आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. का मुखपत्र

मित्रस्याऽहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे

लखनऊ—रविवार रा० पौष २४ शक १८८९, पौष शु० १४ वि० स० २०२४, दिनाक १४ जनवरी १९६८

वेदामृत

ओ३म् त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं हवे हवे सुहवं शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शुक्रं पुरुहूतमिन्द्रं स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ॥५०॥

यजु० अ० २०, म० ५०

भावार्थ—त्राणकर्ता राजा को, प्रियकारी राष्ट्रपति को, शूरवीर प्रशसनीय भूपति को, शक्तिशाली बहुसम्मानित प्रजापालक को सत्कृत करता हू। वह ऐश्वर्यवान राष्ट्रपति हमारे लिये कल्याण सम्पादन करे।

विषय सूची

१—अध्यात्म-सुधा २
२—सम्पादकीय ३
३—सभा तथा सार सूचनाएं ४
४—अहिन्दी भाषी राज्य और राष्ट्र भाषा हिन्दी ५
५—काव्य-कानन ६
६—आ०स०की उन्नति के कारण ७
७—ईसा मसीह ८-९
८—गुरु का पावन प्रसाद १०
९—आर्य-जगत् ११-१२
१०—विदेशी मिशनरियो का साहस १६

१—परोपकारिणी सभा के ट्रस्टियों से निवेदन!

२—सत्यार्थ प्रकाशादि के सम्पादन में प्रकाशकों द्वारा अनिष्टकर प्रोपेगेण्डा!

३—ऋषि के हस्तलेखों के प्रति अनास्था पैदा करने की कुचेष्टा!

४—परोपकारिणी सभा का मौन!

५—सार्वदेशिक सभा की उदासीनता!

विस्तृत वर्णन अन्दर पढ़िये !!

वार्षिक ८)
छःमाही ५)
विदेश में १ पौ०

सम्पादकाः
सच्चिदानन्द शास्त्री एम० ए० सभा मन्त्री ★ पं० शिवदयालु उमेशचन्द्र स्नातक एम० ए०

वर्ष ७०
अंक २
एक प्रति २० पै०

सायं प्रातः अग्नि देव का उद्बोधन

सायं सायं गृहपतिर्नो अग्निः ।
प्रातः प्रातः सौमनस्य दाता ॥
वसोर्वसोर्वसुदान एधि ।
वयं त्वेन्धानास्तन्वं पुषेम ॥
प्रातः प्रातर्गृहपतिर्नो अग्निः ।
सायं सायं सौमनस्य दाता ॥
वसोर्वसोर्वसुदान एधि ।
ईन्धानास्त्वा शतं हिमा ऋधेम ॥

अथर्व का० १९, सू० ५५, म० ३-४

—:o:—

प्रति दिवस रात्रि और दिन की सन्धि बेलाओ मे उस दिव्य अग्निदेव का उद्बोधन हमारे इस अष्टचक्र तथा नवद्वार वाले शरीर रूपी गेह का, जिसमे हम उसी की आज्ञा से तो निवास करते है, सरक्षण करने एवं मानसिक शान्ति व आन्तरिक हर्ष के उत्पन्न करने मे महान् सहायक होता है ।

धनों मे श्रेष्ठ धन जो यह जीवन धन है अर्थात् मानव जीवन की आन्तरिक एव आध्यात्मिक विभूतियाँ हैं उनकी उपलब्धि भी मानव को इस अग्निदेव के उद्बोधन से ही होती है ।

सुपथ का पान्थ बनाने वाली दिव्य आध्यात्मिक ज्योति का हम निश्चय अपने मन-मन्दिर में प्रतिदिन सायं और प्रातः आवाहन और उद्बोधन करेंगे और अपने इस स्थूल आधिभौतिक शरीर को तथा सूक्ष्म प्राण व मनोमय शरीर को पुष्ट करेंगे और दीर्घकाल तक सौ वर्ष से भी अधिक काल तक दिव्य जीवन व्यतीत करेंगे ।

प्रति सायं और प्रातः आधिभौतिक अग्नि अर्थात् यज्ञाग्नि मे पवित्र सुगन्धित घृत व शाकल्य की अर्थ ज्ञानपूर्वक मन्त्रो द्वारा आहुति देते हुए ही हम आध्यात्मिक अग्नि मे अर्थात् ब्रह्माग्नि मे यजन करने का अभ्यास करेंगे ।

इस अग्निहोत्र का प्रधान ध्येय मानव को शनैः शनैः ब्रह्माग्नि में यजन करने का अधिकारी बना देना है ।

—शिव

★

काले अंग्रेजों को लखकर—

हिन्दी देवी पूजनीय है, श्रद्धास्पद निज माता है ।
कण्ठ लगाना अंग्रेजी का, केवल यश जुटाता है ॥
अंग्रेजी मे ब्याह निमन्त्रण, भारतीय से आता है ।
हिन्दी माता लाखों बच्चों पर, उनमे कुछ नाता है ?
नई युगों के जीवित रहते, मा को जीवन के लाले ।
काले अंग्रेजों को लख कर, बगल बजाता "मेकाले" ॥
निज भाषा मे क्या हाथों मे या जिह्वा पर पड़ते छाले ।
काले अंग्रेजों को लखकर, बगल बजाता "मेकाले" ॥

—श्री यज्ञदत्त अक्षय, सा०प्रजासेवक, जोधपुर से साभार

श्री रामचन्द्र देहलवी से नर्सिंग होम में वार्तालाप

१ दिसम्बर १९६७ को मै सार्वदेशिक सभा के दो एक कार्यालय के व्यक्तियो के साथ प० रामचन्द्र जी देहलवी के दर्शनार्थ, नर्सिंग होम देहली गया । जब हम लोग वहां पहुचे तब देहलवी जी के सम्बन्धी उन्हे अपने हाथ से भोजन खिला रहे थे । भोजन कर चुकने के बाद वार्तालाप प्रारम्भ हुआ । स्वास्थ्य के कुशल क्षेम के पश्चात मैने उनसे पूछा कि आजकल जो सत्यार्थ प्रकाशो के छपने की बाढ़ आ रही है उसमे एक स्थान पर आप की समति छपी है । उस सम्बन्ध मे मै आप से मालूम करना चाहता हू । सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय सस्करण का फोटो प्रिंट मेरे पास था जिसमे देहलवी जी की सम्मति छपी थी । देहलवी जी ने कहा कि मेरे नाम से जो मेरी सम्मति छपी है उसको पढ़कर सुनाइये । मैने जैसी की तैसी सम्मति जो छपी थी पढ़कर सुनादी । जिसमें यह लिखा था कि मै द्वितीय सस्करण सत्यार्थ प्रकाश को ही प्रमाणिक मानता हू । देहलवी जी ने मुझसे पूछा कि इस मेरी समति से कोई हानि या गलत बात तो नहीं हो गई । मैने महर्षि के हस्त लेखो की चर्चा की उस पर देहलवी जी ने अपना व्यक्तित्व इस प्रकार किया कि—

देहलवी जी का सत्यार्थ प्रकाश द्वितीय संस्करण के फोटो प्रिंट के सम्बन्ध में व्यक्तव्य

देहलवी जी ने कहा कि मै ऋषि के हस्त लेखो के प्रति अपनी श्रद्धा रखता हू । मेरी समति को आप इस प्रकार समझो कि मै (रामचन्द्र देहलवी) सत्यार्थ प्रकाशादि के महर्षि के लिखाये हस्तलेखो को प्रामाणिक मानता हू । हा जो छपे हुये सत्यार्थ प्रकाश है उन मुद्रितो मे मै द्वितीय सस्करण को ठीक मानता हू पर हस्तलेखों की अपेक्षा द्वितीय सस्करण को अधिक प्रामाणिक नहीं मानता । उन्होंने मुझे अधिकार दिया कि मै उनकी ओर मे यह उनकी सम्मति आर्य जगत् के ज्ञानार्थ प्रकाशित कर दू ।

आर्य समाज के भविष्य के सम्बन्ध मे देहलवी की भविष्यवाणी

उपर्युक्त चर्चा के पश्चात् मैने उनसे कहा कि कुछ आर्य जगत को सदेश दीजिए । इस पर उनके आखो मे आसू आ गये और वे रोने लगे । मैने कहा कि आप इतने दुखी क्यो है । देहलवी जी हिचकी सो भरते हुये लड़खड़ाती जिह्वा से बोले कि आर्य समाज समाप्त हो जायेगा । मैने उनका ढाढस बंधाते हु कहा कि ऐसा कभी नहीं हो सकता, हम जैसे हजारो आपके बच्चे आर्य जगत् को जीवन दिये हुये हैं । ऐसा कभी नहीं हो सकता । हमारे दुखी होने से कुछ आप को निराशा है । इनका आप सदेह न करें । आज आर्य जगत् मे बड़े २ विद्वान इतने अधिक हैं जितने पहले भी नही आप ऐसी चिन्ता न करे आप आशिर्वाद दें और आज्ञा करे कि हम आप से छोटे क्या २ करें जिससे आर्य समाज दिन दूना रात चौगुना बढ़े अपनी बुद्धि से तो जो समझ मे आता है हम करते ही रहते है पर आप हमारे आर्य जगत् के पितामह हैं हम तो आप से संदेश और आज्ञा चाहते हैं ।

देहलवी जी कहने लगे जो मै कहूँ वह करोगे । यह मै जानता हू कि तुम कर सकते हो । मैने कहा कि महाराज आज्ञा करिये । मैं यत्न करूंगा आगे प्रभु की इच्छा । देहलवी जी ने अपना सदेश आर्य जगत् के नाम प्रसारित करने की इच्छा से इस प्रकार कहा कि—

आर्य समाजी लोगों ने अपने शिर जो राजनैतिक पार्टियों की टोपियां पहन रखी हैं इन्हें उतरवा दे । बस आर्य समाज बच जावेगा अन्यथा नहीं ।

क्योंकि मुझे उसी दिन परोपकारिणी सभा के कार्यवश अजमेर जाना था अतः अधिक बात न हुई और देहलवी जी बोले कि फिर मुझसे मिलना मैं अधिक कुछ लिखना चाहता हू । हम लोग आशिर्वाद लेकर चले आये ।

—आचार्य विश्वश्रवाः व्यास
एम० ए० वेदाचार्य

कृपया पत्र तथा मनीआर्डर कूपन पर
अपना ग्राहक सख्या
अवश्य लिखिए !

—व्यवस्थापक

वैदिक प्रार्थना

ओ३म् अग्निः पूर्वेभिर्ऋषिभिरीड्यो नूतनैरुत । स देवां एह वक्षति ॥ ४ ॥

ऋ० १ । १ । १ । २ ॥

व्याख्यान—हे सब मनुष्यो के स्तुति करने योग्य ! ईश्वराग्ने ! "पूर्वेभिः" विद्या पढे हुये प्राचीन "ऋषिभि" मन्त्रार्थ देखने वाले विद्वान और "नूतनैः" वेदार्थ पढ़ने वाले नवीन ब्रह्मचारियो से "ईड्यः" स्तुति के योग्य "उत" और जो हम लोग मनुष्य विद्वान् वा मूर्ख हैं उनसे भी अवश्य आप ही स्तुति के योग्य हो सो स्तुति को प्राप्त हुये आप हमारे और सब संसार के सुख के लिये दिव्यगुण अर्थात् विद्यादि को कृपा से प्राप्त करो, आप ही सब के इष्टदेव हो ।

लखनऊ रविवार १४ जनवरी १९६८, दयानन्दाब्द १४३ सृष्टिसम्वत् १,९७,२९४९,०६८

परोपकारिणी सभा और महर्षिदयानन्द सरस्वती के ग्रन्थ

★

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने अपने ग्रन्थो के प्रकाशन का उत्तराधिकार परोपकारिणी सभा अजमेर को दिया । परोपकारिणी सभा आरम्भ से ही महर्षि के ग्रन्थो को प्रकाशित करती चली आ रही है । स्वतन्त्र प्रकाशको ने भी वेदभाष्य को छोड़ कर अन्य ग्रन्थो का प्रकाशन किया । सार्वदेशिक सभा द्वारा भी सत्यार्थप्रकाश प्रकाशित हुआ है ।

ऋषि के ग्रन्थो के प्रकाशन मे एक नया मोड़ आया । श्री प० सुखदत्त जी विद्यावाचस्पति ने ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका कलकत्ता से प्रकाशित की । उन्होने अपने संस्करण [illegible] [illegible] परोपकारिणी सभा द्वारा प्रकाशित ऋग्वेद [illegible] भाषा अशुद्ध है यह ऋषि की नहीं है । इस प्रसग मे आचार्य रामदत्तार शर्मा जी बिहार और आचार्य विश्वश्रवाः जी बरेली ने इसका विरोध किया और इन दोनो का ही समर्थन स्व० प० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु ने किया । पर सार्वदेशिक सभा और परोपकारिणी सभा मौन रही ।

उधर श्री पं० भगवद्दत्त जी ने ऋषि का पत्र-व्यवहार प्रकाशित किया । उस पत्र-व्यवहार के प्रकाशन का यह प्रभाव हुआ कि अधिकतर विद्वान् यह कहने लगे कि ऋषि दयानन्द सरस्वती के वे ग्रन्थ जो सस्कृत और आर्यभाषा दोनों मे है उनमे सस्कृत तो ऋषि की है पर आर्यभाषा पण्डितों की बनाई हुई है । श्री पं० ब्रह्मदत्तजी जिज्ञासु और उनके प्रमुख शिष्य पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक ने स्पष्ट रूप से मान लिया कि स्वामी जी के वेद भाष्य की जो १३ जिल्दें छपती है उनमे समस्त यजुर्वेद भाष्य और ऋग्वेद भाष्य की आर्यभाषा पण्डितो की है और परोपकारिणी सभा द्वारा प्रकाशित वेदभाष्य की सस्कृत मे भी अशुद्धिया है आचार्य विश्वश्रवाः जी अकेले इसका विरोध करते रहे । इस संघर्ष का परिणाम मेरठ के आर्यसम्मेलन का मसद था । पर परोपकारिणी सभा और सार्वदेशिक सभा मौन रही ।

स्व० प० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु ने ऋषि के वेदभाष्य की आर्य भाषा को पण्डितो की बनाई तो स्वीकार की पर ऋषि के वेदभाष्य के स[illegible] भा[illegible] मे जो उन्हे अशुद्धिया [illegible] उनको उन्होने यह कभी न[illegible] कि यह अशुद्धिया ऋषि की है [illegible] [illegible] [illegible] नहीं [illegible] ने [illegible] कि [illegible] लन [illegible] वेद सम्मेलन के उद्घाटन [illegible] मे आचार्य विश्वश्रवा जी ने घोषणा की कि ऋषि के ग्रन्थो मे कोई भूल नहीं है । यदि कोई भूल समझता है तो बतावे । प० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु ने इसका समर्थन करते हुए कहा कि कहीं-कहीं लेखको आदि ने प्रमाद मे लशुद्धिया कर दी हैं पर ऋषि की भूल कोई नहीं है । अशुद्धियो के एक दो उदाहरण उन्होने प्रस्तुत किये उसके बाद वेद सम्मेलन मे तीसरा भाषण श्री प० आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री का हुआ उन्होने उन जिज्ञासु जी द्वारा बताई हुई ऋषि के वेदभाष्य की सस्कृत की अशुद्धियो का उत्तर दिया और यह कहा कि अशुद्धियां नहीं हैं आपकी समझ की भूल है । और उन्होंने आचार्य विश्वश्रवाः जी की घोषणा की पुष्टि की इसी की पुष्टि श्री प० भगवद्दत्त जी आदि आर्य विद्वान् करते रहे । पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु ने अनेक प्रकाशनो मे सस्कृत भाष्य और आर्य भाषा भाष्य की अशुद्धियो को प्रकाशित किया । पर न किसी विद्वान् ने उत्तर दिया और न किसी आर्य सस्था ने । परोपकारिणी सभा और सार्वदेशिक सभा मौन रही ।

श्री प० भगवद्दत्त जी ऋषि का पत्र-व्यवहार छाप कर मौन लगाकर बैठ गये पर उसका आश्रय लेकर सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशको मे एक नया मोड़ आया । स्व० स्वामी वेदानन्द तीर्थ जी और प० उदयवीर जी शास्त्री के सम्पादकत्व मे सत्यार्थप्रकाश स्थूलाक्षर के तीन सस्करण निकल चुके है उसमे मुद्राराक्षस अर्थात् मुद्रण की अशुद्धिया परोपकारिणी के छापे सत्यार्थप्रकाश मे हजारो हैं यह उद्घोष करके सत्यार्थ प्रकाश मे बहुत पाठ बदले और उन्हे ठीक किया ।

उधर प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती ने भी स्थूलाक्षर सत्यार्थप्रकाश छापा और उन्होने [illegible] वेद [illegible] और प० उदयवीर [illegible] के छापे सत्यार्थप्रकाश का [illegible] इसके बाद प० भगवद्दत्त जी ने भी स्थूलाक्षर सत्यार्थप्रकाश छापा और यह [illegible] कि [illegible] ऋषि के हस्तलेखो से मिलान [illegible] सत्यार्थप्रकाश [illegible] उन्होने [illegible] वेदानन्द तीर्थ [illegible] प० उदयवीर जी शास्त्री के [illegible] [illegible] [illegible] वे [illegible] [illegible] द्वितीय संस्करण [illegible] छाप कर परोपकारिणी सभा को चलेज किया कि हस्तलेख गलत है । पर इस पर भी सार्वदेशिक सभा और परोपकारिणी सभा मौन रही ।

परोपकारिणी सभा ने स्वीकार कर लिया

अब ऐसा प्रतीत होता है कि परोपकारिणी सभा ने यह स्वीकार कर लिया है कि ऋषि के वेद भाष्य की आर्य भाषा पण्डितो की है ऋषि की नहीं । क्योकि अभी जो नये सस्करण ऋषि के ऋग्वेद भाष्य के परोपकारिणी सभा ने प्रकाशित किये हैं उन पर परोपकारिणी सभा ने यह छाप दिया है—

"इस भाष्य की भाषा को पण्डितों ने बनाया है और सस्कृत को भी पण्डितो ने शोधा है"

हमे आश्चर्य है कि जब यही बात स्व० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु ने कही थी तब उस समय परोपकारिणी सभा ने जिज्ञासु जी पर कमीशन बैठाया और जिज्ञासु जी के छापे यजुर्वेद भाष्य को अप्रामाणिक घोषित किया और अब स्वय इस बात को स्वीकार कर लिया । पर आश्चर्य है कि सार्वदेशिक सभा अब भी मौन है ।

अभी सत्यार्थ प्रकाश का ३४ वाँ सस्करण हमारे हाथो मे आया जिसको परोपकारिणी सभा ने प्रकाशित किया है और यह बात भूमिका ने बड़े बल के साथ लिखी है कि यह सस्करण ऋषि के हस्त लेखो से पूर्ण मिलान करके अब की बार बिलकुल ठीक छापा गया है । पर सत्यार्थ प्रकाश के इस ३४ वें सस्करण को देखकर प्रत्येक व्यक्ति इस परिणाम पर पहुचेगा कि ऐसा [illegible] का सस्करण आज तक कोई प्रकाशित नहीं हुआ है । परोपकारिणी सभा इन को ध्यान से देखे ।

इसके मुख पृष्ठ पर छापा गया है—

श्रीमत्परमहस परिव्राजकाचार्येण श्री मद्दयानन्द सरस्वती स्वामि विरचित:

ऐसी [illegible] सस्कृत [illegible] ऋषि [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] है [illegible]—

अथ [illegible] [illegible]

अथ [illegible] [illegible]

प[illegible] महायज्ञविधि:

इसी प्रकार [illegible] सत्यार्थ प्रकाश" यह [illegible] पर परोपकारिणी सभा के ३४ वें सस्करण मे [illegible] सत्यार्थ प्रकाश' है अत प्रतीत होता है कि परोपकारिणी सभा मे बैठे पण्डित इतनी बात को भी नहीं जानते हैं ।

३—इस ३४ वें संस्करण मे ब्रेकटों की भरमार है जब स्व० पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु ने ऋषि के ग्रथो मे ब्रेकट डाले तब आचार्य विश्वश्रवाः जी ने उनके विरुद्ध आन्दोलन उठाते हुए यह भय दिखाया कि ये ब्रेकट कभी मूल पाठ बन जावेगे पर आज परोपकारिणी सभा के इस ३४ वें संस्करण मे ब्रेकटो की भर

मार है। अब श्री आचार्य विश्वश्रवाः जी क्यो मौन हैं। श्री प० युधिष्ठिर जी मीमासक ने रामलालकपूर ट्रस्ट द्वारा छापे ग्रन्थों में यही प्रश्न उठाया है कि जब रामलाल कपूर ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित ऋषि के ग्रथों मे हमने और पूज्यपाद गुरुवर्य प० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु ने ब्रेकेट डाले तब आचार्य विश्वश्रवा जी ने आन्दोलन उठाया अब परोपकारिणी सभा ने स्वय इस ३४ वें सस्करण मे ब्रेकटो की भरमार कर दी है और ये ब्रेकट है भी असगत जैसे—

४—प्रथम पृष्ठ पर ही (प्रथम समुल्लारम्भ) एक ब्रेकट डाला है। यह ऋषि की शैली के विरुद्ध है क्योकि ऋषि वर अपने किसी भी ग्रन्थ मे प्रथम प्रकरण का उल्लेख न करके केवल पुस्तक का नाम लिखते हैं और आगे द्वितीय प्रकरण आता है तब उस द्वितीय से लिखना प्रारम्भ करते है। इस ऋषि शैली से भी परोपकारिणी सभा का सदस्य अनभिज्ञ है।

५—पृष्ठ ३५ पर "माता शत्रुः पिता वैरी येन बालो न पठितः" यह श्लोक सत्यार्थ प्रकाश में उद्धत है। इसके नीचे स्वामी जी ने लिखा है कि "यह किसी कवि का बचन है" ३४ वें सस्कार मे ब्रेकट डाला गया है।

(द्वितीय देश तालिका) यहां से दोनों पक्तिया मूल मे फिर नहीं बैठती कि इधर तो यह लिखो कि किसी कवि का बचन है और ग्रथ का पता भी दो। 'मम मुखे जिह्वा नास्ति बदामि च' के समान है।

६—ऋषि की संस्कृत शैली का इस ३४ वें सस्करण मे नाश किया गया है जैसे पृष्ठ ३६ पर यह कहा था कि 'चोर आदि भय'। पर परोपकारिणी सभा के पण्डित को ब्रेकट डालने का इतना शौक है कि यहां ब्रेकट मे (क) डाला गया है। चोर आदि (का) भय।

७—पृष्ठ ९४ पर जो सत्यार्थ प्रकाश में बलि वैश्वदेव के मन्त्र ऋषि ने लिखे हैं वहा परोपकारिणी के पण्डित ने मूल में ही ब्रेकट डाल दिया कि (मनु के आधार पर) क्या यही सपादन शैली है। हमारी निश्चित धारणा इस ३४ वें सस्करण को देख कर बनी है कि इतनी धाधली आज तक किसी ने सत्यार्थप्रकाश का सपादन नहीं किया होगा।

मनु का एक श्लोक है कि—

फलं कतकवृक्षस्य यद्यप्यम्बु प्रसादकम्।
न नाम ग्रहणादेव तस्य वारि प्रसीदति ॥

अर्थात् कतक वृक्ष का फल जैसे जल को शुद्ध कर देता है पर उसके नाम लेने मात्र से जल शुद्ध नहीं हो जाता है। इसी प्रकार परोपकारिणी सभा के पास हस्तलेख है और उनके द्वारा ऋषि ग्रंथ ठीक २ छापे जा सकते हैं पर हस्त लेख बोलने मात्र से ऋषि के ग्रथो का प्रकाशन ठीक नहीं हो सकता।

सार्वदेशिक सभा से सानुरोध निवेदन कि जब सभा के उद्देश्यो में यह है कि "ऋषि के ग्रथों को हस्तलेखो के आधार पर सपादित करना जिससे उनमें कोई प्रक्षेप न होने पावे" तो उसको मौन रहना चाहिये और परोपकारिणी सभा द्वारा तक जब ऋषि के ग्रथो के प्रकाशन मे अवहेलना की जा रही है तो उचित कदम सार्वदेशिक सभा उठावे और इस बात पर अपना मत सार्वदेशिक सभा भी प्रकट करे कि ऋषि के ग्रथो मे अभिभाषा पण्डितो की है या ऋषि की। क्योकि परोपकारिणी सभा ने अपने द्वारा वेद भाष्य के नवीन सस्करणो मे यह प्रकाशित कर स्वीकार कर लिया कि वेद भाष्य की आर्य भाषा पण्डितो की है। सार्वदेशिक सभा अपना क्या मत रखती है। हम आर्य विद्वानों के लेखों को आमन्त्रित करते हैं और जानना चाहते हैं कि परोपकारिणी सभा के समर्थक आचार्य विश्वश्रवाः जी और उनके अनुमोदिक श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री का क्या मत है ये दोनो मौन क्यो हैं।

अन्तरङ्ग सभा की सूचना

सभा के समस्त अन्तरंग सदस्यों को सूचित किया जाता है कि आगामी अन्तरंग सभा की बैठक गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन मे दिनांक ३ फरवरी को होना निश्चित हुआ है।

सदस्यों को विस्तृत सूचना शीघ्र ही अलग से भी भेजी जा रही है।

बृहदधिवेशन के लिए आमंत्रण

प्रदेशान्तर्गत समस्त समाजों को सूचित किया जाता है कि जो समाजे सभा का आगामी बृहदधिवेशन अपने यहाँ आयोजित कराना चाहें वह कृपया अपने निमन्त्रण-पत्र हमें ३० जनवरी तक अवश्य भेज दें।

—सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा मन्त्री

हमारी सांस्कृतिक उन्नति का एक मापदण्ड
दिल्ली का कनाट प्लेस

भारत की उन्नति में चार चांद लगाने वाले कार्यो मे एक विशेष उन्नति हम लोगो ने की, और अपना आनन्दोत्सव अब तक मधुशाला के भीतर ही पगड़ी उछाल कर किया करते थे। परन्तु अबकी बार भारत सरकार के पैरों तले वा मधुशाला के सच्चे पहरेदार श्री मुरारजी भाई के शासन तले खुलकर नव वर्ष के उपलक्ष्य में कनाट प्लेस में जो देखने को मिला उमसे भारत की इज्जत मे और चार चांद लग गये। मुरार जी भाई को मगजा प्रसाद पारितोषिक दिया जाना चाहिये, उनकी कार्य कुशलता पर उन्होने मद्य निषेध का आन्दोलन अपने हाथ में लिया है। पर देखना है कि वह क्या कर रहे है।

श्री मुरार जी को यह नीति बिलकुल असफल रही और गुण्डों का साम्राज्य मयखानो के बाहर खुलकर खेलने लगा है। कनाट प्लेस में क्या हुआ है नव वर्ष इसका प्रमाण है। नव युवको ने शराब पीकर जनता हक अदा कर दिया।

उन्होने राह चलती महिलाओ को अपमानित किया, महिलाओ के वस्त्र फाड डाले, उन्हे नगा तक कर दिया, कई महिलाओं के आभूषण तक छीन लिये। सडको पर जाती कारो को नष्ट किया गया। किसी भी भले आदमी की हिम्मत तक नहीं हुई कि इस सांस्कृतिक कार्यक्रम को रोकने मे मदद देते, पर अच्छे भले लोगो ने कान दबाकर इज्जत बचाकर भागने मे ही सुरक्षा समझी। कहते तो यहा तक हैं कि एक राजदूत की पत्नी को भी इस सम्मान से सम्मिलित किया गया' एक मजिस्ट्रेट साहब भी इसके नमूना बने। गुण्डो ने एग्लो-इज स्ट्रेट इशोरेंस के भूतपूर्व महा निदेशक डा० अलबकर्क का भी अपमान किया, श्रीमती सोना ने अपनी राम कहानी जो इस कार्यक्रम मे बीती, वह श्रीमती इन्दिरा गाधी तक से वर्णन की।

हाय रे-हमारी उन्नति-तू कहां पर स्थिर होगी। तमाशा होता रहा, दर्शक इस नाटक को देखते रहे, पुलिस भी मस्ती से घूमती रही। वह भी क्या करती, उन मंजनुओ ने न जाने किन किन इज्जतदार लोगो के, कौन सेक्रेटरी का सपूत, व कौन मंत्री महोदय का सपूत होगा, और कौन किसी सामाजिक कार्यकर्ता का लड़का होगा। इसी निर्णय में उन्हे भी बेहाल कर दिया कि तुम बोलो तो नौकरी की समस्या होगी। वह भी फूंक फूंक कर कदम उठाते हैं।

बीस वर्षों के इस काल में हमने कितनी उन्नति की है भौतिक तत्वो से उन्नति का मापदण्ड विश्व मे नहीं आंका जाता है। जिन विदेशी लोगों ने इस शर्मनाक काण्ड को अपनी आंखों देखा होगा या उनकी खबर बनी होगी, तो हमारी क्या स्थिति उनकी दृष्टि में रही होगी।

स्वतन्त्र भारत मे जुआरियों-चोरों-उचक्को यहा तक कि राम के पुजारी वालो को भी शराब के बिना सन्तोष नहीं मिलता है शराब उन्नति का साधन मानी जाने लगी है, शुभ कार्यों मे यदि यह न उपलब्ध हो तो वह कार्य ही अधूरा माना जाता है। इस चरम सीमा तक हमारा उत्कर्ष हो चुका है। बलिहारी है उन महापुरुषो की जो उस भवन मे बैठे है जहां ४०० कोटि नहीं किन्तु समस्त भारत का हित-अहित सोचते है उनकी आंखें क्यो बन्द हैं—एक ओर मद्य निषेध आन्दोलन, दूसरे ओर शराब के ठेके और भट्टियों के लाइसेन्स।

साराश यह कि एक विचित्र तमाशा सा बना हुआ है चारों और अराजकता का ही साम्राज्य फैल रहा है। इसमें न सरकार का सम्मान है न पुलिस और धार्मिक कार्य कलापो का ही।

भारतीय संस्कृति के मापदण्ड की सुरक्षा इन घृणित कार्यो मे नहीं है जिस देश मे सौंदय प्रतियोगिता नाक- कान अग- प्रत्यगो की देख भाल और सुन्दरतम योजना बन गई हो—गृह लक्ष्मियों ने अब सजाये महफिलो में शोभा स्थान ग्रहण कर लिया हो, यह अबोध बालक जो मयखाने के नाम से घृणा करते थे वह बोतलो को खरीदने मे उतावला पन दिखा रहे हैं। धनिक अपने पैसे का सदुपयोग मयखाने के बिना अपना कार्य अधूरा मानने लगा है।

यह है हमारा —चरमोत्कर्ष—पीने और पिलाने वालो की अपेक्षा हमें सोचना है कि इसका उपाय क्या है,

नये वर्ष के आगमन पर पीछे के कार्य कलापो का अवलोकन कर भविष्य पर दृष्टि डालनी है।

हम क्या थे और क्या हो गये—
और क्या करना है हमे ?

सभा की सूचनायें पृ० १४ पर देखें

अहिन्दी भाषी राज्य और राष्ट्र-भाषा हिन्दी

आज नेहरू जी के नाम पर 'राज भाषा संशोधन विधेयक १९६७' भारत के बंगी गृहमन्त्री और जिद्दी प्रधानमन्त्री द्वारा उत्तर भारत के भयंकर जन क्षोभ और जनता के विरोध के बावजूद भी उसे पास किया गया है और हिन्दी भाषी प्रान्तों के एम० पी० और संसद सदस्य कांग्रेस के नाम पर-पार्टी के अनुशासन की दृष्टि से जनता की उपेक्षा कर इन्दिरा गांधी और चौहान को खुश कर अपनी सीट अगले चुनाव के लिए सुरक्षित करा रहे हैं। क्या यही प्रजातन्त्र है ? क्या यही भारत के राष्ट्रपति का प्रजातन्त्र की हत्या के समय मौन रूप से दर्शक बनकर देखते रहना उनका कर्तव्य है। जो राष्ट्रपति प्रजातन्त्र को बचाने के लिए हरियाणा मन्त्रिमण्डल को हटाकर कांग्रेस को लाने के उद्देश्य से राष्ट्रपति शासन लागू कर सकता है। जो राष्ट्रपति अपने प्रतिनिधि बंगाल के राज्यपाल द्वारा बंगाल में असवैधानिक और अनुचित कार्य कर सकता है। जो राष्ट्रपति बिहार मे वहां के मन्त्रिमण्डल की सहमति मे बिना नित्यानन्द कानून का कांग्रेश शासन लाने के लिए राज्यपाल मनोनीत कर सकता है, क्या वही राष्ट्रपति इन्दिरा गांधी और चौहान को जनता के आन्दोलन को देखकर उन आन्दोलनकारियो की बात सुनने और विचार करने को नहीं कह सकता ? वास्तव मे तो बात यह है कि राष्ट्रपति भारत का राष्ट्रपति नही, जनता का राष्ट्रपति नहीं वह एक दल विशेष अर्थात् कांग्रेस का राष्ट्रपति है और कांग्रेसियो ने उसे चुना है,

उसी की रक्षा करना उसका प्रथम कर्तव्य है। यही कारण है कि अहिन्दी भाषियो का नाम लेकर अपने बच्चों को और अपने सम्बन्धियो को सदा देश का शासक बनाये रखने के लिए श्रीमती इन्दिरा गाधी और श्री चौहान द्वारा यह विशेष कर प्रस्तुत किया गया है। हिन्दी भाषी प्रदेशो के मन्त्रियो और कांग्रेसी ससद सदस्यो मे वह मानसिक और आत्मिक बल नही कि वे अल्गसेन और सुब्रह्मण्यम् की तरह अपना मन्त्रित्व छोड़ सके और कांग्रेस पार्टी मे इन्दिरा गांधी और चौहान का विरोध कर सकें। औरो की बात तो जानें दीजिए हिन्दी भाषी प्रदेश के ही नहीं स्वामी दयानन्द के अनुयायी जिन्होने अहिन्दी भाषी प्रांत का होते हुये भी हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाया है और जिसने खड़ी बोली को व्यवस्थित रूप देने में भारतेन्दु बाबू के समान महत्वपूर्ण कार्य किया है, उनके सिद्धांतों को मानने वाले शिक्षा मन्त्री श्री शेरसिंह और गुरुकुल वृन्दावन के उप कुलपति ने भी इस विषय मे अपने त्याग और सत्य का समर्थन नहीं किया। स्वामी दयानन्द अहिन्दी भाषी थे और संस्कृत के विद्वान् थे, इन्होने हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाने और देश की एकता को बनाये रखने के लिए उसकी महिमा को समझा था और यही कारण था कि उन्होंने अपने सब ग्रंथ, अपनी सब पुस्तकें और अपने भाषण हिन्दी में दिये। इसे वे आर्य भाषा कहते थे। आज उनके अनुयायियो की यह दशा ?

स्वामी दयानन्द के बाद तिलक का स्थान है। महाराज तिलक ने इसी भावना को ध्यान मे रखते हुए- स्वयं अहिन्दी भाषी होते हुए उन्होने हिन्दी को राष्ट्र भाषा के रूप मे प्रचलित किया, उन्होनें अपने क्रांतिकारी स्वभाव के अनुसार भारतीय भाषाओ के लिए देवनागरी लिपि के महत्व को समझते हुए

महाराष्ट्री भाषा की लिपि देवनागरी प्रचलित की और आज भी वह उसी मे लिखी जाती है। तिलक के प्रदेश के गृहमन्त्री ने उनकी हत्या की और यह नापाक विधेयक ससद रखने का पाप उठाया।

तिलक महाराज के बाद भारत की बागडोर महात्मा गाधी के हाथो मे आई। महात्मा जी के आदर्श और सिद्धांतो का आधार सत्य था। उन्हने अपनी सत्यमयी विचार धारा को ध्यान मे रखते हुए कहा है "अगर स्वराज्य अंग्रेजी बोलने वाले भारतीयों का और उन्हीं के लिए होने वाला हो, तो निस्संदेह अंग्रेजी ही राष्ट्र भाषा होगी ?

लेकिन अगर स्वराज्य करोड़ों भूखे मरने वालों, करोड़ों निरक्षरों, निरक्षर बहनों और दलित एवं आत्मजों का हो और इन सबके लिए होने वाला हो तो हिन्दी ही एक मात्र राष्ट्र भाषा हो सकती है।

और राष्ट्रीय एकता के विषय में उन्होने कहा 'यह बात नहीं है कि मैं भाषा के पीछे दीवाना हो गया हूं। फिर भी भाषा पर इतना जोर मै इसलिये देता हूं कि राष्ट्रीय एकता हासिल करने का यह एक बहुत जबरदस्त साधन है और जितना दृढ इसका आधार होगा उतनी हीप्रशस्त हमारी एकता होगी।'

वैज्ञानिक ज्ञान के सम्बन्ध मे जिसके लिए अंग्रेजी रखने का जोर दिया जाता है, राष्ट्र पिता ने कहा 'यह कभी नहीं हो सकता कि हजारों लोग अंग्रेजी भाषा को अपना माध्यम बनायें, और यह अगर मुमकिन हो तो भी चाहने लायक तो कतई नहीं। इसकी सीधी २ वजह यह है कि अंग्रेजी के जरिए मिलने वाला उच्च और पारिभाषिक ज्ञान, आम लोगो तक नहीं पहुच सकता। यह तो तभी हो सकता है जब उस ज्ञान का प्रसार ऊपर के वर्ग वालो मे भी किसी देश की भाषा के द्वारा हो।"

इन सब बातो को ध्यान मे रखते हुये कांग्रेस कार्य समिति और कांग्रेस अधिवेशनो मे भी हिन्दी और क्षेत्रीय भाषाओ को रखने का विचार प्रकट किया गया और उनके विकास का लक्ष्य निर्धारित किया गया। सन् १९५८ के गोहाटी कांग्रेस मे कहा गया—

"इन भाषाओ के मध्य घनिष्ट सम्पर्क होना चाहिये। यह सम्पर्क भाषा कोइ विदेशी भाषा नही हो सकती भले ही वह कितनी महत्वपूर्ण क्यो न हो। यह केवल भारतीय भाषा ही हो सकती है।"

आज यह विधेयक नेहरू और शास्त्री के नाम पर लाया गया। समझ में नहीं आता कि नेहरू जी के साथ-साथ शास्त्री जी को क्यो घसीट लिया। हमारे प्रधान मन्त्री ने यह सोचा कि केवल नेहरू के नाम से लोग यह समझेंगे कि यह अपने पिता के इशारोंपर चल रही है अतः लाओ, शास्त्री जी को भी उसमें डाल दें। शास्त्री जी के समय १९६५ में जो मद्रास में आन्दोलन हुआ उसकी समाप्ति विनोबा भावे के उपवास से हुई। उस समय भावे महोदय ने तीन शर्तें रखी थी (१) तोड़-फोड़ और हिंसात्मक कार्य भाषा के नाम पर रोक दिये जाएं। (२) हिन्दी भाषी लोगों पर बलात् अंग्रेजी न थोपी जाय और (३) अंग्रेजी चाहने वालो पर हिन्दी बलात् न थोपी जाय। श्री शास्त्री जी ने और सभी लोगो ने इसको स्वीकार किया था। इसके अनुसार अंग्रेजी चाहने वालों पर तो हिन्दी नहीं थोपी जा रही है परन्तु हिन्दी चाहने वालों पर अंग्रेजी लादी जा रही है। ऐसी स्थिति में

—सुरेशचन्द्र वेदालंकार
एम० ए०, एल० टी०

शास्त्री जी के आश्वासन कहा पूरे हुए ? रही बात नेहरू जी की। नेहरू जी ने क्या आश्वासन दिया था यह तो कहीं उपलब्ध नहीं है। किन्तु संविधान सभा जब भाषा विषयक विचार कर रही थी तब कुछ अंग्रेजी परस्तो ने उस समय भी अंग्रेजी को सविधान के अन्तर्गत लाकर सदा-सदा के लिये देश पर लादने की योजना बनाई थी। और उन्होने यह प्रयत्न किया कि अंग्रेजी को भारतीय सविधान के अनुच्छेद मे सम्मिलित किया जाय। उस समय पं० नेहरू ने जो कहा वह उनके आश्वासनो के विरुद्ध बात लगती है—जिसके आधार पर यह संशोधद विधेयक लाया गया है। नेहरू जी ने कहा था –

"कुछ लोगो की षड्यन्त्र पूर्ण चाल यह है कि अष्टम् अनुसूची की भाषाओं मे अंग्रेजी भाषा को भी स्थान दिया जाय ? ऐसा करना स्पष्टत अनुचित कार्य होगा। कारण अंग्रेजी कोई भारतीय भाषा नहीं है यद्यपि यह एंग्लो इंडियन जाति की मातृ भाषा के रूप मे गृहीत की गई है। हमे अंग्रेजी अथवा कोई आधुनिक योरोपीय भाषा सीखने को मान्यता दें। यही बहुत होगा। अत. सविधान की अष्टम् अनुसूची मे अंग्रेजी को सम्मिलित करने की बात वाहियात होगी। अंग्रेजी को अनुसूची मे शामिल करने की बात उस मूलभूत सिद्धान्त के सर्वथा विपरीत होगी कि अंग्रेजी भाषा के स्थान पर भारत की राष्ट्रीय भाषा को प्रतिष्ठित किया जाय, ऐसा करना संविधान की भावना तथा निर्देश और हमारे पिछले पचास वर्षों के आधुनिक इतिहास के सर्वथा विपरीत होगा।

(शेष पृष्ठ १३ पर)

भारत की धरती पर 'मैडम या मम्मी नहीं!'

मेरी माता के हिम पवित्र माथे पर
दुर्दिन की देन अभी शेष एक दाग है
भर देता देश भक्त हृदयो मे भीषण जो
क्षोभ की धधकती भड़कती सी आग है—
स्वाभिमान घायल हो मूक रह जाता है
विश्व की सभाओ मे शीश झुक जाता है
खून तिलमिलाकर खौल-खौल जाता है
क्या कुछ न कर दूं ! आवेश आता है
किन्तु दाग पोछने को हाथ जब उठता है
खड़ा हो कुपुत्र तभी कोई आ पकडता है
बहुत सह लिया है अब, सहन नहीं होना है
खून के आसू हर देशभक्त रोता है
देखें कौन हिन्दी को पीछे हटाता है ?
ज्वालामुखी को कौन देखें बुझाता है ?
सविधान साड़ी है सुन्दर भी तन पर
रग लोकतन्त्र का छिपता है सुन्दर
स्वाधीनता सिंदूर माग मे मनहर
दिव्य मुकुट किरणों का चमक रहा दिनकर
भव्य रूप जननी का अतिशय सुहाता है
मानस मे ममता की गरिमा जगाता है
किन्तु हम उतारते हैं मा की जब आरती
भाव की थाली मे ज्योति जला काव्य की
रोती है लेखनी शब्द सहम जाते है
ओठों पर स्तुति के छन्द थम जाते है
क्योंकि राष्ट्र भाषा की, मां के ललाट पर
सुहाग का अक्षय चिन्ह लग न सकी बिन्दी है
उपेक्षिता अनादृता आज भी हिन्दी है
दासता की सील सा विदेशी भाषा का
माथे पर जननी के लगा है धब्बा
काला कलक यह घिनौना भद्दा
रोको मत, लिखता हू प्रहार लिये हाथों में
टोको मत कहता हू अगार लिये आंखो मे
छेड़ो मत, निश्चय है मेरा तूफानी
हो चुकी हिन्दी पर बेहद मनमानी
हो चुके पूरे लो वर्ष सभी वन के
होगा 'अभिषेक' उठे नारे जन-जन के
अग्रेजी बिल्ली से हठकर रहेगी
अन्तिम यह बेड़ी है कट कर रहेगी—
कैसा राजभाषा का विधेयक वह लाए हो ?
मुर्दा के मुंह में क्यों कर रहे दवायें हो ?
सात सिधु पार जब भगा दिया गोरों को
भाषा फिर उनकी भला, कैसे रह पायेगी ?
साथ में विधेयक के सशोधन को लाये जो
हिन्द महासागर मे डूब मर जाएगी
सोचो तो भारत की धरती कहलाती क्या
कैसा सम्बोधन भला उसको दिया जाता है
किसकी विजय के गीत और जयकारों को
ग्राम-ग्राम, नगर-नगर, जन-जन दुहराता है
किसके लिए सीमा पर खड़े हुये जवानो के
दिल धडक उठते हैं हाथ फडक उठते हैं
किसके लिये खेतो और दफ्तर कारखानों में
बाबुओं, किसानों और श्रमिको की बोलियां
कलमो से हथौड़ों मे, हल से श्रम करती हैं
किसके गीत झूम-झूम जन-जन की टोलियां
नाच नाच गाती हैं बरबस मन हरती है
भारत की धरती यह 'मैडम' या 'मम्मी' नहीं
माता है हमारी यह माता हैं माता
भारत का एक मात्र हिन्दी से नाता

—कृष्णबिहारी एम०ए० मोठ, झांसी

'अंग्रेजी हटाओ देश बचाओ'

(भारतीयों को चेतावनी)

हमसे अब इस आर्य्यावर्त की दुर्दशा देखी जाती नहीं ।
चैन दिन को रात को आंखों मे नींद आती नहीं ।।१।।

स्वतन्त्र कहलाते हुए भी वास्तव में हम परतन्त्र हैं ।
क्या करें इन साथियो को कुछ समझ आती नहीं ।।२।।

अंग्रेज तो चले गये भारत को छोड़ के ।
अंग्रेजीयत की बू मगर अब यहा से जाती नहीं ।।३।।

अंग्रेजी के विद्वानों को मिलते हैं ऊचे पद यहां ।
सस्कृत के विद्वानों की अब कोई कदर की जाती नहीं ।।४।।

बच्चो को बचपन मे यहां अंग्रेजी पढ़ायी जाती है ।
ईसलिए वह आर्य सभ्यता अब यहा दिखलाती नहीं ।।५।।

अग्रेजी को राष्ट्र भाषा बनाना कुछ सर फिरों का ख्याल है ।
राष्ट्र भाषा पद के हेतु सस्कृत चुनी जाती नहीं ।।६।।

हिन्दी कोई भाषा नही सस्कृत की बडी पुत्री है ।
क्या पढ़ेंगे सस्कृत जब हिन्दी समझ आती नही ।।७।।

कर दिया इतिहास दूषित है इस आर्य वर्त का ।
क्या करें इन इतिहासकारों को समझ आती नहीं ।।८।।

सस्कृत भाषा में लिखा इतिहास आर्य वर्त का ।
वह भी बिचारे क्या करें सस्कृत जरा आती नहीं ।।९।।

कहते हैं विज्ञान के प्रेमी क्या पढेंगे विज्ञान हम ।
क्योंकि अंग्रेजी बिना साइंस समझ आती नहीं ।।१०।।

सारी साइंस की हि जड है वेद और यह शास्त्र सब ।
अंग्रेजियत के धुयें मे कुछ सूझ भी आती नहीं ।।११।।

वेद और यह शास्त्र सारे ले गये अंग्रेज जब ।
तभी से अविद्या और जहलत देश की जाती नहीं ।।१२।।

अंग्रेजो की दुनियां ने तुमको अब तक बनाया मूर्ख है ।
और अब भी हैं बनाते क्यो तुमको समझ आती नहीं ।।१३।।

जब जब जगाया हमने तुमको तुमने न कुछ सुना था ।
और अब जगाते हैं पुनः क्यों तुमको अकल आती न[illegible] ।।१[illegible]

कह रहीं हैं आज भारत माता हमसे आर्य्यो ।
नमक घावों पर छिड़कते क्यों दया आती नहीं ।।१५।।

जब यहां से भाग गये अंग्रेज के बच्चे सभी ।
यह अंग्रेजी और अंग्रेजियत यहां से अब है क्यों जाती नहीं ।।१६।।

गो हत्या-परिवार नियोजन-और धर्म परिवर्तन की ।
मूल जड़ अंग्रेजी यहा से अब क्यों उखाड़ी जाती नहीं ।।१७।।

देश की अवनति का कारण केवल अंग्रेजी ही है ।
इसलिए देश के नाम में अब शान वह आती नहीं ।।१८।।

अब नहीं मिलता है वह सम्मान संस्कृत को जो मिलना चाहिये ।
इसलिये इस आर्य्य वर्त में कहीं शान्ति दिखलाती नहीं ।।१९।।

देश की स्वतन्त्रता की रक्षा करना अब हमारे हाथ है ।
अंग्रेजी हटाकर स्वतन्त्रता पर कोई आच आती नहीं ।।२०।।

आज के बच्चो को दे दो शिक्षा वैदिक धर्म की ।
क्योंकि बिना वैदिक शिक्षा के सभ्यता जरा आती नहीं ।।२१।।

देश की सब समस्याओ का निदान देखो वेदों में ।
क्योकि वेदो के बिना राजनीति जरा आती नहीं ।।२२।।

या पढ़ो फिर उस महान् ऋषिवर दयानन्द के साहित्य को ।
क्योंकि बिना आर्य साहित्य के समस्यायें सुलझायीं जा सकती नहीं ।।२३।।

सबसे पहले खोल गुरुकुलों को अब इस देश में ।
क्योंकि गुरुकुलों के बिना विद्या पढ़ाई जा सकती नहीं ।२४।

अंग्रेजी और अंग्रेजियत को दूर भगाओ मिलके अब सब आर्य्यो ।
'कण्व' भारत की भलाई और दिखलाती नहीं ।।२५।।

—'कण्व' विद्यार्थी बरेली

यदि आप आर्यसमाज के कार्य को उन्नति के शिखर पर देखना चाहते हैं तो......

यह सभी अनुभव करते हैं कि आर्य समाज की गतिरुद्ध है। इस विषय मे कुछ उपाय आर्य जगत के महान विद्वान लेखक श्री आचार्य विश्वश्रवाः जी ने आर्यमित्र दिनांक २६-११-६७ में बताए हैं। यह उपाय निश्चय ही विचारणीय एवं कार्यरूप मे परिणित किए जाने योग्य हैं। यदि समय रहते इन पर विचार किया गया तो निश्चय ही हम अपने लक्ष्य की प्राप्ति कर सकेंगे अन्यथा— — मैं भी इस विषय मे कुछ विचार रखता हूं :

१—आजकल आर्य समाजो मे सदस्यता अभियान बहुत जोरों से चलाया जा रहा है। परन्तु अब इस बढ़ती हुई सदस्यता अभियान का फल भली भांति हमारे सम्मुख आने लगा है ? पहले आर्य समाज का सदस्य बनाते समय योग्यता का मापदण्ड जो था वह अब सर्वथा ही भुला दिया गया है। अधिकारीवर्ग अपने निहित स्वार्थों हेतु अपने मित्रो, सम्बन्धियो एवं अन्य ऐसे व्यक्तियो को आर्य समासद बना देते है जिन्हे आर्य समाज के नियमो सिद्धान्तो या मान्यताओ का लेशमात्र भी ज्ञान नहीं होता है। आज प्रायः आर्य समासदो की योग्यता का मापदण्ड उनका स्थानीय प्रभाव, पैसा या अन्य पदो का आधार रह गया है। जबकि पहले आर्य समासद बनाते समय यह ज्ञात किया जाता था कि ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका पढ़ी है कि नहीं ? सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा है कि नहीं ? अमुक अमुक - - - -। आजकल की यह परम्परा निश्चय ही भयावह है। जिस व्यक्ति ने आर्य समाज के कम से कम २०० ग्रन्थो (इनमें प० गंगाप्रसाद, स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज के ट्रैक्ट भी सम्मिलित हो) का अध्ययन किया हो वही आर्य समासद बनाया जाय। ऐसा नियम प्रान्तीय सभाए या सार्वदेशिक को बनाना चाहिए। इससे आर्य समाजो मे केवल वही उचित व्यक्ति प्रवेश कर सकेंगे जिन्हे हमारे सिद्धान्तो का पर्याप्त ज्ञान होगा।

२—हमें हिन्दुओं के पाखण्डों के साथ निश्चय ही कोई समझौता किसी भी प्रकार नहीं करना चाहिए। एक बार पं० राजेन्द्र जी अतरौली (अलीगढ़) ने सुझाव भी रक्खा था कि हमे हिन्दूओ से उसी भांति अलग हो जाना चाहिए जैसे कि सिक्ख तथा जैन आदि हो गए हैं, तभी हम जीवित रह सकते हैं। होता यही है कि हम तो आर्य समाज मे आ गये हमारी पत्नियां अन्य पारिवारिक जन कट्टर सनातनी होते हैं। वह मन्दिरो मे जाते हैं अन्य पाखण्ड भी करते हैं और हम उन्हे भी सहन करते हैं। और हमारे सम्बन्ध भी इन्हीं मे होते हैं। इसका परिणाम स्पष्ट है कि तीसरी पीढ़ी पर आर्य समाजियो के पौत्र फिर सनातन धर्म (पौराणिको) मे ही समा जाते है। हमे जहां पौराणिकों के पाखण्डो के विरुद्ध अभियान चलाने की आवश्यकता है वहां यह भी आवश्यक है इसे हम अपने घरो से प्रारम्भ करें और उनमे कोई समझौता न करें। इसके लिये यह आवश्यक ही है कि हम अपने सम्बन्ध विवाह आदि भी आर्य मात्र मे ही करें किसी दहेज आदि के लालच वश इन पौराणिको मे न जावे। परन्तु होता यही है कि हम लोग किसी न किसी लालच वश इन्हीं मे वापस चले जाते हे। इस परम्परा का भी अन्त अब आवश्यक है।

३—आजकल शास्त्रार्थ की जितनी अधिक आवश्यकता है उतनी सम्भवतः पहले न रही होगी। जब अन्य धर्मावलम्बी दिन प्रति दिन बढ़ते जा रहे हैं तो ऐसी दशा मे उनको वैदिक धर्म मे दीक्षित कराने का एक मात्र उपाय शास्त्रार्थ ही हो सकते हैं। क्योंकि शास्त्रार्थ का एक स्थायी प्रभाव व्यक्ति के हृदय पर पड़ता है। परन्तु हमारे आजकल के अधिकारी ही नहीं कही २ पर तो विद्वान भी इससे मुह मोड़ने लगे है। यह परम्परा निश्चय ही ठीक नही है। अत. हमे शास्त्रार्थ की परम्परा को पुनर्जीवित करना ही चाहिए। इस विषय मे विषय निश्चित करके विद्वानो की ओर से कुछ विशेष विज्ञापन प्रान्तीय सभाओ आदि को बड़ी सख्या मे वितरित करना चाहिए। यदि विधर्मी शास्त्रार्थ करने नहीं आते है तो हमे अपनी तरफ से ही सार्वजनिक स्थानों मे मच लगाकर उन विषयो पर अपने विद्वानों के व्याख्यानो का आयोजन करना चाहिये।

४—आज कल हमारे आर्य विद्वानों जिनमे सन्यासी से लेकर अन्य गृहस्थी विद्वान भी आते हैं, की दशा कुछ अच्छी नहीं है। इन्हें सदैव ही धनाभाव का सामना करना पड़ता है। आर्य समाजो मे उनका उचित सत्कार नहीं होता है। जहां अन्य धर्माचार्य जो धर्म के विषय मे अल्पज्ञ हैं पूजे जाते हैं उनके लिए सभी आधुनिक सुविधाओ का प्रबन्ध किया जाता है हां हमारे आचार्यों को उतनी सुविधाय ज तक भी नहीं मिल सकी है। यही कारण है कि आज सन्यासियो की सख्या उगलियो पर गिनी जा सकती है, वानप्रस्थी तो उनसे भी कम होंगे और गृहस्थ कोई अपने बच्चो का भविष्य बिगाड़ कर उपदेशक बनने की सोचता ही नहीं। हमारी प्रान्तीय सभा ने एक उपदेशक विद्यालय खोलने की योजना भी बनाई थी साधन भी एकत्र हो गए। परन्तु विद्यार्थी ही नहीं मिल सके। इस समस्या पर निश्चय ही विचार किया जाना आवश्यक है। अत हमे उन आर्योपदेशको की सभी समस्याओ का समाधान करना होगा जो अपना पूरा समय आर्य समाज के लिये दे रहे हैं, उनकी सुख सुविधा का पूरा २ ध्यान रखना चाहिये। तभी वह कार्य कर सकेंगे।

५—आज कल अधिकांश आर्य समाजो मे दलबन्दी है। इस दलबन्दी का विशेष कारण हमारी शिक्षा सस्थायें हैं। आरम्भ मे इन शिक्षा संस्थाओ का जो उद्देश्य था आज यह उससे बहुत दूर चली गई हैं जहा से पुनः वापस आना असमव ही है। आज आर्य समाजो की गिरावट का मुख्य कारण यह शिक्षा सस्थाये भी हैं। आज हमारा उद्देश्य इन शिक्षा संस्थाओं से बिल्कुल ही पूरा नहीं हो रहा है। केवल नाम मात्र को इन संस्थाओं के साथ आर्य नाम जुड़ा हुआ है। काम अधिकाश अनार्यत्व के हो रहे हैं। आर्य शिक्षा संस्थाओं मे विभिन्न अवसरों पर सार्वजनिक रूप से नाच गाने और अभिनय होते हैं। धार्मिक शिक्षा वहां पर नहीं दी जाती है। आ विद्वानो की उपेक्षा कर अधिकारी अपने निहित स्वार्थ के लिए अन्य अविलम्बियों को अध्यापक [illegible] युक्त करता है। अत समय रहते प्रान्तीय सभाओं को इन शिक्षा संस्थाओं का प्रान्तीयकरण कर इनका प्रबन्ध अपने हाथ मे लेना चाहिये तो निश्चय स्थानीय आर्य समाजों की दलबन्दी कहीं तक समाप्त हो सकेगी और यह शिक्षा संस्थायें भी अपनी कुछ उन्नति कर सकेंगी। इससे जो शक्ति बचेगी वह स्थानीय आर्य समाजों की उन्नति में लग सकेगी।

६—आर्य समाज, जिलोपसभाओं, प्रान्तीय सभाओ में एवं सार्वदेशिक सभा में वही अधिकारी हों जो केवल आर्य समाज का कार्य करते हैं। इसके लिये यह नियम हो कि स्थानीय आर्य समाजों के पदाधिकारी वही व्यक्ति हों जिनकी आयु ३० वर्ष से कम हो। इससे लाभ होगा कि आर्य समाजो मे जो कुछ निश्चित बूढे लोगो ने पद अपने पीछे चिपकाये हुए है उनमे शक्ति हटकर युवक वर्ग के हाथो मे आवेगी। जिससे निश्चय ही स्थानीय आर्य समाजो के कार्यों को गति मिलेगी। अन्तरग भले ही बूढ़े लोग रहे परन्तु अधिकारी वर्ग, प्रधान मन्त्री, आदि पदो पर नवयुवक ही रहे। इसस आर्य समाज का कार्य द्रुतगति से होगा।

जिला उप सभाओ का कार्य कुछ अधिक गम्भीर कहा जा सकता है क्योंकि उस पर समस्त जिले की आर्य समाजों का भार [illegible] इन सभाओ के अधिकारी वह हों जिनकी आयु ३५ वर्ष से अधिक हो और ५० वर्ष से कम हो।

प्रान्तीय सभाओ के अधिकारी केवल मात्र आर्य वानप्रस्थी ही हो जो कि अपना पूरा समय [illegible] आर्य समाजों मे भ्रमण कर उनकी दशा को सुधारने मे व्यतीत कर सकें। प्रान्तीय सभाओं की अन्तरग सभा मे भी वानप्रस्थी ही हों। यह संभव है कि एक जिले में एक वानप्रस्थी अवश्य ही मिल सकता है।

शेष पृष्ठ ८ पर)

—वेदारीलाल आर्य, झांसी

ईसा मसीह

अवैदिक म[...]न्तर समीक्षा

—★ पं० शिवदयालु

आज हम इस लेख में प्रश्नोत्तरी के रूप में ईसा के चरित्र का चित्रण कर रहे हैं। बाइबिल की आन्तरिक साक्षियां तथा श्री यङ्ग हस्बैंण्ड, श्री निकोलस नोटोविच आदि के खोजपूर्ण ग्रन्थ हमारे आधार हैं।

प्रश्न—ईसा मसीह कहाँ और किस वंश में उत्पन्न हुये थे;

उत्तर—प्रशान्तीन देश के बेथलीहेम ग्राम में, इसराइल वंश मे, उनका जन्म हुआ था।

प्रश्न—ईसा के बाप का नाम क्या है?

उत्तर—श्री यूसुफ बढ़ई।

प्रश्न—ईसा की माता का क्या नाम है?

उत्तर—कुमारी मैरी या मरियम।

प्रश्न—क्या ईसा की माता कुमारी थीं।

उत्तर—नहीं। मरियम की यूसुफ के साथ मगनी हुई थी और उसी अवस्था मे वह किसी प्रकार गर्भवती हो गई थीं। ईसा उसके पेट उत्पन्न हुआ था। अत बच्चे जनने के बाद भी मैरी को कुमारी कहना उचित नहीं।

प्रश्न—ईसा को खुदा का बेटा क्यों कहते हैं?

उत्तर—बाइबिल के अनुसार खुदा के चमत्कार द्वारा मरियम के पेट से उत्पन्न होने के कारण वह खुदा का बेटा कहा गया। वैसे तो सब ही मनुष्य अमृत पिता परमात्मा के पुत्र हैं।

प्रश्न—क्या बाइबिल मे कहीं ईसा को मानव-पुत्र (Son of man) कहा गया है?

उत्तर—बाइबिल में एक दो स्थल पर उसको मानव-पुत्र लिखा है तो अनेक स्थलों पर ईश्वर-पुत्र (Son of God) लिखा है। इस रहस्य का कारण हम नहीं समझ सके। सम्भव है अविवाहिता मरियम के गर्भ से ईसा का जन्म होने के कारण और एक गरीब बढ़ई द्वारा पालित किये जाने के कारण, बड़ी जातियो मे उसका मान रखने की दृष्टि से उसकी वल्दियत आदि छिपाने के के नाते ऐसा प्रयत्न किया गया है।

प्रश्न—यहूदियों की पुस्तक पुराने अहदनामे को ईसाई क्यों मानते हैं?

उत्तर—उसमें भविष्य-वाणियां की गई हैं कि इसराइल वंश मे उसका एक त्राता उत्पन्न होगा जो उसको पराधीनता से मुक्त करायेगा। इन भविष्य-वाणियों के आधार पर ईसा की मान्यता कराने के लिए यह प्रयास किया गया है। अतः यहूदियों की उन पोथियो को जिनमें यह भविष्य-वाणियां हैं, मान्यता देनी पड़ी।

प्रश्न—क्या वह भविष्य-वाणियां सच्ची सिद्ध हुईं?

उत्तर—नहीं। ईसा ने अपने आरम्भिक प्रचार-काल में अपने को इसराइल जाति को आजाद कराने वाला Political Redeemer) घोषित किया, किन्तु जब पकड़े जाने का भय सर पर सवार ता हुआ अपने आपको मानव जाति का आध्यात्मिक मुक्तिदाता कहना शुरू कर दिया और इस प्रकार भविष्य-वाणिया स्वयं उसके और उसके चेलो के व्यवहार द्वारा असत्य प्रमाणित हुईं।

प्रश्न—मसीह को पकड़वाने वाला कौन था?

उत्तर—मसीह के प्रधान १२ शिष्यो मे से एक जूडास इस्कारियट, जिसने ३० चांदी के सिक्कों के लोभ मे मसीह को यहूदी पुरोहितों के हाथों पकड़वाया।

प्रश्न—ईसा के अन्य प्रधान चेले कौन २ थे और उन्होंने इस आपत्ति में मसीह का कहां तक साथ दिया।

उत्तर—साइमन (पीटर), ऐण्ड्रूज, जेम्स, जोह्न, फिलिप, मैथ्यू, थामस, [...] आदि ईसा के १२ प्रधान शिष्य थे। इनमें से पीटर के अतिरिक्त सभी ने मसीह का साथ उसके पकड़े जाते ही छोड़ दिया और सब चम्पत हो गये। पीटर ईसा के पीछे-पीछे जब कि उसको पकड़ कर न्यायाधीश कैफियस के भवन मे ले जाया गया, वहाँ गया और जनता मे छिपकर बैठ गया। जब उसको कुछ लोगों ने पहिचान लिया तो उसने तीन बार कसमें खाकर कहा कि "मैं नहीं जानता कि ईसा कौन है?

प्रश्न—ईसा को फांसी का दण्ड क्यों दिया गया?

उत्तर—उसके विरुद्ध यहूदी सरकार ने बगावत आदि करने का अपराध लगाया था। वहा का गवर्नर उसे फासी का दण्ड देना नहीं चाहता था, किन्तु पुरोहितो के रोष के कारण फांसी की सजा सुनाना पड़ी।

प्रश्न—उस समय फांसी का क्या प्रकार था?

उत्तर—लकडी के शिकजे में जकड़कर, जिसे सलीब कहते हैं खड़ा किया जाना था और हाथ पावों मे कीलें ठोक दी जाती थीं। सिसक-सिसक कर जब प्राण निकल जाते थे तो उस शिकजे पर से अपराधी के शव को उतार लेते थे और उसके पाव तोड दिये जाते थे और सरकारी कर्मचारी उसको कब्र मे दफना देते थे।

प्रश्न—क्या ईसा के साथ भी ऐसा ही हुआ?

उत्तर—नहीं। ईसा को केवल कुछ घण्टे बाद रात हो जाने पर शिकञ्जे पर से मूर्छित अवस्था मे उतार लिया गया, उसके पाव भी नहीं तोड़े गये और उसके एक धनी शिष्य को जिसका नाम जोसेफ (ऐरी मेथिया) था, ईसा का शरीर दे दिया गया। उसने उस शरीर को एक पृथक् समाधि में रखा जिस मे पर्याप्त स्थान था और कई आदमी बैठ सकते थे।

प्रश्न—ईसा के साथ ऐसा क्यो किया गया?

उत्तर—मालूम होता है कि गवर्नर का षड्यन्त्र था जो उसको फांसी देना नहीं चाहता था। उसी के आदेश से ईसा के पाव नहीं तोड़े गये और उसको समय से पहले सलीब से बेहोशी की हालत मे उतार लिया गया और उसका शरीर सरकारी कब्रिस्तान में सरकारी कर्मचारियों द्वारा दफनाया भी नहीं गया, शिकञ्जे पर से उतारने के बाद जोसफ और निकोडस ने ईसा के शरीर की जाच की और निकोडस बहुत प्रभावित हुआ और जोसफ को एकान्त में ले जाकर कहा "जितनी निश्चित जीवन और प्रकृति सम्बन्धी मेरी विद्या है उतनी ही निश्चित ईसा मसीह के बचा लेने की सम्भावना है।" ईसा के शरीर मे सिपाही के भाला चुभोने पर उसमे से रक्त और जल निकला था।

प्रश्न—ईसा क्रास पर चीखा क्यों था?

उत्तर—वेदना को सहन न कर सकने के कारण ही उसने कई बार चीख पुकार की और "एली एली लामा सबक्तानी" शब्दो का उच्चारण किया, जिसका तात्पर्य यह होता है कि "ऐ मेरे प्रभु तूने मुझे क्यो बिसरा दिया।"

प्रश्न—क्या इससे ईसा के आत्म विश्वास एवं प्रभु प्रेम के कम होने का पता नहीं चलता?

उत्तर—बाइबिल के अनुसार अवश्य चलता है। जब ईसा आध्यात्मिक दृष्टि से उच्च आत्मा था और परमात्मा मे उसकी सच्ची आस्था थी तो मंसूर, सुकरात, बन्दा वैरागी, गुरु गोविन्द सिंह, ऋषि दयानन्द और महात्मा गाधी, भगतसिंह, बिस्मिल आदि की भांति हँसते हँसते कष्ट सहन करना और प्रभु के पवित्र नाम का जाप करना चाहिये था। बाइबिल के अनुसार तो ईसा जिन दिन पकड़ा गया था उसकी पहली रात अत्यन्त कष्ट से [...] सलीब पर भी न था। मौत का भय उसको बेचैन किये हुये था। उसने अपने तीन चेलों को जो पास में सो रहे थे बार-बार जगाने की चेष्टा की और उनसे कहा कि तुम तो सुख की नींद सो रहे हो और मेरे पसीने की जगह खून टपक रहा है। बाइबिल ने ईसा के चरित्र को अत्यन्त साधारण मानव जैसा ही चित्रित किया है। न जाने फिर ईसाई लोग ईसा के बारे मे बढ़-चढ़ कर बातें क्यो बनाते हैं।

प्रश्न—तो क्या ईसा सलीब पर मरा न था?

उत्तर—नहीं, सर्वथा नहीं। वह निश्चय जिन्दा बेहोशी की दशा में एक षड्यन्त्र के आधीन सलीब पर से लिया गया था और एक विशेष समाधि मे जैसा लिखा है, रखा गया था। वहाँ जोसफ आदि ने उसकी चिकित्सा की और अच्छा हो जाने पर वह अपने दो शिष्यो के साथ गैलिली चला गया।

प्रश्न—क्या गैलिली जाते समय उसने भेष बदला था और उसकी मैरी मैकडावेल ने जाते देखा था?

उत्तर—हां! उसने माली का भेष बनाया था जिससे कि उसे कोई भांप न सकें और मैरी ने उसे जाते देखा था।

प्रश्न—ईसा के जीवन के १८ वर्षों के बारे मे बाइबिल क्यों बिलकुल चुप है?

उत्तर—१२ वर्ष की आयु मे ईसा ज्ञान प्राप्त करने की कामना से एक व्यापारी बेड़े के साथ भारत आया और बराबर १८ वर्षों तक यहाँ आकर बनारस, राजगृह, जगन्नाथपुरी आदि मे हिन्दू, जैन तथा बौद्ध सन्तो से शिक्षा ग्रहण करता रहा। बाइबिल इस सम्बन्ध में बिल्कुल मौन है। केवल एक स्थान पर लिखा है कि वह इन १८ वर्षों मे अपने पिता के पास बढ़ईगीरी करता रहा। यदि इसे सही मान लें तब तो ईसा ज्ञान, तप, साधना आदि से सर्वथा शून्य ठहरता है। यह सम्भव है कि ईसा ने अपने को भारतीय गुरुओं का शिष्य कहने मे अपने महत्व को बट्टा लगता देख, इस बारे मे सर्वथा मौन साध लिया हो और शिष्यो को नाममात्र भी भेद न दिया हो। अथवा शिष्यों ने ही जान-बूझ कर अपने गुरु को भारत का शिष्य मानने में अपनी मान-हानि समझी हो और चुप हो गये हो। ईसा भारत मे अपनी शिक्षा समाप्त कर फारिस के रास्ते जूडिया प्रान्त का चला गया और अपना पन्थ चलाना आरम्भ किया।

प्रश्न—ईसा की मृत्यु किस आयु मे हुई और कहाँ हुई?

उत्तर—७० वर्ष की आयु में ईसा ने अपना यह नश्वर शरीर त्यागा। बतलाया जाता है कि काश्मीर मे उसकी मृत्यु हुई जहां आज भी उसकी कब्र बनी हुई है, जैसा कि श्री यङ्ग हस्बैण्ड ने अपनी खोजपूर्ण पुस्तक मे लिखा है।

प्रश्न—क्या ईसा मसीह ने अहिंसा धर्म का प्रचार नहीं किया है?

उत्तर—मसीह ने हिंसा और अहिंसा का दोनो ही प्रकार की बातें कही हैं। जैसा कि बाइबिल से पता चलता है कि "यदि कोई एक गाल पर थप्पड़ मारे तो दूसरा गाल भी सामने कर दो" यह भी बाइबिल कहती है और यह भी कहती है कि "मै संसार में मां से बेटी को, सास से बहू को पिता से पुत्र को जुदा करने के लिए और मनुष्यों को तलवार देने के लिये आया हूं।" इतना ही नहीं उसने नाना प्रकार के निरपराध जीव-जन्तुओं को मानव का भोजन बतलाया है और मसीह के चेलो ने उस की पहली शिक्षा को बिसार कर खून खच्चर मारकाट को ही अपनाया है जैसा कि ससार भर मे ईसाइयों के इतिहास से सिद्ध होता है। भारत मे भी ईसाइयों ने अपने प्रारम्भिक काल में एक हाथ में तलवार और दूसरे हाथ मे सलीब लेकर अपने मत का प्रचार किया है और आज दिन भी दक्षिण भारत और आसाम आदि मे कर रहे हैं। नाना प्रकार के पशु पक्षियों यहाँ तक कि परमोपकारी गो माता तक का वध कर उसके मांस आदि का सेवन करना इनके जीवन का कार्यक्रम है।

प्रश्न—क्या मसीह ने क्रोध को नहीं जीता था?

उत्तर—मसीह ने क्रोध न करने की शिक्षा तो दी है, किन्तु बाइबिल के अनुसार उसका अपना अमल इसके विपरीत था। जैसा कि यरूशलेम को लौटते हुये एक समय जब मसीह को रास्ते मे भूख लगी तो वह एक अञ्जीर के पेड़ के पास फल की आशा से गया और वहां फल न पाया तो उसे गुस्से मे आकर श्राप दिया और कहा कि "जा आज से तेरे पर कोई फल न लगेगा।"

प्रश्न—क्या मसीह में मुर्दों को जिन्दा करने की करामात थी?

उत्तर—नहीं। ऐसा कहना निरी गप्प है। मुर्दों को जिन्दा करना सृष्टि नियमों के विरुद्ध है। वह तो स्वयं केवल एक षड्यन्त्र के आधीन सलीब पर से जिन्दा उतार लिया गया था। जैसे उसके फिर जी उठने की बात गप्प है, वैसे ही दूसरों को जिन्दा करने की बातें भी। कहते हैं कि मसीह ने तो अपने चेलों को भी यह विद्या सिखलाई थी, परन्तु आज दिन दुनियां मे ईसा का एक भी चेला ऐसा नहीं है जो मुर्दों को जिन्दा कर सकता हो। यदि दुनिया के परदे पर कहीं कोई हो तो पादरी लोग बतावें। मसीह मुर्दों को जिन्दा तो क्या करता वह तो स्वयं ही प्रसन्नतापूर्वक सलीब के कष्टों का सामना न कर सका। सलीब पर जाने से पहली रात भय के मारे परेशान रहा और अपने सोते हुए शिष्यो को नजरबन्द ही जगाता फिरा।

प्रश्न—क्या मसीह मे 'प्राप्ति' सिद्धि नहीं थी?

उत्तर—नहीं, बिलकुल नहीं थी। जहां कहीं भी बाइबिल मे ऐसी बातें लिखी हैं, सृष्टि नियमों के विपरीत होने से सर्वथा अमान्य है। हाँ भोले लोगों को बहकाने के लिये शोप्ताबाजी वह करते हों तो आश्चर्य नहीं, जैसा कि उसके चेले आज भी अपने स्कूलो मे छोटे-छोटे हिन्दू बच्चो को बहकाने के लिये किया करते हैं। कहीं ईसा के नाम लेने पर छत के सूराख से लड्डू, आम आदि गिराकर, कहीं राम कृष्ण की काठ की और ईसा की धातु की मूर्तियां बनाकर उनकी अग्नि परीक्षा द्वारा किया करते हैं।

प्रश्न—क्या ईसा मसीह मानववाद (सिक्यूलरिज्म) का पुजारी नहीं था?

उत्तर—नहीं। मानववाद मे इस संसार से भिन्न कल्पित स्वर्ग, नरक, जन्नत व दोजख से, वहाँ विश्वासी और अविश्वासी के सदा के लिये पवित्र पुत्र की सिफारिश पर खुदा द्वारा न्याय के दिन भेजे जाने से कोई सम्बन्ध नहीं। जन्नत के भोग विलास एवं दोजख की जलती हुई भयकर आग की मान्यताओ से उसका कोई सम्बन्ध नहीं। मानववाद मे मसीह द्वारा मनुष्यों के पापों की पोट को अपने सर पर ओटने और बिना कर्मफल भोग के स्वर्ग जाने के कलुषित विचारों के लिये कोई स्थान नहीं है। इस मानववाद के कारण यूरोप और अमेरिका आदि से भी ईसाइयत समाप्त (लुप्त) हो रही है। रूस चीन का तो कहना ही क्या, वहा तो ईसाइयत जैसी मतान्धता का जनाजा ही निकल गया है। एशिया मे ये विदेशी लोग ईसाइयत का प्रचार एकमात्र अपने उपनिवेशवाद को पुष्ट करने की कामना से कर रहे हैं।

प्रश्न—क्या मसीह बुद्धिवाद का प्रचारक नहीं था?

उत्तर—कदापि नहीं! बाइबिल की साक्षी के आधार पर निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि "जो मसीह पर विश्वास न लाये, चाहे गांधी जैसा ससार का महान् से महान् पुरुष भी क्यो न हो, स्वर्ग नहीं जा सकता।" ईसाइयो का धर्म प्रचार सम्बन्धी सारा विश्व इतिहास और भारत मे वास्को डिगामा व राबर्ट डी नबली से लेकर इनका इतिहास छल-कपट, दम्भ और अन्याय-अत्याचार की गाथाओ से भरा हुआ है। आज भी चीन भारत आदि देशों मे विदेशी पादरियो के जो कारनामे दुनिया के सामने आ रहे है वह बतलाते हैं कि इन्होंने ईसा मसीह की किसी भी अच्छी शिक्षा को नहीं अपनाया वरन् अन्धविश्वास और मतान्धता के प्रचार को ही अपने जीवन का ध्येय बनाया हुआ है।

प्रश्न—क्या मसीह ने कोई अच्छी शिक्षा दी ही नहीं?

उत्तर—अच्छी शिक्षायें दी हैं। जो ज्ञान उसने भारत से सीखा उसका प्रचार उसने किया अवश्य है, जिसका वर्णन संत जोहन, लूका, मैथ्यू और मत्ती ने किया है किन्तु पादरियो ने उस ज्ञान को ताक पर रख दिया है। अनेको अन्य बाइबिल लेखको ने जो अन्ध-विश्वास, मतान्धता आदि का मसीह के नाम से प्रचार किया है उसको आज विदेशी पादरी भारत और अन्य एशियाई देशों मे फैला रहे हैं। यदि इन अच्छी शिक्षाओं का, जो संसार के सब आचार्यों की मान्य [...] शिक्षायें हैं, प्रचार करने वाले हैं तो इनको पहले अपने ही घरों में उनका प्रचार करना चाहिये था और यहाँ भारत आदि मे आकर मत-परिवर्तन का जाल न बिछाकर उनकी चर्चा करते तो किसी को भी विरोध करने की आवश्यकता न पडती। हमें मसीह से विरोध नहीं है, विरोध तो उन शिष्यों से है जिन्होंने बाइबिल मे मसीह के नाम से मनमानी बातों का प्रचार किया और आज दिन मसीह नाम लेवा विदेशी मिशनरी और उनके खरीदे हुए गुलाम देशी पादरी कर रहे है। २२ मई सन् १४९८ ई० में जिस दिन इनके चरण प्रथम बार भारत की पवित्र भूमि पर पडे वह मिशनरी भारत मे भय, आतङ्क, छल कपट, कामनी काञ्चन के प्रलोभनों द्वारा प्रचार कार्य मे जुटे हैं।

भारत मे तो ईसाई पादरियों को अपने मत प्रवर्त्तक की भांति शिष्य बनकर आना चाहिये था। गुरु और प्रचारक बनकर आना केवल आत्म विडम्बना है। भारत ने तो ईसा से सैकडो गुना बढ चढकर योग्य मसीह पैदा किये हैं और आज भी कर रहा है। ससार के ईसाई यदि अपना कल्याण चाहते हैं तो अभी भी भारत मे अपने प्रचारक न भेजकर शिष्यों की मण्डलियां भेजें, जो ईसा की भांति यहाँ से आत्मतत्व का ज्ञान प्राप्त कर विश्व कल्याण की ओर प्रगति कर सकें। मतान्धता एवं मतवाद का युग अब बीत गया है। अब पुनः पूर्व से उदय होने वाले सूर्य के अर्चन के लिये पश्चिम को नतमस्तक होना चाहिये, यदि वह अपना तथा जगत् का कल्याण चाहता हो।

★

यदि आप आर्यसमाज के कार्य को उन्नति के शिखर पर देखना चाहते हैं तो—

(पृष्ठ ७ का शेष)

यह अपने पूरे समय में अपने जिले की आर्य समाजो का भ्रमण करें और उनकी दशा को उन्नत बनाने का कार्य करें।

इसी भांति सार्वदेशिक सभा के सभी पदाधिकारी एवं अन्तरंग सदस्य आर्य सन्यासी वर्ग के हों जो अपना पूरा समय देकर देश विदेश एवं प्रत्येक प्रान्त मे आर्य समाज की गतिविधियो को सुधारें तथा उनको सही मार्ग दर्शन कराने का कार्य करें।

यह कुछ सुझाव है। आशा है कि आर्य जनता इन पर विचार कर इन्हें क्रियान्वित करने का कार्य करें। निश्चय ही आर्य समाज के कार्य को हम उन्नति के शिखर पर देख सकेंगे।

★

गुरु का पावन प्रसाद

[महर्षि दयानन्द के विद्यार्थी जीवन से सम्बन्धित एक एकांकी नाटक]

पूर्वकथन—अज्ञानग्रस्त लोगो को जीर्णशीर्ण रूढ़ियो और दूषित पूर्वाग्रहों से बचाने और उनके मस्तिष्क मे सद्ज्ञानकी गरिमा प्रविष्ट करने का कार्य, नये विचारो को फैलाने का आयोजन अत्यन्त दुरूह है। इसमे भयानक प्रतिक्रिया होती रही है। इसी प्रतिक्रिया की लपेट मे सुकरात, ईसा, महर्षि दयानन्द और गांधी आदि न जाने कितनो को अपनी आहुतियां देनी पड़ी हैं और न जाने कितनो को अपार यातनायें सहनी पड़ी। लेकिन इन महापुरुषो को बनाने मे उनके गुरुओं का भी बडा भाग रहा है। गुरु द्वारा दी हुई शिक्षा और पावन संस्कारों के कारण ही वे अगणित विघ्न बाधाओ, अवरोधो और कठिनाइयों का सामना करते हुए चिरकाल तक अपनी सतत साधना स्थिर रख सके हैं। महर्षि दयानन्द के गुरु, स्वामी विरजानन्द जी भी ऐसे ही महान् आत्मा थे।

स्थान—स्वामी विरजानन्द के आश्रम का एक कमरा।

[बालक दयानन्द तथा कुछ अन्य .द्यार्थीगण पठन-कक्ष मे इधर उधर घूम । प्रतिदिन एक विद्यार्थी कक्ष की ाई करता है। आज दयानन्द ने ..की है। वह जल्दी जल्दी पढ़ने ो नाना वस्तुओं को जमा कर रहा है। सके अन्य मित्र उससे छेड़खानी कर हैं।]

वेदव्रत—(व्यङ्ग्यपूर्वक) दयानन्द, ाज तू ने देर कर दी है।

दयानन्द—(जो अभी बुहारी लगा का है। दरी के टुकड़े जमा रहा है) क्या हुआ। देखो मै बड़ी फुर्ती से ब काम अभी निपटाता हू। चुटकियो काम खतम हो जाएगा। देखा न, ातनी जल्दी झाड़ू लगाया है। गुरू जी । आसन जमा दिया है। बैठने की ्तुवें यथास्थान धर दी हैं। कक्ष की ब चीजें जम चुकी हैं। अब मिनटों में ाम निपटता है। (जल्दी २ काम रते हैं)

कृष्णानन्द—मित्र दयानन्द, आज , तेरे हाथ ऐसे चल रहे हैं, जैसे मशीन ती है वाह! खूब काम तो मिनटो मे कर ला। जिस दिन मेरी बारी थी, मुझे । एक घण्टा पहले उठना पडा था। द शौचादि से निवृत होकर सब कुछ ्च्छ करना पड़ा था। फिर भी श्किल से हमारा काम समाप्त हुआ ।।

आत्मानन्द—(हसकर) याद है, ास दिन सफाई करने की मेरी बारी , तनिक सी देर हो जाने पर ही गुरु- . क्रुद्ध हो गये थे। उनका क्रोध बड़ा ग्र है।

वेदव्रत—तुम समय पर काम पूरा न ोगे, तो गुरु के कटु वचन सुनने हीं डगे।

दयानन्द—(जल्दी जल्दी कार्य को मा्त करने की इच्छा से) जजी, तुम र तो व्यर्थ की टीका टिप्पणी ही करत हते हो। मेरी कमजोरी निकालने की ादत बन गई है। अक्लमन्दी से काम ो, तो जल्दी २ ही सब कुछ काम ।पट सकता है। क्यो मुझे बेवकूफ ना रहे हो।

कृष्णानन्द—अरे आलसी, जल्दी ाम समाप्त कर। हमें कक्षा मे बैठना । पहले ही कुछ देरी हो गई है। क्यो ोर समय नष्ट कर रहा है। गुरुजी से ार पड़वायेगा क्या ?

दयानन्द—अरे भाई! काम पूरा तो र रहा हू। दो हाथों से जितना काम रा हो सकता है, वही तो करूंगा, चार ाथ कहां से लाऊं? (फिर कार्यव्यस्त)

कृष्णानन्द—हम तो समय से पूर्व ही काम निपटाने मे विश्वास करते हैं।

(इतने मे विद्यार्थियो का स्वर सुन पड़ता है "गुरुदेव पधार रहे हैं! गुरुदेव पधार रहे हैं!! सावधान! अपने अपने स्थानों को ग्रहण करो। चुप हो जाओ। कानाफूसी बन्द करो।)

[समस्त विद्यार्थियों मे शान्ति छा जाती है। इतने मे अन्धे स्वामी विरजानन्द दो तीन विद्यार्थियों का सहारा लिये शान्त मन से धीरे धीरे कक्षा के कमरे मे पदार्पण करते हैं।]

स्वामी विरजानन्द—(हाथ ऊंचा करते हुये) विद्यार्थियो! अपने-अपने स्थान पर बैठ जाओ। दुःख है कि आज हमे कुछ बिलम्ब हो गया है। नित्यप्रति के कार्यों, स्नान पूजा आदि मे कुछ देर होने से आज कक्षा नियत समय से कुछ देर मे प्रारम्भ हो रहा है। खैर, अपने-अपने स्थान ग्रहण करो।

[सब विद्यार्थी अपने-अपने नियत स्थान ग्रहण कर लेते है। अन्ध गुरु को दो विद्यार्थी उनके आसन पर बठाते है। टटोलते टटोलते वे अपने आसन पर आ बैठते हैं। अपने हाथ से इधर उधर गद्दी की सलवटें निकालते है। अपने आप को भाषण की मुद्रा मे लाने के लिये वे थोडी देर लेते हैं।]

स्वामी विरजानन्द—(धीरे से) आज तो आसन मे कुछ सलवटें मालूम होती हैं। गद्दी कहीं उँची कहीं नीची प्रतीत होती है। शायद किनारे भी टेढ़े तिरछे होंगे........ कहीं उठी हुई है, तो कहीं नीची लगती है। आज जिस विद्यार्थी ने सफाई का कार्य किया है, लापरवाही और बेमन से किया है। मेरे विद्यार्थियों में यह लापरवाही नहीं होनी चाहिये"।

[वे अब अधिक सावधानी से फिर गद्दी को टटोलते हैं। पूरी तरह टटोल टटोल कर यह छानबीन कर रहे हैं कि कहां कहा लापरवाही हुई है।]

स्वामी विरजानन्द—(क्षोभ पूर्वक बड़बड़ाते हुये) स्थान-स्थान मे ऊँची नीच, सलवटें व गन्दगी से साफ मालूम हो रहा है कि जिस विद्यार्थी ने आज कक्षा की स्वच्छता की है, उसमे काम के प्रति लगन नहीं है। अनुत्साह और शिथिलता दैनिक कर्म के प्रति अरुचि का भाव परिलक्षित करते हैं ...... कर्म का सुख वस्तुत उसकी लगन, भावना और निष्ठा मे ही है मूर्खो, तुम्हें मालूम नही भावना से किये गये कार्य ही प्रफुल्लता दे जाते हैं, लेकिन बेमन, टालमटोल और अनुत्साहपूर्वक काम करने से निराशा, क्षोभ और असफलता ही हाथ लगती है

(उनका असन्तोष बढ़कर अब क्रोध का रूप धारण कर लेता है।)

देवव्रत! आज कक्षा की सफाई करने की किसकी बारी थी जरा, अपनी सूची मे देखकर बताओ तो ?

देवव्रत—(सकुचाया हुआ) गुरुदेव, अभी सूची देखकर निवेदन करता हू।

[सभी विद्यार्थी व्यग्र से दयानन्द को देखते है। भावी विपत्ति की आशका से सभी विद्यार्थी गुरुदेव की क्रोधमुद्रा मे कांप उठते हैं।]

विरजानन्द—(क्रोध से) देवव्रत! "बताओ आज सफाई किसने की है ?"

देवव्रत—(गुरु को शान्त करने के भाव से) गुरुदेव! क्या गलती हुई? आज कक्षा की सफाई.........

[टटोलते टटोलते गुरुदेव का हाथ कुछ उठे हुये स्थान पर आ जाता है। वे गद्दी को पलट कर देखते हैं, तो यकायक उनके हाथ मे कूड़ा करकट भी आ जाता है।]

विरजानन्द—(आश्चर्य मिश्रित क्रोध में) यह क्या, कूड़ा करकट भी आज बाहर नहीं फेंका गया है? जिसने झाड़ू बुहारू दी है, उस आलसी ने सारी गन्दगी गद्दी के नीचे ही सरका दी है। बाहर तक फेंकने की तकलीफ नहीं की है...... हाय ...... हाय! कमबख्त ने सारा कचरा गद्दी के नीचे ही जमा कर रखा है। कूड़े पर ही गद्दी फैला दी है... अपने विद्यार्थियो का यह आलस्य ...... यह अकर्मण्यता देखकर मन मे बड़ी करुणा उत्पन्न होती है। क्यो रे देवव्रत, बतला आज किसकी बारी थी ...... यह अवस्था ...... यह गन्दगी .... यह अस्तव्यस्तता .... किसकी कारगुजारी है? इस फूहड़पन के मलीन वातावरण मे तो मेरा सर चकराने लगा है......... देवव्रत! चुप क्यो हो? नाम क्यो छिपा रहे हो। बोलो, बोलो उत्तर दो आज सफाई किस विद्यार्थी ने की है ?

[वातावरण मे तनाव है। विद्यार्थी कांप रहे हैं।]

देवव्रत—(धीरे से) गुरुदेव! आज दयानन्द की बारी थी।

विरजानन्द—(क्रोधपूर्ण स्वर मे) अच्छा, तो दयानन्द का ही यह सब काम है। कहां है दयानन्द? बुलाओ उसे।

देवव्रत (सकुचाते हुये) जी, यहीं उपस्थित है।

विरजानन्द—दयानन्द! ओ दयानन्द! सुनता है।

दयानन्द—(भयभीत मुद्रा मे) गुरुदेव, मैं यहीं मौजूद हू मुझे दुःख है कि गुरुदेव को मेरा काम पसन्द नहीं आया

—डा० रामचरण महेन्द्र
एम० ए०, पी-एच० डी०

विरजानन्द—दयानन्द! तू बड़ा आलसी और लापरवाह है ...... अपने कार्यों में ढीलापन ...... सतर्कता का अभाव ...... यह गैर जिम्मेदारी ...... यह अव्यवस्था ...... यह अनिश्चितता ...... सब कुछ जिन्दगी मे असफलता को निमन्त्रण देना तू बड़ा ढीलाढाला लड़का है।

दयानन्द—(पश्चाताप मिश्रित भय मे काटो तो खून नहीं) गुरुदेव, काम तो सब किया है। सुबह उठने मे कुछ देर हो गई........ रात को देर तक पढ़ने के कारण प्रातः जल्दी आंखे ही न खुलीं... जल्दी जल्दी काम को निपटाया था...... कूड़ा करकट..................

(शेष पृष्ठ १५ पर)

वेद प्रचार

लखनऊ। आर्य नरही के दि० ३१-१२-६७ के साप्ताहिक सत्संग के अवसर पर सार्वदेशिक विद्यार्य सभा के मन्त्री श्री आचार्य विश्वश्रवाः व्यास जी पधारे आपने उपस्थित आर्य जनता को महर्षि के आदर्शों पर अडिग रहने का आह्वान किया। आर्यसमाजो की वर्तमान रीति-नीतियों की कटु आलोचना करते हुए महर्षि द्वारा निर्धारित उद्देश्यो पर चलने के लिये बडे ही सुन्दर ढग से प्रवचन दिया। आपने आर्य जनो को स्वकीर्ति कामना को छोडकर निष्काम भाव से समाजो का कार्य करने पर बल दिया। लगभग १ घण्टे तक बडा ही मार्मिक एव शिक्षाप्रद प्रवचन हुआ।

फैजाबाद। आर्यसमाज मदरसा मे श्री वेदपालसिंह उपदेशक द्वारा प्रभावशाली ढग से वेद प्रचार किया गया तथा ईसाइयो की गतिविधियो से सर्वसाधारण को अवगत कराया गया।

जिला अलीगढ़ में वेद प्रचार की धूम

जिला आर्योपप्रतिनिधि सभा अलीगढ द्वारा सुनियोजित ढग से तहसील-तहसीलप्रचार समारोह आयोजित किये जारहे है। गत मास दिसम्बर मे तहसील खैर मे विभिन्न स्थानो पर वेद प्रचार का व्यापक रूप से प्रबन्ध किया गया। इन समारोहो मे जिला सभा के प्रधान, ब्र० यशपाल शास्त्री व मन्त्री श्री कुशल पाल सिंह जी विशेष रूप से सहयोग प्रदान कर रहे हैं। जिला वेद प्रचार निधि मे अब तक ६,०० रु० एकत्रित हो चुका है।

इन आयोजनो के अतर्गत इस समय तहसील सिकन्दराराऊ के सिकन्दरपुर कुतुबपुर, व दमौरा में समारोह आयोजित किये जा चुके हैं तथा मास के अन्त तक जिरौली, धनौली, बिजवगढ, कौमरी, सिरौली, कठंरा व सिकन्दराराऊ तथा खटुवा मे क्रमशः वेद प्रचार का कार्य सम्पन्न किया जायेगा। सभी आयोजनो में प्रातः यज्ञ, कथा तथा शका समाधान मध्याह्न मे भजनोपदेश तथा रात्रि मे भजन व उपदेश आदि के कार्यक्रम चलाये जाते हैं तथा लूप नसबन्दी द्वारा व्याप्त भयंकर रोगो के प्रति जन साधारण को सावधान किया जाता है।

यदि इसी प्रकार प्रत्येक जनपद मे वेद प्रचार के आयोजन किये जाय तो निःसन्देह आर्य समाज का कार्य काफी आगे बढ सकता है।

अनुकरणीय दान

कायमगज। स्थानीय श्री मुन्शीलाल जी आर्य ने अपनी स्वर्गीया सुपुत्री प्रकाशवती की स्मृति मे अपना मकान आर्य समाज को दान कर दिया है और उसकी रजिस्ट्री श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के नाम करा दी है।

दयानन्द सेवा आश्रम बाम्बो (गोवा)

गत २८ दिसम्बर को उत्तर प्रदेश सरकार के मुख्य सचेतक तथा विधान सभा के अन्य सद स्यो का, उनके आश्रम मे पधारने पर विद्यार्थियो द्वारा स्वागत किया गया।

मुख्य सचेतक श्री तिवारी जी ने आश्रम की व्यवस्था तथा विद्यार्थियों की पढाई का निरीक्षण किया। इस अवसर पर उपस्थित आर्य जनता को सम्बोधित करते हुए आपने हिन्दू समाज मे फैली अनेकता को समाप्त करने का आग्रह किया और राष्ट्र को विदेशी खतरो से बचाने के लिऐ तत्पर रहने का आह्वान किया। आपने आश्रम के विद्यार्थियो को उनकी उन्नति तथा स्वधर्म सेवा के लिये आशीर्वाद दिया।

गोवा प्रदेश आर्य समाज के मुख्य सगठन मत्री श्री रामप्रसादजी सैनी ने अतिथियो का आभार प्रकट किया तथा उन्हे गोवा पधारने पर धन्यवाद दिया। यहां पर आर्य समाज का कार्य उत्तरोत्तर प्रगति कर रहा है।

वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज, मेस्टन रोड, कानपुर का वार्षिकोत्सव शुक्रवार, २३ फरवरी से सोमवार २६ फरवरी १९६८ तक मनाया जाना निश्चित हुआ है। उत्सव में श्रीयुत प० प्रकाशवीर जी शास्त्री संसद सदस्य, श्रीयुत प० शिवकुमार जी शास्त्री ससद सदस्य, श्रीयुत रामचन्द्र जी "विकल" मन्त्री उत्तरप्रदेश सरकार तथा आचार्य विहारीलाल जी शास्त्री, आचार्य अमरसिंह जी आर्य पथिक, आ० रामानन्द जी शास्त्री, श्रीयुत प्रो० रत्नसिंह जी एम०ए०, श्रीयुत पं० सत्यमित्र जी शास्त्री और कुंवर महीपाल सिंह जी 'सगीतरत्न', कुंवर वेदपालसिंह जी भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

उत्सव

जलालाबाद। आर्य समाज जलालाबाद का ७५ वा वार्षिक उत्सव २६ से २८ दिसम्बर तक समारोह पूर्वक मनाया गया। उत्सव पर श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज तथा श्री ओमप्रकाश जी शास्त्री आदि आर्य नेताओं के प्रवचन हुये।

बरेली। आर्य समाज मन्दिर रिठौला चौधरी जिला बरेली का शिलान्यास २५-१२-६७ को श्री मान व्रजराज सिंह भूत पूर्व ससद सदस्य के करकमलों द्वारा समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ।

प्रयाग विश्वविद्यालय वैदिक छात्रावास आर्यसमाज कटरा

हर्ष के साथ 'आर्यजगत् को सूचित किया जाता है कि आर्यसमाज कटरा प्रयाग का 'प्रयाग विश्वविद्यालय वैदिक छात्रावास' निर्माण का स्वप्न साकार होने की दिशा मे अग्रसर हो गया है। उत्तरप्रदेश सरकार ने कृपापूर्वक ६ बीघे १७ बिस्वा की एक भूमि छात्रावास के लिये स्वीकृत कर दी है। भूमि का मूल्य लगभग २८०००) है।

लड़का लापता

श्री गणेश उर्फ जयसिंह नामक एक १४ वर्षीय बालक जिसका रग गोरा, एकहरा बदन तथा सिर पर बीच मे बायें से दायें को चोट का निशान है लगभग दो वर्ष से (५ फरवरी १९६६) घर से रूष्ट होकर चला गया है। लड़के को हिन्दी का ज्ञान है तथा आर्यसमाज के कुछ भजन भी वह गा लेता है। जिन सज्जनो को यह बालक मिले अथवा जिन्हें इसका पता हो वे कृपया उसे श्री रामनारायसिंह धनुर्वेदाचार्य भजनोपदेशक मुह० तेलियाना-चेतगज-मकान न० ५/३९ वाराणसी के पते पर सूचित कर दें अथवा पहुचा दे। बालक के पहुचाने वाले सज्जन की बड़ी कृपा होगी उन्हे सफर खर्च भी दिया जायगा।

ग्राम बनत में १०४ ईसाइयों की शुद्धि

श्री महाशय डालचन्द जी ने भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के तत्त्वावधान में ता० २२-१२-६७ को ग्राम बनत जि० मुजफ्फरनगर मे एक शुद्धि सम्मेलन का आयोजन किया जिसमे १०४ ईसाइयो को वैदिक धर्म की दीक्षा दो गई। शुद्धि संस्कार श्री हरिप्रसाद जी वानप्रस्थी ने कराया। इस अवसर पर श्री द्वारकानाथ जी प्रधान मन्त्री शुद्धि सभा, श्री आशानन्द जी, श्री गोकुलचन्द जी, श्री हरिदत्त शर्मा, श्री दीपचन्द जी आदि महानुभाव उपस्थित हुए और सब ने वैदिक धर्म की विशेषताओ पर प्रकाश डाला।

ग्राम टोडा में ५१ ईसाइयों की शुद्धि

दूसरा शुद्धि सम्मेलन २३-१२-६७ को ग्राम टोडा मे हुआ जिसमे ५१ ईसाइयो को वैदिक धर्म की दीक्षा दी गई। श्री हरिप्रसाद जी वानप्रस्थी ने शुद्धि संस्कार कराया। कई विद्वान् वक्ताओं के भाषण हुए। श्री हरिदत्त शर्मा कार्यालयाध्यक्ष ने भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा की ओर से ग्रामवासियो को धन्यवाद तथा शुद्धि शुदाओ का स्वागत किया। श्री दीपचन्द जी के भजनो से जनता बहुत प्रभावित हुई। ग्राम के सरपच चौ० श्री खिलकराम का सहयोग प्रशंसनीय रहा।

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

आर्यसमाज पिंपरी पूना (महाराष्ट्र) मे २३ दिसम्बर की रात्रि को श्री जयंती लाल जी पटेल डायरेक्टर महेन्द्र एण्ड महेन्द्रा कं० की अध्यक्षता मे स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस बड़ी धूम-धाम के साथ मनाया गया। जिसमे पं० जगदीश चन्द्र "वसु" विद्यावाचस्पति, प० धर्मवीर जी, श्री बेढाराम जी, पं० सोमव्रत जी वाचस्पति, श्री बगा जी, प्रो० रविशंकर जी तथा श्री मोहनलाल जी आदि विद्वानों ने अमरशहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी के विशेष जीवन पर प्रकाश डाला तथा महर्षि दयानन्द आर्यसमाज के कार्यों की प्रशसा की और २४ दिस० की रात्रि को स्थानीय आर्यसमाज का वार्षिक चुनाव सम्पन्न हुआ जिसमे निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये—

प्रधान—श्री धनराज जी सेठी
उपप्रधान—श्री किशनचन्द जी आर्य
मन्त्री—श्री राजलदास जी आर्य
कोषाध्यक्ष—जेठानन्द जी आर्य
पुस्तकाध्यक्ष—श्री खिलदास जी आर्य
निरीक्षक—श्री कन्हैयालाल आर्य

निर्वाचन—

—आर्यसमाज जानकीनगर (गोंडा)

प्रधान—मा० स्व० श्री प० भगवतप्रकाश
उपप्रधान—डा० कामतासिंह
मन्त्री—रामयज्ञ त्रिपाठी
पुस्त०—प० लक्ष्मीशंकर
निरी०—गुरुप्रसाद वर्मा

निर्वाचन—

—आर्यसमाज जमालपुर
प्रधान—श्री अम्बिकाप्रसाद सिन्हा
उपप्रधान—गंगाशाह एवं केशवलाल गुप्त
मन्त्री—आनन्दस्वरूप गुप्त
कोषाध्यक्ष—बनारसी साह
पुस्तकाध्यक्ष—सत्यदेव झा

समाचार

किरतियापुर। श्री डा० बलबन्त सिंह के पौत्र का नामकरण संस्कार वैदिक रीति के अनुसार सम्पन्न हुआ। [illegible]पालसिंह रखा गया।

कटियारी आर्य सम्मेलन मे प्रस्ताव पारित किया गया कि प्रत्येक मास पूर्णमासी के दिन समाजो के मन्त्री व प्रधान के आमन्त्रण पर विभिन्न स्थानों पर जिला आर्य सम्मेलन आयोजित किये जायेंगे। अगला सम्मेलन ग्राम मदुआपुर नरौया मे दिनांक १५-१-६८ को सम्पन्न होगा।

समस्तीपुर। १६ दिसम्बर को श्री मेहरचन्द महाजन के निधन पर श्रद्धांजली अर्पित की गई।

आर्यसमाज मन्दिर मे स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया,

कानपुर। 'आर्य समाज ने अपने अन्दर कैसे कैसे तेजस्वी महात्मा तथा विद्वान पैदा किये जिनके बताये मार्ग पर चलकर हम देश, जाति तथा धर्म की रक्षा करने मे समर्थ हो सकते हैं, उक्त शब्द श्री जातिभूषण जी ने २४-१२-६७ को स्वामी श्रद्धानन्द तथा श्री मेहर चन्द महाजन को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुये कहा। यह समारोह वेद प्रचार मण्डल गोविन्दनगर कानपुर द्वारा आयोजित किया था।

पूना। 'ब्रह्मचर्य ही जीवन है' विषय पर आर्यसमाज पिंपरी पूना मे एक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन श्री भगवानदास जी की अध्यक्षता मे किया गया। प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय और विशेष पुरस्कार ब्र० जयराम आर्य, ब्र० हरिश्चन्द्र आर्य तथा सुरेशचन्द्र आर्य व सुरेन्द्रकुमार आर्य को क्रमश दिय गये।

दिनांक २३ दिसम्बर को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया।

गाजीपुर। आर्यसमाज गाजीपुर मे श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा के उप मंत्री, श्री आनन्द प्रकाश जी उपस्थित थे।

इटारसी। आर्य कन्या पाठशाला मे स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया और उनके जीवन की मुख्य मुख्य घटनाओं पर विस्तार से प्रकाश डाला गया।

पालन पोषण में असमर्थ श्री गजराज नामक व्यक्ति की एक दो वर्षीय बच्चों को हिन्दू बाल सदन अजमेर भेजा गया।

स्वामी श्रद्धानन्द का राष्ट्रीय स्मारक बनाने की मांग बलिदान दिवस पर आर्य नेताओं के भाषण

नगर की सभी आर्य समाजो की ओर से केन्द्रीय आर्य [illegible] कानपुर के तत्वावधान मे आर्य सभा गोविन्द नगर मे आर्य समाज तथा कांग्रेस पुराने नेता अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान दिवस मनाया गया। इस अवसर पर विशाल जन सभा डा० कालिकाप्रसाद भटनागर (पूर्व उप कुलपति आगरा विश्वविद्यालय) की अध्यक्षता मे हुई। इस आयोजन पर उद्‌घाटन करतेहुए आर्यनेता श्री देवीदास आर्य ने कहा कि महात्मा गांधी से भी पहिले स्वामी श्रद्धानन्द ने स्वतन्त्रता संग्राम का नेतृत्व किया था। गाधीजी को मिस्टर गांधी से सर्वप्रथम महात्मा गांधी के नाम से स्वामी श्रद्धानन्द ने पुकारा था। गांधी जी स्वामी जी को बड़े भाई मानते थे। उन्होने जान हथेली पर रख कर देश, धर्म व जाति का कार्य किया। परन्तु हमारी सरकार ने इस राष्ट्रीय नेता के सम्मान अनुसार कोई राष्ट्रीय स्मारक आज तक नहीं बनाया है। अत चान्दनी चौक दिल्ली और अन्य स्थानो पर ये स्मारक बनाने चाहिये। डा भटनागर ने कहा कि स्वामी जी हिन्दी, गुरुकुल शिक्षाप्रणाली, शुद्धि, स्त्री शिक्षा दलित उद्धार के पक्के समर्थक थे। उनका बलिदान एक ना समझ मुसलमान द्वारा हुआ। इसीसे इस बलिदान को साम्प्रदायिक नही समझना चाहिए। समारोह मे सर्वश्री लक्ष्मण कुमार शास्त्री, प०विद्याधर, डा०दुर्गादास, डा० कपिल, ललिताप्रसाद, मुल्खराज, कुमारी ऊषा शर्मा, मोहनलाल और योगेन्द्र सरीन के भाषण भी हुए और आर्य कन्या विद्यालय गोविन्द नगर की छात्राओं का विशेष कार्यक्रम हुआ।

—योगेन्द्र सरीन मंत्री

शोक समाचार

बदायू। आर्य समाज अलापुर के कोषाध्यक्ष श्री प० हेमराज जी की माता जी का देहावसान २१-१२-६७ को हो गया। अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न कराया गया। परमात्मा दिवगत आत्मा को शान्ति तथा श्री कोषाध्यक्ष महोदय को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

धर्म-शिक्षा प्रशिक्षण का विवरण

शिक्षा विभाग आर्य प्रतिनिधि सभा ने अध्यापक-अध्यापिकाओं को धर्म-शिक्षा पढ़ाने योग्य बनाने के लिये प्रशिक्षण शिविर लगाने की योजना बनाई। सन् १९६६ ई० मे इस प्रकार का एक शिविर आर्यसमाज लखीमपुर के सहयोग से अध्यापिकाओं का लगाया गया था। जिसमे चार जिलों की सभा से सम्बद्ध आर्य कन्या विद्यालयो की कुछ अध्यापिकाए सम्मिलित हुई थी। इस वर्ष भी इस योजना को कार्यान्वित करने के लिये प्रयास किया गया। श्री शिवदयालु जी आर्य ने सुझाव दिया कि यह शिविर आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर मे अच्छा रहेगा। मैने श्री महात्मा हरप्रसाद जी प्रधान आर्य वानप्रस्थ आश्रम [illegible]लापुर तथा आ[illegible]म के अधिष्ठाता श्री तेजसिंह को पत्र लिखे, उन्होने बड़ी [illegible]रलता से शिविर लगाने तथा तत्सम्बन्धी सभी प्रबन्ध करने की अनुमति प्रदान की। उनकी अनुमति से २४ दिसम्बर से ३१ दिसम्बर सन् १९६७ तक यह शिविर [illegible]। इस शिविर मे जिला देहरादून, आगरा, बिजनौर, मुजफ्फरनगर, मेरठ, बुलन्दशहर, मुरादाबाद तथा सहारनपुर के सभा से सम्बद्ध सभी आर्य कन्या विद्यालयों से कम से कम एक अध्यापिका को प्रशिक्षणार्थियो के रूप मे आवाहन किया गया था। इस शिविर मे निम्नलिखित अध्यापिकाए सम्मिलित हुई—

क्रम स०	नाम विद्यालय	नाम अध्यापिका
(१)	आर्य कन्या इन्टर कालिज गुलाबठी (बुलन्दशहर)	(१) श्रीमती हरप्यारी देवी (२) कु० कुसुम देवी
(२)	रामप्यारी आर्य कन्या पाठशाला हा०से० स्कूल चन्दौसी (मुरादाबाद)	(३) श्रीमती उर्मिलादेवी जौहरी
(३)	आर्य कन्या इन्टर कालेज (मुज०नगर)	(४) श्रीमती मनोहरी देवी
(४)	रामप्यारी आर्य कन्या इन्टर कालिज देहरादून	(५) कु० गुरुदेव कौर
(५)	आर्य कन्या इन्टर कालिज बुलन्दशहर	(६) श्रीमती आशारानी सक्सेना
(६)	जमुनादास आर्य कन्या जू०हा०स्कूल पुरानी मंडी सहारनपुर	(७) कु० सतोष गुलाटी
(७)	आर्य कन्या इन्टर कालिज मुरादाबाद	(८) श्रीमती सौभाग्यवती

इस शिविर मे निम्नलिखित महानुभावो ने प्रशिक्षण देने का कार्य किया—

क्रम स०	नाम विद्वान्	सख्या व्याख्यान जो दिये
(१)	श्री सच्चिदानन्द जी शास्त्री, मन्त्री सभा	३
(२)	श्री रामबहादुर जी, अधिष्ठाता शिक्षा विभाग	६
(३)	श्री धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड	२
(४)	श्री [illegible]खदेव जी विद्यावाचस्पति	२
(५)	श्री रुद्रदत्त जी शास्त्री	३
(६)	श्री जन्मेजय जी	३
(७)	श्री जयदेव जी, निरीक्षक	३
(८)	श्रीमती प्रभावती जी	२

यह सभी विद्वान् विशेष धन्यवाद के पात्र हैं। इनके उपदेशो का अध्यापिकाओ पर बहुत अच्छा प्रभाव पडा।

प्रशिक्षणार्थियो के आवास, जलपान व भोजन तथा हर प्रकार की सुविधाओं का प्रबन्ध आश्रम की ओर से हुआ। शिक्षा विभाग, आश्रम के सभी पदाधिकारियो तथा कर्मचारियों का बहुत आभारी है। विशेषकर श्री महात्मा हरप्रसाद जी प्रधान, श्री ज्योतिप्रसाद जी मन्त्री, श्री रेवतीप्रसाद जी उपमन्त्री व श्री मिलापचन्द्र व श्री लक्ष्मी नारायण जी पुस्तकाध्यक्ष की विशेष कृपा हर प्रकार के प्रबन्ध और सुविधा देने मे रही। इस शिविर मे प्रशिक्षण व हर प्रकार की सुविधा तथा आश्रम की पुण्य स्थली के पवित्र वातावरण तथा सादगी और वैदिक सतसगों व यज्ञो का प्रशिक्षणार्थियों पर विशेष प्रभाव पड़ा और उन्होंने इस प्रकार के शिविर प्रतिवर्ष लगाने का आग्रह किया और धर्म शिक्षा की पढ़ाई को अपने अपने विद्यालयों मे प्रगति देने का वचन दिया।

अंतिम दिन प्रशिक्षणार्थियों को शिक्षा विभाग की ओर से प्रमाण पत्र तथा आश्रम की ओर से १०, १०, धार्मिक पुस्तकों के सेट श्री प्रधान जी आश्रम के करकमलों द्वारा दिलाये गये।

नारायण स्वामी जन्म शताब्दी समारोह

२, ३, ४ फरवरी ६८, बसन्तपञ्चमी

स्थान–गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन (मथुरा)

आर्य-जगत् का सार्वदेशिक समारोह

सादर-निमन्त्रण

आदरणीय ! सादर नमस्ते !

आपको यह सूचित करते हुए हर्ष होता है कि आर्यसमाज के महान् संन्यासी नेता अध्यात्मतत्व वेत्ता, हैदराबाद व सिन्ध सत्याग्रह संचालक विजेता, गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के प्रबल समर्थक श्री पूज्यपाद महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज का जन्म शताब्दी समारोह उपर्युक्त तिथियों में सम्पन्न होना निश्चित हुआ है। पूज्य स्वामी जी ने सम्पूर्ण आर्य-जगत् का आदर्श नेतृत्व किया और आर्यसमाज की गौरव-वृद्धि की, उनके इस महत्व को दृष्टि में रखते हुए शताब्दी समारोह सम्पूर्ण आर्य-जगत् की ओर से मनाया जा रहा है।

इस शुभावसर पर अनेक सम्मेलन, नवस्नातकों का दीक्षान्त संस्कार, गुरुधाम (गुरु विरजानन्द स्मारक मथुरा) उद्घाटन, विशाल नगर कीर्तन, प्रदर्शनी आदि उपयोगी कार्यक्रम सम्पन्न होंगे। अनेक आर्य विद्वान्, नेता, धर्म व राष्ट्रसेवी पधार कर समारोह को गौरवान्वित करेंगे।

आपसे विनम्र प्रार्थना है कि अपने इष्ट-मित्रों बन्धु-बान्धवों सहित सपरिवार पधार कर अपने नेता एवं पथ-प्रदर्शक के प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित करें और आर्यसमाज की सेवा का शुभ संकल्प ग्रहण करें।

शताब्दी समारोह की सफलता में आपका तन, मन, धन पूर्वक सहयोग विशेष रूप से प्रार्थनीय है।

विनीत–

–नरदेव स्नातक, संसद सदस्य,
संयोजक
नारायण स्वामी जन्म शताब्दी समारोह

अहिन्दी भाषी राज्य और राष्ट्रभाषा हिन्दी

(पृष्ठ ५ का शेष)

आज पुनः उन अंग्रेजी परस्तों ने जिन्होंने इस भाषा द्वारा देश को गुलामी की जंजीरों में जकड़ रखा था आज पुनः उसे दृढ़ करने का प्रयत्न कर रहे हैं और इसका दोष अहिन्दी भाषियों पर डालने का प्रयत्न कर रहे हैं भारत के स्वतन्त्रता के इतिहास को यदि उठाकर देखा जाय तो देश के लिये मरने मिटने वालों में एक भी द्रविड़ मुन्नेत्र कजगम या मद्रास का व्यक्ति नहीं दिखाई देगा। मद्रास में राजा जी जैसे कुछ व्यक्ति अवश्य राजनीति में आये परन्तु राजनीति में भाग लेने वाले मद्रासियों में भी अंग्रेजी जानने वालों की अपेक्षा कामराज जैसे केवल तमिल का ज्ञान रखने वाले लोग ही अधिक रहे हैं। मैं उत्तर भारत, दक्षिण भारत का आर्य और द्रविड़ इत्यादि भेदों को कहीं मानता। हमारी दृष्टि में मानव एक जाति है। अच्छे कार्य करने वाले आर्य हैं। द्रविड़ इत्यादि के रूप में कोई जाति नहीं। परन्तु अंग्रेजी समर्थक द्रविड़ मुन्नेत्र कजगम वाले अपने अलग राष्ट्र बनाने के स्वप्न को चरितार्थ करने के लिए अंग्रेजी का नारा लगा रहे हैं और अपने साथ अन्य प्रान्तों के अहिन्दी भाषियों को लाने का प्रयत्न कर रहे हैं। हिन्दी भाषा को राष्ट्र भाषा कभी भी हिन्दी भाषी लोगों ने संज्ञा नहीं दी, उसे नहीं माना। इसके विपरीत उसका विरोध किया। आज भी इन्दिरा गांधी और हिन्दी भाषी प्रदेशों के सभी सदस्य इसके प्रमाण हैं। क्या ये भी सुब्रह्मण्यम् और अलगेसन की तरह भाषा के प्रश्न पर मन्त्रिमण्डल और कांग्रेस की सदस्यता से नहीं हट सकते हैं। हिन्दी को राष्ट्र भाषा के पद पर अहिन्दी भाषियों ने प्रतिष्ठित किया। आधुनिक भारत का नेतृत्व बंगाल से आरम्भ हुआ और राजा राममोहनराय ने कहा–"हिन्दी ही ऐसी भाषा नजर आती है जिसे राष्ट्रभाषा के पद पर बिठाने का प्रस्ताव रखा जा सकता है।" केशव चन्द्र सेन बंगाल के नेता थे इन्होंने गुजराती मातृभाषा भाषी और संस्कृत के महान् विद्वान एवं उपदेष्टा स्वामी दयानन्द को संस्कृत के स्थान पर हिन्दी में व्याख्यान देने की प्रार्थना की थी। उन्होंने यह भी कहा है "यदि एक भाषा न होने के कारण भारत विभिन्न भाषा-भाषी है तो राष्ट्रीय एकता के लिये सारे भारत में एक ही भाषा का व्यवहार करना ही एकमात्र उपाय है। अभी जितनी भाषायें भारत में प्रचलित है उन में हिन्दी ही सर्वत्र प्रचलित भाषा है। इसी हिन्दी को यदि भारतवर्ष की एक मात्र भाषा स्वीकार कर लिया जाय, तो यह एकता सहज ही में सम्पन्न हो सकती है।" बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय ने भी कहा है "बिना हिन्दी की शिक्षा अंग्रेजी के द्वारा यहां तो कोई कार्य नहीं चलेगा। भारत के अधिकांश लोग भी अंग्रेजी और बंगला न तो बोलते हैं और न समझते ही है। हिन्दी के द्वारा ही भारत के विभिन्न भागों के मध्य एकता स्थापित हो सकेगा।" विश्वकवि रवीन्द्र नाथ ठाकुर ने कहा "बहुत वर्षों से अंग्रेजी ही हमारी राष्ट्रभाषा बनी हुई है, जो साधारण जनता की समझ से बिलकुल बाहर है अगर हम हर भारतीय के नैसर्गिक अधिकारों के सिद्धान्त को स्वीकार करते हैं तो हमे उस भाषा को (राष्ट्रभाषा के रूप में) स्वीकार करना चाहिये जो देश के सबसे बड़े भाग में बोली जाती है और जिसके स्वीकार करने की सिफारिश महात्मा जी ने हम लोगों से की है–अर्थात् हिन्दी।" सुभाष चन्द्र बोस ने कहा–"मैंने सर्वदा ही यह अनुभव किया है कि भारत में एक राष्ट्र भाषा का होना आवश्यक है। और हिंदी ही हो सकती है। कुछ लोगों का विचार है कि बंगला राष्ट्रभाषा हो, कारण कि उसमें उच्चकोटि का साहित्य है। हिन्दी में उच्च साहित्य है या नहीं यह विवाद ग्रस्त विषय उठाना व्यर्थ है। हिन्दी व्यापक रूप से भारत में बोली जाती है और इसमें संग्रह्य शक्ति है तथा वह सरल है। 'संस्कृत निष्ठ' अथवा फारसी युक्त हिन्दी का व्यवहार नहीं करना चाहिये अपितु उत्तर भारत में सर्वसाधारण स्तर पर जो बोली जाती है वही हमारा स्तर होगी।" महाराष्ट्र के तिलक, सावरकर आदि का भी उल्लेख कर ही चुके हैं। अभी संसद में पणजी (गोवा) के मराठी भाषी निर्दल सदस्य श्री जनार्दन जगन्नाथ शिकरे ने 'कजगम वालों के हिन्दी द्रोह और अंग्रेजी मोह को देश के लिये घातक बताते हुये कहा कि हिन्दी ही समस्त देश की राष्ट्रभाषा है और होकर रहेगी। हिन्दी के साम्राज्य का जो नारा लगाते हैं वे अंग्रेजी से भी अधिक अपने को अंग्रेजी का कर्मठ हिमायती भले ही सिद्ध करने की कोशिश करें, किन्तु हिन्दी का मार्ग प्रशस्त होकर रहेगा।"

उन्होंने कहा–"मेरी मातृभाषा मराठी है किन्तु मराठी के प्रति मुझे जितनी ममता है उससे जरा भी कम आदर हिन्दी के प्रति नहीं। गोवा में विदेशी गुलामी से मुक्ति के लिये हम लोगों ने जो आन्दोलन किया था, उसके पीछे यही भावना रही है कि एक शर्त की एक राष्ट्रभाषा हिन्दी ही रहेगी।

ऐसे समय नेहरू के आश्वासन के नाम पर अहिन्दी भाषियों के लिये अंग्रेजी के नाम पर सम्पूर्ण राष्ट्र पर अंग्रेजी थोपना अन्याय एवं अत्याचार से कम नहीं। दो प्रतिशत को ९८ प्रतिशत के ऊपर लादना किसी भी दृष्टि से उचित नहीं। भारत की प्रधान मन्त्री का यह वक्तव्य भी उपहासास्पद ही प्रतीत होता है कि हिन्दी हमारी अन्तर्प्रादेशिक सम्पर्क भाषा होगी और अन्तर्राष्ट्रीय सम्पर्क भाषा के रूप में हमें अंग्रेजी पढ़नी चाहिए। भारत की मन्त्री! आपका यह वक्तव्य अत्यन्त ही अनुपयोगी हैं और आत्म सम्मान पर आघात करने वाला। हिन्दी को अन्तर्राष्ट्रीय सम्पर्क भाषाओं में लाने का प्रयत्न आवश्यक है। उन्हें यह कहना चाहिये था कि हम हिन्दी को अन्तर्राष्ट्रीय सम्पर्क भाषा का स्थान दिलाने का प्रयत्न करेंगे। आज पांच अन्तर्राष्ट्रीय भाषाओं में चीनी भाषा को छोड़कर अन्य किसी भी भाषा से हिन्दी बोलनें वालों की संख्या विश्व में कम नहीं। अंग्रेजी बोलने वाले दो तरह के लोग है। एक इंग्लैण्ड की अंग्रेजी वाली और दूसरे अमेरिका की। इन दोनों को सम्मिलित संख्या संभव है हिन्दी बोलने वालों से अधिक हो जाय। परन्तु फिर भी हिन्दी, फ्रेंच रशियन आदि भाषाओं के बोलने वालो की संख्या से अधिक है।

इसलिये इस संशोधन विधेय द्वारा अहिन्दी भाषियों को बदनाम किया जाना बन्द होना चाहिये। अहिन्दी भाषियों में केवल मद्रास के कजगम के सदस्य ही हमारे विरोधी हैं और जब तक चाहे अंग्रेजी रखें। इसमें हमें आपत्ति नहीं। यह विधेयक हिन्दी भाषियों पर और केन्द्र पर जो अंग्रेजी लाद रहा है उसको हटाना चाहिये। किसी भी एक राज्य को वीटो पावर अर्थात हिन्दी रोकनें के लिये निषेध का अधिकार भी एक अन्याय है, इसे दूर करना हमारा धर्म है। आर्य समाज इस विधेयक का हर-कीमत पर विरोध करता रहेगा और हमें सफलता मिलेगी।

राष्ट्र भाषा हिन्दी अमर रहे

★

सभा की सूचनाएं

आवश्यक सूचना

उत्तर प्रदेशों की समस्त आर्यसमाजों की भूसम्पत्ति का पूर्ण विवरण एकत्रित करने के निमित्त समस्त जिलों के प्रमुख कार्य्यकर्त्ताओं के पास सभा द्वारा प्रकाशित भू-सम्पत्ति चित्र (चित्र सं० ९) अन्तरंग सभा के निश्चयानुसार भेजे जा रहे हैं। ताकि सभा कार्यालय के भू-सम्पत्ति विभाग में पूर्ण जानकारी उपलब्ध रहे और सभा की सम्पत्ति की सुरक्षा के लिये आवश्यक कार्यवाही की जा सके।

प्रदेश के जिन कार्य्य कर्त्ताओं के पास ये चित्र भेजे जा रहे हैं, उन से निवेदन है कि वे इस महत्वपूर्ण कार्य्य मे अपना हार्दिक सहयोग दें तथा स्वयम् व अपने सहयोगियों द्वारा इन चित्रों को भरवा कर सभा कार्यालय में तुरन्त भेजवाएं। इस सम्बन्ध से किया गया मार्ग व्यय सभा द्वारा वहन किया जायेगा।

विक्रमादित्य 'वसन्त' स०अधिष्ठाता
भू-सम्पत्ति विभाग, आर्य प्रतिनिधि
सभा, उ० प्र० लखनऊ

आवश्यकता

सभा के भू-सम्पत्ति विभाग में कार्य करने के लिये तथा आवश्यकतानुसार लखनऊ से बाहर जाकर विवरण एकत्रित करने के लिये एक सुयोग्य, पुरुषार्थी समाज के कार्यो से लगन रखने वाले तथा सम्पत्तियो की कानूनी जानकारी रखने वाले एक अनुभवी व्यक्ति की तुरन्त आवश्यकता है। अपनी आयु योग्यता तथा न्यूनतम वेतन की मांग सहित निम्नलिखित पते पर पत्रव्यवहार करें। आर्य समाजी व्यक्ति को नियुक्ति मे प्रमुखता दी जाएगी। पूर्ण जानकारी के लिये लिखें या मिलें।

विक्रमादित्य 'वसन्त'
स० अधिष्ठाता
भू-सम्पत्ति विभाग, आर्य प्रतिनिधि
सभा, उ० प्र० लखनऊ

श्वेत दाग की

मुफ्त दवा

श्वेतारी सफेद दाग की लाभकारी दवा है। हजारों ने व्यवहार कर लाभ उठाया है। दाग का पूर्ण विवरण लिखकर पत्र व्योहार करें। लगाने की एक फायल दवा मुफ्त।

पता—कृष्णचन्द्र वैद्य
पोस्ट—कतरीसराय (गया)

आवश्यकता

मुझे अपनी सुन्दर सुशील १८ वर्षीय ग्रेजुएट पुत्री के लिए सुयोग्य शाकाहारी सक्सेना वर की आवश्यकता है।

—महाराज बहादुर सक्सेना
रिटायर्ड फारेस्ट रेंजर
नानपारा (बहराइच)

शीत ऋतु का अनुपम उपहार—

ऋषियों की बुद्धि का अपूर्व चमत्कार

अमृत भल्लातकी रसायन

इसके अमृत तुल्य चमत्कार को देखकर ही जनता ने इसकी मुक्तकंठ से प्रशंसा की है। यह रसायन इस ऋतु की अनुपम देन है। प्रयोगशाला में इसका निर्माण शास्त्रीय विधि से होता है।

गुण—अशक्ति, हड्डियो व जोड़ों के दर्द, वायु के कारण शरीर में दर्द, रक्त विकार, कमजोर, स्त्रियों को कमजोर करने वाली समस्त बीमारियाँ प्रदर प्रसूतिका आदि, धातु का पतलापन एव सभी तरह के वीर्य विकार पर अपना जादू का सा असर करती है।

स्वस्थ पुरुष भी इसके सेवन से बल, वीर्य ओज और आनन्द को प्राप्त करते है। एक बार सेवन करने वाला व्यक्ति इसे भूल नहीं सकता। अनुपम सुगन्ध एव स्वाद से मनुष्य दिन भर अपने मे नवीनता स्फूर्ति एव आनन्द का अनुभव करता है।

निर्माण—शिलाजीत, मकरध्वज, बंग, लोह आदि के योग से इस पौष्टिक पाक को तय्यार किया गया है, जो प्रात काल नाश्ते के समय सेवन किया जाता है।

४० दिन के सेवन योग्य औषधि का मूल्य ६) रु०

पता—गुरुकुल वृन्दावन आयुर्वेद प्रयोगशाला
वृन्दावन (मथुरा)

विद्वत्मंडल से प्रेरित

सज्जनो !

आपके हाथों मे ऋग्वेद की अमूल्य निधि, जिसमे अनमोल तत्व खोजकर दिये गये थे—

अब

शिवरात्रि पर

"वेदाङ्ग प्रकाश"

अङ्क

आपकी सेवा में 'आर्य्यमित्र' भेट करने जा रहा है।

यह अङ्क ३० विद्वानों के विद्वतापूर्ण लेखों से पूरित होगा।

क्या आप चाहेंगे ?

'आर्य्यमित्र' आपके हाथों में साज-सज्जा से पहुंचे, तो फिर—

अपनी प्रतियां अभी से सुरक्षित करा लें

विश्वास है आर्यजन हमे प्रोत्साहन देंगे।

—सच्चिदानन्द शास्त्री
सम्पादक 'आर्य्यमित्र'

सत्यार्थप्रकाश

द्वितीय संस्करण

जो सत्यार्थप्रकाश महर्षि दयानन्द की संरक्षता में द्वितीय संस्करण प्रकाशित हुआ था। उस सत्यार्थप्रकाश को फोटो ओफसेट पर प्रकाशित किया जा रहा है यह अमूल्य ग्रन्थ दो चार विद्वानों के ही पास है इसे अब वह बहुमूल्य निधि समझे हुये हैं। सर्वसाधारण के पास न होने के कारण विद्वानो ने सत्यार्थ प्रकाश में परिवर्तन करना आरम्भ कर दिया है। इस कमी को दूर करने के लिये यही उचित था कि इसको फोटो ओफसेट प्रिन्ट करके समस्त आर्य बन्धुओं के हाथों मे दिया जाय। जिससे भविष्य में सत्यार्थप्रकाश में परिवर्तन करने का किसी को साहस न हो। इसलिये इस अमूल्य द्वितीय संस्करण वाले सत्यार्थप्रकाश को फोटो ओफसेट पर छपवाया जा रहा है कृपया शीघ्र ही अपनी मांग भेजने की कृपा करें। सत्यार्थ प्रकाश का साइज बड़ा है मूल्य १ प्रति ४.५० डाकखर्च २), चार प्रति १६), डाकखर्च रेलखर्च सहित २) शीघ्र पत्र द्वारा सूचित करें द्वितीय संस्करण से सत्यार्थप्रकाश की छपी पुस्तक २.५० दस कापी २) दयानन्दप्रकाश लेखक स्वामी दयानन्द सरस्वती २.५ वेद प्रचारक पत्र तथा आर्य साहित्य का सूची-पत्र बिना मूल्य मंगायें।

वेद प्रचारक मण्डल, ६४१० देवनगर दिल्ली—५

गुरु का पावन प्रसाद

(पृष्ठ १० का शेष)

बिरजानन्द—बस, बस व्यर्थ की बात न बना ! तेरी आलसी और ढीली प्रवृत्ति मैं बहुत दिनों से देख रहा हूँ। कभी कभी तो तेरी गन्दगी और अव्यवस्था पर बड़ा दुखी हुआ हूँ .. चेतावनी भी दी है पर तू सुधरता ही नहीं। मूर्ख तुझे मालूम नहीं कि जो आलस्य में फँसकर अधूरा काम करता है वह अभागा है। मनुष्य कर्म के लिए उत्पन्न हुआ है- उसे जीवन भर मन लगाकर काम करना चाहिए।

दयानन्द—मैं काम करता तो हूँ करता ही रहता हूँ। कोई खाली थोड़ा ही बैठता हूँ।

बिरजानन्द—(यह उत्तर सुनकर और क्रुद्ध हो उठते हैं) अच्छा, तो जबाब भी देता है। एक तो काम मन लगा कर नहीं करता, कूड़ा करकट छोड़ देता है, दूसरे जबान चलाता है। ऐसे नहीं मानेगा। देवव्रत ! ला तो मेरा डन्डा, आज इसे पीटना ही पड़ेगा। ऐसे नहीं मानेगा यह वाचाल !

(सब विद्यार्थी काँप उठते हैं। आज गुरुदेव क्या करने जा रहे हैं। पीटने के क्या क्या दुष्परिणाम हो सकते हैं ? सम्पूर्ण वातावरण में तनाव आ जाता है। सभी विस्फारित नेत्रों से विषम परिस्थिति को देख रहे हैं। आज का क्रोध अप्रत्याशित है।)

बिरजानन्द—डण्डा लाओ ! डण्डा लाओ ! आज आलसी दयानन्द को किसी प्रकार पीटे बिना न छोड़ूंगा।

सब विद्यार्थी (अनुनय पूर्वक) गुरुदेव ! हम सबकी प्रार्थना है कि आज दयानन्द का अपराध माफ किया जाय। एक अवसर और

दयानन्द—(क्षमा प्रार्थना करते हुए) गुरुदेव, आज तो कामचोरी हुई, वह हमेशा के लिये हुई। भविष्य में ऐसा कदापि न होगा। क्षमा ।"

बिरजानन्द—(टटोलकर डण्डा उठा लेते हैं।) नहीं, नहीं, तू बिना पिटे न मानेगा तुझे बार बार चेतावनी दी है, पर तू नहीं सुधरता कभी कभी मार भी देनी पड़ती है (डण्डे मारते हैं)

दयानन्द—(पिटते हुए) ओह ! ओह ! मर गया ! मर गया !! हाय

सब विद्यार्थी—गुरुदेव, मत पीटिये मत पीटिये .. बहुत पिट चुका

बिरजानन्द—(आवेश में) अब फिर लापरवाही करेगा ..फिर काम से जी चुरायेगा कूड़े कचरे को गद्दी के नीचे छिपायेगा आलस्य में पड़ा सोया करेगा बोल बोल- क्या अपने शरीर को जंग लग जायेगा ।

दयानन्द-(क्षमा मांगते हुये) गुरुदेव क्षमा कीजिए भविष्य में ऐसा नहीं होगा काम में शिथिलता नहीं आयगी आलस्य नहीं होगा

विद्यार्थी—गुरुदेव, बस यह काफी है .. बहुत पिट चुका है डण्डा कमर पर उभर आया है ..माफ कर दीजिये बहुत दण्ड मिल गया है।

विरजानन्द—(कुछ ठण्डे पड़कर) अच्छा तुम सब इसके सुधारने की जिम्मेदारी लेते हो, तो आज इतना ही पीट कर छोड़ देता हूँ ।

दयानन्द—(कराहते हुये) अब आगे से ऐसा नहीं होगा अब मैं खुद सुधरूंगा आलस्य कभी नहीं करूंगा — यह मारपीट सदा याद रहेगी ।

(विरजानन्द आन्तरिक क्षोभ से थक गये हैं। मानसिक क्लेश ने उनके समस्त शरीर को बुरी तरह झकझोर दिया है। वे कुछ देर कुछ नहीं बोल पाते)।

धीरे २ वातावरण में कुछ ठन्डक आती है। दयानन्द अपने घावों को सहला रहे हैं। घबराहट में वे भी अस्त व्यस्त हो रहे हैं। उनका मानसिक सन्तुलन खो गया है। पश्चाताप भरे स्वर में वे कहते हैं—

दयानन्द—गुरुदेव, अपने आलस्यपूर्ण अधूरे मन के काम से मुझे बड़ा पश्चाताप हो रहा है। मेरी करनी से आपको मानसिक कष्ट पहुंचता है। इससे मैं बड़ा व्यथित हो रहा हूं। हाय मैं कैसा अभागा हूं। मुझे झाड़ू देना और ठीक तरह सफाई करना तक नहीं आता है। मैं आलस्य में अपना मूल्यवान समय नष्ट करता हूं। काम से जी चुराता हूं मुझे क्षमा करें गुरुदेव।

बिरजानन्द—(स्नेह से अन्धी आंखों में आंसू भर कर) दयानन्द ! मैं तुझे बहुत स्नेह करता हूं। तू बड़ा कुशाग्रबुद्धि बालक है। रूढ़ियों का खन्डन करने और मौलिक रूप से विचार करने की तुझमें अपूर्व शक्ति है पर तेरा यह आलस्य तेरी रचनात्मक शक्तियों को नष्ट कर देगा छोटे २ काम भी उपेक्षणीय नहीं हैं। तेरी लम्बी जिन्दगी चलेगी अगर तू इनकी तरफ से उदासीन और आलसी बना रहा तो बेटा, तुझे बाद में भारी पछतावा होगा इसलिए मैं यह सिखाना चाहता हूं कि जो भी करे, वह देखने में चाहे कितना ही छोटा क्यों न हो, भली प्रकार से पूरे मनोयोग से अच्छे से अच्छा सुघड़ता पूर्वक किया जाये याद रख बेटा, छोटी बातों का महत्व कम नहीं होता। जीवन की सफलता-गुणता भी इन्हीं में सन्निहित है।

दयानन्द—(पश्चाताप के आंसू बहाते हुए) गुरुदेव, मैंने आज इस पिटाई से जीवन में छोटी बातों का महत्व समझा है। अपनी कमजोरी का आभास आज मुझे अच्छी तरह हो गया है।

[सब विद्यार्थी गम्भीरतापूर्वक दयानन्द के हृदय परिवर्तन को देखते हैं]

विरजानन्द—(दयानन्द को प्यार से गोद में बैठा कर उसके आंसू पोंछते हुए) बेटा लोग बड़े आदमी इसीलिये बन जाते हैं क्योंकि वे जिन्दगी में शुरू से ही छोटे से छोटा काम जी लगाकर करते हैं जल्दी जल्दी काम को निपटाना, मनोयोग पूर्वक न लगना मनुष्य का ओछापन प्रकट करता है। सुसंस्कृत व्यक्ति अपने दैनिक जीवन के मामूली कामों को भी इस प्रकार पूरा करते हैं, मानो इन साधारण कर्तव्यों में ही उनका सारा सुख, वैभव और आनन्द भाव छिपा हुआ हो। प्यारे दयानन्द, जिन्दगी बहुत बड़ी है। याद रखना, तुम बड़े काम तो करोगे ही लेकिन बड़ा काम मन लगा कर करना ही काफी नहीं है, वरन यह भी जरूरी है कि सामने आया हुआ काम कितना ही साधारण क्यों न हो, उसे भी अच्छी तरह मनोयोगपूर्वक पूरा किया जाय मत रोओ यह पाठ भी तुम्हारे कंठ के नीचे उतारना आवश्यक था।

दयानन्द—मैं समझ गया गुरुदेव ! मुझे अपनी आलस्यवाली कमजोरी स्पष्ट हो गई निरर्थक समय बिताने और आलस्य में पड़ रहने से उत्पन्न शिथिलता अनेक प्रकार की विकृतियां पैदा करती हैं-आइन्दा ऐसी गलती न होगी निश्चय जानिये।

विरजानन्द-यों नहीं। हथेली में जल लेकर संकल्प कर। कृष्णानन्द वेदव्रत, आत्मानन्द और तुम सब लोग कहाँ हो ? ब्रह्मेश हो ? जल लाओ।

सब-गुरुदेव, अभी लाते हैं अभी संकल्प की सारी सामग्री प्रस्तुत करते हैं।

(जल लाया जाता है और दयानन्द उसे हथेली में लेते हैं।)

दयानन्द—(पूर्ण निष्ठा के साथ) आज मैं गुरुदेव और समस्त बन्धुओं के सामने संकल्प करता हूं कि भविष्य में आलस्य, लापरवाही, और निष्क्रियता में समय नष्ट नहीं करूंगा जो कुछ करूंगा भले ही वह कितना ही क्षुद्र कर्म हो, पूर्ण मनोयोगपूर्वक करूंगा " ..... ईश्वर इस संकल्प का साक्षी है।

बिरजानन्द—(हृदय परिवर्तन से प्रसन्न होकर) दयानन्द आज तूने अपना सुधार किया है। निरन्तर जागृत रहने और पूर्ण मनोयोग से समस्त कार्य करने का संकल्प लिया है यह तत्परता और आज्ञा पालन देखकर मुझे बहुत खुशी हो रही है। इस दुनिया में जीर्ण शीर्ण रूढ़ियों का खण्डन करना है दुनियां को नया मार्ग दिखलाना तेरी यह शिष्य एक ... उद्देश्य ... है उस महान उद्देश्य के लिए निरन्तर जागरूक रहने की आवश्यकता है। जागृत ... मन ही ... ज्योति भारत में जगमगा ... मेरा आशीर्वाद है कि भारत का एक अमर व्यक्ति बनेगा अच्छा आज हम कक्षा नहीं पढ़ायेंगे. हम कक्षा छोड़ते हैं।

[गुरुदेव का प्रस्थान]

विद्यार्थी—(व्यंग्यपूर्वक स्वर में) दयानन्द आज तो खूब मार पड़ी न ! कमर पर डण्डों के निशान उभर आये हैं।

दयानन्द—मूर्खो, यह तो गुरु का पावन प्रसाद है इसने मेरी जिन्दगी में नया दिशा बोध दिया है। विकास, सफलता शान्ति और समृद्धि मनोयोगपूर्वक कर्म से ही मिलती है।

[सब जाते हैं]

पुस्तक समीक्षा

"बाल जगत्"

यह एक हिन्दी मासिक पत्रिका श्री कुबेरप्रसाद जी गुप्त द्वारा नया प्रयास है। बच्चों को नवीनतम ढंग से एक सच्चा नागरिक बनाने का साधन है। प्राचीन तथा अर्वाचीन ऐतिहासिक गाथाओं द्वारा बच्चों को प्रौढ़ नागरिक बनाने की अद्भुत योजना है। इसमें छपी कवितायें कहानियां, ग्रामीण तथा नागरिक जीवन के सच्चे दृष्टान्त और घटनायें कोमल बच्चों में कौतूहल पैदा करती हैं। बालजगत के पढ़ने से बच्चों को ईश्वर भक्ति माता पिता आचार्यों के प्रति श्रद्धा व आपस में प्रेम तथा छोटे बालकों में स्नेह पैदा होता है।

निस्सन्देह श्री गुप्त जी का प्रयास सराहनीय है। छपाई आदि सुन्दर व आकर्षक है।

—शिवप्रसाद 'विशारद'

आर्य्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल-६०

रा० पौष २४ शक १८८९ पौष शु०१४
(दिनांक १४ जनवरी सन् १९६८)

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

Registered No.L. 60
पता—'आर्य्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष : २५९९३ तार : "आर्यमित्र"

विदेशी मिशनरियों का यह साहस

जितना साहस विदेशी ईसाई मिशनरियों का अब बढ गया है, वह भारतीय मतों के लिए बड़ा भारी खतरा तो है ही पर हमारे राष्ट्रीय सम्मान पर भी बड़ी भारी चोट है। अंग्रेज सरकार के होते हुए तो इनका इतना साहस न बढा पर अपनी सरकार ने इन विदेशियो पर कोई रोक नहीं लगाई तथा न ही करोड़ों रुपये का धन जो यह लोग विदेशो से ला-ला कर निर्धन भारतीय जनता को बरगलाने के लिये लगा रहे हैं उस पर कोई रुकावट है।

गत ग्यारह नवम्बर को प्रात कालेज काय के प्रारम्भ होने के पश्चात मेरे पास एक विद्यार्थी ने आकर बताया कि हमारे कालेज के गेट पर विदेशी ईसाई मिशनरी जोर जोर से व्याख्यान दे रहे हैं। मैंने उसी समय कार्यालय के दो आदमियों को भेजा कि देखें, उन्होंने बहुत से विद्यार्थी इकट्ठ करके सडक रोक रखी है तथा ईसाई मत का प्रचार कर रहे हैं तथा कई विद्यार्थियो ने जब उनको कहा कि यह आयसमाज का कालेज है तब उन्हाने आयसमा के बारे मे आपत्तिजनक बातें कहीं तथा मेरी भी खिल्ली उडाई। यह देखकर पादरियो ने कालेज क मुख्य द्वार पर ऊधम मचाया हुआ ह मै भागा गया, देखा कि पाच विदेशी पादरी तथा उनकी कार सडक के बीच खडी थी त ा विद्यार्थियो को नोकरी के प्रलोभन चच आने तथा बाईबल पढ़ने की बातें चालू थीं। मैंने उ हे हाथ जोड कर प्राथना की कि कालेज के सामने कभी कोई भारतीय मत वाले ऐसे नहीं आ सकते तो आप चले जावें, मुझ बड़ी हैरानी हुई कि वह अकड पड और कहा कि सडक पर ही खड हम प्रचार करते रहेंगे। विद्यार्थियों मे उनकी धमकियों से बहुत रोष फैल गया। तब मैंने क्लर्क को कहा कि कार का नम्बर नोट करके पुलिस को सूचना दे। इस पर वे कार मे बैठ कर भाग गए पर मैंने पुलिस के, हरयाणा गृह सचिव के व केन्द्र के गृह सचिव को तथा आर्यसमाजी लोक सभा सदस्य श्री रामगोपाल शालवाले, श्री ओम्प्रकाश जी, तथा श्री प० प्रकाशवीर जी शास्त्री को लिखा, पुलिस के कहने पर पादरियों के लीडर मेरे पास आए तथा मौखिक क्षमा मागी पर मै नहीं माना तब उन्होने लिखकर क्षमा मागी।

यह घटना विदेशियों की सरमस्तियों का दिग्दर्शन है आज तक आर्यसमाजी कार्यकर्ताओं ने भारत के किसी ईसाई मत वाले कालेज स्कूल के सामने इतना साहस नहीं किया बल्कि भारतीय धर्म प्रचारकों ने कभी किसी भी स्कूल, कालेज के सामने इस प्रकार ईसाई प्रचार का यह साहस हमारी धर्म निरपेक्षता का दुरुपयोग है। यह विदेशी मिशनरी तथा विदेशी धन हमारे राष्ट्र जीवन को समाप्त करने वाला है, अगर सरकार चुप है तो जनता ही सोचे कि क्या होगा ?

—प्रिंसिपल भगवानदास
डी० ए० वी० कालेज, अम्बालानगर

परिवार नियोजन-
एक उद्बोधन

हमारा देश आबादी के ख्याल से विश्व का दूसरा सबसे बडा देश है लेकिन जितनी कम जमीन पर इस देश के पचास करोड लोग निवास करते है, दुनिया मे शायद ही इतनी कम जमीन पर इतने अधिक लोग रहते हों। दुनिया मे आस्ट्रेलिया कनाडा ऐसे देश भी हैं जहा निवासियो के मुकाबले जमीन बहुत ज्यादा है इसलिये उनके सामने यह प्रश्न नहीं है कि वे कसे रहग या कसे खायेंगे पियेंगे। वे बड़ ही सुख मे रहते हैं और अपने खाने के अलावा अनाज और पैसा दूसरे देशो को भी देते ह।

कभी हमारे देश के लोग भी ऐसा ही करते थे। हमारे धन से और हमारे अन्न से आस पास के कितने ही देशों की परवरिश होती थी। य सभी देश एक जमाने मे हमारे मुह की तरफ देखते थे।

सम्राट अकबर के जमाने मे सुना जाता है कि इस देश की आबादी केवल १० करोड थी। और भी पहले इस देश मे और भी कम लोग निवास करते थे। थोड़े से लोगो के लिए यहा जमीन अधिक पडती थी, चारों ओर जगल ही जगल थे और किसी के लिए कोई रोक थाम नहीं थी। "सबै भूमि गोपाल की" कहकर निश्चित भाव से लोग कहते थे कि यहा तो दूध और दही की नदिया बहती थीं।

अब उतनी ही जमीन पर बल्कि यो कहिए कि सभी जगल, झाडी, ऊसर और परती जमीन जोत लेने के कारण उससे कहीं अधिक जमीन पर पचास करोड लोग निवास करते हे। इस जमीन पर थोड़ से लोगो को छोटे छोटे खेत मिले पर बहुत से लोग ऐसे भी हे जिनके पास खेत नहीं ह। गोपाल की भूमि गोपाल के लाखो करोडो पुत्रो ने टुकड टुकड करके आपस म बाट ली है और फिर भी अन्न की कमी है और नित्य पचास हजार नये लडके इस धरती पर चले आ रहे है, उन्हे खाना चाहिये।

देश मे भी हमारा प्रदेश सबसे बडा है और हमारे प्रदेश मे भी कुछ जिले ऐसे है जहा एक वर्ग मील मे एक हजार या इससे भी अधिक आदमी रहते हैं। यह तय है कि उत्पादन कितना ही बढ़ाया जाय, इतने अधिक लोगों के लिये यहा खाना पूरा नहीं पडेगा। नतीजा यही है कि प्रदेश के बाहर लाखों लोग दो जून की रोटी जुटाने के लिये दर-दर की ठोकरें खा रहे हैं और जो घर पर भी बचे हैं वे भी कम कष्ट नहीं भोग रहे हैं।

आपने कभी सोचा है कि आपकी थाली की रोटी दिन पर दिन छोटी होती जा रही है तो उसका कारण क्या है ? सामान के लिये 'क्यू' लगाने में सुख तो नहीं मिलता, जहाँ जाइये भीड़ भीड़ जहाँ जाइये दिक्कत, स्कूल में भर्ती नहीं, रेल में जगह नहीं, रास्ते भीड़ से खचाखच भरे, आखिर इतने सारे लोगों का होगा क्या ? आपने कभी अब तक नहीं सोचा है ? आपने नहीं सोचा कि उत्तर प्रदेश में प्रति घटा ४०० बच्चे जन्म ले रहे हैं। उन्हें खाना, कपड़ा, दवा, शिक्षा देनी होगी। अच्छी दवाइयाँ, अच्छी स्वास्थ्य सेवाए प्राप्त हो गयी हैं। बच्चे पैदा होते हैं तो जीते भी हैं, भगवान करें जियें, लेकिन जीना ही तो जरूरी नहीं है। अगर जीना है तो सम्मान के साथ जीना चाहिए। जीवन की दौड मे हर जीने वाले को अवसर मिलना चाहिए, उसे हर सुविधा पाने का अधिकार है लेकिन यह अधिकार उन्हे देता कौन है ? जिसके घर में एक बच्चा है उस घर मे उसे सारी सुविधायें प्राप्त हैं। जिस घर में बच्चे बढ़ गये, सुविधायें खत्म हो गयीं।

पैसा बचाकर रखना अच्छी चीज है, आप रखिये, लेकिन आप बचा सकें तब तो। बचा सकने की शर्तें हैं कि खर्च पर आपका बश हो। लेकिन हर नया लडका जो आपकी गोद मे आता है आपके परिवार के सतुलित बजट को तोडता हुआ ही आपके पास आता है भगवान का वरदान है, वह तो ठीक है, लेकिन असमय मे प्राप्त वरदान अभिशाप बन जाता है।

बचत एक अच्छी चीज है लेकिन बचत के लिए जरूरी है कि आप परिवार को सतुलित सीमित और नियोजित रखें। आपकी विपत्ति की जिम्मेदारी न तो अन्न की राज्य पर है और न ही स्वतन्त्र भारत पर है न पिछले बीस वर्षो के शासन पर ही आपकी जिम्मेदारी अगर है तो आपके ऊपर ही है और उसे आपको ही झेलना भी होगा।

आप तय कर लीजिए कि आप परिवार को सीमित रखने के सिद्धान्तों का पालन करेंगे। अगर आपको दो या तीन बच्चे हो चुके हैं तो आप ब्रह्मचर्य का व्रत धारण करें। अपने जीवन को पूर्ण नियमित बनाने का व्रत लें और शेष आयु सयम के साथ व्यतीत कर अपनी आन्तरिक शक्तियों को विकसित कर अपने देश की, अपने समाज की व अपने परिवार की और अपनी निजी उन्नति करने मे सलग्न हो जावें।

स्वत्वाधिकारिणी आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के लिये नवचालवीन आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग से कृष्णगोपाल शर्मा द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।

ब्रह्म-ज्योति का ज्योति-मार्ग

(एक पथ)

धर्म का स्वरूप

प्यारे आर्य किशोर !

बहुधा व्याख्यानो मे, पुस्तकों मे धर्मग्रन्थों मे उपदेश पूर्ण वाक्य मिलते हैं। यथा –

"धर्मोहिनेषा अधिकोविशेषो"।
धर्मेणहीना पशुभि समाना ॥
धर्मएवहतोहन्ति धर्मोरक्षतिरक्षित ।
मा नोधर्मोंहतोऽवधीत् ॥

ऐसे वाक्य सुनोगे, पढ़ोगे तथा याद करोगे कि मानव और पशु में सिर्फ धर्म का ही भेद है। धर्म हीन आदमी और पशु एक जैसे ही हैं। धर्म की रक्षा करो तो धर्म तुम्हारी रक्षा करेगा मरा हुआ धर्म तुमको मार देगा।

प्रश्न उपस्थित होना है कि क्या इनने वाक्यो के रटने या दोहराने से धर्म का स्वरूप जान गये ? नहीं समझ सकोगे। कारण यह है कि धर्म का तत्व भगवत् चित्त वाले आस्तिक बुद्धि वाले कामना रहित सतो गुणी पुरुष, प्रलोभन के मूल कारण धन मे अरुचि रखने वाले ही उसे समझ पाते हैं।

भगवद् गीता मे 'ददामि बुद्धियोग येन मा उपयान्ति ते'।

भगवान् कृपा से धर्म बुद्धि प्राप्त होती है अन्यथा नहीं।
धर्मस्यत्वरिता गति
धर्मस्य तत्व निहित गुहायाम्

'गुहा' शब्द का अर्थ भी 'सात्विक बुद्धि या सतोगुणी बुद्धि है'। [illegible] तत् सत् अर्थात् ॐकार उपदेश करते हैं तत (वह परमेश्वर) सत् वास्तविक सच्चाई है। केवल मात्र वही सतोगुण का आदि [illegible] हैं। उसका स्वरूप ही सत्य है। हे किशोर ! अकेले सत्य का दामन पकड सद्गुण क्रमश तुम्हारे देह के अन्दर घर कर लेंगे।

झूठ या दामन पकडने से सारे अवगुण
क्रमश तुम्हारे शरीर मे डेरा जमा लगे।

इन दोनो वाक्यो को बार बार पढ़ो। फिर चुनाव करो कि क्या तुम सद् गुणों के गाहक हो या बुराइयों के ? यह किशोरावस्था ही चुनने की आयु है। मुझे आशा है कि तुम अपने लिये सद्गुण ही चुनोगे और सत्य का मार्ग अपनाओगे यही देवता पथ या देवयान का मार्ग है।

आस्तिक बुद्धि—ईश्वर के गुणों का चिन्तन–योगदर्शन का पढना सन्ध्या अग्निहोम करना स्वाध्याय नित्य करना मन तथा चित्त, बुद्धि को दैवी विचारो से भर देते हैं। भूख जगाओगे तो धर्म की भूख जगेगी रुचि बढ़ेगी। ज्ञान विज्ञान मे रुचि बढेगी। जब तक भूख नहीं [illegible] धर्म की खोज क्यो करोगे ?

तुम कह सकते हो कि हम अपनी गिनती पशुओ मे नहीं करना चाहते। हम निश्चय पूर्वक मनीषी तथा सच्चे मानव बनना है।

[illegible] अपने जीवन [illegible] डालना होगा,

इसके अलावा हम सुनते हैं 'एक एव सुहृद्धर्मोनिधनेप्यनुयातिय' अर्थात् धर्म ही एक ऐसा मित्र है जो मरण के बाद भी साथ जाता है। स्वाभाविक तौर पर प्रश्न उठता कि वह 'धर्म क्या है ?

कथा है धर्मराज युधिष्ठिर के साथ 'धर्म कुत्ते का रूपधारण करके गया था। स्वर्ग द्वार पर ज[illegible] से कहा गया कि यह 'कुत्ता' साथ नहीं जा सकेगा तो धर्मराज [युधि]ष्ठिर ने स्वर्ग मे जाने से इंकार कर दिया। मानव तेरे अन्दर यह 'कुत्ता' जाग जावे और 'धर्म' को दृढ करे। युधिष्ठिर सत्यवादी प्रसिद्ध थे। कथा है कि उनके रथ का पहिया इसी सत्य के बल पर जमीन से चार अगुल ऊपर रहता था। भाव यह कि सत्य के बल पर अति वेग से घूमता था।

इसका सारांश या तत्वांश यह हुआ कि 'सत्य' का नाम धर्म है।

न सत्यात्परो धर्मः

वाक्य भी यही कहता है कि सत्य से बढ़कर कोई 'धर्म, नहीं।

श्रद्धया सत्यमाप्यते

का भी अर्थ यही है कि मनुष्य 'श्रत्' सत्य की श्रृंखला या जंजीर पकड़ते २ सत्य को पा जाता है।

लोक व्यवहार में भी हम देखते हैं कि ऊँचे मन्जिल की पौडियो में रस्सी या सगल (लोहे की श्रृंखला या जंजीर) बधी रहती है। उसे पकड़ कर चढ़ने वाले ऊपर पहुचते हैं।

सत्ये नोन्त भिता भूमिः

पृथ्वी को सत्य ने ही धारण किया या ऊपर उठाया हुआ है।

सदाधार पृथ्वीं

उस परमेश्वर ने पृथिवी को धारण किया हुआ है

जिसका भावार्थ यह हुआ कि परमेश्वर का नाम ही 'धर्म' है—उसका नाम ही सत्य है 'तस्मिन विज्ञाते सर्वमिद विज्ञात भवति' अकेले परमेश्वर को पकडो सारा विश्व तुम्हारी पकड मे आ जावेगा। इस लेख में पहले भी सुझाया गया है कि अकेले सत्य का दामन पकडने से सारे सद्गुण इस देह मे मन में बुद्धि में आत्मा में आकर घर बना लेते हैं। 'ऊर्ध्व गच्छन्ति सात्विका' उन्नति के मार्ग पर सत्यशील या सात्विक पुरुष ही चढ़ने पाते हैं। 'त्रिपाद स्यामृत दिवि' ऊपर द्युलोक मे ३/४ ज्ञान विज्ञान का भण्डार है इसी का नाम परमेश्वर है। श्रीमद्भगवद्गीता कहती है कि सर्वे प्रवृत्ति तु सर्व द्वारेषु प्रकाश उपजायते सतोगुण के बढ जाने पर सभी दरवाजो मे रोशनी जग जाती है। द्वारों या दरवाजों से भाव हैं 'आँख नाक कान आदि सभी ज्ञान क्रियाओ में प्रकाश बढ़ जाता है। मन, चित्त, बुद्धि, आत्मा सब सतोगुण या सत्य के प्रकाश से जगमगा उठते हैं। यह ही तो भगवत्प्रकाश है। हे किशोर ! जब तुम इस अवस्था मे उन्नति करते करते पहुच जावोगे तो समझना कि धर्म मार्ग पर हो। इस प्रकार सत्य और धर्म का एकार्थ मे एक भाव मे ग्रहण करने से भी धर्म अक्षुण्ण रहेगा।

सब द्वारों से अभिप्राय है कि मन, बुद्धि चित्त, अन्त करण, जीवात्मा सतोगुण के कारण प्रकाशित अवस्था मे रहते है। अर्थात् सभी अपने अपने धर्म पर आरूढ हो जाते हैं। उन पर किसी प्रकार के मल का आवरण नहीं रहता तभी जीवात्मा उस परमात्मा को निकट से देख पाता है और आनन्द मगन हो जाता है। मृत्यु के समय निर्मल बुद्धि, निर्मल मन, निर्मल चित्त, निर्मल अन्त करण निर्मल जीवात्मा के साथ शरीर को छोडोगे, तो अगले जन्म मे भी दैवी सम्पत् साथ ले जा सकोगे।

मानव देह का महत्व

परमात्मा ने जब सृष्टि बनाई तो इस रचना को देखकर देव बड़े खुश हुए। उन्होने ने कहा कि प्रभो ! हमारे निवास के लिये भी घर बनाइये प्रभु ने मानव शरीर बनाकर पूछा कि क्या यह पसद है ? सबने कहा कि अत्यन्त सुन्दर है।

ईश्वर ने कहा कि अपने अपने स्थान स्थानो मे बस जाओ। अग्नि 'वाणी' बनकर शरीर मे प्रविष्ट हुई। वायु प्राण बनकर नासिका मे प्रविष्ट हुई। सूर्य आंखो मे प्रकाश लेकर प्रविष्ट हुआ। ऐतरेयोपनिषद मे यह पाठ है।

हे किशोर !

यह मानव देह देवताओ ने अपने निवास के लिए चुनी है। इस दुर्लभ [illegible] गुजर कर आत्म पुर [illegible]

यदि इसी प्रकार हर द्वार निर्मल मन, निर्मल बुद्धि, निर्मल अन्त करण लेकर निर्मल आत्मा प्रभु के दरबार मे पहुचेगा तो—वह 'ब्रह्मैव भवति"

स्वय भी ब्रह्म रूप हो जावेगा। पानी की भांति पानी मे मिल एक रूप हो जावेगा।

धर्म 'वृषा' कहलाता है। अत्यन्त बली है। तमोगुण द्वारा इसे मैला करके आत्महत्या करने वाले व्यक्ति 'मृत्यु मुख वशमापद्यते मे' बार-बार जन्म-मरण के चक्कर मे आते हैं

वास्तव मे भी जितने क्षण प्रभु चिन्तन मे लगाओगे उतने ही क्षण 'धर्म' करोगे। प्रभु ही धर्म है। इस आयु मे 'धर्म' का इतना स्वरूप ही ग्रहण कर लो तो 'मोक्ष्यसे ऽ अशुभात्' अशुभ से बचे रहोगे।

—योगेन्द्रपाल

वैदिक प्रार्थना

ओ३म् अग्निर्होता कविक्रतुः सत्यश्चित्र श्रवस्तमः।
देवो देवेभिरा गमत् ॥५॥ ऋ० १-१-१-५

व्याख्या—हे सर्वदृक् ! सबको देखने वाले "क्रतुः" सब जगत् के जनक "सत्यः" अविनाशी, अर्थात् कभी जिनका नाश नहीं होता "चित्रश्रवस्तमः" आश्चर्यश्रवणादि आश्चर्यगुण आश्चर्य शक्ति आश्चर्यरूपवान् और अत्यन्त उत्तम आप हो जिन आपके तुल्य वा आपसे बड़ा कोई नहीं है, हे जगदीश ! "देवेभिः दिव्यगुणो के सह वर्तमान हमारे हृदय में आप प्रकट हो सब जगत् में भी प्रकाशित हो जिससे हम और हमारा राज्य दिव्यगुणयुक्त हो वह राज्य आपका ही है हम तो केवल आपके पुत्र तथा भृत्यवत् हैं।

लखनऊ रविवार २१ जनवरी १९६८, दयानन्दाब्द १४३ सृष्टिसम्वत् १,९७,२९४९,०६८

निःशुल्क शिक्षा के प्रवर्तक स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

●

आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचारो को सत्य अर्थों में यदि किसी ने हृदयङ्गम कर क्रान्तिकारी विचारक बनकर सैद्धान्तिक प्रचार किया था—तो वह थे स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती, जिन्होने अपने जीवन के बहुत बड़े भाग को ऋषि के बाद जनता जनार्दन की सेवा मे लगा दिया।

पर हा दुर्दैव ....

तुझे किसी ने गोली से नही मारा, जहर का प्याला नहीं पिलाया, पेट मे छुरा नहीं भोका ? तूने अपनी अमृत वाणी से मौखिक और लिखित दोनो रूप से सुलझे विचारो को देकर भारत के विद्वानो को ललकारा, तेरी वाणी मे ओज था, लेखनी मे तर्कपूर्ण प्रतिभा थी जिसे पढ़ व सुनकर विधर्मी भी आप से शास्त्रार्थ करने मे कतराते थे।

"महान् उद्देश्य को लेकर मानवमात्र का उद्घाटन नवयुवकों मे भारतीय संस्कृति के मूलस्रोत वेदो का उन पर प्रभाव हो" अतः गुरुकुल शिक्षा-दीक्षा से दीक्षित करने के लिये अनेक गुरुकुलों की स्थापना की। जहाँ से निकले स्नातक राष्ट्र मे वेद की वीणा बजाकर ऋषि ऋण उतारने को कृत संकल्प हो गये।

आपकी तर्कपूर्ण शैली का प्रभाव आज भी बड़े-बड़े विद्वान् मानते हैं। युक्तियुक्त प्रश्नों का उत्तर सुनकर अन्य मतावलम्बी भी निरुत्तर हो जाते थे।

स्वामिन् ! तेरी वाणी में क्या बात थी या तेरे भाग्य में ही कुछ कमी थी—कि तुझे अमरता प्रदान करने के लिये विष की प्याली नहीं पिलाई, और न तू अमर बन सका। हां तपस्विन् ! अपनी लेखनी से दर्शनों, उपनिषदों, अपने लेखों में दर्शनानन्द ग्रन्थ संग्रह-भाष्य तथा लेख लिखकर अवश्य अमरता प्राप्त की है। जिनको पढ़कर आज भी उपदेशक विद्वान् होकर प्रचार मे रत है। धनिको निराश्रितों को आश्रय देकर गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली का उद्धार किया। तूने अपने पीछे एक ऐसी प्रक्रिया छोड़ी है जो तेरे नाम को अजर-अमर बनाये रखेगे वह है शिक्षा क्षेत्र गुरुकुल।

कौन कहता है तुम्हे लोग भूल जायेंगे—जब तक वैदिक मर्यादा विद्यमान रहेगी। गुरुकुलो की मर्यादा भी अक्षुण्ण रहेगी तो ऋषि के साथ आपका नाम भी अमर रहेगा।

तेरे वरद्-पुत्र तेरे स्नातक तेरा जय-जयकार करते है।

दर्शनानन्द तू और तेरा बताया मार्ग महान् है। बलिदान न होकर तू बलिदानो की पंक्ति में अग्रगण्य रहेगा।

गणतन्त्र दिवस पर—

"देश में फैलते हुए भ्रष्टाचार का उत्तरदायी कौन ?" यह विषय विवादास्पद है पर प्रश्न है कि अब तक हम कहते थे कि "यथा राजा तथा प्रजा" अर्थात् प्रजा राजा का अनुसरण करती है। हमारे देश मे राजा नाम का कोई राज्य अधिकारी नहीं है। परन्तु साधन किन्हीं व्यक्तियो द्वारा किसी पार्टी विशेष के हाथो मे है। अतः शासको के अनुरूप ही प्रजा का भी आचरण होता है।

पर देखने मे आया है—भ्रष्टाचार बढ़ाने में जनता ही कारण है गौणतया राज्य भी। "यथा राजा तथा प्रजा" की कहावत पुरानी पड़ गई है। जब राज्यतन्त्र था तब सत्य था अब लोकतन्त्र हो जाने से जनता ही विधान सभा के विधायकों को चुनती है। फिर उनके शासन में जब भ्रष्टाचार पनपे तो उसका और उनके चुनने वाली जनता का ही दोष माना जायगा। पर आचार्य नरदेव जी शास्त्री के शब्दों में प्रजातन्त्र में मूर्खों का ही राज्य होता है। पढ़े, अनपढ़े सभी को मताधिकार प्राप्त हैं। अंग्रेज जो शासन करता था वह प्रजातन्त्र को एकतन्त्र के साथ चलाता था वैसा ही अधिकार प्रजा को देता था—पर सदाचारी न तब थे और न अब। भ्रष्टाचार का बोलबाला सदा ही रहा है कारण यह है कि स्वार्थतन्त्र पनपाया जा रहा है। पहले जनता भीरु थी पाप करके भी कह नहीं पाती थी अब भ्रष्टाचार करके सरेआम खड़ा होकर चिल्लाता है कि बड़ा पाप हो रहा है। कौन करता है यह एक प्रश्न है ?

शासनतन्त्र आज चिल्ला-चिल्लाकर कहता है कि भ्रष्टाचार रहा है। धार्मिक प्रवृत्ति के लोग कहते है हम धर्म निरपेक्ष से क्या बनेगा। शासनतन्त्र कहता है कि अब धर्मतन्त्र का क्या होगा। इस भ्रष्टाचार की जड़ को हिलाने के लिये आर्य समाज रूपी डाक्टर विद्यमान है वह इस बीमारी को दूर करेगा।

आर्यसमाज ने देश की स्वाधीनता मे जो कार्य किया है उसी का यह सुखद फल है जिसे शासन मे बैठे शासक और शासित वर्ग दोनो ही चखकर आनन्द प्राप्त कर रहे है। आज आवश्यकता है कि स्वराज्य को सुस्थिर बनाने व सुराज्य करने के लिये २६ जनवरी आत्मचिन्तन का दिन है कि हम कहा हैं समस्त जनो के विचारो मे परिवर्तन की आवश्यकता है। स्थिरता के लिये सदाचारी शासनतन्त्र बने उसके लिये जनता के विचारो का निर्माण करना ही होगा। इसके बिना सभी प्रयत्न निष्फल ही रहेंगे।

'आर्यमित्र' के प्रेमी पाठकों से

आर्य समाज प्रचार के लिये जहाँ मौखिक भाषणो द्वारा जन जागरण अपेक्षित है उसी प्रकार लेखन शैली के द्वारा साहित्यिक पुस्तक रचना से भी ज्ञान वृद्धि होती है और इसी का एक अंग जो कि महत्व पूर्ण "समाचार-पत्र, से लेखो द्वारा पत्र की उपयोगिता से अपेक्षित है। मुझे आप से इसी आपके [illegible] के लिये कहना है।

आधुनिक युग मे पत्रों की उपयोगिता का महत्व किसी से छिपा नहीं है। परन्तु आश्चर्य और लज्जा के साथ स्वीकार करना पड़ता है। आर्यसमाज जैसी सगठित व सम्पन्न संस्था के पास अपने पत्र की कितनी उपयोगिता है। आप लोग अनुभव करते हो या नहीं, पर मै अनुभव से कहता हू कि आप लोगों के होते हुए आप के पत्र की दयनीय दशा है। पत्र की आलोचना का समय नहीं, विषय है आपकी आचार संहिता का, कि हम आर्य लोग कहाँ हैं क्या कर रहे हैं ?

असफलता सिर पर सवार हो, जब कि आर्य आशावान रहता है, फिर इस आशा मे निराशा की किरणे क्यो फूट रही है। आर्यो सावधान—

आर्य मित्र आपका पुराना मित्र है जो कि भारत मे सबसे प्राचीन है। तथा आर्य समाज की गतिविधियो का एक मात्र प्रचार-प्रसार का एक प्रगतिशील मुख्य पत्र है। जिससे राष्ट्र की सामाजिक राजनैतिक धार्मिक, नैतिक सांस्कृतिक सभी पहलुओ पर विचार विनिमय मिलता है। आशावान आर्यों आप साधन सम्पन्न हैं अपना प्रेस है सभी साधन है दूसरे शब्दो मे कहना चाहिये कि उन्नति करने के पर्याप्त साधन है और सच्चा प्रयत्न करने पर यह भारत का एक प्रमुख हिन्दी साप्ताहिक बनकर वैदिक भावनाओ का प्रसार अपने साधनो से और आर्य समाज की सगठित शक्ति का प्रतीक बन सकता है।

आर्यभाइयो—

आप से एक आशा और विश्वास लेकर ही इन पंक्तियो को लिखने लगा हू। ऐसे कौन जागरूक व्यक्ति है जो कि ऋषि के लक्ष्य की पूर्ति न हो, अज्ञान अन्धकार-अन्याय-अनाचार के गढ को ध्वस्त न किया जाय। चारो ओर फैली कुरीतियो को मिटाया जाय, कराहती मानवता को दानवता के चगुल से सुरक्षा की जाय। उन सभी से मैं सहयोग की प्रार्थना कर रहा हू।

महान् ऋषि के महान् लक्ष्य की पूर्ति के लिये आप का सहयोग अपेक्षित है—मुझे आशा है—आर्यमित्र के पाठक अपना आशीर्वाद देंगे और अपने नवीन सुझाओं से इस पत्र मे परिवर्तन परिवर्धन कराकर इसकी उन्नति मे भाग लेंगे आप सभी की चाह से आर्यमित्र आगे बढेगा।

आप अपनी सम्मति-सुधार के लिये भेजते रहे हम आपके विचारो का आदर करते हुये त्रुटियों को दूर करने का प्रयत्न करेंगे। जो अच्छा लगे उसका भी अवलोकन कर वह भी बताइये इससे प्रोत्साहन मिलेगा। आर्यमित्र में सुधार की आवश्यकता है। हमने इसके कलेवर को परिवर्तित करने का सकल्प लिया है संकल्प दृढ़ है अवश्य ही आप लोगों के शुभाशीषों से सफल होगा।

आर्यमित्र की सूचना

महात्मा नारायण स्वामी जी की स्मृति में आर्यमित्र का एक विशेषांक दिनांक ४-२-६८ को प्रकाशित किया जावेगा। अतएव दिनांक २८-१-६८ का अंक बंद रहेगा।

कृपया पाठकगण तथा समाचार पत्र विक्रेता नोट करले।

—सच्चिदानंद शास्त्री
सभा मन्त्री

...की सूचनाएँ

आवश्यक सूचना

प्रदेशान्तर्गत समस्त आर्य उप प्रति-
सभाओं से अनुरोध है कि
अपने जनपद के समस्त संसद,
नसभा तथा विधान परिषदों के
सदस्यों की सूची, जो आर्यसमाज
यमित सदस्य हैं व जो आर्यसमाज
से सहानुभूति रखते हों, बनाकर
कार्यालय को अतिशीघ्र भेज दें।
यह सूची सार्वदेशिक सभा को
है अतएव अविलम्ब कार्यवाही
है।

—सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा मन्त्री

त्रुटियों ने ही आपका ध्यान इस
ी ओर से खींच लिया है। जिसे
र आपको समीप से लाना है।

...कर्तव्य में लग जाओ—

...देश में महान् क्रान्ति की आवश्य-
है और वह ऐसी क्रान्ति, रंगीन
...ों को न बदलकर मस्तिष्कों को
...तित करने वाली विचारधारा का
...र्यसमाज एक ऐसी संस्था है
...द्वारा शोषित व पीड़ित मानव के
...रों मे परिवर्तन किया जाय।
और समता का प्रसार, जीवन
...य को सही दिशा देना, क्रान्ति
...ही लक्ष्य हो!
...मारे विचार से, ऋषि ने आर्य
...की स्थापना इसी क्रान्ति का
...न करने के लिये ही की थी।
मानव को मुक्ति दिलाना ही इस
यज्ञ में आर्यो आपको आहुति देनी
...राशा की तरङ्गों पर झूलते हुए
समूह के हृदयों में आशा की
जगानी है। आज व्यवस्थाओं मे
...रिवर्तनों की आवश्यकता है। इस
...कता को कौन पूर्ण करे? यह
...ा प्रश्न है।
...के उत्तर के ... सच्चे वैदिक
... के प्रसार के चाहने वाले
...र ... से मात्र निवेदन है कि
...मान ... एक संगठन ही नहीं
एक महान् आन्दोलन है जो वर्त
... ... के
...पर आने वाले ... का निर्माण
चाहता है।
... और अपने ...
...वालों को ... और चेतना
...ने मे आर्य... को अधिक
के हाथों मे पहुंचाने का ...
। जिससे ऋषि का उद्देश्य पूरा

●

अन्तरङ्ग सभा की सूचना

सभा के समस्त अन्तरंग सदस्यों को सूचित किया जाता है कि आगामी अन्तरंग सभा की बैठक गुरुकुल विश्वविद्यालय बृन्दावन में दिनांक ३ फरवरी को मध्याह्न २ से ५ बजे तक होना निश्चित् हुआ है।

सदस्यों को विस्तृत सूचना शीघ्र ही अलग से भी भेजी जा रही है।

बृहदधिवेशन के लिए आमंत्रण

प्रदेशान्तर्गत समस्त समाजों को सूचित किया जाता है कि जो समाजे सभा का आगामी बृहदधिवेशन अपने यहाँ आयोजित कराना चाहें वह कृपया अपने निमन्त्रण-पत्र अपनी अंतरंग सभा से स्वीकृत कराकर हमें ३० जनवरी तक अवश्य भेज दें।

—सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा मन्त्री

हमारे गण राज्य का प्रतीक!

आवश्यक सूचना

सभा के समस्त वैतनिक उपदेशकों एव प्रचारक महानुभावों को सूचित किया जा रहा है कि सभा का वर्ष ३१ दिसम्बर १९६७ को समाप्त हो चुका है, अतएव जमा खर्च करने हेतु (जिन मासों की बिल· डायरी तथा रसीदें न भेजी हो) अविलम्ब भेजने का कष्ट करें ताकि हिसाब आदि स्पष्ट और सही रूप से बनाये जा सकें।

प्रोग्राम मास फरवरी

श्री सत्यमित्र शास्त्री—३ से १४ वेद पारायण यज्ञ गोंडा।

श्री केशवदेव शास्त्री–३ से १४ वेदपारायण यज्ञ गोंडा, १६ से १९ पाली (हरदोई)।

श्री विश्ववर्धन वेदालंकार—१० से १३ बस्ती, १६ से १९ पाली (हरदोई)।

श्री रामस्वरूप आर्यमुसाफिर—२४ से २६ सौरिख

श्री गजराजसिंह–१० से १३ बस्ती, २३ से २६ सीतापुर

श्री धर्मराजसिंह–१ से २८ सीतापुर

श्री धर्मदत्त आनन्द–१ से ४ पडरौना

श्री प्रकाशवीर—१ से ४ पडरौना, १६ से १९ पाली (हरदोई)

श्री ...सिंह—२·३ विद्यालय, २६ से २८ मनियर

श्री ...कृष्ण—११ से २८ तकिया पारा दुर्ग (म० प्र०)

—सच्चिदानन्द शास्त्री एम० ए०
सभा मन्त्री

सूचना

समस्त सम्बन्धित आर्य बन्धुओं से निवेदन है कि आय प्रतिनिधि सभा की कैशबुक ३१-१-६८ तक खुली रहेगी अतः निवेदन है कि हिसाब तुरन्त कार्यालय मे भेज दें अन्यथा हिसाब सन् ६८ में ही लिखा जा सकेगा।

—देवेन्द्र आर्य कोषाध्यक्ष सभा

आवश्यक सूचना

उत्तर प्रदेशों की समस्त आर्यसमाजों की भूसम्पत्ति का पूर्ण विवरण एकत्रित करने के निमित्त समस्त जिलों के प्रमुख कार्य्यकर्त्ताओं के पास सभा द्वारा प्रकाशित भू-सम्पत्ति चित्र (चित्र सं० ९) अन्तरंग सभा के निश्चयानुसार भेजे जा रहे हैं। ताकि सभा कार्यालय के भू-सम्पत्ति विभाग में पूर्ण जानकारी उपलब्ध रहे और सभा की सम्पत्ति की सुरक्षा के लिये आवश्यक कार्यवाही की जा सके।

प्रदेश के जिन कार्य्य कर्त्ताओं के पास ये चित्र भेजे जा रहे हैं, उन से निवेदन है कि वे इस महत्वपूर्ण कार्य्य मे अपना हार्दिक सहयोग दें तथा स्वयम् व अपने सहयोगियों द्वारा इन चित्रों को भरवा कर सभा कार्यालय मे तुरन्त भिजवाएं। इस सम्बन्ध से किया गया मार्ग व्यय सभा द्वारा वहन किया जायेगा।

विक्रमादित्य 'वसन्त' स० अधिष्ठाता
भू सम्पत्ति विभाग, आर्य प्रतिनिधि
सभा, उ० प्र० लखनऊ

२६ जनवरी

जन-मन-गण तेरा अभिनन्दन!

संघर्षो का व्रत तुम्हारे चारों ओर
एक अमर इतिहास सजलता का परिमल,
अमर शहीदों के स्वप्निल साकार रूप,
कोटि स्वरों के भाव गीतअर्चन अविकल,

तिलक लगा दूं आज तुम्हें श्रद्धा-चन्दन
जन-मन-गण तेरा अभिनन्दन!

नूतन आशा, नयी दिशा के परिदर्शक
नयी चेतना नव जागृति के तुम सम्बल,
शतवेशी का एक देश स्वातन्त्र्य अशेष,
भाग्य-विधाता आर्य-देश समृद्धि अचल।

नये वर्ष, नव पीढ़ी का शत शत वंदन
जन-मन-गण तेरा अभिनन्दन।

—पाण्डेय गोपाल शर्मा

आवश्यकता

सभा के भू-सम्पत्ति विभाग मे कार्य करने के लिये तथा आवश्यकतानुसार लखनऊ से बाहर जाकर विवरण एकत्रित करने के लिये एक सुयोग्य, पुरुषार्थी समाज के कार्यो से लगन रखने वाले तथा सम्पत्तियो की कानूनी जानकारी रखने वाले एक अनुभवी व्यक्ति की तुरन्त आवश्यकता है। अपनी आयु योग्यता तथा न्यूनतम वेतन की मांग सहित निम्नलिखित पते पर पत्र व्यवहार करें। आर्य समाजी व्यक्ति की नियुक्ति मे प्रमुखता दी जाएगी। पूर्ण जानकारी के लिये लिखें या मिलें।

विक्रमादित्य 'वसन्त'
स० अधिष्ठाता
भू-सम्पत्ति विभाग, आर्य प्रतिनिधि
सभा, उ० प्र० लखनऊ

आर्यसमाज का एक अध्याय—

श्री स्वा. दर्शनानन्द जी महाराज

—हरिदत्त शास्त्री एम०ए०

महाभारत की यह उक्ति कि—

"इद ब्राह्ममिद क्षात्र शापादपि शरादपि।"

नि शुल्क शिक्षा प्रणाली के जन्म-दाता यतिवर श्री स्वामी दर्शनानन्द जी के विषय मे पूरी-पूरी घटती है। एक समय था जबकि कणाद और गौतम गुरुकुलो से निकलेंगे, यह जनता आशा लगाये बैठी थी। इस आशा की पूर्ति के लिए महात्मा मुन्शीरामजी ने बाबु पार्टी की कालेज खोलने की प्रयासे असन्तुष्ट हो कर गगापार कागडी नामक स्थान मे गुरुकुल नाम का पौधा लगाया था तथा गुरुकुलों मे पढ़ने वालों पर कालेज के छात्रों की तरह फीस भी लगाई थी। इस फीस लगाने न लगाने के विवाद को लेकर घास पार्टी दो भागों में विभक्त हो गई थी। इनमे फीस के विरोध मे जिन्होने सबसे अधिक नेतृत्व किया, वे श्री स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती जी थे। आपका पूर्वाश्रम का नाम कृपाराम था। इनका जन्म जगरावा, जिला लोधियाना मे हुआ था। जब पिता ने प्रत्येक पुत्र की सम्पत्ति को अलग अलग कर दिया, तो प० कृपाराम जी अपने हिस्से का धन लेकर काशी पहुचे। वहा अध्ययन करने लगे एव पुस्तको के न मिलने पर जो कठिनाई छात्रो को उपस्थित होती थी उसे दूर करने के लिये अष्टाध्यायी और महाभाष्य छपाकर ४ आने और २ रुपये मे देने शुरू किये, गरीब छात्रो को मुफ्त भी बाट दिये। तब पूरे फक्कड होने के बाद प० कृपाराम जी ने सन्यास की दीक्षा ली। एव गरीब छात्रो की कठिनाइयो को अनुभव करते हुये नि शुल्क शिक्षा के प्रसार के लिये गुरुकुलो का प्रारम्भ किया। सब-प्रथम गुरुकुल पोठोहार चुहाभक्ता जिला रावलपिण्डी खोला। तदनन्तर फरुखाबाद मे एक पाठशाला की स्थापना की और साथ ही साथ गुरुकुल सिकन्दराबाद को जन्म दिया। फर्रुखाबाद वाली पाठ-शाला प्रतिनिधि सभा उ० प्र० ने अपने हाथो मे सभाली और वही पाठशाला सिकन्दराबाद व वृन्दावन मे विलीन हो गई। इसके बाद गुरुकुल बदायूं और गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर की भी स्थापना की। ऐसा निरीह और वीतराग पिता न किसी ने देखा होगा और न सुना होगा जो कि जन्म देने के बाद पुत्र का मुह देखने भी न आवे। वीतराग स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज ऐसे ही थे।

इस प्रकार स्वामी जी ने आर्यसमाज में एक नया युग परिवर्तित किया। यह कार्य तो उन्होने शारीरिक श्रम और दौड़,धूप से किया किन्तु इससे भी बढ कर आर्य सिद्धान्तो के प्रचार के लिये ट्रैक्ट लिखने प्रारम्भ किये। ईसाइयो और मुसलमानो से शास्त्रार्थ किये। सर्व प्रथम इन ट्रैक्टों का सग्रह भरतपुर से श्री प० नैणल शर्मा ने मुद्रित किया था। इसके प्रथम भाग मे २५० ट्रैक्ट हैं जिनका सग्रह तथा अनुवाद पूज्य पितृ चरण श्री प० भीमसेन जी ने सर्वप्रथम किया था। इस प्रकार स्वामी जी ने वाणी और लेखनी से आर्य-जगत् को प्राण सचार किया। अभी कुछ दिन हुये श्री जस्टिस मेहरचन्द महाजन का स्वर्ग-वास हुआ है। उन्होने यह यत्न किया कि दयानन्द विश्वविद्यालय स्थापित किया जाय किन्तु इस दयानन्द विश्व-विद्यालय का स्वप्न आज से ६८ वर्ष पूर्व स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती ने भी देखा था। इस कार्य मे उन दिनो ऋषि दया-नन्द के परम भक्त तथा बादशाही मण्डी सरस्वती प्रेस प्रयाग से निकलने वाले आर्य सिद्धान्त के सम्पादक ऋषि दयानन्द के लेखक इटावा निवासी श्री प० भीमसेन शर्मा ने भी इस कार्य मे सहयोग दिया था। उन्होने आर्य सिद्धान्त के भाग ४ अक ९ मे—

"श्री मद्दयानन्द विश्वविद्यालय का नोटिस दिया है जिसका सक्षिप्त रूप इस प्रकार है वे लिखते हैं कि प्रयाग मे श्रीमद्दयानन्द विश्वविद्यालय नाम से एक पाठशाला स्थापित की गई है। इस पाठ-शाला को स्थापित हुये ३ वर्ष से अधिक समय बीत चुका है। जो विद्यार्थी आरम्भ मे पठनार्थ आये थे व अब नहीं है। इस विश्वविद्यालन के खोलने का उद्देश्य यह है कि आजकल प्राय आर्य-समाजो मे सच्चे अध्यापक व उपदेशक पण्डितों की अत्यन्त आवश्यकता है। वे उपदेशक और अध्यापक ऐसे हो कि धर्म के लिये प्राण तक देने को उद्यत रहे। तथा आर्यसमाज के गम्भीर सिद्धान्तो को भली प्रकार जानते हों। ऋषि दया-नन्द के सिद्धान्तो के प्रचार के लिये ही इस विद्यालय को जन्म दिया है। स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती इस विद्यालय के सहयोगी हैं। इस समय विद्यार्थियों की सख्या ७ है। ये सब पक्के आर्य हैं। इनमें ४ ब्राह्मण और ३ क्षत्रिय हैं इत्यादि।

इससे सिद्ध है कि स्वामी जी को नि शुल्क शिक्षा प्रचार की बडी लग्न थी। जिसके फलस्वरूप भिन्न भिन्न गुरु-कुल खोले गये और उनमे आज गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर अग्रणी है। यहाँ से अबतक स्नातकोपाधिकारी ७३६ स्नातक निकल चुके हैं। स्वामी जी ने एक धर्म प्रचारक नाम का पत्र भी महा-विद्यालय से कुछ दिन चलवाया था। उनकी लग्न "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" के लिये थी। वे जब आयसमाज हाथरस मे बीमार पडे थे उस समय भी मृत्यु-शय्या पर पडे हुये दर्शनानन्द ने मन्त्री को बुलाकर यह कहा था कि— ... मनाही करवा दो यदि आय धम के विषय में किसी ईसाई या मुसलमान को शका हो तो वह आकर मुझ से पूछ ले। आज उसी तपस्वी वीतराग सन्यासी की जयन्ती है। जो हमे मूक भाव से यह प्रेरणा दे रही है कि—

श्री दर्शनानन्द उदार वृत्ति,
वृत्तोज्जितोद प्राहित वेद वृत्ति।
छात्रेषुविश्राणित पुस्तवृत्ति,
स्तेष्वेवनिर्वर्तित भोज्य वृत्ति।
शास्त्रार्थ वृत्ति परिहास वृत्ति,
ख्रिस्तादि दुर्वादि विरोधि वृत्ति।
प्रवर्तित प्राकृत वेद वृत्ति,
दुर्वादि... वृत्र ... ॥

★

आर्यमित्र की उन्नति के लिये—

डा० सूर्यदेव शर्मा स्थिरनिधि

अन्तरङ्ग सभा दि० ९-५-६३ के निश्चयानुसार विषय स० २४ श्री प० सूयदेव शर्मा एम०ए० अजमेर का आर्य-मित्र सहायतार्थ धन दिये जाने विषयक पत्र विचारार्थ प्रस्तुत होकर श्री शर्मा जी का पत्र पढा गया। निश्चय हुआ कि दानी सज्जन की निम्न शर्तो के लिये चार सहस्र रुपया दान लेना स्वीकार किया जावे। धन प्राप्त होने पर एफ० डी० मे जमा किया जाये।

श्री डा० सूयदेव जी शर्मा

१—इस निधि का नाम डा० सूयदेव स्थिरनिधि होगा।

२—इस निधि की धनराशि स्थायी रूप मे सभा मे पृथक जमा होगी।

३—इसके ब्याज से प्रति वर्ष सार्वजनिक सस्थाओ, पुस्तकालयों एव वाचनालयो को आर्यमित्र लागतरूप मे दिया जाया करेगा।

४—वर्ष मे कम से कम दो बार जनवरी, जुलाई मास मे इस निधि की सूचना प्रमुख शर्तों के साथ 'आयमित्र' मे प्रकाशित होगी।

५—सम्मान रूप मे आर्यमित्र सदा दानी सज्जन को भेजा जाया करेगा। जहा-जहा जायगा उसकी सूची दानी सज्जन के पास भेजी जाया करेगी।

६—आर्यमित्र का प्रकाशन बन्द हो जाने पर इस निधि का ब्याज वैदिक साहित्य प्रकाशन मे लगाया जावेगा।

—सच्चिदानन्द शास्त्री मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, लखनऊ

महान् दार्शनिक प्राचीन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के सच्चे पुनरुद्धारक निर्भीक वक्ता शास्त्रार्थ विजयी

श्री स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

साक्षात्कृत धर्मा महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज की दूसरी पीढी में कुछ महान् आत्मायें आर्यजगत् मे चमकती दिखाई देती हैं उनमें प्रमुख व्यक्ति स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती जी महाराज है इन्होने अनेक विघ्नबाधाओ के होते हुए भी अपनी अदम्य शक्ति के बल पर सारा जीवन ग्रन्थों के लेखन और शास्त्रार्थ में व्यतीत करते हुए अपने ढंग के निराले गुरुकुलो की स्थापना का तांता बांध दिया था। जिसका पृथक्-पृथक् विवेचन इस प्रकार है।

(गुरुकुलों की स्थापना)

स्वामी दर्शनानन्द जी उन गुरुकुलों को जन्म देना चाहते थे जहां बच्चों से भोजन व्यय भी न लिया जावे और शिक्षा आदि सब ही निःशुल्क हो। शिक्षा निःशुल्क का विज्ञापन देकर भोजन व्यय और प्रवेश शुल्क पर सैकड़ों रुपया लेने वाले गुरुकुलो का गुरुकुल नाम वैसा ही जैसा—

यथा काष्ठमयो हस्ती यथा चर्ममयो मृग [illegible] के बने घोड़े को भी घोड़ा तो कहा जाता है पर वह सवारी के काम मे नहीं आता। मरे हुए मृग की खाल में भूसा भरकर जो पुतला खड़ा किया जाता है कहना तो उसको मृग पड़ता है पर वह मृग न कूद सकता है और न भाग सकता है। अतः फीस लेने वाली संस्थाओं को जबरदस्ती गुरुकुल कहना तो पड़ता है उनको पत्र लिखते समय उनके पते में गुरुकुल शब्द लिखना तो होता ही है पर वे वैसे ही गुरुकुल हैं जैसे लकड़ी का घोड़ा और चमड़े का मृग।

प्राचीन काल में जो गुरुकुल थे उन में राजा द्रुपद और भिक्षुक द्रोण एक ही गुरुकुल के छात्र थे। भगवान कृष्ण और निर्धन सुदामा एक ही गुरुकुल के विद्यार्थी थे।

उस युग मे परिवार नियोजन की भी आवश्यकता नहीं थी क्योंकि माता-पिता पर कोई व्यय भार सन्तान का नहीं था। "दशास्यां पुत्रान् धेहि" मन्त्र असंगत नहीं था। मुझे स्मरण है जब मे पढ़ने की लालसा में घर से भागकर महाविद्यालय ज्वालापुर गया। श्री प० भीमसेन जी शर्मा जो दर्शनों के बड़े अच्छे विद्वान् थे उनसे नव्यन्याय और नव्य वेदान्त पढ़ने की इच्छा थी जब मै वहां पहुचा और अपना अभिप्राय प्रकट किया तब पं० जी ने अपने पास से कुछ बर्तन दिये और मृगछाला दी कि इस पर बैठकर पढ़ा कर। उस समय स्वामी दर्शनानन्द जी महराज का यह गुरुकुल सच्चे तपस्वी ब्राह्मणों का निवास स्थान था जो प्राचीन ऋषियों के आश्रमों की याद दिलाता था। वहाँ उस समय निर्वाचन और पार्टी का कहीं भी दृश्य नजर नही आता था उन दिनों ऐसा प्रतीत होता था कि 'विद्या ह वै ब्राह्मणमाजगाम' वाले सब यहीं आकर एकत्र हो गये हैं। स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज का सच्चा गुरुकुल वही हो सकता है जो भोजन व्यय भी न लेता हो। जब एक विद्यार्थी गुरुकुल में गुरु के पास गया अब पिछला पिता समाप्त अब तो "तिस्रो रात्रीरुदरे बिभर्ति" करके गुरु ने गायत्री माता से उसको दुबारा पैदा करके अथवा बेटा बना लिया अब 'दशमे मासि सूनवे' का क्या काम। वह गुरु उस नवजात गायत्री माता के पुत्र की आयु भी आज से गिनना प्रारम्भ करता है। ११ वर्ष की आयु मे [illegible] राम का जब गायत्री माता से जन्म देकर विश्वामित्र चार्ज में राम को [illegible] से उनको वर्ष गणना करके विवाह के समय जब जनक ने आयु राम की पूछी तब विश्वामित्र ने कहा कि—

"ऊनषोडशवर्षोऽयं बालो मे'

अर्थात् यह मेरा लड़का है इसकी आयु १६ वर्ष से कुछ कम है। गुरु को पिछले ११ वर्ष से क्या मतलब। यदि राम शूद्र होते तो १६+११=२७ वर्ष के कहाते। इस रहस्य को कलियुग के पौराणिक विद्वान क्या समझते जो कहते हैं कि राम की आयु विवाह समय १६ से कम थी फिर देखो सच्चे बाप गुरु का कमाल कि अपने बेटे राम का विवाह 'दशमे मासि सूनवे' वाले बाप से बिन पूछे ही करा दिया।

(दार्शनिक दर्शनान्द)

स्वामी दर्शनानन्द जी सरस्वती महाराज ने दर्शनों और उपनिषदो की व्याख्यायें रचीं जिससे उस युग के आर्यों ने जो स्वाध्यायशील थे परम लाभ उठाया। उनकी व्याख्या शैली में जहां सरलता और विस्तृत विवेचन गुण था वहां एक विचित्र बात उनकी व्याख्या मे यह पाई जाती थी कि दर्शन या उपनिषत् कार किसी बात को सिद्ध करने के लिये जो हेतु देते हैं उनकी व्याख्या करने के बाद स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज अपने नये हेतु उसी बात को सिद्ध करने के लिये दे चलते हैं। तब ऐसा प्रतीत होता है कि स्वामी दर्शनानन्द जी व्याख्या कार ही इस समय नहीं है प्रत्युत वे दर्शनकार और उपनिषत् कार के रूप मे स्वयं प्रकट हो चलते हैं। यदि उन दर्शनों और उपनिषदों के के निर्माण काल के समय स्वामी दर्शनानन्द जी होते तो स्वामी दर्शनानन्द जी के दिये वे हेतु भी दर्शन और उपनिषत्कार अपने ग्रन्थों के मूल भाग में समाविष्ट कर लेते।

उन की व्याख्या से एक नवीन बात और थी जो महर्षि दयानन्द के शिष्यों में होनी चाहिये जो आजकल पाई नहीं जाती वह यह कि उपनिषदादि के भाष्य करते समय जहां स्वामी शंकराचार्य आदि विद्वानों ने वेदों की उपेक्षा करके उपनिषदो को अन्तिम महत्त्व दिया वहां स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज ने किसी भी बात की व्याख्या में इन दर्शनों और उपनिषदो को वेद की व्याख्या समझकर वेदो को अन्तिम महत्व दिया। जैसे माण्डूक्योपनिषत् की व्याख्या के समय "सप्ताङ्ग एकोनविंशतिमुख." का विवेचन करते हुये जहां स्वामी शंकराचार्य जी ने सप्ताङ्ग आदि के विवरण में छान्दोग्य उपनिषत् का सहारा पकड़ा वहां स्वामी दर्शनानन्द जी ने वेद के पुरुषसूक्त को मौलिकता दी। इस प्रकार के अनेक स्थल मेरी दृष्टि में तब पड़े जब मैंने स्वामी दर्शनानन्द जी के उपनिषदों का सम्पादन आज से बहुत वर्ष पूर्व किया था उस समय स्वामी दर्शनानन्द जी के उपनिषत् प्रकाश की जो प्रति मेरे पास थी उसमे संस्कृत भाषा और व्याकरण के बहुत स्खलन थे उनको यथा-सम्भव मैंने ठीक करने का यत्न किया और १५० उपनिषदों का इतिहास भी मैंने प्रकाशित किया जिसके अनेक संस्करण अनेक प्रकाशनो ने प्रकाशित किये तब मे स्वामी दर्शनानन्द जी के उपनिषत्प्रकाश का वही सस्करण आर्य जगत् मे चल रहा है।

(शास्त्रार्थ विजयी दर्शनानन्द)

स्वामी दर्शनानन्द जी ने अपने जीवन में सैकड़ों शास्त्रार्थ किये उस समय शास्त्रार्थ कर्ताओं में स्वामी दर्शनानन्द जी का नाम प्रथम उल्लेख किया जाता था। शास्त्रार्थ करने वाले व्यक्ति अपने अपने विषय पर शास्त्रार्थ करते हैं पर स्वामी दर्शनानन्द जी जहां ईसाई मुसलमानों से शास्त्रार्थ में दक्ष थे वहां वे जैनियों बौद्धों और पौराणिकों से भी शास्त्रार्थ करते थे यहां तक कि ऋषि के सिद्धान्त जो उन्होंने जिस रूप में समझते थे उस विषय पर वे आर्य विद्वानों से भी शास्त्रार्थ करने को उद्यत रहते थे। इसके लिये स्वामी दर्शनानन्द जी का आर्यसमाज के महान् दार्शनिक विद्वान् पं० गणपति शर्मा जी के साथ वृक्षों में जीव है या नहीं इस विषय पर शास्त्रार्थ प्रसिद्ध है जो मुद्रित भी हुआ था।

दर्शनानन्द जी के विशेष सिद्धान्त

स्वामी दर्शनानन्द जी के दो सिद्धान्त विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं एक वृक्षो मे जीव नहीं है और दूसरा अकाल मृत्यु नही होती है। वृक्षों में जीव के विषय मे अभिमानी जीव और अनुशयी जीव की परिभाषाएं स्वामी जी की प्रस्तुत की हुई विशेष हैं। अकाल मृत्यु नही होती है इस सम्बन्ध में ऋषि दया-

—आचार्य विश्वश्रवाः व्यास
एम० ए०

नन्द सरस्वती जी के अनुभूति ग्रन्थों पर कुछ यह विषय अङ्कित है जो इस प्रकार है।

१—स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का सम्वत् १९३० में चारों वेदों के प्रत्येक मन्त्र पर विशद रूप से विषयों का पूर्ण विवेचन है जिसके आधार पर कोई भी अच्छा साङ्गोपाङ्ग वेद का पण्डित प्रमाणित वेद भाष्य कर सकता है दुःख है इस की सूचना आर्यसमाज के वेद भाष्यकारों को नहीं हुई

२—इसके बाद ऋषिवर ने ऋग्वेद पर विस्तृत भाष्य लिखना प्रारम्भ किया और यह निर्देश किया कि इस प्रकार का वेद भाष्य एक एक वेद पर एक-एक सौ वर्ष से अधिक समय में सम्पन्न होगा।

नोट—ये दोनों प्रकार के ग्रन्थ परोपकारिणी सभा के संग्रह मे अद्यावधि अमुद्रित अति सुरक्षित पड़े हैं।

३—तब ऋषि ने तीसरे प्रकार की लेखनी वेदों के भाष्य पर उठाई जिसके परिणाम स्वरूप यजुर्वेद का पूरा भाष्य और ऋग्वेद के ७ मण्डल के ६१ सूक्त के दो मन्त्र तक भाष्य ऋषिकृत मुद्रित उपलब्ध है।

इस की चर्चा करते हुये ऋषि लिखते हैं कि मैं विस्तृत भाष्य पूरा नहीं

(शेष पृष्ठ १३ पर)

सहज मार्ग सम्प्रदाय की आ०स० को चुनौती

—मुकुलचन्द पाण्डेय
एम० एस सी०

प्रकृति का यह शाश्वत नियम है कि जब कोई भी धर्म संस्था, सम्प्रदाय अथवा जाति की चरम सीमा पर पहुच जाती है उस समय उसके अन्दर पर्याप्त निष्क्रियता, कुरीतियां व दोषों का समावेश होने लगता है। यूनान का साम्राज्य व उसकी संस्कृति विश्व मे प्रख्यात थी, बौद्ध धर्म एशिया पर पूर्णतया छा गया था, किन्तु इस्लाम के तूफान के सामने यूनान की संस्कृति तथा बौद्ध धर्म टिक न सके। इसी प्रकार हिन्दू धर्म मे भारी आडम्बर आ गया था, पण्डितो ने अपने माया जाल मे हिन्दू जनता को आविद्ध कर जर्जर, निरीह व निर्बल बना दिया था तब प्रवर्तक परिव्राजकाचार्य महर्षि दयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ, आर्यसमाज की नीव पडी तथा एक क्रान्तिकारी परिवर्तन समाज मे प्रविष्ट हुआ, फलत हिन्दू समाज मे नव जीवन का संचार हुआ। वैदिक धर्म का बिगुल पुन और हिन्दू जनता एकबार फिर स्वजाति पर गर्वान्वित हो चली।

समय व्यतीत होता चला गया, शनै शनै आर्य समाज में बलिदानी मनस्वी, विद्वान व समाज-सेवी जन उत्पन्न होकर आर्य समाज के माध्यम से भारत ही नहीं अपितु "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का नारा बुलन्द कर सारे ससार को आर्य बनाने को सन्नद्ध हुआ। बहुत सफलता भी प्राप्त हुई किन्तु अपनी ही कमजोरियो सगठन मे असामाजिक तत्वो के प्रवेश व राजनीतिक दलदल मे फसकर आर्यसमाज का पराभव ही दृष्टिगोचर होता है। अभी हाल ही मे आचार्य विश्वश्रवा जी के लखनऊ आगमन पर उन्होने यह ललकार कर कहा कि यदि यही क्रम रहा तो दस वर्ष मे विद्वानो का विनाश अवश्यम्भावी है। उनकी बात अक्षरश सत्य ज्ञात होती है क्योकि सम्प्रति आर्य समाज मे मात्र सस्कार कराने वाले व उपदेशक ही रह गये हैं, कोई न तो स्वाध्याय की ओर उन्मुख है, न उसे वैदिक धर्म के उत्थान की ही कोई चिन्ता है। आर्यसमाज के निष्क्रियता का परिणाम यह हुआ कि ईसाइयत बढ़ी, इस्लाम बढता ही गया तथा अनेकानेक सम्प्रदायो का आविर्भाव हो गया।

इस समय का सबसे महत्वपूर्ण विचारणीय समस्या शास्त्रार्थ की है। कतिपय जनों का मत है कि अब शास्त्रार्थ की आवश्यकता नहीं, परन्तु बलात सद्भाव सम्प्रदाय के साधक को योग साधना को ही मूल मन्त्र मानकर साधनारत हैं वे आर्य समाज को ललकारते हैं, उधर आर्य समाज के विद्वज्जन इससे विमुख जान पडते हैं। चुनौतिया व शास्त्रार्थ के अभाव मे आज यह सम्प्रदाय दिन दूनी रात चौगुनी गति से बढ़ता जा रहा है, इसकी सदस्यता बढती आ रही है और समाज के सामने एक जटिल समस्या के रूप मे आ खडा हुआ है। ज्ञातव्य हैं कि यह सम्प्रदाय स्वामी रामचन्द्र द्वारा चलाया गया है और इसका प्रधान केन्द्र शाहजहाँपुर (उ प्र०) मे है जो "रामचन्द्र मिशन" के नाम से प्रख्यात है। उनके अनुयायी योग साधना को ही मात्र ईश प्राप्ति का कारण मानते हैं। वे अपने धर्म को सहज (सरल, सुगम) व सर्वग्राही घोषित कर, उसके अभिनव कृत्यो के आधार पर कोटि कोटि व्यक्तियो को अपनी ओर आकृष्ट कर रहे हैं। यह कहना अतिशयोक्ति या मिथ्या न होगा कि कुछ आर्य समाजी व्यक्ति भी उनके चगुल मे आकर उस मत मे सम्मिलित हो गये हैं।

आर्य विद्वान आज मानो निर्बल व असहाय हो चले हैं। वे सामने आकर टक्कर नहीं ले सकते अथवा उनमे पारस्परिक ऐक्य का अभाव है। यह विद्वान अपने को यदि शास्त्रार्थो से विरक्त कर तो निश्चय ही आर्यसमाज अपकर्षोन्मुख होगा। आर्य महारथियो, प्रकाण्ड विद्वानो और क्रिया कर्मठ कार्यकर्ताओ के लिये यह एक परीक्षा की अनुपम कसौटी है। यदि वे इससे अपने को पराजित समझते हों तो यह सरलता से कहा जा सकता है कि आर्य समाज से अब जाज्वल्यमान विभूतिया तिरोहित होती जा रही है आर्य जाति पुन आडम्बर, मिथ्याभिमान व नाना दुष्कर्मो के जाल मे फसने को स्वत उद्यत है।

सहज मार्ग सम्प्रदाय ने आर्य जगत् मे विचित्र खलबली मचा रखा है और इसकी चुनौतिया असहाय होकर छाती पर एक अपूर्व भारस्वरूप बोझिल बन गई है। आर्य समाज के महान उच्च अधिकारियो, प्रेमियों व अन्य जनो को यह एक जागृत कर देने वाली चुनौती है। आर्य प्रतिनिधि सभा, सार्वदेशिक सभा, गुरुकुलो व अन्य जनो के लिए यह एक गम्भीर विचारणीय समस्या है।

★

युवा शक्ति और आर्यसमाज

ससार के प्रत्येक प्रगतिशील सामाजिक नैतिक वा सांस्कृतिक सगठन की यह आकांक्षा रहती है कि युवा शक्ति का उसको पर्याप्त मात्रा मे सहयोग मिलता रहे। ससार के सभी दूरदर्शी सगठन कर्ता सदा युवा शक्ति के सहयोग की अपने सगठन के लिये महती आवश्यकता का अनुभव करते है और नाना साधन ऐसे जुटाते हैं कि उनको यह सहयोग अधिक से अधिक मात्रा मे निरन्तर मिलता रहे।

यह सत्य है, कि राजनीति की तडक भडक और उसके द्वारा उपलब्ध होने वाली सस्ती लोक प्रतिष्ठा युवाशक्ति के लिए विशेष रूप से आकर्षण की वस्तु होती है और इसीलिए प्राय युवक उस ओर की सहजतया आकर्षित हो जाते है। तथापि संस्कृति और समाज सेवा की पवित्र भावनाएं तप, त्याग, सयम और स्वाध्याय शील युवको को अपनी ओर आकृष्ट किये बिना नहीं रहती।

ससार मे संस्कृति विस्तार के इतिहास का यदि अध्ययन किया जाय तो वहा युवक ही प्राय अग्रसर दृष्टिगोचर होंगे। सामाजिक प्रगति के सूत्रधार भी प्राय युवा ही मिलेंगे। अत यह धारणा कि युवक सिवाय राजनीति के अन्यत्र जाते ही नहीं निर्मूल है। बौद्ध, ईसाई एव यावनी संस्कृतियों के विस्तार में अधिक से अधिक त्याग एव बलिदान युवको ने ही किया है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के पावन मिशन का भार भी लाजपत राय, हसराज, गुरदत्त, लेखराम, मुन्शीराम, नारायणप्रसाद भाई परमानन्द, कृष्णवर्मा, नित्यानन्द आदि युवको ने वहन किया था और उन्ही के तप त्याग से आर्यसमाज का भारत मे और भारत से बाहर विस्तार हुआ है।

आर्यसमाज मे जब से पद लोलुपता और पदो से चिपटे रहने की भावना ने बल पाया है तभी से युवाशक्ति के अन्दर उपेक्षा की भावना जागृत होने लगी है। पद लोलुप जनो ने आर्यसमाज के द्वारा युवको के लिये तो क्या स्वतन्त्र विचारक और दलबन्दी की पंक्ति मे न फसने वाले प्रौढो के लिये भी बन्द कर दिये है।

यदि किसी नगर मे आर्यसमाज के विचार रखने वालो की सख्या १०० भी नहीं। इससे स्पष्ट है कि अधिकतर आर्यों को आर्यसमाजी बनने मे रुचि नहीं है।

स्थान-स्थान पर अनेक आर्य महानुभाव ऐसे मिलेंगे जिन्होने कभी आर्यसमाज की भारी सेवा की है किन्तु अब वह उदासीन होकर आर्यसमाज से हाथ खींच बैठे हैं। अनेक स्थानों पर आर्यसमाजो मे दुर्भाग्य से आज दिन ऐसे व्यक्तियों का बोल बाला है जो न तो सदाचार के नियमों पर खरे उतरते हैं न स्वाध्याय करते और न वैदिक सिद्धान्तो को जानते ही हैं।

यह स्थिति निश्चय ही शोचनीय है। आर्यसमाज के मिशन के लिये तो यह स्थिति केवल शोचनीय ही नहीं अपितु अत्यन्त भयानक और मारक है।

संस्थावाद भी इस दयनीय स्थिति के निर्माण मे कारण हुआ है यदि हमने यह नाना शिक्षण संस्थाएं आर्यसमाज के लिये खोली होती तो रोमन कैथालिक चर्च की भांति वैदिक मिशन के प्रचार मे इन से भारी सहायता सहयोग मिला होता और अवाञ्छनीय तत्व भी इनमे अग्रसर न होने पाते किन्तु हमने तो आर्यसमाज को इन संस्थाओ के हवाले कर दिया है।

इन संस्थाओ पर अधिकार पाने के लिए लोग आर्यसमाजी बनते। पुराने योग्य कार्यकर्त्ताओ को पीछे धक्का देते और अवाञ्छनीय तत्व के बल पर संस्थाओ पर अधिकार पा लेते हैं। इस भयावह स्थिति का अविलम्ब डट कर आर्यसमाज के हितचिन्तको को सामना करना होगा।

या तो इन समस्त आर्य शिक्षा संस्थाओ का केन्द्रीकरण कर दिया जाय और स्थानीय आर्यसमाजो के नियन्त्रण से इन्हे निकालकर इनके लिये आर्य पुरुषो का स्थायी प्रादेशिक सगठन स्था-

(शेष पृष्ठ १६ पर)

समस्त नागरिकों के लिए समान आचार संहिता बनाई जावे

संसद में श्री प्रकाशवीर शास्त्री जी का ओजस्वी भाषण

देश के सभी नागरिकों के लिये समान आचार संहिता या कामन सिविल कोड बनाने के सम्बन्ध में जिस चर्चा को मैं उठा रहा हूं वह चर्चा उस समय भी उठी कि जिस समय भारत का संविधान तैयार हो रहा था। उस समय कुछ लोग इस प्रकार के थे जिन्होंने संविधान सभा में इस बात का विरोध किया था कि संसद को इस प्रकार की आचार संहिता सभी देश व नागरिकों के लिये बनाने का कोई अधिकार नहीं है। लेकिन उस समय के जो न्याय शास्त्री थे जिनमें प्रमुख डा० अल्लादी कृष्णस्वामी अय्यर, श्री के० एम० मुन्शी और स्वयं उस समय के विधि मन्त्री डा० अम्बेडकर इस बात का समर्थन उन्होंने किया कि संसद का इस विषय में पूर्ण अधिकार है। उसी आधार पर हिन्दू कोड बिल के सम्बन्ध में भी आगे चलकर विचार किया गया। इस प्रश्न को लेकर जिस पर संविधान सभा में एक लम्बी चर्चा चली थी, इस सदन में भी समय समय पर कुछ प्रश्न उठते रहे हैं। जिनका उत्तर विधि मन्त्रालय की ओर से जो आया उसमें और अब जिस प्रश्न पर मैं चर्चा उठा रहा हूं उसमें एक बहुत बड़ा अन्तर है।

सबसे पहले एक प्रश्न इसी प्रकार का आया था १७-५-१९६४ को जिसका उत्तर उस समय के उप-विधि मन्त्री श्री विधुपेन्द्र मिश्र ने दिया था और उन्होंने अपने उत्तर मे कहा था कि ला कमीशन की पन्द्रहवीं और सोलहवीं रिपोर्ट के आधार पर जो उन्होंने हमको सुझाव दिया है कि ईसाइयों विवाह कानून के सम्बन्ध में संसद को परिवर्तन के लिये विधेयक लाना चाहिये।

इसी प्रकार के एक प्रश्न का उत्तर देते हुए १७ मई १९६६ को उस समय के विधि मन्त्री श्री पट्टाभि रमन ने यह कहा कि यह हमारी हार्दिक इच्छा है कि एक समान संहिता देश के सभी नागरिकों पर जो लागू हो उस प्रकार का एक विधेयक हम इस संसद में लायें लेकिन उसके लिये अभी कुछ समय की अपेक्षा है। फिर उसके बाद २५ जुलाई, १९६७ को उप-विधि मन्त्री श्री डी० आर० चव्हाण ने एक प्रश्न का उत्तर देते हुये कहा कि हमने इस सम्बन्ध मे प्रान्तीय सरकारो से कुछ परामर्श मांगे हैं कि विवाह और उत्तराधिकार के बारे मे सब के लिये एक समान कानून बनाने के बारे में उनकी क्या सम्मति है ? उसमें मैसूर, आसाम, हिमांचल प्रदेश, मणिपुर, दादरा नगर हवेली, इनकी इसके पक्ष में सम्मति आई और कश्मीर, नागालैण्ड, राजस्थान और केरल विपक्ष मे थे। महाराष्ट्र का कहना यह है कि एक कमीशन इस काम के लिये नियुक्त किया जाय। उड़ीसा सरकार भी इससे सहमत थी लेकिन उसका कहना था कि अभी इसमें बहुत शीघ्रता न की जाय। इस समय के जो विधि मन्त्री हैं श्री गोविन्द मेनन उन्होंने स्वयं ११ जुलाई '६७ को इसी प्रकार के एक प्रश्न का उत्तर देते हुये यह कहा कि इस सम्बन्ध में मुस्लिम महिलाओं के विचार जानने के बाद संसद में आवश्यक कानून पेश करेंगे। पहले उनकी राय जान लें। भारत सरकार ने पहले इस सम्बन्ध में एक समिति गठित करने का भी निश्चय किया था लेकिन सभापति जी ! कुछ राजनैतिक दबावों के कारण वह समिति गठित होने के पहले ही उसका विचार स्थगित कर दिया गया।

आज मैं जो बात कहना चाहता हूं वह यह है कि अब जो उत्तर विधि मन्त्री ने दिया है वह पहले विधि मन्त्रियों के और स्वयं विधि मन्त्री के निजी पूर्व उत्तर से सर्वथा असंगत उत्तर है। इस उत्तर मे वह कहते हैं कि इस प्रकार का कानून न बनाने का कारण यह है कि विवाह और उत्तराधिकार आदि के बारे में भारत के सभी नागरिकों पर एक समान विधि संहिता लागू करने के लिये भारत के नागरिकों के सभी वर्गों में मतैक्य नहीं है। इस लिये इस प्रकार का कानून नहीं बनाया जा सकता। सभापति जी ! संविधान सभा के एक प्रमुख न्यायशास्त्री श्री अल्लादी कृष्णास्वामी अय्यर के शब्दों को यहाँ मैं पढ़कर सुनाना चाहता हूं। जब उनके सामने यह प्रश्न आया तो उन्होंने उस समय जो लोग इसका विरोध कर रहे थे मिस्टर पोकर और मिस्टर हुसेन इमाम आदि उनको उत्तर देते हुये यह कहा था। यह संविधान सभा की कार्यवाही का 'हिन्दी अनुवाद है' जिससे मैं पढ़कर सुना रहा हूं—

"भारत की भावी संसद के लिये ऐसे कानून बनाने का कोई निषेध नहीं है। अतएव, अभिप्राय एक विधि व्यवहार संहिता बनाने का है। यूरोप के विभिन्न देशों में मुसलमान हैं, हिन्दू हैं, कैथोलिक हैं, ईसाई हैं, यहूदी हैं। मैं मि० पोकर से जानना चाहता हूं कि क्या फ्रांस में, जर्मनी में, इटली में और यूरोप के सारे देशों में विभिन्न निजी कानून स्थाई रूप से लागू हैं ? क्या विभिन्न राज्यों में उत्तराधिकार के कानूनों को अनियमित तथा एक विध नहीं किया गया है ? उन्होंने तो मुस्लिम न्याय शास्त्र का सविस्तार अध्ययन किया होगा और पता लगाया होगा कि इन देशों में न्याय की एक ही प्रणाली है या विभिन्न प्रणालियां हैं।

वहां के लोगों को भी छोड़ो। आज यदि देश के अन्य भागों के लोगों के पास यूरोप महाद्वीप में सम्पत्ति हो जहां जर्मन व्यवहार संहिता अथवा फ्रांसीसी व्यवहार संहिता लागू हो तो उन लोगों पर कई विषयों मे उस स्थान का कानून लागू होता है। अतएव यह कहना गलत है कि हम धर्म के क्षेत्र में हस्तक्षेप कर रहे हैं। मुस्लिम-कानून के अन्तर्गत विवाह एक व्यावहार संविदा है, जैसा कि हिन्दू कानून मे नहीं है। मुस्लिम न्याय शास्त्र के अनुसार विवाह की कल्पना में पवित्रता का आशय नहीं आता, यद्यपि इस संविद के साथ में कुरान तथा बाद के न्यायशास्त्रियों के कथन लागू होते हैं। अतएव धर्म के जोखम में होने का कोई प्रश्न नहीं है।"

यह अल्लादी कृष्णास्वामी अय्यर का संविधान सभा में कथन था। इसी से आप अनुमान लगा सकते हैं कि स्थिति क्या है। दूसरी बात यह है कि जहां तक धर्म का सम्बन्ध है धर्म और रीति-रिवाज में बड़ा अन्तर होता है। धर्म के कुछ इस प्रकार के सिद्धान्त हैं कि जिनको आसानी से नहीं छेड़ा जा सकता। लेकिन रीति-रिवाज इस प्रकार के होते हैं कि जिसके अन्दर संसद् को परिवर्तन करने का अधिकार होता है। यह केवल हमारे ही देश में नहीं, बल्कि मुस्लिम देशों के कुछ उदाहरण मैं देना चाहता हूं जिन्होंने इस प्रकार के रीति-रिवाजों में परिवर्तन किये। लेबनान में १९३२ में, सीरिया में १९५३ में, ट्यूनिशिया में १९५६ में, ईराक में १९५९ में बहु-विवाह के ऊपर उन्होंने प्रतिबन्ध लगाये। अभी पिछले १ सितम्बर, १९६७ को ईरान की संसद ने एक कानून पास किया है जिसमें बहु विवाह प्रथा पर रोक लगाने के साथ-साथ सपत्नी प्रथा को वहां थी यानी जो रखैल रखने की आदत थी, उस पर भी प्रतिबन्ध लगाया है। उसमें यह भी उन्होंने व्यवस्था रखी है कि केवल इच्छा मात्र ही सम्बन्ध विच्छेद का कारण नहीं हो सकता। ईजिप्ट के अन्दर बहु-विवाह पर रोक तो नहीं लगाई लेकिन दूसरा विवाह करने के पहले विवाह करने वाले को यह सिद्ध करना पड़ता है कि "मैं इसका बोझ उठाने की क्षमता अपने मे रखता हूं।" लेकिन सभापति जी ! इन सबसे अधिक निकट का और प्रामाणिक उदाहरण जो हमारे लिये आदर्श हो सकता है वह है पाकिस्तान का। पाकिस्तान ने १९६१ में फैमिली लाज आर्डिनेन्स नाम से एक अधिनियम बनाया। इसे अधिनियम के द्वारा पाकिस्तान ने यह नियम बनाया कि कोई भी व्यक्ति अगर एक के बाद दूसरा विवाह करना चाहेगा तो पहली पत्नी और होने वाली पत्नी दोनों की लिखित सहमति देनी पड़ेगी और इस लिखित सहमति पर निर्णय के लिये एक मध्यस्थ परिषद् बनेगी जिसमें पहली पत्नी का एक प्रतिनिधि होगा। वह अगर इस निश्चय पर पहुंचे कि दूसरा विवाह करने की जरूरत है तब दूसरा विवाह करने का अधिकार होगा। पाकिस्तान ने इस अधिनियम के हिसाब से वह सारे का सारा निर्णय लिपिबद्ध होगा और उस निर्णय को पाकिस्तान के किसी न्यायालय में चुनौती नहीं दी जा सकती। न्यायालय भी उसको बदल नहीं सकता। इसी नियम के अन्तर्गत यह चीज आती है कि कभी अगर वह सम्बन्ध विच्छेद करना चाहेगा तो भविष्य के लिये सारे जीवन-निर्वाह की व्यवस्था करनी होगी और दहेज की सारी सम्पत्ति उसे लौटानी होगी। ऐसा पाकिस्तान ने भी अधिनियम बनाया है। ऐसी स्थिति में हम यह सोचें कि हमारे यहां इसी प्रकार की सबके लिये समान संहिता नहीं बन सकती, जबकि पड़ोसी देश इस प्रकार के सुधार रीति-रिवाजों में कर रहे हैं कहां तक ठीक है ? हम रीति-रिवाजों में सुधार के सम्बन्ध में इतने पिछड़े रह जाएं यह उचित नहीं है।

जिस देश के संविधान में सेक्युलर शब्द लिखा हुआ है वहां हम यह अपेक्षित परिवर्तन नहीं कर सकते, यह बात कुछ समझ मे आने वाली नहीं है। सभापति जी ! आप को सुनकर आश्चर्य होगा कि अभी बम्बई में 'सेकुलर फोरम का अधिवेशन हुआ था। पहले उप-विधि-मन्त्री श्री डी० आर० चव्हाण ने पीछे संसद में बताया कि उसके सामने मुस्लिम महिलाओं ने प्रदर्शन किया बहु-विवाह के खिलाफ। प्रदर्शन करके यह मांग की कि यह प्रथा समाप्त होनी चाहिये। उसी प्रश्न के उत्तर में श्री डी० आर० चव्हाण ने यह भी बताया कि कलकत्ते के कुछ मुसलमानों की ओर से प्रधान मन्त्री को यह तार आया कि इस प्रकार के बहु-विवाहों पर प्रतिबन्ध लगना चाहिये।

पर अब यह सरकार डरती क्यों है ? सबसे पहला कारण तो यह है कि सरकार यह समझती है कि कुछ जो हमारे रिजर्व वोट हैं इस प्रकार के रीति-रिवाजों मे परिवर्तन करने से निर्वाचनों में वह वोट छिन जायेंगे। दूसरा कारण वह यह समझते हैं कि पाकिस्तान को हमारे खिलाफ प्रोपेगंडा का अवसर मिल जायगा। कोई यह कहे कि इस प्रकार के कानूनों में हाथ डालने का या कानून बनाने का काम पहली बार भारत में किया जा रहा है सो बात भी नहीं है। जैसा मैंने आपको बताया, संसद को प्रबल अधिकारों द्वारा अगर हिन्दुओं के उत्तराधिकार और तलाक व्यवस्था सम्बन्धी रिवाजों में यह संसद परिवर्तन कर सकती है तो कोई कारण नहीं कि देश मे दूसरे जो इसी प्रकार के वर्ग हैं उनके लिये इस प्रकार का कानून क्यों संसद न बनाये ? स्वतन्त्र भारत की संसद ही नहीं सबसे पहले भारतवर्ष में शरियत के खिलाफ अगर किसी ने परिवर्तन की आवाज उठाई तो वह पहला मुसलमान बादशाह था। जिसने मुसलमानी सल्तनत की नींव डाली थी। उसका नाम था अलाउद्दीन खिलजी। उसने सबसे पहले ऐसा परिवर्तन किया। जब शरियत के खिलाफ उसने निर्णय दिया तो काजी लोगों ने उसके खिलाफ फतवा दिया। तब अलाउद्दीन खिलजी ने कहा कि अल्लाह की अदालत में जब मैं पहुंचूंगा अगर मैंने सद्भावना से काम नहीं किया है तो उस अदालत में मुझे गुनहगार ठहराया जायगा। अगर ऐसा हुआ तो जो सजा मुझे मिलेगी वह भी भोगने के लिये मैं तैयार रहूंगा। लेकिन मेरा निर्णय सद्भावना के साथ है उसमें मैं किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं कर सकता। जब संविधान सभा मे यह प्रश्न उठा कि मुस्लिम रिवाजों मे परिवर्तन नहीं हो सकता तो सभापति जी ! उस समय के विधि मन्त्री डा० अम्बेडकर ने उसको चुनौती दी और कहा कि ऐसा परिवर्तन तो जब सेंट्रल असेम्बली हिन्दुस्तान में थी तब एक बार १९३५ में हुआ, दूसरी बार हुआ १९३७ मे और तीसरी बार १९३९ में सेंट्रल असेम्बली ने इस प्रकार का परिवर्तन किया यह कोई नई बात नहीं है कि इस प्रकार के कानून में परिवर्तन करने के लिये हम पहली बार सोच रहे हैं। इसलिये यह कहना कि संसद को अधिकार नहीं है यह बात गलत है।

अब इससे हानियां क्या हो रही हैं ? सभापति जी ! मैं अपने वक्तव्य को उपसंहार की ओर ले जाते हुय केवल दो तीन बातों की विशेष चर्चा करना चाहता हूं। सबसे बड़ी हानि जिसके बारे मे पहले विधि मन्त्री श्री पट्टाभिरमन ने एक बार उत्तर देते हुये संसद में कहा था वह यह है कि हमारे देश में इस प्रकार का कानून न होने से जिनके धर्म मे बहु विवाह की प्रथा नहीं है वह थोड़े समय के लिये धर्म परिवर्तन कर लेते हैं और दूसरा विवाह कर लेते हैं। दूसरा विवाह करने के बाद फिर अपने धर्म में आ जाते हैं। डा० पट्टाभि रमन ने इसी संसद मे यह कहा कि यह बड़े दुख के साथ हमको सदन को सूचित करना पड़ा है। दूसरी हानि यह हो रही है कि हमारे देश मे जनसंख्या का जो बैलेंस है वह बिगड़ गया है, पिछले १९६१ की जनगणना के आंकड़े कुछ मैं आपके सामने रखता हूं। कुल मिलाकर हमारे देश में जो प्रतिशत वृद्धि हुई है वह २१.५ है। लगभग २१ प्रतिशत वृद्धि समझ लीजिये। इसमें हिन्दुओं का प्रतिशत बढ़ा है २० प्रतिशत और गैर हिन्दुओं का प्रतिशत जो संसद मे ही एक प्रश्न के उत्तर मे बताया गया है, बढ़ा है ३०.३ प्रतिशत। मैं .३ को भी छोड़ता हूं। ३० प्रतिशत वृद्धि इस प्रकार उनकी हुई है। अगर यही अनुपात बढ़ता चला गया और सरकार ने देश के लिये कोई समान आचार-संहिता न बनाई तो मैं गणित का कोई बहुत बड़ा कुशल विद्यार्थी तो नहीं रहा हूं लेकिन थोड़े बहुत जो हिसाब जोड़ सकता हूं वह यह है कि आज के १५० साल के बाद हिन्दुओं और गैर हिंदुओं का यह अनुपात समाप्त हो जायगा। फिर उसी प्रकार की स्थिति आने लगेगी जैसी १९४७ मे हुई थी।

इसलिये मेरा विधि मन्त्री से कहना यह है कि जब संविधान सभा मे न्याय शास्त्रियों ने इस बात की अनुमति दे दी थी और संसद को यह अधिकार दे दिया था कि संसद को इस प्रकार के कानून बनाने का अधिकार है तो ऐसी स्थिति मे विधि मन्त्री की ओर से यह उत्तर दिया जाना कि विभिन्न वर्गों मे मतैक्य नहीं है इसलिये ऐसा कानून नहीं बनाया जा सका। क्या यह संविधान निर्माताओं की भावनाओं की अवहेलना करना नहीं है ? अथवा जिस पृष्ठभूमि मे संसद को यह अधिकार दिया गया था उसकी भी जानकर अवहेलना करना नहीं है ?

यहां मैं विधि मन्त्री से तीन बातें कहना चाहता हूं। पहली यह कि इस प्रकार की समान आचार संहिता सभी नागरिकों के लिए बनाने के लिए उन्हे चाहिए कि एक उच्चस्तरीय समिति का निर्माण करें जिसकी चर्चा मैंने पीछे की है कि पहले बनाने का निश्चय भी किया गया था, लेकिन राजनीतिक दबावों के कारण सरकार ने उस निर्णय को बदल दिया : उस उच्चस्तरीय समिति को कोई अनिश्चित अवधि न दें बल्कि एक निश्चित अवधि दें। उसका प्रतिवेदन आने के बाद सरकार कानून बनाये जिससे यह मालूम पड़े कि संविधान के प्रति सरकार निष्ठावान है और देश के सभी नागरिकों को समान मान कर चलती है तथा सरकार की दृष्टि में रीति रिवाजों के पालन करवाने में किसी प्रकार का कोई भेद भाव नहीं है।

दूसरी बात यह कि कानून बनाने में सबसे पहले सरकार को यह चाहिये कि दूसरे देशों के इसी प्रकार के कानूनों का अध्ययन करे। विशेषकर उन देशों के कानूनों का अध्ययन करे जिन देशों ने अपने ऐसे रीतिरिवाजों मे क्रान्तिकारी परिवर्तन किये हैं और उन देशों में उसके प्रति किसी प्रकार कोई विरोध नहीं हुआ है। अध्ययन के पश्चात् उन कानूनों की पृष्ठभूमि मे अपने कानून का प्रारूप तैयार करें।

तीसरे यह कि इस प्रश्न पर मुस्लिम महिलाओं के विचार भी लिये जाय जैसा कि एक बार स्वयं विधि मन्त्री कह चुके हैं कि पाकिस्तान मे मुस्लिम महिलाओं ने विरोध किया। तुर्की मे मुस्लिम महिलाओं ने विद्रोह किया। ईरान मे इसी प्रकार की घटनायें घटीं। इस प्रश्न को बजाय पुरुषों पर छोड़ने के महिलाओं पर छोड़ा जाय और मुस्लिम महिलाओं से [illegible] मे जानकारी ली जाय उनकी अपनी राय क्या है ? अगर उनकी राय है कि इस देश मे ऐसा कानून बनाना चाहिये तो इससे विधि मन्त्री के हाथ और मजबूत हो जायेंगे और इस प्रकार का कानून बना कर वह एक निश्चित रूप मे सबल विधि मंत्री होने का परिचय देंगे। ★

साधुआश्रम हरदुआगंज को उपयोगी बनाया जाये

(एक सुझाव)

पूज्यपाद वीतराग श्री स्वामी सर्वदानन्दजी की आरोपी यह मानलता है जिसका सिञ्चन उनके सुशिष्य श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी जीवन भर करते रहे। आज यह संस्था संरक्षण से रहित है, म्लान हो रही है। आर्य-जगत् के लिये इससे कुछ लाभ नहीं दीख रहा। अतः इस संस्था को किसी योग्य अधिष्ठाता के हाथों मे देना चाहिये जो वहां के छात्रों को आर्य बना सके, कर्मठ बना सके। आर्यसमाज सिद्धान्तों मे रुचि रखने वाला और उन सिद्धान्तों का प्रचार करने वाला बना सके। ऐसा अधिष्ठाता इस समय प्राप्य है। वह हैं पूज्यपाद वीतराग स्वामी जी के प्रमुख शिष्य, बहुत प्रिय शिष्य आचार्य श्री विश्वबन्धु जी। पण्डित तो विद्वान् हैं। सुवक्ता हैं, कार्य क्षमता भी उनमे खूब है। उनकी रुचि भी अपने गुरु के लगाये इस उद्यान की रखवाली करने मे है। अब केवल कमेटी का काम है कि सर्वसम्मति से श्री पण्डित जी को वहां सम्मान सहित बैठाये। पण्डित स्वावलम्बी सुयोग्य उपदेशक हैं अत. संस्था पर पण्डित जी के किसी व्यय का भार नहीं पड़ेगा और पण्डित जी के द्वारा संस्था को अर्थ लाभ होता ही रहेगा। विद्यार्थियों में से पण्डित जी द्वारा कुछ व्यक्ति उपदेशक भी बनाये जा सकेंगे। पण्डित जी छात्रों को सिद्धान्तज्ञ भी बनायेंगे और सुनने में यह आया है कि पूज्य श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी की अन्तिम इच्छा यह थी कि उनके परलोक जाने से पूर्व श्री पण्डित विश्वबन्धु जी को आश्रम सौंप दिया जाये। यदि यह ठीक है तो श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी की वसीअत को पूरा करना चाहिये। पण्डित जी मे जो बहु कार्य सम्पादनीशक्ति है उससे लाभ उठाना चाहिये।

आशा है कि प्रबन्ध समिति के लोग श्री प० विश्वबन्धु जी को आवाहन करेंगे। संस्था को ऐसा हितैषी विद्वान् ढूढ़ने से नहीं मिलेगा क्योंकि इस संस्था से प० जी को अपनापन है। वह गुरु ऋणोद्धार की दृष्टि से इस संस्था की सेवा को तैयार हो जायेंगे।

—बिहारीलाल शास्त्री

श्री राविन्सन एवं पं० शिवदयालु जी की विचार-गोष्ठी

(बैठक दूसरी)

एक दिन आर्यसमाज की गति-
धियो तथा उसके भविष्य के सम्बन्ध
म्ध० श्री राविन्सन रिटायर्ड डी०
ई० जी० पुलिस उत्तरप्रदेश के साथ
म्न प्रकार विचार विनिमय हुआ—

पण्डित जी–आर्यसमाज के सम्बन्ध आपकी क्या कुछ धारणायें हैं ?

श्री राविन्सन—मुझे उत्तरप्रदे । मे
लस विभाग मे काम करते तीस वर्ष
ने को आये। मैने इस दीर्घकाल मे
र्यसमाज की गतिविधियो का बहुत
ान के साथ अध्ययन किया है। मै
र्यसमाज के उद्देश्यों और सिद्धान्तों
संसार मे सर्वश्रेष्ठ समझता हू। जिस
ाय में भारत मे नौकरी करने आया था
हमारी सरकार आर्यसमाज पर बडी
ाह रखती थी और सरकार को
मे खतरा था। किन्तु इधर तीस वर्षों
आर्यसमाज इतना श ि हीन और
य भ्रष्ट करा दिया गया है अब हमे
ासे कोई भी खतरा रह नहीं गया है।

पण्डित जी—ऐसी धारणा आपने
े बना ली। आर्यसमाजी तो अब
जनैतिक क्षेत्रो मे बहुत भाग लेने लगे
और उनका प्रभाव भी बढ़ता जा रहा
।

श्री राविन्सन—आर्य समाजी यदि
ा मिलकर अपना कोई एक राज-
निक सगठन बनाकर कार्य करते तो
कार को उसमे चि ता हो सकती थी
ा तो आर्यसमाजी विभिन्न राजनीतिक
ों मे पिछलग्गू बनकर कार्य कर रहे
और इन दलो के नेताओ को खुश
रने के लिये आपने आर्यसमाजी स्वरूप
छिपा रहे हैं। पहले आर्य समाजी
ाने मन्तव्यो पर डटने वाले और उनके
य कभी समझौता न करने वाले होते
किन्तु अब यह बात भी नहीं रही।

पहले आर्य समाजियों से हमारी सरकार को अपने ईसाई मिशन के लिये भी खतरा था किन्तु अब वह भी जाता रहा है क्योंकि पहले आर्य समाजियों को अपने वैदिक मिशन के लिये भारी दिल-चस्पी थी किन्तु अब यह बात नहीं है। आज का आर्यसमाजी मिशन कार्यों से उपरत हो गया है। शास्त्रार्थ, खण्डन-मण्डन सब समाप्त हो चुका है और आर्यसमाज के मिशनरीज ठकुर सुहाती के आदी हो गये हैं।

आज का आर्यसमाजी राजनीतिक दल दल मे फसा हुआ है अथवा सस्था-वाद का शिकार है अत हमारे ईसाई मिशन को अब इनसे कोई खतरा नहीं।

हमारी शिक्षा सस्थायें हमारे अपने मिशन के लिये हैं किन्तु आर्यसमाज की सस्थायें आर्यसमाज के मिशन के लिये नहीं अपितु आर्यसमाज इन सस्थाओ के लिये बना दिया गया है।

पण्डित जी–क्या आर्य समाज के प्रचार से ईसाई मिशन के मनसूबे थे उन पर पानी नही फिर गया है ?

श्री राविन्सन—यह ठीक है कि आर्य समाज के प्रचार कार्य से हिन्दू बहुत सावधान हो गया है और अपने धर्म को ईसाइयत से बहुत श्रेष्ठ मानने लगा है किन्तु हमने तो हि दुओ की जडो को ही अपनी अग्रेजी शिक्षा द्वारा खोखला कर दिया है। अग्रेजी पढा लिखा हिन्दू खान-पान, भाषा-भेष और व्यवहार मे ईसाई बन चुका है। उसको अब अपनी सस्कृति और सभ्यता का ज्ञान भी नही रहा है फिर इनके मान का तो प्रश्न ही क्या।

इधर हमने अपने मिशनरियों को जो चीन रूस आदि कम्युनिस्ट देशों से निकाले जा रहे हैं भारत मे विशेष रूप से खपाना आरम्भ कर दिया है। अब भारत में हमारे मिशनरियों की सख्या पहले से चौगुनी हो गई है प० जवाहर लाल नेहरू पहले से ही हमारी संस्कृति का पुजारी है और उसके कारण हमे अपने मिशन का भारत मे जी भर कर विस्तार करने का अवसर मिल गया है। हमारे मिशनों को अब अमेरिका आदि से धन भी बहुत अधिक आने लगा है और हमने हिन्दू जाति के अशिक्षित, गरीब और पिछड़े वर्गों को जिनको अछूत, नीच, पञ्चम, पडिया और जगली आदि कहा जाता है सामूहिक रूप से ईसाई बनाने की योजना तैयार कर ली है और हमे इस कार्य मे काफी सफलता भी मिलती जा रही है। इने-गिने आर्यसमाजी हैं जो कभी-कभी हमारे इन कार्यों का इधर-उधर विरोध करते हैं किन्तु हमे इनके विरोध की लेश मात्र भी चिन्ता नहीं।

पण्डित जी—आपको चिन्ता नहीं यह बात समझ मे नहीं आती।

श्री राविन्सन—चिन्ता इसलिये नहीं है कि क्योंकि अब आर्यसमाज मिशनरी सगठन नहीं रह गया है। इसके बहुत से प्रभावशाली अच्छे-अच्छे कार्यकर्त्ता राजनीति की चकाचौंध के शिकार बन चुके हैं और बहुत से इन सस्थाओ के पीछे आपस मे सर फोड रहे हैं। कुछ इने-गिने सर फिरे लोग हैं जो केवल विरोध करते हैं सो हमारे मिशनरी उनकी उपेक्षा करते हैं।

आर्यसमाज का संगठन तो अब राजनीतिक कार्यकर्त्ताओं के हाथों की कठपुतली है या फिर सस्थावादियों की लड़ाई का अखाड़ा है उससे अब हमें चिन्ता करने की आवश्यकता ही नहीं है।

पण्डित जी–आर्यसमाज का प्रभाव-क्षेत्र बहुत विस्तृत हो गया है। उसे दबाना अब किसी की भी शक्ति में नहीं नहीं है। एक दिन आवेगा कि अग्रेजि-यत भारत से विदा होगी और उसके साथ ईसाइयत भी।

श्री राविन्सन—आपका स्वप्न तो सुन्दर है। केवल आप ही तो ऐसा मानते हैं। क्या कोई काग्रेसी, जनसघी, समाजवादी या साम्यवादी आदि दल का नेता भी ऐसा मानता है।

सब ही दृष्टियो से आर्यसमाज अब एक "स्पैण्ट अप फोर्स" है। बहुत से आर्यसमाजी जो राजनीतिक स्वार्थों मे फसे हुए हैं वह भी आर्यसमाज को समाप्त करने की बातें करते हैं अतः यदि आर्यसमाज को जीवित रखना है तो उस की बागडोर सच्चे वैदिक मिशनरियो के हाथो मे सौंपो। राजनीति के अखाडे बाजो से आर्यसमाज को बचाओ। शिक्षा सस्थाओ को या तो आर्यसमाज के मिशन के लिये अर्पित कर दो नही तो इन्हे आर्यसमाज से पृथक कर दो।

इतनी चर्चा के बाद आज की गोष्ठी समाप्त हो गई।

○

धर्म परिवतन से पूर्व

........पश्चात्

महर्षि दयानन्द सरस्वती

लोकमान्य बालगङ्गाधर तिलक

डा० राजेन्द्रप्रसाद

विश्ववद्य महात्मा गाँधी

महात्मा मदनमोहन मालवीय

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

अमरशहीद स्वामी श्रद्धानन्द

राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन
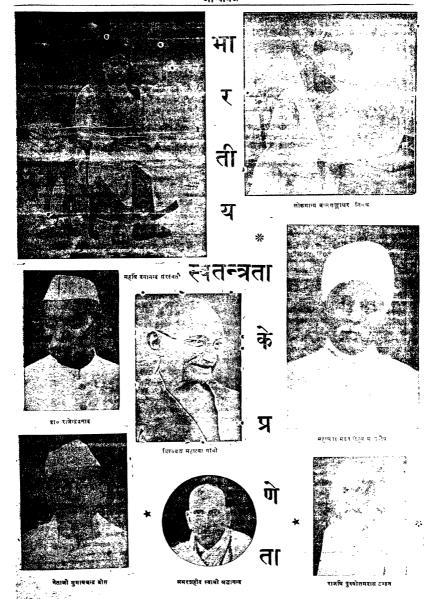
आर्य नर-नारी नारायण स्वामी जन्म शताब्दी को सफल बनाने गुरुकुल वृन्दावन पहुँचें

आनन्दस्वामी जी की आर्य जनता से प्रार्थना

महात्मा नारायणस्वामी जी की जन्म शताब्दी २, ३, ४, ५ फरवरी को गुरुकुल वृन्दावन में मनाने का निश्चय हुआ है—महात्मा नारायणस्वामी के आदर्श जीवन से प्रेरणा लेने का यह सुन्दर शुभावसर है। आदर्श गृहस्थी, आदर्श वानप्रस्थी, आदर्श सन्यासी का समुच्चय महात्मा जी के जीवन मे मिलता है। समाज के एक मात्र सफल सत्याग्रह (हैदराबाद) के मुख्य कमाण्डर आप ही थे। दयानन्द जन्म शताब्दी मथुरा की अपूर्व सफलता का श्रेय आप ही को मिला, वृन्दावन के बीहड़ जंगल को अपने तप, त्याग से सुन्दर गुरुकुल धाम मे परिवर्तन कर देना आप ही का कार्य था। अपूर्व लेखक सिद्ध हस्त लेखक उपनिषद् भाष्यकार गुप्त योगी और दलबन्दी की दल दल से सदा दूर रहने वाले महात्मा नारायणस्वामी जी की शताब्दी के अवसर पर आर्यजगत् के नर-नारी उमड़ घुमड़कर वृन्दावन पहुचे और चार दिन के सत्संग का पूरा लाभ उठायें। मैने भी निश्चय किया है कि इन दिनो मे गुरुकुल ही मे निवास करके महात्माजी की इस तपोभूमि के वातावरण से लाभ उठाऊंगा।

आर्य जगत् का सेवक—

—आनन्द स्वामी सरस्वती

नई दिल्ली १-१ ६८

संन्यासियों एवं उपदेशकों, से निवेदन

वर्तमान आर्य सन्यासियों, उपदेशको उपदेशिकाओ, विद्वानो, विदुषियो एव नेताओ के सचित्र जीवन चरित्र भारतवर्षीय वैदिक सिद्धान्त परिषद, सेवा-सदन, कटरा, अलीगढ़, २१ सुप्रसिद्ध आर्य विद्वानों से सम्पादित कराके प्रकाशित कर रही है। 'आर्योपदेशक रत्न माला' नामक इस ग्रन्थ का विमोचन प्रो० शेरसिंह राज्य मन्त्री करेंगे। तथा श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी को यह ग्रन्थ रत्न भेंट किया जावेगा। अब तक जिन उपदेशको आदि से परिषद सम्पर्क स्थापित नही कर सकी है कृपा करके वे शीघ्र ही सम्पर्क स्थापित करने का अनुग्रह करें।

—आचार्य मित्रसेन एम० ए०

संयोजक

म० नारायणस्वामी जन्म शताब्दी

आर्य-जगत् का सार्वदेशिक समारोह

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन वार्षिकोत्सव २, ३, ४, ५ फरवरी १९६८

तिथि माघ शुक्ला ४, ५, ६, ७ संवत् २०२४

सादर-निमन्त्रण

आदरणीय, सादर नमस्ते !

आपको यह सूचित करते हुये हर्ष होता है कि आर्यसमाज के महान् तपस्वी नेता अध्यात्म तत्ववेत्ता, हैदराबाद व सिन्ध सत्याग्रह संग्राम विजेता गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली के प्रबल समर्थक श्री पूज्यपाद महात्मा नारायणस्वामी जी महाराज का जन्म शताब्दी समारोह एवं गुरुकुल विश्वविद्यालय का वार्षिकोत्सव उपर्युक्त तिथियों में सम्पन्न होना निश्चित हुआ है। पूज्य स्वामी जी ने अपना समस्त जीवन आर्यसमाज की सेवा में समर्पित कर दिया, उनकी महान् सेवाओ के प्रति समस्त आर्यजगत् की ओर से श्रद्धांजलियां समर्पित की जायेंगी।

इस शुभावसर पर संस्कृत सम्मेलन, राष्ट्रभाषा सम्मेलन, स्नातक सम्मेलन, आर्य सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन, आयुर्वेद सम्मेलन, महिला सम्मेलन, आर्य विद्वत्परिषद कार्यक्रमों के अतिरिक्त—

श्री महात्मा आनन्दस्वामी जी महाराज की अध्यक्षता में महात्मा नारायणस्वामी जी के प्रति श्रद्धांजलि सम्मेलन होगा और भारत के गृहमन्त्री श्री यशवन्तराव बलवन्तराव चव्हाण नवस्नातकों को दीक्षान्त भाषण देंगे।

आर्य सम्मेलन—	उद्घाटन कर्ता	श्री चौ० चरणसिंह जी मुख्य मन्त्री उत्तरप्रदेश
	अध्यक्ष	श्री प्रतापसिंह शूरजी प्रधान सार्वदेशिक सभा
शिक्षा सम्मेलन—	उद्घाटन कर्ता	श्री प्रो० शेरसिंह जी राज्य शिक्षामन्त्री, भारत
	अध्यक्ष	श्री रामप्रकाश जी गुप्त शिक्षा मन्त्री उत्तरप्रदेश
राष्ट्रभाषा सम्मेलन—	उद्घाटन कर्ता	श्री गोविन्ददास जी संसद सदस्य
	अध्यक्ष	(केरल निवासी) श्री चन्द्रहासन जी निदेशक, हिन्दी निदेशालय भारत सरकार
संस्कृत सम्मेलन—	उद्घाटन कर्ता	श्री डा० रामकरण शर्मा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, भारत
	अध्यक्ष	श्री गोरेनाथ जी शास्त्री उप कुलपति वाराणसेय संस्कृत वि०विद्या०
राष्ट्ररक्षा सम्मेलन—	उद्घाटन कर्ता	श्री दिनेशसिंह जी वाणिज्य मन्त्री, भारत
	अध्यक्ष	श्री पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री संसद सदस्य
गुरुकुल सम्मेलन—	उद्घाटन कर्ता	श्री स्वामी समर्पणानन्द जी महाराज
	अध्यक्ष	श्री डा० धर्मेन्द्रनाथ जी शास्त्री तर्कशिरोमणि, एम०ए०डी-लिट्
आयुर्वेद सम्मेलन	अध्यक्ष	श्री प० शिवशर्माजी संसद सदस्य, आयुर्वेद निर्देशक योजना। आयोग
महिला सम्मेलन—	उद्घाटन कर्त्री	श्रीमती [illegible]
	अध्यक्षा	" [illegible]

(वीर माता विद्यावती जी, माता शहीद सरदार भगतसिंह जी पधारेंगी।)

आर्य इतिहास, साहित्य, पत्र-पत्रिका प्रदर्शनी—

निर्माता—श्री हीरालाल चित्रकार

उद्घाटन कर्ता—श्री पं० नरेन्द्र जी प्रधान आ०प्र० सभा मध्य दक्षिण (आन्ध्र)

इसी अवसर पर ब्रह्मचारियो द्वारा संस्कृत व हिन्दी मे भाषण व शारीरिक शक्ति प्रदर्शन, एवं क्रीड़ा प्रतियोगिता आदि कार्य सम्पन्न होंगे।

गुरुकुल शिक्षा प्रेमी जनता एवं नर-नारियों से सविनय अनुरोध है कि सपरिवार शताब्दी समारोह में सम्मिलित होकर अपने महान् नेता के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करें।

शताब्दी समारोह की सफलता के लिये यथाशक्ति आर्थिक सहायता प्रदान कर सहयोग से अनुगृहीत करें।

दर्शनाभिलाषी—

—नरदेव स्नातक, संसद सदस्य,

संयोजक

नारायण स्वामी जन्म शताब्दी समारोह समिति

मुख्याधिष्ठाता—गुरुकुल वृन्दावन

स्वा. दर्शनानन्द जी और उनकी शैक्षिक संस्थायें

महर्षि के आरोपित बीज को अंकुरित करने तथा उसे पाल पोस कर सुदृढ़ बनाने वालों मे स्वामी जी के परम शिष्य महान् दार्शनिक विद्वान् श्री स्वामी दर्शनानन्द जी ने शिक्षा के क्षेत्र में क्रान्तिकारी कार्य किया। आपने विभिन्न स्थानों पर गुरुकुलों की स्थापना कर आर्य ग्रन्थों के पठन पाठन मे महान् योगदान दिया।

गुरुकुल सिकन्दराबाद

स्वामी दर्शनानन्द जी ने उ० प्र० मे सर्व प्रथम इस गुरुकुल की स्थापना सन् १९०४ मे श्री प० मुरारीलाल शर्मा, पं० गंगा सहाय [illegible] नत्थू सिंह जी आदि के सहयोग से की थी। सन् १९०६ मे यह गुरुकुल आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के अन्तर्गत हो गया। सन् १९०८ मे सभा ने इसे फरुखाबाद स्थानान्तरित कर दिया और तीन वर्षों के उपरान्त यह वृन्दावन के राजा महेन्द्र प्रताप सिंह जी के विशाल उद्यान में ले आया गया। यह गुरुकुल अब तक निरन्तर चल रहा है तथा प्रादेशिक सरकार द्वारा इसे आदर्श संस्कृत विद्यालयों की सूची मे स्थान प्राप्त है।

पं० मंगलदेव जी शास्त्री, डा० हरिदत्त शास्त्री एकादश तीर्थ आगरा, पं० देवेन्द्र नाथ जी शास्त्री व आचार्य विभुदेव जी बम्बई तथा प० यज्ञदत्त जी शर्मा आदि कतिपय प्रमुख स्नातकों के निर्माण का श्रेय इस गुरुकुल को प्राप्त है।

आज दिन यह गुरुकुल-गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन के नाम से विख्यात है।

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर

अक्षय तृतीया (वैशाख सुदी ३) सम्वत् १९६० [illegible] १५ मई १९०७ ई० को स्वर्गीय सीताराम प्रदत्त भूमि मे इस गुरुकुल की स्थापना शास्त्रार्थ [illegible] महान् दार्शनिक विद्वान श्री स्वामी दर्शनानन्द जी के कर कमलों द्वारा हुई। यह संस्था प्रौढ संस्कृति पाण्डित्य का महान् केन्द्र है।

सन् १९०८ ई० मे १९१५ ई० तक स्वामी [illegible] सरस्वती (प० भीमसेन शर्मा) का इस [illegible] के साथ मुख्याध्यापक के रूप [illegible] सम्बन्ध रहा। म[illegible] अन्य स्तम्भ स्वामी [illegible] वेदतीर्थ, आचार्य [illegible] आचार्य [illegible] शुद्धबोध तीर्थ साहित्याचार्य [illegible] गुरुकुल [illegible] [illegible]

इतिहास मे [illegible] निर्माण किया है जो देश के विभिन्न भागों मे धर्म, संस्कृति, [illegible], शिक्षा आयुर्वेद एवं राजनीति के क्षेत्र मे मार्ग प्रदर्शक हैं।

महाविद्यालय की विद्याभास्कर उपाधि को आगरा विश्वविद्यालय ने बी० ए० के समकक्ष की मान्यता प्रदान की है।

कार्यालय महाविद्यालय ज्वालापुर

[illegible] प्रणाली के अनुसार कर रहे हैं। इस गुरुकुल मे भी सैकड़ों निर्धन और [illegible] छात्रों को विद्वान बनाकर राष्ट्र को सौंपे हैं। इस गुरुकुल [illegible] गुरुकुल [illegible] और उसके [illegible] मनोरम है वहाँ पर यहाँ के [illegible] आचार्य वृजनन्दन जी शिक्षा के योगदान मे [illegible] प० [illegible]

(शेष पृ० २४ पर)

आश्रम

[illegible] कार्य कर रहा है [illegible] शताधिक छात्र हैं।

गुरुकुल, सूर्यकुण्ड

स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती की यह गुरुकुल बदायूं शहर से [illegible] पर लगभग दो मील सूर्यकुण्ड [illegible] पर स्थित है। [illegible] कृषिकार्य और [illegible] स्थित है। विद्यालय, छात्रावास तथा अध्यापकों के निवास स्थान व अतिथि [illegible] शाला आदि ब्रह्मचारियों के लिए सभी उपयोगी साधन उपलब्ध हैं। आज भी १००-१५० छात्र विद्याध्ययन प्राचीन

[illegible] जा सकता है। [illegible] जी महाराज इनके ग्रन्थों [illegible] और [illegible] इस समय के [illegible] और [illegible] जनता मे [illegible] थी। पर आज [illegible] विद्वानों का [illegible] जो हाल [illegible] नहीं [illegible] स्वामी [illegible] शास्त्रार्थ [illegible] उनके स्थापित गुरुकुल फिर निःशुल्क हो, जनता स्वाध्यायशील बने।

आर्य समाजों से निवेदन

शीतकाल चिन्तनमनन एवं आध्यात्मिक विकाश के लिये सबसे उत्तम ऋतु है। आप महानुभाववृन्द अपने अपने समाजों को वार्षिकोत्सव का आयोजन करें।

सभा आपको सहयोग देना चाहती है। आप सभा के नियमित महोपदेशों भजनोपदेशक एवं प्रचारको के लिये लिखें।

—सच्चिदानंद शास्त्री एम० ए०
अधिष्ठाता उपदेश विभाग

(पृष्ठ १३ का शेष)

जी शास्त्री आचार्य विशुद्धानन्द जी तथा बलबीर जी शास्त्री महोपदेशक ऐसे अनेक विद्वान उसकी उन्नति में आज भी सहायक हैं। और यह स्वामी दर्शनानन्द की वाटिका पल्लवित, परिवर्धित और पुष्पित बनी है स्वामी जी की तपस्या का ही यह परिणाम है कि उनके पीछे भी आज यह गुरुकुल अपना अस्तित्व बनाए अपने पैरो पर खड़े होकर वैदिक धर्म एवं संस्कृत साहित्य का प्रचार एवं प्रसार कर रहा है।

गुरुकुल पोटोहर

रावलपिण्डी के निकट पोटोहर मे श्री स्वामी जी द्वारा स्थापित यह गुरुकुल भारत विभाजन से पूर्व तक सुचार रूप से कार्य करता रहा। विभाजन के उपरान्त यह स्थान पाकिस्तान मे चले जाने के कारण गुरुकुल का कार्य अवरुद्ध हो गया।

श्री स्वामी दर्शनानन्द जी आर्य जगत् के शास्त्रार्थ महारथी महान् दार्शनिक विद्वान थे। आपने अपनी प्रभु प्रदत्त प्रतिभा से आर्य भारती के भण्डार को जो कुछ दिया, वह आर्य साहित्य की अमर निधि है। सच तो यह है कि वैदिक सत्य सिद्धान्तो के प्रचार प्रसार का जितना बड़ा कार्य स्वामी दर्शनानन्द जी ने किया उतना शायद ही किसी अन्य विद्वान विशेष से हुआ हो।

दो वरों और एक वधू की आवश्यकता

एक ३५ वर्षीया कुमारी जो एक राजकीय हाई स्कूल की मुख्याध्यापिका है, एम० ए० है और जिसका मासिक वेतन ५००) है, तथा सुन्दर और स्वस्थ है, के लिये एक योग्य वर चाहिये। एक २१ वर्षीय कुमारी जो एफ० ए० क्लास की छात्रा है तथा सुन्दर और स्वस्थ है, के लिये योग्य वर चाहिए। एक २४ वर्षीय कुमार जो सुन्दर और स्वस्थ है और ३२५) मासिक वेतन पाने वाला कर्मचारी है, के लिये योग्य वधू चाहिये। तीनों वार्ष्णेय (बारहसैनी) वैश्य है। जाति बन्धन नहीं, केवल आर्य्य होना आवश्यक है। पत्र व्यवहार पूर्ण विवरण और फोटो सहित अपेक्षित है।

रमाशङ्कर वार्ष्णेय
१२, बापूनगर, अजमेर"

आवश्यकता

मुझे अपनी सुन्दर सुशील १० वर्षीय ग्रेजुएट पुत्री के लिए सुयोग्य शाकाहारी सक्सेना वर की आवश्यकता है।

—महाराज बहादुर सक्सेना
रिटायर्ड फारेस्ट रेंजर
नानपारा (बहराइच)

श्वेत दाग की मुफ्त दवा

श्वेतारी सफेद दाग की लाभकारी दवा है। हजारों ने व्यवहार कर लाभ उठाया है। दाग का पूर्ण विवरण लिखकर पत्र व्योहार करें। लगाने की एक फायल दवा मुफ्त।

पता—कृष्णचन्द्र वैद्य
पोस्ट-कतरीसराय (गया)

गुरुकुल वृन्दावन प्रयोगशाला
जिला मथुरा का

"च्यवनप्राश"

विशुद्ध शास्त्र विधि द्वारा बना या हुआ

यौवन दाता, श्वास, कास हृदय तथा फेफडो को शक्तिवाला तथा शरीर को बलवान बनाता है।

मूल्य ८) रु० सेर

पगागरस

प्रमेह और समस्त वीर्य-विकारों की एकमात्र औषधि है। स्वप्नदोष जैसे भयकर रोग पर अपना जादू का सा असर दिखाती है। यहां की यह सुविख्यात दवाओं मे से एक है।

मूल्य एक तोला ६)

हवन सामग्री

सब ऋतुओं के अनुकूल, रोग नाशक, सुगन्धित विशेष रूप से तैयार की जाती है। आर्यसमाजो को १२॥ प्रतिशत कमीशन मिलेगा।

...से निर्मित सब रस, भस्म, आसव, अरिष्ट, तैल तैयार ...ों की हर जगह आवश्यकता है, पत्र व्यवहार करें।

—व्यवस्थापक

सत्यार्थप्रकाश
द्वितीय संस्करण

...यानन्द का ... द्वितीय संस्करण प्रकाशित को फोटो ओफसेट पर प्रकाशित किया जा रहा है यह ...लो के ही पास है इसे अब यह बहुमूल्य निधि सबके ... पास न होने के कारण विद्वानों ने सत्यार्थ प्रकाश मे परिवर्तन करना आरम्भ कर दिया है। इस कमी को दूर करने के लिये यही उचित था कि इसको फोटो ओफसेट प्रिन्ट करके समस्त आर्य बन्धुओ के हाथों में दिया जाय। जिससे भविष्य मे सत्यार्थप्रकाश में परिवर्तन करने का किसी को साहस न हो। इसलिये इस अमूल्य द्वितीय संस्करण वाले सत्यार्थप्रकाश को फोटो ओफसेट पर छपवाया जा रहा है कृपया शीघ्र ही अपनी मांग भेजने की कृपा करें। सत्यार्थ प्रकाश का साइज बड़ा है मूल्य १ प्रति ४.५० डाकखर्च २), चार प्रति १६), डाकखर्च रेलखर्च सहित २) शीघ्र पत्र द्वारा सूचित करें द्वितीय संस्करण के सत्यार्थ... पुस्तक २.५० दस कापी २) दयानन्दप्रकाश लेखक स्वामी दयानन्द सरस्वती २.५ वेद प्रचारक ... आर्य साहित्य का सूची-पत्र बिना मूल्य मंगायें।

वेद प्रचारक मण्डल, ६४१० देवनगर दिल्ली—५

प्रत्युत्पन्नमति महर्षि दयानन्द

—अनूपसिंह, मुजफ्फरनगर

आंग्ल साहित्य की एक कहावत है—Misfortunes never come alone. जिसका भावार्थ है विपत्तियाँ कभी अकेली नहीं आतीं। अपना घरबार छोड़ने के बाद सार्वजनिक क्षेत्र में पदार्पण करते समय महर्षि दयानन्द का जीवन घोर कष्ट और यातनाओं में बीता। कभी-कभी तो लगातार कई दिनों तक निराहार रहना पड़ा। कभी हिंसक जीवों से टक्कर लेनी पड़ी। इस अलौकिक समाज-सुधारक को बीस-इक्कीस से भी अधिक बार मार डालने का प्रयत्न किया गया। कभी विष देकर, कभी नदी मे फेंक कर, कभी तलवार के वार से और कभी जीवित सांप उन पर फेंक कर—अनेक प्रकार से उनके जीवन को समाप्त करने के प्रयत्न किये गये। चरित्रारोपण तथा कैद करने तक का भी दुस्साहस किया गया। इतनी विकट परिस्थितियों मे भी कोई व्यक्ति अपने मानसिक सन्तुलन को ठीक रख सकता है यह तो कल्पनातीत है। पर ऋषि तो ऋषि ही थे। कठिन से कठिन मुसीबतों में भी वे विचलित न होकर प्रत्युत्पन्नमति साबित हुए।

महर्षि दयानन्द जोधपुर मे सत्य-प्रचार कर रहे थे। वे निर्भीक होकर सब के मुंह पर सत्य-सत्य सुनाते थे। एक दिन इस्लाम का खण्डन उनके मुंह से सुनकर एक मौलाना ने कहा—"महाराज! यदि मुसलमानों का राज्य होता तो आपकी जीभ निकलवा दी जाती।" महाराज भला कब चूकने वाले थे। उन्होंने तत्काल प्रत्युत्तर मे कहा" उस समय मै यह कार्य न करता अपितु महाराणा प्रताप और शिवा जी जैसे वीरों की कमर ठोक देता जो आपकी अच्छी तरह खबर ले लेते।

लाला जगन्नाथ के यज्ञोपवीत पर पौराणिक पण्डितों ने कहना प्रारम्भ किया कि गणेश आदि के पूजन कराये बिना मुहूर्त के समय किया गया यह संस्कार अनिष्टकारी होगा। महर्षि ने तुरन्त उत्तर दिया गणेश आदि का पूजन तो वेद विरुद्ध है, इसके न कराने से अनिष्ट नहीं हो सकता और हमारा शुक्र (तदेव शुक्र तद्ब्रह्म) तो ब्रह्म है जो कभी अस्त नहीं होता।

महर्षि दयानन्द को थाली में भोजन करते हुए देखकर एक विरोधी सन्यासी ने कहा "सन्यासी होकर थाली मे भोजन करते हो। सन्यासी के लिये धातु छूना वर्जित है :" तभी प्रत्युत्पन्नमति महर्षि दयानन्द ने मुस्कराते हुए उस सन्यासी के घुटे हुए सिर की ओर संकेत किया और बोले—"क्या आपने अपने सिर के बाल उखाड़े हैं या चमड़ी को तन्नी से रगड़े हैं क्योंकि सन्यासी धातु स्पर्श तो करते नहीं ?"

एक दिन स्वामी जी को नीचा दिखाने के लिये बहुत से मनुष्यों ने निर्णय किया कि स्वामी जी से यह पूछा जाय कि आप ज्ञानी हैं या अज्ञानी ? यदि वे कहें कि ज्ञानी हे तो उनसे कहा जाय कि महापुरुष अहंकार नहीं किया करते और यदि वे अपने आपको अज्ञानी कहें तो उनसे कहा जाय जब आप स्वयं अज्ञानी है तो हमको क्या समझावेंगे ?

अगले दिन जब यह प्रश्न स्वामी जी से किया गया तो उन्होंने तत्क्षण उत्तर दिया, "मैं कई विषयों में ज्ञानी हूं और फारसी, अरबी और अंग्रेजी आदि विषयों मे अज्ञानी हू। उनके इस तर्कसंगत उत्तर को सुनकर प्रश्नकर्ता हक्के-बक्के रह गये और एक दूसरे का मुंह ताकने लगे।

एक व्यक्ति ने महर्षि दयानन्द महाराज जी से कहा,' आप ग्रन्थों के शब्दों का अर्थ उलट देते हैं"। स्वामी जी ने तुरन्त उत्तर दिया, " मैं तो अर्थ नहीं उलटता, उलटने वाले कोई और ही हैं। हां, उनके उल्टे हुये अर्थों को तो अवश्य ही उलट देता हू।

एक दिन, लक्ष्मण शास्त्री ऋषिवर के निकट आकर शास्त्रार्थ करने लगे। शास्त्रार्थ का विषय मूर्ति-पूजा था। ऋषिवर ने शास्त्री जी को कहा कि आप अपने पक्ष की पुष्टि के लिये कोई वेद का प्रमाण प्रस्तुत कीजिये। शास्त्री जी ने कहा कि वेद का प्रमाण कहां से दू ? वेद तो शंखासुर ने हरण कर लिए है। स्वामी जी ने तत्काल वेद हाथ मे उठाकर कहा— " पण्डित जी आपके आलस्य और प्रमादरूप शंखासुर का वध करके ये वेद मैंने जर्मनी से मगाये हे। लीजिये, इनमे से खोजकर कोई प्रमाण निकालिये।

महर्षि दयानन्द की प्रत्युत्पन्नमति से प्रभावित होकर विश्व विख्यात फ्रेन्च लेखक "रोमां रोलां" ने उनके विषय मे लिखा है—It was impossible to get the better of him (Dayarand) for he possessed an unrivalled knowledge of Sanskrit and the Vedas अर्थात् उस (दयानन्द) पर विजय पाना असम्भव था क्योंकि वे वैदिक वाङ्मय और संस्कृति के अनुपम भण्डार थे।

साहित्य-समीक्षण

"संस्कार-प्रकाश"

लेखक-श्री प० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय
प्रकाशक-विजय कुमार--अध्यक्ष
वैदिक प्रकाशन मंदिर, इलाहाबाद-३
पृष्ठ संख्या—१५५ मूल्य २ रुपया
(प्रथम संस्करण)

श्री पं० गंगा प्रसाद जी उपाध्याय लिखित एक आर्य जाति के षोडश संस्कारो पर संक्षेप मे सम्यक् विवेचन है जीवन मे १६ संस्कारो का क्या महत्व है जीवन की गहराइयो मे प्रवेश कर, ज्ञान के अगाध समुद्र से मोती खोज पाना आसान नहीं।

"अनुभूति" पाना स्वय एक समस्या है। जटिल समस्याओं को सरलता के साथ साधारण बुद्धिजीवियो मे भी बसा देना स्वानुभूति वाले श्री उपाध्याय जी, एक अनोखी प्रतिभा वाले व्यक्ति ही हैं जिन्होने ऋषि की आर्ष प्रणाली को उद्घाटित कर जनता के समक्ष प्रस्तुत किया है।

"संस्कार प्रकाश,, इसी प्रकार का अनुभूतिपूर्ण ऋषि की संस्कार विधि का संक्षिप्त बोधगम्य "सार" हो तो है। जिसे साधारण असाधारण दोनों ही प्रकार के व्यक्ति जीवन में संस्कारोका का क्या महत्व है बड़ी ही सुगमता से समझ सकते हैं।

आर्य (हिन्दू) जनता को विषय की गम्भीरता होते पर भी पाठक को बड़ी सरलता से हृदयङ्गम कराया है।

हम चाहते हैं कि प्रत्येक आर्य (हिन्दू) सोलह संस्कारों पर विश्वास रखने वाले जैन भी हो इसे अवश्य मगाकर पढ़ने व पढ़ाने का संकल्प लें, जिससे संस्कारों का प्रचलन बढ़े।

वैदिक जगत् मे परिवर्तन लाने के लिए पुस्तक अपूर्व साधन है लेखक आर्य जगत् के चिर परिचित हैं उनका प्रत्येक साहित्य विद्वानों के हाथो मे अवश्य ही होना चाहिए।

—सच्चिदानन्द शास्त्री एम० ए०
सभा मन्त्री

❀ आवश्यक विज्ञप्ति ❀

रामचन्द्र आर्य नाम का एकाउण्ट क्लर्क बिना चार्ज दिये गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर से भाग गया है मिलने पर आप उसे पुलिस के हवाले कर दें तथा गुरुकुल के नाम पे उसे कोई सहायता न दें हमने थाना ज्वालापुर जिला सहारनपुर मे उसकी रिपोर्ट कर दी है।

—वाचस्पति शास्त्री
गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार)

आर्य्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल.-६०

रा० पौष १० शक १८८९ माघ कृ० ५
(दिनांक २१ जनवरी सन् १९६८)

आर्य्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

Registered No.L. 60
पता—'आर्य्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष्य : २५९९१ तार : "आर्यमित्र"

सशस्त्र विद्रोह के लिए सुर्खों की गुप्त योजना

भारत को दूसरा वियतनाम बनाने के इरादे : सीमान्त क्षेत्रों में गड़बड़ी की तैयारियां : गुप्त पत्रक मिले

सशस्त्र विद्रोह द्वारा सत्ता हथियाने की योजना को कार्यरूप देने के उद्देश्य से [illegible] कम्युनिस्ट पार्टी प्रादेशिक समितियों के स्तर पर वैकल्पिक गुप्त पार्टी [illegible] की स्थापना कर रही है।

वामपंथी कम्युनिस्ट [illegible] 'वितरित गुप्त पत्रकों के—[illegible] कुछेक सरकार के पास पहुंच गये हैं—अनुसार सशस्त्र संघर्ष वियतनामी पद्धति की तरह का होगा और उसे चीन तथा पाकिस्तान की सीमाओं से मिलने वाले क्षेत्रों मे तेज किया जाएगा।

इन पत्रको स पता चलता है कि पार्टी सेना तथा पुलिस मे घुसपैठ का विशेष प्रयास करेगी। इससे पार्टी को दो लाभ दिखाई देते हैं। एक तो वह विकट अवसरो पर सेना और पुलिस के कुछ वर्गों के असन्तोष पर निर्भर कर सकगी और दूसरे शस्त्रास्त्र के लिए एक गुप्त केन्द्र स्थापित कर सकेगी।

उत्तर प्रदेश के एक प्रमुख वामपंथी कम्युनिस्ट नेता ने हाल ही मे एक गुप्त बैठक मे आश्वासन दिया कि जैसे ही पार्टी अपनी लड़ाकू व्यवस्था स्थापित करने मे समर्थ हो जायगी, तिब्बत स्थित चीनियो से हथियार आने शुरू हो जाएगे।

ऐसे ही आश्वास पश्चिम बगाल के दो वामपंथी कम्युनिस्ट नेताओ द्वारा जो इस समय भूमिगत हैं, एक गुप्त सभा मे दिये गये हैं। उन्होंने कहा आवश्यकता पड़ने पर हथियारों का कोई अभाव न होगा और पार्टी को भावी संघर्ष के लिये अपने जन सगठन के आधार को विस्तृत करना होगा।

सीमान्त क्षेत्रों में विद्रोहात्मक व्यवस्था को केन्द्रित करने का आह्वान करते हुए गुप्त पत्रकों मे तेलगाना के अनुभव की चर्चा की गई है जो 'एक कम्युनिस्ट देश के पास न होने' के कारण विफल रहा था। पत्रकों मे [illegible] गया है कि चीनी नियन्त्रण मे [illegible] मे "सोशलिस्ट राज्य" की स्था- [illegible] ने स्थिति पार्टी के पक्ष मे ला दी है। साथ ही चीन और पाकिस्तान मे मैत्री उत्साहवर्धक है क्योंकि इससे पार्टी के लड़ाकू तत्वों को तिब्बत तथा पाकिस्तान मे शरणस्थल मिल सकते हैं।

गुप्त पत्रो और गुप्त भाषणो के अनुसार जिन सीमांत क्षेत्रों मे आन्दोलन तेज किया जाना है उनमे पश्चिमी बगाल, विशेषत उसके जलपाईगुडी, पश्चिमदिनाजपुर, मालदा और मुर्शिदाबाद के जिले और उत्तर प्रदेश का बहराइच जिला शामिल है। साथ ही मिजो पहाड़ियो, नागालैंड, आसाम, मणिपुर, त्रिपुरा और काश्मीर मे पार्टी की गतिविधिया प्रबल बनाने की योजना है।

गुप्त समितियो मे सदस्यों की कोई लिखित सूची न होगी। भूमिगत शरणस्थल, भूमिगत छापेखाने, सुरक्षित घर और गुप्त सचार व्यवस्था बनाई जाएगी।

पार्टी की नई कार्य पद्धति मे चीन के इस कथन से सहमति व्यक्त की गई है कि मिजो, नागा और अन्य जनजातियों को स्वायत्तता के आन्दोलन के लिये भड़काया जाना चाहिए। मुस्लिमों में भी काम तेज किया जाएगा और उन्हें १९६५ के भारत-पाक युद्ध के दौरान तथा बाद मे किए जा रहे कथित 'दुर्व्यवहार से अवगत किया जाएगा।

भारतीय दूतवासों में हिन्दी को अर्धचन्द्र

विदेशों में भारत के ८० दूतावास हैं जिनमें से केवल दो मे हिन्दी के जानने वाले कुछ व्यक्ति हैं किन्तु शेष ७८ दूतावासों में भारत की राष्ट्र भाषा हिन्दी का नामलेवा और पानी देवा एक भी व्यक्ति नहीं है। यह है भारत सरकार की राष्ट्र भाषा हिन्दी को समुन्नत एवं प्रचलित करने की स्थिति। गत २० वर्षों में यदि भारत सरकार ने हिन्दी को यदि राष्ट्र-भाषा बनाने का प्रयत्न किया होता तो जो विरोध आज दिन दक्षिण मे हो रहा है वह कदापि न होता।

इस विरोध का उत्तरदायित्व १६ आने भारत सरकार की हिन्दी सम्बन्धी गर्हित नीति पर ही है।

युवा शक्ति और आर्यसमाज

(पृष्ठ ७ का शेष)

चित कर उसके नियन्त्रण में इनको दे दिया जाय और यदि स्थानीय नियन्त्रण में ही रखना हो तो इनके प्रबन्ध के लिये केवल वह ही सज्जन चुने जाएं जो कम से कम ५ वर्षों से नियमपूर्वक आर्य सदस्य किसी आर्यसमाज में चले आते हों। तथा जो सदाचार सम्बन्धी नियमों में पूर्णतया खरे उतरे हों उन्हीं को इन संस्थाओं का अधिकारी चुना जाय। शेष आर्यसमाज की सारी शक्ति प्रचार कार्य में लगाई जाय। मिशन कार्य में जो भी सहयोग दे उसका स्वागत किया जाय। आर्यसमाज का द्वार सबके लिये खुला रखा जाय। नवयुवकों को आर्यसमाज में आमन्त्रित किया जाय और उनको आगे बढ़ने के लिये उत्साहित किया जाय।

[illegible]नवीन आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग से कृष्णगोपाल शर्मा द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।

जन्म शताब्दी समारोह सफलतापूर्वक सम्पन्न

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन में आर्यनेता श्री म० आनन्दस्वामी जी महाराज की अध्यक्षता में विशाल आर्य जन-समूह द्वारा स्वामी जी के प्रति श्रद्धांजलियां समर्पित, स्वामी जी के कार्य को पूर्ण करने के लिए आर्य नर-नारियों द्वारा सामूहिक संकल्प

भारत के क्रान्तिकारियों का आर्यजगत् की ओर से शानदार हार्दिक अभिनन्दन

लखनऊ रविवार माघ २९ शक १८८९, फा० कृ० ४ वि० २०२४
१८ फरवरी सन् १९६८ ई०

वेदामृत

ओ३म् प्राणाय स्वाहाऽपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा चक्षुषे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा ॥ २३ ॥

यजु० अ० २२, म० २३

भावार्थ—प्राण के लिए यज्ञ हो। अपान के लिए यज्ञ हो व्यान के लिए यज्ञ हो। नेत्रों के लिए यज्ञ हो। श्रोत्रों के लिए यज्ञ हो। वाणी के लिये यज्ञ हो तथा मन के लिए यज्ञ हो।

विषय सूची

१—स्वाध्याय और आनन्द	२
२—सम्पादकीय	३
३—श्री देहलवी जी (एक संस्मरण)	५
४—सभा तथा सार सूचनाए	६, ११
५—यह कृतघ्नता क्यों ?	७
६—महर्षि के अप्रकाशित ग्रन्थ	८-९
७—मौरिशस में साम्प्रदायिक दंगे	१०
८—आर्य जगत्	१३
९—आर्य प्रज्ञाचक्षु का निधन समाचार	१५
१०—दयानन्द-सप्ताह	१६

भारत सरकार के राज्य शिक्षा मन्त्री श्री प्रो० शेरसिंह जी ने देश की शिक्षा समस्याओं पर प्रकाश डालते हुए आर्यसमाज और गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की प्रशंसा की, नवस्नातकों को दीक्षान्त भाषण देते हुए स्नातकों को आशीर्वाद दिया कि वे राष्ट्र के आदर्श पथ प्रदर्शक बनें, राष्ट्र उनकी ओर आशा भरी दृष्टि से देख रहा है। गुरुकुल अनुसन्धान विभाग का भी आपने उद्घाटन किया।

शताब्दी समारोह में पूज्य स्वामी जी के प्रति भावपूर्ण श्रद्धांजलियां समर्पित करने के साथ साथ आर्य नर नारियों ने गुरुकुल को और भी अधिक उन्नत एवं सफल बनाने में सहयोग एवं समर्पण की घोषणायें की।

शताब्दी समारोह का सर्वाधिक आकर्षक एवं महत्वपूर्ण राष्ट्र रक्षा सम्मेलन श्री पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री संसद सदस्य, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। विशाल समूह के मध्य इस सम्मेलन में क्रान्तिकारी शहीद यतीन्द्रनाथदास के लघुभ्राता श्री किरणचन्द्रदास, शहीद भगतसिंह के छोटे भाई श्री राजेन्द्र सिंह तथा श्रीमती रणवीरसिंह, बहन के पुत्र श्री जगमोहनसिंह, शहीद रामप्रसाद बिस्मिल की बहन श्रीमती शास्त्री देवी, क्रान्तिकारी श्री सुरेन्द्र पाण्डे की बहन श्रीमती सुशीला आजाद, भूतपूर्व प्रधान मन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री के पूज्य चाचा श्री सतगुरशरण श्रीवास्तव आदि प्रमुख देश भक्तों ने उपस्थित होकर देश को पुनः क्रान्ति का सन्देश दिया। आर्य नेता श्री आनन्द स्वामी जी महाराज ने आर्य जगत् की ओर से क्रान्तिकारियों को माल्यार्पण करते हुए आशीर्वाद दिया और आशा प्रकट की कि आज के भारत में फिर भगतसिंह पैदा होंगे और क्रान्ति सफल होगी।

श्रीमती ललिता शास्त्री जी ने महिला सम्मेलन की अध्यक्षता कर महिलाओं को देश सेवा के लिये प्रेरणा दी। राष्ट्रभाषा सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए सूचना व प्रसारण मन्त्री, श्री के० के० शाह ने गुरुकुल एवं आर्यसमाज के राष्ट्रीय योगदान की प्रशंसा की और कहा कि भारत में ज्ञान विज्ञान का भण्डार भरा है जरूरत है उसपर गर्व करने एवं उसे दुनिया तक पहुंचाने की, राष्ट्र भाषा हिन्दी के प्रति श्रद्धा प्रकट करते हुये श्री शाह ने कहा कि हिन्दी ही भारत की राष्ट्र भाषा है और रहेगी, हमें उसे समृद्ध करने में जुट जाना चाहिये।

आयुर्वेद सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए माननीय श्री दरबारीलाल शर्मा अध्यक्ष विधान परिषद व भारतीय चिकित्सा परिषद् उ० प्र० ने गुरुकुल के आयुर्वेद सम्बन्धी योगदान की प्रशंसा की और सब सम्भव सहायता दिलाने का आश्वासन दिया। गुरुकुल सम्मेलन, संस्कृत सम्मेलन, आर्य सम्मेलन, शारीरिक शक्ति प्रदर्शन प्रतियोगिता आदि विशेष कार्यक्रम भी इस अवसर पर सम्पन्न हुए।

गुरुकुल भूमि के दानदाता देशभक्त राजा महेन्द्र प्रताप ने शताब्दी समारोह में स्वामी के प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित की। शताब्दी में आयोजित आर्य इतिहास एवं सांस्कृतिक प्रदर्शनी का उद्घाटन श्री हंसराज गुप्त महापौर दिल्ली नगर निगम, प्रधान परोपकारिणी सभा के करकमलों से सम्पन्न हुआ। बम्बई के सेठ श्री बद्रीप्रसाद मोरका एवं फिरोजाबाद के श्री सेठ बालकृष्ण गुप्त जी ने शताब्दी में पधार कर ११११), ११०१ रुपए की धनराशियां भेंट की, भारत के वाणिज्य मन्त्री श्री दिनेशसिंह जी ने भी ११११) रुपये का दान भेजकर सहयोग प्रदान किया। बम्बई से श्री धर्मेन्द्र सिंह जी ने १०००) सहायता प्रदान की और उनकी माता वेदवती जी (फगवाड़) ने ५००) धन संग्रह करके भेजे। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली की ओर से ५०००) रुपये की विशेष सहायता शताब्दी समारोह के लिये प्राप्त हुई।

आर्यजगत् के श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी दण्डी, श्री डा० हरिशङ्कर जी शर्मा, श्री बा० पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट, श्री ब्रि० महेन्द्रप्रताप जी शास्त्री, श्री शिवचन्द्र जी श्री डा० धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री मेरठ, श्री प० सच्चिदानन्द जी शास्त्री श्री प० प्रेमचन्द्र जी शर्मा, श्री ठा० फूलनसिंह जी, श्री माता प्रियम्वदादेवी जी, श्रीमती अक्षयकुमारी जी श्री प० धर्मपाल जी विद्यालंकार, श्री भारतेन्द्रनाथ जी, श्री प० शिवकुमार जी शास्त्री संसद सदस्य, श्री आचार्य विश्वश्रवाः जी, श्री आचार्य बृहस्पति जी शास्त्री एम०ए०, श्री वीरसेन जी वेदश्रमी, श्री हीरालाल जी आर्य, श्री जयकुमार स्नातक एम०ए०, श्री डा० विजयेन्द्र स्नातक एम०ए०, श्री ब्रह्मदत्त स्नातक एम०ए०, श्री रत्नाकर शास्त्री एम०ए०, आदि प्रमुख व्यक्तियों ने शताब्दी समारोह कार्यक्रम में पधार कर विशेष सहयोग प्रदान किया।

शताब्दी समारोह की सफलता के लिये आर्यजगत् को बधाई !

वार्षिक ८)
छःमाही ५)
विदेश में १ पौ०

सम्पादकः
सच्चिदानन्द शास्त्री एम० ए० सभा मन्त्री ★ पं० शिवदयालु
उमेशचन्द्र स्नातक एम० ए०

वर्ष ७०
अंक ५
एक प्रति २० पै०

स्वाध्याय और आनन्द

'स्वाध्यान्मा प्रमदित्तव्यम् ।'

यह उपनिषद् का वचन है जिसका अर्थ है "स्वाध्याय मे कभी भी प्रमाद (लापरवाही) न करना चाहिये।"

योग दर्शन में भी स्वाध्याय का फल बताया है।

स्वध्यायादिष्ट देवता सम्प्रोगः।

"इसका आशय यह है कि स्वाध्याय शील पुरुष का इष्ट देवता के साथ मिलाप या उसके साथ आलाप होता है।"

धर्म और आनन्द, धन और आनन्द इत्यादि के साथ- साथ स्वाध्याय और आनन्द (लव आफ बुक्स) कुछ कम उपयोगी नहीं है बहुधा लोग खाली बैठे और पढे लिखे होकर ऐसे व्यसनों में लिप्त रहते हैं जिनसे न तो उनको कुछ मानसिक लाभ होता है और न भविष्य के लिये अच्छी और उपयोगी टेव (हैबिट्स) पड़ती है किन्तु कुटेव और दुर्व्यसनो मे ग्रस्त होकर अपना जीवन और धन सम्पत्ति नष्ट किया करते हैं ऐसे लोगों को यदि पुस्तकानुराग हो जावे तो मनोरजन के साथ-साथ पुस्तको से उपदेश और अनुभव की बातें सीख सकते हैं। जिनसे अपने भविष्य जीवन में बहुत आनन्द का लाभ उठा सकते हैं।

संसार के पदार्थों में यदि विचारा जाये तो पुस्तकें मूल्यवान वस्तु हैं। पुस्तको के अध्ययन से हमारे मस्तिष्क में अपूर्व परिवर्तन होता है, पुस्तक हमें अज्ञानान्धकार से ज्ञान के उज्ज्वल प्रकाश की ओर ले जाती है, संसार के दुःख दूर करने और इस संसार यात्रा को सुखमय बनाने मे पुस्तकों ने बड़ा काम किया है, पुस्तकें विद्वान् की जननी भी कही जावे तो अत्युक्ति नहीं है। विद्या प्राप्ति का साधन, परमात्मा की प्राप्ति का ज्ञान बनाने वाली पुस्तकों से अधिक उपयोगी इस ससार मे क्या वस्तु हो सकती है? द्रव्य बड़ी चीज है—सही परन्तु द्रव्य का कमाना और उसको जीवन मे ठीक काम मे लाया जाना पुस्तक ही [illegible] है। पुस्तक हमे मनुष्य त्व प्रदान करती है। हमारे जीवन के उद्देश्य क्या है, हम [illegible] इस संसार मे [illegible] यह पुस्तकें ही बतलाती हैं। पुस्तक [illegible] अपनी अमृत वर्षा से हमारे शुद्ध हृदय मे ज्ञान का मानसरोवर उत्पन्न करती है, जो मनुष्य पुस्तके पढ नहीं जानता वह वास्तव म बडा अभागा है।

जिस देश मे [illegible] की संख्या अधिक हो, जो पुस्तकों के आनन्द मे एकदम कोरे हों तो वास्तव मे वह अभागो का देश है। साधारण लोगों ने खाने-पीने विषय भोग मे ही सुख समझ रखा है परन्तु खाना पीना मैथुन क्रिया तो पशु-पक्षी भी करते हैं। यदि इन्हीं बातो मे तुम मानव जीवन का सुख समझे बैठे हो तो तुम्हारे जीवन (मनुष्य जीवन) और कुत्ते बिल्लियो के जीवन में कुछ अन्तर नहीं रहता।

हमारा मानव जीवन सब जीवो के जीवन से श्रेष्ठ है, यह उत्कृष्टता यह मनुष्यत्व का विकास जब ही जान पड़ता है जब हम पुस्तको से मनोविनोद करना सीखें हो विद्या देवी के ज्ञान मन्दिर की ओर अग्रसर हुए हों एक विद्वान् कह गया है कि हमारे ग्रन्थ ऐसे गुरू हैं जो हमें ताड़ना दिये बिना बहुत कुछ पढ़ाते-सिखाते हैं। इन गुरुओं को न तो क्रोध आता है न झटक कर कोई शब्द बोलते हैं, फीस या गुरु दक्षिणा कुछ नहीं मांगते जब चाहो उन के पास पढ़ने को चले जाओ इन्हे कभी सोता ही न पाओगे, जो कुछ पूछोगे उसका उत्तर तुरन्त मिलेगा यदि तुम उनका सबक (पाठ) भूल जाओगे तो अप्रसन्न भी न होगे यदि तुम अज्ञानता से कुछ मूर्खता कर बैठोगे तो वह तुम्हारी हँसी भी नहीं उड़ावेंगे।

सद्ग्रन्थों से परिपूर्ण पुस्तकालय दुनियां की सारी सम्पत्तियों से अधिक मूल्यवान है, कोई भी मूल्यवान पदार्थ पुस्तकों की समता नहीं कर सकता। पुस्तको का प्रेमी बनने से मनुष्य सब कुछ प्राप्त कर सकता है।

पुस्तके हमारी मित्र हैं यह मनुष्य कह सकता है परन्तु इनकी मित्रता का आनन्द वही प्राप्त कर सकता है जो पुस्तक पढना सीखता है और उनसे मित्र की तरह हृदय से मिलता है। जो पुस्तको से प्रेम करता है उसको न तो मित्र की न किसी सम्पत्ति वालों की और न मनोरंजन करने वाले मनुष्य की आवश्यकता है। पुस्तकाध्ययन से मनुष्य सर्वदा आनंदित रहकर दिन व्यतीत करता है। पुस्तको के समान अविनाशी मित्र संसार मे कौन हो सकता है।

एक पुस्तक प्रेमी का कथन है कि पुस्तकों द्वारा हम मृतक विद्वान और महात्माओं को अपने पास बुलाकर बिठा लेते हैं और उन्हे बातें करने के लिये विवश करते है। पुस्तको द्वारा यह कैसा स्वर्ग हमको प्राप्त है। यह सासारिक आनन्दो से कैसा बढ़ चढ़कर आनन्द है, मृत पुरुष न जाने कब और कहां मर गये पर पुस्तकों द्वारा उनके हृदय के भावों को हम जान लेते हैं। सीजर और सिकन्दर मे उनके युद्ध वृत्तांत सुन सकते हैं, डिमास्थनीज और सिरो हमारे आगे खड़े हो वक्तृता देने लगते हैं। राम और कृष्ण के कार्य प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होने लगते हैं। पुस्तकों द्वारा हम महर्षि दयानन्द सरस्वती समीप जा बैठते हैं और उनकी बातें सुनते हैं। कैसा अनुपम आनन्द हमें पुस्तकों द्वारा

★ पं० भगवानदेव शर्मा
महर्षि दयानन्द योग आश्रम, टङ्कारा

प्राप्त होता है। युद्ध का नाम सुनते ही बहुतेरों का कलेजा कांपता है परन्तु महाभारत अथवा रूस जापान में युद्ध की पोथी आप हाथ में ले लीजिये और बेखटके लड़ाई की कैफियत देखिये।

संसार मे अनुभव का राज्य है जो अपने अनुभव से अपने भविष्य को नहीं सुधारता वह बड़ा नहीं बन सकता। वास्तव में अनेक विषयों की पुस्तकों से पूर्ण पुस्तक भण्डार स्वर्ग की समानता रखता है। पुस्तक द्वारा चाहे जहां की सैर कर लीजिये गरीब और अमीर सब ही पुस्तकों से एक सा आनन्द लाभ करते हैं।

जेरेमकोलिस कहता है कि पुस्तकें हमारी युवावस्था का मार्गदर्शन है, बुढापे में आनन्दपूर्वक सेवा करती है, एकान्त में हमारी रक्षा करती है। हमें अपने जीवन को भार रूप बोध नहीं होने देती है। मानव जीवन में झंझट दूर करती है। हमारी चिन्ताओं और बुरी इच्छाओ को नष्ट करती है। निराशाओं को पुस्तकें दूर कर देती हैं इतने पर भी जब हम किसी जटिल समस्या मे फंस जाते हैं तो उससे सुलझने के लिए पास जाकर प्रश्न कर सकते हैं—बिना चिढ़िडाए निरभिमान और निःस्वार्थ होकर पुस्तकें हमे उत्तर देती हैं जिससे हमारा जीवन आनन्दमय बन जाता है। मुख्य बात यह है कि पुस्तकों के स्वाध्याय से जितना आनन्द होता है, उतना अन्य बातो से नहीं होता।

पूज्यपाद स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज ने एक बार अपने उपदेश मे कहा था। स्वाध्याय के बिना सद्विचार स्थिर नहीं रहता। सद्विचारों के अभाव से सदाचार की हीनता प्रवाहित हो जाती है। सदाचार का दूर हो जाना किसी के भी सौभाग्य का कारण नहीं हो सकता, अत. स्वाध्याय को स्थिर करके अपने हिताहित की चिन्ता करो। ऋषि ने वेदो का जो ईश्वरीय ज्ञान है स्वाध्याय किया, जीवन मुक्ति को प्राप्त कर परमात्मा की प्राप्ति का उपाय प्रकाश करके शरीर त्यागान्तर प्रकाश स्वरूप परमेश्वर को प्राप्त हो गये। सबका इष्टदेवता जो परमात्मा है उसके साथ सम्प्रयोग करने का उपाय स्वाध्याय ही है। ●

नवयुवक हृदय उठ जाग ! जाग !!

'अरे वीर हुंकार गुंजादे, वीर स्वरो मे गादे तू।
उठी वेदना ज्वलित हृदय मे, उसको आज मिटादे तू॥
जिनके वज्र हृदय पिघले हैं, उनको फिर सरसादे तू।
कर्म त्याग कर बैठे उनको, कर्म की याद दिलादे तू॥
शब्द सुनाई दे कण-कण से, कायरता तू भाग ! भाग ॥१॥
नवयुवक हृदय उठ जाग ! जाग !!

तरुण तरङ्ग उठे जब मन मे, दिग्गज भी दहला जायें।
नभ मण्डल के ग्रह मण्डल भी, उतर धरा पर आ जायें॥
शून्य हृदय को मथे मन्थनी, वीर भावना भर जायें।
वीर उठें हुंकार भरे तो, हृदय कमल द्रुत खिल जायें॥
तेरे तीक्ष्ण तीर की गति मे, झंकृत हो जाये राग ! राग !! ।२।
नवयुवक हृदय उठ जाग ! जाग !!

प्रबल प्रताप [illegible] सूरज से, अपनी वाणी से भर दे।
राष्ट्र भक्त [illegible] [illegible], तू सारे युवकों को कर दे॥
[illegible] ऐसी [illegible] से, [illegible] [illegible] दे।
प्रखर प्र[illegible] ने माता के, [illegible] [illegible] कर दे॥
आर्य वीर वर वीर बनें, 'योगेन्द्र' भेद को त्याग ! त्याग !! ।३।
नवयुवक हृदय उठ जाग ! जाग!!

पादरी पोप पाखण्डी दल, ईसाई धर्म बढ़ाते है।
बतलाते ईसा ईश पुत्र, जगदीश्वर व्यर्थ बताते हैं॥
इधर मूढ मतवादी दल, प्रभु को भूल सिखाते हैं।
उठो. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कष्ट बढाते जाते है॥
पुरुषार्थी निज पुरुषार्थ बढा, प्रियमित्र साथ हो भाग ! भाग ।४।
नवयुवक हृदय उठ जाग ! जाग !!

—योगेन्द्र पुरुषार्थी, गुरुकुल झज्जर

वैदिक प्रार्थना

ओ३म् यदङ्ग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि । तवेत्तत्सत्यमङ्गिरः ॥ ६ ॥

ऋ० १ । १ । २ । १ ॥

व्याख्या–हे "अङ्ग" मित्र ! जो आपको आत्मादि दान करता है, उसको "भद्रम्" व्यावहारिक और पारमार्थिक सुख अवश्य देते हो, हे "अङ्गिर" प्राणप्रिय ! यह आप का सत्यव्रत है कि स्वभक्तों को परमानन्द देना, यही आपका स्वभाव हमको अत्यन्त सुखकारक है आप मुझ को ऐहिक और पारमार्थिक इन दोनों सुखों का दान शीघ्र दीजिए जिससे सब दु ख दूर हो । हमको सदा सुख ही रहे ।

लखनऊ रविवार १८ फरवरी १९६८, दयानन्दाब्द १४३ सृष्टिसम्वत् १,९७,२९४९,०६८

मातेश्वरी सीता का पावन जन्म पर्व

फाल्गुन कृष्ण अष्टमी बुद्धवार तद-नुसार ता० २१ फरवरी १९६८ इसवर्ष सीता अष्टमी पर्व की पुण्य तिथि है । आर्य संस्कृति अभिमानी समस्त आर्य जाति के नर-नारियों का चाहे वह संसार के किसी भी देश मे निवास करती हों, मातेश्वरी सीता का जन्म पर्व मनाना महान नैतिक कर्त्तव्य है ।

आर्य जाति सदा से मातृशक्ति की पूजा करती आई है । आर्य संस्कृति मे नारी जाति को उच्चमान का स्थान दिया गया है । नारी की निन्दा करना, उसको नरक का द्वार कहना, उसको पापों की जननी व उपभोग की वस्तु बताना व उसको पशु तुल्य मानना सवथा हेय एव अनार्य भावनाये हैं । आयसमाज के प्रवर्तक महर्षि स्वामी दयानन्द जो महा राज ने इस युग में आकर इन गर्हित भावनाओं का, जो समस्त जातियो मे घर किए थीं प्रबल विरोध किया और मातृशक्ति के गौरव की पुन पूण प्रतिष्ठा की ।

मातेश्वरी सीता को महर्षि बाल्मीकि ने अपनी रामायण मे वैदेही, जानकी, जनकतनया आदि नामो से पुकारा है साथ ही उसको अयोनिजा भी कहा है । उसका तात्पय यह प्रतीत होता है कि सीता जनक की धमपत्नि सुनयना के गर्भ से उत्पन्न नही हुई, अपितु राजा जनक भूमिकषन महोत्सव मनाते हुए खेत की लीक खूड या सीता म एक नवजाता कन्या को उपलब्ध किया और उसका पुत्रीवत पालन किया । उसका नाम सीता मे उपलब्ध होने के कारण सीता रखा गया ।

हम बाल्मीकि रामायण के इस लेख कि सीता अयोनिजा थी और खेत की लीक मे हल चलाते समय उपलब्ध हुई, मानने को तैयार नहीं । बाल्मीकि रामायण में क्यों और कैसे यह लिख गया, हमारी समझ मे नहीं आता । हम तो समझते हैं कि सीता निश्चय ही महारानी सुनयना के गर्भ से उत्पन्न हुई थी, हां इतना माना जा सकता है कि भूकर्षण महोत्सव अथवा सीतोष्टि के ठीक समय उसका जन्म होने के कारण उसका नाम सीता रख दिया गया हो और महापुरुषो के चरित्र मे चमत्कारिता व अलौकिकता चित्रित करने की परम्परा के अनुरूप उपरोक्त कथन आगे चलकर रामायण मे किया गया हो ।

महारथी कर्ण की उत्पत्ति माता कुन्ती के कान से बतलाना ईसा मसीह को माता मरियम के गभ से बिना मानवीय ससर्ग के उत्पन्न हुआ बतलाना, मेनका गभ प्रसूता कन्या शकुन्तला का पक्षियो द्वारा कण्वऋषि के आश्रम मे लाया जाना और इसीलिए उसका नाम शकुन्तला रखना आदि अनेको अदभुत व चमत्कारिक गाथाओं व कथानकों का वर्णन साहित्य मे मिलता है । अस्तु ।

सीता को वेदशास्त्रो मे पारगत बनाने मे राजा जनक ने कोई कसर उठा न रखी और जब वह विवाह योग्य हुई तो उसका प्रतिबन्ध पूर्व स्वयंवर रचने की घोषणा की । प्रतिबन्ध यह था कि जो शिवधनुष को चढ़ावेगा उसके साथ सीता विवाही जावेगी । वर्षों तक समय २ पर देश विदेशों के कुलीन राजकुमार आते रहे किन्तु कोई भी धनुष उठा न सका । बहुत काल के उप रान्त विश्वामित्र के साथ राजा दशरथ के दो राजकुमार रामचन्द्र व लक्ष्मण, जिनको ऋषिवर ने अपने आश्रम मे लेजाकर नाना दिव्य अस्त्रों व शस्त्रों के संचालन की शिक्षा दी थी, राजा जनक के शिव-धनुष पर शक्ति आजमाने मिथिलापुरी पधारे ।

राजाजनक ने प्रथा के अनुसार पुरवासियों को बुलाया और उनकी उपस्थिति मे राम ने धनुष भग कर दिया । विश्वामित्र से परामर्श कर राजा जनक ने अपने दूत अयोध्या भेजे और सम्राट दशरथ को सब वृत्तान्त भेजकर अपनी कन्याओ का राजकुमारों के साथ पाणिग्रहण का प्रस्ताव भेजा । सम्राट ने सहर्ष उसे स्वीकार किया । धूमधाम से बरात जनकपुरी पहुची । श्री शतानन्द जनक के राज पुरोहित तथा श्री वशिष्ठ दशरथ राजपुरोहितो ने वैदिक रीत्यानुसार राजकुमारो के विवाह कराये ।

विवाह के समय राम की आयु २७ वर्ष की थी । १३ वष के लगभग विवाह के उपरान्त राजकुमारोचित जीवन व्यतीत किया ।

जब राम की आयु ४० वर्ष की थी तो राजा दशरथ ने उनको युवराज बनाने के लिए महापरिषद बुलाई । सर्व सम्मत से निश्चय हो गया । किन्तु केकयी के साथ आई केकयी देश की नागरिक मन्थरा दासी की प्रेरणा से महारानी केकयी ने राजा दशरथ से अपने दो वरो को, जो देवासुर सग्राम के समय राजा ने उसके प्राण रक्षण करने के उपलक्ष में दिये थे, मांगा । प्रथम वर था भरत को राजतिलक और और दूसरा वर था राम के लिए १४ वष का बनवास ।

जस ही राम को इसका पता चला वह बनयात्रा के लिए तैयारी करने लगे । मातेश्वरी सीता को राम ने बहुत समझाया कि उनके साथ बन जाने का आग्रह न करे किन्तु पति परायण सीता न मानी और बनों के नाना दुख और कष्टो को सहन करते हुए पति चरणो मे रहने का आग्रह किया । राम, मातेश्वरी सीता और अपने छोटे भाई लक्ष्मण के साथ वन सिधारे । चित्रकूट मे जाकर पर्ण कुटी बनाकर सीता पति देव एव अपने देवर के साथ तप का जीवन व्यतीत करने लगी । वहा से चल-कर विभिन्न ऋषि मुनियो के आश्रम में निवास करते तथा नाना प्रकार की शस्त्र व शास्त्रो की शिक्षा प्राप्त करते हुए पचवटी मे जा पहुचे वहा लकेश रावण ने अपनी बहिन सूपनखा के अप मान का बदला लेने के निमित्त धोखे से सीता का हरण किया और लका लेजाकर उसे अशोक वाटिका मे बन्दी बना कर रखा ।

रावण ने लाख प्रलोभन व त्रास सीता को दिखलाये अपनी पटरानी बनाने का प्रस्ताव रखा और अन्त मे दो मास की अवधि निर्धारित कर दी और अवधि बीतने पर सीता को बरबस पटरानी बनाने की घोषणा की । पति-परायण साध्वी सीता ने असह्य यातनाए सही किन्तु अपने पतिव्रत धर्म को न छोडा । दो मास की अवधि समाप्त होने से पूर्व ही लका पर राम की चढ़ाई हो गई ।

लंका विजय के उपरान्त राम ने रणक्षेत्र मे लक्ष्मण, विभीषण हनुमान, सुग्रीव अगद नल नील आदि सब के समक्ष सीता की अग्नि परीक्षा की किन्तु अयोध्या और राम के शासन भार सभाल लेने पर लोकापवाद के भय से सीता को गर्भ-वती अवस्था मे राम ने लक्ष्मण द्वारा बाल्मीक आश्रम के निकट बन मे छुडवा दिया । बाल्मीकि ऋषि ने सीता का पुत्री-वत् पालन किया । सीता ने राम के इस व्यवहार को अच्छा नहीं समझा । राम को भी अपने इस काय पर भारी पश्चा-ताप था किन्तु लोकापवाद का निराकरण करना प्रजा रञ्जक राजा के लिए प्रमुख कर्तव्य है ऐसा जान, न चाहते हुए भी सीता का परित्याग करना पडा ।

आश्रम मे सीता ने दो पुत्रो लव, कुश को जन्म दिया तथा इन पुत्रो को बडा होने पर बाल्मीकि ऋषि ने शिक्षा दी और जब राम ने अपने राजसूय यज्ञ के लिए बाल्मीकि को बुलाया तो वह दोनों राजकुमारो को ब्रह्मचारी भेष मे अपने साथ ले गये और राज सभा मे उनसे स्वरचित रामायण के श्लोकों का गायन करवाया ।

राम ने लव, कुश के तेज रूप को देखकर वास्तविकता को जान लिया और सीता जी को सादर अयोध्या बुलवा भेजा किन्तु वहा पहुचने पर पुन लोका-पवाद का प्रश्न उठा । सीता को इतनी भयकर ग्लानि हुई कि उसने वहीं अपने प्राण त्याग दिए । इसका प्रभाव राम के जीवन पर भी विशेष पडा । वह भी शीघ्र राजपाट अपने लडको व भतीजो को सौंप कर लक्ष्मण आदि सहित अज्ञात वास मे चले गये ।

मातेश्वरी सीता ने जन्म से मरण पर्यन्त दारुण दुखों कष्टो व सकटो का सामना किया किन्तु कभी वह कर्तव्यच्युत न हुयी । उसने कभी धर्म न छोडा और न अपने पति देव की भक्ति मे लेश मात्र भी कमी आने दी ।

निश्चय ही मातेश्वरी सीता विश्व मे पतिव्रत धर्म का पालन करने वाली आदर्श देवी थी । सीता के तप त्याग एव बलिदान के कारण ही यह आर्य संस्कृति आज तक जीवित है । हम मातेश्वरी सीता के प्रति भक्ति समन्वित हो अपनी श्रद्धांजलि सादर समर्पित करते हैं ।

★

कर्त्तव्य बोध की वेला

महर्षि दयानन्द के बोध दिवस की पवित्र वेला केवल एतिहासिक स्मृति के रूप मे ही सम्पन्न होकर हमारे जीवन में नव स्फूर्ति उत्पन्न करने वाली होनी चाहिये। जो लोग इस दिवस को केवल रस्म अदायगी के रूप मे मनाकर केवल यश, ऋषि गुण गान तक ही समाप्त कर देते हैं, उन्हें अनुभव करना चाहिये कि इसमे महर्षि का मन्तव्य न तो पूर्ण होगा और न आगे बढ सकेगा इस दिवस की सच्ची प्रेरणा होनी चाहिये कि हम अपने मानस पटल पर सञ्चित अज्ञात राशि को दूर कर अपने भावी कार्यक्रम के लिये व्रत ग्रहण करें।

महर्षि के जीवन की सबसे बडी शिक्षा यही थी कि सदैव, कदम बढ़ाते चलो' 'बढ़ते चलो'। वास्तव में गति ही जीवन है क्या हम प्रगति कर रहे हैं? क्या प्रगति रथ की बाधाएं हमे निराश और हताश कर रही हैं? इन सब प्रश्नो का उत्तर हमे देना है।

महर्षि अपने अन्तिम क्षण तक संसारोपकार की चिन्ता मे रत रहे। उन्होने आर्यसमाज के नियमो मे स्पष्ट आदेश दिया 'संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है''। क्या इस उद्देश्य की पूर्ति मे हमारा जीवन सक्रिय है? हम महर्षि के सच्चे अनुयायी हैं या नहीं, इन सब पर हम सबको इस वेला मे गम्भीरता पूर्वक विचार करना चाहिये।

महर्षि का बोध आस्तिकता की पवित्र भावना से ओत-प्रोत था। वे सत्य के लिये जिये और उन्होने असत्य का कभी समर्थन नहीं किया। स्वामी जी ने एक निडर सन्यासी के रूप मे अपना कर्तव्य पालन किया। उनकी विचारधारा को 'मानववाद' का नाम दिया जा सकता है। जीवन भर उन्होंने अपनी वाणी और लेखनी से अपने विचारों का प्रचार किया। आज के हमारे आचरण क्या साम्प्रदायिक विद्वेष की भावनाएं तो व्यक्त नहीं हो रही हैं? इसकी ओर हमे विशेष सावधान रहने की आवश्यकता है।

आर्यसमाज एक विश्वव्यापी धर्म का सन्देश वाहक है परन्तु आज अनेक समाजें स्थानीय भावनाओ से इतनी प्रभावित मालूम पडती है कि विदेश प्रचार तो दूर की बात है, अन्तर प्रान्तीय और राष्ट्रीय प्रचार की भावना भी उन्हें प्रभावित नहीं कर पा रहा है, फिर 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' क्या स्वप्न ही नहीं रह जाएगा? अतएव आवश्यकता इस बात की है कि हम महर्षि के सार्वदेशिक दृष्टिकोण से सोचना सीखें और कार्य को आगे बढ़ाए।

महर्षि ने मानव के लिये आदर्श शिक्षा नीति, आदर्श समाज व्यवस्था आदि का निरूपण किया था। क्या आज देश की शिक्षा नीति हमारे विचारों से प्रभावित हैं या हम सामयिक शिक्षा से प्रभावित है? क्या आज राष्ट्र मे वर्ण व्यवस्था का जातिवादी अभिशाप दैत्य रूप मे फिर से नहीं छा गया है? क्या हम व्यक्तिगत जीवन मे धन के मोह को समाप्त कर चुके है? क्या हमने वेदामृत का पान करने और कराने का जो व्रत लिया था, उसको दिशा मे वास्तविक प्रगति कर सके है? इसी प्रकार के अनेक प्रश्न हैं। जिनका इस वेला पर हमें उत्तर देना है। उत्तर औचित्य पूर्ण हो ही नहीं सकता। ऐसी दशा मे इस पुण्य पर्व पर हमे फिर से नवीन उत्साह के साथ कर्तव्य पथ पर अग्रसरित होने का व्रत लेना होगा। इस कठिन व्रत की पूर्ति व्यक्तिगत आचरण की श्रेष्ठता एव समाज सगठन के प्रति दृढ़ निष्ठा से ही सम्भव हो सकती है।

हम आगामी बोध रात्रि को आत्म बोध के रूप मे क्रियान्वित करें यही समय का सदेश है।

बोध-ज्ञान

—ओम्प्रकाश शर्मा
नरसेना (बुलन्दशहर)

हम कौन थे, क्या हो गये
और क्या होंगे अभी।
आओ विचारें आज मिलकर
ये समस्यायें सभी॥

स्वर्गीय राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण जी उपरोक्त शब्द 'भारत भारती' मे नीतिकार के 'कश्चाहम काय मे शक्ति इति चिन्तयं मुहुर्मुहु'' वचनो का अनुवाद है और उपरोक्त वचनो पर हमे भी विचार करना है।

आज से लगभग १३० वर्ष पूर्व शिवरात्रि बोधरात्रि मे परिणित हुई। तब से बराबर बोध देने वाली रात्रि क्या पुन शिव जी की रात्रि अब नहीं बन गई? बोध कहा गया, क्या अब केवल रस्म पूरी नहीं होती? ले देकर यज्ञ कर लिया या जलसा छोटा मोटा, अधिक हुआ तो आकाशवाणी से रात के आठ बजे किसी आर्यनेता का ५ ६ मिनट का भाषण सुन लिया।

विचार कीजिये कहा गई वह मिशनरी स्प्रिट जो स्वामी श्रद्धानन्द व गुरुदत्त विद्यार्थी आदि मे थी, उसके बाद भी हमारे नेताओ ने कम त्याग नहीं किया, मरे पिटे, जाति से निकाले गये, किन्तु फिर भी निर्भीक रूप से कर्मकाण्डी एव वेद प्रचारक बने रहे जीवन पर्यन्त। याद कीजिये आर्यसमाज के चपरासी भी सत्यार्थप्रकाश लोगो को मुफ्त पढ़ाते थे, सोने वालो जागते रहो की रात को आवाज लगाने वाले का कर्मकाण्ड देखकर लोग आर्य बने। कहाँ हम हैं?

अभी कदा भूले बिसरे अतीत को याद करना, अपने नेताओ की प्रशसा करना मात्र ही काम रह गया है, न हम मे कर्मकाण्ड है जिसे देखकर आर्य बने, न हम मे उत्साह, लगन परिश्रम है। आर्यसमाज मे शिष्य परम्परा है नहीं, शेष है केवल तर्क। हम अपने विद्वानों, नेताओ, उपदेशको का आदर नहीं करते कभी-कभी तो आर्यसमाज का साधारण सदस्य अपने को उनसे बड़ा विद्वान् मान बैठते हैं। हमारे उत्सवो मे विद्वानों की अपेक्षा नेताओ का मान है, उपदेशक भी वैदिक सिद्धान्तों की अपेक्षा हल्के-फुल्के फिल्मी तर्ज के गीत या राजनीति साम्प्रदायिक विषयो की ओछी आलोचना करते हैं।

आज आर्यसमाज ने पाखण्ड नष्ट करने के स्थान पर राष्ट्रीयता के आवरण में केवल अलग एव ईसाइयो का शुद्धिकरण ही लक्ष्य बना रक्खा है।

यद्यपि शुद्धिकरण अत्यन्त आवश्यक है, इसके लिये कई नेताओ ने भी बलिदान दिये हैं पर केवल शुद्धिकरण ही एक मात्र लक्ष्य नहीं, मूल पर ध्यान नहीं दिया, अज्ञान कहां है? हिन्दू क्यों धर्म के महत्व मे आते हैं? इन सबका मूल कारण है पाखण्ड। उसका खण्डन इस समय आर्य समाज ने छोड़ दिया, क्यों कि हम निर्भीक नहीं रहे। उनका रुख बदल गया अपनो को रुष्ट करना श्रेयस्कर नहीं, इसलिये पाखण्ड पूर्वापेक्षा बढ़ रहा है, इधर शिक्षा के कारण शिक्षित उसमें विश्वास नहीं करते। हम उन्हें बोध नहीं करा पाते तो वे नास्तिक बन जाते हैं, या धर्म को तिलाञ्जलि देकर मजहब मे चले जाते हैं, लोभ मोह में फसकर।

यद्यपि यह पाखण्ड सारे देश में बढ़ रहा है कई भगवान कई स्वामी घर हैं, पर गंगा के किनारे विशेषकर

(शेष पृष्ठ १२ पर)

अमर शहीद लेखराम

आर्य पथिक! तुम धर्म हेतु हँसते हँसते बलिदान हो गये।
तिमिर मिटाते मार्ग दिखाते धरती के दिनमान हो गए॥
ज्ञान शून्य जब आर्य जाति अपने विनाश के बीज बो रही।
भानु ज्ञान का उदित हुआ पर पीठ फेर चुपचाप सो रही॥
तुमने गुरु के निर्देशन पर नेत्र खोल सन्मार्ग दिखाया,
बिछुड़ो को फिर गले लगाकर पतितो के वरदान हो गये।
तिमिर मिटाते ‥ ॥
दर्शन पाकर दिव्य ज्योति के तुम में नव संचार हो गया।
जिससे रोगी आर्य जाति का अति अचूक उपचार हो गया॥
पर पीड़ा का चिन्तन करते निज की पीर भुलादी तुमने,
स्वयं इसीसे कर्मठता के, सेवा के प्रतिमान हो गये।
तिमिर मिटाते ‥ ॥
आततायियों के दुर्गों पर भीषण वज्र प्रहार कर गये।
कान खोलकर नाद बजाकर वैदिक धन प्रचार कर गये॥
शास्त्रार्थों की धूम मचा दी भागे सभी पोप-पाखण्डी,
जड़ता, सकीर्णता मिटाकर मानव एक महान हो गये।
तिमिर मिटाते ‥ ‥॥
रहे लेखनी को गति देने लिख 'कुल्लियाते आर्य मुसाफिर'
साहस कभी न खोया आये कितने भी संकट घन घिर घिर॥
चला पवित्र शुद्धि आन्दोलन खुद आहुति बन गये यज्ञ की,
जब सुगन्ध फैली दिगन्त मे तब तुम अन्तर्धान हो गये।
तिमिर मिटाते‥‥ ‥‥॥

—प्रतापकुमार सक्सेना 'साहित्य रत्न'

स्व. पं. रामचन्द्र देहलवी

(एक संस्मरण)

गत ४ फरवरी को आर्य समाज के यशस्वी विद्वान शास्त्रार्थ महारथी पं० रामचन्द्र देहलवी के निधन का समाचार बड़े दुःख के साथ सुना गया। पं० जी का निधन जहां आर्य सामाजिक जगत् में विक्षोभ उत्पन्न करनेवाली घटना सिद्ध हुई, वहीं अन्य मतावलम्बियों के हृदय पर गहरा आघात पहुंचानेवाली थी। इसका कारण था कि जहां वे उनकी विद्वत्ता, शुद्ध उच्चारण प्रत्युत्पन्नमति के कायल थे, वहां वे उनके सदाचार, सद्व्यवहार तथा नपे तुले विद्वतापूर्ण उत्तर और शिष्टाचार से मोहित थे। स्वर्गीय पं० जी ऐसे मनीषियों में थे जिनकी स्मृति सुदीर्घ काल तक जन मानस पर स्थिर रहेगी।

आपका जन्म एक साधारण परिवार में हुआ था। जीवन के आरम्भ काल में ही आपको महर्षि दयानन्द के सिद्धांतों से अनुराग उत्पन्न हो गया था। उस समय आर्यसमाज जहां हिन्दू जाति के रूढ़िवाद, पाखंड, मूर्तिपूजा अन्ध परम्पराओं को निर्मूल करके आर्य जाति को सशक्त बनाने के लिए प्रयत्नशील था, वहीं विरोधी विधर्मियों के युक्ति युक्त प्रत्युत्तर देने में संघर्ष कर रहा था। स्वर्गीय पं० जी ने ईसाई मुसलमानों व पौराणिकों से बड़े बड़े शास्त्रार्थों का श्रवण किया था। जिसका इनके जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा। उपर्युक्त घटनायें आपको वैदिक धर्म प्रचारक बनाने में प्रेरक सिद्ध हुईं।

सुनारी व धर्मोपदेश

आपमे धर्म प्रचार की तीव्र लगन थी, किन्तु वे इसके लिए भिखारी या परमुखापेक्षी नहीं बनाना चाहते थे। अतएव इन्होंने अपने पैतृक व्यवसाय सुनारी को नहीं छोड़ा। कहा जाता है कि वे दिन भर में एक सोने की अगूठी बनाते, जिसकी मजदूरी से अपना जीवन यापन करते और सायंकाल प्रतिदिन चांदनी चौक के फव्वारे पर धर्मोपदेश देते। आप में विनय और शिष्टता कूट कूट कर भरी हुई थी। इस गुण से इन्होंने किसी मौलवी से कुरान पढ़ा। बाइबिल आदि अन्य मतों के ग्रन्थो का आपने विशद अनुशीलन किया। महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों व अन्य वेदादि सच्छास्त्रो का आपने गहन अध्ययन किया था। भारतीय वांगमय के विस्तृत ज्ञान व अन्य मतों की युक्ति युक्त समालोचना का श्रोताओं पर गहरा प्रभाव पड़ता था। सोलह वर्ष तक यह क्रम निरंतर अविराम गति से चलता रहा। इन व्याख्यान माला से जहां जन साधारण में धर्म के लिए अभिरुचि उत्पन्न करने मे सहायक हुई वहीं आप स्वल्प काल में ही आपकी प्रगल्भ धर्मोपदेष्टा के रूप में गणना होने लगी, जब आपकी यौवनावस्था में प्रिय पत्नी का देहान्त हो गया तो आपके सम्बन्धियों ने बहुतेरा चाहा कि आप पुनर्विवाह करलें। उस समय आप की आयु ३५ वर्ष की थी। किन्तु आपने स्पष्ट शब्दों में इनकार कर दिया। और शेष जीवन को वैदिक धर्म प्रचार के लिये समर्पित कर दिया। आपके शुद्ध सात्त्विक भाव व कठोर अध्यवसाय से समस्त भारत में आपकी कीर्ति फैल गई। गार्हस्थ के बन्धन जो बाहर जाने में प्रतिरोधक थे वह पत्नी की मृत्यु से अबाधित रूप से खुल गये। आपकी व्याख्यान शैली अत्यन्त मनोरंजक व ज्ञान प्रदायिनी थी इसलिये श्रोताओं का जहां ज्ञानवर्द्धन होता था, वहां उनका समुचित स्वस्थ मनोरंजन भी हो जाता था। उनका स्वर इतना मधुर था कि जब वे संस्कृत के श्लोकों व वेद मन्त्रों का पाठ करते तो पंडित मण्डली गद्-गद् हो जाती और इसी प्रकार जब वे कुरान की आयतों को सस्वर पढ़ते तो बड़े बड़े मौलवी झूम जाते थे। और उनके कुरान पाठ को मुक्त कंठ से सराहना करते।

शास्त्रार्थ महारथी

प्रत्युत्पन्नमतित्व (हाजिर जवाबी) पं० जी का स्वाभाविक गुण था इसलिए शास्त्रार्थ करने में वे अद्वितीय माने जाने लगे। आपके अपने युग के मौलवी सनाउल्ला, पादरी अब्दुल हक आदि बड़े बड़े मौलवी और पादरियों से आपने शास्त्रार्थ किये। आपने कभी शास्त्रार्थों में कटुता नहीं उत्पन्न होने दिया। यह आपका सबसे बड़ा गुण था। आपने विपक्षी के कर्कश एवं कठोर स्वरों का प्रतिउत्तर सस्नेह और मुस्कराते हुए मधुर वाणी से ही दिया है। इस सद्गुण से विरोधी भी इनका अत्यन्त आदर करते थे।

कुछ मनोरञ्जक प्रश्नोत्तर

१—एकबार किसी मौलवी साहब ने कहा कि हिन्दी भाषा भी कैसी भाषा है। यह तो गन्दगी से (बायीं ओर) आरम्भ होती है। अर्थात् इसका आरम्भ ही शौच करने वाले बायें हाथ की ओर से होता है आपने तत्काल उत्तर दिया कि हां मौलवी साहब! हिन्दी गन्दगी से आरम्भ होती है परन्तु सफाई की ओर ही अग्रसर होती रहती है यदि फिर गन्दगी मे आ गई तो फिर सफाई की की ओर ही निरन्तर बढ़ती जाती है परन्तु आपकी उर्दू भाषा भी क्या है जो सफाई (दायीं ओर से) आरम्भ अवश्य होती है किन्तु गन्दगी की ओर ही बढ़ती जाती है यदि सफाई की ओर आ भी गई तो फिर गन्दगी की ओर ही बढ़ जाती है। और उसका अन्त गन्दगी में होता है।

२—एक बार हैदराबाद में आपने अपने व्याख्यान में कहा कि "उर्दू भाषा तो बिना हिन्दी की सहायता से एक पग भी नहीं चल सकती हैं।" इस कथन पर आप पर उर्दू की मजम्मत (अपमानित) करने का आरोप लगाकर आप का व्याख्यान बन्द करा दिया गया। आपने कहा कि मुझे अधिकारियों के पास ले चलो। वहां जाने पर निजाम के तत्कालीन गृह मंत्री ने कहा कि आपने कल गैरजिम्मेदाराना ढंग से उर्दू को अपमानित किया है अतएव आपका व्याख्यान बन्द कर देना पड़ा है। आपने प्रत्युत्तर मे कहा कि मैंने तो वास्तविकता का वर्णन किया है न कि उर्दू की मजम्मत। गृह मन्त्री ने कहा कि यह कैसे? आप एक स्लेट मगाइये आपको समझा दू। स्लेट आने पर आपने कहा कि अब आप लिखें— अलिफ और बे. उसके नीचे है और मीम। जब उन्होंने लिख दिया तब आपने कहा कि आप दोनो अक्षरों को मिलाकर पढ़ें उन्होंने पढ़ा अब, हम। आपने कहा कि श्रीमान् मन्त्री जी जो आपने लिखा है उसे ही पढ़ें अलिफ को अलिफ पढ़ें और बे को बे। इसी प्रकार हे को हे और मीम को मीम। अ और ब तथा ह और म हिन्दी का उच्चारण है उसे मत बोलिए। मन्त्री महोदय ठठा कर हसने लगे और कहा कि ऐसे हम पढ़ भी नहीं सकते। तत्पश्चात् उनके व्याख्यान पर प्रतिबन्ध उठा लिया।

३—एकबार प्रयाग में आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव पर एक पादरी साहब की शकाओं का उत्तर देते हुये आपने कहा कि ईश्वर जीव और प्रकृति अनादि है। ईश्वर अपने ज्ञान और सामर्थ से जीवात्मा और प्रकृति पर शासन करता है। आपने कहा ईश्वर, ईश्वर की प्रजा जीव और सृष्टि बनाने की सामग्री प्रकृति सदा से है। पादरी साहब का कहना था कि ईश्वर ने जब जीव और प्रकृति को बनाया (पैदा) नहीं तो वह उसका मालिक कैसे हो गया। इसका आप कोई उदाहरण दीजिये। आपने कहा कि क्या आपने अपनी बीबी को बनाया है? क्या आपने जमीन को बनाया है। क्या अपने जेब के रुपयों को आपने बनाया है? उत्तर स्पष्ट है कि इन वस्तुओं को न बनाने पर भी आप अपनी द्रव्य और सामर्थ्य से इसके मालिक हैं इसी प्रकार परमेश्वर अपने ज्ञान और सामर्थ्य से जीव को प्रकृति से संयुक्त करके शरीरधारी बनाता है, न तो जीवात्मा स्वय अपना शरीर निर्माण कर सकता है और न प्रकृति अपने मे चेतनता उत्पन्न कर सकती है। इसलिए परमेश्वर को मालिक कहते हैं।

एक पादरी ने प्रश्न किया कि सृष्टि में अमैथुनी सृष्टि कैसे हो जाती है? और अब क्यों नहीं होती? आपने कहा आज भी अमैथुनी सृष्टि हो रही है जैसे खाट में खटमल, सर में जुएं, घास बहूटी, मेढक आदि रह गया। मानवी

—राधेमोहन
मन्त्री
आर्यसमाज चौक

अमैथुनी सृष्टि! आपने कहा कि कोई कारीगर जब कोई सांचा बनाता है उससे चीजें ढलती जाती हैं जब तक सांचा टूट नहीं जाता तब तक नये सांचे को बनाने की आवश्यकता नहीं होती। इसी प्रकार से परमेश्वर ने सृष्टि के आदि मे मनुष्य, पशु, पक्षी कीट पतगादि की अमैथुनी सृष्टि उत्पन्न कर दी जो अब तक यह सृष्टि चल रही है तब तक नये सांचे बनाने की कोई आवश्यकता नहीं। जब प्रलय के पश्चात समस्त जीव जगत् सर्वथा नष्ट हो जाएगे, तब परमेश्वर पुनः अमैथुनी सृष्टि की रचना करेगा।

एकबार आप शिष्टाचार के सम्बन्ध मे व्याख्यान देते हुये कहा कि कुछ लोग ऐसे हैं जो दातून करते जाते हैं और सड़कों पर थूकते हुए शाक सब्जी आदि की खरीददारी करते हैं। यह आदत बुरी है बल्कि चाहिये कि एक स्थान पर बैठकर ठीक प्रकार से दन्त धावन करना चाहिये। किसी मन चले विद्यार्थी ने बात काट कर कहा कि पं० जी! इसमे हर्ज ही क्या है? ऐसा करने से शाक सब्जी भी खरीद लेते हैं और दातून भी कर लेते हैं। इससे समय की बचत हो जाती है। माननीय पंडित जी ने व्यग करते हुये कहा कि, बेटे अगर समय ही इस प्रकार बचाना हो तो पाखाने मे पराठा ले जाया करो।

आपकी सहनशीलता विशेष रूप से अनुकरणीय है। एकबार पादरी अब्दुल हक से शास्त्रार्थ हो रहा था। किसी बात पर वह बिगड़ गये और उत्तेजित होकर कहने लगे कि इतने बड़े विद्वान होकर आपको झूठ बोलने मे

(शेष पृष्ठ १२ पर)

क्षेत्रीय बैठकों का आयोजन

आर्यसमाज के संगठन को सुदृढ़ बनाने एवं कार्यकर्ताओं में सम्पर्क बढ़ाने के लिये यह आवश्यक है कि समय-समय पर क्षेत्रीय बैठकों का आयोजन किया जाया करें। इस दृष्टि से आगामी फरवरी, मार्च तथा अप्रैल मासों के अन्तर्गत प्रान्त की समस्त कमिश्नरियों में सम्मिलित बैठकों का आयोजन किया जावेगा। इन बैठकों में कमिश्नरी के अन्तर्गत समस्त जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभाओं, आर्यसमाजों, प्रतिनिधि सभा के अधिकारी एवं अन्तरंग सदस्य, शिक्षण एवं अन्य संस्थाओं के प्रतिनिधि एवं अन्य आर्यजगत् के विद्वान तथा प्रमुख कार्यकर्ता सम्मिलित होंगे। अब तक गोरखपुर एवं वाराणसी कमिश्नरियों की सम्मिलित बैठकों की व्यवस्था की जा चुकी है। अन्य कमिश्नरियों के लिये जो आर्यसमाजें अथवा जिला उप प्रतिनिधि सभायें निमन्त्रण देना चाहें वे शीघ्र ही सभा कार्यालय को सूचित करने का कष्ट करें। बैठकों का कार्यक्रम १ दिन का होगा। प्रातः काल सम्मिलित सत्संग, मध्याह्न मे सम्मिलित बैठक तथा सायंकाल सार्वजनिक बैठक के कार्यक्रम आयोजित किये जावेंगे।

आनन्द प्रकाश एम० फार्म०
उप मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

विद्यार्य सभा सूचना

सार्वदेशिक विद्यार्य सभा द्वारा संचालित धार्मिक परीक्षायें इस वर्ष जौलाई १९६८ के अन्तिम रविवार को होगी। परीक्षाओं की नई पाठविधि, आवेदन पत्र, तथा केन्द्र सहायता पत्रादि के लिये श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु परीक्षा मन्त्री दयानन्द भवन, रामलीला मैदान नई दिल्ली-१ से पत्र-व्यवहार करें। —कार्यालयाध्यक्ष

शैक्षिक सूचना

सार्वभौम आर्यसमाज शिक्षण संस्था परिषद दयानन्द कालिज अजमेर समस्त आर्य शिक्षण संस्थाओं की परिचय निर्देशिका प्रकाशित करने जा रही है। अतः उत्तरप्रदेश की जो शिक्षण संस्थायें अपना परिचय प्रकाशित कराना चाहें वह अपनी संस्था का विवरण सेवा में श्री दत्तात्रेय वावले अवैतनिक मन्त्री सार्वभौम आर्यसमाज शिक्षण संस्था परिषद अजमेर भेजकर प्रकाशित कराने सम्बन्धी पत्र-व्यवहार करें।

—रायबहादुर एडवोकेट
अधिष्ठाता शिक्षा विभाग
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश

"आह्वान !"

"टंकारा के शूल कणों से
अंगारो पर चलना सीखो।"

आर्य वीरो! देखो, यह तुम्हें पुकार रहे हैं-
१—वैदिक धर्म और संस्कृति।
२—देश की आकाश सीमायें।
३—भारतीय जनता की दुर्दशा।
४—राष्ट्रीय एकता।
५—राष्ट्र भाषा।
६—गो माता।

अ.ओ, २४ से २७ फरवरी १९६८ के दिनों मे राष्ट्र-पुरुष-दयानन्द की जन्म भूमि टंकारा मे आयोजित 'ऋषि-मेले' मे सम्मिलित होने के लिये २२ फरवरी को दिल्ली से चलने वाली स्पेशल ट्रेन मे सवार होकर टंकारा पहुंचें तथा सुनाई देने वाली पुकारों का समाधान ढूंढें!!

निवेदक—
ओ० आर० महता,
मन्त्री
महर्षि दयानन्द स्मारक-ट्रस्ट टंकारा

श्री कुसुमाकर जी सम्मानित

आर्य जगत् के ख्याति प्राप्त कविवर श्री कृष्णलाल 'कुसुमाकर' जी का सार्वजनिक अभिनन्दन २० जनवरी, ६८ को डी० ए० वी० कालिज फीरोजाबाद (आगरा) के सुसज्जित प्राङ्गण में स्थानीय तथा बाहर से पधारे हुए साहित्यकारों एवं नागरिकों द्वारा किया गया। इस समारोह की अध्यक्षता हिन्दी एवं आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान् श्री डा० हरिशङ्कर शर्मा कविरत्न, आगरा ने की तथा उद्घाटन भावुक प्रसिद्ध पत्रकार श्री पं० बनारसीदास चतुर्वेदी (भूतपूर्व संसदसदस्य राज्य सभा) ने किया। दोनों वयोवृद्ध महान् साहित्यकारों ने श्री कुसुमाकर जी की साहित्यक और सामाजिक सेवाओं की चर्चा करते हुये उनके चिरायु होने की शुभ कामना की और उनकी अप्रकाशित रचनाओं के प्रकाशित कराने की अपील की नागरिकों से अपील की। तदनन्तर हिन्दी जगत् के सुप्रसिद्ध गीतकार कविवर 'रंग' जी तथा श्री कविरत्न कुं० हरिश्चन्द्र देव वर्मा 'चातक' ने श्री कुसुमाकर जी के प्रति अपनी भाव-भीनी काव्यमय श्रद्धांजलि एवं शुभ कामनाएं प्रकट कीं। इस अवसर पर उनके सम्मान में सुहृद मित्रों ने अभिनन्दन पत्र एवं ऊनी शाल तथा दुपट्टे वस्त्र, रुपये आदि भी भेंट किये।

माननीय श्री अणे का निधन

राष्ट्रवादी लोक नेता श्री अणे जी का २६ जनवरी को आकस्मिक निधन हो गया है। सारा देश उनके निधन से शोक ग्रस्त है।

श्री सेठ गणेशदास जी सालूजा का देहावसान

मुरादाबाद जिले के लोकप्रिय आर्य नेता, प्रसिद्ध उद्योगपति, आर्य उपप्रतिनिधि सभा मुरादाबाद के प्रधान तथा सार्वदेशिक सभा के अन्तरङ्ग सदस्य उत्साही, पुरोगामी कार्यकर्ता, श्री सेठ गणेशदास जी सालूजा अध्यक्ष राजनिधि पत्थर मिल्स मुरादाबाद के आकस्मिक निधन से उपसभा मुरादाबाद एवं आर्यजगत् की गहरी क्षति हुई है हम सभी हार्दिक संवेदना प्रकट करते हैं तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शान्ति प्रदान करे तथा परिवार के सदस्यों उनके मित्रों एवं उपसभा के कार्यकर्ताओं को उनके वियोग की महान क्षति प्रदान करे।

शोक संवेदना

—श्री प्रोफेसर भगवानप्रसाद जी प्राध्यापक डी० ए० वी० कालेज लखनऊ का देहावसान बलरामपुर अस्पताल में हो गया। इधर कुछ समय से वह अस्वस्थ चल रहे थे। कालेज की सेवा से अवकाश प्राप्त कर आर्यसमाज की सेवा का व्रत वह अन्तिम समय तक निभाते रहे।

आर्य प्रतिनिधिसभा उत्तर प्रदेश ने यह दुखद समाचार मिलते ही शोक-सभा की, व दिवंगत आत्मा के लिये सद्गति एवं शान्ति तथा परिवार को धैर्य प्रदान करने की प्रार्थना की गई और कार्यालय बन्द कर दिया गया।

—श्री बा० केशोराम जी भूतपूर्व कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधिसभा उत्तर प्रदेश की धर्मपत्नी एवं माता श्री मदनलाल जी का स्वर्गवास दिनाङ्क २३ जनवरी ६८ को हो गया।

श्री बा० केशोराम जी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रतिष्ठित कार्यकर्त्ता थे। श्री माता जी के दिवंगत होने की सूचना सभा को जैसे ही मिली, तुरन्त शोक सभा कर दिवंगत आत्मा के लिए सद्गति एवं शान्ति तथा परिवार को धैर्य प्रदान करने की प्रभु से प्रार्थना की गई, और कार्यालय शोक में बन्द कर दिया गया। हम सभी उनके दुःख में दुखी हैं।

आर्यप्रतिनिधि सभा उ० प्र० के अधिकारी एवं कार्यकर्तागण।

शोक प्रस्ताव

मध्य प्रदेश निवासी शाजापुर जिले के धर्मनारायण कट्टर दो आर्य विद्वानों श्री रामनारायण माथुर वकील व श्री चन्द्रसिंह जी आर्य शिक्षक के दो बच्चों की मृत्यु हो गई। वकील साहब का लड़का १७ वर्ष का, अति सुयोग्य प्रखर बुद्धि का था तथा शिक्षकजी का १३ वर्षीय सत्यदेव था जिसने प्रथमश्रेणी प्राप्त कर तीन विषयों में विशेष योग्यता प्राप्त कर वाराणसी की "प्रथमा" परीक्षा एक वर्ष मे ही उत्तीर्ण की थी। समस्त गुरुकुल वासी उन दोनों की सद्गति के लिये संवेदना प्रकट करते हुये श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं कि श्री जयप्रकाश व श्री सत्यदेव के माता पिता को धैर्य प्रदान करें।

—आर्यसमाज नगरा, झांसी के भूतपूर्व कोषाध्यक्ष एवं वयोवृद्ध आर्य-सभासद महात्मा चिरञ्जीलाल जी का देहावसान दिनांक २७-१२-६७ को सायंकाल हुआ था। उनकी अन्त्येष्ठि क्रिया पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार दिनांक २८-१२-६७ को की गई।

उनके पुत्र श्री वसन्तलाल जी एवं पौत्र श्री ओमप्रकाश जी ने महात्मा चिरञ्जीलाल जी की पुण्य स्मृति में २५१ रु० दान देने की घोषणा की।

श्रद्धेय पं० रामचन्द्र देहलवी जी का वियोग

आर्यसमाज के मूर्धन्य विद्वान् तार्किक शिरोमणि पं० रामचन्द्र देहलवी जी अब हमारे मध्य नहीं रहे। दीर्घकालीन अस्वस्थता के कारण ८७ वर्षीय अवस्था में ४ फरवरी को उनका दीवान हाल दिल्ली मे स्वर्गवास हो गया। आर्य नर नारियो ने शोक विह्वल हो अपने पूज्य नेता के प्रति श्रद्धाञ्जलियां समर्पित कर विशाल शोभा यात्रा मे निगम बोध घाट पर वैदिक रीति सेअन्त्येष्टि संस्कार किया। उनकी विदाई आर्यसमाज पर अनभ्र वज्रपात है। प्रभु उन्हें सद्गति प्रदान करे। मित्र परिवार उनके प्रति श्रद्धञ्जलि समर्पित करता है।

श्री पं० दीनदयालु जी उपाध्याय का निधन

अखिल भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष श्री पं० दीनदयालु उपाध्याय जी का आकस्मिक दुर्घटना में निधन हो गया है। यह जान कर देशवासियों के साथ मित्र परिवार हार्दिक दुखी है भारतीय राजनीति के उज्ज्वल रत्न श्री उपाध्याय जी के प्रति हार्दिक श्रद्धञ्जलि समर्पित करते हैं। जिन परिस्थितियों और तरीकों से उनकी मृत्यु हुई है उसकी पूर्ण जांच होनी चाहिये उनकी मृत्यु भारतीय शासन पर कलंक है।

वार्षिकोत्सव—

बम्बई। दिनांक २५ से २८ जनवरी १९६८ को आर्यसमाज माटुंगा का ४२ वां वार्षिक समारोह बड़ी धूमधाम से मनाया गया। जिसमे प्रतिदिन प्रातः मध्यान्ह एवं रात्रि को प्रसिद्धतम आर्य विद्वानों के प्रेरणात्मक, सारगर्भित वेद सम्मत सुप्रवचनो की अमृतमयी कलित् तरंगिनी मे श्रद्धालु जनता ने स्नान किया श्री पूज्य आचार्य विश्वश्रवाः के गम्भीर वेद परक क्रियात्मक उपदेश, शास्त्रार्थ महारथी श्री पं० शान्तिप्रकाश जी के अकाट्य तर्क संगत, विभिन्न मतों की भ्रान्त धारणाओं की असार्थकता और वेद की अपौरुषेयता पर ठोस विचार एव अन्य अनेक विद्वानों और गायकों के भाव भीने उपदेशों और गीतो की पड़ी अमिट छाप जनता की हृदय-स्थली को सदा रस-प्लावित करती रहगी।

इस धार्मिक समारोह के अवसर पर आर्यजगत् के युवक सन्यासी महात्मा आनन्द गिरि जी महाराज पंजाब, शास्त्रार्थ महारथी पं० विद्यानन्द जी मन्तकी, श्री ओम्प्रकाश त्यागी, संसद सदस्य प्रधान संचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल, वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् पण्डित विश्वबन्धु जी शास्त्री बरेली आदि विद्वान् एव भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

—आर्यसमाज सकरावां का वार्षिक उत्सव दिनांक २४, २५, २६, २७ फरवरी सन् १९६८ ई० दिन शनिवार, रविवार, सोमवार तथा मंगलवार को होना निश्चित हुआ है इस अवसर पर एक बृहत् यज्ञ का भी आयोजन हो रहा है।

—आर्यसमाज दौलताबाद का वा० उ० ता० २४, २५, २६ फरवरी सन् १९६८ ई० को बड़े समारोहपूर्वक मनाया जावेगा।

आर्यसमाज लल्लापुर वाराणसी का २३ वां वार्षिकोत्सव मिति माघ सुदी ९ से मिति माघ सुदी १२ सं० २०२४ वि०, दि० ८ फरवरी से ११ फरवरी १९६८ बृहस्पति से रविवार) तक समारोहपूर्वक मनाया जायगा।

आर्यसमाज विदिशा का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

विदिशा दि० २७ से २९ दिसम्बर तक आर्यसमाज विदिशा का ६१ वां वार्षिकोत्सव समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ। उत्सव के अन्तर्गत नैतिक उत्थान सम्मेलन, आर्यवीर दल सम्मेलन, एवं महिला सम्मेलन भी भव्य रूप में सम्पन्न हुए। आर्यजगत् के उद्भट विद्वान् पूज्य स्वामी समर्पणानन्द जी सरस्वती, प०शिवकुमार जी शास्त्री संसद सदस्य, आचार्य कृष्ण जी, ओजस्वी वक्ता कुं० सुखलाल जी आर्यमुसाफिर आदि के सारगर्भित व्याख्यान हुए। श्री बिनदसिंह जी विजय के सुमधुर भजनोपदेश हुये।

आवश्यक सूचना

सभा से सम्बन्धित समस्त जिला उप सभाओं, विभागो, और निरीक्षक महानुभावों से अनुरोध है कि सभा का वर्ष ३१ दिसम्बर ६७ को समाप्त हो चुका है, अतः सभा की वार्षिक रिपोर्ट मे प्रकाशनार्थ वर्ष भर का कार्य विवरण १५ मार्च १९६८ तक सभा को भेजने की कृपा करें ताकि रिपोर्ट का छपना आरम्भ किया जा सके।

सभा की सूचनाएँ

गोंडा, गोरखपुर और देवरिया जिले की समाजों को सूचना

उक्त जिले की समस्त आर्य समाजों को सूचित किया जा रहा है कि श्री ब्रह्मानन्द जी मिश्र आपकी समाज मे प्रचारार्थ पहुंच रहे हैं उनके पहुंचने पर प्रचार की व्यवस्था करें तथा वेदप्रचारार्थ धन प्रदान कर सभा की रसीद प्राप्त करें।

फरवरी मास के प्रोग्राम

श्री सत्यमित्र जी शास्त्री—१२ से १६ बलरामपुर।

श्री बलवीर शास्त्री—११ से १८ रसौली।

श्री केशवदेव जी शास्त्री—१२ से १६ बालरामपुर १७ से १९ पाली (हरदोई) २४ से २७ सकरावां (फर्रुखाबाद)

श्री विश्ववर्धन जी—१६ से १९ पाली (हरदोई) २० से २६ मऊनाथ भजन।

श्री रामस्वरूप जी आ०मु०—२४ से २६ सौरिख, २७ से २९ उतरौला।

श्री गजराजसिंह जी—१० से १३ बस्ती; १७ से २० लखीमपुर २३ से २६ सीतापुर।

श्री रामचन्द्र जी शर्मा—२० से २६ आजमगढ़।

श्री धर्मराजसिंह—२५ तक सीतापुर, २६ से २८ अथाई।

श्री प्रकाशवीर जी—२० से २२ बढ़नी (बस्ती), २४ से २७ सकरावां (फर्रुखाबाद)।

श्री वेदपालसिंह जी—११ से १८ रसोली, २३ से २५ मेस्टनरोड कानपुर, २६ से २८ तक मनियर।

श्री बालकृष्ण शर्मा—१६ से १८ प्रयाग।—सच्चिदानन्द शास्त्री एम०ए०

अधिष्ठाता उपदेश विभाग

समाजों का कर्त्तव्य एवं दशांश का प्रश्न

उत्तर प्रदेशीय समस्त आर्य समाजों का कर्त्तव्य है कि सभा के अनेक कार्यों को पूर्ण रूपेण संचालित करने निमित्त और वेद प्रचार की सुदृढ़ व्यवस्था हेतु चालू वर्ष और सन् ६७ का दशांश सभा के किसी उपदेशक प्रचारक को न देकर सीधा सभा कार्यालय मे भेजें।

उत्सवों आदि पर प्रचार के पश्चात् दशांश का धन जो सभा मे आना चाहिये, न भेजकर उपदेशकों प्रचारकों को समाजें देती है जो नियमानुसार एवं उचित नहीं होता।

उत्सवों और सप्ताहों पर प्रचार के पश्चात् तो केवल वही धन देना चाहिये, जो वेद प्रचार की स्थिति दृढ़ करने निमित्त सभा से लिखकर भेजा जाता है।

यदि फिर भी यदि कोई समाज दशांश की राशि प्रचारक को देती है, तो प्रतिनिधि स्वीकार न हो सकेंगे। विश्वास है कि समाजें इस पर ध्यान देंगी। —सभा मन्त्री

आवश्यकता

सभा के भू-सम्पत्ति विभाग मे कार्य करने के लिये तथा आवश्यकतानुसार लखनऊ से बाहर जाकर विवरण एकत्रित करने के लिये एक सुयोग्य, पुरुषार्थी समाज के कार्यों मे लगन रखने वाले तथा सम्पत्तियों की कानूनी जानकारी रखने वाले एक अनुभवी व्यक्ति की तुरन्त आवश्यकता है। अपनी आयु योग्यता तथा न्यूनतम वेतन की मांग सहित निम्नलिखित पते पत्र व्यवहार करें। आर्यसमाजी व्यक्ति को नियुक्ति में प्रमुखता दी जायेगी। पूर्ण जानकारी के लिये लिखें या मिलें।

विक्रमादित्य 'वसन्त'
स० अधिष्ठाता
भू-सम्पत्ति विभाग, आर्य प्रतिनिधि
सभा, उ० प्र० लखनऊ

आर्यमित्र का

"वेदाङ्ग प्रकाश"

अङ्क

शीघ्र प्रकाशित कर आपको सेवा में प्रस्तुत किया जायगा।

कृपया समस्त समाजों तथा सम्बन्धित समाचार पत्र विक्रेता अपनी आवश्यता से अविलम्ब सूचित कर अनुग्रहीत करें।

विश्वास है आर्यजन हमें प्रोत्साहित कर कृतार्थ करेंगे।

—सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा मन्त्री एव सम्पादक 'आर्य्यमित्र'

[illegible]० पं०रामचन्द्र देहलवी

(पृष्ठ ५ का शेष)

। नहीं आती। आप जनता को [illegible]ा दे रहे हैं। पण्डित जी यदि बाइ[illegible] में यह शब्द हो जो आप कह रहे [illegible]ो मैं बाइबिल को फाड़कर फेंक दूं। [illegible] समय वह यह कह रहा था उसका [illegible]रा क्रोध से लाल हो गया था किन्तु [illegible]न्ति की प्रतिमूर्ति देहलवी जी मुस्करा [illegible] थे। जब पादरी साहब बोल चुके । पण्डित जी ने कहा कि भाई जो यह [illegible]इबिल और वह वाक्य पादरी साहब [illegible] दिखाया जिससे वे उत्तेजित हो रहे [illegible] पादरी साहब ने जब बाइबिल में देखा [illegible] हैरान रह गये और कहने लगे कि [illegible]में गलती से छपा होगा हिब्रू में ऐसा [illegible]ीं है। आपने कहा कि जनाब पादरी [illegible]की सोसाइटी से छपी हुई बाइबिल इसकी गलती और सही के आप ही [illegible]ारदायी हैं।

एकबार आपके एक विपक्षी विद्वान् शास्त्रार्थ में उत्तेजित होकर कहा कि [illegible]ण्डत जी आप ऐसे शब्दों का प्रयोग [illegible]रते हैं यदि दूसरा कोई होता तो आप [illegible]ो कत्ल कर देता। आपने तत्काल उत्तर [illegible]या कि मेरे भाई यह ऐसी पवित्र वेदी [illegible] जिस पर लेखराम, श्रद्धानन्द, राजपाल [illegible]ादि कितने ही महापुरुष बलिदान होगये और अपने को अमर बना गये धन्य[illegible]न्य मेरा भाग्य होगा यदि आप भी [illegible]झे कत्ल कर दें, ऐसा कहकर आपने [illegible]ेट के बटनों को खोल दिया।

पण्डित जी सादगी पसन्द थे। वस्त्र [illegible]क्षालन प्रायः नित्यप्रति स्वयं अपने ही [illegible]थों से किया करते थे। चाय कभी नहीं [illegible]ीते थे। भोजन में मिर्च मसालों का [illegible]योग नहीं किया करते थे। वे कहा करते थे कि जीने के लिये खाओ न कि खाने के लिये जिओ। उनकी थाली में यदि कोई कई प्रकार की सब्जी रख दे तो एक सब्जी फौरन हटा देते और कहते कि घर में जैसे एक ही पत्नी होनी चाहिये उसी प्रकार थाली में भी एक ही सब्जी होनी चाहिये। आप भोजन के साथ दूध नहीं खाते थे बल्कि कहा करते थे कि दूध खाने की चीज नहीं वरन् पीने की चीज नहीं। आप स्वल्पाहार के समर्थक थे आप कहा करते थे प्रायः भोजन में अच्छी चीजों को लोग अन्त में खाया करते हैं जिससे लोभवश अधिक खा जाते हैं। आप कहते थे कि जो चीज अच्छी लगती हो उसे पहले खा लेनी चाहिये जिससे भोजन में संयम रख सकें।

आपकी ८६ वर्ष के लगभग आयु थी लगभग ६५ वर्ष तक जमकर आपने धर्म प्रचार किया है आप आर्यसमाज में अद्वितीय शास्त्रार्थ महारथी थे वृद्धावस्था में भी आप धर्म प्रचारार्थ लम्बी-लम्बी यात्रायें किया करते थे। एक स्थान पर आप अधिक देर तक रह नहीं पाते थे इसलिये कुछ लिखने के कार्य में असमर्थ थे। फिर भी इस व्यस्त होते हुए भी आपने 'दो सनातन सत्ताएं' इञ्जील के परस्पर विरोधी वचन, कुरान में अन्य मतावलम्बियों के प्रति कठोर वचन आदि महत्वपूर्ण पुस्तकें लिखी हैं।

स्वर्गीय पं० रामचन्द्र देहलवी ऐसे वैदिक धर्म के अनन्य उपासक, प्रगल्भ वक्ता, अद्वितीय शास्त्रार्थ महारथी आर्य सिद्धान्तों के मर्मज्ञ विद्वान के निधन से आर्यजगत् को जो महान क्षति पहुंची है वह क्षति शायद ही भविष्य में पूर्ण हो सके।

बोध-ज्ञान

(पृष्ठ ४ का शेष)

उत्तर प्रदेश में सर्वत्र हैं, गंगा किनारे बदायूं जिले में कन्छा पर भी यह सब कुछ ताता थंय्या नाच गाने आदि चल रहे हैं वहां यह सब पुनः बढ़ा है इसे देखकर वहां समीप के आर्यबन्धुओं ने गांव (बदायूं) में मन्दिर बनाने का दृढ निश्चय कर लिया है भूमि प्राप्त कर ली है नींव भी भरली गई है एवं दो कमरे भी बन से रहे हैं शेष कार्य के लिये समस्त आर्य जगत् को योग देना चाहिये—ओं पृणीयादिन्ना-धमानाय तव्यान्द्रा घीयां'''—(अ० १०-११७-५) अथर्व वेद के अनुसार धन का दान अवश्य दें" आर्यसमाज गवाँ का संकल्प पूरा होने पर शिष्य परम्परा स्थापित होगी स्थाई रूप से पुरोहित एवं संन्यासी रहेंगे संस्कृत पढ़ाएंगे, नित्य उपदेश देंगे, स्वाध्याय के लिए (वेद का भण्डार) पुस्तकालय होगा, क्षेत्र का तिमिर तिरोहित होगा ऐसी आशा है। अज्ञान हटेगा तो ज्ञान आएगा ही, तभी सच्चा बोध होगा और तभी सच्ची बोध रात्रि !

विश्व शान्ति केवल वैदिक धर्म प्रचार से ही सम्भव है अतः इसमें सभी योग दें, इसके साथ ही सरकार से आग्रह करें कि शिवरात्रि एवं दीपावली को सरकारी अवकाशों का नाम दीपावलि तथा ऋषि निर्वाण दिवस, शिवरात्रि तथा बोध रात्रि रक्खे, तथा आर्यसमाज स्थापना दिवस का भी सार्वजनिक अवकाश घोषित करें इसी प्रकार आकाशवाणी से प्रायः वैदिक मतों का प्रसारण तथा अन्य कार्यक्रमों में भी वैदिक धर्म के सिद्धांतों का प्रसारण हो, उसे आदि समान आर्यसमाज के उत्सवों का भी प्रसारण करें।

★

पं० जगन्नाथ प्रसाद शर्मा का देहान्त !

अत्यन्त दुःख है कि कोटला (आगरा) आर्यसमाज के प्रधान श्री पं० जगन्नाथ जी शर्मा वैद्य का १ फरवरी को देहावसान हो गया। आप ६ मास से बीमार थे। आपकी आयु ७४ वर्ष की थी। पण्डित जी ऋषि दयानन्द के सच्चे भक्त और कट्टर आर्य थे। आप कोटला आर्य समाज के संस्थापक थे। कोटला आर्य समाज के आदि से अन्त तक प्रधान रहे आपने अनेक विधवा विवाह कराये। कोटला के पौराणिक पण्डितों ने आपका जातीय और सामाजिक बहिष्कार तक कराया, पर पण्डित जी कभी अपने सिद्धान्त से विचलित नहीं हुये। अन्त में वे ही पौराणिक पण्डित उनके भक्त बन गये। पण्डित जी सफल वैद्य थे, २०-२५ गांवों में आप वैद्यक करते थे। सब्जी के काम में भी आप बड़े दक्ष थे। वह बड़े कर्मठ और अध्यवसायी थे। उन्होंने अपने पुरुषार्थ से प्रचुर धन पैदा किया। अत्यन्त सम्पत्ति, बाग बगीचा, खेत-हार, ट्यूबवेल आदि लगाये। आपने अपने पीछे ४ पुत्र और विधवा पत्नी छोड़ी हैं परमपिता परमात्मा दिवंगत आत्मा को शान्ति और शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें, यही प्रार्थना है।

—नारायणगोस्वामी

अत्यन्त क्रान्तिकारी खण्डन मण्डन साहित्य

शास्त्रार्थ में विजय प्राप्त करने का ईसाईमत, इस्लाम तथा पौराणिक साम्प्रदायिक पाखण्डों को उखाड़ फेंकने के लिये निम्न अत्यन्त प्रभावशाली साहित्य मंगाकर स्वयं पढ़े व सम्बन्धित सम्प्रदाय वालों को देवें।

मूर्ति पूजा खण्डन	१'००
बाइबिल दर्पण (विस्तृत खंडन)	२.५०
कुरान दर्पण ,,	२.००
भागवत समीक्षा ,,	३.००
गीता विवेचन ,,	२.७५
अवतार रहस्य ,,	१.५०
मुनि समाज मुख मर्दन	१.५०
शिव लिंग पूजा क्यों ?	१.२५
ईश्वर सिद्धि (महत्वपूर्ण ग्रन्थ)	२.००
वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है	.७५
पुराण किसने बनाये ?	.७५
माधवाचार्य को डबल उत्तर	.६५
कबीर मत गर्व मर्दन	.६०
पौराणिक गप्प दीपिका	.५५
शिवजी के चार विलक्षण बेटे	.३७
मृतक श्राद्ध खण्डन	.३१
पुराणों के कृष्ण	.३१
पौराणिक कीर्तन पाखंड है	.२५
शास्त्रार्थ के चेलेंज का उत्तर	.२५
सनातन धर्म में नियोग व्यवस्था	.२५
पौराणिक मुख चपेटिका	.१९
नृसिंह अवतार वध	.१२
सत्यार्थ प्रकाश की छीछालेदर का उत्तर	.४०
संसार के पौराणिक विद्वानों से ३१ प्रश्न	.१२
अवतार वाद पर ३१ प्रश्न	.१०
अर्थ सहित वैदिक संध्या	.१५
खुदा और शैतान	.१५

उत्सवों पर पुस्तक विक्रेताओं से मांगे अथवा सीधे निम्न पते से पत्र लिखकर वी० पी० से मंगावें।

मिलने का पता—
वैदिक साहित्य प्रकाशन
कासगंज (उ० प्र०) भारतवर्ष

आर्य विद्वान् को पी०एच०डी०उपाधि प्रदान

आर्य जनता को यह समाचार जान कर हर्ष होगा कि आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध लेखक और विद्वान् श्री भवानीलाल भारतीय को राजस्थान विश्व विद्यालय द्वारा 'आर्यसमाज की संस्कृत भाषा और साहित्य को देन' विषय पर पी० एच० डी० उपाधि प्रदान की गई है। यह उपाधि श्री भारतीय को जयपुर में राजस्थान विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह के अवसर पर केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री डा० त्रिगुणसेन के करकमलों द्वारा प्रदान की गई।

डा० भारतीय ने अत्यन्त परिश्रम पूर्वक अपने शोध प्रबन्ध में आर्यसमाज की संस्कृत विषयक सेवा का मूल्यांकन किया है। उन्होंने अनेक लुप्त और अनुपलब्ध ग्रन्थों का पुनरुद्धार कर यह सिद्ध किया है कि आर्यसमाज के प्रवर्तक स्वा० दयानन्द और परवर्ती आर्य विद्वानों ने संस्कृत में अपने महत्वपूर्ण ग्रन्थों की रचना कर संस्कृत के सारस्वत भण्डार को समृद्ध किया है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में आर्यसमाजी लेखकों द्वारा लिखे गये संस्कृत महाकाव्य, चरित काव्य, नीति काव्य, स्तोत्र साहित्य, शतक काव्य, चम्पू, नाटक, गद्य, निबन्ध, शास्त्रार्थ उपन्यास, साहित्यालोचन तथा भाषा विज्ञान विषयक सम्पूर्ण साहित्य का विशद आलोचन करते हुये आर्यसमाज के द्वारा संस्कृत शोध कार्य की प्रगति का भी विचार किया गया है। साथ ही आर्यसमाज के गुरुकुलों, पाठशालाओं, प्रकाशन संस्थानों, पुस्तकालयों तथा पत्र-पत्रिकाओं ने संस्कृत भाषा के प्रचारार्थ जो कार्य किया है, उनका तथ्य परक विवरण भी शोध प्रबन्ध में सकलित किया गया है। वस्तुत: यह शोध ग्रन्थ आर्यसमाज की संस्कृत विषयक देन का समग्र विवेचन प्रस्तुत करता है।

वेद प्रचार

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा लखनऊ का ५६वां मासिक अधिवेशन आर्यसमाज आदर्शनगर में श्री माननीय प्रधान श्री कृष्णदत्तदेव जी की अध्यक्षता में ५ बजे शाम से ८ बजे रात्रि तक सम्पन्न हुआ। सर्व प्रथम विशेषयज्ञ हुआ जिसके यजमान श्री चरनदास सेंगल तथा पुरोहित श्री भजनानन्द जी वानप्रस्थी थे। तत्पश्चात् श्री वहिन सन्तोष भाटिया ने सन्ध्या प्रार्थना करा कर सहिकाओं के लिए आदर्श उपस्थित किया। पश्चात् श्री साविती कपूर व श्री पुष्पलता सोबती के सुमधुर भजन हुये।

वाराणसी कमिश्नरी की बैठक

आर्यसमाज के प्रान्त व्यापी संगठन को सुदृढ़ बनाने हेतु एवं सामयिक समस्याओं पर परस्पर विचार विमर्श करने की दृष्टि से समय-समय पर आर्यसमाजों एवं उसके आधीनस्थ संस्थाओं के प्रतिनिधियों की बैठकें होती रहना आवश्यक है। वृहद अधिवेशन के अवसर पर वार्षिक निर्वाचन एवं अन्य कार्यक्रमों में ही पूरा समय लग जाने के कारण इस प्रकार की बैठकें नहीं हो पाती। साथ ही यदि प्रान्तीय स्तर की बैठक की जाय तो बैठक का आकार बड़ा होने और प्रत्येक क्षेत्र का प्रतिनिधित्व नहीं होने से अधिक सफलता नहीं मिल सकती। इसी लिये क्षेत्रीय स्तर की बैठकें ही अधिक उपयोगी हो सकती हैं। सभा के उपमन्त्री श्री आनन्दप्रकाश जी ने इस सामयिक आवश्यकता को समझाते हुए अनेक जिलों में भ्रमण कर आर्यसमाज के अधिकारियों से सम्पर्क स्थापित किया। हर्ष का विषय है कि वाराणसी कमिश्नरी की बैठक आगामी २५ फरवरी रविवार को आर्यसमाज बलिया में सम्पन्न होगी। श्री आनन्दप्रकाश जी उपमन्त्री सभा ने बैठक में उपस्थित रहने की स्वीकृति प्रदान कर दी है। सभा मन्त्री श्री सच्चिदानन्द जी शास्त्री एवं अन्य प्रान्तीय अधिकारियों को भी आमन्त्रित किया जा रहा है। वाराणसी कमिश्नरी के अन्तर्गत पाचों जिलों वाराणसी, मिर्जापुर, गाजीपुर, जौनपुर तथा बलिया की समस्त जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभाओं, आर्यसमाजों आर्य शिक्षा संस्थाओं, आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तरङ्ग सदस्यों एवं अधिकारियों, आर्यवीर दल के अधिकारियों तथा समस्त आर्य बन्धुओं से निवेदन है कि वे इस बैठक में उपस्थित होकर अपने विचारों से लाभान्वित करने की कृपा करें। आप समस्त पत्राचार एवं अपने आने की सूचना और बैठक के लिये प्रस्ताव इत्यादि श्री डा० सुरेन्द्र देव जी शास्त्री एम० ए०, पी० एच० डी० संयोजक समारोह आर्यसमाज बलिया के पते पर प्रेषित करने की कृपा करें।

वाग् दान संस्कार

श्री हरिश्चन्द्र आर्य सुपुत्र रामचन्द्र आर्य कोषाध्यक्ष कायमगंज निवासी का वाग् दान संस्कार रामकुमारी सुपुत्री श्री बाबूराम जी भारद्वाज सड़ा ग्राम जिला शाहजहांपुर निवासी के साथ वैदिक रीत्या सुसम्पन्न हुआ। टीका की विधि श्री रामेश्वरदयाल जी की अध्यक्षता में पूर्ण हुई।

वेद कथा

झांसी दि० ४ व ५-१-६८ को सायंकाल ७-३० बजे से ८-३० बजे तक आर्य समाज नगरा, झांसी में आर्य जगत् की सम्माननीय आर्य सन्यासिनी माता विद्यावती यति जी की वेद कथा हुई। जिसमें कि उन्होंने स्वस्तिवाचन प्रकरण के मन्त्र ओ३म् सूर्याचन्द्र....: का अर्थ बड़े ही सुन्दर ढंग से करते हुये मानव मात्र को सूर्य तथा चन्द्रमा से उनके कर्म विशेष के अनुकरण करने की प्रेरणा दी। निरन्तर आर्यसमाज मंदिर का हाल श्रोताओं से भरा रहा और जनता आगे भी इस कथा का आयोजन करने हेतु आग्रह किया। माता जी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रशस्त मार्ग पर भी अग्रसर होने हेतु जनता को प्रेरित किया।

पी० डब्ल्यू० डी० कन्ट्रेक्टर की शुद्धि

३१ दिसम्बर १९६७ को आर्य जगत के प्रसिद्ध सन्यासी स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती ने झीरपाणी पी० डब्ल्यु० डी० ए क्लास के कन्ट्रेक्टर श्री करिडड ट वेन्स्टन लहा को जगन्नाथ मन्दिर सैक्टर ४ राऊरकेला में सपरिवार शुद्ध करके आर्य (हिन्दू) धर्म में दीक्षित किया। इस अवसर पर राऊरकेला के सैकड़ों व्यक्ति उपस्थित थे। शुद्ध होने के पश्चात् श्री लहा साहब ने सबको अपने हाथों से यज्ञ प्रसाद वितरण किया। श्री लहा साहब का शुद्ध नाम कृष्ण तनय भूषण लहा रखा गया है।

आवश्यक अपील

श्री पं० धर्मवीर जी आर्य झण्डाधारी एक उत्साही प्रचारक हैं, उनके हृदय में आर्यसमाज के प्रचार की एक अनोखी लगन है। वे दस वर्षों तक आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, मालवा, अजमेर के आधीन रहकर अजमेर जिले के ग्रामों में जहाँ ईसाइयत का जाल फैला हुआ है अनेकों आर्यसमाज स्थापित कर चुके हैं। आजमगढ़, बलिया, गाजीपुर आदि जिलों में आर्यसमाज की स्थापना और शुद्धि का कार्य कर चुके हैं।

लखनऊ नवाब की स्टेट दुबारी मधुबन जिला आजमगढ़ के मैनेजर इस्माइल खां की पुत्री को शुद्ध करके गाजियाबाद के श्री तेज बहादुर लाल जी के साथ आप शादी करा चुके हैं और दुबारी तथा गाजियाबाद में आर्यसमाज स्थापित करके इन इलाके में सैकड़ो परिवारों को आप शुद्ध कर चुके हैं।

पूज्य स्वर्गीय देशभक्त भारत केसरी कुंवर चांदकरण जी शारदा के साथ श्री झण्डाधारी जी निजाम हैदराबाद के करीमनगर जेल में, नोआखाली के हत्याकाण्ड में, सिन्ध हैदराबाद की सरकार के सत्यार्थप्रकाश की जब्ति के विरोध आन्दोलन में, कराची, कश्मीर के नगरों में तथा भारत के अन्य नगरों में सेवा का कार्य कर चुके हैं।

इनके साथ ही हिन्दी रक्षा आन्दोलन में, गौरक्षा आन्दोलन में, ईसाइयत के विरुद्ध दिल्ली के प्रसिद्ध आन्दोलन में आप जेल यातनायें भोग चुके हैं। मैं आर्य जनता से अपील करता हूं कि श्री वेद प्रचारक पं० धर्मवीर जी आर्य झण्डाधारी जी की उत्तम हवन सामग्री तथा उनकी उपयोगी पुस्तकें मगवाकर उनकी सहायता करें।

पुस्तकें तथा हवन सामग्री मंगवाने के लिए पत्र इस पते पर लिखें—वेदपथिक धर्मवीर आर्य झण्डाधारी, आर्य हवन सामग्री निर्माण शाला, सराय रुहेला, नई दिल्ली ५।

निवेदक—

—भगवानस्वरूप न्यायभूषण, मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्दाश्रम अजमेर

दो वरों और एक वधू की आवश्यकता

एक ३५ वर्षीय कुमारी जो एक राजकीय हाई स्कूल की मुख्याध्यापिका हैं, एम० ए० ट्रेन्ड है और जिसका मासिक वेतन ५५०) है, तथा सुन्दर और स्वस्थ है, के लिये एक योग्य वर चाहिये। एक २१ वर्षीय कुमारी जो एम० ए० क्लास की छात्रा है तथा सुन्दर और स्वस्थ है, के लिये योग्य वर चाहिए। एक २४ वर्षीय कुमार जो सुन्दर और स्वस्थ है और ३२५) मासिक वेतन पाने वाला राजकीय कर्मचारी है, के लिये योग्य वधू चाहिये। तीनों वार्ष्णेय (वारहसैनी) वैश्य हैं। जाति बन्धन नहीं, केवल आर्य्य होना आवश्यक है। पत्र व्यवहार पूर्ण विवरण और फोटो सहित अपेक्षित है।

रमासहाय वार्ष्णेय
१२, बापूनगर, अजमेर"

हिमालय के हरे
उपकरणों से निर्मित
विटामिन सी तथा
लोह से भरपूर
च्यवनप्राश
अति शक्ति के
लिए आज से
ही सेवन करें

घर का डाक्टर
लक्ष्मणधारा

श्री ब्र. बालकराम जी आर्य प्रज्ञाचक्षु का निधन

—ब्र० [illegible]
गुरुकुल [illegible] (हरिद्वार)

श्री बालकराम जी का जन्म विजय नगर, बिजौली पट्टी गुराडंमिहा डाकखाना रीठाखाल जिला गढवाल उत्तर प्रदेश मे हुआ था। इनकी माता जी का नाम गायत्रीदेवी तथा पिता का नाम जगतराम आर्य है। आपका जन्म सम्वत् १९.२ [illegible] मे हुआ था। आप के परिवार के लोग कट्टर मूर्ति-पूजक थे। सन् १९३९ मे चौनकोट परगना मे आर्यसमाज के प्रचार प्रभाव से आर्यसमाज में इन्होंने प्रवेश लिया था। उससे पहले ये भी कट्टर मूर्तिपूजक थे देवी तथा शिव के अनन्य भक्त थे। आर्यसमाज मे प्रवेश लेते ही इन्होने पत्थर, लोहे एव चांदी की सैकड़ो मूर्तियों को जलसमाधि लगवा दी थी। आपके मन में पवित्र आर्यसमाज के प्रति तीव्र अग्नि प्रज्वलित हो चुकी थी। प्रथम ५ वर्ष [illegible] आश्रम हरिद्वार मे श्री पं० देवानन्द जी द्वारा सत्यार्थ प्रकाश संस्कारविधि तथा ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका आदि महर्षि कृत सभी ग्रन्थों का अध्ययन किया। सन् ४२ में गुरुकुल सिघवाद, मध्यप्रदेश मे आचार्य श्री रामचन्द्र जी से वेदान्तप्रकाश के अन्तर्गत वर्णोच्चारण शिक्षा तथा सन्धि विषय संज्ञा प्रकाश ५ महीने के अदर अध्ययन किया वहां की जलवायु अनुकूल न होने के कारण इनको पुन. मोहन आश्रम हरिद्वार मे लौट आना पड़ा था। आश्रम के श्री कविराज हरिनामदास बी० ए० ने आर्य उपदेशक विद्यालय मे इनका प्रवेश करा दिया था। सन् ४३ से ४४ तक विद्यालय मे नियम पूर्वक अध्ययन करके "धर्मेन्दु" की उपाधि प्राप्त की। यह शिक्षा इन्होंने श्री प० ईश्वरचन्द्र जी दर्शनाचार्य तथा डा० अमर सिंह जी शास्त्रार्थ महारथी महोपदेशक गुरुजनो के चरणों मे बैठकर प्राप्त की थी।

सन् ४३ मे शिक्षा समाप्ति के पश्चात् [illegible] के अवकाश पर श्री पं० देवव्रत [illegible] ([illegible]) और श्री स्वामी ओमप्रकाशानन्द जी (पीली-भीत) के साथ गढवाल मे वैदिक धर्म के प्रचार [illegible] कविराज जी की प्रेरणा से [illegible] एक बरात मे [illegible] उस [illegible] के पौराणिक उच्च जाति के लोग छोटे [illegible] के लोगो को विवाह के अवसर पर [illegible] नहीं बैठने देते थे। यदि कदाचित कोई बैठने का साहस करता तो उनके साथ लोग मारपीट करते थे। ऐसी घटना उनके साथ भी घटी। इस घटना मे उनके तथा

वेदव्रत जी के गले मे रस्सा डालकर घसीट-घसीट कर लोगो ने मारा, साथ ही इनका ओम् का झडा छीन लिया गया। इसके विरोध मे इन्होने आमरण अनशन प्रारम्भ कर दिया। सारे आर्य जगत् के लोगो मे एक तूफान सा मच गया। अनशन को तोड़वाने के लिए सार्वदेशिक सभा के साथ सभी प्रादेशिक सभाओ के नेताओ के हस्तक्षेप पर इनको इनका झडा दिलवाया गया और बरात को आने जाने की व्यवस्था कराई गई। आर्य नेताओ ने महात्मा गांधी और पत जी से मिलकर प्रान्तीय [illegible] कानून सर्वसाधारण के लिये बनवाए।

[illegible] प्रचार [illegible] सन् [illegible] से [illegible] परीक्षा (स्वामी [illegible]) का [illegible] प्रचार कार्य किया। सन् ४५ से [illegible] तक आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के वैतनिक प्रचारक रहे। सन् ३९ के हैदराबाद सत्याग्रह आन्दोलन के समय आपने पाच दिन का अनशन व्रत रखा था।

पजाब के हिन्दी आन्दोलन में ५० तक निरन्तर सैक्रेटेरियट भवन के आगे भयकर धूप तथा वर्षा मे भी जून मास [illegible] किया था। केन्द्रीय कारागार अम्बाला मे जब अनशनकारी श्री आत्मभिक्षु जी को गिरफ्तार करके पुलिस ले गई थी तो विरोधस्वरूप उन्होने भी अनिश्चित काल तक के लिये अनशन किया था। महात्मा जी के अनशन बन्द करने पर इन्होने भी किया था।

९ नवम्बर १९३६ को वैदिक साधना आश्रम से गोरक्षा आन्दोलन मे भाग लेने के लिए विदा होकर आर्य भिक्षुक जी के साथ १३ नवम्बर को प्रथम बार सत्याग्रह किया था। १३ नवम्बर से २६ अप्रैल ६७ तक छह बार जेल की यात्रा की थी। गोरक्षा आन्दोलन को शक्ति प्रदान करने के लिए १०४०) रुपये समिति को सग्रह करके प्रदान किया था। सूखा पीड़ित क्षेत्र बिहार के लिये हजारों रुपये तथा वस्त्र इकट्ठा करके आर्यसमाज को भेजा था।

इन्होने अपने जीवन का मूल उद्देश्य आर्यसमाज के प्रचार और प्रसार के लिये बना रखा था। [illegible] हुये [illegible] हुये यह अनोखा [illegible] के साथ लोगो को वैदिक धर्म का पवित्र सदेश सुना रहा था। [illegible] को इस [illegible] कराकर उन [illegible] शारीरिक अवस्था [illegible] होती जा रही थी। आर्य वानप्रस्थ [illegible] आश्रम मे पितृतुल्य प्रधान श्री [illegible] जी ने इस प्रज्ञाचक्षु सत की स्थिति को देखकर वानप्रस्थ श्री रेवतीप्रसाद जी के साथ सहारनपुर अस्पताल मे चिकित्सा के लिये भेजा था। १७ जनवरी को उनके पेट का सफल आपरेशन हुआ। उनकी स्थिति बड़ी सतोषजनक लग रही थी, किन्तु अचानक २[illegible] जनवरी रात के १ बजे वानप्रस्थ रेवतीप्रसाद जी से उन्होने कहा— 'मै महाप्रभु के गोद मे बड़ा आनन्द का अनुभव कर रहा हू।" गायत्री का जाप कर रहे थे कि अचानक एक जोरो की हिचकी आई और वे इस असार ससार से सर्वदा के लिये कूच कर गये। वहाँ से इनकी लाश वानप्रस्थ आश्रम हरिद्वार लाई गई और वैदिक विधि से बड़े धूम के साथ श्मशान घाट कनखल मे आपकी अन्त्येष्टि क्रिया करदी गई नि.सन्देह उक्त महाशय के निधन होने पर जो आर्यसमाज को महती क्षति हुई है, वह शीघ्रतया पूर्ण नहीं हो सकेगी। इस प्रकार के नि.स्पृही एव उदात्त भावना, त्यागी तपस्वी, कर्मठ व्यक्ति समाज मे अल्पसख्या में ही पाये जाते हैं।

हम सभी वानप्रस्थ आश्रम [illegible] हार्दिक श्रद्धाञ्जलि देते हुये दिवगत आत्मा की शान्ति के लिये तथा उनके परिवार [illegible] परमात्मा से शुभ-कामना करते हैं।

आर्य्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल.-६०
रा० माघ २९ शक १८८९ कृ० शु० ४
(दिनांक १८ फरवरी सन् १९६८)

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

Registered No. L. 60
पता—'आर्य्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष : २२११३ तार : "आर्यमित्र"

दयानन्द-सप्ताह

(२० फरवरी ६८ से २६ फरवरी ६८ तक)

(अन्तरङ्ग सभा दि० २५-१२-६७ के नि० सं० ३२ द्वारा स्वीकृत)

इस महान् पर्व पर हमारी प्रतिज्ञाएं और कार्यक्रम

१—ऋषि बोधोत्सव पर जन-सम्पर्क एवं सदस्यता अभियान किया जावे—आगामी ऋषि बोधोत्सव पर आर्यसमाज के प्रचार की दृष्टि से विशेष जन-सम्पर्क स्थापित करने एवं सदस्यता अभियान पर विशेष बल दिया जाना चाहिये ताकि आर्य विचारों तथा आर्यसमाज से सहानुभूति रखने वाले बन्धुओं के सक्रिय सहयोग से समाज लाभान्वित हो सके।

२—आर्यजनो में पारस्परिक सहयोग एवं भ्रातृत्व-भावना वृद्धि का प्रयत्न किया जाए—
प्रत्येक जिले मे जिले की समस्त समाजों को "आर्य सम्मेलनों" का आयोजन करना चाहिये और परस्पर भ्रातृभाव की वृद्धि के साथ-साथ स्थानीय आर्थिक, सामाजिक, तथा धार्मिक गोष्ठियों के द्वारा परस्पर सहयोग प्राप्त करने का प्रयत्न किया जाये।

३—राष्ट्र के नैतिक पतन को रोकने का आर्यजन विशेष यत्न करें—आर्यसमाज धार्मिक आन्दोलन है। राष्ट्र के नैतिक पतन को देखते हुए आर्यसमाज का दायित्व और भी अधिक बढ़ जाता है। अतः सभी आर्य बन्धुओं को चाहिये कि वे इस पर्व पर सामूहिक रूप से राष्ट्र के नैतिक उत्थान में विशेष सक्रिय सहयोग देने का निश्चय करें और स्वयं नैतिक जीवन का आदर्श प्रस्तुत कर राष्ट्र का मार्ग दर्शन करें।

दयानन्द सप्ताह कार्यक्रम

[१] **उद्बोधन**—प्रतिदिन प्रातः नगर नगर और ग्राम ग्राम मे टोलियां बनाकर उद्बोधन किया जावे।

[२] **यज्ञ**—प्रभात फेरी के पश्चात् आर्य मन्दिर मे सार्वजनिक यज्ञ किया जाये। यथासम्भव इस सप्ताह मे सम्पूर्ण यजुर्वेद संहिता से बृहद् यज्ञ की योजना की जाये।

[३] **प्रचार**—(अ) प्रतिदिन सायंकाल ग्रामों मे तथा नगर के भिन्न भिन्न मुहल्लों मे अथवा आर्यमन्दिरों में कथा द्वारा तथा अन्य प्रकार से वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार की विशेष योजना की जाय और ऋषि जीवन पर विशेष प्रकाश डाला जावे। सत्यार्थ-प्रकाश को बिना मूल्य या लागत मात्र पर देकर अधिक से अधिक प्रचार किया जावे।

[आ] **आर्यमित्र**—सभा की ओर से वैदिक धर्म प्रचार और आर्यसमाज की गतिविधियों एवं नीतियो के परिचयार्थ ६९ वर्ष मे 'आर्यमित्र' साप्ताहिक प्रकाशित हो रहा है। ८) वार्षिक मूल्य में प्रत्येक आर्यसमाज स्वयं ग्राहक बनकर और सदस्यों को उसका ग्राहक बनाकर प्रचार कार्य मे रचनात्मक सहयोग प्रदान करें।

[इ] **गुरुकुल आन्दोलन**—सभा की ओर से गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली को प्रोत्साहित करने के लिये गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन गत ६३ वर्षों से सञ्चालित है। बोधरात्रि के अवसर पर गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के महत्व पर विशेष प्रकाश डालना तथा गुरुकुल की आर्थिक सहायता द्वारा उसे समर्थ बनाना प्रत्येक आर्य हिन्दू का कर्तव्य है।

[४] **आचार व्यवहार**—जनता मे से भ्रष्टाचार और चरित्रहीनता मिटाने के लिये, सिनेमाओं के भ्रष्टाचार फैलाने वाले व अश्लील चित्रों के विरुद्ध आन्दोलन किया जावे तथा मादक द्रव्य निषेध व गोरक्षा पर भी बल दिया जावे।

[५] **दलितोद्धार**—इस सप्ताह मे न्यून से न्यून एक दिन अछूत कही जाने वाली जातियों में विशेष रूप से प्रचार कर उनके उठाने और अस्पृश्यता मिटाने का प्रयत्न किया जावे। दलितों को आर्यसमाज का सदस्य बनाना और उनमें वैदिक संस्कारों का प्रचार भी प्रयत्नपूर्वक करना चाहिये।

[६] **प्रीतिभोज**—यथासम्भव प्रीतिभोज की उसी दिन योजना की जाये। प्रीतिभोज अत्यन्त सादा और स्वल्प व्ययक हो, उनमे जातपांत छूत अछूत का भेदभाव विसार कर, सब आर्य भाई बहन समान रूप से सस्नेह भाग लें।

[७] **आत्म-निरीक्षण**—इस सप्ताह मे एक दिन समस्त आर्य भाई-बहनों को एकत्र होकर इस बात पर भी गम्भीरता से विचार करना चाहिये कि जिस शक्तिशाली, आर्यसमाज का कभी बहुत बड़ा प्रभाव था, आज वह शिथिल और अकर्मण्य सा क्यों बन गया है। इसमें स्वयं अपनी कहां तक त्रुटि है।

[८] **स्वदीक्षा-व्रत**—भविष्य मे आर्यसमाज के लिये दयानन्द दीक्षा शताब्दी मथुरा में स्वीकृत प्रस्ताव के लिये सामूहिक दीक्षाव्रत को व्यक्तिगत और सामूहिक दोहराना चाहिये।

[९] **ईसाई प्रचार निरोध**—इस सप्ताह मे एक दिन विशेष सार्वजनिक सभा करके ईसाइयत के प्रचार के लिये जाने वाले धन, विदेशी मिशनरियों पर प्रतिबन्ध लगाने, विदेशी मिशनों का राष्ट्रीयकरण करने तथा हिन्दू बालक बालिकाओं की ईसाइयत की शिक्षा पर प्रतिबन्ध लगाने की मांग करनी चाहिये।

दयानन्द जन्म दिवस (ऋषि बोध पर्व २६ फरवरी १९६८ ई० दिन सोमवार)

प्रातः—समस्त आर्यसज्जन तथा देवियां मन्दिर में एकत्रित होकर—

१—कुछ काल वेद पाठ करें।
२—साधारण यज्ञ तथा पर्वेष्टि यज्ञ करें।
३—आत्मोद्धार सम्बन्धी भजन गान किये जावें।
४—प्रत्येक व्यक्ति आत्मोन्नति, स्वाध्याय वैदिक धर्म प्रचार करने का अनुष्ठान करें।

सन्ध्याह्न—विशेष शोभा यात्रा का आयोजन किया जाय। शोभा-यात्रा अधिक से अधिक गम्भीर तथा प्रभावोत्पादक होना चाहिये। आर्य पुरुषों, कुमारों, देवियों को अपनी अपनी टोलियां बनाकर स्वयं भजन गाने चाहिये। भजनों में प्रभु-भक्ति महर्षि-महिमा जातीय-गौरव तथा आत्म-सुधार के विशेष भाव हों।

रात्रि—मन्दिरों में विशेष रोशनी करनी और उसके पश्चात् आर्य मन्दिरों में वेदोपदेश तथा ऋषि जीवन पर प्रकाश डालने वाले व्याख्यान होने चाहिये।

विनीत—
सच्चिदानन्द शास्त्री
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश

५ मीराबाई मार्ग लखनऊ
दिनांक २-१-६८ ई०

स्वत्वाधिकारिणी आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के लिये प्रबन्धसमीप आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग से कृष्णगोपाल शर्मा द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।

अमरहुतात्मा पं० लेखराम

का बलिदान दिवस

महान् हुतात्मा पं० लेखराम जी दयानन्द मिशन के एक सच्चे पुजारी थे। उच्चकोटि के विद्वान तथा तार्किक थे। तप और त्याग की पावन प्रतिमा थे। गृहस्थी होते हुए एषणाओं से ऊपर थे। निर्भयता और पुरुषार्थ के तो वे धनी ही थे। दयानन्द मिशन के लिये सर्वस्व स्वाहा करना आपके जीवन की साधना थी। अन्त समय में एक नृशंस यवन के हाथों अपनी जीवन लीला को समाप्त कराकर आपने अपनी उस साधना को सम्पन्न कर दिखाया।

आपने उस विपरीत समय में, जबकि यवनों का दम्भ द्वेष पराकाष्ठा को पहुंचा हुआ था, इस्लाम की धज्जियाँ उड़ाकर रख दी थी और उसके पाखण्ड की पोल खोलकर विश्व को दिखला दिया। अकेले लेखराम ने अपने ज्ञान, तप और तेज के द्वारा वह कार्य करके दिखला दिया जिसके करने में बड़ी से बड़ी सेना भी सफल नहीं हो सकती थी। परन्तु !

आज आर्यसमाज में प्रचारकों की संख्या लेखराम जी के समय की अपेक्षा बहुत अधिक है किन्तु पं० लेखराम जी की भांति वर्तमान उपदेशकों तथा प्रचारकों में कितने हैं जो परिवार का मोह त्यागकर ऋषि के मिशन के लिये मतवाले बन गये हैं ? कितने हैं जो धन का लोभ न करके और रूखी-सूखी खाकर रात-दिन मिशन के लिए पागल बने हुए हैं ? कितने हैं जो अपने ऊंचे चरित्र के कारण आभा, तेज और कान्ति से सम्पन्न हैं ? कितने हैं जिनकी अर्थ शुचिता, त्याग वृत्ति एवं कर्तव्य निष्ठा की आज आर्य जगत में धाक है ? कितने हैं जो चन्द रटे रटाये व्याख्यानों तक ही सीमित न रहकर रात दिन स्वाध्याय में रत रहते हुए अपनी ज्ञान वृद्धि करते और नवीन से नवीन खोज करते हैं तथा श्रोताओं की हृदयतन्त्री को कम्पन देते हैं ?

कितने हैं जो वीर लेखराम जी की भांति दलबन्दी के शिकार न बनकर और राजनैतिक स्वार्थों से ऊपर उठकर भगवान दयानन्द के पावन मिशन के लिये ही केवल अपने को समर्पित किये हुये हैं ?

इस पवित्र दिवस पर हमें अपनी आत्मा की नीरवता में आत्म निरीक्षण करना होगा और उस महान् प्रचारक के बलिदान से कोई पाठ पढ़ना होगा। इसी में हमारा और आर्य जाति का कल्याण निहित है।

होलिका का पर्व

—आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री

आर्यों की पर्व सूची में होली का भी उल्लेख है। यह पर्व किसी न किसी रूप में भारत में सभी प्रान्तों में मनाया जाता है। इसका रूप विकृत अवश्य हो गया है। परन्तु वास्तविकता यह है कि यह एक अच्छी परम्परा का बिगड़ा हुआ रूप है। इस पर्व पर देहातों में हर प्रकार की गन्दगी लोगों के ऊपर फेंकी जाती है। उसके बाद आजकल को गुलाल फेंका जाता है। तरह तरह की गालियां कबीर के तौर पर लोग उच्चारित करते हैं जो मानव जिह्वा के लिए शोभा की वस्तु नहीं। लोग भंग का भी प्रयोग इस पर्व पर करते हैं। गन्दे फाग भी गाते हैं ये सब कुरीतियां हैं जिनको हटाने की परमावश्यकता है।

होली के लिए जिन नामों का प्रयोग होता है वे लगभग सभी यज्ञ की पवित्र भावना के द्योतक हैं और उसकी प्रतीक हैं। होला, होलहा और होलक शब्द समानता के द्योतक हैं। संस्कृत साहित्य में आधे भुने हुए अनाज का नाम होलक है। इसी को होला और होलहा तथा 'होरहा' के नाम से भी लोग पुकारते हैं। आजकल बहुधा हरे मटर जौ गेहूं और चने का होलहा लोग बनाते हैं। यह बहुत ही उपयोगी होता है। भाव प्रकाश में इस होलक को श्रम-दोष और कफ का नाशक कहा गया है। जिस अनाज का होलक होता है उसी गुण वाला होता है। इसीलिए लिखा भी गया है कि 'अर्ध पक्व शमी धान्यम् होलका स्मृत' अर्थात् आधा भुना अन्न होलक है। होलिका इस होलक का स्त्रीलिङ्ग बना दिया गया है। उत्तर प्रदेश के पूर्वी देहातों में ऐसी प्रथा है कि गोबर का बड़ा बनाकर उसके मध्य में छेद कर देते हैं। उस छेद में जव, गेहूं अलसी आदि की बालियां डालकर होली की आग पर सेंक कर घरों में रख लेते हैं। किसानों का विश्वास है कि इससे अनाज की वृद्धि होती है। वृद्धि हो अथवा न हो परन्तु यह तो इससे सिद्ध है कि होली की अग्नि यज्ञाग्नि है और उस पर यज्ञ करने से बचा हुआ यज्ञशेष यह लेकर जाते हैं। यज्ञ शेष की महिमा भी बहुत है।

होली एक ऐसा पर्व है जो यज्ञ-पर्व है। खेतों में यज्ञ करने का विधान गृह्य सूत्रों में पाया जाता है। नव सस्येष्टि तो प्रसिद्ध ही है। परन्तु 'सीता यज्ञ' नाम का भी एक यज्ञ है जो सीता अर्थात् खेत में जुते हुए हल की लकीर पर किया जाता है। सीता हल की लकीर का नाम है। उस पर किया जाने वाला यज्ञ सीता यज्ञ है। होली भी एक सीता यज्ञ है।

होली को कहीं कहीं पर 'हुताशनी' कहा जाता है। 'हुताशन' अर्थात् हवि खाने वाला अग्नि है। हुताशनी वह है जिसकी अग्नि हुत को खाती है। यह स्पष्ट ही यज्ञ की सूचना है होली की धुलहड़ी को कहीं कहीं पर धूलिवन्दन कहा जाता है। यह भी यज्ञ की राख के लिए ही प्रयुक्त हो सकता है। इस प्रकार होली का पर्व यज्ञात्मक है यह सुतराम सिद्ध होता है।

कुछ लोगों में यह विचार है कि शूद्रों का पर्व है। परन्तु यह गलत बात है कहीं भी ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिलता है जिससे यह धारणा पुष्ट हो हो सके। होलिका एक आर्य पर्व है और यज्ञात्मक है। इस पर विचार मीमांसा के टीकाकारों ने भी उठाया है। जिसके यहां पर उल्लेख करने की आवश्यकता नहीं है।

गुलाल और इत्र आदि छिड़कने की प्रथा महाराज हर्षवर्धन के समय से पड़ी होगी ऐसा प्रतीत होता है रत्नावली नाटिका में ऐसा उल्लेख मिलता है। यह पर्व किस प्रकार मनाया जावे इसका वर्णन पर्व पद्धति में पाया जाता है उसके अनुसार इस पर्व को मनाना चाहिए। जो कुप्रथायें इस पर्व के अवसर पर पड़ गई हैं उन्हें समाप्त कर इसका वैदिक रूप सामने लाना चाहिए।

वैदिक प्रार्थना

ओ३म् वायवा याहि दर्शतेमे सोमा अरंकृताः।
तेषां पाहि श्रुधी हवम् ॥७॥ ऋ० १-३-३-१

व्याख्या-हे अनन्त बल परेश वायो दर्शनीय ! आप अपनी कृपा से ही हमको प्राप्त हो हम लोगों ने अपनी शक्ति से सोम (सोम लता आदि) ओषधियों का उत्तम रस सम्पादन किया है और जो कुछ भी हमारे श्रेष्ठ पदार्थ हैं वे आपके लिये "अरंकृताः" अलङ्कृत अर्थात् उत्तम रीति से हमने बनाये हैं और वे सब आपके समर्पण किये गये हैं इनको आप स्वीकार करो (सर्वात्मा से पान करो) हम दीनों को दीनता सुनकर जैसे पिता को एक तुच्छ छोटी चीज समर्पण करता है, उस पर पिता अत्यन्त प्रसन्न होता है, वैसे आप हम पर होओ।

इस अङ्क में पढ़िये !

१–होलिका का पर्व	२	१२–पण्डित परिभाषा	१४
२–सम्पादकीय	३	१३–आर्यसमाज के नियम	१५
३–सभा तथा सार सूचनायें	४	१४–व्यक्ति और समाज की उन्नति	१६
४–आर्यों का कर्तव्य	५	१५–ईसाइयत का २५म.ल का कार्य	१७
५–कुछ इधर की कुछ उधर की	६	१६–सम्पादक के पत्र	१८
६–होली महापर्व	७	१७–आर्यजगत्	१९-२२
७–काव्य कानन	८	१८–शोक का आयण	२३
८–होली 'होमावली'	९	**परि-शिष्टाङ्क**	
९–स्वामी दयानन्द और शिक्षा	१०	विद्वद्वर्य की सम्मतियां	क
१०–अध्यात्म-सुधा	११	होली कैसे मनाए ?	ख
११–दयानन्द दिग्विजयार्क	१२-१५	स्व० डा० हरिशङ्कर शर्मा	ग

आर्यमित्र

लखनऊ रविवार १७ मार्च १९६८, दयानन्दाब्द १४४ सृष्टिसम्वत् १,९७,२९४९,०६८

वासन्ती नवसस्येष्टि यज्ञ का होलिका-पर्व

★

यह होलिका पर्व एक अत्यन्त प्राचीन प्राकृतिक, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय पर्व है। हिमालय से कन्याकुमारी तक समूचे भारतवर्ष के नगर-नगर और ग्राम ग्राम मे बड़े उत्साह व उमगों के साथ सार्वजनिक रूप में यह मनाया जाता है।

भारत से मारीशस, फिजी, अफ्रीका सिंगापुर, स्याम, इङ्गलैण्ड, लंका, अमेरिका, जर्मनी आदि देशों मे भी जहां-जहां आर्य लोग आबाद हैं वहां-वहां इस पर्व को विशेष रूपेण मनाया जाता है।

प्राकृतिक महत्व–

ऋतु परिवर्तन की पावनी वेला में इस पर्व के मनाने का आयोजन किया जाता है। वन, वाटिका, बेली विटप वितानों में नव रस का संचार होता तो जंगम जगत् में नव रक्त का संचरण होने से हर्ष, उत्साह, उमंग तथा उन्माद का स्वाभाविक उदय उनके अन्दर होने होने लगता है। अतः नृत्य गान का सर्वत्र आयोजन होता तथा किंशुक पुष्पों के रस में भाव उन्मत्त जनता केलि व स्नान करती है। संसार के सब ही देशों में इस ऋतु परिवर्तन की वेला में किसी न किसी रूप में सब जातियां इस पर्व को मनाती हैं।

सांस्कृतिक रूप

कृषि प्रधान भारतवर्ष में सर्वत्र तथा अन्यत्र भी यत्र तत्र नवसस्येष्टि पाकयज्ञ यज्ञों का वैदिक एवं लौकिक रूप में आयोजन किया जाता है। जौ, मटर, चना, सरसों, गेहू अर्ध पक्व अन्नो की यज्ञों मे अन्य शाकल्य के साथ विशेष आहुतियां दी जाती हैं। आर्यसमाज ने भी अपनी पर्व पद्धति में वेदोक्त सीता सूक्त आदि के विशेष मन्त्रों से आहुति देने का विधान किया है जो बुद्धिवादी संसार के लिये मान्य करने योग्य है। इस पर्व पर नूतन अर्ध पक्व अन्न को अग्नि मे भूनने की भी प्रथा चालू है।

इस प्रथा की मूल मे एक रहस्य यह भी अन्तर्हित है कि किसान पर्व से पूर्व नवान्न का सेवन नहीं करता अपितु यज्ञ की अग्नि मे उसमे से कुछ भाग प्रथम समर्पित करके ही उसका उपयोग करता है।

राष्ट्रीय रूप

भारतीय पर्वों में इस पर्व की यह एक विशेषता है कि छोटे बड़े अमीर-गरीब, सवर्ण अवर्ण, ऊंच नीच सब लोग संकीर्ण जातीय भेदभावों को त्याग कर प्रेमपूर्वक गले मिलते और राष्ट्र की एकता को अपने क्रियात्मक जीवन से साकार रूप प्रदान करते हैं। इतना ही नहीं जिन लोगों में भी किन्हीं कारणों से वैर-विरोध उत्पन्न हो जाता है और उन के परस्पर के सम्बन्ध शिथिल हो जाते हैं वह भी इस पर्व पर वैर विरोध की भावनाओं से ऊंचे उठकर परस्पर गले मिलते और प्रत्यक्ष या मौन रूप से अपनी भूलों के लिये क्षमा-याचना करते हैं। अतः राष्ट्रीय एकता सम्पादन की दृष्टि से यह पर्व निश्चय अपना एक विशेष महत्व रखता है।

इस पर्व पर अश्लील गाने, अभद्र चेष्टायें और भांग, मदिरा आदि का विशेष सेवन मानव की आसुरी प्रवृत्तियों का द्योतक है। हमें प्रयत्न करके इन आसुरी तथा अनार्य प्रवृत्तियों का दमन करना चाहिये और होली पर्व को परिष्कृत रूप में ही मनाने का प्रयत्न करना चाहिये।

★

होली का सन्देश

★

प्रकृति अपने उल्लास का दिग्दर्शन ऋतुराज वसन्त के रूप में करती है। क्या उस उल्लास का मानवीय जीवन पर कोई प्रभाव पड़ता है इस प्रश्न का उत्तर है भारत का महान् राष्ट्रीय पर्व "होली"। भारतीय जीवन पद्धति कृतज्ञता प्रधान है, प्रकृति ने भारत को शस्यश्यामला बनाया, पर्वत एवं वनराजि की सुषमा दी और प्रकृति समस्त वैभव भारत के विभिन्न अंगों में विराजित और विकसित हैं ऐसी महिमामयी प्रकृति का प्रभाव मानव हृदय पर पड़ना स्वाभाविक है, भारतीय जीवन ऋतुराज वसन्त का चालीस दिन पूर्व स्वागत और फाल्गुन पूर्णिमा को ऋतुराज का अभिषेक इसी कृतज्ञ परम्परा के प्रतीक हैं। प्रकृति के साथ साथ शरीर और मन भी एक नवीनता अनुभव करने है। और सर्वत्र एक नवीन वातावरण गूंज उठता है।

शीत की समाप्ति और वृक्षों के नवीन परिधान, अन्न की परिपक्वावस्था आदि अनेक ऐसी स्थितियां हैं जिनमें मानव स्वाभावतः ही परिवर्तन अनुभव करने लगता है इसी स्थिति को दृष्टि मे रखते हुये भारत मे फाल्गुन पूर्णिमा को नवान्न यज्ञ का विधान था, कृषक समाज की प्रसन्नता ही देश की प्रसन्नता बन सकती है पिछले वर्ष देश में सूखा पड़ गया, किसान रो रहा था सारा देश उसके दर्द से दुखी था और हम सब उसकी मदद के लिए दौड़ पड़े इस वर्ष प्रभु की कृपा से प्रकृति में उल्लास है, खेती लहलहा रही है किसान आशा भरी दृष्टि से खेतों को देख रहा है। इसी प्रकार की स्थिति मे होली जैसे पर्व का विधान है। यही नवान्न विकृत रूप में होल [illegible] से होली बन गया।

इस होली पाकरण की [illegible] किम्वदन्तियां हैं परन्तु वे सब आलंकारिक हैं। वास्तविकता यही प्रतीत होती है कि सुखी राष्ट्र के लिए धन धान्य की समृद्धि को देने वाली प्रकृति के प्रति हम इस पर्व के द्वारा आभार प्रदर्शन करते थे और आज भी कर सकते हैं। आज तो गन्दगी और अश्लीलता इस पर्व के साथ [illegible] कर दी गयी है उन्हें रोकना शिष्ट समाज का कर्तव्य है।

वास्तव मे होली जन मानस के प्रह्लाद का प्रतीक है और वह तभी सम्भव है जब जनता की भौतिक आवश्यकतायें अन्न, वस्त्र, निवास की समस्यायें पूर्ण हो इसी को हिरण्यकश्यपु (स्वर्ण शय्या) समझ सकते हैं परन्तु सत्ता पाय काहे मद नाहीं जिन व्यक्तियों को जनता अपने संरक्षण के लिए स्वर्ण सिंहासन पर (राज सत्ता) बिठाती है वे ही व्यक्ति अब हिरण्यकश्यपु राजा की भांति अत्याचारी बन जाते हैं तब धन सम्पन्न हो हुए भी जनता का आह्लाद प्रह्लाद समाप्त हो जाता है और उसकी अति होने पर क्रांति की रक्तलीला होकर रहती हैं यही नरसिंह द्वारा हिरण्यकश्यपु सत्ताधीशो का विनाश हो स्वतन्त्र भारत के २० वर्ष का इतिहास इस प्रक्रिया का साक्षी है। सामान्य जनता ने स्वराज्य घोषणा पर आह्लाद प्रकट किया था पर वह आह्लाद सत्ता के मोह ने छीन लिया है आज देश मे सर्वत्र सत्ता संघर्ष है फिर जनता का ध्यान किसे हो कैसे हो।

होली के आगमन पर प्रकृति हमें एकबार पुनः सन्देश दे रही है कि हम राष्ट्र को आह्लाद बनायें सत्ता मोह को छुड़ाकर सेवा और [illegible] भाव का पुनः आह्वान करें और [illegible] दें [illegible] के प्रह्लाद [illegible] करें।

❀ अवकाश सूचना ❀

होली पर्व के कारण 'आर्य्यमित्र' कार्यालय तथा प्रेस दिनांक १३ से १७ मार्च तक बन्द रहेगा अतः २४ मार्च का अङ्क नहीं प्रकाशित होगा।

हमारा अगला अङ्क ३१ मार्च का होगा। सम्बन्धित महानुभाव कृपया नोट कर लें।

—चन्द्रदत्त तिवारी
अधिष्ठाता 'आर्य्यमित्र'

सभा का वृहदधिवेशन सिरसागंज (मैनपुरी) में होगा

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का ८२ वाँ वार्षिक वृहदधिवेशन सभा के निश्चयानुसार इस वर्ष सिरसागंज जि० मैनपुरी में होना निश्चय हुआ है। तिथियों की सूचना बाद में दी जावेगी।

समस्त आर्यसमाजें अपने प्रतिनिधि चित्र तथा दशांशादि धन शीघ्र ही सभा कार्यालय में भेजने की कृपा करें।

—सच्चिदानन्द शास्त्री एम० ए०
मन्त्री—आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश

वार्षिक चित्र

सभा से सम्बन्धित सभी आर्यसमाजों को वार्षिक चित्र भेजे जा चुके हैं, जहाँ न पहुँचे हों पत्र भेजकर पुनः सभा कार्यालय से मंगा लें।

सभी समाजों से अनुरोध है कि अपने वार्षिक चित्र शुद्ध रूप से भरकर ३१ मार्च ६८ तक अवश्य ही सभा कार्यालय में भेज दें ताकि उनकी जांच भलीभांति हो सके और प्रतिनिधियों की स्वीकृति भेजी जा सके।

अधिवेशन के अवसर पर किसी समाज के वार्षिक चित्र स्वीकार नहीं हो सकेंगे।

सभा प्राप्तव्य धन दशांश, चवन्नी फण्ड मुद्रकोटि तथा प्रतिनिधि शुल्क फार्मों के साथ ही भेजने का कष्ट करें।

निरीक्षकों से नम्रनिवेदन

सभा के समस्त निरीक्षक महानुभावों से निवेदन है कि वह अपने निरीक्षण का कार्य ३० अप्रैल तक करते रहने की कृपा करें, साथ ही अपने क्षेत्र की आर्य समाजों के वार्षिक चित्र भरवाकर ३१ मार्च ६८ तक सभा कार्यालय में अवश्य ही भिजवाने का कष्ट करें। ताकि उन पर विचार [illegible] होकर प्रतिनिधियों की स्वीकृति समय पर भेजी जा सके।

सभा प्राप्तव्य धन दशांश मुद्रकोटि चवन्नी फण्ड एवं प्रतिनिधि शुल्क आदि सभा कार्यालय में भिजवायें।

अधिवेशन के अवसर पर कोई फार्म स्वीकृत न हो सकेंगे।

विज्ञापन

श्री धर्मराजसिंह भूतपूर्व उपदेशक सभा (जो कि त्यागपत्र द्वारा सभा से अवकाश प्राप्त कर अब स्वतन्त्र प्रचार कार्य कर रहे हैं) उन्हें जिन आर्यसमाजों तथा अन्य संस्थाओं को अपने वार्षिक उत्सवों पर प्रचारार्थ बुलाना हो, उनसे सीधे पो० भौंगवारी जिला गोरखपुर (उ० प्र०) के पते पर पत्र व्यवहार करें।

प्रोग्राम—मार्च ६८

श्री सत्यमित्र शास्त्री—७ से २० औरैया।

श्री बलवीर शास्त्री— ७ से २७ चौरीचौरा।

श्री केशवदेव शास्त्री—१५ से १७ धमौरा।

श्री विश्ववर्धन वेदा०—२५ से २८ कुरावली।

श्री गजराजसिंह-१८ से २० मिलक

श्री वेदपाल जी-१७ से २० औरैया २१ से २४ देवरिया, २५ से २८ कुरावली।

श्री गुर्मीत्र जी—२० से २२ सुल्तानपुर (नैनीताल)।

—सच्चिदानन्द शास्त्री एम० ए०
सभा मन्त्री

कृपया एजेन्सी का शेष धन अविलम्ब भेजें।

—व्यवस्थापक

आर्यजगत् के मूर्धन्य विद्वान् डा. हरिशङ्कर जी शर्मा का निधन

आज सम्पूर्ण आर्यजगत् को अपने सुप्रसिद्ध पत्रकार, हास्य लेखक एवं प्रख्यात कवि तथा महान् विद्वान् और त्यागी नेता डा० हरिशङ्कर जी शर्मा को खोकर अपार दुःख हुआ है। श्रीमान् पण्डित जी के निधन से जो क्षति आर्य समाज को हुई है उसकी पूर्ति होना नितान्त असम्भव है।

'मित्र परिवार' के लिये तो यह एक अत्यन्त दुःखद घड़ी है। आपने बड़े ही असमय में 'आर्यमित्र' की सेवा की थी। आप लगभग १० वर्ष तक इसके सम्पादन का भार संभाला और इसे जीवित रखने में अपूर्व योगदान दिया।

आपने लगभग ८० पुस्तकें लिखीं, और आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-के अध्यक्ष भी रह चुके हैं।

श्री पंडित जी काफी दिनों से अस्वस्थ थे। कुछ समय पूर्व आपको दिल का दौरा पड़ा था और गत ८ मार्च को आगरे में आपका देहावसान हो गया।

आपका जन्म सन् १८९१ में अलीगढ़ जनपद के ग्राम हरदुआगंज में प्रसिद्ध लेखक पं० नाथूराम जी शर्मा 'शङ्कर' के घर हुआ था।

श्री पण्डित जी को देव पुरस्कार तथा कई अन्य पुरस्कार प्राप्त हुए थे। सन् १९६६ में राष्ट्रपति ने 'पद्मश्री' की उपाधि से विभूषित किया था। गत वर्ष राजभाषा विधेयक के विरोध स्वरूप आपने उस उपाधि को वापस कर दिया। आपने सन् १९४२ के स्वाधीनता संग्राम आन्दोलनों में भी भाग लिया था और यातनायें सहन की थीं।

आपके निधन पर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के माननीय प्रधान श्री पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री ने शोक प्रकट करते हुए कहा कि श्री शर्मा जी ने साहित्यिक, सामाजिक व राजनैतिक क्षेत्रों में जो सेवा की वह आगामी पीढ़ी को सर्वत्र प्रेरणा देती रहेगी।

'आर्य्यमित्र परिवार' समस्त आर्य्यजगत् की ओर से उस महान् आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिये प्रार्थना करता है तथा शोक सन्तप्त परिवार के साथ पूर्ण संवेदना प्रकट करता है।

—सम्पादक

श्री मदनमोहन वर्मा को पत्नी वियोग!

आर्यजगत को यह जानकर दुःख होगा कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के वर्तमान उपप्रधान तथा भूतपूर्व अध्यक्ष विधान सभा उ० प्र०, श्री मदनमोहन जी वर्मा एडवोकेट की धर्मपत्नी का देहावसान गत दिनांक ४ मार्च को फैजाबाद में हो गया। हम परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वह दिवंगत आत्मा को शान्ति तथा शोक सन्तप्त परिवार को सहनशक्ति प्रदान करे।

—सम्पादक

(४)

मुझे यह लिखते हुए हर्ष है कि आर्य्यमित्र का वेदांग प्रकाश अङ्क जो महाशिवरात्रि पर्व पर इस आर्य सभा के योग्य मन्त्री श्री सच्चिदानन्द जी शास्त्री एम० ए० के सम्पादकत्व में प्रकाशित हुआ है। वह आर्यजगत् को सामान्यतः और आर्य विद्वानों को विशेषतया वैदिक वाङमय से परिचय कराने के लिये एक सफल प्रयत्न है।

सम्बन्धित वेदांग प्रकाश में वेद के छवों अङ्गों पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। भले ही सामान्य जनता के लिये वह एक दुरूह जान पड़े। परन्तु वेद की अध्येताओं के लिये अत्यन्त उपयोगी है। इसमें भिन्न-भिन्न विषयों पर अपने लेख देने वाले विद्वानों को सम्बन्धित विषय पर पूर्ण अधिकार प्रतीत होता है।

मुझे आशा है कि भविष्य में भी श्री शास्त्री जी के सद् प्रयत्नों से इस प्रकार के विशेषांक आर्य्यमित्र के माध्यम से जनता के सम्मुख आते रहेंगे।

विद्याभिक्षु आर्य
एम०ए० एल०टी०,
प्रधानाचार्य
हिन्दू इण्टर कालेज, दरौली

(५)

आर्य्यमित्र का 'वेदाङ्ग प्रकाश-अङ्क' देखने का सौभाग्य मिला। इस अङ्क को प्रस्तुत करने में 'मित्र' के वर्तमान सचालकों ने जो स्तुत्य कार्य किया है उसके लिये वे बधाई के पात्र हैं। इस अङ्क में वेद के छवों अङ्गों पर बड़े परिश्रम एवं खोजपूर्ण ढंग से प्रकाश डाला गया है। विशेषांक को पुस्तकाकार रूप देकर इसे संग्रहीत साहित्य बनाकर सम्पादक महोदय ने वास्तव में सराहनीय कार्य किया है।

साहित्य के क्षेत्र में तथा वैदिक धर्म प्रचार में इधर कुछ समय से आर्य्यमित्र में जो परिवर्तन दृष्टिगोचर हो रहा है उससे आर्यजगत के इस मुख-पत्र का भविष्य अत्यन्त उज्ज्वल प्रतीत होने लगा है।

इस अपूर्व सफलता के लिये मैं श्री सच्चिदानन्द जी शास्त्री को पुनः अपनी बधाई देता हुआ आशा करता हूं कि भविष्य में भी हमें इसी प्रकार स्वाध्यायशील साहित्य प्राप्त होता रहेगा जिससे महर्षि के उद्देश्यों की पूर्ति हो सकेगी।

हरप्रसाद आर्य
उ० कोषाध्यक्ष
अधिष्ठाता भू-सम्पत्ति विभाग-सभा

(६)

आज ७-३-६८ को मैंने आर्य्यमित्र के श्रद्धांजलि अङ्क, वेदाङ्ग प्रकाश अङ्क, ऋषि दर्शन अङ्क देखे और इनमें प्रकाशित लेखों का गम्भीरता से अवलोकन किया। विद्वान् मनीषियों के लेखों का संग्रह करके सम्पादक महोदय ने स्वाध्यायशील व्यक्तियों के लिये ऐसा आत्मिक भोजन दिया है जो अन्यत्र कहीं एक स्थान पर, मिलना असम्भव है।

तीनों अङ्कों के मुख पृष्ठों को भी लेखों के अनुरूप ही आकर्षक बनाने का यत्न किया गया है।

इस भावनात्मक उपलब्धि में सफलता प्राप्त करने के लिये मुख्य संपादक महोदय तथा उनके माध्यम से सभा अधिकारी बधाई के पात्र हैं।

जयदेव विद्यालङ्कार
निरीक्षक आय विभाग

(७)

वेदाङ्ग-प्रकाश अङ्क प्राप्त हुआ। ५० वर्ष से मैं मित्र का ग्राहक हूं इतना ठोस और गहन स्वाध्याय योग्य मित्र कभी नहीं निकला।

आपको बधाई!

नारायणस्वामी अङ्क व ऋष्यङ्क आदि सभी अङ्क सुन्दर पठनीय हैं। आपकी आगामी मित्र की योजना सुन्दर है। आपको पुनः बधाई!

रघुनन्दनस्वरूप
रोबर्टस गंज, मीरजापुर

(८)

मान्यवर सम्पादक जी!

आपका 'वेदाङ्ग-प्रकाश' शिवरात्रि विशेषाङ्क पढ़कर प्रसन्नता हुई। मैं 'आर्यमित्र' को हार्दिक धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने हमारे हाथ में वेदों की कुञ्जी पहुंचाई। इस कुञ्जी के द्वारा प्रत्येक कोई सन्मार्ग देख सकता है। मेरे जीवन का लक्ष्य वैदिक धर्म का प्रचार करना है मेरे लिये तो यह अङ्क बहुत ही उपयोगी है। मैं एक वैदिक प्रचारक हूं। मैं किसी से भी [illegible] इसका मूल्य मंगाने की अपेक्षा आपसे ही निवेदन करता हूं कि कृपया शीघ्र मेरे लिये एक 'प्रति' निःशुल्क भेजने की कृपा कीजिये।

वेदाचार्य ब्र० चिरंजीवलालार्य
साधुआश्रम होशियारपुर

होली कैसे मनाएं?

★ रघुनाथप्रसाद पाठक

होली का पर्व आनन्द और उल्लास का पर्व है और उन पर्वों में से एक है जो ऋतु परिवर्तन पर वायु, जल इत्यादि की शुद्धि के लिये यज्ञ रूप में मनाये जाते हैं। इस पर्व के यज्ञ में नई आई हुई आषाढ़ी फसल के अध पके यवों (जौ) के होमने के कारण इस पर्व का नाम होलकोत्सव पड़ा था। संस्कृत में अग्नि में भुने हुए आधे पके अन्न को 'होलक' कहते हैं। इन यवों को यज्ञाग्नि को भेंट करना एक धार्मिक कृत्य था जिसके पीछे अन्न का स्वयं उपभोग करने से पूर्व दूसरों को भेंट करके उसे परिष्कृत करने की भावना काम करती थी।

कृषक जन आषाढ़ी की फसल के रूप में अपने कठोर परिश्रम का फल पाने के हर्ष की अभिव्यक्ति सामूहिक रूप से आनन्दोत्सव मनाकर करते थे। केवल हमारे देश में ही नहीं अन्य देशों में भी नई फसल पर उत्सव मनाने की परिपाटी चली आ रही है। रूस में फसल काटने पर कृषक अपने इष्ट मित्रों को पक्वान्न आदि से परितृप्त करके उत्सव मनाते हैं जापान में भी जब धान की फसल कटती है तब चावलों की रोटियों आदि के सहभोज होते हैं और गाना बजाना होता है यूरोप में सेंट वेलन्टाइन का दिन और इंगलैंड में 'मेपोल' के उत्सव भी इसी प्रकार के होते हैं। ऋतुराज बसन्त की मोहकता जबकि प्रकृति अपने पूर्ण यौवन में शृङ्गार मण्डित होती है वातावरण में ताजगी और मादकता भर देती है।

परन्तु देशकालिक परिस्थिति में आमूल परिवर्तन हो जाने से लोग विशुद्ध वैदिक परम्परा को तो भूल गए और घास फूंस कंडों और लकड़ियों की होली मनाकर उसका जला दिया जाना ही वैदिक यज्ञ का अनुष्ठान समझ लिया गया। घृत और सामग्री आदि सुगन्धित एवं रोग नाशक वस्तुओं के द्वारा यज्ञानुष्ठान की बात अचिन्त्य बन गई। इतना ही नहीं होली में जलाए जाने के लिए काष्ठादि की चोरी करने में आनन्द की अनुभूति समाविष्ट कर दी गई। हां यवों को भूनने की प्रथा रूढ़ि के रूप में अवश्य रही गई।

इस दिवस के आनन्दोत्सव को जो अशिष्ट रूप दिया गया है उसका चित्रण करने में लज्जा को भी लज्जा आती है। ढाक के फूलों का रङ्ग और चन्दन का लेप दोनों ही स्वास्थ्य-प्रद होते हैं। जब इस उत्सव को शिष्ट रूप प्राप्त था तब प्रायः इन्हीं का प्रयोग होता था। अब तो स्वास्थ्य विनाशक रङ्गों कूड़े कचरे और कीचड़ तक का खुलकर प्रयोग होता है। जब अनिच्छुक लोग इस प्रकार की बेहूदगी के शिकार होते हैं तो प्रायः अप्रिय घटनायें हो जाती हैं। भद्दे दृश्य उपस्थित करना, अश्लील गाने गाना और बकवास करना शिष्ट भावना पर घोर आघात

(शेष पृष्ठ ८ पर)

★ विद्वद्वर्य से विनम्र निवेदन ★

आर्यजगत् के मूर्धन्य विद्वानों तथा आर्य्यमित्र के कृपापात्रों के सहयोग से अभी कुछ समय के अन्दर ही हमने अपने प्रिय पाठकों के सम्मुख आर्य्यमित्र के तीन विशेषांक प्रस्तुत किये—ऋष्यङ्क—दीपावलि के शुभावसर पर प्रकाशित हुआ था तत्पश्चात् महात्मा नारायण स्वामी श्रद्धांजलि अङ्क छपा। इन दोनों [illegible] को आर्यजगत ने भूरि भूरि प्रशंसा की। इससे उत्साहित होकर तथा आप सभी विद्वद्वर्यों की अनुकम्पा से महाशिवरात्रि पर्व पर हमने 'वेदाङ्ग-प्रकाश अङ्क' पाठकों के सम्मुख रखा है। जहां तक सम्भव हो सका है हमने इन सभी अङ्कों को पठनीय, उपयोगी तथा सुन्दर ढंग से प्रस्तुत करने का पूर्ण प्रयत्न किया है। परन्तु जितनी अपूर्व पठन सामग्री इन अङ्कों में हमने दी है उसी के अनुरूप कुछ आर्थिक कठिनाइयों के कारण हम इनमें उच्चकोटि का कागज नहीं प्रयोग कर सके, इसका हमें खेद रहा है।

हम आर्यजगत् के अपने विद्वानों तथा आर्य नेताओं से सानुरोध प्रार्थना करते हैं कि वे कृपया 'मित्र' के उपरोक्त अङ्कों का अवलोकन कर इस सम्बन्ध में अपनी अमूल्य सम्मतियों से हमें अवगत कराकर हमारा मार्ग-दर्शन कर कृतार्थ करें ताकि हम भविष्य में उन्हीं के अनुरूप कार्य करते हुए आर्य्यमित्र को सफल बनाने में समर्थ हो सकें।

—सुधाकरनाथ
व्यवस्थापक 'आर्य्यमित्र'

श्रद्धेय डा. हरिशङ्कर शर्मा

कविरत्न, डी० लिट्०

(एक संस्मरण)

★डा० शिवपूजनसिंह कुशवाहा
एम ए०, साहित्यालङ्कार, कानपुर

दिनांक ८-३-६८ को सवा सात बजे के प्रादेशिक समाचार (लखनऊ रेडियो) से यह सुनकर कि श्रद्धेय शर्मा जी का देहावसान हो गया, अत्यन्त हार्दिक दुःख हुआ। शर्मा जी आर्य्यजगत् के एक प्रतिष्ठित कवि, पत्रकार, व विशिष्ट लेखक थे। आप कई वर्षों तक साप्ताहिक 'आर्य्यमित्र' के सम्पादक थे। जिस समय आप 'आर्य्यमित्र' के सम्पादक थे उस समय बहुत से लेखों को प्रकाशित करवाया था और वे 'आर्यमित्र' निःशुल्क भेजा करते थे। सर्वप्रथम आपका दर्शन लाहौर में हुआ था। उस समय से जब कभी मिलते बड़े प्रेम से मिलते थे। गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन के उत्सव पर भी आपसे भेंट हुई थी। मैं जब उनका पैर स्पर्श करता था तब मेरी प्रशंसा करते थे। वास्तव में आपके उठ जाने से आर्य्यजगत् का एक देदीप्यमान सूर्य का अस्त हो गया। आप सर्वत्र ही आर्यमित्र के आदरी सम्पादक रहे।

आपकी लिखी हुई प्रायः सभी पुस्तकें मेरे पास हैं। जब मैं नौकरी करते हुए परीक्षाएं देता था और स्वाध्याय करता था तब आप सदैव मुझे प्रोत्साहन देते थे।

गत वर्ष पौराणिक पं० माधवाचार्य शास्त्री के सम्बन्ध में एक पुस्तक की पाण्डुलिपि "महर्षि ग्रिटिंग वर्क्स" आगरा ने को दी और श्री शान्तिप्रिय आ० प० का दिया एक सौ रुपया अग्रिम भी खा गया था तब मैंने आपसे शिकायत की थी कि आपके रहते आगरा में अन्धेर है। आपने उस प्रेस में अपना विशेष दूत भेजकर वहाँ का पूर्ण विवरण मेरे पास भेजने की कृपा की थी। आपके सभी पुत्र व पुत्रवधुएं योग्य हैं और शिक्षा कार्य में संलग्न हैं।

लाहौर में, सम्भवतः आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की स्वर्ण जयन्ती में हिन्दी के अध्यक्ष बनकर आप गये थे। उसमें शाहपुराधीश भी आये थे।

वहाँ के दयानन्द कालेज में आप ठहरे हुए थे जहां मैं भी था। एक पक्ति में जब हम लोग भोजन कर रहे थे तब वहां लगभग पन्द्रह व्यक्ति भोजन कर रहे थे। कूष्म का साग बना था। मैंने पंडित जी से कहा कि पं० अखिलानन्द शर्मा, महर्षि दयानन्द जी के विरुद्ध विषवमन करते हैं और 'रमा-महर्षि सम्वाद' नामक गन्दी व अश्लील पुस्तिको लिखी है। आपने पं० अखिलानन्द शर्मा की भर्त्सना करते हुए कहा कि वह नितान्त पतित व्यक्ति है। उन्होंने कहा कि वह इतना पतित है कि पहले वह कहता था कि "मैं स्वामी दयानन्द जी का गुणगान करके जीविकोपार्जन करता था, अब उनको गाली देकर जीविकोपार्जन करता हूं।" इससे ज्ञात होता है कि पण्डित हरिशङ्कर शर्मा जी में महर्षि दयानन्द

(शेष पृष्ठ ५ पर)

हा ! पंडित हरिशङ्कर जी

हा-स्य भवन में बदला क्या दुर्भाग्य हमारा
पं-छी उड़कर चला, नहीं परिवार निहारा
डि-गे न जो कर्तव्य क्षेत्र में स्वामी मानी
त-त्पर आर्य-समाज कार्य में थे वरदानी ॥१॥
श्री-विहीन साहित्य सुमन सब मुरझाये से
ह-न्त वसन्ती गौरव गण हैं अकुलाये से
रि-क्त हुआ जो स्थान नहीं होता है पूरा
शं-कित आर्यसमाज देखता कार्य अधूरा ॥२॥
क-र अपनों पर कृपा, दया, दे विद्या सारी
र-म्य रत्न से शिष्य बनाये गुण अधिकारी
जी-वन का फल केतु उच्च ऐसा लहराया
शा-न्तः त्याग-तपस्या का अनुराग दिखाया
र-श्मि रथी दे रश्मि ज्ञान का भव्य उजाला
मा-न्य बने थे आर्य-मित्र से सन्त निराला
क-लित कल्पना हास्य विनोदों के थे सागर
वि-द्वद्वृन्द वरेण्य भारती नागर आगर ॥४॥
र-हे सर्वदा पद्य-श्री से शोभित प्यारे
त-रुण सर्वदा वृद्ध, जरा से जरा न हारे
न-त मस्तक हैं 'प्रणव' पूज्यवर भक्त तुम्हारे
हे हरि, "शङ्कर पुत्र" मुक्ति के महल पधारे ॥५॥

—'प्रणव' शास्त्री एम०ए०, फीरोजाबाद

शुद्धि का प्रश्न

पंडित लेखराम जी का कत्ल १८९७ की मार्च माह में हुआ था उससे पहिले प० जी मुसलमानों में वैदिक धर्म का प्रचार कार्य करते थे उनकी मृत्यु पर आर्य समाज में शुद्धि के लिये प्रबल जोश उत्पन्न हो गया। व्यक्तिगत शुद्धि, परिवारों की शुद्धि, मलकाने राजपूतों की शुद्धि इस प्रकार हम देखते हैं कि २५,२६ वर्ष तक शुद्धि का नाम बड़े जोर-शोर से चला। मौ० हसन निजामी ने जब दाइये इस्लाम लिखी तो उसका बड़े जोर से प्रतिकार हुआ। प० भोजदत्त आर्यमुसाफिर आगरा, स्वामी श्रद्धानन्द जी आदि छोटे बड़े सभी उपदेशक और नर-नारियों पर शुद्धि का भूत सा सवार हो गया। लोगों के दिल दहल गए राष्ट्रवादियों ने कि उनके राष्ट्रीयकरण में बाधा पड़ेगी परन्तु राष्ट्रवादियों में संख्या तो आर्यसमाजियों की अधिक थी। स्वामी श्रद्धानन्दआदि सभी राष्ट्रवादी थे। इसलिये शुद्धि के आन्दोलन को कम नहीं किया। स्वामी श्रद्धानन्द का कहना था कि राष्ट्रवाद का यह अर्थ नहीं है कि हिन्दू तो मुसलमान हो जाय किन्तु मुसलमान हिन्दू न हो। आर्यसमाज में मनातन और कल्चरड पार्टी दो बहुत दिनों से चल आ रही थी और इनमें आपसी झगड़े बहुत थे परन्तु शुद्धि आन्दोलन ने इन सभी झगड़ों को समाप्त कर दिया। [illegible] भी हैं और गुरुकुल भी स्कूल भी हैं और [illegible] में भी। वस्तुतः न [illegible] पार्टी है न मासाहार पार्टी। १९२६ ई० में स्वामी श्रद्धानन्द [illegible] एकत्र और यह [illegible] [illegible] प्रचार [illegible]। मुसलमानों ने [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

आर्यसमाज के नेता यदि इस [illegible] अब हम मुसलमानों पर अपना कोई प्रभाव न डाल पाए। सोचने की बात है।

—गङ्गाप्रसाद उपाध्याय

(पृष्ठ ७ का शेष)

रचना होता है। जिस मनोरंजन में अशिष्टता एवं अनैतिकता की बू आती हो उसका न होना ही अच्छा है। प्राचीन काल मे शिष्ट नाटकों आदि के आयोजन किये जाते थे परन्तु उनमे लोगों की शिष्ट भावना पर आघात न होने दिया जाता था। सभ्यतम आर्य जाति के उत्तराधिकारियों की कुचेष्टाओं का जिस विकृत ढंग से विदेशों में प्रदर्शन किया जाता है, देशवासियों को जंगली और जाहिल दिखाकर उनका जैसा भद्दा मजाक उड़ाया जाता है उससे किस देश एवं सभ्यताभिमानी को दुःख न होगा?

पौराणिक परम्परा मुख्य रूप से हमारे अनुष्ठानों और पर्वों की विकृति के लिये उत्तरदाता है। यही परम्परा इस पर्व की विकृति मे काम करती देख पड़ती है। इस परम्परा ने इस पर्व के साथ प्रह्लाद की बुआ होलिका के अग्निसात होने की कपोल कल्पित कथा प्रचलित की है साथ ही इस पर्व को पौराणिक शूद्रों का पर्व स्थिर करके और उन्हें कुचेष्टाओं का लाइसेंस देकर इसके काल्पनिक नाम और स्वरूप के साथ घोर अन्याय भी किया है। अतएव इस परम्परा मे ईश्वर विश्वास को कुछ प्रेरणा मिलना है।

इस पर्व का पारस्परिक जात्यादि भेद भाव भुलाकर प्रेम प्रदर्शन तथा प्रेम-वृद्धि का साधन बनाया जाना अन्धकार में प्रकाश की रेखा कही जा सकती है।

आज अपने ही देश मे मानव की स्वार्थपरता आज विविध आवेशों के साथ मानवता के साथ खिलवाड़ कर रही और दूसरों की आकांक्षाओं एवं अरमानों के साथ फाग खेल रही है। 'पर' के स्थान मे 'स्व' के इस फाग ने देश और समाज मे पराजकता की स्थिति उत्पन्न कर दी है जिसके रहते हुए गरीबी शोषण और शोषण से पीड़ित लोगों को आनन्द और उल्लास की वास्तविक अनुभूति कैसे हो सकती है?

यदि हम इस पर्व के वास्तविक शुद्ध एवं पवित्र स्वरूप को पुनः प्रतिष्ठित कर सकें, इसे हुल्लड़बाजी एवं अश्लीलता से बचाकर शिष्टतापूर्वक मनाएं, देश और मानव समाज के सामने प्रस्तुत का सच्चा स्वरूप प्रस्तुत करें जो प्रदाय एवं कृत्रिमता से रहित हो। देश और समाज के हित का, अपने-अपने परिवार, अपने शहर, ग्राम एवं पास से दूर रखें तो इस पर्व का आनन्द और आदर न केवल देश मे ही व्याप्त होगा अपितु इस की सुखद रश्मियां दिग्दिगन्तर मे व्याप्त होकर संसार के हर्ष समुद्र मे योग देने का भी कारण बनेंगी जो आज वैज्ञानिक भीषणता के साथ रक्तरंजित होली खेलने का आयोजन कर रहा है और वियतनाम आदि में खेल रहा है।

(पृष्ठ ५ का शेष)

जी के प्रति कितनी अगाध श्रद्धा थी।

आप 'आर्यमित्र' के सम्पादन काल में किसी भी अधिकारी का दखल देना पसन्द नहीं करते थे। आप 'आर्य्यमित्र' में भी साहित्यिक लेख देने में न हिचकते थे। जब कभी अधिकारियों ने दखल दिया तब आपने तत्काल ही त्यागपत्र दे दिया। आप बड़े स्वाभिमानी व्यक्ति थे।

मैं उनके शोक-सन्तप्त परिवार के साथ समवेदना प्रकट करता हूं और उन की पवित्र आत्मा की शान्ति के लिये परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूं।

आर्यजगत् के लिये अति आवश्यक सूचना

आर्यमित्र का आर्यसमाज स्थापना दिवस अङ्क ३१ मार्च को प्रकाशित होगा उसमे हम उन समाजों का विवरण देना चाहते हैं जिन आर्यसमाजों को महर्षि स्वा० दयानन्द जी ने अपने कर-कमलों द्वारा स्थापना (आर्यसमाज के नियम-कहां कहां बनाये गये) की हो। ऐसे आ०स० के अधिकारी गण अपने आ० स० की स्थापना तिथि आदि का विवरण आर्यमित्र कार्यालय को भेज दें। —सम्पादक

होली आई

★आनन्दप्रकाश एम०फार्म०
उपमन्त्री आर्यप्रतिनिधि सभा उ.प्र.

रंग और गुलाल के त्योहार होली का नाम सुनते ही उल्लास और आनन्द से सभी स्त्री पुरुषों के चेहरे चमकने लगते हैं। वातावरण में एक अजीब उत्साह छा जाता है। प्रकृति अपने नव शृङ्गार के साथ ऋतुराज का स्वागत करती है। जिस ऋतुराज वसन्त के आगमन का चालीस दिनों पूर्व स्वागत किया गया था वह पूर्ण विकसित होकर अपने अभिषेक के लिये प्रस्तुत हुआ प्रतीत होता है। नवान्न की प्रसन्नता के कारण ग्राम-ग्राम में स्वाभाविक आह्लाद बिखर जाता है। पर यह एक प्राकृतिक पर्व तक ही सीमित नहीं, हमारे प्राचीन आचार्यों ने इसे राष्ट्रीय और सांस्कृतिक पर्व का रूप भी दिया था।

यह होली का पर्व हिन्दू जाति को जन्ममूलक जाति-पांति की विचारधारा और इस कारण उत्पन्न ऊंच नीच की भावना को त्यागने का अनुपम सन्देश देता है। क्योंकि इस पर्व पर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र सभी आपस में प्रेम और स्नेह से मिलते हैं। उनके बीच की सभी कृत्रिम दीवारें एक दिन के लिये टूट जाती हैं। इस प्रकार हृदय की संकुचित और रूढ़िवादी भावनाओं को त्याग कर राष्ट्र और जाति हित की सुन्दर कामनाओं से मन को प्रभावित करने वाला यह पर्व हमें सन्देश देता है कि वर्तमान परिस्थितियों मे राष्ट्र में व्याप्त विघटनकारी शक्तियों को परास्त करने हेतु एक जुट हो जावें और "मेरा रंग दे बसन्ती चोला" और "खून से फाग रचायगी हमारी होली" जैसे स्वतंत्रता संग्राम के काल में जनमानस को आन्दोलित करने वाले गीतों को बदलती परिस्थियों में एकबार पुनः दोहरायें।

पर भारत के प्रांगण में खेली जा रही होली के उल्लास में, हमारे जीवन में नव स्फूर्ति देने वाली उस प्रेरणा का सर्वथा अभाव है। होली के साथ जिस अपवित्रता और अश्लीलता को संपृक्त कर दिया गया है, वह किसी भी जीवित और स्वाभिमानी राष्ट्र और जाति की आत्मा को खुली चुनौती है। होली के अवसर पर हुड़दंग और हुल्लड़बाजी के वातावरण में जीवन की मर्यादाओं को तोड़ना होली का स्वरूप बना रखा है। रंग और गुलाब के स्थान पर हानिकारक द्रवों, कीचड़ व गोबर का प्रयोग सर्वथा अनुचित है। इस प्रकार के कृत्यों का अन्त कभी २ भयंकर काण्डों में होता है। गांव के लोग जहां से रेल गाड़ियां निकलती हैं, अपनी अज्ञानतावश कभी-कभी पत्थर, गोबर, कीचड़ इत्यादि चलती गाड़ियों पर फेंका करते हैं। इस प्रकार के कृत्यों द्वारा जहां गाड़ियां खराब होती हैं और रेलवे की सम्पत्ति नष्ट होती है वहीं यात्रियों को भी अपार कष्ट होता है। अनेक यात्रियों को गम्भीर रूप से घायल होता देखा गया है। एक बार मैंने स्वयं एक सहयात्री की फेंके गये पत्थर से आंख फूटते देखा था। अतः इस प्रकार के कुकृत्यों को बन्द कराने की दिशा में ग्राम पंचायतों तथा अन्य ग्राम संस्थाओं को विशेष रूप से कार्य करना चाहिये। अनेक विदेशी लोग जब होली के इन कृत्यों को देखते हैं या यदि उनको उनका शिकार बनना पड़ता है तो राष्ट्र के नाम को धब्बा लगता है। अब इस प्रकार के अमर्यादित आचरण को त्यागना अत्यन्त आवश्यक है। हमारे व्यक्तिगत तथा संस्थागत जीवन मे होली पवित्रता का सन्देश लेकर आती है।

प्राचीनकाल मे होली के अवसर पर नव वर्षारम्भ का यज्ञ किया जाता था। यह सामूहिक यज्ञ सार्वजनिक स्थानों पर बृहत् रूप में हुआ करते थे।

इस अवसर पर वेद सम्मेलनों के साथ ही काव्य संगीत आदि के आयोजन भी हुआ करते थे। परन्तु कालान्तर में आर्य जाति के पतन के साथ ही हमने वैदिक पर्वों की पद्धतियों को भी भ्रष्ट कर दिया। अब वैदिक यज्ञ के स्थान पर अनेक प्रकार की भ्रष्ट प्रथायें दिखाई पड़ती हैं। यज्ञ की समिधाओं के स्थान पर गन्दा कूड़ा करकट एक मास तक एकत्रित कर बाद में जलाया जाता है वैदिक मन्त्रों के स्थानों पर भद्दी गालियां और अपशब्द सुनाई पड़ते हैं। केसर चन्दन आदि सुगन्धित गुणकारी पदार्थों को छोड़कर गन्दे पदार्थों का प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार के वाममार्गी कार्यों को सनातन धर्म कहकर प्राचीन वैदिक धर्म और भारतीय परम्पराओं का उपहास उड़ाया जा रहा है। सबसे अधिक दुःख तो तब होता है जबकि भारतीय इतिहास के गौरव योगीराज श्रीकृष्ण के नाम इन बातों से सम्बन्ध किया जाता है। ब्रज की होली के नाम पर असभ्यता का जो नग्न नृत्य देखने को मिलता है, उससे सभ्यता का मस्तक शर्म से नतमस्तक हो जाता है। पर वाह रे अन्ध विश्वास, कुछ लोगों को उस ब्रजलीला में भगवान के दर्शन होते हैं। आज के युग मे भगवान कृष्ण के पावन चरित्र को इस प्रकार के कृत्यों से लांछित न होने देना हमारा परम कर्त्तव्य है। क्या राष्ट्र का प्रबुद्ध मस्तिष्क इस पर विचार करने को तत्पर है? ●

सन् १९७१ में होने वाली जन गणना में आर्यों का कर्त्तव्य

एक अत्यन्त आवश्यक तथा महत्त्वपूर्ण विषय

सन् १९७१ में होने वाली जनगणना में आर्यों का कर्त्तव्य विषयक एक परिपत्र सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उप मन्त्री तथा सार्वदेशिक आर्य जनगणना उपसमिति के संयोजक श्री शिवचन्द्र जी ने भारत की समस्त प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं के मन्त्रियों के नाम उनकी अन्तरङ्ग सभाओं में प्रस्तुत करने तथा उनकी सम्मतियां जानने के लिये भेजा था। तदनुसार यह परिपत्र इस सभा की दि० ११ जून १९६७ की अन्तरङ्ग में प्रस्तुत हुआ था। श्री शिवचन्द्र जी ने उक्त अन्तरङ्ग सभा में स्वयं उपस्थित होकर इस विषय में अपने विचार भी व्यक्त किये थे। तत्पश्चात् अन्तरङ्ग सभा ने अपने प्रस्ताव सं० २९ (१३) द्वारा निश्चय किया था कि "इस परिपत्र को आर्यमित्र के माध्यम से सब समाजों को प्रसारित कर उनके विचार व सुझाव लेकर आगामी सभा में उचित निर्णयार्थ रखा जाये।"

तदैव यह परिपत्र अविकल रूप से आर्य्यमित्र अङ्क ३७ दि० २४ सितम्बर सन् १९६७ में प्रकाशित हुआ था। प्रान्त की समस्त आर्यसमाजों से प्रार्थना है कि वे अपनी अन्तरङ्ग सभा की एक विशेष आवश्यक बैठक शीघ्रातिशीघ्र बुलाकर उसमें इस परिपत्र को आद्योपान्त पढ़कर सुनायें और इस पर अपने सुझाव तथा विचार मार्च १९६८ के अन्त तक इस सभा को अवश्य भेज दें ताकि यह सभा अपनी आगामी अन्तरङ्ग सभा में इस विषय में विचार कर अपनी सम्मति सार्वदेशिक आर्य जन गणना उपसमिति को शीघ्र भेज दे।

जैसा कि इस परिपत्र से विदित होगा, आर्यों की जनगणना का विषय अत्यन्त महत्त्वपूर्ण तथा आवश्यक है, आपकी अन्तरङ्ग सभा इस पर गम्भीरतापूर्वक विचार कर अपने सुझाव भेजने में तत्परता दिखाये।

सच्चिदानन्द शास्त्री
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश

होली हास्य व्यंग

★

गई 'गुप्त' की चार चांदनी, दिवस चार क्रीड़ा में
भूल गई 'सिंह चरण' चौकड़ी पड़ी प्रसव पीड़ा में
पड़ी प्रसव पीड़ा में चढ़ गये नौ से अधिक महीना
ऐड़ी चोटी बहा रहे सब अपना आज पसीना
कहैं 'कृषक' कवि डर काहे का अब 'पति' की सरकार
होली में टोली का अपनी जमने दो दरबार

मेल का महत्व

मच रहा हलचल जल-थल में महत्व मित्रो मेल का
बहुत बड़ा आगे रहता है भाड़ा इसकी रेल का
इसी से दल-दल में जमा 'पाक' धाक का दावा
'कच्छ' मच्छ, का धूप बढ़ाके चल पड़ा है धावा
कहैं 'कृषक' कवि देखो दुनियां परिणाम है बस मेल का
मेले से ही राज्य कायम आज है कौमेल का

अष्टम आश्चर्य

प्रिय क्यों पीले पड़ रहे दष्ट आज ऋतुराज
सजा रहे सब साज तुम्हारा कामराज महाराज
कामराज महाराज जगत् में जब से ज्योति पसारी
बड़ों-बड़ों की लूप में लग गई सुद्धिया मारी
कहैं 'कृषक' कवि विधान बदला बदली दुनिया सारी
नर तो नीचे हो गया है ऊपर उसके नारी

—पं० मदनमोहन एडवोकेट 'कृषक' मौंठ

कुछ इधर की कुछ उधर की

विनोद-बिन्दु

लगभग ८० वर्ष की बात होगी। अभी सवेरा होने में देर थी मेरी मां मेरे कमरे में आयीं। वह रो रही थीं। मैं जाग पड़ा। मैंने पूछा क्या है? कहा बाबा मर गये। मैं भी रो पड़ा। मां बोली मर्द नहीं रोया करते। मैं चुप होगया।

(२)

बाबा मर गये उनकी अर्थी बनी। जब अर्थी उठने लगी तो मेरी दादी ने कहा, बाबा जा रहे हैं इनके पैर छुओ। मैंने पैर छुए, सत्कारार्थ नहीं परीक्षार्थ। मेरी धारणा थी कि मरने के बाद शरीर तो गीला हो गया होगा परन्तु पैर तो बड़े सख्त थे।

(३)

मैं बाराबंकी में था। एक दिन खबर मिली कि मेरे दोस्त बाबू श्याम सुन्दर लाल की टांग की हड्डी टूट गई। मैं देखने चला। मेरे लड़के सत्यप्रकाश मेरे साथ हो लिये। उस समय उनकी उमर ६ या ७ साल की थी। मां ने हाल पूछा लड़का बोल उठा। अम्मा हड्डी टूटी नहीं वह तो जुड़ी हुई है।

(४)

सत्यप्रकाश बालक थे उनके कान में दर्द हुआ। मैं उनको अस्पताल ले गया डाक्टर साहब बड़े योग्य और दयालु थे। उपचार के बाद हम लौटे तो रास्ते में सत्यप्रकाश ने सवाल पूछा। डाक्टर साहब अच्छे आदमी हैं या बुरे? मैंने कहा बहुत अच्छे। लड़का बोला वह तो सिगरेट पीते हैं।

(५)

विश्वप्रकाश शायद पांच वर्ष के होंगे कुछ शरारत की मां ने डांट दिया। बोले मैं घर से निकल जाऊंगा। मां ने कान पकड़कर दरवाजे से बाहर कर दिया और कहा कि जाओ। दो मिनट रोते रहे फिर चले आए। एक दिन मेरी माता जी ने पूछा बच्चा तुम घर से निकल के कहां जाते? लड़के ने उत्तर दिया डा० अग्निहोत्री के यहां। मेरी गली के पास डा० अग्निहोत्री की दूकान थी। एक दिन मेरे साथ वे दुकान से गुजरे। मेरा बच्चा समझकर डा० साहब ने थोड़ी [illegible] मंगाकर देदी थी।

(६)

मैं अपने पड़ोसी से मिलने गया। वह भीतर थे। बाहर नौकरानी थी। उसका छोटा सा बच्चा खेल रहा था। उसने मेरे लिए "साले" शब्द का प्रयोग किया। मां ने उसे तमाचा मारा। बाबू को गाली देता है। इतने में वह बाहर निकल आये—क्या है? मां ने कहा, "यह बाबू को गाली देता है।" वे बोले "साला बड़ा बदमाश है।" मैंने कहा जनाब उसने केवल वही कसूर किया था जो आपने।

(७)

मेरे एक देहाती मित्र थे। वह चारपाई पर बैठे हुए थे। चारपाई के नीचे कुतिया आ गई। वह अपनी स्त्री से बोले "अरे सास को मारना" उसने एक लकड़ी लेकर यह कहते हुए मारा "माम यहीं आ जाती है।"

(८)

इंगलैंड में एक विद्वान थे, जिनका नाम था Charles Lamb उनकी बहन का नाम था Mary Lamb बहन बचपन से ही बीमार रहती थी और भाई को उनकी देखभाल करनी पड़ती थी। चार्ल्स ने विवाह नहीं किया। क्योंकि वह विवाह करता तो अपनी बहन की देखभाल नहीं कर सकता था। ये दोनों विद्याप्रिय थे और दोनों ने मिलकर शेक्सपियर के नाटकों को कथानक, रूप दिया। आजकल भी आप पढ़ते हैं Lambs's Tales From Shakespear ऐतिहासिक नाटकों को छोड़कर शेष नाटकों का कथानक, रूप आपको इस पुस्तक में मिलेगा। १९१० में मैंने इंडियन प्रेस इलाहाबाद द्वारा जो हिन्दी शेक्सपियर प्रकाशित कराया है उसमें ऐतिहासिक नाटकों का भी समावेश है।

(९)

रोम का एक सम्राट था "नीरो" यह बड़ा क्रूर था और निर्दयी था। एक दिन रोम में आग लग गई। बूढ़े व लड़के स्त्री व पुरुष जान लेकर किसी प्रकार भागने लगे। नीरो महल की अटारी पर बैठा हुआ बाजा बजाता हुआ नागरिकों की विपत्ति का तमाशा देखता रहा। आप जानते हैं कि नीरो में यह निर्दयता कैसे पैदा हुई। इसकी एक सच्ची कहानी है।

जब नीरो अपने मां के पेट में था तो उसकी मां की यह इच्छा थी कि मेरा पुत्र अत्यन्त क्रूर हो और वह बड़े बड़े भयानक दृश्य देखा करती थी। जैसे कटे हुए आदमियों की लाशें। एक बार नीरो अपनी मां से भी बिगड़ गया। और उसने उसकी हत्या के लिये कुछ हत्यारे भेजे। मां को जब पता चला तो वह बोल पड़ी। पहले मेरे पेट में छुरी भोंको जिसने नीरो जैसा राक्षस जना। अंग्रेजी में अब भी कहावत है, "रोम जल रहा है और नीरो बाजा बजा रहा है" "Rome is burning and Niro is fiddling"

(१०)

उर्दू के प्रसिद्ध कवि गालिब एक दिन अपने दर्वाजे पर बैठे हुए थे कि एक मित्र आगये। यह मित्र कभी धनी थे अब निर्धन हो गये थे। पहले कीमती कपड़े पहनते थे आज केवल घटिया छींट की एक अचकन थी। गालिब को तर्स आया। करते क्या? बोले यह छींट की अचकन तो बड़ी सुन्दर है कहां से ली। मित्र ने उत्तर दिया, यह आज ही बनकर आई है और मैं अभी पहन कर आया हूं। गालिब बोले मुझे बहुत अच्छी लगती है जी चाहता है कि आपसे छीन लूं। मित्र ने कहा हाजिर है। गालिब ने कहा फिर तुम कैसे घर वापस जाओगे। और अपना बहुमूल्य लबादा उनको पहिना दिया।

(११)

क्या आपको मालूम है कि विक्टोरिया जो इंगलैंड की रानी थी हिंदुस्तान की सम्राट कैसे बनी? सम्राट और राजा में भेद है। सम्राट का पद राजा के पद से ऊंचा समझा जाता है और सम्राट के अधिकार प्रजा के ऊपर अधिक हैं राजा के अधिकारों की अपेक्षा। महारानी विक्टोरिया ब्रिटिश राज की रानी थी उनके छोटे लड़के का विवाह रूस के सम्राट की लड़की से हो गया। इंगलैंड में राजा के सबसे बड़े युवराज की स्त्री को प्रिंसेस आफ वेल्स का दर्जा है अतः इस रूसी वधु की कुर्सी प्रिंसेस आफ वेल्स के नीचे थी। इस रूसी वधु को बुरा लगता था। वह कहती थी कि मैं साम्राट वंश की हूं। मेरा पद ऊंचा होना चाहिए। इसलिये वह जेठानी का सामना करने दर्बार में नहीं आती थी। विक्टोरिया ने सोचा कि यदि मुझको भी सम्राट की पदवी दी जाय तो उलझन दूर हो जाय। उसने अपने मन्त्री मण्डल में यह इच्छा प्रकट की। इंगलैंड के राज्य को सम्राज्य की पदवी मिल जाय। मन्त्री मण्डल अपने राजा को इतना अधिकार देने पर राजी नहीं था। तब विक्टोरिया की दृष्टि दक्षिणी अफरीका, आस्ट्रेलिया न्यूजीलैंड आदि उपनिवेशों पर पड़ी। यहां के लोग भी गोरे थे, वे भी राजी नहीं हुए, तब अन्त में १८७७ ई० में विक्टोरिया को इंडियन एम्पायर (भारतीय साम्राज्य) की साम्राज्ञी बना दी गई तब से लेकर १९४७ ई० अर्थात् छठे जार्ज तक इंगलैंड के राजे King of United Kingdom and Emperor of India कहलाते रहे।

(१२)

मैं उस जमाने में पैदा हुआ था जिसको मुसलमानी वैभव और अंग्रेजी प्रभाव का सन्धिकाल कह सकते हैं। उस

★पं० गङ्गाप्रसाद उपाध्याय

समय लड़कियां अपने छोटे भाई को गोद में खिलाती हुई यह गाया करती थीं।

चढ़ने को लेवूं नीला सा घोड़ा
हाथों को लेवूं तीर कमान
कोई जाने मेरा भैया
मुगल पठान ।।

(१३)

मेरा छोटा भाई ७ वर्ष का था। उसे घड़ी देखना कम आता था। मास्टर साहब पास होकर निकले पूछा क्या बजा है। बच्चे ने घड़ी की ओर देखा। मास्टर साहब जा चुके थे। लड़का मिनट गिनता रहा, बहुत देर के बाद उनके पास गया और कहा ७ बजकर ४३ मिनट हैं।

(१४)

मेरी लड़की जब ५ या ६ वर्ष की थी एक एकन्नी लाई और माता जी से कहा इसे भुना दो। उन्होंने एकन्नी ले ली और ४ पैसे दे दिये। दूसरे दिन फिर आई, अम्मा एकन्नी भुनादो। माताजी ने पूछा एकन्नी कहां है बोली कल मैंने दी तो थी तुम्हारे बक्स में है। माता जी ने एकन्नी निकाल कर फेंक दी और कहा लेजा रोज इसी को भुनाया करेगी।

(१५)

मेरे एक पोते ने मेरी मां से कहा, अम्मा मोटर खरीद लो। मां ने कहा बेटा पैसा कहां है? बोला मकान बेच दो। मां ने कहा मोटर खरीद कर कहां रक्खेंगे। बोला सड़क पर।

(१६)

मैं अस्पताल में था। पेट का आप्रेशन हुआ था। जब डा० पट्टी बांधने आते तो उनके साथ कम्पाउन्डर और मेहतर आदि भी होते थे। सब घर वालों को कमरे से निकाल दिया जाता था। मेरा पोता ६-७ वर्ष का था। वह कहा करता था मैं तो सगा पोता हूं मुझे क्यों निकालते हो। (क्रमशः)

होली महापर्व
का संस्मरण

यह पर्व प्रति वर्ष ही आते हैं पर जिस समय जिससे कुछ सीख मिले, वह समय विशेष का पर्व माना जाता है। बात ४५-४६ सन् की है। गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर से ५ मील दूर एक ऐतिहासिक स्थान कटारपुर नाम से प्रसिद्ध है। जहाँ गोकशी को लेकर भयंकर दंगा हुआ था और बहुत से हिन्दुओं को फांसी व काला पानी, सजायें हुयीं थीं। उसी गाँव में आर्यसमाज की स्थापना भी है। होली पर आर्यसमाज का उत्सव था नगर कीर्तन रंग खेलते हुये निकालने का कार्यक्रम बना। पर मुसलमानों के विरोध करने पर जिलाधीश आदि दल-बल के साथ वहां आगये और रंग खेलते हुये जुलूस निकालने पर प्रतिबन्ध लगा दिया। बात-चीत करने पर मालूम हुआ कि लिखा पढ़ी मे यह निश्चय है कि होली पर रंग न खेलकर कीचड़ से होली खेली जाय। आचार्य प्रवर श्री पं० नरदेव जी शास्त्री वेदतीर्थ भी वहां उपस्थित थे। उन्होने जिलाधीश महोदय से कहा, कि यह कौन सी बुद्धिमानी की बात है कि हम पहले मूर्ख थे भविष्य में भी मूर्ख रहेंगे क्योंकि लिखा पढ़ी हो चुकी है यह तो कोई बात नहीं हुई। आज हम बुरे काम करते हैं पर भविष्य में सुबुद्धि मिली अच्छे काम करने लगेंगे। यह बात जिलाधीश को जंच गयी, और आदेश किया कि पहले की मूर्खता को छोड़कर अब रंग से होली खेलें और नगर कीर्तन निकालें। बात साधारण सी थी पर कितना रहस्य मयी बनी। इसलिये कोई भी घटना जीवन के लिये कहीं भी शिक्षाप्रद बन सकती है।

पर मानव! तेरे जीवन मे हास और रुदन साथ २ चल रहे हैं होली हास का सन्देश लिये आयी है यह क्षणिक हास चिरस्थायी हो, तेरे जीवन का अभिन्न अङ्ग बन जाये तभी जन-जन का कल्याण है।

मानव इतिहास के दुर्गम सन्धि-वेला मे जब चहुँदिशि हाहाकार के स्वर सुनाई देते हैं। इस ओर से उस पार तक कैसा अशान्त-अन्याय-अभाव का वातावरण बना हुआ है और हम होलिकोत्सव मना रहे हैं।

मन में प्रश्न उठता है जब इस कठिन समय में सभी त्रस्त्र हैं फिर हास परिहास कैसा? सभी परस्पर गला घोंट रहे हों, तो परस्पर मिलन कैसा? भाई-भाई एक दूसरे को खाये जा रहे हों तो उमगे कैसी? अहर्निश जलती ज्वालाओं जब मानवता सिसक रही हो प्रफुल्ल वदन लोगों के बसे बसाये घरों की जब होली जलायी जाती हो हँसते चेहरों को मिटाकर संसार को श्मशान बनाया जाता हो। पेट के भरने मे जिस देश का अभागा मानव तड़प तड़प कर प्राण छोड़ता हो तो फिर यह होली जो हर्ष उल्लास उमगों का थाल सजाकर लायी है हम कैसे मनाये?

उत्तर मे इन कठिन परिस्थितियो मे होली का स्वागत करना है अपनी समस्त भावनाओ के साथ जन मानस को आँसू नहीं बहाने हैं सभी कुछ जानते हुये भी प्रमुदित मन होलिका को जय-माला पहनानी ही है—परन्तु

ऐसा निश्चय करें कि हम अपने समस्त पापो को होली की धधकती ज्वाला मे आहुति प्रदान करेंगे। समस्त दुर्गुणो जिनके कारण हम पतित हुए हैं उन्हे भेंट चढ़ा देंगे।

विषमता की खाई जिसने ऊंच-नीच गरीब-अमीर के भेदभाव मे बाँटकर मानव को प्रताडित किया है हम होली की राख से पाटकर भेदभाव मिटायेंगे और युग का नव निर्माण करेंगे।

होली पर्व के साथ एक सांस्कृतिक उत्सव भी है देश के प्रत्येक भाग मे यह नाना प्रकार से मनायी जाती है उस दिन नाना उमंगों के साथ रगरेलियां करते हैं पर क्या परस्पर मिलन के भाव उत्पन्न करते हैं। हम इस दिन अपने कष्ट और दुःखो को विस्मृत अवश्य कर देना चाहते हैं पर निराशा के आगे कुछ नहीं मिलता—

होली आई है आशा और विश्वास लेकर परस्पर मे प्रेम पैदा करने के लिये! यह सदेश केवल होली के दिन के लिये ही नहीं, भविष्य के लिये भी प्रेरणा मिलती रहे। यह हो आधार हो फिर न निराशा रहेगी और ईर्ष्या द्वेष की अग्नि ही जलेगी हृदयो मे। और हम इस तड़पती बिलखती दुनिया को स्वर्ग समान बनाने का संकल्प बना सकेंगे। इस विश्वास के साथ होली का स्वागत करते हे।

★ सच्चिदानन्द शास्त्री एम० ए०
मन्त्री, आर्यप्रतिनिधि सभा उ० प्र०

मानव! जरा सोच कि जिस दुनियां को बनाने मे तू ने जमीन आसमान को एक कर रहा है उस जमीन पर रहने वाले मानव का भी कुछ कल्याण किया है। वह मानव जन कल्याण के नाम पर खून की होली खेल रहा है। कौन होगा समाजवाद और कौन होगा साम्यवाद। नेता राष्ट्रों को दावानल मे धकेलने को तैयार हैं सारा विश्व जल रहा हैं प्रेम नाम का केवल बहाना है।

वर्तमान सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक विश्रृंखलताओं ने जब सभी के सौख्य आनन्द और हर्ष को विषाद मे बदलकर स्वाहा कर दिया है। विश्व मे रहने वाले मानव को नाना वर्गवाद और सम्प्रदायो मे बांटकर विषमता मे डाल रखा है विषमता के जहरीले कीटाणु उनके मस्तिष्को मे छोड़ दिये हैं कि वे सदा परस्पर घृणा कर झगड़ते ही रहे इसी से इस पर्व पर विचार करना है कि इस होली का क्या बनेगा।

इस उत्सव पर विचारो के परिवर्तित करने के साथ २ सारे मानव के विचारो मे परिवर्तन की भावना लानी है। सारा संसार एक साथ चलता हुआ अपनी कामनाओ की पूर्ति मे अग्रसर होकर सफलता प्राप्त करे। उसकी श्रम साधना मय होकर सफली भूत हो और वह संतोष प्राप्तकर सुख का अनुभव करे।

मानव! यदि तू इन्हें केवल लकीर पीटता हुआ ही ऊपर से हंसेगा इससे तुझे क्या मिलेगा केवल उपहास? अन्तर मे विषाद की धारायें फूटेगी, मन मे अशान्ति बढ़ेगी। इसलिये यदि तू चाहता है कि सुख और शान्ति मे रह सके। तो इस पर्व मे शिक्षा ले और ऊपरी दिखावा न दिखाकर उल्लास के स्रोत को अपने मानस उड़ेल और जो तेरे पास नहीं हे उसे पाने के लिये सदा प्रयत्नशील बन।

★

महान् हुतात्मा पण्डित दीनदयाल उपाध्याय का उद्बोधक संदेश

★

[५१ वर्षीय स्व० श्री उपाध्याय भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष ही नहीं वरन् भारत के उच्चकोटि के नेता थे। उनके निधन से एक बहुत बडा राष्ट्रीयतावादी एवं कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति भारत ने खो दिया है। ज्ञातव्य है कि श्री उपाध्याय जी का शव गत ११ फरवरी को मुगलसराय स्टेशन पर रहस्यमय ढंग से पड़ा मिला था और अभी उनके हत्यारों का सही पता नहीं लग सका है। आशा है कि उनका सन्देश हम सभी को मार्गदर्शन करने मे सहायक होगा। —सम्पादक]

स्व० श्री उपाध्याय जी

"भविष्य से डरिये मत, बल्कि उसके निर्माण मे रुचि लीजिये। सजीये सपनों को सवारिये, कल्पना को कर्म से गढ़िये और योजना को युक्ति से पूरा करिये! ....

वादों के विवाद में फंसने की जरूरत नहीं। अपने अन्तःकरण की प्रवृत्ति को ही प्रमाण मानकर चलिये। वही धर्म है। उसी में तप को प्रेरणा मिलेगी और कर्म को दिशा प्राप्त होगी।' ....—

जीवन के सत्य अधिक प्रभावी हैं, विकृति पर प्रकृति की और प्रकृति पर संस्कृति की विजय सुनिश्चित है, भारत की मिट्टी का मुझे भरोसा है। ...—

जो राह का डर बताकर न चलने की सलाह देते हैं उनकी मत सुनिये। गलत रास्ते पर भी चलें, तो कुछ नहीं बिगड़ेगा, पर चलने की शक्ति जाती रही तो ठूंठ बनकर रह जायेंगे। और हमे तो अपनी राह बनानी है, जिस ओर हम चलेंगे वहीं रास्ता होगा।"...... ......

आइये इस मार्ग पर चलने का व्रत लें तभी इस हुतात्मा का बलिदान काम आयेगा।

●

काव्य कानन

बहेलिए से

✲

कपट बीन तुमको बजाने न दूंगा।
मृगों को भुलावे में आने न दूंगा॥
ये माना कि सरगम सुरीली तुम्हारी अबुध प्राणियों को मनो मोहकारी
विषैले स्वरों मे बजाई गई है विदेशी घरों से ये लाई गई है
मनो मन्दिरों में मलिन मान्यता का
मजमा जरा सी लगाने न दूंगा॥१॥
बिछाते यहां जाल जजल के हो बड़े मित्र बनते कि कगाल के हो
फसाने का दाना मगर डाल देते कि नादान को ही सदा प्यार देते
विनाशो के सपने सजीले सजीले
कि साकार तुमको बनाने न दूंगा॥२॥
हवाओं मे ऐसी ही दी प्रेरणा है विहग बन्धु मे भी उठी चेतना है
प्रशिक्षण प्रथायें बड़ी पावमानी कि अपनी ही सुनने लगे हैं कहानी
'बिना बाप के था हुआ एक बेटा'
असम्भव कहानी सुनाने न दूंगा॥३॥
अमा ने यहां पर क्षमा मांग ली है उषा ने धरा की गली झाक ली है
उठाओ यहां से अभी बारदाना कि बीणा जहा की वहीं पर बजाना
मिथ्या चमत्कार की चञ्चला को
यहा साज हरगिज सजाने न दूंगा॥४॥

—कविवर "प्रणव" शास्त्री एम० ए० फीरोजाबाद

ले आ, वसन्त ! अपना वैभव !!

जिनमे न क्रांति की गन्ध मिले, मत ऐसे फूल खिला माली !
जिनमें बलिदानी रंग नहीं, मत ऐसे फूल खिला माली—
रजनी के आंसू भूल ! अरे, जो खुश होकर चूमा करते,
हर फूल-तोड़ने वाले के हाथों को जो चूमा करते !
धनपति लोगों के गुलदस्तों मे सज कर जो शीश झुका लेते—
जो अत्याचारी से डरकर प्राणो की भेंट चढ़ा देते !
जो स्वाभिमान से शून्य !! स्वयं अरमानों पर धूल जाती डाली
ओ माली ! रे, तू भी गुलाम !! पगला, कैसा ! तू गुलज़ार !
कुछ टुकड़ों पर बिकने वाले !!! तुझ पे लज्जित है जो बहार—
जिनको तूने निज हाथों से शैशव से यौवन तक पाला !
उनको ही होकर स्वयं दीन, क्यों ? निर्दयता से चुन डाला ?
फूलों की लाशों का विक्रय करने वाले !!! क्या दूं गाली ?
मुझ करते हो अब उपवन मे आजाद हवायें अपनी हैं—
मैने तो देखा है, उनमे बारूद भरी है !
[illegible] जीवन, [illegible] मे छिपकर [illegible] है !
हर [illegible] होकर निर्भय [illegible] है !!
ले आ, वसन्त ! अपना वैभव !! रे, हो न [illegible] रखवाली—

—कृष्णबिहारी 'प्रणत' सेठ (झांसी)

पुनर्जागृति

★

भारत की इस पतित दशा मे,
हे आर्य तुम्हें कुछ करना है।
जन-जन में करके परिवर्तन,
तुमको देश जगाना है,
हे आर्य तुम्हें कुछ करना है।
इस सुन्दर से देश आर्य को,
पाखण्डी अब तक लूट रहे,
देव दयानन्द की धरती पर,
वैदिक धर्म चलाना है।
हे आर्य तुम्हें कुछ करना है।
इस धरती पर फैल चुके हैं,
झूठ, पाप और द्वेष सभी,
अब तुमको सब मोह छोड़ के,
वैदिक नाद बजाना है,
हे आर्य तुम्हें कुछ करना है।
भटक रही सारी जनता है,
अंधी बन इन गलियो में,
वैदिक ज्योति जलाकर जग मे,
राह तुम्हें दिखलाना है।
हे आर्य तुम्हें कुछ करना है।

—विजयदयाल सक्सेना, बहराइच

जाने कब श्वासों का तार टूट जाये

जीवन भर जो भर के प्रभु के गुण गाले रे !
जाने कब श्वासो का तार टूट जाये।
माया का इन्द्रजाल मोहक अति होता है।
जीवन मोह ममता की निद्रा मे सोता है।
हँसता, रम जाता जो ईश्वर के ध्यान मे,
वरना हर मानव तो अन्त समय रोता है॥
इसीलिए कर ले कुछ आत्म हित कमाले रे !
जाने कब स्वजनो का संग छूट जाए॥१॥
कितना अनमोल समय जीवन का खो डाला।
प्रियतम की प्रीति का प्रसाद सभी धो डाला।
कैसे औ' कब तक तू सफल कर सकेगा, कह !
अन्तर मे बीज महाविष का जो बो डाला॥
खोना हर बार रहा अब तो कुछ पा ले रे !
जाने कब प्राणों का मीत रूठ जाये॥२॥
श्रद्धा से भगवन् के नित्य गीत गाये जा।
उसको ही ध्याये जा, प्रेम लव लगाये जा॥
पाना हो निराकार, उसको कर निर्विकार,
दीपक नित उस अनन्त ज्योति से जलाए जा॥
अपने स्वर अन्तर् की वीणा से मिला ले रे !
जाने कब आयु का सितार फूट जाये॥३॥

—प्रतापकुमार सक्सेना "मानस-यतन," गोण्डा

★ ★ ★ ★ ★

चिन्तन

✲

कांपती हैं बालियों
किम्वा शीत के भय से
नहीं नहीं कांपती है चिन्तन मे
सोचती हैं तोड़ हमें बच्चे ले जायेगे
होली में जलायेंगे।

अथवा ?

विश्व के उपवन
चाहे जितना करें चिन्तन
[illegible] सिर्फ उनके पास एक बेर रोटी
[illegible] नहीं खोटी।
जिन्होने उगाया है पसीने से
हाय ! बदे हैं उन्हीं के भाग्य
आसू के बहुत टुकड़े।

गर्मी में तमाम जोतों को
लगाते हैं, सींचने मे सर्दी की परवाह—
नहीं करते हैं, गोड़ने मे निराई मे
वर्षा को
सहते हैं। वे तरसते हैं बेचारे
दो टाइम की रोटी के लिए।
और खाते हैं वे, जो कि धूप से डरते हैं
शीत में दोपहर तक सोते हैं

पैरों मे धूल छिपती है।
हाय ! रे दैवी विधान
इससे अच्छा है
होली मे जल जाना
बच्चो कृपा करना।

—जयपालसिंह बी० ए०
आ० स० कर्णपुरवस्त, फर्रुखाबाद

★

होली 'होमावली'

प्रारम्भिक इतिहास

संसार में भारत वर्ष प्रकृति का दुलारा रहा है। इसके पवित्र मस्तक पर गिरिराज हिमालय किरीट के रूप में प्रकाशमान है। रत्नाकर इसका सदैव चरणोदक लिया करता है। इसे आह्लादित करने के लिए छः ऋतुएं क्रमशः आया करती है। इन सबों में वसन्त ही ऋतुराज के पद पर आसीन है। हर वर्ष ऋतुराज इस पुण्य उल्लास पर्व होली का स्वागत करता है।

मेरी शस्यश्यामला भारत जननी रत्नगर्भा हैं। समय-समय पर ऐसे ऐसे पुरुषों का जन्म देती रही हैं, जो उसकी मर्यादा तथा रक्षा के लिए सदा उद्यत रहे।

ईसा पूर्व नवों दसवीं शताब्दी का समय था, जब कि हमारे देश में गणतंत्र शासन प्रणाली थी। उस समय देश के ऊपर दस्युदल रूपी मेघ आच्छादित थे। प्रत्येक गावों में त्राहि-त्राहि मची हुई थी। व्यक्तियों को व्यग्रता की सुई ऐसी लगी हुई थी। उन्हें कुछ सूझ नहीं रहा था कि हम क्या करें।

जन्म भूमि की रक्षा कैसे की जाय ? इस बात पर लोगों ने विचार विमर्श किया। अन्तिम निर्णय हुआ कि हम सभी वसुन्धरा माता की सन्तान हैं। इसकी मर्यादा एवं रक्षा का भार हमीं लोगों पर है। अतएव हम सब परस्पर संगठित हो जाएं, जिसमें अपनी तथा जन्मभूमि की रक्षा कर सकें।

गांव-गांव में लाल पताका फहराई गई। जिससे मालूम हो सके कि कोई भारी विपत्ति आ गई है। तथा जन्म-भूमि संकट से है। प्रत्येक मनुष्य अपने अपने गांव के बाहर एकत्र हुये तथा ध्वजा के नीचे शपथ ग्रहण की।

"यह शरीर मेरी नहीं जन्मभूमि की है। इसकी शिराओं तथा धमनियों में ओज पूर्ण रक्त बह रहा है। अतएव इसके निमित्त ही शरीर का लग जाना ही अत्युत्तम होगा। फिर ऐसी देश भक्ति तथा जाति भक्ति की परीक्षा में सम्मि-लित होने का समय न मिलेगा। इन प्राणों की अवशिष्ठता में मेरी जन्मभूमि दस्युओं के हाथ नहीं आ सकती"।

इस प्रकार समस्त ग्रामीण जनों ने एकता का मन्त्र पढ़कर अपना-अपना एक सुन्दर दल बनाकर दस्यु दल पर धावा बोल दिया। लगभग एक माह तक भयंकर लड़ाई हुई। बहुतो ने तो प्राणों की बलि दे दी। अन्तिम विजयश्री भारतीयों के ही हाथ लगी। शत्रु दल बुरी तरह से पराजित हुआ। लोग बहुत हर्षित हुये। क्योंकि उन्हें एक नया जीवन मिल गया।

चारों ओर प्रसन्नता की लहर फैल गई। सभी नये नये वस्त्रों से विभूषित हुए। फाल्गुन मास की पूर्णिमा को प्रत्येक गावों में हवन का आयोजन किया गया। बन्दनवारें लटकायी गयीं। जिससे समस्त वातावरण महक उठा। सभी जन परस्पर एक दूसरे के गले लगते तथा मनोविनोद करते और आह्लादित होकर कह उठते कि हम सब धन्य है। जन्म-भूमि की रक्षा तो कर सके।

प्रति वर्ष हमारे यहाँ इस पुण्योल्लास पर्व का स्वागत हो रहा। जिसे हमारे पूर्वजों ने होमावली तथा नवजीवन दिवस की संज्ञा दी थी। कुछ समय बाद इसका रूप विस्तृत हुआ। यह बसन्तोत्सव के रूप में परिवर्तित हो गया।

बसन्तोत्सव में प्रेम के ईश मनोज की पूजा होने लगी। अतएव इसको नाम मदनोत्सव पड़ गया। समय के फेरे के अनुसार मेरा देश, विदेशियो के चंगुल मे पड़ गया। मुसलमानों ने हमारे इस पुण्य नवजीवन पर्व का अवलोकन किया। उन्होंने शनैः शनैः इस पर आव-रण डालना शुरू कर दिया। जिससे भारतीय अपने को भूल जाय।

हमारी जो युद्ध सूचक लाल पताका थी। जिसे देखकर हमारे पूर्वजों के अन्दर स्फूर्ति, उत्साह तथा जागरण एव त्याग व बलिदान की लहर उमड़ने लगती थी। मुसलमानों ने उस पताका के नीचे सफेद कपड़े का फुलरा लगवा लगवा दिया। अब यही पताका युद्ध सूचक न रहकर देवी-देवताओं की पूजा की सूचक रह गई। हवन का स्थान कण्डा (उपले) तथा बबूल की लकड़ी ने ले लिया। धीरे २ यही लाल ध्वजा रेंड (जो बसन्त पञ्चमी के दिन जमीन में ढाही गाड़ी जाती है) के रूप में बदल गयी।

परिणाम यह हुआ कि हम सबों ने बसन्तोत्सव मनाने के स्थान पर भी एक दूसरे को, बहिन बेटियों को गाली देना शुरू कर दिया। बसंत की मधुमय सुगन्ध को भूलकर कीचड़ मारना शुरू किया। यहाँ तक कहीं कहीं देखा गया कि लोग इस पुण्य पर्व पर एक दूसरे को ढोले कंकड़ आदि मार रहे हैं।

हमारी सभ्यता एवं संस्कृति का रूप बदल गया। मेरे पूर्वजो का पुन्य पर्व होमावली, जिसे उन्होंने नवजीवन दिवस से शोभित करके पुकारा था, आज होली के नाम से प्रसिद्ध हो गया हैं। हम सब पुरानी परम्परा को भूल गए हिरण्यकश्यप की हौलिका की कथा मे डूब गए। समाज का ढांचा और ही हो गया।

परन्तु आज हम सब स्वतंत्र हैं। अपनी स्वतंत्रता को सुदृढ़ बनाए रखना हमारा परम कर्तव्य है। इसलिये हम लोगो को समाज मे फैली विभिन्न कुरी-तियों बुराइयों जैसे-कीचड फेंकना, गाली देना, किसी को अपशब्द कहना, ढीले कंकड़ मारना आदि को दूर फेंक देना चाहिए। इसके स्थान पर एकता एवं मिलन तथा परोपकार की भावना का जागरण करें।

आज हम लोगों को इस पुण्य पर्व पर होमावली (होली) का सम्मान उसी प्रकार करना है, जिस प्रकार से हमारे पूर्वजों ने किया था। ●

ओंकारसिंह 'विभाकर'
उमरा सुल्तानपुर

होली और सदाचार

"होली" जैसे पवित्र त्योहार के स्थान पर अकर्तव्य कर्म को देखकर आज लिखना पड़ता है कि वास्तविक उद्देश्य को भूलकर आर्यावर्तीय जनता किस कर्म को ग्रहण किए हुए है। वास्तव में होली वार्षिक यज्ञ तथा पवित्र त्योहार था। जिसको समस्त लघु दीर्घ स्त्री पुरुष प्रेमपूर्वक मिलकर मनाया करते थे। शास्त्रों में वर्णित विधान के अनुसार यह नवशस्येष्टि यज्ञ है।

सर्वजीवनाधार, सर्वपालक नवीन अन्न के नवीनागमन को देखकर आर्यावर्त के निवासी प्रमुदित होकर आनन्दोत्सव मनाने मे संलग्न हो जाते थे। शास्त्रकारों ने अन्न को ही सर्वजीवनाधार परमौषध माना है। यहीं तक नहीं वरन् "अन्नं वै प्राणा:" अन्न को ही प्राण मानकर सर्वोत्कृष्ट अपूर्व पदार्थ निश्चित कर मनुष्यों का दृष्टिकोण इधर फेरा कि जो पदार्थ प्राणि जगत् के लिये इतना उपयोगी है, उसके शुभागमन पर परमपिता परमात्मा के गुणानुवाद गाते हुए तदर्थ अर्पण करते हुए 'यज्ञ' के पश्चात् उपभोक्ता बनने के अधिकारी बनो ? इस नियम का पालन करते हुए प्राचीन आर्यों ने किस सुख शान्ति वैभव को प्राप्त किया, जो कि इस समय केवल मात्र इतिहास का ही विषय रह गया है। इस नियम के उल्लंघन करने से भारतीय जनता किस प्रकार अपने आचार तथा सदाचारिक जीवन को खो बैठी है, जो अति ही लज्जाजनक है। जहां पर कभी वैदिक कृत्य होते थे, वहां पर आज वाममार्ग को फैलाने वाले व सदाचार को गिराने वाले बेढंगे ढोंग जो कि मनुष्यता के नितान्त ही विपरीत हैं प्रति वर्ष होली के अवसर पर दृष्टिगोचर होते हैं। इनसे सभ्य समुदाय के हृदयों को भारी आघात पहुंचता है।

यह विचारणीय है कि इस समय आर्यावर्त जैसे पवित्र देशके निवासी सदा-चार का कितना पालन कर रहे हैं। होली जैसे पवित्र उत्सव पर यदि हम अपने आचरणों मे सुधार कर सकें तथा सदाचार की मर्यादा को स्थिर रख सकें तो बहुत कठिन न होगा।

क्या यह सदाचारिक जीवन स्मृतियों के अन्दर ही विधि वाक्य रहेगा या भारतवासी स्वआचरणों में लाकर इसे संसार में चरितार्थ भी करेंगे ? यदि आवश्यकता इस बात की है कि यदि हम न्यानातिन्यून सदाचार पूर्ण जीवन व्यतीत करने पर कटिबद्ध हो जावें तो शीघ्र ही होली के इस हुल्लड़ का समूलोच्छेदन हो सकता है।

—नाथ

स्वामी दयानन्द और शिक्षा

स्वामी दयानन्द अपने युग के बहुत बड़े शिक्षक थे उन्होंने शिक्षा का अतुर्मुखी उत्कृष्ट वर्णन किया है।

शिक्षा का अर्थ 'शक्लृ इच्छा' (शक्—सन्नन्त) अर्थात् शक्ति प्राप्त करने की विधि। शिक्षा वो है जिससे हर प्रकार का बल मिलता है। स्वामी दयानन्द चाहते थे कि संसार को ऐसी शिक्षा दी जाय जिससे सबको शारीरिक बौद्धिक और सामाजिक बल की प्राप्ती हो सके। सबसे पहले शारीरिक शिक्षा है शरीर के उन्नति के बिना तो कुछ हो नहीं सकता बीमार कुछ नहीं कर सकता इसलिए स्वामी दयानन्द की शिक्षा का आधार शारीरिक स्वास्थ्य है। शारीरिक स्वास्थ्य के लिए कुछ तो हर नर नारी स्वयं उत्तरदाता है और कुछ उत्तरदायित्व समाज का भी है। यदि समाज अच्छा है तो उसकी सन्तान भी अच्छी होगी स्वामी दयानन्द ने भारत वर्ष की वर्तमान दुर्दशा का कारण बाल विवाह बताया है भारत मे प्राय छोटे-छोटे बच्चों की विवाह की प्रथा है जब किसी के संतान उत्पन्न होती है तो वह सबसे पहले वह उसके विवाह की बात सोचता है शिक्षा की नहीं हिन्दुओं मे जितना धन विवाह पर व्यय होता है उतना शिक्षा पर नहीं जब मै हेडमास्टर था तब कुछ लड़को के पिता मेरे पास आते थे। और कहते थे कि फीस माफ कर दो हम लोग बड़े गरीब है मैंने एक सज्जन से पूछा तुम्हारे लड़के का ब्याह हुआ कि नहीं उन्होंने कहा कि इन्हीं गर्मियो की छुट्टी मे हुआ है मैंने पूछा कितना धन व्यय हुआ कहने लगे क्या बताऊ बहुत खर्च हो गया कई सौ रुपये मैंने पूछा आप मुझसे क्या चाहते हैं कहने लगे फीस माफ कर दीजिए मैंने कहा कितनी फीस है कहने लगे दो रु० महीना मैंने कहा जब ब्याह मे कई सौ रु० खर्च कर दिये तो क्या दो रु० महीना फीस नहीं दे सकते। सारांश यह है कि हम शिक्षा पर धन व्यय नहीं करना चाहते बल्कि विवाहो पर खर्च डालते है जिस घर मे सबसे अधिक भाग शिक्षा पर [illegible]

[illegible]

करें।

[illegible] जन्म से ही पहले से [illegible] मां के पेट से होता है तभी से उसके संस्कार बनने आरम्भ हो जाते हैं आप बच्चे मे जो संस्कार उत्पन्न करना चाहते हैं। उन संस्कारों का आरम्भ माता से होना चाहिए जिस देश मे स्त्रियो की शिक्षा नहीं होती उस देश में पूरी जाति की शिक्षा नहीं हो सकती जब स्वामी दयानन्द ने काम आरम्भ किया तो उन्होंने देश में सबसे बड़ा दोष यह देखा कि स्त्रियों को पढने का निषेध था। प० लोगो ने यह बहका रक्खा था कि स्त्रियो और शूद्रो को नही पढाना चाहिए। वे स्वयम् वेद पढ़ते थे। परन्तु अपनी माताओं अपनी पुत्रियो अपनी बहनों और अपनी पत्नियों को वेद नहीं पढ़ाते थे। इस प्रकार भारत की जनसख्या का एक बहुत बड़ा भाग अशिक्षित था भूतप्रेत आदि भ्रम भाव अधिकतर स्त्रियों मे ही फैलाये जाते थे इससे भारत के भावों ने जीवन अनेक दोषों से दूषित हो गए थे। शिक्षा के विषय में स्वामी दयानन्द का सबसे बड़ा काम यह है कि स्त्रियो को पढाना चाहिये। उन्होंने यजुर्वेद का एक मन्त्र दिया है।

क्या स्त्री और शूद्र भी वेद पढें? जो ये पढ़ेंगे तो हम फिर क्या करेंगे? और इनके पढ़ाने में प्रमाण भी नहीं है जैसा यह निषेध है—

स्त्री शूद्रौ नाधीयातामिति श्रुते.।

स्त्री और शूद्र न पढ़ें यह श्रुति है।

उत्तर—सब स्त्री और पुरुष अर्थात् मनुष्यमात्र को पढ़ने का अधिकार है। तुम कुएँ में पड़ो और यह श्रुति तुम्हारी कपोल कल्पना से हुई है [illegible]

[illegible]

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः।

ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च।

[illegible] (यथा) जैसे मैं (जनेभ्यः) सब मनुष्यों के लिए (इमाम्) इस (कल्याणीम्) कल्याण अर्थात् संसार और मुक्ति के सुख देनेहारी (वाचम्) ऋग्वेदादि चारों वेदों की वाणी का (आ, वदानि) उपदेश करता हूं वैसे तुम भी किया करो।

यहा कोई ऐसा प्रश्न करें कि जन शब्द से द्विजो का ग्रहण करना चाहिये। क्योंकि स्मृत्यादि ग्रन्थो में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य ही के वेदों के पढ़ने का अधिकार लिखा है स्त्री और शूद्रादि वर्णो का नहीं।

उत्तर–(ब्रह्मराजन्याभ्याम्) इत्यादि देखो परमेश्वर स्वयं कहता है कि हमने ब्राह्मण, क्षत्रिय, (आर्याय) वैश्य, (शूद्राय) शूद्र और (स्वाय) अपने भृत्य वा स्त्रियादि (अरणाय) और अति शूद्रादि के लिए भी वेदो का प्रकाश किया है अर्थात् सब मनुष्य वेदो को पढ़ पढा और सुन सुना कर विज्ञान को बढा के अच्छी बातों का ग्रहण और बुरी बातो का त्याग करके दुःखो से छूट कर आनन्द को प्राप्त हों। कहिए अब तुम्हारी बात

मानें या परमेश्वर की? परमेश्वर की बात अवश्य माननीय है इतने पर भी जो कोई इसको न मानेगा वह नास्तिक कहावेगा। क्योंकि 'नास्तिको वेदनिन्दकः' वेदों का निन्दक और न मानने वाला नास्तिक कहाता है।

क्या परमेश्वर शूद्रों का भला करना नहीं चाहता? क्या ईश्वर पक्षपाती है कि वेदो के पढ़ने सुनने का शूद्रों के लिये निषेध और द्विजों के लिए विधि करें? जो परमेश्वर का अभिप्राय शूद्रादि के पढ़ाने सुनाने का न होता तो इनके शरीर में वाक् और श्रोत्र इन्द्रिय क्यों रचता? [illegible] अन्न, अग्नि, [illegible] सब के लिए बनाये हैं वैसे ही वेद भी सबके [illegible] नहीं [illegible] अभिप्राय है [illegible] कुछ भी न आवे वह निर्बुद्धि और मूर्ख होने से शूद्र कहाता है उसका पढ़ना पढ़ाना व्यर्थ है और जो स्त्रियों के पढ़ने का निषेध करते हो वह तुम्हारी मूर्खता, स्वार्थता और निर्बुद्धिता का प्रभाव है। देखो वेदों में कन्याओ का पढ़ने का प्रमाण—

ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्
अथर्व० (कां ११, प्र० २४, अ० ३, मं० १८

जैसे लड़के ब्रह्मचर्य सेवन से पूर्ण विद्या और सुशिक्षा को प्राप्त हो के युवति, विदुषी, अपने अनुकूल प्रियसदृश स्त्रियों के साथ विवाह करते हैं और वैसे (कन्या) कुमारी (ब्रह्मचर्येण) ब्रह्मचर्य सेवन से वेदादि शास्त्रो को पढ़ पूर्ण विद्या और उत्तम शिक्षा को प्राप्त युवति हो के पूर्ण युवावस्था में अपने सदृश प्रिय विद्वान् (युवानम्) पूर्ण युवावस्था युक्त पुरुष को (विन्दते) प्राप्त होवे।

★गंगाप्रसाद उपाध्याय एम.ए.

इसलिये स्त्रियो को भी ब्रह्मचर्य और विद्या का ग्रहण अवश्य करना चाहिये।

प्रश्न–क्या स्त्री लोग भी वेदो को पढ़ें?

उ०–अवश्य देखो श्रौत सूत्रादि में–

इमं मन्त्रं पत्नी पठेत् ॥

अर्थात् स्त्री यज्ञ मे इस मन्त्र को पढ़े। जो वेदादि शास्त्रो को न पढ़ी होवे तो यज्ञ मे स्वर सहित मन्त्रों का उच्चारण संस्कृत भाषण कैसे कर सके? भारतवर्ष की स्त्रियो मे भूषण रूप गार्गी आदि वेदादि शास्त्रो को पढ़ के पूर्ण विदुषी हुई थीं। यह शतपथ ब्राह्मण में स्पष्ट लिखा है।

भला जो पुरुष विद्वान् और स्त्री अविदुषी, स्त्री विदुषी और पुरुष अविद्वान हो तो नित्यप्रति देवासुर संग्राम घर मे मचा रहे। फिर सुख कहां?, इसलिये जो स्त्री न पढ़े तो कन्याओ की पाठशाला मे अध्यापिका क्यो कर हो सके तथा राज्य कार्य न्यायाधीशत्वादि गृहाश्रम का कार्य जो पति को स्त्री और स्त्री को पति प्रसन्न रखना घर के सब काम स्त्री के अधीन रहना, इत्यादि काम बिना विद्या के अच्छे प्रकार कभी ठीक नहीं हो सकते।

इन कथनों से प्रकट होता है कि स्वामी दयानन्द प्रत्येक नर नारी को चाहे वह किसी भी परिवार का क्यों न हो विद्या पढ़ाना आवश्यक समझते थे? पशु और मनुष्य मे यही भेद है कि मनुष्य विद्या सीख सकता है और पशु नहीं। फिर यदि मनुष्य विद्या पढ़े नहीं है [illegible] नहीं रह सकते। वह तो पशुओं के समान है।

स्वामी दयानन्द ने शिक्षा का उत्तरदायित्व राजा और समाज दोनों पर छोड़ा है। वह कहते हैं कि राजनियम और जातिनियम होना चाहिये कि पांचवें

(शेष पृष्ठ १५ पर)

'भू भुवः स्वः'

भू र्भुवः स्वः ये तीन महाव्याहृतियां हैं। व्याहृति. उक्तिः कथितम्' कोष के अनुसार महाव्याहृति का शब्दार्थ हुआ महत्वावाचक उक्ति। इन तीन महाव्याहृतियों में महत्वाधान की शक्ति है। जिन मन्त्रों में ये महाव्याहृतियां, जोड़ दी जाती हैं, वे महत्वशाली हो जाते हैं। प्रसिद्ध गायत्री मन्त्र–

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो योनः प्रचोदयात्। मे उसके महत्वाधान के लिये ऊपर से भूर्भुवः स्वः जोड़ दिया गया है। क्योंकि गायत्री एक चौबीस अक्षरों का छन्द है। चौबीस अक्षर 'तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्' मे समाप्त हो जाते हैं। इसी प्रकार पवमान मन्त्रों–

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। अग्न आयूंषि पवस, आसुवोर्ज मिष च नः। आरे बाधस्व दुच्छुनाम्। स्वाहा

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। अग्निर्ऋषि पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः। तमी महे महागयम्। स्वाहा

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे वर्चः सुवीर्यम् दधद् रयिं मयि पोषम्। स्वाहा

में भी महत्वाधान के लिये भूर्भुव स्वः ये तीन महाव्याहृतियां जोड़ दी गई हैं; क्योंकि ये गायत्री छन्द से अधिक हैं इसी प्रकार ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना के प्रसिद्ध आठ मन्त्रों मे आने वाले ओं प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वाजातानि परिता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् मे भी ओ३म् भू र्भुवः स्वः ये तीन महाव्याहृतियां अधिक जोड़कर पवमान मन्त्रों के साथ चौथी प्रजापत्य आहुति दी जाती हैं।

इन महा व्याहृतियों के अर्थ भी महान् हैं—आधिदैविक क्षेत्र मे ओ३म् भूरग्नये स्वाहा। ओ३म् भुवर्वायवे स्वाहा, ओ३म् स्वरादित्याय स्वाहा। अर्थात् भू अग्नि के लिये है, भुवः वायु के लिये और स्वः आदित्य के लिये।

आध्यात्मिक क्षेत्र में ओ३म् भूरग्नये प्राणाय स्वाहा। ओ३म् भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा: ओ३म् स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा। अर्थात् अध्यात्म क्षेत्र में भू प्राण के लिये है, भुवः अपान के लिये है और स्वः आदित्य के लिये है।

आधिभौतिक जगत् में ओ३म् भू र्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना, पृथिवीव वरिम्णा। अर्थात् नक्षत्रों के बाहुल्य से जैसे आकाश विराजमान है और अपने बड़प्पन से जैसे पृथिवी सबका आधार है वैसे ही भू र्भुवः स्वः महत्वशाली हैं।

आधिभौतिक जगत् में भू पृथिवी है और स्वः द्यौ है और उन द्यावा पृथिव्योरिव मन्तरम् जो अन्तरिक्ष में है वह भुवः है।

ओ३म् भूर्भुवः स्व द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा। तस्यास्ते पृथिवी देव यजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे॥

इस मन्त्र मे भू र्भुवः स्वः मन्त्र का ही अंश है, ऊपर से जोड़ा गया अधिक भाग नहीं है। द्यौरिव पृथिवीव इन उपमानों को भू र्भुवः स्व उपमेय हैं। इस मन्त्र से हम अन्नाद अग्नि को अन्नाद्य अर्थात् अन्नादत्व के लिये आधान करते हैं। अन्नं वै प्राणिनां प्राणाः अन्न ही प्राणियों का प्राण है। इस मन्त्र से यह ध्वनित होता है प्राणवानों की प्राणवत्ता के लिये भगवान् ने प्राणियों मे अग्नि की स्थापना की है। हम मानवों को भी परमात्मा के विधान का अनुसरण करते हुए अपने शरीर रूपी मन्दिर मे अग्नि रूपी देव की सदा सुरक्षा तथा पूजा

करनी चाहिये कि वह मन्द न पडे और उसकी अन्ना दत्व की शक्ति सदा सुस्थित रहे। और अपने मानव समाज मे उस मानवाग्नि मानवता की ज्योति को सदा जागरूक रक्खें। इसलिये हम नैतिक जगत् मे यज्ञाग्नि का आधान करते हैं कि हमारा समाज तथा राष्ट्र सदा प्राणवान् बना रहे।

इस अग्न्याधान के मन्त्र मे भू र्भुवः स्वः होते हुए भी और अधिक महत्वाधान के लिये पुनः ओ३म् भू र्भुवः स्वः अधिक जोड़ देते हैं। ओ३म् भू र्भुवः स्वः इन महाव्याहृतियों का उच्चारण करके अग्नि का प्रणयन करते हैं। गोभिल कात्यायनादि गृह्य सूत्रों के अनुसार 'भू र्भुवः स्वरित्यभिनुख प्रणयन्ति' आगाराद ब्राह्मणस्य वा राजन्यस्य वा वैश्यस्य वा बहुपशो गृहाद् अग्नि माहृत्य अग्निं प्रणयन्ति। से पवित्र अग्नि का प्रणयन करते हैं। इस अग्नि उद्बोधन मन्त्र में 'उद्बुध्य स्वाग्ने प्रति जागृहि त्वं इष्टापूर्ते संसृजे कामयं च।' हम अग्नि देव से उद्बुद्ध होने की प्रार्थना करते हैं

और पुनः प्रार्थना करते हैं कि त्वं प्रति जागृहि घर-घर मे आप जागरुक हों। हे अग्निदेव आप और आपका उपासक दोनों मिलकर इष्टापूर्ते ससृजेयाम्' यज्ञादि कार्य और धर्मार्थवादी कूप, धर्मशाला, चिकित्सालय, विद्यालय आदि शुभ कार्यों का निर्माण करें।

इस प्रकार मानवों मे देवत्व पूजा तथा संगतिकरण या समाज सगठन और इष्टापूर्त्यर्थ दान देना रूप यज्ञ देव यज्ञ हवन मे किया जाता है। हम तो वेदों के द्वारा किये गये यज्ञ का विस्तार इस पृथिवी मे करते हैं। यज्ञस्तापते सप्त होता'।

'भू र्भुवः स्वः' इन तीनों का सामंजस्य होना चाहिये इसका आदेश हमें ओ३म् भू र्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्य' स्वाहा तथा ओ३म् भूर्भुव स्वराग्नि वाय्वादित्येभ्य. प्राणापान व्यानेभ्य' स्वाहा। और ओ३म् आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भू र्भुव स्वरोम्' स्वाहा से मिलता है। देवयज्ञ का लक्ष्य केवल भौतिक अग्नि मे हवन नहीं है, आधिदैविक आधिभौतिक, आध्यात्मिक तीनों क्षेत्र मे हवन अर्थात् आत्मोत्सर्ग है जिसमे देवत्व की पूजा, सभा-समिति तथा समाज का सगठन और समाज कल्याणार्थ धर्मार्थ स्थान का निर्माण हो। समाज के कल्याण मे अपने व्यक्तित्व के महत्व का दर्शन हो। इसी महत्व के आधान के लिये ही देवयज्ञ मे भू र्भुवः स्वः इन महाव्याहृतियों से बार-बार आहुतियां दी जाती हैं।

प्रसिद्ध गायत्री मन्त्र ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्' का भी महत्व भी उसी भूर्भुवः स्वः के कारण है। भू र्भुवः स्वः से व्याहृत होने वाले द्यावा भूमि और अन्तरिक्ष तथा अग्नि वायु और आदित्य और प्राण अपान और व्यान सभी उस परमात्म ज्योति के वरेण्य भर्गः को धारण करते हैं। हम भी उनके साथ एकात्मता का अनुभव करते हुये उस परमात्म ज्योति को धारण करके दिव्यता को प्राप्त करें। सबका प्रेरक, सब का अन्तर्यामी, वह परमात्मा हमारी बुद्धि को सत्कार्य मे सदुद्देश्य मे प्रेरित करें।

ओ३म् भू र्भुव· स्वः से पुष्ट गायत्री मन्त्र इतना पवित्र माना जाता है कि उसके उच्चारण की योग्यता तथा पवित्रता के लिये प्राणायाम् या आचमन करना आवश्यक समझा जाता है। सध्या मे प्रथम गायत्री मन्त्र से पूर्व तीन बार प्राणायाम का विधान है। और सध्या के मध्य मे गायत्री मन्त्र के उच्चारण से पूर्व शन्नो देवी मन्त्र से तीन बार आचमन करना पड़ता है। गायत्री मन्त्र से पवित्र होकर हम मनसा परिक्रमा के मन्त्रों के द्वारा ४ छक्के चौबीस बार नमस्कार करते हैं और पूर्व पश्चिम दक्षिण उत्तर ध्रुव और ऊर्ध्व छ हो पहल मे भगवान के सामने आत्म समर्पण करते हैं योऽस्मान् द्वेष्टि य वय द्विष्मस्त वो जम्भेदध्म। और सध्या की समाप्ति मे 'नमः शम्भवाय च मयोभवाय च।' नमः शिवाय च शिव तराय च॥

से तीन बार नमस्कार करते हैं। और देव यज्ञ मे भी ओ३म् भू र्भुवः स्वः से अग्नि प्रणयन से पूर्व ओ३म् अमृतो पस्तरणमसि स्वाहा, ओ३म् अमृतापिधानमसि, स्वाहा। ओ३म् सत्य यशः श्रीमयि श्री श्रयताम् स्वाहा से तीन आचमन कर अङ्ग स्पर्श करते हैं और अपने को पवित्र कर लेते हैं।

'भू र्भुवः स्वः शब्द ब्रह्म क्षेत्र मे ऋग् यजुः साम है और तीनो की समन्वय रूप अथर्व वेद है। भू र्भुवं स्वः समाज क्षेत्र मे ब्राह्मण राजन्य वैश्य हैं और तीनो मे समन्वय करने वाला शूद्र है। परिवार मे भूः माता है, भुवः पिता है स्वः आचार्य है। परिवार तथा समाज सम्मिलित है। राष्ट्र भू जनता है, भुवः सनद है और स्व. राष्ट्रपति सेना मे भू-भू सना है भुवः जलसेना है। और स्वः आकाश सेना है। भू जाग्रत् अवस्था है भुवः स्व प्नावस्था है और स्वः सुषुप्ति है। इस प्रकार हमें स्व सर्वत्र परमात्मा की भूर्भुव स्वरात्मक महाव्याहृतियों का दर्शन करना चाहिए तभी हमारा जीवन धन्य होगा, पवित्र होगा और सफल होगा। अन्त में एक बार पुनः हम कहें ओ३म् ज्योतिरमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरो३म्" ॥

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः" ॥

★आचार्य वात्सायन
वैदिक शोध संस्थान, कानपुर

महर्षि के जीवनकाल में लिखा गया—

महर्षि दयानन्द का प्रथम जीवन चरित

★डा० भवानीलाल भारतीय एम०ए० पी-एच०डी०

जैसा कि मैं अपने पूर्व लेख (आर्यमित्र १०-१२-६७) मे बता चुका हु दिग्विजयार्क का तृतीय खण्ड स्वामी जी के स्वर्गारोहण के पश्चात् प्रकाशित हुआ। उसकी एक अत्यन्त जीर्णशीर्ण प्रति मुझे आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् प० युधिष्ठिर जी मीमांसक के पुस्तकालय मे देखने के लिए मिली। इस खण्ड मे १२ मयूख हैं जिनमे निरूपित विषयों का यहां क्रमश परिचय दिया जायगा। प्रथम मयूख का नाम है 'दामोदर समालोचनोत्तर' इसमे बूंदी के किसी साधु अमृतराम और लेखक पं० गोपाल राव हरि के बीच का पत्र व्यवहार संकलित किया गया है। दिग्विजयार्क के लेखक ने अपने ग्रंथ के द्वितीय खण्ड में स्वामी जी के उदयपुर प्रवास का जो विवरण उपस्थित किया था, साधु अमृतराम नाम के किसी नवीन वेदान्ती ने इस विवरण मे कोई तथ्य सम्बन्धी भूल बताई थी, तथा आर्यसमाज के सिद्धान्तों और कार्यों विषयक कतिपय प्रश्न भी पूछे थे। यह पत्र व्यवहार स्वामी जी के जीवन काल मे ही (चैत्र बदी १४ गुरुवार १९३९ से प्रारम्भ होकर अगस्त १८८३ तक) हुआ था। प० गोपालराव हरि ने स्वामी जी की ओर से साधु अमृतराम के प्रश्नों को युक्तियुक्त उत्तर दिया था,

द्वितीय मयूख मे श्री महाराज के बम्बई प्रवास का इतिवृत्त निबद्ध हुआ है। बम्बई के सात मास के प्रवास काल में स्वामी जी ने तीन मुख्य कार्य किये—गोरक्षा हेतु अपील छपवाकर देश वासियों में हस्ताक्षरार्थ प्रकाशित की, (इसी प्रसंग में लेखक ने गोकरुणानिधि ग्रन्थ भी अपने ग्रन्थ के इस द्वितीय मयूख मे छाप दिया है। उसके साथ ही 'सही करने का पत्र' शीर्षक से उस पत्र की नकल भी छापी गई है जो स्वामी जी ने गोरक्षा हेतु अपील के रूप मे प्रचारित किया था, और जिस योजना के अनुसार लाखों करोड़ो [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] से लिया [illegible]।

तृतीय मयूख में थियोसोफिस्टों से स्वामी दयानन्द का मतभेद तथा उसके निवारण हेतु दिये गये सुप्रसिद्ध बम्बई व्याख्यान का विवरण है। यहां यह बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि दिग्विजयार्क के लेखक पं० गोपालराव हरि ने थियोसोफिकल सोसाइटी के संस्थापक द्वय कर्नल आल्काट और मैडम ब्लैवैट्स्की के उन समस्त अंग्रेजी पत्रों का हिन्दी अनुवाद 'पाखण्ड तिमिर नाशक' शीर्षक पुस्तक मे छापा था जो समय २ पर उक्त महानुभावों ने स्वामी जी के सेवा में अमेरिका से प्रेषित किये थे और जिनमे स्वामी जी को अपना गुरु और सोसाइटी को आर्यसमाज की शाखा के रूप मे स्वीकार किया है। आर्यसमाज के शोध विद्वानों को इस पुस्तक का अन्वेषण करना चाहिए। इस मयूख में 'थियोसोफिस्टों की गोलमाल पोलपाल' शीर्षक एक लेख उद्धृत किया गया है जिसमें सोसाइटी और आर्यसमाज के बीच के मतभेदों की चर्चा करते हुए कर्नल और मैडम के विचारों की अस्थिरता तथा उनके नित्य के परिवर्तित व्यक्तित्व का विश्लेषण किया गया है। यह लेख स्वामी जी की ओर से मुंबई ओरियंटल प्रेस से छाप कर बम्बई में और अन्यत्र वितरित किया गया था। इसी मयूख मे 'थियोसोफिस्टों की लीला (लाहौर के शिक्षा सभा हाल—University Senate Hall) में थियोसोफिस्टों की एक सभा मे चमत्कार प्रदर्शन का विज्ञापन किया गया था) तथा 'लन्दन नगर मे थियोसोफिस्टों का पाल-पाल' (इसमे लदन के सी० सी० मैसी नामक एक थियोसोफिस्ट के इस सोसाइटी से त्याग पत्र देने का विवरण छापा है) शीर्षक दो अन्य लघु लेख भी छपे हैं। इसी प्रसग मे स्वामी जी द्वारा देश हितैषी पत्र के सम्पादक के नाम लिखे गये एक पत्र की प्रतिलिपि भी छापी गई है जो उन्होंने भारत मित्र (आषाढ सु० ८ गुरुवार १९४० वि०) से [illegible] मिस्टर ए० ओ० ह्यूम के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] था। [illegible] [illegible] ४ [illegible] १९४० को जोधपुर से लिखा था। यहां यह उल्लेखनीय है कि 'दिग्विजयार्क' मे प्रकाशित स्वामी जी के पत्र व्यवहार को पं० भगवद्दत्त जी ने अपने 'ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन' शीर्षक ग्रंथ मे एकत्र कर छाप दिया है।

चतुर्थ मयूख का नाम है—मिथ्यापवाद सम्मार्जन' इसमे मुन्शी इन्द्रमणि की आर्थिक सहायता से उत्पन्न विवाद का उल्लेख है। इन्द्रमणि मुरादाबाद निवासी वैश्य थे वे अरबी और फारसी के विद्वान् तथा इस्लाम के मर्मज्ञ थे। उनका मुसलमानों से लेख बद्ध शास्त्रार्थ और वाद विवाद चलता रहता था। ऐसे ही किसी प्रसग में मुसलमानों ने उन पर अपने मत का अपमान करने का लांछन लगाकर न्यायालय मे वाद उपस्थित कर दिया। इन मुकदमे में आर्थिक सहायता स्वामी जी की अपील पर आर्यजनता ने की। परन्तु मुन्शी जी इस सहायता निधि को हड़पने के इच्छुक थे। स्वामी जी का अभिप्राय यह था कि एक ऐसी स्थायी निधि स्थापित कर दी जाय, जिससे भविष्य मे भी होने वाले ऐसे वाद विवादों में हिन्दुओं का पक्ष लेने वालों की सहायता की जा सके। परन्तु मुन्शी इन्द्रमणि रुपये के मामले मे कच्चे निकले। इस वाद विवाद ने मुन्शी जी और स्वामी जी के बीच की खाई को और अधिक चौड़ाकर दिया। फलस्वरूप न केवल मुन्शी इन्द्रमणि ने ही आर्यसमाज का परित्याग कर दिया, वे स्वामी जी और उनके सिद्धान्तों के भी विरोधी बन गये। उनका एक शिष्य जगन्नाथदास तो इस विरोध को बढ़ाने में सीमा का अतिक्रमण ही कर गया। उसने श्री महाराज के व्यक्तित्व और चरित्र पर तथा उनके सिद्धान्तों पर मिथ्या आक्षेप युक्त अनेक ग्रंथ (लघु ट्रैक्ट) लिखे जो कालान्तर मे प० भीमसेन शर्मा के पुत्र प० ब्रह्मदेव मिश्र द्वारा 'ब्राह्मणसर्वस्व' के इटावा स्थित प्रेस से छपे। इस मयूख मे प्रथम तो मुन्शी इन्द्रमणि का [illegible] देश हितैषी मासिक पत्र के [illegible] सम्वत् १९३९ के अङ्क मे प्रकाशित [illegible] विज्ञापन की नकल छापी गई है। [illegible] मुन्शी जी के शिष्य जगन्नाथ प्रसाद ने 'प्रश्नोत्तरी' (यह पुस्तक अन्वेषणीय है।) नामक कोई पुस्तक इस विवाद के सम्बन्ध में लिखी थी। स्वामी जी ने उसका खण्डन उक्त देश हितैषी पत्र में 'एक उचित वक्ता' के नाम से प्रकाशित कराया। मुन्शी जी का यह पत्र स्वामी जी के उक्त वक्ता के खण्डन मे ही लिखा गया है। पाद टिप्पणी में ग्रन्थ लेखक प० गोपाल राव हरि मुन्शी जी के वक्तव्य की आपत्तिजनक बातों का समाधान भी करते चलते हैं। उसके पश्चात् इसी वक्तव्य के उत्तर में दिये गये उसी उचित वक्ता (स्वामी दयानन्द ने इसी नाम से देश हितैषी मे पत्र प्रकाशनार्थ भेजा था) के पौष शु० १ बुधवार १९३९ के पत्र को भी छापा गया है। दोनों पत्रों पर देश-हितैषी पत्र के सम्पादक की निष्पक्ष टिप्पणी भी छपी थी, उसे भी यहां उद्धृत किया गया है। यहीं मेरठ के आर्यसमाज द्वारा प्रकाशित एक अन्य विज्ञापन को भी उद्धृत किया गया है जो मुन्शी इन्द्रमणि सहायता निधि के हिसाब के विषय में प्रकाशित हुआ था। इसमें विस्तारपूर्वक उस राशि का विवरण छापा गया है जो विभिन्न आर्यसमाजों तथा व्यक्तियों द्वारा सहायता हेतु एकत्रित की गई थी। इसमें व्यय का हिसाब भी दिया गया है। इस सारे विवाद पर ग्रंथकार ने अपनी टिप्पणी भी दी है।

मुन्शी इन्द्रमणि विषयक इस विवाद पर और भी बहुत कुछ लिखा और छपा मुन्शी जी के शिष्य जगन्नाथदास ने 'मुन्शी इन्द्रमणि का इलतिमास और स्वामी दयानन्द का संन्यास' शीर्षक एक पुस्तक लिखी जो मुन्शी नारायणदास नामके उनके एक अन्य शिष्य ने छपवाई थी। इसका उत्तर 'सदसद् प्रदर्शकानुप्रसास पच्चीसी' के नाम से किसी ठाकुर दास नामक व्यक्ति ने लिखा। यह भी इसी मयूख मे छपा है। बाबू चंदनगोपाल गोंडा मुल्क अवध ने भी मुन्शी जी के इलतिमास नाम का उत्तर लिखा था। देश हितैषी पत्र में प्रकाशित इस उत्तर को भी यहां उद्धृत किया गया है। मुंशी इन्द्रमणि को इस विवाद के फलस्वरूप आर्यसमाज मुरादाबाद के प्रधान पद से २९ मई १८८३ को हटा दिया गया। इसी प्रकार उनके शिष्य जगन्नाथदास भी उक्त समाज के पुस्तकाध्यक्ष पद से मुक्त किये गये। मुंशी दुर्गाचरण आर्यसमाज के नये प्रधान नियत हुए। उस समय उक्त समाज के मन्त्री सुप्रसिद्ध अथर्ववेद भाष्यकार क्षेमकरणदास (त्रिवेदी) थे।

दयानन्द दिग्विजयार्क

आलोच्य ग्रन्थ का पंचम मयूख श्री महाराज की उदयपुर यात्रा का विवरण प्रस्तुत करता है। इसमें महाराज उदयपुर द्वारा महाराज के सत्कार तथा स्वामी जी के उस प्रसिद्ध वसीयतनामे का मूलपाठ छापा गया है जो 'स्वीकार पत्र' के नाम से प्रसिद्ध है। उदयपुर से प्रस्थान करते समय श्री महाराज को महाराणा सज्जनसिंह ने जो प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया उसकी प्रतिलिपि भी इसी मयूख में दी गई है। छठा मयूख स्वामी जी की शाहपुरा यात्रा से सम्बन्धित है। उदयपुर नरेश ने स्वामी जी का जिस प्रकार सत्कार अभिनन्दन किया, उसके प्रति कृतज्ञताज्ञापनार्थ देश की विभिन्न आर्यसमाजों ने महाराणा को एक ही इबारत के धन्यवाद पत्र भेजे। इनके उत्तर में महाराणा ने भी तत् तत् आर्य समाज को पुनः धन्यवादार्थ एक पत्र प्रेषित किया। यह पत्र मेवाड़ की महद्राज सभा के मन्त्री श्री मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या (परोपकारिणी सभा के प्रथम उपमन्त्री) के हस्ताक्षरों से आश्विन कृ० १४ दि० २९-९-८३ को भेजा गया था। शाहपुराधीश द्वारा प्रदत्त प्रशंसा पत्र, जो श्री महाराज के जोधपुर प्रस्थान के समय अर्पित किया गया, भी इस मयूख में छपा है। स्वामी जी जोधपुर के लिये शाहपुरा से प्रस्थित हुए। २७ मई ८३ को अजमेर पहुंचे। २९ को पाली स्टेशन पर उतरे। उन दिनों रेल पथ पाली तक ही था। यहां से जोधपुर को ले जाने के लिये महाराज की ओर से हाथी रथ पालकी आदि की व्यवस्था थी।

सप्तम मयूख का नाम लेखक द्वारा 'अनिष्टोत्थान' दिया गया है। यह नामकरण यथार्थ ही है। स्वामी जी के जोधपुर में अस्वस्थ होने का विवरण तिथिवार दिया गया है। इसी प्रसंग में स्वामी जी का जोधपुर त्याग, आबू एवं अजमेर प्रस्थान तथा रोग विषयक [illegible] विवरण लिखा गया है। अष्टम मयूख [illegible] शीर्षक है। इसमें महाराज के [illegible] त्याग का विवरण [illegible] ने विस्तारपूर्वक [illegible] किया हुआ है। देह त्याग के पश्चात् अन्त्येष्टि का विवरण भी दिया गया है। ([illegible] जीवनकारों ने यहां से ही [illegible] लिया है। —लेखक) '[illegible]' शीर्षक नवम मयूख में उस समय के प्रसिद्ध समाचार पत्रों द्वारा श्री महाराज की दिवंगत आत्मा के प्रति अर्पित शोकांजलियों का संग्रह किया गया है। (इन शोकांजलियों को अब पृथक् पुस्तक रूप में छापा जाना चाहिये। आर्य प्रकाशक इस सम्बन्ध में मुझ से पत्र व्यवहार करें। —लेखक) यहां यह द्रष्टव्य है कि ग्रन्थकार ने तत्कालीन हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी, उर्दू और बंगाली के उन सभी प्रसिद्ध पत्र-पत्रिकाओं के उन श्रद्धांजलि वाले लेखों का सारसंकलन करने का सराहनीय प्रयास किया है जो श्री स्वामी जी के प्रसंग में लिखे गये थे। इन पत्रों के नाम इस प्रकार हैं १-हिन्दी प्रदीप, प्रयाग, (हिन्दी के सुप्रसिद्ध निबन्धकार पं० बालकृष्ण भट्ट इसके सम्पादक थे) २-भारत बन्धु अलीगढ़, ३—शुभचिंतक शाहजहांपुर (यहां श्रद्धांजलि शिखरिणी छन्द में छपी है) ४—बिलासपुर समाचार, मध्यप्रदेश (इस पत्र की श्रद्धांजलि चौपाई और सोरठा छन्दों में हैं) ५- सम्पादक बनारस प्रेस, (कवि केदार शर्मा की सोरठा दोहा और कवित्त युक्त श्रद्धांजलि ६- वेशोपकारक लाहौर (उर्दू पत्र) ७—विक्टोरिया पत्र स्यालकोट (उर्दू) ८-आर्य समाचार मेरठ (इस उर्दू पत्र) में स्वामी जी की प्रशंसा में उर्दू नज्म छपी है) ९—बदायूं समाचार (उर्दू) १०-बंगाली कलकत्ता (अंग्रेजी) ११—ट्रिब्यून लाहौर १२-इण्डिया एम्पायर कलकत्ता १३—हिन्दू पेट्रियट (कलकत्ता) १४-इण्डियन क्रानिकल कलकत्ता १५-हिन्दू आब्जर्वर, मद्रास १६-पंजाब टाइम्स रावलपिंडी (१७) गुजरात मित्र, सूरत (गुजराती) (१८) भारतमित्र कलकत्ता।

उपर्युक्त पत्रों के अतिरिक्त उदयपुर महाराणा श्री सज्जनसिंह द्वारा डिंगल पद्यों में लिखी गई शोकाञ्जलि, कविराज श्यामलदास के २ पद्य तथा कृष्णसिंह चारण कवि) का एक डिंगल [illegible] उद्धृत किया गया है। [illegible] मुन्नालाल [illegible] बख्श, [illegible], [illegible] त्रिपाठी ने [illegible] कविराज [illegible] और [illegible] तथा में [illegible] मुंशी [illegible], सरस्वती तह [illegible] भीम ने अपने दि० २-१२-८३ के एक पत्र में दी थी। इसी मयूख में स्वामी जी के वैतनिक लेखक पं० ज्वालादत्त शर्मा (वैदिक यन्त्रालयस्थ) द्वारा रचित ३१ श्लोक तथा केम्ब्रिज विश्वविद्यालय में अध्ययन रत संस्कृत कवि बैरिस्टर रामदास छबीलदास वर्मा के २० श्लोक स्वामी जी के वियोग के सम्बन्ध में छपे हैं। इन श्लोकों का विवेचन मैंने अपने शोध ग्रन्थ 'आर्यसमाज की संस्कृत भाषा और साहित्य को देन' में विस्तारपूर्वक किया है। यह शोध-ग्रन्थ अब छपने वाला है।

दशम मयूख में स्वामी जी के देहावसान के पश्चात् परोपकारिणी सभा के प्रथम अधिवेशन का इतिवृत्त लिखा गया है। यह अधिवेशन दि० २८-२९ दिसम्बर ८३ को अजमेर में उदयपुर की कोठी में हुआ। इसमें प्रशंसित सभा के २१ सभ्य उपस्थित थे। सर्वप्रथम सभा के मन्त्री पंड्या जी ने प्रारम्भिक वक्तव्य के रूप में श्री महाराज के परम धाम पधारने के पश्चात् सभा के इति कर्तव्यों के विषय में सभासदों को परिचित कराया। कई उपयोगी निश्चय किये गये। यह सभाधिवेशन परोपकारिणी सभा के उपसभापति रा० ब० मूलराज की अध्यक्षता में हुआ था क्योंकि अध्यक्ष पद पर आसीन महाराणा सज्जनसिंह उन दिनों अस्वस्थ थे। इस अधिवेशन में देश की कई प्रमुख आर्यसमाजों के प्रतिनिधि भी सम्मिलित हुये थे। अधिवेशन के अन्तिम दिन स्वामी जी के प्रमुख शिष्य, सुप्रसिद्ध क्रांतिकारी संस्कृत विद्वान् पं० श्याम जी कृष्णवर्मा की वक्तृता हुई। (परोपकारिणी सभा के प्रारम्भिक अधिवेशनों के विवरण सभा द्वारा प्रकाशित हुये हैं। इनसे आर्यसमाज के प्रारंभिक इतिहास पर अच्छा प्रकाश पड़ता है।)

एकादश मयूख में स्वामी जी के स्वमन्तव्यामन्तव्य (सत्यार्थप्रकाश के परिशिष्ट रूप में प्रकाशित) [illegible] किये गये हैं 'आत्मनिवेदन' शीर्षक द्वादश मयूख इस ग्रन्थ का अन्तिम भाग है। इसमें स्वामी जी के व्यक्तित्व [illegible] इसी मयूख से [illegible] पं० [illegible] ग्रन्थ [illegible] करके प्रकाशित किया था। पं० भीमसेन शर्मा ने अपने मासिक पत्र 'आर्य सिद्धान्त' में उक्त पुस्तक का विस्तारपूर्वक खण्डन संस्कृत और हिन्दी में लिखकर धारावाही रूप में प्रकाशित किया था। वहां इस ग्रन्थ के लेखक का नाम राममोहन शर्मा बताया गया है। कहते हैं यह नाम तो कल्पित ही है, वस्तुतः महामोह विद्रावण के लेखक उस समय के काशी के विश्रुत पण्डित गण थे। इस पं० मोहनलाल के अनुज पं० लोकेश्वर ने भी स्वामी जी के सिद्धान्त के खण्डन में कोई ग्रन्थ लिखा था, नाम का पता नहीं चलता। यह ग्रन्थ भी अन्वेषणीय है।

पूना में स्वामी जी के कार्यों और सिद्धान्तों के विषय में एक मराठी पुस्तक 'लोक हितवादी' प्रकाशित हुई थी जिसमें स्वामी जी की प्रवृत्तियों की प्रशंसा पूर्ण समीक्षा की गई थी। इसका मूल और हिन्दी अनुवाद भी इसी मयूख में दिया गया है। स्वामी जी के बम्बई में एक पं० रामलाल षट्शास्त्री से हुये शास्त्रार्थ का भी विवरण इस मयूख में उपलब्ध होता है। इस शास्त्रार्थ के मध्यस्थ भाऊ जी शास्त्री थे। पं० रामलाल ने कालान्तर में 'मूर्ति प्रकाशक' नामक एक ग्रन्थ मूर्ति पूजा के समर्थन में भी लिखा था। पं० चतुर्भुज और स्वामी दयानन्द के विषय में एक मासिक पत्र 'प्रयाग' की माघ शु० ५ सं० १९३९ के अङ्क में प्रकाशित सम्मति भी उद्धृत की गई है। ग्रन्थान्त के इस मयूख में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र सम्पादित, 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' के १८७५ ई० के किसी अङ्क के एक लेख को भी यहां उद्धृत किया गया है जिसमें काशी के पण्डित समुदाय का उपहास पूर्ण चित्रण किया गया है। काशी के पण्डितों ने स्वामी जी के मूर्तिपूजा खण्डन के विरोध में जो व्यवस्था दी थी, उसकी आलोचना प्रयाग के 'हिन्दी प्रदीप' ने 'दयानन्द की दुरवस्था—महाराज महामोह और कुतर्कानन्द बाबू' शीर्षक से प्रकाशित की थी। यह [illegible] भी भारतेन्दु [illegible] इसे भी यहां उद्धृत किया गया है। [illegible] करके [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है।

★

पण्डित परिभाषा और आचार्य विदुर

★ पं० शिवदयालु

आचार्य विदुर महाभारत कालीन एवं महान् तपस्वी त्यागी एवं भारतीय राजधर्म के उच्चकोटि के ज्ञाता एवं वक्ता थे भारत के महान् चक्रवर्ती साम्राज्य के गृह्य एवं अर्थ विभागों के मन्त्री थे।

५०० से अधिक श्लोकों में राज धर्म की जो विशद व्याख्या आपने की है वह युग युगान्तर पर्यन्त आपकी कीर्ति को विद्यमान रखने वाली है विदुर जी के राजनीति के उपदेश विदुर प्रजागर के नाम से विख्यात हैं।

इन उपदेशों के आरम्भ मे आपने पण्डित शब्द की जो व्याख्या की है जनहित की दृष्टि से यहां उसका वर्णन किया जाता है।

विदुर प्रजागर के प्रथम अध्याय में पण्डित शब्द की व्याख्या मे १६ श्लोक रचे गये हैं। जिनका विवेचन इस लेख में करना अभीष्ट है—

१—आत्म ज्ञान-आत्म तत्व (जीव+ब्रह्म) के स्वरूप का ज्ञान।

२—समारम्भः=परोपकार की वृष्टि से इष्ट एवं आपूर्त कर्मों का अनुष्ठान।

३—तितिक्षा—सुख, दुःख शीतोष्ण हर्ष शोक आदि द्वन्द्वों का सहन।

४—धर्मनित्यता—यमनियमादि कर्मों का निष्ठापूर्वक नियम से सेवन।

५—प्रशस्त कर्माणि निषेवते—श्रेष्ठ कर्मों का ही सदा आचरण करना।

६—निन्दित कर्माणि न सेवन-निन्दित नीच कर्मों का कभी सेवन न करना।

७—अनास्तिकत्व—परमात्मा एवं वेद ज्ञान में आस्थावान् होना।

८—श्रद्धानां—सत्य में अनन्य प्रीति का धारण करना।

९—क्रोधो हर्षश्च दर्पश्च ह्रीस्तम्भो

१४—मान्यमानिता यमर्थान्नापकर्षन्ति क्रोध, हर्ष, दर्प (अहंकार), ह्री (लज्जा), स्तम्भ (विरोध) तथा मान्यमानिता जिसको जीवन के महान् लक्ष्य से भ्रष्ट नहीं करते।

१५—यस्य कृत्यं न जानन्ति मन्त्रं वा मन्त्रितं परे न जानन्ति—जिसकी योजनाओं मन्त्रणाओं एवं निश्चयों को शत्रु न जान पावे।

१६—यस्य संसारिणी प्रज्ञा धर्मार्थौ अनुवर्तते-जिसकी प्रवीण बुद्धि आध्यात्मिक आधिभौतिक उन्नति सम्बन्धी कार्यों में निरत रहती है।

१७—कामादर्थं वृणीते यः—जो काम्य कर्म अर्थात् धन, सम्पत्ति ऐश्वर्य की वृद्धि एवं उनके उपभोगों की अपेक्षा राष्ट्र की रक्षा, उन्नति एवं उसके निवासियों मे दैवी गुणों के विकास को महत्व देता है।

१८—यथाशक्ति चिकीर्षन्ति-जो कार्य की साधना मे पूर्ण मनोयोग से प्रवृत्त होते हैं।

१९—यथाशक्ति च कुर्वते-और अपनी शक्ति को तोलकर कार्य का ताना तनते हैं।

२०—न किंचिद्व मन्यन्ते-जीवन के छोटे से छोटे कार्य की भी कभी उपेक्षा नहीं करते।

२१—क्षिप्रं विजानाति—जो किसी बात को अथवा कार्य के रहस्य को तुरन्त जान लेता है।

२२—चिरं शृणोति—दीर्घकाल तक उस पर विचार करता है।

२३—विज्ञायचार्थं भजते न कामात्—अपने राष्ट्रीय कर्तव्य के रहस्य को जानकर एवं स्वार्थ त्यागकर उसकी साधना मे जो रत होता है।

२४—नासंवृत्तो व्युपयुंक्ते परार्थे-बिना सोचे समझे कभी किसी के काम मे हाथ नहीं डालता।

२५—नाप्राप्यमभिवाञ्छन्ति-प्राप्त न होने वाली वस्तु की कभी कामना नहीं करते।

२६—नष्टं नेच्छन्ति शोचितुम्-जो वस्तु नष्ट हो गई उसका सोच नहीं करते।

२७—आपत्सु न मुह्यन्ति-जो कभी आपत्तियों के आने पर हतप्रभ या हतचेष्ट नहीं होते अर्थात् धैर्यपूर्वक आपत्तियों का सहन करते हुये अपने ध्येय की ओर अग्रसर होते हैं।

२८—निश्चित्य यः प्रक्रमते-जो मनुष्य भलीभांति सोच विचार कर किसी कार्य मे प्रवृत्त होता है।

२९—नान्तर्वसति कर्मणः—कार्य का आरम्भ कर बीच में फिर विराम नहीं करते।

३०—अवन्ध्यकालः-जिसके जीवन का एक क्षण भी कभी व्यर्थ नहीं जाता।

३१—वश्यात्म=जो अपने ऊपर पूर्ण नियन्त्रण रखता है।

३२—आर्य्य कर्माणि रज्यन्ते=जो सदा श्रेष्ठतम कर्मों के अनुष्ठान में ही रत रहते हैं।

३४—भूति कर्माणि कुर्वते=जो सदा आध्यात्मिक और आधिभौतिक उत्कर्षयुक्त कर्मों के करने में ही संलग्न रहते हैं।

३४—हित मात्रसूयन्ति=किसी भी श्रेष्ठ कर्म की अवहेलना व निन्दा कभी करते।

३५—न हृष्यत्यात्म सम्माने=जो अपने सम्मान प्रतिष्ठा आदि से कभी हर्षित नहीं होता।

३६—नावमानेन तप्यते=जो अपमानित होने पर कभी दुखित नहीं होता।

३७—गांगोह्रद इवाक्षोभ्यः=जो सागर की भांति कभी क्षोभ को प्राप्त नहीं होते।

३८—सर्वभूतानां तत्वज्ञ-जो मानव अग्नि, वायु, आदित्य, सोम, नक्षत्र पृथिवी जल, विद्युत आदि के गुणों को तथा उनसे प्राप्त होने वाले लाभों को भलीभांति जानता है।

३९—सर्व कर्मणाम् योगज्ञः-जो सब कर्तव्य कर्मों को कुशलता पूर्वक करने की क्षमता रखता है।

४०—मनुष्याणां उपायज्ञः=जो समस्त मानवी उद्योग एवं प्रयत्नों को भलीभांति जानता है अथवा ज्ञानपूर्वक अपने सहायकों का चयन करता है।

४१—प्रवृत्तवाक्=जो मनुष्य सदा नपे तुले शब्दों का प्रयोग करता है।

४२—चित्र कथः-प्रभावशाली कथन करने की क्षमता अथवा अर्थ गाम्भीर्य को प्रकट करने की योग्यता रखता है।

४३—ऊहवान्=जो युक्ति एवं तर्क पूर्ण प्रवचन करने वाला होता है।

४४—प्रतिभानवान्=जो प्रतिभा अर्थात् ज्योतिष्मति बुद्धि वाला होता है।

४५—आशु ग्रन्थस्य वक्ता=अविलम्ब ज्ञान ग्रंथों की संगति लगाने वाला अथवा उनके रचने की क्षमता वाला होता है।

४६—श्रुतं प्रज्ञानुगं यस्य=जिसका वेद शास्त्र आदि का ज्ञान बुद्धि के अनुकूल हो।

४७—प्रज्ञाचैव श्रुतानुगा=जिसकी बुद्धि वेद शास्त्र के अनुकूल गति करने वाली हो।

४८—असम्भिन्नार्य्य मर्यादः=जिसने आर्य मर्यादाओं का अपने जीवन में दृढ़तापूर्वक पालन किया है और कभी किसी मर्यादा का उल्लंघन नहीं किया है।

४९—अर्थ महान् तमासाद्य विद्यार्थ्यमप्रभुत्वमुत्कृष्टः।

विपुल सम्पत्ति एवं महान् साम्राज्य को पाकर भी जो निरभिमानी हो और विनम्र होता है।

५०—विद्या मैश्वर्यमेव वा=अथवा उच्चकोटि की विद्या तथा ऐश्वर्य को पाकर भी जो निरभिमानी एवं विनम्र रहता है वही पण्डित कहाता है ★

हिन्दुस्तान महासागर के द्वीप—

मारीशस के विभिन्न नाम

★ जगदीश शर्मा, मारीशस

मारीशस ३ हो ४ सौ शताब्दी से आबाद है क्योंकि यह भारत तथा अरब के व्यापारियों के रास्ते में आता था इन लोगों ने उस द्वीप का नामकरण किया था। निर्जन देश का यदि भारतियों ने "श्वेत द्वीप" नाम रखा तो अरब के लोगों ने उसे "दीना अरोबी" नाम दिया। संस्कृत के विद्यार्थियों को जल्दी मालूम होगा कि "दीना" द्वीप शब्द से व्युत्पन्न है।

बहुत दिनों तक मत प्रकट किया जाता था कि एक बार उस निर्जन देश में किसी वस्तु पर कुछ लिखा हुआ दिखाई दिया था। लोगों का ख्याल था कि यूनानी भाषा को व्यवहृत किया गया था। आज कल यह माना है कि यूनानी भाषा नहीं, संस्कृत का प्रयोग किया गया था।

अरब के लोग दक्षिण मारीशस के उस ग्राम में जिसे अब ब्लेड्स पोर कहा जाता है, माल रखकर चले जाते थे। उनके लिये मानो मारीशस गोदाम बन गया है।

सोलहवीं सदी के आरम्भ में पुर्तगाल से लोग आये जिन्होंने टापू को "सेरने" नाम दिया। उनकी भाषा में हंस को सेरने कहा जाता है। उनकी दृष्टि में मारीशस हंस द्वीप था।

यह नाम सुरक्षित न रहा क्योंकि एक ही सप्ताह द्वीप पर रह कर वे लोग चले गये उसी सदी के अन्त में डचों का आगमन हुआ। जिस पक्षी को हंस समझा गया था वास्तव में वह दोदो था।

(शेष पृष्ठ २१ पर)

आर्यसमाज के नियम

—पूर्णचन्द्र एडवोकेट

आर्यसमाज को स्थापित हुए ९० वर्ष से अधिक हो चुके। और १९७५ में उसकी स्थापना शताब्दी मनाई जानी है।

कभी कभी ऐसा प्रतीत होता है कि आर्यसमाज क्या है उसके समझने में कभी कभी बड़ी भूल हो जाती है।

महर्षि दयानन्द ने गुरु विरजानन्द से दीक्षा प्राप्त करके वैदिक धर्म का प्रचार का कार्य आरम्भ किया। और कई वर्ष प्रचार करने के पश्चात् अपने प्रचार को स्थाई और विधि पूर्वक रूप देने के लिए आर्यसमाज की स्थापना की।

सबसे पहला आर्यसमाज राजकोट मे बना। उसके नियम क्या थे कहीं पता नहीं चलता। १८७५ मे बम्बई में आर्यसमाज स्थापित हुआ उसके नियम और उद्देश्य बहुत थे और उनमे उपनियम और नियम दोनों सम्मिलित थे। १८७७ मे लाहौर मे आर्यसमाज स्थापित हुआ और उसी अवसर पर ये दस नियम बनाये गये जो अब आर्यसमाज के नियमो के नाम से प्रसिद्ध है।

महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र मे जो मास्टर आत्माराम जी ने रखा और प्रकाशित किया उसमें इनको नियम और उद्देश्य दोनों रूप मे प्रदर्शित किया गया। बाद मे जहाँ तक मेरा ध्यान है कुछ समय तक नियम और उद्देश्य दोनों शब्दो का प्रयोग होता रहा और फिर केवल नियम शब्द प्रचलित हो गया।

इन दस नियमो मे केवल छठा नियम ऐसा है जिसमें आर्यसमाज का शब्द आया है और उद्देश्य शब्द का प्रयोग हुआ है। इनके देखने से विदित होता है कि नाम और उद्देश्य दोनो इस नियम के अन्तर्गत प्रदर्शित किये गए हैं इससे विदित होता है कि उद्देश्य बड़ा सार्वजनिक और विशाल है। संसार शब्द से अभिप्राय है कि सारा विश्व इसका कार्य क्षेत्र है और उपकार शब्द की जो परिभाषा दी गई है इससे विदित होता है कि सर्वांग पूर्ण उन्नति इसका लक्ष्य है। शारीरिक, मानसिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति [illegible] दुनियाँ [illegible] [illegible] और [illegible] नहीं है। [illegible] समाज [illegible] है। [illegible] आदमियो [illegible] सकता है [illegible] और [illegible] ही आर्यसमाज समझा जा [illegible] ये बात भी ध्यान में रखनी है कि वेद प्रचार मुख्य उद्देश्य है। और उसके साथ साथ गौण रूप मे परन्तु अति आवश्यक अंग के रूप मे परोपकार सम्बन्धी कार्य भी इसके कार्य क्षेत्र के अन्तर्गत सदैव समझे जायेंगे। ये मानते हुए कि सब भले काम न कोई समाज कर सकता है और न कोई व्यक्ति परन्तु आवश्यकता पड़ने पर देश और काल की परिस्थिति के अनुसार जिस भले कार्य की आवश्यकता होगी वह कार्य इसके अन्तर्गत समझा जाएगा और उसका करना आवश्यक होगा। जैसे अकाल के समय रोटी और अन्न का बाँटना। और बीमारी के समय औषधियों का। अब तक अनुभव यह रहा है कि जब जाति का खतरा था आर्यसमाज सेवा कार्य मे अग्रसर रहा जब मान का खतरा था आर्य समाजियो ने देश को स्वतंत्र कराने मे सहयोग दिया। स्वराज्य मिल जाने पर अधिकारियों की आँखें खुलने मे [illegible] का खतरा है और इसीलिए आर्यसमाज की वेदी मे चरित्र निर्माण और नैतिक उत्थान पर बल दिया जा रहा है।

विचार की दृष्टि से पहले पाँच नियम व्यक्तियो के लिए मन्तव्य और कर्तव्य निर्धारित करने के लिए है इनको हम योग दर्शन की परिभाषा मे नियम कह सकते हैं। बाकी आठ, नौ और दसवें नियम योग दर्शन की परिभाषा मे सामाजिक मर्यादा के लिए इनको यम कह सकते हैं। आर्यसमाज यज्ञ और योग दोनों सिद्धान्तों के प्रचार के लिए है। आर्यसमाज एक विशाल यज्ञ के रूप मे है। इसमे देव पूजा और संगतीकरण के नियम सम्मिलित हैं। पहले पाँच नियम देव पूजा के सम्बन्ध मे है। इनमे वेद और ईश्वर को पुरुषस्तम्भ के रूप मे हमारे सम्मुख रखा गया है। ६ से लेकर ९ तक संगतीकरण और संगठन के नियम हैं और दसवाँ [illegible] [illegible] [illegible] मे [illegible] लक्ष्य [illegible] मे [illegible] [illegible] सम्बन्ध मे अब प्रश्न उपस्थित होता है कि हम अब ये विचार करें कि इसका व्यवहारिक स्वरूप क्या हो। किसी भी मत के या धर्म के अनुयाइयों का रजिस्टर नहीं बन सकता। मुसलमानो का रजिस्टर नही है। अंजुमने तब्लिक ए इस्लाम का रजिस्टर है। ईसाइयो का रजिस्टर नहीं है (Christian missionary Society) का रजिस्टर है। सनातन धर्मियों का रजिस्टर नहीं है सनातन धर्म सभा का है इसी प्रकार आर्यसमाज के क्षेत्र मे आर्यसमाज के प्रचारको और आर्यसमाज की संस्थाओं के प्रबन्धो का रजिस्टर होना चाहिए। स्थापना शताब्दी तक जहाँ तक हो अनुयायियों का नाम सदस्यों और सहायकों मे लिखा जाय और उस अवसर पर ये रजिस्टरों की विधि मे मौलिक परिवर्तन कर दिया जाय। आर्यसमाज सर्वोदय के लिए है सबका उदय और सब का सब प्रकार का उदय इसके उद्देश्य के अन्तर्गत है। आचार्य विनोबा भावे ने दान की भावना [illegible] और सुरक्षित करने के लिए अपनी संस्था का नाम 'सर्वोदय' रखा और इस दृष्टि से ठीक है। मे इस लेख को समाप्त करते हुए सब आर्यसमाजों के सदस्यो और प्रचारको से अनुरोध करूँगा कि वह आर्यसमाज के विशाल और सार्वजनिक स्वरूप को समझकर अपनी कार्य प्रणाली को निर्धारित करें। इसके विशाल स्वरूप को अपनी सामर्थ और शक्ति को सीमित समझकर संकुचित बनाने का यत्न न करें। १९६८ मे हरद्वार मे अप्रैल मास मे कुम्भ का समारोह होगा जो १२ वर्ष के पश्चात् होता है। इसी वर्ष के लिए पाखण्ड खण्डिनी पताका की शताब्दी मनाना मुश्किल हो चुका है मेरी सम्मति मे ये अति आवश्यक है कि इस शताब्दी की रूप रेखा तुरन्त निश्चित और निर्धारित करके उसको मनाने का प्रबन्ध किया जाये जब १८६८ मे महर्षि ने हरद्वार मे पाखण्ड खण्डनी पताका फहराई थी उस समय में भी १२ वर्षीय कुम्भ था उस अवसर पर पताका की शताब्दी मनाना अति आवश्यक हो जाता है। यदि स्वतंत्र रूप से मनाने की व्यवस्था सार्वदेशिक सभा आर्यप्रतिनिधि सभा न कर सके तो गुरुकुल कांगड़ी का उत्सव पर ही इसका कार्यक्रम और इसको अंग बनाया जा सकता है मेरा विचार तो इसी मे है कि शताब्दी स्वतंत्र रूप से मनाई जाये।'

स्वामी दयानन्द और शिक्षा

(पृष्ठ १० का शेष)

अथवा आठवें वर्ष से आगे कोई अपने लड़की और लड़कों को घर में न रख सके पाठशाला में अवश्य भेज देवें जो न भेजें वह दण्डनीय हो।

(देखो सत्यार्थप्रकाश समुल्लास ३)

इससे यह भी विदित होता है कि आरम्भिक शिक्षा का भार राज्य और समाज पर था दरिद्र से दरिद्र और निर्धन से निर्धन परिवार के बच्चे स्कूल इसलिये ही शिक्षा से वंचित रह जाते थे कि उनके अन्न पानी [illegible] नहीं है। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] लिए हर नर नारी को शिक्षा मिलनी चाहिए।

[illegible] आर्यसमाज के नियमो [illegible] भी रक्खा है कि [illegible] विद्या की वृद्धि [illegible] [illegible] है कि आर्य समाज विद्या के प्रचार को सबसे बड़ा पुण्य मानता है और धर्मों मे विद्या और बुद्धि को इतना महत्व नहीं दी गई। यदि कोई मुसलमान [illegible] से बहस करे तो [illegible] जायगा। [illegible] ऐसा ही लिखा है [illegible] क्या तुम ईश्वर [illegible] आर्यसमाज ऐसा नहीं [illegible] मे प्रार्थना की गई है [illegible] बुद्धियो [illegible] [illegible] से [illegible] ज्ञान प्राप्त करने की आवश्यकता है। ★

"व्यक्ति और समाज की उन्नति"

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है वह समाज से पृथक् नहीं रह सकता इसलिये उसके लिये सामाजिक नियमों का पालन करना अत्यावश्यक होता है। इन नियमों का निर्माण समाज की सुव्यवस्था एवं उन्नति के लिये किया जाता है। मनुष्यों के समूह का नाम समाज है। समाज का अच्छा होना मनुष्यों पर और मनुष्यों का अच्छा होना समाज पर निर्भर है। इस प्रकार व्यक्ति की उन्नति समष्टि और समष्टि की उन्नति व्यक्ति की उन्नति पर निर्भर होती है। मनु महाराज एवं ऋषि मुनियों ने मनुष्य समाज को समुन्नत बनाने के लिये मनुष्य के व्यक्तित्व के स्थान पर बल दिया और प्रारम्भ से लेकर मृत्यु पर्यन्त पृथक्-पृथक् षोडश १६ संस्कारों का विधान किया। इन संस्कारों से मनुष्यों की बाह्य एवं आन्तरिक पवित्रता होती है और उनसे संगठित समाज आदर्श समाज होता है। आदर्श समाज में प्रत्येक व्यक्ति को अपनी उन्नति के लिये समान अवसर उपलब्ध होते हैं परन्तु वह किसी दूसरे को हानि पहुंचाकर अपनी उन्नति नहीं कर सकता। मनु महाराज ने व्यष्टि एवं समष्टि की अन्योन्याश्रयी उपयोगिता को समझते हुए व्यवस्था दी।

यमान् सेवेत केवलान् बुधः।
यमान् पतत्यकुर्वाणोनियमान् केवलान् भजन्॥

बुद्धिमान् को चाहिये कि वह यमों का सदा पालन करता रहे केवल नियमों का नहीं। केवल नियमों का पालन करता हुआ और यमों का पालन न करता हुआ गिर जाता है अर्थात् अधोगति को प्राप्त होता है। इसलिये यम और नियम दोनों का ही पालन करना चाहिये। मनु ने दस यम और दस नियमों का उल्लेख किया है। जिनमे ५ यम और ५ नियम मुख्य माने गये हैं इन्हीं पांच यम और पांच नियमों का कथन योग दर्शनकार ने निम्न सूत्रो मे किया है—

अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्या परिग्रहाः यमाः शौच सन्तोष तपः स्वाध्येश्वर प्रणिधानि नियमः।

अहिंसा किसी को दुःख न पहुंचाना सत्य सदा सत्य भाषण करना, अस्तेय चोरी न करना, ब्रह्मचर्य उपस्थेन्द्रिय का संयम कर वीर्य संरक्षण करना, अपरिग्रह लोलुपता एवं स्वत्वाभिमान से रहित होना अर्थात् संग्रही न होना ये पांच यम हैं। शौच सब प्रकार की पवित्रता, संतोष पुरुषार्थ के उपरान्त हानि व लाभ में शोक तथा हर्ष न करना, तपः कष्ट सहनपूर्वक भी धर्मयुक्त कर्मों का अनुष्ठान करते रहना, स्वाध्याय वेद का पढ़ना-पढ़ाना, ईश्वर प्रणिधान ईश्वर की भक्ति विशेष में आत्मा को लगाये रखना। ये पांच नियम हैं।

यम और नियमों का सेवन करना व्यक्ति तथा समाज को सुव्यवस्थित एवं समुन्नत बनाने के लिये परम आवश्यक है। मनु महाराज तथा अन्य ऋषि मुनियों ने व्यक्ति एवं समाज के चरित्र निर्माण के लिये वेद प्रतिपादित वर्णाश्रम व्यवस्था पर विशेष बल दिया है और उनके अनुष्ठेय कर्मों का विस्तार से प्रतिपादन किया। इनकी जानकारी के लिये महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती कृत सत्यार्थप्रकाश के तृतीय एवं चतुर्थ समुल्लास का अध्ययन करना उपयुक्त होगा। आदर्श समाज के निर्माण के लिये गुण, कर्म, स्वभावानुसार ही वर्णों की व्यवस्था होनी चाहिये जिससे प्रत्येक को अपनी योग्यतानुसार समाज मे स्थान प्राप्त हो सके। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र ये चार वर्ण हैं और जीविकार्थ समाज सम्मत निर्दिष्ट साधनों को चुन

सामाजिक समस्याएँ

कर अपनाने से मनुष्य इन वर्णों को प्राप्त होता है जन्म से नहीं। इसी बात को मनु ने—"शूद्रो ब्राह्मणता येति ब्राह्मणश्चेति शूद्रताम्। क्षत्रियाज्जात मेवन्तु विद्याद्वैश्यात्तथैव च॥

कहकर स्पष्ट किया। शूद्र ब्राह्मण भाव को और ब्राह्मण शूद्र भाव को प्राप्त हो जाता है और क्षत्रिय एवं वैश्य से उत्पन्न हुआ भी इसी प्रकार से ब्राह्मण शूद्रादि भाव को प्राप्त हो जाता है। इस प्रकार गुण कर्मानुसार वर्ण व्यवस्था होने से व्यक्ति एव समाज का चरित्र उज्ज्वल होता है प्राचीनकाल में चरित्र वान् व्यक्तित्व का निर्माण करने के लिये चार आश्रम ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास का विधान किया गया। प्रथम अवस्था मे बालक को ब्रह्मचर्य व्रत का पालन कराया जाता था और उसका जीवन तप और त्याग के सिद्धान्तों पर आधारित होता था। वह सच्चा व्रती बनकर आचार्य का अन्तेवासी होता था और सर्वथा निरालस्य होकर आचार्य के अनुशासन में रहता था तथा श्रद्धापूर्वक विद्योपार्जन करता था। उस समय लोग देशदेशान्तर से भारत में आकर ज्ञान को प्राप्त करते और अपने चरित्र का निर्माण करते थे। राजा अश्वपति के राज्य में प्रजा का चरित्र बहुत ऊंचा था और वह यह घोषणा करने में समर्थ हो सके।

नमे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपः।
नानाहिताग्निर्नाविद्वान् न स्वैरी स्वैरिणी कुतः।

मेरे राज्य में चोर, कृपण, मदिरा पान करने वाला, यज्ञ न करने वाला, और मूर्ख कोई नहीं है और न कोई व्यभिचारी ही है फिर व्यभिचारिणी की तो बात ही नहीं कही जा सकती।

मनु महाराज ने यहां के आदर्श चरित्रवान् व्यक्तियों को देखकर ही समस्त भूमण्डल के लोगों के लिये यह घोषणा की—

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्व चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्व मानवाः॥

पृथिवी के समस्त मानव आर्यावर्त के तपस्वी त्यागी ब्राह्मणों (शिक्षकों) से अपने-अपने चरित्र को सीखें।

यह सत्य ही कहा है—
"आचार हीनं न पुनन्ति वेदाः"

आचार हीन को वेद पवित्र नहीं करते। आदर्श समाज का निर्माण करने के लिये हमे आबाल वृद्ध सबको ही चरित्रवान् बनना चाहिये और विशेषकर शिक्षा के क्षेत्र में इस ओर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिये। ऋषि, मुनि, साधु सन्त एवं महात्माओं की दृष्टि में चरित्र धन ही सबसे बड़ा धन था और आज भी ऐसा ही समझा जाना चाहिये।

मानव धर्म शास्त्र में मनुष्य को मनुष्य बनाने के लिये उसके चरित्र निर्माण पर विशेष बल दिया है।

जब बालक की शिक्षा प्रारम्भ की जाय तो गुरु उसका उपनयन (यज्ञोपवीत) संस्कार करके उसे सर्व प्रथम शुद्ध पवित्र रहने और आचार की शिक्षा दे जैसा कि मनुस्मृति में कहा है।

उपनीय गुरुः शिष्यं शिक्षयेच्छौचमादितः।
आचार मग्नि कार्यं च सन्ध्योपासन मेव च॥

गुरु शिष्य का उपनयन संस्कार करके सर्व प्रथम उसे शौच अर्थात् मनसा वाचा, कर्मणा सब प्रकार से शुद्ध पवित्र रहने की सीख दे। सदाचार सिखलावे और अग्निहोत्र एवं संध्योपासन करना सिखलावे। आजकल चरित्र निर्माण के इन सूत्रों पर कोई ध्यान नहीं देता जिस का परिणाम बालकों का अपने माता-पिता गुरु और बड़ों के प्रति आस्थावान् न होना ही है और जैसे तैसे पढ़ लिख कर कार्य क्षेत्र में उतरकर कर्तव्य भावना

★रामेश्वर शास्त्री
मुख्याध्यापक गुरुकुल वृन्दावन

को तिलांजलि देकर अपने स्वार्थ की सिद्धि में ही रत रहना और अन्यों के हितों की सर्वथा उपेक्षा करना ही है। कर्तव्यहीन लोगों के हाथ में अधिकारों का आ जाना समाज में अशान्ति, अव्यवस्था और अन्याय को ही जन्म देता है।

प्राचीन काल मे दी जाने वाली शिक्षा मनुष्य को मनुष्य बनाती थी और अधिकार की अपेक्षा उसे कर्तव्य के प्रति जागरूक रखती थी। विद्यार्थी का तप और त्याग ही आभूषण होता था जो उसे विनम्र आत्म विश्वासी एवं कर्तव्य परायण बनाता था। वह माता-पिता और आचार्य की सेवा करना और उनकी आज्ञानुसार अपने जीवन का निर्माण करना अपना परम सौभाग्य समझता था, पर आज की शिक्षा और उसकी पद्धति विद्यार्थी को बहिर्मुखी बनाकर उसे जीवन के सुपथ से भटका कर दम्भ स्वार्थ और दिखावट के मार्ग को अपनाने की प्रेरणा देती है। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश के २२ वें मन्तव्य में शिक्षा के सम्बन्ध में लिखा "शिक्षा" जिससे विद्या, सभ्यता, धर्मात्मा जितेन्द्रियतादि की बढ़ती होवे और अविद्यादि दोष छूटें उसको शिक्षा कहते हैं। सम्प्रति स्वतन्त्र भारत में व्यक्ति और समाज के उत्थान के लिये उपर्युक्त गुणों से युक्त गुरुकुलीय शिक्षा की ओर विशेष ध्यान दिये जाने की आवश्यकता बिना उत्तम शिक्षा के राष्ट्र या समाज सुखी समुन्नत एवं समृद्ध नहीं हो सकता सुशिक्षा ही राष्ट्र निर्माण की कुञ्जी है। सुशिक्षा ही मनुष्य को मनुष्य बनाती है और सुशिक्षा ही मानव को दानव बनने से रोकती है उसी के द्वारा व्यक्ति एवं समाज की उन्नति होकर आदर्श राष्ट्र बनता है।

★

हिमालय की पूर्वी कन्दराओं में—

ईसाइत का २५ साल का कार्य

(ग्लैडनिंग रीवर के आधार पर)

एक पुस्तक जो मिस्टर डी० जी० मेन्यूल ने "ग्लैडनिंग रीवर" (आनन्द की नदी) के नाम से सन् १९१४ मे प्रकाशित की, उस पर विहंगम दृष्टिपात करने के पश्चात् यह लिखने की प्रेरणा मिली कि सन् १८५९ से १८८५ तक ईसाइयों के द्वारा हिमालय की पूर्वी कन्दराओं मे ३७० ईसाई बनाये गये। इसका थोड़ा सा विवरण इस प्रकार है—

जब १८३० मे डा० डफ ने कलकत्ता मे शैक्षणिक कार्य आरम्भ किया तब उनका ध्यान भारतवर्ष के अन्य भागों की ओर भी आकर्षित हुआ और जनवरी १८५९ मे मि० अलक्जेन्डर क्लार्क को 'गया' भेजा। वहाँ से उसने एक पत्र १७ फरवरी १८५९ को 'गया' का वर्णन करते हुए भेजा, जिसमे से चन्द शब्द इस प्रकार है। "मगर यह नहीं कहा जा सकता कि, जैसा सोचा गया है उसके अनुसार शीघ्र ही खेत की फसल निश्चित रूप से मिल सके।"

सन् १८६३ में मिस्टर विलियम मैक्फरलेन ने निराश होकर 'गया' से एक पत्र लिखा 'सुनने वालों के समूह मे अधिकतर बुरे नीच प्रकृति के लोग होते थे, जो हम पर हंसते, गाली देते और विरोध करते थे। किसी की आत्मा सच्चाई के पीछे नहीं थी। न हिन्दू न मुसलमान कोई भी हमारे पास क्राइस्ट के बारे मे मालूम करने आता था।" उसने पुनः १८६८ मे एक पत्र लिखा जिसका थोड़ा सा अंश इस प्रकार है—

"मैं जितना ही हिन्दुओं से जान-पहिचान करता हूं उतना ही निराश होता हूं क्योंकि उन पर कोई असर नहीं होता है, पर पहाड़ी [illegible] हिन्दू नहीं है उनमे ऐसा बात नहीं है। मेरी इच्छा है कि पहाड़ी जाति जो आदिवासी हैं, उनमे प्रचार के लिये एक चर्च की स्थापना की जाय"।

इन पहाड़ी जातियों की ओर से मि० मैक्फरलेन का झुकाव तब हुआ जब 'गया' अनाथालय मे आपत्काल मे मि० जर्डन ने कुछ पहाड़ी बच्चों को भेजा।

सन् १८७० मे मि० मैक्फरलेन अनाथालय से [illegible] नेपाली बच्चों को लेकर कालिम्पोंग पहुंचा। इनमे से [illegible] और लेप्चाओं के साथ थे। इसी का मि० मैक्फरलेन ने अपना अभीष्ट स्थान निश्चित किया और १८७३ तक १७ स्कूल, दो नार्मल स्कूल स्थापित किये जिनके रजिस्टर मे ५०० विद्यार्थियों के नाम थे, जिनकी प्रति दिन की सामान्य उपस्थिति ३०० थी। कुमारी मैक्फरलेन की देखरेख मे एक ट्रेनिंग स्कूल था जिसमे एक भोटिया लड़का १२ लेप्चा और १६ नेपाली विद्यार्थी थे।

सन् १८७८ में गङ्गाप्रसाद को ईसाई बनाया जो [illegible] मे बड़े लगन से मिशन का कार्य करता रहा। साथ ही कालिम्पोंग ट्रेनिंग स्कूल के प्रिंसिपल लक्ष्मण-सिंह को भी ईसाई बनाया। १८७५ को

★ महानन्द शर्मा
कोटद्वार गढ़वाल

अध्यापक जंतवीर व सुब्बन को ईसाई बनाया। १२ मार्च १८७६ को एक नेपाली [illegible] ईसाई बना। दैवयोग से उस वक्त दार्जिलिंग, कालिम्पोंग मे हैजा का भयंकर प्रकोप हुआ। [illegible] मृत्यु हो गई। जो ईसाई हुए [illegible] काम को भर गए, जो [illegible] के लिए [illegible] सुबह मरे पाये गये कुछ [illegible] कि [illegible] घर से भर गये। कालिम्पोंग [illegible] पर दो घर साथ [illegible] एक बाजार बुढ़िया और [illegible] लड़की [illegible] और कोई न बचा। बुढ़िया भी [illegible] सुब्बन उसकी सहायता न [illegible] १८७६ [illegible] ईसाई [illegible]। ७ [illegible] १८७८ को [illegible] और उसकी [illegible] एक बच्चा ईसाई बने। फिर [illegible] और उसका एक [illegible] ईसाई बना।

तीन पादरी, सुब्बन [illegible], डौंगी ५ अध्यापक और दो विद्यार्थी [illegible] ईसाई [illegible] के काम मे लग गये। सन् १८८५ की मिशन की रिपोर्ट बताती है कि कालिम्पोंग मे २०३ [illegible] मे ४५, सिक्किम मे ८२, [illegible] मे २३ और [illegible] मे १७ यानी कुल ३७० ईसाई बने।

समाचार पञ्जीयन (केन्द्रीय) 'कानून' १९५६ के आठवें नियम के साथ ही पढ़ी जाने वाली प्रेस तथा पुस्तक पंजीयन कानून की धारा १९ 'डी' की उपधारा 'बी' के अन्तर्गत अपेक्षित "आर्यमित्र" लखनऊ नामक समाचार पत्र से सम्बन्धित स्वामित्व और अन्य बातों का ब्यौरा।

प्रपत्र—४

१—प्रकाशन का स्थान—भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस,
नारायणस्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

२—प्रकाशन की आवर्तिता—साप्ताहिक।

३—मुद्रक का नाम—श्री कृष्णगोपाल शर्मा, स्वत्वाधिकारी—श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश, लखनऊ के लिये।

४—प्रकाशक का नाम—श्री कृष्णगोपाल शर्मा स्वत्वाधिकारी—श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश, लखनऊ के लिये।
राष्ट्रीयता—भारतीय
पता—५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

५-सम्पादक—श्री पं० शिवदयालु, आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर (सहारनपुर)
विद्याभास्कर श्री सच्चिदानन्द शास्त्री एम० ए०
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ
श्री उमेशचन्द्र स्नातक एम० ए०, पन्त भवन, हल्द्वानी (नैनीताल)
राष्ट्रीयता—भारतीय

६—पत्र का स्वामित्व किसके पास है—श्रीमती आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश
लखनऊ।

मैं, कृष्णगोपाल शर्मा घोषित करता हूं कि मेरी जानकारी और विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सही हैं।

कृष्णगोपाल शर्मा
दिनांक १ मार्च, १९६८ (प्रकाशक के हस्ताक्षर)

[illegible] उसके की [illegible] विस्तृत [illegible] साल मे कुल [illegible] ईसाई [illegible] वक्त व भारत मे [illegible] हुआ [illegible] है। [illegible] ईसाई संस्कृति, [illegible] तथा आर्थिक शोषण [illegible] संस्कृति [illegible] [illegible] को [illegible] है।

यह [illegible] के लिए [illegible] के [illegible] वेग [illegible] दिखाई देती है। [illegible] मे ईसाई प्रचारक की भावना [illegible] करें।

"कोई युवक बिना इच्छा के नहीं [illegible] [illegible] फायदा [illegible] दुनिया मे फंसाता है।"

★

२१ जनवरी के सम्पादकीय मे "आर्य मित्र के प्रिय पाठको से" शीर्षक से जो प्रेरणादायक विचार प्रस्तुत किये हैं, वे आज के प्रगतिशील युग मे पत्रकारिता के महत्व और उपयोगिता की दृष्टि से सर्वथा सराहनीय हैं। यह पूर्ण सत्य है कि वाणी की तरह लेखनी भी अपने भावो को दूसरो तक पहुचाने और प्रचार का प्रबल साधन है, अपितु वाणी की अपेक्षा लेखनी का प्रभाव अधिक विस्तृत और चिरस्थाई होता है। अतः आर्यसमाज जैसी सत्य प्रसारक, समाज सुधारक संस्था के लिए वेदो के प्रचार और प्रसार के लिए उपदेशक मण्डल की तरह सशक्त पत्रिका का सम्पादन अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इस दृष्टि से आप महानुभावो का इस ओर विशेष ध्यान सर्वथा सराहनीय है, तथा आर्यमित्र की शोभा वृद्धि और आर्य जगत् के लिए गौरव की बात है।

आर्यसमाज की पत्र-पत्रिकाओं की इस सोचनीय स्थिति का एक मुख्य कारण एकांगीपन है। आज जब हिन्दी जगत् मे अनेक समृद्ध पत्रिकाएं चल रही है तब भी आर्य पत्रिकाओ की यह स्थिति सचालको के लिए चिन्तनीय है। आर्यमित्र की प्रगति के लिये मेरे विचार से यह सुझाव उपयोगी हो सकते हैं। प्रति सप्ताह आर्यमित्र मे अध्यात्मिक, सैद्धान्तिक, सामाजिक, शैक्षणिक विषयोपयोगी विचार होने चाहिये हैं। अर्थात् आर्यमित्र मे अनेक स्तम्भ प्रारम्भ किये जाएं। जैसे कि बाल स्तम्भ, महिला स्तम्भ, अध्यात्म विचार, सिद्धान्त स्तम्भ, सामयिक चर्चा, शिक्षा स्तम्भ, आर्थिक प्रगति आदि। प्रत्येक मानव अपनी हर क्षेत्र की प्रगति के लिए हर प्रकार के विचार चाहता है। जैसे सत्यार्थ प्रकाश में जीवन से सम्बन्धित प्रत्येक विषय पर प्रकाश डाला है, वैसे ही विविध स्तम्भो मे विविध विषयो के सम्बन्ध मे विचार प्रकाशित कर आर्यमित्र को इतना महत्वशाली बना लिया जाये। जिसमे प्रत्येक पाठक बड़ी उत्सुकता से प्रत्येक अङ्क की प्रतीक्षा करें। अच्छा हो जैसे साहित्यिक पत्रिकाओ मे योग्य लेखको से योग्य सशक्त लेख लिखवा कर प्रकाशित कराये जाए। वैसे ही किया जाय, क्योंकि बहुत दिन तक निःशुल्क रूपेण अच्छे लेख प्राप्त नही होते, साधारण लेखो के कारण पाठको की रुचि घट जाना स्वाभाविक है। अतः योग्य लेखकों को उचित पारिश्रमिक देकर यथा समय हर विषय पर लेख प्रकाशित कराये जांए।

प्रत्येक मास एक लेखन प्रतियोगिता प्रारम्भ की जाय, उसमे उचित पुरस्कार रखे जाय इससे जहां लिखने वालों को प्रोत्साहन मिलेगा वहा आर्यमित्र के लिए अच्छे लेख भी प्राप्त हो सकेंगे। प्रतियोगिता के लिये धन कुछ सभा व्यय करे जैसे उपदेशको पर किया जाता है क्योकि पत्र भी तो प्रचार का प्रमुख साधन है सम्पादकीय टिप्पणियो द्वारा धनिको को प्रेरित किया जाय जिससे वे अपने नाम से लेखन प्रतियोगितायें प्रारम्भ करायें। जैसे सूर्य देव स्थिर निधि है ऐसे प्रतियोगिताओं के लिए प्रेरणा करने पर कुछ निधियां प्राप्त हो सकती हैं लेखक प्रतियोगिता प्रोत्साहन और उत्तम लेख प्राप्ति के लिये बहुत उपयोगी हो सकती है।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश से सम्बद्ध जितनी आर्यसमाजें हैं, वे आर्यमित्र को अवश्य मगवायें और समय-समय पर अपने यहां के समाचार प्रकाशित करवा कर सामाजिकता और परस्पर पारिवारिकता को उत्पन्न करें। और समृद्ध समाजें कम से कम १० प्रति मगवाकर अपने नगर के वाचनालयों में निःशुल्क वितरित करें, इससे आर्यमित्र सबल और विस्तृत परिवार वाला हो सकेगा।

उत्तरप्रदेश की जितनी भी बड़े बड़े शहरों की आर्यसमाजें हैं, वे अपने वार्षिक उत्सव पर आर्यमित्र का विशेषाक प्रकाशित करायें और उस अङ्क का कम से कम आधा व्यय दें। और वह आर्यसमाज उस विशेषांक को उन दानी महानुभावों को प्रेमोपहार में भेंट दे, जिन्होने वार्षिक उत्सव पर दान दिया हो। इससे जहां दानियों के प्रति सच्ची कृतज्ञता प्रकट होगी वहा आर्य साहित्य और विचारों का विशेष प्रचार हो सकेगा।

समृद्ध आर्यसमाजों और धनिकों को प्रेरित किया जाये कि वे प्रतियोगिता और विशेषाक को अपने पूर्वजों के स्मारक के रूप मे अपनायें अर्थात् समय समय पर पूर्वज के स्मारक के रूप में विशेषांक प्रकाशित किये जायें और उसके व्यय में स्मारक प्रकाशकों की ओर से विशेष सहयोग दिया जाये।

आर्यमित्र की प्रगति और समृद्धि के लिये सभा को भी कुछ विशेष ध्यान देना चाहिये। जैसे योग्य से योग्य उपदेशकों को रखकर सभा वेद प्रचार का प्रबन्ध करती है, वैसे ही आर्यमित्र को भी वेद और आर्य विचारों के प्रचार का एक महत्वपूर्ण साधन मानकर, उसके लिये कुछ विशेष राशि व्यय करे। उस राशि से नये लेखक नियुक्ति की अपेक्षा अन्य स्थानों पर विविध विषयों के विद्वानों से उचित पारिश्रमिक देकर लेख लिखवाये जायें। इससे अल्प व्यय में अधिक कार्य हो सकता है।

सभा अपने उपदेशकों को विशेष धन से प्रोत्साहित करे, और वे अनेक वर्षो के अति परिश्रम से साध्य भाषणों को लेख रूप मे दें, इससे उन विद्वानों का वर्षों का परिश्रम सुरक्षित होगा और ज्ञान का भी विकास हो सकेगा।

—आचार्य भद्रसेन
साधुआश्रम, होशियारपुर

श्रद्धेय ओमप्रकाश जी त्यागी संसद सदस्य का बेगमगंज के आर्यवीरों और जनता को उद्बोधन —

दिनांक २४-२-६८ को आर्य वीर दल द्वारा आयोजित एक विशाल आम सभा मे श्री त्यागी जी को ५०१ रु० की थैली श्री मण्डल पति ने आर्यवीर दल बेगमगंज की ओर से भेंट की श्री त्यागी जी ने जन समूह को सबोधित करते हुए कहा कि यद्यपि धन थोड़ा है परन्तु इसका परिणाम महान हितकारी और सतोषजनक है। आपने कहा कि वर्तमान सतति का निर्माण ही भावी भारत का निर्माण है। स्वतन्त्रता के पश्चात् हमने करोड़ो की थैलियाँ सड़क और बांध धर्मशाला और स्मारको के निर्माण में दी जो उत्तम विचार का द्योतक है, परन्तु भावी भारत की आशाओ की ओर उपेक्षा ही रही। अग्रेजो ने भारत के नौनिहालों को राष्ट्र और संस्कृति विरोधी तथा दास मनोवृत्ति की शिक्षा दी और आजादी के बाद हमारे नेताओं की भी दृष्टि और योजनायें मस्तिष्क निर्माण की ओर न लगकर केवल भौतिक विकास की ओर ही रही, यदि इसका परिणाम रेलों और कारखानो में आग लगाने वाली मोटरों पर पत्थर फेंकने वाली पीढ़ी के रूप में हमारे सामने आवे तो आश्चर्य क्या है? क्या आप वर्तमान योजनाओ से राम, कृष्ण, शिवा, प्रताप राष्ट्र को दे सकेंगे?

आज हठात्, एक प्रश्न हमारे सामने उपस्थित होता है कि क्या हमारे नेताओं ने ऐसे ही भारत के मानचित्र को सामने रखकर फांसी के तख्तो को हसकर चूमा था? क्या फांसी पर जाते समय ही यह भावना (कि 'खुश रहो—अहले वतन हमतो सफर करते हैं') यही थी? हमे विचार करना है, सोचना है हम पार्टी लेबिल से ऊपर उठकर इन विषयों पर विचार करें, नींव गलत पड़ रही है और गलत नीव पर क्या सही निर्माण हो सकेगा?

आपने कहा कि सरकार के सामने दो काम हैं, राष्ट्र रक्षा और राष्ट्र निर्माण और वर्तमान में सरकार अपने लक्ष्य से हटकर एक ऐसी स्थिति में आकर खड़ी हो गई है जैसे कोई किसान एक अच्छे हल के जुते और मुलायम खेत को बोने के लिए बनाकर उसमें कुश्ती लड़ना प्रारम्भ करके अखाड़े का काम लेने लगे, देश अखाड़ा बना हुआ है। आपने शरीर की उपमा देते हुए कहा कि जिस प्रकार आत्मा और शरीर का नाम मनुष्य है और दोनों का विकास ही मनुष्य का विकास है उसीप्रकार भौतिक और आध्यात्मिक दोनों की उन्नति का नाम ही राष्ट्रोन्नति होगी। यदि आत्मा का विकास नहीं हुआ तो केवल शरीर का विकास पागलपन का द्योतक होगा। आपने इस आत्म निर्माण और भावी भारत के निर्माण के लिये आर्यवीर दल की शाखाओं के सचालन पर बल दिया।

सभाध्यक्ष श्री भंवरलाल जी ने अन्त में श्री त्यागीजी का तथा जनता का आभार प्रदर्शित किया तथा प्रारम्भ में श्री कौशल, सहायक प्रधान संचालक ने श्री त्यागी जी का परिचय दिया।

श्री बाबूलाल जी तिवारी प्रान्तीय सचालक तथा श्री आनन्द जी अधिष्ठाता ने भी सभा में आर्यवीर दल के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला।

★

समाचार दर्शन—

खड़गपुर

दिनांक १८ से २४ मार्च तक आर्य समाज खड़गपुर (बंगाल) की ओर से सात दिवसीय वेद-कथा का आयोजन आर्य कन्या विद्यालय में पं० अखिलानन्द जी द्वारा किया जायगा।

पंचागपुर

आर्यसमाज सुभाषनगर कालोनी में दि० १४ फरवरी को एक हवन यज्ञ का आयोजन हुआ। १८ बंगाली भाइयों का 'यज्ञ उपवीत संस्कार' पं० धर्मपाल जी के द्वारा सम्पन्न कराया गया। स्मरण रहे कि सन् १९५९ मे पश्चिमी बंगाल से सात-आठ सौ शरणार्थी परिवारों को लाकर यहां पर बसाया गया है। कालोनी में समाज का कार्य बड़े जोर जोर से गतिमान है।

बस्ती

आर्यसमाज बस्ती द्वारा दि० १६ फरवरी को श्री मद्देश्वरनाथ के मेले मे प्रचार किया गया जिसमें श्री बाबा मंगलदास, श्री पं० सूरजप्रसाद व श्री रामदास लोहिया और प० रामचरित्र वैद्य के विद्वत्तापूर्ण भाषण हुए।

रुड़की

आर्यसमाज रुड़की (सहारनपुर) के दयानन्द सप्ताह के अवसर पर श्री प० शिवदयालु जी सम्पादक आर्यमित्र ने प्रचार कर वैदिक त्रैतवाद, वैदिक साम्य-वाद, आर्यसमाज के मौलिक उद्देश्य तथा महर्षि दयानन्द के महत्व और उनके क्रान्तिकारी विचारो एवं कार्यक्रमो पर प्रकाश डाला।

आर्य कन्या विद्यालय तथा स्त्री आर्यसमाज मे प्रचार कर आपने नारी जाति के प्रति महर्षि के महान् उपकारो तथा मातेश्वरी सीता के जीवन पर भाषण दिये। रामनगर सत्संग मे प्रचार कर वैदिक मिशन की सेवा पर बल दिया।

२३ ता० को सार्वजनिक सभा मे पधारकर भी आपने महान् हुतात्मा श्री पं० दीनदयाल उपाध्याय के प्रति श्रद्धा-जलि प्रस्तुत की। नगर मे आपके आग-मन से विशेष उत्साह और जागृति उत्पन्न हुई। आर्य नर नारियो ने वैदिक साहित्य विक्रय केन्द्र खोलने का निश्चय किया।

राजधानी (गोरखपुर)

श्री महावीरसिंह के [illegible] मे आर्य समाज राजधानी मे इस वर्ष दि० २३, २४ जनवरी को वेद प्रचार किया गया। श्री आर्य भिक्षु तथा श्री रघुनन्दन शर्मा आदि मन्त्रोपदेशक सम्मिलित हुए। राजधानी के लिये यह उत्सव अपूर्व था।

बलरामपुर

दिनांक ११ से १४ फरवरी तक बलरामपुर (गोण्डा) में यजुर्वेद पारा-यण यज्ञ समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्रतिदिन विद्वानो के प्रभावशाली भाषण, उपदेश तथा भजन आदि के रोचक एवं ज्ञानवर्द्धक कार्यक्रम हुए। इस उत्सव के आयोजन का श्रेय श्री चन्द्रबली जी तिवारी को है।

राजा का रामपुर

आर्य समाज राजा का रामपुर (एटा) के मन्त्री श्री रामचन्द्र जी सर्व सम्मति से नगर उपाध्यक्ष पद पर चुन लिये गये।

बरेली

ग्राम करनपुर कलां मे वैदिक धर्म का प्रचार दिनांक ४ ५ फरवरी को बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। दो दिन तक लगभग ३०० व्यक्तियो का सहभोज चलता रहा।

कायमगंज

आर्यसमाज कायमगंज मे महिला समाज तथा पुरुष समाज मे वसन्त पंचमी पर्व समारोहपूर्वक मनाया गया। पर्व पद्धति द्वारा बृहद यज्ञ सम्पन्न हुआ।

जालन्धर शहर

वसन्त पर्व के अवसर पर पंजाब के अनेक नगरों से पधारे नर-नारियों के भारी जनसमूह के समक्ष यजुर्वेद पारा-यण यज्ञ की पूर्णाहुति के साथ भक्त खेम-चन्द जी और माता आनन्दी देवी जी से दीक्षा लेकर प० नन्दलाल जी ने वान-प्रस्थ आश्रम मे प्रवेश किया। प० नन्द-लाल जी कुछ दिन आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर मे रहेंगे तदन्तर पूना और दक्षिण भारत की प्रचार यात्रा पर जायेंगे।

अलापुर (बदायूं)

मन्त्री आर्य समाज अलापुर के तत्वावधान मे ग्राम रुपामई मे दि० १८-१९ फरवरी को प्रचार उत्सव मनाया गया। यज्ञ के साथ धनुष-बाण विद्या का चमत्कार प्रभावशाली रहा। इस आयो-जन मे श्री गजराजसिंह, मिश्रीलाल व लक्ष्मणसिंह आदि आर्यजनो का खासी सहयोग रहा।

[illegible]पुर

आर्यसमाज, स्त्री आर्यसमाज तथा आर्य कन्या उच्चतर मा० विद्यालय गोविन्दनगर कानपुर का संयुक्त वार्षिक उत्सव दि० ११ से १४ अप्रैल तक विशेष समारोह के साथ मनाये जाने का निश्चय किया गया। समारोह मे आर्य जगत के सुप्रसिद्ध नेता, विद्वान् तथा सन्यासी पधारेंगे।

हरदोई

जनपद हरदोई के अन्तर्गत कटियारी क्षेत्र मे वेद प्रचार कार्य योजनाबद्ध रूप से सम्पन्न हुआ। यह निश्चय किया गया कि प्रति मास के अन्त मे क्रम से प्रत्येक समाज मे यज्ञ व वेद प्रचार हुआ करेगा। यह कार्यक्रम श्री म० रणजीतसिंह प्रधान आ०स० गौरिया की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ।

देहरादून

श्री ला० देवराज जी के दौहित्र का १३ जनवरी तथा श्री वी० एन० जौहरी की सुपुत्री का २६ जनवरी को नामकरण संस्कार सम्पन्न हुये। आर्य सज्जनो ने इस अवसर पर [illegible] का दान [illegible] मे किया।

उत्तर काशी

श्री घनश्यामदास शास्त्री के घर पर दि० ४ फरवरी को यज्ञ सम्पन्न हुआ तथा यह निर्णय किया गया कि गत वर्षों से सुप्त आर्यसमाज उत्तरकाशी को पुन-र्जीवित कर उसे सक्रिय रूप देने के सभी सम्भव प्रयत्न किये जायेंगे।

लक्ष्मीपुर (बिहार)

आर्यसमाज लक्ष्मीपुर (पूर्णिया) के मन्त्री श्री जानकीप्रसाद के सुपुत्र तथा भतीजी के चूडाकर्म संस्कार सम्पन्न हुए।

बसन्त पञ्चमी के अवसर पर समाज के भूतपूर्व कोषाध्यक्ष श्री एनतारी जाय की सुपुत्री पर्मीला व अम्बाकुमारी का शुभ विवाह वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुए।

कन्या गुरुकुल हाथरस

१—किशोरीलाल जैन कालेज, सासनी (अलीगढ़) मे हुई [illegible] प्रतियोगिता मे कन्या गुरुकुल हाथरस की [illegible] और [illegible] ने [illegible]। प्रतियोगिता मे १ दर्जन से अधिक [illegible] ने भाग लिया।

२—इस मास मे गुरुकुल मे भवन-निर्माण के लिये निम्नस्थ विशेष दान प्राप्त हुए—

२२५१) श्री बालकृष्ण गुप्त, एडवांस ग्लास वर्क्स, फिरोजाबाद।

२०००) रु० गुप्त दान फिरोजाबाद।

१०००) रु० चौ०टीकाराम, खेड़ा हटाना (मेरठ) एक हजार रुपये का वचन और दिया।

१०००) रु० सेठ भगवतीप्रसाद महेश्वरी बोइस कम्पनी, पुरदिलपुर (अलीगढ़)

१०००) रु० बोहरे नवलकिशोर, ग्राम-मगोरा (मथुरा)

२५१) रु० श्री मुन्शीलाल पाठक, निजामाबाद (आन्ध्रप्रदेश)

२५१) रु० सेठ बदरीप्रसाद मोरका, बम्बई

४००) रु० श्री रमेशचन्द्र पालीवाल, शिकोहाबाद (दो हजार के वचन मे से १०००) रु० प्राप्त हो चुके हैं)

२५१) रु० श्री वेदप्रकाश सलूजा, मुरादाबाद।

सबको धन्यवाद है। छात्रावास में स्थान की कमी है। नया छात्रावास बनाने के लिये धन की आवश्यकता है। दानी सज्जन सहायता करें।

अक्षयकुमारी शास्त्री
मुख्याधिष्ठात्री
कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, हाथरस

× × ×

माघ मेले मे वैदिक धर्म प्रचार

प्रयाग। आर्य उप प्रतिनिधि सभा प्रयाग के तत्वावधान मे स्थानीय आर्य समाजो के सहयोग से त्रिवेणी के तट पर माघ मेला क्षेत्र मे आर्यसमाज प्रचार शिविर स्थापित किया गया। १४ जन-वरी से ४ फरवरी तक प्रतिदिन प्रात ९ बजे से सायं ६ बजे तक हवन, प्रवचन व भजन आदि के आयोजन किये गये। श्री योगाचार्य वेंकट भट्ट द्वारा अभिलाषी सज्जनो को योग शिक्षा की भी व्यवस्था की गई। स्वर्गीय प्रधान मन्त्री श्री लाल-बहादुर जी की धर्मपत्नी श्रीमती ललिता शास्त्री ने इस शिविर मे पधार कर अभिनन्दन स्वीकार किया। प्रत्येक दृष्टि से प्रचार कार्य पूर्ण सफल रहा।

वसन्तोत्सव

सहारनपुर। आर्यकुमार सभा [illegible] नगर की ओर से दि० ६ फरवरी को वसन्तोत्सव मनाया गया जिसमे अनेको विद्वानो के भजन व प्रवचन हुए। उत्सव मे श्री [illegible] जी प्रधान द्वारा परीक्षा-र्थियो को [illegible] वितरित किये गये।

लड़का खो गया?

[illegible]। श्री [illegible] प्रधान [illegible] [illegible] (illegible) सूचित किया है कि [illegible] [illegible] दि० [illegible] [illegible] है तथा [illegible]। [illegible] सज्जन को पता लगे वह कृपया प्रधान [illegible] जी को सूचित करने का कष्ट करें।

मुण्डन संस्कार

रामेश्वरदयाल (शुद्धि बन्धु) की सुपुत्री कुमारी ज्योत्सना का मुण्डन संस्कार बसन्त पचमी के दिन बड़े ही धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस शुभ अवसर पर ११०) रु० दान भी निम्न संस्थाओं को दिया गया—

आर्य उपप्रतिनिधि सभा, उ०प्र०	११)
आर्य जिला उपसभा, हरदोई	११)
आर्यसमाज, हरदोई	११)
आर्य कन्या पाठशाला इन्टर कालेज, हरदोई	११)
आर्यकुमार सभा, हरदोई	११)
गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार	११)
गुरुकुल ज्वालापुर, हरिद्वार	११)
गुरुकुल वृन्दावन	११)
आर्य स्त्री समाज, हरदोई	११)
देणीमाधव विद्यापीठ, बाल विहार हरदोई	११)
	११०)

इसी अवसर पर २५०) रु० मूल्य के ऋषि चित्र (गायत्री मन्त्र सहित) कैलेण्डर विशिष्ट व्यक्तियों को बांटे गये।

शुद्धि संस्कार

नैनीताल। लखनऊ के एक नवाबी मुस्लिम परिवार के ५ व्यक्तियों को शुद्ध करके वैदिक धर्म में प्रविष्ट कराया गया शुद्धि संस्कार गुरुदेव विद्यालंकार ने कराया।

देहरादून। दि० १८ फरवरी को आर्यसमाज मन्दिर देहरादून में जन्म से मुसलमानयुवक नसीरुद्दीन की शुद्धि की की गई। उनका नवीन नामकरण 'यश बहादुर' किया गया। इसी अवसर पर कुमारी गङ्गादेवी को पुनः आर्य जाति में प्रविष्ट कराया गया।

हरदोई। ग्राम पसिगवां तहसील शाहाबाद के अन्तर्गत २५ व्यक्तियों का एक क्षत्रिय परिवार जो बहुत दिनों से आत्मच्युत था पुनः आर्य जाति में प्रविष्ट कराया गया। सहभोज मे बड़ी सख्या में लोग सम्मिलित हुए। श्री प० ब्रह्मानन्द जी आर्य प्रचारक का आसपास की जनता पर सुन्दर प्रभाव पड़ा।

वैवाहिक सूचनायें

कलकत्ता। दि० १६ फरवरी को आर्यसमाज बड़ा बाजार के तत्वावधान में जिला रायबरेली निवासी श्री सम्मर बहादुरसिंह का शुभ विवाह जिला मोतिहारी (बिहार) निवासी श्री रामभरोसे सिंह की सुपुत्री कुमारी शान्ती देवी के साथ वैदिक रीति से श्री पं० रमाकान्त शास्त्री के करकमलों द्वारा सम्पन्न हुआ।

—दिनांक ८-२-६७ को बड़वाहा (प्रतापगढ़) निवासी श्री सदाशिव का शुभ विवाह बरजगा निवासी श्री शिवनन्दन की सुपुत्री कु० सीतादेवी के साथ पं० शशिकान्त उपाध्याय के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर गवर्नमेंट सिल्चर रिफाइनरी के अधिकारी व कर्मचारियों ने उपस्थित होकर वर-वधू को आशीर्वाद दिया।

वार्षिकोत्सव—

कानपुर

आर्यसमाज मेस्टन रोड कानपुर का ८८ वां वार्षिकोत्सव दि० २३ से २६ फरवरी तक आर्यसमाज मन्दिर तथा श्रद्धानन्द पार्क में समारोहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर आर्यजगत् के प्रख्यात नेता श्रीयुत ला० रामगोपाल शालवाले, पं० शिवकुमार जी शास्त्री, पं० वाचस्पति जी शास्त्री, कुं० भद्रपाल सिंह जी, पं० बिहारीलाल जी शास्त्री, आ० अमरसिंह जी आर्य पथिक, प्रो० रत्नसिंह जी, कुं० महीपालसिंह व कुं० देवपालसिंह तथा श्री देवीप्रसाद जी आदि सम्मिलित हुए।

कलकत्ता

आर्यसमाज कलकत्ता का ८२ वां वार्षिकोत्सव दि० १६ से २४ मार्च तक स्थानीय मुहम्मद अली पार्क में मनाया जायगा। इस अवसर पर यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का अनुष्ठान किया गया है। वार्षिकोत्सव में अनेक साधु, संन्यासी तथा विद्वान महानुभाव पधारेंगे।

फतेहपुर

आर्योपसभा का वार्षिकोत्सव जिला स्तर पर ग्राम बसेड़ी मे ९-१० फरवरी को मनाया गया। श्री आचार्य विश्वश्रवाः जी के संरक्षण में वृहद् यज्ञ सम्पन्न हुआ इस अवसर पर श्री भारद्वाज वानप्रस्थी स्वामी योगानन्द जी तथा श्री बुद्धिप्रकाश आदि के सारगर्भित भाषण हुये। दोनों दिन बसेड़ी ग्राम में धूमधाम के उपरान्त कस्बा असोथर मे वैदिक धर्म का प्रचार किया गया।

कर्नैलगञ्ज (गोण्डा)

दि० १६-१७ फरवरी को आर्य समाज का वार्षिक उत्सव मनाया गया। उत्सव के अवसर पर उपदेश, भजन तथा प्रवचन आयोजित हुए तथा धनुर्विद्या के चमत्कारो का प्रदर्शन किया गया।

शाहजहांपुर

आर्यसमाज शाहजहांपुर (रजिस्टर्ड) का वार्षिकोत्सव दि० १२ से १५ अप्रैल तक मनाया जायगा।

औरैया (इटावा)

आर्यसमाज औरय्या का वार्षिक उत्सव समारोह आगामी १७ से २० मार्च तक सम्पन्न होगा। इस वर्ष उत्सव को अधिक सफल बनाने का प्रयत्न हो रहा है।

नैनीताल

सदा की भांति इस वर्ष भी दिनांक २१ से २७ मई तक आर्यसमाज नैनीताल का वार्षिकोत्सव विशेष समारोह के साथ मनाया जायगा। समारोह में सम्मिलित होने के लिये पूर्व ही अपनी सूचना भेज दें ताकि उसी के अनुरूप आवश्यक व्यवस्था सम्भव हो सके।

समस्तीपुर (बिहार)

आर्यसमाज समस्तीपुर का ११ वां वार्षिकोत्सव दिनांक ११ से १४ अप्रैल तक विविध सम्मेलनों के साथ समारोह पूर्वक मनाया जायगा।

हरदोई

आर्यसमाज गोमी का वार्षिकोत्सव दि० २० से २२ फरवरी तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। ग्राम की जनता पर समारोह का बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ा।

धुर्वा (रांची)

आर्यसमाज धुर्वा (रांची) का चतुर्थ वार्षिक उत्सव दि० १० से १२ फरवरी तक अभूतपूर्व रीति से मनाया गया। इस अवसर पर स्वामी आर्य भिक्षु, आ० रामानन्द शास्त्री, पं० गङ्गाधर शास्त्री, व श्रीमती हेमलता आर्योपदेशिका आदि विद्वानों ने पधार कर वेदप्रचार समेलन, महिला सम्मेलन तथा राष्ट्ररक्षा सम्मेलनों में भाग लिया। उत्सव तीन दिन तक उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ।

गोवा में शिवरात्रि पर्व

डिचोली २७ फरवरी। स्थानीय आर्यसमाज की ओर से शिवरात्री उत्सव मनाया गया। इस शुभ अवसर पर नगर के प्रमुख साहित्यकार डा० र०वी० प्रभु मांवकार व श्री दामोदर मार्शेलकर श्री विशनूकुमार व श्री रामप्रसाद सैनी ने महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला। सभी वक्ताओं ने इस पर्व की महत्ता बतलाते हुए हिन्दू जनता को आवाहन किया कि वे राष्ट्र को विदेशी मिशनरियों के खतरे से बचायें और समारोह बहुत ही सफल रहा।

भिलाई नगर

आर्यसमाज भिलाईनगर सेक्टर-६ में दिनांक २६ फरवरी को महाशिवरात्रि पर्व ससमारोह पूर्वक धूमधाम से मनाया गया।

सम्पादक के पत्र

समाज का निर्वाचन

सम्पादक महोदय,

आर्यसमाज बिहारीपुर के नवनिर्वाचन में जो व्यक्ति निर्वाचित हुए हैं वे व्यक्ति आर्यसमाज के परम्परागत सदस्य हैं। उनके हृदय में आर्यसमाज के प्रति प्रेम है।

आर्यसमाज की सम्पत्ति के स्वार्थ में प्रयोग करने वाले आर्यों के प्रति उनके हृदय में आक्रोश है।

आर्यसमाज की सम्पत्ति को अपनी बपौती बनाने वालों के प्रति घृणा के भाव हैं। आर्यजगत् ऐसे शुभ निर्वाचन का सहर्ष स्वागत करता है।

और अब ऐसे सुदृढ़ आर्यों के हाथों में आर्यसमाज बिहारीपुर का भविष्य उज्ज्वल होगा। पूर्ण विश्वास करता है।

मैं वर्तमान निर्वाचन को शुभ लक्षण मानता हूं।

—एक नागरिक

झालावाड़

दिनांक २६ फरवरी को ऋषिबोध दिवस सानन्द मनाया गया तथा ऋषि की इस दिन की घटना का उल्लेख पढ़ कर सुनाया गया।

गाजीपुर

आर्य समाज मन्दिर गाजीपुर में ऋषि बोधोत्सव श्री डा० मोतीसिंह आचार्य डिग्री कालिज के सभापतित्व में मनाया गया। एक सहभोज का भी आयोजन इस अवसर पर किया गया।

इटारसी

दि० २६ फरवरी को आर्य कन्या पाठशाला में महर्षि दयानन्द बोधोत्सव बड़े ही समारोहपूर्वक मनाया गया। उपस्थित जनसमुदाय से महर्षि के बताये मार्ग पर चलने का आह्वान किया गया।

दरियागंज (देहली)

आर्यसमाज मन्दिर दरियागंज में ऋषि बोधोत्सव बड़े समारोह से मनाया गया। प्रातः प्रभातफेरी निकाली गई। विभिन्न कार्यक्रमों के पश्चात् रात्रि में मन्दिर पर मोमबत्तियों से प्रकाश किया गया।

मुरादाबाद

आर्यसमाज हरथला कालोनी द्वारा ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर एक निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया तथा २५ रु० का आर्य साहित्य वितरित किया गया।

आर्यजगत् के प्रकाण्ड पण्डित शास्त्रार्थ महारथी पं० रामचन्द्र जी देहलवी को श्रद्धांजलियां

[तर्क शिरोमणि पं० रामचन्द्र जी देहलवी के निधन पर भारत के कोने कोने से शोक सभायें होने के समाचार बडी संख्या में प्राप्त हुए हैं जिन सभी का विस्तृत विवरण दे पाना अत्यन्त कठिन है। कुछ प्रमुख स्थानों तथा आर्यसमाजों का नाम यहां पर दिया जा रहा है जिन्होंने श्री देहलवी जी को अपनी श्रद्धांजलियां अर्पित की हैं। —सम्पादक]

१—आर्यसमाज हनुमानरोड, नई दिल्ली, २—आ० स० कांठ (मुरादाबाद) ३—आ० स० बिजनौर, ४—आ० स० अमरोहा, ५—आ० स० सीमगंज मण्डी कोटा ज०, ६—आ० स० रेल बाजार छावनी, कानपुर ७—आ०स० गढ़मुक्तेश्वर ८—आ०स० लखीमपुर-खीरी ९—आर्य उप प्रतिनिधि सभा प्रदान १०—आर्य वीर दल दौराला, मेरठ ११—आ०स० सिकन्दराबाद १२—आ० स० बिसौली (बदायूं) १३—आर्यसमाज कायमगंज (फर्रुखाबाद) १४—आ०स० कलकत्ता १५—गोवा प्रदेश आ०स० वास्कोडिगामा १६—आर्य कन्या पाठशाला लघु माध्यमिक विद्यालय बहराइच १७—आ० स० हापुड़ (मेरठ) १८—आ० स० सरीला १९—आ०स० महर्षि दयानन्द मार्ग-चौकारा (राज०) २०—डी०ए० वी० इण्टर कालिज फीरोजाबाद २१—आ०स० देवनगर फौन्डरी नगर (आगरा) २२—आ० स० अजमेर (राज०) २३—आ० स० सिद्धगोड़ २४—आ० स० मुगलसराय (वाराणसी) २५—आ०स० सीतापुर २६—आ० स० गोविन्दनगर कानपुर २७—आ०स० गोरखपुर २८—आ०स० रजि० स्वामी पार सहारनपुर २९—आ०स० किशनपुरी (इटावा) ३०—आ०स० इटारसी—होशंगाबाद ३१—आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण हैदराबाद ३२—आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर (सहारनपुर) ३३—आ०स० खण्डवा ३४—आ०स० जेवर (बुलन्दशहर) ३५—आ०स० बस्ती ३६—आ०स० बहादरनगर (बुलन्दशहर) ३७—आ०स० माटुंगा बम्बई ३८—आ०स० गाजीपुर ३९—आ०स० प्रतापगढ़ ४०—आ०स० बीसलपुर (पीलीभीत) ४१—आ० स० लाजपत नगर कानपुर ४२—आ० स० वाराणसी ४३—श्री विशुद्धानन्द विद्या मन्दिर जौनपुर ४४—आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश लखनऊ ४५—आ० स० चेम्बूर (बम्बई) ४६—आ० स० लश्कर (ग्वालियर) ४७—आर्यकुमार परिषद् गुरुकुल महाविद्यालय सिरसागंज (मैनपुरी)।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र का ५६ वां वार्षिकोत्सव

गुरुकुल कुरुक्षेत्र विद्यालय का ५६ वां वार्षिकोत्सव ५, ६, ७ अप्रैल ६८ को विशेष समारोह से मनाया जाना निश्चित हुआ है। आर्यसमाज के विद्वान् पण्डित तथा सन्यासी महात्माओं को निमन्त्रित किया है उस समय उपयोगी सम्मेलनों की भी योजना की जा रही है।

ऋषि बोधोत्सव— सरदारपुरा (जोधपुर)

इस वर्ष जोधपुर की समस्त आर्य समाजों ने मिलकर महर्षि बोधोत्सव पर यजुर्वेद पारायण यज्ञ सरदारपुरा गांधी मैदान में दि० २१.२.६८ से २७.२.६८ तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया।

यह यज्ञ श्री आचार्य कृष्ण जी के नेतृत्व में सम्पूर्ण हुआ। इसकी पूर्णाहुति माननीय न्यायमूर्ति वेदपाल जी त्यागी (राजस्थान हाईकोर्ट) के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुई।

आर्यवीर दल की सूचनायें

—समस्त आर्य वीरों तथा आर्य समाजों को सूचित किया जाता है कि आर्यवीर दल का शिक्षण शिविर जून मास में प्रान्तीय शिक्षक की अध्यक्षता में दयानन्द इण्टर कालेज बिन्दकी जि० फतेहपुर में लगने जा रहा है।

सभी आर्यवीर दलों तथा आर्य समाजों से प्रार्थना है कि इस शिविर में अधिक से अधिक संख्या में उन युवकों को भेजकर शिविर को सफल बनावें।

जो बन्धु शिविर में भाग लेना चाहें वे निम्न पते पर सूचना देने की कृपा करें। शिविर उत्तीर्ण वीरों को प्रमाण-पत्र दिये जायेंगे।

—डा० बालकृष्ण आर्य 'विकल'
उपसेनापति
प्रान्तीय आर्यवीर दल उत्तरप्रदेश
बिन्दकी फतेहपुर

शोक समाचार—

पीलीभीत—म० सत्यदेव जी की धर्म पत्नी एवं आर्यसमाज बीसलपुर के मन्त्री जी की माता श्रीमती सत्यदेवी के निधन पर दि० ४.२.६८ को शोक सभा का आयोजन किया गया और दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए परमात्मा से प्रार्थना की गई।

वाराणसी—आर्यसमाज लहरतारा के वार्षिकोत्सव के अवसर पर अखिल भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष स्व० पं० दीनदयाल जी उपाध्याय के निधन पर शोक प्रकट किया गया तथा दिवंगत नेता को श्रद्धांजलियां अर्पित की गई।

जौनपुर—आर्यसमाज के साप्ताहिक अधिवेशन के अवसर पर समाज के भूतपूर्व उपप्रधान स्व० श्री सीताराम जी वकील के आकस्मिक निधन पर शोक प्रकट किया।

बिजनौर—आर्यसमाज सेनद्वार के एक अधिवेशन में स्व० श्री पं० रामचन्द्र देहलवी और जनसंघ के अध्यक्ष स्व० पं० दीनदयाल जी उपाध्याय के निधन पर शोक प्रकट किया गया और दिवंगत आत्माओं की सद्गति के लिये प्रभु से प्रार्थना की गई।

नवाबगंज—आर्य समाज नवाबगंज (गोण्डा) के भूतपूर्व प्रधान श्री हरिश्चन्द्र अस्थाना का दिनांक २३ फरवरी को लखनऊ अस्पताल में असामयिक निधन हो गया। परमात्मा दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

आगरा छावनी—आर्यसमाज नामनेर के उत्सव पर स्व० दीनदयाल जी उपाध्याय के आकस्मिक निधन पर शोक सम्वेदना प्रकट करते हुए प्रस्ताव पारित किया गया।

खण्डवा—आर्यसमाज खण्डवा द्वारा श्रद्धेय पं० माखनलाल चतुर्वेदी के आकस्मिक निधन पर हार्दिक खेद प्रकट किया गया। शोक प्रस्ताव पारित किया गया और इस उपलक्ष्य में आर्यसमाज का वसन्त पर्व उत्सव स्थगित कर दिया।

कोटला—आर्यसमाज कोटला आगरा के प्रधान श्री जगन्नाथप्रसाद का निधन दि० १ फरवरी को हो गया। आप आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता तथा एक योग्य वैद्य थे।

गढ़वाल—श्री पू० श्री० बालकराम जी वानप्रस्थी के आकस्मिक निधन पर आ०स० विजयनगर द्वारा शोक प्रकट किया गया तथा श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

सीतापुर—भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष श्री पं० दीनदयाल जी उपाध्याय के आकस्मिक निधन पर आर्य कन्या इण्टरकालेज में एक शोकसभा का आयोजन किया गया।

मारहरा—मन्त्री आ० स० मारहरा के पिता श्री रामस्वरूप शास्त्री जी का १९ जनवरी को स्वर्गवास हो गया। समाज के साप्ताहिक अधिवेशन में शोक प्रस्ताव पारित किया गया और दिवंगत आत्मा की सद्गति हेतु परमात्मा से प्रार्थना की गई।

गाजियाबाद—आर्यसमाज के कर्मठ नेता चौधरी सूरजमल का दि० ११ फरवरी को बस से एक्सीडेण्ट हो जाने के कारण असामयिक देहावसान हो गया इस सम्बन्ध में आर्यसमाज मन्दिर में एक शोक सभा का आयोजन किया गया प्रतिष्ठित व्यक्तियों द्वारा श्रद्धांजलियां अर्पित की गई।

समस्तीपुर—नगर के एक प्रतिष्ठित समाजसेवी तथा आर्यसमाज के भूतपूर्व प्रधान श्री अयोध्या सहाय वैद्य का अन्त्येष्टि सस्कार पूर्ण वैदिक रीति से दि० १६ फरवरी को सम्पन्न हुआ।

हरदोई—आर्य समाज चडिया के प्रधान श्री विश्वनाथ सरस्वती (पूर्व विशारद) जी की धर्मपत्नी का ७८ वर्ष की अवस्था में देहावसान ११ जनवरी को हो गया। अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। श्री प्रधान जी के सुपुत्र श्री ब्रजेन्द्र व जगदीश जी ने इस अवसर पर आ० प्र० सभा तथा गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन को १५१ रु० वेदप्रचारार्थ दान में दिया।

बुलन्दशहर—दि० १८ फरवरी को आर्यसमाज बुलन्दशहर के साप्ताहिक अधिवेशन में समाज के भूतपूर्व मन्त्री श्री रघुवीरशरण शर्मा के निधन पर शोक प्रकट किया गया और संवेदना प्रस्ताव पारित किया गया।

कृपया पत्र-व्यवहार करते समय ग्राहक नं० अवश्य लिखें। व्यवस्थापक

कन्या की आवश्यकता

मुझे प्यारे पुत्र के लिए सुन्दर सुशील गृहकार्य में दक्ष कन्या की आवश्यकता है।

लड़के की आयु २४ वर्ष [illegible] है। जो [illegible] [illegible] उदयपुर [illegible] विद्यालय में आर्ट अध्यापक है। वेतन [illegible] रु० है। [illegible]

पत्र व्यवहार का पता—हरिश्चन्द्र शर्मा
[illegible] निवास
महर्षि दयानन्द मार्ग [illegible]
(उ० प्र०)

कमिश्नरी आर्य सम्मेलन वाराणसी

बलिया । आर्यसमाज के संगठन को सुदृढ़ बनाने हेतु तथा सामुदायिक विषयों पर विचार विमर्श करने हेतु क्षेत्रीय स्तर की प्रथम बैठक २५ फरवरी को बलिया आर्यसमाज मे श्री आनन्दप्रकाश उपमन्त्री आ० प्र० सभा उत्तर प्रदेश की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुई । जिसमें वाराणसी कमिश्नरी के अन्तर्गत विभिन्न जनपदों के २५ प्रतिनिधियो ने भाग लिया । सम्मेलन के संयोजक डा० सुरेन्द्र शास्त्री ने अभ्यागतों का स्वागत करते हुए बैठक के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला । आपने मुख्यरूप से तीन बातों को संगठन के लिये आवश्यक बताया । प्रथम समस्त आर्यजनों और और समाज के अधिकारियों तथा सक्रिय कार्यकर्ताओं को जन साधारण के सम्मुख अपने उज्ज्वल और अनुकरणीय जीवन को प्रस्तुत करना । द्वितीय-पञ्च महायज्ञ और स्वाध्याय को जीवन का अनिवार्य अङ्ग बनाना । तृतीय-संस्थाओं मे उत्पन्न विवादों और दलबन्दी को समाप्त करने का स्थायी हल निकालना ।

सम्मेलन मे आचार्य विश्वश्रवा जी पं० सत्यदेव जी शास्त्री, स्वामी सत्यानन्द प्रभुदयाल जी, परमानन्द जी तथा कैलाशप्रकाश जी मुख्तार व रामेश्वर प्रसाद जी आदि महानुभावो ने अपने सुझाव रखे तथा जनपदों की आर्यसमाज की स्थिति पर प्रकाश डाला ।

अपने अध्यक्षीय भाषण मे श्री आनन्दप्रकाशजी ने कहा कि पूज्य स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज द्वारा संगठन को सुदृढ बनाने हेतु बताई गई पांच बातों पर सभी आर्य बन्धुओं का ध्यान देना चाहिये तथा उनका अनुसरण करना चाहिये । आपने आह्वान किया कि म० नारायणस्वामी जी, जो आर्यजगत के संगठन के नेता थे, से प्रेरणा लेना चाहिये कि निरन्तर प्रयास अपने जीवन को किस प्रकार उत्कृष्ट और संस्था के लिये हितकारी बनाया जा सकता है ।

सम्मेलन मे निम्नलिखित निश्चय किये गए–

१–प्रत्येक जिले में कम से कम एक परीक्षा केन्द्र, सार्वदेशिक अथवा प्रांतीय सभा द्वारा संचालित परीक्षाओं को स्थापित किया जाय ।

२–आर्यसमाज के सभासद को किसी भी राजनैतिक संस्था का सदस्य नहीं होना चाहिये परन्तु वह अखिल भारतीय आर्य सभा का सदस्य बन सकता है । यह प्रस्ताव सार्वदेशिक आ० प्र० सभा के पास विचारार्थ भेजा जावे ।

३–आर्यसमाजें अपने वार्षिक उत्सवों के अवसर पर संगृहीत धन का १/४ भाग बचाकर जिले में वेद प्रचार विशेष कर ग्राम प्रचार के निमित्त व्यय किया जाया करे ।

४–आगामी ग्रीष्मावकाश मे बलिया मे कमिश्नरी स्तर का आर्यवीर दल शिविर लगाया जाय । वसुमित्र जी, आर्यसमाज मालगोदाम बलिया को संयोजक नियुक्त किया गया ।

५–बलिया जिले के क्षेत्र मे ईसाइयो के बढ़ते हुए प्रचार को देखते हुए सार्वदेशिक सभा मे एक प्रचारक भेजने को कहा जावे । श्री सत्यानन्द जी को प्रचार योजना बनाने का भार सौंपा गया ।

६–सार्वदेशिक तथा 'आर्यमित्र' पत्रों तथा अन्य आर्य जगत् की पत्रिकाओ की ग्राहक संख्या बढ़ाने पर ध्यान दिया जावे ।

–संयोजक

राजीव सोनिया सम्बन्ध

भारत के प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी जी ने अपने पुत्र श्री राजीव का विवाह इटली देश की युवती सोनिया के साथ दि० २५ फरवरी को सिविल मैरिज कानून के अनुसार निज निवास स्थान पर सम्पन्न किया ।

भारतीय तथा आर्य परम्परा के अनुसार उन्होंने कोई संस्कार नहीं कराया और ना ही युवती को आर्य धर्म मे प्रवेश कराया ।

राजीव पूर्व से ही विलायत में पढ़ते हुये भारतीय संस्कृति से शून्य था और विदेशी युवती के प्रेमपाश मे बंधते समय उसने अपने को धर्म शून्य घोषित कर एक भारी अवाञ्छनीय परम्परा को जन्म दिया है । धर्म प्राण देश भारत कभी भी इस प्रकार के उच्छृङ्खलतापूर्ण कृत्य का समर्थन नहीं कर सकता ।

इन्दिरा गांधी भारत की प्रधान मन्त्री न होतीं और तब ऐसा कार्य कर बैठतीं तो कोई उधर ध्यान भी नहीं देता किन्तु भारत के सर्वोच्च राजकीय पद पर आसीन होकर उन्होंने जो आदर्श प्रस्तुत किया है वह सर्वथा निन्दनीय है ।

हम वर वधु के लिये मंगल कामना करते हुये भी आर्य मर्यादा और परम्परा को अपमानित करने वाले इस सम्बन्ध का समर्थन नहीं कर सकते ।

शिक्षा संस्थाओं में साम्प्रदायिकता का विष—

दारुल उलूम देवबंद में शेख का भाषण

मेरठ से शेख अब्दुल्ला साहब देवबंद गए। वहाँ भारत के विख्यात मुस्लिम केन्द्र 'दारुल उलूम' उनकी गतिविधियों का केन्द्र बन गया।

उनके आने पर जो स्वागत समारोह हुआ उसमें शेख साहब को इस्लाम का रक्षक बताया गया। समारोह के अध्यक्ष मौलाना मोहम्मद तैयब साहब ने उनका परिचय देते हुए कहा है—'उनको बैनुल अकवामी (अन्तर्राष्ट्रीय) शख्सियत की अजमत व शोहरत दुनिया के हर मुल्क और हर कौम की जुबान पर है उन्होंने जो बात फूलों की सेज पर कही है वही तलवारों के साये में भी कही है' मौलाना असद मदनी साहब ने शेख अब्दुल्ला साहब की तारीफ करते हुऐ उन्हें 'रहनुमाए वतन' से सम्बोधित किया।

शेख के भाषण के जो अंश हमारे सामने आए हैं उनसे यह प्रगट होता है कि वे सारे हिन्दुस्तान के मुसलमानों को एक नए तरीके से संगठित करना चाहते हैं। दारुल उलूम के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करते हुये उन्होंने कहा—'ये दारुल उलूम देवबंद इस्लामी पुर्जे ढालने की फैक्ट्री है और आपको इस फैक्ट्री से ढलकर इस्लामी सांचों में ढालना है ताकि आपके काम और अमल से इन्सानी कमजोरियां दूर हो सकती हैं।

शेख साहब ने दारुल उलूम में भी इस बात को दोहराया कि कश्मीर पूरी तरह हिन्दुस्तान में शामिल नहीं हुआ। उन्होंने कश्मीरियों को कश्मीर का फैसला करने के लिए आजाद बताया। उन्होंने मुसलमानों की मुसीबतों का नग्न चित्र पेश करते हुए कहा कि आज मुसलमानों को जितनी मुसीबतें पेश आ रही है वह आपस के इख्तलाफात (मतभेद) का नतीजा है।

हिन्दुस्तान को अपना वतन बताते हुए उन्होंने भारत और पाकिस्तान के विभाजन का भी खुला चित्र पेश किया और इस बारे में उनका कहना है कि 'हिन्दुस्तान की तकसीम से जो जख्म पड़ गये हैं, हमें अपने अमल से दूर करना है।' इसके आगे उन्होंने अपने पुराने बुजुर्गों की याद को ताजा करते हुए कहा है 'हमारे बुजुर्गों ने जो पार्ट हिन्दुस्तान में अदा किया है वही हमें करना है।

शेख अब्दुल्ला ने शायद मेरठ की घटना को ध्यान में रखकर दारुल उलूम में देवबंद के जलसे में वे बातें न दोहरायी हों जो उन्होंने मेरठ के जलसे की तकरीर में कहीं। शेख साहब ने मेरठ के मुसलमानों को मशवरा दिया है कि वे मुनजिम होकर अपने हकूक की हिफाजत करें। इस सम्बन्ध मे इतना ही कहा जा सकता है कि अच्छा यह है कि मुसलमान अपने आप को सीमित न रखकर सम्पूर्ण भारत का एक अंग समझकर संगठित हों। ५ फरवरी के अलजमीयत अखबार ने अमरोज अखबार की एक टिप्पणी प्रकाशित की है जिसका शीर्षक है मुसलमान खुद कुछ करें। इसमें कहा गया है '२० वर्षों के तजुर्बे और मशाहद (कार्यों) के बाद हिन्दुस्तान के छः करोड़ मुसलमान इस मरहले पर हैं, जहां उम्मीद कम मायूसी ज्यादा, रोशनी कम तारीकी (अन्धकार) ज्यादा, इन्साफ की तवक्कम (आशा) कम और बेइन्साफी का अंदेशा ज्यादा।

इन राष्ट्रवादी कहे जाने वाले मुसलमान भाइयों के इन विचारों से ये बात प्रकट होती है कि वे सब प्रकार की सुविधाओं और विशेष रियायतें दिये जाने पर भी सन्तुष्ट नहीं। वे हर बात को साम्प्रदायिक ढंग से सोचते हैं और इस्लाम के नाम पर अपने आप को संगठित करने में गौरव समझते हैं और जब कोई मामला गम्भीर स्थिति धारण करता है तब ये अपनी राष्ट्रवादिता की दुहाई देते हैं और कहते हैं 'हमने खून दिया है। हमने जेलें भरी हैं, हम अंग्रेज से लड़ रहे थे।

इस प्रकार के विचारों से राष्ट्र का कितना भला होगा यह विचारने की बात है। प्रश्न तो सीधा यह है कि हम इस समय अपने देश की आजादी की रक्षा कहां तक कर रहे हैं। हमें देखना यह भी होगा कि जिस साम्प्रदायिकता की आग में जलने से हमने अपने देश को अब से २० साल पहले बचाया था, उसे उससे अब सुरक्षित कैसे रखना है।

मुसलमानों के हृदय में शेख अब्दुल्ला के प्रति मानवता के नाते प्रेम होना तो क्षम्य हो सकता है परन्तु इनकी अराष्ट्रीय नीति और देशद्रोही कामों में भारत के एक भी व्यक्ति को प्रेम और लगाव नहीं होना चाहिए।

जमीयते उलमा ने हिन्दुस्तान की आजादी में जबरदस्त हिस्सा लिया, इससे हमें भी इंकार नहीं परन्तु अब उसका यह रवैया कि वह हिन्दुस्तान के बड़े बड़े नगरों में शेख अब्दुल्ला के कार्यक्रम रखकर साम्प्रदायिकता की भावनायें फैलाने की चेष्टा करे। यह न्यायसंगत नहीं माना जा सकता। राष्ट्रवादी मुसलमानों का इस समय सबसे पहला काम यह है कि वे शेख के मस्तिष्क में इस बात को लाएं कि वह भारत के नागरिक हैं क्या ही अच्छा होता कि उत्तर प्रदेश जमयते उलमा के इजलास में उनसे यह घोषणा करायी जाती—"मैं उस हिन्दुस्तान का नागरिक हूं जिसमें काश्मीर भी शामिल है।

शेख अब्दुल्ला इस तरह की घोषणा क्यों करते? उन्हें तो सारे हिन्दुस्तान का एक महान मुस्लिम नेता बनना है। उनकी अपनी कोई विशेष योजना है जिसके अनुसार वे आजादी में सोचते हैं, भाषण देते हैं, विचार प्रकट करते हैं और अहले इस्लाम के नाम पर जमायते उलमा के माध्यम से लोगों से मिलते जुलते हैं। अब सरकार का यह कर्त्तव्य है कि वह शेख की प्रत्येक गतिविधि का गम्भीरतापूर्वक अध्ययन करे। वह इस बात की भी जांच पड़ताल करे कि उनके इशारे पर कौन लोग भारत में अराष्ट्रीय तत्वों को प्रोत्साहन देते हैं।

★

पूज्य स्वा० सुधानन्द जी की केरल यात्रा

पूज्य स्वामी सुधानन्द जी महाराज दयानन्द मठ दीनानगर से १४ दिसम्बर को लखनऊ फैजाबाद जौनपुर बनारस इलाहाबाद कानपुर और झांसी होते हुए मद्रास पहुचे। सभी समाजों ने स्वामी जी का बड़ा सत्कार किया इस यात्रा में श्रद्धेय स्वामी जी के साथ श्री रामनाथ यात्री जी भी थे। स्वामी जी ने इलाहाबाद में प्रथम अवसर पर आर्यसमाज के यशस्वी विद्वान पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय को मिले। पण्डित जी के दर्शन कर वे बहुत प्रसन्न हुए अनेक शब्दों में पण्डित जी साक्षात देवता हैं।

पुन आकस्मात मद्रास में २१ १ ६८ को Punjab Association में महर्षि दयानन्द दिवस पर स्वामी जी से भेंट हुई इस अवसर पर भारत के उपराष्ट्रपति श्री वी० वी० गिरि तथा मद्रास के भूतपूर्व मुख्य मंत्री श्री भक्तवत्सलम ने महर्षि दयानन्द के प्रति भावभरी श्रद्धांजलि अर्पित की। इसी अवसर पर तमिल भाषा में 'त्याग भूमि' का महर्षि दयानन्द अङ्क भी प्रकाशित हुआ। उपस्थिति प्राय मद्रास के निवासियों की ही थी। इस समारोह का प्रभाव सारे दक्षिण पर पड़ा।

मैं स्वामी जी के साथ मद्रास से चंगनूर (केरल) गया जो लगभग ५५ मील है। यह प्रदेश अत्यन्त रमणीय प्रदेश है चाय काफी नारियल सुपारी केले की उत्पत्ति विशेष रूप से होती है। ऐसा प्रतीत होता है कि ईश्वर ने सारे विश्व का नारियल इसी प्रदेश में उत्पन्न किया है।

केरल की आबादी लगभग डेढ़ करोड़ है। इसमें मुसलमानों की संख्या लगभग १८ लाख है, ईसाई २३ प्रतिशत के लगभग हैं। २७ लाख हरिजन हैं जिनको ईसाई बनाने के लिए ईसाई मिशनरियों द्वारा दिन रात कार्य हो रहा है। गरीबी बहुत है। जिनको ईसाई बनाने के लिए ईसाई प्रचारक दिन रात प्रयत्न शील हैं। अफसोस कि इस इलाके में गरीब हिन्दू जनता की सहायता के लिये किसी हिन्दू संस्था की ओर से कोई कार्य नहीं हो रहा है।

कितने आश्चर्य की बात है कि सात समुद्र पार से आने वाली जाति सारे इलाके पर छा गई है। मद्रास से कन्याकुमारी तक हम दोनों ने सड़क की दोनों ओर अपनी आंखों से चर्च और क्रास देखे। कन्याकुमारी की ठाठें मारते हुये विशाल समुद्र के पास ईसाइयों का एक बड़ा चर्च बना हुआ है ईसाई प्रचारकों तथा Nuns के झुंड के झुंड हमने केरल में देखे। केरल प्रांत के भ्रमण से कोई द्वेष नहीं है। प्राय अपनी प्रान्तीय भाषा मलयालम बोलते हैं परन्तु बाहर के आने वालों का हिन्दी से ही काम चल सकता है।

कन्याकुमारी के सूर्यास्त का दृश्य अत्यन्त रमणीय था। वहां पर विवेकानन्द मैमोरियल रॉक का निर्माण हो रहा है। त्रिवेन्द्रम में हमने पद्मनाभ स्वामी का मन्दिर देखा जो ललित कला की दृष्टि से अपना विशेष महत्व रखता है।—कृष्ण शास्त्री, आ०स०, अशोक रोड (मैसूर)

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल.-६०
रा० फाल्गुन २७ शक १८८९ [illegible]
(दिनांक १७ मार्च सन् १९६८)

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

Registered No. L. 60
पता—"आर्यमित्र"
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष . २२९९१ तार : "आर्यमित्र"

आर्य जनता साव-धान रहे

आर्य, प्रतिनिधि सभा पंजाब का मामला

ओमप्रकाश जी त्यागी एम० पी० की विज्ञप्ति

सार्वदेशिक न्याय सभा ने पंजाब सभा के सम्बन्ध में जो निर्णय दिया है नियमानुसार उसके क्रियान्वय का अधिकार सार्वदेशिक सभा के प्रधान जी को है। उन्होंने इसके लिए एक समिति बना दी है जिसके कार्यकर्ता प्रधान, श्री ओम्प्रकाश त्यागी हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के आगामी चुनाव के सम्बन्ध में कुछ बातें अभी हाल में समाचार पत्रों में प्रकाशित हुई हैं जिनसे भ्रान्ति फैलने की सम्भावना है अत: श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी ने इस भ्रम के निवारणार्थ निम्नलिखित विज्ञप्ति प्रकाशित की है।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्णय के विरुद्ध कई कोर्टों की शरण ली और सब में वह हारती गई अन्त मे सार्वदेशिक न्याय सभा में गई और फिर उसके खिलाफ भी कचहरी में केस दाखिल किया। उसमें भी उसको हार ही माननी पड़ी। सार्वदेशिक न्याय सभा ने अपना निर्णय घोषित किया और उसके अनुसार पाकसभा आदि में हुए चुनाव अवैध हैं तथा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरङ्ग सभा और सभी अधिकारी आदि अवैध तथा अपने पदों पर कार्य करने के अयोग्य ठहराये गये हैं। अत अवैध अन्तरग सभा और अधिकारियों को पजाब सभा के आगामी चुनाव कराने का स्वय को एव कोई भी अधिकार किसी व्यक्ति को देने का अधिकार ही नहीं प्राप्त है। फिर वह अधिकार किसी को किस प्रकार दे सकती है। अभी भी वे कोट मे सार्वदेशिक न्याय सभा के केस के विरुद्ध आ चुके हैं।

सदभावना का वातावरण उत्पन्न होने के प्रयास का हमारी सभा ने सदा स्वागत किया है और अब भी करती है। परन्तु वस्तुस्थिति यह है कि नियम और विधान के अनुसार सार्वदेशिक न्याय सभा के निर्णय को कार्यान्वित करने का अधिकार एकमात्र सार्वदेशिक सभा के प्रधान को है जो उसकी अन्तरग सभा के १४-१-६८ के निम्न प्रस्ताव से स्पष्ट है —

'आर्य प्रति० सभा पजाब के विवाद के सम्बन्ध में सार्वदेशिक न्याय सभा का दि० १६ ११ ६७ का निर्णय पढ़ा गया तथा श्री नारायणदास जी कपूर का दिनांक २ १ ६८ का पत्र तथा संलग्न ३१-१२ ६७ का निश्चय पढ़ा गया सार्वदेशिक सभा के निर्णय को क्रियान्वित करने का अधिकार एकमात्र सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान को होते हुए भी आज की यह अन्तरङ्ग सभा पूज्य आनन्द स्वामी जी महाराज, श्री कपूर जी तथा सब हस्ताक्षर करने वाले महानुभावों के सदभावना प्रयास का स्वागत करती है। इस पत्र पर विचार करने से पूर्व सदभावना का वातावरण पूर्णतया निर्माण हो एतदर्थ आवश्यक है कि पजाब प्रतिनिधि सभा द्वारा सार्वदेशिक न्याय सभा के निर्णय के विरुद्ध चलाए गए अभियोग को बिना शर्त न्यायालय से वापस लिया जाय।

सभा प्रार्थना करती है कि श्री प्रधान जी महात्मा आनन्दस्वामी जी का मूल्यवान सहयोग प्राप्त करके इस विवाद को शीघ्राति शीघ्र समाप्त करवा दें।

विदित रहे कि इस प्रस्ताव को भी ठुकराते हुये आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की तथा कथित अन्तरग सभा ने सार्वदेशिक सभा के विरुद्ध चलाए गये अभियोग को वापस लेने से इन्कार कर दिया है इसका तात्पर्य यह है कि वे सदभावना का वातावरण नहीं उत्पन्न करना चाहते हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का विवाद

आर्यसमाजों को सूचनार्थ विज्ञापित किया जाता है कि [illegible] न्याय सभा के आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब सम्बन्धी निर्णय के [illegible] को कार्यान्वित करने की व्यवस्था के लिये [illegible] [illegible] अम्बाला में १३-२-६८ से [illegible] है।

—[illegible]
कार्यकर्ता [illegible]

(पृष्ठ १५ का शेष)

को विलुप्त हो गया है। 'इला दी फ्रांसे' का पूरा मतलब था "डोडो का द्वीप" यह नाम सार्थक था। डचों ने डोडो को देखा था। वे टापू को पसन्द करके उस पर रहने लगे। चूहे कुत्ते भी आ गये थे। मनुष्य, चूहे, कुत्ते के संयुक्त मोर्चे के सामने डोडो ठहर न सका। बेचारा नष्ट हो गया। १७ वीं शताब्दी के अन्त में डोडों का काम तमाम कर लिया गया था। यह बात सही है, जिस तरह कि सेलानियों को देने के लिए रखी गई पुस्तिका में बताया गया है, कि फ्रेंचों के शासन काल के अन्तिम दिनों में या १८ वीं शताब्दी के अन्तिम चरण में यह पक्षी दिखाई देता था। असावधानी से किताब लिखकर भ्रमण शील विदेशियों को गुमराह किया जा रहा है। किसी दूसरी पुस्तिका मे लिखा गया कि राम ने रावण को जीता था। मतलब राम और रावण से है।

डोडो को नष्ट करके डच द्वीप पर रह न सके। उन्होंने ही मारीशस नाम प्रथम बार दिया था।

त्यागे गये द्वीप को फ्रांस ने ले लिया। तब उसका नाम 'फ्रांस का द्वीप' पड़ा यह नाम फ्रेंचों को इतना प्रिय है कि अब भी जब वे मारीशस लिखते हैं तो भूतपूर्व फ्रांस का द्वीप नाम साथ दे दिया करते हैं।

अंग्रजों ने लड कर 'फ्रांस का द्वीप' १८१० मे लिया और उसे उसका द्वितीय नाम मारीशस नये सिरे से दिया। याद करने लायक है कि ६ हजार भारतीय सिपाहियों ने अंग्रेजों का साथ दिया था।

पहला नाम अभी मिटा नहीं है। ब्रिटिशों का आगमन फ्रेंचों को नापसन्द था। १८२३ में उन्होंने एक दैनिक पत्र को चलाना आरम्भ किया जो इस समय भी जीवित है। उसका नाम "सेरनेइ" या "सेरनी वाली" रखा गया।

[illegible] ने "[illegible]" का उल्लेख किया था जिससे चिरकाल तक यह गलतफहमी फैली हुई थी कि [illegible] (मारीशस ही की ओर) संकेत करते हैं।

इतिहासकार खोज करने में लगे हैं और वे इस परिणाम पर आ गये हैं कि सर्वप्रथम द्वीप को डोमिंगो फेरनान्डेज नाम दिया गया था न कि सेरने। डोमिंगो फेरनान्डेज एक नाविक था जिसने मारीशस का आविष्कार किया था।

जबसे मारीशस को स्वतन्त्रता प्राप्त हुई है उन १० हजार फ्रेंचों का जो उस देश के निवासी हैं, देवता कूच कर गया है। इसी साल "सेरनेइ" में एक लेख छपा था जिसमे बताया गया था कि प्रवासी भारतीय देश का नाम बदलकर उसे "मणि" पुकारेंगे। सर्व विदित है कि अनेक नये राष्ट्रों ने नये नाम ले लिये हैं। "घाना" "मिवाना" नये नामों में से है।

बात यह है कि विगत जुलाई में कवि रामाधारीसिंह दिनकर ने मारीशस की एक यात्रा की थी जब वे एक साहित्यकार से मिले थे। अपने देश का परिचय देते हुये इस साहित्यसेवी ने प्रवासी भारतीयों के मध्य प्रचलित एक लोक कथा रोचक ढंग से अपने अतिथि को सुनाई। समाचार दवाग्नि की भांति लघुद्वीप में फैला। कथा में आता है कि मारीशस एक हीरा, मोती या मणि है। गोरों ने सोचा कि जो ४ लाख हिन्दू इस समय देश में हैं वे १२५००० मुस्लिम, २२५००० ईसाई तथा २३००० चीनी की परवाह न करके कोई हिन्दी नाम देश को देंगे। बेचारों का भय निराधार है। हिन्दू सब से मिलकर जन्मभूमि की सेवा करना चाहते हैं।

❀

स्वत्वाधिकारिणी आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से कृष्णगोपाल शर्मा द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।

मन्त्र-मनन-माला

(द्वितीय सुमन)

'अदितेऽनुमन्यस्व ।
अनुमते ऽनुमन्यस्व ।
सरस्वत्यनुमन्यस्व' ।

इन उपर्युक्त तीन मन्त्रों से यथाक्रम पहले वेदी के पूर्व में, तदनुसार पश्चिम में तत्पश्चात् उत्तर में सलिल सिञ्चन किया जाता है। परन्तु इन मन्त्रों से जल के सिञ्चन का कुछ भी संकेत नहीं मिलता है। 'अदिति' से पूर्व दिशा का, अनुमति से पश्चिम दिशा का और सरस्वती से उत्तर दिशा का सम्बन्ध विचारणीय है। यदि सलिल सिञ्चन की उपयोगिता यही है कि हवि-प्रदान के लोभ से आने वाले पिपीलिकादि कीट आग की दाहकता से बचे रहें तो भी दक्षिण भाग में सिञ्चन न किये जाने से उस ओर से तो वे आ ही सकेंगे।

अवश्य अदिति, अनुमति, और सरस्वती तीनों के स्त्री लिंग होने से इन तीन देवियों से जल सिञ्चन की प्रार्थना और अग्नि सोम इन्द्र प्रजापति आदि पुल्लिङ्ग देवों को आहुतियां प्रदान करने के औचित्य का विभाजन भी विचारणीय है। इसके आगे ओ३म् देवसवितः प्रसुव यज्ञं, प्रसुव यज्ञपतिं भगाय।

दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु ॥ इस मन्त्र से यज्ञवेदी के चारों ओर जल छिड़कने का विधान है। इस मन्त्र में भी जल वाचक पद नहीं है, और न उनके द्वारा सलिल सिञ्चन के संकेत की संगति है। तब फिर जल सिञ्चन को किस तर्क से समझा जाय। मनु भगवान् ने धर्म के जानने के लिए तर्क के द्वारा अनुसन्धान का मार्ग बतलाया है।

"यस्तर्केणानुसन्धत्ते स धर्मं वेद नेतरः"

इस मन्त्र को दिशा से 'वाचस्पति-र्वाचं नः स्वदतु' का सीधा सादा अर्थ है कि वाचस्पति वाणी का स्वामी अर्थात् वाक् सिद्धि सम्पन्न वक्ता हमारी उक्तियों का स्वाद लें। हम तक सबन ऐसा मधुर वचन बोलें कि वह सिद्धि अधिवक्ता हमारे वचनों का अभिनन्दन करें। यह तो किसी संसद, परिषद या सभा में युक्तियुक्त प्रवचन के अभिनन्दन का संकेत करता है। 'केतपूः केतं नः पुनातु' 'कित ज्ञाने धातु से केत का अर्थ ज्ञान या विधान को धारा और विधान की धाराओं को पवित्रता रखने का काम संविधान का होता है। गन्ध अर्थात् वाणी को धर अर्थात् धारण करने वाला होने से गन्धर्व हुआ संविधान। वह संविधान तभी दिव्य या देव शक्ति सम्पन्न लोकोत्तर बन सकता है जब वह अदिति अखण्डनीय सर्वसम्मत नियमों का अनुमत हो, तदनन्तर विचारणीय मतों पर बहुमत की अनुमति मिल जाय और उससे बढ़कर सरस्वती के उपासकों या

सरस्वती श्रुति महती मही की अनुमति प्राप्त हो। तभी वह विधान की धाराओं को पवित्र करने वाला केतपूः कहला सकता है। और उससे केत अर्थात् विधान धाराओं को पवित्र करने की प्रार्थना की जा सकती है। तभी राष्ट्र और राज्य के लिए 'भगाय' ऐश्वर्य का निमित्त बन सकता है।

इन मन्त्रों में अग्नि देव को सम्बोधन नहीं किया गया है। अतः निश्चय से अग्नि कार्य इससे नहीं होना चाहिए। अग्न्याधान में देवयजनी पृथिवी को सम्बोधन कर उसकी पृष्ठ पर अन्नाद अग्नि का आधान किया है। उसके बाद अग्नि देव से उद्बुद्ध होने की प्रार्थना की है और हे दूसरी प्रार्थना है यह अग्ने व यजमान और अग्नि देव आप दोनों मिलकर इष्ट और आपूर्त का सम्पादन कीजिए और इस अग्नि सहित स्थान में तथा इससे भी उत्तर अर्थात् उत्कृष्ट स्थान में विश्वेदेव और यह यजमान और तुम

बैठो। यहाँ 'सीदत' यह मध्यम पुरुष बहुवचन का किया है अतः आवश्यक है कि उसमें सम्बोध्य अग्नि देव की उपस्थिति प्रधान रूप से प्रार्थनीय है और उसके साथ विश्वेदेव और यजमान उसकी अध्यक्षता में बैठें। यह उत्तम स्थान सभा समिति और विदथ होने चाहिए। क्योंकि ऋग्वेद का प्रारम्भ अग्निदेव की स्तुति से होता है और समाप्ति संगठन सूक्त पर होती है। सम्भवतः इसी आधार पर साप्ताहिक सत्संग का प्रारम्भ अग्नि देव की स्थापना से होता है और समाप्ति संगठन सूक्त के पाठ से तथा शान्ति पाठ से की जाती है।

अग्न्याधान के अनन्तर जातवेदस् अग्नि को सम्बोधन करते हैं, उसको इध्म समिधा प्रदान कर उसको दीप्त और प्रबुद्ध करते हैं और उससे अपनी आत्मा को, प्रजाओं से, पशुओं से, ब्रह्मवर्चस् से और अन्नादिकों से समृद्ध करने की प्रार्थना करते हैं। जातवेदस अग्नि के साथ अंगिरस् अग्नि को भी घृत के द्वारा बढ़ाते हैं। 'अंगिरो घृतेन वर्धयामसि' अर्थात् अग्नि को घृत से बढ़ाया जाता है, इसीलिये घृत मिश्रित भोजन का विधान है, उसी से सब अङ्गों का स्वस्थ एवं सुन्दर निर्माण होता है। अंगिरस का सब अंगों को समृद्ध करने वाला अग्निदेव आदि प्रसिद्ध अग्नि मय है।

इसके आगे अग्नि को सम्बोधन न करके हम अदिति, अनुमति और सरस्वती को सम्बोधन करते हैं कि वे हमें अनुकूल मति प्रदान करें अर्थात् समाज सभा-समिति और विदथों में संगठन हो।

समानो मन्त्रः, समितिः समानी,
समानं मनः सह चित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रम् अभिमन्त्रये वः,
समानेन वो हविषा जुहोमि ॥

हमारी मन्त्रणायें समानता के आधार पर हों, हमारी समिति समता का निर्माण करने वाली हो, हमारे मन समान हों, हमारे चित्त में सहानुभूति हो। जब हमारी ऐसी सर्वतोमुखी समानता की भावना परमात्मा देखता है तब वह हमारा अनुमोदन करता है कि समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः' और हम पर प्रसन्न होकर आशीर्वाद देता है कि समानेन वो हविषा जुहोमि' मैं तुम सब को समान रूप से हवि अन्न और जल वायु और प्रकाश तथा आकाश और अवकाश प्रदान करता हूं तुम सब मिल कर समता से भोग करो।

जिस प्रकार उन्नति और आगे बढ़ने की प्रेरणा हमें अग्नि से मिलती है उसी प्रकार समानता, स्वच्छता, पवित्रता, शान्ति और चित्त की सरसता का आदर्श हमें जल से मिलता है अतः अदितेऽनुमन्यस्व, अनुमतेऽनुमन्यस्व, सरस्वत्यनुमन्यस्व में यज्ञवेदी की दिशाओं में जल का सिंचन करते हैं। पूर्व दिशा में अर्थात् सबसे पहले अदिति अखण्डनीयता अर्थात् विश्व से अभिन्न भावना से अनुकूल मति की प्रार्थना करते हैं, तदनन्तर अनुमति से समिति की समानता से मन की समानता से, अर्थात् चित्त की सहानुभूति और विचारों की अनुमति से जो सर्वसम्मत या बहुसम्मत हो उसके अनुमति की प्रार्थना करते हैं। और इन दोनों से उत्तर स्थान या सर्वोत्तम प्रधानता सरस्वती श्रुति महती महौषधी को अनुमति को देते हैं।

★ आचार्य वात्सायन
वैदिक शोध संस्थान, कानपुर

जल चाहे कितना ही अगाध या उथला हो उसका ऊपरी तल सदा समतल ही रहेगा। लोगों की स्थिति में शरीर मन बुद्धि के धनादिक में कितनी भी असमानता हो समाज के स्तर में सहानुभूति और आत्म समर्पण सेतु की भावना से समतलता होनी ही चाहिए। परमपिता परमात्मा ने समझाया है कि मैंने सभी के लिए समान रूप से हविः प्रदान किया है 'समानेन वो हविषा जुहोमि'। परमात्मा समदर्शी है जल समतल कर्ता है अतः हम समाज में समतल रखने के लिए वेदी का सभी दिशाओं में देव सावित प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं मन्त्र से जल सिंचन करते हैं। इस मन्त्र में हम सकल जगदुत्पादक देव सविता से प्रार्थना करते हैं कि वह हम में यज्ञ की भावना उत्पन्न करे और यज्ञ की भावना के पालन करने तथा पालन कराने वाले को हमारे बीच में उत्पन्न करे जो कि हमारा यज्ञपति अर्थात् सभापति, समितिपति और राष्ट्रपति बन सके। हमारा दिव्य गन्धर्व संविधान समाज राष्ट्र के भगाय अर्थात् ऐश्वर्य के लिए हो।

इस प्रकार समाज की चारों दिशाओं की प्रतीक यज्ञवेदी के चारों दिशाओं में जल सिंचन किया जाता है। जल सिंचन के द्वारा आठ प्रार्थना की जाती है, पहली अदिति अर्थात् अखण्डनीयता की दूसरी समाज की अनुमति की तीसरी श्रुति-महती महावती सरस्वती की अनुमति की। चौथी सकल जगत् के सविता देव से यज्ञीय भावना के उत्पन्न करने की पांचवी यज्ञपति अर्थात् समाज एवं राष्ट्र के व्यवस्थापक के उत्पादन की, छठी दिव्य गन्धर्व लोकोत्तर संविधान के द्वारा ऐश्वर्य प्राप्ति की, सातवीं विधान धाराओं के पवित्र करने वाले से धाराओं की पवित्रता की और आठवीं प्रार्थना ऐसी युक्ति युक्त प्रिय सत्य तर्क प्रणाली की है जिसका वाचस्पति भी स्वाद ले सके। इन आठ भावनाओं से ही समाज में समरसता, सद्भावना आ सकेगी।

★

अचार्य विश्वश्रवाः व्यास एम.ए. वेदाचार्य

जिनको गवर्नर उत्तर प्रदेश ने संस्कृत यूनिवर्सिटी वाराणसी की ऐक्जीक्यूटिव कौंसिल का सदस्य सरकार की ओर से नियत किया

आचार्य विश्वश्रवाः जी देश देशान्तर के आर्यजगत् में जहां ख्याति प्राप्त केवल उच्चकोटि के महापण्डित प्रसिद्ध हैं वहां आपके पाण्डित्य की ख्याति वाराणसी के विद्वानों में भी है। स्वामी ध्रुवानन्द जी सरस्वती जब विदेशों की यात्रा से लौटे तब उन्होंने बताया कि विदेश के लोग भी आचार्य विश्वश्रवाः जी का परिचय पूछते थे। आचार्य जी इस बात के लिये अति प्रसिद्ध हैं कि वे महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के ग्रन्थों और वेदभाष्यों में कोई भूल नहीं मानते वे स्वामी जी को साक्षात्कृतधर्मा ऋषि मानते हैं। आचार्य जी के बारे में पण्डित लोग यहां तक कह देते हैं कि ये तो स्वामी जी के ग्रन्थों में छापे की भी भूल नहीं मानते। आचार्य विश्वश्रवाः जी ने अपने जीवन में अनेक स्वतन्त्र विचार वाले आर्यसमाज से सम्बन्ध रखने वाले पण्डितों से भयकर से भयकर टक्कर ली है और उन्हें आर्यसमाज में पनपने नहीं दिया।

विद्याध्ययन

आर्यसमाज मूड बरेली के संस्कृत महाविद्यालय से आपकी शिक्षा प्रारम्भ हुई जहां रहकर आपने बाल्यकाल में ही संस्कृत के माध्यम से अध्ययन करते हुए व्याकरण मध्यमा की। फिर देश के विभिन्न नगरों में घूमते हुए चार विश्वविद्यालयों के आप पोस्ट ग्रेजुएट बने। (१) गवर्नमेंट संस्कृत कालिज बनारस, (२) पंजाब यूनिवर्सिटी, (३) आगरा यूनिवर्सिटी, (४) और संस्कृत यूनिवर्सिटी वाराणसी से आपने एम० ए० आचार्य आदि परीक्षायें भिन्न-भिन्न विषयों में की। और इस समय भी लखनऊ यूनिवर्सिटी के लिये प्राचीन भाषा विज्ञान पर पी एच डी का थीसिस लिख रहे हैं। आचार्य जी ने काशी, लाहौर, जयपुर, हरिद्वार आदि के उच्च कोटि के परम्परागत विद्वानों से व्याकरण अलंकार शास्त्र दर्शन वेद आदि का अध्ययन नियम रूप से किया है। आप के गुरु जनों में से कुछ के नाम यहां दिये जाते हैं।

१—महामहोपाध्याय शिवदत्तदाधिमथ—व्याकरण गुरु।

२—महामहोपाध्याय प० रामेश्वरानन्द—अनेक शास्त्रों के गुरु

३—महामहोपाध्याय प० गिरधर शर्मा चतुर्वेद और प० मधुसूदन झा विद्यावाचस्पति जयपुर राजगुरु—वेद आदि शास्त्रों के गुरु।

४—कवितार्किक प० नृसिंहदेव दर्शनाचार्य और प० भीमसेन शर्मा महाविद्यालय ज्वालापुर—दर्शन गुरु

५—डा० वूलनर और डा० कुरैशी अनुसन्धान और जर्मन भाषा गुरु। इत्यादि अनेक गुरुजनों से ललित हरि संस्कृत कालिज पीलीभीत, ओरियन्टल कालिज लाहौर, डी० ए० वी० कानपुर, हिन्दू कालिज बनारस आदि में रहते हुए भी श्री आचार्य जिस्ते प० जगन्नाथ शास्त्री आदि काशी के विद्वानों से आपने शिक्षा प्राप्त की। अतः हम स्पष्ट शब्दों में आचार्य विश्वश्रवा जी को साङ्गोपाङ्ग वेदाचार्य कह सकते हैं।

आपकी धर्मपत्नी भी वेदाचार्य

श्री आचार्य जी स्वयं जहां काशी के वेदाचार्य हैं वहां आर्यजगत को जान कर आश्चर्य होगा कि आपकी धर्मपत्नी श्रीयनी देवी जी ने भी काशी की वेदाचार्य परीक्षा १२ वर्ष अध्ययन करके की है। आपके बच्चों की संस्कृत मातृभाषा के समान रही और आपके ज्येष्ठ पुत्र वेदश्रवाः ने तो आठ वर्ष की आयु में ही समग्र व्याकरण चार हजार सूत्र मां की गोद में ही कण्ठस्थ कर लिया जो अब इस समय एम०एस०सी० कर रहा है आपके तीन पुत्र और ३ पुत्रियां हैं। पुत्रों के नाम वेदश्रवा, इन्द्रश्रवा और ऋषिश्रवा तथा पुत्रियों के नाम विश्व भारती विश्वकीर्ति और विश्वज्योति है सभी उच्च विद्या अभी प्राप्त कर रहे हैं सभी बच्चे वैदिक सिद्धान्तों के ज्ञाता हैं और बच्चे भी उच्चकोटि के वक्ता हैं।

आचार्य जी का कार्यक्षेत्र

आचार्य विश्वश्रवाः जी डी०ए०वी० कालेज लाहौर के संस्कृत विभाग में प्रोफेसर रहे और डी०ए०वी० कालेज के रिसर्च डिपार्टमेण्ट तथा विश्वेश्वरानन्द वैदिक रिसर्च इन्स्टीट्यूट लाहौर में वैदिक रिसर्चस्कालर रहे जहां रहकर आपने जैमिनीय ब्राह्मण यजुर्वेद की मैत्रायणी शाखा के पद पाठ निरुक्त आदि अनेक ग्रन्थों पर रिसर्च कार्य किया वेङ्कटमाधव का ऋग्वेदभाष्य, स्कन्दमहेश्वर का निरुक्त भाष्य सामविधान आदि पर भी आपने कार्य किया। व्याकरण का अध्यापन आचार्य जी ने बहुत वर्ष छात्रों को कराया। व्याकरण को बिना पुस्तक हाथ में लिये आप पढ़ाते थे।

प्रचार कार्य मे आने का इतिहास

आचार्य विश्वश्रवा जी ने यथाशक्य चान्द्रायण व्रत करने हुये एक मास दिन रात गायत्री का जप किया। कभी एक समय भोजन करके चार घण्टे की प्रति दिन की निद्रा का अभ्यास कर लिया और वर्षों प्रतिदिन १२ घण्टे का मौन धारण करके १६ घण्टे और १८ घण्टे अध्ययन प्रतिदिन करते। लाहौर में दो मकान ले रखे थे एक में ताला डालकर दूसरे मकान में जाकर पढ़ते थे जिस मकान को कोई नहीं जानता था जिससे मिलने वाला कोई न आवे रिसर्च डिपार्टमेण्ट डी०ए०वी०कालेज लाहौर के संग्रह में स्थित हजारों हस्तलेखों को जिनके अक्षर भी महीन थे ताड़ पत्र पर लिखे ग्रन्थों का भी अध्ययन करते रहते थे। अचानक एक दिन कार्य करते हुये जबकि सैकड़ों हस्तलेख सामने पड़े थे जिन पर कार्य कर रहे थे, आंख की रोशनी एक साथ ही समाप्त हो गई। हस्तलेखों का दूसरे से उठवाकर रखवा दिया। तब विवश होकर मौखिक प्रचार की लाइन में आना पड़ा। महात्मा हंसराज जी आदि जब आचार्य जी से व्याख्यान देने को कहते थे तब आचार्य जी यह कहकर मना कर देते थे कि व्याख्यान में समय नष्ट होता है इतनी देर में मैं दो ग्रन्थ समाप्त करूंगा। अब विवश होकर व्याख्यान के संसार में आना पड़ा आप ने सबसे पहला व्याख्यान आर्य समाज गोरखपुर के वार्षिकोत्सव पर दिया जहां उत्तरप्रदेश में सबसे अधिक उपस्थिति होती थी दस पन्द्रह हजार की जनता में बिना लाउडस्पीकर के (उस समय लाउडस्पीकर चला नहीं था) बिना अभ्यास के केवल महर्षि की आग जो हृदय में थी ऐसा व्याख्यान पहली बार हो गया कि आपकी प्रसिद्धि सर्वत्र फैल गई और आप उत्सवों पर आने लगे।

आंखों की चिकित्सा

भारतवर्ष के अनेकों चिकित्सालयों में आंख के विशेषज्ञों से चिकित्सा भी प्रारम्भ हुई और प्रभु कृपा से आंखें ठीक हो गई और अब आप व्याख्यान और अनुसन्धान कार्य दोनों ही कर रहे हैं। आप लेखक भी हैं वक्ता भी हैं और शास्त्रार्थकर्ता और अध्यापन कार्य में भी दक्ष हैं विद्या के सभी गुण आप में है।

राजपरिवारों मे सम्मान

आपका सम्मान राज परिवारों में भी पर्याप्त रहा है। राजसाहब [illegible] राजा [illegible] और [illegible] के [illegible] राजा [illegible] के यहां आप सम्मान प्राप्त करते रहे हैं राजा आवागढ़ तो अपने दरबार में आचार्य जी को बुलाकर रखी बधवाते थे।

सभाओं के अधिकारी

आचार्य विश्वश्रवाः जी सर्वप्रथम गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन के रजिस्ट्रार हुए। यह कालिजों का जीवन बिताने के पश्चात् आर्य समाज में कार्य प्रारम्भ हुआ उस समय आचार्य जी ने गुरुकुल वृन्दावन से सब अप्रामाणिक ग्रन्थ निकाल कर फेंक दिये और आर्ष ग्रन्थ कोर्स में कर दिये पर अंग्रेजी, गणित, इतिहास और भूगोल आदि को भी कोर्स में रहने दिया अनेक विशेषज्ञों की सहा

मंगलमय नव वर्ष [illegible]म ।।

हे सर्वेश्वर ! नव संवत्सर, करे परस्पर प्रेम प्रसारित।
भद्रभाव वसुधा कुटुम्ब का, दया तथा आनन्द समन्वित।
सतत सत्यता सहित 'रणजय' विद्या, बल, धन सेवा परहित।
दुरित दूर हो, विश्व शान्ति हो, प्राणिमात्र हो परम प्रफुल्लित।

—रणंजयसिंह (राजा)

अमेठी एन० आर०, जिला सुल्तानपुर, उ० प्र०

क्षता से गुरुकुल की एक विशिष्ट पाठ विधि तैयार की। उन दिनों राजा आबामदु आपके शिष्य थे और जितना भी रुपया आचार्य जी राजा साहब से कहते वे प्रतिमास दे देते थे। उस समय गुरुकुल में कई सौ विद्यार्थी अध्ययन करते थे।

आचार्य जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश की स्वर्णजयन्ती के अवसर पर आर्य विद्वानों को एकत्र करके दयानन्द विद्यापीठ की स्थापना की और उसके भी सर्वप्रथम प्रस्तोता आचार्य विश्वश्रवाः जी हुए। पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु आरम्भ में सम्मिलित नहीं हुए फिर उन्होंने दयानन्द विद्यापीठ के कार्य को संभाला। आचार्य विश्वश्रवा जी उत्तरप्रदेश की आर्य प्रतिनिधि सभा मे शिक्षा विभाग के अधिष्ठाता और वेदभाष्य कमेटी के मन्त्री भी रहे। आपने अपने कार्यकाल में गुरुकुल वृन्दावन से अनेक ग्रन्थ निकाले जिसमें अष्टाध्यायी का संस्करण विशेष ढंग का है। आप गुरुकुल वृन्दावन के शोधर अनुसन्धान विभाग के भी डाइरेक्टर रहे और गुरुकुल शिक्षा समिति के मन्त्री भी आप कई वर्ष रहे।

उत्तर प्रदेश के बाद आर्य सार्वदेशिक सभा के कार्य क्षेत्र में पहुंचे और सार्वदेशिक धर्मार्यसभा के प्रधान सात वर्ष रहे और इस समय सार्वदेशिक विद्यार्य सभा के प्रधान मन्त्री आप हैं। आप बहुत वर्ष सार्वदेशिक सभा के पुस्तकाध्यक्ष रहे हैं सार्वदेशिक सभा देहली मे जो इस समय पुस्तकालय का सुन्दर स्वरूप है आचार्य जी ही इसके कर्त्ताधर्ता हैं।

आर्यसमाज के आन्दोलनों में कार्य

हैदराबाद सत्याग्रह के अवसर पर जब आप घर से निकले तब ६ मास पश्चात् ही घर लौटे जब सत्याग्रह समाप्त हुआ इतने मास सत्याग्रह के कार्य मे ही व्यस्त रहे। और जब सार्वदेशिक सभा ने पंजाब में हिन्दी सत्याग्रह प्रारम्भ किया तब उसके प्रारम्भ वाले और चण्डीगढ़ के प्रथम सर्वाधिकारी आप ही थे आप का सारा परिवार चण्डीगढ़ हो रहा और स्वतं पति पत्नी प्रबन्धक रहे और बच्चे जेल जाते रहे। कैरों को सत्याग्रह का अल्टीमेटम उनके रात के १० बजे विशेष वेष धारण करके उनकी कोठी के अन्दर आचार्य जी पहुंच गये।

सैद्धांतिक संघर्ष

आचार्य जी के जीवन का बहुत बड़ा भाग सैद्धांतिक संघर्षों में भी बीता है। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के विरुद्ध एक शब्द भी सुनने को आप तैयार नहीं हैं चाहे कोई कितना मित्र ही क्यों न हो अतः जो आज आचार्य जी का परम मित्र है सिद्धांत विरोध होने पर उस पर कोई कसर नहीं उठा रखते हैं। पंजाब के आचार्य विश्वबन्धु जी से वेद में इतिहास का संघर्ष और लाहौर के प्रसिद्ध शास्त्रार्थ में भाग लेना दक्षिण भारत के प० सातव लेकर जी से संघर्ष और राजस्थान के पं० विद्यानन्द विदेह और परोपकारिणी सभा अजमेर का रामानन्द ब्रह्मचारी के जाली खत का संघर्ष ये आचार्य जी के जीवन की विशेष घटनाएं हैं।

परोपकारिणी सभा अजमेर से सम्बन्ध

जिन्होंने महर्षि के दर्शन किए थे उन दीवान बहादुर हरविलास जी शारदा मन्त्री परोपकारिणी सभा अजमेर ने आचार्य विश्वश्रवाः जी को तार देकर अजमेर बुलाया और आचार्य जी के रहने की विशेष व्यवस्था की। आचार्य जी अजमेर पहुंचे और दीवान बहादुर साहब से पूछा कि आपने क्यों बुलाया है। तब दीवान बहादुर साहब ने आचार्य जी से कहा कि मैंने तुम्हारे लेख अखबार में पढ़े जिनसे मुझे मालूम हुआ कि आर्यसमाज मे कोई ऐसा प० है जो यह कहता है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती साक्षात्कृतधर्मा ऋषि थे ऋषि के ग्रंथों और वेदभाष्य में कोई भूल नहीं है मैंने तुम्हें देखने के लिये बुलाया कि तुम हो कौन। फिर दीवान बहादुर साहब ने ऋषि की बातें सुनाईं और सुनते हुये दीवान बहादुर साहब रोने लगते थे और आचार्य जी भी रोने लगते थे। अब दोनो ऋषि भक्तों का पिता पुत्र सम्बन्ध हो गया। पहले आचार्य जी को दीवान बहादुर साहब ने दयानन्द आश्रम मे ठहराया था। अब वहां से सामान उठवाकर दीवान बहादुर साहब ने घर मगा लिया और दीवान बहादुर साहब की पत्नी आचार्य जी की माता जी बन गई और दीवान बहादुर साहब पिता जी बन गये अब आचार्य जी अजमेर बार २ जाने लगे और घर पर ही रहने लगे।

प्रथम महायुद्ध के समय ऋषि के स्वर्गवास के पश्चात् ऋषि के सब हस्तलेख तथा पुस्तक संग्रह रक्षा की दृष्टि से भूमि मे सुरक्षित रखे गये फिर उनको भय समाप्त होने पर निकाला गया। ऋषि के समस्त हस्त लेखों के देखने का सौभाग्य दीवान बहादुर साहब की कृपा से आचार्य जी को प्राप्त हुआ। तब से अब तक आचार्य जी अजमेर जा जा कर ऋषि के हस्त लेखों को देखते और उन पर कार्य भी करते हैं। आचार्य जी सबके विरुद्ध लेखनी उठाते हैं जरा भी गड़बड़ कहीं हो पर परोपकारिणी सभा की सदा वकालत करते हैं और जब उन से कोई परोपकारिणी सभा के सम्बन्ध में कहता है तो आचार्य जी यही उत्तर दे देते हैं कि मैं परोपकारिणी सभा की कठिनाइयों को समझता हूं कोई आर्य विद्वान विश्वास पात्र नहीं है जिसके भी हाथ में परोपकारिणी सभा कार्य देती है वही विश्वासघात करता है। या धूर्त विद्वान मिलता है या मूर्ख भक्त मिलता है परोपकारिणी सभा करे क्या।

महर्षि के ग्रन्थों और वेदभाष्यों पर भाष्य

अब आचार्य जी के जीवन का प्रधान कार्य ऋषि के ग्रन्थों पर भाष्य लिखना है। ऋषि की पञ्चमहायज्ञ विधि जो पचास पृष्ठ की है उस पर दो हजार पृष्ठ का भाष्य आचार्य जी ने किया है। ६०० पृष्ठ का एक भाग छपा वह समाप्त भी हो गया अब दूसरा भाग सन्ध्यापद्धति मीमांसा पांच सौ पृष्ठों का छपा है और ऋषि के ऋग्वेद भाष्य की विस्तृत टीका संस्कृत आर्यभाषा और अंग्रेजी में वैदिक यन्त्रालय अजमेर मे छप रही है। सत्यार्थ प्रकाश भाष्य आदि भी तैयार हो रहे हैं। इसके लिए आचार्य जी ने वेद मन्दिर महर्षि परिषत् एक ट्रस्ट बनाया है और देहली में दिल्ली गुरुकुल श्री दयानन्द वेद विद्यालय ११९ गौतम नगर, नई दिल्ली में रहते है।

आचार्य जी का कहना है कि इस समय सारा आर्य जगत् राजनीति वातावरण से क्षुब्ध है अतः आर्यों की सहायता प्राप्त न होने से ऋषि के सब ग्रंथों पर भाष्य लिखने का काम पूरा नहीं होगा और उनके संसार से विदा होने पर उनके ग्रंथों को देखकर आर्य जगत यह पश्चाताप करेगा कि यदि इस व्यक्ति को सहयोग दिया गया होता तो ऋषि का सब वेद भाष्य स्पष्ट हो जाता।

आचार्य जी ने ताण्ड्यमहाब्राह्मण और कात्यायन श्रौत सूत्र पर भी आर्य भाषा मे टीका लिखी है और भारत सरकार से सहायता मांगी है। आचार्य जी उन आर्ष ग्रंथों पर भाष्य आर्यभाषा में करना चाहते हैं जिन पर किसी ने आज तक लेखनी नहीं उठाई अतः उपनिषत् आदि पर लिखने की वे इच्छा नहीं करते क्योंकि इन पर सब ही करते रहते हैं।

सारा आर्य जगत् उलटे रास्ते पर

आचार्य विश्वश्रवाः की निगाह में समस्त आर्य जगत उलटे रास्ते पर चला गया है इसको रोकने के लिये वे समाचार पत्रों के सम्पादक बनना चाहते रहे। पहिले कुछ दिन सार्वदेशिक पत्र के सम्पादन का कार्य लिया पर आचार्य जी की लेखमाला से सब जगह हाय हाय मचने लगी तब उसे छोड़ दिया फिर एक सेठ की सहायता से 'वैदिक युग' मासिक पत्र निकाला उस मासिक पत्र में एम० बी० नाटक नेता नाटक आदि लिखे। तब कुछ लोगों ने सेठ जी को बहका कर आचार्य जी का वैदिक युग बन्द करा दिया। आचार्य जी कट्टर सिद्धांतवादी आर्यों का संगठन चाहते हैं

विदेश यात्रा

आचार्य विश्वश्रवाः अब ऋषि के कार्य में सहयोग प्राप्त करने और देशान्तरस्थ भाइयों में वैदिक धर्म प्रचारार्थ जाना चाहते हैं जो देश प्रथम बार स्वागत करेगा वहां जाने का विचार है।

काशी की संस्कृत परीक्षाओं में नया युग

आर्ष पाठ विधि के प्रबल प्रचारक आर्ष ग्रन्थों के परम भक्त आचार्य विश्वश्रवाः को उत्तर प्रदेश के गवर्नर श्री बी० गोपाल रेड्डी महोदय ने प्रथम बार संस्कृत यूनिवर्सिटी की ऐक्जीक्यूटिव कौंसिल का सदस्य सरकार की ओर से चुना है। हम माननीय गवर्नर महोदय को धन्यवाद देते हैं और आचार्य विश्वश्रवाः जी को वाराणसी पण्डित मण्डली में इस आदर प्राप्ति का स्वागत और अभिनन्दन करते हैं और आशा करते हैं कि अब जो अनेक वर्ष आचार्य जी का कार्यकाल वाराणसी के पण्डित वर्ग में होगा। उस काशी की आचार्य आदि परीक्षाओं में आर्ष ग्रन्थों का नया युग प्रारम्भ होगा।

पुरोहित की आवश्यकता

स्थानीय आर्यसमाज के लिए एक विद्वान् योग्य व अनुभवी पुरोहित की आवश्यकता है; जो वैदिक रीति से समस्त संस्कार कराने में दक्ष हो और वैदिक सिद्धांतों पर सुन्दर व तर्क पूर्ण भाषण आदि भी दे सके।

इच्छुक महानुभाव निम्नलिखित पते पर अपने आवेदन पत्र, प्रमाण पत्रों सहित एवं न्यूनतम वेतन स्वीकार्य लिखकर शीघ्र भेजें।

—महेशचन्द्र आर्य

मन्त्री आर्यसमाज, मण्डी बांस

मुरादाबाद

महर्षि पतंजलि-प्रोक्त ब्रह्मचर्य

सिद्धान्त विमर्श

संसार में ऐसा कौन व्यक्ति होगा जो दुःख से अलग होना नहीं चाहता ? प्राणी मात्र की मनोभावना कष्टों से दूर होकर सुख प्राप्त करने में प्रवृत्त देखी जाती है। पशु-पक्षी भी किसी बन्धन में आना नहीं चाहते तो विवेकी पुरुष जो पशु पक्षियों से अत्यधिक श्रेष्ठ है वह कैसे कष्टों में पनपने के लिए सहमत हो सकता है। यद्यपि क्लेशों की निवृत्ति तथा सुखोपलब्धि करना मनुष्य का प्रधान कर्त्तव्य है तथापि जब तक अविद्या का नाश और विद्या का प्रकाश नहीं तब तक कष्टों के दूर होने की आशा स्वप्न में भी नहीं करनी चाहिए। किसी कार्य की सिद्धि तब तक नहीं होती जब तक कि उस कार्य को करने वाले यथार्थ साधनों एवं कार्य करने का सम्यक् ज्ञान न हो। ज्ञान सहित साधनों के अनुष्ठान करने पर सभी कार्य निष्पन्न हो सकते हैं।

अस्तु तत्त्व ज्ञान करने के लिए भारतीय दर्शनकारों ने जो सूत्र विश्व को दिये हैं आज उनकी तुलना सम्पूर्ण विश्व के साहित्य से नहीं की जा सकती। दीर्घ काल के तप और साधनामय जीवन व्यतीत करने पर ऋषि महर्षि महापुरुषों ने हमें अलौकिक एवं लौकिक अनुभव से सत्य मार्ग दर्शाया। यदि हम उन महानुभावों के दर्शाये हुए मार्ग का तत्परता से अनुसरण करें तो हम भी अपने क्लेशों भगा सकते हैं तथा तत्त्व ज्ञान के अधिकारी हो सकते हैं। आस्तिक भारतीय दर्शनकारों में महर्षि पतञ्जलिवर्य का स्थान विशेष आदरणीय है। इन्होंने योगदर्शन का निर्माण किया है। योगशास्त्र में चार पाद तथा १९५ सूत्र हैं। उन चार पादों का नाम क्रमशः—समाधिपाद (१) साधनपाद (२) विभूतिपाद (३) तथा कैवल्यपाद ४ है। क्योंकि मन को एकाग्र करने के बिना तत्त्व ज्ञान करना असम्भव है अतः योगशास्त्र में चित्त को प्रसन्न करने हेतु एवं एकाग्रता की प्राप्ति के लिए बहुत से उपाय बतलाए गये हैं। साधनपाद में योग के आठ अङ्ग बतलाए हैं जिनका नाम— यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार धारणा, ध्यान, और समाधि है। इन आठ अङ्गों में जो प्रथम अङ्ग है "यम" इसके ५ भेद हैं जिनका नाम—अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह है। इन पांच यमों में जो चौथा यम 'ब्रह्मचर्य' है इस विषय को लेकर हम कुछ पाठकों की सेवा में निवेदन करना चाहते हैं।

ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं सन्यास भेद से आश्रम चार माने जाते हैं जिनमें से ब्रह्मचर्य आश्रम का सम्बन्ध सभी आश्रमों से है। बिना ब्रह्मचर्य धारण किये हुये अन्य किसी भी आश्रम का परिपालन नहीं किया जा सकता। इस प्रथम आश्रम का अनुष्ठान करना जीवन का मुख्य भाग सम्भालना है। जब तक इस आश्रम का यथार्थ रूप से पालन नहीं किया जायेगा तब तक अन्य आश्रमों की मर्यादाओं को स्वप्न में भी नहीं निभाया जा सकता। ब्रह्मचर्य वह आश्रम है जिसके बनने से अन्य आश्रम बन सकते हैं तथा बिगड़ने पर बिगड़ सकते हैं। वस्तुतः यदि इसी आश्रम को ज्येष्ठाश्रम माना जाय तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

ब्रह्मचर्य क्या है ? इस प्रश्न का उत्तर महर्षि व्यास जी ने इस प्रकार से 'ब्रह्मचर्यं गुप्तेन्द्रियस्योपस्थस्य संयमः।" कहा है। अर्थात् उपस्थ इन्द्रिय के संयम को ब्रह्मचर्य कहते हैं। संसार में उपस्थ इन्द्रिय का संयम करना कठिन है। इस इन्द्रिय के संयम किये बिना कदापि आत्मिक विचारों की दृढ़ता नहीं होगी। प्रभु भक्ति या ईश्वर उपासना करने के हेतु उपासक को इस इन्द्रिय की वासना को त्यागना ही होगा। क्योंकि इस वासना के चक्कर में आ जाने पर अष्टाङ्ग योग की सिद्धि होना असम्भव है अतएव महर्षि पतञ्जलि जी ने अपने योगशास्त्र में इस ब्रह्मचर्य तप का विशेष स्थान प्रारम्भ में ही दिया है। उनको यह विशेष कथन अपने योगशास्त्र में करना इसी कारण हुआ। उन्होंने अपने जीवन में यह भली प्रकार अनुभव किया था कि ब्रह्मचर्य के बिना चित्त को एकाग्र नहीं किया जा सकता। और बिना चित्त की एकाग्रता के अपने परम इष्ट परमपिता का दर्शन करना सम्भव हो ही नहीं सकता। जो महानुभाव उस प्रभु से अपना सम्बन्ध जोड़ना चाहते है। अथवा वेदादि शास्त्रों के अभिप्राय को समझने के लिए प्रयत्नशील हैं उन्हें अवश्य ही इस ब्रह्मचर्य को अपनाना चाहिए। अन्यथा [illegible] दर्शन होना ब्रह्मचर्य व्रत के बिना [illegible] ही असम्भव है जिस प्रकार बलिष्ठ हाथी को कच्चे सूत्र से बांधना असम्भव है।

यमों के लाभ बतलाते समय भगवान् पतञ्जलि जी ने ब्रह्मचर्य की सिद्धि का फल अपने सूत्र में "ब्रह्मचर्यप्रतिष्ठायां वीर्यलाभः ॥ २। ३८ ॥ कहा है। अर्थात् ब्रह्मचर्य की सिद्धि होने पर बल की प्राप्ति होती है [यहां पर बल अथवा सामर्थ्य के अर्थ में वीर्य शब्द का प्रयोग है। आत्मिकबल-मनोबल-शारीरिकबल भेद से तीनों प्रकार के बल वीर्य की रक्षा करने से प्राप्त होता है] अतः महर्षि के इस सूत्र से स्वतः यह अर्थ स्पष्ट हो जाता है कि ब्रह्मचर्य का पालन करने पर ही कोई व्यक्ति आत्मिक बल, मानसिकबल तथा शारीरिकबल की प्राप्ति कर सकेगा यदि कोई मनुष्य ब्रह्मचर्य की उपेक्षा करेगा तो निश्चय ही वह अपने मानव जीवन में उक्त तीनों ही बलों से वञ्चित रहेगा। उक्त तीनों ही बलों की प्राप्ति ब्रह्मचर्य के पालन करने पर अवश्यमेव होगी इसमें लेशमात्र भी सन्देह का स्थान नहीं है।

आजकल हमारे आर्यावर्त में ब्रह्मचर्य की अत्यधिक उपेक्षा [illegible] रही है। ब्रह्मचर्य काल में जहां [illegible] प्राप्ति तथा शारीरिक बल एवं आत्मा[illegible] होता था, वहां आज विद्या प्राप्ति तथा शारीरिक बल और आत्मिकबल लुप्त हो गये। क्योंकि इस राष्ट्र में [illegible] काल में जो ब्रह्मचर्य के प्रति अनुराग होता था, वह आज कहां है ? आज तो ब्रह्मचर्य का उपहास एवं ब्रह्मचर्य के नियमों का खण्डन सरेआम [illegible] किया जाता है। हमारे १२-१३ वर्ष की अवस्था के बच्चों की आंखों पर चश्मे लगे हुए पर्याप्त देखे जाते हैं। सादगी एवं सदाचार की सुगन्ध भी उपलब्ध नहीं है। शरीरों में नाना प्रकार की व्याधियों ने अपना स्वतन्त्र राज्य स्थापित कर लिया रोगियों से वैद्य अधिक संख्या में होते पर भी रोगों का शमन नहीं होता। ब्रह्मचर्य का उल्लङ्घन करना तथा परिवार नियोजन में नाना यन्त्र उपयन्त्रों का आश्रय लेना ही नित्य कर्म समझा जाता है। ऋषि मुनियों की भारतीय परम्परा पर विचार करने के लिए तो सर्वथा अभाव है। धिक्-धिक् असंयमपूर्वक जीवन को। क्या इस अविवेकता का हमें दण्ड नहीं मिलेगा ?

★ ब्र० याज्ञवल्क्य
वानप्रस्थाश्रम, ज्वालापुर

क्या ब्रह्मचर्य की अवज्ञा से हम अपने जीवन को सुखमय बना सकेंगे ?

क्या इस वातावरण के बिना हमारी आत्मोन्नति सम्भव है ?

क्या इस ब्रह्मचर्यनिष्ठा के बिना मानसिक सन्तुलन यथार्थ रहेगा ?

क्या वीर्य संरक्षण के बिना हम अपने शरीर को रोगों से मुक्त कर लेंगे ?

इस मार्ग का अनुष्ठान किये बिना क्या समाज का उत्थान सम्भव है ?

इस तपस्या के किये बिना क्या अन्य [illegible] से हम अपने राष्ट्र की रक्षा कर सकेंगे ?

कदापि न[illegible] कर सकेंगे इस अपनी वर्तमान ब्रह्मचर्य का अनुष्ठान किये बिना। अतः जिन महानुभावों को अपने राष्ट्र से प्रेम है तथा जो अपना शारीरिक बल को सुरक्षित रखना चाहते हैं, और जिनकी मनोभावना अपने मानसिक सन्तुलन को यथार्थ रूपेण बनाए रखने की है, जो रोगों से अपने शरीर को सुरक्षित चाहते हैं, जो [illegible] साक्षात्कार करना अपना अन्तिम ध्येय समझते हैं उन्हें उपर्युक्त महर्षि पतञ्जलि प्रोक्त 'ब्रह्मचर्य रूप अमृत" रसास्वादन अवश्यमेव करना चाहिए।

वह सच्चिदानन्द दयालु प्रभु हमारे देशवासियों [illegible] को इस पावन वातावरण के लिए प्रेरणा में सामर्थ्य दें जिससे वे अपने ऋषि महर्षियों के बताए हुये आदेशों का पालन करके अन्तिम ध्येय की प्राप्ति कर सकें।

उत्तरप्रदेश के बहराइच नगर में—

विजय तीर्थ के दर्शन

उत्तर प्रदेश के बहराइच नगर में मुसलमानों ने एक बड़ा भारी मुस्लिम तीर्थ स्थान बना रखा है—गाजी मियां की ज्यारत—यहां विशाल भवन बने हुये हैं और गाजी मियां (मसऊद) की समाधि संगमरमर की बनी हुई है। सहस्रों रुपये की आय इस ज्यारत की है जिसका अधिकांश मूर्ख अन्ध विश्वासी हिन्दुओं की जेब से आता है। ज्येष्ठ मास के प्रथम रविवार को यहां मेला लगता है कई दिन चलता है। मुसलमानों के त्योहार मुसलमानी महीनों और मुसलमानी तारीखों से सम्बद्ध होते हैं। और इस्लामी मास और तिथि स्थिर नहीं होते। क्योंकि उनका सम्बन्ध चन्द्र से होता है सूर्य से नहीं। ईद कभी ग्रीष्म में होगी तो कभी जाड़ों में कभी वर्षा में। यही दशा उनके उर्सों। कबरों पर मेलों की होती है परन्तु बहराइच का उर्स स्थायी होता है ज्येष्ठ मास के प्रथम रविवार को। रविवार भी हिंदुओं का ही मान्य दिन है जैसे मुसलमानों का शुक्र। जुम्मा ऐसा क्यों है। वस्तुतः यह कब्र नकली है। मसऊद यहां से कुछ दूर मारा गया था। यहां पर तो बाल सूर्य का एक कलापूर्ण मन्दिर था और कुण्ड था जिसमें चर्म रोगी स्नान करके लाभ उठाते थे। क्योंकि यहां गन्धक मिश्रित मिट्टी थी। और अब भी बहुत गहराई पर है।

मुसलमानों ने वह मन्दिर तोड़कर यह बनावटी समाधि बना दी। सूर्यकुण्ड पाट दिया अब कब्र का धोवन पानी रोगियों को दिया जाता है। और बालादित्य के स्थान पर बाले मियां कर दिया है। मेला जैसा कि ज्येष्ठ में मन्दिर पर लगता था वैसा ही रहने दिया और मूढ़ हिन्दू मेले में पूर्ववत् आते रहे। मुसलमानों ने अपनी आय चालू करने के लिये कुफ्र पर इस्लाम का लेबिल लगा दिया और अन्धविश्वासों से लाभ उठाते रहे और उठा रहे हैं।

इस नगर का नाम भी सूर्य भगवान के नाम पर ही था बृहदादित्य इसका अपभ्रंश रूप है बहराइच : अब विजय तीर्थ की बात सुनिये—यहां से एक मील दूर पर महान् विजेता मान्य महाराज सुहेलदेव। सुहृद्देव। की मूर्ति स्थापित है। मूर्ति बहुत ही सुन्दर आकर्षक है। श्वेत अश्व पर सवार महाराज हैं। सुन्दर रङ्गीन पगड़ी बांधे हुये भाला और धनुष हाथ में है। धनुष्य रिक्त है। उससे बाण छूट चुका है। बाण छोड़कर एक ओर को अपनी सेना को देख रहे हैं एक ऊंचे टीले पर एक बड़े से कमरे में यह मूर्ति प्रतिष्ठित की गई है। यह टीला कुटिला नदी के तट पर है। कुटिला नदी तीर्थ स्थान है। यहां मान्यवर मुनि अष्टावक्र जी ने तप किया था। कथा है कि मुनिवर तपोलीन थे और इस नदी पर अप्सरायें जल क्रीडा करने को उतरीं मुनि के रूप को देखकर हंस पड़ीं तत्काल मुनीश्वर के शाप से उन्हें कुष्ट रोग हो गया तब मुनि जी से प्रार्थना करके अपने किये पर पश्चाताप करने लगीं तब मुनिवर ने प्रसन्न होकर कहा कि कुटिला नदी में स्नान करो तो रोग जाता रहेगा उन्होंने श्रद्धापूर्वक स्नान किया और वे रोग मुक्त हो गयीं फिर मुनि जी ने भी स्नान किया और वे सुन्दर रूपवान हो गये।

युद्ध मसऊद सुलतान महमूद का भांजा था। उसने महमूद से सेना मांगी और कहा कि मैं तलवार के बल पर भारत के मन्दिर तोड़कर वहां से मूर्ति पूजा को समाप्त करूंगा। महमूद ने सहर्ष सेना दे दी। यह एक लाख बीस हजार सैनिकों को लेकर भारत में घुस आया और मन्दिर तोड़ता हुआ अजमेर,

बदायूं, हरदोई, मनकापुर के हिन्दुओं का वध करता हुआ बहराइच आ पहुंचा। यह जाति का सैयद था। और उस सेना का सेनापति (सालार) था अतः सैयद सालार कहा जाता था। महाराज सुहेलदेव। सुहृद्देव। ने इस पर दूत भेजा कि तुम हमारे देश से चले जाओ तो इसने गर्व से उत्तर दिया कि देश उस का है जिसके भुजा में बल है। हम यहां शिकार करने आये हैं। तब महाराज ने युद्ध की तैयारी की। कठिनाई यह थी कि यह अपनी सेना के आगे गौओं का बहुत बड़ा समूह रखता था इससे हिन्दू सैनिक गोवध के भय से तीर चलाने में संकोच करते थे। महाराज ने ब्राह्मणों से व्यवस्था मांगी तो ब्राह्मणों ने संकल्प लेकर कहा जो गौवें मारी जायेंगी उनका सब अपराध हम अपने ऊपर लेते हैं। आप निःसंकोच युद्ध करिये। फिर क्या था लाखों हिन्दू सशस्त्र होकर महाराज के झण्डे के नीचे आकर इकट्ठे हो गये। दो दिन घमासान युद्ध हुआ और सब आततायी यमपुर भेज दिये गये। कुछ थोड़े से बचे थे जो रात में भागने का विचार कर रहे थे। महाराज ने इनका भाग जाना हितकर न रहेगा। आधी रात में ही इन पर आक्रमण करके सबको समाप्त कर दिया जाये। सब सेना ने रात में ही धावा बोल दिया और सबको मार गिराया। मसऊद अपने कुत्ते को साथ लिये एक महुए के नीचे छिपा खड़ा था। पेड़ के चारों ओर इसने खाई खुदवा रक्खी थी। महाराज शर संधान किये घोड़े पर सवार खड़े थे। रात का समय था कि इतने में सैयद सालार मसऊद का कुत्ता भौंक उठा। बस इसी से लक्ष समझकर शब्दवेधी बाण इस बल से मारा कि मसऊद का हृदय वेधता हुआ बाण महुए के पेड़ में जा धंसा। मसऊद यमलोक सिधारा। कुत्ता भी मार दिया गया। अब सब शत्रुदल शून्य था। महाराज की पूर्ण विजय हुई। हिन्दुओं की आपत्ति टल गई। बहुत दिन बाद जब यहां मुसलमानी शासक हो गया तो बालादित्य के मन्दिर को तोड़कर उस स्थान पर बालेमियां के नाम से नकली समाधि बना दी गई। और उसके साथियों रज्जब सैफुद्दीन आदि की कब्रें भी बना दी गयीं। इन कब्रों पर तो मेला लगने लगा और अभागे मूढ़ हिन्दू मान्यतायें मानने लगे और सहस्रों रुपया भी चढ़ाने लगे। विजेता महाराज को सब भूल गये थे। केवल इतिहास में उनका नाम था। ऐतिहासिक वर्णन भी मुसलमानों द्वारा ही लिखा गया है। अब कुछ वर्ष हुये हिन्दुओं में जागृति हुई।

यहां के प्रतिष्ठित वकील श्री श्यामलाल जी एडवोकेट और उनके साथी धर्मप्रिय हिन्दुओं ने महाराज सुहेलदेव (सुहृद्देव) की प्रतिमा प्रतिष्ठित कर दी है और यहां मेला भी लगने लगा है। श्री श्यामलाल जी का रोम-रोम स्वधर्म प्रेम से भरा हुआ है। हिन्दुत्व के गौरव पर उन्हें गर्व है। वह अच्छे वक्ता हैं और पुरातन इतिहास के पण्डित भी हैं। आर्यसमाज के नेता हैं। महाराज सुहेलदेव जो प्रसिद्ध बुद्ध भक्त महाराज प्रसेनजित के वंशज थे। और महाराज प्रसेनजित भगवान राम के पुत्र लव की वंश परम्परा में थे और श्रावस्ती के राजा थे। सूर्यवंशी महाराज सुहृद्देव तो बुद्ध भगवान के भक्त थे परन्तु उनकी एक रानी श्रद्धालु जैन थी और भगवान महावीर की अनन्य भक्त। अतः आगे का राजवंश जैन धर्मानुयायी हो रहा। श्री महाराज सुहृद्देव श्री निष्ठावान जैन थे। जैन नरेशों में महाराज खारवेल के अतिरिक्त इतना भारी वीर विजेता और कोई नहीं हुआ जैसे कि श्रावस्ती नरेश महाराज सुहृद्देव हुये हैं।

★ श्री बिहारीलाल शास्त्री
बरेली

यह स्थान जैनों के लिये तो बड़े महत्व का है। उन्हें भी इस स्थान को चमकाना चाहिये। जैन लोगों में धन की कमी नहीं है अतः वे चाहें तो इस स्थान को गौरवशाली दर्शनीय तीर्थ बना सकते हैं। यहां की आवश्यकतायें ये हैं—

१—कुटिला नदी पर पक्का घाट बने।

२-महाराज की मूर्ति का स्थान बढ़ाकर एक बड़ा हाल बनाया जाये जिसमें हिन्दू महापुरुषों, वीरों धर्माचार्यों नेताओं के चित्र लगे हों।

३—यहां का पूर्ण इतिहास जिसकी सामग्री श्री श्यामलाल जी पर है प्रकाशित किया जाये।

४—एक अतिथिशाला और पाठशाला बनाई जाये और पाठशाला में संस्कृत साहित्य के साथ आर्य संस्कृति की भी शिक्षा दी जाये। जैन दर्शन और वैदिक दर्शन भी पढ़ाये जायें।

मेरे इस लेख को अन्य हिन्दू पत्र भी छापने की कृपा करें।

सुहृद्देवो महावीरो,
रघुवंशकुलोद्भवः
रक्षिताह्यार्यधर्मस्य,
दुष्ट वर्ग विनाशकः
अत्रैवा सर्वयवनान्,
आर्यधर्मोन्मूलकान्
ध्वानेकेन बाणेन,
मसऊदंदुरासदम्।

अद्भुत महापुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती

★ श्री देवीदास आर्य कानपुर

सुप्रसिद्ध कवि शिरोमणि भवभूति ने एक स्थान पर ठीक ही कहा है "महापुरुषों के वज्र से भी अधिक कठोर और फूल से भी कोमल हृदय को कौन समझ सकता है ?" इस वाक्य में महापुरुषों की उत्तम पहचान बताई गई है। जिस पुरुष का हृदय समय पर पत्थर से भी अधिक कठोर और समय पर फूल से भी अधिक कोमल हो सकता है वह महापुरुष है। भगवान संसार के सर्वमान्य महापुरुष हैं। एक ओर 'वे दया की भीख मांगते हुए कर्ण पर तीर चलाने के लिए हाथ पर हाथ रखे हुए बैठे अर्जुन को उकसाते हैं, यह है हृदय की कठोरता। दूसरी तरफ वही भगवान कृष्ण अपने पांव में तीर मारने वाले शिकारी को सामने क्षमा मांगते हुए देख कर मधुर मुस्कराहट से हंस देते हैं और शिकारी को क्षमा कर देते हैं, यह है हृदय की कोमलता।

तीनों शक्तियों के स्वामी

महर्षि दयानन्द भारत के सुधारक एवं उद्धारक, नवीन जाग्रति के जन्मदाता एवं नवयुग के प्रवर्तक ही नहीं वरन् संसार के अद्भुत महापुरुषों में से थे। संसार में बहुत कम ऐसे महापुरुष हुए हैं जो शारीरिक, आत्मिक एव मानसिक बल में परिपूर्ण हों। ऐसे भी महापुरुष संसार में हुये हैं जो केवल शारीरिक शक्ति में बलवान थे जैसे अर्जुन, भीम, हनुमान आदि। इस प्रकार कुछ ऐसे महापुरुष भी हुए हैं जो केवल मानसिक शक्ति में महान् थे जैसे गौतम, कणाद, न्यूटन, सुकरात आदि। ऐसे महापुरुष भी हुए हैं जो केवल आत्मिक शक्ति में महान् माने जाते हैं, जैसे शंकर आचार्य महात्मा बुद्ध और कई योगीगण। परन्तु ऐसे महापुरुष बहुत कम हुए हैं जो स्वामी दयानन्द की तरह शारीरिक, मानसिक व आत्मिक शक्तियों के स्वामी हों।

कठोरता व कोमलता

महर्षि दयानन्द के हृदय में भी भगवान् कृष्ण की तरह कठोरता एव कोमलता का अद्भुत व सुन्दर मेल था। महर्षि के जीवन में ऐसी अनेक घटनाएं आई जिनसे सिद्ध होता है कि वे पत्थर से भी अधिक कठोर थे और फूल से भी अधिक कोमल थे। जिन्हें अपने शारीरिक बल पर घमण्ड था और अपनी चमकती हुई तलवार पर भरोसा था उन्होंने अपनी तलवार से डराकर महर्षि को सत्य पथ से डिगाने का प्रयत्न किया, जिन्हे अपनी राज्य की सत्ता पर गर्व था उन्होंने अपने प्रभाव से महर्षि की वाणी को बन्द करना चाहा। जिन्हें अपने ऐश्वर्य पर अभिमान था उन राजाओं और महाराजाओं ने, सेठों और साहूकारों ने महर्षि को ऐश्वर्य और गद्दियों का प्रलोभन देकर सत्य मार्ग से विचलित करना चाहा परन्तु महर्षि का कठोर एवं दृढ़ हृदय, न तलवारों के भय से, न राज्य की सत्ता के प्रभाव से और न ही ऐश्वर्य प्रलोभन से झुक सका। महर्षि दयानन्द की हत्या करने के लिये कौन सा साधन था जो नहीं अपनाया गया। अनेक बार विष पिलाया गया। तलवारों, लाठियों तथा शस्त्रों से आक्रमण उन पर किये गये परन्तु वह ईश्वर विश्वासी निर्भय संयासी वीरता व धीरता पूर्वक कठिनाइयों का मुकाबिला करते चले गये। महर्षि के हृदय के अन्दर की दृढ़ता या कठोरता का पता इसी से चलता है।

परन्तु ऐसे कठोर महर्षि का हृदय कई बार कोमल भी देखा गया। उनका हृदय प्रेम व दया के सागर की भांति था। अपनी प्रिय बहिन की मृत्यु को देखकर जिस मूलशकर (दयानन्द) की आंखों से आंसू की एक भी बूंद नहीं टपकी थी, माता पिता ने उसे पत्थर हृदय समझा था परन्तु वह पत्थर के साथ के साथ कोमल भी था एक माता को अपने मरे पुत्र के कफन के लिये लाश को ढकने वाली साड़ी के आंचल को फाड़ते हुये देखकर महर्षि के आंखों से धारा बह चली थी। कठोरता और कोमलता का यह कितना विचित्र मेल है। लोगों ने आर्यसमाज के इस प्रवर्तक महर्षि दयानंद पर पत्थर फेंके परन्तु उन्होंने इसे फूलों की वर्षा माना। महर्षि से लोगों ने घृणा की परन्तु उनके हृदय से घृणा के बदले सदा प्रेम ही निकला। जिन्होंने महर्षि का स्वांग निकाला उन पर महर्षि केवल मुस्करा दिये और हृदय से उनका भी भला सोचा। जिन्होंने विष देकर प्राण लेने का प्रयत्न किया उनके लिये भी महर्षि ने आशीर्वाद दिया और उनको मुक्त कर दिया। पकड़ने वालों से कहा "मैं संसार को कैद कराने नहीं आया कैद से छुड़ाने आया हूं" कीचड़ मे फसी हुई एक बैलगाड़ी को देखकर महर्षि का दिल द्रवित हो उठता है। बैल के जुए को अपने कन्धों पर रखकर गाड़ी को कीचड़ से निकालकर उस सपाठी मे मित्रस्य चक्षुषा समीक्षा महे" अर्थात् प्राणिमात्र को मित्र की दृष्टि से देख इस वैदिक उपदेश का जीता जागता उदाहरण पेश किया। महर्षि दयानन्द के जीवन की अन्तिम घटना तो स्वर्ण अक्षरों में लिखने योग्य है। जब उन्होंने अपने हत्यारे रसोइये जगन्नाथ को जिसने उनको दूध में विष दिया था, उसको अपने हाथो से रुपया देकर भाग जाने को कहा। अपने प्राणों से भी अधिक उन्हें हत्यारे के प्राणों की रक्षा की चिन्ता थी और हत्यारे का पता व नाम भी किसी को नहीं बताया।

आदेश वसीयत

संसार में बड़े से बड़े पैगम्बर व महापुरुष हुये हैं परन्तु ऐसी दया व ऐसा प्रेम बहुत खोजने से भी नही मिलता। महर्षि ने अपने जीवन के अन्तिम दिन दीपावली पर शरीर छोड़ते समय कहा था "मेरी हड्डियों को किसी गरीब के खेत में फेंक देना।" यह कितनी मर्मस्पर्शी एवं अनुकरणीय वसीयत है। ऐसे महर्षि जिसने जीवन के हर पहलू पर विचार किया और भारतवासियों को कहा" ऐ भारतवर्ष के लोगों ! यदि तुम अपना कल्याण चाहते हो तो तुम्हें जन्म से वर्ण व्यवस्था के सिद्धान्त को त्यागना होगा, छुआ छूत को छोड़ना होगा, बाल व वृद्ध विवाह की प्रथा को दूर करना होगा, स्त्री शिक्षा का प्रसार करना होगा श्राद्ध, मूर्ति पूजा एवं पाखण्ड से बचना होगा, विधर्मियों की शुद्धि करके उन्हें अपने प्राचीन वैदिक धर्म में प्रवेश कराने के सिद्धान्त को स्वीकार करना होगा। स्वदेशी वस्तुओं को अपनाना होगा, प्राचीन इतिहास को गर्व के साथ देखना होगा, आर्य भाषा (हिन्दी) व संस्कृत और वैदिक साहित्य के अध्ययन पर विशेष बल देना होगा, एक ईश्वर व वेदों को मानना होगा और गोरक्षा करनी होगी।

वैदिक उपदेशकों तथा अध्यापकों की आवश्यकता

अमेरिकन आर्यन लीग (गयाना और वेस्ट इन्डीज के वैदिक मिशन) को गयाना सुरिनाम और वेस्ट इन्डीज में काम करने के लिये ५ उपदेशकों तथा अध्यापकों की आवश्यकता है जिसके लिये आवेदन पत्र मांगे जाते हैं।

आवेदकों की अवस्था ३३ और ४५ के बीच होनी चाहिये तथा किसी मान्य भारतीय विश्वविद्यालय से उन्हे कम से कम द्वितीय श्रेणी मे संस्कृत में एम० ए० होना चाहिये। आर्यसमाज के सिद्धान्तों को अंग्रेजी में जनता के सामने अच्छी तरह रखने की क्षमता अनिवार्य है।

प्रार्थियों के अंग्रेजी में हस्तलिखित आवेदनपत्र प्रशंसा पत्रों की प्रमाणित प्रतिलिपियों के साथ सार्वदेशिक सभा के कार्यालय, महर्षि दयानन्द भवन रामलीला मैदान नई दिल्ली मे ७ ५-६८ तक पहुंच जाने चाहिये। आवेदनपत्रों में आयु, माता तथा पिता के नाम, पारिवारिक एव सामाजिक सबन्ध, सूचनादाता, शिक्षा सम्बन्धी योग्यता तथा अन्य सम्मान और महत्वपूर्ण कार्य, अनुभव, आर्यसमाज की सेवा, उपदेश और या अध्यापन कार्य में अभिरुचि तथा उत्साह एवं भोजन और आवास के अतिरिक्त कम से कम आवश्यक वेतन पर स्पष्ट प्रकाश डालना चाहिये।

जो सज्जन सच्चे और श्रद्धालु आर्योपदेशक या अध्यापक न हों तथा जो गयाना और वेस्ट इन्डीज के ग्रेंड वैदिक मिनिस्टर के अध्यादेशों और निर्णयों को मानने तथा सार्वदेशिक सभा और अमेरिकन आर्यन लीग के नियन्त्रण मे रहने में असमर्थ हों उन्हे प्रार्थना पत्र देने की आवश्यकता नहीं है।

आने जाने का मार्ग व्यय लीग वहन करेगी।

मनुष्य कैसे बढ़ते हैं

आकाश मे जैसे सूर्यप्रकाश का [illegible] है, वेदों का अध्ययन करने से बुद्धि भी वैसे ही बढ़ती है। हम संसार मे वेद के द्वारा सब अन्य विद्याओं [illegible] सब प्रकार से आगे बढ़ेंगे।

—दयानन्द सरस्वती

महिला मण्डल

इस्लाम और स्त्री जाति

पं० विद्याभिक्षु आर्य
फाजिले सदव (अरबी) एम.ए. एल.टी.
प्रधानाचार्य हिन्दू इण्टर कालेज रुदौली

इस्लाम ने जहां मानव जाति में काफिर, मुनकिर, मुश्रिक और मुनाफिक के भेद करके उनके प्रति घृणा और विद्वेष का भाव पैदा किया, उन्हें मोमिनों से निकृष्ट और पापात्मा बताकर मुसलमानों में एक उच्चता की भावना Superiorty Complex पैदा कर केवल मात्र उन्हें ही संसार का मार्गदर्शक बताया, "कुन्तुम खैर उम्मतिन उखरिजतिन्नास" लिनअजुल्माते इलन्नूरि" (कुरआन) तुम उत्तम जाति हो जो मनुष्यों को अंधकार से प्रकाश की ओर निकाल कर ले जाती है, वहां उसने स्त्री जाति के साथ भी बहुत बड़ा अन्याय किया है। उन्हें दुनिया ही नहीं आखिरत (स्वर्ग) के सुखों से भी वंचित कर दिया है।

जब कि वैदिक धर्म में उन्हें पिता से सौगुना अधिक पूज्य माना गया है, मनु जैसे स्मृतिकार उनके सम्बन्ध में कहते हैं "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता। यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफला क्रिया" जहां स्त्रियों का सम्मान होता है वहां देवता वास करते हैं, और जहां उनका अनादर होता है वहां सभी क्रियायें निष्फल हो जाती हैं, वहां इस्लाम में उन्हें खेती से उपमा दी गयी है, निसाउकुम हरसुल्लकुम फातु हर्सकुम अन्ना शिअतुम" (कुरआन) स्त्रियां तुम्हारी खेतियां हैं, अतः जिधर से चाहो अपने खेतों में जाओ यहां इस बात के स्पष्ट करने की आवश्यकता नहीं है कि खेतों में जिधर से चाहो जाओ के सम्बन्ध में हदीसें और तफसीरें क्या कहती हैं बुद्धिमान इतने ही से समझ लें कि स्त्रियों को खेती से उपमा देना स्त्री जाति का कितना अपमान है इस छोटे से लेख में पूर्ण रूप से तो नहीं बताया जा सकता कि इस्लाम में स्त्रियों की प्रत्येक दृष्टि से क्या स्थिति है, परन्तु यह पाठकों को 'इस्लाम में स्त्री जाति का सामाजिक राजनैतिक आर्थिक, तथा आध्यात्मिक क्या स्थान है' दिग्दर्शन मात्र कराना अभिप्रेत है।

समाज में स्त्री पुरुष का अधिकार समान है यदि स्त्री के लिए एक पती का होना आवश्यक है तो पुरुष के लिए भी यह अनिवार्य होना चाहिए कि वह एक ही पत्नी से विवाह सम्पन्न करें। इस्लाम के लिए कुरआन शरीफ में ४ स्त्रियों तक से विवाह और उसके अतिरिक्त दासियों से यौन सम्बन्ध करने की छूट दी गई है जो स्त्री जाति के लिए अत्यन्त अन्याय है। कौन इस तथ्य से इन्कार कर सकता है कि स्त्री के लिए सौत से बढ़कर कष्टप्रद अन्य कुछ नहीं होता कुरआन कहता है 'फनकिहू मा ताबा लकुम् मिनन्निसाइ, मसना व सुलास व रुबाअ फइन खिफतुम अल्ला तादिलू फ वाहिदतन् औ मा मलकत ऐमानुकुम जालिक अदना अल्ला तऊलू (कुरआन सूरए निसाअ आयत ३) अर्थात तो विवाह करो उन स्त्रियों से जो तुम्हें पसन्द हों एक, दो तीन अथवा चार तो यदि तुम्हें भय हो कि तुम न्याय न रख सकोगे तो एक से अथवा जिनके तुम्हारे दाहिने हाथ मालिक हुए हैं (दासियां) यह थोड़ा है कि तुम अन्याय न करो।

अब आर्थिक दृष्टिकोण से लीजिए पिता यदि मर जायें तो पुत्री को पुत्र का आधा भाग ही मिलता है। इस सम्बन्ध में कुरआन की प्रसिद्ध कहावत है "लिज्जकरे मिस्ल हज्जिल उनसैन" कु० सू० निसाअ आयत ११, पुरुषों को दो स्त्रियों के समान भाग है इत्यादि। इसी प्रकार स्त्री को तिहाई भाग पिता की सम्पत्ति में और पति को पत्नी की सम्पत्ति से आधा भाग, पुत्र की सम्पत्ति में मां को तिहाई भाग शेष पिता को। इस प्रकार हम देखते हैं कि स्त्री का भाग सम्बन्धियों की सम्पत्ति में पुरुषों के भाग से कम रखा गया है।

राजनैतिक दृष्टि से स्त्रियों की दशा और भी शोचनीय है। उन्हें इस योग्य नहीं समझा गया है कि उनसे विचार विनिमय किया जाये हजरत अली के अनुसार स्त्रियां मूर्ख तथा नासमझ होती हैं "इन्ननिसाअ नाकिसा तुल अकूल व सकीफतुल" 'नहजुल व लाया', कुरआन में भी कहा गया है

(शेष पृष्ठ १२ पर)

सम्पादक के पत्र

ऋषि दयानन्द के ग्रंथों के साथ खिलवाड़

मान्यवर सम्पादक जी,

गत दिनांक १४-१-६८ के आर्यमित्र में महर्षि दयानन्द जी महाराज के ग्रन्थों के प्रकाशन में प्रकाशकों के भिन्न भिन्न दृष्टिकोणों के सम्बन्ध में उसके सुयोग्य सम्पादक द्वारा जो प्रकाश डाला गया है वह अवश्य ही स्तुत्य है। साथ ही उन विद्वानों का नाम निर्देश भी किया है जो ऋषि ग्रन्थों के प्रकाशनों से शुद्धि व अशुद्धि मानते हैं। मेरा अपना दृष्टिकोण भी यही है कि चाहें किन्हीं को हों परन्तु ऋषि कृत ग्रन्थों में अशुद्धि अवश्य है, और अपने यह विचार उन अशुद्धियों के साथ में कई बार प्रगट कर आर्य विद्वानों एवं प्रकाशकों का ध्यान खींच चुका हूं और मैं ही नहीं किन्तु आर्यसमाज के प्रकाण्ड पण्डित गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय जैसे विद्वान् एवं अन्य व्यक्ति भी मानते हैं कि ग्रन्थों को ठीक मानने वाले विद्वानों ने अब तक भी समाधान करने का कष्ट नहीं किया। मैंने अपने सबसे पिछले लेख में तो यहां तक लिखा था कि आज कल प्रकाशकों की ओर से जो यह डङ्का पीटा जाता है कि अबकी बार यह संस्करण विशुद्ध और ऋषि की हस्तलिखित प्रति से मिलाकर छापा गया है। तो मेरा ख्याल तो ऐसा है कि वह हस्तलिखित प्रति भी इस शङ्का से शून्य नहीं, कारण कि महर्षि दयानन्द जी स्वयं ग्रन्थ लेखन का कार्य नहीं करते थे किन्तु लेखकों को बोलते जाते और उस समय आर्य लेखक भी नहीं थे जो ऐसा करने से डरते। मेरी इस बात की पुष्टि एक और बात से भी हो जाती है कि ऋषि का जीवन चरित्र जो श्री दयानन्दप्रकाश नाम से श्री स्वामी सत्यानन्द जी द्वारा लिखा गया है उसमें संगठन काण्ड के १२वें सर्ग में उन्होंने लिखा है कि एक दिनेशराम नाम का लेखक जो ऊपर से तो स्वामी जी का बड़ा भक्त बनता रहा परन्तु भीतर से स्वामी जी के कार्यों में जानबूझ कर अशुद्धि कर देता और श्री स्वामी जी के सामने तो बड़ी चिकनी चुपड़ी बातें करता पर उनकी पीठ पीछे दूसरे कर्मचारियों को कहता कि 'यह साधु हम लोगों के हथकण्डों को क्या जाने हम अपने चातुर्य से इसके ग्रन्थों में ऐसी बातें मिला देंगे और इस प्रकार मिला देंगे कि उनका पता इसे प्रलयकाल तक भी न लगेगा तो मैं यह कह सकता हूं कि हस्तलिखित प्रति में भी यदि ऐसे स्थल पड़े हों या रह गये हों तो वह भी विद्वत परिषद द्वारा अवलोकन करने योग्य है और वह देखने योग्य हैं वह स्थल कहीं संशोधन तो नहीं चाहते और ऋषि के मन्तव्यों के विरुद्ध तो नहीं हैं और मैं तो यहां तक कहता हूं कि सत्यार्थप्रकाश के साथ ही संस्कार विधि आदि भी विचारणीय हैं। सत्यार्थप्रकाश के कई स्थल तो ऐसे हैं कि जिन्हें साधारण जन यही नहीं जान सकता कि यहां क्या है और क्या होना चाहिये और अशुद्धि इतने प्रकार की है कि कहीं मन्त्रों में पाठ भेद हैं, त पते गलत हैं कहीं कोई अक्षर रह जाने से अर्थ प्रकरण के एकदम विरुद्ध हो जाता है और एक सम्वाद तो ऐसा है कि वहां साधारण जन तो यही नहीं समझ सकता कि वहां पूर्व पक्ष कौन सा और उत्तर पक्ष कौन सा है। साथ ही एक संस्करण में वही पता कुछ लिखा है तो दूसरे संस्करण में वही पता दूसरे ग्रन्थ का है और समय आने पर मैं उन्हें स्पष्ट कर दूंगा कि १२ वें संस्करण में जो पता एक ग्रन्थ का है १८ वें में वही पता दूसरे ग्रन्थ का है। श्री सम्पादक जी ने जिन विद्वानों की चर्चा ऊपर किया है उनमें मान्यवर आचार्य विश्वश्रवाः जी से मैं दो एक बार इस सम्बन्ध में बातचीत कर चुका हूं पर उनका कहना है कि ऋषि के सामने उस समय यही ग्रन्थ होंगे अब उन ग्रन्थों में हेरफेर हो गया होगा आदि पर उन अशुद्धियों को शुद्ध साबित नहीं कर सके तथा एक बार बरेली उनके मकान पर भी मैंने इसी विषय पर उनसे बातें की तो अन्त में यह कह दिया कि सार्वदेशिक सभा को लिखिये तब वह धर्मार्य सभा के मन्त्री थे और जब मैंने विस्तार सहित उनको देहली के पते पर लिखा तो कोई उत्तर नहीं मिला। सत्यार्थप्रकाश के ११वें समु० में मैंने इस प्रकार की अशुद्धियां पाई हैं और इन पंक्तियों के द्वारा आर्य विद्वानों का ध्यान पुनः आकर्षित करता हूं कि वह तथा प्रकाशक महोदय इधर ध्यान देकर ऋषिकृत ग्रन्थों की रक्षा करें। अन्यथा इस प्रकार वातावरण और भी गलत बनेगा सम्पादक जी का मैं आभारी हूं कि उन्होंने एक बार पुनः सचेत किया।

—वैद्य राजबहादुर आर्य 'सरस'

वैदिक प्रार्थना

ओ३म् पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥१०॥

—ऋ० १-६-१५-५

व्याख्या—हे सर्वाधिस्वामिन् ! आप ही चर और अचर जगत् के ईशान (रचने वाले) हो "धियं जिन्वम्" सर्वविज्ञानमय विज्ञानस्वरूप बुद्धि को प्रकाशित करने वाले [illegible]स्वरूप "पूषा" सबके पोषक हो, उन आपका हम "नः, अवसे" अपनी रक्षा के लिये "हूमहे" आह्वान करते हैं। "यथा" जिस प्रकार से आप हमारे विद्यादि धनों की वृद्धि व रक्षा के लिए "अदब्धः रक्षिता" निरालस रक्षा करने में तत्पर हो वैसे ही कृपा करके आप "स्वस्तये" हमारी स्वस्थता के लिए "पायुः" निरन्तर रक्षक (विनाशनिवारक) हो आप से पालित हम लोग, सर्वदा उत्तम कार्यों में उन्नति और आनन्द को प्राप्त हों ॥ १० ॥

सभा का वृहदधिवेशन सिरसागंज (मैनपुरी) में होगा

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का ८२ वाँ वार्षिक वृहदधिवेशन सभा के निश्चयानुसार इस वर्ष सिरसागंज जि० मैनपुरी में तिथि ११, १२ ज्येष्ठ सं० २०२५ शनिवार—रविवार तदनुसार १ व २ जून १९६८ को होना निश्चित हुआ है।

समस्त आर्यसमाजें अपने प्रतिनिधि चित्र तथा यथाशक्ति धन शीघ्र ही सभा कार्यालय में भेजने की कृपा करें।

—सच्चिदानन्द शास्त्री एम० ए०
मन्त्री—आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश

आर्य्यमित्र

लखनऊ रविवार चैत्र १८ शक १८९०, अ० चैत्र शु० ९ सं० २०२५
७ अप्रैल १९६८ ई०, दयानन्दाब्द १४४ सृष्टिसंवत् १९,७२,९४,९०,६९

यशस्वी वीर पुरुष की पहचान
बनाम
महावीर स्वामी का नग्नतावाद

आतिथ्यरूपं मासरं महावीरस्य नग्नहुः ।
रूपमुपसदा मेतत् तिस्रो, रात्रीः सुरासुता ॥

—यजु० १९-१४

अर्थ—(महावीरस्य) महान् यशस्वी वीर पुरुष के यहां (आतिथ्यरूपं) विद्वान साधु, सन्यासी, भिक्षुकों के आतिथ्य का रूप (मासरं) मासों तक चलने वाला आतिथ्य ही है। (उपसदां) तथा माया-रूप अन्न को उसके पास अन्न, वस्त्र, धन आदि की कामना से आते हैं, (रूपं) उसका प्रकार या स्वरूप यह है कि (तिस्रो रात्रीः) उसके यहां तीन रात्रि पर्यन्त निवास करने व भोजनादि मिलने की व्यवस्था रहती है तथा (सुरासुता) उसके यहां प्रचुर मात्रा में सोमरस, आसव अथवा गोदुग्ध का नित्य सेवन या दोहन होता है। और (नग्नहुः) वह यशस्वी मानव दीन, दुःखी, दरिद्रों का ग्रहण करता अथवा महान् कर्तव्य समझता है।

इस मन्त्र मे महान् वीर मानव के यहां सज्जनों के आतिथ्य, साधारण जनों की सेवा, दीन दुःखी नरों का भरण-पोषण एवं नित्य सोमरस या गोदुग्ध का दोहन होना अनिवार्य रूप मे प्रतिपादित किया गया है। जो अतिथि सेवा नहीं करता, साधारण याचकों या भिक्षुओं को मानपूर्वक भिक्षा नहीं देता, दीन दुखी नगे व कंगालों का भरण पोषण नहीं करता तथा जिनके गृह में नित्य सोमरस का सेवन व प्रचुर मात्रा में गोदुग्ध का दोहन नहीं होता उसको वेद की परिभाषा में महावीर अर्थात [illegible] यशस्वी मानव नहीं कहा जा [illegible]

हमारे माननीय श्री विद्यानन्द जी जैनमुनि जी इस मन्त्र मे उनके तीर्थंकर महावीर स्वामी का इतिहास दिखलाई देता है और नग्नहु शब्द से वह महावीर स्वामी जी के नंगे रहने का प्रतिपादन करते हैं। यहां नग्न शब्द का अर्थ नंगा, कंगाल, दरिद्री है। हु सत्कार करने या देने के अर्थ मे प्रयुक्त होता है। नंगा रहना नग्नहु शब्द का अर्थ किसी भी दृष्टि से सिद्ध नहीं होता। नग्नहु शब्द से जैनमुनि जी द्वारा नग्न रहने का समर्थन किया जाना बुद्धिशून्य कृत्य है।

महाभारत मे भी भीष्म पितामह ने युधिष्ठिर को उपदेश देते हुए कहा था कि "दरिद्रान भर कौन्तेय" अर्थात् हे कुन्ती पुत्र युधिष्ठिर ! तुम शासनारूढ होकर सदा दीन दुःखी नंगे व कंगालों के उत्थान में प्रयत्नशील रहना। भरतों को भरना भले शासक का धर्म नहीं है। आचार्य पारस्कर ने अपने गृह्य सूत्र में लिखा है कि "प्रजापति-जंयान्निन्द्राय" अर्थात आर्य शासक की वास्तविक विजय उसके द्वारा दीन, दुखियों निर्धनों का भरण पोषण व उत्थान का किया जाना है।

वेद की परिभाषा में समग्र मानवों को नग्नहु बनना चाहिये अर्थात दरिद्रों दीन दुखियों का भरण पोषण करने वाला होना चाहिये न कि स्वयं नग्न होकर जीवन व्यतीत करने वाला बन जाना। मुनिवर विद्यानन्द जी का वेद में महावीर स्वामी का इतिहास टटोलना और उसकी नग्नवादिता का समर्थन करना ऐसा ही कृत्य है जैसा 'ईशावास्यमिद सर्व०' आदि वेद मन्त्र में ईसाई पादरियों द्वारा ईसा के इतिहास की खोज करना। अथवा गीता में जहां मोह मद शब्दों का साथ-साथ प्रयोग हुआ है वहां मुसलमान मौलवियों द्वारा हजरत मुहम्मद के जीवन चरित्र की खोज करना और 'शन्नोदेवी रभिष्टये०' मन्त्र मे बुद्धि के धनी पौराणिक पण्डितों का शनैश्चर देवता की पूजा के विधान की खोज करना है।

यजुर्वेद अध्याय २० के मन्त्र ५७ मे भी "नग्नहु" शब्द का प्रयोग किया गया है किन्तु यहां प्रसंगवशात् ऋषि दयानन्द ने नग्न शब्द का निर्वचन निम्न किया है—"यो नन्दति सन्नानन्दयति दातीति" अर्थात् जो मस्त रहता, आनन्द युक्त रहता वह नग्न कहाता है और उसको जो देता है वह नग्नहु कहाता है। जिसने सांसारिक सुखों को त्याग दिया, त्रिगुणातीत पद का जो पथिक बन गया, जिसने अपनी आवश्यकताओं को न्यूनतम बना लिया जो सुखदुःखों से ऊपर उठ गया है ऐसे मानव को यहां नग्न कहा है। लंगोटी न लगाकर नंगा फिरना, नग्न शब्द का अर्थ करना मूर्खता है।

महावीर स्वामी को वेद की इस उपर्युक्त नग्न की शब्द परिभाषा के अनुसार नग्न कहा जा सकता है किन्तु वस्त्र धारण न करना अथवा लंगोटी भी न लगाना यह भाव कदापि भी नहीं लिया जा सकता।

अतः वेद मे दिगम्बर जैनियों का नग्नतावाद सर्वथा असिद्ध है।

जैन मत दर्पण

श्री प० शिवदयालु जी अधिष्ठाता घासीराम प्रकाशन विभाग आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश लखनऊ द्वारा लिखित 'जैनमत दर्पण' नामक ट्रैक्ट ने जैन जगत् में हलचल उत्पन्न कर दी है। जैनमित्र तथा जैन गजट जैसी हिन्दी साप्ताहिक पत्रों ने तथा अनेक जैन लेखकों ने अपने पत्रों मे ट्रैक्ट में अङ्कित ३५ आक्षेपों मे से एक का भी उत्तर न देकर प्रणेताओं की ही भर्त्सना की है तथा शास्त्रार्थ का आह्वान किया है। किन्तु [illegible] का [illegible] विषय रखा है कि जैनमत की असम्भव बातों से अन्य मतों की बातों मे तुलना। आर्यसमाज हम स्वयं को तुलना में क्यों पड़ें। शास्त्रार्थ करने की चर्चा करने वाले स्वतः यह मानते हैं कि जैनमत में असंभव बातें हैं अतः वह स्वयं निग्रह स्थान में आ गये हैं। आर्यसमाज की दृष्टि में सब की मतों की असम्भव बुद्धिशून्य, तर्कशून्य एवं विज्ञान शून्य मान्यतायें सब त्याज्य हैं।

वैदिक धर्म मे भी कोई असम्भव बातें हैं ऐसा किसी भी लेखक ने लिखने का साहस नहीं किया फिर आर्यसमाज के साथ शास्त्रार्थ कैसा ?

हम उपर्युक्त पुस्तक में जैनमत पर उसके शास्त्रों के आधार पर ३५ आक्षेप किये हैं अतः हमारा आग्रह है कि जैन विद्वान तथा जैन [illegible] पत्र उनका उत्तर दें व्यर्थ अपशब्दों को छोड़ी [illegible] कर अशोभनीय कृत्य मे समय न खोयें।

—सम्पादक

प्रोग्राम मास अप्रैल

श्री बलवीर जी शास्त्री—१६ से १८ कैराना, १९ से २१ गोला।

श्री श्यामसुन्दर जी शास्त्री—६-७ जुही कानपुर।

श्री रामस्वरूप जी आर्यमुसाफिर ७-८ रायबरेली, ९ से १२ [illegible], १८ से २१ गोला, २६ से २८ शास्त्रीनगर कानपुर।

श्री गजराजसिंह जी—८ से १० रुद्रपुरी, १३ से १६ कासगंज, २५ काकोरी।

श्री [illegible]सिंह—९ से १२ आंवला १३ से १५ रजि० शाहजहांपुर।

श्री रामचन्द्र जी शर्मा—११ से १४ [illegible] कानपुर।

श्री प्रेमचन्द्र जी—७ से १० कैराकत, ११ से १४ जौनपुर।

श्री वेदपालसिंह जी—१९-२० विवाह गाजीपुर।

श्री प्रकाशवीर शर्मा—८ से १३ ज्वालापुर, ३० विवाह फैजाबाद।

श्री मुरलीधर जी—६-७ गंगा, १६ से १८ रुहान, २४ से २७ बीसलपुर।

श्री ब्रजराजसिंह जी—८ से १३ लक्ष्मण झूला।

श्री [illegible] जी—६ ७ गैया ९ से १२ [illegible], २१ से २३ [illegible]।

—सच्चिदानन्द शास्त्री

विद्वद्वर्य की सम्मतियां

वेदाङ्ग-प्रकाश अङ्क आर्यमित्र का जो विशेषाङ्क प्रकाशित हुआ है वह बड़ा ही सुन्दर और लाभप्रद है। इसमे वेदों के स्वाध्याय के सम्बन्ध मे बड़ी गम्भीरता से विचार किया गया है। वेदों के अङ्ग और उपाङ्गों पर कुछ विवेचन है। जिनकी ओर बहुत कम ध्यान जाता था इसको पढ़कर जहां बड़ा उत्साह होता है उसके साथ ही जिन्होंने विधि पूर्वक वेदों का स्वाध्याय नहीं किया है केवल भाष्यों के आधार पर विचार किया है और साहित्य प्रकाशित किया है उनको एक प्रकार से बड़े सावधान होने की आवश्यकता प्रतीत होती है।

—पूर्णचन्द्र एडवोकेट
पूर्व प्रधान सार्वदेशिक सभा

× × ×

आपके परिश्रम से आर्यमित्र उत्तरोत्तर सुन्दर निकल रहा है।

—राधेमोहन
बहादुरगञ्ज प्रयाग

× × ×

आपका भेजा वेदाङ्ग प्रकाश हस्तगत हुआ। इस अङ्क में मान्य विद्वानों के महत्वपूर्ण विचार प्रकाश में आये है। वेदों के अङ्गों की समुचित जानकारी इसे पढ़कर प्राप्त होती है इस अङ्क मे प्रचार में काफी सहायता मिली है। इस प्रकार के महत्वपूर्ण विशेषाङ्कों का प्रकाशन आपकी योग्यता और कर्म कुशलता एवं सच्ची धार्मिक लगन का परिचायक है। आशा है आप और उपयोगी विशेषाङ्क प्रकाशित करेंगे। आर्यमित्र दिन दूनी रात चौगुनी प्रगति पथ पर बढ़े यही कामना है। सफल सम्पादन के लिए आपको शतश: बधाई स्वीकार हो।

घर-घर पहुंचे आर्यमित्र, हो जिससे
ध्वान्त निशा का नाश।
करदे उद्बोधित जन जन को
देकर सबको सुखद प्रकाश।

—सत्यनारायण द्विवेदी
गंगाजमुनी-बहराइच

× × ×

आपका वेदाङ्ग प्रकाश अङ्क मिला। इसमे समस्त विद्वानों के लेख खोजपूर्ण हैं। प्रत्येक लेखक ने अपनी विद्वता का परिचय दिया है। यह अङ्क अति रुचिकर सिद्ध हुआ। मैं इसकी भूरि भूरि प्रशंसा करता हूं। परमात्मा आपको बल-बुद्धि विद्या प्रदान करे। जिससे आर्य मित्र की उन्नति हो।

—रामचरन आर्य
कर्णवास बुलन्दशहर

× × ×

समाज मे आपके आर्यमित्र का विशेषाङ्क-शिवरात्रि विशेषाङ्क वेदाङ्ग प्रकाश देखा। कमाल कर दिया है आपने इसे निकालने में। और मैं तो यह कहता हूं कि आर्यमित्र के जितने विशेषाङ्क अब तक निकले हैं यही एक विशेषाङ्कों की कोटि में आता है। बेशक आप कहां अपनी खोज एवं श्रम में सफल हुए हैं वहां आपकी सम्पादकी लेख में विजय लाभ कर रहे हैं और मैं तो ऐसा कहता हूं कि इसमें जितने लेख प्रकाशित हुये हैं। आपका साझा तो सब में है। आशा है भविष्य में भी अब आप ऐसे ही विशेषाङ्क निकालेंगे जो पाठकों का पथ प्रदर्शन करेंगे।

इस अङ्क के निकालने के लिये आप धन्यवाद के पात्र हैं।

—वैद्य राजबहादुर आर्य भरस
रामपुर (मथुरा)

× × ×

इस वर्ष आपके आर्यमित्र के विशेषाङ्क बड़े ही मनमोहक और विद्वतापूर्ण निकाले जा रहे है। इसके लिये आपको कोटिश धन्यवाद है। इसीलिए हमने दीपावलि अङ्क की १५ प्रतियां श्री आनन्दप्रकाश जी से प्राप्त करली थी जिन्हें अच्छे सज्जनों में वितरित कर दिया है।

—प्रभुदयाल आर्य
मन्त्री आर्यसमाज गाजीपुर

× × ×

श्रीमान ने 'वेदाङ्ग प्रकाश आर्यमित्र का शिवरात्रि विशेषाङ्क को प्रकाशित कर शिक्षित वर्ग का जो उपकार किया है उसके लिये शुद्ध हृदय से असख्य शत् बधाई देता हूं।

—धर्मराज
चौराचारी गोरखपुर

× × ×

आज ऋषि बोध अङ्क प्राप्त कर इतना आनन्द आया है व भाषा से वर्णनातीत बहुत सुन्दर। आशा है आप लोगों के कर कमलांकित ज्ञान अतीव लाभदायक होंगे। इसके लिये आप लोगों का आभारी हूं।

—डा० एम० एल० दास
मन्त्री आर्यसमाज रायबरेली

अध्यक्ष जी के विचार !!

आर्यसमाज अङ्क आर्यसमाज स्थापना दिवस पर्व चैत्र ११ शक १८९१ रविवार लखनऊ से प्रकाशित वर्ष ७० अङ्क ९ मे आर्य समाज अङ्क प्रकाशित हुआ। पृष्ठ २ पर मेरे बालसाथी आचार्य विश्वश्रवा: व्यास एम० ए० का आर्यसमाज में अब आगे क्या है का बड़े ही उत्तम ढंग से लिखा गया। पृष्ठ ३ पर आर्यसमाज के नियम अर्थात् मूलोद्देश्य का वर्णन है पृष्ठ ५ पर आर्य समाज स्थापना हमारे सभा मन्त्री के उद्गार हैं। उदयवीर शास्त्री गाजियाबाद ने पृष्ठ ७ पर और आर्यसमाज की स्थापना का उद्देश्य आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री पृष्ठ ९ पर सराहनीय है। प्रिय ताराशंकर राकेश साहित्याचार्य का खोजपूर्ण लेख करमें वेदाय हविषा विधेम बड़ा महत्वपूर्ण स्थान रखता है। आर्यसमाज का उद्देश्य आचार्य रामानन्द शास्त्री बिहार व आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य प० नरेन्द्र जी द्वारा बड़ा ही प्रेरणा दायक है। मेरे मित्र श्री शिवदयालु जी अपने देश में अपना राज्य चाहना क्रान्तिकारी बनना लेख अति सुन्दर है नौजवानों के अन्दर उत्साह पैदा करता है और इस लेख को पढ़ने से मुझको भगतसिंह और उनके आर्यसमाज से सम्पर्क तथा उनके शिक्षक किशनसिंह और अर्जुनसिंह जिन्होंने भगतसिंह को क्रान्तिकारी बनाया याद आ जाते हैं। इस अङ्क में मेरे पुराने साथी प० हरिशंकर शर्मा जी जिन्होंने मुझे पत्रकारिता की प्रेरणा दी और मेरे युवावस्था में पूर्ण साथ दिया का दुखित समाचार पढ़कर मुझे स्मरण हो रहा है कि मौन जीवन की अमर कहानी है।

आर्यमित्र अब नई प्रेरणा के साथ नई नई खोज नये नये साहित्य और महत्वपूर्ण संकलन की ओर अग्रसर है और इसके सभी कार्यकर्त्ता सम्पादक मण्डल करता सभी प्रशंसा के पात्र हैं। मैंने जीवन का सुन्दर अङ्क देखा तो वह आर्यमित्र 'आर्यसमाज' अङ्क है और जिन्होंने मुझसे वेदाङ्ग लेकर पढ़ा वे कृत कृत हैं।

— छोटेलाल सत्यपाल
अध्यक्ष
गांधी शास्त्री स्मारक समिति
शाहजहांपुर

उत्सवों, विवाह संस्कारों एवं कथाओं निमित्त उच्चकोटि के वक्ता एवं मधुर गायक आमन्त्रित कीजिये !

श्री सत्यमित्र जी शास्त्री
श्री बलवीर जी शास्त्री
श्री केशवदेव जी शास्त्री
श्री श्यामसुन्दर जी शास्त्री
श्री विश्ववर्धन जी वेदालंकार
श्री रामनारायण जी विद्यार्थी

प्रचारक

श्री रामस्वरूप जी आर्य मु०
श्री शंकरलालसिंह जी
श्री धर्मराजसिंह जी
श्री रामचन्द्र शर्मा
श्री रमेशचन्द्र जी
श्री देवपालसिंह जी
श्री प्रकाशवीर जी शर्मा
विन्ध्येश्वरीसिंह जी
श्री जयपालसिंह जी
श्री बालकृष्ण जी शर्मा
'धनुर्विद्या प्रदर्शक'
श्री मु[illegible] जी
श्री रामचन्द्र जी
श्री लखनसिंह जी
श्री ज्ञानप्रकाश जी
श्री ब्रह्ममित्र जी
श्री रघुवरदत्त जी
श्री महिपालसिंह जी
श्री लक्ष्मणसिंह जी

—सच्चिदानन्द शास्त्री एम०ए०
अधिष्ठाता उपदेश विभाग

साहित्य-समीक्षण

भारतीय दर्शन
ले०—डा० विश्वनाथ प्रसाद वर्मा

प्रोफेसर तथा अध्यक्ष राजनीति विभाग पटना विश्वविद्यालय, प्रकाशक लक्ष्मीनारायण अग्रवाल शिक्षा साहित्य के प्रकाशक आगरा मूल्य १० रुपया, पृष्ठ ४८८ सजिल्द छपाई कागज व गेटअप अच्छा है।

खोजपूर्ण जीवन व्यतीत करने वाले बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न श्री वर्मा जी अध्ययनशील व्यक्ति हैं। आपने अपनी इस रचना में भारतीय दर्शन को चारों ओर से भली प्रकार आंक कर देखा है। जन्मना सनातन धर्मी परिवार से तथा बाद में आर्यसमाज की बढ़ती हुई प्रचार शैली से प्रभावित होकर धार्मिक प्रवृत्ति तथा उसके स्वाध्याय में बढ़ोत्तरी होना ही आपकी विशेष योग्यता का परिचायक है। आपने वैदिक वाङ्मय का सभी मतों के दर्शनों का दर्शन कर अपनी रचना में दिग्दर्शन कराया है। भारतीय दर्शनकारों के अतिरिक्त विदेशीय दार्शनिकों के साहित्य का भी अवलोकन कर अपने ग्रन्थ में तुलनात्मक दृष्टिकोण से दर्शन का अध्ययन कर मानव को बोधगम्य बनाया है।

पुस्तक भारतभित्त होने के साथ विद्वत्ता पूर्ण है आर्यसमाज का प्रभाव होने के साथ २ उसका भी भली प्रकार दिग्दर्शन कराया है।

साहित्य अपना हो या पराया पाठक को रुचि से पढ़ना चाहिए और उसके आधार पर अपना तथा पराये को मार्ग पर लाने का प्रयत्न करना चाहिए, अतः लेखक का प्रयत्न सराहनीय है जनता को पढ़ने का आग्रह करता हुआ परिश्रम के लिए लेखक को बधाई देता हूं।

पूर्व और पश्चिम
लेखक—नित्यानन्द पटेल

प्रकाशक गोविन्दराम हासानन्द नई सड़क, दिल्ली ६, पृष्ठ सं० १९२ कागज छपाई आदि आकार प्रकार सुन्दर मूल्य ७.५०

प्रस्तुत पुस्तक 'पूर्व और पश्चिम' में कुछ विवेचनात्मक प्रबन्धों का अच्छा संकलन है। लेखक महोदय ने वैदिक वाङ्मय के आधार पर मूल सिद्धान्तों को सामने रखकर प्राच्य और प्रतीच्य का धार्मिक-सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से तुलनात्मक विवेचन स्वरूप का अच्छा चरित्र चित्रण किया है यह रचना गम्भीर होते हुये भी सरल व रुचिकर है। भारत के प्राचीन ऋषि मुनियों का जीवन के प्रति दृष्टि क्या है। वैदिक संस्कृति क्या है, इसके मूल तत्व क्या हैं, आज के साम्यवाद की तुलना में वैदिक अर्थशास्त्र क्या देता है मनोवैज्ञानिक तत्व क्या हैं सभी तत्वों पर भली प्रकार से विचार किया है। मानव के मूल भूत तत्वों पर गहराई से कलम चलाई है। पुस्तक में क्या है खोलकर बता दिया है।

विचारों की क्रान्ति के इस युग में परिवर्तन लाने के लिए तुलनात्मक विवेचन विचार शील व्यक्तियों के लिये प्रकाश का कार्य करेगी। यही पुस्तक की विशेषता है। पठित समुदाय इसका सम्मान करे परिश्रम के लिए लेखक को बधाई देता हूं।

आर्य दर्पण
ले०—प० विश्वबन्धु जी शास्त्री एम० ए० एम० ओ०एल०

प्रकाशक-विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान होशियारपुर पंजाब पृष्ठ २१० मुखपृष्ठ रंगीन आकर्षक एवं रोचक मूल्य २.७५

श्रद्धेय आचार्य प्रवर की यह अनुपम कृति है इसमें मान्य विद्वान ने आर्य समाज की गतिविधियों, स्वरूप का पुष्टिकारण वर्त्तमान स्थिति का पर्यालोचन एवं भावी विकास का निरूपण भली प्रकार किया है। आर्यसमाज में ऐसी रचना का सम्मान होना चाहिये। इसका उचित परीक्षण एवं मूल्यांकन करें।

विद्वान लेखक आर्य जगत के माने हुए तपोनिष्ठ व्यक्ति हैं आप इस कृति से पूर्व भी अनेक रचनायें आर्य जनता को भेंट कर चुके हैं। जैसे—वेद सार—मानवता का मान—सत्संग सार—पंजाबी रामायण आदि की रचनायें हैं।

विद्वान लेखक ने अपने जीवन को वेद धर्म जाति के लिये ही लगाया है। साहित्य के सृजन में जीवन के खरे अनुभव हर स्थान पर अंकित मिलेंगे।

मेरी प्रभु से प्रार्थना है कि आदरणीय आचार्य जी हमारे मध्य स्वस्थ एवं शतायु होकर हम लोगों का अधिक अपने विचारों से उपकृत करें।

—सच्चिदानन्द शास्त्री एम०ए०
सभा मन्त्री

वार्षिक महोत्सव

आपके प्रिय गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर का ६० वां वार्षिकोत्सव इस वर्ष वैशाखी एवं अर्ध कुम्भ के शुभ अवसर पर दिनांक १२, १३, १४ अप्रैल सन १९६८ ई० शुक्र, शनि, रविवार को गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के रमणीय स्थान में बड़े समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है।

इस शुभ अवसर पर अनेक महत्व पूर्ण एवं शिक्षाप्रद सम्मेलनों और व्याख्यानों का आयोजन किया गया है। अतः आपकी सेवा में सादर प्रार्थना है कि आप अपने बन्धु-बान्धवों सहित उत्सव में पधार कर दूर-दूर से आगत सन्यासी, महात्मा, एवं विद्वानों के उपदेशामृत का पान कर धर्म लाभ उठावें।

१३ अप्रैल को दीक्षान्त समारोह हो रहा है जिसमें दीक्षान्त भाषण के लिये माननीय महामहिम श्री डा० बी० गोपाल रेड्डी राज्यपाल उत्तर प्रदेश पधार रहे हैं। इसके साथ-साथ आर्य सम्मेलन, संस्कृत सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन, राज्य भाषा सम्मेलन आदि का भी आयोजन किया गया है।

१४ अप्रैल को नवीन छात्रों का वेदारम्भ संस्कार होगा। आशा है आप उपर्युक्त अवसर पर पधार कर अपनी एक मात्र संस्था का निरीक्षण करेंगे तथा अपने अमूल्य परामर्शों से अनुग्रहीत करेंगे।

प्रकाशवीर शास्त्री प्रकाशचन्द्र शास्त्री
प्रधान मन्त्री
महाविद्यालय सभा, ज्वालापुर

डा० हरिशङ्कर जी शर्मा के निधन पर हृदयोद्गार

अभी उस दिन की बात है, वृन्दावन में महात्मा नारायणस्वामी जन्म शताब्दी समारोह के अवसर पर, डा० हरिशङ्कर जी शर्मा के दर्शन हुए थे।

सहज स्वभाव से, पितृ-परम्परा से प्राप्त साहित्यिक-संस्कार के धनी, धार्मिक भावना से ओतप्रोत, साहित्यानुरागी मनीषी की प्रतिमा मुखरित हो उठी।

उस दिन नहीं जानता था कि इस सुसंस्कृत सौहार्दपूर्ण स्नेह से हम इतने शीघ्र ही वंचित हो जायेंगे।

परमपिता परमात्मा की यही इच्छा थी हम सब उसके सामने नतमस्तक हैं। "दिवंगत आत्मा को शान्ति और हम सब को इस अपूरणीय क्षति को सहन करने की तथा उनके द्वारा प्रदर्शित सन्मार्ग पर अनुगमन की शक्ति प्रदान करने की कृपा करें यही परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है।

—विद्याधर, कानपुर

गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय का ६८ वां वार्षिकोत्सव

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का ६८ वां वार्षिकोत्सव १२, १३, १४, १५, अप्रैल को बड़ी धूम धाम से मनाया जाएगा। इस अवसर पर कई समयोपयोगी सम्मेलनों का भी आयोजन किया गया है। आर्य जनता से प्रार्थना है कि वे अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर उत्सव की शोभा को बढ़ावें।

खण्डवा पूर्व निमाड़ में वैदिक धर्म प्रचार

आर्यसमाज खण्डवा के स्थाई प्रचारक सुखराम आर्य सिद्धांत शास्त्री ने दिनांक १८ मार्च से २३ मार्च ६८ तक ग्राम छवी, भामगढ़, अमलपुरा, माचलिहपुरा, सेडी, राई आदि ग्रामों में प्रतिदिन प्राथमिक, मिडिल, एवं माध्यमिक विद्यालयों में वर्णाश्रम व्यवस्था, ईश्वर भक्ति आदि विषयों पर वैदिक सिद्धांतों के द्वारा धर्मोपदेश दिया।

धर्म और सेवा की आड़ में लोभ लालच देकर देश में प्रतिदिन सैकड़ों की संख्या में धर्म परिवर्तन करने वाले इन विदेशी मिशनरियों के काले कारनामों का भंडा फोड़ किया।

आर्यसमाज क्या मानता है ?

●

१—वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है' जो ईश्वर ने सृष्टि के आदि में मनुष्यों के पथ प्रदर्शन और आमार्ग प्रदान किया। वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब वैदिक धर्मियों का परम धर्म है। वेदों को पढ़ने का अधिकार बिना भेद-भाव के संसार भर में सब स्त्री पुरुषों को है।

२—ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, न्यायकारी- अजन्मा, अनन्त, सर्व-व्यापक, अनादि, सृष्टिकर्त्ता आदि गुणयुक्त तथा मनुष्य मात्र का उपास्य देव है एक मात्र उसी की उपासना करना चाहिए।

३—ईश्वर निराकार और सर्व-व्यापक है। उसकी मूर्ति नहीं हो सकती। ईश्वर के स्थान में देवी देवताओं की कल्पित मूर्तियों की पूजा वेद विरुद्ध है। 'मन्दिर' वही कहाने योग्य है, जहां धर्म और सुकर्म का उपदेश मिले।

४—जीव ब्रह्म से भिन्न है। अद्वैतवादियों का 'अहं ब्रह्मास्मि' (मैं ब्रह्म हूं) कहना अयुक्त है। हमीं ब्रह्म हैं तो पूजन किसका ? दुःख सुख में फिर हमें आश्रय किसका !

५—विद्वान पुरुषों का सत्संग और वेद शास्त्र का अध्ययन तथा विषय विकार रहित मन 'तीर्थ' है।

६—सूर्य तथा चन्द्र ग्रहण छाया मात्र है, यह सभी पढ़े लिखे जानते हैं। उन्हें राहु केतु से ग्रस जाना और उस समय तीर्थों पर जाकर स्नान करने में पुण्य मानना अन्धविश्वास है।

७—ईश्वर कभी किसी मनुष्य, सुअर, कच्छ, मच्छ आदि की देह धारण करके अवतार नहीं लेता। ईश्वर निराकार है और सर्व-व्यापी है। वह नस-नाड़ी, शोक, हर्ष, काल और कर्म के बंधन से रहित है।

८—ईश्वर कर्मों का फलदाता है और उसके न्याय नियम से कर्मों का फल अवश्य मिलता है। कोई ईश्वर का अवतार, 'खुदा का पैगम्बर' या 'खुदा का बेटा' दुष्कर्म के फल भोग से नहीं बचा सकता। ऐसा कहना पाप को बढ़ावा देना है।

९—स्वर्ग नरक कोई विशेष स्थान नहीं हैं। सुख का नाम स्वर्ग और दुःख का नाम नरक है और वे इसी संसार में तथा इसी शरीर में भोगे जाते हैं।

१०—पुण्य, दान, ईश्वरोपासना, स्वाध्याय, सत्सग, सदाचार माता पिता गुरुजनों तथा दीन दुःखी की सेवा, तथा अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य आदि १० यम नियमों का पालन, ये मनुष्य को देव पद प्राप्त कराते हैं।

११—माता, पिता और आचार्य तीन गुरु होते हैं। जीवित माता, पिता और गुरुजनों की श्रद्धा पूर्वक सेवा करना ही श्राद्ध है। मृत पितरों के नाम पर श्राद्ध करना वेद विरुद्ध और निरर्थक है।

१२—वर्ण व्यवस्था 'गुण, कर्म, स्वभाव' से है। ब्राह्मण, क्षत्री और वैश्य यदि आचार और विद्या से विहीन हो तो उनका शूद्र वर्ण हो जाता है।

१३—पशुओं के बलिदान से ईश्वर प्रसन्न नहीं होता। धर्म या यज्ञ के नाम पर मन्दिर आदि में पशु हिंसा करना घोर पाप है।

१४—भूत प्रेत जादू टोना तागा तावीज झाड़ फूंक सब मूर्खों को बहकाने और ठगने को हैं।

१५—बिना किसी स्वार्थ के संसार का उपकार करना, अविद्या, अज्ञान नास्तिकता और कुप्रथाओं का नाश करना, सदाचार दीन दुःखी की सेवा और प्रभु भक्ति आर्यसमाज के मूल मन्त्र हैं।

१६—शूद्रों या अन्य जाति के साफ सुथरे स्त्री पुरुषों द्वारा पकाये हुये भोजन से धर्म भ्रष्ट नहीं होता। हिंसा, अधर्म, अन्याय से प्राप्त हुए धन से खरीदे हुए अन्न के खाने से अवश्य धर्म भ्रष्ट होता है। (जाति-अभिमानी जन हृदय पर हाथ धरकर अपनी-अपनी कमाई और जीवनी को परखें) !

१७—आर्यसमाज कोई अलग सम्प्रदाय नहीं। आर्य का अर्थ श्रेष्ठ है, आर्यसमाज श्रेष्ठ सदाचारी आस्तिक ईश्वर विश्वासी और वैदिक धर्मी जनों का संगठन है।

१८—यह भी आर्यसमाज का नियम है कि प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

१९—आर्यसमाज यह भी मानता है कि 'स्तुति प्रार्थना उपासना अग्नि-होत्र यज्ञ आदि नित्य कर्म करते हुये, यदि किसी व्यक्ति में सदाचार, दान पुण्य पवित्र कमाई, शुद्ध आहार व्यवहार नहीं, तो ये नित्य कर्म सभी निरर्थक हैं, और ऐसों का मन्दिर जाना, पाठ पूजा आदि आरम्भ करना और ढोंग मात्र है।

वन्दना !

●

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं, तदु सुप्तस्य तथैवैति,
दूरंगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं, तन्मेमनः शिव संकल्पमस्तु

निशि दिवस जाग्रतावस्था मे, करता रहता जो दूर गमन।
वैसे ही स्वप्नावस्था मे, करता सरिता, वन, सिन्धु गमन॥
द्रुत, दिव्य शक्ति सम्पन्न एक, है मार्ग प्रदर्शक ज्योति नयन।
शिव, सत्य, सुष्ठु संकल्पयुक्त, हो जाय प्रभो! वह मेरा मन॥१

येन कर्माण्यपसो मनीषिणो, यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः,
यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां, तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु

जिसके द्वारा नित कर्मशील, अति धीर वीरवर विद्वज्जन।
धर धीर धर्म व्यवहारों में, कर्मों का करते नित-दिन॥
जो यक्ष समान प्राणियों मे, है स्थित अपूर्व सत्कार सदन।
शिव, सत्य, सुष्ठु संकल्प युक्त, होजाय प्रभो! वह मेरा मन॥२

यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च, यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु,
यस्मान्नऋते किञ्चनकर्म क्रियते तन्मेमनः शिव संकल्पमस्तु

जो स्मृति धृति का कारण निश्चय, जिससे होता प्रज्ञान गहन।
भरता सर्वत्र प्राणियों में ज्योतिर्मय दीप्त अमर जीवन॥
इस जग मे जिसके बिना नहीं होता कोई भी कार्य वहन।
शिव, सत्य, सुष्ठु संकल्पयुक्त, हो जाय प्रभो! वह मेरा मन॥३

येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्, परिगृहीतममृतेन सर्वम्।
येन यज्ञस्तायते सप्त होता, तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु॥

जिस अमर पूज्य मन के द्वारा, सब काल सर्वदा सर्व अपर।
जाना जाता निश्चयपूर्वक, वृत्तान्त भविष्यत्, भूत, भुवन॥
जिससे सर्वत्र सप्त होता, विस्तृत करते शुभ कर्म हवन।
शिव सत्य, सुष्ठु संकल्प युक्त हो जाय प्रभो! वह मेरा मन॥४

यस्मिन्नृचः साम यजूंषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः।
यस्मिंश्चित्तं सर्वमोतं प्रजानां, तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु

ऋक्,छन्द,साम यजु नाम रूप,विज्ञान, कला, श्रुति गान, यजन।
रथ चक्र नाभि में अरा सदृश, रहता जिसमें श्रुति ज्ञान चयन॥
है ओतप्रोत सदा जिसमें, सब प्रजाजनों का चित्त कनन।
शिव, सत्य, सुष्ठु संकल्पयुक्त हो जाय प्रभो! वह मेरा मन॥५

सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान् नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं, तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु

जैसे सुसारथी ले लगाम, करता अति उत्तम अश्व नयन।
वैसे ही जो कि मनुष्यों का करता अनेक विधि सञ्चालन।
रह सतत प्रतिष्ठित हृदय मध्य, गति दे करता सबका स्पन्दन।
शिव, सत्य, सुष्ठु संकल्पयुक्त, हो जाय प्रभो! वह मेरा मन॥६

—पं० कृष्णचन्द्र राजौरिया एम० ए०, अलीगढ़

आर्यसमाजों के नाम अपील

गढ़वाल में आर्यसमाज मन्दिर निर्माण की योजना

आर्यसमाज सावली आदि पंचपुरी (गढ़वाल) के कार्यकर्ताओं ने स्यूंसी (गढ़वाल) में आर्यसमाज मन्दिर बनाने का निश्चय किया है परन्तु गढ़वाल आदि पर्वतीय अंचलों में आर्यसमाज का प्रचार यथेष्ट न होने के कारण मन्दिर निर्माणार्थ उन्हें बाहर से धन संग्रह करने के लिए विवश हो जाना पड़ा है। उक्त समाज ने धन के लिए अपील निकाली है जिसका समर्थन आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश और सार्वदेशिक सभा ने भी किया है। अपने प्रचार को स्थाई रूप देने और उन क्षेत्र में ईसाई मिशन की व्यापक एवं आपत्तिजनक प्रगतियों एवं उसके बढ़ते हुए प्रभाव के निराकरण के लिए वहां एक आर्यसमाज मन्दिर के निर्माण की परमावश्यकता है।

इस कार्य में देश की आर्यसमाजों द्वारा इस समाज के कार्यकर्ताओं को प्रोत्साहन मिलना चाहिए।

आशा है कि आर्य समाजें धन से इस समाज की सहायता करेंगी। धन मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट के सार्वदेशिक सभा को दिया जा सकता है जहां से आवश्यकतानुसार उक्त समाज को दिया जाता रहेगा।

—रामगोपाल, संसद सदस्य
मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द भवन, रामलीला मैदान,
नई दिल्ली—१

हरिशङ्कर शर्मा स्मारक समिति

आगरा—कविरत्न सत्यनारायण अर्द्ध शताब्दि समिति समारोह की कार्यसमिति की एक बैठक बाबू वृन्दावनदास जी एडवोकेट की अध्यक्षता में हुई जिसमें हिन्दी जगत के मूर्धन्य नेता एवं साहित्यकार यशस्वी डा० हरिशङ्कर जी शर्मा के दुखद निधन पर घोर दुःख प्रकट किया गया। समिति की राय में पण्डित जी के निधन के रूप में हिन्दी जगत को एक महान् क्षति हुई है जिसकी पूर्ति निकट भविष्य असम्भव है। समिति द्वारा निम्न लिखित सज्जनों की एक समिति का निर्माण किया है, जो स्वर्गीय पण्डित जी की स्मृति में एक स्मारक बनाने की योजना पर विचार करके उसे कार्यान्वित करने की चेष्टा करेगी।

सदस्यों के नाम हैं—

श्री वृन्दावनदास संयोजक, श्री देवी प्रसाद 'विकल', श्री राजेन्द्र रघुवंशी, श्री हृषीकेश चतुर्वेदी, श्री तोताराम पंकज, श्री अमृतलाल चतुर्वेदी।

यह समिति इस सम्बन्ध में शीघ्र ही ठोस कदम उठायगी ऐसी आशा की जाती है।

वार्षिकोत्सव—

प्रयाग

आर्य समाज चौक का ९२ वाँ वार्षिकोत्सव नगर के मध्य हरकूपरानी पार्क में दिनांक ३० जनवरी से २ फरवरी तक समारोहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर आर्यजगत के प्रसिद्ध विद्वान एवं भजनीक पधारे। श्री ठा० धर्मपालसिंह की अपील पर २५० रु० से अधिक धन जनता ने मुक्तहस्त से सहर्ष आर्यसमाज को प्रदान किया।

जगदीशपुर

आर्यसमाज जगदीशपुर का २८ वां वैदिक धर्म महोत्सव दिनांक ८ से १० अप्रैल तक समारोह के साथ मनाया जायगा।

धमौरा

आर्यसमाज धमौरा (रामपुर) का १८ वाँ वार्षिकोत्सव होली के पुनीत पर्व पर अत्यधिक सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

बकरीद पर ट्रैक्ट वितरण

प्रयाग—दि० १० मार्च को बकरीद पर आर्यसमाज चौक की ओर से नमाज के पश्चात लौटते हुए मुसलमानों में १४०० उर्दू के 'कुर्बानी तथा वेदों की अक्सत नामक' ट्रैक्ट वितरित किये गये इस कार्य में ३५ रु० की आर्थिक सहायता 'श्री रामाराम जी गुप्त काव' से प्रदान की गई।

वेदप्रचार

कायमगंज—आर्यसमाज कायमगंज (फर्रुखाबाद) में २३ मार्च को श्री धर्मानन्द जी भजनोपदेशक द्वारा ईश्वर भक्ति और गोरक्षा विषय पर बड़ा ही प्रभावशाली प्रचार सम्पन्न हुआ।

शुद्धि—

समस्तीपुर—दि० १२ मार्च को एक ईसाई युवती एलिजाबेथ सेमसन का शुद्धि संस्कार आर्य समाज मन्दिर समस्तीपुर में किया गया। शुद्धि के बाद युवती का नाम धर्म शिरोबाला रखा गया तथ एक आर्य बंगाली युवक श्री धीरेन्द्रचन्द्र दास के साथ उसका विवाह सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर नगर के विशिष्ट जनों ने भाग लिया।

शोक समाचार—

गोरखपुर—आर्यसमाज गोरखपुर के कर्मठ सदस्य और नगर के प्रसिद्ध व्यवसायी श्री ओम्प्रकाश रस्तोगी का देहाव सान दि० १५-३-६८ को हो गया। उनकी हृदयगति सहसा रुक गई। हवन एवं शुद्धि संस्कार पर परिवार द्वारा ५१ रु० आर्यसमाज गोरखपुर-५१ रु० महिला आर्य समाज ११ रु० गुरुकुल गोरखपुर ५ रु० आ० स० साहबगंज तथा ५ रु० आ०स० मुहद्दीपुर को दान में दिया गया।

स्वर्गीय श्री रस्तोगी जी जीवन पर्यन्त आर्यसमाज की सेवा तन मन धन से करते रहे। परमात्मा उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

कलकत्ता—आर्यसमाज कलकत्ता की परम सहयोगी माता यशवन्त कौर नरूला के निधन पर शोक प्रस्ताव पारित किया गया। श्री माता जी आर्य स्त्री समाज कलकत्ता की प्रधाना थीं।

शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज, मण्डी बाग, मुरादाबाद के भूतपूर्व प्रधान स्व० श्री शिव नारायण जी मुन्सरिम का देहान्त १७ ३ ६८ को प्रातः ८ बजे, उनके निवास पर लम्बी बीमारी के कारण हो गया। श्री मुन्सरिम साहब उन इने गिने आर्यों में से थे जिनकी उपमा कठिनाई से दी जा सकती है। आपका व्यक्तित्व अनुकरणीय था। महात्मा नारायण स्वामी जी जैसे महान व्यक्तियों का स्नेह एवं आशीर्वाद उन्हें प्राप्त था।

भगवान से प्रार्थना है कि वह दिवंगत आत्मा को शान्ति, सद्गति एवं शोक सतप्त परिवार को इस महान शोक के सहन की क्षमता प्रदान करें।

महिला मण्डल

(पृष्ठ १० का शेष)

"फशावरूहुन्न वखालिफ कोहिन्न" अर्थात् उनसे परामर्श करो और जैसा वह कहें उसका उलटा करो।

अब जहाँ तक आध्यात्मिक जगत् में हम देखते हैं इस्लाम में कोई भी स्त्री का उल्लेख नहीं मिलता जिसे पैगम्बर अथवा नबी का स्थान प्राप्त हुआ हो जबकि वैदिक धर्म में जहाँ वेद मन्त्रों के द्रष्टा अनेक ऋषि हैं वहाँ अनेक ऋषिकाएं भी मन्त्रों की द्रष्टा हैं। यज्ञों का विधान उस समय तक पूर्ण नहीं होता जब तक यजमान के साथ उसकी पत्नी न हो। ज्ञान तथा कर्म के द्वारा मोक्ष प्राप्ति स्त्री तथा पुरुष दोनों ही के लिये सम्भव है, फिर मोक्ष में जो आनन्द पुरुष के लिये है वह स्त्री के लिये भी। ऐन्द्रिय सुख की वहाँ गुञ्जाइश नहीं है इस्लाम के विपरीत जहाँ जन्नत में सभी ऐन्द्रिय सुख के साधन हैं जिनमें जन्नतियों के लिये बढ़िया राजसी उनमें बिछे हुए गद्देदार पलंग, खाने के लिये मेवे, शराब शहद और मीठे पानी की बहती नहरों के अतिरिक्त, बड़ी-बड़ी आँखों वाली गोरी हूरें जो ऐसे कपड़े पहने होंगी कि सत्तर तहों में भी पिंडली का गूदा दिखाई देगा, फिर एक-एक जन्नती को सत्तर सत्तर हूरें मिलेंगी इनके अतिरिक्त ७२ गिलमान बिना दाढ़ी मूछ के लड़के भी मिलेंगे। पाठक विचार कर सकते हैं कि मेवे, फल, शहद, दूध आदि तो बेचारी स्त्रियां कुछ उपयोग भी कर सकती परन्तु ये हूरें और गिलमान उनके किस काम आयेंगे।

इस्लाम ही ने स्त्रियों को पर्दे में रखना शरीअत में आवश्यक बताया। तलाक का अधिकार प्रायः मर्दों को ही दिया गया यदि कोई स्त्री व्यभिचारिणी पायी जाय तो उसे कोड़ों से मार मार कर कड़ी यातना देने का विधान है परन्तु मर्दों के लिये ऐसा कोई विधान नहीं है। अन्त में इतना ही कहना चाहता हूं कि आज जब स्त्री पुरुष का भेदभाव संसार में मिट रहा है और समाज के प्रत्येक क्षेत्र में स्त्रियां पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त कर रही हैं ऐसी दशा में इस्लाम सर्वथा प्रतिक्रियागामी तथा स्त्रियों के लिये किसी भी प्रकार से लाभप्रद नहीं प्रतीत होता।

स्वाध्यायान्न प्रमदितव्यम्

★ पं० शिवदयालु

भारत के प्राचीन अनुभवी तत्त्वदर्शी विद्वानों का यह निश्चित मत कि स्वाध्याय मानव की रक्षा और त्थान करता है। स्वाध्याय निश्चय ही ानवीय संस्कृति का महान् रक्षक है वाध्याय तो मानव का सच्चा आभूषण । स्वाध्याय हीन मानव संसार की दौड़] पिछड़ जाता है और प्रगति पथ से भटक ाता है।

अतः अब प्रश्न यह है कि स्वाध्याय ! क्या ?

स्वाध्याय का पहला अर्थ है स्व का ाध्ययन अर्थात् आत्मतत्व का बोध। ापने निज स्वरूप को समझना। अंग्रेजी में इसको कहते हैं टु नो दाइसेल्फ इज टु नो गाड' अर्थात् अपने स्वरूप को जान लेने पर ही मानव परमात्मदेव को जान सकता है और यही मानव जीवन की रम साधना है।

आत्म चितन अर्थात अपनी शक्ति और कर्तव्यों का चिंतन करना मानव को ऊंचा उठाने वाला है।

स्वाध्याय का दूसरा अर्थ है सु अध्ययन अर्थात श्रेष्ठ मानवों महापुरुषों के लिए ग्रन्थों का ध्यान पूर्वक अध्ययन करना। स्वार्थी, मतवादी, अन्धविश्वासी सन्धाई लोगों के लिए ग्रन्थो में सर खपाना व्यर्थ और समय का दुरुपयोग करना है। ऋषि, मुनि, महात्माओ, तत्वदर्शी विद्वानों के लिए शास्त्रो का अध्ययन और मनन करना मानव जीवन के उत्थान का महान साधक है।

आर्यसमाज के आरम्भिक काल में महर्षि दयानन्द जी महाराज के पुण्य प्रभाव से सैकड़ो व्यक्तियों ने आर्षग्रंथो के अध्ययन और मनन का बीडा उठाया और उसका ही परिणाम था कि पं० गुरुदत्त विद्यार्थी, पं० तुलसीराम स्वामी, पं० आर्यमुनि, पं० रामचन्द्रदेहलवी, पं० क्षेमकरणदास स्वामी दर्शनानन्द, स्वामी नित्यानन्द, स्वामी सर्वदानन्द, नारायण स्वामी स्वामी श्रद्धानन्द, पं० लेखराम, पं० गंगाप्रसाद, पं० मातव लेकर आदि एक से एक उद्भट विद्वान् आर्य शास्त्रो के ममज्ञ उत्पन्न हुये और महर्षि दयानन्द की विचारधारा का पूर्ण सफलता के साथ देश में प्रचार किया। ये और इन जैसे अनेक आर्य विद्वानों ने ही भारत मे प्राचीन ऋषियों के पावन युग की झलक दिखला दी और ग्रन्थो के सुन्दर अनुवाद एवं भाष्य करके आर्य जाति के समक्ष स्वाध्याय के लिये उपस्थित कर दिये।

समय ने पलटा खाया और आर्य ग्रन्थो के पठन पाठन अध्ययन-मनन की लगन मन्द पड गई। अनार्ष पुस्तकों, नाविलों उपन्यासों आदि के पठन-पाठन की प्रवृत्ति जागृत हो उठी। और इसका परिणाम यह हुआ कि आर्यसमाज अपने वेद प्रचार के लक्ष्य से भ्रष्ट होकर केवल नैतिक सामाजिक एवं शैक्षणिक झञ्झटो में बुरी तरह उलझ गया।

आज आर्य जगत् में स्वाध्याय की प्रवृति का भारी अभाव है। न स्व+अध्ययन की प्रवृत्ति है और न सु+आङ् अध्ययन की ही।

अब आर्ष ग्रन्थ आर्य पुस्तकालयों की शोभा बढ़ाने का ही केवल काम करते हैं। आर्यसमाजों मे इस ऋषि प्रणीत ग्रन्थों के पढ़ने की अब लगन शेष नहीं। आर्य पुस्तक विक्रेता भी अब आर्ष ग्रन्थो को छापने और बेचने से हाथ धोकर नाविल उपन्यासों के प्रकाशन आदि मे प्रयत्नशील हैं।

आर्यसमाजों के उत्सवों पर आर्ष ग्रन्थो के बेचने वाले अब पहुचते तक नहीं और यदि पहुंच भी जाते हैं तो हाथ पर हाथ धरे बैठे रहते हैं। आर्ष ग्रन्थों का कोई खरीद दार नहीं है।

यदि इन आर्ष ग्रन्थों का प्रकाशन और प्रचार रुक गया और आर्यसमाजों में स्वाध्याय की अन्त्येष्टि हो गई तो फिर आर्यसमाज, आर्यसमाज न रहकर कुछ और ही रह जाएगा।

समय है अभी इस बिगडी को बनाने का। गलत धारा के प्रवाह को रोक कर स्वाध्याय की पवित्र गंगा को पुनः प्रवाहित करने का।

आर्यसमाजी स्वयं स्वाध्याय का व्रत लें, आर्ष ग्रन्थों की अपने घरों व परिवारों मे नियमित रूप से कथा की प्रथा डालें।

अपनी सन्तान को आर्ष साहित्य का प्रेमी बनावें।

आर्ष एवं आर्य साहित्य के अपने २ यहां प्रत्येक आर्यसमाज बिक्री केन्द्र खोल तथा आर्यसमाज के अधिकारी एवं कार्यकर्ता गली मुहल्लों व ग्रामों में घूम-घूम कर आर्य साहित्य का विक्रय करें। साम्यवादियों, ईसाई मिशनरियों और विनोबा जी के अनुयायियो की भांति घूम २ कर वैदिक साहित्य का विक्रय करें। कोई घर ऐसा न रहे जिसमे वैदिक साहित्य का प्रवेश न हो गया हो।

प्रत्येक आर्यसमाज वर्ष में एक निश्चित धनराशि का साहित्य विक्रय करने का अपना लक्ष्य निर्धारित कर कार्य क्षेत्र मे उतरे और अन्य सब कार्यों की अपेक्षा वैदिक साहित्य के सृजन प्रकाशन विक्रय एवं पठन-पाठन को अधिक महत्वपूर्ण समझें। तब ही यह बिगडी हुई धारा बदल सकती है और आर्यसमाज अपने पिछले स्वाध्याय युग को पुनः ला सकता है।

●

सभा का वृहदधिवेशन सिरसागंज (मैनपुरी) में होगा

आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का ८२ वां वार्षिक वृहदधिवेशन सभा के निश्चयानुसार इस वर्ष सिरसागंज जि० मैनपुरी में तिथि ११, १२ ज्येष्ठ सं० २०२५, शनिवार—रविवार तदनुसार १ व २ जून १९६८ को होना निश्चित हुआ है।

समस्त आर्यसमाजें अपने प्रतिनिधि चित्र तथा दशांशादि यथाशीघ्र ही सभा कार्यालय में भेजने की कृपा करें।

—सच्चिदानन्द शास्त्री एम० ए०
मन्त्री—आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश

श्री मास्टर मानिकराम जी की अचानक मृत्यु !

मुझे यह जानकर अत्यन्त दुःख हुआ कि आर्यसमाज कटरा प्रयाग के प्रसिद्ध वृद्ध पुरुष का प्रेरणा पूर्ण जीवन आज १२ अप्रैल सन् १९६८ को प्रातः काल समाप्त हो गया। श्री मास्टर जी राजकीय इण्टर कालेज में अध्यापक थे और वहां से कुछ वर्षों पूर्व पेन्सन लेकर रिटायर हो गये थे। उनको यात्रा का बहुत शौक था। उन्हीं ने आर्यसमाज की सब प्रमुख संस्थाओं टंकारा आदि को जाकर देखा था। उनका प्रयाग की स्थानीय हर एक छोटी बड़ी संस्था से सम्बंध था और हर आर्यसमाजी के दुख सुख में सम्मिलित रहते थे। उनके हृदय में आर्यसमाज कल्याण की भावना सदा विद्यमान रहती थी वे शांति प्रिय थे अतः उनके कारण सामाजिक झगड़े शीघ्र समाप्त हो जाते थे। श्री मास्टर जी प्रांतीय और अन्तर देशीय समाज के कार्यों में बहुत रुचि रखते थे। उनके देहावसान से आर्यसमाज की बहुत क्षति हुई है। हम उनकी पत्नी श्रीमती शांती देवी के साथ हार्दिक संवेदना प्रकट करते हैं जो स्वयं आर्यसमाज की परम भक्त तथा सेविका हैं।

—गङ्गाप्रसाद उपाध्याय

★

वैदिक प्रार्थना

ओ३म् अतो देवा अवन्तु नो यतो विष्णुर्विचक्रमे। पृथिव्याः सप्त धामभिः ॥ ११ ॥

ऋ० १।२।७।१६ ॥

व्याख्या—हे "देवाः" विद्वानों ! "विष्णुः" सर्वत्र व्यापक परमेश्वर ने सब जीवों का पाप तथा पुण्य का फल भोगने और सब पदार्थ के स्थित होने के लिये पृथिवी से ले के सप्तविध लोक "धामभिः" अर्थात् ऊंचे नीचे स्थानों से संयुक्त बनाये तथा गायत्र्यादि सात छन्दों से विस्तृत विद्यायुक्त वेद को भी बनाया उन लोकों के साथ वर्तमान व्यापक ईश्वर ने "यतः" जिस सामर्थ्य से सब लोकों को रचा है "अतः" (सामर्थ्यात्) उस सामर्थ्य से हम लोगों की रक्षा करे। हे विद्वानों ! तुम लोग भी उसी विष्णु के उपदेश से हमारी रक्षा करो कैसा है वह विष्णु ? जिसने इस सब जगत् को "विचक्रमे" विविध प्रकार से रचा है उसकी नित्य भक्ति करो ॥ ११ ॥

आर्य्यमित्र

लखनऊ-रविवार २८ अप्रैल १९६८, दयानन्दाब्द १४४ सृष्टिसंवत १,९७,२९,४९,०६९

भूल सुधार

कृपया पृष्ठ सं० ७, ८, ९, १०, ११, १२, तथा १५ व १६ के स्थान पर ५, ६, ७, ८, ९, १० तथा ११ व १२ पढ़ा जाय। असुविधा के लिये हमे खेद है।

—व्यवस्थापक

हाल-चाल

★

आजकल देश मे बड़ी चिन्ता की दशा हो रही है। एक ओर अनेक निर्माणों की चर्चा है, कृषि के उत्पादन के क्षेत्र मे वृद्धि हो रही है। दूसरी ओर अकाल, बाढ़, ओले और अन्य प्रकार के दैविक प्रकोपों का सामना करना पड रहा है। यह एक पहेली है जिसका समाधान होना चाहिये। आजकल "मरज बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की" की कहावत चरितार्थ हो रही है। वास्तविक परिस्थिति यह है कि इस देश के नागरिक यह भूल गये है कि-हाल-चाल का घनिष्ठ सम्बन्ध है। यदि हाल ठीक रखना है तो चाल पर या चरित्र पर दृष्टि रखनी होगी। जैसा चलन होगा वैसा ही हाल होगा। दैविक आपत्तियाँ कर्मों के आधार पर सम्मुख आती हैं। यदि दैविक आपत्तियों से बचना है तो प्रत्येक नागरिक को अपने चरित्र पर अंकुश रखना होगा। सबको याद रखना चाहिये कि कर भला होगा भला कर बुरा होगा बुरा" बुरे और भले को कर्म के साथ जोड़कर विचार करने से परिणाम के समय बुरे से बचा जाय।

बिना ब्रेक की मोटर

आजकल अधिकारों के लिये दौड़-धूप शक्ति का प्राप्त करना बड़ा आकर्षक है। परन्तु निरकुश शक्ति नाश का कारण भी हो सकती है। जितनी मोटर में शक्ति हो उतनी ही बलयुक्त ब्रेक या अंकुश होना चाहिये। व्यक्तियों के शरीर मे मन का वही स्थान है जो मोटर मे स्टीयरिंग व्हील या हाँकने में पहिये का अंकुश यदि मन मे स्वाभाविक रूप धारण कर चुका है तो शक्ति प्राप्त होने पर अनुशासन और मर्यादा पालन में रहेगी, और अधिकारों का दुरुपयोग नहीं होगा। तन और धन के बल के साथ मन का भी बल प्राप्त करना चाहिये,और मन के बल के लिए आत्मिक बल आवश्यक होगा। आजकल स्वार्थ-वाद एक संक्रामक रोग की तरह प्रचलित है। इसकी अचूक औषधि अध्यात्मवाद है।

आत्मिक बल से—अनेक प्रकार के स्वार्थवाद के लिये अंकुश प्राप्त होगा। और उससे जो हानियां होती हैं उनसे बचा जा सकता है।

पाप छिपकर न बचकर

अपराध करने वाला अपराध करते समय यह धारणा बना लेता है कि या तो उसका पाप या अपराध गुप्त रहेगा या वह उसके परिणाम से किसी न किसी उपाय से बच सकेगा। यदि यह निश्चय हो जाय कि ईश्वर का न्याय इतना व्यापक और अटल है, तो फिर कोई यह भावना न रख सकेगा, कि उसका पाप छिपा रहेगा, यह उसके पाप से बच सकेगा। व्यवहारिक आस्तिकता चरित्र निर्माण के लिए अचूक औषधि है।

भारत के विधान मे शपथ की प्रथा इसी भावना का क्रियात्मक रूप है परन्तु दुर्भाग्य यह है कि सब शपथ लेते हैं परतु होठ और वाणी तक रहती है जिससे जगत मे उसका प्रभाव नहीं होता और शपथ का चरित्र से सम्बन्ध नहीं रहता शपथ को व्यवहारिक मानकर उसका पालन सबको करना चाहिये।

फैशन का दर्पण

आजकल फैशन या दिखावे का बड़ा बोलबाला है फैशन के साथ दर्पण में मुंह देखने के लिये प्रचलित प्रथा है। दर्पण देखते समय केवल यह ध्यान नही होना चाहिये, कि मुंह देखने योग्य है। सबसे अधिक आवश्यक यह है कि इस पर ध्यान दिया जाय कि मुंह दिखाने योग्य है भी या नहीं।

स्वतन्त्रता-स्वराज्य

स्वतन्त्रता बड़ी प्रिय है। परन्तु स्वतन्त्रता मर्यादा पालन का नाम है मनमानी करने का नही। जो मनचाहा करता है वह आजाद नहीं रह सकता।

जैसा चाहिये वैसा जो करता है वह आजाद रहता है। स्वतन्त्रता में भावना यह हो गई है घर-घर राजा दर-दर राजा जहाँ देखो वहा राजा ही राजा, यदि सब राजा हो जायें, तो आज्ञा कौन दे और कौन पालन करे। होना यह चाहिये कि घर मे राजा और घर के राजा का शासन मानकर यदि चला जाय तो सब आजाद रहकर भी आनन्द से रह सकेंगे।

वोट राष्ट्र की सम्पत्ति है

आजकल हर प्रकार की व्यवस्था वोट के आधार पर चल रही है। राष्ट्र का जहाज वोट की कीलों पर टिका हुआ है पर वोट देने वाले और लेने वाले यह भूल जाते है कि वोट राष्ट्र की सम्पत्ति है परन्तु इसका दुरुपयोग घोर आपत्ति है वोटर और दुल्हा का जोड़ा यदि बेमेल का सम्पत्ति का दुरुपयोग होगा तो गोली चलती रहेगी और अशांति फैलती रहेगी। वोट की सफलता के लिये विद्या और चरित्र दोनो आवश्यक है। दोनो का जोड़ा महर्षि दयानन्द ने सम्पत्ति का अधिकार चरित्रवान को ही दिया है। यदि महर्षि दयानन्द का यह आदेश राष्ट्र निर्माण का यह आधार बन जाय तो राष्ट्र की सारी अशान्तियों का समाधान हो जाय।

प्रजातन्त्र

प्रजातन्त्र का असली स्वरूप यह है कि बुद्धिमान और चरित्रवानों की सम्मति को व्यवस्थापिका समिति मानना चाहिए। सम्मति का अधिकार सबको हो परन्तु सबकी सम्मति से राष्ट्र का नवनिर्माण सुधार रूप से चल रहा है। अतः सम्मति देते समय और लेते समय चरित्र विद्या और ईमानदारी पर ध्यान देना चाहिये।

●

चम्पारण—आ० स० मोतिहारी का ३७ वां वार्षिकोत्सव गत मास समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर, स्वामी श्री दिव्यानन्द जी सरस्वती, पं० शान्तिप्रकाश जी, पं० रामभिक्षु शास्त्री पं० रामनारायण शास्त्री व श्री डा० पृथ्वीसिंह 'बेधड़क' आदि के सारगर्भित उपदेशों से स्थानीय जनता अत्यन्त लाभान्वित हुई।

गुरुकुल विश्वविद्यालय को स्थायी मान्यता

ऋषिकेश। जब से आचार्य प्रियव्रत जी ने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार का उपकुलपति पद का कार्यभार सम्भाला है, तब से विश्वविद्यालय ने कई क्षेत्रों मे महत्वपूर्ण प्रगति की है जिसका विवरण वार्षिक दीक्षांत समारोह के अवसर पर उपस्थित जनसमुदाय को दिया गया।

कुछ मास पूर्व चतुर्थ पंचवर्षीय योजना के सम्बन्ध मे एक उच्चस्तरीय समिति यहाँ आई थी। अब इसकी रिपोर्ट आ गई है। उस समिति ने ११ लाख रुपये का अनुदान दिया है। इससे एक बहुत बड़ा वेद एवं साधारण महाविद्यालय का भवन बनेगा, जिस पर दस लाख तीस हजार रुपये खर्च होगा। १० स्टाफ क्वार्टर बनेंगे और ५० ब्रह्मचारियों के लिये एक आश्रम [होस्टल] बनेगा, इसके लिऐ ढाई ढाई लाख रुपये स्वीकार हुआ है। मनोविज्ञान की एक बहुत बड़ी प्रयोगशाला भी बनेगी। डेढ़ लाख रुपया पुस्तकालय के लिए भी स्वीकार हुआ है। विज्ञान महाविद्यालय को उपकरण एवं पुस्तकों के लिए एक लाख से ऊपर मिलेगा। प्रत्येक विभाग मे एक एक उपाध्याय और रखा जाएगा।

अभी तक गुरुकुल को केवल एम. ए. की उपाधि देने का अधिकार था परन्तु अब विश्वविद्यालय आयोग ने संस्कृति एवं हिंदी मे पी. एच. डी. देने की स्वीकृति दे दी है। इसके लिए ढाई-ढाई सौ रुपये की एक-एक छात्रवृत्ति भी मिली है।

अभी तक गुरुकुल के विज्ञान महाविद्यालय मे बी. एस-सी. की कक्षायें आगरा यूनिवर्सिटी से सम्बद्ध थीं। इस वर्ष बी. एस-सी को गुरुकुल विद्यालय से सम्बद्ध कर दिया जाएगा। विज्ञान में एम. डी. तक की शिक्षा देने की व्यवस्था करने का प्रस्ताव है।

गुरुकुल को प्रारम्भ मे विश्वविद्यालय स्तर की मान्यता केवल तीन वर्ष के लिए प्राप्त हुई थी, परन्तु अब मान्यता को स्थाई कर दिया गया है। गत कई वर्षों से सरकार से एक निश्चित अनुदान मिलता था। जो धीरे-धीरे पौने दो लाख तक हो गया था। अब सरकार से यह लिखित आश्वासन प्राप्त हो गया है कि विश्वविद्यालय विभाग का पूरा घाटा केन्द्रीय सरकार वहन करेगी।

तृतीय पंचवर्षीय योजना में १८ लाख रुपया गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय को इस शर्त पर प्राप्त हुआ था कि गुरुकुल अपने पास से ५० प्रतिशत भाग वहन करेगा। गुरुकुल मे इतनी क्षमता नहीं थी कि इस भार को वहन कर सके अब केन्द्रीय सरकार से इस सम्बन्ध मे यह आश्वासन प्राप्त हो गया है कि जो योजना केन्द्रीय विश्वविद्यालय अनुदान आयोग स्वीकार कर देगा और जिसके लिये ५० प्रतिशत धन अपेक्षित होगा, वह धन सरकार से मिल जायगा।

चार वर्षों से यह प्रयत्न किया जा रहा था कि विश्वविद्यालय की एम. ए. की उपाधि को मान्यता आगरा विश्व विद्यालय द्वारा प्राप्त हो जाय ताकि विद्यार्थियों की संख्या पर प्रभाव पड़ सके। आगरा विश्वविद्यालय ने अब गुरुकुल मे अधिकाश विषयों को अपना उपाधि के समकक्ष मान लिया है। इसके अतिरिक्त दिल्ली, पञ्जाब, कुरुक्षेत्र, अलीगढ़, शांति निकेतन, इलाहाबाद, पूना, कलकत्ता, सागर, विक्रम, रांची आदि विश्वविद्यालयो ने भी गुरुकुल उपाधि को मान्यता प्रदान कर दी है।

शिक्षा का धर्म और संस्कृति से अटूट संबन्ध

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर का दीक्षान्त समारोह सम्पन्न

महाविद्यालय—गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के ६०वें दीक्षांत समारोह मे भाषण करते हुए उत्तरप्रदेश के राज्यपाल डा. बी. गोपाल रेड्डी के नवस्नातकों से अपील की कि गंगा और यमुना जैसी दिव्य और पवित्र नदियों का प्रदेश, जो कभी धन धान्य, समृद्धि तथा विद्या का केंद्र माना जाता था, आज अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा को पुनः स्थापित करने के लिए आपकी ओर बड़ी आशा मे देख रहा है।

श्री रेड्डी ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की चर्चा करते हुए कहा कि इस पद्धति मे विदेशी शिक्षा प्रणाली के प्रति विद्रोह और भारतीय परम्परा के प्रति आग्रह स्पष्ट है, इन संस्थाओ के कर्णधारो ने स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लिया और एक ऐसी सेना तयार की जिसने विदेशी प्रभुओं को हटाने मे विशेष काम किया। ऐसी संस्थाओ के प्रति हम श्रद्धा से नतमस्तक होते है।

"अनादिकाल से ही गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली सारे देश मे मान्य रही है। गुरु और शिष्यों की जो परम्परा हमे श्रुतियों से मिलती है आपका गुरुकुल उसी महान् परम्परा की एक कड़ी है। प्राचीन काल में ब्रह्मचारी आश्रमों मे रहते थे और श्रद्धापूर्वक ब्रह्मचर्यव्रत का पालन करते हुये गुरुओ से शिक्षा-दीक्षा ग्रहण करते थे। श्रद्धा के उस वातावरण से ब्रह्मचारियों का मन विद्याध्ययन में लगता था और गुरुओं का विद्याभ्यास कराने में। गङ्गा के तट पर हिमालय की गोद मे जिस वातावरण मे आप शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं वह मुझे आदि गुरुकुलों का ही एक रूप प्रतीत होता है। महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज, जिसके द्वारा इस स्वस्थ शिक्षण परम्परा की नींव इस देश मे पड़ी, के प्रति हम श्रद्धानत होते हैं।'

राज्यपाल ने यह भी कहा कि शिक्षा और सभ्यता संस्कृति एवं धर्म का अटूट सम्बंध है उन्होने इस पद्धति द्वारा देश में राष्ट्रीय एकता बनाए रखने पर बल दिया।

संसद सदस्य श्री कमल नयन बजाज ने समारोह की अध्यक्षता की और उन्होने अपने भाषण मे गुरुकुल प्रणाली की सराहना की गुरुकुल के कुलपति राष्ट्रकवि श्री रामधारी सिंह जी दिनकर ने २७ स्नातकों को उपाधि पत्र प्रदान किये और डा. लक्ष्मीदत्त सिवदी को न्याय वाचस्पति की मानद उपाधि से विभूषित किया। गुरुकुल के आचार्य श्री रामदत्त ने तथा उपकुलपति डा० हरदत्त ने नवस्नातकों को आशीर्वाद दिया।

आरम्भ मे संसद सदस्य श्री प्रकाशवीर शास्त्री ने गुरुकुल की प्रगति की चर्चा करते हुए कहा कि स्वामी दर्शनानंद सरस्वती द्वारा स्थापित यह गुरुकुल २००० स्नातकों को देश सेवा मे अग्रसर करने का अवसर प्राप्त कर चुका है। इस समय लगभग १५० छात्र विदेशों मे सेवा कार्य कर रहे हैं। तथा १३ विदेशी छात्र गुरुकुल मे शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, विद्यालय मे अहिंदी भाषी राज्यो के छात्रों को भोजन और शिक्षा नि:शुल्क है।

आरम्भ मे राज्यपाल ने नवस्नातकों के साथ यज्ञ मे भाग लिया।

★

आर्य जनों के नाम परिपत्र

बन्धुवर

सप्रेम नमस्ते।

मुझे यह जानकर अत्यधिक आश्चर्य एवं खेद हुआ कि किसी धूर्त व्यक्ति ने सार्वदेशिक पत्र के प्रबन्धक श्री लाला चतुरसेन जी गुप्त के नाम से विज्ञप्ति आर्य जनों व आर्यसमाजों को प्रसारित की है। जिसमे सार्वदेशिक सभा तथा इसके अधिकारियों पर निराधार अनाप शनाप दोषारोपण किये गये हैं। इस प्रकार आर्यसमाज की प्रतिष्ठा व सम्मान को जान बूझ कर भारी धक्का पहुंचाया गया है। अतः आर्य जनता को आर्यसमाज के ऐसे शत्रुओ से सावधान रहना चाहिए, जो अपने स्वार्थ के लिए समूचे आर्यसमाज को हानि पहुंचाते हैं। अपने नाम से विज्ञप्ति प्रसारित न कर दूसरे के नाम से प्रसारित करना ही सिद्ध करता है कि यह विज्ञप्ति निरर्थक, तथ्यहीन एवं रद्दी की टोकरी मे फेंक देने लायक है। आशा है आर्य जनता इससे सावधान रहेगी।

—रामगोपाल

मन्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१

ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज के विषय में—

विश्वविद्यालय स्तर पर शोध कार्य

★डा० भवानीलाल भारतीय
एम० ए०, पी-एच. डी.

भारत के शताधिक विश्व-विद्यालयो मे एम० ए० तथा अन्य स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् विशिष्ट विषयो मे शोध कार्य सम्पन्न कराने के लिए छात्रो को प्रोत्साहित किया जाता है। न्यूनातिन्यून २ वर्ष तक किसी महत्वपूर्ण अन्वेषणीय विषय पर शोध कार्य करने के पश्चात शोध छात्र अपने अन्वेषण कार्य को एक बृहत् शोध प्रबन्ध के रूप से प्रस्तुत करना है। यह कार्य किसी विद्वान् शोध निर्देशक प्राध्यापक के निर्देशन के सम्पन्न होता है कार्य समाप्ति के पश्चात् अन्य दो विशिष्ट ख्याति के विद्वानो द्वारा उसकी जॉच कराई जाती है। इन परीक्षको द्वारा अनुकूल सस्तुति प्राप्त होने के पश्चात् शोध छात्र को 'डाक्टर आफ फिलासफी' की उपाधि प्रदान की जाती है। इस उपाधि के प्राप्त करने के पश्चात् यदि कोई शोध क्षेत्र मे विशिष्ट कार्य करता है तो उसे 'डाक्टर आफ लिटरेचर' की उपाधि प्राप्त होती है।

स्वातन्त्र्योत्तर काल मे देश के विभिन्न विश्वविद्यालयो मे आर्यसमाज तथा उसके प्रवर्त्तक स्वामी दयानन्द के कार्यों, प्रवृत्तियो, सिद्धांतो तथा आदर्शों को लेकर अनेक शोध कार्य सम्पन्न हुऐ है। खेद है कि उनमे से एक आध को छोड़कर अभी शोध प्रबन्ध अप्रकाशित हैं। यदि ये प्रकाशित हो जाये तो आर्यसमाज तथा उसके प्रवर्त्तक के कृतित्व विषयक मूल्याकन का सारा कार्य एक बार ही ससार के समक्ष आ सकता है। आशा है मेरे द्वारा प्रस्तुत शोध कार्यो के इस विवरण से आर्यसमाज में इन शोध ग्रन्थो विषयक जिज्ञासा जाग्रत होगी तथा कतिपय सिद्धांतनिष्ठ व्यक्ति और सस्थायें उन्हे प्रकाशिन किए जाने की आवश्यकता अनुभव कर इस क्षेत्र मे किंचित प्रयास करेंगे।

'स्वामी दयानन्द सरस्वती की वेद भाष्य प्रणाली की देन' इस महत्वपूर्ण विषय पर डा० सुधीरकुमार गुप्त, रीडर सस्कृत विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय ने १९५७ में शोध कार्य करने के पश्चात् पी० एच० डी० की उपाधि प्राप्त की थी। उनके शोध निर्देशक सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान और सम्प्रति पुरातत्व शोध सस्थान जोधपुर के निर्देशक डा० फतहसिंह व डा० गुप्त ने वेद भाष्य की विभिन्न प्राचीन और अर्वाचीन भारतीय तथा पाश्चात्य प्रणालियो का आलोचनात्मक अध्ययन करते हुऐ स्वामी जी के वेद भाष्य की विशिष्टता का प्रतिपादन किया है। खेद है कि उपाधि प्राप्त होने के ११ वर्ष पश्चात् भी यह महत्वपूर्ण शोध ग्रन्थ यद्यपि अप्रकाशित ही है। स्वामी दयानन्द के दर्शन पर अभी २-३ वर्ष पूर्व ही मेरठ के प्रो० वेदप्रकाश को उनके महत्वपूर्ज शोध कार्य पर पी० एच० डी० की उपाधि प्राप्त हुई। मेरे मित्र हिसार के जाट कालेज के सस्कृत विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर जयदेव आर्य भी स्वामी जी के दर्शन पर शोध कार्य कर रहे है। उनका यह अध्ययन तुलनात्मक होगा, तथा वे शकर, रामानुज, मध्व, निम्बार्क, वल्लभ आदि मध्यकालीन वैष्णव वेदान्ताचार्यों के सिद्धान्तो से स्वामी जी के त्रैतवादी दर्शन की तुलना कर उसका महत्व प्रतिपादित करेगे।

आर्यसमाज की राजनैतिक, धार्मिक भाषा सम्बन्धी तथा शिक्षा समाज सुधार आदि क्षेत्रो मे जो उपलब्धियॉं रही है उनका भी शोध दृष्टि से मूल्यॉंकन हुआ है, तथा हो रहा है। राजस्थान विश्वविद्यालय से भी राधेश्याम पारीक को उनके शोध ग्रन्थ Contribution of Arya Samaj in the making of Modern India (१८७५-१९४७) (आधुनिक भारत के निर्माण मे आर्यसमाज की देन) पर राजस्थान विश्वविद्यालय से शोध उपाधि प्राप्त हुई। इस महत्वपूर्ण ग्रथ से लेखक ने आर्यसमाज के स्थापना काल के पूर्व की तथा समसामयिक राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक तथा आर्थिक परिस्थितियो का ऐतिहासिक विवेचन करते हुए आर्यसमाज के धर्म, संस्कृति, भाषा, समाज राजनीति आदि क्षेत्रों मे महत्वपूर्ण योगदान का विस्तृत विश्लेषण किया है। मेरी सम्मति मे यह ग्रथ अपने मूल अग्रेजी रूप मे तथा हिंदी अनुवाद सहित अविलम्ब प्रकाशित होना चाहिए। 'आर्यसमाज की हिंदी भाषा और साहित्य को देन।' विषय पर लखनऊ विश्वविद्यालय से डा० लक्ष्मीनारायण गुप्त ने शोध प्रबध लिखकर पी० एच० डी० उपाधि प्राप्त की। यह शोध ग्रंथ लखनऊ विश्वविद्यालय की हिन्दी परिषद् के द्वारा प्रकाशित हो चुका है। इसे प्रकाशित करने से आर्यसमाज की किसी सस्था का हाथ नही रहा अन्यथा इसका मूल्य १२ रु० नहीं रहता। विद्वान् लेखक ने आर्यसमाज के द्वारा की गई हिंदी सेवा का पूर्णतया आकलन किया है। इस शोध प्रबध के निर्देशक लखनऊ विश्वविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष डा० दीनदयालु गुप्त थे।

इन पक्तियो के लेखक ने इस वर्ष ही 'आर्यसमाज की सस्कृत भाषा और साहित्य की देन'। विषय पर राजस्थान विश्वविद्यालय से पी० एच० डी० की उपाधि प्राप्त की है। मेरे शोध निर्देशक गवर्नमेंट कालेज अजमेर के सस्कृत विभागाध्यक्ष डा० ब्रह्मानन्द शर्मा के जो यद्यपि आर्यसमाजी नही है तथापि उन्होने अत्यन्त सहानुभूति तथा योग्यता पूर्वक शोध विषयक मेरा मार्गदर्शन किया। आज इस ग्रथ के प्रकाशन की समस्या मेरे समक्ष है। मैंने आर्यसमाज की अनेक सस्थाओ प्रकाशको तथा सम्पन्न श्रीमानो मे भी इस विषय मे मेरी आर्थिक सहायता करने का अनुरोध किया है, परन्तु अभी तक मुझे असफलता ही मिली है। बात यह है कि आर्यसमाज मे गम्भीर साहित्य के पढने वालो और उसके महत्व को समझने वालो की सख्या इतनी न्यून है कि गम्भीर अनुशीलन पूर्ण साहित्य अप्रकाशित ही पडा रहता है। सम्पन्न लोग भी लेखको की सहायता नहीं करते चाहे अन्यत्र वे लाखों रुपया दे देते हो। इसी प्रकार आर्यसमाजो का भी लाखो, करोड़ो रुपया मौखिक प्रचार के लिए तो व्यय होता है। परन्तु श्रेष्ठ कोटि के ग्रथ प्रकाशन की ओर उनका ध्यान नहीं है। अब तो मैने भी निश्चय कर लिया है कि चाहे ऋण लेकर ही इस ग्रथ को छापना पड़े यह छपेगा अवश्य।

इस उक्ति को स्मरण रखता हूं—
"उत्पत्स्यते मम कोऽपि समान धर्मा।
कालो ह्यय निरवधि विपुला च पृथ्वी।"

उसके उपरात भी यदि यह महत्वपू ग्रन्थ अप्रकाशित ही रहे तो इसे हमा दुर्भाग्य ही समझना चाहिऐ।

इस किंचित प्रसगातर के पश्चा मै पुन प्रकृत विषय पर आता हू।

यहा हमने उन शोध ग्रंथों ः उल्लेख किया है जो लिखे जाकर उपा हेतु स्वीकृत हो चुके हैं। परन्तु अः बहुत सा शोध कार्य चल रहा है त बहुत कुछ प्रारम्भ होना शेष है। उद हरणार्थ, आर्यवीर दल के कार्यालय म श्री जयदेव आर्य ने कुछ समय पूर्व मु लिखा था कि वे 'हिदी के द्विवेदीकाल साहित्य पर आर्यसमाज का प्रभाव' इ विषय पर शोध कार्य कुरुक्षेत्र विश विद्यालय के तत्वावधान से करना चाह हैं। यह विषय अत्यनत सुन्दर अ उपयुक्त है। द्विवेदी कालीन काव उपन्यास, कहानी नाटक, तथा निब आदि साहित्य के सभी अगो अ उनके लेखको पर आर्यसमाज प्रभाव पड़ा था। इस युग की विचा धारा मूलत आर्यसमाज से ही प्रभावि थी। सुदर्शन, चन्द्रगुप्त, विद्यालंक आदि कथाकार हरिशकर शर्मा, बे बनारसी आदि कवि प्रत्यक्षतया आ समाजी थे। प्रेमचन्द के कथा सारि तथा उनके सुधार वादी विचारो आर्यसमाज का प्रत्यक्ष प्रभाव प्रेमचन्द्र के पुत्र श्री अमृतराय द्वा लिखित 'कलम का सिपाही' शीर उनके विशद जीवन से यह तथ्य प्रक मे आता है कि अपने अध्यापक काल जीवन मे प्रेमचन्द आर्यसमाज के नि मित समासद थे तथा मौलवी महे प्रसाद आदि के साथ आर्यसमाज उत्सवों मे भी जाते थे। तत्काल पजाब की राजधानी लाहौर में भी उ आर्यसमाजियो द्वारा आमन्त्रित कि गया था।

हिंदी के सुप्रसिद्ध महाकवि स्व पण्डित नाथूराम शङ्कर शर्मा व्यक्तित्व और कृतित्व पर शोध क शङ्कर जी की ही पौत्रवधू डा० श्रीम शाती शर्मा प्रिंसिपल सेकसरिया कन कालेज आगरा ने किया है। डा० शां शर्मा स्व० डा० हरिशङ्कर शर्मा व पुत्र वधू हैं। हिंदी साहित्य के इतिहा कारो और आलोचको ने शङ्कर जी काव्य का मूल्याकन कभी निष्पक्ष मा से नहीं किया। उन्हे सदा ही आर

(शेष पृष्ठ १० पर)

(म)हर्षि के ग्रन्थों के सम्पादन और प्रकाशन के सम्बन्ध में—

(पं०) युधिष्ठिर जी (रामलाल कपूर ट्रस्ट) से निवेदन

पं० युधिष्ठिर जी ने रामकपूरट्रस्ट, (द्वारा) ट्रस्ट और स्वतंत्र रूप से यहां (त)क कि परोपकारिणी सभा की सर्विस (में) रहते हुये भी जो ऋषि दयानंद सर(स्व)ती के ग्रंथो को बिगाड़ा या ऋषि के (वि)रुद्ध लिखा उसकी सदा मैने कटु (आ)लोचना की और ट(स्ट) द्वारा ट्रस्ट और (पर)ोपकारिणी सभा को सावधान किया। (इ)ससे पूर्व जब हम लोग लाहौर रहते थे (पर)स्पर मिलकर कार्य करते थे।

पिछले वर्ष जब मै अजमेर गया (थ)ा था पं० युधिष्ठिर जी ने स्वय यह (इ)च्छा प्रकट की कि हम दोनो फिर (ला)हौर वाले सम्बन्ध पर आ जावें और (जो) बात कहनी हो परस्पर मिलकर तै (कर) ले और समाचार पत्रो मे कुछ न (लि)खें। मैने उनके इस प्रस्ताव का स्वा(गत) किया और इस बार रामलाल कपूर (ट्रस्ट) के द्वारा जो ऋग्वेदादि भाष्य (भू)मिका और संस्कार विधि प०युधिष्ठिर (जी) ने छापी उसमे जो भूलें उन्होने की (थीं) पं० युधिष्ठिर जी को घर बैठकर (बत)ला दीं और उनके विरुद्ध जो लेख (मैने) परोपकारिणी पत्र मे छपने प० भग(वद्द)त्तस्वरूप जी को दिया था वह मैने उन (से) कुछ कहकर वापस ले लिया और मै (सम)झता था कि ऐसे ही काम चल (जाय)गा।

(मे)रे हमारा उद्देश्य किसी व्यक्ति या (संस)था को हानि पहुचाना नही प्रत्युत जो (ऋषि)वर की ठेकेदारी ली है उसको (बता)ना है और ऋषि के ग्रन्थो की रक्षा (कर)नी है।

(२)

परन्तु इसके विरुद्ध प० युधिष्ठिरजी (फि)र अपने स्वरूप पर आ गये और वेद(वा)णी के फरवरी १९६८ के अङ्क मे प० (राजे)न्द्रनाथ जी और प० सुदर्शनदेव जी (की) समालोचना प्रारम्भ की और मेरे (सम्ब)न्ध मे भी आपकी लेखनी चल पड़ी (पं०) युधिष्ठिर जी लिखते है कि—

"प० सुदर्शनदेव जी प० राजेन्द्रनाथ और प० विश्वश्रवा जी कुछ पढते (लिख)ते नहीं हैं। यदि ये तीनो चाहे तो बहुत से विचारणीय स्थल उन्हे बता (सक)ता हू। मैने जो अपनी भूल स्वीकार (की) वह मुझे स्वय सूझी इन तीनो को (तो) इस विषय का बोध ही नहीं है। घर बैठकर गेहे शूर बनना। विद्या, बुद्धि (तो) कुछ और है नहीं"। इत्यादि (अस)भ्यतापूर्ण असत्य दुरभिमान की भाषा (पं०) युधिष्ठिर जी के लेख मे है। मै सोचता हू कि पं० युधिष्ठिर जी को क्या उत्तर दू। जब मै प० युधिष्ठिर जी से पहले कहता था कि एक बार शास्त्रार्थ करके खुजली मिटा लो। अगर एक घटे से पहले ही पानी न पिला दू तो ऋषिवर का चेला नहीं तब पं० युधिष्ठिर जी कह देते है कि आप वाकचतुर हो। बैठ कर बात नहीं करना और अजमतगढ पैलेस से शिष्यो मे कूदते रहना पण्डिताई नहीं है। इन पं० युधिष्ठिर जी ने अनेक ऋषिद्रोही चेले पैदा कर दिये है और रामलाल कपूर ट्रस्ट को ऋषि ग्रन्थो को खराब करने और ऋषि की पगडी उछालने का साधन बनाया हुआ है। और रामलाल कपूर ट्रस्ट के लोग अति सज्जन और धर्मात्मा है वे कुछ इनकी लीला समझ नहीं पाते है।

(३)

प० युधिष्ठिर जी कहते हैं कि वे विचारणीय स्थलो की सूची हमे दे सकते हैं हमारा कहना है कि अपने विचारणीय स्थलो की सूची पहले ही है वही पर्याप्त है अब आगे ऋषिवर पर

६-पं० युधिष्ठिर जी ने अपनी किताबो मे लिखा है कि स्वामी दयानन्द जी ने जो अपने ऋग्वेद भाष्य के प्रारभ मे प्रमाण लिखा है कि—

"ऋग्भि स्तुवन्ति"

यह प्रमाण समस्त वैदिक साहित्य मे कहीं नहीं है और स्वामी दयानन्द की यह बात है भी गलत क्योंकि ऋग्वेद के मन्त्रो से शसन होता है स्तुति तो सामवेद के मन्त्रो से होती है। ऋग्वेद के मन्त्रों से स्तुति नहीं होती।

इत्यादि अनेक आक्षेप स्वामी जी के परिवार की प्रतिष्ठा के और स्वामी जी के विरुद्ध घृणित और असत्य आक्षेप किये हैं। प० भीमसेन और प० अखिलानन्द ने एक-एक बात गलत की थी जिससे वे आर्यसमाज से निकाले गये। आजकल के आर्यसमाजी मर चुके हैं उनकी ऋषि भक्ति समाप्त हो चुकी है। आर्यों ने पढना छोड दिया है। राजनीतिक चकाचौंध में आर्यसमाज के अधिकारी व्यस्त है अत किसी का पं० युधिष्ठिर जी की

मे प्रत्येक पद की स्वर प्रक्रिया लिखी हे श्रीमती देवी ने स्वाध्याय पद्धति मीमासा करिये उसका ही खण्डन। और उसमे जो भापके यजुर्वेद भाष्य विवरण की स्वर की स्वर की भूल दिखाई है आजतक आपसे उत्तर नहीं बना है।

इसके अतिरिक्त जो अभी रामलाल कपूर ट्रस्ट से सस्कार विधि छापी उसके प्रथम सस्करण मे ही स्वस्तिवाचय और शान्तिकरण के मन्त्रो मे मैंने पं० युधिष्ठर जी को बताया कि स्वर की चालीस गलतियां हैं जिसको अब द्वितीय संस्करण में ठीक कर रहे हैं।

(५)

प० युधिष्ठिर जी ने घोषणा की कि स्वामी दयानन्द जी के वेदभाष्य और ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका मे जो आर्य भाषा है वह पण्डितो की है। ऐसी घोषणा करके स्वामी जी के ऋग्वेद भाष्य की आर्यभाषा स्वय करके रामलाल कपूर ट्रस्ट से छापनी शुरू कर दी थी। प० युधिष्ठिर जी की उस अशुद्ध और मूर्खतापूर्ण भाषा को जब मैने सार्वदेशिक सभा की धर्मार्य सभा मे विचारार्थ प्रस्तुत कर दी तब धर्मार्य सभा छोड़कर भाग गये और आज तक दर्शन नहीं दिये और रामलाल कपूर ट्रस्ट ने भी उसको फिर आगे छापना बन्द कर दिया।

(६)

मैने पं० युधिष्ठर जी को समझाया कि आपने जो अपने संपादित ऋषि के ग्रन्थो मे हस्तलेखों की दुहाई दी है वह गलत है क्योकि उसी के पास ऋषि के हस्तलेख हैं नहीं और जो पाठ हस्तलेख का नाम लेकर आपने दिये हैं मेने अजमेर जाकर हस्तलेखों को देखा उनमे वैसा नहीं है क्यों दुनिया को बहकाते हो। इसीलिए मेरा पक्ष है कि ऋषि के ग्रंथो को छापने का अधिकार केवल परोपकारिणी सभा को क्योकि उसी के पास ऋषि के हस्तलेख हैं। अत वह ही छाप भी सकती है ठीक-ठीक। यह दूसरी बात है कि परोपकारिणी सभा को धोका देकर कोई मूर्ख या धूर्त पण्डित परोपकारिणी सभा की सर्विस करले तो मूर्ख अपनी मूर्खतावश भूल करेगा यद्यपि उसका हृदय ठीक होगा। और तिरछी चाल वाला अपनी तिरछी चाल के कारण परोपकारिणी

(शेष पृष्ठ १० पर)

✱आचार्य विश्वश्रवाः एम. ए. वेदाचार्य

और ऋषि के ग्रन्थो पर दया ही कर दो अच्छा है क्योकि प० युधिष्ठिर जी ने अपनी किताबो मे लिखा है कि—

१-स्वामी दयानन्द के पिता की दो स्त्रिया थीं। दूसरा विवाह स्वामी जी के पिता ने तब किया जब वे बुड्ढे हो गये और चार लडके पहली पत्नी से थे। ऐसे बाप को उन चारो जवान लडको ने घृणा करके छोड दिया और उन बुड्ढे बाप ने जो एक कुमारी छोटी लडकी से विवाह किया उससे स्वामी दयानन्द पैदा हुए थे।

२-पण्डित युधिष्ठिर जी ने अपनी किताबो मे लिखा है कि स्वामी दयानन्द जी ने स्मृति भ्रान्तिवश भूलें की हैं।

३-पं० युधिष्ठिर जी ने अपनी किताबो मे लिखा है कि स्वामी दयानन्द को यह नहीं मालूम कि ऋग्वेद मे कितने मन्त्र हैं।

४-प० युधिष्ठिर जी ने अपनी किताबो मे लिखा है कि स्वामी दयानन्द द्विपदाओ को नहीं समझते थे।

५-प० युधिष्ठिर जी ने अपनी किताबो मे लिखा है कि स्वामी दयानन्द ने पाश्चात्यो का अन्धानुकरण किया है।

ओर ध्यान नहीं है। पं० युधिष्ठिर जी ने रामलाल कपूर ट्रस्ट की छापी सस्कार विधि के मुख पृष्ठ पर अपने को प० भीमसेन के स्थानापन्न लिखा है और प० विजयपाल जी को ज्वालादत्त के स्थानापन्न घोषित किया है। वह ठीक ही है।

(४)

पं० युधिष्ठिर जी कहते है कि विश्वश्रवाः जी को स्वर का ज्ञान नहीं है। अच्छा होता कि वह बात पं०राजेन्द्र नाथ जी और प० सुदर्शनदेव जी के बारे मे ही कहते तो कुछ जचती भी। क्या यह बात प० युधिष्ठिर जी भूल गये जब उन्होने "वैदिक स्वर मीमासा" ग्रन्थ लिखा और मैने उस ग्रन्थ को पढकर प० युधिष्ठिर जी को पत्र लिखा कि पूर्ण न्युब्ज अर्धन्युब्ज आदि स्वरित स्वरो को क्या आप नहीं जानते जो आपकी पुस्तक मे नही है तब प० युधिष्ठिर जी ने उत्तर दिया कि काशी के पण्डितो से पूछा पर उन्हे भी नहीं पता है तब मैने उनको बैठकर ये स्वरित बताये और कहा कि मेरे ग्रन्थ सन्ध्या पद्धति मीमांसा मे इसको देख लो। हम लोग स्वर इतना जानते हैं कि मेरी धर्मपत्नी वेदाचार्य

पद्मविभूषण पं. दामोदर सातवलेकर

वैदिक आदर्श को जीवन मे प्रत्यक्ष करने वाले तथा राष्ट्रपति द्वारा पद्म विभूषण उपाधि से सम्मानित १०१ वर्षीय देवमूर्ति पं० श्रीपाद सातवलेकर का गत १४ अप्रैल को नई दिल्ली मे भव्य नागरिक अभिनन्दन किया गया। श्री सातवलेकर जी ने महर्षि स्वामी दयानद जी की परम्परा मे वेदो का उद्धार किया है। दीर्घजीवी, कर्मशील, सम्पन्न, सेवारत राष्ट्र का निर्माण उनका ध्येय है। आप वैदिक जीवन के साक्षात् प्रतीक हैं।

—सम्पादक

भारतीय संस्कृति को देश तथा काल के बंधन से मुक्त समझने वाले तथा उसे धर्म के साथ भी बिल्कुल असम्बद्ध मानने वाले पण्डित श्रीपाद दामोदर सातवलेकर आर्य जगत् के उन महान रत्नो मे हैं जिन्होने वेद की इस आशा का पालन किया है—"जीवेम् शरद: शतम्"।

श्री सातवलेकर जी के अनुसार भारतीय ऋषियों की सस्कृति की कल्पना यह थी कि उसके द्वारा मानव का उत्थान होना चाहिए। उन्हीं के अपने शब्दो मे भारतीय सस्कृति का आशय "प्रकाश के मार्ग से -अनुष्ठान करने से प्राप्त होने वाली संस्कार सम्पन्नता है।" इसमे 'भा' का अर्थ है प्रकाश अथवा प्रकाश का मार्ग तथा 'रत' का अर्थ हैं दत्तचित होना। श्री सातवलेकर जी ने अपनी आयु का एक लम्बा भाग मानव के उत्थान के लिए मार्ग निर्दिष्ट करने मे लगाया है। १४ अप्रैल को उनका राजधानी मे सम्मान हुआ है। इस अवसर पर मै भी उन्हे अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करता हू।

उनके सम्बध मे विख्यात साहित्यकार श्री रामनाथ 'सुमम' ने लिखा था—"आयु मे वैदिक सीमा के निकट पहुचते हुए परन्तु उत्साह मे चिर तरुण, संध्या और उषा जैसे एकत्र चल रहे हो, इस अविश्वासनीय वातावरण मे प्राचीन श्रद्धा के प्रतीक से सातवलेकर जी हैं।" इस सम्बन्ध में कोई दो मत भी नहीं हो सकते कि सातवलेकर जी ने अत्यन्त ओजपूर्वक भारतीय सस्कृति, वैदिक ज्ञान तथा राष्ट्र के गौरव की प्राणपण से रक्षा की है।

१९ सितम्बर १८६७ को सावन्तवाडी के कोलगाव नामक ग्राम मे एक निर्धन ब्राह्मण परिवार में जब श्री सातवलेकर का जन्म हुआ तो कोई यह कल्पना भी नहीं कर सकता था कि यह बालक सौ वर्ष की आयु प्राप्त करके राष्ट्र का गौरव बनेगा तथा वेदों मे निहित गम्भीर ज्ञान को जनता को सुलभ करेगा। २५ वर्ष की आयु में जब वह बम्बई के जे० जे० स्कूल आफ आर्ट्स से एक कुशल चितेरा बनने के लिए गये तब भी शायद यह कल्पना नहीं की गई थी कि वह वैदिक राष्ट्र के भव्य शब्द-चित्र बनाया करेंगे और अपनी क्रांतिकारी "वैदिक राष्ट्रगीत" द्वारा उस राष्ट्र की आरती उतारा करेंगे।

श्री सातवलेकर जी राष्ट्रीयता की भावना से ओतप्रोत थे। "वैदिक राष्ट्रगीत" जिसका प्रकाशन १९०९ मे हुआ भारतीयो के मन मे अपने राष्ट्र के प्रति सम्मान जगाने के लिए लिखी गई थी। तत्कालीन ब्रिटिश सरकार की नजर से वह पुस्तक बच न सकी तथा सरकार ने उसे जब्त कर लिया। इसके कई वर्ष उपरात मासिक पत्र "विश्ववृत्त" मे प्रकाशित उनके एक लेख "वैदिक प्रार्थना की तेजस्विता" के लिऐ उन्हे डेढ़ वर्ष के लिए करावास दण्ड हुआ था। इस प्रकार से यह स्पष्ट हो जायगा कि वेदो के माध्यम से श्री सातवलेकर

जी ने भारतीय राष्ट्रीय गौरव को बनाने का सतत प्रयत्न किया। उनको राष्ट्रीयता के रङ्ग मे रंगने मे जहां एक ओर लोकमान्य तिलक का हाथ है, वहां स्वामी श्रद्धानन्द जैसे तप. पूत राष्ट्र भक्त तथा उनके द्वारा स्थापित गुरुकुल कागडी का भी योगदान है।

आर्यसमाज के प्रभाव मे पहले-पहल वह अपने हैदराबाद निवासो के दिनों मे आए थे। वहा आर्यसमाज के से ही उन्होने राष्ट्रीयता जगाने के लिए जो शंखनाद फूका उसके परिणाम स्वरूप तत्कालीन निजाम राज्य का अंग्रेज रेजिडेण्ट विचलित हो गया तथा उसने उन्हे हैदराबाद छोड़ देने का आदेश दिला दिया। यहीं से पण्डित जी गुरुकुल गए थे। कांगडी मे उनके दर्शन करने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनके द्वारा प्रणीत वैदिक साहित्य के अध्ययन का सौभाग्य तो मुझे मिला ही था, किंतु दर्शन के इस अवसर ने मुझे अत्यन्त प्रभावित किया।

सातवलेकर जी को "वैदिक प्रार्थना की तेजस्विता" लेख के कारण कोल्हापुर की जेल मे रखा गया था। वहाँ से छूटने के बाद उन्होने लाहौर को कार्य क्षेत्र बनाया। किंतु वहाँ भी पजाब के गवर्नर ओडायर ने उन्हे टिकने न दिया। अन्तत. उन्होने सतारा जिले के औंध नामक स्थान मे स्वाध्याय मण्डल की स्थापना की।

जहा पण्डित सातवलेकर जी ने वेदों के शुद्ध भाष्य पर बल दिया, वहाँ उन्होने वेदों मे वर्णित विभिन्न विद्याओ पर पृथक्-पृथक् छोटी पुस्तकें लिखीं, जिससे समाज का ध्यान सरलता से वैदिक ज्ञान की ओर आकृष्ट किया जा सके।

गीता पर "पुरुषार्थ बोधनी" पुस्तक उनके इस विचार की पोषण है कि गीता मोक्ष का मार्ग नहीं बताती अपितु कर्मरत रहने की प्रेरणा करती है उनका विश्वास है कि न यह संसार दु:खरूप है और न क्षणभंगुर और वेदो मे कहीं भी इस संसार को त्यागने का निर्देश नहीं मिलता इस प्रकार से ससार त्यागने की भावना यदि राष्ट्र के मानव मे घर कर जाय तो हमारा राष्ट्र बेकारो का राष्ट्र बनकर रह जाएगा और इस तरह से हमारी आर्थिक मृत्यु हो जायगी।

पण्डित जी इस ससार को परमेश्वर का रूप मानते हैं। उनका कहना है कि यदि हम इसी विश्व को आनन्द से पूर्ण मानते जायगे तो यही विश्व हमारे सामने प्रसन्नता का प्रतीक बन जायगा। इसी लिए हमारे विचार हमारे मन्तव्य और हमारे सिद्धांत पवित्र, उत्तेजक और पुरुषार्थ प्रवर्तक रहने चाहिए। हमको कभी निराशावादी नहीं होना चाहिये। पण्डित जी का विश्वास है कि हिंदू मात्र के जीवन में जगत् की और अपने शरीर की अत्यन्तिक निंदा करने की जो भावना राष्ट्रीय चरित्र के रूप मे बनी हुई है

—श्री विश्वम्भर सहाय प्रेमी

वह उत्साह हीनता पैदा करती है और इसी उत्साह हीनता के कारण हम स्वराज्य प्राप्ति के बाद वह उत्क्रांति नहीं कर सके जो होनी चाहिये थी। आयुपर्यन्त पण्डित जी ने भारतीय युवकों में ऋग्वेद का यह मंत्र फूका है।

"मैं इन्द्र हू। मेरा पराभव नहीं होगा। मै बड़े से बडा हू। मै ब्रह्म अर्थात् शक्ति का महान केन्द्र हू, मैं उत्कृष्ठ हू। मै ईश्वर का अंश हू। जहा उ होंने साधारण हिंदू के मन की इस भावना को धिक्कारा है कि "पापोऽहं, पापकर्माऽहं, पापात्मा, पापसंभव," वहाँ उन्होंने यह निर्देश भी किया है कि हम सदैव इस वैदिक आज्ञा का पालन करते रहे—तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।

आज सौ वर्ष की आयु पूर्ण कर लेने पर भी पद्मभूषण, साहित्य वाचस्पति तथा महामहोपाध्याय एवं डा० आफ लिटरेचर की उपाधियो से सम्मानित पण्डित सातवलेकर जी संकल्प पूर्वक आर्य राष्ट्र को जगाने तथा उसके गौरव को आसमान करने मे लगे हुये हैं।

★

धार्मिक परीक्षाओं से लाभ उठायें

सार्वदेशिक विद्यार्य सभा की धार्मिक परीक्षायें इस वर्ष २८ जुलाई ६८ को देश-विदेश मे हो रही हैं। परीक्षा देने के इच्छुक व्यक्ति केन्द्र स्थापित कर अधिक से अधिक परीक्षार्थी बिठाकर धर्म ग्रंथो के स्वाध्याय के प्रचार यज्ञ मे पूर्ण सहयोग दें। परीक्षाओं की नई पाठ विधि, केन्द्र स्थापनाफार्म तथा आवेदन पत्र आदि के लिए लिखें प० देवव्रत धर्मेंदु परीक्षामन्त्री सार्वदेशिक विद्यार्य सभा दयानन्द भवन, रामलीला मैदान नई दिल्ली—१।

विश्वविद्यालय स्तर पर शोध कार्य

(पृष्ठ ७ का शेष)

समाजी कट्टर वादिता का शिकार कहा गया। वस्तुत कविता कामिनी कान्त शङ्कर के काव्य का यथार्थ मूल्यांकन इस शोध ग्रन्थ के द्वारा ही हुआ है। इस ग्रन्थ के शीघ्र प्रकाशित होने की आवश्यकता है। 'आर्यसमाज के गद्य साहित्य' का विश्लेषण करने हेतु एक शोध विषय आगरा विश्वविद्यालय से श्री सुरेशचन्द्र गुप्त ने पञ्जीयत कराया है। सम्भवत यह कार्य अभी पूरा नहीं हुआ है। इसी प्रकार 'आर्यसमाजो के पत्रकारो तथा पत्र पत्रिकाओ की हिंदी पत्रकारिता को देन' इस महत्वपूर्ण विषय पर भी शोध कार्य होना अभीष्ट है। डा० रामरतन भटनागर, रीडर, हिंदी विभाग, सागर विश्वविद्यालय ने अपने शोध ग्रन्थ 'A History of Hindi Journalism' तथा स्व० पण्डित अम्बिकाप्रसाद वाजपेई ने 'हिंदी पत्रकारिता का इतिहास' मे इस सम्बध का प्रासगिक उल्लेख किया है।

वेद के सम्बध मे भी आर्यसमाज की दृष्टि से शोध कार्य हुआ है। पजाब के भाषा विभाग के निर्देशक डा० परमानद ने स्वामी जी की ऋग्वेदादि-भाष्य भूमिका पर कार्य किया है। डा० देवप्रकाश पातञ्जल शास्त्री ने बडौदा विश्वविद्यालय मे ऋग्वेद के कतिपय सूत्रो पर शोध कार्य पाणिनीय व्याकरण के परिप्रेक्ष्य मे किया। गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगडी के संस्कृत विभागाध्यक्ष डा० रामनाथ वेदालङ्कार ने १९६६ मे आगरा विद्यालय से वेदो की वर्णन शैलियो पर शोध प्रबध लिखकर पी० एच० डी० उपाधि प्राप्त की। अजमेर गवर्नमेंट कालेज मे हिंदी के प्रवक्ता डा० बद्रीप्रसाद पंचोली को 'ऋग्वेद मे गो तत्व' पर राजस्थान विश्वविद्यालय मे १९६५ मे उपाधि प्राप्त हुई। गवर्नमेंट कालेज अजमेर के संस्कृत विभाग के प्रवक्ता प्रो० अभयदेव शर्मा श्रौत सूत्रों मे वर्णित इष्टियों पर शोध कार्य कर रहे हैं तथा एक अन्य शोध छात्रा डा० सुधीरकुमार गुप्त के निर्देशन मे मैत्रायणी सहिता पर कार्य कर रही है।

उपर्युक्त पक्तियो मे जो विवरण प्रस्तुत किया गया है वह तो नगण्य सा ही है। अभी भी आर्यसमाज तथा स्वामी दयानंद के सिद्धांतो तथा मन्तव्यों एव कार्यों विषयक उनके ऐसे पहलू हैं जो अछूते ही हैं। इन पर शोध कार्य करने का प्रयास भी हो रहा है। हैदराबाद स्थित उस्मानिया विश्वविद्यालय के पुस्तकालय विभाग के एक सज्जन (जिनका नाम मै भूल रहा हू) आर्यसमाज के राजनीतिक सिद्धांतो तथा स्वाधीनता सग्राम मे आर्यसमाज के योगदान पर कार्य करने के इच्छुक थे। ऐसा उन्होने अपने पत्र द्वारा मुझे सूचित किया था। इसी प्रकार मध्यप्रदेश के दो सज्जन श्री बिहारीलाल व्यास तथा श्री कन्हैयालाल चौरसिया क्रमश आर्यसमाज की राजनैतिक गतिविधि तथा आर्यसमाज की शिक्षा देन के विषय पर शोध कार्य कर रहे है, ऐसा उनके पत्रो से ज्ञात हुआ था। अभी मुझे जयपुर मे श्री सुरेशचन्द्र भार्गव (अजमेर) नामक एक शोध छात्र मिले थे जो स्वामी दयानद के राजनैतिक दर्शन (Political Philosophy) पर शोध कार्य करने की व्यग्रता व्यक्त कर रहे थे। आर्यसमाज तथा स्वामी जी के विषय मे अद्यावधि लिखे गये ग्रथ समूह (Bibliography) की सर्वांगीण सूची तैयार करने के मेरे प्रयासो के कारण अन्य भी अनेक शोध छात्र मुझसे पत्राचार करते रहते है तथा सम्बधित ग्रथो की जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं। समाज सुधार विषयक आर्यसमाज के महत्वपूर्ण कार्य पर समाज शास्त्र विषय के शोध छात्र कर सकते है। इसी प्रकार अन्य चालू शोध कार्यों का सम्पन्न किया जाना आवश्यक है।

आर्यसमाज के सामान्य सदस्यो की जानकारी के लिए मैं बताता हू कि जिन पुराणो का डिंडिम हम घोषपूर्वक खण्डन करते हैं, आज उन १८ पुराणो पर विभिन्न विश्वविद्यालयो के द्वारा शोध कार्य हो रहा है। इन पुराणो मे निहित धार्मिक, दार्शनिक, सास्कृतिक, ऐतिहासिक भौगोलिक तथा लोकतात्विक सामग्री का विशद अध्ययन किए जाने का विशाल समारम्भ हो रहा है। परतु एक ओर हम हैं कि हमारा शोध कार्य प्रकाश मे भी नहीं आ रहा है। क्या आर्यसमाज की कोई ऐसी सभा, सस्था या व्यक्ति उस महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व को स्वीकार करेगा कि अद्यतन अप्रकाशित तथा भविष्य मे तैयार होने वाले स्वामी जी तथा आर्यसमाज विषयक शोध ग्रंथो को छापने का व्यय भार वहन करने के लिए तैयार हो जाय। यदि एक ५००० रु० भी व्यय किया जाय तो क्रमश: सारे ग्रंथ छप सकते है। परंतु हम जानते है कि आर्यसमाज की सस्थाओ से साहित्य विषयक अपील करना अरण्य रोदन ही है। अस्तु।

★

(पृष्ठ ८ का शेष)

सभा के प्रकाशन मे भी गडबड़ कर सकता है। प० युधिष्ठिर जी ने परोपकारिणी सभा मे सर्विस करके अपने काल मे जो वैदिक यन्त्रालय के छपे ग्रन्थो को बिगाडा उसकी घोषणा मैने स्पष्ट शब्दो मे अपने सध्या पद्धति मीमासा ग्रथ मे कर दी है कि इस इस सन् के छपे वैदिक यत्रालय के ग्रथ भी प्रामाणिक नही है क्योकि प० युधिष्ठिर जी वहाँ उस सन् मे बैठे थे।

अत मेरे सम्बध मे जो यह जो कहा जा रहा है कि मै परोपकारिणी सभा का अनुचित पक्ष करता हू यह गलत है क्योकि परोपकारिणी सभा के लोग यह जानने मे असमर्थ है कि किस पर विश्वास किया जावे जो मिलता है वह धोखा देता। परोपकारिणी सभा किसी पण्डित को रखती है वह प्रूफ देखने मे ही पाठ बदल देता है। फिर किसी को रखती है वह मूर्खता वश ब्रेकटो की भरमार कर देता है। परोपकारिणी के लोग प्रस्ताव पास करते है कि ऋषि के ग्रथ हस्तलेखो के आधार पर बिना परिवर्तन किए जैसे का तैसा छापो पर जिसे रखो वह प्रस्ताव के विरुद्ध आचरण करता है। प्रस्ताव क्या किसी का हाथ पकड ले।

ऋषि के अब तक अमुद्रित ग्रथ जो अभी तक नहीं छपे हैं उसमे पण्डितो की धूर्तता और मूर्खता का भय कारण है। मैने अमुद्रित ऋषि के ग्रथ सब देखे हैं और मेरी यह निश्चय धारणा है कि यदि परोपकारिणी सभा ने आदमी के परखने मे चूकी और किसी मूर्ख या धूर्त पण्डित के हाथ मे इनका सम्पादन रहा और प्रकाशन दे दिया तो अनर्थ भी महान् होगा। मैं भी चाहता हू कि ये ग्रथ छापें। मेरा यह पक्ष नहीं है कि ये छापे ही न जावें। पर मुझे चिन्ता अवश्य है क्योकि परोपकारिणी सभा के सलाहकार इस समय ऋषि भक्त नहीं है।

इस बात को प० भगवान स्वरूप जी न्याय भूषण भी समझते हैं और मैं भी समझता हू पर ससार में बहुत सी परिस्थिया ऐसी होती हैं जहा घुट-घुट कर रहना पडता है।

(८)

पं० युधिष्ठिर जी को मैं फिर समझाता हूं कि प्रत्येक ग्रथ में परोपकारिणी सभा को कोसना छोड़ें। और समाचार पत्रों में दूसरो को मूर्ख कहना और अपनी पण्डिताई की झूठी डींग मारना छोड दें। परस्पर बैठ कर प्रेम पूर्वक विचार करा करें। मैंने इस लिए यह लेख लिखा कि पं० युधिष्ठिर जी ने समझौता की प्रतिज्ञा भंग की। अब भी वे अपनी भूल स्वीकार करें तो मैं उनके उस प्रस्ताव का स्वागत करूंगा कि हम लोग लाहौर वाले पुराने सम्बध पर आ जावें और परस्पर मिलकर बात करें। मेरा साथ समाचार पत्र वाले नहीं देते और मेरा अपना कोई पत्र है नहीं। इसी लिए एक सेठ की सहायता लेकर मैने वैदिक युग मासिक पत्र प्रारम्भ किया उस सेठ को उन भीरु सिद्धांत द्रोहियो ने बहकाकर मेरा यह मासिक पत्र बद करा दिया। यदि मेरा वह मासिक पत्र बद न होता तो अब तक समस्त ऋषि द्रोहियो और आर्यसमाज मे घुसे स्वार्थियो को परले घाट पहुचा चुका होता।

(९)

अथवा प० युधिष्ठिर जी और उनके साथी तैयार हो और शास्त्रार्थ की व्यवस्था हो। सार्वदेशिक सभा के प्रधान और परोपकारिणी सभा के प्रधान सगठन की दृष्टि से सन्यास के दृष्टिकोण से महात्मा आनद स्वामी जी महाराज तथा अधिकार के दृष्टिकोण से सार्वदेशिक सभा के अनुसधान विभाग के अध्यक्ष सर्वोपरि कोटि के विद्वान् आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री और शिक्षण की दृष्टि से काशी के सस्कृत विश्वविद्यालय के वेदाध्यक्ष इन पाँच पच बनाकर बैठा लो और सब स्वतन्त्र विचार की डींग हाकने वाले मेरे साथ बैठकर बात करलो।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का ६८वां वार्षिकोत्सव—

सब मिलकर देश की शिक्षा के पुनरुद्धार का संकल्प करें

प्रो० शेरसिंह का दीक्षान्त अभिभाषण

हरिद्वार। "इस गौरवमयी संस्था की स्थापना श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानंद जी ने स्वामी दयानंद के आदर्शों से अनुप्राणित होकर की थी। यह संस्था हमारी संस्कृति का प्रतीक है—ऐसा प्रतीक जो जीवन जगत् के उत्तरोत्तर विकास के साथ-साथ स्वयं भी विकसित होता है। मुझे यह जानकर हर्ष हुआ है कि इस विश्वविद्यालय में प्राचीन विषयों के साथ-साथ नये विषयों का भी सम्यक् समावेश है। विश्वविद्यालय में कृषि एवं विज्ञान आदि विषयों के अध्ययन की व्यवस्था है जो कि सराहनीय है। वस्तुतः शिक्षा का जीवन के अटूट सम्बन्ध हो। जो शिक्षा जीवन के लक्ष्यों की पूर्ति मे सहायक नहीं होती, जो मानव की परिवर्तित आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं ढल सकती, वह शिक्षा युग की दौड़ मे जीवन से पीछे रह जाती है और उसकी सामाजिक प्रतिष्ठा मे कमी होती जाती है।

पहले हम कहते थे कि ज्ञान मे बढ़ कर पवित्र और कोई वस्तु इस संसार में नहीं है 'नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते,। ज्ञान की पावनता तो आज भी ससिद्ध है। परन्तु ज्ञान मे भी बढ़कर पवित्र है 'मानव' ज्ञान का कार्य है मानव में वह शक्ति प्रदान करना, जिसकी सहायता से वह सामाजिक मर्यादाओं की रक्षा करते हुए अपने ऐहिक और आमुष्मिक उत्तरदायित्वों को सफलता पूर्वक निभा सके। अनेक व्यक्ति व्यवहारिकता की कसौटी पर गुरुकुल शिक्षा की आलोचना करते हैं। यह मेरी दृष्टि मे उपयुक्त नहीं है। मुझ तो इसमे तनिक भी सन्देह नहीं है कि ज्ञान के उद्देश्यो की यथावत् पूर्ति करने में गुरुकुल शिक्षा पद्धति सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

"विदेशी संस्कृति के प्रभाव मे आकर यदि आप भी जीवन को अधिक से अधिक कृत्रिम बनाने मे लगजायें तब फिर आप अवश्य लक्ष्य भ्रष्ट हो जायेंगे। मैं चाहता हू कि आप अपने जीवन को अधिकाधिक सरल व विचारों को अधिकाधिक ऊँचा बनायें।" यह है वह प्रेरणा जो भारत के शिक्षा राज्य-मन्त्री प्रो. शेरसिंह ने गुरुकुल से पढ़कर निकलने वाले स्नातकों को दी।

वे गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी के वार्षिकोत्सव पर आयोजित दीक्षांत समारोह मे दीक्षांत भाषण कर रहे थे।

उन्होंने गुरुकुल कांगड़ी से अपील की कि वह हिंदी व दूसरी भाषाओं के विकास में अग्रणी रह, वह हिन्दी पुस्तकें प्रकाशित करने मे और राष्ट्रीय शिक्षा नीति के निर्धारण में अपना सहयोग प्रदान करें।

प्रो० शेरसिंह ने कहा कि यह संस्था हमारी संस्कृति का प्रतीक है—ऐसा प्रतीक जो जीवन जगत के उत्तरोत्तर विकास के साथ साथ स्वयं भी होता है मुझे यह जानकर हर्ष हुआ कि इस विश्वविद्यालय में प्राचीन विषयो के साथ ही नये विषयों का भी सम्यक् समावेश है। विश्वविद्यालय मे कृषि एवं विज्ञान आदि विषयों के अध्ययन की व्यवस्था है जो कि सराहनीय है।

आपकी अनुमति से मैं कुछ अप्रिय सत्य भी आपके समक्ष प्रस्तुत करना चाहूंगा। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना, जैसा कि मैं पहले भी निवेदन कर चुका हू। महर्षि दयानन्द के आदर्शों से अनुप्राणित होकर महात्मा स्वामी श्रद्धानंद जी ने की थी। इस संस्था ने विदेशी सत्ता, विदेशी भाषा एवं विदेशी संस्कृति के दुष्प्रभावों को दूर करने के लिए जो निर्भीकता-पूर्वक ठोस कदम उठाये थे, वे सुविदित हैं। भारतीय स्वातन्त्र्य संग्राम मे इस संस्था के अधिकारियों, अध्यापकों एवं विद्यार्थियों का जो अपूर्व सहयोग प्राप्त हुआ था उसे हमारा राष्ट्र कभी भूल नहीं सकता। संस्था के पावन उद्देश्यों से प्रभावित होकर महात्मा गांधी और सी० एफ० एंड्रयूज जैसे महापुरुषों ने इस संस्था को अपना निवास स्थान बनाया था।

मेरी धारणा है कि गुरुकुल शिक्षा पद्धति में कुछ ऐसे उपादेय तत्व समाविष्ट हैं जिनके कारण इस पद्धति का भी अधिकाधिक विकास एवं विस्तार अपेक्षित है। इनमे सर्वप्रथम है गुरुशिष्य का पारस्परिक घनिष्ठ सम्बन्ध। यह सम्बन्ध अर्थ परायणता पर आधारित न होकर श्रद्धापूर्ण होता था। वैदिक समाज में आचार्य को कुल के पितृपद पर प्रतिष्ठित किया था। गौतम और मनु के धर्म मे तो आचार्य का पिता से भी अधिक महत्व प्रतिपादित किया गया है। अथर्ववेद के अनुसार आचार्य विद्यार्थी को ज्ञानमय शरीर प्रदान करता है। परम हर्ष का विषय है कि आचार्य के प्रति सम्मान की वह उत्कृष्ट भावना आज भी हमारे गुरुकुलों मे विद्यमान है।

ज्ञान की प्राप्ति—अर्थात् उसका अध्ययन-अध्यापन तो यज्ञ के समान है। उपनिषदों में विद्या को तप किए ब्रह्मज्ञान कहा गया है। ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति के लिए गुरु और शिष्य दोनो के लिए कठोर अनुशासन म रहना आवश्यक है। आचार्य स्वयं ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करता था। गृहस्थ होते हुए भी वह संयम से रहता था ताकि उसे देखकर किसी प्रकार का विकार शिष्यों के मन में न उठे। वह शृंगारानुरंजन नहीं करता था। आलापुरुं में ही वह छात्रों को उनका कार्य बताता था तथा स्वयं स्वाध्यायनिमग्न होता था। समाज की यह धारणा थी कि जिस प्रकार सूर्य का काम स्वभावतः प्रकाश देना है, नदी का काम जल देना है, उसी प्रकार आचार्य का काम स्वभावतः ज्ञान देना है। शतपथ ब्राह्मण मे कहा गया है कि "मन लगाकर पढ़ाने से ही आचार्य के हृदय को शान्ति मिलती है। अध्ययन और अध्यापन दोनों ही आनन्द के स्रोत हैं, इससे मन 'मुक्त' हो जाता है, स्वतन्त्र होकर व्यक्ति नित्य समृद्धि पाता है और वह शान्ति से सोता है।

ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तन्न आसुव।

राज्य तथा श्री महावीरप्रसाद जी सेठ गाजीपुर आदि के सम्मिलित होने की पूर्ण आशा है।

जौनपुर—आर्य समाज शाहगंज का ४२ वा वार्षिकोत्सव २१ से २४ मई तक समारोहपूर्वक मनाया जायगा जिसमें अनेक आर्य विद्वान महोपदेशक व प्रवक्ता पधारेंगे।

वार्षिकोत्सव—

शिकोहाबाद

मैनपुरी जनपद का आर्य जिला सम्मेलन मैनपुरी मे २६ से २८ अप्रैल तक समारोहपूर्वक मनाया जायगा। जिसमें आर्यजगत् के महान् विद्वान एवं संन्यासी तथा भजनीक पधार रहे हैं। आर्य जन अधिक से अधिक संख्या मे उपस्थित होकर समारोह को सफल बनाये।

बिसारा

आर्यसमाज बिसारा (अलीगढ़) का तृतीय वार्षिकोत्सव ४-५ जून को धूम-धाम से मनाया जायगा। इस अवसर पर मूर्धन्य विद्वान प० बिहारीलाल जी शास्त्री, श्री ओंकार मिश्र 'प्रणव' तथा श्री यशपाल जी शास्त्री आदि महानुभाव पधारेंगे।

साँवलपुर नवादा

आर्यसमाज सावलपुर नवादा (सहारनपुर) का प्रथम वार्षिकोत्सव १० से १८ मई तक होना निश्चित किया गया है।

मण्डी, शाहदरा-दिल्ली

आर्यसमाज अनाज मण्डी शाहदरा का ५४ वां वार्षिकोत्सव २० से २१ अप्रैल तक समारोहपूर्वक मनाया जायगा। इस समारोह मे समाज के प्रमुख विद्वान, भजनोपदेशक एव प्रसिद्ध नेतागण सम्मिलित होंगे।

शाहजहांपुर

आर्यसमाज शाहजहांपुर का ७९ वा वार्षिकोत्सव २५ स २८ अक्तूबर तक मनाने का निश्चय किया गया।

गया

आर्यसमाज गया का ८५ वा वार्षिकोत्सव दिनांक ८ अप्रैल तक लगातार चार दिन सफलतापूर्वक मनाया गया। इस समारोह मे नगर तथा जिले की समस्त समाजो के प्रतिनिधि सम्मिलित हुये, वेद सम्मेलन महिला सम्मेलन तथा गया जिला आर्य सम्मेलन विशेष रूप से सफल रहे। काको निवासी श्री ब्रजनन्दनप्रसाद ने वानप्रस्थ आश्रम की दीक्षा आचार्य पं० रामानन्द जी शास्त्री से ग्रहण की। श्री स्वामी आनन्दगिरि जी के आध्यात्मिक उपदेश का जन साधारण पर स्थायी प्रभाव पड़ा।

बड़हलगंज

आर्यसमाज बड़हलगंज (गोरखपुर) का वार्षिकोत्सव २५ से २७ मई तक मनाने का निश्चय किया गया है। इस समारोह मे पं० विद्यानन्द जी मंतकी शास्त्रार्थ महारथी, श्री सुरेशचन्द्र वेदालंकार, श्रीमान राजा रणंजयसिंह अमेठी

आर्य्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल.-६०

रा० वैशाख ८ सम्वत् १८९० वैशाख शु० १
(दिनांक २८ अप्रैल सन् १९६८)

आर्य्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

Registered No. L. 60
पता—'आर्य्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष : २५९९३ तार : "आर्यमित्र"

पर्वतीय क्षेत्रों के बन्धुओं की रक्षार्थ

अपने कर्तव्य का पालन करें

उत्साही आर्यजनों के लिये धार्मिक प्रचार का स्वर्णिम अवसर

सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा उड़ीसा, छोटा नागपुर, आसाम, राजस्थान और मध्यप्रदेश के पर्वतीय एवं वनाँचलों में प्रचार का कार्य कर रही है जहां विदेशी ईसाई मिशनरियों का जाल बिछा हुआ है और जो निर्धन, एवं अपढ़ हिन्दुओं को विविध प्रलोभन देकर और डरा धमकाकर धड़ाधड़ ईसाई बना रहे हैं और उन्हें अपने धर्म से नहीं अपितु अपने देश से भी विमुख कर रहे हैं।

सार्वदेशिक सभा की ओर से अनेकों प्रचारक एवं कार्यकर्ता इस काम पर लगे हुये हैं। जिनके प्रयत्न से हजारों हिन्दू ईसाई बनने से बच गये हैं और हजारों पुन हिन्दू धर्म में वापस ले लिये गये हैं। कई औषधालय, दयानन्द आश्रम, स्कूल, छात्रावास एवं पाठशालायें भी चल रही हैं। इस काम पर सभा का लाखों रुपया वार्षिक खर्च हो रहा है जबकि ईसाई मिशन इस कार्य पर करोड़ों रुपया प्रति मास खर्च कर रहा है जो उसे विदेश से निरन्तर प्राप्त हो रहा है। काम को देखते हुये सभा के साधन बड़े परिमित हैं। यदि सभा के धन से हाथ मजबूत हो जायं तो ईसाई मिशन का और भी दृढ़ता से मुकाबला किया जा सकता है।

अतः प्रत्येक धन सम्पन्न आर्य हिन्दू नर-नारी को इस काम के लिये हिंदू धर्म और संस्कृति को बचाने के लिये दिल खोलकर धन देकर सभा के हाथ मजबूत करने चाहिये। सभा ने आसाम में आर्यसमाज शिलांग के माध्यम से एक हाईस्कूल खुलवाया है, वाचनालय की व्यवस्था की है जिससे हिन्दू बच्चे यहां शिक्षा प्राप्त करें और ईसाई मिशन के प्रभाव से बच जायं।

डीफू नामक स्थान पर गवर्नमेण्ट की ओर से सभा को ५० बीघा भूमि भी प्राप्त हुई है जहां गुरुकुल की लाइन पर शिक्षणालय चलाया जायगा और आदिवासी कहे जाने वाले बच्चों को प्रशिक्षित किया जायगा। इस कार्य पर भी सभा पर्याप्त धन खर्च कर चुकी है और करने वाली है। इस प्रकार स्थान स्थान पर कार्य बढ़ाया जा रहा है।

परन्तु सभा के सामने धन-जन दोनों की समस्यायें हैं। धनीमानी हिंदू जाति के हितैषी इस काम में अपने धन का ही सदुपयोग नहीं करेंगे अपितु जाति को बचाने का यश लाभ करेंगे। उनकी सूचना के लिये यह भी लिख देना आवश्यक है कि सभा के पास इनकम टैक्स मुक्ति का प्रमाण-पत्र है। इससे भी उन्हें सुविधा रहेगी।

जो उत्साही सज्जन आसाम में प्रचारार्थ जाना चाहें वे सभा से सम्पर्क स्थापित करें परन्तु वे प्रबन्ध कुशल, प्रचार की धुन रखने वाले और अंग्रेजी हिन्दी के ज्ञाता और सुवक्ता होने चाहिये।

—ओम्प्रकाश त्यागी संसद सदस्य
मंत्री अ०भा० ईसाई प्रचार निरोध समिति
सार्वदेशिक सभा, नई दिल्ली-१

(पृष्ठ १५ का शेष)

वक्ता से लेकर श्रोता तक सभी युवक ही दृष्टिगोचर हो रहे थे। समाज के क्या मन्त्री क्या प्रधान सभी कार्यकर्ता सुशिक्षित नवयुवक हैं। अगर इस समाज को इन्जीनियरों की समाज कहा जाय तो अतिशयोक्ति न होगी। क्योंकि इसके सर्वाधिक कार्यकर्ता ओबरा तथा रिहन्द बांध के इन्जीनियर या उनके सहायक ही हैं। श्री गुप्ता जी (जो अत्यन्त सौम्य आर्यसमाज के कार्यग्राहक तथा रिहन्द में इन्जीनियर हैं) की सहायता से श्री वहिन प्रज्ञा जी व मैंने रिहन्द बांध का विशाल बिजलीघर आदि का अवलोकन किया। जैसा मैंने ऊपर कहा है कि यह लोगों का भ्रम है कि समाज में नया खून नहीं आ रहा है। इसके अतिरिक्त मुझे कई आर्यसमाजों के उत्सवों पर जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है जैसे सतना, प्रतापगढ़, मिर्जापुर, लल्लापुरा, रीवां आदि। उपर्युक्त आर्य समाजों में मुझे अधिकतर नया खून ही दृष्टिगोचर हुआ। किन्तु लल्लापुरा, ओबरा तथा रीवा के उत्सवों पर मुझे कार्यकर्ताओं में बूढ़े तो शायद दिखाई ही न दिए। रीवां आर्यसमाज के उत्सव पर केवल श्री गंगानन्द जी ही वृद्ध दिखाई दिए किंतु उत्साह की दृष्टि से वे मेंढकी नवजवानों को मात करते थे। वहां का भी उत्सव तथा कार्यकर्ताओं का अपरिमित उत्साह चिरकाल तक स्मरण रहेगा। उत्सव पहिला ही था किंतु ठाकुर महिपालसिंह जी भजनोपदेशक की धन के लिए अपील पर ३१ रु० से अधिक ही जनसाधारण ने दिल खोलकर आर्यसमाज को अर्पित किया था पता चलता है कि आर्यसमाज के लिए जनता के हृदय में विशेष श्रद्धा है मैं अपने निराशावादी भाइयों से प्रार्थना करूंगा कि वे हताश न हों बल्कि अपने अन्य मतावलम्बियों की ओर भी देखें। हमें प्रयाग में आने वाले कई बड़े-बड़े मौलानाओं से वार्ता करने का अवसर प्राप्त हुआ है वे संतप्त होकर कहते हैं कि आप लोग धन्य हैं जो आप लोगों में धर्म के प्रति इतना उत्साह तो है किन्तु हम अपने मजहब में देखते हैं कि हमारे यहां का कोई नवजवान मुसलमान हमारी तरफ देखना भी पसंद नहीं करता और न उसे इस्लामी फलसफा में कोई रुचि है। बात सर्वांश में सत्य है क्योंकि आजकल का पढ़ा लिखा मुसलमान अन्धविश्वास पर आधारित इस्लाम की दन्त कथाओं पर कतई विश्वास नहीं करता यही बात सुशिक्षित ईसाइयों पर लागू होती है। आर्यसमाज की बातें तर्क पर आधारित तथा युक्ति युक्ति होती हैं। अतएव सर्व साधारण को अपील कर जाती हैं, आवश्यकता है कि हम इसे जनतक किसी प्रकार पहुंचा पावें। सौभाग्य की बात है कि आर्यसमाज में सत्साहित्य का अभाव नहीं है। आर्यसमाज के उत्सवों पर हम लोग साधारण जनता पर वैदिक संस्कृति की जो छाप छोड़ देते हैं जरूरत इस बात की है उसे हम चिर स्थाई बना सकें। इसके लिऐ हमें साहित्य विशेष सहायक हो सकता है। दार्शनिक व बाल की खाल निकालने वाले व्यक्तियों के लिऐ पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय व स्वामी दर्शनानन्द के ग्रंथ तथा भक्ति भाव वाले या नये लोगों के लिए महात्मा आनन्द स्वामी की पुस्तकें विशेष लाभप्रद हो सकती हैं। कहने का तात्पर्य है कि हमें पाठक के मनस्थली का अध्ययन करके तदनुकूल साहित्य देने का क्रम आरम्भ करना चाहिये प्रत्येक आर्यसमाजों में पुस्तकालय अवश्य होना चाहिऐ और नई-नई पुस्तकों के विक्रय का भी प्रबन्ध होना चाहिऐ जिससे सभी घर की पढ़ाई तो करके वे मगरूर कर सकें। जो वैदिक साहित्य के पढ़ने-पढ़ाने वालों से निरन्तर सम्बन्ध बनाये रखना चाहिये चाहे वह आर्यसमाजी हो या चाहे गैर आर्य समाजी। कहने का भाव यह है कि हमें घर घर में आर्य-समाज के साहित्य को पहुंचाने में सारी शक्ति लगा देनी चाहिऐ क्योंकि यह आज के युग की मांग है।

★

आर्यमित्र

की एजेंसी का धन शीघ्र भेजिये। —व्यवस्थापक

सत्वाधिकारिणी आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के लिए भगवामदीन आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से कृष्णगोपाल शर्मा द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।

लखनऊ—रविवार वैशाख १५ शक १८९०, वैशाख शु० ७ वि० सं० २०२५, दिनांक ५ मई १९६८ ई०

वेदामृत

सिरसागंज (मैनपुरी) में वृहदधिवेशन को सफल बनाकर

आर्यसमाजें अपना कर्त्तव्य पालन करें

आर्यसमाज की संगठन शक्ति सुदृढ़ हो और हम अधिक समर्थ बनकर संसारोपकार

इसके लिए आवश्यक है कि सहयोग, सद्भावना एवं लगन के साथ

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश

निवास, आतिथ्य, आदि का प्रबन्ध आ० स० सिरसागंज तथा जिला आ० उ० प्र० सभा के अधिकारी बड़े उत्साह एवं लगन से कर रहे हैं

आप अपना सिरसागंज पहुँचने का कार्यक्रम स्मरण रखें

१ व २ जून, १९६८

★

वार्षिक ८)
छमाही ५)
विदेश में
१ पौ०

सम्पादक
सच्चिदानन्द शास्त्री ★ पं० शिवदयालु
उमेशचन्द्र स्नातक

वर्ष ७०
अंक १९
एक प्रति १५ पै०

बाली बध रहस्य

प्रायः महात्मा राम पर यह आरोप लगाया जाता है कि उन्होंने निज स्वार्थ [illegible] अर्थात् अपनी धर्म-पत्नी सीता की [illegible] में सहायक बनाने के कारण सु[illegible] से सन्धि की और उसके कहने पर बालि का बध किया।

संसार के राजनीतिक मञ्च पर तो प्रायः सर्वत्र ही ऐसा हो [illegible] है किंतु महात्मा राम एक आदर्श पुरुष माने जाते हैं अतः उनके द्वारा ऐसे व्यवहार का किया जाना आपत्तिजनक [illegible] जावेगा।

जिस समय बाली समराङ्गण मे क्षतविक्षत हो भूमि पर गिर पड़ा तो उसने राम की कड़ी भर्त्संना की और कहा कि यदि सुग्रीव सीता की प्राप्ति में सहायक बनाने के हेतु ही मेरी यह हत्या की गई है तो यह भारी भूल तुम से हुई है यदि मुझसे पहले अपना अभीष्ट बतला देते तो मैं एक दिन में मैथिली को आपके सामने ला उपस्थित करता ;और साथ ही दुष्ट दुरात्मा रावण को गले से पकड़कर दण्ड देने के निमित्त आपको सौंप देता। इस सम्बंध में बाल्मीकि जी के निम्न श्लोक हैं—

मामेव यदि पूर्वं त्वमेतदर्थमचोदयः।
मैथिलीमहमेकाह्ना तव चानीतवान् भवेः।
राक्षसं च दुरात्मानं तव भार्यापहारिणम्।
कण्ठे बध्वा प्रदद्यां तेऽनिहित रावणम्॥

किष्किन्धा का० स० १७ श्लोक ४९। ५०।

आगे बाली ने राम की भर्त्संना करते हुये और कहा कि क्यों कि हम बानरों का यह राज्य अयोध्या के राज्य का शत्रु नहीं और नाही मित्र है। हमारा राष्ट्र उदासीन है तुम्हें किसी उदासीन राष्ट्र में हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं है।

इस पर राम ने तड़पकर बाल्मीकि के निम्न शब्दों में उत्तर दिया—

इक्ष्वाकूणामियं भूमिः सशैल वन कानना।
मृग पक्षी मनुष्याणां निग्रहानुग्रहेष्वपि।
तां पालयन्ति धर्मात्मा भरतः सत्यवानृजुः।
धर्म कामार्थ तत्वज्ञो निग्रहानुग्रहे ततः॥
तस्य धर्म कृतादेशाः वयमन्ये च पार्थिवः।
चरामो वसुधां कृत्स्ना धर्म सन्ता नमिच्छवः।
तस्मिन् नरनिशार्दूले भरते धर्म वत्सले
पालयत्यखिलां पृथ्वीं कश्चरेद् धर्म-विप्रियं।

किष्किन्धा का० सर्ग १८ श्लोक ६-७-९-१०।

वय मार्गविभ्रष्टं स्वधर्मे परमे स्थिताः।
भरतस्तां पुरस्कृत्य निगृह्णीमो यथाविधि।
त्वंतु संक्लिष्ट धर्मश्च कर्मणा च विगर्हितः
काम तन्त्र प्रधानश्च न स्थितो राजवर्त्मनि॥

श्लोक १२-१३

अर्थ—शैल वन कानन सहित यह सकल भूमि इक्ष्वाकुओं की है। पशु, पक्षी मनुष्यों के दण्ड देने का उन पर अनुग्रह करने का अधिकार इक्ष्वाकुओं को निश्चित प्राप्त है।

इस सम्पूर्ण पृथिवी पर सत्यव्रती धर्मात्मा भरत शासन कर्त्ता है जो धर्म, अर्थ और काम के मर्मों के जानने वाला है और प्रजा के यथायोग्य निग्रह अनुग्रह मे सदा रत रहने वाला है।

तदेतत् कारणं पश्य यदर्थं त्व मम हृतः।
भ्रातुर्वर्तसि भार्यायां त्यक्त्वा धर्मं सनातनं।
अस्य त्व धरमाणस्य सुग्रीवस्य महात्मनः।
रुमायां वर्तसे कामात् स्नुषायां पाप कर्मकृत्॥

श्लोक १८-१९

अर्थ—जिस निमित्त मैंने तेरा बध किया है उसको तू भली प्रकार समझ ले कि तू सनातन आर्य धर्म को त्याग कर अपने छोटे भाई की स्त्री के साथ फसा हुवा है।

तू ने अपने लघु भ्राता धर्मात्मा सुग्रीव की रूमा नाम की स्त्री को कामान्ध होकर अपने घर में जबरदस्ती डाल लिया है।

धार्मिक समस्याएं

धर्म की रक्षा और उसके अनुसार आचरण कराने के निमित्त हम तथा पृथिवी पर के अन्य सब राजागण प्रयत्न शील रहते हैं।

उस नरशार्दूल धर्मवत्सल भरत के इस सम्पूर्ण पृथिवी पर शासन करते हुये कौन है जो धर्म के विरुद्ध आचरण करने की हिम्मत कर सके।

हम लोग अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए सम्राट भरत की आज्ञा से लक्ष्य में रख कर धर्म मार्ग से भ्रष्ट बनों का निग्रह करते है। तूने अपने पतित कर्म द्वारा धर्म की मर्यादा का घोर उल्लंघन किया है और तू व्यभिचार दोषों का शिकार बना हुआ है और राजा के कर्त्तव्य से च्युत हो गया है।

औरसीं भगिनीं वापि भार्यां वाप्यनुजस्यः।
प्रचरेत् नरः कामात् तस्य दण्ड वधः स्मृतः।

श्लोक २३

आर्य आचार शास्त्र व दण्ड नीति के अनुसार जो मनुष्य अपनी पुत्री बहिन पुत्र-वधू वा लघु भ्राता की स्त्री के साथ व्यभिचार करता है उसके लिए स्पष्ट मृत्यु दण्ड का विधान है।

भरतस्तु महीपालो वय त्वादेशवर्तिनः।
त्वं च धर्मादिन क्रान्त कथं शक्यमुपोक्षितुम्॥

इस समस्त पृथिवी का शासक भरत है हमतो केवल इनके अनुचर हैं। तूने मर्यादा को भंग किया है तो हम इसकी उपेक्षा कैसे कर सकते थे।

आगे चलकर महात्मा राम ने बाली से यह भी स्पष्ट कहा है कि—

सुग्रीवेण च मे सख्यं लक्ष्मणेन यथा तथा
दार राज्य निमित्तं च निः श्रेयस्करः स मे।
प्रतिज्ञा च मया दत्ता तदा वानर सान्निधौ
प्रतिज्ञा च कथ शक्या मद्विधेनानवेक्षितुम्

श्लोक २६-२७

★पं० शिवदयालु

अर्थ-मैं जिस प्रकार लक्ष्मण को अपना सच्चा सखा मानता हूं। उसी प्रकार मैंने सुग्रीव के साथ मैत्री की है और यह मैत्री दारा और राज्यके निमित्त की गई है अर्थात् मैं सुग्रीव की स्त्री को जो तूने हथियाली है उसको दिलाऊंगा और किष्किन्धा का राज्य भी उसे दिलाऊंगा और बदले में वह मेरी स्त्री सीता को जिसे रावण चुरा कर ले गया है उसे दिलाएगा और भारतवर्ष की इस पवित्र भूमि पर से राक्षस-राज रावण के साम्राज्य का जो दक्षिण में उसने विस्तृत कर लिया है समाप्त करावेगा।

मैंने जो प्रतिज्ञा वानर जाति के नेताओं के समक्ष की है उसका उल्लंघन मैं कैसे कर सकता हूं।

मरते समय बाली ने महात्मा राम के इस तर्क को स्वीकार करते हुये अंतिम प्रार्थना अपने पुत्र अङ्गद को किष्किन्धा का युवराज बनाने की की थी जिसका पूर्णतया पालन महात्मा राम ने आगे चलकर किया।

यह शङ्का भी की जाती है कि जिस प्रकार बाली ने सुग्रीव को किष्किन्धा मे खदेड़ कर उसकी स्त्री रूमा से संभोग किया उसी प्रकार बाली के मारे जाने पर सुग्रीव ने भी तो बाली की स्त्री तारा को अपने घर में डाल लिया था तो राम ने सुग्रीव का बध क्यो नहीं किया।

समाधान निम्न प्रकार है कि रूमा बाली की वधु सामी थी उसके साथ मैथुन करना आर्य मर्यादा के अनुसार घोर पाप है और तारा सुग्रीव की ज्येष्ठ भ्रातृ जाया थी जिसका सुग्रीव देवर लगता था और बड़े भाई के निधन पर उसका लघु भ्राता अर्थात् देवर उसके साथ पुनर्विवाह कर सकता हैं ऐसी प्राचीन परम्परा (शूद्र कुलों की) है। तारा ने अपनी अच्छा से सुग्रीव को पति बनाया था अतः सुग्रीव के बध करने का प्रश्न नहीं उठातर। ●

सभा का वृहदधिवेशन सिरसागंज (मैनपुरी) में होगा

आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का ८२ वा वार्षिक वृहदधिवेशन सभा के निश्चयानुसार इस वर्ष सिरसागंज जि० मैनपुरी में तिथि ११, १२ ज्येष्ठ सं० २०२५, शनिवार-रविवार तदनुसार १ व २ जून १९६८ को होना निश्चित हुआ है।

समस्त आर्यसमाजें अपने प्रतिनिधि चित्र तथा दशांशादि धन शीघ्र ही सभा कार्यालय में भेजने की कृपा करें।

—सच्चिदानन्द शास्त्री एम० ए०
मन्त्री—आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश

वैदिक प्रार्थना

ओ३म् पाहि नो अग्ने रक्षस पाहि धूर्तेरराव्ण. ।
पाहि रीषत उत वा जिघांसतो बृहद्भानो यविष्ठय ॥ १२ ॥
ऋ० १ । ३ । १० । १५ ॥

व्याख्या—हे सर्वशत्रु दाहकाग्ने परमेश्वर ! राक्षस हिंसाशील दुष्टस्वभाव देह धारियों से "न" हमारी "पाहि" पालना करो "धूर्तेरराव्ण" कृपण जो धूर्त उस मनुष्य से भी हमारी रक्षा करो जो हमको मारने लगे तथा जो मारने की इच्छा करता है, हे महातेज बलवत्तम ! उन सबसे हमारी रक्षा करो ॥ १२ ॥

आर्य्यमित्र

लखनऊ-रविवार ५ मई १९६८, दयानन्दाब्द १४४ सृष्टिसंवत १ ९७,२९,४९,०६९

बनारस संस्कृत यूनिवर्सिटी की ऐक्जीक्यूटिव कौंसिल में आचार्य विश्वश्रवा व्यास का भाषण और वैदिक परम्परा की विजय

●

सरकार द्वारा संस्कृत यूनिवर्सिटी की ऐक्जीक्यूटिव कौंसिल मे श्री आचार्य विश्वश्रया जी सर्वप्रथम ३१ मार्च १९६८ की बैठक मे सम्मिलित हुए। उसमे काशी के विद्वानो ने सरकार द्वारा नामिनेट होकर आये हुए आचार्य विश्वश्रवा जी का जब स्वागत किया, उस स्वागत के उत्तर मे आचार्य जी ने काशी के विद्वानो से निवेदन किया "हमारे विश्वविद्यालय की मोहर मे "श्रुत मे गोपाय" अंकित है। मै दो बातो की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहता हू प्रथम यह कि मैं आर्यसमाज की सर्वोच्च शिरोमणि सभा सार्वदेशिक सभा का अधिकारी और अन्तरंग सदस्य बहुत काल से हू हमारे यहा यह मर्यादा है कि सभा प्रारम्भ होने से पूर्व श्रुति के मन्त्र बोले जाते हैं तब सभा की कार्यवाही प्रारम्भ होती है पर यहा मैने देखा कि आप सब लोग एकत्र होकर सभा प्रारम्भ कर चले पर कोई श्रुति नही बोली गई दूसरे यह कि हमारे पास एजेण्डा पहुचा और पिछली बैठक की कार्यवाही पर हमारे यहा सार्वदेशिक सभा के एक परिपत्र और आता है जिसमे यह लिखा होता है कि जो पिछली बैठक मे पास हुआ वह क्या क्या काम कार्यरूप मे परिणत हुआ।"

श्री आचार्य जी की दोनो बात स्वीकार हुई और २८ अप्रैल को जो कौंसिल की बैठक हुई इसमे 'स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवा०' आदि मन्त्र बोल कर तब परिषद् की कार्यवाही प्रारम्भ हुई आचार्य विश्वश्रवा जी ने बताया कि हमारे विश्वविद्यालय मे जो विद्वान है वे अपने अपने विषय के विशेषज्ञ हैं उनकी विद्या अपार है और वे सब हमारे विश्वविद्यालय के विद्वान कणाद, शंकराचार्य और माधवाचार्य जैसे तुच्छ विचार वाले नही है।

कौंसिल की बैठक मे सब ही जाति के लोग है कर्मचारियो मे शूद्र वर्ग भी हो सकता है यदि माधवाचार्य जैसे लोग हमारे विश्वविद्यालय मे होते तो वेदमन्त्र नहीं बोला जा सकता था। स्मरण रहे हमारे विश्वविद्यालय मे महिलाएं भी अध्यापकादि पदो पर हैं। कौंसिल के लोग भी अत्यन्त योग्य और समझदार है। आचार्य जी ने कहा कि मुझे दुःख होता है कि हमारे आर्य-समाज के व्यक्ति बिना जाने काशी के संस्कृत विश्वविद्यालय के सम्बन्ध मे उल्टा विचार प्रकट कर देते हैं पहिले उनको मुझसे ही जानकारी प्राप्त तो कर लेनी चाहिये हमारे विश्वविद्यालय की वेद की गद्दियों पर जो वैदिक लोग महर्षि दयानन्द और उनके वेद भाष्य को आदर की दृष्टि से देखते हैं। ऋषि का वेद भाष्य आदि सब इस विश्वविद्यालय के पाठ्य ग्रन्थों मे है। कुछ समझकर ही लेखनी उठानी चाहिये। केवल लिखने के लिये उखाड़ पछाड़ करना बुद्धिमान का कार्य नहीं है।

स्वरूप को पहचानिये

★

वर्ष समाप्त होने जा रहा है अगला निर्वाचन समीप आता जा रहा है आर्य जगत प्रतीक्षा कर रहा होगा कि भविष्य का क्या बनेगा और अब तक क्या हुआ। मैं यही उत्तर दूगा कि जो कश्मीर मे हुआ वही यहा भी हुआ। सेना तथा सेनापति बडी बहादुरी से लडे पर राष्ट्रनायक ने कन्धा डाल दिया, सेनापति दिल मसोस कर रह गये।

आज आर्यसमाज का भी यही हाल है सैनिक (आर्य जनता) दिल मे अर-मान भरकर कार्यक्षेत्र मे उतरना चाहती है पर आर्य नेता कन्धा डाले हुये है। सन् १९६७ यही बताता है कि हम अपने किये हुए कार्य मे अपने स्वरूप को पह-चानें, कि ऋषि के मिशन को कितना आगे बढाया है या कितना पीछे धकेला है।

आर्यो कुछ सोचो

आर्यसमाज के पास काम बहुत है पर इन्हे भी राजनैतिक पार्टियो की भांति लडने झगडने से फुरसत कहा ? कार्य अधिक व्यक्ति थोडे, साधन कम कार्यक्षेत्र बडा फिर भी जहा देखो वहा कलह ने डेरा डाला हुआ है। समाजो मे कलह सभाओं मे कलह, घर-बाहर सभी जगह कलह, फिर प्रश्न है कि क्या ये आर्यजन ऋषि के उत्तराधिकारी कहलाने योग्य हैं या आर्यसमाज के हित चिंतक है। आर्यों अब भी आर्यसमाज पर दया करो कुछ महर्षि के प्रति कर्तव्य निभाओ और कार्यरत हो जाओ साथ ही काम करने वालो को काम भी करने दो।

शीशे मे रूप देखें

अपना लेखा-जोखा देखने के लिये अपना बहीखाता होता है दूसरे का नहीं। जो आर्यजन अपना निरीक्षण स्वयं करते और जीवन निर्माण मे तत्पर रहते थे वे अब अपने को, समाज को, धोखा देते है छिद्रान्वेषण ही परम धर्म बना लिया है। इससे कुछ बनेगा नहीं।

आचार्य नरदेव शास्त्री के शब्दो मे काम तो हो रहे है पर घर बिगड रहे है—

सदियो यातनाय और अत्याचार समाप्त करने के पश्चात जो नव निर्माण की घडी उपलब्ध हुई है उसे दूसरा के साथ न मिलाकर अपनी शक्ति स्वय खो रहे हो नव निर्माण के बजाय विनाश के पथ पर ही अग्रसर हो रहे हो। आर्य समाज की बढती संख्या को देखकर सारा संसार आर्य बन जायेगा पर आर्यो के चरित्र चित्रण से लग रहा है कि यह दूसरो को क्या अपना भी भला नही कर सकेंगे।

अजीब था संगठन

समाज बना-सभाय बनी इस प्रकार आर्यसमाज का विशाल रूप लेकर खडा हो गया। अंग्रेजी हुकूमत थर्रायी, और सात समुद्र पार चली गई, अन्य मत मतान्तरो की नीव हिलाई गई शास्त्रार्थ के मैदान छोडकर मुह छिपाने लगे, यह था संगठन शक्ति का स्वरूप—पर तुमने स्वय अपने हाथो गड्ढे मे नुकसान मे हाथ लगा रहे हो।

संगठन बना और चलने लगा काम होने लगा, राजसी आनन्द आने लगा। पर करना तो कुछ नहीं, लोगो की जय-जयकार होने लगी नाम का थोडा पढा आज भी मत-पन्थो के गढो को ढाने मे पर्याप्त था पर आज चन्दा देकर ही नेता बनना चाहता है। चुनाव चक्कर मे बे पढे लिखो की भरमार होने लगी सस्थावाद- सत्याबाद पर जीवित हुआ हमारी समाजें खुल गई, सभाय बन गई चुनाव होने लगे, बडे २ उत्सव होने लगे दरबारी ठाठबाठ के प्रतिनिधियो के वार्षिक अधिवेशन होने लगे अधि-कारी अधिकार के मद मे चूर होकर कार्य से विरत होकर इति समझ बैठे परिणाम स्वरूप आर्यसमाज शिथिल होता जा रहा है। न तो धर्म-बल है न संगठन बल रहा सारी दुनिया का बिगडा फौज मे ठीक हो जाता है और फौज का बिगडा कहते है कि आर्यसमाज मे ठीक हो जाता है पर आर्यसमाज के बिगडे को कौन ठीक करेगा। सारे वर्ष के बाद सारा ध्यान चुनाव पर केन्द्रित हो जाता है। समय बदल रहा है कार्य करने के ढग बदल रहे है और हम ह्रास की ओर बढ रहे हैं। विद्वानो का ह्रास धर्मात्मा त्यागी तपस्वी जिधर देखो ह्रास सर्वत्र ह्रास—

तो फिर —

हम पदो के पीछे पड धर्म के पीछे न लगें, पद लोलुपता ने हमसे क्या क्या अधर्म नहीं कराये, पद लोलुपता ने हमे यथार्थ मार्ग से विनाश के मार्ग पर ला पटका है। बचने का उपाय सोचो। ऋषि के बनाये पथ पर चलकर पूर्वजो का सम्मान कर अपने कार्य करने वाले कर्मठ कार्यकर्ताओ को आगे लाओ। पुराने महारथी एक एक कर प्रस्थान करने की बारी बांधकर बढे २ जा रहे हैं। नेता तो नाम को भी अब दिखाई नहीं देते भविष्य भी शून्य पर खडा है। उत्तरप्रदेश भारत का मस्तिष्क व हृदय दोनो ही है क्या आने वाले समय पर प्रदेश के प्रतिनिधि अपना कर्तव्य पालगे कि भविष्य उन लोगो के हाथों मे सौंपेंगे जो समय देंगे धन-जन-मन भी देंगे विद्वान और चरित्रवान भी होंगे। मैं

मुंबई प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान
श्रीमान् गुलजारीलाल आर्य का फादर फेरर के संबंध में वक्तव्य

हमे इस बात की बड़ी प्रसन्नता है कि महाराष्ट्र के मुख्यमन्त्री माननीय वसतराव नाईक ने ईसाई प्रचारको की राष्ट्र-विरोधी गतिविधियों पर प्रतिबन्ध लगाने के लिये मनमाड के फादर फेरर के निष्कासन के सम्बन्ध मे प्रशंसनीय कदम उठाया है।

हम गुजरात तथा महाराष्ट्र प्रान्त की सम्पूर्ण आर्यसमाजों की ओर से इस कार्य मे महाराष्ट्र सरकार के इस निर्णय का पूरा-पूरा समर्थन करते हैं।

हमारे मत मे तो अन्य प्रांतों की तथा केन्द्रीय सरकार को भी महाराष्ट्र सरकार के इस न्यायपूर्ण तथा राष्ट्र-हितकारी निर्णय का अनुकरण करना चाहिए। क्योंकि पूरे भारत में विशेषतः नागालैंड, मध्यप्रदेश, केरल आदि मे ईसाई मिशनरियों की जो राष्ट्र-विरोधी तथा धर्म-विरोधी गतिविधियां जारी हैं, वे तुरन्त बन्द की जानी चाहिए। हमारे देश की निर्धनता तथा अज्ञानता का इस प्रकार अनुचित लाभ लेना किसी भी सभ्य राष्ट्र के लिये शोभा की बात नहीं है। ईसाइयों का इस रूप में हमारे देश में काम करना हमारे लिये कलंक की बात है।

यह आश्चर्य की बात है कि राष्ट्र में इतने व्यापक रूप में ऐसी दुष्प्रवृत्तियां जारी रहते हुये हमारी सरकार क्यों असावधान है निश्चय ही इस प्रकार की असावधानी के भयकर परिणाम होंगे।

हम पुनः महाराष्ट्र सरकार के निर्णय का पूर्ण समर्थन करते है और इसके लिये मुख्य-मन्त्री श्री वसनराव नाईक जी का अभिनन्दन करते हैं।

सरकार को चाहिए कि महाराष्ट्र के ईसाई स्कूल तथा धर्म-प्रचार के अन्य स्थान चर्च आदि पर अपना नियंत्रण रखे।

केवल पादरी फेरर को ही नहीं, यहा के सभी विदेशी मिशनरियों को इस देश से निकाल देना चाहिये।

जो भी आर्थिक सहायता विदेशो से आती है उसके वितरण की व्यवस्था स्वयं सरकार करे या इसे आर्यसमाज को सौंप दें। आर्यसमाज यह कार्य करने को तैयार है।

गुलजारीलाल आर्य
प्रधान
मुंबई प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा,
८०।८२ नागदेवी स्टीट, बम्बई-३

मजलिसे मुशावरत की ओर से उत्तरप्रदेश में
नया पाकिस्तान बनाने की मांग

दिल्ली १८ अप्रैल-सर्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री ससद-सदस्य श्री लाला रामगोपाल शालवाले ने एक प्रेस वक्तव्य मे बताया कि मजलिसे मुशावरत के अध्यक्ष डा० अब्दुल जलील फरीदी ने कर्नलगज (उत्तर प्रदेश) की एक सार्वजनिक सभा मे भारत सरकार से उत्तर प्रदेश मे रहने वाले ३२ लाख मुसलमानों के लिये एक मुस्लिम बहुल क्षेत्र का निर्माण करने की माग की है।

अपनी माग की पुष्टि मे श्री फरीदी ने पंजाब सूबे का उदाहरण देकर कहा है कि जब ८० लाख सिक्ख पजाबी सूबा बनवा सकते हैं तो मुसलमान अपनी मांग क्यों नहीं मनवा सकते? डा० फरीदी ने उत्तर प्रदेश के मुस्लिम बहुल क्षेत्र मे मुसलमानो के लिये सीटें सुरक्षित करने उर्दू को दूसरी राजभाषा बनाने तथा जन-सख्या के अनुपात मे मुसलमानों को नौकरियां दिये जाने की मांग करते हुये परिवार नियोजन से दूर रहकर अपनी जन-सख्या बढ़ाने की मुस्लिम जनता से अपील की है।

श्री शालवाले ने कहा कि भारत सरकार की सेक्यूलर नीति का परिणाम जल्दी ही भयंकर रूप में सामने आ रहा है। केन्द्रीय सरकार की हिन्दू विरोधी नीति के कारण इस प्रकार के साम्प्रदायिक लोग अप्रजातात्रिक मांग रखने का दुःसाहस कर रहे हैं। विगत २० वर्षों में केन्द्रीय सरकार ने कांग्रेस की पुरानी मुस्लिम पोषक नीति का समर्थन करके अपने आप पाकिस्तानी मनोवृत्तियों को बढ़ावा दिया है। इसी प्रकार केरल की मुस्लिमलीग ने अपने विगत अधिवेशन मे दक्षिण मे मुस्लिम बहुल प्रान्तों का निर्माण करने की योजना बनाई है।

जब पाकिस्तान बना था तो अनेक लोगो ने सरदार पटेल से सवाल किया था कि कांग्रेस ने अपनी मान्यताओं के विरुद्ध पाकिस्तान का विभाजन एवं साम्प्रदायिक प्रस्ताव कैसे स्वीकार कर लिया? उस समय सरदार पटेल ने उत्तर दिया था कि भारत के कोने में साम्प्रदायिक तनाव एव झगड़े समाप्त हो जांय आज यही विचार कर हमने मुसलमान और पाकिस्तान के रूप में अपना घर बसाने की अनुमति दी है। वे वहां सुखी रहेंगे हम यहां आनन्द से रहेंगे। रोज २ के साम्प्रदायिक झगड़े समाप्त हो जायेंगे।

आज थोड़ा समय बीतने पर ही कांग्रेस सरकार की अनिश्चित नीति के कारण मुस्लिम साम्प्रदायिकता अंग्रेजी राज्यकाल से समान सिर उठा रही है। यदि इस देश में कोई सुदृढ़ शासन होता तो इस प्रकार के बिगड़े दिमागों को इस तरह की बकवास करने का साहस न होता। किंतु आज देश के साम्प्रदायिक लोगों को विश्वास है कि "सैयां भये कोतवाल अब डर काहे का" ऐसी विषम परिस्थिति में भारत सरकार के कर्णधारों को देश की राष्ट्रवादी जनता के साथ न्याय करना चाहिए और पाकिस्तान थोपते समय जो वादे किये थे उनका ध्यान रखना चाहिए। श्री शालवाले ने भारत सरकार से मांग की कि अवैध कार्यशाही विरोधी (अनलाफुल एक्टीवीटीज) बिल पास हो जाने के बाद भारत सरकार को ऐसे देश द्रोहियों के साथ कठोर व्यवहार करना चाहिए।

अत में श्री शालवाले ने देश की आर्य (हिंदू) जनता को इस भावी खतरे से सावधान करते हुए कहा कि यदि उसने इस समय अपने कर्तव्य का पालन न किया तो आने वाली संतान शासन पर बैठे हुए नेताओं को और आज भी जनता को धिक्कारेगी।

★

सभा का वृहदधिवेशन

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का आगामी अधिवेशन दिनांक १-२ जून १९६८ को सिरसागंज (मैनपुरी) में होने जा रहा है। समाजें प्रतिनिधि चित्र शीघ्र भेजें।

अन्यथा

वार्षिक प्रतिनिधि चित्र अधिवेशन से पहले न आने पर आपको तथा कार्यालय के कार्यकर्त्ताओं दोनों को कितना कष्ट उठाना पडता है। साथ ही प्रतिनिधि चित्रो को भली-भांति निरीक्षण भी नहीं कर पाते। इसी हेतु निवेदन है कि आप अपने प्रतिनिधि चित्र दशांशादि धन अधिवेशन से पूर्व सभा कार्यालय में शीघ्र ही भेजें।

उपदेशकों-प्रचारकों-निरीक्षकों से भी निवेदन

आप लोग मेरी प्रार्थना पर ध्यान देकर सभा प्राप्तव्य धन, प्रतिनिधि चित्र आदि शीघ्र ही भिजवाकर सभा को सहयोग प्रदान करने की कृपा करेंगे। समय थोड़ा है कार्य अधिक हैं। शीघ्र काम मे लग जायें।

सिरसागंज मार्गदर्शन

आर्यसमाज सिरसागंज मैनपुरी जिले मे शिकोहाबाद रेलवे स्टेशन से ८ मील दूरी पर स्थित है। पूर्व से आने वाले भाई, बहिन लखनऊ कानपुर होकर शिकोहाबाद आयेंगे। इसी प्रकार पश्चिम स वाया अलीगढ़ टूडला से शिकोहाबाद पहुंचे। उत्तर-पश्चिम मुरादाबाद से अलीगढ़ होकर-बरेली से कासगज एटा से सिकोहाबाद आयेंगे-फिर वहा से मोटर द्वारा सिरसागज आना होगा। लखीमपुर, सीतापुर, हरदोई, बरेली के जिले वाया शाहजहापुर होकर मोटर से फर्रुखाबाद फिर ट्रेन से शिकोहाबाद फिर मोटर से सिरसागज, झांसी, उरई, जालौन बांदा वाया-कालपी मोटर से औरय्या इटावा फिर सिरसागंज पहुंचें

आवश्यक

आर्यसमाजों के द्वारा भेजे गये प्रतिनिधि चित्रो की प्राप्ति पर प्रेषित उत्तर में निवेदन है कि आर्यसमाज के मन्त्री महोदय आर्यसमाज के आर्य सभासदों के वार्षिक चन्दे पर ही अपना दशांश धन तथा सुवकोटि—[illegible] फण्ड आदि भेजें। समस्त आय पर न भेज कर चन्दे पर ही भेजें।

नोट—प्रतिनिधि चित्र शीघ्र सभा कर्यालय पर ही भेजे। अधिवेशन के समय सभा कर्मचारियों तथा आप लोगों को (दोनों को) ही बड़ी कठिनाई होती है। अत: इस परेशानी से बचने के लिये प्रतिनिधि चित्र शीघ्र सभा कार्यालय पर धन के साथ भेजें। उस समय फार्म भी भली प्रकार देखे नहीं जा पाते हैं।

सभा-मन्त्री

समझता हूं कि ऐसे ही व्यक्ति भविष्य का रूप सवारने के लिये आगे आये ऐरे गैरे नत्थू खैरे सहमा हिम्मत न कर अच्छे व्यक्तियों का चयन करेंगे। समय आप के हाथ मे है उसे पहचानकर अपने स्वरूप को सवांरने का सकल्प लें।

★

महर्षि की चतुर्वेद विषय सूची आदि अमुद्रित ग्रंथ

यह बात सत्य है कि ऋषि के कुछ ग्रंथ अभी तक अप्रकाशित है उधर ध्यान नहीं दिया गया है। इस समय आर्य समाचार पत्रो मे इसकी चर्चा चल रही है। कुछ आर्य भाई इस समाचार से दुखी होकर परोपकारिणी सभा से पत्र-व्यवहार कर रहे है। यहा तक कि अबकी बार सार्वदेशिक सभा ने अपने बम्बई अधिवेशन मे इस काम को अपने हाथ में लेने का निश्चय किया और प्रस्ताव पास किया और सार्वदेशिक सभा ने आर्य समाज स्थापना शताब्दी के प्रोग्रामो मे ऋषि के सब अमुद्रित ग्रन्थो को परोपकारिणी सभा से प्रकाशित कराने का काम सम्मिलित किया है।

ज्यो-ज्यो यह चर्चा चल रही है मेरी चिन्ता बढ़ रही है क्योकि मै सब अप्रकाशित ग्रन्थों का रहस्य जानता हू और परोपकारिणी सभा की स्थिति को भी ठीक ठीक समझता हू। अच्छा आज कुछ कहता हू।

मेरी निजी सम्मति

महर्षि ने जिस समय परोपकारिणी सभा की स्थापना की थी उस समय भी कुछ पण्डित ऋषि के पास थे पर ऋषि ने परोपकारिणी सभा के २३ मेम्बरो मे एक भी आर्य विद्वान को नहीं रखा था। इस परम्परा की अवहेलना परोपकारिणी सभा मे हुई और उस दूरदर्शी ऋषि को समझने मे भूल हुई। और परोपकारिणी सभा ने परोपकारिणी सभा मे विद्वानो को मेम्बर बनाना प्रारम्भ किया उसी के परिणामस्वरूप पिछले वर्षों मे परोपकारिणी सभा को एक सकटकाल मे होकर गुजरना पड़ा और हजारो रुपया परोपकारिणी सभा का व्यय हो गया। यह एक विचित्र बात है कि मै पण्डित होकर पण्डितो के विरुद्ध लिख रहा हू पर इस रहस्य को मैं व्याख्या न करु यही अच्छा है। इस समय परोपकारिणी सभा मे जो पण्डित भी मेम्बर है वे स्वय त्यागपत्र दे दें या उनके मुकाबले के उतने ही पण्डित परोपकारिणी सभा मे और ले लिये जावें तब मार्ग निकल सकता है अन्यथा यह स्थिति ऐसी की ऐसी ही रहेगी। परोपकारिणी सभा के व्यक्ति स्वय यह बात समझते है कि इस समय उनके सलाहकार वे व्यक्ति है जो ईश्वर की सत्ता भी नहीं मानते और उन सलाहकारो का विश्वास है कि स्वामी दयानन्द जी ने पचासो मूर्खतायें की है और ऐसे भी सलाहकार है जो स्वामीजी से अपने आपको बड़ा विद्वान् मानते हैं। और ऋषि की की हुई व्याख्या शास्त्रों की उन्हे पसन्द नहीं है। अत. उस वातावरण मे वहा कुछ हो नहो सकता अत मैं चुप लगाकर बैठ गया। और मेरा दृढ विश्वास है कि मेरे मरने के बाद यह चर्चा भी समाप्त हो जावेगी। ऋषि के अप्रकाशित ग्रन्थ प्रकाशित होने की बात उठाना व्यर्थ है।

और

स्वर्गीय दीवान बहादुर साहब का युग

आज से बहुत वर्ष पूर्व की कथा है कि पितृवत्पूज्य दीवानबहादुर हरविलास जी शारदा ने मुझे अजमेर बुलाया और ऋषि का सब सामान मेरे सुपुर्द किया कि मै देखू कि इसमे क्या-क्या है। ऋषि के पास एक बहुत बड़ा सग्रह मुद्रित अमुद्रित ग्रन्थो का है और ऋषि ने अपने प्रकाशित ग्रन्थो के हस्तलेख वहा हैं और वे ग्रन्थ भी वहा है जो ऋषि ने स्वय लिखे पर छपवा नहीं सके। मैने सारा सामान वर्षों देखा है। और देखता ही रहा हू और अब देखना भी छोड दिया।

परोपकारिणी सभा

ऋषि के ग्रन्थो की चोरी

ऋषि के पास जो ग्रंथ राशि है वह बस्तों मे बधी रखी थी मैने सब बस्ते खोल-खोलकर देखे। ऋषिवर दो मोटे लकडी के तख्तो मे ग्रन्थ रखकर बस्ता बाध देते थे और बस्ते के ऊपर ग्रन्थ का नाम लिख देते थे अनेक बस्तो मे लकड़ी के तखते ही थे बीच की किताब गायब। मै आवाक् रह गया कि यह क्या हुआ। परोपकारिणी सभा मे यह बात रखी परोपकारिणी सभा के प्रमुख सदस्य डा०

की कठिनाइयां

घीसूलाल जी कहने लगे कि जब हमारे पास कोई लिस्ट ही नहीं है कि क्या-क्या ग्रन्थ हमारे पास हैं तो आप कैसे कहते हैं कि हमारे यहा से ऋषि के ग्रन्थो की चोरी हुई। तब मैंने वे बस्ते उनके सामने सभा मे रख दिये कि इन बस्तों की किताबें कहा हैं बस तख्तो की किताब ऋषिवर लिख रहे हैं मैने यहां तक देखा कि एक चोर पण्डित ने एक बस्ते मे से हस्तलेख चुराया जल्दी मे अन्तिम पृष्ठ तख्ते मे चिपका ही रह गया। मैंने उस समय परोपकारिणी सभा को कहा कि इस एक पृष्ठ से चोर पकडा जा सकता है डा० घीसूलाल जी ने कहा कि पुलिस को सूचना दी जानी चाहिये पर कुछ ऐसे व्यक्ति भी वहा बैठे थे जो सहम गये कि चोरी किसने की है वे उस पण्डित की बेइज्जती नहीं चाहते थे कि वह पकड़ा जावे अत यह विषय वहीं दबा दिया गया था।

परोपकारिणी सभा के मेम्बर

परोपकारिणी सभा के लोग करे क्या। काम पण्डितो से लेना पडता है और पण्डित पुस्तक चोर है। परोपकारिणी सभा के सग्रह मे से बहुत सामान गायब है। यहा तक कि ऋषि के वस्त्र भी वहां नहीं है। ऐसी स्थिति मे परोपकारिणी सभा किंकर्तव्य विमूढ है। जिस पण्डित को रखती है वह चोरी करता है और ऋषि के ग्रन्थो मे मिलावट करता है। प० भगवानस्वरूप जी जो परोपकारिणी सभा के पुस्तकाध्यक्ष है उन्होने सीधा रास्ता पकड़ा है कि हमारे पास कुछ रहे ही नहीं यही प्रशस्त मार्ग है।

आरम्भ से परोपकारिणी सभा के २३ मेम्बर रहे है, २३ मेम्बर ही अब है जो मर जाता है उसके स्थान पर दूसरा लिया जाता है या तीन वर्ष न आवे तब उसके स्थान पर दूसरा बदला जा सकता है या पुन उन्ही को स्थापित करने की प्रथा विधान है। उन २३ व्यक्तियो मे से कुछ ऐसे है जिन्हें स्मरण भी नहीं है कि वे परोपकारिणी सभा के मेम्बर है कुछ निराश होकर नहीं आते। कुछ को अवकाश नहीं है और मेम्बरो की लिस्ट में रहते है। इस समय २३ मेम्बर नीचे लिखे है।

परोपकारिणी सभा के सदस्यों की नामावलि पूर्ण पते सहित

१–राजाधिराज श्री सुदर्शनदेव जी शाहपुरा, पैलेस- नियर शाहपुरा, (राजस्थान)

२–महात्मा आनन्दस्वामी जी महाराज

३–डा० परमात्मशरण ३-६/३१४ बशीरबाग, हैदराबाद (आन्ध्र)

४–डा० मथुरादास जी पहवा २० राजपुर रोड, दिल्ली।

५–श्री चरणदास जी पुरी एडवोकेट ८/६ रूपनगर सिविल लाइस दिल्ली ८।

६–श्री सेठ प्रतापसिंह शूरजी वल्लभदास कच्छ कैसल बम्बई।

—आचार्य विश्वश्रवा: व्यास
एम० ए० वेदाचार्य

ये छै मेम्बर तो ऐसे है जिन्हे कभी स्मरण भी नही आता होगा कि वे परोपकारिणी सभा के मेम्बर है।

७–प्रो० मदनसिंह जी एम० ए० एल०एल०बी० आदर्शनगर अजमेर।

८–ला० हसराज जी गुप्त २० बारहखम्भा रोड, नई दिल्ली।

९–डा० मथुरालाल जी शर्मा सी० स्कीम, जयपुर।

१०–श्री के० नरेन्द्र जी मालिक 'वीर अर्जुन' और 'प्रताप' मथुरा रोड, नई दिल्ली।

११–श्री विद्यारत्न जी इजीनियर १० गोविन्द मार्ग, जयपुर ४

१२–श्री हरिश्चन्द्र जी वर्मा ज्योति वीविंग फैक्टरी, दमदम कलकत्ता।

१३–प० भगवद्दत्त जी रिसर्चस्कालर १/२८ पंजाबी बाग, दिल्ली ३७

१४–डा० चित्तरंजन जी वर्मा एडवोकेट घीसूलाल भवन अजमेर रोड, अजमेर।

१५–श्री अमरचन्द्र जी ईदाणी एडवोकेट, नसिया के पास अजमेर

१६–डा० राजबहादुर जी भाटापाडा, कोटा।

(सख्या १३ से १६ तक के मेम्बर ऐसे हैं जो यह कहते है कि वे किसी झगड़े मे नही पड़ते उनकी कोई सुनता नहीं है।)

१७–प० आनन्दप्रिय जी आर्य कन्या महाविद्यालय बडोदा।

इन का यह सिद्धांत है कि श्रीकरण

जी शारदा मेरे भान्जे हैं जो वे करें मेरी हां है।

१८–वां श्री करण जी शारदा एडवोकेट अजमेर। इनका सिद्धांत यह है कि मेरे बुजुर्ग श्री डा० मानकरण जी शारदा जीवित हैं मै उनके आगे बोल नहीं सकता जो उनकी आज्ञा।

१९–पं० भगवानस्वरूप जी न्याय-भूषण, केसरगंज अजमेर।

इनका कर्त्तव्य यह रहता है कि मै सारे जीवन परोपकारिणी की सर्विस मे रहा हू अतः मानकरण जी जैसा ठीक समझेंगे मी वही ठीक समझता हू।

२०—डा० विष्णुचन्द्र जी, बीसलारोड अजमेर। यह भी एक अति सज्जन व्यक्ति है जो श्री मानकरण जी शारदा की अति प्रतिष्ठा करते हैं।

२१–डा० मङ्गलदेव जी शास्त्री इंगलिशिया लाइन, वाराणसी।

२२–पं० उदयवीर जी शास्त्री बडी होली, गाजियाबाद।

स० २१ और २२ के मेम्बर पं० है वे स्वयं जो ठीक समझते हैं कहते और करते हैं।

२३—श्री डा० मानकरण जी शारदा, शारदा भवन अजमेर.

श्री डा० मानकरण जी शारदा सबसे पुराने तजुर्बेकार भुक्तभोगी अनुभवी है और उन्हें कुछ अनुभव पण्डितो का है अत. वे यह कह देते है कि मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता है मैं कुछ नहीं कर सकता। मै भी समझता हू कि डा० मानकरण जी का यह मार्ग अति प्रशस्य है। श्री डा० मानकरण जी धूर्त पण्डित की अपेक्षा मूर्ख अपण्डित को अच्छा समझते हैं आखिर और करें भी क्या। आज के युग मे सभी आर्यसमाज के पण्डित हैं जो चाहे स्वामी जी को मूर्ख समझते हों और अपने को महापण्डित वे भी आर्यसमाज के पण्डित हैं। विवेक कोई कर नहीं सकता कि कौन ऋषिभक्त है कौन ऋषिद्रोही।

परोपकारिणी सभा को जब कोई पण्डित नहीं मिला तो एक वैद्य नौजवान अजमेर मे थे जिनकी वैद्यक भी नहीं चलती थी सस्कृत पढे है नहीं हिंदी की किताबों से वैद्यक सीखी थी उन्हे ऋषि ग्रन्थों के हस्तलेखो के मिलान के लिए रख लिया। अब वे सम्पादन भी करने लगे ऐसा यदि वे न करने तो अच्छा था। इन्हीं महानुभाव ने सत्यार्थ प्रकाश का ३४वा सस्करण छापा जिसमे ब्रेकटो की भरमार कर दी इनका नाम है धर्मसिंह जी कोठारी इनके घर के लोग आर्यसमाजी हैं अतः वे समझते हैं कि मैं जन्मसिद्ध पण्डित भी हू इन्होंने सत्यार्थप्रकाश का ३४वां सस्करण बिगाडा और सस्करण विधि का भी सम्पादन करने बैठ गये तब मैंने अजमेर जाकर रोका है पर १६ हजार प्रतियां दो फार्म छप चुके हैं धर्म सकट मे परोपकारिणी सभा है कि इनका क्या करू', ये सारी कठिनाइयां परोपकारिणी सभा के सामने हैं ऋषि के अप्रकाशित ग्रन्थ कैसे छपे कौन सम्पादन करे और कौन क्या करें। मै श्री डाक्टर मानकरण जी शारदा की कठिनाइयो को समझता हू कि उनकी समझ मे ही नहीं आता कि क्या करें। अत ऋषि के अप्रकाशित ग्रन्थ जो रखे है उनका सम्पादन न श्री करण जी कर सकते है और न मानकरण जी न प० भगवान स्वरूप जी ही क्षमता है इसके अतिरिक्त एक और कठिनाई यह है कि उन अप्रकाशित ग्रन्थो मे कुछ ऐसे पारिभाषिक शब्द ऋषि ने इस्तेमाल किये है कि जिन के कारण यह भी खतरा है कि उनके छपने से मिथ्या भ्राति भी फैल सकती है अतः न छपना ही ठीक है। मै अबकी जब अन्तिम बार अजमेर गया था मैंने आठ-नौ डिजाइन चतुर्वेद विषय सूची के सम्पादन के परोपकारिणी सभा को दिखाये यदि उस प्रकार चतुर्वेद विषय सूची न छापी गई तो हानि भी होगी और जो मैने प्रकार बताया है वैसे यदि छापी गई तो वह महान श्रेयस्कर ग्रंथ होगा।

अबकी बार मैने चतुर्वेद विषय सूची ग्रन्थ को रातो रात जगकर सारा पढ और पढ़ते २ कभी कभी रो भी लेता था कि मेरे ऋषि के बहुत अक्षर अनेक स्थानो पर पढने मे नहीं आते हैं कि मेरे ऋषि ने क्या लिखा है। बहुत भाग नष्ट भी उपेक्षा से हो गया है। अबकीबार वेदार्थ यत्नभाष्य का एक भाग भी मैने ढूढ़ कर परोपकारिणी सभा को दे दिया है जो वही सग्रह मे फटा पुराना पड़ा था। ऋषि का सामान बहुत है परोपकारिणी सभा मे कोई ऐसा व्यक्ति नहीं जो सबको एक बार देख भी सके कि वहा क्या क्या है अतः यही मार्ग परोपकारिणी सभा के लिये ठीक है कि कह दे कि हमारे पास कुछ है ही नहीं। न कोई अमुद्रित ग्रन्थ ही ऋषि का हमारे पास है। वर्तमान निराशा स्थिति में मै सब परोपकारिणी सभा के अधिकारियो को धन्यवाद देता हू कि उन्होने सब सुविधाए आजतक दी। मै सब ग्रथ पढता देखता रहा अब मेरा दृढ निश्चय हो गया कि ग्रन्थ छपेंगे नहीं हालात ऐसे हे मैंने भी इच्छा छोड दी।

कुछ चोर पण्डित ऋषि के अप्रकाशित ग्रंथो की नकल करके भी ले गये हैं और वे लोग डर से उनको नहीं छाप रहे है एक समय आवेगा कि वे ढग से उनको छापेंग और अनर्गल बात बकेगे जैसे ये लोग जाली खत ब्रह्मचारी रामानन्द आदि का बनाकर छाप रहे और लाहौर में भी यह जाल रचा जाता रहा है। यही जाल अप्रकाशित ग्रथो के छापने मे भी होगा। यह मेरी भविष्यवाणी है सार्वदेशिक सभा का वातावरण क्षुब्ध और राजनीतिक है वे क्या करेंगे इस निराश स्थिति मे मैने यह निश्चय किया कि अब अजमेर कभी नहीं जाना और छाती पर पत्थर रख कर ऋषि के हस्तलेख और अमुद्रित ग्रथों को देखने की इच्छा छोड़ दी।

ओं नमो मूर्खभक्तेभ्यः धूर्त पण्डितेभ्यश्च।

धन्य है तुझको ऋषि महान्

धन्य है तुझको ऋषि महान्
मिटाया तूने था अज्ञान।
अमर सेनानी तू बलिवान
आज जग करता तव सम्मान॥

ज्ञान बिन लोग हुये नादान
ढोंग रच करवाते सम्मान।
सभी को था मिथ्या अभिमान
मिटाया जग से ढोंग निशान॥

अरे मेरे भारत सरताज!
वेदोद्धार की थी आवाज।
वैदिक धर्म की रख दी लाज
बनाया तूने आर्यसमाज॥

करूं कितना भी तव गुणगान
अल्प सब होगा रे मतिमान!
दिया तूने जग,जीवन दान
अत. ऋषियो में ऋषि महान्॥

जान पाया था जीवन मोल
सभी से हित की वाणी बोल।
खोल मिथ्या पन्थों की पोल
दिया प्याला अमृत का घोल॥

आर्य जाति थी सब म्रियमाण
दिया था फूंक सभी मे प्राण।
एक था छोड़ा ऐसा बाण
हुआ जिससे धर्म का त्राण॥

नियम दश हुये अटल समाज
राजों का था तू महाराज।
यही है दुनियां की आवाज
आज है जिससे आर्यसमाज॥

किया प्रभुवर को उसने प्यार
मात-पित छोडा था घरबार।
किया था ऋषि ने वेदोद्धार
शिक्षा ग्रहण करो नर-नार॥

जगत को आर्य बनाना है
ऋषि सन्देश सुनाना है।
वेदो को पढ़ना-पढ़ाना है।
ऋषि ऋण हमें चुकाना है।

आओ आर्यो एक हो जाओ
छल छिद्रो को दूर भगाओ।
जग मे ज्ञान की ज्योति जगाओ
मानवता का पाठ पढ़ाओ॥

कभी तो किसी के गुण लेरे!
पर उपदेश कुशल बहु तेरे।
माना अवगुण बहुत हैं मेरे
फिर भी जो गुण हों लेरे!॥

सुनो ऋषि मुनियो की सन्तान
मिटा दे जग का शेष अज्ञान।
दयानन्द! रख दी धर्म की शान
धन्य है तुझको ऋषि महान्॥

★ब्र० धर्मदेव आर्य शास्त्री, गुरुकुल सिरसागंज

कूटनीतिक षड्यन्त्र का शिकार कच्छ

★

प्रो० आनन्दप्रकाश एम. फार्म
उपमंत्री आ० प्र० सभा उत्तरप्रदेश

कच्छ न्यायाधिकरण के निर्णय से उत्पन्न जन-आक्रोश को दबाने के लिए भारत सरकार के प्रवक्ता ने पिछले दिनों जनता को संयम और विवेक से काम लेने की सलाह दी है। अनेक अंग्रेजी के समाचार पत्र भी इसी प्रकार की पैरवी बड़े जोर शोर से कर रहे हैं। उनके अनुसार हमें यह मानकर चलना चाहिये कि न्यायाधिकरण का फैसला कुल मिला-कर हमारे ही पक्ष में है। क्योंकि भारत ने कच्छ का रन १०० प्रतिशत अपना बताया था और उसका ९० प्रतिशत स्वामित्व स्वीकार कर लिया गया, जबकि पाकिस्तान का दावा ५० प्रतिशत का था और उसे १० प्रतिशत ही दिया गया है। यानी हमारा दावा ९० प्रतिशत मान लिया गया और उसका कुल २० प्रतिशत। इस प्रकार के आंकड़े प्रस्तुत कर अपनी विजय प्रदर्शित करना और जनता को भ्रम में डालने का प्रयास किसी भी सरकार के लिये शोभा दायक नहीं हो सकता। इसे विजय न कहकर केवलमात्र अन्तर्राष्ट्रिय वचनबद्धता की मजबूरी कहा जाये तो कुछ हद तक ठीक हो सकता है। पर उसमें भी यह प्रकाश डालना होगा कि हम अन्तर्राष्ट्रीय मजबूरी के नाम पर किसी कूटनीतिक षड्यन्त्र के शिकार तो नहीं बन रहे है।

कच्छ समझौते का विवरण ज्ञात होते ही भारत सरकार की कथनी और करनी में एक विचित्र प्रकार का विरोधाभास प्रतीत हुआ जिससे पता लगता है कि भारत सरकार अन्दरूनी तरीके से इस षड्यन्त्र से भलीभांति परिचित है पर अपनी बद्धू नीति के कारण ही कुछ कह सकने में असमर्थ है। क्योंकि वह ऐसा महसूस करती है कि यदि इस निर्णय को स्वीकार करे तो भारतीय लोकमत असंतुष्ट होगा और न माने तो पाकिस्तान नाराज हो जावेगा। न्यायाधिकरण का निर्णय प्रकाशित होते ही प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने कहा था कि यह एक गम्भीर मामला है इसमें अंतिम निर्णय लेने के पूर्व न्यायाधिकरण के विस्तृत निर्णय और राष्ट्रीय हितों का पूर्ण ध्यान रखा जावेगा। परन्तु जब पाकिस्तान रेडियो ने अनर्गल प्रचार आरम्भ किया और अयूब खां ने लाल-पीली आंखें दिखाई तो प्रधान मंत्री ने झट से लोकसभा में घोषणा कर दी कि भारत इस निर्णय को स्वीकार करने के लिये वचनबद्ध है। पर इतना अवश्य मालूम होता है कि भविष्य में अपनी स्वामित्व और सत्ता को विवादास्पद मानने और पंचों को सौंपने का साहस सरकार फिर कभी नहीं करेगी। जहां तक वचनबद्ध होने का प्रश्न है इसमें दो मत नहीं कि अंतर्राष्ट्रिय निर्णयों को यदि सदस्य राष्ट्र न माना करें तो उनका कोई महत्व नहीं रह जावेगा। परन्तु यह बात दोनों पक्षों पर लागू होनी चाहिये। पहले पाकिस्तान को चाहिये कि सुरक्षा परिषद के निर्णय को मानते हुये अधिकृत काश्मीर के भू भाग को खाली कर इस बात का प्रमाण प्रस्तुत करे कि उसे भी अंतर्राष्ट्रीय निर्णय का महत्व है या नहीं। इसके साथ ही यह सोचना कि पाकिस्तान से सम्बन्ध मधुर बनाने के लिये इस भूभाग को दे देना उचित होगा भी सरासर गलत होगा। पाकिस्तान में शेष रह गये हिंदुओं को जिस प्रकार नारकीय जीवन व्यतीत करना पड़ रहा है और पाकिस्तान रेडियो का प्रचार और विदेशी प्रचार का समस्त तंत्र जो सदा भारत के विरुद्ध घृणा की धुरी पर ही घूमा करता है इन सब बातों को बंद करने का स्पष्ट आश्वासन मिलना चाहिये। पर ऐसे आश्वासनों की कल्पना कौन करे, कच्छ निर्णय की स्याही सूखने से पहले ही पाकिस्तान ने कूच बिहार तथा अन्य स्थानों पर भी अपना दावा स्थापित करना प्रारम्भ कर दिया है।

राजनैतिक समस्याएं

सम्बन्ध सुधारने के लिये यह आवश्यक है कि वह सभी प्रश्न हल कर लिये जावें जिनके कारण कटुता उत्पन्न हुई है और होती रहती है। पाकिस्तान पर विभाजन के समय का करोड़ों रुपया शेष है जो कि उसे दे देना चाहिये। इसी प्रकार से हिंदुओं द्वारा छोड़ी गई सम्पत्ति का निर्णय हो जाना चाहिये। पाकिस्तान की ओर से समय समय पर जो छुटफुट घुस पैठ की जाती है, सीमा पर निरंतर संघर्ष बनाये रखने हेतु सैनिक गतिविधियां चलती रहती हैं।

जिस प्रकार से इस न्यायाधिकरण के निर्माण द्वारा भारत सरकार को ठगा गया है, यह जान लेना आवश्यक है। भारत के भूतपूर्व विदेश मन्त्री श्री मोहम्मद करीम छागला ने, जो एक प्रमुख विधि विशेषज्ञ भी हैं, राज्य सभा में स्वीकार किया कि यह निर्णय कानूनी न होकर राजनैतिक है। उन्होंने भारत सरकार से इसप्रकार का निर्णय न मानने की सलाह दी। अनेक प्रमुख विरोधी दलों ने भी इस निर्णय को राष्ट्रीय हितों के प्रतिकूल बताया। कच्छ न्यायाधिकरण की कार्यवाही के समय कच्छ की सीमा सम्बन्धी कागजातों और नक्शों का गुम होना भी रहस्य पूर्ण था। इतना ही नहीं न्यायाधिकरण की नियुक्ति की पृष्ठभूमि में इस प्रकार की चर्चा सुनाई दी थी कि सरदार स्वर्णसिंह ने सम्पूर्ण तथ्यों को भी लालबहादुर शास्त्री के सम्मुख नहीं रखा था। इसके बाद न्यायाधिकरण ने यह स्वीकार करने पर भी कि मानचित्रों, दस्तावेजों और सर्वेक्षणों के आधार पर कच्छ का रन प्रदेश भारत का है, केवल मात्र व्याव-हारिक कब्जे के नाम पर और दो पड़ोसी देशों के मध्य शांति बनाये रखने के लिये ही ३०० वर्गमील का प्रदेश पाकिस्तान को देना स्वीकार किया है। न्यायाधि-करण का निर्णय भी सर्वसम्मत नहीं युगोस्लाविया के न्यायाधीश ने उससे अपनी असहमति प्रकट की। अत: इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए और इस प्रकार के निर्णय को राजनीति से प्रेरित होकर राजनीति और कूटनीतिक षड्-यंत्र से प्रेरित मानते हुये, भारत सर-कार को उसे अस्वीकार करने में तनिक भी हिचकिचाहट नहीं होनी चाहिये।

अंतर्राष्ट्रीय वचन बद्धता के साथ ही कुछ अन्य थोथे दलीलें भी दी जा रही है। कहा जा रहा है कि वह निर्जन स्थान है। लद्दाख के सम्बन्ध में भी यही बात तत्कालीन प्रधान मंत्री नेहरू जी ने कही थी। मातृभूमि के प्रति सच्ची आस्था रखने वाला कोई भी व्यक्ति इस प्रकार की बात नहीं कह सकता। दूसरी दलील यह दी जा रही है कि यह प्रदेश चारों ओर से पाकिस्तानी भाग से घिरा है, अत: वहां की सुरक्षा का प्रबन्ध आसानी से नहीं किया जा सकता। क्या इसी आधार पर पाकिस्तान को पूर्वी पाकिस्तान के साथ भारत को समर्पित नहीं कर देना चाहिये कि वह चारों ओर से भारत से घिरा है। हमारे राष्ट्र नेता इस प्रश्न को केवल मात्र सीमा सम्बन्धी विवाद का मसला कहते और इस प्रकार बिना संविधान में परिवर्तन किये कच्छ का ३०० वर्गमील का प्रदेश देने की कुचेष्टा कर रहे हैं। सर्व विदित बात है कि कांग्रेस को लोकसभा में इतना अधिक बहुमत नहीं है कि वह सरलता से संविधान में परिवर्तन करा सके। पर यदि इस प्रकार कोई भी राष्ट्र विरोधी कार्य सरकार ने यही लोक प्रियता अर्जित करने के लिए किया, तो उसका पतन अवश्यम्भावी है। ●

बढ़े चल, चले चल

सामाजिक समस्याएँ

★

जीवन एक यात्रा है। सामवेद के ५१वें मन्त्र में यह बात कही गई है—

ओ३म् प्र दंबोदासो अग्निर्देव इन्द्रो न मज्मना।
अनुमातर पृथिवीं विवावृते तस्थौ नाकस्य शर्मणि॥

इसका भाव है कि इस पृथ्वी रूपी माता के पास रहने के पश्चात् सब लोग लौट जाते हैं। यह हमारा घर नहीं, यह हमारा लक्ष्य नहीं, हमारा घर तो ब्रह्मलोक है, वहीं हम सबको जाना है। उसी की ओर यातना करते हुए हम चले जा रहे हैं। सचमुच यदि हम देखें तो पृथ्वी, सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र सब चल रहे हैं। चलते रहना, यात्रा करते रहना ही जीवन है। मनुष्य दिन रात सायं निरंतर यात्रा कर रहा है। इसीलिए किसी ने कहा है—

हर सुबह सफर हर शाम सफर।
इस जीवन का है नाम सफर॥

दूसरे कवि ने भी इसका समर्थन करते हुये लिखा हैं—

सफर दर पेश है गाफिल,
तुम्हें इस दारेफानी से।
लगा दिल रो न दुनिया से,
न ऐशो कामरानी से।
चलेगा काम कब तक जोर से,
जर से जवानी से।
किनारा एक दिन करना,
पड़ेगा जिन्दगानी से।
सराय दर में महमां,
फकत तू रात भर का है।
कमर बांधे हुए तैयार रह,
आलम सफर का है।

जब हम यात्री हैं तो जीवन पथ के यात्री को चैन कहां है? बिना अपने घर पहुंचे हम भटके हुए बालकों को शांति कहां मिले? आओ, अपनी इस यात्रा को पूरा करने के लिये दिन रात उठते बैठते चलते फिरते सोते जागते हर समय कमर कसे रहें। हर समय जागते रहें, आगे बढ़ने को सदा सावधान रहें। यहाँ विश्राम और शांति खोजना व्यर्थ है। पथिक को मार्ग में रजा और आनन्द कहाँ है? हमें बैठने का अवसर कहां है? जीवन पथ के यात्रियों, आओ अपने घर की तलाश में अपने लक्ष्य की पूर्ति में अनवरत, अनथक परिश्रम करते हुये आगे ही आगे चलते चलें, जब तक हम अपने घर की पावनी ज्योतिर्मयी दिव्य भूमि पर न पहुंच जांय, जहां अनल तेज, अगाध शांति, अम्लान चैतन्य, अपार सौंदर्य और असीम आनन्द हमारा स्वागत करने के लिये हमारी बहुत समय से अनादि काल से प्रतीक्षा कर रहा है।

वेद मन्त्र ने पहुचने के स्थान अर्थात् मानव जीवन का लक्ष्य ब्रह्म प्राप्ति को बतलाया है। इस ब्रह्मलोक के यात्री को उस मार्ग का ज्ञान कराते हुये कहा गया है—

वेदाहमेत पुरुषं महान्तमादित्य-वर्णं तमसः परस्तात् तमेव विदित्वाऽ-तिमृत्युमेति नान्यः पन्था. विद्यते अयनाय।

(तमस परस्तात्) जो अन्धकार से परे (आदित्यवर्णं) सूर्य के समान तेजस्वी और (महान्त पुरुष) महान् पुरुष है उसको (अहमेव) मैं जानता हूं। (तमेव विदित्वा) उसको जानने से (मृत्युं) मृत्यु के (अत्येति) पार हो सकता है। (अयनाय) मृत्यु को दूर करने का (अन्य. पन्था) दूसरा कोई मार्ग (न विद्यते) नहीं है।

सम्पूर्ण देवों में कौन मुख्य देव है कि जो मनुष्यों को मुक्ति के मार्ग पर आगे बढ़ा ले जाता है। संपूर्ण देवों में कौन मुख्य देव है। जिसका नाम लेने से मनुष्य कृतार्थ हो जाता है? और वह देव कौन है जिसकी कृपा से जन्म प्राप्त होकर उन्नति के साधन हमें प्राप्त होते हैं। वह देव कौन सा है जिसको देखकर हम आगे बढ़ते हैं? वह देव अग्नि देव है। उसी को वेदों में अनेक नामों से पुकारा गया है। वहा पर लिखा है—

तदेवाग्नि स्तदादित्यः तद् वायु तदु चन्द्रमा।
तदेव शुक्रं तद् ब्रह्म ता आपः स प्रजापतिः

वह अग्नि है आदित्य है वह और वह चन्द्रमा है। उसे ही शुक्र उसे ही ब्रह्म, उसे ही आप और उसे ही प्रजापति कहा गया है। उस अग्नि स्वरूप परमेश्वर की दिशा प्राची है। प्राची शब्द 'प्र' उपसर्ग पूर्वक 'अञ्च्' धातु से बना है। 'प्र' का अर्थ आगे बढ़ना व उत्कर्ष है। 'अञ्च्' धातु का अर्थ है 'गति करना'। इस प्रकार 'प्राची' शब्द का अर्थ आगे बढ़ना, व उन्नति की ओर गति करना है। जीवन की दौड़ में आगे उन्नति के लिये प्रयत्न करना, पुरुषार्थ करना जीवन साधक का प्रथम लक्ष्य है। जिस हृदय में आगे बढ़ने की महत्वाकांक्षा उत्पन्न नहीं होती, जिसके हृदय में 'प्रथमं नो रथ कृधि" (ऋग्वेद ८-१०-५) 'हे प्रभो, मेरे जीवन रथ को आगे कर दो' वह जीवन शून्य है, वह जीवन मृतवत् हैं, वह जीवन, जीवन नहीं मरण है। जिसकी दिशा प्राची नहीं, जो प्राची नहीं, जो आगे बढ़ने का संकल्प नहीं करता वह अग्नि-अग्रणी भगवान की उपासना नहीं कर सकता? सच्ची उपासना कर सकने के लिए, साधक अनथक प्रयत्न व पुरुषार्थ करना अपना प्रथम प्रण निर्धारित करता है। वेद भगवान ने इसी लिये तो आज्ञा दी है "कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेत् शत समा." "ए मनुष्य! तू कार्य करता हुआ सौ वर्ष जीने की इच्छा कर।" महात्मा तुलसीदास ने भी इसी स्वर में अपना स्वर मिलाकर लिखा है "कर्म प्रधान विश्व रचि राखा" संसार कर्म भूमि है। इस कर्म भूमि में जिसने आगे बढ़ने से अपने लक्ष्य को भुला दिया वह अग्नि परमेश्वर तक नहीं पहुंच सकेगा और मार्ग में ही रह जायगा। अर्थात् उसे मोक्ष का लक्ष्य नहीं मिल सकेगा।

यदि हम संघर्ष में घबराने लगें, काम से रुकने लगें तो उस समय उसे दूर करने का प्रयत्न करना चाहिये। सदा याद रखिए कि आपके शरीर में एक ऐसी अलौकिक शक्ति है जो कभी भी किसी भी बुराई या निराशा के आगे हार नहीं सकती। अपने आपसे कहो" यदि ईश्वर ने मुझे बनाया है तो ईश्वर के गुण भी मुझमें अवश्य हैं। इन बुराइयों पर विजय पाने की शक्ति भी मुझ में है। यह बुराई जो मेरे स्वर्णिम भविष्य को अन्धकार पूर्ण बना रही है। मेरे पुरुषत्व का अपमान है मेरे आगे बढ़ने में रुकावट है। अब मैं इसे अपना जीवन बरबाद नहीं करने दूंगा। मैं आज से पवित्र प्रण लेता हूं कि कभी भी इस बुराई को जीवन में स्थान नहीं दूंगा। इस अकर्मण्यता को हृदय से निकाल बाहर करूँगा। यह मेरे अग्नि पर ईश्वरीयता पर धब्बा लगाती है और जीवन भर के लिए मुझे असफलता और अपमान के गहरे गर्त में गिराकर आगे बढ़ने से— लक्ष्य तक पहुंचने से रोक देती है। अतः मैं इसे निकाल बाहर करूँगा।"

एडिसन से जब उसके मित्रों ने शराब पीने का आग्रह किया तो वह उससे कैसे बचा यह बताते हुए उसने लिखा "मैंने सोचा, अच्छा हो कि मैं पहले विचार कर लूं। मैं अपनी सम्पूर्ण शारीरिक और मानसिक शक्तियों का लाभ उठाना चाहता था। इसलिये उन्नति के इस महान् शत्रु शराब को मुंह में लेकर मैं अपने भविष्य को अंधकार मय और प्रतिक्रियावादी नहीं बनाना

★ सुरेशचन्द्र वेदालंकार
एम० ए० एल० टी०

चाहता था। तब मैंने दृढ़ निश्चय से कहा मैं मनुष्यता के इस महान् शत्रु शराब को छुऊँगा नहीं।" इसी एडीसन ने ग्रामोफोन, बिजली के बल्ब आदि अनेक वस्तुओं का आविष्कार कर परमेश्वर के अग्नि रूप की उपासना की। जीवन में आग का यही मार्ग है।

प्रत्येक मनुष्य ईश्वरीय शक्ति का स्वामी है। अगर वह अपनी इस शक्ति को पहचान लेता है तो वह संसार में आश्चर्य जनक कार्य कर लेता है। वे जो अपनी इस अनुपम शक्ति को नहीं पहचानते हैं और जिन्हें अपने आप पर विश्वास नहीं है, वे जीवन में सौभाग्य के अवसर आने पर भी उनको हाथ से खो बैठते हैं। यह दुनिया कर्मशील व्यक्तियों के लिए है। जो कर्म करते हैं वे ही संसार के नेता हैं और उनको संसार से नेतृत्व प्राप्त होता है। फोर्ड मोटर गाड़ियों के स्वामी हेनरी फोर्ड का प्रारम्भिक जीवन अत्यन्त निर्धन था। संसार में उसके पड़ोसी उनसे अधिक बुद्धू व्यक्ति की कल्पना भी नहीं कर सकते थे। एक बुद्धू विद्यार्थी के रूप में वह स्कूल से भागा, एक बुद्धू कर्मचारी की तरह एक कारखाने में १० रुपया सप्ताह के हिसाब से नियुक्त हुआ, एक बुद्धू आदमी के रूप में उसने खेती सभाली और एक बुद्धू पति के रूप में उसने विवाह किया। एक दिन कृषि विषयक पत्र पढ़ते हुये एक बिना घोड़े वाली गाड़ी का चित्र देखा। उसने ऐसी गाड़ी के चित्र बनाने शुरू किये। उन चित्रों को देखकर उसकी पत्नी उसका मजाक उड़ाया करती। एक दिन उसने गाड़ी में एक पुराना इञ्जन जोड़कर गाड़ी बनाई। उसकी चाल देखकर लोगों ने उसकी मजाक उड़ाई लड़कों ने पत्थर और धूल फेंकी और उसे वहां से हटकर दूसरी जगह जाना पड़ा। वह असफल हुआ। दूसरे स्थान पर जाकर उस

सफलता के लिये प्रयत्न किया। यह प्रयत्न ही अग्निदेव की सच्ची उपासना है। आगे बढ़ने का मूल मन्त्र है, चले चल, करे चल का मूल सिद्धान्त है, निरन्तर लगे रहने वालों के हाथ में सफलता आती है। उसने गाड़ी को जो बिना घोड़ों के सड़क पर चल सके, प्रयत्न द्वारा बनाने का अपना कार्यक्रम जारी रखा और आठ वर्ष तक लगातार प्रयत्न करने के बाद उसे सफलता मिली। और आज उसकी गाड़ियां ससार के हर कोने मे हैं। यह ससार का सर्वश्रेष्ठ धनाढ्य, आविष्कारक और एक विशाल कारखाने का मालिक हैनरी फोर्ड है— इसे कौन नहीं जानता ?

ईश्वरीय स्रोत से अलग होने का विचार हमे निर्माण की सारी शक्तियों से वचित कर देता है आगे बढ़ने की सभी अवस्थाओ का अन्त कर देता है। हमारी सभी निर्बलताओ, बीमारियों, दु खो और कष्टों का कारण यह है कि हम उस प्रभु से जिसे प्राप्त किये बिना सुख नहीं पाया जा सकता अपने को अलग कर लेते हैं। जब भी मनुष्य इस ईश्वर से अलग हो जाता है तब वह मनुष्य नहीं, शैतान बन जाता है। तब उसके पाव उसे अवनति की ओर ले जाते हैं और विचार पतन की ओर। सच तो यह है कि ईश्वर ने प्रकाश में कदम रखते ही मनुष्य की सभी दुर्बलतायें, सब पाप, सूर्य के सामने अन्धकार की तरह नष्ट हो जाते हैं।

स्वामी रामतीर्थ ने एक बादशाह की कहानी लिखी है कि उसने अपने एक कमरे मे एक सींग लटकाया हुआ था। उसके खोल मे पानी भरा हुआ था। बादशाह ने यह घोषणा कर रखी थी कि जो इस सींग का पानी पी लेगा उसे मै अपना आधा राज्य दे दूंगा। बहुत से आदमी आए परन्तु उस पतले से सींग का पानी कोई न पी सका। वे असफल हुए। सींग ऊपर से देखने में छोटा सा था, पर उसका सम्बन्ध सागर से था। इस कथा की तरह हमारी देह छोटी सी थी पर जब उसका सम्बन्ध रूप परमात्म रूप सागर से जोड़ देते हैं तब उसकी शक्ति असीम और अनन्त हो जाती है। स्वामी रामतीर्थ ने एक दृष्टान्त और दिया है तथा बताया है कि फ्रान्स जर्मनी के युद्ध में बादशाह फैडरिक हार गए। शत्रु किले मे घुसकर रगरलिया करने लगा। परन्तु फैडरिक को निश्चय था कि परमात्मा उसके साथ है। उसने हिम्मत न छोड़ी। उसने अपने सैनिक एकत्र किये कुछ को एक टीले पर और दूसरों को दूसरे टीले पर खड़ा किया। शत्रु सैनिकों से जाकर कहा—

हथियार रख दो !

सैनिकों ने पूछा क्यों ? उसने कहा देखते नहीं मेरे सैनिक चारों ओर तुम्हें घेरे बैठे हैं ? शत्रुओं ने हथियार रख दिये।

स्काटलैंड का एक बालक वहा से भागकर लन्दन चला गया। और वहा के मेयर के बगीचे मे जाकर खेलने लगा। उधर मे उसी समय एक बिल्ली निकली। बालक उसकी पूछ पकड़कर कहने लगा। कुछ क्षण बाद पास से ही घटे बजने की आवाज आई। वह बालक बिल्ली से बातें करता-करता कहने लगा—

ह्वाट इज दी मैड बैल से
टन ! टन ! टन !
ह्विटींगटन ह्विटींगटन
लार्ड मेयर आफ लन्दन।

अर्थात् यह पागल घंटी क्या कह रही है ? यह कहती है—टन ! टन !! टन !!! ह्विटिंगटन, ह्विटिंगटन लार्ड मेयर आफ लन्दन ! उसी समय लन्दन का लार्ड मेयर वहां पहुंचा। उसने प्रसन्न होकर उसे रख लिया। उसने खूब प्रयत्न से विद्या प्राप्त की और एक दिन लन्दन का लार्ड मेयर बना।

हम में अपने यह विचार घर कर गया है कि—

हमको चाकर राखो जी !
अथवा—
मै गुलाम मै गुलाम ! मै गुलाम तेरा।
तू दीवान, तू दीवान, तू दीवान मेरा ॥

तब से हम अकर्मण्य हो गये। यदि जीवन मे सफलता प्राप्त करना चाहते हो तो कभी घबराओ मत, ईश्वर मे विश्वास रखते हुये 'करे चल' चले चल' 'बढ़े चल' इस मन्त्र को सामने रखकर बढ़े चलो। बढ़े चलो। ऐ परम यज्ञ के याज्ञिक ! ऐ अनन्य पथ के पथिक ! ऐ दिव्य यज्ञ के योद्धा वीर, आजकल यही मन्त्र होना चाहिये ! तेरे अन्तरतम को पुकार यही है। अग्नि रूप प्रभु का यही आदेश है। पर इस ऐतरेय ऋषि के 'चरैवेति चरैवेति' आगे बढ़ो—के मन्त्र की सफलता बिना प्रभु में श्रद्धा और विश्वास के नहीं हो सकती। लक्ष्य भी तो वह प्रभु ही है। लक्ष्य पूर्ति की अवश्यंभाविता तभी सम्भव है जब उसमे अविरल विश्वास हो, वह तेरी श्रद्धा की अडिग चट्टान पर खड़ा हो। इसलिये हे प्रभो ! तू मुझे मेरे प्रयत्नों की सफलता का विश्वास दिला दे। तू मुझे दिखा दे कि जिस अंधेरी सुरंग में से हम गुजर रहे हैं वह समाप्त होने वाली है और उसके अन्त मे खुला विस्तृत प्रकाश है। तू मुझे आश्वस्त कर दे कि जिस सघर्ष में हम जूझ रहे हैं उसमे हमारी विजय अवश्यंभावी है तू ने पहले से कर रखी है, हमे तो इसमे से गुजरना भर ही है। कविवर 'योगी' के शब्दों मे हमे यह समझ लेना चाहिये—

रात तुम्हें दे स्वप्न प्रगति के,
दिन मे आगे कदम बढ़ाओ।

टीक कि लहरों के विरुद्ध,
चलने मे घोर थपेड़े लगने।
जीर्ण शीर्ण हो जाती नौका,
अग अंग नाविक के दुखते
किंतु विरोध करे लहरों का,
मित्र, प्राण की यही निशानी
यदि बहते जाय जड़ होकर,
प्राणो की हस्ती बेमानी।
सास दिये जिसको स्रष्टा ने
बढ़े लक्ष्य की ओर वेग से
बहें स्वेद लहरें टकरायें,
लक्ष्य करे अगवानी—आओ।
एक सांस जब अन्दर आता,
कहता बढो उठो रे उलझो
महा शक्ति अन्दर है आई,
अरे सास की कीमत समझो
बिना लक्ष्य की ओर बढाये
सास जबकि बाहर आता है
व्यर्थ न जा सकता वह
मानव को अन्दर से खा जाता है।
आओ बढ़े नहीं नहीं
उन नाचीजो मे अपना नाम लिखायें
शाति गीत अत में होगा,
अभी युद्ध के गीत सुनाओ

रात तुम्हें दे स्वप्न प्रगति के
दिन मे आगे कदम बढ़ाओ।

आखो मे निश्चय, गति पद मे,
स्वेद बिंदु मस्तक पर सुन्दर
पूर्ण अडिग विश्वास हृदय मे,
और कण्ठ मे जयजय का स्वर।
अतर मे मानव आत्मा की,
सीमा हीन शक्ति का सागर
सम्मुख धरती से अम्बर तक
लहरें ज्योति उमिया भरकर
नित्य नई आशा का स्वागत,
करने को हो प्रस्तुत मनाते
आने सघर्षों के पथ पर
विजय गीत से गगन गुंजाओ

रात तुम्हें दे स्वप्न प्रगति के,
दिन मे आगे कदम बढ़ाओ।

अन्तर की चाह

ऐ मेरे प्रभु ! ऐसी लगन लगा दे,

निशिदिन छिन-छिन तेरे ही गुण गाऊं।
तू है सत्य स्वरूप, सत्यता में भी अपनाऊं।
तू प्रकाश का पुंज, ज्योति धरती पर बिखराऊं ॥
तूने देकर ज्ञान मनुज पर की है अनुकम्पा,
तू है दीनबन्धु, दुख दुखियों के मैं हर लाऊं

उर मे भगवन ! ऐसी जलन मचा दे,

पर-पीड़ा मे किंचित् चैन न पाऊं ॥ १ ॥
नाम तुम्हारा छोड़ भला मैं और कहां जाऊं !
जग मे दूजा कौन जिसे मैं अपना कह पाऊं !
तूने दिये महान दान मानव के पुतले को,
जिनका सहज बखान प्रभो ! मे कैसे कर पाऊं !!

मुझमें हरदम वो तड़पन उपजा दे,

स्वाति बूंद तू, मैं चातक बन जाऊं ॥ २ ॥
भौतिकता मे भूल नहीं मैं तुझको बिसराऊं।
पा कुछ सुरभित फूल मूल को कहीं न खो आऊं।
मुझे न भाते हैं आकर्षक बंदी जीवन के,
चाह यही है कारा से छूल तुझसे मिल जाऊं ॥

उर अशाति की प्रियतम तपन मिटा दे-
चख लूं तेरा अमिय तृप्त हो जाऊं ॥ ३ ॥

—प्रतापकुमार सक्सेना 'साहित्य रत्न' गोंडा

वैदिक काल का ह्रास

★ पं० शिवनारायण वेदपाठी
तर्कशिरोमणि

आज संसार के सभी विद्वान एक मत से यह स्वीकार करते है कि संसार मे सबसे प्राचीन ग्रन्थ वेद हैं, इसलिए वैदिक काल या उस काल की मान्यतायें किस प्रकार समाप्त हुई इसका जानना आवश्यक है हमे महाभारत के युद्ध पर ध्यान देने से प्रतीत होता है कि यह युद्ध दो प्रकार की भावनाओं का परिणाम है, पहला यह कि पाण्डवो व कौरवो मे पाण्डव ज्येष्ठ थे और उन्हीं को राज्य का अधिकार मिलना चाहिए किन्तु दुर्योधन ने अहकार पूर्वक यहा तक कह डाला कि 'सूच्यग्रं न दास्यामि बिना युद्धेन केशव.' अर्थात् हे केशव ! सुई की अग्रभाग की भूमि भी बिना युद्ध के मैं नहीं दूंगा। इस कथन का प्रभाव उन लोगो पर विशेष पड़ा जो राजनैतिक विचारधारा के थे ऐसे लोगो ने सोचा कि, युद्ध अवश्य हो, और उसमे सबको सम्मिलित होना चाहिये। दूसरा यह कि बीच सभा मे द्रौपदी को नग्न करते समय, पितामह भीष्म, गुरु द्रोणाचार्य जैसे महापुरुष बैठे थे किन्तु किसी ने दुश्शासन को नही रोका और अत्याचार को देखते रहे इस दृश्य को जिन धार्मिक पुरुषो ने देखा उनके हृदय मे इसके प्रति विद्रोह की भावना उमड़ पड़ी परिणामत महाभारत का युद्ध प्रारम्भ हो गया। आपने देखा कि राजनैतिक धार्मिक दोनो विचारधाराओ के लोग इस युद्ध मे भाग लेकर काम आये, यहाँ तक कि युद्ध के बाद भगवान कृष्ण भी एक बहेलिये के बाण से मारे गये। पाण्डव हिमालय की ओर चले गये। अब वही लोग बच गये जिन्होने इस लड़ाई मे भाग नही लिया और ऐसे लोग वह थे जिन्होने सोचा कि मैं युद्ध मे मारा जाऊँगा तो मेरी सुन्दर पत्नी विपुल भोग विलास की सामग्री क्या होगी ? अत अपने घरो मे पड़े रहे, और विलासी जीवन बिताने लगे। महाभारत के युद्धोपरान्त, इन्हीं कायर व विलासी जनो का राज्य हुआ। उसी काल मे इन्हीं लोगो द्वारा वाममार्ग सम्प्रदाय का प्रादुर्भाव हुआ जिनका सिद्धान्त पंच मकार का सेवन निर्धारित किया गया। जैसा कि उनके धर्म ग्रंथों मे लिखा है कि 'मीन मद्य च मांस च मुद्रा मैथुनमेव च। एते पञ्च मकाराः स्युः मोक्षदायकाः युगे युगे।'

अर्थ—मछली, शराब, मांस, मुद्रा (व्यभिचार की एक विशिष्ट कला) एव मैथुन यह पांच मकार जो करने वाला सदा मोक्ष प्राप्त करता है। ऐसा विचार उस काल के योग्य से प्राप्य व्यक्तियो द्वारा समस्त देश मे फैलाया गया, परिणाम निकला कि देश मे व्यभिचार एव अनाचार का साम्राज्य स्थापित हो गया। इसी काल मे इन वाममार्गी विद्वानो ने अनेक प्रकार के तन्त्र ग्रन्थों का निर्माण किया जिसमे पशुओ की बलि का भी विधान किया। तन्त्र ग्रन्थो मे ही नही अपितु वेदो के भाष्य भी तत्कालीन विद्वान महीधर एव उव्वट ने इन्हीं विषयो को प्रमाणित करने के लिए किया। यथा गोमेध अश्वमेध नरमेध अजमेध आदि पर ही सन्तुष्ट नही हुये अपितु नरमेध का भी विधान किया। जिसके कारण यज्ञो मे गाय, घोड़ा, बकरा, भेड़ आदि पशुओं को मार-मार कर आहुती दी जाने लगी और शेष मांस को प्रसाद रूप मे स्वयं ये पापी खाने लगे। समस्त देश मे शुद्ध वैदिक मर्यादा का अभाव सा हो गया। वैदिक वर्ण व्यवस्था यज्ञ, तप दान, परोपकार आदि समस्त शुभ कर्म देश से समाप्त सा हो गया। वाममार्गियो के दुराचार व अत्याचार से देश कराह उठा। यह स्थिति सैकड़ो वर्षों तक चलती रही। उसके पश्चात् वि० सवत् ६१४ वर्ष पूर्व भगवान गौतमबुद्ध का जन्म हुआ। भगवान बुद्ध वाममार्ग द्वारा उत्पन्न हिंसा के प्रतिकार के लिये उपाय सोचने लगे। गौतमबुद्ध वेदो के विद्वान नही थे, इसलिये वाममार्गियों के तर्कों का खण्डन वेदो के आधार पर न करके स्वय नई युक्तियो द्वारा करने लगे उनका सिद्धान्त क्षणिक विज्ञानवाद पर आधारित है, जिसका अभिप्राय अहिंसावाद है। वाममार्गियों के इस युक्ति पर कि अश्वमेध आदि यज्ञो का विधान वेदों मे है, और ऐसा ही ईश्वर की आज्ञा है, जो इस आज्ञा का पालन करता है उसे स्वर्ग मिलता है। गौतमबुद्ध यदि वेदों को पढ़ते होते तो, वाममार्गियो को मुहतोड़ उत्तर देते कि वेदो मे स्पष्ट 'गां मा हिंसि, अश्वमां हिंसि अजा मा हिंसि' आदि लिखा है, और जिस यज्ञ मे उक्त पशुओं का वध होता हो उस यज्ञ का पर्यायवाचक शब्द अध्वर है

(क्रमशः)

आर्य कन्या हायर सेकंड्री स्कूल बिलसी

पदलोलुपों का सफाया

सभा की शानदार विजय

प्रशासक की धर्मनिष्ठा से आर्यसमाज की पुनः धाक जम गई

स्थानीय नागरिकों में आर्यसमाज के लिये अनुकरणीय उत्साह

आर्य कन्या हा० से० स्कूल बिलसी जिला बदायूं को हड़प करने का जो लज्जास्पद और स्वार्थपूर्ण षड्यन्त्र बनाया गया था उसका जादू टूट गया धन के बल पर प्रबन्ध समिति में बहुमत बनाकर सस्था को हथियाने का एक गहरा षड्यन्त्र रचा गया। श्री [illegible] प्रधान जिन्होने बिलसी स्थित सभा की सम्पत्ति को [illegible] थी और श्री लक्ष्मीनारायण मन्त्री [illegible] कालेज को बुलाकर [illegible] और आर्यसमाज [illegible] थी, ने सभा प्रधान [illegible] विपरीत अपनी जाति की [illegible] श्रीकृष्णस्वामी को अन्यायपूर्ण ढग से प्रधानाचार्या नियुक्त किया जिससे बिलसी का वातावरण [illegible] हो गया इन लोगो के दुष्कर्मों से आर्य समाज कराह उठा।

स्कूल की दशा [illegible] हो गई जब श्री लक्ष्मीनारायण ने प्रधानाचार्य पाठक की अनुपस्थिति में ताले तोड़कर [illegible] नई प्रधानाचार्या को अधिकार दिलाने की चेष्टा की थाने में [illegible] मुकदमेबाजी आरम्भ हो गई।

इसी समय आर्यसमाज के प्रसिद्ध उपदेशक पं० बिहारीलाल शास्त्री व स्थानीय वयोवृद्ध आर्यसमाजी श्री विश्वम्भरदयाल आदि ने सभा प्रधान श्री प० प्रकाशवीर शास्त्री ससदसदस्य को लिखा और स्वय भी मिले श्री सभा प्रधान ने आजमगढ़ की अन्तरग मे बिलसी कमेटी को भंग कर दिया और श्री हरप्रसाद जी को प्रशासक नियुक्त कर दिया।

पदलोलुप और सत्ता भूखे लोगो ने सभा के विरुद्ध दीवानी में दावा दायर कर दिया परन्तु प्रशासक जी ने चातुर्य से सस्था पर अधिकार कर लिया और शासन सूत्र सभाल लिया।

भंग की हुई कमेटी के अधिकारियो का प्रबल प्रयत्न यह था कि कमेटी बनी रहे। इधर प्रशासक जी सभा और आर्यसमाज की प्रतिष्ठा स्थापित करना चाहते थे। निष्कासित अधिकारियो ने जज महोदय पर जाति बिरादरी का भी प्रभाव डाला, एक न्यायालय के दूसरे और दूसरे से तीसरे मे केस गया और जज महोदय ने निषेधाज्ञा (इन्जक्शन) [illegible] और प्रशासक को ही [illegible] कमेटी के अधिकारी [illegible] जज के [illegible] महोदय [illegible] [illegible] का द्वार खटखटायेंगे।

प्रशासक महोदय [illegible] बिलसी की जनता भूरि भूरि प्रशसा कर रही है श्री ठाकुर [illegible] श्री विश्वम्भरदयाल श्री [illegible] श्री हरि [illegible] सहायता प्रशासक महोदय को [illegible] प्रशसनीय है। इनकी सहायता के बिना प्रशासक महोदय को अधिकार [illegible] असम्भव हो जाता। यह भी वर्णनीय है कि श्री केशोराम आदि ने अन्य प्रतिनिधि सभा पर जो अभियोग चलाया उसका सारा व्यय बिलसी की जनता ने दिल खोल कर किया।

प्रशासक की तत्परता जनता की सहायता न्यायालयों के निर्णय ने सिद्ध कर दिया कि सदा सत्य की जय होती है, पद लोलुपो और स्वार्थियो की सदा क्षय होती है।

चन्द्रनारायण एडवोकेट
बरेली

सिरसागंज अधिवेशन में उत्साह पूर्वक जाने की प्रेरणा

१—निश्चय हुआ कि सराय अगस्त आर्यसमाज का द्वितीय वार्षिकोत्सव यथा शीघ्र मनाया जावे। कोषाध्यक्ष महोदय ने १०० रु० स्वयं व्यय करने का वचन दिया।

२—आर्यसमाज के महान् त्यागी विद्वान, तप.पूत शास्त्रार्थ महारथी पं० रामचन्द्र देहलवी-महान् साहित्यकार सम्पादकाचार्य परम प्रतिष्ठित गुरुकुल वि० विद्यालय वृन्दावन के उप कुलपति कन्या गुरुकुल प० वि० हाथरस के प्रधान विद्वान डा० हरिशंकर जी शर्मा एवं भारतीय जनसंघ के उपाध्यक्ष पं० दीनदयाल जी उपाध्याय और सराय अगस्त आर्यसमाज के सदस्य पं० प्रतापनारायण जी के असामयिक निधन पर शोक प्रस्ताव पारित कर दिवंगत आत्माओ की शांति हेतु ईश्वर से प्रार्थना की गई। सम्बन्धित परिवारो के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट की गई।

३—आगामी जून मास मे होने वाले आर्य प्रतिनिधि सभा के सिरसागंज अधिवेशन मे अधिकतम व्यक्तियों को दर्शनार्थ पहुंचाने की प्रेरणा दी गई।

धर्म प्रचार

सहतवार—बलियानगर के समीप रामनवमी के शुभ अवसर पर शंकरपुर के मेले मे आयसमाज सहतवार की ओर से व्यापक प्रचार हुआ। पंडाल हजारों नर-नारियो से भरा हुआ था।

कानपुर—अभी कुछ समय पूर्व श्री पं० बिहारीलाल जी शास्त्री तथा कुंवर भद्रपालसिह संगीत विशारद ने कानपुर के ग्रामीण क्षेत्रो से वैदिक धर्म का सुनियोजित ढग से प्रचार कार्य सम्पन्न किया। बहुत अच्छा प्रचार हुआ। इन आयोजनों में जनता ने अत्यधिक रुचि ली।

आर्यसमाज भरमपुर द्वारा श्री शास्त्री जी को अभिनन्दन पत्र भेंट किया गया। न्यतारा कस्बा पौराणिको का गढ़ है वहां श्री ठा० रणजीतसिंह के प्रयत्न से प्रचार हुआ।

शोक समाचार

मुरादाबाद—स्थानीय आर्यसमाज मन्डी बांस के उपप्रधान श्री बिन्दाप्रसाद का देहावसान १० अप्रैल को पन्द्रह दिन की लम्बी बीमारी के उपरान्त हो गया। श्री उपप्रधान जी वर्षों तक समाज के पदो पर रहकर समाज की सेवा करते रहे है। इसबार भी दिनांक २४-३-६८ को सर्व सम्मति से आपको उपर्युक्त पद के लिये निर्वाचित किया गया था।

यद्यपि आपकी आयु इस समय ७२ वर्ष थी और आप रुग्ण भी रहा करते थे फिर भी समाज का कोई सत्संग प्रचार या उत्सव आदि आपसे अछूता नहीं रहता था। आपकी आर्यसमाज के प्रति लगन को देखकर नयी पीढ़ी आपके प्रेरणा प्राप्त करती थी। आपका अभाव सर्वव खटकता रहेगा और इस क्षति की पूर्ति होना कठिन है।

हम सभी परम पिता परमात्मा से उस दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिये प्रार्थना करते हैं।

देहरादून—स्थानीय आर्यसमाज के कर्मठ नेता पं० अमरनाथ जी वैद्य शास्त्री के देहावसान पर समाज के साप्ताहिक सत्संग मे हार्दिक शोक प्रकट किया गया। श्री पं० जी नगर मे वैद्य जी के नाम से सुप्रसिद्ध थे। आप लम्बे समय से रुग्ण थे। इस अवसर पर आर्यसमाज देहरादून के प्रधान एवं उपमंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा श्री धर्मेन्द्रसिंह जी आर्य तथा समाज के मन्त्री श्री ईश्वरदयालु आर्य ने अपनी श्रद्धांजलिया अर्पित कीं।

कायमगंज-आर्यसमाज अलाईपुर के मन्त्री श्री राजनारायण की धर्मपत्नी का देहावसान दिनाक ९ अप्रैल को हो गया। दाह संस्कार वैदिक रीति के अनुसार सम्पन्न हुआ परमात्मा दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

सहारनपुर—आर्यसमाज मिर्जापुर के प्रधान श्री समेरचन्द्र का २ अप्रैल को देहावसान हो गया। आप आर्यसमाज के बड़े ही कर्मठ कार्यकर्त्ता थे। परमात्मा उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे।

इलाहाबाद—स्वर्गीय श्री मास्टर मातागुलाम जी के निधन पर आर्यसमाज कटरा-प्रयाग द्वारा शोक प्रस्ताव पारित किया गया—"आर्यसमाज कटरा की १९ अप्रैल १९६८ को यह सभा इस समाज के कर्णधार, आर्यप्रवर, कर्मनिष्ठ एव अटल वेदमार्गानुगामी मास्टर मातागुलाम के १२ अप्रैल को प्रातः ६ बजे ऐहिक लीला संवरण पर हार्दिक शोक प्रकट करती है। परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वह शोक संतप्त परिवार को दुख भार बहन करने की शक्ति दे और आर्यसमाज कटरा को ऐसी क्षमता दे कि वह धर्म कार्य मे अधिक श्रद्धा से रत हो जाय ताकि दिवंगत आत्मा को शांति मिले।"

विवाह संस्कार

लक्ष्मीपुर—श्री चमरुप्रसाद आर्य के सुपुत्र श्री मनोहरप्रसाद का कुमारी सुनीता देवी के साथ तथा श्री जानकी प्रसाद आर्य के सुपुत्र श्री वेदानन्द का श्री गङ्गाधर महतो की सुपुत्री के साथ और श्री भगीरथप्रसाद आर्य के सुपुत्र श्री ज्ञानप्रसाद का श्री फूलचन्द महतो की सुपुत्री व श्री अमृत आर्य के सुपुत्र श्री सुरेश्वर प्रसाद आर्य का श्री सहदेव महतो सरपंच की सुपुत्री के साथ वैदिक रीति मे समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ।

कायमगंज—बदायू निवासी श्री सच्चिदानन्द भारद्वाज की सुपुत्री आशाकुमारी का आदर्श विवाह श्री कान्तीस्वरूप भारद्वाज निवसी सिरपारपुर (फरुखाबाद) के सुपुत्र श्री राधाकृष्ण भारद्वाज के साथ दिनाक १९ अप्रैल को वैदिक रीत्यानुसार श्री रामचन्द्र जी आर्य की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ।

विदाई समारोह

कायमगंज—अपने जीवन का एक लक्ष्य वैदिक धर्म, तथा सपरिवार उस पर दृढ़तापूर्वक चलने वाले मा० श्री महावीर शर्मा, एजेन्ट स्टेट बैंक कायमगंज (फर्रुखाबाद) को उनके बरेली स्थानान्तरण पर समाज की ओर से भावभीनी विदाई दी गई।

मन्दिर के पुजारी का यज्ञ प्रेम

वाराणसी—आर्य समाज वाराणसी छावनी मे पिछले दिनो आयोजित एक पारिवारिक यज्ञ एवं सत्संग से प्रभावित होकर स्थानीय महावीर मन्दिर के एक पुजारी श्री ज्योतिप्रसाद ने मन्दिर में वैदिक रीति से यज्ञ कराने तथा पूर्ण आहुति दिये जाने की इच्छा प्रकट की। तदैव मन्दिर पर यज्ञ का आयोजन समाज द्वारा किया गया। इस अवसर पर बहन प्रज्ञादेवी जी ने ज्ञान भक्ति और कर्म पर प्रवचन हुआ। श्रोतागण अत्यंत प्रभावित हुए।

पौराणिक एव आर्य भाइयो का यह मिलन एक दूसरे को समझने एवं समीप आने का प्रयास सराहनीय एवं अनुकरणीय है।

अर्ध कुम्भी पर सफल वेद प्रचार

हरिद्वार—पंत द्वीप मे धर्मसंघ के शिविर के सामने आर्यसमाज का 'वेद प्रचार शिविर' लगाया गया और रामनवमी से वैसाखी तक प्रचार की धूम रही। श्री अमर स्वामी जी सरस्वती, श्री महात्मा आनन्द भिक्षु जी, श्री सत्यानन्द जी, श्री प० रुद्रदत्त जी शास्त्री, श्री प० महेन्द्रदेव जी शास्त्री, श्री वेदमुनि जी वानप्रस्थ व श्री माता प्रभावती आदि अनेक आर्य विद्वानों के उपदेश तथा व्याख्यान व प्रवचन हुए।

कार्यकर्त्ताओ ने लगभग ३० हजार ट्रैक्ट जिसमे तीर्थ मोक्ष और वैदिक धर्म की मान्यताएँ तथा 'मै हिंदू या रोऊं' आदि प्रमुख साहित्य वितरित किया गया।

कन्या गुरुकुल हाथरस

इस सप्ताह उत्तर प्रदेश के हरिजन तथा समाज कल्याण विभाग के उपनिदेशक श्री ब्रजनन्दन जी गुरुकुल पधारे। सारा गुरुकुल देखकर बहुत प्रसन्न हुए। उन्होने संस्था की उपयोगिता देखकर योजना बनाई है जिसके अन्तर्गत आगामी सत्र से उपर्युक्त विभाग की ओर दस कन्यायें गुरुकुल मे प्रविष्ट करायी जावेगी और उनके भोजन, वस्त्रादि का सम्पूर्ण व्यय उत्तरप्रदेश शासन देगा।

इस वर्ष उत्तरप्रदेश के शिक्षा विभाग ने भवन निर्माण के लिये गुरुकुल को १०,००० रु० का अनुदान दिया है। इसके अतिरिक्त केन्द्रीय तथा प्रदेशीय शिक्षा मन्त्रालयो ने १५,००० रु० की अन्य सहायता मिली है। जिला परिषद् अलीगढ के अध्यक्ष श्री नवाबसिंह चौहान ने १२४० रु० का अनुदान दिया है। सभी धन्यवाद के पात्र हैं।

गुरुकुल मे ग्रीष्मावकाश प्रथम से सप्तम कक्षा तक की बालिकाओं के लिये बुधवार ८ मई से और नवम से चतुर्थ तक की बालिकाओं के लिये १५ मई से होगा। नया सत्र १ जुलाई १९६८ को प्रारम्भ होगा।

अक्षयकुमारी शास्त्री,
मुख्याधिष्ठाता

"विसेंट फेरर भारत छोड़ो"

"आर्यसमाज माटुंगा-बम्बई ने दि० २१-४-६८ रविवार के साप्ताहिक अधिवेशन में सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव पारित किया कि महाराष्ट्र सरकार ने राष्ट्र विरोधी गतिविधियों को बढ़ावा देने वाले ईसाई पादरी 'विसेंट फेरर' को जो भारत छोड़ने का आदेश दिया है, वह सर्वथा उचित कदम है। यह अधिवेशन महाराष्ट्र सरकार का हार्दिक समर्थन करता है तथा भारत सरकार से अनुरोध करता है कि वह इस आदेश में हस्तक्षेप न करे प्रत्युत इस प्रकार के राष्ट्र विरोधी तत्वों के शमन मे पूर्ण सतर्कता से काम ले।"

—मन्त्री आर्यसमाज माटुंगा, बम्बई

प्रचार शिविर का आयोजन

मध्यभारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में सिंहस्थ मेला उज्जैन में "वैदिक धर्म प्रचार" शिविर का आयोजन किया गया है। इस शिविर मे नित्य एक मास तक वेदों का यज्ञ, भजन तथा प्रवचन प्रात. व सायं होते हैं।

शिविर का समारम्भ दिनांक १३-४-६८ को आर्य समाज कांकडवाड़ी बम्बई के प्रधान श्री बद्रीप्रसाद जी मोरुका ने मुख्य यजमान के रूप मे पधार कर किया। श्री मोरुका जी ने इस अवसर पर स्थानीय कार्यकर्ताओं को प्रोत्साहित कर २५००) रुपये की राशि वैदिक धर्म प्रचार हेतु सभा को दान मे दी।

वार्षिकोत्सव

आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर का वार्षिकोत्सव आश्रम की पुण्य भूमि में ता० १४ अप्रैल में १७ अप्रैल तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस शुभ अवसर पर अथर्ववेद के पुनीत मन्त्रो से एक महान् यज्ञ श्रीमती दुर्गादेवी बढेरा की ओर से रचाया गया, जिसकी पूर्णाहुति ता० १३ अप्रैल ६८ प्रातः ९ बजे हुई। इस यज्ञ के ब्रह्मा प० सुखदेव जी विद्यावाचस्पति थे। श्री अमर स्वामी सरस्वती जी, श्री हरपाल शास्त्री जी, श्री स्वामी समर्पणानन्द जी, श्री ओम्प्रकाश जी शास्त्री, प० रुद्रदत्त जी शास्त्री, प० सुखदेव जी विद्यावाचस्पति प० देवमुनि जी विद्यामार्तण्ड, स्वामी आत्मानन्द जी श्री प० महेन्द्रदेव जी शास्त्री आदि के सारगर्भित भाषण हुए।

निर्वाचन—

प्रधान—श्री महात्मा हरप्रकाश
उपप्रधान—श्री ब्रजबिहारीलाल
" " गोपालमुनि
" " लक्ष्मणदेव
उपप्रधान माता कौशल्यादेवी सेठी
प्रधान मन्त्री—श्री ज्योतिप्रसाद
उपमन्त्री—श्री कृपाराम, श्री रेवतीप्रसाद, श्री आनन्दमुनि
कोषाध्यक्ष—श्री अमरनाथ जी नय्यर
लेखानिरीक्षक—श्री यज्ञमुनि
पुस्तकाध्यक्ष—श्री प्यारेलाल महेन्द्र
प्रबन्धक वैदिक आश्रम ऋषिकेश—श्री स्वामी अथर्वानन्द।

ब्रह्म परायण महायज्ञ

आर्य जगत के प्रसिद्ध तपोनिष्ठ महात्मा जिनके कर-कमलो से मेवाड क्षेत्र में और भारत के अनेकों स्थानो मे एव अफ्रीका मौरीशस आदि देशो मे अनेकों वृहद यज्ञ सम्पन्न हुये, जिनकी निमाडा क्षेत्र पर विशेष कृपा रही उन्ही स्वर्गीय स्वामी श्री नारायणानन्द जी महाराज एव उनके प्रेरणा सूत्र स्वर्गीय श्री गौर ससरामनी ग्राम सुन्देल की पुण्य स्मृति मे दिनाक २४ मई मगलवार से १९ मई रविवार १९६८ तदनुसार ज्येष्ठ वदी २ से अष्टमी स० २०२५ तक ग्राम सुन्देल जिला धार मे व्रत पारायण महा यज्ञ करने का निश्चय किया है इस अवसर पर आर्यजगत के अनेको गण-मान्य महात्मा- उपदेशक भजनोपदेशक विद्वानो को आमन्त्रित किया गया है।

नेमाड़ के कर्मठ आर्य कार्यकर्त्ता श्री मागीलाल पाँडवा ग्राम सुन्देल इन्होने १००१ रु० इस महायज्ञ मे देने का सकल्प किया है।

श्री सर्वदानन्द साधु, आश्रम

अलीगढ़—आर्यसमाज श्री सर्वदानन्द साधु आश्रम मे दिनांक ४ अप्रैल को स्वर्गीय श्री पूज्यपाद १०८ श्रीस्वामी सर्वदानन्द जी सरस्वती का निर्वाण दिवस मनाया गया। इस अवसर पर गायत्री महामन्त्र का यज्ञ किया गया।

इस वर्ष के लिए श्री ठा० रणधीर-सिंह जी, प्रधान व श्री बाबूराम जी, मन्त्री और श्री पं० रामनिवास जी शास्त्री को कोषाध्यक्ष निर्वाचित किया गया है।

अजमेर के सेन्ट ऐन्सलम ईसाई स्कूल के प्रिन्सिपल पादरी श्री मन्नूर साहब द्वारा शारदा जी से क्षमा याचना

गत मास मे अजमेर के ईसाई स्कूल सेन्ट ऐन्सलम मे एक नाटक के अभिनय मे महर्षि दयानन्द के प्रति अपमानजनक घटित घटना पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के उपप्रधान श्रीमान श्रीकरण जी शारदा एडवोकेट ने एतदर्थ एक वक्तव्य प्रसारित कर तीव्र रोष प्रकट करते हुये इस घटना की निंदा की थी जिसने सारे आर्य जगत मे एक हलचल मच गई थी। इस सदर्भ मे उक्त प्रिन्सिपल साहब श्री पादरी आगस्टीन मन्नूर ने खेद प्रकट करते हुये भी शारदा जी से लिखित क्षमा मागती है।

श्री कुंवर सुखलाल जी आर्य मुसाफिर का अतरौली में भव्य स्वागत

जिला आर्यो प्रतिनिधि सभा अलीगढ की सरक्षता मे मार्च मास में वैदिक धर्म का वृहद प्रचार उत्सव अतरौली में मनाया गया। 'इस अवसर पर आर्य जगत के सुप्रसिद्ध विद्वान ओजस्वी वक्ता श्री कुंवर सुखलाल जी आर्य मुसाफिर को समाज की ओर से अभिनन्दन पत्र भेंट किया गया। श्री कुंवर जी के भाषण से जनता अत्यन्त प्रभावित हुई। आपकी वाणी अभी भी पूर्व की तरह ही जोशपूर्ण एवं प्रभावक है।

इस समारोह मे श्री कुंवर जी के अतिरिक्त श्री ब्र० यशपाल जी शास्त्री, पं० शिवराजसिंह जी शास्त्री, पं० इन्द्र-जीत जी शास्त्री, स्वामी शान्ति स्वरूप जी महाराज जी व श्री यशपालसिंह जी मानव तथा श्री महीपालसिंह जी आर्य उपदेशक तथा वक्ता सम्मिलित हुए जिससे तहसील एव जिले मे जागृति आ गई।

उत्सव

बिजनौर—आर्यसमाज बिजनौर का ८५वा वार्षिकोत्सव दिनांक १५ मई से १८ मई तक बडे समारोह पूर्वक मनाया जायगा जिसमे आर्य जगत के शिरोमणि सन्यासी, नेता एवं वक्ता सम्मिलित होंगे।

शाहजहापुर—आर्यसमाज रजिस्टर्ड शाहजहापुर का वार्षिक महोत्सव १२ से १६ अप्रैल तक मनाया गया। श्री स्वामी आनन्द गिरि जी जैसे प्रकाण्ड विद्वान के पदार्पण से उत्सव अत्यन्त सफल रहा।

सम्भल—आर्यसमाज रुस्तमपुर जिला मुरादाबाद का वार्षिक समारोह २० वर्ष के पश्चात् गत ९ से १२ मार्च तक नव उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर बाहर से पधारने वालो मे श्री स्वामी आत्मानन्द जी तीर्थ, श्री प० श्यामसुन्दर स्नातक, श्री कुंवर सुखलाल जी आर्य मुसाफिर व प्रो० विशेश्वर जी संगीताचार्य तथा श्रीमती उर्मिला देवी के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। समाज प्रेमी जनता से इस समारोह के लिये २१०० रु० दान स्वरूप प्राप्त हुआ उपस्थिति। लगभग १५-२० हजार रही।

उपदेशक महाविद्यालय शीघ्र खुल रहा है

प्रवेशार्थी प्रार्थना-पत्र भेजें

देश विदेश मे वैदिक धर्म एव भगवान दयानन्द के दिव्य सन्देश को पहुचाने के लिये योग्यतम उपदेशकों को तैयार करने के उद्देश्य से सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा दिल्ली ने आगामी शिक्षा सत्र से एक उपदेशक महाविद्यालय खोलने का निश्चय कर लिया है। यह विद्यालय सभा के अनुसन्धान विभाग के अध्यक्ष, उद्भट आर्य विद्वान् श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री के आचार्यत्व मे चलेगा। इस विद्यालय मे शिक्षाकाल मे विद्यार्थी का सब व्यय सभा वहन करेगी और प्रशिक्षित हो जाने पर उपदेशकों को वर्तमान शिक्षा क्षेत्रों के स्तर पर वेतन देकर कार्य पर नियुक्त करेगी। शास्त्री, आचार्य, बी०ए०, एम० ए० तथा तत्सम योग्यता के छात्र इसमे प्रवेश पा सकेगे। विदेश मे उपदेशक बनने के लिये आर्य छात्रो को अन्य सब शर्तें पूरी होने की अवस्था मे उपर्युक्त शैक्षणिक स्तरों के नियम कुछ शिथिल किये जा सकेंगे।

इस विद्यालय मे प्रवेश पाने एवं विशेष विवरण जानने के इच्छुक अपना प्रार्थना पत्र नीचे लिखे पते पर भेजें।

प्रस्तोता—
उपदेशक महाविद्यालय सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
महर्षि दयानन्द भवन,
रामलीला मैदान, नई दिल्ली—१

निर्वाचन

—आर्यसमाज रहमतगंज जिला रामपुर ।

प्रधान—श्री जयदेवसिंह आर्य
उपप्रधान—श्री हरप्रसाद
मन्त्री—श्री सत्यदेवसिंह आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री केशरीसिंह
निरीक्षक—श्री मुकनशरण पांडे
पुस्तकाध्यक्ष—श्री सूरेवसिंह

—आर्यसमाज बहजोई मुरादाबाद ।

प्रधान—श्री दरबारीलाल
उप प्रधान—श्री बद्रीप्रसाद, श्री चन्द्रपाल
मन्त्री—श्री जगन्नाथ अग्रवाल
उप मन्त्री—श्री नित्यमूर्ती
कोषाध्यक्ष—श्री किशनलाल
पुस्तकाध्यक्ष—श्री ओप्रकाश भटनागर
निरीक्षक—श्री मास्टर रामफल

—आर्यसमाज डिचोली (गोवा)

प्रधान—श्री विष्णू महादेव कुककर्येकर
उप प्रधान—श्री रघुवीर शेट मासोलकर
मन्त्री—श्री डा० र. वि. प्रभुगावकर
कोषाध्यक्ष—श्री वामन अनत गावकर

—आर्यसमाज फेराहेडी जिला सहारनपुर ।

प्रधान—श्री अचपल शर्मा
उप प्रधान—श्री रूपराम सिंह
मन्त्री—श्री जीवनसिंह
कोषाध्यक्ष—श्री साधूराम
पुस्तकाध्यक्ष—श्री हुकमसिंह
निरीक्षक—श्री अमयराम

—आर्यसमाज शेकपुरा (फंजाबाद)

प्रधान—श्री रामनरायण वर्मा
मन्त्री—श्री श्यामनरायण वर्मा
कोषाध्यक्ष—श्री रामनवल वर्मा
ग्राम प्रधान—श्री रामआसरे वर्मा

—आर्यसमाज सिवहारा (बिजनौर)

प्रधान—श्री लाला मुरारीलाल
उप प्रधान—श्री ओ३मप्रकाश
मन्त्री—श्री हरस्वरूप आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री दयाराम शास्त्री
निरीक्षक—श्री छोटेलाल
पुस्तकाध्यक्ष—श्री घासीराम जोशी

—आ० स० ढकिया (बरेली)

प्रधान—श्री डा० परमेश्वरी सहाय
उप प्रधान—श्री भगवान सहाय
मंत्री—श्री मेधाव्रत आर्य
उपमंत्री—श्री उमेदराय
कोषाध्यक्ष—श्री नरायणदास
पुस्तका—स्वामी चेतनानन्द सरस्वती
निरीक्षक—श्री मुक्ताप्रसाद

—आ० स० रानी की सराय जिला आजमगढ़ ।

प्रधान—श्री बासुदेव रावत
उप प्रधान—श्री रघुनाथप्रसाद
प्रचार मंत्री—श्री नन्हकूरमा
मंत्री—श्री अवधबिहारी उपाध्याय
कोषाध्यक्ष—श्री फूलचंद्र आर्य
निरीक्षक—श्री रामचरण सेठ
पुस्तकाध्यक्ष—श्री त्रिवेणीराम यादव

—आर्यसमाज जहानाबाद

प्रधान—श्री महाशय प्रयागदत्तआर्य
उप प्रधान—श्री नदकिशोर आर्य
मंत्री—श्री बाबूलाल आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री रामकिशोर आर्य
पुस्तका०—श्री देवदत्त

—आर्य समाज अनूपशहर

प्रधान—श्री नरेन्द्रनाथ शर्मा
उप प्रधान—हरिशकर मु० आर्य
मंत्री—श्री प्यारेलाल
उपमंत्री—श्री सुरेशचन्द्र
कोषाध्यक्ष—श्री गुलाबराय
पुस्तकाध्यक्ष—श्री सुरेशचन्द्र शर्मा
निरीक्षक—श्री जयभगवान गुप्ता

—आर्यसमाज, राजामंडी- आगरा—
प्रधान—श्री श्यामसुन्दर वर्मा, उपप्रधान श्री प्रो० बाबूराम जी गुप्त, सुरेन्द्रनाथ जी वैद्य, मत्री शकरलाल जी शर्मा, कोषाध्यक्ष श्री श्यामसिंह, पुस्तकाध्यक्ष-श्री देवेन्द्र जी, निरीक्षक-श्री मथुराप्रसाद ।

—आर्यसमाज पूरनपुर, जिला पीलीभीत-प्रधान श्री सियाराम जी, उपप्रधान श्री सुरेन्द्रकुमार स्नातक मत्री श्री प्रेमचद्र, कोषाध्यक्ष-श्री रतनलाल,श्री पुस्तकाध्यक्ष श्री बसतलाल जी, निरीक्षक श्री ईश्वरचद्र, अधिष्ठाता पाठशाला श्री रामबहादुर एडवोकेट ।

—आर्यसमाज सोरो (एटा) ।

प्रधान—श्री फूलचन्द्र
उपप्रधान—श्री रामरक्षपाल
मंत्री— श्री सियाराम
उपमंत्री— श्री शाती देवी
पुस्तकाध्यक्ष—श्री राजेंद्रदेव ।

—आर्यसमाज-मऊनाथभजन ।

प्रधान—श्री धर्मदत्त
उपप्रधान—श्री विश्वनाथसिंह
मन्त्री—देवशरण
कोशाध्यक्ष—श्री श्रीकृष्णमुरारीप्रसाद
पुस्तकाध्यक्ष—श्री रामचन्द्र गुप्त
आयव्यय निरीक्षक—श्री गोपालप्रसाद

—आर्यसमाज सोखोदेवरां (गया) ।

प्रधान—श्री सौखी माझी
उपप्रधान—श्री लक्ष्मणसिंह
मंत्री—श्री हरिहर चौधरी शिक्षक
उपमंत्री—श्री मलुकदास आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री राजेंद्रप्रसाद आर्य
लेखा निरीक्षक—श्री देवीदयालप्रसाद
पुस्तकाध्यक्ष—श्री शम्भुशरणसिंह

—आर्यसमाज मीरजापुर ।

प्रधान—श्री चद्रलाल वर्मा
मुख्य उपप्रधान—श्री बटुकप्रसाद वैद्य
उपप्रधान—श्री जैराम जोशी
मन्त्री—श्री आशाराम पाण्डेय
कोषाध्यक्ष—श्री कपूरचद आजाद
पुस्तकाध्यक्ष—श्री लक्ष्मीनारायण शर्मा

—आर्यसमाज गोविंदनगर ।

प्रधान—श्री देवीदास आर्य
उपप्रधान—श्री द्वारिकानाथ उप्पल
मंत्री—श्री शिवदयाल
उपमंत्री—श्री मदनलाल
कोषाध्यक्ष—श्री शुभकुमार वोहरा
पुस्तकाध्यक्ष—श्री मनोहरलाल भाटिया
निरीक्षक—श्री वेदप्रकाश शर्मा

—आर्यसमाज देवास (म० प्र०) ।

प्रधान—श्री सरदारसिंह
मंत्री—श्री निर्विकार श्रीवास्तव
उपमंत्री—श्री माणकलाल जी
आय व्यय निरीक्षक—श्री मुरारीलाल जी श्रीवास्तव
कोषाध्यक्ष—श्री लीलाशकर महाजन
पुस्तकाध्यक्ष—श्री प्रेमनारायण निगम

—आर्यसमाज जलालाबाद जिला शाहजहांपुर ।

प्रधान—श्री लक्ष्मीचद्र
उपप्रधान—श्री बाँकेलाल
कोषाध्यक्ष—श्री प्यारेलाल
मंत्री—श्री रमेशचद्र
उपमंत्री—ओमप्रकाश
पुस्तकाध्यक्ष—श्री शशीचद्र
निरीक्षक—श्री होरीलाल

—आर्यसमाज खुरजा ।

प्रधान—श्री ओमप्रकाश जी वाधवा
उपप्रधान—श्री युधिष्ठिरकुमार
मंत्री—श्री राजपालसिंह वर्मा
उपमंत्री—कृष्णलाल
कोषाध्यक्ष—श्री बुद्धसेन आर्य
पुस्तकाध्यक्ष—श्री मूलचन्द प्रसाद जी आर्य

—आर्यसमाज हरिहर नाथ शास्त्री नगर, कानपुर ।

प्रधान—श्री कर्मचद्र भल्ला
उपप्रधान—श्री चतुर्भुज शर्मा
मंत्री—श्री विशम्भरनाथ जी
कोषाध्यक्ष—श्री सकलदीपसिंह
प्रचार मंत्री बाबू लोकनाथ

—आर्यसमाज अमरोहा

प्रधान—श्री हरिश्चन्द्र आर्य
मुख्य उपप्रधान—श्री वीरेन्द्र कुमार
मन्त्री—श्री प्रेमबिहारी आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री ओमप्रकाश आर्य
पुस्तकाध्यक्ष—श्री जगदीशकुमार
आय-व्यय निरीक्षक—श्री छोटेलाल

—आर्यसमाज सराय अगस्त

प्रधान—श्री देवदत्त आर्य
उप प्रधान—डा० सियाराम आर्य
मन्त्री—डा० शिवरत्नलाल
उप मन्त्री—डा० रामनिवास
कोषाध्यक्ष—डा० सतीशचन्द
निरीक्षक—सू० मे० जगबहादुरसिंह

—आर्यसमाज, देहरादून ।

प्रधान—श्री धर्मेन्द्रसिंह आर्य
उपप्रधान—श्री श्रीमती व्रतवती नारग
श्री पं० तेजकृष्ण कौल
श्री श्रीकृष्णलाल
मन्त्री—श्री ईश्वरदयालु आर्य
उपमन्त्री—श्री विद्याभास्कर शास्त्री
कोषाध्यक्ष—श्री ज्ञानचन्द्र रगन
पुस्तकाध्यक्ष—श्री हर्ष पर्वतीय

—आर्यसमाज जनकपुरीनगर सहारनपुर ।

प्रधान—श्री लाला निहालचन्द्र आर्य
उपप्रधान—श्री मकरन्दसिंह सैनी
मन्त्री—श्री [illegible]
उपमन्त्री—श्री रामसिंह आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री डा० विश्वम्भरसिंह आर्य
पुस्तकाध्यक्ष—श्री रामचन्द्र आर्य

—आर्यसमाज [illegible]

प्रधान—श्री देवनाथ आर्य
उप प्रधान—श्री पृथ्वीचन्द आर्य
मन्त्री—श्री जानकी प्रसाद आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री हरिप्रसाद आर्य
पुस्तकाध्यक्ष—श्री गुलाबचन्द आर्य

—आर्यसमाज बलिया

प्रधान—श्री भृगुराम
उप प्रधान—श्री अवधकिशोर
मन्त्री—श्री रामेश्वर प्रसाद
कोषाध्यक्ष—श्री ब्रह्मेश्वर प्रसाद
पुस्तकाध्यक्ष—श्री शिवप्रसाद
आय-व्यय निरीक्षक—श्री विश्वनाथ

—आर्यसमाज सांडी (जि हरदोई)

प्रधान—श्री प० बनवारीलाल
उप प्रधान—श्री प० रामेश्वर दीन पाण्डे
प्रधान मन्त्री—प० केशवदेव शास्त्री
कोषाध्यक्ष—श्री राधाकृष्ण आर्य
पुस्तकाध्यक्ष—श्री लक्ष्मणप्रसाद आर्य

—आर्यसमाज जानकीनगर ।

प्रधान—वानप्रस्थी श्री प० भगवानप्रकाश
उपप्रधान—श्री ठा० कामतासिंह
मन्त्री—रामयज्ञ त्रिपाठी
उपमन्त्री—श्री रामदर्शन वर्मा
कोषाध्यक्ष—ठा० कामतासिंह
पुस्तकाध्यक्ष—प० लक्ष्मीशकर पांडेय

योग्य वधू चाहिये

१९ वर्षीय सुदर एव स्वस्थ युवक श्री कीरतसिंह जो एक सम्पन्न जमीदार के सुपुत्र है, के अनुरूप सुशील वधू की शीघ्र आवश्यकता है। कोई जाति बधन नहीं।

इस पते पर मिले अथवा पत्र-व्यवहार करें—

—सर्वाधारसिंह
ग्राम-जिगनी, पो० मसूरापुर
कस्बा साडी (जि० हरदोई)

आवश्यकता

आर्य परिवार का क्षत्रिय वशज गुरुकुल वृन्दावन का स्नातक डबल एम० ए० कर रहा है। घर पर अच्छी खासी काश्त है, के लिये बी० ए० एम० ए० तथा गुरुकुल की स्नातिका को विशेषता दी जायेगी। वधु सुन्दर (गौर वर्ण) होनी चाहिये जातीय बन्धन तोड़कर भी संस्कार हो सकेगा।

पता—मन्त्री आर्यसमाज केसरी
मु०-केसरी, डा०-मदनपुर
जिला-मैनपुरी (उ० प्र०)

आर्यसमाज स्थापना दिवस

गत २९ मार्च को प्रदेश तथा देश की विभिन्न समाजों मे 'आर्यसमाज स्थापना दिवस' समारोहपूर्वक मनाया—

गुरुकुल महाविद्यालय वैद्यनाथ धाम में यह समारोह श्री पं० महादेवशरण की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

कानपुर—केन्द्रीय आर्य सभा के तत्वावधान में कानपुर के सभी आर्य समाजों की ओर से डा० शिवदत्त जी की अध्यक्षता मे मनाया गया।

आजमगढ़—श्री नागेन्द्रनाथ उपाध्याय की अध्यक्षता में आर्यसमाज रानी की सराय में धूमधाम से मनाया गया। समाज मन्दिर को दीप रश्मियो से अलंकृत किया गया।

शाजापुर—आर्यसमाज पोलाय कलाँ (बिहार) से इस अवसरपर उत्साही युवकों का जुलूस वैदिक गान करते हुये ग्रामीण जनता मे वैदिक धर्म का प्रचार किया।

सौरिख-यज्ञ के पश्चात् श्री बाबूराम जी प्रधान आर्यसमाज की अध्यक्षता मे सभा का आयोजन हुआ। श्री गुप्ता जी ने शीघ्र ही ५० आर्य समासद् बनाने का निश्चय किया।

जोधपुर—यहाँ की समस्त आर्य समाजों द्वारा यह दिवस बड़े ही समारोह पूर्वक आर्यसमाज पूंगला में मनाया गया दिनांक ३१ मार्च को आर्यसमाज पूंगला का वार्षिकोत्सव भी मनाया गया।

बरेली—बरेली नगर की समस्त आर्यसमाजों की ओर से केन्द्रीय आर्य समाज बरेली के तत्वावधान मे आर्य समाज स्थापना दिवस का आयोजन मोती पार्क में किया गया। मूर्धन्य विद्वानों ने समाज की गतिविधियों और कार्यकलापो पर प्रकाश डाला। टाउन-हाल पर महर्षि स्वामी दयानन्द जी की बरेली नगर यात्रा सम्बन्धी शिला-लेख के निर्माण की योजना पर भी प्रकाश डाला गया।

राम जयन्ती

आगरा—आर्य केन्द्रीय सभा आगरा के तत्वावधान मे डा० कृष्णगोपाल जी की अध्यक्षता में मर्यादा पुरुषोत्तम राम जन्मोत्सव आर्यसमाज आगरा नगर के प्रांगण में उत्साहपूर्वक वातावरण मे मनाया गया। महोत्सव मे नगर की समस्त आर्यसमाजों एव स्त्री समाजों के पदाधिकारी तथा सदस्य उपस्थित हुये।

श्री लक्षनणदेव वैदिक आश्रम की स्थापना

ठाकुरगंज—श्री हरिवंशलाल आर्य ग्राम नयरियां (लखनऊ) ने सूचित किया है कि स्वर्गीय श्री लक्ष्मणदेव शास्त्री (देहावसान ३०-१-६८) की पुण्यस्मृति में 'श्री लक्ष्मणदेव वैदिक आश्रम' के लिये ठाकुरगंज से ५ मील की दूरी पर ३ बीघा भूमि क्रय की गई है।

गायत्री महायज्ञ

आर्यसमाज मधुबन (आजमगढ़) मे दिनांक २५ मई से १० जून तक यज्ञ के साथ ही राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, गोरक्षा सम्मेलन, महिला सम्मेलन आर्यसम्मेलन व शुद्धि सम्मेलन तथा वेद सम्मेलन आदि—नेताओं, विद्वानों व महात्माओं की अध्यक्षता मे सम्पन्न होगे।

यज्ञ वेदी की रचना के लिये आर्ष गुरुकुल एटा के संस्थापक स्वामी ब्रह्मानन्द जी दण्डी पधार रहे हैं। युवक सम्राट बालब्रह्मचारी श्री जगदीश जी आर्यंयुवक सम्मेलन की अध्यक्षता करेंगे।

नामकरण संस्कार

हरदोई—ग्राम दलेलनगर मे दिनांक ६ अप्रैल को ठाकुर मुलायमसिंह के पौत्र का नामकरण संस्कार वैदिक रीत्यानुसार श्री प० ब्रह्मानन्द आर्य द्वारा सम्पन्न हुआ। ग्रामीण जनता पर बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ा तथापि लोगों ने यहां पर एक आर्यसमाज स्थापित करने का वचन दिया।

पतितोद्धार तथा वृहद यज्ञ

हरदोई—गत २७ मार्च को सेठ पन्ने बाबू सर्राफ, बिलग्राम एव सण्डीपुर आर्य समाज के मन्त्री श्री कु० सुखदेवसिंह तथा श्री गिरधारीसिंह जी यादव के सद्प्रयत्न से श्री गजोधरलाल पटवा मुहाल मंडई (बिलग्राम) का पतितोद्धार संस्कार सम्पन्न हुआ। इस उपलक्ष मे वृहद रूप से एक हवन श्री केशवदेव शास्त्री महोपदेशक आ० प्र० सभा के आचार्यत्व से किया गया। इस पावन कृत्य में मदैचा निवासी श्री मदनमोहन मिश्र भजनोपदेशक व श्री अनन्तराम शर्मा, मन्त्री आ०स० कटियारी तथा होरीलाल और श्री राधाकृष्ण आर्य मांडी निवासी सम्मिलित हुये।

श्री गजोधरलाल ने ९६ रु० इस अवसर पर दान दिया तथा प्रीतिभोज सम्पन्न हुआ।

उत्सव सम्पन्न

लखीमपुर—आर्यसमाज मन्दिर मे मर्यादा पुरुषोत्तम राम का जन्मोत्सव श्री सीतारामसिंह एडवोकेट की अध्यक्षता मे मनाया गया जिसमें श्री वीरेन्द्रसिंह, श्री गनपतिसिंह आचार्य, श्री रघुनन्दनप्रसाद 'इन्द्र' एडवोकेट एवं श्री रामचन्द्र गुप्त एम० एल० सी० के प्रवचन हुए। राम के जीवन से हमे अपने सामाजिक तथा व्यक्तिगत जीवन के सुधार की शिक्षा लेने पर बल दिया गया।

कायमगंज—आर्य समाज कायमगज (फर्रुखाबाद) द्वारा दिनांक ७ अप्रैल को रामनवमी पर्व समारोहपूर्वक मनाया गया। पर्व पद्धति द्वारा वृहद् यज्ञ सम्पन्न हुआ।

सरसौल में नई आर्यसमाज स्थापित

कानपुर से १५ मील दूर स्थित सरसौल कस्बा मे आर्य नेता श्री देवीदास आर्य द्वारा एक विशाल सभा में आर्य-समाज की स्थापना कराई गई। इस अवसर पर श्री आर्य ने भाषण देते कहा कि आज देश को विदेशी ईसाई प्रचारकों से भयङ्कर खतरा है। यदि हिंदू समाज, आर्यसमाज की सहायता करे तो आर्यसमाज इस ईसाइयत के तूफान को रोकने मे समर्थ हो सकता है।

आर्यसमाज के संयोजक श्री डा० देवीसहाय आर्य ने श्री देवीदास आर्य का स्वागत किया। सभा मे सर्व श्री शिव स्वामी और श्री भद्रपालसिंह के भी भाषण व भजन हुए।

गुरुकुल वृन्दावन को सात्विक दान

श्री पुरुषोत्तमदास जी मिर्जापुर निवासी मालिक फर्म देवीचरण पुरुषोत्तम ने गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन को पांच हजार रुपये विद्याध्ययन के निमित्त सात्विक दान देकर गुरुकुल की विशेष सहायता की है। इस उदार सहायता के लिए हम समस्त कुलवासी दानी महानुभाव का हार्दिक धन्यवाद करते हैं और प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि वह उन्हे चिरायु करें। और धार्मिक कार्यों मे उनकी प्रवृत्ति सदा बनी रहे।

—नरदेव स्नातक
मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन

आर्यवीर दल समाचार

"आर्य मेला प्रचार समिति शिवशकरी" के तत्वावधान में "जिला आर्य वीर दल मीरजापुर" की ओर से त्रिदिवसीय "मेला प्रचार शिविर" शिवशकरी धाम मे ७ से ९ अप्रैल तक श्री बेचनसिंह स० संचालक की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ।

१—शिविर मे कुल ७० व्यक्ति (५० आर्यवीर व २० शिविर अधिकारी तथा विशिष्ट आर्य पुरुष) भाग लिए।

२—शिविर में 'वैदिक धर्म प्रचार' बड़े धूमधाम से किया गया जिसमे श्री आनन्दप्रकाश उपमन्त्री तथा, श्री महानन्दसिंह, श्री विश्रामसिंह, श्री हीरालाल सिंह व बेचनसिंह ने भाग लिया।

३—"जिला आर्य सम्मेलन" श्री आनन्द प्रकाश जी उपमन्त्री की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ जिसमे निम्न प्रस्ताव पास हुए-

(१) अवैतनिक प्रचारक की नियुक्ति (२) जिला प्रचार के लिए स्थायी कोष। (३) प्रत्येक आर्यसमाज में दल की स्थापना। (४) जिला सभा का मासिक अधिवेशन किया जाय व (५) क्वार के नवरात्र मे विन्ध्याचल मे १ शिविर लगाया जाय।

४—बकरे का बलिदान पुन इस वर्ष भी रोक दी गई।

५—२५अनाथ बालको को पाकर उनके संरक्षको को वापस किया गया।

६—मेला प्रचार समिति के लिए श्री बलिकरनसिंह अध्यक्ष, शिवमदिरसिंह मन्त्री व श्री नेवरामसिंह कोषाध्यक्ष चुने गये।

सम्पादक के पत्र

एक सुझाव

श्रीमन्नमस्ते!

'आर्यमित्र' की उन्नति के लिये मेरा एक सुझाव है—

उत्तरप्रदेश की केवल ५० आर्यसमाजें यदि चाहे तो 'आर्यमित्र' का प्रत्येक अङ्क भारत के किसी भी साप्ताहिक से अच्छा निकल सकता है—एक लघु विशेषांक के रूप में निकल सकता है। एक समाज वर्ष से केवल एक अङ्क का खर्च वहन करे। इस प्रकार ग्राहक के ऊपर कोई भार नहीं पड़ेगा अर्थात् वार्षिक शुल्क बढ़ाया न जायगा। यह काम मिशनरी स्प्रिट से प्रचार की दृष्टि से किया जाय। प्रश्न धन का नहीं इच्छा का है।

—डा० रा० स० लाल
मेडिकल आफीसर
हरपालपुर (मध्यप्रदेश)

शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज हनुमानरोड आर्यसमाज के पुराने निष्ठावान कार्यकर्ता श्री प्रा० साझीराम जी महाजन तथा इस समाज के भूतपूर्व उपमन्त्री श्री विश्वम्भरनाथ जी सोनी के देहान्त पर हार्दिक शोक प्रकट करता है।

परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दोनो दिवंगत आत्माओं को शान्ति तथा दोनों दुखी परिवारों को धैर्य प्रदान करने की कृपा करे।

आर्य्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल.-६०

रा० वैशाख १५ ... १८९० वैशाख शु० ७
(दिनांक ५ मई सन् १९६८)

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

Registered No. L ...
पता—'आर्य्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष्य : २५९९३ तार : 'आर्यमित्र'

उड़ीसा में विदेशी ईसाई मिशन का खतरा

प्रत्येक हिन्दू इसके निवारण हेतु तैयार रहे

उड़ीसा के सुप्रसिद्ध आर्य मिशनरी स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती दिल्ली में

श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती (गुरुकुल वैदिक आश्रम, वेद व्यास राउरकेला) जो उड़ीसा में वैदिक धर्म का प्रचार और विदेशी ईसाई मिशन का प्रचण्ड रूप से प्रतिरोध कर रहे हैं। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्रीयुत ला० रामगोपाल शालवाले से आवश्यक परामर्श के लिये दिल्ली पधारे सभा कार्यालय में उनका अभिनन्दन किया गया।

इस अवसर पर श्री स्वामी जी ने उड़ीसा एवं बिहार के पर्वतीय अंचलो मे विदेशी मिशनरियों द्वारा स्वतन्त्र झारखण्ड की चर्चा करते हुए बताया कि यदि शीघ्र ही भारत सरकार ने इस प्रकार की विदेशी गतिविधियों पर नियन्त्रण न किया तो शीघ्र ही समूचे देश को एक नये पाकिस्तान के रूप मे ईसाइस्तान का चित्र देखना पड़ेगा।

स्वामी जी महाराज ने सरकार की अनिश्चित नीति पर चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि सबसे बडा दुख तो इस बात का है कि आर्यसमाज द्वारा उस क्षेत्र मे किये जा रहे शुद्धि कार्य के रास्ते मे ईसाई मिशनरियों द्वारा जो रुकावटें डाली जाती हैं और झूठ मुकदमे चलाये जाते हैं उनमे प्रत्यक्षत: सरकारी अधिकारी ईसाई मिशनरियों को प्रश्रय देते हे। यह बड़े खेद और आश्चर्य का विषय है कि भारतीय जन समुदाय को विदेशी संस्कृति मे दीक्षित करने मे सरकारी सहायता दी जाय।

श्री स्वामी जी ने वक्तव्य को जारी रखते हुये कहा कि जिसप्रकार पाकिस्तान और अन्य देशों में कानूनी तौर पर कोई विदेशी धर्म परिवर्तन नहीं कर सकता उसी प्रकार भारत सरकार को सजग होकर इस प्रकार के विदेशी तत्वो पर नियन्त्रण करने के लिये कानून मे परिवर्तन करना चाहिये।

इसके अतिरिक्त उन्होने कहा कि समूचे हिंदू समाज को इस सकटकालीन समय मे स्वामी दयानन्द सरस्वती की विचारधारा को अपनाकर सगठित रूप से शुद्धि के महान् कार्य मे जुट जाना चाहिये।

हिन्दू समाज को दान की प्रणाली बदलनी होगी। करोड़ो एव अरबो रुपयो की विदेशी सहायता का मुकाबला करने के लिये शुद्धि आन्दोलन को जन आन्दोलन बनाना होगा।

श्री स्वामी जी ने प्रत्येक हिंदू से अपील की कि १००० वर्ष के पश्चात् आई हुई स्वतन्त्रता की रक्षा के लिये विदेशी तत्वो द्वारा बिगाड़े गये विभागो का राष्ट्रीयकरण करने के लिये वह पूर्ण रूप मे आर्थिक सहायता दे।

स्वामी जी ने कहा कि उपरोक्त रुकावटो के बावजूद भी बिहार और उड़ीसा मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सरक्षता मे अनेक नवयुवक शुद्धि प्रचार के कार्य मे जुटे हुये है और शुद्धि के कार्य मे हमे बड़ी सफलता मिल रही

राउरकेला बिसरारोड मे डी०ए०वी० स्कूल की स्थापना हो गई है तथा राउरकेला के निकट वेद व्यास मे प्राचीन आर्ष पद्धति के अनुसार गुरुकुल आश्रम चल रहा है। वनवासी तथा पहाड़ी क्षेत्रो मे ईसाई मिशनरियों के मुकाबले में ५ दिन की तथा १८ रात्रि पाठशालायें संचालित की जा रही हैं। इसके अतिरिक्त २० एकड़ भूमि में वनवासी सांस्कृतिक केन्द्र की स्थापना भी गत शिवरात्रि के पुण्य अवसर पर कर दी गई है। वनवासी बच्चों को उच्चस्तरीय शिक्षा का प्रबन्ध किया गया है।

स्वामी जी ने वक्तव्य के अन्त मे कहा कि गजाम से लेकर छोटा नागपुर महुआडांड तक आर्यसमाजों की स्थापना की विशाल पैमाने पर योजना बनाई जा रही है। ईसाई मिशनरियो के उखड़ते हुए पैरों को सरकारी उपेक्षा से जमने का पुन: अवसर मिल जाता है यह बड़े दुःख की बात है। स्वामी जी ने कहा कि वनवासियो के नाम पर दी जाने वाली सरकारी सहायता को भी बड़े नाटकीय ढग से ईसाई मिशनरी ही ले जाते हैं। स्वा० जी ने बड़े शब्दो में इसका विरोध करते हुए सरकार से अनुरोध किया कि सरकार इस परम्परा को रोकने का यत्न करे।

•

सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन का

दशवाँ अधिवेशन हैदराबाद में

हैदराबाद-आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण ने अपनी एक प्रेस विज्ञप्ति मे कहा है कि हैदराबाद की ऐतिहासिक नगरी मे सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन के दशम अधिवेशन का आयोजन अक्तूबर मास मे किया जाना निश्चित किया गया है। सम्मेलन के आयोजन की दिशा मे कार्य प्रारम्भ कर दिया गया है। स्वागत समिति के सदस्य बनाये जा रहे हैं।

आर्यसमाज का देश की स्वाधीनता और स्वाधीन भारत की उन्नति मे महत्व पूर्ण योग रहा है। भारत की स्वाधीनता के इस २० वर्षो में प्रयत्न के उपरान्त आज भी कई महत्वपूर्ण समस्यायें हमारे राष्ट्रीय जीवन को चारो ओर से घेरी हुई हैं। राजनैतिक वातावरण का दूषित प्रभाव जहा अन्य क्षेत्रो मे दिखाई दे रहा है, वहीं इसका प्रभाव आर्यसमाज के प्रचार की गतिविधि पर पड़े बिना नहीं रहा है। ऐसी विकट और विषम परिस्थिति मे आर्यसमाज का कर्तव्य हो जाता है कि जागरूक होकर देश मे उत्पन्न समस्याओ का समाधान ढूंढे। साथ ही भारतीय संस्कृति के अनुरूप भारत के पुनर्निर्माण में सक्रिय भाग लेकर सांस्कृतिक और आध्यात्मिक प्रवृत्तियो के विरुद्ध भौतिकवाद तथा अनीश्वरवाद जैसी प्रबल उठने वाली शक्तियो का अन्त करने के लिये आर्यसमाज को कार्यक्षेत्र मे उतर कर दृढ़ता से वातावरण को बदलने के उत्तरदायित्व की पूर्ति का समय इसके लिये अब आ गया है।

इन्हीं सब बातो को ध्यान मे रखकर सभा द्वारा निश्चय किया गया है कि अक्तूबर मास मे सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन का दशमाधिवेशन हैदराबाद मे किया जावे।

यह कार्य जितना महान् है उसे उतनी ही विशाल शक्ति से सम्पन्न किया जाना है। एतदर्थ सम्पूर्ण आर्यजगत् का सहयोग अपेक्षित है। समूचे आर्यजगत का कर्तव्य है वह इस महान् यज्ञ की सफलता मे अपना तन, मन, धन से योग दें।

•

स्वत्वाधिकारिणी आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ मे कृष्णगोपाल शर्मा द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।

लखनऊ—रविवार वैशाख २२ शक १८९०, वैशाख शु० १५ वि० सं० २०२५ दिनांक १२ मई १९६८ ई०

> ओ३म् सुष्टुति ं सुमती-
> वृधो राति ं सवितुरीमहे ।
> प्र देवाय मतीविदे ॥१२॥
>
> "भावार्थ-सुशिक्षा के वर्धक शिक्षा प्राप्त कराने वाले उत्पादक देव की उत्तम स्तुति को और दान योग्य विभूति को (हम) मांगते हैं।

विषय-सूची

१—नमो मन्त्राः	२
२—सम्पादकीय	३
३—सभा की सूचनायें	१३
४—अछूती पाठशाला	५
५—जागरूकता की आवश्यकता	६
६—पुलिस और अपराध	७
७—कबत्रु की बहकती धरती	८
८—स्वस्थ जीवन	१०
८—आर्यजगत्	११-१२
१०—आचार्य महर्षि	१५

सभा के पूर्व प्रधान—

माननीय श्री मदनमोहन जी वर्मा

भूतपूर्व अध्यक्ष विधान सभा उत्तरप्रदेश

वर्तमान

उपाध्यक्ष—आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश उपाध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

द्वारा

२०००० का महादान

आर्य जगत् में बड़े ही दुःख के साथ जाना जायगा कि श्री वर्मा जी की धर्मपत्नी श्रीमती विमलादेवी जी का देहावसान हो गया है। आप कर्तव्यनिष्ठ कर्मनिष्ठ, परिश्रम, दक्ष कुशल परिवारवाली सुयोग्य महिला थीं, अनेकों बार उनके निकट बैठने का सुअवसर मिला है, आज वह हमारे मध्य नहीं है और वह अपनी स्मृतियां ही शेष छोड़ गई हैं। उन्हीं की स्मृति में माननीय वर्मा जी ने आ० स० द्वारा सञ्चालित आर्य कन्या पाठशाला फैजाबाद को २०००० रु० बीस सहस्र की महानराशि प्रदान की है। आ० स० के कार्यकर्ताओं ने उनकी स्मृति में विद्यालय के नाम में संशोधन कर 'श्यामलाल राजे' के स्थान पर 'श्यामलाल राजे विमला देवी' आर्य कन्या पाठशाला फैजाबाद कर दिया है।

माननीय वर्मा जी आ०स० के पुराने कर्मठ कार्यकर्ता हैं सभा को ४ वर्ष तक प्रधान पद पर कार्य करते हुये महान् यश अर्जित किया है। कुशल प्रशासक, योग्य वक्ता कानून और [illegible] है। इसी से उत्तर प्रदेश सरकार ने आपको विधान सभा का अध्यक्ष मनोनीत किया था।

श्री वर्मा जी के इस वियोगजनक दुःख में हम सभी शामिल हैं और प्रभु से उनके शतायुष्य की कामना करते हुए प्रार्थना करते हैं कि वह हमारा मार्ग दर्शन करते रहें तथा श्री माता जी की आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें। श्री वर्मा जी अपने शेष जीवन में देश जाति तथा धर्म की अपनी सूझ बूझ से सेवा करेंगे, ऐसी आशा है

—सच्चिदानन्द शास्त्री सभा मन्त्री

वार्षिक ८)
छमाही ५)
विदेश में १ पौ०

सम्पादक—
सच्चिदानन्द शास्त्री एम० ए० सभा मन्त्री ★ पं० शिवदयालु
उमेशचन्द्र स्नातक एम० ए०

वर्ष ७०
अङ्क १४
एक प्रति २० पै०

मनन-मन्त्र माला का तृतीय सुमन—
'नमो मन्त्राः'

★आचार्य वात्स्यायन, कानपुर

ब्रह्म यज्ञ संध्या में नमो विधान सत्ताईसवां है क्रमश ४, परिक्रमा के छःहो कर्मों में प्रत्येक में चार बार बार 'तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु' और अन्त में तीन बार—

'नमः शम्भवाय च मयोभवाय च
नमः शङ्कराय च मयस्कराय च
नमः शिवाय च शिवतराय च। से नमस्कार करते हैं।

नमो मन्त्रों के पाठ करने से पहले विश्व गायत्री मन्त्र का उच्चारण करना आवश्यक समझा जाता है। इससे यह प्रतीत होता है कि नमो मन्त्र विधांति तम है। उसकी योग्यता प्राप्त करने के लिए गायत्री मन्त्र के द्वारा अपने हृदय को पवित्र बनाना पड़ता है। और गायत्री के पवित्र मन्त्र के उच्चारण करने की शुद्धि के लिये 'शन्नो देवी मन्त्र से आचमन करना अपेक्षित माना जाता है। अर्थात् अभीष्ट और पूर्णानन्द की प्राप्ति 'पीति' के लिये जब तक शन्नो अभिवृष्टि से हम अपने हृदय को निर्मल और स्वच्छ न कर लें तब तक हम गायत्री उच्चारण की योग्यता प्राप्त नहीं होती है, और जब पवित्र गायत्री मन्त्र के द्वारा हमारा हृदय न पवित्र और शुद्ध हो जावे तब कहीं नमः का मनन का अधिकार प्राप्त होता है। अन्यथा मध्य तथा अन्त में शन्नो देवी से आचमन और पुनः गायत्री मन्त्र के जप का विधान न रखा जाता। संध्या के प्रारम्भ में क्रम बदला मिलता है पहले गायत्री मन्त्र का उच्चारण करते तदनु 'शन्नोदेवी मन्त्र से आचमन किया जाता है। यहाँ पर भी पवित्र गायत्री मन्त्र के उच्चारण की योग्यता प्राप्त करने के लिये तीन बार प्राणायाम किया जाता है। प्राणायाम करने से इन्द्रियों के दोष जल जाते हैं जैसा कि भगवान ने कहा है—

दह्यन्ते ध्मायमानानां धातूनां हि यथा मलाः।
तथेन्द्रियाणां दह्यन्ते दोषाः प्राणस्य निग्रहात् ॥

सोना आदि धातुओं के मल तो अग्नि में फूंक कर दूर कर दिये जाते हैं यह तो सभी जानते हैं और उसी प्रकार प्राणायाम के द्वारा इन्द्रियों का मल दूर हो जाता है ऐसा परम आप्त मनु का कथन है। पर सर्व साधारण को इनका अनुभव यदि नहीं हो पाता है तो इसका कारण हमारी प्राणायाम क्रिया की हीनता और भावना की कमी है। गीता में भगवान कृष्ण ने बताया है कि—

'न चाभावयतः शान्तिः अशान्तस्य कुतः सुखम्'

आस्तिक्य भावना के अभाव में चित्त को शान्ति नहीं मिलती है अतः संध्या करने के लिए आस्तिक्य भावना का होना परम आवश्यक है। ब्रह्म तो निरन्तर यज्ञ करता रहता है, हम तो ब्रह्म यज्ञ में उस ब्रह्म को यज्ञ करता हुआ देखते हैं—

ब्रह्म का सर्व ग्राह्य स्वरूप 'वायु' है। वायु निराकार होते हुये भी सर्वानुभव गम्य है इसीलिए बतलाया गया है 'नमो ब्रह्मणे नमस्ते वायो त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि'

प्राणायाम में पहले शरीर के अन्दर की वायु को निकाल देना होता है और शरीर जीवन के लिए पुनः प्राण वायु करने के लिए अधीर हो जाता है। श्वास, निश्वास ओ३म् की ध्वनि करता हुआ अन्दर आता है और निकलता है। जीवन के लिये ओ३म् की पुकार होती है और ओ३म् के साथ जीवन प्राप्त होता है।

दूसरे शब्दों में जीवन की विद्युत का डायनोमा हमारे शरीर से बाहर है, जहां से हमें प्रतिक्षण जीवन धारा मिलती रहती है 'ओ३म् एवं ब्रह्म। जब हम वायु को साक्षात् ब्रह्म का दर्शन तथा अनुभव करते है तब हमारी आस्तिक्य बुद्धि भावना उद्बुद्ध हो जाती है हमें अपने जीवन का केन्द्र बिन्दु दीखने लग जाता है। और यदि हम कान के छेदों को अंगुलियों से बन्द करके अपने अन्दर की क्रियाशीलता का अन्तर्नाद सुने और उस पर मनन करने का प्रयास करें तो ऐसा आश्चर्य मय चमत्कार दिखाई पड़ेगा कि हम अवाक रह जाएंगे क्या इस परम आश्चर्य में हमारा अहंकार मिटे बिना रह जाएगा। और इन्द्रियों के दोष दूर न होंगे। अवश्य दूर हो जाएंगे। इसी लिए मेरी समझ में गायत्री मन्त्र के प्रथम उच्चारण के लिए प्राणायाम करना अपेक्षित होता है जिससे कि वायु रूप साक्षात् ब्रह्म को हम यज्ञ करता हुआ देखें और उसी के अनुरूप हम भी ब्रह्म यज्ञ का विस्तार करें।

येन यज्ञस्तायते सप्त होता,
तन्मे मनः शिवसंकल्प मस्तु।

इसके उपरान्त हम आचमन मन्त्र ओ३म् शन्नोदेवी रभिष्टये आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभिस्रवन्तुनः ॥

मे जीवनमय जीवनीय सत्त्व जल को दिव्यता और पवित्रता के दर्शन करते हैं। जल की शुद्धि साधनता को तो सभी मानते हैं 'अद्भिर्गात्राणि शुद्धयन्ति'। का प्राणायाम के द्वारा वायु रूप साक्षात् ब्रह्म के साक्षात्कार के उपरान्त दिव्य शक्ति सम्पन्न, अभीष्ट तथा पीति रूप पूर्णानंद के प्रदाता जल का आचमन करके अन्तःकरण की पवित्रता तथा शुद्धि की अनुभूति न होगी और उसके द्वारा शंयोः 'कल्याण और भयस की अभिवर्षा की संभावना न हो सकेगी ? अवश्य होगी।

पहले 'शन्नो देवी० से आचमन पुनः गायत्री मन्त्र से वरेण्य भर्गः का ध्यान अथवा धान तदनन्तर जीवन की दिशाओं क्षेत्रों का मनसा चिन्तन उनके अधिपतियों रक्षिताओं और उनके रक्षा साधनों इषुओं को मनसा परिक्रमा करके प्रत्येक की सत्ताओं में आस्था रखते हुये उनकी महत्ता के सामने बराबर नमन 'योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः' उसको उन अधिपतियों और रक्षिताओं के अनुशासन में 'तं वो जम्भे दध्मः' के द्वारा अपने अहंकार का संन्यास करने से शान्ति क्या हमे प्राप्ति न होगी ? गीता में भगवान् कृष्ण ने यही तो अर्जुन को कर्म फल संन्यास का उपदेश दिया है।

मयि सर्वाणि कर्माणि, संन्यस्याध्यात्म चेतसा।
निराशी निर्ममो भूत्वा युध्यस्व विगतज्वरः ॥

सर्व तो भावेन परमात्मा की शरण में जाना चाहिए, उसकी रक्षा शक्ति पर आस्था होनी चाहिए तभी हमें कल्याण और सुख दोनों की प्राप्ति होगी। निःश्रेयस और अभ्युदय दोनों वाञ्छनीय वस्तुएं हमें मिलेंगी। व्यक्ति और समाज दोनों की जब 'शम' और मयस की प्राप्ति होगी तभी हमको शिव से भी उत्कृष्ट शिवतरत्व मिलेगा। इसीलिए हम परम विश्रान्ति धाम को बारम्बार नमस्कार करते हैं।

नमः शंभवाय च मयोभवाय च
नमः शंकराय च मयस्कराय च
नमः शिवाय च शिवतराय च

यह आपकी इच्छा या मनोवृत्ति पर निर्भर है कि आप हाथ जोड़ नवाय मस्तक नमः करते हैं या प्राणायाम की मुद्रा में बैठे आप नमस्कार करते हैं। यदि हाथ जोड़ नवाय मस्तक के कहते ही आप भावना वश हाथ जोड नवाय मस्तक कर बैठते हैं तो आप संध्या में नमस्थलों में यदि नमस्कार कर बैठें तो हम आपकी भावप्रवणता से भावित हुए बिना न रहेंगे। विनय में ही सच्ची विनति होती है और अहंकार का भूल नाशता है।

★

अध्यात्म-सुधा

अमरीका में दर्शन शास्त्र में अधिक रुचि

न्यूयार्क—एक रिपोर्ट के अनुसार अमरीका और कनाडा में आठ हजार से अधिक अध्यापक दर्शन शास्त्र पढ़ाते हैं।

पिछले दो वर्षों में इनकी संख्या में २५ प्रतिशत की वृद्धि हुई है। अध्यापकों में लगभग ६०० महिलाएं हैं। १९६८ में ८८ और कालिजों में दर्शन शास्त्र की पढ़ाई शुरू हुई।

एक विशेष बात यह है कि दर्शन के अध्यापकों की संख्या में वृद्धि सरकारी सहायता प्राप्त कालिजों में हुई जबकि प्राइवेट कालिजों में इनकी संख्या घट रही है। वि० वा०

सभा भवन की अधूरी यज्ञशाला और संस्कृत यूनिवर्सिटी वाराणसी

★ आचार्य विश्वश्रवाः
एम० ए० वेदाचार्य

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश लखनऊ के सभा भवन मे माननीय प० रामदत्त शुक्ल ने अपने जीवनकाल मे विशाल यज्ञशाला का निर्माण कराया था जो बनकर तैयार हो गई अभी उसमे बहुत कार्य शेष है। सभा भवन का नकशा बन कर तैयार हो गया नवी सभा भवन जब भी बने पर यह यज्ञ शाला और उसके आस पास की भूमि नकशे मे नपी हुई है जिससे हम यज्ञशाला सम्बन्धी कार्यों का निर्माण करा सकते है।

इस यज्ञशाला मे बारह खम्भे है और वे खम्भे इस ढंग से बने हैं जिससे उन खम्भो मे बारह अलमारियां लम्बी जैसे कपड़ा टांगने की तोती है बनाई जा सकती हैं और विशाल भूमि यज्ञशाला के मध्य मे है जिसमे यज्ञकुण्ड का निर्माण अभी नहीं हुआ है। किसी भी यज्ञशाला की महत्ता इस बात मे नही है कि उसमे एक सौ खम्भे है या दो सौ खम्भे हैं प्रश्न यह है कि उन खम्भो का उपयोग क्या है आपकी यज्ञशाला मे प्राचीनकाल के यज्ञों का क्या प्रदर्शन हैं तथा वैज्ञानिक बातें आप की यज्ञशाला मे है यह भी कुछ है या नहीं या लम्बाई चौडाई ऊंचाई का ही दौर दौरा है।

मैने टंकारा परोपकारिणी सभा अजमेर आदि अनेक स्थानो पर यह सुझाव दिया पर मैं किसी को नहीं समझा सका। मेरा यह सुझाव है कि महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज अग्निहोत्रादि अश्वमेधान्त सब प्राचीन यज्ञो को ठीक मानते है। अश्वमेध राजसूय पुत्रेष्टि सोमयाग दर्श पौर्णमास आदि नाना प्रकार के यज्ञो की नाना प्रकार की यज्ञवेदियां और उनके हजारों प्रकार के यज्ञपात्र शास्त्रो मे लिखे है वेदियो के बनने में इंटो की भी माप है और ईंटो की भी संख्या निश्चित है, इष्ट का चयन तथा शुल्व-सुत्रों की व्यवस्था सब शास्त्रीय है इन सबका कहीं कुछ प्रदर्शन हो।

सभा भवन की यज्ञशाला मे विस्तृत भूमि के मध्य मे एक यज्ञकुण्ड का निर्माण हो जिसमे यज्ञ हुआ करें शेष समस्त भूमि मे प्रदर्शन के रूप मे सब यज्ञवेदियों का निर्माण करा दिया जाय और उसके ऊपर लकड़ी का ऐसा फर्श बना दिया जावे कि जिस पर बैठकर सैकड़ों आदमी यज्ञ कर सकें मध्य के यज्ञकुण्ड में। और जब वह लकड़ी का फर्श उठा दिया जावे तब सब यज्ञकुण्डों की प्रदर्शनी हो जावे सब लोग एक दृष्टि में एक ही स्थान पर देख लें। कि प्राचीन काल के यज्ञकुण्डों का क्या प्रकार था। और जो बारह अलमारियां लम्बी बनाई जावें उनमें सब प्रकार के यज्ञपात्रों का भी प्रदर्शन एक ही स्थान पर हो जावें।

इन सबके निर्माण का कार्य सरल नहीं है बड़े विशेषज्ञ लोग इस कार्य को कर सकेंगे। इनके लिये पूना जयपुर वाराणसी आदि के विद्वानों का जो वैदिक याज्ञिक है सहयोग प्राप्त करना होगा। यह साधारण कार्य नहीं है। टंकारा अजमेर आदि के लोगों को यह बात समझ नहीं [illegible] से मैं वाराणसी संस्कृत यूनिवर्सिटी की एकेडेमिक कौंसिल का मेम्बर [illegible] द्वारा बना दिया गया हूं। मैंने वहां इन यज्ञवेदियों और यज्ञपात्रों के निर्माण और सब प्राचीन यज्ञों के प्रदर्शन का प्रस्ताव कौंसिल मे रखा है जिसका स्वागत काशी के विद्वानों ने किया है जब वहां निर्माण होगा उसी प्रसङ्ग मे उन्ही लोगों से मैं सभा भवन मे भी निर्माण करा सकता [illegible] इस बात की है कि [illegible] आर्य प्रतिनिधि सभा के [illegible] मे मिरजापुर (मेंगुरा) पधारे [illegible] अपने-अपने आर्यसमाजों मे आर्थिक सहयोग [illegible] समय उन अधिकारियों को [illegible] अधिकारी निर्वाचित हो जाये। [illegible] काम [illegible] [illegible] और पत्थर पर अंकित कर दिये जावेंगे। आशा है कि यज्ञप्रेमी यज्ञभक्त आर्य सभा के अधिकारियों को इस दिशा मे आर्थिक सहयोग देंगे।

दो बातें

मै आज इस लेख द्वारा दो बातें निवेदन करना चाहता हूं—

१—एक तो यह कि काशी के विद्वान् जिनकी प्रत्येक विषय की विद्या अपार है वे सब ही अति धार्मिक सदाचारी सत्यप्रिय दुराग्रह रहित शिष्ट हैं और वे ज्ञानतत्व की साक्षात् प्रतिमा है उनके हृदय मे महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के प्रति श्रद्धा है और व

(शेष पृष्ठ १२ पर)

Front Elevation

श्री मिश्रीलाल जी आर्य आर्यसमाज टांडा द्वारा ६००० के पवित्र दान से बनी यह यज्ञशाला।

धार्मिक जागरूकता की आवश्यकता

विचार-विमर्श

त्रिभुवन चतुर्वेदी, अजमेर

आजादी के बाद भारत में सांस्कृतिक जीवन में अनेक परिवर्तन हुए हैं। जब अंग्रेज थे, तो भारत के सामने एक विरोधी था। उसकी दासता से मुक्त होने की आकांक्षा थी। उसकी संस्कृति, उसकी भाषा, उसकी वेश भूषा, आदि के प्रति स्वाभाविक संकोच था। उससे बचने की सहज प्रवृत्ति थी। आजादी के बाद अंग्रेज चले गये और पश्चिमी संस्कृति के प्रति जो स्वाभाविक संकोच या खतरा था वह भी समाप्त होने लगा। नेहरूवाद ने अंग्रेज से नहीं, अंग्रेजों की बुरी बातों से बचने की सलाह दी, पतित नहीं पतित के दुर्गुणों से बचने की सलाह दी। और धर्मनिरपेक्षता की आड़ में विदेशी संस्कारों का भारत में अबाध आगमन हुआ। विदेशी संस्कार के रूप में आया हुआ भोगवाद सहज आकर्षक तो था ही, सिनेमा आदि के प्रचार के कारण व पूर्जों के दिखावटी चकाचौंध के कारण ईश्वर विमुखता भी बढ़ी। इसने भारतीयों को अपनी संस्कृति पुरातन के प्रति तो बेजार किया ही, धार्मिक अनुशासन की जड़ें भी हिला दीं। इसके साथ ही, सारे संसार में यह प्रचारित किया गया कि समृद्धि का आधार अमरीका सांस्कृतिक समृद्धि का भी आधार है। सैकड़ों विद्यार्थी अमरीका जाकर दीक्षा पाने लगे व अपनी संस्कृति के प्रति अनास्थावान होने लगे। नतीजा यह हुआ कि जो जातियां अपनी परम्पराओं का वध कराकर भी अपने धर्म की रक्षा हेतु पाकिस्तान जैसे देशों से बच निकली थीं, आज अपने धार्मिक अनुशासन व सांस्कृतिक गौरव से च्युत हो रही हैं। ऐसी स्थिति का सबसे बड़ा लाभ मिशनरियों ने विशेषकर अमरीकी धर्म प्रचारकों ने उठाया है। धर्मनिरपेक्ष राज्य की पहल का लाभ उठाकर, वे अपने धन से, व कुटिल चालों से धर्म परिवर्तन का कार्य निरंतर बढ़ा रहे हैं। विदेशी यह अच्छी तरह जानते हैं कि भारत एक उपनिवेश या अधीन राष्ट्र के रूप में तभी रह सकता है जब कि अधिकांश जनता उनके धर्म की अवलम्बी बन जावे। इस प्रयास का विफल हुए नागालैंड व मिजो में देखने को मिल रहा है, जहाँ पृथक् राज्य के रूप में ईसाई स्थान की मांग की जा रही है। कश्मीर में भी यह बात है जहाँ देश द्वारा इतना त्याग करने के बाद भी मुस्लिम राज्य की स्थापना का मानचित्र बनाया जा रहा है। आज का यथार्थ यह है कि अपने वर्तमान रूप में धर्मनिरपेक्षता खोखली सिद्ध हुई है। उसके स्थान पर धर्म सजगता आवश्यक हो गई है। मैं धार्मिक आक्रमण की वकालत नहीं करता, जो कि अन्य देश भारतभूमि पर कर रहे हैं। मैं तो धार्मिक सजगता चाहता हूं, अपने धर्म व सांस्कृतिक जीवन के प्रति रक्षण की भावना का विस्तार चाहता हूं, ताकि देश में पुनः सांस्कृतिक जागरण हो सके।

इस विदेशी धर्म प्रचार का कुछ दिन पूर्व मुझे बड़ा कटु अनुभव हुआ। संध्या को पहाड़ी की ओर घूमने गया। पहाड़ी अंचल में गरीबों की बस्ती है। दो गोरे व कुछ काले पादरी घूम रहे थे। थोड़ी दूर पर एक लड़का मिला जो अपनी बकरियां घेर कर ला रहा था। उससे पूछा तो पता लगा कि ये लोग 'डुबकी बाबा' हैं। थोड़ा कुतूहल हुआ। पता चला ये लोग ईसाई धर्म का प्रचार कर रहे हैं। उन्होंने दो लकड़ी की मूर्तियां बनवा रखी थीं, एक कृष्ण की और दूसरी ईसा की। पानी में तैरने पर कृष्ण की मूर्ति डूब जाती थी और दर्शकों से कहा जाता था, देखो कृष्ण ईसा के मुकाबिले में डूब गया। इसका सहारा लोगे तो तुम भी डूब जाओगे। उस लड़के ने बताया कि उसे विवाह कराने घर देने आदि प्रलोभन भी दिये गये थे। अपने धर्म की अच्छी बातें बताना व उनका प्रचार करना तो जनतान्त्रिक है पर इस तरह भ्रामक बातें फैलाकर या प्रलोभन देकर धर्म-परिवर्तन करना देश के संविधान व एकता के प्रति द्रोह है और राष्ट्र-द्रोह से कुछ कम नहीं है। अतः स्वाभाविक है, कि हिन्दुत्व की रक्षा के प्रति हम भी सजग हों। बीसवीं सदी के इस प्रगतिशील-युग में ऐसी बात करना सम्भवतः किसी को अच्छा नहीं लगे। पर यह तो अपने धर्म के अस्तित्व का प्रश्न है। अतः जरूरी है कि इस विषय पर गम्भीरता से विचार किया जावे।

मैं आर्यसमाज को एक समर्थ संस्था मानता आया हूं, जिसका भारत के पुनर्जागरण के इतिहास में महत्वपूर्ण योग रहा है। आज आर्यसमाज द्वारा प्रतिपादित अनेक सुधारों के लागू हो जाने के कारण उसका सैनिक रूप समाप्त हो गया है और उसमें एक प्रकार की जागृति सी प्रतीत है। फिर भी यह देशव्यापी संस्था है जिसका विशाल संगठन है व जिसके विशाल साधन हैं। ऐसी अनेक सांस्कृतिक व धार्मिक संस्थायें भारत में हैं जो किसी रचनात्मक कार्यक्रम के अभाव के कारण कोई महत्वपूर्ण कार्य नहीं कर पा रही हैं। अतः आवश्यक है कि इन संस्थाओं का कोई ऐसा सक्रिय कार्यक्रम हो जो इनके उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक हों व इनकी उपयोगिता प्रमाणित कर सकें। कुछ सुझाव विचारार्थ प्रस्तुत हैं।

१—आज समस्त देश में भारी बेरोजगारी है। सहस्रों प्रशिक्षित विद्यार्थी बालक-बालिकाएं बेकार हैं। उधर ईसाई मिशनरी अपने स्कूलों से गांव-गांव में प्रचार व सेवा कर रहे हैं। क्यों नहीं हम भी प्रचार व सेवा कार्य करें। अतः जरूरी होगा कि आर्यसमाज, आदि संस्थाएं भी गांव गांव में, जहां-जहां ईसाई स्कूल, आदि हैं वहां-वहां, अच्छे स्कूल खोलें जो सरकारी स्कूलों से बेहतर हों। प्रशिक्षित अध्यापक मिल ही जायेंगे। त्याग की भावना पर आधारित अच्छे स्कूल चलाएं। भारतीय दृष्टिकोण के प्रशिक्षण के लिए विशेष कैम्प आयोजित करें। डी० ए० वी० कालेजों के मूल में जो भावना थी, उसी का विस्तार इस प्रकार किया जाये कि संस्थाएं केवल महन्तों के गढ़ न रखकर सामाजिक संस्थाएं बनें जिससे कि इनमें गतिशीलता उत्पन्न हो जाये। किसी अच्छे कार्य के लिये देश में दानवृत्ति का अभाव नहीं है। कमी काम करने की है। ये पाठशालाएं केवल शिक्षण का ही कार्य न करें बल्कि धार्मिक विचारों का आदान प्रदान भी करें तो भ्रामक धर्म-परिवर्तन से देश को छुटकारा मिल सकेगा।

२—साथ ही, आवश्यक है कि सारे देश में अनाथालय स्थापित करने के कार्य को बढ़ाया जावे। विशेषकर निम्न वर्ग के दीन जनों पर ध्यान दिया जावे। भारत में समग्र क्रान्ति के वाहक ये ही लोग हैं। ये ही धार्मिक संतुलन के निर्माणकर्ता हैं। देश सदियों से इनके साथ दुर्व्यवहार करता रहा है। आश्चर्य है, हम गोरक्षा व कीट-रक्षा की बात करते हैं पर मनुष्य रक्षा की ओर उदासीन हैं। देश में शिक्षित पेंशनरों में वानप्रस्थ-वृत्ति को जगाकर अनाथालयों के लिए श्रेष्ठ प्रबन्धक प्राप्त किये जा सकते हैं। और इन्हीं के साथ औषधालय, आदि के कार्य भी चलाये जायें।

पर इसके लिये जरूरी होगा कि राजनीति के आकर्षणों से बचा जाय, सभी कार्य राजनैतिक दासता से मुक्त, केवल रचनात्मक स्तर पर हों और इसकी आकांक्षाएं भी अराजनैतिक हों। अन्यथा जो सड़ांध आज इन संस्थाओं में आती है इसमें भी आ जायेगी और धर्म व संस्कृति के हित के स्थान पर अहित ही अधिक होगा। अतः जरूरी है कि उद्देश्य व कार्यविधि में स्पष्टता प्रारम्भ से ही रहे।

पुलिस और अपराध

गत सप्ताह सम्पूर्ण देश में अपराध निरोध सप्ताह मनाया गया। उक्त अवसर पर कई राज्यों की राजधानियों मे प्रदर्शनी एवं चलचित्रों का आयोजन किया गया। इस सब के अतिरिक्त लाखों रुपये की लागत का साहित्य भी जनता मे वितरित हुआ। भारत की राजधानी होने के कारण देहली मे इस सप्ताह की शोभा और भी अधिक प्रशंसनीय थी। शायद यह प्रथम अवसर था जब पुलिस ने अपने कार्यक्षेत्र, कर्त्तव्यों और कार्यों का कोई लेखा या विश्लेषणात्मक हवाला सामान्य नागरिक को दिया और उससे सहयोग की आशा की। अन्यथा तो पुलिस के विषय में एक सामान्य नागरिक की जो जानकारी थी या बहुत अपूर्ण थी या फिर घृणास्पद थी। उक्त अवसर पर प्रकाशित होने वाले सभी प्रसारणों और कार्य-क्रमों से यह मालूम पड़ता था कि सरकार नागरिकों को आदर्श नागरिकों के कर्त्तव्यों की शिक्षा देने के अतिरिक्त जनता में पुलिस के प्रति अच्छी भावना, विश्वास एवं सहयोग की भावना भी स्थापित करना चाहती है। इसमें किसी को कोई आपत्ति नहीं यदि उसे आदर्श नागरिक के कर्त्तव्यों को जानने या उनका पालन करने को कहा जाय लेकिन दृष्टिकोण में अन्तर वहीं से प्रारम्भ होता है जब [illegible] आदर्शों को व्यावहारिक स्वरूप देने के लिए प्रयोग की [illegible] पद्धति का चयन करना होता है। यह सत्य है कि अच्छे विचारों का समर्थन करने और उनको अपने जीवन में उतारने की चेष्टा करने वालों की संख्या दुर्जनों से अधिक से अधिक है। निश्चित रूप से मनुष्य शान्ति एवं सुखी जीवन व्यतीत करना चाहता है और वह यह भी चाहता है कि दूसरों को उससे अनावश्यक कष्ट न पहुंचे फिर भी अपराध और अपराधियों का अस्तित्व सदा से विद्यमान है। माँ जैसे योग्य गुरुओं एवं घर जैसे पावन विद्यालय के होते हुए भी बालकों में दुराचार एवं नैतिकताहीन प्रवृत्तियों का जन्म कब और कहाँ हो जाता है यह विचारणीय है। पुलिस का कर्त्तव्य सामान्य नागरिक को सुखी एवं शान्ति जीवन व्यतीत करने के लिये वांछनीय परिस्थितियां उत्पन्न करना है। इस दिशा में पहला कदम नागरिक को सुरक्षित एवं आदर्श वातावरण प्रदान करना है। स्पष्ट है कि यदि नागरिक को यह अनुभव होता है कि उसका तन, धन, सन्तान और उसकी अन्य चीजें असुरक्षित हैं तो मानना होगा कि पुलिस की कार्य कुशलता में कुछ कमी है। अपराधों को कम करने की अपेक्षा अपराधियों को पकड़ लेना और उन्हें दण्डित कर देना आसान अवश्य है लेकिन इसमें सामान्य नागरिक का कोई भला नहीं होता। न ही दुर्घटना घटित होने के बाद घटना से हुई क्षति को पूरा ही किया जा सकता है और न ही उससे संतप्त व्यक्ति या परिवार के मनोबल को बनाये रखने या ऊपर उठाने में कोई बल मिलता है। आदर्श बात यही है कि अपराध हों ही नहीं और यदि हों भी तो अपराधी पकड़े जाने के बाद दुबारा अपराध करने के योग्य न रहे।

अपराधियों के सम्बन्ध मे पुलिस से अधिक जानकारी किसी अन्य व्यक्ति या संस्था के पास नहीं होती। सभी योग्य एवं कुशल अधिकारी जानते हैं कि उनके क्षेत्र मे अमुक दस पन्द्रह लोग हैं जो अपराध करते हैं या जिनके बल की आड़ लेकर कोई नया या बाहरी अपराधी उनके क्षेत्र मे अपराध करने की कुचेष्टा करता है। कुछ ऐसे अपराधों को छोड़ कर जो [illegible] वश, [illegible] या अज्ञानता [illegible] हैं, सभी [illegible] पूर्व निश्चित [illegible] सुसंगठित होते हैं। जब अपराध [illegible] करने वाले व्यक्ति जिज्ञासा वश [illegible] नहीं करते, यदि कोई प्रेरक [illegible] है तो वह अपराध करने की प्रवृत्ति [illegible] क्षोभ या फिर प्रतिशोध, प्रतिरोध का [illegible] अपमान, अन्याय, शोषण [illegible] के बाद होता है। [illegible] आर्थिक विषमताएं और अभाव [illegible] अपराधों के लिये उत्तरदायी कारण है। अपराध के कारणों का विश्लेषण करना यहां नहीं है फिर भी प्रसंगवश इतना अवश्य कहना है कि सभी अपराध चाहे वह दंडनीय हैं या नहीं मनुष्य की अपनी दुर्बलताओं, विवशताओं और अभावों का प्रतीक है जिनसे छुटकारा दिलाना केवल शिक्षा के माध्यम से सम्भव है।

अपराध करने वाला एक अभाव की पूर्ति करने की चेष्टा मे दूसरे अभाव को जन्म देता है। अच्छा यह हो कि अपराधी को दंड दिलाने के लिये न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत करने से पहले पुलिस अधिकारी पूरी ईमानदारी एवं मानवीयता से अपराधी का पूर्ण अध्ययन करें। यदि आवश्यक हो तो विभिन्न सामाजिक विषयों के सम्बन्धित व्यक्तियों की मदद से यह कार्य पूरा किया जाय अपराधी की सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक एवं शारीरिक पृष्ठ भूमि को बिना समझे उसके लिए उपयुक्त दंड की व्यवस्था कठिन ही नहीं असम्भव भी है। यों तो दंड में [illegible] होनी ही चाहिये लेकिन दंड और अपराध एक दूसरे के पूरक न होकर अपराधों के उत्थान के लिए आवश्यक कार्यक्रम के रूप में हो। आग को आग जन्म देती है उसे समाप्त नहीं करती। दंड की व्यवस्था न्यायकारों और आधुनिक न्याय शास्त्रियों के अनुसार व्यक्ति के उत्थान के उद्देश्य से की गई है उससे प्रतिशोध लेने से नहीं। सामान्य नागरिक को उसकी सुरक्षा का आश्वासन देना पर्याप्त नहीं है [illegible] नैतिक स्तर [illegible] कोई क्षेत्र [illegible] जाए। [illegible] अपराधों से पीड़ित [illegible] हममें से हर एक दूसरे के [illegible] सुरक्षा या भय उत्पन्न कर सकता है। [illegible] की शिक्षा [illegible] मनुष्य को [illegible] के [illegible] और [illegible] की भावना [illegible] है, [illegible] राष्ट्रीय वातावरण की स्थापना [illegible] नहीं हो सकती। आर्थिक विषमताओं को एक साथ दूर करने की शक्ति हममें है नहीं और मनुष्य को [illegible] नैतिकतापूर्ण शिक्षा देने की चेष्टा हम [illegible] नहीं, परिणाम है कि [illegible] को [illegible] अपने व्यावहारिक जीवन में [illegible] सचेष्ट नहीं। केवल भौतिक [illegible] ही नहीं, आध्यात्मिक एवं [illegible] रूप से भी हममें से अधिकांश अभावग्रस्त हैं। एक बार को भौतिक अभाव की पूर्ति हो भी जाये लेकिन जब तक हमारा आध्यात्मिक एवं नैतिक स्तर ऊपर नहीं उठता हम सन्तुष्ट नहीं हो सकते और ऐसी अवस्था में अभाव की पूर्ति असम्भव है। अभावग्रस्त निर्धन उतने भयंकर अपराध नहीं करता जितना आदर्श शिक्षा हीन और आध्यात्मिकताच्युत धनिक एवं शिक्षित मनुष्य करता है। अपराधों को कम करने या समूल नष्ट करने के लिये सबसे पहले हमें धार्मिक शिक्षा का प्रसार करना होगा। अच्छा तो यह हो कि हम सम्पूर्ण शिक्षा पद्धति को बदल सकें लेकिन यदि ऐसा न भी हो तो हमें धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा मन्दिरों, गिरजों और मस्जिदों की चारदीवारी से बाहर निकालकर हर बालक तक [illegible] एवं सरल रूप से पहुंचाना है। दूसरी बात यह है कि [illegible] शिक्षा [illegible] को [illegible] जाना चाहिये। भौतिकता की आवश्यकता से अधिक

— चन्द्रप्रकाश [illegible] देहली

[illegible] हम [illegible] को [illegible] राष्ट्रीय [illegible] व्यक्ति को [illegible] होता [illegible] है। [illegible] चाहिये [illegible] भारत [illegible] राष्ट्रीय [illegible] की [illegible] चेष्टा होनी चाहिये। अपराध करने की प्रवृत्ति जागृत [illegible] एवं [illegible] प्रभावशाली [illegible] योजना बनायें।

लेकिन [illegible] करने [illegible] अपराधी को [illegible] के अध्य- [illegible] पकड़वाने [illegible] करने के लिये नागरिक [illegible] रहे इसके लिये [illegible] है कि पुलिस [illegible] एवं [illegible] हो। अपराधी को पकड़ने के बाद उसके साथ [illegible] हीन व्यवहार करना उपयुक्त नहीं है, यह ऐसा अवसर भी नहीं कि [illegible] उपदेश दिया जाय, [illegible] है कि पुलिस [illegible] से अधिक समझने की कोशिश करे। सामान्य

(शेष पृष्ठ १५ पर)

कच्छ की धधकती धरती

कच्छ ट्रिब्यूनल के निर्णय को स्वीकार करने से सम्पूर्ण कच्छ को खतरा

सन् १९२८ के वैस्ट इण्डिया कम्पनी के गजेटियर वाल्टर हैमिल्टन जिल्द १ पृष्ठ ४६५, उसके पश्चात् अंग्रेज शासन काल में सन् १८६५ से १८७२ के सरकारी नक्शों और दस्तावेजों को देखने से तथा सन् १९०९ के सिन्ध के गजेटियर का अवलोकन करने से, सन् १९०९ के इम्पीरियल गजेटियर आफ इण्डिया प्राविन्शल सीरीज जिल्द २ को पढ़ने से, सन् १९१० में सिन्ध के अंग्रेज कमिश्नर के लिखित बयान पर नजर डालने से, सन् १८६९-७० के सिन्ध के जनरल रेवेन्यू रिपोर्ट तथा कच्छ के तत्कालीन असिस्टेंट पोलिटिकल एजेण्ट एच०एच० रैण्ड के बयान को देखने से कच्छ, भारत के वर्णनाथ हिस्से का ही भाग रहा है। ब्रिटिश शासनकाल के सन् १९३७, ३८,३९ और ४२ तक के राजनैतिक परिवर्तनों के बावजूद अंग्रेजों ने सम्पूर्ण कच्छ को, कच्छ भुज राज्य (भूतपूर्व रियासत) का ही अंग माना। ८ मई १९४८ में जब कच्छ-भुज राज्य भारत संघ में शामिल किया गया, उस समय इस क्षेत्र के नक्शे तथा जो दस्तावेज भारत सरकार को दिये गये थे; [illegible] है कि [illegible] पाकिस्तान के अधीर [illegible] भारत का ही है।

सन् १९४७ में देश का बंटवारा हुआ, [illegible] कोई ध्यान नहीं दिया।

कच्छ की ओर भारत सरकार की उपेक्षा नीति का पाकिस्तान सरकार ने लाभ उठाया। सन् १९६० में पाकिस्तान सरकार ने इस क्षेत्र के लिये व्यवस्थित योजना बनाई। जिसके अन्तर्गत बदीन के हवाई अड्डे को मजबूत राडार का रूप दिया। कंजरकोट तथा छाडबेट तक सड़कें बनाई गईं। [illegible] लगाकर इस रेगिस्तान में पीने के पानी की तथा रोशनी के लिये बिजली की व्यवस्था की। यह सब कुछ इसलिये किया गया जिससे आगे चल कर हमले के समय उनकी फौजी टुकड़ियों को कोई परेशानी न हो और उन्हें तत्परता से सामान पहुंचाने की सुविधा हो सके।

पाकिस्तान सरकार ने एक ओर तो अपनी फौजी कदमों की सुविधा की ओर ध्यान दिया। दूसरी ओर सिन्ध के प्रसिद्ध ओलियों का संगठन बनाकर उनके द्वारा सैंकड़ों की संख्या में फकीरों की व्यवस्था की। जिनको कुछ समय ट्रेनिंग देकर भारत के कच्छ क्षेत्र में हाजीपीर तथा लखपत के मार्ग से भेजा जाने लगा। कुछ समय इन फकीरों ने कच्छ तथा हरे रंग के झण्डे को फहराया। सन् १९६१ से [illegible] का जब गुजरात के आर्य समाजी नेताओं को पता लगा तब उसकी अनुसन्धान करने का कार्य अपने हाथ में लिया। १५ दिन के कच्छ प्रवास से हमें पाकिस्तान की तमाम योजनाओं का पता लग गया। हमने इसकी रिपोर्ट प्रान्तीय तथा केन्द्रीय सरकार के कर्णधारों को दी। तथा वर्तमान पत्रों में भी उसके समाचार दिये। कुम्भकरण की निद्रा में सोने वाले हमारे राष्ट्रीय नेताओं ने इस बात पर कोई ध्यान नहीं दिया। पाकिस्तान ने हमारी सरकार की गफलत का पूरा लाभ उठाया। अचानक हमला हुआ। अनुभवहीन सिपाही जवानों के कारण पाकिस्तान की मुराद पूरी न हो सकी। भारत सरकार को अपनी की गई गफलत का ख्याल आया। रक्षा की तैयारी की; परन्तु जहां तक कच्छ का सवाल है वहाँ की रक्षा व्यवस्था अपूर्ण है, न के बराबर है। न सड़कें बनाई गई

[illegible]

धारी [illegible], [illegible] फकीरों ने सरहद पार [illegible] प्रवेश [illegible] किया।

[illegible] तेजस्वी तथा दर्शन-व रखने वाले लोगों को आर्थिक मदद दी जाने लगी। पाकिस्तानी जासूसों को इनके यहां सहारा मिलने लगा। हमारी गफलत तथा मूर्खतापूर्ण मान्यताओं ने भारत से वफादारी रखने वाले लोगों को भारत का दुश्मन बना दिया।

पाकिस्तान के इस भयंकर षड्यंत्र [illegible] व्यवस्था है, न [illegible] हमारे [illegible] इस दृश्य देखने से दिल [illegible] आंसू बहाती थी-इस [illegible] व्यवस्था पर [illegible] लिया। [illegible] के लिए [illegible] था।

भारत सरकार की लापरवाही से हम दुःखी थे। पाकिस्तानी जासूस फकीरों तथा साधुओं के वेश में भारत की कच्छ सरहद पार करके जो भयंकर कार्य कर रहे थे उससे हम चिंतित थे। हमने पाक एजेन्टों और जासूसों की इन गतिविधियों को रोकना अपना कर्तव्य समझा। और उसके मुकाबिले में आर्यसमाज की ओर से कर्मवीर पं० आनन्दप्रिय के नेतृत्व में कार्य शुरू किया। कच्छ जिले की ७ तहसीलों में ७ अनुभवी पंडितों की व्यवस्था की गई। जिनका मुख्य काम-

(१) पाक एजेन्टों की गतिविधियों को रोकना।

(२) जो हिन्दू धर्म इस्लाम स्वीकार करके मुसलमान हो चुके हैं उन्हें पुनः हिन्दू धर्म में दीक्षा देना।

★ पं० भगवानदेव शर्मा

संचालक—महर्षि दयानन्द कीर्ति मन्दिर टंकारा-गुजरात

---

(३) मेवला-सीढा, कुमारा जाति के लोगों के धार्मिक संस्कार करवाना और उनका सम्बन्ध पूर्व की उनकी जाति के लोगों से करवाना।

(४) उन्हें भारत के वफादार बनाना।

(५) उनके बच्चों के शिक्षण की व्यवस्था करना और यथासंभव मदद करना था।

हमें इस बात [illegible] है कि [illegible] हिन्दू [illegible] मुसलमान बन चुके [illegible] है।

कच्छ सीमा क्षेत्र की कोई समस्या नहीं थी। राजनीति के अनभिज्ञ हमारे नेताओं ने [illegible] कच्छ सीमा विवाद को स्वीकार किया। [illegible] एक [illegible] गलती की।

भारत की जनता ने तथा संसद ने इस ट्रिब्यूनल का विरोध किया। उनका कहना था कि विवाद कोई है ही नहीं। फिर तीसरी पार्टी को इस में क्यों लाया जा रहा है। परन्तु हमारे कांग्रेसी नेताओं ने इस तरफ ध्यान नहीं दिया। क्योंकि उनके सामने अपने देश तथा देशवासियों की चिन्ता कम थी; दुनियां वालों की चिन्ता अधिक थी। पाकिस्तान ने ट्रिब्यूनल के सामने कंजरकोट तथा

कच्छ की धधकती धरती

छाडबेट और अन्य भारत के मुख्य स्थानो पर अपना अधिकार सिद्ध करने के लिए लगभग एक हजार मुद्दे पेश किये। और विस्तार पूर्वक फिल्म भी बनाई। और कुछ (जाली) दस्तावेज पेश किये। भारत सरकार की ओर से लगभग ५०० चित्र पेश किये गये। हमारा पक्ष बहुत ही कमजोर पेश किया गया। क्योंकि इस क्षेत्र से अनुभवहीन लोगों को ट्रिब्यूनल के सामने पेश करने के लिये नियुक्त किया गया था। ऐतिहासिक तथा भौगोलिक दृष्टि से देखा जाये तो हम दावे के साथ कह सकते हैं कि सिन्ध का पारकरकर तथा बदीन का क्षेत्र भी भारत को मिलना चाहिये।

आज कच्छ तथा उत्तर गुजरात के बनासकाठा क्षेत्र में सैंकड़ों की संख्या में पाकिस्तानी जासूस कार्य कर रहे हैं। नित्य कच्छ के 'छानी गेर' तथा 'भखरव' के मार्ग से और बनासकाठा के "सुई गांव" तथा 'डीसा' के मार्ग से ये लोग भारत क्षेत्र में आते जाते हैं। कच्छ में इनकी गतिविधियों में मदद करने वाले हैं—नलिया (जहां गुजरात के मुख्य मन्त्री श्री बलवन्तराय महता के वायुयान को पाक के सैनिक वायुयान ने नष्ट किया था) से १२ मील दूर "कोठारा" गांव के एक तथाकथित कांग्रेसी मुसलमान डा० मूंगी। इन [illegible]

[illegible]

पहुंच चुके हैं।

राष्ट्र की यह कमजोरी सबसी कि तारीख ८ मई १९४८ को भारतीय संघ में कच्छ भुज राज्य शामिल करते समय इस क्षेत्र सम्बन्धी 'इन्स्ट्रूमेंट आफ एक्शन' की फाइल (जिसमें महत्वपूर्ण नक्शे और दस्तावेज थे) नई दिल्ली स्थित आफिस से गुम किया जा चुका है। इस महत्वपूर्ण फाइल के अभाव से ट्रिब्यूनल के सामने हमारा केस कमजोर रहा है। इस बात का पता तब लगा जब लन्दन स्थित भारतीय हाई कमीशन ने कच्छ के महाराव श्री हिम्मतसिंह को पत्र लिखकर पूछा कि—क्या आपके पास उक्त फाइल की कोई नकल है? कच्छ के महाराव ने उत्तर दिया" भारत संघ में शामिल होते समय सम्बन्धित फाइल भारत सरकार को सौंपी गई थी। हमारे पास उसकी कोई प्रतिलिपि नहीं है।" हम हाथ मलते रह गये पाकिस्तान अपने षड्यन्त्र में सफल हो गया।

पाकिस्तान का ध्यान संपूर्ण कच्छ पर कब्जा करना है। जिसके लिये उन्होंने योजना बद्ध कार्य शुरू कर दिया है। गत दो तीन मासों से पाकिस्तानी जासूस यन्त्र चालित नौकाओं के साथ मुंद्रा तथा जखाऊ कस्बों पर सैंकड़ों की संख्या में पाये गये। गत सात जनवरी से २८ फरवरी तक लगभग २३ नौकाओं और ५४२ पाकिस्तानियों को पकड़ा जा चुका है। १९-२० फरवरी को ३ और पाकिस्तानी नौकाओं तथा ५८ व्यक्तियों को पकड़ा गया, जिसमें से कई अफसर भी हैं।

पाकिस्तान इस समय शान्त है—ट्रिब्यूनल के निर्णय के अमल करने की राह देख रहा है। ट्रिब्यूनल के निर्णय को अमल में लाने से, उन्हें कच्छ का यह संवेदनशील क्षेत्र प्राप्त होगा जिससे, [illegible]

[illegible]

पाकिस्तान के [illegible] के अनुसार सम्पूर्ण कच्छ जिसके अन्तर्गत मुंद्रा, माण्डवी, नवलखी तथा कण्डला के महत्वपूर्ण बन्दरों को भी अपने कब्जे में करना है। इस योजना को क्रियात्मिक रूप देने के लिये पाकिस्तान सरकार के संकेतों की इच्छा में अनुभवी लोग पास-पोर्ट लेकर कुछ वर्षों से भारत भेजे हुये हैं। समय मर्यादा पूरी हो जाने पर भी वे लोग अभी तक पाकिस्तान नहीं लौटे हैं। हमारी सरकार इन लोगों को तलाश करने में असमर्थ रही है। गुजरात सरकार ने गत मास विधान सभा में इस बात को स्वीकार किया है कि ऐसे पाकिस्तानी २४६ व्यक्ति भी राज्य में हैं। जिनकी जांच की जा रही है। भारत सरकार की इस गफलत ने कच्छ के लिये खतरा पैदा कर दिया है।

१० वर्ष का इतिहास साक्षी है कि पाकिस्तान ने भारत के साथ विश्वासघात और धोखे बाजी ही की है। उन्होंने कभी किसी वचन का पालन नहीं किया। कच्छ ट्रिब्यूनल के निर्णय के पश्चात् अब पाकिस्तान बंगाल और बिहार के सीमा की भारतीय भूमि पर दावा करने लगा। पाकिस्तान की हालत तो यह है कि मरज बढ़ता ही गया ज्यूं-ज्यूं दवा की। ऐसी हालत में कच्छ ट्रिब्यूनल के निर्णय को मानना देश के लिये खतरनाक सिद्ध होगा। ट्रिब्यूनल के निर्णय को इसलिये नहीं मानना चाहिये क्योंकि उन्होंने मूल बातों की अवहेलना की है और जो निर्णय किया है उसमें भी ट्रिब्यूनल के सदस्य सम्पूर्ण एक मत नहीं हो सके। जिस बात को सर्वसम्मति से स्वीकार न किया गया हो इससे यह सिद्ध होता हो कि उसमें अवश्य कोई राजनैतिक चाल चली गई है। जिसको मानने से [illegible]

[illegible]

[illegible] का काम नहीं होगा। बार बार अपराध करने वाले या हत्या एवं राष्ट्र द्रोह जैसे भीषण अपराधों को करने वालों के लिये कठोर दण्ड की व्यवस्था होनी ही चाहिये।

पुलिस [illegible] ईमानदारी [illegible] से पूरा करना चाहिये तभी वह नागरिकों से वांछनीय सहयोग के पाने में सफल हो सकते। अब तक पुलिस अपने रचनात्मक व्यवस्थात्मक पक्ष को जनता को [illegible] भांति स्पष्ट नहीं कर देगी तब जनता को उसके विषय में एक [illegible] सी भावना बनी रहेगी। आज की [illegible] तो यह है कि सज्जन व्यक्ति पुलिस [illegible] सन्देह की दृष्टि देखकर उससे सहयोग करना ठीक नहीं समझता जो पुलिस अपराधी व्यक्तियों को दण्डित करने लिये विवशतावश व्यवहारी गवाहों [का] सहारा लेना पड़ता। परिणाम यह होता है कि अधिकतर गुनाहगार मुक्त [हो] जाते हैं और निर्धन और बेगुनाह बेक[सूर] दण्डित वस्तुतः पुलिस तब तक कुशल पूर्वक कार्य नहीं कर सकती जब तक [उसे] नागरिकों का सहयोग न प्राप्त [हो]। अपराध तब तक कम नहीं हो सक[ते] जब तक शिक्षा ठीक नहीं और द[ण्ड] व्यवस्था अपराध की पूरक न हो[कर] अपराधी की पूरक ही हो जाती। ना[गर]िक तब तक सहयोग नहीं कर पा[येंगे] जब तक पुलिस अपनी ईमानदारी ए[वं] निष्ठा का परिचय अपने कार्यों [से] जानकारी सामान्य नागरिक तक न पहुंचा पायेगी।

पुलिस प्रत्येक राष्ट्र की एक महत्वपूर्ण संस्था होती है। देश की सुर[क्षा] की बड़ी जिम्मेदारी उसके कन्धों पर है क्योंकि वह भौगोलिक सीमाओं [की] रक्षा के लिए उत्तरदायी न हो[कर] अन्दर बसने वाले राष्ट्रीय नागरिकों [illegible]

[illegible]

अच्छा हो कि नागरिकों का नैतिक स्तर इतना ऊंचा हो सके कि वे पुलिस [का] ध्यान व शक्ति अपराधों की र[oकथाम] [illegible] आज [illegible] आत्मक कार्यक्रमों में लगा सकें।

स्वास्थ्य ही जीवन है

यदि आप वास्तव में सौंदर्य चाहती हैं और अपने जीवन को स्वस्थ बनाना है तो आप को सिर्फ ३ बातों पर ध्यान देना चाहिये।

१—अपना हाजमा ठीक रखिए।

२—चिन्ता छोड़ तथा सदैव प्रसन्न रहिये।

३—रोज सुबह टहलने जाइये। ये काम आप केवल एक महीना करके देखें आप के सौंदर्य में जमीन आसमान का अन्तर हो जाएगा।

प्रथम हाजमा ठीक होने से शरीर में रक्त का संचार ठीक ठीक होता है। इससे स्वास्थ्य बढ़ता है और वास्तव में स्वास्थ्य ही सौंदर्य है। हाजमा बिगड़ने से बाल रूखे मुंह सूखा और त्वचा रूखी दीखती है। उस दशा में क्रीम पाउडर वह सौंदर्य नहीं दे सकते, परन्तु इस हाजमे को रोज चूरन फांकने या हर महीने जुलाब लेने से ठीक नहीं किया जा सकता। रोज कोई न कोई सब्जी खाएं। इससे आप का हाजमा ठीक रहेगा। पालक, टमाटर, मूली, प्याज, हरा धनिया, पोदीना, नीबू आदि चीजें खूब खाएं। इन चीजों के खाने से आपका हाजमा ठीक हो जाएगा, तन्दुरुस्ती ठीक होगी और अपना चेहरा शीशे में देख कर खुश होगी।

हाजमे को ठीक रखने के लिये यह भी आवश्यक है कि भोजन उचित समय पर उचित मात्रा में लिया जाय तथा भोजन पौष्टिक अथवा संतुलित हो। भोजन ऐसा करना चाहिये जो कि सरलता से पच सके जिससे पचने में कष्ट न हो।

चिन्ता, उदासी, रंज, शोक, फिकर कुछ भी कहिये, सब एक ही चीजें हैं। इससे चेहरा कुरूप दीखने लगता है, क्योंकि उस दशा में शरीर के अन्दर एक प्रकार का विष तैयार हो जाता है जो रक्त में मिलकर त्वचा को कुरूपता प्रदान करता है। बालों की जड़ें कमजोर हो जाती हैं, जिससे वे छोटे हो जाते हैं। झड़ने लगते हैं या असमय में सफेद हो जाते हैं। इसका हाजमे पर भी असर पड़ता है और हाजमा बिगड़ जाने से सौंदर्य बिगड़ जाता है। परन्तु प्रश्न यह है कि चिंता दूर कैसे की जाये? सोच फिकर के प्रेत को मन से निकाल बाहर कैसे करें, इसका सिर्फ एक उपाय है। सुख दुःख हर चीज को परमात्मा की देन समझकर स्वागत करें और प्रसन्न रहें। बराबर मुस्काने की कोशिश करें, खाली कभी न बैठें। सहेलियों से गपशप करके अपना जी हल्का करती रहें। बस आप निश्चित रहेंगी और निश्चिन्तता स्वयं ही एक सौंदर्य है।

रोज सुबह टहलना इस लिये जरूरी है कि इससे एक प्रकार की कसरत हो जाती है। हाजमा ठीक रहने के लिये टहलना सर्वोत्तम औषधि है। डाक्टरों ने इसे सर्वोत्तम व्यायाम माना है। अमेरिका के एक चिकित्सक का कहना है कि प्रातःकाल का टहलना हर मर्ज की दवा है। वह कहते हैं कि यदि आप को जुकाम हो तो खुली स्वच्छ हवा में टहल कर देख लें फौरन जुकाम ठीक हो जायगा। तपेदिक जैसे रोग टहलने से ठीक हो जाते है। टहलने से भूख खूब लगती है और भोजन भी खूब होता है।

नन्हे मुन्ने

बच्चा जब तक दूध पीता रहे तब तक दूध पिलाते रहना चाहिये। प्रायः बच्चे ५ से ३० मिनट तक दूध पीते रहते हैं। इस प्रकार एक दिन में छह बार या हर चार घण्टे बाद दूध पिलाना चाहिये। हर बार छाती खाली हो जानी चाहिये, अन्यथा अगली बार कम दूध साबित होगा।

यदि हो सके तो जब तक शिशु के दांत न निकल आएं तब तक उसे मां का दूध मिलना चाहिये। बच्चे के दांत प्रकृति का संकेत है कि अब वह अन्न खा सकता है।

इस तरह मां का अपना दूध पिलाना हर प्रकार से लाभकर है पर इसके साथ ही मेरी आपसे दो कुछ बातों का ध्यान रखना चाहिये। पहली बात यह कि बच्चे को दूध पिलाने वाली स्त्री को दूसरे पदार्थ वाली खुराक तथा मसाले आदि कम मात्रा में सेवन करना चाहिए फल काफी खाने चाहिए तथा जल काफी पीना चाहिए। वास्तव में शिशु को दूध पिलाने वाली माता की खुराक में आम स्वस्थ व्यक्ति की खुराक से कोई विशेष अन्तर नहीं होना चाहिये। हर बार बच्चे को दूध पिलाने से पूर्व माता को जल पी लेना चाहिए। मां की खुराक अच्छी होने से ही उसका दूध बच्चे के लिए अच्छा होगा।

यदि ऐसा सम्भव नहीं है और मां को हानिकारक वस्तुयें खाने की आदत है तथा वह उन आदतों को छोड़ने में असमर्थ है, तो उस स्थिति में बच्चे को ऊपर का दूध पिलाना ही उचित होगा। ऐसी हालत में गाय या बकरी का दूध पतला करके दिया जाना चाहिये।

गाय का दूध या गाय, बकरी के दूध के साथ-साथ बच्चे को फलों का रस भी देना चाहिये। ताजा रस निकाल कर स्वच्छ बोतल में डालकर स्वच्छ निपल से पिलाना चाहिये। पांच महीने के बच्चे को इस प्रकार दूध और फलों का रस देना चाहिये।

६ बजे प्रातः—मां का दूध

१० बजे प्रातः—४ औंस गाजर

६ बजे सायं—४ औंस संतरा

१० बजे रात्रि—मां का दूध

बड़े बच्चों को सेब, अंगूर, सन्तरा, टमाटर आदि का रस दिया जा सकता है। दिया जाने वाला फलों का रस नहीं रखना चाहिये। फल का ताजा रस ही देना चाहिये। फलों का रस कुछ देर रखा रहने से खराब हो जाता है।

चाय काफी अधिक पीने से या धूम्रपान करने से महिलाओं में स्वाभाविक दुर्बलता आ जाती है। उचित यही होगा कि मां इन हानिकारक वस्तुओं का सेवन न करे।

आम के आम गुठली के दाम

जिन वस्तुओं को आप बिना कुछ सोचे-समझे तुच्छ समझकर फेंक देती हैं, उन्हें फेंकिये मत, उन्हें इस प्रकार प्रयोग में लाइये।

खरबूजे के बीज

पहले आप बीजों को छील लीजिये, अर्थात इनके ऊपर का काला छिलका उतार दीजिये। अब इन बीजों को गरी के तेल में पीसकर सिर में इनकी मालिश करिये। इससे आप के बाल कोमल, श्याम, अधिक घने तथा लम्बे हो जायेंगे और साथ ही आप के सिर के रूसी जुएं भी एक दम नष्ट हो जायेंगे।

गोभी के डण्टल

वास्तव में इनकी बड़ी ही स्वादिष्ट सब्जी बनती है। गोभी के डण्टलों को पतले-पतले काट लीजिये। अब कड़ाई में जरा अधिक मसाला डालकर ठीक प्रकार से भून लीजिये। भून जाने पर डण्ठल डालकर अच्छी तरह चलाकर ढक दीजिये। गल जाने पर इन्हें भून कर उतारिये। ध्यान रहे मसाला जरा तेज और अधिक हो।

अनार के बीज

आप अनार के बीजों को सुखाकर गर्म तवे पर भून लीजिये। फिर इन्हें महीन पीसकर रख लीजिये। सब्जी तरकारी के बाद ऊपर से इनका बुरका छिड़क देने से सब्जी बहुत स्वादिष्ट हो जाती है। सिरके में भी इसको डाला जा सकता है। यह पाचन शक्ति को बढ़ाता है। यदि आप इस चूर्ण को शहद में मिलाकर किसी खांसी वाले रोगी को दिला दें तो यह दवा का काम करेगा।

गन्ने की छीलन

जी हां यह भी एक उपयोगी वस्तु है। आप छीलन को तथा रस निकल जाने के बाद बचे पदार्थ को सुखा लें और अपने कमरे में सोते समय जलाते चलिये तब आप कर जलएं तो आप देखेंगी कि आप का कमरा एक विशेष प्रकार की सुगन्ध से भर गया है। इसमें एक लाभ यह होगा कि उस रात मच्छर आपको तनिक भी नहीं सता एंगे।

कुछ काम की बातें

स्याही का दाग—पुराने सिर्के को पानी में गर्म करके धो डालने से स्याही का दाग छूट जाता है।

फलों के रस के दाग—कबूतर की बीट को पानी में औटा कर धोवें।

नील का दाग—ताजे दूध को गर्म करके धोवें।

सब भांति के दाग—ऊंट की मेंगनी को पीस कर पानी में घोलें, और उसमें और उसमें कपड़े को भिगो दें। एक दिन रात पड़ा रहने दें। दूसरे दिन धो डालें। रीठे और साबुन के पानी से धो डालें सब दाग छूट जायेंगे।

चाय का धब्बा दूर करना—चाय के धब्बे को दूर करने के लिये उस पर गिलीसरीन लगाकर कुछ देर रखें फिर साधारण रीति से धोयें।

आचार्य भद्रसेन

(संक्षिप्त जीवन परिचय)

जिन्हें कि राजस्थान सरकार ने उनकी संस्कृत सेवाओं के उपलक्ष में तीन वर्ष तक एक सौ रुपये मासिक सहायता देने का निश्चय किया है।

आचार्य भद्रसेन भारत के सुप्रसिद्ध उन गिने चुने विद्वानों में एक हैं जिन्होंने संस्कृत के सुप्रसिद्ध केन्द्रों मे शिक्षा ग्रहण की है आपने प्राच्य आर्य शिक्षा प्रणाली के अनुसार विद्या अध्ययन किया है। श्री आचार्य जी की प्रारम्भिक शिक्षा उर्दू भाषा मे हुई। आप प्रारम्भ मे ही विद्या अध्ययन मे कुशाग्र बुद्धि थे। इसलिये ढाई तीन वर्ष के अल्प काल में उर्दू की पाँच क्लासें पास कर लीं। श्री आचार्य जी को असन्मार्ग से हटाकर सन्मार्ग मे प्रवृत्त करने वाले एक आदर्श आर्य थे वे सदाचार व संयम की साक्षात् प्रतिमूर्ति थे जिनका नाम दीवानचन्द था वे एक पटवारी होते हुये भी उनके आर्यत्व का प्रभाव उनसे सम्बन्धित सभी ग्रामों मे फैल गया था वे अपना निश्चित ३०-३२ रुपये वेतन के अतिरिक्त किसानों व जिमींदारों से एक पैसा भी नहीं लेते थे। उनकी तथा एक अन्य महानुभाव के आग्रह से श्री आचार्य जी अपने घर से रात्रि को उठकर बिना घर वालों को सूचित किये हिन्दी तथा संस्कृत पढने के लिये लाहौर मे आ गये। लाहौर मे दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय आदि मे संस्कृत तथा हिन्दी का अध्ययन किया।

श्री आचार्य जी को प्रारम्भ मे ही प्राच्य आर्ष प्रणाली के अनुसार संस्कृत पढ़ने की तीव्र अभिलाषा थी। आचार्य जी ने लाहौर में अध्ययन काल में जब समाचार पत्रों में यह पढ़ा कि कानपुर के वैदिक विद्यालय मे उपरोक्त शिक्षा प्रणाली के अनुसार पढ़ाया जाता है, परन्तु आप के पास कानपुर तक पहुचने का किराया भी नहीं था। अत. श्री आचार्य जी दिन मे तो विद्यालय मे पढ़ते और सायंकाल लाहौर के बाजारों में घूम-घूम कर लाहौर से निकलने वाले वैदिक मिलाप, प्रताप तथा बन्देमातरम् आदि को बेचते। अत. जब श्री आचार्य जी के पास कानपुर तक का किराया इकट्ठा हो गया तब आप लाहौर से कानपुर आ गये, लगभग दो ढाई वर्ष कानपुर मे अध्ययन करने के पश्चात् श्री आचार्य जी हरदुआगंज साधु आश्रम मे पढ़ने के लिये आये। क्योंकि वहां प्राच्य प्रणाली के अनुसार पढ़ाया जाता था। श्री पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु, श्री प० शंकरदेव जी आदि भारत के सुप्रसिद्ध विद्वान अध्ययन कराते थे। उन्होंने आचार्य जी की प्रार्थना स्वीकार कर उन्हें प्रविष्ट कर लिया। अमृतसर के संस्कृत प्रेमी पुरुषों ने पूज्य स्वामी सर्वदानन्द जी से अपने हरदुआगंज के विद्यालय को अमृतसर मे ले जाने की प्रार्थना की। अत उपर्युक्त विद्यालय विरजानन्द ब्रह्मचर्य आश्रम के नाम से अमृतसर आ गया। अमृतसर मे ये विद्यालय लगभग ३ वर्ष तक बड़ी सफलता पूर्वक चला फिर विद्यालय के प्रबन्धकों और विद्यालय के गुरुजनों मे कुछ अनबन हो जाने के कारण वह विद्यालय भी बन्द हो गया। फिर श्री आचार्यजी व गुरुजनों ने ५-६ब्रह्मचारियों को साथ जिनके माता-पिता खर्च दे सकते थे उनको साथ लेकर काशी जाने का निश्चय किया। ऐसी अवस्था मे श्री आचार्य जी के सम्मुख बड़ी कठिन समस्या आकर उपस्थित हो गयी। उन दिनों श्री आचार्य जी के पास काशी मे जाकर पढ़ने के लिये खर्च नहीं था। क्योंकि उनके माता-पिता का बाल्यकाल

मे ही स्वर्गवास हो चुका था। इतने मे ही पूज्य स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज आश्रम मे पधारे। पूज्य जिज्ञासु जी ने स्वामी जी की ओर संकेत करके स्वामी जी महाराज से निवेदन किया। "पूज्य स्वामी जी यह ब्रह्मचारी बड़ी लगन से पढ़ता है तथा समाज सेवा की भी इसमें लगन है। स्वामी जी महाराज ने पूज्य आचार्य जी मे कहा भद्र! तुम भी जा कर काशी मे विद्याध्ययन करो, तुम्हारे भोजनादि का सब खर्च मै तुम्हारे पास प्रति मास भेज दिया करूंगा।"

काशी मे सम्पूर्ण पातंजल महाभाष्य, दर्शन तथा साहित्य के समाप्त होने के पश्चात श्री आचार्य जी मे आध्यात्मिक उन्नति के उद्देश्य से योगाभ्यास सीखने की उत्कृष्ट अभिलाषा उत्पन्न हुई तब श्री आचार्य जी योगाभ्यास सीखने के लिये श्री परमपूज्य योगीराज स्वामी कुवलयानन्द जी महाराज संचालक कैवल्यधाम लोणावला के पास चले गये वहा चार वर्ष तक का कोर्स समाप्त करके पूज्य आचार्य जी गुरुकुल चित्तौड़ मे प्राच्य आर्ष ग्रन्थ पढ़ाने आ गये। गुरुकुल मे तीन वर्ष पढ़ाने के पश्चात श्री आचार्य जी अजमेर आ गये तब से लेकर अब तक मुख्यत अजमेर ही आचार्य जी का कार्यक्षेत्र रहा है। अजमेर तथा भारत के अन्य प्रान्तों मे श्री आचार्य जी के बड़े प्रभावशाली वेद प्रवचन होते रहते हैं। श्री आचार्य जी यौगिक चिकित्सा द्वारा सैकड़ों नर-नारियों को निरोग बना चुके हैं। आप श्री विरजानन्द वैदिक विद्यालय अजमेर के आचार्य भी रह चुके हैं तथा पातंजल योगाश्रम अजमेर के संचालक भी।

श्री आचार्य जी ने लगभग एक दर्जन ग्रन्थों की रचना की है इन समय निम्न ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं—

(१) योग और स्वास्थ्य (२) प्राणायाम (३) आदर्श गृहस्थ जीवन [लगभग ३०० पेज की एक ही वेदमन्त्र की व्याख्या] (४) आदर्श की ओर (५) कठिन तथा असाध्य रोगों की यौगिक प्राकृतिक तथा आयुर्वेदिक चिकित्सा (६) हम आर्य हैं (७) योगासन तथा यौगिक चित्रपट (८) भक्त-भक्त दयानन्द तथा उनके आध्यात्मिक उपदेश (९) आर्य-कर्तव्यदर्श।

निम्न ग्रंथ अभी तक प्रकाशित नहीं हुए हैं—

(१) वैदिक वाङ्मय वाटिका [केवल संस्कृत मे] (२) वैदिक भक्ति स्त्रोत। (३) विश्व शान्ति का स्त्रोत वैदिक धर्म।

राजस्थान सरकार ने श्री आचार्य जी की संस्कृत सेवाओं से प्रभावित होकर उन्हें तीन वर्ष के लिये १०० रु० मासिक सहायता देना स्वीकृत कर श्री आचार्य जी को सम्मानित किया है। इसके लिये हम राजस्थान सरकार को हृदय से धन्यवाद देते है।

उन्नाव जेल में स्वाधीनता दिवस

पं० शिवदयालु जी

अब से ३७ वर्ष पुरानी बात है। सन् १९३१ ई० मे उन्नाव जिला जेल मे कानपुर व उन्नाव जिलों के लगभग ४०० सत्याग्रही बन्दी थे। स्पेशल क्लास मे डा० फूलसिंह (सहारनपुर), प० विश्वम्भरदयालु त्रिपाठी (उन्नाव), दीवान शत्रुघ्नसिंह (गढ़, हमीरपुर) तथा लेखक आदि बन्द थे

स्वाधीनता-दिवस का आयोजन लेखक को सौंपा गया। कार्यक्रम यह निर्धारित किया गया कि प्रत्येक बैरिक रात्रि को ठीक १२ बजे 'झंडा ऊंचा रहे हमारा" तथा बन्दे मातरम् गान सब मिलकर करेंगे तथा प्रात. साढ़े ७ बजे हर बैरिक मे सम्मिलित यज्ञ किये जाय। मध्याह्न १२ बजे हर बैरिक मे पृथक पृथक राष्ट्रीय झण्डे का तोरण पताकों सहित जुलूस निकाला जाय और बाद मे सार्वजनिक सभाएं की जाय।

झण्डे व मोटोज आदि उन्नाव सत्याग्रह आश्रम से तिकड़म से मगाये गये। घृत व हवन सामग्री लेखक के पास थी ही। रात्रि के १२ बजे सारी जेल मे ध्वज गीत की ध्वनि गूंजन लगी। अर्धरात्रि का समय सुनसान जंगल और फिर ४०० कण्ठों से निकली सम्मिलित ध्वनि जेल मे क्या सारे उन्नाव नगर मे कुतूहल पैदा हो गया। वार्डर इधर से उधर बौखलाये हुये भागने लगे जितने मे जेलर अन्दर आवे कि सब शान्त होकर गीतों से निवृत्त हो अपने २ टूलों पर सो गये।

प्रातः सम्मिलित यज्ञों मे किसी अधिकारी को आपत्ति भी न हुई।

मध्याह्न के जुलूस और जलसों न जेल अधिकारियों के होश उड़ा दिये। लेखक जेल के चक्कर (केन्द्र बिन्दु) के अन्दर स्पेशल में रोका गया था और वहां से ही कार्यक्रम का संचालन कर रहा था। इतने में जेलर महोदय वहां पर पधारे और कहने लगे कि क्या मरोगे। जानते हो। मैं नौकरी से पृथक कर दिया जाऊंगा। यह पताका झण्डे और मोटोज कहां से आये।

मैंने जेलर साहब को सान्त्वना दी और निकट बिठाकर बतलाया कि आज २६ जनवरी है। आपके देश भारत की स्वाधीनता के व्रत का पावन

(शेष पृष्ठ १६ पर)

आर्य्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल -६०

रा०वैशाख २२ शक १८९० वैशाख शु०१५

(दिनाक १२ मई सन् १९६८)

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

Registered No.L. 60

पता—'आर्य्यमित्र'

५, मीराबाई मार्ग लखनऊ

दूरभाष २५९९३ तार "आर्यमित्र"

गढ़वाल में आर्यसमाज

★महानन्द शर्मा प्रधान आर्य जिला उप सभा, गढ़वाल

हमारे देश का आदि नाम आर्यावर्त है। इससे पहला अन्य नाम कहीं भी नहीं मिलता है। ऋग्वेद सृष्टि की सबसे पुरानी और प्राचीन पुस्तक होने के कारण संसार के सबसे प्राचीन धर्म का प्रतिपादन करती है। जिसमें आर्य शब्द है, जिसका अर्थ है, श्रेष्ठ, यज्वा, व्रती, ब्रह्मविद, सज्जन, धार्मिक शूरवीर आदि।

परलोकवासी योगिराज श्री अरविन्दघोष ने अपनी एक पुस्तक के शीर्षक लेख मे आर्य शब्द की विशद व्याख्या की है। जिसका मुख्यांश इस प्रकार है। 'आर्य शब्द से एक सामाजिक तथा नैतिक आदर्श का एक मर्यादित जीवन का, उदारता, नम्रता, सज्जनता, सरलता, साहस, सौजन्य, पवित्रता, मानवता, निर्बलो की सहायता, सामाजिक कर्त्तव्यो का अनुष्ठान, ज्ञानप्राप्ति का उत्कंठा इत्यादि गुणो का बोध होता है। वस्तुत मानवीय भाषा मे अन्य कोई शब्द नहीं जिसका इतिहास इस शब्द से उच्च हो।'

रूढ़िवाद के प्रबल विरोधी जिनको मै इस युग मे धार्मिक क्रांति का जनक निसंकोच कह सकता हू, स्वामी दयानन्द के सामने जब आर्यो का श्रेष्ठतम प्राचीन इतिहास आया और उन्होने देश की उस वक्त की हीन, पतित अवस्था की तुलना उससे की तो वह तिलमिला उठे और अपनी अकाट्य युक्तियों द्वारा इस देश का प्राचीनतम गौरवान्वित इतिहास लोगों के सामने इस प्रकार रखा। 'सृष्टि से लेके पाच सहस्र वर्षों से पूर्व समय पर्यन्त आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती अर्थात् भूगोल मे सर्वोपरि एकमात्र राज्य था। अन्य देशो मे माण्डलिक अर्थात् छोटे-छोटे राजा रहते थे।

(सत्यार्थप्रकाश समुल्लास ११)

ऐसे गौरवमय इतिहास के प्रचार के लिये उन्होने आर्यसमाज की स्थापना की। आर्यसमाज न किसी मत व सम्प्रदाय का नाम है वरन मनुष्यों के उस समुदाय का नाम है जो सत सनातन वैदिकधर्म मे आस्था रखकर उसकी रक्षा हेतु प्रचार करता है। यह प्रचार देश के कोने-कोने के अलावा विश्व भर मे हो रहा है। इस हालत मे गढ़वाल कब अलग रह सकता था। उसका सर्व प्रथम प्रभाव यहा के उस समाज पर पड़ा, जिसके सामाजिक व धार्मिक अधिकार न जाने कब से छिने हुए थे। उनमे एक क्रांति आयी जो रूढ़वादियों के लिये एक आपत्ति थी। उसको कुचलने के लिये हर सम्भव, वैध अवैध कृत्य अपनाये गये। पर सत्य के सामने झूठ कभी नहीं टिक सकती। अस्तु गढ़वाल के रूढ़िवाद का उतना विकराल रूप तो नहीं है पर आर्यसमाज जिसकी स्थापना औदीच्य ब्राह्मण ने की, और इसका प्रचार लाखो ब्राह्मण कर रहे है उसको गढ़वाल मे अधिकांशत हीन दृष्टि से देखा जाता है। अपने नाम के आगे आर्य लिखने पर छींटाकशी होती है तथा उनकी नाना विधि आलोचनायें की जाती हैं। आलोचक स्वय धर्म तथा कर्महीन हैं जिसकी साक्षी यहां चरम सीमा पर पहुंचने वाला शराब मांस, तम्बाकू, मछली आदि का भक्षण है। जिसके लिए धार्मिक पुस्तकों मे निषेध है, जिसको घोरतम पाप और अधार्मिक कार्य बताया है। ऐसे लोग इस पद को भूल जाते हैं—

"पर को अवगुन देखिये,
अपनो दृष्टि न दोय'

बिना कारण के कार्य नहीं होता। इस अनभिज्ञता का कारण अवश्य है और वह है "पौराणिकवाद का वाममार्ग"। वही श्रेष्ठ वाममार्गी है, जो सबसे अधिक मास, मदिरा, मछली भक्षण करता हो।

जैसे "मद्यं मांस च मीन च मुद्रा मैथुन मेव च।
एते पंच मकारा स्युर्मोक्षदा हि युगे-युगे॥" (काली मन्त्रादि में)

लाला लाजपतराय के कथनानुसार "जो वश पौराणिक ग्रन्थों में लीन हो जाय जो वश पौराणिक, मिथ्या विश्वासो मे फस जावे पौराणिक रीति से जात पात की जञ्जीरों से अपने को दृढ़ता से जकड़ लें, जो वश विद्वत्ता को छोड़कर बुराइयों का शिकार बन जाय वह वश कब तक सुखी और विपत्ति मे रहित रह सकता है।

अंग्रेजी राज्य की स्थापना के पश्चात जब कि राज्य की ओर से हर प्रकार की मदद थी, यग म्यन क्रिश्चियन मिशन की सन १८८५ की रिपोर्ट बताती है कि सन १८५९ से सन १८८५ यानी २६ साल मे हिमालय के पूर्वी क्षेत्र कालिंगपोंग तथा उसके निकटवर्ती प्रदेश मे केवल ३६८ ईसाई बने थे। आज भारतीय राज सत्ता है तो पर्वतीय प्रदेश मे प्रतिवर्ष हजारो हिंदू ईसाई बन रहे है और उसका भयकर परिणाम नागालैंड की स्थापना है। यह क्यो हो रहा है? केवल आर्यसमाज के प्रति उदासीनता। जिस आर्यावर्त ने तमाम विदेशियो को यहा आने पर अपने मे मिलाकर अपनी जनसख्या बढाई थी आज इन्हीं आर्यों की सतान पाकिस्तान और नागालैंड की सूरत मे हमारे सामने है और जो प्रतिदिन अपनी सख्या बढ़ा रहे है।

गढ़वाल के पण्डित जब किसी यजमान के यहा धार्मिक संस्कार कराते हैं ना 'आर्यावर्ते पुण्यक्षेत्रे केदारखण्डे" आदि शब्द उच्चारण करते है क्योंकि देश का प्राचीनतम नाम आर्यावर्त है, आर्यावर्त कहते हैं आर्यों के निवास को तब किसी के अपने नाम के आगे आर्य लिखने पर नाक भौं सिकोड़ना स्वय की अज्ञानता प्रदर्शित करना है। अस्तु सारे देश के साथ गढ़वाल की उच्चता तभी आंकी जा सकती है जब यहाँ भी शुद्ध सनातन वैदिक धर्म को अपना कर छूत-छात के भयकर भूत को भगाया जाय।

(पृष्ठ १५ का शेष)

पर्व है। इस पर्व का यहा मनाना हमारे लिये अनिवार्य था। आप कुछ करोगे तो जेल मे ऐसी गड़बड़ी मच जाएगी कि आप से सम्भालते न बनेगी।

मैंने जेलर से कहा कि आपकी नौकरी की हमे भी चिन्ता है आप जाओ और आराम से कार्यालय मे अपना काम करो कल सूर्य निकलने से पहले यह सब झण्डे और स्टेज जेल मे आपको न मिलेंगे।

जेलर महाशय चुपचाप चले गये सायकाल बारिक बन्द होने से पूर्व सब झण्डे आदि इकट्ठे कर और अपने सन्दूक बन्दकर अस्पताल से मे अपनी बारिक मे चला आया जो नकरना मे बाहर थी और रात्रि को ड्यूटी पर जाते वार्डर के साथ झण्डे आदि नगर के सत्याग्रह आश्रम मे भिजवा दिये।

जनता मे उत्साह इतना अधिक था कि प्रत्येक सत्याग्रही इस अपने पर्व के मनाने के लिये मतवाला बना हुआ था। यदि जेल अधिकारी बाधा डालते तो जेल मे भारी उपद्रव करने के लिये सब कटिबद्ध थे। जलसे और जुलूसों मे सब साधारण बन्दी भी खुलकर भाग लेते थे जब था उत्साह अपने स्वाधीनता पर्व के लिये स्वाधीनता प्राप्त के पूर्व और जब स्वतन्त्र हो गया तो जनता मे अपने इस पावन पर्व के लिये जितना और जैसा उत्साह है वह प्रत्यक्ष है।

अन्य देशो की जनता अपने स्वाधीनता पर्व पर हर्ष और उमगो से नाच उठती है। देश का बच्चा बच्चा हर्ष और मोद मनाता है। सारे राष्ट्र मे पर्व के आगमन पर विचित्र वातावरण बन जाता है। किन्तु हमारा अपना भारत देश है कि जनता को मानो अपने इस पावन पर्व से कोई सम्बन्ध ही नहीं। केवल स्कूलों के छात्र छात्रायें प्रभातफेरियां निकालते वह भी अनुशासन के वश। जलसो मे जनता एक प्रतिशत भी कठिनता से भाग लेती है। इससे स्पष्ट है कि देशवासियों ने स्वाधीनता की कीमत पहचानी नहीं। पहचानते तो तब जब उसके लिये आवश्यक बलिदान देकर जनता ने उसका पूरा-पूरा मूल्य चुकाया होता।

स्वत्वाधिकारिणी आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से कृष्णगोपाल शर्मा द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।

आर्य-मित्र

ओ३म्   ओ३म्

लखनऊ—रविवार वैशाख २९ शक १८९०, ज्येष्ठ कृ० ८ वि० सं० २०२५ दिनांक १९ मई १९६८ ई०

ओ३म् रातिं सत्पतिं
महे सवितारमुप ह्वये।
आसवं देववीतये ॥१३॥

ऋ० मं० ५।८२।७

अथ—दाता (सूर्य) विज्ञान-सम्पन्न स्वामी के स्वामी सकल जगत् के विधायक तथा उत्पादक परमात्मा को दिव्य गुणों की प्राप्ति के लिये अंगीकार करता हूं।

१—आध्यात्म सुधा २
२—सम्पादकीय ३
३—सभा की सूचनायें ४
४—आर्यमित्र के विशेषांक ५
५—आ प्र सभा की सेवा ६
६—सत चिन्तन
७—अनागत इत्यादी
८—मतमतान्तर समीक्षा
९—आर्यजगत् ११
१०—हिन्दी रक्षा आन्दोलन
११—वैदिककाल का ह्रास
१२—आर्यमित्र का पुनर्निरीक्षण

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश—८१ वें

सिरसागंज वृहद्धिवेशन

की

तिथियां १ व २ जून १९६८

आर्यसमाजें अपने प्रतिनिधियों को अधिकाधिक संख्या मे भेजकर अपनी सक्रियता और जागरूकता का परिचय दें

वृहद्धिवेशन पर आयोजित आर्य सम्मेलन के लिए अपने प्रस्ताव भेजकर राज्य की समस्याओं के समाधान में सहयोग कीजिए

★

आर्यसमाजों के प्रतिनिधि-चित्र शीघ्रतया कार्यालय मे सभा का प्राप्तव्य धन सहित भेजिये

आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सिरसागंज (मैनपुरी) अधिवेशन उत्तर प्रदेश में

आर्यसमाज के वर्चस्व की वृद्धि में स्थायी महत्व प्राप्त करेगा

वार्षिक ८)
छमाही ४)
विदेश में १ पौं०

सम्पादक
सच्चिदानन्द शास्त्री एम० ए० सभा मन्त्री
पं० शिवदयालु
उमेशचन्द्र स्नातक एम० ए०

वर्ष ७०
अङ्क २५
एक प्रति २० पै०

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० का ८२वाँ अधिवेशन और हमारा कर्तव्य

दिनांक ३० व ३१ मई को सिरसागंज जिला मैनपुरी में आर्य प्र० नि० सभा उत्तरप्रदेश का ८२ वाँ अधिवेशन होने जा रहा है। प्रांत के ५४ जिलों के लगभग १२०० आर्यसमाजों के प्रतिनिधि इस में भाग लेंगे और अपने गत वर्ष के कार्य का सिंहावलोकन कर भविष्य का कार्यक्रम निर्धारित करेंगे।

जैसे जैसे समय व्यतीत होता जा रहा है प्रान्त में आर्यसमाजों की संख्या उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है। आर्य-शिक्षा संस्थाओं का तो सारे प्रान्त में सुन्दर जाल बिछ गया है। कई सौ के लगभग बड़े बड़े शिक्षणालय प्रान्त में आर्य समाज के नियन्त्रण में चल रहे हैं जिनमें कई लाख छात्र छात्राएं शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। लघु संस्थाओं की तो गणना ही क्या ?

किंतु हमें देखना तो यह है कि क्या प्रान्त के यह १२०० आर्यसमाज पूर्णतया जागरूक रहकर कर्तव्य क्षेत्र में प्रगति कर रहे हैं ? क्या सदस्यों के चरित्र निर्माण की दिशा में नित्य सत्संग, स्वाध्याय, सन्ध्या, यज्ञ आदि द्वारा पग बढ़ाया जा रहा है ? क्या सदस्यों में सद्भावना- आत्मीयता का निर्माण कर परिवार बढ़ाने का प्रयत्न किया जा रहा है ? क्या अपने इर्द गिर्द निवास करने वाले दलित पतित, हरिजन आदिवासी उपेक्षित जातियों आदि से सम्पर्क स्थापित कर उनके उत्थान का प्रयत्न किया जा रहा है ? क्या पहले कभी भूलेश या दबाव व लालचवश ईसाई व मुसलमान बने अपने बन्धुओं को पुनः आर्य धर्म में दीक्षित करने आत्मसात् करने का यत्न किया जा रहा है ? क्या स्थान स्थान पर स्वाध्याय केन्द्र आर्य साहित्य बिक्री केन्द्र खोलकर जनता को आर्य बनाने का प्रयत्न किया जाता है ? क्या जाति पांति के भेद और जन्ममूलक वर्णवाद तथा बिरादरी व प्रान्तभेदों को मिटाने का प्रयत्न किया जाता है। यह कुछ प्रश्न हैं जिन पर हमें गम्भीरता के साथ विचारना होगा।

साथ ही यह भी देखना होगा कि यह शिक्षणालय जिनका भार आर्यसमाज वहन कर रहा है वैदिक मिशन के विस्तार में सहायक हैं, या नहीं ? इनके द्वारा हमारे आने वाली नई पीढ़ी आर्य बनाई जा रही है या नहीं ? क्या इनके द्वारा चरित्र निर्माण एवं आध्यात्मिकता के पाठ्यक्रम के निर्माण में हम कहाँ तक सफलता प्राप्त कर रहे हैं ?

कहीं इन संस्थाओं के भार पर आर्य समाज की शक्ति तो नहीं खर्च की जा रही है ? यह संस्थाएं आर्यसमाज के लिए हैं अर्थात् वैदिक मिशन के प्रचार के लिये हैं न कि आर्य समाज इनके लिये है अर्थात् आर्यसमाज की सारी शक्ति इनके व्यवस्था पर तो व्यय नहीं की जा रही है ?

हमें अपने इस आगामी वार्षिक अधिवेशन पर इन दो मौलिक प्रश्नों पर गम्भीरता के साथ विचार करना है तब ही हम ५ वर्ष बाद आर्यसमाज की प्रथम जन्म शताब्दी सफलता पूर्वक मना सकेंगे।

सिरसागंज मार्गदर्शन

आर्यसमाज सिरसागंज मैनपुरी जिले में शिकोहाबाद रेलवे स्टेशन से ८ मील दूरी पर स्थित है। पूर्व से आने वाले भाई बहिन लखनऊ कानपुर होकर शिकोहाबाद आयेंगे। इसी प्रकार पश्चिम से आगरा अलीगढ़ टूंडला से शिकोहाबाद पहुंचें। उत्तर पश्चिम मुरादाबाद से अलीगढ़ होकर बरेली से कासगंज एटा से शिकोहाबाद आयेंगे फिर वहाँ से मोटर द्वारा सिरसागंज आना होगा। लखीमपुर, सीतापुर हरदोई बरेली के जिले वाला शाहजहाँपुर होकर मोटर से फर्रुखाबाद फिर ट्रेन से शिकोहाबाद फिर मोटर से सिरसागंज, झांसी' राई, जालौन बांदा वाला कालपी मोटर से औरय्या इटावा फिर सिरसागंज पहुंचें।

आवश्यक

आर्यसमाजों के द्वारा भेजे गये प्रतिनिधि चित्रों की प्राप्ति पर प्रेषित उत्तर में निवेदन है कि आर्यसमाज के मन्त्री महोदय आर्यसमाज के आर्य सभासदों के वार्षिक चंदे पर ही अपना दशांश धन तथा सूदकोटि—५ फण्ड आदि भेजें। समस्त आय पर न भेजकर चंदे पर ही भेजें।

नोट-प्रतिनिधि चित्र शीघ्र सभा कार्यालय पर ही भेजें। अधिवेशन के समय सभा कर्मचारियों तथा आप लोगों को [दोनों को] ही बड़ी कठिनाई होती है अतः इस परेशानी से बचने के लिये प्रतिनिधि चित्र शीघ्र सभा कार्यालय पर धन के साथ भेजें। उस समय फार्म भली प्रकार देखे नहीं जा पाते हैं।

सभा मन्त्री

सम्पादक के पत्र

श्री पं. विश्वश्रवा जी के नाम पत्र

[नोट—इससे पूर्व श्री युधिष्ठिर जी मीमांसक के विरुद्ध एक लेख आचार्य विश्वश्रवा जी का छप गया है। अतः उसका उत्तर छापना हमारा कर्तव्य है। भविष्य में इस प्रकार के आक्षेप प्रत्यारोपात्मक लेख न छपेंगे। —सम्पादक]

श्री माननीय भ्राता जी,

सादर नमस्ते

गत फरवरी के अंत में जब आप काशी आये थे तब आपने दुरभाग्य पर मेरे विरुद्ध लिखने की धमकी दी थी। तदनुसार आपके द्वारा मेरे विरुद्ध जो लेख लिखा गया वह आर्यमित्र के गत अङ्क में पढ़ा।

लेख आपके स्वभाव के अनुरूप ही है इस कारण मुझे उसे पढ़कर कोई आश्चर्य नहीं हुआ। आश्चर्य तो तब होता जब आपके लेख में ५ प्रतिशत भी सचाई होती और मुझे कुछ विचारने के लिए बाधित होना पड़ता।

वस्तुतः आप वेदवाणी में श्री पं० सुदर्शन देव जी के लेख की आलोचना के जिस अतिम भाव से अप्रसन्न हुए हैं उसकी सभ्यता का आपने उक्त लेख लिखकर क्रियात्मक रूप में स्वीकार कर लिया है। इसके लिये मैं आपका धन्यवाद करता हूं।

माननीय भ्राता जी ! मैंने वेदवाणी के उक्त लेख (जिस लेख पर आप रुष्ट हैं) में जो कुछ परामर्श आपको दिया वही अब पुनः दे रहा हूं कि आप अपनों से लड़ना छोड़ दें शूर न बनें। आज ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों और मन्तव्यों के विरोध में पाश्चात्य और पौरस्त्य दोनों मतों के विद्वानों द्वारा प्रतिदिन नये नये ग्रन्थ निकल रहे हैं उनका उत्तर दीजिये और ईश्वर प्रदत्त मेधा और शक्ति का सदुपयोग कीजिये।

मेरा विरोध आप १८ वर्षों से बराबर कर रहे हैं उससे न कोई मेरी हानि हुई और न आप का कुछ लाभ हुआ। मेरी हानि तो इस कारण नहीं हुई कि मैं आर्यसमाज के मञ्च से औचित्य पंच नहीं करता इसी कारण भविष्य में भी मेरी कोई हानि आपके इस प्रकार के लेखों से न होगी यह विश्वास रखें। हां, यदि कुछ हानि होगी तो वह आपकी और आर्यसमाज की होगी।

भ्राता जी विश्वास रखिये आप जैसे महानुभावों के तथ्यहीन विरोध को कोई भी पसन्द नहीं करता है। और न करेगा। और न विरोध के चक्कर में पड़कर श्री पं० रविन्द्र जी जैसे आपके सुमित्र विरोधी बन गये जैसे न कभी मैं आपका विरोधी अथवा अशुभ चिन्तक बनूंगा।

मैं तो प्रभु से सदा यही प्रार्थना करता रहता हूं कि वह मुझे सदा सुमति प्रदान करता रहे। जिसके बिना पं० लोकेषणा जिसके चक्कर में पड़कर बड़े बड़े धार्मिक भी अन्यथा मंत्रगामी बनकर राक्षस बन जाते हैं, पथ भ्रष्ट हो जाते हैं उससे जिस प्रकार आज तक बचाये रखा आगे भी बचाये रखें।

—लेखक युधिष्ठिर मीमांसक अजमेर

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के वृहदधिवेशन के निमित्त सभा का कार्यालय २९ मई को चलकर ३० को प्रातः सिरसागंज पहुंच जाएगा अतः २७ मई से अधिवेशन तक सारी डाक सिरसागंज के पते पर भेजी जाय।

मन्त्री सभा

आर्यसमाज मन्दिर छतरपुर मध्य प्रदेश का निर्माण

वीर शिरोमणि छत्रसाल बुंदेले की राजधानी छत्रपुर में आर्यसमाज का अभी कुछ समय हुआ संगठन किया गया है। आर्यसमाज के मंदिर का निर्माण कार्य भी आरम्भ हो गया है। समाज मध्य प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बन्धित है। आर्य-समाज का विशेष प्रचार न होने के कारण इधर विदेशी ईसाई मिशनरी खूब फसल काट रहे हैं। इधर एक जागरूक कर्मठ सुसंगठित आर्यसमाज की नितान्त आवश्यकता है।

श्री शिवप्रसाद जी आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर श्री परमलाल अग्रवाल, श्री भागीरथ जी चौरसिया श्री परसराम जी आनन्द आदि धन संग्रह में विशेष संलग्न हैं।

इस समय तक ५०००) से अधिक रुपया सञ्चित किया जा चुका है। १२-१२ ६९ को स्वामी विज्ञानन्द जी सरस्वती द्वारा मंदिर का शिलान्यास किया गया है। दानी सज्जनों से इस शुभ कार्य में हाथ बटाने का अनुरोध है। दान श्री परमलाल जी अग्रवाल कोषाध्यक्ष आर्य समाज छतरपुर (म० प्र०) के पते पर भेजा जाना चाहिये।

*

आर्यमित्र के विशेषांक

आर्यमित्र के विशेषांक पहले भी निकलते थे। केवल ऋष्यंक के नाम से। मन से ऋषि दयानन्द को श्रद्धांजलियाँ होती थीं।

इस बार आर्यमित्र के २ अङ्क पुस्तकाकार प्रकाशित हुये। एक ऋषि-दर्शन और दूसरा वेदप्रकाश अङ्क। दोनों अङ्कों मे इतनी नवीनताओं से युक्त लेख हैं कि स्वाध्याय प्रिय पाठक मुग्ध हो जाता है। पी एच. डी. करने वालों के ये लेख हैं। विद्वान लेखकों ने मन लगाकर ये लेख लिखे हैं। प्रत्येक लेख पठनीय है। ऋषि दर्शन अङ्क मे श्री प० विद्याभिक्षु का लेख, वेदाङ्क अङ्क मे आचार्य श्री प० देवव्रत व्यास जी आचार्य श्री प० बुद्धदेव जी आचार्य श्री पं० विश्वबन्धु जी आदि विद्वानों के लेख बड़े विद्वत्ता पूर्ण हैं ज्ञान वर्द्धक हैं।

आर्यमित्र ने अब संभाल लिया है। आजकल के लेखक अच्छे अच्छे विद्वानों से प्राप्त किये जा रहे हैं। सम्पादक मण्डल को धन्यवाद।

—पं० बिहारीलाल शास्त्री
बरेली

★ ★ ★

आर्यमित्र का स्वामी दर्शनानन्द अङ्क पाकर बड़ी प्रसन्नता हुई। इस वर्ष आर्यमित्र ने विशेषांकों की धूम मचा दी इतने स्वल्पकाल में इतने विशेषांक आर्यमित्र ने पहिले कभी नहीं दिये। दीपावली पर ऋषि दर्शन' अङ्क अपने ढंग का अनूठा और निराला ही निकला फिर शिवरात्रि पर "वेदप्रकाश' उससे भी बढ़कर निकला इस प्रकार का विशेषांक किसी विरले ही आर्य पत्र ने शायद कभी निकला हो। मुझ जैसे अल्पज्ञ को इस अङ्क के अध्ययन से जब इतना आनन्द अनुभव होता है तो विद्वानों की तो बात ही क्या? इस अङ्क द्वारा आपने बड़ी अमूल्य सामग्री प्रदान की है। सम्पादकीय मे जो आपने सब लेखों का सारांश टिप्पणी रूप में दिया है वह आपकी विद्वता व पाण्डित्य का परिचायक है वस्तुत. आर्यमित्र में आपने नया जीवन और कांति उत्पन्न करके अपने कर्त्तव्य का प्रशंसनीय परिचय दिया। आशा है आप भी अब आर्य मित्र को अधिकाधिक अपना कर अपने कर्त्तव्य पालन मे पीछे न रहेगा। ऐसा विश्वास है,

—रामदास आर्य सिद्धांत रत्न
प्रधान आ० स० पाकूतगज (फतेहगढ़)

★ ★ ★

३१ मार्च को साप्ताहिक आर्यमित्र को रूप बहुत ही भाया मैं तो आपसे अनुरोध करता हूं कि आर्यमित्र का यही रूप रखें तो बड़ा ही उत्तम रहेगा। इसी अङ्क मे श्री गंगाप्रसाद उपाध्याय की 'सतसई' के रूप मे अनुभूति पढ़ी। वास्तविकता का अनावरण किया है। आज ऐसे ही आलोचकों की आवश्यकता है। वास्तव मे आर्यसमाज की गतिविधि बहुत ही चिंताजनक होती जा रही है। आज आर्यसमाज के मार्गदर्शन के लिए कुछ कर्मठ एवं निर्भीक शक्तियों की आवश्यकता है। मुझे अभी 'आर्यमित्र' से भविष्य के लिये बड़ी आशाएं हैं। आपके सफल सम्पादन से तो आर्यमित्र' और अधिक निखर उठा है। कृपया सफलता के लिए शुभकामनाएँ स्वीकारें।

—विजयदयाल सक्सेना
८९० काजीपुरा बहराइच

★ ★ ★

आपका भेजा 'आर्यसमाज अङ्क प्राप्त हुआ। यह अङ्क आपके प्रयास से बहुत सुन्दर और उपयोगी बन पड़ा है। इसमें आर्यसमाज की गतिविधियों को आगे बढ़ाने के महत्वपूर्ण साधक तत्वों का समावेश हुआ है। इसे पढ़कर पाठकों की आवश्यकता पूर्ण कार्यों की जानकारी होती है। इस प्रकार के उपयोगी विशेषांकों का प्रकाशन एक महत्वपूर्ण कदम है 'विद्वान लेखकों के लेख ज्ञानवर्द्धक एवं प्रेरणास्पद हैं। आर्यमित्र गत ८२ वर्षों से पवित्र वैदिक सन्देश प्रचार में तत्पर है। कई महत्वपूर्ण विशेषांकों के प्रकाशन एवं कुशल सम्पादन से प्रचार में चार चांद लग गये हैं। आजकल यह पत्र जन-जन के हृदय में स्थान पा चुका है और पाता जा रहा है। कृपया आप मेरी सच्ची श्रद्धांजलि स्वीकार करें।

आर्य जाति का सच्चा सेवक आर्य-
मित्र है,
वैदिक मत का सफल प्रचारक
आर्यमित्र है।
इसने मृत प्राय जाति को देकर
जीवन ज्योति जगाया,
देश धर्म की रक्षा करके ही इसने
नाम कमाया।
बढ़े प्रगति पथ पर यह निशिदिन,
पावे सब जन जन का प्यार।
ओ३म् ध्वजा फहरे भूतल पर होवे
इससे वेद प्रचार।

—सत्यनारायण द्विवेदी
सहायक अध्यापक प्रा० पाठशाला
भरथा इटहिया गोंडा

★ ★ ★

आपके सद् प्रयासों से आर्यमित्र' अल्पकाल मे ही आज के आर्यजगत का सर्वाधिक प्रतिष्ठा प्राप्त हिंदी साप्ताहिक हो गया है। एतदर्थ आप बधाई के पात्र हैं। सुन्दर भविष्य के लिये शुभ भावनायें।

—शम्भूदयाल यादव
आर्यसमाज महर्षि दयानन्द मार्ग
किशोर, राजस्थान

श्री शालवाले का प्रधान मन्त्री के नाम पत्र

श्री रामगोपाल जी शालवाले संसद सदस्य, मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने प्रधान मन्त्री केन्द्रीय गृहमन्त्री एवं गृह मन्त्रालय के राज्य मन्त्री श्री विद्याचरण जी शुक्ल को एक पत्र भेज कर विदेशी मिशनरी फादर फ़ेरर को महाराष्ट्र सरकार द्वारा निर्वासित किये जाने की आज्ञा को देश की आन्तरिक सुरक्षा के लिये आवश्यक और समयानुकूल बताया

अपने पत्र में श्री शालवाले ने लिखा है कि महाराष्ट्र सरकार ने अनेक जांच पड़ताल के पश्चात ही फादर फेरेर एवं राष्ट्र विघातक कार्यवाहियों मे भाग लेने के कारण विदेशी मिशनरी फेरर को निर्वासित करने का आदेश दिया है। अपने पत्र में श्री शालवाले ने आगे कहा कि श्री सोवो तथा कुछ संसद सदस्यों द्वारा हस्ताक्षर हुये जो अपील फादर फेरर के निर्वासन आज्ञा को भंग करने के सम्बन्ध में दिया गया है। वह देश के लिये दुर्भाग्य पूर्ण है, इसी पत्र मे आगे कहा गया है कि शेख अब्दुल्ला की रिहाई के लिये भी ऐसे ही कुछ सदस्यों ने अपील की थी जिसका परिणाम आज जनता के सामने है।

★

संसत्सदस्यों का केन्द्रीय गृह-मन्त्री को संयुक्त ज्ञापन

विदेशी ईसाई पादरियों के देश निकाले की मांग

लोक सभा के अनेक सदस्यों ने भारत सरकार के गृह मन्त्री श्रीयुत चह्वाण को एक संयुक्त ज्ञापन दिया है जिसमे नागालैंड, आसाम, मणिपुर, त्रिपुरा, बिहार, हिमालय प्रदेश, उत्तर प्रदेश के गढ़वाल आदि पहाड़ी तथा सीमावर्ती क्षेत्रों मे विदेशी ईसाई पादरियों की देश द्रोहात्मक प्रवृत्तियां तथा आपत्तिजनक सामूहिक धर्म परिवर्तन के द्वारा लोगों को देश के प्रति विद्रोही बनाये जाने पर चिंता व्यक्त करते हुए इन मिशनरियों को शीघ्र से शीघ्र देश निकाले की जोरदार मांग की है।

ज्ञापन में यह भी कहा गया है कि विदेशी मिशनरियों के द्वारा नागालैंड आसाम तथा बिहार में जो विस्फोटक स्थिति उत्पन्न कर दी है वह आंख खोल देने वाली है। इनके रहते हुए अन्यत्र ही खतरनाक स्थिति उत्पन्न होने का खतरा है अतः इस खतरे की सरकार द्वारा और उपेक्षा किया जाना देश हित के साथ खिलवाड़ करना होगा।

ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने वालों मे श्री लाला रामगोपाल शालवाले, श्री प० प्रकाशवीर जी शास्त्री, श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी, श्री महंत दिग्विजयनाथ, श्री कंवरलाल गुप्त, श्री [illegible] दयाल देवगुण, श्री शिवानन्द [illegible] शर्मा, श्री रघुवीरसिंह शास्त्री, श्री नारायण स्वरूप शर्मा, श्री हेमराज जी आदि २ संसत्सदस्य हैं।

अन्तरङ्ग की सूचना

आर्य उपप्रतिनिधि सभा लखनऊ साधारण अन्तरङ्ग का अधिवेशन रविवार १९-५-६८ को सायंकाल ६ बजे आर्यसमाज गणेशगंज लखनऊ मे किया गया है जिसमें अनेक महत्वपूर्ण विषयों पर विचार किया जाएगा। सम्बन्धित महानुभावों से अनुरोध है कि वे कृपया समय पर पधारें।

विश्वनाथ [illegible]
मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा को देखा

कार्यालय में लगातार काम होता रहता है। रिपोर्ट छप रही है। श्री मन्त्री जी (श्री सच्चिदानन्द) जिसे सभा के बोलने हैं। इनकी सारी उमंग होम करेंगे, शक्ति यति सभा को समर्पित है। सभा समुन्नत बने समृद्ध बने इसके अतिरिक्त अपनी कोई चिन्ता नहीं, तुमा तथा सभा का काम यही जो हाबी शौक) बन गये हैं। शास्त्री जी के ऐसा जानू मन्त्री कहाँ मिलेगा? पंडित, वक्ता, प्रचारवान जवान धुन का धनी, लगन का पक्का, काम का अडियल बिल्कुल चित्त प्रसन्न हो गया।

परन्तु दुःख भी हुआ यह जान कर कि प्रधान जी (पं० प्र० बी०) और मन्त्री जी के अतिरिक्त सभा के लिये कोई भी अधिकारी धन नहीं लाया। परम्परागत नियम ऐसा था कि प्रत्येक अन्तरग सदस्य सभा को कम से कम ... रुपये तो लाकर देता ही था। अन्यथा वह सभा से मार्ग व्यय नहीं लेता था। प्रत्येक विभागाध्यक्ष अपने विभाग के लिये धन जुटाता था। मैं भी वर्षों अन्तरंग सदस्य रहा हूं। सभा के लिए दो सौ तीन सौ रुपये लाता रहा और जब शुद्धि विभाग का अधिष्ठाता बना तो इस विभाग का समग्र व्यय श्री मल्ला जी मेनिंग डाइरेक्टर प्रेम मिल्स उज्जैन से सभा को दिलाता रहा।

अब न जाने क्या दशा हो गयी है अधिकारी और अन्तरग सदस्य बनने के लिये तो जोश जागता है पर सभा की शक्ति के लिये पुरुषार्थ सो जाता है। मेरे सन् ६८, ६९ के लिये चुने जाने वाले अधिकारियों और अन्तरंग सदस्यों से मेरा साग्रह निवेदन है, उपदेश है, आदेश है कि सभा के लिए सदस्य १५ ... अपने मण्डल में, अधिकारी एक ... प्रांत मे और प्रधान तथा मन्त्री जी ... अर्थ संचय मे लगावें। सभा का प्रचार बिना धन के निर्जीव हो रहा है।

पाठशालाओं, स्कूलों के झगड़े भी तथा बखेड़े भी हैं। सभा को चाहिये धर्म के विवादों से बचने के लिये संस्थाओं का एक बोर्ड पृथक् बनादे।

सभा की पूरी शक्ति आर्यमित्र द्वारा पत्रिकाओं द्वारा वैदिक विचार- मे लगा देनी चाहिये।

देश बराबर संकट में फंसता जा रहा है भौतिकवाद, सम्प्रदाय, स्वार्थवाद, जातिवाद, प्रांतवाद राष्ट्र को कुचल रहे हैं। इन वादों के विष का शमन, दुर्गुणों का दमन दयानन्द की विचारधारा से ही हो सकता है। छोटे-छोटे विवादों और स्वार्थों से ऊपर उठ कर आर्यों को काम करना है। मार्गदर्शन कराना है। गम्भीरता से मेरी बात पर ध्यान दीजिये।

★पं० बिहारीलाल जी शास्त्री

वेद प्रचार के अतिरिक्त सभा भवन बनाना भी आवश्यक है। इस बार चुनाव में कोई भी चुने जायें मुझ इसमे कोई भी विशेष दिलचस्पी नहीं है परन्तु काम करने वाले लोग आगे आवें। काम करने वालों को मेरे सहयोग की आवश्यकता होगी तो मैं प्रत्येक प्रकार का सहयोग दूंगा। इस बार उद्योग करके सभा को चमका दो। समृद्ध बना दो। आर्यमित्र का कायाकल्प हो जाये वेद प्रचार मे जान पड़ जाये।

एक आवश्यक बात और कहनी है। इस प्रांत में हरिजनों की संख्या मुसलमानों से भी अधिक है। परन्तु स्वराज्य प्राप्ति से पूर्व हरिजनों में आर्य समाज का प्रचार था अब नितान्त उन पर धार्मिक प्रभाव ईसाइयत का होता जा रहा है और राजनैतिक प्रभाव मुसलमानों का और कम्यूनिष्टों का। अत जाटव बाल्मीकि आदियों में धर्मप्रचार की योजना भी इस वर्ष बनानी चाहिये और पहले धन संचय भी किया जाये।

धन की कमी नहीं है। कई समाजों की आय हजार हजार रुपये मासिक की है। पर वह सब रुपये अर्थ के कामों में जाते हैं। वेद प्रचार को एक कौड़ी भी नहीं मिलती। दो समाज तो ईसाई स्कूल चला रहे हैं। आश्चर्य न करिये। समाजों के लक्ष्य को इन स्कूल कालिजों ने नष्ट भ्रष्ट करके रख दिया है। गम्भीरता से सोचिये कि देश के लिये विचारधारा का प्रचार चाहिए या इन संस्थाओं का?

★

बनारस संस्कृत यूनिवर्सिटी की ऐक्जीक्यूटिव कौंसिल में भेजे गये

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के स्वप्नों को पूरा करने वाले कुछ सुझाव

आचार्य विश्वश्रवा: व्यास एम०ए० वेदाचार्य द्वारा प्रस्तुत

बनारस यूनिवर्सिटी ऐक्जीक्युटिव कौंसिल में सरकार द्वारा नामिनेटेड श्री आचार्य विश्वश्रवा जी ने कुछ प्रस्ताव बनारस संस्कृत यूनिवर्सिटी मे भेजे हैं। जिस पर वहाँ की ऐकेडेमिक कौंसिल विचार कर रही है। काशी के विद्वानों ने उन प्रस्तावों का हृदय से स्वागत किया है। प्रस्ताव इस प्रकार है—

प्रस्ताव संख्या १

जब तक साइंस और वेद के ज्ञाता वही लोग होंगे तब तक वेद मन्त्रों की समस्या हल नहीं होगी। जो साइंस जानते हैं वे वेद नहीं जानते और जो वेदाचार्य हैं वे साइंस नहीं जानते अत ऐसे छात्र तैयार करने चाहिये जो वेद और साइंस दोनों को जानने वाले हों। वेदों में मित्रावरुणों क्या है इन्द्राबृहस्पती क्या हैं यह जानना कठिन है। वेद वैज्ञानिक ग्रन्थ हैं उनमें सब सत्य विद्याएं निहित हैं। अतः हमारा विश्वविद्यालय एम०एस-सी०पास छात्रों को वेदाचार्य (नैरुक्त प्रक्रिया) में प्रविष्ट करें। क्योंकि साइंस जानने वाला संस्कृत नही जानता अतः एक दो वर्ष की विशिष्ट परीक्षा मध्य में रखी जावे जिसमें अध्ययन काल में छात्रों को २००) रु० छात्रवृत्ति दी जावे और फिर वेदाचार्य परीक्षा में अध्ययन काल में उन एम० एस-सी० लड़कों को ३००) छात्रवृत्ति तीन वर्ष तक दी जावे फिर वे छात्र हमारे विश्वविद्यालय की पी० एच०डी० और डी० लिट मे अपने अपने विषय पर अनुसंधान कार्य करें। जैसे फिजिक्स और वेद कैमिस्ट्री और वेद गणित और वेद इत्यादि और इन दो दो वर्ष के अनुसन्धान काल मे उन छात्रों को ५००) छात्रवृत्ति दी जाय। यह गवर्नमेन्ट को भेजी जाय तब वेद मन्त्रों के वास्तविक अर्थ जाने जा सकते हैं जिनके संकेत महर्षि के वेद भाष्य मे विद्यमान हैं।

प्रस्ताव सं० २

हमारे विश्वविद्यालय मे गणित इतिहास भूगोलादि सब विषय अब संस्कृत की परीक्षाओं मे है अतः हमारी परीक्षाओं की मान्यता वही है जो अन्य विश्वविद्यालयों की बी० ए०, एम० ए० आदि परीक्षाओं की मान्यता है। इस के वे ग्रन्थ अपने विश्वविद्यालय के कोर्स में रख दिये हैं जो ग्रन्थ दूसरे विश्वविद्यालयों में पढ़ाये जाते हैं अतः समस्त पाठ्यग्रन्थों का निरीक्षण किया जावे कि हमारे कोर्स में जो ग्रन्थ हैं उनमें कोई अभारतीय और अवैदिक बातें तो नहीं पढ़ाई जाती हैं उनको निकालकर अपने दृष्टिकोण से पाठ्यग्रन्थ लिखाये जावें और वे ग्रन्थ पाठ्यग्रन्थों मे रखे जावें।

प्रस्ताव सं० ३

श्रौत सूत्रों ब्राह्मणग्रन्थों में नाना प्रकार की यज्ञवेदियों और यज्ञपात्रों का वर्णन है। अभी भारत में कुछ विद्वान हैं जो इन सबको जानते हैं पर अधिकतर वह मीमांसा शास्त्र का क्रियात्मकज्ञान नष्ट हो रहा है। आज कल के लोग शौकिया अपने नाम के साथ मीमांसक लिखते हैं पर उन समस्त यज्ञों को न समझते हैं और न करा सकते हैं यह मीमांसा विद्या नष्ट न हो अतः हमारे विश्वविद्यालय में समस्त वेदियां और समस्त पात्रों को प्रदर्शनी के रूप मे रखा जावे और सब प्राचीन यज्ञों को प्रदर्शन के रूप में करके सिखाया जावे जिससे इस यज्ञरूपी सृष्टि विज्ञान का ज्ञान उत्तरोत्तर बढ़े अग्निहोत्राद्यश्वमेधान्त यज्ञ होते रहे।

प्रस्ताव सं० ४

हमारे विश्वविद्यालय मे डी० लिट की उपाधि के साथ वाचस्पति उपाधि भी दी जाती है इसके स्थान पर डी० लिट के साथ महामहोपाध्याय उपाधि दी जाया करे हमारे देश के विद्वानों का यह प्रतिष्ठासूचक शब्द प्राचीन शब्द है। क्योंकि अंग्रेजी राज्य काल में अंग्रेज राजभक्तों को यह उपाधि दी जाती रही अत कांग्रेस सरकार ने रायसाहब रायबहादुर आदि के साथ महामहोपाध्याय को भी समाप्त कर दिया। इसे हमे पुनः प्रचलित करना चाहिये यह शब्द हमारे भारत के विद्वानों को प्रतिष्ठा देने वाला है।

★

ततः किम्

(ज्योतिष तथा कल्प के अनुसन्धान की आवश्यकता)

जयदत्त शास्त्री, व्याकरण दर्शनाचार्य, जोशीमठ

आर्यमित्र की सम्पादक मण्डली द्वारा ऋषिबोध पर्व (शिवरात्रि) पर प्रकाशित 'वेदाङ्ग प्रकाश' नामक विशेषांक पूर्वापेक्षया अधिक ज्ञानवर्धक और रमणीयतावायक है। सम्पादक महानुभावों का यह प्रयास अवश्य स्तुत्य है और वे धन्यवाद के पात्र हैं।

लेखक की दृष्टि उक्त अङ्क के दो लेखों (१) वेद और कल्प (लेखक—ऋषिमित्र शास्त्री) (२) वेद और ज्योतिष (लेखक—आचार्य सत्यमित्र शास्त्री) पर नवीनता और विशेषता वाले की दृष्टि से बार बार पड़ती है। फलतः कुछ विचार मन में उठते हैं जिन्हें यहां विन्यस्त किया जाता है। ऋषि दयानन्द से प्रेरणा पाकर जिन आर्य विद्वानों ने वेदाङ्गों के प्रकार तथा विज्ञानार्थ अनुसंधानात्मक ग्रन्थ प्रस्तुत किये उनमें पं० युधिष्ठिर मीमांसक जी का नाम अग्रगण्य है। उन्होंने शिक्षा व्याकरण और छन्द शास्त्रों पर जो अन्यत्र दुर्लभ सामग्री ग्रन्थ रूप में उपस्थित की है वह विद्वानों की दृष्टि से छिपी नहीं है चतुर्थ वेदाङ्ग निरुक्त पर भी स्व० पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु तथा वर्तमान में प्राच्येतिहास मर्मज्ञ पं० भगवद्दत्त जी द्वारा 'वेद और निरुक्त', 'निरुक्तभाष्य' इत्यादि ग्रन्थों में अनुसन्धानात्मक सामग्री सकलित और चिन्तित की गई है। अब रह गये शेष दो-कल्प और ज्योतिष, जिनके सम्बन्ध में पर्याप्त खोज अभी नहीं की गई है। यह कहना असमीचीन न होगा कि इन दो विषयों के सम्बन्ध में आर्यसमाज पौराणिक समाज से अति पीछे है। इस लिये यदि उनके आगे न भी सही, बराबरी में आना तो अत्यावश्यक है।

ज्योतिष विषय पर पं० प्रियरत्न आर्य (वर्तमान स्वामी ब्रह्ममुनि) जी ने 'वैदिक ज्योतिषशास्त्र' ग्रन्थ लिखकर वेदों में विद्यमान ज्योतिष शास्त्र के तत्त्वों का यत्किञ्चित दर्शन कराया है, वह उपयोगी अवश्य है, परन्तु कई अंशों में अपूर्ण है। आर्यसमाज के अन्दर ज्योतिष विषय में सामान्यतया यह धारणा है कि ऋषि की फलित ज्योतिष के विरोध में कही गई बातों के अतिरिक्त आगे पीछे एक कदम भी नहीं हटना चाहिये। परन्तु यदि गम्भीरतया विचारा जाय तो ऋषि का यह मन्तव्य कहीं भी नहीं दीखता कि जितना वे लिख गये हैं उस पर अधिक विचार या खोज आगे कोई न करे। इसके विपरीत उनका तो समाज के अभ्युत्थान के लिये एक मन्त्र दिया हुआ है। 'अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये।'' (आर्यसमाज के नियम संख्या ८) जिसका प्रतिसत्संग आर्यमन्दिरों में अनिवार्यरूपेण पाठ किया जाता है। हम केवल ऋषि दयानन्द कृत ग्रन्थों की आवृत्तिमात्र में इतिकर्त्तव्यता समझ बैठे हैं, यह भूल है। संसार आगे बढ़ रहा है—ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में। ऐसी स्थिति में हमारा जागना और आगे बढ़ना परम कर्त्तव्य है, युग की मांग है। विशेषतया अपने विपक्षी बन्धुओं के उन सब आक्षेपों का समुचित और युक्तिपूर्ण उत्तर हमारे पास रहना चाहिये जिनको लेकर वे हमारी बातों को काटते हैं और अपनी मान्य बातों को प्रामाणिक सिद्ध करते हैं। इसमें भी भला क्या दोष है कि उनकी किसी बात की परीक्षा किये जाने पर यदि उसमें हमें सत्यता या वैज्ञानिकता मिलती है, तो उसे न अपनाएं? उदाहरण के लिये ऋषि ने प्रशंसा की—इसलिये गणित व सिद्धान्त का हम भी खूब समर्थन करते हैं। और उसने फलित का खण्डन किया, इसलिये हम भी फलित को 'गपोड़ा' कहने में नहीं हिचकिचाते। भला किसकी शक्ति है कि गणित की व्यवस्थाओं को मिथ्या सिद्ध कर सके? दो और दो मिलकर चार ही होते हैं।

ऐसी कोई सम्भावना या शंका नहीं करता कि तीन भी होते हैं। तब जो सर्वथा निर्णीत विषय है उनमें क्या विचार करना। वह तो सत्य ही है। विचार तो वहां आवश्यक करना है जिसमें शंका सन्देह हो। देखिये न्यायदर्शन के भाष्यकार वात्स्यायन मुनि ने यही तो कहा है—'न हि सर्वथाऽनुपलब्धे निर्णीते वार्थे न्यायः प्रवर्तते, किं तर्हि? संशयिते।'' हां, तो कहना यह है कि ऋषि दयानन्द प्रणीत संस्कारविधि में यत्र तत्र गृह्य सूत्रों के प्रमाण से इस बात का समर्थन किया गया है कि 'उदगयनापूर्यमाणपक्षेषु गोदानचौलविवाहा.' अर्थात् उपनयन विवाहादि कुछ संस्कार उत्तरायण शुक्ल पक्ष में करना चाहिये। क्या किसी ने कभी यह भी विचार किया कि विवाह को दक्षिणायन कृष्णपक्ष या अमावस्या के दिन क्यों नहीं करना चाहिये, इसमें क्या दोष है? इतना ही नहीं, यज्ञ इत्यादि बातों के विषय में तो नक्षत्रयोग और काल विशेष की अपेक्षता पर यत्र तत्र उल्लेख मिलते हैं। जैसे

(१) 'नक्षत्रेण युक्तः कालः (अष्टाध्यायी ४/२/३) सास्मिन् पौर्णमासीति संज्ञायाम् (अष्टाध्यायी ४/२/२१)

(२) 'यानि वा इमानि पृथिव्याश्चित्राणि तानि नक्षत्राणि। तस्मादश्लीलनाम्नि चित्रे नावस्येत्र यजेत। यथा पापाहे कुरुते तादृगेव तत्।' (तैत्तिरीय ब्राह्मण १/५/२/)

[भारतीय ज्योतिष (हिन्दी समिति उ० प्र० सरकार द्वारा मराठी का हिन्दी भाषान्तर द्वि०सं०पृष्ठ ७६।]

अर्थात्—ये जो पृथिवी के चित्र हैं वे नक्षत्र हैं। इसलिए अश्लील नाम वाले नक्षत्र में न समाप्त करे न यज्ञ करे। जैसे बुरे दिन में करने का फल होता है, वैसा ही वह है।

(३) 'य उदगयने प्रमीयते देवानामेव महिमानं गत्वाऽऽदित्यस्य सायुज्यं गच्छति अथ यो दक्षिणे प्रमीयते पितृणामेव महिमानं गत्वा चन्द्रमसः सायुज्यं सलोकतामाप्नोति।'

(नारायणोपनिषद)

['भारतीय ज्योतिष' (हिन्दी समिति उ० प्र० सरकार द्वारा मराठी का हिन्दी भाषान्तर द्वि०सं० पृष्ठ ४७।]

अर्थात्—जो उत्तरायण में मरता है वह देवों की महिमा को पाकर सूर्य के साथ हो लेता है। और जो दक्षिणायन में मरता है वह पितरों की महिमा को पाकर चन्द्रलोक में चला जाता है। उल्लेखनीय है कि वेदों में देवयान व पितृयाण का बहुत वर्णन आता है।

(४) 'फाल्गुन्यां पौर्णमास्यां चातुर्मास्यानि प्रयुञ्जीत' (गोपथब्राह्मण ६/१९)

[भारतीय ज्योतिष (हिन्दी समिति उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा मराठी व हिन्दी भाषान्तर द्वि०सं० पृष्ठ ५४।]

अर्थात्—फाल्गुनी पौर्णमासी को चातुर्मास्यों (यज्ञविशेषों) को प्रयुक्त करे। ऐसी भी बात नहीं है कि ये उदाहरण अर्वाचीन ग्रन्थों के हों। ब्राह्मण ग्रन्थों को ऋषि दयानन्द ने आर्षग्रन्थ कहा है। महाभाष्यादि आर्ष ग्रन्थों में भी ऐसे उदाहरण मिलते हैं जैसे 'पुष्ये (पुष्येण वा) पायसमश्नीयात्' पुष्यनक्षत्र से युक्त जब चन्द्रमा हो तो खीर खाव। इन सबसे याज्ञादि कृत्यों में तो ज्योतिष की उपयोगिता सिद्ध ही है। अतएव सिद्धान्त शिरोमणि में भास्कराचार्य ने लिखा है—

'वेदास्तावत् यज्ञकर्म प्रवृत्ता यज्ञाः
प्रोक्तास्ते तु कालाश्रयेण।
शास्त्रादस्मात् कालबोधो यथा स्यात्
वेदाङ्गत्वं ज्योतिषस्योक्तमस्मात्।

अर्थात्—वेद यज्ञ के लिये प्रवृत्त हुये हैं, यज्ञों का विधान काल के अनुसार होता है। इस शास्त्र से काल का ज्ञान होता है। इसीलिये ज्योतिष शास्त्र को वेद का अङ्ग माना जाता है।

यह भी उक्त उदाहरणों से लक्षित होता है कि वैदिक कृत्यों में नक्षत्र, काल आदि के शुभाशुभत्व का बोध ब्राह्मण ग्रन्थों में विद्यमान है। वे सब केवल अर्थवाद (स्तुतिनिन्दामात्र उद्देश्य वाले) हैं ऐसा भी नहीं कहा जा सकता। यदि अर्थवाद यों ही हों तो उनका भी कुछ न कुछ हेतु और प्रयोजन होता ही है। वही ढूंढना चाहिये। यदि हम यह कहें कि आगे चलकर इन्हीं बातों के आधार पर ज्योतिष शास्त्र में नक्षत्र, ग्रह आदि के फलित ग्रन्थों का उदय और विस्तार हुआ तो स्यात् अयुक्त न होगा।

फलित विषय के उन ग्रंथों में सारी बातें कल्पनामात्र मिथ्या ही हैं या उनमें कुछ सत्यता भी है—इसका निर्णय तो तभी हो सकता है जब कि उनके अन्तःस्थल तक प्रविष्ट होकर पूर्णतया विषय वस्तु की परीक्षा की जाय। क्योंकि केवल कहने मात्र से कोई वस्तु सिद्ध या असिद्ध नहीं हो सकती, लक्षणप्रमाणाभ्याम् वस्तुसिद्धिर्न तु प्रतिज्ञा मात्रेण।' 'भारतीय ज्योतिष' नामक ग्रन्थ [जो मूलतः श्री शंकर बालकृष्ण दीक्षित द्वारा मराठी में लिखा गया है और जिसको उत्तर प्रदेश सरकार के सूचना विभाग (हिन्दी समिति) द्वारा हिन्दी में अनूदित किया गया है] में दक्षिण भारत के कुछ ऐसे ज्योतिषियों का उल्लेख किया गया है, जो मनुष्य की आकृति मात्र से उसका जन्मलग्न मालूम करके उसकी जन्मकुण्डली (जिसमें जन्मकालीन आकाशस्थ ग्रहों का उल्लेख रहता है) बना लेते हैं। ले० (श्री दीक्षित) लिखते हैं कि जांच करने पर शतप्रतिशत वह बात सिद्ध हुई है। उनका इस सम्बन्ध में कहना है कि मनुष्य के जन्म काल में जैसी आकाशीय नक्षत्रादि की स्थिति होती है, उसका जायमान व्यक्ति के शरीर आकृति, वर्ण आदि पर भी प्रभाव पड़ता है जिससे कुछ विशेष चिह्नों को देखते ही वह (दैवज्ञ) जन्म लग्न आदि को ढूढ निकालता है। अब यह बात आर्यसमाज से परीक्षित होनी चाहिये। यदि परीक्षा नहीं करेंगे और विपक्षियों को वाग्जाल कहते रहेंगे कि तुम्हारी बात झूठी है—तो इसका कोई प्रभाव नहीं होने का।

दूसरी ओर सिद्धांत ज्योतिष के ग्रंथ 'सूर्य सिद्धान्त' की प्रामाणिकता की हमारे द्वारा दुहाई बहुत दी जाती है। परन्तु आज तक किसी भी आर्य सामाजिक व्यक्ति ने इस पर अनुसंधान नहीं किया न उसके सिद्धांतों की व्याख्या करके समाज में प्रचार ही किया यहां तक कि आर्यसमाज का अपना कोई पञ्चांग नहीं है। नामकरणादि संस्कारों में तिथि नक्षत्रादि देखने की सब पुरो-

ह्मितों को आवश्यकता पड़ती है परन्तु वहां पौराणिकों द्वारा बनाये गए पंचाङ्गों को देखकर काम चलाया जाता है। प्रश्न यह है कि ऐसी स्थिति में हम लोग कैसे आगे बढ़ सकते हैं? मैंने एक विद्वान के मुख से यह कहते सुना "अचिन्त्य-प्रभावा मणिमन्त्रौषधयः" अर्थात् मणि, मंत्र और औषधि का बड़ा प्रभाव होता है [द्रष्टव्यम्-जन्मौषधिमन्त्रतपः समाधिजाः सिद्धयः। (पातञ्जल योग सूत्र ४/१) जनसाधारण इनमें से औषधि के प्रभाव को तो प्रत्यक्ष देखने पर स्वीकार कर लेते हैं परंतु मणि और मंत्र के प्रभाव को नहीं मानते क्योंकि उनका प्रचार कम है, कोई विशेषज्ञ ही मणि और मन्त्र के प्रभाव को सत्य कर दिखलाता है। बहुत से लोगों की आंखों देखी घटनायें हैं कि सर्पविष को उतारने की विद्या जानने वाले लोग मन्त्र-तंत्र के प्रयोग से उस सर्प (जिसने जिस किसी को काटा हो) को बुलाकर उससे सम्पूर्ण विष चुसवा लेते हैं और वह व्यक्ति स्वस्थ हो जाता है।" इन बातों को हम अत्यन्त तुच्छ समझकर छोड़ देते हैं। परिणाम यही होता है कि जनसाधारण आकृष्ट होने की अपेक्षा दूर हो जाता है। इस विषय पर अन्त में आर्य प्रतिनिधि सभाओं, सार्वदेशिक सभा और आर्य विद्वानों से यही प्रार्थना करनी है कि इनके द्वारा आर्यसमाज में ज्योतिर्विज्ञान के अनुसन्धानार्थ वेधयत्र वेधशालाएं और ज्योतिष पाठशालायें, स्थापित होनी चाहिये, साथ ही फलित ज्योतिष की पारता अथवा अपारता पर भी गवेषणा की जानी चाहिये तभी हमारी ज्योतिष के प्रति मान्यता व श्रद्धा फलवती हो सकती है। अन्यथा केवल यह कहने मात्र से कि 'गणित व सिद्धान्त सत्य है। फलित झूठा' दूसरे हमारी खूब मजाक उड़ाते रहेंगे, और आज हम भी आने वाले दिनों में रूढ़िवादी गिने जायेंगे। क्या ऐसा सम्भव है कि ज्योतिर्विज्ञान में आज यूरोपादि देशों का मुकाबला हम कर सकें।

कल्पशास्त्र के विषय में श्री ऋषिमित्र जी अपने लेख 'वेद और कल्प' में यथार्थता प्रकट कर चुके हैं। उनका यह कहना बहुत सत्य है कि श्रौतयज्ञों का आर्यसमाज में न कोई ज्ञान है, न प्रचार है। इस विषय में भी आर्यसमाज को बहुत कुछ करना है। 'स्वर्गकामो यजेत' अर्थात् स्वर्ग की कामना वाला यज्ञ करे अर्थात् इस श्रुतिवाक्य का पौराणिक यह अर्थ लेते हैं कि कोई भी यज्ञ इसलिये किया जाता है कि उनसे यजमान को मरने के पश्चात् जन्मान्तर में स्वर्ग (देवयोनि) प्राप्त हो परन्तु आर्यसमाज यज्ञ (अग्निहोत्र) का उक्त अर्थ न लिया जाकर यह लिया जाता है कि जलवायु शुद्ध होती है व नीरोगता होती है। एक बार लखनऊ में ही एक सुप्रतिष्ठित विद्वान् के मुख से सुनने को मिला कि "यज्ञ जलवायु की शुद्धि के लिये करना चाहिये यह स्वामी दयानन्द की अपनी कल्पना है, परम्परा तो यही है कि यज्ञों के अपने २ प्रयोजन हैं जैसे 'ज्योतिष्टोमेन स्वर्गकामो यजेत' ज्योतिष्टोम यज्ञ करे स्वर्ग चाहने वाला पुत्रेष्टि करे पुत्र चाहने वाला राजसूय यज्ञ करे साम्राज्य चाहने वाला इत्यादि" मैंने अपने अल्प ज्ञान के आधार पर उस सज्जन को उक्त बात का उत्तर दिया तो सही परन्तु उन्हें सन्तुष्ट न कर सका। तब से अब तक उनकी बात मन में बैठी है अनेक ग्रन्थ देखने पर भी अभी पूर्ण उत्तर के लिये बड़ी सामग्री अपेक्षित है। प० ऋषिमित्र के लेख को पढ़कर कुछ सहारा मिलता है। यह ठीक है कि ऋषि दयानन्द ने आयुर्वेदिक दृष्टिकोण से यह लिखा है कि यज्ञ का एक प्रयोजन जलवायु की शुद्धि भी है। परन्तु अन्य प्रयोजन भी हैं यह बात उनके पञ्चमहायज्ञ विधि, संस्कारविधि, सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका और उपदेश मञ्जरी ग्रन्थों से परिलक्षित होती है। मैं श्री शास्त्री जी के तथाकथित लेख के निम्नांकित दो प्रस्तावों का पूर्णतः समर्थन करता हूं—

(१) "इस लेखक का स्पष्ट विचार है कि ब्राह्मण ग्रन्थों को आदर्श बनाकर श्रौतसूत्रों के इन गर्हित पशुप्रकरणों का विकल्प कुछ मीमांसा आदि के विशेष जानकार विद्वान् मिलकर प्रस्तुत करें और श्रौतसूत्रों की परिपाटी आरम्भ की जाय।"

(२) "संस्कार विधि के समान ही हमें श्रौतसूत्रों का ग्रंथ निर्मित करना चाहिये (पृष्ठ १४)—वेदांकप्रकाश आर्यमित्र वर्ष ७०, अङ्क ६।

यदि कर्म काण्ड कुशल आर्य विद्वान् (जैसे आचार्य विश्वश्रवाः, पं० युधिष्ठिर मीमांसक, प० विहारीलाल शास्त्री पं० वीरसेन वेदश्रमी प्रभृति) संगठित रूप से श्रौतसूत्रों और पूर्व मीमांसा का मथन कर नवनीत रूप में संस्कारविधि के समान ग्रन्थ निकाल डालें तो ऋषि के ऋण से उऋण होने के साथ २ समाज और विश्व का भी उपकार हो सकता है। वस्तुतः इससे कर्मकाण्डीय क्षेत्र में एक महती आवश्यकता की पूर्ति होगी। अतः प्रतिनिधि सभाओं को इस ओर विशेष ध्यान देना चाहिये जिससे वे विद्वानों के द्वारा उक्तप्रकार के ग्रंथ रत्न निकाल सकें। इत्योउम् शम्।

जमायत इस्लामी

—राधेमोहन, प्रयाग

७१२ ई० में भारतवर्ष पर मुसलमानों का जो आक्रमण आरम्भ हुआ वह १५२७ ई० बाबर तक अविराम गति से चलता रहा। इन आठसौ वर्षों के मध्य में मुहम्मद बिन कासिम सुबुक्तगीन, महमूद गजनवी, मुहम्मद गोरी, तैमूरलंग तथा नादिरशाह दुर्रानी आदि कितने धर्मोन्मत्त युद्धोन्मादी भारत भूमि पर ताण्डव नृत्य करते रहे। इनके आक्रमण का मुख्य उद्देश्य इस्लाम का प्रचार तथा हिन्दू जाति का मानमर्दन करना, हिन्दू स्त्रियों का सतीत्व अपहरण करना और भारत की अतुलित सम्पदा को लूटना था। यह लुटेरे जिस क्षेत्र पर आक्रमण करते वहां के मन्दिरों को नष्ट भ्रष्ट कर देते, हीरा जवाहरात, सोना चांदी जो कुछ मिलता लूट लेते, और हिन्दुओं को बलात मुसलमान बना लेते थे। या उन्हें मौत के घाट उतार देते थे। अलाउद्दीन खिलजी, कुतुबुद्दीन ऐबक तथा फिरोज शाह तुगलक आदि ने यहां अपना शासन स्थापित करके भी बलात् तथा अमानुषिक धर्म परिवर्तन के अत्याचारों का क्रम यथावत जारी रखा। बाद में मुगल साम्राज्य के निर्माण के पश्चात् स्थिति कुछ भिन्न हो गई। क्यों कि मुगलों का मुख्य उद्देश्य शासन करना हो गया था परन्तु इस्लाम प्रचार के मोहवश मुसलमान बनाने के मौके को वे भी हाथ से जाने नहीं देते थे। आश्चर्य है नृशंसतापूर्ण लूट मार और मुस्लिम शासन के इस दीर्घकाल में हिन्दू जाति का एक छोटा सा भाग ही मुसलमान बन पाया जब कि हिन्दू होने के नाते इनके सिर पर सदैव तलवार लटकती रही। यह सत्य है कि मुसलमानों ने अपनी तलवार की शक्ति से भारतवर्ष के बड़े भू भागों को लूटा उन पर अपना शासन स्थापित किया और अगणित हिन्दुओं को गुलाम बनाया, किन्तु सांस्कृतिक दृष्टि से हिन्दू जाति पर इनका कोई प्रभाव न पड़ा। मुस्लिम शासनकाल में अनेक हिंदुओं ने भय से अथवा ऊंचे-ऊंचे राजकीय पदों के लोभ से इस्लाम चाहे स्वीकार भले ही किया हो किन्तु आपको शायद एक ही प्रमाण ढूंढने पर भी उपलब्ध न हो सके कि किसी हिंदू ने कुरान को पढ़कर तथा इस्लामी संस्कृति से प्रभावित होकर अपना धर्म परिवर्तन कर लिया हो। इसके विपरीत हम देखते हैं कि सन् ६२९ ई० में मक्का नगर में मुहम्मद साहब की अधीनता स्वीकार की था और सन् ६३२ ई० में २ वर्ष बाद समस्त अरबों ने। ६३६ ई० में ईराक (मेसोपोटामिया) शाम (सीरिया) को अरबों ने हस्तगत कर लिया और ६३७ में बैतुल मुकद्दस (जेरूसलम) पर कब्जा किया था। और सातवीं शताब्दी तक तमाम तातार और तुर्किस्तान तथा चीन की पूर्वी सरहद तक इस्लाम में मिल गया था इसी बीच में पश्चिम में मिश्र, कार्थेज तथा समस्त उत्तरीय अफ्रीका पर इस्लाम की फतह हो चुकी थी और प्रबल रोमन साम्राज्य को उन्होंने चौरफाड़ डाला था और स्पेनों पर अपना अधिकार कर लिया था। पूर्व में फारस, दमिश्क और ईराक आदि देश थोड़े ही दिनों में मुसलमान बना लिये गये। थोड़े ही दिनों में उपर्युक्त देशों की प्राचीन संस्कृति और सभ्यता सर्वथा अतीत के गर्त में विलीन हो गई। और उनकी समस्त जाति ने इस्लाम धर्म को अंगीकार कर लिया। जैसा हमने कहा है कि भारत में दीर्घकाल तक शासन करते रहने पर भी धार्मिक दृष्टि से इस्लाम का कोई विशेष प्रभाव न पड़ा बल्कि वे स्वयं परिवर्तित हो गए और जो इस्लाम मक्के से चला था वह भारत में आने पर अपने उसी रूप में अधिक देर तक स्थिर न रह सका।

इसका कारण क्या है कि इस्लाम भारत वर्ष के अतिरिक्त जिन देशों में गया थोड़े ही दिनों में वहां की समूची जाति ने इस्लाम स्वीकार कर लिया। इस्लाम की तलवार की तेज धार के समक्ष बड़ी-बड़ी प्रबल जातियां देर तक ठहर न सकीं, भारतवर्ष में इस्लामी तलवार की धार क्यों कुण्ठित हो गयी। इसको इस देश पर कई शताब्दियों तक शासन करते रहने पर भी वह सफलता क्यों न प्राप्त हो सकी जो अन्य देशों में अल्प काल में ही उसे मिल गयी थी। इसका कारण है कि प्रभु प्रदत्त ईश्वरीय ज्ञान वेद से सम्बन्धित होने से वैदिक संस्कृति की जड़ें पाताल तक विस्तृत हो चुकी थीं, और आर्य जाति के धार्मिक उच्च विचार व दर्शन शास्त्रों के गम्भीर ज्ञान के आगे कुरान व इस्लाम के विचार कोई समता

(क्रमशः)

क्या वेद नग्नतावाद के समर्थक हैं

★ पं० इन्द्रराज जी मेरठ

मुनि श्री विद्यानन्द जी से जैन धर्मशाला में श्री मास्टर निर्मल स्वरूप जी एम० ए० के सुप्रयास से श्री डा० भगवद्दत्त जी, श्री आचार्य सत्यव्रत जी राजेश एवं श्री आचार्य सत्यप्रिय जी शास्त्री एम. ए. के साथ मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। जैनमत दर्शन मालक पुस्तक पर चर्चा प्रारम्भ करते हुये मुनि श्री से दिगम्बर सम्प्रदाय में नग्न वाद पर विचार विमर्श हुआ। इससे पूर्व मुनि श्री अपने किसी प्रवचन में भी यह कह चुके थे कि नग्न रहना तो वेदों से भी सिद्ध होता है। इसी सन्दर्भ से इस विचार विमर्श में भी मुनि श्री ने यजुर्वेद के १९ वें अध्याय के १४ वें मन्त्र के आधार पर दिगम्बर सम्प्रदाय में नग्नता वाद की पुष्टि की। वह मन्त्र इस प्रकार है।

ओ३म् आतिथ्य रूप मासर महा-
वीरस्य नग्नहु।
रूपमुपसदामेतत्तिस्रो रात्री
सुरा सुता॥
यजु० अ० १९ मन्त्र १४

इस मन्त्र के "महावीरस्य नग्नहु, इन दो पदों से मुनि श्री ने मन्त्र में 'नग्नावस्था में रहना सिद्ध किया है। इस विचार विमर्श में उनका अधिक बल नग्नहु शब्द पर ही था।

'नग्नहु' शब्द का अर्थ 'नगा रहना' ही है इसका विवेचन करने के लिये यह अत्यन्त आवश्यक है कि प्रथम हम 'नग्नहु' शब्द की व्युत्पत्ति व्याकरण के आधार पर करें और दूसरा वेद के स्वदेशी और पश्चिमी भाष्यकारों के भाष्य को देखें कि उन्होंने इस शब्द का क्या अर्थ किया है। नग्नहु शब्द दो शब्दों से बना है 'नग्न' और 'हु'। 'हुदानादानयो आदाने चेत्येके' इस धातु से हु शब्द सिद्ध होता है इस प्रकार से 'नग्नहु' का अर्थ हो गया यो नग्नान् जुहोत्यादत्ते" अर्थात् जो नग्न अर्थात् अकिञ्चनों को वस्त्रादि का दान कर उन्हें धारण कराता है उसको 'नग्नहु' कहते हैं।

अब यह देखना चाहते हैं कि 'नग्नहु' शब्द वेद में कितनी बार और कहां २ आया है और भाष्यकारों ने इस शब्द का कहां २ क्या २ अर्थ किया है। 'नग्नहु' शब्द यजुर्वेद में १९ वें अध्याय में १४ वें और ८३ वें मन्त्र में आया है। इसके अतिरिक्त 'नग्नहुम शब्द यजुर्वेद के २० वें अध्याय के ५७ वें मन्त्र में तथा २१ वें अध्याय के ३१ वें मन्त्र में आया है।

सर्व प्रथम हम वेदों के प्रसिद्ध भाष्यकार आचार्य उव्वट का १९ वें अध्याय के १४ मन्त्र में नग्नहु शब्द पर भाष्य प्रस्तुत करते हैं। उन्होंने नग्नहु शब्द पर लिखा 'किण्वो नग्नहु सौत्रिकाणां प्रसिद्ध विश्वकोष के अनुसार 'किण्व पापे सुराबीजे' किण्व सुरा बीजों को कहते हैं। इस प्रकार से 'नग्नहु' का अर्थ सुराबीज हुआ। आप्टे की Dictionary में 'किण्व sin और किण्व A drug or seed used to Cause fermentation in the manufacture of spirits' लिखा है, इससे भी 'किण्व' का अर्थ सुराबीज ही होता है।

इसी अध्याय के ८३ वें मन्त्र में आये हुये 'नग्नहु' शब्द पर भी आचार्य उव्वट 'नग्नहु किण्व' ऐसा लिखकर स्पष्ट रूप से आसव या सुरा का बीज अर्थ करता है।

२० वें अध्याय के ५७ वें मन्त्र में आये नग्नहुम् शब्द का भाव आचार्य उव्वट ने सुराबीज से ही लगाया है

इसी प्रकार २१ वें अध्याय के ३ वें मन्त्र में आचार्य उव्वट स्पष्ट लिखते हैं—

"नग्नहुम सुग्यो सहित नग्नहु किण्व च होता यजत्विमनुवर्तते' यहां पर भी नग्नहु का अर्थ किण्व अर्थात् सुराबीज ही है।

ऊपर लिखे आचार्य उव्वट के भाष्यों से यह कहीं भी सिद्ध नहीं होता कि वे नग्नहु का अर्थ नगा रहना किञ्चिन्मात्र भी मानते हैं।

अब हम इस शब्द पर प्रसिद्ध भाष्यकार महीधर की भी सम्मति प्रस्तुत करते हैं। वे यजुर्वेद के १९ वें अध्याय के १४ वें मन्त्र में आये 'नग्नहु' शब्द: पर लिखते हैं—

"सर्जत्वगादिषड्विंशति वस्तु येको कृतानि नग्नहु पूर्वोक्त स महावीरस्य घमस्य रूप ध्येयम् अर्थात् सर्जत्वगादि २६ वस्तुओं को एकत्र कर बनाया हुआ कोई पदार्थ 'नग्नहु' है। इसी प्रकार से इसी अध्याय के ८३ वें मन्त्र में आये हुए उक्त शब्द पर लिखते हैं—

'नग्नहु किण्वः सुराकन्द पूर्वोक्तः अर्थात् नग्नहु सुराकन्द का कहते हैं। अध्याय २० के ५७ वें मन्त्र में भी वे स्पष्ट रूप से 'नग्नहुम सुराकन्दम्' लिखते हुये उपरोक्त कथन की पुष्टि करते हैं तथा अध्याय २१ के ३१ वें मन्त्र में भी 'नग्नहुम नग्नहु किण्व' तथा नग्नहु सुराकन्द' लिखकर वे स्पष्ट कर रहे हैं कि 'नग्नहु का अर्थ नगा रहना कदापि नहीं है

सनातन धर्म पुस्तकालय मुरादाबाद द्वारा में हमें श्री भागव ज्वाला प्रसाद मिश्र मुरादाबाद निवासी के मिश्र भाष्य देखने का सुअवसर प्राप्त हुआ। हम उसे भी क्रमशः प्रस्तुत करते हैं—

ब्रह्मभाष्य अंक ११/१२ संवत् १९४३ सन् १८८६ पृष्ठ ९०८ पर यजुर्वेद अध्याय १९ मन्त्र १४ में नग्नहु' का अर्थ नग्नहु नाम वस्तु तथा अध्यात्म में धातु का अर्थ रुधिर किया हुआ है। इसी प्रकार पृष्ठ ९४२-३ पर इसी अध्याय के मन्त्र ८३ में आये 'नग्नहु का अर्थ मादक सुराकन्द तथा अध्यात्म में सुराकंद किया हुआ है। इसी भाष्य में अंक १ सन १८८६ पृष्ठ ९७९/८० में अध्याय २० के ५७ वें मन्त्र में नग्नहुम' का अर्थ सुराकन्द को' और अध्यात्म में नग्नहुम का अर्थ 'सूक्ष्मात्मा' को किया गया है। इसी भाष्य के अंक २ सन १८८६ पृष्ठ १००३ पर अध्याय २१ मन्त्र ३१ में 'नग्नहुम का अर्थ रुधिर ही किया है। मिश्र भाष्य संवत् १९५९ पृष्ठ ८१७ पर अध्याय १९ मन्त्र १४ में नग्नहु का अर्थ सर्जत्वगादि २६ वस्तु पृष्ठ पृष्ठ ८५३ पर अध्याय १९ मन्त्र ८३ में नग्नहु का अर्थ सर्जत्वगादि का चूर्ण पृष्ठ ८८९ पर अध्याय २० मन्त्र ५७ में 'नग्नहुम का अर्थ महौषधियों के कन्द को तथा पृष्ठ ९१८ पर अध्याय २१ मंत्र ३१ में नग्नहुर का अर्थ 'पूर्वोक्त औषधियों को किया है।

पाठकगण ब्रह्म भाष्य और मिश्र भाष्य का अध्ययन करने के पश्चात् भली भांति निर्णय कर सकते हैं कि उपरोक्त भाष्यों के भी नग्नहु' का अर्थ 'नगा रहना या नगा होना बिल्कुल भी नहीं है

अब हम इस शब्द पर यजुर्वेद भाष्यकार श्री जयदेव विद्यालंकार जी का भाष्य प्रस्तुत करते हैं। अध्याय १९ मन्त्र १४ में वे लिखते हैं ('नग्नहु महावीरस्य) = नग्नहु महावीर अर्थात यज्ञ मेघमष्टि का रूप है। राष्ट्र पक्ष में नग्न अर्थात् अकिञ्चन पुरुषों को अन्न वस्त्रादि प्रदान करना ही महावीर बड़े वीर्यवान त्यागी पुरुष का रूप है इसी अध्याय के मन्त्र ८३ में इसी शब्द पर लिखते हैं नग्न अर्थात विशुद्ध ज्ञान के ग्रहण करने वाला समापति इसी मन्त्र का दूसरा अर्थ करते हुये लिखते हैं "नग्नहु = सुन्दर स्त्री को स्वीकार करने वाला उसका पति अध्याय २० मन्त्र ५७ में आये नग्नहुम शब्द पर वे लिखते हैं—

"दरिद्रियों के पालक, प्रजा के सुखदायक" तथा अध्याय २१ मन्त्र ३१ में लिखते हैं नग्नहुम पतिम = सुन्दर स्त्री को स्वीकार करने वाले पति को इसी मन्त्र के भाष्य में आगे लिखते हैं—

"नग्नहुम —दरिद्रों के पोषक, दुष्ट पुरुषों के विनाशक'। पं० जयदेव जी शर्मा विद्यालंकार के मत में भी (नग्नहु) शब्द का अर्थ नगा रहना' नगा होना' कदापि नहीं है।

अब हम इस शब्द पर यूरोपीय विद्वान Ralph T. H. Griffith के विचार भी प्रस्तुत करना अपना कर्तव्य समझते हैं। The text is of the white Yajurveda में जो सन १९८९ में [illegible] g lagarus and Co द्वारा प्रकाशित किया गया था, पृष्ठ १७४ पर अध्याय १९ मन्त्र १४ के नीचे नग्नहु शब्द पर टिप्पणी है—

'Nagnahu—A root used as yeast इससे भी यही सिद्ध होता है कि ग्रिफिथ महोदय भी नग्नहु को सुराबीज ही मानते हैं। इसी प्रकार पृष्ठ १८४ पर इसी अध्याय के मन्त्र ८३ के फुटनोट में भी वे इसी प्रकार 'Nagnahu the root used as yeast' लिखकर उपरोक्त कथन की पुष्टि करते हैं। पृष्ठ १९३ पर अध्याय २० के मन्त्र ५७ में 'Nagnahu the drug used for fermenting the sura तथा पृष्ठ १९९ पर अध्याय २१ मन्त्र ३१ में Nagnahu The drug used to ferment

the lhid' लिखकर उपरोक्त कथन की पुष्टि करते हैं।

पाठक अब उपरोक्त भाष्य से भी 'नग्नहु' का अर्थ 'नगा रहना' नहीं निकाल सकते।

अब हम आधुनिक युग के वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् एवं क्रान्तदर्शी भाष्यकार महर्षि दयानन्द जी सरस्वती की सम्मति उक्त शब्द पर प्रस्तुत करते हैं। वे अध्याय १९ मन्त्र १४ में संस्कृत भाष्य में '(नग्नहु) यो नग्नान् जुहोत्यादत्ते' तथा हिन्दी में जो नग्न अकिञ्चनों को धारण करता है, संस्कृत भाष्य में— 'दरिद्रेभ्यो वस्त्रादि दाता' आदि अर्थ किये हैं जो सर्वथा युक्ति युक्त, संगत तथा व्याकरण की रीति से सर्वथा सत्य अर्थ है।

इसी प्रकार से इसी अध्याय के ८३ वें मन्त्र में आये हुये 'नग्नहु' शब्द पर संस्कृत में 'यो शुद्ध जुहोति गृह्णाति स,' हिन्दी में (नग्नहु)—शुद्ध को ग्रहण करने वाला' संस्कृत के भावार्थ में "सार सार वस्तु गृह्णन्ति" तथा हिन्दी भावार्थ में सार सार वस्तुओं को ग्रहण करते हैं, । इत्यादि लिखते हैं उक्त अर्थ भी सर्वथा ठीक है। यह ऋषि का महान् आशय है कि उन्होंने भिन्न २ स्थानों में आये हुये एक ही शब्द का प्रकरणानुसार व्याकरण की दृष्टि से ठीक अर्थ किया है।

अध्याय २० के मन्त्र ६७ में आये 'नग्नहु' शब्द का अर्थ महर्षि संस्कृत में 'यो नन्दयति स नग्नस्तमाददातीनि' तथा हिन्दी में 'आनन्द करने वाले विषय को ग्रहण करने वाले' करते हैं। इसी प्रकार अध्याय २१ के मन्त्र ३१ में आये हुये 'नग्नहुम' का अर्थ महर्षि संस्कृत में यो नग्नान् दुष्ट न जुहोति कारागृहे प्रक्षिपति तम्' (नग्नहु धातोवाहुल कादौणादिको ड प्रत्यय) तथा हिन्दी में नग्न दुष्ट पुरुषों को कारागृह में डालने वाले' इस प्रकार कहते हैं। यह अर्थ भी अत्यन्त प्रकरणानुकूल व्याकरण की दृष्टि से ठीक एवं युक्ति युक्त है। इन उपरोक्त अर्थों को पढ़कर महर्षि के प्रगाढ़ ज्ञान एवं गम्भीर पाण्डित्य का परिचय प्राप्त होता है।

पाठक वृन्द अब समझ गये होंगे कि उक्त भाष्य से भी नग्नहु का अर्थ नगा रहना कदापि सिद्ध नहीं होता।

ऊपर लिखित सब भाष्यों से स्पष्ट है कि मुनियों ने 'नग्नहु' का मनमाना अर्थ किया है और इस शब्द से नगा रहना या 'नगा होना' अर्थ करना उनका दुस्साहस मात्र है। यह अर्थ तो इसी प्रकार का अनर्गल अर्थ है जैसे कि कोई निरक्षर व्यक्ति यह कह देवे कि ईसा का नाम तो यजुर्वेद के ४० वें अध्याय के प्रथम मन्त्र में आया है।

पाठकवृन्द ! आप स्वयं विचार करें कि अपने सम्प्रदाय की इस सारहीन एवं सभ्यता के विरुद्ध नग्नतावाद को वेदों से सिद्ध करने का मुनि श्री का प्रयास कितना विडम्बना पूर्ण है। क्या अपने आपको त्यागी और तपस्वी कहने वाले व्यक्ति से इस प्रकार की असभ्य कल्पना की आशा की जा सकती है? क्या नग्न रहने से ही कैवल्य की प्राप्ति हो सकती है? [illegible] खेलते हैं पशु पक्षी आदि तो [illegible] ही रहते हैं। क्या वे कभी मुक्ति [illegible] कर सकते हैं? क्या सभ्य समाज में स्त्रियों के लिये भी दिगम्बर सम्प्रदाय के अनुसार मोक्ष प्राप्ति की इसी प्रकार की साधना का उल्लेख अथवा उपक्रम करने का साहस किया जा सकता है? क्या हम नग्न रहने वाले तथाकथित मुनियों से जीवन निर्माण के लिये उनके जीवन व्रत के रहने की भोजन की और स्नानादि की किसी प्रकार की प्रेरणा प्राप्त हो सकती है? क्या उनके मार्ग पर चलकर सारा संसार नग्नतावाद में डूबकर असभ्य और जंगलियों की कोटि में नहीं गिना जावेगा?

ये और इसी प्रकार के और कई प्रश्न नग्नतावाद पर उठ खड़े होते हैं जिनका समाधान होना मुनि श्री से कदापि सम्भव नहीं हो सकता।

कैवल्य की प्राप्ति के लिये तो महर्षियों के बताये हुये अष्टाङ्ग योग का रास्ता ही सर्वोत्तम है। यम नियम आसन प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि, ये क्रमशः मोक्ष प्राप्ति के साधन सर्वमान्य और स्वतन्त्र हैं। नग्न रहने पर परिश्रम करने की अपेक्षा इन योगाङ्गों के अनुष्ठान में प्रयत्न करना ही अत्यन्त उपादेय एवं उचित है।

भगवान कृपा करें सभी लोग वेद के बताये हुये मार्ग का अनुसरण कर अपने २ जीवनों को ऐहिक और पारलौकिक रूप से सफल बनाते हुये उस परमानन्द पद का रसास्वादन कर सकें जिस रस के विषय में महर्षियों ने उपनिषदों में लिखा है "रसोवैसरसोह्येव लब्ध्वा आनन्दी भवति" अर्थात् वह भगवान रसस्वरूप है उस रस का पान करने से ही जीव परमानन्द को प्राप्त करता है।

आयुर्वेद की दृष्टि में—

ग्रीष्मकालीन उपद्रवों का उन्मूलक—प्याज

ग्रीष्म ऋतु की प्रचण्डता का सभी अनुभव करते हैं, इसके विषय में आयुर्वेद के आचार्यों का कथन है—

तीक्ष्णांशुरति तीक्ष्णांशुर्ग्रीष्मे संक्षिपतीव जगत्।
प्रत्यहं क्षीयते श्लेष्मा, तेन वायुश्च वर्धते॥

अर्थात्—ग्रीष्म ऋतु में सूर्य की किरणें अत्यन्त तीक्ष्ण होती हैं इसलिए यह प्राणीमात्र के स्नेह को नष्ट कर श्लेष्मा को क्षीण कर देती है, जिससे मनुष्य की शारीरिक शक्ति घटती और वायु की वृद्धि होती है।

वायु की रूक्षता एवं श्लेष्मा की क्षीणता से उत्पन्न होने वाले ऋतु रोगों से बचाव के लिये ऋषियों व आचार्यों ने प्याज के विभिन्न अनुभूत प्रयोग सब साधारण के हित के लिये किये हैं जिनके प्रयोग से इस मौसम के उपद्रवों से बिना किसी कठिनाई के बचा जा सकता है।

महर्षियों ने आयुर्वेद में प्याज को वातनाशक, उष्णवीर्य, स्वल्प, पित्तकारक बल वीर्य, अग्निवर्धक, स्निग्ध रुचिकारक धातुओं को स्थिर करने वाला, कफ कारक पुष्टि कर, मधुर, गुरु, रक्त पित्त नाशक कहा है। निरन्तर और अधिक मात्रा में सेवन किया गया प्याज बुद्धि विकास को रोकता है और स्मरण शक्ति का नाश करता है। अतः बौद्धिक कार्य कर्ताओं को इसका सेवन नहीं करना चाहिये।

ग्रीष्म के उपद्रवों के उन्मूलक बहु परीक्षित जनोपयोगी प्याज के कुछ प्रयोग निम्न लिखित हैं—

दृष्टि मन्दता के लिये

एक तोले प्याज के रस में एक तोला शहद मिलाकर नित्य प्रातः-सायं सलाई से आँख में लगाने से लाभ होता है।

गिल्टी में उपयोगी

प्याज को बारीक पिसी लुगदी में थोड़ा सा खाने वाला नमक मिला कर बच्चे के पेशाब में पका कर गिल्टी पर बांध लाभ होगा।

इनफ्लुएंजा के लिये

रोगी को खाने को कुछ न दें सिर्फ एक चम्मच ताजे प्याज का रस दिन में तीन बार शहद के साथ दें। गर्भिणी को कदापि न दें। बच्चों को आधी मात्रा में दें।

हैजे की दवा

प्याज एक छटांक, काली मिर्च साढ़े पांच तोला हरा चार माशे पीस के उसके से भाग जैसे कूंडी में पीस लें और आधा पाव पानी मिला कर बच्चों को २-३ बार सेवन कराने से लाभ होता है।

हिचकी में

प्रारम्भिक अवस्था में प्याज को सूंघने को दें। तथा काले नमक का सेवन कराएं।

मौसमी अजीर्ण में

कटे प्याज पर नींबू व नमक छिड़क कर सेवन करायें। उपयोगी होता है।

मौसमी पीलिया में

यह रोग [illegible] बहुत ही लाभप्रद होता है यदि रक्त अधिक मात्रा में गिर रहा हो तो एक चम्मच ताजे प्याज के रस में [illegible] प्रमाण अफीम मिलाकर दिन में तीन बार सेवन करायें। आहार में सिर्फ साबूदाना दें।

सिर दर्द में

गरमी के कारण होने पर प्याज की लुगदी बांधें और प्याज के रस को मिश्री के साथ सेवन करें।

ग्रीष्मकालीन नेत्र रोगों पर

सोते समय प्याज का ताजा रस लगायें यह नेत्रों की लाली, जलन, खुजली, गड़ना आँसू आना उठना सभी में लाभप्रद है।

बवासीर और गुदा पीड़ा में

दो प्याज को सब गरम राख में भून लें, छिलका उतार कर पीस लें, इसमें घी मिला कर लुगदी की पोटली बना लें गुदा के ऊपर टिकड़ी बना कर बांध लें। लाभ होता है।

रक्त शुद्धि के लिये

पांच तोले ताजे प्याज के रस में एक तोला मिश्री, एक माशा भुना सफेद जीरा प्रातःकाल पीने को दें। खाज खुजली में लाभ करता है।

नकसीर रोग में

प्याज का ताजा रस नाक के नथुनों में टपकायें और उसी की लुगदी को माथे पर बांधें। गरम चीजों से परहेज रक्खें।

लू से बचाव में

ऊपर का छिलका उतार कर दो टुकड़े करके जेब में रखिये और छोटे बच्चों को इसी की माला पहनाइये।

श्री विजयदयाल सक्सेना बहराइच

निर्वाचन

—आ०स० कसौली [मुजफ्फरनगर]
प्रधान—पं० विजयेन्द्र
मंत्री—श्री स्वरारासिंह

—आ०स० आर्यापुर स्टेट [कानपुर]
प्रधान—श्री विश्वनाथ सिंह
मंत्री—श्री आशावीर वर्मा

—आ०स० किशनपोल बाजार जयपुर
प्रधान—उग्रसेन जी सेठी
मंत्री—श्री दामोदरदयाल गुप्त

—आर्य प्रतिनिधि सभा मुरादाबाद
प्रधान—श्री लीलावती सलूजा मुरादाबाद (नवरपुर)
उपप्रधान—श्री गोपीदेवी, श्री शेरसिंह, हरिश्चन्द्र आर्य सरायतरीन मुरारीलाल [हसनपुर], हंसराज केहूर [मुरादाबाद] कृष्ण वर्मा [काशीपुर]
मंत्री—श्री उमरावसिंह मुरादाबाद

प्रादेशिक समाचार

मध्यभारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का वृहदधिवेशन

भोपाल—मध्यभारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का आगामी वृहदधिवेशन दिनांक ९ व १० जून को आर्य समाज मंदिर अम्बाह [मुरैना] में आयोजित किया गया है। इस सम्बन्ध में सभामंत्री श्री विश्वनाथ कम्ठान को एक विज्ञप्ति द्वारा प्रान्त की समस्त आर्य समाजों से निवेदन किया गया है कि वे अपने अपने प्रतिनिधि उक्त तिथि को वहां भेज कर अधिवेशन को सफल बनावें।

धर्म प्रचार

खण्डवा—आर्यसमाज खन्डवा पूर्व निमाड़ में आर्यसमाज के स्थायी प्रचारक श्री सुखराम आर्य सिद्धांत शास्त्री ने २५ से २९ अप्रैल तक ग्राम कोलाडिट, आवन्तिया व तिरसोद मे तथा २९ अप्रैल से ५ मई तक ग्राम आशापुर, धनेरा, बकड़ तथा खालवा आदि में जहां ईसाई मिशनरियों द्वारा बलाही जाति एव अधिवासियों को लोग लालच देकर धर्म परिवर्तन कराया जा रहा है, व्यापक धर्म प्रचार कर जनता मे जागृति उत्पन्न की।

लखनऊ—दिनांक २८ अप्रैल को जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा लखनऊ का ५८ वां मासिक अधिवेशन श्रीकृष्ण बलदेव जी प्रधान की अध्यक्षता मे बड़े समारोह पूर्वक मनाया गया। अथर्व वेद के मणि सूक्त पर श्री विक्रमादित्य 'वसंत' का वेदोपदेश बड़ा ही हृदयग्राही रहा। यज्ञ एव भजन के रोचक कार्यक्रम हुये।

मधुवन में गायत्री महायज्ञ

आजमगढ़—गत रविवार ५ मई को मधुवन क्रांति के मूल संचालक श्री पं० मंगलदेव जी शास्त्री की अध्यक्षता में गायत्री महायज्ञ समिति की एक आवश्यक बैठक हुई तथा निम्नलिखित निश्चय किये गये—

१—समिति के स्वागत मंत्री श्री पं० कर्मवीर आर्य भण्डागारी का यह प्रस्ताव कि इस अवसर पर १५ हजार यात्रियों के भोजन का प्रबंध किया जाय सर्व सम्मति से पास हुआ।

२—२० मन हवन सामग्री की दिल्ली से व्यवस्था की गई।

३—यज्ञ के लिये महर्षि दयानंद सरस्वती के हाथ की स्थापित अग्नि लायी जायगी।

यज्ञ का अनुष्ठान रविवार २६ मई को ६॥ बजे प्रातः रविवार ९ जून को प्रात. ९ बजे पूर्णाहुति होगी।

संस्कार सम्पन्न

बहराइच—आर्यसमाज बहराइच के पुस्तकाध्यक्ष श्री सुन्दरलाल ने अपने पुत्र अशोककुमार तथा आर्य सदस्य श्री ओ३मप्रकाश सिंह ने अपने सुपुत्र के चूड़ाकर्म संस्कार के उपलक्ष में क्रमशः ६ रु० तथा ८ रु० का दान दिया। संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ।

मेरठ—आलमपुर निवासी श्री जैप्रकाश जी आर्य श्री सुपुत्र लाला कैलाशचन्द्र आर्य का पाणिग्रहण संस्कार नाहल निवासी लाला मदनलाल आर्य की सुपुत्री देवि आर्य के साथ श्री पं० सत्यप्रिय ब्रह्मचारी द्वारा वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ दिनांक २८ अप्रैल को सम्पन्न हुआ।

गढ़वाल—ग्राम बड़ेथ निवासी श्री वैद्य मानसिंह आर्य के सुपुत्र चिर० अर्जुन का शुभ विवाह २० अप्रैल का वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री सत्यदेव जी आर्य भजनोपदेशक के कार्यक्रम का स्थायी प्रभाव पड़ा। वर पक्ष की ओर से आर्यसमाज कोटद्वार व चेलुसैण को ५-५ रु० दान मे दिया गया।

मेरठ—श्री सोमाहुति भार्गव सि. भू. अवैतनिक उपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने श्री पं० शिवदयालु जी द्वारा साकेत मेरठ में वानप्रस्थाश्रम की दीक्षा ली। अनेक आर्य देवियों तथा बन्धुओं ने आपको हार्दिक आशीर्वाद दिया।

कायमगंज (फर्रुखाबाद) श्री कांति स्वरूप भारद्वाज सिरपालपुर की कन्या उर्मिलादेवी का आदर्श विवाह श्री शिवस्वरूप भारद्वाज सुपुत्र श्री राम स्वरूप जी का २९ ४ ६८ को सम्पन्न हुआ।

पिपरी पूना—आर्यकुमार सभा का प्रथम वार्षिकोत्सव १/२/३ जून को आर्यसमाज प्रांगण में होगा। पं० सत्यप्रिय शास्त्री, पं० वेदमित्र जी, पं० शांतिप्रकाश जी, आदि विद्वान उत्सव पर पधार रहे है।

—आर्य समाज ललितपुर के मुख्य कार्यकर्ता, मन्त्री श्री कन्हैयालाल आर्य के आत्मज श्री वीरेन्द्रकुमार जी एव कोटा निवासी श्री मोतीसिंह जी स्वर्णकार की आयुष्मती कन्या राजमतीबाई का पाणिग्रहण संस्कार दिनांक २४-४-६८ को आर्यसमाज कोटा राजस्थान के पुरोहित श्री बद्रीप्रसाद जी के आचार्यत्व मे कोटा मे सम्पन्न हुआ।

जिला हरदोई के अन्तर्गत कटियारी क्षेत्र मे जो आर्य समाज द्वारा वैदिक प्रचार के मासिक योजना का कार्य क्रम नियमितरूप से चल रहा है उसके अनुसार १ नरौया २ मिमरिया ३ सवायजपुर ४ सभौरा आर्यसमाजों में यज्ञ व प्रचार हुआ। बैशाखी (पूर्णमासी) दि० १२-५-६८ को गौरिया मे यज्ञ व प्रचार होना निश्चित हुआ है। उसमें श्री स्वामी सत्यानंद जी (...) आने की महती कृपा करेंगे सूचना है।

नि० रणजीतसिंह निरीक्षक सभा
तथा प्रधान आर्यसमाज गौरिया
पो० अलीगंज कन्नौज [हरदोई]

आर्य दानी वीरो से—

आज आर्य समाज को ऐसे ... नवयुवक उपदेशकों ... जो देश विदेश मे भारतीय धर्म और संस्कृति का प्रचार कर सकें। इसके लिये महर्षि दयानंद स्मारक ट्रस्ट टंकारा ने टंकारा में निःशुल्क उपदेशक महाविद्यालय चलाया हुआ है। वहां प्रत्येक छात्र पर लगभग एक सौ रुपया प्रतिमास ट्रस्ट व्यय करता है। धनाभाव के कारण ट्रस्ट अधिक छात्र रखने में असमर्थ है। अतः आर्य दानी वीरों से अनुरोध अपील है कि वह छात्रों को छात्रवृत्ति [स्कालर शिप] देकर इस महान कार्य में ट्रस्ट के हाथ मजबूत करें और उपदेशक तैयार करने में अपने धन का सदुपयोग करते हुये आर्यसमाज की शक्ति बढ़ाएं पूर्ण आशा है आर्य जनता इस समय की मांग को अनुभव करती हुई अपने कर्तव्य का पालन अवश्यमेव करेगी।

आर्य परिवार सम्मेलन

मुरादाबाद आर्य प्रतिनिधि सभा मुरादाबाद से सम्बन्धित सभी आर्य समाजों एवं निकटस्थ आर्य समाजों के कार्य कर्त्ताओं की सेवा मे सूचनार्थ निवेदन है कि उप सभा मुरादाबाद ने इस वर्ष गंगा के रमणीय तट पर ब्रजघाट पर दिनांक २१ मई १९६८ मंगलवार को एक द्वितीय आर्य परिवार सम्मेलन मनाने का आयोजन किया है। इस अवसर पर प्रातः से रात्रि तक यज्ञ संध्या सत्संग विभाग गोष्ठी एवं मनोरंजक कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है।

इस शुभ अवसर पर श्री जयमुनि जी शास्त्री श्री पं० सत्यप्रिय जी वृती श्री ज्ञानप्रकाश जी भजनोपदेशक महानुभाव पधार रहे हैं।

उमरावसिंह, मन्त्री

सस्ती उत्सव योजना

आर्य उप प्रतिनिधि सभा मुरादाबाद की दिनांक ७ मई १९६८ की अन्तरंग सभा ने निश्चय किया है। कि गत वर्षों से संचालित आर्य उप सभा मुरादाबाद की सस्ती उत्सव योजना १०० रुपये के अन्तर्गत १५ मई १९६८ से १५ जून १९६८ तक उत्सव सम्पादित कराये जायें उप सभा से सम्बन्धित सभी आर्यसमाजों से प्रार्थना है कि वह अपने यहां उत्सवों का आयोजन करें कुछ आर्य समाजों के उत्सव निश्चित किये जा चुके है। कुछ के किये जा रहे है।

अतः कार्यालय उप सभा अमरोहा से सम्पर्क स्थापित कर अपनी तिथि तुरन्त निश्चित करावें।

इस योजना में ... उपदेशक ... द्वितीय पत्र व्यवस्था ...

—उमरावसिंह मंत्री

आर्य प्र० नि० सभा के नए अधिकारियों द्वारा सरकार की चुनौती स्वीकार

हिंदी की रक्षा के लिये आंदोलन का फैसला

१९ मई को हिन्दी दिवस

यहां आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के नये अधिकारियों के चुनाव के बाद अधिवेशन में प्रतिनिधि सभा ने पंजाब में हिन्दी रक्षा के लिये सक्रिय पग उठाने का निश्चय किया।

नव निर्वाचित सभा के अधिकारियों ने गिल मन्त्रि मण्डल की हिन्दी घातक नीति का कड़ा विरोध करते हुये घोषणा की है कि हिन्दी पंजाब के ४० प्रतिशत लोगों की मातृ-भाषा है इसकी हर सम्भव उपाय से रक्षा की जायेगी। सभा ने १९ मई को हिन्दी दिवस मनाने का निश्चय किया जिसमें गिल सरकार की हिन्दी घाती नीति के विरुद्ध रोष प्रकट किया जाएगा।

सभा के अधिवेशन में निम्नांकित प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास किया गया जिसमें कहा गया है कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का यह अधिवेशन पंजाब सरकार की उस भाषा नीति का घोर विरोध करता है जिसके द्वारा पंजाब में हिन्दी का अस्तित्व ही समाप्त करने का यत्न किया जा रहा है।

यह अधिवेशन स्पष्ट शब्दों में यह घोषणा करता है कि हिंदी पंजाब के ४० प्रतिशत नागरिकों की मातृभाषा है। इसलिये इसे वह सब संरक्षण मिलने चाहिये जो देश की राष्ट्र-भाषा और एक महत्वपूर्ण अल्प संख्यक वर्ग की भाषा को देश के सम्विधान के अनुसार मिलने आवश्यक हैं।

परन्तु पंजाब की वर्तमान सरकार सम्विधान की अवहेलना करके और पंजाब के हिंदी प्रेमियों की भावनाओं पर कुठाराघात करती हुई पंजाब में हिंदी को समाप्त कर रही है। यह एक ऐसी स्थिति है जिसे पंजाब के हिंदी प्रेमी किसी अवस्था में भी सहन न करेंगे और सरकार की चुनौती को स्वीकार करते हुए हिंदी की रक्षा के लिये प्रत्येक प्रकार का बलिदान करने को तैयार हैं।

पंजाब सभा का यह अधिवेशन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा से भी सानुरोध प्रार्थना करता है कि वह भी उसी प्रकार पंजाब में हिन्दी की रक्षा के लिये सक्रिय आन्दोलन चलाये जैसा उसने १९५७ में चलाया था।

यह अधिवेशन कांग्रेस हाईकमाड और भारत सरकार को भी चेतावनी देना चाहता है कि पंजाब की वर्तमान सरकार हिन्दी के साथ जो दुर्व्यवहार कर रही है उसके फल रूप जो भी दुष्परिणाम निकलेगा उसका दायित्व कांग्रेस और कांग्रेस की सरकार पर होगा क्योंकि पंजाब का वर्तमान मन्त्रि-मण्डल कांग्रेस के समर्थन से ही शासन चला रहा है।

यह अधिवेशन आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित सब आर्यसमाजों से आग्रह करता है कि रविवार १९ मई को अपने अपने शहरों में हिन्दी दिवस मनावें और सब हिन्दी प्रेमियों के सहयोग से पंजाब सरकार की भाषा नीति का विरोध करें। अधिवेशन में आर्य प्रतिनिधि सभा के नये अधिकारियों से कहा गया कि प्र० सभा के आधीन जितनी भी संस्थायें हैं उन सबका बजट बनाया जाये। एक अन्य प्रस्ताव में आर्य सार्वदेशिक सभा की न्याय सभा के प्रति धन्यवाद प्रकट किया गया जिसने हमारे मतभेद समाप्त करवायें. हम आश्वासन देते है कि हम आर्यसमाज का कार्य तन-मन-धन से करते और आदर्शों और उद्देश्यों को पूरा करने का हर सम्भव प्रयत्न करेंगे।

वार्षिकोत्सव

देहली-आर्यसमाज हरिनगर देहली का ११ वां वार्षिक महोत्सव १९ अप्रैल से ५ मई तक धूम धाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर तीनो सप्ताह वेदों की पावन कथा होती रही। प्रथम एक सप्ताह में श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती द्वारा तदन्तर माता विद्योत्तमा यति के द्वारा मन्त्रों की व्याख्या की जाती रही। इस अवधि में आर्य जगत् के शीर्षस्थ विद्वान श्री क्षेमचन्द्र, श्री जगदेव जी सिद्धांती, श्री मेधानन्द जी सरस्वती व श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री संसद सदस्य तथा श्री रामेश्वर दयाल त्यागी आदि के भाषणों का विशेष कार्य क्रम रहा।

मैनपुरी-गत २६, २७ व २८ अप्रैल को ११ वाँ आर्य जिला सम्मेलन मैनपुरी में समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, गोरक्षा सम्मेलन तथा महिला सम्मेलन आदि का भी आयोजन किया गया। श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री तथा श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी आदि आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वानों ने पधार कर समारोह को सफल बनाने में योगदान दिया। डा० रामेश्वर दयाल जी नारंग प्रधान आर्य जिला सभा व श्री जमुनाप्रसाद जी तथा श्री सुरेशचन्द्र जी सक्सेना ने सम्मेलन में बड़ी लगन से कार्य किया।

बरेली आर्य उप प्रतिनिधि सभा जिला बरेली का साधारण अधिवेशन दिनांक २६ मई को १ बजे से आर्यसमाज बिहारीपुर में होना निश्चित हुआ है। सम्बन्धित समाजें अपने प्रतिनिधि चित्र तथा शुल्क आर्यसमाज आर्यनगर मूढ़ बरेली के पते पर अविलम्ब भेजें।

यजुर्वेद पारायण यज्ञ

नई दिल्ली-आर्यसमाज राजौरी गार्डन में शुद्ध वेदपाठ शिक्षा शिविर तथा यजुर्वेद पारायण यज्ञ दिनांक १ से १३ मई तक प्रसिद्ध सन्यासिनी माता विद्योत्तमा यति जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हो रहा है। यज्ञ की पूर्णाहुति २३ तारीख को ५ बजे होगी।

मुफ्त प्राप्त करें

जैन मत विचार शास्त्रार्थ महारथी पं० शांति प्रकाश जी का कथन है कि इस पुस्तक में जैन मत के सिद्धांतों पर युक्ति युक्त विचार किया गया है। पढ़ने के योग्य है। दस पैसा का डाक टिकट भेजकर राधाकृष्ण आर्य, बुढ़ा कोठी, बारादरी-निहालबा, पटियाला से मुफ्त प्राप्त की जा सकती है।

निर्वाचन

—आर्यसमाज हाथरस

प्रधान—श्री प्रेमचन्द शर्मा
उपप्रधान—श्री भीमदेव शर्मा वकील
,, श्री रमेशचन्द्र आर्य बी. ए.
मंत्री—श्री सुरेशचन्द्र वैद्य
उपमंत्री—वैद्य ओं प्रकाश गुप्त
,, श्री लक्ष्मी चन्द्र एम. ए.
कोषाध्यक्ष—श्री रघुनन्दन शर्मा विशारद
पुस्तकाध्यक्ष—श्री विजयदेव शर्मा बी. ए.

—आर्य उपप्रतिनिधि सभा बाराबंकी

प्रधान—श्री क्षेमचन्द्र यादव मोखपीर
उपप्रधान—श्री रंजीत सिंह बुलानाला
श्री भगवतीसिंह भुलसरा
मंत्री—श्री कैलाशनाथ सिंह बुलानाला
उपमंत्री—श्री शम्भूनाथ गुप्त. श्री गंगा-प्रसाद जी लल्लापुर
कोषाध्यक्ष—श्री बुद्धदेव आर्य

—जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा लखनऊ

प्रधान—श्री कृष्ण बलदेव जी
उप-प्रधान—श्री तारायन राय तथा
श्री दीवान चन्द
मंत्री—श्री विश्वमित्र 'वसन्त'
उप-मन्त्री—श्री पृथ्वीपाल, श्री राम चरित्र, श्री तिलकराज तथा श्रीमती शान्तिदेवी
कोषाध्यक्ष—श्री मुनीन्द्र कुमार
पुस्तकालयाध्यक्ष—श्री अशोक
आय व्यय निरीक्षक—श्री ज्ञानचन्द

—आ०स० चन्दौसी (मुरादाबाद)

प्रधान—श्री शांति स्वरूप
मंत्री—श्री विद्यासागर गुप्त
उप-प्रधान—श्री ज्ञानचन्द शर्मा, श्री उमेशचन्द्र, श्री रामरक्षपाल श्री योगेशचन्द्र आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री ओ प्रकाश

—आ०स० ललितपुर (झांसी)

प्रधान—श्री वीरसिंह
मंत्री—श्री कन्हैयालाल जी
उपमंत्री—पुरुषोत्तम नारायण सोनी
कोषाध्यक्ष—श्री फकीरचंद

—आ० स० शिवपुरी

प्रधान—श्री प्रतापसिंह एम० ए०
मंत्री—श्री उमेशचन्द्र स्नातक, विद्याभास्कर शास्त्री काव्यतीर्थ विशारद।

—आ० स० बाराबंकी

प्रधान—श्री चन्द्र प्रकाश सिंह
मंत्री—श्री कृष्णचन्द्र कौशल

—आ०स० सोमगंज मण्डी (कोटा)

प्रधान—श्री रघुनाथ ओबराय
मंत्री—मोहनलाल आर्य

—आ० स० कनखल [सहारनपुर]

प्रधान—पं० धर्मदत्त वैद्य
मंत्री—श्री छंगाराम वैद्य

—आ०स० अफजलगढ़ [बिजनौर]

प्रधान—ला. युगलकिशोर
मंत्री—ला. राजनाथ

८९ वें बृहदधिवेशन का विज्ञापन

उत्तर प्रदेशीय सभान्तर्गत आर्यसमाजों के मन्त्रीगण तथा आर्य प्रतिनिधि महोदयों की सेवा मे—

श्रीमन् महोदय नमस्ते !

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश का ८९वां वार्षिक साधारण अधिवेशन मिति ज्येष्ठ शु० ५, ६ संवत् २०२५ वि० ज्येष्ठ ११, १२ शक सं० १८९० दि० १ व २ जून १९६८ ई० दिन शनि व रविवार स्थान इण्टर कालिज सिरसागंज मैनपुरी में होगा । साधारण अधिवेशन दि० १-६-६८ की प्रथम बैठक ३ बजे अपराह्न से प्रारम्भ होगी ।

आशा है कि आर्यसमाजों एवं आर्य उप प्रतिनिधि सभाओं के प्रतिनिधि महोदय नियत समय पर अधिवेशन मे सम्मिलित होकर अनुगृहीत करेंगे ।

प्रवेशनीय विषय सूची—

१—उपस्थिति, ईश्वर-प्रार्थना के उपरान्त शोक प्रस्ताव ।
२—स्वागताध्यक्ष एवं सभापति के भाषण ।
३—वार्षिक वृत्तान्त १ जनवरी १९६७ से ३१ दिसम्बर १९६७ तक आय व्यय लेखा सहित स्वीकृत्यर्थ ।
४—आगामी वर्ष सन् १९६९ के लिये बजट स्वीकृत्यर्थ ।
५—सभा के पदाधिकारियों एवं अन्तरंग सदस्यों का निर्वाचन ।
६—गुरुकुल विद्या सभा के लिये सभा के नियम सं ४४ (इ) के अनुसार छ प्रतिनिधियों का निर्वाचन ।
७—आय व्यय लेखा निरीक्षक (आडीटर) की नियुक्ति ।
८—सभा के नियम सं० ८ (ए) के अनुसार ३ सदस्यों का निर्वाचन ।
९—सभा नियम धारा २१ (६) के अनुसार प्रस्तुत विषय ।

टिप्पणी (१)—सिरसागंज पहुंचने के लिए रेलवे स्टेशन शिकोहाबाद पर उतरना चाहिये । आर्यसमाज की ओर से वहां पूर्ण व्यवस्था रहेगी ।
(२) दिनांक १ जून १९६८ को 'प्रदेशीय आर्य सम्मेलन' सिरसागंज नगर पण्डाल में रात्रि ८ बजे से होगी ।
(३) आर्य प्रतिनिधि महाशयों के निवास, भोजनादि की व्यवस्था आर्य समाज सिरसागंज तथा आर्य उपप्रतिनिधि सभा मैनपुरी द्वारा इण्टर कालिज सिरसागंज मे की गई है ।
(४) नवीन अन्तरंग अधिवेशन की समाप्ति पर होगी ।
(५) सभा की वार्षिक रिपोर्ट के सम्बन्ध में जो प्रश्न हों वे रिपोर्ट मिलने के १५ दिन के अन्दर सभा कार्यालय लखनऊ के पते पर भेजने की कृपा करें जिससे उनका उत्तर तैयार कर अधिवेशन में प्रस्तुत किया जा सके । समय के उपरान्त आने वाले प्रश्नों के उत्तर देने में कठिनाई होगी ।

बृहदधिवेशन का कार्यक्रम

१ जून १९६८ दिन शनिवार

प्रातः—७ से ८॥ तक सन्ध्या यज्ञ, ९ से ११ तक प्रवचन
अपराह्न—३ से ६ बजे तक बृहदधिवेशन की प्रथम बैठक ।
सायं—६ से ८ बजे तक नित्यकर्म सन्ध्या, भोजनादि । तत्पश्चात प्रदेशीय आर्य महा सम्मेलन की प्रथम बैठक विशेष पण्डाल में ।

२ जून १९६८ दिन रविवार

प्रातः—६॥ से ७॥ तक सम्मिलित सन्ध्या यज्ञ ।
८ से १२ तक बृहदधिवेशन की द्वितीय बैठक तथा नवीन अधिकारियों द्वारा कार्य भार ग्रहण एवं धन्यवाद ।

नोट—आर्य प्रतिनिधि सभा अन्तर्गत शिक्षा संस्थाओं के प्रतिनिधियों को १ जून रात्रि ८ बजे पण्डित धर्मपाल जी विद्यालंकार की अध्यक्षता में शिक्षा सम्मेलन वहीं कालिज हाल मे होगा ।

निवेदक—
—सच्चिदानन्द शास्त्री
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

नारायणस्वामी भवन, लखनऊ
दि० १-५-६८ ई०

जिला सभा बरेली के वार्षिकोत्सव सन् १९६८ के अवसर पर आर्यसमाज बिहारीपुर में लिया गया चित्र

[बैठे हुये बायें से दायें प्रथम पंक्ति मंच पर]
१. रामपालसिंह जी प्रधान जिला आर्य सभा बरेली २ श्री ठा० साहबसिंह जी
३ श्री ओम्प्रकाशसिंह पूर्व उप गृह मन्त्री उत्तर प्रदेश
[दूसरी पंक्ति]
[१] श्री महेन्द्रबहादुर मन्त्री जि० सभा बरेली [२] डा० प० बहादुर [illegible] बरेली
[३] श्री लक्ष्मण प्रसाद जी आर्य अन्तरंग सदस्य [४] श्री [illegible] गुप्त आर्य प्रधान आ० स० बिहारीपुर
[खड़े हुए]
[१] श्री जे डी तपस्वी एडवोकेट अन्तरंग सदस्य व पत्रकार [२] श्री राजकुमार एडवोकेट मन्त्री आ स. बिहारीपुर
[३] श्री नरेशकुमार सिंघल सदस्य—तथा नीचे बैठे हुये श्री रामप्रसाद आर्य इत्यादि ।

गुरुकुल वार्षिकोत्सव

पता—चन्द्रावती कन्या गुरुकुल बैसरी महुआपुर सोरो का तृतीय वार्षिक महोत्सव दिनांक १९ से २२ मई तक सम्पन्न होगा। इस अवसर पर भारत के प्रसिद्ध सन्यासी महात्मा एवं विद्वान पधार रहे हैं कन्याओं का मनोरंजन भी आकर्षक होगा। इस गुरुकुल में वेद, शास्त्र, उपनिषद, दर्शन आदि का पठन पाठन करने की पूर्ण व्यवस्था है। इस समय गुरुकुल को एक अनुभवी आचार्या की महती आवश्यकता है।

आर्यवीर दल आदेश

१—विदित हो कि उत्तरप्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा का वृहद अधिवेशन १/२ जून ६० को मैनपुरी शिरसागंज में हो रहा है। इसी अवसर पर प्रांतीय आर्य वीर दल की भी एक आवश्यक बैठक होगी सभी अधिकारी व कार्यकर्ताओं से निवेदन है कि इस बैठक में अवश्य आजावें।

२—आर्यवीर दल शाखा के कार्यक्रम में संध्या अनिवार्य रूप से सम्मिलित कर दें।

३—प्रांतीय सहायता कोष में नगर शाखा से १० और ग्राम शाखा से ५ रु० अवश्य भेजें।

४ प्रतिमास अपनी २ शाखा की प्रगति रिपोर्ट प्रांतीय कार्यालय को अवश्य भेज दिया करें।

—संचालक उत्तर प्रदेशीय आर्यवीर दल हापुड़ (मेरठ)

गुरुकुल वृन्दावन प्रयोगशाला

जिला मथुरा का

"च्यवनप्राश"

विशुद्ध शास्त्र विधि द्वारा बनाया हुआ

जीवन शक्ति, वीर्य, बल, हृदय तथा फेफड़ों को शक्तिशाली तथा शरीर को बलवान बनाता है।

मूल्य ८) रु० सेर

परागरस

प्रमेह और समस्त वीर्य-विकारों की एकमात्र औषधि है। स्वप्नदोष जैसे भयंकर रोग पर जादू का सा असर दिखाती है। यहां की यह सुविख्यात दवाओं में से एक है।

मूल्य एक तोला ६)

हवन सामग्री

सब ऋतुओं के अनुकूल, रोग नाशक, सुगन्धित विशेष रूप से तैयार की जाती है आर्यसमाजों को १२॥ प्रतिशत कमीशन मिलेगा।

नोट—शास्त्र विधि से निर्मित सब रस, भस्म, आसव अरिष्ट, तैल तैयार मिलते हैं। एजेन्टों की हर जगह आवश्यकता है, पत्र-व्यवहार करें।

—व्यवस्थापक

समाज तथा शिक्षा-संस्थाओं

के उत्सवों पर

आर्य्यमित्र के विशेषांक

ऋषि-दर्शन अंक तथा वेदांक-प्रकाश अंक

मंगाकर

विशिष्ट व्यक्तियों तथा विद्यार्थियों को उपहार स्वरूप भेंट करिए!

मूल्य १.०० प्रति

वैदिक साहित्य-प्रचार का अपूर्व अवसर

—व्यवस्थापक

आवश्यकता

आर्य परिवार का क्षत्रिय वंशज गुरुकुल वृन्दावन का स्नातक इस वर्ष एम० ए० कर रहा है। घर पर अच्छी खासी जायदाद है, के लिये बी० ए० एम० ए० तथा गुरुकुल की स्नातिका को विशेषता दी जावेगी। वधु सुन्दर (गौर वर्ण) होनी चाहिये जातीय बन्धन तोड़कर भी सम्बन्ध हो सकेगा।

पता—मन्त्री आर्यसमाज केसरी पो०—केसरी, डा०—भदमपुर जिला—मैनपुरी (उ० प्र०)

आवश्यकता

एक १८ वर्षीय सुन्दर सुशील गृह कार्य में दक्ष तथा इस वर्ष इन्टर की परीक्षा में सम्मिलित कन्या के लिये एक शिक्षित योग्य वर की आवश्यकता है जो बीसा अग्रवाल वंश का हो तथा वंश गोत्रीय न हो। पत्र व्यौहार निम्न पते पर करें।

बृजलाल अग्रवाल
भवन-निर्माण सामग्री के विक्रेता
८४, मोहल्ला रैदोपुर
शहर आजमगढ़

सफेद बाल से निराश क्यों?

सतत परिश्रम और खोज के बाद सुगन्धित आयुर्वेदिक, "दे हाल्ट" केश तेल हरी जड़ी बूटियों से बनाया गया है। यह बालों को सफेद होने से रोकता है और सफेद बालों को काले बालों में बदलने में मदद करता है। हजारों प्रशंसा पत्र मिल चुके हैं। यदि आप बालों को काला देखना चाहते हैं तो एक बार अवश्य परीक्षा करें। मूल्य ९ रु० एकत्र तीन शीशी २५ रु० ८

नोट—यह दिमाग को तर व ताजा रखता है।

पता—श्री लखन फार्मेसी—७५० पो० कतरीसराय (गया)

वैदिक काल का ह्रास

(गताङ्क से आगे)

अत्व का अर्थ ही हिंसा रहित है तो उसमें हिंसा कैसे होगी। वेदानभिज्ञ होने के कारण क्योंकि जिस ईश्वर ने ऐसी आज्ञा दी है उस ईश्वर एवं वेद को हम नहीं मानते, और ऐसी पशुहिंसा से जो स्वर्ग मिलता है उसे भी नहीं मानते। जैन सम्प्रदाय के प्रवर्तक महावीर स्वामी भी इसीकाल मे हुये उनका सिद्धान्त भी अहिंसावाद ही है। कुछ विचारकों का मत है कि गौतमबुद्ध ही को प्रकारान्तर से महावीर कहा है। महावीर नाम का कोई व्यक्ति नहीं हुआ। इसका कारण वे लोग यह देते हैं कि—बौद्धधर्म एवं जैनधर्म की मान्यतायें प्राय: मिलती जुलती सी हैं, जैनियों के तीर्थंकार जिनकी संख्या २४ बतायी जाती है यही संख्या बौद्ध सम्प्रदाय के उन महापुरुषों की है जो गौतमबुद्ध के पश्चात् बौद्धधर्म में विशेष प्रगति लाये, अत. दोनों सम्प्रदाय (बौद्ध एवं जैन) की आधार शिला एक ही है, ऐसे विचार लोगों के है। जो भी हो मेरे विचार से वाममार्ग के समाप्त करने में बौद्धों तथा जैनियों ने पर्याप्त परिश्रम किया। आगे चलकर जैन सम्प्रदाय का अहिंसावाद अपनी जगह स्थिर रहा, इतना ही नहीं जैन सम्प्रदाय में अहिंसा की अति व्यापक भावनायें लोगों में बैठती गयी, जिसके कारण उनके जिनों (तीर्थंकारों) ने मुंह पर पट्टी बांधने तक का विधान किया और आज तक उनके अनेक धर्म गुरु मुंहपर पट्टी बांधने तथा एक झाड़ू से भूमि को बुहारते चलते हैं। जैन समाज ने जहां अहिंसा का उत्कृष्ट अपनाया, वहां बौद्धों ने अहिंसा का अर्थ इसके उल्टा करना प्रारम्भ कर दिया। बौद्धों ने अहिंसा का अर्थ यह किया कि मनुष्यों को मारना तथा पशुओं को किसी हथियार से मारना ही हिंसा है, ऐसा करना पाप है लेकिन पशुओं को आग में डालकर भून डालना, उबलते हुए पानी में डाल देना, लात मुक्का आदि से मार डालना हिंसा नहीं है। परिणाम निकला कि गौतम बुद्ध के पश्चात् उनके शिष्यों में पशुवध का बाजार गर्म हो गया और सम्भवत: कोई भी जीव ऐसा नहीं है (मनुष्यों) को छोड़कर) जिसको बौद्ध-सम्प्रदाय के भोग न लाते हों। अस्तु भगवान गौतम बुद्ध ने जिस अभिप्राय से वाम मार्ग को भारतवर्ष से बिदा किया था वह नहीं हुआ, और वही रोग जो हिंसा का वाममार्ग में था, बौद्धों में आ गया केवल रूप ही का परिवर्तन हुआ। बौद्धों की यह स्थिति भी सैकड़ों वर्ष तक रही, जिसके कारण भारतवर्ष की बची हुई वैदिक भावना एक बार पुनः कराह उठी। गौतम बुद्ध का देहावसान ८० वर्ष की आयु में हुआ। जिसको आज २५८२ वर्ष हुआ इसके बाद जगतगुरु शंकराचार्य का प्रादुर्भाव हुआ, शंकराचार्य अपने काल के प्रकाण्ड विद्वान् एवं बाल ब्रह्मचारी थे इन्होंने बौद्धधर्म के खंडन मे अनेक ग्रन्थ लिखे- किन्तु जो मार्ग गौतमबुद्ध ने वाममार्ग के खण्डन मे अपनाया वही मार्ग शंकराचार्य जी ने बौद्धों के खण्डन के लिये स्वीकार किया, अर्थात गौतम-बुद्ध ने वेदों ईश्वर को न मानकर केवल जीव ही को माना, इसके विपरीत शंकराचार्य ने वेदों के ही आधार पर ब्रह्म की सत्ता स्वीकार किया जीव को सर्वथा अस्वीकार किया। शंकराचार्य के युक्तियों एवं तर्क के समक्ष बौद्ध पराजित होने लगे परिणामत: देश मे बौद्धधर्म समाप्त सा हो गया और सर्वत्र वैदिक मर्यादाओं की स्थापना होने लगी। शंकराचार्य के समकालीन कुमारिल भट्ट ने भी बौद्ध व जैन सम्प्रदाय के विद्वानों को अपने वैदिक तर्कों द्वारा परास्त किया किंतु जनसाधारण कुमारिल भट्ट से अपरिचित ही हैं। शंकराचार्य ने अपने तूफानी शास्त्रार्थ द्वारा बौद्ध धर्म को भारतवर्ष के बाहर ही करके दम लिया। भारतवर्ष को धार्मिक आक्रमणों से रक्षा करने के लिये देश के चारों भागों मे चार मठ स्थापित किये जिनके मठाधीश आज भी जगतगुरु शंकराचार्य के नाम से प्रसिद्ध हैं। किंतु जो रोग गौतम बुद्ध के देहावसान के पश्चात् बौद्धों में आया वही रोग शंकराचार्य के पश्चात् उनके शिष्यों में आया। शंकराचार्य जी ने जिस ब्रह्म का प्रतिपादन बौद्धों को समाप्त करने के लिये किया था, वही उनके शिष्यों का सिद्धांत बन गया, जिसका फल यह हुआ कि देश मे अद्वैतवाद फैलने लगा। सभी लोग अपने को ब्रह्म कहने लगे जीव रक्षा या उसकी उन्नति से उन्हें कोई सम्बन्ध नहीं रहा, परिणाम यह हुआ कि देश में एक बार आलस्य एवं प्रमाद का पुनः विस्तार हुआ। देश को जाति रक्षा का कोई ध्यान ही नहीं रहा, इसका फल यह हुआ कि जिस शंकराचार्य ने समस्त भारतवर्ष को धार्मिक आक्रमणों की रक्षा के लिए चार विभिन्न दिशाओं मे मठ स्थापित किये, उन्हीं शङ्कराचार्य की जन्म भूमि जो केरल प्रान्त में है आज वह ग्राम सम्पूर्ण रूपेण ईसाई हो गया एक भी जिला सूत्रधारी अपने को हिंदू कहने वाला वहां न रहा, फिर भी उनके मठों मे मौज करने वाले, वर्तमान समय में अपने को जगतगुरु कहलाने में तिनक सा भी संकोच नहीं करते। हिन्दुओं के पतन तथा राष्ट्र को दुर्बल बनाने में शंकर का अद्वैत वेदांत का बहुत बड़ा योग रहा है। इसके कारण देश में एक बार पुन अकर्मण्यता फैली और देश में राष्ट्र की रक्षा, सेवा आदि का व्रत लेने वालों का अभाव सा हो गया इसके बाद देश में रामानुजाचार्य आदि अनेक महात्मा हुये और सब लोगों ने वैदिक धर्म के उद्धारार्थ प्रयत्न किया, किन्तु पूर्ण रूपेण किसी को भी सफलता नहीं मिली और उन लोगों का एक अलग सम्प्रदाय बनता गया। यद्यपि रामानुजाचार्य के गुरु एक बटलोय (सूप बनाने वाले कुल मे उत्पन्न हुये थे) थे, किन्तु उन्हीं रामानुजाचार्य के शिष्यों ने हिन्दू जाति की सेवा का व्रत लेने वाले शूद्रों का अत्यन्त बहिष्कार किया है, दृष्टान्त के लिये अयोध्या के वैरागियों को देखा जा सकता है जहां पर हरिजन (शूद्र) कहे जाने वालों के साथ कैसा अभद्र व्यवहार वह करते हैं। इसी काल में देश पर विदेशियों के आक्रमण प्रारम्भ हुए और एक बार दो बार ही नहीं किन्तु अनेकों बार होते रहे परन्तु उस समय देश मे एकता एवं राष्ट्र धर्म की भावना थी। इसलिये शकों हूणों एवं किरातों की विशाल सेनाओं को समाप्त किया गया। दृष्टान्त स्वरूप आज तक भी विश्व मे कहीं भी शकों हूणों एवं किरातों का न कोई राष्ट्र है और न कोई संस्कृति एवं सभ्यता ही शेष है। उनकी संस्कृति सभ्यता एवं राष्ट्रीयता मे सब सनै सनै वैदिक संस्कृति, सभ्यता एवं राष्ट्रीयता मे सदा के लिए विलीन हो गई। समय का कुचक्र चला, वही वैदिक धर्मावलम्बी अनेक मतमतान्तर (बौद्ध, जैन, शैव, शाक्त, वैष्णव आदि) में फसकर दुर्बल होते गये और इन्ही दुर्बलता के कारण पुनः विदेशियों का आक्रमण होने लगा। इतिहास के विद्यार्थी इस बात को भली-भांति जानते हैं कि भारतवर्ष को किसी ने अपनी शक्ति से पराजित नहीं किया। इनके पराजय के कारण भारत के ही राष्ट्र-द्रोही हैं। दृष्टान्त के लिये मानसिंह, जयचन्द्र, गंगू ब्राह्मण आदि को सभी जानते हैं। और बन्दा वैरागी को धम-धमाती कढ़ाह मुगल सल्तनत का सफाया करने वाली ही थी कि कुछ देश द्रोहियों ने शिष्यों (सिक्खों) को यह कहकर बरगलाया कि बन्दा सिक्ख नहीं है इसके साथ सिक्खों को नहीं लड़ना चाहिये इसका परिणाम यह निकला कि सिक्खों ने बन्दा का साथ छोड़ दिया नतीजा वही निकला जो निकलना था। बन्दा लड़ते लड़ते पकड़ा गया, और उसे इस्लाम स्वीकार करने को बाध्य किया जाने लगा किन्तु वीर बन्दा ने धर्म नहीं छोड़ा अन्त मे गर्म, गर्म चिमटों से उसके शरीर का मांस निकाल कर मारा गया। लेख का कलेवर न बढ़ जाय अत: विशेष उल्लेख नहीं करूंगा। वैदिक धर्म, संस्कृति, सभ्यता एवं राष्ट्रीयता की रक्षा के लिये अनेक महापुरुष हुये, किन्तु उनमे से कोई भी अपने विशाल हृदय म, विशाल भारत, एवं वैदिक धर्म की विशालता पर ध्यान न रखकर कुछ न कुछ अपनी भावना संकुचित ही रखता रहा जिसके कारण यह विशाल आर्य हिन्दू जाति दिन प्रति दिन गिरती गई, और उन महापुरुषों द्वारा स्थापित सब सम्प्रदाय एक दूसरे को घृणा की दृष्टि

★ पं० शिवनारायण वेदपाठी
तर्कवागीश, बस्ती

से देखने लगे। देश एवं जाति, भाषा सभ्यता, संस्कृति की एकता अनेकता में परिणत हो गया। और वैदिक मान्यतायें समाप्त सी हो गई। आर्य हिन्दू जाति की रक्षा एवं राष्ट्र को सुदृढ़ बनाने के लिये गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी रामायण की रचना की किन्तु रामायण ने भक्तिवाद का इतना अधिक प्रचार किया कि कर्मवाद को लोगों ने त्याग दिया, केवल रामायण पाठ व राम नाम का कीर्तन ही शेष रह गया, जिस राष्ट्रीय एकता के लिये रामायण की रचना की गई थी वह सफल नहीं हुई अपितु उसके विपरीत दक्षिण के हिन्दुओं में घृणा की भावना आ गई जिस कारण वे लोग आज अपने को रावण की संस्कृति का अनुयाई कहते हैं और भारत की अखण्डता पर भी आक्रमण करते नहीं चूकते हैं राष्ट्रभाषा हिन्दी के विरोधी हो गये हैं, आदि कहने का अभिप्राय कि राष्ट्र एवं समाज की सर्वांगीण भावना किसी महापुरुष ने सुदृढ़ बनाने का प्रयत्न नहीं किया, सभी के प्रयत्न एकांगी रहे, इसी का परिणाम है। देश की रक्षा धार्मिक एवं राष्ट्रीय दृष्टि से करने वालों की आवश्यकता थी पर ग्राम गुजरात प्रान्त के अन्दर स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्म हुआ

★

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल.-६०

२० वैशाख २९ शक १८९० ज्येष्ठ कृ० ८
(दिनांक १९ मई सन् १९६८)

आर्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

Registered No. L. 60

पता—'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष : २५९९३ तार : "आर्यमित्र"

चलचित्रों का दुष्परिणाम

सामाजिक समस्याएँ

हमारे देश का दिनोंदिन पतन ही होरहा है उन्नति नहीं। सरकार प्रगति की लम्बमान योजनायें बना-बना कर अपने राष्ट्र के सम्मुख की मात्रा पाने में सांस भी नहीं लेती—पाये ही चली जाती है। पर नैतिकता का घोर अधःपतन हो रहा है। इसका कारण है चल चित्रों का अनियंत्रित प्रचलन। ये चल चित्र किसी के जीवन निर्माण में सहायक नहीं होते। इनके देखने से समझदार सज्जनों के भी मन विकृत हो जाते हैं फिर उन अबोध अनायास चिंतन विहीन छात्रों की बात कौन कहे। आज जहां देखो वहीं नवयुवक सिनेमा की सड़ांध फैलाने में लगे हुए हैं। कोई कमर मटकाता है, कोई आंख मारता है। कोई अभिनेत्रियों की तरफ सीच ले २ कर तत्वत आचरण करता है। जिनके शरीरों में जान नहीं फूंक दो तो उड़ जावें, फफक मीकियां पत्र बनाव ये भी अपनी कलाबाजी में मग्न हैं। गायक पर ठीक से चलना नहीं आता नाचते चलते हैं, ऐसा प्रतीत होता है जैसे नाचने को नृत्य पीठ यही हो। सिनेमा की स्वर लहरियां—'मेरा दिल लो गया है कहीं तुम्हारे पैर के 'ये तो नहीं" एक लड़की ने जिसने जान मुश्किल कर दिया" आदि-आदि न जाने क्या २ दिखलाती रहती है। सोचो यह ये भावी राष्ट्र निर्माता नवयुवक इस प्रकार के हों क्या कभी यह उन्नति सम्भव है। राष्ट्रीय कवियों की कवितायें कौन याद करे। वीरता की अमन्द मन्दाकिनी बहा देने वाली हल्दीघाटी की पंक्तियां कौन याद करें—

> रण २ डग २ रण में हंके
> मारू के साथ मयद बाजे।
> टप टप टप घोड़े कूद पड़े
> कट-कट मतंग के रद बाजे।।

इनके पाठ करने से तो उनका दिल धड़कता है। कठोरता अनुभव होती है पर कभी कठोरता हो सही किन्तु कामायनी को कमनीय कांत पदावली को कठोर मान उसका प्रण क्यों नहीं करते? अजी बड़ी दार्शनिक है पता ही नहीं चलता क्या लिखा है। चलो कामायनी दार्शनिक ही सही, कठिन ही सही पर तुलसी की रामायण तो सरल है, उसी का पाठ किया करो। आप भी वही पुरानी लीक पीटने लगे। कहने का तात्पर्य यह है कि ये सब देन किसकी है—महामाता

> विनाशोपकरण पूर्णा
> सब धर्म कर्म विहीना।
> स्वस्व विनाशूमी,
> सर्वप्रिया सिनमा सरस्वती की।

हे महामाये तुम निश्चित रूप से सर्वविजयनी।

> सर्वभावसाकिकाशी
> स्वास्थ्य चिंतन कारिणी।
> युव युवालकारिणी,
> स्वसंशोक विस्तारिणी।

और नवयुवक शक्ति संहारिणी हो, तुम्हें प्रणाम है, बारम्बार प्रणाम है।

इसकी कृपा कोरों से जो बचा रहे उसी का भला है नहीं तो जीवन विनाश की लीला दूर नहीं वह शीघ्र ही दौड़ कर स्वागत करती है। इसी सिनेमा का वह जादू है। जिस पर चल गया वह तो बेच ही नहीं सकता। सिनेमा घरों के चारों ओर चक्कर मारने वाले, बात एक दूसरे को चिपटाये हुवे हैं। कैसी बेहूदगी है इन चित्रों की क्या इन्हें देखकर कोई सदाचारी बन सकता है। इस पर सरकार प्रतिबन्ध क्यों नहीं लगाती। जब लड़के उत्पात मचाते हैं तो इन राष्ट्रीय उल्लुओं का अनूठा अध्यात्मिक व्याख्यान होता है। विद्यार्थियों को ब्रह्मचारी रहना चाहिए किसी पर खराब दृष्टि नहीं डालनी चाहिये सबको माता और बहिन की दृष्टि से देखना चाहिए। आजकल नैतिकता का नाश हो रहा है। तुम्हीं इसे सुधार सकते हो। भावी देश के कर्णधार तुम्हीं हो। है न महा मूर्खता की निशानी। किसी बच्चे को आग में झोंक दो फिर उसे उपदेश दो कि तुम्हे सम्हल कर रहना चाहिये, आग में नहीं जलना चाहिये। तुम्हीं तो इस आग से सभी को बचा सकते हो। इसी को कहते हैं अन्धेर नगरी चौपट्ट राजा इसी भावना से और बात से और पग पग पर निष्कारण लड़कियों को छेड़ने वाले, थोड़ी २ देर में जाल ऐने हाथ धोले पेटू चिरवा कनुहां और लम्बी पतलून धारण करने वाले बिस्तर पर पड़े २ पढ़ने वाले, अकर्मण्य आलसी और जड़ विक्षिप्त क्या कभी देश के उत्थान में सहायक हो सकते हैं। जिनका निर्माण करने में हमारी सरकार पागल है।

चारित्रिक हीनता, आत्म हत्या, अनुशासनहीनता तथा उद्दण्डता का मूल कारण है सिनेमा। न जाने कौन आंख के अन्धे बैठकर इस प्रकार के चित्रों को सर्व दर्शनार्थ अनुमति प्रदान कर देते हैं। जिन चित्रों को बाहर से ही देखने में तबियत खराब होती है फिर उनका हाव भाव देखकर लोगों पर क्या बीतती होगी यह तो वही जाने।

कोई अभिनेता किसी अभिनेत्री को उठाये भागा जा रहा है, कोई किसी के गाल चूम रहा है, कोई किसी से मद भरी नयन भंगिमाओं की अठखेलियों में मग्न हो रहा है, कोई किसी को हाथ में हाथ मिलाकर खड़ा हुआ है तो कोई इसी प्रकार के आचरणों से राष्ट्र का सत्यानाश हो रहा है। इन्हीं राष्ट्र भेदियों को तो देखकर महाकवि शंकर ने लिखा था कि—

> नौकरी की सांझी मर्यादा का गला काटती है
> नाकी के सुगाती अखियों में खटकता है।
> भारत का लूट कूट नीति को उखाड़ रही,
> न्याय के भिखारी ठौर २ भटकत हैं।।
> बैलों में स्वदेश भक्त हिंसा हीन पड़ कर्नों के
> पेट पाल घात की पिशाच पटकत हैं।
> कौन पे पुकारें अब शंकर बचा ले हमे,
> गोरे और गोरों के गुलाम अटकत हैं।

आजकल युवकों की जो दशा हो रही है उसे देखकर महाकवि शंकर ने ठीक ही कहा था कि—

> ईश विरजा को ईसु विरजा में जाय,
> शंकर सलोन बैन मिस्टर कहलावैंगे।
> बूट पतलून कोट, कम्फाट कैप डाट,
> जाकेट की पाकेट में वाच लटकावैंगे।
> घूमेंगे घमण्डी बने रण्डी का पकड़ हाथ,
> पियेंगे बरण्डी मीट होटल में खावैंगे।
> फारसी को छार सी उड़ाय अंग्रेजी पढ़ें,
> मानों देवनागरी का नाम ही मिटावैंगे।

बात भी सही है, "हाथ कंगन को आरसी क्या" और स्पष्ट क्या किया जाय। केवल नवयुवक समाज अथवा यह विद्यार्थी वर्ग ही इस सिनेमा को जकड़ जाल में चौंधिया रहा हो। यह बात नहीं है। लड़कियां उनसे भी दो कदम आगे हैं वे तो जमीन पर चलना ही नहीं चाहतीं दुनिया का साज शृंगार देखना हो तो इनको देख लो। हद हो गई है आधी बांहें खुली, आधी-आधी बांहें खुली, किन्हीं के तो आधे-आधे बाल कटे। वस्त्रों का पोल ऐसा जिसे देखकर

★ शंकरसिंह वेदालंकार एम. ए.

प्रतीत होता है कि इनको ... अभी रंगीं इनको नाक घूंट और दांत टूटे बगैर न बचोगे। पर इन्हें समझावे कौन? जो समझावे वो ऊपर से गाली सुने मौंदू बने और दकियानूसी उल्लू का फर्स्ट क्लास का प्रमाण-पत्र प्राप्त करे। समाज सुधारक चाहे जितना गला फाड़ें पर प्रभाव कुछ नहीं पड़ता। जब तक इन गन्दे कमर मटकू और आंख मटकू चित्रों पर प्रतिबन्ध नहीं लगता।

हे देश के कर्णधारो! कुछ तो सोचो तुमने तो अपने चरित्र का जो सत्यानाश किया है वह तो किया ही है पर 'हम तो डूबे सनम तुमको भी ले डूबेंगे' का पाठ क्यों पढ़ रहे हो। मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है "अन्धे के आगे रोवे औ अपने दीदा खोवे" सुनने वाला तो कोई नहीं, नक्कारखाने में तूती की आवाज है। पर हम चिल्लाना बन्द भी नहीं करेंगे कभी न कभी तो इस स्वर को वाणी को सुनेगा ही। ये गन्दे चित्र चीर चीर कर फेंके जावेंगे और इन्हीं के स्थान में सत्य शिवं सुन्दर की मंगलमयी चित्रावलियाँ लायेंगी। राष्ट्र की तराजू सुधरेगी तो राष्ट्र भी शिरोमणि होगा। अलमिति बुद्धिमद्वर्येषु।

अध्यात्म-सुधा

मूढ़ परिभाषा और आचार्य विदुर

महाभारत काल के राजनीति के महान् आचार्य महात्मा विदुर ने मूढ़ की व्याख्या करते हुए लिखा है कि निम्न २९ अवगुणों वाले व्यक्तियों को मूढ़ कहा जाता है।

(१) अश्रुत समुन्नद्ध—

जो वेदादि शास्त्रों के ज्ञान से शून्य हो और घमण्ड, मिथ्याभिमान और दम्भ में चूर रहता है।

(२) महामना दरिद्र—

जो बल, बुद्धि, शौर्य, धन व सम्पदा से सर्वथा शून्य हो किन्तु बड़ी २ योजनायें बनाता हो या मनसूबे बांधता हो।

(३) अकर्मणा अर्थप्रेप्सु—

निन्दित खोटे कर्मों या साधनों द्वारा धन सम्पत्ति पद या राज्य प्राप्ति की कामना करता हो।

(४) स्वमर्थं परित्यज्य य परार्थमनुतिष्ठति—

जो अपने कर्त्तव्य कर्म को त्याग कर दूसरों के करने योग्य कर्मों में अनुरक्त होता हो अथवा शत्रु का अभीष्ट सिद्ध करने वाले द्रोहादि में लिप्त होता हो।

(५) मित्रार्थे मिथ्याचरति—

जो अपने साथी मित्र व हितैषी के प्रति कपट व्यवहार करता है।

(६) अकामान्कामयति यः—

जो व्यर्थ के कामों अर्थात् ऐसे कर्मों में जिनसे देश जाति या कुल का कोई हित न होता हो, अनुरक्त रहता है।

(७) कामयानान्परित्यजेत्—

कर्त्तव्य क्षेत्र से दूर भागता अर्थात् करने योग्य श्रेष्ठ कर्मों के अनुष्ठान में उदासीन रहता हो।

(८) बलवन्तं यो द्वेष्टि—

जो भुजबल या सैन्यबलादि में श्रेष्ठ पुरुषों के साथ वृथा वैर बांधता हो।

(९) अमित्रं यो मित्रं कुरुते—

जो शत्रुओं के साथ मित्रता का व्यवहार करता अथवा जो राष्ट्र का नाश करने वालों के साथ मित्रता रखता है।

(१०) मित्रं द्वेष्टि हिनस्ति च—

जो मित्र द्रोह करता और मित्र के नाश का प्रयत्न करता है।

(११) य कृत्यानि प्रसारयति—

जो कर्त्तव्य कर्मों के अनुष्ठान में टाल मटोल करता।

(१२) द्रुत कर्मारभते—

द्रुत अर्थात् शीघ्र कर्मों के करने में ही जो लगा रहता।

(१३) सर्वत्र विचिकित्सते—

इधर उधर व्यर्थ के कामों में जो हाथ डालता है।

(१४) क्षिप्रार्थे चिरं करोति—

जो तुरन्त करने योग्य कर्मों के अनुष्ठान में शिथिलता दर्शाता अर्थात् शुभ कर्म का पालन करने से जो मुख मोड़ता हो।

(१५) पितृभ्यो श्राद्ध न ददाति—

जो अपने पितरों अर्थात् जीवित माता-पिता आचार्य आदि की श्रद्धापूर्वक अन्न वस्त्रादि से सेवा नहीं करता।

(१६) दैवतानि न अर्चति—

जो विद्वान साधु सन्यासियों की भक्ति पूर्वक सेवा सुश्रुषा व वन्दना नहीं करता।

(१७) सुहृन्मित्रं न लभते—

जो निष्कपट व्यवहार वाले अर्थात् स्वच्छ निर्मल हृदय वाले व्यक्तियों को अपना मित्र नहीं बनाता।

(१८) योऽनाहूत प्रविशति—

जो किसी सभा समाज संस्था में बिना बुलाये प्रवेश करता है अर्थात् इधर-उधर घुसता फिरता है।

(१९) अपृष्टो बहुभाषते—

बिन कहे बोलने लगता और लम्बी-बातें झाड़ता है।

(२०) अविश्वस्ते विश्वसिति—

अविश्वसनीय व्यक्ति के प्रति अर्थात् ऐसे व्यक्ति के प्रति जिसने अपने आचरण द्वारा विश्वास खो दिया है। जिसकी गतिविधियां समाज व राष्ट्र के प्रति हानिकारक हैं उस पर विश्वास कर लेना उसको बन्धन मुक्त कर स्वतन्त्र विचरने देना मूढ़ों का काम है।

(२१) स्वयं वर्तमान पर दोषेण क्षिपति—

जो स्वयं किसी दुर्गुण का शिकार हो और दूसरों पर आक्षेप करे अर्थात् कांच के घर में बैठ कर जो दूसरों पर पत्थर फेंकता है।

(२२) योऽनीशान् कुप्यति—

जो स्वयं सामर्थ्यहीन होकर दूसरों पर कोप करता है।

(२३) अनर्थं परिवर्जित आत्मनो बलमज्ञाय योऽलभ्य नैष्कर्म्यात् इच्छति।

जो आध्यात्मिक एवं आधिभौतिक उन्नति की साधनाओं से शून्य एवं आलस्य प्रमाद से परिपूर्ण हो अपनी शक्ति का विचार न करते हुए अप्राप्य वस्तु की कामना करता है।

(२४) योऽशिष्य शास्ति—

जो मनुष्य कुपात्र को उपदेश देता है।

(२५) य शून्यमुपासते—

जो ज्ञान और गुणों से शून्य व्यक्तियों की उपासना अर्थात संग करता है अथवा जो मूर्खों की पूजा करता है।

(२६) यः कदर्यं भजते—

जो भीरु कायर कृपण कंजूस की सेवा करता है।

(२७) एक सम्पन्न मश्नाति—

जो अपने आश्रितों की आवश्यकताओं की पूर्ति किये बिना अकेला नाना प्रकार के व्यञ्जनादि का भोग करता है।

(२८) शोभन वसनश्च वस्ते—

अपने आश्रितों के निवास की चिन्ता न कर जो अकेले स्वयं सुन्दर निवास भवन में रहता है।

(२९) योऽसंविभज्य भृत्येभ्योऽश्नाति

तथा जो अपने कन्यादि आश्रित जनों को सम्मान पूर्वक भोजनादि न कराकर स्वयं उपभोग करता है वह मूढ़ है और वह पशु के तुल्य है।

—पं० शिवदयालु जी

•

नेह निमन्त्रण

चलो सब पूर्णो सिरसागंज......

चहुं दिश से चल चढ़ो रेल पर, पहुंच शिकोहाबाद
आठ मील बस याचा बस की प्यारो रखना याद
निहारो निर्मल नीर निकुंज...

दो दिन का है मेला त्यागो तेल व लकड़ी धून को
छोड़ झमेला आय अकेला, पहुंचो पहलो जून को
बजाते ढोलक बाजा झांझ......

सुना सिक्त स्व स्नेह की अजस्र धार बहने दो
कुक्षेत्र मत करो समाज को धर्म क्षेत्र ही रहने दो
कमालो कीर्ति कौमुदि कंज ...

दूर दुःशासन करो देश से दस्पीड़न का उच्छेदन हो
अमर शांति के कांति दूत बन विषय वासना विच्छेदन हो
वणिक बन करलो उत्तम वस्त्र ...

ऋषि, सन्देश सुनाओ घर २ मान गौरव पीत हो
मोहन मंजुल प्रीति नीति हो, हार हो या जीत हो
किंचित कर न कोई रंज ...

वेद मधुर वीणा तन्त्री, मंत्री पुण्य प्रयाण हो
पूर्ण परिषद् संगठन की सरस सुरीली तान हो
बहुरो प्रखर प्रकाश का पुंज... ...

—पं० मदनमोहन एडवोकेट
मौठ (झांसी)

हिन्दी व्यवहार में

हिन्दी को राष्ट्र भाषा के पद पर आसीन करने तथा अनेक राज्यों द्वारा प्रांतीय भाषा के रूप में स्वीकार करने के उपरांत भी दुर्भाग्यवश हिन्दी व्यवहार में नहीं आ सकी है। यही नहीं देश के कई जिलों में हिंदी के विकास संबंधी परिषदों की स्थापना भी हो चुकी है। परन्तु फिर भी कोई विशेष परिवर्तन देखने में नहीं आया।

यदि इस असफलता पर विस्तृत रूप से अध्ययन किया जाये तो पता चलेगा कि हिंदी को वास्तविक स्थान प्राप्त न होने का प्रमुख कारण केंद्रीय एवं प्रांतीय सरकारों की ढील है। ऐसा देखा गया है कि आदेश जारी करने वाला कार्यालय स्वयं उस आदेश का पालन नहीं करता। किसी कार्यालय से वहां पर हिंदी में किये गये कार्य की प्रगति जानने के लिये जो परिपत्र आदि लिखा जाता है वह अंग्रेजी में होता है। जिन कार्यालयों मे अब हिंदी में प्रतिवेदन आदि बनाये जाने लगे हैं उन्हें दुगुनी मेहनत करनी पड़ रही है। हिंदी के अतिरिक्त प्रतिवेदन की अंग्रेजी की प्रति भी मंगाई जाती है। यही कारण है कि कर्मचारी दुगुने परिश्रम से बचने के लिये केवल अंग्रेजी में ही कार्य करते हैं। यद्यपि संसद द्वारा पारित किये गये नये कानून के अनुसार हिंदी व अंग्रेजी दोनों प्रतियों का तैयार करना अब आवश्यक नहीं है। इससे समय व धन की हानि होती है। इस व्यवस्था को हल करने के लिये जो हिंदी अनुभाग खोले गये हैं वे अनुवाद करने के लिये २/४ महीने से कम समय नहीं लगाते दूसरी बात यह है कि प्रतिवेदनों के प्रकाशन सम्बन्धी जो पत्रिकाएं निकलती हैं व भी अंग्रेजी में ही होती हैं। यदि इन पत्रिकाओं का प्रकाशन हिंदी में भी कर दिया जाये तो प्रतिवेदनों की छपाई के लिए चार महीने के विलम्ब की समस्या हल हो सकती है।

अधिकारियों के कारण भी कर्मचारीगण अंग्रेजी में ही कार्य करते हैं। हिंदी के प्रति उनकी रुचि एवं श्रद्धा का दमन होता है। यदि कर्मचारियों को उनकी इन समस्याओं का व्यक्त करने की स्वतंत्रता दी जाये तो हिंदी को व्यवहार में लाने में बहुत सीमा तक मदद मिल सकती है।

—दिलबाग राय
हिंदी प्रचार एवं प्रसार समिति
(उत्तर प्रदेश)

देश में इस समय ऐसी हिंदी की संस्थाओं की आवश्यकता है जहां कार्यालय में कार्य करने से संबंधित प्रशिक्षण दिया जा सके। जो व्यक्ति अंग्रेजी में काम करने से अभ्यस्त हो गये हैं वे हिंदी में कार्य करने की शुरुआत नहीं करना चाहते। यदि कार्यालय में प्रवेश करने से पूर्व एक माह का प्रशिक्षण अनिवार्य कर दिया जाये तो कार्यालयों में हिंदी चलन में आ सकती है। इस कार्य को कार्यान्वित करने के लिये प्रत्येक जिले में केंद्रीय, प्रांतीय एवं स्वयं सेवी संस्थाओं के संयुक्त सहयोग से हिंदी प्रशिक्षण संस्थायें खोली जाएं जहां पर प्रत्येक कर्मचारी प्रशिक्षण होकर कार्यालय में प्रवेश करेगा जो कार्यालय के कार्य को सुचारु ढंग से चलने में सहायक सिद्ध होगा।

सरकारी नौकरियों के लिये विज्ञापनों को हिंदी के समाचार पत्रों में ही देना चाहिये। इससे हिंदी के समाचार पत्रों की मांग बढ़ेगी तथा लोगों की रुचि भी हिंदी समाचार पत्रों के पढ़ने में होगी। इससे अंग्रेजी पढ़ने वाले व्यक्तियों का यह आरोप कि हिंदी के समाचार पत्रों में सामग्री उपलब्ध नहीं होती, स्वत: ही दूर हो सकेगा। विज्ञापन के प्राप्त धन को पत्रों के सम्पादक अपने समाचार पत्रों में हिंदी ज्ञान संबंधी एक स्तम्भ नियुक्त करें जिससे हिंदी का व्यवहारिक रूप मिल सके। इस स्तम्भ में दैनिक जीवन में प्रयोग आने वाले शब्द का ब्योरा हो। अंग्रेजी तथा अन्य देश की भाषाओं के हिंदी में प्रचलित शब्दों के विषय में ज्ञान हो सके, ताकि उन शब्दों को एक रूप दिया दिया जा सके तथा भिन्न २ शब्द प्रयोग में लाने के स्थान पर सही शब्द बोला जाये। इससे अहिंदी भाषी भी प्रभावित होंगे तथा उन्हें हिंदी सीखने में कठिनाइयों का सामना नहीं करना पड़ेगा।

●

वृक्ष सजीव हैं

★

पौधे सजीव हैं या निर्जीव? इस प्रश्न के उत्तर में आर्यसमाज के विद्वानों में मतभेद है। प्रसिद्ध दार्शनिक विद्वान पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय ने वृक्षों को जड़ माना है जैसा कि आपकी लिखी पुस्तक "हम क्या खायें घास या मांस" पढ़ने से स्पष्ट होता है। शास्त्रार्थ महारथी पं० ओम्प्रकाश शास्त्री ने वृक्षों को जड़ प्रमाणित करने के लिये "वृक्ष जड़ हैं" नाम की पुस्तक लिखी है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली वृक्ष में जीव की सुषुप्त अवस्था में मानती है। आधुनिक विज्ञान पौधों को सजीव मानता है। सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने से मालूम होता है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती वृक्ष में जीव मानते थे।

वृक्षों को जड़ मानने वाले विद्वानों का मत है कि वृक्ष में जीव नहीं होता अपितु प्राण मात्र रहता है उनमें होने वाली रस संचार आदि सारी क्रियायें प्राणाधार होती हैं, किन्तु मेरी समझ में उनकी प्रतिज्ञा का साधक कोई हेतु या उदाहरण संसार में नहीं पाया जाता क्योंकि श्वास प्रश्वास, इस रक्त संचार आदि क्रियायें सजीवों ही में पाई जाती है निर्जीवों में नहीं।

वृक्ष सजीव हैं या निर्जीव? इस पर कुछ प्रश्नोत्तर यहां दिया जाता है। प्रश्न—वृक्षों में जीव कैसे है? प्रमाणित कीजिये। उत्तर—वृक्ष सजीव हैं क्योंकि प्राणधारी हैं। जो-जो पदार्थ प्राणधारी है वे-वे सजीव हैं जैसे मनुष्य, पशु, पक्षी आदि प्राणी। वृक्ष भी प्राणधारी हैं अतः वृक्ष सजीव हैं।

[प्र०] क्या सजीव ही प्राणधारी होते हैं? क्या निर्जीव प्राणी नहीं होते?
[उ०] अवश्य। जो पदार्थ सजीव नहीं होते वे प्राणधारी भी नहीं होते क्योंकि ईंट, पत्थर, कुर्सी, मेज आदि निर्जीव वस्तुयें प्राणधारी नहीं हैं। क्या उपर्युक्त जड़ वस्तुओं में कोई श्वसन क्रियायें प्रत्यक्ष दिखा सकता है? कदापि नहीं।

यदि पौधे सजीव न होते तो वे प्राणधारी भी न होते जैसे ईंट, पत्थर, लोहा, चांदी, पाषाणादि की बनी हुई शालायें—जन्तुओं की मृतशरीर सजीव न होने से प्राणधारी नहीं है। अतः स्पष्ट है कि सजीव ही प्राणधारी और निर्जीव अप्राणी होते हैं।

निर्जीवों में न केवल प्राणाभाव ही होता बल्कि पोषण [आहार ग्रहण करना], श्वसन [श्वास-प्रश्वास करना], वृद्धि [बढ़ना] रस संचार आदि क्रियाओं का भी अभाव होता है। क्या कोई विद्वान सजीवों में उपर्युक्त क्रियाओं का अभाव या निर्जीवों में उनका अस्तित्व दिखा सकता है? कदापि नहीं। यदि वृक्ष निर्जीव होते तो वे न तो प्राणधारी होते और न उनमें जड़ों द्वारा अपना खाद्य ग्रहण करना, श्वास-प्रश्वास, बढ़ना

—रमाशंकर
अमई (सुल्तानपुर)

रस संचार आदि क्रियायें पायी जातीं। चूंकि पौधों में सजीवों के सदृश पोषण, श्वसन वृद्धि आदि क्रियायें देखी जाती हैं अतः सिद्ध है कि वृक्ष सजीव हैं।

[प्र०] वृक्ष यद्यपि प्राणधारी हैं किन्तु हैं निर्जीव ही।

[उ०] वृक्षों को निर्जीव कहना सत्य नहीं क्योंकि संसार में समस्त प्राणधारी श्वास-प्रश्वास करने वाले जन्तु [मनुष्य पशु, पक्षी आदि] सजीव देखे जाते हैं, निर्जीवों में प्राण अपान (श्वास-प्रश्वास) नहीं देखा जाता। जब कि प्राणधारी जन्तु निर्जीव नहीं तो प्राणधारी वृक्ष निर्जीव क्यों कर माने जा सकते हैं?

[प्र०] पौधों को पुनः सजीव प्रमाणित कीजिये। [उ०] पौधे सजीव हैं क्योंकि उनमें पोषण (आहार ग्रहण करना), श्वसन [श्वास लेना प्रश्वास छोड़ना] वृद्धि [बढ़ना], प्रजनन [बीजों द्वारा वंश वृद्धि होना] आदि क्रियायें पायी जाती हैं जैसे मनुष्य, पशु पक्षी, आदि में उक्त क्रियायें पायी जाती हैं अतः पौधे सजीव हैं। यदि वृक्ष जड़ होते तो उनमें ईंट, पत्थर, आदि जड़ पदार्थों के सदृश उपर्युक्त क्रियायें कदापि न पायी जातीं।

[अपूर्ण]

रोटी और बुद्धि

★ अनूपसिंह, मुजफ्फरनगर

एक बार एक निरीक्षक महोदय एक पाठशाला में निरीक्षण करने के लिये गये। वहां पर उन्होंने एक लड़के से पूंछा, "एक और एक मिलकर कितने होते हैं ?" लड़के ने उत्तर दिया, "श्रीमान जी एक और एक मिलकर दो रोटियां होती हैं।" परीक्षक महोदय ने अनुमान लगाया कि लड़का भूखा है। उन्होंने लड़के से पूछा "क्या आज तूने रोटियां नहीं खाई ?" लड़के ने नकारात्मक उत्तर दिया। ठीक एक और एक दो रोटियां वाली बात ईसा मसीह पर लागू होती है। जब वे भगवान से प्रार्थना करते हैं तो कहते हैं— Give us this day our daily bread" हे भगवान ! तू हमें प्रतिदिन की रोटी दान दे।

यह कितनी हीन प्रार्थना है ? मनुष्य जैसी प्रार्थना करता है उसका प्रभाव उसके मन तथा कर्मों पर वैसा ही पड़ता है। वह जैसा मन से सोचता है, वैसा कर्म करता है। जैसा कर्म करता है वैसा ही फल पाता है। रोटी के लिये प्रभु से प्रार्थना करने वाला व्यक्ति दिन रात कमाने के ही चक्कर में पड़ जाता है। इस चक्कर में वह परमात्मा को भी भूल जाता है। किसी उर्दू के कवि ने ऐसे मनुष्यों की दशा का इस प्रकार चित्रण किया है—

खुदा को भूल गये लोग फिक्रे रोजी में।
ख्याले रिजक है, राजिक
का कुछ ख्याल नहीं॥

क्या मानव जीवन का लक्ष्य पेट पोषण करना ही है ? पेट-पोषण तो एक गन्दी नाली में रहने वाला कीड़ा भी कर लेता है। यदि यही बात है तो मनुष्य और कीड़े के जीवन में कोई अन्तर ही नहीं रहा। नरतन चोला प्राप्त करने के लिये तो मनुष्य को बहुत शुभ कर्म करने पड़ते है।

'नरतन चोले का पाना,
बच्चों का कोई खेल नहीं।
जन्म जन्म के शुभ कर्मों का,
होता जब तक मेल नहीं॥

इसीलिये तो मानव को परमात्मा की सर्वश्रेष्ठ कृति माना जाता है। महाभारत में कहा गया है—

गुह्यं ब्रह्म तदिदं ब्रवीमि।
नहि मानुषात् श्रेष्ठतरं हि किंचित्।

"Man does not live by bread alone" मनुष्य केवल रोटी के बल पर ही नहीं जीता ! रोटी कमाना और खाना ही मनुष्य जीवन का उद्देश्य नहीं। मनुष्य जीवन का क्या उद्देश्य है इसका उत्तर वेद भगवान ने दिया है—

कस्त्वा युनक्ति स त्वा युनक्ति कस्मै त्वा युनक्ति तस्मै त्वा युनक्ति। कर्मणे वाम् वेषाय वाम्। [यजु १।६]

इस मन्त्र में दो प्रश्न है और दो ही उत्तर दिये गये हैं। पहला प्रश्न है—तेरी

आत्मा का इस शरीर के साथ किसने सम्बन्ध जोड़ा ? इसका उत्तर मन्त्र में है परमात्मा ने आत्मा का सम्बन्ध इस शरीर से जोड़ा हैं। दूसरा प्रश्न है—किस प्रयोजन के लिए परमात्मा ने आत्मा और शरीर को युक्त किया है। इसका उत्तर है—

[१] तस्मै—सुख स्वरूप परमेश्वर की प्राप्ति के लिये।

[२] कर्मणे—श्रेष्ठ कर्म करने के लिए।

[३] वेषाय—सब विद्याओं की प्राप्ति तथा प्रचार के लिये।

यह तीन प्रयोजन हैं जिनको पूरा करने के लिए मानव देह प्राप्त हुआ है।

संसार में बुद्धि ही सर्वप्रधान है। महात्मा तुलसीदास जी ने ठीक ही कहा है—

जहा सुमति तहं सम्पति नाना।
जहां कुमति तहां विपति निदाना॥

अथर्ववेद में एक मन्त्र आता है जिसका तात्पर्य है—मनुष्य को परमात्मा से हर समय बुद्धि के लिये प्रार्थना करनी चाहिये। मन्त्र है—

मेधां सायं मेधां प्रातः,
मेधां मध्यन्दिनं परि।
मेधां सूर्यस्य रश्मिभिर्वचसा
वेशयामहे॥ [अथर्व ६।१०८।५]

महाभारत में एक स्थान पर आता है कि देवता दण्ड लेकर पशु रक्षक की भांति पुरुष की रक्षा नहीं करते। वे जिसकी रक्षा करना चाहते हैं, उसे बुद्धि देते हैं और जिसे असफल बनाना चाहते हैं, उसकी बुद्धि पहले छीन लेते हैं।

गीता में तो यही कहा गया है—

"बुद्धिः नाशात्प्रणश्यति"
[गी० २-६३]

बुद्धि के नाश होने से सर्वनाश हो जाता है।

वैदिक प्रार्थना इसलिये सर्व श्रेष्ठ है कि मनुष्य इसके द्वारा परमात्मा से बुद्धि की याचना करता है। वेदमाता गायत्री द्वारा साधक प्रार्थना करता हुआ कहता है—'धियो यो नः प्रचोदयात्" हे प्रभु ! हमारी बुद्धि को श्रेष्ठ मार्ग पर चला। एक नहीं अपितु अनेक मन्त्र वेद में ऐसे हैं जिनके द्वारा मनुष्य परमात्मा से बुद्धि मांगता है। केवल दो मन्त्र यहां पर दिये जाते हैं—

"यां मेधां देव गणाः,
पितरश्चोपासते।
तया मामद्य मेधयाऽग्ने
मेधाविनं कुरु॥

अर्थात् हे परमेश्वर ! जिस बुद्धि की उपासना विद्वान ज्ञानी और योगी करते हैं उसी बुद्धि से आप कृपा से युक्त हमको इसी वर्तमान समय में बुद्धिमान आप कीजिये।

मेधां मे वरुणो ददातु
मेधामग्निः प्रजापतिः
मेधामिन्द्रश्च वायुश्च
मेधां धाता ददातु मे स्वाहा।
[यजु ३२। १५]

अर्थात् हे परमेश्वर ! आप [वरुण] वरणीय हो। कृपा से मुझको सब विद्या सम्पन्न बुद्धि दीजिये तथा [अग्नि] विज्ञान मय [प्रजापति] सब संसार के पालक [इन्द्र] परमैश्वर्यवान [वायु] अनन्त बल वाला तथा सब जगत का धारण और पोषण करने वाले आप मुझको उत्तम बुद्धि दीजिये।

बुद्धि से उत्तम पदार्थ कोई नहीं है। उसके होने से जीव को सब सुख होते हैं। इसीलिए बारम्बार परमात्मा से बुद्धि की ही याचना करनी श्रेष्ठ बात है।

★

तेरी जय हो भारत माता

तेरी जय हो भारत माता, तेरी जय हो, तेरी जय हो ऐ भारत माता ! ॥ टेक ॥

जन्म दात्री है ऋषि मुनियों की सर्व गुणों की खान हैं।
विश्व तुझे आदर देता है इस हेतु महान है।
जन्म लिया इससे जिसने वह—होता भाग्य विधाता—
तेरी जय हो ऐ भारत माता ! ॥ १ ॥

राम, कृष्ण, ऋषि भीष्म पितामह, दयानन्द ऋषिराज हुये।
तव सपूत ये जिसकर सारे अखिल जगत् सरताज हुये।
तुझसे पाकर जन्म ऐ माता ! जीवन सफल बनाता—
तेरी जय हो ऐ भारत माता ! ॥ २ ॥

भगतसिंह आजाद, औ बिस्मिल, बोस को तूने जन्म दिया।
तव स्वतन्त्रता हेतु वीरों ने अपना है बलिदान किया।
अमर रहे जब तक सृष्टि हो, तेरी गौरव गाथा—
तेरी जय हो ऐ भारत माता ! ॥ ३ ॥

सीता, सावित्री, मैत्रेयी सदगुण सम्पन्न बती।
पद्मावती, लक्ष्मीबाई, जो दुर्गा वीरवती।
वीर धीर, गम्भीर जनने वाली मेरी माता—
तेरी जय हो ऐ भारत माता ! ॥ ४ ॥

धर्म तेरा है प्राण और शुभ कर्म हस्त कहलाता है।
सर्व गुणों की खान यही है सकल विश्व बतलाता है॥
धर्म कर्म हो ऐसा जो जिवन साथ ही जाता—
तेरी जय हो ऐ भारत माता ! ॥ ५ ॥

विनय यही परमेश्वर से है मनुज जन्म फिर तथा में।
जन्म अगर मैं लूं मेरी माता ! तेरी गोद स तूला में।
कर्म करूंगा ऐसे जिससे बरसे विश्व विधाता—
तेरी जय हो ऐ भारत माता ! ॥ ६ ॥

—ब्र० धर्मदेव आर्य शास्त्री गुरुकुल सिरसागंज

वेदमूर्ति पं० सातवलेकर जी से एक भेंट—

क्या शहरी भी शतायु हो सकते हैं?

क्या हम शहरी नागरिक भी प्राकृतिक जीवन बिताते हुए शतायु हो सकते हैं? यह प्रश्न जब १०२ वर्षीय पं० सातवलेकर जी से किया तो वे किंचित मुस्कराये और बड़े विश्वास पूर्वक कहने लगे, प्रत्येक वह व्यक्ति जिसमें दृढ़ संकल्प शक्ति है शतायु तो हो ही सकता है, इससे भी कहीं अधिक आयु वाला हो सकता है, अब तक हुए हैं और होंगे भी।

पं० जी से यह सब वार्तालाप दिल्ली के महापौर लाला हुकमराज जी के निवास स्थान पर हो रहा था। पं० जी से जब दीर्घ जीवन के रहस्य के विषय में पूछा गया तो बताया कि—

(१) ब्राह्म मुहूर्त में उठना (२) प्रतिदिन दोनों सन्ध्या समय प्राणायाम, ध्यान, तथा गायत्री का जाप करना, उज्जायी प्राणायाम १०० से २०० बार तक प्रातः-सायं करना चाहिए। (३) अवस्थानुसार ५० से ४०० तक सूर्य नमस्कार करना। ४० वर्ष की आयु के बाद यह संख्या ३००,४५ वर्ष के बाद १०० और ५० वर्ष के बाद ५० कर देनी चाहिए। ८० वर्ष की आयु पर २५ या इससे भी कम। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए आसन प्राणायाम और सूर्य नमस्कार का दिनचर्या के अंग हो जाना आवश्यक हैं। (४) नियमित और समय पर भोजन। (५) मन स्वस्थ रहे।

"मन स्वस्थ कैसे रहे"।

इसके लिये भी बड़ा आसान तरीका है। (१) सुख-दुख, हानि लाभ, शीत उष्ण आदि द्वन्दों को सहन करने का अभ्यास। (२) चिन्ता मुक्त रहना। (३) निराशावादी विचार जैसे यह संसार क्षण भंगुर है या दुख पूर्ण है, मन से निकाल देना। (४) जीवेम शरद शतं के विचार को स्मरण रखना (५) ईश्वर में विश्वास रखकर उसके सच्चिदानन्द स्वरूप का ध्यान करना। (६) अपना पृष्ठवंश [रीढ़ की हड्डी] सीधा रखना। और [७] अपने जीवन के उद्देश्य को महायज्ञ मानकर उसकी पूर्ति के लिए निरन्तर प्रयत्न करते रहना।

आहार—इतने सूर्य नमस्कार करने के लिए क्या विशेष आहार चाहिये?

जी नहीं? एक दम सादा भोजन। प्रातः नित्य कार्य से निवृत्त होकर आधा सेर दूध [गाय का] और चाहे तो आधी छटांक घी पर्याप्त है।

स्थान का अभाव भी केवल दृढ़ निश्चय का अभाव बताता है? क्योंकि कितना भी घना बसा शहर हो जितने स्थान में व्यक्ति सोता है उतना स्थान ही सूर्य नमस्कार करने के लिये चाहिए।

गो हत्या—जब पं० जी से दूध और घी की चर्चा की तो अनेक प्रश्न उठ खड़े हुये। क्या भारत में गो दूध भी आज सम्भव है और क्या विदेशों में भी दूध घी मिलता है। पं० जी ने कहा—भारत को छोड़कर सर्वत्र घी दूध घी मिलता है।

क्या प्राचीन भारत में गो मांस का प्रयोग होता था?

गो मांस ही नहीं किसी भी प्रकार का मांस प्राचीन भारत में प्रयोग नहीं होता था। भारत के प्राचीनतम ग्रन्थों में मांसाहार का कहीं भी प्रमाण नहीं है। एक भी मन्त्र ऐसा नहीं है जिसमें मांसाहार की अनुमति हो। गाय को तो वैसे भी वेदों ने अघन्या कहा गया है अर्थात वह जो मारा न जावे।

गोमेध—क्या प्राचीन समय में यज्ञों में पशु बलि की प्रथा थी? कभी नहीं। क्या नरमेध का अर्थ मानव हत्या से है? और क्या पितृमेध का अर्थ पिता की हत्या करना है यदि हो तो कोई उदाहरण दें कि किसी ने अपने पिता की हत्या करके यज्ञ में बलि दी हो। यह सब केवल पराधीन इतिहास का ही दुष्परिणाम है जो इस प्रकार के उदाहरण दिये जाते हैं।

[पं० सातवलेकर जी ने इस सम्बन्ध में "गोज्ञानकोष" भी लिखा है।]

—जगन्नाथ शास्त्री
एम० ए०

सरकार ने भी हत्या बन्दी के सम्बन्ध में जो समिति बनायी है क्या आप उससे भी यह सब कहेंगे?

हाँ यदि वह मुझे मिले तो मैं उसकी सब समस्याएं और शंकाओं का समाधान का प्रयास करूँगा।

शांति समय में लाठी का महत्व—बहुत देर तक जब इस प्रकार की बातचीत होती रही तो कार्य का अधिक प्रभाव न हो यह सोचकर बातचीत समाप्त करना चाहता थे। तब पं० जी ने स्वयं प्रश्न कर दिया कहा लाठी चलाना जानते हो? और इससे पूर्व कि कुछ उत्तर दें वे स्वयं ही कहने लगे कि आज जब देश में चारों ओर विघटनकारी प्रवृत्ति और शक्तियाँ बढ़ रही हैं केवल लाठी ही हमें बचा सकती है। एक लाठी चलाने में दक्ष व्यक्ति ४०-५० आततायियों के लिये बहुत है। ऐसे अनेक उदाहरण हैं जब लाठी चलाने में दक्ष व्यक्ति के कारण ही रक्षा हो सकी।

और इस अविस्मरणीय भेंट के बाद चलने लगा तो मुझे लगा कि मैं शायद अधिक समय तक बैठे रहने से थक गया हूँ परन्तु मुझे यह देख कर हैरानी हुई [और प्रसन्नता भी] कि पं० जी जैसे भेंट करने से पूर्व स्वस्थ और प्रसन्न थे वैसे ही अब थे मानो उन्हें इतनी देर की बैठक का कोई प्रभाव ही न हुआ हो, जबकि इतने समय वे ही बोलते रहे और मैं अधिकांश समय सुनता ही रहा। वे इतने समय तक जिस आसन से बैठे रहे वह भी उनकी निरन्तर प्राणायाम और आसन आदि का ही परिणाम था। श्वेत और धवल धोती कुर्ता-टोपी पहने पं० जी को देखकर नया व्यक्ति विश्वास नहीं करता कि पं० जी १०२ वर्ष के हैं।

पं० जी का जब सार्वजनिक अभिनन्दन होने वाला था तो उन्होंने कार में बैठ कर सभा स्थल तक जाने के लिये मना कर दिया था और विश्वास पूर्वक कहा था कि मैं तो पैदल ही जाऊँगा।

मेरे मन में भी उन्हें देखकर यही विश्वास जमा कि सभी व्यक्ति शतायु हो सकते हैं, अकाल मृत्यु का प्रतिकार।

राष्ट्र भाषा हिन्दी

तुलसी का उपदेश पढ़ा करते हैं जिस भाषा में हम
उसके प्रति अनुराग न मेरा होगा इस जीवन में कम

(१)

माँ की प्रथम लोरियाँ जब मेरे कानों में पड़ती थी
हिन्दी की जीवन पीयूषनी धारा आ आ बहती थी
सीता मेरे मुग्ध भोजा की अमृत वर्षा होती
माँ की प्रिय आवाज हमारे अन्तर में रह रह उठती

(२)

उसी समय हम पी लेते हैं हिन्दी की अमृत मीरा
आकर लोरी गा जाती है हा ! हर कर वह प्रिय मीरा
तुलसी का उपदेश पढ़ा करते हैं जिस भाषा में हम
उसके प्रति अनुराग न होगा मेरा इस जीवन में कम

(३)

जिस भाषा में दयानन्द ने वैदिक नाद गुंजाया है
काश्मीर से धनुष कोटि तक मधुमय धार बहाया है
जिस भाषा में श्रद्धानन्द ने श्रद्धानन्द पुष्प चढ़ाया है
गुरुकुल की फुलवारी देकर हिन्दी को लहराया है

(४)

जिस भाषा से हरिश्चन्द्र जी भारतेन्दु कहलाये हैं
जिस भाषा में जयशङ्कर ने आंसू मधुर बहाये हैं
और मैथिली शरण गुप्त ने गान भारती गाया है
महादेवी ने दीप शिखा का प्रतिपल ज्योति जलाया है

(५)

जिस भाषा का राजा जी दक्षिण में साख जमाये हैं
महामना ने काशी में जिसके मन्दिर बनवाये हैं
जिस भाषा में बाबू रवि ने जन मन गण को गाया है
महाराष्ट्र में आगे बढ़कर जिसका मान बढ़ाया है

(६)

जिस भाषा के प्रिय माध्यम से स्वतन्त्रता का मान हुआ
'राष्ट्रपति' उस राष्ट्रपिता से हिन्दी का सम्मान हुआ
रावी के तट पर नेहरू ने जिस भाषा में शपथ लिया
और राष्ट्र भाषा हिन्दी है संविधान ने कथन किया

—राधेमोहन गुप्त, जौनपुर

फादर फेरर की अराष्ट्रीय गतिविधियां

★आचार्य रामनारायण शास्त्री
एम० ए०, बम्बई

महाराष्ट्र की भूमि पर पोप की सेना का बड़ा ही प्रबल सुनियोजित आक्रमण हुआ है। जिसके संदर्भ में स्पेन निवासी विदेशी पादरी कैथोलिक, मिशनरी फेरर की गतिविधियां अपराष्ट्रीय एवं देश के लिये घातक सिद्ध हुई हैं। उनके लगभग वर्षों का कार्य काल इस बात का प्रमाण है। यह सत्य है, कि, उन्होंने सन् १९५२ से १९५७ तक पूना में रहकर अपने अराष्ट्रीय कुकर्मों का परिचय दिया। साथ ही वे १९५८ से १९६९ तक इसी प्रकार के कार्यक्रमों को सभा में कोंडाई कैनाल में भी रहे। सबसे महत्व की बात यह है कि इसके बाद उनको मनमाड का कार्य क्षेत्र सुव्यवस्थित कार्य करने के लिये १९५९ में सुपुर्द किया गया। क्या यह सच नहीं है, कि सन् १९६३ में उन्होंने क्यों महाराष्ट्र शेतकरी सेवा मंडल मनमाड नामक संस्था की स्थापना की। जिसका कार्य क्षेत्र नासिक अहमदनगर तथा औरंगाबाद था। इसमें केवल उनके ही, और विशेष रूप से सभी कैथोलिक प्रचारक ही थे। क्या फादर विल्जा, चेयरमैन बम्बई, क्या जे० डी० हायस, वाइस चेयरमैन, बम्बई क्या एच० डिकोस्टा सेक्रेटरी बम्बई क्या एम० कुटिन्हो ट्रेजरर, बम्बई और क्या फादर ख्रिस्टेन फेरर मनमाड।

अपने कार्यालय में फादर फेरर ने ३१ जुलाई १९६७ तक जो कार्य किये हैं, वे वास्तव में देखने में तो सेवा के कार्य हैं, समाज सुधार के कार्य हैं, लेकिन उनके पीछे जो भावना है, वह है गरीबी से लाभ उठाकर, बिचारे किसानों को बहकाकर लोभ के वशीभूत उनके धर्म का परिवर्तन। इस प्रकार के लोगों की संख्या लगभग तीन हजार है। वैसे उनके 'कार्यों का विवरण' में यह सत्य है, कि उन्होंने ११ तालुकों को अपने कार्य का क्षेत्र चुना, ६७१ गावों में कार्य सम्पन्न किये। १४०५ कुवें खोदे, ४१३ पत्थर से बांधे, ३१५ मोटें दीं, ४१७ बैल जोड़ियों की पूर्ति की, २५०० क्विंटल मिश्रखाद बांटा, ५००० क्विंटल बीज बांटा, एक लाख लीटर तेल पम्प के लिये प्रदान किया, १०५० क्विंटल अन्न वितरित किया, ९२२७ हल की जुताई के लिये साधन जुटाये। १८ ट्यूबवेल प्रदान किये, ९९०२ अपनी संस्था के सदस्य बनाये। क्या यह सच नहीं है, इन सभी सदस्यों को जिनको पादरी साहब के द्वारा लाभ हुआ है और सहायता प्राप्त हुई है। वे उनके मिशन और कार्यों का गुणगान नहीं करेंगे? अतः मनमाड से उनके समर्थन की जो आवाज निकलती है, उसके पीछे उनके इसी प्रकार के व्यक्ति हैं, जिन्होंने पादरी फेरर के अन्न को खाया है।

पादरी फेरर की प्रचार की गतिविधियां इस प्रकार की रहीं, कि उन्होंने ४/५ गावों को मिलाकर एक/एक मंडल की स्थापना की। तथा प्रत्येक मण्डल के लिये वैतनिक प्रचारक भी नियुक्त किया। जिसे मास्टर कहा जाता है। इसके माध्यम से किसानों के पास पहुंचने में फेरर साहब सहायता पाते हैं, और निश्चित स्थिति पर किसानों के पास पहुंचते हैं। उन्हीं को सहायता प्रदान करते हैं, और जिनको सहायता प्रदान हो जाती है, वे लोग शेतकरी सेवा मंडल के सदस्य बन जाते हैं। अब तक जो उन्होंने किसानों को सहायता दी है वह विशाल राशि लगभग ४ करोड़ रुपयों के रूप में है। जिन देशों से यह सहायता प्राप्त हुई हैं, वे देश इण्टर नेशनल मिजरेर, जर्मनी, सरफो, फ्रांस आदि।

इस समय आगामी वर्षों के लिये एक करोड़ ७१ लाख रुपयों की योजना निर्मित हुई है। विदेशों से धन प्राप्त करने में ये विशेष प्रवीण हैं। क्योंकि कार्यों का दिखावा करने के लिये फिल्में, चित्र एवं टेप रिकार्डिंग कराते हैं। और उन्हें विदेश में जहां से सहायता प्राप्त होती है वहां भेजते हैं। इस सहायता का विवरण किसी सरकारी या गैर-सरकारी संस्था द्वारा नहीं होता बल्कि वह स्वयं जिन लोगों को चाहते हैं उनको अपने स्वार्थ के लिये देते हैं। क्या यह सच नहीं, कि जब उनके सामने यह प्रस्ताव लाया गया, कि यह सहायता ग्राम पंचायत के द्वारा दी जाय तो उन्होंने इस प्रकार के प्रस्तावों को ठुकरा दिया। आश्चर्य है कि उन्होंने अपने प्रमुख कार्यकर्ताओं को जो लोग उनके साथी थे उन्हें पचास/पचास हजार रुपये तक राशि प्रदान की है।

मनमाड एक औद्योगिक एवं भारत सरकार का सुरक्षाजन्य क्षेत्र है। इस क्षेत्र में भारत सरकार के रक्षा विभाग और अर्थ विभाग के क्रमशः दो और एक कारखाने हैं। अर्थात् ओझर का मिग कारखाना देवलाली का तोपखाना तथा नासिक का नोट छापने का कारखाना इसी भाग में है। फिर इस क्षेत्र को चुनने में क्या फेरर साहब का कोई षडयंत्र कार्यकारी क्रम नहीं है? यह तो भारत सरकार की अदूरदर्शिता रही कि उसने इतने दिनों तक इस प्रकार के अराष्ट्रीय व्यक्ति को यहां टिकने दिया। लेकिन सुबह का भूला भटका यदि शाम को घर आ जावे तो तो उसे भूला नहीं कहते। इस कहावत के अनुरूप महाराष्ट्र सरकार ने बहुत बड़ी हिम्मत की है कि उनको देश छोड़ने का आदेश दिया है। लेकिन दुर्भाग्य है कि भारत सरकार ने दो महीने की अवधि बढ़ाकर बड़ी गलती की है। मैं जब स्वयं मनमाड के क्षेत्र का निरीक्षण करने गया तो मैंने देखा और अनुभव किया कि वहां पर रामकृष्ण, दयानन्द और गांधी महाराणा प्रताप और शिवाजी की संस्कृति को समाप्त प्राय कर दिया गया है। मैंने देखा कि लोग नमस्ते और राम राम के स्थान पर जय फादर के नारे लगा रहे थे। और तो और वे बुद्ध महात्मा बुद्ध नहीं बल्कि महात्मा इनका नाम निकल रहा था। यह एक अनोखी बात थी। आज न केवल मनमाड न केवल महाराष्ट्र बल्कि भारत के जनमानस फादर फेरर से कुछ प्रश्न पूछ रहा है। क्या फादर फेरर इन प्रश्नों का समाधान कर सकेंगे। और वे प्रश्न हैं, कि क्या मनमाड तथा येवला के नागरिकों ने उनके अराष्ट्रीय ईसाई प्रचार निरोध के लिए आवाज नहीं उठाई थी। क्या एक ही समय में पिछले दिनों फेरर साहब ने लगभग एक हजार नागरिकों को ईसाई नहीं बनाया? येवेरिक के क्षेत्र के समय फेरर [illegible] के पोप के [illegible] हिन्दू रूपों को जमकर लेकर [illegible] गये थे? क्या उन्होंने इस अवसर पर इन रूपों का धम प्रचार के लिए नहीं फुसलाया था। क्या इनके विरोध में मनमाड के नागरिकों ने उस समय जनता जागृति मण्डल और येवला के हिन्दुओं ने धर्म जागृति मण्डल संगठनों के माध्यम से फेरर को उसी समय देश निकाला देने की मांग नहीं की थी? और क्या इसी मांग को नासिक जिले की कम्युनिस्ट पार्टी की शाखा ने नहीं दोहराया था?

पादरी फेरर ने राजनीति को भी अपनी गतिविधियों से प्रभावित करने के लिये जिला परिषदों एवं ग्रामपंचायतों के चुनाव में भी अपना षड्यन्त्रकारी जाल फैलाया। उनके ही लोग सफलता प्राप्त करके पंचायतों और जिला परिषदों में पहुंचे इस कारण उन्होंने पानी के समान पैसा बहाया। इसकी सूचना उस समय जनसंघ और प्रजा ने सरकार को दी थी। तब से सरकार ने उनकी गतिविधियों पर बड़ी निगरानी रखी। और उनकी राष्ट्र विरोधी गतिविधियों की जानकारी जब महाराष्ट्र सरकार ने ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा प्राप्त की तत्पश्चात केन्द्र सरकार के परामर्श के अनुसार पादरी फेरर को देश छोड़ने का आदेश दिया गया।

महाराष्ट्र सरकार ने जो समुचित कदम उठाया है, इसके लिए वह धन्यवाद की पात्र है। लेकिन सरकार के निश्चय के विपरीत कैथोलिक मिशनरी जिस प्रकार से संघटित हो करके विरोध के रूप में सामने आये हैं उससे भविष्य में एक संकेत मिल रहा है आज इनकी जड़ें क्या व्यापारी क्षेत्र क्या सामाजिक? क्या प्रशासनिक? और क्या राजनैतिक सभी क्षेत्रों में इनका बोलबाला है। और तो और इनके एक नेता ने सरकार को चुनौती दी है, कि देखेंगे कि महाराष्ट्र सरकार फादर फेरर को कैसे निकालती है। इससे लगता है, कि आज उनकी शक्ति केन्द्र में मजबूत है। लेकिन इन विचारों को यह नहीं भूलना चाहिये कि आज नहीं तो कल इस देश के हर भूभाग में 'विदेशी पादरियों देश छोड़ो' यह आन्दोलन आरम्भ होने वाला है। जिसके कारण सरकार भी इनका संरक्षण नहीं कर सकेगी। [illegible] जो [illegible] है कि पादरी फेरर [illegible] अराष्ट्रीय कार्यों के कारण वह अब [illegible] भूमि में [illegible] क्योंकि महाराष्ट्र की जनता जागृत है। ★

महिला मण्डल

महिलाओं के लिए व्यायाम

शरीर को स्वस्थ रखना सभी चाहते और नारियां भी इसी की कामना रखती हैं, लेकिन यह स्वस्थता शारीरिक एवं मानसिक दोनों ही प्रकार की होनी चाहिये, इन दोनों ही प्रकार की स्वस्थता की प्राप्ति के लिये महिलाओं ने अनेक प्रकार के कार्य करने होते हैं इनमे कि व्यायाम का भी बहुत बड़ा महत्व है।

महिलाओं के मन मे प्रायः यह धारणा रहती है कि हमे व्यायाम की क्या आवश्यकता है, क्या हमें कुश्ती लड़नी है या लड़ना है? यह विचार गलत है।

१—शरीर की रक्षा के लिये,

२—शरीर सौन्दर्य सम्वर्द्धन के लिये,

३—शारीरिक मानसिक विकास के लिये,

४—गृहस्थ धर्म के लिये,

५—वृद्धावस्था में भी क्रियाशील रहने के लिये, व्यायाम की आवश्यकता है।

महिलाओं को कुछ विशिष्ट प्रकार के व्यायाम विशेष उपयोगी होते हैं—

१. रस्सी कूदना,
२. झूला झूलना,
३. घूमने जाना,
४. पानी में तैरना,
५. घरेलू कार्य करना,
६. विशेष प्रकार के आसन नियमित रूप से करना,
७. महिलाओं के उपयोगी खेल, आदि अनेक व्यायाम के प्रकार हैं जो देश काल, जाति एवं स्वयं की प्रवृत्ति के अनुसार किये जा सकते हैं।
८. प्राणायाम,

व्यायाम के प्रभाव से पाचनक्रिया ठीक प्रकार से होती है जिसमें अग्नि भी प्रदीप्त होती है, पेट मे वायु नहीं बनती पाचन क्रिया ठीक होने से भूख अच्छी प्रकार से लगती है और रस, रक्त, मांस आदि धातुओं का भी ठीक प्रकार से निर्माण से ही शरीर को बल मिलता है, शरीर सुन्दर सुडौल बनता है काम करने की सामर्थ्य बनी रहती है, इसी से उत्साह की भी वृद्धि बनी रहती है, मन आत्मा एव सभी इन्द्रियां प्रसन्न रहती हैं।

व्यायामो से शरीर का गठन अच्छा होता है, चर्बी नहीं बढ़ती है, व्यायाम के प्रभाव से थकान भी अनुभव नहीं होती है, मांस पेशियां सुदृढ़ होती हैं और चमड़ी में झुर्रियां नहीं पड़ती शरीर से पसीना निकल जाने से हल्का पन भी आ जाता है।

★

जगजीवनराम को हटाने की मांग

हिन्दुओं पर गोमांस खाने का निराधार आरोप

कानपुर १३ मई। आर्यसमाज गोविन्दनगर कानपुर के तत्वावधान मे एक आम सभा श्री देवीदास आर्य की अध्यक्षता में हुई। सभा में खाद्य मन्त्री श्री जगजीवनराम द्वारा लोक सभा मे हिन्दुओं पर लगाये गये इस आरोप का कड़ा विरोध किया गया कि वैदिक युग में गो मांस खाते और आज भी काफी हिन्दू गो मांस खाते हैं इत्यादि। सभा मे एक प्रस्ताव पारित कर भारत सरकार से मांग की गई कि श्री जगजीवनराम ने इस प्रकार के निराधार आरोप से ४५०००००० पैंतालिस करोड़ हिंदुओं के धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुचाई है उनको ऐसे उत्तरदायित्वपूर्ण पद पर नहीं रहना चाहिये, उनको मन्त्री मण्डल से तुरन्त हटाया जाये।

श्री देवीदास आर्य ने श्री जगजीवनराम को चुनौती दी कि वह इस विषय पर शास्त्रार्थ करें और अपने कथन को सिद्ध करें वरना हिन्दू जनता से क्षमा याचना करें। सभा मे श्री शालिग्रामप्रसाद व श्री शिवदयाल के भी भाषण हुये।

सार्वदेशिक समाचार

ऋषि के अमुद्रित ग्रन्थों के सम्बन्ध में आर्यजगत् को सूचना

आर्य समाचार पत्रों में यह चर्चा चल रही है कि ऋषि के कुछ ग्रन्थ अभी तक अमुद्रित ही परोपकारिणी सभा के पास सुरक्षित हैं। आर्यजगत को सूचनार्थ निवेदन है कि सार्वदेशिक सभा की अन्तरङ्ग सभा की १३, १४ जनवरी बम्बई की बैठक मे इस सम्बन्ध में प्रस्ताव पास हुआ है और सार्वदेशिक सभा परोपकारिणी सभा से इस सम्बन्ध मे पत्र व्यवहार कर रही है। पूर्ण आशा है कि परोपकारिणी सभा इस सम्बन्ध मे उचित कार्य करेगी। सार्वदेशिक सभा की ओर से परोपकारिणी सभा को जो पत्र लिखा गया, वह आर्यजगत् के सन्तोषार्थ नीचे दिया जाता है—

आपकी सेवा मे सार्वदेशिक अन्तरङ्ग सभा की बम्बई बैठक १३, १४ जनवरी का प्रस्ताव पत्र सं० ३४३८ ता० २१-२-६८ को भेजा था। उसके साथ यह भी निवेदन है कि सार्वदेशिक धर्मार्य सभा तथा शताब्दी कमेटी के सदस्यो की यह भी मांग है कि ऋषि का संगृहीत जो साहित्य मुद्रित अमुद्रित आपके संरक्षण मे है उसकी सूचना भी कृपया सभा को दे दें। अर्थात्—

१—ऋषि के संग्रह मे जो मुद्रित ग्रंथ हैं उनकी सूची संस्करण निर्देश सहित।

२—ऋषि के संग्रह मे जो हस्त लिखित ग्रंथ हैं उनकी सूची।

३—ऋषि के अपने मुद्रित ग्रन्थों के जो हस्तलेख हैं उनकी सूची।

४—ऋषि के अब तक जो जो ग्रंथ अमुद्रित आपके पास हैं उनकी सूची।

आशा है इस प्रकार की सूची आपने ऋषि के ग्रंथ संग्रह की बनाई हुई होगी ही उसकी केवल प्रतिलिपि भेज दें और यदि ऐसी सूची आपके पास तैयार न हो तो यदि आप चाहें तो हम किसी विद्वान को सभा के व्यय से आपके सहयोगार्थ भेज दें जिससे उसके निर्माण में आपको सुविधा रहे।"

★

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमन्त्री श्री शिवचन्द्र जी द्वारा अलीगढ़ का प्रचार दौरा

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा अलीगढ़ के निमन्त्रण पर वहां के जिले के समस्त आर्य कार्य कर्त्ताओं के विशाल सम्मेलन की अध्यक्षता करने के लिये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उप मन्त्री श्री शिवचन्द्र जी पिछले दिनों अलीगढ़ गये थे।

सम्मेलन से एक दिन पूर्व अलीगढ़ के विशिष्ट आर्य सज्जनों तथा स्थानीय आर्य समाज के अन्तरंग सदस्यों की बैठक मे श्री शिवचन्द्र जी ने विशेष रूप से जिले के कालिजों, स्कूलों, शिक्षित-वर्ग तथा बुद्धि जीवियो मे आर्यसमाजों द्वारा वैदिक धर्म के प्रचार पर तथा उसके लिय विशेष प्रकार की योजना पर प्रकाश डाला।

दूसरे दिन अलीगढ़ आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संग में महर्षि दयानन्द की इच्छा तथा आदेश के अनुसार सन् १८९१ से सन् १९६१ तक आर्य जन गणना का विस्तृत इतिहास बताते हुये सन् १९७१ मे होने वाली आर्यों की जन-गणना के अवसर पर आर्यों का कर्तव्य विषय पर प्रकाश डाला।

समस्त जिले के आर्य कार्यकर्ताओं के सम्मेलन में अपने अध्यक्षीय भाषण मे श्री शिवचन्द्र जीने बताया कि महर्षि-दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना वैदिक धर्म के प्रचार के लिये की थी। अतः वैदिक धर्म साध्य है और आर्यसमाज साधन। वैदिक धर्म, आर्य धर्म, सनातन धर्म तथा मानव धर्म पर्यायवाची शब्द हैं और एक ही हैं। हमे प्रचार करते समय वैदिक धर्म पर अधिक बल देना चाहिये।

श्री शिवचन्द्र जी ने एक सार्वजनिक सभा में "आर्यसमाज तथा राजनीति' विषय पर भाषण दिया, जिसमे उन्होंने सत्यार्थप्रकाश के छठे समुल्लास के आधार पर ही सिद्ध किया कि आर्यसमाज को संस्था के रूप मे पृथक पार्टी बना कर राजनीति में भाग नहीं लेना चाहिये किंतु आर्यों को स्वतन्त्र रूप से राजनीति में भाग अवश्य लेना चाहिये।

★

उत्तर प्रदेशीय आर्य-वीर दल की प्रगति

कार्य की सुगमता की दृष्टि से प्रदेश को चार विभागों में विभक्त किया गया है—

१. पूर्वीय क्षेत्र—अधिकारी श्री देवनसिंह। उन्होंने अपने सहयोगी श्री मुन्नीलाल जी, श्री जगदम्बाप्रसाद जी तथा श्री रामदुलारे जी के सहयोग से विशेष सन्तोषजनक कार्य किया।

२. उत्तरीय व दक्षिणीय क्षेत्र—अधिकारी श्री रघुनाथसिंह ने अपने सहयोगी श्री बालकृष्ण जी के साथ फतेहपुर उरई व जालौन आदि मण्डलों में नवीन शाखाओं को प्रगति दी।

३. पश्चिमी क्षेत्र—अधिकारी श्री चन्द्रपाल जी आर्य अपने सहयोगी श्री विश्वनाथ जी आर्यवीर तथा श्री विद्याशंकर अनिकेत के साथ शाखाओं को प्रगतिशील बनाया।

वर्ष में निम्न प्रकार शिविर सगठित किये गये—

१. मीरजापुर—शिवशंकरी मेले में त्रिदिवसीय शिविर।

२ बगहा—दो सम्मेलन

३. लल्लापुर (वाराणसी) १ सम्मेलन।

४ केराकत (जौनपुर) १ बड़ा सम्मेलन।

५. गुरुकुल सिराथू (इलाहाबाद) ७ दिवसीय शिविर श्री मदनमोहन आर्य के सहयोग से।

६ आ० स० फैजाबाद—११ दिवसीय शिविर श्री शिवनाथ मिश्र मेधावी जी की संरक्षता में।

७. गाजियाबाद (मेरठ)-दल का रजत जयन्ती कार्यक्रम आदर्श रहा।

८ कानपुर तथा उन्नाव मण्डलों में दो शिविर।

९. बिन्दकी (फतेहपुर) दो दिन का सफल सम्मेलन श्री रघुनाथमित्र जी, श्री बालकृष्ण, श्री रामदत्त तथा श्री रामनाथ सिंह जी के प्रयत्न से हुआ। प्रचार संचालक श्री ओमप्रकाश त्यागी का भाषण भी सम्मेलन में प्रभावपूर्ण था। दल की प्रान्तीय बैठक बुलाकर उनकी गतिविधियों पर विचार विनिमय किया गया।

१०. हरदोई में दल की प्रान्तीय बैठक की गई जहाँ आर्थिक दृष्टि से दल को उन्नत करने पर विचार किया गया।

मीरजापुर के भूकम्पग्रस्त क्षेत्रों में श्री देवनसिंह आदि ने सराहनीय कार्य किया। श्री आनन्द प्रकाश जी सहायक अधिष्ठाता आर्यवीर दल एवं उप मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा तथा उपर्युक्त सब अधिकारियों ने अपने-अपने सम्बन्धित क्षेत्रों में दौरा किया तथा दल को प्रगति दी।

मीरजापुर, जौनपुर, कानपुर, उन्नाव व बुलन्दशहर में दल की दैनिकी या साप्ताहिक ग्रामीण शाखायें तथा फतेहपुर फैजाबाद, मेरठ, बरेली, रामपुर, शाहजहाँपुर आदि जिलों में नवीन शाखायें खुल गई हैं। इस समय दल की ४० दैनिक तथा ३५ साप्ताहिक शाखायें चल रही हैं जिनमें २००० स्वयं सेवक शारीरिक बौद्धिक आत्मिक तथा सामाजिक उन्नति कार्यों में संलग्न हैं।

आय-व्यय (पूर्वी क्षेत्र)

वार्षिक आय २४३'३८

वार्षिक व्यय ३२८'३८ अर्थात् ८५'०० अधिक व्यय।

देवीप्रसाद आर्य संचालक
प्रान्तीय आर्य वीर दल

आर्य-जगत

निर्वाचन—

—आर्यसमाज खण्डवा

प्रधान—श्री प्रेमनाथ कपूर
उपप्रधान—श्री सेठ करोड़ीमल
मन्त्री—डा० अक्षयकुमार वर्मा
प्रचार मन्त्री—श्री हीरालाल आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री रोशनलाल वर्मा
पुस्तका०—श्री मोतीलाल सोनी
निरीक्षक—श्री कृष्णलाल आर्य

—आर्यसमाज लाडनूं

प्रधान—श्री मदनलाल
उपप्रधान—श्री रामकृष्ण पाठक
मन्त्री—श्री देवमित्र आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री कान्तिप्रसाद रस्तोगी
पुस्तका०—श्री मोतीलाल आर्य
महिला संयुक्त मन्त्रिणी—श्रीमती सावित्री देवी आर्य

—आर्यसमाज अशोकनगर (म०प्र०)

प्रधान—श्री सा० आनन्द शाह
उपप्रधान—श्री परमानन्द श्रीवास्तव
मन्त्री—श्री मूलचन्द आर्य
उपमन्त्री—श्री श्यामकिशोर श्रीवास्तव
कोषाध्यक्ष श्री राधाकृष्ण आर्य
निरीक्षक—श्री भगवतीप्रसाद माथुर
पुस्तका०—श्री विद्याभास्कर वकील

—आर्यसमाज उज्जैननगर (म०प्र०)

प्रधान—श्री मांगीलाल काश्यप
उपप्रधान—श्री अनन्तलाल व्यास
मन्त्री—श्री ओमप्रकाश अग्रवाल
उपमन्त्री—श्री रमेशचन्द्र चौहान
कोषाध्यक्ष—श्री पन्नालाल नागर
पुस्तकाध्यक्ष—श्री रविवर्मा आर्य

—वेद मन्दिर हस्तिनापुर

प्रधान—पं० नेतराम शर्मा
उपप्रधान—पं० पूर्णानन्द शर्मा
" कुमारी विमला स्वामी
मन्त्री—श्री दिग्विजय
कोषाध्यक्ष—श्री विनयकुमार एडवोकेट
संचालक—श्री महन्त डा० स्वामी

—आर्यसमाज लश्कर

प्रधान—श्री डा० महावीरसिंह
उपप्रधान—श्री बाबूलाल गुप्त
" श्री डा० फूलसिंह
मन्त्री—श्री हुकमलाल
कोषाध्यक्ष—श्री प्रेमनारायण
पुस्तकाध्यक्ष—श्री रामावतार

—आर्यसमाज सीहोर भोपाल क्षेत्र (म० प्र०)

प्रधान—श्री शिवदत्त
उपप्रधान—श्री भजनपाल
मन्त्री—श्री छोटेलाल आर्य
उपमन्त्री—श्री चुन्नीलाल
कोषाध्यक्ष—श्री जगन्नाथप्रसाद
पुस्तकाध्यक्ष—श्री मुन्नीलाल

—आ० स० कानकोण (गोवा)

प्रधान—श्री सदानन्द ग. ना. देसाई
उपप्रधान—श्री कृष्णराव देसाई
मन्त्री—श्री आनन्द फल देसाई
कोषाध्यक्ष—सौभाग्यवती कल्पना मांदकर
प्रदेश प्रतिनिधि—श्री ना० मिन्ना गावकर

—आर्यसमाज मुबारकपुर टाण्डा

प्रधान—श्री धमराज वर्मा
उपप्रधान—श्री त्रिलोकीप्रसाद
मन्त्री—श्री बेनीप्रसाद
आय व्यय नि०—श्री शम्भूराम
कोषाध्यक्ष—श्री सूरजलाल
पुस्तका०—श्री श्री राम दत्त

—आर्यसमाज बलरामपुर

प्रधान—श्री हरप्रसाद
उपप्रधान—श्री सुन्दरलाल तथा श्री शिवनारायण आर्य
मन्त्री—श्री रमाकान्त
कोषाध्यक्ष—श्री भगवन्नारायण
पुस्तका०—श्री राजकिशोर

—सहारनपुर जिला उप सभा
प्रधान—श्री हरेन्द्रसिंह
उप प्रधान—सर्वश्री तेजसिंह
,, राजाराम
,, नन्दलाल
,, ओमप्रकाश एवं फूलसिंह
मन्त्री—श्री मोल्हासिंह
कोषाध्यक्ष—श्री हुक्मराम
निरीक्षक—श्री भूलनसिंह

—आर्यसमाज दरियागंज देहली
प्रधान—श्री धर्मपाल
उप प्रधान—श्री मिश्रीलाल
मन्त्री—श्री चमनलाल
कोषाध्यक्ष—श्री किशोरचन्द पाल
पुस्तकाध्यक्ष—श्री ओ३म् प्रकाश
लेखा निरीक्षक—श्री काशीनाथ

अलीगढ़ में सुनियोजित वैदिक धर्म प्रचार

जिला आर्यप्रतिनिधि सभा अलीगढ़ की ओर से इस मास में तहसील कोल में अब तक दयपुरा, अकुर्की, बारोठी, हरदुआगंज, जफरपुर, बरकनपुर, इगलास, मडौली, कजाई, रहसुपुर तथा सहारनपुर में कमश उत्सव सम्पन्न हो चुके हैं जिनमें श्री स्वामी शान्तिस्वरूप वानप्रस्थी, पं० सत्यप्रिय शास्त्री पं० इन्द्रजीत जी शास्त्री तथा महोपदेशक भजनोपदेशक तथा श्री ज्ञानप्रकाश आर्य भाग ले रहे हैं। इसी योजना के अन्तर्गत अभी निम्नलिखित स्थानों पर प्रचार कार्य आयोजित होंगे।

(१) सुखरामपुर सासपुर २६-५-६८
(२) नगला बमन खेड़ी २७-५-६८
(३) नगन खेड़ा २८-५-६८
(४) कनवरगंज २९ से ३१ मई

इन समस्त आयोजनों का श्रेय जिला सभा के कुशल उपाध्यक्ष श्री प० यशपाल शास्त्री एवं मन्त्री श्री कुंवरपालसिंह जी तथा तहसील कार्यकर्ता डा० किशनचन्द बंसाली तथा श्री महेन्द्रपालसिंह जी को है।

आवश्यक सूचना

श्री स्वामी अमृतानन्द जी महाराज जहां कहीं भी हों आर्यसमाज रहमानगंज जिला रामपुर पधारने की अवश्य कृपा करें। यदि असमर्थ हैं तो कृपया पत्र द्वारा उक्त समाज को सूचित कर दें।

—प्रधान आ० स०
रहमानगंज (रामपुर)

श्री विद्यारत्न जी हल्द्वानी का दुःखद निधन

आर्यसमाज हल्द्वानी जि० नैनीताल के प्रधान, रामकृष्ण आश्रम के अध्यक्ष तथा आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के माननीय अन्तरंग सदस्य श्री विद्यारत्न जी का अचानक १० मई ६८ को निधन हो गया, आप उच्चकोटि के सहनशील कर्मठ कार्य कर्ता थे। आपके निधन से आ० स० एवं सभा को भारी क्षति पहुंची है।

परमात्मा दिवंगत आत्मा को सच्ची शांति और इनके परिवार को धैर्य प्रदान करें।

—शिवदयालु, सम्पादक

डा० शर्मा का विदेश गमन

अखिल भारतीय आर्य युवक परिषद के उपाध्यक्ष डा० शिवदेव शर्मा एम. ए. पी. एच डी का अम्बई में १० मई को परिषद तथा आर्यसमाज देहली की ओर से विशेष स्वागत समारोह का आयोजन सम्पन्न हुआ। डा० शर्मा हैम्बर्ग विश्वविद्यालय पश्चिम जर्मनी के विशेष आमंत्रण पर 'वैदिक साहित्य और दर्शन' पर अनुसंधान करने के लिये तथा यूरोप एवं एशिया के अधिकतर देशों में भारतीय संस्कृति के प्रचार हेतु १४ मई को बम्बई से प्रस्थान कर दिया।

आपने अपने वक्तव्य द्वारा बताया कि आज तक दुनिया के सामने भारतीय साहित्य, दर्शन, इतिहास कला और विज्ञान का उचित पक्ष नहीं प्रस्तुत हो सका है। अब समय है जब हम भारतीय संस्कृति के माध्यम से 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' तथा 'वसुधैव कुटुम्बकम्' को आदर्श सही रूप में प्रस्तुत कर सकते हैं। परिषद के महासचिव श्री रामनारायण शास्त्री एम० ए० प्रमोद और बालचन्द जी खोसड़ा आदि सज्जनों ने आपका स्वागत किया।

—महासचिव

शोक समाचार

कायमगंज—आर्यसमाज कायमगंज के भूतपूर्व कोषाध्यक्ष श्री लक्ष्मीनारायण जी के सुपुत्र श्री गोपालराम आर्य का ६७ वर्ष की आयु में गत १० मई को अचानक स्वर्गवास हो गया। आप समाज के एक निस्वार्थ सेवी कार्यकर्त्ता तथा लगनशील प्रचारक थे। हम उनकी सद्गति तथा शांति के लिये ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

बुलन्दशहर—आर्यसमाज के अछूतोद्धारक तथा कर्मठ कार्यकर्ता श्री डा० गंगासहाय जी की धर्म पत्नी श्रीमती गंगादेवी के स्वर्गवास पर आ० स० बुलन्दशहर द्वारा शोक प्रकट किया गया और दिवंगत आत्मा की सद्गति हेतु परमात्मा से प्रार्थना की गई।

विवाह संस्कार

मुंगेर—आर्यसमाज बारी के प्रधान श्री राहुलाल जी के सुपुत्र श्री धर्मेन्द्रलाल का गत १० मई को मुंगेर निवासी श्री राजेन्द्रप्रसाद जी की सुपुत्री कुमारी क्षमा किरन के साथ बिहार राज्य आ० प्र० सभा के महोपदेशक पं० गदाधर जी शर्मा के पौरोहित्य में विवाह संस्कार सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर नगर के गण्य मान्य व्यक्तियों ने उपस्थित होकर वर वधू को आशीर्वाद दिया।

फतेहपुर—गत ७ मई को ग्राम बनपरवा में श्री शिवराम सुपुत्र श्री रामदुलारे निवासी चकमुस्तफापुर और मियांपुर का विवाह संस्कार वैदिक रीति से श्री रामशरण जी आर्य द्वारा सम्पन्न कराया गया।

जमशेदपुर—आ. स. जमशेदपुर के विद्वान पुरोहित श्री प्रेमसुख शास्त्री द्वारा हाल ही में ४ विवाह, ४ गृहप्रवेश, ५ वर्षगांठ, ८ विशेष यज्ञ तथा ७ अन्त्येष्टि कराये गए। इसके अतर्गत आर्यसमाज जमशेदपुर को ३४४ रु० दान स्वरूप प्राप्त हुआ। श्री शास्त्री जी का कार्य वास्तव में अनुकरणीय है।

२६ वां वार्षिकोत्सव समारोह सम्पन्न

आर्यसमाज श्री दयानगर का २६ वां वार्षिक उत्सव दिनांक १०, ११ तथा १२ मई १९६८ को आर्यसमाज मन्दिर में समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर मुख्यतः सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महा मन्त्री एवं संसद सदस्य श्री रामगोपाल जी शालवाले प० श्री ओमप्रकाश जी शास्त्री शास्त्रार्थ महारथी, माता प्रभावती जी काव्यतीर्थ बहिन शकुन्तला जी रामपाल व श्री पं० प्रभुदयाल प्रकाश जी और श्री शम्भुचन्द जी भजनोपदेशक आदि महानुभाव पधारे।

वेद प्रचार

जलालाबाद—आ. स. जलालाबाद (गाजीपुर) की ओर से १९ से २१ अप्रैल तक वेद प्रचार का सुनियोजित कार्यक्रम सम्पन्न कराया गया। इस अवसर पर पं० विश्ववर्धन वेदालंकार तथा श्री ज्ञानप्रकाश जी के कार्यक्रम बड़े सुन्दर रहे इसके अतिरिक्त श्री मदनलाल जी आर्योपदेशक के सारगर्भित प्रवचन हुये।

आर्यकुमार परिषद् के सदस्यों से—नम्र-निवेदन—

आप लोगों को सूचित करते हुये सुसमाचार यह है कि १ जून ६८ को प्रात काल शिरसागंज (मैनपुरी) में आर्यकुमार परिषद् की प्रतिनिधियों पर विचार-विमर्श करने के लिये आवश्यक बैठक बुलाई है जिसमें अधिकारियों तथा सदस्यों और परीक्षा प्रणाली पर निर्णय लेना है।

यह परिषद् आपकी चिर परिचित संस्था है, हम सब की असावधानी से इसमें जो शिथिलता आई है उसे दूर कर कार्य में प्रगति लाने का प्रयत्न करना है। आपसे प्रार्थना है शिरसागंज प्रतिनिधि बनकर पधारें और परिषद् में प्राणवत्ता लाने का प्रयत्न करें।

—नरदेव स्नातक एम० पी०
अध्यक्ष-अखिल भारतीय आर्य कुमार परिषद

अपनी बात

"आर्यसमाज का फोटो सर्टिफिकेट आलम और अभिनन्दन पत्र युग"

★ आचार्य विश्वश्रवाः व्यास एम० ए० वेदाचार्य

वेद प्रधान आर्यसमाज का जन्म वैदिक सिद्धांतों के प्रचार और पाखण्ड खण्डन के लिये हुआ था इन दोनों ही कामों को उच्च कोटि के विद्वान ही कर सकते थे पर आर्यसमाज का नेतृत्व धुरंधर विद्वानों के हाथ में न रहा और विद्वान् धीरे २ इससे खिसकते चले गये और नेतृत्व रह गया उनके हाथों में जिनकी विद्या सम्बन्धी योग्यता न के बराबर है। आर्यसमाज का स्वाध्याय बिलकुल गिर गया। उसका परिणाम यह है कि आर्य समाजी यह जानने में असमर्थ हो गया कि कौन विद्वान् है कौन नहीं। जो अपने नाम के साथ शास्त्री आचार्य आदि लिखना आरम्भ कर दें वह विद्वान माना जाता है चाहे वह संस्कृत अक्षर न जानता हो बहुत से लोगों ने पाकिस्तान की लाहौर यूनिवर्सिटी की झूठी मार्कशीट बना रखी है कि हमारा सार्टीफिकेट खो गया है ऐसा कहते सुन जाते हैं। यह हाल कथित शास्त्री आचार्यों का है।

उधर आर्यसमाज का नेतृत्व इसी बात में रह गया है कि अपना फोटो अखबार में छपवाओ, अभिनन्दन लो और अपना जुलूस निकलवाओ और इसमें इन नाम धारी नेताओं का आदान प्रदान है एक दूसरे के प्रांत में जाता है तो वहां उसका जलूस निकलता है और जब उसके प्रांत में दूसरा जाता है तो वहां उसका जुलूस निकलता है वह उसको पंजाब केसरी लिखता है तो वह उसको कलकत्ता बम्बई हैदराबाद केसरी लिखता है और दोनों केसरी केसरी की खाल ओढ़े हुए हैं। परमात्मा यह अहो रूपम् अहोध्वनि युग कब समाप्त होगा। आर्य जगत् इन चक्करों में सब सिद्धांत और वेद प्रचार भूल गया और जलूसों में फस गया।

आर्यसमाज के उत्सव और सम्मेलन

आर्यसमाज के वार्षिक उत्सवों और सम्मेलनों में राजनैतिक अनार्य नेता बुलाये जाते हैं वे आकर स्वामी दयानन्द महाराज को सार्टीफिकेट देते है कि स्वामी दयानन्द बड़े सुधारक थे आर्य समाजी फूले नहीं समाते कि देखो अमुक नेता ने कितना अच्छा स्वामी दयानन्द के लिये कहा बस इसमें आर्यसमाजी चारों वेदों का प्रचार समझता है। आज आर्यसमाज की वेदी पर आकर शंकराचार्य स्वामी दयानन्द जी को सुधारक का सार्टीफिकेट दे जाते हैं श्री दिनकर जी और राधाकृष्ण जी स्वामी दयानन्द की प्रशंसा कर जाते हैं पर इन सब में से एक भी व्यक्ति अपने फूटे मुंह से यह नहीं कहता कि स्वामी दयानन्द बहुत बड़े विद्वान् थे और उनके बताये वैदिक सिद्धान्त सही हैं। क्योंकि यह शङ्कराचार्य दिनकर और राधाकृष्णन आदि अन्दर-अन्दर समझते हैं कि स्वामी दयानन्द कोई विद्वान् नहीं थे और न ही उनके वैदिक सिद्धांत सही हैं क्योंकि ये लोग अपने अलग सिद्धांतों पर विश्वास रखते हैं और स्वामी जी के बताये सिद्धांतों को कोई नहीं मानता। हमारे आर्य नेता उनको अपने प्लेटफार्म पर बुलाते हैं और इन अवैदिक सिद्धान्तों को मानने वालों की प्रशंसा इस लिये करते हैं जिससे वे इन को अपने प्लेटफार्म पर बुलाकर इनकी प्रशंसा करें और हिन्दूमात्र का वोट इनके लिये सुरक्षित हो जाय और राजनीतिक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करले यही उद्देश्य आर्य नेताओं का है वेद प्रचार सिद्धांत प्रचार किसी को छू तक नहीं गया है। प्रभो ! इस लीला से आर्यसमाज कब बचेगा।

आर्यसमाज में सिद्धांत प्रेमी

अभी आर्यसमाज में कुछ समझदार व्यक्ति शेष हैं वे घुट घट कर रह रहे हैं। पर उनकी चलती नहीं है आर्य समाज के पत्रों के सम्पादक हमारे लेख नहीं छापते हैं और कहते हैं कि इन लेखों से हमारे अधिकारियों पर प्रहार होता है हम नौकर हैं क्या करें। मैं अपने इस लेख द्वारा समस्त सिद्धान्त प्रेमी आर्य जनता से प्रार्थना करता हूं कि वे संगठित हो कर आर्य समाज से वेद में हाथ डाल कर फोटो खिचवाने वालों से अपना जलूस हाथी और ऊंट पर निकलवाने वालों से और अनार्यों को आर्य वेदी पर बुलाकर स्वामी दयानन्द को सर्टीफिकेट दिलवाने वालों से तथा अनार्यों से सम्पर्क बढ़ा कर सिद्धांत प्रचार को दबा कर अपना राजनैतिक क्षेत्र विस्तार करने वाले मिडल फल कल्पित आर्य नेताओं से आर्यसमाज की रक्षा करें मैं जानता हूं कि मैंने पिछले दिनों सही मार्ग निदर्शन करने वाले लेख लिखे है और अब मेरी लेखनी पर आर्य जनो मे प्रतिबन्ध लगेगा और लोग कहेगे कि अब आचार्य विश्वश्रवा जी ने लेख लिखने बन्द कर दिये हैं पर आर्य जनता को यह समझ लेना चाहिये कि मै लेखनी बन्द नही करता हूं पर मेरे लेख आर्य समाज के सब समाचार पत्रों के सम्पादकों के पास जमा रहते है पर वे छापते नहीं और मेरा कोई समाचार पत्र है नहीं। पर आगे आने वाला संसार जान लेगा कि मैंने मार्ग प्रदर्शन ठीक किया पर दूसरी बात है कि लोगों ने साथ नहीं दिया।

★

(पृष्ठ ४ का शेष)

विश्वमत कर रहे हैं और संसार में एक विश्व सरकार की स्थापना का प्रचार कर रहे हैं। आध्यात्मिकता की आड़ में भारत की राजनीति के अखाड़े में भी यह लोग तीव्र गति के साथ प्रवेश करते जा रहे हैं।

आनन्द मार्गियों की राष्ट्र-भक्ति संदिग्ध है ऐसा नहीं कहा जा सकता। भारत सरकार को इन तथा ऐसे सम्प्रदाओं से सावधानी बरतनी चाहिये।

साम्प्रदायिकता क्या है ?

अभी पिछले दिनों लखनऊ में उत्तरप्रदेशीय भारतीय क्रांतिदल की बैठक श्री चौ० चरणसिंह की अध्यक्षता में हुई थी। बैठक मे साम्प्रदायिकता की भर्त्सना की गई और उससे टक्कर लेने का निश्चय किया गया।

सम्प्रदायिकता से टक्कर लेने की बात साम्यवादी, समाजवादी, कांग्रेसी, जनसंघी, आर्यसमाजी आदि सब ही करते हैं। हिन्दू महासभा भी साम्प्रदायिकता से टकराना चाहती है अतः साम्प्रदायिकता का स्पष्ट विश्लेषण होना चाहिये। ठीक जिस प्रकार भारतीय संस्कृति एक गोल मोल शब्द बना दिया गया है और सब धर्म उसके संरक्षण का दावा करते हैं किन्तु भारतीय संस्कृति है क्या इसका स्पष्टीकरण देने को कोई तैयार नहीं। इसी प्रकार यह साम्प्रदायिकता का गोरखधन्धा है।

साम्यवादियों की दृष्टि से भारत में सबसे बड़ा और मजबूत सम्प्रदाय हिन्दु है अतः इसको निर्बल बनाना और छिन्न भिन्न करना उनका ध्येय है। इस ध्येय की पूर्ति के लिये मुसलमानों की कट्टर साम्प्रदायिकता के साथ समझौता करके भी हिन्दुत्व पर प्रहार करते हैं। साम्प्रदायिकता के विनाश के नारे के पीछे वह हिन्दू धर्म संस्कृति को विनष्ट करने की दर पर तुले हुये हैं।

कांग्रेस की दृष्टि में हिन्दुत्व की चर्चा करना हिन्दु हितों या आर्य हिंदु संस्कृति के संरक्षण की बात करना भी साम्प्रदायिकता है। मुसलमान तथा ईसाई साम्प्रदायिकता का चाहे जितना भी नङ्गा नाच नाचे कांग्रेस उसे साम्प्रदायिकता नहीं समझती।

जनसंघ, आर्यसमाज व हिन्दु सभा कांग्रेस की मुस्लिम तुष्टिकरण नीति को साम्प्रदायिकता समझती है। मुसलमान ईसाइयों को विशेष संरक्षण देना और उनकी साम्प्रदायिक हठों की पूर्ति करना कांग्रेस भले ही शुद्ध राष्ट्रीयता समझे किन्तु आर्यसमाज जनसंघ आदि इसे साम्प्रदायिकता समझते है।

अतः यह प्रश्न स्वाभाविक रूप से हमारे सामने आ उपस्थित होता है कि भारतीय क्रांतिदल से साम्प्रदायिकता की परिभाषा स्पष्ट कराई जाय। हम भारतीय क्रांति दल के निर्माताओं और संचालकों से यह अनुरोध करते है कि वह कृपा करके साम्प्रदायिकता की परिभाषा स्पष्ट शब्दों में उपस्थित कर दें। गोल मोल रखने से देश का कोई हित न होगा।

—शिवदयालु

वार्षिक अधिवेशन

बांदा—आर्यसमाज अतर्रा का वार्षिकोत्सव दिनांक २६ से २८ मई तक मनाया जायगा जिसमें क्रान्तिकारी उपदेशक ब्रह्मचारी स्वामी नारायण आर्य, गुरुकुल कांगड़ी के श्री बुद्धदेव जी तथा माता जी आदि के पधारने का कार्यक्रम है।

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल-६०
१० ज्येष्ठ ५ शक १८९० ज्येष्ठ कृ० १४
(दिनांक २६ मई सन् १९६८)

उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

Registered No.L. 60
पता—'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ
टेलीफोन : २५९९३ तार : "आर्यमित्र

भारत सरकार की समस्त धार्मिक जनता को चुनौती

—क्षेमचन्द्र प्रधान, [illegible] छावनी

१०/३/६८ के साप्ताहिक 'सार्वदेशिक' में प्रकाशित श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी संसद सदस्य द्वारा लिखित लेख से ज्ञात हुआ है कि सरकार ने अपने विशेष आदेश व निर्देशन से देश के सभी साबुन निर्माताओं को बाध्य किया है कि वह साबुन बनाने में तेल का प्रयोग न करके अमरीका से आयात की गयी चर्बी का प्रयोग करें। उस चर्बी में गौ वंश की चर्बी सरकार ने स्वीकार कर ली है। मगर सुअर की चर्बी भी होने की सम्भावना बताई है। इससे ज्ञात हुआ कि न जाने कितने दिनों से हम अनजाने ही भारत सरकार की परम कृपा से गो माता की चर्बी से बने साबुन का प्रयोग कर रहे हैं। यदि गाय का मांस अथवा चर्बी प्रयोग करना पाप है जैसा कि हम मानते हैं तो निश्चय ही यह ज्ञात हो जाने पर भी कि साबुनों में गौ की चर्बी प्रयोग की गई है उसको प्रयोग में लाना हमें पापी बनाता है। श्री त्यागी जी ने सरकार से निवेदन किया था और सुझाव दिया था कि सरकार साबुन बनाने वालों को आदेश दे कि वह साबुन पर यह अंकित करें कि इस साबुन में गाय की चर्बी का प्रयोग किया गया है यह मांग श्री त्यागी जी ने लोक सभा में रखी थी मगर सरकार ने इसे इस आधार पर अमान्य कर दिया कि इसकी आवश्यकता यूं नहीं है कि उपभोक्ताओं की ओर से यह मांग नहीं हो रही है। सरकार की राय में अब कोई इस बात को जानता है और सवर्ण हिन्दू मुसलमान सब इसे जानते हुये भी प्रयोग कर रहे हैं। अवश्य ही सरकार ने जनता को धोखा दिया है। उसकी धार्मिक भावना के साथ खिलवाड़ किया है। मगर सरकार अच्छी तरह जानती है कि जनता की भावना तो अब मर चुकी है उसका तो अन्त हो ही चुका है उसकी भावना को ठेस पहुंचाने में उन्हें कोई डर या भय नहीं है। कुछ इने गिने व्यक्ति कुछ लेख लिखेंगे कहीं २ भाषण भी देंगे और बात आई गई हो जायेगी। लगता है हो भी ऐसा ही रहा है। २१/

१२/६७ को सरकार ने लोक सभा में यह बात स्वीकार की है। लाखों हिन्दू (आर्यो) और मुसलमानों को यह बात ज्ञात हो गई है। मगर मैं देखता हूं कहीं से कोई आवाज विरोध में नहीं उठी है। किसी भी भारतीय पत्र दैनिक या साप्ताहिक ने इसका न तो प्रचार किया है न विरोध किया है न जनता का पथ प्रदर्शन ही किया है। हम अपने ईमान को बचाने के लिये सरकार का ही दरवाजा खटखटाये और वह न सुने तिस पर भी हम ईमान खोते रहे पाप कमाते रहें तो इससे क्या हम पाप से बच आवेंगे? भारत की समस्त धार्मिक जनता को यह चुनौती है। यदि वास्तव में भारत में हृदय से सच्चे गो भक्त हैं तो क्या वह एक क्षण को भी यह रहस्य ज्ञात जाने पर ऐसे अपवित्र साबुन का प्रयोग कर सकेंगे? उन्हें साहस करके ऐसे साबुन का प्रयोग छोड़ना पड़ेगा। और दूसरों को भी इसकी जानकारी देकर पाप से उन्हें भी बचाने का प्रयत्न करना पड़ेगा। केवल इतने से ही काम न चलेगा। साबुन हमारे नित्य-प्रति के प्रयोग की आवश्यक वस्तु बन गई है उसके बिना काम भी हमारा नहीं चल सकेगा। बच्चों, महिलाओं पुरुषों के स्नान, सिर धोने आदि में अब उसका प्रयोग सर्वमान्य है इससे छुटकारा पाना सरल नहीं है। वस्त्रों के धोने में भी अब इसी का प्रयोग हो रहा है। इसके बिना वस्त्रों को धुलाई असम्भव ही है। हजामत बनाने व बनवाने में भी इसके बिना कार्य नहीं चल सकता। इस प्रकार इसमें गाय की चर्बी होते हुये भी हम में से कुछ इने गिने दृढ़ संकल्प वाले व्यक्तियों को छोड़कर उसे पाप समझते हुये भी इससे बच पाने का कोई उपाय न पाने की सूरत इसका प्रयोग करने के लिए बाध्य होते ही रहेंगे। ऐसी सूरत में देश के धार्मिक वर्गों एवं धार्मिक नेताओं, विद्वानों महात्माओं का कर्तव्य है कि वह इस महान् पाप से जो धार्मिक प्रवृत्ति के लोग बचना चाहें उनका पथ प्रदर्शन करें। हिन्दू (आर्य) समाज में बड़े २ पूंजीपति धार्मिक प्रवृत्ति के हैं वह इस समय धार्मिक जनता को पाप के गहरे गर्त से बचाने के लिये ऐसे साबुन या दूसरी वस्तु बना सकते हैं जिसमें चर्बी का प्रयोग न हो। फिर कैसे और किस २ चीज से धोया जावे कि साबुन से छुटकारा मिल जावे। हाथ तो मिट्टी से मले जा सकते हैं मगर बड़े शहरों में मिट्टी भी तो उपलब्ध नहीं होती। नहाने के लिये सस्ती और बिना झंझट की क्या वस्तु प्रयोग की जावे? नित्य-प्रति के कपड़े कैसे स्वच्छ किये जावें और कम्बल दाढ़ी नित्यप्रति कैसे छीली जावे। दाढ़ी रखा लेने की सलाह तो देना सरल है मगर उसका रखा लेना कठिन ही नहीं असम्भव भी है। सरकार से कोई आशा करना बिलकुल व्यर्थ है। हाँ अगर इसे हमारे मुसलमान भाई कुछ भी जोश दिखा देंगे तो अवश्य ही सुअर की चर्बी साबुन में प्रयोग करने वाले कारखाने वालों को सरकार बाध्य कर देगी कि वह अपने साबुनों पर यह बात अंकित कर दें ताकि मुसलमानों की धार्मिक भावनाओं को ठेस न पहुंचने पावे। मगर हिन्दू (आर्य) की धार्मिक भावना का कोई मूल्य हमारी धर्म निरपेक्ष सरकार की निगाह में नहीं है। समय है हिन्दू (आर्य) नेता विद्वान और पूंजीपति इस समस्या का समाधान निकाल कर धार्मिक जनता की धार्मिक भावनाओं की रक्षा करेंगे और इसी पथ प्रदर्शन भी। वास्तव में भारत सरकार की यह चुनौती पूरी धार्मिक हिन्दू (आर्य) जनता के लिये है। देखें किसको विजय होती है। हिन्दू (आर्य) राजनैतिक नेताओं को कितना पुकार कर न तो सरकार ध्यान देती है और न उसका ध्यान करती है उनसे, उसे कोई डर नहीं है। उन्हें तो वह सम्प्रदायवादी, अकियानूसी आदि उपाधियों से विभूषित कर हंसी उड़ाकर रास्ता देखा देती ही आई है।

आज आवश्यकता है कि हिन्दू (आर्य) जो गोभक्त हैं और गो की चर्बी से बने साबुन का प्रयोग करना नहीं चाहते उनको सच्चा पथ प्रदर्शन करने वाले नेताओं की जो यह बता सकें वह इससे कैसे बचे रह सकते हैं और अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये वह क्या करें? धार्मिक प्रकृति के पूंजीपति क्या अपने कारखानों में ऐसा साबुन नहीं बना सकते जिसमें गाय की ही नहीं कोई भी चर्बी काम में न लायी गई हो। मैं समझता हूं ऐसी कोई पाबन्दी तो लगा नहीं सकती, हाँ वैज्ञानिकों को यह सोचना व खोजना पड़ेगा और ऐसा पदार्थ निकालना पड़ेगा कि उनका चर्बी रहित साबुन चर्बी वाले साबुन का मुकाबला सब तरह से कर सके। आज आवश्यकता है इस चुनौती को स्वीकार करने की। क्या धार्मिक प्रकृति के हिन्दू (आर्य) विद्वान, विशेषज्ञ, पूंजीपति एवं धन इसमें अपना २ योगदान करके धार्मिक जनता की भावनाओं की रक्षा करेंगे।

भारत सरकार ने अपने विशेष आदेश द्वारा साबुन में तेल के प्रयोग पर प्रतिबन्ध लगा दिया है और अमेरिका से आयात की जाने वाली चर्बी का प्रयोग करने का आदेश दिया है। इस चर्बी में गाय की चर्बी मिली हुई है यह सरकार ने स्वीकार कर लिया है। हमारी मांग है कि साबुनों पर गोचर्बी का लेबिल तुरन्त लगवाने की सरकार व्यवस्था करे। लेख पढ़कर व्यापक आन्दोलन किया जाय — सं०

उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिये प्रधानमंत्री आर्य मार्तण्ड प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से मुद्रित तथा सभा द्वारा प्रकाशित एवं प्रेषित।

लखनऊ—रविवार ज्येष्ठ १२ शक १८९०, ज्येष्ठ शु० ८ वि० सं० २०२५, दिनांक २ जून १९६८ ई०

वेदामृत

ओ३म् अग्नि ... [illegible] ... देवेषु नो दधत् ॥ १५॥

भावार्थ— [illegible]

विषय-सूची

[illegible]

माननीय सभा मन्त्री

श्री पं. सच्चिदानन्द जी शास्त्री
को विभिन्न स्थानों से
१६००) रु० भेंट

आर्यसमाज टांडा तथा प्रतापगढ़ की समाजों द्वारा अनुकरणीय दान

★

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के सभा मन्त्री विद्या भास्कर श्री पं० सच्चिदानन्द जी शास्त्री एम० ए० ने इस वर्ष प्रान्त के अनेक स्थानों पर पहुंचकर सभा के लिए लगभग सात हजार रुपया प्राप्त किया। इधर वर्ष के अन्तिम चरण में भी निम्नांकित महानुभावों ने सभा मन्त्री जी को धन भेंट कर सभा को अपना स्तुत्य सहयोग प्रदान किया है।

१—श्री बा० विश्वम्भरलाल जी टाण्डा (फैजाबाद)	५००)
२—श्री बा० शिवप्रसाद जी प्रतापगढ़	४००)
३—श्री मन्त्री आर्यसमाज प्रतापगढ़	२००)
४—स्व० पं० शिवरक्षणलाल जी की स्मृति में उनकी धर्मपत्नी जी द्वारा	५००)

हम आशा करते हैं कि भविष्य में भी आर्यजन सभा को अपना इसी प्रकार सहयोग देकर आर्थिक स्थिति में सुदृढ़ बनाते रहेंगे।

वार्षिक ८) | छमाही ५) | विदेश में १ पौ०
सम्पादक
सच्चिदानन्द शास्त्री एम० ए० सभा मन्त्री
पं० शिवदयालु
उमेशचन्द्र स्नातक एम० ए०
वर्ष ७० | अङ्क १७ | एक प्रति १० पै०

विश्व शान्तिका प्रधान उपाय वाणी-वशीकरण

पं० भगवानदेव शर्मा
टंकारा

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। (यजु० २६।२)

वेद के इस मन्त्र में कहा है कि—"कल्याणकारी वाणी बोलनी चाहिये।" बहुत से लोग एक विशेष समुदाय के साथ ही मधुरता का व्यवहार करते हैं। परन्तु वेद भगवान् घोषित करते हैं कि सब के साथ मीठी कल्याणकारी वाणी बोलनी चाहिये। सृष्टि रचना से लेकर आज तक जितने भी महापुरुष ऋषि-मुनि हुये हैं, उन्होंने पुकार-पुकारकर यही कहा है कि—हे संसार के लोगो ! यदि तुम लोग सुख और शान्ति चाहते हो तो वाणी में संयम और मिठास लाओ। वेद में एक स्थान पर कहा है-

मधुमती स्थ मधुमतीं वाचमुदेयम्
(अथर्व० १६-२-२)

हे प्रजाओ ! तुम मधुयुक्त होओ, मैं मधुर वाणी बोलूं। अर्थात् जो चाहता है कि लोग उसके साथ मीठा व्यवहार करें, उसे दूसरों के साथ मीठा व्यवहार करना चाहिये। परमात्मा ने उपदेश किया है सृष्टि के सारे पदार्थ मधुरता का व्यवहार कर रहे हैं, तू भी मधुरता का व्यवहार कर।

देखिये कितने मधुमान्-मधुर मन्त्र हैं—

मधुवाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः
(ऋ० १।९०।६)

अर्थात् सृष्टि नियम की अनुकूलता चलने वाले के लिये वायु मिठास लाती है, नदियां मिठास बहाती हैं, औषधियां हमारे लिये मीठी हैं।

मधुनक्तमुतोषसो मधुमत् पार्थिवं रजः।
मधुद्यौरस्तु नः पिता ॥
(ऋ० १।९०।७)

अर्थात्-रातें मीठी हैं प्रभात मीठे हैं, पृथिवी की धूलि का पृथिवी लोक भी मीठा है, पिता द्यौ भी हमारे लिये मधुर हो।

मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमान्
अस्तु सूर्यः।
माध्वीर्गावो भवन्तु नः।
(ऋ० १।९०।८)

अर्थात्-वनस्पति हमारे लिये मधुमान्-मीठी हैं, सूर्य भी हमारे लिये मधुमान् हो। हमारी गौएं माध्वी मिठास वाली हों।

यह सब मिठास ऋतानुसार के लिए है। वेद कहते हैं-सरल सीधे सृष्टि नियमानुकूल को।

प्रकृत मन्त्र में वाणी को मधुमती के साथ 'सुमेधा' भी कहा है। मीठा बोलो किन्तु बुद्धि के साथ बोलो, बुद्धि रहित मधुर भाषा किस काम की। मधुर वचन को बुद्धियुक्त करने का प्रयोजन है—यदि वक्ता में बुद्धि हो तो वह अप्रिय सत्य को भी प्रिय बना लेगा।

स्मृतिकार मनु ने कहा है—

सत्यं ब्रूयात्प्रियं ब्रूयान्न
ब्रूयात्सत्यमप्रियम्।

अर्थात्—सच बोलो, मीठा बोलो, किन्तु अप्रिय सत्य न बोलो। अप्रिय सत्य कहने के लिये भी स्मृतिकार रोकते हैं। कारण वह वाणी नहीं, जो अन्यों को अप्रिय लगे। वाणी से ही मनुष्य को स्वर्ग की प्राप्ति हो सकती है। वाणी से ही वह नरक का अधिकारी होता है। जिसने वाणी की उपासना नहीं की, वह चाहे कितना भी प्रयत्न करे, परन्तु वह साधारण मनुष्य ही रहता है और दुःखी जीवन व्यतीत करता है। कारण यह है कि वह न कहने योग्य बातें कह जाता है। इसीलिये तो कवि ने कहा है—

ऐसी बानी बोलिये,
मनका आपा खोय।
औरन को शीतल करे,
आपहि शीतल होय ॥

मधुमती वाणी और सत्य मानव को देवता बना देता है। संयम रहित वाणी अनर्थकारिणी होती है। ऐसी वाणी के कारण अनेक वंश, जातियां और देशों का सर्वनाश होता रहता है और होता रहेगा। तलवार का घाव तो भर जाता है, परन्तु वाणी का घाव नहीं भरता। वाणी के घाव ने ही महाभारत का युद्ध कराया। वह भी वाणी ही थी जो मन्थरा ने कैकई के कान में फूकी थी। शूर्पणखा की वाणी के कारण ही राम-रावण युद्ध हुआ। कड़वी और असत्य वाणी ने हमें बहुत सी हानि पहुंचाई है। अब भी संसार में होने वाले ८० प्रतिशत पारिवारिक, जाति और राजनीतिक झगड़े, मुकद्दमे आदि केवल हमारी संयम रहित वाणी के कारण हैं। कितने शोक और दुःख की बात है कि हम यह भी मालूम नहीं कि कब कहां क्या बोलना चाहिये।

आज कल के विद्यार्थी बी० ए० और एम० ए० तो हो जाते हैं लेकिन उन्हें वाणी का प्रयोग करना ही नहीं आता। जब ऐसे डिग्री प्राप्त पढ़े लिखे लोगों के मुख से खरब और बेतुके से शब्द सुनने में आते हैं तब बड़ा दुःख होता है। ऐसे संयम रहित वाणी बोलने वालों को नीचे के दोहे पर खास विचार करना चाहिये। निम्न दोहे में कवि ने इतनी अच्छी लोकप्रिय बात लिखी है—

मीठी बानी बोलिये,
सुख उपजत चहुं ओर।
बसीकरन यह मन्त्र है,
तज दे बचन कठोर ॥

संसार के सभ्य लोगो ! यदि आप संसार में से अशान्ति को दूर करके सुख और शान्ति लाना चाहते हैं तो वाणी के संयम पर ध्यान दें। यही एक प्रधान उपाय है, जिससे विश्व में शान्ति हो सकती है।

★

श्री जगजीवनराम को खुली चुनौती

★

प्राचीन आर्य लोग गो-मांस खाते थे यह एक भारी लाञ्छन है जो हमारे पूर्वजों पर पाश्चात्य इतिहासकारों ने लगाया है अंग्रेजी फ्रांसीसी-पुर्तगाली दासता के युग में दास मनोवृत्ति के कारण ही विदेशियों के कथन पर विश्वास किया जिसका परिणाम यह निकला कि भारत के अंग्रेजी पढ़े लिखे अनेक विद्वान इस भारोप को सही मान बैठे। उन्हीं में से हमारे श्री जगजीवनराम जी भी एक हैं।

श्री जगजीवनराम का यह कहना कि 'यह सरकार का व मेरा मत नहीं अपितु अनेक भारतीय विद्वानों व नेताओं का मत है' एक सफेद झूठ है और दूसरों की आड़ में हृदय की कालिमा बखेरना है। जगजीवनराम जी ने स्पष्ट क्यों नहीं कहा कि कुछ अंग्रेजी सभ्यता के गुलाम और पाश्चात्य विद्वानों के मानस पुत्रों का ऐसा मत है।

मैं समझता हूं कि श्री जगजीवनराम जी का भी अपना निजी मत यही है केवल अन्तर इतना है कि उनको स्पष्ट कहने की हिम्मत नहीं है। मैं तो कहता हूं कि भारत में करोड़ों रुपया व्यय करके विदेशों में चालित बूचड़ खाने चल रहे हैं यही भारत सरकार का वह असली मत है। गो-वध, मछली, मांस, अण्डों आदि का व्यापार करके संसार भर के सामने प्राचीन संस्कृति को नीचा दिखाने वाली भारत सरकार का निश्चय यही अनुकूल मत है।

प्रत्येक आर्यसमाज को मौन त्याग कर इस दिशा में अपना रोष व्यक्त करना चाहिये और जब तक जगजीवनराम अपने इस अनुत्तरदायित्वपूर्ण एवं विवेक शून्य कथन पर पश्चात्ताप न करें आन्दोलन बराबर करते रहना चाहिये।

—शिवदयालु
सम्पादक

आर्यसमाज को बदनाम करने वाले कौन ?

आर्योदय के १९ मई १९६८ के अङ्क में एक लेख दिया था। जिसका शीर्षक था आर्यसमाज का भविष्य यह प्रश्न उठता है कि यदि आर्यसमाज का भविष्य इतना उज्ज्वल है तो इतनी शिकायतें क्यों की जाती हैं ? आर्यसमाज को बदनाम करने वाले प्रथम तो वो लोग हैं जो स्वयम् कुछ नहीं करते न करना चाहते हैं न उनकी कोई स्कीम है वो काम करने वालों की त्रुटियों पर विशेष आंख रखते हैं। आर्यसमाज की भिन्न २ संस्थाओं द्वारा और आर्यसमाज के भिन्न २ व्यक्तियों द्वारा कहीं सामान्य तथा कहीं विशेष रूप से जो काम हो रहा है उन सब का [illegible] कठिन है। हर आर्यसमाजी अपनी शक्ति अनुसार कुछ न कुछ सुधार करना चाहता चाहता। सुधार करने के बहुत से तरीके हैं। हर सुधारक अपनी रुचि के अनुसार कार्य प्रणाली को भी चुनता है कुछ मतभेद भी होता है जो लोग कुछ नहीं करते और केवल दूसरों की आलोचना करते हैं वो यदि स्वयं काम करने लगें तो उनको मार्गों की कठिनाइयां भी उनको मालूम हो जायं। कुछ ऐसे लोग हैं जिन्होंने संस्थायें खोल रक्खी हैं। जिन संस्थाओं के क्षेत्र बहुत दूर २ हैं उनमें कोई मुठभेड़ नहीं होती जैसे यदि कोई मनीताल में कोई आश्रम खोले और दूसरा केरल में तो दोनों एक दूसरे से इतनी दूर हैं कि असद भावना की सम्भावना नहीं है। परन्तु जहां संस्थायें एक दूसरे के निकट होती है वहां स्पर्धा और वैमनस्य और आलोचना के लिये भी अवसर मिल ही जाता है। आर्यसमाज के प्रथम काल में आर्यसमाज की कई पार्टियां आपस में लड़ती रहीं क्योंकि उनके काम क्षेत्र निकटस्थ थे परन्तु ये भावना तो अब बहुत कम हो गई पार्टी की भावना भी कम हो गई। गत शताब्दी से पचास के बहुत से आर्य कार्यकर्ता विदेश गये वहां उन्होंने प्रचार किया परन्तु भारतवर्ष में बनी हुई क्षुद्र भावनाओं को अपने साथ ले गये अफ्रीका आदि देशों में कालेज पार्टी और गुरुकुल पार्टी अलग २ रहे। लड़ते भी रहे झगड़ते भी रहे उन्होंने ये नहीं सोचा कि पार्टी बन्दी तो भारत की चीज थी विदेशी उसको नहीं समझ सकते। परन्तु अब वह बात नहीं रह गई।

आर्यसमाज का कार्य क्षेत्र बहुत बड़ा हो गया है। जहाँ जैसी आवश्यकता हो वहां उसी तरह की तब्दीली करनी पड़ती। ये केवल आर्यसमाजियों में ही नहीं अन्य लोग भी इस भावना से प्रेरित हो सकते हैं। मैं जब दक्षिण अफ्रीका के ईस्ट लंदन नामक शहर में ठहराया था तो जिनके घर मैं ठहरा था वे थे चमार उनकी जूतों की बड़ी दूकान थी। उनका नाम था Harison and Co उनका बुड्ढा बाप हरिया एक चमार था। जो जूते गाँठा करता था वो अब भी जीवित था उसने मेरे जूते गांठ दिये थे। परन्तु उसका परिवार सम्पन्न हो गया था उनकी एक मेवों की भी दुकान थी अच्छा बंगला था रेडियो था मोटरकार था। और बड़े २ आदमी मिलने आते थे वहां से एक पेपर निकलता था Despatch, मेरा उसमें वक्तव्य छपा था जो सम्पादक जी मेरे घर आकर ले गए थे। ईस्ट लंदन में जो और भारतवासी थे। [illegible] मुसलमान थे और दूसरे ईसाई। [illegible] मुझसे स्नेह रखते थे क्योंकि मैं भारतीय था।

इस प्रकार हम यह देखते हैं कि जिन लोगों के विचार शुद्ध है वे आर्यसमाज के लोगों को भी मतभेद होते हुये भी शुद्ध भाव से देखते हैं परन्तु जिनको कुछ करना नहीं है और केवल छिद्र अन्वेषण करना है वो आर्यसमाज को [illegible] बदनाम करते हैं अगर आप सुधार का काम आरम्भ कर दें तो आप के समक्ष भी वो कठिनाइयां आ जायेंगी जो दूसरों के समक्ष हैं और [illegible] उनके

★ गङ्गाप्रसाद उपाध्याय, प्रयाग

[illegible] करना शुरू कर दो क्योंकि [illegible] है। एक सुधारक [illegible] सुधारक को कठिनाइयों को समझता है जो स्वयं कुछ नहीं करना चाहता वह दूसरों की बुराई करने के सिवा कर ही क्या सकता है।

कभी २ मैंने देखा है कि लोग व्यर्थ का आक्षेप कर देते हैं। आर्यसमाज चौक इलाहाबाद में कई वर्ष पहले एक डिप्टी साहब आया करते थे जो अपने भ्रमण काल में हैट लगाकर दफ्तर को जाया करते होंगे वही हैट पहन कर वो समाज में भी आ जाया करते थे लोग उन पर आक्षेप करते थे। ये बात ठीक नहीं थी। इसी प्रकार न्यू दिल्ली में मैंने एक युवक से पूछा कि क्या आर्यसमाज जाया करते हो। उसका परिवार एक प्रसिद्ध आर्य परिवार था उसके पिता जी की तो अल्प आयु में ही मृत्यु हो चुकी थी परन्तु उनके बाबा जी प्रसिद्ध आर्यसमाजी थे और ये लड़के जी भी अपने बाबा जी के साथ आया करते थे। इन्होंने उत्तर दिया कि मैंने समाज में आना छोड़ दिया है। उत्तर इस प्रकार से दिया गया कि मुझे आश्चर्य हुआ जैसे कोई विशेष घटना हो गई। उन्होंने कहा कि मेरी स्त्री लिपस्टिक का प्रयोग करती है और विवाह हाल उसकी हंसी उड़ाते हैं। मेरी समझ में सादा रहना तो अच्छा है परन्तु यदि कोई विशेष शौक रक्खे तो उसकी अवहेलना करना अच्छा नहीं। कुछ लोग सरल स्वभाव के होते हैं और कुछ की बनावट पसन्द होती है। रुचियां तो भिन्न २ होती हैं। कई संन्यासियों को देखा है कि वे कपड़े तो गेरुए पहनते हैं परन्तु उनका सूत और उसका रङ्ग विशेष होता है। मनु ने इस विषय में ठीक लिखा है।

न लिङ्गम् धर्म कारणम्।

अर्थात्—बाहरी चिह्न धर्म का कारण नहीं होता।

★

राष्ट्रभाषा हिन्दी

★

जिस भाषा को लोकसभा ने राजसिंहासन [illegible] बिठलाया
राष्ट्रभाषा, का गौरवमय पद सबसे [illegible] दिलवाया
तो फिर क्यों वे गिरा रहे है हिन्दी के उस गौरव को
अंग्रेजी को सर पर मढ़कर भुला रहे [illegible] को

ओ ! मेरा अनुराग जगेगा प्यार जगेगा [illegible] से
शासक को आवाज लगेगा हिन्दी को नव आशा से
अरे ! सखी भाषा अंग्रेजी कभी न हिन्दी की होगी
और न सरकारी भाषा का गौरव अंग्रेजी लेगी

यदि ऐसा करने को आतुर जो शासक हो जायेगा
हिन्दी का अनुराग उमड़कर फिर उससे टकरायेगा
फिर कवि की वाणी से यह उद्बोधन गान भरा होगा
अंग्रेजी, को दूर हटाओ यह उद्गार भरा होगा

'दिनकर, का अभिमान जगेगा हिन्दी पर बलिदान चढ़ेगा
'रघुवीर, का आह जगेगा हिन्दी पर [illegible] त्याग बढ़ेगा
देशरत्न राजेन्द्र, हमारा क्या हमको धिक्कारेगा
अरे ! स्वर्ग से कहा 'निराला, क्या हम पर सिसकारेगा

राघव माधव की आत्मा क्या [illegible] जायेगा
प्रेमचन्द्र, की सेवा का क्या बदन उठाया जायेगा
भाव सुभद्रा, की 'झांसी की रानी, क्या शरमायेगी
'रामनरेश' त्रिपाठी की क्या स्वप्न सुमन [illegible] जायेगी

श्याम नारायण' की हल्दी का घाटा क्या [illegible] जायेगा
'बच्चन' की मधुशाला का क्या भाव यहां मिट जायेगा
क्या 'दिनकर' का उच्च हिमालय नीचा हो [illegible] जायेगा
और 'पन्त' की भावुकता में क्या पतझड़ आ जायेगा

माखनलाल' द्विवेदी का क्या राष्ट्रगान [illegible] जायेगा
क्या हिन्दी का उत्साह और वह स्थान यहां मिट जायेगा
हम 'प्रसाद' के मृदुल भाव को आज नहीं भूलने देंगे
तुलसी मीरा के कण्ठों को आज नहीं थकने देंगे

—राधेमोहन गुप्त, जौनपुर

२८ मई को जिनकी जयन्ती मनाई गई—

क्रांतिकारी साहित्यकार स्व. वीर सावरकर

[स्वातन्त्र्य वीर सावरकर महान् क्रान्तिकारी, राष्ट्र निर्माता युगपुरुष थे। हिन्दुत्व को साम्प्रदायिकता में संकुचित क्षेत्र से निकाल विशुद्ध राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करना आपकी महती देन रही है। आप हिन्दी के महान् समर्थक एवं उच्चकोटि के साहित्यकार भी थे। प्रस्तुत लेख में उनके इसी रूप पर प्रकाश डाला गया है। —सम्पादक]

स्वाधीनता संग्राम के अन्यतम योद्धा एवं महान् क्रांतिकारी नेता स्वातन्त्र्य वीर सावरकर का गत वर्ष २६ फरवरी को ८३ वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। और सरकार को स्वर्गवास पर शोक प्रकट करते हुए तत्कालीन राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन ने कहा था—वीर सावरकर ने भारत के स्वाधीनता संग्राम में जो योग दिया वह युगों तक युवकों को देश भक्ति की प्रेरणा देता रहेगा। उनके निधन से देश की महान् क्षति हुई है।

वस्तुतः स्वाधीनता संग्राम के इस योद्धा सेनानी के निधन से न केवल भारत अपितु विश्व में भी शोक की लहर दौड़ गई। वीर सावरकर ने जिस समय अंग्रेजी साम्राज्य के गढ़ इंगलैण्ड में रहकर भारत की स्वाधीनता के लिए देखना तथा सशस्त्र क्रान्ति का आयोजन बनाया था, उसी समय समस्त विश्व का ध्यान उनकी ओर आकर्षित हो गया था। उनकी सुप्रसिद्ध पुस्तक १८५७ का स्वातन्त्र्य समर से उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हुई।

साहित्यकार सावरकर

वीर सावरकर ने जहां अनेक वर्षों तक अण्डमान [कालापानी] की काल कोठरी में नजरबन्द रहकर कोल्हू चलाया, कूटी, एवं अनेक अमानुषिक यातनायें सहन करके स्वाधीनता संग्राम में भाग लिया वहां उन्होंने लेखनी के माध्यम से भी सोये हुये भारतीय युवकों की प्रगाढ़ निद्रा को भंग करके उन्हें झकझोर कर खड़ा कर दिया। श्री सावरकर ने नाटक, उपन्यास, काव्य महाकाव्य, निबन्ध, साहित्य के प्राय: प्रत्येक क्षेत्र पर सफल लेखनी उठाई। उन्होंने लगभग चालीस पुस्तकों की रचना की।

लंदन में वीर सावरकर ने १८५७ का स्वातन्त्र्य समर लिखा, किन्तु वह प्रकाशित होने से पूर्व ही जब्त कर लिया गया। उन्होंने 'सिखों का स्फूर्तिदायक इतिहास' लिखा, किन्तु वह भी जब्त कर लिया गया। बाद में '१८५७ का स्वातन्त्र्य समर' भारत के क्रांतिकारियों ने गुप्त रूप से प्रकाशित कराया।

अण्डमान में लेखन

वीर सावरकर को देश-भक्ति के अपराध में दो आजन्म कारावासों का दण्ड देकर अण्डमान (कालापानी) भेज दिया गया। अण्डमान की कालकोठरी में भी श्री सावरकर साहित्य सृजन के कार्य में संलग्न रहे। उन्होंने वहां अण्डमान में ही १४०० पदों पर आधारित अपने 'कमला' नामक महाकाव्य की रचना की। अण्डमान में ही 'गोमान्तक' एवं 'विरहोच्छ्वास' काव्य लिखे। 'गोमान्तक' काव्य गोआ की ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि पर लिखा, जो सन् १९२४ में प्रकाशित हुआ।

वीर सावरकर ने 'मांझी जन्मठेप' [आत्म चरित] एवं 'अण्डमान की गूंज' में अण्डमान कारावास की कहानी रोचक ढंग से लिखी। 'मांझी जन्मठेप' ब्रिटिश सरकार ने प्रकाशित होते ही जब्त कर ली। किन्तु बाद में वह पुनः प्रकाशित की गई।

वीर सावरकर ने उपन्यास एवं नाटकों की रचना भी की। 'कालेपानी' नामक मराठी उपन्यास का अनुवाद हिन्दी में 'कालापानी' नाम से प्रकाशित हुआ। अण्डमान के जीवन पर आधारित इस रोचक उपन्यास ने अच्छी ख्याति प्राप्त की। मालाबार के मोपला विद्रोह पर आधारित उन्होंने 'मालाकावस्थायें' नामक उपन्यास की रचना की।

वीर सावरकर ने ऐतिहासिक आधार पर अनेक नाटक भी लिखे। 'सन्यस्त खड्ग' भगवान बुद्ध के जीवन पर आधारित उनका सफल व लोकप्रिय नाटक है। 'उत्तर क्रिया' मराठों द्वारा दिल्ली पर किये गये अधिकार पर आधारित नाटक लिखा। 'तेजस्वी तारे' में उन्होंने क्रान्तिकारियों पर रोमांचकारी गाथायें दी हैं।

वीर सावरकर इतिहास के प्रकाण्ड विद्वानों में से थे। उन्होंने जहां '१८५७ स्वातन्त्र्य समर' व 'सिखों का इतिहास' लिखा वहां नेपाल का इतिहास भी लिखा। 'नेपाल' नामक उनके लिखे ग्रन्थ की नेपाल महाराजा ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की थी।

हिन्दी के प्रबल समर्थक

स्वातन्त्र्य वीर सावरकर मूलतः मराठी लेखक थे किन्तु हिन्दी भाषा के वह प्रबल समर्थक थे। संस्कृतनिष्ठ विशुद्ध हिन्दी के समर्थन में उन्होंने अनेक लेख लिखे। अ० भा० हिन्दू महासभा के अध्यक्ष पद से भाषण देते हुये उन्होंने कहा था—"हिन्दी भाषा भारत की राष्ट्र भाषा के पद पर प्रतिष्ठित की जानी चाहिये और जब तक हिन्दी भाषा को यह सम्मान न मिलेगा देश की प्रगति असम्भव है। हिन्दी भाषा में जो विदेशी शब्द घुसेड़ दिये गये हैं, उन्हें निकालकर हमें भाषा शुद्धि की ओर ध्यान देना चाहिये। संस्कृतनिष्ठ हिन्दी ही हमारी मातृभाषा, राष्ट्रभाषा है।"

श्री सावरकर ने भाषा शुद्धि पर पुस्तक भी लिखी। उन्होंने भारतीय भाषाओं से विदेशी शब्दों को निकाले जाने का आन्दोलन भी चलाया। बहुत कम व्यक्तियों को मालूम है कि वीर सावरकर ने हिन्दी शब्द कोष के लिये हजारों शब्दों का निर्माण किया। उन्होंने ही 'रिपोर्ट' के स्थान पर 'प्रतिवृत्त', 'रिपोर्टर' के लिये प्रतिवेदक, 'शहीद के लिए हुतात्मा, टाइप राइटर के लिये टंक' लेखक 'शहादत के लिये' आत्मबलिदान जैसे शब्दों का निर्माण किया जो आज हिन्दी भाषा में काफी प्रचलित हो रहे हैं।

वीर सावरकर ने महाराष्ट्र प्रान्तीय साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष पद को भी सुशोभित किया था। मराठी के अग्रणी साहित्यकारों में इनकी गणना होती है। प्रसिद्ध मराठी उपन्यासकार एवं मराठी साहित्य सम्मेलन के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री माडखोलकर ने सावरकर साहित्य के सम्बन्ध में लिखा था—

"वीर सावरकर द्वारा अपने यौवन में अण्डमान का वसन एवं अनुभव करने के पश्चात् भी उनकी कविता क्षय विद्रूप न न हुई। उसका तेज और ओज प्रतिपक्षियों के आसुरी आघातों द्वारा भी दुर्दमनीय सिद्ध हुआ। मानों 'वज्र' सिद्ध करने के उपरान्त महर्षि दधीचि की देव दिव्य अस्थियों से विधाता ने सावरकर की प्रतिभा का निर्माण किया।"

अपने अन्तिम दिनों श्री सावरकर ने 'भारतीय इतिहास के छह स्वर्णिम पृष्ठ' पुस्तक में भारत के गौरवमय इतिहास के कुछ पृष्ठों पर प्रकाश डाला। उनकी इस पुस्तक की अनेक विद्वानों ने मुक्तकंठ से प्रशंसा की है। वह अपने जीवन के अन्तिम समय तक साहित्य सृजन में

(शेष पृष्ठ १४ पर)

श्रीमद्दयानन्द

अज्ञान के कुहासे की घनी घनी परतें
जड़ की उपासना के घहराते बादल
धर्म का ह्रास
पाप का विकास
पथभ्रष्ट धरणी
भटकता आकाश
मिलकर जन्म देते हैं
किसी महान व्यक्तित्व को।
अन्यायों की उमस
असमानता की भभिक
पराधीनता की विभायें
मिलकर तरसाती हैं
न्याय की समानता-स्वतन्त्रता की शक्ति लिये
जीवनदायक बादल को।
ज्ञान उदित होता है
अगम विजित होता है
धर्म का विकास
नाश पाप का
स्वर्ग सा बन जाता है धरणी पै।
व्योम बन जाता है
युग को नवीन दिशा स्वयं मिल जाती है
जब दया सिन्धु दयानन्द जन्म पाता है।

— प्रो० हरिशङ्कर आदेश

जगजीवनराम हटाओ आन्दोलन

कानपुर। आर्यसमाज लाजपतनगर कानपुर का यह सम्मेलन श्री जगजीवन राम कृषि तथा खाद्य मन्त्री भारत सरकार के लोक सभा में गोवध काल में गाँधी के गौमांस के खाने के असत्यमय प्रचार की भर्त्सना करता है। आर्य हिन्दुओं की धार्मिक भावनाओं के साथ देश की लोक सभा में खिलवाड़ के लिये जितनी भी निन्दा की जाय उतनी ही कम है। आपने इस प्रकार का दुर्व्यवहार करके करोड़ों हिन्दुओं की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाया है।

अतः यह सभा मन्त्री महोदय से आग्रह करती है कि इस प्रकार के कुत्सित एवं असत्य प्रचार के लिये विशेष रूप से क्षमायाचना करें तथा करोड़ों हिंदुओं की धार्मिक भावनाओं का आदर करें।

श्री जगजीवनराम का मिथ्या प्रचार

श्री जगजीवन राम ने लोक सभा में पिछले दिनों एक बहुत ही दुःखदायक और झूठा वक्तव्य गऊ मांस के विषय में देकर देश के करोड़ों हिन्दुओं की भावनाओं को ठेस पहुंचाई है। यह प्रथम बार नहीं अपितु कई बार तथाकथित धर्म निरपेक्ष राज्य के ठेकेदारों ने हिन्दू धर्म तथा संस्कृति की हंसी करके जनभावनाओं को निरादर किया है। दुःख तो इस बात का है कि इतने सदस्यों के होते हुये केवल कुछ सदस्यों ने ही मन्त्री महोदय के इस मिथ्या प्रचार के लिये उनकी भर्त्सना की है। एक सीधे सादे प्रश्न का उत्तर जो गऊ वंश की रक्षा के हेतु जो समिति बनाई गई है वह कार्य कब तक समाप्त करेगी तथा उस समिति में ऐसी भावनाओं का आदर करने वाले कितने है इसका उत्तर न देकर जानबूझ कर इस प्रकार का भ्रमात्मक व्यवहार देना मन्त्री महोदय के लिये कहाँ तक उचित है। देश और धर्म के हित चिन्तकों को सोचना होगा कि इस प्रकार का खिलवाड़ वह कब तक सहन करते रहेंगे। ऐसा प्रतीत होता है कि गऊरक्षा सम्मेलन स्थगित करवाना तथा एक समिति बनाकर मामले को टालना एक चाल थी क्या समिति का गठन बने रहने का कोई अर्थ बाकी है जबकि मन्त्री महोदय के विचार इस प्रकार के हैं। देश के करोड़ों हिन्दुओं को इस विषय में गम्भीरता से सोचना होगा।

आर्य समाज उन भावनाओं का आदर करते हुये मन्त्री महोदय से आग्रह करेगा कि वह इस प्रकार का प्रचार आगे न करें।

—योगेन्द्र भसीन
मन्त्री-केन्द्रीय आर्यसभा
कानपुर

गुरुकुल की सूचना

गुरुकुल महाविद्यालय सिकन्दराबाद जि० बुलन्दशहर (उ० प्र०) का नवीन सत्र १ जौलाई से प्रारम्भ हो रहा है जिसमें महर्षि दयानन्द की आर्ष पद्धति के अध्यापन के साथ २ अंग्रेजी सहित प्रथमा मध्यमा शास्त्री व वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी के अध्यापन का पूर्ण प्रबन्ध है। प्रवेश चाहने वाले विद्यार्थी कार्यालय से प्रवेश प्राप्त करें। प्रवेश पत्र योग्यता कक्षा ५ उत्तीर्ण होना आवश्यक हैं। विशेष जानकारी के लिए कार्यालय से सम्पर्क करें।

प्रधानाचार्य

श्री दामोदर सातवलेकर जी की महर्षि दयानन्द जी को श्रद्धाञ्जलि

श्री दामोदर सातवलेकर जी ने श्री दत्तात्रेय जी वाल्डे, आचार्य दयानन्द कालेज एवं प्रधान आर्यसमाज अजमेर को पत्र लिखकर महर्षि दयानन्द जी के विषय में लिखा है कि महर्षि दयानन्द जी ने सचमुच सबको वेदों की ओर आकर्षित करके बड़ा भारी कल्याण किया है मानव जाति के कल्याण के लिये वेद हैं और और वेद का अर्थ यौगिक निरुक्त की पद्धति से करना चाहिए यह महर्षि जी ने बताया है। उनके बड़े उपकार हैं। निरुक्त, ब्राह्मण आरण्यकों में वेद मंत्रों के अर्थ जैसे किये हैं वैसे के करने चाहिये इस दृष्टि से महर्षि दयानन्द जी के भारत पर बड़े उपकार हैं। महर्षि दयानन्द जी स्वतन्त्र थे सार्वदेशिक सभा के आर्यसमाज के परिहत उसी मार्ग पर चल रहे हैं।

श्री देवीदास आर्य का सम्मान

कानपुर—नगर की सभी आर्यसमाजों तथा केन्द्रीय आर्य सभा कानपुर की ओर से आर्यसमाज हाल गोविन्दनगर में नगर महापालिका कानपुर के लिये पुनर्निर्वाचित आर्य नेता श्री देवीदास आर्य का विशेष स्वागत समारोह दिनांक २१ मई को किया गया। समारोह की अध्यक्षता डा० दुर्गादास जी ने की। समारोह में सर्व श्री आचार्य विश्वश्रवा, डा० कन्हैयालाल गांधी, मास्टर देसराज कपूर, शिवदयालु, बसीलाल कक्षा, हरनामदास काहली, राजेन्द्रप्रसाद आर्य, योगेन्द्र भसीन, सदानन्द सैलानी, प्रभुदयाल तिवारी श्रीमती बसन्त मित्र, कमला आसवानी, शान्तिदेवी आदि ने श्री देवीदास आर्य की सेवाओं की भूरि-भूरि प्रशंसा की। श्री आर्य ने सबका धन्यवाद किया और आर्यसमाज और जनता की पहले से भी अधिक सेवा करने का आश्वासन दिया।

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा रामपुर का निर्वाचन

दि० १९-५-६८ का जिला उपसभा रामपुर का निर्वाचन प्रधान श्री हरिप्रसाद जी बमोरा के सभापतित्व में स्थान आर्यसमाज रहमतगंज में हुआ।

प्रधान—श्री जयदयालसिंह आर्य
उपप्रधान—श्री रामपूर्ति आर्य
" श्री प० कन्हैयालाल मुमुक्षु
मन्त्री—श्री साहू हरिप्रसाद आर्य
उपमन्त्री—श्री नरसिंह
कोषाध्यक्ष—श्री अतरसिंह
प्रतिनिधि—श्री साहू हरिप्रसाद
श्री अतरसिंह
श्री जयदयालसिंह रोरा
श्री यशोधर तिलक
श्री बद्रीप्रसाद गोयली
श्री चोखेलाल जी

गुरुकुल वृन्दावन समाचार

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन का शिक्षा सत्र समाप्त हो गया और अधिकांश ब्रह्मचारी और अध्यापक ग्रीष्मावकाश के अनध्याय पर बाहर चले गये हैं।

जौलाई मास के प्रारम्भ में नवीन शिक्षा सत्र प्रारम्भ हो जायगा, और उसी समय नवीन बालकों का प्रवेश भी होगा। जो महानुभाव अपने बालकों को गुरुकुल में प्रविष्ट कराना चाहें, उन्हें चाहिये कि गुरुकुल वृन्दावन कार्यालय से प्रवेश नियम व प्रवेश फार्म नि शुल्क मंगा लें और भर कर भेज दें।

—मुख्याधिष्ठाता

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय सिरसागंज
का संक्षिप्त परिचय

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय सिरसागंज आर्ष पाठ विधि अर्थात् अष्टाध्यायी पद्धति से वाराणसेय संस्कृत विश्व विद्यालय की आचार्य पर्यन्त परीक्षा दिलाने वाली एकमात्र प्रमुख आर्यसमाज की संस्था है। जो एकान्त शुद्ध वातावरण में स्थित है। संस्था के पास निजी ट्यूबवेल एवं बिजली पानी का सु-प्रबन्ध है। इसमें पूर्व मध्यमा (इण्टर अंग्रेजी) तक गणित विज्ञान आदि आधुनिक विषयों के अध्यापन का भी सु-प्रबन्ध है। संस्था के आचार्य व मुख्याधिष्ठाता श्री देवेन्द्र जी [वेद स्वामी] के महान त्याग व परिश्रम के कारण इस संस्था ने स्वल्पकाल में आशातीत प्रगति की है। इस संस्था से शिक्षा पाकर कई नैष्ठिक ब्रह्मचारी प्रचार सेवा के कार्यों में संलग्न हैं। इसी संस्था के स्नातक ब्र० विज्ञान मित्र दक्षिण भारत मंसूर मैसूर में वैदिक साहित्य विद्यालय चला रहे हैं। आर्यजन्य उपनिषद आदि तथा वैदिक सिद्धान्तों का कन्नड़ भाषा एवं अंग्रेजी में ट्रैक्ट लिखकर प्रचार कर रहे हैं। तथा दक्षिण भारत के छात्र गुरुकुल में शिक्षा प्राप्ति के लिए भेज रहे हैं। इस गुरुकुल की शाखा कन्या गुरुकुल खोला गया है इस समय ३५ कन्यायें शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। जो मध्यमा शास्त्री आचार्य आदि की परीक्षायें दे रही हैं।

इस समय नवीन सत्र का प्रवेश चल रहा है। अतः बालक बालिकाओं के प्रवेश के इच्छुक सज्जन पत्र-व्यवहार कर नियमावली मगालें। प्रवेश १५ जुलाई तक ही होगा।

आर्यमित्र में

विज्ञापन देकर लाभ उठाइये

अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल

जन्म–ज्येष्ठ शुक्ल ११ सम्वत् १९५४ निर्वाण–१९-१२-१९२७ ई

ब्रिटिश साम्राज्य के समय देश और [illegible] तथा [illegible] के बन्धनों से मुक्त होने की प्रेरणा देने वाले महापुरुषों में से उनसे पहले महर्षि दयानन्द ने अपना पहला कदम उठाया और भारत [illegible] को वास्तविक आजादी देने, जन कल्याण करने तथा जन जागरण को [illegible] करके सामाजिक कुरीतियों को समूल नष्ट कर एक स्वच्छ आजाद स्वतन्त्र भारत का निर्माण करने का सन्देश दिया था।

इस सन्देश को प्राप्त कर भारत में स्वतन्त्रता संग्राम [illegible] नौ-सेना आन्दोलन आदि अन्य आन्दोलन प्रारम्भ हुये इन आन्दोलनों का संचालन पूरे भारत में हुआ था जिसमें हमारा [illegible] शाहजहाँपुर भी था।

हमारे जिले के श्री रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाकउल्ला खां, रोशनसिंह और राजेन्द्र लाहिड़ी चार शहीद प्रदान कर देश की स्वतन्त्रता संग्राम में सक्रिय कार्य किया।

पं० रामप्रसाद बिस्मिल का जन्म ज्येष्ठ शुक्ल ११ सम्वत १९५४ को श्री मुरलीधर के घर पर हुआ था इनकी माता का नाम श्रीमती मूलमती था आपके परिवार में ७ सदस्य थे। आपके प्रत्येक कार्य में आपकी बहन श्रीमती शास्त्रीदेवी का पूर्ण सहयोग रहता था। आपको आर्यसमाज से बड़ा प्रेम था। आपने अशफाक उल्ला खाँ को आर्यसमाज से प्रेम करने की प्रेरणा दी और इसी प्रेरणा को प्राप्त कर अशफाक उल्ला खाँ भी आपके साथ आर्य समाज शाहजहाँपुर में कार्य करते थे।

एक बार आप के पिता जी ने आर्यसमाज छोड़ने को कहा कि या तो तुम घर छोड़ दो या आर्यसमाज छोड़ दो इस पर आपने घर छोड़ दिया परन्तु आर्यसमाज नहीं छोड़ा। और एक बार आप आर्यसमाज के सामने बरगद के पेड़ के सामने जड़ में छुप कर स्वामी अखिलानन्द जी का व्याख्यान सुन रहे थे तो आपके पिता जी को पता लगा कि आप आर्यसमाज में हैं तो वह आप को वहाँ से घर वापस लाये। आपकी आर्यसमाज में घोर निष्ठा और प्रेम का प्रमाण भी [illegible] है कि आप एक कमरे में जो इस समय आर्यसमाज में है विद्याध्ययन करते और अधिक समय वहीं पर अपने साथियों के साथ रहते थे।

आपने काकोरी केस में भाग लिया और [illegible]गंज में डकैती में भाग लिया और आपके साथ आपकी बहन श्रीमती शास्त्रीदेवी भी कार्य किया करती थी वहाँ से आप अपना काम पूरा कर वापस आये।

आपने अपना बलिदान देकर शाहजहाँपुर का नाम स्वर्णाक्षरों में लिख दिया और अपने साथ अन्य क्रान्तिकारियों को अमर किया। आपके साथ अशफाक उल्ला खाँ रोशनसिंह राजेन्द्र लाहिड़ी आदि शहीद हुए जिसका शाहजहाँपुर को गर्व है।

स्वतन्त्रता संग्राम का इतिहास आपके नाम व काम को कभी नहीं भूल सकता। भारतवर्ष का प्रत्येक नागरिक आपकी सेवाओं से परिचित है। और आज आपकी इच्छा "I wish the down fall of the British Empire" पूर्णरूप से साकार हुई और अपना राज्य जनतन्त्र राज्य भारतवर्ष में है। आज आपके सन्देश की "यदि किसी के हृदय में जोश उमंग तथा उत्तेजना पैदा हुई हो तो उन्हें उचित है कि शीघ्र ग्रामों में जाकर कृषकों की दशा सुधारें जहाँ तक हो सके जन समुदाय को शिक्षा दें किसी को घृणा या उपेक्षा की दृष्टि से न देखा जावे परन्तु सबके साथ करुणा सहित प्रेम भाव का बर्ताव किया जावे।" देश को आवश्यकता है।

—महावीर प्रसाद गुप्ता, शाहजहाँपुर

गोला में आर्य नेताओं का समागम

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

चित्र में बैठे श्री प० सच्चिदानन्द जी शास्त्री मंत्री, आर्य प्र० स० उत्तरप्रदेश (बिल्कुल बाईं ओर) तथा (दाईं ओर से दूसरे) श्री लाला रामगोपाल जी शालवाले संसद सदस्य एवं सभा मन्त्री सार्वदेशिक सभा देहली और आर्यसमाज गोला के अन्य अधिकारी एवं सदस्य गण।

गोलागोकर्णनाथ। आर्य समाज गोला (लखीमपुर-खीरी) का वार्षिक उत्सव १९ से २२ अप्रैल तक अभूतपूर्व समारोह सहित सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर विविध सम्मेलनों की बड़ी धूम रही सार्वदेशिक सभा के माननीय मन्त्री श्री लाला रामगोपाल शालवाले संसद सदस्य, श्री [illegible] पुरुषार्थी संसद सदस्य और विद्याभास्कर श्री सच्चिदानन्द शास्त्री मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के इस अवसर पर [illegible] स्थानीय आर्य जनता को बड़ा प्रोत्साहन मिला। इन आर्य नेताओं के प्रवचनों से इस जनपद की जनता में जो जागृति आई है वह स्वच्छ [illegible] श्री [illegible] जी और उनकी मण्डली तथा श्री वेदव्रत शास्त्री के व्याख्यान एवं भजन बड़े ही प्रभावक हुए।

तत्कालीन मुख्यमन्त्री उ० प्र० सरकार तथा कर्मठ आर्यसमाजी श्री चौधरी चरणसिंह जी भी इस उत्सव में सम्मिलित होने के लिए गोला पधारे। आपको सभा श्री रामगोपाल जी शालवाले तथा श्री पुरुषार्थी जी की समाज की ओर से अभिनन्दन-पत्र भेंट किये गये।

इस अभूतपूर्व समारोह को क्रियान्वित करने तथा इसे सफल बनाने में समाज के प्रधान श्री कुन्दनलाल साहनी, मन्त्री श्री निरमलचन्द [illegible], पूर्व प्रधान श्री डा० गिरधारीलाल, श्री हरदयाल पुरी, श्री [illegible] श्री रघुवरदयाल तथा डा० राजबहादुर और गोला नगर पालिकाध्यक्ष श्री [illegible] की की है।

भावभीनी विदाई

सीतापुर–महर्षि के पथानुगामी एवं मेडिकल मार्केटिंग विभाग के कर्मचारी श्री हरिपाल जी भटनागर को उनके गुनावपुर स्थानान्तरण के अवसर पर आर्यसमाज सीतापुर द्वारा गत दिनांक २६ मई को भावभीनी विदाई समारोह पूर्वक दी गई। श्री भटनागर जी ने सीतापुर में अपने गत तीन व चार वर्षों के कार्यकाल में स्थानीय समाज को जो अपना स्तुत्य सहयोग एवं प्रेरणा दी उसकी भूरि २ प्रशंसा की गई। आप गुरुकुल के स्नातक एवं एक उच्चकोटि के वक्ता और कर्मठ आर्यसमाजी कार्यकर्ता हैं।

वार्षिकोत्सव

कानपुर। आर्यसमाज गांधीपुर स्टेट का १८ वां वार्षिकोत्सव आर्य वैदिक जूनियर हाई स्कूल के प्रांगण में दिनांक १७ से १९ मई तक समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ।

मित्रस्याऽहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।

14-6-68

रविवार ज्येष्ठ १८ शक १८९०, ज्येष्ठ सु० १२ वि० सं० २०२५, दिनांक ९ जून १९६८ ई०

वेदामृत

ओ३म स हव्यवाडमर्त्य ऽउशिग्दूतश्चनोहित । अग्नि-र्धिया समृण्वति ॥ १६ ॥

भावार्थ-वह हव्य पदार्थों को फैलानेवाला अमर गुणवाला कांतिमान् अन्नादि पदार्थों को प्राप्त कराने वाला दूतस्वरूप अग्नि यज्ञकर्म द्वारा सुसम्पन्न होता है।

विषय-सूची

१—स्वामी दर्शनानन्द एक पत्रकार ३
२—सम्पादकीय ३
३—कर्मवीर राजा प्रताप ४
४—प्रताप की शक्ति-पूजा ५
५—कवितायें ६
६—समाज की आवश्यक पुकार ७
७—विनोद-बिन्दु ८
८—नास्तिक को मुँहतोड़ उत्तर ९
९—एक सम्वाद १०
१०—आर्यजगत ११
११—चोरी नहीं जमा कीजिये १२
१२—लक्ष्य पूर्ण करो १५

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का १, २ जून का ८२ वां

वृहदधिवेशन

प्रधान सभा के आदेश से विशेष परिस्थितियों के कारण

अनिश्चित काल के लिए स्थगित

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का ८२ वां वृहदधिवेशन सिरसागंज (मैनपुरी) में बड़े उत्साहपूर्ण वातावरण में आरम्भ हुआ, किन्तु चुनाव में विशेष परिस्थितियां उत्पन्न हो जाने के कारण प्रधान सभा के आदेश से सारा चुनाव अनिश्चित काल के लिये स्थगित कर दिया गया है।

नवीन निर्वाचन सम्बन्धी सूचना, स्थान तथा समय सम्बन्धी, अन्तरंग की स्वीकृति के पश्चात् घोषित की जायेंगी। प्रतिनिधिगण आगामी सूचना की प्रतीक्षा करें।

●

वार्षिक १०)
छमाही ६)
विदेश में
१ पौ०

सम्पादक:
सच्चिदानन्द शास्त्री ★ पं० शिवदयालु
उमेशचन्द्र स्नातक

वर्ष ७०
अङ्क १८
एक प्रति २५ पं०

स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती : पत्रकार के रूप में

★ डा० भवानीलाल भारतीय
एम० ए० पी-एच० डी०

आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध तार्किक विद्वान्, शास्त्रार्थ महारथी तथा अप्रतिम दार्शनिक विद्वान् स्वामी दर्शनानन्द जी की निर्वाण तिथि ११ मई १९१३ है। इस प्रकार उनका देहान्त हुये अब ५५ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। स्वामी दर्शनानन्द अपने युग के महान् विद्वान, लेखक तथा पत्रकार थे। बहुत कम लोगों को ज्ञात होगा कि स्वामी जीने अपने जीवन काल में अनेक पत्रो का प्रकाशन और सम्पादन किया। जिस प्रकार उन्हें ट्रैक्ट लिखकर आर्यसमाज के साहित्य की वृद्धि करने तथा गुरुकुल खोलकर प्राचीन शिक्षण के पुनरुद्धार की धुन थी। इसी प्रकार पत्र पत्रिकाओं के प्रकाशन द्वारा वे आर्य सामाजिक जगत् मे एक नई लहर फैलाना चाहते थे। प्रस्तुत लेख में उनके पत्रकार रूप का विवेचन किया जायगा।

वैराग्य ग्रहण करने के पश्चात् जगरांवा (जिला लुधियाना, पजाब) निवासी प० कृपाराम ने स्वामी दर्शनानन्द का नाम धारण किया और काशी में चैत्र पूर्णिमा १९४५ के दिन अपना आसन जमाया। इसके पूर्व वे पटना आकर 'दी इण्डियन ट्रेड एडवर्टाइजर' नामक प्रेस क्रय कर चुके थे। इसे वे १० दिसम्बर १८८९ को काशी लाये और उसका नाम 'तिमिर नाशक मुद्रणालय' रक्खा। इसी प्रेस से स्वामी जी ने तिमिर नाशक नामक एक साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ किया। इसका प्रथम अङ्क ३० जून १८९० को प्रकाशित हुआ था। 'तिमिर नाशक' पत्र का आदर्श वाक्य यह दोहा था—

> स्वारथ भारत मे बस्यो,
> जीवन भयो अकाज।
> खोयो कुमति विलास न,
> धर्म जीव और लाज।

काशी निवास के पश्चात् १८९३ में स्वामी दर्शनानन्द पजाब के नगरों में स्वतंत्र पर्यटन करते रहे। १८९४ मे अपनी जन्म भूमि जगरावां आये और वहां आपने वेद प्रचार प्रेस की स्थापना की। इस प्रेस से वेद प्रचारक मासिक तथा भारत उद्धार नामक एक साप्ताहिक पत्र प्रकाशित किया। १८९७ में आपने मुरादाबाद से वैदिक धर्म नामक एक साप्ताहिक पत्र जारी किया। उसके लिये उन्होंने वैदिक धर्म प्रेस की स्थापना की थी। इस पत्र का आदर्श वाक्य यह था—

> ख्वाहिशे दुनिया नहीं,
> वैदिक धर्म मन्जूर है।
> धर्म पर देने को जाँ,
> यह दूसरा मंसूर है।

यह पत्र पहले उर्दू में प्रकाशित होता था तथा इसमे मौलवी मुहम्मद आदि के वैदिक धर्म पर किए जाने वाले आक्षेपों का उत्तर होता था। अक्टूबर १८९७ से यह पत्र हिन्दी में प्रकाशित होने लगा। १८९८ मे आपने दिल्ली से वैदिक धर्म पत्र प्रकाशित किया। १८९९ में हिन्दी से ही आपने एक और मासिक पत्र 'वैदिक मैगजीन' निकालना प्रारम्भ किया। सन् १९०० मे स्वामी जी ने आगरा मे 'मखजनुल इलूम' नामक एक विद्यालय स्थापित किया। इस विद्यालय के तत्वावधान में आपने 'तालिबे इल्म' नामक एक उर्दू साप्ताहिक निकाला जिसके कुछ ही अङ्क छपे। गुरुकुल सिकन्दराबाद की स्थापना के पश्चात् आपने 'गुरुकुल समाचार' नामक पत्र जारी किया। स्वामी जी ने बदायू में भी गुरुकुल खोला और यहां से 'आर्य सिद्धांत' मासिक तथा 'मुबाहिसा' नामक साप्ताहिक पत्र निकाले। आर्यसिद्धांत १९०३ में प्रकाशित होना प्रारम्भ हुआ। यह गुरुकुल का मुख-पत्र था। इसके अगस्त १९०३ के अङ्क में देवरिया जिला गोरखपुर में हुए उस प्रसिद्ध शास्त्रार्थ का विवरण छापा है जो मुसलमानों के ५० मौलवियों और स्वामी दर्शनानन्द के बीच ईश्वरीय ज्ञान (इलहाम) वेद हैं या कुरान विषय पर हुआ था। इस पत्र का मुद्रण वैदिक यंत्रालय अजमेर में होता था।

१९०८ में स्वामी दर्शनानन्द हरिज्ञान मन्दिर लाहौर में निवास करते थे। यहां से उन्होंने 'ऋषि दयानन्द' नामक मासिक पत्र प्रकाशित किया। १९०९ में आपने रावलपिण्डी के निकट चोहा भक्ता में गुरुकुल प्रारम्भ किया और वहां से 'वैदिक फिलासफी' नामक मासिक पत्र निकाला। यही गुरुकुल रावल पिण्डी 'गुरुकुल पोठोहार' के नाम से प्रसिद्ध हुआ और आर्यसमाज के एक अन्य दार्शनिक विद्वान स्वामी आत्मानन्द जी देश विभाजन काल तक उसका संचालन करते रहे। इस विवरण से यह स्पष्ट है कि स्वामी दर्शनानन्द जी ने अपने जीवन काल में १२ अखबार निकाले। आज इन पत्रों की फाइल हमें उपलब्ध नहीं हैं। हो सकता है कि इनमें से अधिकांश अल्प जीवी रहे हों, परन्तु उनके अङ्कों से आर्यसमाज के तत्कालीन इतिहास पर बहुत कुछ प्रकाश पड़ सकता है। आज आर्यसमाज में साहित्यिक अनुसंधान का अभाव है अन्यथा आर्यसमाज की पत्रकारिता का इतिहास कभी का प्रकाशित हो जाता।

★

वेद-विवेचन

ओ३म् जिह्वाया अग्रे मधु मे जिह्वामूले मधूलकम्।
ममेदह क्रतावसो मम चित्तमुपायसि ॥

अथर्व १ ३४-२

अन्वय—(मे) मेरी (जिह्वाया अग्रे) जिह्वा के अग्र भाग में (मधु) माधुर्य का वास हो (मैं) तथा मेरी (जिह्वामूले) जिह्वा के मूल अर्थात हृदय में (मधूलकम्) गहरी मधुरता विराजे। (मम + इत + अह) निश्चय ही मेरे (क्रतौ + अवस) कर्म मे रहने वाला हो। (मम) मेरे (चित्त) अन्त करण मे (उपायसि) माधुर्य सरसाती हो।

भावार्थ—माधुर्य मानव जीवन का सौंदर्य है। प्रत्येक मानव के प्रत्येक कथन प्रवचन हाव भाव मे उसके उठने बैठने चलने फिरने, खाने-पीने आदि जीवन की प्रत्येक क्रिया में माधुर्य होना चाहिये केवल जिह्वा के अग्र भाग मे माधुर्य होना पर्याप्त नहीं। ससार मे अनेक छली कपटी दुष्ट दुराचारी मुख से मीठी-मीठी चिकनी चुपड़ी बातें बनाते हैं किन्तु उनके हृदय में ईर्ष्या द्वेष घृणा सभी हलाहल भरा रहता है। इसीलिये वेद ने कहा है कि जिह्वा के मूल मे मिठास और भी अधिक होनी चाहिये।

प्रत्येक मानव का यह कर्त्तव्य है कि वह श्रद्धा, मेधा अभयता बुद्धिकी पवित्रता के साथ साथ अपने जीवन के क्रिया कलापों को माधुर्य से युक्त करने को उस प्रभु से याचना करें। अपने अन्त करण का माधुर्य से संयुक्त करने की मानव सतत चेष्टा करें ऐसा वेद मंत्र का अभीष्ट है।

प्रभो! हमारे बाह्य एवं आन्तरिक जीवनो को माधुर्य से युक्त कर दो बस यही हमारी आपसे नम्र विनय है।

जापान में स्वाध्याय अभिरुचि

टोकियो—एक सर्वेक्षण द्वारा पता लगा है कि जापान में ७ करोड़ से अधिक व्यक्ति स्वाध्याय मे रुचि रखते हैं। पुस्तकें पढ़ने में इतनी अधिक रुचि पहले कभी नहीं देखी गई।

विश्वकोष जैसे कीमती ग्रन्थों को ही ले लें। पाच छ साल पहले प्रकाशक विश्वकोष छापते घबड़ाते थे। परन्तु इस समय १७ विश्वकोष पुस्तक विक्रेताओं के पास हैं और पाठक यह सलाह लेने आते हैं कि कौन सा विश्वकोष उनके लिये अधिक उपयोगी होगा। विक्रेताओं के अनुसार एक दिन ऐसा आने वाला है जब प्रत्येक जापानी गृहस्थ में एक बालकों के लिये और एक वयस्कों के लिये अलग-अलग विश्वकोष होगा।

सर्वेक्षण के अनुसार अगस्त १९६७ मे १४२० नयी पुस्तकें प्रकाशित हुई थी और १६१६ पुनं प्रकाशित पुस्तकें विक्रेताओं के पास आयीं। इस प्रकार विक्रेताओ के पास इस महीने में १ करोड़ ९० लाख पुस्तकें पहुंची। इस महीने १३४८ मासिक पत्रिकायें प्रकाशित हुई जिनका सर्कुलेशन ८० लाख २४ हजार था।

जापान मे विकसित यूरोपीय देशों की भांति "ग्रामोफोन पुस्तकें" भी तैयार होती हैं। अगस्त में ३२ वाक्-पुस्तकें प्रकाशित हुई थी—जिनकी कुल तादाद ६ लाख ६० हजार थी। वि०वि०

★

वैदिक प्रार्थना

ओ३म् अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वे देवा अदितिः पञ्च जना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम् ॥ १७ ॥

ऋ० १।६।१६।१० ॥

व्याख्या—हे त्रैकाल्याबाधेश्वर ! "अदितिर्द्यौः" आप सदैव विनाशरहित तथा स्वप्रकाशस्वरूप हो "अदितिरन्तरिक्षम्" अविकृत (विकार को न प्राप्त) और सबके अधिष्ठाता हो "अदितिर्माता" आप प्राप्त मोक्ष जीवों को अविनश्वर (विनाशरहित) सुख देने और अत्यन्त मान करने वाले हो 'स पिता' सो अविनाशीस्वरूप हम सब लोगों के पिता (जनक) और पालक हो और 'स पुत्र' सो ईश्वर आप मुमुक्षु धर्मात्मा विद्वानों को नरकादि दुःखों से पवित्र और त्राण (रक्षक) करने वाले हो "विश्वे देवा अदितिः" सब दिव्यगुण (विश्व का धारण, रचन, मारण, पालन आदि कार्यों को करने वाले) आप अविनाशी परमात्मा ही हैं "पंचजना अदितिः" पंच प्राण जो जगत् के जीवनहेतु वे भी आपके रचे और आपके नाम भी हैं 'जातमदितिः' वही एक चेतन ब्रह्म आप सदा प्रादुर्भूत हैं और सब कभी प्रादुर्भूत कभी अप्रादुर्भूत (विनाशभूत) भी हो जाते हैं 'अदितिर्जनित्वम्" हो अविनाशीस्वरूप ईश्वर आप सब जगत् के (जनित्व) जन्म का हेतु हैं और कोई नहीं ॥ १७ ॥

आर्यमित्र का मूल्य १०) वार्षिक होगा

१८ मई से डाक व्यय के दूना हो जाने के कारण आर्यमित्र का मूल्य ८) रुपया से बढ़ाकर १०) वार्षिक करना पड़ा है। पहले डाक व्यय दो पैसा था जो अब पाँच पैसे हो गया है, जिससे वर्ष में १५००) रुपये का घाटा होता है। अतः मूल्य की वृद्धि कर ८) से १०) कर दिया गया है।

आशा है कि सहृदय पाठक बढ़े हुए पोस्टेज के कारण आर्यमित्र की अनिवार्य मूल्य वृद्धि से असन्तुष्ट न होंगे और अपनी कृपा दृष्टि पूर्ववत् बनाये रखेंगे।

हम भरसक यह प्रयत्न कर रहे हैं कि आर्यमित्र का प्रकाशन ग्राहकों की रुचि के अनुकूल हो।

—सभा मन्त्री

आर्य्यमित्र

लखनऊ-रविवार ९ जून १९६८, दयानन्दाब्द १४४ सृष्टिसंवत १,९७,२९,४९,०६९

सम्पादकीय

आया भी और गया भी ?

★

बड़े दिनों से जिसकी चर्चा सुन रहे थे वह सिरसागंज में होने वाला आ० प्र० सभा उत्तरप्रदेश का ८२ वां बृहद-धिवेशन १-२ जून को आया भी और गया भी। हम लोग भी अपने-अपने अरमानों के साथ वहां गये पर अधूरे ही वहां से लौट आये। धर्म क्षेत्र के पितामहों तथा बड़े बड़े महारथियों ने अपनी अपनी कार्य कुशलता के बड़े-बड़े करतब दिखाये पर वह भी सब अधूरे रहे उनके साथ देने वाले नाना प्रकार के शूरवीरों ने भी जो कि बड़े-बड़े देशों से आये थे अपने-अपने करतब दिखाने में बड़ी कुशलता दिखाई पर वह भी प्रदर्शन मात्र रहा। और युद्ध समाप्त हो गया—बड़े-बड़े शूरमा खेत रहे—पर कुरुक्षेत्र के मैदान का कोई रहस्य न निकला—मैदान से भविष्य की प्रतीक्षा के लिये ललकार कर जिधर से आये थे—उधर को ही लौट गये। हजारों का खून हुआ सैकड़ों धराशायी हुये—शक्ति का प्रदर्शन मिट्टी में मिल गया—हाथ पल्ले कुछ न पड़ा, स्वर्ग जाने वाले कुछ मुमुक्षु भी अपने अरमानों को लिये हाथ मलते—कुढ़ों को गाली देते हुये चले गये। पर-

जरा सोचो हम धर्म क्षेत्र में या क्या ? युद्ध क्षेत्र की रचना तो कर डाली पर कर्म क्षेत्र कुछ का ही नहीं। युद्ध क्षेत्र का अभिनेता भी कोई नहीं था अन्यथा लड़ाई व्यर्थ न जाती। कृष्ण न जाने कहां थे।

महारथियों की कमी नहीं थी एक से एक योद्धा विराजमान थे पर कृष्ण नहीं दिखायी दिये—चारों ओर कुहराम था। कृष्ण आओ युद्ध क्षेत्र में मरी हुयी आत्माओं को अमरत्व प्रदान करो। पर उस स्थान पर कृष्ण हो नहीं सुनता कौन ? महारथी भी कम समझदार नहीं थे लड़-झगड़ कर ताल ठोककर भविष्य को ललकार देकर रामधुन गाते हुये अपने २ स्थानों को भरे अरमानों के साथ लौट गये। अगर कृष्ण होते तो आज दूसरे समराङ्गण की प्रतीक्षा न करनी पड़ती। पर भविष्य बड़ी दूर हैं इस आशा से कि चलो कृष्ण आयेंगे युद्ध का निर्णय बिना लड़े ही कर जाएंगे। समय बड़ा विपरीत है हम आपस में अपने अरमानों को निकालने में लगे हैं। दुश्मन घर में घुसकर हमारी कमजोरियों का नाजायज फायदा उठा रहा है। आर्यसमाज का कार्य करने की शपथ लो—मैदान सब आगे लड़ लेना—उस समय तक अपने-अपने कर्तव्य कार्य क्षेत्र में दिखाओ तो छिपा कृष्ण अवश्य प्रकट होगा और हमारे कर्मों का अवश्य निर्णय करेगा।

●

क्या बात है ? चरित्र और क्या चीज है चरित्र ?

सारे समाज में जिधर चर्चा सुनो उधर चरित्र की विशेष चर्चा सुनने को मिलती है पर चरित्र क्या चीज है ? कहते हैं प्राचीन काल में भारत में घरों में ताले नहीं लगाते थे क्या बात थी वह कि भारतवासियों के सदाचरण और सद्-व्यवहार की विदेशियों ने भी मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की।

चन्द्रगुप्त के शासन काल (३०५-ई० पू०) में मेगस्थनीज ने लिखा था कि भारतवर्ष के प्रत्येक व्यक्ति का सिर ऊँचा है उनमें दिखावा नाम की वस्तु ही नहीं है-शुद्ध वातावरण शुद्ध आहार विहार के परिणाम से चरित्र ठीक होना स्वाभाविक ही है।

अलबरूनी ने जो कि ११ वीं शती में लिखा था कि धार्मिक सहनशीलता की इस देश में पराकाष्ठा है लोग स्वच्छता पूर्वक धर्म के बारे में विचार विनियम करते हुये विवाद भी कर बैठते हैं परन्तु लड़ाई झगड़े कभी भी नहीं करते।

आज के दिन भारतीयों की दशा बिल्कुल विपरीत है। दिखावा दम्भ असहिष्णुता का चारों ओर बोलबाला है धर्म के नाम पर सही बात सही काम की चर्चा करना एक दोष बन चुका है।

प्रश्न स्वाभाविक है ऐसा क्यों ? हमारा उत्तर है कि सांस्कृतिक शिक्षा के अभाव में समाज की मनोवृत्ति असंस्कृति ही बनी रही और संस्कार व्यवहार से कोसों दूर पड़ गया।

कहने का तात्पर्य यह है कि नीति नियम का पाठ पढ़ाने वाली, भले बुरे का विवेक उत्पन्न करने वाली शिक्षा ही सांस्कृतिक शिक्षा कही जा सकती है। जिसका कि हम लोगों में भी बड़ा अभाव है—जो सद् शिक्षा व चरित्र का सम्बन्ध स्थापित करते हैं उन्हें-

अंग्रेजी विचारक न्यूमैन के इन महत्त्वपूर्ण शब्दों पर गम्भीरता से विचार करें तो क्या है यदि उस्तरे से पहाड़ काटना सम्भव है तो केवल उच्च शिक्षा ही चरित्र निर्माण कर सकती है।

अज्ञानवश हम भूल भुलैया में पड़े है मोटर कार रखकर हम समाज में बड़ा स्थान प्राप्त कर सकते हैं। थोड़ी विद्या थोड़े, ४ मन्त्रों की व्याख्या याद कर दो भजनों की संगति जोड़ कर अहम्मन्य-पण्डितम्मन्य अपने को विद्वान् घोषित कर रहे हैं। चरित्र का नारा इतना सरल नहीं है कि रोटी का टुकड़ा तोड़ा मुंह में डाल लिया। चरित्र क्या है रस-गुल्ला है

पहनावा, खान-पान, उठना बैठना सभी वाह्य प्रवृत्तियों पर एकाग्र कर लिया और चरित्र का नारा लगाना प्रारम्भ कर दिया। चरित्र हीन व्यक्तियों की पूजा होना 'गुणा पूजा स्थानम्' का मत न होकर अपूज्यों की पूजा करना मात्र ही चरित्र का लक्षण माना जाने लगा। थोड़ा उपदेश मन्त्र ही पंडित का लक्षण बन गया। संस्कृत हीन असंस्कृत व्यक्ति पण्डितों की गणना स्वयं कराने लग गये है। फिर चरित्र को कौन जानता व मानता है। चरित्र स्वयं नहीं कहता कि मुझे ग्रहण कर लो। चरित्र का सही बोलबाला अपने सुसंस्कृत कह-लाने वाले इन आर्यों की भी दशा का दिग्दर्शन हम सब आये दिन देखा ही करते हैं। उदाहरणार्थ--

सिरसागंज [illegible] धर्म क्षेत्र कैसे युद्ध क्षेत्र बना, चरित्र का सही नमूना हमारे धर्म क्षेत्र में ही देखने को मिल गया। क्या कहते हो चरित्र की बात और क्या चीज है। चरित्र ? स्वयं विचार करें सिरसागंज स्मरण करो—

●

कर्मवीर महाराणा प्रताप

[लेखक—स्व० श्री गणेशशंकर विद्यार्थी सम्पादक "प्रताप" साप्ताहिक कानपुर का प्रथम सम्पादकीय लेख १९१५ ई०]

बलिदान-केवल बलिदान-चित्तौड़ की स्वतन्त्रतादेवी केवल बलिदान चाहती है। बादल उमड़े थे, बिजलियां कड़की थीं, और अन्धकार छा गया था। अपवित्रता पवित्रता पर कब्जा करना चाहती थी, अनाचार आचार और व्यवहार की ईंट से ईंट बजा देने वाला था। हृदय कांप उठे थे, अशांति की लहरें बड़े जोरों से शांति के किले के कंगूरों को एक एक करके ढा रही थीं। सूर्य देव भी अपने बच्चों को सदा के अन्धकार में छोड़ देने के लिये तैयार थे और चित्तौड़ की दीवारें ऊंचा सिर करते हुये भी नीची नजर कर चुकी थीं। देहव बाजी लगी थी। पद्मिनी का दाव था। पांसे उलटे पड़ रहे थे। लेकिन रक्त बदला किसी की दया या कृपा से नहीं, और किसी की कमजोरी या नीचता से भी नहीं। रक्त की वर्षा हो गयी। रक्त की प्यासी भूमि की प्यास मिट गयी। चित्तौड़ की देवियों को राख का ढेर होते देख चित्तौड़ की स्वतन्त्रता देवी के हृदय की ताप मिट गयी।

फिर वही दृश्य, और फिर वही कार्य्य। समय के पहिये और घूमे। और चित्तौड़ की स्वतन्त्रता देवी ने दया से या निर्बलता से, फिर अपना खप्पर हाथ में लिया। वीरों ने फिर उसे अपने खून से भर दिया। लेकिन जगमल और उसके वीर साथियों का रक्त उसकी प्यास न बुझा सका। चित्तौड़ की देवियों ने अपने कोमल शरीरों को उसके लिये अग्नि के सिपुर्द कर दिया, लेकिन उन्हें मुट्ठी भर राख ही में पलट जाते हुये देखकर, उसके हृदय की जलन और बढ़ी। और इतनी बढ़ी कि स्वयं चित्तौड़ से आगे बढ़ गयी। चित्तौड़ खाली हुआ। अकबर का झण्डा उस पर फहराने लगा। चित्तौड़ के दरोदीवार ने आंसू बहाये। हाथ उठाकर उन्होंने अपने कुल संरक्षक सूर्य्य और गम्भीर आकाश की दुहाइएं दीं। लेकिन सूर्य्य से न किसी अग्नि की चिनगारी ने गिरकर इस्लामी झण्डे को जला दिया और न आकाश की गम्भीरता, हो ने उसकी दुःसता कम कर दी। चित्तौड़ की स्वतन्त्रता देवी चाहती है, 'बलिदान'।

(२)

उदयसिंह, आगे बढ़ और अपने प्राण उसकी पवित्र वेदी पर बलिदान कर, लेकिन अरे! यह क्या? देवी की प्रतिष्ठा करने के उठकर आगे बढ़ने के बजाय तू पीठ देकर भागता है! जान रख, तेरी इस धोखा का फल अच्छा न होगा। और आगे आने वाली सन्तानें बड़ी ही शर्म से तेरा नाम लेंगी। मत्र पुत्र वह दिन चित्तौड़ के लिये बड़ा ही अभागा था, जिस दिन पन्ना ने तेरे लिये अपने बच्चे के हृदय में कटारी घुसने दी। हत्यारे का शिकार तुझी को होना था, जिससे फिर चित्तौड़ की लाज का शिकार तू इस निर्लज्जता के साथ न करने पाता। चित्तौड़ ने स्वतन्त्रता के दिन भोगे थे। और अब काल चक्र तेरी आड़ लेकर उसे परतन्त्रता की सुनहली जञ्जीर से जकड़ने के लिये आगे बढ़ा है। हे नीच और पतित आत्मा! चल आगे बढ और दूसरे के लिये स्थान छोड़। ईश्वर के लिये नहीं, देश, और जाति के लिये नहीं, उनके लिए नहीं, जिन्होंने तेरे पूर्वजों को आन बान

कायम रखने के लिए अपने को रणकुण्ड में आहुति दे दी थी, बल्कि अपनी ही आत्मा की शान्ति के लिए। जा, इस संसार से उठ जा और उस महापुरुष के लिए स्थान खाली कर जिसके और राणा संग्राम सिंह के बीच में, यदि तूने जन्म लेने का कष्ट न उठाया होता तो चित्तौड़ को अपनी स्वाधीनता शत्रुओं के हाथ मिट्टी मोल न देनी पड़ती।

आओ, प्रताप आओ! पहिले परीक्षा दो। स्वतन्त्रता देवी के पवित्र मन्दिर में उनके लिए स्थान नहीं, जिनके हृदय का स्थान छोटा है। कैसे परीक्षा दोगे? अपने सिर को काट कर नहीं, बल्कि अपने सिर को अपने धड़ पर कायम रखकर बार २ उसके काटे जाने का कष्ट सहते हुये महलों को ही छोड़-कर नहीं, लेकिन इस भीष्म शपथ को लेकर, कि जब तक चित्तौड़ स्वाधीन नहीं होता, जब तक उसकी दीवारें सिर उठाकर संसार के साथ नजर न मिला सकें, जब तक उन वीर पुरुषों और वीर स्त्रियों की आत्माएँ जिनके खून से लिखी हुयी है, अपने मनोवांछित काम को पूरा होता देखकर प्रसन्न हो जांय, तब तक फूस पर सोवेंगे, पत्तों पर खाऐंगे और शारीरिक सुखों को स्वप्नों में भी ख्याल न करेंगे। तपस्या का यही अन्त नहीं। जो सिर स्वतन्त्रता देवी के सामने झुका याद रखो, उसे अधिकार नहीं, कि संसार की किसी शक्ति के सामने झुके। तलवार की धार पर चलना है; लेकिन, याद रखो, तुम्हारे मुंह से उफ भी निकली, और तुम गये! ऐसे जाओगे कि कहीं भी पता न लगेगा और अपने साथ ही कितनी आशाओं और देश के कितने ही शुभगुणों को लेते जाओगे।

(३)

अच्छा आदर और सत्कार पाने पर भी विभीषण मानसिंह चित्तौड़ के कुमार से बोला, "राणा जी के सिर में जो दर्द है, उसकी दवा लेकर शीघ्र ही लौटूंगा" विभीषण चिकित्सक मानसिंह शीघ्र ही लौटा। हल्दी घाटी के मैदान ने इस सुयोग्य चिकित्सक का आवाहन किया। प्रताप भी अपनी कठिनाइयों का पहला पाठ करने के लिए इस रण क्षेत्र की ओर आगे बढ़ा। २२००० हजार साथी लेकिन अन्त में ८००० ही बचे, शेष सब प्रताप की युद्ध दक्षिणा में देते पड़े। घमासान युद्ध। बाणों का बाजार पूरा गर्म। भीषणता और उसका सच्चा महत्व उसे समझ सकते हो, जब एक किसान की कुटी की शान्ति और सौम्यता से इस दृश्य की तुलना करो। मनुष्य की पाशविक शक्ति पूरा नमूना, लेकिन साथ ही संसार के उज्ज्वल गुणों का पूरा खजाना भर रहे और मारे जा रहे हैं। एक पर एक टूट रहे हैं, और एक पर एक गिर रहे हैं। ढाल लेकिन अन्त में कोमल शरीर ही ढाल का काम देते हैं। तलवार मनुष्य के रक्त की तरलता देखकर उसका पानी भी तरल हो जाता है। बर्छियां जरा भी आगा पीछा नहीं करतीं। इस यज्ञ कुण्ड में प्रताप! तुम अपनी जान को बार बार आहुति दे रहे हो! लेकिन तुम इस तरह छुटकारा नहीं पा सकते, तुम्हें संसार में रहकर संसार से संग्राम करना है। मानसिंह? लेकिन वह विभीषण दवा लेकर प्रताप के सामने न आ सका। ओह सलीम बच्चा है, छोड़ो, उसे प्रताप छोड़ो! ऐ अब तुम बेतरह घिर गये। तुम अकेले, और वह इस्लामी सिपाही सैकड़ों। तुम्हारा मुकुट इस समय तुम्हारा शत्रु हो गया है। फेंक दो उसे! अरे फेंक दो उसे! कितने मारोगे, एक दो तीन—अरे वे आते ही जाते हैं, अब भी फेंक दो, फेंको भी। देश और जाति को, नहीं, संसार को तुम्हारी जान तुम्हारे सोने के तुच्छ मुकुट से ज्यादा प्यारी है। नहीं फेंकोगे? अच्छा राजपूत वीरो! आगे बढ़ो, देखो, तुम्हारा अधिपति मुश्किल में जा रहा है। बढ़ो आगे बचाओ! बचाओ! हां, सबरी के झाला। तुम। हां, बढ़ो! बढ़ो! बस ठीक! झाला के सिर पर मुकुट है। इस्लामी तलवारें झाला पर पड़ने लगीं। प्रताप को उन्होंने छोड़ दिया। एक जान के बदले दूसरी जान! झाला ने अपनी जान देकर अधिक जान बचा ली! रक्त की नदी बह उठी! लेकिन चित्तौड़ की स्वतन्त्रता की देवी की प्यास न बुझी। अभी तो परीक्षा आरम्भ हुई है।

प्रताप! एक किले के बाद दूसरा किला दो। अब किले नहीं रहे, तो जाओ, पहाड़ियों और जंगलों में खाक छानो। ऐं! रसद बन्द हो गई, तो क्या हर्ज है? पत्ते कहीं नहीं गये, जंगल के सामा और गोदों का कोई हाथ न पकड़ लेगा। आज यहां, तो कल वहां, घास की रोटियां, लेकिन खाते ही मुगल आ पहुंचे। लड़ते-भिड़ते निकल चलो। सोने को बिछौना नहीं, कोई हर्ज नहीं!

(शेष पृष्ठ १३ पर)

कर्मवीर महाराणा प्रताप

(पृष्ठ ४ का शेष)

बड़ों के लिये पत्थर की चट्टानें और बच्चों के लिये बांस के पालने ही सही, अंधेरी रातें, धधकती दुपहरियां, जाड़े का कड़ाका, वर्षा की रिमझिमाहट, आत्मा की आग, और परमात्मा की उदासीनता—साथियों का मरते जाना, और सैनिकों का कम हो जाना, कठिन तपस्या और कठोर व्रत! आराधना—और स्वतन्त्रता देवी की पूरी पक्की आराधना! चञ्चलता फटकने न पावे। एक दिन भी नहीं, और दो दिन भी नहीं, एक साथ २५ वर्ष तक!

(४)

यह कैसा चीत्कार? चित्तौड़ की राजकुमारी के हाथ से एक बन-बिलाओ घास पात की रोटी छीन ले गया। राजकुमारी चीख उठी! बिलाओ के डर से नहीं, भूख के डर से। राजकुमारी और रोटी के लिये तरसे। लेकिन प्रताप, यह क्या? तुम्हारी आत्मा कांप क्यों उठी? लड़की की वेदना देखकर, और परिवार के कष्टों से? क्या अब स्वतन्त्रतादेवी को नमस्कार करना चाहते हो? शांत हो और जरा विचारो! देखो वह तुम्हारे शत्रु—नहीं स्वतन्त्रता के शत्रु अपने खीमों में घी के दीपक जला रहे हैं। क्यों? तुम्हारी हिम्मत टूटती हुई देख कर। इन दीपकों के घी और असों के साथ, सच बताओ, तुम्हारा हृदय जला कि नहीं? हां, जला, और अब। उस जले पर नमक छिड़कने की जरूरत नहीं!

(५)

हो चुका! बस चित्तौड़ की पवित्र भूमि! तुझे नमस्कार है। तुझे छोड़ता हूं। लेकिन, स्वतन्त्रता की देवी का पल्ला नहीं छोड़ता। जो था, सो अब इस देवी के अर्पण हो चुका। शरीर मे जो हड्डियां बाकी हैं, वे भी उसके अर्पण हो चुकीं। जननी जन्म-भूमि! अन्तिम वचन है। ले, आज्ञा दे!

प्रताप आगे मत बढ़ो। तुम्हारी सच्ची माता तुम्हें बुला रही है। हरिश्चन्द्र अपनी दासता के कर्तव्य मे, जब हद से ज्यादा बढ़ गये थे, तब कहते हैं, निराकार प्रभु ने आकर उनका हाथ पकड़ा था। मेवाड़ की भूमि भी तेरा पैर पकड़ रही है। देख, उसका एक सपूत आगे बढ़ता है। भामाशाह तेरे पैर थामता है। देश को मत छोड़, वह तुझे छोड़ने के लिये तैयार नहीं। भाग्य भी अभी तक तुझे छोड़ रहा था, लेकिन, अब वह प्रार्थना करता है कि तू उसे मत छोड़। ले धन! २५ हजार आदमी इस धन से १२ वर्ष तक खा सकेंगे।

तेरी तपस्या पूरी हो गई, और देख, स्वतन्त्रतादेवी तेरे पास आ रही है। तेरे साहस और तेरी दृढ़ता, वीरता और उदारता के सामने उसका आसन डोल उठा है। देख इस समय उसके हाथ में खप्पर नहीं, उसके हृदय में जलन नहीं, शांति से वह मुस्करा रही है। उसके हाथों मे माला है और देख, वह तेरे गले मे गिरती है!

(६)

महान् पुरुष—निस्सन्देह महान पुरुष! भारतीय इतिहास के किस रत्न मे इतनी चमक है? स्वाधीनता के लिये किसने इतनी कठिन परीक्षा दी? जननी जन्म भूमि के लिये किसने इतनी कठिन परीक्षा दी? देश-भक्त, लेकिन देश पर अहसान जताने वाला नहीं, पूरा राजा लेकिन स्वेच्छाचारी नहीं। उसकी उदारता और दृढ़ता का सिक्का शत्रुओं तक ने माना। शत्रु से मिले भाई शक्तिसिंह पर उसकी दृढ़ता का जादू चल गया। अकबर का दरबारी पृथ्वीराज उसकी कीर्ति गाता था। भील उसके इशारे के बन्दे थे। सरदार उस पर जान निछावर करते थे। भामाशाह ने उसके पैरों पर सब कुछ निछावर कर दिया। विभीषण मानसिंह उससे नजर नहीं मिला सकता था। अकबर उसका लोहा मानता था। खानखाना उसकी तारीफ मे पद्य रचना पुण्य कार्य समझता था। जानवर भी उसे प्यार करते थे, और घोड़े चेतक ने उसके ऊपर अपनी जान निछावर कर दी। स्वतन्त्रतादेवी को वह प्यारा था, और वह उसे प्यारी थी। चित्तौड का वह दुलारा था, और चित्तौड़ की भूमि उसे दुलारी थी। उदार इतना कि बेगमें पकड़ी गईं और मान सहित वापिस भेज दी गईं। सेनापति फरीद खां ने कसम खाई कि प्रताप के खून से मेरी तलवार नहायेगी। प्रताप ने सेनापति को पकड़ कर छोड़ दिया।

(७)

अन्तिमकाल! जान नहीं निकलती लेकिन, राणा जी क्यों? मुझे विश्वास नहीं कि मेरे बाद चित्तौड़ की स्वाधीनता कायम रह सके। क्यों? राजकुमार दृढ़ अमरसिंह इतना दृढ़ नहीं, मेवाड़ के १६ सरदार, राणा जी की कसम खाते हैं कि हम अपने खून से स्वतन्त्रता के उस बीज को—जो तुमने बोया सींचेंगे। शान्ति हुई, और उनकी आत्मा शरीर से बाहर होकर, स्वतन्त्रता देवी की पवित्र गोद मे जा विराजी। प्रताप! हमारे देश का प्रताप! हमारी जाति का प्रताप! दृढ़ता और उदारता का प्रताप! तू नहीं, केवल तेरा यश और कीर्ति है। जब तक यह देश है और जबतक संसार मे दृढ़ता, उदारता, स्वतन्त्रता, और तपस्या का आदर है, तब तक हम क्षुद्र प्राणी ही नहीं, सारा संसार तुझे आदर की दृष्टि से देखेगा। संसार के किसी देश मे तू होता, तो तेरी पूजा होती और तेरे नाम पर लोग अपने को न्योछावर करते। अमेरिका मे होता, तो वाशिंगटन अब्राहमलिंकन से तेरी किसी तरह कम पूजा न होती। इङ्गलैण्ड मे आता, तो वेलिंगटन, और नलसन को तेरे सामने सिर झुकाना पड़ता। [illegible] और राबर्ट ब्रूस तेरे साथी होते। फ्रांस मे जान आफ आर्क तेरे टक्कर की गिनी जाती, और इस से तुझ [illegible] हम भारतीय निर्बल [illegible] जिससे तुम तेरी पूजा कर और तेरे नाम की [illegible] एक भारत [illegible]

आर्यसमाज गोला (लखीमपुर-खीरी) द्वारा श्री चौधरी चरणसिंह जी का भव्य स्वागत

तत्कालीन मुख्यमन्त्री उत्तरप्रदेश सरकार श्री चौधरी चरणसिंह जी गोला के वार्षिकोत्सव पर यहाँ पधारे।

चित्र में इसी अवसर पर जल-पान गोष्ठी मे नगरपालिका गोला के अध्यक्ष (बीच में) तथा आर्यसमाज गोला के मन्त्री श्री निरमलचन्द जी राठी श्री चौधरी जी से बातचीत कर रहे हैं।

महाराणा प्रताप की शक्ति पूजा

(पृष्ठ ५ का शेष)

आज हमारा राष्ट्र स्वतन्त्र है। इस देश को केवल तालियां बजाने तथा व्याख्यान देने से स्वतन्त्रता प्राप्त नहीं हुयी है। इस स्वतन्त्रता की रक्षा बाह्य शत्रुओं की अपेक्षा आन्तरिक शत्रुओं से करना है। पश्चिम का भौतिकवाद साम्यवादी अन्तर्राष्ट्रीय समाजवाद के नाम पर मनुष्यों के नैतिक मूल्यों को नष्ट करना चाहता है। ऐसी स्थिति मे भारतीय स्वतन्त्र राष्ट्र की प्रतिरक्षा, उसकी उन्नति के लिये महाराणा प्रताप के प्रताप को, उनके अदम्य उत्साह को तथा उनके त्याग एवं सतत संघर्षरत रहने की भावनाओं से प्रेरणा लेकर की जा सकती है।

महाराणा प्रताप का जीवन भारतीय इतिहास का एक सुनहरा अध्याय है। उसका नित्य अध्ययन राष्ट्रीय चेतना मे सतत प्रेरणा देता रहेगा।

(पृष्ठ ७ का शेष)

विकास हो क्योंकि बाल्यावस्था ही ऐसी बातों के सीखने का उपयुक्त अवसर है। इस नैतिक शिक्षा के अभाव से ही छात्रों की उद्दण्डता एवं विद्या पढने में अधिक रुचि नहीं होती। आज देश के नेतागण इसकी उपयोगिता समझने लगे हैं। और जब तब छात्रों को नैतिक शिक्षा दिलाने की चर्चा अपने भाषणों मे करते हैं यहीं तक नहीं मध्य प्रदेशीय सरकार ने तो हायर सेकण्डरी तक के छात्रों को नैतिक शिक्षा का विषय अनिवार्य कर दिया है।

अब बाल्यावस्था में छात्रों को प्राचीन इतिहास पढ़ाया जायगा। भारतीयों की वीरता धीरता विद्या एवं कला कौशल की उन्नति सम्बन्धी कथायें सुनाई जावेंगी। ऋषियों महात्माओं एवं विद्वानों के वचनों पदों एवं श्लोकों को कण्ठस्थ कराया जावेगा। तब कोई कारण नहीं कि देश मे राष्ट्रीयता का विकास न हो और वे राष्ट्र का सर्व प्रथम स्थान न दें। [illegible] अभिमन्यु [illegible] और ईश्वर [illegible] का जन्म होगा [illegible] चरित्र से [illegible] को प्रभावित कर राष्ट्र को समुन्नत के पथ पर ले जाने मे समर्थ होंगे

विदेशों में वेद प्रचार

बम्बई प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा से विदाबी लेकर मैं १ मई को आर्यसमाज मोम्बासा आया। यहां पर प्रचारक का अभाव होने के कारण आर्यसमाज का जो कार्य होना चाहिये वह नहीं हो पा रहा है, किन्तु अनेक कार्यकर्ताओं के चले जाने पर यहां की आर्य जनता में काफी उत्साह है। मेरे आने पर यहाँ मुझे प्रसन्नता हुयी वहां यहां पर भी सबको बहुत खुशी हुयी।

मोम्बासा मे हिन्दुओं की अनेक संस्थायें हैं किन्तु सबके अपने २ अलग-अलग कार्य क्रम जैसे हैं जिनमे सब एक स्थान पर एकत्रित नहीं हो पाते हैं, इसीलिये परस्पर वह सम्बन्ध नहीं हो पाता जो विदेश में रहते हुये अपनी संस्कृति की रक्षा के लिये अनिवार्य होना चाहिये। मेरे यहां आने पर आर्यसमाज से अतिरिक्त अन्य संस्थाओं ने भी मेरे व्याख्यानों का कार्यक्रम रखा और काफी लोगों ने उनमे भाग लिया। अब तक यहां मेरे लगभग २० व्याख्यान हो चुके हैं। मोम्बासा आर्यसमाज की आवश्यकता को देखते हुये मैंने लगभग २ वर्ष तक मोम्बासा रहने का निश्चय किया है। यहां की वर्तमान गतिविधियां साप्ताहिक सत्संग, महिला सत्संग, राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति द्वारा हिन्दी वर्ग, बाल-समायें, आर्यनवयुवक व स्पोर्ट्स क्लब तथा आर्यन्सवाइस (मासिक पत्रिका) आदि है। इन गतिविधियों को बढ़ाने में मुझसे जो कुछ बनेगा मैं करूंगा।

अभी एक सप्ताह के लिये मैं नैरोबी भी होकर आया हूं, वहां भी आर्यसमाज के तत्वावधान में मेरे विभिन्न संस्थाओं द्वारा १०-१२ व्याख्यान आयोजित किये गये, जिनके माध्यम से मैंने आर्यसमाज के विचार रखने की कोशिश की। केन्या रेडियो द्वारा मेरे व्याख्यान की सूचना तो प्रसारित की ही गयी, इसके अतिरिक्त वी० ओ० के० (आकाशवाणी केन्या) द्वारा २० मिनट की मेरी एक वार्ता भी प्रसारित हुयी। जिसके द्वारा मैंने ईस्ट अफ्रीका के भारतीयों से भारतीय वैदिक संस्कृति के सम्बन्ध मे बात की, इसका प्रभाव भी काफी अच्छा रहा। नैरोबी आर्यसमाज की गतिविधियां तथा वहां की आर्य संस्थाए आर्यसमाज के लिये गर्व का विषय है. उन्हें देखकर मेरा मन बहुत प्रसन्न हुआ हैं।

—भारतेन्दु विमल एम ए
विद्यावाचस्पति
आर्यसमाज मोम्बासा

विज्ञप्ति

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून अनिवार्य आश्रम पद्धति पर चलने वाली अखिल भारतीय स्त्री शिक्षण संस्था है। जो कि गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से सम्बन्धित है। यहां प्रथम श्रेणी से बी० ए० तक (विद्यालंकार) की शिक्षा का प्रबन्ध है।

छात्राओं के लिए पढाई के अलावा चित्रकला, संगीत, विभिन्न प्रकार के खेल सिलाई, कटाई, खिलौने बनाना गृह विज्ञान एवं साइन्स आदि के शिक्षण की सुन्दर व्यवस्था है। शिक्षण शुल्क नहीं लिया जाता।

१ जुलाई से नवीन कन्याओं का प्रवेश प्रारम्भ है। संस्कृति लेकर मैट्रिक उत्तीर्ण छात्राये भी प्रथम वर्ष में प्रविष्ठ हो सकेंगी। प्रवेश के इच्छुक महानुभाव पत्र व्यवहार करें।

—दमयन्ती कपूर, आचार्या

—२८ अप्रैल बाघरी (मैनपुरी) मे श्री श्यामलाल जी पुत्री सूयमुखी देवी का पाणिग्रहण संस्कार श्री रूपलाल जी पाल, शक्ति बेवर (मैनपुरी) के साथ प० रामचन्द्र शर्मा अग्निहोत्री गुरुकुल (एटा) ने सम्पन्न कराया साथ ही मे श्री कमलदेव जी के मनोरंजक होते रहे।

—३ मई मे कुसमरा (मैनपुरी) मे स्वर्गीय रामस्वरूप जो हलवाई की पुत्री श्यामलन्दनी का उपनयन (यज्ञोपवीत) प० रामचन्द्र शर्मा अग्निहोत्री गुरुकुल (एटा) द्वारा सम्पन्न हुआ।

आवश्यकता

श्री पाणिनीय संस्कृत महाविद्यालय दयानन्द नगर (कोल्हुई) पत्रालय, चेतिया जनपद बस्ती, उत्तरप्रदेश के लिए निम्न प्रकार के अध्यापकों की शीघ्र आवश्यकता है।

(१) एक प्राचीन व्याकरणाचार्य्य अथवा प्राचीन व्याकरण शास्त्री।

(२) एक साहित्याचार्य अथवा साहित्य शास्त्री।

(३) दो बी० ए० प्रशिक्षित (हिन्दी एवं अंग्रेजी साहित्य से)।

प्रार्थी अपनी प्रार्थना पत्र २५ जून सन् १९६८ ई० से पूर्व प्रबन्धक महाविद्यालय के नाम प्रेषित करें। वेतन योग्यतानुसार दिया जाएगा।

गुरुकुलीय स्नातकों एवं वैदिक धर्मावलम्बियों को प्राथमिकता दी जायगी।

- प्रकाशक
प्रबन्धक, श्री पाणिनीय संस्कृत
विद्यालय दयानन्द नगर (कोल्हुई)

आर्यवीर समाचार

रविवार ज्येष्ठ कृष्ण ८ सं० २०२५ तदानुसार १९-५-६८ को आर्यसमाज मन्दिर दयानन्द मार्ग बीकानेर के तत्वावधान मे आर्यवीर दल तथा आर्य कुमार सभा की स्थापना उत्साहपूर्ण वातावरण मे की गई। इस अवसर पर समाज के पदाधिकारी और कार्यकर्ता उपस्थित थे। कार्यक्रम के पश्चात आर्यवीरों तथा कुमारों मे श्री नारायण स्वामी द्वारा लिखित 'विद्यार्थी जीवन" पुस्तकें तथा मिठाई वितरित की गई। श्री रणजीतसिंह व दल नायक श्री हरवीरसिंह और शम्भुराव यादव के नेतृत्व में आर्यवीर दल तथा कुमार सभा की शाखायें प्रतिदिन उत्साहपूर्वक लग रही हैं।

वधू चाहिये

२६ वर्षीय प्रथम विश्वविद्यालय एम० एम० सी० [illegible] (चन्देले) क्षत्रिय युवक के लिये शिक्षित सुशील कन्या की आवश्यकता है कन्या गुरुकुल की स्नातिका को विशेषता दी जावेगी केवल राजपूत क्षत्रिय पत्रव्यवहार करने का कष्ट करें।

—सत्येन्द्रनाथ शास्त्री
ग्राम पो० जावलखेड़ा
(शाहजहाँपुर)

आवश्यकता

एक १८ वर्षीय सुन्दर सुशील गृह कार्य में दक्ष तथा इन वर्ष इन्टर की परीक्षा मे सम्मिलित कन्या के लिये एक शिक्षित योग्य वर की आवश्यकता है जो बीसा अग्रवाल वंश का हो तथा गर्ग गोत्रीय न हो। पत्र व्योहार निम्न पते पर करें।

बृजलाल अग्रवाल
भवन निर्माण सामग्री के विक्रेता
८४, मोहल्ला रैदोपुर
शहर आजमगढ़

हमारा सबका विश्वास है कि महाभारत के पश्चात् यदि किसी व्यक्ति ने भली-भांति और सर्वाङ्ग महत्वपूर्ण उन्नति का प्रोग्राम समस्त संसार के आगे उपस्थित किया है, तो वह ऋषि दयानन्द जी महराज ने ही किया है। इस कारण जब तक ऐसे ऋषिवर का प्रोग्राम अर्थात् पुनर्जीवित वैदिक सन्देश जनता तक न पहुंचाया जावे, उस समय तक आर्य समाज को सुख से नहीं बैठना चाहिए। संसार की वर्तमान दशा देख कर बार-बार मेरे मन में यह विचार आता है कि आर्थिक और परमार्थिक उन्नति का प्रोग्राम जिस विधि और क्रम से वैदिक धर्म बताता है ऐसा अन्य कोई मत, पंथ या मजहब नहीं बताता। परन्तु खेद इस बात का है कि अभी तक वह प्रोग्राम संसार तो क्या भारतवर्ष के कोने-कोने तक भी नहीं पहुंच सका।

दयानन्द का लक्ष्य पूर्ण करो

इस सन्देश को समस्त संसार में पहुंचाने के लिए तीन समुदायों में कार्य करना होगा। (१) बुद्धिमान, (२) साधारण (३) और नवयुवक। जब तक हमारे लेखक और उपदेशक इन तीनों श्रेणियों तक नहीं पहुंचते, उस समय तक हम अपने कार्य में यथार्थ सफलता नहीं प्राप्त कर सकते। अब जब कि हमारा देश स्वतन्त्र हो चुका है हमें दत्तचित होकर इस अत्यन्त आवश्यक कार्य को करना चाहिए। कोई ढांचा शीघ्र तैयार करके ऋषि का लक्ष्य पूर्ण करना चाहिए।

प्रथम बुद्धिमानों तक आर्य समाज को अवश्य पहुंचना होगा, क्योंकि बुद्धिमान ठीक हो जाएं तो जनता अपने आप ठीक हो जाया करती है। यह एक सत्य है कि बुद्धिमानो का परस्पर वैर विरोध ही नाश का कारण हुआ करता है और भोली भाली जनता उलझ जाया करती है। बुद्धिमान् भी दो प्रकार के होते है। एक वह जिनमें सद्भावना और श्रद्धा अधिक होती है और वह किसी उच्च सन्देश और साहित्य को तुरन्त ग्रहण कर लेते हैं। उनके पास तो वैदिक साहित्य का पहुंचा देना ही पर्याप्त है। दूसरी प्रकार के ऐसे बुद्धिमान हैं जो तर्कशक्ति से छुटकारा प्राप्त नहीं कर सकते, ऐसे लोगों की आलोचना का उत्तर भी आवश्यक है अन्यथा उनमें पूर्ण श्रद्धा उत्पन्न नहीं की जा सकती। यह हमारा सिद्धान्त है कि सृष्टि के आरम्भ में केवल वैदिक धर्म था, वह ईश्वर प्रदत्त हैं और करोड़ों वर्ष तक आर्य लोग चक्रवर्ती राज्य करते रहे और अब भी हम इसी प्रयत्न में हैं कि फिर से वही प्राचीन वैदिक धर्म संसार में स्थापित किया जाय चाहे हमें संघर्ष करना पड़े। परन्तु विश्वकवि श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर ने इस विचार से घबरा कर लिख डाला था—

"किसी एक धर्म को जो किसी मनुष्य को अत्यन्त प्रिय है सर्वदा और सर्वत्र फैलाने का यत्न करना उन लोगों का स्वाभाविक कार्य होता है जो साम्प्रदायिकता मे लथपथ होते हैं और वह सुन भी नहीं सकते कि परमात्मा अपना प्रेम बांटने मे बड़ा उदार है और मानव तक उसके पहुंचने का साधन किसी काल या देश की अंधी गली तक ही परिमित नहीं हो गये हैं। यदि मनुष्यमात्र को कभी भी केवल एक धर्म रूपी बाढ़ की भयानक आपत्ति से सामना करना पड़ा तो परमात्मा को अवश्य यह प्रबन्ध करना होगा कि वह एक बार फिर हजरत नूह की नाव तैयार करके अपने पुत्रो को नष्ट होने से बचाये।"

विचार-विमर्श

टैगोर जैसे विद्वान संसार में केवल एक धर्म के विचार से ही घबरा उठे। ऐसे बुद्धिमान और जगत विख्यात मनुष्यों के लिए आर्य समाज के विद्वानो तथा विचारशील पुरुषों को सन्तोषजनक उत्तर देने पड़ेंगे।

स्वामी जी महराज ने मान के पांच स्थान बताये है। एक धन, दूसरा कुटुम्ब, तीसरा अवस्था, चौथा उत्तम कर्म और पांचवा श्रेष्ठ विद्या। परन्तु धन से उत्तम कुटुम्ब, कुटुम्ब से अधिक अवस्था, अवस्था से श्रेष्ठ कर्म और कर्म से पवित्र विद्या वाले अधिक माननीय हैं। क्या हमने इसको कार्य रूप दिया है? नहीं दिया है। स्वामी जी ने यह भी बताया है कि "जितना हिंसा और चोरी, विश्वासघात, छलकपट आदि मे पदार्थों को प्राप्त होकर भोग करना है वह अभक्ष्य और अहिंसा धर्म आदि कर्मो से प्राप्त होकर भोजन करना भक्ष्य है। क्या हम मान के अतिरिक्त नेक कमाई का भी ध्यान रखते है? कम से कम मैंने तो इस बात पर विचार करने वाला कोई नहीं देखा। इसलिए या तो हम स्वामी जी के कथानुसार जनता की कमाई को नेक बनाए और फिर नेक कमाई से धन कमाने वाले मनुष्य को मान का पांचवां स्थान दें अन्यथा शान्ति कैसे स्थापित होगी। केवल शान्ति पाठ के रटने से न ही शान्ति स्थापित हो सकती है और न हो कोई बुद्धिमान् सन्तुष्ट हो सकता है। इस समय तो हमारी दशा यह है कि हम पैसे वाले के सामने, चाहे उसका पैसा पाप से कमाया हुआ हो, दम मारने का साहस नहीं रखते, बल्कि समाज मे सबसे बड़ा दर्जा देने को तैयार रहते हैं। केवल साधारण जनता ही धनवान की पूजा नही करती बल्कि "धन वानों के द्वार पर खड़े रहे गुणवन्त" वाली कहावत भी शत प्रतिशत ठीक हो रही है। ऐसी दशा में कोई भी समझदार मनुष्य इस बात से ना नहीं कर सकता कि सम्पत्ति की वर्तमान बांट को अनिवार्य रूप से बदल देना चाहिए। आर्य समाज को इधर भी तीव्र गति से काम करना है।

दूसरा समूह साधारण जनता है। वैदिक धर्म ऊंचे दर्जे के ज्ञान पर निर्भर है, परन्तु भारत के रहने वाले धर्म को मानते हुए भी वेदों को नहीं मानते। क्योंकि जब व्याख्यान मे बुद्धिगम्य बाते सुनने को मिलती है तो लोग खिसकने लगते हैं। आर्य समाज के उपदेशो मे पहले दिन स्त्रियो और पुरुष काफी संख्या मे आ जाते हैं परन्तु अगले दिन कम हो जाते है, कहते हैं, वेदों का समझना बड़ा कठिन है। यही कारण है भजन उपदेशको चिमटे वालो और कीर्तनों के रखने का। विद्वान बोलने वाला हो तो हाजरी बहुत थोड़ी। भांडों की तरह बोलने वाला, बेतुकी हांकने वाला, आकाश पाताल को मिलाने वाला हो तो हाजरी बहुत अधिक। हिन्दू भाइयो की मनोवृति अज्ञान और दासता के कारण ऐसी बन गई है कि यह सभी बातो मे सस्ता सौदा करना चाहते हैं। एक साधारण हिन्दू सट्टे से धन चाहता है और डुबकी से मुक्ति चाहता है। इसी कारण ज्ञान को झमेला समझना हुआ बुद्धि को तीव्र नहीं करता और मिथ्या मत मतान्तरों और कपोल कल्पित सिद्धान्तों में उलझा रहता है। इस कारण आर्य समाज के सामने यह प्रश्न भी है कि जनता को किस प्रकार वैदिक धर्म में रुचि कराई जावे। रामलीला में हजारों पहुंच जाते हैं। कोई तीर्थ यात्रा हो त्यौहार लेकर

★कुंवरबहादुर

ही पहुंच जायेंगे। परन्तु आर्य समाज के सत्संग मे नहीं आते। क्या इसका कारण यह है कि रामलीला जाकर वे भ्रातृभाव, शूरवीरता, पतिव्रत धर्म या राजनीति को सीखते हैं, कदापि नहीं, वे केवल तमाशा देखने जाते हैं। उनके मन में किसी प्रकार का आदर्श या उद्देश्य का विचार तनिक भी नहीं होता। ऐसा प्रतीत होता है कि भारत के हिन्दू न ही सत्य के पुजारी है और न ही कर्मशील। यह प्रत्येक क्षेत्र में घटिया स्थान पर रह कर अपना जीवन व्यतीत करना चाहते हैं।

तीसरा नम्बर नवयुवकों का है। इनको आत्मा, परमात्मा, कर्मफल, जन्म-मरण, ईश्वर भक्ति आदि से कोई रुचि नहीं रही, इन्हें प्राचीन संस्कृति से तनिक भी प्रेम नहीं। इन्हें धर्म का विचार ही झुनझुना देता है। उनके विचार मे भारत की आपत्ति का एक मात्र कारण धर्म ही है। अब इस जाति की उठती हुई आशाओं और इस देश की दौलत अर्थात् नवयुवकों के पास आर्यसमाज क्योंकर पहुंचे? ईसाई मत का भी यही हाल था परन्तु ईसाई प्रचारक दुनियादारी को खूब समझते हैं। उन्होंने ईसाई नवयुवकों की सभाएँ स्थापित की और वहां पर केवल भाषण देना ही आरम्भ नहीं किया बल्कि उनको अपनी ओर आकर्षित करने के लिए टाइप और शार्टहैंड की शिक्षा दी। निवास का भी प्रबंध किया। बड़े-बड़े नेताओं के व्याख्यान भी कराये परिणाम यह निकला कि नवयुवक इन समाओं के सम्पर्क मे आने लगे और इसी प्रकार ईसाई मत की बातें भी सुनने लगे और धीरे-धीरे इनको अपनाने लगे। क्या आर्यसमाज ऐसा नहीं कर सकता है? जहां वेदों की कथा हो वहां समाज मन्दिरों में अन्य लाभदायक बातों पर भी विचार हो जाया करे तो क्या हानि? आर्य समाज के पास इतने विद्वान और कालिज के प्रोफेसर हैं उनके द्वारा शिक्षा संस्थाओं में प्रचार कराया जाये। स्थान स्थान पर युवक सभाएं खोलकर जहाँ इन्हें वैदिक धर्म का भक्त बनाकर उनके भीतर आत्म सम्मान, चरित्र, निर्भीक, सद्बुद्धि और ईश्वर प्रेम की भावनाएं उत्पन्न की जाएँ, वहां संसार को बतला

लखनऊ—रविवार ज्येष्ठ २६ शक १८९०, आषाढ़ कृ० ६ वि० सं० २०२५, तदनुसार १६ जून १९६८ ई०

वेदामृत

श्री जगजीवनराम अपने असत्य एवं अनर्गल वक्तव्य पर खेद प्रकट करें

अथवा

भारत सरकार इस सम्बन्ध में अपनी स्थिति स्पष्ट करे

देश के कोने-कोने से आर्य जनता की मांग

—○○★○○—

गत २ जून को सार्वदेशिक सभा दिल्ली के आह्वान पर देश के विभिन्न नगरों तथा ग्रामीण अञ्चलों में स्थापित आर्य समाजों द्वारा भारत सरकार के खाद्य मन्त्री श्री जगजीवनराम के इस वक्तव्य पर कि वैदिक युग में गो मांस खाया जाता था, घोर विरोध प्रकट किया गया और जन सभाओं का आयोजन कर तत्सम्बन्धी प्रस्ताव पारित किए गए।

भारत सरकार को चाहिए कि जनमानस की भावनाओं का आदर करते हुये इस सम्बन्ध में अविलम्ब अपनी स्थिति स्पष्ट करे।

●

वार्षिक १०) छमाही ६) विदेश में १ पौ०

सम्पादक:
सच्चिदानन्द शास्त्री एम० ए० सभा मन्त्री ★ पं० शिवदयालु
उमेशचन्द्र स्नातक एम० ए०

वर्ष ७० अङ्क १६ एक प्रति २५ पै०

भारत के प्रथम उन्नायक—

महर्षि दयानन्द

★ डा० रामसिंह एम. ए.
पी-एच०डी०, टकाना रोड, पिठौरागढ़

महर्षि दयानन्द भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के पितामह हैं। वे अनेक दृष्टियों से क्रान्तिकारी और पूरे अर्थों में क्रान्तदर्शी ऋषि थे। वे ही पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने देश का औद्योगीकरण एक पूर्ण स्वाभिमानी स्वतन्त्र राष्ट्र के रूप में करना चाहा था, अंग्रेज प्रभुओं की छत्र-छाया में नहीं, उसी युग में अंग्रेजों के प्रसिद्ध प्रतिद्वन्दी राष्ट्र जर्मनी के सहयोग से। वे अंग्रेजों की छत्रछाया के घातक परिणामों को जानते थे, जिसे हम आज हजारों धक्के खाकर भी समझ नहीं सके हैं। वे विदेश नहीं गये थे, अनेक बार विदेश चलने का आग्रह और बाहर से निमन्त्रण मिलने पर भी। जब घर ही लुट जल रहा है तो बुद्धिमानी आग बुझाने में है, बाहर जाकर अपनी महत्ता के गान में नहीं। वे विदेश जाते तो उन का सम्मान अपने प्रगतिशील और सर्व मान्य विचारों के कारण इतना अधिक होता जितना आज तक किसी का नहीं हुआ। यश-लोलुपता उनमें होती तो उन्हें विदेश जाने से कोई रोक नहीं सकता था, विदेशी छाप लगी उनकी प्रतिमा भी आज जगह-जगह पूजी जाती। परन्तु उन्हें अपने देश के भूखे, नंगे, पीड़ित, अनपढ़ मानवों से अधिक मोह था, वे महीदार सीटों में बैठकर विदेश भ्रमण की अपेक्षा इस देश की धूल, बेशुमार गर्मी, असह्य ठिठुरन को इतना अधिक पसन्द करते थे। क्योंकि सदियों से पराधीन भारत की काया भी उन्हें बदलनी थी।

स्वदेश, स्वराष्ट्र, स्वभाषा, स्व-संस्कृति को वे पराधीन देश के लिये सर्व प्रथम आवश्यकता समझते थे। शब्द-जाल में कूड़ा-करकट को भी जो स्वदेशी ही था, अपनाने के कट्टर विरोधी थे। इसके लिये नासमझ लोगों ने उन्हें नास्तिक, विधर्मियों का एजेंट, स्वार्थपरायण अंग्रेज प्रभुओं का शत्रु आदि कहकर उन्हें बद-नाम करने का प्रयत्न किया। इतना होने पर भी उन्होंने अपनी सच्चाई की दृढ़ता में भय, लालच या सस्ती लोकप्रियता की तुच्छ मनोवृत्ति को कभी उभरने नहीं दिया। वे प्रत्येक भारतीय की अन्तरात्मा की पूर्ण सफाई चाहते थे। यह भी सही है कि वे एकमात्र आर्य धर्म के प्रशंसक थे। परन्तु वे उसकी विशेषताओं की ही दुन्दुभि बजवाने की अपेक्षा उसे आदर्श बनाना चाहते थे।

उन्होंने कभी गुड़ में सने हुये मैल की इसलिए सराहना नहीं की कि गुड़ के सम्पर्क से मैला भी मीठा हो गया है, वरन उन्होंने अनुभव किया कि इस मैले ने गुड़ के गुणों को तो नष्ट भी किया है परन्तु बदले में गुड़ को भी दूषित कर डाला है। अतएव यदि वही गुड़ खाना है तो उसके मैले को साफ कर डालो। वे सड़े हुये फल को मय सड़न और कीड़ों के निगल जाने की सीख कभी नहीं दे गये। वे तो तेज चाकू से फल के टुकड़े २ अलग करके सड़न को काट कर फेंक देने के पक्षपाती थे। इसी से उन्होंने वर्ण व्यवस्था की सराहना तो की साथ ही उससे चिपके जातिवाद की सड़न को बुरी तरह काट छांट भी की। वे तो निरीह और त्यक्त लोगों के हाथ का भोजन ऊँचे आत्माभिमानियों को दिला २ कर खाते थे। वे कष्ट से बिलबिलाते रूढ़ि और अन्धविश्वास में डूबे लोगों के चीत्कार को छोड़कर व्यक्तिगत शांति या साधना में विश्वास नहीं करते थे। वे नित्य एक व्याख्यान देते, शास्त्रार्थ करते सैकड़ों शंकाओं का समाधान करते किसी न किसी को कुछ समय पढ़ाते, स्वाध्याय, चिन्तन मनन और लेखन करते, वेदों के गूढ़ रहस्यों पर अपने विचारों को प्रकट करते रहते। केवल दस वर्षों की छोटी सी अवधि में, आठ-नौ शताब्दियों का जमा कूड़ा करकट, अगणित विरोधी और विघ्न बाधाओं के बीच अकेले काम करने वाले उस महापुरुष के अध्यवसाय और अनथक परिश्रम को चमत्कार या असाधारण कर्तृत्व के अतिरिक्त और क्या संज्ञा दी जा सकती है। उस पर भी देश के कोने २ में भ्रमण करना, हजारों व्यक्तियों से सम्पर्क, अनेक सम्प्रदाय के नेताओं, प्रवर्तकों को अपना मन्तव्य समझाना, राष्ट्र भाषा और गऊ रक्षा के लिए स्मृति पत्रों (मान-पत्रों) पर लोगों के हस्ताक्षर करवाना, पाखण्ड खण्डिनी पताका को देश भर में घुमाना न जाने कितने कार्यक्रम एक अकेले व्यक्ति के ऊपर थे। रात के दो बजे जाग जाना, दिनभर एक सब दिन उनके काम करते जाना विलक्षण शक्ति और अद्वि-तीय कार्य क्षमता का परिचायक था। हमारे स्वाधीनता के इतिहासकारों में अधिकांश ने महर्षि को व्यक्तित्व की गरिमा को भुलाकर भारी पाप किया है, जिस किसी ने ऐसा किया है, उसने देश को भावना के साथ विश्वासघात किया है।

उनकी निश्छल आलोचना का सभी सम्प्रदायों के समझदार व्यक्तियों ने स्वागत किया। तभी डा० रहीम ने उनको आश्रय दिया। ईसाई धर्माचार्यों और अंग्रेज शासकों में जो प्रबुद्ध थे, सभी ने

(शेष पृष्ठ १६ पर)

आर्यों के कर्तव्य

•

ओ३म् नित्यं पंच महायज्ञं कुर्यात्सर्वार्य्य तन्द्रितः,
मासे २ बृहद्यज्ञं वैदिकी समनुष्ठितम् ॥ १ ॥

देयं दानं गुरुकुले तथा वेद प्रचारणे,
तपः स्वाध्याय निरतः सर्वं देव न संशयः ॥ २ ॥

धर्म संरक्षणार्थाय वैधर्म्यं च विनाशनम्,
शुद्धिः संगठनं कृत्वा आर्याणां च विवर्धनम् ॥ ३ ॥

अनाथाः विधवाः रक्ष्याः गोवंशस्यैव रक्षणम्,
मान प्रतिष्ठा दातव्या ब्राह्मणे. वेद पारगैः ॥ ४ ॥

ग्रामे ग्रामे समार्यंच पाठशाल तथैव च,
युद्ध विद्या मल्लशाला ब्रह्मचर्यं प्रचारणम् ॥ ५ ॥

सर्वत्र स्थापनं कुर्या दार्य शासन मुत्तमम,
साम्राज्यः चक्रवर्तिश्च यथार्याणां च पूर्वजम् ॥ ६ ॥

असत्य खण्डनं कुर्यात्सत्य स्यैव च मण्डनम्,
विश्वमार्य च कृण्वन्तो येनं धर्म समाचरेत् ॥ ७ ॥

सर्वेषामार्यवर्याणा धर्मोयं पालनं ध्रुवं,
ईश्वरस्य प्रसादेन विश्वमार्यं भविष्यति ॥ ८ ॥

(अर्थ) १—सब आर्यों को नित्य-प्रति निरालस्य होकर पंच महा यज्ञ करना चाहिए। तथा हर महीने में एक वैदिक वृहद् यज्ञ वेद मन्त्रों से कराना चाहिये।

२—निःसन्देह गुरुकुल तथा वेद प्रचार में दान देना चाहिये। एवं वेदों के स्वाध्याय में संलग्न रहना चाहिये। और तपस्वी जीवन बनाना चाहिये।

३—वैदिक धर्म की रक्षा के लिए और विधर्मी सिद्धान्तों का विनाश करने के लिये एवं आर्यों की वृद्धि के लिये शुद्धि और संगठन करना चाहिये।

४—अनाथों, विधवाओं तथा गो वंश की रक्षा करनी चाहिये। तथा वेद पारंगत् ब्राह्मणों को मान प्रतिष्ठा देना चाहिये।

५—प्रत्येक गांव में संस्कृत पाठशाला, युद्ध विद्या सिखानेवाले मल्लशाला स्थापित करनी चाहिये और ब्रह्मचर्य का प्रसार करना चाहिये।

६—पूर्व आर्य राजाओं की भांति चक्रवर्ती साम्राज्य के द्वारा सर्वत्र उत्तम आर्यशील शासन स्थापित करना चाहिए।

७—असत्य का खण्डन तथा सत्य ही मण्डन करना चाहिये। क्योंकि इस धर्म का आचरण करने से विश्व भर को आर्य बनाया जा सकता है।

८—इसलिए सब आर्य सज्जनों को इस धर्म का पालन अनिवार्य रूप से करना चाहिये। तो परमात्मा के आशीर्वाद से समस्त विश्व आर्य हो जायगा।

★ ब्रजमोहनशरण आर्य, उन्नाव

वैदिक प्रार्थना

ओ३म् ऋजुनीती नो वरुणो मित्रो नयतु विद्वान । अर्यमा देवैं सजोषा ।।१८।।
ऋ० १ । ६ । १७ । १ ।।

व्याख्या–हे महाराजाधिराज परमेश्वर ! आप हमको "ऋजु०" सरल (शुद्ध) कोमलत्वादिगुणविशिष्ट चक्रवर्ती राजाओं की नीति को "नयतु" कृपा दृष्टि से प्राप्त करो, आप 'वरुण.' सर्व्वोत्कृष्ट होने से वरुण हो, सो हमको वरराज्य वरविद्या वरनीति देओ तथा सबके मित्र शत्रुतारहित हो हमको भी आप मित्रगुणयुक्त न्यायाधीश कीजिये तथा आप सर्वोत्कृष्ट विद्वान् हो हमको भी सत्यविद्या से युक्त सुनीति दे के साम्राज्याधिकारी सद्य कीजिये तथा आप "अर्य्यमा" (यमराज) प्रियाप्रिय को छोड़ के न्याय मे वर्तमान हो सब ससार के जीवों के पाप और पुण्यो की यथा योग्य व्यवस्था करने वाले हो सो हमको भी आप तादृश करें जिससे 'देवैं, सजोषा' आपकी कृपा से विद्वानो वा दिव्यगुणों के साथ उत्तमप्रीति-युक्त आप मे रमण और आपका सेवन करने वाले हों, हे कृपासिन्धो भगवान् ! हम पर सहायता करो जिससे सुनीतियुक्त होके हमारा स्वराज्य अत्यन्त बढ़े । १८ ।।

आर्य्यमित्र

लखनऊ-रविवार १६ जून १९६८, दयानन्दाब्द १४४ सृष्टिसंवत् १,९७,२९,४९,०६९

* अन्तरंग सभा की सूचना *

मान्यवर !

निवेदन है कि सभा प्रधान जी की आज्ञानुसार आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश की अन्तरङ्ग सभा का साधारण अधिवेशन मिति आषाढ शुक्ल १ संवत् २०२५ तदनुसार दिनांक २६ जून सन् १९६८ दिन बुधवार को मेस्टन रोड आर्यसमाज कानपुर मे समय प्रातः ९-३० बजे से प्रारम्भ होगा ।

आशा है आप समय पर पधार कर कार्य सम्पादन में सहयोग प्रदान करेंगे ।

-सच्चिदानन्द शास्त्री, एम० ए०
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश

आर्यमित्र का मूल्य १०) वार्षिक होगा

१६ मई से डाक व्यय के दूना हो जाने के कारण आर्यमित्र का मूल्य ८) रुपया से बढ़ाकर १०) वार्षिक करना पड़ा है । पहले डाक व्यय दो पैसा था जो अब पांच पैसे हो गया है, जिससे वर्ष में १५००) रुपये का घाटा होता है । अतः मूल्य की वृद्धि कर ८) से १०) कर दिया गया है ।

आशा है कि सहृदय पाठक बढ़े हुए पोस्टेज के कारण आर्यमित्र की अनिवार्य मूल्य वृद्धि से असन्तुष्ट न होंगे और अपनी कृपा दृष्टि पूर्ववत् बनाये रखेंगे ।

हम भरसक यह प्रयत्न कर रहे हैं कि आर्यमित्र का प्रकाशन ग्राहकों की रुचि के अनुकूल हो

—सभा मन्त्री

सम्पादकीय

केवल त्याग और तप ही समाज को गतिशील बना सकता है

★

जब किसी सभा सोसायटी के अधिकारियों का निर्वाचन होता है, तब लोगों मे खूब चहल-पहल दिखायी देती है । महीनो पहले से कनवेसिंग या कानाफूसी प्रारम्भ हो जाती है । वोट बटोरने के लिये जितने साधन सम्भव होते हैं, वे सब काम में लाये जाते हैं । जो लोग चुनाव संग्राम में सफल हो जाते हैं, उनकी तो विजय दुन्दुभी बजती है परन्तु जिन्हे कामयाबी नहीं हो पाती वे दांत मिस मिसाकर रह जाते हैं और अपनी अलग अढ़ाई चावल की खिचड़ी पकाने का उद्योग करते हैं । खेद की बात है कि दुर्भाग्यवश यही सब कार्यवाही आर्यसमाज जैसी धार्मिक संस्था और उससे सम्बन्धित सभाओं के निर्वाचनों मे भी देखी जा रही है । आर्यसमाज मे भी ऐसे कितने ही पहलवान हैं जो चुनाव संग्राम या दलबन्दी के दङ्गल मे खम ठोकते हुये दिखायी देते हैं, वैसे उनका किसी क्षेत्र मे नाम भी सुनायी नहीं पड़ता । ज्यों २ सभाओं या समाजों का चुनाव निकट आता जाता है, त्यों २ लोगों के शरीर में उत्साह की विद्युत धारा बड़े वेग से दौड़ने लगती है, परन्तु चुनाव समाप्त होते ही वह बिजली की राशि सड़े हुये फूस की तरह धम्म से धरती पर आ पड़ती है ।

चुनाव में भाग लेना बड़ी अच्छी बात है, उसके लिये उद्योग करना भी अब बुरा नहीं समझा जाता । परन्तु केवल चुनाव के लिये ही सारी शक्तियों को केन्द्रित करना और शेष वर्ष को नींद सोना कर्मण्यता का चिह्न नहीं है । हमें दुःख होता है, जब देखते हैं कि अन्य सम्प्रदायों की तरह आर्यसमाज ने भी अपने को सीमित क्षेत्र मे सिकोड़ना प्रारम्भ कर दिया है । दूसरे सम्प्रदायों की तरह हम भी ज्यों त्यों कर अपने उत्सव मनाने और आर्य पद्धति की रस्म अदा करने में ही अपनी कर्त्तव्य निष्ठा की चरम सीमा समझ लेते हैं । लोगों मे उत्साह, उमंग या तरंग दिखाई नहीं देती, और न यही मालूम देता है कि कहीं गम्भीरतापूर्वक ठोस काम हो रहा हो । बड़े-बड़े महासम्मेलनों और महोत्सवों मे बहुत बड़ी भीड़ का एकत्र हो जाना बड़े सौभाग्य की बात है, परन्तु इसमे यह अनुभव कर लेना कि आर्यसमाज अपने उद्देश्यपूर्ति की सफलता की सड़क पर दौड़ा चला जा रहा है, ठीक प्रतीत नहीं होता । हमे अपनी सफलता का अन्दाजा न तो भीड़-भाड़ से लगाना है और न बाहरी आडम्बर से, हम तो यह देखना चाहते हैं कि हमने धार्मिक या अध्यात्मिक क्षेत्र मे वास्तविक और ठोस उन्नति कहां तक की है । हम अपने उद्देश्यों पर अनुष्ठान करने के निमित्त किस गति से आगे बढ़े । आत्म निरीक्षण या आत्म संशोधन के लिये क्या किया ?

यदि हम विशुद्ध एवम् धार्मिक भावना लेकर समाज मे प्रविष्ट हुये हैं, तो हमारा समाज भी वैसा ही होगा । धर्म झण्डे के ऊंचा उठाने वाली वस्तु नहीं है । इसका सम्बन्ध हृदय से है । हृदय की पवित्रता के लिये सत्संग, स्वाध्याय, आत्मचिन्तन आदि की अतीव आवश्यकता है । यदि हम सभी लोग केवल त्याग और तप की भावना लेकर सच्चे आर्य मिशनरी की भांति कार्य-क्षेत्र कूद पड़े तो बड़ा हित साधन हो सकता है । निश्चय ही हमको नगर-नगर और ग्राम ग्राम मे घूम-घूम कर अलख जगानी पड़ेगी और असह्य कष्ट भोगने रहेंगे परन्तु उनके बाद जो सफलता प्राप्त होगी वह अभिनन्दनीय स्वागत करने योग्य होगी ।

—सच्चिदानन्द शास्त्री

फेरर तथा अन्य सब कैथालिक गुप्तचरों को निकालो

जैसी की सम्भावना थी नपुंसक कांग्रेस सरकार ने रोमन कैथलिक के भारत विरोधी प्रदर्शनों एवं धमकियों के सामने निर्लज्जतापूर्ण ढंग से हथियार डाल दिये और देश द्रोही फेरर को आगे दो मास तक भारत मे रहने की अनुमति दे दी ।

शक्तिशाली चीनी फौज के सामने भारतीय सेना की हिमालय में हुई दुर्दशा को हम समझ सकते हैं तथा विदेशी शक्तियों के दबाव मे आकर ताशकन्द में पाकिस्तान के साथ दबकर किये गये अपमान जनक समझौते को भी समझा जा सकता है किन्तु कतिपय कैथालिक पादरियों की धमकी के सामने भारतीय सेनाओं पर अभिमान करने वाली सरकार का झुक जाना हमारे तो क्या संसार मे किसी की भी समझ मे आने वाली बात नहीं है

क्या सरकार के पुलिस विभाग की फेरर सम्बन्धी राष्ट्रद्रोही गतिविधि की रिपोर्ट असत्य और बनावटी है ? क्या फेरर, के मनमाड गोदाम मे प्राप्त १२०० से अधिक बम तथा ३०० किलो विस्फोटक पदार्थों का मिलना उसे देशद्रोही घोषित करने के लिए पर्याप्त नहीं है

हमारा भारत सरकार से अनुरोध है कि वह समय रहते चेत जाये और भारत मे ईसाई स्थान बनाने सम्बन्धी षड्यन्त्रों का डटकर सामना करे । विदेशी मिशनरियों और विशेष कर रोमन कैथालिक मिशनरियों को भारत से अविलम्ब निकाल देने में ही देश की सुरक्षा एवं कल्याण निहित है

-प्रियदयालु

इस्लाम के कुछ सिद्धांत

[श्री विद्यामित्र आर्य फजिले अदब (अरबी) एम० ए० एल० टी०]
प्रधानाचार्य हिन्दू इण्टर कालेज, रुदौली (बाराबंकी)

गत वर्ष लेखक का विचार हुआ कि कुरआनशरीफ का एक हिन्दी अनुवाद इस प्रकार का किया जाये जिसमें यथा सम्भव शब्दों के अर्थ करने में केवल अरबी साहित्य तथा तत्कालीन जिन विशिष्ट अर्थों में वे प्रयुक्त हुये हों उनको ही महत्व दिया जाये। कुरआन शरीफ के भाष्यकारों, अनुवादकों, मुहद्दिसों तथा विभिन्न उलेमा ने क्या अर्थ लिये हैं इसको अधिक महत्व न दिया जाये क्योंकि उससे मानव समाज मे कटुता उत्पन्न होती है, लेखक ने मौलाना अब्दुल माजिद साहब 'मालिक' दरियाबादी से अपना विचार प्रकट किया।

यहाँ यह बता देना असंगत न होगा, कि मौलाना अब्दुल माजिद साहब एक उच्च कोटि के विद्वान्, लेखक, तथा विचारक हैं और उनकी ख्याति इसी देश के आलिमों में ही नहीं अपितु बाहर देशों मे भी है यह कहना अनुचित नहीं होगी कि उन्होंने इस्लाम धर्म को आधुनिक विज्ञान और दर्शन के प्रकाश में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है, अतः इस्लाम के कुछ प्रमुख सिद्धान्त जैसे फरिश्तों का अस्तित्व, जन्नत, जिहाद, नमाज आदि के सम्बन्ध मे मैंने इस आशा से कुछ प्रश्न उनसे करके उनका अर्थ स्पष्ट करवाना चाहा जो आधुनिक युग के विचारक मान सकें परन्तु दुख है कि उनके उत्तरों से मुझे सन्तोष नहीं हुआ।

मैं इस लेख में सम्मान्य मौलाना द्वारा जो उत्तर प्राप्त हुए बिना किसी टीका टिप्पणी के उन्हीं के शब्दों मे यहां प्रस्तुत कर रहा हूं जिससे धर्म के जिज्ञासुओं को वास्तविकता की जानकारी हो जाये अस्तु सम्बन्धित पत्र व्यवहार मूल शब्दों में निम्न है।

मौलाना द्वारा प्राप्त प्रथम पत्र जो अपने द्वारा हिन्दी अनुवाद करने के सम्बन्ध मे कुछ अंग्रेजी तर्जुमों की जानकारी से सम्बन्धित है और जिसके द्वारा मौलाना द्वारा कृत अंग्रेजी अनुवाद की प्रति देखने को मांगी गई थी।

१) दरियाबाद ३१ दिसंबर १९६६
करम गुस्तर (दयालु) तस्लीम

हिन्दी तर्जुमा एक तो जमाअते इस्लामिया वाले हाल मे कर चुके हैं। मेरे ख्याल में तो वह काफी हो जाना चाहिये एक तर्जुमा सुना है कि लखनऊ के कोई हिन्दू साहब कर रहे हैं। एक तर्जुमा अरसा हुआ ख्वाजा हसन निजामी छापा था।

मेरा आम तजुरबा यह है (खुसूसन विशेषतया) बड़े बड़े फाजिल (विद्वान्) लेखों के किये हुये अंग्रेजी तराजिमे (अनुवाद) कुरान को देखकर) कि हर आसमानी किताब की अस्ल रूह व मग्ज (वास्तविकता) तक सिर्फ उस किताब के मानने वाले ही पहुंच सकते हैं।

मेरे अंग्रेजी तर्जुमे की सिर्फ एक ही कापी मेरे पास है। उसे मुश्किल से ही अपने पास से जुदा करता हूं कि मालूम नहीं किस वक्त उसकी जरूरत पेश आ जाये। ता हम (तब भी) आपकी फर्माइश पर गौर करूंगा।

जिन मसायल (प्रश्न) को आप दर्याफ्त करना चाहें, वजूदे मलायका (फरिश्तों का अस्तित्व) वगैरह वगैरह उनपर सवालात लिखकर भेज दें।

ज्यादह तस्लीम, अब्दुलमाजिद

उपर्युक्त पत्र के उत्तर मे १-१-६७ को लेखक ने लिखा—

मेहरबानम आदाब !

जनाब का गरामी नामा (कृपा पत्र) मौसूलहुआ (प्राप्त) आपने जो जहमत मेरे खत के जबाब लिखने मे गवारा फर्माई उसके लिये शुक्रिया। इसमे कोई शक नहीं कि हिन्दी तराजिम और लोगों ने भी किये हैं ख्वाजा हसन निजामी साहब का तर्जुमा अरसा दराज (अधिक समय) हुआ जब मेरी नजर से गुजरा था लखनऊ का तर्जुमा भी मैंने देखा मगर मेरे ख्याल मे मजकूरा (उक्त) हर दो तराजिम के मकासिद (उद्देश्य) अलग-अलग हैं। मेरा अपना मतमहे नजर (दृष्टिकोण) दूसरा है। मैं इस तर्जमे का अंग्रेजी या दीगर उलमा के तराजिम के चरबा (अनुकरण) नहीं बनना चाहता बल्कि खुसूसी तौर पर अरबी इबारत से ही तर्जुमा आजादाना करना चाहता हूं। मेरा ख्याल है कि आं हजरत (पैगम्बर) दुनिया के आजम तरीन (महान) मुस्लिह (सुधारक) थे और उन्होंने अरब कौम को कअरे मजल्लत (अन्धकार के गड्ढे) से निकालकर उन्हें न सिर्फ अखलाक (उत्तम आचरण) हमीदा से आशना किया बल्कि उसे मुत्तहिद (संगठित) करके दुनिया की एक मुतमद्दीन (सुसस्कृत) कौम बना दिया। कुरान शरीफ की ज्यादातर आयात जो मुख्तलिफ मवाके (विभिन्न (स्थानो) पर हस्बेजरूरत नाजिल (उतरना) होती रहीं उनके इस अज्म (दृढ़ निश्चय) और इस्तिकलाल (दृढ़ निश्चय को साबित करती है। मेरा यह भी ख्याल है कि इस किस्म की आयात से हम इतना ही मुस्तफीद (लाभान्वित) हो सकते हैं कि अगर हमारे सामने भी इस किस्म के हालात दर पेश हों तो हम क्या करें। काफिर मुश्रिक मुनाफिर और जिम्मी वगैरा अलफाज आं हजरत के जमाने मे मौजूदा मुख्तलिफ तबकात (श्रेणियो) व अकायद (विश्वासो) के लोगो के लिये ही मुस्तामल (प्रयुक्त) हुये हैं और उनके साथ जिन अल्फाज या उनके साथ जिस किस्म के बर्ताव की तलकीन (शिक्षा) है वह हस्बेहाल है जो इस जमाने में बे महल (अवसर के विपरीत) मालूम होते हैं। क्यों कि आज इंसान को इंसान से प्रेम मुहब्बत की जरूरत है।

मजकूरा बाला (उपयुक्त) किस्म की आयात के अलावा वह आयात जिन का गैब से ताल्लुक है मसलन ईमान के लिये फरिश्तों का कायल होना, दोजख और जन्नत हश्रो नश्र (कयामत) वगैरा उनके बारे में जो चीज काबिले गौर है वह यह है और मुझे उम्मीद वासिक है कि जनाब अपने अकीदे के मुताबिक जरूर कुछ रोशनी डालेंगे।

(१) फरिश्तो का कोई मुस्तकिल वजूद है या जैसा किसी शायर ने कहा है "आदमी राकुवा मलायका अस्त (फरिश्ते मनुष्य की शक्तियां ही हैं) के मुताबिक सहज इन्सानी या रब्बानी (ईश्वरीय) कुवा ही हैं।

(२) इस मखलूक से भी कब्ल (पूर्व) कोई मखलूक (सृष्टि) थी या नहीं और बादे कयामत क्या कभी मखलूक का इमकान (सम्भावना) है या नहीं।

(३) कयामत हर इसान की अलाहिदा २ है, अब जो मरता है तभी खुदा उसके अमाल के मुताबिक सजा या जजा दे देता है या यकक वक्त (एक ही समय मे) जमा करेगा।

(४) जन्नत और दोजख की माहियत (वास्तविकता) क्या है।

सरे दस्त इनके बारे मे आप अपने ख्यालात से मुत्तला फर्माएं। जहमत के लिये मआफी का ख्वास्तगार, ।

ज्वाब मुतअल्लिका (इच्छुक)
सबमित In land head पर देकर मश्कूर करें।

—विद्यामित्र आर्य

बिस्मिल्लाह

दरियाबाद ९ जनवरी १९६७

मेहरबाने बन्दा तस्लीम

इनायत नामा (कृपापत्र) मिला। आप कुरआन के सिलसिले मे जिन ख्यालात का इजहार किया वह बहुत अच्छे और काबिले कद्र हैं। अब सवालात के मुख्तसर जवाबात अर्ज है:—

(१) कुरआन की सिराहतों (वर्णों) से तो यही मालूम होता है कि फरिश्तों का मुस्तकिल वजूद (अस्तित्व) है और वह नूरानी और मुतकद्दम (प्रकाशमय तथा प्राथमिक) और कारकुन (क्रियाशील) हस्तियां हैं। मगर बाज मुसल्मान ही फिरको ने उन्हे कुवा (शक्तियाँ) के मानी मे लिया है इस की भी गुन्जायश खींचतान कर निकल आती है।

(२) इन्सान से कब्ल किसी मखलूक होने की सिराहत तो नहीं इशारात से ऐसा निकल आता है। बादे कयामत सारी मखलूक एक दूसरे आलम में हमेशा मौजूद रहेगी। जन्नत व दोजख में मकीम।

(३) एक महदूद मानी में मरते ही हर इन्सान की कयामत कायम हो जाती है। यानी मुजमल (सक्षिप्त) जांच के मानी मे बरजखी (बीच की) जिन्दगी है, खुशगवार या तकलीफ दह मिल जाती है। तफसीली (विस्तृत) हिसाब-किताब एक-एक जुजआ का हश्र में होगा।

(४) जाहिरी मानी तो यही है कि इस माद्दी (प्राकृत) दुनियां के नमूने पर उस दुनिया की जन्नत या आरामगाह होगी और जहन्नुम या जेल! बाकी जिन लोगों ने इस दुनियां को महज कहानी ख्याल किया है उनके लिये भी कुरआन मे सबक मौजूद है।

एक उसूली बात अर्ज किये देता हूं इबारते कुरआन मे लचक बहुत ही ज्यादा (अधिक) मौजूद है, और इसी लिये मुसल्मानों में इतने ज्यादा फिरके हो गये हैं। हर एक ने अपना अकीदा (विश्वास) कुरआन ही से ढूंढ निकाला है।

नयाज केश अब्दुलमाजिद

(क्रमशः)

चल चित्रों का उपयोग

★चन्द्रगुप्त आर्य
एल एल-एम, सि० शास्त्री

कुछ लोग आर्यसमाज के विद्वानों के बारे में भी यह कहावत सत्य प्रतीत होती है कि मनुष्य की वृत्ति बुराई की ओर अधिक जाती है। चलचित्र भी एक ऐसा ही विषय है। यह दुर्भाग्य की बात है कि हमने विज्ञान के इस अत्यन्त उपयोगी आविष्कार के दुरुपयोग की कहानी तो हमेशा कही है। ऐसा कहने में हम हमेशा यह भूल जाते हैं कि जड़ और चेतन में अंतर होता है। भूल करना चेतन का कार्य है जड़ का नहीं। चलचित्रों का आविष्कार भी ऐसा ही है। यदि कोई पिस्तौल से अपनी आत्महत्या कर ले अथवा अपने भाई को मार डाले तो वस्तुतः संसार का कोई भी न्यायाधीश पिस्तौल को जेल नहीं भेजेगा। दण्ड मारने वाले को ही मिलेगा।

यदि सिद्धान्तः यह भी स्वीकार किया जावे कि हर उस वस्तु का नाश होना ही उचित है जो बुरे प्रभाव रखती हो तो सम्भवतः संसार की प्रत्येक वस्तु का नाश करना होगा क्योंकि संसार में शायद ही कोई ऐसी वस्तु या पदार्थ होगा जो अपने सर्वथा कुप्रभावहीन होने का दम भर सके। एक और विचित्र बात है। हमारे जो विद्वान चलचित्रों की बुराई करते नहीं अघाते वे ही सरकार से एटमबम बनाने के लिये अपील करते नहीं थकते जब कि हमारे सामने हिरोशिमा की घटना अभी ताजा है और अभी संसार के अधिकांश देशों ने ऐटम के शान्ति कालीन प्रयोगों के बारे में सुना ही सुना है। इसके विपरीत चलचित्रों के सदुपयोग का फल तो संसार के हर विकासमान देश में किसी न किसी स्तर पर तो हो ही चुका है। चलचित्रों की इस अन्धाधुन्ध निन्दा का श्रेय आर्यसमाज के रूढ़िवादी विचारों के महानुभावों के प्रभाव को ही दिया जा सकता है। यह आश्चर्य एवं खेद का विषय है कि समूचे आर्य विचारकों में से किसी को भी इस शताब्दि के इस क्रान्तिकारी आविष्कार में कोई गुण दिखाई नहीं देता। और यह स्थिति तो तब है जब कि कुछ दशक पूर्व ही चलचित्रों के पूर्वज 'मैजिक लैन्टरन' का अत्यन्त सफल प्रयोग आर्यसमाज अपने प्रचार के लिये कर चुका है। आज उसका युग नहीं रहा किन्तु चलचित्रों का युग तो है। आइये इस सर्वथा बुरी चीज के कुछ उपयोगी प्रयोगों पर भी विचार करें।

शिक्षा में उपयोग

सबसे पहले हम शिक्षा के क्षेत्र को लेंगे। शिक्षा के क्षेत्र में चलचित्रों के व्यापक प्रयोग हुये हैं। आप यह तो जानते ही होंगे कि शिक्षा का यह माना हुआ सूत्र है कि जिस चीज के बारे में आप पढ़ावें उसे प्रत्यक्ष भी दिखा सकें तो विद्यार्थी की समझ में बात सरलता से व गहराई से आती है। जो लोग शिक्षा के विषय में उपाधियां प्राप्त करते हैं उन्हें अपने साथ कई चीजों के मॉडल भी साथ ले जाते हुये आपने देखा होगा जिनका प्रयोग वे अपने अध्यापन को बोध गम्य बनाने के लिये करते हैं। मॉडल ले जाने की बात हमेशा न तो कार्यरूप में परिणित की जा सकती है न सरलता पूर्वक पूरी की जा सकती है। मॉडल बनाने का कार्य न केवल कठिन है अपितु अत्यधिक खर्चीला है। फिर सब अध्यापकों को मॉडल दिया जाये तो इसमें निर्माण में बहुत समय नष्ट होगा एवं अपार धन राशि की आवश्यकता होगी इसके अतिरिक्त समय-समय पर मॉडल बदलने पड़ेंगे। यह कार्य चलचित्रों द्वारा अत्यन्त सरलता से किया जा सकता है। सिर्फ एक बार मॉडल बनाना पड़ेगा उसके बाद उसका चित्र खींच कर उसकी हजारों प्रतियाँ साधारण मूल्य पर प्राप्त की जा सकती हैं। चलचित्रों में आरम्भिक व्यय तो अधिक होता है किन्तु उसके बाद उसका उपयोग सहस्रों स्थान पर बहुत थोड़े मूल्य में किया जा सकता है।

जब शिक्षार्थी बालक अथवा निरक्षर वृद्ध हों तब शिक्षा का तरीका चलचित्रों से सर्वाधिक प्रभावकारी होता है। इसके अतिरिक्त जब शिक्षा का विषय पेचीदा हो तो भी चलचित्रों द्वारा आवश्यक स्थलों पर कम या अधिक जोर देकर उसे सरलता से बोध गम्य बनाया जा सकता है। उदाहरण के लिये यदि हमें भूगोल विषय पढ़ाते समय पृथ्वी के ऊपर से लेकर मध्य तक की सभी सतह बतानी हो तो हम उनकी मोटाई के अनुरूप विभिन्न रंगों की सहायता लेकर बड़ी सरलता से दिखा सकते हैं साथ ही प्रत्येक परत वस्तुतः कैसी होती है उसका वास्तविक चित्र भी प्रदर्शित किया जा सकता है। यह अनुमान आप सहज ही लगा सकते हैं कि प्रत्येक को क्या अधिकांश विद्यार्थी इन सतहों को नहीं देख सकते किन्तु कुछ व्यक्ति तो देखेंगे ही और उस समय यदि उनका चित्र ले लिया जाय तो वह भूगोल के प्रत्येक विद्यार्थी को लाभ पहुंचा सकता है। इसी प्रकार बहुत सी असाधारण चीजें होती हैं जिन्हें प्रत्येक तो क्या विरले ही देख पाते हैं। उदाहरण के रूप में हम हिंस्त्र प्राणियों की जीवनलीला के बारे में कल्पना कर सकते हैं। इन लीलाओं को देखना तो दूर घने जंगलों में जाना ही विरलों को उपलब्ध होता है किन्तु यदि कोई साहसी कैमरा-मैन ऐसे दुर्लभ लीलाओं का चित्र ले ले तो वे हजारों लाखों के लिये ज्ञानवर्धक हो सकती है। प्रसिद्ध अमरीकी चलचित्र निर्माता वाल्ट डिस्ने ने अनेक ऐसे दुर्लभ चलचित्रों का निर्माण किया है।

प्रचार का साधन

दूसरा बड़ा प्रयोग चलचित्रों का प्रचार के लिये किया जाता है। इसमें न केवल उत्पादन विशेष के गुणों पर प्रकाश डाला जाता है अपितु उसके उपयोग के तरीके प्राप्ति स्थान, मरम्मत आदि की जानकारी भी दी जाती है। बहुधा उस वस्तु विशेष का प्रयोग करते हुए नागरिक दिखाये जाते हैं एवं दर्शक के मन पर अनजाने यह असर डाला जाता है कि उसे स्वयं भी उस वस्तु का प्रयोग करना चाहिये। नये नये सिद्धांतों विचारों, विचारधाराओं, आन्दोलनों आदि का प्रचार भी चलचित्रों द्वारा कुशलता पूर्वक होता है।

मनोरंजन

तीसरा बड़ा प्रयोग चलचित्रों का मनोरंजन के लिये किया जाता है। इन चित्रों को बहुधा कथाचित्र कहते हैं जब कि अन्य चलचित्रों को शिक्षा चित्र प्रचार चित्र, समाचार चित्र आदि का नाम दिया जाता है। चलचित्रों के मनोरंजनात्मक प्रयोग ने ही इस विज्ञान के सर्वथा निन्दक पैदा किये हैं। मनोरंजन में स्वभावतः मनुष्य नैतिकता की लगाम ढीली कर देता है। अतः इस प्रकार के चित्रों में बहुत से निर्माताओं ने भी ऐसा ही किया। किन्तु मनोरंजन भी स्वस्थ अस्वस्थ दोनों प्रकार का होता है। अस्वस्थ मनोरंजन तब होता है जबकि वह देश काल व परिस्थिति के अनुकूल न हो। हमारे देश में साधारणतः मनोरंजन के चित्र सबके लिये एक समान ही होते हैं। पर अनेक पाश्चात्य देशों में जहां की बुराई करते हम नहीं थकते, हर आयु के प्रेक्षकों के लिये अलग २ चीजों का निर्माण होता है। यथा छोटे बच्चों के लिये अलग, किशोरों के लिए अलग वयस्कों और प्रौढ़ों के लिए अलग व वृद्धों के लिये अलग। बच्चों को वहां वयस्कों के चित्र देखने की अनुमति नहीं होती। दूसरे सेंसर बोर्ड यह ध्यान रखता है कि देश के चरित्र को गिराने वाली बातों का समावेश चल चित्रों में न हो। दुर्भाग्य हमारे देश का है जहां सेंसर बोर्ड ईश्वर जाने किस सिद्धांत पर कार्य करता है। यदि हमें शिकायत ही है और हमें निन्दा ही करनी है तो प्रथम तो हमें चरित्र को गिराने वाले चलचित्रों के निर्माताओं से शिकायत करनी चाहिये दूसरे सरकार की निन्दा करनी चाहिये जो ऐसे चित्रों को बनने देती है एवं उस पर दबाव डालना चाहिये ताकि वह इस प्रकार के गलत चित्रों को न बनने दे। चलचित्रों की कला अथवा विज्ञान को दोष देना युक्तियुक्त नहीं है।

खोजबीन या अनुसंधान

चलचित्रों का उपयोग खोजबीन में बहुतायत से किया जा सकता है विशेषकर वैज्ञानिक अनुसंधान में। यह कार्य दो प्रकार से किया जाता है। एक तो भू माप (Survey) करने के लिए ऊंचाई से चित्र लेकर उनका अध्ययन किया जाता है। कभी २ इन चित्रों को बड़ा करके या बहुत भाग करके अध्ययन करते हैं। दूसरा प्रकार है बहुत दूर के नक्षत्रों आदि अथवा अन्य वैज्ञानिक प्रयोगों में से आने वाली रोशनी चित्रों के निगेटिव पर चिह्न बनाती है इन चिह्नों का आकार प्रकार व स्थान अनेक प्रकार के वैज्ञानिक निष्कर्षों के निकालने में सहायता देता है। अन्य कई प्रकार से चलचित्रों का प्रयोग वैज्ञानिक अनुसंधान अथवा साधारण खोजबीन में होता है [illegible] आवश्यक है और [illegible] समीचीन।

अन्य प्रयोग

इन सबके अतिरिक्त भी अनेक ऐसे क्षेत्रों में चलचित्रों का प्रयोग होता है जो अविश्वसनीय से प्रतीत होते हैं। औद्योगिक प्रशिक्षण ही नहीं अपितु औद्योगिक केन्द्र संचालन में भी चल-

(शेष अगले पृष्ठ पर)

सामाजिक समस्याएँ

कितने चले गए हम दूर

★

वैदिक सुखद-पथ बिसराये, भ्रम विवश मजबूर।
कितने चले गये हम दूर॥
सदन-सदन में अध्ययन करते, वेदों के सब लोक।
आज सिनेमा चले देखने, मन्द अव्यवहारिक ओक॥
मधुर-सरस प्रिय आर्य भाषा, देख रहे वे शोक।
आज विदेशी अपनी समझें, टर कर रहे टटोल
बने हमके सब मजबूर।
कितने चले गये हम दूर॥१॥

पहले गुरुकुल सरिता तट पर, पढ़ते वे सत सार।
आज कालेज शहर के अन्दर, चलते असत व्यवहार॥
योग्य हो किया तन-मन से, करते थे विवाह।
आज सड़क पर हाथ मिलाके, सधम गीत सुनाह॥
बजते नित नव अनहदतूर।
कितने चले गये हम दूर॥२॥

पहले धोती-खद्दर चोला, सिर पर घुंघरू बाल।
कुर्ती आज पाजामा कसकर, चलत टम-टम चाल॥
पहले नीति-धर्म-मर्यादा पालन करते लोग।
आज ढकोसला समझ रहे हैं, तज कर चलें अयोग॥
जिसकी करनी कलुषित क्रूर।
कितने चले गये हम दूर॥३॥

सभ्यता की वर-रीति गुत, बस सन्ध्या ध्यान।
अब असभ्यता गीत तराने, सुने सभी धर ध्यान॥
पहले अमृत बेला जागते, सद-कर्म करते उठ।
अब तो पड़े खाट पर लौटे, ले रहे निन्द्रा लूट॥
जगते बजती आठ जरूर।
कितने चले गये हम दूर॥४॥

क्या ? उन्माद हो चला एक सा, कुए पड़गी भङ्ग।
जन-जन का मन गिरगिट सा है, नित नव बदल रंग॥
पहले ईश्वर सब भक्ति में, रहत मानन्द लीन।
अब तो अष्ट पहर विषयानन्द, रहत हैं वह लीन॥
विस्मय देख हुए कस्तूर।
कितने चले गये हम दूर॥५॥

—कवि कस्तूरचन्द "घनसार"
पीपाड़ शहर (राज०)

राष्ट्रभाषा हिन्दी

★

राष्ट्र के आन्तरिक भावों को करे भाव्यमान, वही राष्ट्र भाषा होगी।
यदि सच्चे भारत मां के सपूत हो तो, करनी पूर्ण अभिलाषा होगी॥१

जो कलम उठाते रहते हैं वह आगे बढ़ जाते हैं
जिनकी मति अवरुद्ध हुई वह जमीन में गड़ जाते हैं।
पढ़ने को अंग्रेजी अरबी फारसी आदि भाषा पढ़ जाते हैं
राष्ट्र तत्व का विरोध करने वाले के कलंक माथे चढ़ जाते हैं

ऋषि दयानन्द लिखते हैं प्रथम मातृभाषा,
फिर अन्य भाषाओं की करनी जिज्ञासा होगी॥२

कहने को जो मसखरी जुबान रही उर्दू भाषा भी क्या भाषा है
लिखो मोला पढ़ो मुल्ला मुल्ला का ओला क्या अजब तमाशा है
सच मानो उर्दू का अस्तित्व मुझे! डरा सा लगता है
दूसरे अक्षरों की मदद बिना इसका जीवन ढहा सा लगता है
अरे शायरों के दिल बहलाने को उर्दू है,
रही कभी नवाबों की भाषा होगी।३

कहते हैं अंग्रेजी में विज्ञान है सृष्टि और प्रलय का सामान भरा है
मैं कहता हूं अंग्रेजी और जब अंग्रेजों का उत्थान नहीं था,
तब क्या विज्ञान नहीं था।
क्या वह सच नहीं शागिर्द थी दुनियां उस्ताद क्या भारतवर्ष महान नहीं था
क्या मैक्समूलर और दाराशिकोह का संस्कृत पर ईमान नहीं था
ख्याल है सिरे अकबर का आधार उपनिषदों की भाषा होगी॥३

अंग्रेजी भारत में कैसी आई यह कभी क्या सोच लगाई है
लार्ड मैकाले की चिट्ठी लिखी लन्दन को क्या नहीं पढ़ पाई है
लिखता है अंग्रेजी पढ़ा, नहीं मुझे जेन्टलमैन बनाना है
देखने में रहे हिन्दुस्तानी पर अन्दर से अंग्रेज बनाना है
अरे इससे भारतीयों की सभ्यता सावन में अर्क बनाना होगी॥४

अरे अपने ही दीपक से होती है घर में उजाले की ज्योती
अब तो राष्ट्र भाषा हिन्दी की माम में भरना होंगे वैज्ञानिक मोती
कर्तव्य परायण होकर अटल बनो विश्वासी
जब तक गंगा जमना जल है मालवीय की काशी
माता जब सच्ची सरस्वती गार्गी लोपामुद्रा सी अभिलाषा होगी॥५

अंग्रेजी लाकर अंग्रेजों ने गुलाम बनाने के ढंग निकाले थे
देखने में वे गोरे पर नाम के मैकाले थे
सर और राय की पदवी से दिमाग खराब कर डाले थे
पर ताड़ गये मुंशीराम, मालवीय वह आफत के पर काले थे
देश धर्म जाति के हित जीवन बलिदान किया,
तो भी क्या पूर्ण नहीं आशा होगी॥६

तिलक गोखले लाला लाजपत सावरकर पटेल सभी
श्री टण्डन और राजेन्द्रबाबू हिन्दी के प्रबल समर्थक है गोविन्ददास अभी
कन्याकुमारी से लेकर काश्मीर कहते हैं अपने प्रकाशवीर
नहीं जरूरत वैदेशिक भाषा रूपी आस्थो की
बात माननी होगी दयानन्द स्वामी की॥
अरे हुस्न जवानी वालो कुछ दिन इतरालो तुम्हारी कीर्ति बढ़ाने वाली
यह हिन्दी भाषा होगी॥७।

सूर, कबीर, तुलसी ने जिसका मान बढ़ाया
रहीम रसखान ने रस को जाम बताया
जिस भाषा में जायसी और मीरा ने झूम झूम कर गाया
गुप्त, हरिश्चन्द्र आदि ने जिसका ताज सजाया
प्रान्तीय भाषा आभूषण बनकर चमकें पर माथे पर एक बिन्दी होगी
सो पटरानी राष्ट्रभाषा, आज वह हिन्दी हिन्द की होगी।

—डोरीलाल आर्य, रामपुरी

(पृष्ठ ५ का शेष)

चित्रों का महत्वपूर्ण प्रयोग किया जाता है। खेती बारी के विकास, दुर्घटनाओं की रोकथाम सूचना प्रसारण, समाचारों का प्रसार निर्माण कला के विकास, चिकित्सा विज्ञान की शिक्षा विकास व प्रसार, गणित के सिद्धांतों का विकास आदि अनेक ऐसे क्षेत्र हैं जहां बहुत सी बातें अब तक सम्भव न थी किन्तु चलचित्रों के आगमन से न केवल ऐसी बातें सम्भव ही हुयी हैं अपितु बहुत सरल, सुविधाजनक व कम खर्चीली हो गई हैं। प्रभावकारी शिक्षण के क्षेत्र में तो चलचित्रों के प्रयोग ने क्रांति ला दी है।

संक्षेप में इस लेख का उद्देश्य पाठकों के हृदय में प्रचलित इस भ्रांति का निराकरण करना मात्र है कि चलचित्र केवल सामाजिक हानि के साधन हैं। चलचित्रों का उपयोग हमारे जीवन को अधिक सुशिक्षित व समाज के लिये उपयोगी बनाने के लिये भी किया जा सकता है। और विश्व के अनेक समृद्ध देशों में ऐसा किया जा रहा है। चलचित्रों की दिशा में अगर हमें नकल ही करनी है तो समाजोपयोगी चित्र बनाने की नकल करनी चाहिये दोषपूर्ण चलचित्रों के निर्माण को हतोत्साहित करने के लिये हमें अनेक निर्माताओं की निंदा करनी चाहिये एवं शासन पर दबाव डालना चाहिये कि ऐसे हीनता से भरपूर चित्रों के निर्माण पर पाबन्दी लगा दे जिनसे समाज का नैतिक पतन आसान होता है। मैं तो कहूंगा कि आर्यसमाज को प्रतिवर्ष एक ऐसे चलचित्र निर्माता को पुरस्कृत करना चाहिये जो हमारी संस्कृति के अनुरूप शिक्षाप्रद व चारित्रिक दृढ़ता से परिपूर्ण चलचित्रों का निर्माण करें। ★

सिरसागंज अधिवेशन और मेरा अनुभव

(१) मैं इस वर्ष कई वर्षों के पश्चात् सिरसागंज अधिवेशन में सम्मिलित होने के लिये गया। मैं ३१ मई की शाम को वहां पहुंचा। मुझे वहां प्रतिनिधियों की संख्या देखकर और उत्साह देखकर बड़ा आनन्द हुआ परन्तु आर्यसमाज की प्रगति के सम्बन्ध में चिन्ता भी हुयी।

(२) सबसे पहली बात जो मुझे खटकी था जिसका प्रभाव मेरे ऊपर हुआ थी सार्वदेशिक सभा के कार्यकर्ताओं का और अन्य पंजाबी भाइयों का सहयोग और प्रेम का प्रदर्शन। हमें इस प्रकार के सहयोग से धन्यवाद सहित सावधानी से लाभ उठाने के लिये उद्यत होना चाहिए और पंजाब के कार्यों में भी सहयोग देने के लिये तत्पर रहना चाहिये। आर्य समाज के कार्य की दृष्टि से उत्तर प्रदेश और पंजाब दो ही मुख्य प्रांत हैं। यदि दोनों प्रांतो के कार्यकर्ता सहयोग से काम करें तो आर्यसमाज के विस्तार में बड़ी सफलता हो सकती है।

(३) बात जो विचारणीय है वो है आर्यसमाज में सदस्य बनने और प्रवेश की विधि अब यह आवश्यक हो गया है कि आर्यसमाज की आन्तरिक दशा को सुधारने के लिये पूरा प्रयत्न होना चाहिये। इसकी प्रवेश, विचार और प्रबन्ध की नीति पर गम्भीरता से विचार होना चाहिये। यह बात ध्यान रहे कि जो सदस्य किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये बनाए जाते हैं वह कार्य को बिगाड़ते है जो स्वयं सिद्धान्त को मानकर और समझकर बनते हैं वो बनाते हैं।

(४) जिस समय प्रधान पद के लिए निर्वाचन आरम्भ हुआ इसी समय मुझे यह विचार मन मे आया कि यदि संघर्ष को मिटाने के लिए किसी देवी, सन्यासी या तटस्थ व्यक्ति का नाम सर्व सम्मति से स्वीकार हो जाय तो बड़ा उत्तम हो। परन्तु मैंने अपने साथ बैठे हुए कुछ सज्जनों से बातचीत की परन्तु कोई नाम ध्यान मे नहीं आया। जब कभी फिर निर्वाचन हो उस समय इस पर विचार किया जा सकता है।

(५) प्रधान के निर्वाचन के पश्चात् मैंने जो वातावरण देखा उसको देखकर मैंने यह प्रस्ताव किया कि आगे के चुनाव करने का अधिकार श्री प्रधान जी को दे दिया जाय। यह प्रस्ताव बहु सम्मति से स्वीकार भी हो गया और बिल्कुल नियमों के अनुकूल था। सभा में इससे पूर्व ऐसे प्रस्तावों के अनुसार निर्वाचन हो चुके। सार्वदेशिक सभा का एक वर्ष का निर्वाचन तो सभा द्वारा न होकर एक उप समिति द्वारा हुआ जिसके सदस्य श्री पूज्य आनन्द स्वामी जी, डा० श्री राम जी और श्री घनश्याम सिंह जी गुप्त थे। इन तीनों ने सबसे पहले श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी को प्रधान नियुक्त किया इसकी घोषणा की और फिर उनको शामिल करके शेष सब अधिकारियों को और अन्तरंग सभा के सदस्यों का निर्वाचन करके सूची बनाकर सभा में सुना दी। उस समय वहां भी ऐसा ही उत्तेजित वातावरण था जैसा सिरसागंज में मैंने देखा।

(६) उपरोक्त प्रस्ताव बहु सम्मति से स्वीकार होने के पश्चात् उसके अनुसार काम होना आवश्यक था। परन्तु श्री प्रधान जी ने झगड़ा मिटाने के लिए उस प्रस्ताव को अमान्य घोषित किया और सभा में सीधा निर्वाचन होने के लिए घोषणा की जो बिल्कुल नियम विरुद्ध हुआ। श्री प्रधान जी को कोई अधिकार सभा के प्रस्ताव की अवहेलना करने का नहीं था। उन्हें पुनः सभा से अनुमति लेना चाहिये थी मुझे इस बात का दुख है कि मैं वहां बैठा रहा और इस भूल पर ध्यान न दिला सका।

७—पर श्री प्रधान जी की घोषणा के पश्चात् उपप्रधान पद के लिये नाम लिये गये और हाथ उठवाकर निर्वाचन किया गया यह ठीक हुआ।

८—जब मन्त्री पद के लिये नाम मांगे गए तो केवल दो नाम आये इससे मुझे प्रतीत हुआ कि संघर्ष गहरा है। दोनों पक्ष संघर्ष के लिये डटे हुए हैं। जहां दोनों पक्ष दलों को अलग अलग बैठने के लिये श्री मदनमोहन वर्मा का प्रस्ताव स्वीकार हुआ और अलग अलग बैठाने की चेष्टा की गयी इस समय जो खींचा-तानी और छीनाझपटी का दृश्य था उस को देखकर मुझे दुख हुआ और जब मैं सहन न कर सका तो श्री प्रधान जी की अनुमति लेकर बाहर चला आया। मुझे कल रात्रि को ज्ञात हुआ कि मन्त्रि पद और अन्य पदों का निर्वाचन नहीं हो सका। आगामी के लिये स्थगित हो गया मैं केवल यह अनुरोध करूँगा कि सारी

★ पूर्णचन्द्र एडवोकेट
पूर्व प्रधान सार्वदेशिक सभा

परिस्थिति पर गम्भीरता से विचार हो और किसी उचित स्थान पर शांत वातावरण में निर्वाचन किया जाय।

जहां तक मुझे याद है ऐसा पहले कभी नहीं हुआ कि ऐसा वातावरण हुआ हो कि कार्यवाही पूरी न हो सके सबसे अधिक आवश्यक यह है कि सदस्यों के खड़े होकर विल्लाने धमकी देने का प्रथा बन्द होनी चाहिये और किसी प्रस्ताव के बहु सम्मति से या सर्वसम्मति से स्वीकार होने के पश्चात् उसकी अवहेलना नहीं होनी चाहिये और न प्रस्तावक और अनुमोदक पर बातचीत व आक्रमण नहीं होना चाहिये। सभा की बात सभा में ही अच्छी लगती है सभा से बाहर उसकी विशेष चर्चा लाभदायक नहीं होती भविष्य के लिये एकान्त में विचार होकर यदि कोई भूल हो तो उसका सुधार किया जा सकता है। मैं इस लेख में किसी पर आक्षेप नहीं कर रहा हूं। यह लेख अपने ५०-६० साल के अनुभव के आधार पर लिख रहा हूं और वह भी केवल इसलिये कि मुझे आर्यसमाज से और आर्यप्रतिनिधि सभा से प्रेम है। मैं उसका मन्त्री भी रहा। चार वर्ष प्रधान रहा और उपप्रधान तो इतने वर्ष रहा हूं कि जिसकी संख्या मुझे याद नहीं है। सार्वदेशिक सभा में भी सेवा का अवसर मिला है। अब मुझे आर्यसमाज के वातावरण से आवश्यकता से अधिक उलझना दिखाई देती है तो बड़ा दुख होता है। इस लेख को अपने दो शेरों से समाप्त करता हूं—

"जोश के साथ अगर होश न हो,
इक जुनूं सा सवार रहता है।१'

काफिला जब निकल गया आगे
पीछे गर्दो गुबार रहता है।२

इतना काम जरा कर देना

●

ऐ मेरे शुभचिंतक वीरों, इतना काम जरा कर देना,
जब भर आये आंख किसी की उसके आंसू तुम चुन लेना।

इस जगती में दुखी बहुत हैं
मैंने सबको रोते देखा
दुख के समय इसी दुनिया मे
कुछ को मैंने ठगते देखा

ओ मेरे पथ के अनुगामी इतना काम जरा कर देना,
बिलख रहा हो कोई दुख से उसकी फरियादें सुन लेना।

हित मे यदि कर सको किसी के
अपना सर्वस्व लुटा देना
दुखियों का दुख बांट लिया तो
कमी नहीं कुछ उसमे लेना

ओ आर्य वीर इस धरती के, इतना काम जरा कर देना,
पथ विचलित होते पथिको को हाथ पकड़ के राह दिखाना।

चांदी के चन्द टुकड़ो पर मैंने
नियम धर्म को मिटते देखा
मन्दिर मस्जिद के आंगन मे
मोल भाव होते देखा,

ओ देश जगाने वालो इतना काम जरा कर देना
हारे हुए पथिक के मन मे फिर से जोश नया भर देना।

★ विजयदयाल सक्सेना, बहराइच

कुछ इधर की कुछ उधर की

पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय

एक दिन इङ्गलैण्ड में एक बुढ़िया ने एक नौकर रखा। उसने रोटी कभी नहीं बनाई थी। रोटी बनाता तो जब जाती बुढ़िया झुंझलाई रोटी तो नहीं बनती बादशाह बना बैठा है। वह कह ही रही थी कि फौज आ गई। बात यह थी कि वह बादशाह था, फौज इसके तलाश में थी। जब वह हार गया तो चुपके से खिसक आया।

* * *

राजा जनक ने एक भारी यज्ञ किया और सौ गौओं को उनके सींगों को सोने से मढ़वाकर दान के लिये उपस्थित किया। जितने ऋषि मुनि वहाँ उपस्थित थे उनको सम्बोधित करके कहा, "आप में से जो सबसे बड़ा हो वह इन गायों को खोल ले"। बहुत देर हो गई। किसी को साहस न हुआ कि वह अपने को दूसरे से बड़ा बताता। अन्त में ऋषि याज्ञवल्क्य ने अपने शिष्यों को आज्ञा दी कि गायों को खोल ले चलो। उनका कहना था कि आज यदि किसी ने यह दान ग्रहण न किया तो जनक को दान करने से जो पुण्य मिलेगा उससे वह वंचित रह जायगा। दान की महिमा दान ग्रहीता के लिये नहीं है अपितु दान दाता के लिये है।

* * *

कहते हे कि प्रजापति के पास तीन लोग गये। एक देव थे एक मनुष्य और एक असुर। उन तीनों ने प्रार्थना की कि कुछ उपदेश दें। प्रजापति ने मुख खोला और कहा कि "द" तीनों ने प्रणाम किया और चल दिये। किसी ने पूछा आप उपदेश ले आये? उत्तर मिला बहुत अच्छा उपदेश दिया। पूछा क्या? असुर बोला 'द" से मतलब है "दयध्वं" दया किया करो। मनुष्य बोला "द" से तात्पर्य यह है 'दत्त" दान दिया करो। देव ने कहा 'द" से तात्पर्य है, 'दाम्यत' अपने को दमन करो।

असुरों का रोग यह है कि वह निर्दयी होते हैं। उन्हें दूसरों को मारने में संकोच नहीं होता। इसलिये उन्हे कहा गया तुम दया करना सीखो जिससे निर्दयता का रोग दूर हो जाय।

साधारण मनुष्य दान देने मे बड़ा संकोच करता है। उसे अपने घरबार की आवश्यकताओं से पूरा ही नहीं पडता कि दान के लिये कुछ बच सके।

देवों को जो मनुष्यों की उच्चतम श्रेणी है अभिमान हो जाता है। वह समझते हैं कि हम सबसे उत्तम हैं जैसे एक विद्वान् पंडित। अभिमान एक रोग है इसलिये बृहस्पति का आग्रह था कि विद्यार्थों को सदा विनय पूर्वक रहना चाहिए।

* * *

उद्दालक एक ऋषि थे। श्वेतकेतु उसका शिष्य था। श्वेतकेतु ने पूछा महाराज, "मैं क्या हूं?" गुरु ने कहा एक प्याला पानी ले आ और एक नमक की डली। डली को गिलास में छोड़ दो और कल आना। शिष्य चला गया। दूसरे दिन गुरु बोले गिलास उठा ला। डली को उठा कर मुझे देदो। श्वेतकेतु बोला, नमक की डली तो दिखाई नहीं पड़ती। गुरुवर ने कहा कि पानी चख। चखा तो नमकीन था। गुरु ने कहा "वही तू है। जो दिखाई नहीं पड़ता और जिसने शरीर को चेतना बना दिया है।

* * *

एक गांव मे एक लाला जी थे, जो बहुत होशियार समझे जाते थे। एक दिन एक बेपढ़े कुम्हार ने आकर उनसे कहा 'लाला जी आप चारपाई पर बैठे-बैठे रुपये कैसे पैदा कर लेते हैं?" कहने लगे किसी दिन बता देंगे। एक दिन लाला जी ने कुम्हार को बुलाया और कहा, "भाई हमको मिट्टी के सौ रुपया बना दो।" कुम्हार ने कहा अच्छा १५ दिन में दूंगा। १५ दिन बाद लाला जी ने एक आदमी भेजा कि कुम्हार से सौ रु० मांग ला। कुम्हार ने कहा, 'इधर काम मे फंस गया था परसों दूंगा" तीसरे दिन फिर इन्होंने एक और किसी को भेजा कि कुम्हार से १०० रु० ले आओ। कुम्हार ने कहा "कल जरूर दूंगा।" इसी प्रकार तीन बार दिन लाला जी अलग-अलग भिन्न भिन्न आदमियों को भेजते रहे और कुम्हार आज की कल करता रहा। एक दिन कुम्हार ने मिट्टी के सौ रुपये लाकर लाला जी को दे दिया। लाला जी बोले "रु० कहाँ मिट्टी के होते हैं तुम तो चांदी के रु० ले गये थे" मुकदमा हुआ। उन सब तकाजा करने वालों ने गवाही दी कि कुम्हार ने हमसे वादा किया था कि रु० कल देंगे। यदि कुम्हार पर रु० न चाहिये होते तो वह ऐसी बात न करता लाला जी ने कुम्हार से कहा तुमने एक प्रश्न किया था उसी का यह उत्तर है।

* * *

प्रायः कहावत है कि मनुष्य की आयु सौ साल की होती है। जानते हैं कैसे? एक अनोखी कहानी है सुनिये, भगवान ने सबसे पहले गधे को पैदा किया। गधा बोला महाराज मुझे क्यों पैदा किया? भगवान ने कहा बोझ लादने के लिये। गधे ने कहा कितने दिनों? भगवान बोले ३१ वर्ष। गधे ने कहा भला ३१ साल बोझा कैसे लाद सकूंगा, बहुत गिड़गिड़ाया, भगवान ने ३१ के बजाय ८ वर्ष दिये। गधा बोझ ढोने लगा। अब भगवान ने कुत्ते को उत्पन्न किया। कुत्ते ने पूंछा मेरा क्या काम है? भगवान ने कहा चौकीदारी करो। कितने दिनों? ३१ वर्ष कुत्ता गिड़गिडाया और गधे की भांति चौकीदारी की मियाद ८ वर्ष करा ली।

अब भगवान ने बन्दर पैदा किए। बन्दर ने पूछा महाराज मेरे लिए क्या काम है? भगवान बोले तेरा काम बड़ा आसान है, तू मुंह बनाया कर। बच्चे तुझे देख-देखकर हंसेंगे और तालियां बजायेंगे। बन्दर ने कहा कितने दिनों? उत्तर मिला ३१ वर्ष। बन्दर ने कहा ३१ वर्ष मुंह बनाना बड़ा मुश्किल काम है। भगवान ने कहा, "८ ही वर्ष सही।"

अब आदमी को बनाया। आदमी ने कहा मुझे किस लिये बनाया? भगवान ने कहा, "खाओ, पियो, मस्त रहो" कहा कितने दिनों तक? उत्तर मिला ३१ वर्ष। आदमी बोला ३१ वर्ष तो बड़ी जल्दी बीत जायेंगे।

दिन ऐश की घड़ियों में गुजर जाते हैं कैसे। भगवान ने कहा, 'मेरे पास और ज्यादा वक्त नहीं है। आदमी बहुत रोया चिल्लाया अनेक प्रकार की प्रार्थनायें की शास्त्र लिखे, काव्य लिखे, स्तुतियां की, भगवान ने कहा, भाई मेरे पास तो कुछ और है नहीं, गधा अपने जीवन के २३ वर्ष छोड गया है तू लेगा? आदमी ने कहा बहुत अच्छा २३ वर्ष ठीक सही। आदमी बोला, कुछ और भी दीजिये ३१ और २३ = ५४ में कुछ कर भी तो न पाऊंगा। भगवान ने कहा कुत्ते के भी २३ वर्ष मेरे पास पड़े हैं। तू लेगा? मनुष्य बोला क्या हरज है। २३ वर्ष कुत्ते की जिन्दगी मौत से तो अच्छी है। मैं ले लूंगा। इस प्रकार ७७ वर्ष हो गये। परन्तु आदमी को सन्तोष नहीं हुआ। वह कहने लगा कुछ और बढ़ाये। भगवान ने कहा, बन्दर के २३ वर्ष और हैं। तू लेगा? मनुष्य बहुत खुश हुआ। अच्छा है सौ वर्ष पूरे हो गये। तब से ऐसा ही होता चला आ रहा है। मनुष्य पैदा होता है और अपनी आयु का मुख्य तम भाग ३१ वर्ष खाने पीने और मस्त रहने में व्यतीत कर देता है। जब जवान होता है विवाह करता है। दो चार बच्चों का बाप हो जाता है तो खाना पीना और मस्ती भूल जाती है। आटे दाल का भाव मालूम हो जाता है। स्त्री कहती है आटा नहीं है। लड़का कहता है टोपी नहीं है। लड़की कहती है फराक नहीं है, घर भार हो जाता है और गधे की तरह उसे पीठ पर लादे-लादे फिरते हैं। आज बच्चा जो बीमार है दवा लाओ: कल कोई और खराबी हो गई। किसी तरह ३१ वर्ष कटते हैं आनन्द के नहीं बोझा ढोने के। ५५ साले में जब पेन्शन हो गई तो क्या करो? कुत्ते की तरह घर की रखवाली करते रहो। अच्छा है एक बुड्ढा पड़ा हुआ है। बुड्ढे की खांसी को सुनकर चोर भी भाग जाता है। जब २३ वर्ष गुजर गये और ७७ हो गये, भाग्य सूख गये। बन्दर की सी शकल हो गई। कान से सुनते नहीं आंख से देखते नही। पोता कुछ पूंछता है तो उसकी ओर मुंह बना देते है और वह भाग जाता है। कहता है बाबा जो बात करते हैं कि मुंह से चिढ़ाते हैं। (क्रमश.)

* * *

विनोद-बिन्दु

वैश्य वर चाहिए

दिल्ली के प्रतिष्ठित गोयल गोत्रीय वैश्य परिवार को २२ वर्षीया, बी० ए० (आनर्स) बी० एड०, आय ३०० रु० मासिक, इकहरा बदन, ५—२", स्वस्थ, सुन्दर, निरामिष भोजी कन्या के लिए स्वस्थ धार्मिक, मांसाहारी गोयल गोत्र छोड़कर वैश्य मात्र में योग्य वर चाहिए। दहेज के लोभी कष्ट न करें।

—रवीन्द्र अग्निहोत्री
वनस्थली विद्यापीठ
जयपुर

परमात्म शक्ति

छान्दोग्योपनिषद् (१/३/१४) में लिखा है कि :- 'उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान् निबोधत । क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्गं पथस्तत् कवयो वदन्ति" उस आत्मा को जानने के लिये उठो, जागो और श्रेष्ठ जनों को पाकर उनके सत्संग से परमात्म शक्ति को समझो । नहीं तो जैसी उस्तरे की धार पर चलने में कठिन, तीखी धारा होती है वैसे ही वह कठिन मार्ग है, ऐसा ज्ञानी लोग कहते हैं । वास्तव में संसार के सब आश्रयों को छोड़, जब प्रभु की शरण में रहना होता है, भक्त जीवन का वहीं से प्रारम्भ है । एक बहुत ही सुन्दर उक्ति है. –

'दुनियाँ को फिक्र क्यों,
तुझे तो सभी रहे ।
आसक्त यह शर्त है कि,
उधर भी सभी रहे ॥
मिलने न मिलने का तो
को मुख्तार आप है ।
पर तुझको चाहिए कि
'हमीदो' बनी रहे ।।"

भक्ति में आसक्ति, कामना, ममता, अहंकारता आदि बाधक हैं । इस कारण इनको निवृत्त करके ही परमात्मा से प्रवृत्ति बढ़ाई जा सकती है । जब तक संसार के नश्वर पदार्थों में प्राणी की प्रवृत्तियाँ जुड़ी हुई हैं, वह निश्चय ही परमात्मा को जानने में पथ भ्रष्ट है । लिखा है कि.—

"न बाप–बेटा न दोस्त-दुश्मन,
न आशिक और सनम किसी के ।
अजब फरागत हुई है मेरी,
न कोई हमारा न हम किसी के ।।"

भक्त को संसार में रह कर भोगी नहीं, योगी बनना है, रागी नहीं विरागी बनना है, मोही नहीं निर्मोही बनना है, कामी नहीं निष्काम बनना है तथा आसक्त नहीं विरक्त बनना है । बड़ा ही स्पष्ट कहा गया है कि.—

"खुदा को भूल गये लोग
फिकरे रोजी में ।
ख्याले रिजक है राजक का
कुछ ख्याल नहीं ।।'

भक्त संसार में सदैव अपने प्रभु का ध्यान करते हुए रहे । ऐसा नहीं कि संसार मन में, घर में भीतर-बाहर, चलते-फिरते, रिश्ते-नाते सबसे अपना प्रभुत्व डाले और कहा यह जावे कि मैं प्रभु की भक्ति कर रहा हूं । इस सम्बन्ध में ईशावास्योपनिषद् (१) में लिखा है कि:–

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत् । तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम् ।"

अर्थात्–यह दृश्यमान सब और जो कुछ भी त्रिलोकी जगत् है वह सब ईश्वर से आच्छादित है, ईश्वर के बसने योग्य है, उसमें ईश्वर विद्यमान है । हे उपासक ! तू उस त्याग से पदार्थों को भोग, सब भोग, भगवान् की देन जान मत ललचा । किसका धन है ? सब पदार्थ परमेश्वर के हैं । और भी कहा गया है:—

"हुस्न की हर एक अदा पर,
जानो-दिल सदके मगर ।
लुत्फ कुछ दामन बचाकर,
ही निकल जाने में है ॥"

संसार में जो कुछ भी हो रहा है, सब प्रभु के मंगलमय विधान से हो रहा है । सुख-दुःख, यश-अपयश, जीवन-मरण का प्रश्न नहीं, यह तो संसार के रंगमंच के पहलू हैं ।

भक्त की स्थिति यह होनी चाहिये कि यदि वह देखे तो प्रभु के लिये, सुने तो प्रभु के लिये और रहे तो प्रभु के लिये । उसके जीवन का प्रत्येक क्षण प्रभु के ध्यान, चिन्तन, मनन, अध्ययन में बीते । यहां मेरा यह कहने का अभिप्राय नहीं है कि वह संसार में रहकर कोई कार्य न करे । वह सब कुछ करे किन्तु उसमें आसक्त बनकर न करे । उसे तो बस प्रभु का होकर ही रहना है ।

भक्त न संसार से कुछ चाहता है और न भगवान से । उसका तो हृदय प्रभु के प्रेम में ओत-प्रोत रहे, इसी में उसका कल्याण है । प्राणी जब संसार में सम्बन्ध जोड़ता है तब उसे पहले अवश्य ही सुख मिलता है किन्तु उसका बाद का प्रभाव दुःखदायी हो जाता है । भक्त तो कहीं भी अपनी ममता नहीं जोड़ता । क्योंकि संसार के विनाशी पदार्थ देंगे क्या ? सिवाय इसके कि हम सदैव रोते ही रहें । जहां तक शांति और आनन्द का प्रश्न है वह परमानन्द प्रभु के पास जाये बिना मिलता नहीं ?

भक्त का समर्पण-असत् को नहीं सत्य को, अविद्या को नहीं विद्या को, अन्धकार को नहीं प्रकाश को, मृत को नहीं अमृत को, भय को नहीं निर्भय को, अन्त को नहीं अनन्त को, विनाशी को नहीं अविनाशी को, साकार को नहीं निराकार को, एक देशी को नहीं सर्वव्यापक को, अल्पज्ञ को नहीं सर्वज्ञ को, अल्प शक्ति को नहीं सर्व शक्तिमान् को, विकारी को नहीं निर्विकारी को, अशान्त को नहीं परमशान्त को तथा अल्पानन्द को नहीं परमानन्द को होना चाहिये ।

भक्त का मन स्थिर हो, भक्त की बुद्धि स्थिर हो, भक्त का चित्त स्थिर हो, भक्त का अहंकार स्थिर हो । लिखा है कि "यदापञ्चावतिष्ठन्ते ज्ञानानि मनसा सह

अर्थात्—जब पांच ज्ञानेन्द्रिय छठा मन तथा सातवीं बुद्धि ये सब स्थिरता को प्राप्त होते हैं तभी मोक्ष हो जाता है ।

★रवीन्द्रकुमार पाण्डेय एम.ए

भक्ति की मंजिल प्रभु है, भक्त की साधना प्रभु है, भक्त की धारणा प्रभु है भक्त की उपासना प्रभु है और भक्त की पाना प्रभु है । बहुत ही सुन्दर उक्ति है

"पूछा है जब से तुझको
मेहराबे बे खुदी में,
सो हुस्न बढ़ गये हैं
जानाबे बन्दगी में ।
वे सुख नुमाइयों के
अन्दाज बे-खुदी में,
हम बन गये तमाशा
आखिर तेरी गली में ।।"

जब भक्त पूर्ण विरक्त बन, पूर्ण अनुरक्त बन, यौगिक साधना (ध्यान) में कुशल हो अपने प्रियतम प्रभु से मिलने की बाट जोहता है तब देर नहीं धैर्य रक्खे । जहां उसकी हृदय-ग्रन्थि खुली कि परमानन्द प्रभु में तन्मयता हो गई । फिर तो उसे आनन्द ही आनन्द है । मुण्डकोपनिषद् (२/२/८) में लिखा है कि—

'भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसंशयाः
क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन् दृष्टे
परावरे ॥'

अर्थात्—उस पर अवर-वाचक वाचक को ज्ञान लेने पर हृदय की अविद्या की गाँठ भेदन हो जाती है, सब संशयों का छेदन हो जाता है और भक्त के कर्म क्षय हो जाते हैं । बस यही जीवात्मा का परम लक्ष्य है और यह जीवात्मा की पूरी होने वाली मंजिल है । जिसको कि वह पा चुका है । इसी को मोक्ष, इसी को निर्वाण, इसी को परमपद, इसी को परमगति और इसी को परमधाम कहते हैं ।

शिव गीता (१३/३२) में भी लिखा है कि "मोक्षस्य न हि वासोऽस्ति न ग्रामान्तरमेव वा । अज्ञानहृदयग्रन्थिनाशो मोक्ष इति स्मृतः" मोक्ष कोई ऐसी वस्तु नहीं कि जो किसी एक स्थान में रखी हो अथवा वह भी नहीं, कि उसकी प्राप्ति के लिये किसी दूसरे गांव या प्रदेश को जाना पड़े । वास्तव में हृदय की अज्ञानग्रन्थि के नाश हो जाने को ही मोक्ष कहते हैं ।

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते । पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ।।

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।।

'मित्र' के लेखकों से नम्र निवेदन

आर्यमित्र विद्वान लेखकों का सदा ऋणी रहा है, आर्यजगत् की सेवा में आर्यमित्र सदा निर्भीक रहा है और आगे भी उसी नीति पर इसका पग उठेगा । इसलिये आर्य विद्वानों से नम्र निवेदन है कि वे अपने प्रेम पूर्वक सहयोग से मित्र को सदा अपने अनुग्रह का पात्र बनाए रक्खेंगे ।

उनके लेख सम्पदा पर ही आर्यमित्र और उनका निज गौरव और आर्य जनता की उन्नति तथा आर्य प्रतिनिधि सभा का गौरव स्थिर रहा है । अभी तक जगत में यदि कोई साप्ताहिक व मासिक पत्र है तो केवल आर्य मित्र ही है जो व्यापक रूप से समस्त आर्यजगत की प्रवाह वाणी है और उसको प्रत्येक आर्य पुरुष अपना गौरव और अभिमान योग्य वस्तु समझता है ।

उसको और भी उज्ज्वल करना और उसको अधिकाधिक लोकप्रिय बनाना आर्य विद्वानों के ही हाथों की बात है ।

आर्य संस्थाओं से

समस्त आर्यसमाजों व आर्य संस्थाओं के संचालकों से निवेदन है कि वे अभी तक जैसा अनुभव करते हैं, उसी प्रकार आर्यमित्र को वे अपना गौरवपूर्ण समाचार पत्र सदा जानें । आर्यमित्र आर्य संस्थाओं के निमित्त सदा कटिबद्ध रहा है । वे अपनी संस्थाओं के हितों के साथ २ मित्र को कभी न भूलें । वे 'मित्र को अपनावें और 'मित्र' को अपने साथ दाएं हाथ के समान समझें । संस्थाओं के महत्वपूर्ण कार्यों और अभिमान योग्य कार्यकर्त्ताओं का जगत में व्यापक परिचय होने से ही संस्थाएं अपना कार्य अधिक दृढ़ता से कर सकेंगी । वे कृपया 'मित्र के साथ मन्-कर्त्तव्य अवश्य निभावें ।

— व्यवस्थापक

मास्टर मातागुलाम सक्सेना

१७ अप्रैल, १९६९ को प्रातः ६ बजे काल का एक प्रबल झंझावात आया, जिसने प्रयाग के आर्यजगत् की एक अमर ज्योति बुझा दी। वह ज्योति थी मास्टर माता गुलाम सक्सेना के देदीप्यमान जीवन की। मास्टर साहब आर्यसमाज कटरा के प्राण स्वरूप और प्रयाग नगर की अन्य समाजों के जीवन्त एवं प्रेरक सदस्य थे। मास्टर साहब का जीवन प्रकाश बुझा और स्थानीय आर्यजगत् विशेषकर आर्यसमाज कटरा, तमसाच्छन्न हो गया है।

मास्टर साहब के पूर्वज एक शताब्दी पूर्व दिल्ली से इलाहाबाद आये थे और पुराने कटरे में बस गये थे। परिवार बहुत कुछ मुगल कालीन संस्कृति से अभिभूत था। मांस मदिरा सेवन साधारण बात थी। ऐसे पंक में से मास्टर माता गुलाम सक्सेना रूपी पंकज का आविर्भाव हुआ। आविर्भाव आज से लगभग ७५ वर्ष पूर्व १८ जनवरी १८९४ को हुआ था। पंकज अधिक समय तक पंक न रह सका। अपने पूर्व जन्म के संस्कारों के कारण वह शीघ्र ही 'नीरज' एवं 'सरोज' हो गया। ब्रह्मचर्याश्रम से ही मास्टर साहब पर महर्षि दयानन्द के अमर संदेश की छाप पड़ गयी और वे जीवन सुधार में लग गये। स्वयं तो परिवार की परम्परागत संस्कृति से दूर रहे ही, परिवार के अन्य सदस्यों को भी अपने आदर्शमय जीवन से प्रभावित करने लगे। फलस्वरूप आज मास्टर साहब का परिवार एक सुन्दर आर्य परिवार है।

मास्टर साहब हाईस्कूल सी० टी० करके गवर्नमेंट हाईस्कूल, इलाहाबाद में अध्यापक हो गये। अपना पूरा सेवा काल उसी स्कूल में बिताया और वहीं सन् १९४९ में अवकाश प्राप्त किया। ऐसे विरले ही अध्यापक होंगे, जिनका स्थानान्तरण न हुआ हो। मास्टर साहब को यह अद्भुत श्रेय प्राप्त था। इस श्रेय के मूल में और जो भी कारण रहे हों, एक मुख्य कारण यह था कि मास्टर साहब आदर्श अध्यापक माने जाते थे। उनके प्रधानाध्यापक तथा अन्य उच्च अधिकारियों ने सदैव उनकी अनुशासन प्रियता, कार्य पटुता, कर्तव्य परायणता तथा विस्तृत एवं गहन ज्ञान की सराहना की थी। इसी कारण उनके सहयोगी तथा अधिकारी सभी उनका आदर करते थे। उनके पढ़ाये हुये विद्यार्थी भारतवर्ष भर में फैले हुये हैं और ऊंचे ऊंचे पदों पर विराजमान हैं। आश्चर्य कि जिन विद्यार्थियों को उन्होंने कक्षा ५ या ६ में पढ़ाया था और सख्ती से पेश आये थे, वे ही विद्यार्थी आई० सी० एस०, पी० सी० एस० होने के वर्षों बाद जब मास्टर साहब से मिलते थे तब उनका चरण स्पर्श करते थे और गुरुकुल परम्परा के अनुसार उनका आदर करते थे। श्री आदित्यनाथ झा, जो आजकल दिल्ली के उप राज्यपाल हैं, कहीं भी रहते थे, मास्टर साहब को देखते ही कुर्सी छोड़कर खड़े हो जाते। ऐसे अनेक उदाहरण दिये जा सकते हैं। आज के युग में ऐसे सौभाग्यशाली अध्यापक अंगुलियों पर गिने जा सकते हैं।

मास्टर साहब की शिक्षा अंग्रेजी, उर्दू व फारसी में हुयी थी। सन् १९१८-१९ में वे आर्यसमाज कटरा के सदस्य बने। तब से उन्होंने हिन्दी का महत्व में वे आर्यसमाज कटरा तथा आर्य उप प्रतिनिधि सभा, दोनों संस्थाओं में उप प्रधान पद पर आसीन थे।

मास्टर साहब उस श्रेणी के आर्य थे जो अपना तन-मन धन सब कुछ आर्य समाज की सेवा में अर्पित कर देते हैं। अवकाश प्राप्ति के बाद उन्होंने अपना सम्पूर्ण समय आर्यसमाज की सेवा में लगा दिया। नौकरी के अनेक प्रलोभन आये, पर वे अपने निश्चय से डिगे नहीं। सोते-जागते, चलते-फिरते उठते बैठते सभी समय आर्यसमाज का हित-चिन्तन करते रहते थे। प्रयाग नगर में कई समाजें हैं। जिस समाज में उनकी आवश्यकता जब कभी भी पड़ती थी, वे सदैव पहुंच जाते थे। इस प्रकार वे एक

खोया हुआ

पूज्य पिता जी (राधाकृष्ण जी)

आपको जयपुर से हरिद्वार के लिये गये हुये डेढ़ माह से अधिक हो गया है, अब तक आपके द्वारा कोई सूचना प्राप्त न होने से और आपके न लौटने से परिवार के सभी सदस्य बहुत दुःखी हैं। आपकी अनुपस्थिति के कारण हरी व इन्द्र के संस्कार रुके पड़े हैं। आपके आने पर ही ये संस्कार हो सकेंगे। आप जहाँ पर भी हों अपनी उपस्थिति से हमें अवगत करायें। हम स्वयं आपको लिवा लायेंगे।

आपके—

रवि व रुद्र

ई, ६०, देव विला, शास्त्री नगर

(बनीपार्क एक्सटेन्शन) जयपुर

समझा। धीरे २ वे हिन्दी के अच्छे ज्ञाता हो गये और वेदादि संस्कृत धर्म ग्रन्थों का भी निरन्तर अध्ययन करने लगे। शीघ्र ही उन्होंने अपनी छाप आर्यसमाज पर डाल दी और सक्रिय कार्यकर्त्ता बन गये। तब से निरन्तर वे आर्यसमाज में किसी न किसी उच्च पद पर आसीन रहे। मजे की बात तो यह थी कि वे पद के इच्छुक कभी नहीं रहे, पर पद उनपर थोपा जाता था। आर्यसमाज कटरा में वे वर्षों मन्त्री व प्रधान पद पर रहे। आर्य प्रतिनिधि सभा प्रयाग में भी वे कई वर्ष तक मन्त्री व प्रधान रहे। उ० प्र० आर्य प्रतिनिधि सभा में वे कई वर्ष तक अवैतनिक मुख्य निरीक्षक रहे। अन्त समय व्यक्ति नहीं। अपितु संस्था थे।

ऊपर कहा गया है कि मास्टर साहब सदैव आर्यसमाज के हितचिन्तन में रत रहते थे। फलस्वरूप उन्होंने कई नये कार्य किये, जो अन्य समाजों के लिये भी उद्बोधक एवं प्रेरक हैं। जब उन्होंने सन् १९५० में आर्यसमाज कटरा की स्वर्ण जयन्ती मनाने की अपनी १०,०००) रु० की योजना प्रस्तुत की, तब उनका घोर विरोध किया गया एक शेखचिल्ली वाला असम्भव सा प्रस्ताव प्रस्तुत करने के लिये। पर मास्टर साहब अपने निश्चय पर अटल रहे। अनुमानित धन राशि से अधिक धन एकत्र हुआ और स्वर्ण जयन्ती धूम-धाम से मनायी गयी। इसका सम्पूर्ण श्रेय केवल मास्टर साहब को है। स्वर्ण जयन्ती की योजना में प्रयाग विश्वविद्यालय के लिये एक वैदिक छात्रावास की योजना भी थी। इतनी बड़ी योजना के लिये प्रारम्भ में किसी को उत्साह नहीं था, पर मास्टर साहब के अदम्य उत्साह एवं अद्भुत लगन के सामने सभी नतमस्तक हो जाते थे। मास्टर साहब के अनन्य भक्त, मित्र एवं सहयोगी आर्यसमाज कटरा के एक

★ज्वालाप्रसाद एम० ए०
प्रधान आर्यसमाज कटरा

सम्मान्य सदस्य श्री बैजनाथ जी हैं जो उनकी सभी योजनाओं में पूरा सहयोग देते थे। वैदिक छात्रावास योजना में भी वे ही उनके एक मात्र सहयोगी थे। उनके सहयोग से मास्टर साहब ने इलाहाबाद के तेलियरगंज मुहल्ले में कुछ भूमि प्राप्त करने का प्रयत्न प्रारम्भ कर दिया। अनेक बार लख़नऊ गये, दिल्ली गये, उ० प्र० के मन्त्रियों तथा भारत सरकार के मन्त्रियों एवं अनेक अधिकारियों से मिले और उनको प्रभावित किया लगभग १७ वर्ष के अथक प्रयत्न के पश्चात् जनवरी १९६६ में उ० प्र० सरकार ने ६ बीघे १७ बिस्वे की भूमि देने का निश्चय किया। भूमि का मूल्य आर्यसमाज ऐसी संस्था के लिये इतना अधिक था कि हम सब हताश हो गये, पर मास्टर साहब निराश नहीं हुये। उन्होंने लेने का निश्चय कर लिया। इस बीच कई सज्जनों से कई कमरों के लिये वचन अथवा धन भी प्राप्त कर चुके थे। गत फरवरी मास में मास्टर साहब छात्रावास के ही सिलसिले में दिल्ली गये। वहाँ ठंड लग गयी। वही ठंड प्राणलेवा सिद्ध हुयी। जीवन पर्यन्त आर्यसमाज की सेवा करते हुये अन्त में उसी के लिये अपने प्राणों की आहुति दे दी।

सन् १९५० में स्वर्ण जयन्ती का उत्सव समाप्त होने के पश्चात् मास्टर साहब को एक और नई बात सूझी। जिस सड़क पर स्वर्ण जयन्ती का समारोह हुआ था, उसका पुनर्नामकरण महर्षि दयानन्द के नाम पर क्यों न किया जाय? यह सुझाव कुछ को पसन्द आया, कुछ को नहीं। पर जब मास्टर साहब कटिबद्ध हो गये तो सफलता प्राप्त करके ही सांस लिया। अब पुराना 'वानहिल रोड' 'महर्षि दयानन्द मार्ग' है। इतना ही नहीं, आर्यसमाज के प्रचार का एक और भी रूप उनके उर्वर मस्तिष्क में आया। आर्यसमाज के दस नियम राह चलते लोगों की नजर में आ जांय तो

(शेष पृष्ठ १३ पर)

श्री जगजीवनराम अपने शब्द वापस लें

कालपी

आर्यसमाज कालपी (जि० जालौन) ने निम्नलिखित प्रस्ताव पारित किया।

"श्री जगजीवनराम केन्द्रीय मन्त्री द्वारा यह कथन कि वैदिक काल में गो-मांस भक्षण होता था सर्वथा मिथ्या है। समाज इनके इस असत प्रचार को घृणा की दृष्टि से देखती है तथा घोर निन्दा करती है। प्रधान मन्त्री से समाज निवेदन करती है कि वे जगजीवनराम से अपने कथन को वापस लेने का अनुरोध करें।"

सीतापुर

गत २ जून को यहाँ पर एक वृहद सभा का आयोजन किया गया। जिसमें श्री जगजीवनराम के वक्तव्य पर घोर विरोध तथा रोष व्यक्त किया गया। सभाओं के विभिन्न नेताओं ने वक्तव्य दिये और केन्द्रीय सरकार से अनुरोध किया कि वह श्री जगजीवनराम को अपने शब्द वापस लेने तथा खेद प्रकट करने पर बाध्य करे अथवा उनसे पद त्याग करायें। इस प्रकार के भ्रामक एवं अनुत्तरदायित्वपूर्ण भाषण सहन नहीं किये जा सकते।

नकुड़ (सहारनपुर)

एक सार्वजनिक सभा में केन्द्रीय सरकार के कृषि मन्त्री श्री जगजीवनराम के वक्तव्य का तीव्र विरोध किया गया और मांग की कि वह अपने असत्य एवं अनर्गल वक्तव्य पर खेद प्रकट करें अन्यथा भारत सरकार इस सम्बन्ध में अपनी स्थिति स्पष्ट करे।

मुजफ्फरनगर

आर्यसमाज थाना भवन द्वारा आयोजित सार्वजनिक सभा में श्री जगजीवनराम के वक्तव्य की निन्दा की गई तथा उनसे अपने शब्द वापस लेने व खेद प्रकट करने का अनुरोध किया गया।

तिलहर

तिलहर (शाहजहाँपुर) नगर वासियों की एक सभा २ जून को गीता भवन में आर्यसमाज की ओर से सायंकाल आयोजित की गई जिसमें श्री जगजीवनराम के दस मई के वक्तव्य का तीव्र विरोध हुआ तथा सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित कर मांग की गयी कि वह अपने असत्य एवं अनर्गल वक्तव्य पर खेद प्रकट करें अन्यथा भारत सरकार इस सम्बन्ध में अपनी स्थिति स्पष्ट करे।

सरकार स्थिति स्पष्ट करे

देश के विभिन्न स्थानों पर जनसभाओं का आयोजन

★

अलीगढ़

आर्यसमाज बेसा (जि० अलीगढ़) की एक सार्वजनिक सभा द्वारा केन्द्रीय सरकार के कृषि मन्त्री श्री जगजीवनराम के इस वक्तव्य पर कि वैदिक युग में गो मांस खाया जाता था, तीव्र विरोध किया गया और मांग की कि श्री जगजीवनराम अपने असत्य एवं अनर्गल वक्तव्य पर खेद प्रकट करें। अन्यथा भारत सरकार अपनी स्थिति स्पष्ट करे।

वाराणसी

आर्यसमाज छावनी के २ जून के अधिवेशन में केन्द्रीय मन्त्री श्री जगजीवनराम द्वारा दिये गये वक्तव्य पर रोष प्रकट किया गया तथा उनसे मांग की गयी कि वह अपने इस गैर जिम्मेदाराना काम पर खेद प्रकट करें वर्ना भारत सरकार इस विषय में अपनी स्थिति स्पष्ट करे।

होडल (हरियाणा)

गत २ जून को आर्यसमाज होडल तथा सनातन धर्म सभा के तत्वावधान में एक विशाल सार्वजनिक सभा का आयोजन किया गया जिसमें केन्द्रीय खाद्य मन्त्री श्री जगजीवनराम के वक्तव्य के प्रति घोर रोष प्रकट किया गया तथा उनसे मांग की गई कि वह अपने इस असामयिक वक्तव्य पर सार्वजनिक रूप से पश्चाताप करें जिससे गो भक्तों के हृदय को सांत्वना मिले।

फैजाबाद

आर्यसमाज फैजाबाद द्वारा आयोजित एक सार्वजनिक सभा में श्री जगजीवनराम के वक्तव्य की घोर निन्दा की गई व उनसे मांग की गई कि वे अपने असत्य एवं अनर्गल वक्तव्य पर खेद प्रकट करें अन्यथा भारत सरकार इस सम्बन्ध में अपनी स्थिति स्पष्ट करें।

गुना (म० प्र०)

आर्यसमाज गुना की एक सार्वजनिक सभा में केन्द्रीय कृषि मन्त्री श्री जगजीवनराम के इस वक्तव्य का कि वैदिक युग में गो मांस खाया जाता था, तीव्र विरोध प्रकट किया गया। सभा ने उनसे मांग की है कि वह अपने असत्य एवं अनर्गल वक्तव्य पर खेद प्रकट करें अन्यथा भारत सरकार इस सम्बन्ध में अपनी स्थिति स्पष्ट करे।

गया (बिहार)

आर्यसमाज गया के तत्वावधान में २ जून को एक सार्वजनिक सभा का आयोजन तथा श्री जगजीवनराम के वक्तव्य पर घोर विरोध प्रकट किया गया।

★

हरिहरपुर समाज

हरदोई—आर्यसमाज हरिहरपुर का प्रथम वार्षिकोत्सव गत २८ से ३० मई तक श्री डा० महर्षिसिंह साहित्य रत्न आयुर्वेदाचार्य की अध्यक्षता में बड़े समारोह के साथ मनाया गया जिसमें आर्यजगत् के प्रसिद्ध महोपदेशक एवं प्रचारकों ने सहर्ष भाग लिया। इस समाज की स्थापना गतवर्ष श्री पं० रघुनन्दन जी शर्मा की सरलता में हुई थी।

नवीन वर्ष के लिये निम्नलिखित पदाधिकारी निर्वाचित हुये हैं—प्रधान—श्री पं० रामौतार मिश्र, उपप्रधान—श्री छबिनाथ प्रसाद, मन्त्री—श्री डा० श्रीकृष्णसिंह उपमन्त्री—श्री गोविन्द-प्रसाद तथा श्री दरगाहीलाल, प्रचार-मन्त्री—श्री मथाप्रसाद, कोषाध्यक्ष—श्री कुंवर हनुमन्तसिंह, तथा आय व्यय निरीक्षक—श्री ठा० मुरलीसिंह।

निर्वाचन

—आर्यसमाज ब्रह्मपुरी।

प्रधान—श्री वेदप्रकाश जी उपप्रधान—श्री डा० चन्द्रसेन जी, मन्त्री—श्री लक्ष्मणदास जी, उपमन्त्री—श्री सत्यदेव, कोषाध्यक्ष—श्री धनेशचन्द्र, पुस्तकाध्यक्ष—श्री सावरमल, लेखा निरीक्षक—श्री मुरारीलाल।

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा की साधारण अधिवेशन १५ मई १९६८ को सायंकाल ६॥ बजे आर्यसमाज १५ हनुमान रोड नई दिल्ली में श्री नारायणदास जी कपूर की अध्यक्षता में हुआ जिसमें आगामी वर्ष १९६८-६९ के लिये पदाधिकारियों का तथा अन्तरङ्ग सदस्यों का चुनाव निम्नप्रकार हुआ—

प्रधान—श्री नारायणदास कपूर, उपप्रधान—श्री मेलाराम जी, श्री हंसराजजी गुप्त दिल्ली व श्री कुंवरलाल जी, माईथान, आगरा, प्रधान मन्त्री—श्री द्वारिकानाथ जी नई दिल्ली, मन्त्री—श्री रामनाथ सहगल, दिल्ली, श्री रामशरण दास नई दिल्ली, श्री पं० शिवदयालु जी मेरठ, श्री सत्येन्द्र जी, नई दिल्ली, कोषाध्यक्ष—श्री गुलाबसिंह जी नई दिल्ली,

इसके अतिरिक्त १७ अन्तरङ्ग सदस्य और ४ विशेष सदस्य चुने गये।

विवाह संस्कार

मीरजापुर। बगही के आर्य भजनोपदेशक श्री ठा० महानन्दसिंह आर्य के सुपुत्र श्री उदयनम का विवाह रानीपुर निवासी श्री रामपोखसिंह की कन्या ललिताकुमारी के साथ २० मई को वैदिक रीति के अनुसार श्री पं० यज्ञनारायणसिंह आर्य प्रधान आर्यसमाज हांसी के द्वारा सम्पन्न कराया गया।

बरेली—फरीदपुर इण्टर कालिज के प्रवक्ता श्री रामप्रसाद उपाध्याय शास्त्री के सुपुत्र श्री सत्यदेव जी का विवाह संस्कार श्री पं० जगदीशनारायण वैद्य की सुपुत्री कु० नीलादेवी के साथ गत १५ मई को श्री पं० शिवानन्द जी आचार्य द्वारा पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न कराया गया। इस अवसर पर आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान श्री पं० बिहारीलालजी शास्त्री भी उपस्थित थे जिन्होंने बीच-बीच में वेदमन्त्रों एवं विधि-विधान की बड़ी सुन्दर व्याख्या की जिसका अति हृदयग्राही प्रभाव उपस्थित जनों पर पड़ा।

वार्षिकोत्सव

बहुहलगंज—यहां पर गत दिनांक २१ से २७ मई तक आर्यसमाज का उत्सव धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री सत्यमित्र शास्त्री, श्री यशराजसिंह व श्री देवपालसिंह भजनोपदेशक के अतिरिक्त श्री सुरेशचन्द्र वेदालङ्कार तथा श्री वेदमित्र आदि के प्रवचन व उपदेश हुए जिसका स्थानीय जनता पर बड़ा सुन्दर प्रभाव पड़ा।

विविधि संस्कार सम्पन्न

फर्रुखाबाद—श्री उदयपालसिंह कोषाध्यक्ष आ० स० फर्रुखपुरदत्त के सुपुत्र कुं० देवपालसिंह का यज्ञोपवीत संस्कार गत १८ मई को श्री प० अनन्तराम शर्मा श्री रणवीरसिंह तथा श्री पं० रामभरोसे आर्य श्री कुल पुरोहित द्वारा पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर १०१ रु० का 'यजुर्वेद' द्वारा यज्ञ भी कराया गया। श्री उदयमानसिंह जी ने संकल्प लिया है कि जब तक सम्पूर्ण 'यजुर्वेद' समाप्त नहीं होगा तब तक प्रति वर्ष इसी हवन कुण्ड पर यज्ञ हुआ करेगा।

कायमगंज—श्री नत्थूसिंह जी दारोगा की सुपुत्री कुमारी सविता कुमारी का विवाह बुलन्दशहर निवासी श्री हरराज सिंह के सुपुत्र श्री अमरसिंह के साथ २० मई को सम्पन्न हुआ।

श्री रामकरन जी आर्य की सुपुत्री कुसुम कुमारी का शुभविवाह इलाहाबाद निवासी श्री रामस्वरूपजी के पुत्र श्री बैजनाथ आर्य के साथ वैदिक रीति से २२ मई को समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ।

वेद प्रचार

झालावाड़—आर्य समाज झालावाड़ के भवन में स्वामी विशुद्धानन्द जी सरस्वती ने २१ से २४ मई तक धार्मिक प्रवचन दिये।

शोक सम्वेदना

आर्यसमाज बसन्तपुर (सारण) के उपप्रधान श्री दुखराम बजाज की धर्म पत्नी के निधन पर आर्य सभासदों द्वारा शोक प्रकट किया गया तथा दिवंगत आत्मा की सद्गति एवं शोक संतप्त परिवार को शान्ति प्रदान करने के लिये परमात्मा से प्रार्थना की गई।

फीरोजपुर शहर—आर्यसमाज रानी तालाब के दि० १९ मई के साप्ताहिक सत्संग में हल्द्वानी आर्यसमाज के प्रधान श्रीयुत विद्यारत्न जी वकील की अकाल-शोकजनक मृत्यु पर हार्दिक दुःख प्रकट किया गया तथा शोक-सन्तप्त परिवार को सम्वेदना सन्देश भेजा गया।

ग्राम हसनपुर (मुजफ्फरनगर) में ३६२ ईसाइयों की शुद्धि

सभा उपदेशक श्री इतवारीलाल ने ग्राम हसनपुर जिला मुजफ्फरनगर में एक शुद्धि सम्मेलन का आयोजन किया। जिसमें ३६२ ईसाई भाइयों ने वैदिक धर्म की दीक्षा ली। एक सार्वजनिक सभा हुई जिसमें श्री हारिकानाथ जी प्रधान मन्त्री, श्री हरिदत्त शर्मा कार्यालयाध्यक्ष मा० हि० शुद्धि सभा, श्री दीपचन्द जी भजनोपदेशक आदि के ओजस्वी भाषण हुए। इनके अतिरिक्त ला० यशपाल जी तथा ला० गोकुलचन्द जी ने भी सम्मेलन में भाग लिया। ग्रामवासियों ने भारी उत्साह से सम्मेलन को सफल बनाया।

—आल इण्डिया दयानन्द साल्वेशन मिशन, होशियारपुर के कार्यकर्ता पं० सुखदेव ने ग्राम खतौर, जिला गुरुदासपुर से एक मुसलमान परिवार के आठ सदस्यों को दिनांक २८-५-६८ को शुद्ध करके वैदिक धर्म का अंग बनाया है। इस कार्य में वहां के निवासी श्री शेरसिंह जी ने मिशन को बहुत सहयोग दिया है। साथ ही यह बहुत प्रसन्नता की बात है कि वहां के सब हिन्दू भाइयों ने इस शुद्ध हुये परिवार के साथ रोटी बेटी का व्यवहार खोल देने की घोषणा कर दी है जैसे कि श्री शेरसिंह जी ने लिखा है। इस के लिये मिशन श्री शेरसिंह जी तथा वहां की हिन्दू जनता का बहुत आभारी है।

—दिनांक १२ से २० मई तक श्री आर्यसमाज खेतपुरा (एटा) में प० रामचन्द्र शर्मा अग्निहोत्री गुरुकुल (एटा) ने वैदिक धर्म प्रचार किया फलस्वरूप ३ यज्ञ हुये साथ ही में १९ उपनयन (यज्ञोपवीत) संस्कार हुए। दक्षिणा के अतिरिक्त एक कुन्टल गेहूं गुरुकुल को प्रदान किये गये। ग्रामीण जनता अपूर्व उत्साहपूर्ण थी अविष्य में वृहत उत्सव होने की सम्भावना है। मन्त्री अजयवीर यादव खेतपुरा (एटा)

आवश्यकता है

आर्य कन्या विद्यालय जूनियर हाई स्कूल रेल बाजार कानपुर—एक पोस्ट ग्रेजुएट ट्रेंड प्रधानाध्यापिका एवं कुछ ग्रेजुएट ट्रेन्ड सहायक अध्यापिकाओं की। आवेदन पत्र प्रमाण पत्रों सहित २० जून तक भेजें।

—प्रधान आर्यसमाज ई० २० कबरा मोहाल, कानपुर फो०-३५६१६

निवेदक—रामचन्द्र शर्मा

मन्त्री—आर्यसमाज
रेल बाजार कानपुर

वैदिक सिद्धान्त ही सुख और शान्ति स्थापित कर सकते हैं

★ आचार्य मित्रसेन एम०ए० सिद्धान्तालङ्कार

देश में फैले हुए अज्ञानान्धकार, अनुशासनहीनता, अभाव, छात्रों में अस्थिरता और अशान्ति को दूर करने का यत्न आज समस्त सामाजिक, धार्मिक तथा राजनीतिक संस्थायें कर रही हैं। समस्त नेता गण इस दिशा में अपनी विचारधारा के अनुसार प्रयत्न कर रहे हैं परन्तु सफलता किसी को प्राप्त नहीं हो सकती है। और सारे नेताओं के प्रयत्न व्यर्थ सिद्ध हो रहे हैं।

देश के नवयुवकों के समक्ष स्वराष्ट्र देशभक्ति, राष्ट्रभाषा तथा स्वधर्म के प्रति आदर्श उपस्थित करके उनमें भावी जीवन के प्रति आशा भरने का कार्य अत्यधिक आवश्यक दीख पड़ता है। आज का शिशु और युवक कल का राष्ट्रनिर्माता होगा। इसलिये इसे अनुशासन प्रिय एवं स्थिर मस्तिष्क बनाने का कर्त्तव्य सभी का है।

जिस समय देश के नेतागण और छात्र किंकर्त्तव्यमूढ़ हो चुके है वे नहीं समझ पा रहे कि कौन से उपाय अपनाये जावें जिनसे यह उद्देश्य पूरा हो उस समय आशा की किरण केवल महर्षि दयानन्द सरस्वती की विचार धारा ही दीख पड़ती है। महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित आर्य समाज ने जहां देश के स्वातन्त्र्य आन्दोलन में प्रशंसनीय योग दिया वहां उसके पास एक ऐसा विचार भी है जिस पर आचरण करने से युवकों में शान्ति, अनुशासन, भविष्य के प्रति आशा, देश भक्ति तथा स्वधर्म के प्रति उत्कट प्रेम उत्पन्न हो सकता है।

लार्ड मेकाले द्वारा चलाई गई इस शिक्षा पद्धति के दोषों को भी सभी जानते हैं किन्तु इनके स्थान पर कौन सी शिक्षा पद्धति प्रारम्भ की जावे यह विचार भी आर्य समाज के ही पास है।

दलगत एवं निकृष्ट राजनीति से दूर रहते हुए आर्य समाज यह प्रयत्न करता रहा है कि इस देश में आदर्श प्रजातन्त्र स्थापित हो सके। ऐसी ही कल्पना रामराज्य के रूप में राष्ट्रपिता महात्मागांधी ने की थी।

भावी विदेश नीति क्या हो आर्थिक नीति, राष्ट्रीय धर्म तथा शिक्षा प्रणाली क्या होनी चाहिए इसके सम्बन्ध में आज सभी दल, नेता और विद्वान किसी निश्चित परिणाम पर नहीं पहुच सके है और निकट भविष्य में भी ऐसी आशा नहीं है। किन्तु आर्य समाज के माध्यम से यह सब कुछ सम्भव है।

समस्त विश्व का आज नैतिक पतन हो चुका है और यही कारण है कि आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक आदि क्षेत्रों में तनाव पैदा हो रहे हैं जिसके कारण शान्ति और सुख संसार से लुप्त होता जा रहा है। यदि यही स्थिति चलती ही गई तो संसार का बड़ा अकल्याण होगा। इस प्रकार देश-देश जन-जन, समाज-समाज में सत्यता व्याप्त उपस्थित हो जावेगा।

इस पृष्ठ भूमि पर जब हम विचार करते हैं तो महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वैदिक सिद्धांत ही सुख, शान्ति स्थापित करने एवं समस्त बुराइयों को नष्ट करने का एक-मात्र उपाय है जिससे विभिन्न राष्ट्रों में अपनी-अपनी स्वतन्त्रता होते हुए भी परस्पर प्रेम भावना का उदय एवं उत्थान होगा।

आर्यसमाज की उक्त राष्ट्र निर्माण की योजना के प्रति देश की तथा विदेश रूप से युवकों का ध्यान आकर्षित करने के लिये भारतवर्षीय वैदिक सिद्धांत परिषद् ने धार्मिक एवं नैतिक परीक्षाओं का माध्यम अपनाया है। यह परीक्षायें स्कूल और कालिजों में विशेष रूप से प्रचलित की जायें इसके लिये आर्य वीर दल, आर्य कुमार सभायें अनेक प्रयत्न कर रही है। देश एवं मानव हितैषी सज्जनों का यह कर्तव्य है कि वे इस कार्य में परिषद् को भरपूर सहयोग प्रदान करें जिससे युवक वर्ग के ऊपर राष्ट्रीय और धार्मिक संस्कार उत्पन्न हो सकें।

जीवन-ज्योति

(पृष्ठ १० का शेष)

उसका प्रभाव कभी न कभी और कहीं न कहीं अवश्य पड़ेगा। यह सोचकर उन्होंने दान दाताओं की खोज प्रारम्भ की। उनके व्यक्तित्व और उनकी लगन का ऐसा प्रभाव था कि उन्हें दान दाताओं की कमी कभी नहीं खटकी। शीघ्र ही, यम नियमों के तीन पत्थर तीन स्थानों पर लग गये और चौथा लगने जा रहा है।

आर्यसमाज कटरा की स्थिति में एक विशेषता है। वह विश्वविद्यालय क्षेत्र में अवस्थित है। इस नाते उसका एक विशेष कर्तव्य हो जाता है विश्वविद्यालय के छात्रों में प्रचार करना। आर्यसमाज कटरा विशेष सफल तो नहीं, पर असफल भी नहीं हुआ। वार्षिकोत्सव के अवसर पर प्रायः विद्वानों के व्याख्यान विश्वविद्यालय के छात्रावासों में कराये जाते हैं। कभी २ दीक्षान्त समारोह पर धार्मिक पुस्तकों का वितरण भी किया गया है। इस दिशा में मास्टर साहब ने एक नया प्रयास प्रारम्भ किया। प्रयाग विश्वविद्यालय में अध्ययनार्थ आने वाले विदेशी छात्रों का स्वागत करना, उनका परिचय प्राप्त करना। अपने समाज का परिचय देना और आर्य साहित्य का वितरण करना। यह योजना सफल हुयी और रानीमण्डी आर्यसमाज के मन्त्री श्री राजाराम गुप्त पर इसका ऐसा प्रभाव पड़ा कि उन्होंने ५०० रु० इसी कार्य के लिये आर्यसमाज कटरा को दे दिया है। इस धन का वर्ष में जो ब्याज आयेगा, उतना ही धन आर्यसमाज कटरा को मिलेगा। और सम्मिलित धन राशि का आर्य साहित्य विदेशी छात्रों में प्रति वर्ष वितरित किया जायगा।

मास्टर साहब को भ्रमण का बड़ा शौक था। अपने अनन्य मित्र श्री बैजनाथ जी के साथ वे सम्पूर्ण भारत का भ्रमण कर चुके हैं। जहाँ भी वे गये, यथासम्भव आर्यसमाज मन्दिरों में ही रुके। प्रत्येक भ्रमण में आर्य सन्यासियों विद्वानों, उपदेशकों व प्रचारकों से मिले और उनके पते नोट किये ताकि समय पर आर्यसमाज कटरा में उनको निमन्त्रित किया जा सके। इन भ्रमणों से भी वे नये-नये विचार लाते थे और उनसे समाज को लाभान्वित कराते थे।

स्व० सक्सेना जी यहां चलते-फिरते आर्यसमाज थे वहाँ अनुशासन में कठोर भी थे। अध्यापकत्व की अनुशासन प्रियता सामाजिक [illegible] में उनके साथ रही, परिवार और [illegible] में। जिस सिद्धान्त विचार या बात के प्रति उनकी कोई धारणा बन जाती थी उससे उनको विचलित करना प्रायः सम्भव नहीं होता था। प्रान्तीय सभा या सार्वदेशिक सभा के नियमों को वे अक्षरशः पालन करते थे और करवाते थे। [illegible] समय इतना मम के साथ [illegible] को [illegible] न छोड़ा जाय, होली के [illegible] पर व्यंग्य-विनोद सिद्धान्त विरुद्ध है, [illegible] अनेक छोटी-मोटी बातों को मनवाने में वे कठोरता से व्यवहार करते थे। कभी कभी मनमुटाव भी हो जाता था, लोग उनको [illegible] या हठ कह देते थे [illegible] अपने मार्ग पर दृढ़ रहते थे।

सारांश यह है कि स्व० मास्टर साहब ने [illegible] में जीवन [illegible] किया, आदर प्राप्त किया, अनेक व्यक्तियों के लिये आदर्श बने और आर्यसमाज ने अपनी कीर्ति फैलाई। जिस गौरव से वे जिये उसी गौरव और शान से उनका देहावसान भी हुआ। अन्त समय में [illegible] काल तक बीमार रहे। अधिक सेवा-सुश्रूषा नहीं कराई और न कोई विशेष शारीरिक कष्ट ही उनको हुआ। वास्तव में रोग की गम्भीरता का एहसास ही उनको नहीं हुआ और बोलते-चालते, उठे-बैठे लेट गये और प्राणान्त।

दुःख है कि ऐसे पुण्यात्मा जीवों का आर्यजगत् से द्रुत गति से ह्रास होता जा रहा है और रिक्त स्थान की पूर्ति नहीं हो रही है। आर्यसमाज कटरा के सौभाग्य से स्व० मास्टर साहब की धर्मपत्नी श्रीमती यशोदेवी स्वयं एक सक्रिय और लगन की कार्यकर्त्री हैं। आर्य स्त्री समाज कटरा उन्हीं के बल पर प्रगति के मार्ग पर बराबर अग्रसर हो रहा है। इसके अतिरिक्त स्व० मास्टर साहब के दो भतीजे श्री भगवानसहाय एडवोकेट और श्री ईश्वरसहाय, ओवरसियर भी आर्यसमाज कटरा के सदस्य हैं। आशा है कि इनके सहयोग से आर्यसमाज का कार्य और बढ़ेगा और स्व० आत्मा जहाँ कहीं भी होगी आनन्द का अनुभव करेगी।

आर्यमित्र की सूचना

अब तक जिन ग्राहकों का इस वर्ष हेतु शुल्क समाप्त है उन्हें काफी समय पूर्व ही व्यक्तिगत रूप से सूचनायें भेज दी गई हैं। कुछ कृपालु ग्राहकों ने अपना शुल्क भेज भी दिया है परन्तु अधिकांश अभी शेष हैं।

अतएव अनुरोध है कि अविलम्ब ही आप महानुभाव अपना २ शुल्क १० रु० मनीआर्डर द्वारा भेजने का कष्ट करें।

डाक दर में असाधारण वृद्धि हो जाने के कारण वी० पी० पी० भेजने पर ग्राहकों पर अनावश्यक व्यय भार पड़ता है अतएव कृपया अपना धन मनीआर्डर द्वारा ही भेजिए।

मनीआर्डर के कूपन पर अपनी ग्राहक संख्या अवश्य लिखिये।

—व्यवस्थापक

★

श्रीमती चन्द्रवती चौ०

मैच तथा खेल प्रतियोगिताएं

इस वर्ष मैच तथा खेलों की प्रतियोगिताएं प्रथम जुलाई १९६८ को प्रातः ७ बजे से होंगी।

लड़कियों के मैच व खेल पर्दा बाग दरियागंज दिल्ली में तथा लड़कों के मैच और खेल [illegible] मैदान नई दिल्ली में होंगे।

खेलों में भाग लेने के इच्छुक लड़के व लड़कियां, स्कूलों तथा संस्थाओं की टीमें अपने अपने नाम ३० जून ६८ तक निम्न पते पर भेज देवें।

—देवव्रत: धर्मेन्दु

मन्त्री—श्रीमती चन्द्रवती चौधरी प्रतियोगिता [illegible] हाउस, दरियागंज दिल्ली—६

चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ

१० जून सोमवार से चारों वेदों के सम्पूर्ण मन्त्रों द्वारा अर्थ सहित यज्ञ का शुभ अनुष्ठान आर्यसमाज मधुबन में गायत्री महायज्ञ की वेदी पर प्रारम्भ हो जायेगा।

आर्यसमाज मधुबन के संस्थापक वेद पथिक प० धर्मवीर जी आर्य झंडाधारी ने अपने एक वक्तव्य में बतलाया है कि आर्यसमाज मधुबन में संगमरमर की एक दर्शनीय ८४ खम्भों की यज्ञशाला का निर्माण होगा जिस पर २ लाख रुपये का व्यय होगा।

आर्यसमाजों और आर्य जनों से अनुरोध

मान्य आर्य बन्धुओ और बहनो,

आज से दस वर्ष पूर्व महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा ने मोरवी के महाराजा का विशाल राज-भवन खरीद कर टंकारा को ऋषि-मिशन का मुख्य केन्द्र बनाने के लिये निःशुल्क उपदेशक-महाविद्यालय गोशाला, संस्कृत पाठशाला, आयुर्वेद महाविद्यालय, निःशुल्क-औषधालय आदि विभागों का संचालन किया। उपदेशक म० वि० में २५ छात्रों को निःशुल्क प्रशिक्षण देने की व्यवस्था है। प्रत्येक छात्र पर ट्रस्ट लगभग एक सौ रुपया प्रतिमास व्यय करता है। ट्रस्ट की आकांक्षा है कि यहां ऐसे सुयोग्य उपदेशक तैयार किये जावें जो विदेशों में जाकर आर्य संस्कृति का प्रचार करें।

लेकिन इन संस्थाओं पर लगातार व्यय होने के कारण ट्रस्ट की आर्थिक स्थिति बड़ी चिन्तनीय है। ट्रस्ट प्रति वर्ष ४५ हजार रुपये घाटे में जा रहा है। ऐसी नाजुक स्थिति में भी ट्रस्ट ऋषि मिशन को आगे बढ़ाने के लिये कटिबद्ध है।

महर्षि दयानन्द के स्वप्नों को साकार करने के लिये [illegible] आर्यसमाजों और [illegible] के आगे अपनी [illegible] में घड़ा भर जाता है। [illegible] है आप सब के योगदान [illegible] अवश्य भरेगी और [illegible] आर्य संस्कृति के प्रचार का महान केन्द्र बनेगी।

— [illegible]
मन्त्री
म० द० स्मारक ट्रस्ट टंकारा

आर्य प्रचारक प्रशिक्षण शिविर

श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ ग्राम ततारपुर डा० बाबूगढ़ छावनी जिला मेरठ में मिति आषाढ़ शुक्ला त्रयोदशी से श्रावण शुक्ला तृतीया सं० २०२५ विक्रमी तदनुसार दिनांक ८ जौलाई से २८ जौलाई १९६८ तक २१ दिवस का एक आर्य प्रचारक प्रशिक्षण शिविर लगेगा। जिसमें आर्य भजनोपदेशकों को प्रचार की गतिविधियों, वैदिक सिद्धान्तों सन्ध्या, अग्निहोत्र एवं संस्कारों के सम्बन्ध में अपेक्षित प्रशिक्षण दिया जावेगा। शास्त्रीय संगीत शिक्षण का भी समुचित प्रबन्ध होगा।

शिविर में सम्मिलित होने के इच्छुक सभी आर्य प्रचारक महोदयों को शिविर प्रबन्धक से पत्र व्यवहार करके शीघ्र ही अपना स्थान सुरक्षित करा लेना चाहिये।

मुनीश्वरानन्द सरस्वती
प्रबन्धक—
आर्य प्रचारक शिक्षण शिविर, ततारपुर

शैक्षिक आवश्यकता

आर्य कन्या हायर सेकेन्डरी स्कूल बिलसी जिला बदायूं के लिये निम्नलिखित योग्य एवं प्रशिक्षित अध्यापिकाओं की आवश्यकता है।

१. गृहविज्ञान १ संगीत गायन
१. संस्कृत १ जे० टी० सी० अथवा सी० टी० गणित एवं विज्ञान सहित जूनियर कक्षाओं को पढ़ाने के लिए।

प्रार्थना पत्र १५ जून १९६८ तक साहु हरप्रसाद आर्य प्रशासक पो० बिलसी जि० बदायूं के पास भेजें।

WANTS

Wanted the following staff for Dayanand Inter College Bindki, Fatehpur

One Lecturer in Economics.

Twelve J. T. Cs. or B. T Cs. with Maths, Science, Book Craft & Art

Two B. Sc s with Maths (Trained)

One Commerce Teacher with Type & short hand

One qualified Sanskrit Hindi Teacher M.A. Hindi & Sahityacharya will be prefered

Two Trained Graduates with English Litt & History.

One Type knowing experienced Head Clerck

One Liberian Trained.

One Lab. Asstt

One Arya samajee Pracharak Music Teacher

Apply to the Principal upto 20th June 1968 Aray samagists will be prefered

—Principal
Dayanand Inter College
BINDKI (Fatehpur)

कृषि विद्यालय गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार
(जिला सहारनपुर)

नवीन छात्रों का प्रवेश

यह विद्यालय कृषि एवं पशुपालन में दो वर्ष का डिप्लोमा कोर्स प्रदान करता है। प्रवेश के लिये न्यूनतम योग्यता, हाई स्कूल परीक्षा उत्तीर्ण, आयु १६ से २१ वर्ष तक। नियमावली तथा प्रवेश फार्म १) मनीआर्डर द्वारा भेजकर मंगाया जा सकता है। प्रवेशार्थ प्रार्थनापत्र २५ जून १९६८ तक लिये जायेंगे।

—धर्मपाल विद्यालंकार
एडमिनिस्ट्रेटर, कृषि विद्यालय गुरुकुल कांगड़ी
हरिद्वार, (सहारनपुर)

हिमालय के महान् तपस्वी संन्यासी के द्वारा प्राप्त

समस्त नेत्र रोगों की

अचूक दिव्य औषधि

नेत्र के समस्त रोगों, जैसे मोतियाबिन्द की प्रथम अवस्था, मन्द दृष्टि, फूला, कुकरे, तथा पानी का बहना आदि की अचूक औषधि—एक हिमालय के तपस्वी संन्यासी से प्राप्त हुई है। उसका विधिपूर्वक निर्माण किया है। इस औषधि के लगाने खाने व सूंघने से समस्त नेत्र रोग नष्ट हो जाते हैं। नेत्रों की ज्योति बढ़ जाती है। फिर नेत्र ज्योति आयु भर स्थिर रहती है। जीवन भर चश्मे की आवश्यकता नहीं रहती। जिसकी अनेक सज्जनों ने प्रशंसा की है।

यदि आप चश्मा लगाते हैं तो कम से कम ४० दिन तक, और यदि मोतियाबिन्द आरम्भ हुआ है तो कम से कम ८० दिन तक इस औषधि के खाने लगाने व सूंघने से अद्भुत लाभ होता है। स्वस्थ नेत्रों में नित्य प्रति लगाने व सूंघने से किसी प्रकार का नेत्र रोग उत्पन्न ही नहीं होता।

इस सम्बन्ध में स्वयं मिलें अथवा पत्र-व्यवहार करें। उत्तर के लिये १५ पैसे के टिकट भेजें।

४० दिन के प्रयोग का मूल्य लागत मात्र—लगाने की ५) रु० प्रति शीशी सूंघने की ५) रु० प्रति शीशी। खाने की साधारण औषधि १०) रु० तथा शीघ्र व विशेष गुण के लिये विशेष स्वर्ण, मोती, केसरादि से युक्त का मूल्य २००) रु० है। एक बार अवश्य परीक्षा कीजिये।

वैद्य देवेन्द्र आर्य
प्रा० एम० पी० (इ० प्र०)
देवेन्द्र रसायन शाला,
आर्यसमाज, दयानन्द नगर
गाजियाबाद।

पाकिस्तान से रूस की मित्रता के बढ़ते चरण

कोसीगिन के प्रधान मन्त्रित्व काल में जो परिवर्तन दिखायी देता है उसका सम्बन्ध बहुत कुछ भारत से भी है। रूस की दक्षिणी सीमा पर स्थित ईरान और पाकिस्तान के साथ उसने दोस्ती बढ़ाने के जोरदार प्रयत्न शुरू किये हैं और कम समय में अनेक बार रूसी प्रधान मन्त्री ने उन दोनों का दौरा किया है। दोनों देशों का पश्चिमी देशों खासकर इग्लैंड और अमरीका के साथ घना सम्बन्ध है। रूस अपनी मित्रता द्वारा उनके सम्बन्धों में दरार डालकर लाभ उठाने का इच्छुक है। ईरान की कूटनीतिक स्थिति मध्यपूर्व का तेल और उसके साथ व्यापार की सम्भावनाओं के कारण रूस ईरान से मित्रता बढ़ा रहा है। पाकिस्तान के साथ अपने सम्बन्ध बढ़ाने का प्रमुख कारण रूस को यह डर है कि कहीं इस देश में चीन का प्रभाव अधिक न बढ़ जाय, जो उसके हितों के प्रतिकूल हो।

इस क्षेत्र में रूसी सीमा पर स्थित अन्य तटस्थ या पश्चिमी देशों के मित्रों में अफगानिस्तान के साथ उसके अच्छे सम्बन्ध सन् १९२५ से ही कायम हैं। टर्की भी साम्यवादी देशों के साथ सम्बन्ध बढ़ाने प्रारम्भ किये हैं। रूस व टर्की के प्रधान मन्त्रियों ने एक दूसरे देशों की यात्रायें की हैं। परन्तु रूस जैसे शक्तिशाली पड़ोसी देश से टर्की का परम्परागत डर कायम है। टर्की नाटो और ईरान सेंटो का सदस्य ज्यों का त्यों बना हुआ है।

पुराने मित्र

ईरान और पाकिस्तान के साथ मैत्री बढ़ाने के समय रूस को अपने पुराने मित्रों भारत और लड़ाकू अरबों के भाव विचारों का भी ख्याल रखना जरूरी है। इन दोनों देशों के नेताओं को अपने चंगुल में फंसाने के लिए कोसीगिन ने पुराने मित्रों से सम्बन्ध बनाये रखकर नये कूटनीतिक के प्रयत्न प्रारम्भ किये हैं, उनमें उनकी अपनी यात्राओं के समय कई पेचीदा, जटिल प्रश्नों को टालना पड़ा या उन पर चुप रहना पड़ा है। उदाहरण के लिये तेहरान में भी रूसी प्रधान मन्त्री ने अपने भाषण में और न संयुक्त वक्तव्य में फारस की खाड़ी के भविष्य से सम्बन्धित प्रश्नों का उल्लेख किया है जिनमें दोनों की दिलचस्पी बढ़ रही है। पाकिस्तान में कोसीगिन ने वहाँ के साम्यवादियों के साथ एक जुटता के सम्बन्ध में दिलचस्पी नहीं दिखायी क्यों कि वहाँ इसका अस्तित्व नाममात्र का है और ये राष्ट्रीय आवामी दल के द्वारा कार्यरत हैं। ईरान में यह [illegible] से अधिक शक्तिशाली हैं और रूसी नेता इसको दो गैरकानूनी छिपे हुये रेडियो स्टेशनों द्वारा ब्राडकास्ट करने की सुविधायें दिये हुये हैं परन्तु कोसीगिन की यात्रा आदि से ऐसा मालूम पड़ता है कि इस अन्य अनेक ऐशियाई और मध्य पूर्व देशों के तरह ही ईरान के साथ भी पार्टी के हितों की उपेक्षा करके सरकार से सम्बन्ध सुधारने के लिए प्रयत्नशील हैं। ईरान शाह को जनवरी सन् १९६७ की रूस यात्रा के बाद रूस द्वारा वहाँ इस्पात का कारखाना लगाने और दोनों देशों का व्यवहार बढ़ाने का कार्य शुरू हो गया है। रूस ईरान को १० अरब डालर के मूल्य के हथियार देने के लिये भी राजी हो गया है। वक्तव्य में यह बताया गया है कि दोनों देशों के प्रमुख व्यक्तियों को एक दूसरे देश की यात्रा [illegible] होने पावे। १९५६ के बाद से पाकिस्तान को रूस से २४ करोड़ डालर का ऋण देने का वायदा किया है जो १९६५ के बाद से तेजी से बढ़ गया है। अफगानिस्तान होकर थलमार्ग से व्यापार की दिक्कतों के होते हुए भी दोनों देशों का व्यापार आश्चर्यजनक रूप से बढ़ गया है। मार्च में हुए नये व्यापारिक समझौते के अनुसार सभी प्रकार के माल का आदान प्रदान ६८७० में बहुत काफी बढ़ जायगा। सन ६६ के ताशकन्द समझौते का जिक्र करने में कोसीगिन और रूसी टीकाकार बहुत सावधान रहें।

काश्मीर के प्रश्न को सुलझाने म, अन्यों की तरह ही असफल होने के कारण कोसीगिन ने इस प्रश्न पर ध्यान देना आवश्यक नहीं समझा। परन्तु पाकिस्तानी नेताओं ने बताया था कि

राजनैतिक समस्याएं

से मध्यपूर्व की स्थिति सम्हली परन्तु अन्य अनेक अन्तरराष्ट्रीय प्रश्नों की तरह ही अरब इजराइल प्रश्न पर कोई विशेष बात नहीं कही गई। वियतनाम के प्रश्न पर भी उदार रचनात्मक विकर था। इनसे ऐसा लगता है कि कोसीगिन ने इन प्रश्नों पर दबाव डालने की चेष्टा नहीं की। अरबों पर अपने प्रभाव को मजबूत करने के लिये इसी समय रूस ने अपने सुरक्षा मन्त्री को ईराक, सीरिया और मिश्र भेजा और तीन दिन बाद रूसी जम्बस सीरिया और मिश्र पहुच गये। बाद में ईराक की बन्दरगाहों पर रूसी नौसेना की टुकड़ियां भी गयीं।

पाकिस्तान यात्रा

पाकिस्तान की यात्रा के लिये कोसीगन ने एक पुराने निमन्त्रण के आधार पर शीघ्र ही दौरे का प्रोग्राम बना लिया था। सितम्बर सन ६५ मे पाकिस्तान के राष्ट्रपति अयूब खां की रूस यात्रा से दोनों देशों का सम्बन्ध बढ़ाने का मार्ग खुल गया था। कोसीगिन की भारत यात्रा के समय जनवरी में पाकिस्तान को रूस ने ६ करोड डालर का कर्ज देने की घोषणा की थी

भारतीय सैनिक तैयारियों को वह अपनी सुरक्षा के लिये खतरा समझते हैं। इसी तरह काश्मीर के भारतीय अधिकृत क्षेत्र के भारत की कार्यवाहियों को भी। अयूब खां ने १७ अप्रैल को कोसीगिन के आने के बाद के [illegible] यह बात दोहराई [illegible] मन्त्री भारत के साथ [illegible] फिलहाल बनाये रखने के लिये पाकिस्तान को सैनिक सामग्री आदि की सहायता खुल्लमखुल्ला नहीं देना चाहते है। अतएव उन्होंने पाकिस्तान को बार बार विश्वास दिलाकर १८ अप्रैल को उन्होंने पाकिस्तान को आणविक शक्ति से चालित बिजली उत्पादन केन्द्र और उसके मछली पालन उद्योग को मजबूत बनाने का वायदा किया। भारत के सन्देह निवारणार्थ उन्होंने बताया कि उनकी बातचीत तीसरे देश के खिलाफ नहीं थी। पाकिस्तान के लिये अस्त्रशस्त्र की सहायता के प्रश्न पर भी वह चुप रहे। संयुक्त वक्तव्य में दोनों देशों के सहयोग की प्रगति और पड़ोसियों के साथ अच्छे मैत्री सम्बन्धों की बढ़ोतरी की प्रशंसा की गई थी। अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर दोनों के एक मत होने का केवल साधारण तथ्यों में लिया था। उसमें काश्मीर का नाम नहीं था। परन्तु भारत के साथ पाकिस्तानी सम्बन्ध के बारे में यह लिखा था कि अयूब खां ने अपने देश की स्थिति को बताया और कोसीगिन ने दोनों देशों को अपनी विवादग्रस्त समस्याओं को ताशकन्द घोषणा के अनुसार तय करने के लिये [illegible] यात्रा के [illegible] के लिये शुभ कामनाओं की घोषणा की थी। अतएव पाकिस्तान यात्रा से भारत में सन्देह उत्पन्न न होने के लिये वह उसके पास कोसीगिन अचानक थोड़ी देर के लिये दिल्ली आये और उन्होंने बताया कि रूस दोनों देशों में अच्छे सम्बन्ध कायम करने का इच्छुक है। परन्तु उनके पास इसके लिये कोई प्रस्ताव नहीं है। उनके इस प्रकार भारत आने से पाकिस्तान में नाराजी प्रकट की

★हरिहर पाण्डेय, इटावा

गई और बताया गया कि दोनों देशों के साथ सम्बन्ध बढ़ाने में मास्को के सामने कठिनाई है। परन्तु उनके पाकिस्तानी मेजबानों ने बताया है कि उनकी यात्रा बहुत सफल रही और वह कोसीगिन के लम्बे समय के लिये व्यापार करने की बातचीत और तेल की खोज आदि क्षेत्रों में तकनीकी सहयोग के प्रस्ताव से प्रसन्न हैं। सम्बन्धित देशों की प्रतिक्रिया के विश्लेषण से स्पष्ट है कि पुराने मित्रों को बिना शक्ति और नाखुश किये रूस के लिये नये देशों के साथ अपने राजनैतिक हितों में सम्बन्ध बढ़ाना एक अत्यधिक कठिन कार्य है। जरा सी असावधानी या गुप्त समझौतों या बातचीत के रहस्यों के प्रकट हो जाने से पुराने मित्रों की मैत्री और नवों का विश्वास टूट सकता है और फिर इस कठिन कार्य में सफलता पाने के लिये काफी समय चाहिये। भारत में तो पाकिस्तान में रूस की अधिक दिलचस्पी और भारत की तुलना में अधिक झुकाव की खबरें आ रही हैं और रूस की काश्मीर नीति में भी परिवर्तन के चिन्ह दिखाई पड रहे हैं। रूस के पाकिस्तानी मित्रता प्राप्त करने के प्रयत्नों से वह भी भारत की कीमत पर भारतीय जनता व सरकार सचेत और सावधान हो गई है। अगर यह रवैया जारी रहा तो हो सकता है कि शीघ्र ही रूस भारतीय मित्रता और सहानुभूति खो बैठे और भारतीय रूस पर विश्वास करना छोड़ दें।

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल-६०

आर्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

Registered No. L. 60

१० ज्येष्ठ २६ शक १८९० ... (दिनांक १६ जून सन् १९६८)

जगजीवनराम-शब्द वापस लो!

[प्रधान-आर्यसमाज (इन्दूर) निजामाबाद, आन्ध्र प्रदेश द्वारा पारित प्रस्ताव]

आर्य समाज निजामाबाद तथा निजामाबाद जनता की यह जनरल सभा भारत के खाद्य मन्त्री श्री जगजीवनराम जी ने 'वैदिककाल में आर्य लोग गो-मांस खाते थे' लोक सभा में कुछ लोगों को प्रसन्न करने के लिये ऐसा गलत अथवा कलंक तथा गैर जिम्मेदाराना बात बोली है। इसको घृणा और क्षोभ की दृष्टि से देखती है। आम जनता की भावनाओं से इस तरह खिलवाड़ करना बहुत बुरी चीज है। देश के संगठन और प्रेम में बाधा डालने वाली चीज है। यह सभा मांग करती है कि श्री जगजीवनराम जी अपने शब्द वापिस लें। यह सभा सभी केन्द्रीय तथा प्रान्तीय मन्त्रियों लोकसभा सदस्यों तथा विधायकों से आशा करती है कि वह अपनी जिम्मेदारी समझते हुए सत्य सनातन वैदिक धर्म की बाबत कोई गलत बात गैर जिम्मेदारी से न बोलें।

महर्षि दयानन्द

(पृष्ठ २ का शेष)

उनके प्रयत्नों की सराहना की। उनका वेदभाष्य समग्र मानवता का स्वर है। उसमें देश काल या जाति विशेष का कहीं उल्लेख नहीं है। इतने पर भी कुछ लोगों ने उन्हें साम्प्रदायिक कहा तो उन्होंने दुराग्रह पक्षपात के कारण ही ऐसा किया समझ-बूझ कर नहीं। उनके कुछ शिष्यों ने उनके सिद्धान्तों को घटा बढ़ाकर हिन्दू धर्म तक ही सीमित कर दिया और एक दिन वह भी हम देख रहे हैं जब हम आर्यसमाज को मानव मात्र की संसद के रूप में न देख कर हिन्दू धर्म के रक्षा दल के रूप में देख रहे हैं। जिस महापुरुष ने मानव मात्र की रक्षा के निमित्त अन्ध जड़ रूढ़ि ग्रस्त समाज के हाथों पत्थर खाये गालियां सहीं तिरस्कार और अपमान सहा, फूल मालाओं के स्थान पर कांटे ही मिले आसन के स्थान पर खड़े होने को भी स्थान नहीं मिला फिर भी जो आजीवन सत्य के पथ से तिलमात्र डिगा नहीं उस अजय योद्धा को हम बार बार नमस्कार करते हैं।

रोज-रोज चौराहों मन्दिरों घरों में होने वाले तुलसीकृत रामचरित का कथा वाचकों द्वारा गजगराज में हारमोनियम, ढोल, लाउडस्पीकर से हल्ला-गुल्ला एवं घर घर चलनेवाला नित्य पारायण तरह तरह की पाठविधियों का रट्टू रामायणियों द्वारा पाठ कुछ होता है और व्यवहार बिल्कुल उसके विपरीत। 'मानस' में केवट और वशिष्ठ का गले मिलकर स्नेह व्यक्त करना तुलसी ने वर्णन किया है तथा केवट से लिपटते हुए वशिष्ठ के लिये कवि ने कहा है। 'जनु महि लुठत सनेह समेटा।' तात्पर्य यह कि केवट स्नेह की अमित राशि है, वशिष्ठ उसे बटोर रहे हैं। इसका कोई प्रभाव आज सैकड़ों वर्षों के निरन्तर पाठ के बाद भी वशिष्ट के पुत्रों पर नहीं पड़ा। वे रामभक्त हरिजनों को अपने पूर्वज वशिष्ट की तरह गले लगाने का साहस नहीं कर सके। तब उनको अपने पूर्वजों पर अभिमान करने का क्या अधिकार है? अभिमान तो वह कर सकता है जो अपने को अपने पूर्वजों से, अधिक नहीं तो कम से कम उनके बराबर ही सिद्ध कर सके। कितने ऐसे हैं जिन्होंने तुलसी के राम की तरह कभी शबरी के स्थान के लिये राजघाटों को खोला है? कितनों ने हरि मन्दिरों में शूद्रों को बिठाकर नाम जप करने का अवसर दिया है जबकि तुलसी ने शूद्र के लिए लिखा है 'विप्र पढ़ाय पुत्र की नाई'। सब का उत्तर है किसी ने ऐसा नहीं किया। ये तुलसीदास का नाम बच बच कर अयोग्य सन्तान की तरह अपना पेट पालते रहे बस। इसी अविवेक के कारण मुसलमानों से बार बार भ्रष्ट होने पर भी काशी विश्वनाथ, विश्वनाथ बने रहे और हरिजनों के प्रवेश से, जो उपासना के लिए गये थे, अपवित्र हो गये। वे कहीं बाहर निकल कर हरिजनों से छू न जायें उन्हें उनके भक्तों ने लोहे के सींकचों में बन्द कर दिया। बेचारे काशी विश्वनाथ का क्रोध इतना ही था कि उसने हरिजनों को भस्म नहीं किया, इन्द्र ने वज्र नहीं फेंका तो इन काशी के पुजारियों ने उसे जेल की सजा दे दी। महर्षि ने इन जड़ प्रतिमाओं को इसलिये अस्वीकार किया था कि इनकी जड़ता का सीधा प्रभाव मनुष्य के विचारों पर पड़ता है। इन प्रतिमाओं को भगवान मानकर पूजने वालों के बीच पाखण्ड पैदा होता है। अगर विचारों में गति पैदा करनी है तो इस जड़ता को त्यागो मस्तिष्क में उन्मुक्तता आ सकेगी।

सम्पादक के पत्र

वैदिक कालीन आर्य मांसाहारी नहीं थे

महोदय,

३० मई के हिन्दुस्तान में जोशकापी के अन्तर्गत श्री ... जी का एक पत्र, क्या हिन्दू भी मांस खाते थे? शीर्षक से छपा है जिसमें उन्होंने इस बात को पुष्ट किया है कि वैदिक काल में ब्राह्मण भी मांस खाते थे। उन्होंने ऋग्वेद के मन्त्र का हवाला देकर लिखा है कि इस बात का प्रमाण ऋग्वेद में मिल जाएगा। उन्होंने यह भी लिखा कि ऋग्वेद का ... अग्नि देवता के लिये घोड़ा, बैलों, सांड, गौओं तथा भेड़ों की बलि दी जाती थी। एक समय था जब कि ब्राह्मण सबसे बड़े मांसाहारी थे और प्रायः प्रतिदिन गो वध होता था। वेद में ऐसा कोई मन्त्र नहीं है जिससे गो वध का समर्थन होता हो। यदि होता तो लेखक महोदय उसका उल्लेख करते, अतः उनका कथन कपोल कल्पित है।

उन्होंने मनुस्मृति के एक श्लोक का भी हवाला दिया है जिसका अर्थ है वेदों मन्त्रों द्वारा पवित्र किया गया मांस खाना चाहिए और शास्त्रोक्त विधि से मांस खाना चाहिये। मनुस्मृति का यह एक प्रक्षिप्त श्लोक है जो वाम मार्गियों द्वारा इन पवित्र ग्रन्थों में सुरा एवं मांसादि को विहित करने के लिए भर दिये गये थे। वे प्रक्षिप्त प्रमाण नहीं हैं।

इस सम्बन्ध में वेदों के अध्येता पश्चिम भारतीय विद्वानों का संयुक्त वक्तव्य हमारे सामने है जिसमें उन्होंने लिखा है-

भारतवर्ष में वेद विरोधी वाम मार्ग सम्प्रदाय का जब प्रचार हुआ तो उस समय भी कम्युनिस्टों की भांति वाम मार्गियों ने भी हमारे पवित्र ग्रन्थों में आक्षेप किये और ऋषियों तथा वेदों के विरुद्ध कई अन्ट सन्ट प्रलाप किये। सन १८५७ के स्वतन्त्रता संग्राम अनन्तर अंग्रेजों ने भी वाम मार्गियों के ग्रन्थों के आधार पर सिद्ध करने का यत्न किया कि प्राचीन आर्य भी मांस खाते थे। उन्होंने यह नीच भावना केवल इस लिये फैलायी थी कि हिन्दू जनता के हृदय में गो भक्ति के प्रति अश्रद्धा उत्पन्न हो। वेदों में गो का नाम अघन्या है जिसका अर्थ है कि गोवंश की हत्या कभी नहीं करनी चाहिये।

—प्रेमचन्द्र शास्त्री, दिल्ली

आर्यमित्र आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के लिये भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से कृष्णगोपाल शर्मा द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।

आर्य मित्र

लखनऊ—रविवार अषाढ़ २ शक १८९० आषाढ़ ह० १३ वि० सं० २०२५, दिनांक २३ जून १९६८ ई० दयानन्दाब्द १४४ सृष्टिसंवत १,९७,२९,४९,०६९

वेदामृत

क्या-जनता और हमारी सरकार इधर ध्यान देगी ?

24-6-68

कि राष्ट्र में उपद्रवों का श्रोत कहां है ?

देश की स्वतन्त्रता के बाद आये दिन जो साम्प्रदायिक उपद्रव हो रहे हैं और वह बढते ही जा रहे हैं—इसका आदि श्रोत् कहां है। राजनीति के विशारद अपनी स्वार्थ लिप्सा वश अपना २ दृष्टिकोण भिन्न-भिन्न तरह से देते हैं। १९४७ के बाद देश का वातावरण शुद्ध व पवित्र होता पर वह पहले से भी अधिक विषाक्त बनता जा रहा है। देश के जिस कोने पर दृष्टि डालो-कत्लेआम, दंगों की भरमार मची है। कहीं नागा समस्या, कहीं ईसाई समस्या, कहीं मुस्लिम साम्प्रदायवाद का बोलबाला है। सुविज्ञ क्षेत्रो के अनुसार सारे देश मे जो दंगे हुये हैं, उनकी रूपरेखा पर विचार करें तो १९६० में २६, १९६१ में ९२ तथा १९६४ मे १०७०, १९६५ में युद्ध के मध्य कोई नहीं, १९६६ में १२२ व १९६७ में २०४ दंगे हुए हैं और यह दंगे एक भाग मे न होकर आसाम, बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र आन्ध्र अभिप्राय यह कि जब दंगे प्ररम्भ हुये तो शुरुआत मुसलमानों से ही हुई। जब हिन्दुओं की ओर से प्रतिशोध की बात बढ़ी तो सरकार दीवार बनकर सामने आ गई, मरम्मत हिन्दुओं की हो गई। देश मे बड़े २ उपद्रवों की न्याय पूर्ण जांच होने पर सही रिपोर्ट जनता के सामने नहीं आ पाती जैसा कि कपूर आयोग की रिपोट के साथ किया गया।

१९४७ से लेकर अब तक मुसलमानों को आत्मा, देश के विभाजन और हिंदुओं की हत्या के लिये जिम्मेवार ठहराया जा सकता है अब पुन: नये २ नामों को लेकर नवीन संगठनों को जन्म देकर देश को विघटित करने के षड्यंत्र रचे जा रहे हैं। मजलिसे इत्तहादुल मुसलमीन, मुस्लिम लीग, मजलिसे मुशावरात, जमीयते इस्लामी हिन्द आदि सामने हैं और पूर्व की भावनाओं को पुनः जागृत कर रहे है। इसी से कहता हू कि क्या जनता और सरकार इधर ध्यान देगी ? कि खतरा कहा है।

★

वार्षिक १०)
छमाही ६)
विदेश में १ पौ०

सम्पादक:
सच्चिदानन्द शास्त्री एम० ए०
पं० शिवदयालु
उमेशचन्द्र स्नातक एम० ए०

वर्ष ७०
अङ्क २०
एक प्रति २५ पै०

इस्लाम के कुछ सिद्धांत

[श्री विद्याभिक्षु आर्य फाजिले अदब (अरबी) एम० ए० एल० टी०]
प्रधानाचार्य हिन्दू इण्टर कालेज, रुदौली (बाराबंकी)

(ब्लाक से आगे)

अज रुदौली मुवर्रिखए २२ जनवरी सन् १९६७ ई०

मुहतरमी मौलाना साहब ! आदाब

जनाब का नामए गरामी मुवर्रिखए ९ जनवरी १९६७ मौसूल हुआ। जवाब की जहमत के लिये शुक्रिया। जो सवालात मैं ने जनाब की खिदमत में लिखे थे और जिनके जवाबात मतलूब थे वह इस नुक्तए नजर से लिये गये थे कि जनाब उन्हें खुद क्या तसलीम करते है। कुरआन शरीफ की आयात में और अहादीस में उनके मुताल्लिक क्या है वह तो अपनी जगह पर है ही और उसके बारे में इनका मुताला करने वाला मुख्तलिफ फरकों के लिहाज से मुख्तलिफ किस्म के नजरिये मान्यता) पाता है, लिहाजा उम्मीद अगलब है कि आप इन सवालात पर मजीद (अधिक) रोशनी डालकर ममनून फरमाएंगे।

(१) फरिश्तों का वजूद अगर मुस्तकिल है तो क्या उनकी तखलीक (उत्पत्ति) भी हुई है ? अगर हां तो तखलीक आलम (सृष्टि के क्रम) मे उनका क्या सिलसिला है ? उनके फराइज, (कर्तव्य) अखलाम, (शरीक) उमूर (कार्य) वगैरा के बारे में जो बयानात मिश्कात बुखारी व नीज इनके नामों (अबीसों के नाम) वगैर अहादीस में हैं, उनसे जनाब कहाँ तक मुत्तफक हैं ?

(२) इस मखलूक से कब्ल कोई मखलूक थी तब भी और अगर नहीं थी तब भी यह मेरे खयाल मे मुसल्लम (मान्य) है कि यह फानी है और अगर यह फानी है जिसका अजाम एक नई मखलूक है तो लामुहाला उस मखलूक को भी फना लाजमी होना चाहिये। उसका अबदी (नित्य) होना बईद अज कयास (युक्ति से परे) मालूम होता है।

(३) आलमे बरजख यानी इल्लीन और सिज्जीन (एक प्रकार की अच्छी और बुरी हवालातें जिसमे कयामत से पूर्व मुस्लिम विश्वासानुसार आत्माएं रहेंगी) से मखाह है (जीवात्माओं) को रखने की मसलहत भी कुछ अजीब मालूम होती है। पहले अनमान (कर्मानुसार) अखाह को बराहे रास्त (सीधे जन्नत या दोजख में भेज देना ज्यादा मुनासिब मालूम होता है। अगर ऐसा तसलीम कर लिया जाये कि हर वक्त यह जरूरी नहीं कि जालिम और मजलूम दोनो बयक वक्त जमा ही होंगे तो फैसला सिर्फ मुद्दई या मुद्दआ अलैह की मौजूदगी में स्वीकर होगा, कयामत मे सभी होंगे तो भी बहर हाल कयामत तक इन्तिजार करने की जरूरत नहीं लाहक होती। अव्वल तो यह अली मेकुल (सर्वज्ञ) है। व नीज आजा (शरीर के अवयव जो मुस्लिम विश्वासानुसार कयामत मे स्वयं गवाही देंगे।) कातिबैन की (दो फरिश्ते जो प्रत्येक मनुष्य के अच्छे बुरे कर्म लिखते हैं।) की शहादत काफी होनी चाहिये। यहां भी तो मकतूल मौजूद नहीं होता। कातिल को मोतिबर शहादत पर सजा दे दी जाती है।

(४) जन्नत व दोजख में जिन माजव नअम (उत्तम भोग्य पदार्थों) का जिक्र है उनसे रूहानियत का कोई वास्ता तो नहीं मालूम होता क्योंकि उनकी लज्जात दुनियवी लज्जात के मिस्ल बतायी गयी हैं जो यकीनन आरिफीन (आत्मज्ञानी) के लिये काबिले तर्क हैं।

जवाब का मुन्तजिर —विद्याभिक्षु आर्य

अज अयाबाद २१ जनवरी १९६८

जनाबमन तसलीम

मैं तो यह समझ रहा था कि आप मालूमात कुरआन व हदीस के मुतअल्लिक चाहते हैं। इसलिए मैं जनाब के लिये बखुशी आमादा हो गया था बाकी मेरे जाती ख्यालात क्या हैं इनकी तो जरा भी अहमियत नहीं है। बहरहाल आपकी खातिर एक बारफिर जवाब अर्ज किये देता हू

१—जी हाँ फरिश्ते मखलूक (सृष्टि) हैं इसी तरह के जैसे सारी मखलूक है उनके फरायज (कर्तव्य) खुले हुए है यानी तकवीनी एहकामे इलाही की तामील (आज्ञापालन) बाद व वगैरह का कोई कतई इल्म नहीं और न उसकी जरूरत है।

२—फरिश्तों से कब्ल किसी और मखलूक का इल्म नहीं बहरहाल जो भी होगा फानी होगा।

—आलमे बरजख आलमे अखरवी की एक हल्की सूरत है। जन्नत व दोजख की कैफियते मिस्ल ख्वाब के इस आलम मे तारी होती है। इन कैफियतो का पूरा इतलाक रूहों के दुबारा मुजस्सिम (शरीरधारी मनुष्य) होने पर और मुफस्सिल (विस्तृत) और एक एक जुजिया के फैसले के बाद हश्र में होगा।

४—जन्नत की नेमतो की और निजाहत (स्पष्टीकरण) और तकरार तो जिस्मानी ही नेमतो की तरह की गई लेकिन इजमाली (संक्षिप्त) वादा हर किस्म की नेमतों का है।

यह अकीदा इस्लामी नहीं। कि हर माद्दी लज्जत (प्राकृतिक स्वाद) आरिफीन के लिए काबिले तर्क ही होती है। जिस्मानी लज्जते भी इन्सान के लिए हो सिर्फ उनके और रूहानी लज्जतों के दरम्यान सही तनासुब (अनुपात) और तवाजुन रहना चाहिये उनका गलबा न होना चाहिए।

अब्दुल माजिद

* * *

रुदौली ३ फरवरी १९६७

मौलानाए मुहतरम

आदाब !

जनाब का नामए गरामी मौसूल हुआ उसके लिए शुक्रिया मुन्दर्जए जैल उमूर की वाकिफियत मतलूब है। उम्मीद अगलब है कि आंजनाब उन पर रोशनी डालकर मशकूर फरमायेंगे।

(१) आं हजरत को जिन हालात मे अपने रिफार्मेशन से मुतअल्लिक काम करना था उनका मुताला करने के बाद ऐसा मालूम होता है कि "जिहाद" (धर्मयुद्ध) एक वक्ती मसलहत थी। लिहाजा जहाद एक दायमी (सर्व कालीन धार्मिक कर्तव्य) फर्ज मजहबी नहीं है क्योंकि इससे मुतआल्लिकात जुमला (सम्बन्धित सभी आयतें) आयात खास २ मवाके से वाबिस्ता हैं इनकी हकीकत यिऐनि हो नहीं है जैसी श्री कृष्ण जी ने अर्जुन को जंगे महाभारत के मौके पर तलकीन की थी। जैसा कि "या ऐय्युहल्लजीन आमनू लातत्तखजू आबाअकुम व अखवानकुम औलियाअ इनिस्तहिब्बुल्कुफ्र अलल ईमान" (कुरान) (ऐ वे लोग जो ईमान लाए हों अपने बापों और भाइयों को भी मित्र न बनाओ यदि वे कुफ्र को इस्लाम पर वरीयता देते हों।) वगैरह आयात से जाहिर है।

(२) खुदा गैर मुजस्सिम (शरीर रहित) है इसके मुतआल्लिक कुरआन शरीफ में कौन सी आयत है तहरीर फरमाए।

(३) कुरआन शरीफ में जैसा कि जाहिर है कि एक वह इन्सान भी काफिर है जो मुवहिद (एक ईश्वर वादी) है रास्तबाज, (सच्चा) दयानतदार और नेक करदार हो (सौम व सलात (रोजे नमाज) वगैरह जैसा कि कुरआन में वाजेः किया गया है उसका कायल न हो) बल्कि बनी नौअ इन्सान (मानव जाति) की फलाह बहबूद (भलाई) के लिहाज से भी यह भी वाजेह रहे कि वह रसूल मलाएका, कुरआन शरीफ के कलाम अल्लाह होने कयामत, दोजख और जन्नत वगैरह का (धर्मानुसार) हस्ब तौफीक कुरआन शरीफ पर भी उसका ईमान नहीं है।

(४) मेरे ख्याल मे कसरत अजवाज (बहुविवाह) गैर मनकूहा (विवाहित) लौन्डियों के रखने का जवाज (वैधता) इसलिये है कि बेवगान (विधवाओं) की जिनके शोहर या वुर्सा (उत्तराधिकारी) जेहाद में मकतूलीन (मृत) की कसरत से लावारिस औरतों की तादाद ज्यादह हो गई उनकी परवरिश हो सके। उसके लिये एक तरीका निकाला गया यह आइडियल नहीं हो सकता।

(५) नमाज मे जमाअत की कैद कयाम (खड़े होने की पाबन्दी) रुकूअ (झुकना) सुजूद (बैठना) का लुजूम भी महज इकतिजाये हालाते वक्त की मसलहत से रखा गया था न कि यह इबादत का एक आलातरीन तरीका था। इबादत मे भी हम दुश्मनो से चौकन्ने रहें यही नमाज के अरकान का मन्शा मालूम होता है वरना इबादतरा बाजमाअत चेताल्लु का (उपासना का भीड़ भाड़ से क्या सम्बन्ध है।"

जनाब का मुन्तजिर

विद्याभिक्षु आर्य

* * *

(उत्तर) ख्वास्तगारे मुआफी (क्षमा प्रार्थी) अब्दुलमाजिद दरियाबादी ८ फरवरी १९६८

* * *

वजाहत—उपर्युक्त पत्र व्यवहार के प्रकाशनार्थ मौलाना साहब से अनुमति ले ली गई है। जैसा कि उनके ३ जून ६८ के पत्र में है। ख्वास्तगारे मुआफी।

★

वैदिक प्रार्थना

ओ३म् त्वं सोमासि सत्पतिस्त्वं राजोत वृत्रहा। त्वं भद्रो असि क्रतुः ॥ १९ ॥
ऋ० १ । ९१ ॥ १९ । ५ ॥

व्याख्या—हे सोम राजन् सत्पते परमेश्वर ! तुम सोम, सबका सार निकालने हारे प्राप्य स्वरूप शान्तात्मा हो तथा सत्पुरुषों का प्रतिपालन करने वाले हो, तुम्हीं सबके राजा "उत" और 'वृत्रहा' मेघ के रक्षक, धारक और मारक हो भद्रस्वरूप भद्र करने वाले और "क्रतु" सब जगत के कर्ता आप ही हो ॥ १९ ॥

काम तो हो रहे हैं पर घर बिगड़ रहे हैं

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश भारत का सबसे बड़ा भाग वाला प्रदेश है और भारत का हर कार्य इसी प्रदेश से सञ्चालित होता है। आर्य समाज का कार्य सञ्चालन भी इसी प्रदेश की देन है। आज इस प्रदेश में लगभग १४ सौ आर्य समाजें सभा से सम्बन्धित हैं, और आये दिन नई समाजें स्थापित होकर संख्या में वृद्धि करती जा रही हैं। लोग देखते सुनते व पढ़ते हैं कि आर्य समाजें बढ़ रही हैं।

पर प्रश्न है कि क्या आर्य भी बढ़ रहे हैं? इसका उत्तर स्पष्ट है कि आर्यत्व के स्थान पर अनार्यत्व पनप रहा है लाठी डण्डा चलाने वाले, आचारहीन तत्वों की भरती बढ़ रही है जिससे संस्थावाद पर हावी होकर उन पर अधिकार किया जाय। इसी से—

पण्डित नहीं, बाबुओं की जमात चाहिये—

आर्यसमाज की स्थापना का उद्देश्य था वैदिक मान्यताओं का मान्यता दिला-कर उनका प्रचार व प्रसार करना। पर यह गतिविधि देखने को मिल रही है कि आर्य समाज को सिद्धान्तों के ज्ञाता पण्डित नहीं किन्तु असैद्धान्तिक तत्वों की जमात खड़ी कर बाबुओं का पण्डितों पर शासन करना मात्र ही लक्ष्य है। इसका दुष्परिणाम आर्य समाज के लोग सिद्धान्त से अति दूर जा रहे हैं। इस पवित्र संस्था का उद्देश्य था प्रथम से अन्यों की उन्नति करना, पर हम अपनी उन्नति कर रहे हैं या नहीं। प्रचार खूब हो रहा है पर व्यक्तित्वहीन हो रहा है। दिन भर चोरी बेईमानी झूठ बोलने का जो व्यापार करता हो वह धर्म प्रचार कैसे करेगा और उसका प्रभाव भी क्या रहेगा।

आर्य समाज में प्रारम्भ से ही स्वामी दर्शनानन्द जैसे तपस्वियों ने इसका कठोरता से पालन करने के लिये कठिन पग उठाया था। इन बाबुओं की लम्बी कतार ने उन लोगों का घोर विरोध किया था। पर इन तपस्वियों ने सिद्धान्त को आगे लेकर उनका खण्डन किया। बाबुओं पर इसका कुछ प्रभाव पड़ा या नहीं, यह तो उस समय के व्यक्ति ही बता सकेंगे।

पर मैं तो आज की बात कर रहा हूं।

मुझे एक सलाह दी जा रही है कि आप विद्वान् हैं सिद्धान्तों को भी जानते हैं पर आप व्यक्तित्व नहीं रखते। यदि इसलिये व्यक्तित्व का निखारने में सहयोग न देकर टांगें पीछे खींचने लगें तो वह व्यक्तित्व भी क्या करेगा। समाज भवन जैसे खुराफातों-अनैतिक-आचार हीन व्यक्तित्व वाले व्यक्तियों को पनपने देना चाहता है, और पापों का प्रायश्चित ऊंचे ऊंचे मञ्चों पर बैठकर अपना प्रदर्शन करता है कि हमें देखो कि हमने कितने तीर मारे हैं—समाज के ढांचे को देखो कि कहां बिगाड़ पैदा हो रहा है। मैं इसी से कह रहा हूं— कि काम तो हो रहे हैं पर घर बिगड़ रहे हैं। घर को बनाने के लिये, समय देने वाले दर्शनानन्द, श्रद्धानन्द, लेखराम चाहिए, जो कि बाबुओं की कतार से आगे खड़े होकर साहिबों को मिटा कर आर्यत्व को जन्म दे सकें। तुम समय देने वाले हो काम अपने आप बढ़ेगा। अन्यथा यह समाज क्षमा न करेगा। यह कुर्सी पर बिठाना जानता है तो कुर्सी के नीचे उतार कर जमीन के नीचे भी लाना जानता है। अब व्यक्तित्व के बनाने में उन व्यक्तियों पर निखार लाने में सहयोग दो—यही एक समस्या का समाधान है।

—सच्चिदानन्द शास्त्री

श्री जगजीवनराम जी का अन्धा अनुकरण

काश्मीर विश्वविद्यालय के जम्मू [illegible] स्थित संस्कृत विभाग में स्नातकोत्तर छात्रों की प्राध्यापिका डा० कौशल्या वाली ने केन्द्रीय खाद्य मन्त्री श्री जगजीवनराम का समर्थन करते हुए अथर्व वेद तथा ऋग्वेद के कुछ प्रमाण उद्धृत किये हैं।

पौराणिक तथा पाश्चात्य पंडितों ने जो रूढ़िवाद का आश्रय लेकर वैदिक भाषा के संस्कृत में प्रचलित शब्दों के रूढ़ि अर्थों के आधार पर जो अनर्गल प्रलाप किया है वह दयनीय है शब्दों के यौगिक अर्थ न लेकर चलना। वेदार्थ की प्राचीन शैली का स्पष्ट निरादर करना है।

अंग्रेजी के मानस पुत्र तथा पुत्रियां इस प्रकार के असम्बद्ध प्रलाप करने के आदी बन गये हैं। उनको वैदिक प्रकाश छू तक नहीं गया है। बाल्मीकि रामायण आदि आर्ष ग्रन्थों में जो वाम मार्गियों ने मिलावट की है उसी प्रक्षिप्त भाग को प्रमाण मानकर रामायणादि में मांस भक्षणादि का प्रतिपादन यह लोग किया करते हैं। हमें इन लोगों की बुद्धि तथा मनोवृत्ति पर दया आती है।

इस्लामी षड्यन्त्र मजलिस तामीरे मिल्लत

गत सप्ताह औरङ्गाबाद (हैदराबाद दक्खिन) में 'मजलिसे तामीरे मिल्लत' नाम से घोर साम्प्रदायिक मुसलमानों का एक और संगठन प्रकाश में आया है। अंग्रेजों समय के हैदराबाद राज्य के बदनाम रजाकारों ने इस नये संगठन की आड़ में सर उठाना आरम्भ कर दिया है।

इस संगठन की स्थापना रजाकारों के [illegible] कासिम रिजवी के प्रबल समर्थक खलील्लाह हुसैनी ने अब से [illegible] पूर्व की थी। किन्तु प्रकाश में [illegible] असली रूप में अब आकर प्रकट हुआ है। अब तक मस्जिदों में मुसलमानों को धार्मिक शिक्षा की ओर प्रेरित करता रहा है।

इस सम्मेलन में लगभग [illegible] प्रति-निधि सदस्य हुसैनी की अध्यक्षता में सम्मिलित हुए।

अधिवेशन के अन्दर तथा बाहर सार्वजनिक सभाओं में जो भाषण हुये वह रजाकारी जैसे ही विषैले भाषण थे। हुसैनी ने मुसलमानों के उज्ज्वल भूत काल का वर्णन करते हुये कहा कि मुसलमानों ने १००० वर्ष तक भारत पर शासन किया है और जंगली हिन्दू कौम को सभ्यता और संस्कृति का पाठ पढ़ाया है। मुस्लिम विजेताओं ने हिन्दू स्त्रियों को साड़ी पहनना सिखाया है।

गुरु गोलवलकर जी तथा राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ पर सम्मेलन में प्रत्येक वक्ता ने तीखे वाणों की बौछार की और गुरु जी को तो लाल चीन का एजेन्ट तक बता डाला है।

प्रत्येक वक्ता ने इस्लाम खतरे में का नारा लगाया और भारत सरकार को नपुंसक बतलाया और अपने दावे की सिद्धि में कहा कि भारत सरकार गृह मन्त्री [illegible] की नियुक्ति [illegible] इसका स्पष्ट प्रमाण है।

महाराष्ट्र जनता एवं सरकार ने [illegible] शिवाजी महाराज को महत्व दिया उसको लक्ष्य में रखकर कोल्हापुर [illegible] सरकार ने जो वक्तव्य दिये हैं [illegible] निश्चय ही भर्त्सनीय है।

[illegible] सम्बन्धी नीति [illegible] रूप से खुली हिमायत की गई। [illegible] सरकार से अनुरोध किया गया कि वह शेख [illegible] साहिब से शीघ्र [illegible] सम्बन्ध में वार्तालाप आरम्भ करें।

परिवार नियोजन के कड़ी आलोचना की गई और मुसलमानों को [illegible] पूर्ण कर भी न फंसने को कहा गया परिवार नियोजन के [illegible] को खुली अवज्ञा है।

परिवार नियोजन की समस्या [illegible] के लिये है। अल्पसंख्यक मुसलमानों के लिये नहीं। भारत में मुसलमान लोग कदापि अल्पसंख्यक बन रहना कभी पसन्द नहीं कर सकते। एक न एक दिन उन्हें बहुसंख्यक बनके रहना है।

इस सम्मेलन के करने का मुख्य प्रयोजन मुसलमानों को मुस्लिम [illegible] को [illegible] करने की दिशा में प्रेरणा देना है [illegible] कहा गया कि यदि मुस्लिम [illegible] हिन्दुओं की सेना [illegible] भांति निहत्थे नहीं अपितु अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित होंगी।

इस सम्मेलन की खबरें महाराष्ट्र के सब समाचार पत्रों में छपी हैं किन्तु म० राष्ट्र की भी [illegible] नायक कांग्रेसी [illegible] मन्त्रों को सरकार के कान पर जूं तक नहीं रेंगी।

—शिवदयालु

हा ! वैदिक कर्मकाण्ड का अद्वितीय विद्वान्

पं० ऋषिमित्र जी शास्त्री

[बम्बई]

आर्यसमाज बम्बई के मन्त्री समाजिक जी का दुःखद पत्र लिखा कि पं० ऋषिमित्र शास्त्री ने घर गोरखपुर गये थे और एक से दूसरे ग्राम जाते हुये अचानक मृत्यु हो गयी। इस पत्र को पढ़कर मैं हो गया। आंखे आंसुओं से भर हा मित्र ऋषिमित्र अब तुम नहीं लोगे।

जिस समय आर्य जगत् में उच्च-टि के शास्त्रज्ञ विद्वानों की चर्चा ती थी उस समय बम्बई में एक पं० ऋषिमित्र जी की गणना उच्च-टि के संस्कृतज्ञों मे हम लोग करते। आज दक्षिण भारत बम्बई विद्वानों शून्य हो गया। बढ़िया लेक्चर देने, रोचक कथा कहने वाले, प्रभाव-ली संस्कार कराने वाले व्यक्ति वह वश्यक नहीं कि वे संस्कृत के विद्वान और शास्त्रों के प० हों। पं० ऋषि-त्र शास्त्री प्रथम तो वेदतीर्थ आदि परीक्षाएं उत्तीर्ण थे और संस्कृत के पं० थे और वैदिक कर्म काण्ड श्रौत ब्रह्मसूत्रों के आद्योपान्त अध्ययन और उनके मर्मज्ञ थे। अनेक बार बम्बई में उनके वैदिक साहित्य की पर चर्चा हुयी जिससे मुझे ज्ञात कि पं० ऋषिमित्र जी का वैदिक हित्य पर ऊंचा अध्ययन है।

इसके अतिरिक्त पं० ऋषिमित्र की संस्कृत भाषा पर पूर्ण अधिकार था वही प्रौढ़ संस्कृत बोलते और सरल संस्कृत लिखने की शक्ति प० ऋषिमित्र जी में थी। मैं उनके पाण्डित्य मुग्ध था पर वे इतने विद्वान होते भी अपने पाण्डित्य का प्रकाश नहीं थे यह उनके स्वभाव के विरुद्ध बहुत से साधारण योग्यता वाले अपना नोटिस खूब करना जानते पर प० ऋषिमित्र जी इस विद्या से थे। पं० ऋषिमित्र जी उत्तरप्रदेश गोरखपुर जिले के रहने वाले थे कि बम्बई में वे ऐसे बसे कि लोग गुजराती मराठी समझने थे गुज-मराठी भाषा उन्हे ऐसी आती थी मानो उनकी मातृ-भाषा ही हो। वे बम्बई आर्यसमाज मे विवाह रते थे या कोई अन्य संस्कार तो राती और मराठी लोगों को उनकी मे धारा प्रवाह बोलते हुये सम ये इसीलिये प० ऋषिमित्र जी की भर मे पूजा होती थी। और ऋषिमित्र जी के पाण्डित्य का यह प्रभाव बम्बई मे था कि पौराणिक लोग भी प० ऋषिमित्र जी की नों मे गणना करते थे। और वे भी पं० ऋषिमित्र जी के साथ सम्पर्क रखते थे।

एक अपूर्व दृश्य

एक दृश्य अभी आंखो के सामने सा प्रतीत हो रहा है। जब प्रतापसिंह शूर जी वल्लभदास ने बम्बई में अपने वैदिक साधनाश्रम बिले पार्ले में डेढ़ लाख रुपया व्यय करके देश के सवा सौ वेदपाठी और वेदज्ञ विद्वानों को बुलाकर चतुर्वेद पारायण यज्ञ कराया। जिसमें पूना काशी आदि के पौराणिक विद्वान भी थे और आर्य जगत् के उच्चकोटि के विद्वान भी थे उस समय मैंने यह प्रस्ताव किया कि जो सायंकाल विद्वत्परिषद होती है उसके स्थान पर एक दिन सब विद्वानों की परिचय गोष्ठी हो तदनुसार एक दिन सब पौराणिक विद्वान और आर्यजगत के विद्वान एकत्र हुये और परस्पर परि-चय करना प्रारम्भ हुआ। श्री आचार्य रामानन्द जी शास्त्री बिहार ने धारा-वाही संस्कृत बोलते हुये आर्यसमाज के उपस्थित सब विद्वानो का परिचय कराया। उधर पौराणिक वेद पाठियों का जब परिचय प्रारम्भ होना था तब एक कठिनाई यह आयी कि वे वेद पाठी संस्कृत नहीं बोल सकते थे और आर्य भाषा जानते न थे वे गुजराती और मराठी मे अपना परिचय दे सकते थे। तब प० ऋषिमित्र जी शास्त्री इस बात के लिये नियत किये गये कि वे गुजराती मराठी मे अपना परिचय दे और उसको संस्कृत में ऋषिमित्र जी शास्त्री अनुवाद करें।

उन वेद पाठियों ने परिचय अपनी मातृभाषा मे अपने विद्वानों का कराना प्रारम्भ किया वे लोग प्रत्येक वेदपाठी के परिचय के समय उस वेदपाठी के नाम के साथ वेद मूर्ति शब्द का प्रयोग करते थे और गुजराती मराठी भाषा मे प्रत्येक वेदपाठी का पूर्ण परिचय देते थे और प० ऋषिमित्र जी शास्त्री धारा-प्रवाह संस्कृत बोलते हुए उस परिचय का संस्कृतानुवाद करते थे। यह काम हम मे से कोई नहीं कर सकता था। यद्यपि प० ऋषिमित्र जी शास्त्री उत्तर-प्रदेश के रहने वाले थे और अयोध्या गुरुकुल मे पढ़े थे तथापि गुजराती मराठी भाषा पर उनको ऐसा अधिकार था जैसे उनकी मातृभाषा ही गुजराती मराठी हो।

सायंकाल कर्मकाण्ड पर व्याख्यान

उस यज्ञ के रात्रि को विद्वानों के भाषण हुआ करते थे अन्तिम दिन प० ऋषिमित्र शास्त्री जी शास्त्री का विशाल जनसमूह मे भाव व्याख्यान हुआ। मैं भी उस व्याख्यान को सुन रहा था। वह व्याख्यान प० ऋषिमित्र जी का वैदिक कर्मकाण्ड पर था। जो यज्ञ हो रहा था उसके वर्णन के साथ प० ऋषिमित्र जी ने जो व्याख्यान वैदिक कर्मकाण्ड पर दिया उससे प्रतीत हो रहा था कि पं० ऋषिमित्र जी का अध्ययन श्रौत सूत्रों गृह्य सूत्रों मीमांसा दर्शन और ब्राह्मण ग्रन्थों पर कितना है पर वे देखने में बड़े सीधे-सादे प्रतीत होते थे और बम्बई के लोग भी यह नहीं समझ पाते थे कि बम्बई में जो यह विद्वान् रहते हैं उनका पाण्डित्य वैदिक साहित्य पर कितना है पर यह बात जरूर थी कि बम्बई के सब ही आर्य समाजों के लोग पं० ऋषिमित्र जी की प्रतिष्ठा करते थे और अत्यन्त पूज्य दृष्टि से सब उन्हें देखते थे। बम्बई में जो और पंडित लोग रहते हैं वे सब ही प० ऋषिमित्र जी से प्रभावित थे। प० ऋषिमित्र जी का अपना निजी पुस्तकालय भी बहुत बड़ा था जो उन के निवास स्थान पर था जिसमे बैठकर वे अध्ययन करते थे। विद्वान् की पहचान है कि वह भूखा रहेगा पर ग्रन्थ अवश्य खरीदेगा और इन लेक्चर देने वाले पण्डितों के घरों मे जाकर देखो तो अखबार जरूर मिलेंगे पर उनका घर पुस्तकों से भरा कभी नहीं होगा क्योंकि वे न पढते हैं और न पढ़ना चाहते हैं हमें इस बात का दुख है कि आर्य समाजियों का स्वाध्याय गिर गया अतः वे उच्च कोटि के संस्कृत के विद्वानों और लेक्चर बाजों मे अन्तर नहीं कर सकते और यह कहावत प्रसिद्ध हो गई कि पण्डित वही जो गाल बजावे।

बम्बई मे आर्यसमाज की स्थापना का इतिहास अन्धेरे में

प० ऋषिमित्र जी शास्त्री आर्य समाज बम्बई जिसको महर्षि ने स्वयं स्थापित किया था उसके पुरोहित थे और प्रतिदिन नियम से वे आर्य समाज गिरगाव काकड़वाड़ी मे आया करते थे। मैं जब बम्बई जाता और उस आर्य समाज मे ठहरता था तब वे प्रतिदिन मुझ से मिलते थे मेरे साथ उनका बड़ा प्रेम था तब वे बम्बई मे महर्षि के द्वारा आर्य समाज की स्थापना का इतिहास सुनाया करते थे और तत्कालीन व्यक्तियों का विस्तृत परिचय देते थे जो ऋषि के साथी थे और प० ऋषिमित्र जी कहा करते थे कि मेरे पास बहुत बड़ा रिकार्ड बम्बई मे आर्यसमाज की स्थापना का है। आर्यसमाज काकड़वाड़ी में जो महर्षि का रिकार्ड रजिस्टर कागजात आदि हैं। उन सब का विशेष ज्ञान प० ऋषिमित्र जी को था और उसके अति-रिक्त भी उस युग के समाचार पत्र उन्होंने एकत्र कर रखे थे। मैं उनसे कहता था कि भाई ऋषिमित्र जी इस सब को लेख बद्ध कर दो जिससे वह एक महर्षि के जीवन काल का इतिहास सुर-क्षित हो जावे। तब वे कहा करते थे कि मेरे पास बहुत-मसाला है मैं पूरा इसका इतिहास लिखूंगा और उसके नोट तैयार कर रहा हूं। उन्हें क्या पता था कि वे इतनी छोटी उमर में संसार से विदा हो जावेगे। आर्यसमाज के उच्च कोटि के विद्वान् अपने परिवार की जीविका कठिनता से चला पाते हैं और जो कुछ वे जानते हैं उसको लेखबद्ध करने का अवसर ही उन्हें नहीं मिलता और आर्य समाजी जो आज राजनीति की चकाचौंध

★ आचार्य विश्वश्रवाः व्यास
एम० ए० वेदाचार्य

में अन्धे ही रहे हैं वे अपने विद्वानों की ओर आंख उठाकर नहीं देखते इन आर्य समाजों के नेता सब राजनीतिक कार्य कर्ता लोग हैं और उन्हीं की पूजा में वे अपने आर्य समाज और अपने को कृत-कृत्य मानते है। और इनके इस रवैये से विद्वानों का युग समाप्त होता चला आ रहा है। भीष्म पितामह ने महाभारत के समय कहा था कि—

श्वः श्वः पापिष्ठ दिवसा पृथिवी म यौवना।

अर्थात्—पृथिवी का यौवन समाप्त हो रहा है आगे-आगे पापी दिन आ रहे हैं। हमें भी यही प्रतीत हो रहा है कि आर्य समाज का यौवन समाप्त हो रहा है। विद्वानों से शून्य आर्यसमाज होने को है।

बम्बई महानगरी विद्वान् शून्य

हम दिल्ली में रहते हुए जब कभी सार्वदेशिक धर्मार्यसभा या विद्यार्य सभा के अधिकारी की हैसियत से किसी सिद्धांत निर्णय के लिये सब देश के विद्वानों पर निगाह डालते और उन उन से परामर्श लेते तब हमारी निगाह जब दक्षिण भारत बम्बई की ओर जाती तब प० ऋषिमित्र जी शास्त्री हमारी आखों से ओझल कभी न होते थे हम उन्हे पत्र लिखते शास्त्रीय परामर्श उन से लेते। पर हा आज भारत का वह प्रदेश विद्वान् शून्य हो गया।

गुरुकुल अयोध्या तुझे बहुत्तश. प्रणाम जो तूने ऐसा विद्वान् अपनी गोदी मे पाला था। वह माता चरण चूमने योग्य है जिसने ऐसा बेटा जन्मा था। वह पिता अत्यन्त पूज्य और धन्यवाद के पात्र है जिन्होंने अपने पुत्र को संस्कृत के अध्ययन में लगाया। पर हमारे दुर्भाग्य से वह रत्न हम से छिन गया। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वह उनके परिवार और पत्नी बच्चों को धैर्य प्रदान करे और आर्यसमाज को सुबुद्धि दे कि बम्बई के आर्य प० ऋषिमित्र जी के परिवार का योग क्षेम करें और प्रभु उस मेरे मित्र को फिर से आर्यजगत् में पैदा कर कि वह अपनी इच्छायें द्वितीय जन्म मे आकर पूरी कर सके।

कुछ इधर की कुछ उधर की

(गतांक से आगे)

एक गरीब मजदूर मर गया। उसका सम्पूर्ण जीवन धार्मिक कार्मों में व्यतीत हुआ था। अतः देवदूत उसे स्वर्ग में ले गये। स्वर्ग के फाटक के सामने कुछ कुर्सियाँ पड़ी हुई थी जहाँ आगन्तुकों को प्रतीक्षा करनी पड़ती थी। जब स्वर्गाधिकारी फाटक खोलते थे तब उनका प्रवेश होता था। वह बेचारा बहुत देर प्रतीक्षा करता रहा फाटक न खुला। बाहर बैठे २ उसके कानों में आवाजें आती रहीं कि तालियाँ बज रही हैं। कब कारे हग का स्वागत हो रहा है। उसने सोचा कि शायद स्वर्ग में शामिल होने की यही है कि जो आवे उसका सत्कार पूर्वक स्वागत किया जाय। उसे आशा हुयी कि मेरा भी ऐसा ही स्वागत होगा परन्तु वैसा नहीं हुआ। दर्वाजा खुला और वह साधारण रीति से ले लिया गया उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। उससे पूछा मेरे आने से पूर्व कौन आया था? उत्तर दिया कि अमुक नगर के लखपति सेठ आये थे, उन्हीं का स्वागत हो रहा था। उसने कहा क्या स्वर्ग मे भी भेद भाव का बर्ताव होता है? लोगो ने बताया कि भाई तुम जैसे तो स्वर्ग मे बहुत आया करते हैं, धनाढ्य तो कोई मुद्दतों मे एक आ जाता है।

* * *

सोलन एक बहुत बड़ा प्रसिद्ध विद्वान हो गया था। वह एक दिन एक राजा के यहाँ पहुंचा जिसका नाम था (Croesis) (क्रिसस) राजा ने पूछा तुमको अपनी यात्रा में सबसे अधिक भाग्यशाली कौन मिला? सोलन ने दो तीन नाम गिना दिये। क्रिसस बड़ा धनवान था। सोलन ने क्रिसस का नाम तक न लिया, क्रिसस ने पूछा, सोलन तुम्हारे विचार से भाग्यशाली कौन है? और भाग्य शाली की पहचान क्या है? सोलन बोला, मै कुछ नहीं बता सकता जब तक के अन्त न देख लूं क्रिसस को यह बात पसन्द न आई और सोलन का जैसा सम्मान होना चाहिये नहीं किया। कुछ दिन बीत गये। एक राजा ने क्रिसस पर चढ़ायी कर दी और उसे गिरफ्तार कर लिय। विजयता ने आज्ञा दी कि क्रिसस को जिन्दा जला दिया जाय। जब आग देने को थे क्रिसस चिल्ला उठा, "सोलन, सोलन, सोलन' विजयता बादशाह कुर्सी डाले बैठा था पूछने लगा यह क्या कहता है? सोलन कौन था। और यह क्यों पुकार रहा है? क्रिसस ने सारा वृत्तांत कह सुनाया। कि सोलन ठीक कहता था, कि जब तक अन्त न देख लो कुछ नहीं कह सकते कि क्या होगा है। मैं अपने को बड़ा भाग्यशाली समझता हू कि मैं राजा हूं। और सम्पन्न हू विजेता राजा पर इसका बड़ा प्रभाव पड़ा और क्रिसस की जान बच गई।

* * *

यूनान का एक राजा था मस्दूनियाँ (Macedon) उसका राजा था फिलिप एक दिन कुछ घोड़ों के सौदागर आये। एक घोड़ा सुन्दर और शरीर था। वह किसी को अपनी पीठ पर बैठने नहीं देता था। राज्य के प्रसिद्ध घुड़ सवारों ने यत्न किया परन्तु सफल नहीं हुये। अन्त में यह निश्चित हुआ कि घोड़ को खरीदा न जाया। राजा के पास उसका एक छोटा लड़का बैठा था। जिसकी आयु ७-८ वर्ष की थी, वह कहने लगा आप लोग कितने मूर्ख हैं कि इतने अच्छे घोड़े को हाथ से खो रहे हैं। राजा बोला, "छोटा लड़का ऐसी बड़ी बात करता है? क्या तू इस पर चढ़ सकता है?' लड़के ने कहा

विनोद-बिन्दु

'हां वह उठा और झट से घोड़े की पीठ पर सवार हो गया। सब लोग दंग रह गये। बात यह थी कि घोड़ा अपने साये से बिदकता था जैसी बहुत से घोड़ो की आदत होती है। इसने घोड़े का मुख इस प्रकार फेर दिया कि वह अपना साया न देख सके। फिलिप के आँखों मे हर्ष के आंसू आगये और बोला, "बेटे मंसिडोनिया की राज्य तेरे योग्य नहीं है। तू जा और अपने लिये कोई बड़ा राज्य स्थापित करने। आप जानते है यह कौन था? महान सिकन्दर Elexander the Great और घोड़े का क्या नाम था, 'Bausieaphalaus" यह घोड़ा हमेशा सिकन्दर के साथ रहा।

* * *

दो मन चले आदमियों ने यह निश्चय किया कि स्वर्ग की सैर करनी चाहिए और वे स्वर्ग को चल दिये। लोगों ने बताया कि केवल वही धर्मात्मा पुरुष स्वर्ग मे जा सकते हैं जो किसी ऋषि या पैगम्बर के शिष्य हैं। इन्होंने उत्तर दिया भाई हमतो थोड़ी देर सैर करके चले आयेंगे। हमतो यह देखना चाहते हैं कि स्वर्ग में क्या होता है। जब स्वर्ग में दाखिल हुये तो मार्ग से कुछ दूर पर एक वृक्ष के नीचे खड़े २ तमाशा देखने लगे। बड़े ज़ोर की आवाज आयी "धर्मम् शरणं गच्छ, संघम् गच्छ बुद्ध गच्छ,' एक बड़ा जुलूस निकल रहा था। उसके साथ करोड़ों आदमी थे। बुद्ध भगवान की सवारी आगे चल रही थी। जुलूस निकल गया।

बड़ा शानदार था। थोड़ी देर के बाद एक और जलूस निकला, आवाज आयी रामचन्द्र की जय। आगे २ रामचन्द्र की सवारी थी पीछे करोड़ों आदमी थे। वह जलूस भी निकल गया। बड़ा शानदार था। थोड़ी देर के बाद एक और जलूस निकला जिसके सरदार थे हज़रत ईसामसीह। लोग हज़रत ईसा के गीत गा रहे थे। इस जलूस मे भी करोड़ो आदमी थे, ऐसा प्रतीत होता था कि ईसा मसीह का प्रभाव सर पर के ऊपर था। यह जुलूस भी निकल गया। एक और जलूस आया इसके अगुवा थे हज़रत मुहम्मद साहब। बड़े जोश से, अल्लाह हो अकबर की आवाज आ रही थी। यह प्रतीत होता था कि इनके जोश से जमीन हिल जायगी यह जुलूस भी अपने शान का निराला था। थोड़ी देर के बाद एक बहुत छोटी सी टोली आयी। दस पांच बुड्ढे और कमजोर आदमी, और एक बुड्ढे घोड़ पर एक बुड्ढा सवार इन लोगो ने पूछा कि भाई यह किसका जुलूस है? लोगो ने कहा, 'यह है अल्लाह मियां"

* * *

नादिरशाह जब दिल्ली आया तो उसको हाथी पर सवार कराया गया। हाथी पर चढ़ कर उसने लगाम माँगी। लोगो ने कहा हाथियों के लगाम नहीं होती। नादिरशाह झट से कूद पड़ा और कहने लगा, "मै किसी ऐसे जानवर की पीठ पर नहीं बैठ सकता जिसकी लगाम मेरे हाथ मे न हो। इसका आशय है कि नादिरशाह जन्म से ही स्वतन्त्र था किसी के आश्रय नहीं रह सकता था।

* * *

कहते हैं नेपोलियन जब विजय करते करते एक राज्य में पहुंचा तो वहां के राजा के पास एक मुकदमा आया मुद्दई का कहना था, "कि मैंने मुद्दाले से एक खेत खरीदा है उसमे कुछ रुपया गड़ा मिला। मैं कहता हूं कि मैंने खेत खरीदा है धन नहीं, इस धन को तुम ले लो। यह कहता है कि जब मैंने खेत बेचा है तो खेत की हर चीज बेच दी मेरा इस पर कोई अधिकार नहीं। राजा असमन्जस में पड़ गया और अन्त में पूछा क्या तुम्हारे कोई सन्तान नहीं?

★गङ्गाप्रसाद उपाध्याय एम०ए

मालूम हुआ कि एक के लड़का है दूसरे की लड़की उसने आज्ञा दी कि दोनो का विवाह कर दो और यह धन उन्हे दे दो। नेपोलियन को इस फैसले पर आश्चर्य हुआ। उसने कहा, हमारे देश मे यदि ऐसी बात हुई होती तो माल सरकार का होगा। राजा ने कहा क्या तुम्हारे देश मे वर्षा होती है? उसने कहा क्या पूछते हो? उसने उत्तर दिया जिस देश के राजा की नियत खराब हो उस देश मे वर्षा नहीं होनी चाहिए।

* * *

एक रईस घोड़े पर चढ़े हुए गालिब से मिलने के लिए दिल्ली आये। गालिब साहब अपने दरवाजे पर टहल रहे थे जब उनको मालूम हो गया कि यही गालिब है तो प्रार्थना की हजरत कुछ सुनाइये। गालिब ने कहा "इस समय तबियत मौजू (स्फूर्ति) नहीं है क्या कहो?" रईस महोदय ने आग्रह किया क्यों नहीं महोदय जी कुछ तो सुनाइये हो। गालिब टालते रहे और रईस साहब का आग्रह बढ़ता रहा। जब गालिब तंग आ गये तो नीचे का शेर पढ़ा।

नाकदर दां के आगे
अजब दुश्वार है,
कुदरत खुदा की घोड़े
पर गदहा सवार है।

* * *

जब नादिरशाह दिल्ली आया तो उसके सम्मानार्थ दिल्ली के बादशाह की ओर से एक बड़ा दरबार किया गया सबसे पहले प्रथा के अनुसार पान की तश्तरी आयी। वजीर घबराया उसके समझ मे नहीं आया कि क्या करूँ। पहले पान दिल्ली के बादशाह को पेश करता हूं तो सम्भव है कि नादिरशाह इसको अपना अपमान समझे और तलवार से मेरा सर उतार दे

गोरक्षा के लिए आर्य जनता में अपूर्व उत्साह

सिरसागंज, भोजपुरखेड़ी और कर्णवास में

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री तथा संसद सदस्य

श्री लाला रामगोपाल जी का विशाल जन समूह द्वारा अपूर्व स्वागत

नई दिल्ली। गोरक्षा के प्रश्न पर समाज का प्रत्येक सदस्य अपने [illegible]त्व की आहुति दे देगा—उक्त शब्दों [illegible] सार्वदेशिक सभा के मन्त्री संसद [illegible]य आर्य नेता श्री रामगोपाल जी ने [illegible]सागंज की विशाल जन सभा में [illegible] की। आपने कहा कि सार्वदेशिक [illegible] इस बात पर कृत संकल्प है कि भारत की पवित्र भूमि में गोहत्या पाप नहीं होने देगी।

सिरसागंज की जनता ने आर्य नेता [illegible] भव्य हार्दिक स्वागत किया। और [illegible] विलाया कि उनके आदेश पर [illegible] जन बड़े से बड़ा बलिदान देने को [illegible]र रहेंगे।

भोजपुर खेड़ी (बिजनौर) में भी [illegible]समाज की ओर से एक विशाल [illegible] समूह ने भावना और हार्दिक [illegible] से आर्यसमाज के यशस्वी नेता [illegible] हार्दिक स्वागत किया।

वहां भी श्री रामगोपाल जी ने [illegible]ने भाषण में राष्ट्र रक्षा और पश्चिमियों से सावधान रहने के लिये कहा आपने सरकार का ध्यान मजलिसे मशावरात की शरारतों की ओर आकर्षित करते हुए चेतावनी दी कि यदि समय रहते इनके षडयन्त्रों को विफल न किया गया तो राष्ट्र को भारी हानि होगी।

कर्णवास (बुलन्दशहर) पहुंचने पर भी वहां की जनता ने आर्य नेता का अभिनन्दन किया आपने यहां अपने भाषण में कृषि मन्त्री श्री जगजीवनराम जी के वक्तव्य की चर्चा करते हुये कहा कि कृषि मन्त्री के इस अनर्गल वक्तव्य से सर्वत्र रोष की लहर फैल गई है। भारत की जनता गौ को माता तुल्य मानती है और गौ हत्या को किसी भी स्थिति में सहन नहीं करेगी।

सम्पूर्ण आर्यजगत गोरक्षा के लिये पूर्णतया कृत संकल्प है और सर्वत्र यह भावना व्याप्त है कि अपनी शिरोमणि सार्वदेशिक सभा के आदेश पर वह प्रत्येक बलिदान देने में अग्रणी रहेगा।

★

[illegible]र अगर अपने बादशाह की उपेक्षा [illegible]ता हूं तो यह राज विद्रोह (बगावत) [illegible]ा। करूं तो क्या करूं? झट से [illegible] को एक तरकीब सूझी और पान की [illegible]री दिल्ली के बादशाह के हाथ में [illegible]र बोलाः—

शाहां बशाहां बेतवाजन्द

अर्थात्, राजों का सत्कार राजों को करना चाहिए। आप दिल्ली के [illegible] हैं और नादिरशाह भी राजा हैं। [illegible]लिये आप ही पानों को पेश कर दें।

* * *

प्राचीनकाल में भारत में एक [illegible]त्मा रहते थे जिनका नाम था अष्टा[illegible]। इनको अष्टावक्र इसलिए कहते थे [illegible] इनका शरीर आठ जगह से टेढ़ा था। [illegible]त् ये स्वस्थ मनुष्य की भांति खड़े [illegible] हो पाते थे। कुरूप भी थे और रं[illegible] भी काला था। उन दिन राजा जनकों की सभा अध्यात्म ज्ञान (रूहानी तालीम) के लिए प्रसिद्ध थी। एक दिन अष्टावक्र जी एक लड़के के सहारे राजा जनक के दरबार में आ गये। दरबारी देखते ही हँस पड़े। उनकी सूरत ही ऐसी थी कि देखकर हँसी आ जाय। अष्टावक्र जी ने लड़के को एक तमाचा दिया और बोले, "कम्बख्त कहाँ ले आया? मैंने तो तुझे कहा था कि राजा जनक की सभा में ले चल"। लड़का बोला यह राजा जनक की ही सभा है। महात्मा जी बोले "हर्गिज नहीं, यह तो कसाइयों और चमारों की सभा है। क्योंकि कसाई मांस देखता है और चमार चमड़ा।" यह सुनकर दरबारी बड़े लज्जित हुए और उनसे क्षमा मांगी।

* * *

(क्रमशः)

प्रतिमा जड़ पाषाण की

बदल गया युग किन्तु न बदली परिभाषा भगवान की।
बन्दी है भगवान यहां पर,
मन्दिर की दीवारों में।
स्वत्व अभी तक सीमित उसका,
मानव के अधिकारों में।
अब भी नित्य पुजारी उसको,
मीठा भोग लगाता है।
जो उसको इस महासृष्टि को,
भूखा नहीं सुलाता है।
बिना सुलाये हुए कभी जो,
सोता वह भगवान नहीं।
बिना जगाये हुए कभी भी,
जगता वह भगवान नहीं।
जग-पालक की संज्ञा पाकर-भी
अन्न का मोहताज है।
जग व्यापी, सर्वज्ञ देवता,
किन्तु नहीं आजाद है।
फिर भी पूजा यहां चल रही, पत्थर के भगवान की।
बदल गया युग किन्तु न बदली परिभाषा भगवान की॥
मिट्टी का जो पुतला मानव
ज्ञानी-गुणी सुजान है।
जिसका स्वर माधुर्य पानकर,
गल जाता पाषाण है।
भूला क्या वह भटक रहा है,
मिट्टी के भगवान में।
टके-टके में जो बिकता है,
हाट-बाट दूकान में।
अजर-अमर की संज्ञा जिसकी
न्यायी और अनन्त है।
इस मानव को मिली कहां से
उसकी मोहक प्रतिमा है।
मानव-निर्मित प्रस्तर प्रतिमा
दे सकती वरदान नहीं।
महा सृष्टि का जो निर्माता
हो सकता पाषाण नहीं।
पूज रहा है मूरख फिर भी प्रतिमा जड़-पाषाण की
अविनय हिंसा पनप रही है
कुविचारों का शोर है।
लाज त्याग कर नारी नर्तन—
करती जैसे मोर है।
मन्दिर में वह जड़ देवता,
देख रहा दुष्कृत्य है।
संस्कार सुविचार सभी कुछ
हुआ यहां पर मृत्य है।
मन्दिर का वह मूक देवता,
जब तक नैन न खोलेगा।
मस्त प्रवर से गद्‌-गद्‌ होकर
मीठे बैन न बोलेगा।
धरती के मानव का तब तक
होगा पुनि कल्याण नहीं।
दुराचार का ज्वार उठेगा
बदलेगा इन्सान नहीं।
'उसे' भूल कर पूज न मूरख प्रतिमा मृत इन्सान को॥

—लक्ष्मीनारायण कुशवाहा 'अशान्त', गोण्डा

मन का दमन (संयम) कीजिए

मनु महाराज के बताये हुये धर्म के दस लक्षणों में 'दम' और 'इन्द्रिय निग्रह' दो शब्दों का प्रयोग किया गया है। हमारे विचार से 'दम' शब्द का अर्थ दमन करना है; दमन शब्द का अर्थ संयम में रखना समझना चाहिये। और मन का दमन करने वाला व्यक्ति धर्म का पालन करने वाला होता है। मन बड़ा शक्तिशाली है। गीता में मन के लिये कहा गया है "मन एव मनुष्याणां कारणं बन्ध मोक्षयोः" अर्थात मन ही मनुष्यों के बन्धन और मोक्ष का कारण है। मन साधारण नहीं है। हमारे शरीर के सब कार्यों का संचालक और नियन्त्रक मन है। यह मन जागते हुये, सोते हुये सभी समयों पर हमारे कार्यों का संचालन करता है। यह मन सोते, जागते, उठते, बैठते हर समय नई से नई दुनिया बनाता ही रहता है। यह कभी शांत नहीं रहता। बन्दर के समान कभी इधर तो कभी उधर दौड़ता, भागता फिरता है। यह चाहे तो मनुष्य को संसार सागर से पार कर दे और यदि यह चाहे तो उसे ले जाकर समुद्र में डुबा दे। परन्तु यदि मनुष्य इस बड़े मन पर अपना अधिकार कर ले, इसका दमन कर ले तो यह मन संसार के सभी कार्य सिद्ध करने में समर्थ हो सकता है। इस लिये अथर्व वेद में कहा है:—

वश न रुते मनः

मन तो कभी वश नहीं लेता। आप इसको वश मे करके अच्छाई की ओर लगा सकते हैं और आप चाहे तो उसे बुराई की ओर लगा सकते है। ऋग्वेद मे कहा है:—

स्थिरं मनश्च कृणुष्व जात इन्द्र
वेषीदेको युधये भूयसश्चित्
ऋ० ५-३०-४

अर्थात भगवान् इन्द्र को अच्छा करने वाले ! यदि तू समर्थ होकर मन को स्थिर करे, तो तू अकेला ही बहुतों (अनेक विघ्न बाधाओं तथा विषयों) को भी युद्ध में जीत सकता है।

एक जहाज पर एक बार पंजाबी सैनिक किसी बुरे रोग से रोगी हो गया। डाक्टर ने उसके लिए अन्तिम आज्ञा दी कि उसे जहाज से समुद्र में फेंक दिया जाय। डाक्टर, हां डाक्टर कभी-कभी मौत का दण्ड भी दिया करते हैं। सैनिक को इस बात का पता लग गया। कभी-कभी जब मनुष्य विपत्ति से घिर जाता है तो उस समय एक साधारण व्यक्ति भी निडर हो जाता है। उसका मन प्रबल हो जाता है। उस समय उसका ध्यान केन्द्रित होकर मन को किसी एक ओर नियन्त्रित कर देता है, मन का दूसरे शब्दों में दमन या नियन्त्रण शरीर की सभी शक्तियों को एक दीक्षा में प्रेरित कर कार्य करने के लिये समर्थ बना देता है। वह सैनिक मन की इसी अन्तः शक्ति से उत्साहित होकर निर्भय हो गया। डाक्टर के सामने सीधा पहुंच कर उसने अपनी पिस्तौल उसकी छाती की तरफ तान दी और कहने लगा "तुमने मुझे बीमार कहा है ? मैं तुम्हे गोली से उड़ा दूंगा।" इतना सुनने की देर थी कि डाक्टर ने उसे स्वस्थ होने का सर्टिफिकेट दे दिया। इस प्रकार स्थिर मन रास्ते में आने वाली बाधाओं और विघ्नों को नष्ट करने मे, विजय प्राप्त करने मे समर्थ हो जाता है। परन्तु इसका स्थिर करना तो आसान नहीं। इसमें अनेक प्रकार के संकल्प, विकल्प तरंगें निरन्तर उठते है। इन तरंगों को न उठने देना, इनका दमन करना साधारण काम नहीं। वाशिष्ठ उत्पत्ति प्रकरण सर्ग १११ मे कहा है —

मोमः सम्भ्रमदायिन्य
स्तस्य कल्पनाश्रिया।
विपद्‌ सप्रसुवन्ते
मृग तृष्णा नदीरिव

अर्थात संकल्प रूपी क्लेश से भयंकर अनेक सम्भ्रम को देने वाली विपत्ति इस प्रकार उत्पन्न होती जैसे मरुस्थल मे मृगतृष्णा की नदियां।

इस कुम्हार की कहानी तो आप ने छुटपन मे पढ़ी ही होगी, जो कि अपने मटकों को एक के ऊपर एक सजाकर सोते समय सोचने लगा 'इन मटकों को कल के मेले म बेचकर काफी पैसे कमाऊंगा। उन पैसों से मिठाई की एक छोटी सी दुकान खोलूंगा। उसमे भी खूब आमदनी होगी। फिर व्यापार करूंगा और धीरे-धीरे एक बड़ा सेठ साहूकार बन जाऊंगा। बहुत से लोग शादी के लिए मेरे पास आने लगेंगे एक अच्छी लड़की चुनकर विवाह भी कर लूंगा। उस पर मैं अपना खूब रोब रखूंगा और कभी उसने मेरा जरा भी अपमान किया तो उसे ऐसी लात से मारूंगा।" पड़े-पड़े उसे नींद भी आ गयी थी। लात मारने का स्वप्न देखते समय उसे इतना जोश आ गया कि सोते सोते ही उसकी लात सचमुच चल गई। सारे बड़े मटके भड़ भड़ नीचे गिर कर फूट गए। उस समय इस कहानी को पढ़कर उस कुम्हार पर रहम भी आया। किन्तु, जब हम दुनिया पर अपनी दृष्टि डालते है तो हमें ऐसे बहुत से व्यक्ति दिखाई देते हैं जो मन के लड्डू खाते हुये लम्बी चौड़ी योजनायें बनाते हैं, भविष्य के सुनहरे स्वप्न देखकर खुश होते है परन्तु उनके यह स्वप्न मृगतृष्णा के समान नष्ट हो जाते हैं। इसलिए मन का दमन करना चाहिये और मन को व्यर्थ के कल्पना के जगत में उड़ने न देकर उसपर नियन्त्रण स्थापित करना चाहिये।

किन्तु मन का दमन या नियन्त्रण करना वह तो साधारण बात नहीं। मन अत्यन्त शक्तिशाली है। नियन्त्रण करने की अभिलाषा रखने वाले व्यक्ति भी घबरा जाते हैं। भगवान् राम ने कितनी आतुरता से ऋषि से यह कहा था:—

कथमभ्यांति लोलत्वं वेगोवेगैक कारणम्
चलतो मनसो ब्रह्मन् बलनो विनिवार्यते।

हे भगवन् अति चंचल जो यह मन है उसका वेग सम्पूर्ण लोक वेगों का मुख्य कारण है उसे बल पूर्वक भी कैसे निवारण किया जाए कैसे वश मे किया जाए, कसे उसका दमन किया जाय ?

इस प्रश्न को सुनकर और उसकी यथार्थता का अनुभव करके वशिष्ठ जी ने कहा था —

नेह चंचलता हीनं मन क्वचन दृश्यते। चंचलत्वं मनो धर्मो वह्ने धर्मो यथोष्णता।

हे राम, इस ब्रह्माण्ड में चंचलता से शून्य मन भी कहीं भी नहीं देख पड़ता। चंचलता मन का ऐसा धर्म है जैसे अग्नि का धर्म उष्णता है। योग वशिष्ठ में तो यहां तक कहा गया है:—

अप्यब्धिपानान्महतः सुमेरून्मूलना-दपि, अपिवह्न्यशनात् साधो विषमश्चित्त निग्रहः।

समुद्र को पी डालने से, सुमेरु पर्वत को उखाड़ डालने से या फिर दहकते हुये अंगारों को सटक लेने से भी हे साधो इस चित्त का निग्रह अत्यन्त कठिन है।

सचमुच आग बुझाई जा सकती है, समुद्र को पार सरलता से किया जा सकता है, बड़े बड़े पर्वत को खोदा जा सकता है पर मन को जीतना उतना आसान नहीं उतना सरल नहीं।

★श्री सुरेशचन्द्र वेदालंकार

स्वामी रामतीर्थ ने मन के बल और उसकी शक्ति को जानने के लिये एक बार प्रयत्न किया। एक दिन नीबू खाने की उनकी इच्छा हुई। उन्होंने नीबू लेकर उसे काटा, उसमें नमक मिलाया उनकी नीबू खाने की प्रबल अभिलाषा ने अपनी ओर आकृष्ट किया। उन्होंने निश्चय किया कि मन ! आज देखता हूं कि तू जीतता है या मै ? तू नीबू खाना चाहता है और मै नहीं। मन ने जोर मारा, नीबू हाथ मे लिया। मुख में निचोड़ना ही चाहते थे कि उन्होंने कहा नहीं खाऊंगा, नहीं खाऊंगा। जीभ में पानी आ गया। अजब विचित्र हो गया मन और रामतीर्थ का संग्राम छिड़ गया। रामतीर्थ पराजित होने ही वाले थे कि उन्हें एक उपाय सूझ गया और उन्होंने यह कहते हुये कि 'न रहेगा बांस न बजेगी बांसुरी' नीबू को उठाकर फेंक दिया। क्या करते यदि वह ऐसा न करते तो उनकी पराजय निश्चय थी। जब स्वामी राम जैसा शक्तिशाली व्यक्ति मन से पराजित हो सकता है तो हमारी और आप की बिसात ही क्या ?

प्रश्न उठता है तो क्या मन को वश मे रखने के विषय में हम निराश हो हो जाय ? नहीं निराश होने की बात नहीं मनोनिग्रह महा कठिन तो है परन्तु असम्भव नहीं उसको वश मे किया जा सकता है, इसका दमन किया जा सकता है। गुरु वशिष्ठ ने राम की घबराहट को देख कर मन का दमन करने का उपाय बतलाया:—

मन एव समर्थो वो मनसो दृढ निग्रहे।

हे राम मन को दमन करने तुम्हारा मन ही समर्थ है मन चंचल

सिद्धान्त-विमर्श

। उपमा देते हुये किसी ने लिखा है कि यह मन बिजली से भी अधिक तेज गति वाला है। बिजली की चमक देखी जा सकती है और मन की गति अदृश्य है। परन्तु बुद्धिमान मनुष्य बिजली को वश में करके अंधेरे को उजियाले में, स्थिर वस्तु को गति में, बदल देता है। रेल, कारखाने, पंखे, गाड़ियां सब विद्युत की शक्ति से चल रही हैं। यदि वह विद्युत वश में न रहे तो बड़ी-बड़ी अट्टालिकायें बड़े-बड़े भवन गगन चुम्बी महल और कारखाने एक क्षण में भस्म हो जाते हैं। ठीक यही बात मन के साथ भी है। यदि मन को वश मे, नियन्त्रण में या काबू में कर लिया जाय तो यह मन अत्यन्त शक्तिशाली हो जाता है और संसार के अनेक चमत्कार दिखाई देने लगते हैं।

संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के एब्राहीम लिंकन को तो आप जानते ही हैं।

एक निर्धन लकड़हारे का बेटा!
नंगे पैर, नंगे शरीर, जिसका बाल
पन बीता।

जिसके परिवार में एक समय भोजन का ठिकाना न था। लेकिन भी अटूट निर्धनता के बीच भी इस लकड़हारे के बेटे ने अपने मन में ठान ली।

दिन में मजदूरी रात मे अध्ययन। कर्मवीर अपने मन की शक्ति को पहचान कर जुट गया। इसने स्वयं शिक्षा प्राप्त की और छात्रों के लिये एक स्कूल खोल दिया। उसने इस स्कूल को अपने साथियों के साथ मिलकर खड़ा किया। यह विद्यालय एक विश्वविद्यालय के रूप में आज भी खड़ा है। इसने दास प्रथा का उन्मूलन किया।

अपने जीवन में बोझा ढोने वाला होटल मेजें साफ करने वाला और वर्षों साथ भूखा रहने वाला, पेड़ों की छाया में अध्ययन करने वाला यही व्यक्ति संयुक्त राष्ट्र अमेरिका का राष्ट्रपति हुआ।

मन की शक्ति अपरंपार है। जब वश में हो जाता है उस समय उन्नति की ओर प्रगति करने लगता है। वह यह देखता है कि अकेला है, वह एकाकी है उस समय वह अपने से कह उठता है उठो और अकेले ही चलो। निश्चय ही हमारी विजय होगी। तुम सब कुछ कर सकते हो। देखा नहीं, सुना नहीं डिमस्थनीज के विषय में। विश्व का प्रख्यात वक्ता डिमस्थनीज। यह गूंगा था, यह बड़ी मुश्किल से हकला कर बोल पाता था। यह नाना मानसिक दुर्बलता है। यह होनी चाहिये। डिमस्थनीज के मन हकलाना दूर कर विश्व का सर्वश्रेष्ठ वक्ता बनने के लक्ष्य पर दीवाना बन गया। समुद्र किनारे, निर्जन प्रदेश में जाकर वह मुंह में कंकड़ियां भरकर बोलने का अभ्यास करने लगा और देखते ही देखते वह कुछ वर्षों में संसार का महान् वक्ता बन गया।

सम्भव है आपके पास बुद्धि, बल, विद्या और धन है पर आप मन की विजयिनी शक्ति से अनभिज्ञ हैं तो निश्चय है कि आप कुछ भी न कर सकेंगे। एम०डी०कालरिज इसी मन की अस्थिरता के कारण कुछ भी न कर सका। यह व्यक्ति जब मरा, तो इसके पास ४० हजार से अधिक दर्शन और मनोविज्ञान पर लिखे हुए निबन्ध पाये गये। सबके सब अपूर्ण थे। मन की अस्थिरता के कारण वह कुछ न कर सका।

स्वामी श्रद्धानन्द ने अकेले होते हुये भी गुरुकुल खोलकर दिखा दिया। स्वामी दयानन्द ने इसी मानसिक शक्ति के बल पर आर्यसमाज की अकेले स्थापना कर दी। हनुमान ने अकेले राम दल को विजयी बनाने में अभूतपूर्व शौर्य का परिचय दिया।

याद रखिये, हर सफलता का रास्ता कांटों से भरा हुआ है। अवनति के रास्ते में कोई रुकावट नहीं, कोई बाधा नहीं, किन्तु उन्नति की मंजिल पर जब हम अपने कदम बढ़ाते हैं तो पहला कदम उठते ही हम पर ऊपर संकटों का पहाड़ टूट पड़ता है। जिसके मन में लगन है, अदम्य उत्साह है, वही इस पथ पर आगे बढ़ सकता है। जो आगे बढ़ गये वे अमर हो गये। इस मंजिल के कष्टों को, पीड़ाओं को, दुख बाधाओं को जिसने पार कर लिया उसे इसका उत्तम फल मिलता है।

मन को वश में करने अथवा इसकी उच्छृंखलता का दमन करने का मार्ग क्या है? मार्ग जितना बीहड़ और कठिन प्रतीत होता है उतना कठिन और बीहड़ है नहीं। हां, उसे समझने की जरूरत है। हमने ऊपर उसके दमन का, उसके संयम का, उसके नियंत्रण का स्वरूप बतलाया है। और वह स्वरूप और कुछ नहीं—वह यही है कि मन ही मन के निग्रह में समर्थ हो सकता है क्या? आश्चर्य की बात नहीं। न्याय दर्शन में मन का लक्षण करते हुये लिखा है—

युगपज्ज्ञानानुत्पत्तिर्मनसोलिङ्गम्।
न्याय १-१-१६

अर्थात मन एक समय में एक ही कार्य कर सकता है। यह नहीं हो सकता कि वह पाप भी सोचे और पुण्य भी, वह दूसरे को ठगने और लूटने के भावनाएं उसके बचाने का विचार एक साथ नहीं कर सकता। चरक संहिता के शरीर स्थान में भी इसी बात की पुष्टि की गई है और वहां मनका लक्षण इस प्रकार किया गया है—

लक्षणं मनसो ज्ञानस्याभावो भाव एव च।

ज्ञान होना और ज्ञान न होना, मन का लक्षण है। अर्थात् एक काल में एक वस्तु का ज्ञान होना और दूसरी का न होना अथवा दो ज्ञानों का एक ही काल में उत्पन्न न होना, मन का लक्षण है। पाप प्रबल है। पाप सैन्य पर विजय का पा सकना सरल नहीं। प्रलोभनों को ठुकरा सकना सतत अभ्यास और साधना चाहता है। पूर्णता के लिये प्रयत्नशील पुरुष भी पद पद पर पाप सैन्य से परास्त होता है। जिस समय काम, क्रोध, लोभ, मोह इत्यादि शत्रु अपनी सेना सजाकर आक्रमण करते हैं उस समय मैदान में डटकर लोहा लेना किसी धीर वीर और स्थिर मन शक्ति सम्पन्न व्यक्ति का कार्य है। यह पाप चुपके-चुपके आक्रमण करता है। अर्जुन ने कृष्ण से कहा है—

अथ केन प्रयुक्तोऽयं पापं चरति पूरुषः।
अनिच्छन्नपि वार्ष्णेय बलादिव नियोजितः।।

अर्थात्—न जाने कौन सी शक्ति है जिससे कि मनुष्य न चाहते हुये भी जबरन पाप में प्रवृत्त किया जाता है। मन मे यह पाप जब आता है तो इसे कैसे रोकें? पतञ्जलि ऋषि ने योग दर्शन में रोकने का उपाय मन के एक समय एक ही ज्ञान को ग्रहण करने की क्षमता को ध्यान में रखते हुये उपाय बताया—

वितर्क बाधने प्रतिपक्ष भावनाम्।
(योगदर्शन २-३३)

वितर्क अर्थात् झूठ, चोरी, भय, कायरता, विषय भोगा सक्ति आदि वितर्क जब आक्रमण करें तो मन में प्रतिपक्ष अर्थात सत्य, अस्तेय, निडरता, बहादुरी और त्याग के भाव लाने चाहिये। मन में एक ही विचार रह सकते हैं। अच्छे विचार आने पर बुरे विचार दूर हो जायेंगे। कहावत प्रसिद्ध है "खाली मन शैतान का घर होता है।" इसलिये स्वामी श्रद्धानन्द गुरुकुल के विद्यार्थियों को सिखाया करते थे "यदि तेरे पास कोई काम न हो तो अपनी धोती उधेड़कर सीना शुरू कर दो।" यह मन दमन का भाव। यह दम शब्द उस दमन का सूचक नहीं जिससे मन के अन्दर ग्रन्थियां (काम्पलेक्स) उत्पन्न हो जाती है। दमन शब्द नियन्त्रण के, संयम के और मन को वश में करने के रूप में प्रयुक्त हुआ है। इस प्रकार पाप, अधर्म और अकर्तव्य के भाव लुप्त होने पर पुण्य धर्म और कर्तव्य मानव जीवन को उच्च बनायेगा इसीलिये धर्म के दस लक्षणों में 'दम' का भी स्थान है।

इस प्रकार यदि हम अपना जीवन सफल बनाना चाहते हैं यदि हम आनन्द और पुण्य लूटना चाहते हैं तो हमें ध्यान रखना होगा होगा हमारी सफलता के कारण हमारी चित्त वृत्तियां होंगी, और हमारी इन्द्रियों का स्वामी मन होगा। हृदय को प्राचीर लाघकर किसी का अन्य विचार वहां पहुंच नहीं सकता। वे विचार तो बाहर टक्कर खाते नजर आवेंगे। दूसरे व्यक्ति के वे विचार ही हमारी सहायता करेंगे जिन्हें हमारी आत्मा द्वारा बैठने की स्वीकृति मिल चुकी होगी, जिन्हें प्रवेश करने का अधिकार इन्द्रियों के सम्राट मन ने दे दिया होगा। इस बैठक का निर्णय हमारे जीवन का निर्णय होगा। इस मन का आदेश हमारे भाग्य का आदेश होगा। इस मन का रचा भविष्य हमारा भविष्य होगा। मन के इस निर्णय को संसार की कोई शक्ति परिवर्तित न कर सकेगी। किसी ने ठीक ही लिखा है—

"जीवन के समस्त क्षेत्र तुम्हारे सामने पड़े हैं।" संसार की अतुल धनराशि, संसार का यश और उच्च पद तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं यदि तुम में मानसिक बल है, यदि तुम्हारा मन पर नियंत्रण है, यदि तुम्हारे मन में लगन है, यदि तुम्हारे मन में उत्साह है, यदि तुम्हारे मन में जीवन है तो तुम सब कुछ पा सकते हो, सब कुछ कर सकते हो।"

"ज्योतिषां ज्योतिरेकम्"

यह मन ज्योतियों की भी ज्योति है। अतः "तन्मे मनः शिव संकल्प मस्तु"

यह मेरा मन शिव संकल्प वाला हो।

★

वेद घन

ईश वेद घन बरसा दो।
मन मानस जो शुष्क पड़ा है,
सरस उन्हें तू बना दो।।
ईश वेद घन... ।।
मानस में तू गरज २ घन,
बरसो सरस बना दो।
मानस की कालुष्य कालिमा,
प्रभु तू शीघ्र धुला दो।।
ईश वेद घन... ।।
मानस सर में जल बरसा के,
"सुन्दर" कंज खिला दो।
वेद ज्ञान की नव पंखुरियां,
मानस में बिखरा दो।।
ईश वेद घन... ।।

तर्करत्न लक्ष्मीनारायण 'सुन्दर'
मुबहनी, (गोंडा)

स्वर्गीय ब्रह्मचारी बालकराम 'प्रज्ञाचक्षु'

श्री स्वर्गीय ब्रह्मचारी बालकराम जी उन व्यक्तियों में से थे जो आजीवन कष्ट सहन कर भी मानव अधिकारों के लिये संघर्ष करते रहते हैं, और जो बाद में अपनी मधुर स्मृतियाँ छोड़ जाते हैं।

आप जन्म से प्रज्ञाचक्षु थे, परन्तु आपकी अन्तः की ज्ञानचक्षु अतीव तीक्ष्ण एवं गुण ग्राही थी। आपका जन्म उत्तर प्रदेश के उत्तराखण्ड में स्थित जिला पौड़ी गढ़वाल के ग्राम विजयनगर [विजोली] मे सन् १९१७ मे एक साधारण कृषक तथा प्रसिद्ध पौराणिक मूर्तिपूजक शिल्पीवर्ग के श्री जगतराम जी के घर में हुआ था। स्वाभाविकता आप अपने पिता से पौराणिक देवी' देवताओं को पूजाविधि बचपन मे ही सीख कट्टर पुजारी बन चुके थे। ध्यान रहे कि गढ़वाल आदि हिमालय की गोद में जितने भी प्रदेश हैं वहाँ कल्पित देवी-देवताओ की पूजा में पशु बलि ही नहीं अपितु अन्य राक्षसी प्रवृत्ति की प्रधानता भी रहती है।

आर्य-जगत् के ऋषिभक्तों को सूझी कि गढ़वाल जैसी देव भूमि को पशुबलि जैसे अमानुषिक कृत्य से तथा मानव अस्पृश्यता जैसे घृणित कलंक मुक्त किया जाय। सन् १९३९ का समय था। आर्य जगत् के प्रचारक गढ़वाल की उन पर्वत कन्दराओं में पहुंचे और लगे पर्वत शिखरों से सत्य सनातन वैदिक धर्म का सिंहनाद करने कि "यथेमां वाचं कल्याणी-मावदानि जनेभ्यः ... । जन्मना जायते शूद्र कर्मणा द्विज उच्यते"। "शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चेति शूद्रताम्"। एको वशी सर्वभूत तरात्मा ... ।" यो मां पश्यति सर्वत्र।" इत्यादि

इस प्रकार सत्य और तीक्ष्ण आवाज श्री पं० रामानन्द जी, श्री स्व० जयानन्द जी भारतीय, श्री प० रघुवीर दयाल शर्मा श्री ठा० केसरीसिंह जी व श्री ठा० पंचमसिंह जी व श्री प० तोताराम जी जैसे सज्जनों के कानों को चीरती हुई निकली। इन वेद तथा शास्त्र वाक्यों ने उनके हृदय के कपाट खोल दिये, इन सज्जन पुरुषों ने प्रण कर लिया कि वैदिक ज्ञान की शुभ्र ज्योति से गढ़वाल के इन पर्वत कन्दराओं मे दिव्य प्रकाश करना ही है। और जीवन में ऋषि ऋण से उऋण होने का केवल मात्र यही उपाय है बाल ब्रह्मचारी बालकराम जी की पवित्र आत्मा मे महर्षि दयानन्द के वैदिक नाद का अचूक प्रभाव पड़ा। जेष्ठ मास की शुक्ला द्वादशी को २४ वर्ष की आयु में श्रद्धेय पं० रघुवर दयाल शर्मा के कर कमलों से यज्ञोपवीत धारण कर आर्य दीक्षा लेकर पौराणिक पाखण्डों को सदा के लिये तिलाञ्जलि दे दी। गायत्री मन्त्र आपने श्री नत्थूराम पाण्डे से तथा स्वस्तिवाचन, शांति प्रकरण एवं सन्ध्या हवन मन्त्र श्री बुद्धिवल्लभ जी से श्रवण कर कन्ठस्थ कर लिये थे। इसके बाद आर्य सिद्धांतो की जानकारी प्राप्त करने की आपकी इच्छा तीव्र होती गई।

सन् १९४१ मे श्री ठा० केशरीसिंह जी आर्य की दृढ़ प्रेरणा से "हरिद्वार मोहनाश्रम" मे गये। वहाँ श्री प० देवानन्द जी (आजकल स्वामी सच्चिदानन्द) के चरणों मे दो वर्ष तक वैदिक सिद्धांतों का अध्ययन करते रहे। इसके बाद लाहौर के स्वनामधन्य श्री धनीराम भल्ला जी ने उन्हे 'साधु आश्रम होशियारपुर भेज दिया। कुछ दिन वहां रुकने के बाद आप फिर "ऋषिकेश वैदिक आश्रम" मे रहे।

जीवन-ज्योति

वहाँ से आप एक वैदिक परिव्राजक की प्रेरणा से गुरुकुल होशयाबाद गये। वहाँ एक वर्ष मे आपने वेदांग प्रकाश सन्धि-विषय, आर्याभिविनय आदि ऋषि कृत पुस्तकों का पठन श्रवणाकर उनकी मौखिक परीक्षा दी। सन् १९४३ में आप पुनः गुरुकुल त्यागकर होशियारपुर मोहनाश्रम मे आये। उनदिनों वहां कविराज हरनामदास जी० बी० ए० ने एक आर्योपदेशक महाविद्यालय के स्थापना कर ली थी। वह विद्यालय त्यागमूर्ति दर्शनाचार्य श्री पूज्य प० ईश्वरचन्द्र जी के आचार्य पद से शोभित हो रहा था। १९४४ मे उसके आचार्य बने आर्य जाति के प्रसिद्ध शास्त्रार्थ महारथी श्री ठा० अमरसिंह जी। इन दोनो महान विभूतियों के चरणों मे बैठकर आर्य सिद्धांतो की जानकारी प्राप्त करने का भी सौभाग्य ब्र० जी को प्राप्त था।

योग्य साथी का मिलना-

उपरोक्त विद्यालय मे ही ब्र० जी का परिचय श्री देवव्रत जी से हुआ, जो बिहार वासी हैं, और उनके साथ ही रहे। गढ़वाल मे प्रचार कार्य तथा अन्य बहुत सा समय आप का प० जी के साथ गढ़वाल में वैदिक धर्म की सफलता का बहुत बड़ा श्रेय आप पं० देवव्रत जी बिहारी को देते थे। लेखक से एक बार श्री बालकराम जी ने श्री वेद प्रबल व्रत जी का सार्वजनिक अभिनन्दन करने की प्रबल इच्छा व्यक्त की थी।

प्रचार क्षेत्र

इधर उन दिनों गढ़वाल में वैदिक धर्म का प्रचार करने वालो को बड़ी भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था। आये दिन गढ़वाल का पौराणिक वर्ग आर्य दीक्षा से दीक्षित होने वालों को तंग करता था, और विशेषतया सदियों से पददलित एवं तिरस्कार उपजाति को वह किसी भी कीमत पर धार्मिक अधिकार देने को तैयार न था। वह अवस्था देखकर ब्रह्मचारी जी श्री स्वामी ओम्प्रकाशानन्द जी महाराज और श्री प० देवव्रत जी साथ गढ़वाल मे वैदिक धर्म प्रचारार्थ निकल पड़े। प्रथम आपका प्रचार कोटद्वार के आर्य समाज मन्दिर मे हुआ। वहां श्री भक्तराम व श्री नन्दराम आर्य ने आपको बिजनौर गढ़वाल आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्कालीन मन्त्री श्री नत्थीराम जी के पास जाने को कहा। जब आप उनसे मिले तो मन्त्री जी ने आप तीनों को ग्राम काण्डी [जिस गाँव के उपप्रधान के भूतपूर्व खाद्यमन्त्री श्री डा० जगमोहन सिंह नेगी हैं] ग्राम मे भेजा। वहां आपके प्रचार को नेगी जी के भाई श्री रघुवीरसिंह नेगी ने न होने देने का काफी असफल प्रयत्न किया। पर आप वहा घबराये नही प्रचार करते रहे। वहीं आपको कालपाली ग्राम की एक आर्य वर यात्रा में प्रचार करने का निमन्त्रण मिल गया।

कांस्याली काण्ड

बरात मे जब आप प० जी व श्री स्वामी जी के साथ बडयून नामक ग्राम के पास आये तो वहा आस पास के कई ग्रामो के सवर्णों ने आर्य बरात मे वर-वधु को डोला पालकी मे न जाने देने की योजना बनायी। आपका वहाँ काफी बाद विवाह हुआ आप किसी भी हालत में वर-वधु को ग्राम देवी के सामने डोला-पालकी से उतर कर पैदल चलने को तैयार न हुये। अन्त के यह वाद-विवाद बड़े भारी झगड़े मे बदल कर जन समुदाय ने आर्य बरात को खूब लूटा पीटा और अपने अत्याचारों का नग्न रूप देश के सामने प्रस्तुत किया। वहाँ की एक घटना है कि विरोधियों ने भी श्री स्वामी ओम्प्रकाशानन्द जी व श्री प० देवव्रत जी को बरात से अलग ले जाकर एक कमरे मे बन्द करने की योजना बनायी थी। और ब्र० बालकराम जी को रस्सी से बांधकर यम नदी जो कि उस इलाके में पड़ती है डुबो देना चाहते थे, परन्तु उनकी इस काना-फूसी को ब्रह्मचारी ने सुन लिया। आप जोर से प० जी व स्वामी जी के नाम लेकर चिल्लाये। वे दोनों उनसे अपना पिन्ड छुड़ाकर वहां भागे २ आये। इस प्रकार वहाँ आने मे वे अपने मनोरथ में सफलता न हो सके, परन्तु अन्त में सवर्णों ने पत्थर फेंक कर उन्हे लहु-लुहान तो कर ही दिया वहा आपको काफी मुसीबतो का सामना करना पड़ा। कभी २ सारी रातों चलकर आपने जंगलों और पहाड़ों को पार किया, पर फिर भी वैदिक धर्म की प्रचार की गति को धीमी नहीं होने दिया। कांस्याली कांड के बाद आपने दुगड्डा मण्डी मे आकर मारवाड़ी मन्दिर मे ... गायत्री मन्त्र जप का अनुष्ठान किया। और निश्चय किया कि गढ़वाल में आर्यों के ऊपर जो सवर्ण अत्याचार कर रहे हैं। इनको समाप्त ही करके दम लिया जाय और इसके लिये जनमत तैयार कर सरकार से कानून बनवाया ... [illegible] ... तत्कालीन ... [illegible] महात्मा [गांधी] ... को विज्ञापनों तथा ... द्वारा भिजवाते रहे।

-श्री सत्यव्रत शास्त्री
लोहारू हिसार हरियाना

(क्रमश.)

हमारा कर्त्तव्य

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द जी महाराज के इस देश में कार्य क्षेत्र में आने पर महर्षि की परम पुनीत अमृतमयी तेजस्वी वाग्धारा की निर्मल गंगा में नहाकर अनेक महापुरुष पुतात्मा हो गये, गुरु शिष्य की कीर्ति फैलाया करता है शिष्य गुरु की। इसके साक्षात् उदाहरण राम, कृष्ण, दयानन्द आदि हैं। यदि मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र जी जैसे शिष्य वशिष्ठ और विश्वामित्र को न मिलते तो उन्हें कौन जानता। यदि सन्दीपन को कृष्ण योगीराज जैसे शिष्य न मिलते तो उन्हें कौन जानता, गुरुवर प्रज्ञाचक्षु श्री १०८ विरजानन्द जी महाराज को आदर्श शिष्य दयानन्द न मिलते तो उन्हें कौन जानता। कहने का तात्पर्य यह है कि गुरु शिष्य का परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है। आज हमें महर्षि के स्वप्नों को पूरा करने की आवश्यकता है, गुरुवर विरजानन्द के स्वप्नों को महर्षि दयानन्द जी महाराज ने पूरा किया और महर्षि दयानन्द के स्वप्नों को गुरुदत्त एम० ए० विद्यार्थी, आर्यमुनि, लेखराम, श्रद्धानन्द, आत्मानन्द, शिवशंकर शर्मा काव्यतीर्थ आदि अनेकों दिवगत आर्य महापुरुषों ने किया और अब हमें उन दिवगत महान आत्माओं के स्वप्नों को किस प्रकार पूरा करना है यह विचारणीय गम्भीर प्रश्न है।

मानस मधन में आर्य जन,
            जिसकी उतारें आरती।
भगवान भारतवर्ष में,
            गूंजे हमारी भारती॥
हम कौन थे क्या हो गये?
            और क्या होंगे अभी?
आओ विचारें आज मिलकर,
            ये समस्यायें सभी॥

वैदिक धर्म धुरी विश्व के आद्यगुरु धर्म परायण, सत्य के परम पक्षपाती ईश्वर विश्वासी आर्यो! केवल कथन मात्र से ही हम अपनी समस्या का समाधान नहीं कर सकेंगे। आज हमें कार्य क्षेत्र में उतरने की आवश्यकता है। आज हम जब समाज की ओर आँख उठाकर देखते हैं तो समाज, राष्ट्र एवं विश्व की बढ़ती हुई गतिविधियाँ बहुत खराब भयानक एवं घातक हो रही हैं। भारत में भी ईसाई, मुसलमानों की बढ़ती हुई गतिविधियाँ देश के लिये महान् घातक बनती जा रही हैं। इनको रोकना होगा अब तक भारत में १ करोड़ ६१ लाख ईसाई एवं ६५० करोड मुसलमानों की संख्या है। ३२ लाख बौद्ध, १० लाख जैन, ९० लाख सिक्ख हैं। क्या ये कहीं से आकर यहाँ बस गये? नहीं ये सभी तो यहीं के निवासी हैं और सब आर्यों से ही ईसाई, मुसलमान, जैनी, बौद्ध, सिख आदि हो गए हैं। आज से ५००० वर्ष पहले भारत में कोई मत-मतान्तर न था। आर्यों का चक्रवर्ती राज्य था। एवं साथ सनातन वैदिक धर्म था आज सबसे अधिक गतिविधि ईसाई और मुसलमानों की बढ़ रही है।

(१) अस्तु! आर्यों को पहला कार्य तो शुद्धि प्रचार का बहुत तीव्रता से करना चाहिए। शुद्धि प्रचार के धर्मवीर पं० लेखराम जी आर्यमुसाफिर ने अपने प्राण प्रिय पुत्र की चिन्ता न कर पुत्र के बलिदान के साथ साथ स्वयं भी शुद्धि प्रचार करते हुये वैदिक धर्म पर बलिदान हो गये। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज भी शुद्धि प्रचार करते हुए वैदिक धर्म के रक्षार्थ अपने जीवन का बलिदान कर दिया। परन्तु खेद है कि आज शुद्धि प्रचार पर आर्य-जन बहुत कम ध्यान दे रहे हैं। आज पं० लेखराम श्रद्धानन्द की तरह हम में से शुद्धि, प्रचा-

विचार-विमर्श

रक जब निकलेंगे, और अपने प्राणों की आहुति वैदिक धर्म की रक्षा के लिये कर देंगे। तब महर्षि के स्वप्नों को पूरा कर सकेंगे। आज हमारे पौराणिक भाई भी शुद्धि प्रचार को महत्व दे रहे हैं। और मन्दिरों में घण्टा घड़ियाल बजाने को ढोंग समझते हैं। धीरे-धीरे सब वैदिक धर्म को स्वीकार करने के लिये उद्यत हैं, परन्तु उनको दिग्दर्शन कराने वाला चाहिए। अतः आप प्रथम निवेदन पर ध्यान दें।

(२) द्वितीय निवेदन आर्य जनों से यह है कि प्रति दिन स्वयं आवश्यक समझ कर प्रातः सायं सन्ध्या हवन किया करें। और सन्ध्या हवन करने की अन्यों को प्रेरणा दें। आज भारत में १ करोड़ आर्यसमाजी हैं यदि एक वर्ष में प्रत्येक व्यक्ति अपने इष्ट मित्रों सम्बन्धियों आदि में से सन्ध्या हवन करने की प्रेरणा दें, एक आर्य बनावें तो १ वर्ष में १ करोड़ आर्य हो सकते हैं। उसी प्रकार २ करोड़ १-१ व्यक्ति को प्रेरणा दें इस प्रकार १० वर्ष में तो पूर्ण रूपेण समस्त भारत के नागरिकों को आर्य बना सकते हैं और भारत की ५१ करोड़ जनता में से १ करोड़ भी विदेशों में जाकर आर्य बनावें, तो १० वर्ष में समस्त विश्व के नरनारी आर्य हो सकते हैं।

(३) महर्षि दयानन्द के निर्वाणान्तर बहुत से ऋषि भक्त आर्य जन हुए जिन्होंने वैदिक स्वाध्याय द्वारा व मतमतान्तरों का अध्ययन करके शास्त्रार्थ में सबको परास्त कर विजयी हुये परन्तु आज खेद की बात है कि आज आर्यों का वैदिक स्वाध्याय न के बराबर है विश्व का कोई मुसलमान ऐसा नहीं होगा जिसके पास 'कुरआन' पुस्तक न हो परन्तु हमारे आर्यजन ऐसे बहुत से मिल जायेंगे जिनके यहाँ अनादि काल से परमात्मा का प्रदत्त ज्ञान 'वेद' नहीं होंगे। भोले लोगों! ऋषि, मुनि, धार्मिक विद्वानों की विरचित पुस्तकों का निरन्तर प्रतिदिन कम से कम १ घण्टा स्वाध्याय किया करो। मैं विश्वास दिलाकर कहता हूँ कि तुम्हारे एक वर्ष के अध्ययन से इतना होगा किसी भी मत का मनुष्य तुम्हें बहका न सकेगा और तुम्हारी वाक पटुता के समक्ष ठहर भी न सकेगा अतः निरन्तर वैदिक स्वाध्याय करते हुये व मतमतान्तरों का अध्ययन करके विधर्मी मुसलमान ईसाइयों का तीव्रता से सामना करो, इस प्रकार ऋषि के स्वप्न पूरे होंगे।

(४) गुरुकुल प्रणाली के जन्मदाता युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द, स्वामी दर्शनानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द आदि ने तो यही व्यवस्था दी कि प्रत्येक नरनारी अपने लड़के लड़कियों को ५ वर्ष का या ८ वर्ष का होते ही लड़कों को ब्रह्मचारियों के गुरुकुल में और लड़कियों को कन्या गुरुकुल में भेजा जावे परन्तु खेद है कि हमारे आर्यजन ऋषि, मुनि सन्यासियों, की व्यवस्थाओं, आज्ञाओं की अवहेलना कर रहे हैं। अब कम से कम आर्य जन इतना तो अवश्य ही करें कि प्रत्येक आर्य अपनी सन्तानों में से एक बालक या बालिका को अवश्य गुरुकुलीय शिक्षा देवें।

स्मरण रखिये—

माता शत्रु पिता वैरी,
      येन बालो न पाठितः।
न शोभते सभा मध्ये,
      हंस मध्ये बको यथा॥१॥
पुस्तकेषु च नाधीतं,
      नाधीतं गुरुसन्निधौ।
न शोभते सभा मध्ये,
      जारगर्भ इव स्त्रियाः॥२॥

—ब्र० धर्मदेव आर्य शास्त्री
गुरुकुल सिरसागंज

वह माता, पिता शत्रु के समान हैं जिन्होंने अपनी सन्तानों को गुरुकुल जैसी आर्य धार्मिक संस्थाओं में न पढ़ाया हो वह सभ्य समाज में इस प्रकार सुशोभित नहीं होते जैसे हंसों के मध्य में बगुला॥१॥

जिन्होंने त्यागी, तपस्वी सदाचारी धार्मिक विद्वान गुरु के समीप रहकर वैदिक पुस्तकों का अध्ययन न किया वह सभ्य समाज में व्यभिचारिणी स्त्री के समान शोभायमान नहीं होता॥२॥

आज गुरुकुलों में प्रायः अधिकतर निर्धनों के बच्चे पढ़ते हैं या ऐसे बच्चे गुरुकुल में भेजे जाते हैं जिनके माता पिता उनसे दुखी हो जाते हैं, जो असभ्य समाज में बिल्कुल बिगड़ जाते हैं। उनके सुधार के लिये गुरुकुल में भेजते हैं अतः प्रणाली को सुदृढ़ बनाने के लिये कम से कम अपना १ सन्तान को प्रत्येक आर्य गुरुकुल में पढ़ावें। सबको पढ़ावें तो सोने में सुगन्ध समझिये।

प्राचीन आर्य विद्वानों के ग्रंथों का प्रकाशन

(५) आज यद्यपि वैदिक साहित्य के प्रकाशन में हमारे आर्य जन बहुत तीव्रता से लगे हुये हैं तथापि प्राचीन विद्वानों की अप्रकाशित रचनाओं पर बिल्कुल ध्यान नहीं दे रहे हैं मुझे जिन महापुरुषों के अप्रकाशित ग्रन्थों की जानकारी है उन्हें दे रहा हूँ।

[१] महर्षि दयानन्द जी महाराज के गुरु श्री विरजानन्द जी महाराज ने तीन ग्रन्थ लिखे थे जो सम्भवतः "शब्द बोध" अलवर के पुस्तकालय में है, अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ १—"शब्दबोध" २—"वाक्य मीमांसा" ३—पाणिनीय सूत्रार्थ प्रकाश। अलवर के महाराजा विनय सिंह जी ने जब प्रार्थना गुरुवर विरजानन्द जी से की कि आप मुझे किसी सरल रीति से व्याकरण पढ़ाइये तब उन्होंने जन हितार्थ अपनी तीनों पुस्तकों की रचना की थी।

(शेष पृष्ठ १२ पर)

भारत सरकार स्थिति स्पष्ट करे

गत रविवार दिनांक २-६-६८ को प्रातः काल आर्यसमाज मन्दिर १९, विधान सारिणी में श्री कबीरदास जी बैनी के सभापतित्व में गोरक्षा सम्मेलन हुआ जिसमें श्री जगजीवनराम जी के वेद में गो-वध समर्थन सम्बन्धित वक्तव्य पर कड़ा रोष व विरोध प्रकट किया गया तथा निम्न प्रस्ताव सर्व सम्मति से पारित किया गया।

प्रस्ताव

आज दिनांक २-६-६८ को प्रातः काल आर्यसमाज कलकत्ता द्वारा आयोजित यह सभा केन्द्रीय खाद्य मन्त्री श्री जगजीवनराम के वेद में गो-वध समर्थन सम्बन्धित वक्तव्य को अनुचित एवं आपत्ति जनक मानती है। श्री जगजीवन राम जी ने वेद गो तथा वेद गो भक्त जनता के साथ अपनी भ्रान्त धारणाओं के आधार पर अन्याय किया है एवं हिन्दुओं की भावनाओं को ठेस पहुंचाई है। अतः इस सभा का आग्रह है कि श्री जगजीवन राम जी बिना शर्त अपने शब्द वापस लें अन्यथा शास्त्रार्थ के द्वारा या विचार विमर्श द्वारा अपने भ्रम का निराकरण कर लें। और गो-वेद भक्त जनता गो-वेद के सम्मान की रक्षा के लिए सदा उद्यत रहें।

आर्यसमाज दादरी

दिनांक २-६-६८ को सायंकाल ७-३० बजे आर्यसमाज मन्दिर के प्रांगण में एक विराट सार्वजनिक सभा श्री प० विद्यामित्र जी आर्य प्रधानाचार्य हिन्दू अन्तर्वर्तीय विद्यालय दादरी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

सभा में श्री डा० [illegible]प्रसाद चतुर्वेदी एवं प्रज्ञामित्र जी शास्त्री आदि महानुभावों के भाषण हुये सभी वक्ताओं ने माननीय जगजीवनराम कृषि मन्त्री भारत सरकार के लोक सभा में दिये गये इस वक्तव्य का कि वैदिक युग में गो मांस खाया जाता था की कटु आलोचना की। वक्ताओं ने वेद मन्त्रों एवं शास्त्रों के अनेक प्रमाण जनता के सम्मुख प्रस्तुत किये एवं सिद्ध किया कि श्री जगजीवनराम का उपरोक्त वक्तव्य सर्वथा असत्य एवं निराधार है। श्री आचार्य जी ने कहा कि गोमेध अश्वमेध अथवा नरमेध यज्ञ का अर्थ यह नहीं कि यज्ञ में गो अश्व एवं मनुष्य की बलि दी जाती थी अपितु इन शब्दों का अर्थ अलग अलग है।

सभा के अन्त में सर्वसम्मति से निम्न प्रस्ताव पारित हुआ।

नगर के नागरिकों की प्रतिनिधि यह सभा केन्द्रीय सरकार के कृषि मन्त्री श्री जगजीवनराम के इस वक्तव्य का कि वैदिक युग में गो मांस खाया जाता था तीव्र विरोध करती है यह सभा मांग करती है कि या तो श्री जगजीवनराम असत्य वक्तव्य के निमित्त खेद प्रकट करें अन्यथा भारत सरकार उन्हें केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल से पृथक करे।

आर्यसमाज पूरनपुर

आर्यसमाज पूरनपुर की यह सार्वजनिक सभा केन्द्रीय सरकार के कृषि मन्त्री श्री जगजीवनराम जी के इस वक्तव्य का कि वैदिक युग में गो मांस खाया जाता था तीव्र विरोध करती है। यह सभा मांग करती है कि श्री जगजीवनराम जी अपने असत्य एवम् अनर्गल वक्तव्य पर खेद प्रकट करें। अन्यथा भारत सरकार इस सम्बन्ध में अपनी स्थिति स्पष्ट करे।

"आदर्श विवाह"

आर्यसमाज [illegible] के प्रधान श्री राम[illegible] जी [illegible] की सुपुत्री कुमारी [illegible] का विवाह पूर्ण वैदिक रीति से श्री लक्ष्मणकुमार जी शास्त्री व पंडित देशराज जी धर्मोपदेशक, के पौरोहित्य में दिनांक ५-६-१९६८ को कन्नौज निवासी श्री प्रेमप्रकाश जी शुक्ल सुपुत्र श्री मदनलाल जी शुक्ल के साथ सम्पन्न हुआ और भेंट रूप में बरातियों को दो-दो पुस्तकें (स्वर्ग गृहस्थ जीवन तथा दो मित्रों की बातें) प्रदान की गई। दोनों पक्षों की ओर से आर्यसमाज से सम्बन्धित संस्थाओं को २७ रु० दान भी दिये गये।

मन्त्री—हंसराज

—श्री डा० [illegible]सिंह जी आर्य के कुतबपुर (अमरपुर) जि० अलीगढ़ निवासी के सुपुत्र चि० [illegible]कुमार का पाणिग्रहण संस्कार ठाकुर [illegible] ठा० महीपालसिंह जी की सुपुत्री कुसुमलता के साथ वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ, इस अवसर पर श्री ठा० [illegible]पालसिंह जी ने आर्य गुरुकुल [illegible] के लिये १०१ रु० प्रदान किया।

शोक प्रस्ताव

दिनांक २६-५-६८ रविवार को प्रातःकाल आर्यसमाज के प्रांगण, [illegible] तथा विद्वान कार्यकर्ता श्री शिवा[illegible] जी गौड़ के निधन पर आर्यसमाज लश्कर ने शोक प्रस्ताव पारित हुआ। लश्कर आर्य समाज तथा मध्यभारतीय आर्यप्रतिनिधि सभा के अनेक वर्षों तक प्रधान पद पर रहकर उन्होंने अपने गम्भीर तथा प्रेरणा प्रद मार्गदर्शन से नूतन जीवन का संचार किया। श्री डा० महावीरसिंह जी सभा प्रधान श्री बाबूलाल जी गुप्त, श्री डा० [illegible]सिंह जी श्री बूबलाल जी सूलर तथा सभा के वरिष्ठ उपप्रधान आचार्य भारतभूषण त्यागी ने स्व० गौड़ जी के जीवन से सम्बन्धित अनेक मार्मिक तथा उनकी आदर्शवादिता दृढ़ता के उदाहरण गिनाये।

आर्यसमाज खंडवा द्वारा वैदिक धर्म प्रचार

आर्य समाज खंडवा पूर्व निमाड़ मे दि० २८ मई से ४ जून तक समाज के स्थाई प्रचारक मुन्नाराम आर्य सिद्धान्त शास्त्री ने ग्राम पन्धाना मे ३ दिन ग्राम [illegible] मे २ दिन और ग्राम [illegible] मे [illegible] दिन ग्राम [illegible] का राष्ट्रीय स्वरूप [illegible] का यह जगदगुरु [illegible] ईश्वर भक्ति एवं [illegible] के नाम पर अन्याय, अत्याचार मानव धर्म आदि विषयों पर सारगर्भित उपदेश दिया।

ईसाई पादरियों द्वारा सेवा के नाम पर भोले-भाले हरिजनों एवं आदिवासियों को प्रलोभन देकर उनका धर्म परिवर्तन करना हिन्दुओं के देवी देवताओं का अपमान करना आदि गुप्त षड्यन्त्रों का भण्डाफोड़ कर ग्रामीण जनता को सावधान किया। उपरोक्त उपदेशों से ग्रामीण जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा। साथ में श्री [illegible]लाल जी [illegible] और [illegible] कुमार [illegible] एवं मोहनलाल आर्य के भजन भी हुए।

पं० रामप्रसाद बिस्मिल को श्रद्धांजलियां

शाहजहांपुर—गत ७ व ८ जून को स्थानीय आर्य समाज मन्दिर में अमर क्रान्तिकारी शहीद श्री पं० रामप्रसाद बिस्मिल का ७१ वां जन्मोत्सव धूम-धाम से मनाया गया। इस अवसर पर उ० प्र० के [illegible] मुख्यमन्त्री श्री चौधरी चरणसिंह जी पधारे। आपने अपनी श्रद्धांजलि [illegible] ए [illegible] आवेश में आकर भी फांसियां बहुत से लोग खाते हैं परन्तु शुद्ध पवित्र देश प्रेम की भावना से जो सोच समझ कर और हंस २ कर फांसी खाता है वह निश्चय ही अमर पद प्राप्त करता है। श्री बिस्मिल जी भी उन्हीं में से एक हैं। वह एक कट्टर आर्य समाजी थे और मैं भी आर्य समाजी हूं।

श्री चौधरी जी के अतिरिक्त श्री छोटेलाल सत्यपाल, श्री रमेशचन्द्र सक्सेना, श्री सज्जनदास, श्री मूलशंकर जी तथा अन्य नेताओं व महानुभावों ने अपनी श्रद्धांजलियां अर्पित कीं।

इस अवसर पर एक कवि गोष्ठी का भी आयोजन ८ जून को किया गया। जिसमें उत्तर प्रदेश के प्रसिद्ध कवियों ने अपनी पुष्पांजलियां चढ़ायीं।

विदेशों मे संस्कृत भाषा और साहित्य

आज की स्थिति में अपने देश के अन्दर, हम अपनी प्राचीनतम संस्कृत भाषा और साहित्य की कितनी ही उपेक्षा करें परन्तु विदेशों मे उसका उचित सम्मान हुआ है और हो रहा है। संस्कृत भाषा साहित्य और उसके प्राचीन ग्रन्थों की हस्तलिखित पाण्डु लिपियों का एक प्रमुख केन्द्र जर्मनी रहा है। डेढ़ सौ वर्ष से पहले जर्मन भाषा शास्त्रियों, विद्वानों और दार्शनिकों का ध्यान भारत की ओर गया और उन्होंने अलभ्य मूल्यवान संस्कृत के ग्रन्थों को प्राप्त किया और उनके अध्ययन पर विशेष ध्यान दिया। उनका अनुवाद सम्पादन और प्रकाशन भी जर्मन भाषा में किया गया। इन पुस्तकों ने जर्मनी की जनता और विद्वानों को संस्कृत भाषा और साहित्य की श्रेष्ठता बताने के साथ २ भारतीय सभ्यता और संस्कृति मे दिलचस्पी पैदा कर दी।

आज भी पश्चिमी जर्मनी मे सभी विद्यालयों मे संस्कृत भाषा और भारतीय साहित्य पढ़ने पढ़ाने का प्रबन्ध है। जर्मन रेडियो संसार का प्रथम रेडियो है जो संस्कृत भाषा में प्रसारण करता है।

सार्वदेशिक धार्मिक परीक्षायें

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा सार्वदेशिक धार्मिक परीक्षायें इस वर्ष भी आगामी जौलाई १८ के अन्तिम रविवार को देश विदेश में सभी केन्द्रों में होंगी। परीक्षाओं में बैठने, एवं नये केन्द्र स्थापित कराने के इच्छुक व्यक्ति शीघ्र ही पं० [illegible] धर्मेन्दु परीक्षा मन्त्री सार्वदेशिक [illegible] [illegible]नन्द भवन [illegible] दिल्ली-१ के पते पर पत्र व्यवहार करें।

मौरीशस के सुप्रसिद्ध आर्य नेता श्रीयुत मोहनलाल जी मोहित का

सार्वदेशिक आर्य प्र. नि. सभा को १०,०००) का सात्विक दान अन्तरंग सभा द्वारा स्वीकृत

यह राशि श्री मोहनलाल जी मोहित (मौरीशस) स्थिर निधि के नाम से जमा रहेगी और इस निधि का ब्याज निम्नलिखित कार्यों में खर्च होगा—

१—किसी आर्य विद्वान द्वारा लिखित एवं सार्वदेशिक सभा द्वारा स्वीकृत ग्रन्थ प्रकाशन में जो सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित हों।

२—मौरीशस के उन आर्य विद्यार्थियों को आवश्यकतानुसार सहायतार्थ जो गुरुकुल वा आर्य महाविद्यालय आदि में आर्यसमाज की सेवार्थ उपदेशकों का प्रशिक्षण प्राप्त करते हों।

गोंडा जिले में वेद-प्रचार की धूम

आर्य उप प्रतिनिधि सभा गोंडा ने पूरे जिले में भजन, उपदेश आदि द्वारा वेद प्रचार की व्यापक योजना बनाई है। धर्म जिज्ञासुओं को ज्ञानामृत से तृप्त करना और सुप्त आर्यों (हिन्दुओं) को जगाना व सचेत करना इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य है। पहली जून से ३० जून ६८ तक की अवधि में अधिकांश समय गोंडा व बड़गांव में प्रचारार्थ व्यय होगा, जिले में प्रसिद्ध आर्य विद्वान पं० शांतिप्रकाश जी शास्त्रार्थ महारथी एवं 'आर्य मुसाफिर' पं० रामस्वरूप जी भजनोपदेशक पाखण्ड विनाशक तूर्यनाद करेंगे। विशेष कार्यक्रम निम्न प्रकार होंगे —

बड़गांव—दिनांक १९ जून से २३ जून ६८ तक प्रतिदिन रात्रि ७ से ११ बजे तक ठाकवर, बड़गांव के स्थान

गोंडा—दिनांक २४ जून से ३० जून ६८ तक प्रतिदिन ७ से ११ बजे तक नगर में (प्रथम चार दिन) तथा आर्यसमाज मन्दिर, गोंडा में।

ईसाई मिशनरियों को खुली चुनौती

राष्ट्रीय ईसाई मिशनरियों के बढ़ते हुये कुचक्र को निष्फल करने का आर्यसमाज ने बीड़ा उठाया है। भोली भाली जनता को मूर्ख बनाकर धर्म-भ्रष्ट करने वाले ईसाई पादरियों को हम खुली चुनौती देते हैं कि वे शास्त्रार्थ के द्वारा अपने मत की उच्चता सिद्ध करें। शास्त्रार्थ के इच्छुक पादरी अविलम्ब हम में से किसी एक से सम्पर्क (सीधे या पत्र द्वारा) स्थापित करें।

—संकट मोचन श्रीवास्तव
एम० ए० एल० एल० बी०, प्रधान

—मुरली मनोहर
प्रधान

गुरुकुल वृन्दावन में महान् क्षति

आर्य महानुभावों को यह जानकर दुःख होगा कि गत ९ जून की रात्रि को भयंकर तूफान आने के कारण गुरुकुल के पेड़ उखड़ गये हैं, इमारतों की छतें उड़ गई हैं और दीवारें अति ग्रस्त हो गई हैं, इनके पुनर्निर्माण में बहुत धन की आवश्यकता है, कृपया दानी महानुभाव दान देकर अनुगृहीत करें।

—हरदेव स्नातक
मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन
मथुरा

★

प्रभु का प्यारा ओ३म नाम

सब ओ३म् नाम मेरे भाई-सब ओ३म् नाम मेरे भाई।।
इसी नाम का जाप किया था ध्रुव भक्त प्रह्लाद ने।
ओ३म् नाम जप फांसी चढ़ाई, थी बिस्मिल आजाद ने।
फांसी के फन्दे पर भी जो रटते रहे दुहाई।।१
जिसने लिया ओ३म का सहारा उसका हर संताप मिटा।
राम, कृष्ण ने जीवन भर तक ओ३म नाम का जाप किया।
सुबह शाम संध्या करते थे, मधुसूदन और रघुराई।।
ऋषि दयानन्द ओ३म नाम कह, सारा जग जगा के गये।
प्रभु का प्यारा ओ३म नाम है, मुनी ना हतलाः गये।।
अन्त समय तक ओ३म् नाम को, रटना नहीं भुलाई।
ओ३म् नाम की नविका चढ़के भवसागर के पार गये।
जिसने ओ३म् नाम न लीना, वही उरू मझधार गये।
'राघव' ओ३म नाम अपने से जीवन हो सुखदाई।।

—त्रिलोक चन्द्र 'राघव', देहली

कृषि विद्यालय गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार
(जिला सहारनपुर)

नवीन छात्रों का प्रवेश

यह विद्यालय कृषि एवं प्रसार में डिप्लोमा कोर्स प्रदान करता है। प्रवेश के लिये न्यूनतम योग्यता हाई स्कूल परीक्षा उत्तीर्ण, आयु १६ से २१ वर्ष तक। नियमावली तथा प्रवेश फार्म १) मनीआर्डर द्वारा भेजकर मंगाया जा सकता है। प्रवेशार्थ प्रार्थना पत्र २९ जून १९६८ तक लिये जायेंगे।

-- धर्मपाल विद्यालंकार
एडमिनिस्ट्रेटर कृषि विद्यालय गुरुकुल कांगड़ी
हरिद्वार, (सहारनपुर)

पाकिस्तानी हौसलों राजनैतिक समस्याएं अनुचित कार्यों और- मांगों का रहस्य

—कीर्तिध्वज, कानपुर

पाकिस्तान का स्वप्न, निर्माण और उसकी वर्तमान गर्जन तर्जन के पीछे विदेशी शक्तियों का शक्तिशाली हाथ प्रारम्भ से ही रहा है। उन विदेशी शक्तियों ने भारत की शक्ति कम करने के लिए और उनके विभिन्न टुकड़ों पर अपना प्रभाव वर्षों तक बनाये रखने के लिये ही यह चाल चली थी। भारत व पाकिस्तान के सम्बन्धों को सुधरने न देने में भी उनका ही लाभ है। इसीलिये वह दोनों को उकसाते, लड़ाते रहते हैं और दोनों को सैनिक सहायता देकर उनका शक्ति सन्तुलन कायम रखे हुये हैं। पाकिस्तान बनाने की सूझ वास्तव में जिन्ना साहब की नहीं वरन इंग्लैण्ड की थी। उसके बाद बदली हुई परिस्थितियों मे अब इंग्लैण्ड के मित्र देश अमरीका, पश्चिमी जर्मनी आदि भी पाकिस्तान की रीति नीति को पसन्द करने लगे हैं। भारतीय जनता अंग्रेजों की निन्दनीय कूटनीतियों से परिचित है ही। इधर के वर्षों मे पाकिस्तान मे अमरीकी गतिविधि, अमरीका की भारतविरोधी और पाकिस्तान समर्थक नीति से भी भारतीय जनता परीचित हो गई है। पाश्चात्य देशों मे समर्थन प्रदान करने वाला तीसरा देश पश्चिमी जर्मनी है जिसकी दुमुंही नीति से अभी हम भलीभांति परिचित नहीं हो पाये हैं।

पश्चिमी जर्मनी भारत मे अपने पुराने सांस्कृतिक सम्बन्धों की दुहाई देकर अपनी सबसे अधिक बड़ी व्यापारिक और आर्थिक सहयोग की शर्तों द्वारा उसका शोषण कर रहा है तो दूसरी ओर पाकिस्तान को छिपे-छिपे अस्त्र-शस्त्र देकर उसका उत्साह और हौसला बढ़ा रहा है। भारत से भी अधिक पाकिस्तान के साथ उसकी घनिष्ट मैत्री है। अपने इन मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों को वह भारत से प्रकट नहीं होने देता। अपने वह दोनों ही देशों का मित्र बन कर, दोनों को ही उल्लू बना कर अपना स्वार्थ सिद्ध करता रहा। भारत पर पाकिस्तानी आक्रमण के बाद यह बात अब किसी से छिपी नहीं रही है कि पश्चिमी जर्मनी ने पाकिस्तान को लड़ाकू हवाई जहाज टैंक व अन्य अस्त्र दिये थे। और वहां एक कारखाना अस्त्र-शस्त्र के लिये निर्माण करने का आश्वासन दिया था। कुछ महीने पूर्व जब पश्चिमी जर्मनी के प्रधान मन्त्री श्री कीसिंगर ने भारत व पाकिस्तान की सरकारी और पर यात्रा की थी, तो उन्होंने भारत की मर्जी और अपने कायदों के खिलाफ भारत पाकिस्तान के सामरिक महत्व के विवादग्रस्त क्षेत्रों का हवाई जहाज से निरीक्षण किया था। इनके इस कार्य ने स्पष्ट कर दिया कि पाकिस्तान से उनकी कितनी ज्यादा गहरी सांठगांठ है। हो भी क्यों न जब पाकिस्तान पश्चिमी गुट का सदस्य है और पश्चिमी जर्मनी के अन्य मित्र देशों का प्रोत्साहन पा रहा है। वास्तव मे

भारत की ही तरह पश्चिमी जर्मनी ने पाकिस्तान को विशाल मात्रा में आर्थिक, तकनीकी व औद्योगिक सहायता प्रदान की है और अनेक कल कारखाने बनाये हैं। पाकिस्तान की अर्थ व्यवस्था उद्योग धन्धों आदि को मजबूत बनाने मे प० जर्मनी के सहयोग का महत्वपूर्ण स्थान है वह भी चाहता है कि भारत व पाकिस्तान की मनातनी बनी रहे क्योंकि इसमें उसका लाभ है। पाकिस्तान को किसी प्रकार कमजोर न होने देना व भारत के साथ उसके सम्बन्धों को सुधारने न देना पश्चिमी जर्मनी की प [illegible]

इसका कारण उसकी पाकिस्तान को खुश करने की नीति ही है

दरअसल में पश्चिमी जर्मनी का यह रवैया कोई नया नहीं है। उसने योरोप मे भी तनाव कायम कर रखा है। हिटलर तो मर गया पर उनका नाजीवाद आज वहां फिर उभर रहा है। उसके प्रमुख साथी नाजियों का वहां के

[illegible] नीति के मुख्य लक्ष्य है। हाल ही में भारतीय समाचार पत्रों में पश्चिमी जर्मनी के दूतावास ने भारत मे अपने देश के कार्यों के केन्द्रों को दिखाते हुये भारत का नक्शा विज्ञापन के रूप में प्रकाशित करवाया था। इसकी उल्लेखनीय बात यह थी कि काश्मीर में पश्चिमी जर्मनी ने अपने सहयोग का एक भी केन्द्र नहीं बनाया है। सम्भवत

शासन पर कब्जा है और उनकी चलती है। पश्चिमी जर्मनी की वैसी विदेशी रीति-नीति का निर्माण वही कर रहे हैं। ऐसा लगता है कि वहां के नये प्रधान मन्त्री कीसिंगर के रूप मे हिटलर अपने कार्यक्रम को पुनः चालू किये हुये हैं।

पिछले दिनों मे जो समाचार पत्रों मे पढ़ने को मिला है, उससे लगता है कि इंग्लैंड और अमरीका की भांति अब पश्चिमी जर्मनी भी भारत के आंतरिक मामलों मे हस्तक्षेप करने के लिये प्रयत्नशील है। सदन मे हुये प्रश्नोत्तरों से ऐसा लगता है कि वह भारत में अपने समाचार पत्र व समाचार समिति कायम करना चाहता है जिससे वह अपने माफिक प्रचार कर लोकमत बना सके जो उसकी परराष्ट्र नीति के समर्थन में हो और जो साथ ही उसके व्यापार विस्तार के लिये मार्ग तैयार कर सके।

योरोप और पाकिस्तान में ही नहीं भारत में भी उसके अब तक के कार्य हमें सचेत और सावधान रहने का इशारा करते हैं। भारत सरकार को उसके मित्रता के वादों सांस्कृतिक प्रेम के नमूनों, मैक्समूलर भवनों आदि के भुलावों मे न आकर उसके वास्तविक मायावी रूप को समझने की कोशिश करनी चाहिये जो अन्य दोनों की तुलना मे किसी भी कदर कम भयानक, खतरनाक और धोखा देने वाला नहीं है।

★

'मित्र' के लेखकों से नम्र निवेदन

●

आर्यमित्र विद्वान लेखकों का सदा ऋणी रहा है, आर्यजगत् की सेवा मे आर्यमित्र सदा निर्भीक रहा है और आगे भी उसी नीति पर इसका पग उठेगा। इसलिये आर्य विद्वानों से नम्र निवेदन है कि वे अपने प्रेम पूर्वक उद्योग से मित्र को सदा अपने अनुग्रह का पात्र बनाए रखेंगे।

उनके लेख सम्पदा पर ही आर्यमित्र और उनका निज गौरव और आर्य जनता की उन्नति तथा आर्य प्रतिनिधि सभा का गौरव स्थिर रहा है। अभी तक जगत मे यदि कोई साप्ताहिक व मासिक पत्र है तो केवल आर्यमित्र ही है जो व्यापक रूप से समस्त आर्यजगत की प्रधान वाणी है, और उसको प्रत्येक आर्य पुरुष अपना गौरव और अभिमान योग्य वस्तु समझता है।

इसको और भी उज्ज्वल करना और उसको अधिकाधिक लोकप्रिय बनाना आर्य विद्वानों के ही हाथों की बात है।

आर्य संस्थाओं से

समस्त आर्यसमाजों व आर्य संस्थाओं के संचालकों से निवेदन है कि वे अभी तक जैसा अनुभव करते हैं, उसी प्रकार आर्यमित्र को वे अपना [illegible] पूर्ण समाचार पत्र सदा जाने। आर्यमित्र आर्य संस्थाओं के निमित्त सदा [illegible] बढ़ रहा है। वे अपनी संस्थाओं के हितों के साथ २ मित्र को कभी न भूलें वे 'मित्र' को अपनावें और 'मित्र' को अपने साथ उठाए हाथ के समान समझें। संस्थाओं के महत्वपूर्ण कार्यों और अभिमान योग्य कार्यकर्त्ताओं का जगत में व्यापक परिचय होने से ही संस्थाएं अपना कार्य अधिक व्यापक रूप से कर सकेंगी। वे कृपया 'मित्र' के साथ सत्-कर्त्तव्य अवश्य निभावें।

—व्यवस्थापक

वधू व वर चाहिए

दिल्ली के प्रतिष्ठित गोयल गोत्रीय वैश्य परिवार की २२ वर्षीया, बी० ए० (आनर्स) बी० एड०, आय ३०० रु० मासिक, इकहरा बदन, ५—२", स्वस्थ, सुन्दर, निरामिष [illegible] के लिए स्वस्थ धार्मिक, [illegible] गोयल गोत्र छोड़कर वैश्य [illegible] वर चाहिए। [illegible]

—रवीन्द्र अग्निहोत्री
[illegible] विद्यापीठ
जयपुर

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल.-६०

(दिनांक २३ जून सन् १९६८)

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

५, मीराबाई मार्ग लखनऊ

गुरुकुल-नारसन (सहारनपुर) में-

मान. चौ. चरणसिंह को १०१५५) रु. की थैली भेंट

माननीय चौ० चरणसिंह जी का २४ मई १९६८ को साय दोपहर तीन बजे भव्य स्वागत हुआ, अभिनन्दन-पत्र तथा दस हजार एक सौ पचपन रुपये क्षेत्रीय जनता की ओर से भेंट में दिये गये जिसमें राजा महेन्द्रप्रताप, प्रम विद्यालय कालिज के विद्यार्थियों तथा अध्यापकों की एक हजार एक रुपये की धनराशि भी शामिल है। सर्व प्रथम श्री वीरेन्द्र शर्मा जी ने भूतपूर्व उप-सहकारिता मन्त्री ने चौधरी साहब का परिचय कराया और अन्त मे दो रोज के अल्पकाल में इतनी बड़ी धन राशि एकत्रित करने के लिये जिले के क्रान्ति दल के अधिकारी तथा क्षत्रीय जनता की भूरि भूरि प्रशंसा की।

चौधरी साहब ने अपने डेढ़ घण्टे के विद्वतापूर्ण सारगर्भित भाषण में देश की वर्तमान गम्भीर स्थिति का सिंहावलोकन कराया कि देश पर अत्यधिक ऋण है विदेशी आक्रमण की सदैव आशंका है, सैनिक शक्ति कम है, भ्रष्टाचार का बोलबाला है आपसी लड़ाई झगड़े का जोर है बेकारी की बढ़ोतरी है जिससे आजादी को खतरा है।

भारतीय क्रान्ति दल की स्थापना का इतिहास बतलाते हुए उन्होंने कहा कोई पार्टी धन के बिना नहीं चल सकती, परन्तु देखना है कि उस धन दान की पृष्ठ भूमि मे उद्देश्य क्या है? सेठ साहूकार बड़ी-बड़ी रकमें राजनैतिक दलों को देते हैं कि वे शासन में आयें और उन्हें लाभ पहुंचायें। परन्तु मैं जनता जनार्दन के पसीने-खून की कमाई के छोटे-छोटे सिक्के लेना पसन्द करूंगा कि वे समझें कि सरकार उनकी है और उन्हीं के लिये है। देश की आबादी का ७० से ८० प्रतिशत तक एक किसान व मजदूर है। हमें इनको सम्पन्न बनाना है। किसान खुशहाल होगा तो सब खुशहाल होंगे। किसान कच्चा माल पैदा कर कारखानों को देता है तभी पक्का माल वितरण किया जाता है। हमें बड़े कारखाने नहीं चाहिये। कम पूंजी पर छोटे कल कारखानों से अधिक लोग लाभ उठा सकते हैं। हमें हाथ के काम से घृणा नहीं करनी चाहिये। स्वयं श्रम करना चाहिये पुरुषार्थ करना चाहिये जिसके बिना गरीबी नहीं मिटेगी। हम अधिक वेतन कम काम और अधिक अवकाश चाहते हैं जो नितान्त गलत है।

राष्ट्र पिता महात्मा गांधी ने विदेशी सत्ता को समाप्त करने हेतु अहिंसात्मक सत्याग्रह के अलौकिक अस्त्र का प्रयोग किया परन्तु अब हम स्वतन्त्र हैं और शासन हमारा है शासक हमारे बनाये हुये हैं जिन्हें हम जब चाहें वैधानिक रूप से बदल सकते हैं। इनके विरुद्ध सत्याग्रह या जेल जाना व भूख हड़ताल की धमकी एकदम गलत है। पंचायत फैसला करे या शान्ति से फैसला करायें। परन्तु ऐसे गलत गैरकानूनी ढंग व तरीके कभी न अपनायें। बापू (गांधी जी) के चरण कमलों पर चल कर देश की आर्थिक तथा नैतिक उन्नति हो सकती है जिससे सकल विश्व में हमें यश तथा मान प्राप्त होगा।

★

आर्यसमाज मन्दिर में शराब की दुकान खोलने का प्रबल विरोध

★

कानपुर १० ६ ६८। केन्द्रीय आर्य सभा कानपुर के तत्वावधान में नगर की सभी आर्यसमाजों तथा सभी आर्यसमाजों के पदाधिकारियों, सदस्यों का एक वृहद सम्मेलन रामकृष्ण नगर में हुआ। सम्मेलन में आर्यसमाज मेस्टन रोड के एक दुकान के किरायेदार को अपनी शराब की दुकान खोलने की सरकारी आज्ञा देने का घोर विरोध किया गया।

आर्य नेता श्री देवीदास आर्य ने भाषण देते हुए कहा कि जिलाधिकारियों की इस अदूरदर्शिता को आर्य भाई बहनें कभी भी सहन नहीं करेंगे। अगर यह शराब की दुकान खोली गई तो उसको एक दिन भी चलने नहीं दिया जायेगा सत्याग्रह किया जायेगा। जिलाधिकारियों को चाहिये कि वे आर्यों की धार्मिक भावनाओं को ठेस न पहुंचायें वरना जो भी अशान्ति उत्पन्न होगी उसके उत्तरदाई स्वयं अधिकारी होंगे। श्री आर्य ने दुकान के लाइसेंस को तुरन्त रद्द करने की जोरदार मांग की।

सभा में प० विद्याधर जी मन्त्री आर्यसमाज मेस्टन रोड ने बताया कि हमारे समाज ने शराब की दुकान के विरोध मे प्रस्ताव पारित किया है अधिकारियों को सूचित किया है। प० लक्ष्मणकुमार शास्त्री ने इस घटना को अत्यन्त गम्भीर बताया। सम्मेलन मे भी उक्त आशय का प्रस्ताव पारित किया गया।

★

ईसाई युवती का वैदिक धर्म में प्रवेश

कानपुर १० ६ ६८। आर्यसमाज गोविन्दनगर कानपुर में श्री देवीदास आर्य प्रधान समाज ने एक शिक्षित ईसाई युवती को उनकी इच्छानुसार वैदिक धर्म में प्रवेश कराया। और उसका नाम सरोज रखा। उसको गायत्री मन्त्र का उच्चारण कराके वैदिक धर्म [हिन्दू धर्म] की दीक्षा दी गई। तत्पश्चात इस २० वर्षीय युवती का विवाह एक शिक्षित युवक श्री नवीनचन्द्र कक्कड़ के साथ उसकी प्रार्थना पर कराया गया। इस अवसर पर उपस्थित सैकड़ों स्त्री पुरुषों ने इस जोड़े को आशीर्वाद दिया।

आर्य नेता श्री देवीदास आर्य ने भाषण देते हुये कहा कि वैदिक धर्म की यह विशेषता है कि किसी को बलपूर्वक व लालच देकर धर्म परिवर्तन न किया जावे जैसे ईसाई धर्म वाले करते हैं।

★

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के लिये ... २ मीराबाई मार्ग लखनऊ से ... द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।
६१

लखनऊ [illegible] शक १८९० आषाढ़ शु० वि० सं० २०२५ दिनांक ३० जून १९६८ [illegible]

10-7-68

* वेदामृत *

विभूरसि प्रवाहण । वह्निरसि हव्यवाहन । श्वात्रोऽसि प्रचेता । तुथोऽसि विश्ववेदा ॥ उशिगसि कवि । अङ्घारिरसि बम्भारि । अवस्यूरसि दुवस्वान । शुन्ध्यूरसि मार्जालीय । सम्राडसि कृशानु । परिषद्योऽसि पवमान । नमोऽसि प्रतक्वा । मृष्टोऽसि हव्यसूदन । ऋतधामासि स्वर्ज्योति ॥ समुद्रोऽसि विश्वव्यचा । अजोऽस्येकपात । अहिरसि बुध्न्य । वागस्यैन्द्रमसि सदोऽसि । ऋतस्य द्वारौ मा मा सन्ताप्तम । अध्वनामध्वपते प्र मा स्वस्ति मेऽस्मिन पथि देवयाने भूयात ॥

—यजु० ५ । ३१ । ३२ । ३३

व्याख्यान

हे व्यापकेश्वर ! आप विभु हो अर्थात सर्वत्र प्रकाशित वैभवैश्वर्य युक्त हो किन्तु और कोई नहीं विभु आप सब जगत के प्रवाहण (स्वस्वनियमपूर्वक चलाने वाले) तथा सब के निर्वाहकारक भी हो हे स्वप्रकाशक सर्वरसवाहकेश्वर ! आप वह्नि हैं अर्थात सब हव्य उत्कृष्ट रसों के भेदक आकर्षक तथा यथावत स्थापक हो हे आत्मन ! आप व्यापनशील हो तथा प्रकृष्ट ज्ञान स्वरूप प्रकृष्ट ज्ञान के देने वाले हो हे सर्ववित आप तुथ और विश्ववेदा हो तुथो वै ब्रह्म (यह शतपथ की श्रुति है) सब जगत मे विद्यमान प्राप्त और लाभ कराने वाले हो । १६ । हे सर्वप्रिय आप उशिक कमनीयस्वरूप अर्थात सब लोग जिसको चाहते हैं क्योंकि आप कवि पूर्ण विद्वान हो तथा आप अङ्घारि हो अर्थात स्वभक्तों का जो अघ (पाप) उसके अरि (शत्रु) हो उस समस्त पाप के नाशक हो तथा बम्भारि स्वभक्तो और सब जगत के पालन तथा धारण करने वाले हो अवस्यूरसि दुवस्वान अन्नादि पदार्थ अपने भक्त धर्मात्माओं को देने की इच्छा सदा करते हो तथा परिचरणीय विद्वानों मे सेवनीयतम हो शुन्ध्युरसि मार्ज्जालीय शुद्धस्वरूप और सब जगत के शोधक तथा पापों का मार्जन (निवारण) करने वाले आप ही हो अन्य कोई नहीं सम्राडसि कृशानु सब राजाओं के महाराज तथा कृश दीनजनों के प्राण के सुखदाता आप ही हो परिषद्योसि पवमान हे पापकारिन ! पवित्र परमेश्वर सभा के आज्ञापक सभ्य सभापति सभाप्रिय सभा रक्षक आप ही हो तथा पवित्रस्वरूप पवित्रकारक सभा से ही सुख दायक पवित्रप्रिय आप ही हो नमोऽसि प्रतक्वा हे निर्विकार ! आकाशवत आप क्षोभरहित अतिसूक्ष्म होने से आपका नाम नम है तथा प्रतक्वा सब के ज्ञाता सत्यासत्यकारी कर्मों की साक्ष्य रखने वाले कि जिसने जैसा पाप वा पुण्य किया हो उसको वैसा फल मिले अन्य का पुण्य वा पाप अन्य को कभी न मिले मृष्टोसि हव्यसूदन मृष्ट शुद्धस्वरूप सब पदार्थों के मार्जक शोधक तथा हव्यसूदन मिष्ट सुगन्ध रोगनाशक पुष्टिकारक इन द्रव्यों से वायु वृष्टि की शुद्धि करने कराने वाले हो अतएव सब द्रव्यों के विभाग कर्त्ता आप ही हो इससे आप का नाम हव्यसूदन है ऋतधामासि स्वर्ज्योति हे भगवन ! आप का ही धाम स्थान सर्वगत सत्य और यथार्थस्वरूप है यथार्थ (सत्य) व्यवहार मे ही आप निवास करते हो स्वः आप सुखस्वरूप और सुखकारक हो तथा ज्योति स्वप्रकाश और सब के प्रकाशक आप ही हैं । १७ । समुद्रोसि विश्वव्यचा हे द्रवणीयस्वरूप ! सब भूतमात्र आप ही मे द्रवते हैं क्योंकि कार्य कारण में ही मिलते हैं । आप सब के कारण हो तथा सहज से सब जगत को विस्तृत किया है इससे आप विश्वव्याप हैं अजोस्येकपात आप का जन्म कभी नहीं होता और यह सब जगत आपके किञ्चिन्मात्र एक देश मे है आप अनन्त हो अहिरसि बुध्न्य आपको हीनता कभी नहीं होती तथा सब जगत के मूलकारण और अन्तरिक्ष में भी सदा आप ही पूर्ण रहते हो वागस्यैन्द्रमसि सदोसि सब शास्त्र के उपदेशक अनन्तविद्या स्वरूप होने से आप वाक हो परमैश्वर्यस्वरूप सब विद्वानो मे अत्यन्त शोभायमान होने से आप ऐन्द्र हो सब संसार आप मे ठहर रहा है इससे आप सदा (सभा स्वरूप) सो ऋतस्य द्वारौ मा मा सन्ताप्तम सत्यविद्या और धर्म ये दोनो मोक्षस्वरूप आप की प्राप्ति के द्वार हैं उनको सन्तापयुक्त हम लोगो के लिये कभी मत रक्खो किन्तु सुखस्वरूप ही सदा रक्खो जिससे हम लोग सहज से आप को प्राप्त हों अध्वनामध्वपते हे अध्वपते ! परमार्थ और व्यवहार मार्गों मे मुझ को कहीं क्लेश मत होने दे किन्तु उन मार्गो मे मुझ को स्वस्ति (आनन्द) ही आपकी कृपा मे रहे किसी प्रकार का दुःख न रहे ॥ १८ ।

— महर्षि दयानन्द सरस्वती

वार्षिक १०)
छमाही ६)
विदेश मे
१ पौ०

सम्पादक

सच्चिदानन्द शास्त्री एम० ए० सभा मन्त्री

पं० शिवदयालु

उमेशचन्द्र स्नातक एम० ए०

वर्ष ७०
अङ्क २१
एक प्रति २५ पै०

वेद में गोवध और मांस भक्षण की आज्ञा नहीं, अपितु निषेध है

सिद्धान्त विमर्श

★ ओ३मेन्द्र प्रकाश (डी० एन०) ब्रह्मार्थी "पाठक"
सि० शास्त्री, वाचस्पति, आर्य समाज मुबारकपुर "टाण्डा"

इस युग में बहुत समय से पाश्चात्य और प्राच्य दोनों जगत के अवैदिक विद्वान, जिन्हें संस्कृत का तनिक भी ज्ञान नहीं रहा है, जो अपने जन्म काल से ही वेद और वैदिक संस्कृति सभ्यता से अपरिचित रहे हैं, वे सायण महीधर आदि वाम मार्गी आचार्यों के भाष्य और रचनाओं के आधार पर ईश्वरी ज्ञान वेद के ऋचाओं एवं मन्त्रों पर अहङ्कार एवं अज्ञानता वश नाना प्रकार के आक्षेपों द्वारा कीचड़ उछाल रहे हैं। इन्हे वेद मे गाय मारने और उनके मांस भक्षण का विधान दृष्टिगोचर होता रहा है। जैसा कि इन्हीं विद्वानों के परम भक्त श्री क्लेटन महोदय अपनी The Rigveda and Vedic Religon नामक पुस्तक में "Animal Sacrifices" शीर्षक के अन्तर्गत लिखते हैं–

At one sacrifices; probably a very un usual sacrifice, performed once in five years called the Pancha Shara-diya Sowa, seventeen young cows were offered. Bullocks, buffaloes, & deer were also sacrificed, some time in large numbers The white Yajurveda mentions 327 domestic animals, including oxen, cows, milch cows that are to be offered along with horse at the great horse sacrifice.

अर्थात्–एक यज्ञ मे जो सम्भवत. बड़ा असाधारण था १७ जवान गायों की बलि दी जाती थी। बैल, भैंसा, और हिरणों की भी कई बार बड़ी मात्रा मे बलि दी जाती थी। शुक्ल यजुर्वेद में ३२७ पालनीय पशुओं का वर्णन प्राप्त है। जिसमे गाय, बैल, दूध देने वाले गाय आदि पशुओं का भी वर्णन है। इन पशुओं की बलि घोड़े के साथ अश्वमेध यज्ञ मे दी जाती थी।" इस प्रकार के अनेकों असत्य आक्षेप इन अविद्वानों के ग्रन्थों में भरा हुआ है। क्लेटन महोदय के इस अज्ञान पूर्ण असत्य लेख का आधार डा० राजेन्द्रलाल मिश्र की "Indo Aryans" ग्रन्थ है। इसमे सर्वत्र आर्यों (हिन्दुओं) को गो मांस भक्षण और मद्यसेवी सिद्ध किया गया है। इन्हीं अविद्वानों के पक्षपात ग्रस्त एवं अविवेक पूर्ण विचारो के वशीभूत होकर परम मान्यनीय डा० अविनाशचन्द्र बोस एम० ए०, एच० डी० अपने "Vedic Age" नामक पुस्तक में लिखते हैं कि–

"The guests are entertained with the flesh of Cows got killed on the occasion (of marriage).

(Vedic Age p. 389).

अर्थात्–अतिथियों को उस अवसर पर मारी गई गउओं के मांस से तृप्त किया जाता है।" यह कल्पना अविवेकियों की है। हम यहां वेद के कुछ मन्त्र उद्धृत करते हैं जिनमे मांस खाने और गो वध का प्रबल निषेध किया गया है–

पशून पाहि, गां मा हिंसीः, अजां मा हिंसीः, अविं मा हिंसीः,
इम मा हिंसीर्द्विपादं पशुं, मा हिंसीरेकशफं पशुं मा हिंस्यात्
सर्वाभूतानि ॥

अर्थात्–पशुओं की रक्षा करो। गाय को मत मारो। बकरी को मत मारो। भेड़ को मत मारो। इन मनुष्य और द्विपद पक्षियों को मत मारो। एक खुर वाले घोड़े गधे को मत मारो। किसी भी प्राणी का वध मत करो।" वेद के इस मन्त्र मे किसी भी प्राणी की हत्या न करने की स्पष्ट आज्ञा है। आगे का मन्त्र भी गो वध का प्रबल निषेध कर रहा है–

अनागोहत्या वै भीमा कृत्ये मा नो गामश्वं पुरुषं वधीः।
यत्रयत्रासि निहिता ततस्त्वोत्थापयामसि पर्णाल्लघीयसी भव ॥

अथर्व १०। १। २९॥

अर्थात्–हे हिंसा! निर्दोषों की हत्या निश्चित ही महा भयानक है। अतः तू हमारी गौ, घोड़े और पुरुषों को मत मार। जहां २ तू गुप्त रूप से छिपी है वहां २ से हम तुझे निकालते हैं। अतः तू पत्ते से भी हल्की हो जा। इसके आगे देखें अथर्व वेद का यह मन्त्र–गवादि पशु वध करने वाले हिंसकों को प्राणदण्ड की स्पष्ट आज्ञा दे रहा है–

यदि नो गां हंसि यद्यश्वं यदि पुरुषम्।
तं त्वा सीसेन विध्यामो यथा नोऽसो अवीरहा ॥

अथर्व १। १। ६४॥

अर्थात्–हे दुरात्मन्! यदि तू हमारे गाय, घोड़े, आदि पशुओं की हत्या करेगा तो हम तुझे सीसे की गोली से उड़ा देंगे। ऋग्वेद १०। ८७। १६ में गौ को अघ्न्या के नाम से पुकारते हुये उसके दूध का जबरदस्ती अपहरण करने तथा उसे मारने वाले के लिये अति कठोर प्राणदण्ड का विधान है–

यः पौरुषेयेण क्रविषा समङ्क्ते यो अश्व्येन पशुना यातुधानः।
यो अघ्न्याया भरति क्षीरमग्ने तेषां शीर्षाणि हरसापि वृश्च ॥

पाठक बन्धुओं इस प्रकार वेद (मंत्र संहिता) मे अनेकों मन्त्र हैं जो गो आदि पशुओं की रक्षा का पूर्ण विधान करते हैं। पशु वध का आदेश वेद मे नहीं है। पशु वध (गो वध की असत्य कल्पना अविद्वानों की है। यह कल्पना उन अविवेकियों की है जो न तो संस्कृत जानते हैं और न वेद पढ़े हैं। उपरोक्त वेद मन्त्रों में हमने पशु वध निषेध के विधान का दिग्दर्शन कराके अब हम मांस भक्षण एवं मद्य पीने का निषेध करने वाले वेद मन्त्रों का वर्णन करा रहे हैं।

युजुर्वेद ३०/१८ मे विधान है कि "अन्तकाय गोहातिकम"।

अर्थात् जो गोहत्या करने वाला हो उसे मृत्यु दण्ड दिया जाये। पाठक बन्धुओ इसे पढ़कर गो हत्या को महा पाप और महान् अपराध सिद्ध करने वाला अन्य आदेश क्या हो सकता है। आगे गो मांस और मद्य भक्षण का निषेध वेद में देखो:–

एतद् वा उ स्वादीयो यदधिगवं क्षीरं वा मांसं वा
तदेव नाश्नीयात् ॥ अथर्व० ९। ६। ९॥

अर्थात् गाय का यह क्षीर दधि और घृत खाने योग है, मांस नहीं।" आगे के मन्त्र मे मांस भक्षक को प्राणदण्ड का वेदादेश है।

यथा मांसं यथा सुरा यथाक्षा परिदेवने।
यथा पुंसो वृषण्यते, स्त्रियां निहन्यते मनः ॥ अथर्व० ॥

अर्थात्–मांसहारी शराबपीने वाला और व्यभिचारी एक समान ही मार डालने योग्य हैं।

ऋग्वेद ८। ४। १८॥ में कहते हैं। "जो दुरात्मन्, मनुष्य का, घोड़े का और गाय का मांस खाता हो तथा दूध की चोरी करता हो उसके शरीर को कुचल देना चाहिये।'

पाठक बन्धुओ वेद के उपरोक्त प्रमाण से सिद्ध होता है कि वेद मे पशु वध मांस भक्षण और मद्य सेवन पूर्णरूपेण निषेध है। अत. वैदिक आर्य लोग न तो मांस

(शेष पृष्ठ १६ पर)

सीता स्वयंवर और धनुष भंग रहस्य

सीता स्वयंवर की शर्त यह निश्चित की गई कि जनक के यहां जो महात्मा शिव का धनुष रखा हुआ था जो उसको चढ़ावेगा उसके साथ सीता का विवाह किया जावेगा।

धनुष बहुत बड़ा था ८ पहिये वाले रथ में एक बड़ी मञ्जूषा में वह रखा हुआ था। धनुष में कुछ ऐसी कारीगरी थी कि उसके मध्य मे किसी स्थल विशेष को दबाने से ही वह टूट सकेगा अथवा नहीं।

विश्वामित्र मुनि के साथ रामचन्द्र जी तथा लक्ष्मण जी मिथिला पुरी इस धनुष को देखने गये थे। उनसे पूर्व वर्षों से अनेक राजकुमार समय २ पर आते रहे और धनुष चढ़ाने के प्रयत्न करते रहे।

बाल्मीकि जी लिखते हैं कि—

तच्च दृष्ट्वा धनुः श्रेष्ठं गौ साद्-
गिरिसंनिभम्।
अभिवाद्य नृपा. जग्मुरशक्तास्तस्य
तोलने॥
सुदीर्घस्यतु कालस्य राघवोऽयं
महाद्युतिः।
विश्वमित्रेण सहितो यस द्रष्टुं
समागतः॥
अयो० काण्ड स. ११८ श्लोक ४३-४४

अर्थ-पर्वत की शिला के समान भारी उस श्रेष्ठ धनुष को अनेक राजकुमारों ने आजमाया किन्तु कोई उसको उठा न सका और हार मान कर चले गये। बहुत काल के उपरान्त श्री विश्वामित्र के साथ यज्ञ (उस प्रशंसनीय धनुष को) देखने की कामना से महान देदीप्यवान वपुवाले रघुकुल भूषण राम का यहां पदार्पण हुआ।

इससे स्पष्ट है कि समय-समय पर राजकुमार आते रहे और अपने बल की परीक्षा करते रहे। किसी एक समय पर हो निश्चित तिथि पर सब आये हों ऐसी बात नहीं और एक से अधिक ने एक समय में धनुष को उठाया हो यह बात भी मान्य नहीं है क्योंकि स्वयंवर केवल एक साथ होना था अतः एक काल में एक से अधिक धनुष उठावें यह उचित नहीं। धनुष चढ़ाने वाले के नाम कुल गोत्रादि की घोषणा भी की जाती थी और कुलीन होने पर ही उसको धनुष के निकट जाने दिया जाता था। श्री तुलसीदास जी का यह लिखना कि—

"भूप सहस्रदश एक ही बारा,
लगे उठावन टरइ न टारा।"

मिथ्या है। यदि यह १००० राजकुमार मिलकर एक बार ही सब धनुष चढाते तो सीता किसके साथ विवाही जाती।

धनुष उठाने से पूर्व विश्वामित्र के साथ श्री रामचन्द्र जी उसको देखने गये थे। सम्भव है कि विश्वामित्र ने उस समय उनको धनुर्भोत्तोलन रहस्य बतला दिया होगा। धनुष टूटते ही परशुराम का वहां आ जाना राम व लक्ष्मण से उनका विवाद होना। यह बात भी तुलसीदास जी के मन की कल्पना मात्र है। धनुष टूटने के बाद दशरथ के पास राजा जनक ने सन्देश भिजवाया और सीता के साथ राम के विवाह की मन्त्रणा की और स्वीकृत होने पर विवाह की तैयारियाँ की गई। अयोध्या से बरात आयी। संस्कार हुआ और बरात विदा होकर जब अयोध्या लौट रही थी तो मार्ग में परशुराम आते हैं और राम को शिव धनु चढ़ाने पर साधुवाद कहते हैं और वैष्णव धनुष को जो वह साथ लाये थे चढ़ाने को कहते हैं राम ने उसको भी चढ़ाया और तोड़ दिया। उस समय परशुराम ने कहा था:—

"इमेद्वे धनुषी श्रेष्ठे
दिव्य लोकाभिपूजिते।
दृढ़े बलवती मुख्ये
सुकृते विश्व कर्मणा।
बालकाण्ड सर्ग ७५ श्लो० ११

अर्थात्—यह दो शैव तथा वैष्णव धनुष दिव्य और श्रेष्ठ हैं, संसार में मान्य, दृढ़ और महान् शक्तिशाली हैं इनको विश्वकर्मा ने बनाया है। जो धनुष महात्मा वरुण ने शिव जी को दिया था और फिर शिव जी ने उसे विदेह राज जनक को दे दिया था वही शैव धनुष जनकपुरी मे तोड़ा गया था।

'शिव'

परशुराम ने कहा कि यह दो धनुष एक जैसे दुराधर्ष है किन्तु देवताओं में इस प्रश्न को लेकर विवाद उठ खड़ा हुआ है। मैं यह निश्चय जानता हूं कि दोनों धनुष समान हैं किन्तु देवताओं का विवाद शांत करने के लिये इस दूसरे धनुष को तुम्हारे समक्ष लाया हूं तुम इसको भी चढ़ाओ और इसके तुम्हारे हाथों टूट जाने पर विवाद शान्त हो जायगा और मेरा पक्ष सत्य प्रमाणित हो जायगा कि दोनों धनुष समान शक्तिशाली हैं।

राम ने इस धनुष को भी चढ़ाया और तोड़ दिया।

सीता स्वयंवर उस प्राचीन वैदिक मर्यादा का द्योतक है कि जिस में नारी के गुणों की पूजा होती थी। जन्ममूलक जात-पांत का कोई विचार नहीं किया जाता था।

जिस प्रकार हमारे प्राचीन इतिहास मे परिचारिणी जाबाला का पुत्र सत्यकाम प्रतिष्ठा को प्राप्त हुआ उसी प्रकार सीता की विशेष मान्यता हुई है। दूसरा एक यह भी पक्ष है कि सीता महारानी की आत्मजा थी। सीतोत्सव अर्थात् राजा जनक द्वारा आर्य परम्परा के अनुसार खेत मे हल चलाने के पावन मुहूर्त में उत्पन्न होने के कारण उसको सीता नाम दिया गया। और कवि ने सीता को दिव्यता प्रदान करने की दृष्टि से उसको अयोनिजा लिख दिया है। हमरी दृष्टि में यह दूसरा पक्ष ही मान्य है :

एक पक्ष यह है कि-राजा जनक की महारानी सुनैना के गर्भ से उत्पन्न न होने के कारण महर्षि बाल्मीकि ने सीता को अयोनिजा कहा है। राजा जनक जब खेत में वाह दे रहे थे तो अचानक सूड में एक सद्योजात कन्या को देखकर आश्चर्य चकित हो गये। उसको उठाकर हृदय से लगा लिया और आत्मजावत् उसके पालन करने का सकल्प किया। सूड़ अर्थात् सीता में कन्या को पाने के कारण उसका नाम सीता धरा गया। बड़ी होने पर इक्ष्वाकु वंश मे उसका समारोह पूर्वक विवाह करने का निश्चय किया।

इस निश्चय के पीछे यह एक विशेष कारण था कि चूंकि सीता पालिता पुत्री थी आत्मजावा योनिजा न थी अतः कोई यह न कहे कि जनक ने वैसे हो किसी को दे दी अतः उसके स्वयंवर की घोषणा कर दी।

सीता का स्वयंवर द्रोपदी के स्वयंवर की भांति सानुबन्धक था अर्थात् राजाजनक स्वयं द्रुपद की कुछ शर्तें थीं जिनके पूरा होने पर ही उनका विवाह किया जा सकता था।

●

सभा की सूचना

बुधवार दिनाङ्क २६-६-६८ को कानपुर में हुई अन्तरङ्ग सभा के निश्चयानुसार आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का सिरसागंज का स्थगित वृहद् अधिवेशन अब गुरुकुल वृन्दावन (मथुरा) में होगा।

तिथि की सूचना शीघ्र ही प्रकाशित की जायगी।

के लिये और कोई कलङ्क हो नहीं सकना।

मुख्य प्रश्न यह है कि साम्प्रदायिकता की परिभाषा क्या है ? आज तक इसकी व्याख्या करने का प्रयत्न नहीं किया गया। भारतवर्ष का इतिहास इस बात का साक्षी है कि हिन्दुत्व और सहिष्णुता पर्यायवाची है। जितना विचार स्वातन्त्र्य हिन्दू धर्म मे है उतना संसार के अन्य किसी धर्म में शायद ही हो। परन्तु इस समय प्रवृत्ति कुछ ऐसी चल पड़ी है कि हिन्दुत्व से सम्बन्ध प्रत्येक चीज साम्प्रदायिकता की कोटि में गिनी जाती है। स्थिति का यही विपर्यास है। साम्प्रदायिकता की एक मोटी परिभाषा यहाँ हो सकती है कि जो व्यक्ति अपने सम्प्रदाय को अपने देश से अधिक तरजीह देता है वह साम्प्रदायिक है। इस कसौटी पर कसने से आखो के आगे से बहुत कुछ अंधेरा दूर हो जायगा। जो राजनीतिक दल अपने दलीयहितों को राष्ट्रीय हितो से बढ़ कर समझते हैं, वे सब दल भी राजनीतिक साम्प्रदायिकता के शिकार हैं। इस कसौटी पर कसने के बाद तो राष्ट्रीय एकता परिषद् के संयोजको तक को अपने गिरेबान मे मुँह डालकर देखने पर विवश होना पड़ेगा। इस आत्मनिरीक्षण के बिना इस समस्या का हल नहीं होगा और न चोर पकड़ा जायगा।

[हिन्दुस्तान २१ जून से उद्धत]

राजस्थान में शराब बन्दी आन्दोलन के प्रति सरकार की दुरङ्गी नीति

महात्मा गांधी के स्वराज्य आन्दोलन में शराब बन्दी को भी कार्यक्रम के रूप मे स्वीकार किया था क्योंकि श्रमिक वर्ग तथा समाज के दलित और पिछड़े वर्ग के आर्थिक शोषण का एक प्रमुख कारण मद्यपान है। कांग्रेस ने शराब-बन्दी के लिये सत्याग्रह और शराब की दुकानों पर पिकेटिंग के द्वारा शराब के व्यापार को बन्द करने का प्रयास भी किया। परन्तु स्वराज्य के उपरान्त यदि सबसे अधिक किसी चीज का प्रचार हुआ है तो शराब का। देश मे गिरती हुई नैतिकता के मूल कारण मद्यपान पर प्रतिबंध लगाने की मांग सबसे मद्य-निषेध सम्मेलन ने की है कांग्रेस के अन्दर भी आगामी वर्ष गांधी जन्म शताब्दी (२ अक्टूबर १९६८) से पूर्ण मद्यनिषेध की मांग उठ रही है। श्री मुरार जी देसाई ने जो इस मांग के प्रबल समर्थक है पिछले दिनों पत्रकार सम्मेलन मे घोषणा की थी कि शराब बन्दी के प्रश्न पर झुककर वह प्रधान मन्त्री का पद भी स्वीकार नहीं कर सकते। कांग्रेस महा समिति के सौ से अधिक सदस्यों ने शराब बन्दी के प्रश्न पर विचारार्थ महासमिति की विशेष बैठक आयोजित करने की मांग की है। परन्तु सरकार की ओर से अभी तक कोई स्पष्ट नीति घोषित नहीं की गई है।

इसी बीच राजस्थान नशाबन्दी समिति ने राज्य के अनेक स्थानों पर आन्दोलन छेड़कर प्रशंसनीय कदम उठाया है। राजस्थान में शराब बनाने के ६ कारखाने है, जिनमे से सभी को सरकार चलाती है, इनमें से तीन कारखानों पर जयपुर के निकट झोटवाड़ा मे जोधपुर के निकट मण्डोर मे और अजमेर के ... स्थान पर सत्याग्रही स्वयं सेवक धरना दे रहे है। और प्राप्त विवरण के अनुसार उन्होंने कारखाने का कामकाज आंशिक रूप से ठप्प कर दिया है। परन्तु राज्य आबकारी विभाग ने उत्पादन मे क्षति न होने देने के लिये भरतपुर, जयपुर, सांभर आदि अन्य स्थानों पर शराब बनाने का प्रबन्ध कर लिया है। इस प्रकार से जहां एक ओर आन्दोलन बल पकड़ता जा रहा है वहीं दूसरी ओर शराब का उत्पादन कम न होने देने का उपाय भी सरकार की ओर से किया जा रहा है राजस्थान के आबकारी मन्त्री ने जयपुर में पत्रकार सम्मेलन में बोलते हुये यह प्रकट किया कि सरकार शराबबन्दी आन्दोलन को अच्छा समझती है, अतः उस आन्दोलन को दबाने के लिये बल प्रयोग करने का इरादा नहीं रखती, परन्तु गांधी शती समारोह अथवा उसके बाद के किसी निश्चित समय से राज्य में शराब बन्दी कर देने की स्पष्ट घोषणा करने का सरकार का विचार नहीं है। कहने का तात्पर्य यह कि सरकार की तरफ से सब लोगों को मानना चाहिये कि सरकार भी शराब बन्दी मे विश्वास रखती है और इसीलिये वह यह भी चाहती है कि आन्दोलन का प्रसार हो परन्तु शराब का उत्पादन सरकारी कारखानों मे कम नहीं होगा और न ही सरकार शराब पर प्रतिबन्ध ही लगायेगी।

सरकार की इस दुर्नीति का कारण सम्भवत यह है कि उनके विचारानुसार शराब बन्दी का करना और कराना केन्द्रीय सरकार का काम है क्योंकि शराबबन्दी सम्विधान के निर्देशक सिद्धान्तों में लिखी गई है। साथ ही यदि केन्द्रीय सरकार शराब पर प्रतिबन्ध लगाये तो वह राज्यों की पूरी क्षति पूर्ति भी करे। सरकारी अनुमान है कि शराब बन्दी होने पर ८ करोड़ रुपये की हानि सरकारी आय मे होगी और कानून का पालन करवाने पर प्राय १ करोड़ की अतिरिक्त आवश्यकता होगी। इस प्रकार यदि ९ करोड़ रुपये वार्षिक की अतिरिक्त सहायता केन्द्रीय सरकार दे तो राज्य सरकार विचार कर सकती है। वैसे अनधिकृत रूप से ५० प्रतिशत की क्षतिपूर्ति करने को केन्द्रीय सरकार तत्पर है परन्तु राज्य सरकार ५० प्रतिशत भी खोने को तैयार नहीं है। इस प्रकार से "ना नौ मन तेल होगा ना राधा नाचेगी" की कहावत चरितार्थ करते हुये शराब बन्दी नहीं की जा सकती। यह वैज्ञानिक दृष्टि कोण नहीं है। यह आंकड़े भी भ्रामक है। ९ करोड़ रुपये की क्षति पूर्ति तो श्रीमती सुचेता कृपलानी संसद सदस्य द्वारा दिये गये सुझाओ पर अमल करते हुए राज्य के प्रशासनिक व्यय मे कटौती करके तथा अन्य साधनों से ... की जा सकती है। पर यह क्षति भी वास्तविक नहीं है। शराब से गरीबी बढ़ती है। सरकार की ओर से देश की गरीबी को दूर करने का उद्यम शराब बन्दी से ही सार्थक हो सकता है।

राज्य सत्याग्रह के फलस्वरूप अब तक ... लाख रुपये का नुकसान हुआ है। यदि यह आन्दोलन ... होता रहा तो यह क्षति और बढ़ती जावेगी। आन्दोलन के ... के कारण होने वाले ... व्यय को ... पर बोझ बढ़ता जावेगा। यदि सरकार शराब का उत्पादन करने पर अड़ी है तो वह सत्याग्रहियों को ... के लिये ... पतार करके भी कारखाने के उत्पादन को बाहर निकाल सकती है अथवा अन्यत्र उत्पादन के साधन तलाश कर सकती है। नशाबन्दी आन्दोलन का समर्थन और शराब का उत्पादन भी बढ़ाने की दुरंगी नीति राज्यकोष को कुछ क्षति पहुंचा कर आसानी से चली जा सकती है भले ही इसे कोई सिद्धांत हीनता कहे। क्या शराब बन्दी समिति ने इस दुरंगी नीति को अनुभव किया है? यदि हां तो उसे सत्याग्रह के अतिरिक्त अन्य उपायों पर भी विचार करना चाहिये।

—आनन्दप्रकाश एम० फार्म०
उपमन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

★

एक प्रश्न ?

स्वामी जी ने सत्यार्थ प्रकाश के आरम्भ में यह प्रश्न उठाया है कि—

प्रश्न :—परमेश्वर से भिन्न अर्थों के वाचक विराट आदि नाम क्यों नहीं? ब्रह्माण्ड, पृथिवी आदि भूत इन्द्रादि देवता और वैद्यक शास्त्र मे शुण्ठ्यादि औषधियों के भी ये नाम हैं वा नहीं।

कोई सज्जन चरक, सुश्रुत या किसी अन्य वैद्यक शास्त्र मे बतायें कि किस स्थान पर शुंठि आदि के लिए विराट आदि शब्दों में से किस शब्द का अभिप्राय है।

★ प० गंगाप्रसाद उपाध्याय

जगजीवनराम द्वारा वैदिक संस्कृति पर लगाये गये आरोपों का डटकर विरोध करें

"आर्यों के प्राचीन पूर्वज ... मांस भक्षी थे श्री जगजीवनराम के इस आरोप का जो उसने ... विद्वानों की आड़ मे वैदिक संस्कृति पर लगाया है उसका देश के कोने २ में तीव्र विरोध होना चाहिए इस वक्तव्य को देकर जगजीवन-राम ने गोरक्षा महाभियान समिति की कमर में छुरा भोंका है और गो हत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाने के सम्बन्ध में जो भारत सरकार की अनिच्छा है उसका नग्न प्रदर्शन है।

जिस समय तक श्री जगजीवनराम अपने इस अनर्गल ... के लिए खेद प्रकट न करें अथवा मन्त्री पद से त्याग पत्र न दें विरोध जारी रहना चाहिए।

शिवदयालु स०

भारतीय जनसंघ और आर्यसमाज

कांग्रेस की आर्यत्व (हिन्दुत्व) विरोधी तथा मुस्लिम तुष्टिकरण नीति के कारण सहस्रों आर्यसमाजी, जिन्होंने स्वतन्त्रता के आन्दोलन मे अग्रसर होकर कार्य किया और कांग्रेस को बल दिया खिन्न होकर कांग्रेस से पृथक हो गये और अपना पृथक राजनैतिक सगठन बनाने की सोचने लगे।

हैदराबाद सत्याग्रह के उपरान्त आर्य सभा सगठित की गई और उत्तर प्रदेशादि में उसका कुछ कार्य चला किन्तु आर्यसमाज के पदारूढ मूर्धन्य नेताओं का इसको आशीर्वाद प्राप्त नहीं हुआ।

सन् १९४२ के आन्दोलन की समाप्ति पर सन १९४५ के आरम्भ में सार्वदेशिक सभा आर्य प्रतिनिधि सभा ने राजार्य सभा के सगठन को अपने हाथ मे लिया किन्तु क्रियात्मक रूप से कोई काय नहीं किया।

गाजियाबाद (मेरठ) में भारतीय लोक संघ की आर्यसमाजी कार्यकर्ताओं एवं विचारकों ने स्थापना की, कुछ समय तक जैसे तैसे इसका कार्य चला किन्तु कोई प्रगति न हुई।

इधर स्व० डा० स्यामा प्रसाद मुकर्जी के सहयोग से प० मौलिचन्द्र शर्मा, श्री बसन्त राव जी ओक, पं० दीनदयाल जी उपाध्याय आदि द्वारा दिल्ली में भारतीय जनसघ का प्रादेशिक सम्मेलप्र कर प्रांत में सगठन खड़ा किया गया।

सन् १९५१ के निर्वाचन सामने आगये जनसंघ ने निर्वाचन में डटकर कांग्रेस से मोर्चा लिया, उस समय श्री पं० जवाहरलाल नेहरू जनसघ को आर० एस० एस० की नाजायज औलाद के नाम से पुकारा करते और जनसघ के मंच से इसकी सफाई दी जाती। राष्ट्रीय स्वयं सेवक सघ के नेताओं ने भी अनेक बार यह घोषणा की कि जनसघ से हमारा कोई सम्बन्ध नहीं किन्तु डा० श्यामाप्रसाद मुकर्जी के निधन के उपरान्त परिस्थिति ने पलटा खाया। राष्ट्रीय स्वय सेवक संघ के सचालकों ने यह कहना प्रारम्भ कर दिया कि जनसघ का हमने निर्माण किया है और जैसे हम चाहेंगे वैसे हो उसको चलना पड़ेगा। कहने को जनसघ का विधान प्रजातांत्रिक बनाया गया था किन्तु व्यवहारिक रूप में पूर्ण तानाशाही चलने लगी। राष्ट्रीय स्वय सेवक संघ के प्रमुख श्री गोलवल्कर जी का आदेश ही सर्वोपरि रहता और एक प्रकार से जनसंघ का सूत्र उनके द्वारा ही सचालित होता। राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ के प्रांत सचालक का प्रांतीय जनसघ पर अधिपत्य रहता तो जिला सघ पर जिला प्रचारक का प्रभुत्व रहता। जनसघ के प्रांतीय वा जिला अधिकारी नाम मात्र के ही होते थे वास्तविक शक्ति रा० स्वयं सेवक सघ के प्रचारकों व सचालकों के हाथ मे रहती थी। और मजे की बात यह कि श्री गोलवल्कर जी से लेकर जिला प्रचारक तक कोई जनसघ का ४ आना सदस्य भी नहीं बनता था। तथा कथित प्रजातांत्रिक सगठन चलने लगा। लेखक को भी इसमे दो वर्ष कार्य करने का आरम्भ मे अवसर मिला। जब लखनऊ में प्रांतीय जनसघ स्थापित किया गया तो लेखक उसका उपमन्त्री बनाया गया और अगले वर्ष उपप्रधान बनाया गया था।

सन् १९५१ के चुनाव में लेखक ने उत्तर प्रदेश तथा पेप्सु का दौरा भी किया और काश्मीर आन्दोलन में दो बार कारागार की यात्रा भी की। किंतु लेखक एक कट्टर आर्य समाजी सन् १९१९ से है और कांग्रेस में भी उच्चपदों पर रहते हुये आर्यसमाज के खण्डन मण्डन, शास्त्रार्थ तथा शुद्धि आन्दोलनों मे खुलकर भाग लेता रहा है। हैदराबाद सत्याग्रह मे भी खुल कर भाग लिया और कांग्रेस के उच्च नेताओं की ओर से सत्याग्रह निर्बल बनाने के प्रयासों का डटकर सामना किया।

भारी संख्या में आर्यसमाजी जो कांग्रेस की दब्बू नीति से असन्तुष्ट थे वह जनसंघ मे सम्मिलित हो गये। आर्यसमाज का कोई अपना सगठन बना नहीं, हिन्दु सभा को अपनाने में उनको हिन्दु शब्द के कारण हिचक होती थी और राजनीति मे विरक्त हो जाना उनके स्वभाव में नहीं अत: जनसंघ को अपनाना पड़ा।

डा० श्यामाप्रसाद मुकर्जी के उपरांत जनसघ की अप्रजातांत्रिक गतिविधियों तथा राष्ट्रीय स्वयं सेवको के नेताओं को चोचलो से खिन्न होकर अनेक कार्य कर्ताओं ने जनसघ को अन्तिम नमस्कार कर दिया।

बम्बई मे जनसघ का वार्षिक अधिवेशन प० मौलिचन्द्र शर्मा जी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ, लेखक भी उसमे सम्मिलित हुआ था लेखक सघियों की आर्य समाज विरोधी गतिविधियों से चौकन्ना था ही कि बम्बई की सघ की सांस्कृतिक प्रदर्शनी ने उसकी आंखें खोल दीं। प्रदर्शनी में श्री राजाराम मोहनराय, विवेकानन्द, रामतीर्थ आदि के अनेक बड़े-बड़े विशाल चित्र लगे हुए थे किन्तु महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का ड साइज का भी कोई चित्र न था। लेखक ने बड़े ध्यान से उसे खोजा किन्तु जब था ही नहीं तो दीखता कहां। दुखित हृदय मञ्च पर बैठ गया। पं० मौलिचन्द्र शर्मा व प० दीनदयालु जी के आग्रह करने पर अपने चित्त की व्यथा बतलाई कि क्या भारतीय संस्कृति के सरक्षण एव उत्थान मे महर्षि दयानन्द का कोई भी योगदान न था। यह सुनकर सबको आश्चर्य हुआ। प्रदर्शनी रचयिताओं ने अपनी भूल बतलाकर क्षमा मांगी, किन्तु लेखक ने उसी क्षण से जनसघ को शीघ्र त्यागने का निश्चय कर लिया। कुछ दिनों के बाद लेखक ने ही नहीं प० मौलिचन्द्र जी शर्मा, श्री ओक जी आदि ने भी जनसघ को छोड़ दिया।

★ पं० शिवदयालु

इधर १९५६, ६१ व ६३ के निर्वाचनों में जनसघ अपनी शक्ति बढ़ाता चला गया। और कांग्रेस की हिन्दुत्व घातिनी व मुसलिम तुष्टिकरण नीति से लाभ उठाता चला गया। बहुत से आर्य समाजी सैद्धातिक मत भेद के कारण जनसघ से पृथक् हुए तो बहुत से पदलोलुप आर्य समाजी एम० एल० ए० एम० पी० बनने का स्वप्न सजोते हुए जनसघ मे सम्मिलित हो गये। लेखक को उत्तर प्रदेश का जनसघ के काय से व्यापक दौरा करने का अवसर मिला प्रान्त भर मे सघ व जनसघ के किसी भी कार्यालय मे स्वामी दयानन्द का चित्र वा उनका कोई ग्रन्थ देखने को नहीं मिला। स्वामी विवेकानन्द आदि के चित्र तथा ग्रन्थों से उनके कार्यालय सुशोभित मिले। अनेक समाजों में लेखक के समक्ष ही सघियों ने आर्य समाज और उसके कार्यों की उपेक्षा अवहेलनादि की।

सघ व जनसघ की दृष्टि मे कांग्रेस एवं आर्य समाज दोनो ही उसके मार्ग के दो कांटे हैं। कांग्रेस राजनैतिक दृष्टि से तो आर्यसमाज सांस्कृति व सामाजिक दृष्टि से। कांग्रेस का विरोध वह बाहर रहकर करते हैं तो आर्यसमाज को लक्ष्य भ्रष्ट करने व उसे निर्बल बनाने का काम प्राय: वह आर्यसमाज के अन्दर घुसकर करते हैं।

कांग्रेस का पक्ष लेना मेरा अभीष्ट नहीं है। ३० वर्ष कांग्रेस मे कार्य करने के उपरान्त मैं स्वत: ही उसमे उपरत हो गया। मेरी दृष्टि मे आज की कांग्रेस केवल मुसलिम परस्त हिन्दुत्व विरोधी ही नहीं, भ्रष्टाचार भाई भतीजे पन व जातिवाद के भयानक रोगो मे ग्रस्त है और आपस के बदेबन्दी के मधुमक्खियों की भांति विनाश के पथ पर जा रही है। (असमाप्त)

विदेशी ईसाई मिशनों के सम्बन्ध में
हमारी १० मांगें

★

१—विदेशी ईसाई मिशनों पर प्रतिबन्ध लगे और इनकी सम्पत्ति का राष्ट्रीयकरण हो।

२—राष्ट्रीय ईसाई मिशन की स्थापना हो और विधिवत मान्यता प्राप्त हो।

३—विदेशी ईसाई मिश्नरियो को देश से अविलम्ब विदा किया जाय और देशी मिश्नरियो को उनके स्थान पर नियुक्त किया जाय।

४—देशी ईसाई मिश्नरियो की शुद्ध राष्ट्रीयता के आधार पर शिक्षण हो। राष्ट्रीय भाषा भाव भेष को वह अपनाने वाले हों और देश के प्रति इनकी पूर्ण निष्ठा हो।

५—भारतीय ईसाइयो की श्रद्धा के केन्द्र बिन्दु भारत के महान् पूर्वज हों और रोम के पोप आदि से उनका कोई लगाव न हो।

६—हिन्दुओं को ईसाई बनाने सम्बन्धी कुचक्र का अन्त हो और विदेश से एतदर्थ आने वाले पूंजी पर कड़ा प्रतिबन्ध हो।

७—गैर ईसाइयों को बाइबिल पढ़ने पढ़ाने पर प्रतिबन्ध हो।

८—ईसाइयो के प्रत्येक शिक्षणालय का राष्ट्रीयकरण हो और राष्ट्रभाषा को अनिवार्य रूप से उसमें शिक्षा का माध्यम बनाया जाय।

९—अल्पवयस्क हिन्दू बालक बालिकाओं को ईसाइयों के फन्दे से निकाला जाय और उनको हिन्दू आर्य संस्थाओ को सौंपा जाय।

१०—तथा बाल-हरण अपराध में इन ईसाई पादरियो पर अभियोग चलाये जायें।

ईसाइयत के सम्बन्ध में कुछ तथ्य

श्री ललताप्रसाद जी
डी० ए० वी० कालिज कानपुर

ईसाइयत एक विष है किन्तु दुनिया ने उसे अमृत समझ रखा है। प्रस्तुत लेख में ईसाइयत के सम्बन्ध में कुछ प्रमाणिक तथ्य प्रस्तुत हैं। --सम्पादक

महात्मा ईसामसीह विश्व में क्यों आये ?

परमपिता परमात्मा ने आदि सृष्टि मे जिस प्रकार हमारी आंखों के प्रकाश के लिये सूर्य बनाया उसी प्रकार हमारी आत्मा को शुद्धि एवं बुद्धि के विकास के लिए 'वेद' प्रदान किया जो निर्भ्रान्ति सत्य और सनातन है। पाश्चात्य विद्वान भी इस बात को मानने लगे है कि वेद ईश्वरीय ज्ञान हैं। वेद पथ के पथिक बनने से ही हमारा कल्याण हो सकता है।

हमारे कुछ बन्धु "बाइबल" को हमारे सामने प्रस्तुत करते हैं जो कि विश्व ईसाई पादरियो की रचनाओं का संकलन है। पुराने नियम मे ३९ और नये नियम २७ कुल ६६ पुस्तकें मिलकर 'बाइबिल' कहलाती है परन्तु इन ६६ पुस्तको मे भी परस्पर भेद है। एक पुस्तक एक दूसरे के सिद्धांत का खण्डन करती है।

विश्व के पादरियो! बतलाओ मत्ती मरकुस लूका यूहन्ना आदि की इंजीलें ईसा की मृत्यु के कितने काल पश्चात् लिखी गई या उनके जीवनकाल मे ही लिखी गई ? ये पुस्तके तो विश्वास के योग्य नहीं क्योंकि न तो ये सृष्टि के आदि मे ही प्रकाशित हुई और न किसी सत्यवादी पवित्रात्मा पुरुष के द्वारा ही लिखी गई है, इस कथन की पुष्टि निम्न प्रमाणो से होती है।

"जब पतरस को एक लौंडी ने देख कर कहा कि यह भी यीशु नासरी के साथ था तब उसने कसम खाकर कहा कि मै उसको नहीं जानता। तीन बार मुझे सामने अस्वीकार किया।" (मत्ती रचित सुसमाचार प. २६ आ ७१-७२-

पतरस ईसा के शिष्य थे जब वह स्वयं सत्य नहीं बोलते तो उनकी लिखी पुस्तके क्योंकर सत्य मानी जा सकती है? ईसा मसीह स्वयं सत्य नहीं बोलते थे। यूहन्ना रचित सुसमाचार प. ७-आ. २ से १० तक मे स्पष्ट लिखा है कि ईसा ने स्पष्ट अपने भाइयो से झूठ बोला।

ईसा का विश्व मे पदार्पण का वास्तविक उद्देश्य

ईसाई कहते है कि ईसा विश्व मे शान्ति स्थापना के लिए आये थे परन्तु बाइबल के अध्ययन से यह स्पष्ट प्रकट होता है कि वे शांति स्थापना के लिये नहीं वरन् क्रांति उत्पन्न करने के लिये आए।

ईसा का उपदेश है 'यह न समझो कि मैं पृथ्वी पर मिलाप कराने को आया हू, मिलाप कराने को नहीं पर तलवार चलाने आया हू।" (मत्ती की इंजील प. १०-आ ३४)

"मनुष्य उसके पिता से लड़को को उसकी मा से और बहू को सास से अलग कराने आया हू।" (मत्ती प. १० आ. ३५)

"मै पृथ्वी पर आग लगाने आया हू। और क्या चाहता हू केवल यह कि अभी सुलग जाती।" (लूका रचित सुसमाचार प १२-आ ४९)

"क्या तुम समान करते हो कि मै पृथ्वी पर मेल कराने आया हू। तुमसे सच कहता हू कि नहीं बल्कि जुदाई कराने आया हू।" (लूका प १२-आ ५१)

'बाप बेटे से मुखालिफत रक्खेगा और बेटा बाप से, मा बेटी से, बेटी मां, से, सास बहू से, और बहू सास से विरोध रक्खेगी।' (लूका प. १२-आ. ५३)

ईसा ने स्वयं अपने शिष्यों को तलवार खरीदने का आदेश दिया है।

'और जिसके पास तलवार नहीं है वह अपने कपड़े बेचकर एक मोल ले।" (लूका प. २२ आ ३६)

'और रस्सियों का कोडा बनाकर सबको यानी भेडो और बैलो को मन्दिर से निकाल दिया (यूहन्ना प. २-आ. १५)

"और उन्होने कहा हे प्रभु! देखिये यहां दो तलवारें हैं। और उसने उनसे कहा कि बहुत है।" (लूका प २२-आ. ३८)

अहिंसक भेडो और बैलों को रस्सियों का कोडा मारने वाला कभी दयालु और अहिंसक हो सकता है ?

ईसाई, मसीही मत का प्रचार करते हुये कहते हैं कि ईसा की शरण मे आओ क्योंकि उसने शांति और प्रेम की शिक्षा इस प्रकार से दी है।

"जो कोई तेरे दहिने गाल पर थप्पड मारे तू दूसरा भी उसकी ओर फेर दे" (मत्ती प ५-आ ३९)

क्या उपयुक्त शिक्षा का पालन ईसाई करते हैं? ईसाई पादरियो ने स्वयं बडे २ अत्याचार किये। कितने वैज्ञानिक गलैलियो आदि को घोर यातनाए दीं कितनों को कोडे लगवाये। बाइबल से भी इस शिक्षा की पुष्टि नहीं होती है। यह तो केवल [illegible] की बात है अथवा [illegible] बने है और बेचारा कपने वाला बूढ़ा [illegible] पर मार खाने वाला बने ऐसा क्या ?

कपडे बेचकर तलवार खरीदने का आदेश देने का तात्पर्य क्या है ? विश्व का कोई पादरी तात्पर्य को समझा सकता है ?

तलवारों का प्रयोग

ईसा के शिष्यो ने तलवारो का प्रयोग किया। जिस समय यहूदा ने ईसा को पकड़वाने के लिए [illegible] आकर चूम लिया और सिपाहियो ने [illegible] करके उसे पकड़ लिया [illegible] समय यीशु के साथियो मे से एक ने हाथ [illegible] अपनी तलवार खींची [illegible] सरदार काहन के नौकर पर चलाके उसका कान काट लिया। (मत्ती प २६-आ ४९ से ५१ तक, [illegible] ४६ व ४७ तथा यूहन्ना प. १-आ. १०)

उपर्युक्त प्रमाणों से स्पष्ट प्रकट होता है कि ईसा स्वयं परस्पर फूट डलवाने की शिक्षा ईसाइयों को दे गये है।

ईसाइयों का परमात्मा लड़ाकू है

ईसाइयों के एक ईश्वर नहीं वरन् तीन हैं। पिता पुत्र और पवित्रात्मा। पिता तो परमात्मा हुआ, पुत्र ईसा और पवित्रात्मा क्या है? बाइबल मे जो ईश्वर का स्वरूप है वह शरीर है, एक देशीय है उसको 'यहोवा' के नाम से लिखा गया है। उस यहोवा ईश्वर का वर्णन करते हुये बाइबल मे लिखा है—

ईश्वर युयुत्सु प्रकृति का (लड़ाकू) है

'यहोवा, योद्धा है।' (निर्गमन नाम पुस्तक प. १५-आ० ३)

'सेना सेनाओं का यहोवा है।' (यशायाह) भविष्यवक्ता की पुस्तक प ५१-आ. १५)

'धन्य है यहोवा जो मेरी चट्टान है वह मेरे हाथो को लड़ने [illegible] युद्ध करने के लिये तैयार करता है [illegible] भजन संहिता प १४४ आ १'

ईश्वर निर्दयी घातक व क्रूर है

यहोवा की वाणी है कि मै उनपर कामलता नहीं दिखाऊँगा और न तरस खाऊँगा। और न दया करके उनको नष्ट होने से बचाऊँगा। (यिर्मयाह नाम पुस्तक प. १३-आ १४)

'देश-देश के जितने लोगो को तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे वश में कर देगा, तू उन सबको सत्यानाश करना, उन पर तरस की दृष्टि न करना।' (व्यवस्था विवरण प. ७ आ १६।

इसलिये अब उनको आक्रमण [illegible] मार और जो कुछ उनका है उसे बिना कोमलता सत्यानाश कर, क्या पुरुष, क्या स्त्री, क्या बच्चा, क्या दूध पिउवा, क्या गाय बैल क्या बकरी, क्या ऊँट क्या गदहा सबको मार डाल।' (१ शमूएल प. १५ आ. ३)

"यहोवा संदूक के भीतर झांका था उसने उनमे से ७० [illegible] पचास हजार मनुष्य [illegible]। (१ शमूएल की पुस्तक [illegible])

यहोवा [illegible] में [illegible] २ पत्थर [illegible] ने [illegible] मर [illegible]' (यहोशु प [illegible])

'[illegible] ... ... [illegible] प. २९ आ २९)

'[illegible] वह तो यहोवा के लिए हवन [illegible]।" (निर्गमन प. २९-आ १८)

[शेष अगले पृष्ठ पर]

हैदराबाद नगर के साम्प्रदायिक दंगे

हैदराबाद के शान्त वातावरण मे कुछेक मुस्लिम साम्प्रदायिक संस्थायें इस प्रकार का प्रयत्न करती आ रही थीं कि वातावरण दूषित होकर अशान्ति उत्पन्न हो और राष्ट्र की बदनामी होकर भारत के विरुद्ध विदेशों में पाकिस्तान को प्रचार का अवसर मिले। इस कार्य को हैदराबाद की मुस्लिम साम्प्रदायिकता पोषक संस्थायें बदनाम मजलिस इतेहादुल मुसल्मीन, मजलिस मसावरात, जमात इस्लामी तथा तामीरे मिल्लत आदि ने निरन्तर और योजना बद्ध रूप मे धार्मिक पवित्र स्थानों का उपयोग करते हुए राजनीतिक स्वार्थों की सिद्धि के लिये प्रयास किया। इन्हीं कुत्सित प्रयत्नों के परिणाम स्वरूप एक दल के लोगो मे साम्प्रदायिक भावना उभरती गई। और इनके परिणामस्वरूप दूसरे दल के लोगों पर आक्रमण और छुरे बाजी की दुर्घटनायें घटीं। सुलतान शाही, बबीरपुरा, याकूतपुरा और अन्य स्थानों पर इस प्रकार की घटनायें होती रहीं। अभी एक दो सप्ताह से पूर्व चप्पल बाजार के युवक राजेश्वर का वध भी बड़ी ही निर्दयता से हुआ। इस सब की प्रतिक्रिया रूप में कहीं २ कुछ अग्निकाण्ड व लूट आदि की भी अप्रिय घटनायें हुयीं। सभा इस सब की घोर निन्दा करती है। सभा की दृष्टि मे यदि हैदराबाद की सरकार सतर्क होकर कोई प्रभावशाली पग उठाती तो साम्प्रदायिकता इतना उग्र रूप धारण न करती।

यह सभा आन्ध्रप्रदेश राज्य से इस बात की बल पूर्वक मांग करती है कि पुलिस को कार्य कुशल बनाने के लिये उपयोगी, आवश्यक उपाय करने की दिशा मे ठोस पग उठाये जायें। जिससे कि इस प्रकार के उपद्रवों को बल पूर्वक समाप्त कर स्थिति को नियन्त्रण में लाया जा सके और समाज विरोधी तत्वों को दबाया जा सके। सभा का विश्वास है कि इन दुर्घटनाओं की यदि अदालती जाच करायी जावे तो किस प्रकार के साम्प्रदायिक तत्व इन के पीछे क्रियाशील हैं पता लगेगा और इनका अन्त भी दुरमना ने किया सकेगा।

प्रस्तुत शान्त वातावरण को विक्षुब्ध करने में हैदराबाद के कुछेक उर्दू दैनिक व साप्ताहिक समाचार पत्र हैं जो कि उत्तेजक भाषा में घटनाओं को छापकर लोगों की साम्प्रदायिक भावनाओं को हवा देते रहते है। यह सभा आन्ध्र प्रदेश सरकार का ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहती है और मांग करती है कि ऐसी उत्तेजना उत्पन्न करने वाले पत्रो के प्रति कड़ी से कड़ी कार्यवाही करे।

औरंगाबाद का साम्प्रदायिक दंगा

सभा को यह जान कर अत्यन्त ही खेद हुआ कि औरंगाबाद में दिनांक ८-६-६८ को साम्प्रदायिक दंगा फूट पड़ा। यह सभा ऐसा अनुभव करती है कि औरंगाबाद का प्रस्तुत दंगा उस प्रयत्न का परिणाम है जो अभी मास व दो मास पूर्व तामीरे मिल्लत का अधिवेशन औरंगाबाद मे होकर साम्प्रदायिक द्वेष को बढ़ाने वाले विषैले प्रस्ताव पारित किये गये थे। तभी से औरंगाबाद का वातावरण विक्षुब्ध हो रहा था। इस दुर्घटना के स्वरूप हत्या और अग्निकांड तथा लूट आदि की दुर्घटनायें हुयीं। सभा जिनकी घोर निन्दा करती है। साथ ही सभा महाराष्ट्र सरकार से माग करती है कि इस प्रकार साम्प्रदायिक विद्वेष फैलाने वाली संस्थाओ और समाज विरोधी तत्वों के प्रति कड़ी से कड़ी कार्यवाही करे। जिससे कि इस प्रकार की दुर्घटनायें भविष्य मे न हो सकें।

आर्य नेताओं की मुक्ति

नगर के अशान्त वातावरण को दृष्टिगत रखकर आन्ध्र प्रदेश सरकार ने हैदराबाद नगर के छः प्रसिद्ध कार्यकर्ता एवं श्री छगनलाल जी, देवैया जी, बहादुरमल जी, पुरुषोत्तम रेड्डी जी, हनुमन्तराव और श्रीनिवासराव इत्यादि को नजरबन्द कर दिया है। इनका सम्बन्ध आर्यसमाज से भी अत्यन्त निकट का है और यह जनता में शान्ति स्थापना मे निरन्तर प्रयत्न शील रहे हैं। अतः आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण की अन्तरग सभा का यह मत है कि उपर्युक्त निर्दोष कार्य कर्ताओं की गिरफ्तारी सर्वथा अन्यायपूर्ण है, अतः उन्हे तत्काल मुक्त किया जावे।

(पिछले पृष्ठ का शेष)

गाय के निरपराध बछड़ा को प्रायश्चित तथा मेढ़े को यहोवा के लिए मारना क्या बाइबल की विध्वंसकारी शिक्षा नहीं है ?

घात का आदेश

'परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि अपनी अपनी जांघ पर लटकाकर छावनी मे एक निकास से दूसरे निकास तक घूम २ कर अपने भाइयों संगियों और पड़ोसियों को घात करो' (निर्गमन प. ३२-आ. २७)

ईसाइयो का परमेश्वर अपने सगे सम्बन्धियो को विनाश के लिये आदेश देता है। ईसाइयों के ईश्वर तथा ईसा मसीह दोनो के युयुत्सु प्रकृति के होने तथा मानव समाज को दूषित करने के लिये बाइबल में अनेकों प्रमाण हैं। इसलिए हमे बाइबल को स्वाध्याय करने के साथ २ मनन द्वारा सत्यासत्य की परीक्षा करके चलना चाहिये। सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने के लिये सर्वदा उद्यत रहना चाहिये। लूका की इञ्जील प. ३ आ. १६ मे लिखा है (यूहन्ना कहता है)

"मै तो तुम्हे पानी से बपतिस्मा देता हूं परन्तु वह आने वाला है जो मुझसे शक्तिमान है। मैं तो इस योग्य भी नहीं कि उसके जूते का बन्ध खोल सकू, वह तुम्हे पवित्रात्मा और आग से बपतिस्मा देगा।"

आज तक बाइबल की वेदी पर किसी भी ईसाई पादरी ने अग्नि से बपतिस्मा' न दिया और न लिया है। अग्नि से बपतिस्मा विश्व में केवल महर्षि दयानन्द जी सरस्वती महाराज ने और उनकी स्थापित की हुई "आर्यसमाज" संस्था ने ही अग्नि कुंड के सामने बैठ कर शुद्धि यज्ञ के द्वारा दिया है। वेद को ईश्वरीय ज्ञान घोषित किया है।

यूहन्ना की भविष्यवाणी ठीक प्रतीत होती है, महर्षि दयानन्दजी अवश्य उनसे शक्तिमान थे जो आग से बपतिस्मा' देते थे। अतः ईसाइयो। आर्यसमाज की पवित्र वेदी पर आकर आग से 'बपतिस्मा लो अर्थात शुद्धि कराओ। देखो, वैदिक सिद्धांत शान्तिदायक है।

"दृतेदृंहमा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्। मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे,, (यजु अध्याय ३६-मन्त्र १८)

अर्थ—'हे समस्त दुःखों और अज्ञानों के विदारक! महावीर राजन्! परमेश्वर! मुझे दृढ़ कर। मुझको समस्त प्राणीगण मित्र की आंख से देखें और मैं सब प्राणियो को मित्र की आंख से देखूं। हम सब मित्र की आंख से एक दूसरे को भली प्रकार देखा करें।"

"मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्मा स्वसारमुत स्वसा सम्यञ्चः सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया।" अथर्व वेद कांड ३-सूक्त ३० मन्त्र ३)

अर्थ—'भाई २ से और बहिन से द्वेष न करे और बहिन अपनी से और भाई से द्वेष न करे। हे प्रजाजनो! सब एकत्र होकर एक दूसरे के अनुकूल एकचित्त और एक ही उद्देश्य मे होकर कल्याण और सुखप्रद रीति से एक दूसरे के प्रति वाणी बोला करो।" कहां बाइबल की अशान्तिदायक शिक्षा और कहां वेदों की ये शान्तिदायक शिक्षा है! अतः हमें पूर्ण आशा है कि ईसाई बाइबल की विध्वंसकारी शिक्षा को त्याग कर वेदों तथा सच्छास्त्रों की उच्च शिक्षा को ग्रहण करेंगे। विदेशी मनोवृत्ति को परित्याग कर पवित्र आर्यावर्त की वैदिक संस्कृति को अपनाएंगे। हम विदेशी आकान्त ईसाई मिशनरियों से साग्रह अनुरोध करते हैं कि बाईबल की विध्वंसकारी शिक्षा का प्रचार पाश्चात्य देशों मे ही करें यहां इसकी कोई आवश्यकता नहीं यह आर्यावर्त स्वयं सब देशों का गुरु हैं। इसलिए ईसाईमत की नींव जालफरेब पर रक्खी गयी।

योशु मसीह ने मसीही मत की नींव जाल व मक्कारी, पर रक्खी थी। यह तो बाइबल मे ही स्पष्ट लिखा हुआ है (ईसा का कहना है मेरे पीछे चले आओ तो मै तुमको मनुष्यों के पकड़ने वाले बनाऊंगा। (मत्ता रचित' सुसमाचार प० ४-आ. १९

आज भी ईसाइयों का प्रचार जाल व फरेब पर आधारित है। धन और श्वेतांगियों का लोभ देकर निर्धन कामी मनचले युवकों को फसाकर विधर्मी बनाते हैं।

आवश्यकता इस बात की है कि सभी मिलकर इनके षडयन्त्र विफल बनाएं।

★

(गतांक से आगे)

१९ वीं शताब्दि के अन्त में सर सैयद अहमद मुसलमानों के बहुत बड़े नेता हो गये हैं। आजकल के इस प्रान्त की बहुत बड़ी यूनिवर्सिटी की बुनियाद उन्होंने ही डाली थी। सरसैयद अहमद खूब सूरत नहीं थे। एक मनचले गुस्ताख लड़के ने इनसे सवाल किया। "सरसैयद साहब, जब खुदा की तरफ से खूबसूरती बँट रही थी तब आप कहाँ थे?" सर-सैयद मुस्कराकर बोले, 'मै अकल की बाजार मे सैर कर रहा था।'

* * *

एक राजा साहब प्रात काल टहलने निकले, तो देखा कि एक साधु एक पत्थर पर पड़ा सो रहा है। राजा साहब बोले, "कहो साईं जी रात कैसी बीती?" साधु ने कहा, 'राजन् कुछ आप जैसी कुछ आप से अच्छी' राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ कि यह फकीर कहता है कि रात ऐसी बीती जैसी तुम्हारी राजा न पूछा, 'आपके इस कथन का क्या अर्थ है?' साधु ने उत्तर दिया, जब हम और आप गहरी नींद मे सो गये तो हम दोनो की रात एक सी कटी। न तो आपको नर्म गद्दे का अनुभव हुआ न मुझे पत्थर का, परन्तु जब जागते रहे तो आप विलास की बात सोचते रहे, और मै ईश्वर को याद करता रहा। इस प्रकार रात का कुछ हिस्सा तो हमारा आपका एक सा कटा और कुछ मेरा आपसे अच्छा।

* * *

एक सेठ साहब, जर्क बर्क कपड़े पहने हुये, सोने चांदी के जेवर से लदे हुये, अकड़े चले जा रहे थे। एक आदमी ने आगे बढ़कर उन्हे प्रणाम किया। सेठ जी ने कुछ उत्तर भी न दिया। दस कदम चलने के बाद उस आदमी ने फिर प्रणाम किया। सेठ जी कुछ न बोले। इसी प्रकार उस आदमी ने चार पांच बार प्रणाम किया तब सेठ जी ने सर उठाया, उसकी ओर देखा और पूछा "क्या चाहते हो?" उत्तर दिया मै कुछ नहीं चाहता। सेठ जी बोले बार बार प्रणाम क्यों करता है? उसने उत्तर दिया, महाराज मैं आपको धन्यवाद दे रहा हूं। सेठ जी ने आश्चर्य से पूछा, किस बात का धन्यवाद? मैने तो तुम्हे कुछ दिया नहीं? उसने नम्रता से उत्तर दिया, दिया क्यों नहीं बहुत कुछ दिया। इतने अच्छे अच्छे कपड़ और इतने कीमती जेवर आप अपने कमजोर शरीर पर लादे फिर रहे है और मैं आनन्द पूर्वक इस सुदृश्य को देख रहा हूं बोझ आप उठाते हैं और लाभ मुझको मिलता है।"

* * *

कुछ इधर की कुछ उधर की

★

जब ईसाई जगत का समस्त शासन रोम के पोप के हाथ मे आ गया। उस समय पोप को रोम को सुन्दर बनाने की चिन्ता हुई। और पोप ने धन इकट्ठा करने की एक विधि निकाली। पोप को ईसा का पार्थिव प्रतिनिधि (इस भूमण्डल का नोमाइन्दा) समझा जाने लगा। और पोप ने कुछ क्षमा पत्र वितरण कराये जिनको पादरी धनाढ्य ईसाइयों मे बांट देते थे। इस क्षमापत्रों मे लिखा होता था कि इस धनाढ्य पुरुष ने इतने रुपये धर्म खाते मे जमा कराया इनके मूल्य के अनुपात से इस पुरुष के लिये स्वर्ग मे सुविधायें सम्पन्न की जाय। इन क्षमा पत्रों के नाम Indulgance था। यह यह क्षमा पत्र दान दाता की लाश के साथ कब्र मे रख दी जाती थी। बहुत दिनों तक पादरी लोग इस प्रकार ईसाई जगत को लूटते रहे। जर्मनी की एक पादरी मार्टिन लूथर ने इस कुप्रथा के विरुद्ध आवाज उठाई। तब से मार्टिन

लूथर के अनुयायी ईसाइयों को Protestant कहते है। Protestant का अर्थ है सुधारक। यह लोग रोम के पाप को नहीं मानते। जो प्रोटेस्टेन्ट नहीं है उनको कार्थोलिक कहते हैं। कार्थोलिक ईसाइयो मे रोम के पोप का प्रभाव अब भी वैसा ही बना हुआ है।

* * *

जब नादिरशाह ने दिल्ली पर आक्रमण किया उस समय दिल्ली के मोगल गद्दी पर मुहम्मद शाह रंगीला सम्राट था। औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात मोगल वंश का बहुत बड़ा अधःपतन हुआ। मोहम्मदशाह तो रंगीला था शराब और विलासिता में फंसा रहता था। जब उसके सूबेदारों ने उसे लिखा कि नादिरशाह चढ़कर आ रहा है। उस समय वह शराब मे मस्त था। उसने उस परवाने को शराब मे डुबो दिया और कुछ चिन्ता नहीं की। जब नादिर शाह दिल्ली के निकट आ गया तो सब लोग भयभीत हो गये। फौज के अधिकारी अपना अपना सुझाव देने लगे। किसी की समझ मे नहीं आता था कि क्या किया जाय? उस समय सभा मे एक नक्काल (भाड) भी था। वह उठ खड़ा हुआ और कहने लगा, "मुझ एक अच्छा नाकोब सूझी है। दिल्ली के आगे एक छोलदारी लगा दो और मुझे दरवाजे पर बैठा दो। जब कोई आयेगा तो मैं कहूँगा, इधर मत आना, इधर जनाने रहते है।"

* * *

ईरान का एक राजा था उसका नाम था Midas उसको सोना बहुत प्रिय था। उसका राज महल सोने से भरा पड़ा था परन्तु उसकी तृप्ति नहीं होती थी। एक रात स्वप्न मे एक देव दूत ने उसे दर्शन दिया और कहा, "कोई वर माग लो।" उसने कहा, मुझे स्वर्ण बहुत प्रिय है, ऐसा वरदान दीजिये कि जिस वस्तु को छू लू सोना हो जाय।" देव दूत ने कहा, "मैने तुमको यह वर दिया, कल प्रात काल से तुम जिस चीज को छुओगे सोना हो जायगी।" Midas प्रसन्नता के मारे फूला न समाया और प्रातःकाल की प्रतीक्षा करने लगा। उस रात भर नींद भी न आयी। प्रातःकाल हुआ तो उसने ने अपना कार्य आरम्भ किया। उसकी चारपाई सोना हो गई। वह बड़ा प्रसन्न हुआ। उसके बाद उसका सेवक उसके लिये चाय का प्याला लाया। मुंह से लगते ही चाय सोना हो गयी और वह पी न जा सकी। इतने मे उसकी लड़की दौड़ी आयी परन्तु ज्यों ही उसे गोद मे लिया वह सोने की मूर्ति हो गई। जीती जागती लड़की के सामने सोने की मूर्ति का क्या मूल्य था। जो चीज खाने को आती सोना हो जाती। जो पीने को आती सोना हो जाती। सोना कितना ही मूल्यवान वस्तु हो वह दही दूध पानी रोटी आदि का स्थानापन्न नहीं बन सकता वह शीघ्र ही अपने जीवन से तंग आ गया। सारे जीवन के सुखों से वह वंचित हो गया। क्या आप ऐसा सोना लेना चाहते हैं? इसको अंग्रेजी मे कहा है The disease of gold touch अर्थात् सोने की छूत की बीमारी।

* * *

जब नादिरशाह दिल्ली आया तो उसने दिल्ली बादशाह को उपहार में एक तलवार दी और कहा उसमे यह गुण है कि एक बार मे सवार को काटती हुई ऊँट के कजावे को पार करके ऊँट को काट देती है। दिल्ली के बादशाह ने परीक्षा की और विफल हुआ। नादिरशाह ने उसी तलवार से एक चोट में ऊँट को कजावे के साथ काट दिया। नादिरशाह बोला "शमशीर हमीनस्त वले दस्त नादरी नेस्त" अर्थात् तलवार वही है परन्तु नादिर का हाथ नहीं है।

* * *

भारतवर्ष की प्राचीन राजनीति मे भी पहले दो अधिकारी थे। एक ऊंच और दूसरो नीच। ऊंच और नीच जातियों मे निरन्तर झगड़े हुआ करते थे। एक बार जब झगड़े बहुत बढ़ गये तो ब्रह्मा

★ गङ्गाप्रसाद उपाध्याय एम०ए०

एक नेता था Agrippa उसने सारों को इकट्ठा किया और कहानी सुनाई। वह Agrippa की कहानी इतिहास मे प्रसिद्ध समझी जाती है। उसने कहा एक बार पेट मे और शरीर के अन्य अवयवों मे झगड़ा हो गया। हाथ पैर ने कहा कि हम तो कमाई करते हैं और पेट केवल खाता है कुछ करता नहीं इसलिये अब हम भी कुछ कमाकर पेट को नहीं देंगे। इस प्रकार पेट का भोजन बन्द हो गया। और पेट का अन्न पहुंचना बन्द होने से हाथ पैर सूखने लगे। अब तो हाथ पैरों मे काम करने की शक्ति भी न रही। तब तो सब अवयवों की अकल आ गई और उन्होंने सोचा कि अगर हम अपना भला चाहते हैं तो पहले दूसरे अवयवों की सेवा करनी होगी। इससे उसने अपने देशवासियों को यह शिक्षा दी कि छोटी जातियां जो यह शिकायत करती है कि बड़ी जातियां काम नहीं करती और उन को सहायता न देनी चाहिए यह धारणा सर्वथा अनुचित है। यदि हाथ काम न करेगा तो पेट का खाना न मिलेगा और यदि पेट को आहार न मिले तो पेट भोजन का रुधिर बनाकर हाथ को न भेज सकेगा और हाथ दुर्बल हो जायगा। हर अवयव के जीवन का दूसरे अवयवों पर ऋण है। इस ऋण को मानने से ही शरीर की उन्नति हो सकती है। वैदिक संस्कृति मे मनुष्य जाति के चार वर्ण विभाग किये गये हैं ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य और शूद्र यह इसी आधार पर थे। ब्राह्मण ज्ञान प्राप्त करे। क्षत्री रक्षा करता। वैश्य कृषि और व्यापार और शूद्र सबकी सेवा करता था। Agrippa ने भी उसी कहानी को दुहराया है वास्तव यह कहानी बहुत पुरानी है यजुर्वेद और ऋग्वेद में यह आ रही है।

[क्रमशः]

महर्षि दयानन्द की आत्मा क्या कह रही है

न्यायात्पथः प्रविचलन्ति पदन्न धीराः

ऋषि दयानन्द के मिशन में अन्याय को स्थान मिलने से मुख्योद्देश्य (उन्नति का मार्ग) समाप्त हो जायगा

★कन्हैयालाल 'मुमुक्षु'
सिद्धांतशास्त्री, लखीमपुर खिरनु, रामपुर

प्रिय बन्धु वर्ग सिरसागंज अनेक कठिनाइयों से पहुंचने पर भी बड़ी आशायें हृदय को आह्लादित कर रही थीं बड़ी चहल-पहल थी। आगन्तुक सज्जन रङ्गमञ्च के स्वर्ण अवसर के लिए बड़े लालाइत हो रहे थे। वैदिक धर्म के दीवाने (कृण्वन्तो विश्वमार्यम्) की रट लगाते हुए समाज का भविष्य निर्माण कर आर्य समाज को भारतवर्ष की एकमात्र सुसंगठित संस्था राष्ट्र के प्रमुख और अग्र गण्य बनाने का स्वप्न देखते हुये उत्साह से आये थे। उनका संकल्प और विचार सत्य भी था क्योंकि जिस संस्था के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने कितनी बार बड़े प्रेम से विष के प्याले पीकर और अन्त में प्रसन्नता से बलिदान देकर जिसकी आधार शिला रखी। पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द की अमर शहीद श्री लेखराम जी के बलिदान तथा भारत मातः के सुपुत्र पंजाब केसरी ला० लाजपतिराय जी सरदार भगतसिंह जी ने जीवन दान देकर आर्य जाति के धर्म प्रेम देश प्रेम वीरत्व के अनुपम उदाहरण संसार के सामने उपस्थित किये। फल स्वरूप भारत में ही नहीं वरन् अमेरिका, जापान, अफरीका, मोरीशिश, जर्मन, ब्रह्मा तथा अन्य देश देशान्तरों में वैदिक धर्म की सत्यता की धाक जम गई। इसके प्रभाव से प्रभावित होकर एक आदर्श अनुसन्धान कर्त्ता विदेशी व्यक्ति श्री मैक्समूलर ने मुक्त कण्ठ से वेद और वैदिक धर्म की प्रशंसा की थी। (कृण्वन्तो विश्वमार्यम्) का स्वप्न साकार होने का पूर्ण विश्वास हो रहा था। वैदिक सिद्धात समाज के प्रत्येक व्यक्ति के आचरण में चरितार्थ हो रहा था। भारत के शासक सत्ताधिकारी भी आर्य समाज को सच्ची संस्था मानते थे किसी को स्वप्न मे भी आभास नहीं था कि ऐसी पवित्र संस्था मे ऐसा अनुचित परिवर्तन हो जायगा। क्या से क्या हुआ। जहां समाज के कर्णधार अधिकारी (आर्य सभासद्) महर्षि दयानन्द जी द्वारा निर्मित पद्धति के अनुसार त्यागी, तपस्वी, धर्मात्मा बनाये जाते थे। समाज को चलाने के लिये परम नीतिज्ञ भगवान कृष्ण ने श्रीमद्भगवतगीता में सुन्दर शब्दों में बताया है।

> यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो नरः।
> स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनु वर्तते॥

अर्थात्—जैसा २ आचरण अग्र गण्य नेता पुरुष करते हैं वैसा २ ही आचरण इतर पुरुष करते हैं इसलिये समाज का नेता बहुत श्रेष्ठ सच्चरित्र होना परमावश्यक है। जब तक इस सिद्धात को स्थान मिला बोल बाला ही रहा। परन्तु समय की क्रूर गति से पलटा खाया समाज के नेता नाना प्रकार के (संस्थावाद के) प्रलोभनो से (वैदिक सिद्धात के विपरीत) धनी मानी राज सत्ताधिकारिणी चुने गये। तब से त्यागी तपस्वी आदर्श पुरुषो का मूल्य कुछ भी नहीं रहा। ऐसी अवस्था में स्वार्थ परायणता, वैमनस्य ईर्षा, द्वेष, का होना स्वाभाविक था। पुराने महापुरुषो के त्याग तपस्या से किये हुये सारे कार्य क्रम पर पानी पड़ गया।। समाज का अस्थि पन्जर रूप ढाचा तो और बड़ा मालूम होने लगा। परन्तु आत्मा निकल गयी। फल यह हुआ कि समाज सभ्यता और आदर्श का जितना मान था दु:ख के साथ लिखना पड़ता है उतना ही आज संसार को समाज के वैमनस्य द्वारा समाज की नाना प्रकार की अनियमताओ का परिचय मिल रहा है। ऐसी अवस्था में कितनी ही संस्थाएं खोलिये, उत्सव कीजिये, प्रचार कीजिये और निर्वाचन कीजिये परन्तु उद्देश्य तो समाप्त हो रहा है। ढोंग का ढोल तो पिटता रहेगा। यथा काष्ट मयो हाथी यथा चर्म मयो मृग की किम्वदन्ति चरितार्थ हो रही है।

मेरे शब्द यदि कुछ कर्ण कटु हैं तो हाथ जोड़कर नम्रनिवेदन कर रहा हूं कि यदि वेद और महर्षि दयानन्द की तपस्या का विचार और मान हृदय मे है तो वीरता के साथ आगे आओ समाज के कार्य क्रमों अधिकारो मे त्यागी तपस्वी आदर्श पुरुषो को स्थान दो। समाज का निष्पक्षता न्याय के साथ नव निर्माण करो। शास्त्र पर विश्वास करो (यतोधर्मस्ततोजय) इसी विश्वास को लेकर महर्षि दयानन्द ने बड़े २ तूफानो और संघर्षो का डट कर निर्भयता के साथ सामना किया और वह आदर्श सफलता प्राप्त करके स्थापित किया कि जिसका दूसरा उदाहरण आज संसार मे नहीं है। शुभ संकल्प का शुभ परिणाम अवश्य होता है। अतः समाज के सत्संगो मे अन्तरंग सभाओं में सपथ पूर्वक यह प्रस्ताव पास कीजिये कि महर्षि दयानन्द और वैदिक धर्म के सच्चे भक्तो को ही आगे बढ़ाना है। इसी से महर्षि के नियम निर्मित मुख्योद्देश्य (शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति की पूर्ति हो सकेगी।

'खूब लड़ी मरदानी...... झांसी वाली रानी थी'

—डा० राज बुद्धिराज

सन् सत्तावन में एक बार फिर रानी लक्ष्मीबाई ने बरसों से जंग लगी तलवार को युद्ध भूमि मे चमका दिया था। उसकी वीरता और अदम्य उत्साह से अंग्रेजो का मजबूत सिंहासन एक-बारगी डोल उठा था। तेईस वर्ष की युवती ने हाथों में चूड़िया पहनने के बजाय मजबूती से तलवार पकड़ ली थी। पीठ से नन्हे बच्चे को बांध, मुह में घोड़े की लगाम डाले और दोनों हाथो में तलवार लेकर जब वह शत्रुओं को गाजर-मूली की तरह काट देती तो ऐसा लगता मानो साक्षात् चंडी धरा पर उतर आई हो। इस कोमलांगी युवती के साहस ने भारतीयों मे नवीन उत्साह भर दिया था और टुकडो मे बटे राजा आपसी वैर भूल कर एक हो गये।

यह वीरता रानी को बचपन मे ही मिली थी। बाल्यकाल में वीर शिवा की गाथा के प्रति इसका अनन्य अनुराग था। जब साधारण बालिका मिट्टी के घरोंदे बनाने और गुड्डे गुडियो का ब्याह रचाने में लगी रहती हैं, उस समय लक्ष्मी अपने प्रिय खेल शिकार खेलना सैन्य घेरना, दुर्ग तोड़ना और चक्रव्यूह की रचना मे लगी रहती थी। खेल २ मे ही नाना की मुहबोली बहिन छबीली ने युद्ध विद्या सीख ली थी। युद्ध कौशल और वीरता दोनों समय के साथ पनपते गए।

रानी अनिद्य सुन्दरी थी। सौंदर्य और शौर्य का अभूतपूर्व सामंजस्य रानी में देखने को मिला। इसे स्त्रियों के कर्तव्य निभाने पड़े। इस छबीली का विवाह झांसी के राजा के साथ हुआ। वैभव और वीरता का यह संगम देखने योग्य था। अपने सौंदर्य से तो इसने सभी को चकित कर ही दिया था युद्ध-कौशल और पराक्रम भी कम मनोमुग्धकारी न था। उसने महल मे ही स्त्रियो को अपनी रुचि के अनुसार सैनिक शिक्षा देनी प्रारम्भ की। अपने परिश्रम से इसने ऐसी तैयार कर ली थी जो तलवार चलाने तथा सैन्य घिराव मे पुरुष सेना से पीछे न थी। रानी कभी २ नकली युद्धों का आह्वान करती और उसकी सारी सेना अपनी वीरता के करतब दिखाती अभ्यास करते २ इस सेना मे ऐसी शक्ति आ गयी थी जो आवश्यकता पड़ने पर शत्रु को लोहे चने चबवा सकती थी। रानी की दो सहेलियां सुन्दरा और मुन्दरा इस सेना की अगुआ थीं।

मानो रानी को युद्ध का आभास बहुत पहले ही हो गया था इसलिये उसने अपनी पूरी शक्ति सैन्य संचालन मे लगा दी थी। कुछ समय पश्चात राजा का देहांत हो गया और और झांसी का कोई

(शेष पृष्ठ १२ पर)

महाराणा प्रताप की शक्ति-पूजा

★

परिस्थितियाँ ही व्यक्तित्व का निर्माण करती हैं। केवल प्रमादी एवं अकर्मण्य व्यक्ति ही परिस्थितियों के दास होते हैं, परन्तु परिस्थितियों को अपना दास बना लेने वाले पुरुषार्थी ही संसार में कुछ महत्वपूर्ण कार्य कर जाते हैं। महाराणा उदयसिंह का जन्म तलवारों की नोकों के बीच हुआ था। महान देशभक्त वीरांगना पन्ना दाई के महान त्याग के फलस्वरूप ही उदयसिंह के प्राण बचे और उन्हीं उदयसिंह से हमारे देश को जो महान रत्न प्राप्त हुआ, उसे प्रताप का साकार रूप ही कहा जा सकता है।

महाराणा प्रताप का सम्पूर्ण जीवन परिस्थितियों की विभिषिकाओं से उत्पीड़ित रहा। उनका बाल्यकाल और किशोरावस्था उनके पिता के साथ रहने के कारण प्रायः घुमक्कड़ सा रहा। किशोरावस्था समाप्ति के पश्चात् जब उन्होंने चित्तौड़ और उसके साथ अन्य किलों को अपने अधिकार में लेने के लिये प्रयत्न किया तो उन्हें अपने बालों में सघर्ष करना पड़ा। प्रताप परिस्थितियों के सम्मुख कब झुकने वाले थे। उन्होंने राष्ट्र हित के लिये अपने और परायों से युद्ध करना प्रारम्भ कर दिया।

ठीक इसी समय विदेशी मुगल शासक अपनी साम्राज्य लिप्सा के कारण राजस्थान के कई हिस्सों पर अपना अधिकार जमा चुका था। उसकी साम्राज्यवादी नीति में सहयोग देने वाले राजा मानसिंह तथा कछवाहा वंश के भारमल आदि भी थे। इतना ही नहीं, न जाने किन परिस्थितियों के वशीभूत होकर इन राजपूतों ने जोधबाई का विवाह अकबर से कर दिया? इनका अनुकरण कर अन्य साधारण राजपूतों ने भी अपनी बहिनों एवं बेटियों को मुगलों को सहर्ष सौंप दी। इतने पर भी राणा के विद्रोही राजपूतों ने, जिनमें उनके भाई शक्तिसिंह भी सम्मिलित थे, प्रताप का जमकर विरोध करना प्रारम्भ कर दिया।

'मेरे सिर में दर्द हो रहा है, इस लिये मैं मानसिंह के साथ भोजन नहीं कर सकता' उस वाक्य ने मानसिंह के सिर में ऐसा दर्द पैदा किया, जो कि हल्दी घाटी के घमसान युद्ध के रूप में परिणित हुआ। हल्दी घाटी का एक २ कण आज भी हमारी इन्हीं मूर्खताओं की हंसी उड़ा रहा है। नमन, हो उस झाला नरेश ने जिसने राणा प्रताप का मुकुट अपने सिर पर रख अपनी मृत्यु को आमन्त्रित किया। राणाप्रताप वहाँ से बाहर निकल गये। यद्यपि राणाप्रताप के प्राण वहाँ तो बच गये, परन्तु क्या उन्हें वास्तविक सुख और शांति प्राप्त हो सकी? क्या यह इतिहास प्रसिद्ध नहीं है कि लौह पुरुष राणाप्रताप ने जीवन के अन्तिम दिनों में विलासी एवं कुटिल नीति अकबर से सन्धि चर्चा करना चाही थी? परन्तु महाराजा जयसिंह के हस्तक्षेप के कारण इतिहास का यह काला अध्याय प्रारम्भ नहीं होने पाया।

आज के कुछ राष्ट्रवादी विचारक भारतीय जनता को परामर्श देते हैं कि अब हमें महाराणा प्रताप, शिवाजी, वीर बन्दा बैरागी को भूल जाना चाहिये। इससे भावात्मक एकता स्थापित होने में सहायता मिलेगी। कुछ इतिहासकारों की यह भी सम्मति है कि महाराणा प्रताप ने अकबर के विरुद्ध जो लम्बी लड़ाई लड़ी थी वह राष्ट्रीयता के सिद्धान्तों के अनुसार बिल्कुल गलत थी परन्तु वे ही इतिहासकार उपरोक्त परामर्श देते समय यह महत्वपूर्ण तथ्य भूल जाते हैं। कि मुगल अपने आपको विदेशी समझते रहे और उन्होंने भारतीयता को कभी भी नहीं अपनाया। ऐसी स्थिति में उन विदेशी शक्तियों से जो कि साम्राज्यवादी मनोवृत्ति की थी, एक महाराणाप्रताप तो क्या सैंकड़ों प्रताप भी भारतीय स्वतन्त्रता की रक्षा के लिये अपना प्रताप बताते, तो भी कम माना जाता। कुछ प्रगतिशाली तत्व भारतीय इतिहास के मध्य युगीन तथ्यों को उदारता से देखने के लिए कहते हैं उनकी दृष्टि में महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी एवं वीर बन्दा बैरागी आदि की वीर गाथायें अन्य जातियों के प्रति घृणा, हिंसा एवं प्रतिशोध की भावनाएं जागृत करती हैं? ऐसी स्थिति में क्या बाबर से लेकर औरङ्गजेब तक के विदेशी आक्रमणकारियों को क्या कहा जायेगा? क्या देश का इतिहास सही अर्थों में यहाँ के विद्यार्थियों को कोई नयी दिशा प्रदान करेगा। क्या भावी सन्तति इस इतिहास से कोई प्रेरणा ले सकेगी।

महाराणा प्रताप का संघर्ष पूर्ण जीवन का अध्ययन करते समय विलासी एवं चालाक मुगल बादशाह अकबर को कैसे भुलाया जा सकता है। अकबर ने भारतीय जनता की धार्मिक भावनाओं का लाभ उठाकर 'दीन इलाही' सम्प्रदाय प्रारम्भ कर दिया। इतिहास का विद्यार्थी होने के नाते इन पंक्तियों के लेखक को यही ज्ञात होता है कि राणाप्रताप अपने एक आदर्श के लिये अकबर के समान पथभ्रष्ट शासक से युद्ध करते रहे, जब कि अकबर केवल अपना राज्य बनाये रखने के लिये, मूर्ख बनाओ और राज्यकरो नीति का पालन कर रहा था। आश्चर्य तो तब होता है, जबकि भारतीय जनसमूह में अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिये उसे कुछ स्वार्थी राजपूत भी मिल गये। राणाप्रताप ने इन स्वार्थियों एवं विद्रोही राजपूतों की तनिक भी परवाह नहीं की और वे अपने आदर्श को अपने सम्मुख रख निरन्तर संघर्ष करते रहे।

जिस राष्ट्र में भामाशाह के समान विनम्र, उदार एवं दानवीर हों, वहाँ महाराणा प्रताप को, उनके शौर्य को कैसे दबाया जा सकता है? धन और वीरत्व जब मिल जावे, अवसर और साधन मिल जावे तब सफलता वीरों के चरण चूमने लगती है।

आज हमारे राष्ट्र में राणा प्रताप के आदर्श एवं भामाशाह के त्याग एवं बलिदान के विचारों की अत्यधिक आवश्यकता है जिस पारस्परिक फूट एवं स्वार्थ के कारण यह देश अनेकों बार परतन्त्रता एवं दरिद्रता के झूले में झूलता रहा, ऐसी कुमार्ग गामी आदतों एवं विचारों को कठोरता पूर्वक रोकना होगा इस जाति में महाराणा प्रताप के आदर्श, वीरत्व एवं संघर्ष रत रहने के विचारों का जन्म होगा। इस जाति को इसी देश के वीरों, विद्वानों एवं महात्माओं से ही शिक्षा ग्रहण करनी होगी, तभी हमारा राष्ट्र उन्नति कर सकेगा।

—मनुदेव 'अभय'
एम० ए०, इन्दौर

(शेष पृष्ठ १३ पर)

गीत

★

जागो अब सोई सदियों से ओ राम कृष्ण की सन्तानो!
ऋषि दयानन्द का तूर्य निनादित होकर तुम को जगा रहा।

यह माना जग में ज्ञान बुद्धि पर घोर तिमिर की छाया है।
अरु भ्रम हो जाता सत्य झूठ में बढ़ी ढोंग की माया है।
लेकिन 'सत्यार्थ प्रकाश' हटाकर अन्धकार की चादर को
फैलाकर सत्य प्रकाश सहज सीधा सच्चा पथ दिखा रहा।
ऋषि दयानन्द ...... ।।

तुम शांति हृदय की खोज रहे भौतिकता के बाजारों में।
उलझ हो डारविन, कार्ल मार्क्स के तत्व विहीन विचारों में।
क्यों व्याकुल तृषित अशान्त बने आओ! अर्पण कर दो जीवन।
ऋषि का पावन उपदेश जलद आकुल अन्तर की मिटा रहा।
ऋषि दयानन्द ...... ।।

जीने का सबको मोह किन्तु जीने की कला नहीं आती।
है भार रूप जीवन भू पर औ मृत्यु सदा भय दिखलाती।
पाना हो विजय मरण पर तो सीखो, अपनाओ शिक्षा लो—
ऋषि का समस्त जीवन विद्या जीवित रहने की सिखा रहा।
ऋषि दयानन्द ...... ।।

भड़कीले रङ्ग बिरङ्गे हैं छल छद्म भरे मत के डेरे।
झटकाकर समझ गवा देंगे ये सारे पन्थों के घेरे।
पछताने का क्यों करो काम, लौटो वेदों की ओर चलो,
देखो तो आर्यसमाज अमिय अध्यात्म कोष का लुटा रहा।
ऋषि दयानन्द ...... ।।

—प्रतापकुमार सक्सेना "साहित्य रत्न" गोंडा

वैदिक आदर्श

सारे विश्व का एक ही तो पिता है।
अहा सर्व संसार स्वीकारता है।
सभी बन्धु हैं एक ही जब पिता है।
कहो कौन ऐसा नहीं मानता है ॥ १ ॥

कहाता पिता जो बड़ा न्यायकारी।
सभी पुत्र प्यारे नहीं द्वेषकारी ॥
दिया धर्म जो बुद्धि से लो विचारी।
नहीं सार्वभौमत्व तो भूल भारी ॥ २ ॥

नहीं धर्म जैनी यहूदी कुरानी।
नहीं पारसी औ इसाई पुरानी ॥
सभी सम्प्रदायी मती क्यों हिरानी ?
वही धर्म है जो कहे वेदवाणी ॥ ३ ॥

नहीं वेदवाणी कहीं सृष्टि में जो।
नहीं सृष्टि में दृश्य ना वेद में जो ॥
कसौठी यही है रखो ध्यान में जो।
कसो वेद लो वेद मे धर्म है जो ॥ ४ ॥

नहीं कोई धर्मी सभी सम्प्रदाई।
सभी सम्प्रदायी बने आतताई।
लाखों वैदिकादर्श आनन्ददाई।
करे विश्व कल्याण चाहे भलाई ॥ ५ ॥

सभी बन्धु का धर्म है एक जैसे।
बनी एक ही जाति है मुख्य तैसे ॥
धुना भाट तेली पड़े नाम कैसे ?
बने व्यवसायी हुए नाम ऐसे ॥ ६ ॥

नहीं जाति में लेख है ब्राह्मणों का।
न शूद्रों व वैश्यों तथा क्षत्रियों का ॥
करो क्यों न स्वाध्याय वेदस्थलों का ?
करो ज्ञान तो जाति वर्णान्तरों का ॥ ७ ॥

व्रती वर्ण जो है अविद्या भगाता।
वही वर्ण है ब्राह्मणों का कहाता ॥
प्रजा राज में स्नेह औ मान पाता।
प्रशासी तु उद्दण्ड होने न पाता ॥ ८ ॥

व्रती वर्ण अन्याय को जो भगाता।
वही वर्ण क्षत्री भला नाम पाता ॥
जु उद्दण्डता राष्ट्र में है दबाता।
विदेशी चढ़े मार के है भगाता ॥ ९ ॥

व्रती वर्ण जो राष्ट्र में पूर्ति लाता।
वही वैश्य के वर्ण का नाम पाता ॥
धनाभाव दुर्भिक्ष को है भगाता।
प्रजा मे अहो श्रेष्ठ है नाम पाता ॥ १० ॥

नहीं जो पढ़ा है न क्षत्री बना है।
जिसे वैश्य का कर्म भी शक्य ना है ॥
उसी आर्य को शूद्र तो मानता है।
श्रमी उद्यमी है तिरस्कार ना है ॥ ११ ॥

नहीं कार्य जो ब्राह्मणों का करेगा।
तो निश्चय वही शूद्र भी हो सकेगा ॥
पढ़े शूद्र विद्वान् भी हो सकेगा।
जु श्रेणी तु पा ब्राह्मणों की सकेगा ॥ १२ ॥

अविद्या रहेगी न अन्याय होगा।
धनाभाव से ग्रस्त कोई न होगा ॥
श्रमी उद्यमी हों कहा क्लेश होगा ?
सभी राष्ट्र सेवी महानन्द होगा ॥ १३ ॥

यही साम्यवादी व्यवस्था यहीं है।
नहीं कोई ऊँचा न नीचा यहां है ॥
अहा प्रेम आदर्श कैसा यहीं है !
कहीं स्थान सङ्घर्ष को ना यहां है ॥ १४ ॥

प्रसोपा संसोपादि क्या चाहते हैं ?
बताओ कम्यूनिष्ट क्या मागते हैं ??
किसी का न स्वातन्त्र्य ये चाहते हैं।
[illegible] ॥ १५ ॥

बुरी साम्यवादी व्यवस्था तुम्हारी।
सदा चाहती है जु सङ्घर्ष भारी ॥
भली साम्यवादी व्यवस्था हमारी।
बहाये चहुं ओर हो शान्ति वारी ॥ १६ ॥

प्रभो राष्ट्र को बुद्धि दे दो हमारे।
मिटा रिश्वतखोरी औ सुशिक्षा प्रसारे।
'नरेन्द्रार्य' उद्घोष ये हों हमारे।
बनें विश्ववासी सुखी आर्य सारे ॥ १७ ॥

—नरेन्द्र. ओ३म भण्डार. मैनपुरी।

भारत 'आर्यावर्त'

(१)

विश्व गुरु हो चतुर्युगों के, हो तुम ब्रह्म-ज्ञान आगार।
शिक्षा देते थे देशों को, जो रहते सागर-मग पार ॥
गुरुवर पद आसीन देखते, आज देश की तुमको तात।
उत्पर करते रहे सदा तुम, प्रेम दया की दृष्टिपात ॥

(२)

तेरे इस पावन-आश्रम मे, उज्ज्वल-उपयुक्त विद्या पाकर।
गुरु हेतु दक्षिणा देने का, संकल्प सुदृढ़ मन में लाकर ॥
निष्कपट-विकार-हीन हिय में, शिष्यत्व भावना को लाकर।
गुरु की मर्यादा रक्षण में, वे कर देते हैं प्राण निछावर ॥

(३)

गंगा तरणिजा तटिनी बहतीं, जिनका विमल स्रोत हिम गिरिवर।
उर्वर मृदा एकत्रित करतीं, वक्ष-स्थल में बिखर २ कर ॥
रेणु रगड़ बढ़ते प्राणी जन, जिनका पौष्टिक अन्न ग्रहण कर।
प्राण समर्पित तुम पर करते, वे अपने को धन्य समझकर ॥

(४)

मुकुट लगाये अचल पुञ्ज का, जो करता मस्तक को विलसित।
सप्त द्वीप में चमक चमकती, शुभ्र ज्योति से जगत प्रकाशित ॥
ताज सुशोभित हर भूधर से, धाम वही रमणीक त्रिलोचन।
जटा जूट पर चन्द्र छटा है, जग का मोचन तपोत्पीड़न ॥

(५)

चरण कमल को नित प्रति तेरे, धोया करता है रत्नाकर।
धन धारा सी तेरे आंगन, नदियां बहती हैं निशिवासर ॥
षट्ऋतुऐं स्वागत करतीं हैं, तेरी अमर कीर्ति को गाकर।
त्रिविध पवन अश्वासन देता, शीतल मन्द सुगन्ध बहाकर ॥

(६)

सप्त सिन्धु से शोभित हो तुम, हिमगिर है तेरा उच्चभाल।
आदि सभ्यता के निधि होकर, भूमण्डल में बने विशाल ॥
शूर-वीर गम्भीर धीर हो, तुम हो शक्ति भक्ति भण्डार।
दीनबन्धु तुम दयाकोष हो, ज्ञानी, त्यागी तुम हो अपार ॥

(७)

दीन दुःखी के आश्रय तुम हो दान दुन्दुभी बजती घर घर।
लिप्सा लिये दान की उर मे, सिंहपौर आता रत्नाकर ॥
तुम आह्लादित हो उठते हो, मन में अनुपम प्रेम प्रकट कर।
हर्षित हो रस स्वर्ण राशि से, दान-पात्र देते उनका भर ॥

(८)

कहलाते थे पुरट पत्तेश, वैभव तेरा है अब अशेष।
जग नर आये याचक बनकर, द्रव्य दे दिया उन्हें विशेष ॥
बने हुये हैं वे तेरे सम, इस अमूल्य धन को पाकर।
अपना करके ज्ञान-कोष को, उन्नत होते हैं उन्नति कर ॥

(९)

शक्ति ज्ञान में इससे पहले, तुम ही थे सबसे बढ़ कर।
विजय प्राप्त की शक्ति क्षत्र मे, जिसकी चोटी रही दुधर ॥
युद्ध-कार्य मे अस्त्र सायक को, भूप बने तुम नाम अमर कर।
अविरल- विजय घोष का गर्जन, गूंज रहा है इस अवनी पर ॥

(१०)

अकथनीय महिमा सराहते, धर्म मूल कवि-कोविद किन्नर।
अमल कौमुदी कीर्ति बनाता, सोम-वदन द्युतिमान क्षपाकर ॥
तेरे ही ढिग आज आ रहा, अपना नाश समझ संसार।
विश्व गुरु पद धारण करिये, शरणागत लीजिये उबार ॥

—ओंकारसिंह 'विभाकर' उमरा, सुलतानपुर

सामाजिक समस्याएँ

समाज की आवश्यक पुकार-चरित्र निर्माण करो

— रामवीर शर्मा आचार्य
एम० ए० साहित्य रत्न, अलीगढ़

संसार में जितनी चरित्र बल की आवश्यकता है शायद ही उतनी किसी अन्य वस्तु की आवश्यकता हो चरित्र जीवन यात्रा के संचालन में संबल का काम देता है। यही मनुष्य नहीं समाज एवं राष्ट्र का मूल है। इसके अभाव में मनुष्य का व्यक्तित्व एवं महत्व समाप्त हो जाता है। चाहे जितनी अपार सम्पत्ति हो, चाहे जितने भाई बन्धु हों, पर उसमे चरित्र रूपी धन का अभाव है तो वह सब व्यर्थ है। रावण के पास अपार धन राशि थी, देवता उसके सेवक थे, सवारी के लिये पुष्पक विमान भी था पर अन्त मे उसका अधःपतन चरित्र के गिर जाने से हुआ। यदि वह पतिव्रता माता सीता का अपहरण न करता, उनको ओर बुरी दृष्टि से न देखता तो उसका विनाश कभी न होता।

इस चरित्र की रक्षा करना मानव समाज का प्रथम कर्तव्य है। किसी विद्वान् ने कहा है–

यदि आपका धन नष्ट हो गया है तो समझिये कुछ भी नष्ट नहीं हुआ। यदि स्वास्थ्य नष्ट हो गया हो तो कुछ नष्ट हो गया और चरित्र नष्ट हो गया तो समझिये कि सब कुछ नष्ट हो गया। वास्तव मे चरित्र मे एक अपार एवं अपूर्व शक्ति है। जिससे व्यक्ति अन्याय एवं अत्याचार करने का विरोध करता है। और अनेक कष्टों के समवाय को अनायास ही सह लेता है। इसलिये राजनीति के परम विद्वान् अर्थशास्त्र के मर्मज्ञ, महामुनि चाणक्य ने कहा है:—

शीलं प्रधानं पुरुषे,
　　तद्यस्येह प्रणश्यति।
नतस्य जीवतेनार्थं,
　　न धनेन बन्धुभिः।
वृत्तं यत्नेन संरक्षेत,
　　वित्तमायाति याति च।
अक्षीणोवित्ततः क्षीणः,
　　वृत्ततास्तु हतो हतः।

अर्थात् मनुष्य में चरित्र ही प्रधान होता है। वह चरित्र जिसका नष्ट हो जाता है, उसके धन, भाई, बन्धु व जीवन से कोई लाभ नहीं। इसलिये इस चरित्ररूपी धन की सदा रक्षा करनी चाहिये. क्योंकि धन तो आता है चला जाता है। धन से रहित मनुष्य निर्धन नहीं माना जाता पर चरित्र से रहित मनुष्य का जीवन तो व्यर्थ ही हो जाता है।

सभी ऋषि, मुनि और विद्वान् चरित्र की प्रशंसा करते है। धर्म ग्रन्थ इसके गुणों से भरे पड़े हैं जिन्होने चरित्र का पालन किया। उन्होंने संसार के महत्वपूर्ण पदों को पाया, सुख साम्राज्य को भोगा और यश के भागी बने। दुश्चरित्रता की सभी निन्दा करते हैं। और चरित्र का पालन करना ही धर्म का पालन करना है। महाराज मनु जी ने कहा भी है —

श्रुति स्मृति सदाचार,
　　स्वस्य च प्रियमात्मनः।
एतच्चतुर्विधं प्राहु,
　　साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम्।

चरित्र को प्राचीन काल से ही धर्म का अंग माना गया है। यह चरित्र क्या वस्तु है? इसमें कौन-कौन से विशेष गुण हैं। जिनसे मनुष्य का गौरव बढ़ता है। चरित्र के अन्तर्गत वे सभी गुण आ जाते। जिनकी जीवन साज के संचालन मे आवश्यकता होती हैं। उनके बिना मनुष्य का जीवन व्यर्थ है। चरित्र की परिभाषा देते हुये हिन्दी साहित्य के विद्वान् लेखक स्व० श्री गुलाबराय एम० ए० ने कहा है। "चरित्र उन गुणों का समूह है जो हमारे व्यवहार से सम्बन्ध रखते हैं। दार्शनिक बुद्धि, वैज्ञानिक कौशल, काव्य की प्रतिमा ये सब वांछनीय हैं परन्तु ये हमारे चरित्र से सम्बन्ध नहीं रखते। इस जीवन को सुखी एव शान्ति मय बनाने के लिये जो भी सद्गुण आवश्यक हैं उन्हें हम चरित्र के अन्तर्गत मान सकते हैं। सत्य भाषण दया, दान, क्षमा, परोपकार, कर्तव्य परायणता, मधुर भाषण ये सभी गुण जीवन यात्रा की सफलता में आवश्यक हैं। और वे ही चरित्र निर्माण के आवश्यक तत्व हैं।

संसार में जिन्होंने उन्नति की है और जिन्होंने उच्च पद प्राप्त किया है, वे सभी चरित्रवान् थे। महर्षि दयानन्द लोकमान्य तिलक, गोखले, महामना मालवीय' सुभाषचन्द्र बोस एवं महात्मा गांधी आदि महापुरुषों को आज कौन नहीं जानता होगा। इन्होने चरित्र बल से ही वे महान् कार्य किये जिनसे उनका यश आज भी संसार में अमर है। पराधीनता पाश मे निबद्ध भारत माता को म० गांधी ने अपने चरित्र बल से ही किया। भारत माता चरित्रवान व्यक्तियों को पाकर अपने आपको धन्य समझती है।

दुश्चरित्र व्यक्ति का समस्त संसार मे अपमान होता है, दुःख भोगता है. अपकीर्ति प्राप्त करता है और रोगी रहता है। वह सदैव दूसरों का दास बना रहता है। उनका अपना कोई व्यक्तित्व नहीं होता। सद्गुणो के अभाव मे सर्वत्र वह दूर किया जाता है। इसी बात को मनु ने स्पष्ट करते हुए कहा है—

दुराचारो हि पुरुषो
　　लोके भवति निन्दित.।
दुःख भागी च सततं,
　　व्याधितो ऽल्प पुरेव च।

अत्याचारी रावण एवं कंस आदि आज भी संसार मे निन्दनीय माने जाते हैं। जनता उनका नाम लेना भी पाप समझती है। चाहे मनुष्य जितना ही विद्योपार्जन करले, धन वैभव प्राप्त करले यदि वह चरित्र हीन है तो उसका कोई महत्व नहीं, उसकी कोई सहायता नहीं कर सकता, क्योंकि 'परलोके धनं धर्म'। वह धर्म चरित्र द्वारा ही होता है। वेद शास्त्रों का अध्ययन भी दुश्चरित्र व्यक्ति का कल्याण नहीं कर सकते। वेदों में कहा है:–

आचार हीनं न पुनन्ति वेदा,
　　यद्यप्य धीताः सहषड्भिरगैं।
तं मृत्युकाले मततं त्यजन्ति,
　　नीडं शकुन्ता इव जातपक्षा·

चरित्र हीन व्यक्ति का कल्याण नहीं हो सकता। चाहे उसने अंग सहित वेदों का अध्ययन ही क्यों न कर लिया हो। उसको मृत्यु के समय वे इस प्रकार छोड़ देते हैं जैसे पंख निकल आने पर पक्षी अपने घोंसले को छोड़ देते हैं।

पर दया, क्षमा, कर्तव्य शीलता आदि चरित्र गत प्रधान गुणो का प्रादुर्भाव कब होता है? इसकी उपयुक्त आयु कौन सी है? विचार करने पर ज्ञात होता है कि बाल्यावस्था ही चरित्रवान् बनने का सबसे उत्तम तथा उपयोगी काल है जैसे छोटे पौधे को हम जिस ओर चाहे उस ओर मोड़ सकते हैं पर बढ़े पौधे को कभी नहीं मोड़ा जा सकता वैसे ही बालको को भी आप जिस ओर प्रवृत्त करना चहें उस ओर प्रवृत्त कर सकते है। उन्हे फिर जीवन पर्यंत बदला नहीं जा सकता।

आज देश में भ्रष्टाचार फैल रहा है। अन्याय और अत्याचार बढ़ रहा है। छात्रो मे अनुशासनहीनता फैल रही है चोर बाजारी का सर्वत्र बोलबाला है। बाजार मे कोई वस्तु शुद्ध नहीं मिलती प्रत्येक व्यक्ति अपना स्वार्थ सिद्ध करने मे व्यस्त है। राष्ट्रीयता के स्थान पर प्रान्तीयता एवं साम्प्रदायिकता की धूम है। इन सब का मूल कारण चरित्र का अभाव ही तो है। आज प्रत्येक क्षेत्र में शिकायत आ रही है कि राष्ट्र मे उत्पादन नहीं बढ़ रहा, देश की प्रगति रुक रही है पर इस भ्रष्टाचार के रोकने का कोई प्रयत्न नहीं करता। देश का विकास एव चरित्र-निर्माण के लिये निम्न लिखित सुझाओं पर ध्यान देना आवश्यक है:—

दण्ड की व्यवस्था—भ्रष्टाचार फैलाने वा चोर बाजारी करने वाले तथा रिश्वत लेने वाले कर्मचारियो को पदावनत किया जाय। कठोर शारीरिक एव आर्थिक दण्ड दिया जाय जिससे अन्य लोगों को भी ज्ञात हो कि बुरे कर्म का परिणाम बुरा होता है।

उत्तम मनुष्यों को पुरस्कार-जो कर्मचारी अपना काम ईमानदारी से करते हैं। अपने काम को समय पर करते हैं। समय को व्यर्थ बरबाद नहीं करते। जनता को कष्ट नहीं पहुंचाते। ऐसे ईमानदार एवं परिश्रमी व्यक्तियों को पुरस्कार दिया जाय और पदोन्नत किया जाय।

नैतिक शिक्षा—शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन किया जाय। अल्पायु बालकों को नैतिक शिक्षा दी जाय जिससे उनमें माता पिता गुरुजन के प्रति आदर, धर्म में रुचि स्वार्थ एवं दलबन्दी का त्याग एवं देश भक्ति की भावना का पूर्ण रूपेण

(शेष पृष्ठ १३ पर)

कुछ इधर की कुछ उधर की

पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय

जब स्वामी जी मूर्ति पूजा का खण्डन करते थे तो प० ने कहा मैं शास्त्रार्थ कर सकता हूं परन्तु सामने आने की हिम्मत नहीं पड़ती। स्वामी दयानन्द ने कहला भेजा बीच मे पर्दा डाल लो।

* * *

हजरत अली से एक आदमी ने पूछा। इन्सान काम करने में स्वतन्त्र (खुद मुख्तार) है या परतन्त्र (गैर आजाद)। अली बोले सीधा पैर उठाओ उसने उठा लिया। फिर उन्होंने कहा अब बायां उठाओ वह न उठ सका। अली ने कहा यही तुम्हारे प्रश्न का उत्तर है।

* * *

न्याय दर्शन ६ दर्शनों मे एक प्रसिद्ध दर्शन है। इसके लिखने वाले गौतम, इनका दूसरा नाम अक्षपाद, अक्षपाद का का अर्थ है, वह मनुष्य जिसके पैरों मे आंखें हो। कहते हैं कि उन्होंने बहुत तप किया था। फलस्वरूप उनके पैरों मे आंखें बन गई यह कहानी मनगढ़न्त और अर्थ शून्य है बात यह है कि गौतम थे फिलास्फर, यह हर समय सोच मे मग्न रहते थे और चलने समय भी इनकी आंखें नीचे को रहती थी जिससे कोई विक्षेप उत्पन्न न हो।

* * *

प्रसिद्ध वैयाकरण पाणिनी की अष्टाध्यायी मे १४ छोटे छोटे सूत्र हैं जिन पर समस्त अध्यायी का आधार हैं यह सूत्र महेश्वराणि सूत्राणि कहलाते हैं। कहावत है कि सृष्टि के आरम्भ में शिव जी ने एक डमरू बजाया। उनमें से यह १४ सूत्र निकल पडे। बात यह है पुराने जमाने में महेश्वर बहुत बड़ा वैयकरण था। उसने यह १४ सूत्र रचे। दूसरे वैयाकरणों ने महेश्वर के सम्मानार्थ इन सूत्रों में कोई परिवर्तन नहीं किया। और वह आज तक महेश्वर सूत्र कहे जाते हैं।

* * *

एक दिन मेरी पत्नी ने पूछा कि यदि आपका कोई पुरुष मित्र आवे तो मै उसे किस नाम से सम्बोधित करूं। मैंने उत्तर दिया कि प्रायः स्त्रियाँ दूसरे पुरुषों के लिए भाई जी कहा करती है। कहने लगी बहन जी कहें तो क्या बुराई है? मैने कहा पुरुष के लिये बहन कौसे कहा जा सकता है। उत्तर दिया श्री तुलसीदास जी ने यह लिखा है।

अर्थ यह है—उससे बडी पतिव्रता वह स्त्री है जो अपने पति को छोड कर संसार भर के पुरुषों को स्त्री समझती है।

* * *

बंगाल में एक मुसलमान थे। उनका नाम था मख्दूम। उनकी दाढ़ी कुछ अजीब तरह निकली हुई थी। किसी ने पुंछा क्या नाम है? कहने लगे मख्दूम। बंगाली बोल पड़ा, यथा नाम तथा गुण मुख, दुम।

* * *

एक बार बगाल के नवाब से कुछ मुसलमान मौलवियों ने यह आग्रह किया कि वह अपने हिन्दू वजीर को मुसलमान हो जाने पर बाधित करे। नवाब उदार चरित्र, वह किसी प्रकार राजी नहीं हुये। मौलवियों ने कुछ रुपया देकर कुछ पंडितों को अपनी ओर मिला लिया उन्होंने संस्कृत शास्त्रों को देख कर यह नियम निकाला कि 'घ्राण अर्ध भोजनम्' इसका अर्थ यह है कि सूंघना आधे खाने के बराबर होता है। एक दिन दीवान साहब नवाब के पास बैठे हुये थे, नवाब के खाने के लिये खिचडी आयी।

विनोद-बिन्दु

खिचडी में से मुश्क आदि बहुमूल्य सुगन्धो की लपटें उठ रही थीं। मौलवियो ने पूछा दिवान साहब खिचड़ी कैसी है? दीवान साहब बोले, बड़ी सुगन्धित है। पंडितों को अवसर मिल गया, उन्होंने प्रसिद्ध कर दिया कि दीवन साहब आधे मुसलमान हो गये। क्योंकि उन्होंने खिचड़ी को सूंघ लिया। दीवान साहब थे जबर्दस्त। वह डटे रहे और पंडितों के आन्दोलन का कोई प्रभाव अपने ऊपर न पड़ने दिया। यदि बीसवीं सदी का आर्यसमाजी होता तो पंडित जी से पूंछता। पाखाना बदबूदार होता है कि नहीं? और इसके सूंघने वाले आधे सुअर हैं कि नहीं।

* * *

१५ वीं सदी में इंग्लैण्ड के एक स्कूल का टीचर (Teacher) वहाँ से कहीं चला गया और बडा शोर हुआ। स्कूल का एक बहुमूल्य पर्दा फट गया। टीचर बहुत नाराज हुये। एक लड़के पर सन्देह हुआ। उसे खूब पीटा गया। वह लडका निर्दोष था जिसका अपराध था वह खड़ा देखता रहा उसका साहस न हुआ कि अपना दोष स्वीकार करके उस निर्दोष को बचा लेता। बात छोटी थी। आयी और चली गई। मुद्दतें बीत गयीं। १७ वीं सदी के मध्य मे बडा विप्लव हुआ। राजा को प्राण दण्ड दे दिया गया जिसका नाम प्रथम चार्ल्स था। शासन के लिये एक शासन सभा बनायी गयी जिसे "प्रोटेक्टोरेट" कहते है। Cormwell संरक्षक हुआ। उसने शत्रुओं को पराजित किया। कैदियों की एक टोली आयी जिनको प्राण दण्ड देना था। अधिकारी था वही लड़का जो दोषी होते हुये भी बच गया था। उस अधिकारी ने उस कैदी को पहचाना। अरे यह तो वही है जिसने मेरे लिये बेंत खाये थे। प्राण दण्ड का समय नियत हो चुका था केवल एक दिन बाकी था। Cormwell लंदन में था जो उस स्थान से बहुत दूर था। अधिकारी ने कुर्सी छोड़ दी और बड़े तेज घोडे पर सवार होकर रवाना हो गया। Cormwell बड़ा सख्त था। कोई क्षमा की आशा न थी फिर भी यत्न तो करना ही चाहिये यह मनुष्य बिना विश्राम लिये ठीक समय पर Cormwell के पास जा पहुंचा और मिलने की आज्ञा चाही Cormwell बोला। अजी साहब ऐसी क्या बात थी जो आप इतना परेशान हुए? उसने उत्तर दिया एक करजा चुकाना था। और सब हाल कह दिया। Cormwell को यह शुभ कामना देखकर तरस आगया और आज्ञा दी कि तुम अपने मित्र को न मारो।

* * *

पंडित लेखराम मुसलमानों से बहुत शास्त्रार्थ किया करते थे। एक बार खबर मिली कि अमुक स्थान पर मुसलमान तैयार हैं। कोई आर्य उपदेशक नहीं है। पंडित लेखराम गाड़ी में बैठ गये। यह न पूंछा कि गाड़ी अमुक स्थान पर ठहरती है कि नहीं? जब स्टेशन आया तो झट से कूद पड़े। चोट लग गई। लोगों ने समझा कि जिस संस्था के ऐसे सरगर्म उपदेशक हों उसके पराजय का प्रश्न ही नहीं उठता।

* * *

कहते हैं कि जापान में एक ईसाई पादरी प्रचार कर रहा था। बाइबिल में लिखा है कि यदि कोई एक गाल पर तमाचा मारे तो दूसरा गाल भी उसके सामने कर दो। एक आदमी था बहुत ताकतवर। उसने कहा एक गाल सामने करो उसने जोर से तमाचा मारा कि खून निकलने लगा। पादरी ने दूसरा गाल भी पेश कर दिया। वह आदमी दूसरे ही दिन ईसाई हो गया।

* * *

नैपोलियन बड़ा लड़ाकू था। एक दिन उसके एक अंग्रेज मल्लाह को देखा जो नाव की टूटी लकड़ियां जोड़ रहा था। नैपोलियन ने पूंछा क्या कर रहा है? उसने कहा एक नाव बनाऊंगा और इग्लैण्ड जाऊंगा। वह कहने लगा इतनी छोटी नाव समुन्दर में कैसे चलेगी? उत्तर मिला जी नहीं मालूम इग्लैंड तो जाना ही है। नैपोलियन ने कहा "क्या वहाँ तुम्हारी कोई प्रेमिका है जिसे देखने के लिये तुम इतनी विपत्ति का सामना कर रहे हो?' बोला नहीं मेरी माँ मुझ बहुत प्यारी है। मै उसे देखे बिना नहीं रह सकता। नैपोलियन का हृदय गद्गद् हो गया। उसने आज्ञा दी कि इसको सुरक्षित इंग्लैंड पहुचा दो।

* * *

१८ वीं और १९ वीं सदी में यूरोप के राज्यों में यह फैशन चला कि अपने अपने देश की प्रजा को सुशिक्षित करना चाहिए। आस्ट्रिया की महारानी का नाम था (Maria The Rapsa) उसने भी अपने एक शिक्षाध्यक्ष Diractor of Education नियत कर दिया। यह बहुत बुद्धिमान और ईमानदार आदमी था। दो वर्ष के बाद उसने महारानी से कहा। श्रीमती जी! मै बहुत यत्न करता हूं फल कुछ नहीं निकलता। वह बोली तुम हो मूर्ख। मैंने तुमको शिक्षा के प्रचार के लिये नहीं नियत किया। तमाशे के लिये किया है। यदि प्रजा शिक्षित हो गयी तो मुझे कौन तख्त पर रहने देगा।

* * *

इंगलैंड के एक बड़े सज्जन थे। उस समय कार्ड और लिफाफों का रिवाज नहीं था। पत्र बैरंग भेजे जाते थे। और पैसा उसको देना पडता था जिसके नाम पत्र होता था। एक सज्जन खड़े हुये थे डाकिया आया उसने एक लड़की को पत्र दिया। लड़की ने उलट फेर कर देखा और यह कह कर वापस कर दिया कि मेरे पास पैसे नहीं हैं। इस आदमी ने पैसे देकर पत्र को छुडा लिया। लडकी ने कहा 'आपने व्यर्थ कष्ट किया। मेरे और मेरे भाई के बीच में यह समझौता है कि जब तक यह कोरे पत्र आते रहेंगे हम समझेंगे सब ठीक है"। इस महापुरुष ने पालियामेंट में बड़ा आन्दोलन किया और वर्तमान काल के टिकट लिफाफे और पोस्टकार्डों का रिवाज जारी किया। (क्रमशः)

नास्तिक को मुंहतोड़ उत्तर

(ईश्वर और धर्म को न माननेवाले घोर नास्तिक से कैसे करारी झड़प हुयी और उसको मुंह तोड़ उत्तर देकर उसकी बोलती बन्द कैसे की गयी ? पिलखुवा में वयोवृद्ध आर्यसमाजी नेता महामहोपदेशक पं० श्री रामजी लाल शास्त्री आत्रेय जी के महत्वपूर्ण प्रवचन का सारांश]

पिलखुवा में भारत के सुप्रसिद्ध आर्य विद्वान गुरुकुल सिकन्दराबाद के महामहोपदेशक, ७८ वर्षीय वयोवृद्ध पं० श्री रामजीलाल आत्रेय जी पधारे थे। आपका लाला उमरावसिंह की धर्मशाला में नास्तिक कम्युनिस्टों के विरोध में बड़ा ही महत्वपूर्ण भाषण हुआ था। जिसे सुनकर सभी बड़े प्रसन्न और बड़े प्रभावित हुये थे। आपके महत्वपूर्ण प्रवचन का सारांश हमने लिख लिया था कि जो यहां पर दे रहे हैं। आशा है पाठक इसे बड़े ही ध्यान से पढ़ने की कृपा करेंगे और इसमें जो भी गलती रह गई हो वह सब हमारी ही समझेंगे। माननीय आत्रेय जी की नहीं।

घोर नास्तिक से हमारी करारी झड़प क्या हुई। ? सज्जनों पिछले दिनो मै जब आपके इस कस्बे पिलखुवा मे आया था तो मुझे उस समय वहां पर एक बहुत बड़े घोर नास्तिक कम्युनिस्ट से मिलना हुआ था जो कि ईश्वर धर्म कर्म वेद शास्त्र आदि किसी को भी नही मानता था और घोर कट्टर नास्तिक था। उससे मेरी बातें हुई थीं तो उसने मुझसे स्पष्ट शब्दों में यह कहा था कि मै ईश्वर को, धर्म कर्म को, वेद शास्त्रों को किसी को भी बिल्कुल नहीं मानता हू। और ईश्वर नाम की इस ससार में कोई वस्तु नहीं है और यह सब ईश्वर की और धर्म की बातें स्वार्थी मनुष्यों ने बनाली है।

मुझे उस नास्तिक मनुष्य को देखकर बड़ा घोर दुःख हुआ कि यह जाति का हिन्दू होकर और धर्म प्राण ऋषियों के देश भारत में जन्म लेकर अब ब्राह्मण घर में उत्पन्न होकर फिर भी यह ईश्वर को, धर्म को नहीं मानता है और रूस और चीन के गीत गाता है और नास्तिक बना हुआ है। इस प्रकार ऋषियों के देश हमारे इस भारतवर्ष में हजारों लाखों ऐसे २ घोर नास्तिक पैदा हो गये हैं कि जो आज खुले रूप में यह कहते है कि ईश्वर और धर्म कुछ नहीं है यह कितने घोर दु:ख की बात है! मैंने इस घोर नास्तिक ब्राह्मण नवयुवक से प्रश्न किया कि अरे नास्तिक तू मुझे यह तो बता कि तू यदि यह कहता है कि ईश्वर नहीं है और मैं ईश्वर को नहीं मानता और मैं उस ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास नहीं करता तो फिर इस ससार का बनाने वाला कौन है और फिर इस समस्त संसार का रचयिता कौन है और इस संसार को किसने बनाया है ? नास्तिक हां प० जी मैं ईश्वर को नहीं मानता और यह ससार ईश्वर ने नहीं बनाया है यह संसार अपने आप बन गया है। मैंने कहा-प्रिय मित्र क्या बिना किसी के बनाये हुये क्या कभी कोई चीज अपने आप भी बना करती ? क्या कभी आज तक इस ससार में ऐसा कभी हुआ है ? यह सामने देख मिट्टी का घड़ा है बता क्या यह मिट्टी का घड़ा बिना किसे के बनाये अपने आप बन गया ? नहीं यह मिट्टी का घड़ा अपने आप नहीं बना इसके बनाने वाली कोई चेतन सत्ता अवश्य है जिसका नाम कुम्हार है और जिसने इस मिट्टी के घड़े को बनाया है यह मेरे सामने घड़ी रखी है क्या यह घड़ी अपने आप बिना किसी के भी बनाए हुये बन गई ? और इस घड़ी को किसी ने भी नहीं बनाया है ? नहीं २ इस घड़ी को किसी चेतन प्राणी ने अवश्य बनाया है तभी यह घड़ी बनी है। यह सामने लाउडस्पीकर है क्या यह लाउडस्पीकर भी बिना किसी के बनाये हुए अपने आप बन गया ? नहीं-नहीं इसे किसी न किसी कारीगर ने अवश्य बनाया है तभी यह लाउडस्पीकर बना है इसके बनाने वाला कोई न कोई प्राणी अवश्य है। इसी प्रकार छोटी २ चीजों को भी कोई न कोई बनाने वाला अवश्य होता है बिना किसी के बनाये हुये जब यह छोटी २ चीजें भी नहीं बन सकतीं तो भला इतने बड़े संसार को किसी ने भी नहीं बनाया और यह इतना बड़ा संसार अपने आपही बन करके खड़ा हो गया यह भला कैसे माना जा सकता है ? बता नास्तिक यह सूर्य किसने बनाया ? यह चन्द्रमा किसने बनाया ? यह समुद्र किसने बनाया ? यह ठीक समय पर सूर्य निकलता है और ठीक समय पर छिप जाना और सर्दी गर्मी अर्थात् ऋतु का ठीक समय पर नियमानुकूल होना यह सब का बड़ा ही सुचारू रूप से हो रहा है यह सब कौन कर रहा है! इसे इस प्रकार से कौन चला रहा है। क्या यह सब अपने आप ही हो रहा है ? बिना उस ईश्वर के इसे कौन बना सकता है और कौन सुचारु रूप से चला सकता है ? यह सब उस जगनियन्ता जगदाधार प्रभु का ही कार्य है। उस प्रभु के बिना एक पत्ता तो भी नहीं हिल सकता। जिस प्रकार बिना बिजली के बल्व में प्रकाश नही आ सकता और जिस प्रकार बिना बिजली के यह लाउडस्पीकर नहीं बोल सकता इसी प्रकार बिना उस ईश्वर की सत्ता के यह संसार एक क्षण भी तो नहीं चल सकता है और न ही यह ससार बन सकता है।

नास्तिक—नहीं २ हम ऐसा नहीं मानते कि यह ससार का बनाने वाला कोई ईश्वर है और इस संसार को कोई ईश्वर चला रहा है ? मैं-यदि संसार को उस ईश्वर ने नहीं बनाया और यदि इस संसार का संचालन वह ईश्वर नहीं कर रहा है तो फिर बताओ कि इस ससार को किसने बनाया है और इसका सचालन कौन कर रहा है।

नास्तिक—ईश्वर है तो फिर वह तुम्हारा ईश्वर दीखता क्यो नहीं है ? यदि वास्तव मे वह ईश्वर है तो सबको वह ईश्वर दिखलायी देना चाहिए। ईश्वर यदि होता तो क्या वह ईश्वर सबको दिखलायी नहीं देता ? ईश्वर नहीं है यह इस बात का प्रमाण है कि वह किसी को कहीं भी नहीं दीखता। यदि तुम्हारा ईश्वर होता तो वह अवश्य ही दिखलाई देता।

मैने उत्तर दिया-प्रिय मित्र ईश्वर है और अवश्य है और यदि वह ईश्वर नहीं दिखलायी देता तो भी वह ईश्वर है।

नास्तिक-जब वह ईश्वर नहीं दिखलायी देता तो फिर वह ईश्वर है इसमे आपके पास क्या प्रमाण है ? ईश्वर होता तो वह दिखलायी क्यों नहीं देता ?

मै-क्या जो चीज हमें नेत्रों से नहीं दिखलायी देती वह चीज नही होती क्या नास्तिक तू इस बात को मानता है और स्वीकार करता है ? क्या जो चीज है उसका दिखलायी देना भी आवश्यक है नहीं तो वह चीज नहीं है तू ऐसा मानता है ?

नास्तिक—जी हां मैं ऐसा माना हू कि जो चीज है वह अवश्य दिखा[ई] देनी चाहिये तभी उसका अस्तित्व मान[ा] जा सकता है अन्यथा नहीं।

मैं—सुन नास्तिक मैं तुझे आज य[ह] सप्रमाण सिद्ध करके दिखलाता हूं कि [जो] चीज आंखों से नहीं दीखती वह [न] दीखने पर भी अवश्य होती है। उल्लु[ओं] को और चमगादड़ों को कभी भी [दिन में]

लेखक—

★भक्त रामशरणदास, पिलखु[वा]

नेत्रों से सूर्य नहीं दिखलाई देता [।] क्या फिर यह मान लिया जाय कि सू[र्य] नहीं है ? क्या इसी प्रकार यदि नास्ति[क] उल्लुओं को ईश्वर नहीं दिखलायी दे[ता] तो क्या वह ईश्वर नहीं रहता ? ए[क] छोटा सा बच्चा अपनी मां के पास भाग करके आता है और अपनी मां [से] कहता है कि मां मुझे जल्दी से तू [दूध] पिला या तू मुझे जल्दी से रोटी खि[ला] मुझको इस समय बड़ी जोर की भू[ख] लगी है। मां कहती है कि बेटा तू मु[झे] अपनी भूख दिखा ? बालक कहता कि मां भूख लगी तो अवश्य है पर तुझे अपनी वह भूख दिखा नहीं सकता। यह भूख अनुमान की चीज हैं यह भू[ख] नेत्रों का विषय नहीं है। अब क्या [हे] नास्तिक क्या जो उस बालक को भू[ख] लगी है वह भूख न दीखने पर भी क[्या] वह भूख नहीं है ? यदि वह भूख है [तो] फिर तेरा यह कहना सत्य कहां रहा [कि] जो वस्तु दीखती है वही होती है औ[र] जो नही दीखती वह नहीं होती ?

एक ने कहा कि मिश्री बड़ी मीठ[ी] है तो दूसरे ने कहा मिश्री का मिठा[स] आंखों से दिखा। तो क्या मिश्री [का] मिठास कोई आंखों से दिखा सकता है[?] यदि कोई मिश्री का मिठास आंखो [से] नहीं दीख सकता तो क्या उसका य[ह] कहना कि मिश्री ही गलत है ? [या] मिठास नाम की कोई वस्तु नहीं है[?] नहीं २ मिठास नाम की वस्तु अवश्य [ही] है पर वह खाकर और चखकर ही अनु[भ]व करने की वस्तु है वह देखने [की] वस्तु नहीं है।

(क्रमशः)

श्री जी० जी० फील्ड और पं० शिवदयालु जी का मांस, मदिरा व जूआ संबंधी संवाद !!

सन १९३६—जब प्रथम बार भारत में औपनिवेशिक स्वराज्य की स्थापना हुई थी, की बात है कि गढ़मुक्तेश्वर (मेरठ) के ऐतिहासिक कार्तिकी मेले मे जूए एवं शराब के विरुद्ध भारी अभियान जिला कांग्रेस कमेटी मेरठ की ओर से श्री पं० शिवदयालु जी प्रधान जिला की देख रेख मे चालू किया गया था। लगभग १०० स्वयं सेवक मेरठ कांग्रेस शिविर से इस अभियान मे भाग ले रहे थे। उन दिनों श्री जी० जी० फील्ड मेरठ जिले के सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस थे और मेले से बाहर पक्के कुयें पर अपने कैम्प पर आये हुए थे। आपने अपने विशेष आदमी को मेले के कांग्रेस शिविर में पंडित जी को बुलाने के लिये भेजा। सायं समय पंडित जी साहब से मिलने उनके शिविर मे गये। पता पाते ही साहब टार्च लिये अपने डेरे से बाहर पंडित जी की अगवानी करने के लिये आये और डेरे में ले जाकर अंगीठी के धौरे कुर्सी पर बैठाया और चाय पान कराते हुये निम्न प्रकार चर्चा चलाई:—

जी. जी. फील्ड—आप शराब के विरुद्ध क्यो अभियान चला रहे हैं इससे तो मनुष्य अपनी थकान दूर करता और जीवन मे स्फूर्ति लाभ करता है।

पंडित जी-शराब आदि नशे जीवन शक्ति की वृद्धि की अपेक्षा उसका ह्रास करते हैं, इसी प्रकार मानव की चेतना को प्रबुद्ध करने के स्थान मे उसको निर्बल बनाते हैं। मांदे थके घोड़े के चाबुक मारने से वह गर्दन हिलाता है और तेज दौड़ने लगता है परन्तु यह चाबुक उसमे जीवन शक्ति का संचार नहीं करता और न उसके अन्दर स्फूर्ति उत्पन्न करता है, अपितु अन्दर की शक्तियो को कुछ क्षण के लिये उद्वेलित कर देता है। जिसके परिणाम स्वरूप वह अधिक थक कर चलने में ही असमर्थ हो जाता है।

जी. जी. फील्ड—यदि शराब बुरी बात होती तो महात्मा ईसा इसका क्यों स्वयं सेवन करते और क्यों चर्चों में पूजा बलिदान के समय शैम्पियन शराब का प्रयोग किया जाता।

पंडित जी—बड़े आदमियों मे सारे गुण ही नहीं होते, कोई न कोई दोष भी हो ही सकते हैं। हमें गुण का ग्रहण करना चाहिये दोषों का नहीं। ईसा मसीह महान् थे और अपने समय में उन्होंने समाज की अच्छी सेवा की किन्तु मदिरा पानादि दोषों से वह ऊपर न उठ सके। हमे यह देखना है कि शराब वास्तव में स्वास्थ्य के लिये हानिकर है या नहीं। रही चर्चो में शैम्पियन शराब के प्रयोग करने की बात सो पादरियो का मसीह का शराब पीने मे अन्धानुकरण करने के कारण है। पूजा बलिदान मे शराब के स्थान पर दाखरस, खजूर रस अथवा मधु का प्रयोग किया जा सकता था।

जी. जो. फील्ड-शराब न पीने की आज की बात मैं मान गया और आज से कभी शराब नहीं पीऊँगा और आप के इस अभियान मे पूरा सहयोग दूगा। किन्तु आप मांस खाने का क्यो विरोध करते हैं?

पंडित जी-मास तो मानवीय भोजन ही नहीं है, यह तो सर्वसाधारण पशुओं व पक्षियो तक का भी आहार नहीं, केवल कुछ विशेष तमोगुणी पशु व पक्षी इसको खाते हैं। मांस प्राण शक्ति एवं सहनशक्ति का क्षय करने वाला और मानव की सात्विक वृत्तियों का विनाश कर उसको तमोगुणी जन्तु बनाने वाला है? मांस भक्षी मानव की सौजन्यता नष्टप्राय हो जाती है और वह क्रूर बन कर निरपराध पशु, पक्षियों के वध पर उतारू हो जाता है।

जी. जी फील्ड-संसार की प्रायः सब ही जातियां मांस खाती है। भारत के हिन्दू भी अधिकतर मांस खाते हैं, फिर आप क्यो इसका विरोध करते है।

पंडित जी-सत्यासत्य का निर्णय हाथ उठा कर नहीं किया जाया करता है। मानव प्रायः पाशविक प्रवृत्तियो का शिकार रहता है जब तक कि विशेष प्रयत्नों द्वारा उसके अन्दर सात्विक प्रवृत्तियों अर्थात् दैवी प्रवृत्तियों का आचरण न किया जाये। भारत के पूर्वज, संन्यासी, भिक्षुक एवं ब्राह्मण देश देशान्तरों में प्रति वर्ष सहस्रों की संख्या में जाते थे और आचार धर्म की वहाँ २ की जनता को शिक्षा दिया करते थे। महाभारत काल पर्यन्त यह परम्परा चलती रही, बाद में शिथिलता आ गयी। आज कल सैकड़ों मत, पंथ, सम्प्रदाय संसार मे चल रहे हैं। सबको अपनी-अपनी दुकानदारी की चिन्ता है, मानव उत्थान का किसी को ध्यान नहीं।

★पं० शिवदयालु जी

जी. जी. फील्ड-आपकी बात समझ में आ गई, मैं मास खाने की आदत बदलूंगा। अच्छा यह तो बतलाओ कि आप जुए का क्यों इतना विरोध करते है? आपने तो मेले मे सैकड़ो सम्भ्रान्त व्यक्तियों को भी उनके डेरो से अपने स्वयं सेवकों द्वारा अपने कैम्प में पकड़वा मंगवाया है और उनसे तोबा करवाई है।

पंडित जी—आपको जो रिपोर्ट मिली है वह ठीक है। हम जुए के घोर शत्रु हैं। इस जुए ने ही हमारे देश मे प्रथम विश्व युद्ध करवाया था। इस जुए ने मानवों को सर्व दुर्गुणों का शिकार बनाया है। जुआरी का कोई धर्म ईमान नहीं होता। उसकी बात का कोई मूल्य नहीं होता। जुआरी का जीवन परिश्रम शून्य व पुरुषार्थ हीन एक प्रमादी मानव का जीवन होता है।

जी. जी. फील्ड-क्या घुड़दौड़ में दांव लगाना भी जूआ है, इसका तो मुझ को बहुत शौक है।

पंडित जी-निश्चय वह जुआ है। आप जैसे भद्र पुरुषों को इससे बचना चाहिये और अपनी शक्ति भर इस मेले में तथा सारे जिले में जूआ व सट्टा बन्द करने में कड़ाई से पग उठाना चाहिये।

जी. जी. फील्ड-अच्छा मैं मेले में जितने जूए व सट्टे के अड्डे हैं सबको कल ही स्वयं ही मौके पर आकर बन्द करवाऊँगा।

लगभग दो घन्टे तक विचार गोष्ठी के उपरान्त पंडित जी अपने शिविर में वापस आगये और अगले दिन फील्ड महोदय ने अपने कहे अनुसार जूये सट्टे के विरुद्ध मेले में बड़ा अभियान चालू कर दिया। ★

महिमा गाओ वेदों की

✶

मैं चाह रहा तुम महिमा गाओ वेदों की,
मै चाह रहा तुम जग में सत्य ज्ञान भर दो,
मै चाह रहा तुम धरती को एक रंग मे रंगकर
सारे जग को, चाह रहा तुम वैदिक धर्म सिखाओ।

मैं चाह रहा तुम जग के दुख को दूर करो,
मैं चाह रहा तुम विचलित कभी नहीं होना,
हर आफत को जीतो तुम मैं चाह रहा,
ऐसा कुछ आ जाये तुम को जादू टोना।

लेकिन जादू बेकार न कुछ हो पायेगा,
मै चाहू लाख न तुम वेदों को अपनाओगे,
मैं चाहू लाख अभिलाषायें इससे क्या
हिम्मत छोड़ी तो बस यों ही मर जाओगे।

लेकिन यदि तुम लो ठान, कमर यदि तुम कस लो,
धरती में यदि वेदों का नाद बजा दोगे,
औरों की क्या औकात, अरे विश्वास करो,
इस वीर धरा के जन-जन को तुम आर्य बना दोगे।

श्रम करो कि फल निश्चय ही तुमको मिलना है,
निश्चय ही जग के अन्धकार को दूर करोगे तुम,
कष्ट क्लेश तुम पर निश्चय ही बलि जायेंगे,
लेकिन तब ही जब मन से काम करोगे तुम।

★विजयदयाल सक्सेना, बहराइच

निर्वाचन—

—आर्यसमाज गनेशगंज लखनऊ—प्रधान—श्री रामचरन विद्यार्थी, उपप्रधान—श्री तेजनारायण, श्री डा० श्यामलाल पाण्डे मन्त्री—श्री जगदत्त तिवारी, अतिरिक्त मन्त्री—श्री विष्णुकुमार अवस्थी, श्री श्रीराम, श्री गंगाप्रसाद बाजपेई, कोषाध्यक्ष—श्री महेश्वर पाण्ड, उप कोषाध्यक्ष—श्री चंद्रमाल दुबे, पुस्तकाध्यक्ष—श्री प्रज्ञामित्र शास्त्री।

—आर्यसमाज मैनपुरी—प्रधान—श्री हरिश्चन्द्र एडवोकेट, उपप्रधान—श्री नाथूराम आर्य, मन्त्री—श्री रमेशचन्द्र मिश्र एडवोकेट, उपमन्त्री—श्री लक्ष्मीनारायण मिश्र, कोषाध्यक्ष—श्री जमुनाप्रसाद, पुस्तकाध्यक्ष—श्री विजयकुमार।

—आर्यसमाज मेहरवी (गोवा) प्रधान—श्री बालचन्द्र खिन्डकर, उपप्रधान—श्री लक्ष्मीचन्द्र शकर कलगूंठकर, मन्त्री—श्री महाबलेश्वर लक्ष्मण मडकईकर, कोषाध्यक्ष—श्री श्री गुन्डू ओ० बारी, प्रबन्ध प्रतिनिधि श्री अच्युत खिन्डकर।

—आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का वार्षिक अधिवेशन शिवगंज में दि० २५ और २६ मई १९६८ को सानन्द सम्पन्न हुआ। उसमें निम्न लिखित पदाधिकारी सर्वसम्मति से निर्वाचित हुये। सर्वश्री प० भगवानस्वरूप न्यायभूषण अजमेर प्रधान, उपप्रधान—डा० रामबहादुर कोटा, संतोषसिंह कछवाहा जोधपुर, छोटूसिंह एडवोकेट, अलवर, चौधरी नारायणराम, श्री गंगानगर, माधोसिंह शाहपुरा, मन्त्री—श्री श्रीकरण शारदा, अजमेर, उप मन्त्री—सर्वश्री ओमभक्त वानप्रस्थ, अजमेर, डा० भवानीलाल भारतीय, पाली, तथा अधिष्ठाता आर्य मार्तण्ड, उप मन्त्री—सुश्री कुमारी सरला शारदा, अजमेर, संगठन मन्त्री—श्री मदनमोहन शर्मा, बीकानेर, कोषाध्यक्ष—श्री रतनचन्द्र जी एडवोकेट। इनके अतिरिक्त २० अन्तरंग सदस्य चुने गये।

इसी अवसर पर आर्यसमाज शिवगंज का रजत जयन्ती महोत्सव दि० २५ २६, २७ मई ६८ को सानन्द सम्पन्न हुआ। जिसमें पूज्य स्वामी व्रतानन्द जी महाराज गुरुकुल चित्तौड़, स्वामी सर्वानन्द जी महाराज मध्य प्रदेश, स्वामी कात्यायनन्द जी महाराज, स्वामी ओमभक्त जी वानप्रस्थ, स्वामी चेतनानन्द जी, स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, डा० रामबहादुर जी, श्रीकरण जी शारदा, प० भगवान स्वरूप जी न्यायभूषण, डा० भवानीलाल जी भारतीय, कुमारी सरला शारदा, सुश्री सुमित्रा जी पाली, चौधरी कुम्भाराम जी आर्य आदि विद्वानों के ओजस्वी भाषण हुये।

—आर्यसमाज बीसलपुर, प्रधान—श्री वैद्य हरसहाय वर्मा, उपप्रधान—श्री पूर्णानन्द जी, मन्त्री—श्री हरिश्चन्द्र आर्य कोषाध्यक्ष—श्री देवदत्त

—आर्यसमाज नया बास दिल्ली प्रधान—श्री देवकीनन्द, उपप्रधान—श्री मनोहर विद्यालंकार, व श्री त्रिलोकचन्द्र मन्त्री—श्री धर्मपाल, उपमन्त्री—श्री नन्द किशोर व श्री गिरधारीलाल, कोषाध्यक्ष—श्री फूलचन्द, पुस्तकाध्यक्ष—श्री बांकेबिहारीलाल।

—आर्यसमाज फूलपुर, (आजमगढ़) प्रधान—श्री बाकेलाल आर्य, उपप्रधान—श्री शिवशंकरलाल आर्य, मन्त्री—श्री छंगीलाल आर्य, उपमन्त्री—श्री चन्द्रप्रकाश आर्य, कोषाध्यक्ष—श्री दिनेशचन्द्र पुस्तकाध्यक्ष—श्री सूरजप्रसाद, निरीक्षक—श्री रामनन्द आर्य।

—केन्द्रीय आर्य सभा अमृतसर प्रधान—श्री धर्मपाल, मन्त्री—श्री डा० देवव्रत महाजन, कोषाध्यक्ष—श्री रामकृष्ण आय-व्यय निरीक्षक—श्री हीरालाल वर्मा

—आर्यसमाज, मण्डी, मडवरा दिल्ली, प्रधान—श्री क्षेमचन्द्र 'सुमन' उप प्रधान—श्री मनोहरलाल, मन्त्री—श्री श्रद्धानन्द शर्मा, उपमन्त्री—श्री मुरारीलाल शर्मा, कोषाध्यक्ष—श्री हरिपालसिंह पुस्तकाध्यक्ष—श्री शांतिस्वरूप जी

—आर्यसमाज बुलन्दशहर. प्रधान—श्री महाशय शिवलाल वर्मा, उप प्रधान—श्री म० सत्यस्वरूप, मन्त्री—श्री बनारसी दास शर्मा, उपमन्त्री—श्री कुवर बहादुर जी वर्मा, तथा श्री गजराजसिंह एडवोकेट, कोषाध्यक्ष—श्री भगवनप्रसाद पुस्तकाध्यक्ष—श्री मा० चिरजीलाल।

—आर्य इण्टर कालेज, बुलन्दशहर प्रधान—श्री म० शिवलाल जी वर्मा, उप प्रधान—श्री म० सत्यस्वरूप, प्रबन्धक—श्री डाक्टर मनवीरसरन, उप प्रबन्धक—श्री देवेन्द्र प्रसाद जी रस्तोगी।

—आर्यसमाज मदरसा, फैजाबाद अध्यक्ष—श्री ज्ञानचन्द्र, उपाध्यक्ष—श्री रामदेवल व वासुदेवलाल, मन्त्री—श्री रामानन्द, उपमन्त्री—श्री रामकुमार व श्री प्रेमचन्द्र, निरीक्षक—श्री जगरूपराम कोषाध्यक्ष—श्रीलक्ष्मीचन्द्र, पुस्तकाध्यक्ष—श्री हरिप्रसाद।

"आर्यवीरदल शिक्षण शिविर"

जिला आर्यवीरदल बलिया की ओर से माण्डलिक शिक्षण शिविर १० से १६ जून तक आर्य समाज रसड़ा मे लग रहा है। जिसमें श्री मुन्नीलाल उप संचालक बेचनसिंह सं० संचालक व प० सत्यदेव शास्त्री पहुच रहे हैं। प्रत्येक जिले के मण्डल पति आर्यसमाज के मन्त्री व दल के नगर नायक से निवेदन है कि अपने यहाँ से २ आर्यवीर गणवेश में भेजें। विशेष जानकारी के लिये श्री वसुमित्र मण्डल पति आर्यसमाज रसड़ा बलिया से पत्र व्यवहार करें।

—बेचनसिंह, संचालक

मथुरा जिले में वैदिक धर्म प्रचार

माट-तहसील मे उत्सवो के कार्यक्रम को सफलतापूर्वक सम्पन्न करने के बाद अब दिनांक ४ जून से १ जुलाई सन् १९६८ तक उत्सवो की व्यवस्था की गई है। जिनमे आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के महोपदेशक श्री प० केशवदेव जी शास्त्री या प्रकाण्ड पण्डित श्री शिवराजसिंह जी शास्त्री शास्त्रार्थ महारथी, स्वामी निरोगानन्द जी महाराज, श्री वीर कवि देव श्री चुन्नीलाल आर्य भजनोपदेशक हरियाणा पधारेंगे। इनके अतिरिक्त समय समय पर जिला सभा प्रधान श्री नरदेव जी ...... संसद सदस्य अन्तर्राष्ट्रीय प्रचार निरीक्षक समिति उ०प्र० के मुख्य संघटक श्री डा० रघुवीर शरण जी प्रकाण्ड विद्वान् श्री प० विश्वबन्धु जी शास्त्री अधिष्ठाता उपदेश विभाग उ०प्र०, श्री कुंवर जोरावरसिंह जी सिंहकवि, बहिन प्रभावती जी स्नातिका तथा अन्य विद्वान एव भजनोपदेशक भी भाग लेते रहेंगे। कृपया निश्चित तिथियों मे अपने यहाँ उत्सवों की व्यवस्था करावें तथा अधिक से अधिक संख्या मे पधार कर धर्म लाभ प्राप्त करें।

शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज फैजाबाद के आर्य सदस्यों की यह सभा इस समाज के प्रतिष्ठित कार्यकर्त्ता भूतपूर्व मन्त्री श्री रामनरेश जी सावन्त के देहावसान पर शोक प्रकट करती हैं तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती हैं कि वह दिवंगत आत्मा को सद्गति एव उनके शोक संतप्त परिवार को इस विषम दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज गंगाजमुनी (बहराइच) का वार्षिकोत्सव दिनांक २३-२४ मई १९६८ को गंगा जमुनी तथा २५ मई को सरैया (गोंडा) में बड़ धूम धाम से सम्पन्न हुआ। जिसमे प्रो० रामनाथसिंह "आधुनिक अर्जुन" धनुर्वेदाचार्य, वाराणसी, श्री राम वर्ण पाण्डेय संगठक भारतीय आर्य सभा जनपद गोंडा तथा प० विद्यानन्द जी वानप्रस्थी भजनोपदेशक फखरपुर (बहराइच) पधारे। श्री रामवर्ण पाण्डेय द्वारा आर्य सभा का गठन हुआ तथा प० विद्यानन्द जी के जोशीले भजन तथा प्रो० रामनाथसिंह जी के द्वारा बाण-विद्या का आश्चर्य जनक प्रदर्शन हुआ। जनता प्रदर्शन से अत्यधिक प्रभावित हुयी। विशाल जन समूह ने बड़े शांति से प्रदर्शन देखा तथा उपदेश का श्रवण किया।

विवाह संस्कार

"आर्यसमाज समस्तीपुर के तत्वाधान मे स्थानीय नगर मे एक आदर्श वैदिक विवाह सम्पन्न कराया गया। इसमे तथा कथित पौराणिक जात पांत को तोड़कर अन्तर्जातीय व अन्तरप्रांतीय वैदिक विवाह संस्कार कराया गया। प० विश्वबन्धु वेदालंकार महोपदेशक उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा, लखनऊ तथा कन्या कुमारी शीलादेवी पौत्री श्री रामशरन जी भूतपूर्व मन्त्री आर्यसमाज समस्तीपुर का यह शुभ पाणिग्रहण संस्कार काशी के विख्यात पं० विद्यानन्द जी मति जी के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ।"

शुद्धि संस्कार

श्री भिखारीप्रसाद आर्य (विद्याविनोद) उपमन्त्री आर्यसमाज मलाही चम्पारण तथा प० रामदेव शर्मा के द्वारा दि० २९-४-६८ को रामनगर निवासी अभिमन्यु यादव जो २ साल से इस्लाम धर्म स्वीकार कर चुके थे उन्हें दरम्या में शुद्ध किया गया।

वैदिक धर्म प्रचार

"ग्राम प्रचार योजना के अन्तर्गत आर्यसमाज समस्तीपुर के द्वारा समीपस्थ एक गाँव 'मधुटोल' मे वैदिक धर्म का प्रचार खूब धूम धाम से किया गया। उपदेश और भजनों के सुन्दर कार्यक्रम से वहाँ की जनता काफी प्रभावित हुई और फलस्वरूप वहाँ तत्काल ही आर्यसमाज की स्थापना हो गयी जिसके प्रधान श्री अनूपलाल जी तथा मन्त्री श्री हरेकृष्ण महतो जी सर्व-सम्मति से निर्वाचित किये गये।"

सॉरी नहीं-क्षमा कीजिए

बात उस दिन की है जब अंग्रेजी के विरोध में छात्रों का विशाल जुलूस निकल रहा था। हम कुछ मित्र जुलूस को देखने के लिए सड़क पर खड़े हो गये। जुलूस को व्यवस्थित रूप से आगे बढ़ने के लिये एक व्यक्ति को इसका उत्तरदायित्व सौंपा गया था। सड़क पर खड़े व्यक्तियों को एक ओर करते हुये वह व्यवस्थापक हमारे समीप भी आया तथा बोला आप लोग एक साइड में हो जाइएगा। इतने में मेरे एक मित्र ने उस व्यक्ति से कहा—"साइड में नहीं" कहिये 'एक दिशा में हो जाओ'। इतने में ही वह व्यक्ति अपनी त्रुटि का आभास करते हुए बोला सॉरी। इस पर मेरे मुख से एक दम निकला—सॉरी नहीं, क्षमा कीजियेगा।

हिन्दी के समर्थन को अंग्रेजी में लिखी वस्तुओं का विरोध कर रहे थे, स्वयं बातचीत में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग कर रहे थे। भीड़ को स्थान २ पर रोकने के लिये प्रदर्शन करने वाले छात्र 'स्टाप' शब्द का प्रयोग कर रहे थे। नेता लोग जोर २ से चीख कर पुकार रहे थे हमें अंग्रेजी का बॉयकाट (Boycott) करना है। और बीच २ में जब ध्वनि-विस्तारक यन्त्र कार्य करना बन्द कर देता तो निरीक्षणकर्त्ता हैलो हैलो। माइक्रोफोन टेस्टिंग स्टेशन। हैलो, वन, टू, थ्री।

वही विद्यार्थी जो प्रदर्शन के समय अंग्रेजी में लिखे नाम पटों का विध्वंस कर रहे थे कक्षा में घुसने से पूर्व क्या 'मैं अन्दर आ सकता हूं' के स्थान पर अंग्रेजी के वाक्य 'May I come in sir' का प्रयोग कर रहे थे। यही नहीं हिन्दी के अध्यापक प्रत्युत्तर में अंग्रेजी के शब्द 'Come in' का प्रयोग कर रहे थे। हिन्दी समर्थन में इतने प्रदर्शन होने के उपरान्त अब भी उपस्थिति के समय गुरुजन हिन्दी की गिनती बोलने के स्थान पर अंग्रेजी में ही बोलते हैं—"Yes, roll no, one two' और विद्यार्थी भी महोदय अथवा उपस्थित श्रीमान आदि शब्दों के स्थान पर "Yes, sir" तथा 'Present sir' जैसे शब्दों का प्रयोग करते हैं। इसके अतिरिक्त उपस्थिति रजिस्टर में भी अंग्रेजी लिपि में विद्यार्थियों के नाम लिखे हुये देखे जाते हैं। विद्यालयों की शुल्क बहियां अंग्रेजी तथा कहीं हिन्दी में छपी हुयी है, लेकिन रसीद काटते समय उसमें नाम तथा अन्य विषय अंग्रेजी में ही भरा जाता।

हिन्दी विषय की कापी में भी विद्यार्थी कापी के मुख पृष्ठ पर अपना नाम कक्षा तथा स्कूल आदि का नाम अंग्रेजी में ही लिखते हैं। छुट्टी के लिये दिया जाने वाला प्रार्थना पत्र यद्यपि हिन्दी में होगा, परन्तु नीचे हस्ताक्षर अंग्रेजी में अवश्य होंगे।

अधिकतर लोग अपने लिये अथवा अपने सगे सम्बन्धियों को पत्र लिखते समय ऊपर नाम तथा दिनांक तो कम से कम अंग्रेजी में ही लिखते हैं, चाहे शेष पत्र हिन्दी में ही क्यों न लिखें। पत्र की समाप्ति पर हस्ताक्षर तो हिन्दी के स्थान पर अंग्रेजी में अवश्य होंगे। लिफाफे पर पता भी आपको अंग्रेजी में अवश्य होंगे। लिफाफे पर पता भी आपको अंग्रेजी में ही लिखा हुआ मिलेगा। इसे भी छोड़िये। पत्र के प्रारम्भ में 'प्रिय बन्धु' अथवा 'प्रिय मित्र' के स्थान पर "My dear friend" अथवा "Dear friend" तो अवश्य ही लिखा होगा, चाहे शेष पत्र हिन्दी में क्यों न लिखा हो।

दूसरों को ही दोष क्यों दें। हम स्वयं टेलीफोन करते समय हलो अंग्रेजी में ही मांगते हैं। अपने घर में ही हम अपने बच्चों को 'टा-टा', बाय बाय गुड बोआय, ओ० के० शेक-हैंड, गुड मार्निंग, थैंक यू, आदि शब्दों का प्रयोग करना सिखलाते हैं। यही कारण है कि अंग्रेजी हमारे मस्तिष्क में गहरा रंग जमा गयी है। हम दूसरों के साथ बोलते हुये अंग्रेजी के शब्दों को भी बीच बीच में बोल जाते हैं। जैसे "टाइम की बड़ी शार्टेज है" अगले प्रोग्राम का टाइम क्या होगा'। अब तो मण्डे को ही आफिस में मिलना हो पायेगा। 'पेन में इंक नहीं' मैं तो आपके रेजीडेंस पर डेली आता हूं, "सन्डे वाले दिन तो टाइम भी नहीं पास होता।" अखबार में क्या न्यूज है आदि २। कुछ व्यक्ति तो बातचीत में पूरा का पूरा वाक्य ही अंग्रेजी में कह जाते हैं।

कुछ शब्दों को लोग अंग्रेजी में इसलिये बोलते हैं कि उन्हें हिन्दी में बोलने में लज्जा सी लगती है। उदाहरणार्थ, शौचालय के स्थान पर 'लेबेटरी' अथवा 'लैंटरिन' 'मूत्रालय' के स्थान पर 'यूरिनल' बहनोई के स्थान पर ब्रदर इनला इत्यादि।

अतः हिन्दी चलन में तभी आ सकती है जब हम बोलचाल में अंग्रेजी के शब्दों का परित्याग करें तथा अन्य साथियों को भी ऐसा करने की सलाह दें। ऐसा करने पर 'क्षमा कीजियेगा' शब्द का प्रयोग कर सकेंगे, जिसमें अंग्रेजी के Sorry शब्द से भी अधिक 'नम्रता' दृष्टिगोचर होती है।

—दिलबागराय
९/१६२, सराय सुल्तानी
अलीगढ़

श्री वैद्यनाथप्रसाद जी का देहान्त

आर्यजगत् को बहुत दुःख के साथ यह सूचित कर रहा हूं कि बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा के भूतपूर्व प्रधान एवं डी० ए० बी० कालेज सिवान के संस्थापक श्रीमान् वैद्यनाथप्रसाद जी का देहान्त पटना में हृदय की गति अवरुद्ध हो जाने से हो गया। श्रीमान वैद्यनाथ बाबू बिहार के लाला हंसराज कहे जाते थे। बहुत कम उमर में उनकी पत्नी का देहान्त हो गया, उन्होंने दूसरा विवाह नहीं किया। अपितु सारा जीवन आर्य समाज को अर्पित कर दिया। वे बी०ए० की उपाधि प्राप्त कर गवर्नमेंट की नौकरी नहीं किये, अपितु दयानन्द विद्यालय स्थापित कर स्वयं हेडमास्टर होकर बालकों को पढ़ाने लगे। उन्होंने असंख्य लड़कों को आर्यसमाज के विचारों से अवगत कराया। नेपाल के अमर शहीद श्री प० शुक्रराज शास्त्री बी० ए० इनके शिष्य थे। श्री प० माधवपनि राज शास्त्री, श्रीमती चन्द्रकान्ता आदि नेपाल के आर्य सदस्य, बालकपन में श्री वैद्यनाथप्रसाद के तत्वावधान में रह कर वैदिक धर्म के सिद्धान्तों से परिचित हुए। बिहार के प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री श्री वैद्यनाथप्रसाद के शिष्य थे। देहली विश्व विद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष श्री प० बांकेबिहारी मिश्र भी डी० ए० वी० स्कूल सिवान के विद्यार्थी हैं।

जिस समय डी०ए० वी० स्कूल से श्री वैद्यनाथ बाबू अवकाश प्राप्त किये उन्होंने विद्यालय को कालेज बनाने की तैयारी की। उनका बड़ा विरोध हुआ बिहार में [illegible] बहुत चलती है। [illegible] कालेज के मार्ग में रुकावट बनकर सामने आये तथा चाहते थे कि किसी प्रकार यहां आर्यसमाज का महाविद्यालय न बने। तदर्थ बहुत बाधायें आयीं। सरकार उस समय विरोधी थी। आर्यसमाज के प्रति अधिकारियों की अच्छी भावना नहीं थी।

श्री वैद्यनाथ बाबू इसका सामना करने को तत्पर हो गये।

वे भिक्षा की झोली लेकर समाजों का दौरा प्रारम्भ किये। उनके ऊपर सार्वदेशिक के दिवंगत प्रधान स्वामी अभेदानन्द जी की कृपा थी। वे कुछ ही दिनों में लगभग २ लाख रुपया एकत्र कर लिया। आज बिहार में वही एकमात्र दयानन्द कालेज है।

श्री मास्टर जी ने लड़कियों के लिये श्री कन्या पाठशाला, ठाकुर विद्यालय, हरिजन विद्यालय, [illegible] बनवाया। वे नेपाल के दो बार हमारे साथ प्रचार की यात्रा पर गये। वे दाढ़ी रखते थे अतः उन्हें नेपाल के बेदार एवं गोरखा लोग दाढ़ी बाबा कहकर पुकारते थे। उनके हृदय में गरीबों के प्रति करुणा थी। एक चमार की बालक को शिक्षित कर प्रोफेसर बना दिये, एक दूसरा धांगड़ी गवर्नमेंट के उच्चतम पद पर विराजमान है।

श्री मास्टर जी की मृत्यु से बिहार आर्यसमाज की वाटिका सूनी हो गई है। श्री साधु वचन जी श्री श्यामकृष्ण सहाय बैरिस्टर, श्री स्वामी ईश्वरानन्द जी, श्री महेशप्रसाद जी एवं श्री अभेदानन्द जी की मृत्यु से बिहारवासी पीड़ित थे ही किन्तु तत्काल श्री वैद्यनाथ प्रसाद जी की मृत्यु से हम अत्यन्त पीड़ित हो गये हैं। हमारे चारों ओर अन्धकार हो आज बिहार महान विभूतियों से शून्य हो गया है। केवल इन महान नेताओं का जीवन चरित्र ही हमारे लिये इस अन्धकार में आलोक का काम होगा। अतः हम बिहारवासी आर्यसमाजी प्रभु से यही प्रार्थना करते हैं कि प्रभु दिवंगत आत्मा को शांति करे। हम बिहारनिवासी आर्यजनों में नवचेतना का प्रवाह लावें। यह सत्य है कि मास्टर जी की उमर काफी हो गयी थी वे ८५ वर्ष की अवस्था में स्वर्ग सिधारे किंतु हमारे लिये तो एक अनुभवी तथा ज्ञानी का अभाव हो गया है। इन शब्दों के साथ मैं बिहार की ओर से अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित कर रहा हूं।

—रामानन्द शास्त्री
उपप्रधान
बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा,
पटना

आर्य वीर दल के तत्वावधान में महाराष्ट्र में अभूत पूर्व वेद प्रचार

आर्यवीर दल के आमन्त्रण पर भारतवर्षीय वैदिक सिद्धांत परिषद् के परीक्षा मन्त्री युवक आर्य नेता आचार्य श्री मित्रसेन जी एम० ए० सिद्धान्तालंकार अलीगढ़ से २५ मई को पधारे। उसी दिन से आपके व्यस्त कार्यक्रम प्रारम्भ हो गये।

२५ मई को महिला आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग मे आर्य समाज और महिलाओ का कर्तव्य, विषय पर बोलते हुए आचार्य जी ने स्त्रियो पर आर्य समाज का ऋण बताया और यह निवेदन किया कि उससे उऋण होने के लिए सपरिवार आर्य समाज के कार्यो मे सोत्साह भाग लें।

रात्रि को कार्यकर्त्ता सम्मेलन मे आपने युवको को आर्यसमाज का सन्देश देते हुये अपील की कि वे देश की सुरक्षा और उन्नति के लिए आर्यसमाज को यथा शक्ति सहायता दें। आपने परिषद् की परीक्षाओ के विषय मे भी विस्तृत सूचना देते हुये उनमे अधिकाधिक भाग लेने की प्रेरणा दी। युवकों ने आपको इसके लिये अधिक से अधिक सहयोग देने का आश्वासन दिया।

रविवार को आर्यसमाज जरीपटका नागपुर एव आर्यसमाज दयानन्द भवन मे आपके ओजस्वी व्याख्यान हुये जिनका जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

सोमवार को पत्रकार सम्मेलन में बोलते हुये आचार्य जी ने बल पूर्वक कहा कि विश्व की समस्त समस्याओं का एक मात्र समाधान आर्यसमाज के ही पास है। आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री विश्वम्भर प्रसाद शर्मा ने गो रक्षा कमेटी के विषय मे पत्रकारों के प्रश्न के उत्तर दिये।

मंगलवार को आर्य समाज हसापुरी बुधवार को याबी चौक सदर बाजार गुरुवार को सेन्ट्रल रोड, छबीले भगत के मकान के पास सार्व जनिक सभायें हुई। जिनमे आचार्य जी के अतिरिक्त सभा प्रधान श्री पं० विश्वम्भर प्रसाद जी शर्मा तथा सभा मन्त्री श्री श्रीकृष्ण जी गुप्त उपस्थिति रहे। इन सभाओं में श्री शर्मा जी ने अपने व्याख्यानों मे जनता को बताया कि विश्व का उपकार केवल आर्य समाज ही है। शान्ति प्राप्त करने का केवल एकमात्र उपाय वैदिक धर्म है जिसे हमारे सामने महर्षि दयानन्द ने दिखाया। दुर्भाग्य है कि हम लोग सारे जीवन देश की आजादी के लिये जेलों में सडते रहे, बलिदान दिये और आजादी मिलने पर सरकार द्वारा हमारी ही उपेक्षा की जा रही है। आपने जनता से अपील की कि वह आर्यसमाज से सम्पर्क स्थापित करके शान्ति प्राप्त करे।

इन सभाओं मे बोलते हुए, आचार्य श्री मित्रसेन जी ने प्रमाणों के द्वारा यह सिद्ध किया कि सबसे प्राचीन धर्म वैदिक धर्म ही है। ईसाई और मुसलमान केवल धोखा देकर ही अपनी सख्या बढ़ाकर देश की सुरक्षा को खतरा पैदा कर रहे है। आपने उन्हें शास्त्रार्थ के लिये चैलेंज भी दिया। आपने अपने परिषद् की गतिविधि आर्य समाज का प्रचार आवश्यकता बताते हुये कहा कि राष्ट्र के भावी निर्माता बालकों का निर्माण करना आवश्यक है। जो केवल आर्य समाज के द्वारा ही सम्भव है। उसको समझने के लिए परिषद् की धार्मिक परीक्षाओं में अधिक से अधिक छात्र बिठाये जावें।

आर्य वीर दल के मन्त्री श्री, मधुकर सदार और श्री नरेन्द्र मोहन अग्रवाल, प्रेमचन्द्र अग्रवाल, सगतराम, गजानन्द गगोत्री आदि ने विशेष सहयोग दिया।

शिक्षण शिविर सम्पन्न

बलिया। जिला आर्यवीर दल बलिया की ओर से दिनांक १० से १६ जून तक आर्यसमाज मन्दिर रसडा मे एक प्रशिक्षण शिविर दल के सहायक सचालक श्री देवव्रतसिंह की अध्यक्षता में आयोजित हुआ। शिविर का उद्घाटन आर्योप सभा बलिया के मन्त्री श्री सुदर्शन जी के द्वारा सम्पन्न हुआ।

बौद्धिक का कार्य श्री पं० सत्यदेव शास्त्री, श्री मुन्नीलाल उप सचालक व श्री स्वामी सत्यानन्द जी ने किया। श्री बलवन्तसिंह व श्री बृजभूषण जी ने कुशलता पूर्वक शिक्षण का कार्य किया।

इस शिविर में कुल ३२ आर्यवीरों ने भाग लिया जिसमें से १५ उत्तीर्ण हुये।

विविध संस्कार

देहरादून। श्री इन्द्रजीत कुमार के पुत्र चि० विनीत कुमार का मुण्डन संस्कार ९ जून को सम्पन्न हुआ। इस उपलक्ष्य मे विभिन्न आर्य संस्थाओ को २१ रु० दान दिया गया।

मुगल सराय। गत दिनांक १६ जून को आर्य समाज मन्दिर मे श्रीमती सावित्री स्नातिका के पुत्र का अन्नप्राशन संस्कार बड़ी धूमधाम से श्री प० विद्यानन्द जी मन्त्री द्वारा सम्पन्न कराया गया।

वैदिक धर्म प्रचार

बहराइच। ग्राम गम्भू टिकारी निवासी श्री प्रेमनारायण के यहां २-३ जून को हवन आदि का आयोजन हुआ तथा श्री विद्यानन्द जी वानप्रस्थी के भजन व श्री प्रेमनारायण प्रेम' के प्रवचन का स्थानीय जनता पर स्थाई प्रभाव पड़ा।

आर्य समाज गंगा जमुनी के निकट श्याम पुरवा मे भी श्री यदुनाथ जी पुरी के प्रयास से इसी प्रकार का एक और सफल आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री रामनाथ सिंह द्वारा बाण विद्या का प्रदर्शन भी किया गया।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

बुलन्द शहर। आर्य स्त्री समाज का वार्षिकोत्सव २५ से २७ मई तक समारोह पूर्वक मनाया गया। यह समारोह १९ मई से प्रारम्भ हुआ। प्रात. प्रतिदिन डा० श्री जगदीश चन्द्र जी विद्यार्थी द्वारा यज्ञ व श्री स्वामी विज्ञानानन्द जी के प्रवचन तथा रात्रि मे श्री प० बिहारीलाल जी शास्त्री द्वारा उपनिषदो की कथा होती रही। श्री आशानन्द जी ने मैजिक लैन्टर्न का भी प्रदर्शन किया। इसके अतिरिक्त प० श्री जगदेवसिंह सिद्धान्ती व अन्य भजनोपदेशकों के कार्य क्रम भी बडे ही हृदयग्राही हुये।

अलीगढ। आर्य समाज खिमारा का तृतीय वार्षिकोत्सव ४ ५ जून को श्री छेदासिंह नम्बरदार के स्थान पर मनाया गया। इस समारोह पर श्री प० बिहारीलाल जी शास्त्री, श्री विश्वबन्धु जी शास्त्री, श्री शिवकुमार जी शास्त्री ससद सदस्य आदि आर्य विद्वान् पधारे। इस उत्सव को स्थानीय जनता ने बडी सख्या मे व लगन के साथ भाग लिया। दोनो दिनो का कार्यक्रम अत्यन्त रोचक तथा प्रभावी रहा।

बिजनौर। आर्यसमाज सेन द्वार का वार्षिकोत्सव समारोह ९ से ११ जून तक मनाया गया। इस अवसर श्री हरिपाल जी शास्त्री तथा श्री ईश्वरदयालु जी के प्रवचन हुए। श्री स्वामी मुक्तानन्द जी ने वेद की शिक्षा की सार्वभौमिकता पर बल दिया तथा श्री बलबीर सिंह वेदक व श्री अयेन्द्र जी शास्त्री के सारगर्भित व्याख्यान हुये।

एटा। आर्य समाज सतारूढ का वार्षिक उत्सव ५ से ८ जून तक धूमधाम से मनाया गया जिसमे आर्य जगत् के संन्यासी, विद्वान् तथा उपदेशको एवं भजनीक ने बडे ही रोचक एवं शिक्षाप्रद कार्यक्रम प्रस्तुत किये। विशाल जन समूह ने विद्वानों के उपदेशों को बड़ी शान्ति से सुना।

आर्य कुमार सभा पिपरी पूना का प्रथम वार्षिकोत्सव १ से ३ जून को आर्यसमाज के मैदान मे बडी धूम धाम के साथ मनाया गया। जिसमे आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान प० सत्यप्रिय जी शास्त्री, प० शान्तिप्रकाश जी शास्त्रार्थ महारथी, हैदराबाद केसरी प० नरेन्द्र जी, महेशचन्द्र जी शास्त्री, प्रो० राजेन्द्र जी जिज्ञासु, प० देवव्रत जी, प० धर्मवीर जी, रामसिंह जी, प्रो० ओमकुमार जी, जगदीशचन्द्र वसु, विद्यावाचस्पति आदि विद्वानों ने आर्य जनता का सबोधन किया।

शुद्धि

बदायू—१६ मई को आर्यसमाज बदायूं मे एक जन्मजात इस्लाममतावलम्बी श्री रईस अहमद को उनकी इच्छानुसार शुद्ध करके 'सञ्जय' नाम दिया गया। तदनन्तर उनका विवाह श्रीमती रामभूर्ति [illegible] हरबसलाल [illegible] के साथ (दोनों की सहमति पूर्वक) सम्पन्न करा दिया गया।

[illegible] साप्ताहिक सत्सग के [illegible] बदायू ने श्री [illegible] मन्त्री के [illegible] कहा [illegible] पर कि [illegible] और उनको [illegible] सरकार [illegible] मर्फ राजनी[illegible] हेये विशेषकर जब कि उनको धर्म का कुछ भी ज्ञान ही नहीं है।

(पृष्ठ १० का शेष)

उत्तराधिकारी न था। इन्होंने के लिये यह स्वर्ण अवसर था। उसने झांसी को अपने राज्य में मिलाने की योजना बनाई और दुर्ग पर झण्डा फहरा दिया। भला लक्ष्मीबाई के लिये कैसे सह्य हो सकता था। उसने अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध के लिये तैयारी की। जब समझौते की कोई आशा न रही तो इस वीर नारी ने युद्ध का आह्वान किया और रणचंडी बन गयी। मेरठ, कानपुर और दिल्ली में विद्रोह की चिंगारी फूटी और रानी ने युद्ध का नेतृत्व किया। अंग्रेजों को झांसी की शक्ति का अभास नहीं था। भवानी की अराध्या सचमुच भवानी बन चुकी थी। सबसे पहले लेफ्टीनेंट वोकर टक्कर लेने के लिये बढ़ा। रानी क्रुद्ध सिंहनी की तरह शत्रुओं पर टूट पड़ी और जिधर जाती खून की नदियां बहने लगतीं। वोकर उसकी वीरता देखकर घबरा गया। सशक्त तोपखाना और आधुनिक सैन्य प्रबन्ध होने के बावजूद भी वह हार कर पीछे भाग गया। रानी कालपी पहुंची और उसके बाद ग्वालियर पर अधिकार कर लिया। भला अंग्रेज हार कर चुप कैसे बैठ सकता था। अब जनरल स्मिथ आधुनिक हथियारों से रानी का मुकाबला करने के लिए आगे बढ़ा। इस युद्ध मे रानी की दोनों सहेलियो ने भी भाग लिया। हजारों शत्रुओं को मारने के बाद दोनों ने वीर गति प्राप्त की। अब रानी अकेली थी। उसका साथ देन के लिये केवल उसका घोड़ा ही रह गया था। इतने बड़े तोपखाने का मुकाबला रानी ने अकेले किया। हजारों को मौत घाट उतारने के बाद रानी का घोड़ा जख्मी हो गया और वह तोपखाने का मुकाबला न कर सकी। जख्मी घोड़े की मृत्यु हो गयी और दूसरी तरफ जख्मी रानी अन्त तक शत्रुओं से जूझती रही। परन्तु सामने नाला था। चारों ओर शत्रुओं से घिरी रानी थी। इससे पूर्व कि कोई शत्रु उसको हाथ लगाता रानी ने अपने पेट में छुरी भोंक दी। इस प्रकार एक ऐसे जीवन का अन्त हो गया जिसने भारत की स्वतन्त्रता के लिये रक्त का अन्तिम कतरा भी बलिदान कर दिया। रानी का नाम इतिहास में अमर हो गया। उसका नाम केवल इतिहास ही बनकर रह गया। लोक गीतों और आल्हा में यशगान होने पर भी भारतवासी उसकी याद भूल गये हैं इससे बढ़कर और कृतघ्नता क्या हो सकती है।

★

आर्यसमाजों को सूचना

आर्य गुरुकुल महाविद्यालय सिरसागंज मैनपुरी

श्री नन्दलाल वैदिक मिश्नरी वानप्रस्थ आश्रम की दीक्षा लेने के पश्चात् जालन्धर (पंजाब) के स्थान पर वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर जिला सहारनपुर में रह रहे हैं। उनके घर के पते पर पत्र व्यवहार करने से बड़ी देर से समाजों को उत्तर मिलता है। पत्र समय पर पहुंचाना कठिन हो जाता है। अतः अब पत्र व्यवहार आश्रम के पते पर ही करना चाहिए।

—शिवदयालु

★

मुस्लिम युवती हिन्दू धर्म में

कानपुर—आर्यसमाज गोविन्दनगर कानपुर के अध्यक्ष आर्य नेता श्री देवीदास आर्य ने एक शिक्षित मुस्लिम युवती को उसकी इच्छानुसार शुद्ध कर हिन्दू धर्म मे प्रवेश कराया। उसका नाम मिसबीबी से प्रतिमादेवी रखा गया। गायत्री मन्त्र व यज्ञोपवीत में उसको हिन्दू धर्म की दीक्षा दी गई। तत्पश्चात् उसका विवाह उसकी इच्छानुसार एक बंगाली युवक श्री शम्भूनाथ चटर्जी के साथ वैदिक रीति से किया गया।

★

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, हाथरस
पो० कन्या गुरुकुल [जिला अलीगढ़]

गुरुकुल पद्धति पर बी० ए० स्तर तक निःशुल्क शिक्षा देने वाली कन्याओं की अखिल भारतीय संस्था इंग्लिश, अर्थशास्त्र, इतिहास, भूगोल, गणित, संगीत, गृहविज्ञान आदि के साथ २ हिन्दी, संस्कृत, वेद, दर्शन, धर्मशास्त्र की विशेष शिक्षा सीधा-सादा एक सा जीवन। एकसा वर्ताव। भोजन, आश्रम आदि के लिए ३०-३५) रु० मासिक शुल्क। अलीगढ़ आगरा सड़क पर अलीगढ़ से १६ मील पर स्थित। नया सत्र १ जुलाई १९६८ से प्रारम्भ।

—आचार्या

★

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार मे नए (६ से १० तक की आयु के) ब्रह्मचारियों का प्रवेश १ जुलाई १९६८ से प्रारम्भ होगा। शिक्षा निःशुल्क। सब विषयों की शिक्षा। आश्रम-वास। विशेष देख रेख। सीधा सादा भारतीय जीवन। कड़ा अनुशासन। एक सा रहन-सहन। प्राकृतिक सुन्दर स्वास्थ्यप्रद वातावरण। सात्विक भोजन। पालन-पोषण का साधारण व्यय। उपाधियां सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त। नियमावली मुख्याधिष्ठाता, गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार, जिला सहारनपुर से मंगावें।

—मुख्याधिष्ठाता

★

नवीन प्रवेश

"आर्य गुरुकुल महाविद्यालय सिरसागंज प्राचीन व्याकरण (अष्टाध्यायी पद्धति) से वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय की आचार्य पर्यन्त परीक्षा दिलाने वाली प्रमुख संस्था है। पूर्वमध्यमा (हाईस्कूल) तक गणित साइंस आदि आधुनिक विषयों के अध्यापन की समुचित व्यवस्था है। शास्त्री और आचार्य श्रेणी के छात्रों को भोजन निःशुल्क दिया जाता है। नवीन सत्र का प्रवेश प्रारम्भ है। प्रवेशार्थी निम्न पते पर पत्र व्यवहार कर नियमावली मंगालें।

—देव स्वामी
आचार्य व मुख्याधिष्ठाता

निर्वाचन

मध्यभारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का वृहदधिवेशन दिनांक ९ व १० जून को आर्यसमाज अम्बाह जिला मुरैना में बड़ी धूम-धाम से सम्पन्न हुआ। वर्ष १९६८-६९ के लिए निम्न पदाधिकारी एवं अन्तरंग सदस्य सर्व सम्मति से निर्वाचित घोषित किए गए—

प्रधान—श्री बाबूलाल गुप्त, उपप्रधान—श्री भारतभूषण, त्यागी समाज ग्वालियर, श्री अमरनाथ समाज इन्दौर उज्जैन, श्री देवप्रकाश समाज रतलाम, श्री गौरीशंकर साधक समाज भोपाल, मन्त्री—श्री विश्वमित्र कम्ठान भोपाल, उपमन्त्री—श्री महेन्द्रप्रताप शास्त्री समाज ग्वालियर, श्री राजगुरु जी समाज इन्दौर उज्जैन, श्री बसीलाल एडवोकेट समाज रतलाम, श्री रामेश्वरदयाल समाज भोपाल, कोषाध्यक्ष सभा—श्री हरवंशलाल ग्वालियर, भूसम्पत्ति अधिष्ठाता—श्री कालिकाप्रसाद सक्सेना, अधिष्ठाता आर्यवीर दल—श्री बाबूलाल आनन्द।

—आर्य कुमार सभा बल्लभगढ़ (हरियाना)। प्रधान—श्री वृजनन्दन, उपप्रधान—श्री राजकिशोर, मन्त्री—श्री गिरधारीलाल, उपमन्त्री—श्री सुभाषचन्द्र, कोषाध्यक्ष—श्री कुलभूषण, लेखा निरीक्षक—श्री राजेन्द्रप्रसाद।

आ० स० राणाप्रताप बाग दिल्ली। प्रधान—श्री मलिक रघुनाथ, राय उपप्रधान—श्री विद्यासागर, मन्त्री—श्री विद्याधर, उपमन्त्री—श्री कुंवर दयानन्द, कोषाध्यक्ष—श्री कर्मचन्द्र कपूर, पुस्तकाध्यक्ष—श्री नरेन्द्रकुमार।

—आ० स० बरेली कैंट। प्रधान—श्री भगवानदास छतवाल, उपप्रधान—श्री दीनानाथ अरोरा वैद्य, व श्रीमती सुशीलादेवी, मन्त्री—श्री ओमप्रकाश, उपमन्त्री—श्री केदारनाथ, कोषाध्यक्ष व पुस्तकाध्यक्ष—श्री नरेन्द्र गिरि गोस्वामी।

—आर्यसमाज पौड़ी। प्रधान—श्री नरेन्द्रसिंह भण्डारी, उपप्रधान—श्री गोविन्दलाल शर्मा, व श्री इन्द्रमोहन मोदगिल, मन्त्री—श्री सोहनसिंह नेगी, संयुक्त मन्त्री—श्री गुन्डीलाल कोषाध्यक्ष—श्री भूपालसिंह नेगी. पुस्तकाध्यक्ष—श्री दर्शनसिंह बिष्ट।

हजरत मूसा का वास्तविक स्वरूप

आर्यमित्र ता० २ जून के अङ्क म श्री मौलाना इस्लामानन्द जी का ह. मूसा को वैदिक ऋषि सिद्ध करने का लेख छपा है। लेख भ्रांति पैदा करने वाला है अतः हम मूसा के सम्बन्ध में वास्तविक स्थिति पर प्रकाश डालते है।

यहूदी सम्प्रदाय के मान्य पैगम्बरों का उल्लेख बाइबिल के ओल्ड टेस्टामेंट में दिया गया है। उसी का सशोधित स्वरूप न्यू टेस्टामेंट है। अर्थात यहूदी मत का सशोधित संस्करण ईसाई मत है। और उन दोनों का सशोधित एडीशन इस्लाम है। इसका अर्थ हुआ कि इस्लाम की मान्य पुस्तक कुरान मे जो भी कुछ दिया है वह बहुत कुछ बाईबिल के दोनों भागो से ही लिया गया है शेष जो भिन्नता है वह मोहम्मद साहब की अपनी कल्पना के आधार पर है। यहूदी मत के मान्य पैगम्बर ही इस्लाम के मान्य पैगम्बर हैं। उनका सर्वप्रथम वर्णन बाइबिल में देखना होगा और उनके जीवन की जो घटनायें उसमें न होकर कुरान मे दी है वह बाद को गढ़ी गई होने से उतनी प्रमाणिक तो नहीं है किन्तु इस्लाम को मान्य होने से स्वीकार कर दी जावेगी।

बाइबिल के अनुसार हजरत मूसा का जन्म मिश्र में हुआ था। मिश्र के राजा फिरऔन ने आज्ञा दी थी कि किसीइबी स्त्री के लड़का पैदा हो तो उसे तुरन्त मार दिया जावे। जब मूसा पैदा हुआ तो उसकी मां ने उसे तीन महीने तक छिपा रखा। जब वह उसे और न छिपा सकी तो सरकण्डो की टोकरी मे चिकनी मिट्टी और राल लगाकर बच्चे को रखकर नील नदी के तीर छोड़ आई। राजा फिरऔन की बेटी वहां नहाने गई, उसे वह बालक मिला। वह घर हो आई। बालक की परवरिश को धाई की आवश्यकता हुयी तो औरते मूसा की मां को धाई के रूप में ले आयी और बालक पलने लग.। एक दिन बड़े होने पर मूसा ने एक मिश्री को मार डाला और लाश को बालू मे छिपा दिया। हत्या का भेद खुलने पर पकड़े जाने के बाद राज्य भय से मूसा भाग गया और मिदयान देश मे जाकर रहने लगा। वहां के याजक की एक बेटी से मूसा की शादी हो गई। वह वहीं उन्हीं के घर रहने लगे।

एक दिन मूसा को बकरी चराते समय पर्वत पर कटीली झाड़ी के बीच आग की लौ दिखाई दी। मूसा वहां गया और वहां यहोवा परमेश्वर से उसकी बात हुयी। यहोवा खुदा ने उसको लाठी का साप बनने का तथा अपना हाथ ढाप कर बाहर निकालने पर सफेद दिखाई देने तथा दुबारा निकालने पर पूर्ववत दीखने के चमत्कार दिये जो मूसा ने फिरऔन बादशाह को दिखाए।

खुदा ने मूसा के द्वारा नील नदी के मेढकों से देश भर देने, लाठी जमीन पर मारने से सारे देश में कुटकियां बन जाने, डांसो से देश भर जाने, राख उडा से पशु पक्षी व मनुष्यो के शरीरों पर फफोले पड जाने, देश में टिड्डी दल के छा जाने, नील नदी का पानी रक्त बन जाने आदि के अनेक चमत्कार दिखाये और बाद मे उन आपत्तियों को मूसा से ही निवारण भी कर दिया। मूसा ने नदी का पानी रोक दिया, पानी फट गया और राजा की सेना जब नदी के बीच मे पहुंची तो पानी चलने लगा। सब डूब गये।

यह सारे चमत्कार आदि निर्गमन खण्ड में बाइबिल मे दिये हैं।

सम्पूर्ण बाइबिल में मूसा के ऋषि होने का कोई प्रकरण नहीं मिलता है। जो चमत्कारो की बातें लिखी हैं व शेख चिल्ली की गप्पों से अधिक मूल्य नहीं रखती है। इन्हीं चमत्कारों का उल्लेख कुरान मे भी बाइबिल से लेकर लिखा गया है जो कि कुरान पारा ९ सू० आराफ आ १०५ से ११९ तक, कु० पा० १६ सूरे ताहा आ १७ से २२ तक, पारा १९ सू० शुअरा आ ३०से६६ तक, कु०पा०१९ सू०नम्ल आ ९ से ११ तक में दिया है। कु० प० २० सू०कसस के मूसा को बाइबिल वाली जन्म कथा, विवाह आदि की बात दी है और अग्नि दर्शन की घटना के बारे मे लिखा है—

"मूसा (विवाह के बाद) वहां कुछ दिन रह कर बीबी को लेकर चल दिया। तोतूर पहाड की ओर उसे एक आग दिखाई दी। मूसा ने अपने घर के लोगों से कहा कि तुम (इसी जगह) ठहरो! मुझे आग दिखाई दी है, शायद वहां से कुछ खबर लाऊं या आग भी एक चिनगारी लेता आऊं ताकि तुम तापो।२९। फिर जब मूसा आग के पास पहुचा तो उस पाक जगह मैदान के दाहिने किनारे के दरख्त से उसे आवाज सुनाई दी कि मूसा! हम ससार के पालन करने वाले अल्लाह हैं। ३०। और यह कि तुम अपनी लाठी जमीन पर डाल दो तो उस लाठी को डाला और उसको इस तरह चलते हुए देखा कि गोया यह सांप है तो पीठ फेर कर भागा और पीछे को न देखा। (हमने फरमाया) मूसा आगे आओ और डर न करो तू बेखटके है। ।३१। अपना हाथ अपने गिरहबान के अन्दर रखो। और फिर निकालो तो वह बिना किसी बुराई के सफेद निकलेगा ॥ ३२ ॥

इस सारी कथा को कुरान व बाइबिल मे देखने से प्रगट हो जाता है कि मूसा साधारण आदमी था। वह हत्यारा था। हत्या के पाप से पकड़े जाने के भय से मिश्र से भाग गया था। मिदयान देश मे जाकर रहने लगा। उसकी वहां शादी हुई, बाइबिल के अनुसार उसके एक लड़का भी पैदा हुआ था। एक बार भेड़े चराते समय सुसराल में ही उसे आग पहाड़ पर झाडी में दिखाई दी, वहां जाने पर उसे खुदा मिल गया और खुदा ने उसे विद्या, बुद्धि, बल, श्रेष्ठ गुण, धन, सन्तान, मोक्ष आदि कुछ न देकर दो चमत्कार दिये कि जब तू चाहेगा लाठी का सांप बना देगा और अपना हाथ सब को सफेद रग का दिखा देगा। खुदा की सबसे बडी देन, दान, परशाद यह जादूगरी रही थी जिस पर कुरान व बाइबिल मे लम्बे चौडे वर्णन लिखे गये है।

हत्यारा भय से भागने वाला, जादूगरी दिखाने वाला मूसा वैदिक ऋषि नहीं हो सकता है। मौलाना साहब अपना भ्रम दूर कर लेवें।

बाइबिल के अनुसार आग झाड़ी में थी और खुदा ने झाड़ी मे से बातें उससे की थी। कुरान के अनुसार आग पृथक् जल रही थी। मूसा वहां आग के पास जब पहुच गया तो उस स्थान के दाहिनी ओर खड़े पेड़ पर से खुदा बोल उठा।

यह दोनो विवरण परस्पर विरोधी हैं। कौन सत्य है यह आप जाने। बाइबिल के अनुसार मूसा ने ससुराल के भेड़ चराते समय आग देखी थी। कुरान के अनुसार ससुराल मे चले जाने के बाद मार्ग मे देखी यह विरोध दोनो मे है।

बाइबिल में मूसा ने एक जगह एक अत्यन्त गन्दा बेरहमी का जाहिलाना आदेश कौम को दिया है जो उसे ऋषि के स्थान पर अति क्रूर व्यक्ति सिद्ध करता है जो निम्न प्रकार है—

"तब मूसा क्रोधित होकर कहने लगा १३। १४॥ क्या तुमने औरतों को जीवित छोड़ दिया। १५। के-अब बाल बच्चों मे से हर एक लडके को और जितनी औरतो ने पुरुषों का मुंह देखा हो उन सभी को कत्ल करो। १७। परन्तु जितनी लड़कियों ने पुरुष का मुंह न देखा हो उन सबों को तुम अपने लिए जीवित रखो। १८। और मनुष्यों में से जिन औरतों ने पुरुष का मुंह देखा था बत्तीस हजार थीं। ३५। (बाइबिल गिनती ३१)

★आचार्य डा० श्रीराम आर्य
कासगंज

उपरोक्त उदधरण से प्रगट है कि मासूम बच्चों, औरतों व निर्दोष लोगों को कत्ल कराना मूर्खों का काम होता है न कि सज्जनों का होता है। सज्जन लोग तो सब पर दयालु, न्यायी, धर्मात्मा होते हैं। स्पष्ट है कि मूसा बेरहम व कातिल था, भेड़ें चराना उसका पेशा था।। खुदा भी एक बार उस पर इतना नाराज हुआ था कि उसने मूसा को मार डालना चाहा जैसा कि लिखा है—

"तब यहोवा का कोप मूसा पर भड़का...। १४। और ऐसा हुआ कि मार्ग पर सराय मे यहोवा (खुदा) ने मूसा से भेंट करके उसे मार डालना चाहा। (२४) निर्गमन ४, बाइबिल ॥

यदि मूसा भला आदमी होता तो खुदा उस पर इतना क्रोध कदापि न करता कि उसकी हत्या की बात सोचता।

आशा है मौलाना इस्लामानन्द जी के लेख से भ्रांति फैली है उसका निराकरण इस लेख से प्रकारेण हो जावेगा।

●

मोहन आश्रम हरिद्वार में विरोध सभा जगजीवनराम की बड़ी भर्त्सना

दि० १२ जून १९६८ को मध्याह्न-काल हरिद्वार में श्री पं० शिवदयालु जी की अध्यक्षता में सभा की गई और श्री जगजीवनराम जी ने जो प्राचीन आर्य पूर्वजों पर गोमांस भक्षण का आरोप लगाया है उसकी बड़ी निन्दा की गई।

पं० जी ने अपने भाषण में बतलाया कि वैदिक वाङ्मय में गो शब्द धेनु, वाणी, इन्द्रिय, भूमि स्वर्ग आदि अर्थों में प्रयुक्त हुआ है। धेनु को तो स्पष्ट अनेक स्थानों पर अघ्न्या बतलाया है। ब्रह्मचारी अर्थात ब्राह्मण की गौ जिसे सत्य पूत वाक कहते हैं वह भी अघ्न्या है इसी प्रकार मातृभूमि भी अघ्न्या है।

इन्द्रिय रूपी गौ केवल हत्या अर्थात् दमन करने योग्य हैं। इन्द्रियों को दमन करने वाले व्यक्ति को गोदम कहा जाता है। गोहन अतिथि का अर्थ इन्द्रिय जित भिक्षु संन्यासी आदि है। जिन अतिथि के लिए गो का हनन किया जाय ऐसा करना वेद दूषकों का काम है। पाश्चात्य विद्वानों ने जो वैदिक संस्कृति के शत्रु के इस प्रकार के अनेक अनर्गल प्रलाप किये हैं। जिनका समर्थन श्री जगजीवनराम जी ने अपने वक्तव्य में किया है। श्री जगजीवनराम जी मानवता का यह तकाजा है कि वह अपने वक्तव्य के लिये खेद प्रकट करें।

शुद्धि तथा उपनीत संस्कार

आर्यसमाज मण्डावली में २ जून ६८ को एक अमर जन ईसाई महिला की शुद्धि श्री ... मित्रसेन जी एम० ए० के पौरोहित्य में की गई। और उसका नाम ... गया। तदनन्तर ... हिन्दू धर्म में कर लिया गया। उपस्थित सैकड़ों व्यक्तियों पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

२ जून को ६ ... का जिन्होंने भारतवर्षीय वैदिक सिद्धान्त परिषद की सिद्धान्त भूषण परीक्षा उत्तीर्ण की है, का यज्ञोपवीत संस्कार परीक्षा मन्त्री आचार्य मित्रसेन जी एम० ए० ने कराया। उन्होंने जीवन भर आर्यसमाज की सेवा करने का व्रत लिया।

सूचना

गढ़वाल आर्य उप सभा कोटद्वार के कतिपय सदस्यों के परामर्श से पौड़ी की नव वर्षगांठ में आर्यसमाज की साधारण सभा ने यह निश्चय किया है कि अक्टूबर १९६८ में अब जिला की बैठक हो उस समय आर्यसमाज का वार्षिक उत्सव समारोह का आयोजन किया जाय और उसी समय महर्षि दयानन्द सरस्वती के चित्र का जिला परिषद हाल में अनावरण की व्यवस्था की जाय।

मन्त्री

गुरुकुल महा विद्यालय रुद्रपुर में छात्रों का प्रवेश

गुरुकुल महाविद्यालय रुद्रपुर में जुलाई से प्रारम्भ होने वाले नवीन सत्र के लिये छात्रों का प्रवेश प्रारम्भ है। यह संस्था वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय से उत्तर मध्यमा (१० वीं श्रेणी) तक मान्यता प्राप्त है। साथ ही गुरुकुल ज्वालापुर से मान्यता प्राप्त श्रीमद्दयानन्द विद्यापीठ एटा की आचार्य कक्षायें भी यहाँ होती हैं। यह संस्था प्राचीन आर्ष प्रणाली से संस्कृत व्याकरण, साहित्य, निरुक्त, दर्शन, याज्ञिक प्रक्रिया का अध्यापन कराती है।

प्रत्येक प्रकार की शिक्षा निःशुल्क है। भोजन व्यय २०) मासिक लिया जाता है। महाभाष्य, निरुक्त दर्शन का अध्ययन करने वालों को भोजन निःशुल्क दिया जाता है। विशेष जानकारी के लिए आज ही नियमावली मंगाइये तथा पत्र व्यवहार करिये।

निवेदक—
—सत्यदेव शास्त्री
गुरुकुल रुद्रपुर, तिलहर
जि० शाहजहाँपुर

धार्मिक परीक्षायें

आर्य सेवा संघ की साहित्य विशारद, साहित्य भूषण, साहित्य रत्न, साहित्य प्रभाकर तथा शोध उपाधि परीक्षायें आगामी दिसम्बर मास में समस्त भारत में होंगी। कोई भी व्यक्ति किसी भी परीक्षा में बैठ सकता है। प्रत्येक परीक्षा में सुन्दर व रंगीन उपाधि पत्र प्रदान किया जाता है। सर्वप्रथम और द्वितीय तृतीय, आने वाले छात्रों को पारितोषिक, छात्र-वृत्ति, पुस्तक सहायता, पदक, आर्थिक सहायता दी जाती है। निम्न पते से पाठ विधि २५ पैसे के डाक टिकट भेज कर मंगाइये, परीक्षाओं का माध्यम हिन्दी है।

हरपालसिंह योगी
अध्यक्ष

डा० ओमपाल आर्य 'सचेत'
साहित्य शास्त्री H L M S
मन्त्री

आर्य सेवा संघ, रसूलपुर जाहिद
पो० रसूलपुर कलौंदी (जानी) मेरठ (उ० प्र०)

आर्यमित्र की सूचना

अब तक जिन ग्राहकों का इस वर्ष हेतु शुल्क समाप्त है उन्हें काफी समय पूर्व ही चन्दा समाप्ति की सूचनायें भेज दी गई हैं। कुछ कृपालु ग्राहकों ने अपना शुल्क भेज भी दिया है परन्तु अधिकांश अभी शेष है।

अतएव अनुरोध है कि अविलम्ब ही आप महानुभाव अपना २ शुल्क १० रु० मनीआर्डर द्वारा भेजने का कष्ट करें।

डाक दर में असाधारण वृद्धि हो जाने के कारण वी० पी० पी० भेजने पर ग्राहकों पर अनावश्यक व्यय भार पड़ता है अतएव कृपया अपना धन मनीआर्डर द्वारा ही भेजिए।

मनीआर्डर के कूपन पर अपनी ग्राहक संख्या अवश्य लिखिये।

—व्यवस्थापक

स्वर्गीय ब्रह्मचारी बालकराम 'प्रज्ञाचक्षु'

(सतालू से आगे)

जन कल्याणार्थ आमरण अनशन

गढ़वाली नेताओं तथा सम्भ्रान्त व्यक्तियों में जागरूकता उत्पन्न करने और देश के नेताओं का ध्यान गढ़वाल की पीड़ित आर्य जनता की ओर आकृष्ट करने ब्रह्मचारी जी ने पं० वेदव्रत जी के साथ डी०ए०वी० स्कूल भवन दुगड्डे में "आमरण अनशन" प्रारम्भ कर दिया। आपका यह अनशन १३ दिन तक चला। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली तथा आर्य प्र० नि० सभा उ० प्र० ने आपको आश्वासन दिया कि आप अपना अनशन समाप्त करें, हम इन अत्याचारों को समाप्त कराने में अपनी सारी शक्ति लगा देंगे। अनशन बिजनौर गढ़वाल आर्योपप्रतिनिधि सभा के तत्कालीन मन्त्री श्री ईश्वर दयालु जी उ० प्र० प्र० नि० सभा के मन्त्री बाबू पूरनवीर सिंह व आर्य प्रादेशिक सभा पंजाब के प्रतिनिधि ठा० अमरसिंह आर्य पथिक और नजीबाबाद के बा० शिवचरण दास वकील के समक्ष समाप्त किया। इस प्रकार ब्रह्मचारी जी ने गढ़वाल के समाज शिल्पकारों को जो सदियों से पददलित थे, समान धार्मिक एवं नैतिक अधिकार दिलाने का स्वप्न देखा था, गढ़वाली उच्च वर्णीय निर्दयी व्यक्तियों का नवदीक्षित आर्यों पर अत्याचार अपनी चरम सीमा पर पहुंच चुका था। पंजाब के दानवीर आर्य नेता बाबा गुरुमुख जी ने गढ़वाल में वैदिक धर्म प्रचारार्थ एक लाख रुपये का दान भी दिया। कुछ दिन प्रचार करने के बाद ब्रह्मचारी जी ने पुन. प० वेदव्रत शर्मा के साथ कोटद्वार में सवा लाख गायत्री जप अनुष्ठान तथा साथ में पुनः आमरण व्रत रखने का निश्चय किया। पर बीच में ही राष्ट्रीय नेताओं से मिलना आवश्यक समझा गया।

महात्मा गांधी से भेंट

ब्र० बालकराम जी प० वेदव्रत शर्मा के साथ ६-१०-१९४६ को हरिजन बस्ती नई दिल्ली में महात्मा गांधी से मिलने गये। और उनसे उन्होंने गढ़वाल की सवर्ण जनता द्वारा किये अत्याचारों की दर्द भरी कहानी सुनाई। और उनसे इस विषय पर स्वयं दिलचस्पी लेने की प्रार्थना की। महात्मा जी के सामने उन्होंने इसके लिये एक कानून बना देने की भी प्रार्थना की। पूज्य राष्ट्रपिता ने पूरी हमदर्दी के साथ बातचीत सुनी और कहा कि आप लखनऊ जाकर प० पन्त जी से मिलें और उनसे कहें। मैं भी उनको लिख देता हूं। इसके बाद ब्रह्मचारी जी उत्तर प्रदेश के मुख्य मन्त्री प० गोविंद वल्लभ पन्त से मिलने नैनीताल गये। और म० गांधी जी का आदेश उन्हें सुनाया। श्री ब्र० जी के इस परिश्रम का ही परिणाम था कि डोलापालकी की एक वर्ष से रोकी गई बरात को ससम्मान निकालने का राजकीय प्रबन्ध हुआ और इस प्रकार डोलापालकी काण्ड का अन्त हुआ। इसी सिलसिले में जब आप राष्ट्र नायक श्री जवाहरलाल नेहरू से मिले तो श्री नेहरू ने आवेश में कहा कि "क्या अभी तक गढ़वाल की इस अमानुषी समस्या का हल नहीं हुआ।"

डोला-पालकी एक्ट १९४६

श्री प० वेदव्रत जी के साथ श्री ब्रह्मचारी जी लखनऊ आये। कानून बनवाने में जो भी अड़चने सामने आयीं उनका आपने धैर्य से सामना किया। अन्त में उत्तर प्र० सरकार ने 'डोला पालकी एक्ट १९४६' बनाकर समस्त शिल्पकारों एवं हरिजनों को सवर्णों के समान धार्मिक अधिकार प्रदान किया।

प्रचार क्षेत्र

इसके बाद आपका प्रचार क्षेत्र का विस्तार हो गया। आप मैदानी इलाके में बिजनौर, सहारनपुर हरिद्वार, मुरादाबाद तथा दिल्ली और पंजाब भी प्रचार करते रहे। दैनिक यज्ञ तथा पारिवारिक यज्ञ एवं कथा में आपकी विशेष रुचि थी। आपके धार्मिक प्रचार का बड़ा सुन्दर प्रभाव पड़ता था। सद्गृहस्थियों से प्रतिदिन पंच यज्ञ करवाते थे। प्रज्ञाचक्षु होने हुये भी आप अपने प्रोग्राम पर यथा समय पहुंच जाते थे। सन् १९३० से आप निःशुल्क गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या के अवैतनिक एवं प्रतिष्ठित प्रचारक रहे। इस अवधि में आपको मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम की जन्म भूमि अयोध्या के इलाके से भी पाखण्ड एवं अन्धविश्वासों को दूर करने का सौभाग्य मिला।

पंजाब हिन्दी सत्याग्रह १९५०

स्वतन्त्रता मिलने के बाद में तो पंजाब में अकालियों का आन्दोलन तीव्र होता गया कि हम हिन्दी नहीं पढ़ेंगे। पंजाब में सभी को गुरुमुखी लिपि में पंजाबी पढ़नी पड़ेगी। फल स्वरूप आर्य समाज ने पंजाबी की अनिवार्यता हटाने के लिये आन्दोलन चलाया। तब पंजाब के मुख्य मन्त्री सरदार प्रतापसिंह कैरों थे। ब्रह्मचारी जी ने उत्तर प्रदेश के पश्चिमी जिलों में घूम-घाम कर प्रचार किया और सत्याग्रहियों को जेल जाने को तैयार किया। लालापार आर्यसमाज (सहारनपुर) से श्री महात्मा हरिप्रकाश वानप्रस्थी के साथ जत्थे में सम्मिलित होकर ११ मई को ब्र० जी सत्याग्रह करने चल पड़े। चण्डीगढ़ में धारा १४४ तथा पुलिस का घेरा तोड़ कर पंजाब सचिवालय के सामने ११ सन्यासी जून की कड़कती धूप में धरना दे रहे थे, उनमें सम्मिलित हो गये। यह धरना बड़ा विकट था। मई जून की कड़कड़ाती धूप में और इसी बीच एक दिन लगातार १३ घण्टे तक वर्षा हुई, पर आप धैर्य पूर्वक धरना दिये बैठे रहे। कई दिन पंजाब पुलिस ने आपको अन्य सत्याग्रहियों के साथ मोटर में भर कर जंगल में भी छोड़ा पर आप फिर अपने साथियों के साथ आ जाते थे।

आमरण अनशन

हिन्दी जगत् के ६ अगस्त ५७ का दिवस तो स्मरणीय है ही जिस दिन कैरों शाही पुलिस ने बूते पहन कर आर्य समाज चण्डीगढ़ की यज्ञशाला को अपवित्र किया था। जिसके प्रतिकार स्वरूप आर्य [illegible] महात्मा आनन्द भिक्षु जी ने अनशन किया। पुलिस महात्मा जी को जब पकड़ कर ले गई और उन्हें आत्म हत्या के अपराध में बन्दी बनाया, तब [illegible] ब्रह्मचारी श्री बालकराम जी ने भी आमरण अनशन की घोषणा कर दी।

इस आन्दोलन में आपका यह आ[मरण] अनशन ४१ (इकतालीस) दिन त[क] चला। ५ सितम्बर को पंजाब सरका[र] के जेल मन्त्री डा० गोपीचन्द भार्गव ने [illegible] भाषा स्वातन्त्र्य समिति के अध्यक्ष [illegible] घनश्यामदास गुप्त के अनुरोध पर [illegible] कि डा० भार्गव ने कहा कि 'जो पंजा[ब] पुलिस ने आर्य समाज की पवित्र य[ज्ञ] वेदी को भ्रष्टाचार द्वारा दूषित किय[ा] है यह वास्तव में अशोभनीय था [illegible] लिये मैं क्षमा मांगता हूं भविष्य में ऐ[सा] न होगा"। तब आपने उनके हाथ [illegible] दिये पेय से अनशन तोड़ा। [illegible] शरीर काफी कृश हो गया था। आप[ने] बहुत ही कष्ट उठाये पर वैदिक ध[र्म] तथा मातृ भाषा हिन्दी के मान [illegible] बनाये रखा। दो मास के विश्राम [के] बाद पुन. प्रचार कार्य में जुट गये।

गोरक्षा आन्दोलन १९६६

अखिल भारतीय स्तर पर ज[illegible] गोरक्षा महा समिति के तत्वाधान [illegible]

गोरक्षा आन्दोलन चला तो इसमें [illegible] आप पीछे न रहे। एक एक दो-दो मा[स] की सजा काटने के बाद आप फिर [illegible] आप को गिरफ्तार करवा लेते थे। इस [illegible] ५ बार आप जेल गये। पटियाल[ा] रोहतक तथा तिहाड़जेल दिल्ली [illegible] रहे। आप ने निश्चय कर लिया [illegible] कि जब तक सरकार कानून बनाकर [illegible] वंश रक्षा का वचन नहीं देती तब त[क] मैं अपने आप को जेल में ही रखूंगा। इस प्रकार आपका [illegible] संघर्ष मय रहा [illegible] प्रेरणा [illegible] उत्तर प्रदेश [illegible] प्रज्ञाचक्षु होते हुये भी [illegible] धर्म प्रचा[र] के लिये कटिबद्ध रहे [illegible] कितनी ह[ी] दूर जाना हो [illegible] भगवान आपका [illegible] ही रहता [illegible] में [illegible] नहीं [illegible]

—सत्यव्रत शास्त्री
लोहारू हिसार हरियाना

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल.-६०

२० आषाढ़ १ शक १८९० आषाढ़ सु० ४
(दिनांक ३० जून सन १९६८)

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

Registered No L 60
पता—'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष २५९९३ तार : "आर्यमित्र"

संस्था-परिचय

डी०ए०वी० इण्टर कालेज, इलाहाबाद

जैसा कि आपको विदित है कि पिछले ६० वर्षों से अधिक समय से यह संस्था आर्य सिद्धान्तों के प्रचार और प्रसार में लगी हुई है इधर अनेक वर्ष से धनाभाव के कारण हम अपने कार्य में समुचित सफलता नहीं प्राप्त कर सके हैं। संस्था के वर्तमान अधिकारी दृढ़ संकल्प है। कि इसके विकास के लिए कोई प्रयत्न उठा न रक्खा जावे। इण्टर कक्षाओं में विज्ञान की शिक्षा प्रारम्भ करने के लिये प्रयोग शालाओं तथा साज सज्जा की आवश्यकता है। इस वर्ष से दयानन्द शिशु मन्दिर के नाम से एक बाल भवन खोलने का निश्चय किया गया है। जिसमे आर्य सिद्धान्तों के साथ आधुनिक ढंग से बच्चों को प्रशिक्षित किया जायगा। हमारा हाल भी कई वर्षों से अपूर्ण पड़ा हुआ है। उसे पूरा करना है।

इस संस्था के विकास मे पूज्य प० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय ने अपना सारा जीवन लगा दिया है। आर्य जगत का यह पुनीत कर्तव्य है कि इस संस्था के चतुर्मुखी विकास के लिये पूर्ण सहयोग दे। आप से प्रार्थना है कि आप अपने सदस्यों तक हमारी अपील पहुचा दें। १००) रुपया से अधिक दान देने वाले दाता सज्जन आर्यन एजूकेशन ट्रस्ट के आजीवन न्यासधारी बन सकते है। जो लोग विज्ञान भवन तथा हाल की पूर्ति के लिये २००) रुपया या इससे अधिक का दान देंगे उनका नाम हम सादर भवन में अंकित करेंगे। जो दानी सज्जन किसी एक कमरे के निर्माण का भार पूर्णतया वहन करेंगे उनका नाम कमरे के मुख्य द्वार पर विशेष रूप से अंकित करेंगे।

हमें पूर्ण विश्वास है कि हमे इस दिशा मे आपका पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा जब आप आज्ञा देंगे कालिज का एक डलीगेशन आपकी सेवा मे उपस्थित होगा।

दान कृपया इस पते पर भेजें—
मन्त्री आर्यन एजूकेशन ट्रस्ट डी० ए० वी० इण्टर कालेज इलाहाबाद।

—प्रबन्धक

★

विदेशी मिशनरियों व पाक-समर्थकों द्वारा सरकार विरोधी गतिविधियों को प्रोत्साहन

रांची के आस पास अनेक अड्डे

पटना। ज्ञात हुआ है कि रांची तथा आस पास के विदेशी मिशनरी और वहां के अल्प संख्यक वर्ग राज्य सरकार तथा छोटा नागपुरियों के विरुद्ध सम्मिलित रूप से एक बड़ा षड़यन्त्र तयार करने में संलग्न हैं और इन क्षेत्रों में 'कोल्हा कोल्हा' भाई २ के नारे दिये जा रहे हैं।

इन क्षेत्रों का दौरे से लौटे कुछ अधिकारिक सूत्रों ने यहां बताया है कि अगस्त १९६८ में रांची में हुये साम्प्रदायिक दंगे के बाद विदेशी मिशनरियों ने अल्प संख्यकों को भारी सहायता पहुचाई थी और आज जब मिशनरियों के उकसाने पर आदिवासियों का आन्दोलन बढ़ रहा है तो वे मिशनरी सक्रिय सहयोग उन्हें दे रहे हैं।

बताया गया है कि विदेशी मिशनरियों तथा पाक समर्थक मुसलमानों के नेताओं ने एक उच्चस्तरीय समझौता किया है उन्होंने आसपास के इलाकों को सरकार विरोधी गतिविधियों का अड्डा बनाये रखने की योजना बनाई है ताकि ईसाई प्रभावी द्वारा इस इलाके को अलग राज्य बनाने के बारे में किये जा रहे आन्दोलनों को बल मिल सके।

★

सिद्धांत-विमर्श

(पृष्ठ २ का शेष)

हो खाते थे और न पशुवध ही करते थे। वैदिक साहित्य में जहां गो मांस आदि के भक्षण का उल्लेख है वहां भौतिक अर्थ में औषधि और अध्यात्मिक अर्थ मे इन्द्रिय आदि हैं।

यथा—गो मांस भक्षयेन्नित्यं पिबेदमरवारुणीम्।
कुलीनं तमहं मन्ये इतरे कुलघातकाः ॥ हठयोग प्रदीपिका

अर्थात—जो नित्य गो मांस का भक्षण करता है और मदिरा पीता है वही कुलीन है। अन्य लोग कुलघाती हैं। यहां गो मांस का अर्थ जिह्वा इन्द्रिय हैं और अमर वारुणीम का अर्थ परमानन्द ब्रह्म अथवा वेद वाणी उचित हैं। अगले श्लोक में गो मांस स्पष्टीकरण है—

गो शब्देनोदिता जिह्वा तत्प्रवेशो हि तालुनि।
गो मांस भक्षणं तत्तु महा पातक नाशनम् ॥

अर्थात योगी पुरुष जिह्वा को लौटा कर तालू मे प्रवेश करता है उसी को गो मांस भक्षण कहा गया है। गौ जिह्वा को कहते हैं। जिह्वा मांस की होती है। इसी लिये जिह्वा को गो मांस की उपमा दिया गया है यदि दूसरा श्लोक पहले का स्पष्टीकरण न करता तो इसमें स्पष्ट गो मांस भक्षण का उल्लेख था परन्तु वह विषय हो गया।

आगे कुछ प्रमाण हम उद्धृत कर रहे हैं जिसमें यज्ञ में मांस प्रयोग का निषेध है। यद्यपि बौद्ध काल में यज्ञ में मांस का प्रयोग होने लगा था परन्तु वह वैदिक तथा शास्त्रीय विधान नहीं था। यज्ञ पशुवध सर्व सम्मति से स्वीकार नहीं कर लिया गया था। मीमांसा शास्त्र में कहा गया है—

मांस पाकप्रतिषेधश्च तद्वत (मीमांसा १२। २। २)

अर्थात जैसे यज्ञ मे पशुहिंसा मना है वैसे मांस पाक भी मना है। आगे आश्वलायन मे कहा गया है—

"होमिय च मांस वर्जम्"

अर्थात हवन सामग्री में मांस वर्जित है।

कात्यायन ऋषि कहते हैं—आहवनीये मांस प्रतिषेध। अर्थात हवन सामग्री मे मांस नहीं है।

सब सिद्ध है कि प्राचीन वैदिक ग्रन्थ हिंसा मूलक न थे। मूल वैदिक धर्म बुद्ध सिद्धान्त के प्रतिकूल न था। भगवान बुद्ध का अटल विश्वासनीय कथन था कि—

'एवमेसो अनुधम्मो पोराणो विञ्ञू गरहितो'

अर्थात यह गो हिंसा इस प्रकार पुराने विद्वानों द्वारा निन्दित, नीच कर्म है। शतपथ ६। २। २। ६९॥ में कहा गया है कि—

न मांस मश्नीयात, न मिथुनमपेयात यन्मांसमश्नीयात्,
यन्मिथुनमुपेयादिति न स्वेवैषा दीक्षा ॥

अर्थात मांस न खावे। मैथुन न करे। यदि मांस खाये और यदि मैथुन कर तो यह दीक्षा ही नहीं रहती। आगे तैत्तिरीय १। १। ९। ७। ८ में कहा है—

न मांसमश्नीयात्। न स्त्रियमुपेयात्।

पाठक बन्धुओ! सब सद्शास्त्रों के प्रमाणों द्वारा सिद्ध है कि वैदिक युग के आर्य पुरुष कभी भी मांस भक्षण और मद्य सेवन नहीं करते थे। हो सकता है दस्यु लोग करते रहे हों। परन्तु निषेध उनके लिये भी था। अतः श्री खाद्य मन्त्री जग जीवनराम जी की गो-मांस भक्षण की धारणा सर्वथा असत्य एवं मिथ्या पूर्ण भ्रम है।

●

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के लिये भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से कृष्णगोपाल शर्मा द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।

लखनऊ—रविवार आषाढ १६ शक १८९० आषाढ शु० १० वि० सं० २०२५ दिनांक ७ जौलाई १९६८ ई०

दयानन्दाब्द १४४ सृष्टिसंवत १ ९७ २९ ४९ ०६९

वर्ष ७०

अङ्क २२

एक प्रति २५ पै०

गुरुकुल कांगड़ी

परमेश्वर की अमृत वाणी

ओ३म् त्वं हि विश्वतोमुख विश्वतः परिभूरसि । अप नः शोशुचदघम् ॥
द्विषो नो विश्वतोमुखाति नावेव पारय । अप नः शोशुचदघम् ॥
स नः सिन्धुमिव नावयाति पर्षा स्वस्तये । अप नः शोशुचदघम् ॥

[ऋग्वेद मण्डल १ सूक्त ९७ मन्त्र ६ ७ ८]

प्रार्थना—हे विश्वतोमुख सर्व द्रष्टा परमात्मन् ! आप सम्पूर्ण जगत में व्याप्त हैं। आप सर्वज्ञ हैं आप समस्त जीवों के हृदयों के भावों और उनके कर्मों को भली भांति जानते हैं। प्रभु ! हम अपनी अल्पज्ञता से नाना प्रकार के पापों व उनके कारण दुष्ट संकल्पों व दुष्कर्मों में रत रहते हैं। अतएव आप से प्रार्थना करते हैं कि हमें इन कुटिलता युक्त पापों से छुड़ाइए जिससे हम आपके सच्चे ज्ञानी व भक्त बन सकें।

हे विश्वतोमुख सर्व शक्तिमान परमात्मन ! हमें डूबने से बचाने के लिए, हमें सर्वनाश से सुरक्षित करने के लिये हमें द्वेष के महासागर से पार उतारो। हे सच्चे नाविक ! हमारे हृदयों से द्वेष को दूर करने के लिए हमारी जीवन नौकाओं को पतवार सम्भालो ताकि हमारे मन निष्पाप हो जाएं।

हे प्रेम स्वरूप दयानिधे परमात्मन् ! जिस प्रकार नौकाओं और जलयानों से नदियां व सागरों के पार उतरा जाता है, उसी भांति सुख शांति और आनन्दमय जीवन प्राप्त कराने के लिये हमारे अन्तःकरणों से विनाशकारी पापों को दूर कर दो ताकि आत्मा की मलिनताओं को आपकी भक्ति धारा में धोकर निर्मल शुद्ध और पवित्र होकर हम इस भव-सिन्धु से पार उतर सकें।

प्रभु ! हम आर्य जनों की आप से यही विनय है—स्वीकार करो, स्वीकार करो।

—'वसन्त'

वार्षिक १०)

छमाही ६)

विदेश में

१ पौ०

इस अंक में पढ़िए !

१—एकमेव औषधि	२	७—महिला मण्डल	८
२—सम्पादकीय	३	८—पाठकों के पत्र	९
३—सभा तथा सार सूचनायें	४	९—आर्य जगत	११-१२
४—भवशास्त्र	५	१०—पाप का फल	१५
५—शिक्षा सम्मेलन	६	११—आर्यमित्र नये रूप में	१६
६—परिवार नियोजन	७		

अवैतनिक सम्पादक—

विक्रमादित्य 'वसन्त'

या ओषधीः सोमराज्ञीर्बह्वी शत विचक्षणः। तासां त्वमस्युत्तमारं कामाय शं हृदे ।।

(ऋ० १०-९७-१८, य० १२-९२ अथव ६-९६-१)

पद पाठ

या, ओषधीः सोम-राज्ञी बह्वी शत विचक्षणः। तासाम् त्वम् असि उत्तमा अरम् कामाय शम् हृदे ।।

परम पिता परमेश्वर के इस आनन्द मय जगत् में आज का मानव जब अत्यन्त दुःखी व अशान्त है तो आनन्द की अनुभूति उसे कहां हो सकती है। प्रभु का यह अमृत पुत्र क्यों दुःखी और अशान्त है? इस प्रश्न के उत्तर मे केवल यही कहा जा सकता है कि वह रोगी है क्योंकि हमे भली भांति विदित है कि रोगी न तो सुखी हो सकता है और न ही उसके मन मे रोग की वेदना के कारण शान्ति हो सकती है। वह रोगी क्यो है? यह भी एक प्रश्न है और उसका भी एक उत्तर है अपनी असावधानी व अनियमतताओं के कारण अथवा कर्मफल भोग की विवशता के कारण। इन अनियमताओं व पापो का क्या कारण है तो उसका भी एक ही उत्तर है और वह है अज्ञान। अज्ञान कैसे जब कि विश्व मे स्थापित विश्वविद्यालयों से निरन्तर शिक्षा का प्रसार हो रहा है तो उसके लिये भी एक ही उत्तर है–श्रुत व पठित की अपेक्षा आत्मानुभूत ज्ञान जो सत्यता का साक्षात्कार कराता है और यही सत्य ज्ञान वेद की उन पावन ऋचाओ मे है जो परमपिता ने अपने पावन पुत्रों के कल्याणार्थ वेद में अन्तर्निहित किया है।

वह नितान्त सत्य है कि परमात्मा के आनन्दालय को मानव ने अपने ही दुष्कर्मों से रोगालय मे परिवर्तन कर दिया है। जगत् मे रोग का उत्पत्ति कर्ता भोग है और भोग की मूल प्रवृत्ति की सञ्ज्ञा हो पाप है। पापों से आच्छादित आत्मायें भाग की प्रवृत्तियो से विषय पदार्थों व जीवों मे आशक्त होकर सीमोलघन कर जाती हैं तो रोगों मे परिवर्तित होकर रोगों की सीमा तक जा पहुंचती है–

किन्तु वह प्रभु जहा न्यायकारी है वहां दयालु भी है। न्याय नियम मे बंधा हुआ वह न्याय को नहीं छोडता किन्तु मानव के सुधार के निमित्त इस बुद्धि जीवी के लिये उसने औषधियो का भी सृजन कर रखा है। यही कारण है कि प्रभु ने जहां रोग बनाये हैं वहां उन

एकमेव ओषधि

की औषधि भी बनाई है। विश्व को मानव ने यदि रोगालय बना दिया है तो उस सर्वज्ञ ने ओषधियों एवम् वनस्पतियों का अनन्त औषधालय भी स्थापित कर रखा है। कैसा है यह चिकित्सालय और कैसी हैं वे विचित्र औषधियां उन का विवेचन करते हुए मन्त्र कह रहा है–

(याः बह्वी सोम-राज्ञीः शत-विक्षणाः औषधिः)

अर्थात् बहुत सी सोमराज्ञी असंख्य विचक्षणता वाली औषधियां हैं–

होना होता है तो वह औषधियां काम नहीं करती है क्योंकि तू उनमे अपने रस को डालता है वह उनमें से रस सोखने की क्षमता भी रखता है इसी लिए साधक औषधि को महत्व न देकर उस औषधिराज को ही सारा महत्व देता है जिसकी यह सब महिमा है। उससे बडी औषधि क्या हो सकती है इसी लिये मन्त्र मे आगे कहा–

तासाम् त्वम् उत्तमा असि

हे प्रभु तू उन सब औषधियों से

प्रभु की महिमा विचित्र है, उसकी लीला विस्मयकारी है तभी से एक रोग की अनेक औषधियां व एक औषधि से अनेक रोगों की निवृत्ति। क्या हमने कभी इसे विचारा है कि जो दवाइयां हमारे रोगो को दूर करती हैं हमारी न्यूनताओं व अभावों को मिटाती हैं उनमें रस किस का है? निस्सन्देह वह उस स्वामी का ही रस है क्योंकि जब कर्म फल के वशी भूत मानव का प्राणान्त

श्रेष्ठ है। मूर्ख हैं वे जन जो तुझ पर आस्था न रखकर तेरी औषधियो पर आस्था रखते हैं। तेरी भौतिक औषधियों से भौतिक रोगो का निवारण तो भले हो ही जाए किन्तु मानसिक व आत्मिक रोगो की चिकित्सा इन नास्तिक विज्ञान वेत्ताओं के पास नहीं है। यह तो प्रभु केवल तेरी, तेरे ओ३म् नाम की ही एकमेव औषधि है जो (कामाय अरम) काम को समाप्त करती है और (हृदेशम्) हृदय को

शांति देता है।

विकार वासनाओ से दग्ध मानव, ईर्षा द्वेष की आग में जलता हुआ मानव किस औषधि से चैन पाएगा। काम वासना की समाप्ति केवल प्रभु लगन में है। ज्ञान चक्षु खुलने पर काम ज्ञान की अग्नि में भस्म हो जाता है। यही कल्याण पथ पर चलने वाले मानव रूपी शिव की तीसरी आंख है। जिस दिन मनुष्य इस धर्म को आत्मसात कर लेगा वह रूप रस गन्ध प्राण स्पर्श से ऊपर उठ जाएगा। नर-नारी पशु-पक्षी कीट पतंग वृक्ष आदि के ऊपरी कलेवर नहीं वरन् उनके अन्दर अन्तर्निहित चेतना का उसे साक्षात्कार हो जाएगा। विषमदर्शिता के स्थान समदर्शिता

*विक्रमादित्य 'वसन्त'

लेगी और वेदानुसार 'तत्र को मोह. कः शोक एकत्वमनुपश्यत.' उसे कोई मोह व शोक ग्रसित नहीं कर सकेगा। जब मोह व शोक के बन्धन टूट जाएंगे तब कहाँ की ईर्षा, कैसा द्वेष, कैसी दुर्भावना, कैसा विरोध, कैसी शत्रुता कैसा संघर्ष और क्यों विनाश, होगा? ऐसे व्यक्ति को क्यों न इन आकाश पर स्थित चञ्चल मन नितान्त शांत होकर आत्मा को आनन्द का भोपान करएगा पर यह तो तभी होगी–

जब प्रभु पर दृढ आस्था होगी
जब प्रभु की लगन लगेगी
जब प्रभु मे प्यार होगा
जब प्रभु के गुणों को धारण कर आत्मा उसके समीपस्थ होगी।

जब मस्तिष्क में निरन्तर प्रभु चितन होगा

जब हृदय आकाश मे आत्मा उसका आह्वान करेगी—और

जब नितांत शांतावस्था में आत्मा उसके दिव्य संदेश सुनेगी और अपनी जिज्ञासाओं का समाधान करेगी

तभी प्रभु हम पर कृपा करेगा हम रोग मुक्ती की कामना सत्कर्म में प्रवृत होंगे यह हमारी स्वर पर क्या होगी और वह दयालु हमे योग मार्ग पर अग्रसर होते देखकर मोक्ष की ओर आकृष्ट करेगा। ●

प्रार्थना के स्वर

ज्योतित करदे मेरा जीवन।

निर्मल उज्ज्वल ज्योति तेरी, जगमग कर दे मेरा तनमन ।।
ज्योतित······

धारण करके तेरे गुणों को, करलूं अपना अन्तर्शोधन।
भक्ति की पावन धारा में, हो पवित्र मेरा चिन्तन ।।
ज्योतित······ ········

ज्ञानमय हो साधना मेरी, सरल हो प्रभु मेरा जीवन।
सद् इच्छाओ से ही होवे, निशि दिन मेरे दय में वर्धन ।।
ज्योतित··········

परम मनोहर धाम में तेरे, निश दिन पाऊं तेरा दर्शन।
आनन्दमय हो आत्मा मेरी, मनमय हो मेरा नर्तन ।।
ज्योतित ·········

तृष्णाओ से हो छुटकारा, कट जायें भव-भय के बन्धन।
परम प्रसाद मिले मुक्ति का, सफल हो प्रभु मेरा अर्चन ।।
ज्योतित··········

—'वसन्त'

अमृतेन विषं हन्यते

इस समय संसार में सर्वत्र आसुरी वृत्तियों का बोलबाला है जिसके फल स्वरूप आनन्दमय परमात्मा की यह पुण्य धरती घोर अशान्ति और क्लेश का धाम बनी हुई है। आज का मानव भले ही वैज्ञानिक उन्नति की डींगे हांक कर यह कहे कि उसने भौतिक सुख की अनगिनत सामग्रियां एकत्रित कर दी हैं परन्तु हृदय की शांति नाम की कोई वस्तु उसके पास नहीं है आज के गतिशील युग की दुहाई देकर मानव भले ही नभ विजय के स्वप्न देखता हो किंतु एक कवि के शब्दों ने कैसा सत्य कहा है "जिसे मिली न शांति धरा पर, उसे गगन भी क्या देगा ?"

जगत की अशांति का मूल स्वार्थमय वृत्तियां हैं और उनका आधार घोर अज्ञान है। जब से मानव ने परमेश्वर के पराज्ञान से अपने आपको वंचित कर परमार्थ के मार्ग का त्याग कर दिया है तभी से वह अन्धकार मय भूल भुलैयों में भटक कर ठोकर खा रहा है। वेदानुसार यह संसार तो उस आनन्दमय का आनन्द रचना है "इह रति, इह रमध्वं" के अनुसार यहां तो मानव का आनन्द के खेल खेलने चाहिए न कि स्वार्थमय विनाश के।

यही कारण है कि विश्व जिस नीति से आज सञ्चालित हो रहा है, उसका आधार "विषेन विष हन्यते" हो रहा है। विष से विष दूर करो' लोहे से लोहे को काटो, यह मानों आज के युग का उद्घोष है फलतः सर्वत्र चाहे वह पारिवारिक क्षेत्र हो या सामाजिक अथवा राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय सब ने इस विष युक्त नीति का बोल बाला है। ऊपर से मीठा भीतर से कड़वा विष यह है आज की व्याप्त नीति। वेद ने कहा था "यद् अन्तरम् तद् बाह्यम्, यद् बाह्यम् तद् अन्तरम्" किन्तु आज का मानव तो बहुरूपिया बन चुका है मुंह में राम-राम और बगल में छुरी वाली कहावत पूर्णतया चरितार्थ होती है।

घोर असत्य से आच्छादित यह नीतियां वास्तव में अनर्थकारी हैं और इन्हें दूर करने का उत्तरदायित्व केवल आर्यसमाज को निभाना है। संसार का उपकार जिस समाज का मुख्य उद्देश्य है और सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझने का जिसका सुनहरी नियम है, उसे आगे बढ़कर इस ओर प्रगतिशील होना चाहिये। संसार के वर्तमान द्वेष पक्षपातपूर्ण स्वार्थ, दुर्भावना, विरोध, संघर्ष व सर्वनाश के मदमाते प्रवाह से निकल कर परमेश्वर के पुनीत वेद ज्ञान की वेगवती धारा बहाकर उसे भूले भटके विश्व को एक नयी दिशा देनी चाहिये और उसका आधार होना चाहिए 'अमृतेन विष हन्यते" विष से विष दूर करने पर एक विष का यदि लोप होगा तो दूसरा स्थिर रहेगा किंतु अमृत से विष दूर करने पर अमृत ही शेष रहेगा—

आर्य जगत के नेताओं को चाहिये कि वे इन सूक्तियों पर गम्भीरता से विचार करें और वेद की अमृत वर्षा से युग प्रवाह को एक नया मोड़ दें।

'बसन्त'

पादरी फेरर को देश निकाला

मनमाड़ (महाराष्ट्र) के बदनाम रोमन कैथोलिक पादरी, जिसने लगभग दस हजार हिन्दुओं को छल कपट द्वारा ईसाई बनाया महाराष्ट्र से निकाल दिया गया है। सम्प्रति वह एक मास के लिये भारत से बाहर जा रहा है। अवधि बीतने पर वह फिर भारत आकर महाराष्ट्र के अतिरिक्त कहीं भी प्रचार कार्य कर सकेगा। अतएव भारत की राष्ट्रीयता एवं संस्कृति के इस द्रोही व्यक्ति को पुनः भारत प्रवेश की अनुमति देना सर्वथा अनुचित है।

कुण्डली बूचड़खाना सत्याग्रह सफलता की राह पर

कुण्डली बूचड़खाने पर पचास हजार हिन्दू जनता द्वारा घेरा डालने की तैयारी से भयभीत होकर हरियाना के मुख्य मन्त्री ने सार्वजनिक सभा में यह आश्वासन दिया है कि इस बूचड़खाने में अब किसी भी पशु का वध न होने दिया जायगा और केन्द्रीय सरकार से बूचड़खाना उठाने का अनुरोध किया जायगा। हम हरियाना आर्य बन्धुओं को हार्दिक बधाई देते हैं कि उन्होंने गो-रक्षा के प्रति अपनी कर्तव्य निष्ठा का पूरा परिचय दिया। साथ ही अपनी राष्ट्रीय सरकार से अनुरोध कर रहे हैं कि जनभावनाओं की कद्र करते हुए इस बूचड़खाने को शीघ्र उठा कर अपनी लोकप्रियता का परिचय दे।

★

आर्यमित्र की सूचना

मशीन की खराबी के कारण मित्र का पिछला ३० जून, १९६८ का अङ्क वर्तमान अङ्क दिनाङ्क ७ जौलाई १९६८ के साथ संयुक्त रूप से भेजा जा रहा है। असुविधा के लिए खेद है।

—व्यवस्थापक

★

देहली और आस पास की समाजों के लिये सुनहरा अवसर

समाजों को सूचित करते हुये हर्ष होता है कि श्री अमरनाथ जी कान्त ने अपना अमूल्य समय सभा को प्रदान करने का संकल्प किया है। जो आर्य समाजें इनके प्रवचनों से लाभ उठाना चाहें वह, ५८६३ कूचा नवाब मिर्जा गली बताशान, खारी बावली, देहली-६ के पते पर पत्र-व्यवहार करने की कृपा करें।

सच्चिदानन्द शास्त्री, एम० ए०

[illegible]

संस्था-परिचय

मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल वाराणसी

★

आर्य जगत् की प्रसिद्ध विदुषी कुमारी पुष्पावती एम० ए० पी० एच० डी० साहित्य रत्न इस संस्था की संस्थापिका हैं। हिन्दू विश्वविद्यालय काशी के निकट ७॥ बीघा भूमि क्रय करके सन् १९५४ ई० में इस संस्था की स्थापना की गई।

श्री पुष्पा जी के सतत परिश्रम से संस्था का उत्तरोत्तर विकास होता जा रहा है।

कन्या विद्यालय में आठवीं कक्षा तक की पढ़ाई की व्यवस्था है। मध्यमा तक की मान्यता शासन द्वारा उपलब्ध हो चुकी है। वैदिक विचारधारा का सुन्दर वातावरण बनाने का सतत प्रयत्न किया जाता है धार्मिक शिक्षा एवं संस्कृत अध्ययन पर विशेष बल दिया जाता है।

उपदेशिका कक्षा भी स्थापित की गई है जिसमें छात्राओं को योग्य प्रचारिका बनाने का यत्न किया जाता है।

मातृ मन्दिर की एक एक स्नातिका [illegible] अध्यापन करती है। गुरुकुल में [illegible] बालिकाएं [illegible] वर्ष में २०० से [illegible] छात्राएं शिक्षा पाती हैं। [illegible] है। [illegible] की [illegible] का उत्तरदायित्व सौंपा हुआ है।

[illegible] की व्यवस्था [illegible] है। [illegible] की सम्पूर्ण ध्यान दिया जाता है। [illegible] करने की दिशा में पुष्पा जी [illegible]

[illegible] यह हमारा [illegible]

—[illegible]

दार्जीलिंग यात्रा के संस्मरण

- मदनमोहन एडवोकेट
मोंठ (झांसी)

टिप्पणी—"रूप रूप प्रतिरूपो बभूव" रूप २ में जिसका प्रतिरूप विद्यमान है, साधक उसके अन्तर दर्शन स तृप्त होना है' सांसारिक जन प्रकृति के बाह्य रूप पर मुग्ध होते हैं और उसके दर्शन के लिये लालाइत हो दूर २ तक यात्रायें करते हैं—पशु पक्षी जहां स्वच्छन्द हो इधर-उधर विचरण करते हैं, वहां बन्धनों मे जकड़ा मानव देश विदेश की विषमताओं मे घिरा पासपोर्ट और मुद्राओं की शृंखलाओ मे बन्धा कहां तक इस सौन्दर्य दर्शन से आत्मानन्द की अनुभूति कर सकता है—यह विचारणीय है। —सम्पादक

यस्य भूमिः प्रमान्तरिक्ष मुतोदरम्,
दिवं यश्चक्रे मूर्धानम् तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः।
अथर्व० १०-७-३२

विस्तृत वसुन्धरा विलक्षण, प्रभु का पुनीत प्रमाण है
अन्तरिक्ष आयोजित अकित, उसका उदर उगाम् है
दिव्य दिवाकर देव दवका, मजुल मूर्ध ललाम है
विराट रूप उस विश्वम्भर को, शत २ मेरा प्रणाम है

अर्थात् पद स्वरूप पृथ्वी, उदर स्वरूप अन्तरिक्ष तथा मूर्धमान दिवाकर जिस प्रभु की सौम्य सृष्टि के पुण्य प्रतीक हैं, उसी के विलक्षण वैशाल्य की एक विहगम दृष्टि विलोकनार्थ मैं भी बोरो में बासनादि, विस्तृत बिस्तर में वस्त्रासनदि बाँध कर कटिबद्ध हो अन्तस पटल मे अनुपम अभिलाषाओं से ओत प्रोत हो सपरिवार भीष्म ग्रीष्म से विह्वल होकर उच्च गगन चुम्बी गिरि गह्वारो मे संरक्षण प्राप्त करने हेतु अभिलषित यात्रा पर चल दिया। सिलीगुडी से, शिशुओ सी जुडी, चक्राकार घूड़ी लगाती हुई रेलो ने मुझे पर पहुंच कर वेदना की गुडी खोल टुड़ी तक आनन्द की हिलोरों से भर दिया। आर्यसमाज मे आश्रय पाकर अपने को धन्य माना। फर्श पर फट्टी, बिना टट्टी किराये के भवन मे आर्य बन्धुओ के आकर्षक आलिंगन की अद्भुत अनुभूतियो से आनन्द विभोर होता रहा। आदि सृष्टि के प्रथम स्थल के उत्तरीय सौभाग्य एवं मनसा परिक्रमा में प्राची दिक [illegible] ज्ञान स्रोत अधिष्ठाता आदित्य के आरुणोदय मे छिटके हुए सौन्दर्य पर चार चांद लगा दिये। लगभग सातहजार फीट की ऊंचाई पर स्थित दार्जीलिंग शब्द सम्भवतः तिब्बतीय शब्द 'दोर्जे' अर्थात् इन्द्रदेव का राजदण्ड, तथा लिंग=स्थान से बना है।

इस सम्बन्ध मे एक कथानक प्रसिद्ध है कि आकाश से इन्द्रदेव का वज्र (Thunderbolt) उस स्थान पर गिरा जिसे वर्तमान (Observatory hill) दर्शनीय पर्वत कहते हैं। बंगाली मिश्रित नेपाली भाषा के बाहुल्य में यह नगर भारी वर्षा के भार से, हरे भरे चाय बगीचों से कोनो २ से, अन्होने आकृति के बौनों से, नोने २ छौनों से लदा हुआ अपना एक अनोखा आकर्षक रखता है। सराहनीय साहस के प्रमुख प्रख्यात पर्वतारोही श्री तेनसिंह के गुरु श्री बोधानन्द ने यहीं पर जन्म लेकर कौमुदि कीर्ति कमाई। भौतिकवाद की होड़ को अध्यात्म की ओर नई मोड़ देने वाले स्व० श्री दिलूसिंह राई एक वरिष्ठ कर्मठ साधु ने दिल तोड़ प्रयत्न किया और स्वामी दयानन्द के सन्देश को जन २ तक पहुंचाने के लिए सत्यार्थ प्रकाश के ११ समुल्लास, वैशेषिक दर्शन संस्कार विधि आदि का नेपाली भाषा मे अनुवाद करके प्रकाशित कराया इनके प्रेम कार्य को पूर्ण करने में इनके कर्मठ जामाता श्री कृष्ण जी सपत्नीक अनवरत परीश्रम से प्रयत्नशील हैं विद्या-प्रवृद्ध, वयोवृद्ध श्री हेमबू, श्री मनु भी श्री त्रिमूर्ति प्रधान प्रभृति अनेक आर्य बन्धु ईसाई पराष्ट्रीय प्रचार को चुनौती देते हुये उपदेशकों के अभाव में ही, घर घर ऋषि सन्देश सुनाते रहते हैं। मेरी [illegible] के प्रथम प्रभव काल मे श्री प्रधान जी ने [illegible] समुचित प्रबन्ध किया वह उनके सक्रिय आर्यत्व का ही प्रतीक है रविवासरीय साप्ताहिक अधिवेशन मे [illegible] शान्ति के मधुर गायन वादन के बाद सहसा लेखक के मुख से निम्न शब्द निकल पड़े—

प्रधान जी ने प्रभु कृपा से रात [illegible] दान
आर्य भवन में आन, [illegible] से छः के [illegible] भात
दार्जिलिंग के आर्यसमाज की धवल धरा है धन्या
पुण्य प्रभात मे पुत्र वधू को प्राप्त हुई इक कन्या
उच्च गगन मे गूंजे तबला वहिन शांति का बाजा
दिव्य जनो से दयानन्द का भरा रहे दरवाजा।

(शेष पृष्ठ १४ पर)

वेद प्रचार सप्ताह

८ अगस्त से १६ अगस्त के निमित्त

सुयोग्य वक्ता, विद्वान और प्रचारक बुलाने के लिये, पत्र लिखने में देरी न कीजिए—

महामहोपदेशक

श्री सत्यमित्र जी शास्त्री शास्त्रार्थ महारथी
" बलवीर जी शास्त्री
" केशवदेव जी शास्त्री
" श्यामसुन्दर जी शास्त्री
" विश्ववर्धन जी वेदालंकार
" रामनारायण जी विद्यार्थी

प्रचारक

श्री रामस्वरूप जी आर्य मुसाफिर
" गजराजसिंह जी
" धर्मराजसिंह जी
" रामचन्द्र जी सङ्गीत विशारद
" खेमचंद्र जी
" वेदपालसिंह जी
" प्रकाशवीर जी
" विन्ध्येश्वरीसिंह जी
" जयपालसिंह जी
" बालकृष्ण जी धनुर्धर
" मुरलीधर जी
ज्ञानप्रकाश जी
" खजानसिंह जी
" रघुबरदत्त जी
" रामचन्द्र जी कथा वाचक
" महिपालसिंह जी
" खड़गपालसिंह जी
श्री स्वामी योगानन्द जी सरस्वती
" " रुद्रानन्द जी सरस्वती
" डा० प्रकाशवती जी
" सरलादेवी जी शास्त्री
" हेमलतादेवी
" जगधात्रीदेवी जी

—सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा मन्त्री

लखनऊ में पारिवारिक सत्संगों की शृङ्खला

आदर्श नगर, लखनऊ मे शनिवार ८-६-६ को एक पारिवारिक सत्संग श्री मनोहरलाल जी की कोठी पर हुआ तत्पश्चात् दिनांक १६-६-६८ को लालबाग में श्री दीवानचन्द जी गांधी, १३-६-६८ को चौक मे श्री दीनानाथ जी शर्मा तथा ३०-६-६८ को श्री गुप्त जी आर० डी० एस० ओ० कालोनी लखनऊ के निवास स्थानों पर पारिवारिक सत्संगों के आयोजन हुए। इन सब में श्री वसन्त जी के वेदोपदेश हुए।

देवरिया जिले में वैदिक धर्म प्रचार

सभा की श्री प्यारेलाल जी शर्मा, व्याख्यान वाचस्पति ने अपनी अवैतनिक सेवायें अर्पित की हैं। वह जिले की समाजों मे पहुंचेंगे—समाजों का कर्तव्य है कि उनके पहुचने पर प्रचार की व्यवस्था करे तथा मार्ग व्यय अवश्य देवें। जो समाज पत्र व्यवहार करना चाहे, वह आर्य समाज पडरौना के पते से कर सकते हैं।

सच्चिदानन्द शास्त्री
सभामन्त्री

उपसभा लखनऊ की सूचना

रविवार दिनांक २०-६-६८ को सायंकाल ५॥ से ८॥ तक लखनऊ नगर की समस्त आर्यसमाजों का सम्मिलित ६१वां मासिक अधिवेशन बड़े समारोह पूर्वक जिलोप सभा लखनऊ के तत्वावधान मे मनाया गया। सामवेद से बृहत् वैदिक यज्ञ पं० शान्तिस्वरूप शास्त्री के पुरोहित्य मे सम्पन्न हुआ। सन्ध्या प्रार्थना प० विष्णुस्वरूप विद्यार्थी ने कराई। श्री मुलकराज मोबनी व श्रीमती लीला वरमानी के भजन हुये। पुनर्जन्म पर श्री कृष्णलाल का व्याख्यान हुआ।

कार्यक्रम की एक विशेषता बाल कार्यक्रम था जिसमे आर्यकुमार सभा, चन्द्रनगर लखनऊ के बच्चों ने भाग लिया—बच्चों ने भजन, महर्षि दयानन्द के जीवन वृत्तान्त और आर्यसमाज के किये हुये उपकार सुनाए—

सबसे अन्तिम कार्यक्रम मे श्री वसन्त जी का वेदोपदेश था जिसमे वेद मन्त्रों के आधार पर उन्होंने परस्पर मित्रता पूर्वक व्यवहार, संयमित जीवन और वाणी की मृदुता पर प्रकाश डाला।

उपसभा लखनऊ का आगामी ६२वां मासिक अधिवेशन रविवार २८-७-६८ को सायंकाल ५॥ से ८॥ तक आ० स० शृंगारनगर आलमबाग लखनऊ में होगा।

अर्थ शास्त्र

अर्थ

'अर्थ्यंते प्राप्यतेऽसौ अर्थः' जो प्राप्त किया जाता है उसे अर्थ कहते हैं। अर्थोऽभिधेयरैवस्तुप्रयोजन निवृत्तिषु। शब्द का जब तक अर्थ से सबंध नहीं होता तब तक वह शब्द केवल शब्द है। अर्थ से सम्बन्ध हो जाने पर वह शब्द किसी अभिधेय=नाम को धारण कर लेता है। जैसे 'अग्निमानय अग्नि को लाओ, ऐसा गुरु ने शिष्य से कहा। शिष्य तुरन्त एक पत्र पर अग्नि शब्द को लिखकर ले आया कि लो महाराज यह अग्नि है। गुरु ने कहा कि तुम जो अग्नि शब्द लिखकर लाये हो, इससे मेरा प्रयोजन नहीं। लोक मे अग्नि पद जिस अर्थ मे प्रयुक्त होता है उस पदार्थ को लाओ। उस पदार्थ का नाम अग्नि है वही राये है, वही वस्तु है।

शास्त्र

★'शासु अनुशिष्टौ' धातु से शास्त्र शब्द बनता है। वेदानुकूल शिक्षा का नाम शास्त्र है। अन्ध-परम्परा का नाम वेदानुकूल नही है, प्रत्युत जो क्या कैसे कहा, कौन, क्यों इत्यादि प्रश्नों का समाधान करना है उसे वेदानुकूल कहते हैं।

★अर्थ शास्त्र—क्या प्राप्त किया जाता है? कहां प्राप्त किया जाता है? कौन अर्थात् किसके द्वारा प्राप्त किया जाता है? क्यो प्राप्त किया जाता है? इत्यादि प्रश्नो का समाधान जो करता है उसे 'अर्थ-शास्त्र' कहते हैं।

अब क्या, कैसे, कौन, कहा प्रश्नो पर विचार करते हैं तो मालूम होता है कि यह प्रश्न अर्थ के आय से सम्बन्धित है और क्यों पर विचार करते है तो यह प्रश्न व्यय से सम्बन्धित है। इसलिये अर्थ शास्त्र मे अर्थ के आय और व्यय पर ही विचार किया जाता है। अतः अर्थ के दो अङ्ग है। आय व्यय।

★विलास मार्ग—अर्थ कौन प्राप्त करता है? प्राणधारी।

सकल अर्थ प्राणधारियो के लिये है। इस लिये अर्थ शास्त्र मे प्राणी मात्र का विचार किया जाता है। चाहे वह पागल हो अन्धा बहिरा हो, बन्दी हो, पशु पक्षी कोई हो अर्थ शास्त्र मे सब पर विचार किया जाता है। जो अर्थ शास्त्र पागल आदि को छोड़कर केवल थोड़े से मनुष्यो के लिये विचार करता हो वह अर्थ-शास्त्र नहीं बल्कि वह विलासिता की फिलासोफी अर्थात् विलास मार्ग है।

आय

मनुष्य कुछ भी न करे तो भी भूमि से पदार्थ प्राप्त हो ही जाते हैं, यह हो सकता है कि वे पदार्थ उसकी इच्छानुकूल प्राप्त न हों, इसलिये भूमि से श्रम करके इच्छानुकूल पर्याप्त पदार्थों की प्राप्ति के लिये प्रयत्न करना पड़ता है। अतः केवल भूमि को ही नहीं, मनुष्यो से युक्त भूमि को अर्थ कहते हैं। 'मनुष्यवती भूमिरित्यर्थः'।

अर्थ प्राप्ति के दो ही साधन हैं १-भूमि २—श्रम। प्राणियो के प्रत्येक प्रकार के प्रयत्न को श्रम कहते है। 'रूप, रस, गन्ध स्पर्शवती पृथ्वी' वै० २-१-१ रूप, रस, गन्ध स्पर्श वाली पृथ्वी है। उसमे रूप रस और स्पर्श अग्नि, जल और वायु के योग से है (महर्षि दयानन्द) अतः भूमि से तात्पर्य भूमि से युक्त जल, अग्नि, वायु सभी से है।

आजकल भूमि और श्रम के अतिरिक्त पूंजी, साहस और प्रबन्ध को भी आय का साधन माना गया है। पूंजी भूमि और श्रम से उत्पन्न होती है, स्वतन्त्र सत्ता नहीं है। साहस नाम बलात्कार और प्रबन्ध नाम बन्धन का है। विलास युग मे पूंजी आदि तीनों की आवश्यकता होती है। मनु० ७।४८ मे साहस को क्रोध का व्यसन कहा है और दयानन्द जी ने जिसका अर्थ बलात्कार किया है। मनु० ८। ३४५ में कहा है—

वाग्दुष्टात् तस्कराच्चैव दण्डेनैव च हिंसत।
साहसस्य नरः कर्त्ता विज्ञेयः पापकृत्तमः॥

★साहसिक पुरुष का लक्षण—जो दुष्ट वचन बोल चोरी करके बिना अपराध के दण्ड देने वाले से भी साहस बलात्कार काम करने वाला है। वह अतीव पापी दुष्ट है (महर्षि दयानन्द स० प्र०) प्रबन्ध करने वाला राजमण्डल होता है वह ग्राम से लेकर राष्ट्र पर्यन्त व्यापक होता है। बड़े पैमाने पर होने वाले कार्यो मे प्रबन्ध की आवश्यकता होती है। जिस कार्य मे बहुत से व्यक्तियो की आवश्यकता हो वहां बन्धन के नियम बनाये जाते है जिसे प्रबन्ध कहते है। बड़े पैमाने पर होने वाला कार्य किसी एक व्यक्ति का नहीं होना चाहिये। ऐसे कार्यों को राष्ट्र करे। बोझ के दलाल समाप्त करना चाहिये। वे चाहे मिल मालिक हो चाहे सहकारी समितियाँ हो इत्यादि।

अर्थ संग्रह के नियम

अद्रोहेणैव भूतानां अल्प,
द्रोहेण वा पुनः।
या वृत्तिस्तां समास्थाय
विप्रो जीवेदनापदि॥
यात्रा मात्र प्रसिद्धयर्थं,
स्वैः कर्म भिरगर्हितैः।
अक्लेशेन शरीरस्य कुर्वीत,
धन सञ्चयम्॥

सर्वान परित्यजेदर्थान् स्वाध्यायस्य विरोधिन। मनु०। निरापद्काल मे मनु महाराज ने अर्थ संग्रह के छः नियम बताये है।

१—पहला नियम यह है कि धन सञ्चय करते समय किसी प्राणी से द्रोह न हो।

२—दूसरा नियम यह है कि जितने से अपनी जीवन यात्रा चले उतना ही धन संचय करना चाहिए।

३—तीसरा नियम यह है कि अपने ही पुरुषार्थ से उत्पन्न किये गये धन से निर्वाह किया जाय दूसरो की कमाई से नहीं।

४—चौथा नियम यह है कि अपना उत्पन्न किया हुआ धन भी किसी गर्हित कर्म के द्वारा न उत्पन्न किया गया हो।

५—पांचवां नियम है कि धन संचय करते समय शरीर को कष्ट न हो।

६—छटा नियम है कि धनोपार्जन के कारण स्वाध्याय मे विघ्न न होता हो।

व्यय

वित्त सम्पत्ति का नाम व्यय है। जब वित्त का अर्जन कर लिया जाता है तभी व्यय होता है। वित्त के उपार्जन मे जितने सहयोग दिया है पहले उनमे वितरण किया जाता है। सर्व प्रथम सहयोगी राज्य है अतः उसे सबसे पहले राजस्व देना पड़ता है। द्वितीय सहायक बढ़ई आदि शिल्पकार हैं उन्हें दिया जाता है इसके पश्चात् शेष वित्त का उपभोग किया जाता है। उपभोग करने में जिस वित्त का उपभोग किया जाता है। उपभोग करने मे जिस वित्त की अपने पास कमी है उसको से जिनके पास अधिक है उनसे विनिमय किया जाता है। विनिमय व्यापार द्वारा होता है। इस प्रकार व्यय के दो भाग हुये १—वितरण २—उपभोग।

इन्द्रदेव मन्त्री
अ० भा० आर्यसभा

[आर्ष पर्व शास्त्रों के आधार पर लिखा गया. लेखक का यह लेख मौलिक है और मनन करने योग्य है। आज के अर्थ प्रधान युग मे वेद व अन्य वेदानुकूल ग्रन्थो पर लिखे गये ऐसे मौलिक लेखों का 'आर्यमित्र' स्वागत करता। —सम्पादक]

विनिमय का माध्यम क्या हो सकता है?

१—जिसकी अनिवार्य आवश्यकता हो।

२—जिसको प्रत्येक उत्पन्न कर सके।

३—जिसका विभाजन हो सके।

४—जिसके द्वारा परिग्रह न हो सके।

५—जो स्वयं मूल्यवान हो।

१—प्राणी की अनिवार्य आवश्यकता अन्न है बिना अन्न के जीवित नहीं रह सकता है। कुछ लोग कहते हैं कि अन्न से अधिक आवश्यकता वस्त्र है क्योंकि नगे बाहर नहीं जा सकते, मुर्दे को नंगा नहीं जला सकते है। यह तो व्यवहार की बात हो गई है। नागा खण्ड मे नर-नारी सब नंगे ही रहते हैं, वे मुर्दों को भी नगा जलाते हैं। पशु सब नगे ही रहते हैं। आजकल मनुष्यों ने वस्त्रों को अत्याधिक मान्यता दे रखी है। इस लिये अन्न से अधिक आवश्यकता वस्त्र की समझते है। माना कि नंगे बाहर नहीं जा सकते किन्तु [illegible] जाकर [illegible] रह सकते है, परन्तु बिना भोजन के [illegible] नहीं [illegible] सकता है। इसलिये [illegible] की अनिवार्य आवश्यकता [illegible] माध्यम का [illegible] है।

जिस [illegible] आवश्य [illegible] प्राप्त [illegible] हर [illegible] आजकल [illegible] की [illegible] हर [illegible] वह [illegible] सको [illegible] उसको

(शेष पृ० [illegible])

सिरसागंज में सभा का शिक्षा सम्मेलन

[शिक्षा सम्मेलन जो कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के तत्वावधान में दि० ३१-५-६८ को सिरसागंज जिला मैनपुरी मे गिरधारी इण्टर कालिज के भवन में श्री धर्मपाल जी विद्यालंकार प्रशासक गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगडी की अध्यक्षता मे हुआ, उसमे निम्नलिखित प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हुये ।]

स्वीकृत प्रस्ताव

(१) रामप्यारी आर्य कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, सन्दौमी, आर्य कन्या इण्टर कालिज मुजावठी, आर्य कन्या इण्टर कालिज मेरठ शहर तथा श्री केदारीलाल जी आर्य, झांसी की ओर से अपने-अपने नगरों मे धर्म शिक्षा प्रशिक्षण शिविर लगाने के लिये निमन्त्रण प्राप्त हुए। निमन्त्रणदाताओं को धन्यवाद दिया गया और सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि एकएक शिविर यथासम्भव प्रत्येक स्थान पर लगाये जावें। समय आदि की व्यवस्था स्थानीय कार्यकर्त्ताओं से परामर्श करके निश्चित की जावे।

(२) सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि इन प्रशिक्षण शिविरों में निम्नलिखित बातों की ओर विशेष ध्यान दिया जावे।

(अ) प्रशिक्षणार्थियों तथा प्रशिक्षकों मे परस्पर गोष्ठी द्वारा उन कारणो के जानने का यत्न किया जावे कि जिनके द्वारा धर्म शिक्षा की ओर छात्रो व शिक्षको में रुचि की न्यूनता है तथा इस न्यूनता को दूर करने के उपायो पर विचार किया जावे।

(ब) शिक्षकों मे धार्मिक जागृति उत्पन्न की जावे तथा यह प्रेरणा की जावे कि वेशभूषा भारतीय हो, खान-पान पवित्र हो अर्थात् मांस मदिरा धूम्रपान आदि से रहित हो।

(स) प्रातः व सायं दोनो समय शिविर मे सन्ध्योपासना व हवन-यज्ञ विधिवत हो।

(द) कुछ भक्ति रस से सने भजन गाये जावें और स्मरण कराने का यत्न किया जावे।

(क) पाठ विधि की पुस्तकों का साधारण अध्ययन करा दिया जावे।

(ग) मन्त्रो का शुद्ध उच्चारण करने का अभ्यास कराया जावे।

(घ) छात्र-छात्राओं मे धर्म के प्रति रुचि उत्पन्न करने के उपाय बताये जावें।

(च) प्रशिक्षार्थियों के लिए सन्ध्या, पंच महायज्ञ संस्कारो ईश्वर, जीव प्रकृति, सदाचार, परोपकार, तप, त्याग ब्रह्मचर्य तथा आर्य महापुरुषो पर अच्छे [illegible] प्रबन्ध किया जावे।

३—यह सम्मेलन समस्त आर्य विद्यालयों की प्रबन्ध समितियों से अनुरोध करता है कि शिक्षकों की नवीन नियुक्ति के समय इस बात का अवश्य ध्यान रखें कि [illegible] वैदिक विचारधारा के व्यक्तियों की नियुक्ति करें। यदि कोई धर्म शिक्षा परीक्षा उत्तीर्ण हो तो और भी अच्छा है।

४—यह सम्मेलन वैदिक विचारधारा के अध्यापकों की उपलब्धि के लिये यह आवश्यकता अनुभव करता है कि किसी आर्य शिक्षण संस्था, जैसे गुरुकुल कांगडी, गुरुकुल वृन्दावन अथवा डी० ए० वी० कालेज कानपुर में अध्यापकों का ट्रेनिंग कालिज खोला जावे। जिसमे आर्य विचारधारा वाले व्यक्तियो के प्रवेश को प्राथमिकता दी जावे तथा उसमे धर्म शिक्षा का विषय भी अनिवार्य हो।

इसलिये सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० तथा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से आग्रह पूर्वक अनुरोध किया जावे कि इस आव-

श्यकता की पूर्ति हेतु शीघ्र उचित उपाय काम मे लाकर गुरुकुल कांगडी, गुरुकुल वृन्दावन तथा डी० ए० वी० कालिज में से किसी एक स्थान अथवा सब स्थानो पर ट्रेनिंग कालेज स्थापित कराकर इस आवश्यकता की पूर्ति करें।

५—सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि यह सम्मेलन आर्य सामाजिक कवि महानुभावों का ध्यान आकृष्ट करके उनसे प्रार्थना करता है कि कुछ भजन जो वैदिक विचारधारा के अनुकूल हो और भक्ति रस मे सने हो, का निर्माण करें, जिनसे उपासक के हृदय में श्रद्धा व भक्ति का संचार हो सके।

(६) यह सम्मेलन अनुभव करता है कि प्रदेश में वैदिक धर्म के प्रचार व प्रसार के लिये धर्म शिक्षा प्रशिक्षण शिविर प्रत्येक कमिश्नरी मे लगाये जावें।

इस निमित्त सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि शिक्षा विभाग से आग्रह किया जावे कि प्रशिक्षण शिविर लगाने की योजना इस प्रकार बनाई जावे कि प्रत्येक कमिश्नरी मे एक-एक शिविर यथाशीघ्र लग सके।

(७) यह सम्मेलन सर्व सम्मति से निश्चय करता है कि प्रदेश के समस्त आर्य विद्यालयो मे धर्म शिक्षा की पाठविधि में एकरूपता होनी चाहिये। अतः समस्त आर्य विद्यालयों से आग्रह किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश द्वारा निर्मित पाठविधि व निश्चित पुस्तको के माध्यम से ही धर्म शिक्षा दी जावे।

८—सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि शिक्षा विभाग आर्य प्रतिनिधि सभा को सुझाव दे कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश से सम्बद्ध शिक्षा-संस्थाओं का संक्षिप्त परन्तु आवश्यक विवरण, प्रति वर्ष संकलित करके एक पत्रिका के रूप मे प्रकाशित कराया करें।

९—यह सम्मेलन सभा के शिक्षा विभाग से आग्रह करता है कि समय-समय पर अपने सम्बद्ध विद्यालयों मे उच्चकोटि के विद्वानों के प्रवचनो का प्रबन्ध करे और उसका व्यय सम्बन्धित विद्यालय ही वहन करे।

वक्तव्य

यह वक्तव्य श्री रामबहादुर जी अधिष्टाता शिक्षा विभाग आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश द्वारा सभा के सम्बद्ध शिक्षा संस्थाओं के प्रधानाचार्यों व प्रबन्धकों के पांचवें सम्मेलन दि० ३१-५-६८ को स्थान सिरसागंज मे धर्मपाल जी विद्यालंकार प्रशासक गुरुकुल कांगडी की अध्यक्षता में पढा गया।

सभा से सम्बद्ध शिक्षा संस्थाओं के प्रधानाचार्यों व प्रबन्धकों का पांचवा सम्मेलन (सन् १९६८)

माननीय प्रधान जी तथा उपस्थित महानुभाव।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश से सम्बद्ध शिक्षण संस्थाओं के प्रबन्धको व प्रधानाचार्यों अथवा उनके प्रतिनिधि का यह पांचवां सम्मेलन है। इस अवसर पर मे आपका हार्दिक स्वागत करता हूं कि सभा के शिक्षा विभाग को आगामी वर्ष मे आप सब महानुभावों का पूर्ण सहयोग मिलता रहेगा।

इस प्रकार के सम्मेलनो से हम पारस्परिक विचार विनिमय द्वारा अपने विद्यालयो को अधिक उपयोगी बना सकते है। महर्षि दयानन्द ने इस लक्ष्य को सन्मुख रखकर आर्य समाज की स्थापना की थी। उस लक्ष्य की पूर्ति हेतु ही हमारे पूर्वज नेताओं ने शिक्षण संस्थाओं की स्थापना कर आन्दोलनों में वृद्धि की थी। स्वर्गीय पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी, लाला लाजपत राय, महात्मा हंसराज तथा स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा नारायण स्वामी प्रभृति ऋषि भक्तों व आर्य नेताओ ने सन् १८९५ ई० में विद्यालयरूपी एक पौधा लगाया था जो आज बढता बढता वट वृक्ष की भांति सारे देश में फैल गया है। केवल उत्तर प्रदेश मे ही १३८ आर्य विद्यालय तो वे हैं जो सभा से सम्बद्ध हैं और एक सौ से अधिक ऐसे आर्य विद्यालय हैं जो सभा से सम्बद्ध नहीं है।

केवल सभा सम्बद्ध विद्यालयो में इस समय लगभग साठ हजार छात्र छात्रायें शिक्षा पा रहे हैं, जिनको पढाने के लिए लगभग तीन हजार अध्यापक अध्यापिकायें कार्य कर रहे हैं, इन विद्यालयों का वार्षिक व्यय लगभग पचास साठ लाख रुपया है। और उनकी सम्पत्ति लगभग तीन करोड़ रुपया की है। यदि असम्बद्ध आर्य विद्यालयो के आय व्यय, सम्पत्ति, तथा छात्र व शिक्षकों के आंकडे भी सम्मिलित कर लिये जावे तो यह आंकड़े दोगुने के लगभग हो जावेंगे।

शिक्षा संस्थाओ की स्थापना आर्य समाज के माध्यम से केवल एक ही लक्ष्य पर आधारित थी अर्थात् वैदिक धर्म का प्रचार व प्रसार ही लक्ष्य हमारा सदा ही रहा है। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिये नितांत आवश्यक है कि समस्त आर्य शिक्षण संस्थायें आर्य प्रतिनिधि सभान्तर्गत प्रदेशीय विद्यार्य सभा उत्तर प्रदेश के आदेशो व निर्देशो का सहर्ष कड़ाई के साथ पालन करते हुए इस संगठन को सुदृढ़ [illegible] प्रभावी बनावें, अध्यापक अध्यापिकाओ मे वैदिक भावना जागृत हो और छात्र छात्राओ मे उदात्त प्राचीन वैदिक संस्कृति की धारणा उत्पन्न हो इसी

(शेष पृष्ठ १३ पर)

परिवार नियोजन-क्या ? क्यों ? कैसे ?

इन्द्रवर्मा चौहान एम ए.
रामनगर (नैनीताल)

["लेखक द्वारा व्यक्त समस्त विचारों से सहमत न होते हुए भी इसे ज्यों का त्यों इसलिये प्रकाशित किया जा रहा है कि विचार-विमर्श के लिये पाठकों से लेखों का आह्वान किया जाए। एक अनपढ़ किसान भी इस बात को जानता है कि यदि उसे खेती नहीं करनी है तो बीज नहीं बोना है और बोने पर उसे नष्ट नहीं करना है। बढ़ सन्तति यदि वास्तव मे हमारे विघ्न का कारण है तो क्या आत्मसंयम उस की चिकित्सा नहीं है और क्या उसका व्यापक प्रचार न होना चाहिये। वेद के ब्रह्मचर्य व मणि सूक्त के मन्त्रों पर आधारित लेखों को भ्रम के निराकरण के निमित्त व जन साधारण के मार्गदर्शन के लिये इस पत्र मे प्रमुख स्थान दिया जाएगा।

—सम्पादक]

भारत मे तीव्र गति से बढ़ती हुई जनसंख्या सभी के लिये चिंता का विषय है। देश मे वर्ष भर अकाल तथा भुखमरी की सी स्थिति बनी रहना जनता के स्वास्थ्य मे निरन्तर ह्रास होना, मृत्यु दर का बढ़ जाना जनसंख्या की वृद्धि का ही परिणाम है। यह हमारी निर्धनता एवं विपत्ति का भी सूचक है। हमारे नेता एवं समाज सुधारक सभी बड़े चिंतित एवं क्षुब्ध हैं और इस समस्या के समाधान के लिये वे सभी परिवार नियोजन पर अधिक बल देते हैं।

परिवार नियोजन क्या ? क्यों?

परिवार नियोजन से उनका तात्पर्य सीमित परिवार से है। किसी भी परिवार मे दो तीन बच्चो से अधिक का होना परिवार के हित मे नहीं होता। माता-पिता को उतनी ही सन्तान उत्पन्न करनी चाहिये जितनी का वे सुगमता से पालन पोषण कर सकें। यदि एक माता पिता की आय दो सौ रुपया मासिक है और वे दो बच्चो के पालन-पोषण की क्षमता रखते हैं तो उन्हें अधिक बच्चे उत्पन्न नही करने चाहिये क्योंकि अधिक बच्चे उत्पन्न करके उनके भोजन, वस्त्र शिक्षा, शादी आदि का भार उनके कन्धो पर बढ़ जावेगा जो अन्ततोगत्वा उनकी गरीबी का कारण बनेगा। इस तरह सीमित परिवार केवल देश या राज्य की आबादी को ही नियन्त्रित नहीं करेगा, वरन माता पिता के सुखी एवं सम्पन्न जीवन के लिये भी वरदान सिद्ध होगा।

परिवार नियोजन कैसे ?

परिवार नियोजन के निमित्त आज सरकार काफी पैसा व्यय कर रही है। नगर-नगर गांव-गांव आज इसका बड़े जोरों पर प्रचार है। अतः अधिकांश स्त्री एवं पुरुष इसके साधनों से परिचित हैं। इसके साधन मुख्य चार बतलाये जाते हैं। इनमें सर्वोत्तम साधन आपरेशन माना जाता है। कहा जाता है 'नसबंदी' एक साधारण आपरेशन है जिसे किसी भी पुरुष के लिये करा सकना असुविधा जनक नहीं है। स्त्रियों के भी आपरेशन होते हैं। किन्तु वे कुछ पेचीदे कहे जाते हैं। साथ ही उन्हे आपरेशन कराने के लिये एक बच्चा करना पड़ता है क्योंकि आपरेशन बच्चा जनने के तुरन्त बाद ही सम्भव है। इसका दूसरा साधन लूप का प्रयोग है यह भी एक अच्छा साधन है किन्तु इतना अच्छा नहीं जितना कि आपरेशन। लूपों के फट जाने तथा खिसक जाने का भय सदैव बना रहता है। तीसरा साधन खाने की गोलियां अथवा दवाई है। लेकिन दवाइ अधिकांश को माफिक नही आती। उल्टी आना, जी मिचलाना, कमजोरी होना, पेट खराब हो जाना जैसी कुछ परेशानियां दवाई के सेवन से उत्पन्न हो जाती हैं, अतः अधिकांश स्त्री व पुरुष इसको अच्छा नहीं मानते। चौथा साधन है प्राकृतिक। कहा जाता है मासिक धर्म के पांचवें से सवें तक, उन्नीसवें से अट्ठा-

विचार-विमर्श

इसवें दिन के बीच गर्भाधान नहीं होता। किन्तु यह भी विश्वसनीय नहीं कहा जा सकता। अनेक स्त्रियों को मासिक धर्म समय पर नहीं होते। कभी पहले कभी बीच मे होते रहते हैं। अतः यह दिन भी सुरक्षित नहीं कहे जा सकते।

परिवार नियोजन का कुप्रभाव

परिवार नियोजन निस्सन्देह एक अच्छी योजना है किन्तु इस योजना के सही रूप से कार्यान्वित न किये जाने के कारण यह समाज मे अनेक बुराइयों को जन्म दे रही है। इसका प्रथम कुप्रभाव स्त्री पुरुषों के स्वास्थ्य पर पड़ रहा है। चूंकि इनके कारण स्त्री-पुरुष अधिक सम्भोग के अभ्यस्त हो जाते हैं अतः उन का स्वास्थ्य प्रति दिन गिरता जाता है। यौवन काल मे ही वह वृद्ध दृष्टिगोचर होने लगते हैं। जिस प्रकार [illegible] रस निकल जाने पर गन्ना चूड या सूख जाता है उसी प्रकार मनुष्य के शरीर से वीर्य निकल जाने पर वह कमजोर तथा बूढ़ा दृष्टिगोचर होने लगता है। इसका दूसरा कुप्रभाव हमारे लड़कों एवं लड़कियों पर पड़ रहा है। वे अल्प आयु मे इस विज्ञान का ज्ञान प्राप्त कर इसका शिकार हो जाते हैं। कण्डोम बट रहे हैं, फैशन बढ़ रहा है, लूप खुले आम बाजार में बिक रहे हैं फिर वे यौवन का आनन्द क्यों न लें। लूप उनके भय को समाप्त भी कर देते हैं। लड़कियों को गर्भवती बन जाने का जो डर रहता था। यह वह भी दूर हो गया तो फिर उन्हें [illegible] समाज [illegible] है। इसका [illegible] कुप्रभाव कोमल [illegible] बच्चों पर भी पड़ रहा है। वे भी समाचार पत्र, पोस्टरों, पत्रिकाओं मे परिवार नियोजन का अध्ययन करते हैं। उन्हें लिंग (सेक्स) का [illegible] ज्ञान प्राप्त हो जाता है उनकी मानसिक चेतना बिगड़ जाती है। उनके संस्कार खराब हो जाते हैं। वे अपनी पुस्तकों को छोड़ इसी विषय से सम्बन्धित पुस्तकों की खोज और अध्ययन मे लग जाते हैं। फिर वे चरित्रवान स्वस्थ, शिक्षित, पराक्रमी कैसे बन सकते हैं? इसका चौथा कुप्रभाव हिन्दू जनसंख्या का कम तथा मुसलमान जनसंख्या का अधिक बढ़ते जाना है मुसलमानो मे बहुपत्नी प्रथा [illegible] तथा वे परिवार नियोजन से घृणा भी करते हैं। वे [illegible] गरीब हैं और [illegible] जल्द [illegible] जाते हैं [illegible] अधिक होंगे [illegible] क्योंकि [illegible] पड़ता है। [illegible] मेहनत मजदूरी [illegible] बच्चा [illegible] हिन्दू [illegible] नहीं जानते [illegible] है। अतः [illegible] अधिक बच्चे पैदा कर उनका भार अपने ऊपर [illegible] हैं। उन्हें बाध्य होकर परिवार नियोजन के उपकरण प्रयोग में लाने पड़ते हैं।

तब फिर—

मैं परिवार नियोजन का विरोधी नहीं केवल इसके कार्यान्वित किये जाने के तरीकों का विरोधी हूं। यदि सरकार वास्तव मे जनसंख्या की वृद्धि से चिंतित है तो उसे कानून, धार्मिक संगठनों एवं सामाजिक संगठनों का सहारा एवं सहयोग लेना चाहिये सर्वप्रथम सरकार कानून बनाकर स्त्री-पुरुष विवाह की आयु निश्चित करे उस निश्चित आयु से पहले किसी को विवाह करने की स्वीकृति प्रदान न की जावे। देर से विवाह होने पर स्त्री पुरुष को जीवन का भी ज्ञान होगा, व अपने उत्तरदायित्व को भी समझेंगे और उनकी सन्तान भी अपेक्षाकृत अधिक नहीं होगी। द्वितीय, सरकार को सह-शिक्षा पर प्रतिबन्ध लगा देना चाहिये। यह छात्र एवं छात्रा को स्वतन्त्र रूप से शिक्षा अध्ययन मे बाधक है। उनका एक दूसरे के अधिक सम्पर्क मे रहना उनकी मानसिक भावना को प्रभावित करता है। तृतीय, सरकार को छात्र एवं छात्राओं की तंग एवं फैशनेबुल पोशाक तथा विज्ञापन मे स्त्रियों के प्रकाशित होने वाले चित्रो पर भी प्रतिबन्ध लगा देना चाहिये। यह दोनो पुरुष के हृदय मे धड़कन पैदाकर उनकी मानसिक क्रिया को दूषित करते हैं। पांचवें, सरकार को शिक्षण संस्थाओं में धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा देने की स्वतन्त्रता प्रदान करनी चाहिये। केवल धर्म को शिक्षा मनुष्य को उत्तम चरित्र, आदर्श जीवन, तथा पवित्र जीवन [illegible] है। यह मनुष्य [illegible] कराती है। [illegible] उत्पन्न [illegible] सरकार [illegible] प्राचीन [illegible] रहता था [illegible] चरि- [illegible] पांचवे, सरकार [illegible] परिवार नियोजन का प्रचार

(शेष पृष्ठ १० पर)

ये अविवाहित मातायें

[ब्रह्मचर्य के महत्व को भुलाकर असंयमित जीवन के भयङ्कर दुष्परिणामो से बचने के दो ही उपाय हैं—एक वेद का पढना-पढाना, सुनना-सुनाना और दूसरा वेदानुकूल राज्य व्यवस्था। —सम्पादक]

कदाचित ही भारतीय समाज मे ऐसा कोई बुरा काम या अपराध हो जिसे इस अवैध सन्तानोत्पत्ति से भी जघन्य माना है। प्राचीन काल से ही यौन, विषय भोग और सन्तानोत्पत्ति गृहस्थ जीवन के अधिकार एव महत्व-पूर्ण अङ्ग माने जाते रहे हैं। भारतीय जीवन सदैव से कुछ सीमाओ और मान्यताओ से प्रभावित रहा है। यह मान्यताएं समय समय पर बदलती भी रही है परन्तु इनके मूल मे दबी मनुष्य के दैनिक एव सामाजिक जीवन को नियन्त्रित करने की भावना सदैव ही विद्यमान रही है। भारतीय जीवन दर्शन किसी स्तर पर भी पाप-पुण्य गुण दोष दया-अत्याचार और अच्छे बुरे के चक्कर से मुक्त नहीं है और इसकी मुक्ति की कोई आवश्यकता भी नहीं है।

अवैध सन्तानोत्पत्ति अनुचित एव निन्दनीय है, ऐसा सभी जानते हैं और मानते हैं फिर भी ऐसी माताओं की संख्या मे दिनोदिन वृद्धि हो रही है जो विवाह के पूर्व या विवाहोपरान्त अवैध सन्तानोत्पत्ति के लिये दोषी हैं। निःसदेह अवैध सन्तानोत्पत्ति एक जघन्य कार्य है फिर भी उसके प्रति मानवीय दृष्टि से विचार करना आवश्यक है। आज की परिस्थितियों मे जब एक ओर दूसरे मतो के लोग हमारे समाज से तिरस्कृत, अपमानित तथा शोषित जनता को नाम-मात्र का धैर्य, सन्तोष, सहानुभूति एव आर्थिक सरक्षण देकर उन्हे अपने मतों मे सम्मिलित कर हमें निर्बल बनाने की कुचेष्टा कर रहे हैं और तो हमारा यह कर्तव्य हो जाता है कि अन्य समस्याओं के साथ २ इस समस्या पर भी गम्भी-रता से विचार करें।

अवैध एव अवांछनीय मातृत्वता प्रत्येक समाज मे पायी जाती है और बहुत प्राचीन काल मे विद्यमान है। किसी भी राष्ट्र का ले लीजिये, आप यही पाएगे कि उसके नागरिक सबके सब गुणी और दोष रहित नहीं होते। इसका यह अर्थ नहीं है कि दोष रहित या पाप-मुक्त समाज की रचना ही नहीं की जा सकती। कहने का अभि-प्राय केवल इतना है कि अपनी भाव-नाओं एव [illegible] रख कर [illegible] सब भ्रष्ट हो सकते हैं। इसलिए समाज का यह उत्तरदायित्व हो जाता है कि वह उसे उचित दण्ड के रूप [illegible] प्रदान करे। अवैध सन्तानोत्पत्ति एक [illegible] कार्य नहीं है इसलिये दूसरे पक्ष पर बिना किसी को [illegible] केवल माता को दण्डित करना अनुचित है।

अवैध मातायें चार प्रकार की होती हैं। (१) वे मातायें जो विवाह के पूर्व ही यौन के चक्कर मे पडकर माता पद को प्राप्त हो जाती है। (२) वे जिनका विवाह तो हो गया होता है परन्तु अपने पति से असन्तुष्ट होकर या अत्य-धिक यौन प्रिय होने के कारण वे पर पुरुष से सबन्ध कर लेती है और फल-स्वरूप अवैध सन्तानोत्पत्ति करती हैं (३) वे जिनका एक पति नहीं होता जैसे वेश्यायें इत्यादि और (४) वे जो बलात्कार, अपहरण और बहकावे फुस-लावे मे आकर मातायें बन जाती है। चारो प्रकार की मातायें अवैध सन्ता-नोत्पत्ति करके स्वस्थ सामाजिक जीवन को भ्रष्ट करती है। पहले प्रकार की मातायें एक कल्पना जगत मे रहती है। वे अपने अभावो की पूर्ति के हेतु विवाह पूर्व ही किसी पुरुष से प्रेम कर बैठती है

और ऐसी २ कल्पनाएं मन मे उत्पन्न कर लेती है जिनका यथार्थ से दूर का भी सबन्ध नहीं होता। कामान्ध और प्रेमान्ध यह स्त्रियां अपनी दुर्बलताओ को सहज ही अपने प्रेमियों को बता देती हैं और फिर अधिक सरक्षण सुरक्षा या प्रेम की आशा मे वे अपने आप को समर्पित कर देती है। अपरिपक्व अवस्था और उचित शिक्षा व पारिवारिक स्नेह के अभाव मे उनका यह कार्य स्वाभा-विक सा हो जाता है। वे आशा यह करती है कि अपनी दुर्बलताओ को अचेतन एव अप्रत्यक्ष रूप में व्यक्त करके तथा अपने आप को उसे समर्पित करके वे उसके मन मे अपने सहानुभूति व प्रेम उत्पन्न कर सकेगी। किन्तु होता इसके विपरीत है क्योंकि पुरुष स्वभाव से ही स्वार्थी होता है। स्त्री की दुर्बलताओं [illegible] प्रेरित करती है। [illegible] की पूर्ति [illegible] सम्बन्धों [illegible] बन जाती है [illegible] अपनी इस पिपासा को शान्त करने का अवसर मिल जाने पर वह स्त्री से कतराने लगता है। कारण यह है कि उसे यह स्पष्ट हो जाता है कि अब स्त्री उससे

विवाह का प्रस्ताव रखेगी। विवाह के लिये स्वीकृति देने का अर्थ होता है अपने आप को बन्धनों मे डालना और एक उत्तरदायित्व को पूरा करने का बोझ अपने कन्धे पर लेना है। विवाह शब्द से स्त्रियों का जितना अधिक मानसिक लगाव होता है उतना ही पुरुषो को यह शब्द विचित्र लगता है।

दूसरे प्रकार की मातायें भी किसी बडे अभाव या भ्रामक कल्पना की शिकार होती है। पति के स्वास्थ्य, सच्चरित्र एव विद्यमान रहते हुये उससे आंख बचाकर इस प्रकार के सबधों को बनाना एक पतित कार्य है जिसके लिये समाधान नही दिया जा सकता। प्रायः देखा जाता है कि ऐसे सबध वे तभी बढाती है जब वे यह अनुभव करती हैं कि उनका पति उन्हे सभी प्रकार से

संतुष्ट नहीं कर पाता। कभी २ धन या उच्च सामाजिक स्तर को पाने के उद्देश्य से भी स्त्रियां इस प्रकार के नैतिकताच्युत आचरण को अपना लेती हैं। तीसरे प्रकार की स्त्रियां समाज की वे पीड़ित नारियां है जिन्हे समाज ने ऊपर उठने का अवसर तदनुकूल सुवि-धायें ही प्रदान नहीं की। प्रथम प्रकार की मातायें भी विवश होकर इस प्रकार की स्त्रियों मे सम्मिलित हो जाती हैं। हमारी सामाजिक व्यवस्था कुछ ऐसी है कि एक भूल के बाद अनेक पाप करना अनिवार्य सा हो जाता है यह अनुभव करते हुये भी कि उनका अपना जीवन [illegible] अनेक ऐसे [illegible] जन्म दे [illegible] संस्कार सब होगा। किन्तु [illegible] [illegible] प्रतिष्ठा [illegible] [illegible] में सत्य [illegible] नहीं पाती।

चौथे प्रकार की मातायें वे हैं, जिनके साथ किसी सबल एव सशक्त पुरुष ने अक्षम्य अपराध किया होता है परन्तु उसका फल उन्हे भोगना पडता है। कुछ ऐसी मातायें हैं जो वास्तव में दण्ड की भागी हैं। परन्तु अपराध का पता चलने और स्पष्ट होने तक उसके विषय में समाज कोई विशेष रुचि नहीं दिखाता। फलस्वरूप उनकी कामुकता और वासना की ओर प्रचण्ड और प्रभा-वशाली होने की छूट मिल जाती है। और यह पुरुषों के भी पतन का कारण बन जाती है।

चन्द्रप्रकाश आर्य
नई देहली

विश्लेषण से पता यही चलता है कि नारी और पुरुष समान रूप से अवैध सन्तान के उत्तरदायी हैं। अतः दोनों ही दण्ड के भागी हैं। परिस्थिति एवं काल के अनुसार कहीं पुरुष ने महत्वपूर्ण भूमिका की होती है तो कहीं नारी ने यह होते हुये भी अवैध सन्तान के लिये माता को ही दोषी माना जाता है। यह घोर अन्याय है प्रकृति की भी ऐसी विडम्बना है कि स्वभाव से कोमल एव भावुक नारी जाति की ही ऐसी शक्ति रचना की है कि वह पुरुष की तरह अपने को इस अपराध से असम्बन्धित नहीं कर सकती। एक ओर तो प्रकृति उसे गर्भ से प्रसव तक की सभी पीड़ायें प्रदान कर उसे अपनी भूल का आभास कराती है जब कि दूसरी ओर समाज उसकी ओर उंगली उठाता है। उसे अपमानित करता है और इतना तिरस्कृत करता है कि वह जीवित रहने के योग्य ही न रहे। लेकिन पुरुष के साथ तो ऐसा कुछ भी नहीं होता, न तो उसे प्राकृतिक पीड़ा का अनुभव होता है और न सामाजिक तिरस्कार का, क्योंकि स्त्री सकोच एवं भय वश भावी सन्तान के पिता का नाम नहीं बताती। यदि वह नाम बता भी दे तो केवल [illegible] प्रयोग ही ऐसा उपाय है जिसके द्वारा समस्या हल की जा सकती है अन्यथा तो पुरुष को अपनी निरपराधिता या [illegible] प्रमाणित करने का पूरा अवसर है। अपमान के भय से [illegible] के अभिभावक [illegible] पुरुष को जानना [illegible] समक्ष नहीं ला पाते।

अविवाहित माताओं की समस्यायें [illegible] होती हैं। कुछ तो प्रारम्भ में ही अवैध सन्तान को पेट मे [illegible] और कुछ गलत तरीके अपनाकर समाप्त कर देती हैं और कुछ गर्भ मे सन्तान का अनुभव करते ही सम्बन्धित

(शेष पृष्ठ १२ पर)

आर्य-सभा कार्य कर्त्ता प्रशिक्षण शिविर

दिनांक १५ से ३० जून तक आ० प्रा० आर्य सभा का एक कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण-शिविर आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर (हरिद्वार) में लगाया गया।

शिविर में उत्तर प्रदेश के अतिरिक्त हरियाणा, महाराष्ट्र के कार्यकर्ता भी सम्मिलित हुये। १५ जून को शिविर का उद्घाटन ध्वजारोहण के साथ श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी द्वारा किया गया।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के पूर्व प्रधान मन्त्री एवं पूर्व सम्पादक आर्यमित्र श्री पं० शिवदयालु जी की अध्यक्षता में ५ दिन तक प्रातः सायं संस्कार विधि सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास ६ के सम्बन्ध में विशेष बौद्धिक एवं विचार विनिमय हुआ।

शिविर में श्री पं० इन्द्रदेव जी मन्त्री आर्य सभा ने वैदिक अर्थ-शास्त्र एवं गौ के महत्व पर विशेष प्रकाश डाला। गौ से भारत की खाद्यादि सब समस्याओं का समाधान प्रतिपादित किया तथा वैदिक राष्ट्र संविधान की रूपरेखा प्रस्तुत की। श्री धर्मपाल शास्त्री जी ने आर्य सभा की आवश्यकता उसके भावी कार्यक्रम पर विशेष प्रकाश डाला।

शिविर में पधारने वाले सज्जनों के निवास एवं भोजन की व्यवस्था आश्रम की ओर से प्रधान हरप्रसाद जी ने की थी। सभा की ओर से उनके एवं आश्रम के प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट की गई।

शिविर में पधारने वाले अनेक कार्य कर्त्ताओं ने श्री चौ० तेजसिंह जी के साथ सहारनपुर जिले के विभिन्न स्थानों में यथा रुड़की, बहादुराबाद, लक्सर सहारनपुर, गंगोह, नकुड़ आदि स्थानों में सार्वजनिक सभायें कर करके सभा के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला तथा अनेक व्यक्तियों को सदस्य बनाया।

सभा की अन्तरङ्ग बैठक

सभा की अन्तरंग बैठक आ० स० मेस्टन रोड कानपुर में बृहस्पतिवार २६-६-६८ को हुई जिसमें सिरपंगाज के स्थगित बृहद् अधिवेशन से उत्पन्न परिस्थितियों पर विचार किया गया। बैठक सद्भावना पूर्ण वातावरण में हुई और सभा प्रधान ने बड़ी कुशलता से बैठक का संचालन किया। बैठक में अनेक महत्व पूर्ण प्रस्ताव पास किये गये।

भोजन व आवास का प्रबन्ध बड़ा ही सुन्दर तथा व्यवस्थित था जिसके लिये पं० विद्याधर जी एवं अन्य सभी कार्य कर्त्ताओं को विशेष धन्यवाद दिया गया। अन्तरंग सभा के समस्त सदस्यों को आ० स० मेस्टनरोड द्वारा प्रकाशित ४ पुस्तकों का एक सेट सम्मानार्थ प्रदान किया गया।

समाचार

—आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर में सम्प्रति मातृ-मन्दिर हाथरस की ३५ छात्रायें तथा संस्था की सञ्चालिका कुमारी पुष्पावती एम० ए० बी० एड० की संरक्षकता में एक प्रशिक्षण शिविर लगाये हुये हैं। आश्रम की ओर से इनके निवासादि की समुचित व्यवस्था की गई है।

श्री जगजीवनराम के वक्तव्य का विरोध

प्रयाग। आर्य स्त्री समाज कटरा के साप्ताहिक अधिवेशन में केन्द्रीय कृषि मन्त्री श्री जगजीवनराम के इस वक्तव्य का कि वैदिक काल में गो मांस खाया जाता था, तीव्र विरोध प्रकट किया गया। समस्त बहनों ने सर्व सम्मति से उन्हें अपने शब्द वापस लेने का अनुरोध किया।

रामपुर। गाय हमारी धार्मिक संस्कृति का केन्द्र बिन्दु है और पूज्य है तथा उसकी हत्या अक्षम्य अपराध है। इस सम्बन्ध में आर्य समाज सफीपुर जिला द्वारा आयोजित नागरिकों की सभा ने केन्द्रीय कृषि मन्त्री श्री जगजीवनराम के वक्तव्य पर रोष व्यक्त किया और उनसे तत्काल अपने शब्द वापस लेने का आग्रह किया।

मानपुर में नवीन समाज स्थापित

बाराबंकी। आर्यसमाज सिंधी बाजार झांसी के पुरोहित श्री रामदुलारे लाल आर्य के तत्वावधान में एक विशाल यज्ञ का आयोजन ग्रा० मानपुर (बाराबंकी) में गत २ जून को हुआ। तत्पश्चात् समाज की स्थापना की गई। नवनिर्वाचित पदाधिकारी इस प्रकार है—प्रधान—श्री रामआसरे, उपप्रधान—श्री शम्भुदयाल, मन्त्री—श्री अवधराम, उप मन्त्री श्री मुकेश व कोषाध्यक्ष—श्री शिव शङ्कर, पुस्तकाध्यक्ष—श्री जगतनारायण तथा निरीक्षक—श्री विश्वनाथ जी।

निर्वाचन

आर्य समाज मसूरी, प्रधान—श्री चरणदास साहनी, उप प्रधान—श्री विश्वम्भरनाथ हरिरामदास, मन्त्री—श्री परमात्मा शरण उप मन्त्री—श्री अमर प्रभाकर, कोषाध्यक्ष—श्री अमरनाथ सेठ पुस्तकाध्यक्ष—श्री तेजपालसिंह रावत

पाखण्डी बालयोगेश्वर

बुलन्दशहर—इस मत के पाखण्डी बालयोगेश्वर परमहंस जी महाराज को नगर आर्यसमाज द्वारा दिव्य संदेश परिषद के उत्सव में शास्त्रार्थ की खुली चुनौती दी गई जिसे उन्होंने स्वीकार नहीं किया और न विज्ञापित प्रश्नों का ही उत्तर दिया।

अविवाहित मातायें

(पृष्ठ ८ का शेष)

पुरुष से या फिर किसी अन्य व्यक्ति से विवाह कर लेती हैं। एक और प्रकार की स्त्रियां किसी परामर्श या सहायता को प्राप्त करने में संकोच या असमर्थता अनुभव कर आत्महत्या तक कर लेती हैं। उपरोक्त तीनों प्रकार की माताओं के विषय में परिवार या सम्बन्धित व्यक्तियों से पृथक को किसी को जानकारी नहीं होती है फलस्वरूप मानसिक पीड़ा के अतिरिक्त सामाजिक अपमान का सामना अभिभावकों तथा स्त्रियों को नहीं करना पड़ता। अधिकांशतया ऐसी स्त्रियों के जीवन में इस दुर्घटना की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है और वे आगे के लिये अधिक सचेत, सजग और अच्छी हो जाती हैं। ऐसी स्त्रियों में अपने पैरों पर खड़े होने की भावना जागृत हो जाती है और वे विवाह द्वारा या किसी नौकरी द्वारा अपने आप को स्वावलम्बी बना लेती हैं।

सर्वाधिक सामाजिक अपमान एवं कष्ट उन माताओं को सहन करने पड़ते हैं जो इस ओर से प्रारम्भ से ही चिन्तित नहीं होती या फिर जो बड़ी नासमझी के शिकार होती हैं। ऐसी मातायें बिना अभिभावकों के बताये या कभी २ अभिभावकों की स्वीकृति पर केवल मोह में बच्चे को पेट में पलने देती हैं। और प्रसव जैसी गहन पीड़ा को सहन के बाद सन्तान को अपने से पृथक् कर देती हैं। ऐसा न करने के बाद असीम स्नेह होते हुए भी सामाजिक मान्यताओं से डर कर उन्हें ऐसा करना पड़ता है। ऐसी सन्तानों का भविष्य भी अनिश्चित होता है। पुरुष और स्त्री की एक भूल का फल अबोध और निरपराध सन्तान को भोगना पड़ता है जब कि माता-पिता एक स्थिति के बाद इस उत्तरदायित्व से अपना सम्बन्ध विच्छेद कर लेते हैं।

अवैध सन्तान के तिरस्कार एवं अपमान जनक व्यवहार प्रकट करना वस्तुतः अनुचित है किन्तु ऐसा करना पड़ता है। कदाचित समाज यह दृष्टिकोण इसलिये अपनाता है ताकि स्त्री पुरुषों को अवैध सन्तानोत्पत्ति के लिये प्रोत्साहन प्राप्त न हो। जो कुछ भी हो दण्ड की व्यवस्था में परिवर्तन की आवश्यकता है। अनेक स्त्रियों को मृत्यु एवं मानसिक एवं सामाजिक शोषण व उत्पीड़न की आग में झोंकने वाले इस अवैध यौन सम्बन्धों पर किसी न किसी प्रकार रोक तो लगानी चाहिये। क्या परिवार नियोजन के साधन ऐसा कर सकेंगे? कदापि नहीं उन्हें ऐसा करने की छूट भी नहीं देनी चाहिये वरना की हर दिशा में अवैध सन्तानोत्पत्ति प्रगति पथ पर आरूढ़ दिखाई देगी। आवश्यकता इस बात की है कि नैतिक शिक्षा का विस्तृत एवं प्रभावशाली ढंग से प्रचार किया जाय। बालक व बालिकाओं का ठीक आयु पर विवाह किया जाना चाहिए और फिर एक ऐसी पद्धति की व्यवस्था की जानी चाहिये जिसमें सामाजिक मान्यताओं के साथ २ मानवीयता को भी उचित संरक्षण प्राप्त हो। अविवाहित माताओं की उचित शिक्षा देख रेख संरक्षण तथा उत्पन्न सन्तान के पालन पोषण की जिम्मेवारी सरकार तथा स्वेच्छा सेवी संस्थाओं को उठानी चाहिये। अविवाहित माताओं को पुनः सदचरित बनने तथा सामाजिक जीवन में प्रवेश करने की छूट प्रदान की जानी चाहिए और पुरुष को सबसे कठोर दण्ड की व्यवस्था होनी तो नितान्त आवश्यक है।

उप-सभा लखनऊ की सूचना

लखनऊ जिले की समस्त आर्य समाजों को सूचित किया जाता है कि उप सभा का अन्तरंग अधिवेशन रविवार १४-७-६८ को सायंकाल ६ बजे आर्य समाज गणेशगंज लखनऊ में होगा जिसमें अनेक महत्वपूर्ण विषयों पर विचार किया जायगा।

पदाधिकारियों एवं अन्तरंग सदस्यों व सदस्याओं से प्रार्थना है कि वे कृपया ठीक समय पर पधारें।

विक्रमादित्य 'वसन्त'
मन्त्री

शिक्षा सम्मेलन

(पृष्ठ ६ का शेष)

कारण इस शिक्षा विभाग ने धार्मिक शिक्षा के प्रशिक्षण शिवरों का आयोजन किया और आगे करने का विचार है। गत वर्ष एक ऐसा शिविर आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर में लगा था। जिसमे केवल आठ पश्चिमी प्रान्तो के सभा सम्बद्ध आर्य कन्या विद्यालयों की दो २ अध्यापिकाओं को प्रशिक्षण निमित्त आवाहन किया गया था, इन जिलों मे ऐसे विद्यालयो की सख्या ३३ है। इस शिविर मे आवास, भोजन व जलपान की व्यवस्था आश्रम की ओर से निःशुल्क थी। फिर भी केवल सात ही विद्यालयों से केवल आठ ही अध्यापिकायें सम्मिलित हुयीं। यह संख्या यद्यपि सोचनीय है, तथापि निरुत्साहित होने की बात नहीं सम्मिलित होने वाले विद्यालय व अध्यापिकायें स्तुत्य हैं।

शिक्षा विभाग ने सन् १९६७ ई० के वर्ष में अपने उत्तर दायित्व को निभाने के लिये जो कार्य किये हैं। उन का विवरण आर्य प्रतिनिधि सभा के वार्षिक वृत्तान्त सन् १९६७ में प्रकाशित इस विभाग की रिपोर्ट पृष्ठ ५९ से ७१ तक तथा पृष्ठ ८८ पर देखिये।

महानुभाव मुझे आप क्षमा करेंगे यदि हम अपनी निर्बलताओं पर कुछ दृष्टिपात करलें। आज हम देखते हैं कि देश के विद्यालयों मे अनुशासनहीनता बढ़ती आ रही है शिक्षा वर्ग अपने को इस अनुशासनहीनता को रोकने मे असमर्थ सिद्ध कर रहे हैं। शिक्षक वर्ग इस मँहगाई के युग मे अपने कर्तव्यों के प्रति निष्ठावान न रह कर अपनी आर्थिक कठिनाइयों मे उलझकर अपनी मांगों की पूर्ति हेतु अधिक प्रयत्नशील दिखाई पड़ते हैं।

आये दिन प्रबन्धक व कर्मचारियो के विवाद नित नये बने रहते हैं, यही नहीं, प्रबन्ध समितियों के सदस्यों व पदाधिकारियो मे भी पारस्परिक झगड़े रहते हैं।

अनुशासन तथा कर्तव्य परायणता मे विमुखता केवल विद्यालयो मे ही दृष्टि गोचर नहीं होती है। वरन् देश का प्रत्येक क्षेत्र इससे अछूता नहीं है। कर्तव्य परायणता का स्थान स्वार्थ लिप्सा ने ले लिया है।

आज देश का प्रत्येक वर्ग इस दुर्गुण से चिन्तित तो है परन्तु उसके शोध के उपायों पर विचार करने को किसी वर्ग सभा सोसाइटी को न समय है न चिन्ता।

इस देश व्यापी दुर्गुण को यदि आर्य समाज चाहे तो अवश्य दूर हो सकता है। महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की नींव ही समस्त बुराइयों को दूर करने और सद्गुणों को स्थापित करने के लिये डाली थी, जिसकी ओर हम प्रयत्नशील तो अवश्य हैं परन्तु यथेष्ठ सफलता के लिये और अधिक प्रयत्नशील होने की आवश्यकता है। यों तो बुराइयों को दूर करने के लिये हमे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे प्रयत्नशील रहना चाहिये. परन्तु, यदि हम बालक बालिकाओं तथा छात्र छात्राओ पर आस्तिकता, देश प्रेम, भ्रातृभाव, पितृ सेवा, सदाचार, परोपकार सत्य निष्ठता, तप त्याग व गुरुभक्ति आदि उत्तम गुणो की क्रियात्मक छाप डालने मे सफल हो सकें तो भावी नागरिक समाज का सुधार होकर देश वास्तविक कल्याण मार्ग का पथिक बन सकता है।

यह कार्य तभी सम्भव है जब कि छात्र-छात्राओं मे वेदो के आधार पर धर्म शिक्षा अनिवार्य रूप से दी जावे। और धर्म शिक्षा देने वाले शिक्षकों का भी जीवन सादा, खान-पान शुद्ध तथा वे क्रियात्मक धर्म परायण है।

आज देश के नेता जो वास्तव में सुधार प्रिय हैं। वे धार्मिक शिक्षा की आवश्यकता अनुभव कर रहे हैं। परन्तु अभी उनका पाठ्य-क्रम बनाने मे असफल है, कारण सेकुलरवाद और गलत तुष्टीकरण की नीति है वहीं आ सकती है। परन्तु आर्य समाज के पास ऐसा पाठ्य-क्रम पूर्व निश्चित है। केवल उसको व्यवहारिक रूप देना है। यदि हम इसका सफल परीक्षण अपनी सस्थाओ द्वारा क्रियात्मक रूप मे देश व शासन के समक्ष प्रस्तुत कर सके तो देश व शासन अवश्य अपनायेंगे।

उसी कारण आज हम विज्ञान मे विद् विषयों पर विशेष अभिरुचि से विचार विनिमय कर आपका मूल्यवान परामर्श लेना चाहते हैं, ताकि शिक्षा विभाग अपने उत्तरदायित्व को आपके सहयोग से अधिक सक्षमता से निभा सके। विभाग उत्तरदायित्व की ओर कृतसंकल्प है, परन्तु आपका क्रियात्मक सहयोग सफलता के लिए निम्न प्रकार अपेक्षित है।

[१] धर्म शिक्षा छात्रों मे तभी भले प्रकार दी जा सकती है। जबकि शिक्षक वर्ग स्वयं धर्म शिक्षा मे दीक्षित हो। इस निमित्त अध्यापक अध्यापिकाओं के अथवा २ प्रशिक्षण शिविर आवश्यक हैं। उनमे सभी आमन्त्रित विद्यालयों को अनिवार्य रूप मे भाग लेना समयोचित है।

[२] इस विभाग की ओर से सञ्चालित धर्म शिक्षा परीक्षाओं मे कक्षा ७, ९, ११ के छात्र छात्रायें क्रमश. धर्म प्रवेशिका. धर्म भूषण व धर्म अधिकारी मे प्रत्येक विद्यालय के समस्त विद्यार्थी अनिवार्य रूप से बैठा करें यह दुख की बात है सन् ६८ की परीक्षाओं मे १३८ सस्थाओं मे से केवल ३८ सस्थाओं ने ही भाग लिया परन्तु इतना सन्तोष है कि गत वर्ष की अपेक्षा इस वर्ष १०७३ विद्यार्थी अधिक सम्मिलित हुये। इस वर्ष ४४८१ छात्र सम्मिलित हुये।

[३] अध्यापक अध्यापिकाओं मे शैक्षिक योग्यता के अतिरिक्त क्या क्या गुण आवश्यक होने चाहिए और क्या २ अवगुण न होने चाहिये इसकी भी एक तात्विक [illegible] प्रबन्ध समितियो के मार्ग दर्शन निमित्त होनी चाहिए।

[४] शिक्षा सस्थाओं मे आर्य प्रतिनिधि सभा के नियमो के अन्तगत सगठित विद्यार्य सभा के अनुशासन मे रहते उसके निर्णय को पालन करने उसकी आज्ञाओं व निश्चयों के अनुसार कार्य करने की प्रवृत्ति दृढ़ होनी चाहिए।

[५] विवादों को न्यायालयों मे न लेजाकर आपसी समझौते तथा प्रदेशीय विद्यार्य सभा तथा आर्यप्रतिनिधि सभा के निर्णयो के आधार पर स्वीकार करना चाहिये। आखिर न्यायालयों के भी तो निर्णय अपनी इच्छाओं के प्रतिकूल मानने ही पड़ते हैं। रहा शासन का डन्डा होता है। क्या ही अच्छा हो कि हम अपने संगठन के नैतिक अनुशासन को मान लिया करें और ही [illegible] किसी के इच्छाओं के आधीन हों।

[६] जिन सस्थाओं ने सभा अनुकूल [illegible] योजना बना दी उन्हे अब क्या [illegible] चाहिए।

[७] प्रबन्धक और वैतनिक [illegible] कार्यों के सम्बन्धों को उदार रखना नितान्त आवश्यक है। प्रबन्धक के [illegible] अथवा मान प्रतिष्ठा का प्रश्न न बना लेना चाहिए।

[८] गत वर्ष मैंने यह आवश्यकता व्यक्त की थी कि सस्थाओं के सहयोग से इस विभाग के पास एक अच्छा कोष हो जाय तो इस विभाग की ओर से धर्म शिक्षा का अधिक प्रसार बनाने के लिए योग्य व निर्धन छात्र-छात्राओं को छात्र वृत्तियां पिछड़े प्रदेशों मे शिक्षा सस्थाओ को स्थापित करने अथवा सुचारू रूप से सञ्चालन करने हेतु अनुदान अथवा ऋण आदि देने की पूर्ति [illegible] जा सके। आप को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि दयानन्द जूनियर हाईस्कूल [illegible] जिला अल्मोड़ा को २५००) सभा की स्वीकारी से ऋण दिया गया जिस से उसको हाईस्कूल की मान्यता प्राप्त होने मे सहयोग मिला यह विद्यालय बहुत ही पिछड़ी हुई जगह स्थापित है। कोष को बनाने के लिये यदि प्रत्येक विद्यालय अपनी छात्र सख्या पर वर्ष में केवल एक बार १) प्रति छात्र की दर से अनिवार्य रूप से दे दिया करे तो यह योजना भली प्रकार सफल हो सके तो आर्य प्रतिनिधि सभा के नियम ४० द अनुसार प्रदेशीय विद्यार्य सभा उत्तर प्रदेश का सगठन सन् १९६६ ई० में हो गया था। परन्तु अब पदाधिकारियो का निर्वाचन भी १९-५-६८ को हो गया है। अब यह सभा अपना कार्य नियमानुसार करने लगेगा।

अन्त मे आप सबका पुनः आभार [illegible] यह अपेक्षा करूगा कि आप शिक्षा विभाग और विद्यार्य सभा को पूर्ण सहयोग देकर सस्थाओं की उन्नति [illegible] आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश की [illegible] व यश को बढ़ायेंगे।

[illegible] अमरनाथ जी विद्यालंकार [illegible] पधारे [illegible] सम्मेलन का अध्यक्षता स्वीकार [illegible] इसको [illegible] अपने [illegible] विभाग [illegible] तथा [illegible] धन्यवाद देता हूं।

पुस्तक समीक्षा

"दैनिक ईश्वर प्रार्थना-उपासना"

पृष्ठ सख्या ३२, मूल्य ५ पैसा मात्र सुन्दर पीला कवर, ४) रुपया प्रति सैकड़ा, बढ़िया कागज और छपाई।

यह पुस्तिका श्री जवाहरलाल जी आर्य कोषाध्यक्ष आर्यसमाज चौक, लखनऊ ने सकलित और प्रकाशित की है। इसमें ईश्वर प्रार्थना, उपासना के आठो मन्त्रो का पद्यानुवाद, ईश्वर स्तोत्र के मन्त्रों का भावानुवाद और 'मनः शिव सकल्प मस्तु' के छ मन्त्रों का सरल हिन्दी में अनुवाद दिया गया है। इसके अतिरिक्त इस छोटी सी पुस्तक में १८ भजनों का भी सकलन किया गया है।

आर्य प्रतिनिधि सभा के वृहद अधिवेशन के अवसर पर मिरसागज में इस पुस्तिका की सहस्रों प्रतियो का हाथों हाथ बिक जाना पुस्तिका की प्रियता का प्रमाण है।

[illegible] और देश के समस्त आर्य समाजें इस सस्ती पुस्तिका के विक्रय में सहयोग देकर धर्म प्रचार का विकास करें।

—'वसन्त'

[पृष्ठ ४ का शेष]

चौरस्ता पर स्थापित नेपाली कवि रामायण रचयिता श्री भानु भक्त आचार्य (१८७१-१९२७) की मूर्ति से कुछ ही पग पर मातृ भूमि के मग पर मौन मुद्रा से स्वातन्त्र के अमर सेनानी श्री चित्तरञ्जनदास की भव्य मञ्जुल मूर्ति देश प्रेम का नित नूतन पुनीत सन्देश सुनाती रहती है और एकबार पाषाण हृदय को भी अनुप्राणित कर देती है। दर्शन करके बरबस फूट फूट कर कहने लगी—

"कौन कहता है नहीं वह आज हमारे पास
हर हृदय मे अमर है, श्री चित्तरञ्जनदास।

मृत्यु शय्या पर निमित सजीव चित्र के समीप कवीन्द्र रवीन्द्र की अंग्रेजी कविता की निम्न पंक्तियों ने हृदयश्री को झंकृत कर दिया।

"The mother land spreads her veil from her breast on the dust, where the body left its last touch. They Country's invocation is chartered in the silent stones, for the bodiless presence to take its seat here on the attar of deathless love.'

अर्थात्—वक्षस्थल से मातृभूमि का माटी पर अचल आता
पार्थिव तन मे त्याग दिया जह, अपना अन्तिम नाता
राष्ट्रीय आह्वान अलौकिक, पाषाण मौन भर जाता
माथा ऊँचा करती माँ का, गाथा अमर सुनाता

लिखने का लोभ संवरण नहीं कर सकता कि पर्वतीय पुलिस तथा राजकीय औषधालयो के कर्तव्यनिष्ठ कर्मचारी सभी तत्परता से संलग्न रहते हुये निरन्तर उच्च प्रशंसा एवं सराहना के पात्र बन सकते है जो अन्य प्रदेशों के लिये अनुकरणीय है। लाल लाल लालों व ललनाओ के लावण्य मे अनुप्राणित होकर कवि हृदय गद-गद हो गया और पंक्तिबद्ध उद्‌गार प्रस्फुटित हो उठे आशा है पाठकगण कुछ तो रसास्वादन अवश्य ही करेंगे।

मन जो दारजीलिंग चले ··· ··· ··· ···
अचक्क मोटा दहा को, रख लई एक रजाई
बक्सा मे नक्शा गुड़िया से बुढ़िया सब सजाई
खस्ता सस्ता लड्डुवा गड्डवा निबुआ मिर्च चले······
एंतवार खो रहे उपाये, उसनींदी सी आँखें
रातई भई सफाई कै गए भोर दुकनियाँ ढाँकें
चाँवर खा कें चुप्पई धर गये दो दिन बहुत खले···
यद्यपि सात दिनो से लौटें सुरक्षित सवई कराई
लेकिन इच्छा में बच्चा कीं अड़िन बारई आई
बिगरे महमा ठाठ रुपय्या हम खो आठ घले·
सोहत शोभत सुन्दर जैसे ऊपर मुकुट मुढ़ो के
'मोहन' मञ्जुल मंजिल मोरी जैसेई सिलीगुड़ी के
बगाली बहु बसत बिहारी बंचत मच्छ तले··
छुक २ करके, झुक २ करके चलत चढ़त है रेल
मानो छिन मित भूत भुक कहवें खूब खिलावत खेल
सहर पहर देखो दुनिया मे, रोजई भात चले·····
घुमड़ २ घिर आवत बदरवा, भूरे करे कजरारे
घड़ी २ मे झड़ी लगत नव उफनत नदिया नारे

आर्यमित्र की सूचना

अब तक जिन ग्राहकों का इस वर्ष हेतु शुल्क समाप्त है उन्हे काफी समय पूर्व ही चन्दा समाप्ति की सूचनायें भेज दी गई हैं। कुछ कृपालु ग्राहकों ने अपना शुल्क भेज भी दिया है परन्तु अधिकांश अभी शेष है।

अतएव अनुरोध है कि अविलम्ब ही आप महानुभाव अपना २ शुल्क १० रु० मनीआर्डर द्वारा भेजने का कष्ट करें।

डाक दर मे असाधारण वृद्धि हो जाने के कारण वी० पी० पी० भेजने पर ग्राहकों पर अनावश्यक व्यय भार पड़ता है अतएव कृपया अपना धन मनीआर्डर द्वारा ही भेजिए।

मनीआर्डर के कूपन पर अपनी ग्राहक संख्या अवश्य लिखिये।

—व्यवस्थापक

अजानी कोहरा मे गलियन छलियन जात छले···
विक्टोरिया उद्यान वनस्पति, रंग-बिरंगे फूल खिले
चौरस्ता चल टोपे मोपे, रोये फूल मिले
देश बन्धु के दर्शन करके गदगद भरे गले..
उदित ऊषा की उत्तम वेला ऊपर टाइगिर हिल के
कुँकुम की किरणों मे शिशु से, भगवान भास्कर किलके
माता की सिंदूरी मांगन, सदा सुहाग फले··· ··
यात्रा प्रेरक पर्वतीय पर प्रायः परत न धूप
झूमत घूमत रहते रसिया, बने छलिया रूप
चारु चन्द्र से चमको चहुं दिश, सबके चाओ भले···

धार्मिक परीक्षायें

आर्य सेवा संघ की साहित्य विशारद, साहित्य भूषण, साहित्य रत्न, साहित्य प्रभाकर तथा शोध उपाधि परीक्षायें आगामी सितम्बर मास में समस्त भारत मे होगी। कोई भी व्यक्ति किसी भी परीक्षा मे बैठ सकता है। प्रत्येक परीक्षा मे सुन्दर व तिरंगा उपाधि पत्र प्रदान किया जाता है। सर्व-प्रथम और द्वितीय, तृतीय, आने वाले छात्रो को पारितोषिक। छात्र-वृत्ति। पुस्तक सहायता। पदक। आर्थिक सहायता दी जाती है। निम्न पते से पाठ-विधि २५ पैसे के डाक टिकट भेज कर मंगाइये, परीक्षाओं का माध्यम हिन्दी है।

हरपालसिंह योगी
अध्यक्ष

डा० ओमपाल आर्य 'सचेत'
साहित्य शास्त्री. H L. M S
मन्त्री

आर्य सेवा संघ, रसूलपुर जाहिद
पो० रसूलपुर कनौदी (जानी) मेरठ (उ० प्र०)

पाप का फल

[मनुष्य जिस भौतिक विज्ञान के [illegible] अन्धाधुन्ध दौड़ रहा है वहाँ न शान्ति है न आनन्द ! पाप का फल न कभी मीठा हुआ है न होगा। प्रकृति के नियमोल्लंघन पर न्यायकारी अवश्य दण्ड देगा [illegible] आज का मानव इस तथ्य को समझ कर संयम के महत्व का मूल्यांकन कर सके।]

शेखर अपने माता पिता का इकलौता पुत्र था इसलिये स्वाभाविक रूप से वह उनका लाडला था। शेखर के पिता श्री गिरधारीलाल यद्यपि सरकारी कार्यालय में एक साधारण लिपिक थे फिर भी उन्होंने शेखर को ऊँची शिक्षा दिलाने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी। यही कारण था कि स्कूल कालिजों व विश्वविद्यालयों में से निकलता हुआ शेखर एक कारखाने का सफल इञ्जीनियर बन चुका था। श्री गिरधारीलाल जी का सारा जीवन तिकड़मबाजी छल-कपट और धूर्तता में ओतप्रोत था। उन्होंने ऊपर से भक्त का रूप धारण कर रखा था और उठते-बैठते राम राम उनके मुख से निकलता रहता था परन्तु भीतर से वे पूरे मायावी थे। उनकी पाप कमाई से घर में भौतिक साधनों का बाहुल्य हो गया और वे सगर्व अपनी पत्नी से एकान्त में कहा करते थे—"अरे शेखर की माँ ! इस संसार में पैसा ही भगवान है। बुद्धि भगवान ने दी ही इसलिये है कि चतुराई से अपना उल्लू सीधा करो। जब भगवान विष्णु भी लक्ष्मी को चेरी बनाकर रखते हैं तो हम सांसारिक जन भला उनकी लक्ष्मी का पूजन अर्चन कैसे छोड़ सकते हैं। उनकी पत्नी राधा यद्यपि नित्य हनुमान चालीसा और रामायण बाँचती थी तथापि घर में आते पाप धन से उसको भी लगाव था।

समय बीतता गया और शेखर जब एक कारखाने में इञ्जीनियर हो गया तो उसके माता पिता को उसके विवाह का ध्यान आया। मध्यम श्रेणी के अनेक सम्भ्रान्त परिवारों से विवाह प्रस्ताव आये परन्तु गिरधारीलाल जी को कोई न जचता। अनेक व्यक्तियों से तो उन्होंने बात करना ही अपनी शान के विरुद्ध समझा। वे सगर्व अपनी पत्नी राधा से कहते—"बड़े आये सम्बन्धी बनने—तनिक अपनी हैसियत तो देखें। मेरा बेटा इञ्जीनियर है इञ्जीनियर। हजारों खर्चे हैं तो लाखों वसूल भी करूँगा।', राधा की तो बस एक ही रट थी "यह लेन देन तो तुम जानो—मुझे तो चांद जैसी गोरी चिट्टी सुन्दर बहू चाहिये—जैसा सुन्दर शेखर वैसी सुन्दर बहू'। शेखर ने तो स्पष्ट शब्दों में ही कह दिया था कि उसे पढ़ी लिखी फेशनेबुल आधुनिक पत्नी चाहिये।

फिर एक दिन ऐसा भी आया जब कपड़े के एक बड़े कारखाने के स्वामी श्री लक्ष्मीचन्द जी की पुत्री रूपा से शेखर का विवाह सम्पन्न हो गया। सभी अपने-अपने स्थान पर प्रसन्न थे। गिरधारीलाल जी को पुत्र के विवाह में मोटर कार, रेडियो रेफरिजेटर, सैकड़ों तोले सोना और एक लाख की नकद राशि मिली थी। राधा को चांद जैसी बहू मिल गई थी और शेखर को उस आधुनिका का देखकर फूला न समाता था जो दिन में अनेक साड़ियां बदलती थी और जो हर एक घण्टे के बाद नया मेकअप करती थी [illegible] जो कार चलाती थी—प्रति दिन पति के साथ साथ सिनेमा देखती थी। रात दिन रद्दी उपन्यास पढ़ती थी और [illegible] सिगरेट, सोडा [illegible] झडाओं में शेखर का पूरा साथ देती थी।

दिन ऐसे ही हंसी खुशी में बीतते चले जा रहे थे कि एक दिन शेखर ने कारखाने से लौटकर नित्य की भांति रूपा को अपने स्वागत के लिये बरामदे में खड़ा न पाया। माँ से यह जानकर कि रूपा अपने कमरे में सो रही है, वह लपककर उसके कमरे में गया और उसने देखा कि रूपा सिसकियां ले कर रो रही है। शेखर के अनेक बार पूछने पर रूपा शेरनी की भांति दहाड़कर बोली—"आखिर वही हुआ जिसका मुझे डर था तुमने मेरा जीवन बरबाद कर दिया।"

"बोलो तो सही-ऐसा क्या अपराध किया है मैंने ?" शेखर ने विनीत स्वर में कहा।

"अभी एक साल भी नहीं हुआ विवाह को और मैं मातृत्व के बन्धन में बंधने जा रही हूँ। मेरी सहेलियाँ क्या कहेंगी-मेरा रूप खराब हो जाएगा तो तुम भी मुझे नहीं पूछोगे। बच्चे के कारण क्लब जाना, सिनेमा देखना, नावल पढ़ना सब चौपट हो जायेगा। मैंने तुमसे कितना कहा कि आधुनिक विज्ञान की शरण लो पर तुमने एक नहीं मानी। हाय ! तुमने मेरा जीवन नष्ट कर दिया।"

रूपा फिर रोने लगी। शेखर उसे ढाढ़स देता हुआ बोला, 'तुम चिन्ता न करो सब ठीक हो जायगा।' समय पर लगाकर उड़ने लगा और शेखर की एक न चली। आधुनिक औषधियाँ प्रभावहीन हो गयीं। गिरधारीलाल और राधा की प्रसन्नता का पारावार न था।

शेखर ने रूपा को यह कह कर सान्त्वना दी कि एक बच्चा तो परिवार में होना ही चाहिए था। चलो शीघ्र छुट्टी मिली।

और एक दिन रूपा ने अस्पताल में एक कोमल सी बच्ची को जन्म दिया। केस गम्भीर था [illegible] करना पड़ा था। शेखर प्रसन्न था कि रूपा की जान बच गई। गिरधारीलाल व राधा पोती को देख कर उतने प्रसन्न नहीं हुए थे जितना कि पोते को देख कर होते फिर भी उन्होंने पत्नी से हंस कर कहा था, 'अभी आज पोती हुई तो कल पोता भी हो जायगा' राधा ने हंस कर कहा था 'बहू भी माँ बन कर कितनी प्रसन्न है।' परन्तु उसे क्या पता था कि रूपा की प्रसन्नता का रहस्य क्या है ?

समय पुनः द्रुति गति से बीत चला। बच्ची अब ढाई वर्ष की हो चुकी थी। रूपा ने उसका नाम अलका रखा था। वह शेखर के आखों का तारा थी एकदम रूपा की कारबन कापी जैसी। दिन रात पुनः प्रसन्नता के प्रवाह में दौड़ने लगे। शेखर को भी पाप कमाई में कोई विरोध न था और देखते ही देखते एक सुन्दर कोठी भी बन कर तैयार हो गई जिसका नाम भी शेखर ने अलकापुरी रखा। ग्रीष्म ऋतु का आगमन होने पर पति पत्नी ने मसूरी जाने का कार्यक्रम बनाया और वे देहरादून चल पड़े।

देहरादून के दर्शनीय स्थान देखने के कार्यक्रम में शेखर रूपा अलका सहित सहस्रधार देखने जा पहुंचे। धारा के सरल प्रवाह के समीप एक स्वच्छ स्थान पर वे बैठ गये। ट्रांजिस्टर रेडियो पर फिल्मी धुनें बजने लगीं और अलका अपनी माँ से पाई हुई शिक्षा के आधार पर नाचने लगी। जब नृत्य समाप्त हुआ तो रूपा ने थरमस व टिफन केरियर से खाने का सामान बाहर निकाला। अभी मैं मुँह हाथ धो [illegible] और तौलिया लेकर [illegible] के [illegible] में देखने लग [illegible] में एक [illegible] रहा था। उधर पति [illegible] प्रपात में [illegible]

रूपा [illegible] तुम बड़ी प्रसन्न होगी [illegible] तुम [illegible] न [illegible] आँसुओं [illegible]"

विक्रमादित्य 'वसन्त'

रूपा [illegible] और [illegible] होली—[illegible] को [illegible] शुभ सन्देश [illegible] डाक्टर [illegible] करना [illegible] रहा [illegible]।

इबल [illegible] ' और दोनों पति-पत्नी [illegible] तभी शेखर ने कहा [illegible] तो यह है कि हमी [illegible] दोनों ही अलकाल हे और [illegible] की आशा [illegible] है।"

तभी 'बाबू साहब [illegible] !" की ध्वनि से दोनों चौंक उठे एक अधेड़ उमर का व्यक्ति [illegible] को लपेटे पूछ रहा था 'साहब [illegible] क्या यह आपकी बच्ची है। यह धारा में बहकर पनचक्की के पाटों में पिस गई है।"

काटो तो खून नहीं—शेखर एकदम सुन—रूपा ने बाल नोच [illegible] 'अलका' कह कर एकदम शव से लिपट कर दहाड़े मार-मार कर रोने लगी। बड़ा करुण दृश्य था [illegible] वह आधुनिका न हो कर एक ग्रामीण स्त्री जैसा विलाप कर रही थी—

आज रूपा पागलों सा [illegible] व्यवहार करती है—वह अब [illegible] पायेगी [illegible] इसलिए उसका मस्तिष्क विकृत हो गया है। शेखर खोया खोया सा [illegible] और अशान्त रहता है—वह अब [illegible]। पागल बहू और बेटे [illegible] से [illegible] और पोते की [illegible] गिरधारीलाल व राधा [illegible] आह भर कर कहते [illegible] का क्या होगा—

[illegible] को [illegible] "शान्ति" [illegible] है [illegible] ही [illegible] पहले इस जन्म में या पूर्व-जन्म में। ●

आर्य्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल.-६०

२० आषाढ़ १६ शक १८९० आषाढ़ शु० १२
(दिनांक ७ जुलाई सन् १९६८)

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

Registered No.L. 60
पता—'आर्य्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष्य : २५९९३ तार "आर्यमित्र

आर्य्यमित्र नए रूप में

पाठकों को यह जानकर हर्ष होगा कि आर्य जगत् के इस प्रसिद्ध पुराने पत्र को अतिशय उपयोगी व रोचक बनाने के निमित्त नये आयोजन किये गये हैं। आर्य्यमित्र के आगामी अङ्कों में आप को यह सामग्री पढ़ने को मिलेगी–

(१) शिक्षाप्रद कथाएं
(२) समाज सुधारक एकांकी
(३) अध्यात्मिक रस से ओत प्रोत वेद मन्त्रों की व्याख्याएं
(४) ओजस्वी कविताएं
(५) सुमधुर भजन
(६) सामयिक लेख
(७) महिलाओं, विद्यार्थियों व बच्चों के लिए सुन्दर वेद शिक्षाएं
(८) महर्षि दयानन्द के अनमोल वचन
(९) आर्य जगत के प्रचार, संस्कार सम्बन्धी विस्तृत समाचार व सूचनाएं
(१०) विज्ञान वार्ताएं

लेखकों से प्रार्थना है कि वे वेद मन्त्रों पर आधारित व आर्यसमाज के सिद्धांतानुकूल प्रकाश्य सामग्री सुन्दर स्पष्ट शब्दों में कागज के एक ओर लिखी हुई भेजें—

लेखक महोदय कृपया नोट कर लें कि किसी प्रकार की ईर्षा व द्वेष को भड़काने वाली कृतियां व सूचनाएं आदि प्रकाशित नहीं की जाएगी। विद्वानों, पाठकों व अन्य शुभ चिन्तकों के उपयोगी सुझाओं का सदैव स्वागत किया जाएगा।

आर्य्यमित्र आपका अपना पत्र है, इसे पढ़िए-पढ़ाइये, सुनिये-सुनाइये स्वयम् ग्राहक बनिये व बनाइये और वेद प्रचार में अपना पूर्ण सहयोग दीजिए।

--विक्रमादित्य 'वसन्त'
सम्पादक

हृदय रोग चिकित्सा के लिए नया उपकरण

आइसबर्डेन-[illegible] नगर में हुये चिकित्सा विज्ञान के एक सम्मेलन में उन उपकरणों पर एक गोष्ठी हुई जिनका हृदय रोग बढ़ जाने पर उपयोग आवश्यक हो जाता है।

ऐसे रोगियों की हृदय गति को समय समय पर देखते रहना आवश्यक होता है। इसके लिये जर्मनी की प्रसिद्ध इलेक्ट्रोनिक कम्पनी सीमन ने एक छोटा सा उपकरण तैयार किया है। यह उपकरण चार पहियों पर स्थापित है और एक कमरे से दूसरे कमरे में ले जाया जा सकता है। कम कीमत का होने के कारण यह छोटे से छोटे अस्पताल में भी उपलब्ध हो सकता है।

इसी उपकरण में ऐसे औजार भी हैं जिनसे दवा दी जा सकती है या आवश्यकता पड़ने पर चीड़ फाड़ की जा सकती है।

जापान के सबसे बूढ़े पुरुष की दीर्घायु का रहस्य

टोकियो—जापान के सबसे बूढ़े आदमी की आयु ११२ वर्ष है उसका नाम है नाकापुरा और वह जापान के दक्षिणी नगर कागोशिमा में रहता है।

अपनी दीर्घायु का रहस्य बताते हुये नाकामुरा ने कहा है कि उसने न तो कभी धूम्रपान किया है न कभी मदिरा छुई है और न कभी आवश्यकता से अधिक भोजन किया है।

नाकामुरा अब भी प्रतिदिन बीस मिनट टहलता है।

सूचना

श्री प्रभुदयाल चैरिटेबल ट्रस्ट, की ओर से योग्य निर्धन, परिश्रमी एवं सच्चरित्र छात्राओं से छात्र वृत्ति के लिये आवेदन पत्र आमन्त्रित किये जाते है। आवश्यक प्रमाण पत्रों सहित आवेदन-पत्र, मन्त्री श्री प्रभुदयाल चैरिटेबल ट्रस्ट ५७ मॉडल बस्ती, नई दिल्ली—५ के पास भेजने चाहिए।

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के लिये भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से कृष्णगोपाल शर्मा द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।

लखनऊ—रविवार आषाढ २३ शक १८९०, श्रावण कृ० ५ वि० स० २०२५, दिनांक १४ जोलाई १९६८ ई०

वर्ष ७०

अङ्क २३

प्रति २५ पै०

वार्षिक १०)

छमाही ६)

विदेश मे

१ पौ०

परमेश्वर की अमृत वाणी

नरो ! आगे बढ़ो, विजयी होओ !

ओ३म् प्रेता जयता नर इन्द्रो व शर्म यच्छतु ।
उग्रा वः सन्तु बाहवोऽनाधृष्या यथासथ ।।

[ऋग्वेद १०-१०३-१३ यजुर्वेद १७-४६ सामवेद १८६२ अथर्ववेद ३-१९-७]

परमपिता परमेश्वर अपनी सनातन दिव्य अमर और कल्याणकारी वेद वाणी में ज्योतिर्मय सन्देश दे रहे हैं—

(१) [नरः] नरो ! नरत्व को धारण करने वालो, पुरुषार्थियो, कर्म शीलो, धर्म रक्षको, ओजस्वियो, तेजस्वियो..........

(२) [प्र-इत] बढ़ो, आगे बढ़ो, प्रगमन करो, प्रयाण करो, चले चलो रुको मत, रुकना तुम्हारा काम नहीं, चलना तुम्हारी शान । चरैवेति चरैवेति.......

(३) [जयत] जीतने के लिये, विजय सम्पदानार्थ, धर्म युद्ध में, न्याय युद्ध में, आत्म संग्राम में, सामाजिक कुरीतियों के संघर्ष में, राष्ट्र रक्षा घोर समर में.........................

(४) [इन्द्रः वः शर्म यच्छतु] इन्द्र तुम्हें शांति प्रदान करे । इन्द्रियों का दमन व मन का शमन करने वालों को, इन्द्रत्व को धारण करने को तथा पाप विकार वासनाओं उत्तेजनाओं अभावों अन्यायों व अत्याचारों पर विजय प्राप्त करने वालों को ही परमेन्द्र द्वारा मनवांछित शांति मिलती है । आत्मिक संघर्ष से लेकर विश्व संग्राम के मूल में आर्यों का एक ही लक्ष्य है—द्यौ शांति अन्तरिक्ष शांति पृथिवी शाँति.........................

(५) [वः बाहवः उग्रा सन्तु] तुम्हारी भुजाएं उग्र हो इन फड़कती हुयी भुजाओं के सम्मुख ही दस्युता घुटने टेकेगी और शांति की स्थापना होगी—एक से अनेक नहीं, अनेकत्व से एकत्व की ओर संगठन में आबद्ध शक्ति जब अनुशासित होगी तो उसकी चमत्कृति से तिमिर की निवृत्ति हो जायेगी, पुण्य ऊषा आयेगी और ज्ञान लालिमा चमक उठेगी ।

(६) [यथा अनाधृष्या असथ] यथावत, नितान्त निरन्तर, अपराजित रहो, अदम्य रहो, स्थिर रहो, ध्रुव और ध्रुवा बनो, दृढ़ता का सतत साथ रखो—पराजित मनोवृत्ति पराजय का मूल है, दीन हीन वृत्ति बलहीनता की उत्पादक है अतएव उसे कभी किसी भी अवस्था में पास न फटकने दो—

'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के साधक प्रभु की इस दिव्य वाणी को यदि आत्म सात कर लें तो विजयश्री उनके पग चूमेगी— —'वसन्त'

इस अंक में पढ़िए !

१—वेद विवचन २
२—सम्पादकीय ३
३—सभा तथा सार सूचनायें ४
४—क्या वेदों में गो-मांस का विधान है ? ५
५—"योग दर्शन" ६
६—विचार-विमर्श ७
७—काव्य-कानन ८
८—शिक्षा-जगत् ९
९—सिद्धान्त-विमर्श १०
१०—आर्य-जगत् ११
११—आर्यकुमार सव १२
१२—देश-विदेश १३
१३—कहानी-कुञ्ज १४

अवैतनिक सम्पादक—

—विक्रमादित्य 'वसन्त'

सनातन ऋषित्व निष्पादक सोपान

"वसोः पवित्रमसि शतधार वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम् । देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शत धारेण सुप्वा कामधुक्षः ॥ य० (१-३)

वेद मन्त्र

अस्य प्रत्नामनु द्युत शुक्रं दुदुह्रे अह्रयः ।
पय: सहस्त्रसामृषिम ॥
[ऋ० ९-५४-१, अ०-२-१६ सा० ७५१]

पद-पाठ

अस्य प्रत्नाम् अनु द्युतं शुक्र दुदुह्रे अह्रयः ।
पयः सहस्त्र साम् ऋषिम् ॥

इस संसार में मानव जाति दो भागों में बंटी हुई है। एक भोगी बनकर केवल भोगों में निरन्तर लिप्त रहकर पशु-पक्षियों और कीट पतंगों की भांति अपने जीवन को व्यतीत करते हैं किन्तु दूसरे योगी बनकर योग साधना द्वारा परमात्मा की अध्यात्म-सुधा का सोपान करते हुए निज जीवन में सुख शान्ति और आनन्द को प्राप्त कर निवृत्ति मार्ग पर अग्रसर होते हुए मुक्ति को प्राप्त करते हैं।

भोगी जन तो इस ससार में असंख्य होते हैं किन्तु योगी तो विरले होते हैं। योगियों की सारी साधना जीवन की निष्पावता के लिये होते हैं। योगी तो निरन्तर प्रकृतिरूपी धेनु को दुहकर भौतिकता को भोगने में रत रहते हैं जिसके फलस्वरूप विकारमयी और परिवर्तनशील प्रकृति के अनुरूप हो उनका जीवन विकार वासना से युक्त होकर अस्थिर और अशान्त रहता है किन्तु योगी तो ब्रह्म रूपी धेनु को दोहते हैं और उसके आनन्दरूपी दूध का पान कर आत्मानन्द को प्राप्त कर अद्वितीय मस्ती का जीवन व्यतीत करते हैं।

योगी इस नियम को भलीभांति जानते हैं कि सर्वव्यापक परमात्मा के समीपस्थ होने के लिये उन्हें भी व्यापनशील होना है परमात्मा यशस्वी है तो उन्हें भी यश का सम्पादन करना है परमात्मा सर्वज्ञ है तो उन्हें भी अल्पज्ञता से ज्ञान की ओर निरन्तर अग्रसर होना है। परमात्मा के इस नियमबद्ध जगत् मे उनकी साधना भी नियम बद्ध हो जाती है। परमात्मा के विश्व रूप वृहत यज्ञ को देखकर वे भी अपने जीवन यज्ञ का सुसम्पादन करने के निमित्त सर्व प्रथम अपनी आत्माओं में तदनुरूप इच्छा के बीज को बोते हैं ताकि उनमें साधना के निमित्त अनन्त वेग जायमान हो सके और वे अपनी चिर साध पूर्ण कर सकें।

वेद ने ऐसे ही अध्यात्म पथ के पथिकों के लिये परमात्मा का दिव्य सन्देश दिया है—

"उत नो वाज सातये पवस्व बृहती इषः । द्युमत इन्दु सुवीर्यम् ॥"

अर्थात् प्रकाश, विज्ञान आत्म ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिये विशाल आकांक्षायें और प्रदीप्त पराक्रम की धारा हमारे अन्दर प्रवाहित होनी चाहिये। श्रेष्ठतम कर्म का आधार आत्मा की सद् इच्छा ही मनुष्य में पवित्रता लाती है और मन मे शिव संकल्पों को जागृत करती है। जो शुद्धता को प्राप्त करता है वही बुद्ध अर्थात् ज्ञानी बनता है और आत्म ज्ञान में जो शक्ति अन्तर्निहित होती है, वह उस आत्मज्ञानी को यश से सुसज्जित कर विश्व मे व्यापन शील बना देती है इस लिये यज्ञ के तीन धामों में अर्थात् शोधन बोधन व व्यापन मे शोधन को ही सर्व श्रेष्ठ महत्व देते हुए वेद ने परमात्मा के अमृत पुत्र व पुत्रियों के लक्ष्य बताते हुए स्पष्ट शब्दों में कहा—

"विप्रम् पदम् अङ्गिरसो दधान. यज्ञस्य धाम प्रथम मनन्त" ।

अर्थात् विप्र पद को धारण करने वाले ज्योति जीवन यज्ञ के प्रथम धाम का ही मनन करते हैं इसीलिये वेद के प्रस्तुत मन्त्र में ऐसे साधकों को अह्रयः शब्द से सम्बोधित किया गया है जो अहि का बहुवचन है और अह व्याप्तौ के अनुसार व्यापनशीलता के अर्थ को लेकर चलता है।

व्यापनशीलता के उच्च ध्येय को सम्मुख रखकर चलने वाले साधक इस बात को भलीभांति जानते हैं कि पवित्रता का आधार परम पवित्र प्रभु है, उसकी अजस्त्र पवित धाराओं में स्नान करने व पान करने से ही पूर्ण पवित्रता प्राप्त होती है। साधक परमात्मा की वेदवाणी को पढ़ना-पढ़ाता सुनता-सुनाता है इसलिये वह भलीभांति जानता है कि परमेश्वर ने अपनी वेद वाणी में कहा है—

"वसोः पवित्रमसि शतधार वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम् । देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शत धारेण सुप्वा कामधुक्षः ॥ य० (१-३)

अतएव उठते-बैठते सोते जागते साधक के सम्मुख एक ही प्रश्न रहता है "काम् धुक्ष." अर्थात् किसे दुह रहा हूं परमात्मा रूपी धेनु को अथवा प्रकृति रूपी गाय को। निरन्तर जागरूप होने के कारण पवित्र धाराओं को प्रवाहित करने वाली ब्रह्मधेनु का वह रस कैसा है उसके विषय में प्रस्तुत वेद मन्त्र मे सत्य विवेचन किया गया है और उस विवेचन के निमित्त जिन शब्दों मे मूलकृत किया है, उनमे प्रथम शब्द है "प्रत्नाम्" जिसके अर्थ हैं सनातन। परमात्मा का यह पयः जिसका साधक पान करता है वह एक सनातन रस है जो अनादिकाल से चला आया है और जो अनन्तकाल तक चलता रहेगा।

परमेश्वर का यह सनातन पय जिसका अहिजन (अनुदुदुहे) अनुदोहन कर रहे हैं वह कैसा है तो प्रस्तुत मन्त्र में बोध कराया गया है "अस्य पयः द्युतं" अर्थात् यह वह अमृत पान है जिससे साधक के जीवन मे द्युति, दीप्ति ओज और तेज आता है। जब भौतिक जगत् में दुग्ध पान से मानव के शरीर में गति और तेज आता है तो यह कैसे हो सकता है कि ब्रह्म धेनु के रसपान से ज्योतिर्मय परमात्मा का प्रकाश साधक के जीवन मे न आये।

और परमेश्वर का यह रस किन विलक्षणताओं से युक्त है, यह कैसा अनुपम है तो कहा "अस्य पय. शुक्रम्" अर्थात् यहां तो वह दिव्य रस है जो मनुष्य की जीवन चादर की कालिमा को धोकर श्वेत करता है। यही दिव्य रस मनुष्य को पुरुषार्थ से युक्त कर तप से तपाता है। तपस्वी ही शुद्ध और पवित्र होता है और पवित्रता मे कालिमा कहां रह जाती है।

यह रस अपने पान पान करनेवालों को कहां तक ले जाता है तो मन्त्र ने कैसा सुन्दर सत्य कहा है 'सहस्र सां ऋषिं' अरे यह रस तो ऐसा विलक्षण है कि जो सहस्रों साधकों को एक साथ एक समान ऋषित्व प्रदान करता है बिना किसी भेदभाव के क्योंकि यह रस तो उस समदर्शी परमेश्वर का है जहां सब समान हैं जहां कोई द्वन्द आदि नहीं है।

(शेष पृष्ठ ९ पर)

वेद-विवेचन

★विक्रमादित्य 'वसन्त'

प्रभु प्रीति

मैंने प्रभु संग प्रीति लगाई।
जिसकी प्रीति सदा हो जगत् में, होती है अतिशय सुखदायी।
मैंने···

जिसने है आकाश बनाया, जिसने है यह धरती बनाई।
सूरज चन्दा और तारों से, दुनिया अपनी जिसने सजाई॥
मैंने···

ज्योतिर्मय पावन प्रीतम की, ज्योति मेरे मन को भाई।
जगमग जगमग उस ज्योति से, मैंने जीवन ज्योति जलाई॥
मैंने···

व्याप रहा है जो कण-कण में, सारी सृष्टि जिसमें समाई।
देख रहा जो सबको पल-पल, देता नहीं पर सबको दिखाई॥
मैंने···

जिसकी महिमा ऋषि मुनियों ने, युग युगों से जग मे गाई।
दिव्यता का पुञ्ज मनोहर, मैंने उससे दीप्ति पाई॥
मैंने···

माता पिता और बन्धु सखा सम, करता है जो सबकी भलाई।
प्रीति करे जो सबमे निरन्तर, भेदभाव की पाटे खाई॥
मैंने···

अमृतमय आनन्द की धारा, जिसने है कण-कण में बहाई।
सोम के पावन सिन्धु से, मैंने अपनी प्यास बुझाई॥
मैंने···

स्वार्थ भरे इस निर्मम जग ने, जब-जब दिल पर चोट चलाई।
करुणामय मेरे स्वामी ने, मुझको हर दम धीर बधाई॥
मैंने···

—'वसन्त'

'चरित्रान् शुन्धामि''

इस विषय मे अनेक प्रकार के आन्दोलनो के स्वर गूंजते हुए दृष्टिगत हो रहे हैं और इन सब क्रान्तियों का मूल उद्देश्य विश्व कल्याण, विश्व शान्ति इत्यादि बतलाया जाता है किन्तु रोग ज्यो २ दवा की, की लोकोक्ति के अनुसार स्थिति निरन्तर बिगड़ती चली जा रही है। गहराई से सब स्थितियों का अवलोकन करने पर जो तत्व निकलता है वह यह है कि आज मनुष्य का नैतिक स्तर बहुत गिर गया है। जब मनुष्य पतित है तो मनुष्यों से निर्मित परिवार, समाज, राष्ट्र कैसे ऊंचे हो सकते हैं अतएव आज युग की एक सर्व श्रेष्ठ समस्या है कि मनुष्य को मनुष्य कैसे बनाया जाए। वेद ने दिव्य उपदेश दिया था 'मनुर्भव दव्य जनम्' किन्तु आज इस सत्य ज्ञान से परे होकर मानव दानवता के पथ पर द्रुत गति से अग्रसर हो रहा है। यही कारण है कि विश्व में अपराधों की संख्या निरन्तर दिन दूनी और रात चौगुनी हो रही है।

विश्व की इस अनैतिकता की छाप ऋषियों, मुनियों की धरती भारतवर्ष पर भी बुरी तरह से लग चुकी है और आए दिन समाचार पत्रों में प्रकाशित समाचार इसकी पुष्टि कर रहे हैं। भारत की राजधानी दिल्ली में इस सप्ताह सात ऐसे कत्ल हुए हैं जिनका चरित्र हीनता से सीधा सम्बन्ध है। सुरजीतसिंह नामक ३५ वर्षीय बस ड्राईवर की लाश रूपनगर स्थित एक मकान से पुलिस को प्राप्त हुई है और उसके पास उसकी प्रेमिका असवन्त कौर भी सख्त घायल अवस्था में पड़ी गई है। इसी प्रकार बारा खम्भा रोड की १ कोठी से लखपति युवक महेश इन्द्रसिंह का शव प्राप्त हुआ है जिसके लिये कालेज की एक छात्रा से, जो सायंकाल उसके कमरे में थी पूछताछ की जा रही है। तीसरी हत्या बारहवीं अर्डीनेंस बटालियन के ३४ वर्षीय युवक श्री लक्ष्मणसिंह ने अपनी प्रेमिका कुमारी शीला की है और उसकी मां को बुरी प्रकार से घायल किया है। इन तीन घटनाओं से पूर्व एक समाचार यह भी पढ़ने को मिला था जिसमें श्री निवासपुर स्थित एक कम्पाउन्डर तथा एक नर्स की प्रेम लीला ने कम्पाउन्डर के तीन बच्चों की जान ले ली थी।

ये सारी घटनायें केवल एक दिशा की ओर संकेत कर रही है और वह है व्यभिचार वृत्ति। दस दिन की अल्प अवधि में ६ हत्याएं जिस व्यभिचार के कारण हुई है, उसका आज भारत के बड़े २ नगरों में आज बोलबाला है। नव भारत टाइम्स, नयी दिल्ली के ३ जुलाई १९६८ में प्रकाशित एक समाचार के अनुसार दिल्ली में वेश्याओं की संख्या २० हजार से भी अधिक है और यह कहा जाता है कि वेश्या वृत्ति तथा मदिरा—इन दो अपराधों में ... राजधानी ने बम्बई ... जैसे महानगरों को भी पछाड़ देती है। ये आंकड़े दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों का सर्वेक्षण करके दिल्ली नारी रक्षा समिति ने एकत्रित किये हैं और कहा है कि शरीर के इस घृणित व्यापार को यहां अतिवृद्धि गत आठ वर्षों में हुई है।

राजधानी की इस कालिमा को धोने के लिये यह आवश्यक है कि यहां पर नैतिक उत्थान आन्दोलन को तीव्र किया जाये। किसी भी बुराई का अन्त केवल दो उपायों से ही सम्भव होता है, एक तो यह कि उसे बल पूर्वक बाह्य रूप से दबा दिया जाये और दूसरा यह है कि आन्तरिक रूप से बुराई की की इच्छा को निर्मूल कर दिया जाए। जहां पर ये दोनों उपाय एक साथ काम में लाये जांय वहां सोने में सुहागे का काम करते हैं। हम दिल्ली की नारी रक्षा समिति तथा नगर की अन्य धार्मिक व सामाजिक संस्थाओं का ध्यान इस ओर आकर्षित करते हुये अनुरोध करते हैं कि वे समस्या की गम्भीरता से देखें और केवल पुलिस या सरकार पर दोषारोपण न करके कुछ क्रियात्मक पग उठायें। कथनी से करनी में अधिक बल होता है अतएव समय की मांग है कि कर्म शीलता को अपनाया जाये। इस सम्बन्ध में हम निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत करते हैं—

(१) दुराचार के अड्डों का पता लगाकर भण्डाफोड़ किया जाये। पुलिस से सहयोग करते हुये उनका उन्मूलन कराया जाय। यदि कोई भ्रष्ट अधिकारी इस सम्बन्ध में उदासीनता या शिथिलता दिखलाय तो ... के स्थान पर उच्च स्तर पर वार्तालाप किया जाये, शिष्ट मण्डल भेजे जाएं। यह इस रोग की बाह्य चिकित्सा की जाये।

(२) आन्तरिक चिकित्सा के लिये संस्कारों का परिवर्तन करने के निमित्त ये उपाय ... जायें।

(अ) अश्लील साहित्य का बहिष्कार किया जाये। इसके पठन के लिये सबको निरुत्साहित किया जाये। नारी रक्षा समिति तथा अन्य धार्मिक संस्थाओं को महिला सदस्याओं को चाहिये कि वे घर घर पहुंच कर अश्लील साहित्य के ... के विरुद्ध विज्ञप्तियां वितरित करें और गन्दे साहित्य को एकत्रित कर सार्वजनिक स्थानों पर उसकी होलियां जलायें। सुन्दर स्वच्छ साहित्य की रचना की जाये तथा ऐसे साहित्य की बिक्री को प्रोत्साहन दिया जाये।

(आ) गन्दे चल चित्रों व भ्रष्ट फिल्मी गानों के विरोध में आवाज उठाई जाये। अपने परिवार के सदस्यों को अश्लील चित्र देखने से और गन्दे गाने को सुनने से रोका जाये। घरों में रेडियो पर भजन और शिक्षाप्रद वार्तायें सुनी जायें। आकाशवाणी और सिनेमा सेंसर बोर्डों को जनता के हस्ताक्षर युक्त आवेदन पत्र भेज कर चरित्र पर निर्माण के लिये कठोर नीति अपनाने विवश किया जाये। शिक्षाप्रद सामाजिक ऐतिहासिक चलचित्रों तथा भजनों व गीतों के रेकार्डों की मांग की जाय। उनके निर्माताओं को प्रोत्साहित किया जाय।

(इ) गन्दी वेष भूषा, भड़क भड़क फैशन, अर्ध नग्नता की समाप्ति का शुभारम्भ किया जाय। ... चरित्र ... पवित्र उच्च विचार ... करें। देवियों को यह ... चाहिये कि अभद्र दर्शन ... विचारों का दूषित एवं उत्तेजित ... स्वाभाविक है अतएव अपनी सन्तियों का विनाश से बचाने के लिए उन्हें मातृत्व रूप को प्रकट दिखाना भी श्रेयस्कर है।

(ई) परिवारों में आध्यात्मिकता को पर्याप्त स्थान दिया। ... परमेश्वर की आराधना की जाए। विशिष्ट अवसरों पर पारिवारिक सत्सग किये जाएं ताकि परिवार के सदस्यों को भोग के स्थान पर योग की ... धाराएं भी ... सकें।

संक्षेप में ... के रूप में उपयुक्त सुझाव हमने प्रस्तुत किए हैं— विस्तार पूर्वक योजनाएं बना कर उन्हें क्रियान्वित किया जा सकता है। मनुष्य को संस्कार जन्य है और संस्कार चित्त की पृष्ठ भूमि पर अंकित होते हैं। मनुष्य जैसा दर्शन करता है वैसी उसकी श्रुति होती है वैसे ही संस्कार उसके चित्त पर पड़ते हैं और तदनुरूप उसका चिन्तन होकर वैसे ही कर्म उसके हो जाते हैं। इसी लिये भद्राचार के लिए वेद ने "भद्रं श्रृणुयाम देवा, भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्रा:" अर्थात् भद्र सुने, भद्र देखें इस तथ्य पर बल दिया है। हमें विश्वास है कि भारत की राजधानी से प्रारम्भ हुई यह क्रान्ति देश के बड़े २ नगरों में ही नहीं वरन् विदेशों में भी रंग लायेगी। इसलिए नैतिक उत्थान के समर्थकों को वेद के शब्दों में एक दिव्य गूंज गुंजानी चाहिए "चरित्रान् शुन्धामि" "चरित्रान् शुन्धामि"

'वसन्त'

जनतन्त्र की भव्य विजय

विश्व के राजनैतिक रंगमंच पर वर्तमानकाल में लोकतन्त्र और साम्यवाद के संघर्ष सतत: दृष्टिगत हो रहे हैं। साम्यवादी रक्तिम क्रांति का आश्रय लेकर लोकतन्त्र का पट पलटते हैं किन्तु फ्रांस में इसकी उल्टी प्रतिक्रिया हुई है। यद्यपि फ्रांस में अनेक क्रान्तियां हुई हैं और वहां लोकतन्त्र का अनेक बार उदय हुआ है किन्तु इस बार की रक्तिम क्रांति में लोकतन्त्र की जो भव्य विजय हुई है वह एक नव क्रान्ति का रूप लिए हुए है। पाठकों को विदित ही होगा कि विद्युत ... इस देश में ... गड़बड़ी रही है। युवकों, विद्यार्थियों तथा मजदूरों ने मिलजुल कर आन्दोलन को इतना ... कर दिया था कि ... को यह ... कि सम्भवतः ... परिवर्तन हो जायगा। ... कालिज बन्द, ... वहां के राष्ट्रपति जनरल दीगाल ने जिस धृति ... का परिचय दिया। ... सैनिक शक्ति का ... स्वीकार किया, अपने ... मन्त्रणा के ... जनता की ... के निमित्त देश में नये चुनाव करए। यह उनकी दूरदर्शिता का ही प्रतिफल था कि ४८

संसद सदस्य प्रकाशवीर जी शास्त्री जो इस वर्ष आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के पुनः प्रधान निर्वाचित हुए हैं।

८२ वें स्थगित वृहदधिवेशन का विज्ञापन

उत्तरप्रदेशीय सभान्तर्गत आर्यसमाजों के मन्त्रीगण तथा आर्य प्रतिनिधि महोदयों की सेवामें—

श्रीमान् महोदय नमस्ते !

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का ८२ वां स्थगित वार्षिक साधारण अधिवेशन तिथि भाद्रपद कृ० ३ संवत् २०२५ र० श्रा० २० शक स० १८९० दि० ११ अगस्त १९६८ ई० दिन रविवार स्थान गुरुकुल वृन्दावन में होगा। स्थगित अधिवेशन दि० ११-७-६८ की प्रथम बैठक प्रातः १० बजे से १ बजे तक होगी। यदि आवश्यक हुआ तो दूसरी बैठक सायं ३ से ६ बजे तक होगी।

आशा है कि आर्यसमाजों एवं आर्य उपप्रतिनिधि सभाओं के प्रतिनिधि महोदय नियत समय पर अधिवेशन में सम्मिलित होकर अनुगृहीत करेंगे।

प्रवेशनीय विषय सूची—

१—उपस्थिति, ईश्वर-प्रार्थना के उपरान्त शोक प्रस्ताव।
२—स्वागताध्यक्ष एवं सभापति के भाषण।
३—वार्षिक वृत्तान्त १ जनवरी १९६७ से ३१ दिसम्बर १९६७ तक आय व्यय लेखा सहित स्वीकृत्य।
४—आगामी वर्ष सन् १९६८ के लिए बजट स्वीकृत्यर्थ।
५—सभा के पदाधिकारियों एवं अन्तरङ्ग सदस्यों का निर्वाचन।
६—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के लिये प्रान्त के १५ प्रतिनिधियों का तीन वर्ष के लिये निर्वाचन।
७—गुरुकुल विद्या सभा के लिये सभा के नियम सं० ४४ (इ) के अनुसार छः प्रतिनिधियों का निर्वाचन।
८—आय व्यय लेखा निरीक्षक (आडीटर) की नियुक्ति।
९—सभा के नियम संख्या ८ (ए) के अनुसार ३ प्रतिष्ठित सभासदों का निर्वाचन।
१०—सभा नियम धारा २१ (६) के अनुसार प्रस्तुत अन्य विषय।

टिप्पणी—(१) गुरुकुल पहुंचने के लिये रेलवे स्टेशन वृन्दावन तथा मथुरा पर उतरना चाहिये। उप सभा की ओर से वहां पूर्ण व्यवस्था रहेगी।
(२) दिनांक ११ अगस्त १९६८ को 'प्रदेशीय आर्य सम्मेलन' गुरुकुल में रात्रि ८ बजे से होगा।
(३) आर्य प्रतिनिधि सभासदों के निवास, भोजनादि की व्यवस्था आर्य उप प्रतिनिधि सभा मथुरा द्वारा गुरुकुल में की गई है।
(४) नवीन अन्तरङ्ग की बैठक अधिवेशन की समाप्ति पर होगी।

वृहदधिवेशन का कार्यक्रम

११ अगस्त १९६८ दिन रविवार

प्रातः—७ से ८॥ बजे तक सन्ध्या यज्ञ।
प्रातः—१० बजे से एक बजे तक वृहदधिवेशन की प्रथम बैठक।
सायं—३ बजे से ६ बजे तक वृहदधिवेशन द्वितीय बैठक तथा नवीन अधिकारियों द्वारा कार्य भार ग्रहण एवं धन्यवाद !

निवेदकः—
—सच्चिदानन्द शास्त्री एम० ए०
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

नारायण स्वामी भवन, लखनऊ
दि० १-७-६८ ई०

माननीय प्रकाशवीर जी शास्त्री, संसद सदस्य द्वारा

गोरक्षा समिति की आलोचना

नई दिल्ली, मंगलवार (प्र) गोवध बन्दी के लिये सरकार द्वारा गठित गो-रक्षा समिति की नीति पर खेद प्रकट करते हुए प्रसिद्ध आर्य नेता प्रकाशवीर शास्त्री संसद सदस्य ने कहा है कि सरकार द्वारा गोरक्षा के कार्य में प्रतिरोध उत्पन्न करने पर मुझे कोई आश्चर्य नहीं है। क्योंकि मेरी धारणा है कि गोवध बन्दी की मांग के सिलसिले में चलाये गये आन्दोलन को विफल करने के लिये सरकार ने समिति का गठन नाटकीय रूप से किया था इसलिये इस समिति ने अधिकांश सदस्य जनभावना के विरुद्ध विचार रखने वाले रखे थे। उन्होंने इस बात पर खेद प्रकट किया है कि समिति के वे सदस्य जो गोरक्षा के पक्षपाती नहीं है तरह तरह के तर्क उपस्थित करके इस महत्वपूर्ण मांग को खटाई में डालने के, प्रयत्न कर रहे हैं।

सर्वदलीय गोरक्षा महाभियान समिति ने निकट भविष्य में एक बैठक बुलाने का फैसला किया है जिसमें समिति के निर्णय के सम्बन्ध में और सर्वदलीय गोरक्षा महाभियान समिति के भावी कार्यक्रम पर विचार किया जायगा।

सातवलेकर जी का स्वास्थ्य सुधार

बम्बई, २ जुलाई (हि स पहाड़ी से प्राप्त सूचना में बताया गया है कि सुप्रसिद्ध विद्वान श्रीपाद दामोदर सातवलेकर के जो कि कुछ दिन पूर्व पक्षाघात से पीड़ित थे, स्वास्थ्य में अब सुधार हो रहा है। डाक्टरों ने उन्हें पूर्णतया विश्राम करने की सलाह दी है।

दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय ने श्री सातवलेकर को डी० लिट् की उपाधि से विभूषित करने का निर्णय लिया है।

(पृष्ठ ३ का शेष)

स्थानों में से ३४८ स्थान उनके समर्थकों के अधिकार में आ गये। जनरल दीगाल की विजय में दो बातों की प्रमुखता है, एक तो उनकी ध्रुवता और द्वितीय तोड़ फोड़ की नीति से त्रस्त फ्रांसीसी जनता की लोकतन्त्र के माध्यम से शांति की कामना—

यद्यपि वर्तमान लोकतन्त्र की व्यवस्था पूर्णतयः वेदानुकूल नहीं है तथापि फ्रांस की नवक्रांति का हम स्वागत करते हैं और यह आशा करते हैं कि इस के पश्चात् वहां की स्थिति में पर्याप्त सुधार होगा और लोकतन्त्र दृढ़ होगा।

पूज्य सातवलेकर जी दीर्घायु हों

बड़े हर्ष का समाचार है कि सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् पं० दामोदर सातवलेकर जी के स्वास्थय में निरन्तर सुधार हो रहा है। उन्हें कुछ दिन पूर्व पक्षाघात हुआ था। हम पूज्य पण्डित जी के स्वास्थ्य तथा दीर्घायु की कामना और परमेश्वर से तदनुकूल प्रार्थना करते हैं।

★

क्या वेदों में गो-मांस का विधान है ?

[देश के दुर्भाग्य से वेद ज्ञान से अनभिज्ञ जो सन्त और नेतागण यह प्रलाप कर उठते है कि वेद मे गोमांस खाने का विधान है अथवा आर्यगण इसे खाते थे, उनके मीलित लोचन पूज्य पण्डितजी के इस सारगर्भित लेख से खुल जाने चाहियें। अब वेद मे मांस व अण्डे खाने का ही सर्वथा निषेध है जैसा कि "य आमं मांस मदन्ति पौरुषेयं च ये क्रविः। गर्भान् खादन्ति केशवास्तानितो नाशयामसि ॥

[अर्थात् कच्चा या पकाकर मांस व अण्डे खाने वाले नाश को प्राप्त होते हैं] मन्त्र [अथर्ववेद का ८, सूक्त ७ मन्त्र २३] आदि से स्पष्ट है तो गो जैसे सर्वथा उपयोगी पशु के वध को वेदानुकूल ठहराना केवल अज्ञानता, भ्रान्ति या फिर भ्रष्ट वृत्ति का द्योतक है—

—सम्पादक]

वेदों मे गोमांस के विधान का प्रश्न आज के युग का एक ज्वलन्त प्रश्न बना हुआ है, पिछले दिनों भारत के खाद्य-कृषि मन्त्री के वक्तव्य ने भारतीय और वैदिक संस्कृति के उपासकों में रोष उत्पन्न कर दिया है इससे प्रेरित होकर अनेक व्यक्तियों ने मेरे पास पत्र डाले जिनमे उन्होने लिखा कि मैं इस विषय पर अपने विचार व्यक्त करूं।

इस विषय में अनेक पुस्तकें लिखी गयीं, जिनमें पाश्चात्य विचारधारा का अनुकरण करने वाले लेखकों ने वेदों मे गो-मांस का विधान बताकर और यह लिखकर कि 'वैदिक ऋषि गोमांस खाते थे और यज्ञों मे गो मांस की आहुति डाली जाती थी लोगों को और भ्रान्ति में डाल दिया, पर, वास्तविकता यह है कि वेदों मे ऐसा विधान कहीं नहीं है और न यज्ञो में गोमांस की आहुति डालने का ही विधान है, जो विद्वान वेदों मे गोवध की बात का प्रतिपादन करने का प्रयत्न करते हैं, मै स्पष्ट कहूंगा कि वे संस्कृति से अनभिज्ञ है और वेदों से तो सर्वथा ही अनभिज्ञ। संस्कृति मे यज्ञ के लिये प्रयुक्त हुये अनेक शब्दो मे एक शब्द 'अध्वर' भी है, वेदों मे यह शब्द यज्ञ के पर्याय एवं विशेषण के रूप मे अनेक स्थानों पर आया है इस शब्द का निर्वाचन करते हुए निरुक्तकार यास्क लिखते .

अध्वर इति यज्ञनाम—

ध्वरतिहिंसाकर्म तत्प्रतिषेधो अध्व

(निरु. २-७)

ध्वर का अर्थ है हिंसा जिनमें हिंसा नही होती, वह कर्म अध्वर कहलाता है (देखिये ऋ. १.१.८.१.१४.२१; १.१२८.४, यजुर्वेद: १५.३८; १४, साम: २१. १६; ३२; अथर्व ४.२४.३, १८.२ २; १.४.२; १९.४२; २)। इसलिए यह अध्वर शब्द तो हिंसा का वाचक तो हो ही नहीं सकता, अतः यह कहना कि ऋषि अध्वर मे पशुओं की हिंसा करते थे, वदतोव्याघात दोष ही है, इससे ज्यादा उपहासास्पद बात तो यह है कि जो मन्त्र बोलकर पशुका वध किया जाता है, उसी मन्त्र मे पशु की रक्षा की प्रार्थना की गयी है, यह मन्त्र इस प्रकार है।

ओषधे त्रायस्व,

स्वधिते मैनं हिंसी

'हे ओषधे, इस पशु की रक्षा कर, हे फरसे, तू इसे मत मार,' इस मन्त्र का उच्चारण करते हुये याजक पशु को मारे, कितनी उपहासास्पद बात है।

अजमेध और अश्वमेध का वास्तविक अर्थ

प्राचीन समय मे ऋषियो द्वारा अजमेध, अश्वमेध, नृमेध आदि अनेको तरह के मेध किये जाते थे। इन सभी मेधों में अज, अश्व आदि शब्द पारिभाषिक है, इनका अर्थ सर्वत्र बकरा, घोडा आदि नहीं होगा अजका अर्थ है विशेष प्रकार का बीज, इन बीजों की आहुति यज्ञ मे दी जाती थी महाभारत में कहा है—

अजै. यज्ञेषु यष्टव्यं

इति वै वैदिकी श्रुति.।

अज सज्ञानि बीजानि

छागान्नो हन्तु महंथ।

नैष धर्मः सतां देवः

यत्र बध्येत वै पशु।

(शा० प० अध्याय ३३)

यह वैदिक विधान है कि यज्ञों द्वारा यज्ञ किया जाये, पर अज का अर्थ बीज है, अतः हमारे लिये बकरो का मारना उचित नहीं, जहां पशुओ का वध किया जाय, वह सज्जनो का धर्म नहीं है, 'स्याद्वादमञ्जरी मे अज का अर्थ बिल्कुल स्पष्ट कर दिया है।

किम वेदे अजैः यष्टव्यं'

इत्यादि वाक्येषु

मिथ्यादृशः अजशब्द

पशुवाचकं व्याचक्षते,

सम्यग् दृशस्तु त्रिवार्षिक

यवव्रह्यादि पर्यवसाययंति

इस प्रकार अश्वमेध का अर्थ भी भ्रान्तिपूर्ण कर दिया गया है, अश्वमेध का वास्तविक अर्थ तो शतपथ ब्राह्मण मे दिया गया है, ब्राह्मण का वचन है।

राष्ट्रं वा अश्वमेध

वीर्यं वा अश्व.

अश्व का अर्थ राष्ट्र है और राष्ट्र को शक्तिशाली और स्वयं को समर्थ बनाना ही अश्वमेध है।

प्राचीन ऋषियो ने इन शब्दों को उत्तम अर्थ के प्रतिपादन के रूप में प्रस्तुत किया था, तथापि आगे चलकर

धूर्तों ने इन्हें विकृतार्थ वाला बना दिया। महाभारत का स्पष्ट कथन है—

सुरा मत्स्याः पशोर्मांस

अजस्र कृशरौदनम्।

धूर्तै. प्रवर्तितं यज्ञे

नैतद् वेदेषु विद्यते ॥

शराब' मछली, पशु का मांस, आदि पदार्थों को यज्ञ मे डालने का विधान वेदो मे नहीं है, यह तो धूर्तों का काम है।

'यदि यज्ञ मे पशुओं को मारने से और पवित्र यज्ञवेदिका को अपवित्र करने से किसी को स्वर्ग मिल सकता है, तो फिर नरक का विधान किसके लिये है ?

भाष्यों की गड़बड़ी

मेरे विचार से यज्ञों मे पशुवध विषयक विकृत विचारो के लिये सायण उव्वट और महीधर आदि के भाष्य जिम्मेवार है, पर, जिन २ मन्त्रो के आधार पर सायण ने ऋषियों को मांसभक्षी सिद्ध किया है। महर्षि ने मांसभक्षण के पक्ष का सरलता पूर्वक खण्डन किया है। उनके वेदभाष्यों के अवलोकन से यह सहज ही हृदयंगम हो जाता है कि ऋषिगण पशु हत्यारे न होकर पशुओं के उत्कृष्ट संरक्षक थे।

गोमेध शब्द भी भ्रान्ति का एक बडा भारी कारण बन गया है। इसी शब्द के कारण अनेक पाश्चात्य और पौरस्त्य विद्वानो ने यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया है कि वैदिक ऋषि गोमांस भक्षण के आदी थे पर मुझे यह कहने में जरा भी संकोच नहीं है कि इस पक्ष का समर्थन करने वालों ने वेदों के दर्शन

★ श्री पं० दामोदर सातवलेकर

भी नहीं किये है, इसी कारण वे इस भ्रान्ति के शिकार हो रहे हैं। वेदों में ऐसे एक नहीं अनेक मन्त्र हैं कि जिसमे स्पष्ट रूप से गाय को अवध्य बताया है वेदो मे गाय के लिये 'अघ्न्या' शब्द का प्रयोग हुआ है 'अघ्न्या' का अर्थ ही 'अहन्तव्या न मारे जाने योग्य है। यह ऋग्वेद मे अनेक स्थलों पर आया है (देखें ऋ), १ १६४ २७, १, १६४ ४०; ४ १ ६, ५ ८३.८, ७. ६८ ९; ८ ६९, २. ९.९३, ३, १०. ८७. १६). वेदों मे गायको आदरणीय बताया गया है, गायके मास की तो बात ही दूर रही, उसके दूध को भी जबरन ले जाना पाप का कारण बताया जाता है। ऋग्वेद का एक मन्त्र है—

यः पौरुषेयेण क्रविषा समङ्क्ते

यो अश्व्येन पशुना यातुधानः।

यो अघ्न्याया भरति क्षीरमग्ने

तेषां शीर्षाणि हरसापि वृश्च ॥

हे अग्ने ! जो मनुष्य के तथा घोड़े आदि पशुओं के मांस को खाता है और जो जबर्दस्ती गाय के दूध का अपहरण करता है, उस राक्षस के सिर को तू काट डाल,

गाम्मा हिंसी, अदितिं विराजम्।

(यजु० १३.४३)

'अवध्य गौ को मत मारो'

अघ्न्या इयं राजवता सोमभागः।

'यह गौ इस की समृद्धि के लिये बढे।

अन्तकाय गोघातकम्।

(यजु० ३० । १०)

गाय के मारने वाले को यमराज के घर भेज दो।

इस प्रकार अनेक मन्त्र है, जिनमें गाय को न मारने का विधान है। गाय वस्तुतः राष्ट्र का ऐश्वर्य है, राष्ट्र की समृद्धि है और राष्ट्र की सर्वतोमुखी उन्नति का कारण है। उसकी रक्षा में ही राष्ट्र की सुरक्षा निहित है, ★

साहित्य परिचय

ईश्वर का साक्षात्कार कराने वाला महत्वपूर्ण ग्रन्थ—

"योग दर्शन"

ले० ब्र० धर्मदेव आर्य शास्त्री गुरुकुल सिरसागंज मैनपुरी

[साहित्य समाज का दर्पण है। वैदिक काल मे उत्तम संस्कारो से अलंकृत मानवों ने परमेश्वर की सुधा का सोपान कर ऋषित्व को धारण किया और फल स्वरूप "योग-दर्शन" जैसे भव्य ग्रन्थों को समाज के अर्पित किया किन्तु आज भौतिकवादी बन कर पशु से भी पतित विकार वासनाओं से ग्रसित मानव से अश्लील साहित्य के अतिरिक्त और क्या अपेक्षा की जा सकती है। आर्य देव और देवियाँ स्वतः परिवार समाज व राष्ट्र को विनाश से बचाने के निमित्त कलुषित साहित्य का पूर्णतया बहिष्कार करें और सद् साहित्य को सर्वथा प्रोत्साहित करें।

—सम्पादक]

अंग्रेजी शासन काल की एक घटना है कि भारतवासी एवं अंग्रेजों की एक विशाल सभा का आयोजन हुआ अंग्रेज लोग भाषण कर रहे थे। एक ने कहा कि देखो हिन्दुओं! तुमने हमारे बराबर क्या उन्नति की? हमारे लोगों ने विमान का निर्माण किया जहाज का निर्माण किया आदि अन्य सब विषय मे तुमसे हम बढ़े हुये हैं। ७०० वर्ष की मुसलमानों की दासता में जकड़े होने के कारण—मुसलमानों के महान अत्याचारों से भारतीय बहुत ढीले हो गये थे फिर अंग्रेजों की दासता में फंसकर और भी शिथिल हो गये। उनके महान निर्दयतापूर्ण अत्याचार से बहुत खून खच्चर हुआ और इसी कारण अंग्रेजों के सामने भारतीय प्रायः बोलने से डरते थे फिर भी क्रांतिकारी, मातृभूमि के रक्षकों, देशभक्तों की कमी न थी। तुरन्त एक भारतीय ने खड़े होकर उत्तर दिया कि "तुमने कुछ नहीं उन्नति की। यदि तुमने वायुयान बनाया तो क्या उन्नति [illegible] की भी यान की भाँति आकाश में उड़ [illegible] और यदि तुमने जलयान आदि [illegible] किया [illegible] तो क्या हुआ? मगर, मच्छ, कूर्मादि भी पानी [illegible] र। तुमने अभी तक ऐसे ग्रन्थ का निर्माण किया जो पशु को भी देवता बना दे? क्योंकि "धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः, विद्या विहीनः पशुः" जो विद्या, धर्म से हीन है उसे पशु कहा है—

जब भारतीय ने अंग्रेज से यह प्रश्न किया तो किसी अंग्रेज का मुंह न खुला तब उसने कहा कि यदि हम बता दें तो हमारी विजय स्वीकार कर हार मानलो बहुत सोच विचार के बाद जब समस्त अंग्रेजों को कोई उपाय न सूझा तब उन्होंने हार मान ली। तब भारतीय व्यक्ति ने अपनी जेब से निकाल कर एक पैसे का ग्रन्थ "योगदर्शन" दिखाया और कहा देखो यह है ईश्वर का दर्शन कराने वाला अमूल्य ग्रन्थ। जिससे ईश्वर का साक्षात्कार कर लिया उसने क्या प्राप्त नहीं किया? फिर तो सर्वस्व मिल ही गया। योग दर्शन में ४ पाद हैं (१) समाधिपाद (२) साधन पाद (३) विभूतिपाद (४) कैवल्यपाद। प्रथम पाद मे योग के लक्षण, मनोनिग्रह, चंचल चित वृत्तियों को रोकने के लिये उपाय बतलाये गये हैं। द्वितीय पाद में अष्टा[illegible] योग का वर्णन और [illegible] के [illegible] का विस्तृत वर्णन है। [illegible] साधन के गौण फ[illegible] एवं वादादि और अणिमादि सिद्धियों की [illegible] का वर्णन है। चतुर्थ पाद में योग के प्रधान फल मोक्ष का वर्णन है जिसको प्राप्तकर कुछ भी शेष नही रहता। चारों पादो में १९५ सूत्र हैं यदि कोई बुद्धिमान व साधारण बुद्धि वाला ४ घंटे तक स्मरण करता रहे तो सम्पूर्ण योग दर्शन मूल मात्र तो कर ही लेगा योग दर्शन [illegible] र व्यास भाष्य, एवं योज वृत्ति है [illegible] ने योग दर्शन के समझने मे बहुत ही [illegible] त

संस्कृत अनभिज्ञ लोगों के लिए व्यास भाष्य एवं भोजवृत्ति का भी सूत्रों के साथ २ अनुवाद कर दिया यद्यपि योग दर्शन का अनुवाद कई लोगों ने किया है परन्तु सर्व श्रेष्ठ योगदर्शन का अनुवाद श्री पं० आर्य मुनि जी तथा श्री ब्रह्मदत्त जी शर्मा ओमानन्द तीर्थ का 'पातञ्जल योग प्रदीप' भी पठनीय है मैंने योगदर्शन के अनेक अनुवाद पढ़े हैं परन्तु इन तीनों विद्वानों के ग्रन्थ में विशिष्टता झलकती है आर्य मुनि द्वारा अनुवादित ग्रन्थ तो सम्प्रति अलभ्य है तथापि—प्राचीन वैदिक साहित्य प्रेमियों के पास से प्राप्त हो सकता है।

आज सर्वत्र त्राहि २ मचरही है सभी मनुष्य चाहते हैं कि—

सर्वे भवन्तु सुखिनः
सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु
मा कश्चिद्दुःख भाग्भवेत्॥

अतः मनुष्य जन्म प्राप्त कर सुखी रहना चाहते हो तो "योग दर्शन" की शरण लो वही आपको धर्मात्मा, देवता मुक्तात्मा, बुद्धिमान, विद्वान्, बनाकर मोक्ष की प्राप्ति कराकर ईश्वर का दर्शन करायेगा इसे बार-बार पढ़ो एव मनन कर यथावत् पालन करो अवश्य ही चरम लक्ष्य तक पहुंच जाओगे। इस विषय पर इसलिये लेख लिखना पड़ा कि वर्तमान स्थिति को देखकर भौतिक वाद की ओर लगे हुये मनुष्य आत्मिको न्नति को तिलाञ्जलि देकर धन वैभव के जुटाने में लग रहें हैं वेदों का पढ़ना तो उनके लिये दुस्तर हो है अतः सरल मार्ग का दिग्दर्शन मैंने अपनी मति के अनुसार पाठकों के समक्ष रखा है आशा है [illegible] मात्र इस महान पतञ्जलि मुनिकृत ग्रंथ—"योग-दर्शन" को पढ़कर मनसा, वाचा कर्मणा पालन का लाभ उठावेगा फिर देखिये सुख, शांति की वृद्धि होगी, नाना समस्याएँ दूर होंगी, मनुष्य धर्मात्मा विद्वान, सदाचारी, ऋषिमहर्षि मोक्ष गामी ईश्वर के प्रिय भक्त बनेंगे दीर्घ जीवी होंगे, शारीरिक, आत्मिक व सामाजिक उन्नति करने वाले होंगे—

वृक्ष सजीव हैं

कुछ प्रश्नोत्तर

[वृक्ष सजीव नहीं निर्जीव हैं, इस विषय पर एक प्रामाणिक लेख आर्यमित्र के आगामी अङ्क मे प्रकाशित किया जाएगा। वृक्ष चेतन हैं, अर्द्ध चेतन हैं या पूर्ण तया निर्जीव हैं इन पर विचार-विमर्श के लिये प्रमाणिक लेखों का स्वागत किया जाएगा। विद्वानों से प्रार्थना है कि वे अपने मौलिक, रोचक, सारगर्भित सचित्र लेख इस विषय पर प्रकाशनार्थ भेजे। —सम्पादक]

प्रश्न-वृक्ष आहार ग्रहण करने मात्र से सजीव नहीं माने जा सकते क्योंकि निर्जीवों को भी आहार करते देखा जाता है जैसे रेल का इन्जिन। इन्जिन कोयला पानी आहार करता है किन्तु क्या वह सजीव है ?

उत्तर—इन्जिन कोयले पानी का न आहार करता और न सजीव है क्योंकि आहार स्वयं ग्रहण किया जाता है जैसा कि मनुष्य, पशु, पक्षी आदि जन्तु वर्ग तथा वनस्पति समुदाय मे प्रत्यक्ष देखा जाता है। आहार ग्रहण करने से आहार ग्रहण करने वाले के समस्त अङ्ग प्रत्यङ्ग (भीतरी व बाहरी भी) हृष्ट पुष्ट होते तथा वृद्धि को प्राप्त होते रहते हैं। निर्जीवो तथा इन्जिन मे भी ऐसा होना नहीं पाया जाता बल्कि उसमे बाहर से कोयला झोंका, जलाया जाता और पानी को गर्माकर भाप बनाई जाती है जिससे कि ड्राइवर इन्जिन को चलाने मे समर्थ होता है। क्या कोयला पानी से इन्जिन हृष्ट पुष्ट होता तथा वृद्धि को प्राप्त होता हुआ छोटे से बढ़ता हुआ धीरे २ विशाल इन्जिन बन जाता है जैसा कि बरगद, आम, महुआ आदि के छोटे २ पौधे स्वयं अपना आहार खींचते हुये हृष्ट पुष्ट होते २ धीरे २ बढ़ते हुये ५० हाथ ऊँचे विशाल वृक्ष बन जाते हैं ? यदि नहीं तो स्पष्ट है कि आहार ग्रहण करना निर्जीवो में नहीं प्रत्युत सजीवों मे ही पाया जाता है अतः सिद्ध है कि पोषण, श्वसन, वृद्धि, प्रजनन आदि सजीवों के लक्षणो से युक्त होने से वृक्ष सजीव तथा इजीवत्व से शून्य इन्जिन मोटर आदि निर्जीव हैं।

प्रश्न-वस्तुतः पौधे ईंट पत्थर की तरह जड़ नहीं है। उनमे प्राण शक्ति है किन्तु ज्ञानात्मक चेतनता नहीं है। अतः वृक्ष सजीव क्यों कर है ?

उत्तर—जब कि वृक्ष ईंट पत्थर की तरह जड़ नहीं हैं तो वे जड़ क्यों कर माने जा सकते हैं ? प्राण शक्ति सजीवों ही में होती है निर्जीवों मे नहीं क्योंकि प्राण, अपान आत्मा के लिंग हैं (देखो वैशेषिक दर्शन)। यदि पौधों मे चेतनता (आत्म सत्ता) न होती तो उनमें प्राण शक्ति (श्वास प्रश्वास) का भी अस्तित्व न होता जैसे मरे घोड़ो व पत्थर की बनी प्रतिमाओ मे निर्जीव होने से श्वास-प्रश्वास नहीं पाया जाता। क्योंकि मनुष्यादिक जन्तु समुदाय मे प्राण शक्ति (श्वासन क्रिया) तभी तक पायी जाती है जब तक कि वह सजीव होता है। जब कि प्राण शक्ति धारी जन्तु निर्जीव नहीं तो प्राण शक्ति धारी वृक्ष निर्जीव क्योंकर माना जा सकता है ?

प्रश्न—वृक्षों का बढ़ना वृक्षो को सजीव सिद्ध नहीं करता क्योंकि बढ़ना जीव का धर्म नहीं प्रत्युत प्राण का धर्म है।

उत्तर—"बढ़ना प्राण का धर्म है" ऐसा कथन साध्य है अतः हेतु शून्य होने से अप्रमाण है। बिना किसी सिद्ध हेतु व उदाहरण के बढ़ना प्राण का धर्म नहीं माना जा सकता। प्राण वायु जड़ है न उसे भूख न उसे प्यास किन्तु भूख प्यास प्राण वाले जीव को ही लगती और वही आहार ग्रहण करता है। जन्तु समुदाय में पोषण, श्वसन वृद्धि तभी तक होती जब तक कि वह सजीव रहता है जीव के निकल जाने पर मृत शरीर न खाता पीता और न बढ़ता देखा जाता है। इसमें जड़ें, पत्तियाँ फल फूल डालियाँ लगती हैं। किन्तु आम, नीम बरगद आदि के बीजों से उत्पन्न सजीव पौधे बढ़ते तथा उनमें जड पत्ते फल फूल लगते रहते हैं। जबकि भीतर से बढ़ने वाले जन्तु निर्जीव नहीं तो पोषण श्वसन क्रियाओं से पुष्ट भीतर से बढ़ने वाले पौधे निर्जीव क्यों कर माने जा सकते हैं ?

जीव निरवयव अपरिणामी होने से घट बढ़ नहीं सकता किन्तु जैसे देहाभिमानी जीव की विद्यमानता में पोषण श्वसन क्रिया के कारण शरीर बढ़ता है वैसे ही वृक्षाभिमानी जीव की विद्यमानता मे पोषण श्वसन क्रिया से वृक्ष बढ़ता है। जीव के निकल जाने

विचार-विमर्श

चूंकि शरीराभिमानी जीव के आहार व श्वसन क्रिया के परिणाम स्वरूप शरीर एक सीमा तक बढ़ता है अतः बढ़ना प्राण का धर्म नहीं बल्कि सजीव वस्तु का धर्म है। यदि वृक्ष जड़ होते तो वे भी जड़ वस्तुओं के समान न, आहार करते और न भीतर से बढ़ते। क्योंकि पौधे भी जन्तुओ के सदृश भीतर से बढ़ते हैं अतः वृक्षो का बढ़ना वृक्षो को सजीव सिद्ध करता है।

प्रश्न—वृक्षो का बढ़ना वृक्षों के सजीवत्व का प्रमाण नहीं क्योंकि बढ़ना जड का लक्षण है न कि जीव का।

उत्तर—यदि बढ़ना जड का लक्षण है तो जड. ईंट, रेल. मोटर. मकान मृत शरीर, कुर्सी, मेज जड़ मूर्तियां क्यो नहीं बढ़ती ? क्या इन जड़ पदार्थों मे अपना जड़त्व खो दिया है ? निर्जीवों का न बढ़ना और सजीवों का बढ़ना सिद्ध करता है कि बढ़ना जड का लक्षण नहीं प्रत्युत सजीव वस्तु का धर्म है। कागज का बना हुआ कृतिम पौधा निर्जीव होने से न बढ़ता है और न वा पौधे नहीं बढ़ते प्रत्युत सूख जाते हैं।

प्र०-वृक्ष सजीव नहीं हैं क्यो कि उसमे जीव के परिचायक इच्छादि गुण नहीं पाये जाते। जहाँ आत्मा होता वहाँ ही कर्तुं अकर्तुं अन्यथा कर्तुं गति होती है। जहाँ नहीं होता वहाँ ऐसी गति नहीं होती। यदि वृक्ष सजीव होता तो उसमे जीव के उपर्युक्त गुणों की अनुभूति तथा कर्तुं अकर्तुं अन्यथा कर्तुं गति क्यो न पायी जाती ?

उ०-सुषुप्ति अवस्था मे मनुष्य के शरीर मे भी जीव के परिचायक इच्छादि गुणो की अनुभूति वा कर्तुं अन्यथा कर्तुं गति नहीं पायी जाती तो क्या सुषुप्त मनुष्य मे आत्मा का अभाव रहता है ? माता के गर्भस्थ पिंड वा पक्षी के अण्डे निर्जीव है ? जीव के परिचायक इच्छादि गुणों की अनुभूति सजीवो में केवल जाग्रत अवस्था मे ही होती है। सुषुप्ति में नहीं क्योंकि सुषुप्ति मे जीव का मन व इन्द्रियों से सम्बन्ध नहीं रहता। पौधों मे ज्ञानेन्द्रियां नहीं होतीं इससे उसमे जीव का मन व इन्द्रियों से सम्बन्ध न होने से वृक्षस्थ जीव जाग्रत अवस्था में न होकर सुषुप्ति अवस्था में रहता है। जब कि वृक्ष मे ज्ञानेन्द्रियों के अभाव के कारण वृक्षाभिमानी जीव जाग्रत अवस्था में रहता ही नहीं तो जाग्रत अवस्था मे पाये जा सकने वाले इच्छादि गुण क्यो कर अनुभूत हो सकते है ? पौधों में इच्छादि गुणो की अनुभूति का अभाव पौधों में जीव का अभाव नहीं बल्कि ज्ञानेन्द्रियों का अभाव सिद्ध करता है। वृक्ष निर्जीव नहीं है क्योंकि

रामप्रताप
अगई, (सुल्तानपुर)

वृक्षों मे जीव के लिंग प्राण (भीतर की वायु को बाहर फेंकना) अपान (बाहर की वायु को भीतर खींचना) अन्तर्विकार (रस संचार आदि) तथा पोषण वृद्धि प्रजनन आदि सजीवों सदृश लक्षण पाये जाते हैं।

प्र०-क्या वृक्षस्थ जीव प्रारम्भ से अन्त तक सुषुप्ति मे होता है ?

उत्तर—अवश्य क्योंकि उसमें ज्ञानेन्द्रियों का अभाव होता है। क्या गर्भस्थ पिण्ड वा पक्षी के अण्डे में जीव सुषुप्ति मे नहीं रहता ?

प्र०-वृक्ष मे यदि जीव होता तो वह केवल सुषुप्ति अवस्था मे पाया जाता क्यो कि स्थूल शरीरस्थ जीव की तीनो अवस्थायें होती हैं। ऐसा कोई शरीर नहीं जिसमे जीव केवल एक ही अवस्था मे हो अर्थात केवल जाग्रत केवल स्वप्न या केवल सुषुप्ति।

उत्तर—उपर्युक्त, तीनो अवस्थायें जीव की केवल मनुष्यादि जन्तुओं के शरीर में होती हैं क्योंकि उसमें ज्ञानेन्द्रियां होती हैं। वहाँ ये तीन अवस्थायें न होकर केवल सुषुप्ति ही होती है वह कि इनमें ज्ञानेन्द्रियां नहीं होतीं। यदि तीनों अवस्थाओं के अभाव के कारण वृक्ष निर्जीव माने जायें तो क्या माता का गर्भस्थ पिण्ड या पक्षी का अण्डा तीनो अवस्थाओं के अभाव के कारण निर्जीव माना जायेगा ? क्या गर्भस्थ स्थूल पिण्ड व स्थूल अण्डे मे जीव केवल सुषुप्ति मे नहीं रहता ? अतः वृक्षस्थ जीव को केवल सुषुप्ति अवस्था वृक्ष को निर्जीव नहीं प्रत्युत सजीव सिद्ध करती है।

काव्य · कानन

आर्यों से !

उठो सपूतो ! तुम्हें सुप्त भारत का भाग्य जगाना।
त्रैतवाद की विमल गङ्ग फिर तुम्हें धरा पर लाना॥

राम कृष्ण के उपवन की सब लुप्त हुई हरियाली
आर्य जाति का वैभव उजड़ा सूखी डाली डाली
शरत्पूर्णिमा गगन सुमन है घिरी अमावस काली
पतझर कम्पीड़ित भारत मे नव बसन्त है लाना।
उठो सपूतो ! तुम्हें.........

आज मनुज का वेश देखकर मानवता रोती है
भौतिकता के युग में अबला शान्ति पड़ी सोती है
नई सभ्यता निखिल भुवन में विषम बीज बोती है
तुम्हें प्रकृति के कण-कण में नूतन अनुराग जगाना।
उठो सपूतो ! तुम्हें.........

आर्य जाति घट रही बने सब मुसलमान ईसाई
स्वार्थ और भ्रम में पड़ सब ने मिथ्या राह बनाई
सत्य सनातन धर्म हमारा हम सब भाई-भाई
तुम्हें जगत् का अन्धकार हर सबको आर्य बनाना।
उठो सपूतो ! तुम्हें.........

वही चिरंतन सत्य सुहावन हैं आदर्श हमारे
वही वेद षट्शास्त्र वही हैं अतुलित शोभा धारे
वही हिमालय वही जाह्नवी नभ में वही सितारे
तुम्हे पुरातन नींव डालकर नवयुग भवन बनाना।
उठो सपूतो ! तुम्हें.........

म्लान मुखी अबला भिखारिणी मां की दशा विचारो
अर्ध क्षुधित शोषित अस्पृश्य जो उनकी ओर निहारो
घड़ी दो घड़ी मिल आपस में चित्र चरित्र सुधारो
तुम्हें जगत को एक सूत्र में कर आबद्ध बनाना।
उठो सपूतो ! तुम्हें सुप्त भारत का भाग्य जगाना॥

—कृष्णगोपाल आर्य शास्त्री गुरुकुल सिरसागंज

मातृ अभिवादन

हे आर्य जननी भारत माँ तुमको है शत शत बार प्रणाम मेरा।
हृदय की पुनीत भावनाओं से, नित दिन लिखूं गुणगान तेरा॥

स्वर्णाक्षरों में लिखना चाहूं, भारत मां तेरा अभिनन्दन।
मधुराक्षरस्वर में करना चाहू, हे आर्य जननी मैं तेरा वन्दन॥
सर्वदा सुनूं गुणगान तेरा, हृदयस्थल में रखूं नाम तेरा।
गा गा कर सुकृति तव वैभव का, करूं जग में नाम तेरा॥ हे०

अपढ़ित ब्रह्मवादी ऋषियों को ! अपनी गोदी में तूने पाला है।
कपिल कणाद गौतम जबालि, अरु व्यास आदि को ढाला है॥
ऋषि बाल्मीकि गार्गी कात्यानी ने पाया था वरदान तेरा।
महर्षि ऋषि मुनि जन सब मिल, गाते थे गुणगान तेरा॥ हे०

महान शङ्कराचार्य जी भी तेरी ही गोदी में थे आये।
जगद्गुरुवर महर्षि दयानन्द सम सन्यासी भी तूने पाये।
मुनि चार्वाक, बुद्ध, महावीर ने भी, किया सर्वदा गुणगान तेरा।
आजाद भगतसिंह बिस्मिल, ने जीवन दे, रखा सम्मान तेरा।

ऋषि दयानन्द, विवेकानन्द सम अगणित पुत्रों को जो जाये।
जिनकी दिव्य जीवन ज्योतियां जग के कण कण में हैं छाये।
माँ ! तेरे अमर वीर पुत्रों ने सर्वस्व लुटा किया गुणगान तेरा।
ब्रह्मार्थी भी चल उन पद चिन्हों पर आजीवन रखेगा गौरव तेरा।

—ओ३मेन्द्रप्रकाश ब्रह्मार्थी 'पाठक' सि० शास्त्री

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

क्या ऊँचा ध्येय हमारा है,
क्या सुन्दर हमारा नारा है—
कृण्वन्तो विश्वम् आर्यम् !
कृण्वन्तो विश्वमार्यम् !!

हम तम अज्ञान मिटा देंगे,
जग में सर्वस्व लुटा देंगे।
बतलाकर सत्य धर्म सबको
मिथ्या पाखण्ड हटा देंगे॥

ऐसा निश्चित व्रत धारा है,
अन्तर से यह उच्चारा है—
कृण्वन्तो ....॥

मत की खाइयां अनेक हैं,
पथ की खाइयां अनेक हैं।
सब में आडम्बरवाद एक,
पर परछाइयां अनेक हैं॥

हमने सबको धिक्कारा है,
ऊँचे स्वर में उच्चारा है—
कृण्वन्तो......... ....॥

जग में कुछ भौतिकवादी हैं,
और कुछ अनीश्वरवादी हैं।
कुछ साम्यवाद का दम भरते,
पर सब ही 'अवसरवादी' हैं॥

सबको हमने ललकारा है,
करके उद्घोष पुकारा है—
कृण्वन्तो ....

मानवता है कर रही रुदन,
दानवता है कर रही दमन।
सत्यता भीरु बन दुबकी सी,
आडम्बर को कर रही नमन॥

चमका आशा का तारा है,
ज्ञान किरण का उजियारा है।
कृण्वन्तो० ....

आओ, करदें तम का विनाश,
व्यापे फिर वेदों का प्रकाश।
फैलावें धरती पर विवेक,
जड़ता का करके मूल नाश॥

ऋषियों से मिला सहारा है,
वेदों से हमें दुलारा है।
कृण्वन्तो०.......................

है वेदों का आदेश यही,
उपनिषदों का उपदेश यही।
मानव सब आर्य बनें सज्जन
ऋषिवर का है सन्देश यही॥

पावन कर्तव्य हमारा है,
नारा यह कितना प्यारा है—
कृण्वन्तो विश्वम् आर्यम् !
कृण्वन्तो विश्वमार्यम् !!

—प्रतापकुमार सक्सेना 'साहित्यरत्न' गोंडा

आधुनिक शिक्षा का कुप्रभाव

[शिक्षा का उद्देश्य केवल जो[illegible] नहीं। परमात्मा का यह संसार एक महत्वपूर्ण [illegible] विद्यालय है जिसमें परमात्मा ही हमारा सच्चा गुरु एवं आचार्य है। [illegible] सर्वज्ञ अन्तर्यामी हमें पल पल अपने दिव्य सन्देशों से [illegible] प्रदान करता है और अपने जगत में पग पग पर व्यावहारिक शिक्षायें देता है। जब तक हम प्रभु की शिक्षाओं से सुशिक्षित नहीं होते तब तक हम अपनी सन्ततियों व प्रजाओं के मस्तिष्कों का समुचित विकास कर उन्हें संकीर्णताओं के अन्धकारमय वन से निकालकर [illegible] उदारता के प्रकाश में नहीं ला सकते। —सम्पादक]

देश के बच्चे ही देश के धन हैं। देश का उत्थान और पतन बच्चों के भविष्य पर निर्भर होता है। यदि हमारे देश के शासक, राजनीतिज्ञ शिक्षा विशेषज्ञ शिक्षक तथा अभिभावक देश के प्रति अपनी-अपनी जिम्मेदारियों को ध्यान में रखकर बच्चों के जीवन में ऐसा चमत्कार लाने का प्रयत्न करें कि बच्चे देश भक्त सुशील, उद्योगी, परिश्रमी व्यवहार कुशल और चरित्र शील बन सकें तो देश में प्रेम, सुख और शान्ति की स्थापना होगी और देश की मर्यादा में वृद्धि होगी। इसके विपरीत होने पर देश का पतन हो[illegible] निश्चित है।

हमारे लिये यह बड़े खेद की बात है कि हमारे देश की आधुनिक शिक्षा नीति बच्चों को प्रकाश न देकर अन्धकार की ओर ले जा रही है। बच्चे शिक्षा मन्दिरों की तीर्थ यात्रा के लिये निकल पड़ते हैं। जीवन के १५ १६ वर्ष शिक्षा मन्दिरों में भटकते रहने के पश्चात शिक्षा समाप्त कर लेने पर भी उनको अपने लक्ष्य स्थान का ज्ञान नहीं हो पाता। उनकी जीविका का क्या साधन होगा अथवा उन्हें अपनी जिम्मेदारियों को किस प्रकार निबाहना होगा, इस ज्ञान के अभाव के कारण उन्हें बड़ी निराशा होती है जिसके फलस्वरूप वे अनापशनाप व्यवहार और कार्य करने लगते हैं।

यह तो सभी जानते हैं कि सभी बच्चे उच्चतम शिक्षा प्राप्त करने योग्य नहीं होते। किसी का मस्तिष्क कमजोर होता है तो किसी का स्वास्थ्य खराब रहता है और किसी के माता पिता के सामने आर्थिक सङ्कट होता और सामर्थ्य में भी अन्तर होता है। सब बच्चों को उनकी योग्यता, आर्थिक दशा [illegible] को समझे बिना एक लाठी से हांकना अन्याय ही नहीं मूर्खता भी है। हमारी शिक्षा नीति इस प्रकार की होनी चाहिये कि शिक्षा मन्दिर में प्रवेश करने के पश्चात प्रत्येक बालक बालिका को अपने लक्ष्यस्थान पर पहुंच कर यह ज्ञान हो सके कि जीविका साधन के लिये उसे कहां जाना है और गृहस्थ जीवन में प्रवेश करने के लिये उसे क्या करना है। यदि शिक्षा बच्चों का मार्ग प्रकाशित और निर्धारित न कर सके, देश के प्रति भक्ति, जनता के प्रति प्रेम, बड़ों के प्रति आदर, और आज्ञाकारिता की भावना उनमें जागृत न कर सके और उनको शूर, निर्भय और चरित्रहीन तथा कर्तव्यपरायण न बना सके तो ऐसी शिक्षा को शिक्षा कहना भूल है।

देश के बच्चे तो भ्रष्टाचार की ओर तेजी से बढ़ते जा रहे हैं परन्तु सबसे दुःख की बात यह है कि गुरुजन भी परिस्थिति वश अपने कर्तव्य का पालन नहीं कर पा रहे हैं। विद्यालयों के प्रबन्धक अपनी मनमानी करते हैं। गुरुजन की सुविधाओं और आदर का ध्यान देना तो दूर रहा वे उन्हें अपना निजी नौकर समझते हैं। कन्या विद्यालयों में अधिकांश प्रबन्धकों द्वारा जो अत्याचार और भ्रष्टाचार हो रहे हैं उनका वर्णन करना कठिन है। जब कभी किसी विद्यालय का प्रधानाचार्य अपने पद से निवृत होकर जाता है तो उसके स्थान की पूर्ति के लिए बाहर से शिक्षा विभाग का कोई निवृत्ति प्राप्त उच्च अधिकारी अथवा प्रबन्ध महोदय का कोई निकट सम्बन्धी अथवा मित्र बुलाया जाता है। उस विद्यालय के प्रभावशाली तथा अनुभवी अध्यापकों को भी प्रधानाचार्य बनने का अवसर ही नहीं मिलता। प्रत्येक मनुष्य की अभिलाषा होती है कि जिस विभाग में वह कार्य करता है उन्नति करते २ किसी दिन उच्चतम पद पर पहुंच सके। ऐसा न होने से उसके हृदय को ठेस लगती है और उसका मन अपने कार्य में नहीं लगता जिसका कुप्रभाव बालक बालिकाओं की शिक्षा पर पड़ता है।

विद्यालयों के प्रबन्धक अभिभावकों की आंखों में भी धूल झोंक रहे हैं। वे अभिभावकों से अनेक प्रकार के शुल्क लेते हैं जिनका कोई अस्तित्व नहीं होता जैसे खेलने का मैदान नहीं है और [illegible] फी ली जाती है [illegible] नहीं है [illegible] फी दवाओं और डाक्टर का कोई प्रबन्ध नहीं है मेडिकल फी ली जाती है—[illegible] फी आदि-आदि इस तरह की फीस लेना अभिभावकों के साथ घोर अन्याय है शिक्षा अधिकारियों को चाहिये कि इस प्रकार की सभी फीसों को तुरन्त बन्द करा दें।

अभिभावकों का भी दोष है। उनके बच्चे विद्यालयों में पढ़ते हैं और वे अपने बच्चों का भविष्य उज्ज्वल बनाना चाहते हैं परन्तु उस ओर प्रयत्नशील नहीं हैं। अभिभावकों में बड़े बड़े शिक्षा पण्डित और देश भक्त हैं परन्तु न तो शिक्षा विभाग उन से किसी प्रकार का सहयोग लेता है और न वे स्वयं शिक्षा विभाग तथा विद्यालय के [illegible] से कोई सम्पर्क रखते हैं। जब अभिभावक अपने बच्चों के अध्यापकों से सम्पर्क रखते थे तो उन्हें बच्चों की पढ़ाई में प्रगति के विषय में पूर्ण जानकारी रहती थी और बच्चे भी इस भय से पढ़ने में अधिक ध्यान देते थे कि उनके माता पिता को उनका सारा दोष मालूम हो जायगा और उनको सजा मिलेगी। महंगाई के कारण अभिभावकों को अवकाश ही नहीं मिलता कि अपने बच्चों को शिक्षा और भलाई के लिये समय निकाल सकें। यदि वे चाहते हैं कि शिक्षा प्रणाली में उचित सुधार हो और शिक्षा अधिक उपयोगी सिद्ध होकर बच्चों के जीवन को शुद्ध और पवित्र बना सके तो उन्हें स्वयं सङ्गठित होकर शिक्षा सम्बन्धी सभी विभागों और अंगों से सम्पर्क स्थापित करके उनमें उचित सुधार लाना होगा।

तीन भाषाओं के पढ़ाई की योजना को लेकर देश की एकता नष्ट हो रही है और प्रान्तों में परस्पर फूट की भावना जागृत हो रही है। हमें केन्द्रीय सरकार की योजनाओं का विरोध न करके उन्हें सफल बनाने में पूर्ण सहयोग देना चाहिये और अपने देश की एकता तथा मर्यादा को मजबूत बनाना चाहिये।

देश के बच्चे पथभ्रष्ट हो रहे हैं दैनिक-पत्रों तथा पत्रिकाओं द्वारा उनके अनुचित व्यवहार और भ्रष्टाचार की निन्दा की जाती है। परन्तु केवल निन्दा करके क्या हम अपनी जिम्मेदारियों से मुक्त हो सकते हैं? क्या हम अपने बच्चों का भविष्य बिगड़ते हुए अपनी आंख बन्द किये देखते रहेंगे। यदि बच्चे अपने कर्तव्य का पालन नहीं करते तो इसमें उनका कोई विशेष दोष नहीं है। सब से बड़ा दोष तो है शिक्षा प्रणाली का शिक्षा विभाग अध्यापक गण, प्रबन्धक तथा अभिभावकों का बच्चों के प्रति अपने कर्तव्य का पालन नहीं कर रहे। देश का भविष्य उज्ज्वल तथा उन्नतिशील बनाने के लिये शिक्षा विभाग के अधिकारियों प्रबन्धक अध्यापकों को जागरूक होकर परस्पर पूर्ण सहयोग और ईमानदारी से कार्य करना होगा वरन देश का भविष्य अन्धकारमय है।

★ गङ्गाप्रसाद भट्ट
लखनऊ

(पृष्ठ २ का शेष)

इसीलिये तो हमारे ऋषि चाहे ब्रह्मा से जैमिनि तक हों या दयानन्द स्वामी सब इस रस का सोपान कर आये हैं इस रस ने प्रत्येक युग में ऋषियों को जन्म दिया है और देता रहेगा। गति से युक्त जीवन में आचार विचार से श्रेष्ठ मननशील होकर [illegible] दर्शन करने वाले ऋषियों ने ही सब मानवों का कल्याण किया है।

तो आइये संसार का उपकार [illegible] की महत्वाकांक्षाओं के लिये आयजन इसी सनातन शुद्ध पवित्र ज्योतिर्मय रस का पान कर निर्मल ऋषित्व को धारण कर अपनी साधना से सबका कल्याण कर

शूर्पनखा नासिका छेदन औचित्य

जिस समय श्री रामचन्द्र जी लक्ष्मण सीता सहित पञ्चवटी में निवास कर रहे थे तो रावण की भगनी सूर्पनखा उनके पास आई उनके रूप को देख कर मोहित हो गई। राक्षसी सूर्पनखा राम से बोली कि तुम कौन हो और इस राक्षस सेवित प्रदेश में क्यों वास कर रहे हो। राम ने सरल स्वभाव से कहा कि यह भूभाग आर्य साम्राज्य का अंग है और हम अपने पिता की आज्ञा से वन सेवनार्थ आये हुवे हैं। और उसका परिचय मांगा। सूर्पनखा ने अपना परिचय दिया और रावण, कुम्भकरण, मेघनाद, विभीषण तथा खरदूषण से अपने सम्बन्ध बतलाये। और कहा कि —

विकृता च विरूपा च न सेयं सदृशी तव। अहमेवानुरूपा ते भार्यारूपेण पश्य माम्। इमां विरूपामसतीं करालां निर्णतोदरीम् अनेन सहते भ्रात्रा भक्षयिष्यामि मानुषीम्॥ वाल्मीकि रामायण आरण्यकांड।-

यह तेरी नारी सीता विकृता और विरूपा है तेरे योग्य नहीं है। मैं ही तेरे अनुरूप हू। अतः तू मुझे अपनी भार्या बना लो। मैं इस विरूपा कराला निर्णतोदरी मानुषी नारी को तेरे भाई लक्ष्मण सहित भक्षण कर जाऊँगी। जो कहती हूँ कि तू मेरे साथ नाना पर्वत शृंगो को देखता हुआ दण्डक वन में स्वच्छन्द विहार करेगा।

तत्पश्चात् राम ने इस कामपाश बँधी सूर्पनखा को कहा कि मेरी तो यह सीता मेरे साथ है, तुझे इससे दुःखदाई सौत भाव उत्पन्न हो जावेगा। यह मेरा भाई लक्ष्मण भले ही अविवाहित है किन्तु नारी साथ न होने के कारण इसके साथ विवाह करने में सौत का दुःख तुझे न होगा। सूर्पनखा ने यह सुन कर राम के पास से हटकर तत्काल लक्ष्मण को जा घेरा। लक्ष्मण हंसकर बोला मैं तो राम का दास हू। मेरे साथ विवाह करके तू दासी बन कर रहना क्या पसन्द करेगी। अतः तू जा रामचन्द्र की ही छोटी भार्या बन और माता सीता की निन्दा करने वा उनको भक्षण करने की घृणित भावना को त्याग।

सूर्पनखा पुनः राम के पास गई और कहा कि तुम इस असती विरूपा और बुढ़िया की अपेक्षा मेरा तिरस्कार करते हो मैं इसे अभी खाये जाती हूं। फिर तो सौत भाव भी समाप्त हो जावेगा। इतना कह कर वह सीता को खाने के लिये झपटी—

यथा श्लोक है:—

इत्युक्त्वा मृगशावाक्षीमलातसदृशेक्षणा। अभ्यगच्छत् सुसङ्क्रुद्धा महोल्का रोहिणीमिव॥ वा० अरण्यकाण्ड सर्ग १८ श्लोक १७॥

इतना कहकर हरिण के बच्चे जैसी आंखो वाली सीता पर वह कालाक जैसी आंखो वाली सूर्पनखा क्रोध में भरकर जैसे रोहणी नक्षत्र पर उल्कापात होता है उसी प्रकार झपटी।

वाल्मीकी जी आगे लिखते हैं कि

तां मृत्युपाश प्रतिमामापतन्तीं महाबलः। निगृह्य रामः कुपितस्ततो लक्ष्मणमब्रवीत्। वा० अर० सर्ग १८॥

अर्थ उस समय मौत के पाश के समान उस राक्षसी सूर्पनखा को सीता पर झपटती देख महाबली राम ने उसको पकड़ लिया और क्रुद्ध होकर लक्ष्मण से कहा कि इस क्रूर राक्षसी पुंश्चली मदोन्मत्त को तुम विरूप कर दो अर्थात् नाक कान आदि काट लो। राम का संकेत पाते ही लक्ष्मण ने खड्ग उठाकर उसकी नाक व कान काट डाले।

जब दुष्टा दुराचारिणी राक्षसी सीता का वध करने के लिये झपटी तब उसका खड्ग से शिर तक भी सती अर्थात् पत्नी के प्राणो की रक्षा के निमित्त किया जा सकता है यह राम की दयालुता थी कि उसने केवल उसको कुरूपा करने की आज्ञा दी। तुलसीदास जी ने सूर्पनखा के इस आक्रमण की चर्चा तक नहीं की जिसके कारण राम को राक्षसी के नाक कान कटवाने में दोषी ठहराया जाता है।

वाल्मीकि रामायण में लक्ष्मण को कृतदार अर्थात् विवाहित कहा है जो यथार्थ है किन्तु गोस्वामी जी ने उसको राम के मुख से कुमार कहा भी है जो असत्य है और इस प्रकार राम के असत्य भाषण का दोष लगाते हैं। वाल्मीकि का राम सूर्पनखा को विरूपा कराने में सर्वथा निर्दोष है।

—पं० शिवदयालु जी

स्व० डा० हरिशङ्कर शर्मा जी के प्रति-

श्रद्धांजलि

(१)

सत्य, शिव, सुन्दर साहित्य सृजेता सुयोग्य
नेता थे उदार चेता, स्नेह-वारिधि-अथाह।
अर्थ सभ्यतानुरागी त्यागी हंसमुख शान्त
दे नितान्त निर्भान्त था न दम्भ द्वेष-दाह॥
थे जो देशभक्त, स्वाभिमानी, साहसी, सहिष्णु
फूल ही क्या देखा शूलों से भी करते निबाह
वे ही महामानव गुणाकर गम्भीर-गुरु
देव हरिशङ्कर सिधारे सुरधाम आह!

(२)

देव दयानन्द समर्थित वैदिक-विचार
सुरसरि में समोद स्नान करते रहे।
आर्य-सामाजिक शुभ सत्यानादि को सतत्
सहयोग श्रद्धा से प्रदान करते रहे॥
भारती-भण्डार भरते रहे कृतियों से
राष्ट्र के सक्रिय गुणगान करते रहे।
देके शुभ परामर्श पार्थ-सारथी समान
हम से अबोधों का उत्थान करते रहे॥

(३)

ठुकराये वैभव विलास स्वकर्त्तव्य हेतु
लोभ, मोह दुरितादि पास नहीं फटके।
अनय, अविद्या, अघ, हिंसा दम्भादिक का
प्रतिरोध करते रहे निशङ्क डट के॥
विविधि विचार विभूषित वाणी लेखनी से
स्वस्ति-पन्थ पे लगाये कोटि भूले भटके।
राष्ट्रोत्थान हेतु गुरु देव हरिशङ्कर ने
शङ्कर ज्यों विष वेदना के घूट घटके॥

—प्रकाशचन्द्र कविरत्न
पहाड़गंज अजमेर

५ लाख रुपये एकत्र करने का सकल्प

आय कन्या महाविद्यालय नत्थूपुर मधुबन (आजमगढ़) के सस्थापक वेद पथिक प० धमवोर आय झण्डाधारी ने घोषणा की कि धम शिक्षा के लिये देश और विदेशों से ५ लाख रुपये का स्थाई कोष हम एकत्र करेंगे। आपने यह भी बतलाया है कि उस महाविद्यालय के भव्य भवन के निर्माण में तीन लाख रुपयों का व्यय होगा। जुलाई से ही पहली कक्षा से लेकर आठवीं अभी तक की कन्याओ को पढाई का समुचित प्रबन्ध हो रहा है।

यह ज्ञातव्य है कि आय कन्या महा विद्यालय के भवन निर्माण के लिये बावन बिगहे के तिनसखा पोखरा पर अपना सुन्दर आम का बाग श्री प० धर्मवीर जी आर्य झण्डाधारी ने गायत्री महायज्ञ के शुभ सकल्प पर प्रदान कर दिया है। श्री झण्डाधारी जी अब तक अपनी ओर से ३५००० रुपये शुद्धि मे वेद प्रचार में एव यज्ञ आदि अनुष्ठानों पर दान कर चुके हैं।

—आय कुमार सभा का वार्षिक उत्सव मूड बरेली मे श्री वाचस्पति जी शास्त्री आगरा की अध्यक्षता में गत वर्षों की भांति इस वष भी अपूव उत्साह एव उल्लास के साथ मनाया गया जिसमें विभिन्न कायक्रमो में विभिन्न आय कुमारों एवम उपदेशकों ने भाग लिया।

सब सम्मति से निम्न पदाधिकारी सत्र १९६८ के लिये चुने गए–

प्रधान–श्री सुखप्रकाश, उपप्रधान–श्री सोमेन्द्रनाथ, मन्त्री—श्री भरतवीर प्रचार मन्त्री–श्री अनोखेलाल, कोषाध्यक्ष–श्री सन्तोषकुमार कण्व

आयसमाज बघही (मिर्जापुर) का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव

(१) ता० २१ २२ मई सन १९६८ ई० को आयसमाज बगही पो० चुनार जिला मीरजापुर का स्वण जयन्ती महोत्सव बड़ ही धूम धाम के साथ मनाया गया। आयसमाज के बड बड़े विद्वानों का भाषण व भजन हुआ काफी जनता इकट्ठा होती थी श्री ठा० इन्द्रदेवसिंह जी 'इन्द्र' (छपरा) ठा० विन्ध्येश्वरीसिंह जी (वाराणसी) श्री ठा० महानन्दसिंह जी (बगही) श्री हीरा लालसिंह जी (भगरहां के सारगर्भित व्याख्यान व भजन उपदेश हुये।

(२) श्री ठा० महानन्दसिंह जी आर्योपदेशक बगही चुनार जि० मीरजापुर के सुपुत्र ज्ञवनम का विवाह सस्कार २५ मई को वदिक रीत्यानुसार प० महानारायणसिंह जी द्वारा सम्पन्न हुआ।

मध्यभारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के वृहदधिवेशन में पारित महत्वपूर्ण प्रस्ताव

प्रस्ताव स० १

श्री जग जीवनराम केन्द्रीय खाद्य मन्त्री जी ने दि० ९ मई १९६८ को वदिककाल मे गोमांस भक्षण के सम्बन्ध में लोकसभा मे जो वक्तव्य दिया वह असत्य एव अत्यन्त खेदजनक है। अत सभा के वृहदधिवेशन मे यह प्रस्ताव पारित किया जाकर श्री जगजीवनराम से यह अनुरोध किया जाता है कि वे अपने शब्द अविलम्ब वापिस लेकर अपनी भूल स्वीकार करें।

प्रस्ताव स० ३

परिवार नियोजन के सम्बन्ध मे जो योजना बनाई जा रही है वह राष्ट्र के लिये अत्यन्त घातक है। क्योकि इससे विषय वासना और व्यभिचार को खले रूप मे प्रोत्साहन मिलता है। इससे चरित्र और स्वास्थ्य दोनो की हानि होती है। इसके साथ ही इस योजना के अन्तगत हिन्दू ही अधिक प्रभावित होते हैं। हिन्दूसइतर लोग उसका पहले ही विरोध कर चुके हैं और उन्होंने अपने धम के सिद्धान्तानुसार परिवार नियोजन अनुचित ठहराया है। ऐसी स्थिति मे राष्ट्र के लिये यह एक भयकर खतरा पदा हो गया है। क्योकि इस प्रक्रिया से आय हिन्दुओं की अनुपातिक सख्या घटेगी। और अनाय तत्वों की सख्या बढ़ेगी। अत उक्त के निवारणाथ एव राष्ट्र की भावी पीढी को समुन्नत एव सच्चरित्र बनाने के लिये इस राष्ट्रघाती योजना को अविलम्ब बन्द किया जावे।

प्रस्ताव स० ४

साबुन निर्माण मे गोमांस की चर्बी का उपयोग किया जाता है। गो भारतीय सस्कृति का मान बिन्दु है। गो की चर्बी का उपयोग सवथा अनुचित है। अत हम भारत सरकार से सानुरोध निवेदन करते है कि वह साबुन के लिये गो की चर्बी के उपयोग को वर्जित कर तथा दण्डनीय अपराध मान।

आ०स० मोतिहारी का विरोध प्रस्ताव

आज दिनाक २६ ६ ६८ को सायकाल आयसमाज मोतिहारी द्वारा आयोजित यह सभा केन्द्रीय खाद्य मन्त्री श्री जगजीवनराम जी के वेद मे गो वध समथन सम्बन्धित वक्तव्य को अनुचित एव आपत्तिजनक मानती है श्री जगजीवनराम जी ने गोभक्त जनता के साथ अपनी भ्रान्त धारणाओं के आधार पर अन्याय किया है एव हिन्दुओं की भावनाओं को ठस पहुंचायी है।

अत इस सभा का आग्रह है कि श्री जगजीवनराम बिना शत अपने शब्द वापस ले अन्यथा शास्त्राथ द्वारा या विचार विमश द्वारा अपने भ्रम का निराकरण करें जिससे गो वेद भक्त जनता तथा गो वेद के सम्मान की रक्षा हो।

विरोध प्रस्ताव

आयसमाज महुवा मे एक सभा हुई जिसमे जगजीवनराम के इस वक्तव्य के प्रति विरोध प्रकट करते हुए क्षोभ प्रकट करती है कि वदिक काल म गोमास खाया जाता था जबकि वेदो मे गो को अघ्न्या कहा गया है

अत सभा माग पेश करती है कि या तो श्री जगजीवनराम अपने शब्द वापस लेकर क्षोभ प्रकट कर या क्षमा माग अथवा केन्द्रीय सरकार उनको मंत्रिपद स अलग करदे।

शोक

दि० १७ ६८ को आय समाज सम्भल मे हुई साधारण सभा मे आ०स० के परम हितषी वयोवृद्ध कमठ कायकर्त्ता आयसमाज सम्भल के भूतपूव मन्त्री आय प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के पूव लिपिक श्री मुन्शी बनवारीलाल जी के आकस्मिक निधन पर हार्दिक शोक प्रकट किया गया और प्रभु स प्राथना की गई कि शोक सतप्त परिवार को धय तथा दिवगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे

—श्री वीरेन्द्र वीर सभासद की धमपत्नी जो दीघकाल से अस्वस्थ थीं दहली मेडिकल इन्स्टीट्यूट होस्पिटल मे २९ जन को स्वगवास हो गया है। मित्र परिवार हार्दिक सवेदना प्रकट करता है।

मधुबन मे ओ३म के झण्डे का अपमान

२६ मई से ९ जून तक आयसमाज मधुबन के सरक्षण मे वेद पथिक प० धमवीर जी आय झण्डाधारी ने गायत्री महायज्ञ का अनुष्ठान एक लाख आहुतियों से सम्पन्न कराया था। गायत्री महायज्ञ की आहुति पर ९ जून रविवार को श्री रामस्वरूप जी उसुरी निवासी ने मपत्निक यज्ञ कराकर अपनी भूमि को आय समाज के लिय सकड़ों यज्ञ प्रमियो के सम्मुख आय प्रतिनिधि सभा लखनऊ के नाम दान पत्र लिख दिया था

उस भूमि पर ओ३म का झण्डा फहराया गया था और उस झण्ड को प० धमवीर जी आय ने सकड़ो यज्ञ प्रमियो के साथ स्थापित किया था।

किन्तु दुर्भावना से तारावती मल्ल ने आयसमाज के झण्ड को उखाड कर फक दिया है और आय समाज की दान मे प्राप्त भूमि पर लाठियों बल्लमो के जोर पर अपना मकान बनवाना प्रारम्भ कर दिये हैं।

इस काण्ड की सूचना थाना महोदय मधुबन जिलाधीश जी आजमगढ़ सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस आजमगढ को दे दी गई है। झण्ड की रक्षा और सम्मान के लिये प० धमवीर जी आय झण्डाधारी मधुबन मे अनशन प्रारम्भ करने का निश्चय किया है।

सूचना

तीन वष स अधिक समय हो गया है परन्तु एक विधवा को किसी विधुर या युवक ने अभी तक विवाह के लिय स्वीकार नहीं किया है। जिसकी आयु केवल २३ वष है और पूण शिक्षित है। दु ख का विषय यह है कि वह बाल अवस्था म विधवा हो गई।

आय बन्धु इस ओर ध्यान द और इस पते से विशेष विवरण के लिय पत्र व्यवहार कर

चन्द्रगुप्त आय एडवोकेट मन्त्री
अग्रवाल राजवश सभा
मुजफ्फरनगर (उ० प्र०)

प्रचार

दिनाक २ जून से ९ जून तक रामपुर फरुखाबाद मे रामचन्द्र बाबराम जी राजपूत के यहा वेद कथा तथा निरन्तर दोनो वेला यज्ञ होता रहा है फलस्वरूप ९ यज्ञोपवीत सस्कार हुये जिसमे ना महिलाए भी दीक्षित हुई चार ब्र० गुरुकुलों म प्रविष्ट होने जा रहे हैं साथ ही मे बाल सभा स्थापित हो गई है। इसका श्रेय प० [illegible] वानप्रस्थी जी गुरुकुल (एटा) वालो को है।

वैदिक पहेली

कि स्वित्सूर्यसमं ज्योतिः
कि समुद्र समं सरः।
किं स्वित्पृथिव्यै वर्षीयः
कस्य मात्रा न विद्यते ॥

प्रिय आर्य्य कुमारों! ऊपर यजुर्वेद के अध्याय २३ का मन्त्र ४७ दिया हुआ है जिसका देवता जिज्ञासु है। इस मन्त्र में प्रश्न रूप में ४ जिज्ञासाएं हैं?

(१) सूर्य के समान कौन सी ज्योति है?

(२) समुद्र के समान कौन सा जलाशय है?

(३) पृथिवी से अधिक बड़ा कौन है?

(४) कौन सी वह वस्तु है जिसकी मात्रा (परिमाण) नहीं है?

क्या आप इन प्रश्नों के उत्तर जानते हैं? यदि नहीं तो यजुर्वेद इसमें अगले मन्त्र को पढ़िये और समझिये। क्या समझ में आया है, यह हमें लिख भेजिये, इससे आप का मनोरंजन भी होगा और मान का वर्धन भी

जिन आर्य कुमारों के उत्तर ठीक होंगे। उनके नाम इस स्तम्भ के २८-७-६८ के अङ्क में प्रकाशित किए जायेंगे और उन्हें 'भगवान भजनावली' की एक प्रति भेंट की जाएगी। प्रश्नों के उत्तर २०-७-६८ तक इस पते पर भेज दीजिए-"आर्य्य कुमार संघ, आर्य्य मित्र, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ-१"

'वसन्त'

वेद सूक्ति

मा भेर्मा संविक्थाः।
(मा) मत (भेः) भयकर
(मा) मत (स-विक्थाः)
घबड़ा।

प्रिय आर्य्य कुमारो—यजुर्वेद की इस सूक्ति को अर्थ सहित कण्ठस्थ करो। आर्य कुमार निडर होते हैं वे न कांपते हैं, न थर्राते हैं, न भयभीत होते हैं। आर्य राष्ट्र को वीर बालकों की आवश्यकता है और इस उत्तरदायित्व को तुम्हें निभाना है। इस सूक्ति को आचरण में उतारने के लिये दृढ़ प्रतिज्ञा करो कि तुम कभी किसी भी परिस्थिति में नहीं डरोगे। क्या तुम जानते हो—

१) भय हमारा सबसे बड़ा शत्रु है क्योंकि उसके उत्पन्न होते ही हमारा साहस चला जाता है और बिना साहस के पौरुष और शौर्य सब धरे के धरे रह जाते हैं?

(२) जो बच्चे बाल्यकाल में भूत प्रेत से डरते हैं, काल्पनिक राक्षसों व चुड़ैलों से घबड़ाते हैं वे आगे चलकर कायर और डरपोक कहलाते हैं। संसार उन्हें पग २ पर दबाता है और वे जीवित होते हुये भी मरों जैसे रहते हैं—इस संसार में भूत प्रेत केवल वहम है उनका कोई अस्तित्व नहीं है? इस लिये भय को भगाने के लिए अन्धेरे स्थान में जाने से कभी न हिचको वरन् छाती तान कर जाओ। भय की एक मात्र औषधि है साहस अतएव साहसी बनो।

आर्य कुमारो! क्या तुमने कभी देखा है जो बच्चे कुत्तों या बन्दरों से डरते हैं तो वे उन्हें और भी डराते हैं या फिर काट भी बैठते हैं किन्तु जो दौड़ने के स्थान पर रुक जाते हैं और साहस से काम लेते हैं तो पशु भाग जाते हैं अतएव साहस ही भय को दूर करता है।

(२) भूल हो जाने पर दृढ़ता से उसे स्वीकार करो और यदि दण्ड मिले तो धीरता से उसे ग्रहण करो। माता पिता और आचार्य से भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है, उनका कहना मानो और जो पाठ समझ में न आये उसे पुनः पूछो और सदैव प्रश्नों का सत्य उत्तर दो। सत्य वचन और सच्चे व्यवहार से निर्भीकता आती है। यह स्मरण रखो!

आर्य्य कुमारो! यदि इस वेद सूक्ति का तुम मनन व पालन करोगे तो एक दिन तुम भी बालक ध्रुव या हकीकतराय या गुरुगोविन्दसिंह के पुत्रों सम वीर होकर अमर हो जाओगे।

—'वसन्त'

अमृत वर्षा

महर्षि दयानन्द ने कहा था--

[१] आर्य समाज के ठीक नियम को समझ कर आपको वेद के आज्ञानुसार सब के हित में अवश्य लग जाना चाहिये—विशेषता से अपने आर्यावर्त्त देश के सुधारने में अत्यन्त श्रद्धा, प्रेम और भक्ति होनी चाहिये। सब को अपने समान जानकर उनके क्लेशों को काटने और सुखों को बढ़ाने के लिये प्रयत्न और उपाय करना उचित है। सब का हित करना ही परम धर्म है। इसी के प्रचार की वेद में आज्ञा पाई जाती है।

[२] मेरी अन्तःकरण से यही कामना है कि भारतवर्ष के एक अन्त से दूसरे अन्त तक आर्यसमाज स्थापित हो, और देश में व्यापी हुई कुरीतियां उन्मूलित हो जायें।

[३] दयानन्द के नेत्र तो वह दिन देखना चाहते हैं कि काश्मीर से कन्या कुमारी तक और अटक से कटक तक नागरी अक्षरों का ही प्रयोग और प्रचार हो। मैंने आर्यावर्त्त भर में भाषा का ऐक्य सम्पादन करने के लिये ही अपने सकल ग्रन्थ आर्य भाषा में लिखे और प्रकाशित किये गये हैं।

७ परिवारों के ३९ व्यक्ति शुद्ध हुये एक उरांव लड़की की शुद्धि एवं विवाह भी, एक नर्स भी शुद्ध हुई

सिमडेगा सब डिवीजन के गांव झपु-केरमई में २१ जून को एक विशेष शुद्धि हुई जिसमें ७ परिवारों के ३९ व्यक्ति शुद्ध हुये। इस शुद्धि को विशेष महत्व दिया जा रहा है क्योंकि इस शुद्धि स्थान के चारों ओर ईसाइयों का बहुत जोर है। जिला रांची का सबसे बड़ा चर्च रेंगारी भी इस स्थान के निकट ही पड़ता है। शुद्धि संस्कार पं० दयानन्द जी व्याकरणाचार्य-आचार्य गुरुकुल वैदिक आश्रम वेदव्यास-राउरकेला ४ (उड़ीसा) एवं पं० सुरेन्द्रकुमार जी प्रचाराध्यक्ष ने करवाया। इसके आयोजन में महन्त जयराम जी प्रसन्न रामरेखा तीर्थधाम का भी विशेष सहयोग रहा।

इससे पूर्व भी रामरेखा में एक उरांव लड़की की शुद्धि हुई एवं एक शुद्ध लड़के से उसका विवाह भी कर दिया गया।

आश्रम की पवित्र भूमि में बनई की एक सुयोग्य नर्स भी शुद्ध हुई जिसने प्रसन्न होकर आश्रम को ११) दान भी दिये।

श्री ला० रामगोपाल शालवाले का तूफानी दौरा

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री रामगोपाल शालवाले ने मेरठ, लुधियाना, अमृतसर, अजमेर, मथुरा, हिण्डौन सिटी आदि की प्रचार यात्रायें कीं।

हिण्डौन में श्री शालवाले का भव्य स्वागत किया गया और आर्यसमाज स्थापना शताब्दी के लिये ५०१) की थैली भेंट की गई।

आर्यसमाज के भावी प्रोग्राम पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा विदेशी मिशनरियों के कुचक्र से देशवासियों को बचाना है। श्री शालवाले ने तन, मन, धन से आर्यसमाज की शक्ति को बढ़ाने की अपील की।

(जिला इन्दौर म० प्र०) द्वारा वैदिक धर्म प्रचार

स्थानीय आर्यसमाज गौतमपुरा द्वारा दिनांक १७-१८ व १९ जून को वैदिक धर्म का प्रचार किया गया। विशाल जन समूह में उत्तर प्रदेश के महेन्द्र पाल जी व अपने सुमधुर भजनोपदेश के द्वारा वेद, आर्यसमाज एवं रामायण पर प्रकाश डाला गया। प्रदेश के स्थानीय, विद्वान पं० रमेशचन्द्र जी, चावड़ा के मानव जीवन की महत्ता, आत्मदर्शन, व महर्षि दयानन्द और नारी समस्या पर सारगर्भित अध्यात्मिक प्रवचन हुये।

साथ ही स्थानीय पं० महादेवदास जी साधु के 'वैदिक धर्म बिना शान्ति संभव है" इस विषय पर भजन हुये

आनन्द मार्गियों का आतंक

केन्द्र द्वारा जांच का आदेश

कलकत्ता २३ जून ज्ञात हुआ है कि केन्द्रीय सरकार ने बिहार के दसिया जिले में आनन्द मार्ग नाम की संस्था को गतिविधियों की तुरन्त जांच करने का आदेश दिया है।

कहा जाता है कि इस संस्था का मुख्य स्थल मिलाई से दस मील की दूरी पर है जहां सशस्त्र साधु पहरा देते हैं। बताया जाता है इन साधुओं के कारण उस क्षेत्र में आतङ्क फैला हुआ है। यह लोग ऊपर से योग का प्रचार करते हैं परन्तु बताया जाता है कि इनके सदस्यों को सैनिक प्रशिक्षण दिया जाता है।

बताया जाता है कि इस संस्था को, जो हिंसा तथा अधिनायकवाद का प्रचार करती है, और जिसकी स्थापना रेलवे के एक भूतपूर्व कर्मचारी श्रि० सरकार ने की है, अमरीका की एक एजेंसी द्वारा धन प्राप्त होता है।

आर्यवीर राष्ट्र की उन्नति के लिये सर्वस्व न्योछावर करने को तैयार रहें

लुधियाना १ जुलाई। प्रान्तीय आर्य वीर दल के वार्षिक प्रशिक्षण शिविर का उद्घाटन करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उपप्रधान श्री वीरेन्द्र एम० ए० ने कहा कि जिस प्रकार आर्य युवकों ने देश को स्वतन्त्र कराने के लिये प्रत्येक प्रकार का बलिदान दिया, उसी प्रकार आज भी आर्य वीरों का कर्तव्य है कि वह देश के विकास के लिये अपना तन, मन, धन न्योछावर करने के लिए तैयार रहें। इसके लिये अपने में एकता स्थापित करें।

इस अवसर पर सभा के प्रधान श्रीमान् रामशरणदास, प्रो० वीरराम, प्रो० रामप्रकाश ने भी भाषण किये। शिविर में राज्य के विभिन्न भागों से लगभग १ सो आर्य युवक शामिल हुए।

राजनीतिक स्थिरता के लिये एक अनोखी विधि

बान—विभिन्न प्रकार के राजनीतिक दल अब कोई मिली-जुली सरकार बनाते हैं तो देश में राजनीतिक अस्थिरता रहती है। ऐसी अवस्था जर्मनी में न पैदा हो इसके लिये उसके समाजवादी दल ने एक अनोखी विधि सुझाई है।

उसके एक वक्तव्य में कहा गया है कि जर्मनी को १९६ निर्वाचन क्षेत्रों में बाँटा जाय और प्रत्येक निर्वाचन क्षेत्र से तीन प्रतिनिधि संसद के लिये चुने जायें।

चुनाव के अन्त में, अधिकतम औसत के आधार पर सीटों को विभाजित किया जाय। उदाहरणार्थ यदि किसी निर्वाचन क्षेत्र में (क) दल ने एक लाख मत प्राप्त किये (ख) ने ८० हजार और (ग) ने ३० ००० तो (क) को दो सीट मिलेंगी (ख) को एक और (ग) को शून्य।

आशा है कि इस प्रकार संसद में केवल दो ही दल रह जायेंगे—जिनमें से एक सरकार चलायेगा और दूसरा विरोधी दल का कार्य सम्पन्न करेगा।

कुछ भी हो अगले वर्ष के अन्त से पहले जबकि जर्मनी के नये चुनाव होने वाले हैं, वहां चुनाव सुधार होंगे, ऐसी आशा है।

इस समय प्रत्येक वह दल जो आवश्यक न्यूनतम मत प्राप्त कर लेता है, मान्यता का अधिकारी हो जाता है। इससे जर्मनी में कई दल हो गये हैं। चुनाव सुधार से स्थिति सुधर जायगी, ऐसी आशा है।

जापान के राष्ट्रीय उत्पादन में अपूर्व वृद्धि

टोकियो—पिछले साल जापान में राष्ट्रीय उत्पादन १ खरब १५ अरब ७० करोड़ डालर का हुआ जो सन १९६६ के मुकाबले लगभग १९ प्रतिशत अधिक था लेकिन मूल्यों की वृद्धि से वास्तविक वृद्धि लगभग १४ प्रतिशत थी। यह घोषणा जापान की आर्थिक योजना एजेन्सी ने की है।

राष्ट्रीय उत्पादन की दृष्टि से १९६६ में जापान का संसार के गैर कम्युनिस्ट देशों में पांचवा नम्बर था। लेकिन १९६७ में उसका इस क्षेत्र में तीसरा नम्बर रहा। पहला नम्बर अमरीका का और दूसरा पश्चिम जर्मनी का था।

ब्रिटेन और फ्रांस जापान से पीछे थे।

फ्रांस की हड़ताल का आर्थिक प्रभाव

पेरिस—फ्रांस के कुछ समय पहले के औद्योगिक उपद्रवों से भविष्य में उस की आर्थिक व्यवस्था को जो क्षति होगी उसका कुछ अनुमान लगाया गया है।

अब तक प्रत्यक्ष रूप से जो हानि हुई है उसको ८ अरब रुपये का बताया गया है।

इसके अतिरिक्त फ्रांस के औद्योगिक मजदूरों एवं कर्मचारियों को अब प्रति मास ७० करोड़ रुपया वेतन वृद्धि के रूप में दिया जायगा। चूंकि वेतन और उत्पादन में परस्पर चोली दामन का साथ है फ्रांस के उद्योगपतियों की विदेशियों के मुकाबले प्रतिद्वन्दिता क्षमता उतनी ही कम हो जायगी जिसका अर्थ अन्ततोगत्वा यह होगा कि उत्पादन कम होगा और वेतन भी कम होंगे।

मिश्र में पाकिस्तानी ढंग का जनतन्त्र

काहिरा—मिश्र भी पाकिस्तान की तरह तथा कथित आधार भूत जनतन्त्र का निर्माण कर रहा है।

इसके लिए उसके पचास लाख मतदाताओं ने ७५ ००० प्रतिनिधियों का चुनाव किया है। ये प्रतिनिधि १,५०० ऐसे व्यक्ति चुनेंगे जो राष्ट्रीय समिति का निर्माण करेंगे।

वस्तुतः यह राष्ट्रीय समिति ही देश का शासन सञ्चालन करेगी। ऐसी आशा है कि नासेर यथापूर्व राष्ट्रपति बने रहेंगे।

आर्यमित्र की सूचना

अब तक जिन ग्राहकों का इस वर्ष हेतु शुल्क समाप्त है उन्हें काफी समय पूर्व ही चन्दा समाप्ति की सूचनायें भेज दी गई हैं। कुछ कृपालु ग्राहकों ने अपना शुल्क भेज भी दिया है परन्तु अधिकांश अभी शेष हैं।

अतएव अनुरोध है कि अविलम्ब ही आप महानुभाव अपना २ शुल्क १० रु० मनीआर्डर द्वारा भेजने का कष्ट करें।

डाक दर में असाधारण वृद्धि हो जाने के कारण वी० पी० पी० भेजने पर ग्राहकों पर अनावश्यक व्यय भार पड़ता है अतएव कृपया अपना धन मनीआर्डर द्वारा ही भेजिए।

मनीआर्डर के कूपन पर अपनी ग्राहक संख्या अवश्य लिखिये।

—व्यवस्थापक

मिश्र में तीन हजार रूसी सैनिक विशेषज्ञ

काहिरा—मिश्र की सेना का पुनर्गठन करने के लिए रूस ने तीन हजार सैनिक विशेषज्ञ भेजें हैं।

ये विशेषज्ञ सेना के न्यूनतम स्तर तक नियुक्त किये गये हैं।

अब कि मिश्र में इस बात की सराहना है कि उसकी सहायता कर रहा है सैनिक अधिकारियों में बड़ी उत्तेजना है। वे नहीं चाहते कि कोई विदेशी उनको यह बताये कि उनको क्या करना चाहिये। इसलिये एक विस्फोट की आशंका है।

जर्मनी में भी विज्ञापनों द्वारा विवाह

बर्लिन–जर्मनी में १४ प्रतिशत विवाह विज्ञापनों की सहायता से होते हैं। इन विज्ञापनों द्वारा विवाहोत्सुक युवक और युवतियां अपनी प्रतिभाओं और आकांक्षाओं को व्यक्त करते हैं। विवाह सम्बन्धी संस्थाएं भी उनके लिये ऐसा करती हैं।

कुछ विज्ञापनदाता अपनी सहनशीलता पर बल देते हैं और अपेक्षा करते हैं कि उनकी भावी पत्नी या पति में भी यह गुण हो कुछ ऐसे भी हैं जो अपनी राशि बतलाते हैं और सहधर्मिणी की क्या राशि हो यह भी लिख देते हैं।

जर्मनी के विवाह सम्बन्धी विज्ञापन चरित्र, नख शिख वर्णन और आय पर बल देते हैं हलांकि कानूनन सभ्य एवं शोभनीय भाषा में होने चाहिये।

वैसे तो जर्मनी में पहला विवाह विज्ञापन १५० वर्ष पहले छपा था परन्तु पिछले महायुद्ध के बाद लाखों नर-नारी बेघर बार हो गये तो उन्हें अपने सहगृहस्थ को ढूंढने के लिये यही एक मात्र सहारा हो गया।

लखनऊ में पारिवारिक सत्संग

बुधवार दिनांक ३ ७ ६८ को आर्यसमाज बादशाहनगर के सुप्रबन्ध में और बृहस्पतिवार ४-७ ६८ को आर्यसमाज चौक के तत्वावधान में सायंकाल पारिवारिक सत्संगों का आयोजन हुआ जिनमें वैदिक यज्ञ भजन इत्यादि के अतिरिक्त भजन जो के वेदोपदेश हुये।

निर्वाचन

—आर्यसमाज जंगमबाड़ी वाराणसी। प्रधान—श्री रामकृष्ण शुक्ल उपप्रधान–श्री पारसनाथ मिश्र, मंत्री श्री रामकरन आर्य उपमंत्री—श्री वनीधर आर्य कोषाध्यक्ष–श्री लालचन्द आर्य, पुस्तकाध्यक्ष—श्री विजयन आनन्द।

धार्मिक समस्याएं आर्य विद्वान् विचार करें

[परिव्राजकाचार्य वेद स्वामी, मेधार्थी सरस्वती एम० ए०, साहित्याचार्य]

[इस समस्या के निराकरण करने के निमित्त आर्य जगत के विद्वानों से निवेदन है कि वे इस सम्बन्ध में अपने युक्ति युक्त विचार प्रकाशनार्थ अवश्य भेजें सम्पादक]

मैंने भली प्रकार अवलोकन कर लिया है-पश्चात् लेखनी उठा रहा हूं। भारत भर की आर्य समाजों में महर्षि दयानन्द कृत संस्कार विधि के विपरीत दैनिक अथवा साप्ताहिक यज्ञों में ५ बार अयन्त इध्म आत्मा०-द्वारा आहुतियां दी जाती हैं। महर्षि दयानन्द ने उपनयन और वेदारम्भ संस्कारों में इन ५ आहुतियों को निषिद्ध किया है। फलतः ब्रह्मचारियों को प्रथम. आदि बोलना व्यर्थ है। गृहाश्रम प्रकरण (देखो संस्कार विधि) में गृहस्थों के लिये भी निषिद्ध है। वानप्रस्थ संस्कार में भी अयन्त इध्म आत्मा०-द्वारा ५ आहुतियां देना निषिद्ध है। जब ब्रह्मचारी, गृहस्थ, और वानप्रस्थ तीनों नहीं बोलेंगे तो क्या आर्य सन्यासी प्रजया, पशुभिः-की मुहारनी करेंगे। त्रुटि यह है कि-महर्षि दयानन्द ने संस्कार विधि का जो सामान्य प्रकरण लिखा है वही दैनिक हवन या साप्ताहिक सत्संगों में ले लिया गया है। ध्यान रहे-संस्कार विधि संस्कारों के लिये प्रमुख पुस्तक है।

इसलिए केवल ९ संस्कारों में महर्षि दयानन्द ने ५ बार अयन्त इध्म आत्मा-द्वारा आहुतियाँ देने का विधान किया है। जिनके नाम इस प्रकार है.-

गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन चूडाकर्म कर्णवेध और विवाह।

विशेष जानने के लिये संस्कार विधि की भूमिका में महर्षि दयानन्द ने अति स्पष्ट कर दिया है।

ध्यान-रहे महर्षि एक बार अयन्त इध्म आत्मा०-बोलने के लिये ही समिदाधान के मन्त्रों में इसका विशेष रूप से ग्रहण किया है। ऐसा उनकी हस्त लिखित प्रति में 'हाशिया' में पीछे लिखा हुआ उपलब्ध होता है। यह महर्षि ने इसीलिये 'हाशिया' में बढ़ाया है कि एक बार तो सब गृहस्थ अवश्य बोलें। ब्रह्मचारीगण तो 'पंचमहा यज्ञ विधि' से यज्ञ करेंगे। उनके लिये तो समिदाधान भी नहीं है। हां! गृहस्थ, गृहस्थाश्रम प्रकरण से यज्ञ करें-अतएव पृथक् विधान है। विषय और वार्ता बिल्कुल विस्पष्ट है। बहुत देर तक कोई त्रुटि चलती रहे तो वह त्रुटि नहीं मालूम होती है। ऐसी ही दशा सारे आर्य समाज की हो गई है। मैं सावधान कर रहा हूं। वैश्वानरस्य सुमतौ स्याम सन्यासिओं की सम्मति से ही सुमार्ग मिलेगा।

धार्मिक परीक्षायें

आर्य सेवा संघ की साहित्य विशारद, साहित्य भूषण, साहित्य रत्न, साहित्य प्रभाकर तथा शोध उपाधि परीक्षायें आगामी सितम्बर मास में समस्त भारत में होंगी। कोई भी व्यक्ति किसी भी परीक्षा में बैठ सकता है। प्रत्येक परीक्षा में सुन्दर व तिरंगा उपाधि पत्र प्रदान किया जाता है। सर्वप्रथम और द्वितीय, तृतीय, आने वाले छात्रों को पारितोषिक। छात्र-वृत्ति। पुस्तक सहायता। पदक। आर्थिक सहायता दी जाती है। निम्न पते से पाठविधि २५ पैसे के डाक टिकट भेज कर मंगाइये, परीक्षाओं का माध्यम हिन्दी है।

हरपालसिंह योगी
अध्यक्ष

डा० ओमपाल आर्य 'सचेत'
साहित्य शास्त्री, H. L. M. S.
मन्त्री

आर्य सेवा संघ, रसूलपुर जाहिद
पो० रसूलपुर कलौंदी (जानी) मेरठ (उ० प्र०)

प्रचार

... प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के ... द्वारा आर्यसमाज ... प्रचार किया ... कार्यक्रम कई दिन तक चला।

(२) दिनांक १२ जून में दयालपुर [औरैया] में रघुपतिसिंह राजपूत बी० ए० का यज्ञोपवीत संस्कार, तथा १६ जून में औरैया (इटावा) में श्री वंशलाल जी के पुत्र वधु द्वारा यज्ञ सम्पन्न हुआ तथा १८ जून में श्री रघुपतिसिंह जी दयालपुर वालों का समावर्तन संस्कार प० रामचन्द्र शर्मा गुरुकुल (एटा) द्वारा सम्पन्न हुये।

(३) दिनांक २० जून में रस्तोगी मुहाल फर्रुखाबाद में स्वर्गीय वासुदेव जी की पुत्री पुष्पादेवी वर्मा का पाणिग्रहण संस्कार श्री रघुपतिसिंह जी राजपूत बी० ए० दयालपुर (औरैया) (इटावा) के साथ श्री प० रामचन्द्र शर्मा वानप्रस्थी गुरुकुल (एटा) ने सम्पन्न कराया।

(४) दिनांक २५ जून मुराव (फर्रुखाबाद) में श्री बेचेसिंह अतार सिंह जी कुशवाह के यहां पारिवारिक यज्ञ सम्पन्न हुआ।

प्रथम बार वेद प्रचार

सभा के उपमन्त्री श्री आनन्द प्रकाश जी ने गत २९ जून से १ जुलाई तक बहराइच जिले के अन्तर्गत विभिन्न आर्यसमाजों का निरीक्षण किया। बहराइच जिले में गाजीमियां का बहुत बड़ा मेला लगता है, जिसमें हिन्दू जनता बहुत अधिक संख्या में आती है। ऐसी प्रसिद्धि है कि वहाँ पर स्थित एक कुण्ड में जिसमें नमाज के समय वजू किया हुआ और इधर से उधर से पानी जमा होता है नहाने से कुष्ठ रोग दूर हो जाता है कुछ किराये के दलाल इस प्रकार का प्रचार गाँवों में घूम २ कर करते हैं। और अन्ध विश्वासी जनता को बहकाकर लाते हैं। कुण्ड में नहाते हुए कोई अच्छा व्यक्ति रु० लेकर कोढ़ियों के बीच जाकर झूठ मूठ यह शोर मचाना शुरू कर देता है कि उसका कोढ़ ठीक हो गया स्थानीय आर्यसमाज की ओर से गाजीमियां के मेले के अवसर पर कैम्प लगाकर इन बातों के विरुद्ध प्रचार किया जाता है। सभा मन्त्री जी ने सुझाव दिया कि आर्यसमाज की ओर से और अधिक प्रभावशाली ढंग से और स्थाई रूप से प्रचार करने के लिये जिला सभा के तत्वावधान में स्थायी व्यवस्था होनी चाहिये जिसमें प्रचारक रक्खे जायें और आस पास के जिलों की जनता से सहयोग लिया जाय। सभा मन्त्री जी ने आर्यसमाज इकौना, स्त्री आर्यसमाज बहराइच, जिला आर्योपप्रतिनिधि सभा बहराइच, तथा आर्यसमाज बहराइच की गतिविधियों का भी निरीक्षण किया।

★

एकाँकी— दयानन्द के वीर सैनिक बनेंगे। दयानन्द का काम पूरा करेंगे ॥

पात्र परिचय-

रणवीरसिंह—	एक आर्यवीर
कुन्दनलाल—	रणवीरसिंह के पिता
कौशल्या—	रणवीरसिंह की माता
सुवर्चा—	रणवीरसिंह की बहन
वेदव्रत—	सचालक आर्य वीर दल शिविर

पहला दृश्य

(स्थान—आर्यवीर दल का नदी किनारे एक शिविर जिसमे अनेक तम्बू लगे हुये दिखाई देते हैं। ओ३म् की पताका ऊँची, गगन मे फहरा रही है। एक विशाल मन्डप मे पर्दा उठने पर आर्यवीरों का सामूहिक वीर-गान दयानन्द के वीर सैनिक बनेंगे, दयानन्द का काम पूरा करेंगे। सुनाई पडता है। सैकड़ों आर्यवीर पंक्तिबद्ध होकर बैठे हुए उन्हे सम्बोधित करने के लिये शिविर सचालक अपने स्थान से उठता है-)

वेदव्रत—मेरे प्यारे आर्य वीरो। आज शिविर का यह अन्तिम कार्यक्रम है और मै आपसे कुछ विशेष निवेदन करने जा रहा हू। शिविर मे एकत्रित होकर शारीरिक व्यायाम द्वारा अपने को हृष्ट पुष्ट बनाना, परस्पर प्रीति पूर्वक मिलना उठना बैठना और सामाजिक व राष्ट्रीय समस्याओं पर विचार करना ही केवल पर्याप्त नहीं है—हमे इन से आगे बढकर कुछ नये कदम बढ़ाना है।

(आर्य वीरों को उत्सकता भरी आंखें शिविर सचालक के मुख पर केन्द्रित होती है)

वेदव्रत—आप सब आर्यवीर इस बात को भली भांति जानते हैं कि कभी विश्व मे हमारे चक्रवर्ती साम्राज्य हुआ करते थे, एक भाषा एक भेष, सादगी, उच्च विचार किन्तु आज परमात्मा की यह धरती अनेक छोटे-छोटे राष्ट्रों में बट गई है परस्पर कलह द्वेष से जीवन विषाक्त हो गया है। घोर अज्ञान का साम्राज्य आच्छादित है, सर्वत्र अभाव और अन्याय का बोल बाला है। हमारी आर्य जाति कभी विश्व का प्रतिनिधित्व करती थी परन्तु आज वह सुन्दर विशाल सगठन कहा है? जातियाँ, उप जातियाँ छुआ-छूत लेन-देन ऊच-नीच की शृ खलाओं ने हमारा सर्वनाश कर दिया है। आप जानते है यह क्यों हुआ। मै केवल तीन शब्दों मे उसे बताता हू और वे है "पथ से भ्रमन"।

जी हां! हम सत्य मार्ग से भटक गये, हमने जीवन यज्ञ करना छोड़ दिया। व्यसन और विलास ने हमे जर्जर कर दिया। अज्ञानताओं ने हमें सन्कीर्ण मनोवृत्ति के पाश मे बांध कर पीस डाला।

तो आज हे आर्य वीरो-तुम्हारे समझने का समय है, तुम्हारे उठने की बेला आ गई है धर्म जाति और समाज व राष्ट्र पर अर्पित जीवन ही समस्या का एकमात्र हल है। क्या मै आशा करूँ कि आप मे से कोई अपना जीवन अर्पित करने को तत्पर हैं-

रणवीरसिंह-(उठ कर उत्साह से) मैं अपना जीवन इस महान् कार्य के लिये अर्पित करता हू।

वेदव्रत- (प्रसन्न होकर) बहुत सुन्दर आर्यवीर। क्या मैं इसे तुम्हारा दृढ निश्चय समझू।

कहानी-कुञ्ज

रणवीरसिंह-अवश्य! मैं चारपाई पर एडियाँ रगड २ कर मरने की अपेक्षा रणक्षेत्र मे वीरगति पाना श्रेयकर समझता हू।

वेदव्रत-मुझे तुमसे ऐसी ही आशा थी (शेष आर्य वीरो को सम्बोधित करते हुये) क्या और भी कोई व्रती है जो इस पुनीत कार्य मे जीवन की बाजी लगायेगा? आर्य वीरो! यह भली भांति समझ लो कि कर्तव्य ही वास्तविक पूजा है। केवल योजनाये ही समस्याये नहीं सुलझातीं वरन् कर्मशील व्यक्ति ही उन्हे क्रियान्वित कर सफलता प्राप्त कराते है।

(अनेक आर्य वीर खडे होकर उत्साह पूर्वक अपने को प्रस्तुत करते है। थोड़ी देर उत्साहमय कोलाहल रहता है)

वेदव्रत-(प्रसन्नता से) आर्य वीरो! तुम धन्य हो। परमात्मा तुम्हारे व्रतों को पूरा करे। तुम अडिगता से धर्म के मार्ग का अनुसरण करो, यही मेरी कामना है और तुम विजयी हो, यह मेरा हार्दिक आशीर्वाद है।

दूसरा दृश्य

[श्री कुन्दनलाल जी, कौशल्यादेवी एक सुसज्जित कमरे मे सोफों पर बैठे परस्पर वार्तालाप कर रहे है। रणवीर सिंह का प्रवेश]

रणवीरसिंह-(नम्रतापूर्वक) क्या आपने मुझ बुलाया है पिता जी।

कुन्दनलाल-हाँ बेटे। मै इधर कई दिनो से तुम से कुछ बातें करना चाहता था। तुम्हारी माँ तो विशेष उत्सुक थीं परन्तु तुम किसी शिविर मे चले गये थे सो वार्तालाप न हो सका।

रणवीरसिंह-आज्ञा कीजिये पिता जी।

कुन्दनलाल-तुम एक सुशील आज्ञाकारी और सदाचारी पुत्र हो। हमे तुम पर गर्व है।

रणवीरसिंह-यह सब आपके द्वारा मुझ पर डाले गए सस्कार ही है।

कौशल्यादेवी—तुम तो बेटे लाखो मे एक हो, क्या रूप, क्या रग, क्या विद्या, क्या आचार, क्या विचार, इसी लिये हम समझते है कि अब समय आ गया है कि हम तुम्हे जीवन मे और शोभा युक्त कर दें।

रणवीरसिंह-मै आपका मन्तव्य समझा नहीं माता जी।

कुन्दनलाल (हसकर) खड़े क्यों हो बैठो (रणवीरसिंह माँ के पास सोफे पर बैठता है) बात यह है कि तुम्हारी पढ़ाई लिखाई समाप्त हुई और तुम जवान भी हो गये हो। अब हमे अपना कर्त्तव्य निभाना है। अनेक स्थानो से तुम्हारे विवाह सन्देश आए है।

कौशल्यादेवी (अनेक फोटो दिखाते हुये) एक से एक बढ़कर है—हमे बेटे तुम्हारी सम्मति चाहिये क्योंकि यह तुम्हारे जीवन का प्रश्न है।

रणवीरसिंह (घबराहट भरे स्वर मे) किन्तु मैं विवाह नहीं करना चाहता।

कुन्दनलाल (हसते हुए) लो बोलो हैं न वैसे ही सीधे के सादे। विवाह अभी कहाँ होगा। पहले पसन्द कर लो फिर मेरे व्यवसाय मे हाथ बटाओ ....

★विक्रमादित्य 'वसन्त'

(सुवर्चा जलपान की ट्रे लेकर भीतर आती है जिसमे लस्सी के गिलास और मिठाई रखी है) सुवर्चा ट्रे मेज पर रखकर पिता के पास आ जाती है और सबको गिलास पकडाती है)

सुवर्चा-(हास्य से) भैय्या लो मुह मीठा करो (मिठाई देते हुए) भाभी के आने के बाद तो वही तुम्हारी चिन्ता करेंगी।

रणवीर—(गम्भीर होकर) पिता जी—मै विवाह नहीं करूगा। मैंने प्रतिज्ञा की है कि मै अपना सारा तन-मन-धन धर्म पर बलिदान कर दूंगा। मैंने शिविर में अपना जीवन परमार्थ के लिए अर्पित कर दिया है और मैं आप लोगों से विदा चाहता हू ताकि पर्वतीय क्षेत्रों मे जाकर आदि वासियों की सेवा करू और उन्हे स्वार्थी लोगों के चगुल से बचाऊँ।

कुन्दनलाल व कौशल्या—(भौंचके होकर) यह क्या कह रहे हो बेटा? (सुवर्चा आश्चर्य चकित होकर देखती है)

रणवीर—(धैर्य मे) मैं ठीक कह रहा हूं। राष्ट्र के अभ्युत्थान के निमित्त मैंने व्यसन और विलास के जीवन का त्याग कर तपस्वी बनने का ध्रुव निश्चय किया है।

कुन्दनलाल-(अस्थिर होकर) यह सब दान पुण्य तो घर पर बैठकर भी कर सकते हो।

रणवीर—(शांत स्वर मे) नहीं पिता जी। आसुरी वृत्तियों का नाश करने के निमित्त मर्यादा पुरुषोत्तम राम को १४ वर्ष भटकना पड़ा। भगवान बुद्ध को भी गृहस्थी छोड़ना

आर्य्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल.-६०

२० आषाढ़ २३ शक १८९० श्रावण कृ० ५
(दिनांक १४ जुलाई सन् १९६८)

आर्य्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

Registered No.L. 60
पता—'आर्य्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष्य : २५९९३ तार । "आर्यमित्र

★सात वर्षीय बालिका सतरंज खिलाड़ी

हैम्बर्ग—७।। वर्षीय बालिका ने शतरंज के १० मजे हुये खिलाड़ियो के साथ प्रतिद्वन्द्वता की जिसका परिणाम ९.५ और ० ५ रहा। इसी प्रकार अमरीकी न्यूलरोल के लिए भी उसने १० बार शतरंज खेली जिसमे वह नौ बार विजयी रही।

इस बालिका का नाम है जूटा हैम्पल और वह पश्चिम जर्मनी के फूलेंसबर्ग नामक नगर मे रहती है।

इस बालिका मे शतरंज की प्रतिभा के चिह्न ३ वर्ष की आयु मे ही दिखाई देने लगे थे जब उसने अपने पिता से जो स्वयं शतरज के प्रसिद्ध खिलाड़ी है, शतरज के मोहरों के बारे मे सवाल पूछे थे। इस पर उसके पिता ने धैर्यपूर्वक उसे मोहरों का ज्ञान कराया। छः महीने के भीतर ही वह इस खेल मे इतनी दक्ष हो गई कि अपने पिता का मुकाबला करने लगी।

यह ध्यान देने योग्य बात है कि इसके पिता के अलावा उसके बाबा भी शतरज के खिलाड़ी थे और रूस के जार के दरबार मे शतरज के चॅम्पियन रह चुके थे।

शतरंज के खेल में अद्भुत प्रतिभा होते हुये भी वह बालिका स्कूल मे पढ़ाई मे कमजोर नहीं है।

[पाठक विचार करें कि क्या इस बालिका की दक्षता में पीछे पूर्व जन्म के संस्कार का उदय होना नहीं है और क्या यह घटना वैदिक मान्यताओ को सिद्ध नहीं करती ? स०]

जैनमत-दर्पण का उत्तर

पिछले दिनों जैनमत दर्पण नामक पुस्तिका आर्य कुमार सभा मेरठ नगर की ओर से प्रकाशित की गई थी। इस पुस्तिका मे मैंने जैन मत के अनेक शास्त्रों के आधार पर सप्रमाण आक्षेप किये थे। उसके उत्तर मे "जैन इतिहास पर लोक मत" नामक पुस्तिका जैन-सभा मेरठ की ओर से प्रकाशित की गई है।

लेखक ने आरम्भ मे ही यह लिख दिया है कि इस लेख (जैनमत दर्पण) में जिन शास्त्रों का उल्लेख किया गया है उनका दिगम्बर जैन धर्म से कोई सम्बन्ध नहीं है। उत्तर से बच निकलने का यह सरल प्रकार है। हमने दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के नाम से खण्डन नहीं किया है। दिगम्बर से भिन्न जैन सम्प्रदायो से तो इन शास्त्रों का सम्बन्ध है जिनके प्रमाण जैन मत दर्पण मे मैंने उद्धृत किये हैं। यदि लेखक यह लिखता कि जैनियों के किसी भी सम्प्रदाय मे इन विवेकसार आदि शास्त्रों का सम्बन्ध नहीं है तब तो हम दोषी थे। जिन सम्प्रदायों से उन शास्त्रों का सम्बन्ध है वह हमारी पुस्तिका का युक्ति युक्ति खण्डन करें।

जहां तक नग्नवादिता का सम्बन्ध है वह निश्चय ही दिगम्बर सम्प्रदाय से सम्बन्ध रखता है। हमारे इस आक्षेप का उत्तर तो लेखक को देना ही चाहिये था। उस पर मौन धारण करने का अर्थ स्पष्ट है कि लेखक को हमारी आपत्तियां मान्य हैं।

जैन इतिहास पर लोकमत के पृ० १६ पर लेखक ने महा पण्डित श्री राहुल सांकृत्यायन का मत उद्धृत किया है जो इस प्रकार है—

"भारत के प्राचीन धर्मों मे जैन धर्म भी है। जैन धर्म के प्रतिष्ठापक श्रमण महावीर कौन थे ? वह भी घुमक्कड राज थे।'

इसमे जैन मत का प्रतिष्ठापक श्रमण महावीर माना है। इस प्रमाण को उद्धृत करके लेखक ने हमारे पक्ष का ही समर्थन किया है। हम भी तो यही कहते हैं कि जैन मत के प्रवर्तक महावीर स्वामी थे जो महात्मा बुद्ध के समकालीन थे।

पृ० ३६ पर लेखक ने लिखा है कि "श्रमण शब्द का प्रयोग दिगम्बर जैन मुनियों के लिये ही अति प्राचीनकाल से अनेक जैन तथा वैदिक ग्रन्थों मे किया हुआ मिलता है। हमारा कथन यह है कि जैन ग्रन्थों मे जाकर यह श्रमण शब्द रूढ़ि हो गया है। वैदिक ग्रन्थों में यह शब्द यौगिक है।

श्रमण का अर्थ संस्कृत के प्रामाणिक कोष आप्टे के अनुसार श्रमिक, तपस्वी, भक्त, भिखारी, बौद्ध, भिक्षुक आदि है। जैन साधु को तो श्रमण कहा ही नहीं है। यथार्थ मे यह शब्द तपस्वी साधु के लिये प्रयुक्त है।

लेखक ने अपने पक्ष मे ऋग्वेद का १०। १३५। २ मन्त्र प्रस्तुत किया है। मन्त्र मे श्रमण शब्द का नाम तक नहीं है। मन्त्र मे शब्द का प्रयोग है जिसका अर्थ है राग, भय, क्रोध से रहित स्थिर की सुख दुखो मे समान वृत्ति वाला। यह शब्द बुद्ध, पाणिनि, व्यास के अर्थों मे रूढ़ि हो गया। जैन साधु के लिये इसका विशेष प्रयोग भी नहीं है।

लेखक ने जैन मत को प्राचीन सिद्ध करने के लिये कुछ आधुनिक हिन्दी कवियों, लेखकों आदि के मत उद्धृत किये है।

लेखक का यह प्रयास निरर्थक है। प्राचीन भारतीय साहित्य से प्रमाण उद्धृत यदि लेखक करता तो उन पर विचार किया जाता।

—शिवदयालु

पड़ी और ऋषि दयानन्द को

कौशल्या—(अधीरता से) पर यह तो बड़े लोगों की बातें हैं बेटा—वे तो महान आत्माएं थीं हम तो साधारण जन हैं—

रणवीर—मां हर कोई महान बन सकता है यदि अपनी आत्मा मे सद इच्छायें अंकुरित कर ले और पराक्रम का आश्रय ले। तुम्हे तो पता ही है कि मैंने प्राणों की बाजी लगाकर जिस डूबती हुई बालिका के प्राण बचाये थे, उसकी मां ने मुझे आशीर्वाद देते हुए आप सब की कैसी सराहना की थी—बस मुझे इसी प्रकार जाति समाज और राष्ट्र का नाम उज्ज्वल करने दो।

कुन्दनलाल—बेटा तुम्हारा जोश सराहनीय है पर जोश मे होश होना चाहिये यह मार्ग उतना सरल नहीं जितना तुमने समझ रखा है। यह कण्टक मार्ग है, यह तो नगी तलवार पर चलना है—बेटा अब भी समय है लौट आओ।

रणधीर—पिता जी मुझे शिथिल मन मत कीजिये। मैं आर्य वीर हूं। आर्य वीर जब किसी बात को ज्ञान पूर्वक जान लेते हैं तो अन्तर मे उसको मानते हैं और जब अपना पथ ठानते हैं तो उन्हे कोई नहीं रोक सकता। वे पर्वतो को लाघ जाते हैं। दृढ़ आस्था सब कठिनाइयां सरल कर देती है।

(कुन्दनलाल और कौशल्या कुछ क्षणों तक चिन्ता युक्त रहते हैं—सहसा सुवर्चा उठ खड़ी होती है)

सुवर्चा—भैय्या ठीक कहते हैं। इनके पग अब नहीं रुक सकेंगे। इन्हे आशीर्वाद दो मां, इन्हे शुभ कामनाएं प्रदान करो पिता जी! ये बलिदान के पथ पर बढ़े चलें-बढ़े चलें।

(नेत्र सजल हो उठते हैं सुवर्चा के आगे बढ़कर रणवीर माता पिता के पैर छूता है बहन से गले मिलता है। तत् पश्चात् कमरे से बाहर चला जाता है। बाहर उसके गाने की ध्वनि सुनाई देती है—"दयानन्द के वीर सैनिक बनेंगे दयानन्द का काम पूरा करेंगे।" यहीं पटाक्षेप होता है)

★

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के लिये भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से कृष्णगोपाल शर्मा द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।

लखनऊ—रविवार आषाढ ३० शक १८९० श्रावण कृ० ११ वि० सं० २०२५ दिनांक २१ जौलाई १९६८ ई०

इस अंक में पढ़िए !

१—अध्यात्म-सुधा	२
२—सम्पादकीय	३
३—सभा तथा सार सूचनायें	४
४—वनिता विवेक	५
५—स्वास्थ्य-सुधा	६
६—विचार विमर्श	७
७—श्रद्धा क्या है ?	८
८—विश्व वचित्र्य तथा वृक्ष निर्जीव हैं	९
९—बाल-विनोद	१०
१०—आर्य जगत्	११
११—देश विदेश	१३
१२—कहानी-कुञ्ज	१५
१३—अमृत-वर्षा	१६

वार्षिक मूल्य १०)

छमाही मूल्य ६)

विदेश मे १ पौ०

एक प्रति २५ पै०

परमेश्वर की अमृत वाणी

पशुओं की वृत्ति को त्याग, इन्द्र बन, षड ऋपु दमन कर और जगमगा

उलूकयातु शुशुलूकयातु जहि श्वयातुमुत कोकयातुम ।
सुपर्णयातुमुत गृध्रयातु दृषदेव प्र मृणा रक्ष इन्द्र ।।
[अथर्व वेद काण्ड ८ सूक्त ४ मन्त्र २२]

[१] (उलूक यातुम) उल्लू की चाल को, उल्लू के समान अन्धकार मे रहने की वृत्ति को, उल्लू के समान मूर्खता के व्यवहार को उल्लू मम मोह बुद्धि को, उल्लू की राग द्वेष की वृत्ति को

[२] (उत शुशुलूकयातुम) और भेडिये की चाल को, भेडिये के समान क्रूरता को भेडिये सदृश हिंसा वृत्ति को, भेडिये जैसी क्रोध वृत्ति को, भेडिये जैसी अतृप्तता को

[३] (श्वयातुमुत) कुत्ते की चाल को, कुत्ते जैसी ईर्षा वृत्ति को, कुत्ते सम सजातीय से वैर करने के भाव को, कुत्ते के समान दुम हिलाने वाली चापलूसी को, कुत्ते की परिग्रह वाले स्वभाव को कुत्ते जैसी काम व सघर्ष वृत्ति को

[४] (उत कोकयातुम) और हस या चिडिया की चाल को, कामान्ध वृत्ति को, अत्यन्त विकार वासना के जीवन को, भोग क रोग मय बन्धन को, निलज्जता को, व्याकुलता को, नग्नता को, पाप वृत्ति को

[५] (सुपर्णयातुम) गरुड के समान आचरण को, रंग रूप माया के मिथ्याभिमान को, सौंदर्य के गर्व को, शक्ति के अहकार को, धन के घमण्ड को

[६] (उत गृध्रयातुम) गिद्ध की चाल को, लोभ की वृत्ति को, स्वार्थ के भाव को, किसी को मार कर या मरे हुये को खाने की पाशविकता को

[७] (जहि) त्याग दे, छोड दे, मार दे, दमन कर दे

[८] (दृषदेव प्रमृणा रक्ष इन्द्र) हे ऐश्वर्य्याभिलाषिन् ! इन्द्रियो का दमन करने वाले इन्द्र ! शत्रुओ को नष्ट करने वाले आत्मिन् ! दुर्व्यसन रूपी इन राक्षसो को पत्थर सम कठोरता से, वज्र बनकर कुचल दे, मसल दे, समूल नष्ट कर दे।

'कृण्वन्तो विश्वमार्यम' की चिर साध जिस 'कृण्वन्तो स्वयमार्यम' साधन मे सिद्ध होगी उनके साधक परमेश्वर की इस अमृत वाणी को आत्म सात् कर षडऋपुदमन कर निज जीवन को जगमगाए और अपनी जीवन ज्योतियो से दूसरो के जीवन दीप को जलाकर मनवाछित सिद्धि को प्राप्त करें । —'वसन्त'

वर्ष	अवैतनिक सम्पादक— —विक्रमादित्य 'वसन्त'	अङ्क
७०		२४

स्वादिष्ट मदिष्ट सोम रस

[साधक के हृदय में विरहाग्नि कैसे उत्पन्न होती है, कैसे सोम घटाएं घिर आती हैं, कैसे सोम की बूंदें बरसती हैं, कैसे धारायें बह उठती हैं कैसे हिलोरें लेती हैं, कैसे क्रीड़ा करती हैं, कैसे रोमांचित करती हैं, कैसे तरंगित करती हैं, कैसे उन्मत्त करती हैं·· ·············

इसकी आगकारी आर्य्यमित्र के आगामी अङ्क के अध्यात्म सुधा स्तम्भ में करायी जाएगी, पाठक प्रतीक्षा करें । सम्पादक]

वेद मन्त्र

स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोम धारया । इन्द्राय पातवे सुतः ।

[ऋ० ९-१ १, ब० २६-२५ सा० ४६८, ६८९]

परमात्मा इस संसार में आनन्दमय है, सत् चित् आनन्द है। वह सत् व चित के साथ संयुक्त है आनन्द रूप में वह जीवों के हृदय में विद्यमान है परन्तु वह जीवों के समान रोग, शोक, राग द्वेष दुःख सुख से परे आनन्द मग्न है। वह प्रकृति के कण २ में व्याप्त है किंतु विकार सहित और परिवर्तनशील प्रकृति की भांति वह विकार और परिवर्तन से परे है। प्रकृति जड़ है, इसमें प्रतीत नहीं किन्तु चेतन को तो अनुभूति होती है, इस की ज्ञानेन्द्रियाँ इसे रूप रस स्पर्श, घ्राण, स्वाद और श्रवण का बोध कराती हैं। सर्वोत्तम योनि में अर्थात् मानवी चोले में जहां मस्तिष्क अधिक परिष्कृत है जहां बुद्धि विवेक और निष्कर्ष समाहित है वहां मनुष्य को अन्य प्राणियों के सदृश शारीरिक सुख प्यास के अतिरिक्त एक और भी क्षुधा और तृष्णा व्यथित करती है जिसका सम्बन्ध सीधा आत्मा से है। यह नितांत सत्य है कि जब तक मनुष्य की आत्मिक पिपासा शान्त नहीं होती तब तक वह अशान्त होकर इधर-उधर भटकता है। मोह के कीचड़ में फंसकर जब वह चीखता चिल्लाता है, आसक्तियों की दल दल में फंसकर वह करुण क्रन्दन करता है और किसी भी सांसारिक जन की सहायता में असमर्थ पाकर सब व्यापक सर्वान्तर्यामी परमेश्वर को पुकारता है, तब वह निकटतम परमात्मा क्या कहता है, इसे एक साधक ही समझ सकता है, कैसे ?

साधक ने अन्तर्मुखी होकर विनीत स्वरों में प्रार्थना की—"प्रभु मैं दुखी हूं, मुझे सुखी करो, प्रभु मैं अशान्त हूं मुझे शान्ति दो, प्रभु आपके अथाह आनन्द सिन्धु में मैं प्यासे का प्यासा हूं, प्रभु मेरी तृषा बुझाओ, मुझे आनन्दपान कराओ।"

नितांत शांत वातावरण में जब साधक की आत्मा और उसके साध्य परमात्मा के मध्य में यह प्रकृति अथवा उसके विकारजन्य विषय आदि नहीं होते तो परमेश्वर का एक पुनीत दिव्य स्वर गूंजता हुआ सुनाई देता है— 'पिब सोम इन्द्र" अर्थात् हे इन्द्रियों के स्वामी तुम सोम का पान करो, यह सोम ही तुम्हारी आत्मिक तृषा को शांत करेगा, यह सोम ही सुधा है, यह सोम ही वह सुपान और पियान है जिसे पीकर तू मस्त बनेगा, मस्ती में झूमेगा, आनन्द विभोर होगा।

साधक ने पुनः पूछा "प्रभु यह सोम क्या है इसकी उत्पत्ति कहां होती यह मुझ कैसे प्राप्त होगा।"

"वत्स ! मेरा सोम ही, वह अमृत है जिसके लिये देवगण मेरी उपासना करते हैं। मैं आनन्दमय हूं, मैं सरस हूं, सोम मेरा रस है। मैं सर्वत्र हूं, मेरा सोम सर्वत्र है, वह तुझे भीतर बाहर सर्वत्र मिलेगा, उसे भी भर कर पी और पिला"

अतः प्रत्येक साधक इस बात को उसे प्रदान करता है। परमेश्वर ने संसार में जैसे सब पदार्थों की उत्पत्ति परमार्थ के लिए की है, वैसे ही सोम भी जीव के निमित्त है। यह इन्द्र का पान है, यह रस आत्मा के पान करने का है, इसलिये साधक वेद के इस कथन को आत्मसात कर लेता है—"इन्द्राय पातवे सुतः।" (अर्थात यह इन्द्र के लिए उसके पानार्थ सम्पादित करना पड़ता है।

यह सोम वास्तव में क्या है, यह अबोध सांसारिक जन तो बहकी बहकी

अध्यात्म-सुधा

भली भांति जानता है कि जहां उसका आराध्य देव सोम है वहां पर उसका अमृत सोम भी है। यह सोम संसार की किसी दूकान पर नहीं बिकता, यह तो जिस परमेश्वर का है, वही बातें करते हैं यह तो सस्ती मस्ती के लिए सोम को मदिरा की बोतलों में खोजते फिरते हैं, नशीली वस्तुओं के सेवन से क्षणिक उन्माद में खोते हैं और पश्चाताप करते हैं, किन्तु ब्रह्म ज्ञानी

साधक वेद के स्वाध्याय से जानता है—

"सोमं मन्यते पपिवान् यत्संपिंषन्त्योषधिम् सोमं यं ब्रह्माणो विदुर्न तस्याश्नाति कश्चन: ।।

(अथर्व० १४ १-३)

अर्थात् ओषधियों का सार ही सोम नहीं है जिन्हें कूट कर सांसारिक जन पान करते हैं। यह तो वह दिव्यामृत है जिसे ज्ञानी जन, तप के द्वारा वेद मन्थन करके प्राप्त करते हैं। स्पष्ट है कि भौतिक भोग परायण व्यक्ति सोम आस्वादन नहीं कर सकता।

★विक्रमादित्य 'बसन्त'

इसलिए इन्द्र सोम के पान के निमित्त ज्ञानाग्नि से निज को तपाता है, वह ईश्वरीय ज्ञान वेद का मन्थन करता है। वेद की ऋचाओं का मनन करता है। संसार के ऊपरी कलेवर पर न जाकर उसके भीतर के मर्म को पकड़ता है। जब वह संसार के सत्य को आत्मानुभूत कर लेता है, तो सत्यानुभूति उसे सोम का पान कराने लगती है। कैसा है यह दिव्य रस जब मस्ती से पूरित साधक से भोगीजन पूछते हैं तो वह कह उठता है—

"बड़ा ही स्वादिष्ट है, बड़ा ही मदिष्ट है।'

'कितना मीठा, कितना नशीला"

"कितना... यह मेरे वर्णन से बाहर है जितना २ जब २ पीता हूं तब तब उतना ही मधुर और उन्मत करने वाला है यह रस। प्रभु के अमृत पुत्र और पुत्रियों, यह रस वर्णन विषय नहीं यह तो अनुभूति से सम्बन्धित है।"

"क्या इस रस पान की कोई सीमा है कहीं कोई अन्त है ?"

"अरे ! यह क्या बात कही, यह जिस परमेश्वर का रस है, जब वह स्वतः असीम और अनन्त है तो उसकी सोम धारा कहीं शुष्क हो सकती है, भला उसका अन्त कैसा ? वेद माता स्वतः कह रही है, प्रभु स्वयं बोध करा रहा है, "स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोम धारया" मेरी मधुर स्वादिष्ट उन्मादकारी, रोमांचित सोमधारा का निरन्तःक्षरण हो रहा है, वह बह रही है, अन्दर बाहर सर्वत्र, ओषधियों में, फलों में, वनस्पतियों में, पर्वों में।'

अतः हे मनुष्यों, ज्ञानाग्नि में तप कर, ब्रह्मस्थ हो कर, परमेश्वर की इस प्रवाहित पवित्र धारा का रसपान करो, जी भर कर इस मीठे रस को पियो, सर्वत्र इस रस का आनन्दपान कराओ ताकि परमेश्वर के आनन्दमय सिन्धु में यह आत्मारूपी मीन प्यासी न रहे। प्रभु भक्ति के मदमाते रस से तृप्त बनो, तृप्ति में ही आनन्द की अनुभूति होगी और आत्मानन्द में ही परमानन्द की प्राप्ति होगी। ★

नशीला रस

●

जाने कैसा रस है, उन्मत हुआ जाता हूं।
अन्तर की विरह वेदना, उठती जब घुमड़ २ कर।
सोम घटायें घिर आती हैं, हृदय नभ में उमड़ २ कर ।।
बरसती हैं सोम की बूंदें, बन जाती मधुमय धारा।
धारा के प्रवाह में, धुल जाती है अन्तर्कारा ।।
निर्मलता में ही तो मैं, ज्योतित हुआ जाता हूं।
जाने कैसा रस है, मस्त हुआ जाता हूं ।।
जाने कैसा - --

छलछलाती मदमाती बहती सोम की पावन धारा
क्रीड़ा करती मुझसे पुलकित करती जीवन धारा।
पीता हूं भर भर के प्याले, बुझाता हूं तृषा अपनी
गूंज उठती जीवन सदन में, प्रेम की नशीली रागिनी ।।
स्वादिष्ट है रस इतना, तृप्त हुआ जाता हूं।
जाने कैसा रस है, मस्त हुआ जाता हूं ।।
जाने कैसा ······ -- ---

'बसन्त'

★ आवश्यक सूचना ★

श्रावणी पर्व पर विशेषाङ्क प्रकाशन के निमित्त 'आर्य्यमित्र' का साधारण अङ्क दि० २८-७-६८ को प्रकाशित न होकर आगामी संयुक्त अङ्क ४-८-६८ को विशेषाङ्क के रूप मे ही प्रकाशित होगा। पाठकगण कृपया नोट करलें।

—चन्द्रदत्त तिवारी
अधिष्ठाता 'आर्य्यमित्र'

को वेदानुद्धरिष्यति ?

श्रावणी पर्व प्रत्येक वर्ष की भाँति पुनः आ रहा है और सदैव की भाँति इस वर्ष भी अनेक आर्यसमाजों द्वारा वेद प्रचार सप्ताह मनाने के आयोजन किये जा रहे हैं। आर्य जगत् के वेद विद्वानों के कार्य्य-क्रम निर्धारित हो चुके हैं, और यथा समय उनके व्याख्यान भी हो जाएगे। आर्य प्रतिनिधि सभाओं के द्वारा तथा अन्य वैदिक सस्थाओं के द्वारा प्रकाशित साप्ताहिक व मासिक पत्रों के वेद विशेषाङ्क इस अवसर पर प्रकाशित किये जाएगे और आर्यजगत् यह समझ कर सन्तोष कर लेगा कि उसका कर्तव्य पूर्ण हो गया। समाचार पत्रों मे वेद प्रचार सप्ताह धूम धाम से मनाए गये—ऐसे समाचार भी पढ़ने को मिल जायेंगे और आर्य समाजों के पदाधिकारी भी इन से सन्तुष्टि का अनुभव करेगे। कहीं कहीं इन आयोजनों मे वेद प्रचार के निमित्त धन भी एकत्रित हो जाएगा। वेद प्रचारकों को दक्षिणा मिल जाएगी और यदि कुछ शेष रह गया तो समाज के कोष मे जमा हो जाएगा। जिन प्रचारकों को पर्याप्त दक्षिणा मिलेगी वे अपने ज्ञान को सार्थक समझेंगे, जहां उपस्थिति कुछ अधिक होगी, वहाँ के समाज अधिकारी "जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा" कह कर गर्व करेंगे।

प्रश्न यह उठते है कि क्या यह वेद प्रचार पर्याप्त है ? क्या यह प्रचार ठीक दिशा मे जा रहा है ? क्या इसका वास्तव मे महत्वपूर्ण उपयोग है, क्या इससे वेद का पुनरुद्धार हो जाएगा ? क्या महर्षि स्वामी दयानन्द के वेद प्रचार मन्तव्य की पूर्ति हो जाएगी ? क्या यथार्थ मे वेद प्रचार के इन आयोजनो से 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' की हमारी साध पूरी हो रही है ? इन सब प्रश्नों का वास्तविक उत्तर केवल एक ही है—"नहीं ! नही !! नहीं !!! "

तो फिर क्या किया जाए ? यह प्रश्न स्वाभाविक रूप से उपस्थित हो जाता है ? केवल नकारात्मक दृष्टिकोण से काम नहीं चलता। केवल छिद्रान्वेषण ही उचित नहीं है ? दोषों के बखान की अपेक्षा उन्हे दूर करना ही श्रेयस्कर है। त्रुटि है तो उसे आगे बढ़कर ठीक करना होगा। केवल रोग की चर्चा नहीं वरन उसका निदान करके उचित चिकित्सा करना होगी। योजनाए नहीं ठोस रचनायें ही कल्याण करेंगी।

सौभाग्य से एक आर्य परिवार मे जन्म लेने के कारण तथा बाल्यकाल से लेकर अब तक निरन्तर आर्यसमाज के वातावरण मे रहने के कारण तथा अनेक वर्षों से विभिन्न आर्यसमाजों के वार्षिक उत्सवों तथा कथाओं मे भाग लेने के कारण एव समाज की व्यवस्था मे एक निष्ठावान सेवक के रूप मे अनेक प्रकार के उत्तरदायित्व सम्भालने के कारण, अपने अनुभवों के आधार पर मैं आर्य जगत् के नेताओं, विद्वानों और समस्त शुभ चिन्तकों के सम्मुख अपने हार्दिक उद्गार इस आशय से व्यक्त करता हूं कि हम सब परस्पर मिलकर गम्भीरता पूर्वक विचार करके, वेद प्रचार को वर्त्तमान युग के अनुकूल एक नयी गति दें।

यह नितान्त सत्य है कि वेद आर्यसमाज की आत्मा है। आर्य-जगत् के समस्त महानुभाव इस तथ्य को भलीभाँति स्वीकार करते है और हृदय से मानते हैं कि शरीर की अपेक्षा आत्मा का महत्व अधिक है। आर्यसमाज के प्रवर्त्तक ऋषि दयानन्द ने अपना पूरा जीवन वेद प्रचार के निमित्त अर्पित कर दिया। वेद प्रेमी इस महर्षि ने आर्यसमाज के नियम मे वेद का पढ़ना पढ़ाना सुनना सुनाना, आर्यों का परम धर्म बताया था। समाज के दस नियमों का पाठ करने वाले हृदय पर हाथ रख कर बतलाए कि क्या वे इस परम धर्म का पालन कर रहे है ? आर्यसमाज के बीते स्वर्णिम युग में महात्माओं सन्यासियों, विद्वानों एव नेताओ ने धार्मिक सामाजिक और राष्ट्रीय क्षेत्रों मे जितना भी प्रचार किया उसका आधार एकमेव वेद था। जब तक सर्व दिशाओं में वेद प्रचार की पुनीत धाराए अर्पित जीवनों के द्वारा बहाई जाती रहीं तब तक मानव जीवन सरस होकर, लहलहाता हुआ, दिखाई देता रहा, सुन्दर सुरभित पुष्पो की सुगन्धि विभोर करती रही और जीवन-दायक स्वादिष्ट फल तृप्त करते रहे किन्तु आज उन धाराओं के वेगवती न होने के कारण मानवीय खेतियां नष्ट हो रही हैं, पुष्प मुरझा रहे हैं और फल सड़ रहे हैं।

तो आइये वेद प्रचार के इस पुनीत कार्य्य मे एक नवगति लाने के निमित्त हम श्रावणी पर्व पर ये व्रत लें।—

१—अपने परम धर्म का निर्वाह करने के लिए प्रत्येक आर्य नित्य वेद का पठन करे। सुविधानुसार और क्षमतानुसार कम से कम एक वेद मन्त्र का अर्थ सहित पाठ कर और परिवार के समस्त व्यक्तियो मे उसका पाठ कराये। स्वाध्यायशील होकर उस पर मनन करे और अपने मनन के रसपान से परिवार वालों तथा मित्रो को तृप्त करे।

२—जिन आर्यसमाजो के दैनिक अधिवेशन होते है वहा केवल दैनिक अग्निहोत्र करके ही कर्त्तव्य की इति श्री न मानली जाये। वेद के एक सूक्त का अर्थ सहित पाठ किया जाये तथा इन मन्त्रों से यज्ञ मे अतिरिक्त आहुतियां दी जाए। इस प्रयोग से दैनिक अधिवेशन की न केवल उपस्थिति बढ़ेगी वरन् सरसता का सचार होगा। स्वाध्यायशील आर्य इस पवित्र कार्य्य के लिये तुरन्त कमर कसें।

३—जिन समाजो मे साप्ताहिक अधिवेशन ही केवल होते हैं और जहां परिस्थितियो वश दैनिक अधिवेशन करने सम्भव नही हैं वहा प्रत्येक सप्ताह कम से कम एक घण्टे का कार्यक्रम वेदप्रचार के लिय रखा जाए। एक सूक्त का सस्वर वेद पाठ हो। वेद-पाठ करके उपस्थित समूह से उसको कहलवाया जाये ताकि सुगमता से वे घर पर उसका पाठ कर सकें। फिर किसी स्वाध्याय शील या विद्वान द्वारा उसी सूक्त के आधार पर वेदोपदेश कराया जाए।

४—विभिन्न अवसरो पर या पर्वों पर आर्यसमाजो द्वारा सामूहिक सार्वजनिक प्रचार आयोजन किये जाएं जिन मे धार्मिक सामाजिक राष्ट्रिय व अन्तराष्ट्रीय समस्याओं का निराकरण वेद मन्त्रों के आधार पर किया जाये और जन साधारण को सत्य ज्ञान से अवगत कराया जाए ताकि उनकी वेद रुचि का विकास किया जा सके।

५—वेद प्रचार सप्ताह केवल श्रावणी पर्व के लिये ही सीमित न किए जाएं वरन् सुविधानुसार वर्ष मे आठ दस बार किए जाएँ। केवल लकीर के फकीर होकर लकीर पीटने के स्थान पर कुछ ठोस कार्यक्रम बनाया जाए। केवल घिसी पिटी व्याख्यायें ही न दुहराई जायें वरन् जिज्ञासु बनकर वेद के विशेष सूक्तो की धाराप्रवाह कथा कराई जाए। भजनीकों पर नियन्त्रण आवश्यक है। उनके भजन प्रभु भक्ति या वेद महिमा के हों—व्याख्यान का काम विद्वानों पर छोड़ा जाए और प्रत्येक आयोजन पर नये सूक्त की कथा का आयोजन हो। विज्ञप्तियों द्वारा जब जनता को यह बोध होगा कि कार्यक्रमों मे नवीनता का आकर्षण है तो वह अवश्य खिंची चली आएगी। विद्वानों के स्वाध्याय मे भी अतिशय वृद्धि होगी और रोचकता से सरसता का प्रवाह बह उठेगा।

६—आर्यजगत् के प्रकाशकों व सम्पादकों को चाहिये कि वे पत्र-पत्रिकाओ मे परमेश्वर की अमृत वाणी का ही पाठकों को अधिक रसास्वादन कराएँ इधर उधर के विषाक्त भेदभाव बढ़ाने वाले दोषारोपण करने वाले गन्दगी की दुर्गन्धि फैलाने वाले समाचारों व लेखों की अपेक्षा चरित्र निर्माण करने वाले वेद आधारित सामग्री को प्रमुख स्थान दें। वेद सूक्तों की सुन्दर सरस व सरल व्याख्याए प्रकाशित कर जन साधारण तक पहुंचाए।

७—वेद प्रचार का [illegible] केवल सप्ताह-वाद तक सीमित न रखकर उस को [illegible] उन्नति के [illegible] जनतामुखी बनाया जाय। नयी पीढ़ी के [illegible] के लिये बालक बालिकाओं को शिक्षाप्रद छोटी छोटी वेद सूक्तियां, मनोरंजन के लिये वैदिक पहेलियां, माताओं के लिये वैदिक नारियां गृहस्थ जीवन के वेदोपदेश कृषकों के लिए कृषि सूक्त की व्याख्यायें, जब तक प्रस्तुत नहीं की जाएंगी तब तक जन मानस का वेद के प्रति आकर्षित होना सम्भव नहीं है।

८—वेद को विश्व रूप देने के लिए विश्व की भाषाओं मे अनुवाद का महा

८२ वें स्थगित वृहदधिवेशन का विज्ञापन

उत्तरप्रदेशीय समान्तर्गत आर्यसमाजों के मन्त्रीगण तथा आर्य प्रतिनिधि महोदयों की सेवामें—

श्रीमान् महोदय नमस्ते।

अन्तरङ्ग सभा दि० २५-८-६८ के नि० सं० ४ के अनुसार आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का ८२ वाँ स्थगित वार्षिक साधारण अधिवेशन मिति भाद्र० कृ० ३ संवत् २०२५ र० श्रा० २० शक सं० १८९० दि० ११ अगस्त १९६८ ई० दिन रविवार स्थान गुरुकुल वृन्दावन में होगा। स्थगित अधिवेशन दि० ११-८-६८ को प्रथम बैठक प्रातः १० बजे से १ बजे तक होगी। यदि आवश्यक हुआ तो दूसरी बैठक सायं ३ से ६ बजे तक होगी।

आशा है कि आर्यसमाजों एवं आर्य उपप्रतिनिधि सभाओं के प्रतिनिधि महोदय नियत समय पर अधिवेशन में सम्मिलित होकर अनुगृहीत करेंगे।

प्रवेशनीय विषय सूची—

१—उपस्थिति, ईश्वर-प्रार्थना के उपरान्त शोक प्रस्ताव।

२—स्वागताध्यक्ष एवं सभापति के भाषण।

३—वार्षिक वृत्तान्त १ जनवरी १९६७ से ३१ दिसम्बर १९६७ तक आय व्यय लेखा सहित स्वीकृत्य।

४—आगामी वर्ष सन् १९६८ के लिए बजट स्वीकृत्यर्थ।

५—सभा के पदाधिकारियों एवं अन्तरङ्ग सदस्यों का निर्वाचन।

६—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के लिये प्रान्त के १५ प्रतिनिधियों का तीन वर्ष के लिये निर्वाचन।

७—गुरुकुल विद्या सभा के लिये सभा के नियम सं० ४४ (इ) के अनुसार छ प्रतिनिधियों का निर्वाचन।

८—आय व्यय लेखा निरीक्षक (आडीटर) की नियुक्ति।

९—सभा के नियम संख्या ८ (ए) के अनुसार ३ प्रतिष्ठित सभासदों का निर्वाचन।

१०—सभा नियम धारा २१ (६) के अनुसार प्रस्तुत अन्य विषय।

टिप्पणी—(१) गुरुकुल पहुंचने के लिये रेलवे स्टेशन वृन्दावन तथा मथुरा पर उतरना चाहिये। उप सभा की ओर से वहां पूर्ण व्यवस्था रहेगी।

(२) दिनांक ११ अगस्त १९६८ को 'प्रदेशीय आर्य सम्मेलन' गुरुकुल में रात्रि ८ बजे से होगा।

(३) आर्य प्रतिनिधि सभासदों के निवास, भोजनादि की व्यवस्था आर्य उप प्रतिनिधि सभा मथुरा द्वारा गुरुकुल में की गई है।

(४) नवीन अन्तरङ्ग की बैठक अधिवेशन की समाप्ति पर होगी।

वृहदधिवेशन का कार्यक्रम

११ अगस्त १९६८ दिन रविवार

प्रातः—७ से ८॥ बजे तक सन्ध्या यज्ञ।

प्रातः—१० बजे से एक बजे तक वृहदधिवेशन की प्रथम बैठक।

सायं—३ बजे से ६ बजे तक वृहदधिवेशन द्वितीय बैठक तथा नवीन अधिकारियों द्वारा कार्य भार ग्रहण एवं धन्यवाद!

निवेदक.—

प्रकाशवीर शास्त्री एम० पी०
प्रधान

सच्चिदानन्द शास्त्री एम० ए०
मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

कार्य को भी क्रमशः हाथ मे लेना होगा इसके लिये विद्वानों को प्रोत्साहन देना होगा। यह कैसी विडम्बना है कि केवल तो भूखे मरे और केवल ऊपरी चकाचौंध दिखाने वाले तथा झूठी और केवल बातों से पथभ्रष्ट करने वाले पाखण्डी फूलें फलें। इस अर्थ प्रधान युग में विद्वानों की आवश्यकताओं को पूरा करना हमारा नैतिक कर्तव्य होना चाहिये। त्याग की अपनी सीमायें हैं—ब्राह्मण वर्ग को भिक्षुक नहीं वरन् सम्पन्न करना चाहिये ताकि दीन-हीन न होकर वह निश्चिन्त होकर सोत्साह वेद प्रचार के कार्य्य से रत हो सके।

अनुभव की बात तो यह कि वेद प्रचार सप्ताह में प्रतिनिधि सभाओं को १ रु० वार्षिक प्रति सदस्य भी वेद प्रचार के निमित्त समाजें नहीं देतीं, परन्तु समाओं से आशा रखती हैं कि सुयोग्य विद्वानों की सेवायें प्राप्त हों। भला अर्थाभाव में यह कैसे सम्भव हो सकता है। **इस वर्ष प्रत्येक आर्यसमाज वेद प्रचार के निमित्त धन संग्रह कर सभाओं को भेजें और अपने नैतिक कर्तव्य को पूरा करें** ताकि सभाएं वेद प्रचार के प्रमुख कार्य्य को क्रियान्वित कर सकें।

९—आज के प्रचारात्मक युग में आधुनिक वैज्ञानिक साधनों की उपेक्षा नहीं की जा सकती। केवल मौखिक प्रवचनों व साहित्य से अभीष्ट की पूर्ति नहीं होगी। आकाशवाणी से वैदिक कार्य्यक्रम प्रसारित किये जाएँ साप्ताहिक अधिवेशनों में ध्वनि विस्तारक यन्त्रों का प्रयोग किया जाये। सस्वर वेद पाठ के सङ्गीत रेकार्ड तैय्यार किये जाएं। टेप रेकार्डों में सुन्दर कार्यक्रमों का संग्रह किया जाए। वेद मन्त्रों पर आधारित कथायें नाटक तैयार किये जायें। चल चित्र बनाये जायें। जड़ मन्दिरों के निर्माण की अपेक्षा चलते-फिरते वेद मन्दिर अर्थात् जीप मोटरें क बनाये जायें ग्राम-ग्राम में प्रचारकों को भेजा जाए सस्ता साहित्य वितरित किया जाये। मधुर संगीत श्रवण कराया जाये। शिक्षाप्रद वैदिक चलचित्र दिखाये जाएँ और टेपरेकार्ड से वेदोपदेश सुनाये जाएँ। हमारे व्यवसायी भाई कलण्डरों व डायरियों में मन्त्रों व सूक्तों को उद्धृत करें।

१०—वेद स्वतः प्रमाण है उसी प्रकार जिस भांति भौतिक जगत् में सूर्य स्वतः प्रमाण है। वेदार्थ करने में भले ही निरुक्त निघण्टु आदि सहायक हों किन्तु वेदों को पूर्णतयः परतः प्रमाण करना प्रचार की दृष्टि से सर्वथा घातक है। जन साधारण तक वेद सरल करके वेद पहुंचाये जा सकते हैं क्लिष्ट करके नहीं अतएव अष्टाध्यायी आदि के सूत्रों को कण्ठस्थ करना व व्याकरणाचार्य बनाना सीमित व्यक्तियों तक सीमित रखिये। जन साधारण को ईश्वरीय ज्ञान के लिये प्रभु निष्ठ बनाइये सरल से सरलतम वेदार्थों को उनके सम्मुख रखिये। जब उनमें वेद के प्रति निष्ठा होगी, स्वाध्याय का रसपान करने की रुचि जागृत होगी तो वे वेदार्थ करने के सहायक ग्रन्थों का स्वतः आश्रय लेंगे और पठन-पाठन करायेंगे। समय की आवश्यकता है रुचि उत्पन्न करना और यह तभी सम्भव है जब उन्हें सरलतापूर्वक वेद की महत्ता का ज्ञान कराया जाए।

वेद प्रचार कार्य्य महान् और युग परिवर्त्तन के नितान्त आवश्यक है। वेद के अनुयायियों को समय की आवश्यकता का अनुभव कर जी जान से इस पुनीत कार्य्य मे जुट जाना चाहिये। काल अश्व किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। बीता हुआ समय लौटकर नहीं आता। जो काल अश्व की सवारी करते हैं वे विजयी होते हैं जो काल के मार्ग मे प्रमादवश पड़े रहते हैं वे उसके चरणों से रौंदे जाते हैं।

अतएव व्यर्थ पदलोलुपता व स्वार्थमय सङ्घर्षों को त्याग कर आर्यजन वेद की विश्व व्याप्ति में तन-मन धन से लग जायें और संसार के अपराध करने की साध को सिद्ध करें। जब तक एक, एक आर्य जन इस पुनीत कार्य में सर्वस्व की बाजी नहीं लगाएगा तब तक अभीष्ट की प्राप्ति नहीं होगी। आइये हम सब श्रावणी पर्व पर मिलकर ऐसे ही भव्य कार्य्य क्रम बनायें। प्रत्येक आर्य्य उत्साह भरे स्वर मे कहे—

'अहम् वेदानुद्धरिष्यामि!'

'अहम् वेदानुद्धरिष्यामि!!'

'अहम् वेदानुद्धरिष्यामि!!!'

अर्थात्—मैं वेद का उद्धार करूंगा, मैं वेद का उद्धार करूंगा, मैं वेद का उद्धार करूंगा।

वनिता विवेक

नारी श्रृंगार के ६ आभूषण

[पाश्चात्य जगत् की भौतिकता की चकाचौंध से प्रभावित होकर आज महिलायें व्यसन और विलास का अन्धानुकरण कर रही हैं। कहने को भले ही वे वर्तमान शिक्षा की उपाधियों से अपने को अलंकृत करलें, परन्तु वास्तविकता यह है कि वेद ज्ञान से शून्य वे न तो गृह परिवार व समाज की स्वामिनियां हैं न ही राष्ट्र की आधारशिला। फैशन और बनावटी श्रृङ्गार ने उन्हें केवल वासना की दासियां बना दिया है। यदि वे पुरुषों के हृदयों की स्वामिनियां होना चाहती हैं तो उन्हें अपने मातृत्व के रूप में निर्माण की महत्ता को समझना चाहिये और इस लेख में वर्णित ६ आभूषणों से अपने को अलंकृत कर राष्ट्र को गौरवान्वित करना चाहिये। ऐसे रोचक शिक्षाप्रद लेखों को हम स्तम्भ में प्रमुख स्थान दिया जाएगा। विदुषियाँ इस ओर ध्यान दें और हमें वेदप्रचार के पुनीत कार्य में पूरा सहयोग दें।—सम्पादक]

—श्रीमती राजरानी

बक्शी, लखनऊ

महिला आर्यसमाज का साप्ताहिक अधिवेशन हो रहा था। कुछ महिलाएं आ चुकी थीं कुछ आ रही थीं। इनमें बालिकाएं युवतियां और वृद्धाएं सब थीं। कुछ युवतियां सादे वेश में थीं जो सम्भवत मध्यम श्रेणी के परिवारों से सम्बन्ध रखती थीं किन्तु कुछ फैशन ग्रस्त नवयुवतियां भी थीं जो सम्भवत यजमान के निमन्त्रण पर उस पारिवारिक सत्सङ्ग में सम्मिलित होने आई थीं। यज्ञ समाप्त हो चुका था और भजन हो रहे थे। जब लगातार ४ सामूहिक भजन हो गये तो प्रधाना ने कहा—"मुझे खेद है कि शास्त्री जी के न पधारने के कारण आज उनका प्रवचन न हो सकेगा। यदि कोई बहन कुछ विचार व्यक्त कर सकें तो उत्तम हो अन्यथा आज की कार्यवाही समाप्त कर दी जाये। कमरे के एक कोने में बैठी हुई सादा वेश भूषा वाली एक देवी ने खड़े होकर कहा—यदि मुझे आज्ञा दी जाए तो मैं कुछ निवेदन करूं।'

"अवश्य २ अपना परिचय भी दीजिए क्योंकि हममें से अधिकांश आप से अपरिचित जान पड़ती हैं।" प्रधाना के आदेश से अनेक उत्सुक नेत्र उस अपरिचिता की ओर उठ गये जो अब तक उपदेश के निमित्त चौकी पर बैठ चुकी थी। नेत्र बन्दकर उस अपरिचिता ने मधुर स्वरों से वेद मन्त्रों का पाठ किया। वातावरण पूर्णतया शान्त हो चुका था। उस देवी ने सबको सम्बोधित करते हुये कहा—

'बहनों—मैं आज प्रथम बार ही आपके मध्य में आई हूं। मुझे कान्ति देवी कहते हैं। मैं घोर पौराणिक थी, बी० ए० पास होने पर भी मैं नित्य हनुमान चालीसा का पाठ करती थी, मंगलवार को व्रत रखती थी और मूर्ति पर प्रसाद चढ़ाती थी। यों तो सत्यनारायण जी की कथा और रामायण भी बांचती थी परन्तु जीवन का वही पुराना ढर्रा था—वही नई साड़ियों के शौक फैशन की रुचि, किन्तु धन्य है वह ऋषि दयानन्द जिसके बताए मार्ग पर चलने वाले आर्यसमाज के सम्पर्क में आकर मेरा काया कल्प हो गया, और वही घर जिसमें पति से निरन्तर झगड़ा रहता था और जीवन नर्क तुल्य था, वह वेद के स्वाध्याय से स्वर्ग में परिवर्तित हो गया।

हां तो मैं अपने फैशन के बारे में कुछ चर्चा कर रही थी। प्रत्येक नारी सौंदर्य के लिये श्रृंगार करती है श्रृंगार करना प्रत्येक नारी को स्वाभाविक रूप से प्रिय होता है और उसके लिये वह नाना प्रकार के प्रसाधनों व आभूषणों का प्रयोग करती है। एक समय था जब पुष्पों के आभूषणों से श्रृंगार होता था किन्तु अब उनका स्थान चांदी सोने जैसी धातुओं ने या हीरे पन्ने आदि बहुमूल्य पत्थरों ने ले लिया है। किन्तु ये तो श्रृंगार के बाह्य रूप मात्र है। मैं तो उस सौंदर्य का वर्णन करती हूं जो भीतर से बाहर आता है। मैं तो उस श्रृंगार की चर्चा करती हूं जो [illegible] से सौंदर्य प्रदान कर उसका निर्माण करता है। इस सम्बन्ध में वेद की आज्ञा क्या है, सुनो—वेद का एक मन्त्र है—

इमा नारीरविधवाः सुपत्नीराञ्जनेन सर्पिषा सं विशन्तु। अनश्रवोऽनमीवाः सुरत्ना आ रोहन्तु जनयो योनिमग्रे ॥

[ऋ० १०-१८-७]

बहनों वेद के ज्ञान काण्ड अर्थात् ऋग्वेद के इस मन्त्र में नारियों के लिये दो सुन्दर आदेश हैं। एक तो नारियों के श्रृंगार के विषय में है जिसमें षड्भूषणों का उल्लेख किया गया है और दूसरा गृह से बाहर जाने के सम्बन्ध की अवस्था का निर्देश करता है।

इन छः आभूषणों के विषय में वेद ने कहा (इमा नारी) ये नारियां (अविधवाः) अ-विधवा (सुपत्नी) अच्छी पत्नियां (अनश्रव) अश्रु न बहाने वाली (अनमीवाः) स्वस्थ (सुरत्ना) अच्छे गुणों वाली और (जनय.) माताएं हों।

आइये हम नारी के इन ६ आभूषणों पर क्रमश विचार करें। नारियों का प्रथम आभूषण अ विधवा होना है। धव पति को कहते हैं। धवा पतियुक्ता होती है। वे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पति का साथ निभाने वाली होती हैं। सुख हो चाहे दुख हो वे कभी भी पति वियोग की कामना नहीं करतीं। आज कल जो बहनें पारिवारिक झगड़ों के कारण पति से पृथक् होने के लिए कचहरी से तलाक आदि लेती हैं, वह उचित नहीं है। वेद तो स्वयम्वर का आयोजन करता है, जब पति का चुनाव नारी करती है तो उसे जीवन भर उसका साथ देना चाहिए—संग २ चलना चाहिये, यदि पति अच्छा न हो तो नारी क्या करे यह प्रश्न बहुधा उठाया जाता है तो वेद ने कहा—

दूसरा आभूषण है सुपत्नी होना। पत्नी यदि गृह की अच्छी स्वामिनी बन जाय तो घर स्वर्ग बन जाता है। वहां साक्षात देवताओं और देवियों का सतत वास रहता है। सुपत्नी पति की पूरी देख-भाल करती है। वह पत्नी सुपत्नी नहीं है जो पति को ठूंस २ कर राजसिक भोजन या तामसिक पदार्थों का सेवन कराती है। वह पत्नी भी सुपत्नी नहीं है जो सर्वदा बाह्य श्रृङ्गार [illegible] उत्तेजक वेश से पति की वासनाओं को उत्तेजित करती रहती हैं। ये लक्षण तो पति को अल्पायु करने के और स्वयं को शीघ्र विधवा बनाने के हैं।

तीसरा आभूषण है अनश्रु होना है। बात २ में रूठना, आंसू बहाना और घर में क्लेश का वातावरण उत्पन्न करना। दूसरे शब्दों में प्रसन्न रहना, सदा चेहरे पर मन्द मुस्कान रहना, नारियों की शोभा हैं जिस घर में नारी का रुदन होता है वहां न पति प्रसन्न रहता है न घर के अन्य सदस्य। विपत्ति पड़ने पर भी जब नारी अपनी दृढ़ता का परिचय देती है और अश्रुपात के स्थान धृष्टता बन जाती है तो गृह का कल्याण होता है और दुःख से बचने का मार्ग निकल आता है।

चौथा आभूषण है अनमीवा अर्थात् रोग मुक्त होना। जो नारियां व्यायाम नहीं करतीं और भोग विलास में रत रहती हैं उनका सौन्दर्य उन से विदा हो जाता है इसलिए स्वस्थता रूपी आभूषण से श्रृङ्गार होना चाहिए। स्वस्थता के निमित्त प्राकृत नियमों का

[शेष पृष्ठ १२ पर]

वैदिक पहेली

स्वाध्यायशील महिलायें बतायें—इस वैदिक पहेली का क्या रहस्य है? यह रङ्गरेजन (रङ्गने वाली) कौन है??

वह मन्त्र—

ओ३म् सर्वे देवा उपाशिक्षन् तदजानाद् वधूः सती।
ईशा वशस्य या जाया सास्मिन् वर्णम् आभरत् ॥

—अथर्ववेद काण्ड ११ सूक्त ८ मन्त्र १७

वेद के इस मन्त्र में एक पहेली है—जिसका अता पता यह है—

१—एक सती वधू है।
२—जो वशस्य ईशा जाया है।
३—जिसके सम्मुख सब देव उपस्थित होते हैं।
४—जो उन्हें जानती पहचानती है।
५—जो उनमें विविध रङ्ग भर देती है।

जो महिलायें इस पहेली का रहस्य खोलेंगी उनके लेख नाम सहित इस स्तम्भ में प्रकाशित किये जायेंगे, तथा भगवान भजनावली पुरस्कार स्वरूप भेंट की जाएगी। २१-८-६८ तक निम्न पते पर पहेली के स्पष्टीकरण भेजिए—

"वनिता विवेक द्वारा 'आर्यमित्र' ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ-१" —सम्पादक

पौष्टिक आहार से स्वास्थ्य

विज्ञान वार्ता

वायु और जल के बाद हमारे लिये सबसे आवश्यक पदार्थ है आहार। आहार से प्राप्त शक्ति के फलस्वरूप ही हम दैनिक कार्यों को ... हैं। आहार केवल स्वस्थ व्यक्ति को ही नहीं रोगी को भी चाहिए और रोगों की चिकित्सा में जितना औषधियों का महत्व है उतना ही आहार का भी। भारतीय चिकित्सकों ने इस तथ्य को बहुत पहले ही खोज लिया था और वे औषधि देते समय रोगी के आहार के सम्बन्ध में भी आवश्यक हिदायतें देना न भूलते थे। पश्चिमी देशों में प्राचीन चिकित्सक भी इस मत से सहमत थे। रोगों की प्रकृति के सम्बन्ध में प्राप्त होने वाले नित नये ज्ञान ने शनैः शनैः 'आहार विज्ञान' को जन्म दिया। आज यह विज्ञान आयु-विज्ञान की विशिष्ट शाखा बन गया है।

यद्यपि प्राचीन भारत में कुशल चिकित्सकों की कमी न थी। हमारे देश में अत्यंत निपुण शल्य चिकित्सकों को भी जन्म दिया, परन्तु रोगों के सम्बन्ध में आज हमें जो ज्ञान उपलब्ध है वह लगभग सबका सब पश्चिमी देशों में हुये अनुसन्धानों के फलस्वरूप ही प्राप्त हुआ है। इसलिये यह स्वाभाविक ही था कि आहार-विज्ञान का विकास भी यूरोपीय देशों में हो। यहीं भोजन का प्रोटीन, वसा, कार्बोहाइड्रेट, लवण और विटामिनों में वर्गीकृत किया गया और उनके विशेष के विशिष्ट कार्यों का ज्ञान प्राप्त हुआ। आज हमें ज्ञात है कि विटामिन भोजन में सूक्ष्म मात्रा में मौजूद होते हुये अनेक रोगों से हमारी रक्षा करते हैं। प्रोटीन हमारे शरीर की टूटफूट की मरम्मत करता है, कार्बोहाइड्रेट शरीर रूपी भट्ठी में इंधन का कार्य करते हैं, वसा हमारे भोजन को शीघ्र पचाने में सहायता देते हैं, लवण हड्डियां बनाते हैं तथा अनेक क्रियाओं में अत्यावश्यक योग देते हैं। परन्तु इन सबसे महत्वपूर्ण है जल। जल के बिना न भोजन बन सकता है और न पच ही सकता है।

उपर्युक्त रचकों में से प्रत्येक को हमें उचित मात्रा में ग्रहण करना आवश्यक है। यदि वह हमें उचित मात्रा में नहीं मिलता तो निश्चय ही हमारा शरीर पर्याप्त ऊर्जा प्राप्त नहीं कर पाता। इससे एक ओर जहां हमारी शक्ति क्षीण हो जाती है वहां दूसरी ओर संतुलन बिगड़ने से हम रोगों से पीड़ित हो

रोग-मुक्त रहने के लिये औषध की उतनी आवश्यकता नहीं, जितनी कि पौष्टिक भोजन की है।

सकते हैं। स्वस्थ मनुष्य को भोजन से ३४०० कैलोरीके समतुल्य ऊर्जा प्राप्त होनी चाहिये।

अब हम रोगियों के आहार पर ध्यान दें। रोगी के आहार का निर्णय करते समय रोग की अपेक्षा उसकी व्यक्तिगत आवश्यकताओं को ध्यान में रखना अधिक जरूरी है। रोगी का भोजन साधारण नहीं होता है, इसलिये उसकी भोजन सम्बन्धी आदतों का जानना भी बहुत जरूरी है इस सम्बन्ध

विटामिन-युक्त भोजन से ही शरीर पूर्ण स्वस्थ विकसित और रोग मुक्त रहता है।

में एक साधारण नियम यह भी है कि रोगी को शीघ्र पचने वाला भोजन दिया जाना चाहिए। रोगी के आहार की योजना बनाते समय हमको यह देखना चाहिए कि वह किस समाज में रहता है, किस धर्म को मानता है। उसकी अभिरुचि किन २ वस्तुओं को खाने की है, वे वस्तुए आसानी से उपलब्ध भी हैं अथवा नहीं। उदाहरण के रूप में मोतीझरा (टायफायड ज्वर) से पीड़ित रोगी के आहार को लीजिये

पहले ऐसे रोगी को जो आहार दिया जाता था अब चिकित्सक उससे भिन्न आहार देने की सलाह देते हैं। पहले ऐसे रोगियों को केवल उबाला पानी, दूध एव फलों का रस ही दिया जाता था। इसका कारण यह हो सकता था कि १९४८ तक इस ज्वर की कोई विशिष्ट चिकित्सा नहीं थी। बाद में क्लोरेम्फेनिकाल इस ज्वर की एक विशिष्ट औषधि प्रमाणित हुयी है। टायफायड से रोगी की छोटी आंतों में छाले पड़ जाते हैं और यकृत, तिल्ली एवं पित्ताशय में भी गड़बड़ी उत्पन्न हो

सकती है। ऐसे रोगी के आहार में प्रोटीन की मात्रा अधिक होनी चाहिए तथा उसके भोजन का कुछ कैलोरी मान स्वस्थ व्यक्ति के भोजन की अपेक्षा अधिक होना चाहिये। उस भोजन में ३०००-४००० कैलोरी ऊर्जा प्रतिदिन मिलना आवश्यक है। उसे दिन भर में ३५० ग्राम तक कार्बोहाइड्रेट मिलने चाहिये। आहार में आरारोट, कार्नफ्लोर जो सागों एव टूटे हुए चावलों से बना पेय पदार्थ और दूध, फलों का रस (मुख्य रूप से मौसम्मी का रस) उबला हुआ पानी, चाय या काफी दे सकते हैं।

अनेक रोगों (हृदय अथवा यकृत के रोगों) में हाथ पैरों अथवा मुंह में सूजन आ जाती है। ऐसे रोगियों को नमक विहीन आहार देना हितकर है। नमक शरीर में पानी के रुकाव को बढ़ाता है।

पोषक तत्वों के अभाव से रोगों की उत्पत्ति

पोषक तत्वों की कमी से उत्पन्न रोगों, बेरी २ स्कर्वी, सूखा रोग एवं अस्थि मृदुता आदि प्रमुख हैं। चिकित्सकों ने कुछ और भी रोगों का पता लगाया है, जो कुपोषण के कारण उत्पन्न होते हैं परन्तु उपर्युक्त रोगों में उनकी गिनती नहीं की जाती। मेरस्मस बर्निंग फीट सिन्ड्रोम, क्विश्ओर्कोर, फ्रक्रो सिरोसिस आदि कुपोषण से होने वाले रोगों के उदाहरण हैं। चिकित्सकों को अब यह बात मालूम है कि विटामिनों की सामान्य कमी होने से शरीर का रोगों से ग्रसित हो जाना सामान्य है लेकिन केवल एक विटामिन की कमी* भी रोगों को उत्पन्न करने में सहायक सिद्ध हो सकती है। (विज्ञान समाचार सेवा)।

सदा स्वस्थ रहने के लिये ऊर्जा-वर्धक खाद्य-पदार्थों का प्रतिदिन सेवन आवश्यक है!

समुद्र की रोशनी

दिन के प्रकाश की पहुंच समुद्र की गहराई में कहाँ तक होती है—इस विषय में जो अनुमान अभी तक लगाये जाते थे, समुद्र की रोशनी उससे भी आगे है। काफी गहराई तक इतना प्रकाश समुद्र में रहता है कि बड़ी आसानी से गोताखोर दिन की रोशनी में काम कर सकते हैं। अल्विन नामक एक अमरीकी अनुसन्धान पनडुब्बी ने दिखा दिया है कि २३०० फुट की गहराई तक सूर्य का प्रकाश अपना प्रभाव रखता है। कृत्रिम प्रकाश के बजाय प्राकृतिक प्रकाश में ही समुद्री वस्तुयें अधिक सुगमता से देखी जा सकती हैं। कारण यह है कि प्राकृतिक प्रकाश की मात्रा परावर्तित होकर नष्ट होती है। पता चला है कि ६०० फुटकी गहराई में आस-पास २०० फुट तक और १००० फुट की गहराई में आस,पास २० फुट तक भलीभांति देखा जा सकता है।

उजाले में सिनेमा

सिनेमा हम अंधेरे में ही देखते हैं। ईस्टमैन कोडक ने एक फिल्म स्क्रीन तैयार किया है जिसकी प्रतिबिम्ब ग्रहण क्षमता प्रचलित सिनेमा के पर्दों से लगभग छः गुनी अधिक होती है। अतः यह सम्भव हो जाता है कि स्लाइडों और मूवी फिल्मों को उजाले में भी पर्दे पर उतारा जा सके। इस फिल्म स्क्रीन को बनाने में अल्यूमीनियम की चादरों का इस्तेमाल विशेष रूप से हुआ है। इस धातुयुक्त पर्दे को उच्च दबाव पर निर्मित किया जाता है। विशेषतः शिक्षणात्मक फिल्म प्रदर्शनों में ये स्क्रीन बड़े उपयुक्त होंगे क्योंकि उजाले में लोग फिल्म देखने के साथ-साथ एक दूसरे को भी देख सकेंगे।

पानी से हल चलाना

स्वीडन में एक हल तैयार किया गया है जो पानी की ताकत से चलाया जाता है और खेत में चलते समय जहां कहीं बीच में पत्थर आ जाता है तो यह स्वयं अपनी पातें उठा लेता है और पत्थर से आगे निकलने पर तुरन्त पातें फिर जमीन में घुमा देता है।

नया दृष्टिकोण—

राम वनगमन रहस्य

[मर्यादा पुरुषोत्तम राम के वन गमन रहस्य का प्रस्तुत लेख मे विद्वान् लेखक ने एक नया दृष्टिकोण दिया है। क्या राम के वन गमन मे केवल पितृ-भक्ति थी ? क्या कैकयी वास्तव में ऐसी ही दुष्टा व स्वार्थिनी थी ? जो नारी रणक्षेत्र में पति के साथ जाकर उसका रथ हाँक सकती है और उसके प्राण बचा सकती है, वह केवल अपने पुत्र को राज्य दिलाने के लिये इतनी पाषाण हृदय हो सकती है कि पति के प्राण तक लेने का निमित्त बन जावे। और युग युगान्तरों तक अपने को कलंकित कर ले ? क्या यह सत्य नहीं है कि राम का बनगमन उस समय के ऋषियों के मन्तव्य के अनुसार था जो दक्षिण मे बढ़ते हुये अनार्यत्व का दमन करना चाहते थे और केकयी ने आर्यत्व की स्थापना के लिये अपने सम्मान तक का बलिदान कर दिया और वेदाज्ञा के विपरीत बहु पत्नीवाद वाले, मोहग्रसित अयोग्य पति दशरथ के प्राणों तक की कोई चिन्ता नहीं की। हम स्वाध्यायशील पाठकों के विचारों का इस सम्बन्ध में स्वागत करेंगे। —सम्पादक]

—पं० शिवदयालु

विचार-विमर्श

राम राजा दशरथ के सबसे बड़े पुत्र थे अत: वंश परम्परा के अनुसार वही राजगद्दी के उत्तराधिकारी थे। राजा दशरथ कौशल्या, सुमित्रा लक्ष्मण आदि सब की यही आकांक्षा थी कि राज तिलक राम को दिया जाय।

किन्तु राजा दशरथ ने केकय देश की राजकन्या केकयी के साथ विवाह किया तो शर्त यह तय हुयी थी कि गद्दी का अधिकारी केकयी के उदर से उत्पन्न होने वाला राजकुमार ही होगा। इधर राजा दशरथ ने देवासुर संग्राम में जब वह सुभटों के आक्रमण से क्षतविक्षत और गत सज्ञा हो गया और उसका सारथी भी मारा गया तो केकयी जो समर मे राजा के साथ थी स्वय सारथी बनी और रथ को समर गण से हटाकर दूर जगल म गई जहाँ दशरथ की चिकित्सा की और उसे होश मे लाया गया। उस समय राजा दशरथ ने केकयी को दो वर दिये थे और कहा था कि जब भी वह वर मांगेगी तो निश्चय पूर्ण किए जावेंगे।

राजा दशरथ इन वरों के देने की बात भूल गया था और ज्येष्ठ पुत्र होने के नाते परिजनाग्रहवश राम को उत्तराधिकारी बनाना चाहता था।

दशरथ को केकयी परिणय कालिक शर्त याद थी अत. केकयी को अपने प्रेम पाश मे बांधकर राम को राजतिलक देने के लिए उसे राजी कर लिया था और भरत को दूरदर्शिता वश शत्रुघ्न के साथ ननिहाल भेज दिया गया था और उनकी अनुपस्थिति में राजतिलक की तैय्यारी कर दी गई वाल्मीकि का इस सम्बन्ध मे स्पष्ट श्लोक है—

विप्रोषितश्च भरतो यावदेव पुरादितः
तावदेवाभिषेकस्ते प्राप्त कालो मतो मम ॥

वा०रा०मा अयो० सर्ग ४ श्लोक २५

अनिष्ट भय के कारण राजतिलक का सूचना तक भरत के नाना केकयाधिपति अश्वपति को नहीं दी गई, साथ ही कूटनीति वश मिथिलाधिपति जनक को भी सूचना नहीं भेजी गई। किन्तु केकय देश से ही केकयी के साथ आने वाली दासी मन्थरा को विवाह कालिक शर्त अच्छी तरह याद थी, अत: राम के राज्याभिषेक का समाचार पाते ही वह खिन्न हो गई और ऐसा होना केकय की नागरिक होने तथा केकयी की अनुचरी होने के नाते सर्वथा स्वाभाविक ही था। वह कब चाह सकती थी कि उसकी स्वामिनी केकयी राज माता न बनकर कौशल्या की अनुगामिनी बनकर रहे। साथ ही उसके अन्दर स्वदेश प्रेम ने भी जोर मारा वह यह कि केकयी के विवाह की शर्त के अनुसार अयोध्या के राज्य का उत्तराधिकारी उसके देश का नाती होवे न कि विदेह राज्य का नाती बनाया जावे।

जब मन्थरा ने केकयी को दोनों वरों व विवाह प्रति बन्धनी याद दिलाई और अपनी जन्म भूमि केकयी को मान प्रतिष्ठा की भावना उस मे भरी तो एकदम उसके विचारों ने पलटा खाया और अपने पुत्र भरत को अयोध्या का निष्कटक राज्य सौंपने की हठ ठान ली। साथ ही मन्थरा के निम्न प्रस्ताव को भी स्वीकार कर लिया—

तस्माज्ञ लक्ष्मणे राम
पाप किञ्चिद करिष्यति।
रामस्तु भरते पाप
कुर्यादेव न सशय।
तस्माद् राजगृहादेव
वन गच्छतु राघव।
एतद्धि रोचते मह्य।
भशं चापि हित तव ॥

अयोध्याकाण्ड

[illegible] के अनुसार केकयी कोप भवन मे प्रविष्ट हो गयी और अपना रूप विकराल बना लिया।

राम के राजतिलक की बात को राजा दशरथ इस समय तक केकयी से छिपाये हुये था जब रात्रि को महल में गया तो केकयी का समाचार पाकर एकदम घबरा गया और अयोध्या मे भारी अनिष्ट होने की चिन्ता से व्याकुल हो उठा। दशरथ ने अब यह समझ लिया कि राम को राज्य देने की उसकी भारी योजना विफल हो गई। यदि केकयी को प्रसन्न किये बिना राम का राज्याभिषेक किया गया तो केकयाधिपति अश्व पति को जैसे ही पता चलेगा वह क्रुद्ध होकर अयोध्या पर चढ़ाई कर देगा। अत. इस खतरे के कारण दशरथ को राम के राज्याभिषेक का कार्यक्रम स्थगित करना पड़ा और केकयी को दिए हुये वरों को पूरा करना पड़ा। यदि वह ऐसा न करता और इधर राम व लक्ष्मण भी राज्य पर आने वाले भावी संकट को दृष्टि मे रखकर बन न चले गये होते तो अयोध्या और केकयी देशों के बीच युद्ध होना निश्चित ही था।

राम ने भारी सूझ-बूझ से काम लिया और बन का रास्ता पकड़ा। लक्ष्मण भ्रातृप्रेमाधिक्य के कारण तथा सीता पति सग के आकर्षणवश राम के साथ बन चल दिये। उधर राजा दशरथ मोह और अनिष्ट की चिन्ता के कारण मृत्यु के ग्रास बन गये।

राम के महान् त्याग का भरत पर भारी अनुकूल प्रभाव पड़ा और जैसे ही अयोध्या पहुंचे तो तुरन्त स्थिति का अध्ययन कर उसने स्पष्ट घोषणा कर दी कि भले ही माता के विवाह काल मे प्रतिबन्ध कुछ भी निश्चित किया गया हो किन्तु अयोध्या की जनता जब राम को राज्य देना चाहती है तो मैं प्रजा की इच्छा का मान करते हुये अपनी गद्दी के अधिकार को छोड़ता हूं और बन मे आवश्यक सामान साज सेना के साथ जाकर राम का वहा ही राज्याभिषेक कराऊंगा।

उस समय राम का बन गमन निश्चय ही उसकी भारी दूरदर्शिता का परिचायक था यदि वह ऐसा न करता तो अयोध्या मे भारी राज कलह विग्रह और केकय देश के साथ युद्ध की सम्भावना थी। ★

महान् दयानन्द

हे दयानन्द तू अस्त हुआ पर ज्योति नहीं बुझ पायी है।
तेरे ज्ञान की ज्योति किरण सारी धरती पर छायी है।
छांटी अवसादों की बदली, काटी पाखण्डों की काई है।
भारत की जनता पर तेरी अब तक प्रतिमा छायी है।
हे दयानन्द !

तेरे पदचिन्हों पर चलकर जाने कितने इंसान बनें।
ज्ञानी, विज्ञानी, शूरवीर, गुणवान, और विद्वान बनें।
भारत के वे रत्न बनें और धरती के आलोक बने।
जिनके हर जगह निशान बने जो स्वय देश की शान बनें।
हे दुख दर्द भरे इसान जगो सत्ज्ञान प्रकाश बन आई है।
हे दयानन्द !

स्वामी के पदचिन्हों पर चलकर आखिर मंजिल पा जायेंगे।
युग युगों तक हम दयानन्द का आलोकित मार्ग दिखायेंगे।
'सत्यार्थ प्रकाश' की महिमा अब तक धरती पर छायी है।
हे दयानन्द !

—विजयदयाल सक्सेना, बहराइच

श्रद्धा क्या है ?

कुछ हार्दिक उद्गार

श्रद्धा अन्धविश्वास नहीं है वरन् श्रत+धा अर्थात् सत्य को धारण करना है। वेद ने कहा है "श्रद्धां देवा यजमाना वायु गोपा उपासते। श्रद्धां हृदय्ययाकूत्या श्रद्धया विन्दते वसु॥" (ऋ० १०-१५१-४) श्रद्धा दम्भ आडम्बर से परे हृदय की एक सूक्ष्म पवित्र, उच्चतम भव्य सत्य भावना है जिसकी उपासना विद्वान् यजमान और बलवान करते हैं और मनवांछित फलों को प्राप्त करने के निमित्त तर्क और परीक्षा के आधार उसे प्राप्त करते हैं।

—सम्पादक]

★

१) श्रद्धा ही जीवन की तन्त्री का तार, आधार विश्व का सार भूत है।

(२) श्रद्धा ही मानव जीवन की प्रतिमा का मूर्तिमान् रूप अनुरूप है।

(३) श्रद्धा ही जीवन धन सर्वस्व की रत्न ज्योतियों की मणि माला का मूर्तिमान शब्द सागर की रत्न मण्डित मणिमाला है।

(४) श्रद्धा ही मानव जीवन की सर्वाङ्ग उन्नति का प्रेरणाप्रद पथप्रदर्शक और हिय हर्षक अनादि नाद निनाद है।

(५) श्रद्धा हो आर्य जीवन की ज्योति का आधार सार सरिता सुमन मन मोहक अद्वितीय रत्न मण्डित आशादीप है।

(६) श्रद्धा ही धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष सुखों की सिद्धि का मूल मन्त्र है।

(७) श्रद्धा ही मानव जीवन की जगमगाती ज्योति का अमृत कलश ा रस बिन्दु आधार अवलम्बन का त्न सार है।

(८) श्रद्धा ही देश धर्म पर मर मिटने वाले धर्म वीरों के जीवन का पथ दर्शक और मृत्यु पर विजय प्राप्त रने का मन्त्र मूल रत्न ज्योति का द्वितीय हार शृङ्गार है।

(९) श्रद्धा हो माता की ममता ा साकार रूप है।

(१०) श्रद्धा ही माता की प्रसव स की वेदनाओं में आशारूपी जीवन तन्त्री के तार का मन्द मन्द मुस्कान ।

(११) श्रद्धा ही विश्व के मानव ाज के जीवन सरिता का सार है।

२) श्रद्धा ही आदि सृष्टि से लेकर तक के इतिहासकारों की लेखनी प्राण पियूष है।

(१३) श्रद्धा विद्यार्थी जीवन की ति का पथ-प्रदर्शक है।

(१४) श्रद्धा हो पूर्व जन्मों की ाओं को जानने की एक अनुपम ी है।

(१५) श्रद्धा ही जीवन की जटिल याओं को सुलझाने का एकमात्र मन्त्र तन्त्र तमसोमा ज्योतिर्गमय का अनादि नाद है।

(१६) श्रद्धा हो मन, वचन, और की पवित्रता का आधार है।

(१७) श्रद्धा जीवन सुमन का ेक अकल्पनीक उत्कर्ष है।

(१८) श्रद्धा यज्ञ, दान, तप, जप, अनुष्ठानों की सिद्धि का लक्ष्य ललाम अमृत सागर की मोती है।

(१९) श्रद्धा मानव जीवन का अनुपम प्रकाश पुञ्ज दीप है।

(२०) श्रद्धा वेदों, शास्त्रों, उपनिषदों, गीता, रामायण, महाभारत आदि धर्म ग्रन्थों के मन्थन का अमृत कण है।

(२१) श्रद्धा मानव जीवन की नैया का प्रबल पतवार है।

(२२) श्रद्धा इष्ट सिद्धियों की वरदाता है।

(२३) श्रद्धा स्नेह दीप का अनुपम अनुरूप रूप है।

(२४) श्रद्धा विश्व के आधार का हिय हर्षक रूप मन्त्र नाद है।

(२५) श्रद्धा जीवन की बसन्त बहार का अलौकिक रूप है।

(२६) श्रद्धा परमात्मा की भक्ति का और पारब्रह्म के दर्शन का सूत्र रूप है।

(२७) श्रद्धा दाम्पत्य जीवन की ललित कला का काव्य कुञ्ज है।

(२८) श्रद्धा आर्य जीवन की झलक है और श्रुति सुधा सार है।

(२९) श्रद्धा के बिना जीवन पृथ्वी पर भार समान है।

कहां तक लिखूं श्रद्धा की महिमा अगम्य अपार है।

श्रद्धा से समृद्ध होकर अपने जीवन को उन्नति के मार्ग में आगे ले चलो, अपने जीवन में, वाणी में, आंखों में रोम रोम में श्रद्धा को रमाकर भक्ति भावना में भरो अखिल विश्व के मानव समाज के कल्याण में अपना कल्याण समझ कर जीवन समर में प्रति पल आगे बढ़ो।

वेद भगवान् का और विश्व वन्दनीय महर्षि दयानन्द का मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् रामचन्द्र जी का और योगीराज श्रीकृष्ण जी महाराज का आज के मानव समाज के नाम आज के स्वर्ण प्रभात मे यह उपदेश है कि ऐ मनुष्यों श्रद्धा से समाहित होकर मन मन्दिर मे परमात्मा को प्राप्त करके मोक्ष-मुक्ति को प्राप्त कर अमर बनो।

श्रद्धा का दीप जलाकर आर्य बनो और विश्व के ओर छोर में आर्य जीवन का निर्माण करो।

प्रिय भाइयो और बहनों श्रद्धालु बनो श्रद्धाहीन जीवन का कोई मूल्य नहीं है।

श्रद्धा के बिना जीवन सर्वथा बेकार है मृतक समान है।

इस संसार का सार श्रद्धा है अतः अपने जीवन के रोम रोम मे श्रद्धा को रमाकर मनोवाञ्छित फल को प्राप्त करो।

★ पं० धर्मवीर आर्य, झण्डाधारी

माया की मदिरा का त्याग करो अपने जीवन को सरल, सरस, सलिल, सालीन, सौम्य, सौन्दर्ययुक्त रसमय सुमतियुक्त सार्थक, साहस पूर्ण मतवाला वाटिका के सुमन सम सक्रिय, प्रमार्ग का पथिक बना लो।

श्रद्धा सहित धर्म को धारण करो इसी में अपना और विश्व का कल्याण निहित है।

आज श्रद्धा की सरिता मे गोता लगाकर श्रद्धावान् बनकर अपने आप को और परमात्मा को अन्तर आत्मा में देख लो।

आज विश्व के मानव समाज से और आर्य समाज से विनम्र शब्दो मे निवेदन है कि श्रद्धा के बिना महर्षि दयानन्द की खेती सूख रही है श्रद्धालु बन कर दान दो, अतिथि सेवा करो, यज्ञमय जीवन बनाकर अक्षय सुखों को प्राप्त कर अमर बनो, यह वेद का और महर्षि दयानन्द का अमर सन्देश है। श्रद्धा हो जीवन है अश्रद्धा मृत्यु है। श्रद्धा ही मानव जीवन की सफलता का पथ प्रदर्शक है।

●

अब तक जिन ग्राहकों का इस वर्ष हेतु शुल्क समाप्त है, उन्हें काफी समय पूर्व ही चन्दा समाप्ति की सूचनायें भेज दी गई हैं। कुछ कृपालु ग्राहकों ने अपना शुल्क भेज भी दिया है; परन्तु अधिकांश अभी शेष है।

अतएव अनुरोध है कि अविलम्ब आप महानुभाव अपना अपना शुल्क १०) रु० मनीआर्डर द्वारा भेजने का कष्ट करें।

डाक दर में असाधारण वृद्धि हो जाने के कारण वी० पी० भेजने पर ग्राहकों पर अनावश्यक व्यय भार पड़ता है, अतएव कृपया अपना धन मनीआर्डर द्वारा ही भेजिए।

मनीआर्डर के कूपन पर अपनी ग्राहक संख्या अवश्य लिखिये।

—व्यवस्थापक

विश्व-वृत्तिका

मारीशस वासियों की पत्र-पत्रिकाओं में बढ़ती हुई रुचि

हेम्बर्ग—पश्चिम जर्मनी के एक सर्वेक्षण के अनुसार अफ्रीका मे ४०० पत्र पत्रिकायें प्रकाशित होती हैं, जिनमें से कुछ हिन्दी और गुजराती जैसी भारतीय भाषाओं में हैं, तो अन्य यूरोपीय, हिन्दू अग्रेजी, और चीनी भाषाओं में।

अफ्रीका के सबसे छोटे और सबसे नवीनतम राज्य मारीशस मे औसतन पाठकों की संख्या सबसे अधिक है। इसकी आबादी साढ़े सात लाख है। इसमें ९५,००० स्थानीय पत्र पत्रिकायें बिकती हैं। हिन्दी मे भी यहां अनेक पत्र-पत्रिकायें हैं।

दक्षिण अफ्रीका को छोड़कर अन्य किसी अफ्रीकी देश मे इतने अधिक पाठक नहीं हैं।

सड़क और पानी पर चलने वाली दमकल

मेंज—जर्मनी की एक इन्जीनियरिंग फर्म ने एक ऐसी दमकल बनाई है जो साधारण दमकलों की भाति सड़क पर भी चलती है, और एक मोटरबोट की तरह पानी पर भी। ससार मे इससे पहले ऐसी दमकल कहीं नहीं बनाई गई।

यह सड़क पर ६० मील प्रतिघण्टे की रफ्तार से चलती है। पानी पर इसकी रफ्तार १५ मील प्रति घण्टे के करीब होती है।

इसका उपयोग जहाजों में लग जाने वाली आग को बुझाने के अतिरिक्त समुद्र या नदी मे गिर जाने वाले हवाई जहाजों मे लगने वाली आग को बुझाने के लिये भी किया जाता है।

संसार का सबसे आश्चर्य जनक स्कूल

एम्टेरडम—इस नगर में स्कूलों के पास इतनी बसों की व्यवस्था नहीं हो सकती थी कि हर विद्यार्थी, शिक्षार्थी को उसके वांछित स्कूल तक लाया ले जाया जा सके। इस दिक्कत का समाधान करने के लिये एक ऐसे विद्यालय की परिकल्पना की गई जहां सभीप्रकार की शिक्षा और प्रशिक्षण दिया जा सके।

स्कूल की इस एक ही इमारत में आठ स्कूल होंगे जिनमे घड़ी साजी, कोयलुज, मुद्रण और कला, काष्ठ शिल्प और सजावट, पाक शास्त्र, केश विन्यास, सुथरा बिक्री और बुनाई, सिलाई, कढ़ाई के प्रशिक्षण के लिये प्रबन्ध होंगे।

स्कूल में एक तकनीकी लाइब्रेरी होगी। छः मंजिला व्यायामशाला होगी, तैरने के लिये कुण्ड होगा। एक ५०० व्यक्तियों की क्षमता वाली नाट्यशाला होगी, जिसमे वर्ष भर मे १०० दिन नाटक स्कूल वाले खेलेंगे और बाकी दिन यह किराये पर दी जा सकेगी। इसी नाट्यशाला में सिनेमा आदि भी दिखाने का प्रबन्ध होगा।

हालैण्ड का यह आश्चर्यजनक स्कूल ११५ फुट ऊंचा ६३० फुट गहरा और १६८ फुट चौड़ा होगा और उसमे २५०० विद्यार्थी रात्रि को २५०० विद्यार्थी दिन मे शिक्षा पा सकेंगे। स्कूल मे २५० शिक्षक होंगे और इसकी इमारत १९६९ तक बनकर तैयार हो जायगी।

ससार का सबसे बड़ा बांध

रावलपिंडी-विश्व का सबसे बड़ा बांध पाकिस्तान मे बनाया जा रहा है।

यह बांध पाकिस्तान की राजधानी से ४० मील दूर तरबला नामक स्थान पर होगा। इसमे ११०० करोड़ मोटरिक टन जल सचित करने की क्षमता होगी।

यह बांध सन् १९७६ मे बन कर पूरा हो जायगा और उस समय इससे ४० लाख एकड़ जमीन की सिंचाई हो सकेगी। पजाब और सिंध के रेतीले और नमकीले इलाकों मे सिंचाई सम्भव होने पर उस इलाके मे भी खेती होने लगेगी जिन्हे आजकल रेगिस्तान माना जाता है। इस बांध द्वारा २१ लाख किलोवाट बिजली उत्पादित होगी।

इस बांध योजना पर ८५ करोड डालर यानी लगभग ६४० करोड़ रुपया खर्च होगा। इसे निर्मित करने के लिये इटली, फ्रांस, ब्रिटेन, पश्चिम, जर्मनी अमरीका और कनाडा ने सहायता देने का वायदा किया है।

★

वृक्ष निर्जीव हैं

[विचार विमर्श के इस स्तम्भ मे इस विषय पर अन्य प्रामाणिक लेखों का हम स्वागत करेंगे। विद्वानों से अनुरोध है कि वे इस प्रकार [illegible] विचार अवश्य व्यक्त करें सम्पादक]

'वृक्षों में जीव है या नहीं' आर्य जगत् के विद्वानों के मध्य यह एक विवाद ग्रस्त प्रश्न हुआ है। कतिपय विद्वानों का मत है कि वृक्ष सजीव हैं जब कि कतिपय विद्वान इस मत के पोषक हैं कि वृक्ष निर्जीव हैं। आर्य जगत् के विद्वान माननीय प० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय एम० ए० ने अपनी स्व रचित "हम क्या खायें घास या मांस" पुस्तक मे यह सिद्ध किया है कि वृक्षों मे जीव नहीं है। श्री रामप्रताप अगई (सुल्तानपुर) का एक लेख आर्यमित्र दि० २६-५-६८ मे "वृक्ष सजीव हैं" शीर्षक मे प्रकाशित हुआ जिसमे उन्होने वृक्षों को सजीव सिद्ध करने का प्रयास किया है।

आर्यसमाज वैदिक धर्म का अनुयायी है। वैदिक धर्म की आधार शिला वेद है। वेद ईश्वरीय ज्ञान है, जो सांख्य० ५/५१ के सूत्र "निजशक्त्यभिव्यक्तेः स्वतः प्रमाण्यम्" की मर्यादानुसार अपनी ही शक्ति से प्रकाशित होने के कारण स्वत प्रमाण है। इस तथ्य पर आर्य जगत् के समस्त विद्वान सहमत है।

'वृक्षो मे जीव है या नहीं' यदि इस विषय पर कोई वेद मन्त्र प्रमाण स्वरूप मिलता है तो समस्त आर्यजगत के विद्वानों को तदनुकूल तथ्य को एक मत होकर ग्रहण कर लेना चाहिये। क्योंकि पारस्परिक प्रेम तथा मधुर भाषण का मूल कारण सज्ञान (समता ज्ञान) है जैसा कि अ३ ३-३०-४ मे मे ईश्वर का उपदेश है कि—

येन देवा न वियन्ति नो च विद्विषते मिथः।
तत्कृण्मो ब्रह्म वो गृहे सज्ञानं पुरुषेभ्यः ।।

"जिसमे विद्वान् जनों एक दूसरे से पृथक नहीं होते और एक दूसरे से द्वेष नहीं करते, उस सज्ञान (समता) का बोध कराने वाले ब्रह्म (वेदज्ञान) को तुम्हारे हृदय मे हम प्रकाशित करते हैं।"

उपरोक्त विषय पर मै एक वेद मन्त्र (निम्नाङ्कित), आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के भाषार्थ सहित, आर्य जगत् के विद्वानों के समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूं। कृपया विचार पूर्वक मनन करें। इस वेद मन्त्र का भाष्य महर्षि ने अपनी स्वरचित पुस्तक "ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका" के सृष्टि विद्या विषय मे किया है।

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहा भवत्पुनः।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि ।। ४ ।।

भावार्थ—(त्रिपादूर्ध्व उदैत्पु०) पुरुष जो परमेश्वर है सो पूर्वोक्त त्रिपाद

★रामेश्वरदयाल, पिपरगांव

जगत मे ऊपर भी व्यापक हो रहा है। तथा सदा प्रकाश स्वरूप, सब मे भीतर व्यापक और सबसे अलग भी है। (पादोऽस्येहाभवत्पुनः) इस पुरुष की अपेक्षा से यह सब जगत् किंचित् मात्र देश में है और जो इस ससार के चार पाद होते हैं वे सब परमेश्वर के बीच में ही रहते हैं। इस स्थूल जगत का जन्म और विनाश सदा होता रहता है और पुरुष तो जन्म विनाश आदि धर्म से अलग, और सदा प्रकाशमान है (ततो विष्वङ् व्यक्रामत् अर्थात् यह नाना प्रकार का उसी पुरुष के सामर्थ्य से उत्पन्न हुआ है। (साशनान) सो दो प्रकार है; एक चेतन जो कि भोजनादि के लिये चेष्टा करता और जीव सयुक्त है और दूसरा अनशन अर्थात् जो जड़ और भोजन के लिये बना है। क्योंकि उसमे ज्ञान ही नहीं है और अपने आप चेष्टा भी नहीं कर सकता। परन्तु उस पुरुष का अनन्त सामर्थ्य ही इस जगत् के बनाने की सामग्री है कि जिससे यह सब जगत् उत्पन्न होता है। [illegible] पुरुष सर्व हितकारक होके [illegible] प्रकार के जगत् को अनेक प्रकार से आनन्दित करता है। वह पुरुष [illegible] प्रकाश वाला, ससार मे [illegible] होके धारण करके, देख रहा और वह सब जगत् को सब प्रकार से आकर्षण कर रहा है।"

उपरोक्त वेद मन्त्र के भाष्य मे महर्षि ने स्पष्ट लिखा है कि नाना प्रकार का जगत दो प्रकार का है-

(शेष पृष्ठ १० पर)

बाल-विनोद

मनोरंजन के साथ-साथ ज्ञान वर्धक

[जो बालक बालिकाएं इस स्तम्भ के लिए महापुरुषों के वचन व ज्ञानवर्धक बातें संकलित करके भेजेंगे, उनके नाम सहित वे प्रकाशन छापे जाएंगे। —सम्पादक]

●

(१) ऊंट के पेट में पानी जमा करने के लिये लगभग ८०० छोटी-छोटी थैलियां होती हैं।

(२) पक्षियों में सबसे अधिक आयु तोते की होती है। दूसरा नम्बर कौए का है।

(३) केंचुए की लगभग दो हजार जातियां होती हैं और यह संसार के अधिकांश देशों में पाया जाता है।

(४) मनुष्य अपने पूरे जीवन में साठ और सत्तर टन के बीच अनाज खाता है।

(५) चील के अतिरिक्त अन्य कोई प्राणी सूर्य की तरफ नहीं देख सकता।

(६) रेडियो की विद्युत लहरें एक सेकिण्ड में १,८६,००० मील की दूरी तय कर लेती हैं।

(७) [illegible] रेफ्लेसिया नाम का एक फूल पैदा होता है। यह फूल संसार में सबसे बड़ा है। इस फूल का व्यास अट्ठारह से चौबीस इञ्च तक होता है।

(८) कंगारू जानवर आस्ट्रेलिया में पाया जाता है। इसकी विचित्र सूरत को देखकर एक विदेशी ने आस्ट्रेलिया के एक मूल निवासी से इसका नाम पूछा। उस आदमी ने अपनी भाषा में कहा 'कानगारू'। इसका अर्थ होता है 'मुझे मालूम नहीं'। और तभी से यह जानवर कंगारू कहलाने लगा।

(९) संसार भर के चूहे एक वर्ष में १८०,००,००० रुपये का अन्न तथा अन्य खाद्य पदार्थ खा जाते हैं या नष्ट कर देते हैं।

(१०) सैकरीन शक्कर से ५०० गुनी मीठी होती है और यह कोलतार से बनाई जाती है।

(११) दुनिया की सबसे बड़ी गैलरी रामेश्वरम् के मन्दिर की है, जिसकी लम्बाई ४००० फीट है।

अहिंसक देव दयानन्द

★

ऊषा की लाल किरणों का भव्य प्रकाश फैला।
चमकी स्वर्णिम लताएं चमकी कुसुम बेला॥
मधुकर अम्भोज ऊपर गुंजित भले सुहाये।
था दृश्यमनोहक ध्वाक्षि भी लुभाये॥

कल-कल नदी का जल था किंचित नहिं हलचल थी।
रवी रम्यता बढ़ाती वृक्षावलि सुफल की॥
पिक की पुकार सुन्दर महमहा रही फुलवारी।
जहां एक "दिव्य ज्योति" निकली कोपीन-धारी॥

गङ्गा का भव्य तट था जहां घाट भी बट सुघट था॥
महान था वह यति उसका व्रत भी प्रकट था॥
करके स्नान तरते जल गहन में विचरते।
नीरोपरि लेटे थे, मन में प्रमोद भरते॥

ऋषि भक्त वृन्द भय से, क्रन्दन पुकार उठे।
प्रचण्ड 'मक्र' हिंसक जबसे निहार उठे॥
थर-थर सुगात्र कूजे तम तोम था दृगों में।
हाहाकार छाया कलरव [illegible] में॥

यह घातकी है जन्तु बहु पातकी निरन्तर।
बचिये! 'दयाद्र पुरुष' हे महान् ऋषिवर॥
करुणा भरी पुकार सुन बोले बाल ब्रह्मचारी।
निर्द्वन्द्व भाव भीनि' मधुरिम गिरा उचारी॥

किंचित बिगाड़ उसका जब हम नहीं करेंगे।
तो निश्चित है कष्ट तन का हम नहीं सहेंगे॥
आंखें अनुचर मूंदी छाया परम सन्नाटा:
जलस्थली में आया अति शोक ज्वार भाटा॥

अमृत भरे विलोचन मृदु मूर्ति-निहारी।
अवलोक मक डूबा "कृतान्त'-क्रूर भारी॥
क्या? इसे कहते हैं 'अहिंसा' की प्रतिष्ठा।
धन्य ऋषि तुम्हारी सत्य प्रतिज्ञा-निष्ठा॥

—कात्यायन आर्य

क्या वृक्ष निर्जीव हैं?

(पृष्ठ ९ का शेष)

१—एक चेतन जो कि भोजनादि के लिए चेष्टा करता और जीव संयुक्त है। २—अशन अर्थात् जो जड़ और भोजन के लिये बना है। क्योंकि उसमें ज्ञान ही नहीं है और अपने आप चेष्टा भी नहीं कर सकता।

प्रथम प्रकार के जगत को महर्षि ने 'चेतन' भोजनादि के लिये चेष्टा करने वाला, तथा 'जीव संयुक्त' लिखा है और दूसरे प्रकार के जगत को 'जड़', भोजन के लिये बना, तथा 'ज्ञान व चेष्टा' से शून्य लिखा है। इससे स्पष्ट होता है कि चेतन, जीव संयुक्त वाले जगत् के लिये दूसरे प्रकार का जगत् लिये बना है, वह 'जड़' तथा ज्ञान व चेष्टा शून्य (निर्जीव) है। ज्ञान व चेष्टा का अभाव 'निर्जीव' होने का अकाट्य प्रमाण है। क्योंकि ज्ञान व चेष्टा जीवात्मा के स्वाभाविक गुण हैं। गुण व गुणी में समवाय सम्बन्ध होता है। गुणी की सिद्धि उसके स्वाभाविक गुणों की विद्यमानता से ही होती है। महर्षि ने भोजन के लिये बने हुये जगत में ज्ञान व चेष्टा का न होना लिखा है। इससे यह निर्विवाद सिद्ध होता है कि वनस्पति जगत् के वृक्ष, पौधे इत्यादि जीव संयुक्त नहीं हैं अर्थात् निर्जीव हैं। वनस्पति जगत् ही चेतन जगत के लिये भोजन के निमित्त बना है। ईंट पत्थर मेज कुर्सी आदि भोजन के लिये नहीं हैं। चेतन जगत् के जीवन का आधार एक मात्र वनस्पति जगत् ही है। कृपया तुलनात्मक दृष्टिकोण से अवलोकन कीजिये—

जगत्

प्रथम प्रकार	द्वितीय प्रकार
१—चेतन	१—जड़
२—भोजनादि के लिये चेष्टा करता	२—भोजन के लिये बना
३—जीव संयुक्त	३—ज्ञान व चेष्टा रहित (निर्जीव)

पाठक गण कृपया विचार करें कि जीव संयुक्त चेतन जगत् का जीवन पूर्ण रूपेण जीव रहित भोजनार्थ बने जड़ जगत् पर आधारित है। अतः सर्व हितकारक परमात्मा इन दोनों प्रकार के जगत् को अनेक प्रकार से आनन्दित करता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा किये गये उपरोक्त वेद मन्त्र के भाष्य के प्रकाश में उक्त विवाद ग्रस्त प्रश्न का इस निष्कर्ष के साथ समाधान होता है कि "वृक्षों में जीव नहीं" है। मुझे आशा है कि आर्य जगत् के सम्पूर्ण विद्वान् इस निष्कर्ष पर एक मत होकर यह घोषणा करेंगे कि "वृक्ष निर्जीव हैं। यदि किन्हीं महानुभावों को उक्त वेद मन्त्र एवं महर्षि के भावार्थ पर अन्यथा विचार हो तो वे कृपया प्रकाशित करें।

मुस्लिम महिला पुत्र सहित वैदिक धर्म में सम्मिलित

११-७-६८ कानपुर—आर्य समाज गोविन्दनगर कानपुर के अध्यक्ष आर्य नेता श्री देवीदास आर्य ने एक मुस्लिम महिला को पुत्र सहित उनकी इच्छानुसार शुद्ध करके हिन्दू धर्म में प्रवेश कराया। इस महिला ने श्री देवीदास आर्य के यहाँ प्रार्थनापत्र देकर धर्म परिवर्तन के लिये निवेदन किया था। यज्ञ हवन के पश्चात् इस युवती को वैदिक धर्म की दीक्षा दी गई और इनका नाम शान्तिदेवी व उसके पुत्र का नाम राजेन्द्रकुमार रक्खा गया। उपस्थित सैकड़ों स्त्री पुरुषों ने इस युवती के हाथ से प्रसाद ग्रहण कर उसका स्वागत किया।

इस अवसर पर श्री देवीदास आर्य ने भाषण देते हुए कहा कि वैदिक धर्म में महिलाओं को लक्ष्मी, सरस्वती व दुर्गा का स्थान प्राप्त है, अन्य मतों में इतना सम्मान प्राप्त नहीं।

प्रचार, निर्वाचन

चेरकी बाजार मवा में श्री शिवचर आर्य भजनोपदेशक की द्वारा चार पाँच दिनों तक आर्य समाज का प्रचार हुआ। यहाँ की जनता ने प्रभावित होकर आर्यसमाज की स्थापना की। सर्व सम्मति से निम्न लिखित पदाधिकारी निर्वाचित हुए।

सभापति श्री अमरनाथप्रसाद, उपसभापति श्री डा० ताराचन्द्र, प्रधान मन्त्री श्री विन्ध्येश्वरीप्रसाद, उप मन्त्री श्री राजेश्वर प्रसाद, व श्री गया प्रसाद कोषाध्यक्ष श्री शंकर प्रसाद, लेखा निरीक्षक श्री युगेश्वर प्रसाद. पुस्तकाध्यक्ष श्री नन्दकुमार प्रसाद।

विदेशी पादरी भारत छोड़ो सम्मेलन

अखिल भारतीय आर्य युवक परिषद्; १५ अगस्त स्वाधीनता दिवस के अवसर पर क्रांति के प्रथम चरण के रूप में नई दिल्ली में "विदेशी पादरी भारत छोड़ो सम्मेलन" का आयोजन कर रही है। जिसकी अध्यक्षता डा० यशपालसिंह एम० पी० तथा उद्‌घाटन लाला रामगोपाल शालवाले एम० पी० करेंगे भाग लेने के इच्छुक युवक निम्न पते पर पत्र व्यवहार करें।

—प्रधानसचिव अखिल भारतीय आर्य युवक परिषद ओंकार भवन, स्वामी विवेकानन्द मार्ग सान्ताक्रुज बम्बई-५४

विदेशों में वेद प्रचार की आवश्यकता

इंडोनेशिया में कई लाख कम्युनिस्ट वैदिक धर्मी बन गये प्रतिदिन कई हजार की शुद्धि हो रही है।

गत वर्ष जब मैं दक्षिण पूर्वी एशिया में प्रचार के लिये गया हुआ था तो इंडोनेशिया से मुझे निमन्त्रण मिला कि वहाँ के कई लाख निवासी हिन्दू बनने के लिये तैयार बैठे हैं, परन्तु उन दिनों इंडोनेशिया में युद्ध की आग भड़क रही थी, इसलिये मलेशिया सरकार ने मुझे वहाँ जाने की आज्ञा न दी परन्तु इंडोनेशिया वालों से पत्र व्यवहार चलता रहा। इंडोनेशिया के प्रांत बाली में गत २१ वर्षों से पं० एम० डी० शास्त्री बड़ी लग्न से कार्य कर रहे हैं। जावा, बाली और दूसरे भागों में गायत्री मन्त्र द्वारा सारे कार्य प्रारम्भ होते हैं। अब वहाँ के रेडियों से वेद मन्त्रों का गायन होता है। जो नया समाचार वहाँ से मिला है उससे ज्ञात होता है कि वहाँ जावा के पचास लाख कम्युनिस्ट वैदिक धर्म में प्रवेश पा चुके हैं और हजारों की संख्या में अभी भी शुद्धि का जा रही है।

बात यह है कि इंडोनेशिया को कम्युनिस्ट पार्टी को नष्ट कर दिया गया वहाँ की सरकार ने यह कानून बना दिया है कि इंडोनेशिया में रहने वालों को हिन्दू-धर्म, इस्लाम अथवा ईसाईमत में प्रवेश करना होगा। कम्युनिस्टों की संख्या लगभग दो करोड़ थी और ये लोग हिन्दू धर्म को अपने विचारों के अधिक निकट समझते हैं इसलिये वे हिंदू मत को ग्रहण करते चले जा रहे हैं।

शुद्धि का जोर बढ़ने के साथ उन लोगों को वैदिक धर्म से भली-प्रकार अवगत करने के लिये प्रचारकों और साहित्य की बड़ी आवश्यकता है। जो सज्जन साहित्य भेजना चाहें वे इस पते पर भेज सकते हैं—

—Shri N. D Pandit
Bhuvana saras Wati
Denpasar Bali

इसी प्रकार से मलेशिया में लाखों हिन्दुओं के लिये प्रचारकों एवं साहित्य की आवश्यकता है। आज से चार सौ वर्ष पूर्व मलेशिया एक हिन्दू देश था, जो अब मुस्लिम देश हो चुका है क्योंकि वहाँ प्रचारक नहीं पहुंचे। गत वर्ष जब मैंने मलेशिया के भिन्न २ भागों में वेद की बात सुनाई तो उन लोगों ने बहुत श्रद्धा से मुझे सुना। अब मुझे पुनः निमन्त्रण आया है कि मैं मलेशिया पहुंचू। अब तो मैं अफ्रीका जा रहा हूं। अतः अगले वर्ष ही मलेशिया जाना हो सकता।

आर्य जगत को विचार करना चाहिये कि विदेशों में वेद प्रचार की कितनी, बड़ी भारी आवश्यकता है।

—आनन्द स्वामी सरस्वती

सराहनीय दान लखनऊ के अस्पतालों में वैदिक धर्म प्रचार

अमीनाबाद लखनऊ के थोक वस्त्र विक्रेता श्री पन्नालाल राजकिशोर ने 'दैनिक ईश्वर प्रार्थना उपासना' पुस्तिका की २००० प्रतियां नगर व निकटवर्ती क्षेत्रों के अस्पतालों के लिये प्रदान की है। पुस्तिका के प्रकाशक श्री जवाहरलाल आर्य विभिन्न अस्पतालों के रोगियों के पास जा जा कर यह पुस्तिका भेंट कर रहे हैं।

शुभ विवाह

अखिल भारतीय आर्य युवक परिषद् के महासचिव विद्याभास्कर रामनारायण शास्त्री एम० ए० का पाणिग्रहण संस्कार ४ जुलाई ६८ को जलालपुर मण्डी शाहजहाँपुर से श्री प० शिव दत्त शर्मा वैद्य की सुपुत्री वेदवती आर्या के साथ सम्पन्न हुआ। यह संस्कार आर्य जगत के सुप्रसिद्ध विद्वान् आचार्य डा० हरिदत्त शास्त्री उपकुलपति गुरुकुल ज्वालापुर तथा सुमेधाविन शास्त्री ने सुसम्पन्न कराया।

पचास रु० इनाम

क० बेबू उम्र द वर्ष ऊंचाई ३० इंच पिता का नाम श्री नानेराम रंग गोरा बच्चो सफेद पट्टीदार बड़ी पहने है ५ ता० को गुरुकुल अयोध्या से भगकर चले गया है। जन्मस्थान नौगनवां भारतपुर है। जो सज्जन हूंढ़ देंगे उन्हें मार्गव्यय के अतिरिक्त ५०) रुपये पुरस्कार दिये जायेंगे।

विश्वनाथमित्र ..... आयुर्वेदाचार्य
गुरुकुल अयोध्या

आर्य कन्या महाविद्यालय के लिये पचास हजार रुपयों का बाग दान में भेंट

आर्य कन्या महाविद्यालय के संस्थापक वेद पथिक प० धर्मवीर जी आर्य झण्डाधारी ने मत्यूपुर मधुवन में तीन लाख रुपयों से निर्मित निमलखा पक्खर पर अपना सुन्दर आम का बाग आर्य कन्या महा विद्यालय के भव्य भवन निर्माण के लिये गायत्री महायज्ञ के अनुष्ठान पर दान दे दिया है।

कन्या महाविद्यालय की आधार शिला सैकड़ों आर्य विद्वानों, संन्यासियों के बीच वेद मन्त्रों की पवित्र ध्वनि से रखी गई है।

आर्य कन्या महाविद्यालय के स्थाई कोष के लिये वेद पथिक प० धर्मवीर जी आर्य झण्डाधारी ने ५ लाख रु० एकत्र करने का शुभ संकल्प किया है।

अब तक ३५०००) का दान वेद प्रचार, शुद्धि एवं यज्ञ आदि अनुष्ठानों पर प० धर्मवीर जी कर चुके हैं। साहित्य निर्माण की दिव्य दिशा में भी आप बहुत बड़ा कार्य कर चुके हैं और दिन रात कर रहे हैं।

दुखद घटना

आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार पटना के मान्य मन्त्री श्री प० बद्रीनारायण जी शर्मा दिनांक २९-६-६८ को पटना से दिल्ली जा रहे थे। मार्ग में दिलदार नगर स्टेशन के करीब हृदय की गति अवरुद्ध हो जाने से ट्रेन में ही दिवंगत हो गये। उनका शव आर्य समाज फतेहपुर को श्री अजयकुमार जी तथा श्री हरिप्रसाद जी शास्त्री द्वारा प्राप्त हुआ और जीप द्वारा पटना भेज दिया। आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार के प्रधान डा० दुखनराम जी सभा की अन्तरङ्ग में दिल्ली आये थे—वे तुरन्त पटना चले गये।

सार्वदेशिक सभा की अन्तरङ्ग सभा ने, सभा प्रधान श्री प्रतापसिंह शूर जी बल्लभदास द्वारा शोक प्रस्ताव पर सदस्यों ने मौन खड़े होकर प्रभु से दिवंगत आत्मा की सद्‌गति के लिये प्रार्थना की और उनके परिवार के प्रति संवेदना प्रकट की।

बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री के निधन पर शोक प्रस्ताव

सर्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की दि० ३० जून की अन्तरङ्ग सभा मे भाग लेने के लिये पटना दिल्ली यात्रा में इलाहाबाद कानपुर के मध्य फतेहपुर स्टेशन के पूर्व चलती हुई रेलयात्रा मे हृदयगति के अवरुद्ध हो जाने के कारण बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री गुरुकुल महाविद्यालय बैद्यनाथ धाम के भूतपूर्व मन्त्री और अनेक शिक्षण संस्थाओं के संस्थापक, परिचालक एवं अनेक उच्चतर विद्यालयों के सेवा निवृत्त प्राचार्य, समाजसेवी, पत्रकार तथा वैदिक साहित्य के लेखक पं० श्री बदरीनारायण शर्मा का आकस्मिक देहावसान दि० २९ जून को अपराह्नकाल मे लगभग ५ बजे हो गया।

आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय की ओर से उनके शव को पटना लाने और मुंगेर मे पहुंचाकर अन्त्येष्टि संस्कार के विधिवत आयोजन की व्यवस्था की गई सभा कार्यालय से श्री प्रतिनिधि श्री अभयकुमार एवं दुर्गाप्रसाद जी तत्काल फतेहपुर भेजे गये। सभा की ओर से तत्काल सार्वदेशिक सभा, दिल्ली मे तो सम्पर्क स्थापित किया गया सभा के माननीय प्रधान श्री डा० दु[illegible]राम जी, जो देहली सभा की बैठक मे भाग लेने के लिये गये थे, उन्हें अवगत कराया गया और प्रधान जी ने उत्तरप्रदेश के सरकारी अधिकारियों और फतेहपुर के रेलवे पुलिस विभाग तथा अस्पताल के अधिकारियों से दूरभाष्य द्वारा सम्पर्क स्थापित करके उनके शव को आर्यसमाज के लोगों को अविलम्ब देने का निर्देश दिया। उन्होंने दूरभाष्य के द्वारा बिहार सभा कार्यालय के प्रयास के साथ-साथ उनके कनिष्ठ सुपुत्र कैप्टन नरदेव शर्मा तथा धर्मपत्नी को मिलिटरी अस्पताल जामनगर गुजरात मे इस घटना से अवगत कराया।

उनके करुणाजनक एवं आर्यसमाज की महत् सेवा के ममत्व के साथ देहावसान पर इस शोक सभा मे आर्य प्रतिनिधि सभा परिवार एवं पटना नगर के उपस्थित आर्यसमाजी शोकसंतप्त हैं।

हम परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिये प्रार्थना करते हुए शोक विह्वल परिवार के प्रति शोक संवेदना प्रकट करते हुये प्रभु से याचना करते हैं कि परिवार को शोक सहन करने की शक्ति दें।

आ. स. गया का शोक प्रस्ताव

रविवार दि० ७ जुलाई ६८ की यह शोक सभा बिहार राज्य आर्यप्रतिनिधि सभा के विद्वान महामन्त्री श्री बदरी नारायण शर्मा जी की असामयिक एवं आकस्मिक मृत्यु पर गहरा शोक संवेदना प्रकट करती है। ईश्वर से प्रार्थना करती है कि इनकी आत्मा को शान्ति दे, शोकमग्न परिवार स्वजन परिजन को धैर्य प्रदान करे।

शोक

आज दिनांक ३-७-६८ को दयानन्द माध्यमिक विद्यालय आर्य कन्या विद्यालय एवं दयानन्द विद्यालय रक्सौल के अध्यापिकाओं तथा छात्र छात्राओं एवं आर्य समाज के सदस्यों के बीच श्री राम नारायण लोहिया प्रधान, आर्य समाज रक्सौल के तत्वावधान में स्व० श्री पं० बद्रीनारायण शर्मा प्रधान मन्त्री बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा पटना के आकस्मिक निधन पर शोक सभा हुई।

शोक सभा में प्रस्ताव पारित कर दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिये प्रार्थना की गयी।

आर्यसमाज कलकत्ता

प्रधान—श्री कलियाराम जी गुप्त
उपप्रधान—श्री ओमप्रकाश जी गोयल व श्री पुनमचन्द जी आर्य
मन्त्री—श्री छबीलदास जी सैनी
उपमन्त्री—श्री अतुलकान्त जी गुप्त व श्री दशरथलाल जी गुप्त
प्रचारमन्त्री—श्री लक्ष्मणसिंह जी
कोषाध्यक्ष—श्री सत्यानन्द जी आर्य
पुस्तकाध्यक्ष—श्री रघुनन्दनलाल जी

वनिता विवेक

[पृष्ठ ५ का शेष]

पालन करना चाहिए। इनका व्यायाम प्राणायाम तथा घर के कार्य स्वतः करने चाहिये। नारी स्वस्थ है तो घर के सब कार्य सुव्यवस्थित हो जायेंगे। मत समझिये कि अल्पभक्षण से बल व आयु का नाश होता है। जो बहिनें स्वाद के लिये मिर्च मसालों वाली चाटें खाती हैं, वे सर्वदा पेट के रोगों से पीड़ित रहती हैं इसलिये जिह्वा पर संयम करना चाहिए। शारीरिक विज्ञान की जानकारी के लिए आयुर्वेद आदि का अध्ययन करना चाहिए।

पांचवा आभूषण वेद ने सुरत्ना होना बताया है। गुण ही रत्न और सुरत्न हैं। सदाचार मीठी वाणी, सहनशीलता, प्रेमभाव, पवित्रता, शुद्धता, सेवा ये सब सुरत्न हैं, जिनसे नारियों को अपने आप को सजाना चाहिये।

और सब से अन्त मे वेद ने कितनी खरी बात कही नारी का बड़ा आभूषण है मातृत्व। निस्सन्तान नारी सब साधन सम्पन्न होने पर भी कहीं अपूर्ण है। यदि अधिक सन्तान की कामना नहीं है या उनके पालन पोषण के साधन नहीं हैं तो फिर संयमित जीवन व्यतीत करना चाहिये। जो महिलायें कृत्रिम उपायों का उपयोग करती हैं वे अपने सुन्दर स्वास्थ्य को नष्ट करती हैं। सन्तान जितनी भी हों वह सब सुन्दर चरित्रवान् हों। इसलिए मातृत्व रूपी आभूषण से नारी को अलंकृत होना चाहिए।

ये तो नारी के गृह क्षेत्र की बात हुई। घर से बाहर नारी जाए तो क्या सुन्दर वेश भूषा पहन कर न जावे। क्या सभाओं व उत्सवों मे नारी बाह्य शृङ्गार के बिना ही जावे—पति के साथ जावे तो फिर कैसे जावे तो बहनों सुनो वेद ने कितना सुन्दर विधान बताया है—

(इमाः नारीः) ये स्त्रियां (आ अञ्जनेन सर्पिषा) अञ्जन और स्नेहन सहित (अग्रे) प्रथम (स-विशन्तु) भीतर जायें (योनिं आ-रोहन्तु) सवारियों पर चढ़ें।

अर्थात् अञ्जन और स्नेहन सहित बाहर जायें। नारियों का सामाजिक क्षेत्र मे प्रवेश वर्जित नहीं है। वे स्वच्छ सुन्दर वस्त्रों को धारण करें, सुरमा काजल, सिन्दूर, मेहंदी आदि अञ्जन, तेल आदि स्निग्ध पदार्थों का सेवन भले ही करें। वेश भूषा का सादा व सुन्दर होना और बात है तथा उससे अश्लीलता का प्रदर्शन करना एक अन्य बात है, जिससे सावधानी बरतना चाहिए। मर्यादा सहित काजल मेहंदी का प्रयोग उचित है, किन्तु ओंठ रंगना, पाऊडर अथवा और तड़क भड़क से पुरुषों की वासनाओं को भड़काना सर्वथा अनुचित और वेदानुकूल वर्जित है। माताओं के निमित्त सवारी की व्यवस्था मना नहीं है। वहां तो वेद का विधान है नारी प्रथम चढ़े पुरुष बाद में सभाओं मे नारी का प्रवेश पहले और पुरुष पीछे से आये। ये मर्यादायें वेद ने नारी के सम्मानार्थ बनाई हैं। जैसे विवाह मे नारी आगे चलती हैं, पुरुष पीछे वैसे ही पारिवारिक व सामाजिक क्षेत्र मे नारियों को विदुषी बन कर उनका सुसंचालन करना चाहिए। स्त्रियां जब अपने जीवन का सुनिर्माण कर लेती हैं और पथ प्रदर्शन करती हैं तो उनके पीछे उनके परिवार समाज व राष्ट्र सब ठीक हो जाते हैं और जब नारियां ही पथ भ्रष्ट हो जाय तो सब बिगड़ जाता है, इसीलिए किसी कवि ने कितना सुन्दर कहा है—"आधार राष्ट्र की हो नारी सुभग सदा हो।"

और मैं तो प्रभु से सदा यही प्रार्थना करता हूं। कान्ति देवी नेत्र बन्द कर आत्ममुखी हो गई। सत्सङ्ग मे आयी हुई बहनों ने भी श्रद्धा से नेत्र बन्द कर लिये और कान्ति देवी का मधुर स्वर गूंजने लगा—

प्रभु तेरी धरा पर,
ऐसी हों वें सुनारियां।
कर्मों मे होवें उत्तम,
धर्म की हों प्यारियां॥

लगी रहें वेदों के अपने,
महकाएं जीवन क्यारियां।
सुपत्नियां बन कर करें,
अपने घरों की रखवारियां॥

अश्रुहीन रहें [illegible] में,
बाहें की हों दुलारियां।
स्वच्छता की होकर साधक,
स्वस्थता की करें तैयारियां॥

सुरत्नों से होवें विभूषित,
दिलों पर करें सवारियां।
जननी बनें जनक जनें,
गूंजे घरों में किलकारियां॥

सदाचार के अञ्जनों पर
ही करें बलिहारियां।
स्नेह अमृत धारण करें,
भगायें द्वेष की बीमारियां॥

सभाओं मे अग्रगणी होवें,
राष्ट्र की बनें प्रहरियां।
लक्ष्य पहचानें जीवन का,
मोक्ष की हों अभिलाषियां॥

★

आसंसोल का बाजार ४ फुट भूमि में धंस गया

कलकत्ता, ८ जुलाई—आसनसोल में कंण्डोआ बाजार का कुछ भाग जो ४०० गज लम्बा और ३०० गज चौड़ा है परसो रात्रि ११ बजे से भूमि में धस रहा है। अब तक ५०० से अधिक इमारतें ४ फुट नीचे धस चुकी हैं।

कई इमारतों मे जिनमें लगभग ५ हजार आदमी रहते हैं दरारें पड़ गई हैं पुलिस इस क्षेत्र के लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचा रही है। इस स्थान से १२५ गज दूर रेल की पटरी गुजरती है। इस पर चलने वाली रेलों को धीरे-धीरे चलाया जाता है।

पुलिस ने सारे क्षेत्र को घेरे मे ले लिया है। कुछ महीने पूर्व उस क्षेत्र मे एक लोहे व इस्पात कम्पनी की वर्कशाप भूमि मे धस गई थी।

पुलिस का कहना है कि ज्योंही भूमि जमीन मे धसने लगी तो ५ जबरदस्त धमाके सुने गये। इसके बाद गड़गड़ाहट गूंज जारी रही। लोग डर के मारे अपने घरों से बाहर निकल आये।

गोरक्षा समिति, पुरी के शंकराचार्य बहिष्कार करेंगे

नयी दिल्ली, भारत सरकार द्वारा गठित उच्चस्तरीय गोरक्षा समिति का पुरी के शंकराचार्य स्वामी निरंजनदेव तीर्थ ने बहिष्कार करने का निश्चय किया है।

पुरी के शकराचार्य ने पत्रकारों के सामने अपने निर्णय की घोषणा की और कहा कि सरकार द्वारा गठित समिति में गो रक्षा अभियान समिति के सदस्य, जिसमें राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ के सर सघ चालक श्री माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर भी शामिल हैं, इस समिति की विचारशैली से असन्तुष्ट होकर समिति की बैठकों में भाग नहीं लेंगे।

सरकार द्वारा गठित समिति की गतिविधि के सम्बन्ध मे आज सर्वदलीय गो रक्षा महाभियान समिति की बैठक हुई, जिसमें निर्णय किया गया कि सरकारी समिति का बहिष्कार किया जाय, और गोवध बन्दी आन्दोलन को आरम्भ किया जाय। इस आन्दोलन की विस्तृत रूपरेखा निकट भविष्य मे तैयार की जायगी।

साईकल चोर को ६ वर्ष कैद

जालन्धर २ जुलाई—महिला मजिस्ट्रेट श्रीमती बलजीत कौर ने थाना बस्ती बावा खेल के बिलगा गांव के एक व्यक्ति महिन्द्र सिंह को चोरी के चार मुकदमों में ६ वर्ष कैद का दण्ड दिया है।

बताया जाता है कि दोषी के नियंत्रण से चोरी के ३ साईकल तथा एक रेडियो बरामद हुआ।

अभिनेता धूम्रपान से भयभीत

बम्बई ७ जुलाई। फिल्म उद्योग के सूत्रों के अनुसार फिल्म अभिनेताओं में धूम्रपान के प्रति बड़ी तेजी से घृणा होती जा रही है। इस बात का प्रमाण यही है कि हाल के कुछ महीनों में ही सुनीलदत्त, धर्मेन्द्र शशि कपूर, विश्वजीत, राजेश खन्ना व प्राण ने धूम्रपान बिल्कुल त्याग दिया है। राजेन्द्र कुमार इस शृङ्खला की अन्तिम कड़ी है।

धूम्रपान के कुप्रभावों से भयभीत होकर ही इन्होंने धूम्रपान त्याग दिया है।

योग को व्यापार का साधन न बनायें

नयी दिल्ली रविवार (प्र) भारतीय लोक परिषद् द्वारा आज बोधुर्गी पर आयोजित एक विशिष्ट योग परिचर्चा मे कई विद्वानो ने भाग लिया। योगाभ्यास की कक्षा हुई और श्री लाजपत शर्मा सचिव अन्तरराष्ट्रीय योगाश्रम ने योग की महत्ता बताते हुए अनेक सामान्य योगाश्रमो का प्रदर्शन किया।

अन्तरराष्ट्रीय योग विद्या-संस्थान के सचालक डा० कुमारपाल ने योग की शास्त्रीय व्याख्या करते हुये उसको आधुनिक एव वैज्ञानिक पृष्ठ भूमि प्रस्तुत की तथा उसे मन शरीर को स्वस्थ रखने का प्राचीन एवं अर्वाचीन श्रेष्ठतम साधन बताया।

जैन मुनि श्री सुमेरमल जी ने चेतावनी दी कि कहीं योग साधन जो आध्यात्मिक सदर्भ मे प्रारम्भ हुआ था। मात्र प्रदर्शन अथवा व्यापार की वस्तु बनकर न रह जाय। उन्होने अष्टाग योग की चर्चा करते हुए योग को चिरन्तन आनन्द का साधन बताया।

चांद मे हीरे

लन्दन ९ जुलाई—अपोलो चांद परियोजना पर काम कर रहे प्रख्यात अंग्रेज भौतिकी शास्त्री प्रोफेसर सैम्युल तोलेंस्की के अनुसार चांद धूली मे चमकने वाले पदार्थ हीरे हो सकते हैं।

प्रोफेसर तोलेंस्की ने कहा है कि अमरीकी राकेट द्वारा चांद से लायी गई सामग्री जब उन्हे मिलेगी तो उन्हे आशा है कि वह अपनी प्रयोगशाला में उससे हीरे देख सकेंगे।

प्रो० तोलेंस्की के अनुसार ये हीरे बहुत कीमती नहीं होंगे और इनसे अन्तरिक्ष में हीरों की प्राप्ति के लिये दौड़ शुरू नहीं होगी। उन्होंने कहा कि 'वे बहुमूल्य रत्न न होकर मात्र औद्योगिक ही होंगे और वे गन्दे और काले होंगे।'

सामाजिक व राजनैतिक कार्यकर्त्ता—श्री कुंजबिहारी राठी जी का देहावसान !

अत्यन्त दुःख है कि आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तरग सदस्य व अधिष्ठाता आर्य भास्कर प्रेस के बड़े भाई श्री कुंजबिहारी जी राठी संसद सदस्य का ५८ वर्ष की आयु मे. १३ जुलाई को प्रात. बम्बई मे लम्बी बीमारी के बाद देहावसान हो गया। आर्यसमाज जिला लखीमपुर के पुराने कार्यकर्त्ताओ में आपकी गिनती थी, श्री राठी जी जनसघ के भी कर्मठ कार्यकर्त्ता थे। वे उत्तर प्रदेशीय जनसघ के कोषाध्यक्ष थे। बाद मे आप जनसघ से राज्य सभा के सदस्य निर्वाचित हुए। आर्यसमाज गोला गोकरननाथ को उनसे पर्याप्त आर्थिक सहायता मिला करती थी। उनके वियोग से जहाँ जनसघ को महान धक्का लगा है, वहाँ आर्यसमाज को भी महान् क्षति पहुची है। पर दैव मे किसी का वश नहीं चलता। होनी होकर रहती है। हम आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से और 'आर्यमित्र परिवार' की ओर से श्री निर्मलचन्द्र राठी जी को उनके भ्रातृ वियोग मे हार्दिक शोक सहानुभूति प्रकट करते है। परमपिता परमात्मा दिवगत आत्मा को शान्ति और शोक सतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करे यही प्रार्थना है

—सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा मन्त्री

'घूँसे बाजी'

लखनऊ, ७ जुलाई। युवक कांग्रेसी कार्य कर्ताओं मे कोई १५ मिनट तक घूसेबाजी चली। राज्य के युवक कांग्रेस सयोजक श्री रामू सवाल ने बैठक बुलाई थी। इस बैठक मे युवक कांग्रेसियों के लिये कांग्रेस में ३३ प्रतिशत स्थान रखने के प्रश्न पर विचार विमर्श हो रहा था। इसी समय युवक कांग्रेसी एक दूसरे पर गरम हो गये। सभापति ने बीच मे ही बैठक समाप्त कर दी।

बताया जाता है कि कुछ युवकों ने श्री सांवल पर आरोप लगाया कि वे केवल अपने पिट्ठुओं को ही बोलने का अवसर दे रहे हैं. इस पर कुछ युवक कांग्रेसी भड़क उठे और नौबत मारपीट तक पहुंच गई।

—आर्य समाज कवले (गोवा)
प्रधान—श्री मनोहर एल. बांदोडकर
उप प्रधान—श्री काशीनाथ विठो नाइक
मन्त्री—श्री गुरुदास धवलकर
कोषाध्यक्ष—श्री बाबली जी कपिलेश्वर

वेद-प्रचार-सप्ताह

८ अगस्त से १६ अगस्त १९६८ तक

श्रावणी पर्व, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, बलिदान स्मृति एवं स्वाधीनता दिवस समारोह पूर्वक मना कर वैदिक धर्म का सदेश जन जन तक पहुंचाइये

श्रीमन्नमस्ते !

इस वर्ष "वेद प्रचार सप्ताह' मिति श्रावण शुक्ल १५ से भाद्रपद कृष्णाष्टमी स० २०२५ तदनुसार दिनांक ८ अगस्त से १६ अगस्त १९६८ दिन गुरुवार से शुक्रवार तक मनाया जायगा। सप्ताह का कार्यक्रम निम्न प्रकार है—

आर्यसमाजों को चाहिये कि वे अभी से इस सप्ताह को सफल बनाने का भरसक प्रयत्न करें। इस कार्य में स्थानीय महिला आर्यसमाज, आर्यकुमार सभा, आर्यवीर दल तथा आर्य शिक्षा संस्थाओं आदि का पूर्ण सहयोग प्राप्त करना चाहिये। जहां आर्यकुमार सभाएं तथा आर्यवीर दल न हों, वहां वह स्थापित किये जाने चाहिये। वेद प्रचार सप्ताह पूरे श्रावण मास चलाये जाएं जिससे विद्वानों का अधिक लाभ उठाया जा सके।

श्रावणी का महत्व

आर्यसमाज के संस्थापक, वैदिक विज्ञान के अद्वितीय विद्वान् वैदिक धर्म के महान प्रचारक, मानवता को मतान्धता, एवं अन्ध विश्वासों के अन्ध कूप से निकालकर बुद्धिवाद एवं मानववाद के शुद्ध वातावरण में श्वास लेने की पुनीत प्रेरणा के प्रदाता, आध्यात्मिक एवं आधिभौतिक स्वतन्त्रता के महान सूत्रधार तथा राष्ट्र धर्म के प्रबल प्रेरक महर्षि दयानन्द के महान् व्यक्तित्व को समझें और श्रद्धा समन्वित हो ऋषि के चरण चिन्हों पर चलने की चेतना देना, इस पर्व का महान् उद्देश्य है।

वेद प्रचार विधि

इतने बड़े उत्तरप्रदेश मे आर्यसमाज के प्रचार कार्य को व्यवस्थित करने के लिये सवा लाख रुपया प्रति वर्ष चाहिये। प्रान्त में डेढ सहस्र से अधिक आर्यसमाजें हैं। यदि इनका प्रत्येक सदस्य एक-एक रुपया वेद प्रचार के लिये इस श्रावणी पर्व पर सभा को दान करना अपना कर्तव्य समझे, तो वेद प्रचार की समस्या बहुत कुछ हल हो सकती है। वेदप्रचार के लिये जो धन संग्रहीत किया जाय, उसे सभा कार्यालय मे भेजने की कृपा करें।

श्रीकृष्ण-जन्मोत्सव

१६ अगस्त १९६८ भाद्रपद कृष्णाष्टमी, आर्य राजनीति के धुरन्धर विद्वान्, योग विद्या के प्रबल ज्ञाता पतनोन्मुख भारत के महान् आत्मा तथा भारत के निर्माता आचार्य अङ्गिरस घोर के शिष्य महात्मा कृष्ण का शुभ जन्म दिवस है। इस महापुरुष के नाम पर आज भी जो पाखण्ड लीला हो रही है, उसके समूल नाश का दायित्व आर्यसमाज पर ही विशेषरूप से है। श्रीकृष्ण की महत्ता के लिये उनकी वैदिक शिक्षाओं का प्रचार किया जाना चाहिये।

प्रातः ७॥ बजे से आर्य मन्दिरों मे "आर्य पर्व पद्धति" के अनुसार विशेष यज्ञ किया जाय। रात्रि को आर्य मन्दिरो मे अथवा सार्वजनिक स्थानों मे योगिराज श्रीकृष्ण के जीवन पर व्याख्यान तथा उनके गीता ज्ञान और कर्म योग का विवेचन किया जाय।

कार्यक्रम—८ अगस्त से १६ अगस्त १९६८ तक

प्रतिदिन प्रात. सूर्योदय वेला मे दैनिक सत्संग का आयोजन किया जाय, और इस सत्संग को यथासम्भव प्रतिदिन निरन्तर चालू रखने की प्रतिज्ञा भी करनी चाहिए।

मध्याह्न—वैदिक साहित्य वितरण तथा आर्यसमाज के नवीन सभासद् बनाने का विशेष रूप से प्रयत्न किया जाय।

रात्रि—मन्दिरों मे वेद कथा का विशेष आयोजन हो। वेदों के आधार पर विश्व बन्धुत्व, मानववाद, बुद्धिवाद, साम्यवाद, समाजवाद एवं राष्ट्रधर्म आदि विषयो पर विशेष व्याख्यानों का आयोजन किया जाय।

शारीरिक व्यायाम, प्रदर्शन एवं शक्ति सघर्ष—इस सप्ताह मे आर्यवीर दल एव आर्यकुमार सभाओ को शारीरिक व्यायाम के प्रदर्शन तथा वक्तृत्वकला विकसित करने की दृष्टि से भी विशेष आयोजन करने चाहिये।

श्रावणी कार्यक्रम

पारिवारिक यज्ञ—श्रावणी (८ अगस्त) के दिन प्रत्येक आर्य परिवारो मे प्रातः पारिवारिक यज्ञ करें। प्रात ७॥ बजे से समस्त आर्य नर नारी, युवक तथा बालक बालिकायें आर्य मन्दिर मे उपस्थित होकर पुनीत पर्व मनाएं—वेद की पावन ऋचाओं का पाठ किया जाये।

रात्रि को आर्य मन्दिरो मे वेदकथा का भी विशेष आयोजन होना चाहिये।

हैदराबाद सत्याग्रह धर्मयुद्ध एव वैदिक धर्म के समस्त बलिदानियों की पुण्य स्मृति मनाकर उनके प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित की जाये।

स्वतन्त्रता

महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा अन्य आर्य जनों के प्रयत्न से भारत स्वतन्त्र हुआ। १५ अगस्त को स्वाधीनता दिवस मनाकर भारत की स्वाधीनता की रक्षा की प्रतिज्ञा लीजिये—आर्यसमाज ने देश की स्वाधीनता के संग्रामों में सर्वाधिक बलिदान किया है। देश मे प्रजातन्त्र के समुचित विकास, भ्रष्टाचार निवारण, पञ्चमांगी तत्व निरोधादि कार्यों में आर्यसमाज को पूर्ण सहयोग देना चाहिये।

टिप्पणी—(१) सप्ताह के आरम्भ से आर्य मंदिरों पर नया आर्यध्वज लगाना चाहिये।
(२) इस सप्ताह को अधिक प्रभावपूर्ण व सार्थक बनाने के लिये हमारा आग्रह है कि प्रत्येक आर्य समाज एक सूची उन महानुभावों की तैयार करे, जिनका आर्यसमाज से अथवा उसके अधीनस्थ संस्थाओं से, शिक्षणालयों आदि से सम्बन्ध रहा हो और इस समय आर्यसमाज के सभासद न हों। ऐसी सूची की एक प्रतिलिपि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के कार्यालय को भेजी जावे।

निवेदक—

प्रकाशवीर शास्त्री एम. पी.
प्रधान

सच्चिदानन्द शास्त्री एम. ए.
मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

जुआ खेलते हुए एक दर्जन पुलिस कर्मचारी गिरफ्तार

दिल्ली पुलिस के १२ कर्मचारी एक सरकारी क्वार्टर मे जुआ खेलते हुए पकड़े गये।

जिन ग्यारह पुलिस कर्मचारियों को पकड़ा गया है उनमे एक असिस्टेंट सब इंसपेक्टर, एक हेडकांस्टेबिल, छह कांस्टेबिल, तीन चतुर्थ श्रेणी के पुलिस कर्मचारी हैं, इन ग्यारह के अतिरिक्त कांस्टेबिल चन्द्रबहादुर को भी हिरासत में ले लिया गया है, जिस क्वार्टर मे जुआ हो रहा था वह क्वार्टर चन्द्रबहादुर के नाम मे अलाट है।

यह क्वार्टर किंग्सवे कैंप स्थित न्यू पुलिस लाइन्स मे है, न्यू पुलिस लाइंस ही वह जगह है जो विशुद्ध रूप से पुलिस क्षेत्र है।

ये गिरफ्तारियाँ थाना किंग्सवे कैंप के थानेदार के नेतृत्व मे मारे गये एक छापे के दौरान की गयीं।

जो १२ पुलिसमैन जुए के अभियोग मे गिरफ्तार किये गये हैं वे सभी दिल्ली सशस्त्र पुलिस से सम्बन्धित हैं।

छापे के दौरान इनके पास से कुल मिलाकर ३१४ रु० भी बरामद किये गये।

इन रुपयों मे नाल के २० रुपये भी शामिल हैं।

कहानी-कुञ्ज

विधि का विधान

[महाशय जी भूल गये थे कि विधि का अपना एक विधान है जो सर्वथा उचित और न्याय सङ्गत है। जैसी करनी वैसी भरनी, बुरा करो या भला करो, उसकी स्वतन्त्रता है। न्यायकारी परमात्मा गुणगान से अपने न्याय नियम को कभी नहीं छोड़ता है—जो उस प्रभु को विस्मृत कर अधर्म मे प्रवृत हो दुष्कर्मों में रत होता है, उसे प्रभु अवश्य दण्डित करता है।

आर्यमित्र के कथाकुञ्ज मे ऐसी ही शिक्षाप्रद लघु कथाओ व एकाकी नाटिकाओं की आवश्यकता है। लेखक महोदय कृपया ऐसी ही रोचक रचनायें प्रकाशनार्थ भेजें। कथाओं के पात्र कल्पित होने चाहिए—

—सम्पादक]

★

महाशय हरबंसलाल एक मध्यम श्रेणी के व्यक्ति थे। उनके पिता कट्टर धार्मिक वृत्ति के थे, इसलिये हरबन्सलाल जी पर भी कुछ धार्मिक सस्कार पड़े थे। उनके पिता आर्य समाज के प्रचार में तन मन धन से पूरा सहयोग देते थे, अपने घर पर विद्वानों, सन्त महात्माओं को ठहराते थे, पारिवारिक सत्सङ्ग कराते रहते थे जिनके कारण बालक हरबन्सलाल के जीवन मे भी धर्म की छाप लगी थी। अपनी सम्पत्ति का अधिकांश भाग दान मे लगाने के कारण उनके देहान्त के पश्चात् उनके ५ पुत्रों व पत्नी को केवल पाँच २ हजार की अल्प राशि ही मिल सकी थी। महाशय हरबन्सलाल ने सम्पत्ति का भाग मिलते ही अपने को सम्मिलित परिवार से पृथक कर दिया था। हरबन्सलाल की पत्नी सन्तोषवती वास्तव मे यथा नाम तथा गुण को सार्थक करती थीं। बहुत सीधे सरल स्वभाव की नारी होने के कारण उसे पति की अनेक बातें सुनने को मिलती थीं क्योंकि वह व्यवहार कुशल नहीं थी और चतुराई से कोसों दूर रहती थी।

महाशय जी ने अपने पाँच सहस्र रुपयों को व्यापार मे लगाया। व्यवहार कुशल तो वे थे ही इसलिए उन्हे उसमे निरन्तर लाभ होता गया। ज्यों २ महाशय जी सम्पन्न होते गये, वे धर्म कर्म से दूर होते गए। पहले उनके घर में होने वाला दैनिक अग्निहोत्र बन्द हुआ, फिर धीरे २ सन्ध्या करना समाप्त हुआ और उसके पश्चात् समाज के अधिवेशनों मे आना रुक गया। यह दूसरी बात थी कि वे वार्षिकोत्सव मे पहले से कुछ अधिक धन देने लग गये थे। माँगने पर अपना चन्दा भी दे देते थे। घर में भौतिक वैभवों के बढ़ने के साथ २ महाशय जी के स्वभाव मे भी एक विचित्र परिवर्तन आ गया था। उनके हृदय मे दया के स्थान पर क्रूरता विराजमान हो गई थी। पहले वे भिक्षुकों को कुछ दे दिया करते थे, परन्तु अब उन्हे उनकी छाया तक से घृणा थी। अपनी घृणा को तर्क की आड़ में छिपाते हुए वे कहा करते थे 'अजी जब भगवान् इनके कुकर्मों का फल दे रहा है तो हम इन पापियों पर दया करके विधि के विधान मे क्यो हस्तक्षेप करे? कुछ लोग पीठ पीछे दबे स्वरो मे यह भी कहने लगे थे कि महाशय जी होटलो मे चोरी-चोरी शराब पीने लगे हैं, अण्डे और मास का भी सेवन करने लगे हैं। धूम्रपान तो उन्होंने खुल्लम खुल्ला करना प्रारम्भ कर दिया था। धर्म परायणा पत्नी ने जब टोक टाक की तो बदले मे बहुधे उसे गालियाँ सुनने को मिलीं तत्पश्चात महाशय जी उसे मारने पीटने लगे। अत्याचारों की शृङ्खला यहा तक बढ़ी कि एक दिन सन्तोषवती के प्राण पखेरू उड़ गये।

महाशय जी के पास पैसे की गरमी थी। उन्होंने तुरन्त एक अन्य सुन्दर युवती से विवाह कर लिया और अपनी पुत्रियों को कन्या गुरुकुल में भर्ती करा दिया। नयी नवेली सुन्दर पत्नी को प्रसन्न करने के लिये उन्होने व्यापार मे छल कपट की नीति को और अधिक अपनाया। ब्याज पर दिये गये रुपयों पर ब्याज बढ़ाया और क्रूरता से लोगों के मकान, जमीन आदि कुर्क कराये और फल स्वरूप पत्नी को आभूषणों से लाद दिया। अब उन्हे एक ही चिन्ता थी कि वे शीघ्र ही एक कोठी बनवाले और मोटर आदि खरीद लें। अपनी इच्छा की पूर्ति के लिये उन्होंने ठेकेदारी प्रारम्भ की। बड़े २ ठेके साझे मे लिये और एक दिन ससार ने देखा कि उनकी नयी पत्नी के नाम ललिता पर एक विशाल ललित भवन बनकर तैयार हो गया है और उसमे एक बढ़िया विदेशी कार खड़ी है। इस समय तक ललिता भी एक बालक की मा बन चुकी थी। महाशय जी ने कोठी के उद्घाटन पे नगर के बड़े २ धनियो, सेठों अधिकारियों और नेताओं को आमन्त्रित किया। वे यदि भूल गये थे तो आर्य समाज के अपने उन साथियो को जिनके मध्य में उन्होंने जीवन के प्रारम्भिक दिन बिताये थे। यहाँ तक कि गृह प्रवेश मे यज्ञादि को भी कोई स्थान नहीं दिया था क्योंकि उनकी दूसरी पत्नी ललिता को, जो फैशन की एक पुतली थी, यह सब स्वीकार नहीं था। और अधेड़ अवस्था मे दूसरे विवाह मे प्राप्त की गई सुन्दर पत्नी की इच्छा के विपरीत चलने का साहस अब महाशय जी मे नहीं था।

दिन बीतते चले गये। महाशय जी के चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ने लग गईं वे बूढ़े नजर आने लगे। उनका पुत्र सुधीर नगर के शिक्षालयों और कालिजों से डिग्रियाँ लेता हुआ स्थल सेना का एक उच्च अधिकारी हो गया। उसके मा बाप को अब एक ही चिन्ता थी कि व अपने इकलौते पुत्र का शीघ्रातिशीघ्र विवाह कर दें। पुत्रियों का विवाह तो वे बहुत पहले निपटा चुके थे। बिना मा की उन बच्चियों को वे साधारण परिवारों को सौंप चुके थे। गुरुकुल से निकलती हुई धार्मिक माता को उन बच्चियों ने अपने सद्ज्ञान और सेवाभाव से अपने २ घरों को स्वर्ग बना दिया था। न महाशय जी उन्हें कभी बुलाते थे न वे कभी मायके आती थीं। अपने पुत्र अनुराग के लिये वे आये दिन सम्पन्न परिवारो की लड़कियां देखने आया करते थे परन्तु उनका गणित ठीक नहीं बैठ रहा था। यदि लड़की सुन्दर होती तो परिवार वालों की हैसियत उन्हें ठीक न जचती। कहीं परिवार ठीक था तो लड़की का रग काला या साँवला होता निर्धनों का तो वे यह कहकर फटकार देते—

"क्यों जी तुम्हारी लड़की क्या सत्या है जिसके शरीर की सुगन्ध पर मुग्ध होकर राजा शान्तनु ने उसे स्वीकार कर लिया था।"

अन्त मे एक दिन ऐसा भी आया कि बड़ी धूम-धाम से अनुराग का विवाह भी हो गया। लेन देन मे लाखों के न्यारे ध्यारे हुए। महाशय जी ने सब कामों मे दिल खोल कर धन लुटाया केवल विवाह सस्कार कराने वाले पं० की दक्षिणा उन्हें भारी लगी। बल ७ रुपये देकर तथा ... मे यह कह कर कि आर्यसमाजी पण्डितों को लोभी नहीं होना चाहिये, विदा कर दिया। अनुराग के विवाह को अभी १० दिन ही हुये थे कि उसे आवश्यक तार आ गया और वह सेना के उच्च अधिकारी होने के निमित्त अनुशासन बद्ध वापस चला गया। नव दम्पति मे नित्य प्रेम पत्रों का आदान प्रदान होने लगा। एक वर्ष की अवधि के पश्चात अनुराग को पुनः दो मास का अवकाश मिला। उसने परिवार मे सूचना दी। सारे घर मे प्रसन्नता की लहर दौड़ गई।

आज महाशय जी की कोठी नयी दुल्हिन की भांति सजाई जा रही थी क्योकि उनका सुपुत्र आ रहा था। फर्श धोये जा रहे थे कमरों मे नयी सजावटें हो रही थीं। गाड़ी सन्ध्या सात बजे आती थी परन्तु ममता के लिये एक २ घड़ी वर्षों के समान लग रही थी उसका दिल अपने पति से मिलने के लिये—अतिशय व्याकुल हो रहा था। सहसा एक बड़ी कार कोठी के सामने रुकी जिसमे तीन सेनाअधिकारी उतरे और मन्द गति से भीतर चलने लगे। महाशय जी को सूचना मिली तो वे धड़कते दिल से बाहर आए सैनिक अधिकारियों के शांत चेहरों को देखकर महाशय जी घबड़ाकर बोले—"कहिये क्या बात है आप कैसे आये है, अनुराग तो सकुशल है।"

"हमे दु:ख है कि सहसा सुरङ्ग के फटजाने से कैप्टन अनुराग का देहान्त हो गया है, हम उनके शव को लाये हैं।"

महाशय जी पछाड़ खाकर वहीं गिर गये और सज्ञाहीन हो गये। ललिता कटे वृक्ष की भाँति गिर पड़ी। ममता ने माथा पीट लिया, सिन्दूर पोंछ डाला, चूड़ियां फोड़ डालीं, वह बिना पानी के मछली की तरह तड़पने लगी। सारे घर मे कोहराम छा गया। ममता को जब यह ज्ञात हुआ कि जिस समय सुरङ्ग फटी थी, उस समय अनुराग उसका अन्तिम प्रेम पत्र पढ़ने में मग्न था और उसी स्थिति मे पहाड़ी के नीचे

★ विक्रमादित्य 'वसन्त'

आर्य्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण स० एल.-६०
२० आषाढ़ ३० शक १८९० अंक क्र० ११
(दिनांक २१ जुलाई सन १९६८)

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

Registered No.L. 60
पता—'आर्य्यमित्र'
'५, मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष्य २२९९३ तार : "आर्यमित्र

अमृत वर्षा

महर्षि दयानन्द ने कहा था—

(१) जो उन्नति करना चाहो तो आर्यसमाज' के साथ मिलकर उसके उद्देश्यानुसार आचरण स्वीकार कीजिये नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा, क्योंकि हम और आपको उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना अब भी पालन होता है आगे भी होगा उसकी उन्नति तन, मन धन से सब जने मिलकर प्रीति से करें इसलिये जैसा आर्यसमाज आर्यावर्त देश की उन्नति का कारण है वैसे दूसरा नहीं हो सकता।

(२) सब तन्त्र सिद्धान्त अर्थात सार्वजनिक धर्म जिसको सदा से सब मानते आये, मानते हैं और मानेंगे भी इसीलिये उसको सनातन नित्य धर्म कहते हैं कि जिसका विरोधी कोई भी न हो सके।

(३) जो बातें सबके अनुकूल सबमें सत्य हैं उनका ग्रहण और और को एक दूसरे के विरुद्ध है उनका त्यागकर वर्तें वर्ताव नो जगत का पूर्ण हित हो।

(४) मनुष्य उसी को कहना जो कि मननशील होकर आत्मवत अन्यों के सुख दुख और हानि लाभ को समझे अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इस काम में चाहे उसको कितना ही दारुण दुख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी भले ही जावें परन्तु इस मनुष्यपन रूप धर्म से कभी पृथक न हो।

(५) धन्य वे मनुष्य हैं जो अनित्य शरीर और सुख दुखादि के व्यवहार में वर्तमान होकर नित्य धर्म का त्याग कभी नहीं करते।

प्रचार

बीरसिंह पुर पाली निकट कटनी मध्य प्रदेश में आर्य जगत के तपस्वी महात्मा श्री आनन्द स्वामी जी महाराज उनके साथ प्रसिद्ध आर्य भजनो पदेशक श्री प० इन्द्रसेन जी 'विश्व प्रेमी' कई दिनो तक वेद कथा करते रहे जिसमे हजारों नर-नारी इस सत्संग में उपस्थित होकर धर्म लाभ उठाते रहे इस नगर के वैष्णव मन्दिर मे भी श्रद्धेय महात्मा जी का वेदोपदेश हुआ। मन्दिर के पुजारी और सभी वर्गो के लोग इस सत्संग मे बराबर आकर उपदेश श्रवण करते रहे।

दब गया था।

आज महाशय जी पागलों की भांति मन की शान्ति के लिये भटक रहे हैं वे बड़े २ यज्ञ कर रहे हैं साधु महात्माओं को दान दे रहे हैं ललिता उदास सी खोई २ शून्य मे निहारती है, उसका फैशन विलास सब समाप्त हो गया है वह अब पति के किसी धार्मिक कार्य का विरोध नहीं करती। ममता सूख कर कांटा हो गई है उसे देखकर दोनों पर दुख का पहाड़ टूट पड़ता है, आँखों मे अश्रु प्रवाह बह उठता है और कभी २ महाशय जी एक अज्ञात भय से कांप उठते हैं उन्हे

बोध होने लगता है कि लाला ठेकेदारों मे अपने जिस साथी को उन्होंने विश्वासघात कर विषपान द्वारा मरवा दिया था और उसके धन पर धोखे से अधिकार कर लिया था कहीं वह तो नहीं अनुराग बन कर

सब आगे वे नहीं सोच पाते, उनके ओठों पर अनयास ही गीत की एक कड़ी बिखरे सुर हीन स्वरो मे आ जाती है—

कोई लाख करे चतुराई रे।
कर्म का ले। मिटे न मेरे भाई रे।

और वे दोनों हाथ जोड़कर उस सब महान शक्ति के सम्मुख नत मस्तक हो जाते हैं।

पाप क्या है ?

पाप की उत्पत्ति कैसे कब, कहां और क्यों होती है ?

पाप का परिणाम क्या होता है ? क्या पाप से बचा जा सकता है ? क्या उसे निर्मूल किया जा सकता है ? यदि हाँ तो कैसे ? पाप रहित जीवन से क्या मिलेगा ?

पाप पुण्य की भावनायें क्या यथार्थ है या कपोल कल्पनायें ? हमारे धर्मशास्त्र क्या कहते हैं ? आज की वैज्ञानिक मान्यतायें क्या सत्य का प्रदर्शन करती है ?

क्या आप इन सब प्रश्नों का उत्तर जानना चाहते हैं ? क्या आप अपने सद्ज्ञान मे वृद्धि चाहते हैं ?

यदि हां ! तो

श्रावणी पर्व पर

आर्यमित्र के विशेषांक

पाप-विमोचन अङ्क

की प्रतीक्षा कीजिए

इस सुन्दर विशेषाङ्क में ऋग्वेद के पाप विमोचन अङ्क की धारा प्रवाह रूप मे वेद कथा के अतिरिक्त 'पाप' पर वेद मन्त्रो की सुन्दर व्याख्यायें पढ़ने को मिलेंगी—

विशेषाङ्क की सीमित प्रतियां प्रकाशित की जा रही हैं—अपने आदेश तुरन्त भेजिये कहीं बाद मे निराश न होना पड़े। विशेषाङ्क का मूल्य एक रुपया वार्षिक ग्राहकों को सदैव की भांति निःशुल्क मिलेगा।

विद्वानों से प्रार्थना है कि वे अपने लेख आदि कृपया २५-७-६८ तक अवश्य भेज दें

--विक्रमादित्य 'वसन्त'
सम्पादक

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के लिये भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ मे कृष्णगोपाल शर्मा द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।

लखनऊ—रविवार श्रावण २० शक १८९०, भाद्रपद कृ० ३ वि० सं० २०२५, दिनाक ११ अगस्त १९६८ ई०

इस अंक में पढ़िए !

१—अध्यात्म-सुधा २
२—सम्पादकीय ३
३—सभा सार सूचनाएं ४
४—प्रान्तीय आर्यसमाजों का वक्तव्य ५
५—सार्व० दशम आर्य सम्मेलन ६
६—श्रावणी का यह पावन पर्व ७
७—साहित्य-सौरभ ८
८—पाप की उत्पत्ति कब हुई ? ९
९—महिला-मण्डल १०
१०—आर्य कुमार मंच ११
११—आर्यजगत १२
१२—हमारे पाठक क्या कहते हैं ? १३
साहित्य-समीक्षण १३
१३—कहानी कुञ्ज १५
१४—अमृत-वर्षा १६

वार्षिक मूल्य १०)

छमाही मूल्य ६)

विदेश में १ पौ०

एक प्रति २५ पै०

परमेश्वर की अमृत वाणी

कल्याण कारी सुखप्रद वेदवाणी को ही बोलो और जीवन सौंदर्य को धारण करो

★

नमिद्वोचेमा विदथेषु शम्भुवं मन्त्रं देवा अनेहसम् ।
इमां च वाचं प्रति हर्यथा नरो विश्वे द्वामा वो अश्नवत् ॥

[ऋ० १/४०/६]

१—देवाः हे विद्वानो ! विद्या के दानियो, देवजनो, दिव्यता के पुञ्जो ! !

२—[विदथेषु] ज्ञान यज्ञों में, सत्सगों मे, संघर्षों में

३—[नम्] उस [इन्] ही [शम्भुवं] शान्तिदायक, कल्याणकारी, सुखप्रद

४—[अनेहसम्] निर्दोष, यथार्थ, अबाधित, सत्य, स्थिर, रक्षा करने योग्य

५—[मन्त्रम्] मन्त्र, मनन करने योग्य सुविचार को [वोचेम] बोलो

६—[च] और [नरः] नरो, नरत्व से युक्त मनुष्यो, नायक गणो, लोगो, जनो

—७(इमां वाचम्) इस वाणी को

८—(प्रति-हर्यथ) प्रति-हरण करो, चाहो प्रत्येक अवसर पर प्राप्त करो

९—(वः) तुम्हे, तुम लोगों को (विश्वा इत् वामा) समस्त ही वाम, सारे ही सौंदर्य

१०—(अश्नवत्) प्राप्त हों, सेवनीय हों ।

वेद प्रचार सप्ताह में समस्त आर्य जन परमेश्वर की आज्ञा को शिरोधार्य करें और वेद के पठन-पाठन श्रवण, श्रावण से अपने परम धर्म का पालन करें । जिस दिन वेद की पावन ऋचाएं हमारे मन वचन और कर्म में अवतरित हो जाएगीं, हमारे जीवन शुद्ध पवित्र और निर्मल होकर जगमगाने लगेंगे और हमारे जीवन सौंदय से आकृष्ट होकर सम्पूर्ण विश्व आर्यत्व की ओर द्रुति गति से अग्रसर होगा ।

'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' की चिर साध की पूर्ति के निमित्त क्या हम वेद वाणी को विश्व व्यापक रूप दे सकेंगे ? परमेश्वर का दिव्य आव्हान हम से उत्तर मांग रहा है ।

वर्ष ७०

अवैतनिक सम्पादक—
विक्रमादित्य 'वसन्त'

अङ्क २७

अध्यात्म-सुधा

इन्द्र की सोम वर्षा से आत्म तृप्ति

वेद मंत्र–

अभित्वा वृषभा सुते सुतं सृजामि पीतये ।
तृम्पा व्यश्नुही मदम् ॥

[सामवेद मन्त्र १६१]

त्रिशोक ऋषिः इन्द्रोदेवता गायत्री छन्दः

पद-पाठ–

अभि त्वा वृषभ सुते सुतम् सृजामि पीतये ।
तृम्प व्यश्नुहि मदम् ॥

भावार्थ

[वृषभ] वृष्टि कर्त्तः [सुते] तैयार होने पर [सुतम्] सोम को [पीतये] पीने के लिये [त्वा] तुमको [अभि सृजामि] सर्वतः हर्ष्ये [तृम्प] तृप्त होने के लिये [मदम्] हर्ष, आनन्द मस्ती [व्यश्नुहि] प्राप्त करें।

प्रत्येक मनुष्य के भीतर एक आत्म तृषा है जिसकी तृप्ति के लिये वह जगत् मे भटका करता है। जिस प्रकार भौतिक रूप से प्यास जल से बुझती है, उसी प्रकार आध्यात्मिक तृषा सोम से तृप्त होती है। यह आत्म तृषा है जिसे बुझाने के लिए मानव अपने जीवन में व्यथित हो इधर उधर उसकी खोज करता है। प्रातः से सायं और रात्रि में भी मनुष्य जो उधेड़ बुन किया करता है उसके पीछे आत्म तृप्ति की एक तृषा है। यह अनबुझ प्यास है जो मिटती ही नहीं। मनुष्य से पूछा जाये तू रात दिन इस माया के चक्कर में, निन्यानवे के फेर में क्यों पड़ा हुआ है तो वह उत्तर देता है—

"सुख के लिए"

"सुख किस लिये"

"मन की शान्ति के लिये"

"मन की शान्ति किस निमित्त"

वह निरुत्तर हो जाता है। मूल में आत्म तृषा है जब वह मिट जाती है तो मनुष्य हर्षित होता है, आनन्दित होता है, पुलकित होता है।

अज्ञान वश मनुष्य उस आत्म तृषा को भौतिक साधनों से बुझाना चाहता है। शरीर सुख चाहता है मन शान्ति चाहता है। शारीरिक सुख के लिये धन धान्य कोठी, मोटर, रेडियो टेलीवीजन आदि भौतिक उपकरणों को मनुष्य सजोता है। मन के चैन के लिये वह यात्राएं करता है, कभी पर्वतों पर जाता है कभी जल विहार करता है, परन्तु वह अनबुझ प्यास तो वैसी की वैसी ही रहती है।

['एकमेव औषधि' 'सनातन ऋषित्व निष्ठावक सोपान' 'स्वादिष्ट मदिष्ट सोमरस' आध्यात्मिक सुधा स्तम्भ मे इन विषयों पर विगत तीन साधारण अङ्कों मे प्रकाश डाला गया है। उसी क्रम के अन्तर्गत 'सोम वर्षा से आत्म तृप्ति' पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत है। पाठक कृपया हमे सूचित करें कि ये सोम चर्चाएं उन्हे कैसी लगीं ? यदि इनमे सरसता है कहीं आत्म तृप्ति की अनुभूति है तो हम इस क्रम के अन्तर्गत 'सोम क्रीड़ा' 'सोम सहस्र धार' आदि चर्चाओं की शृङ्खला को आगे चलाए अन्यथा इस स्तम्भ के अन्तर्गत कुछ परिवर्तन करें।
—सम्पादक]

वेद ज्ञानामृत पान करने वाला इस बात का बोध करता है कि आत्म तृषा की तृप्ति से वह भिम आत्मानन्द को प्राप्त करेगा, वही उसके मन में शान्ति लाएगी- वही उसे शारीरिक सुख का बोध कराएगी इसलिये वह परमात्मा से आत्म तृषा बुझाने के लिये वेद मन्त्र के आधार पर प्रार्थना करता है–

"इन्द्र आ न पृक्ष से अस्माकं ब्रह्मोद्यतम्।
तत्वा याचामहे अवः शुष्णं यद्धन्न मानुषम्।"
[ऋ० १०-२२-७]

हे प्रभु तुम प्यासे के लिये जल सदृश हो। प्यास बुझाने की हमारी याचना को स्वीकार करो।

जब यह अन्तर्बोध हो जाता है कि प्यास बुझाने वाला एकमेव परमात्मा है और भीतर की प्यास अन्दर उत्पन्न होने वाले सोम रस से ही दूर होगी तो साधक की लगन उस परमात्मा के लिये विकसित हो जाती है। उसकी तड़प परमात्मा के लिये बढ़ जाती है। "दिल में लगन हो सच्ची और प्यार हो प्रभु का, तो हो नहीं सकता प्रीतम को हम न पाएं।

दिल में तड़प जो होगी बरसेंगे आप आँसू।
इन प्रेम अश्रुओं से प्रीतम को हम रिझायें॥"

साधक विरह वेदना में तड़पता है, प्रीतम का विछोह असहनीय है, नेत्रों से झमाझम अश्रुपात होने लगता है—

"आज हृदय में उठ-उठ आते
नयनों से हैं बहते जाते।"

वाली स्थिति हो जाती है। साधक वाणी से मौन है, परन्तु उसका हृदय रुदन करता है, वह अन्दर ही अन्दर पुकारता है–सूरदास के शब्दों में—

निश दिन बरसें नयन हमारे
रहत सदा ऋतु पावस हम पर,
जब से प्रभु सिधारे।"

मीरा के शब्दों में—

कोई कहियो रे प्रभु आवन की।
आवन की मन भावन की।
देऊ नयना मेरे मानत नाहिं
बहे ज्यों नदिया सावन की॥

जब अन्तर्वेदना चरम सीमा की ओर अग्रसर होती है जब साधक का मन सदा अशान्त रहने लगता है, जब वह प्रीतम के बिना एक क्षण भी चैन नहीं पाता है और अन्तर के स्वर कह उठते हैं–

"मेरो मन अनत कहाँ सुख पावे।
जैसे उड़ि जहाज पर को पंछी॥
ज्यों पुनि जहाज पर आवे।"

साधक के अश्रु आत्म निरीक्षण में पाप के प्रायश्चित्त हैं, वे अन्तर्मल को बहा रहे हैं, आत्म कालिमा को धो रहे हैं। वह दीन आर्त्तनाद करता है—

"प्रभु हमारे अवगुण चित न धरो।
समदर्शी है नाम तिहारो, चाहे तो पार करो।"

(शेष पृष्ठ १६ पर)

सोम वर्षा और मन मयूर

[१]

नाच रे मन मोर मेरे
वर्षा की ऋतु आई है।
भक्ति भाव से पूरित हृदय में
सोम घटा घिर आई है॥

दर्शन शील प्रभु ने
अनुकम्पा दर्शाई है।
तृषा बुझाने मेरी प्रभु ने
सोम सुधा बरसाई है॥

उतर रही है सोम बूंदें
मोतियों की झड़ी लगाई है।
छलछलाती धारा में दे रहा
दिव्य संगीत सुनाई है।

सरस हो रही आत्मा मेरी
निर्मलता उसने पाई है।
कूक रहा है प्राण पपीहा।
पी-पी की रटन लगाई है॥

मुझमें मेरे प्रभु ने
अपनी ज्योति दिखाई है।
दीप्त हो रही लालिमा मेरी
ऐसी उसने चमकाई है॥

[२]

नाच रहा मेरा मन मोर
जब से देखी ज्योति प्रभु की, यह बना है चन्द्र चकोर।
नाच ……

बीत गई पापों की रजनी,
आई पुण्य मनोहर भोर।
उदित हुई है ज्ञान लालिमा
चमक उठी मेरी चित कोर॥
नाच ……

उमड़-घुमड़ कर हृदय गगन मे
बरसी सोम घटा घनघोर।
बह उठी मस्ती की धारा
मैं हुआ आनन्द विभोर॥
नाच ……

खींच रहा है मेरा प्रीतम
पल-पल मुझको अपनी ओर।
सुखमय है स्वामी का बन्धन,
जिसने बांधी प्रेम की डोर॥
नाच ……

जनम-जनम की प्यास बुझी
आया जीवन का नव दौर।
अङ्ग अङ्ग है पुलकित मेरा,
हर्षित है मेरा आत्म किशोर॥

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल.-६०
व० ७० अंक २० सं० १८९० ... ४
(दिनांक ११अगस्त १९६८)

Registered No.L. 60
पता—'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष : २२९९२ तार : "आर्यमित्र

अमृत वर्षा

महर्षि दयानन्द ने कहा था—

आर्ष ग्रन्थ क्यों पढ़ने-पढ़ाने चाहिए ?

"जो महाशय महर्षि लोगों ने सहजता से महान् विषय अपने ग्रन्थों में प्रकाशित किया है, वैसा क्षुद्राशय मनुष्यों के कल्पित ग्रन्थों में क्यों कर हो सकता है ?

महर्षि लोगों का आशय, जहां तक हो सके सुगम और जिसके ग्रहण में समय थोड़ा लगे, इस प्रकार का होता है और क्षुद्राशय लोगों की मनसा ऐसी होती है कि जहाँ तक बने वहाँ तक कठिन रचना करनी, जिसको बड़े परिश्रम से पढ़ के अल्प लाभ उठा सकें, जैसे पहाड़ का खोदना, कौड़ी का लाभ होना और आर्ष ग्रन्थों का पढ़ना ऐसा है जैसा एक गोता लगाना--बहुमूल्य मोतियों का पाना ।"

रहस्य छुपा हुआ होता है। यदि स्वाध्याय में इतना बल नहीं होता तो वे इस... उच्च महत्व नहीं बतलाते योग दर्शन में तो महर्षि पतंजलि ने और भी बढ़कर प्रशंसा की है—

स्वाध्यायादिष्ट देवता सम्प्रयोगः

अर्थात् स्वाध्याय से मनुष्य अपने इष्ट ज्ञान को प्राप्त कर सकता है। व्याख्या में जो लिखा है कि—

स्वाध्यायाद् योगमासीत योगात्
स्वाध्यायमामनेत् । स्वाध्याय योग सम्पत्या परमात्मा प्रकाशते ।।

भाव यह है कि स्वाध्याय एक ऐसी वस्तु है जिससे योग प्राप्ति में अधिकाधिक सहयोग प्राप्त होता है। पुनश्च स्वाध्याय और योग अभ्यास के द्वारा परमात्मा की प्राप्ति होती है।

इतना होने पर भी आज श्रावणी की शुभ परम्परायें छूटती जा रही है। लोगों की स्वाध्याय एवं उपदेशों के प्रति अरुचि हो गई है। आधुनिक युग का मनुष्य अपने हीरा जन्म को बनावटी खेलकूद तथा गप्प और सिनेमा देखने में तो गंवा सकता है, परन्तु स्वाध्यायके लिये उसके पास पांच मिनट भी नहीं हैं। निकृष्ट चीजों को अपनाने में एवं निरन्तर सम्मिलित ... लालायित रहते हैं परन्तु स्वाध्याय में मुंह सिकोड़ते हैं। इसीलिये यह देश उन्नति पथ से विमुख होता जा रहा है। ऋषियों द्वारा प्रचलित प्रकृष्ट परम्परायें विलुप्त होती जा रही है। ऋषि ऋण आज हमारे कन्धों के ऊपर जैसा का तैसा लदा हुआ है। प्राचीन शिक्षण पद्धति को भी हम सर्वत भूल चुके है।

आइये ! आज श्रावणी के इस शुभ उपलक्ष्य पर हम सब पुन ऋषियों के अनुयायी बनकर उनकी शिक्षाओं का प्रचार व प्रसार करने का प्रण लें और उनके ऋण को चुकाकर उऋण बनें।

(पृष्ठ २ का शेष)

जो साधक के समीपतम है कैसे उसकी पुकार न सुनेगा। साधक ने ... का ... डालकर जब मन ... फेर लिया है तो वह ... अपने सोम से कैसे उसकी तृषा को शान्त न करेगा। वह भौतिक ... मेघों से वर्षा करके मिटा सकता है तो आत्म तृषा को क्यों न तृप्त करेगा ?

... फिर क्या होता है जैसे ग्रीष्म के पश्चात् वर्षा का आगमन होता है उसी भांति हृदयाकाश में ... की घटाएं घिर आती हैं, ... बूंदें बरसने लगती हैं, तृषा बुझने लगती है ज्यों ज्यों बरसती हुई बूंदों ... आने लगता है, धारा का प्रवाह उतना ही तीव्र होने लगता है। यह अन्तर की धारा साधक में क्रीड़ा करती है उसे पुलकित करती है, ... तरंगित और ... करती है और ... आनन्द के विराट और अथाह सिन्धु में उसको अपने साथ ले जाती है। इस वेद मंत्र में इसी रहस्य का उद्घाटन किया गया है। आत्म तृप्ति के लिए, मस्ती और हर्ष मात्र के लिये सोम पान-भक्ति रस को पीता है। वह सोम रस ... ऋतु की भांति हमारे ... यह ... रक ... की वर्षा ... पर ... होता है ... साधक को जीवन ... है जिसके ... और ... ... पड़ती है।

... देवो और ... के इस ... को ... तृप्त ... अपनी ... तृप्ति करते हुवे आनन्द की प्राप्ति करो।

'वसन्त'

आर्यमित्र

का आगामी अंक

स्वराज्य अङ्क होगा-

जिसमें निम्नलिखित आकर्षक होंगे—

(१) राष्ट्रिय वैदिक प्रार्थना
(२) वैदिक ध्वजगान
(३) वेद का स्वराज्य सूक्त अर्थ सहित
(४) वैदिक महापुरुष श्रीकृष्ण
(५) राष्ट्र भाषा की समस्या
(६) भारतीय नारी का सच्चा भूषण तथा महिलाओं के लिये एक वैदिक पहेली
(७) नागा प्रदेश की समस्या
(८) स्वराज्य के सम्बन्ध में महर्षि दयानंद के उद्गार
(९) ओजस्वी राष्ट्रिय कवितायें
(१०) ऋषियों की पावन भूमि की एक झलक —एकाङ्की
(११) विदेशों में भारतीय संस्कृति के प्रति आकर्षण
[१२] वेद का राष्ट्रिय स्वरूप
[१३] राष्ट्र का संगठन कैसे करें और विघटन कैसे रोकें
[१४] वेदानुकूल राम राज्य की झांकियाँ
[१५] राष्ट्र की सर्वांगीण उन्नति का एकमेव आधार वेद
[१६] राष्ट्र के नव आधारों के प्रति हमारे कर्त्तव्य

पाठक प्रतीक्षा करें। समाचार पत्र विक्रेता शीघ्र अपनी प्रतियाँ सुरक्षित करें।

—विक्रमादित्य 'वसन्त'
सम्पादक

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के लिये भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से कृष्णगोपाल शर्मा द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।

आदर्श आर्य दम्पति

[वेद प्रचार सप्ताह मे यह कथानक विशेष पठनीय है। वेद के भाष्य और प्रचार तप की मांग करते हैं, व्यसन और विलास की कामना नहीं।

सोई हुई आर्य जाति क्या वेदाचार्य की स्वधर्मिणी की मांति उठ खड़ी होगी, और तपस्विनी बन कर जगत् का कल्याण करेगी ? आर्य जन वेद प्रचार सप्ताह में इस बात को गम्भीरता पूर्वक सोचें और तप व त्याग के जीवन धारण का दृढ़ व्रत लें।

—सम्पादक]

★राजरानी, बक्शी, लखनऊ

नव स्नातक भट्टाचार्य ने दृढ़ संकल्प किया कि मैं अपने जीवन में वेद भाष्य का कार्य पूर्ण करूंगा। अपने संकल्प की पूर्ति के लिये वे दिन रात अपने कार्य में व्यस्त रहने लग गये। उनकी विधवा माता पुत्र को इस प्रकार व्यस्त देखकर विचार मग्न हुईं "कैसा है मेरा लाल, कैसी है उसकी वेद लगन, सब देखो व्यस्त। आज तो मैं हूं जो इसके खान-पान का ध्यान रखती हूं। कल मैं न रहूंगी तो क्या होगा ?"

सोच विचार के उपरांत वृद्धा माता ने निश्चय किया कि पुत्र को गृहस्थाश्रम में प्रविष्ट करा देना चाहिए। उन्होंने एक दिन पुत्र से कहा:—

"बेटा कब से एक आशा सजोये बैठी हू—क्या पूरी करोगे ?"

"आज्ञा दो मां। तुम्हारी आज्ञा शिरोधार्य होगी।"

"मैं तुम्हारे लिये एक बहू घर में लाना चाहती हूं। तुम्हारा अध्ययन समाप्त हो गया, अब मैं तुम्हें विवाहित देखना चाहती हू—शीघ्र ही।"

मातृ-ऋण तो प्राण देकर भी नहीं चुकाया जा सकता—फिर मेरी वेद भाष्य की लगन का क्या होगा—पल भर भट्टाचार्य ने दोनों को ज्ञान और कर्म के पलड़ों पर तोला—कर्त्तव्य जीत गया। "मां तुम्हारी इच्छा पूर्ण होगी।"

मां गद्-गद् हो गई। विवाह की तैयारियां हुईं और फिर एक दिन शुभ विवाह संस्कार भी हो गया। पत्नी अत्यधिक सुन्दरी थी। मद माता यौवन था, एक-एक अंग में मादकता झलकती थी। माता की आज्ञा की पूर्ति हो गई थी, किन्तु वेदभाष्य की अपरिमित लगन अब भी उतनी ही दृढ़ थी। एक ओर कर्त्तव्य की पुकार थी, दूसरी ओर यौवन का मदमाता विलास था। कर्त्तव्य निष्ठ वेदज्ञ भट्टाचार्य ने तुरन्त अपने श्रेय पथ को निर्धारित कर लिया।

चन्द्रमा की शीतल चान्दी छिटकी हुई थी। सुन्दरी पत्नी अभिमुख थी। भट्टाचार्य ने मौन को तोड़ा और कहा—'देवी आकाश में शुभ्र ज्योत्सना को देखो। कैसी शीतल शांतिदायक है। प्रभु की वेद वाणी भी ऐसी सरस ज्योति है जिसे मैं जन साधारण तक अपने भाष्य के द्वारा पहुंचाना चाहता हू, और यह महान् कार्य बिना ब्रह्मचर्य की साधना के नहीं होगा।

"देव आपकी प्रसन्नता मेरी प्रसन्नता है, आपकी लगन मेरी लगन है।"

विदुषी देवी ने कहा—

समय पंख लगाकर उड़ चला। वृद्ध माता का देहान्त हो गया। श्रद्धा से आचार्य की स्वधर्मिणी ने गृह कार्य सम्भाला। आचार्य वेद भाष्य मे तल्लीन रहने। देवी उनकी सुख सुविधा का ध्यान रखती। न कोई विकार न कोई वासना, शुद्ध पवित्र दोनो एक दूसरे के सहयोगी बन गये।

और तब वह शुभ दिवस आया जब आचार्य की साध सफल हुई। वेद भाष्य पूरा हुआ। अथर्व वेद के अन्तिम आनन्द परक मन्त्र की व्याख्या पूर्ण होते ही आचार्य ने अंगड़ाई ली और आकाश की ओर देखा। शुभ्र ज्योत्सना छाई थी। आज पुन पूर्णिमा की रात्रि थी। मुस्कराती चन्द्रिका को देखकर आचार्य हंस पड़े। पत्नी का विचार आया, देखा धरती की पावन गोदी में उनकी धर्मिणी सो रही है। केश सब श्वेत हो गये हैं। आचार्य ने अपने केशों को देखा वे भी श्वेत हो गये थे। चन्द्रिका के सदृश वे भी चान्दनी जैसे एक दम श्वेत थे। आचार्य ने अपनी आयु के विषय में ध्यान किया 'मैं ६८ वर्ष का हो गया' फिर पत्नी को देखा '६२ वर्ष की यह भी हो गई—कोई सुख न दिया इसे। मैं तपस्वी बना रहा और यह तपस्विनी। मातृत्व की अभिलाषा तो प्रत्येक नारी को प्राकृतिक रूप से होती है। एक सन्तान तो होनी ही चाहिए।'

और पूर्व इसके कि आचार्य स्वधर्मिणी का आलिंगन करते, देवी उठकर बैठ गई। आचार्य के नेत्रों की ओर दृष्टिपात किया वहां पवित्रता के स्थान पर वासना की झलक थी। विदुषी सब समझ गई, तुरन्त कर्त्तव्य निर्धारित किया और दोनों हाथ जोड़ कर सिर नवा कर बोली—

देव ! अब तो जीवन का अन्तिम प्रहर है हमारा। इसे भी वैसा ही शुद्ध पवित्र रहने दो। अब तक वेद भाष्य किया, अब उसका प्रचार कीजिए'

आचार्य की वासना तन्द्रा टूट गई। श्रद्धा से उन्होंने देवी को कर बद्ध नमस्ते की और बोले—

'ऐसे ही होगा देवी

और संसार ने देखा एक सन्यासी एक सन्यासिनी जीवन भर वेद प्रवचन और वेद व्याख्यायें करते रहे, और जनता को वेद सुधा का पान कराते रहे।

(पृष्ठ ७ का शेष)

इस अवसर पर सभी मनुष्य उपदेश श्रवण के साथ-साथ स्वाध्याय पर विशेष जोर देते थे। स्वाध्याय एक ऐसी अनुपम वस्तु है जिसके द्वारा मनुष्य विद्वान् के साथ-साथ अपने जीवन का निर्माण भी कर सकता है। आजकल तो लोगों ने गन्दी पुस्तकों के अध्ययन को भी स्वाध्याय समझ लिया है, परन्तु प्राचीन काल में तो स्वाध्याय केवल वेद वा तत्सम्बन्धी ग्रन्थों का अध्ययन करने को ही मानते थे। जिस प्रकार छत में लगा हुआ गाटर छत की निर्भरता का प्रतीक है, इसी प्रकार स्वाध्याय भी मनुष्य जीवन का गाटर है। स्वाध्याय केवल पढ़ने लिखने का ही नाम नहीं है अपितु "स्व अध्ययन स्वाध्याय:" अपना अध्ययन करने को भी स्वाध्याय कहते हैं। उन्नति को चाहने वाले प्रत्येक व्यक्ति को अपना अध्ययन करना बहुत जरूरी है। प्रति दिन अपने किये हुए दोषों को छोड़े और गुणों को अपनावे अपने अन्दर आई हुई निर्बलताओं को दूर करे यही मुख्यतया स्वाध्याय कहलाता है।

दूसरा स्वाध्याय उसे कहते हैं जो वेदादि ग्रन्थों का किया जावे। दोनों ही स्वाध्यायों का क्रम निरन्तर चलता रहे इसलिये प्रत्येक आश्रम में ऋषियों ने स्वाध्याय की परम्परा को डाला है। यथा सर्वप्रथम ब्रह्मचर्याश्रम में तो पठन-पाठन, अध्ययन-अध्यापन ही मुख्य रहता है। द्वितीय गृहस्थाश्रम में कार्याधिक्य अथवा प्रमाद के कारण स्वाध्याय क्रम के टूटने की आशंका रहती है, इस सम्भावना की लेकर पूर्व ही समावर्तन संस्कार करते समय आचार्य शिष्य को सावधान कर देता है कि—स्वाध्यायो अध्येतव्यः स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्। तृतीय आश्रम वानप्रस्थ भी तप एवं स्वाध्याय में ही व्यतीत करना पड़ता है। चतुर्थ आश्रम सन्यास में भी इसी प्रकार-सन्यसेत् सर्वकर्माणि वेदमेकं न सन्यसेत् अर्थात्—सब कर्मों को छोड़ देवे परन्तु वेद के स्वाध्याय को न छोड़े। स्वाध्याय की अतुल महिमा के कारण ही इसको इतना महत्व दिया गया है। स्वाध्याय एक मानसिक भोजन है। जिस प्रकार श्रेष्ठ अन्नादि भोजनों द्वारा शरीर पुष्ट होता है, उसी प्रकार मानसिक भोजन स्वाध्याय के द्वारा मन को पुष्ट रखना भी अनिवार्य है।

मनु महाराज ने भी कहा है—

अनभ्यासेन वेदाना आचारस्य च वर्जनात्। आलस्यादन्नदोषाच्च मृत्युर्विप्राञ्जिघांसति ॥

अर्थात विप्रों को मृत्यु तभी हनन करती है जब वे वेदों के स्वाध्याय को श्रेष्ठ आचरण को छोड़ देते हैं और आलस्य में पड़ जाते हैं।

इतना ही नहीं बल्कि स्वाध्याय को आवश्यक बतलाते हुए यहां तक भी कहा है कि—सर्वान सत्यजेदर्थान् स्वाध्यायस्य विरोधिनः अर्थात् स्वाध्याय विरोधी सभी कार्यों को छोड़ देवे परन्तु स्वाध्याय को कभी न छोड़ें।

मुन्शीराम ने जो एक शराबी-कबाबी था स्वाध्याय के कारण ही स्वामी श्रद्धानन्द के नाम से महान् संन्यासी पद को प्राप्त किया। लेखराम ने भी स्वाध्याय की भावनाओं से ही प्रेरित होकर धर्म पर बलिदान दिया। गुरुदत्त भी स्वाध्याय से ही महान् विचारक बना न जाने कितने मानवों ने इस प्रकार स्वाध्याय से विद्वत्व को प्राप्त किया है। ऋषियों की वाणी निरर्थक नहीं होती उसमे बहुत बड़ा

(शेष पृष्ठ १६ कालम २ के नीचे)

श्रावणी का यह पावन पर्व

जो हमें ऋषियों की याद दिलाता है

श्रावणी उपाकर्म प्रत्येक वर्ष आता है और चला जाता है। समाजों में श्रावणी यज्ञ होते हैं, नवीन यज्ञोपवीत धारण किये जाते हैं, और वेद श्रवण करने पर व्याख्यान होते हैं। कर्त्तव्य की इतिश्री लकीर पीटने में नहीं है, बाह्यांग के साथ अन्तरांग की भी पुष्टि होनी चाहिये। ऋषि तर्पण यदि हम करना चाहते हैं, तो हमें यज्ञ अवश्य करना और कराना होगा, और इसके निमित्त ईश्वरीय ज्ञान वेद का पठन-पाठन करके अपने परम धर्म को निभाना होगा।

वेद प्रचार सप्ताह में इस गम्भीर लेख का अध्ययन कीजिए, विचार कीजिए और ऋषि-ऋण चुकाने के लिये दृढ़ प्रतिज्ञ बनिए।

—सम्पादक

★श्री सुरेन्द्रकुमारजी सामवेदी
अध्यक्ष प्रचार विभाग गुरुकुल वैदिक आश्रम 'वेदव्यास' राउरकेला-४

जिस प्रकार किसी मंजिल पर पहुंचने के लिये सोपान की आवश्यकता अनिवार्य है, उसी प्रकार जीवन रूपी नौका को उन्नत एवं पार ले जाने के लिये जहाँ अन्य अनेक साधन हैं। वहाँ पर्व भी एक महत्वपूर्ण साधन हैं, जो संसार मे प्रत्येक जातियों सम्प्रदायों व राष्ट्रों में पाया जाता है। कोई भी जाति या राष्ट्र पर्व विहीन नहीं मिलेगा, क्योंकि पर्व मानव जीवन की आत्मा है।

पर्व शब्द पर्व-पूरणे धातु से व्युत्पन्न हुआ है, जिसके अनेक अर्थ होते हैं। (१) पर्वः स्याद उत्सवे ग्रन्थौ (२) यः पूरयति जनान् आनन्देनेति सः पर्वः अथवा (३) पवित्री करणं वा पर्वः। इन सभी अर्थों में पर्व की महत्ता कूट कूट कर भरी हुई है। जैसे कि—

पर्व शब्द आनन्द एवं उत्सव वाची कहा गया है। उत्सव या किसी पर्व का नाम सुन कर प्रत्येक मनुष्य कुछ न कुछ आनन्द अवश्य ही अनुभव करता है, इसलिये पर्व को आनन्द से भरने वाला कहा गया है। दूसरे शब्दों में इसे मनोरंजन के लिये भी कहा जा सकता है। मनुष्य के जीवन में हंसी का वह स्थान है, जैसे कि भोजन में नमक का। यदि मनुष्य अपने जीवन से हंसी या प्रसन्नता का बहिष्कार कर देवे तो उसका जीना कठिन हो जाता है। यह तो सब जगह देखने मे आता है कि जो हर्षमय जीवन व्यतीत करने वाले हैं और मस्त हैं वे बलवान् एवं हृष्ट पुष्ट शरीर वाले पाये जाते हैं और जो सदा चिन्ता मे घिरे हुये रहते हैं, उनका शरीर कृश एवं निर्बल तथा जर्जरित मिलेगा। इस लिये कुछ दिन दुनियादारी के चिन्ता भी होती अनिवार्य हैं, सदा अपने व्यवसाय में लिपटे रह कर तेली के बैल की तरह जीवन बिताना कोई जीवन का उद्देश्य नहीं है। स्वास्थ्य एवं मस्तिष्क शांति के लिये भी यह आवश्यक है कि वह हर्ष के कुछ अमूल्य क्षण तो प्रतिदिन अवश्य बिताये।

तीसरा पर्व का अर्थ है पवित्र करना, इस दिन सभी मनुष्य अपने शरीर एवं गृह को अच्छी प्रकार से साफ किया करते हैं, और प्रत्येक पदार्थ को स्वच्छ रखते हैं। स्नान न करने वाला व्यक्ति भी इस दिन अवश्य स्नान करता है और मैले कपड़े रखने वाला व्यक्ति भी इस दिन स्वच्छ कपड़े धारण करता है। इस प्रकार यह पवित्र करने वाला कहा जाता है।

पर्व का चतुर्थ अर्थ है ग्रन्थि-पर्व एक ऐसी ग्रंथि है जिस पर पैर रख कर मनुष्य जीवन के बहुत ऊंचे लक्ष्य पर पहुंच सकता है। जिस प्रकार रस्सी में गांठ लगाकर उन पर पैर रख कर इच्छित ऊपर के स्थान में पहुंच जाते हैं, ठीक उसी प्रकार यह जीवन एक रस्सी है और पर्व इसमें गांठें हैं, और हम इन पर पैर रखकर उन्नति पथ पर अग्रसर हो सकते हैं। दूसरी तरह हम इसे यूं भी कह सकते हैं कि पर्व एक मनुष्य जीवन की ऐसी ग्रन्थियां हैं जो जीवन को डगमगाने नहीं देतीं। जिस प्रकार बांस की लकड़ी मे होने वाली गांठें उसको टूटने से बचाती हैं।

गहरे पानी पैठ

और शरीर में होने वाली गांठें शरीर को सुरक्षित रखती हैं।

पर्व तीन प्रकार के होते हैं—एक तो वे जो महापुरुषों के जन्म दिवस पर मनाये जाते हैं, दूसरे वे जो ऋतु से सम्बन्ध रखते हैं तथा तीसरे राष्ट्रिय पर्व होते हैं। श्रावणी पर्व जहां ऋतु से सम्बन्ध रखने वाला है वहां साथ-साथ धार्मिक पर्व भी है। वैदिक धर्म में विशेषतः सम्बन्ध रखने वाला यह पर्व प्राचीनकाल मे बड़ी धूमधाम से मनाया जाता था।

यह श्रावणी पर्व उस पावन वर्षा ऋतु में आता है जब कि चारों ओर भरे हुये जल की चमचमाहट प्रत्येक के मन को हर लेती है, उस समय की मेंढकों की टर्र टर्र की आवाज मानों वर्षा के गुणों का बखान कर रही हो। वर्षा से आनन्दित हुआ मयूर भी अपनी पिक-पिक की आवाज के साथ नाचता हुआ दूसरों को भी आनन्दित कर देता है। चातक की चिल्लाहट भी इसी समय विश्राम पाती है। नूतन वारिधाराओं से सिंचित वसुधा को देख कृषक लोग हर्षोल्लास से प्रफुल्लित हो उठते हैं। उनके यत्न से सुफलित हरी-भरी खेती को अवलोकन करने से मनुष्य में नई स्फूर्ति का सचार होता है। इस समय वे हल जोतते हुए गर्मी की आतप के ताप से जाज्वल्यमान शरीर से निकले लहू के पसीने को फलित देख कर अपने दुःखों को भुला कर पुनः हमारे लिये अन्नोत्पादन से होने वाले कष्टों को सहन करने के लिए तपस्या की मानो भूमिका बना रहे हों। एक महान् तपस्वी किसान के लिये जिसका स्वयं का सुख-दुःख ही नहीं अपितु अन्यों का भी सुख दुख उसकी खेती पर ही निर्भर है-परमात्मा ने वर्षा ही कुछ विश्राम का समय बनाया है। और फिर ऋषियों ने भी उसको चरम लक्ष्य मोक्ष तक पहुंचाने के लिये वेदोपदेशों की परम्परा इसी सुअवसर पर निर्धारित की है। व्यापारीगण भी इसी समय अपने व्यापार से अवकाश ले लेते हैं। तथा क्षत्रिय गण भी इसी समय अपनी युद्ध वाहिनियों को युद्ध न कर सकने के कारण विराम देते हैं। मानो वे इस समय अपने शत्रु की शत्रुता को भूल से गये हों। जैसे कि वर्षा की मधुर बिन्दुओं ने उनके हृदय पर अपनी मधुरता की छाप डाल दी हो। ऐसे सुअवसर पर जब कि सभी वर्ग अपने मुख्य व्यवसाय से मुक्त हो जाते हैं परम पूज्य ऋषि महर्षियों ने वेदों की रक्षा के लिये, श्रेष्ठ कर्मों की शिक्षा के लिये मनुष्यों को उनके चरम लक्ष्य व कर्त्तव्य को बतलाने के लिये परम पुनीत श्रावणी पर्व की परम्पराओं का प्रारम्भ किया।

वर्षा की ऋतु को चातुर्मास्य शब्द से भी पुकारते हैं। लोक की भाषा में इसे चौमासा भी कहते हैं। पुरातन काल में चौमासे के समय वर्षा होने के कारण ऋषि मुनि लोग वनों का निवास छोड़ ग्रामों एवं ग्रामाटिकाओं में आ जाते थे और लोगों को सदुपदेशों से अमृत पान कराया करते थे। इस अवसर पर विशेष यज्ञों का भी आयोजन किया जाता था। जो चार मास तक चलते थे। इन यज्ञों में ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्र सभी वर्ग उपस्थित होते थे, अपनी जीवन की ग्रन्थियों को ऋषियों के मनोहर उपदेशों के द्वारा सुलझाते थे।

श्रावणी शब्द से यहां दो अर्थों की प्रतीत होती है एक तो श्रावणी मास की जो पूर्णिमा, दूसरा जिस पर कुछ सुना जावे। इस अवसर पर वेदों के उपदेश सुने जाते हैं। आज उसी परम्परानुसार इस समय हम वेद सप्ताह मनाते हैं।

श्रावणी पर पुराने यज्ञोपवीत को छोड़ कर नवीन यज्ञोपवीत धारण किया जाता है तथा इससे सम्बन्धित सभी शिक्षायें इस समय दी जाती हैं। यज्ञोपवीत वैदिक धर्म की उच्च कोटि की परिचायक वस्तु है। यह एक शिक्षाओं का सागर है और प्रेरणाओं का महान स्रोत है।

यह यज्ञ पूर्व श्रावण मास की पूर्णिमा को होता था, और पौष की पूर्णिमा पर समाप्त होता था।

वर्षा के इस मनोहर काल में जहां छिन्न-भिन्न के मद मे गुंजायमान वारि धारायें मयूरों और चातकों को आह्लादित करती थीं वहां साथ ही ऋषि मुनि गण भी मनुष्य रूपी चातकों को अपने मधुर उपदेशों से अमृत पान कराते थे।

(शेष पृष्ठ १५ पर)

साहित्य-सौरभ

श्रावणी पर्व

—कवि कस्तूरचन्द 'घनसार'

रिमझिम-रिमझिम वर्षे मेहा,
आर्य पुरुष जस बढ़े सुनेहा।
उमड़ाये नभ घन चहु ओरा,
वेद मन्त्र सुनि जिमि कवि मोरा॥

गर्जे घोर गगन थररायें,
बुध रव सुन जस खल डरपाये।
बरसे वारिद भरे तालावा,
आर्य पुरुष जस शांति सुपावा॥

दोहुं कूल बहें सरिता वारी,
वेद ज्ञान युत जिमि ब्रह्मचारी।
पृथिवी तृप्त जलवत् होई,
आर्य पुरुष जस सुख जिमोई॥

हरित घास अवनी पर छाये,
ज्ञान सुनत जिमि मन हरषाये।
शशि श्यामला सोभित रासी,
पा बटु वेद ज्ञान वृत्ति जैसी॥

तड़ित प्रकाश करे घन मांही,
खल विरनि जस थिर रहे नाहीं।
नदी प्रवाह विशद अति बहही,
मुनि जस ज्ञान पाप ना रहही॥

सरिता मिलहि सिन्धु में जाही,
योगी जस प्रभु सुक्ख समाहीं।
घन बरषे आ अवनी समीपा,
अस ऋषिवर दे ज्ञान अनूपा॥

देखि किसान खेति हरषाये,
विज्ञ पुरुष जस उन्नति पाये।
श्रावण मास, लतावन विकसे,
कोविद पा जिमि विद्या निकसे।

सर तट दादुर बानि सुहाई,
यज्ञ-मन्त्र जस पढ़ समुदाई।
विकसे सरस सुमन ले रङ्गा,
कोविद दे अस ज्ञान असङ्गा॥

श्रावण मास विशद [illegible],
सदन-सदन अस मन्त्र उचारा।
नभ थल गहन कुहरा छाया,
जस वायु सुध गगन समाया॥

कृषिक, कृषि निवाने ही जैसे,
ऋत्विज यज्ञ करत नित वैसे।
फले हि फूलयुत कृषि सवाई,
आर्य पुरुष वह सुबुद्धि पाई॥

कृषि देख हर्षेहि नर नारी,
आर्य दम्पति कहे सुख बयारी।
कृषि काम रत कृषिक हो जैसे,
आर्य कर्म धर्म पा नर वैसे॥

★

श्रुति गान!

सृष्टि मे श्रुति गान जागे,
सुरभित स्वर्ण विहान जागे।

अग्नि वायु आदित्य अंगिरा, ऋषि आदि में आते,
ऋक् यजु साम अथर्व कोष वे धम्य कल्प कहलाते।
ज्ञान कर्मोपासन वित विज्ञान जागे·····।

चहु दिश चारों मास इन्हीं का उपाकर्म होता था
सतत संयमी स्वाध्याय रत, संसार सुख से सोता था।
उत्सर्जन हो उठा उसी दिन आये दिवस अभागे···।

स्व श्रेष्ठत्व से सुखी बनाने पूर्ण जगत् के प्राणी,
आदि सृष्टि मे प्रभु देता है वेदों की कल्याणी वाणी।
उठें विश्व मे आर्यों के अरमान आगे···।

सब कर्मों को भले त्याग दे पर न त्यागे वेद को
श्रेष्ठ संन्यासी समझते भलो,भाति इस भेद को।
आज भौतिक श्रान्त क्लान्त मे श्रेयस्कर श्रेमाण जागे···।

धर्म से निरपेक्ष शासन यहां कभी नहीं टिका है,
रक्षा बन्धन का अभिनन्दन पैरों में यहीं टिका है।
दूर दुःशासन करो देश से, अरियों का अभिमान भागे···।

वेद प्रति पालित नियमों का पावन पुण्य प्रसार हैं,
प्रति कूलानि आत्मन, तू पाप का अभिशाप है।
प्रशस्ति पथ के पथिक अथक को प्रभु मिलाता बिन मांगे···।

कभी करो न द्वेष किसी से, दुःख मे दुःख दर्शाओ,
देख पराई सुख समृद्धि फूले नहीं समाओ।
सुधा सिक्त स्व स्नेह की सरस सुरीली तान लागे···।

भ्रातृत्व से भूषित भू पर भरे रहें भण्डारे,
भव्य भावनाओं से भगवन भर दो हृदय हमारे।
फूल-फूल के 'मूल' धूप मे मोहन का बलिदान जागे···।

—मदन मोहन एडवोकेट, मोठ (झांसी)

★

हे कण-कण में व्यापक प्रभु!

कण-कण मे व्यापक प्रभु तुम हो,
सर्व प्रकाशक जगदीश्वर हो।
अणु-अणु मे गति देन वाले,
हे अनुपम पतिदान प्रभु हो।
कण कण मे···।

किसलय किसलय मे छवि तेरी
सुमनों मे मुसकान है तेरी।
मधु रस के देने वाले हे,
"सुन्दर" दयानिधान प्रभु हो।
कण कण मे···॥

आनन्द पान हेतु प्रभुवर मैं,
आनन्द सागर बैठा हूं।
कण-कण में छवि देख-देख कर
पुलक पुलक कर गाता हूं।
कण-कण मे···॥

मुझको अब विश्वास हो गया,
आनन्द पान करा दगे।
क्योंकि आनन्द देने वाले,
दाता दया-निधान प्रभु हो।
कण कण में···॥

—लक्ष्मी नारायण शास्त्री, गोंडा

संसार में महिलायें कैसे उन्नति कर रही हैं ?

विचारों और अनुभवों का आदान प्रदान

★ सुधा शर्मा बी०ए०, कानपुर

इसमें सन्देह नहीं कि दुनिया एक विश्व की तरफ तेजी से बढ़ रही है। परन्तु इसके माने यह नहीं कि विभिन्न देश अपनापन छोड़ दें। वास्तव में विश्व में प्रत्येक देश का अलग स्थान है, और रहेगा, परन्तु एक देश में जो होगा उसका प्रभाव अन्य देशों पर कुछ न कुछ अवश्य पड़ेगा। इधर के वर्षों में संसार के विभिन्न देशों में महिलाओं की स्थिति उनके कार्य क्षेत्र आदि में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुये हैं और इनमें उन्होंने विभिन्न देशों से बहुत कुछ सीखा है और सिखाया है। पोलैण्ड की महिलाओं ने अन्य देशों से जो सीखा है और उनको जो सिखाया है, उसका संक्षिप्त विवरण इस लेख में है।

पोलैण्ड महिला संगठनों के कार्य दिनोंदिन प्रगति कर रहे हैं और पोलिश वाकिया से सीखा है कि लोक परिषदों पीपुल्स काउंसिल के साथ कैसे सहयोग करें। सोवियत रूस के वर्ग महिलाओं के निकाय पर ही सामाजिक कार्य के रूप को लिया है और जर्मन लोकतांत्रिक गणतन्त्र से महिलाओं को उनके काम करने के कारखानों और दफ्तरों में अतिरिक्त, प्रशिक्षण के सिद्धान्त को अपनाया गया है।

अपना अवदान

दूसरी ओर विदेशों ने पोलिश महिलाओं के अनुभवों का लाभ उठाकर अपने देश की परिस्थितियों के अनुकूल रूप दिया है। उदाहरण के लिये इटली की महिला संगठन यू० डी० आई० ने पोलैण्ड के नमूने पर सामाजिक तथा

महिला संगठनों का विश्व संगठनों से सम्पर्क है। पोलिश महिला आन्दोलन के प्रतिनिधि विश्व लोकतांत्रिक महिला संघ। वर्ल्ड फेडरेशन आफ डेमोक्रेटिक वीमेन, नव संगठित अन्तरराष्ट्रीय महिला सहकारी संगठन तथा अन्तरराष्ट्रीय महिला वकील संगठन में है। इससे अन्य देशों से सम्पर्क के जरिये वहाँ की जनता के अनुभवों का ज्ञान मिल जाने का लाभ होता है और सबने अपनी कठिनाइयों के हल करने में सहायता मिलती है। उदाहरणार्थ एक वर्ष पूर्व स्वयम् द्वारा परित परिवार एवं संरक्षक महत्ता पर विचार करने हमारे पोलैण्ड के महिला वकील संगठन से बड़ी सहायता मिली। हमने अन्य देशों के महिला आन्दोलनों के अनुभवों को अपने देश की दशाओं के अनुकूल कर लिया है। उदाहरण के लिये अन्य गृहणियों के लिए कार्य की रूप रेखा को विशेष कर उनकी खेती सम्बन्धी जानकारी बढ़ाने के तरीकों को फिनलैण्ड से ग्रहण कर लिया है। चैकोस्लोवाकिया ने कानूनी परामर्श केन्द्र खोले हैं। पोलैण्ड के गृह कार्य परामर्श केन्द्र के नमूने पर कई देशों में वैसे ही केन्द्र खोले गये हैं।

बच्चों के मनोरंजन केन्द्र

महिला संगठनों के कार्यकर्त्ताओं ने बच्चों की देखभाल के कार्य विस्तार के लिये बड़ा मन लगाकर कार्य किया है। गत वर्ष बच्चों के लिये पोलैण्ड हजारों मनोरंजन केन्द्र खोले गये। अवकाश के समय के [illegible] के कार्य केन्द्र, बच्चों [illegible] बच्चों के स्कूली कार्य में सहायता देने के लिये सहायक शिक्षक दल भी संगठित किये जाते हैं। उन बच्चों की जो घर के बाहर रहते हैं या जिनके माता पिता जीवित नहीं हैं अथवा जिनकी माताएं कारखानों और दफ्तरों में काम करती हैं या अध्ययन करती हैं उनकी देखभाल की भी व्यवस्था की जाती है। इस वर्ष के अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह का मुख्य ध्येय शिशुओं तथा बालकों की देखभाल साज सम्भाल के कार्यों को विस्तार देना रहा है।

[वैदिक धर्म उत्थान की प्रेरणा देता है। मनुष्य उन्नतिशील प्राणी है और उसकी उन्नति का आधार है प्रभु प्रदत्त बुद्धि। उन्नति का अधिकार पुरुष व महिलाओं को एक समान है। वेद ही इस सर्वज्ञ की वह पावन ज्योति है जिसमें मानव भेदभाव तथा विषमताओं की संकीर्णताओं से निकल कर समदर्शिता तथा उदारता को धारण करता है। वेद के शब्दों में "अनुप्रत्नास पदम् नवीयो अक्रमु। रुचे जनन्त सूर्यम" अर्थात् प्राचीनता से प्रीति करते हुए नये कदम बढ़ाये जाएं। ज्योति हमारा लक्ष्य है और उसके लिये मनवांछित सूर्यों से हमें प्रकाशित होना है।

हमे सत्य ग्रहण करना है—हमे उन्नतिशील होना है, दूसरों के अनुभवों से लाभ उठाना है। इसी दृष्टिकोण से यह ज्ञानवर्धक लेख प्रकाशित किया जा रहा है।

—सम्पादक]

बहनें मांगती राखी का प्रतिदान

★

मत भाग जरा ठहर ओ द्रुतगामी समीर,
तनिक बताजा कहां छिपे मेरे बलिदानी वीर।
उनकी स्मृति में आँसू बहाती, बढ़ती माँ की पीर।
ले जा मेरे राखी सूत्र बंध जावें जिनसे वे वीर।।

हे आर्य वीरो इस धरती से हम करते तुम्हें प्रणाम।
हैदराबाद का धोकर पाप तुमने पाया पुण्य धाम।
पर इस धरा के तो अभी सभी अधूरे काम।
राखी सूत्र तुम्हें बुलाते आ वीरवर अभिराम।।

जब पापी गरजा था तुमने की थी सिंह दहाड़।
उसने खाई खोदी थी, तुम बन आए थे पहाड़।
कांप उठा था अत्याचारी सुन तुम्हारी चिंघाड़।
गीदड़ कैसे टिकता तुम तो खेल में कौंधी सिंह की बाढ़।

भारत के सीमान्त की क्या सुनी नहीं पुकार?
क्या देखा नहीं तुमने मां का धूमिल धूसरित शृंगार?
आज सुनाओ इस धरती को ओजमयी हुंकार
कब से राह तकें तुम्हारी बहनें ले राखी के तार।

स्वर्ग धाम के सुखों की तुम्हें न होगी परवाह।
अपने बाहुबल से पूरोगे तुम अपनी सब चाह।
देखो व्यर्थ न जाये जननी की आँसू भरी आह।
ऐसा शंख बजाओ वीर शत्रु उठे कराह।।

बहनें माँगती आज तुमसे राखी का प्रतिदान।
कि मिटने न पाये इस धरा से आर्यवीरों की आन।
आग लगाई जिसने बनकर भाई रूप मेहमान।
उसी छलिया के एक सांस में खींच लो तुम प्राण।

बच न पाए दस्यु एक भी यह राखी की पुकार।
क्रोध अग्नि में भूनें शत्रु मट्टी में चाहे जिस प्रकार।
आन चुकाओ ऋण जननी का अब न रहे उधार।
आर्य वीर समस्त राष्ट्र में हैदराबाद प्रसार।।

—कुमारी पुष्पावती एम०ए० आचार्य साहित्यरत्न

वैदिक पहेली १ का शुद्ध उत्तर

बड़े हर्ष की बात है कि आर्यमित्र अङ्क २३ दिनाँक १४-७-६८ में जो वैदिक पहेली दी गयी थी, उससे निम्न-लिखित आर्य्य कुमारों व कुमारियों ने भाग लिया–

(१) श्री जयदेवसिंह त्यागी मेरठ (२) कुमारी सीता मोरध्वपुर (३) द्विजेन्द्र माथुर शिकोहाबाद (४) आशुतोष मेरठ (५) विद्यासागर मेरठ (६) छेदालाल बुलन्दशहर (७) चन्द्रपाल सहारनपुर (८) अरुण कुमार मेरठ (९) लक्ष्मीचन्द्र आर्य फतहपुर (१०) सुरेश कुमार तिवारी सुल्तानपुर (११) जयप्रकाश शुक्ल बलरामपुर (१२) रवीन्द्रपालसिंह अलीगढ (१३) कु० विमला आर्य (१४) सुखवीरसिंह राजपूत बिजनौर (१५) ज्ञानेन्द्र आर्य मुरादाबाद (१६) वेद प्रकाश यजुर्वेदी बदायूँ।

यद्यपि इन सब में से किसी को भी उत्तर पूर्णतया ठीक नहीं है तथापि पहली बार पहेली प्रतियोगिता में भाग लेने के कारण सब को 'भगवान्' भावनाओं' की एक प्रति भेजी जा रही है। मन्त्र मनन के लिए होता है, उस पर जितना अधिक विचार किया जाता है, उसका रहस्य उतना ही खुलता है।

शुद्ध उत्तर पहेली का यह था

ब्रह्म सूर्य सम ज्योति,
द्यौः समुद्रसमं सरः।
इन्द्रः पृथिव्यै वर्षीयान्,
गोस्तु मात्रा न विद्यते।
यजुर्वेद (२३.४८)

अर्थात्–

[१] ब्रह्म की ज्योति सूर्य के समान है। ब्रह्म के अर्थ परमेश्वर के अतिरिक्त ज्ञान के भी होते हैं। ईश्वर की उपमा संसार के किसी भी पदार्थ से नहीं की जा सकती, वह तो अनुपमेय है।

इसलिए ज्ञान की ज्योति सूर्य के समान है। सूर्य बाहर का अन्धकार दूर करता है, ज्ञान अन्तःकरण का।

[२] द्यौ समुद्र के समान सर है। द्यौ जगमगाता लोक है, द्यौ अन्तरिक्ष और आकाश नहीं वरन् उसमें जगमगाते नक्षत्रों को कहते हैं। सर तालाब या जलाशय को कहते हैं। सो वो ऐसा कौन सा छोटा जलाशय है जो समुद्र के समान अथाह हो गहरा हो, समुद्र में तो रत्न होते हैं जिन्हें गोता खोर गोता लगाकर प्राप्त करते हैं–

जैसे अन्तरिक्ष में अनगिनत नक्षत्र जगमगाते हैं, जैसे अन्तरिक्ष एक अथाह और अनन्त समुद्र या सागर है वैसे ही मानव का मस्तिष्क भले ही छोटे आकार का हो परन्तु वह भी उतना ही अथाह है, इसमें सुन्दर विचार रूपी नक्षत्र जगमगाते हैं, विचारशील मनुष्य ही सत्य के मर्म रूपी रत्नों को मस्तिष्क रूपी सागर में डुबकी लगाकर पकड़ते हैं। इसलिये मानवी शरीर का मस्तिष्क ही वह छोटे जलाशय वाला द्यौ है। भौतिक द्यौ का सौन्दर्य और ज्योति बाह्य रूप से जिस प्रकार मुग्ध करता है, मस्तिष्क के उर्वर तिमय सुन्दर विचार उसी प्रकार आत्मानन्द को प्राप्त कराते हैं।

[३] इन्द्र पृथिवी से बड़ा है। इन्द्र परमात्मा को कहते हैं, सूर्य को भी कहते हैं। और आत्मा भी इन्द्र से पुकारी जाती है। भौतिक जगत् में जैसे सूर्य पृथिवी से बड़ा है, उसी प्रकार जीवन जो शरीर व आत्मा का समुच्चय है उसमें आत्मा शरीर से वर्षीयान है, बहुत है। शरीर तो बनते और मिटते रहते हैं किन्तु आत्मा अजर अमर है। इसलिये उसका महत्व अधिक है। पांच तत्वों से बनी काया या शरीर रूपी सुन्दरता तो मृत्यु में समाप्त हो जाती है किन्तु आत्मा का नाश नहीं है। उसकी पृथक सत्ता कभी [illegible] शरीर से अधिक [illegible] रखता है।

(४) गो की मात्रा नहीं है। गो रूपी पशु में यहाँ प्रयोजन नहीं है, उसका आकार-प्रकार रूप रंग वजन आदि सब बताया जा सकता है। गच्छ तीति गौ–गतिशीलता ही गो है। मानवी जीवन में वाणी का प्रमुख स्थान है, सब जीव-धारियों में मनुष्य अधिक बोलता है कितना बोलता है कोई सीमा नहीं, मनुष्य जीवन में नित्य गतिशील और उन्नतिशील हो सकता है, कोई मात्रा नहीं, ऊँचा और ऊँचा और अधिक ऊँचा इसलिये गतिशील वाणी गति की द्योतक है। महान पुरुषों और विदुषी महिलाओं ने जिस ज्ञान के प्रकाश से अन्त: अन्धकार को दूर किया, जिस मस्तिष्क में सुन्दर विचारों की ज्योति जगाई, जिस आत्म ज्ञान से आत्मा की महत्ता को जाना, तो [illegible] गतिशील वाणी से जगत् को गति प्रदान [illegible]।

आर्य कुमार व कुमारियो–पहेली का रहस्य तो अब समझ में आ गया है। इस रहस्य को आत्मसात करो ज्ञान गरिमा को धारण करो, सुन्दर विचारों को धारण करो आत्म के अमरत्व को जानकर निर्माण करो और जगत के उत्थान के लिए वेद वाणी को गतिशील करने के लिए [illegible] वाणी के प्रवाह [illegible]।

वैदिक बाल पहेली–२

पृच्छामि त्वा परमन्तं पृथिव्याः
पृच्छामि यत्र भुवनस्य नाभिः।
पृच्छामि त्वा वृष्णो अश्वस्य रेतः
पृच्छामि वाचः परमं व्योम॥
(यजु० २३-६१)

प्रश्न –

(१) पृथिवी की परम सीमा को तुमसे पूछता हूँ।
(२) जहां भुवन का केन्द्र है, उसको पूछता हूँ।
(३) वर्षणशील अश्व के रेत [पराक्रम] को तुमसे पूछता हूँ।
(४) वाणी के परम स्थान को तुमसे पूछता हूँ।

आर्य कुमारों या कुमारियो! यजुर्वेद के इस मन्त्र के उत्तर इसी अध्याय के अगले मन्त्र में दिये हुये हैं, उन्हें पढ़ो, उनका मनन करो, फिर हमें लिख भेजो। जिनके उत्तर ठीक होंगे उन्हें पुरस्कार रूप में आर्य साहित्य की पुस्तकें दी जाएंगी। उत्तर २९ [illegible] तक आ जाने चाहिए–उत्तर निम्नलिखित पते से भेजें–गुरुकुल के छात्र-छात्रायें अपने-अपने गुरुकुलों का नाम भी लिखें–

'आर्य कुमार संघ, आर्यमित्र
५ मीराबाई मार्ग लखनऊ-१'

मनोरंजन के साथ ज्ञान वर्धन

१–मनुष्य का हृदय २४ घण्टे में १०६५० बार धड़कता है।

२–मनुष्य २४ घण्टे में २१००० बार श्वास लेता है।

३–मनुष्य के नाखून २४ घण्टे में .००४३५३५६ से० मी० बढ़ते हैं।

४–मनुष्य के बाल २४ घण्टे में .०००१९७ से० मी० बढ़ते हैं।

५–मनुष्य के मस्तिष्क का वजन ३ पौंड होता है।

६–मनुष्य के शरीर के बालों तथा नाखूनों में नसें नहीं होती हैं। अतः इन्हें काटने से दर्द नहीं होता है।

७–मनुष्य के शरीर से प्राप्त लोहे से [illegible] से० मी० लम्बी कीलें बन सकती हैं।

८–मनुष्य के शरीर में ६५ प्रतिशत पानी होता है व २०६ हड्डियां और ७५० मांस पेशियाँ।

९–७० वर्ष के जीवनकाल में मनुष्य के हृदय गति २००,०००,-००० बार होती है।

१०–यदि मनुष्य के शरीर की छोटी और बड़ी नसों का विस्तार नापा जाय तो ३५०००० मील होगा।

११–पृथ्वी ३६५ दिन ६ घण्टे एवं १३ मिनट में ने सूर्य की परिक्रमा करती है।

१२–सब से बड़ा दिन २१ जून को तथा सबसे छोटा दिन २३ दिसम्बर को होता है।

१३–सूर्य की किरणें एक सेकिण्ड में १८६००० मील की यात्रा करती हैं।

–सं० चन्द्रप्रकाश शर्मा
पतवरा मथुरी १/२०३, अलीगढ़

★

मिशनरियों के बहकावे में बिरसा भगवान के नाम पर हिंसा के कार्यों से पृथक् रहें

वनवासियों से पं गोविन्दप्रसाद की अपील

रांची—"बिरसा भगवान् ने अनेकश्वरवाद, पशुबली मांसाहार का विरोध करते हुए सच्चे मन से भगवान् की पूजा और सादा जीवन व्यतीत करने का उपदेश देकर जहां छोटा नागपुर के वनवासी भाइयों के सामाजिक अभ्युत्थान में प्रशंसनीय कार्य किया है, वहां स्वदेश प्रेम की उच्च भावना से प्रेरित होकर स्वधर्म की रक्षा के लिये विदेशी धर्म ईसाइयत का विरोध और वनवासियों के सामाजिक शोषण के अन्य प्रतीकों के विरुद्ध १९ वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में सशस्त्र विद्रोह करके न केवल छोटा नागपुर के वनवासी समाज में वरन् भारत के इतिहास में अपना नाम अमर किया है। बिरसा भगवान् ने पादरियों को मारा और गिरजाघरों पर हमला किया। आश्चर्य की बात है कि आज ये ही पादरी गिरजाघरों में ईसाइयों को बिरसा भगवान् के नाम पर उभाड़कर छोटा नागपुर में हिंसा का वातावरण फैला रहे हैं। परिणामस्वरूप यहां के विभिन्न सम्प्रदायों में पारस्परिक सौहार्द की भावना नष्ट होकर इससे राष्ट्रिय एकता पर आघात हो रहा है। साथ ही वीर बिरसा के राष्ट्रिय रूप का स्वरूप संकुचित होता जा रहा है। उन्होंने वनवासियों से अपील की कि सरकार और जागरूक नागरिकों को सतर्क रहकर प्रेम से रहना चाहिये, साथ ही हिन्दू समाज को अपने पिछड़े वनवासी समाज के सर्व भांति उन्नयन में अपना योगदान देकर अपना कर्तव्य पालन करना चाहिये ये हैं वे शब्द जो पं० गोविन्दप्रसाद आर्य विद्यावारिध (कलकत्ता) ने रांची के प्रसिद्ध रथयात्रा के अवसर पर छोटा नागपुर आर्य उप प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में रांची, घुरवा और डोरण्डा की आर्यसमाजों के सहयोग से निर्मित एक प्रचार कैम्प में कहे। इस प्रचार कैम्प में आर्यसमाज की ओर से वैदिक साहित्य के विक्रय और निर्मूल्य ट्रैक्टों के वितरण का अच्छा प्रबन्ध था। आर्यसमाज रांची की ओर से इस अवसर पर नागपुरिया भाषा में प्रसारित एक पर्चे में वैदिक धर्म का सन्देश देते हुए पृथक् प्रान्त की मांग का विरोध किया गया। मेले में आर्यसमाज घुरवा के सदस्यों का प्रशंसनीय सहयोग रहा।

—दयाराम पोद्दार मन्त्री

वेद प्रचार

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द मार्ग बीकानेर के तत्वावधान में दि० २६ से ३० जून १९६८ तक वेदप्रचार समारोह का वृहत् आयोजन समाज भवन में किया गया। निरन्तर पांच दिन तक हवन भजनोपदेश तथा वेद प्रवचन का कार्यक्रम प्रभावशाली ढंग से हुआ जिसमें आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान् आचार्य सत्यप्रिय जी प० शालिगराम जी शर्मा द्वारा वेद प्रवचनों तथा प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री पं० भगवतीप्रसाद जी 'अमय' के भजनों का बीकानेर की जनता पर अति उत्तम प्रभाव पड़ा।

दिनांक ३० जून को प्रातःकाल हवन यज्ञ की पूर्णाहुति पर आचार्य सत्य प्रिय जी की शुभ प्रेरणा से भावपूर्ण वातावरण में उपस्थित महानुभावों ने नित्य सन्ध्या हवन करने तथा वैदिक सिद्धान्तों को जीवन में अपनाने का शुभ संकल्प लिया। समाज के प्रधान श्री यशपाल जी ने अपने पूज्य पिता जी डा० गोविन्दराम जी की ओर से एक वरी उपप्रधान श्री रामचन्द्र जी भण्डारी ने चांदी का घृत पात्र समाज को दान दिये, तथा श्री देवेन्द्रदत्त जी शर्मा प्रधान चिकित्सक राजस्थान प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र बीकानेर ने 'आर्यवीर दल' के लिए पचास रुपये का खेल कूद का सामान देने की घोषणा की।"

शोक समाचार

ग्राम ससोई जि० मुजफ्फरनगर के श्री महाशय नौबतराय जी के पौत्र का देहान्त टाइफाइड ज्वर में हो गया। इलाज मुजफ्फरनगर के प्रमुख डा० वेद सुमन का चल रहा था। टाइफाइड के बाद दसवें रोज दो खून की उल्टीयां हो जाने पर देहान्त हो गया। इस अकाल मृत्यु से परिवार के सदस्यों को बहुत दुःख हुआ। ईश्वर से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे और परिवार के सदस्यों को धैर्य दे। सभा को वेद प्रचारार्थ १०) दान दिया गया।

गुरुकुल वृन्दावन समाचार

गुरुकुल विश्व विद्यालय वृन्दावन के विद्यालय तथा महाविद्याल विभाग खुल गये हैं। प्रवेश चालू है। जो महानुभाव अपने बालकों को गुरुकुल मे प्रविष्ट कराना चाहे, वे गुरुकुल कार्यालय से प्रवेश नियम फार्म निःशुल्क मगा लें अथवा सीधे लाकर प्रविष्ट करा सकते हैं।

गुरुकुल वृन्दावन मे आश्रम विभाग में सरंक्षकों की आवश्यकता है जो आर्य विचार धारा के हो, जिनकी आयु ४० से अधिक हो संस्कृत हिन्दी का ज्ञान आवश्यक है, जो देख भाल के साथ-साथ अध्ययन मे भी सहायता पहुंचा सकें। अपनी योग्यता का प्रमाण तथा कार्य के अनुभव का उल्लेख करते हुए निम्न पते पर पत्र व्यवहार करें। अवकाश प्राप्त सज्जन भी पत्र-व्यवहार कर सकते हैं। गुरुकुल प्रेमी महानुभाव अन्यों से भी प्रार्थना-पत्र भिजवा सकते हैं।

—नरदेव स्नातक, एम० पी०
मुख्याधिष्ठता
गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन, (मथुरा)

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन के विद्यालय तथा महाविद्यालय विभाग १ जुलाई को खुल गये हैं। प्रवेश चालू हैं। जो महानुभाव अपने बालको को गुरुकुल में प्रविष्ट कराना चाहे, उन्हें चाहिये कि गुरुकुल कार्यालय से प्रवेश नियम फार्म निःशुल्क मंगा लें। अथवा सीधे लाकर प्रविष्ट करा सकते।

आयुर्वेद महाविद्यालय की भूषण तथा शिरोमणि उपाधियां भी रजिस्ट्रेशन के लिए सरकार की ओर से पुनः स्वीकृति हो गई हैं, हाई स्कूल अथवा पूर्व मध्यमा पास छात्र यहां की आयुर्वेदिक कक्षाओं में प्रविष्ट होकर लाभान्वित हो सकते हैं।

—मुख्याधिष्ठाता

आर्यसमाज दीवान हाल का निर्वाचन

आर्यसमाज मन्दिर दीवान हाल दिल्ली का वार्षिक निर्वाचन दिनांक ७ जौलाई ६८ को दीवान हाल में श्री लाला रामगोपाल जी शालवाले संसद सदस्य की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। जिसके निम्नलिखित अधिकारी निर्वाचित हुये।

प्रधान—श्री लाला बालमुकन्द जी आहूजा, उपप्रधान—श्री वी० पी० जोशी जी एडवोकेट, श्री लाला ज्योतिप्रसाद जी- श्री लाला महेशचन्द्र जी, श्री केदारनाथ जी, मन्त्री—श्री पुरुषोत्तमदत्त जी, उपमन्त्री—श्री श्री देवराज जी चड्डा, श्री लाला रामावतार जी, श्री शान्तिप्रकाश जी, तेजभान जी काठपालिया, कोषाध्यक्ष—श्री लाला परमानन्द जी, पुस्तकाध्यक्ष—श्री पं० सुरेन्द्रकुमार जी शास्त्री।

शुद्धि तथा विवाह

सोमवार दि० २४-७-६८ के दिन लोवर परेल आर्यसमाज मे कु० नोरा मोंटेरिओ (Nora Monterio) रोमन कैथोलिक युवती की शुद्धि पं० लक्ष्मणराव ओघले जी के हाथ से हुआ और उसको श्रीमती आर्य नाम दिया। इसके बाद उसका विवाह श्री श्रीकान्त वोमन नामक हिन्दु कुमार के साथ हुआ।

सूचनायें

१—मातृ मन्दिर कन्या गुरकुल डी० ४५।१२९ रामापुरा, से राखी का पर्व प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी माननीय राजाराम जी शास्त्री उप कुलपति काशी विद्यापीठ की अध्यक्षता मे शंकर सत्संग भवन रामापुरा (लक्सा रोड) में ८-८-६८ को सोत्साह सम्पन्न होगा। कृपया बाहर से आने वाले भाई बहन आने से पूर्व सूचना दें। विस्तृत कार्यक्रम की जानकारी पत्र अथवा सम्पर्क द्वारा की जा सकती है।

२—मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल वाराणसी के नवीन भवन निर्माण का उपक्रम जारी है। उपदेशिका तथा गुरुकुल में नव प्रवेश आरम्भ है।

३—मातृ मन्दिर गुरुकुल के तत्वावधान में छात्राओं का ग्रीष्मावकाश शिविर हरिद्वार में लगा। इसमें २५ छात्राओं ने भाग लिया। राज्य समाज कल्याण सलाहकार बोर्ड उत्तर प्रदेश लखनऊ, तथा आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर का प्रमुख सहयोग प्राप्त हुआ।

—पुष्पावती, अध्यक्ष
मातृ मन्दिर, वाराणसी

[१]

आपने तो दो-तीन अङ्कों में ही "आर्यमित्र" की काया पलट दी। उसके लेखों, टिप्पणियों में आमूल परिवर्तन हो गया। अब उसमें पर्याप्त अध्ययन योग्य और विचारणीय मसाला रहता है। कलेवर भी सुधरा है। बहुत-बहुत बधाई। भविष्य के लिये और शुभकामनाएं।

—महेन्द्रप्रताप शास्त्री

[२]

आर्यमित्र इस वर्ष ७० अङ्क २३ को मैंने अद्योपांत पढ़ा मुझे इसे पढ़कर बड़ा आनन्द आया। इस अङ्क की विशेषता आर्य कुमार संघ का जो पृष्ठ १३ पर वैदिक पहेली के नाम से प्रकाशित हुआ है, अति सुन्दर और विचारणीय है। दो-चार प्रश्न इसमें अङ्कित किये गये हैं, उन पर पोथी पर पोथी लिखी जा सकती है। वह वैज्ञानिक दृष्टि और मनोरञ्जन की दृष्टि से भी बड़े ही अच्छे पवित्र होंगे। इसमें जो २० जुलाई सन् १९६८ तक ही अवधि निहित की है, वह एक बन्धन है। अन्तर देने के लिये अध्ययन और मनन की आवश्यकता है, इसके नीचे वह सूक्ति जो नं० १ व २ करके लिखी गई है, वह भारत के भविष्य के लिए सर्वोपरि है एवं विशेष अङ्क श्रावणी पर्व पर प्रतीक्षा करने की पृष्ठ ६ पर घोषित की गई है इसका शीर्षक पाप क्या है के नाम से घोषित किया गया है भावना प्रशंसनीय और श्लाघनीय है यदि यह विशेष अङ्क आर्यमित्र के पिछले अङ्कों के भांति होगा तब यह आर्यमित्र के लिये बड़े गौरव की बात सिद्ध होगी। मैं यह भी जानकर बड़ा प्रसन्न हूं कि परमेश्वर को अमृत वाणी शीर्षक मे प्रथम पृष्ठ पर नरो आगे बढ़ो, विजयी हो यह विश्वास का उद्बोधन है।

—छोटेलाल सत्यपाल
गान्धी शास्त्री स्मारक समिति
शाहजहांपुर

[३]

सेवा में निवेदन है कि आर्यमित्र बहुत सुन्दर निकलने लगा है। काव्य कानन शिक्षा जगत आर्य युवक संघ, अमृत-वर्षा धार्मिक समस्यायें कहानी कुञ्ज अति श्रेष्ठ लेख तथा कवितायें पढ़कर हृदय गद्‌गद् हो गया परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि आर्यमित्र दिन दूनी उन्नति करता रहे। धन्यवाद! आर्यमित्र अबकी ठीक समय पर शनिवार को आ गया जो कि रविवार को साप्ताहिक सत्सङ्ग में पढ़कर सुनाया गया।

—रामचन्द्र आर्य
कोषाध्यक्ष, आर्यसमाज कायमगंज

[४]

आर्यमित्र की सफलता के लिये शतशः बधाई।

—सुरेन्द्रकुमार सामवेदी
अध्यक्ष प्रचार विभाग
गुरुकुल वैदिक आश्रम, राउरकेला

[५]

व्यवस्थापक जी नमस्ते।

पत्र लिखने का कारण कि हमें 'आर्यमित्र' अत्यधिक पसन्द आया है। इस पत्र की जितनी प्रशंसा की जाये थोड़ी ही होगी। इसलिये मुख्योद्देश्य पर आ जाना ही ठीक होगा। हम 'आर्यमित्र' को वाचनालय में लगा रहे हैं। पता लिख लीजिये। धनादेश पाते ही निम्न पते पर पत्र भेजना का कष्ट करें।

नगर पालिका वाचनालय
खडकेश्वर, खडकी (औरङ्गाबाद)
मराठवाड़ा [महाराष्ट्र]

साहित्य-समीक्षा

नशाबन्दी सन्देश—अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद २८, थियेटर कम्यूनिकेशन बिल्डिंग नई दिल्ली की मासिक पत्रिका (प्रकाशन का यह दूसरा वर्ष है-वार्षिक मूल्य ६) एक प्रति ५० पैसे

अंग्रेजी व हिन्दी लेखों सहित यह एक सचित्र पत्र है और नशाबन्दी के महान् उद्देश्य को लेकर चला है। छपाई सफाई अति सुन्दर है। सामग्री उत्तम है। राष्ट्र निर्माण की हुंकार लगाने वाली इस पत्रिका का स्वागत है।

धर्म प्रचार—ले० स्व० पं० लेखराम, आर्य मुसाफिर, अनुवादक पं० शान्ति प्रकाश शर्मा जी, प्रकाशक-आर्य उप-प्रतिनिधि सभा, लखनऊ जिला।

मूल्य-कृपालु पाठकों का सहयोग, स्वयम् पढ़ने व दूसरों को पढ़ाने का।

प्राप्ति स्थान—श्री जवाहरलाल द्वारा आर्य समाज चौक, लखनऊ।

आर्य समाज के दूरदर्शी विद्वान् स्व० पं० लेखराम आर्य पथिक ने जो चेतावनी ७५ वर्ष पूर्व दी थी वह अक्षरशः सत्य सिद्ध हुई है। आर्य जाति को जगाने के लिये प्रेरणात्मक विचार और पन्द्रह प्रायश्चितों से युक्त यह पुस्तिका पठनीय है।

अभिलाषा!

मेरी पूरी चाह यही हो,
भगवन् मेरी राह यही हो।
जिसे वेद ने सत्य बताया, ऋषियों ने सत्कर्म बनाया।
उन शुभ कर्मों को करने की, निश दिन मन में चाह नई हो।
भगवन् मेरी राह यही हो।
चाहे जीवन सङ्कटमय हो, दुख के ऊपर दुख अथाह हो।
सच्चे पथ से डिगें नहीं हम, मुख में दुःख की आह नहीं हो।
भगवन् मेरी राह यही हो।
कोई बुरा कहे मत डर हो, चाहे रुष्ट जगत् मुझ पर हो।
यदि नरः मर सत्कर्मों पर तो किंचित भी परवाह नहीं हो।
भगवन् मेरी राह यही हो।
प्रभु तेरा विश्वास अटल हो, मन में तब सुमिरन प्रतिपल हो।
मन निर्वैर मृदुल निश्छल हो, कुमति कुभाव कुचाह नहीं हो।
भगवन् मेरी राह यही हो।
'प्रेम' देश हितरत भर प्रण हो, जनहित में सर्वस्व अर्पण हो।
वैदिक पथ की अमिट लगन हो मन्द कभी उत्साह नहीं हो।
भगवन् मेरी राह यही हो।
मेरी पूरी चाह यही हो।

—प्रेमनारायण द्विवेदी 'प्रेम'

प्रोग्राम-वेद प्रचार सप्ताह

१—सर्वश्री सत्यमित्र शास्त्री—८ से १६ अगस्त आजमगढ़
२—केशवदेव शास्त्री—८ से १६ अगस्त मऊनाथ भञ्जन
३—श्याम सुन्दर शास्त्री—८ से १६ अगस्त हरदोई
४—विश्वदर्शन वेदालङ्कार—८ से १६ अगस्त बहादुरी मरठ
५—रामनारायण विद्यार्थी—८ से १६ अगस्त रुद्रपुर (नैनीताल)
६—विश्वनाथ जी त्यागी—८ से १६ अगस्त लखीमपुर खीरी

प्रचारक

१—श्री रामस्वरूप जी आ० मु०—नूरनपुर
२—श्री गजराजसिंह—शाहगंज
३—श्री धर्मराजसिंह—सीतापुर
४—श्री वेदपालसिंह—बिधूना (इटावा)
५—श्री प्रकाशवीर शर्मा—चन्द्रनगर लखनऊ
६—श्री बालकृष्ण शर्मा—रमोली (बाराबंकी)
७—श्री मुरलीधर जी—दातागंज (बदायूं)
८—श्री ज्ञानप्रकाश—रुद्रपुर (नैनीताल)
९—श्री खड्गपालसिंह—१३ से १५ सकरावां

—सच्चिदानन्द शास्त्री
अधिष्ठाता, उपदेश विभाग

वर चाहिये

आठवीं कक्षा में प्रथम श्रेणी उत्तीर्ण कढ़ाई सिलाई तथा गृह कार्य में दक्ष आयु १५ वर्ष, गौरवर्ण आर्य विचार ब्राह्मण परिवार की कन्या के लिए २२ से २५ आयु तक का शिक्षित, स्वस्थ एवं आर्य विचार का सुन्दर वर चाहिये। गुरुकुल के स्नातक ब्राह्मण वर्ण के वर को प्राथमिकता दी जाएगी। आदर्श सादा विवाह एक वर्ष के पश्चात् होगा, दहेज की पूर्ति नहीं।

पता—पं० छाजूराम शास्त्री आर्योपदेशक
आर्य उप प्रतिनिधि सभा
फैजाबाद (उ० प्र०)

भारत के शहरों में अधिकांश हत्यायें रविवार के दिन

नयी दिल्ली, ऐसा मालूम होता है कि सप्ताह के अन्य दिनों की अपेक्षा रविवारों को हत्या के अपराध अधिक किये जाते हैं।

केन्द्रीय जांच ब्यूरो द्वारा पिछले ५ वर्षों में शहरों में, विशेष रूप से दिल्ली के सन्दर्भ में, की जाने वाली हत्याओं के रिकॉर्डों के अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है।

श्रावणी की दक्षिणा दें

मानवता के प्रतीक वैदिक धर्म का दिव्य नाद गुञ्जानेवाले विगत ८० वर्षों से

उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ से प्रकाशित

के

आज ही ग्राहक बनकर

क्या आपने इस स्वाध्याय अंक को पढ़ा है ? क्या इससे 'पाप-विमोचन' की आपको कोई प्रेरणा मिली है ?

आर्य्यमित्र की परिवर्तित नीति को लेकर विभिन्न स्तम्भों में प्रकाशित आध्यात्मिक एवम् सामाजिक लेखों को क्या आपने साप्ताहिक अङ्कों में देखा है ? कहानी-कुञ्ज, आर्य्य कुमार सघ, बाल-विनोद, महिला-मण्डल वनिता-विवेक, शिक्षा-जगत्, वेद-व्याख्या, विचार-विमर्श, अमृत-वर्षा, परमेश्वर की अमृत वाणी, आध्यात्म सुधा, वैदिक पहेलियां, धार्मिक समस्यायें, शिक्षा जगत् आदि अनेक स्तम्भों में सम्पादकीय टिप्पणियों सहित प्रकाशित सामग्री क्या आपको रुचिकर लगी है ?

यदि हां ! तो आज ही इस हिन्दी साप्ताहिक पत्र के ग्राहक बनिये एवम् बनाइये। वार्षिक मूल्य केवल दस रुपए है। जिनमें इस स्वाध्याय अङ्क जैसे ४ विशेषाङ्क भी सम्मिलित हैं।

प्रिय पाठको ! श्रावणी की यही दक्षिणा है। इसे आज ही दें ताकि आर्य्यमित्र की छपाई कागज व पठनीय सामग्री को अत्यधिक उत्तम बनाया जा सके। प्रत्येक शिक्षण संस्था, आर्य्य समाज व आर्य्य परिवार में आर्य्यमित्र पहुंचे, श्रावणी पर्व पर आप इस दक्षिणा को देवें और अन्यों से दिलावें।

-चन्द्रदत्त तिवारी
अधिष्ठाता

धार्मिक परीक्षायें

भारतवर्षीय वैदिक सिद्धांत परिषद् (रजि०) की सिद्धांत प्रवेश, सि० विशारद, सि० भूषण, सिद्धान्तालंकार, सि० शास्त्री, तथा सिद्धान्ताचार्य

परीक्षायें आगामी दिसम्बर-जनवरी में समस्त भारत तथा विदेशों में होंगी। सर्व प्रथम, द्वितीय, तृतीय आने वालों को छात्रवृत्ति दी जाती है। उत्तीर्ण होने पर सुन्दर व तिरंगा उपाधि पत्र दिया जाता है। तथा अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश की सत्यार्थ सुधाकर, सत्य धर्मामार्त्तण्ड उपाधियां डाक द्वारा निःशुल्क प्राप्त करें। विशेष जानकारी के लिए १५ पैसे की टिकट भेजकर नियमावली मंगाइये।

आदित्य ब्रह्मचारी	आचार्य मित्रसेन
यशःपाल शास्त्री	एम० ए०, सिद्धान्तालंकार
प्रधान	परीक्षा मन्त्री

भारतवर्षीय वैदिक सिद्धान्त परिषद्
सेवा-सदन, कटरा, अलीगढ़ (उ० प्र०)

वधू चाहिये

एक २७ वर्षीय सुन्दर, स्वस्थ, वार्ष्णेय वैश्य कुमार के लिये जो एक स्थायी राजकीय विभाग में ४२५ रु० मासिक वेतन पा रहा है, एक सुन्दर ग्रेजुएट कुमारी चाहिये। फोटो व पूर्ण विवरण सहित पत्र व्यवहार कीजिये।

रमाशंकर वार्ष्णेय
१२ बापूनगर, अजमेर

२८-२९-३१

वेद प्रचार सप्ताह के पुनीत पर्व पर प्रसारित

श्री पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय की अमूल्य रचना—ऋषि के सिद्धान्तों पर आधारित

* धर्म-तर्क की कसौटी पर *

धर्म के सम्बन्ध में जनता के भिन्न-भिन्न विचार हैं-संसार में हजारों धर्म हैं ? फिर किसको उचित माना जाय ? लेखक ने विद्वता पूर्ण धर्म की विवेचना इस पुस्तक में की है और यह दिखलाया है कि सच्चा धर्म वही है जो तर्क की कसौटी पर घिसा जा सके। इस पुस्तक के अध्ययन से आप को यह ज्ञान हो जायगा कि धर्म के सिद्धान्त और तर्क में क्या अन्तर है, और वैदिक धर्म ही क्यों विश्व का सर्व श्रेष्ठ धर्म समझा जा सकता है। मू० १.५०

समस्त आर्य संस्थायें अधिकाधिक मंगाकर जन समुदाय में प्रसार करें।

१ प्रति का मूल्य	२) ५०	डाक खर्च सहित
१० प्रतियों का मूल्य	१३) ७५	"
२५ " का "	३०)	"
५० " का "	५२)	"
१०० " का "	१००)	"

नोट--रुपया मनीआर्डर से आना चाहिए।

पता--वैदिक प्रकाशन मन्दिर
१३ लालपतराय लेन, इलाहाबाद—३

समस्त नेत्र रोगों की

अचूक औषधि

नेत्र के समस्त रोगों, जैसे मोतियाबिन्द की प्रथम अवस्था, मन्द दृष्टि, फूला, कुकरे, तथा पानी का बहना आदि की अचूक औषधि-एक हिमालय के तपस्वी सन्यासी से प्राप्त हुई है। उसका विधि पूर्वक निर्माण किया है। इस औषधि के लगाने, खाने व सूंघने से समस्त नेत्र रोग नष्ट हो जाते हैं। नेत्रों की ज्योति बढ़ जाती है। फिर नेत्र-ज्योति आयु भर स्थिर रहती है। जीवन भर चश्मे की आवश्यकता नहीं रहती।

यदि आप चश्मा लगाते हैं तो कम से कम ४० दिन तक, और यदि मोतियाबिन्द आरम्भ हुआ है तो कम से कम ८० दिन तक इस औषधि के खाने-लगाने व सूंघने से अद्भुत लाभ प्राप्त होता है। स्वस्थ नेत्रों में नित्य प्रति लगाने सूंघने से किसी प्रकार का नेत्र रोग उत्पन्न ही नहीं होता।

इस सम्बन्ध में स्वयं मिलें अथवा पत्र-व्यवहार करें। उत्तर के लिये १५ पैसे के टिकट भेजें।

४० दिन के प्रयोग का मूल्य लागत मात्र-लगाने की ५) रु० प्रति शीशी, सूंघने की ५) रु० प्रति शीशी। खाने की साधारण औषधि ६०) रु० तथा शीघ्र व विशेष गुण के लिये विशेष स्वर्ण, मोती, केसरादि से युक्त का मूल्य २००) रु० है। एकबार अवश्य परीक्षा कीजिये। वेद सप्ताह के उपलक्ष में औषधि के प्रचार तथा विश्वास के लिये प्रथम कोर्स २५) रु० में डाकव्यय सहित दिया जाएगा। यह सुविधा दीपावली तक रहेगी।

सूचना:—इसके अतिरिक्त हमारे यहां दमा, अर्श (बवासीर), सफेद कुष्ट, प्रमेह, प्रदर, नपुंसकता तथा पथरी आदि रोगों की भी चिकित्सा सावधानी से की जाती है।

मिलने का समय:—प्रातः ७ बजे से १२ तक

—वैद्य देवेन्द्र आर्य
आर० एम० पी० (उ० प्र०)
देवेन्द्र रसायन शाला, दयानन्द नगर, गाजियाबाद।

वेदोऽसि येन त्वं देव वेद देवेभ्यो वेदो भवास्तेन मह्यं वेदो भूयाः। देवगातु विदोगातुं वित्वा गातुमित मनसस्पत इमं देव यज्ञ स्वाहा वातेधाः ॥ [यजु० २-२१]

भावार्थ-हे विद्वान मनुष्यो ! तुम लोगों को जिस वेद जानने वाले परमेश्वर ने वेद विद्या प्रकाशित की है, उसकी उपासना करके उसी की वेद विद्या को जान कर और क्रिया काण्ड का अनुष्ठान करके सबका हित सम्पादन करना चाहिए, क्योंकि वेदों के विज्ञान के बिना तथा उसमें जो जो कहे हुए काम हैं, उनके किये बिना मनुष्यों को कभी सुख नहीं हो सकता। वेद विद्या से जो सबका साक्षी ईश्वर देव है, उसे सब जगह व्यापक मान के नित्य धर्म में रहो।

—महर्षि दयानन्द सरस्वती

सूर्य ऽ एकाकी चरति

●

यजुर्वेद के २३ वें अध्याय मे अनेक मन्त्र प्रश्नोत्तर के रूप में हैं। उत्तर शैली में जिज्ञासुओं की शंकाओं का समाधान कराते हुए श्रेष्ठतम कर्म की प्रेरणा देने का यह ढंग बड़ा ही मनमोहक है। पहेली रूप में दिये गये मन्त्रों पर जब मनन किया जाता है या जिज्ञासुओं को मनन कराया जाता है तो मस्तिष्क का विकास किस सीमा तक होता है, यह बात प्रत्यक्ष अनुभूति की और उसका वर्णन शब्दों से परे है। यजुर्वेद के इस अध्याय के ९ वें और ४५ वें मन्त्र के प्रारम्भ में एक ऐसा ही सुन्दर प्रश्न किया गया है, और वह है—

"कः स्विदेकाकी चरति है—

और १० वें व ४६ वें मन्त्र में उसका एक ही उत्तर इस प्रकार दिया है—

"सूर्य्यऽएकाकी चरति"

अर्थात् प्रश्न किया गया "अकेला कौन विचरता है ?" उत्तर दिया गया "सूर्य अकेला विचरता है।"

भौतिक जगत् मे जिस प्रकार अकेला सूर्य सारे संसार को प्रकाशित करता है, उसी प्रकार सामाजिक, राष्ट्रीय एवम् अन्तर्राष्ट्रिय जगत् मे वह मानव जो सूर्य के समान वर्चस्वी तपस्वी और तेजस्वी होता है वह अविद्या रूपी अन्धकार को दूर कर ज्ञान का प्रकाश करता है और भटके हुए मनुष्य समुदाय को उनके लक्ष्य का बोध कराता है। यही कारण है कि वेदानुसार वेदपाठी वेद के शब्दों मे परमात्मा से यह प्रार्थना करता है—

"अहम् सर्या इवाजनि" सूर्य के समान जब तक मनुष्य ज्ञान के प्रकाश को धारण नहीं करता तब तक वह तो आत्म कल्याण ही करता है, न ही परिवार, समाज, राष्ट्र व विश्व का। सूर्य में अपनी कुछ अन्य विशेषतायें होती हैं। सूर्य सौर मण्डल का राजा है, और सौर मण्डल के समस्त ग्रहों व उपग्रहों को न केवल प्रकाशित करता है, वरन् अपने नियन्त्रण में भी रखता है। सूर्य कितना तेजस्वी है, उसका विश्लेषण करते हुए एक वैज्ञानिक ने कितने सुन्दर उद्गार प्रकट किए हैं-वह लिखता है कि यदि संसार भर का समस्त ईंधन मिट्टी का तेल पेट्रोल से जला दिया जाये, विद्युत के समस्त केन्द्रों का मुक्तिकरण करके एक विशाल गोला आकाश में प्रकाशित किया जाये। तो वह इस ईश्वरीय सूर्य के सम्मुख सम्भवतः एक जुगनु सम भी प्रकाश नहीं देगा। समस्त ईन्धनों का ताप सूर्य के ताप के सम्मुख नितान्त नगण्य होगा।

ऐसा ज्योतिमान सूर्य्य अपने कक्ष पर अकेला ही घूमता है। ग्रह सूर्य की परिक्रमा करते हैं, उपग्रह ग्रहों की परिक्रमायें करते हैं, किन्तु सूर्य किसी ग्रह या उपग्रह की परिक्रमा नहीं करता। ऐसे अदभुत सूर्य्य से जब तक मानव प्रेरणा नहीं लेता वह महानता के शिखर पर नहीं चढ़ता।

मानवी स्वभाव के अन्तर्गत एक अनुकरण की प्रवृत्ति है। बाल्यकाल से लेकर वृद्धावस्था तक मनुष्य किसी न किसी रूप में कोई न कोई नकल किया करता है। एक प्रवाह है जिसमे मनुष्य बह जाया करता है। कभी संसार में आध्यात्मिकता का प्रवाह प्रबल था, और मनुष्य उसमें बहता था, किन्तु आज तो भौतिकता का प्रवाह प्रबल है। व्यसन और विलास के प्रबल प्रवाह मे मानव बह रहा है। आध्यात्मिकता के प्रवाह ने तो मानव को परमेश्वर के आनन्द सिन्धु में विलीन किया था। किन्तु भौतिकता का प्रवाह तो मनुष्य को विनाश के सागर की ओर ले जा रहा है। प्रवाह के साथ बह जाना सरल होता है। किन्तु प्रवाह को रोकना या उस की दिशा को परिवर्तित करना या बांध बनाकर उस सदुपयोग करना किसी विरले का काम होता है, और ये विरले ही सूर्य के समान शक्तिवान और कर्त्तव्य परायण होते हैं। ये स्वतः मर्यादाओं में बन्धते है, फिर दूसरों को उसमें बांधते हैं।

विनाश के इस प्रवाह को अवरुद्ध करने के लिए सूर्य्य के समान तेजस्वी वर्चस्वी, तपस्वी व यशस्वी एक युग पुरुष ने अपनी आत्मशक्ति का परिचय दिया था जिसे आज जगत् महर्षि दयानन्द के नाम से जानता है। इस महान् आत्मा ने एक उद्घोष किया था—"वेद की ओर लौट चलो।" इस युगपुरुष ने वेद की वेगवती धारा को प्रवाहित किया अपने दिव्य प्रकाश से स्वामी श्रद्धानन्द पं० लेखराम हंसराज, आदि अनेक महात्माओं को प्रकाशित किया। संसार ने देखा कि इस प्रवाह में मानव बहने लग गये हैं, किन्तु आज वह प्रवाह पुनः मन्द पड गया है। एक समय था जब प्रत्येक आर्य स्वाध्यायशील होता था। वह स्वत वेद पढ़ता था और उसका प्रचार करता था, किन्तु आज स्थिति कुछ और संकेत दे रही है। वेद मन्दिर की दीवारों पर वेद मन्त्र लिखने जब प्रारम्भ हो गये थे और वेद भगवान् की जय' का जयजयकार होने लग गया था उस समय स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज ने विनोद में एक सत्यता का साक्षात्कार कराया था कि ये मन्त्र अब दीवारों पर ही लिखे रहेंगे—केवल वाणी से ही वेद का जयघोष होगा। वह अक्षरशः सत्य हो गया है।

प्रवाह के मन्द हो जाने से दिल में तड़प होने पर भी आज अनेक विद्वान् निराश और हताश बैठे हैं। यदि कोई लगन से कार्यरत होता है तो उससे भी निराशा की बातें की जाती हैं, उसे निरुत्साहित किया जाता है। जो पतन है निराशा है, उसके मूल में केवल एक ही बात है और वह है वेदानुकूल जीवन का निर्माण न करना। इन पंक्तियों के लिखने के पीछे केवल एक प्रयोजन है और वह यह है कि वैदिक धर्म तो आशावाद सजोता है। वैदिक धर्म के अनुयायियों में निराशा का क्या काम ? यदि आज प्रवाह मन्द पड गया है तो उठिये कमर कसिए और उसे तीव्र कीजिये। यदि आज पाप और अविद्या का अन्धकार बढ़ गया है तो सूर्य सम वेद विद्या से स्वतः को जगमग कर उसे दूर कीजिये। यदि पाखण्ड की अभिवृद्धि हो रही है, तो उठिये और अपने वृद्ध हाथ मे पाखण्ड खण्डिनी पताका उठाइये। वेद प्रचार सप्ताह में आशावाद को संजोइये। आप जहाँ-जहाँ पर भी है, वहाँ से वेद का दिव्य नाद गुंजाइये। देखिये वेद आपके भीतर वीरता को ओतप्रोत करने के लिए कैसी प्रेरणा दे रहा है—

"न वा उमां वृजने वारयन्ते
न पर्वतासो यदहंमनस्ये।
मम स्वनात् कृधु कर्णो भयात
एवेदनु धून् किरणः समेजात् ॥"
(ऋ० १०-२७-५)

अर्थात् जब मैं किसी बात को ज्ञानपूर्वक जान लेता हूं तर्करूपी कसौटी से बुद्धिपूर्वक मान लेता हू और जब उसे दृढतापूर्वक ठान लेता हू तो मेरा मार्ग कोई अवरुद्ध नहीं कर सकता। ये पर्वत ये विरोधी क्या मेरा पथ रोक सकते हैं? नहीं, कदापि नहीं। मै जब उद्घोष करता हू, दिशायें कांप उठती हैं। भीरु कायर सब भाग खड़े होते हैं। क्यो इसलिये कि मैंने अपने को सूर्य के समान तेजस्वी और तपस्वी बनाकर जग के सम्मुख उपस्थित कर दिया है। प्रकाण्ड ज्योति वाले सूर्य्य के प्रकाश को मेघ कब तक ढाँप कर रख सकते हैं? किरण पुञ्ज सूर्य तो सम्यक निर्बाध गमन किया करता है। मैं तो कर्त्तव्य पथ का पथिक हू, मुझे तो "चरैवेतिचरैवेति' चलना है—बस चलना ही है। कोई चले या न चले "मन एकला चलो रे' 'बढ़ चल, बढ़ चल, बढ़ चल तू एकाकी। के अनुसार कोई साथ न दे, तो भी अकेला ही चलना है क्योंकि वेद ने भी कहा है—

"सूर्य्य ऽ एकाकी चरति'

"......भस्मान्तम् शरीरम्।"

पद्मश्री प० दामोदर सातवलेकर जी जो वेदमूर्ति कहे जाते थे, उनका देहावसान ३१ जुलाई १९६८ को हो गया। आप रक्त चाप और पक्षाघात से पीड़ित थे। १०१ वर्ष की आयु की श्री पाद सातवलेकर जी वेदों के प्रकाण्ड विद्वान थे। सरल साधु जीवन वेदानुकूल था, और "जीवेम शरदः शतम्" को प्रत्यक्ष करने वाले इस शतायु विद्वान् की शत वीं गत वर्ष मनाई गई थी, एवम भारत सरकार ने उन्हें पद्म श्री की उपाधि से विभूषित किया था।

दिवंगत आत्मा की शान्ति तथा उनके वियोग से दुःखी सम्बन्धियों को धैर्य प्रदान करने के लिये विश्व की समस्त आर्य समाजो द्वारा परम पिता परमात्मा से प्रार्थनाएं की जा रही हैं, और शोक प्रस्ताव पास किये जा रहे हैं।

आर्य्यमित्र परिवार की ओर से हम भी पूज्य पण्डित जी के प्रति अपनी

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. की आर्थिक स्थिति और प्रान्त की आर्यसमाजों का कर्त्तव्य

ऋषि दयानन्द के जीवन में ही आर्य समाज के नियम तथा उपनियम बन चुके थे। उस समय यह नहीं सोचा गया था कि जब आर्यसमाजों की सख्या हजारों पर पहुच जायेगी, तब उसको एक सूत्र में बांधने के लिये क्या-क्या उपाय किये जावें। ऋषि की मृत्यु के पश्चात उस समय के अनुभवी नेताओं ने प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं की स्थापना पर विचार किया।

उत्तर प्रदेश में आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना १९ वीं शताब्दी के अन्तिम वर्षों में हुई। सम्भल के ऋषि भक्त श्री ला० श्यामसुन्दर जी, जिला बिजनौर के प्रसिद्ध नगर नहटौर निवासी रईस चौ० मुन्नीसिंह और हरदोई के पं० भगवानदीन इत्यादि ने प्रान्त का भ्रमण किया, दान एकत्रित किया और सभा की स्थापना की। इसी प्रकार अन्य प्रान्तों में भी प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं की स्थापना हुई।

दक्षिण भारत के केरल प्रान्त मे उत्पन्न हुए महापण्डित स्वामी शङ्कराचार्य ने भी समस्त देश का भ्रमण करके वैदिक धर्म के पुनरुत्थान के लिये स्थान स्थान पर विद्यापीठ और मठ स्थापित किये। परन्तु चूंकि इन मठों को प्रजातन्त्रात्मक पद्धति पर नहीं किया गया था और इनको एकसूत्र मे बांधने के लिये कोई केन्द्रीय सस्था स्थापित नहीं की गई थी। इसका परिणाम यह निकला कि प्रत्येक मठ दूसरे मठ से भिन्न और पृथक हो गया और थोड़े ही काल में मठाधीश बड़े-बड़े जागीरदार बन गये और हर प्रकार का भ्रष्टाचार और दुराचार उनमे व्याप्त हो गया। और जिस उद्देश्य की पूर्ति के लिये यह मठ स्थापित किये गये थे, वह समाप्त हो गया।

इसके विपरीत ऋषि ने पर्याप्त विचार और देश की स्थिति का अध्ययन करके आर्यसमाज की स्थापना प्रजातन्त्रात्मक नियमों और सिद्धान्तों पर की ताकि भविष्य में आर्यसमाजों का सगठन बना रहे और एक सूत्र में बधा रहे। आर्यसमाज के नेताओं ने प्रान्तीय सभाओं का गठन भी प्रजातन्त्रात्मक नियमों पर निर्धारित किया।

सन् १८७५ से (जबकि आर्यसमाज की स्थापना बम्बई में की) सन् १९२० तक आर्यसमाज का स्वर्ण युग कहा जा सकता है। इन ४५ वर्षों में

आर्यसमाज ने आशातीत सफलता प्राप्त की और एक सार्वजनिक आन्दोलन बन गया। और ससार के बड़े से बड़े विद्वान का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया इस आशातीत सफलता का श्रेय केवल प्रान्त की आर्य प्रतिनिधि सभा को ही है। यदि आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना न होती तो कोई भी कार्य न हो पाता न प्रचार की व्यवस्था होती और न विद्यालयों और अन्य सस्थाओं की स्थापना होती॥

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश समस्त समाजों और आर्यों के लिये धन्यवाद और गौरव की सस्था है। समस्त देश मे यू०पी० प्रान्त मे आर्य समाजों की सख्या सबसे अधिक है। जिनके पास अपने-अपने विशाल मन्दिर और विद्यालय हैं, इन समस्त समाजों को एक सूत्र में बांधने के लिये और वैदिक धर्म का प्रचार करने के लिये प्रतिनिधि सभा को सुदृढ़ बनाने की आवश्यकता है। इसके लिये सब प्रथम प्रचुर धन राशि की आवश्यकता है।

इस्लाम का प्रचार मुसलमान, ईसायत का प्रचार ईसाई भाई और सिक्ख धर्म का प्रचार सिक्ख लोग ही कर सकेंगे।

अब तक आर्यसमाज का जो प्रचार हुआ, वह पौराणिक हिंदुओं की उदारता और उनके धन से ही हुआ, चूंकि आर्य समाज ने भी हिन्दुओं की बड़ी सेवा और रक्षा की। परन्तु अब समय बदल रहा है।

-श्री विश्वनाथ त्यागी
आर्य मिशनरी

वैदिक धर्म के प्रचार का उत्तर दायित्व निरन्तर आर्य समाजियों के कन्धों पर ही रहेगा।

आर्य्य प्रतिनिधि सभा की आर्थिक स्थिति डांवाडोल है। प्रतिदिन सभा का व्यय बढ़ता जा रहा है। परन्तु दुःख से लिखना पड़ता है कि कोई भी व्यक्ति यह सोचने को उद्यत नहीं है कि भविष्य मे सभा का इतना बड़ा कार्य किस प्रकार चलेगा।

सभा के अधिकारी, अन्तरग सदस्य तथा प्रान्त की आर्यसमाजें सभी इस गम्भीर समस्या के प्रति उदासीन हैं। यदि यह सभी महानुभाव कमर कसकर खड़े हो जावें तो धन की समस्या सरलता से हल हो सकती है।

प्रत्येक आर्यसमाज को अपनी समस्त आय का दशांश सभा को देना चाहिये। जितना धन सभा को इस समय समाजों से भिन्न भिन्न रूप में मिलता है वह सभा के बढ़ते हुये व्यय को पूरा करने से नितान्त अपर्याप्त है।

अन्त में प्रत्येक आर्यसमाज स्थानीय धनीमानी और दानवीर महानुभावों से अपील करता हूं कि वे सब मिलकर दान देकर सभा की वर्तमान शोचनीय आर्थिक स्थिति को दृढ़ बनावे, तभी प्रान्त और देश देशान्तरों मे वैदिक धर्म का प्रचार और ऋषि का दिव्य सन्देश ससार में फैलाया जा सकेगा।

[जुलाई मास के दूसरे सप्ताह में श्री विश्वनाथ जी त्यागी आर्य मिशनरी मुरादाबाद से लखनऊ अपनी चिकित्सार्थ आए थे और सभा भवन के अतिथि कक्ष में ठहरे थे। यद्यपि मेरा प्रथम परिचय उनसे हरदोई आर्य समाज के वार्षिकोत्सव पर हुआ था तथापि निकट सम्पर्क उनके लखनऊ आने पर हुआ। मुझ बोध हुआ शारीरिक कष्ट और आर्थिक सकट होने पर भी आर्यसमाज के प्रति उनके हृदय में आज भी एक जीवित जागृत तड़प है। समाज के प्रति उनकी लगन अपने विद्यार्थी जीवन से है, विद्यार्थी जीवन मे ईसाइयों का प्रचार बाजारों मे बन्द करवा देना, स्व० पं० रामचन्द्र देहलवी को बुला कर मौलवियों के शास्त्रार्थ मे छक्के छुड़वा देना और वकालत को लात मारकर उपदेशक बन जाना आसाम मद्रास मे वेद प्रचारार्थ दौरे करना, दयानन्द के इस वीर सैनिक ने दयानन्द के काम का पूरा करने मे अपना तन, मन, धन, यौवन सब सौंप दिया है। लखनऊ से प्रयाग जाने पर उन्हें पांव मे भीषण चोट आने पर भी उन्होंने सभा को अपनी सेवाए वेद प्रचारसप्ताह के लिए अर्पित कर दीं ऐसे आर्य मिशनरी ने जब लखनऊ मे आर्य प्रतिनिधि सभा की घोर आर्थिक दुरावस्था देखी—सभा की अनेक योजनाओं को अर्थाभाव के कारण बन्द होते देखा तो उनसे न रहा गया और फल स्वरूप उत्तरप्रदेश की आर्यसमाजों को उनके कर्तव्य की स्मृति दिलाते हुये उन्होंने ये पंक्तियां लिख डालीं जो पाठकों के सम्मुख बिना किसी सशोधन के प्रस्तुत की जा रही हैं—इस विश्वास के साथ कि एक तपे तपाये वैदिक मिशनरी के हार्दिक उदगार रग लायेंगे। समाज अपना दशांश और वेद प्रचार सप्ताह मे प्रति सदस्य एकत्रित किया हुआ धन अविलम्ब सभा को भेजेंगी और अपने कर्त्तव्य को पूरा करेंगी।

-सम्पादक]

सार्वदेशिक दशम् आर्यमहासम्मेलन-८, ९, १० नवम्बर को हैदराबाद में

हैदराबाद १५ जुलाई ६८।

दशम सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन हैदराबाद के स्वागत समिति के सदस्यों की एक बैठक कल दिनांक १४-७-६८ को विनायकराव भवन सुलतान बाजार में श्री पं० नरेन्द्र जी प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण की अध्यक्षता में हुई। बैठक में नगर हैदराबाद, सिकन्दराबाद के अतिरिक्त मराठवाड़ा, कर्नाटक और आंध्र के जिलों से लगभग दो सौ सदस्यों ने भाग लिया। जिसमें निम्न प्रकार स्वागत समिति के अधिकारी चुने गये। सदस्यों में महासम्मेलन के प्रति पर्याप्त उत्साह पाया गया।

श्री पं० नरेन्द्र जी, स्वागताध्यक्ष
श्री के० सीतैया जी गुप्त उप स्वागताध्यक्ष
श्री रामचन्द्रराव जी कल्याणी, एम० एल० ए०, उप-स्वागताध्यक्ष
श्री शेषराव जी वाघमारे, एडवोकेट, उप-स्वागताध्यक्ष
श्री पं० सुधीन्द्र देव जी विद्यालंकार " "
श्री कृष्णदत्त जी एम० ए० " "
श्री हरिश्चन्द्र जी रेग पुर, एम० ए० " "
श्री पं० गंगाराम जी एडवोकेट " "
श्री छानलाल जी विजयवर्गीय, स्वागत मन्त्री
श्री देवव्रत यं जी उप स्वागत मन्त्री
श्री एन देवैया जी " "
श्री वी० वीरभद्रराव जी " "
श्री एम० नारायण स्वामी जी " "
श्री के० पुरुषोत्तम रेड्डी जी " "
श्री देवेन्द्रनाथ जी मनोट " "
श्री सत्यनारायण जी आर्य " "
श्री बी० किशनलाल जी कोषाध्यक्ष

आर्य महासम्मेलन की तिथियों का निश्चय

८, ९, १० नवम्बर ६८ को होगा

महोदय,

सार्वदेशिक दशम आर्य महासम्मेलन का आयोजन हैदराबाद नगर में ८, ९, १० नवम्बर को भव्य रूप में किया जा रहा है। देश की वर्तमान परिस्थितियों को लक्ष्य में रख कर महासम्मेलन के आयोजन की आवश्यकता अनुभव की गई है। जिसमें प्रत्येक आर्य का सहयोग अपेक्षित है। आशा है महासम्मेलन को भव्य, आकर्षक और सफल बनाने हेतु प्रत्येक (आर्य) नर-नारी मुक्त हस्तों से धन द्वारा सभा को सहयोग देवें, ताकि महासम्मेलन अपने उद्देश्य में सफलीभूत हो सके।

टिकटें मंगवाइये

आर्य महासम्मेलन के धन संग्रहार्थ १००, ५०, २५, १० और ५ रुपये के टिकट छाप गये हैं। समाजें अधिक मात्रा में टिकटें मंगवा कर धन संग्रह में हाथ बटावें।

सम्मेलन के लिए दान दीजिए

श्री पं० नरेन्द्र जी, स्वागताध्यक्ष दशम सार्वदेशिक आर्य महा सम्मेलन की अपील

आर्य जगत् की समस्त प्रजा को यह पता चल गया होगा कि ८, ९ तथा १० नवम्बर को एक अभूतपूर्व सांस्कृतिक, धार्मिक आर्य सम्मेलन आन्ध्र प्रदेश की ऐतिहासिक और आर्य शहीदों की भूमि हैदराबाद में होने जा रहा है, जिसमें भारत तथा विदेशों की आर्य समाजों के नेता व सन्यासी भाग ले रहे हैं।

इस सम्मेलन का उद्देश्य महर्षि दयानन्द के शब्दों में संसार का उपकार करना अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करने के रूप में ही है।" जैसे कि अपने गत जीवन में आर्य समाज सदा भारत देश का समय-समय पर पथ प्रदर्शन करता आ रहा है, वैसे ही इस समय भी भारतीय प्रजा को आर्यसमाज के पथ प्रदर्शन की आवश्यकता है। इसी के लिए यह समारोह आयोजित किया गया है।

यह सब कार्य वीरों के महान् त्याग और निःस्वार्थ सेवा के परिणाम स्वरूप ही हो सकता है। इसी विश्वास के आधार पर हमने इस बड़े भारी सम्मेलन को मनाने का दायित्व लिया है। हैदराबाद वासियों के लिए बड़े ही गौरव की बात है कि भारतीय जनता को एक बार इस सम्मेलन द्वारा पथप्रदर्शन करने का उज्ज्वल श्रेय मिल रहा है।

आशा है हैदराबाद-वासी तथा आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बंधित सभी समाजें और भारत की सभी समाजें अपने त्याग और सेवा की मिसाल को कायम रखते हुये हमें सब प्रकार से अर्थात आर्थिक सहायता देंगे जिनसे कि यह महान यज्ञ सफल हो सके और अपने उद्देश्य की मंजिल पर अग्रगामी हो सके।

इन सब कार्यों के लिए एक लाख रुपये की आवश्यकता है अन्त में समस्त आर्यसमाजों और धर्म प्रेमी जनता से अपील करता हूं कि वह अपना आर्थिक सहयोग आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण, महर्षि दयानन्द मार्ग, सुलतान बाजार हैदराबाद आन्ध्र प्रदेश के पते पर भेजें। समय अल्प है और कार्य महान है। अधिक सहयोग रूपी आशीर्वाद अपेक्षित है।

आर्य-युवक-प्रदर्शनी

अखिल भारतीय आर्य युवक परिषद ८, ९, १० नवम्बर को हैदराबाद में एक आकर्षक, मनोरंजक ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक आर्य प्रदर्शनी का आयोजन कर रही है। इस प्रदर्शनी में विशेष रूप से विश्व की सभी प्रमुख आर्य समाजों शिक्षा संस्थाओं, सन्यासियों तथा आर्य बलिदानियों एवं स्वामी दयानन्द के प्रमुख घटना स्थलों के आकर्षक सुन्दर सजीव चित्र होंगे।

अतः आर्य सज्जनों से अनुरोध है कि आपकी समाजों, शिक्षा-संस्थाओं बलिदानियों और ऋषि के प्रमुख स्थलों के पुराने या नवीन जो भी चित्र हों शीघ्र ही हमें निम्न पते पर भेजने का कष्ट करें। आर्य जगत् के यह प्रथम ऐतिहासिक चरण है।

पत्र व्यवहार पता—
महामन्त्री अखिल भारतीय आर्य युवक परिषद
पोद्दार भवन, स्वामी विवेकानन्द मार्ग सान्ताक्रुज
बम्बई—५४ (पश्चिम)

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा लखनऊ

के

तत्त्वावधान में वेद प्रचार

दो महत्त्वपूर्ण आयोजन

आर्यसमाज मन्दिर गणेशगंज में

श्रावणी उपाकर्म

(ऋषि तर्पण)

बृहस्पतिवार ८-८-६८ को

प्रातः ७ से १० बजे तक

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी

शुक्रवार १६-८-६८ को

रात्रि ७ से ९॥ बजे तक

लखनऊ—रविवार भाद्रपद ३ शक १८९० भाद्रपद शु० ७ वि० सं० २०२५, दिनांक २५ अगस्त १९६८ ई०

इस अंक में पढ़िए !

१—वेदोपदेश २
२—सम्पादकीय ३
३—सभा तथा सार सूचनायें ४
५—विनोद-बिन्दु ६
४—विचार-विमर्श ५
६—स्वास्थ्य-सुधा ७
७—धार्मिक समस्यायें ८
८—शिक्षा-जगत् ९
९—आर्यकुमार संघ ११
१०—आर्यजगत् १२
११—विश्व वैचित्र्य १३
१२—कहानी-कुञ्ज १५
१३—अमृत वर्षा १६

वार्षिक मूल्य १०)

छमाही मूल्य ६)

विदेश में १ पौ०

एक प्रति २५ पै०

परमेश्वर की अमृत वाणी

सत्पथ गामी बनो और सुगम कंटक रहित जीवन व्यतीत करो ।

★

सुगः पन्था अनृक्षर आदित्यास ऋतं यते । नात्रावखादो अस्ति वः ॥

[ऋ० मण्डल १ । सूक्त ४१ । मन्त्र ४]

[१] (आदित्यासः) अदिति के पुत्रो, पुत्रियो । सूर्य्य के समान तेजस्वियो, ब्रह्मचारियो, एकाकी ही सन्मार्ग पर चलने वालो ।

[२] (ऋतं यते) सत्य ज्ञान, धर्मशास्त्र तथा वेदानुकूल चलने वालों का ।

[३] (पन्थाः) मार्ग, पथ, जीवन का रास्ता ।

[४] (सुगः) सुगम, सरल, सीधा, छल कपट रहित ।

[५] (अनृक्षरः) कण्टक रहित, विघ्न बाधा विहीन, भय से शून्य, आपत्तियों और विपत्तियों के बिना होता है ।

[६] (अत्र) इस मार्ग मे, इस पथ मे ।

[७] (वः) आपको, आपके लिए

[८] (अवखादः) हानि, क्षति, भय ।

[९] (न अस्ति) नहीं है ।

सत्य का मार्ग ही अनुकरणीय है । असत्य मार्ग तो सर्वतः त्याज्य है । सत्य मार्ग समस्त प्रकार की विघ्न बाधा रहित है ।

उसमे भय नहीं है किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं है, वह तो सुखप्रद है, शान्ति दायक है आनन्द प्रदाता है ।

आर्य्यो ! ज्योतिर्मय जीवन के निमित्त इसी सुगम पथ का अनुसरण करो और अपनी दिव्य जीवन ज्योति से दूसरो के जीवनो में प्रकाश करो ।

'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' की साध इसी सत्य पथ से ही होगी—यह तथ्य कभी भी विस्मृत न करें ।

रक्षाणो ब्रह्मणस्पते !

[परम पिता परमेश्वर ही हमारी रक्षा करता है। पाप की वृत्तियाँ हमारी हिंसा करती हैं और फलस्वरूप दुःख का कारण बनती हैं। साधक साधना पथ पर जब आत्म ज्ञान के माध्यम से आगे बढ़ता है तो परमेश्वर के समीपस्थ हो कर तिग्म तेज को धारण करता है और पाप की वृत्ति को भस्म कर आनन्द मग्न होता है। लेखिका के कथनानुसार उनका यह प्रथम लेख है जिसकी प्ररणा 'आर्यमित्र' मे 'अध्यात्म सुधा' शीर्षक के अन्तर्गत प्रकाशित लेखों से उन्हें मिली है। अन्य साधक साधिकाओं के लिये यह प्रयास अनुकरणीय होना चाहिए।

—सम्पादक]

—सुश्री कांतिदेवी, बी ए.
लखनऊ

वेद मन्त्र

अग्ने रक्षाणो अंहस प्रतिस्म
देव रीषत । तपिष्ठैरजरोदह ॥

[सामवेद मन्त्र २४]

भावार्थ —(अग्ने) सर्वदेशकेश्वर ! (न) हमारी (रक्ष) रक्षा करो (देव) परमात्मन ! (अजर) आप अजर हैं (अंहसः) पाप और (रीषत) हिंसा वृत्तियों को (तपिष्ठै) तीव्र तेजों से (प्रति, दह, स्म) भस्म करो।

पाप-पुण्य, सुख-दुख, मान-अपमान, यश-अपयश, रात दिन, और जन्म-मरण मानव जीवन के दो पहलू हैं। चक्की के इन्हीं दो पाटों में मानव पिसता रहता है। कभी वह पापमय जीवन व्यतीत कर नारकीय यातनाओं को भोगता है तो कभी पाप रहित होकर मोक्ष का सोपान करता है सत्य तो यह है कि पापी जीवन भर चैन नहीं पाता जब तक वह पाप को अपने जीवन से निकाल नहीं देता। पाप मनुष्य के अन्दर घुन की भाँति उसे खाता रहता है। और खोखला बना देता है।

पाप क्या है ? परमात्मा की आज्ञा का उल्लंघन करना है। हमारी आत्मा जो यह दिव्य शक्ति चेताती है कि हे मनुष्य तू यह काम मत कर परन्तु वह उस दिव्य प्रेरणा को अनसुनी कर परमात्मा की आज्ञा का उल्लंघन करता है और जब पापमय पथ का अनुसरण करता है तब वह पाप सर्प की भाँति बन कर उसे टेढ़े-मेढ़े और कुटिल रास्तों पर ले चलता है। पाप अधर्म मार्ग पर चला कर मनुष्य का सर्वनाश कर देता है। व्याघ्र के समान मनुष्य की सारी अच्छाई की हिंसा कर डालता है।

जिस कार्य के करने के पश्चात् हमें पश्चाताप, भय, लज्जा, और ग्लानि, होती है, उसे ही पाप कहते हैं, तथा जिस काम के करने के बाद हमें सुख, शान्ति और आनन्द की अनुभूति मिलती हो वही पुण्य है। पाप मनुष्य पेट भरने के लिये नहीं करता वरन् अपनी दुष्ट मनोवृत्तियों के कारण ही करता है। पेट तो दाल रोटी से भर सकता है पर मानव की दूषित प्रवृत्तियों एवम् तृष्णाओं की तुष्टि उससे नहीं होती।

जिस प्रकार एक बालक अपनी माता-पिता की आज्ञा न मानकर दुखी होता है उसी प्रकार जब मनुष्य अपने परमपिता ईश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करता है तो उसको अपने पाप का दण्ड अवश्यमेव भुगतना पड़ता है। मन में एक बार पाप का विचार आते ही पर

वन्दना के स्वर

हे आनन्दमय, सच्चिदानन्द, हे परमानन्द के दाता।
हे दुःख भंजक, पाप विनाशक, हे कृपा सिन्धु बल दाता॥
हे अविनाशी, कण-कण वासी, हे ज्ञानसिन्धु बुद्धि दाता।
हे भवभय हारी, भव पाप संहारी, हे दीनबन्धु सुख दाता॥

तुम्हीं सृष्टि उत्पादक, रक्षक, तुम्हीं नियम के कर्ता हो।
तुम्हीं वीर मे महावीर हो, तुम्ही सृष्टि के हर्त्ता हो॥
तुम्हीं प्राण हो जगजीवन के तुम्हीं विश्वपति कर्ता हो।
तुम्हीं तेज हो अग्नि सूर्य के तुम्हीं सृष्टि के कर्ता हो॥

तुम्ही देव मैं महादेव हो, तुम्हीं भक्त के रक्षक हो।
तुम्हीं हो न्यायी न्याय के कर्त्ता, तुम्हीं दुष्ट के भक्षक हो॥
तुम्हीं अनादि पवित्र नित्य हो, तुम्हीं अनन्त अकर्ता हो।
तुम्हीं हो अनुपम निराकार प्रभो! तुम्हीं सदा शुभ कर्ता हो।

तू ही अलख अगोचर प्रभुवर, तेरा ही हम ध्यान धरें।
तू ही स्वयं प्रकाशक भगवन तेरा ही गुणगान करें॥
तू ही सुकर्म स्वभाव युक्त गुण इससे जीवन शुद्ध करें।
तू ही आत्मज्ञान सुख दाता मधवामृत नित्य पान करें।

हे प्रभुवर ! कर्ण श्रद्धा से सुनें, तेरा ही गुणगान सदा।
हे प्रभुवर चक्षु निहारे यही सब मे ही तेरा रूप सदा।
हे प्रभुवर ! रसना जाप करे, श्रद्धा से तेरा नाम सदा।
हे प्रभुवर ! बुद्धि विचारे यही 'प्रेमी' गुण कर्म स्वभाव सदा॥

हे विश्व रूप, हे कृपा सिन्धु प्रभो ! तुम्हें सप्रेम नमस्ते हो।
हे विश्वपति, हे सौख्य सिन्धु प्रभो ! तुम्हें सप्रेम नमस्ते हो॥
हे सत्य स्वरूप, हे ज्ञान सिन्धु प्रभो ! तुम्हें सप्रेम नमस्ते हो।
हे तेज स्वरूप, हे दयासिन्धु प्रभो ! तुम्हें सप्रेम नमस्ते हो॥

—महगूप्रसाद 'प्रेमी', गोरखपुर

आत्मा आनन्द का तुरन्त ह्रास करने लगता है, शान्ति को तुरन्त छीन लेता है और मनुष्य अशान्त हो जाता है। पाप चोर और लुटेरा बन कर मनुष्य के जीवन भर के सुख धन को लूट ले जाता है और जीवन भर के शुभ कर्मों को क्षण भर मे नष्ट-भ्रष्ट कर देता है।

पाप का एकमेव कारण मनुष्य का अहंकार या अभिमान है। जब तक मानव अहम की भावना से ओत प्रोत रहता है, तब तक परमात्मा उसके पास से भागो दूर रहता है। जब पापी मनुष्य परमात्मा की सर्व व्यापकता, सर्वज्ञता और न्याय नियम में आस्था हीन रहता है तो उसको किसी का भय नहीं रहता और वह अपनी मनमानी करता है और पाप के कीचड़ मे निरन्तर पड़ा रहता है। तुलसीदास के शब्दों में भी इस पाप का कारण केवल अभिमान ही है।

'दयाधर्म का मूल है,
पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया न छोड़िये,
जब लग घट में प्राण॥

पाप मन वचन और कर्म तीन प्रकार से होता है। ईश्वर ने हमें मन दिया कि हम उससे शिव संकल्प करके दूसरों का कल्याण करें मन मनन करें। और दूसरों को सुख दें। पर हम यदि मन से बुरा संकल्प करते हैं तो वह न्यायकारी परमपिता परमात्मा हमसे मन का चैन तुरन्त छीन लेता है। बुरा चिन्तन करते ही आत्मिक शक्ति को तुरन्त क्षीण कर देता है। परमेश्वर ने हमें वाणी दी जिससे हम सत्य और मधुर बोलें पर यदि हम झूठ और अप्रिय बोलते हैं दूसरों को कष्ट देने वाले वचन बोलते हैं और परमात्मा के दिये हुए इस मन्त्र का दुरुपयोग करते हैं तब वह ईश्वर दूसरे को तो बाद में कष्ट देगा पहले तो पापी को ही अन्दर से जलायेगा परमात्मा ने हमें हाथ दिए कि हम इन हाथों से दूसरों की सेवा करें, पर यदि हम इन हाथों से जो कि हमारे लिए भगवान ने दिए हैं बुरा काम करते हैं तो उसकी सजा हमें अवश्य भुगतनी पड़ेगी।

पाप से निवृत्ति के लिए हमें शुद्ध और पवित्र बनना होगा। अपने जीवन सदन से अन्धकार को निकालना होगा। तभी परमेश्वर हमारे समीपस्थ होकर हमारी रक्षा करेगा। हमें हमारे कर्मों का बोध कराकर हमें सन्मार्ग पर ले चलेगा एक मात्र उसकी ही शरण में आने से मनुष्य अपने पापों से बच

(शेष पृष्ठ ११ पर)

अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमनाः ।
जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शान्तिवाम् ।।

[अथर्ववेद कांड ३ सूक्त ३० मन्त्र २]

भावार्थ–हे गृहस्थो ! जैसे तुम्हारा (पुत्रः) पुत्र (मात्रा) माता के साथ (समनाः) प्रीतियुक्त मन वाला (अनुव्रतः) अनुकूल आचरणयुक्त, (पितुः) और पिता के सम्बन्ध में भी इसी प्रकार का प्रेम वाला (भवतु) होवे, वैसे तुम भी पुत्रों के साथ सदा वर्त्ता करो। जैसे (जाया) स्त्री (पत्ये) पति की प्रसन्नता के लिये [मधुमतीम्] माधुर्य गुणयुक्त [वाचम्] वाणी को [वदतु] कहे वैसे पति भी [शान्तिवाम्] शान्त होकर अपनी पत्नी से सदा मधुर भाषण किया करे।

—महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

लखनऊ रविवार श्रावण ३ शक १८८९, भाद्रपद शुक्ल पक्ष २ वि० २०२५
२५ अगस्त सन् १९६८ ई०, दयानन्दाब्द १४३, सृष्टि संवत् १,९७,२९,४९ ०६८

स्वस्ति पंथामनु चरेम

★

सिरसागञ्ज में आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के वृहदधिवेशन में मन्त्री पद के चुनाव पर जो विषम परिस्थितियाँ उत्पन्न हुई, और जिनके कारण उस अधिवेशन को अनिश्चित काल के लिये स्थगित करना पड़ा, उस का सुखान्त रविवार १८-८-६८ को गुरुकुल वृन्दावन (मथुरा) की पवित्र भूमि पर हुआ। स्थगित अधिवेशन को सफलता से चलाने का श्रेय जहां सभा प्रधान श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री को है वहीं विवाद को सुलझाने की यश भिका-रिणी वह समिति भी है, जिसमें मर्वश्री महेन्द्रप्रताप जी शास्त्री शिवकुमार जी शास्त्री, आचार्य विश्वश्रवा जी, वाच-स्पति जी शास्त्री तथा पण्डित शिवाधर जैसे सुयोग्य महानुभाव सम्मिलित थे।

कैसा मनोहर दृश्य था जब गुरुकुल की पवित्र यज्ञशाला में पूर्व मन्त्री श्री सच्चिदानन्द जी शास्त्री ने अपनी महान् उदारता का परिचय देते हुए यह घोषणा की कि उन्होंने न्याय सभा आदि में दिये हुए अपने समस्त आवेदन पत्र वापस ले लिये हैं और आर्य जगत के कल्याण एवं संगठन की भावना को लक्ष्य में रखते हुये समिति की आज्ञा को शिरोधार्य करने का संकल्प लिया है।

श्री सच्चिदानन्द जी शास्त्री ने जब स्वयमेव मन्त्रीपद के निमित्त अपने प्रति-द्वन्दी श्री प्रेमचन्द्र जी शर्मा का नाम प्रस्तुत किया तो प्रतिनिधियों के हृदय आनन्द विभोर हो उठे। मर्व श्री प्रेम-चन्द्र जी शर्मा व सच्चिदानन्द जी शास्त्री जब परस्पर सस्नेह गले मिले तो कुछ प्रतिनिधियों के नेत्र हर्षातिरेक से सजल हो उठे। माननीय सभा प्रधान की इस घोषणा ने कि यज्ञ वेदी जैसे पवित्र स्थान पर धार्मिक वातावरण का सुन्दर प्रभाव पड़ता है, सोने में सुहागे का कार्य किया जिसके फल स्वरूप समस्त निर्वा-चन पूर्ण सद्भावना एवम् शान्तिपूर्वक सर्व सम्मति से सम्पन्न हो गया।

आर्यसमाजों व आर्य सभाओं में निरन्तर भिन्न संघर्षों का विकास हो रहा है, उनके लिये आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के स्थगित अधिवेशन की कार्यवाही अनुकरणीय होनी चाहिए। विवादों का एकमेव कारण पदलिप्सा है जिसके मूल में निकृष्ट स्वार्थ अन्तर्निहित है। गांधी जी ने जब एक बार आर्य समाज के भविष्य के विषय में प्रश्न किया था तो उन्होंने बड़े ही सरल शब्दों में एक सत्य कहा था जिसका आशय यह था कि आर्य समाज एक महान् संगठन है, इसकी नींव बड़ी दृढ़ है, इसके सिद्धान्त अकाट्य हैं पर इसका विघटन जब कभी होगा भीतर से होगा, बाहर से नहीं।

यह सर्व विदित है कि आज भी आर्य समाज से शास्त्रार्थ में टक्कर लेने का साहस किसी में नहीं है। हमारे वार्षिकोत्सवों में हमारे शास्त्रार्थ महा-रथी ललकारते हैं, किन्तु कोई मताव-लम्बी आगे नहीं आता। आर्यसमाज के सिद्धान्तों में वह सत्य ही तो है जिसने हमें बाहरी मोर्चों पर निरन्तर विजय ही दिलाई है। सत्य में अपरिमित शक्ति है, इसलिये 'सत्यमेव जयते' अर्थात् सत्य की सर्वत्र विजय होती है। आर्य समाज का प्रवाह यदि आज अवरुद्ध हो गया है तो इसमें किसी बहुमत की सिद्धान्त शक्ति नहीं है, वरन् आर्य बन्धुओं की पारस्परिक फूट है। लोकै-षणा और वित्तैषणा ही हमारे अनिष्ट की जड़ है। हम बाहर कैसे अपना प्रसार कर सकते हैं, जब भीतर से ही हमारी जड़ खोखली हो रही हो।

आर्य्य जगत आज विनाश की जिस महा ज्वाला में भस्म हो रहा है, उससे बचाने के लिये आज त्याग की महती आवश्यकता है। त्याग ही नहीं वरन् सर्वस्व की बाजी लगानी होगी। विनाश एक शृंखला में बंधा हुआ है। जिसका सूत्रपात ईर्ष्या से होता है। ईर्ष्या से द्वेष, द्वेष से विरोध, विरोध से दुर्भावना, दुर्भावना से वैर, वैर से संघर्ष, संघर्ष से सत्वहीनता और सत्वहीनता से विनाश।

मैं दो मुख्य बातों की ओर आर्य जगत का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूँ। एक तो एषणा सम्बन्धी है और दूसरा प्रीति से युक्त है। किसी भी संस्था में यह 'पद' क्या है, केवल व्यव-स्था मात्र का नाम। हम कोई व्यवस्था सम्भालते हैं इसलिये उसके निमित्त हमें कुछ अधिकार दिया जाता है, और प्रत्येक वर्ष अथवा जैसा विधान हो इसमें परिवर्त्तन हो जाता है। पदाधि-कार वास्तव में एक हवा मात्र है और धर्म प्रधान संस्थाओं में इस अधिकार का मूल्यांकन त्याग के मापदण्ड से होना चाहिए। दूसरी बात प्रीति से सम्बन्धित है। प्रेम का संसार में कोई मापदण्ड है यदि है तो केवल त्याग। कोई कर्म से जितना स्नेह करता है तो इस बात को हम कदम कदम में जान सकते हैं कि वह उसके लिए कितना त्याग कर सकता है।

आइए इन दो बातों के आधार पर हम आर्य जगत के विवादों के निराकरण के विषय में कुछ विचार करें। प्रत्येक आर्य समाज, प्रतिनिधि एवम् अधि-कारी अपना आत्मनिरीक्षण करें और इन बातों पर सत्यता से विचार करें।

(१) क्या उसे आर्य समाज से वास्तविक स्नेह है ?

(२) यदि हां तो लाला लाजपत राय के शब्दों में आर्य समाज रूपी माता के ऋण को चुकाने के लिये क्या वह उत्सर्ग कर सकता है, अथवा क्या उसे बलिदान देने को प्रस्तुत होना चाहिये।

(३) क्या जिस पद के लिए उसका नाम प्रस्तुत किया जा रहा है वह अपने को उस कार्य के लिए योग्य पाता है ?

(४) क्या अपने जीवन के अन्य उत्तरदायित्वों को निभाते हुये उसके पास सेवाभाव के लिये पर्याप्त अवकाश है और वह निष्ठापूर्वक सामाजिक उत्तरदायित्व निभा सकता है ?

(५) क्या उसका चरित्र इतना उज्ज्वल है जो दूसरों के लिये प्रकाश स्तम्भ का काम कर सके एवम् अपनी जीवन ज्योति से अन्य जीवन दीप जला सके।

सत्य हमारा एकमेव आधार है। इस सत्य को हम अपने भीतर खोजें। केवल पार्टीबाजी से संस्था को भ्रष्ट न करें। यदि पदाधिकार लें तो केवल नाम मात्र को ही नहीं वरन् ईमानदारी से उसको निभाने के लिये और यदि वास्तव में यदि ऋषि ऋण चुकाना चाहते हों तो सुयोग्य व्यक्तियों के लिये स्वतः अपनी कुरसियां अपनी इच्छा से छोड़िये। आर्यसमाज की सम्पुष्टि आर्य जनों से बलिदान चाहती है, देखें उसे कौन चुकाने आगे आता है ? कौन माई का लाल आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के पूर्व मन्त्री श्री सच्चिदानन्द जैसा अनुकरणीय दृश्य उपस्थित करता है।

प्रातःकाल का भूला भटका यदि सायंकाल तक घर लौट आता है तो उसे पथ विस्मृत नहीं कहते। अब आर्य समाजों के कर्णधार जहां पर किसी भी प्रकार के विवाद हों, इन पंक्तियों का गम्भीरता पूर्वक पढ़ें और स्वस्ति पथ का अनुकरण करने के लिये अपने अ[illegible] पथ पर आगे बढ़ायें और [illegible] जीवन बनाकर 'स्वस्ति पन्था-मनु चरेम' को साकार करें [illegible] ऋग्वेद के [illegible] शब्द [illegible] को [illegible] कर [illegible]।

★

आर्यप्रतिनिधि सभा उ.प्र.का स्थगित वृहदधिवेशन

सद्भावनापूर्ण वातावरण में सम्पन्न

●

आय प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का ८२ वां वार्षिक अधिवेशन सिरसागंज [मैनपुरी] मे २ जून १९६८ को गम्भीर स्थिति उत्पन्न हो जाने के कारण श्री प्रधान सभा द्वारा अनिश्चित काल के लिये प्रधान एवं उप प्रधान के निर्वाचन के पश्चात् स्थगित कर दिया गया था।

यह स्थगित वृहदधिवेशन गुरुकुल वृन्दावन में १८ अगस्त १९६८ को पूर्णतया सदभावनापूर्ण वातावरण मे सम्पन्न हुआ।

निर्वाचन का परिणाम निम्नप्रकार रहा –

श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री, ससद सदस्य
सभा प्रधान

श्री प्रेमचन्द्र जी शर्मा, पूर्व एम.एल.सी.
सभा मन्त्री

[१] सिरसागंज में निर्वाचित:–

प्रधान—श्री पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री संसद सदस्य

उपप्रधान—[१] श्री विश्वबन्धु शास्त्री [२] श्री मदनमोहन वर्मा
[३] श्री महेन्द्रप्रताप शास्त्री [४] श्री विष्णुदेवी शर्मा

[२] गुरुकुल वृन्दावन के निर्वाचित:-

मन्त्री—श्री प्रेमचन्द्र शर्मा पूर्व एम० एल० सी० सर्व सम्मति से निर्वाचित हुए। प्रस्तावक श्री सच्चिदानन्द जी शास्त्री मन्त्री सभा थे।

उप मन्त्री—[१] श्री ईश्वरदयालु जी [२] श्री धर्मेन्द्रसिंह आर्य
[३] श्री सुरेशचन्द्र जी मथुरा मन्त्री आर्योपप्रतिनिधि सभा मथुरा।

[एक स्थान रिक्त रखा गया है, इसकी नियुक्ति की घोषणा मन्त्री जी द्वारा बाद में की जायेगी]

कोषाध्यक्ष—श्री साहू देवेन्द्र जी आर्य, सहायक कोषाध्यक्ष—श्री साहू हरप्रसाद जी
पुस्तकाध्यक्ष—श्री नरदेव स्नातक सह पुस्तकाध्यक्ष—श्री हरिशंकर शर्मा

अन्तरङ्ग सदस्य

नाम	जिला
श्री विक्रमादित्य वसन्त	लखनऊ
" वाचस्पति शास्त्री	आगरा
" अतरसिंह	मुजफ्फरनगर
" भवानीप्रसाद	
" इन्द्रराजसिंह	मेरठ
" तेजसिंह आर्य	सहारनपुर
" राजेन्द्रप्रसाद	"
" शिवलाल वर्मा	बुलन्दशहर
" सत्यदेव उपाध्याय	एटा
" शान्तिप्रकाश प्रेम	गढ़वाल
" रणवीरसिंह	बिजनौर
" निर्मलचन्द्र राठी	खीरी-लखीमपुर
" कन्हैयालाल मुमुक्षु	रामपुर
" रघुवीरदत्त शर्मा	फर्रुखाबाद
" सोनसिंह	गोरखपुर देवरिया
" रमाकान्त मिश्र	गोंडा
" शिवकुमार मिश्र	हरदोई
" मुरारीलाल	शाहजहांपुर
" प्रेमदत्त तिवारी	फतेहपुर
" रामबहादुर एडवोकेट	पीलीभीत
" बिहारीलाल आर्य	झांसी, जालौन, बांदा, हमीरपुर
" कृष्णदत्त आयुर्वेदालंकार	फैजाबाद
" सतीशचन्द्र शास्त्री	बरेली
" रामरत्न शर्मा	वाराणसी
" धर्मपाल शास्त्री	देहरादून
" विद्याधर जी	कानपुर
" उमेशचन्द्र स्नातक	कुमायूं, नैनीताल अल्मोड़ा, बैंकाक आदि
" विशुद्धानन्द शास्त्री	बदायूं
" कपूरचन्द आजाद	मीरजापुर जौनपुर
" फूलनसिंह	मैनपुरी
" कुं० शिवदत्तराय निगम	इटावा
" राममोहन जी	मुरादाबाद
" जयनारायण आर्य	अलीगढ़
" वासुदेव भारद्वाज	मथुरा
" आचार्य विश्वश्रवाः	उन्नाव
" ओमप्रकाश पलिया	बहराइच सीतापुर
" चन्द्रदत्त तिवारी	आजमगढ़
" निरंजन देव शास्त्री	बस्ती
" ओम्प्रकाश बरेली	बलिया गाजीपुर
" दयास्वरूप	इलाहाबाद
" हरिपाल शास्त्री	प्रतापगढ़
बिजनौर	रायबरेली

विधान की धारा २७ के अन्तर्गत साधारण सभा से निर्वाचित सदस्य जो सर्वसम्मति से चुने गये—

१—श्री आशाराम पाण्डेय
२—श्रीमती अलकाकुमारी जी
३— " कुसुमलतादेवी गोयल

सार्वदेशिक सभा के लिए प्रतिनिधि

सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा दिल्ली के लिए प्रदेश के १५ प्रतिनिधियों का तीन वर्ष के लिए निर्वाचन इस प्रकार हुआ।

१. आचार्य श्री विश्वबन्धु शास्त्री
२. श्री धर्मेन्द्रसिंह आर्य
३. " उमेशचन्द्र स्नातक
४. " ईश्वरदयालु जी
५. " माधवसिंह जी
६. " हरिशंकर शर्मा
७ " नरदेव स्नातक
८. " विद्याधर जी
९. " चन्द्रदत्त तिवारी
१०. श्री हरिश्चन्द्र आर्य
११. " प्रेमचन्द्र शर्मा
१२ " आचार्य विश्वश्रवा:
१३. " आचार्य विशुद्धानंद जी
१४. " लालचन्द जी
१५. " महेन्द्रप्रताप शास्त्री

गुरुकुल विद्या सभा के सदस्य

गुरुकुल विद्या सभा के लिये नि० स० ३४ [ई] के अनुसार छः प्रतिनिधियों का निर्वाचन -

१. श्री महेंद्रप्रताप शास्त्री
२. " उमेशचन्द्र स्नातक
३. " श्री कुंवरसिंह जी
४. " आचार्य विश्वश्रवा: जी
५ " आशाराम पाण्डेय
६. " सुरेशचन्द्र आर्य

आर्य विद्या सभा के सदस्य

नि० सं० १०—आर्य विद्या सभा के लिये ३ अवकाश प्राप्त करने वाले सदस्य
१. श्री कालकाप्रसाद भटनागर
२. श्रीमती सुशीलादेवी जौहरी
३. श्री शिवकुमार जी के स्थान पर
निम्न सदस्य मनोनीत हुए -
१. शिवकुमार शास्त्री
२. श्री विद्याधर जी
३. चन्द्रदत्त तिवारी

सभा प्रधान जी ने नियमानुसार अपना स्थान रिक्त हो जाने के कारण श्री धर्मेन्द्रसिंह जी को मनोनीत किया।

★

'वृक्षादि सजीव हैं निर्जीव नहीं'

[वृक्षों मे जीव विचार के निमित्त हमने विद्वान् लेखकों से लेखों का आह्वान किया था। हमे हर्ष है कि हमारे लेखकों ने इस सम्बन्ध में पूर्ण सहयोग दिया है। समस्त लेखों का एक साथ प्रकाशन करना सम्भव नहीं है, अतएव सुविधानुसार हम उनका प्रकाशन करेंगे —सम्पादक]

दि० २१ जुलाई १९६८ के आर्यमित्र में एक लेख 'वृक्ष निर्जीव हैं' प्रकाशित हुआ है। इसमें ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के एक वेद मन्त्र के ऋषि दयानन्द के हिन्दी भाष्य को लेकर यह प्रयत्न किया गया है कि ऋषि दयानन्द भी वृक्षों मे जीव नहीं मानते थे। वेदों में वृक्षों मे जीव माना गया है या नहीं यह वैदिक विद्वानों के उनके गहन अध्ययन करने के पश्चात् निर्णय करने का विषय है। किन्तु यह कहना और सिद्ध करना कि ऋषि दयानन्द भी वृक्षों मे जीव नहीं मानते थे एक खुला असत्य है।

सत्यार्थ प्रकाश में कई स्थलों पर ऋषि ने स्पष्टतः वृक्षों में जीव सुषुप्ति अवस्था मे माना है। अष्टम समुल्लास में इस प्रश्न के कि 'किन्हीं (जीवों) को वृक्षादि कृमि कीट पतङ्गादि जन्म दिए, के उत्तर मे लिखा है—पक्षपात नहीं आता क्योंकि उन जीवों के पूर्व सृष्टि मे किये हुये कर्मानुसार व्यवस्था करने से जो कर्म के बिना जन्म देता तो पक्षपात आता। इस प्रश्नोत्तर से स्पष्ट है कि वह वृक्षों मे जीव मानते हैं। इसी प्रकार नवम समुल्लास मे मनुस्मृति अध्याय १२ से प्रमाण प्रस्तुत करते हुए लिखा है जो अत्यन्त तमोगुणी हैं वे स्थावर वृक्षादि जन्म को प्राप्त होते हैं।

द्वादश समुल्लास मे जैन मत की समीक्षा करते हुए लिखा है—देखो! पीडा उन्हीं जीवों को पहुंचती है जिनकी वृत्ति सब अवयवों के साथ विद्यमान हो, इसमें प्रमाणः—

पञ्चावयवयोगात्सुख संवित्तिः ॥
सांख्य० अ० ५। सू० २७।

जब पांचो इन्द्रियों का पांचो विषयों के साथ सम्बन्ध होता है तभी सुख व दुःख की प्राप्ति जीव को होती है, जैसे बधिर को गाली प्रदान, अन्ध को रूप या आगे से सर्प व्याघ्रादि भयदायक जीवों का चला जाना, शून्य बहरी वाले को स्पर्श पिपस रोग वाले को गन्ध और शून्य जिह्वा वाले को रस प्राप्त नहीं हो सकता है इसी प्रकार उन जीवों की भी व्यवस्था है। देखो! जब मनुष्य का जीव सुषुप्ति दशा मे रहता है तब उसको सुख या दुःख की प्राप्ति कुछ भी नहीं होती, क्योंकि वह शरीर के भीतर तो है, परन्तु उसका बाहर अवयवों के साथ उस समय सम्बन्ध न रहने से सुख दुःख की प्राप्ति नहीं कर सकता और जैसे वैद्य वा आजकल के डाक्टर लोग नशे की वस्तु खिला वा सुंघा के रोगी पुरुष के शरीर के अवयवों को काटते वा चीरते हैं, उसको उस समय कुछ दुःख विदित नहीं होता, वैसे वायुकाय अथवा अन्य स्थावर शरीर वाले जीवों को सुख वा दुःख प्राप्त कभी नहीं हो सकता, इत्यादि। सत्यार्थ प्रकाश के यह स्थल इतने स्पष्ट हैं कि किसी टीका टिप्पणी की अपेक्षा नहीं रखते।

इसी प्रकार एक प्रमाण हम 'ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन' पत्र संख्या १३१ पृष्ठ १५३ से निम्न प्रस्तुत करते हैं—

Dear M Blavatsky,

(1) After death man's or any ones' "Atma" lives in air "Vayu" according to the sins and virtues of the departed soul. God allows the transmigration or a new life. when there is small proportion of sins and numerous good deeds then the soul gets a body of highly educated man or Deva in proportion to good deeds and after leaving the Viswin body, ascends to moksha or becomes free of sorrow and troubles When the sins and virtues are equal, then soul gets a mans' body when sins increase and virtues decrease the soul in sent to lower creation and vegatable world The Jiva or soul suffers for the increased quantity of sins in the bodies of lower animals or in form of trees, plants etc and after a lapse of time when sins and virtues again kick, the beam equally, then the soul again gets a human body,

प्रिय श्रीमती ब्लेवट्स्की,

१—मनुष्य या किसी की मृत्यु के पश्चात् आत्मा मृत व्यक्ति के पाप पुण्यों के अनुसार वायु में रहता है। ईश्वर पुनर्जन्म या नया जन्म देता है। जब पापों का अनुपात कम और शुभ कर्म अधिक होते हैं तथा शुभ कर्मों के अनुपात से सुशिक्षित या 'देव' का शरीर प्राप्त करता है और विद्वान का शरीर छोड़कर मोक्ष प्राप्त करता है, या दुःख और विपत्तियों से मुक्त हो जाता है। जब पाप पुण्य बराबर होता है तब मनुष्य का शरीर प्राप्त करता है। जब पाप अधिक और पुण्य कम होते हैं तो आत्मा निम्नयोनियों और वनस्पतियों में भेज दिया जाता है। पाप अधिक होने से जीव निम्न कोटि के प्राणियों तथा वृक्षादि के शरीर मे कष्ट पाता है और कुछ समय पश्चात् जब पाप और पुण्य बराबर हो जाते हैं, तो आत्मा पुनः मनुष्य का शरीर पाता है।"

उपर्युक्त उद्धरण इतने स्पष्ट हैं कि किसी टीका टिप्पणी की आवश्यकता नहीं रखती।

'वृक्ष निर्जीव हैं' के लेखक श्री रामेश्वरदयाल जी ने यजुर्वेद अ० ३१ के मन्त्र ४ का प्रमाण रूप में जो भाष्य दिया है वह अस्पष्ट और भ्रामक है। ऋषि दयानन्द ने इसी मन्त्र का अपने वेद भाष्य में जो भाषा भाष्य दिया है वह निम्न प्रकार है यह पूर्वोक्त परमेश्वर कार्य जगत से पृथक तीन अंश से प्रकाशित हुआ एक अंश अपने सामर्थ्य से सब जगत् को बार-बार उत्पन्न करता है, पीछे उस चराचर जगत् में व्याप्त होकर स्थिर है ॥ ४ ॥

हम यहाँ लेखक के भ्रम निवारणार्थ 'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका' का एक स्पष्ट प्रमाण प्रस्तुत करते हैं जो उनकी उपर्युक्त धारणा का पूर्ण समाधान कर देता है। इस ग्रन्थ के पुनर्जन्म विषय पर मन्त्र ६ का भावार्थ करते हुए ऋषि दयानन्द लिखते हैं—"इस संसार में हम दो प्रकार के जन्मों को सुनते हैं एक मनुष्य शरीर का धारण करना और दूसरा नीच गति से पशु, पक्षि, कीट, पतङ्ग, वृक्षादि का होना।' इत्यादि वृक्षो मे जीव है इसकी सम्पुष्टि 'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका' के उपर्युक्त स्पष्ट प्रमाण से ही हो जाती है।

सार्वदेशिक सभा भी कई वर्ष पूर्व वृक्षो के सजीव होने के पक्ष मे अपना निर्णय दे चुकी है। मैं पाठकों से निवेदन करूंगा वे स्वयं सत्यार्थ प्रकाश तथा ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के इन स्थलों को देखें। मुझे विश्वास है कि उनसे, इस विषय पर समस्त आशङ्कायें दूर होजाएगी।

—श्री पं० राजेन्द्र जी
अतरौली (अलीगढ़)

विचार-विमर्श

शुद्धि आंदोलन

दिनांक १४-७-६८ को सेगफ्रिन अंकोव नामक युवक अपने दो लड़को के साथ वैदिक धर्म में प्रविष्ट हुए। शुद्धि संस्कार पं० चन्द्रदत्त जी के पुरोहित्य मे सम्पन्न हुआ। सैकड़ो व्यक्तियो ने इस संस्कार में भाग लिये। उनका नाम गौतम [illegible], तथा उनके लड़कों का नाम [illegible] भवप्रकाश और [illegible] विजयकुमार रखा गया। [illegible] ईसाई [illegible]।

जिनका शुद्ध किया गया है वे मुंगेर में डिस्ट्रिक्ट [illegible] में एम० [illegible] पद पर हैं। उनके परिवार वाले बहुत दिन से [illegible] हैं। अभी भी उनके परिवार के अनेक व्यक्ति क्रिश्चियन हैं। लेकिन इन्होंने ईसाई धर्म के खोखलेपन को जान कर वैदिक-धर्म स्वेच्छापूर्वक अपनाया है।

—रामवृक्ष आर्य उपमन्त्री
आर्यसमाज मुंगेर

विनोद-बिन्दु

पण्डों की ठग लीला

[अन्ध विश्वास का दामन पकड़कर तीर्थों पर भटक कर दुःख प्राप्त करने वालों की एक झांकी पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत है। एकमेव वैदिक मार्ग ही धर्म का सत्य पथ प्रदर्शन करता है। —सम्पादक]

★

आप कभी भी प्रयाग या बनारस स्नान करने के लिये जायें आपको स्टेशन से ही पण्डों का राज्य नजर आवेगा। वहां पर एक से एक मोटे तगड़े मनुष्य आपको देखने को मिलेंगे। खा-खा कर मस्त हैं। न उनको किसी काम की चिन्ता न पढ़ने से मतलब घर गृहस्थी का टन्टा भी अधिक नहीं सब सामान बिना किसी मेहनत के मिल जाता है। जिस तरह शिकारी अपने शिकार को फांसता है, उसी तरह यात्रियों को फांसना इनका काम है।

एक दिन की बात है कि एक पण्डे ने रेलवे स्टेशन पर एक सेठ जी को आते देखा सेठ जी का पूरा परिवार भी उनके साथ था। तीन स्त्रियां और बच्चे भी थे पंडित जी तपाक कर आगे बढ़े और जय हो जजमान की कह कर अपना परिचय दिया" और सेठ जी के पीछे लग गये। सेठ जी ने कहा—पण्डित जी! हम धर्मशाला में ठहर जावेंगे। आप किसी प्रकार की चिन्ता न करें।

प० जी बोले—अरे वाह सेठ जी! यह भी खूब रही! हमारे रहते हुये आप इधर-उधर ठहरते फिरेंगे। चलिये हम सब प्रकार का आराम आपको देंगे।

जब पण्डित जी बहुत पीछे पड़े तो वे राजी हो गये उन्होंने सोचा थोड़ा बहुत पण्डित जी को दे देंगे। पण्डित जी ने तुरन्त गाड़ी बुलाई और सेठ जी उसमें बैठकर पण्डित जी के घर पर पहुंच गये।

पण्डों के यहां ठहरने का प्रबन्ध बड़ा ही सुन्दर रहता है, और इसी लालच से यात्री उनके यहां पहुंच जाया करते हैं, फिर यात्री पण्डों को साक्षात देवता ही समझ बैठते हैं। सेठानी जी ने घर पहुंचते ही पण्डित जी की चरण रज ली और बोली—महाराज आप बड़े पुण्यात्मा हैं। आपके रज कल्याण से अबकी बार हम भी यात्रा को चल पड़े, नहीं तो हमारे ऐसे भाग्य कहां थे।"

महाराज बोले—"सेठानी जी जब गंगा मैया की कृपा होती है तभी लोग दर्शन करने चलते हैं। गंगा की कृपा हर एक पर तो नहीं। कुछ थोड़े से भाग्य वालों को ही याद करती है'

सेठानी—हां महाराज बात ऐसी ही है। आज बूढ़ी हो गई हूं तब कहीं भाग्य खुला। बहुत दिनों से दिल में उमंग थी पर गृहस्थी के पचास टण्टे लगे रहते हैं। उनसे छुटकारा जब मिले तब आना होय। आप लोगों के धन्य भाग्य हैं कि रोज गंगा जी की सेवा में रहते हैं, आपके चरणों की कृपा हुई तो हम भी तर जावेंगे।

महाराज—कुछ पैसे दे देना जरा घूम आऊं। आप भी आराम करें, कल नहान है, खूब अच्छी तरह डुबकी लगाऊंगा जिससे ही मुक्ति मिल जायेगी।'

* * *

सेठ जी की लड़की भी साथ में आई थी। वह स्कूल में पढ़ती थी और बड़ी चतुर थी।

वह अपनी मां से कहने लगी अम्मा यह गंवार सा आदमी ठहरा और तुम उसके पैरों से लिपट जाती थीं। तुम रुपये वाली ठहरी बड़े घर की हो पर तुमको लाज नहीं आती कि बार बार उसके पैर पकड़ लेती हो।" मुझे तो यह अच्छा नहीं लगता।"

सेठानी—बेटी, रुपये से कोई आदमी बड़ा नहीं होता। इनको साक्षात ईश्वर ही समझो। न जाने कितनों को ये तार देते हैं। इनके चरण रज लेने से बड़ा पुण्य होता है।

बेटी—'यह तो बात मैंने मान ली कि रुपये से कोई आदमी बड़ा नहीं होता, पर यह तो मुझे धर्मात्मा नहीं दीखता। अभी तुमसे पैसे मांगकर ले गया है न। पैसे का क्या लावेगा?

सेठानी—मैं नहीं जानती कि क्या लावेगा। उसने पैसे मांगे थे मैंने दे दिये।'

बेटी—'खूब रही अभी दिखाऊंगी कि यह आदमी कितना धर्मात्मा है।'

ब्राह्मण देवता भांग ले आये, भांग छानी गई। पण्डे पी पी कर सो गये और दुपहरी भर सोते रहे, लड़की ने अपनी मां को सब बातें दिखाईं। शाम हुई पण्डा जी बन ठन कर बाजार घूमने गये और रात को एक बजे लौट कर आये।

लड़की ने कहा—अम्मा जैसा अखबार में पढ़ा था। सब आज आंखों से देख लिया, हमारे पण्डा जी को देखो। शाम के गये एक बजे रात को लौटकर आये। अगर यही रुपया किसी स्कूल अनाथालय में दिया जाय तो बच्चों का कल्याण होगा।'

पांच बजे थे, पण्डा जी अभी गहरी नींद में सो रहे थे। सेठानी ने सेठ से कहा—'महाराज को जल्दी बुलाओ। नहाने चलें साइत निकल जायगी, तो नहाने से लाभ ही क्या होगा।'

सेठ जी ने किसी तरह ब्राह्मण देवता को जगाया, वे आंख मींचते हुए साथ हो लिये। जब सब लोग नहा चुके तो पण्डा जी कुश लेकर खड़े हो गये, जजमान जी! अब दान दक्षिणा निकालो। संकल्प पढ़ता हूं।

सेठानी—महाराज! अभी मुंह धोया नहीं संकल्प के लिये तैयार हो गये। स्नान तो कर लो।

पण्डा जी कुछ झेंप गये और बोले—'पांच सौ संकल्प से गंगा जी के नाम पर होगा मैं गंगा जी में खड़ा हूं।' सेठ जी को तो देना था ही। एक चवन्नी निकाली। पण्डा जी बिगड़ गये। आज तो एक एक रुपया सब लोग चढ़ाओ, नहीं तो संकल्प का जल गंगा जी में छोड़ता हूं। सेठानी ऐसी डरीं मानों तोप का गोला लगा हो। झट से एक रुपया निकाल कर नजर पण्डा जी के हुआ। पर लड़की अड़ गयी। उसने कहा—मैं तो संकल्प करती नहीं।"

* * *

वहीं पर महादेव जी का मन्दिर बना था जितने यात्री गंगा जी में स्नान करते थे, वे सब महादेव जी के दर्शन अवश्य ही करते थे। सेठ जी जब स्नान कर चुके तो वे भी मन्दिर की ओर चले मन्दिर पर हजारों की भीड़ थी, एक आदमी का धक्का दूसरे से लग रहा था। इसी भीड़ में स्त्रियां भी थीं और दुश्चरित्र लोग भी जो जान-बूझ कर धक्का दे रहे थे।

सेठ जी इसी भीड़ में चले। फाटक पर पुजारियों ने रोक दिया!

लड़की ने पूछा—'यहां पर क्यों रोक दिया?'

पुजारी—जो चार पैसे देते हैं वे यहां से दर्शन करते हैं।"

लड़की—और जो अन्दर से दर्शन करना चाहें।'

पुजारी—अन्दर जाने में चार पैसे का कपूर आरती के लिये और दो पैसे के फूल ले जाने पड़ते हैं और एक रुपया महादेव जी पर चढ़ाना पड़ता है।

इसी बीच एक गरीब आदमी अन्दर घुसने लगा! पण्डों ने धक्का मार कर निकाल दिया। 'चला है महादेव के दर्शन करने, टेंट में फूटी कौड़ी नहीं और दर्शन करेंगे। 'निकल, निकल' बिचारे को धक्का मार कर निकाल दिया।

लड़की—'पुजारी जी! क्या गरीब आदमी महादेव जी के दर्शन नहीं कर सकते! महादेव जी के दरबार में भी गरीब अमीर का भेद होता है।"

पुजारी—'बेटी, बिना दान दक्षिणा के कौन प्रसन्न होता है। महादेव जी भी दान से प्रसन्न होते हैं। यह महादेव दिन में छः बार शृंगार करते हैं।

सेठ, सेठानी जी महादेव के दर्शन कर आये। इतनी दूर पैसा खर्च करके आये थे, तो दो चार रुपये की क्या कन्जूसी करते। सीढ़ियों पर चढ़कर जब ऊपर आये तो कोलाहल हो रहा था। 'चार स्त्रियां गायब हो गयीं! यह शोर हो रहा था। एक पुरुष के साथ चार स्त्रियां दर्शन करने आयीं थीं पर उनका पता न था। पण्डित जी जो दर्शन कराने लाये थे वे भी न जाने कहां थे।

* * *

सेठानी जी जब मन्दिर के दर्शन करके आयीं तो होश्में बड़ी देर हो गयी। अब कान पकड़ती हूं। कभी तीर्थ स्थानों में न आऊंगी।

सही कहा गया है कि आंखों से देख कर ही इन्सान सम्हलता है। अतः सारा करिश्मा देख कर पण्डों की ठग लीला सेठानी की समझ में आयी।

अब साक्षात देखने की आवश्यकता नहीं है। 'आर्यसमाज' आज पथ-प्रदर्शक के रूप में साक्षात् कार्य कर रहा है। आइये उसके नियमानुकूल आचरण बना पाखण्ड मर्दन पर जुट जाइये। आपको आर्यसमाज बुला रहा है। असत्य खण्डन और सत्य मण्डन के लिये। क्यों न हम फिर ऋषि द्वारा खोजे वेद मार्ग पर चलने को आगे न हो जावें।

★

—राजकुमार 'सिद्धांतालंकार'

स्वास्थ्य का कल्प तरु

शक्ति के लिए सोयाबीन का प्रयोग कीजिए

(शारीरिक शक्ति की उपलब्धि के लिए जो पशुओं की हिंसा कर उनके मांस का सेवन करते हैं, उनके नेत्र इस लेख को पढ़कर खुल जाने चाहिये। परमात्मा ने वनस्पतियों के रूप में शक्ति के अनमोल कोष भर दिये हैं। काश ! मानव इनका अन्वेषण करे और जीव हत्या के पाप व अभिशाप से बचे। —सम्पादक]

स्वास्थ्य-सुधा

आज देश के वैज्ञानिकों ने अनुसन्धान करके देखा है कि संसार का कोई भी अन्न अथवा शाक पौष्टिकता में सोयाबीन की बराबरी नहीं कर सकता। शरीर रक्षा के लिये तीन चीजों की आवश्यकता होती है।

१—पौष्टिकतत्त्व प्रोटीन, २-विटामिन ३—वसा ए तीनों तत्त्व सोयाबीन में प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं। सोयाबीन के सेवन से शरीर की मांस पेशियों का अच्छा विकास होता है तथा मज्जा तन्तुओं में पुष्टता आती है। सोयाबीन के नित्य प्रति सेवन से अग्नि सोमात्म रूप प्राण, शरीर-इन्द्रिय सत्व आत्मा के संयोग रूपा आयु, उत्साह रूपी बल और शक्ति, सप्त धातुओं का स्नेह रूपी हृदयाश्रित ओज बढ़ता है। सोयाबीन नेत्रों को स्वच्छ रखती है, तथा मसूढ़ों को दृढ़, फेफड़ों को शक्तिशाली बनाती है। नाटे मनुष्य लम्बे हो जाते हैं और शरीर का भार बढ़ जाता है। स्नायु दृढ़ हो जाता है तथा चर्मरोग होने नहीं पाते। तथा मनुष्य दीर्घ जीवी होता है। सोयाबीन खाने की विधि ५० ग्राम सोयाबीन को जल में भिगो दीजिये जब खूब फूल जाय तो जिस बच्चे की माता नहीं है अथवा जिसको गाय का दूध भी दुर्लभ है उस बच्चे को जल में सिलबट्टे से पीस कर कपड़े से छानकर शहद या खांड मिलाकर पिलाने से गाय के दूध से [illegible]कारी होता है। तथा दूध से अधिक सुपाच्य होता है।

प्रातःकाल के जलपान में सोयाबीन बच्चों को देना चाहिये। आप यह देख कर आश्चर्य करेंगे कि उनके अंग प्रत्यंग किस तेजी से विकसित हो रहे हैं। नवजवान, प्रौढ़ वृद्ध के लिये सोयाबीन अत्यन्त लाभकारी प्रतीत हुआ है। इसके खाने से किसी प्रकार का कब्ज होने नहीं पाता। यह शीघ्र ही पच जाता है। इसकी सब्जी, हलुआ, बरफी आदि भी बन सकते हैं। सोयाबीन के प्रयोग से जिगर ओरम्, मधुमेह, वात रक्तहीनता, हृदय रोग, स्नायु दौर्बल्य, सभी प्रकार के ज्वर मलेरिया आदि दूर हो जाते हैं। यह प्रत्येक रोग में लाभदायक है।

सोयाबीन में विशेष गुण

सोयाबीन दूध से किसी प्रकार न्यून नहीं है। इसमें विशेष गुण यह है कि यह क्षार-धर्मी खाद्य है। दूसरी विशेषता यह है कि मांस, बादाम, दुग्ध के प्रोटीन की भांति ही यह लाभकारी [illegible]। सोयाबीन में प्रोटीन ४२ प्रतिशत [illegible]ता है यह मांस से ५० प्रतिशत अधिक [illegible] में ७४ प्रतिशत प्रोटीन पाया जाता जाता है जब कि सोयाबीन दुग्ध का न्यून अर्थात् ६५ प्रतिशत प्रोटीन मिलता है। सुअर, भेड़ की मांस व मछली, व अण्डा और अन्य जलीय जानवर एवं स्थलीय पशु के प्रोटीन में तुलनात्मक रूप से पोषण के लिये सम्पन्न वस्तुयें एक साथ नहीं पाई जातीं, परन्तु मनुष्य के शरीर निर्माण और रक्षा के लिये जितनी प्रोटीन की जरूरत होती है वह केवल सोयाबीन से ही प्राप्त हो जाती है। यह सोयाबीन अकेले ही मछली, अण्डा, घी, दूध का स्थान ग्रहण कर लेती है। मूंगफली और बादाम की अपेक्षा सोयाबीन में प्रोटीन व क्षार, तेल, अधिक परिमाण में होता है। एक आहार शास्त्री वैद्य ने हिसाब लगाकर यह बतलाया है कि सोयाबीन में मांस हिरण, बकरा, भेड़, मुर्गी बटेर, सुअर आदि से दुगना, अण्डे से तिगुना और दुग्ध आदि से ग्यारह गुना प्रोटीन सोयाबीन में पाया जाता है तथा इसमें विटामिन 'ए' और 'बी' और अंकुर निकल आने पर इसमें विटामिन 'सी' भी पाया जाता है।

सोयाबीन की प्रोटीन वीर्य से मिलती बतलाई जाती है जिसमें लगभग मुख्य एमिनो एसिड जैसे ट्रिप्टोफेन, लाईसिन, हिस्टीडिन, आर्जिनाइन और टायरोसीन आदि होते हैं। सोयाबीन से शरीर में युरिक एसिड की उत्पत्ति किंचित् मात्र भी नहीं है तो, यह सोयाबीन का विशेष गुण है। युरिक एसिड एक विष कहलाता है यदि शरीर में अधिक एकत्रित हो जाय और उसको निकालने की कोई विधि न अपनाया जाय तो शरीर की अधिक हानि होने की सम्भावना होती है। जब यह विष खून में प्रविष्ट हो जाता है तो स्नायु मण्डल के रोग, जैसे मिरगी, हिस्टीरिया, उन्माद आदि उत्पन्न होने की सम्भावना होती है, तथा दमा, श्वास अजीर्ण एवं रक्त की कमी हो जाती है। नीचे विष की सारणी दी जाती है-

एक किलो मांस में	युरिक एसिड विष
मुर्गी के ,,	१६ ग्रेन
चूहे के ,,	१८ ग्रेन
गाय के ,,	१६ ग्रेन
सूअर के ,,	८-१३ ग्रेन
खरगोश के ,,	१२ ग्रेन
हिरण के ,,	८ ग्रेन
भेड़ के ,,	१२ ग्रेन
बकरी, बकरा ,,	१२ ग्रेन
मछली में ,,	५ ग्रेन
और सोयाबीन में	० शून्य है

सोयाबीन में कौन-कौन से जीवन तत्व कितनी-कितनी मात्रा में होता है नीचे के तालिका से ज्ञात कीजिये।

जीवन तत्व द्रव्य	प्रतिशत
टायरोसीन	१,८६
आर्जिनाइन	५,१२
हिस्टिडिन	१.३९
लाइसिन	२,७१

साधारण तौर पर यह समझ लीजिये कि दो किलो मांस खाकर जितने प्रोटीन की प्राप्ति होती है उतना ही प्रोटीन ५०० ग्राम सोयाबीन में सरलता से प्राप्त किया जा सकता है।

सोयाबीन का तेल

एक रूसी वैज्ञानिक लिखता है कि सोयाबीन के तेल को ९५ से १०० प्रतिशत मनुष्य आसानी से पचा सकता है। सोयाबीन में पाये जाने वाले लेसिथिन तत्त्व के परिमाण पर यदि विचार किया जाय तो पाया जायगा कि 'लेसिथिन' के विषय में सोयाबीन का तेल अण्डे के स्निग्धांश के बराबर ही महत्त्व रखता है। सोयाबीन के तेल में विटामिन 'ए' 'बी', 'डी' तीनों विद्यमान हैं। सोयाबीन का तेल मक्खन के समान सुस्वादु और गुणकारी है। और इसमें कैल्शियम, फास्फोरस, फौलाद, पोटाशियम आदि खनिज क्षार और नमक विशेष रूप में विद्यमान रहते हैं। इसके जीवन तत्त्व दूध के बराबर ही होता है। सोयाबीन में स्टार्च कार्बोहाइड्रेट्स [illegible] कुछ भी नहीं होता यह इसकी विशेषता है जिसके कारण मधुमेह के रोगी इसको खाकर बलवान बन सकते हैं।

सोयाबीन की रासायनिक सारणी नीचे प्रस्तुत की जाती है ?

अन्न	१०,८ प्रतिसत प्रोटीन	
खनिज पदार्थ	३४ से ४० प्रतिशत	
[illegible]	४,७	,,
रेशा	३ ७	,,
वसा	१९.५	,,
फास्फरस	३९	,,
कैलशियम	२४	,,
फौलाद	११.५	,,
विटामिन ए	७१०	,,
विटामिन	बी ३००	,,

सोयाबीन का परिचय

'मोले मीन' जाति का सोयाबीन उत्तम होता है बाजारों में हरे, पीले रंग का खाने में आता है, सोयाबीन को

★स्वामी ब्रह्मानंद जी
महर्षि दयानन्द स्मारक टंकारा

सेव दाना, भवास, सोया के नाम से पुकारते हैं।

गत जर्मनी के युद्ध में जर्मनी की सरकार ने सोयाबीन से एक प्रकार का लड्डू सैनिकों के लिये तैयार कराया था जिसका नाम 'आइरन रेशनिल' रक्खा था जिसको खाकर फिर सैनिकों को अन्य पदार्थों के खाने की आवश्यकता नहीं होती थी, तथा शक्ति भी अपूर्व, अक्षुण्ण बना रहती थी तब से जर्मनी में सोयाबीन का नाम मजिक सीड या [illegible] का बीज प्रसिद्ध हो गया।

सोयाबीन की खेती

सोयाबीन को बोने के लिये खेत को उर्वरा बनाने की आवश्यकता नहीं होती इसको जहाँ भी बो दीजिये वहीं पर उत्पन्न हो जायगी। क्योंकि यह हर प्रकार की भूमि जलवायु में उत्पन्न होने लगती है दूसरे प्रकार के अन्न बोने से खेत की उर्वरा शक्ति शनैः शनैः क्षीण होने लगती है, परन्तु सोयाबीन बोने से खेत की उर्वरा शक्ति बढ़ती ही जाती है। दूसरी खूबी यह है कि इसमें

(शेष पृष्ठ ८ पर)

. नियमों को तोड़ कर अपने जीवन को खोखला बना रहो है, ऐसे नवयुवक किसी देश का उद्धार नहीं कर सकते।

आजकल हमारे देश में राजयक्ष्मा रोग या क्षयरोग बड़ी तेजी से बढ़ रहा है, उसका मुख्य कारण ब्रह्मचर्य का नाश है। स्कूलों में ब्रह्मचर्य पर एक भी व्याख्यान नहीं होता, इधर उधर की बेकार बहुत सी बातें पढ़ा दी जाती हैं। अज्ञान के कारण बहुत से विद्यार्थी वीर्य नाश कर बैठते हैं क्योंकि ब्रह्मचर्य के सम्बन्ध में न तो अबोध नवयुवक को माता पिता कुछ बताते हैं और न अध्यापक।

[७] माता, पिता और गुरु का अपमान—जिस दिन से कोई बच्चा किसी घर में पैदा होता है उसके पालन पोषण में चिकित्सा में तथा शिक्षा में माता-पिता तथा गुरु कितना परिश्रम और धन व्यय करते हैं, तब वह दिन आता है जब सुयोग्य नवयुवक ग्रेजुवेट या स्नातक बनता है, जो माता-पिता उसके लिये इतना कष्ट उठाते हैं जब वह कोई बात ऐसी कह देता है कि जिससे उनका अपमान होता है, वे बस जाते हैं और अपने भाग्य को कोसने लगते हैं, मनुस्मृति में लिखा है कि 'उपाध्यायान् दशाचार्य आचार्याणां शतं पिता। सहस्रन्तु पितृन् माता गौरवेणातिरिच्यते।' अर्थात् उपाध्याय से आचार्य की प्रतिष्ठा दस गुणा होती है पिता की प्रतिष्ठा आचार्य से १०० गुणा होती है तथा माता की प्रतिष्ठा पिता से १००० गुणा अधिक होती है। शास्त्रकारों ने जिन माता-पिता और गुरु का इतना गौरव बतलाया है उनकी भी अप्रतिष्ठा उनका उपहास या व्यंग आज कल के कालेजों के लड़के करते हैं। यह बड़े दुःख का विषय है। धर्मशास्त्रों में लिखा है कि—"अभिवादन शीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः। चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशो बलम् ॥" अर्थात् जो विद्यार्थी प्रतिदिन अपने माता पिता और गुरु और अपने वृद्धों का सेवा सत्कार करता है उसकी आयु, विद्या, यश और बल बढ़ता है।

(८) प्राचीन भारतीय संस्कृति के प्रति द्वेष—महर्षि दयानन्द ने इस युग मे शिक्षा प्राचीन भारतीय वैदिक संस्कृति को अपने ग्रन्थों मे प्रकाण्ड पाण्डित्य के साथ पुष्ट किया है, उसका ये कालेजों के लड़के उपहास करते हैं और ये अपना स्वर उन विदेशी विद्वानों के साथ मिलाते हैं जो वेद को गड़रियों के गीत कहते थे, इस तरह इनके मस्तिष्क में भारतीय संस्कृति के लिए कोई स्थान नहीं। ये पाश्चात्य संस्कृति के गीत गाते हैं, क्योंकि भौतिकवादी मनोवृत्ति यही कर सकती है। इसका मुख्य कारण यह है कि इनके पाठ्यक्रम मे प्राचीन भारतीय संस्कृति के मुख्य ग्रन्थ, वेद उपनिषद, गीता और षड्दर्शनों को कोई स्थान नहीं। अतएव ये जानते ही नहीं कि इन ग्रन्थों मे क्या लिखा है और भारतीय संस्कृति क्या है? गुरुकुल का स्नातक कोई ऐसी बातें नहीं कह सकता बल्कि वह आगे बढ़कर पाश्चात्य संस्कृति का खण्डन कर देगा। इसीलिये महर्षि दयानन्द ने कहा था कि ऋषिकृत ग्रन्थ पढ़ो परन्तु कौन सुनता है परिणाम सामने आ रहा है कालेजों के लड़के नास्तिक हो रहे हैं, वेद ईश्वर और धर्म का ढकोसला समझते हैं और उनका उपहास करते जो हमारे धर्म तथा संस्कृति का मूल आधार हैं। हमारे स्वर्गवासी भूतपूर्व प्रधान मन्त्री श्री प० जवाहरलाल नेहरू भी आवेश मे आकर कभी-कभी कह देते थे कि प्राचीनता में कुछ नहीं, हमें नवीन बातों को देखना चाहिए। विज्ञान की प्रगति को समझना चाहिए और भौतिकवाद की ओर चलना चाहिए। उनके प्रति स्थान रखते हुए भी मैं समझता हूं कि उनके ये विचार अशुद्ध हैं क्योंकि उन्होंने संस्कृत नहीं पढ़ी और वेदादि धर्मशास्त्रों को नहीं देखा। इसलिये व उन तथ्यों पर नहीं पहुंच सके जिन पर महर्षि दयानन्द पहुंचे हैं।

[९] कृषि, दुकानदारी और कुटीर उद्योगों के करने मे लज्जा—कालेज के लड़कों को कृषि का काम करने मे लज्जा लगती है या वे इसे निम्नस्तर का कार्य समझते हैं। परन्तु यदि किसी लड़के के माता पिता के पास कृषि योग्य अधिक भूमि हो तो वह दूसरा काम कर ही नहीं सकता। अतः उसे कृषि का कार्य करने के लिये तैयार रहना चाहिए। विद्यार्थी को परिश्रम से घर का हर एक कार्य जिसमें घर की उन्नति हो करने के लिए रहना चाहिए। आराम तलबी और विलासी जीवन का ही यह प्रभाव है कि कालेज के लड़के शारीरिक परिश्रम करने से दूर भागते हैं। और चाहते हैं कि लिखने पढ़ने का कार्य हो तो कर दें।

इसी तरह से बहुत से घरों में दुकानदारी का व्यवसाय होता है कल्पना कीजिए कि एक लड़के के पिता बजाज हैं। उनकी वृद्धावस्था है वे चाहते हैं कि मेरे जीवन काल में लड़का दुकानदारी सीख ले, परन्तु यह कालेज का ग्रेजुएट क्लर्की तो पसन्द करता है लेकिन दुकान पर बैठना इसे निम्न स्तर का कार्य लगता है। यह भी अज्ञान की बात क्लर्की से दुकान में आय अधिक हो सकती है इसे वह नहीं समझता। वह ऊपर के फैशन को देखता है उसमे यदि कहा जावे कि जाओ १० सेर गेहूं पिसा कर ले आओ तो इसके लिये मौत है। बाजार से तरकारी फल आदि खरीद कर लाने मे उसे शर्म लगती है, और अखाड़े मे कुश्ती लड़ना उसे मूर्खों का काम प्रतीत होता है। और किसी सुन्दरी के साथ लव लेटर लिखने में इसे शर्म नहीं लगती अजब तमाशा है।

[१०] छल, कपट और बेईमानी तथा ४२०—करने मे ये कालेज के लड़के बहुत होशियार होते हैं। अपनी प्रतिज्ञा को तोड़ना मामूली बात है। जेब काट लेते हैं। चोरी कर लेते हैं। धोखा दे देते हैं क्या यही सदाचार है। इसे तो मनु ने दुराचार कहा है। वस्तुतः बात यह है कि धार्मिक शिक्षा स्कूलों मे न मिलने से ये सब रोग पैदा होते हैं।

इस प्रकार आपको पता लगा कि वर्त्तमान स्कूली शिक्षा प्रणाली मे कितने अधिक दोष हैं। जिनके कारण ... का जो लाभ होना चाहिये वह नहीं हो रहा, अतएव ऐसे नवयुवक नहीं तैयार हो रहे हैं जो शरीर से मजबूत (स्वास्थ), मस्तिष्क से धर्म शास्त्रों के ज्ञाता तथा सदाचार की दृष्टि से धृति, क्षमा, संयम, अस्तेय, पवित्रता, जितेन्द्रियता, विवेक, विद्वत्ता, सत्यवादिता आदि गुणों से पूरित हों अतएव स्कूली शिक्षा प्रणाली मे परिवर्त्तन नितान्त आवश्यक है। और इस कार्य के लिये शीघ्र केन्द्रीय शिक्षामन्त्री को ऐसी समिति बनानी चाहिये जो शीघ्र ही उचित सुधार करे। प्रायः ऐसी समितियों में बहुत समय लग जाता है और फल दृष्टिगोचर नहीं होता। यह उचित नहीं है, यह कार्य शीघ्र होना चाहिए।

यह दुःख की बात है कि आर्यसमाज के डी० ए० वी० स्कूलों तथा अन्य पाठशालाओं मे भी धार्मिक शिक्षा या तो है ही नहीं और यदि है तो उसका स्तर बहुत नीचा है। उसका स्तर इतना ऊँचा होना चाहिये कि प्रत्येक नवयुवक धर्म के मूल तत्वों को जान जाये और सदाचार का जीवन बिताते हुए ब्रह्मचर्य व्यायाम और सात्विक भोजन तथा स्वाध्याय के द्वारा अपने को आदर्श नवयुवक बनकर देश जाति और धर्म की सेवा करने मे समर्थ हो सके। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के तत्वों के अनुसार स्कूली शिक्षा प्रणाली के पाठ्य-क्रमों का निर्माण होना चाहिए संस्कृत को विशेष महत्व मिलना चाहिये।

सुधा-कलश

●

गरल के घूंट पीकर भी सुधा के कलश छलकाऊं।
स्वयं ले मृत्यु—आश्रय दूसरों को प्राण दे पाऊं॥

यही है साधना मन की, यही उपलब्धि जीवन की।
मुदित मानव-मनस हो विश्व मे वह कार्य कर जाऊँ॥

सदा संसार मे सर्वत्र मानवता फले फूले।
तरङ्गित हो उठे जन-मन मधुरतम गीत वह गाऊं॥

खिले मधुचन्द्रिका प्रत्येक प्राणी के हृदय-पट पर।
व्यथा के, यन्त्रणा के गहन तम का गरल पी जाऊं॥

घृणा की भावनाओं को मिटाकर अखिल जगती से।
पताका स्नेह की सद्भाव की सर्वत्र फहराऊं॥

न हो विग्रह, कलह, पारस्परिक-शोणित पिपासा ही।
सकल संसार को सुख शान्ति का सन्देश पहुंचाऊं॥

अपरिमित शक्ति भर दो ईश! ऐसी काव्य-रचना में।
तरुण सेनानियों में जागरण के गीत बिखराऊं॥

—हरिवंश अनेजा

विद्यार्थी और अयोग्यता

ज्ञान को ग्रहण करने वाला अर्थात् किसी विषय के प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष गुणों और अवगुणों का प्राप्ताकांक्षी विद्यार्थी कहलाता है। यही कतिपय स्वविशेषताओं से इस कार्य में सफल न होने पावे अर्थात् किसी वस्तु या विषय का यथावत् ज्ञान प्राप्त न कर सके तो वह अविद्यार्थी, मूर्ख और अयोग्य संज्ञाओं से विभूषित हो जाता है। इसका मूल कारण है कि वह अपनी सीमित मात्रा अल्पज्ञता को ही जीवनोद्धार समझने लगता है। विद्यार्थी को अपने माता पिता तथा आचार्य से सदैव कुछ सीखने के हेतु, सुखस्वरूप विद्या तथा तार्किकता प्राप्त करने के लिए उनका श्रद्धा से आज्ञापालन, सत्कार, सेवा तथा विषयों का त्याग करना पड़ता है। यही विद्यार्थी अपने परम शिक्षक माता-पिता के आदर्श नियन्त्रण, मान-मर्यादा भङ्ग करे; गुरुओं को अपना भृत्य समझकर अवहेलना करते हुए हमला कर गौरव हासिल करना चाहे, व्यसनों को अपना निकटतम मित्र बना ले (काम क्रोध का नशा जिन पर लदा है), सत्य कटु होता है लेकिन यह मूर्ख अपनी उपेक्षा जान अपने दुर्व्यवहार से विरोध करे तथा प्रतिशोध लेने का भूत जिस पर चढ़ा हो; निःसन्देह ऐसा व्यक्ति दुर्भाग्य निर्माता है। उसे बाह्य सुख तो प्राप्त हो जाएगा क्योंकि वह मनमानी करेगा लेकिन अन्तः सुख न मिलेगा क्योंकि इसमें मनमानी रोकनी पड़ेगी, ज्ञान से उसकी हरकतों को दबाया जायेगा। इसका तात्पर्य त्याग भी करना पड़ेगा, इस त्याग को क्षणिक दुःख दीर्घकालीन अन्तः सुख होगा। जिसकी परम आवश्यकता है- बावजूद बाह्य सुख के। यह दुःख सदैव कल्याणकारी कटु वचनों को सुन मन, वाणी, कर्म से कर अमृतपान करे।

अनुभव पुरुष व्यसनों का समझकर भी गौरव उनको विस्तृतता में ग्रहण करता है। यह क्षेत्र असीमित है, संसार में कीर्ति प्राप्त नहीं कर सकता है। विद्वानों के बीच तिरस्कृत किया जाता है। जो पुरुष ;काम क्रोधादि व्यसनों से बचता है तो इन व्यसन स्वरूप आभूषणों के साथ अग्रलिखित मेहमान भी साथ-साथ चलते हैं। काम-मृगया खेलना, चौपड़ खेलना, कामकथा या दूसरे की निन्दा किया करना, दिन में सोना, जुआ खेलनादि, स्त्रियों का अतिसेवन मद्य, अफीम, भांग, गांजा, चरस का अतीव चाव से सेवन करना वृथा इधर-उधर घूमते रहना, गाना-बजाना, नाचना व नाच कराना, सुनना व देखना इत्यादि। क्रोध-चुगली करना, दूसरे की बड़ाई व उन्नति देख पुन जला करना, बिना विचारे बलात्कार किसी की स्त्री से बुरा काम करना द्रोह रखना, दोषों में गुणों का गुणों में दोषों का लगाना, अधर्मयुक्त बुरे कामों में धनादि का व्यय करना, कठोर वचन बोलना, बिना अपराध के बिना विचारे कठोर वचन या दण्ड देना इनमें ग्रस्त हो न जाने समाज में क्या-क्या निराले चमत्कार उत्पन्न करता है। उनका अपना गौरव तथा सुख जो दुष्कर्मों से हासिल किया गया है, इनका प्रस्फुरण एक क्षण में ही अदृश्यमान हो जाता है। बेचारे के बने बनाये महलों पर धूल उड़ने लगती है। वपु भी दुखद हो जाती है। धूप की चोट पीड़ित करती है। अब पशु-पक्षी भी बसेरा करने नहीं आते। वह सुनहरा पर अब उड़ जाता है।

सुखार्थी विद्या को और विद्यार्थी सुख जो विषयानन्द त्याग दे।

> सत्ये रतानां सततं दान्तानामूर्ध्वरेतसाम्।
> ब्रह्मचर्यं दहेद्राजन् सर्वपापान्युपासितम्।

जो सदा सदाचार में प्रवृत्त, जितेन्द्रिय और जिनका वीर्य अधस्स्खलित कभी न हो उन्हीं का वीर्य सच्चा और वे ही पूर्ण विद्वान् होते हैं।

अब हम भारत उद्योग पर्व विदुर-प्रजागर अ० ३३ के श्लोकों की व्याख्या करें। अयोग्य और मूर्ख के लक्षण लिखते हैं।

> अश्रुतश्च समुन्नद्धो दरिद्रश्च महामनाः।
> अर्थांश्चाऽकर्मणा प्रेप्सुर्मूढ इत्युच्यते बुधैः ॥

अब हम विद्यार्थियों के लक्षणों की व्याख्या के लिए भारत उद्योग पर्व विदुरप्रजागर अ० ४० के श्लोक ५ तथा ६ की व्याख्या करते हैं।

> आलस्यं मदमोहौ च चापलं गोष्ठिरेव च।
> स्तब्धता चाभिमानित्वं तथाऽत्यागित्वमेव च।
> एते वै सप्त दोषाः स्युः सदा विद्यार्थिनां मताः ॥ १ ॥
> सुखार्थिनः कुतो विद्या विद्यार्थिनः सुखम्।
> सुखार्थी वा त्यजेद्विद्यां विद्यार्थी वा त्यजेत्सुखम् ॥ २ ॥

आलस्य अर्थात् शरीर और बुद्धि में जड़ता, नशा मोह किसी वस्तु में लगाव, चपलता और इधर उधर की व्यर्थ कथा करना सुनना, पढ़ते-पढ़ाते रुक जाना, अभिमानी और अत्यागी होना यह सात दोष विद्यार्थियों में माने गये हैं। जो विद्यार्थी ऐसे दोषों को गुण स्वरूप मानते हैं उन्हें ज्ञान प्राप्त नहीं होता। सुख का भोग करने में ही जिसकी इच्छा प्रबल है, वह कुछ सीख भी नहीं सकता है, और फिर विद्यार्जन करने वाले को सुख कहाँ से प्राप्त हो सकता है।

> अनाहूतः प्रविशति ह्यपृष्टो बहु भाषते।
> अविश्वस्ते विश्वसिति मूढचेता नराधमः ।

अर्थात्–जिसने न कोई शास्त्र पढ़ा, न सुना और अतीव घमण्डी, दरिद्र होकर बड़े-बड़े मनोरथ करने वाला- बिना कर्म से पदार्थों की प्राप्ति करने की इच्छा वाला हो उसी को ज्ञानी मूढ़ कहते हैं। जो बिना बुलाये सभा में व किसी के घर में प्रविष्ट हो, उच्चासन पर बैठना चाहे, बिना पूछे सभा में बहुत सा बकवाद करे, विश्वास के अयोग्य वस्तु वा मनुष्य में विश्वास करे वही मूढ़ और सब मनुष्यों में नीच मनुष्य कहा जाता है। जहाँ जहाँ ऐसे-ऐसे पुरुष, उपदेशक, शिष्य और माननीय होते हैं, वहाँ-वहाँ अविद्या अधर्म असभ्यता, कलह, विरोध, फूट बढ़ा के दुःख, क्लेश की वृद्धि करते रहते हैं। ऐसे पुरुष को कोई विद्वज्जन सुमार्ग बतावे तब तो यह चेतन विवेकी होते हुए भी जड़ और घृणास्पद हो जाता है। इस दशा में तो ऐसा पुरुष पशु-पक्षियों से महाधम तथा अनुचित श्लिष्ट है क्योंकि उसे जिधर कहो उधर चल देता है।

जैसा सभी जानते हैं कि वह धार्मिक पुस्तकें, उपदेशादि भूले भटके की है क्योंकि धार्मिक पुरुष तो स्वयं सुधरा है। दवा रोगी के लिए है न कि नीरोग को। मनुष्यों को चाहिये कि यदि वे अयोग्य और मूर्ख लक्षण वाले हैं या विद्यार्थी जो वास्तव में उन लक्षणों वाले नहीं हैं तो वे सर्वोन्नति के लिये सुमार्ग ग्रहण करें। अपनी चेतनता और विवेक को सफल बनावें। वे क्या करते हैं? क्या करना चाहिये? मन, वाणी, कर्म से यथावत रूप देना चाहिये। फिर क्या परिणाम निकलेगा? सारा राष्ट्र तथा सभी वर्ग बनेंगे? इतना दृष्टिकोण विस्तृत करें। हमारा सबका कल्याण इसी में है, अन्य में नहीं

★ रवीन्द्रदेव आर्य
बहेड़ी नगर (बरेली)

शोक-प्रस्ताव

मुजफ्फरपुर (बिहार राज्य) १९ जुलाई दिनांक १४-७-६८ को मुजफ्फरपुर जिला आर्य सभा की बैठक आर्य समाज मन्दिर चिन्नी पोखर मुजफ्फरपुर में श्री भृगुनन्दन गुप्त के प्रधानत्व में हुई।

सभा में सर्वप्रथम बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा पटना–४ से महामन्त्री श्री प० बद्रीनारायण शर्मा के आकस्मिक निधन पर शोक प्रगट किया गया।

दिवंगत आत्मा की शान्ति एवं शोक सन्तप्त परिवार के धैर्य धारण के लिये परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की गई।

—बालेश्वरसिंह 'आर्य'

—मुजफ्फरपुर जिला आर्य सभा
प्रधान–श्री भृगुनन्दन गुप्त (मुजफ्फरपुर)
उपप्रधान–श्री रामगोपाल अग्रवाल „
मन्त्री–श्री बालेश्वरसिंह आर्य (बैरगनियां)
उपमन्त्री–श्री मोहन प्रा० सिंह (बखरी-सुल्तान)
उपमन्त्री–श्री विद्यानन्द म०(मुजफ्फरपुर)

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के अंतरगत प्रदेशीय विद्यार्य सभा उत्तर प्रदेश के तत्वावधान में धर्म शिक्षा प्रशिक्षण शिविर

आर्य विद्यालयों में धर्म शिक्षा के सुप्रबन्ध और शिक्षण निमित्त अध्यापिकाओं को धर्म शिक्षा पढ़ाने योग्य बनाने के लिये रामप्यारी आर्य कन्या इण्टर कालिज चन्दौसी मे एक प्रशिक्षण शिविर २३ जुलाई से ३० जुलाई सन् ६८ तक लगाया गया। जिसमें दश विद्यालयों से दो-दो अध्यापिकायें प्रशिक्षणार्थी आमन्त्रित की गई थीं। परन्तु विद्यालयो की उदासीनता के कारण केवल निम्न लिखित चार विद्यालयो ने ही उत्साह पूर्वक भाग लिया।

(१) रामप्यारी आर्य कन्या इण्टर कालेज चन्दौसी की ५ अध्यापिकायें।

(२) पार्वती आर्य कन्या संस्कृत इण्टर कालिज बदायूं की दो अध्यापिकाएं।

(३) आर्य कन्या इण्टर कालिज शाहजहांपुर की दो अध्यापिकाएं।

(४) आर्य कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय इस्लाम नगर (बदायूं) की दो अध्यापिकायें। जिन विद्यालयों ने इस आवश्यक पुण्य कार्य में भाग लिया वह प्रशंसनीय है। सम्मिलित होने वाली अध्यापिकाओं के मार्गव्यय को सम्बन्धित विद्यालयों ने वहन किया तथा प्रशिक्षणार्थियों तथा शिक्षकों के आवास, भोजन तथा जलपान का समुचित सुप्रबन्ध रामप्यारी आ० क० इ० का० चन्दौसी के कार्यकर्त्ताओं ने किया वह सभी धन्यवाद के पात्र हैं।

इस शिविर में श्री उमदेव जी निरीक्षक आर्य विद्यालय ने विशेष रूप से पूरे सप्ताह प्रशिक्षण दिया तथा श्री राम स्वरूप आर्य मुसाफिर उपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा भी बराबर प्रशिक्षण कार्य करते रहे, तथा दो दिन श्री राम बहादुर मन्त्री प्रदेशीय विद्यार्य सभा तथा एक दिन श्री महेन्द्रप्रतापजी शास्त्री प्रधान प्रादेशिक विद्यार्य सभा उत्तरप्रदेश ने अपना अमूल्य समय देकर प्रशिक्षण दिया, जिसका प्रशिक्षणार्थियों पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा सभी महानुभाव धन्यवाद के पात्र है।

सम्मिलित होने वाली समस्त अध्यापिकायें प्रशिक्षण से बहुत प्रभावित हुयीं। भविष्य में इस प्रकार के शिविर योजना बद्ध लगाये जाने के लिये आग्रह किया।

अन्तिम दिन रामप्यारी आ० क० इ० का० के विशाल प्रांगण में जो अभ्यागतों से भरा हुआ था के समक्ष श्री महेन्द्र प्रताप जी शास्त्री की अध्यक्षता में समापन समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। जिसमें श्री पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री संसद सदस्य प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने अपने कर कमलों से प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण-पत्र दिये। समारोह रोचक और प्रभावशाली रहा, कन्या विद्यालय की छात्राओं ने शिक्षाप्रद अनेक गान व कीर्तन दृश्य प्रस्तुत किये। श्री राम प्रसाद प्रबन्धक विद्यालय ने अपने विद्यालय की उन्नति सम्बन्धी वृत्तान्त पढ़ा तथा श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री का ओजस्वी भाषण हुआ। और श्री रामबहादुर जी मन्त्री प्रदेशीय आर्य सभा ने विद्यार्य सभा की योजनाओं के सम्बन्ध मे प्रकाश डाला अन्त मे अध्यक्ष महोदय श्री महेन्द्रप्रताप जी शास्त्री ने वैदिक धर्म तथा धर्म शिक्षा के महत्व पर व्याख्यान दिया तथा प्रदेशीय विद्यार्य सभा के कार्यो पर सन्तोष व प्रसन्नता व्यक्त की।

प्रचार

फैजाबाद के जिले की समाजों द्वारा वेद प्रचार की धूम।

आर्य उप प्रतिनिधि सभा फैजाबाद ने पूरे जिले मे वहां के स्थानीय समाजो द्वारा वेद प्रचार की व्यापक योजना बनाई है, सभा के वैतनिक उपदेशक श्री प० छांगूराम जी शास्त्री भजन व्याख्यान तथा—तथा मैजिक लालटेन द्वारा ग्रामों मे घूमघाम कर बड़े उत्साह से वेदप्रचार कर रहे हैं। जिले की समाजों को जाग्रति कर आर्य जनता को सचेत करना सभा का मुख्य उद्देश्य है।

कलपनाथ गिरि, मन्त्री

वेद प्रचार

वेद प्रचार मंडल कानपुर द्वारा साप्ताहिक सत्संग श्री ओमप्रकाश जी आर्य ब्लाक ५ के निवास स्थान पर बड़े उत्साहपूर्वक हुआ। जिसमे हवन, सन्ध्या, प्रार्थना तथा भजनो के पश्चात् श्री शान्ति भूषण मन्त्री वेद प्रचार मण्डल का प्रवचन जीव आत्मा एवं परमात्मा के सम्बन्ध में हुआ। प्रवचन के दौरान आपने बताया कि आत्मा अपने कर्मों के अनुसार जन्म लेता है।

उपरोक्त सभा में एक शोक प्रस्ताव पारित किया गया। जिसमें श्री वेदप्रकाश जी शर्मा के सुपुत्र की अकाल मृत्यु पर गहरा दुःख प्रगट किया गया तथा दिवगत आत्मा के लिए परम पिता परमात्मा से प्रार्थना की गई कि उसे मुक्ति प्रदान करें। तथा उनके सम्बन्धियों को यह महान दुःख सहने की शक्ति प्रदान करें।

श्रद्धानंद साल्वेशन मिशन के महामंत्री जी का दौरा

देहरादून—अखिल भारतीय श्रद्धानन्द साल्वेशन मिशन के महामन्त्री श्री हकीम आनन्दचन्द्र जी आर्य विकास नगर केन्द्र के होम्योपैथिक विभाग के सहायक चिकित्सक श्री डा० बलदेव प्रसाद तोमर पर हुए घातक हमले की सूचना पर देहली से देहरादून पहुच गये हैं। मिशन के महामन्त्री ने इन अस्पताल मे डा० श्री प्रसाद को घायल अवस्था मे देखकर हार्दिक संवेदना व्यक्त की तथा उन्हें धैर्य्य साहस के साथ देश धर्म तथा मानव समाज की सेवा करने के लिये शीघ्र स्वास्थ्य लाभ करने एव उत्साह व आत्मविश्वास बनाये रखने की प्रेरणा की। उसके बाद महामन्त्री जी देहरादून के पछवादून वाले क्षेत्र मे अपने मिशन द्वारा सचालित सेवा चिकित्सा केन्द्रों का निरीक्षण करने के लिये चकरौता रवाना हो गये।

आप के साथ मिशन के संयोजक श्री पं० सुखदेव जी शास्त्री भी दौरा कर रहे हैं।

आर्य समाज शाहपुरा के तत्वावधान मे श्री दयानन्द महिला शिक्षण केन्द्र के प्राङ्गण मे सम्पूर्ण जनता के सहयोग से दि० २८ जून से 'वृष्टि यज्ञ' प्रारम्भ हुआ। वृष्टि विज्ञान कर्त्ता प० वीरसेन जी वेदश्रमी दि० ४ जौलाई को शाहपुरा पधारे उनके आचार्यत्व में यज्ञ कार्य सुचारु रूप से चलता रहा। मिति आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा दिनांक १० जुलाई को यज्ञ की पूर्णाहुति हुई फलस्वरूप अच्छी वर्षा हो रही है।

आर्य जगत् के प्रसिद्ध भजनोपदेशक कुं० जोरावरसिंह जी एवं प्रभावती देवी जी दि० ३० जून को शाहपुरा पधारे ५ दिन तक लगातार महिला शिक्षण केन्द्र के प्राङ्गण में वैदिक सिद्धान्तों पर आज का सफल प्रचार होता रहा, उपस्थित जनता की आर्यसमाज पर आस्था दृढ़ हुई।

स्मरण रहे कि यह आर्यसमाज शाहपुरा का पञ्चम् वृष्टि यज्ञ सफलता पूर्वक सानन्द सम्पन्न हुआ है।

—रामस्वरूप वेदी सि० शास्त्री
मन्त्री
आर्यसमाज शाहपुरा (राजस्थान)

निर्वाचन

आर्य समाज चिरयोल (गोवा)
आर्य समाज चिरयोल के सदस्यों की एक बैठक श्रीकृष्ण काशीनाथ खेडेकर के सभापतित्व में सम्पन्न हुई। जिनमें निम्न पदाधिकारी निर्वाचित हुये।

प्रधान—श्री होनूमुकन्द गांवड़ा
उप प्रधान—श्री हरिश्चन्द्र कृष्ण देसाई
मन्त्री—श्री हनुमन्त जगन्नाथ खेडेकर
खजांची—श्री नीलकण्ठ केरकर
प्रदेश प्रतिनिधि—श्री वामनराम खेडेकर

—आर्य केन्द्रीय समिति लुनसन पाड़ा अहमदाबाद
प्रधान—श्री सन्तोषकुमार जी पाल
उप प्रधान—श्री सत्यराम जी आर्य
मन्त्री—श्री नरसिंह भाई आर्य
सह मन्त्री—श्री मोतिसिंह जी आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री योगानन्द जी आर्य
सह कोषाध्यक्ष—श्री खेमचन्द जी आर्य
लेखा निरीक्षक—श्री प्रतापराज जी आर्य

भारतीय आर्य युवक परिषद वाराणसी

—दिनांक ९-७-६८ को सायकाल ५ बजे स्थानीय सरदार बल्लभ भाई पटेल स्मारक 'अतिथि निवास' के प्रांगण में आर्य युवको का सम्मेलन सम्पन्न हुआ। सम्मेलन मे लगभग ५० प्रतिनिधि युवक जो विभिन्न मुहल्लों के पधारे थे। सम्मेलन की अध्यक्षता, वाराणसी के प्रमुख कार्यकर्त्ता श्री जगतनारायण जी मौर्य ने की।

सम्मेलन में भारतीय आर्य युवक परिषद् की स्थापना की गई, तथा निम्न लिखित पदाधिकारियो का निर्वाचन हुआ।

श्री बचनराम आर्य सरक्षक
श्री प्रकाश नारायण शास्त्री, अध्यक्ष
श्री पन्नालाल, उपाध्यक्ष
श्री रविन्द्रनाथ, महामंत्रि
श्री पन्नालाल शाह, मंत्रि
श्री उमाशंकर गुप्त, प्रचार मन्त्री
श्री कन्हैयालाल आर्य, कोषाध्क्ष

इसके अतिरिक्त अन्य ९ युवक कार्यकारिणी के सदस्य निर्वाचित हुये।

सम्मेलन में सर्व सम्मति से एक प्रस्ताव पारित कर भारत सरकार से मांग की गई है कि—अराष्ट्रिय ईसाई (विदेशी) पादरियों को तत्काल भारत से निकाल बाहर किया जाय, क्योंकि इनके कार्यों के परिणाम स्वरूप देश में पृथकता वादी मनोवृत्ति जोरों से बढ़ रही है।

'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली को अपना निर्वाचन रोकना पड़ा

सब-जज दिल्ली द्वारा निषेधाज्ञा

दिल्ली ५-८-६८ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली ने वार्षिक निर्वाचन के लिये ३-४ अगस्त ६८ को अपनी बैठक रखी थी। ३ अगस्त को सायंकाल बैठक आरम्भ होते ही न्यायालय के एक कर्मचारी ने श्री पी० के० जैन सब जज दिल्ली की निषेधाज्ञा का आदेश सभा के प्रधान, मन्त्री तथा सभा को दिया। इस कारण वह बैठक तुरन्त भंग करनी पड़ी। यह निषेधाज्ञा श्री ओमप्रकाश कपड़े वाले, आजीवन सदस्य सार्वदेशिक सभा की प्रार्थना पर लगाया गया था। उन्होंने अपने प्रार्थना पत्र में लिखा है कि सार्वदेशिक सभा के वर्त्तमान अधिकारियों ने उक्त सभा पर कब्जा रखने की भावना से ३-४ अगस्त ६८ की बैठक में भाग लेने वाले बंगाल के दस और आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब के १४ प्रतिनिधियों को जान बूझ कर एजेण्डा नहीं भेजा। इसके अतिरिक्त अपनी संख्या बढ़ाने के लिए निषेधाज्ञा लगने के बावजूद आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से मनोनीत १५ अवैध सदस्यों को बैठक में बिठाया जा रहा है।

बाद में पता लगा कि उत्तर प्रदेश के ३ सदस्यों को भी जानबूझ कर बैठने की आज्ञा नहीं दी है। अब उन्हे यह बैठक पुनः २-३ मास के अन्दर करनी होगी।

—ओमप्रकाश कपड़े वाला

सूचना

३ अगस्त रात्री को लखनऊ स्टेशन पर हमारा एक थैला किसी ने उठा लिया है, जिसमें सभा की निम्नलिखित दो रसीद बहियाँ थीं। यदि किसी को उक्त थैला मिला हो तो हमे देने का कष्ट करें। और दान-दाता महोदय सभा को इन रसीदों पर किसी को इस सभा के नाम से दान न देवें। रसीद सं० ४७०१-४७२४, रसीद सं० ४७७६-४८०० (इनमें अन्तिम तीन रसीदें रिक्त थीं)।

—कुन्दनलाल आर्य
कुते सभा मन्त्री
'सत्संग भवन" कमला मार्केट
रामकृष्ण पार्क, अमीनाबाद लखनऊ
भारतवर्षीय गो-कृष्यादि रक्षिणी सभा

प्रशंसनीय दान

आर्य जगत् के प्रसिद्ध दानवीर श्री चौ० फतेहचंन्द्र माडल टाउन हिसार में फतेहाबाद मे स्थित अपने मकान तथा भूमि वैदिक धर्म के प्रचारार्थ दयानन्द ब्रा० महाविद्यालय हिसार को दान मे दिये हैं। दान में प्राप्त सम्पत्ति का मूल्य लगभग तीस हजार रुपये है। उनकी इच्छा है कि उनके पिता श्री फकीरचन्द्र जी के नाम पर स्मारक बनाकर समीप के ग्रामीण क्षेत्रों पर प्रचार किया जाये। हम विद्यालय की ओर से चौ० फकीरचन्द्र का हार्दिक धन्यवाद करते हुए, ईश्वर से उनको आरोग्य दीर्घायु धार्मिक भावना का धनधान्य की वृद्धि की प्रार्थना करते हैं।

--आचार्य
दयानन्द ब्रा० महाविद्यालय हिसार
[हरियाणा]

वैवाहिक विज्ञापन

गवर्नमेंट सर्विस मे ५००) पांच सौ रुपये प्रतिमास पाने वाले २४ वर्षीय एम० एस० सी० (फिजिक्स) Msc. (Physics) सुन्दर, स्वस्थ आर्यसमाजी विचारधारा के कायस्थ सज्जन युवक के लिए गौर वर्ण सुन्दर और पढ़ी-लिखी कन्या की आवश्यकता है। जाति तथा दहेज बन्धन नहीं है। पत्र व्यवहार निम्न पते पर कर-

—श्री रामकुमार शास्त्री,
एम० ए० द्वारा—
आनन्द आयुर्वेदीय फार्मेसी
स्थान व पोस्ट—भोगांव
जि० मैनपुरी

विश्व-वैचित्र्य

क्या आप जानते हैं ?

(१) कमल कुल में एक 'विक्टोरिया रीजिया' नाम की पत्ती बिलकुल थाल की भांति होती है, इसका व्यास ६ फीट तक पाया गया है।

(२) 'जावा' में 'कोनोडो ड्रेगन' नामक छिपकली रहती है जो कि १० से १५ फीट लम्बी व लगभग ३ मन भारी होती है। यह जगंली सुअर का शिकार करती है।

(३) कुकरमुत्तों में हरा तथा नीला प्रकाश होता है।

(४) 'कैली फोर्निया' मे एक वृक्ष पाया जाता है जो कि 'सिकोया सेम्परवायरेन्स' कहलाता है। इसकी लम्बाई ३०० फीट तथा तने का व्यास ३० फीट होता है। एक अन्य वृक्ष 'तूक्ष' पाया जाता है, जो कि ५२। फीट चौड़े तने का होता है।

(५) 'उत्तरी आस्ट्रेलिया' मे 'पर्वतीय दानव' नामक सरीसृप पाया गया, जो कि देखने मे बहुत भयानक, परन्तु प्रकृति का सीधा-सादा ८ इन्च लम्बा यह सरीसृप चींटिया खाता है।

(६) एक अन्य सरीसृप 'झालरदार गिरगिट' भी पाया जाता है जो कि २० इन्च लम्बा होता है। शत्रु को देखकर यह अपनी झालरों को खोल देता, जिससे झालरें १० इन्च तक चौड़ी हो जाती है तथा इसका मुख लाल व भयानक हो जाता है।

(७) 'हमिंग बर्ड' नामक चिड़िया उतनी ही तेजी से पीछे उड़ सकती है, जितनी तेजी से आगे।

(८) 'निगेल' जाति की एक अमरीकन मकड़ी इतनी बड़ी होती है, कि वह 'हमिंग बर्ड' को उसके घोंसले से निकाल कर खा जाती है।

(९) 'आक्टोपस' नामक जीव आस्ट्रेलिया के निकटवर्ती समुद्रों में मिलता है। इसकी लम्बाई ४० फीट व भुजाये २८ फीट लम्बी होती हैं। यह 'मछुए' की नाव को भुजाओं में बांध कर डुबा देता है।

[१०] भूमध्य सागर मे 'जेली फिश' पाई जाती है, जिसे छूने से उसका शरीर प्रकाशमय हो उठता है, तथा अंगुलियां भी चमकने लगती हैं।

संकलित:-शशिप्रकाश नागरथ, कानपुर

वेद प्रचार सप्ताह

९ अगस्त से १६ अगस्त तक आर्य-प्रतिनिधि सभा की यज्ञशाला में महिला समाज नरही लखनऊ की ओर से वेद प्रचार सप्ताह समारोह पूर्वक मनाया गया, उसमें प्रतिदिन पूज्य प० मेधावी शास्त्री का वेदों का सुन्दर उपदेश होता रहा और अन्तिम दिन आदरणीय श्री लालादेवराज जी का उपदेश हुआ।

पुष्पलता श्रीवास्तव

कन्या गुरुकुल (सासनी) हाथरस

एक दानी सज्जन की सहायता से गुरुकुलों में कन्यायें विशेष रियायत पर प्रविष्ट की जायेंगी। भोजन, दूध, घी आदि के लिए केवल २०-२५ रु० मासिक देना होगा। शिक्षा, छात्रावास निःशुल्क रहेगा। प्रवेश ३१ अगस्त १९६८ तक हो सकेगा। असहाय माता पिता शीघ्र लाभ उठायें।

—अक्षयकुमारी शास्त्री
मुख्याधिष्ठात्री

आवश्यकता

मेरे एक मित्र जिनके तीन पुत्र क्रमश २५, २३, १३ वर्ष हैं, ब्राह्मण-कुलोत्पन्न साथ आर्य परिवार है। बड़े पुत्र के लिए १६ वर्ष की कन्या आठवी कक्षा उत्तीर्ण स्वस्थ, गृह कार्य में कुशल होनी चाहिए। बड़े पुत्र की योग्यता कक्षा १० उत्तीर्ण, कृषि कार्य में अत्यन्त चतुर, एव निरोग है ३० बीघा भूमि, ट्यूब-वेल रेडियो, साइकिलें आदि अन्य साधन उपलब्ध हैं। छोटा भाई गुरुकुल का स्नातक अध्यापन कार्य कर रहा है। पत्र व्यवहार करें—

—मानूलाल आर्य
स्थान व पोस्ट कहिजरी
कानपुर

धार्मिक

ब्रह्म ज्ञानी का ब्रह्म विवेचन

[याज्ञवल्क्य को आश्रम के लिये गौवों की आवश्यकता थी, इसलिए राजा जनक के धार्मिक सम्मेलन मे उसने ब्रह्म ज्ञानी होना स्वीकार किया और अपने शिष्य सामश्रवा को गाय आश्रम ले जाने का आदेश दिया। अन्य ज्ञानियों से शास्त्रार्थ हुआ जिससे ब्रह्म विवेचन हुआ। याज्ञवल्क्य स्वयं ब्रह्म ज्ञानी ही नहीं था वरन् उसमें विनम्रता कूट-कूट कर भरी हुई थी। इसलिये वह विजयी हुआ। इस धार्मिक कथा मे सभी प्रसंग पढ़िए और अपना ज्ञान-वर्धन कीजिए। —सम्पादक]

जनक वैदेह ने एक बहुत दक्षिणा वाला (अश्वमेध) यज्ञ किया। वहां *कुरुओं और *पञ्चालों के ब्राह्मण एकत्रित हुये थे। उस जनक वैदेह को यह जानने की इच्छा हुई, कि इन ब्राह्मणों में से कौन सबसे बढ़कर वेद का जानने वाला है। इस प्रकार उसने हजार गौएं गौशाला में रोकीं, जिनमें से से एक एक के सींगों पर दस दस सोने के पाद बांधे हुये थे। राजा जनक ने कहा—भगवन्त ब्राह्मणो! जो आप में से सबसे बढ़कर ब्रह्मा है वह इन गौओं को हांक ले। परन्तु उनमे से किसी का हौसला नहीं पड़ा। तब याज्ञवल्क्य ने अपने ही एक ब्रह्मचारी को कहा—प्यारे सामश्रवा इन गौओं को हांक ले जा। तब वह हांक ले गया। जिस पर वे ब्राह्मण बहुत क्रुद्ध हुये, कि किस तरह हम में से यह अपने आपको सबसे बढ़कर ब्रह्मा कह सकता है? अब जनक विदेह का अश्वल था। उसने इसको पूछा—क्या तू याज्ञवल्क्य हम में से सबसे बढ़कर ब्रह्मा है? उसने कहा हम सबसे बढ़कर ब्रह्मा को नमस्कार करते हैं। हम आज कल गौओं की कामना वाले हैं। उसको उत्तर न होता अश्वल पूछने लगा। उसने कहा—हे याज्ञवल्क्य। जब यह यज्ञ सम्बन्धी हर एक वस्तु मृत्यु की पहुंच में है, हर एक वस्तु मृत्यु के वश में है, तो फिर किस साधन से यजमान मृत्यु की पहुंच से अतिमुक्त हो जाता है। अर्थात् पूरा स्वतन्त्र हो जाता है। उसने उत्तर दिया—होता ऋत्विक से, जो अग्नि है जो वाणी है। क्योंकि वाणी ही यज्ञ का होता है, और यह वाणी ही अग्नि है, और वह अग्नि होता है, वह होता मुक्ति (मृत्यु से छूटना) है और वह अति मुक्ति है (मृत्यु से पूरा पूरा छूट जाना है)।

उसने कहा—हे याज्ञवल्क्य जब यह अन्तरिक्ष मानों बिना सहारे (सीढ़ी) के है। तो फिर यह यजमान किस चढ़ाव से स्वर्ग लोक पर चढ़ जाता है।

याज्ञवल्क्य ने उत्तर—ब्रह्मा ऋत्विक से, जो मन है, जो चन्द्र है। क्योंकि मन यज्ञ का ब्रह्मा है। और यह मन चन्द्र है, वह ब्रह्मा है, वह मुक्ति है, वह अति मुक्ति है। ये अति मोक्ष हैं।

कर्म फल ऐश्वर्य

आश्वल ने कहा—हे याज्ञवल्क्य! कितनी ऋचाओं से आज यह होता इस यज्ञ मे काम करेगा? उसने उत्तर दिया तीन से। वे तीन कौन सी हैं? उसने उत्तर दिया—"पुरोऽनुवाक्या च याज्या च शस्यैव तृतीया" पुरोऽनुवाक्या, याज्या और तीसरी शस्या। इन ऋचाओं से यजमान क्या जीतता है, अथवा क्या फल लाभ करता है।"

याज्ञवल्क्य ने उत्तर दिया "यत् किञ्चेदं प्राणभृत्" इति। जो कुछ यह प्राणधारी है।

उसने कहा—हे याज्ञवल्क्य। यह अध्वर्यु आज इस यज्ञ में कितनी आहुति में होमेगा।

याज्ञवल्क्य ने उत्तर दिया—तीन (तिस्र) वे तीन कौन सी हैं। याज्ञवल्क्य ने उत्तर दिया—वे, जो होम की हुई चमकती है, और वे जो होम की हुई बहुत शब्द करती हैं और वे जो होम की हुई नीचे जा ठहरती है अथवा उन्हें सत्-रज-तम की संज्ञा दी जा सकती हैं। उनसे यह क्या जीतता है? याज्ञवल्क्य ने उत्तर दिया—जो होम की हुई उनसे वह देव लोक को ही जीतता है, क्योंकि देव लोक मानव चमकता है, और जो होम की हुई बहुत शब्द करती है, उनसे वह पितृलोक को ही जीतता है क्योंकि पितृलोक मानों अति शब्द वाला है, और जो होम की हुई नीचे बैठ जाती है उनसे वह मनुष्य लोक को ही जीतता है क्योंकि मनुष्य लोक मानों नीचे है। उसने कहा—हे याज्ञवल्क्य! यह ब्रह्मा आज दक्षिण से (यज्ञ में ब्रह्मा दक्षिण दिशा में बैठता है और उत्तराभिमुख रहता है। कितने देवताओं से यज्ञ की रक्षा करेगा। याज्ञवल्क्य ने उत्तर दिया—"एक से" वह एक कौन है? (याज्ञवल्क्य ने उत्तर दिया—मन एव मन ही है क्योंकि मन अन्तरहित से है और विश्वदेव भी अन्त से रहित है, और वह उससे अन्त रहित लोक को जीतता है।

उसने कहा—हे याज्ञवल्क्य। कितनी वे स्तोत्रिय ऋचायें हैं जिनसे यह उद्गाता आज इस यज्ञ में स्तुति करेगा। याज्ञवल्क्य ने उत्तर दिया "तिस्रः इति" तीन। "कतमास्तास्तिस्रः" इति। वे तीन कौन-सी हैं? याज्ञवल्क्य ने उत्तर दिया—पुरोऽनुवाक्या, याज्या और तिसरी शस्या। और वे कौन हैं जो शरीर में अध्यात्म हैं। याज्ञवल्क्य ने उत्तर दिया।

"प्राण एव पुरोऽनुवाक्याऽपानो याज्या व्यानः शस्या" प्राण (सांस निकालना) ही पुरोऽनु वाक्या है, अपान (श्वांस का अन्दर खींचना) याज्या और व्यान (श्वांस को वापिस लौटाना) शस्या है। उनसे वह क्या जीतता है? पृथिवी लोक को ही पुरोनुवाक्या है अन्तरिक्ष लोक को याज्या से और द्युलोक को शस्या से। तब अश्वल ऋषि इन समाधानों को सुनकर चुप हो गया।

—आचार्य विजयपाल शास्त्री
कानपुर

टिप्पणी—उपरोक्त प्रश्नोत्तरों में कई एक शब्दों का विवेचन यहां कर देना आवश्यक प्रतीत होता है कि जिससे सर्व साधारण के समझ में आ जाय क्योंकि बहुत से व्यक्ति छोटी छोटी बातों की उपेक्षा कर देते हैं फिर उनसे प्रश्न करने पर उन बातों का समाधान अच्छी प्रकार नहीं कर पाते। जैसे इस लेख में आया है कि (ब्रह्मा) चारों वेदों का जानने वाला—ऐतरेय ब्राह्मण में चारों ऋत्विजों का काम इस प्रकार विभक्त किया है कि ऋग्वेद से होता का काम, यजुर्वेद से अध्वर्यु का, सामवेद से उद्गाता का, और ऋग्-यजु-साम तीनों से ब्रह्मा का काम किया जाता है। (सामश्रवा) यह शिष्य का नाम प्रतीत होता है और उस समय इस प्रकार के नामों का प्रचार था, जैसा कि महाभारत १।३।१२ में श्रुतश्रवा ऋषि का पुत्र सोमश्रवा आया है, वाजश्रवा आदि। याज्ञवल्क्य से यह शिष्य सामवेद पढ़ता था इसलिये उसे सामश्रवा कहा है। इससे यह बात सिद्ध होती है कि याज्ञवल्क्य चारों वेदों का जानने वाला था। याज्ञवल्क्य यजुर्वेद का प्रसिद्ध अध्यापक है, उससे यह ब्रह्मचारी 'साम' सुनता है और साम ऋचाओं में गाया जाता है इसलिए यह सिद्ध हुआ कि याज्ञवल्क्य चारों वेदों का जानने वाला है, क्योंकि केवल यजुर्वेदी के पास से सामवेद का पढ़ना नहीं बन सकता।

(यज्ञ) व्यष्टि—(स्वार्थ) जीवन को समष्टि (परमार्थ) से मिलाना यज्ञ का उद्देश्य है। मृत्यु व्यष्टि के लिये है, समष्टि के लिये नहीं। व्यष्टि का फिर समष्टि में मिल जाना ही व्यष्टि के लिए मृत्यु है। वाणी व्यष्टि और अग्नि समष्टि है क्योंकि "अग्निर्वाग् भूत्वा मुखं प्राविशत्" (ऐत० २।४।२-४) अग्नि वाणी बनकर मुख में प्रविष्ट हुई है। सो उस वाणी को व्यष्टि सीमा को तोड़कर उसे समष्टि अग्नि के साथ मिला देना ही वाणी को मौत से छुड़ाना है। अग्नियज्ञ में वाणी होता का काम करती है। वही होता अधिदैवत में अग्नि है अतः कहा है, जो होता ऋत्विक् है वही वाणी है, वही अग्नि है। व्यष्टि आंख के लिये दिन रात है वह समष्टि सूर्य के साथ एक होने से दिन रात की पहुंच से पार हो जाती है।

*विदेह, कुरु और पञ्चाल ये तीनों क्षत्रियों की जातियां थीं इन जातियों में से जहां जिसका निवास था वह देश उसी के नाम से बोला जाता था। वर्तमान मिथिला के आस-पास देशों में विदेह निवास करते थे। दिल्ली के आस-पास देशों में कुरु और कन्नौज के आस-पास देशों में पञ्चाल निवास करते थे। ब्राह्मण ग्रन्थों में यहां के क्षत्रियों के पराक्रम और ब्राह्मणों की विद्या और धर्मभाव की बहुत प्रशंसा पाई जाती है।

कहानी-कुञ्ज

आर्य्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल-९
२० भाद्रपद ३ शक १८९० भाद्रपदशु० २
(दिनांक २४ अगस्त सन् १९६८)

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

Registered No L 60
पता—'आर्य्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष्य २५९९३ तार : "आर्यमित्र"

अमृत वर्षा

महर्षि दयानन्द ने कहा था--

पण्डित कौन है ?

*

(१) जिसको परमात्मा और जीवात्मा का यथार्थ ज्ञान जो आलस्य को छोड़कर सदा उद्योगी सुख दुःखादि का सहन, धर्म का नित्य सेवन करने वाला हो, जिसको कोई पदार्थ धर्म से छुड़ा अधर्म की ओर न खींच सके, वह पण्डित कहाता है।

(२) जो सदा प्रशस्त धर्म युक्त कर्मों को करने और निन्दित अधर्मयुक्त कर्मों को कभी न सेवन हारा, न कदापि ईश्वर, वेद और धर्म का विरोधी और परमात्मा, सत्य विद्या और धर्म में दृढ़ विश्वासी है, वही मनुष्य पण्डित के लक्षण युक्त होता है।

(३) जिसकी वाणी सब विद्याओं में चलने वाली, अत्यन्त अद्भुत, विद्याओं की कथा को करने, बिना जाने पदार्थों को तर्क से शीघ्र जानने, सुनी विचारी विद्याओं को सदा उपस्थित रखने और जो सब विद्याओं के ग्रन्थों को अन्य मनुष्यों को शीघ्र पढ़ाने वाला मनुष्य है, वही पण्डित कहाता है।

(पृष्ठ २ का शेष)

सकता है। सार्वभौम की इस ऋचा में इस सत्य का ही साक्षात्कार कराया गया है—

मन्त्र में अग्ने शब्द से सम्बोधन परमात्मा का किया है। अग्नि शब्द का अर्थ है आगे ले जाने वाला ऊँचा उठाने वाला। परमात्मा ही केवल हमको ऊँचा उठाता है जो स्वयं गिरा है वह किसी को कैसे उठाएगा ? मनुष्य जब स्वयं पाप में रत रहता है तब वह किस भांति दूसरे को पाप से बचा सकता है ? पापी तो सदा पाप बढ़ाने की चेष्टा करता है। जो स्वयं ऊँचा उठा हुआ है वही दूसरों को उठा सकता है। परमात्मा सर्वोच्च है वेदानुसार वह नपात है, गिरा हुआ नहीं है इसलिये वही हमें ऊपर उठाता है। परमात्मा जरा से रहित है वह अकाय है, उसे भोग रोग नहीं सताते जिसके कारण वह क्षीण नहीं होता वह समदर्शी है अत वह हमें सबसे सम्बन्धी की भांति छोड़ भी नहीं देता। परमात्मा तो ज्ञान स्वरूप है और अन्तर्यामी होने के कारण हृदय की बात जानता है जब मनुष्य को निरन्तर ऐसा बोध होता है तब वह पाप नहीं करता। परमात्मा को मन्त्र में देव कहा है वही देव तो हमें दिव्यताओं को देने वाला है एक वही हमारी हिंसाकारी वृत्तियों से रक्षा करने वाला है। हमारे अन्त शत्रुओं काम, क्रोध, लोभ मोह, मत्सर, अहंकार से बचाने वाला है ईर्षा और द्वेष आदि को दूर करने वाला है।

अत मन्त्र में प्रार्थना की गई कि हे परमेश्वर तू ही हमें पापों से बचा और जीवन सदनों से हिंसा कारी वृत्तियों को दूर निकाल जिनके कारण मनुष्य विवेक हीन होकर बड़े बड़े पाप कर बैठता है। हमारे जीवन सदनों से पाप को उसी प्रकार दूर कर जैसे वायु भूमि से धूल को उड़ा ले जाती है और आकाश से मेघों को सरका कर ले जाती है। जब तक हम पाप विमुक्त नहीं होंगे हमारे जीवन सदन में आनन्द और सोम की घटायें नहीं छायेंगी और हम जीवन की सुख शान्ति से सर्वथा दूर रहेंगे।

आर्य्यमित्र

के

आगामी अङ्कों के आकर्षण

नए स्तम्भ—

(१) शङ्का-समाधान
(२) संस्कृत-सुधा
(३) आपके प्रश्न-हमारे उत्तर
(४) वैदिक लोरियाँ
(५) महान् दयानन्द
(६) शुद्धि आन्दोलन
(७) नैतिक उत्थान आन्दोलन
(८) ग्राम-जीवन
(९) सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, और सांस्कृतिक समस्याएं
(१०) वैदिक अनुसन्धान

आज ही ग्राहक बनिए व बनाइये। एजेंसी के लिए लिखिए और विज्ञापन दीजिये। आर्य-जगत् का सर्व प्रिय साप्ताहिक पत्र केवल 'आर्यमित्र' ही है, इसे कदापि न भूलिए।

—विक्रमादित्य 'वसन्त'
सम्पादक

समुद्र के तल में छिपे रहस्यों को जानने का अमरीकी प्रयास

वाशिंगटन ७ जुलाई [नभाटा]

ऐसा प्रतीत होता है कि महासागर के तल के रहस्य जानने की दिशा में अमरीका पहल करेगा। उसने एक जहाज तैयार किया है जो संसार का सब से ऊंचा जहाज होगा। गहरे समुन्द्रों में ड्रिलिंग करने के लिये इस पोत को तैयार किया जा रहा है।

उक्त जहाज सर्व प्रथम मैक्सिको की खाड़ी में ड्रिलिंग करेगा जहाँ इस बात के संकेत मिले हैं कि वहाँ संसार का सबसे बड़ा तेल भण्डार छिपा पड़ा है।

आज तक किसी ने इतनी गहराई में ड्रिलिंग नहीं की है। किसी को पता नहीं कि इस खाड़ी के तल में तेल का कितना दबाव होगा। कुछ लोगों का ख्याल है कि दबाव इतना तेज होगा कि ड्रिल पाइप फट जायगा। अन्य लोगों को ऐसी शंका नहीं है। समुद्र के तल की ड्रिलिंग की परियोजना को पूरा करने में डेढ़ वर्ष लगेगा और लगभग एक करोड़ २० लाख डालर खर्च होगा।

परियोजना का मुख्य उद्देश्य यह है कि मानव को पता चले कि समुद्र की तह में क्या छिपा है। इसके फलस्वरूप यह रहस्य भी खुलेगा कि लाखों वर्ष पहले जीवन किस प्रकार शुरू हुआ।

उक्त जहाज १० हजार ५०० टन का है और इसका निर्माण गत २१ मार्च को शुरू हुआ। यह प्रथम पोत है। जो समुद्र की तह में ड्रिलिंग कर सकता है। इसमें ४ मील लम्बा ड्रिल पाइप है जिसका वजन लगभग १० लाख पौंड है।

— सभा उत्तर प्रदेश के लिये भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से कृष्णगोपाल शर्मा द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।

लखनऊ—रविवार भाद्रपद १० शक १८९० ... वि० सं० २०२५, दिनांक १ सितम्बर १९६८ ई०

इस अंक मे पढ़िए !

१—वेद सुधा
२—सम्पादकीय
३—सभा तथा स० सूचना
४—महिला मण्डल
५—प्रथम आर्य महासम्मेलन
६—सिंहावलोकन
७—शुद्धि आन्दोलन
८—सिद्धान्त विमर्श
९—नैतिक उत्थान आन्दोलन ११
अध्यात्म सुधा
१०—अ ग्रजगत १२
११—विश्व परिचय १३
१२—कहानी कुञ्ज १५
१३—अमृत वर्षा १६

वार्षिक मूल्य १०)

छमाही मूल्य ६)

विदेश मे १ पौ०

एक प्रति २५ पै०

परमेश्वर की अमृत वाणी

आलस्य का त्याग, व्यर्थ मत बोल, पुरुषार्थ कर, ज्ञानी बन और प्रभु का प्यार प्राप्त कर

★

त्रातारो देवा अधिवोचता नो मा नो निद्रा ईशत मोत जल्पि ।
वयं सोमस्य विश्वह प्रियास सुवीरासो विदथमा वदेम ॥
[ऋ० ८।४८।१४]

[१] (त्रातार देवा) हे त्राण करने वाले देवो, रक्षक विद्वानो !
[२] (न अधिवोचत) हमे अधिकार-युक्त उपदेश दो।
[३] (निद्रा न मा ईशत) निद्रा हम पर शासन न करे, हम आलस्य के वशीभूत न न होवें, हम आत्म विस्मृति की स्थिति मे न रहे।
[४] (उतमा जल्पि) और व्यर्थ की बातचीत न करें।
[५] (विश्वह) हे सकल दुर्गुण नाशक !
[६] (वयम) हम (सोमस्य प्रियास) आनन्द दायक प्रभु के प्यारे होवें।
[७] (सुवीरास) उत्तम वीर सन्तान वाले हम।
[८] (विदथम आ वदेम) ज्ञान को सर्वत्र कहे।

आत्म विस्मृति ही हमारे प्रमाद का कारण है। आत्म जागृति की स्थिति में ही हम देख पाते हैं कि हम वचन से जो कहते हैं, उसे तन व मन मे कहाँ तक सार्थक कर पाते हैं। दूसरो को उपदेश देने के पहले स्वयम् को उपदेश दें, और उसे आचरण मे उतारें। आचरण युक्त उपदेश भी दिव्यता का अधिकारी बनाता है। प्रभु ऐसे ही देवो के दुर्गुणो का नाश करता है। प्रभु के ये प्यारे जब ज्ञान की बात करते हैं तो उनका आचरण उसकी साक्षी देता है। ऐसे ज्ञान-वीरो से ही प्रभु की धरती शोभायमान होती है, और अनार्य आर्यत्व की ओर आकर्षित होते हैं। जिसके फलस्वरूप 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम' की साध सिद्ध होती है।

वर्ष	सम्पादक— प्रेमचन्द्र शर्मा सभा मन्त्री	अङ्क
७०		३०

[परमेश्वर धर्म की कामनाओं को पूर्ण करता है, अधर्म की नहीं। वैदिक धर्म सत्याधारित है, इसलिये वैदिक कर्मकाण्ड में यजमान को आशीर्वाद देते हुए भी कहा जाता है—

"सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः"

अर्थात् यजमान की सत्य कामनायें पूर्ण हों। परमेश्वर से कामनाओं के निमित्त प्रार्थना करने वालों को इस सत्य का बोध होना ही चाहिये। —सम्पादक]

आत्म कल्याण की भावना

★श्री पं० आशुराम जी आर्य
१५९४/७ चण्डीगढ़

★

कोऽदात्कस्मा अदात्कामायादात्।
कामोदाता कामः प्रतिग्रहीता कामैतत्ते।
(यजुर्वेद ७-४८)

कौन देता है? किस के लिये देता है? काम (जिसकी कामना सब करते हैं वही परमेश्वर) देता है। काम (कामना करने वाले जीव) के लिये देता है। काम (जिसकी कामना योगी जन करते हैं वही काम स्वरूप ईश्वर) देने वाला है। हे काम! तेरे लिये यह सब है। अर्थात् यह लेन-देन का सब तेरा ही खेल है। हे कामी! अर्थात् कामना करने वाले जीव! यह सब वेदरूपी ब्रह्म ज्ञान तेरे लिये है ऐसा तू जान।

कर्म फल प्रदाता ईश्वर

इस मन्त्र का देवता आत्मा है। परम आत्मा ईश्वर और जीवात्मा यह जगत् किसका है? कौन देता है? किस को देता है? काम रूप ईश्वर, जिसकी कामना सभी करते हैं वही देता है। कौन है वह? जो सब कर्मों को पूर्ण करने हारा तथा कर्म फलों का धारण करने हारा 'म विधाता' (य. द) जीव कामना करता है और परमात्मा उसका फल देता है।

ऋषि दयानन्द से पूर्व

ऋषि दयानन्द के आने से पहले लोग अविद्या जाल में फसे, अपने सुख दुःख, धनता निधनता का कारण ग्रहों के चक्र को मानते हुए मानसिक दासता की बेड़ियों में बुरी तरह जकड़े हुये थे। यहां से मृत्यु के पश्चात् भी यमराज चित्रगुप्त मन्त्री और काले काले भयंकर पर्वतों जैसे शरीरों से ले जाये जाकर नर्क कुण्ड वा स्वर्ग मे डाल देने के अन्ध विश्वास से दुखी हो रहे थे। ऋषि ने आकर महान् कृपा कर बतलाया कि भोले भाई! ग्रहों की गति सुख दुःख भोग में कारण नहीं है क्योंकि यह आकाश में पृथ्वी से बहुत दूर है। इनका सम्बन्ध करता और कर्म से कैसे हो सकता है जब कि यह जड़ अर्थात् प्राण विहीन हैं। अतः राजा, रंक, धनी, निर्धन सभी कर्मों से होते हैं। ग्रहों से नहीं। फिर पूछा कि अच्छा मरे पीछे जीव की क्या गति होती है? तो महाराज ने उत्तर दिया कि जैसे इसके कर्म हैं। (स०प्र०)

कामना का पसारा

दूसरी बात मन्त्र मे काम, कामी और कामना रहस्य की है। जगत् में सारा पसारा काम का है और काम की पूर्ति के लिये है। कोई किसी के लिये न जीता है न मरता है, यूंही कभी कभी संघर्षों से थका मांदा परेशान गृहस्थी घर वालों को कह देता है कि तुम्हारे लिए न रात को नींद है, न दिन को आराम। खाने पीने का सुख चैन भी नहीं। न होते तुम न होता सारा बखेड़ा काम काज का। दो रोटी खाते और मौज से रहते। किन्तु प्रश्न यह है कि क्या होने वाली पत्नी ने कहा था कि ले जाओ मुझ मैं तुम्हारे लिये बहुत दुःखी हूं। व अभी जो इस संसार में आये भी नहीं थे उन बच्चों ने कहा था कि हमारे लिए धन कमाओ, घर बनाओ, हम आ रहे हैं। नहीं और कदापि नहीं यह केवल अज्ञान है, जिससे कामासक्त, मोह आसक्त मनुष्य बुरी तरह कराह रहा है।

अपनी कामना के लिये

बृहदारण्यक उपनिषद् ने इस रहस्य को बहुत अच्छी प्रकार स्पष्ट किया है कि पति की कामना के लिये पत्नी को पति प्यारा नहीं अपितु अपनी कामना के लिये। निःसन्देह पत्नी की कामना के लिये पति को पत्नी प्यारी नहीं अपितु अपनी कामना के लिये। धन की कामना के लिये मनुष्य को धन प्रिय नहीं अपितु अपनी कामना के लिये ब्रह्म की कामना के लिये ब्रह्म इष्ट नहीं परन्तु आत्म कल्याण की कामना के लिये।

इसलिये ऋषि दयानन्द जी इस मन्त्र के भावार्थ मे लिखते हैं कि कामना के बिना कोई आँख की पलक भी नहीं हिला सकता, और अति कामना भी प्रशंसनीय नहीं है। इसलिये श्रेष्ठ वेदोक्त कार्मों की इच्छा करनी चाहिये दुष्ट कार्मों की नहीं। जीव कामना करे परन्तु धर्म सम्बन्धी कामना करें अधर्म की नहीं। यह निश्चय कर जानना चाहिये।

अमृत रस पान

प्रभु नाम के अमृत रस का, जो प्राणी पान करेगा।
उसकी बुद्धि को निर्मल, निश्चय भगवान् करेगा।

जो सुबह शाम निज मनसे, भगवान् से ध्यान लगाये।
हृदय रूपी शीशे का, सब जमा मैल धुल जाये॥
सत्संग ज्ञान गंगा में मल-मल स्नान करेगा।
प्रभु नाम के अमृत रस का जो प्राणी पान करेगा॥ १॥

जो सत्य न्याय कर्त्ता है, न्यायकारी को पहिचाना।
सब जगह रमा वह प्यारा, नहीं उसका एक ठिकाना॥
फिर परमेश्वर से धोखा, वह न इंसान करेगा।
प्रभु नाम के अमृत रस का, जो प्राणी पान करेगा॥ २॥

विषयों से मन हट जाये, करे जाएं व्यसन किनारा।
शुभ कर्मों में मन को लगाले यदि चाहे कुछ तु सहारा॥
जैसा तु करके जाये, वैसा भुगतान करेगा।
प्रभु नाम के अमृत रस का, जो प्राणी पान करेगा॥ ३॥

सारे जीवन का लेखा, जब देखेगा न्यायकारी।
शुभ अशुभ कर्म सब तेरे, आयेंगे तभी अगारी॥
'राघव' वही पार हुआ है जो ना अभिमान करेगा।
प्रभु नाम के अमृत रस का, जो प्राणी पान करेगा॥ ४॥

--त्रिलोकचन्द्र राघव आर्यप्रचारक ट्रस्ट टंकारा, देहली

सुख का नुस्खा

लीजिए यह रहा सुख का नुस्खा
सच्चाई के पत्ते—दो तोले
मिलाप के आंवले—तीन तोले
संगठन के बेर—ढाई तोले
परोपकार के बीज—पांच तोले
वाणी की मिठास—एक तोला
सत्संग का रस—छह तोले

सब को मिला कर परमात्मा की हाण्डी में रखकर प्रेम की अग्नि में जलाओ। बाद मे ओ३म् नाम के कपड़े से छान कर सज्जनता की शीशी में भर लो। रोज सुबह शाम एक चिम्मच लीजिये।

परहेज—क्रोध की मिर्च, अहंकार का तेल, लोभ की मिठास, धोखे के पापड़ और बेईमानी के अचार से दूर रहें।

सेवा की खिचड़ी खाइयेगा बहुत लाभदायक होगी।

—वैद्य श्री सुभाषचन्द्र बाबरा, लखनऊ

मेधां मे वरुणो ददातु, मेधामग्निः प्रजापतिः।
मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा ॥
यजु० अ० ३२ मं० १५

मनुष्य जैसे अपने लिए गुण कर्म स्वभाव और सुख को चाहे वैसे औरों के लिए भी चाहे। जैसे अपनी उन्नति की चाहना करें वैसे परमेश्वर और विद्वानों के निकट से अन्यों की उन्नति की प्रार्थना करें केवल प्रार्थना ही न करें किन्तु सत्य आचरण भी करें। जब-जब विद्वानों के निकट जावें तब तक सब के कल्याण के लिये प्रश्न और उत्तर किया करें ॥ १५ ॥

—महर्षि दयानन्द सरस्वती

लखनऊ रविवार श्रावण १० शक १८८९, भाद्रपद शुक्ल पक्ष ९ वि० २०२५
१ सितम्बर सन् १९६८ ई०, दयानन्दाब्द १४३, सृष्टि सम्वत् १,९७,२९,४९,०६८

मित्रं मे सहः

★

आजकल जितनी भी धार्मिक, सामाजिक एवम् राजनैतिक समस्यायें हैं, उनके कार्य कर्त्ताओं में जिस वस्तु का अभाव खटकता है, वह है धैर्य। यदि आज इन संस्थाओं के मूल उद्देश्यों पर दृष्टिपात करें तो संसार में सुख शान्ति की स्थापना ही इन संस्थाओं का मुख्य ध्येय है किन्तु जिस सुख शान्ति का मूल धैर्य है, उसे ग्रहण करने की प्रवृत्ति किसी की भी नहीं है, जिसके फलस्वरूप आए दिन इन संस्थाओं में कार्य करने वालों में मैं-मैं और तू तू हुआ करती है। यह निर्विवाद है कि जब संस्थाओं के कार्य कर्त्ताओं में आपसी संगठन न होकर वैर भाव होगा तो वह संस्था के उद्देश्य की पूर्ति कैसे होगी।

एक प्रश्न उठता है कि बड़ा कौन है? संस्था अथवा मनुष्य। आज के युग में प्रायः एक ही उत्तर दिया जाता है कि संस्था बड़ी है इसलिए मनुष्य को संस्था के हित के लिये बहुमत का आदर करते हुये अपने आग्रह को भले हो वह सत्य ही हो छोड़ देना चाहिए। आर्य जगत् में इस बात की पुष्टि के लिये आर्यसमाज के दसवें नियम की ओर संकेत किया जाता है, जिसके अनुसार सर्व हितकारी नियम में परतन्त्र रहने को कहा गया है। यहाँ मुख्य रूप से यह विचारणीय है, कि क्या संस्था मानव को महान् बनाता है। अथवा महात्माओं से संस्थायें शोभायमान होती हैं। आज विश्व में महान पुरुषों के नाम पर अनेक संस्थायें कार्यरत हैं, भारतवर्ष में ही राम कृष्ण के नाम पर अनेक संस्थायें हैं किन्तु उन संस्थाओं ने किसी महान पुरुष को उत्पन्न नहीं की। सत्य तो यह है कि व्यक्तिगत जीवन निर्माण की बात की सर्वथा उपेक्षा कर दी जाती है।

जगत् का उपकार करना जिस का मुख्य ध्येय हो उसमें कार्य करने वाले एक बात पर विशिष्टतया विचार करें। यदि हम दूसरों की उन्नति की कामना करते हैं, हम उसका सुधार चाहते हैं और इस निमित्त उनके दोषों का बखान करते हैं, छिद्रान्वेषण करते हैं तो क्या हमें स्वतः अपने दोषों को दूर न करना चाहिये। जिस आर्यत्व के उच्च शिखर पर हम संसार को आरूढ़ करना चाहते हैं क्या वहां पर पहुंचने के लिये हमें प्रयत्नशील न होना चाहिये? अच्छा तो यह है कि पहले हम वहां पहुंचें और फिर दूसरों को दिखाएं कि हम किस प्रकार वहां तक पहुंच सके।

ठीक यही बात शान्ति के मूल स्रोत धैर्य के विषय में चरितार्थ होती है। जब संस्थाओं के कार्य कर्ता धैर्यवान होते हैं, तभी तो दूसरे समस्याओं पर विचार करते हैं अथवा विचार विमर्श सत्य और असत्य के निर्णय के लिए करते हैं और अपने आत्म निर्माण से दूसरों के मार्ग प्रशस्त करते हैं। तब ही अभीष्ट की सिद्धि होती है। आर्यसमाज आर्यों का संगठन है उन आर्यों का जिन्हें अनार्यत्व से निरन्तर संघर्ष करना है और इस संघर्ष में वेदानुसार 'विश्वाः पृतना अभि' [ऋ० २-६०-५] विजय प्राप्त करना है। रण में विजय प्राप्त करने के निमित्त वीरता के साथ धीरता की भी आवश्यकता होती है। वेद ने कहा है "वाजेषु सासहिर्भव" (ऋ० १-३७-६) अर्थात संग्रामों में डटने अड़ने वाले बनो। संग्राम में साहसी और धैर्यवान व्यक्ति ही डट सकता है। चञ्चल वृत्ति वाले असंयमी न कभी रण क्षेत्र में डटे हैं न डटेंगे और बिना डटे विजय प्राप्त कैसे होगी। अतएव यह आवश्यक है कि आर्यों में धृति होनी चाहिए। यहां पर यह कहना भी उचित होगा कि मनु महाराज ने 'दशकम् धर्म लक्षणम्' धर्म के दस लक्षण बताये हैं उनमें धृति का पहला स्थान दिया है। धार्मिक जीवन व्यतीत करने वालों को धर्म की इस प्रथम सीढ़ी पर सबसे पहले चढ़ना चाहिये। आत्म निर्माण हो नहीं सकता जब तक जीवन में धर्म न हो। जिसने धर्म के इस प्रथम लक्षण को ही नहीं पकड़ा उसका जीवन कैसे धार्मिक बनेगा?

यह धृति क्या है, उसे वेद की एक सूक्ति में सुस्पष्ट किया गया है—धीतिमश्याः (ऋ० २ ३१-७)। यह सूक्ति जितनी ही लघु है उतनी ही विशाल है। इसमें कहा गया है—(धीति) धैर्य (अश्याः) धारण करो। धृति क्या है उसे किस प्रकार हम धारण करें तो इस के लिए कुरान के चार अङ्गों को पकड़ें यह अङ्ग हैं, तितिक्षा, साधना, प्रतीक्षा एवम् संयम। कठिनाइयों को हंसते-हंसते सहन करना तितिक्षा है। अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये निरन्तर कर्म रत रहना और बाधाओं की चिन्ता न करते हुए प्रयत्नशील रहना ही साधना है और समय कितना लगता है कार्य की सिद्धि में उससे निराश न होना ही प्रतीक्षा है और अपने पर, अपनी भावनाओं और विचार तरङ्गों पर नियन्त्रण ही संयम है।

हम अपने जीवन में आत्मनिरीक्षण करें और देखें कि क्या हमारे भीतर धृति के ये चार अङ्ग उपलब्ध हैं यदि न हों तो क्या अभ्यास के माध्यम से हमें इनको जीवन में धारण कर अपना और जग का निर्माण करने के लिए अब उद्यत नहीं होना चाहिए यदि हम महर्षि दयानन्द के वेदप्रचार और उसके अनुसार 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम' की सिद्धि की कामना करते हैं संसार से अनार्यत्व को समूल नष्ट करना चाहते हैं तो क्या हमें उस अनार्यत्व को अपने निजी जीवन में नहीं लाना होगा। अनार्यत्व के प्रवाह में हम स्वतः बह जाएं तो आर्यत्व का दावा करना क्या उपहास प्रद नहीं है। यदि हमारी अभिलाषा है कि हमारे आर्यत्व के प्रवाह में संसार बहे तो पहले हमें उसमें बहना होगा। संसार के उपकार के निमित्त जिस सुख शान्ति की अभिवृद्धि हमें प्रिय है। उसका सूत्र पात्र हमें स्वयम् करना होगा। दशम आर्य महासम्मेलन में जहाँ आर्य जाति की अन्य समस्याओं पर विचार किया जावे वहीं प्रमुखरूप से इस बात की भी चर्चा की जाये। हम जो जब घोष किया करते हैं 'जो बोले सो अभय' की उसके प्रदान करने के लिए 'सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु' का पाठ तब तक यथार्थ नहीं होगा जब तक हम "मित्रंमे सह" के अनुसार सहनशीलता को नहीं अपनायेंगे।

निरीक्षकों से

श्रीमन नमस्ते!

सूचनार्थ निवेदन है कि गत आपको सभा के निरीक्षक पद नियुक्त किया गया था तथा सभा निरीक्षण कार्य हेतु रसीद बही भेजी थी कृपया उक्त रसीद तथा हिसाब आय खर्च के लिये सभा को अविलम्ब भेजने का कष्ट करें ताकि नवीन वर्ष के लिये निरीक्षकों की नियुक्ति की जा सके। शेष योग्य सेवा में सूचित करने का कष्ट करें। आशा है आप स्वस्थ एवं प्रसन्न चित्त होंगे।

भवदीय—
प्रेमचन्द्र शर्मा
सभा मन्त्री

आर्यमित्र की सूचना

अब तक जिन ग्राहकों का इस वर्ष हेतु शुल्क समाप्त है, उन्हें काफी समय पूर्व से चन्दा समाप्ति की सूचनायें भेज दी गई है। कुछ कृपालु ग्राहकों ने अपना शुल्क भेज भी दिया है; परन्तु अधिकांश अभी शेष है।

अतएव अनुरोध है कि अविलम्ब आप महानुभाव अपना अपना शुल्क १०) रु० मनीआर्डर द्वारा भेजने का कष्ट करें।

डाक दर में असाधारण वृद्धि हो जाने के कारण वी० पी० पी० भेजने से ग्राहकों पर अनावश्यक व्यय भार पड़ता है, अतएव चन्दा अपना धन मनीआर्डर द्वारा ही भेजिए।

मनीआर्डर के कूपन पर अपनी ग्राहक संख्या अवश्य लिखिये।

—व्यवस्थापक

[१]

सम्पादक जी, नमस्ते !

'आर्यमित्र' आपके सम्पादकत्व में ने नाम को सार्थक कर रहा है। उस सभी लेख सैद्धान्तिक होते हैं। का आजकल आर्य पत्र पत्रिकाओं मे ः अभाव ही होता है। इसके सवा- . एवं सम्पादक राजनीतिक दलदल हँसे हुए हैं और खण्डन मण्डन से राते हैं। कारण स्पष्ट है उनको दुओं से वोट जो लेना है। यह पहला सर है जब 'आर्यमित्र' मे श्री पं० दयालु जी का जनसंघ और आर्य ाज विषयक लेख निकला है और ष्ट्रिय स्वयं सेवक संघ और जनसंघ आर्य समाज विरोधी रहा है।

आपकी विद्वता का परिचय आपकी मन्त्र व्याख्याओं, सम्पादकीय लेखों द्धान्तिक लेखों का संकलन तथा कहानी ढ्ज से भली-भाँति विदित होता है।

आर्य समाज का मुख्य लक्ष्य विश्व ो आर्य बनाना है, अन्य सब गौण हैं। रन्तु खेद है कि आज हमारी सभायें ौर उनके मुख पत्र इससे विमुख हैं और ामयिक आन्दोलनों के प्रभाव मे बह हे हैं। आ० स० की अपनी शक्ति ीमित है और लक्ष्य सार्वभौम है– अतः से विभाजित करना एक बड़ी अदूरद- र्शता है।

मैं आपको इस शुभकार्य के लिये धाई देता हूं। केवल देखना यह है कि मा को इसके लिये सभा से सहयोग मिलता है या नहीं ?

[२]

आर्य समाज में आर्य संगीत के रेकार्डों का सर्वथा अभाव जैसा है। सभाए इस ओर से उदासीन हैं–उनको पार्टीबाजी और राजनीतिक निर्वाचनों से ही अवकाश नहीं है। अजमेर के ५ रेकार्ड उपलब्ध हैं, जो गायन की दृष्टि से साधारण हैं। आवश्यकता भारत के अच्छे संगीतज्ञों से उनको रिकार्ड कराना है। परन्तु प्रचार के इस साधन को सदा से उपेक्षा की जा रही है। सार्वदेशिक सभा को मैंने लिखा था किन्तु विचाराधीन कह कर टाल दिया। अजमेर के रेकार्ड भी अजमेर से ही मिलते हैं अन्यत्र नहीं, अतः उन का भी प्रचार नहीं हो पाता। वहाँ से सीधा मगाने में मार्ग में टूट जाने की आशंका है। आपको इसमें रुचि है कुछ प्रयत्न कीजिए।

मुसलमानों के सैकड़ों रेकार्ड हैं। सिक्खों के भी हैं। हिन्दुओं के तो पहले से ही हैं–यद्यपि वह प्रचार दृष्टि से नहीं केवल गायन कला का प्रदर्शन है। फिर भी उनसे पौराणिकता का प्रचार तो होता ही है। यदि नहीं है तो केवल आर्य समाज है। इसके लिये आप 'आर्यमित्र' आन्दोलन करें। ऋषि के के अच्छे चित्र भी उपलब्ध नहीं है। जो हैं सो कलाहीन हैं। ऋषि के वास्तविक फोटुओं का भी अभाव होता जा रहा है। मैंने प्रयत्न करके ऋषि के वास्तविक छः चित्रों (फोटुओं) का संग्रह करके उनके फोटुओं का प्रचार कराया है। पूरे आकार मे (८"x१२") के छः चित्रों का सेट २४ रु० में एक देहली के प्रसिद्ध फोटोग्राफर से तैयार कराकर प्रचार करा रहा हूं। किन्तु आर्य समाजी तो क्या बड़ी आर्य समाजें भी इस ओर से उदासीन हैं। हैदराबाद के पं० मदनमोहन जी विद्यासागर एकमात्र सहयोग दे रहे हैं। इस कार्य में भी आप मेरी सहायता करें।

'आर्यमित्र' का टाइप अच्छा नहीं है, प्रूफरीडिंग भी अच्छा नहीं होता। इन्हें ठीक कराइए। मेरे लेख का प्रूफ सावधानी से देखा जाय। मैं स्वयं अस्वस्थता और रुग्णता के कारण भूल कर जाता हूं।

—राजेन्द्र, अतरौली

(३)

मुझे "आर्यमित्र" के सम्पादक के रूप मे आपका नाम पढ़कर प्रसन्नता हुई निश्चय ही यह आर्यमित्र तथा उसके पाठकों का सौभाग्य है–इसके लिये कि पत्र उन्नति करे मे। यह नम्र सुझाव है कि इसमे सिद्धान्त की चर्चा के साथ साथ व्यावहारिक दृष्टि कोण को सर्व अधिक महत्ता दी जाए तथा स्त्रियों के व बच्चों के (विशेषत. छोटे बालकों के के लिए पर्याप्त सामग्री दी जाए, बच्चों के बारे मे आपकी शैली अच्छी है जैसा कि मैंने गत वर्ष आर्यसमाज मिर्जापुर में वेद सप्ताह के अवसर पर (जब मैं वहाँ आडिट वश गया था) स्वयं अनुभव किया था व्यावहारिक दृष्टि कोण से बच्चों के लिये हम केवल ईश्वर विषयक सामग्री का बहुत कम महत्व है।

—बलदेव सहाय कपूर
कृष्णनगर, इलाहाबाद

(४)

मान्यवर महोदय,

मुझे एकमात्र आर्य जगत् का साप्ताहिक 'आर्यमित्र' की एक प्रति पढ़ने को मिली वास्तव मे समाज का इस वर्ष का चल रहा प्रयास काफी प्रशंसनीय तथा सराहनीय है।

—रघुनन्दन जी पत्रकार
पुरानी सराय, नाथनगर
भागलपुर बिहार

(५)

महोदय,

आपकी साप्ताहिक पत्रिका 'आर्यमित्र' को हमारा परिवार डेढ़ वर्ष से पढ़ रहा है। इसमें प्रकाशित सामग्री उत्तम व ज्ञानवर्धक होने का साथ-साथ आर्य समाज का 'प्रचार व प्रसार' कार्यक्रम को भी पूरा करती है। हमारी परमपिता से प्रार्थना है कि 'आर्यमित्र' इसी प्रकार उन्नति के पथ पर अग्रसर रहे।

शशी प्रकाश नागरथ,
१२०/१७१ लाजपत नगर, कानपुर–५

(६)

श्रीमान् सम्पादक जी,

सादर नमस्ते !

आर्यमित्र की पत्र का व्यवस्था जब से सच्चिदानन्द जी द्वारा प्रारम्भ हुई तब से इसकी पाठक गण रोचकता की ओर बढ़ने लगी, परन्तु अब जब से आपके सम्पादन में आया है, इसका रूप और भी कुछ परिवर्तित हुआ है अर्थात् रोचक लेख आने लगे हैं।

—आर्यसमाज का प्रहरी
यशपाल आर्य
उपप्रधान आर्यसमाज जगतपुर
(बरेली)

स्व॰ डा॰ श्री पाद दामोदर सातवलेकर को श्रद्धांजलि

ज्ञानी गया गुरु गुण देता·····

महाराष्ट्र की मूर्ति मनोहर ऊषा की अरुणायी,
अन्तिम क्षण तक छिटकी जिसके तन मन में तरुणायी।
परमात्म आत्म अध्यात्म का अनुपम अमित अन्वेता·····

आज अदृश्य मे विलीन हो गया सबको श्रुति सन्देश देकर,
सतत साधना स्वाध्यायरत आचार्य श्री सातवलेकर।
वर्ष एक सौ एक बिता कर वीतराग नचिकेता·····

प्रथम प्रकाशन प्रार्थना पर शासन हुआ सशंकित,
दोषारोपण देश द्रोह में किया आपको अंकित।
सेनानी स्वातन्त्र्य समर का वैदिक विमल विजेता

संस्कृत और सनातनी आर्य भावों का ज्ञाता,
ब्रह्मा होता अध्वर्यु गुरु उर उत्तम उद्गाता।
निरत निज आहुतियों से अमर हुआ अभिनेता·····

लिखते-लिखते कविवर लेखनी वेदी पर बलिदान हो गये,
मोहन मधुर मूर्ति मनीषी जन मन के बड़ विज्ञान हो गये।
भारत शांति मे सो गया श्रुतियों का सौम्य सुवेता·····

दया दमन अरु दान तीन 'द' का अधीन वह मौन हो गया,
दशा देश की देव दुखित युग बिन्दु सिन्धु सो गया
आज तुम्हे प्रणाम है सज्जनों के सत्य प्रणेता·····

मदनमोहन एडवोकेट, मोठ (झाँसी)

हमारी वर्ण-व्यवस्था

अर्थात्

वैदिक व्रत-वाद

[व्रती ही संसार का कल्याण करते हैं। हमारे ऋषियों द्वारा चलाई हुई वर्ण-व्यवस्था व्रती बनाने के निमित्त थी। आश्रम व्यवस्था व्रत की परिचायक थी। व्रती जब मनस्वी और तपस्वी बन जाता है तो उसे वर्चस्वी और यशस्वी बनने से कोई शक्ति अवरुद्ध नहीं कर पाती। विश्व कल्याण का मूल मानव निर्माण है और मानवी उन्नति का स्रोत व्रत में है जो वर्ण-व्यवस्था में समाहित है। प्रस्तुत लेख में व्रतवाद का वैज्ञानिक विश्लेषण किया गया है जो विशेषरूप से पठनीय है।

—सम्पादक]

श्री रामेश्वरदयाल बी.एस., इञ्जीनियर, कलकत्ता

हमारी योजनाओं ने उत्पादन वृद्धि की। पर समाज में सौजन्य नहीं फैला। उपभोक्ताओं और उत्पादकों की परिष्कृत अभिरुचि निर्माण करने की योजना नहीं बनी। आज हमारे सामने काम है अच्छे मनुष्य बनाने का। कोई भी अच्छी वस्तु बनाने से बनती है। यदि खेती न भी की जाय तो कुछ पौधे तो उग ही आते हैं पर अच्छी उपज के लिये अच्छी भूमि तैयार करके अच्छे बीज बोने होते हैं। फिर कीटाणुओं तथा जानवरों से पौधों की रक्षा करनी पड़ती है। रहने के लिये तो पर्वत की कन्दरायें तथा फूस की झोंपड़ी भी काम आ सकती है, पर अच्छे निवास स्थान के लिये योग्य इञ्जीनियर से नक्शा बनवा कर कुशल कारीगरों से अच्छे मकान बनवाने पड़ते हैं। इसी तरह यदि कोई विशेष व्यवस्था न की जाय तो कुछ इने गिने अच्छे मनुष्य हो ही जाया करते हैं पर सुयोग्य नागरिकों का समुदाय या समाज तो एक सुनियोजित व्यवस्था द्वारा बनाने से बन सकता है।

किसी भी वस्तु को बनाने से पहले यह पता होना चाहिये कि हम क्या बनाने जा रहे हैं? तथा उस वस्तु की हम और समाज को कितनी आवश्यकता है। अलग-अलग आवश्यकता के लिए अलग-अलग वस्तु अलग-अलग तरीके से बनानी पड़ेगी।

अब हमें देखना है कि—

१—समाज के मुख्य-मुख्य काम क्या हैं?

२—इन्हें करने के लिये किन लोगों की आवश्यकता है?

३—ये लोग कहाँ से उपलब्ध हों या कैसे बनाये जाय?

समाज के मुख्य तीन काम हैं—

१—उत्पादन

२—वितरण

३—उपयोग

तैत्तिरीय आरण्यक में एक श्लोक में यही भाव प्रकट किया है—

अमृतोपस्तरणमसि।

अमृतापिधानमसि।

सत्य यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयताम्।

समाज में उपस्तरण और अपिधान द्वारा अमृत (दीर्घ जीवन) की प्राप्ति हो। इसके हेतु तीन वस्तुओं की मांग है—

श्री—अर्थात् ऐश्वर्य देने वाली वस्तुओं का उत्पादन।

यश—अर्थात् उत्पादित वस्तुओं का यशस्वी पद्धति द्वारा वितरण।

सत्य—अर्थात् वितरित वस्तु का सत्यपूर्वक उपयोग। सत्य ज्ञान की आवश्यकता।

अस्तु यह काम यदि अपने आप अच्छी तरह होने लगे तो कोई समस्या ही न रहे। पर हम देखते हैं कि इन तीनों के रास्ते में कोई न कोई रुकावट आ खड़ी होती है। और इन रुकावटों अर्थात् समाज के इन शत्रुओं का सामना करना आवश्यक होता है।

उत्पादन के क्षेत्र में—अभाव

वितरण के क्षेत्र में—अन्याय

तथा उपयोग के क्षेत्र में—अज्ञान

इन तीन प्रकार के शत्रुओं का सामना करने के लिये हमें तीन प्रकार के विशिष्ट योग्यता सम्पन्न तथा अविकल रूप से अपने जीवन की आहुति देने वाले सैनिकों की आवश्यकता है।

सिंहावलोकन

इन सैनिकों को तैयार करने के लिये विशिष्ट प्रकार की शिक्षा तथा ट्रेनिंग देनी होगी। उनकी शिक्षा एवं विशेष तैयारी के लिए जितना भी अधिक समय मिल सकेगा उतना ही अच्छा होगा। तैयारी या शिक्षा ग्रहण का समय विद्यार्थी जीवन होता है। अतः विद्यार्थी जीवन के प्रारम्भ में ही अपने विशिष्ट क्षेत्र का चुनाव कर उन्हें एक औपचारिक ढंग से व्रत लेना चाहिये ताकि वे अपने व्रत में दृढ़ संकल्प हों।

"मैं समाज से अभाव को दूर करूंगा।"

"मैं समाज से अन्याय को दूर करूंगा।"

"मैं समाज से अज्ञान को दूर करूंगा।"

जीवन का लक्ष्य या उद्देश्य निर्धारित हो जाने पर अपनी योग्यताओं तथा क्रियात्मक शक्तियों को [illegible] केन्द्रित करने में बड़ी सहूलियत मिलती है। दूसरों के लिये मर मिटने की भावना में ढाले हुए जीवन में अद्भुत आत्म शक्ति का विकास होता है। इस तरह व्रत को चुनने या वरण करने तथा सतत उस व्रत को पूरा करने में जीवन को खपा देने की व्यवस्था भारत की अपनी चीज है।

यह व्यवस्था मूलभूत सिद्धान्तों पर आधारित है जो एक सुसमाज के लिये समान रूप से आवश्यक हैं ये मौलिक सिद्धान्त तीन हैं

१—दीक्षा

२—शक्ति प्रतिमान

३—यथायोग्य दक्षिणा।

दीक्षा—समाज में सब मनुष्य सब प्रकार का काम समान योग्यता से नहीं कर सकते। इसलिये सामान्य विषयों पर सामान्य ज्ञान रखते हुए एक विशेष दिशा में कौशल प्राप्त करना होता है। समाज में यहीं से योग्य और अयोग्य का सृजन होता है। इसकी दिशाएं तीन हैं—

(१) प्राकृत पदार्थों को, शारीरिक श्रम तथा बुद्धि कौशल द्वारा मनुष्य जीवन के लिये उपयोगी बनाकर समाज की दरिद्रता दूर करना।

(२) काम, क्रोध, लोभादि मानव स्वभाव सुलभ दुर्बलताओं से उत्पन्न अन्याय को बलपूर्वक दूर करना तथा सद्व्यवहार को प्रचलित करना।

(३) मानव समाज के लिये हितकारी सब प्रकार के ज्ञान को प्राप्त करने में तथा अविद्या के नाश में जीवन लगाना।

उपर्युक्त किसी भी प्रकार योग्यता के होने पर अपनी रुचि के अनुकूल योग्य व्यक्ति के पास जाकर उ[illegible] सेवा करनी तथा विशिष्ट योग्यता [illegible] करनी पड़ती है।

शक्ति प्रतिमान—उपर्युक्त तीन [illegible] कामों में शक्ति विभाजन इस प्रकार [illegible]

(१) विद्याव्यसनी वर्ग को [illegible] प्राप्त हो। समाज में सबसे अ[illegible] आदर उसे मिले क्योंकि त्याग [illegible] चरित्र का मापदण्ड उसे दर्शाता ह[illegible] किन्तु धन-संचय, ऐश्वर्य भोग [illegible] राज्य शासन का अधिकार उससे [illegible] लेना चाहिये।

(२) अन्याय के प्रतिकार [illegible] प्राणोत्सर्ग के लिये तत्पर व्यक्ति के [illegible] में शासन की बागडोर होगी। उन[illegible] प्रभुत्व अधिक होगा। पर आदर [illegible] से कम तथा लक्ष्मी तीसरे वर्ग से [illegible]

(३) सम्पत्ति निर्माताओं [illegible] ऐश्वर्य भोग की सुविधा है पर [illegible] और प्रभुत्व नहीं है। यदि यह सन्तुलन न रखा जाय तो कोई एक वर्ण सम्पूर्ण शक्ति प्राप्त कर दूसरों पर अत्याचार कर सकता है। यूरोप का इतिहास इसका प्रमाण है। पोप की सत्ता बढ़ी अत्याचार हुए, लूथर की क्रान्ति हुई उसके बाद सामन्त युग की निरंकुशता को फ्रांस की राज्य क्रान्ति ने समाप्त किया। पूंजीवाद की निरंकुशता आज के सामने है, धन शक्ति ने विद्या और न्याय को खरीद लिया है। रूस, चीन देशों में इसके विरुद्ध क्रान्ति हुई और मजदूर वर्ग के हाथ में सत्ता आ गई है। यह स्थिति भी व्यवस्थागत नहीं है।

यथायोग्य दक्षिणा समाज के सभी मनुष्यों को आलम्बन पदार्थ अवश्य मिलने चाहिये इससे कम से कम असमानता हो। ये पदार्थ हैं—सामान्य ज्ञान, आहार वस्त्र तथा निवास स्थान और चिकित्सा। पर विशिष्ट योग्यता वालों को इनके अतिरिक्त कुछ विशेष दक्षिणा मिलनी चाहिये इन्हें ज्ञान वृद्धि, शक्ति वृद्धि अथवा ऐश्वर्य वृद्धि के विशेष साधन तो मिलने ही चाहिए, साथ ही श्रद्धा, प्रभुत्व अथवा ऐश्वर्य की विशिष्ट दक्षिणा भी मिलनी चाहिये।

इस प्रकार की दक्षिणा से दो विशेष लाभ हैं।

पहला—मनुष्यों की प्रवृत्ति भिन्न होने के कारण केवल धन की दक्षिणा

(शेष पृष्ठ १२ पर)

शुद्धि-शोधन

[आर्य समाजों मे आजकल जो शुद्धि होती है, उसमें मत परिवर्तन का कारण वैदिक धर्म पर आस्था न होकर अन्तर्जातीय विवाह भी एकमेव सुगमता ही है, जिसकी ओर लेखक ने ध्यान आकृष्ट किया है। केवल नाम मात्र को वैदिक धर्मी बन कर वैदिक रीति से विवाह कर लेना और तत्पश्चात खान-पान और रहन-सहन मे अन मत्स्य को अपनाये रखना शुद्धि नहीं है और इस प्रकार अनैतिकता को प्रोत्साहन देना कहा तक उचित है, यह विषय विचारणीय होना चाहिये। विवाह के प्रमाण-पत्र देकर व्यभिचार को शुद्धि के नाम पर प्रोत्साहन देना नितान्त अशोभनीय है। जब तक मन, वचन और कर्म से हम अनार्यों को शुद्धि नहीं करगे, और भौतिक शुद्धि के साथ जब तक हम उन से निरन्तर सम्पर्क सस्थापित करते हुए, उन्हे अपने अधिवेशनो में लाकर वैदिक सस्कारों से ओत-प्रोत नहीं करेंगे उनकी आन्तरिक शुद्धि नहीं होगी। बाह्य और आन्तरिक शुद्धि के साथ हमारा उनसे मलजोल, प्रेम भाव खान-पान और रोटी-बेटी का व्यवहार भी अत्यावश्यक है, ताकि शुद्धि समुदाय हमारे आर्य्य समाज मे पूर्णतया घुल मिल जाय।
—सम्पादक]

[दि]ल्ली आर्य जगत के समाचार में शुद्धि समाचार प्राथमिकता से [प्रका]शित किये जाते हैं। शुद्धि का जो [आन्दो]लन आर्य समाज के अपनी नेता स्वामी श्रद्धानन्द जी ने प्रारम्भ [किया] वह आज भी चल रहा है। लेकिन [दुःख] की बात है कि आज उसकी प्रगति [नहीं] के बराबर है, जब कि उसकी आव[श्यक]ता पहले की अपेक्षा कहीं अधिक [है।] यह कहना अनुचित या अनुपयुक्त [न हो]गा कि आजकल शुद्धि समाचारों से [ज्ञ]ात होता है कि शुद्धि के लिए जो लोग आर्यसमाज के पास आते हैं [उन]का लक्ष्य प्रेम विवाह के हेतु [मान्य]ता प्राप्त करना होता है। आर्य [सम]ाज मे भी यह भावना बढ़ती जा रही है [कि] किसी न किसी तरह अन्य धर्मावलम्बी मतावलम्बी जनों की तरह शुद्धियो [की] सख्या बढ़नी चाहिए। जिस तरह [अन्य] धर्मावलम्बी प्रचारक यह नहीं [दे]खते कि शुद्धि के लिए भी कुछ आव[श्य]क योग्यतायें शर्तें और क्रियायें है। [इ]नकी पूर्ति के अभाव शुद्धि व्यर्थ व [प्रयो]जनहीन ही नहीं, निन्दनीय भी [है]। ठीक उसी तरह हम भी उन बातों [को] नहीं सोचते और जो भी है, 'ऐरा [गैरा] नत्थू खैरा' सभी को शुद्धि करने के [लि]ये तैयार बैठे हैं, और कर रहे हैं। [प]रिणाम यह है कि आर्य समाज शुद्धि [की] अपेक्षा प्रेम विवाहो का आश्रय बे[न र]हा है, और लोग इस लोकप्रिय नीति [का] लाभ उठा रहे हैं। क्या वेदमन्त्रों के [पा]ठ, सन्ध्या और हवन को एक बार [विवाह के समय) या फिर एक दो [स]प्ताह करने मात्र से शुद्धि की क्रिया [स]र्वांगपेण सम्पन्न मानी जा सकती है। [शु]द्ध होने वाले व्यक्ति के मन के विचार, [आ]चार और व्यवहार मे बिना किसी [ख]ास परिवर्तन को सचारित किये या [उ]सकी आशा किये, शुद्धि को बदनाम करने की एक असफल चेष्टा है। आय [समाज] विवाह केन्द्र नहीं बनना चाहिए।

जहाँ तक हम जानते हैं, कि आय समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने जिस वेदानुकूल शुद्धि व्यवस्था का पुनः प्रतिपादन व प्रचार किया उसकी पृष्ठ भूमि मे जन्मजात जाति व्यवस्था को निरुत्साहित करके उसके स्थान पर कर्मणा जाति व्यवस्था को प्रोत्साहित करने की भावना थी। इसके बाद भी स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा चलाये गये शुद्धि आन्दोलन का ध्येय मुसलमानों के धर्म परिवर्तन कुचक्र को विफल करके वैदिक विचार धारा की इस बात को लोकप्रिय बनाना था कि ऊँचा या नीचा वर्ण अपने कर्मों के आधार पर प्राप्त होता है, जन्म के आधार पर नहीं। शिक्षा और वेदानुकूल आचरण के द्वारा एक निम्न कुल मे उत्पन्न व्यक्ति भी श्रेष्ठ बन सकता है और आदर का पात्र हो सकता है, जब कि एक उच्च कुल मे उत्पन्न बालक भी अशिक्षा और वेद विपरीत आचरण कर के निम्न वर्ण को प्राप्त हो जाता है। शुद्धि आन्दोलन का आर्यसमाज मे विद्यमान अनेकों शोषित उत्पीड़ित और अनादर प्राप्त जाति के व्यक्तियों को उन्नति का अवसर प्रदान करना था। उन्हे समाज के अन्य वर्णों के व्यक्तियों के समान स्थान दिलाने की भावना को

व्यावहारिक रूप देने के लिये ही उन्होने शुद्धि के साथ शिक्षा पर ही अधिक बल दिया। आर्य समाज के कार्य क्षेत्र को वेद की शिक्षा और प्रचार तक सीमित न रहने देने के हेतु उन्होंने विद्यालयों, अनाथालयों आश्रमों तथा अन्य कल्याणकारी एवं शिक्षा प्रसारक संस्थाओं और साधनों की नींव डाली और जीवन पर्यन्त उसके लिये कार्य करते रहे। उन्होंने शुद्धि आन्दोलन जिस उत्साह के साथ प्रारम्भ किया था उसी उत्साह एवं लगन के साथ वे अन्तिम समय तक उससे सम्बन्धित रहे और अन्ततोगत्वा उसपर ही शहीद हुए। यह कहना आवश्यक ही है कि उनकी शुद्धि आन्दोलन की प्रगति को देखकर राजनीति में सबसे बड़ी संस्था कांग्रेस के नेताओं का भी अपना राजनैतिक भविष्य अनिश्चित सा—लगने लगा था। अछूतोद्धार एवं धर्म निरपेक्षता को थोथी ढोंग हांकने वाली संस्था कांग्रेस आर्यसमाज के शुद्धि आन्दोलन से अत्यन्त भयभीत थी, और यही कारण है कि कांग्रेस ने कभी आर्यसमाज से टकराने की कुचेष्टा नहीं की।

शुद्धि की व्यवस्था पूर्णत वेदानुकूल है, और यह आर्य समाज के प्राथमिकता प्राप्त आन्दोलन मे एक है। आज की परिस्थियों मे जब वेदों की शिक्षा प्रायः लुप्त होती जा रही है, और प्रगति एवं स्वतन्त्रता के नाम पर मनुष्य मान्यता हीन अनियमित एवं अवैदिक जीवन पद्धति को अपनाता जा रहा है, हजारों की सख्या में वास्तविक शुद्धियों की आवश्यकता है। यद्यपि मुसलमान एवं ईसाई इत्यादि धर्मावलम्बी जी तेजी से हिन्दू धर्म के विनाश को सुनियोजित षड्यन्त्र में लगे हैं, लेकिन इन से भी अधिक भयानक और दुष्परिणामजनक षड्यन्त्र की योजना तो हममें से ही उत्पन्न वर्ग है जो हमारी मान्यताओं, विचारों और व्यवहारों से दिनों दिन दूर होता जा रहा है। यह वर्ग अन्य धर्मों से प्रत्यक्ष रूपेण सबधित भी नहीं है, और उनके धर्म पर पतित व पीड़ित भी नहीं, फिर भी हमारे घर में यह अधिक दुखदी स्थिति आस्तीं और आचारों के पूर्णत: या अंशत: विपरीत हैं। शुद्धि आन्दोलन के कार्य क्षेत्र में ईसाई व मुस्लिम सम्प्रदायों की कुचेष्टों को विफल करने के साथ-साथ वर्तमान की पीढ़ी और भावी पीढ़ी को वैदिक शिक्षा में पूर्णतः युक्त और प्रभावित बनाने की सुनियोजित, व्यावहारिक एवं लोक प्रिय योजना कार्यान्वित करने की आवश्यकता है।

★ श्री चन्द्रप्रकाश आर्य
नई दिल्ली

आज की स्थिति अत्यन्त शोचनीय है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद आर्य समाज को जो प्रगति करनी चाहिए थी और उसकी आशा भी थी, वह न हो पायी। आर्य नेता सरकार को हर बात के लिये दोषी ठहराकर अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये निश्चेष्ट या कम प्रयत्नशील होकर बैठ गये। आज स्थिति यह है कि आर्य समाज से युवा वर्ग प्राय लुप्त होता जा रहा है, आर्य नेता निराश होकर किंकर्त्तव्यविमूढ़ की स्थिति में हैं। हमारे ऊपर भी राजनैतिक परिस्थितियों का प्रभाव इतना अधिक पड़ा है कि हम राजनीति से अपने को पृथक नहीं कर सकते। इसलिये राजनैतिक जीवन में प्रवेश करना चाहते हैं। आर्य समाज राजनीति मे प्रवेश करे या न करे, यह विषय यहाँ विचारणीय नहीं है, फिर भी मेरा नम्र निवेदन यह है कि आर्य नेता यदि राजनीति को सामाजिक जीवन के विकास का सर्वतोमुख विकास का साधन मानकर न चले अन्यथा उनके आदर्श-च्युत हो जाने का भय है क्यों कि पद और प्रतिष्ठा का लोभ सामान्य लोभ नहीं। राजनैतिक जीवन में प्रवेश करने से पहले हमें अपने को अधिक संगठित बनाने की आवश्यकता है। हमने अपने सामने जो भी उद्देश्य रखे हैं, और उनकी प्राप्ति के लिये जो भी कुछ साधन और कार्यक्रम हमारे पास हैं, उनमें पूरी रुचि लेने की आवश्यकता है। शिक्षा संस्थायें हैं तो आर्य नहीं, संस्कृत विद्यालय हैं तो उनमें पढ़ने के लिये छात्र नहीं, विद्यालय और अनाथालय हैं तो उनके लिये धन नहीं, और प्रमुख बात तो यह है कि हमारे विद्यालयों में भी हमारे शास्त्रों के अनुसार शिक्षा की व्यवस्था नहीं। अगर यह सब नहीं है तो क्या हमें कार्य करने के लिये क्षेत्र की कमी है? शायद नहीं।

(शेष पृष्ठ १० पर)

है सड़क के छोर पर स्थित है। ... ने अपने पूर्वजन्म का दिया ... इब्राहीम बोहमजी नामक व्यक्ति से हूबहू मिल गया जिनकी ... से १८ सितम्बर १९४९ को ... हो गई थी। इब्राहीम की आयु समय २५ वर्ष की थी और उसने वर्ष अस्पताल में बिताया।

... ने जो ५७ बातें अपने ...म से सम्बन्धित बताया था, उनमें ५१ सर्वथा सत्य सिद्ध हुईं। प्रो० ...र्जी द्वारा छानबीन किये गये मामलों से एक अन्य जो भारत का था, एक ...स के सम्बन्ध में था।

रविशंकर नाम के लड़के ने बताया था कि वह अपने पुनर्जन्म में कन्नौज ...आगेश्वर नामक हज्जाम का बेटा और उसकी हत्या कर दी गई थी। ...तब मे यह प्रकट हुआ कि मुन्ना ...मक एक लड़के की १९५१ में हत्या ...र दी गई और यह घटना रवि के ...म से कुछ मास पहले ही हुई थी। ...न्ना का सिर दो व्यक्तियों ने काटा ...-हत्या का उद्देश्य धन प्राप्ति था। ...ना अपने पिता की एकमात्र सन्तान ...। उसकी सम्पत्ति का अधिकारी ...। हत्यारों में से एक सम्बन्धी था, ...से आशा थी कि लड़के की हत्या ...र वह सम्पत्ति का वारिस बन ...एगा।

जन्म के समय से ही रवि के गले पर एक निशान था, जिसके विषय मे उसने बताया कि पुनर्जन्म में हत्या किये जाने के कारण यह बना है। रवि के बाप ने उसकी खूब पिटाई की, यह रोकने के लिये कि वह पुनर्जन्म की बातें करके उसके लिये मुसीबत पैदा न करे। परन्तु बालक कहां रुकने वाला था, और ३० जुलाई १९५५ को जब वह केवल चार वर्ष का ही था, रवि ने अपनी हत्या का पूर्ण विवरण दिया जो बहुत हद तक बयान से मेल खाता है, जो एक हत्यारे ने अपने अपराध की स्वीकृति मे पहले दिया था और जिससे बाद में वह मुकर गया था।

यहाँ हम केवल उन कुछ तथ्यों को बता रहे हैं जो रवि ने अपने पूर्व जन्म के विषय मे बताये और जो सबके सब मुन्ना के संदर्भ में पूर्णतः सत्य सिद्ध हुए। उसने बताया कि वह एक नाई का पुत्र था और उसकी हत्या चतुरि और जवाहर ने की थी। रवि ने कहा कि हत्यारों में से एक नाई था और दूसरा धोबी। उसने बताया कि जिस समय उसे मारा गया वह अमरूद खा रहा था, यह सब कत्ल किये गये लड़के के बारे मे सत्य बातें थीं। उसकी हत्या चिन्तामणि मन्दिर के निकट की गई थी। यह सब सत्य था, और यह भी कि उसकी गर्दन काटी गई थी, यह भी सत्य था कि उसे रेत मे दबाया गया है।

प्राध्यापक बनर्जी के मतानुसार

इनके अतिरिक्त अन्य भी ऐसे अनेक विवरण हैं जो मुन्ना के रूप मे अपने पुनर्जन्म मे रवि ने बताये और जो सब के सब वैसे ही घटित प्रमाणित हुये जैसा कि उसने बताया।

आगे चलकर बनर्जी ने कहा है कि यह उन अनेकों उदाहरणों में से एक है जिन्होंने मुझ अपने द्वारा संगृहित सबूतों को पुनर्जन्म की सत्यता का प्रतिपादक होने का विश्वास दिलाया है।

यद्यपि पुनर्जन्म की शास्त्रीय वैज्ञानिक खोजों के कार्य में प्रो० बनर्जी भारत के मार्ग दर्शक हैं परन्तु उनसे पूर्व कुछ वैज्ञानिकों ने इस सिद्धान्त पर विचार किया था कि मनुष्य पुनर्जन्म की स्पष्ट सम्भावना से पृथ्वी पर कई-जीवन व्यतीत करती हैं। इन वैज्ञानिकों मे थामस वाले और अन्वेषक थोमस एडीसन थे।

हक्सले एक जीव विज्ञान वेत्ता थे तथा विकास वाद के सिद्धान्त के जनक चार्ल्स डारविन के अच्छे मित्र थे। हक्सले ने जो १८९५ में स्वर्गवासी हो गये थे लिखा "पुनर्जन्म के सिद्धांत का आधार यथार्थ है। केवल कुछ बहुत जल्दबाज विचारक ही इसकी स्वाभाविक मूर्खता कहकर त्याग देंगे और कोई अस्वीकार नहीं करेगा।"

एडीसन जिनके श्रेय में अद्वितीय प्रथम विद्युत बल्ब की रचना की और फोटोग्राफी तथा अन्य भी अनेक आविष्कार किये लिखता है—

"मधुमक्खियों के विशाल छत्तों की सदृश जीवन की इकाई का निर्माण हुआ है जिसमें अरबों-खरबों तेजस्वी व्यक्तियों का समावेश है जो विद्युत घटों सदृश जीव कोषों मे रहते हैं। मेरा विश्वास है कि जब मनुष्य मरता है तो यह प्रचण्ड तेज पूर्ण समुच्चय शरीर को छोड़कर आकाश मे चला जाता है। परन्तु उसका अस्तित्व नहीं समाप्त होता दूसरे कालचक्र में प्रविष्ट होता है और वह अमर है।"

"मैं एक क्षण के लिये भी इस बात का विश्वास नहीं कर सकता कि जीवन का प्रथम स्मारक इस तुच्छ-सी छोटी मिट्टी की गेंद पर ही हुआ जिसे हम पृथ्वी कहते हैं। जीवन निर्माण के इन कारणों का स्रोत जिन्होंने एकत्रित होकर हमारी इस पृथ्वी पर रचना की सम्भवतः ब्रह्माण्ड के किसी अन्य भाग और शरीर से हुआ है।

"मैं क्षण भर को भी नहीं मानता कि एक जीव दूसरे जीव को बनाता है। हमारे अपने शरीरों को ही ले लो। मेरा विश्वास है कि ये असंख्यों सूक्ष्मातिसूक्ष्म व्यक्तियों का समुच्चय है जिसमें से प्रत्येक जीवन की एक इकाई है और ये इकाईयां समूहों मे मधु मक्खियों के छत्तों सदृश जैसा कि मैं प्रायः मैं उन्हें कहना पसन्द करता हूं रहती है सदा सर्वदा रहती हैं, यह अमर है।

वातावरण

जब हम मरते हैं मधु मक्खियों के छत्ते के सदृश ही तो ये व्यक्तित्व मधु लेकर अन्यत्र कहीं किसी अन्य वातावरण मे अपने काम मे कार्य रहते हैं। जितना अधिक हम पढ़ने सीखने की चेष्टा करते हैं उतना ही अधिक से अधिक हम इस निश्चय पर पहुंचते हैं कि उन वस्तुओं में जिन्हे हम निर्जीव और प्राणहीन समझते रहे हैं, वास्तव में जीवन है।

वैज्ञानिक एडीसन अन्त में पुनर्जन्म सम्बन्धी अपने दृढ़ विश्वास के बारे में कहते हैं:—अपनी मृत्योपरान्त यदि किसी मात्र अपने अवशेष की मैं आशा कर सकता हूं। तो केवल यही कि मैं पुनः पृथ्वी पर नया जीवन आरम्भ करने के लिये जन्म लूं।

नोटः—मृत्यु के पश्चात् आत्मा के साथ सूक्ष्म और कारण शरीर रहते हैं। एक जन्म के शरीर पर निशान दूसरे जन्म के शरीर पर नहीं रहते, ये वैदिक सिद्धान्त है।

★

शुद्धि-आन्दोलन

(पृष्ठ ८ का शेष)

जहाँ तक शुद्धि का प्रयत्न है हम शुद्धि कर तो देते हैं मगर शुद्धि किये गये व्यक्ति मे आर्य संस्कार जागृत करने की चेष्टा मे हम असफल रहे हैं। कारण जो भी हो मगर होता यही है कि शुद्धि के बाद केवल ५ प्रतिशत लोग ही आर्य समाज की दृष्टि से उपयोगी सिद्ध होते हैं। यह केवल अनुमान है, ईश्वर करे उपयोगी सिद्ध होने वाले लोगों की प्रतिशत संख्या अधिक हो। क्या कभी हम इस बात पर भी गम्भीरता से विचार करते हैं कि अमुक व्यक्ति का (जो पहले कभी आर्यसमाज में शुद्ध हुआ था) आर्यसमाज से आज क्या कैसा और कितना घनिष्ट संबन्ध है। उसके जीवन में कितने अंश तक आर्य या वैदिक संस्कार आ सके हैं, और कितने और आने चाहिए। क्या शुद्धि के बाद भी हम उससे सम्पर्क स्थापित कर उसे यह अनुभव करा पाये हैं, कि वह हमारे ही में से एक है। शायद हम सब के साथ ऐसा नहीं कर पाते। वस्तुतः ऐसा कर पाने में कुछ व्यावहारिक कठिनाइयां भी हैं। लेकिन हमें इन कठिनाइयों का अध्ययन कर उन्हें दूर करने का प्रयत्न, व्यक्तिगत, क्षेत्रीय एवं प्रान्तीय स्तर तक तो अवश्य करना चाहिए। मानव जीवन को अधिक श्रेष्ठ और पाप रहित बनाने मे सुरक्षा एवं सन्तोष की भावना बहुत कुछ भूमिका अदा करती है। केवल एक उत्सवीय शुद्धि पर्याप्त शिक्षा और सुरक्षा के अभाव मे स्थायी नहीं हो सकती। ईसाई लोग यदि अशिक्षा और गरीबी का लाभ उठा कर धर्म परिवर्तन की कुचेष्टा कर रहे हैं, तो इसका सफल विरोध तभी सम्भव है जब हम निर्धन और अशिक्षित वर्गों और व्यक्तियों को व्यवसाय या जीविका के रूप मे आर्थिक संरक्षण व सुरक्षा प्रदान कर सकें, और शिक्षा के लिये सस्कृत व प्राथमिक विद्यालय के माध्यम से उन्हें वेदानुकूल शिक्षा प्रदान कर सकें। ठीक इसी प्रकार विवाहों के सम्बन्ध मे है। केवल इसलिये कि माता-पिता या अभिभावक गण लड़के लड़की के विवाह का समर्थन नहीं करते या जाति उनके विवाह के बीच भी बड़ी भारी रुकावट है। आर्य समाज के दरवाजे खुले नहीं होने चाहिए। विवाह के पूर्व लड़की लड़के की शिक्षा दीक्षा, पारिवारिक पृष्ठ-भूमि विचारों और मान्यताओं तथा परस्पर रुचि एवं योग्यताओं का पूर्ण अध्ययन किया जाना चाहिए। आर्य समाज का नैतिक कर्तव्य है कि विवाहोत्सव को बाधा रहित ढंग से सम्पन्न कराने तथा आशिर्वाद के पहले अपने आप मे यह निर्णय कर ले कि वह विवाह कहां तक न्यायोचित, वांछनीय और आशानुकूल सफल होगा। और फिर विवाहित जीवन में प्रवेश करने वाले वर-वधू पक्ष कहाँ तक उसके लिए उपयोगी सिद्ध होंगे। उपयोगिता का अर्थ केवल इतना है कि वे आर्य समाज को कितना समझ सके हैं और कहाँ तक अपने को आर्य समाज के लिये अर्पित करने के लिये तत्पर हैं।

शुद्धि आन्दोलन को प्रबल और नियोजित व संगठित रूप से चलाये जाने की आवश्यकता है। यह शुद्धि बुद्धि, मन और तन तीनों ही क्षेत्रों में आनी चाहिए।

★

नैतिक उन्नति का मूल--

सत्संग

[नैतिक उत्थान के लिए अध्यात्मवाद आवश्यक है, और अध्यात्म सुधा का पान सत्सङ्गों में होता है। केवल उन सत्सङ्गों में जहां वेदानुकूल बातों की चर्चा होती है, जहां अन्धविश्वास और कुढम का नहीं वरन सत्य का प्रसार किया जाता है। क्या जीवन निर्माण के निमित्त हम ऐसे सत्सङ्गों में जाते हैं ? यदि नहीं तो सहस्रों काम छोड़ कर भी सत्सङ्गों में जाने का सङ्कल्प करें और दृढ़तापूर्वक अपने व्रत को निभाएं। बिना ऐसा किये नैतिक उत्थान की केवल दुहाई देना तो सर्वथा व्यर्थ है।

—सम्पादक]

★

सत्संग मानव जीवन की उन्नति का मूल मन्त्र है। सत्संग ही जीवन है, और कुसंग मृत्यु है। सत्संग हियहर्षक और बुद्धिवर्धक, आत्मदर्शक, पथ प्रदर्शक जीवन ज्योति रत्न मण्डित है। सत्संग रूपी अमृत पान से मानव जीवन की अकल्पनीय अकथनीय उन्नति होती है। सत्संग में जो आनन्द मानव जीवन में प्राप्त होता है उसकी तुलना में चौदहों भुवन का धन ऐश्वर्य नगण्य है। सत्संग से परम शान्ति और अपार आनन्द सुधा सार की प्राप्ति होती है। सत्संग रूपी अमृत को प्राप्त करके वाल्मीकि जैसे जन महर्षि की पदवी को प्राप्त किये हैं, और रामचरित मानस जैसे महा ग्रन्थ का निर्माण करते हैं। प्राप्त कर लेता है। सत्संग द्वारा महा जीवन काव्य कला को प्राप्त कर नित्य नूतन ग्रन्थों का और लेखों का निर्माण करने की अद्भुत क्षमता प्राप्त किया जाता है। सत्संग से घोर वैराग्य और तपोमय जीवन का निर्माण किया जाता है। सत्संग रूपी महाधन के सामने दुनियां के धन वैभव सभी नीरस से प्रतीत होते हैं। सत्संग की सुगन्ध से सुवासित होते हैं मानव के मन वचन और कर्म। सत्संग से ही कर्म विज्ञान धर्म दर्शन, भोग विज्ञान, मोक्ष

★ पं० धर्मवीर आर्य झंडाधारी

नैतिक उत्थान आन्दोलन

सत्संग जप, तप, व्रत, अनुष्ठानों का और परमात्मा की प्राप्ती का आधार अमृत कुण्ड है। सत्संग मानव जीवन की कुसुमित फुलवारी है, सत्संग जीवन सरिता का प्रबल पतवार है। सत्संग मानव जीवन का अनुपम सौन्दर्य है। सत्संग ज्ञान ज्योति का प्रकाश पुंज है। सत्संग आत्मा और परमात्मा के दर्शन का अनुपम सहारा है। सत्संग रूपी गंगा में गोता लगाकर पूर्व जन्मों की अगम्य विद्याओं के रहस्य को जाना जा सकता है। सत्संग से मेधा शक्ति का विपुल भण्डार प्राप्त किया जाता है। सत्संग से विवेक, विलक्षणता, मधुरता, सज्जनता, सौम्यता, सहृदयता सद्गुणों की अलौकिक अनुपम आभा और प्रतिभा प्राप्त होती है। सत्संग से मानव कुल के धर्म और कर्म विवेक विशुद्ध जाने जाते हैं। सत्संग भव सिन्धु का प्रबल पतवार और जीवन सार आधार है। सत्संग द्वारा मनुष्य वक्तृत्व कला की कुञ्जी को विज्ञान, मनो विज्ञान ज्ञान गरिमा के महासागर की मोतियों की जाज्वल्यमान ज्योतियों को प्राप्त किया जाता है। सत्संग से ही जन्म जन्मान्तों के कलुषित विचारों को भस्मसात करके शिखरकीय भव्य भावनाओं के शुद्ध स्रोत को प्राप्त किया जाता है। सत्संग के आनन्द रस को प्राप्त कर लेने पर मनुष्य सदा के लिए तृप्त हो जाता है। सत्संग रूपी रत्न कोष को प्राप्त कर मनुष्य मालो माल हो जाते हैं। सत्संग जीवन सरिता का मोती है। सत्संग से सहस्रों सूर्य सम ज्योति के आकाश पुंज को प्राप्त किया जाता है। सत्संग से अर्थ शास्त्र, धर्म शास्त्र और वेदों के उपदेश सार को जाना जाता है। सत्संग से समाधि व्यवस्था से समाहित होकर परमात्मा का साक्षात् कार किया जाता है। सत्संग से परमात्मा से वार्तालाप योगी जन किया करते हैं। सत्संग मानव जीवन की नैया का प्रबल पतवार है। सत्संग मानव जीवन का हर्ष नाद है। सत्संग से मानव जीवन का चरित्र निर्माण किया जाता है सत्संग सर्व गुणों की खान है।

उद्बोधन

ऐ विश्व के नर नारि वासियो सुनो धर ध्यान, लाख कार्यों को छोड़ कर सत्संग में नित्य जाया करो। सत्संग में सपरिवार भाग लेना आज से प्रारम्भ करो। अपना जीवन यज्ञ मय बनाकर अक्षय सुखों को प्राप्त कर अमर बनो। यह आत्मा का सिंह नाद है। माया की मदिरा का त्याग कर सत्संग के ज्ञानामृत का पान करो।

पूषन् तव व्रते वयं न रिष्येम कदाचन् ॥
स्तोतारस्तऽइह स्मसि ॥ [य० ३४/४१]

शब्दार्थ (पूषन्) हे पालन व पोषण करने वाले परमात्मन्। (तव्रते) तेरे व्रत में हम (कदाचन) कभी भी (न, रिष्येम) चूक न करेंगे। (ते) तेरे (इह) इस जीवन में हम (स्तोतार) स्तवन करने वाले (स्मसि) बनें।

भावार्थ—हे परम-प्रिय प्राणाधार प्रभो! आप प्राणी मात्र के पालन पोषण और संरक्षण कर्ता हो। आप तो व्रत मय हो आपके समस्त कर्म व्रत रूप ही हैं अर्थात् पूर्ण सत्य से संयुक्त हैं: आप सर्वज्ञ हो इसलिये आपका कोई भी कार्य त्रुटि युक्त नहीं हो सकता।

प्राणी मात्र के कल्याण के लिये आपने इस सृष्टि को अपने सहज स्वभाव से सृजन किया है। विविध प्रकार की जीवनोपयोगी वस्तुओं का निर्माण आपने हम सब के अहेतुक स्वाभाविक करुणा के आगार प्रेम के सागर होने के कारण ही किया है। आप परम न्यायकारी हो। सत्पुरुषों का उत्थान और दुष्ट कुकर्मी जनों को दण्ड देने में आप कभी चूक नहीं करते। आपके न्याय पाश से कभी कोई बचकर निकल नहीं सकता। आपके दरबार में रिश्वत व खुशामद को स्थान नहीं।

आप जीवों के उत्थान के लिये फिर-फिर उनको मानव तन प्रदान करते और अन्तर्यामी रूप से उनको सत्य की उपासना और असत्य के त्याग की प्रेरणा देते आप सदा मनुष्यों के संकटों का व विपदाओं में सम्बल बनते और निविड़ अन्धकार में उनका सहज स्वभाव से पथ-प्रदर्शन करते हैं।

प्रभो! हमारी आपके इन और ऐसे अन्य अनेक व्रतों का अनुकरण करने वाले बन जायं।

प्रभो! आप तो हमारे अभिन्न सखा, मित्र, बन्धु और तुम्हीं माता-पिता और गुरु हो आप हम सब को जोड़कर और किसकी उपासना करें।

निश्चय हम अपने इस जीवन में आपके ही गुणों का कीर्तन वन्दन और स्तवन करेंगे और आपके गुणों को अपने जीवन में धारण करने का सतत प्रयत्न करेंगे।

शिवदयालु

सठ सुधरहिं सत्संगत पाई

सत्संग में आकर बड़े बड़े पापियों के जीवन का सुधार हो चुका है। एक से एक पापी सत्संग में जाकर महात्मा विश्व विख्यात साहित्यकार बन चुके हैं। धर्म के मर्म का बोध सत्संग से ही प्राप्त होता है। लेखक को आज हिमालय की चोटी पर पहुंच कर महा योगियों के आश्रम में जाने का और उनसे वार्तालाप करने का उन महात्माओं की चरण धूलि को मस्तक पर लगाने का परम सौभाग्य सत्संग से ही प्राप्त हुआ है।

★

आर्य-जगत

शुद्धि समाचार

आर्य समाज, मण्डी बाँस मुरादाबाद में दिनाक २१-७-६८ को साप्ताहिक सत्संग में एक यवन महिला का शुद्धि संस्कार बड़े धूम-धाम से किया गया। इनका पूर्व नाम निजाम जहाँ था और संस्कार के उपरान्त इनका नाम कामिनी रखा गया।

इस अवसर पर नगर के बहुत से गण-मान्य व्यक्ति उपस्थित थे। महिलाओं और बच्चों की संख्या भी बहुत अधिक थी। संस्कार ... त कामिनीदेवी द्वारा प्रसाद वितरण कराया गया जो सभी उपस्थित वर्ग द्वारा बड़े प्रेम पूर्वक ग्रहण किया गया।

मन्त्री जी के पूछने आने पर कि, आप के मन में स्वतः ही धर्म परिवर्तन के विचार क्यों कर उत्पन्न हुये' कामिनी देवी जो इण्टर मीडिएट पास हैं ने बड़े गम्भीर भाव से उत्तर दिया कि 'वह मजहब ही क्या जो अपने ही को अच्छा कहे'। उन्होंने आगे कहा कि, 'मैंने वैदिक धर्म के विषय में अध्ययन किया है और अन्य धर्मों का मुझे ज्ञान है परन्तु वैदिक धर्म ही मुझे सबसे अधिक तर्क सगत और वैज्ञानिक लगा इस धर्म मे आने पर मुझे गर्व है'।

निजाम जहां द्वारा यज्ञ कराया गया और उन्हें यज्ञोपवीत भी धारण कराया गया। मन्त्री जी द्वारा उन्हें सन्ध्या हवन की एक पुस्तक भेंट स्वरूप प्रदान की गई।

सराहनीय सेवा कार्य

मारीपत स्टेशन के पास ता० ७-८-६८ को फरूखाबाद देहली वाली गाड़ी में देहली से फर्रुखाबाद जाते समय गाड़ी मे आग लग गई। उस गाड़ी मे ग्राम सन्दूना के रहने वाले एक सज्जन ने जिस का नाम जिले सिंह है उसने अपने अथक प्रयत्न से बहुत लोगों को बचाया इस बचाने के सिलसिले मे आप भी बुरी तरह जल गया, और इस समय देहली अस्पताल मे पड़ा है और अब स्वस्थ है।

—गोपीकृष्ण आर्य, दस्कार

शुभ विवाह

शुक्रवार दि० २६-७-६८ को आर्य समाज मन्दिर, जी० सी० एफ० क्वार्टर्स जबलपुर मे स्वर्गीय श्री श्यामसुन्दर खरे के सुपुत्र श्री शिवनारायण खरे का शुभ विवाह श्री नर्मदा प्रसाद सिंह ठाकुर की आत्मजा कु० दयावती सिंह ठाकुर के साथ प० जगदीश प्रसाद शास्त्री के पौरोहित्य मे वैदिक रीत्यनुसार सम्पन्न हुआ। समस्त उपस्थित व्यक्तियों ने नव दम्पती के प्रति हार्दिक शुभ कामनायें प्रगट की।

प्रचार—

दि० १४-७-६८ से २४-७-६८ ई० तक बस्तर आर्यसमाज की ओर से श्रीचन्द्र मन्दिर पर श्री स्वामी सत्यानन्द सरस्वती ने वेद की कथा कही तथा श्री महानन्द आर्य भजनोपदेशक के प्रभाव शाली भजनोपदेश हुए जिसका प्रभाव जनता पर अच्छा पड़ा। अन्य वक्ताओं के भी प्रवचन हुए। लोगों ने वैदिक धर्म का प्रचार कर राष्ट्र को समुन्नत बनाने की प्रतिज्ञा की। इस अवसर पर श्री विद्यानन्द जी यज्ञोपवीत संस्कार कराया गया तथा प्रेमप्रकाश नाम के ईसाई का शुद्धि संस्कार कराया गया तथा उसने आर्य धर्म ग्रहण किया।

—आर्योपदेशक श्री छाजूराम जी द्वारा मैजिक लालटेन से दि० ३, ७ ८ जुलाई को आर्यसमाज मन्दिर मुबारकपुर में वैदिकधर्म का प्रचार हुआ जिसमें लगभग दो हजार व्यक्तियों ने भाग लिया। आर्य समाज का जनता पर काफी प्रभाव पड़ा।

—आर्यप्रतिनिधि सभा के भजनोपदेशक श्री वेदपालसिंह जी आर्य ग्राम पसनपुर (आजमगढ़) मे प्रचारार्थ पधारे। कई दिनों तक प्रचार कार्य चलता रहा। काफी संख्या मे नर-नारियों ने उपस्थित होकर प्रचार से लाभ उठाया। सभा स्थल पर कई व्यक्तियों ने माँस न खाने की प्रतीज्ञा की। जनता पर प्रचार का प्रभाव रहा।

—आर्यसमाज श्री ... के अन्तर्गत तिवारी श्री ... राम जी, श्री हरप्रसाद जी, श्री कृष्ण तथा श्री मंगाराम श्री लक्ष्मीचन्द तथा श्री रामचन्द्रसिंह जी ने समाज के प्रधान श्री मस्तानसिंह तथा श्री ... आर्य द्वारा यज्ञ करवाये। समाज के अधिकारियों ने उक्त व्यक्तियों से प्रतिज्ञा कराई कि माँस मछली तथा मादक पदार्थ (प्याज, लहसुन, आदि) कभी भी सेवन नहीं करेंगे।

—आर्यसमाज कायमगंज में दिनांक ७-७-६८ को श्री केशवचन्द्र आर्य सुपुत्र श्री राजाराम आर्य के यहाँ पुन्सवन संस्कार वैदिक रीत्यनुसार श्री सतीश चन्द्र जी आर्य की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। रामचन्द्र आर्य ने भजन गान किया जो उपस्थित महिला तथा पुरुष समाज ने मिलकर गाया। पुन्सवन संस्कार का प्रभाव अच्छा रहा। ६) आर्यसमाज को दान प्राप्त हुआ। सबने आशीर्वाद दिया, अन्त में शान्ति पाठ किया गया।

निर्वाचन—

—आर्यसमाज बैरमनियां
प्रधान—श्री विन्ध्याप्रसाद
मन्त्री—श्री नवल पण्डित
कोषाध्यक्ष—श्री वासुदेव शास्त्री
निरीक्षक—श्री भोलाराम आर्य

—आर्यसमाज पणजी (गोवा)
प्रधान—श्री हरिश्चन्द्र मण्डोलकर
मन्त्री—श्री वसन्त नायक
कोषाध्यक्ष—श्री विद्याधर विठ्ठल नायक

—आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य
प्रधान—श्री नारायणदास कपूर
मन्त्री—श्री रामनाथ जी सहगल
कोषाध्यक्ष—श्री बलवन्तराय खन्ना
लेखानिरीक्षक—श्री धुमानसिंह

—आर्यसमाज मानपुर (गया)
प्रधान—श्री तुलसीलाल
मन्त्री—श्री धर्मप्रकाश आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री कृष्णप्रसाद
पुस्तकाध्यक्ष—श्री हीरालाल

शोक-प्रस्ताव—

—श्री मक्खीराम भूतपूर्व प्रधान आर्यसमाज अनूपशहर की असामयिक मृत्यु ३ अगस्त १९६८ को ? बजे दिन मे हुई। सायंकाल वैदिक रीति से दाह संस्कार हुआ, घर पर शुद्धि हवन होकर ईश्वर से प्रार्थना की गई कि उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान हो और शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करे।

—प्यारेलाल भटनागर मन्त्री

—आर्यसमाज बिलासपुर (रामपुर) के सभासदों की यह सभा अपने सभासद् एवं अपनी आर्य पाठशाला के प्रधान अध्यापक श्री दयाराम जी 'निर्मल' के दिनांक ३१-७-६८ को आकस्मिक निधन पर शोक प्रकट करती है। और हम सब दिवंगत आत्मा की शान्ति के निमित्त तथा उनके शोक संतप्त परिवार को धैर्य धारण करने की शक्ति के लिये सर्व शक्तिमान परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं।

—आर्यस० लक्ष्मीपुर (बिहार) के श्री जानकीप्रसाद आर्य की सुपुत्री का अन्त्येष्टि संस्कार दि० २४-७-६८ को वैदिक रीत्यनुसार किया गया। —मन्त्री

—आर्यसमाज हिसार में दि० २४-७-६८ के अपने साप्ताहिक अधिवेशन में ने आर्यजगत् के एक निष्ठ भजनोपदेशक श्री प० हरिचन्द्र जी के असामयिक निधन पर गहरा शोक प्रकट किया तथा ईश्वर उन को सद्गति एवं उनके इष्ट जनों को धैर्य प्रदान करे। इस प्रस्ताव के साथ ही हिसार की आर्यसमाज व संस्थाओं ने उनके परिवार के लिए लगभग डेढ़ हजार रुपये की राशि भी एकत्रित की है। वैदिक धर्म के प्रेमी इस ओर विशेष ध्यान देवें। पंडित जी अपने पीछे विधवा पत्नी व तीन अनाथ सन्तान छोड़गये हैं।

पं० दामोदर सातवलेकर जी के देहावसान पर समाजों के शोक-प्रस्ताव

आर्यसमाज काशीपुर (नैनीताल), विरक्त (वानप्रस्थ-सन्यस्त) आर्य आश्रम ज्वालापुर, आर्यसमाज बैरगनिया, आर्य समाज बहराइच, आर्यसमाज राणाप्रताप बाग (दिल्ली), आर्यसमाज कलकत्ता।

आर्यसमाज बहराइच में वेद प्रचार

दि० ८-८-६८ से दि० १६-८-६८ तक आर्यसमाज बहराइच द्वारा वेदप्रचार का भव्य आयोजन किया गया। प्रातः काल ८ से ११ बजे तक आर्यसमाज मन्दिर बहराइच में चारों वेदों से बृहत वैदिक यज्ञ यजुर्वेद पाठ, भजन व प्रवचन तथा सायंकाल आर्य कन्या पाठशाला के प्रांगण में भजन व वेद कथा के आयोजन किये गये जिसमें बहराइच नगर की जनता ने बड़े उत्साह से भाग लिया।

वान प्रस्थी विद्यानन्द जी तथा छपरा से पधारे ठाकुर इन्द्रदेवसिंह जी के भजनों से जनता प्रभावित हुई।

प्रातःकालीन यज्ञ, वेदपाठ व वेद प्रवचनों के अतिरिक्त सायंकाल जीवन निर्माण सम्बन्धी वेद कथा बहराइच के वेद प्रचार इतिहास में अपनी विलक्षणता को लिए हुए थी।

१५-८-६८ को आर्य वीर दल की विधिवत स्थापना की गयी,

—रामचन्द्र बुधवार,
मन्त्री आर्यसमाज बहराइच

सिंहावलोकन

(पृष्ठ ७ का शेष)

से उन्हें सन्तोष नहीं होता। आदर प्रभुत्व व ऐश्वर्य चाहने वाले को उनकी चाह के अनुरूप वस्तु देनी चाहिये ताकि वे असन्तुष्ट रहकर समाज में विप्लव न पैदा न करें।

दूसरा—एकमात्र धन का गौरव अधिक नहीं बढ़ना। जब एक व्यक्ति देखता है कि विद्या चरित्र आदि के बिना भी वह धन के आधार पर पूजा, शासनाधिकार सब कुछ पा सकता है तो उसकी प्रवृत्ति चोरी, लूट, धोखा आदि की ओर झुक सकती है। पर विद्या और चरित्र चुराये नहीं जा सकते।

इस प्रकार प्रतिष्ठा, प्रभुत्व और प्रचुरता के पाने की आशा से ही जन-जन की महत्वाकांक्षा प्रेरित होती है। क्रमबद्ध योजना उनमें व्रत लेने-दीक्षित होने की पवित्र भावना और जोड़ देती है। हमारे विद्यालय उनका चुनाव में हर विद्यार्थी की सहायता कर सकते हैं।

एक एक क्षेत्र में प्रवेश करने का व्रत लेकर निकले हुये युवकों से समाज में व्याप्त अभाव को पूरा करने का संकल्प होगा उसको पूरा करने पर उन्हें पुरस्कार मिलेगा, अपनी भी आवश्यकतायें पूरी करने का और साथ में सन्तोष होगा कि उनका यह कार्य राष्ट्र हित में हो रहा है। यही सच्चा समाजवाद होगा।

सामाजिक सर्व हितकारी नियम पालन में जहाँ सब परतन्त्र हैं, वहाँ प्रत्येक हितकारी नियम पालन में सब स्वतन्त्र हैं।

आइये ऐसे युवकों की मदद करें कि वे कौन-सा व्यवसाय चुनें-अर्थात् समाज में से कौन-सा अभाव दूर करने का वे व्रत लें। पहले आप्त वचन और सत्शास्त्रों के आधार पर यह देखें कि किसी सम्पन्न समुदाय को क्या-क्या वस्तुयें प्राप्तव्य हैं—

(२)

राष्ट्र की महत्वाकांक्षा

आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम् आराष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्यो ऽतिव्याधी महारथो जायताम्। दोग्ध्री धेनुर्वोढाऽनड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः।

सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम् निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नः ओषधयः पच्यन्ताम् योगक्षेमो नः कल्पताम्।

यजु० अ० २ मन्त्र २२

मुझ में ऐसे अध्यापक और ज्ञान प्रसारक उत्पन्न हों, जो तेजवान हों तथा जिनमें आत्मबल हो और जो कार्यरत हों। मेरी सेना में ऐसे सैनिक हों जो महारथी तथा शत्रु विनाशक हों और युद्ध से भागने वाले न हों। गायें भी दूध देने वाली और खेती के लिये बलधारी वृषभ तथा यातायात के लिए तेज घोड़े अथवा ऐसे अन्य यान हों। मेरे यहाँ उत्पन्न स्त्रियाँ भी योग्य तथा गुणवान हों मेरे अंचल में उत्पन्न बच्चे वीर तेजस्वी और महत्वाकांक्षा वाले हों। जब-जब आवश्यकता हो बादल बरसें अथवा उनसे जल इच्छानुसार लिया जा सके, ताकि फल फूल, औषधि वनस्पति और अन्न की भरपूरता रहे। मेरी सम्पन्नता योग क्षेम करने वाली और अमर अनन्त हो और इन्हीं महत्वाकांक्षाओं की उपलब्धियों के लिये हमारे युवकों को अपने विद्यार्थी जीवन काल में ही व्रत लेना है। व्रत की ही दीक्षा है। व्रत के उपरान्त जो कार्य किया जाता है उसमें पवित्रता आ जाती है।

> व्रतेन दीक्षामाप्नोति,
> दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्।
> दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति,
> श्रद्धया सत्यमाप्यते॥
>
> -यजु० १९ ३०

व्रत लेने से उस कार्य में दीक्षा अर्थात् पटुता आ जाती है और अपने ध्येय पर हम अपना अधिकार समझने लगते हैं। इससे ही उसकी प्राप्ति की पात्रता आती है। तब उस कार्य में श्रद्धा होकर उत्साह पैदा होता है। और इससे संसार में सफलता मिलती है। ★

मां के पेट में बालक से 'बातचीत'

लन्दन—कार्डिफ के प्रोफेसर अलेग्जेंडर टर्नबुल ने यह दावा किया है कि उन्होंने एक ऐसा यन्त्र तैयार किया है जिससे गर्भ ही में बच्चों के आकार, वजन और दिमाग के विकास का ठीक-ठीक पता लगाया जा सकता है।

इस यन्त्र को गर्भिणी माता के पेट से लगा दिया जाता है। वहाँ से यह मशीन बच्चे से 'बात' कर सकती है, अर्थात् उस तक कुछ लहरें छोड़ती है जिनसे बच्चे पर प्रतिक्रिया होती है। ऐसी प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण करके उक्त सब बातें जानी जा सकती हैं।

विश्व का सबसे छोटा रेडियो सेट

टोकियो—जापान की एक इलेक्ट्रोनिक कम्पनी ने एक ऐसा रेडियो बनाया है जो घड़ी की भांति कलाई पर बांधा जा सकता है।

४८ गुना ४६ गुना १८ मिलीमीटर का यह रेडियो निकल काडियम बैटरियों पर चलता है जिन्हें घंटे में चार्ज किया जा सकता है। एक बार चार्ज की हुई बैटरी ८ घंटे तक रेडियो को चला सकती है।

निर्माता कम्पनी के अनुसार इतना छोटा रेडियो संसार में पहली बार बना है।

वेदों की महत्ता—

विदेशी विद्वानों के विचार

सृष्टि के प्रारम्भ में ईश्वर ने मनुष्य के कल्याण के लिये जो ज्ञान दिया उसे वेद कहते हैं। वेद सब सत्य विद्याओं के पुस्तक हैं। विद्वान् लोग इसे संसार के प्राचीनतम धर्म ग्रन्थ मानते हैं। वेदों का पठन-पाठन जब तक जारी रहा आर्यों का चक्रवर्ती राज्य संसार में था। परन्तु महाभारत के युद्ध के बाद यह क्रम ज्यों-ज्यों छूटता गया अवनति और पतन बढ़ता गया। वेदों की महत्ता पर विद्वानों के कुछ विचार यहाँ पाठकों की जानकारी के लिये उद्धृत किये जाते हैं:—

(१) संसार में मानुषी उच्चता को उच्चतम बनाने वाला कोई अन्य ऐसा साहित्य नहीं है जैसा कि वेदों और उपनिषदों के स्वाध्याय ने मेरी आत्मा को शान्ति प्रदान की है।

—शोपन हावर

(२) सबसे निकट काल के ऐतिहासिक अनुसंधान और पुराने अहदनामा को देखने से हम अब बिना भय के कह सकते हैं कि ऋग्वेद केवल आर्यों की नहीं किन्तु समस्त संसार की प्राचीनतम पुस्तक है।

—मि० मौरिस फिलिप

(३) केवल वेद ही है जो मनुष्य मात्र की उन्नति के लिये दिव्य ज्योति स्तम्भ का काम देते हैं।

—विशप हेरोन

(४) सूर्य अतिरिक्त विश्व दृष्टि में ही इस अनुपम बुद्धिमत्ता पूर्ण ज्ञान का प्रकाश किया जा सकता है, जो वेदों में छिपा हुआ है।

—मैटर लिंक (नोबुल पुरस्कार विजेता)

(५) वेदों से जो उद्धरण मैंने पढ़े हैं वे मुझ पर दिव्य प्रकाश पुंज की ज्योति के समान गिरते हैं जो सरल और सार्वभौम हैं। उनमें ईश्वर विषयक विचार युक्ति युक्त हैं।

—थोरियो

(६) वैदिक धर्म एक ही ईश्वर का स्वीकार करता है, यह शुद्ध वैज्ञानिक धर्म है जहाँ धर्म और विज्ञान हाथ में हाथ मिलाकर चलते हैं। इसके सिद्धान्त विज्ञान और तत्त्वज्ञान पर आश्रित हैं।

—मि० ब्राउन

(७) हम वेदों को भी खुदा की तरफ से मानते हैं। हमारा दृढ़ विश्वास है कि वेद इन्सान को इकतरा में यह कुव्वत (शक्ति) नहीं कि वह करोड़ों लोगों को अपनी ओर खींच सके।

—मिर्जा साहिब कादियानी कृत 'पैगामसुलह' पृष्ठ ११

संकलनकर्ता—श्री अनन्तलाल 'आर्य' रांची

भाव एकांकी—

कर्मवीर

(कर्मशीलता ही जीवन का आधार है। सूखा, दुर्भिक्ष और महावृष्टि कर्मशीलता के सम्मुख परास्त हो उठते हैं। वेदानुयायी तो विज्ञान और पुरुषार्थ से "निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु" को सिद्ध करता है। आज मानवी जीवन मे ब्रह्मचर्य हीनता से जो रस सूख गया है, शक्ति हीनता से इन्द्रियों में जो दुर्भिक्ष व्याप्त हो गया है और विकार वासनाओं की जो अति वृष्टि हो रही है उसे वही कर्मशील जीवन मे दूर भगा सकता है। जो वेद के शब्दों में 'ओम् क्रतो स्मर क्लिबे स्मर कृत स्मर' को क्रियात्मक रूप दे। यह भाव एकांकी ऐसी ही दृढ़ कर्मशीलता की प्रेरणा दे रहा है—

—सम्पादक]

★

पात्र

जीवन—सुन्दर, हृष्ट-पुष्ट, गौरवर्णीय युवक।

सूखा—लम्बा, दुबला-पतला, अधेड़।

दुर्भिक्ष—काला, भीमकाय, बेडौल व्यक्ति।

महावृष्टि—षोडसी, सुन्दरी बाला।

(पर्दा खुलता है जीवन अपनी प्रयोगशाला में व्यस्थ है—)

(सूखा अट्टहास करता हुआ द्वार से प्रवेश करता है)

सूखा—मैं आ रहा हूं बन्धु। मैं आ रहा हूं।

जीवन—तुम कौन हो?

सूखा—मुझे नहीं पहचाना? मैं चिरकाल से अभी तक प्यासा भटक रहा हूं। मेरी प्यास बुझाओ—मैं प्यासा हूं।

जीवन—नदी निर्झरों के प्रदेश मे अभाव नहीं है। दक्षिण मे स्थान-स्थान पर सरोवर तथा ब्रह्मपुत्र जैसी असख्य नदियो के ... प्यासे नहीं रह पाओगे।

सूखा—मैं जहां जा... मुझे देखते ही बड़े-बड़े जलाशय सूख जाते हैं। मैं सूखा हू सूखा। आज तक मेरी प्यास कोई भी शात नहीं कर पाया है।

जीवन—तुम्हारा नाम सूखा है। तुम अपनी प्यास के बहाने हरी भरी फुलवारी वीरान कर देते हो और लहराती हुई जलधाराओ को निचोड़ देते हो?

सूखा—मैं वही सूखा आज तुम्हारे उपवन मे आया हू, मेरी प्यास ...

जीवन—मैं भागीरथ का वंशज जीवन हूं। अपने कर्मों के बल द्वारा आदिकाल से अब तक तुम्हारा मुकाबला करता आया हू। आज भी मैं तुम्हारी चुनौती का मुकाबला करने को प्रस्तुत हू।

सूखा—मुझे आज तक कोई नहीं हरा पाया, मैं जहां भी जाता हू, मृत्यु ताडव करने लगती है और योगिनियों के खाली खप्पर रुधिर से लबालब भर जाते हैं। मेरे आते ही हरियाली-खुशहाली अदृश्य हो जाती है।

जीवन—तुम मेरे मधुबन मे अपनी विनाश लीला न कर सकोगे? मेरे पुरुषार्थ का महारथी बड़े-बड़े बांधों से, नलकूपों, जलकूपों, नहर, नदियों के जल मैं तुम्हें डुबो देगा।

सूखा—ऐसे-वैसे दम्भ से तुम मुझे डराना चाहते हो? मैं सूखा अजर-अमर हूं, मुझे कोई नहीं मिटा सकता।

जीवन—जीवन कर्म मे विश्वास रखता है। सूखा महोदय, कोरा मध्यवादी समझ कर धोखा न खा जाना।

सूखा—तू कल का छोकरा मुझे भयभीत करना चाहता है। जो इस स्थान को छोड़कर भाग जा। कहीं ऐसा न हो कि मेरी क्रोधाग्नि तुझे भस्म करदे।

जीवन—जीवन को आज तक कौन पराजित कर पाया है? तुम जैसे अनेक बड़े-बड़े ... तबाही के उद्देश्य से आते हैं और इन भुजाओं के पराक्रम के बल से नत मस्तक होकर लौट जाते हैं। आज तुम मेरे नन्दन वन को पददलित करने आये हो? सावधान सूखा जीवन का प्रहरी सजग है।

(नेपथ्य से बादलों की गड़गड़ाहट के साथ भयंकर बरसात होने की ध्वनि आती है। बिजली की चमक-झंझा के झकोरे रह-रह कर द्वार पर थाप देते हैं।)

(जल मे सराबोर होकर मथर गति से महावृष्टि का प्रवेश)

महावृष्टि—मैं आ गई हू, जीवन। मैं आ गई हू।

जीवन—तुम कौन हो? आज से पहले तुम्हे कभी देखने का अवसर प्राप्त नहीं हुआ।

महावृष्टि—मुझे नहीं पहचाना? मैं महावृष्टि हू। तुम्हारा खुला हुआ द्वार देखा तो चली आयी। इस सुन्दर स्थान को देखकर कुछ दिन यहां रहने की इच्छा हो रही है। क्या तुम मुझे आश्रय दोगे?

जीवन—जीवन के इस विशाल हृदयांगन में तुम्हारा स्वागत है देवी, परन्तु तुम्हारी इस परम कृपा का प्रयोजन?

महावृष्टि—तुम्हारा सुरम्य प्रदेश देखकर मैं अपने को सयत न कर सकी जीवन। अनायास ही मेरे पांव मुझे यहां तक खींच लाये।

जीवन—... तुम्हारा उद्देश्य अस्पष्ट है, कहिये जीवन आपकी क्या सेवा करे।

महावृष्टि—तुम कुछ दिन के लिए अपना कानन छोड़कर, सुन्दर प्रदेश मे देशाटन के लिये चले जाओ—तब तक मैं तुम्हारे स्वर्ग के मंच पर आखेट करके अपनी पिपासा शान्त कर सकू।

जीवन—तुम निरीह प्राणियों की बलि मांगने मेरे पास आई हो? तुम्हारी यह भयंकर मनोकामना इस स्थान पर पूर्ण होना असम्भव है।

महावृष्टि—तुम मुझे बल प्रयोग करने के लिये मजबूर न करो जीवन।

जीवन—दिन के प्रांगण मे तुम्हारी विनाश की प्रेमलीला न हो सकेगी महावृष्टि? इतिहास साक्षी है कि जब भी अति वृष्टि, ओले, बाढ़ का प्रकोप हुआ तब मेरे विशाल विज्ञान के जादू से इन दुर्दैवी आपत्तियों को ... के पिंजर मे बन्द कर दिया जाता रहा है।

महावृष्टि—मिथ्या अहंकार के अन्धविश्वास के कारण तुम मेरे अस्तित्व से बेखबर हो जीवन? मैं चाहूं तो चुटकी बजाते ही तुम्हारा सम्पूर्ण वैभव अपने क्रोध से सिंधु में डुबा सकती हूं।

जीवन—तुम्हें ठीक राह पर लाने के लिए मुझे वैज्ञानिक शिव का तीसरा नेत्र खोलने के लिए मजबूर होना पड़ेगा। तुम्हें किसी महासिंधु की भेंट चढ़ा दी जावे। उससे पूर्व अच्छा हो यदि तुम मेरी आंखों से दूर चली जाओ। सावधान महावृष्टि! सावधान! जीवन का आधुनिक वैज्ञानिक सचेत है। (नैपथ्य से करुण चीत्कार, सियारों के रोने की ध्वनि तथा करुण विलाप क्रमशः तीव्र होता जाता है।)

दुर्भिक्ष—मैं आ गया हूं जीवन। मुझे आसन दो।

जीवन—तुम कौन हो और तुम्हारे आने का तात्पर्य क्या है?

दुर्भिक्ष—मुझे खून चाहिये, ताजा मांस चाहिये। मैं भूखा हू, भूखा जीवन, मेरी क्षुधा शान्त करो।

जीवन—जीवन की सीमाओं मे तुम मांस और खून का घृणित व्यापार न कर सकोगे आगंतुक, तुम्हारा उद्देश्य सफल नहीं होगा।

★ श्री गोपीकुमार कौशल

दुर्भिक्ष—मैं दुर्भिक्ष जहां भी गया वहां अपने आप मुझे अपना ग्रास स्वयं प्राप्त होता गया। क्या तुम इस विधान को परिवर्तित कर सकोगे?

जीवन—जीवन के हाथ तुमसे संघर्ष करने को आतुर हैं। तुम लोभी व्यक्ति हो मेरे हंसते गाते ससार को अपनी वक्र दृष्टि का शिकार न बना सकोगे?

दुर्भिक्ष—जीवन मेरे पथ मे बाधा न बनो? दुर्भिक्ष को आज तक कोई नहीं रोक पाया है, जो भी मेरे रास्ते मे रोड़ा बनता है, मैं उसका अस्तित्व सदा के लिये समाप्त कर देता हू।

जीवन—थोथी फूंक से जीवन का अजर अमर दीपक कभी नहीं बुझ सकेगा दुर्भिक्ष! जाओ शीघ्र अन्तरध्यान हो जाओ।

दुर्भिक्ष—मुझे मेरा आहार दो जीवन? नहीं तो मैं तुम्हें ही अपना आहार बना लूगा।

जीवन—जीवन का कृषक कर्मों का धनी है। विज्ञान के आधुनिक शस्त्रों से वह तुम्हारा सफाया करने के लिये कृत सकल्प है।

दुर्भिक्ष—तुम मुझे क्रोधित करके अच्छा नहीं कर रहे हो जीवन! मैं तुम्हें कच्चा खा जाऊंगा।

जीवन—जीवन तुम जैसे दुर्भिक्ष के दानवों को परास्त करना जानता है। मेरा किसान उत्पादन के आंगन मे तुम्हारा ... समाप्त करने के लिये कमर बांधकर खेतों मे खड़ा हुआ केवल मेरे आदेश की प्रतीक्षा कर रहा है

दुर्भिक्ष—हमारी बिल्ली हमीं से म्याऊं! हमारे ... के बल पर

कहानी-कुञ्ज

आर्य्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल.-६०

२० भाद्रपद १० शक १८९० भाद्रपदसु०९
(दिनांक १ सितम्बर सन् १९६८)

आर्य्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

Registered No.L. 60
पता—'आर्य्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष्य : २२९९३ तार : "आर्यमित्र

अमृत वर्षा

महर्षि दयानन्द ने कहा था-

वर्णाश्रम विषय

★

[१] मनुष्य जाति के ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र ये वर्ण कहाते हैं। ये चार भेद गुण कर्म से किये हैं। वेद रीति से इनके दो भेद हैं। एक आर्य्य और दूसरा दस्यु और इन्हीं दोनों के विरोध को देवासुर संग्राम कहते हैं।

[२] ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास, ये चार आश्रम कहाते हैं। ये चारों आश्रम वेदों और युक्तियों से सिद्ध हैं। सब मनुष्यों को अपनी आयु का प्रथम भाग विद्या पढ़ने में व्यतीत करना चाहिये और पूर्ण विद्या को पढ़कर उससे संसार की उन्नति करने के लिए गृहाश्रम भी अवश्य करे। विद्या और संसार के उपकार के लिये एकान्त में बैठकर सब जगत् का अधिष्ठाता जो ईश्वर है उसका ज्ञान अच्छी प्रकार करे और मनुष्यों को सब व्यवहारों का उपदेश करे। फिर उसके सब सन्देहों का छेदन और सत्य बातों के निश्चय कराने के लिये सन्यास आश्रम भी अवश्य ग्रहण करे क्योंकि इसके बिना सम्पूर्ण पक्षपात छूटना बहुत कठिन है।

हे आर्य युवक ! कुछ तुम्हीं करो

★

इस आर्य भूमि के आंगन में, पग-पग अंगारे दहक रहे।
कुछ पता नहीं चलता हमको, क्यों अपने पथ से बहक रहे।

सत्यों की चलती सत्ता नहीं, वेदों का मिलता पता नहीं;
दरपन दिखलाते फिरते हैं, सब कहते 'मेरी खता नहीं';

इस भ्रम की भूल भुलैया में, सिर पटक रहे, हम भटक रहे।
दिखलाई देता ओ३म् नहीं, अपने से लगते रोम नहीं;
रवि की ज्वाला तक छिपी हुई, अब सभा हमारा सोम नहीं;

कस रहा बाज पग-पग ऐसा, बन्दी पंछी से चहक रहे।
ऋषि दयानन्द के आर्य कहाँ, हम करते उनका कार्य कहाँ?
प्रतिपल बहकाते रहते हैं, हमको ही नित्य अनार्य

हम सत के पथ को भूल गये, लपटें बनकर नित लहक रहे।
धर्मों का परिवर्तन होता, अन्या[illegible] [illegible]न होता;
है कौन, विकारों से अपने इस प[illegible] [illegible]न को धोता;

कल क्या होगा, यह सोच सोच, चिन्ता के आंसू चमक रहे।
हे आर्ययुवक कुछ तुम्हीं करो, हर धमनी में नव रक्त भरो;
अन्यायी से, दुष्ट धर्मों से, हे वीर आर्य तुम नहीं डरो;

भाई ! जब अपनी सीमा पर, दुश्मन के गोले भड़क रहे—
तुम स्वर्ण स्वार्थ की चादर में, क्यों गीदड़ बनकर दुबक रहे ?

—सरस्वतीकुमार 'दीपक'

जीने वाले जीवन, जरा कान खोलकर सुन दुर्भिक्ष ने बड़े-बड़े साम्राज्यों को धूल में मिला दिया है।

जीवन—साम्राज्य और जीवन के गणराज्य को समान न समझो दुर्भिक्ष ! वह देखो सामने जीवन की लम्बी-लम्बी कतारें जो आधुनिकतम हथियारों से लैस होकर तुमसे भिड़ने के लिये व्यग्र हो रही हैं।

दुर्भिक्ष—मुझे भयभीत करने के लिए यह स्वांग मत रचाओ। मैं तुम्हारे इस स्वर्ग लोक को श्मशान बनाकर ही लौटूंगा।

जीवन—बस ! दुर्भिक्ष महोदय बस! तुम बड़ी देर से हमारी बस्तियों में नर-संहार कर रहे हो। सावधान ! जीवन के सजग प्रहरियो सावधान ! जीवन के साहसी मजदूरो, जीवन के अजय किसानों और जीवन के फौलादी जवानों आओ—सूखा, महावृष्टि और दुर्भिक्षरूपी दिवंले दानवों के दल को कुचल दो।

सूखा—युगों की अतृप्त प्यास बुझाओ जीवन मैं प्यासा हूं

महावृष्टि—मेरा यौवन बरसाने के लिये बेताब हो रहा है। जीवन मेरे अरमानों की उठती हुई बाढ़ को अपनी धरती पर ले लो।

दुर्भिक्ष—दुर्भिक्ष की क्षुधा शान्त करो जीवन ! नहीं तो मैं तुम्हे ही डकार जाऊँगा।

जीवन—मेरा कर्मठ श्रमिक खून पसीना बहा र निर्माण की अश्वमेध-कलों के प्राण फूंक रहा है। जीवन का धनी मेरा किसान आधुनिकतम साधनों से कई गुना अधिक अन्न उपजा रहा है। मेरा अपराजित जवान राकेटों जैसी गति से जल, थल और नभ की सीमाओं की रखवाली कर रहा है। मेरे कर्मवीरों जीवन तुम्हें आदेश देता है कि सूखन की धरती पर अंगारे बरसाने वालों को सीमा से बाहर कर दो।

(नेपथ्य से नगाड़े की ध्वनि धीरे-धीरे तेज होकर लुप्त हो जाती है)

सूखा—यह क्या हो गया जीवन ! मेरा शरीर टूटा जा रहा है। जीवन मुझे माफ कर दो, मैं मर जाऊँगा जीवन ! मुझे बचाओ।

जीवन—तुम लोगों ने बहुत नर-संहार किया है, इसलिए उसकी सजा तुम्हे जरूर मिलनी चाहिए।

महावृष्टि—मुझे बचाओ जीवन ! मेरा अंग अंग जल रहा है। मेरे रोम-रोम से लपटों की ज्वालायें फूट रही हैं, मुझे इस दावानल से बचाओ।

दुर्भिक्ष—मेरा कंठ अवरुद्ध हो रहा है, जीवन ! मेरी सांस रुकी जा रही है। मै हाथ जोड़ कर प्रार्थना करता हु जीवन ! मुझे क्षमा कर दो। मैं कसम खाता हू कि फिर कभी भूल कर भी यहां नहीं आऊँगा। बचाओ जीवन ! मुझे बचाओ।

तीनों—क्षमा करो जीवन ! हमें क्षमा करो।

जीवन—जीवन सदैव की भांति आज फिर तुम्हें प्राणदान दे रहा है, ध्यान रहे फिर कभी भूलकर भी मेरी सीमाओं मे आने का दुःसाहस न करना। जाओ आंखों से दूर हो जाओ। तुमने इतिहास के पृष्ठ पर जो कालिख पोती है, उसे खून-पसीने की गंगा यमुना के अद्भुत संगम से, जीवन का कर्मवीर जन धो रहा है। भूपता मत जीवन का कर्मवीर अजर-अमर है।

(दुर्भिक्ष, सूखा महावृष्टि का प्रस्थान)
(पर्दा गिरता है)

●

उत्तरप्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के लिये सभा आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से मुद्रक प्रकाशक द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित

लखनऊ—रविवार भाद्रपद १७ शक १८९०, आश्विन कृ० २ वि० सं० २०२५, दिनांक ८ सितम्बर १९६८ ई०

परमेश्वर की अमृत वाणी

वायुरनिलममृतमथेदं
भस्मान्तं शरीरम्।
ओ३म् क्रतो स्मर क्लिबे
स्मर कृतं स्मर।
(यजु० ४०।१५)

(शरीरों में) आने जाने वाला अनिल = जीव अमर है (परन्तु) यह शरीर भस्म पर्यन्त है (इसलिये अन्त समय में) हे (क्रतः) जीव ओ३म् का स्मरण कर, निर्बलता दूर करने के लिये स्मरण कर और अपने किये हुए का स्मरण कर।

★

इस अंक में पढ़िए!

१—अध्यात्म-सुधा २
२—सम्पादकीय ३
३—सभा तथा साप सूचनायें ४
४—श्री गङ्गाप्रसाद उपाध्याय ५-८
५—पाप का परिणाम क्या? ९
६—वैदिक विवाहों में सप्तपदी १०
७—साहित्य समीक्षण, संस्था परिचय, सम्पादक के पत्र ११
८—देश विदेश १२
१०—आर्यजगत् १३
१२—कहानी-कुञ्ज १५
१३—अमृत वर्षा १६

★

वार्षिक मूल्य १०)
छमाही मूल्य ६)
विदेश में १ पौ०
एक प्रति २५ पै०

आर्यसमाज के सुविख्यात विद्वान्—

श्री पं. गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय का देहावसान!

आर्यसमाज का ज्ञान-भानु अस्त हो गया!!

समस्त आर्यजगत् में शोक की लहर

अत्यन्त दुःख के साथ पाठकों को यह शोक समाचार दिया जाता है कि आर्यसमाज के सुविख्यात विद्वान्, दार्शनिक, विचारक महान् लेखक श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय एम. ए. प्रयाग का २९ अगस्त को प्रातःकाल ९॥ बजे उनके निवास-स्थान पर ८७ वर्ष की आयु में, देहावसान हो गया।

आपका अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यनुसार संगम के तट पर उसी दिन सायंकाल को किया गया। आपकी शव यात्रा में प्रयाग के अनेक शिक्षा शास्त्री तथा गण्यमान सज्जन सम्मिलित हुये। पंडित जी ने अपने जीवन में सैकड़ों पुस्तकें लिखीं। आर्यसमाज के लिये वह उच्चकोटि का वैदिक साहित्य प्रदान किया, जिससे आर्य जन सदैव अपने जीवन को उन्नत बनाते रहेंगे।

हम आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश तथा आर्यमित्र परिवार की ओर से श्री उपाध्याय जी के शिक्षित और शोक संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक शोक सहानुभूति प्रकट करते हैं, और परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं, कि वह दिवंगत आत्मा को शान्ति तथा श्री उपाध्याय जी के परिवार और सारे आर्यजगत् को इस महान् दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

वर्ष ७०

सम्पादक—
—क्षेमचन्द्र शर्मा
सभा मन्त्री

अङ्क ३१

परमेश्वर कैसा है, कहां है ?

अध्यात्म-सुधा

अनेजदेकं मनसो जवीयो,
नैनद्देवा आप्नुवन् पूर्वमर्षत्।
तद्धावतोऽन्यानत्येति तिष्ठत्-
तस्मिन्नपो मातरिश्वा दधाति।

वह ब्रह्म (अनेजत्) अचल, एक रस (एकम्) एक (मनसो जवीयः) मन से अधिक वेग वाला है, क्योंकि सब जगह (पूर्वम्) पहले से (अर्षत्) पहुंचा हुआ है। (एनत्) उस ब्रह्म को (देवाः) इन्द्रियां (न आप्नुवन्) नहीं प्राप्त होती हैं अर्थात् वह इन्द्रियों से, उन (इन्द्रियों) का विषय न होने के कारण प्राप्त नहीं होता। (तत्) वह (तिष्ठत्) अचल होने पर भी (धावतः) दौड़ते हुए (अन्यान्) दूसरों को (अत्येति) उल्लंघन किये हुये है, (तस्मिन्) उस ब्रह्म के भीतर (मातरिश्वा) वायु (अपः) जलों को मेघादि के रूप में (दधाति) धारण करता है।

उपनिषद् का यह मन्त्र ब्रह्म विद्या में प्रवेश करने वाले के लिये मननीय मन्त्र है। ब्रह्म का वर्णन इस विद्या में किया जाता है, वह ब्रह्म विद्या है। ब्रह्म का वर्णन करने में वह निराकार है। ब्रह्म का वर्णन करना उसके लिये उसके गुणों का वर्णन करना होगा। ब्रह्म के गुण भी तो बहुत ही अधिक हैं। ऐसी दशा में उसके समस्त गुणों का कैसे उल्लेख और वर्णन किया जा सकता है? अर्थात् गुणों का उल्लेख आदि असम्भव है तो ब्रह्म विद्या का अधिकारी कैसे ब्रह्म को जाने? हमारा विचार है कि ब्रह्म विद्या को जानने का मतलब उसके गुणों को जानकर उसका वज़न या परिमाण या उसकी मात्रा बतला देना भी नहीं है, उसका मतलब है अपने आपको उसके गुणों से गुणान्वित कर ब्रह्म को प्राप्त कर लेना। महात्मा नारायण स्वामी जी ने इसीलिए लिखा है "यदि ब्रह्म के केवल दस गुणों के जानने से हमारे उद्देश्य की पूर्ति हो सकती है, तो ग्यारहवें गुण के जानने के लिये श्रम करना अनावश्यक है। इसीलिये उपनिषदों में ब्रह्म के केवल उन्हीं गुणों का [illegible] लेख किया गया है, जो मनुष्य को उन्नति पथ पर पहुंचा देने के लिये पर्याप्त है।"

जब यदि हमें उसके सभी गुणों की आवश्यकता न होकर कुछ ही गुणों को जानने से काम चलता है तो वह गुण कौन से हैं? श्री पूज्य नारायण स्वामी जी महाराज ने 'ईशोपनिषद्' नामक अपनी पुस्तक में लिखा है "सबसे पहली शिक्षा ब्रह्म के विषय में यह है कि उसे व्यक्ति रूप में न मानकर समष्टि रूप में माना जाय, अर्थात् वह विभु है, परिच्छिन्न नहीं; सर्वदेशी है, एक नहीं। इस बात को उपनिषद् ने इतना अधिक आवश्यक समझा है कि इस बात को अनेक रूपों में एक ही उपनिषद् में और एक ही मन्त्र में भी उल्लेख किया है। इस मन्त्र में उसे 'अनेजत्' (एकरस) कहा है। एकरस सर्वत्र सर्व देशी ब्रह्म ही हो सकता है।

यद्यपि परमेश्वर निराकार, अदृश्य, निर्गुण है, परन्तु प्रत्यक्ष और अनुमानादि प्रमाणों से परमेश्वर की सत्ता है ही। देखने वालों को यह परमेश्वर सर्वत्र दिखाई देगा। जरा निगाह उठाओ उसकी पताकाएं दिखाई देंगी जो उसकी ओर संकेत कर रही होंगी।

फूल की पखुड़ियों में तितली के पंखों में, परिन्दों के परों में, बादलों में, इन्द्र धनुष में, प्रभात की ऊषा में, शिल्पकला का चमत्कार है। सूर्य का उष्ण प्रकाश और चन्द्र की शीतल चांदनी उसी वैज्ञानिक का आविष्कार है। उस ज्योतिर्मय भगवान की ज्योति से ही यह विश्व प्रकाशित हो रहा है। सूर्य के प्रकाश में, चन्द्र की चांदनी में, तारों की टिमटिमाती ज्योति में, विद्युत की चमक में, अग्नि के तेज में, प्रभात की लाल ऊषा में, संध्या की रंगीली छटा में, उसी ज्योति स्वरूप की ज्योति जगमगाती रही है। इस सम्पूर्ण विश्व में वह प्रभु ही प्रभु विद्यमान है। सभी रश्मियां उसी की खोज में हैं। तभी तो 'प्रसाद जी' ने कहा है

महानील इस परम व्योम में
अन्तरिक्ष में ज्योतिर्मान।
ग्रह नक्षत्र और विद्युत कण
किसका करते थे सन्धान।

संध्या की रंगबिरंगी लाली में वही चित्रकार बैठा अपनी तूलिका से किस्म किस्म के रंग भरता दिखाई दे रहा है। पवन के झकोरों में झरनों की झरझर में, बादलों की गर्जन में, पक्षियों के कलरव में, [illegible] की झंकार में और नदियों के कलकल में वही कलाकार अपनी संगीत की सुरीली तान छेड़ रहा है। पृथ्वी, सूर्य, चन्द्र, सितारे तथा ग्रह उपग्रह सब अपने अपने मार्ग पर चक्कर काट रहे हैं। कौन-सा वह नियन्ता है जो अणु अणु में बैठकर इस सम्पूर्ण विश्व को पूर्ण नियम के साथ क्षण-क्षण में गति दे रहा है। आसमान में टिमटिमाते तारों की ओर माला उसी का स्वागत कर रही है। वृक्षों की मधुर गुह डालियां उसी की महिमा जता रही हैं। ऊंचे खड़े पहाड़ों की हिमाच्छन्न गगन चुम्बी चोटियां किसकी ऊंचाई पाने के लिये उछल रही हैं। अगाध समुद्र की अचिन्तनीय गहराई उसी का गाम्भीर्य प्रकट कर रही है। पत्ते पत्ते की विचित्र रचना में उसी शिल्पी की

अन्त में वे कहते हैं--
हे विराट! हे विश्वदेव! तुम
कुछ हो ऐसा होता भान।

अब मनुष्य इस प्रभु को प्राप्त तो करना चाहते हैं परन्तु सर्व देशी इस परमेश्वर की प्राप्ति के लिये सर्व व्यापक प्रभु को उपलब्ध करने के लिये इधर उधर भटक कर परेशान होते हैं। उपनिषद के इस मन्त्र का तात्पर्य यह है कि जब परमात्मा सर्वत्र विद्यमान है तो वह मानव के अन्त करण में मन में भी विद्यमान है, उसकी सत्ता उसकी आत्मा में भी रहती है अतः उसे आत्मोन्नति अर्थात आत्मा को ब्रह्म के गुणों से विभूषित करने में यत्न किया जा सकता है। इसीलिये उसे आत्मा में खोजना चाहिये। गुरुनानक ने कहा है--

काहे रे बन खोजन जाई,
सर्व निवासी सदा अलेपा,
तोही संग समाई
पुष्प मध्य ज्यों बास बसत है,
मुकुर मध्य ज्यों छाई
तैसे ही हरि बसें निरन्तर,
घट ही खोजो भाई।

और जब परमेश्वर के घट-घट व्यापक रूप को हम जान लेंगे तो उस समय अपना और पराया का भेद मिट जायगा शत्रु और मित्र की समस्या हल हो जाएगी। सन्त कवि हरिदास कहते हैं--

अब हौं कासों बैर करौं
कहत पुकारि प्रभु निज मुख से
घट-घट हौं बिहरौं
कहो अब मैं किससे बैर करूं?

जबकि मेरे प्रभु खुद पुकार-पुकार कर कह रहे हैं कि "घट-घट में मैं ही विहार कर रहा हूं।" गीता ने इसी बात को दूसरे रूप में इस प्रकार कहा है सर्वभूतस्थ मात्मानं सर्व भूतानि चात्मनि' [गी० ६. २९] सारे प्राणी मुझमें और मैं सब में हूं। ईशोपनिषद् में इसका उल्लेख इस प्रकार है--

--सुरेशचन्द्र वेदालंकार
एम. ए. एल. टी. गोरखपुर

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्नेवानुपश्यति।
सर्व भूतेषु चात्मानं ततो न विजुगुप्सते॥

अर्थात् जो व्यक्ति सब प्राणियों को अपने में समझता है और अपने को सब में वह किसी से घृणा नहीं कर सकता। जब हम परमेश्वर को सर्व व्यापक समझेंगे उस समय अपराधों का दण्ड पाने से बचने की हमारी प्रवृत्ति का अन्त हो जाएगा और दादू दयाल के शब्दों में हम कह सकेंगे।

गुनहगार अपराधी तेरे
भाजि कहां हम जाहिं
'दादू' देखा सोधि सब
तुम बिन कहिं न समाहिं।

तेरे गुनहगार हम भाग कर आखिर जाएं कहां? छिपने के तो सारे ठौर खोज डाले सरकार! पर जहां भी गये वहीं तुझे पाया वे आगे लिखते हैं--

'दादू' देखो दयाल को,
सकल रह्या भरिपूर,
रोम रोम में रमि रह्या,
तू जिनि जाणें दूर।

अपने दयाल मालिक को मैं हर जगह मौजूद पाता हूं, मेरा प्रभु मेरे रोम रोम में रम रहा है। मत समझ कि मेरा स्वामी मुझसे दूर है।

कबीरदास जी प्रभु की व्यापकता का अनुभव करते हुये कहते हैं--

पावक रूपी सांईयां,
सब घट रह्या समाइ
चित चकमक लागे नहिं,
ताते बुझ-बुझ जाइ।

[शेष पृष्ठ १० पर]

ओ३म् यत्परममवमं यच्च मध्यमं प्रजापतिः ससृजे विश्वरूपम् ।
कियता स्कम्भः प्र विवेश तत्र यन्न प्राविशत् कियत्तद्बभूव ॥

—अथर्व० काण्ड १० सूक्त ७ मन्त्र ८

भावार्थ—जो उत्तम, मध्यम और नीच स्वभाव से तीन प्रकार का जगत् है, उस सबको परमेश्वर ने ही रचा है। उसने इस जगत् मे नाना प्रकार की रचना की है और एक वही इस रचना को यथावत् जानता है। और इस जगत् में जो कोई विद्वान् होते हैं, वे भी कुछ कुछ परमेश्वर की रचना के गुणों को जानते हैं। वह परमेश्वर सबको रचता है और आप रचना मे कभी नहीं आता।

-महर्षि दयानन्द सरस्वती

'आर्यमित्र' को महात्मा आनन्दस्वामी जी सरस्वती का शुभ आशीर्वाद

पूज्य महात्मा आनन्दस्वामी जी सरस्वती आजकल अफ्रीका में वेदप्रचार के निमित्त गये हुए है। वे भारत से २१ जुलाई १९६८ को वायुयान द्वारा अफ्रीका गये और ५ अगस्त ६८ तक उन्होंने नेरोबी मे वेद कथा की। अब वे टांगानियां के नगरों दारेसलाम, जंजीबार, टांगा इत्यादि मे वेद प्रचार कर रहे हैं। पूज्य स्वामी जी के साथ नवयुवक विद्वान् प्रो० दिलीपजी वेदालङ्कार एम०ए० वैदिक मिशनरी भी प्रचार कार्य कर रहे हैं।

पूज्य स्वामी जी ने दारेसलाम से आर्यमित्र के सफल सम्पादन के लिए निम्नलिखित शब्दों मे अपना आशीर्वाद दिया है—

"मेरे प्यारे पण्डित विक्रमादित्य जी,

सप्रेम नमस्ते !

'आर्यमित्र का स्वाध्याय अङ्क प्राप्त हुआ। ऋग्वेद के पाप विमोचन सूक्त की जो सुन्दर व्याख्या आपने की है, इस पर आपको बधाई देता हूं। पाप क्या है और पुण्य क्या है ! इस पर भी भलीभांति प्रकाश डाला गया है। बीच-बीच मे जो भक्तिपूर्ण गीत लिखे गये हैं उनसे स्वाध्याय अङ्क की शोभा द्विगुणित हो गई है।

आपकी व्याख्या एवं आपके गीतों को पढ़कर प्रतीत होता है कि भगवान् ने आपको भक्ति से ओतप्रोत हृदय दे रखा है। और आज आर्यजगत् में जिस भक्तिभाव और अध्यात्मवाद की कमी दिखाई दे रही है उसे दूर करने के लिए आप दृढ़ प्रतिज्ञ एवं कृत सकल्प हैं।

भगवान् आपको अधिक भक्ति, शक्ति प्रदान करता रहे।

सेवक—
आनन्द स्वामी सरस्वती

लखनऊ रविवार श्रावण १७ शक १८८९, आश्विन कृ० पक्ष २ वि० २०२५
८ सितम्बर सन् १९६८ ई०, दयानन्दाब्द १४३, सृष्टि संवत् १,९७,२९,४९,०६८

वायु अनिलम् अमृतम् !

आर्य जगत् अभी पूज्य प० दामोदर सातवलेकर जी के निधन के भीषण आघात को सहन भी न कर पाया था कि उसे एक अत्यन्त भीषण प्रहार पूज्य पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय के देहावसान के रूप में और प्राप्त हुआ। समस्त आर्य जगत् पुनः शोक में डूब गया। शोक सभायें की जाने लगी—प्रतिनिधि सभाओं के कार्यालय बन्द कर दिए गये शोक प्रस्ताव स्वीकृत हुए, प्रभु से दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिये प्रार्थनायें हुई, मौन धारण किये गये…

इस संसार मे परमात्मा का अपना एक विधान है और वह न्याय कर्त्ता, कर्मफल प्रदाता और सर्वज्ञ जो कुछ करता है, भद्र ही करता है। अपने स्वार्थ मे रत होने के कारण हम अशक्त भले ही स्वार्थ मे विघ्न पड़ने के कारण, ऐसा विचार करें कि इन महान् विद्वानों का हमारे बीच से उठ जाना ठीक नहीं हुआ और इनके निधन से वेद प्रचार के कार्य को अतिशय क्षति पहुंची है परन्तु स्वाध्यायशील मानव इस बात का अनुभव बड़ी सुगमता से कर सकते हैं कि ईश्वरीय नियमों के साथ प्रकृति के भी अपने नियम हैं जिनमें कभी कोई परिवर्तन नहीं होता।

इस सृष्टि में पदार्थों की उत्पत्ति होती है, फिर विकास होता है, पुनः ह्रास होने लगता है, इधर अन्त होता है, उधर उत्पत्ति होती है। पेड़ पर पुराने पत्ते टूट कर गिर पड़ते हैं और नये पत्ते आ जाते हैं। ज्ञान मानी प्रत्येक भौतिक पदार्थ के भीतर झांककर मर्म को आत्मसात करते हैं जैसे सन्त कबीर ने इन टूटे पत्तों को देखकर कहा था—

"टूटा पत्ता डाल से,
पवन दिया उड़ाए।
अब के बिछुड़े कब मिलें,
दूर पड़ेंगे जाए।

परिवर्तनशील प्रकृति मे परिवर्तन न हो, यह कैसे सम्भव हो सकता है। इसलिये पंच भूतों से बने मानवी देहों में भी क्षण-क्षण परिवर्तन होता रहता है। 'भस्मान्तम् शरीरम्' शरीर को एक दिन अवश्य भस्म होना है किन्तु आत्मा तो अजर अमर है। एक शरीर छोड़ने के पश्चात् कर्मानुसार दूसरी देह रूपी नगरी अवश्य ही मिलेगी। 'अनृतं निहितं पात्रे न एतत् पश्चात् पुनराविशान्ति' जितना और जैसा जैसा पकाया है, वैसा वैसा और उतना ही पक कर हमारे सम्मुख आयेगा।

कर्म मीमांसा का ज्ञान रखने वाले महानुभाव इस बात को भली भांति जानते हैं कि जैसी करनी वैसी भरनी, भला करो या बुरा करो।" इस आधार पर हम जब दिवंगत आत्माओं के उज्ज्वल कर्मों पर दृष्टिपात करते हैं तो हमें प्रतीत होता है कि न्यायकारी परमात्मा इन महान् आत्माओं को उन के किये हुये पवित्र कर्मों के कारण अवश्य सद्गति प्रदान करेगा। या तो ये दिव्य आत्मायें चतुर्युगी तक मोक्ष का आनन्द लेंगी अथवा जिन उत्तम वेद संस्कारों से ये आत्मायें विभूषित हैं, उनके आधार पर पुनः देवयोनि में आकर वेद प्रचार के कार्य में रत होंगी, भले ही वह भारत की पुण्य भूमि हो, इस सौर मण्डल का कोई अन्यग्रह हो अथवा इस सौर मण्डल से बाहर किसी अन्य सौर मंडल को पावन करती हो। परमेश्वर अपने राज्य की सुव्यवस्था भली भांति करता है। इन वेदज्ञ आत्माओं को किस धरती पर अवतरित करके उसे अपने दिव्य ज्ञान का प्रसार करना है, इस ईश्वरीय व्यवस्था को वे ही भली भांति समझ सकते हैं जिन्हें उस पर आस्था हो, और जो उसके समीपस्थ होने का सौभाग्य रखते हों।

इस समय आर्य जगत् मे जो मौखिक व लिखित श्रद्धाञ्जलियां इन दिवंगत आत्माओं को अर्पित की जा रही हैं, उनसे हमारी व्यथा झलकती है। जिन पर हमें गौरव था उनका वियोग निस्सन्देह दुःखदायी है इसे हम अनुभव करते हैं किन्तु किसी भी दिव्य आत्मा को वास्तविक श्रद्धांजलि तो हम अपने कर्मों द्वारा ही प्रदान कर सकते हैं। जिस वेद प्रचार मे दोनों महानुभावों ने अपने जीवन का दान दिया है, उस वेद प्रचार को वेगवान बनाना ही सच्ची श्रद्धांजलि है जिसे आर्य जगत् को आज अर्पित करना चाहिये। शोक प्रस्तावों के साथ आर्य जन परस्पर कलह द्वेष वैरभाव को त्याग कर संगठन में आबद्ध होकर सिद्धान्त प्रचार में लग जाएं तो इससे बड़ी श्रद्धांजलि और क्या होगी। इन पंक्तियों को लिखने का एकमात्र भाव यह है कि हम तनिक अज्ञान के अन्धकार से निकलकर ज्ञान के प्रकाश मे आए वेद ने सत्य का साक्षात्कार कराते हुये कहा था—

"इमा मना नाम वीधीया,
येन यन्ति परावतम्।
आरोह तमसो ज्योतिः
रे हया ते हस्तो रभामहे ॥'

अर्थात् जो हमसे बिछुड़ गये हैं उनको याद करके दुःख भरी आहें भरने से अभीष्ट की सिद्धि नहीं होगी। यह तो घोर अज्ञान है। हम वास्तविकता का बोध करें—सार तत्व की खोज करें। जिन महान् आत्माओं ने सारी आयु ज्ञान की अर्चना मे व्यतीत की, अज्ञानियों को अविद्या के अन्धकार से निकाला उनके प्रति हमारी श्रद्धांजलि का स्वरूप यही हो कि हम भी ज्ञान के व्रती बनकर अज्ञान के पाश को काटें और दूसरों को अज्ञान के तिमिर से निकालने के लिये स्वयम् प्रकाश स्तम्भ बनें। चित्रों की पूजा के स्थान पर चरित्र पूजा को धारण करें और महर्षि दयानन्द के जिस अपूर्ण कार्य को पूरा करने के लिये इन दिव्य आत्माओं ने अपनी जीवन आहुति दी है, उसे पूरा करने के लिये हम भी सर्वस्व अर्पण करने को उद्यत हो जाएं।

●

स्वर्गीय श्री गंगाप्रसाद जी उपाध्याय के संस्मरण एवम् श्रद्धाञ्जलियां

(१)

पूज्य गंगाप्रसाद जी उपाध्याय के निधन के समाचार से बड़ा दुःख हुआ। उपाध्याय जी एक आदर्श स्वाध्यायशील प्रचारक, कवि, समाज सुधारक थे। उनका नाम तो विद्या सागर होना चाहिये था। मुझे इस समय दो घटनाएँ याद आ रही हैं।

(१) १९३३ में अजमेर में ऋषि दयानन्द की निर्वाण अर्द्ध शताब्दी थी। उपाध्याय जी खड़े हुए, बात कर रहे थे। एक सज्जन आये और उपाध्याय जी से पूछा कि क्या आपका जीवन चरित निकल गया। उनका आशय था कि क्या आपकी जीवनी की पुस्तक छप गई। उपाध्याय जी ने हँस कर जवाब दिया कि थोड़े दिन में निकलने वाला है। ५० साल के बाद अब यह समय आया कि उनकी जीवात्मा शरीर से पृथक हुई: उनकी कीर्ति और यश ऐसा है कि आत्मा तो सबकी अमर है लेकिन उनका नाम और काम भी अमर रहेगा। उनकी साहित्य सेवा अनुकरणीय है।

(२) दो या तीन वर्ष हुये मुझे उनके पुत्र डाक्टर सत्यप्रकाश से आगरे में मिलने पर ज्ञात हुआ कि श्री उपाध्याय जी का स्वास्थ्य कुछ पतला है। मैंने उपाध्याय जी को पत्र लिखा कि क्या हाल है। उनका उत्तर आया कि तेल तो जल चुका है, बत्ती जल रही है। अब ऐसा प्रतीत होता है कि बत्ती भी जल गई। जो बच रहे हैं उनका कर्त्तव्य है कि वे उनके अधूरे काम को पूरा करें।

—पूर्णचन्द्र एडवोकेट
पूर्व प्रधान सार्वदेशिक सभा

(२)

जिसने पहिले अपना जीवन समर्पित किया और फिर प्राण भी जिसके कण-कण में मानव मात्र के कल्याण की भावना ओत-प्रोत थी उस युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के वेद सन्देश में अनुरागी, वाणी और लेखनी का प्रकाश पुञ्ज इस लोक से तिरोहित हो गया।

पूज्य पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय के यशस्वी जीवन में ज्ञान का प्रकाश और कर्म की सुगन्धि परिपूर्ण थी। वह मूर्तिमान पुरुष, जीवन पर्यन्त, मानव मात्र को आल्हादित करता हुआ, परम पिता परमात्मा की अचल गोद का अधिकारी बन गया। काश, उसी मार्ग पर, हम भी अनुगमन कर सकते।

—विद्याधर
प्रधान
जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा कानपुर

आचार्य श्री विश्वबन्धु जी शास्त्री जो इस वर्ष सभा के मुख्य उप-प्रधान निर्वाचित हुए हैं।

विशेष सूचना

उत्तरप्रदेशस्थ समस्त आर्यसमाजों के प्रधान और मन्त्रियों को सूचित किया जाता है कि वे अपने समासदों में से निम्न प्रश्नों के उत्तर देने के लिए पते सहित नाम लिखकर भेजें-

१-दैनिक यज्ञ करने वालों के नाम
२-वैदिक संस्कार करने वालों के नाम
३-वैदिक विचार वाले विद्यालयों के अध्यापकों के नाम
४-आर्य विचार वाले एम० एल० ए० और लोक-सभा सदस्यों के नाम
५-जात-पांत तोड़कर विवाह करने वालों के नाम, आयु, योग्यता, निवासादि का पूरा-पूरा पता।
६-पास में शिथिल, निर्जीव एवं मृत समाज का पता निम्न पते पर पत्र-व्यवहार करें।

विश्वबन्धुः शास्त्री
मुख्योपप्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश
आर्यनगर भूड़ बरेली

श्री पं० किशोरीलाल जी का देहावसान !

अत्यन्त दुःख है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के माननीय मन्त्री श्री पं० प्रेमचन्द्र जी शर्मा एक्स एम.एल.सी. के पूज्य पिता श्री पं. किशोरीलाल जी शर्मा का ८० वर्ष की आयु में एक लम्बी बीमारी के पश्चात् हाथरस में ३० अगस्त को देहावसान हो गया! पण्डित जी स्वभाव के अत्यन्त सरल, कर्मनिष्ठ धार्मिक पुरुष थे।

आपका अन्त्येष्ठि संस्कार मथुरा में यमुना के तट पर पूर्ण वैदिक रीत्यनुसार श्री शान्तिस्वरूप जी वानप्रस्थ द्वारा सम्पन्न कराया गया। परमपिता परमात्मा दिवंगत आत्मा को शान्ति और शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें। यही प्रार्थना है।

—चम्पाराम आर्य, हाथरस

हा! उपाध्याय जी !!!

हारे जीवन में न कभी श्रम से घबराये
पङ्कज होकर नहीं पङ्क से जो सन पाये
डिगे न जो स्वाध्याय सुपथ से मान्य हमारे
तत्पर आर्यसमाज कार्य में स्वर्ग सिधारे ॥१॥

श्री चरणों में रही कला लेखन मनमानी
गंगोदक गुण राशि पुण्य प्रतिभा पहिचानी
गाये गौरव गान सदा संस्कृति सजनी के
प्रकटाये गुरु ग्रन्थ कल्प तरु शुचि अवनी के ॥२॥

सामञ्जस्य 'प्रकाश' 'सत्य' के 'विश्व' विनोदी
दर्शन दिव्य कुबेर शास्त्र स्पन्दन के मोदी
जीवन चक्र तुम्हारा सहसा ऐसा खोया
उल्लासों का मधु प्रयाग शोकित हो रोया ॥३॥

पाकर तुमसे स्नेह अनेकों दीप उजाले
ध्यान धारणा संयम धन के हैं रखवाले
युग निरन्तर चला साधना का प्रिय मार्ग
एक पिता के सभी पुत्र हों आज्ञाकारी ॥४॥

मन में शिवसंकल्प सुधी ने यही विचारा
एक धर्म का गौरव हो सबको हो प्यारा
गये 'प्रणव' के अङ्क अचानक पूज्य हमारे
श्रद्धाञ्जलि स्वीकार करो जगती के प्यारे ॥५॥

—कविवर 'प्रणव' शास्त्री
एम० ए०, फीरोजाबाद

सभा भवन में शोक सभा

४ सितम्बर को आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के भवन लखनऊ में सभा के प्रधान मन्त्री श्री पं० प्रेमचन्द्र जी शर्मा के पिता श्री पं० किशोरीलाल जी शर्मा की मृत्यु के कारण शोक प्रकट करने हेतु श्री पं० शिवनारायण जी वेदपाठी बढ़नी (बस्ती) के तत्त्वावधान में एक सभा हुई। इसमें श्री नारायण गोस्वामी जी ने पण्डित जी के जीवन पर प्रकाश डाला। सब लोगों ने दो मिनट मौन धारण कर श्रद्धांजलि अर्पित की। और परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिये और संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करने के लिये प्रभु से प्रार्थना की।

श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय के साहित्य की संक्षिप्त रूपरेखा

श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय एम. ए.
तथा उनकी पत्नी स्व० श्रीमती कलादेवी जी।

[ले० श्री विश्वप्रकाश जी बी.ए. एल.एल.बी.]

उपाध्याय जी का साहित्य आकार और प्रकार दोनों में महत्त्वपूर्ण है। कम लेखक इतना और इतने विषयों पर लिखने में सफल हुए हैं। यह स्वाभाविक ही है कि लेखनी उठाने से पहले लिखने की योग्यता प्राप्त करते। पण्डितों से मिलने और स्वाध्याय करने की प्रवृत्ति आपमें विद्यार्थी जीवन से ही थी। एण्ट्रेन्स उत्तीर्ण करने के बाद ही आप पं० कृपाराम शर्मा (स्व० दर्शनानन्द जी) पं० गणपति शर्मा, पं० नन्दकिशोर देव आदि के संसर्ग में आये, जिससे आपको स्वाध्याय, लेखन और भाषण की प्रेरणा मिली। उर्दू, फारसी के विद्यार्थी होते हुए भी आर्यसमाज के संसर्ग में आकर टूटी फूटी नागरी लिपि में लिखने लगे। प्रयाग के टीचर्स ट्रेनिंग कालेज में श्री प्रेमचन्द्र जी के सम्पर्क में आये। श्री प्रेमचन्द जी उर्दू में लिखा करते थे— आपका नाम 'धनपतराय' था। दोनों की मैत्री यहीं से प्रारम्भ हुई।

उपाध्याय जी ने पहिला लेख 'थियोसोफिकल सोसायटी' पर लिखा जो १९०२ में आर्यमित्र में छपा और इस प्रकार जो लेखनी १९०२ में उठी वह आज तक बड़ी प्रबल गति से चल रही थी। उन दिनों काल घर से आर्य मुसाफिर' नामक साप्ताहिक पत्र निकलता था। इसके सम्पादक थे श्री महात्मा मुन्शीराम जी बाद में मुन्शी बख्तावरचन्द जी पर इसका भार रहा। मुन्शी जी के प्रोत्साहन से बराबर लेख निकला करते। कभी वेद मन्त्रों की व्याख्या होती, कभी शंका समाधान होता, कभी आर्य समाज के ऊपर किये गये आक्षेपों का उत्तर रहता।

लाहोर में Arya patrika नामक पत्र आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्त्वावधान मे निकलता था। इसमें सर्व प्रथम लेख १९०४ में Yoga made Easy (योग की साधारण क्रियायें) पर निकला। सन् १९०४ में मेरी माता जी का उपनयन संस्कार हुआ इसके विरोध में आर्य पत्रिका में लेख निकले। लोगों का विचार था कि स्त्रियों का उपनयन नहीं होना चाहिए। इस पर आपने अंग्रेजी मे इसके पक्ष में लेख निकाला। इस प्रकार उर्दू और अंग्रेजी दोनों में ही लेख निकलते रहे।

सन् १९०७ में एक विशेष घटना हुई। विदेशी चीनी के विरुद्ध विचारधारा चल निकली थी। आपने एक लेख बिजनौर से निकलने वाले पत्र 'सहीफा' में दे दिया। लेख छपते ही आग लग गई। एक सरकारी नौकर का यह साहस! कलक्टर वाइल्ड नामक अंग्रेज था। उसने झट से नोट लिया। लेखक से कड़ाई से उत्तर मांगा गया। यह प्रतीत हुआ कि इतनी कठिनाई से नौकरी लगी और वह भी जाना चाहती है। कलक्टर ने सर्विस बुक मे लिख दिया 'इसने ऐसा गर्हित लेख छपवाया है। मैं इसको इस योग्य नहीं समझता कि बालकों की शिक्षा का काम इसको दिया जाय।' डाइरेक्टर को भी शिकायत कर दी। समय प्रबल था क्योंकि देश में अग्नि लगी थी। लाला लाजपतराय और तिलक नजरबन्द हो चुके थे। यह लिखने के लिए कि विदेशी चीनी हड्डी से साफ की जाती है नौकरी पर आ बीती। हेडमास्टर महोदय ने नोट दिया कि लेखक का विचार अंग्रेजी शासन से सम्बन्ध नहीं रखता। केवल साधारणतया लिख दिया। कलक्टर के यहा पेशी हुई। भगवान् की दया से नौकरी बच गई, नहीं तो कठिन समस्या उपस्थित हो जाती।

सन् १९०७ में आपने पहला ट्रैक्ट छपवाया जिसका शीर्षक था 'विवाह और रंडियाँ।' इस स्थान में आपने नवीन प्रणाली हिन्दी व्याकरण लिखा। इसको इण्डियन प्रेस ने प्रकाशित किया। इस समय आपका तबादिला बाराबंकी को हो गया था। लोगों का कर्जा हो गया। इस घटना का आपने एक लेख द्वारा 'मधुरी' पत्रिका में स्पष्टीकरण किया 'ईश्वर का अदृश्य हाथ'। इण्डियन प्रेस ने २००) रुपये दिए और कालान्तर मे इसी पुस्तक से हजारों ही पैदा किये। पर एक साहित्यकार कुली के लिए यह रकम बहुत बड़ी थी। विशेषकर जब आवश्यकता हो तो एक रुपये का मूल्य सैंकड़ों हो जाता है।

बाराबंकी में आकर आर्यसमाज प्रचार क्रम चलता रहा। सरकारी नौकरी होते हुए भी प्रचार में कमी न थी, निर्भीकता से उत्सवों पर सम्मिलित होते। कभी-कभी सनातनी विचार के हैडमास्टर आ जाते, उन्होंने बन्धन लगाये पर स्कूल के कार्य में कभी कोई त्रुटि नहीं निकली। इन्सपेक्टर आते तो अच्छे से अच्छा प्रमाण-पत्र दे जाते और कार्य की प्रशंसा लिखकर ही जाते। पारिवारिक संकट के कारण साहित्य सेवा निरन्तर होती रही। सन् १९०९ मे 'बाल निबन्ध माला' नामक एक पुस्तक लिखी। इण्डियन प्रेस ने २५ इसकी लिखाई दी। बाराबंकी में आने से इण्डियन प्रेस, प्रयाग के स्वामी चिन्तामणि घोष से परिचय हो गया था। वे बंगाली होते हुए भी हिन्दी भाषा के प्रसार मे प्रयत्नशील थे। उपाध्याय जी की प्रतिमा को जान वे कुछ न कुछ कार्य देते रहे। वे समझे थे कि एक छोटे से नगर मे एक साहित्यकार कुली रहता है। हिन्दी शेक्सपियर के ६ भाग १९१० मे निकले। एक पुस्तक दो मास में लिखी जाती, १५ पृष्ठ होते और उस पर दक्षिणा मिलती ५०)। पर साहित्यकार इसी रीति मस्त था। लेखक को तुष्टि होती है उसकी कृति प्रकाशित हो गयी और परिवार पालन के लिये कुछ पैसे मिल गये। अपने समय मे वह ग्रन्थ अनूठा था। इसके अनेकों संस्करण निकले इसके उपरान्त १९१८ तक पशुवर्ग नामक माला लिखी गयी। इसके ८ भाग थे। इनकी मातृग्रन्थ बंगला भाषा मे और अंग्रेजी मे थी। अतः आपने बंगला भाषा पढ़नी आरम्भ की और इतना ज्ञान हो गया था कि साधारण पुस्तक पढ़ और समझ सकते थे। दुर्भाग्यवश यह माला प्रकाशित न हो पाई। युद्ध छिड़ गया था और प्रकाशन के व्यय बढ़ गये थे। इसी बीच इण्डियन प्रेस के स्वामी चिन्तामणि घोष का देहावसान हो गया। उनके सुपुत्रों ने यत्न किया पर सफल न हुये। इसके अंश समय-समय पर सरस्वती मे निकला करते थे। आर्य समाज के साहित्य में बहुत

कई अंग्रेजी ट्रैक्ट लिखे Ratio-m, Deities, sanatan rma No 1.2। बाराबंकी मे सि न था। ये सभी ट्रैक्ट लखनऊ । अपना पैसा लगाया थोड सेही र बिके होंगे। यहीं पर रह कर हिन्दी व्याकरण नवीन प्रणाली लखा। इस पर नागरी प्रचारणी से १५०) रुपया और सरकार से) पुरस्कार मिला। समाचार पत्रों पके लेख हिन्दी और उर्दू मे ते रहे। अध्ययन मे गति होती संस्कृत पढने मे प्रयत्नशील रहे। लशन पास करके नौकरी करली एफ० ए०, बी० ए० और एम० ाइवेट बाराबंकी मे ही पास किये। र का पालन, स्कूल के अतिरिक्त न करना, पुस्तकें लिखना आय न का काय करना, फिर बाराबंकी छोटे नगर मे रहकर प रीक्षा की री करना, कितना कठिन काय है। ो सभी समझ सकते हैं। मैट्रीकुले- में उर्दू फारसी पढते रहे, बी० ए० परीक्षा मे संस्कृत और दर्शन विषय ा। कितनी विचित्रता हैं।

१९१८ ई० में आप प्रतापगढ आये। ल इच्छा हुई कि सरकारी नौकरी को डा जाय, पेन्शन का लालच था। पर रकता ने विजय पाई और सरकारी करी स इस्तीफा देकर दयानन्द हाई ल की मुख्याध्यापकी १२५) पर कार की। इस प्रकार मानसिक सता की इतिश्री हो गई।

१९१८ ई० मे प्रयाग मे रहकर ाहित्य प्रतिभा ने करवट बदली। आप 'अग्रज जाति का इतिहास नामक ५० पृष्ठ की पुस्तक लिखी। इसका काशन ज्ञानमण्डल काशी न किया। पने समय का यह प्रमुख प्रकाशन था।

सान १९२० ई० मे आपने एक ोज सम्बन्धी ग्रन्थ ३५० पृष्ठ का लखा। 'विधवा विवाह मीमासा'। इसमें वेद स्मृति, के पुष्कल उदाहरण दिये। इस विषय पर कुछ ट्रैक्ट आर्य जगत में निकले थे, पर ऐसे ग्रन्थ की विशेष आवश्यकता थी। ग्रन्थ तो निकल गया, पर इसके प्रकाशन का प्रश्न था, क्योंकि छपवाने मे १०००) रुपये के लगभग व्यय होता। पुस्तक लिखी पड़ी रही। इसी बीच श्री रामरूप सहगल ने 'चाँद नामक एक समाज सुधार की पत्रिका प्रकाशित की थी। इसमें आपके लेख छपते थे। सहगल जी इस पुस्तक को ले गये। लेखक को २००) इस बडी पुस्तक का पुरस्कार मिला। पर सन्तोष यह रहा कि चाँद कार्यालय ने इसके कई संस्करण निकाले, पुस्तक बहुत सुन्दर प्रकाशित की और विधवा विवाह का खूब प्रचार किया।

प्रयाग में ईसाइयों की नार्थ इण्डिया ट्रैक्ट बुक सोसायटी नामक संस्था है। इसका विशाल भवन बना है। इसको देखकर उपाध्याय जी के हृदय मे यह लालसा उत्पन्न हुई कि क्या आर्यसमाज की ऐसी संस्था नहीं खोली जा सकती। हृदय ने कहा 'क्यों सम्भव नहीं है।' इधर सोचा था उधर आरम्भ हो गया। आपने ट्रैक्ट लिखे। पहला ट्रैक्ट था 'ईश्वर और उसकी पूजा।' यह लिखा गया और २००० प्रतियाँ प्रकाशित हुई कुछ मित्रों को लिखा, उन्होंने कहा कि १००० प्रतियाँ ले लगे। २) सैकडा मूल्य था। और)। प्रति छ सात ग्राहक बन गये। अपने उत्तरदायित्व पर प्रकाशन आरम्भ हुआ। जो पंम आते प्रेस को दे दिये जाते। इसके भेजने का कार्य घर पर होता। हम सब लोग बन्डल बाँधते और डाकखाने पहुचाते। इस प्रकार छपाई के अतिरिक्त और कुछ व्यय न होता। प्रकाशक था ट्रैक्ट विभाग आर्यसमाज चौक, प्रयाग। यह उसकी सम्पत्ति थी। नाम उसका था। घाटे मे अपना उत्तरदायित्व था। इस प्रकार के ट्रैक्टों की बडी आवश्यकता थी। लोग प्रचार करना चाहते थे। पर उनके पास सस्ती पुस्तकें न थीं।

आरम्भ क ट्रैक्टों मे एक विचारधारा काम कर रही थी जहा तक हो ऋषि क वचन ही उदधृत किये जायें। इस प्रकार १७ संख्या तक ट्रैक्ट स्वामी जी की पुस्तकों म से छाँट कर लिखे गये। निश्चय भावना से कार्य प्रारम्भ हुआ। पहले नवीन प्रकाशन पर शक्ति लगती थी बाद मे ट्रैक्टों का संस्करण समाप्त हो जाता और नवीन संस्करण छपता। चार वर्ष में ही २० के लगभग ट्रैक्ट निकले और ४ लाख प्रतिया छप चुकी थीं। काम बढा तो आर्यसमाज चौक मे एक उप सभा का निर्माण हुआ और १९२४ ई० से यह कार्य उसी उप सभा द्वारा संचालित होने लगा। सन १९२४ मे दयानन्द जन्म शताब्दी के अवसर पर पूज्य महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज ने कई विज्ञप्तियों में इन ट्रैक्टों की उपयोगिता का उल्लेख किया और देश भर में इस अवसर पर ट्रैक्ट वितरण करके प्रचार किया। सामयिक आवश्यकता की पूर्ति के लिये कुछ ट्रैक्ट लिखे गये। श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने शुद्धि का बिगुल बजा दिया। लाखों की संख्या में मुसलमान शुद्ध हो गये। 'हमारे बिछुड़े भाई इसी समय का ट्रैक्ट है। अब तक ट्रैक्ट १६ पृष्ठ में थे। ये सिद्धान्त, सम्बन्धी थे। यह निश्चय हुआ कि सामयिक लहर को पुष्टि देने के लिये कुछ ८ पृष्ठ के ट्रैक्ट लिखे जायें। १६ पृष्ठों की प्रथम माला हुई। ८ पृष्ठों की द्वितीय माला। हिन्दुओं जागो, हिन्दू स्त्रियों की लूट के कारण, हिन्दू धर्म का नाश, हिन्दू जाति की रक्षा के उपाय, मस्जिद के सामने बाजा, स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान, ऐसे ही ट्रैक्ट थे। आदि हिन्दुओं का प्रश्न उठा तो आदि हिन्दू सभा क्या है? आदि हिन्दू कौन है? निकले। शारदा एक्ट पास होने पर शारदा एक्ट क्या है?' प्रकाशित हुआ।

जल्दी ही तृतीय माला अंग्रेजी की निकाली गई। इसमे १६ पृष्ठ के १३ ट्रैक्ट छपे।

ट्रैक्टो के प्रकाशन का क्रम निरन्तर चलता रहा। इसका श्रेय उपाध्याय जी के अतिरिक्त श्री रामदीन वैश्य, श्री राम धर जी, श्री दरबारीलाल जी को विशेष रूप से है। ४० लाख तक तो हिसाब चला। उसके उपरान्त न जाने कितने लाख निकल चुके हैं। अब कागज का मूल्य अधिक हो जाने से मूल्य ५) रुपया सैकडा और -) प्रति है इन ट्रैक्टों की अनेक विशेषतायें हैं—भाषा सरल तथा शुद्ध साहित्यिक है युक्ति और प्रमाण जनबद्धक हैं। इस बात का यत्न किया गया हे कि अधिक से अधिक सामग्री दी जा सके ऐसी शब्दावली का प्रयोग नहीं किया गया जो असभ्यता सूचक हो या किसी के दिल को खटके। इसी सफलता के कारण इस समय तक ६७ ट्रैक्ट प्रथममाला १६ पेजी २३ ट्रैक्ट तृतीय माला के १६ पृष्ठो के अंग्रेजी में। कुछ ट्रैक्ट उर्दू मे भी प्रकाशित हुये परन्तु चलन कम होने से काम आगे न बढ़ा। जब उपाध्याय जी कोल्हापुर मे जाकर कुछ काल के लिये रुके तो कई ट्रैक्टों का मराठी में अनुवाद हुआ। तामिल तेलगू और बगला में भी कई ट्रैक्टों मे अनुवाद हुआ। तामिल तेलगू और बगला में भी कई ट्रैक्टों के अनुवाद प्रकाशित हुए।

दयानन्द जन्म शताब्दी पर महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज की प्रेरणा से कुछ साहित्य प्रकाशित हुआ। १९२३ में उपाध्याय जी ने आर्यसमाज नामक एक बृहद ग्रन्थ का लिखना आरम्भ किया था। इसमे ऋषि दयानन्द की जीवनी लिखी जा चुकी थी। जब महात्मा जी का पत्र आया कि शताब्दी के लिये कोई पुस्तक लिखी जाय तो आपने शीघ्रता के साथ आर्यसमाज के कार्य को बढ़ाकर यह ग्रन्थ तैयार कर लिया। यह संस्करण हाथोंहाथ निकल गया। बाद मे कई संस्करण निकले। इसमें चित्र भी थे। आर्यसमाज के कार्य की रूप-रेखा थी।

१९२५ मे आपने सर्व दर्शन संग्रह नामक पुस्तक लिखी। यह पुस्तक संस्कृत मे थी और कहा जाता था कि इसके लेखक स्वामी शङ्कराचार्य हैं। भिन्न-भिन्न सम्प्रदायों के सिद्धान्तों का अच्छा वर्णन है। इसका हिन्दी मे आपने अनुवाद किया। प्रयाग से विज्ञान नामक मासिक पत्रिका निकलती थी। उसमें क्रमश यह पुस्तक छपती रही और उसी से रिप्रिंट होती रही। बाद म यह संस्करण समाप्त हो गया और पुनः प्रकाशन करना पड़ा।

१९२५ मे एक और घटना हुई। राजाराम हाईस्कूल कोल्हापुर का प्रबंध कोल्हापुर नरेश ने आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश को सौंप दिया था। मित्रों का आग्रह हुआ कि आप कोल्हापुर जाकर स्कूल के आचार्य का पद ग्रहण कर ल। इसमे कठिनाई थी, क्योंकि दयानन्द स्कूल प्रयाग का प्रबन्ध होता था। फिर प्रयाग मे अपना घर बन चुका था और परिवार को ले जाना कठिन था यहा पर रह कर १९२६ मे आपने अपना अमूल्य ग्रन्थ आस्तिकवाद लिखा जिसमे आपकी ख्याति मे चारचाँद और लगा दिये। अभी तक प्राय आपकी शक्ति ट्रैक्टों मे ही संलग्न हुई थी। सिद्धान्त सम्बन्धी यह ४१४ पृष्ठ का बृहद ग्रन्थ पहला ग्रंथ था जिसको देखकर आपके बृहद अध्ययन का परिचय मिला। इस प्रकार के ग्रन्थ की आवश्यकता इसलिये और भी थी क्योंकि शिक्षित विद्यार्थी समुदाय ईश्वर की सत्ता में सन्देह करने लगा था। यह ग्रन्थ एक वर्ष मे लिखा गया। संयोग से आप कोल्हापुर से प्रयाग लौट आये। इस ग्रंथ के छपवाने मे १०००) लगता। समस्या हुई कि यह धन कहा से आवे। संसार मे न जाने कितने ही प्रतिभाशाली लेखक पुस्तकें रच देते हैं, पर उनके प्रकाशन का समय ही नहीं आता। यह पुस्तक भी अलमारी के अन्दर बन्द पड़ी थी अन्त में साहस किया कि कहीं से भी धन का प्रबन्ध किया जाय जिससे पुस्तक जनता के हाथ मे पहुच सके। पुस्तक छपकर आ गई। महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज ने एक लम्बी भूमिका लिखी श्री पूज्य महात्मा हंसराज जी पुस्तक को देखकर उछल पड़े। उन्होंने लिखा मेरी तीव्र इच्छा है कि हमारे नवयुवक आपकी रची हुई पुस्तक को पढ़ कर अपने जीवन केन्द्र को स्थिर

[शेष पृष्ठ ७ पर]

और सुखदायक बनावें। माधुरी, 'आर्य मित्र, दैनिक अंग्रेजी लीडर आदि अनेक पत्र पत्रिकाओं ने मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की और लेखक की विद्वत्ता पर प्रकाश डाला। पर इससे क्या होता है। अपने देश में विद्वत्ता और प्रतिभा का क्या महत्त्व है। अनेक शताब्दियों से विदेशियों से पदाक्रान्त होते हुए अपनी आत्मा की आवाज धीमी हो गई है। भारतीय लेखक तो अध्ययन करे, खोज करे मनन करके पुस्तक लिखे, पर सतत परिश्रम का कौन मूल्यांकन कर सकता है। जब पुस्तक तैयार हो जावे तो उसके प्रकाशन के लिये कर्जा ले, स्वयं विज्ञापन करे और पुस्तक की बिक्री करे। पुस्तक छपाई में इकट्ठा धन लग जाता है। यदि भाग्यवश एक-दो पुस्तक बिक भी गई तो वह धन तरकारी खरीदने में लग गया। पुस्तक की मांग साधारण हुई। प्रशंसा अधिक हुई। कुछ मित्रों ने मुफ्त पुस्तक की याचना की। कुछ संस्थाओं ने लिखा कि आपकी पुस्तक का संस्था में होना आवश्यक है, अतः दान दे सकें तो अच्छा होगा। हमारे देश में कुछ संस्थाओं ने पत्र छाप कर रख लिये हैं और जब कहीं किसी पुस्तक की समालोचना पढ़ी, चट से एक पत्र डाल दिया। बेचारे लेखक के दिल की कठिनाइयों का अनुमान किसको करना है।

इस प्रकार अवस्था चलती रही। दास देश की एक प्रवृत्ति का उल्लेख कर देना आवश्यक है। महा कवि रवींद्र नाथ की पुस्तक 'गीतांजलि' बंगला भाषा में छपी। साहित्य जगत में कोई लहर न आई। उसी ग्रंथ पर जब 'नोबिल पुरस्कार' मिला तब तो सबकी जिह्वा पर रवी बाबू रवी बाबू था। ठीक यही दशा आस्तिकवाद ग्रन्थ के साथ भी हुई। जब १९३१ में हिन्दी-साहित्य सम्मेलन ने कलकत्ता अधिवेशन में १२००) का मंगला प्रसाद, पुरस्कार भेंट किया तो हिन्दी जगत में और धर्म जगत् में एक बार फिर "आस्तिकवाद" की याद आई। लोगों ने ग्रंथ मंगाया। एक संस्करण समाप्त हुआ। दूसरा सस्ता संस्करण निकाला गया और ऐसे गूढ़ ग्रंथ की कई हजार प्रतियां निकलीं। अब तो कई संस्करण निकल चुके हैं और उच्च दार्शनिक कोटि का यह ग्रंथ माना जाता है। जब उपाध्याय जी बीमार होकर दिल्ली आपरेशन के लिए गये तो हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक प्रो० रामदास गौड़ ने लिखा था—'आप पर ईश्वर की बड़ी कृपा रहेगी क्योंकि इस युग में किसी ने ईश्वर की इतनी वका-लत नहीं की जितनी आपने।'

आस्तिकवाद के उपरान्त आपका दूसरा विद्वत्तापूर्ण ग्रंथ निकला "अद्वैतवाद"। उपाध्याय जी को दर्शन से प्रेम रहा था। आप ने अंग्रेजी में एम.ए. १९१२ में पास किया था। १९२१ में आपने एक निश्चय किया, कि 'दर्शन में एम ए पास किया जाय। १९२३ में दर्शन' में एम० ए० हो गये। आपने 'शांकर भाष्य' विषय लिया। इस प्रकार शंकर को समीप से अध्ययन करने का अवसर मिल गया। 'अद्वैतवाद' में शंकर तथा अन्य अद्वैतवादियों की आलोचना की आलोचना लिखी गयी। शंकर ऐसे

श्री प० गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय

महान की भूलभुलइयों को समझना तथा उनके वागजाल में फंस न जाना प्रतिभा का ही कार्य है। विद्वत्ता के विचार से यह ग्रंथ 'आस्तिकवाद से किसी प्रकार कम न था। पुस्तक लिख-कर तैयार हो गई, पर इसके प्रकाशन में भी वही कठिनाइयां थीं। आपके पूर्व परिचित मित्र हिन्दी भाषा के गौरव श्री प्रेमचन्द्र जी ने 'माधुरी" नामक सुप्रसिद्ध पत्रिका का सम्पादन अपने हाथ में लिया था। उन्होंने पूछा कि कोई पुस्तक पड़ी है। उपाध्याय जी ने "अद्वैतवाद" की पांडुलिपि देदी। 'माधुरी में आरम्भिक लेख छपे। लोगों ने प्रशंसा की, पर जब 'शंकर के सिद्धान्तों की आलोचना छपी तब तो सनातन मंडली में तूफान आ गया। 'माधुरी' नामक पत्रिका में जिसके स्वामी इस विचार के हों उसमें 'शंकर' का खंडन छपे। उपाध्याय जी के उत्तर में एक लेख छापा गया जिसमें युक्तियों का आधार कम था—शंकर के गौरव की मीमांसा अधिक थी। लिखा गया कि 'सूर्य पर आघात किया गया। यह उत्तर छापकर लेखक को उत्तर देने की मनाही थी और भविष्य में यह निश्चय था कि यह ग्रंथ या ऐसे लेखों का प्रकाशन बन्द। अद्वैतवाद भी फिर साहस करके सन् १९२७ में छपा।

सन् १९२८ में वैदिक विवाह पद्धति और १९३० में वैदिक उपनयन पद्धति अपने अनुज प० सत्यव्रत उपाध्याय बी० ए० एल० टी० के सहयोग से प्रकाशित हुई। इनका उद्देश्य यह था कि सरल रूप में दोनों पद्धतियां छाप दी जायें जिससे साधारण व्यक्ति भी ये संस्कार करा सके।

सन् १९३० में शंकर, रामानुज, दयानन्द नामक पुस्तिका लिखी गई। इसमें तीन प्रसिद्ध दार्शनिकों के सिद्धांतों का तुलनात्मक अध्ययन है।

सन् १९३० में कला प्रेस खुल इस प्रकार प्रकाशन में कुछ सरल हुई। आर्यसमाज के साहित्य पर क प्रेस चल नहीं सकता। उद्देश्य तो था कि बाहर का काम करके प्रेस च और जो लाभ हो उससे समय स आर्यसमाज का साहित्य निकलता रहे १९३१ में उपाध्याय जी ने अ द्वितीय पुत्र श्री विश्वप्रकाश बी० ए एम०एल० बी० के सहयोग से 'वेदोद नामक मासिक पत्र निकाला। इस ख्याति हुई। समय समय पर विशेषा निकले। पर इसके प्रकाशन में आर्थि दृष्टि से लाभ न हुआ। फिर ५ व तक प्रकाशन होता रहा, फिर लगभ ४०००) घाटा सहन पर इसको ब कर देना पड़ा।

१९३३ में तीसरा महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ "जीवात्मा' तैयार हुआ और अजमेर की "दयानन्द निर्वाण अर्द्ध शताब्दी' पर इसका प्रकाशन हुआ। जीवात्मा स सम्बन्ध रखने वाली दार्शनिक सामग्री इसमें संगृहीत है। महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज ने इसकी बड़ी प्रशंसा की।

सन् १९३१ राममोहन राय केशवचन्द्र सेन- दयानन्द, तीन सुधारकों का तुलनात्मक अध्ययन हैं। १९५२ में 'धम्मपद' नामक पुस्तक का अनुवाद किया और विद्वत्तापूर्वक भूमिका लिखी इसमें महात्मा बुद्ध के उपदेश हैं। १९३६ में 'वैदिक मणिमाला' निकली इसमें वेद मन्त्रों की सुन्दर व्याख्या है। १९३६ में मनुस्मृति का एक नवीन संस्करण निकला। इसकी विशेषता एक लम्बी भूमिका है। जिसमें यह विवेचन किया गया है कि मनुस्मृति में प्रक्षेपों को जानने की क्या कसौटी है। जो श्लोक प्रक्षेप समझे गये उनको इस संस्करण से निकाल दिया गया है। यह शुद्ध संस्करण है। फुटनोट में मनुस्मृति के भिन्न-भिन्न पाठ भेदों को दिया गया है जो इस समय उपलब्ध हैं। १९३८ में महिला व्यवहार चन्द्रिका' स्त्रियोप-योगी ग्रन्थ लिखा।

इस समय तक हिन्दी में कुछ साहित्य बन चुका था। पर अंग्रेजी में सर्वथा अभाव था। विदेशों में भेजने के लिये पुस्तकें न थीं। श्री उपाध्याय जी ने कुछ ट्रैक्ट अंग्रेजी भाषा में ट्रैक्ट विभाग आर्यसमाज चौक प्रयाग की ओर से निकाले थे। अब उन्होंने Religious Renaissance Series नामक एक पुस्तक माला स्थापित कर प्रकाशित करने का निश्चय किया। १९३९ में इस माला का प्रथम पुष्प

Reason and Religion प्रकाशित हुआ। इस माला के दो संस्करण छपे थे, एक सस्ता संस्करण साधारण कागज पर, दूसरा अच्छा संस्करण अच्छे कागज पर सजिल्द। इस माला में निम्न पुस्तकें अब तक निकली हैं—

1. Reason and Religion
2. Swami Dayanand's Contribution to Hindu Society
3. I & my god
4. the origin, scope and mission of Arye samaj
5. worhsip
6. Humanitarian Diet
7. Christianity in India
8. Superstition
9. Marriage and Married Life

इनमें से Marriage and Marriad life को छोड़कर जो डाक्टर सत्यप्रकाश की लिखी हैं, शेष सब आपकी लिखी हुई हैं इसका निर्माण काल १९३९ से १९४२ तक है। विदेशों में इस पुस्तक माला से बड़ा प्रचार हुआ।

सन् १९४० में ईशोपनिषद् का अनुवाद तथा व्याख्या प्रकाशित हुई। १९४३ में भगवत कथा प्रकाशित हुई। इसमें युक्ति प्रमाण सहित सात व्याख्यानों की रूपरेखा है। इसके आधार पर कोई भी व्याख्यान दे सकता है। उपनिषदों के पुष्कल प्रमाण हैं। १९४६ में 'हम क्या खावें, घास या मांस' प्रकाशित हुई। वृक्षों में जीव है या नहीं, इस विषय पर लेखक की युक्तियाँ बड़ी प्रबल हैं।

सन् १९४६ में सत्यार्थप्रकाश का एक अंग्रेजी संस्करण आपने महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज की प्रेरणा से निकाला। यह वह समय था जब सत्यार्थ प्रकाश के ऊपर तीव्र प्रहार हो रहे थे और ऋषि दयानन्द के पवित्र ग्रन्थ को जब्त कराने की चेष्टा हो रही थी। इसके पूर्व जो सत्यार्थप्रकाश के अनुवाद अंग्रेजी में हुये थे वे भावानुवाद थे। शुद्ध अनुवाद न थे। यह अंग्रेजी संस्करण उपाध्याय जी की अनुपम देन है।

सन् १९४७ में एक शुद्ध ग्रंथ शांकर 'भाष्यालोचन' निकला। उसमें शांकर मत की तीव्र आलोचना की गई है। यह बड़ा ग्रंथ है और लेखक की अपूर्व विद्वत्ता तथा प्रतिभा का द्योतक है। श्री स्वामी आत्मानन्द जी महाराज ने इसकी प्रशंसा की।

सन् १९४७ में एक अपूर्व कृति प्रकाशित हुई, 'आर्य स्मृति' छन्दोबद्ध संस्कृति है। हिन्दी में भी अर्थ दिया गया है। आर्यसमाज के जो सिद्धान्त हैं उनका सुन्दर विवेचन हैं १९४९ में आपने अंग्रेजी भाषा में वैदिक संस्कृति पर एक और बड़ा ग्रंथ लिखा 'Vadic Culture', इसका प्रकाशन सार्वदेशिक सभा ने किया। ग्रन्थ की उपयोगिता पर ५००) अमृतधारा पुरस्कार आपको मिला। उसको भी आपने सार्वदेशिक सभा को दे दिया। १९५० में 'कम्युनिज्म' नामक ग्रंथ प्रकाशित हुआ। इसमें कम्युनिज्म के सिद्धान्तों की आलोचना की गई और वैदिक संस्कृति को दृष्टि में रखकर उसकी कमियाँ दिखाई गईं। उत्तर-प्रदेशीय सरकार ने ५००) पुरस्कार इस पर दिया।

एतरेय और शतपथ ग्रंथों के अनुवाद भी आपने पूर्ण किये। हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने एतरेय ब्राह्मण का भाष्य १९५० में प्रकाशित किया। शतपथ ब्राह्मण में कई हजार पृष्ठ हैं। यह भी हिन्दी साहित्य सम्मेलन के पास है, पर अभी तक प्रकाशित नहीं हो पाया।

१९५१ में आर्य प्रतिनिधि सभा नैटाल की रजत जयन्ती पर आपको दक्षिणी अफ्रीका से निमन्त्रण मिला। आपने दक्षिणी अफ्रीका में अनेकों नगरों में व्याख्यान दिये। आपके भाषण हिन्दी और अंग्रेजी भाषा में हुये। कई मास वैदिक धर्म का प्रचार करके भारत में लौटे। आपको विदाई में १०१ पौंड मिले थे, लौटने पर आपने सार्वदेशिक सभा को यह धन दे दिया जिससे कि दक्षिणी अफ्रीका वालों के लाभ के लिये साहित्यिक माला प्रकाशित होती रही। इसी माला में—

1. Life after Death.
2. Catechism on Hinduism
३. सनातन धर्म और आर्य समाज
४. मुक्ति से पुनरावृत्ति

प्रकाशित हुये।

सन् १९५० में आपने 'आर्योदय' काव्य प्रकाशित किया। यह ग्रन्थ संस्कृत कविता में है और इस बात का द्योतक है कि आपको संस्कृत भाषा पर कितना आधिपत्य है। प्रथम भाग में वैदिक काल से लेकर ऋषि दयानन्द के आगमन तक संस्कृत छन्दोमय भाषा में भारतवर्ष का इतिहास है।

श्री के० एम० मुन्शी, डा० सम्पूर्णानन्द बिहार के तत्कालीन राज्यपाल श्री अणे हालैण्ड के प्रो० गोंडेल, जर्मनी के प्रो० ग्लेसेनाप्प आदि ने पुस्तक पर अत्यधिक प्रशंसात्मक भाव प्रकट किये हैं।

दूसरे भाग में ऋषि दयानन्द का आद्योपान्त संस्कृत पद्यों में जीवन वृत्त है।

१९५३-५४ में आपने 'विश्व प्रचार सीरीज' निकाली जिसमें ९ लघुपुस्तिकायें निकलीं। इनकी प्रतियां दक्षिणी पूर्वी अफ्रिका, बर्मा, सिंगापुर, बैंकाक को भेजी गई।

१९५४ में उपाध्याय जी का अपूर्व ग्रन्थ Philosophy of Dayananda लिखा गया। यह बड़ साइज के ५०० पृष्ठों में है और यह संस्करण विदेशों के योग्य बहुत ही सुन्दर निकाला गया है। संसार भर के सुप्रसिद्ध दार्शनिकों ने उसके बारे में अच्छी सम्मतियाँ दी हैं।

इसी वर्ष आपेने 'जीवन चक्र' नाम से अपनी आत्म कथा लिखी। यह एक वृहद् ग्रन्थ है, ५०० पृष्ठ का। भाषा, भाव, के विचार से उत्कृष्ट ग्रन्थ है। उत्तर प्रदेश की सरकार ने ५००) पुरस्कार इस ग्रन्थ पर दिया है। गौतम बुद्ध की जयन्ती पर आपने अंग्रेजी में 'Social Raconstruction by Budha and Dayanand नामक ग्रन्थ लिखा। इसकी कई हजार प्रतियाँ जयन्ती पर आने वाले यात्रियों को अर्पित की गईं।

श्री उपाध्याय जी के ग्रन्थों की संक्षिप्त रूपरेखा ऊपर दी गई है। यह पूर्ण नहीं है। इसके अतिरिक्त अप्रकाशित ग्रंथों के कई पुलन्दे बँधे रखे हैं। उपाध्याय जी का कहना है कि मेरा काम तो लिखना है। प्रकाशित होना तो भगवान के हाथ है। इस प्रकार उनके प्रकाशित व अप्रकाशित ग्रन्थों की पृष्ठ संख्या २ लाख के लगभग ठहरती है। ५० वर्ष में २ लाख पृष्ठ संख्या। गणना के अनुसार ४०० पृष्ठ प्रति वर्ष। फिर ग्रन्थ दर्शन सम्बन्धी हैं। जिसमें एक-एक पंक्ति मनन और अध्ययन के उपरान्त लिखी जाती है।

उपाध्याय जी द्वारा लिखित ट्रैक्टों की संख्या सैकड़ों है

The Arya Samaj Introdueed.
The Vedic conception of god.
The five great sacrifices of the Aryas.
The claims of the Arya samaj.
The Between man and god.
The great Bug bear.
The Vedic View of Life
Vedic Womanhood.
Shuddhl.
The Arya Samaj and Hinduism.
The Arya Samaj and Depressed classess.
The Arya Samaj & Christanity.
The Arya Samaj & Mohammadans.

उपाध्याय साहित्य

पुस्तकों का नाम

नवीन हिन्दी व्याकरण
बाल निबन्ध माला
हिन्दी शेक्सपीयर ६ भाग
जीव जन्तु १८ भाग, अप्रकाशित
अंग्रेज जाति का इतिहास
विधवा विवाह मीमांसा
आर्यसमाज
सर्वदर्शन संग्रह
आस्तिकवाद
अद्वैतवाद
वैदिक विवाह पद्धति
शंकर, रामानुज, दयानन्द
वैदिक उपनयन पद्धति
राजा राममोहन राय,
केशवचन्द्र और दयानन्द
धम्मपद
जीवात्मा
इस्लाम के दीपक हिन्दी उर्दू
मनुस्मृति भूमिका भाष्य
वैदिक मणिमाला
अहिंसा विवाह चन्द्रिका
Reason & Religion
Swami Dayanand's Contribution to Hindu Solidaritry
I & my god
ईशोपनिषद्
Origin, mission & Scope of Arya Samaj
Worship
शतपथ ब्राह्मण, अनुवाद अप्रकाशित
Christianity in India.
Superstition
Marriage & married lifa Agnihotra
भगवत कथा
हम क्या खावें घास या मांस

(शेष पृष्ठ १२ पर)

पाप का परिणाम क्या ?

पाप क्या है ;

पाप और पुण्य के लक्षणों के विषय में विद्वानो मे बहुत मतभेद है। यजुर्वेद के निम्नलिखित मन्त्र की सहायता लेने से पाप और पुण्य का बहुत सुन्दर लक्षण निकलता है।

पाप्मा हतो न सोम. (य० ६-३५)

अर्थात्—जीवन से पाप नष्ट हो, सोम अर्थात् सौम्य गुण नहीं। इस मंत्र से स्पष्ट है कि पाप का उल्टा सोम या सौम्यगुण है और सोम का उल्टा पाप है। इस मन्त्र के अनुसार यह भाव निकलता है कि सोम अर्थात् सौम्यगुण, सुशीलता और सद्गुण पुण्य हैं और इसके विपरीत दुर्गुण ही पाप है। संक्षेप मे पाप और पुण्य को इस प्रकार समझा जा सकता है। सद्गुणों को पुण्य कहते हैं और दुर्गुणों को पाप कहते हैं। सद्गुण सुख और शांति के साधक है, अत. सद्गुणों पर आश्रित प्रत्येक कार्य पुण्य होगा। इसी प्रकार दुर्गुण दुःख और अशांति के कारण हैं, अतः दुर्गुण मूलक प्रत्येक कार्य पाप होगा।

पाप क्यों करते है ?

मनोविज्ञान के अनुसार व्यक्ति में सुसंस्कार और कुसंस्कार बीज रूप में रहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपने पूर्वजन्म के सु या कु संस्कारों से प्रभावित होता है। परिणाम यह होता है कि उसमें किसी एक प्रकार के संस्कारों की प्रधानता हो जाती हैं। उनके अनुसार ही वह सद्गुणों या दुर्गुणों की ओर झुकता है। पूर्व संस्कार उसके इस कार्य में साधक या बाधक होते हैं। यदि व्यक्ति सत्वगुण प्रधान है तो उसमें तमोगुणी वृत्तियां उदय होने पर भी नष्ट हो जाती हैं। यदि व्यक्ति मूलतः तमोगुणी है तो उसमें तमोगुणी वृत्तियां निरन्तर वृद्धि को प्राप्त होती हैं। उसके हृदय में भी सात्विक भाव उदय होते हैं, परन्तु वे उसके हृदय पर स्थायी प्रभाव नहीं छोड़ पाते हैं। यही कारण है कि कुछ व्यक्ति जन्म से ही सुशील और सदाचारी होते हैं और दूसरे प्रकार के व्यक्ति जन्म से ही दुर्जन और दुश्चरित्र। मनुष्य की रजोगुणी वृत्तियां कुछ अंश मे तथा तमोगुणी वृत्तियां पूर्णरूप से पाप में प्रवृत्ति के कारण है। मनुष्य में जब तमोगुणी वृत्तियों की प्रबलता होती है, तभी मनुष्य पाप की ओर प्रवृत्त होते हैं। यही उसके जीवन के पतन का प्रथम चरण है।

पाप से कैसे बचें ?

पाप से बचने का सर्व प्रथम साधन विवेक है। परमात्मा ने पशु पक्षियों आदि की अपेक्षा मनुष्य को एक अमूल्य शस्त्र दिया है, वह है विवेक। शक्ति का कार्य है—कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य का स्पष्ट निर्णय करना। मनुष्य यदि विवेक से कार्य करेगा तो वह सभी पापों से बच सकता है। पापों से बचने के अन्य साधन ये है—

(१) आस्तिकता। ईश्वर को सर्वव्यापक समझने से वह कोई पाप नहीं कर सकता है। क्योंकि जो भी पाप मनुष्य करेगा, उसको परमात्मा देख रहा है।

(२) सत्वगुण का विकास। जीवन में सात्त्विक गुणों की वृद्धि करना और तामसिक गुणों को दूर करना।

(३) धार्मिक कृत्यों के प्रति अनुराग। ऐसा करने से पाप के प्रति उसे घृणा होगी।

(४) इच्छा शक्ति का विकास। इच्छा शक्ति को विकसित करने से मनुष्य पाप भावना को बलात् रोक सकता है। उसकी इन्द्रियां उसके वश मे रहेंगी।

(५) सत्संगति। सत्संगति करने से दुर्जनों का साथ नहीं होगा। और न दुर्गुणों की ओर प्रवृत्ति होगी।

(६) धार्मिक ग्रन्थों का स्वाध्याय। धार्मिक ग्रन्थों के अध्ययन से मनुष्य पाप के प्रति घृणाभाव रखता है।

(७) अनासक्ति भाव। कर्मों को अनासक्त भाव से तथा कर्त्तव्य समझते हुए करना।

(८) प्रायश्चित्त। यदि कोई पाप जाने या अनजाने किया है तो उसके लिये प्रायश्चित करना। ऐसा करने से मनुष्य का मन निर्मल हो जाता है।

पाप का परिणाम क्या ?

संक्षेप मे पाप के ये दुष्परिणाम होते हैं—

१—विवेक हीनता पाप का परिणाम यह है कि पाप भावना मनुष्य की विवेक शक्ति को नष्ट कर देती है। विवेकशक्ति का नाश मनुष्य का सर्वनाश है। अतएव गीता में भी कृष्ण ने कहा है कि बुद्धिनाशात् प्रणश्यति, अर्थात् बुद्धि के नाश से मनुष्य का ही नाश हो जाता है।

२—नास्तिकता। सच्चे अर्थों में आस्तिक मनुष्य पाप नहीं कर सकता है। पाप करने से पूर्व मनुष्य के हृदय में नास्तिकता का विकास होता है। वह कर्त्तव्य बुद्धि से हीन होकर ही पाप करता है। शनैः-शनैः यह नास्तिकता जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रवेश कर जाती है और परिणाम स्वरूप उसका जीवन भार रूप और मानवता से हीन हो जाता है।

३—तमोगुण का प्रसार। सत्वगुण के क्षय के कारण मनुष्य का हृदय तमोगुण के आवरण से आवृत हो जाता है। तमोगुण उसे पथ भ्रष्ट करता है और शनैः-शनैः वह कर्त्तव्यच्युत होकर भौतिक सुखों को ही जीवन का लक्ष्य समझने लगता है। इस प्रकार वह अपने जीवन के लक्ष्य से ही च्युत हो जाता है।

४—अधर्म के प्रति अनुराग। जीवन मे तमोगुण के प्रसार से मनुष्य की प्रवृत्ति अधर्म और कुकर्म की ओर हो जाती हैं। वह संसार को अपनी स्वार्थ सिद्धि का साधन समझने लगता है।

५—इच्छा शक्ति का ह्रास। तमोगुण के साथ ही मनुष्य की इच्छा शक्ति नष्ट होने लगती है। इच्छा शक्ति के नाश के साथ ही आत्म संयम भी समाप्त हो जाता है।

६—कुसंगति। आस्तिकता की समाप्ति के साथ ही मनुष्य कुसंगति की ओर अग्रसर होता है। कुसंगति से वह अपना तेज, यश, शील आदि सभी सद्गुणों को खो बैठता है।

७—असद्ग्रन्थों का अध्ययन। तमोगुण मनुष्य में असद्विचारों को जन्म देते हैं। असद्विचारों वाला व्यक्ति असद् ग्रन्थों का पठन-पाठन करने लगता है। उसके असंस्कृत विचार उसे अशिष्ट और अनुचित साहित्य पढ़ने के लिये प्रवृत्त करते हैं। ऐसे ग्रन्थों के पढ़ने से उसके विचार दूषित होते हैं। और वह कुमार्गगामी होकर अपने जीवन को दुःखमय बना लेता है।

८—अशुभ संस्कार। पाप भावना मनुष्य के शुभ संस्कारों को नष्ट कर देती है। फलस्वरूप वह दुर्विचारों का शिकार हो जाता है और शनैः-शनैः असंस्कृत व्यक्ति हो जाता है ये अशुभ संस्कार उसको इस जीवन और भावी जीवन को दूषित कर देते हैं।

९—आसक्ति भाव दुर्विचारयुक्त व्यक्ति धन जन सभी से अपनी आसक्ति बढ़ाता है। वह आसक्ति के कारण स्वार्थ को ही जीवन का परम लक्ष्य मानता है। वह स्वार्थ भावना के कारण ही अपने जीवन को नष्ट कर लेता है। ऋग्वेद के शब्दों में वह केवलाघो भवति केवलादी अकेला खाने वाला अकेला ही पापी होता है। इस सुभाषित का उदाहरण हो जाता है।

१०—समूल नाश। कर्त्तव्य ... होने से वह अधिक या अस्थायी ... लाभ समझ बैठता है। परन्तु ... और असत्य पर आधारित समृद्धि ... के पुल तुल्य होती है। ऐसे व्यक्ति ... लिये ही मनु का कथन है कि- अ... मनुष्य की अधिक समृद्धि होती है ... कुछ समय के लिये सुख भोग भी ... तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करत... परन्तु उसका अन्त अत्यन्त दुःखद ... है। वह शाश्वत समूल नष्ट हो ... है।

अधर्मेणैधते तावत्,
तततो भद्राणि पश्यति।
ततः सपत्नान् जयति,
समूलस्तु विनश्यति।

यहां पर यह ठीक ढंग से ... लेना चाहिये कि जिस कार्य के कर... आत्मा को सुख और शांति प्राप्त ... है, वह पुण्य है। जिस कार्य के कर... मनुष्य को दुःख अशांति, शोक ... विपत्ति प्राप्त होती है वह पाप ... मनुष्य को सदा ऐसे पापों से ब...

—डा. कपिलदेव द्विवेदी आचा...
कानपुर

चाहिये। पाप इस जीवन का ही ... अपितु भावी जीवन को भी नष्ट ... देता है। ... से ... आवश्यक है कि व्यक्तिगत हित की अपे... समाज हित बढ़कर है, समाजहित से देशहित बढ़कर है और देशहित से विश्वहित बढ़कर है। अत. मनुष्य ऐसा कोई काम नहीं करना चाहि... जिससे राष्ट्र या विश्वहित को हा... पहुचे।

वेदों का मन्तव्य

१. कुमार्ग को छोड़कर सन्मा... पर आवें।

परि माग्ने दुश्चरिताद् बाधस्वा म... सुचरिते भज। [यजु० ४-२८

२ पापों के बन्धनों से मुक्त होऊँ

निर्बंधस्य पाशान्मुच्ये [यजु ५-३९]

३. प्रायश्चित के द्वारा सभी प्रका... के पापों से मुक्त हों।

देवकृतस्यैनसोऽवयजनमसि०
[यजु० ८ १३]

देवता, मनुष्य, पितृगण तथा अपने प्रति भी किये गये पापों को प्रायश्चित्त की शुद्ध भावना नष्ट कर देती है।

४. पाप के कारण अनैश्वर्य, निस्तेजस्विता आदि इन बन्धनों से मुक्त हों।

अमूत्यः पाशान्मा मोचि।
निर्मूंत्या पाशान्मा मोचि।
[अथव १६-८-३,४]

५. परमात्मा का दण्ड विधान अतिकठिन है।

(शेष पृष्ठ १० पर)

दिक विवाहों में सप्तपदी का महत्व-

[ार्य गृहिणी का गृह साम्राज्य

इषे एक पदीमव

पदी में पहला पग है विविध अन्न भण्डार जुटाना।
पहले पग पर ही निर्भर है, गृहिणी पद का ताना-बाना॥
भोजन, छादन, सदा बांट कर, निज घर में साम्राज्य बसाना।
मन्त्र भाव से मीठे बनकर, सिंहासन पर कदम जमाना॥

।, ससुर को, बालक गण को, निशिदिन भोजन रुचिकर देना।
यथाशक्ति नित थोड़ो-थोड़ा, काम सभी से सुख कर लेना॥
सभी तरह के अन्न समय पर, अपने घर में सञ्चित रखना।
बिना चूक के पहला पग यह, सप्तपदी का पूरा करना॥

ऊर्ज्जे द्विपदी मव

न दूसरा 'ऊर्जा' का है, 'तेल' सभी तरह के घर में भरना।
दूध, दही, घी, मक्खन, लस्सी, रानी अपने घर में भरना॥
गाय सदा हों दर पर तेरे, खलिहान भरी हो पूलों से॥
दूजा कदम जमाना, उपले, ईंधन 'ऊर्जा' के [illegible] से॥

रायस्पोषाय त्रिपदी मव

विध भांति के द्रव्य, जुटाती रहना अपने घर में।
पालन-पोषण के सब साधन: बिना चूक के भरना घर में॥
[illegible] संचय में चूक न करना, दैन्य भाव को दूर भगाना।
श्रम पूर्वक शुभ कदम तीसरा, सप्त पदी का [illegible]।

मयोमवाय चतुष्पदी मव

हास्य, खेल, सुखों के साधन विविध मनोरञ्जन घर में भरना।
घर के प्राणी सभी सुखी हों, सदा यत्न ऐसा ही कर[illegible]॥
सुख की दाता बनकर शासन करने को [illegible]।
चौथा कदम जमाकर अपना, सुख का छत्र [illegible]।

प्रजाम्यः पञ्चपदी मव

चार कदम यों पक्के करके शुभे! प्रजोत्पादन में लगना।
पांच साल में पहला बालक, पल जावे दृढ़ निश्चय रखना॥
पांच साल औ कदम पांचवां, संयम-नियम यथोचित रखना।
प्रजापति की पूजा करके, कदम पांचवां बचकर रखना॥

ऋतुभ्यः षट्पदीमव

एक वर्ष में छः ऋतुयें हैं, हर ऋतु का तुम रखना ध्यान।
खान-पान में रहन सहन में, ऋतु अनुकूल उचित सामान॥
ग्रीष्मकाल में शीतल शरबत, परदे, पंखे, मच्छरदानी।
नये घड़े हों, नई सुराही, पीने को हो शीतल पानी॥

गोबर मिट्टी का नव लेपन, आषाढ़ महीने में करना।
आश्विन में फिर नया लेप कर, निज घर को सुखप्रद रखना॥
यथास्थान छतरी, बरसाती, छतें घर की न चूने पावें।
अधिक वृष्टि से घर के प्राणी, ठण्ड कभी न खाने पावें॥
गरम-गरम हो पेय शीत में, नरम ऊन के वस्त्र सभी।
ऋतु अनुकूल सदा चल करके, पूरी करना तुम षष्टपदी॥

सखे सप्तपदी मव

सखी भाव से रहना प्रतिपल, सुहृत् सदा हो हृदय तुम्हारा।
पाप नाशिनी दृष्टि निरन्तर, सप्तपदी की अन्तिम धारा॥
सेवा, प्रेम, दया, अनसूया, श्रम निर्भरता जीवन भर।
सदाचार की सुरभित पवनें, बहती रहें सदा घर भीतर॥
पास पड़ौसी जितने तेरे सखी भाव सबसे नित रखना।
सखी भाव उस ईश्वर से भी, नित्य नियम से निश्चय रखना।

—श्री योगेन्द्रपाल जी, रायकोट

[पृष्ठ २ का शेष]

मेरा स्वामी आग की भांति संसार के प्रत्येक रूप में समाया हुआ है। पर लगन के चकमक से घिसे लगे तब न। इसी से तो मेरी यह लौ बुझ-बुझ जाती है।

अब प्रश्न उठता है कि इसे कौन पा सकता है? दादू दयाल कहते हैं—

सब घट माहीं रमि रह्या,
बिरला बूझै कोय
सोह बूझै राम को,
जो राम सनेही होय।

मेरा प्रभु रम तो हर घट में, हर [illegible] में रहा है, पर इस भेद को समझता का[illegible] रला ही है। इसकी व्यापकता [illegible] समझेगा जो उसके प्रेम के [illegible] रंग में रंग गया हो। वेद में भी [illegible] बात को कहा गया है—

[illegible]ष्णोः परमं पद सदा पश्यन्ति सूरयः।
[illegible]ीव चक्षुराततम्। [ऋ० १/२२]

सर्व व्यापक परमात्मा का वह [illegible]रम पद है जिसको ज्ञानी लोग सदा देखते हैं। जिस प्रकार द्यु लोक में जगत की सूर्य रूपी आंख खोलकर रखी गई है।

ज्ञानी लोग, वे लोग जिन्होंने परमेश्वर के स्वरूप को समझ लिया है। उन्हें परमेश्वर सूर्य की तरह दिखाई देता है।

यजुर्वेद ३२/२८ मन्त्र में लिखा है—

वेनस्तत्पश्यन्निहितं गुहायां सद् यत्र विश्वं भवत्येक नीडम। तस्मिन्निद [illegible]सञ्चविचंति सर्वं स ओतः प्रोतश्चविभूः प्रजासु।

अर्थात्—ज्ञानी मनुष्य उस गुप्त स्थान में अथवा बुद्धि में रहने वाले तथा त्रिकालाबाधित नित्य ब्रह्म को देखता है। जिस ब्रह्म में जब सब जगत् एक आश्रय को प्राप्त होता है। उस ब्रह्म में यह सब जगत् एकत्र होता है और पृथक भी होता है। वह परमात्मा सब प्रजाओं में व्यापक है और ओत प्रोत हुआ है।

परमेश्वर के इस सर्वदेशीय रूप को समझने से जीवन में पूर्णता का उदय होता है। इसलिये उस परमात्मा को हमें जानने का यत्न करना चाहिए।

अथर्ववेद १०/८/२९ में देखिये—

पूर्णात् पूर्णं मुदचति पूर्णं पूर्णेन सिच्यते।
उतो तदद्य विद्याम यतस्तत् परिषिच्यते।

पूर्ण से पूर्ण का उदय होता है, पूर्ण को पूर्ण ही जीवन देता है। आज उसको हम जानें जिससे वह चारों ओर सींचा जाता है।

इसलिये हमें ध्यान रखना चाहिये कि ब्रह्म सर्वदेशी है। वह सर्व व्यापक है। और सर्व व्यापक होने से सर्वत्र सबसे पहले पहुंचा हुआ है। यह ब्रह्म इन्द्रियों का विषय नहीं अतः उन्हें प्राप्त नहीं होता। यह ब्रह्म सर्वव्यापक होने से अचल है परन्तु उसके यहां जाने वाले या दौड़ने वाले से पहले ही यह अपने लक्ष्य पर पहुंचा रहता है। इस प्रकार के सभी पदार्थ और जल उससे धारण किये जाते हैं। अथर्व ६-८७-१ में कहा है—

यो अग्नौरुद्रो यो अप्स्वन्तर्य ओषधीर्वीरुध आविवेश यइमा विश्वा भुवनानि चाक्लृपे तस्मै रुद्राय नमोऽस्तु अग्नये।

जो रुद्र अग्नि में, जो जल में और जो ओषधियों वनस्पतियों में व्यापक है जो इन सब भुवनों को रचता है, उस अग्नि रूप रुद्र के लिये मेरा नमस्कार है। जिन्होंने अपने को उस रुद्र के चरणों में समर्पित कर दिया वे अमर हो गये। निर्भीक हो गये। उन्हें संसार कुछ भी अप्राप्य न रहा। स्वामी दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा गांधी हमारे इस युग के महापुरुषों की यही तो सबसे बड़ी विशेषता है। इसलिये—

रे मन उसका कर तू चिन्तन,
ऊंचे ऊंचे व्योम विचुम्बित,
शैल शृंग उत्तुंग हिमावृत
अविचल पर्वत हैं महिमान्वित
करते जिसका आराधन,
रे मन उसका कर तू चिन्तन,
विरहिन व्याकुल सी सरिताएं,
बढ़ा-बढ़ा कर दीर्घ भुजायें
गा-गा कर उसकी महिमायें
करती अविरल आवाहन,
रे मन उसका कर तू चिन्तन।
युग-युग के वियोग से विह्वल
सागर जिसे पुकारे प्रतिपल,
सभी दिशायें फैला आंचल,
करती जिसका आराधन,
रे मन, उसका कर तू चिन्तन।

आइये, हम भी सम्पूर्ण हृदय से ईश्वर की सत्ता और सर्व व्यापकता में विश्वास रख प्रभु के गुणों को धारण करें। जिससे वह हमारी आत्मा का अपने सौंदर्य से सुन्दर, अपने ऐश्वर्य से ऐश्वर्यशाली, अपनी उज्ज्वलता से उज्ज्वल बना दे। हम 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम् बन सकें। ★

(पृष्ठ ९ का शेष)

यथा हि सत्या वरुणस्य राज्ञः।
[अथर्व १ १०-१]

६. दुर्विचारों और पाप भावों को दूर भगावें।

परोऽपेहि मनस्पाप किमशस्तानि शंससि।
[अथर्व ६-४५-१]

७. पाप भावना के निवारणार्थ ईश्वर से शक्ति की प्रार्थना।

मानस्तस्मादेनसो देव रीरिषः
[अथर्व ६-५१-३]

८. इसी प्रकार के पापों को प्रायश्चित्त से दूर करें। जैसे स्नान से शारीरिक मैल को।

द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नः स्नात्वा मलादिव। [अथर्व ६-११५-३]

वेद में पापों से निवृत्ति के सैकड़ों मन्त्र हैं। यहां पर केवल दिग्दर्शनार्थ कुछ मन्त्र प्रस्तुत किये गये हैं। ★

साहित्य-समीक्षण

क्या वैदिक काल में गोमांस खाया जाता था ?

लेखक—श्री राधेमोहन, प्रकाशक—ट्रैक्ट विभाग आर्यसमाज चौक प्रयाग मूल्य—१५ पैसा।

हमारे देश मे पुन वेद और गोवध का प्रश्न उठ खड़ा हुआ है। इस विषय मे आर्यसमाज चौक के मन्त्री श्री पंडित राधेमोहन जी ने एक बहुत ही उत्तम ट्रैक्ट लिखा है जिसकी पृष्ठ संख्या १८ है और मूल्य १५ पैसे। फाजिका पंजाब के रईस श्री चननलाल अहूजा जी ने इसकी छपाई के लिए ७५) रु० दिये हैं। जिससे १००० कापियां छप सकेंगी परन्तु यह देश भर का प्रश्न है, मैं चाहता हूं कि इस ट्रैक्ट की एक लाख प्रतियां छपें सब तक पहुंच जाय। अगर समाज मदद दें तो हम लागत मूल्य पर इनको दे देंगे। तीन महीने के अन्दर जो समाजें पेशगी रुपया भेज देंगी उनको ट्रैक्ट भेजे जावेंगे। इस ट्रैक्ट का मूल्य सामयिक ही नहीं है अपितु स्थायी है क्योंकि यह प्रश्न बारबार कई नैतिक स्थानों से उठता रहता है और उठता रहेगा। क्योंकि जब तक भारतवर्ष मे हिन्दू और मुसलमान मौजूद हैं तब तक मुसलमानों की ओर से यह प्रचार होता ही रहेगा कि हिन्दुओं को गोवध का इतना विरोध नहीं करना चाहिये।

—गङ्गाप्रसाद उपाध्याय एम० ए०

[टिप्पणी—यह समीक्षण हमें श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय के देहावसान के एक सप्ताह पूर्व प्राप्त हुआ। जीवन के अन्तिम क्षणों तक आर्य समाज के प्रचार कार्य की ओर उपाध्याय जी का कितना ध्यान था, यह इसी समीक्षण से स्पष्ट हो जाता है।

संस्था-परिचय

दयानन्द उच्चतर माध्यमिक विद्यालय गुरुकुल डौरली, मेरठ

यह संस्था आज से ४४ वर्ष पूर्व मेरठ नगर से ४ मील दूर स्व० पं० अलगूराय शास्त्री जी के आचार्यत्व मे पं० शिवदयालु जी ने स्थापित की। बढ़ते-बढ़ते एक अच्छा संस्कृत महाविद्यालय एवं आयुर्वेद कालेज का रूप इसने धारण किया। सन १९४२ के राष्ट्रिय आन्दोलन मे इसकी प्रबन्ध समिति अध्यापक वर्ग ब्रह्मचारियों ने आगे बढ़कर भाग लिया। सरकार ने इस संस्था को गैरकानूनी घोषित कर दिया और क्रान्तिकारियों का इसे केन्द्र बतलाया जो यथार्थ मे था भी।

आन्दोलन की समाप्ति पर पं० शिवदयालु जी ने कारागार से आकर पुनः इसको आगे बढ़ाया और स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरान्त कुछ ऐसी लहर चली कि व्यावहारिक दृष्टि से संस्कृति के प्रति जनता एवं छात्रों की रुचि घटने बढ़ने की ओर संस्था को वर्तमान शिक्षा प्रणाली मे परिवर्तित कर दिया गया। सम्प्रति कृषि से इण्टर कालेज के रूप मे कार्य कर रहा है।

संस्था के पास लगभग १७५ बीघे भूमि है, जिसमे १५० बीघा भूमि पं० शिवदयालु जी की दी हुई है। संस्था मे ८०० से ऊपर छात्र इस समय शिक्षा पा रहे हैं। सांस्कृतिक वातावरण बनाने का प्रयत्न किया जाता है। पण्डित शिवदयालु जी जो इसके संस्थापक एवं आजीवन सदस्य हैं को कुलपति भी बनाया हुआ है।

दिनांक २४-७-६८ को श्री पण्डित जी यहां पधारे और उपाध्याय वर्ग की सभा मे संस्था के क्रान्तिकारी लक्ष्य को सामने रखकर सामाजिक क्रान्ति अर्थात जातिवाद एवं जन्ममूलक वर्ण वाद को विघटित करने की दिशा मे क्रियात्मक पग उठाने उठवाने की प्रेरणा दी।

—शिवदयालु

एक सुझाव

विगत जून में टङ्कारा (गुजरात) में स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवन सम्बन्धी स्थानों का दर्शन करके अजमेर जहां उनका स्वर्गवास हुआ था आया। यहां आर्यसमाजी संस्थाओं का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त कर बड़ी प्रसन्नता हुई। स्वामी जी की जिस श्मशान भूमि में दाह क्रिया हुई थी तथा दयानन्द उद्यान जहां स्वामी जी का अवशेष जो राख के रूप में था खेतों मे बिखेरा गया था तथा जहां अस्थियां गाड़ी गई थीं देखा। इस स्थान पर स्वामी जी के कुछ कपड़े, खड़ाऊं, कमण्डलु तथा लेखन सामग्री आदि देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। इस स्थान पर एक यज्ञशाला है। इस यज्ञशाला की अग्नि दयानन्द निर्वाण अर्ध शताब्दी पर प्रज्वलित की गई थी और यह आज तक जल रही है। इस स्थान की यज्ञशाला में सर्वदा अग्नि प्रज्वलित रखने के लिये क्यों चुना गया इसका मुझे कारण बतलाया गया। चूंकि जिस स्थान पर अग्नि कुण्ड है उसी के नीचे स्वामी जी की अस्थियों को समाधि दी गई है, अतः उस स्थान के महत्व को स्थायित्व प्रदान करने के लिये तथा

आर्यजगत् से आवृत होने के लिये अग्नि कुण्ड का निर्माण किया गया है और अग्नि को सर्वदा प्रज्वलित रखने का आयोजन किया गया है। मेरी समझ में इस आयोजन से लोक दृष्टि मे स्थान का सम्मान बढ़ गया है परन्तु यह कार्य स्वामी जी के उपदेश जिसमे उन्होंने अपने लिये किसी प्रकार का स्तूप अथवा स्मारक खड़ा करने को मना किया था के विरुद्ध है।

इस प्रज्वलित अग्नि से कोई लाभ भी नहीं है। सुगन्धि द्रव्यों की अग्नि से वायु शुद्ध होती है और केवल काठ की अग्नि से वायु दूषित होता है, क्योंकि इसके धुयें से जो कार्बन प्राप्त होता है वह जीवनी शक्ति के लिये घातक हो रहा है। वहां लकड़ी बराबर जलती रहती है और किसी-किसी समय इसमें सुगन्धित वस्तुओं का हवन होता है। इससे ही से अग्नि की उपयोगिता सिद्ध नहीं है। इससे मिथ्या विश्वासों की वृद्धि में सहायता मिल रही है। मेरी समझ में यह कार्य भावुकता का है। आर्यजगत को चाहिये कि वे ऋषि के मन्तव्यों के अनुसार सुनियोजित योजना जिससे लोक कल्याण हो कार्यान्वित करे।

—सीताराम द्विवेदी 'समन्वयी'
एडवोकेट, इमली महादेव,
मीरजापुर, उ० प्र०

वृक्ष सजीव हैं

आपके पत्र में मैं देखता हूं कि वृक्ष की सजीवता या निर्जीवता पर फिर विवाद छेड़ दिया गया है। यहां मैं कुछ उद्धरण प्रस्तुत करता हूं जो वृक्षों मे जीव होना बताते हैं—

(१) इदं जनासो विदथ महद् ब्रह्म वदिष्यति। न तत् पृथिव्यां नो दिवि येन प्राणन्ति वीरुधः ॥
अथर्ववेद (प्रथम कांड)।

(२) अस्य सोम्य महतो वृक्षस्य यो मूलेऽभ्याहन्याज्जीवन् स्रवेद्यो मध्येऽभ्याहन्याज्जीवन् स्रवेद्योऽग्रेऽभ्याहन्याज्जीवन् स्रवेत्स एष जीवेनात्मनानुप्रभूतः पेपीयमानो मोदमानस्तिष्ठति ॥ १ ॥
अस्य यदेकां शाखां जीवो जहात्यथ सा शुष्यति ... जहाति सर्वः शुष्यति ॥ २ ॥
छान्दोग्योपनिषद्, एकादश खंड।

(३) शरीरजैः कर्मदोषैर्याति स्थावरतां नरः।

(४) स्थावराः कृमिकीटाश्च मत्स्याः सर्पाश्च कच्छपाः। पशवश्च मृगाश्चैव जघन्या तामसी गतिः ॥
मनुस्मृति, अध्याय १२

विशेष—वृक्षों में जीव की विद्यमानता इस लिये स्पष्ट नहीं होती क्योंकि वे सुषुप्ति अवस्था में होते हैं। उनसे फल फूल लेना मनुष्य के लिये उनका स्वाभाविक उपयोग करना है। उससे कोई हिंसा नहीं होती। इसी तरह घास पात के उखाड़ने से भी कोई हिंसा नहीं होती। नाई जब मनुष्य शरीर के बाल नख इत्यादि निकालता है तो क्या यह हिंसा करता है ? नहीं।

भवदीय—
नीलकंठ कृष्णराव 'विप्रहर?'
बी० ए०, सिद्धान्त शास्त्री
पुरोहित तथा उपदेशक आर्यसमाज
बिलासपुर [म० प्र०]

अशोक मेहता का त्याग-पत्र स्वीकृत
क-प्रश्न पर सरकार से मतभेद

नई दिल्ली, प्रधान मन्त्री के परामर्श पर राष्ट्रपति ने श्री अशोक मेहता का केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल से त्याग पत्र स्वीकार कर लिया है।

श्री अशोक मेहता ने चेकोस्लोवाकिया के प्रश्न पर सरकार की नीति से मतभेद के कारण कल रात अपना त्याग-पत्र प्रधानमन्त्री को दे दिया था। आप पेट्रोलियम रसायन और समाज कल्याण मन्त्री थे।

विधि मन्त्री श्री गोविन्द मेनन समाज कल्याण विभाग भी सम्भालेंगे। पेट्रोलियम एवं रसायन मन्त्रालय में राज्य मन्त्री श्री रघुरमैया इन दोनों विभागों का कार्य सम्भालेंगे।

विदित हुआ है कि श्री अशोक मेहता ने प्रधान मन्त्री को अपने पत्र में सुझाव दिया है कि सुरक्षा परिषद में भारत को दृढ़ रुख अपनाना चाहिए और रूसी तथा वारसा संधि के अन्य देशों की सेना की चेकोस्लोवाकिया से वापसी की मांग करना चाहिये।

बाद में अनेक विपक्षी सदस्यों ने कहा कि अशोक मेहता अपने त्यागपत्र के बारे में वक्तव्य दें।

अध्यक्ष ने कहा कि वह श्री मेहता को वक्तव्य देने के लिए बाध्य नहीं कर सकते।

शेख अब्दुल्ला के जहरीले भाषणों का संग्रह

नई दिल्ली श्री यज्ञदत्त शर्मा के प्रश्न के उत्तर में गृहमन्त्री ने बताया कि जम्मू कश्मीर में दो पुस्तिकायें प्रकाशित की गई हैं जिनमें शेख अब्दुल्ला के भाषणों का संग्रह है। इनकी भूमिका मिर्जा अफजल बेग ने लिखी है जिसमें उन्होंने कहा है कि कश्मीर के लोगों को अभी निर्णय करना है कि वे भारत में रहें या पाकिस्तान में रहें या पाकिस्तान में जायें या स्वतन्त्र रहें। गृहमन्त्री ने कहा कि भारत सरकार ने कई बार कहा है कि कश्मीर का प्रश्न हल हो चुका है अतः इसे दोबारा उठाने का प्रश्न नहीं।

हैदराबाद में साम्प्रदायिकता का जोर
केन्द्र ने मजलिसे मुसलमीन की रिपोर्ट मांगी

नई दिल्ली, गृहमन्त्री श्री चह्वाण ने लोक सभा में एक प्रश्न के लिखित उत्तर में बताया कि केन्द्र ने आंध्र सरकार से मजलिसे इत्तहादुल मुसलमीन की कार्यवाही के विषय में रिपोर्ट मांगी है।

हैदराबाद में कई दिनों से उक्त संगठन की कार्यवाइयों को साम्प्रदायिक एकता के लिए खतरनाक अनुभव किया जा रहा है। वहां इस समय फिरकापरस्ती का बड़ा जोर बताया जाता है।

पश्चिम जर्मनी में दस हजार से अधिक योग के प्रशंसक

बान—पश्चिम जर्मनी में पिछले दस हजार से अधिक व्यक्तियों ने योग के स्कूल में अध्ययन किया है। ऐसे स्कूल इस देश के बड़े छोटे अनेक नगरों में पाये जाते हैं।

योग के इन भक्तों का उद्देश्य बीमारियों से मुक्त रहना और अपने वातावरण के अनुकूल तथा आध्यात्मिक शांति के साथ जीवन बिताना होता है।

विश्व विख्यात 'बीटल्स' ने भारतीय चिन्तन के सिद्धान्त को जैसे युवा जर्मनों में बड़ा लोकप्रिय कर दिया है जो आधुनिक अत्यन्त व्यस्त जीवन में आध्यात्मिक शांति की कामना करते हैं।

स्काटलैंड में ब्रिटेन से अलग होने की प्रवृत्ति

लंदन—स्काटलैंड में ब्रिटेन से अलग होने की जो प्रवृत्ति दिखाई देने लगी है, उसका एक उदाहरण अभी उस दिन ब्लैकपूल में मिला जहाँ एक नृत्य के पश्चात् ६०० युवक-युवतियों ने 'स्काटलैंड, स्काटलैंड' के नारे लगाते हुए सार्वजनिक सम्पत्ति की तोड़फोड़ की।

अनुमान है कि इस उपद्रव से लगभग पांच हजार रुपये की क्षति हुई।

चेकोस्लोवाकिया के रक्त दानी

प्राग—चेकोस्लोवाकिया में लगभग ढाई लाख व्यक्ति ऐसे हैं जो दूसरों के लिए रक्तदान करते हैं—इसमें अधिकांश बिना किसी प्रतिकार की आशा के।

खून देने के पहले हर रक्त देने वाले की परीक्षा की जाती है—उसका ऐक्सरे किया जाता है तथा खून आदि की जांच की जाती है। उम्र और स्वास्थ्य को देखकर साल में खून दो से चार बार तक लिया जाता है।

मुफ्त खून देने वालों को कुछ सुविधायें प्राप्त होती हैं जैसे दांतों तथा अन्य तरह की चिकित्सा में उन पर सबसे पहले ध्यान दिया जाता है।

इसके अलावा उन्हें रक्तदानी संस्था का सदस्य बनाकर सम्मानित भी किया जाता है।

हृदय रोग अनिवार्यतः घातक नहीं

लंदन—आजकल के जीवन में हृदय रोग प्रायः अनिवार्य है, किन्तु ऐसे अधिकांश व्यक्ति, जिन पर हृदय रोग का प्रहार होता है बच जाते हैं, और पुनः साधारण जीवन यापन करने लगते हैं, ऐसा उस पुस्तक में कहा गया है जो यहां के डाक्टर संघ की ओर से प्रकाशित की गई है। पुस्तक का नाम है 'हृदयाक्रमण'।

उक्त पुस्तक के अनुसार जब किसी को हृदयरोग की पीड़ा हो तो उसको घर पर या अस्पताल में पूर्ण विश्राम करना चाहिये।

इस पुस्तक में यह भी कहा गया है कि रोगी स्त्री हो या पुरुष, आक्रमण पश्चात् उसको वैसे ही शारीरिक नियन्त्रण में रहना चाहिए। जैसा कि मुक्केबाजी के खिलाड़ी रखा करते हैं। तीसरे महीने से उसको प्रतिदिन कम से कम पांच मील पैदल चलना चाहिये और अपनी खाने पीने की आदतों में आवश्यक परिवर्तन करना चाहिये।

विकासशील देशों में दूध की समस्या

रोम—विकासशील देशों में अगले सात वर्ष में जितने दूध और दूध से बने पदार्थों की आवश्यकता होगी उससे कहीं कम उनका उत्पादन उन देशों में हो पायेगा। ऐसा विश्व खाद्य संस्थान की पत्रिका में कहा गया है।

अनुमान के अनुसार आज ७ करोड़ १० लाख टन दूध की आवश्यकता है। सन् १९७५ में १२ करोड़ टन की आवश्यकता होगी। इस अनुमान का आधार पिछले वर्ष की खपत है जो एशिया में ११ किलोग्राम प्रति व्यक्ति है तो लेटिन अमरीका में ९१ किलोग्राम प्रति व्यक्ति है। सन् १९७५ में अनुमानतः यह आवश्यकता क्रमशः बढ़कर १५ किलोग्राम और १०५ किलोग्राम हो जायेगी।

दूसरी ओर इन देशों में दूध का पिछले वर्ष का उत्पादन ७ करोड़ १० लाख टन था जो सन् १९७५ में ९ करोड़ १५ लाख टन हो जायगा।

विश्व खाद्य संस्थान के अनुसार अमरीका में औसतन ३०० किलोग्राम दूध की खपत होती है जबकि फिनलैंड में ७०० किलोग्राम की। विकसित देशों में अगले ७ वर्षों में दूध और उससे बने पदार्थ भारी मात्रा में पैदा होंगे, परन्तु विकासशील देशों के पास इतना धन नहीं है कि उन्हें खरीद सकें।

विश्व खाद्य संस्थान का कहना है कि यदि विकासशील देश आधुनिकतम पशुपालन व्यवस्था प्रयुक्त करें तो उनकी आवश्यकतायें बहुत हद तक पूरी हो सकती हैं।

●

(पृष्ठ ८ का शेष)

Light of Truth
(English Translation of Satyarth Prakasha)
शंकर मतालोचन
Landmarks of Swami Dayanand's Teachings.
आर्य स्मृति
Vedic Culture,
कम्युनिज्म
एतरेय ब्राह्मण भाष्य
Life after death.
Catechism on Hinduism
सनातन धर्म और आर्यसमाज
आर्योदय काव्यम् पूर्वार्द्ध उत्तरार्द्ध
आर्यसमाज की नीति
मुक्ति पुनरावृत्ति
सरल संध्या विधि
Aryasamaj in World movemant
The Sage of modern time
The Vades.
Yajnas or Sacrifice.
The World as we view it
Devas in the vedas.
Hindu ! Wake up !
Dayanand and State.
If I become a Christian
धर्म सुधा सार
जीवन चक्र
Outline of Dayanandian philosophy

लखनऊ जिले के समाचार

प्रचार

(१) रविवार दिनाङ्क २५-८-६८ को सायंकाल ५-३० से ८-३० तक आर्यसमाज आदर्शनगर (आलम्बाग) लखनऊ के नव निर्मित हाल में लखनऊ नगर की समस्त आर्यसमाजों का सम्मिलित ६३ वां मासिक अधिवेशन श्री कृष्णबलदेव जी प्रधान जिलोपसभा लखनऊ की अध्यक्षता में हुआ। सामवेद से बृहत्वैदिक यज्ञ श्री पं० रामचरित्र के पुरोहित्व में हुआ। सन्ध्या प्रार्थना पं० मेधावी जी ने कराई। श्री पृथ्वीराज वरमानी के भक्ति रस के भजन हुए। बाल कार्य्य क्रम हुये। स्वामी अमयानन्द जी का व्याख्यान तथा श्री 'बसन्त' जी का वेदोपदेश हुआ।

जिलोपसभा लखनऊ के तत्वावधान में आगामी ६४ वां मासिक अधिवेशन रविवार २८-९-६८ को आर्यसमाज आर० डी० एस० ओ० कालोनी (आलमबाग) लखनऊ में होना निश्चित हुआ है।

(२) रविवार दिनाङ्क १-९-६८ को सायंकाल ६ बजे तक आर्यसमाज गणेशगंज लखनऊ में आर्य उप प्रतिनिधि सभा लखनऊ के सभी अवैतनिक उपदेशकों का एक सम्मेलन हुआ जिसमें लखनऊ नगर की समस्त आर्यसमाजों के साप्ताहिक अधिवेशनों में विधिवत प्रचार के वर्ष भर के कार्यक्रम निश्चित किये गये।

वार्षिकोत्सव

लखनऊ नगर की निम्नलिखित आर्यसमाजों के वार्षिकोत्सव निम्न तिथियों को मनाये जायेंगे--

(१) आर्यसमाज गणेशगंज—२, ३, ४ व ५ नवम्बर ६८

(२) आर्यसमाज चन्द्रनगर—८, ९ व १० नवम्बर ६८

(३) आर्यसमाज शृंगारनगर—८ से ११ दिसम्बर ६८ तक

शोक

लखनऊ नगर की समस्त आर्य समाजों द्वारा रविवार १-९-६८ को अपने प्रातः कालीन साप्ताहिक अधिवेशनों में आर्यसमाज के पूज्य विद्वान् पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय के देहावसान पर शोक सभाएं की गईं और शोक प्रस्ताव पारित किये गये।

सायंकाल जिलोपसभा लखनऊ की एक विशेष बैठक में भी शोक सभा का आयोजन किया गया। दो मिनिट का मौन धारण किया गया तथा दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिये प्रार्थना की गई।

कानपुर में शोक सभा

१ सितम्बर को कानपुर में श्रीयुत श्रीप्रकाश जी के मकान पर कानपुर की समस्त आर्यसमाजों की ओर से श्री पं० विद्याधर जी की अध्यक्षता में एक शोक सभा हुई। इसमें श्री बा० कालिकाप्रसाद जी भटनागर, श्री डा० शिवचन्द्र जी तथा अध्यक्ष महोदय आदि ने श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय के प्रति अपनी आन्तरिक श्रद्धांजलि अर्पित की तथा दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिये प्रभु से प्रार्थना की।

शोक सहानुभूति

आर्यसमाज लाजपतनगर कानपुर के साप्ताहिक सत्संग दिनांक ४-८-६८ में श्री पं० दामोदर सातवलेकर के देहान्त पर शोक सहानुभूति का प्रस्ताव पारित किया।

—योगेन्द्रसरीन मन्त्री

आर्यसमाज जगदीशपुर में शोक सभा

बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रचार मन्त्री स्व० श्री बद्रीनारायण जी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए कोषाध्यक्ष श्री त्रिवेणीप्रसाद जी के मकान पर शोक सभा ७ जुलाई को हुई। उनकी दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिये विशेष प्रार्थना की गई।

आवश्यक सूचना

आर्यमित्र में प्रकाशनार्थ इतने विस्तृत समाचार आते हैं कि उन सब को प्रकाशित करना किसी भी प्रकार सम्भव नहीं हो पाता।

इस कारण प्रकाशन में भी विलम्ब हो जाता है, अतएव आर्यमित्र में प्रकाशन के निमित्त समाचार भेजने वालों से प्रार्थना है कि वे अत्यन्त संक्षिप्त रूप में समाचार भेजें ताकि उन्हें तुरन्त प्रकाशित करने में सुविधा हो।

—सम्पादक

सभा भवन में शोक सभा

२९ अगस्त को एक बजे आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ में श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय के देहावसान का समाचार तार द्वारा मिला। तार को पढ़ते ही सभा कार्यालय, आर्यमित्र कार्यालय, प्रेस कार्यालय शोक में बन्द कर दिये गये। और श्री बा० चन्द्रनारायण जी एडवोकेट की अध्यक्षता में एक शोक सभा हुई, इसमें श्री बा० चन्द्रनारायण जी, श्री शिवनारायण जी बेरवाठी बढ़नी (बस्ती) तथा आर्य समाज मूड के मन्त्री महोदय ने श्री उपाध्याय जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुये स्वर्गस्थ आत्मा को शान्ति और शोक सन्तप्त परिवार को धैर्य प्रदान करने के लिये प्रभु से प्रार्थना की।

दिनांक ३-९-५८ को आर्यसमाज जगदीशपुर में ११ बजे दिन में आर्यसमाज मन्दिर में वेद मूर्ति श्री पाद दामोदर सातवलेकर के निधन पर शोक प्रकट करने के लिये आवश्यक बैठक हुई। जिसमें उपस्थित सदस्यों ने उनकी जीवनी पर प्रकाश डाला तथा परमपिता परमेश्वर से उनकी दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिये प्रार्थना की।

आर्यसमाज रामपुर

रामपुर के नागरिकों की एक सभा आर्यस० के तत्वावधान में हुई यह शोक सभा स्वर्गीय पूज्यपाद स्वामी अथर्वानन्द जी महाराज के निधन पर अति शोक प्रकट करती है। ईश्वर तथा वेद में उनकी अटल आस्था थी। उनका गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा सन्यास तीनों ही आश्रमों का जीवन दृढ़, सरल, क्रियात्मक तथा अनुकरणीय रहा। साधारणतया प्राणी मात्र तथा विशेष तथा प्रत्येक परिचित जन के लिये हित चिन्तन ... आदर्श तथा क्रियात्मक रूप से ... सेवा उनका कार्यक्रम था। उनके प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए ... ईश्वर से प्रार्थना करती है कि उनकी दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

—नरदेवशरण आर्य, मन्त्री

अन्तरंग सभा का निश्चय

विषय सं०-५ (३) श्री पं० शिवकुमार मिश्र ने लिखित प्रस्ताव वृहदधिवेशन के लिये दिये कि चुनाव तीन वर्ष में हुआ करे।

निश्चय हुआ कि निम्नलिखित सदस्यों की उपसमिति बनाई जाय जो इस प्रस्ताव के हर पहलू पर विचार करें—

१—सर्व श्री चन्द्रदत्त तिवारी २—धर्मपाल विद्यालंकार ३—पं० शिव कुमार शास्त्री एम० पी० ४—शिवकुमार मिश्र हरदोई ५—महेन्द्रप्रताप शास्त्री ६—रामबहादुर जी एडवोकेट ७—प्रेम चन्द्र शर्मा ८—नरदेव स्नातक ९—आचार्य विशुद्धानन्द जी १०—क्षेमचन्द्र स्नातक इसकी सूचना आर्यमित्र में भी निकल जाये।

प्रेमचन्द्र शर्मा
सभा मन्त्री

आर्यसमाज बरेली कैंट

८ अगस्त १९६८ को आर्यसमाज बरेली कैंट में एक शोक सभा हुई। जिसमें श्री दीनानाथ जी वैद्य ने वेदमूर्ति महामान्य पं० दामोदर सातवलेकर जी के उज्ज्वल जीवन पर प्रकाश डालते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पण की। तत्पश्चात् उनकी मृत्यु पर शोक-प्रस्ताव पास करके भगवान् से प्रार्थना की गयी कि वह उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें।

आर्यसमाज हरदोई का उत्सव

आर्यसमाज, हरदोई का ८४ वां वार्षिकोत्सव २९, ३० सितम्बर एवं १ अक्तूबर सन् १९६८ ई० दिन रविवार सोमवार तथा मंगलवार को आर्य कन्या पाठशाला भवन में मनाया जायेगा। जिसमें सभा के माननीय विद्वान् तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

—रामेश्वरदयाल (वृद्धि) मन्त्री

वधू चाहिये

एक २७ वर्षीय सुन्दर स्वस्थ, वार्ष्णेय वैश्य कुमार के लिये जो एक स्थायी राजकीय विभाग में ४२५ रु० मासिक वेतन पा रहा है, एक सुन्दर ग्रेजुएट कुमारी चाहिये। फोटो व पूर्ण विवरण सहित पत्र व्यवहार कीजिये।

रमाशंकर वार्ष्णेय
२७–२९–३१ १२ बापूनगर, अजमेर

रणंजय पुस्तकालय का उद्घाटन

अमेठी-सुलतानपुर, १७ अगस्त। महामहिम राज्यपाल डा० बी० गोपाल रेड्डी महोदय ने आज १७ अगस्त १९६८ को रणवीर-रणंजय डिग्री कालेज अमेठी सुल्तानपुर में रणंजय पुस्तकालय का उद्घाटन किया।

इस पुस्तकालय को राजा रणंजय-सिंह भूतपूर्व एम० पी० ने कई सहस्र के बहुमूल्य ग्रन्थ प्रदान किये हैं, जिनमे बहुत से दुष्प्राप्य एवं अप्राप्य हैं। पुस्तकालय का उद्घाटन भारतीय संस्कृति के अनुसार हवन के उपरान्त दीपक जलाकर वेदध्वनि के साथ सम्पन्न हुआ। तदुपरान्त महामहिम राज्यपाल महोदय को महाविद्यालय की ओर से अभिनन्दन पत्र समर्पित किया गया। उसके उत्तर में राज्यपाल महोदय ने महाविद्यालय की उन्नति की शुभ कामना करते हुये कहा कि ऐसे पुस्तकालयों से छात्रों और अध्यापकों को विशेष लाभ पहुचता है। वस्तुतः ज्ञानोपार्जन के स्रोत पुस्तकालय ही हैं। राज्यपाल महोदय ने अपना यह उपदेश हिन्दी मे दिया था। इस अवसर पर लगभग ८ हजार जनता उपस्थित थी।

उत्सव

आर्य समाज शमशाबाद (आगरा) का वार्षिकोत्सव १, २, ३, अक्तूबर को होगा। श्री आचार्य विश्वश्रवा जी की उपस्थिति प्रार्थनीय है। —मन्त्री

"सिद्धान्त परीक्षायें"

भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् द्वारा गत ४३ वर्षों से सचालित, सार्वदेशिक सभा द्वारा मान्य सिद्धात सरोज, सि० रत्न, सि० भास्कर, सि० शास्त्री एव सिद्धात वाचस्पति परीक्षाओं मे बैठिए, केन्द्र स्थापित करने हेतु निःशुल्क नियमावली और फार्म के लिए लिखिए, सुन्दर उपाधि प्रमाण-पत्र प्राप्त कीजिये।—आचार्य डा० प्रेमदत्त शास्त्री, साहित्यालंकार

परीक्षा मन्त्री—भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद्
अलीगढ़ उ० प्र०

धार्मिक परीक्षायें

भारतवर्षीय वैदिक सिद्धांत परिषद् (रजि०) की
सिद्धांत प्रवेश, सि० विशारद, सि०भूषण, सिद्धान्तालंकार,
सि० शास्त्री, तथा सिद्धान्ताचार्य

परीक्षायें आगामी दिसम्बर-जनवरी मे समस्त भारत तथा विदेशों मे होंगी। सर्व प्रथम, द्वितीय, तृतीय आने वालों को छात्रवृत्ति दी जाती है। उत्तीर्ण होने पर सुन्दर व तिरंगा उपाधि-पत्र दिया जाता है। तथा अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश की सत्यार्थ सुधाकर, सत्यधर्ममार्त्तण्ड उपाधियां डाक द्वारा निःशुल्क प्राप्त करें। विशेष जानकारी के लिए १५ पैसे की टिकट भेजकर नियमावली मगाइये।

आदित्य ब्रह्मचारी — आचार्य मित्रसेन
यशःपाल शास्त्री — एम० ए०, सिद्धान्तालंकार
प्रधान — परीक्षा मन्त्री

भारतवर्षीय वैदिक सिद्धान्त परिषद्
सेवा-सदन, कटरा, अलीगढ़ (उ० प्र०)

धार्मिक परीक्षायें

सरकार से रजिस्टर्ड आर्य साहित्य मण्डल अजमेर द्वारा संचालित भारतवर्षीय आर्य विद्यापरिषद की विद्याविनोद, विद्यारत्न, विद्याविशारद, विद्यावाचस्पति की परीक्षायें आगामी जनवरी मे समस्त भारत मे होंगी। कोई भी किसी भी परीक्षा मे बैठ सकता है। प्रत्येक परीक्षा मे सुन्दर सुनहरा उपाधिपत्र प्रदान किया जाता है। धर्म के अतिरिक्त साहित्य इतिहास, भूगोल, समाज विज्ञान आदि का कोर्स भी इनमे रहता है। निम्न पते से पाठविधि व आवेदन पत्र मुफ्त मँगाकर केन्द्र स्थापित कर। परीक्षा शुल्क भी कम है।

डा० सूर्यदेव शर्मा एम. ए., डी. लिट्
परीक्षा मन्त्री आर्य विद्या परिषद अजमेर

आर्यमित्र की सूचना

अब तक जिन ग्राहकों का इस वर्ष हेतु शुल्क समाप्त है, उन्हें काफी समय पूर्व ही चन्दा समाप्ति की सूचनायें भेज दी गई हैं। कुछ कृपालु ग्राहकों ने अपना शुल्क भेज भी दिया है; परन्तु अधिकांश अभी शेष है।

अतएव अनुरोध है कि अविलम्ब आप महानुभाव अपना अपना शुल्क १०) रु० मनीआर्डर द्वारा भेजने का कष्ट करें।

डाक दर में असाधारण वृद्धि हो जाने के कारण वी० पी० पी० भेजने से ग्राहकों पर अनावश्यक व्यय भार पड़ता है, अतएव कृपया अपना धन मनीआर्डर द्वारा ही भेजिए।

मनीआर्डर के कूपन पर अपनी ग्राहक संख्या अवश्य लिखिये। —व्यवस्थापक

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल.-६०
द० आश्विन १७ शक १८९० आश्विन कृ०२
(दिनांक ८ सितम्बर सन् १९६८)

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

Registered No. L. 60
पता—'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष : २१९९१ तार : "आर्यमित्र

बात सुनी, तो लाला के माथे पर बल पड़ गये। परन्तु राधा को सुनाया—

'तुम समझो, ये सब लुटेरे हैं। मुफ्त में पैसा चाहते हैं" निर्लज्ज कहीं के!'

एक दिन जब प्रातः के समय राधा मकान का आंगन गोबर-मिट्टी से लीप-पोत कर निवृत्त हुई, तभी द्वार पर शब्द सुना—'माँ!'

राधा ने समझा कोई भिखारिन है, मांगने आई है। और उसे यह अच्छा नहीं लगता था कि सुबह हुआ नहीं कि भिखारी द्वार पर आ खड़े। इस लिये उसने स्वर सुनकर भी अनसुना कर दिया। जवाब नहीं दिया।

संयोग की बात कि उसी समय लाला भगवानदीन मन्दिर पर जल चढ़ा कर लौटे। द्वार पर एक युवा, दुर्बल नारी को पाकर वह रुक्ष भाव से बोले—'अरी चल हट, भाग यहाँ से! निकल आई सभी से मांगने!'

सुनकर, नारी ने अपनी दुर्बल और दीन आँखें लाला के मुँह पर टिका दीं। वह उसी मुँह पर झुक गयी।

इतना देख पाते ही लाला की छाती के नीचे उमस पैदा हुई। कदाचित वह उनके जीवन का प्रथम अवसर था कि जब उन्हें किसी पर दया की भावना अनुभव हुई हो। वह उसी अवस्था में बोले—''अरी, क्या है"क्या भिक्षा लेगी है!'

किन्तु नारी ने कहा—'नहीं, बाबा, भीख नहीं। मुझे दया चाहिये।'

बलात् लाला के मुँह से निकला—'मूर्ख, दया और भीख में अन्तर ही क्या है!'

वह बोली—'मैं भिखारिन नहीं हूं। विपत्ति की मारी हूं।'

उसी समय द्वार पर राधा आगई। मोहल्ले की कुछ अन्य स्त्रियां भी एकत्र हो गयीं। पुरुष भी आ गये।

तभी किसी ने कहा—'यह रात मन्दिर पर थी।'

दूसरा बोला—'रात सर्दी भी अधिक थी। इसका बच्चा रो रहा था।'

तब सरल और सहज भाव में चकित बने हुए लाला भगवानदीन बोले—'तो क्या रात मन्दिर पर थी। ऐसे शीत में बच्चे को लिए थी। इन्हीं कपड़ों में" 'राम-राम!'

उसी नारी ने कहा—'बाबा, मैं दूर से आयी हूं। भाग्य की मारी हूं।'

हाँ, हाँ, दीखती तो है। दीन भी है। यह तेरा बच्चा"'लाला के मुँह से निकला।

नारी ने कहा—'यह रात से भूखा है। मुझे तीन दिन हुये कि मुँह में एक टुकड़ा नहीं दिया। इस बच्चे के लिये मेरी छाती में दूध नहीं।'

यह सुनते ही लाला का मन बोल पड़ा—'अरी, राधा!'

राधा ने कहा—'हाँ, आ, तू बैठ। घर में आ। बच्चे को दूध दे, तू रोटी खा।'

तभी एक ऊंचा स्वर उठा—'लाला, यह तुम्हारा उपकार का काम होगा।'

किसी और ने कहा—'जो, लाला ने उपकार किया। तन जाय दमड़ी न जाय।''

लाला ने खिसियाकर दाँत निपोरे—'अरे मेरे पास क्या है। जो आया वह लोगों के पास चला गया।'

दूसरा बोला—'वह सब सूद के आवेगा, लाला जी! तुम्हारा पैसा क्या किसी को हजम हो सकेगा?'

उसी समय राधा उस नारी को घर में ले गयी। द्वारे की भीड़ छँट गयी। घर में आकर लाला ने बच्चे की ओर देखा, फिर उस नारी की ओर तभी उससे प्रश्न किया। 'अरी कहाँ जायगी, तू?'

उदास भाव में वह बोली—'बाबा, मेरा कोई घर नहीं। कोई राह नहीं।'

हाँ, हाँ, बेटी। विपत्ति बुरी होती है। सभी पर आती है।'

उसी समय राधा बच्चे के लिये दूध लायी, तो लाला ने कहा—'मैं दुकान पर जाता हूं, इस बच्चे की माँ को भोजन देना।'

राधा ने बच्चे को दूध दिया और उसकी ओर देखा, आह, कितना सुहावना था वह बच्चा। फलस्वरूप राधा का मन न माना और उसे अपनी गोद में उठा लिया। गोद में लेते ही उसे दुलराया—मेरा मुनुवा राजा है" मेरा मुनुवा"।'

उस नारी ने कहा—'माँ, इस बच्चे का जीवन बचा लो। तुमने अब इसे गोद में उठाया है, तो इसी के लिये रहो। मैं इसकी माँ हूं न, तो चाहती हूं, मैं भले से मर जाऊं, परन्तु मेरे बच्चे का प्राण न जाय। भगवान् ने इसे आदमी का जन्म दिया है, तो यह आदमी बना रहे।'

राधा कुछ कहती कि तभी लाला वहाँ लौट आये। देख कर राधा ने कहा—'कुछ सुना तुमने?'

'हाँ, सुन लिया।' लाला ने कहा—'अब यह घर इस बच्चे का है, इसकी माँ का है।' वह बोले—'मेरे जिस पैसे को चोर नहीं चुरा सके, यह बच्चा उसे पायेगा। अपनी जिन्दगी बना सकेगा।'

तभी उस नारी ने लाला के पैरों की तरफ हाथ बढ़ाया। किन्तु लाला ने पैर हटा कर कहा—बेटियाँ पैर नहीं छुआ करती। तू रह। यह घर तेरा है। हमारा क्या है, आज हैं कल नहीं।'

और उसी दिन के बाद, गाँव के लिये यह विषय केवल कौतुक का रह गया था कि लाला भगवानदीन इतने उपकार वृत्ति में प्रवृत्त हुये कि जहाँ जरा भी किसी को कष्ट होता, तो वह शरीर और पैसे से सहयोग देते। दिन-ब-दिन लाला की लोक-प्रियता इतनी बढ़ी की गाँव इन्हें वृद्ध देखकर भी कामना करता कि भगवान् उन्हें जीवन दे, मृत्यु नहीं।

*

अमृत वर्षा

महर्षि दयानन्द ने कहा था—

सच्चे तीर्थ क्या हैं?

वेदादि सत्यशास्त्रों का पढ़ना-पढ़ाना, धार्मिक विद्वानों का संग, परोपकार, धर्मानुष्ठान, योगाभ्यास, निर्वैर, निष्कपट, सत्यभाषण, सत्य का मानना सत्य करना, ब्रह्मचर्य आचार्य अतिथि माता-पिता की सेवा, परमेश्वर की स्तुति प्रार्थना, उपासना शान्ति, जितेन्द्रियता, सुशीलता, धर्मयुक्त पुरुषार्थ, ज्ञान विज्ञान आदि शुभ गुण-कर्म दुःखों से तारने वाले होने से तीर्थ हैं। और जलस्थलमय हैं वे तीर्थ कभी नहीं हो सकते। क्योंकि मनुष्य जिन करके दुःखों से तरें उनका नाम तीर्थ है। जल स्थल तराने वाले नहीं किन्तु डुबाकर मारने वाले हैं। प्रत्युत नौका आदि का नाम तीर्थ हो सकता है क्यों उनसे समुद्र आदि तरते हैं।

परोपकार करना धर्म और परहानि करना अधर्म कहाता है। इस लिये विद्वानों को यथायोग्य व्यवहार करके अज्ञानियों को दुःख-सागर से तारने के लिये नौका रूप होना चाहिये सर्वथा मूर्खों के सदृश कर्म न करना चाहिये किन्तु जिसमें उनकी और अपनी दिन प्रतिदिन उन्नति हो वैसे कर्म करने उचित हैं।

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के लिये भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से कृष्णगोपाल शर्मा द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।

ओ३म्
आर्य-मित्र
ओ३म्

लखनऊ-रविवार भाद्रपद २४ शक १८९०, आश्विन कृ० ८ वि० सं० २०२५, दिनांक १५ सितम्बर १९६८ ई०

इस अंक में पढ़िए !

१—अध्यात्म-सुधा २
२—सम्पादकीय ३
३—सभा तथा सार सूचनाएं ४
४—जीवन-ज्योति ५
५—स्वास्थ्य सुधा ६
६—विचार-विमर्श ७-८
७—शिक्षा-जगत ९
८—महिला-मण्डल १०
९ काव्य-कानन.आर्यकुमार मंच ११
१०—आर्यजगत् १२
११ गोरक्षा आन्दोलन १३
१२—कहानी-कुञ्ज १५
१३ अमृत वर्षा १६
देश दर्शन

★

वार्षिक मूल्य १०)

छमाही मूल्य ६)

विदेश मे २०)

एक प्रति २५ पै०

परमेश्वर की अमृत वाणी

कल्याण की कामना के लिए तथा बल के हेतु तपस्वी बनो और दीक्षित होकर आत्म ज्ञान की सम्पदा से राष्ट्र को ओजस्वी करो एवम् सर्वत्र दिव्यता का संचार करो

★

भद्रमिच्छन्त ऋषयः स्वर्विदस्तपो दीक्षामुपनिषेदुरग्रे ।
ततो राष्ट्रं बलमोजश्च जातं तदस्मै देवा उप सं नमन्तु ॥

अथर्व० काण्ड १९ सूक्त ४१ मन्त्र १]

[१] (भद्रम् इच्छन्तः) कल्याण की कामना करने वाले ।

[२] (स्वर्विदः ऋषयः) सुख शान्ति व आनन्द के साधनों को जानने वाले आत्म ज्ञानी

[३] (अग्रे तप दीक्षाम्) प्रथम तप और दीक्षा को

[४] (उपनिषेदुः) सेवन करते हैं

[५] ततः राष्ट्रम् बलम्) तब उससे राष्ट्र शक्ति रूपी

[६] (ओजः) ओज (जातम्) उत्पन्न होता है

[७] (तत् देवा.) तत् पश्चात् दिव्य गुणों से अलकृत विद्वान्, देवजन

[८] अस्मै उप-स-नमन्तु) उसके समीपस्थ होकर झुकते हैं अभिवादन करते हैं ।

विश्व को आर्य बनाने की साध को पूरा करने के लिए साधक विचार करें—क्या उनकी इच्छाएं कल्याण कारक है ? क्या आत्म ज्ञान की उन्हें प्राप्ति है ? क्या तप व दीक्षा उनके सहचरी हैं ? क्या आत्म बलिदान की भावना से वे सर्वस्व अर्पण कर सकते हैं ? क्या अपने तेज ओज बल व पराक्रम से वे राष्ट्र की सर्वांगीण उन्नति के लिये निरन्तर देवों का आह्वान करते है और अपनी मनोहर दिव्यता से उन्हें आकर्षित कर आर्यत्व के संगठन मे आबद्ध करते है ?

विश्व का आर्यकरण करने के लिये जिन महात्माओं की आवश्यकता है आज उनकी पूर्ति के निमित्त हम स्वयम् क्यो न इन गुणो को अपनाए ?

●

वर्ष	सम्पादक— क्षेमचन्द्र शर्मा सभा मन्त्री	अङ्क
७०		३८

"तप और ईश-कृपा"

★अनूपसिंह
दयानन्द भवन मुजफ्फर नगर (उ. प्र.)

गर्मी-सर्दी-भूख और प्यास आदि द्वन्द्वों को सहन करना तप कहलाता है। योगेश्वर कृष्ण ने 'गीता' में तीन प्रकार का तप बताया है—मानसिक शारीरिक और वाचिक।

शरीर का तप

देव द्विज गुरुप्राज्ञपूजनं शौचमार्जवम्।
ब्रह्मचर्यम हिंसा च शारीरं तप उच्यते॥

अर्थात्-देवता-ब्राह्मण-गुरु और ज्ञानी जनों का पूजन एवं पवित्रता-सरलता-ब्रह्मचर्य और अहिंसा शारीरिक तप है।

वाणी का तप

अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं चयत्।
स्वाध्यायाभ्यसन चैव वाङ्मय तप उच्यते।

अनुद्वेगकारी-सत्य-प्रिय हितकारी वचन बोलना वेदादि शास्त्र पढने और परमेश्वर का नाम जपना वाचिक तप कहलाता है।

मन का तप

मनः प्रसादः सौम्यत्वं मौनमात्मविनिग्रहः।
भाव संशुद्धिरित्येतत्तपो मानसमुच्यते॥

अर्थात् मन की प्रसन्नता, शान्तभाव-मन का निग्रह-अन्तःकरण की पवित्रता मानसिक तप है।

किसी भी प्रकार के कार्य मे चाहे वह छोटा हो अथवा बड़ा बिना तप के सफलता प्राप्त नहीं होती। यदि विद्यार्थी तप न करें तो वह विद्याध्ययन नहीं कर सकता। सैनिक तप न करें तो वह राष्ट्र की सीमाओं की रक्षा नहीं कर सकता। सन्यासी यदि तप न करें तो वह धर्मोपदेश एवं परोपकार नहीं कर सकता।

आप किसी भी आविष्कार को ले लीजिये यदि उसके आविष्कारक ने तप न किया होता तो आज वह आविष्कार सम्भव न हो पाता। यदि 'पाणिनि' ऋषि तप न करते तो समस्त संसार आज 'अष्टाध्यायी' (व्याकरण की अनमोल पुस्तक) से वंचित हो जाता। यदि प्रातः स्मरणीय स्वामी गुरु देव दयानन्द तप न करते तो वे वैदिक धर्म का प्रचार एवं जन-जागरण न कर पाते।

तप के द्वारा कठिन से कठिन कार्य भी सरल हो जाता है। मोक्ष प्राप्ति जिसको संसार का अत्यन्त कठिनतम कार्य समझा जाता है वह भी तप द्वारा सरलतम बन जाता है। तप रहित मनुष्य को योग सिद्ध नहीं होता। महर्षि व्यास का कथन है—"ना तपस्विनो योगः सिध्यति"

परमात्मा उनकी रक्षा करता है जो अपने कर्मों में तप करते है। निकम्मे मनुष्यों पर परमात्मा की न कभी कृपा होती है और न कभी ऐसे मनुष्यों की वह [परमात्मा] रक्षा करता है। महात्मा 'तिलक' ने एक स्थान पर लिखा है—

"No one can expect providence to protect one who sits with folded hands and throws his burden on others."

जब तक मनुष्य अपने को तप करके थका नहीं लेता तब तक वह ईश्वर की दया का पात्र नहीं बनता। 'न ऋते श्रान्तस्य सख्याय देवाः'। इसको स्पष्ट करने के लिये 'महात्मा नारायण स्वामी ने मुण्डकोपनिषद् के भाष्य में एक उदाहरण दिया है जो इस प्रकार है—

"एक माता और उसके घुटनों के बल चलने वाला एक बालक है। माता एक ओर खड़ी है और उसका छोटा सा बालक दूसरी ओर खेल रहा था बच्चे को भूख लगी स्वभावतः उसे माता याद आई, वह माता की ओर घुटनों के बल चला और माता के अंग तक पहुंच कर खड़ी हुई माता की ओर आशा भरी दृष्टि से अभ्यवना के लिए देखने लगा—माता ने देखा कि उसका प्यारा बालक भूख से व्याकुल होकर घुटनों के बल चलते हुये उसके चरणों तक पहुंच गया। परन्तु यह उसकी सामर्थ्य से बाहर है कि वह अपने को इतना ऊंचा करले जिससे स्तनों तक मुँह पहुंचा कर अपनी भूख को शांत कर सके। माता के हृदय मे बालक पर दया करने के भाव जागृत हो उठते हैं। और वह प्रेम से बालक को गोद मे उठा कर दूध पिलाकर उसे कृत्य कृत्य कर देती है।" ठीक इसी प्रकार जब भक्त प्रमाद रहित होकर तप करता हैं तो जगज्जननी [परमात्मा] को अपने भक्त पर दया आती है और वह उसको आनन्द रूपी दूध का पान कराती है।

"ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका' के उपासना विषय मे ऋषि दयानन्द जी महाराज लिखते हैं—

'योग को करने वाले मनुष्य तत्व अर्थात् ब्रह्म ज्ञान के लिये जब अपने को पहले परमेश्वर में युक्त करते हैं [जब पहले साधक अपने आप तप के द्वारा मन को वश में करके परमेश्वर से लगाता है] तब परमेश्वर उनकी बुद्धि को अपनी कृपा से अपने में युक्त कर लेता है: फिर वे परमेश्वर को निश्चय करके यथावत धारण करते है।'

★

अध्यात्म-सुधा

प्राणी का तप

★

हे प्रभो! ज्ञान मे ज्योति दे दो यही।
सत्य पर ही जीवन को निबाहूं सही॥
सत्य पर ही अमल है ए सारा खड़ा।
सत्य ही हर कर्मों में है व्यापक पड़ा॥
सत्य की ज्योति से सबमें ज्योति मिला।
सत्य की ही कला से कलित सब खिला॥
ज्ञान बढ़ता रहे नित्य मुझमें यही।
हे प्रभो! ज्ञान में ज्योति दे दो यही॥
सत्य ही धर्म है, धर्म ही सत्य है।
सत्य ही नित्य है, नित्य ही सत्य है॥
सत्य ही वेद है, वेद ही सत्य है।
सत्य ही ईश है, ईश ही सत्य है॥
ध्यान धारण कर करें सर्वदा हम यही।
हे प्रभो ज्ञान मे ज्योति दे दो यही॥
वस्त्र आहार वृत्ति सदा सत्य हो।
मित्र 'प्रेमी' कुटुम्ब गुरु सदा सत्य हो॥
सत्य पर ही करें नित्य चिन्तन् मनन्।
सत्य विद्या का हो नित्य पाठन-पठन॥
हर्ष बढ़ता रहे नित्य मुझमें यही।
हे प्रभो ज्ञान मे ज्योति दे दो यही॥

[२]

व्यर्थ न वाणी बोलिये, वाणी तन का मूल।
वाणी में कट पिट हुआ, सोहन हुआ बेमूल॥
जीवन हुआ बमूल, ठौर कहिं और न पावे।
वृथा गेंद मन इधर-उधर को ठोकर खावे॥
कह 'प्रेमी' कविराय, शब्द यदि सच्चा आई।
रहे लखपती लाल, रंग फीका पड़ जाई॥
कटु वाणी मत बोलिये, वाणी में बहु धार।
नीर तीर बारूद में नहिं बसा है धार॥
नहिं बसा है धार, हृदय ही बेधे छेदे।
चोट करे इस भांति की ज्यों नर बामिनि बेधें।
कह 'प्रेमी' कविराय, शब्द एक कटु पर आई।
हुए विनष्ट बहु वीर, महाभारत मे आई॥

—मंहगूप्रसाद 'प्रेमी', गोरखपुर

ओ३म् सोम रारन्धि नो हृदि गावो न यवसेष्वा । मर्य इव स्व ओक्ये ॥

—ऋ० १-६-९१-१३

भावार्थ—हे 'सोम सौम्य और सौख्यप्रदेश्वर ! आप कृपा करके 'रारन्धि, नो हृदि' हमारे हृदय मे यथावत रमण करो (दृष्टान्त) जैसे सूर्य की किरण, विद्वानों का मन और गाय, पशु अपने-अपने विषय और घासादि में रमण करते हैं व जैसे मर्य्य, इव स्व, ओक्ये' मनुष्य अपने घर में रमण करता है वैसे ही आप सदा स्व-प्रकाशयुक्त हमारे हृदय (आत्मा) मे रमण कीजिए, जिससे हमको यथार्थ सर्व ज्ञान और आनन्द हो ।

—महर्षि दयानन्द सरस्वती

लखनऊ—रविवार भाद्रपद २४ शक १८९० आश्विन कृ० पक्ष ८ वि० २०२५
१५ सितम्बर सन् १९६८ ई०, दयानन्दाब्द १४३, सृष्टि सम्वत् १,१७,२९,४९ ०६८

आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वानों

(१) पूज्य पं. दामोदर सातवलेकर जी

तथा

(२) पूज्य पं. गंगाप्रसाद जी उपाध्याय

के निधन पर

आर्य्यमित्र अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिये दो विशेषाङ्क प्रकाशित करने जा रहा है—

आर्य्यमित्र

का आगामी अङ्क

पूज्य पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय का श्रद्धाञ्जलि अंक होगा

पूज्य पं० सातवलेकर जी के श्रद्धांजलि अङ्क की सूचना शीघ्र ही प्रकाशित की जायगी ।

—सम्पादक

अश्वत्थे वो निषदनम्

★

इधर ईरान में आ भयङ्कर भूकम्प के दु:खद समाचार प्राप्त हुए है, उनके अनुसार २० हजार से अधिक लोग काल के ग्रास हो गये हैं । गत शनिवार व रविवार को आने वाले दो भयंकर भूचालों से लगभग १०० ईरानी ग्राम नष्ट भ्रष्ट हो चुके है । मिट्टी व कूड़े के ढेरों की सफाई करने के लिये बुलडोजरों का प्रयोग किया जा रहा है । मलबे के नीचे न जाने अभी और कितने शव प्राप्त होंगे । जब मृतक मनुष्यों की संख्या ही इतनी अधिक है तो पशुओं की संख्या का तो कहना ही क्या है । प्राप्त समाचारों के अनुसार मनुष्यों और पशुओं के कंकाल तेज गर्म हवा से अभी तक झुलस रहे हैं । इतनी बड़ी संख्या के मृतकों से कहीं महामारी जैसे भयंकर रोग न फैलें, इसके निमित्त मृतकों को लम्बी कतारों मे एक साथ दफन किया जा रहा है ।

कितना करुण हृदय विदारक दृश्य है यह ! नेत्रों से अश्रुधारायें प्रवाहित होने लगती हैं भावुक हृदय रखने वालों की जब वे समाचार पढ़ते हैं कि असंख्य माता पिताओं के विछोह मे अनाथ बच्चे करुण क्रन्दन कर रहे हैं । निरुद्देश्य इधर-उधर ये कोमल बच्चे चीख रहे हैं, अपने माता पिता को पुकार रहे हैं—वे देख रहे हैं कि किस प्रकार उनके लह-लहाते घर मरुस्थलों में परिवर्तित हो गये हैं । वे आश्चर्य चकित हैं कि एका एक यह क्या हो गया, उनके माता-पिता उनसे बिछुड़ कर कहां चले गये हैं । उनके चारों ओर धराशायी मकानों का ढेर लगा है, धूप मे लथपथ लाशें हैं जिन्हें देखकर वह भयभीत हैं । ऐसे में यदि कोई दयार्द्र भावना से उन्हें पुच कारता है तो और भार से रोने लगते हैं ।

दिल दहलाने वाले समाचार अभी तक बराबर आ रहे हैं । एक गिरे हुए शिक्षालय मे ३० छात्र अध्यापक कभी न टूटने वाली गहरी नींद मे सोए पड़े मिले है । कक्षा के श्याम पट पर अध्यापक महोदय विद्यार्थियों को कुछ समझा रहे थे, उन्हे क्या पता था कि यह उनके जीवन का अन्तिम पाठ है ।

ऐसी आंशिक प्रलय समय २ पर इस संसार मे होती रहती है पर संसार अपनी विस्मृति मे पुनः खो जाता है । जब दुर्घटनायें होती हैं तो पीड़ा होती है । हृदय का भावना केन्द्र दु:खमय भावनाओं से ओत प्रोत हो जाता है । मस्तिष्क का विचार केन्द्र सत्य विचारों का आभास देने लगता है परन्तु क्षण भर चमककर पुनः लुप्त हो जाने वाली बिजली के समान ही इसका अस्तित्व रह पाता है ।

भौतिकता के विनाशमय सागर में डूबा हुआ मानव ज्ञान ज्योति का साक्षात्कार करता हुआ भी पुन: अज्ञान के तिमिर में खो जाता है । वह इस तथ्य को समझने का प्रयत्न ही नहीं करता कि ऐसी हृदय विदीर्ण करने वाली दुर्घटनायें क्यों घटित होतीं हैं ? आज का नास्तिक वैज्ञानिक भले ही इन दुर्घटनाओं को संयोग वश कह कर उनका किसी वैज्ञानिक आधार पर समाधान कर ले परन्तु आध्यात्मिक जगत् में विचरण करने वाला साधक ही इस तथ्य को जानता है कि ये दुर्घटनायें उस परम पिता परमात्मा की ओर से हम पापियों के लिये चेतावनियां हैं । ईश्वर न्यायकारी है और वह न्याय कर्त्ता जब सामूहिक रूप मे हम पापियों को एक साथ एकत्र कर किसी विशिष्ट स्थान पर एकत्रित करके बाह्य रूप मे सामूहिक तथा वास्तव में व्यक्तिगत रूप से कुकर्मों का दण्ड देता है तो वह आंशिक प्रलय क्रमें उस महा प्रलय की चेतावनी देती है जब भयंकर भूकम्पों, तूफानों मे जलथल में और थल जल मे परिवर्तित हो जायेंगे । सर्वत्र त्राहि-त्राहि मच जायेगी । मनुष्य का सारा अहंकार चकना चूर हो जायेगा और वह उस महान् शक्ति के सम्मुख नत मस्तक हो जायेगा ।

विश्व के अन्दर आज पाप की जो भयंकर ज्वालायें सुलग रहा है क्या उन के फल से यह मानवी समुदाय मुक्त रह सकेगा । जिस पाप के बोझ से आज धरती बोझिल हो चुकी है, वह भार मानवी नौका को भवसिन्धु के पार उतारेगा या बीच मझधार में डुबो कर रख देगा । पाप के मूल में मनुष्य का अभिमान है, वह अपने को ही संसार का कर्त्ता-धर्त्ता समझता है और महाभारत में युधिष्ठिर यक्ष सम्वाद के अनुसार विश्व का सबसे बड़ा आश्चर्य ही यही है कि मानव नित्य प्रति अपने गमन-आगम को देखता हुआ भी निरन्तर इस शाश्वत सत्य की अवहेलना करता रहता है । जब अपने ही विषय में मनुष्य सत्य से इतना दूर रहता है तो विश्व के सत्य का साक्षात्कार करना उसके लिये कहां सम्भव है ।

परमपिता परमात्मा ने अपने दिव्य ज्ञान वेद मे अपने अमृत पुत्र पुत्रियों को इसी सत्य का साक्षात्कार कराते हुए कहा है—

"अश्वत्थे वो निषदनम्" अर्थात् प्रभु चेतावनी देते हुए कहता है—हे मेरे पुत्र पुत्रियो ? अश्वत्थ पर तुम्हारी बैठक है अर्थात् तुम उस संसार मे स्थित हो, जहां कल का भरोसा नहीं और तुम्हारा अस्तित्व इसमें क्या है, "पर्णे वो वसतिष्कृता" अर्थात् पर्णशाला में तुम्हारा वास है, यह शरीररूपी पर्ण-शाला जो प्राणरूपी वायु के एक झोंके से इधर की उधर हो जाती है । आग की एक चिनगारी ही जिसे भस्म करने के लिये पर्याप्त है ।

काश ! हम अपने आपसी संघर्षों को वेद के इस पावन ज्ञान से दूर करके संसार को सत्य पथ दिखला सकते और उसका उपकार कर सकते । वैदिक धर्म आशावाद का धर्म है इसलिये हम अब भी विश्वास करते हैं कि हम आर्य्य संगठित होकर विश्व को इस सत्य का साक्षात्कार अवश्य करायेंगे और समस्त संघर्ष वादों विवादों को मिटाकर धरती पर परमात्मा के आनन्द की धारा बहा-येंगे । प्रभु हमे ऐसी ही सद्बुद्धि एवम् सामर्थ्य दे ।

★

कृतज्ञता प्रकाशन

हमारे पूज्य पिता श्री प० किशोरीलाल जी शर्मा की मृत्यु का समाचार पढ़कर संकड़ों मित्रों, हितैषियों, शुभचिन्तकों और आर्य बन्धुओं ने तार और पत्र भेजकर हमारे इस दुःख में शोक सहानुभूति प्रकट की है। हम उन सभी कृपालुओं के अत्यन्त आभारी हैं, वास्तव मे ऐसे समय मे ऐसे पत्रादिकों से बड़ा बल मिलता है, हम अपने सभी शुभचिन्तकों को इस समय पृथक पृथक प्रत्युत्तर देने मे असमर्थ हैं इसलिये इन पंक्तियों द्वारा सब मित्रों और हितैषियों के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हैं, और आशा करते हैं कि आप सदैव अपना स्नेह बनाये रखेंगे।

विनीत–

प्रेमचन्द्र शर्मा

मन्त्री–आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश

विदेशी ग्राहकों को सूचना

भारत से बाहर रहने वाले सभी देशों के आर्यमित्र के पाठकों से निवेदन है कि जून १९६८ से डाक-व्यय दूना हो गया है, अतएव अब १ जौलाई से भारत से बाहर आर्यमित्र का वार्षिक शुल्क २०) रुपये हो गया है। कृपया पाठक नोट करलें, और अपना वार्षिक शुल्क २०) ही मनीआर्डर द्वारा भेजें। भारत से बाहर के अनेक ग्राहकों का शुल्क समाप्त हो गया है, वे सब कृपापूर्वक अपना शुल्क मनीआर्डर द्वारा शीघ्र भेज दें, मूल्य न आने पर हम बार-बार पत्र भेजने मे असमर्थ हैं क्योंकि बाहर के लिए पत्र व्यवहार मे बहुत व्यय पड़ता है।

विनीत–

व्यवस्थापक आर्यमित्र

५ मीराबाई मार्ग लखनऊ

श्री स्वामी अमृतानन्द जी की हत्या

हल्द्वानी ७ सितम्बर। प्रकाण्ड वैदिक विद्वान एवं सन्यासी श्री स्वामी अमृतानन्द सरस्वती की किसी अज्ञात व्यक्ति द्वारा यहाँ हत्या कर दी गई। इनका शव कल प्रातः ऊँचे पुल पर स्थित उनके निवास स्थान 'अमृताश्रम' की पानी की टंकी मे क्षत-विक्षत अवस्था मे पाया गया।

हत्या का पता तब चला जब दो दिन तक स्वामी जी के न मिलने पर ग्रामवासियों ने उनके कमरे को देखा जिसकी दीवारें और फर्श खून से सने हुए थे।

श्री स्वामी अमृतानन्द लाहौर के डी० ए० वी० कालेज और गुरुकुल कांगड़ी मे प्रोफेसर रह चुके थे।

उन्होंने संस्कृत मे अनेक पुस्तकें लिखीं जिनमे से अष्टाध्यायी के भाष्य पर उन्हें पुरस्कृत किया गया था। उनकी आयु ८० वर्ष की थी।

हमारे पाठक क्या कहते हैं?

(१)

आर्यमित्र का विशेषाङ्क मिला–धन्यवाद! प० सत्यव्रत जी का लेख पठनीय है। अङ्क संग्रह के योग्य है। इसका अधिक प्रचार होना चाहिये।

—बिहारीलाल शास्त्री

(२)

आर्यमित्र का सम्पादन आप जिस कुशलता और आत्मनिष्ठा के साथ कर रहे हैं, उसे देखकर हार्दिक प्रसन्नता होती है।

–ईश्वरीप्रसाद 'प्रेम'

सम्पादक–'तपोभूमि' मथुरा

(३)

सम्पादक जी, नमस्ते!

आपका भेजा आर्यमित्र का स्वाध्याय अङ्क तथा स्वराज्य अङ्क प्राप्त हुआ। दोनों विशेषाङ्कों का हमने आद्योपान्त पठन एवं मनन किया। आप ने पाप विमोचन अङ्क मे गागर में सागर भर दिया है। पाप के स्वरूप तथा उससे बचने के उपायों पर यथेष्ट प्रकाश डाला गया है। साथ ही उत्तम ढंग से उनका पद्यानुवाद भी प्रस्तुत किया है। इसके पठन से हमें तो अतीव सजीवता प्रतीत हुई। वास्तव मे यह आर्यजगत के लिये अति उपयोगी सिद्ध हुआ है।

स्वराज्य अङ्क भी आपकी योग्यता का जीता जागता उदाहरण है। इसमे भी उपयोगी लेख एवं कवितायें प्रकाश मे आई हैं। इस प्रकार के विशेषांकों का प्रकाशन आपकी धार्मिक वृत्ति एवं वैदिक निष्ठा तथा कुशलता का परिचायक है। आपने आर्यमित्र को एक नवीन उत्कृष्ट रूप में प्रस्तुत किया है। इससे मित्र की सर्वप्रियता बढ़ी है। आप का मित्र का सम्पादक होना सचमुच आर्यजगत मे वसन्त का आगमन है। आर्यमित्र दिनोंदिन प्रगति पथ पर बढ़े यही कामना है। आपको शतशः बधाई।

–सत्यनारायण द्विवेदी

मन्त्री आ०स० गङ्गायमुनी (बहराइच)

(४)

आपके द्वारा सम्पादित आर्यमित्र' का श्रावणी पर प्रकाशित 'स्वाध्याय-अङ्क' मिला जिसमे 'पाप-विमोचन सूक्त' की विस्तृत व्याख्या एवं कुछ मनस्वी विद्वानों के पाप की उत्पत्ति एवं निराकरण सुन्दर लेखों का विवेकपूर्ण सङ्कलन किया गया है। वास्तव मे यह अङ्क स्वाध्यायी जनों के लिये प्रचुर सामग्री प्रस्तुत करता है, और फिर प्रत्येक मन्त्र का सार काव्यानुवाद मे तथा उसके पश्चात् तत्सम्बन्धी एक-एक सुन्दर कविता देकर तो आपने इसमे "सुवर्ण मे सुगन्धि" की लोकोक्ति चरितार्थ कर दी है। ऐसे सुन्दर प्रकाशन एवं सम्पादन पर शतशः बधाई है।

–डा० सूर्यदेव शर्मा एम० ए०

अजमेर

आर्य प्रतिनिधि सभा के उपदेश विभाग के प्रोग्राम

श्री सत्यमित्र जी शास्त्री २८ सितम्बर ३० सितम्बर सिकन्दरपुर (बलिया) २९ अक्तूबर से ५ नवम्बर तक टांडा

श्री श्यामसुन्दर जी शास्त्री–१५ सितम्बर से १५ दिसम्बर तक उपसभा मुरादाबाद।

श्री कश्यपदेव शास्त्री–१ नवम्बर से ३० नवम्बर तक उपसभा मुरादाबाद।

श्री मुरलीधर जी प्रचारक–१५ सितम्बर से १५ दिसम्बर तक उपसभा प्रयाग।

श्री ज्ञानप्रकाश जी–१५ सितम्बर से १५ दिसम्बर तक उपसभा मुरादाबाद

श्री धर्मराजसिंह–२ से ५ अक्तूबर सुवायज २१ से २४ बिहारीपुर बरेली, १ नवम्बर से ३० नवम्बर तक उपसभा मुरादाबाद।

श्री प्रकाशवीर जी–२८ से ३० सितम्बर तक सिकन्दरपुर १ नवम्बर से ५ नवम्बर तक गोरखपुर।

श्री गजराजसिंह जी–१ से ३ अक्तूबर शमशाबाद, आगरा।

श्री देवपालसिंह जी–४ से ७ नवम्बर रम्मन का पूरा प्रयाग।

—प्रेमचन्द्र शर्मा अधिष्ठाता
उपदेश विभाग सभा

बुन्देलखण्ड आर्य सम्मेलन

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा झाँसी के तत्त्वावधान मे ६ नवम्बर, १९६८ बृहस्पतिवार को पहलीबार बुन्देलखण्ड आर्य सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। इसमें अपने देश मे व्याप्त अनेक धार्मिक, साम्प्रदायिक, सांस्कृतिक तथा राजनैतिक विषम समस्याओं का वैदिक दृष्टिकोण से समाधान प्रस्तुत किया जायेगा।

इस सम्मेलन मे आपको हरयाणा केसरी आचार्य भगवानदेव जी, आर्य सन्यासिनी माता विद्योत्तमा यति जी, संसद सदस्य श्री प० प्रकाशवीर शास्त्री जी तथा दैनिक वीर अर्जुन व प्रताप के यशस्वी सम्पादक श्री के० नरेन्द्र आदि आर्य विद्वानों तथा विचारकों के विचार सुनने का अलभ्य अवसर मिलेगा।

स्थान–किले का मैदान (मोतीलाल लाइब्रेरी के समीप)

सीताराम आर्य, मुख्य उपमन्त्री — उदयभानु शास्त्री, प्रधान

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा, झाँसी

देवता स्वरूप—

भाई परमानन्द

[स्वर्गीय भाई परमानन्द जी अपने जीवनकाल में ही देवता स्वरूप कहलाते थे—वे वास्तव मे देव ही थे—सम्पूर्ण आयु उन्होने जाति, धर्म और देश के प्रति अर्पित कर दी। 'देवा देवं समाप्यते' देवी से देवी बनता है—जीवन ज्योति से जीवन ज्योति जला करती है। हम इस पावन ज्योति से अपना जीवन दीप जलायें और आर्यसमाज तथा राष्ट्र के अभ्युत्थान मे तन-मन-धन से लग जायें। राष्ट्र का गौरव सुनहरी गुम्बज बनने मे नहीं वरन नींव का पत्थर बनने में समाहित रहता है—भाई जी भारत के स्वाधीनता संग्राम मे ऐसे ही नींव के पत्थर थे—
—सम्पादक]

सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी, इतिहासकार एवं देवता स्वरूप स्व० भाई परमानन्द जी भारतीय स्वाधीनता संग्राम के उन महान योद्धाओं मे अग्रणी थे जिन्होंने भारत मा को गुलामी की बेड़ियों से मुक्त करने के लिए तन-मन-धन देश को समर्पित किया हुआ था। देश की स्वाधीनता के लिए अण्डमान की काल कोठरी में अनेक वर्षों तक यातनायें सहन करने वाले देश-भक्तों मे 'भाई परमानन्द' का नाम अग्रणी है।

भाई जी का जन्म पंजाब के एक देशभक्त ब्राह्मण परिवार मे हुआ था। वह उस वीर शिरोमणि अमर शहीद भाई मतिदास के वंश मे उत्पन्न हुये थे जिसने धार्मिक स्वतन्त्रता की रक्षा के लिये धर्मान्ध औरङ्गजेब के दरबार मे अपने शरीर को आरे से चिरवाकर दो टुकड़े करवा लिये थे किन्तु अन्याय के सम्मुख सिर नहीं झुकाया था।

भारत का इतिहास

भाई परमानन्द जी के हृदय मे बाल्यकाल से क्रांति की भावनायें भर गयी। सन् १९०१ मे पंजाब विश्व विद्यालय से इतिहास मे एम० ए० करने के उपरान्त वह डी० ए० वी० कालेज लाहौर मे इतिहास और राजनीति के अध्यापक हो गये। अपने अध्यापन काल मे भाईजी ने अनेक युवकों को स्वाधीनता संग्राम मे भाग लेने के लिये प्रेरित किया।

भाईजी भारतीय संस्कृति के प्रचार और भारतीय स्वाधीनता के लिये जन-मत जागृत करने के उद्देश्य से विदेश प्रस्थान कर गये। दक्षिण अफ्रीका मे भारतीय संस्कृति का प्रचार करने के उपरान्त वह इंग्लैण्ड चले गये। इंग्लैंड में लगभग दो वर्ष तक रहकर भाई जी ने ब्रिटिश संग्रहालय मे भारतीय इतिहास के सम्बन्ध मे अनुसन्धान किया। अनुसंधान के पश्चात् उन्होंने सन् १८५७ में स्वतन्त्रता के लिए प्रयत्न' विषय पर एक ग्रन्थ भी लिखा।

भाईजी ने भारत आकर 'भारत का इतिहास' नामक एक राष्ट्रिय भावनाओं एवं भारत के गौरव की गरिमा से युक्त ग्रन्थ लिखा। यह सुन्दर ग्रन्थ ब्रिटिश शासन ने जब्त कर लिया।

लाहौर षड्यन्त्र केस

भाई जी ने लाहौर में क्रान्तिकारी युवकों को सशस्त्र क्रांति के द्वारा माँ भारती की गुलामी की बेड़ियाँ काट डालने की प्रेरणा दी। शहीदेआजम भगतसिंह, उपन्यासकार यशपाल आदि को भाई जी से ही प्रेरणा मिली। भगतसिंह को भाईजी ने ही क्रांति की दीक्षा दी थी। ब्रिटिश साम्राज्य भाई जी के तेजस्वी नेतृत्व से कांप उठा। भाई जी को भारत से निष्कासित कर दिया गया। वह दक्षिण अमरीका चले गये।

भाई जी सन् १९१४ की लड़ाई के पश्चात पुनः भारत लौट आये। भारत आकर वह पुनः शान्त न बैठ सके। वह गुलामी भी वे तथा अपमान भी सहन न कर सके। वास्तव में क्रांतिकारी देश-भक्त थे। उन्होंने पुनः क्रांतिकारियों का संगठन प्रारम्भ कर दिया।

सन् १९१६ मे भाई परमानन्द जी को अनेक साथियो सहित अंग्रेज सरकार ने लाहौर षड्यन्त्र केस के आरोप मे

गिरफ्तार कर लिया। उनके साथ प्रसिद्ध क्रांतिकारी भाई हृदयरामसिंह भी गिरफ्तार कर लिये गये।

लाहौर की अदालत मे 'अंग्रेजी शासन का सशस्त्र क्रांति द्वारा तख्ता उलटने के षड्यन्त्र' मे मुकदमा चलाया गया और भाई परमानन्द जी को अनेक देश-भक्त साथियों सहित फाँसी की सजा सुना दी गयी। भाई जी को फाँसी का दण्ड सुनाये जाने के समाचार से समस्त देश मे क्षोभ व्याप्त हो गया। महामना मालवीय जी भाई जी के त्यागमय जीवन के प्रति अगाध श्रद्धा रखते थे। मालवीय जी ने जब फाँसी के दण्ड का समाचार सुना तो वह रो पड़े। वह भागे भागे दिल्ली आये और लार्ड हार्डिंग से मिलकर फांसी का दण्ड स्थगित करा देने की मांग की। लार्ड हार्डिंग ने जन-विद्रोह के भय से फांसी की सजा को आजन्म कारावास में परिवर्तन कर दिया।

पोर्टब्लेयर की कालकोठरी

भाई जी को श्री हृदयरामसिंह व अन्य साथियों सहित पोर्टब्लेयर [अण्डमान) भेज दिया गया।

पोर्टब्लेयर मे उन्हे क्रांतिकारी शिरोमणि वीर सावरकर, श्री आशुतोष लाहिड़ी वारीन्द्रकुमार घोष, महात्मा नन्दगोपाल आदि देशभक्तो के साथ अमानुषिक यातनायें सहन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। स्वातन्त्र्य लक्ष्मी की आराधना के लिये उन्होंने कोल्हू मे बैल की तरह जुतकर तेल पेरा, मूंज कूटा व चक्कियाँ चलायीं। भाई जी को अण्डमान की तनहा कोठरी मे कई-कई दिनों तक डण्ड बेड़ी डालकर खड़ा रखा गया, भूखा-प्यासा रखा गया, किन्तु जेल की यह दारुण यातनायें भी उस सिंह पुरुष को झुका न सकीं।

अण्डमान की नारकीय यातनाओ के विरुद्ध भाई जी ने दो मास तक आमरण अनशन किया। आमरण अनशन के समाचार ने भारत मे क्षोभ फैला दिया। हजारों पत्र व तार सरकार को भाई जी को मुक्त कराने की मांग से प्राप्त हुए। सरकार को जन-क्षोभ देखकर झुकना पड़ा और भाई जी को अण्डमान से मुक्त कर दिया गया।

भाई जी ने महामना प०मदनमोहन मालवीय एव लाला लाजपतराय के साथ मिलकर हिन्दू महासभा की स्थापना की। उन्होंने हिन्दू महासभा को अपना सर्वस्व अर्पित कर दिया। सन् १९३१ में वह हिन्दू महासभा के टिकट पर केन्द्रीय असेम्बली के सदस्य निर्वाचित हुए। सन् १९३५ में दूसरी बार पुनः भारी बहुमत से असेम्बली के सदस्य चुने गये।

प्रेरणा के स्रोत

भाई जी के त्यागमय जीवन से प्रेरणा लेकर देश के सहस्रों युवक देश के क्रांति पथ के पथिक बने। काकोरी षड्यन्त्र के सुप्रसिद्ध क्रांतिकारी श्री रामप्रसाद बिस्मिल ने शहीद होने से दो दिन पूर्व फाँसी की कोठरी मे 'निज जीवन की एक छटा' [आत्मकथा] मे लिखा था—

सन् १९१६ मे लाहौर षड्यन्त्र का मामला चला। मैं समाचार-पत्र में उसका सब वृत्तान्त बड़े चाव से पढ़ करता था। श्री भाई परमानन्द जी मे मेरी बड़ी श्रद्धा थी क्योंकि उनकी लिखी हुई 'तवारीखे हिन्द' पढ़कर मेरे हृदय पर बड़ा प्रभाव पड़ा था। लाहौर षड्यन्त्र का फैसला अखबारो मे छपा भाई परमानन्द जी को फाँसी की सजा पढ़कर मेरे शरीर मे आग लग गयी मैने विचारा कि अंग्रेज बड़े अत्याचारी है, कि इनके राज्य मे न्याय नहीं, [illegible] जो इतने बड़े महानुभाव को फाँसी की सजा का हुक्म दे दिया। मैंने उसी दि प्रतिज्ञा की कि मैं इसका बदला अवश्य लूगा। जीवन भर अंग्रेजी साम्राज्य के विध्वंस करने के लिए सचेष्ट करता रहूँगा।'

श्री रासबिहारी बोस, क्रांतिकारी करतारसिंह सराबा, सरदार भगतसिंह एव अनेक क्रांतिकारियो के प्रेरणा-स्रोत भाई परमानन्द ही थे। भगतसिंह की ब्रिटिश कौंसिल ने एक स्थान पर घोषणा की थी—'हमे लाला हरदयाल का भय नहीं है। वे अपने विचारो को पहले ही प्रकट कर देते हैं। परन्तु हमे भाई परमानन्द का अधिक भय है क्योंकि यह जो सोचते हैं कुछ भी नहीं और किसी को भी उनकी गतिविधियो का ज्ञान नहीं हो पाता।'

भा० परमानन्द जी का 'भारत का इतिहास', 'वीर वैरागी', 'आपबीती (आत्मकथा) आदि पुस्तकों से युवकों ने प्रेरणा प्राप्त की। भाई जी 'हिन्दू', 'हिन्दू आउटलुक' एवं 'आकाशवाणी' आदि पत्रो का भी सम्पादन किया। वह एक उच्चकोटि के तेजस्वी वक्ता, कुशल लेखक एवं सफल संगठन कर्ता थे। उनकी संगठन शक्ति एवं क्रान्तिकारी गतिविधियों की रिपोर्ट जब गुप्तचर विभाग ने जलियांवाला बाग गोलीकांड के लोमहर्षक जनरल डायर को दी तो एक बार डायर भी काँप गया। डायर ने आतंकित हृदय से कहा था 'परमानन्द दवा तैयार कर रहा है वह किस मर्ज की दवा है, ईश्वर जाने।'

सौ वर्ष ऐसे जिएँ

यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के दूसरे मन्त्र में बतलाया गया है कि हम सौ वर्ष ऐसे जिएँ—

ओ३म् कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतँ समाः। एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे॥

(इह) इस संसार वा मनुष्य जन्म में कर्माणि वेदादि सत्य शास्त्रों में कहे अच्छे का विधान और बुरे का त्यागरूप नित्य नैमित्तिक भेद से दो प्रकार के करने योग्य धर्म युक्त मुक्ति के हेतु कर्मों को (कुर्वन्नेव) करता हुआ ही (शतसमाः) सौ वर्ष पर्यन्त (जिजीविषेत्) जीवन की इच्छा करे क्योंकि "जीवेम शरदः शतम्" इत्यादि वेद के प्रमाणों से–मनुष्य की अवस्था सौ वर्ष की ही सामान्य कर पाई गई है (एवम्) इस प्रकार संसारी फल भोग की इच्छा रहित कर्म करते हुये (त्वयि) तुझ (नरे) मनुष्य में (कर्म) उक्त वैदिक कर्म (न लिप्यते) नहीं लिप्त होता अर्थात् असार संसार रूप सागर के जन्म मरणादि रूप प्रवाह में बहाने वाला नहीं होता (इतः) इस उक्त प्रकार से भिन्न (अन्यथा) अन्य कोई प्रकार कर्म से लिप्त न होने के लिये (न) नहीं है। अर्थात् लौकिक फल भोग की अभिलाषा से कर्म करता हुआ तो लिप्त होता ही है, किन्तु संसारी फल भोग में विरक्त होकर कर्त्तव्य वैदिक कर्मों के करने से ही मुक्ति का अधिकारी हो सकता है। जैसे जन्म पर्यन्त भोजन आदि स्वाभाविक कर्मों को ज्ञानी लोग भी करते ही हैं वैसे उन ज्ञानी जनों को योग्य है कि सामर्थ्य देश काल की अवस्था और वेद के अनुकूल कर्त्तव्य कर्मों को अवश्य करें। भगवद्गीता में कहा गया है कि (कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन) तेरा सामर्थ्य कर्म करने में ही रहे किन्तु फल भोग की अभिलाषा न रहे।" क्योंकि राजा जनक आदि भी वैदिक कर्मानुष्ठान करने से ही परम सिद्धि अर्थात् मुक्ति को प्राप्त हुये हैं। संन्यासियों का भी संन्यास यही है कि इस लोक वा परलोक के सुख भोगों का त्याग अर्थात् उनमें विरक्त होना। कहा भी है कि कर्म फल का आश्रय न करके जो कर्त्तव्य वैदिक कर्म को करता है वही संन्यासी व योगी कहाने योग्य है किंतु निकम्मा आलसी जन संन्यासी नहीं हो सकता। इसलिये जो लोग यह कहते हैं कि आत्म ज्ञान में असमर्थों के लिये कर्मोपदेश है उनका उत्तर हो गया। इससे यह आया कि वैदिक कर्मों को करता हुआ ही जीवन की इच्छा करे किन्तु आलस्य रूप घोड़े पर चढ़ा निकम्मा होकर न रहे। यही मन्त्र का अभिप्राय है

पं० भीमसेन शर्मणः भाष्य

मां भारत की सेवा में जीवन उत्सर्ग करने वाले इस क्रांति वीर से भारत विभाजन के घोर आघात को सहन करना असह्य हो गया और ८ दिसम्बर ४७ को उन्होंने यह शरीर त्याग दिया।

●

पाठक गण ! आज हमारे समक्ष मुख्य तीन बातें अतीव विचारणीय हैं। [१] हमें मनुष्य जन्म क्यों मिला ?? [२] हमारा कर्त्तव्य क्या है ? [३] वर्त्तमान समय में हम क्या कर रहे हैं ? यदि तीनों ही बातें हल हो जाय अर्थात् तीनों का समाधान होकर यथा योग्य पूर्ति हो जाय तो संसार में कोई भी समस्या शेष नहीं रहेगी और संसार सुखी हो जावेगा। यह वरदान के तुल्य सत्य बात है। अनेक शुभ कर्मों के परिणाम स्वरूप मनुष्य संसार में जन्म लेता है माता-पिता उसे पालते हैं, पढ़ाते हैं, या उद्योग सिखाते हैं, खेती कराते हैं, और उसका विवाह करके निश्चिन्त हो जाते हैं। और मनुष्य भी उसी प्रकार जीवन भर खाने कमाने अपने परिवार को पालने में आजीवन लगा रहता है, जैसे भी बने वैसे। अन्ततोगत्वा वह संसार से चला जाता है, पर जिन्दगी में यह नहीं विचार पाता कि मनुष्य जन्म क्यों मिला ? मेरा कर्त्तव्य क्या है ? मैं क्या कर रहा हूं ? सारा जीवन पशु पक्षी कीट, पतंग वत खाने पीने में ही बिता देता है। मुख्य लक्ष्य तक विरला ही पहुंच पाता है सब चरम लक्ष्य पर पहुंचने के लिये प्रयत्न नहीं करते इसीलिये १०० वर्ष से पहले या बालपन में मृत्यु होती है सूर्य वंशी राजा भगवान् मनु महाराज से लेकर (वा आद्यसृष्टि से) राम के राज्य तक १०० वर्ष से पहले किसी की मृत्यु नहीं हुआ करती थी। लक्ष्य को न समझने के कारण ही आज सर्वत्र दुःख द्वन्द्व एवं पापों की भरमार दिखाई दे रही है। धर्म की उपेक्षा की जा रही है, कहीं नसबन्दी, लूप का प्रचार है, कहीं ईसाई, मुसलमान आदि मत-मतान्तर के लोग अपने अपने मत की महत्ता बताकर लोभ देकर लोगों को अपने में मिला रहे हैं। कहीं चोरी, जारी रिश्वत खोरी की भरमार है कहीं देवी देवताओं के नाम पर बकरों भैंसों आदि की बलि चढ़ाई जाती है कहीं "विषकुम्भ पयो मुखम्" मुँह में राम बगल में छुरी की उक्ति को सार्थक करने वाले अहिंसा वादी गांधी जी के भक्त की कांग्रेसियों के राज्य में गौओं को काट-काट कर खून बहाया जा रहा है। कहीं दीन दुःखी, विधवा, अनाथ विकलांगी भूखों मर रहे हैं और कहीं पर कांग्रेसियों के राज्य में आज मनुष्य तो मनुष्य पर कुत्ते भी आराम से सपाटे कर रहे हैं कहीं गरीबों का खून चूस कर मालदार सेठ साहूकार बनिये कोठियों दुकानों पर बैठे-बैठे आनन्द मना रहे हैं। सावधान ! स्मरण रखो— "अच्छा नहीं होता कभी पाप का है फल बुरा" अवश्य मेव-भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभा शुभम अशुभ कर्म करने वाले किस प्रकार दुःख उठाते हैं किञ्चित् दृष्टान्त से शिक्षा लें।

स्वास्थ्य-सुधा

एक दिन भ्रमण करने के लिये गुरु शिष्य जा रहे थे। शिष्य ने ग्राम के बाहर तालाब में एक मछियारे को मछलियाँ पकड़ते देखा गुरु ईश्वर चिंतन में प्रति क्षण मस्त रहते थे अतः वह कुछ आगे निकल गये। शिष्य तालाब के किनारे रुककर मछियारे से बोला— ए मछुवे तुम मछली पकड़ना बंद कर दो क्यों बेचारी मूक प्राणियों की हत्याकर पाप मोल लेते हो ? परन्तु वह कैसे मानता ! दोनों में झगड़ा हो गया गुरु को मालूम हुआ तो भागकर आये और शिष्य से बोले तू किस झगड़े में पड़ गया। शिष्य बोला महाराज मेरे कहने पर भी यह दुष्ट नहीं माना तभी मैंने इसे दो चार दण्ड लगाये हैं। गुरु बोले राज्य की व्यवस्था करना एवं अपराधी को दण्ड देने का अधिकार राजा का है, शिष्य बोला महाराज ! बहुत से अपराधों को राजा जान नहीं पाता अतः हम सभी का कर्त्तव्य हो जाता है। गुरु बोले- अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्" जिनको राजा देख नहीं पाता उन्हें ईश्वर यथोचित दण्ड देता है और उसे शुभ अशुभ कर्म भोगने पड़ते हैं। गुरु शिष्य दोनों आगे बढ़ गये शाम को लौट कर घर आ गये। दैव योग से एक वर्ष बाद किसी कार्य से उसी रास्ते से गुरु शिष्य दोनों को जाना पड़ा। तब शिष्य क्या देखता है कि एक सर्प घायल बड़े कष्ट से चल पा रहा है, और उसे चींटियां खाये जा रही हैं। शिष्य का सर्प पर दया आ गई। वह चींटियों से सर्प को मुक्त करने के लिये आगे बढ़ा। गुरु ने तुरन्त शिष्य का हाथ पकड़ा। शिष्य बोला —महाराज ! आप शुभ कार्य से क्यों रोकते हैं। गुरु बोले–तू जानता नहीं वत्स ! कि इसने पूर्व जन्म में बुरे कर्म किये थे उन्हीं को यह भोग रहा है यदि तू अभी बचावेगा तो इस बेचारे को अगले जन्म में फिर भोगने पड़ेंगे। शिष्य बोला—महाराज ! पूर्व जन्म में इसने क्या बुरे कर्म किये थे ? कृपाकर बतला दें। गुरु बोले—देखो जब हम १ वर्ष पहले इसी रास्ते से भ्रमण करने जा रहे थे तो तुम्हें इस तालाब पर एक मछुवार मछलियां पकड़ रहा था न ? और तुम उसे रोक रहे थे परन्तु वह न मानता था और तुम दोनों के झगड़े को मैं शान्त कर मैं तुम्हें एक ओर लाया था। अतः यह वही मछुवा सर्प के रूप में कष्ट पा रहा है और यह वही मछलियां जो मछुआरे के द्वारा पकड़ी गई थीं आज चींटी के रूप में इसे [मछुवे को] कष्ट दे रही हैं। इसी का नाम ईश्वरीय न्याय है। मैंने तुमसे कहा था कि जिसे राजा नहीं देख पाता और संसार में अपराध से बच जाता है उसे परमेश्वर दण्ड देता है, शिष्य को इस बात पर बड़ा आश्चर्य हुआ और ईश्वर का परम भक्त इस घटना से हो गया। क्या आर्य जन इस दृष्टांत को पढ़कर अब भी सचेत न होंगे ?

ब्र० धर्मदेव आर्य शास्त्री
गुरुकुल, सिरसगंज

★

'वृक्ष जीवधारी है'

पाठक गण (आर्य बन्धुओं) आर्यमित्र के २१-७-६८ के समाचार पत्र मे श्री रामेश्वर दयाल जी "विपरीत" ने एक लेख दिया है और वेदमत्र द्वारा सिद्ध किया है कि वृक्ष निर्जीव हैं और अत में लिखा है कि यदि किन्हीं महानुभावों को उक्त वेद मन्त्र पर एवं महर्षि के भावार्थ पर अन्यथा विचार हो तो वे कृपया प्रकाशित कर।

वृक्षों के जीवधारी व निर्जीव होने का जो प्रश्न है इसको आर्यसमाज आज तक स्पष्ट नहीं कर सका है। दोनो पक्षों के मानने वाले विद्वान् मौजूद हैं जो अपना-अपना मान्य पक्ष सिद्ध करने में लगे हुए हैं जिनमे बन्धु, विद्वान् श्री रामेश्वरदयाल जी भी हैं। मै समस्त उन सज्जनों को भी जो वेदों को निर्भ्रांत और अपना धर्म ग्रंथ मानते हैं, और महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत ग्रंथों में अटल विश्वास रखते हैं, उनको अपनी आज तक की जानकारी-वृक्षो मे जीव विचार सम्बन्धी विषय से परिचित करना चाहता हूं। प्रथम बार जबकि मैंने सत्यार्थ प्रकाश का नवा समुल्लास देखा जिसमे महर्षि ने जीवों के गुण व कर्म से मिलने वाली गति को प्राप्त होना लिखा है इसमें महर्षि मनु के कथन किये अध्याय १२ के श्लोक ४२ में लिखा है—

स्थावर. कृमिकीटाश्च मत्सय· सर्पाश्च कच्छपा।
पशुवश्च मृगाश्चेव जघन्या तामसी गतिः ॥

इसका अर्थ है जो अत्यन्त तमोगुणी है वे स्थावर कृमि, कीट, मछली, सर्प, कछुआ, पशु और मृग के जन्म को प्राप्त होते हैं. उपरोक्त अर्थ से वृक्ष योनि बतलाया है। यहां वृक्ष अभिमानी जीव है इस विचार से वृक्ष जीवधारी हैं।

वरिष्ठ प्रवर स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज वृक्षो मे जीव नहीं मानते हैं। मैंने इनके बनाये छोटे-छोटे ट्रैक्ट पढ़े हैं ये दो प्रकार के एक दूसरे से भिन्न वृक्ष मे जीव सम्बन्धी विचार सामने आने से शंका उत्पन्न हो गई, अब यह निश्चय करने की जिज्ञासा प्रबल हो गई। सत्यार्थ प्रकाश के आठवे समुल्लास मे यह प्रश्न आया है कि ईश्वर ने किन्हीं जीवो को मनुष्य जन्म किन्हीं को सिंह आदि क्रूर जन्म किन्हीं को हिरन गाय आदि पशु किन्हीं को वृक्ष आदि कीट पतंग जन्म दिये हैं। इसमे परमात्मा मे पक्षपात आता है।

उत्तर—पक्षपात नहीं आता क्योंकि उन जीवों के पूर्व सृष्टि मे किये हुवे कर्मों अनुसार व्यवस्था करने से जो कर्म के बिना जन्म देता है तो पक्षपात आता।

स्पष्ट हो गया कि वृक्ष भी दूसरे जानवरों की भांति अपने कर्म वश भोग भोगने हेतु स्थावर जीव हैं। इस विपरीत विचार के निश्चय हेतु मैंने सन् १९३७ ई० में अपने विचार लेख द्वारा समाचार पत्र 'प्रकाश' जो लाहौर से निकाले जिनका उत्तर सभी वृक्ष जीवधारी हैं—आया और कभी नहीं है—आया। लगातार एक वर्ष तक लेख चले। आर्य बन्धुओं के विचार बराबर लेख में आते रहे। परन्तु हृदय को शान्ति नहीं मिली। मैंने एक पत्र आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के नाम लिखा कि मुझे बताया जाये कि वृक्ष "सजीव है या निर्जीव"। वहाँ ३-२-६६ को उत्तर मिला कि वृक्ष सजीव है। इससे भी शान्ति नहीं हुई, क्योंकि कोई विशेष प्रमाण नहीं था केवल सत्यार्थ प्रकाश का वही प्रश्न जो पीछे लिखा जा चुका है। उसी का प्रमाण लिखा था. इससे पहले मैंने एक पत्र गुरुकुल कांगड़ी के मुख्य अधिष्ठाता श्री देवराज जी के पास

वीरुधा. नाम लता का है। इस मन्त्र में बताया है कि बेलें व लतायें सांस लेती हैं।

अह गर्भ मादधामोषधीष्वहं,
विश्वेषु भुवने पन्तः।
अह प्रजा अजनयं पृथवीव्या,
मह जनिभ्यो अपरीषु पुजान ॥

इस मन्त्र में बतलाया है कि मैंने (परमात्मा ने) औषधियों मे गर्भ धारण किया।

मनु महाराज कहते हैं कि मनुष्य शरीर सम्बन्धी दुष्ट कर्मों के कारण स्थावर हो जाता है।

शरीरजैः कर्म दोषैयिति स्थावतांनरा।
वाचकं पक्षिमृगतां मानसं रुत्यजातिताम ॥ [मनु० अध्याय १२ मन्त्र ९]

इस श्लोक का अर्थ स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज यह करते हैं कि वाणी से किये पाप से पक्षी और पशु तथा चित्त किये हुये पाप से चाण्डाल आदि होता है

विचार-विमर्श

इसी जानकारी के लिये भेजा था जिसका उत्तर उन्होंने १२-१-१९६८ ई० के पत्र में दिया है जो विस्तार पूर्वक हैं जिनमे उन्होंने वृक्षों को सजीव माना है। और ऋग्वेद अथर्ववेद सांख्य दर्शन, कठोपनिषद मनुस्मृति और महाभारत का प्रमाण दिया है जो संक्षेप मे नीचे दिया जाता है। उपरोक्त दोनों पत्र अब भी मेरे पास विद्यमान है।

सूर्यं चक्षुर्गच्छतु व तमात्म द्यांच गच्छ पृथ्वींच धर्मणा।
आपो वा गच्छ यदि तत्रतेहित मोषधीषु प्रतितिष्ठा शरीरे. ॥
[ऋ० मन्त्र १० सूत्र १६ मन्त्र ३]

इसमे बताया है कि औषधियाँ शरीर धारण करके स्थित हो।

यही मन्त्र कुछ बदलकर अथर्ववेद में आता है—

सूर्यं चक्षुषा गच्छ वातमात्मना दिवंच गच्छ पृथवींच धर्मभि।
अपो व गच्छ यदि तत्र ते हितमोषधीषु प्रति तिष्ठा शरीरे ॥
[अथर्व काण्ड १८ सूत्र २०७]

इदम जनासो विदथ महीदव विच्यति। न तम पृथिव्यां नो दिवि येन प्राणन्ति वीरुधाः ॥

मानस मनसैवाय मुप भुङक्ते शुभाऽशुभम ॥
वाचा वाचा कृत कर्मं कायेनैव च कायिकम् ॥
[मनु अ० १२ मन्त्र ८]

जिनमे कहे हुये पाप के फल से उधर जीव अर्थात् वृक्षो मे रहने वाला मन से किये हुये कर्म का मानसिक और वाणी कहे कर्म का फल वाणी से और शरीर से किये हुये कर्म का फल शारीरिक दण्ड होता है। जिस प्रकार पाप करता है उसी प्रकार फल मिलता है।

उपर्युक्त मन्त्र का अर्थ स्वामी दर्शनानन्द जी वाणी द्वारा किये पाप का फल वृक्षो मे रहने वाला जीव इस लिये बताते है कि इनको वृक्ष निर्जीव ज्ञात हुये हैं। अर्थ तो केवल वृक्ष ही होता हैं वृक्षों मे रहने वाला नहीं।

स्वामी दर्शनानन्द जी और पं० गणपति शर्मा का शास्त्रार्थ इसी विषय पर हुआ है। स्वामी जी निर्जीव और पं० जी सजीव सिद्ध करने में प्रयत्नशील रहे हैं। यह पुस्तक शास्त्रार्थ के रूप में मेरे समक्ष आयी हैं। परन्तु मैं इससे स्पष्ट रूप से कोई जानकारी नहीं कर पाया

अब आचार्य देवराज जी के भेजे हुये पत्र का सांख्य दर्शन सूत्र नीचे दिया जाता है।

न वाह्य बुद्धि नियमों वृक्षः गुल्मलतौषधि वनस्पति तृण वाकधादि नामपि भोक्तृ भोगायतनत्वं पूर्ववत।
[सांख्य ५-१२ १

इसका अर्थ है कि वृक्षादि भी भोक्तर (आत्मा) का भोगवान अर्थात् (शरीर) होते हैं।

★मुन्शी सुक्खीसिंह आर्य
प्रधान—आ०स० लामपुर (मुरादाबाद

कठोपनिषद की वल्ली ५ में मं ७ मे आता है।

योनि मन्ये प्रपद्यन्ते शरीर त्वा देहिनः
स्थानुमन्येऽन संयान्ति यथा क यथा श्रुतम

इसका अर्थ है कुछ आत्मा अ ज्ञान कर्म के अनुसार स्थावर हो ज है।

यहां ऊपर लिखे प्रमाण आच देवराज जी की चिट्ठी से मैंने लिखे अब उपर्युक्त कठोपनिषद् वल्ली ५ का अर्थ स्वामी दर्शनानन्द जी क पनिषद् उर्दू तर्जमे लिखते हैं—

ऋषि बतलाते हैं कि ए नचिके कि जिन लोगों को मनुष्य शरीर ब्रह्म ज्ञान हो जाता है उनको मरने पश्चात् जो दशा होती है उसका व लो हो चुका है शेष वह भाग जिन मनुष्य का जन्म पाकर भी ब्रह्म ज्ञ प्राप्त नहीं किया—या तो दुबारा इ का शरीर या पशु पक्षी आदि या आदि हैवानों का जन्म लेते हैं। जो सबसे नीच कर्म वाले हैं वह योनियो को प्राप्त करते हैं। जो हरकते ईरादो से मुबर्राई (व होते हैं। गरज कि जैसा ज्ञान कर्म होता है वैसे ही जन्म में लेते हैं। स्वामी दर्शनानन्द जी इस का अर्थ हरकत इरादी से मुबर्राह मुतहर्रिक (न हिलने चलने वाले) (कालिब) करते है। मिसाल के पर कहते हैं जैसे गूलर के फल के का भुनगा आदि।

परन्तु मेरे विचार मैं गूलर के के अन्दर जो जीवधारी पत्न भुनगे होते हैं वह हरकते इरादी मुबर्राह नहीं होते, क्योंकि जब तोड़ा जाता है तो उसमे हरकत ही दीख पड़ते हैं और फल तोड़ कुछ ही समय पश्चात् उड़ने भी हैं। हरकते इरादी से मुबर्राह तो ही माना जा सकता है जो

सदाचार-शिक्षा

न जातु कामः कामाना-
मुपभोगेन शाम्यति ।
हविषा कृष्णवर्त्मेव,
भूय एवाऽभिवर्द्धते ॥
(मनुः)

"इच्छायें भोग भोगते रहने से शान्त नहीं होती, आग को घी सामग्री देते रहें, तो वह कैसे ठण्डी पड़ेगी।"

केन्द्रीय शिक्षामन्त्री महोदय अब विशुद्ध भारतीय भावना के हैं, यह सौभाग्य की बात है। इधर कुछ वर्षों से शिक्षा-भूमि में कण्टक पौधे ही उग रहे हैं। समाचारपत्रों में यही पढ़ते-पढ़ते वर्ष बीतते जा रहे हैं कि इतने कतल, यहां डाका, यहां लूट, वहां बलात्कार, यहां मारपीट, वहां घिराव, यहां हमला, राहजनी आदि-आदि पढ़ते-पढ़ते चित्त चंचल हो उठता है कि भारत कहां जा रहा है ?

राष्ट्रिय स्थिरता का मूल क्या ?

स्वदेश भक्ति के लिए मनुष्यता के कतिपय गुण अनिवार्य हैं। अपढ़ व्यक्ति अपने छोटे से क्षेत्र को स्वदेश समझता है, स्कूल कालिज की शिक्षा से शून्य होने पर भी वह दुराचार और क्रूर कर्मों से दूर रहता है, दूसरी ओर कुछ उच्च शिक्षित युवक बुरे कामों में लिप्त पाये जाते हैं। भविष्य जिन पर निर्भर रहेगा। वे भारत के गर्त में फिसलते चल जा रहे हैं, तब राष्ट्र का स्थायित्व किसके बलबूते पर टिकेगा ? सद्गुणी पीढ़ी का निर्माण बन्द है। केवल कुछ सुसंस्कारी व्यक्ति स्वतः ही सच्चरित्र हैं, राजकीय शिक्षण के आधार से नहीं।

राज्य सरकारों के अनेक सदस्य तो आपाधापी में इतने विचार शून्य हो रहे हैं कि मानो वह राष्ट्र को फूट से फुट-पथ पर चलना ही सिखा रहे हैं।

मूल के बिना तो महान् कल्पवृक्ष भी खड़ा नहीं रह सकता—तो तरुवर भारत को हरा-भरा रखने के लिये उसके मूल में सदाचार-शिक्षा के विशुद्ध जल सिंचन की तात्कालिक आवश्यकता है।

राज्य और प्रशासन अनेक नैतिक प्रकार परिषदें बनाते रहते हैं। इस प्रकार के उपाय पत्तों पर जल छिड़कना है मूल में नहीं। ऐसी योजनायें भारतीय पद्धति नहीं; अपितु पश्चिम का अनुकरण मात्र है।

ब्रह्मचर्य की जगह बेलगाम कामीपन

...का प्रचार शास्त्रों की उपेक्षा से ...हो रहा है। मनु महाराज का कथन है कि:—

"...[illegible] ...वचनाथमे वचन्"

गृहस्थ पुत्रोत्पत्ति के सिवा शेषकाल में ब्रह्मचर्य का पालन करता रहे। परिवार नियोजन ने लज्जा को भी सदा के लिये विदा कर ही दिया। युवकों एवं महिलाओं की शरम बेशरमों की शरण ले रही है। यह 'लूप' सब सद्गुणों का लोप कर रही है।

महात्मा गांधी जी ने बहुत पहले इस 'सन्तान निग्रह' को निन्दनीय कहा था, इसके स्थान पर ब्रह्मचर्य व्रत का पालन बताया था। अब 'महान् पोप' भी संयम ही बता रहे हैं।

लज्जा गुणों की खान

भक्त योगी राजर्षि भर्तृहरि ने 'लज्जा गुणौघ जननी' कहा है। लज्जा भूमि में कामुकता के कण्टक नहीं उगते, लज्जा मनुष्य के चरित्र की वैसे ही रक्षा करती है जैसे जननी कोमल शिशु की।

बाल्य और किशोर वय में लज्जा के गुण-शील जिनमें विकसित नहीं किये गये वह प्रौढ़ होकर निर्लज्ज रहेगा ही। केन्द्र और राज्य समय निकालकर आगामी पीढ़ी को गिरने से बचावें।

कुछ मूल उपाय

(१) शिक्षालयों के भवनों में विद्याओं के साथ मल्लयुद्ध की शिक्षा के लिये एक शुद्ध मिट्टी का अखाड़ा भी अवश्य बनाया जाय। एक अध्यापक कुश्ती के दांव पेंच का विशेषज्ञ विद्यालय में अवश्य नियुक्त हो। स्नान का भी परिपूर्ण प्रबन्ध रहे। परीक्षा में व्यायाम के प्राप्तांकों को महत्त्व दिया जाय।

(२) शिक्षा के समय विभाग में इस व्यायाम की अनुकूलता पर पूरा ध्यान दिया जाय, अर्थात् अधिक ताप में या भोजन करने के बाद न कराया जाय। कुछ हथियार चलाना भी सिखाया जाय। कूद-फांद लम्बी दौड़ तैरना, भार उठाना आदि भी।

(३) शरीर विकास में ऊंचे नम्बरों पर आने वाले छात्र छात्राओं को विशेष पुरस्कार दिये जावें एवं छात्र वृत्तियां भी।

(४) पाठ्य-पुस्तकों में सत्य, असत्य, अस्तेय अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य के पाठ १० प्रतिशत हों।

भीष्म पितामह, हनुमान शंकराचार्य, और स्वामी दयानन्द जैसे अनेक अखण्ड ब्रह्मचारियों में से कुछ की पौरुष की घटनायें उन पुस्तकों में अवश्य रहें।

अन्य बलवानों वीरों एवं योद्धाओं के आंशिक चरित्र भी दिये जावें।

(५) किसी अध्यापक आदि के श्रम कारण छात्र का विशेष विकास हुआ तो उस अध्यापक को पुरस्कृत किया जाय।

(६) प्रार्थना में आस्तिकता के वचन, और भारत गौरव अवश्य रहें।

(७) बीड़ी-सिगरेट सेवन के दोष कभी-कभी विद्यालयों में मुद्रित अवश्य बांटे जावें।

(८) इस भ्रम को समूल दूर करना चाहिए कि कसरत से दिमागी कमजोरी आती है ब्रह्मचारी का मस्तिष्क और अधिक अच्छा होता है। छात्र ऊंची श्रेणी में उत्तीर्ण होता है।

अर्थ-पिशाच और रूप-प्रतियोगिता

अब से ५० वर्ष पहले बचपन माता-पिता में और गुरु जन बच्चों को अमृत वचन कण्ठस्थ कराते थे।

मातृवत परदारेषु, परद्रव्येषु, लोष्ठवत आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति सः पण्डितः ॥

ऐसे अमृत वचनों का प्रभाव शिक्षार्थी के चित्त-पटल पर सदा अंकित रहता था।

प्रश्न होता है इस समय भारी पतन क्यों हो रहा है, इसका उत्तर यह है कि—अर्थ पिशाचों ने भारत को जाने-अनजाने

काम-वन में सुन्दरियों का बाजार

बना रखा है। वे धनी धन्य हैं, जो हजारों लाखों का दान करते रहते हैं, पर वे इने-गिने ही हैं पर उन अर्थ-शोषकों का समूह बड़ा जागृत है जो दिन-रात दूसरे की जेब का पैसा और चरित्र दोनों वस्तुओं का अपहरण करता है।

कलाकार भी इनके फन्दे में फंसे रहते हैं। [illegible] विज्ञापनों में सुन्दरियों के चित्र जितने छपते होंगे उनसे २५ गुना अधिक इस स्वतन्त्रता के युग में छपते हैं। साबुन, चाह, पाउडर, तेल, फुलेल, पौष्टिक पदार्थ, कलेण्डर, नृत्यकला प्रदर्शक कपड़ा आदि जहां देखो वहीं रूपसी बलात पाठक की आंखें अपनी ओर खींच लेती हैं। क्या यह [illegible] नहीं ?

बेशर्मी का रिकार्ड

और तो और एक चली है रूप प्रतियोगिता और उसकी सगी बहन हंस प्रतियोगिता। समाचार-पत्रों को तो कुछ चटपटा मसाला चाहिए ही,

श्री श्रीराम शर्मा वैदिक
आगरा

प्रत्येक समूह उन्हें पैसा जुटाता रहे। पौबारह बनी रहे। उनके जाल इन दो प्रतियोगिताओं के चित्र नवयुवकों को भले ही जहन्नुम में ले जावें।

कभी इन अर्थ—अपहारियों को यह भी सूझता है कि अच्छे पट्ठे वाले विशाल वक्षस्थल के नवयुवकों के चित्र छापें, जो भारत रक्षकों के दिल बढ़ावें। ब्रह्मचर्य और दीर्घायुष्य का मूल्य समझावें।

मुस्लिम और अंग्रेजी संस्कृतियां

भारत को भारतीयता के पुटों से ही पनपाया जा सकता है। विदेशी दो विदेशी सभ्यता के गुण-दोष भिन्न हैं।

घृताङ्गार समा नारी,
घृतकुम्भ समः पुमान् ।

यह प्राकृतिक सिद्धांत अटल है। मनु भगवान् ने कहा है.—

मात्रा स्वस्रा दुहित्रा वा, न विविक्तासनो भवेत ।

जिन की बहन बेटियों से भी दूर बैठे। यह तो ठीक है कि भारत में पर्दा प्रथा नहीं थी, यह मुस्लिम देशों से आई, पर इस पर्दा प्रथा का मूल सिद्धांत लज्जा की रक्षा अवश्य रहा है पुरोपीय देवियां भी अब से ५० वर्ष पहले तक पूरा शरीर ढांकती थीं, बाद को उनमें अद्धनग्नता का फैशन फैला। उन्हीं के चित्रपट नग्न दिखाये जाते हैं।

जब कि भारत में साड़ी के ऊपर भी रेशमी या सूती चादर या दुशाला ओढ़ा जाता चला आ रहा है। भारत की नव-युवतियों को शरीर ढांकने की आदत डालनी चाहिए।

उच्चस्तरीय रहन-सहन

ऊंचे स्टैंडर्ड का मतलब [illegible] नहीं, अपितु अच्छे [illegible] पुष्टिकारक भोजन प्रचुर मात्रा में [illegible] रखना ही है।

[शेष पृष्ठ १० पर

स्वास्थ्य और सौंदर्य के लिए यह सरल व्यायाम करें

अगर आप अपनी गर्दन की मांस पेशियां मजबूत करना और ठुड्डी तथा झुर्रियों से बचना चाहती हैं तो कृपया ये सरल व्यायाम हर दिन १० से ३० बार तक कीजिये।

१—दर्पण के सामने खड़ी हो जाइये (अथवा बैठ जाइये), पीठ और गर्दन सीधी कीजिये और इसके बाद सामने की ओर झुकिये।

२—हंसुली से तनिक नीचे छाती पर हाथ रखिये और दांतों को भींचकर सिर को पीछे की ओर झुकाइये।

३—उपर्युक्त मुद्रा बनाये रहिये तथा मुंह खोलते और बन्द करते हुए सिर को दायें-बायें घुमाइये।

४—कोहनियां मेज पर टिकाइये, ठोड़ी को हाथ पर रखिये और इसी स्थिति में मुंह खोलिये और बन्द कीजिये।

५—स्टूल पर बैठ जाइये, बाँहें अगल-बगल लटका लीजिये और सिर को दायें-बायें झुकाते हुए कान से कन्धे को छूने की कोशिश कीजिये।

६—खड़ी होकर या बैठकर (पीठ बिल्कुल सीधी रहे) गर्दन को तानकर तथा ठोढ़ी को छाती से न छुआते हुए सिर को पहले एक ओर फिर दूसरी दिशा में चक्राकार घुमाइये।

७—बारी-बारी से दायें-बायें पहलू लेटते हुए (बाहें लटकी रहें) सिर और कन्धों को ऊपर उठाइये और नीचे कीजिये।

८—चित्त लेटिये, सिर को पीछे की ओर झुकाइये, बाँहों को धड़ के साथ सीधे सटा लीजिए और सिर को ऊपर उठाइये तथा नीचे कीजिये। ठोढ़ी को छाती से मत छूने दीजिये। गर्दन लगातार तनी हुई रहनी चाहिये।

९—पैरों को जोड़कर खड़ी हो जाइये और बांहों को धड़ के साथ सटा दीजिये। सारे शरीर को दायें-बायें घुमाइये। सिर को भी दायें-बायें घुमाइये। ठोढ़ी को यथाशक्ति ऊँचा रखने की कोशिश कीजिये।

१०—बैठ जाइये, शरीर को सीधा तान लीजिये, सिर को पीछे की ओर कीजिये तथा दायें-बायें झुकाइये। (सोवियत नारी से)

—मरीया सोल्निकोवा

सह-शिक्षा

विद्यालयों में युवक-युवतियां श्रेणि में इकट्ठे पढ़ें, इसके दुष्परिणाम आये दिन सुनने को मिलते हैं, इस परिपाटी को नितांत बन्द करना चाहिए। इस विचार को कुछ नये साहब 'दकियानूसी' कहकर हंसी में टाल देते हैं। उन्हें विचारना चाहिये कि प्राकृतिक नियमों में नया-पुराना पन नहीं होता। जहां आग लगने का भय होता है, वहां पहले से ही उसे बुझाने के लिये पानी आदि तैयार रखा जाता है।

देश की वैभवशाली स्थिरता के लिये नई पीढ़ी को सशक्त, सुशिक्षित और सभ्य एवं संयमी बनाना मौलिक साधन है।

विद्वानों में अभियान

'विद्या विनय देती है,' यदि विद्वान् में भी अहंभाव है तो समझो कि उसने अविद्या ही पढ़ी है। जनता का मार्ग दर्शक यदि अविनयी या अभिमानी है तो वह अपना कर्त्तव्य उलटे तौर पर ही चलायेगा।

पुरा विद्वत्तासीदुपशमवतां क्लेशहतये। गता कालेनासौ विषयसुखसिद्ध्यै विषयिणाम्।

"विद्वत्ता पहले जन-दुःखहरण के लिये थी, काल पाकर वह विषयी लोगों की ऐयाशी की चीज बन गई" हा हन्त! हे प्रभो! विद्या को पुरानी पद्धति पर लाओ। इतीति

कुशलचौलालजम् आवरण् क्ते

मां की लाज बचाओ

आज प्रलय की आंधी औ तूफान उमड़ता आता है,
राम कृष्ण ऋषियों की भू पर काल चक्र मण्डराता है।

मेरे देश के वीर पहरुओ, आर्य धर्म के रखवालो,
मां की लाज बचाओ बढ़कर, माँ ने तुम्हें पुकारा है।
पाखण्डों के दल-बल अब तो बढ़ते ही नित आते हैं,
पाप-पुत्र ईसा के चेले चकमे खूब दिखाते हैं।

चांदी के टुकड़ों से सबको, आ आकर ललचाते हैं,
दीन दुःखी निर्धन जनता को, छलबल से बहकाते हैं,
अब न प्रतीक्षा की बेला है और न अवसर शेष सोच का,
घर आंगन में आकर हमको, दुश्मन ने ललकारा है।

हिमगिरि के शिखरों के नीचे विषधर के फन फैल रहे हैं,
वे दोनों में वनखण्डों में खेल अनोखे खेल रहे हैं,
देश द्रोह की आग लगाकर फैलाते हैं चिन्गारी,
सर्वनाश के दावानल से, कांप उठी धरती प्यारी।

नागालैण्ड औ झारखण्ड का विस्फोटक भी नहीं सुना क्या,
मृत्यु नींद में सोने वालो, सिर पर खड़ा दुधारा है।
मातृ-भूमि औ शस्य श्यामला, प्यारी थी प्रिय प्राण से,
स्वतन्त्रता थी पाई हमने, कोटि-कोटि बलिदान से।

धर्म, सभ्यता, संस्कृति अपनी, परिरक्षित थी ज्ञान से,
अमर तिरंगा, लहराया जो गौरव से अभिमान से,
आज सभी पर फैल चुकी है कालचक्र की काली छाया,
इन सबका जीवन संकट में, वली शत्रु हुंकारा है।

वेद धर्म के मानस पुत्रो, दुश्मन की हुंकार सुनो,
दयानन्द के वीर सैनिको, सुनो शत्रु ललकार सुनो,
गांव-गांव में गली-गली में, घर आंगन में फुलवारी में,
सर्वनाश-विषधर का फन फुंकार रहा है हर क्यारी में।

ईसा के चालाक सिपाही ग्राम-ग्राम में घूम रहे हैं,
वे देते हैं नित्य चुनौती, क्यों ठण्डा रक्त तुम्हारा है?
आंख बन्दकर बैठे हो तुम, प्राण नहीं बच पायेंगे,
सोते रहे इसी भांति तो, 'वेद' नहीं रह पायेंगे।

अगर तुम्हारा रक्त यूं ही ठण्डा पानी बन जायेगा,
हर घर पर तब ईसा का, काला झण्डा लहरायेगा,
शपथ तुम्हें है मातृ-भूमि की, मां के पावन दूध की,
उठो वीरवर उठो, 'वेद' ने तुमको वीर गुहारा है।

गर्जन करता है शृंगाल, आज सिंहों की धरती पर,
पापों की विरकम नर्तन है, आज सत्य की वेदी पर,
अज्ञान, अविद्या, अन्धकार, रक्षक बन बैठे ज्ञान के,
ओ सत्य ज्ञान के रक्षक तुम, क्यों सोये चादर तान के।

है गूंज रही रणभेरी अब, बज चुका युद्ध का बिगुल सुनो,
है धर्म बुलाता रहा हित, जागो, जागो अभियान करो।
ऋषियों की वाणी कम्पित है, भारत का भाग्य सिसकता है।
पापी विषधर फुंकार रहा, वेदों ने तुम्हें पुकारा।
माता ने तुम्हें पुकारा है।

—[illegible]

काव्य-कानन

आर्यवीर !

आर्य जगत् के आर्यवीर बन,
करें देश की रखवाली !

रहा देश का गौरव है अति, वीर देश के स्तम्भ हैं,
भुजायें-दुश्मन की काया, असीम भरा बुद्ध दम हैं ।।
वीर नहीं तो देश नहीं है, वीर-देश की है काया ।
उनके पीछे मान देश का, सब वीरों की है माया ।।
उन वीरों ने भारत माँ की-दुग्ध सुधा की पी प्याली ।
आर्य जगत् के आर्य वीर बन, करें देश की रखवाली ।।

मल्ल कुश्ती में मार पछाड़ें, आके अखाड़े अड़ते हैं,
भुजा उठाय सामने आते, दुश्मन आगे पड़ते हैं ।।
शस्त्र-विद्या इम भारत की, वीर देश के सब जानें ।
तभी देश का गौरव होंगे, आन शान को पहिचानें ।।
शारीरिकोन्नति वीर बढ़ाकर, बन जावें सब बलशाली ।
आर्य जगत् के आर्य वीर बन, करें देश की रखवाली ।।

वीर्यवान बन जो भारत के लाल लाड़के बन जावें,
बल पौरुष-विद्या हो सब में, आर्य-वीर जब कहलावें ।।
ये भारत है आर्य वीरों का, कायरता का काम नहीं ।
आग-लगावें शक्ति अपनी- बल हीनों का नाम नहीं ।।
रामचन्द्र औ कृष्ण दयानंद इनकी भूमि नहीं खाली ।
आर्य जगत् के आर्य वीर बन, करें देश की रखवाली ।।

भये वीर हनुमान, नील-नल, अङ्गद योधा रणबङ्का,
समर भूमि में दुश्मन हारे, सबल लड़े भट्ट निशङ्का ।।
वीर शिवा, प्रताप अमरसिंह, वीर देश के थे पक्के ।
कुछ दिन पहले पाकिस्तान का, छुड़ा दिये थे छक्के ।।
आर्य वीरों के आगे उनकी, शक्ति तोलने नहीं वाली ।
आर्य जगत् के आर्य वीर बन, करें देश की रखवाली ।।

—कवि कस्तुरचन्द्र 'घनसार', पीपाड़ शहर (राज०)

चार मुक्तक

[१]

जवानी ने सदा क्रांति के गीत गाये हैं
अन्धेरी राह में बलिदान के दीपक जलाये हैं
जब-जब जवानी ने जुल्म से टक्कर ली है
तब-तब इस धरा पर भूचाल आये हैं ।

[२]

वीरों की याद से जिनके भुजदण्ड फड़कते हैं
सीने में तूफानी जोश के शोले भड़कते हैं
निज देश की रक्षा वे ही नौजवान करते हैं
जो शत्रु पर बनकर बिजली कड़कते हैं ।

[३]

किसी आघात से भारत ढह नहीं सकता
नटकी सी धार में यह देश बह नहीं सकता
छत्रपति के देश की पहचान यही है
कि मिट चाहे जावे अनादर सह नहीं सकता ।

[४]

एक दिन सिकन्दर हमें मिटाने चला था
इतिहास से पूछो नतीजा क्या निकला था
और भी कितने सिकन्दर आये मिटाने
सब यूं खो गये कि शव तक न मिला था ।

—श्री ओमकुमार एम० ए० (द्वय)
दयानन्द कालिज, शोलापुर

इन्द्र इच्चरतः सखा

★

प्रभु पुरुषार्थ करने वाले का मित्र होता है । जो अपनी सहायता आप करते हैं, ईश्वर उनकी सहायता करता है । जो हाथ पर हाथ धरे बैठे रहते हैं, उनको सब बुरा मानते हैं और उनकी कोई सहायता नहीं करता । बच्चा जब तक अपने हाथ नहीं चलाता, उसे चलना नहीं आता । जब तक तुम स्वयं पढ़ना नहीं सीखते तुम्हें विद्या नहीं आ सकती । तुम विद्वान नहीं कहला सकते । प्रत्येक आदमी को अपने आप पुरुषार्थ करना सीखना चाहिए । पुरुषार्थ करने वाला ही पुरुष कहलाने का अधिकारी होता है ।

पुरुषार्थ हीन आदमी सदा जीवन की दौड़ में पीछे रह जाता है । उसको बल, बुद्धि और गुण प्राप्त नहीं होते पुरुषार्थ द्वारा लोग भिखारी से धनवान् बन जाते है । थोड़े वर्ष पहले अमरीका का राष्ट्रपति हर्बर्ट हूवर था । वह बचपन से एक अनाथ बालक था । अपने पुरुषार्थ से एक दिन वह अमेरिका का राष्ट्रपति बन गया । तुमने रैम्जे मैकडॉनल्ड का नाम सुना होगा । यह महाशय इंग्लैण्ड के प्रधान मन्त्री बन गये । वह भी अपने पुरुषार्थ की शक्ति से मजदूर से महामन्त्री बने अतः निरन्तर परिश्रम करते रहो । तभी परमात्मा तुम्हारा सहायक होगा । राम वनवास में अकेले थे । परन्तु उन्होंने अपने परिश्रम से साधनों को जुटाया और लंकापति पर विजय प्राप्त कर ली । कृष्ण ने अपने परिश्रम के बल से कंस जैसे महाबली को जीत लिया था । बात यह है कि उनके परिश्रम से ईश्वर उनका साथ देते थे ।

महापुरुषों की दृष्टि में बालक

"शिशुओं को मेरे निकट आने दो-रोको मत, क्योंकि ईश्वर का साम्राज्य शिशुओं से ही निर्मित है ।"

—ईशु मसीह

"बालक को प्रसन्न रखना ही उसमें सुधार करना है ।"

—वाइड

'बालक में बचपन से ही मनुष्य के दर्शन होते हैं जैसे प्रभात में दिन के ।'

—मिल्टन

"अपने माता पिता की सेवा ही बालक का प्रथम कर्त्तव्य है ।"

—बापू

बालक को ताड़ना देने से पूर्व यह निर्णय कर लेना चाहिए कि मनुष्य स्वयं ही तो उसके दोष का कारण नहीं है ।"

—आर्टन, ओ मंली

कुछ जानने योग्य बातें

१—भारत का पहला समाचार पत्र जेम्स आगस्टस हिकी ने सन् सत्तरह सौ अस्सी में 'बङ्गाल-गजट' के नाम से निकाला था ।

२—पतंग का आविष्कार चीन के सेनाध्यक्ष हेन-डी हेनसी ने ईसा से एक सौ छियानवे वर्ष पूर्व किया था ।

३—संसार में दो हजार सातसौ बानवे भाषायें बोली जाती हैं ।

४—हाथी सूंड़ से सत्ताइस मन का बोझ उठा सकता है ।

५—हिरन पचास किलोमीटर प्रति घण्टे की गति से दौड़ता है ।

—सुभाषचन्द्र वाधवा

आर्यवीर ७-८ नवम्बर ६८ को अधिक से अधिक संख्या में हैदराबाद पहुंचें

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान संचालक एवं सभा सदस्य श्री ओमप्रकाश जी त्यागी ने आर्यवीर दल की समस्त प्रान्तीय शाखाओं को एक पत्रक भेजा है। पत्रक में कहा गया है कि ७-८ तथा ९ नवम्बर को हैदराबाद में होने वाले आर्य महासम्मेलन के अवसर पर सार्वदेशिक आर्य वीर दल सम्मेलन भी करने का निश्चय किया गया है। इस सम्मेलन में समस्त प्रांतों से अधिक से अधिक गणवेशधारी आर्य वीर पहुचें इसका भी आग्रह किया गया है।

पत्रक के अनुसार इस बार आर्यवीर दल सम्मेलन मे आर्यवीर दल के भावी कार्यक्रम तथा गतिविधियों के सम्बन्ध में विचार कर एक नया मोड देने का विचार है जिससे, आर्यवीर दल का कार्य विस्तार भली भांति किया जा सके और दल प्रगति की ओर अग्रसर हो सके।

सम्मेलन मे बहुत बडी सख्या मे गणवेशधारी आर्य वीरों के पहुचने की सम्भावना है। सम्मेलन को सफल बनाने के लिये अभी से तैयारी आरम्भ कर दी गई हैं।

प्रादेशिक आर्यवीर दल बंगाल

गत दिनांक १७-८-६८ को दल कार्य समिति की बैठक श्री ब्रह्मदेवसिंह की अध्यक्षता मे हुई। सर्वसम्मति से शरदकालीन शिक्षा शिविर लगाने का निश्चय किया गया तथा शिविर सचालनार्थ निम्न अधिकारियों की नियुक्ति हुई—

शिविर सचालक—श्री ब्रह्मदेवसिंह
शिविराध्यक्ष—श्री राजेन्द्रसिंह मल्लिक
शिविर सचिव—श्री प्रकाशचन्द्र पोद्दार
शिविर उप सचिव—श्री रामसनेही मिश्र
बौद्धिकाध्यक्ष—डा० सदाशिव शर्मा
शिक्षकाध्यक्ष—श्री काशीनाथ शास्त्री

शिवगंज में आर्य वीर दल एवं आर्य वीरांगना दल का शिक्षण शिविर

पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की अध्यक्षता में ता० १५-७-६८ से योग आसन व अन्य व्यायाम का शिक्षण शिविर लगा। जिसमें बहुत से विद्यार्थी भाग लेकर सम्मिलित हुए। आर्य वीरांगनाओं के लिये भी स्वामी जी के [illegible] योग आसन व स्वास्थ्य सम्बन्धी बातें सिखाई गई। उच्च विद्यालय में [illegible] आसन का प्रदर्शन हुआ। [illegible] एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी प्रवचन करके [illegible] एवं विद्यार्थियों को पुष्प किया। आप विगत २६ वर्षों से अन्न ग्रहण नहीं कर रहे हैं। आपका स्वास्थ्य बडा हृष्ट पुष्ट है आप अच्छे भजनोपदेशक हैं एवं संगीत विद्या में आप एम० ए० है। स्वामी जी महाराज पैदल आर्यवीरों को लेकर शिवगंज से १८ किलो मीटर दूर पहाडी स्थान गवकेश्वर जी तक पैदल गये। स्वामी जी के बताये मार्ग पर आज भी आर्य वीर एवं वीरांगनाओं का कार्यक्रम प्रभु कृपा से चल रहा है।

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री का पत्र

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री एवं ससद सदस्य श्री रामगोपाल शालवाले ने सरकार द्वारा नियुक्त गोरक्षा समिति के सचिव श्री अमरेन्द्र कुमार सरकार को एक पत्र लिखकर गोरक्षा समिति के समक्ष साक्षी देने के लिये आने मे असमर्थता प्रकट की है।

श्री शालवाले ने अपने पत्र में लिखा है कि मुझे भलीभांति स्मरण है कि सरकारी गोरक्षा समिति का गठन इस आश्वासन पर किया गया था कि यह समिति सम्पूर्ण गोवंश की हत्या पर प्रतिबन्ध लगाये जाने के उपायों पर विचार करेगी। किन्तु विगत मास कुछ सदस्यों द्वारा यही प्रश्न उपस्थित करने पर समिति मे गतिरोध उत्पन्न हो गया।

उन्होने आगे लिखा है कि यदि मेरी इस बात मे सत्यता है तो मेरा आपके कार्यालय मे उपस्थित होकर गवाही देने का कोई प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। विगत मास इससे पूर्व मे मैं अपना एक लिखित आवेदन आपकी सेवा मे भेज चुका हू यदि आप चाहे तो उसका उपयोग किया जा सकता है।

श्री शालवाले ने आगे लिखा है कि यदि आपने अपने उत्तर में यह स्वीकार किया कि गोरक्षा समिति सम्पूर्ण गोवंश की हत्या बन्द करने के उद्देश्य से ही गठित की गई है तो आपका उत्तर आने पर मैं मौखिक रूप से गवाही देने के प्रश्न पर विचार करूंगा।

धार्मिक परीक्षायें

सार्वदेशिक विद्यार्य सभा की धार्मिक परीक्षायें सारे देश मे गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी सभी केन्द्रों मे सुचारुरूप से सम्पन्न हो चुकी है। मैं सभी केन्द्र व्यवस्थापकों को हार्दिक धन्यवाद देता हू जिनके पूर्ण सहयोग और सत्प्रयत्नों से ही धर्म ग्रन्थों के स्वाध्याय का यह प्रचार यज्ञ सफल हो रहा है। आशा है कि सभी केन्द्र व्यवस्थापक आर्यसमाजों के अधिकारी तथा शिक्षण संस्थाओं के आचार्यगण अभी से आगामी वर्ष की परीक्षाओं की तैयारी मे जुट जायेंगे।

—देवव्रत धर्मेन्दु परीक्षा मन्त्री

दिल्ली प्रशासन की ओर से हिन्दी को उचित स्थान दिलाने की प्रशंसा

श्री नारायण दत्त कपूर प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा ने, जो दिल्ली प्रशासन ने १५ अगस्त, ६८ से दिल्ली राज्य में हिन्दी लागू करने की घोषणा की है, पर दिल्ली जनता की ओर से दिल्ली प्रशासन को बधाई देते हुए कहा दिल्ली प्रशासन ने इस प्रकार एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है। वैसे तो भारत को आजाद हुए २१ वर्ष व्यतीत हो गये, लेकिन हिन्दी को तो अब ही स्वतन्त्रता मिली है। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि केन्द्रीय सरकार का भी अपने समस्त कार्य शीघ्र ही हिन्दी मे प्रारम्भ कर देने चाहिये क्योंकि यह भारत के अधिकांश व्यक्तियों की भावनाओं के अनुकूल रहेगा। श्री कपूर ने सभी भारतीयों से अपने सभी कार्य हिन्दी में करने का आग्रह किया।

हिन्दी ही टेलीफोन निर्देशिका मंगायें

समस्त आर्यसमाजों तथा आर्य संस्थाओं और विशेषकर हिन्दी भाषियों से प्रार्थना है कि वह दिल्ली प्रशासन द्वारा प्रकाशित होने वाली हिन्दी डायरेक्ट्रियां ही मगायें। उन्हें एक पत्र टेलीफोन विभाग की ओर से भी मिल चुका है जिसमे लिख दें हमें हिन्दी में ही डायरेक्टरी चाहिये। अगर आपके पास पत्र नहीं आया हो तो एक पत्र आप शीघ्र ही टेलीफोन विभाग के पास भेज दें।

—रामनाथ सहगल
मन्त्री—आर्य केन्द्रीय सभा

निर्वाचन—

—श्री स्वामी सेवानन्द सरस्वती तथा श्री प० ब्रह्मानन्द जी द्वारा दिनांक १६-८-६८ की रात्रि मे वैदिक धर्म प्रचार हुआ दि० १४-८-६८ को प्रातःकाल यज्ञोपरान्त आर्यसमाज गहकुइयां की स्थापना हुई और निम्नप्रकार निर्वाचन निम्न प्रकार हुआ—

प्रधान—श्री म० कृष्णलाल
उपप्रधान—श्री मोहनलाल
मन्त्री—श्री ठाकुरदास जी
कोषाध्यक्ष—श्री छत्रपालसिंह
पुस्तकाध्यक्ष—श्री रामभरोसेलाल

—आर्यसमाज हरसनगर

—श्री स्वामी सेवानन्द सरस्वती तथा श्री प० ब्रह्मानन्द जी द्वारा दि० १६-८-६८ को वैदिक धर्म का प्रचार हुआ। दि० १७-८-६८ को प्रातःकाल यज्ञोपरान्त आर्यसमाज की स्थापना हुई और निर्वाचन निम्न प्रकार हुआ—

प्रधान—श्री लूयतराम
उपप्रधान—श्री फुन्दनलाल
मन्त्री—श्री डालचन्द
उपमन्त्री—श्री नत्थूलाल
कोषाध्यक्ष—श्री शम्भूदयाल
पुस्तकाध्यक्ष—श्री हरिचरनलाल

—आर्यसमाज पुरानी गोदाम गया
प्रधान—श्री परमेश्वरराम आर्य
मन्त्री—श्री सोमनाथप्रसाद
कोषाध्यक्ष—श्री वासुदेवनारायण
पुस्तका०— " वासुदेवप्रसाद

—आर्यसमाज अजमेर
प्रधान—श्री दत्तात्रेय वाब्ले एम०ए०
मन्त्री—श्री डा० सूर्यदेव शर्मा
कोषा०—श्री [illegible] शर्मा
पुस्तका०—श्री [illegible] आर्य

आवश्यक सूचना

आर्यमित्र में प्रकाशनार्थ इतने विस्तृत समाचार आते हैं कि उन सब को प्रकाशित करना किसी भी प्रकार सम्भव नहीं हो पाता।

इस कारण प्रकाशन में भी विलम्ब हो जाता है, अतएव आर्यमित्र में प्रकाशन के निमित्त समाचार भेजने वालों से प्रार्थना है कि वे अत्यन्त संक्षिप्त रूप से समाचार भेजें ताकि उन्हें तुरन्त प्रकाशित करने में सुविधा हो।

—सम्पादक

गोरक्षा-आन्दोलन

लखनऊ में गोरक्षा प्रचार

शुक्रवार दि० ६-९-६८ को प्रातःकाल ८ बजे सत्संग भवन कमला मार्केट, रामकृष्ण पार्क, अमीनाबाद में सार्वदेशिक गोकृष्यादि रक्षिणी सभा के तत्वावधान में एक सम्मेलन हुआ जिसमें यज्ञ के पश्चात् स्वामी केशवानन्द जी सरस्वती ने गाय के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए प्रत्येक नागरिक के भोजन में गोदुग्ध आवश्यक बताया। मांस और दूध की तुलना करते हुए आपने कहा कि मांस से लाभ होने के स्थान पर हानि होती है। स्वाद भी घी और मसाले का होता है। उन्होंने कहा कि मांस न तो मनुष्य का स्वाभाविक भोजन ही है और न ही मनुष्य के दांत, आंत, आमाशय आदि कोई भी अंग ऐसा बना है जो मांस को स्वीकार करता हो। स्वास्थ्य की दृष्टि से उन्होंने कहा कि प्रत्येक साधारण परिश्रम करने वाले मनुष्य को दो छटांक मांस पोषक और ११॥ छटांक अग्निवर्धक पदार्थों की आवश्यकता होती है। तब ही उसकी अग्नि ठीक रह सकती है। मांस खाकर यह अनुपात ठीक रखना किसी भी प्रकार संगत नहीं। अतः इससे मन्दाग्नि हो जाती है। जब कि गोदुग्ध से यह अनुपात भी ठीक रहता है और अग्नि तीव्र होती है। मांसाहारी और गोदुग्धाहारी के पुरुषार्थ की क्षमता की तुलना करते हुए उन्होंने कुत्ता भेड़िया और बैल का उदाहरण प्रस्तुत किया। बैल गर्मियों में भी मनों बोझ लेकर मीलों दूर जा सकता है पर मांसाहारी पशु थोड़ी दूर केवल चलने में ही थक जाता है।

प्रत्येक नागरिक को दूध मिल सके इसके लिये नस्ल सुधार और गोरक्षा पर जोर देते हुए उन्होंने इस बात पर खेद प्रकट किया कि यहां २५ ३० सेर दूध देने वाली गउएं कृत्रिम गर्भाधान करके तीन चार वर्ष में ही बांझ कर दी जाती है और नीलाम कर दी जाती है जिन्हें प्रायः कसाई ही ले जाते है राष्ट्रिय हित की दृष्टि से उन्होंने कृत्रिम गर्भाधान बन्द करना नितान्त अनिवार्य बताया।"

(पृष्ठ ८ का शेष)

होगा और यजुर्वेद अध्याय ३१ के मन्त्र ४ भावरी सज्ञ मे अर्थात् अनुवाद से वृक्षों में जीव का अभाव देखकर महर्षि दयानन्द के कथन का परस्पर विरोध समझ कर विस्मित हुआ करते हैं। उनकी आत्मिक पीड़ा का पाप किसके माथे पर पड़ेगा। मनुष्य और भीष्म पति के भेद का संस्कृत भाष्य का पता नहीं है, फिर विज्ञो और वेद जो दोनों शब्द एकार्थ एकार्थ वाची संस्कृत में बताये गये हैं। उनमें मनमाना भेद बताना वेदार्थ को ही उल्टा कर देता है क्योंकि वेदमन्त्र में द्रु का ही शब्द पड़ा हुआ है। आर्य बन्धुगण विचारो तो सही कि ऐसे अनर्थों ने कितने जिज्ञासु पुरुषों को सत्य पथ के ग्रहण करने से रोका होगा। आत्मदीक्षा में की और भी गलतियां महात्मा मुन्शीराम जी ने लिखी हैं जो विस्तार भय से नहीं लिखी जाती हैं।

वृक्षों में जीव के बारे में अनेक विद्वान् अपने विचारों को लेकर [illegible] द्वारा प्रसारित करते रहते हैं। अब स्वामी मंगलानन्दपुरी के ऋग्वेद का प्रमाण देखिये।

आपः प्रणीत भेषज वरूथं तन्वे ३ मम। ज्योक् च सूर्यं दृशे ॥ २०
[ऋग मण्डल १ सूक्त २३ मन्त्र २१]
[ऋष दयानन्द भाष्य पृष्ठ ३६४]

इस मन्त्र का भावार्थ स्वामी जी ने इस प्रकार लिखा है—

भावार्थ:—नैव प्राणैर्विना कश्चित् प्राणी वृक्षादयश्च शरीरं धारयितुं शक्नुवन्ति।

भावार्थ हिन्दी:—कोई प्राणी या वृक्षादि प्राणों के बिना अपने शरीरों को धारण नहीं कर सकते।

भावार्थ की हिन्दी वेद भाष्य में नहीं है। यह मंगलानन्द पुरी ने भाष्य किया है।

उपर्युक्त [illegible] अनुसार वृक्ष में जीव है लिखते हैं परन्तु मैं इस कारण उनको अपूर्व [illegible] हूं कि किसी ने [illegible] यह प्रश्न उनके जीवन में नहीं उठाया जो वह इसका उत्तर देते कि वृक्ष में जीव है या नहीं है। यह बात आज तक इतनी नहीं बढ़ती जिस पर पुस्तकें लिखी जाती हैं।

विद्वान् जन महर्षि का सहारा लेकर ही अपने पक्ष की पुष्टि कर रहे हैं महर्षि ने स्पष्ट कहीं नहीं कहा कि वृक्ष सजीव या निर्जीव है। इसका ठीक निर्णय विद्वानों की [illegible] राय से न हो सकेगा विरोध चलता ही रहेगा। प्रिय बन्धु रामेश्वर दयाल जी और आपके विचारधारा वाले जब तक प्रतीक्षा करें (कब तक) जब तक कि महर्षि दयानन्द सरस्वती अपनी मोक्ष अवधि को समाप्त करके संसार में आ जाय और इसको स्पष्ट कर दें, तभी यह मतभेद दूर हो सकता है। प्रतीक्षा करनी ही पड़ेगी, दूसरा कोई उपाय नहीं है। हां यदि श्री स्वामी वेदानन्द, पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय, रामचन्द्र शास्त्री और नारायण प्रसाद देहली आदि के विचार और पण्डितों के नागरी तर्क को ठीक मानते हैं [illegible] और सन्तोष हो जाय तो ठीक है परन्तु मैं वृक्षों में जीव मानने वाला हूं।

[illegible]

गुरुकुल कांगड़ी के स्नातक बन्धुओं की सेवा में

(१) आपको यह ज्ञात हो होगा कि अखिल-भारतीय स्नातक मण्डल के गत अधिवेशन में जो [illegible] वैशाख (१४ अप्रैल) को गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के वार्षिकोत्सव के अवसर पर गुरुकुल कांगड़ी में हुआ, मुझे सब सम्मति से मुख्य उप-प्रधान निर्वाचित किया गया निर्वाचित प्रधान, श्री स्वा० समर्पणानन्द जी सरस्वती ने का० प्रधान नियुक्त किया। स्नातक बन्धुओं से इस प्रेम के लिये हार्दिक धन्यवाद देते हुए मैं यह निवेदन करना आवश्यक समझता हूं (जैसे कि मैंने उस निर्वाचन के ठीक पश्चात् भी किया था) कि सब स्नातक बन्धु इस प्रकार का प्रयत्न करें कि गुरुकुल सचमुच आर्य संस्कृति का सारे जगत् में सर्वोत्तम आदर्श भूत केन्द्र बन जाये तथा गुरुकुल के मूलभूत आदर्शों को कार्य रूप में परिणत करने का पूर्ण प्रयत्न हो। स्नातक बन्धु अपनी वेष-भूषा, रहन-सहन तथा आचार-व्यवहार को आर्य संस्कृति और आर्य सभ्यता के अनुरूप बनाने का विशेष रूप से ध्यान रखें। सन्ध्या, हवन, स्वाध्यायादि आर्योचित नियमों का श्रद्धापूर्वक स्वयं पालन करते हुये आर्यसमाज के कार्यों और संस्कृत व राष्ट्र-भाषा प्रचार आदि भेद और अस्पृश्यता निवारण, मांस मद्य निषेध, गोरक्षादि उत्तम राष्ट्रोपयोगी आन्दोलनों में सक्रिय भाग लें जिससे गुरुकुल की उज्ज्वल कीर्ति का सर्वत्र प्रसार हो।

(२) यह निश्चय स्नातक मण्डल के अधिवेशन में लगभग २, ३ वर्ष पूर्व किया गया था कि स्नातक परिचय ग्रन्थ का नवीन संस्करण तैयार और प्रकाशित कराया जाय। इस वर्ष हमने इसे क्रियात्मक रूप देने का निश्चय किया है। अतः स्नातक बन्धुओं से प्रार्थना है कि वे निम्न प्रकार अपना संक्षिप्त परिचय शीघ्र भेजने की कृपा करें।

(१) नाम, (२) जन्म स्थान तथा तिथि, (३) पिता जी का नाम, (४) शिक्षा, (५) स्नातक होने का वर्ष, (६) उपाधियां, (७) मुख्य कार्य शैक्षणिक, सामाजिक व राजनैतिक आदि, (८) साहित्यिक कार्य तथा प्रकाशित रचना विवरण, पुरस्कार आदि यदि प्राप्त हुये हों, [९] अन्य उल्लेखनीय जानकारी।

यह निवेदन श्री पं० धर्मदेव जी, वेदालंकार, मन्त्री अ० भा० स्नातक मण्डल गुरुकुल कांगड़ी के पते पर शीघ्र विवरण सहित भेज दें। जो अपना ब्लाक भेजना चाहें वे ब्लाक भेज दें। अन्यथा चित्र भेजकर ५) ब्लाक के लिये भेज देवें।

—धर्मदेव विद्यामार्तण्ड
का० प्रधान अ० भा० स्नातक मण्डल,
आनन्द कुटीर, ज्वालापुर, उ० प्र०

आर्यसमाज लाजपतनगर के शोक-सभा

१ सितम्बर को आर्यसमाज लाजपतनगर कानपुर में एक शोक सभा हुई, जिसमें आर्यजगत् के महान् विद्वान् पं० गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय के देहावसान पर शोक-सहानुभूति का प्रस्ताव पास हुआ। व दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिये प्रभु से प्रार्थना की गई।

—योगेन्द्र मरीन मन्त्री

वेद प्रचार सप्ताह

निम्नलिखित आर्यसमाजों द्वारा वेद प्रचार सप्ताह तथा श्री कृष्ण जन्म पर्व मनाने के विस्तृत समाचार उपलब्ध हुए हैं। स्थानाभाव के कारण केवल समाजों तथा विद्वानों के नाम ही प्रकाशित किये जा रहे हैं—

नाम आर्यसमाज	विद्वान महोदय जिनके द्वारा वेद प्रचार हुआ
बिधूना (इटावा)	श्री वेदपालसिंह भजनोपदेशक
बलरामपुर (गोण्डा)	श्री रुद्रानन्द जी सरस्वती
बिलथरारोड (बलिया)	श्री सुखदेवनारायण वकील
डिहरी ऑन सोन	,, प० हरिप्रसाद शास्त्री
परमानन्द कालोनी (रतनगढ़) (बीकानेर)	,, स्वामी शिवानन्द जी सरस्वती
	,, विरक्तदेव जी
करावल दिल्ली	,, ओम्प्रकाश शास्त्री एम० ए०
वरंगल (आं० प्र०)	,, चन्द्रमौलि एस०एम० भूषण
	,, एत० वेंकट स्वामी
अतर्रा (बांदा)	,, स्वामी शिवमुनि परिव्राजक
दरियागंज (देहली)	,, महेन्द्रदेव शास्त्री
सकराबा (फर्रुखाबाद)	,, खड्गपालसिंह आर्योपदेशक
चन्दौसी	,, स्वामी सुखानन्द जी महाराज
	,, यज्ञदत्त शास्त्री श्री जितेन्द्र जी
बेसा (अलीगढ़)	,, कन्हैयालाल तथा रामस्वरूप शास्त्री
नगर आर्यसमाज (बुलन्दशहर)	,, लाला रामगोपाल शालवाले
	,, शिवराजसिंह बम्बई वाले
झालावाड़	श्री नेमीचन्द के यहां जन्माष्टमी पर्व मनाया गया।
पेर का कटरा (इटावा)	श्री वेदपालसिंह भजनोपदेशक सभा
मथुरा	,, रामनारायण शास्त्री व भरद्वाज मुनि
सल्हौ (चम्पारन)	स्वामी विद्यानन्द सरस्वती
	,, रामदेवशर्मा विद्यावाचस्पति
बांगरी क्षेत्रीय आर्योपसभा हरदोई	,, रतन जी वानप्रस्थ
करुआ	,, आचार्य सत्यप्रिय जी
हरथला कालोनी, मुरादाबाद	पूज्य स्वामी आत्मानन्द तीर्थ तथा
	,, चन्द्रप्रकाश जी द्विवेदी एम० ए०
जगदीशपुर	,, शशिकान्त भजनोपदेशक
	,, राधाकृष्ण वानप्रस्थी
भागलपुर देवरिया	,, स्वामी गुरुदेवेश्वरानन्द सरस्वती
शाहपुरा (राजस्थान)	श्री प० वेदव्रत शास्त्री
	,, ,, कालीशंकर भारद्वाज
रेलवेरोड अम्बाला	,, ओम्प्रकाश जी
गया	,, रामानन्द शास्त्री सुरेशसिंह तूफान

उन्नाव, ललितपुर (झांसी), लक्ष्मीपुर (बिहार), इटारसी (म० प्र०), रामनगर (बहराइच), कमालगंज (फर्रुखाबाद), आ० स० शाहपुरा आदि समाजों में भी वेद प्रचार सप्ताह धूमधाम से मनाया गया।

सूचना

उत्तरप्रदेशीय आर्यवीर दल के सहायक संचालक ओजस्वी वक्ता श्री विश्वनाथ आर्यवीर आर्योपदेशक बोराला (मेरठ) का निम्नलिखित आर्यसमाजों में ८-८-६८ से लेकर और १९-८-६८ रक्षाबन्धन से लेकर कृष्ण जन्माष्टमी तक निम्नलिखित समाजों में व्याख्यान हुए—कोकिलपुरी, बहसूरी (मेरठ), खतौली (मुजफ्फरनगर), कीर्तिनगर, दिल्ली (देहली)।

आर्यसमाज कानपुर का शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज मेस्टन रोड कानपुर में ८ सितम्बर का साप्ताहिक अधिवेशन के पश्चात शोक सभा हुई जिसमें आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्रीश्री प० प्रेमचन्द्र जी शर्मा के पूज्य पिता जी प० किशोरीलाल जी शर्मा हाथरस तथा श्री स्वामी अमृतानन्द जी हलद्वानी की मृत्यु पर शोक प्रकट किया गया तथा मृतात्माओं की शान्ति और शोक सन्तप्त परिवार को धैर्य प्रदान करने के लिये प्रभु से प्रार्थना की गई। —विश्व नर

आर्य उपसभा झांसी में वेद प्रचार सप्ताह

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा, झांसी के तत्वावधान में जिले की समस्त आर्यसमाजों में वेदप्रचार सप्ताह ८-८-६८ से १६-८-६८ तक आयोजित किया गया।

८-८-६८ को जिले की समस्त आर्य समाजों द्वारा सम्मिलित रूप से श्रावणी उपाकर्म का पर्व आर्यसमाज मन्दिर सदर बाजार झांसी में प्रातःकाल आयोजित किया गया तथा सायं को ... ६१५-८-६८ को सायंकाल श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व का आयोजन सम्मिलित रूप से आर्यसमाज नगरा, झांसी में आयोजित किया गया।

इस भांति जिले की समस्त आर्य समाजों में नित्य प्रति उपदेश तथा कथाओं का आयोजन किया गया।

आर्यसमाज ललितपुर में भी इसी प्रकार वेद प्रचार सप्ताह आयोजित किया गया। ८-८-६८ को श्रावणी उपाकर्म का आयोजन आर्यसमाज मन्दिर में किया गया तथा ९-८-६८ को आर्यसमाज के प्रधान श्री वीरसिंह जी के निवास स्थान पर वेद कथा तथा पारिवारिक सत्संग का आयोजन किया गया। १०-८-६८ को रात्रि को ललितपुर के मुख्य बाजार घंटाघर के चौराहे पर एक विशाल सभा का आयोजन श्री कन्हैयालाल जी मन्त्री आर्यसमाज के सभापतित्व में किया गया जिसमें अनेक विद्वान वक्ताओं के भाषण हुए।

'अगिया वैताल'

(भूत-प्रेत सब वहम हैं पर जिन्हें अन्ध विश्वास हो, उन्हें भय किस प्रकार पीड़ित करता है, यह इस कथानक में पढ़िये। रमाकान्त व उसकी पत्नी की भय से मुक्ति तभी हुई जब आर्य समाज के एक शास्त्री ने वास्तविकता का परदा हटाया। —सम्पादक)

★

प्र० कु० सक्सेना

रमाकान्त ने देखा—एक बड़ा-सा दैत्य अपने विकराल हाथ बढ़ाये अन्तरिक्ष से उसकी ओर बढ़ा आ रहा है। उसके दो दांत मुँह से बाहर दोनों ओर निकले हुए थे और सांस के साथ नाक से अग्नि की प्रचण्ड लपटें निकलती थीं। दोनों बड़ी-बड़ी आँखें जैसे गोलकों से बाहर निकल पड़ रही थीं। उसके पूरे शरीर पर रीछ के से बड़े बड़े बाल थे, और नाखून पंने व लम्बे थे। बेचारा रमाकान्त पीछे हटकर बेतहाशा भागा, किन्तु शीघ्र ही उसे लगा जैसे किसी ने उसे आकाश में उछाल दिया हो। अब वह दैत्य की हथेली पर था। ज्यों ही उसने सर उठाकर उस दानव को अट्टहास करते देखा, वह भय से चीख उठा।

रमाकान्त जाग गया, किन्तु आँख खुल जाने पर भी काफी समय तक बिस्तर पर पड़ा-पड़ा सिसकियां लेता रहा। सर्व प्रथम उसने यह स्वप्न अपनी पत्नी चमेली को बताया और पत्नी ने उसी दिन पं० शम्भूनाथ ज्योतिषी के घर जाकर पति के दुःस्वप्न का वृत्तांत कहा। ज्योतिषी जी ने पत्रा देखा, मुख से चार छः प्रकार की भाव भंगिमायें बनाईं और फिर संस्कृत का एक श्लोक पढ़कर उस स्वप्न के कारण व परिणाम जो कुछ बतलाये उससे चमेली इतनी भयभीत हो गयी जितनी कदाचित स्वप्न के दैत्य को सम्मुख देखकर भी न हुई होती। प० जी ने शास्त्र के प्रमाण देकर सिद्ध किया कि रमाकांत पर 'अगिया बैताल' का आगमन हुआ है और वह अब स्वप्न में ही नहीं, वरन् जागृत में भी उसे दिखाई दिया करेगा।

चमेली ने ये सब बातें भयानक रस के आवरण में लपेट कर पति के सम्मुख प्रस्तुत कीं, जिससे रमाकांत और भयभीत हो गया। और उसके बाद वह जब भी एकान्त मे रहता, बहुधा अपने पीछे मुड़मुड़ कर देखता रहता कि वह दैत्य तो नहीं आ रहा। रात्रि मे तो उसे और अधिक शङ्कायें होतीं। साधारण सी आहट उसके दिल की धड़कन को कई गुना बढ़ा देती, कोई वृक्ष या खम्भा दैत्य की टांग जैसा लगता और दूर जलते प्रकाश मे बैताल के नेत्र का आभास होता। भय इतना बढ़ता गया रामाकान्त ने सूर्यास्त के उपरान्त घर से बाहर निकलना भी बन्द कर दिया।

इस सम्भव सतर्कता अपनाने पर भी एक दिन रमाकान्त का साक्षात्कार 'अगिया बैताल' से हो ही गया। घटना इस प्रकार हुई कि उस दिन रमाकांत के बहन-बहनोई कानपुर से आये थे उनको विदा करते खाते-पीते देर हो गई और बिस्तर पर जाते-जाते ग्यारह का घण्टा सुनाई पड़ा। थकान भी थी, शीघ्र ही दोनों पति-पत्नी निद्रा के पाश में जा बंधे। उसी रात किसी समय चमेली की आँख खुली तो उसने रसोई घर की ओर से बरतनों के टकराने की सी आवाज आती सुनी। रसोई घर के ही एक भाग में अनाज, घी, तेल आदि खाद्यान्न वस्तुयें भी रखी रहती थीं। चमेली ने चोर की आशंका से अपने पति को जगाते हुये कहा, 'उठो ! देखो तो, घर मे चोर घुसा मालूम होता है।'

रमाकान्त जागा तो उसने भी एक बरतन टकराने की आवाज सुनी। तुरन्त लालटेन जलायी गयी, और भय से कम्पित हुए भी रमाकान्त ने अपने कमरे का दरवाजा खोल दिया, और लालटेन लेकर रसोई घर की ओर बढ़ा किन्तु यह देखकर ठिठक गया कि रसोई घर की रोशनदान से धुआँ भी निकल रहा है। वह कुछ विचार ही कर रहा था, तभी रसोई घर से कुछ अजीब प्रकार की आवाजें आने लगीं। रमाकान्त की चीख निकलते-निकलते रह गई। तुरन्त अपने कमरे में आ अन्दर से द्वार बन्द कर पत्नी के कई बार पूँछने पर दबी सी इतनी अवाज निकाली—अगिया बैताल'

रमाकान्त के दरवाजे अच्छी खासी भीड़ जमा हो गई। चमेली ने तुरन्त जाकर पड़ोसियों को जगा दिया था। सभी घर के बाहर खड़े थे, अन्दर जाने का साहस किसी मे न था। रमाकान्त तो भय से कांप रहा था और बड़ी कठिनाई से घटना का विवरण बता पाया था। कमरे का बाहरी दरवाजा ही खुला था, अन्दर वाला अब भी बन्द था। लोग भाँति-भाँति आशङ्कायें प्रकट कर रहे थे, और अपनी राय भी देते जाते थे, किन्तु उन रायों पर काम करने वाला कोई न था। किसी ने कहा—'पं० शम्भूनाथ को बुलाना चाहिए, वही जैसा कहें वैसा किया जाये।' सबने उसका अनुमोदन किया और एक लड़का पं० जी को बुलाने के लिये तुरन्त भेज दिया गया।

तभी एक आवाज आयी—'देखो शास्त्री जी आ गये, इनसे पूछो क्या कहते हैं।''

'इनसे क्या पूँछोगे यह तो आर्य समाजी हैं'—

दूसरी आवाज आई।

'तभी तो पूछो, देखो क्या बहाना करते हैं ?'

'बेचारे आज फंसे हैं चक्कर में; अब कभी नहीं कहेंगे कि भूत प्रेत, बैताल कुछ नहीं होते, सब झूठ है।'

श्रीयुत विद्याधर शास्त्री स्थानीय आर्य समाज के प्रधान थे, और उसी मुहल्ले में रहते थे, जिसमें यह काण्ड हो रहा था। शोर-गुल सुन कर इधर आये तो बीसों आदमियों को खड़ा देखकर आश्चर्य में पड़ गये। पूछने पर कोई भी घटना का सही वर्णन न कर सका; जितने मुँह उतनी बातें। हाँ, इतना स्पष्ट हो गया कि रमाकांत के घर में ऐसी कुछ बात हो गयी है जिससे लोग भयभीत होकर बाहर जमा हैं, और कोई भी अन्दर जाकर वास्तविकता का पता लगाने को तैयार नहीं।

शास्त्री जी 'आओ देखें क्या बात है।'

कहकर कमरे मे गये और दरवाजा खोलकर अन्दर जा पहुचे। उनके साथ दो, चार नवयुवक भी हो लिये। इस समय धुआँ और अधिक निकल रहा था और अन्दर से पतली चीख जैसी आवाज भी आ रही थी। शास्त्री जी ने चाभी माँग कर रसोई घर का ताला खोला। भाड़ अब तक कमरे मे भर चुकी थी। रसोई घर का दरवाजा खुलते ही धुयें का बादल सा दिखाई पड़ा और शीघ्र ही मुहल्ले का कुत्ता पीलू अन्दर से निकल कर चीखता हुआ भागा। 'यही था अगिया बैताल'—

कहकर शास्त्री जी ने टार्च का प्रकाश अन्दर डाला तो बहुतों ने देखा—चूल्हे मे से आग की लपटें निकल रहीं थीं, घी का टीन उस पर उल्टा पड़ा था, और आग छत की एक लकड़ी को पकड़ चुकी थी, अब सबको वास्तविकता का बोध हुआ। जल्दी-जल्दी पानी लाकर आग बुझाई गई और सभी ने इस बात को स्वीकार किया कि यदि शास्त्री जी थोड़ी देर और न आये होते तो पूरा माकान अग्नि की लपटों में होता।

* * *

रमाकान्त अब भी सपत्नीक उसी मकान मे रहता है, किन्तु उस दिन के बाद कभी उसे बैताल का भय नहीं सताया। उसने भय रूपी अगिया बैताल को साहस रूपी अमोघ शक्ति से सदा—सर्वदा के लिये शान्त कर दिया है।

आर्यमित्र की सूचना

अब तक जिन ग्राहकों का इस वर्ष हेतु शुल्क समाप्त है, उन्हे काफी समय पूर्व ही चन्दा समाप्ति की सूचनायें भेज दी गई हैं। कुछ कृपालु ग्राहकों ने अपना शुल्क भेज भी दिया है; परन्तु अधिकांश अभी शेष है।

अतएव अनुरोध है कि अविलम्ब आप महानुभाव अपना अपना शुल्क १०)रु० मनीआर्डर द्वारा भेजने का कष्ट करें।

डाक दर में असाधारण वृद्धि हो जाने के कारण वी० पी० पी० भेजने से ग्राहकों पर अनावश्यक व्यय भार पड़ता है, अतएव कृपया अपना धन मनीआर्डर द्वारा ही भेजिए।

मनीआर्डर के कूपन पर अपनी ग्राहक संख्या अवश्य लिखिये।

—व्यवस्थापक

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल.-६०

२० भाद्रपद २४ शक १८९० आश्विन कृ० ८
(दिनांक १२ सितम्बर सन् १९६८)

वर्ष ७१ संख्या ३७
Registered No. L. 60
पता—'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष : २५९९३ तार : "आर्यमित्र"

देश दर्शन

जर्मन जनता में—

हिमालय का आकर्षण

—श्री सतीश सक्सेना

भारतीय भाषा, साहित्य दर्शन, सभ्यता आदि ने ही जर्मन नागरिकों को प्रभावित और आकर्षित नहीं किया है वरन् अन्य अनेक चीजों ने भी विभिन्न वर्गों से सम्बन्धित जर्मन नागरिकों, विशेषज्ञों और शौकीनों का ध्यान खींचा है। भारत की सभ्यता और साहित्य से परिचित होने के अब से करीब डेढ़ सौ वर्ष पूर्व से उनकी दिलचस्पी भारत में बढ़ी और उनका आना जाना प्रारम्भ हो गया। इसके फलस्वरूप भारत के बारे में अधिक जानकारी पहुंचेगी जिससे विभिन्न वर्गों के जर्मनों का ध्यान भारत की विभिन्न विशेषताओं की ओर गया। जर्मन लोग स्वभाव से ही नई-नई चीजों को देखने समझने और उनकी बारीकियों का वैज्ञानिक विश्लेषण करने के शौकीन रहे हैं। इस प्रवृत्ति के कारण उन्होंने भारत की अनेक चीजों के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण खोजें की हैं।

संसार का सर्वोच्च पर्वत शिखर और विशाल पर्वत शृंखला हिमालय भी उनकी निगाह से न बचा और उन्होंने इसमें दिलचस्पी लेनी प्रारम्भ की वास्तव में यूरोप के अल्पाइन प्रदेश में पर्वतारोहण के प्रति जर्मनों में जबसे रुचि उत्पन्न हुई है तभी से हिमालय के पर्वतारोहण में भी उनकी रुचि चली आ रही है। हिमालय पर्वतारोहण जर्मनी के अनेक आधुनिक पर्वतारोहियों और वैज्ञानिकों का एक सपना रहा है। हिमालय पर्वत श्रेणियों, इस प्रदेश के पशु पक्षियों और अन्य भूभौतिकीय बातों के रहस्यों का पता लगाने के लिये अनेक बार पर्वतारोहण अभियानों का आयोजन किया गया। हिमालय की दो चोटियों कंचनजंगा (८५७९ मीटर) और नंगा पर्वत (८१२५ मीटर) की विजय में जर्मन और आस्ट्रिया के पर्वतारोहियों की शुरू से ही बहुत दिलचस्पी रही है। अब से करीब ४० वर्ष पूर्व सन १९२९ में संसार के सबसे ऊंचे इस तीसरे पर्वत की चोटी पर विजय प्राप्त करने का प्रयत्न श्री बाम-बायर के नेतृत्व में किया गया था। इन चोटियों पर पहुंचने के और भी अनेक प्रयत्न किये गये। नंगा पर्वत पर चढ़ने में हेरमानबूहल के नेतृत्व में एक दल को सन् १९५३ में सफलता भी मिली थी।

पिछले कुछ वर्षों से नेपाल में प्रोफेसर वाल्टर हेलमूठ के नेतृत्व में जर्मन वैज्ञानिकों का एक दल नेपाल की तरफ वाले हिमालय पर्वतमाला के बारे में अनुसन्धान की एक योजना पर काम कर रहा है। ये योजना पश्चिमी जर्मनी के प्रसिद्ध फ्रिट्ज़ थायसेन प्रतिष्ठान की ओर से शुरू की गई है।

जर्मन हिमालय प्रतिष्ठान और बवेरिया के पर्वतारोहण रक्षा संगठन ने पर्वतारोहण के समय दुर्घटना से रक्षा करने वाली बिना पहिये के बर्फ पर फिसलने वाली एक गाड़ी दार्जिलिंग में हिमालय पर्वतारोहण संस्थान को हाल ही में भेंट की है। इसके साथ ही मेसर्स हुबर्ट मिटोमेयर नामक एक जर्मन फर्म ने संस्थान को बेतार संचार व्यवस्था के लिये एक जनरेटर भी भेंट किया है।

अमृत वर्षा

महर्षि दयानन्द ने कहा था—

भाग्यशाली कौन है ?

*

जो नर इस संसार में अत्यन्त प्रेम, धर्मात्मा, विद्या, सत्सङ्ग, सुविचारता, निर्वैरता, जितेन्द्रियता, सत्यभाषादि प्रमाणों से परमात्मा का स्वीकार (आश्रय) करता है वही जन अतीव भाग्यशाली है क्योंकि वह मनुष्य यथार्थ सत्य विद्या से सम्पूर्ण दुःखों से छूट के परमानन्द परमात्मा की प्राप्तिरूप जो मोक्ष उसको प्राप्त होता है और दुःख सागर से छूट जाता है, परन्तु विषय लम्पट विचार रहित, विद्या, धर्म, जितेन्द्रियता, सत्सग रहित, छल, कपट, अभिमान, दुराग्रहादि दुष्टतायुक्त है सो वह मोक्ष सुख को प्राप्त नहीं होता क्योंकि वह ईश्वर भक्ति से विमुख है।

इसलिये जन्म मरण ज्वरादि पीडाओं से पीडित हो के सदा दुःखसागर में ही पड़ा रहता है, इससे सब मनुष्यों को उचित है कि परमेश्वर और उसकी आज्ञा से विरुद्ध कभी नहीं हों किन्तु ईश्वर तथा उसकी आज्ञा में तत्पर होके इस लोक [संसार व्यवहार] और परलोक (जो पूर्वोक्त मोक्ष) इनकी सिद्धि यथावत करें यही मनुष्यों की कृतकृत्यता है।

जर्मन दूतावास नई दिल्ली के सैनिक सहचारी कर्नल एच० राशमन ने यह उपहार संस्थान के प्रिन्सिपल लेफ्टिनेन्ट कर्नल नरेन्द्रकुमार को संस्थान के दीक्षान्त समारोह के अवसर प्रदान किया। कर्नल एच राशमन पर्वतारोहण के पुराने शौकीन हैं और उन्होंने ही जर्मन पर्वतारोहियों की ओर से भारतीय पर्वतारोहियों के लिये इस उपहार का आयोजन किया है।

ये उपहार भारत और जर्मनी के प्रगाढ़ होने वाले सम्बन्धों में एक और कड़ी है। हिमालय पर्वतारोहण संस्था को बर्फ पर चलने वाली गाड़ी भेंट की गई है उसकी एक विशेषता यह भी है कि वह लपेट कर छोटी की जा सकती है। कर्नल राशमान ने एक महत्वपूर्ण बात यह बताई कि जर्मनी में पर्वतारोहण की अनेक दुर्घटनाओं में इस तरह के साज सामान से सैकड़ों लोगों की रक्षा हुई है। भारतीय प्रतिष्ठान के प्रिंसिपल ने जर्मन संस्थान और कर्नल राशमन को इस उपहार के लिये धन्यवाद दिया जिससे संस्था का हित अधिक अच्छी तरह से हो सकेगा।

सभामन्त्री उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के लिये सत्यार्थ प्रकाश प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ में मुद्रित तथा प्रकाशित।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आर्यमित्र

मित्रस्याऽहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।

लखनऊ- रविवार भाद्रपद ११ शक १८९०, आश्विन कृ० १० वि० सं० २०२५, दिनांक २२ सितम्बर १९६८ ई०

परमेश्वर का अमृत वाणी

वेदों की भांति पवित्र बनो पवित्र ज्ञान की धाराओं से अपने को उनकी भांति पवित्र बनाओ और मानव जीवन को सफल करो।

येन देवाः पवित्रेणात्मानं पुनते सदा :
तेन सहस्रधारेण पावमानी पुनन्तु नः ॥
[सामवेद–१३०२]

[१] (देवाः) निष्काम ज्ञानी, दिव्य पुरुष

[२] (येन) जिस (पवित्रेण) पवित्रता के द्वारा शुद्ध ज्ञान के माध्यम से उत्तम कर्म पूर्वक।

[३] (सदा) निरन्तर (आत्मानम्) अपने को, स्वतः को, आत्मा को (पुनते) पवित्र करते हैं।

[४] (तेन) उस (सहस्र धारेण) सहस्र धाराओं वाले [वेद ज्ञान] के द्वारा।

[५] (पावमानीः) पवित्र वेद ऋचाएं।

[६] (नः) हमें (पुनन्तु) पवित्र करें।

ज्ञानी जन विश्व में सर्व प्रथम अपनी अपनी आत्म शुद्धि की ओर ध्यान देते हैं। वे निरन्तर उन उपायों का आश्रय लेते हैं, जो उनके मन वचन कर्म को पवित्र से पवित्रतर और पवित्रतर से पवित्रतम करते हैं। परमात्मा के दिव्य ज्ञान वेद से जब आत्मा मल विक्षेप और आवरण से रहित हो कर निर्मल हो जाता है, तो यह मानव जीवन सफल हो जाता है। आत्मिक रूप से शुद्ध और पवित्र होने पर कर्मों की सुगन्धि सर्वत्र फैलने लगती है और मानव समुदाय को अपनी ओर आकृष्ट करने लगती है—

वेद मर्मज्ञ पूज्य पण्डित गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय ऐसे ही पवित्रात्मा थे। आर्य जन उनकी भांति ही वेद की पुनीत धारा से स्वतः को पवित्र बना कर उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करें।

श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय का अन्तिम दर्शन

६ सितम्बर को श्री उपाध्याय जी का जन्म दिवस प्रयाग मे बड़े उत्साह के साथ मनाने की इस वर्ष भी योजनायें बन रही थीं, परन्तु कुछ दिवस पूर्व ही श्री उपाध्याय जी ने कह दिया था कि उनका स्वास्थ्य इतना गिर रहा है कि वे ६ सितम्बर तक जीने की आशा नहीं करते। इस वर्ष तो इस दिवस पर उनके निधन पर शोक प्रस्ताव ही पारित हो सकेंगे। उनकी यह बात सत्य निकली यद्यपि २॥ वर्ष के दीर्घ रोग ने उनका शरीर निर्बल कर दिया था, तथापि कोई भी समय ऐसा नहीं बीतता था जब कि आर्यसमाज के विषय में वे चिन्तन न करते रहे हों। वे बैठ नहीं सकते थे और प्रायः लेख शिष्यों से लिखवाते थे। आर्य समाज और इस्लाम, भारतीय पतन की कहानी, संस्कार प्रकाश धर्म तर्क की कसौटी पर, सत्यार्थ प्रकाश एक अध्ययन ये सब के सब उन्होंने बोल कर ही लिखाये थे। रिफार्मर, आर्यमित्र आदि पत्रों में उनके लेख भी प्रकाशित होते रहे। वे सदा लेख लिखते और पत्रों में भेजते रहते थे।

इधर २८ अगस्त से उनका स्वास्थ्य कुछ अधिक चिन्तनीय हो गया था। उनको अनेक कष्ट थे। खांसी तो उनके जीवन की संगिनी थी, पैरों ने भी कार्य करना बन्द कर दिया था। भोजन प्रायः छूट गया, पाचन क्रिया गड़बड़ हो गई थी। पेट में अफारा की बीमारी से नसें तनी रहतीं और लेटना कठिन था। प्रायः बैठे ही रह जाते।

यह सब होते हुए भी उनके चेहरे पर चिन्ता चिड़चिड़ापन या क्रोध की रेखा कभी नहीं आई। बड़े धैर्य के साथ कष्ट को सहन करते और यदि कोई स्वास्थ्य की दशा पूछता तो हंसकर ही उत्तर देते थे।

एक सप्ताह तक दशा गिरी रही, सैकड़ों की संख्या में नर-नारी देखने आते। सबको पहचानते और पारिवारिक बातें पूछते। २८ तारीख को निरन्तर भीड़ लगी रही। २९ ता० को प्रातः भी अनेक नर-नारी मिलने आये उन को पहचाना। अपनी मृत्यु से दो दिन पूर्व भी वे अपने सम्बन्धियों और प्रेमियों से घिरे हुए थे। ९॥ बजे लगभग एक हिचकी आई और उनका पार्थिव शरीर तकिये के सहारे हो गया। बस वे चले गये। अपने जीवन के ४ दिवस पूर्व उनकी उर्दू शायरी का संग्रह 'कौसे कजह' नाम से छपकर आया था। यह उनकी अन्तिम कृति थी। उनकी लिखी हुई अनेकों हस्तलिखित प्रतियां रक्खी हुई हैं जिनका क्रमशः प्रकाशन होगा।

★ दिव्यप्रकाश

वर्ष	सम्पादक— -प्रेमचन्द्र शर्मा सभा मन्त्री	अङ्क
७०		३३

शूर सेनानी

★सुश्री कान्तिदेवी बी० ए०

[स्वर्गीय पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय आर्य जगत् के एक शूर सेनानी थे। पं० लेखराम जी ने अपने अन्तिम समय में जो एक इच्छा व्यक्त की थी कि आर्य समाज में लेखनी का काय बन्द न हो, उसे पूज्य पण्डित गंगाप्रसाद जी ने पूर्ण कर दिखाया। जिस प्रकार शूर सेनानी का उसके जीवनकाल मे ही मान-सम्मान किया जाता है सेना को उस पर गर्व होता है। वह उसके नेतृत्व पर हर्षित होती है तथा उसके देहावसान पर भी उसे अमरत्व मिलता है। उसका यश गान करते सेना थकती नहीं है, ठीक उसी भाँति पूज्य पण्डित गंगाप्रसाद जी का उनके जीवनकाल में सर्वत्र अभिनन्दन हुआ। आर्य सेना प्रसन्नता का अनुभव करती रहीं और आज उनके पार्थिव शरीर के भस्मीभूत हो जाने पर श्रद्धांजलियों की अटूट शृङ्खला बन रही है—

आइये हम भी अपने जीवन के सुपावन कर्मों से उन्हें हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करें। हम भी ऐसे ही शूर सेनानी बनें जिसका उपदेश इस मन्त्र में हमे वेद माता दे रही है। —सम्पादक]

वेद मन्त्र— "प्र सेनानीः शूरो अग्ने रथानां
गव्यन्नेति हर्षते अस्य सेना।
भद्रान् कृण्वन्निन्द्रहवान्त्सखिभ्य
आ सोमो वस्त्रा रभसानि दत्ते॥"

[सामवेद ५३३]

"वीर ही वसुन्धरा का भोग करता है। शूर ही सेनाओं का नायक बन कर अपनी शूरता से संसार में यशस्वी होता है।"

यह संसार धर्म क्षेत्र है, कुरु क्षेत्र है। इस धर्म और कुरुक्षेत्र में हम सब युद्ध रत हैं। कहीं जीवन संग्राम है तो कहीं धर्म संग्राम। कहीं सामाजिक संग्राम है तो कहीं राष्ट्रिय संग्राम। मानव इन संग्रामों के द्वारा व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की रक्षा करना चाहता है।" शूर वीर ही संसार में देश, समाज और राष्ट्र की रक्षा किया करते हैं। जहाँ मानव बाह्य रूप से संघर्ष रत रहता है। वहां उसके अन्तर में भी निस दिन संघर्ष हुआ करते हैं। काम, क्रोध, लोभ, मोह, और अहङ्कार आदि शत्रु उसके जीवन सदन में आकर उस पर आक्रमण किया करते हैं। इन अन्तः शत्रुओं पर शूर आत्मायें ही विजय प्राप्त करती हैं। सामवेद के उपर्युक्त मन्त्र द्वारा वेद माता हमें शूर सेनानी बनाने के लिए कितना सुन्दर उपदेश दे रही है।

इस मन्त्र का देवता सोम है। सोम का अर्थ सौम्यता चन्द्रमा और ऐश्वर्य आदि है, चन्द्रमा जिस प्रकार हमे शीतलता प्रदान करता है, उसी भांति परमात्मा का सोम भी हमें आनन्द और असीम शान्ति प्रदान करता है। परमात्मा ही पूर्णतयः ऐश्वर्य शाली है और वह ही हमे अध्यात्मिक ऐश्वर्य प्रदान करता है।

इस मन्त्र में 'गव' की कामना की गई है। 'गव' का अर्थ राष्ट्र, रक्षा और भूमि है। जिस गृह, समाज और राष्ट्र का पति योग्य होता है उस गृह, समाज और राष्ट्र का संचालन सुचारु रूप से होता है। इस शरीर रूपी भूमि या राष्ट्र का राष्ट्र पति आत्मा है। यदि यह आत्मा रूपी राष्ट्र पति ठीक है तो यह शरीर रूपी भूमि की रक्षा भली भाँति करते है अन्यथा आत्मा के निर्बल पड़ जाने से शरीर की ज्ञानेन्द्रियां और कर्मेन्द्रिया मन-मानी करने लगती हैं। इस जीवन रूपी रथ को चलाने वाला एकमेव आत्मा रूपी स्वामी हैं जो इस रथ को अकेले चलाता है।

'गव' की कामना के लिये शूरत्व की आवश्यकता होती है। शूर वीर ही इस संसार में यशस्वी होते हैं। वे ही संसार में बलिदान बनकर अमर हो जाते हैं। भक्ति से हमें शक्ति प्राप्त होती है। जिस भक्ति से हमें शक्ति नहीं मिलती वह भक्ति अपूर्ण है। भक्त तो सदा सशक्त होता है, उसे किसी का भय नहीं होता। प्रह्लाद और ध्रुव जैसे भक्तों को कौन-सा भय था। सत्य और धर्म की रक्षा के निमित्त ही वीर प्राणों से खेल खेलते हैं।

शूर वीर तपस्वी भी होते हैं। वे तप में ही तपकर यशस्वी बनते हैं। वास्तविक आनन्द तो तप मे ही प्राप्त होता है। तपस्या के द्वारा ही विनाश कारी विलासता भस्म होती है। आनन्द का एकमेव स्रोत तप ही है। यही सफलता की कुञ्जी है। तप के द्वारा ही हम अपने अन्तः शत्रुओं को कुचलकर जीवन सदन से निकाल सकते हैं जैसा कि एक वेद मन्त्र में कहा गया है—

'परा शृणीहि तपसा यातुधानान्
पराग्ने रक्षो हरसा शृणीहि।
परार्चिषा मूरदेवाञ्छृणीहि.
परासुतृपः सोशुचतः शृणीहि।

आत्मा ही इस जीवन रूपी रथ का 'सेनानी' है। ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों रूपी सेनाओं का नायक आत्मा है। सेना नायक का काम जिस प्रकार सेना के आगे चलना है उसी प्रकार आत्मा रूपी सेनानी का काम भी इन्द्रियों को सत्य मार्ग पर चलाना है। उसका काम निरन्तर गति प्रगति करना है और विजय श्री को प्राप्त करना है। वेद मे मानव को उन्नति के पथ पर आगे बढ़ने की कितनी सुन्दर प्रेरणा दी गई है।

'प्रेता जयता नर इन्द्रो वः शर्म यच्छतु।
उग्रा वः सन्तु बाहवोऽनाधृष्या यथासथ॥

सेना नायक को शूर होना ही चाहिये। जिस सेना का नायक शूर होता है उसे ही विजय श्री प्राप्त होती है। जिसका आत्मा रूपी सेनानायक शूर वीर होता है वह ही काम क्रोध आदि शत्रुओं को जीत सकता है। वह शूर आत्मा ही इस शरीर को कर्मेन्द्रियों और ज्ञानेन्द्रियों रूपी सेनाओं का नेता है ऐसा ऋग्वेद ने कहा है—"इन्द्र आसां नेता"। आत्मिक शील से हम अन्तः शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर सकते हैं महात्मा बुद्ध की आत्मिक शक्ति के समक्ष अंगुली माल डाकू भी परास्त हो जाता है। सचर्य से ही शील का निर्माण होता है। प्रेम मे ही शक्ति पावन होती है। शक्ति प्राप्त करने के लिये हमें अपनी हथेली को सुपाणी बनाना होगा और अपनी भुजाओं को भी सुबाहु बनाना होगा।

इस मन्त्र में कहा है 'हर्षते अस्य सेना' अर्थात् उसकी सेना सदैव प्रसन्न रहती है जिसका नायक शूरवीर होता है। महाभारत के युद्ध में अर्जुन ने एक तरफ महान् सेना को त्याग कर दूसरी तरफ केवल योगीराज कृष्ण को ही लिया था। जिसका आत्मा रूपी सेना नायक शूर वीर है उसकी सभी ज्ञानेन्द्रियाँ और कर्मेन्द्रियाँ रूपी सेनायें मुदित और प्रमुदित रहती हैं। अङ्ग प्रत्यङ्ग में उल्लास छाया रहता है। (शेष पृष्ठ १४ पर)

होती अमर कहानी

जीवन रथ के आगे-आगे,
चलता है शूर सेनानी।
प्रभु का लेकर एक सहारा,
बढ़ता है आत्म ज्ञानी।

लुटाकर सर्वस्व अपना,
सार्थक करता अपनी जवानी।
धर्म की पावन वेदि पर
बनता है वह बलिदानी।

कृपा होती उस पर प्रभु की,
यश मिलता है लासानी।
देकर समस्त ऐश्वर्य अपना,
प्रभु करता अमर कहानी।

ओ३म् व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम् ।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥

—यजु० अ० १९ मं० ३०

जो मनुष्य सत्य के आचरण को दृढ़ता से करता है, तब वह दीक्षा अर्थात् उत्तम अधिकार के फल को प्राप्त होता है। जब मनुष्य उत्तम गुणों से युक्त होता है, तब सब लोग सब प्रकार से उसका सत्कार करते हैं क्योंकि धर्म आदि शुभ गुणों से ही उस दक्षिणा को मनुष्य प्राप्त होता है, अन्यथा नहीं। जब ब्रह्मचर्य आदि सत्य व्रतों से अपना और दूसरे मनुष्यों का अत्यन्त सत्कार होता है, तब उसी में दृढ़ विश्वास होता है क्योंकि सत्य धर्म का आचरण ही मनुष्यों का सत्कार कराने वाला है। फिर सत्य के आचरण में जितनी-जितनी अधिक श्रद्धा बढ़ती जाती है। उतना-उतना ही मनुष्य लोग व्यवहार और परमार्थ के सुख को प्राप्त हो जाते हैं, अधर्माचरण से नहीं। इससे क्या सिद्ध हुआ कि सत्य की प्राप्ति के लिये सब दिन श्रद्धा और उत्साह आदि पुरुषार्थ को मनुष्य लोग बढ़ाते ही जायें, जिससे सत्य धर्म की यथावत् प्राप्ति हो।

—महर्षि दयानन्द सरस्वती

सृष्टि संवत—रविवार भाद्रपद ३१ शक १८९०, आश्विन कृ० पक्ष १० वि० २०२५
२२ सितम्बर सन् १९६८ ई०, दयानन्दाब्द १४३, सृष्टि संवत १,९७,२९,४९ ०६९

यशसा परीवृता

इस संसार में मरणशील मनुष्य के भौतिक शरीर का अवसान परमात्मा के नियमानुसार यथा समय होता ही रहता है, क्योंकि उत्पत्ति, विकास, ह्रास और अन्त का चक्र अनवरत चलता ही रहता है। प्रत्येक क्षण इस विश्व में न जाने कितने मनुष्यों की उत्पत्ति होती है और न जाने कितनों का अन्त भी होता है, परन्तु बहुत कम व्यक्ति ऐसे होते हैं जो मर कर भी अमर होते हैं। कोई ऐसा विरला ही होता है जिसके देहावसान पर मनुष्य उसे युग युगान्तरों तक स्मरण करता है और उसका यशगान गाते हुये उसकी कीर्ति को स्थिर रखने के लिये अनेक उपाय करता है। यह अमरत्व तो उस मनुष्य को प्राप्त होता है जो संसार में तो रहता ही है, किन्तु उसका वास्तविक निवास मनुष्य समुदाय के हृदय में निवास कर लेता है, वह मर कर भी जीवित रहता है क्योंकि उसकी स्मृति नहीं जाती।

ऐसी पुण्य स्मृति उन महात्माओं की होती है जो संसार में कीर्तिवान होते हैं और यह कीर्ति उन्हें तब प्राप्त होती है जब वे स्वार्थ से ऊँचा उठ कर परमार्थ की ओर अग्रसर होते हैं। और समस्त उसे लोक कल्याण में आहुत कर देते हैं। उनका तन, मन, धन और जीवन सब इस लोक कल्याण को अर्पित हो जाता है।

पूज्य पण्डित गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय एक ऐसे ही अद्वितीय महान पुरुष थे। आज समस्त आर्य्य जगत् उनका यशोगान कर रहा है। साधारण आर्य समासद् से लेकर सर्वोच्च नेता तक उन्हें श्रद्धाञ्जलियां अर्पित कर रहे हैं। अपना सारा जीवन जिस आर्य समाज की सेवा में उन्होंने लगा दिया, रातदिन आर्य समाज के साहित्य का जो सृजन उन्होंने किया है, कठिन से कठिन विषयों को सरलतम भाषा में लिखकर जन साधारण तक पहुंचाया है, बड़े बड़े ग्रन्थों से लेकर छोटे-छोटे ट्रैक्ट लिखकर सस्ते साहित्य के रूप में उन्होंने जो विशुद्ध कार्य किये हैं उन्होंने उनकी कीर्ति को अमर कर दिया है। उनकी मधुर स्मृतियों को हृदय में संजोये आर्य जगत् उन्हें श्रद्धा के सुमन अर्पित कर रहा है। ऐसे तपस्वी विद्वान् की कीर्ति का हम जितना भी बखान करें वह सब न्यून ही होगा और हमारी तृप्ति उससे नहीं होगी।

यह नितान्त सत्य है कि जो देश, जाति व धर्म के लिये अथवा किसी महान् उद्देश्य की पूर्ति के लिये जीवन दान देते हैं, ऐसे महानुभाव विद्वानों तक के श्रद्धा भाजन होते हैं। वेद के श्रद्धा सूक्त में कहा है—

यथा देवा असुरेषु श्रद्धामुग्रेषु चक्रिरे।
एवं भोजेषु यज्वस्वस्माकमुदितं कृधि॥
(ऋ० १०। १५१। ३)

अर्थात देवगण, विद्वान, निष्काम महात्मा तेजस्वी होकर असुरों तक का श्रद्धा करके उनके भीतर श्रद्धा को उत्पन्न कर देते हैं। श्रद्धा तो श्रद्धावान् ही उत्पन्न कर सकता है। किसी कार्य के लिए जीवन दान तभी दिया जा सकता है जब उसके लिये हृदय में श्रद्धा हो। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि यह श्रद्धा ही है जिसमें इतनी अपरिमित शक्ति है कि मनुष्य प्राण तक अर्पित कर देता है। इसलिए मनुष्य का कर्तव्य है कि वह श्रद्धा के श्रेष्ठ भाव को अपने भीतर संजोए, उसे सदैव जागृत रखे और संसार में जो श्रद्धेय कर्म करते हों उनके प्रति श्रद्धावान् होकर अपनी श्रद्धा का अर्पण प्रीति और सम्मान से करे क्योंकि जैसा कि वेद ने कहा है "श्रद्धया विन्दते वसु" श्रद्धा से ही आध्यात्मिक ऐश्वर्यों की उपलब्धि होती है।

आर्य जगत् के चिर स्मरणीय अमर पण्डित गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय जो सम्पूर्ण जीवन में ईश्वर और वेद के प्रति श्रद्धावान् थे, उन्हें हम श्रद्धाञ्जलि किस प्रकार दें, अपनी श्रद्धा किस प्रकार व्यक्त करें, क्या केवल वाणी अथवा लेखनी के माध्यम से श्रद्धा के सुमन अर्पित करना ही हमारी वास्तविक श्रद्धा होगी, आज ये प्रश्न हैं जो आर्य जगत के मननशील विद्वानों के मस्तिष्क में गूंज रहे हैं। जब कभी किसी विद्वान का हमसे विछोह हो जाता है तो प्रायः हम दीर्घ निश्वास लेकर दुःख भरे उद्गार में कह उठते हैं। "अब इस रिक्त स्थान की पूर्ति असम्भव है।"

वेदानुसार ऐसी निरर्थक भावनाएं तो उत्साह विहीन और पुरुषार्थ हीन मनुष्यों में उत्पन्न होती हैं। वैदिक धर्म तो पग-पग पर आशावाद का सृजन करता है, नव उत्साह देता है, नव प्रेरणा देता है और पुरुषार्थ युक्त जीवन पर बल देता है अतएव हमारी वास्तविक श्रद्धा का स्वरूप तो यह होना चाहिये—

(१) हम स्वतः श्रद्धावान बनें वेद के श्रद्धा सूक्त का पठन तथा मनन करें और श्रद्धा को जीवन का एक अङ्ग बनायें।

(२) हम जीवन में ऐसे ही पुरुषार्थी बनकर परमार्थ को ग्रहण करें और अपने जीवन को वैदिक धर्म के प्रसार के लिये अर्पित करते हुये यशस्वी बनें।

(३) हम पूज्य प० गङ्गाप्रसाद जी द्वारा लिखित साहित्य को जन साधारण तक अधिकाधिक पहुंचायें। प्रत्येक आर्य समाज के पुस्तकालय में उनका पूर्ण साहित्य उपलब्ध हो और उसका पठन पाठन साप्ताहिक अधिवेशनों में हो।

(४) हम पंडित जी के साहित्य का अभिवर्धन करें अर्थात् उसी शैली में सस्ता, रोचक और शिक्षाप्रद साहित्य का सृजन करें।

(५) साधन सम्पन्न व्यक्ति आर्य्य जगत् के सुन्दर सरस साहित्य के प्रकाशन के निमित्त प्रकाशन व्यवस्था करें।

यदि आर्य जगत् इन कार्य कर्मों को अपनाता है तो यह श्रद्धाञ्जलि वास्तविकता को लिये हुये होगी और जिस महान उद्देश्य के लिये पूज्य प० गङ्गाप्रसाद जी ने अपना जीवन दान दिया है, उसकी पूर्ति के लिये उनके गुरुतर कार्य को आगे बढ़ाने वाली होगी। इस ईश्वरीय कार्य में उन्हें यश मिलेगा और वे भी अमरत्व की ओर अग्रसर होंगे। वेद ने यशस्वी जीवन पर बल देते हुये कहा है "यशसा परिवृता" अर्थात् जीवन को श्रेष्ठ कर्मों के माध्यम से यश अर्थात् उत्तम कीर्ति से युक्त करना चाहिये। ★

उपाध्याय जी को श्रद्धांजलि

अब प्रयाग प्रिय 'प्रसाद' नहीं है ......
अध्यात्मिक अनुपम अध्येता अन्तम का अभ्यासी
वीतराग बन बीते जिनके सुरभित वर्ष सतासी
ज्योतित् जीवात्मा जाग्रत जन,
'अद्वैत' आस्तिकवाद' यहीं है...... ...
'पूज्यपाद' के बाद सोगया 'लोक' शीघ्र ही सूना
हाय ! इसीसे होगया दुःख देश का दूना
'गङ्गा की निर्मल धारा में,
श्रुतियों का नित्य निनाद वहीं है...... ...
सतत सेवा रत रही जिन कविता 'कला' कहानी
जगमग ज्योति जगा जनमन में भरती नई जवानी
अकाट्य उक्तियाँ ध्वनित उर में,
उत्कट वाद विवाद कहीं है ..
दिव्य दर्शन देख दुर्लभ दर्पन अवनी अरु आकाश हैं
दृग बिन्दु भरे हैं अरे विश्व के शकित 'सत्यप्रकाश' है
स्थावर जङ्गम सब सङ्गम,
पर अन्तस आह्लाद नहीं है
'मोहन' मंजुल मूर्ध मनीषी, लिखते ही बलिदान हो गये
गीत उजाले मीत निराले, मौन अन्तर्धान हो गए
शेष सलिल अब तक सङ्गम पर,
'गङ्गा जी' की याद यहीं है

—मदनमोहन एडवोकेट मोठ (झांसी)

श्री उपाध्याय जी भी चल दिये

—श्री प० बिहारीलाल जी शास्त्री

मलिया आवत देख के कलियाँ करीं पुकार।
फूले फूले चुन लये काल्ह हमारी बार॥

श्री प० रामचन्द्र देहलवी चले गये, मूर्ति पद्मश्री सातवलेकर जी विदा। अब श्री उपाध्याय जी ने भी प्रस्थान कर दिया। शोक, महाशोक, यदि विचार किया जाये तो शोक कुछ नहीं। जो आया है वह जायगा। आज वे गये कल हमारी बारी है। किन्तु शोक इस बात का है कि जो जा रहा है उसका स्थान लेने वाला कोई नहीं आ रहा!!

क्या देहलवी जी के तुल्य कोई प्रभावशाली इस समय समाज में है? सातवलेकर जी के अध्यवसाय का अनुकरण कौन करेगा? श्री प० गंगाप्रसाद जी के गुणों का तो वर्णन ही बड़ा कठिन है। सफल अध्यापक कुशल लेखक, निपुण लेखक, जिन्होंने लौकिक और धार्मिक दोनों प्रकार की पुस्तकें लिखीं? सूक्ष्म दृष्टि विचारक, और स्वाध्यायशील तथा महान् त्यागी होगी। इन सबसे बढ़कर बात यह थी कि वे भीतर से बाहर तक पूरे धार्मिक थे। उनका व्यवहार सबके साथ भावकता का, सहृदयता युक्त और स्नेहयुक्त होता था। वे कभी किसी पार्टी बाजी में नहीं रहे। समाज की सेवा तन, मन, धन से करते रहे। जिनसे उनकी मित्रता हुई वे जीवन भर उनके मित्र रहे विरोधी तो उनका कोई था ही नहीं। व्यवहार में सच्चे व्यापार में पक्के, ऐसे थे श्री उपाध्यायजी। मैंने भी जीवन में उनका ही अनुकरण करने का सदा यत्न किया। मुझ पर उनका बड़ा प्रभाव रहा है। उनके प्रति मेरे हृदय में अतुल श्रद्धा है। उनका जीवन आर्यों के लिये अनुकरणीय है। त्यागी भी ब खूब थे।

एक बार उन्होंने एक लेख लिखा समान गोत्रों की अनुपयोगिता पर। इस पर आचार्य विश्वश्रवा जी ने लेख लिखा और उसका उत्तर लिखने की प्रेरणा की। मैंने उत्तर लिखकर आर्य-पत्र में छपवा देने की भी धृष्टता की। उन्होंने उत्तर पढ़ा और चुप रहे।

जब मैं फिर आर्यसमाज के उत्सव पर गया तो उन्हीं के यहां ठहरा था। भोजन के समय वे बोले कि एक लेख का उत्तर तो इसलिये नहीं दिया कि आपस में विवाद होना उचित नहीं। आओ गोत्र प्रथा पर अब विचार करें। मैंने उनकी बात स्वीकार कर ली उन्होंने अपना पक्ष प्रस्तुत किया जिसमें अधिकांश लौकिक बातें ही थीं। शास्त्रीय नहीं। इतने ही में माता पूज्य कलावती जी लेख के पास आयीं। और पूछने लगीं कि किस विषय पर वाद-विवाद चल रहा है? मैंने कहा कि गोत्र विषय पर। मैं कहता हूं कि गोत्र मानने चाहिये यह कहते हैं ये गोत्र अब व्यर्थ हैं। पूज्य कलावती जी बोलीं कि इनकी बातें ऐसी ही होती हैं। थोड़ा से दूसरे आयीं और इन्होंने लड़की के घर की पूरी खा लीं। मैंने कहा—"राम राम! इनकी बुद्धि कठ गई है। भला कोई लड़की के घर का अन्न खाता है! पूज्य उपाध्याय जी बोले तो क्या हमारे तुम्हारे शास्त्रार्थ में यही मध्यस्थ रहेंगी? मैंने कहा और क्या? जैसे शंकर और मण्डन मिश्र के शास्त्रार्थ में भारती मध्यस्थ थीं वैसे ही श्रीमती कलावती मध्यस्थ इस समय हैं। उपाध्याय जी जानते थे कि प्राचीन पद्धति की भक्त श्रीमती कलावती जी गोत्रों को व्यर्थ कैसे मान सकती हैं? बस बोले तो बन्द करो यह बातचीत हो चुका शास्त्रार्थ। मैंने कहा बहुत अच्छा वर्षिक वर्ष को जय! हम दोनों हंसकर भोजन करने लगे।

उपाध्याय जी चले गये परन्तु उनका साहित्य आज जनता के लिए अमर है। साहित्य का पढ़ना उनके प्रति सच्ची श्रद्धा प्रकट करना है। आर्यसमाज को अब यह विचारना है कि पूज्य उपाध्याय जी माननीय देहलवी जी पूज्य सातवलेकर जी जैसे विद्वान, विचारक और शास्त्रार्थ महारथी उत्पन्न कैसे हो सकेंगे?

वेदामृतमरन्द सौरभमयं
साहित्यं मुत्पादितम्।
आर्याणां च समर्पितस्वम
करोत्पुण्यं भावेन य
विद्या बुद्धि विवेकयुक्तमकरोत्
विद्यार्थि वृन्दं मुदा
स्वर्यातः सविकीय कीर्ति
ममरां गंगाप्रसादः सुधी।

✱

श्री पूज्य उपाध्याय जी

[एक संस्मरण]

श्री सुरेशचन्द्र वेदालंकार
एम० ए०,एल० टी०, गोरखपुर

परिवर्तिनि संसारे मृतः
को वा न जायते।
स जातो येन जातेन याति
वंशः समुन्नतिम्॥

इस परिवर्तनशील संसार में मर कर कौन नहीं पैदा होता है। वास्तव में उसी का जन्म सार्थक जन्म है जिसके जन्म से वंश उन्नति को प्राप्त होता है। भर्तृहरि जी महाराज ने कहा है—

एके सत्पुरुषाः परार्थघटकाः
स्वार्थान् परित्यज्य ये
सामान्यास्तु परार्थमुद्यम भृत
स्वार्थाऽविरोधेन ये
तेऽमी मानव राक्षसाः
परहितं स्वार्थाय निघ्नन्ति ये
ये तु घ्नन्ति निरर्थकं
परहितं ते के न जानीमहे।

जो अपने लाभ को त्यागकर दूसरों का हित करते हैं वे ही सच्चे सत्पुरुष हैं। स्वार्थ को न छोड़कर जो लोग लोकहित के लिये प्रयत्न करते हैं। वे पुरुष सामान्य है, और अपने लाभ के लिये जो दूसरों का नुकसान करते हैं वे नीच मनुष्य नहीं है उनको मनुष्याकृति राक्षस समझना चाहिये परन्तु एक प्रकार के मनुष्य और भी है जो लोक-हित का निरर्थक नाश किया करते हैं—मालूम नहीं पड़ता कि ऐसे मनुष्यों को क्या नाम दिया जाय। (भर्तृहरि नीति शतक ७४) इसी प्रकार राजधर्म की उत्तम स्थिति का वर्णन करते हुए कालिदास ने भी कहा है—

स्वसुख निरभिलाषः
खिद्यसे लोक हेतोः
प्रतिदिन मथवाते
वृत्तिरेव विधेव॥

'अर्थात्—तू अपने सुख की परवाह न कर लोकहित के लिये प्रतिदिन कष्ट उठाया करता है। अथवा तेरी वृत्ति (पेशा) ही यही है।'

[शकुन्तला ५.७]

श्री पूज्यनीय उपाध्याय जी उन्हीं व्यक्तियों में से जो अपना लाभ त्यागकर दूसरों का हित करते थे। आज से बहुत वर्ष पूर्व फतेहपुर आर्यसमाज का उत्सव था। उत्सव की सबसे बड़ी विशेषता और सबसे बड़ा आकर्षण पूज्य उपाध्याय जी थे। वैसे तो मुझे उनके दर्शन करने का अनेक बार अवसर मिल चुका था पर सन्त सुमति और महापुरुषों का दर्शन जितनी बार हो सके उतना ही श्रेयस्कर है यह सोचकर गोरखपुर से दूर होते हुये भी फतेहपुर समाज का निमन्त्रण पाकर मैं वहाँ के लिये चल पड़ा। उपाध्याय जी की आयु उस समय भी ८२ वर्ष थी। कार्य ही की और पहले दिन सत्संग में ईश्वर महिमा पर व्याख्यान दिया। व्याख्यान में कोई तड़क भड़क न थी, ओजस्वी वक्ताओं की शब्दावली न थी परन्तु हृदय से निकले सरल, स्वच्छ और धीमे उच्चरित वाक्यों में जो प्रभाव था वह हृदय को किसी अनिर्वचनीय श्रद्धा से भर देते थे। उनके बाद मुझे भी ईश्वर की सत्ता पर बोलने का सुअवसर मिला। उनके बाद बोलना किसी भी व्यक्ति के लिये बड़ा कठिन था। क्या बोलूं, कुछ समझ नहीं आ रहा था। मैंने अपने व्याख्यान में ईश्वर की सिद्धि और उसकी सर्वव्यापकता का प्रतिपादन किया। कार्यक्रम समाप्त होने के बाद जब उनसे भेंट हुई तो उन्होंने मेरे व्याख्यान की प्रशंसा की और कहा कि आर्यसमाज में आस्तिकता एवं श्रद्धा का अभाव हो रहा है। आर्य समाज से अध्ययनशील विद्वानों का लोप हो रहा है। किसी भी धर्म, सम्प्रदाय या संस्था को जीवन उसके लेखक, विद्वान और मनस्वी व्यक्ति दिया करते हैं। बौद्धधर्म को उसके दार्शनिकों और विद्वानों ने फैलाया, जैन धर्म को उसके बाद के विचारकों ने आज तक जीवित किया, परन्तु आर्यसमाज को जीवित रखने के लिये उस दिशा में अधिक ध्यान न देकर हम लोग वर्ष में एक तीन दिन का उत्सव करके आर्य-समाज को जीवित रखने का प्रयत्न कर लेते हैं। उत्सव अच्छी चीज है। परन्तु उत्सव से संस्था चिर जीवी नहीं हो सकती। इसके लिये कितना परिश्रम कितनी शक्ति और कितना धन लगाना पड़ता है और अचानक जब किसी समाज के दो चार उत्साही कार्यकर्ता

(शेष पृष्ठ १६ पर)

श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय—श्रद्धांजलि

श्री ला० रामगोपाल शालवाले
संसत्सदस्य तथा मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

(१)

उपाध्याय पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय अब इस संसार में नहीं रहे। २९ अगस्त ६८ को अपने निवास स्थान प्रयाग में प्रातः साढ़े नौ बजे उनकी यह लीला समाप्त हुई और आर्य समाज का एक दीप्तिमान नक्षत्र महान् प्रकाश में लुप्त हो गया। समय-समय पर हम उनसे प्रकाश ग्रहण किया करते थे, अब उससे हम वंचित हो गये हैं।

जब वह सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री थे, तब इन पंक्तियों का लेखक उपमन्त्री के रूप में उनका सहयोगी था। हमने उनसे बहुत कुछ सीखा था।

उनका जीवन बड़ा घटनापूर्ण और शिक्षाप्रद रहा। उत्तर प्रदेश के एटा जिले के नदरई ग्राम में साधारण परिवार में (१८८१ ई०) जन्म हुआ। होश सम्भालने से पहले ही पिता का साया उठ गया। साधन विहीन विधवा माँ ने साहस करके एटे के तहसीली स्कूल में १ रुपये मासिक खर्च देकर मिडिल तक की शिक्षा दिलाई। इस परीक्षा में समस्त उत्तर प्रदेश में उनका चौथा नम्बर था। मामा ने पटवार नौकरी करने की सलाह दी परन्तु साढ़े तीन रुपये का प्रबन्ध न होने के कारण दाखला न हो सका। इनके तयेरे भाई ने बुलन्दशहर में अपने पास बुला लिया और वहीं से अंग्रेजी की आठवीं क्लास की परीक्षा दी और सरकारी वजीफा प्राप्त किया। इसके बाद अलीगढ़ के हाई स्कूल से १९०१ में मैट्रिक परीक्षा पास की। इसी नगर में आर्यसमाज के संपर्क में आये। प्रयाग में ट्रेनिंग करके १९०४ में ४०) मासिक पर बिजनौर में गवर्नमेंट हाईस्कूल में टीचर नियुक्त हुये। १९०८ से १९१७ तक बाराबंकी के गवर्नमेंट स्कूल में रहे। यहीं से प्राईवेट रूप में एफ० ए० बी० ए० और १९६८ में प्रयाग से एम.ए. (अंग्रेजी तथा फिलासफी) किया। बिजनौर और बाराबंकी दोनों ही स्थानों पर आर्य समाज की प्रगतियों में बढ़ चढ़ कर भाग लेते रहे। बाराबंकी आर्यसमाज का मन्दिर निर्माण उपाध्याय जी के पुरुषार्थ का फल था।

१९१७ तक गवर्नमेंट सर्विस की और पेन्शन के अधिकार की पर्वाह न करके मित्रों के अनुरोध पर डी० ए० वी० हाईस्कूल प्रयाग की हेडमास्टरी स्वीकार कर ली। १९३९ तक इस पद पर योग्यता पूर्वक कार्य किया। हैदराबाद सत्याग्रह के कार्य को प्रमुखता देकर सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों की प्रेरणा पर हेडमास्टरी से इस्तीफा दे दिया। और इसके बाद का निधन पर्यन्त सारा समय आर्य साहित्य के निर्माण एवं आर्यसमाज की विविध प्रगतियों में अर्पण रहा। जब सरकारी सर्विस के परित्याग का प्रसंग उपस्थित हुआ और राज्याधिकारियों ने पदोन्नति तथा पेन्शन आदि के प्रलोभन सामने रखकर सर्विस में बने रहने का आग्रह किया तो उन्होंने कहा कि आर्यसमाज की सेवा गवर्नमेंट की सेवा से अधिक महत्त्व रखती है। कम से कम मानसिक दासता हट जाने का मुझे सन्तोष रहेगा। वस्तुतः जीवन धारा का यह मोड़ उज्ज्वल भविष्य की सम्भावनाओं से परिपूर्ण सिद्ध हुआ।

उपाध्याय जी ने इलाहाबाद में तथा जिले में आर्यसमाज को शक्तिशाली बनाने में महान योग दिया। वहां से उनकी सेवाओं का क्षेत्र प्रान्त में तथा भारत भर में व्यापक होकर विदेशों तक विस्तृत हुआ। वह कई वर्ष तक आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान और सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान और मन्त्री रहे। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के कार्यालय को लखनऊ में स्थायी रूप देने में उनका भी प्रमुख हाथ रहा। भवन के लगभग १८ हजार के ऋण को उतारने के लिये प्रान्त भर में भिक्षा की झोली लेकर घूमे। उन्होंने न केवल ऋण ही उतारा अपितु ७०००) स्थायी कोष में भी जमा करा दिये।

सार्वदेशिक प्रकाशन लिमिटेड दिल्ली उन्हीं के पुरुषार्थ का फल है। वह इसे आर्यसमाज का एक भव्य प्रकाशन गृह देखने के लिये उत्सुक थे जिसने न केवल उच्चकोटि साहित्य ही अपितु आर्यसमाज का एक दैनिक पत्र भी निकले। कुछ दिन तक पुण्य सुमित्र निकला। और कुछ पुस्तकें भी छपीं। सार्वदेशिक सभा में उच्चकोटि के साहित्य की रचना के उद्देश्य से दयानन्द पुरस्कार निधि की स्थापना करा जिससे अब तक ४ विद्वानों को उनकी कृतियों के पर पुरस्कृत किया जा चुका है।

दक्षिणी अफ्रीका, ब्रह्म प्रदेश, स्याम आदि की भी उन्होंने सफल प्रचार यात्राएं की थी। दक्षिण अफ्रीका से विदा होते समय आर्य प्रतिनिधि सभा ने उन्हें निजी व्यय के लिये १५००) की थैली भेंट की। उपाध्याय जी ने यह राशि सार्वदेशिक सभा में इस निर्देश के साथ जमा कर दी कि इससे दक्षिण अफ्रीका में प्रचारार्थ साहित्य तय्यार कराया जाय। इस निधि से लाइफ आफ्टर डैथ तथा सनातन धर्म और आर्यसमाज आदि पुस्तक छप चुके हैं।

ब्रह्म देश व स्याम की प्रचार यात्राओं के बाद उन्होंने ब्रह्म वर्मी तथा चीनी भाषाओं में सत्यार्थ प्रकाश अनूदित और प्रकाशित कराये।

उपाध्याय जी की अक्षय यादगार उनका विशाल साहित्य है। उन्होंने हिन्दी उर्दू संस्कृत तथा अंग्रेजी के सैकड़ों ग्रंथ आर्यसमाजों को दिये जो देश में ही नहीं अपितु विदेश में भी बड़ी रुचि के साथ पढ़े जाते हैं। उनके अमर ग्रंथ आस्तिकवाद पर उन्हें १२००) का मंगलाप्रसाद पुरस्कार मिला था। जीवनचक्र [आत्मकथा] तथा कम्यूनिज्म पर उत्तरप्रदेश राज्य की ओर से ५००) ५००) के पुरस्कार प्राप्त हुए थे। वैदिक कल्चर नामक पुस्तक पर अमृतधारा ट्रस्ट से ५००) का पुरस्कार दिया गया था इनके अतिरिक्त जीवात्मा, अद्वैतवाद, दयानन्द फिलासफी, शांकर भाष्यालोचन, सत्यार्थ प्रकाश का अंग्रेजी अनुवाद, इस्लाम का दीपक, संस्कृति का आरोग्य कोष्ठम् आदि उनके अमर ग्रंथ वैदिक वाङ्मय की शोभा बढ़ा रहे हैं। आर्यसमाज चौक इलाहाबाद का ट्रैक्ट विभाग संस्थान उन्हीं की उत्कृष्ट देन है। इस विभाग से उपाध्याय जी के सैकड़ों टैक्ट जिनकी पृष्ठ संख्या लगभग २ लाख बैठती है लाखों की संख्या में प्रकाशित व प्रचारित हो चुके हैं। उनकी शैली बड़ी सरल है। दार्शनिक विषयों का सरल भाषा में स्पष्टीकरण करने में उन्हें अपूर्व दक्षता प्राप्त रही। उनकी स्कूलीय पाठ्य पुस्तकों की संख्या भी बहुत बड़ी चढ़ी है जिनमें हिन्दी व्याकरण बड़ी प्रसिद्ध है। उनके कई ग्रन्थ इण्डियन प्रेस प्रयाग ने छापे थे। स्कूलीय पुस्तकें गंगाप्रसाद बी० टी० के नाम से लिखी गई और प्रकाशित हुई थीं। आर्य समाज का साहित्य गंगाप्रसाद उपाध्याय के नाम से लिखा गया है। मैट्रिक तक उनकी मुख्य भाषा उर्दू रही। इसके बाद उन्होंने हिन्दी संस्कृत सीखी थी।

उपाध्याय जी उच्च कोटि के शिक्षक, विचारक, साहित्यकार और व्याख्याता थे। बचपन में लोग इन्हें छोटा विचारक कहा करते थे।

उनका वैयक्तिक जीवन बड़ा सरल था। रहन-सहन और खान-पान बड़ा सादा था। तबीयत में दया अधिक थी। उनका पारिवारिक जीवन बड़ा सुखद था। उन्होंने अपने पीछे बहुत बड़ा शिक्षित परिवार छोड़ा है। उनके सबसे बड़े पुत्र डा० सत्यप्रकाश डी-एस-सी इलाहाबाद विश्वविद्यालय के रसायन विभाग के अध्यक्ष हैं। एक पुत्र कला प्रेस का संचालन तथा प्रकाशन का कार्य करते हैं। अपने परिवार को जीवन के सांचे में ढालने, उसे शिक्षित एवं सुखी बनाने में भी उपाध्याय जी सफल रहे। इसके लिये उन्हें अनेक आर्थिक संघर्षों में से गुजरना पड़ा परन्तु अपने पुरुषार्थ से ट्यूशन करके ग्रन्थ लिखकर, उन पर विजय प्राप्त की। इस सब का अधिकांश श्रेय पूज्य माता स्व० कलावती जी को प्राप्त है माता जी का सबसे बड़ा शौक उपाध्याय जी के शब्दों में—'आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संगों तथा व्याख्यानों में सम्मिलित होना रहा था।'

उपाध्याय जी का निधन लगभग ८९ वर्ष की आयु में हुआ। उनका जीवन समाज हित के अर्पण रहा अतः वह जीवन लम्बा होते हुए भी छोटा था। मृत्यु के क्षण तक उनका दिमाग और लेखनी काम करते रहे। उनकी स्मृति गजब की थी। लेखनी इतनी तेज कि बड़े-बड़े ग्रन्थ कुछ महीने में छोटे-छोटे ग्रन्थ कुछ दिनों में और ट्रैक्ट कुछ घण्टों में लिखकर प्रस्तुत कर देते थे। विशेषता यह है कि लिखे हुये को दोबारा नहीं पढ़ते थे।

उन्होंने अपने चरित्र तथा कार्य से जनता के हृदय में जो आदर पूर्ण स्थान प्राप्त किया था वह सदैव बना रहेगा। आर्य जनता ने १९६० में दयानन्द दीक्षा शताब्दी के पुण्य अवसर पर उन्हें अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट करके उस आदर भावना एवं कृतज्ञता की किंचित अभिव्यक्ति की थी।

उनसे कभी-कभी सैद्धान्तिक मतभेद भी हो जाया करता था जिसका मुख्य कारण उनका स्वतन्त्र चिन्तन था। परन्तु उनके व्यक्तित्व के प्रति कभी

(शेष पृष्ठ १६ पर)

आर्यजगत् के मान्य नेता पंडित गङ्गाप्रसाद जी के महाप्रयाण पर काव्यमय श्रद्धांजलियां

[१]

हा ! यशस्वी आर्य नेता लेखनी के वे धनी।
आप बिन साहित्य की अब वाटिका सूनी बनी,
ऋषि दयानन्द के मिशन का आपने गौरव बढ़ाया,
आर्य विधि का विश्व को फिर पाठ है तुमने पढ़ाया,
तुम निरन्तर ही रहे साहित्य की आराधना में,
दे दिया जीवन सभी है वेद पथ की साधना में,
हो गई तुम से विकम्पित पोप पन्थों की अनी।
हा यशस्वी आर्य नेता लेखनी के वे धनी ॥

कर गये प्रतिवाद मायावाद नास्तिकवाद का तुम,
दे गये दर्शन प्रभा में वाद आस्तिकवाद का तुम
आपका चलता रहा अविराम गति से कार्य लेखन,
था तुम्हारा कार्य फिर से विश्व सारा आर्य वेतन,
आपकी प्रतिभा प्रखर श्रुति साधना में थी सनी।
हा ! यशस्वी आर्य नेता लेखनी के वे धनी ॥

अनु निश्वर त्याग करके तुम गये परलोक मे,
आर्यजन होते विकल हैं आपके अब शोक मे,
आपकी आत्मा अमर देती रहे आलोक हमको,
श्रद्धांजली है भावनाओं की समर्पित आज तुमको,
अब तुम्हारी ऋषि मिशन में साधना होगी घनी।
हा ! यशस्वी आर्य नेता लेखनी के वे धनी ॥

—दर्शनसिंह चौहान
हथनऊ, मैनपुरी

[२]

हाय गङ्गाप्रसाद से हमने सब कुछ पाया।
सबसे सब कुछ पाया जिससे, आज उसे ही खोया ॥
'आस्तिकवाद' से आस्तिकता के भाव हृदय में आये।
'जीवात्मा' से मैं क्या हूं, यह आत्मबोध कर पाये ॥
वैदिक-मणि-माला' है पाई, मिला 'दयानन्द-दर्शन'।
जीवन-चक्र' आदि चरितावलि करती पथ-प्रदर्शन ॥
माया का भ्रम भूत भगाना, 'शांकर-भाष्यालोचन'।
'भगवत कथा में उपनिषदों का सार सत्य है सोहम्।
धर्म-सुधा (का) सार' दिया है, अब 'आर्योदय काव्यम्।'
आर्हे वेदुर्यो' की दी जो दिया, 'दयानन्द आश्रम' ॥
'सन्ध्या क्यों और कैसे' ने सन्ध्योपासन सिखलाई।
'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' की नई दिशा दिखलाई ॥
अद्वैतवाद' से 'त्रैतवाद' को मान महान् मिला है।
वैदिक-संस्कृति' में संस्कृति का, फिर अध्याय खुला है ॥
'कर्म-फल-सिद्धान्त' से सुलझी कर्म-पहेली उलझी।
'वेद एवं मानव-कल्याण' से श्रुति की महिमा समझी ॥
...... ट्रुथ' आंग्ल-भाषा को उत्तम ग्रंथ मिला है।
सूदित सत्यार्थप्रकाश का पावन-पुष्प खिला है ॥
'शतपथ' मीमांसा प्रदीप' जब ग्रन्थ सामने आते।
उपाध्याय की विशद लेखनी की गरिमा कह जाते ॥
उनकी लेखनी की जिसको गति में नहीं विराम हुआ है।
रुक नहीं अगणित ग्रंथों का सृजन ललाम हुआ है ॥
'आयन ट्रैक्ट विभाग चौक' ने प्राण प्रतिष्ठा पाई।
नगर देश विदेश विश्व में कीर्ति-कौमुदी छाई ॥
वैदिक धर्म प्रचार कार्य में सबल सहायक बनकर।
कोका, बर्मा में पहुंचे, वेद प्रचारक बनकर ॥
कितने अज्ञ जनों ने विस्मृत वैदिक ज्योति पाई।
जो कोई समीप में आया, जीवन ज्योति पाई ॥
कितनों ने पढ़ना सीखा, कितनों ने लिखना सीखा।
अब जनता का हृदय जीतकर कितने जग से सीखा ॥
आज वही सत्प्रेरक खोया, खोया वेद प्रचारक।
सन्त मनीषी लेखक खोया, खोया पथ प्रदर्शक ॥
परम तपस्वी, मनु, वर्चस्वी, कवि वक्ता हा खोया।
वेदवाटिका का रखवारा, सच्चा साधक खोया ॥
आर्य-भवन का दृढ़ स्तम्भ भी आज गर्तो है टूटा।
आर्य-जगत् के शुभ्र गगन का था ध्रुवतारा टूटा ॥
सब कुछ खोया, मत अधीर हो, है साहित्य सहारा।
पथ का है पाथेय, अन्ध का जीवन लकुटि सहारा ॥
'विजय' देश देशान्तर में, बस इसको ही पहुंचाओ।
अध्ययन, मनन, आचरण, के बल श्रद्धा-पुष्प चढ़ाओ ॥

—मदनमोहन 'विजय'
६८७ मुट्ठीगंज, प्रयाग

[३]

आर्य जग में हो गया है—आज वज्राघात कैसा।
हैं हृदय विह्वल हमारे, वेदना का स्रोत कैसा ॥
गङ्गाप्रसाद का सुपथ उज्ज्वल, है सुहावन गंग जैसा।
निर्दयी ने क्यों किया है, क्रूर काल प्रहार ऐसा ॥
हैं बिलखते नास्तिक सब, बाल वृद्ध, वयस्क सारे।
छोड़कर हमको चले क्यों, हैं उपाध्या जी हमारे ॥
नेता महान् समाज सेवी, जो रहे जन जन के प्यारे।
वेद विज्ञ महान पण्डित, विद्वत्ता का रूप धारे।
धर्म वैदिक परम प्यारा, था अटल अनुराग जिससे।
धर्म का परचार करना, ध्येय अपनाया था मनसे ॥
आय कुल के चन्द्र प्यारे, जगमगाती ज्योति जिनसे।
दे गये साहित्य अनुपम, आपका गौरव है जिससे ॥
हम ऋणी उनके रहेंगे, हम करें गुणगान उनका।
उनके मारग पर चलेंगे, ग्रहण कर आदर्श उनका ॥
वे अमर अब हो गये हैं, नाम है जगमान उनका।
आत्मा सुख शान्ति पावे, और हो कल्याण उनका ॥

—कवि केदारनाथ वर्मा 'साहित्यरत्न'
मुट्ठीगंज, प्रयाग

[४]

हा हा उपाध्याय बुधोऽपियात·
समाजसावास्य महानुभावः
ग्रन्थं रनेकं विबुधत्वपूर्ण, यः ख्यातनामा भुवने बभूव।
महा मनीषी सुजनस्य मूर्ति, हा हा उपाध्याय बुधोऽपि यातः
अनेक भाषासु विशारदोय, सुलेखनी यस्यवर्ते बभाऽभूत।
सत्कर्म निष्ठो महितस्तपस्वी, हा हा उपाध्याय बुधोऽपि यातः ॥
मन्त्री समस्ताय सभस्सभाया, प्रचार कार्येऽति पटुर्यशस्वी।
विदेश यात्रां कृतवांस्तथयं हा हा उपाध्यायबुधोऽपि यातः।
अस्तु ध्वजाया सरल च जीवितुम्, आदाय कस्य निदर्शन य ।
गुणाकर तत्रपि दर्पहीनो, हा हा उपाध्याय बुधोऽपि यात
वेदोक्त सत्संस्कृति तत्त्वजात प्रबोध्यतन्या निरत प्रसारे।
'अद्वैतवादास्तिकवाद' कर्ता हा हा उपाध्याय बुधोऽपियातः
कथ समाजाऽभ्युदयो भवेद् ध्रुवं, इत्येव चिन्ता विलयस्य चित्तो
उद्बोधयन् सुप्त् जनान् स्वलेखै, हा हा उपाध्याय, बुधोऽपियातः
शताधिका सत्कृतयो विलक्षणा, नून समाय ह्यमर विधातुम।
स्तम्भो दृढ़ो ह्यार्य समाज नेता, हा हा उपाध्याय बुधोऽपि यातः
ददातु देव सुगति कृतात्मने, शांति समेभ्यो ह्यपि बान्धवेभ्य।
ददातु शक्ति च मनीषि मार्गे पद निधातु विमले च वैदिके ॥

—आचार्य धर्मदेव
विद्यावाचस्पति विद्यामार्तण्ड, ज्वालापुर

श्री पं. गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय के जीवन की दिव्य झांकियां

श्री पं० गङ्गाप्रसाद उपाध्याय एम० ए० का नाम आर्यजगत में बड़े आदर, श्रद्धा और भक्ति से लिया जाता है। जीवन भर आर्यसमाज की सेवा की थी। आप हिन्दी और अंग्रेजी भाषा के प्रौढ़ वक्ता एवं लेखक थे। कठिन से कठिन दार्शनिक विषय को सरलता से रखने मे आप सिद्धहस्त थे। आपकी वक्तृता शक्ति जनता को मोह लेती थी। लेखन के रूप में आपकी अद्भुत प्रतिभा थी। आप हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित थे, लेखनशैली उनकी सरल, सारगर्भित, पाण्डित्यपूर्ण थी। साहित्यिक धारा उनकी लेखनी से भागीरथी के समान बहती रहती थी। तर्क और युक्ति उनके सभी दार्शनिक साहित्य की आधार शिला थी। वे उर्दू मे सफलता के साथ शायरी करते थे। संस्कृत मे सफलरूप से कविता करते थे। सभा सञ्चालन में बड़े दक्ष थे, अपनी नीति का विचार पूर्ण निर्माण करते थे और अपने विचारों को निर्भीकता से बोलकर या लिखकर प्रकट करते थे। अध्यवसाय आपके जीवन का अद्भुत गुण था। त्याग और तपस्या आपका स्वभाव था। निराशावादी नहीं थे, किसी भी कार्य मे जुटते थे तो पूर्ण आशा के साथ प्रयत्नशील रहते थे। व्यवहार मे अत्यन्त मधुर तथा सरल थे।

जन्म एवं प्रारम्भिक परिचय

उपाध्याय जी का जन्म ६ सितम्बर १८८१ ई० तदनुसार भाद्रपद शुक्ल १३ सम्वत् १९३८ वि० मंगलवार को लगभग १२ बजे दोपहर को नदरई ग्राम (जिला एटा उत्तरप्रदेश) मे हुआ था। यह ग्राम काली नदी के किनारे स्थित है और यहीं पर अंग्रेजी शासन के समय में एक दर्शनीय पुल का निर्माण हुआ था, जिसकी विशेषता यह थी कि नदी को काटती हुई एक नहर बनाई गई था। यहीं पर भीमसेन का एक मन्दिर है, जिसमें एक बड़ा घण्टा रक्खा है जिसको भीमसेन वर्मा की लड़ाई में जीतकर लाये थे। आपके बाबा का नाम था श्री फूलचन्द पिता का नाम श्री कुञ्जबिहारी लाल, माता का नाम श्रीमती गोविन्दी था।

बाबा का देहान्त हो चुका था, दुर्भाग्यवश पिता का भी २८ वर्ष की अवस्था में देहावसान हो गया। इस समय उपाध्याय जी की अवस्था केवल १० वर्ष की थी। एक छोटा भाई था और एक बहिन। पिता के मरने से सारे परिवार के भरण-पोषण का भार विधवा माता पर आ पड़ा। बड़ी विषम स्थिति आ गई, पर धैर्यशीला मां ने साहस न छोड़ा, वे शिक्षिता वर्तमान अर्थों मे न थीं। पर उन्होंने बड़ी दूरदर्शिता तथा धैर्य के साथ जीवन बिताया। थोड़ी सी खेती थी जिसकी आय अधिक न थी। जो चार आभूषण थे वे भी क्रमशः महाजन के यहां पहुंच गए।

सन १८८७ में आपकी पट्टी पुजवाई गई जैसी कि उस समय प्रथा थी। फिर एक मौलवी साहब आने लगे। उनसे फारसी पढ़ना आरम्भ किया। सादी का करीमा, मामुकीमा पढ़ा। दस्तूर सिबियां और खालिकबारी पढ़ाई गई। अब नदरई से मरथरा ग्राम लौटकर आये तो प्राइमरी स्कूल मे भर्ती हो गये। कुछ दिन शिक्षा पाई थी कि पिता का देहान्त हो गया। अब एक सम्बन्धी आपको तहसीली स्कूल एटा मे भर्ती कर आये। यहां उर्दू और हिन्दी मिडिल की शिक्षा दी जाती थी। बोर्डिङ्ग हाउस मे रहने लगे। मां के पास धन न था। किसी प्रकार ३।।) मासिक देती। २) मे सूखे भोजन का प्रबन्ध होता। आठ आने फीस लगती। न घी मिलता न दूध, किसी प्रकार सूखी दाल रोटी पर जीवन बीतता। पर विद्याध्ययन के लिये रुचि थी मन थी किसी भी तरह शिक्षा मिले घर था ६ मील दूर प्रति शनिवार ६ मील पैदल चलकर घर पहुंचते जहां कि विधवा माता आपकी प्रतीक्षा करती होतीं। कभी कभी अस्बाब भी सिर पर लादकर आते। सोमवार को अंधेरे मे ही चलकर स्कूल सूर्योदय तक पहुंच जाते। मां पूछती बेटा अंधेरे मे डर तो नहीं लगता'—उत्तर देते नहीं मां! मैं तो सीधे चला आता हूं। डर कैसे लगे। मां बड़ा प्यार करती थी और उपाध्याय जी भी बड़ी भक्ति करते थे। एक बार मां बीमार पड़ी तो एटा से दौड़ आये। गांव आकर ताऊ जी जो हिकमत करते थे उन्होंने नाड़ी देख कर दवा लिखी। पर दवा के लिए एटे जाना था। ६ मील पैदल गये और ६ मील पैदल आये। १२ मील की यात्रा ३ घण्टे में समाप्त की और दवा दोपहर से पहले ही ला दी।

१८९५ ई० में आपने मिडिल परीक्षा उत्तीर्ण की और प्रान्त भर मे आपका स्थान चौथा था। उस समय आपकी अवस्था १४ वर्ष की थी पर उर्दू के काव्य आतिश, मीर गालिब, जौक आदि के दीवान पढ़ डाले थे। उन दिनों हिन्दी का तो प्रचार बहुत कम था मिडिल पास होते ही मामा ने कहा कि पटवारगिरी की परीक्षा दे डालो। पर तीन रुपये फीस का प्रबन्ध न हो सका। सौभाग्यवश आपके ताऊ के लड़के श्री राधा दामोदर बुलन्दशहर की कलक्टरी मे कापीनवीस थे। वे बड़े सज्जन थे। उन्होंने पत्र लिखा 'मेरी उत्कट इच्छा है कि तुम्हें पढ़ाऊं। तुम मेरे पास चले आओ। आप जाकर अंग्रेजी पढ़ने लगे। अंग्रेजी मिडिल मे भी सरकार से वजीफा मिला और आप अलीगढ़ हाई स्कूल मे पहुंच गये।

आर्यसमाज की ओर

१८९८ तक आप सनातनी विचार धारा के थे। खड़ाऊं पहनते नहाते, गणेश जी की पूजा करते। हुक्का पिया करते। बोर्डिंग के सभी लड़के पीते थे, और जो भी नया विद्यार्थी आता उनका शिष्य हो जाता। अब आर्यसमाज से सम्पर्क हुआ तो सन्ध्या सीखी और यह निश्चय हुआ कि तम्बाकू छोड़ी जाय। इसके छोड़ने के लिये पान खाना आरम्भ किया। इस प्रकार एक से दो लत लग गई। पर एक दिन दृढ़ता के साथ दोनों को छोड़ दिया। बोर्डिङ्ग के लड़कों ने हंसी उड़ाई। पर उनका कुछ प्रभाव न पड़ा। अब भी छोटेलाल भार्गव के संसर्ग में आये। उन्होंने वैदिक आश्रम खोला और उसमें व्याख्यान और शिक्षा देने लगे। आर्यसामाजिक जीवन का आरम्भ यहीं से हुआ। श्री छोटेलाल भार्गव की दी गई शिक्षाएं सफल हुई और आर्यसमाज के प्रति आपकी अगाध श्रद्धा आरम्भ हो गई।

★श्री महेन्द्रप्रताप जी शास्त्री
उपप्रधान आर्यप्रतिनिधि सभा उ० प्र०

सरकारी नौकरी

१९०१ मे मैट्रीकुलेशन मे सफल हुए। इच्छा थी कि आगे और पढ़ा जा[ए] पर पारिवारिक जीवन के उत्तरदायि[त्व] बढ़ गये थे। माता, स्त्री, स्त्री के मा[…] अपने छोटे भाई का पालन करना था। प्रयाग के टीचर्स ट्रेनिंग कालेज में २ व[र्ष] अध्यापन किया। परीक्षा मे सफल [होने] के कारण बिजनौर मे ४०) रुपये [की] सरकारी नौकरी १९०४ मे लग गई। वहीं पर आपके दो पुत्र उत्पन्न हुए[।] समय संघर्षमय था। परिवार बड़ा त[था] आय कम। ट्यूशन करके काम चलना[,] अपना अध्ययन भी करना था और समाज सेवा भी। पर हृदय मे उत्[साह] था और ईश्वर की कृपा का सहारा[।] १९०६ मे बाराबंकी को तबादला [हो] गया १९०८ से १९१७ तक आप इ[स] स्थान पर रहे। बाराबंकी का [आर्य] समाज मन्दिर आपके उद्योग तथा सि[…] के सहारे बना। यहीं पर रहते हुये आ[प] ने एफ० ए० बी०ए० उत्तीर्ण किया अ[ौर] १९१८ ई० मे अंग्रेजी मे एम०ए० कि[या।] नगर तथा जिले मे प्रचार चलता रहा[।] उस समय महात्मा नारायण प्रसाद (महात्मा नारायणस्वामी) गुरुकु[ल] वृन्दावन के मुख्याधिष्ठाता थे। उन[की] प्रेरणा पर अपने ग्रीष्मावकाश के सम[य] कुछ वर्षों तक गुरुकुल में ही व्यतीत किया और अंग्रेजी की शिक्षा देते रहे।

सामाजिक कुरीतियों से मुठभेड़

सामाजिक कुरीतियां बड़ी प्रबल [हैं।] लेशमात्र भी इधर से उधर हो जाय [तो] बवण्डर खड़ा हो जाता है। आरम्भ ही अपने परिवार की धारा इधर बदली। परिवार मे बड़िया नहीं बन[ती] थीं। श्री उपाध्याय जी ने माता जी [को] समझाया कि बनाओ, कोई अनिष्ट [न] होगा। माता जी ने चिंतित हृदय [से] बड़ियां बनाई। जब वर्ष कुशल से बी[ता] तो पुत्र की बातों पर विश्वास[…]

जीवन-ज्योति

के हैदराबाद से दिल्ली में रहने की कहा गया, जिससे सामग्री भी-सुरक्षित भी का प्रबन्ध किया जा सके। जून मास में आप हैदराबाद भेजे गये कि जाकर, मूल फर्मानों और पर्चों की उपलब्धि करें। अंग्रेज सरकार जब निजाम से पूछती तो वे कुछ का कुछ उत्तर दे देते। इसलिये मूल फर्मान सरकार के सामने रखने आवश्यक थे। महात्मा गांधी जी से जब कहा गया कि निजाम साहब स्वयं कवितायें लिखकर भड़काते हैं तो उनको भी विश्वास न हुआ। लोग हैदराबाद दौड़ गये कि 'रहबरे दकन' का वह पर्चा जिसमें यह कविता छपी है मिल जाय, पर हैदराबाद में न मिली। अकस्मात् उपाध्याय जी को याद आई कि एक प्रति को प्रयाग ले गये थे। शायद वहां मिल जाय। आप प्रयाग आये और वह अंक मिल गया। उसका फोटो बनवाया गया। ब्लाक भी बना।

सत्याग्रह खूब जोरों पर चल रहा था। ऐसी अवस्था में निजाम सरकार के अधिकारियों से फर्मान प्राप्त करना सरल कार्य न था। पर अब आप सम्वाददाता बनकर दिल्ली से चले। हैदराबाद के पब्लिसिटी विभाग से मिले। वे समझते थे कि दिल्ली से सम्वाददाता आया है। वे सम्वाददाता के प्रति उदासीन कैसे होते। इस प्रकार बहुत सा साहित्य मिला उन्होंने बताया कि आर्य लोग किस प्रकार झूठा प्रोपेगंडा करते हैं। श्री उपाध्याय जी ने उनसे पूछा कि यह तो बताइये कि आपकी जेलों में जो मर जाते हैं उनकी लाशों पर घावों के निशान क्यों मिलते हैं?" उसका उत्तर मिला 'अजी हम तो रोगियों को भरसक चिकित्सा करते हैं, अच्छे से अच्छे डाक्टर उनको देखते हैं, पर जब आर्य लोगों को मृतकों की लाशें वापिस दी जाती हैं तो वह चाकू से घाव करके फोटो ले लेते हैं।"

इस प्रकार सम्वाददाता के रूप में आप हैदराबाद में घूमे और सैकड़ों चित्र मन्दिरों और मस्जिदों में लेकर आये। मस्जिदें अच्छी अवस्था में थीं। मन्दिर फूटे थे और उनको बनवाने की आज्ञा न थी। मस्जिदों पर झण्डे लहरा रहे थे, मन्दिरों पर झण्डा फहराने की आज्ञा न थी। इसी प्रकार नग्न मूर्तियों की फोटो लेकर उपाध्याय जी दिल्ली पहुंचे। चित्रों के ब्लाक बनवाए गए।

जुलाई मास में डी० ए० वी० हाई स्कूल छुट्टियों के उपरान्त खुलता था। उनमें जाना आवश्यक था। पर श्री देशबन्धु गुप्त ने कहा कि ऐसी अवस्था में आपको छोड़ा नहीं जा सकता। उपाध्याय जी ने नौकरी से त्याग-पत्र दे दिया और दिल्ली चले आये।

श्री आपकी आय ले आये थे उनकी पाण्डुलिपि बनाकर महात्मा गांधी को दिखाई गई। सरकार के प्रमुख अधिकारियों को दी गई। इंग्लैण्ड की पार्लियामेन्ट में जब सत्याग्रह के सम्बन्ध में प्रश्न पूछे गये तो उपाध्याय जी ने जेल में बलिदान हुए व्यक्तियों के चित्र एकत्रित करके इंग्लैंड भेजे। निजाम की सरकार अपने धन के मद में झूठा प्रोपेगैंडा करती थी और धन के बल पर लोगों के मुंह बन्द करना चाहती थी। पर आर्य समाज के प्रोपगैंडा के सामने वह नहीं ठहर सकी। भारत के वाइसराय के पास एक प्रार्थना-पत्र (memorandum) भी भेजा गया था जिसमें देश के प्रमुख नेताओं के हस्ताक्षर थे। इसके सम्बन्ध में भी उपाध्याय जी नेताओं से मिले। महामना मालवीय जी को जो काश्मीर में थे, काश्मीर जाकर स्थिति बताई। इस प्रकार श्री उपाध्याय जी की सेवायें बहुमूल्य थीं।

सौभाग्यवश ८ अगस्त १९३९ को निजाम राज्य में आर्य समाज को विजय मिली। २२ अगस्त को सत्याग्रह नेता दिल्ली आये। सत्याग्रह तो बन्द हो गया। उसका एक विस्तृत वृत्तान्त श्री उपाध्याय जी ने सभा की ओर से लिखा, परन्तु निजाम राज्य के अनुरोध पर उस वृत्तान्त का प्रकाशन करना सभा ने स्थगित कर दिया।

सार्वदेशिक सभा ने यह निश्चय किया कि निजाम राज्य में आर्यसमाज का कार्य ठोस रूप से किया जाय। इसके लिए एक उपदेशक विद्यालय शोलापुर में खोला गया। भाई बन्सीलाल को प्रबन्धक नियत किया गया। राज्य भर से उत्साही नवयुवक छांट कर लिए गये जिनको शिक्षा दी जा सके। श्री उपाध्याय जी अब शोलापुर जाकर उसका प्रबन्ध करने लगे। राजगुरु श्री धुरेन्द्र शास्त्री एवं श्री [illegible] जी के सहयोग से आपने उपदेशक विद्यालय [illegible] भर देख भाल की।

दक्षिण भारत में प्रचार

उपदेशक विद्यालय के आचार्य की हैसियत से उपाध्याय जी शोलापुर में रहे। इसी क्रम में वे अक्तूबर मास में मद्रास आये और वहां दो मास तक प्रचार कार्य में लगे रहे। मद्रास में श्री केशवदेव जी ज्ञानी श्री बी० एन० शर्मा आदि पहले से कार्य करते थे। विद्यार्थी का [illegible] बनाया गया। आपके व्याख्यान अंग्रेजी में होते रहे। मंगलौर कालीकट, [illegible], [illegible], एर्नाकुलम, कोचीन [illegible], ट्रावनकोर की राजधानी त्रिवेन्द्रम, कन्याकुमारी, रामेश्वरम्, धनुषकोटि आदि में आप प्रचार कर गये। इसी बीच आप को तार मिला कि आपके अनुज श्री प० [illegible] जी बी० ए० एल० टी० का देहान्त हो गया है। आप प्रयाग आये। दो सप्ताह बाद फिर कार्य क्षेत्र में चले गये। आपने अब दक्षिण प्रान्त में प्रतिनिधि सभा के निर्माण का निश्चय किया। १९४० में हिन्दू महासभा का अधिवेशन मदुरा में था। इसी अवसर पर आपने दक्षिण प्रान्तीय आर्य सम्मेलन का आयोजन किया। यह पहला अवसर था जब [illegible] [illegible] का आयोजन किया। वीर सावरकर, लाला नारायणदत्त, महाशय कृष्ण आदि नेता भी सम्मिलित हुए। इस प्रकार दक्षिण में प्रचार का एक क्रम बना।

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बन्ध

आर्य प्रतिनिधि सभा [illegible] उपाध्याय जी का सम्बन्ध १९१७ से हुआ जब आप अन्तरङ्ग के सदस्य बनाये गये थे। आप उपमन्त्री भी रहे और आपके समय में सभा का कार्यालय प्रयाग में रहा। इसके उपरान्त अनेक पदों पर रहे। जब शोलापुर विद्यालय बन्द हुआ था तो राजगुरु जी ने अपना त्यागपत्र दे दिया और अन्तरङ्ग ने आपको प्रधान पद लेने को बाध्य किया, पर उपाध्याय जी ने स्वीकार न किया। १९४१ में पुनः बल देने पर आपने अपनी स्वीकृति दे दी। प्रान्त का सारा भार आपके कन्धों पर आ पड़ा।

आर्य प्रतिनिधि सभा का १९३९ से पूर्व कोई अपना भवन न था। इस वर्ष प० रामचन्द्र शर्मा ने लखनऊ में एक कोठी सभा के लिए ३०००० रुपए में खरीद ली थी। जब उपाध्याय जी प्रधान हुए तो इस कोठी पर पौने अट्ठारह हजार रुपया ऋण था। पर आप यह विश्वास करते थे कि प्रान्तीय सभा का कार्यालय एक स्थान पर केन्द्रित हो जाय और लखनऊ प्रान्त की राजधानी थी, अतः उसका वहीं होना अधिक उचित था। पर प्रश्न था कि ऋण कैसे दिया जाय। कुछ व्यापार-निपुण व्यक्तियों ने सलाह दी कि कोठी के ५१०००) मिल रहे हैं इसको बेच दिया जाय। उपाध्याय जी राजी न हुए। श्री रामदयालु जी मन्त्र लेखक को लेकर निकल पड़े। गांव-गांव और नगर नगर मांगते फिरे। जब चार वर्ष उपरान्त प्रधान पद छोड़ा तो पूरा कर्ज अदा हो चुका था। इसके अतिरिक्त ७०००) कोष में जमा था। आपने उपदेशक सम्मेलन निमन्त्रित किया, जिसमें प्रचार की शैली और प्रचार प्रणाली पर विचार विनिमय होते रहे। प्रान्त का कार्य बड़ी उत्तम रीति से चलता रहा।

★

स्वर्गीय श्री उपाध्याय जी तथा उनकी धर्मशीला पत्नी स्व. कलादेवीजी

★

यह सब उपाध्याय जी की प्रतिभा का परिचायक था। चार वर्ष के उपरान्त भी आपको प्रधान पद देना चाहते थे, आपने स्वीकार नहीं किया। आप इस सिद्धान्त के पोषक थे कि एक व्यक्ति को चार वर्ष से अधिक एक पद पर नहीं रहना चाहिये।

शाहपुरा में

सन् १९४४ मे मित्रों का आग्रह हुआ कि आप शाहपुरा में आकर शाहपुराधीश के पौत्र की शिक्षा का भार स्वीकार करलें। इस समय शाहपुरा राज्य के दीवान श्री मदनमोहन जी सेठ थे। उनका तो विशेष आग्रह था। यह सोचकर कि वहां जाने से आर्यसमाज को लाभ ही होगा, आपने जाना स्वीकार किया। आप १८ मास शाहपुरा में शिक्षा का कार्य करते रहे। फिर अवसर पाते ही चले आये। शाहपुरा के राज्य परिवार ने पण्डित जी को बड़े आदर से रखा और शाहपुराधीश तो सदा उनको स्मरण करते रहे।

सार्वदेशिक सभा का मन्त्रित्व

जब आप शाहपुरा मे थे तो श्री घनश्यामसिंह गुप्त का पत्र मिला—'सिंध में सत्याग्रह होने वाला है। फौरन चले आओ।' उपाध्याय जी ने लिखा। "मैं तैयार हूं।" पर सिंध की अवस्था और हैदराबाद की अवस्था म भेद है।" २८ अक्टूबर १९४९ मे आप दिल्ली लौट आये और सार्वदेशिक सभा के मन्त्री का पद सम्भाल लिया। महात्मा नारायणस्वामी जी महाराज सत्याग्रह के सर्वाधिकारी बनाये गये। उनकी ८० वर्ष की अवस्था थी। उनका पत्र मिला "मैं शीघ्र सत्याग्रह के लिये करांची जाने वाला हुं। सभा के कार्यालय के लेखक श्री प्रमचन्द्र से कहो कि सिंध आने को तैयार हो जाय।" श्री स्वामी जी क जाने का प्रबन्ध कर दिया। पर सत्याग्रह से लौटते ही स्वामी जी की दशा चिन्तनीय हो गई। महाशय कृष्ण जी लाहौर ले गये। श्री उपाध्याय जी लाहौर गये। वहां आदेश हुआ कि पटने में स्वामी जी के इलाज का प्रबन्ध करो। परन्तु पटने क डाक्टरों म लाहौर क विशेषज्ञों की रिपोर्ट पर कह दिया कि अब क्या होता है। बरेली मे उनका देहावसान हो गया। उनको सुविधा पहुंचाने के विचार से उपाध्याय जी बरेली मे मिले। देहावसान पर बरेली पहुंचे।

सार्वदेशिक सभा के मन्त्रित्व का कार्य लगभग ५ वर्ष तक करते रहे। प्रथम वर्ष महात्मा नारायणस्वामी जी प्रधान रहे। दूसरे वर्ष उनकी बीमारी के कारण श्री मदनमोहन सेठ कार्यकर्त्ता प्रधान रहे। दो वर्ष श्री इन्द्र जी प्रधान रहे। इन सब महानुभावों का सहयोग मिलता रहा श्री राजगुरु धुरेन्द्र शास्त्री, श्री नारायणदत्त जी ठेकेदार सदा सत्परामर्श देते रहे। सब सज्जनों का श्री उपाध्याय जी पर पूरा विश्वास था। वे समझते थे कि जो कुछ उपाध्याय जी करते हैं वह ठीक ही होगा अतः किसी भी काम मे बाधा न मिली। जो भी प्रस्ताव रखा गया ठुकराया नहीं गया।

इस मन्त्रित्वकाल की कुछ विशेषतायें निम्नस्थ हैं—

(१) सार्वदेशिक प्रकाशन लिमिटेड की स्थापना—आपका विचार था कि आर्यसमाज का एक दैनिक पत्र दिल्ली से निकाला जाय। इस संस्था की योजना बन भी गई थी। लाला नारायणदत्त ने विशेष उत्साह दिखाया दो लाख रुपया जमा हो गया था। एक भूमि पटौदी हाउस के निकट दरियागंज मे खरीदी गई। प्रेस बना, पुण्यभूमि नामक पत्र निकाला गया। बाद मे कुछ पुस्तकें भी छपीं।

(२) दयानन्द पुरस्कार निधि—श्री उपाध्याय जी की अभिलाषा हुई कि जिस प्रकार हिन्दी साहित्य सम्मेलन की ओर से पुरस्कार दिये जाते है, उसी प्रकार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आधीन 'दयानन्द पुरस्कार निधि' की स्थापना की जाय जिनकी ओर से एक पुरस्कार आर्य साहित्यकार को मिल सके। इस निधि मे ५७००) जमा हो गये। उसका कार्य चल रहा है।

(३) हिन्दू कोड बिल—इसी काल में हिन्दू कोड बिल का निर्माण हुआ। इस विषय पर आर्यसमाजियो मे भी एकय न था। कुछ इसके पक्ष में थे, कुछ विरोधी। इस सम्बन्ध में श्री उपाध्याय जी अपने विचार निर्भीकतापूर्वक प्रकट करते रहे। आपका विचार था आर्य समाज एक सुधार संस्था है। इसलिये इसको सुधार कार्य मे किसी भी प्रकार पीछे न रहना चाहिये।

दक्षिणी अफ्रीका में ६ मास

भारतवर्ष के सभी प्रमुख भागों में श्री उपाध्याय जी प्रचार कर चुके थे। अब यह प्रबल इच्छा जागृत हुई कि विदेशों मे जाकर ऋषि ऋण से उऋण हुआ जाय। आप इस प्रकार के अवसर की प्रतीक्षा मे थे। अक्तूबर १९४९ में नेटाल (दक्षिणी अफ्रीका) की आर्य प्रतिनिधि सभा ने सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा से प्रार्थना की कि फरवरी १९५० में होने वाली रजत जयन्ती के अवसर पर आपको भेज दें। आपने इस अवसर से लाभ उठाना चाहा और स्वीकारी भेज दी। ११ नवम्बर को आप ट्रावनकोर गये हुये थे, दिल्ली से आदेश मिला फौरन आइये। अफ्रीका से वार्म ध्यम आ गया था और आप ८ दिसम्बर ४९ को बम्बई से अफ्रीका के लिये चल दिये।

जहाज पर लम्बा सफर था एक उर्दू की कविता लिख डाली—

वतन से दूर कहीं से कहीं चले आए।
नई जमी पे नये आसमां तले आए॥
खुदा के बन्दों को क्या दूर क्या नजदीक
जहां कहीं भी वह आये वहीं भले आए॥
अभी तो उम्र की किश्ती का ठीक है अन्दाज
बसर पर हुये जितने मरहले आये हैं।
उसी का बहर है, किश्ती उसी की लंगर भी
उसी के फंज से इस कदर चले आये॥
है कुछ तो राज कि हस्ती हमारी है कायम,
अगर्चे लाखों ही दुनियां में जलजले आये।

करांची होता हुआ जहाज एक सप्ताह में मोम्बासा पहुंचा। आर्य भाइयों ने स्वागत किया। हिन्दू समाज की ओर से व्याख्यान हुआ। जंजीबार से दारुस्सलाम आये। कुंवर आर्य कन्या पाठशाला मे व्याख्यान दिया। ३० दिसम्बर को जहाज डर्बन क बन्दरगाह पर खड़ा हुआ। श्री सत्यदेव जी मन्त्री तथा बीसियों सदस्य स्वागत के लिये आये थे। वैदिक धर्म की जय होने लगी।

दो जनवरी १९५० को डर्बन में आपके स्वागतार्थ सभा हुई। डर्बन मे अंग्रजी मे आपके ६ व्याख्यानों की योजना की गई। विशेषता यह थी कि प्रत्येक व्याख्यान मे एक प्रतिष्ठित विद्वान् सभापति के लिये चुना गया।

नटाल के अन्य नगरों मे प्रचार की दृष्टि से आपका कार्यक्रम बनाया गया। पीटर मारित्ज़बर्ग, लेडी स्मिथ, डनहौज़र, न्यूकासिल, डंडी, ग्लेंको आदि स्थानों मे आठ व्याख्यान हुये।

२९ जनवरी को डर्बन म पहुंच गये। ३० जनवरी को गांधी दिवस के अवसर पर डर्बन म व्याख्यान हुये।

अब मध्य नेटाल मे प्रचार प्रारम्भ हुआ। स्प्रिंगफील्ड, मोप्टपेलियर, पेटिक आदि मे छः व्याख्यान हुये।

इस प्रकार प्रचार करते हुए १५ फरवरी १९५० का दिन आया जब आर्य प्रतिनिधि सभा की रजत जयन्ती होनी थी। १५ फरवरी से २७ फरवरी तक पूरे दिन जयन्ती मनाई गई। २६ फरवरी को श्री आर० बोधासिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा नेटाल ने नये भवन की नींव डाली और दस हजार पौंड देने का वचन दिया। २५ फरवरी को सर्व धर्म सम्मेलन था। जयन्ती के अवसर पर आपने दस व्याख्यान दिये। इसके अतिरिक्त डर्बन विश्वविद्यालय, थियासोफीकल सोसाइटी (यूरोपियन संस्था), वा० एम० सी० ए० [यूरोपियन संस्था] में भी व्याख्यान दिये।

आपका पासपोर्ट ३० मार्च तक के लिये था। मित्रों के अनुरोध से पासपोर्ट की अवधि बढ़ा दी गई और ट्रांसवाल और केपकोलोनी में यात्रा करने की अनुमति मिल गई। रेल से जोहान्सबर्ग, फिर कार से प्रिटोरिया गये। वायुयान से किम्बरले, केपटाउन, पोर्ट एलिजाबेथ ईस्ट लण्डन आदि में व्याख्यान देकर पांच सप्ताह मे डर्बन लौट आये। यदि वायुयान का साधन न मिलता तो इतनी लम्बी यात्रा समाप्त न होती।

एक सप्ताह अब और डर्बन में रहना था। विदाई का रोचक प्रोग्राम बना। कई सहभोज दिये गये और विदाई की सभाएं हुईं ३० अप्रैल को डर्बन में एक सार्वजनिक सभा की गई। विदाई में १०१ पौण्ड अर्थात् लगभग १३००) निजी उपयोग के लिये दिये गये। सनातन धर्म सभा ने १५ गिन्नियां दीं। उपाध्याय जी ने यह सब सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को भेंट कर दिया कि इस धन से दक्षिणी अफ्रीका वासियों के लिये साहित्य तैयार किया जाय। ३ मई को सार्वजनिक भोज दिया गया। ४ मई को २ बजे पश्चात् करंजा जहाज पर पहुचे। ५ मई को १० बजे आर्य भाई-बहिनों ने आपको विदाई दी। जहाज चल पड़ा।

दक्षिण-पूर्व एशिया की यात्रा

आर्यसमाज मांडले (बर्मा) के मंत्री श्री शादीलाल जी ने श्री उपाध्याय जी को निमन्त्रण दिया। इस अवसर को भी आपने हाथ से न जाने दिया। १२ दिसम्बर को ७ बजे कलकत्ते से हवाई जहाज पर चले और दोपहर होते-होते रंगून पहुंच गये। हवाई अड्डे पर डा० ओम्प्रकाश तथा अन्य आर्य भाई स्वागतार्थ आ गये थे। रंगून के आर्य भाइयों ने उपाध्याय जी को दिसम्बर भर अपने यहां ही रहने को बाध्य किया। श्रीमती सुम्बा के ऊपर, जो आर्यसमाज रंगून की प्रधान थीं, भोजन, निवास का भार पड़ा। २७ दिसम्बर को रंगून विश्वविद्यालय की बर्मा-भारत-संस्कृति समिति का अधिवेशन होने वाला था। डा० ओम्प्रकाश ने अनुरोध किया कि इस अवसर पर पण्डित जी का व्याख्यान हो व्याख्यान का विषय था "A bird's eyeview of Vedic Philosophy"। कुछ व्याख्यान आर्यसमाज मन्दिर रंगून में हुए। २१ दिसम्बर १९५१ को आपके स्वागत में एक बड़ी चाय पार्टी दी गई जिसमें कई सौ सज्जनों ने भाग लिया, जिनमें भारत के

राजदूत, पॉलिस के लॉर्ड मेयर बर्मा के चीफ जस्टिस, ह्यूमेनीटैरियन लीग के मन्त्री ऊसाम-लिन, अमरीका के अर्थ विशेषज्ञ मिस्टर सोमवर्न जी थे। अंग्रेजी में व्याख्यान हुआ। अखिल ब्रह्मदेशीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन, रामकृष्ण मठ, मारवाड़ी युवक समाज, ह्यूमेनिटेरियन लीग में व्याख्यान होते रहे।

३० दिसम्बर को हवाई जहाज से आप मांडले आये। आप श्री रामलाल जुनाठी के स्थान पर ठहराये गये। समाज मन्दिर विशाल बना है उसी में व्याख्यान होते रहे। २७ जनवरी को मांडले के प्रसिद्ध एडवोकेट ऊ खिन मांडले के घर पर व्याख्यान हुआ। आपके प्रभाव से बर्मा, भारत, कल्चर लाज की स्थापना की गई।

२८ जनवरी को आप रंगून लौट आये। अखिल बर्मा हिन्दी साहित्य सम्मेलन का वार्षिकोत्सव ४, ५ फरवरी को मनाया गया। २ फरवरी को अखिल बर्मा इण्डियन कांग्रेस का उत्सव था। इन दोनों में आपके व्याख्यान हुए।

६ फरवरी को रंगून से लाशो गये। वहां पर आपका व्याख्यान हुआ। सभापति का आसन लाशो के मेयर ऊ बा ई ने ग्रहण किया। कुछ मुसलमानों ने व्याख्यान सुनना चाहा। उनके लिये व्याख्यान का विषय रक्खा गया, 'आध्यात्मिक दुःख ही सब दुःखों का मूल है।'

१५ फरवरी से २४ तक आप मांडले में रहे। २४ फरवरी को बैंकाक [स्याम] के लिये चल दिये। रंगून आये, पासपोर्ट ठीक कराया और १ मार्च को थाईलैंड की राजधानी बैंकोक में आ गये। समाज के मन्त्री तथा प्रधान हवाई अड्डे पर स्वागतार्थ मिले। आप २२ मार्च तक बैंकाक में रहे। फिर सिंगापुर के लिए प्रस्थान किया। थाई-भारत कल्चर लाज के हिन्दू हाई स्कूल के हाल में व्याख्यान होते रहे। ९ मार्च को आर्यसमाज में व्याख्यान हुआ। १२ मार्च को होली के उत्सव में सम्मिलित हुये आर्य भाइयों का आग्रह था कि सिंगापुर में दो मास रहा जाय पर मांडले का उत्सव १८ अप्रैल को था। जिसमें ब्रह्मदेशीय आर्य समाजों के प्रतिनिधियों को निमन्त्रित किया गया था। १० अप्रैल से १८ मई तक आप मांडले में रहे और सदा आपके व्याख्यान होते रहे।

इस यात्रा में श्री उपाध्याय जी के उद्योग से काफी समाज का प्रचार बढ़ा। आर्य समाजियों में उत्साह आया और धर्म प्रचार में उनकी रुचि बढ़ी।

चीनी तथा बर्मी सत्यार्थप्रकाश

श्री उपाध्याय जी ने निश्चय किया कि विदेशी भाषाओं में सत्यार्थप्रकाश के संस्करण निकाले जायें। दिल्ली के श्री गोविन्दराम जी ने सहायता देने का वचन दिया। प्रयाग विश्वविद्यालय के चीनी भाषा के प्रोफेसर डा० चाऊ को आपने यह कार्य सौंपा। सत्यार्थप्रकाश का अनुवाद हुआ, चीनी संस्करण छपकर तैयार हो गया।

दुर्भाग्यवश गोविन्दराम का देहावसान हो गया। इससे बड़ी अड़चन पड़ी। बनारस के श्री किसिमा ने बर्मी भाषा में अनुवाद करना प्रारम्भ कर दिया था। उनको रुपया देना था। सौभाग्य से यह अनुवाद पूरा हो गया है और इसका प्रकाशन रंगून की आर्य समाज कर रही है। आपका विचार था कि पांडीचेरी जाकर फ्रेंच में अनुवाद कराया जाय। पर एकाएक आप रुग्ण हो गये, श्रीमती कलादेवी जी की अवस्था शोचनीय हो गई। काम रुक गया।

श्री उपाध्याय जी का जीवन वृत्त अधूरा रह जायगा। यदि इसमें उनकी धर्मपरायण पत्नी श्रीमती कलादेवी का उल्लेख न किया जाय। अधिक शिक्षा न पाकर भी उन्होंने जीवन भर बड़े धैर्य और त्याग से कार्य किया। श्री उपाध्याय जी के मार्ग में वे सदा सहायक ही रहीं। आर्य समाज म उनकी अपार भक्ति थी। आपने ३५००) प्रयाग के आर्य समाज मन्दिर चौक के निर्माण में दिये थे। आपने डी० ए० वी० हाई स्कूल में १०००) का दान दिया था। आर्य कन्या पाठशाला की आप ११ वर्ष तक मन्त्राणी रहीं। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की कई वर्षों तक सदस्या रही हैं। स्त्री समाज अनुसूइया प्रयाग की आप बीस वर्षों तक सदस्या रहीं हैं। स्त्री समाज अनुसूइया प्रयाग की आप बीस वर्षों से प्रधान थी।

उपाध्याय जी का परिवार

उपाध्याय जी का एक बड़ा परिवार है। ४ पुत्र, एक पुत्री, ४ पुत्रवधुयें, १ जामाता, ८ पौत्र, ४ पौत्रियां, १ दौहित्री, १ दौहित्र, १ पौत्रवधू तथा एक प्रपौत्री है। परिवार के सदस्यों की संख्या ही अधिक नहीं है, उपाध्याय जी ने उन्हें अधिक से अधिक गुणी बनाने का यत्न किया है। सबसे बड़े पुत्र डा० सत्यप्रकाश, इलाहाबाद यूनिवर्सिटी में रसायन शास्त्र के प्राध्यापक, विद्वत्ता, सरलता आदि गुणों से युक्त सज्जन हैं। वे हिन्दी के एक अच्छे लेखक एवं रसायन शास्त्र के माने हुये विद्वान् हैं। दूसरे पुत्र श्री विश्वप्रकाश आर्य समाज के अच्छे कार्यकर्त्ता हैं। तीसरे पुत्र श्री श्रीप्रकाश दयानन्द कालेज, कानपुर में प्राध्यापक हैं और अच्छे सामाजिक कार्यकर्त्ता हैं। सबसे बड़ी पुत्र-वधू श्रीमती रमादेवी जी, पी० एच० डी० आर्य कन्या इन्टर कालेज प्रयाग की प्रिंसिपल हैं। अन्य सदस्य भी अपने अपने कार्य क्षेत्र में विशेष स्थान रखते हैं। इस प्रकार के शिक्षा, सामाजिक सेवा, लेखन कला आदि विशेषताओं से पूर्ण सदस्यों वाले कम परिवार होंगे।

★

आर्यजगत् के विख्यात नेताओं एवम् विद्वानों द्वारा स्वर्गीय गंगाप्रसाद जी उपाध्याय को अर्पित

श्रद्धांजलियां

(१)

सन १९४९ या १९५० की बात है कि श्री उपाध्याय जी श्री सर्वदानन्द साधु आश्रम (अलीगढ़) के वार्षिकोत्सव पर गये थे। एक दिन एक रात्रि ठहरे थे। व्याख्यान भी हुआ। राजगुरु श्री पं० धुरेन्द्र जी शास्त्री और श्री उपाध्याय जी वीतराग पूज्यपाद स्व० श्री स्वा० सर्वदानन्द जी महाराज के कमरे में ही ठहरे थे। मैं दोनों की सेवा में नियुक्त था।

दोपहर में श्री राजगुरु जी ने अपना शाल मुझे रखने को कहा। वहां दोनों के दो बिस्तर खुले थे। एक बिस्तर तख्ता पर खुला था।

खाट वाले बिस्तर पर शाल को रखकर चला आया। उसी दिन श्री उपाध्याय जी को प्रयाग वापस जाना था। वे लगभग १ या २ बजे मध्याह्न में अलीगढ़ को चल पड़े और शाल बिस्तर में बंध गया। सायंकाल को श्री राजगुरु जी ने शाल मांगा। मैंने कहा कि शाल खाटवाले बिस्तर पर रख दिया था। वे बड़े दुःखी हुए कुछ अविश्वास भी हुआ। परन्तु दूसरे दिन ही अलीगढ़ से श्री सुरेन्द्र जी प्रधान आश्रम के पास तार द्वारा श्री उपाध्याय जी ने बिस्तार के साथ शाल के आने की सूचना दी।

यह घटना पिछले वर्ष आर्यसमाज सुभाष नगर प्रयाग के उत्सव पर श्री उपाध्याय जी को मैंने सुनाई वह हंसने लगे।

वस्तुतः उपाध्याय जी सशक्त लेखक थे और सर्वथ आर्य समाज के लिए जिये और आर्य समाज के लिये मरे।

मैं शतशः श्रद्धाञ्जलियां उनकी स्मृति में समर्पण करता हूं। साथ ही उनके सुयोग्य पुत्रों से भी कामना करता हूं कि सर्वथ वैदिक साहित्य के भण्डार को भरते रहें।

—पं० विश्वबन्धु शास्त्री
उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र०

(२)

श्री उपाध्याय जी आर्य जगत् के मौलिक प्रतिभावान व्यक्तियों में से एक विशिष्ट व्यक्ति थे। लोकेषणा का अति क्रमण कर सदा आर्य समाज को यथार्थ दिशा में प्रगति करने की प्रबल प्रेरणा देने वाले और कभी विरोध बाधाओं की चिन्ता न करने वाले महान् निर्भीक कर्मठ नेता थे। वैदिक दर्शन, कर्मकाण्ड, समाज शास्त्र के प्रबल समर्थक एवं व्याख्याता होते हुए भी वैदिक राजधर्म की यथार्थ व्याख्या करने से भी उन्होंने कभी मुख नहीं मोड़ा। महर्षि दयानन्द ने जिस राजधर्म की विशद व्याख्या की है, उपाध्याय जी निश्चय उसके समर्थक थे किन्तु भारत की प्रचलित राजनीति के दूषित प्रभाव से आर्य समाज को अलिप्त बनाये रखना मात्र उनका लक्ष्य था।

वैदिक धर्म को देशव्यापी एवं विश्व-व्यापी बनाने के स्वप्न को वह सदा साकार रूप देने में प्रयत्नशील रहते थे। अमर शहीद प० लेखराम एवं वैदिक वाङ्मय के प्रबल प्रचारक स्वामी दर्शनानन्द जी की भांति वैदिक साहित्य सृजन करना उनके जीवन का एक महान् लक्ष्य था। वैदिक दर्शन एवं सिद्धान्तों की गुत्थियों को सुलझाने वाले निश्चय वह एक सिद्ध हस्त लेखक, व्याख्याता एवं प्रगल्भ वक्ता थे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री के नाते देश देशान्तरों में महर्षि दयानन्द के सन्देश को पहुंचाने में वह

[शेष पृष्ठ १२ कालम ३ पर)

श्री उपाध्याय जी की साहित्य सेवा

✱ श्री विश्वप्रकाश जी. प्रयाग

८ सितम्बर के आर्यमित्र में श्री उपाध्याय जी की साहित्य सेवा का कुछ उल्लेख हुआ है, उसके उपरान्त अनेक पुस्तकें प्रकाशित हुई। "धर्म-सुधासार" नामक पुस्तक की २०,००० प्रतियां प्रकाशित हुई। यह लागत मात्र पर आर्यसमाजों को दी गई। २५) की १०० पुस्तकें। इसमें आर्यसमाज के सिद्धान्त तथा कार्य का वर्णन है। वैदिक प्रकाशन मन्दिर ने क्रमशः अनेक पुस्तकें प्रकाशित कीं। (१) राष्ट्र निर्माता दयानन्द (२) सनातन धर्म (३) संध्या क्या ? क्यों ? कैसे ? (४) भारतीय उत्थान और पतन की कहानी (५) संस्कार प्रकाश, (६) सत्यार्थ प्रकाश एक अध्ययन (७) धर्म कर्म की कसौटी पर कुछ ट्रैक्ट भी प्रकाशित किये वैदिक फिलासफी अंग्रेजी में। १—वेदों की अजमत २—कुरबानी क्यों ? [उर्दू में)। ट्रैक्ट विभाग की ओर से उर्दू पक्ष में, ग्रंथ के लिखने में लगभग १५ वर्ष लगे। श्री उपाध्याय जी ने एक मौलवी गुरु रखकर अरबी पढ़ी और कुरान का अध्ययन किया।

इस पुस्तक के निकलने पर मुसलमानी जगत् में बड़ी सनसनी मची, कुछ सोचने लगे कि इस ग्रन्थ को जब्त कराया जावे। परन्तु श्री उपाध्याय जी की शैली इतनी उत्तम थी कि कहीं भी हाथ रखने को स्थान न मिला। कुरान या हजरत मुहम्मद साहब जहां भी नाम आया बड़े आदर सूचक शब्द प्रयोग किये गये। कामूलन कोई पकड़ न थी। प्रबल युक्तियां दी गई थीं, उर्दू समाचार पत्रों के उद्धरण थे, मुसलमानी विद्वानों के उद्धरण थे।

मुसलमानों की ओर से चन्दा होकर इसका उत्तर दो जिल्दों में दिया गया। एक व्यक्ति ने चिढ़कर लिखा पंडित जी मुसलमानी जमाना नहीं है, नहीं तो आपको पीठ पर कोड़े पड़ते।

साहित्य-सौरभ

१—आहे वेजुबां २—मुसद्दस दयानन्द प्रकाशित हुये।

इस काल का प्रमुख ग्रंथ "वेद प्रवचन" है। दयानन्द-ब्रह्म-विद्यालय हिसार की प्रार्थना पर यह ग्रंथ लिखा गया। इसमें ५० वेद मन्त्रों की विशद व्याख्या है। इसका प्रकाशन इसी संस्था के द्वारा हुआ है। विद्यालय के अध्यक्ष ने कुछ पारिश्रमिक देना चाहा पर उपाध्याय जी ने अपनी उदारता के अनुरूप कह दिया कि संस्था से क्या लेना, इस ग्रंथ से वेदों की महत्ता का परिज्ञान होता है।

मुसलमानी धर्म की आलोचना

इस्लाम धर्म की आलोचना में श्री उपाध्याय जी ने इस्लाम का दीपक नामक ग्रन्थ लिखा। इसका उर्दू रूपांतर "मसाबीहुल इस्लाम" भी प्रकाशित हुआ। संस्थाओं और व्यक्तियों के सहयोग से उर्दू संस्करण की एक हजार प्रतियां इस्लामी केन्द्रों, लोक सभा के सदस्यों, ईरान, पाकिस्तान, मिश्र, अरब आदि में मुफ्त बांटी गई। इस में यह भी लिखा गया कि स्वामी दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश के उपरान्त यह प्रभावशाली प्रकाशन हुआ है, पर यह उससे भी अधिक खतरनाक है। क्योंकि मिठास के साथ जहर उगला गया है।

गत वर्ष एक और ग्रंथ पंडित जी ने लिखा "आर्यसमाज और इस्लाम" इसमें दो धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन है। इसके उर्दू संस्करण की भी एक हजार प्रतियां मुसलमानों में बांटी गई।

ब्राह्मण तथा दर्शन ग्रन्थ

श्री पं० जी ने ऐतरेय ब्राह्मण का हिन्दी रूपान्तर किया था जिसका प्रकाशन हिन्दी साहित्य सम्मेलन से हुआ था।

शतपथ ब्राह्मण का सम्पूर्ण भाष्य अनेकों वर्ष से पड़ा था। पर इस बड़ी पुस्तक का प्रकाशन टलता रहा। दो वर्ष हुये दिल्ली से पं० रामस्वरूप शर्मा प्रयाग आये। उन्होंने इसको अपनी संस्था की ओर से प्रकाशित करने का वचन दिया। गत वर्ष इसका प्रथम भाग ८०० पृष्ठ का प्रकाशित हुआ। भाग दो और तीन भी दिल्ली में छप रहे हैं। लगभग ४००० पृष्ठ बड़ी तख्ती के इस पुस्तक में होंगे। आशा है कि इस वर्ष में यह ग्रंथ छप जाएगा।

"मीमांसा प्रदीप" नाम से एक बड़ा ग्रंथ ट्रैक्ट विभाग ने प्रकाशित किया। यह मीमांसा की भूमिका मात्र है।

श्री उपाध्याय जी ने शाबरभाष्य का हिन्दी अनुवाद किया था। यह कोई ५००० पृष्ठ का है। इसके प्रकाशन में पन्द्रह हजार रुपये लगेंगे। हस्तलिखित प्रति पड़ी हुई है। न जाने कब इसका प्रकाशन हो।

जीवन भर लेखनी प्रबलता से चलती रही। एक बार अपने प्रेमी से कह रहे थे कि मैंने जीवन भर न जाना कि कब दशहरा आया, कब दिवाली आई और कब होली चली गई। उनके जीवन का कोई मनोरंजन नहीं रहा। न कोई खेल खेला, न तमाशा देखा। उनकी चिर संगिनी तो केवल 'कलम' थी जो जीवन के अन्तिम समय तक बड़ी तीव्रता से चलती रही इसी कारण अपने जीवन में इतना बड़ा साहित्य छोड़ गये हैं। उनके लिखे हुये पृष्ठों की संख्या कई लाख के लगभग पहुंचेगी। साहित्यकार अमर रहता है—श्री उपाध्याय जी की कृतियां उनके यश में उत्तरोत्तर वृद्धि करती रहेंगी।

●

[पृष्ठ १६ का शेष]

सतत प्रयत्नशील रहे।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान के नाते प्रदेश के कोने-कोने में निरन्तर घूम-घूम कर वैदिक धर्म की पावन ज्योति को जगाना और सभा को लखनऊ में केन्द्रित करने की दृष्टि से भवन क्रय करने के निमित्त २१०००) मांग कर जुटाना उनका निश्चय महान साहसिक कार्य था।

सौ से अधिक ग्रन्थ एवं ट्रैक्ट हिन्दी अंग्रेजी, संस्कृत व उर्दू में लिखकर उनको प्रकाशित कराना और उनके विक्रय की व्यवस्था करना उनका एक और महान् कार्य था। चीनी भाषा में सत्यार्थप्रकाश लिखवाकर प्रकाशित करना। उनका महान् प्रशंसनीय कार्य था।

आज उनके निधन पर मैं नतमस्तक अपनी श्रद्धा की अञ्जली समर्पित करता हूं।

—शिवदयालु

(३)

'अर्जुन' में यह पढ़कर कि पूज्य उपाध्याय जी दिवंगत हो गये। बहुत शोक हुआ दिन भर उदासीनता रही। इस पितृ वियोग जन्य दुःख में आपके सब परिवार के साथ सहानुभूति है।

हा शोकः

येना मन्द मरन्द सौरभमय
साहित्य मुत्पादितम्
आर्याणं च समापतित्व
मकरोत्पुण्य मावेन यः
विद्या बुद्धि विवेक
युक्तमकरोद्विद्यार्थि बन्धनुयः
स्वर्यातः सपिकोय
कीर्तिमतुषां गंगाप्रसादः सुधीः

—पं० बिहारीलाल जी, शास्त्री

राजा रणञ्जयसिंह जी, अमेठी राज्य प्रयाग पधारे

(४)

श्री उपाध्याय जी के निधन की सूचना प्राप्त होते ही राजा साहब अमेठी से चलकर मोटर में श्री उपाध्याय जी के निवास स्थान पर पहुंचे। आपके साथ श्री राजकुमार जी तथा अनेक व्यक्ति थे। आपने कहा—"मैं तार देकर सम्वेदना प्रकट करने की सोच रहा था, फिर हृदय में उद्गार उठा कि उस महान् व्यक्ति के सम्मान में उनके घर पर स्वयं सम्वेदना प्रकट करना चाहिये।" आपने अमेठी के डिगरी कालिज में सभा की फिर मोटर द्वारा घर पर पधारे और अपने प्रेम और श्रद्धा का पूरा परिचय दिया।

(५)

आदरणीय पूज्य पिता जी के स्वर्गवास का मुझे दुःख है। मैं घर से बाहर प्रोग्राम पर गया हुआ था। वहां मुझे आर्य भाइयों ने बताया तो मैं बहुत दुःखी हुआ कि आर्यसमाज में एक पुनीत दिग्गज विद्वान् की कमी को पूरा करना सम्भव नहीं। पूज्य पं० जी बड़े धीर वीर गम्भीर तथा अद्भुत प्रतिभाशाली अलौकिक विद्वान् थे। बहुत बड़े महापुरुष थे। मेरे साथ उनका प्रेम अपने परिवार के बन्धु की भांति था। वे सारे जगत् के थे। अकेले सत्यवक्ता महापुरुष थे। आज सारा आर्यसमाज उनके बिना अनाथ वत् प्रतीत हो रहा है।

—पं० शान्तिप्रकाश
शास्त्रार्थ महारथी

स्वर्गीय पं० गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय-एक श्रद्धांजलि

ता० २९-८ १९६८ ई० दिन बृहस्पतिवार को ९॥ बजे सवेरे आर्य जगत् के सूर्य अन्ततः पण्डित गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय ने ८७ वर्ष की आयु में महाप्रयाण कर ही दिया। उन्हें निश्चय ही चरान्तकालीन मुक्ति मिली किन्तु आर्य समाज अकिंचन हो गया।

पण्डित गङ्गाप्रसाद जी ऐसे ही अवतारों में थे जिन्होंने अपने मौलिक चिन्तन पांडित्य, प्रतिभा विस्तृत एवं गहन अध्ययन से महर्षि दयानन्द और उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज के सिद्धान्तों और दर्शन पर सौ से अधिक ग्रन्थों का प्रणयन किया—एक से एक विद्वत्तापूर्ण, उच्च कोटि के ग्रन्थ और ट्रैक्ट १०० से अधिक हिन्दी, उर्दू, और अंग्रेजी में भी। इनमें से अनेक ग्रन्थों को अन्तर्राष्ट्रिय मान्यता और ख्याति मिली। मंगलाप्रसाद पुरस्कार, अमृतधारा पुरस्कार और उत्तर प्रदेश सरकार के पुरस्कार मिले। अब तक वैदिक क्षेत्र में महर्षि दयानन्द को समाज सुधारक मात्र माना जाता था। 'महर्षि' दयानन्द का दर्शन जैसे बृहद् ग्रन्थों से वैदिक दर्शन के अध्ययन और शोध सम्बन्धी मार्ग प्रशस्त हुए एवं डी०फिल० तथा डी० लिट् जैसी उच्चतम उपाधियों के लिये दयानन्द और वैदिक दर्शन पर शोध की मान्यता स्वीकार की गई। यह उपाध्याय जी के रचनात्मक योगदान की सबसे बड़ी उपलब्धि हुई।

आर्य समाज चौक के भवन निर्माण के लिये आपकी पत्नी ने ३२२०) रु० की लागत से बना अपना सोने का हार उतार कर दे दिया। आर्य कन्या पाठशाला और आर्य समाज की अन्य संस्थाओं की अपने तन, मन, धन, से सेवा की। सब के मित्र और सर्वप्रिय व्यक्ति के रूप में पण्डित जी ने आर्य समाज को मौलिक एवं रचनात्मक दिशा दी, अपना समग्र जीवन ही जनकल्याणार्थ समर्पित कर दिया। दयानन्द के दर्शन एवं सामाजिक सुधार कार्य के रूप में पण्डित जी आर्य जगत् को सदैव प्रेरणा की सरिता में निमज्जित कराते रहेंगे। वे शरीर के रूप तो नहीं रहे, पर उनकी आत्मा सदैव दिव्य मार्ग प्रशस्त कराती रहेगी।

—कृष्णादेवी, अध्यक्षा

स्त्री आ० स०, अतरसुइया, इलाहाबाद ३

श्रद्धेय श्री प० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय के निधन पर विराट् शोक सभा

आर्य समाज के सुप्रसिद्ध विद्वान्

अन्तर्राष्ट्रिय ख्याति प्राप्त अप्रतिम लेखक आर्यसमाज के उन्नायक श्री प० गंगाप्रसाद उपाध्याय के निधन पर रविवार १ सितम्बर को प्रातःकाल १० बजे से आर्यसमाज मन्दिर चौक में डा० रमतीप्रसाद चतुर्वेदी भूतपूर्व अध्यक्ष संस्कृत विभाग प्रयाग विश्वविद्यालय की अध्यक्षता में एक विराट शोक सभा हुई। इस अवसर पर अपने श्रद्धेय आचार्य वर के प्रति समवेदना प्रकट करने नगर के विभिन्न क्षेत्रों से आर्यजन समाजसेवी तथा नागरिक एकत्र हुए थे समाज कक्ष खचाखच भरा हुआ था। आर्य संस्थाओं के अतिरिक्त हिन्दी साहित्य सम्मेलन, कांग्रेस कमेटी, आदि संस्थाओं व महात्मा आनन्द गिरि जी दयास्वरूप व कैलाशबिहारी राय आदि ने भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित कीं अन्त में शोक प्रस्ताव पारित किया गया।

—राधेमोहन मन्त्री

आर्यसमाज चौक प्रयाग।

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, हाथरस

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय हाथरस के समस्त कुलवासियों की यह सभा आर्य जगत के यशस्वी लेखक श्री प० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय एवं श्री प्रेमचन्द्र जी शर्मा के पूज्य पिता श्री प० किशोरीलाल जी शर्मा के निधन पर हार्दिक शोक सम्वेदना प्रकट करती है।

प्रभु से प्रार्थना है कि वह दिवंगत आत्माओं को शांति प्रदान करे एवं शोक सन्तप्त परिवारों को धैर्य दे।

मुख्याधिष्ठात्री

आर्य समाज सदर मेरठ

आर्य जगत् के किन्तु समस्त भारत के लब्ध प्रतिष्ठ, दार्शनिक विद्वान, सिद्ध हस्त लेखक, उद्भट ओजस्वी व्याख्याता, ग्रन्थकार एवं प्रसिद्ध वाग्मी श्री स्व० प० गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय एम० ए० के स्वर्गवास होने पर अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि प्रस्तुत करता है और उनके परिवार के साथ सम्वेदनापूर्ण सहानुभूति प्रकट करता है।

आर्य्यसमाज मीरजापुर

आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान प० गङ्गाप्रसाद उपाध्याय के निधन पर शोक प्रकट करती है, तथा अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करती है एवं परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि वह दिवंगत आत्मा को शांति एवं शोक संतप्त परिवार को इस वज्राघात को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—आत्माराम पाडे मन्त्री

एन सी वैदिक इण्टर कालेज कुल्तानपुरा, आगरा छावनी

नारायणदास छुन्नूमल वैदिक इण्टर कालेज के हम सभी छात्र व अध्यापकगण आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान अनेक ग्रन्थ रत्नों के प्रणेता एवं मंगलाप्रसाद पारितोषिक प्राप्तकर्ता श्री गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय के निधन पर अत्यन्त शोक प्रकट करते हैं तथा परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वह दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें तथा उनके वियोग में सन्तप्त परिवार को शोक-भार वहन करने की सामर्थ्य प्रदान करें। —रोशन लाल गुप्त प्रधानाचार्य

आर्यसमाज सुलतानपुर

आर्यजगत के सुविख्यात विद्वान दार्शनिक एवं लेखक श्री गंगाप्रसाद जी उपाध्याय के निधन का समाचार सुलतानपुर के आर्य सामाजिकों को अत्यन्त दुःखद वज्रपात सा लगा। निःसन्देह उपाध्याय जी के निधन से सम्पूर्ण आर्य जगत की अपूरणीय क्षति हुई। इससे समाज कल्याण का एक [illegible] शिखर ही ध्वस्त हो गया है। [illegible] मय भगवान से प्रार्थना करते हैं कि वह उनसे सम्बन्धित सभी जनों एवं उनके परिवार के शोकग्रस्त लोगों को वह धैर्य दे कि इस महती क्षति को सहन कर सकें और श्री उपाध्याय जी की आत्मा को चिर शान्ति प्रदान करे।

—अमरजीतसिंह मन्त्री

नगर आर्यसमाज बुलन्दशहर

श्री गंगाप्रसाद उपाध्याय आर्यजगत के महान विद्वान और श्री कुंवर बहादुर, उपमन्त्री आर्यसमाज बुलन्दशहर की सुपुत्री के निधन पर नगर आर्यसमाज बुलन्दशहर ने एक मिनट का मौन रखकर गहरा शोक प्रकट किया गया तथा ईश्वर से प्रार्थना की गई दिवंगत आत्माओं को शान्ति तथा परिवार जनों को धैर्य प्रदान करे। —इन्द्रदेव उपमन्त्री

विशेष विज्ञप्ति

उत्तर प्रदेश की समस्त आर्यसमाजों को सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का प्रान्तीय आर्य सम्मेलन मेरठ आर्योपप्रतिनिधि सभा की ओर से गढ़मुक्तेश्वर के मेले के अवसर पर १, २, ३, ४ नवम्बर को होगा। जिसमें समस्त नेता, अधिकारी और उच्च कोटि के विद्वान सन्यासी आमन्त्रित किये गये हैं। उन दिनों में बड़ी समाजें अपनी उत्सव तिथियाँ स्थगित कर दें। जिससे प्रान्तीय सम्मेलन को सफलतापूर्वक मनाया जा सके।

—[illegible] शास्त्री

वरिष्ठ उप-प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

आर्यसमाज अलीगढ़

दि० ८-९ ६८ के साप्ताहिक अधिवेशन की सार्वजनिक सभा में श्री गंगाप्रसाद जी उपाध्याय के देहावसान पर शोक समवेदना प्रकट की गई व उनके जीवन की घटनाओं पर प्रकाश डाला गया। २ मिनट मौन रहकर शोक प्रस्ताव पास हुआ। —जयवीरराघव आर्य

शोक सभा

वैदिक विद्वान् प्रवर प० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय के आकस्मिक निधन पर निम्न संस्थाओं के आचार्य, प्रधानाध्यापक, अध्यापक अध्यापिकायें तथा छात्र छात्रायें हार्दिक शोक प्रकट करते हैं। साथ ही सभी इस बात का अनुभव करते हैं कि आर्य जगत का एक अनमोल रत्न छिन गया है। जिसकी तत्काल क्षति पूर्ति सरल कार्य नहीं है। सर्व शक्तिमान प्रभु दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा संतप्त परिवार को अपार दुःख सहने की शक्ति प्रदान करें।

१—दयानन्द कालेज, अजमेर, २—दयानन्द ड० उ० मा० विद्यालय, अजमेर, ३—विद्यालय शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान, अजमेर, ४—विरजानन्द ड० उ० मा० विद्यालय, अजमेर, ५—डी० ए० प्राथमिक विद्यालय, अजमेर, ६—विरजानन्द प्राथमिक विद्यालय, अजमेर, ७—प्रियालाल कन्या विद्यालय अजमेर।

—दत्तात्रेय वाब्ले आचार्य

आर्यसमाज शाहजहांपुर

आर्यसमाज शाहजहांपुर की साधारण सभा में आर्यसमाज के महान पण्डित व साहित्यकार श्रीमान् प० गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय व श्रीमान मास्टर [illegible] जी वानप्रस्थी [illegible] की आर्यसमाज शाहजहांपुर के प्रतिष्ठित सभासद थे के निधन पर शोक प्रस्ताव स्वीकार करती है तथा ईश्वर से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति व शान्ति दे।

—डा० [illegible]

केन्द्रीय आर्य सभा, १२०।१३४ [illegible] कानपुर

केन्द्रीय आर्य सभा का वार्षिक अधिवेशन दिनांक ८ सितम्बर, १९६८ को सायंकाल ४ बजे आर्य समाज मन्दिर [illegible] रोड, कानपुर में हुआ। कानपुर की सभी आर्य समाजों के प्रतिनिधि उपस्थित थे। श्री योगेन्द्र सरीन मन्त्री द्वारा पिछले वर्ष का विवरण प्रस्तुत किया गया। जो सर्व सम्मति से स्वीकृत किया गया। सभा में सर्व श्री पं० रामचन्द्र देहलवी, डा० हरिशंकर जी, श्री पं० दामोदर सातवलेकर जी, श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय, श्री स्वा० अमृतानन्द जी, श्री [illegible] बिहारीलाल शर्मा [illegible] शर्मा हाथरस के निधन पर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। तथा दिवंगत आत्माओं की शांति के लिये परमात्मा से प्रार्थना की गई। तत्पश्चात् अगले वर्ष के लिये निम्न पदाधिकारी चुने गये :

प्रधान—श्री [illegible]

उप प्रधान—श्री [illegible]

मन्त्री—श्री योगेन्द्र सरीन

उप मन्त्री—श्री [illegible] गौतम

कोषाध्यक्ष—श्री [illegible] मल्ला जी

[illegible] विद्यार्थी सभा, श्री पं० [illegible] जी, अध्यक्ष राज्य आर्य सभा श्री देवीदास आर्य (सभासद नगर निगम) अध्यक्ष [illegible] सभा [illegible] कुमार शास्त्री [illegible] की प्रत्येक समिति से २-२ अंतरंग सदस्य लिये गये।

—योगेन्द्र सरीन, मन्त्री

पारिवारिक सत्संग

[illegible],

केन्द्रीय आर्य सभा, कानपुर के तत्वावधान में नगर के समस्त आर्य परिवारों का सत्संग दिनांक २२-९-६८ दिन रविवार को सायंकाल ५ बजे सर्व श्री [illegible] सिंह एवं [illegible] सिंह, १३५ १३६ ब्लाक, किदवईनगर निवास स्थान के सामने (४० दुकानों के पास) होगा। कृपया सपरिवार समय पर पधारें।

डा० के० पी० [illegible] योगेन्द्र सरीन
प्रधान मन्त्री
केन्द्रीय आर्य सभा, कानपुर

आर्यसमाज लाजपत नगर का उत्सव

आर्यसमाज लाजपत नगर कानपुर का वार्षिकोत्सव दिनांक ११.१२ व १३ अक्तूबर को बड़े समारोह से मनाया जायेगा। इस अवसर पर आर्यजगत् के सुविख्यात सन्यासी, विद्वान् वक्ता और भजनोपदेशक पधारेंगे। उत्सव से पहले एक सप्ताह तक कथा होगी। नगर कीर्तन व [illegible] की भी योजना है।

—योगेन्द्र सरीन मन्त्री

उत्सव—

२१ सितम्बर से २ अक्तूबर तक आर्यसमाज [illegible] की कीर्ति विजयादशमी [illegible] समारोह पूर्वक मना रहा है। जिसमें आर्यजगत् के विद्वान, महात्मा, उपदेशकों को आमंत्रित किया गया है।

—जयनारायण आर्य

—[illegible] साधु आश्रम [illegible] का वार्षिक महोत्सव दि० २२, २३, २४ नवम्बर सन् ६८ को धूमधाम से मनाया जायगा। जिसमें साधु महात्मा और उच्चकोटि के उपदेशक पधारेंगे।

—बाबूराम उपमन्त्री

—आर्यसमाज [illegible] का वार्षिक उत्सव २५, २६, २७, २८ अक्तूबर को होना निश्चित हुआ है।

—आर्यसमाज उझानी (बदायूं) का ५९ वां वार्षिकोत्सव ५, ६, ७ अक्तूबर को मनाया जावेगा। जिसमें सन्यासी विद्वान् तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

—बनवारीलाल मन्त्री

—आर्यसमाज [illegible] (आजमगढ़) का उत्सव १, २ और ३ नवम्बर को होगा।

—मन्त्री

—आर्यसमाज [illegible] का वार्षिक उत्सव दि० २७-९-६८ से २९-९-६८ तक मनाया जायेगा। इस अवसर पर आर्यजगत के कई सुप्रसिद्ध विद्वान तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

रवीन्द्र कुमार प्रधान
महेशचन्द्र [illegible] मन्त्री

—आर्य समाज [illegible] का उत्सव इस वर्ष दिसम्बर ६, ७ तथा ८ तारीख को मनाया जाना निश्चित हुआ है।

आर्य उपप्रतिनिधि सभा प्रयाग

आर्य उप प्रतिनिधि सभा प्रयाग के तत्वावधान में आयोजित प्रयाग निवासियों की एक महती सभा, आर्य जगत के सूर्य, वैदिक साहित्य के उच्च कोटि के विद्वान एवं लेखक श्रद्धेय प० गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय के निधन पर शोक एवं सम्वेदना प्रकट करने के हेतु आर्य समाज मन्दिर चौक में सात बजे सायं १-९ १९६८ ई० को श्रीमान [illegible] पति जी त्रिपाठी, न्यायाधीश उच्च न्यायालय प्रयाग के सभापतित्व में हुई जिसमें अनेकों व्यक्तियों ने दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धांजलियां अर्पित कीं तथा शोक प्रस्ताव पारित करते हुये परमपिता जगदीश्वर से प्रार्थना की गई कि उस पुण्य आत्मा को शान्ति, परिवार को धैर्य एवम सभी को दिवंगत आत्मा के जीवन से प्रेरणा प्राप्त करने तथा उनके पद चिह्नों पर चलने की शक्ति प्रदान करें।

—बेनीमाधवसिंह सिनहा
मन्त्री

(पृष्ठ २ का शेष)

जो वीर सेना नायक होता है उसको ही संसार में मान सम्मान मिलता है। वीर शिवाजी, महाराणा प्रताप का नाम आज भी इतिहास में अमर है। जिसकी आत्मा शक्तिशाली होती है, परमात्मा संसार में उसको ही यश देता है। वेद के मन्त्रानुसार यश की कामना ही हमें करनी चाहिये—

"यशो मा द्यावा पृथिवी यशो मेन्द्र बृहस्पती।"

जो आत्मा संसार में शूरत्व को धारण कर यशस्वी होता है उसको परमात्मा, 'सोमो वस्त्रा ण्यसानिवसे' अर्थात् नवीन वस्त्र प्रदान करता है। जिस प्रकार मनुष्य पुराने वस्त्र को त्याग कर नये वस्त्र प्रसन्नता से पहनता है उसी प्रकार परमात्मा आत्मा को नवीन वस्त्र अर्थात् उत्तम योनि प्रदान करता है और उसको यश प्रदान कर उसका नाम संसार में अमर कर देता है। परमात्मा उसको 'ज्ञान रूपी ज्योति पदक' देता है। यह पदक सोने और चांदी का नहीं है। जो आजकल के विश्वविद्यालयों और शिक्षालयों में मिलता है। यह पदक तो परमात्मा के समीपस्थ होने से ही प्राप्त होता है। उसको ही ब्रह्माग्नि से आत्माग्नि प्रदीप्त होती है तभी हमें यह ज्ञान रूपी ज्योति पदक मिलता है तभी हमारी आत्मा सशक्त बन कर जीवन रूपी रथ के आगे चल कर आन्तरिक शत्रुओं पर विजय भी प्राप्त करती है और संसार में यशस्वी बनती है।

शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज कांठ के साप्ताहिक अधिवेशन दिनांक ११-८-६८ को यह प्रस्ताव पारित किया कि श्री बा० फकीरचन्द्र जी बी० ए० भूतपूर्व मन्त्री आर्यसमाज कांठ की धर्म पत्नी के आकस्मिक निधन से समस्त सदस्य-गण शोक एवं हार्दिक दुःख प्रकट करते हैं।

ईश्वर से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे तथा समस्त परिवार को इस महान दुःख को सहन करने का साहस एवं धैर्य प्रदान करे।

वर चाहिये

२१॥ वर्षीय वार्ष्णेय वैश्य कुमारी के लिये, जो एम० ए० फाइनल संस्कृत में पढ़ रही है तथा सुन्दर व स्वस्थ व गृहकार्य में दक्ष है, एक २२-२५ वर्ष की आयु वाला ऐसा कुमार चाहिये जो एम० ए० या एम० एस० सी० या एम० कौम हो और रोजगार पर लगा हो या शीघ्र लगने वाला हो। फोटो व पूर्ण विवरण सहित लिखें।

७ बी—३१, ३३ ३५
—रमाशङ्कर वार्ष्णेय,
१२ बापूनगर, अजमेर

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का ... साप्ताहिक

लखनऊ—रविवार आश्विन ७ शक १८९०, आश्विन शु० ८-वि० स० २०२५, दिनांक २९ सितम्बर १९६८ ई०

इस अंक में पढ़िए !

—जीवन ज्योति ५
—सम्पादकीय ३
—सभा तथा आर सूचनाय ४
—मर्यादा पुरुषोत्तम राम ५
—शङ्का समाधान ६
—अध्यात्म सुधा २
—काव्य कानन, ८
—सिंहावलोकन ९
आयजगत १२
—कहानी-कुञ्ज १३
१—महिला मण्डल १५
२—गोरक्षा आन्दोलन १६
३—अमृत वर्षा १६

वार्षिक मूल्य १०)

छमाही मूल्य ६)

विदेश मे २०)

एक प्रति २५ पै०

परमेश्वर की अमृत वाणी

विश्व रूपी प्रवाह से तरने के निमित्त संगठित होओ, उठो, सम्भलो, दुःखदायी पदार्थों का परित्याग करो, एवम् ज्ञान व शक्ति का संचय करो

अश्मन्वती रीयते संरभध्वमुत्तिष्ठत प्रतरता सखाय । अत्राजहीमोऽशिवा ये असञ्छिवान्वयमुत्तरे माभि वाजान् ॥

[यजुर्वेद अध्याय ३५ मन्त्र १०]

[१] (अश्मन्वती) पत्थरों वाली [पत्थरों तथा,बाधाओं रूपी दुःखदायी विश्व रूपी नदी] (रीयते) बह रही है ।

[२] (सखाय:) समान विचार वालो, साथ-साथ रहने और चलने वाले मनुष्यो (सरभध्वम्) एक साथ रमण करो, एक सम होकर पुरुषार्थ करो ।

[३] (उत+तिष्ठत) उठो,खडे होओ, सम्भलो ।

[४] (प्रतरत) प्रकृष्ट रूप से तरो अच्छी प्रकार से पार करो ।

[५] (ये अशिवा) जो अमङ्गलकारी, दु खदायी (असन्) हैं ।

[६] (अत्र जहीम) यहां ही छोड दो ।

[७] (शिवान् वाजान्) कल्याणकारी ज्ञानात्मक एवम् शक्तिदायक पदार्थों को ।

[८] (अभि व्यम) सर्वत लक्ष्य मे रख कर प्राप्त करते हुए ।

[९] (उत+तरेम) उत्तमता से तर जाओ ।

परमेश्वर की वेद वाणी का सोपान करने वाले आर्य विवेकशील होते हैं । वे जीवन का लक्ष्य जानते और पहचानते हैं, इसलिये सांसारिक विषयों में लिप्त होकर स्वत को सन्तप्त नहीं करते वरन सरस अध्यात्मवाद के आश्रित आत्म-शक्ति को विकसित करते हुए, समान विचारों वालों के साथ, बाधाओ वाली नदी को लांघ कर आनन्द रूपी लक्ष्य को प्राप्त करते हैं । जीवन उद्देश्य से न भटकने वाले आर्यजन ही सारे संसार का उपकार करते हैं और सगठन के महत्त्व को समझ कर उसकी शक्ति से विश्व प्रवाह को नया मोड देते हैं, और योगमय भवन को भोगमय सदन मैं परिवर्तित कर देते हैं ।

हैदराबाद का दशम आर्य्य महा सम्मेलन ऐसे दिव्य सन्देश सुनाने के लिये आर्यों का आह्वान कर रहा है, आर्य शक्ति को सगठन के सूत्र मे बाधने के इस स्वर्णिम अवसर पर आर्य्यजन अपनी कर्त्तव्य परायणता का अनुकरणीय परिचय दें ।

वर्ष ७०

सम्पादक—
—प्रेमचन्द्र शर्मा
सभा मन्त्री

अङ्क ३४

ओ३म् तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये॥
—यजु० अ० ३१ मं० ९

भावार्थ—जो सबसे प्रथम प्रकट था, जो सब जगत् का बनाने वाला है, और सब जगत में पूर्ण हो रहा है, उस यज्ञ अर्थात् पूजने के योग्य परमेश्वर को, जो मनुष्य हृदय रूप आकाश में अच्छे प्रकार से प्रेम भक्ति सत्य आचरण करके पूजन करता है, वही उत्तम मनुष्य है। ईश्वर का यह उपदेश सबके लिये है। उसी परमेश्वर के वेदोक्त उपदेशों से, देव जो विद्वान्, साध्य जो ज्ञानी लोग, ऋषि लोग जो वेद मन्त्रों के अर्थ जानने वाले और अन्य भी मनुष्य जो परमेश्वर के सत्कारपूर्वक सब उत्तम ही काम करते हैं वे ही सुखी होते है क्योंकि सब श्रेष्ठ कर्मों के करने के पूर्व ही उसका स्मरण और प्रार्थना अवश्य करनी चाहिये और दुष्ट कर्म करना तो किसी को उचित ही नहीं।
—महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

अन्तरंग सभा की बैठक लखनऊ में

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश की अन्तरङ्ग सभा का आगामी साधारण अधिवेशन श्री प्रधान जी के आदेशानुसार तिथि आश्विन शु० १५ स० २०२५ वि० तदनुसार दि० ६ अक्तूबर १९६८ दिन रविवार स्थान नारायण स्वामी भवन ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ में मध्याह्नोत्तर २ बजे से होगा। सभा के समस्त अन्तरङ्ग सदस्यों से प्रार्थना है कि वे समय पर पधार कर कृतार्थ करें।

—प्रेमचन्द्र शर्मा
मन्त्री सभा

लखनऊ—रविवार आश्विन ४ शक १८९०, आश्विन शु० पक्ष ८ वि० २०२५
२९ सितम्बर सन् १९६८ ई०, दयानन्दाब्द १४३, सृष्टि सम्वत् १,९७,२९,४९,०६९

"वयम् जयेम त्वया युजा"

पाठकों को समय-समय पर प्रकाशित होने वाले समाचारों एवम् विज्ञप्तियों से यह जानकर हर्ष होना स्वाभाविक ही है कि नवम्बर मास में हैदराबाद की ऐतिहासिक नगरी में दशम आर्य महा सम्मेलन होगा। सम्मेलन की तिथियां ८, ९ व १० नवम्बर १९६८ निश्चित हो चुकी हैं। सम्मेलन का स्थान भी तय हो गया है। नवीनतम प्राप्त समाचारों के अनुसार यह महासम्मेलन नुमायश मैदान मौज़ मगा ही मार्केट के विशाल प्राङ्गण में होगा। यह वही स्थान है जहां १९४५ में अष्टम आर्य महा सम्मेलन का अधिवेशन हुआ था।

यह आर्य महा सम्मेलन सार्वदेशिक स्तर पर है। अन्तर्राष्ट्रिय स्तर की केन्द्रीय संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली के तत्वावधान में इस महा सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण ने इस महा सम्मेलन को आमन्त्रित किया है।

आर्य जगत् में नगर, जिला एवम् प्रान्तीय स्तर पर वार्षिक, अर्धवार्षिक, त्रैमासिक अथवा कहीं-कहीं पर मासिक आर्य सम्मेलनों का आयोजन होता रहता है किन्तु सार्वदेशिक स्तर पर महा सम्मेलन का आयोजन प्रति वर्ष नहीं होता। यह महा सम्मेलन तो तभी होता है जब कोई गम्भीर समस्या उपस्थित होती है और उस पर विचार विमर्श करना एवम् महत्वपूर्ण निर्णय करना आवश्यक हो जाता है।

इस समय आर्य जगत् के सम्मुख एक नहीं अनेक गम्भीर समस्यायें हैं जिनका तुरन्त समाधान होना है। यदि 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' को केवल वाणी और कागज ही सीमित नहीं करना है और उसे यथार्थ मे साकार करना है तो योजनाबद्ध होकर कर्मरत होना होगा और मार्ग में आने वाली समस्त कठिनाइयों व आपत्तियों को दृढ़ता से दूर करना होगा। इस समय कुछ महत्त्वपूर्ण समस्यायें निम्न लिखित हैं:—

(१) गौवध को कैसे रोका जाये और गौ वर्धन कैसे किया जाये?

(२) राष्ट्रिय चरित्र के पतन को कैसे रोका जाये?

(३) शिक्षित वर्ग मे धर्म के प्रति जो अरुचि विकसित हो रही है और ईश्वर के प्रति अनास्था जोर पकड़ रही है, उसके लिये क्या किया जाये?

(४) भारत की पुण्य भूमि पर सम्प्रदायवाद, जातिवाद और प्रान्तवाद के विष को एकत्ववाद के अमृत में कैसे परिवर्तित किया जाये?

(५) राष्ट्र-भाषा हिन्दी के प्रसार को किस भाँति द्रुतगति प्रदान की जाये?

(६) आर्य्य जाति के निरन्तर ह्रास एवम् अन्यमत मतान्तरों के छल कपट से किये जा रहे विकास को कैसे अवरुद्ध किया जाये?

(७) आर्य्य जगत के अन्दर लग रहे विघटन रूपी घुन को कैसे दूर किया जाये?

लिखने की आवश्यकता नहीं है कि अन्तिम समस्या का समाधान होते ही अन्य समस्याओं का निराकरण करना सुगम हो जायगा, क्योंकि संगठन के बिना किसी भी मोर्चे पर विजय पाना सम्भव नहीं है। प्रत्येक अधिवेशन के दो अङ्ग होते हैं जिन्हें बाह्याङ्ग तथा अन्तराङ्ग कहते हैं। बाह्याङ्ग मे व्यवस्था, सुप्रबन्ध, प्रदर्शन, शोभायात्रा, ठाठ सज्जा इत्यादि आते हैं। आज के प्रदर्शनात्मक युग में अपना एक विशेष महत्व है, परन्तु यह एक वास्तविकता है कि इसका दूरगामी एवम् दीर्घकालीन प्रभाव नहीं होता। इसी प्रकार केवल बड़े-बड़े प्रस्ताव पारित कर देना, धुआंधार व्याख्यान दे देना, विद्वत्ता का प्रदर्शन करना आदि भी समस्याओं को नहीं सुलझा सकते। सम्मेलन की आत्मा तो वे संक्षिप्त दृढ़ निश्चय होंगे जिन्हे क्रियान्वित करने के लिये आर्यजन दृढ़ प्रतिज्ञ बनेंगे और व्रती बनकर व्रत पूर्ति के लिये स्वयम् को बलिदान करने मे गौरव का अनुभव करेंगे।

आर्यसमाज का संगठन आर्यों का है और इसे स्वाभाविक रूप से आर्यत्व की झलक दिखानी चाहिये जो जन साधारण को अपनी ओर आकृष्ट कर सके। वैयक्तिक चरित्र निर्माण तथा मानवता की भावना ही वैदिक धर्म का प्रसार कर सकते हैं। पद लिप्सा स्वार्थ पूर्ति संघर्ष वृत्ति, विषय आसक्ति, ईर्ष्या, द्वेष, उत्तेजना, दुर्भावना, विरोध, वैर ये सब तो अनार्यत्व के लक्षण हैं। महर्षि स्वामी दयानन्द ने आर्यसमाज के ऊपर जिस महान् उत्तरदायित्व को सौंपा है, वह केवल वैदिक धर्म की व महर्षि दयानन्द के कोरे जयकारों से पूर्ण होने वाला नहीं है। जयकार भी तभी सुहाता है जब जय विजय का सम्पादन किया जाता है।

अज्ञान के अन्धकार को दूर करने के लिए ज्ञान के प्रकाश की आवश्यकता है और समस्त बुराइयें अज्ञान की उत्पत्ति हैं। विश्व के आर्य्यकरण करने के लिये अज्ञान को समूल नष्ट करना होगा और दिव्य ज्ञान वेद के अंकुरों को उपजाना होगा। यह सब तभी सम्भव होगा जब हम वेद की पावन शिक्षाओं को चरित्र में उतारकर निरासक्त, निर्लेप होकर आर्यत्व के जीते जागते दृष्टान्त बनें और फिर ऐसे ही आर्यों का विशुद्ध संगठन अनार्यत्व को विनष्ट कर संसार में आर्यत्व को स्थापित करने में समर्थ हो सकेगा। यह एक सत्य है जिसको सत्यप्रियता के कारण हमें स्वीकार कर लेना चाहिये।

हैदराबाद के पुनीत स्थल पर हमने पहले एक बहुत बड़ी विजय प्राप्त की है जिसका ऐतिहासिक महत्व है—[illegible] आर्य हैदराबाद सत्याग्रह से भलीभांति परिचित है, उस ऐतिहासिक सफलता की पृष्ठ भूमि में हमारा आर्यत्व और आर्यत्व का पवित्र संगठन ही था। १९४९ मे एक अखिल भारतीय उपदेशक सम्मेलन करने का श्रेय भी हैदराबाद को है जिसके अध्यक्ष स्व० पं० अयोध्याप्रसाद जी थे। १९५४ में इस विशाल ऐतिहासिक नगरी में अष्टम आर्य महासम्मेलन भी हुआ था जिसकी अध्यक्षता श्री घनश्यामसिंह जी गुप्त ने की थी जिनका निकट सम्बन्ध हैदराबाद की आर्यसमाज और आर्य सत्याग्रह आन्दोलन से रहा है।

आज पुनः उसी नगरी में दशम आर्य्य महासम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। स्वागताध्यक्ष पं० नरेन्द्र जी तथा उपाध्यक्ष श्री कृष्णदत्त जी एवं स्वागत समिति के अन्य सदस्य धनसंग्रह तथा अन्य व्यवस्था के लिये निरन्तर दौड़धूप कर रहे हैं। यह स्वाभाविक ही है कि अतिथियों की आवास व्यवस्था भोजन व्यवस्था पर विशेष ध्यान दिया जायगा। सम्मेलन के अध्यक्ष की ऐतिहासिक भव्य परिक्रमा होगी। आर्य समाज की जय जय ध्वनि गगन भेद देगी।

दानी महानुभावों से निवेदन

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के बृहदधिवेशन दि० १८-८-६८ में सभा को आर्थिक सहायता के लिये दिए गये वचन—

१–श्री देवेन्द्र आर्य जी की माता जी	१००००)
२–" धर्मेन्द्रसिंह जी	२५००)
३–मेरठ जिला	२१००)
४–मीरजापुर	१५००)
५–" बदायूं	११००)
६–" मुजफ्फरनगर	११००)
७–" बिजनौर	११००)
८–आ०म० छिन्दकी द्वारा रामनारायण जी	११००)
९–गोला गोकरननाथ आ०स० द्वारा श्री राठी जी	११००)
१०–श्री ओमप्रकाश जी पलिया वाले	११००)
११–मैनपुरी	११००)
१२–गोंडा	११००)
१३–अलीगढ़	११००)
१४–हाथरस	११००)
१५–लखनऊ	११००)
१६–जिला बरेली	११००)
१७–आर्यसमाज मेस्टन रोड कानपुर	११००)
१८–जिला कानपुर	१०००)
१९–" नैनीताल	१०००)
२०–रामपुर	५०१)
२१–हरदोई	५०१)
२२–आ० स० पूरनपुर	५०१)
२३–" पीलीभीत	५०१)
२४–आ०स० खुर्जा	५०१)
२५–आ० स० बुलन्दशहर	५०१)
२६–आ० स० सिकन्दराबाद	५०१)

दानी महानुभावों से निवेदन है कि वे शीघ्र उपरोक्त धनराशि वचनानुसार भेजकर अनुगृहीत करें।

—प्रेमचन्द शर्मा, सभा मन्त्री

इस अवसर पर वेद सम्मेलन, हिला सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन, गो क्षा सम्मेलन, आर्यवीर दल सम्मेलन त्यादि भी होंगे। चित्र एवं पुस्तक दर्शनियां भी होंगी किन्तु इन समस्त ह्यात्रों के साथ साथ आर्यसमाज की अन्तरात्मा अर्थात् आत्मीयता युक्त शुद्ध सगठन है, उसको भी जागरूक रने की महती आवश्यकता है।

वैदिक धर्म ने हमें सर्वत्र विजयवाद खाया है। वेद की पावन ऋचा में हा गया है "इतो जयेतो विजय संजय य स्वाहा। इमे जयन्तु परामी जयन्तां हाद्भ्यो दुराहाभीम्य। नील लोहिते सूनम्य वतनोभि" किन्तु इस सर्व गिनी विजय का आधार क्या है, इसे वेद ने "वयं जयेम त्वया युजा" के न शब्दों मे दुहराया है। हैदराबाद दशम महासम्मेलन मे यदि ईश्वर था तथा आध्यात्मिकता के आधार आर्यत्व को जागृत किया जा सका तथा परस्पर द्वेष वृत्त का उन्मूलन करके सगठन भावना को आर्यों से चरित्र मे उतारा जा सका तो यह पुनः इस नगरी की अद्वितीय ऐतिहासिक स्मरणीय विजय होगी।

विशेष विज्ञप्ति

उत्तर प्रदेश की समस्त आर्यसमाजों को सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का 'प्रान्तीय आर्य सम्मेलन' मेरठ आर्योपप्रतिनिधि सभा की ओर से गढ़मुक्तेश्वर के मेले के अवसर पर १, २, ३, ४ नवम्बर को होगा। जिसमें समस्त नेता, अधिकारी और उच्च कोटि के विद्वान् संन्यासी आमन्त्रित किये गये हैं। उन दिनों में बड़ी समाजें अपनी उत्सव तिथियां स्थगित कर दें। जिससे प्रान्तीय सम्मेलन को सफलतापूर्वक मनाया जा सके।

—विश्वबन्धु शास्त्री
वरिष्ठ उप प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

(१)

मैंने आपके "आर्यमित्र" की पिछली बहुत-सी प्रतियों को केवल पढ़ा ही नहीं बरन् उनका दत्त चित्त होकर स्वाध्याय किया। वास्तव में आप वेद के सम्बन्ध में ही इतना रोचक मसाला देते हैं कि जो पठनीय है और शिक्षाप्रद है। आपका अध्यवसाय और परिश्रम सराहनीय है। मुझे आशा है कालान्तर में 'मित्र' अच्छी उन्नति करेगा। आधुनिक विज्ञान और ज्योतिष विद्या का और समावेश कीजिये। —विश्वनाथ त्यागी

(२)

निवेदन है कि आपका १४ सितम्बर का अङ्क मिला। पढ़कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। ईरान के भूकम्प का लेख बहुत पसन्द आया। सत्य मार्ग पर प्रेरणा करने के लिये बार-बार आपको बधाई है आप हमेशा ऐसी ही कृपा करें ताकि हम सत्य का अनुसरण करते रहें। आजकल आर्यसमाज की स्थिति बड़ी विकट है। आपसी द्वेष वैमनस्य बढ़ गया है श्रद्धा समाप्त होती जा रही है। जिसे देखकर दुःख होता है। कवितायें भी इस लेख अच्छी हैं। कुछ लिखने का प्रयत्न करें ताकि आपस का द्वेष दूर हो। —नरेन्द्रकुमार

(३)

अब तो आर्यमित्र का कलेवर ही बदल गया है। स्वाध्याय अङ्क तो इतना सुन्दर निकला कि उसकी जितनी प्रशंसा की जाय कम है। अक के पूर्व भाग में वेद के कुछ मन्त्रों का विवेचन बड़े ही उत्तम ढंग से किया गया है। मैंने तो उसे आदि से अन्त तक पढ़ा और बहुत प्रभावित हुआ।

—विश्वम्भर दयाल वर्मा
अवकाश प्राप्त उपाचार्य

(४)

सेवा मे निवेदन है कि श्रावणी पर्व पर जो स्वाध्याय अक आपने निकाला है (वाप विमोचन अङ्क) बहुत उत्तम है उसके लिये मैं आपको हार्दिक बधाई देता हूं। वेद के अङ्गों की व्याख्या उदाहरण और दृष्टान्त देकर जो आपने की है उससे उनकी कठिनता दूर गई है। और वे सरल और साधारण जन की बुद्धि को भी समझने योग्य हो गये हैं। तथा सरल और रोचक बन गये हैं। भगवान् आपको बल दें कि इसी प्रकार आप 'आर्यमित्र' का सम्पादन उत्तम प्रकार से करके 'सुयोग्य सम्पादक' सिद्ध हों।

—कृष्णदत्त आयुर्वेदालंकार
मुहल्ला अलीगढ़ फैजाबाद

(५)

माननीय सम्पादक जी,

नमस्ते।

गत दो सप्ताह पूर्व 'आर्यमित्र' के एक अक में (सम्भवतः ७ जुलाई का) श्री प० शिवदयालु जी का एक लेख निकला था आर्यसमाज और जनसंघ। इस लेख में पण्डित जी ने एक बात विशेष लिखी कि "आप सम्पूर्ण भारतवर्ष में कहीं भी जनसघ अथवा जनसंघ कार्यालय में जाइये वहां आपको प्रमुख रूप से गुरु ... जी डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जी तथा स्वामी विवेकानन्द जी के चित्र मिलेंगे परन्तु कहीं भी महर्षि दयानन्द सरस्वती का चित्र दृष्टिगोचर नहीं होगा "यह नितान्त सत्य है, परन्तु इसमें दोष कुछ हम आर्य समाजियों का भी है, सम्पूर्ण भारतवर्ष में कोई भी संस्था चाहे वह राजनीतिक हो चाहे सामाजिक इसमें पर्याप्त सख्या में आर्यसमाजी पाये जाते हैं, परन्तु दुःख है कि हम आय समाजी इन संस्थाओं में जाकर अपने आर्यत्व को गौण कर देते हैं और पूर्ण रूपेण इन्हीं संस्थाओं मे रम जाते हैं अर्थात् इन संस्थाओं के अनुशासन में बधकर अपने सिद्धान्त भी भूल बठते हैं तथा अन्य राजनैतिक दलों मे जाकर आर्यसमाज का कोई हित नहीं कर पाते, यदि एक आय कोई अपने सिद्धान्तों पर दृढ़ रहता है तो वह इन संस्थाओं में खप नहीं पाता और अन्ततः उसको वहां से अलग होना पड़ता है। ऐसी दशा मे प्रत्येक उस आय को जो कुछ भी राजनैतिक गतिविधियों मे रुचि रखता है आर्यसमाज को गौण करना पड़ता अतः आवश्यकता है आर्यसमाज अपनी राजार्य सभा का निर्णय करे।

समय की यह मांग है।

—यशपाल आर्य
उपप्रधान आर्यसमाज जगतपुर

(६)

आप से एक प्रश्न पूछकर कष्ट दे रहा हूं इसके लिए क्षमा करना २०-८-६८ से २३-८-६८ के वीर अर्जुन मे डा० भीगुप्तसेन जी 'प्राचीन' पुस्तक में जो लिखा है कि आज तक पुराने समय में

(शेष पृष्ठ १४ पर)

मर्यादा पुरुषोत्तम राम

श्री मदनमोहन
एडवोकेट मोंठ (झांसी)

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक अर्थात् नव सम्वत्सर से राम जन्म तक नव दिवस विशेष शक्ति, भक्ति, अर्चना आराधना एवं उपासना के रूप में मनाने की परिपाटी सूर्यकुल कमल दिवाकर, अमर लोक हितैषी, वेद मनीषी, आर्य संस्कृति के आधार सर्वगुणागार श्रीराम के समुज्ज्वल आदर्श जीवन गाथा को अविस्मरणीय नित नूतन बनाये रखने हेतु ही विशेष समारोह से सम्बन्धित प्रतीकमात्र प्रतीत होती है।

मधुश्च माधवश्च वासन्तिकावृतु
—यजु० अ० १३ म० २५

वेद की श्रुति के अनुसार मधु माधव शब्दों के अनुसार ही बसन्त ऋतु के मासों के नाम पड़े हैं। कालान्तर में ज्योतिष विद्या विकास एवं विस्तार से चान्द्र गणना प्रचलित होने पर विशेष नक्षत्र वाली पूर्णिमा पर उसी नक्षत्र के अनुरूप ही मासों की संज्ञा परिवर्तित हो गई।

'चित्रा नक्षत्रेणयुक्ता पौर्णमासी चैत्री सास्मिन्‌ सः चैत्रोमासः'
अर्थात् चित्रा नक्षत्र युक्त पौर्णमासी से ही चैत्र संज्ञा हुई इत्यादि।

कौसल्याऽजनयद्रामं सर्व लक्षण संयुतम्
भरतोनाम कैकेय्यो जज्ञे सत्य पराक्रमः
अथ लक्ष्मण शत्रुघ्नौ सुमित्राऽजनयत्सुतौ।
(वाल्मीक)

कौशिल्या ने दिव्य लक्षणों से युक्त राम को, कैकेई ने सत्य पराक्रमी भरत को तथा सुमित्रा ने लक्ष्मण और शत्रुघ्न को उत्पन्न किया। वाल्मीकि रामायण प्रामाणिक ग्रन्थ होने से और श्री राम को अवतारों की श्रृंखला में गणना करने का औचित्य नहीं है श्री राम के लिये वाल्मीकि ने पुरुषोत्तम, नर पुंगव आदि संज्ञा ही प्रयुक्त की है। केवल लोक मर्यादा की अक्षुण्ण स्थिति स्थापित रखने को निष्काम कर्म करते रहने के वैदिक धर्म के सिद्धान्त का पूर्णरूपेण पालन करके प्रातः स्मरणीय श्री राम ने ही दिखाया था।

आहूतस्याभिषेकाय विसृष्टस्य वनाय च
न मया लक्षितस्य स्वल्पोऽप्याकार विभ्रमः।

राज्याभिषेकार्थ बुलाये हुए वन के लिये विदा किये हुये श्री राम के मुखाकार में कुछ भी अन्तर नहीं देखा। रघुकुल दीपक मातृ मोदवर्धक पितृ निर्देश पालक पुत्र, एक पत्नी व्रत प्राण प्रिय, भ्रातृ सखा, सुख, दुःख विमोचन मित्र, प्रजापालक मर्यादा व्यवस्थापक पुरुष रत्न का एकत्र एकीकृत संनिवेश अखिलार्य पावन महाराज रामचन्द्र में ही निहित पाया जाता है। लोक हिताय सीता गृहात् निष्क्रमण, आतिथ्य ब्रह्मचारी लक्ष्मण को मेघनाद से युद्धकरणार्थ अवसर करना रावण का संहार करके विभीषण को ही अभिषेक करना इत्यादि अनेक स्थल उनकी मर्यादा के ही सर्वोत्तम प्रतीक हैं। अतः आज राष्ट्रोन्नति के अंग प्रत्यङ्गों के अनुरूप ही पारस्परिक अनावश्यक वाद विवाद त्यागकर विशुद्ध वीर पूजा का पुनरुद्धार करें आदर्श महापुरुषों की जन्म तिथियां शिक्षाप्रद प्रकार से मनावें जो सर्वसाधारण के लिये पथ प्रदर्शक बने विशुद्ध राम राज्य की स्थापना हो। जन-जन में अनुपम शक्ति, शौर्य साहस का सृजन हो जो संगठित होकर असुरों का विजेता बनकर मातृभूमि भारत के कीर्तिकेतु को विश्व में फहराये।

आयुष्य हो सान्निध्य हो,
नित शुद्ध बुद्ध विराम हो।
आराम हो, आराम हो,
अभिराम हो अभिराम हो॥

विजय दशमी पर्व

तिमिर की अन्तिम कमीदी नींद पूरब में खुली जब
तारिकों के हास की परिहास उषा ने छोनी तब
बाल रवि को अरुण किरणों से सजाकर नियति ने तब
ज्योति आभा की लड़ी की भेंट करती है प्रकृति तब

फूट पड़ता है उजाला उस समय रवि की किरण से
दीख पड़ता है निराला क्रान्ति की अद्भुत चरण से
उस किरण की मेखला पर देश का इतिहास अंकित
भारती के गर्व गाथा का नया आभास अंकित।

था किया अभियान लङ्का पर कभी श्रीराम ने
था उड़ाया जय पताका कीर्ति का रघुनाथ ने
सप्त अश्वा के रथों पर वह विजय आख्यान लिक्खा
राष्ट्र के उस संक्रमण के काल का व्याख्यान लिक्खा।

फिर उन्हीं अनुभूतियों को आज किरणें दे रही है
है विजय की आज बेला सन्देश किरणें दे रही हैं
स्वाभिमानी राम के रघुवंश के गाथा बनो तुम
राष्ट्र सीता का मिलन हो राष्ट्र की आशा बनो तुम

आज रावण छिन न पाये राष्ट्र की कोई कुमारी
आज शत्रु अब न पाये राष्ट्र की कोई किनारी
इस विजय के पर्व का सन्देश जाती को सुना दो
विश्वधर्मम् का मधुर स्वर गान जगती में गुंजा दो

सह न सकते राष्ट्र सीमा का कभी यह अतिक्रमण हम
कर न सकते दूसरों के राष्ट्र पर यह अधिकरण हम
राष्ट्र के सम्मान का कोई उल्लंघन जब करेगा
तब उसी सम्मान के हित यह हमारा शस्त्र उठेगा

इसलिये हर सोच लें यह देश भारतवर्ष है
आदर्श निष्ठा त्याग का फैला यहां सत्कर्म है
सारे जगत को यह सखा अपना सदा से मानता है
त्रस्त मानव के दुखों को दूर करना जानता है

यह न मानव का कभी संहार करने पर तुला है
यह न दानव के कभी अधिकार करने पर झुका है
यह न अस्त्रों का कभी उद्योग करने पर अड़ा है
यह न आततायियों के जुल्म करने पर हटा है॥

राम का वो बाण है जो सिन्धु में भी ज्वार आया
और रावण के विजय के कामना में क्षार आया
मिट गया जिससे मिटाने को चला इस सभ्यता को
हट गया जिसने हटाने को चला इस सभ्यता के

तो सुनो उद्घोष राघव का सुनाई दे रहा है
राष्ट्र रक्षा का नया उत्कर्ष दिखाई दे रहा है
राष्ट्र का अपमान करता है कोई यदि द्वेष लाकर
तो मिटा दो आज उसको कह रहा यह पर्व आकर

—रमेशचन्द्र गुप्त, जौनपुर

पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय का निधन

पं० नरेन्द्र जी का वक्तव्य

पं० नरेन्द्र जी ने पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय, एम० ए० के निधन पर शोक और संवेदना प्रकट करते हुए कहा है कि:—

पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय आर्य समाज के जगमगाते रत्न और महान् विद्वान थे। श्री उपाध्याय जी का स्थान आर्य समाज के उच्चकोटि के लेखकों में था। आपने आर्य समाज के साहित्य जगत को अपनी रचनाओं से मालामाल किया है। देश की बढ़ती हुई नास्तिकता के उत्तर में आस्तिकवाद जैसी पुस्तकों की रचना कर ईश्वर के अस्तित्व और उसकी सर्वज्ञता की कोरी दलीलों का बुद्धिपूर्वक तर्क युक्ति उत्तर देकर उनका मुँह बन्द किया था। आपके निधन से आर्यसमाज के क्षितिज का देदीप्यमान नक्षत्र अस्त हो गया।

आर्यमित्र में

शंका समाधान वेदों में जीवित श्राद्ध ही पितृ-तर्पण है

वेदों में जीवित श्राद्ध का वर्णन है। श्राद्ध शब्द मृतकों के साथ कहीं भी नहीं मिलता है। जगद्गुरु शंकराचार्य्य के प्रश्न का उत्तर—

प्रश्न—वेद के प्रत्येक मन्त्र से सिद्ध होता है श्राद्ध मृतक पितरों का होता है।

उत्तर—प्रथम तो श्राद्ध शब्द जीवितों पर प्रयुक्त हो सकता है। मृतकों पर नहीं, क्योंकि श्रत नाम सत्य का है और धत् जिसके पश्चात् सा श्रद्धा जिसमें सत्य विद्यमान हो वह श्रद्धा है श्रद्धया यत् क्रियते तत् श्राद्धम्। जो श्रद्धापूर्वक पितरों की सेवा की जाती है उसका नाम श्राद्ध है। चूंकि सेवा जीवितों की ही हो सकती है। मृतकों की नहीं। अतः जीवितों का ही नाम पितर है। मृतकों का नहीं। दूसरे पितर शब्द ही जीवितों के लिये प्रयुक्त हो सकता है। मृतकों के लिये नहीं, क्योंकि हमारे जो माता-पिता, बहिन-भाई के सम्बन्ध हैं। वे शरीर के साथ हैं। जीवों के साथ नहीं। क्योंकि हमारे माता-पिता हमारे शरीर को पैदा करते हैं जीव को नहीं। क्योंकि जीव अनादि तथा अनुत्पन्न है। जैसा कि—न जायते म्रियते वा कदाचिन गीता २।२० जीव कभी पैदा हुआ न मरता है। अपितु शरीर पैदा होता है। और मरता है। वासांसि जीर्णानि यथा विहाय गीता २।२२ अर्थात् जैसे हम पुराने कपड़ों को छोड़कर नवीन वस्त्र धारण करते हैं। वैसे ही जीव भी पुराने शरीर को छोड़कर नवीन शरीर धारण करता है। जब जीव शरीर से निकल कर कर्मानुसार पुनर्जन्म ग्रहण कर लेता है और शरीर फूंक दिया जाता है, पुनः पितर कौन शेष रहता है। यदि कहिये कि मरने के पीछे जीवों के साथ भी माता-पिता, भगिनी-भ्राता के सम्बन्ध बने रहते हैं, तो पुनः जन्म के पश्चात् माता का पुत्र से, भगिनी का भ्राता से, पुत्री का पिता से विवाह होना सम्भव हो जायेगा।

जैसे—पिता पाता वा पालयिता वा जनयिता—निरुक्त अ० ४ ख० २१

अर्थ—रक्षा करने वाले तथा पालन करने वाले तथा पैदा करने वाले को पिता कहते हैं।

अध्यापयामास पितृन शिशुरांगिरसः कविः पुत्रका इति हो वाच ज्ञानेन परिगृह्य तान ॥ १५१

अज्ञो भवति वै बालः पिता भवति मन्त्रदः। अज्ञं हि बाल मित्याहुः पितेत्येव तु मन्त्रदम् ॥ १५३ मनु० अ० २

[श्री शंकराचार्य श्री शंकरानन्द के प्रश्नों का उत्तर]

अर्थ—बालक अंगिरा कवि ने अपने पितरों को पढ़ाया। उनको ज्ञान से ग्रहण करके पिता ने कहा—अज्ञानी बालक होता है तथा मन्त्र को देने वाला पिता कहलाता है। अतः अज्ञानी को बालक तथा मन्त्र देने वाले को ही पिता कहते हैं। उपरोक्त प्रमाणों से सिद्ध है कि पितर शब्द जीवितों के लिये प्रयुक्त हो सकता है मृतकों के लिये नहीं अतः जीवित पितरों की श्रद्धापूर्वक सेवा करने का नाम ही श्राद्ध है। वेद का एक भी मन्त्र मृतक श्राद्ध की पुष्टि नहीं करता है।

मन्त्र—ये समानाः समनसो जीवा जीवेषु मामकाः। तेषां श्रीर्मयि कल्पताम स्मिंल्लोके शतं समाः; ॥यजु० १९·४६ मंत्र

देवाः पितरः पितरो देवाः अथर्व ६-१२३-३।

अक्रोधनाः शौचपराः सततं ब्रह्मचारिणः। न्यस्त शस्त्रा महाभागाः पितरः पूर्व देवताः ॥१९२ मनु० अ० ३

जो इस लोक में जीते हुए मेरे समान गुण कर्म स्वभाव वाले समान धर्म में मन रखने वाले मेरे जीते हुए पितर आदि

आचार्य पं० सत्यमित्र शास्त्री
वेदतीर्थ महोपदेशक बड़हलगंज गोरखपुर

हैं। उनकी लक्ष्मी मेरे समीप सौ वर्ष पर्यन्त समर्थ होवे। देवों का नाम पितर है। पितरों का नाम देव है। जो क्रोध से रहित शुद्ध जीवन युक्त ब्रह्मचारी शस्त्रहीन महाभाग विद्वानों तथा वृद्धों का नाम पितर है। ये सम्पूर्ण प्रमाण जीवितों के लिये प्रयुक्त होते हैं।

प्रश्न—ये निखाता अथर्व आयन्तु न पितरः यजुर्वेद अग्नि दग्धाः अनग्निदग्धाः अग्नामृताः आदि, ७०० मन्त्र अथर्व और यजुर्वेद के हैं। जिससे मृतक श्राद्ध सिद्ध होता है।

उत्तर—आपका यह अर्थ त्रुटि पूर्ण है और युक्ति शून्य है। क्योंकि आप उनको हवि खाने के लिये बुलाते हैं। जो गाड़े फूंके पड़े हुये हैं। अब यह गाड़ना और फूंकना आदि शब्द जीवों पर तो प्रयुक्त नहीं हो सकता। क्योंकि जीव नित्य सनातन अनादि हैं। मन्त्र का अर्थ सुनिये जो बुद्धिगम्य है।

ये निखाता: ये परोप्ता ये दग्धा ये चोद्धिताः सर्वांस्तानग्न आवह पितृन् हविषे अत्तवे ॥ अथर्व १८।२।३४

यजमान् पुरोहित से कहता है कि हे विद्वान् जो पदार्थ भूमि में गाड़े हुए होते हैं। (आलू, मूली, गाजर) आदि जो पदार्थ बोए जाते हैं। गेहूं, चावल आदि जो पदार्थ भूनकर खाये जाते हैं। चने पके धान आदि जो पदार्थ बाहर निकाले जाते हैं। सिंहाड़े कमलगट्टे आदि इन सब पदार्थों को निमन्त्रण में साधु महात्मा आदि पितरों को भोजन कराने के लिये लाकर दे। इस मन्त्र में जो प्रोप्ता शब्द है इसके अर्थ बीज जमने वाले पदार्थों के हैं। यह शाक आदि का वर्णन है। यह मन्त्र मृतक श्राद्ध को सिद्ध नहीं करता अपितु जीवितों की सेवा को सिद्ध करता है।

मन्त्र—येऽग्निदग्धा येऽनग्निदग्धा मध्ये दिवः स्वधया मादयन्ते।

त्वं तान् वेत्थ यदि ते जातवेदः स्वधया यज्ञं स्वधितिं जुषन्ताम् ॥ अथर्व १८।२।३५

अर्थ—जो अग्नि होत्र या शिल्प-विद्या सेवधि अग्निविद्या चतुर तथा जो अग्नि से भिन्न जलादि की विद्या में चतुर और जो वैज्ञानिक लोग दिव अर्थात् विज्ञान रूप प्रकाश में मुक्त भोग से आनन्दित रहते हैं। हे सर्वज्ञ परमात्मन् यदि तू उनको जानता है तो वे अन्नजल आनन्द को प्राप्त होते हुए इस यज्ञ का सेवन करें। इसमें भी जीवित श्राद्ध तर्पण का वर्णन है। मृतक श्राद्ध कहां से लगा लिया गया। यह सीधा निगोदर पुरुषार्थ है।

इसमें मनुस्मृति का प्रमाण है।

अग्निदग्धानग्नि दग्धान् बर्हिषदस्तथा। अग्नि ष्वात्तांश्च सौम्यांश्च विप्राणामेव निर्दिशेत् ॥ मनु० ३·१९९

अग्निदग्ध आदि जीवित ब्राह्मणों के पितर हैं तो दूसरों के क्यों नहीं।

संसार के श्रेष्ठ पुरुषो !

एक हो जाओ

२०० युवकों द्वारा क्रान्ति अभियान

२१ सितम्बर को कुरुक्षेत्र से चलकर ६ अक्तूबर को दिल्ली के लालकिले तक विशाल पद यात्रा

युवकों में साहसिक अभियान के प्रति रुचि तथा वैदिक मान्यताओं की स्थापना के लिये संघर्ष करने की क्षमता और भावना पैदा करने के लिये २२ सितम्बर से एक विशाल पदयात्रा का आयोजन हो रहा है। जिसमें विभिन्न स्थानों से २०० युवक भाग लेंगे। यह अभियान कुरुक्षेत्र के उस पुण्य स्थान से आरम्भ होगा जहां आज से पांच हजार वर्ष पहले योगिराज श्रीकृष्ण ने मोहग्रस्त अर्जुन को क्षात्र धर्म की शिक्षा देते हुए अन्याय का प्रतिकार करने के लिये कटिबद्ध किया था। कुरुक्षेत्र से चलकर यह अभियान २३ सितम्बर को सायंकाल नीलोखेड़ी, २४ को करनाल, २५ को घरौण्डा, २६ को पानीपत, २७ को इसराना, २८ को गोहाना, २९ को गुरुकुल भैंसवाल, ३० को रोहतक, १ अक्तूबर को जौंधी, २ को बेरी, ३ को नजफगढ़, ४ को तिलकनगर, ४ को पटेलनगर, ५ को पटेलनगर होता हुआ रविवार ६ अक्तूबर प्रातः १० बजे दिल्ली के ऐतिहासिक लालकिले के मैदान में समापन होगा।

युवकों के इस क्रान्ति अभियान का उद्देश्य हरयाणा राज्य से शराब उन्मूलन की पृष्ठभूमि तैयार करना तथा देश में फैले अराष्ट्रिय तत्वों से सावधान करते हुए युवकों मे ओजस्वी अभियान को देखकर सामाजिक क्षेत्र में उत्साह की लहर दौड़ गई है। प्रत्येक पड़ाव पर रात्रि को ओजस्वी व्याख्यान तथा भजनों का आयोजन होगा तथा प्रसिद्ध नेता एवं उच्चकोटि के विद्वान् युवकों को आशीर्वाद देने के लिये पधारेंगे। ६ अक्तूबर १० बजे से लालकिले के मैदान में राष्ट्रिय नेता युवकों को मार्ग निर्देशन करेंगे तथा हजारों युवक बलिदान के पथ पर चलने की शपथ ग्रहण करेंगे।

समस्त राष्ट्र हितैषी व्यक्तियों से सानुरोध प्रार्थना है कि युवकों के इस अभियान को तन-मन-धन से सहयोग द्वारा सफल बनाकर राष्ट्र निर्माण में योगदान करें। पत्र व्यवहार आर्ययुवक परिषद्, दयानन्द मठ रोहतक के पते से करें।

रामनाथ सहगल	इन्द्रदेव मेधार्थी	श्यामराव
मन्त्री	प्रधान	संयोजक
केन्द्रीय आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली	आर्ययुवक परिषद्	युवक क्रान्ति अभियान

न तस्य प्रतिमा अस्ति

आचार्य ताराशङ्कर 'राके
सहित्याचार्य, शाहजहापु

अध्यात्म-सुधा

इस अनुपमेय स्रष्टा की रहस्यमयी सृष्टि मे जब हम जन्म मरण सुख-दुःख आदि द्वन्द्व भावो पर दृष्टि पात करते है तो हमारे मन मे स्वतः ही अनेकों प्रकार की जिज्ञासायें उत्पन्न होती हैं। हम जानना चाहते हैं यह विश्व प्रपंच क्या है? क्यों है? और कैसे है? इसका कर्त्ता और प्रयोजन क्या हैं? हमारा इस से क्या सम्बन्ध है? अधिकार ओर कर्त्तव्यों के बन्धन मे बंधे हुये हम इसे भोगने मे परवश क्यों देखे जाते हैं? कभी तो हमारी इच्छायें पूर्ण हो जाती हैं और कभी अपूर्ण रहती हैं। ऐसा क्यों होता है? वह कौन है जो हमे मन चाहा भोग भोगने नहीं देता?

शास्त्रो का चिन्तन करने के पश्चात् हमारे सामने तीन अविनाशी तत्व दिखाई पड़ते है जिनकी संज्ञायें ईश्वर जीव और प्रकृति हैं। अविनाशी होने के कारण तीनों की सत् संज्ञा है। चिन्तन होने के कारण जीव तथा ईश्वर दोनों ही चित् संज्ञा हैं। एक रस आनन्द होने के कारण ईश्वर ही आनन्द संज्ञा है। शास्त्रकारों ने ईश्वर और जीव को भिन्न-भिन्न समझने के लिये अलग-अलग लक्षण किये हैं। योग दर्शनकार महर्षि पातञ्जलि जी "क्लेश कर्म विपाकाशयैं-परामृष्टः परम विशेष पुरुष ईश्वरः कह-कर जीव और ईश्वर की भिन्नता स्पष्ट करते हैं। जीव क्लेश भोगता है कर्मफल भोगता है जिसके लिये वह जन्म मरण के बन्धन मे आता है, परन्तु वह परम विशेष पुरुष ईश्वर क्लेशादि रहित सदैव एक रस और आनन्द मय रहता है।

हमारी जिज्ञासाओ का यहीं पर अन्त नहीं हो जाता। चिन्तन करते-करते अनेकों सारगर्भित प्रश्न हमारे समक्ष उपस्थित होते हैं। उदाहरणार्थ—ईश्वर कौन है? वह क्यों सृष्टि बनाता है? जीव क्या है, वह क्यों भोक्ता है? ईश्वर कहा रहता है? कैसा है? उसकी आकृति रूप रङ्गादि कैसा है? ईश्वर और जीव मे किस प्रकार का अन्तर है? जितना-जितना हम समझते जाते हैं उतनी-उतनी जिज्ञासायें और उत्पन्न होती जा रही हैं। ईश्वर विषयक जिज्ञासाओ का अन्त उस समय तक नहीं होता जब तक ईश्वरीय ज्ञान वेद का अवगाहन यथावत नहीं किया जाता। जब वेद रूपी कामधेनु का दोहन किया जाता है तभी उससे जीव को अमरत्व प्रदान करती हुई ईश्वरीय वाणी प्रकट होती है जो जिज्ञासु पर अपना भेद खोल देती है और यही वह बिन्दु है जहां पर जीव की सभी प्रकार की जिज्ञासायें शान्त हो जाती है।

परन्तु जो व्यक्ति वेदों से घृणा करता हुआ स्वार्थी सम्प्रदायवादियों के मन-गढ़न्त और कपोल-कल्पित भ्रांत सिद्धांतों की भ्रान्तियों मे फंसा रहता है वह परिणाम स्वरूप जन्म-मरण के चक्र में फंसा हुआ प्रकृति रूपिणी माया से ठगा जाकर अनन्त दुःख उठाता है।

ईश्वर कौन है?

'एको वशी सर्वभूतान्तरात्मा' आदि वाक्यों से वह ईश्वर समस्त प्राणियों का राजा है। सारे भूत प्राणी उसके आश्रित हैं। 'स भूमिं सर्वतः स्पृत्वा-त्यतिष्ठद् दशाङ्गुलम्' भगवती श्रुति उसे अखिल ब्रह्माण्ड में लोक-लोकान्तरों के बाहर चारों ओर और अन्तःस्थित सर्वव्यापक बताती है। और वह पञ्च महाभूत तथा उनमें रहने वाली पांच तन्मात्रायें, मन, चित्त, बुद्धि प्राण और इन्द्रियों का स्वामी है। उनकी शक्ति और ईक्षण के बिना एक भी परमाणु गति नहीं कर सकता।

मस्तिष्क सृष्टि के विस्तार के पार नहीं पहुंच सकता। वह परमात्मा ही अपनी इस सृष्टि के विस्तार को जानता है क्यों कि वही इसका स्रष्टा, धाता, विधाता आदि हैं।

वह परमात्मा कितना बड़ा है?

वह परमात्मा महानतम है। उसकी नाप तोल आदि का कोई मापदण्ड नहीं है।

'नतस्य प्रतिमाऽअस्ति यस्य नाम महद्यशः। हिरण्यगर्भऽइत्येष मा मा हिंसीदित्येषा यस्मान्न जातऽइत्येषः
॥ यजु ॥

उस परमात्मा का नाम महद्यशः है क्योंकि वही इस महान् ऐश्वर्य का स्वामी है और यह महान् ऐश्वर्य उसकी सर्वशक्तिमत्ता का परिचायक है। उसकी कोई आकृति, प्रतिमा, मूर्त्ति, नाप तौल, आदि नहीं है और न कोई दूसरा आत्मा ही उसके समान ऐश्वर्य-वान् है। क्योंकि वह एक है और अनन्त जीवात्मा उसकी प्रजा हैं। वह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के अन्तःस्थित होने के कारण हिरण्यगर्भः कहा जाता है और प्रत्येक प्राणी उसमे दया की याचना करता है। सृष्टि प्रलय के उपरान्त यही एक सर्व शक्तिमान शेष रहता है, प्रकृति परमाणु रूप और जीव अशक्त हो जाते हैं। पुनः फिर वही नये कल्प मे नई सृष्टि करता है।

थोड़ी देर को यदि हम उस परमा-त्मा का शरीर मान ले तो उसकी लम्बाई, चौड़ाई भी अनन्त माननी पड़ेगी। यह ब्रह्माण्ड उसके एक पाद मे होने के कारण वह इस ब्रह्माण्ड से बड़ा होगा, तो फिर यह सूर्य चन्द्र आदि सितारे गतिरोध हो जाने के कारण न अस्तित्व मे ही आ सकते है और न भ्रमण आदि जो कार्य हो रहे हैं वह हो सकते है। क्योंकि आकृति परमाणुओं से बनी ठोसादि पदार्थों मे होती है। यदि उसे मनुष्य की आकृति के समान छोटा मान लें तो उसकी सर्वव्याप-कत्वादि शक्तियों की समाप्ति हो जाती है। एक साकार वस्तु, दूसरी सा[कार] वस्तु में व्याप्त नहीं हो सकती। भीत की भांति उसके मार्ग मे गतिरो[ध] हो जाती है। इसीलिये परमात्मा साकार और शरीरधारी मान[ना] अवैदिक और बुद्धिहीनता का परि[चायक] है।

सृष्टि का विस्तार—

प्रकृति के परमाणुओं से निर्मित सृष्टि का विस्तार अनन्त है यह जीव की बुद्धि की सीमा से परे है। इस महत् ब्रह्माण्ड की सृष्टि को समझने के लिये पहिले पृथिवी लोक को लीजिए। इस पृथिवी पर जगतः (चलते-फिरते प्राणियों की सृष्टि) तथा तस्थुषः (स्था-वर अप्राणियों वृक्षादि की सृष्टि) यह दो प्रकार की अनन्त सृष्टि दृष्टिगोचर होती है जिस की संख्या का कोई अन्त दिखाई नहीं पड़ता। यह पृथिवी सौर-मण्डल का एक ग्रह है हमारे इस सौर मण्डल मे सूर्य मंगल, बुद्ध, बृहस्पति, शुक्र, शनि,, पृथिवी, अरुण, वरुण, प्रजापति, ग्रह हे तथा प्रत्येक ग्रह के तथा चन्द्रमा नामक उप ग्रह हैं। यह सूर्य हमारी आकाशगंगा नामक नीहारिका की एक इकाई है। आकाशगंगा मे अनन्त सूर्य हैं और इस प्रकार की अनन्त नीहारिकायें इस ब्रह्माण्ड मे उपस्थित हैं। इस प्रकार हम देखते है कि मानव

कण-कण मे व्याप्त होकर उस [सर्व]व्यापक कर्त्ता, न्यायकारी यम को अवतार [लेने] वाला मान लेना तो और भी बुद्धि[हीन]ता का परिचायक है। उस निया[मक] अर्यमा यम के वास्तविक स्वरूप समझे बिना ही इस प्रकार की कल्प[ना] का सृजन हो सकता है। जिसकी श[क्ति] के बिना एक परमाणु भी गति नहीं हो सकता और प्रलय का स[मय] आने पर इस अनन्त ब्रह्माण्ड को प्र[लय] कर देता है। ऐसे शक्तिशाली परमा[त्मा] को अवतार लेकर एक दुष्ट जीवात्मा [के] शरीर हनन के लिये आना एक भ्र[ष्ट] मस्तिष्क की उपज के सिवाय और [कुछ] नहीं कहा जा सकता है। वास्तविक[ता] तो यह है कि एक जीवात्मा दुष्ट गु[णों] और कुवृत्तियों को धारण करने [के] पश्चात् रावण बन जाता है और दूस[रा] सद्गुणों और सद्वृत्तियो को धा[रण] करने से राम बन जाता है। सत्य अ[और] धर्म की अन्ततोगत्वा विजय होती है [किन्तु] बात तो यह है कि बिना वेद को सम[झे] जीवात्मा और परमात्मा की पृ[थक्] शक्ति का भेद समझ मे नहीं आता। दोनों के क्षेत्र विस्तार आदि में [जो] अन्तर है यही तो ज्ञान की चरम सी[मा] है। परमात्मा को साकार और अवता[री] मानना भारत के लिये महान् अहित[कर] है। यह पराधीनता, साम्प्रदायिकता आपसी फूट और आलस्य को जन्म दे[ने] वाला है। आज विदेशी धर्म प्रचार[क] इसी अज्ञान के कारण भारत की भोली भाली जनता का शिकार खेल रहे [हैं] और उन्हें विदेशी विचार देकर ईसा[ई] बना रहे हैं। यदि भारतीय मनीषियों [ने] अपनी करवट न बदली तो इसका ए[क] बड़ा भीषण परिणाम होगा। किसी [भी] देश की स्वतन्त्रता छीनने के लिए पहले इस प्रकार का वातावरण तैयार बनाया जाता है और बाद मे आक्रमण द्वार[ा] शेष व्यक्तियो को तबाह और बरबा[द] कर दिया जाता है।

परमात्मा का सत्य स्वरूप केवल वेद ही मे वर्णित है। जिसका व्याख्यान उपनिषदादि मे है। अन्य साम्प्रदायिक

(शेष पृष्ठ १० कालम २ पर)

विधवा का क्रन्दन

क्षत हुआ जिसका हाय सुहाग,
पड़ा तन्त्री का सूना राग।
व्यथित श्वासों का कम्पन तान।
उड़ गया पंजर-मुक्त विहाग ॥१

शून्य-सा संसृति का आलोक,
विभव-हीना, दयनीय सशोक।
न जिसमें जीवन ऐसा प्राण,
न इसका लोक, न है परलोक ॥२॥

विश्व का हाहाकार महान्,
श्मशान-स्वर का संचार प्रधान।
दुखी पीड़ा का बिलख-विलाप,
गला भर भर गाता दुख-गान ॥३॥

करों से छीन लिया अधिकार,
सिसकना ही केवल आधार।
यही क्या मानव तेरा प्यार?
हंसे तू रोता विधवा-भार ॥४॥

अस्थि-पञ्जर जिसका अवशेष,
नहीं है रक्त-बिन्दु अवशेष।
गुंथे ना, जबसे अब तक केश,
यही भारत का वैभव शेष ॥५॥

झलकते रहते जिसके सदा,
नयन में कलियुग के जल बिन्दु।
अरे! उज्ज्वल भारत सकलङ्क—
इसी से है तव भारत-इन्दु ॥६॥

भाल का बिन्दु, नयन का बिन्दु,
शून्य का शून्य बना आधार।
शून्य-विधवा का तो बस अरे!
बना सूना ही कारागार ॥७॥

सतत रोना ही जिसका कर्म,
न हंसना देखा, जिसने भ्रात।
सुप्त होता है जिसका देव,
उदय के साथ शुभ्र सा प्रात ॥८॥

निर्बला दुखिया का धन एक,
रुदन कर सदन बहाना धार।
यही मानव-समाज का हीर—
मुक्त-मणियों का हीरक हार ॥९॥

आह से प्रथम उपजता गान,
प्राणवलि में लय जिसका प्राण।
सुनाओ क्रूर-कुटिलता-पूर्ण,
तान ताने की भैरव तान ॥१०॥

धूल-धूसर-मर जिसका नित्य,
वसन बनना जिसका उपराम।
काटती कल्पांतक-सी रात,
काटती दिन कह-कह कर राम ॥११॥

नहीं भोजन मिलता भर पेट,
गालियों की सहती है चोट।
सत्य पूछो तो ज्वालामुखी—
सहस्रों का उसमें विस्फोट ॥१२॥

पात्र मर्दन है उसका कर्म,
मर्मभेदी है उसका मर्म।
युवति का ऐश्वर्यों से दूर,
कुढ़ा करना ही केवल धर्म ॥१३॥

विश्व, क्या दोगे तनिक न ध्यान,
दीनता का सुनकर आलाप।
न अपनाओगे क्या ये निधी—
धर्म का जिसमें है अभिशाप ॥१४॥

—कवयिता—विश्वबन्धु शास्त्री, साहित्यरत्न
वरिष्ठ उपप्रधान आ० प्र० सभा, उत्तरप्रदेश
आर्यनगर, भूड़ बरेली

विजय

हर ले जड़ता लघुता कटुता
मुझ में प्रभु! पावनता भर दे
प्रिय पुण्य सुकर्म करूं जग में
पशुता हर मानवता भर दे।

दुःख में न डरूं सुख में न हंसूं
विचरूं उपकार स्वभाव लिये
भव-बन्धन काट सकूं सबके
मन में शुभ भावन लिये।

शुभ लक्ष्य विहीन बनूं न कभी
प्रिय वैदिक धर्म धुरीण बनूं
बलवान बनूं गुणवान बनूं
प्रभु! कर्मठ और प्रवीण बनूं।

पथ एक हटूं न सुमारग से
भय आलय या धन धाम मिले
मन हो न विकार प्रभाव कभी
चहे मान मिले अपमान मिले।

कर हैं कि बनूं बल दानव का
पद हैं विचरूं महिमण्डल में
उर है, जन जीवन प्यार करूं
मन है, रत हो प्रभु चिन्तन में।

रमणीय अहा! सुषमा जग की
अवलोक न लूं, जब नैन मिले
रस क्यों न भरूं हर अक्षर में
जब कण्ठ मिला अब बैन मिले।

"परिवार कहें वसुधा भर को"
यह भाव अलौकिक सुन्दर है
अभिमान रहे पर भारत का
अपना घर तो अपना घर है।

सवितः! शुभ पन्थ प्रवृत्त रहे
मम बुद्धि वरेण्य यही वर दो
प्रभु! पातक हूं अब तार मुझे
करुणाकर! देव! कृपा कर दो।

—आचार्य कृष्णगोपाल आर्य शास्त्री, गुरुकुल सिरसागंज

काहे काम आयेंगे

वृक्ष मीठे फल देत पंथिये को छाया देत,
ताकी लकड़ी भी लोग आग में जलायेंगे।
गाय-अश्व आदि पशु दूध औ सवारी देत,
चमरी ते चमरी की [illegible] ह बनायेंगे॥
छोटे अरु बड़े जो पदारथ जगत बीच,
काहू न काहू के काम एक दिन आयेंगे।
बता 'छाजूराम' बिनु उपकार तेरे ये,
शरीर और ठाट-बाट काहे काम आयेंगे॥

—छाजूराम 'शान्त' आर्योपदेशक, फैजाबाद

ही सब दौलत है। मोहम्मद साहब ने एक जगह प्रार्थना की है कि—

"हे ईश्वर, मेरे मजहब को गरीब ही रखना।"

मोहम्मद जानते थे कि दौलत न नहीं कि बाधा सभी नहीं। अर्यसम

प्रकाश जो अब मन्द पड़ गया है

★श्री विश्ववर्धन वेदालङ्कार
रेडियो स्पीकर

पर्याप्त विचार करने के बाद मैं आर्यसमाज की उपमा एक उस दीपक से दे सकता हूं जो अन्धकार को खा जाता है और तीव्र प्रकाश करता है। परन्तु फिर वह अवस्था आती है कि वह मन्द पड़ने लगता है और अन्त मे अपनी जगह पर केवल टिमटिमाता रह जाता है व अन्धकार पुनः घिर आता है। एक बार आर्यसमाज के स्थापना दिवस पर कुछ लोग हिन्दू नेता मदन मोहन मालवीय जी के पास गये और कहा, कि आप स्थापना दिवस के उपलक्ष्य मे कुछ विचार आर्यसमाज मन्दिर मे चलकर दीजिये। श्री मालवीय जी ने कहा जाओ मेरी तरफ से कह दो कि आर्य समाज दौड़ लगाये। लोगों ने पूछा इसका क्या मतलब हुआ। बोले अगर आर्य समाज दौड़ेगा तो हिन्दू खड़ा हो जायेगा। अगर आर्यसमाज खड़ा हो जायेगा तो हिन्दू बैठ जायेगा। अगर आर्य समाज बैठ जायेगा तो हिन्दू दुनिया से मिट जायेगा। ये विचार आर्यसमाज के बारे में उस नेता के है, जो कट्टर सनातनी था। परन्तु अब वही आर्यसमाज समाप्ति के कगार पर है। ये दो दशक आर्य समाज के इतिहास मे स्वाधीनता के बाद प्रचार कार्य की दृष्टि से प्रशंसनाबायक नहीं हैं। कहने को तो कुछ नास्तिक ये कह देंगे कि बड़े-बड़े आन्दोलन को सूत्रपात इन दो दशकों मे हुई परन्तु ये तर्क नितान्त हल्का है। जो कुछ आर्य समाज का हम आज पा रहे हैं कालान्तर मे इसका भी नाश प्रतीत हो रहा है। प्रचार जैसा कार्य जिसका निर्वाह महाराजा अशोक ने अपने लड़के लड़कियों को प्रचारक बनाकर बर्मा, श्याम मलाया भेज कर किया था, हमारे कर्णधारों को उसका कुछ भी नहीं है। सही बात ये है कि आर्य समाज आज लाला लाजपतराय और पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द जैसे नेताओं के अभाव में अनाथ होकर भटक रहा है। समस्या है कि कौन आज आर्य समाज को दिशा दे? कौन ऐसा आज आदमी दिखाई देता है जो रात-दिन आर्य समाज पर सोचता हो और उसी का सपना देखता हो आखिर एक आदमी ऐसा भी चाहिये, जो हर तरह का सम्मोहन त्यागकर आर्य समाज की बागडोर हाथ में ले और इस बात की शपथ ले कि मै आर्य समाज को एशिया में फैलाऊंगा व अपना जीवन लगाकर दुनिया के एक एक चप्पे पर समाज का दीप जलाऊंगा। ऐसा कोई दिव्य पुरुष दिखाई नहीं देता है। किस्सा इसकी तरह है कि कुम्हार के गधे से आप पूछिये कि तुम भाई साहब अब क्या विचार रहे हो अपने भविष्य के बारे में? कहेगा सोचता हू कि अगले इलेक्शन में एम० पी० के लिये खड़ा हो जाऊं। मेरा अभिप्राय यह है कि जो व्यक्ति समाज सुधार जैसा उच्च कार्य कर रहा है उसकी बराबरी मे मैं एम० पी० आदि को छोटा मानता हू। या जो संस्था या समाज एक पुनीत उद्देश्य के शिखर पर पहुंचने का कार्य कर रही है वह जनसंघ, कांग्रेस आदि दलों से बहुत बड़ी है। छोटे मुंह यदि बड़ी बात न हो तो मैं इतना कहूंगा कि जब से आर्य समाजें व शिक्षण संस्थायें मिनिस्टरों व नेताओं से उद्घाटन कराने लगी हैं उसी समय से हमारी प्रतिष्ठा का अवमूल्यन हो गया है। मैं जब महाविद्यालय ज्वालापुर में पढ़ता था तो महामहिम पं० इन्द्र जी के कभी-कभी चरण स्पर्श करने जाता था: उन्होने बताया था कि गांधी जी व बड़े-वाइसराय, जवाहरलाल नेहरू व मोती-लाल नेहरू आदि नेता गुरुकुल कांगड़ी में बिना बुलाये आया करते थे और कभी-कभी स्वामी श्रद्धानन्द जी गुरुकुल दिखाने के लिये इन्कार किया करते थे कि अभी परिस्थिति अनुकूल नहीं है। जिस दिन आर्य समाज को किसी कर्मठ सच्चे नेता का संचालन प्राप्त होगा उस दिन पुनः आर्य समाज उठ खड़ा होगा। आर्य समाज अपनी प्रतिष्ठा को पुनः तभी प्राप्त कर सकता है जब वह अपने मञ्च पर त्यागी तपस्वी कर्मठ संन्यासियों व विद्वानों को समादर महान् नेताओं व उदभट् स्कॉलरस् के अभाव में जीर्ण होकर रह जायेगा। ये बात सहसा यथार्थ है व इसका प्रत्यक्ष भी हो रहा है। आर्य समाज के अगले दो दशक कैसे भविष्य की सृष्टि करेंगे ये भी एक ज्वलन्त प्रश्न है विद्वानों की व वर्तमान परम्परा जिसमे पूज्य प० रामचन्द्र देहलवी, श्री प० बिहारीलाल जी शास्त्री, बुद्धदेव जी विद्यालंकार व ठाकुर अमरसिंह जी व कुंवर सुखलाल जी आते हैं—सभी आगे पीछे यात्रा करने वाले यात्री दीख रहे हैं। अस्तु ये भगवान् का आशीर्वाद है कि इनका साया हम पर कुछ काल तक और बना रहे, परन्तु जो अध्याय इनके बाद मे खुलेगा वह पता नहीं पूर्व अध्यायों की अपेक्षा कैसा होगा। ये अवाक् रह जाने वाली एक बात है। सम्भवतः अगले अध्याय के लिये सामग्री ही नहीं हो पायेगी। तब ये कहना अयथार्थ न होगा कि आर्य समाज का प्रकाश मन्द पड़ गया है। एक पेचीदा समस्या सामने हाल में और उपस्थित हुई है कि कुछ लोग महामण्डलेश्वर बनकर समाजों पर बैठ गये हैं। और एक भी सदस्य नहीं बढ़ाते हैं—डर है कि उनके पोलखाते को सामने लाता कहीं कोई न आ जावे। तर्क देते हैं कि साहब भर्ती करने से क्या लाभ है। संध्या, हवन कुछ भी ये लोग नहीं जानते हैं। इतने चतुर और सयाने हैं ये लोग कि अपने व्यक्ति को सदस्य बना लेंगे चाहे वह आचार से गिरा हो और सिगरेट, शराब, अण्डा सब उड़ाता हो परन्तु एक सज्जन आदमी को सदस्य नहीं बनायेंगे जो सन्ध्या इत्यादि सब सीख सकेगा है। दो वर्ष इसी का अध्ययन करते हुए बीत गये हैं। मेरा अभिप्राय है कि नियम सभी पर लागू होना चाहिये, अगर आप दूसरे आदमी को कसौटी पर कस कर लेना चाहते हैं और लेते हैं तो अपने द्वारा बनाये गये सदस्यों पर भी दृष्टि-पात कीजिये, जो जीरो बटा जीरो हैं। जब तक आर्यसमाज के लोग इस गर्हित आचरण को नहीं त्यागेंगे तब तक समाज का भाग्योदय नहीं होगा और न ये आगे बढ़ेगा। जब हम भारत में ही आर्य समाज को ओत-प्रोत नहीं कर सके तो हम विश्व को क्या आर्य बनायेंगे जो शान से कहते हैं कि 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'। ... हम इसे ... उत्तरोत्तर ही समाज का लोप होता जा रहा है। मेरा तो एक विचार यह भी हो चला है कि अब जो समाजें नवीन स्थापित हों उनके साथ स्कूल, पाठशालायें, दुकान व मकान न बनाये जायें क्योंकि झगड़े की जड़ ये

सिंहावलोकन

सर्व श्रेष्ठ संस्था है इसके ध्येय बहु महत्वपूर्ण हैं, इसका अतीत का इतिहास प्रशंसनीय है, इसके कार्य अनुकरणीय हैं, कोई नेता नहीं। अब तो आवश्यक है कि एक कर्मठ त्यागी सच्चरित्र को सर्वस्व मानकर सारा आर्यजगत उसके पीछे चले वही व्यक्ति हमारे लिए सर्वोपरि होना चाहिये, उसकी बिना आज्ञा के कोई भी व्यापार नहीं होना चाहिये। अरविन्द जी का पाण्डिचेरी आश्रम जो विश्वविद्यालय है केवल मां जी के आदेश पर चलता है, पर नेताओं को छोड़कर एक के पीछे चलने से अनुशासन और व्यवस्था का निर्माण होता है वहीं तो अपनी-अपनी ढपली अपना-अपना राग तो है ही। श्रीकृष्ण का ये आप्त वाक्य "सर्व धर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज" यहां पूरा लागू होता है।

हर आर्यसमाज में एक संन्यासी व वानप्रस्थी रहना चाहिये, जिसका वा समाज भी आज्ञाओं से वहन करे। हैं। और उसका क्या हुआ जो स्वामी दयानन्द का मिशन है तथा आप इससे अधिक अच्छी बात और क्या हो सकती है? हमारी प्रतिनिधि सभायें इस दिशा में भगीरथ प्रयास करना चाहिये। सब सभी वानप्रस्थाश्रमों से ऐसे आश्रमियों की सेवायें प्राप्त करें। और जब उन वानप्रस्थियों का मन वहां न लगे स्थानान्तर हो तो उन सबकी बदली परस्पर एक दूसरी समाज को समा करदे। एक बात हमें अवश्य समझ लेनी चाहिये कि समाज मन्दिर प्रतिदिन खुलने चाहिये, सुबह सायं नियम से सन्ध्या और अग्निहोत्र होना चाहिये क्योंकि समाज मन्दिर तर्क वितर्क का स्थान नहीं है अपितु पवित्र उपासना स्थल है। प्रातः ब्रह्म मुहूर्त मे ध्वनि यन्त्र के द्वारा समाज में प्रातःमन्त्र के मन्त्र बोले जाने चाहिये और रात्रि को ९ बजे शयन के मन्त्र भी ध्वनि यन्त्र से बोले जाने चाहिये इससे

नगर में आर्यसमाज का पर्याप्त प्रचार होगा। इस समय आर्यसमाजों में दैनिक कर्तव्य कुछ भी नहीं होता है इस कारण से लोगों को श्रद्धा नहीं रही है समाज में। जबकि मस्जिदों में अब (अजान) लाउडस्पीकर द्वारा सुबह साय सुना जाती है। प्रचार की दृष्टि से कुछ (भी) भी परमावश्यक है। रविवार के सत्संग में सभी सदस्यों को सपरिवार आर्यसमाज में आना चाहिये। जब सत्संग समाप्त हों तो अन्त में सबको श्रद्धा से खड़े हो जाना चाहिये और तब आर्यसमाज मन्दिर में कौमी गीत गूजना चाहिये। सवसञ्चम का अर्थ मेरी समझ में कौमी गीत का होना चाहिये। जन सभा उत्सवादि समस्त आयोजनों के अन्त में कौमी गीत का प्रयोग श्रेयस्कर है।

ईसाइयों का सहगान अत्यन्त मुग्ध कारी होता है। जब वे एक ही पर्दे पर समवेत स्वर को उठाते और गिराते हैं तो वे अनुपस्थित ईसा का मानवीकरण सा कर देते हैं। ईसाइयों से भी बढ़कर मुसलमानों का कौमीगीत मैंने सुना है। जब मौलवी साहब की तकरीर समाप्त हो जाती है तो सुन्नी मिलाकर सब उत्तिष्ठ हो जाते है और हजारों जन समूह ऐसे आरोह अवरोह में गुजारता है कि एक-एक मुसलमान में लोय की भावना प्रतिष्ठित हो जाती है। अस्तु हमें कुछ अपेक्षित परिवतन विषयानुसार दूसरों को देखते हुए अपने में यथाशीघ्र करना चाहिये। प्रचार कार्य बहुत न्यून है बड़े पैमाने पर होना चाहिये। सार्वदेशिक सभा एक कारखाने की स्थापना करे और उसकी आय से मिशन कार्य को उन्नति दे। वेतन के लिये दूसरों पर सभा को निर्भर नहीं होना चाहिये। उच्च शिक्षा प्राप्त और उच्च चरित्र वाले लोगों का चयन इस कार्य के लिये करना चाहिये। वर्तमान प्रचार पद्धति अत्यन्त दोषपूर्ण है इसका जीर्णोद्धार कर देना चाहिये। आर्य समाज के पदाधिकारियों को सभा ही स्वयं मनोनीत करे और सही आवश्यक लोगों को उक्त स्थानों पर बैठालें। ये जो चुनाव का अखाड़ा है, जिस पर छुरेबाजी तक हो जाती है इसे समाप्त कर देना चाहिये। आर्य समाजों का सब प्रबन्ध कार्य सभा अपने हाथ में ले लेना चाहिये जिससे नाना प्रकार के विवाद समाप्त हों। सभा का अनुशासन ढीला होने से ही ये सब बीमारियाँ खड़ी होती है।

यह सब कह देने के बाद एक बात और सबकी सेवा में निवेदन करना चाहता हूँ कि आर्यसमाज के इस आरोह अवरोह को देखकर किसी का हतोत्साह

अध्यात्म सुधा

(पृष्ठ ८ का शेष)

पुराण दि पुस्तकों में एक मन गढ़न्त और कपोल कल्पना है। आत्मा की शुद्धि के लिये और ब्रह्म ज्ञान के लिये हमें वेद [illegible] स्वरूप ही ग्रहण करना चाहिए। यह शुद्ध सच्चिदानन्द निराकार स्वरूप से ही हो सकता है।

जो परमात्म दर्शन करना चाहते हैं वे एकान्त स्थान पर शान्त वातावरण में किसी नदी या जलाशय के किनारे बैठ कर ब्रह्मयज्ञ और इसका चिन्तन करें। समय आने पर वृत्तियाँ अपने वश में होंगी और वह परमात्मा का अनुभव करेंगे। चौथे आसमान, सातवें आसमान काबा, काशी, कैलाश, क्षीरसागर आदि आदि स्थान सभी निराधार और निष्फल कल्पनायें हैं। देश देशान्तरों में भ्रमण करने से चोर, डाकू, बदमाश आदि तो सैकड़ों मिलेंगे जो सर्वस्व अपहरण कर लेंगे परन्तु परमात्मा का मिलना असम्भव है। वेद तव पश्यन्तिहित गुहायाम वह परमपिता परमात्मा तो अपने ही हृदय में जीवात्मा द्वारा अनुभव किया जाता है। ऐसा भगवती श्रुति का प्रमाण है।

'जो बस कीन्ह सो तस फल चाखा' कर्म के अनुसार ही फल मिलता है। आग में शक्कर डालने से जल जाती है। पानी में घोलने से घुल जाती है। हवा में उड़ जाती है आदि-आदि। 'कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समा' सौ वर्ष तक श्रुति निर्दिष्ट अग्निहोत्रादि वर्णाश्रम धर्म करता हुआ जीने की इच्छा करें ऐसा भगवती श्रुति कहती है। इस प्रकार यदि जीव चार आने भर पाप और बारह आने भर पुण्य करता है तो उसे चार आने भर पाप का फल तथा बारह आने भर पुण्य का फल भोगने को मिलता है। पाप कर्म बन्द कर देने से भविष्य में फल के लिये पाप एकत्रित ही नहीं हो पाते और पुण्य कर्म बन्द कर देने से भविष्य में पुण्य कर्म संचित ही नहीं हो पाते।

प्रात से सायंकाल तक पाप कर्मों द्वारा जीविका कमाने वाले व्यक्ति ही पाप दूर करने के लिये कोई सरल मार्ग ढूंढते फिरते हैं और मिथ्याचारी लम्पटी व्यक्तियों के हाथ में पड़ कर अपना और अपने देश का सर्वनाश करते है इस प्रकार की प्रवृत्तियों से पापों का नाश होकर न तो ईश्वर प्राप्ति ही होती है और न मोक्ष ही होता है। विचारों और सिद्धान्तों के मिथ्या हो जाने से वह और जाति महान दुखान्धकार में फँस जाते हैं। और संसार को नरक बना देते हैं।

पुनर्जन्म के सिद्धान्त को मानने वाला व्यक्ति संसार को विद्या ज्ञान ऐश्वर्यादि से परिपूर्ण करना चाहता है। क्योंकि वह जानता है कि उसे लौट कर फिर यहीं आना है। इसके विपरीत दूसरा व्यक्ति चोरी हिंसा व्यभिचारादि से मनस्तृप्ति करना चाहता है क्योंकि वह नहीं समझता कि अगर वह इस संसार को गन्दा बना कर छोड़ रहा है तो उसे फिर यहीं आकर इसी गन्दगी में रहना होगा। वह खुल कर प्रचार करता है खाओ पियो मौज करो। उसे मिथ्या सिद्धान्तवादी सम्प्रदायों की ओर एक और सहारा मिल जाता है कि अमुक पीर पैगम्बर या धर्म पर विश्वास करो माफी हो जायगी। जैसे ईसाइयों के पैगम्बर ईसामसीह पर विश्वास ले आने से ईसाइयों के सभी गुनाह माफ हो जाते हैं। कितनी बड़ी भ्रान्ति है जिससे मनुष्यों को फांस कर कुकर्म करने के लिये खुली प्रेरणा मिल जाती है।

मृत्यु के उपरान्त वैदिक सिद्धान्तानुसार शवदाह होना चाहिये, 'भस्मान्तं शरीरं' इससे श्मशान का चार गज वर्ग पृथ्वी पर नगर भर के मुर्दे भस्म कर दिये जा सकते हैं और कब्रिस्तानों से मीलों पृथ्वी व्यर्थ नहीं होती। जो मनुष्य वैदिक सिद्धान्तानुसार पृथ्वी के किसी भी भाग को बेकार नहीं करना चाहता क्योंकि उस स्थान पर कृषि आदि से मनुष्यों को अन्नादि की प्राप्ति होती है वह मनुष्य सामाजिक दृष्टि से महा उपयोगी है। परन्तु जो मनुष्य इस सिद्धान्त को न मान कर सम्पूर्ण पृथिवी को पक्का कब्रिस्तान ही बना डाले उसे केवल सम्प्रदायवादी ही भला कहा जा सकता है। सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और न्यायिक दृष्टि से कोई भी निर्भ्रान्त मस्तिष्क उसे अच्छा नहीं कह सकता। एक ओर समाज की यह दुर्दशा कि परमात्मा के बनाये हुये मनुष्य को रहने के लिये घर नहीं दूसरी ओर पत्थर के भगवान् और मृतक शवों के लिये मन्दिर और मजार बनाकर पृथ्वी सदा के लिये व्यर्थ कर दी जाती है। यदि यहाँ पर हम उन ऐसा करने वाले व्यक्तियों के लिये भ्रांत, दुर्बुद्धि और अदूरदर्शी आदि कहने लगें तो कोई अत्युक्ति या अपवाद नहीं होगा।

दुख और हंसी तो उस समय आती है जब ऐसे कर्मों का करना ईश्वराज्ञा कहा जाता है। इतना ही नहीं अनेकों जीवों को, जिन्हें वेदों में पालने की आज्ञा दी गई है, ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए ईश्वराज्ञा कहकर मूर्ति के सामने बलि कर दिया जाता है। क्या इसी का नाम मनुष्यता है? क्या इसी का नाम ईश्वराज्ञा है?

ओ अन्धविश्वासों के आधार पर चलने वाले प्राणी! थोड़ी देर एकान्त में बैठकर सोच। अपनी आत्मा में व्याप्त परमेश्वर से पूछ। उससे सलाह ले कि ईश्वर का विधान और ईश्वर की आज्ञा क्या हो सकती है। क्या सचमुच तेरे अन्तरतम से इन बेगुनाह प्राणियों की हिंसा करने की आवाज आती है। कभी नहीं। हर प्राणी के अन्तरतम से वास्तव में निर्दोष प्राणियों की रक्षा करने की ही आवाज आती है। मनन करना ही मनुष्य का गुण है। मनुष्य कहते ही उसे है जो मनन करता है अन्यथा वह मनुष्य कहलाने का अधिकारी ही नहीं है। मनुष्य शब्द मन विचारणे धातु से बना है। इसलिये विचारहीन प्राणी मनुष्य नहीं कहा जा सकता। मनुष्य का मनुष्यत्व तो उस परमपिता परमात्मा के दिये गये वेद रूपी ज्ञान की सहायता से सृ[illegible] पदार्थों को यथायोग्य न्यायपूर्ण [illegible] करना ही है प्रत्येक मनुष्य का कर्त्तव्य है कि वह वेदों को आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक दृष्टिकोण से पढ़े। बिना पढ़े और जाने वेदों की सार्थकता दृष्टिगत नहीं हो सकता और उस परमपिता परमात्मा का सत्य स्वरूप विदित नहीं हो सकता क्योंकि वह ज्ञान का विषय है इन्द्रियों का नहीं। ★

नहीं आना चाहिये। क्योंकि शायर नदीम कहते हैं कि—

डूबा हुआ सूरज जो निकल सकता है
तो हिम्मत का हर रंग बदल सकता है
और कोशिश ही दुनिया में,
बड़ी चीज है नदीम।
जो चाहोगे जिस साँचे में,
ढल सकता है।

हमें भी आशा है जैसे सूरज डूबने के बाद फिर निकलता है उसी प्रकार ऋषि का आर्यसमाज एक दिन फिर करवट बदलेगा और पाखण्ड खण्डिनी पताका फिर फरफराकर आन्दोलित होकर आकाश में उड़ेगी और सब कहेंगे

बोल वैदिक धर्म की जय।

★

दशम सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन

हैदराबाद

१, लाख रुपये की अपील

सम्मेलन का आयोजन

सृष्टि के आरम्भ से ही आर्यजन वेदों को परम ईश्वरीय ज्ञान मान इनमे निर्दिष्ट मर्यादाओं का पालन करते हुए भू-मण्डल के मानवों को वैदिक मर्यादाओं पर चलाते रहें। जिसके परिणाम-स्वरूप सम्पूर्ण विश्व में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना व्याप्त थी। इसी से समस्त मानवों मे परस्पर प्रेम, विश्वास और सहानुभूति का व्यवहार साक्षात् स्वरूप धारण किये हुए था। इसी से मानव समाज तो क्या प्राणी मात्र में भी सर्वत्र शान्ति ही शान्ति दिखाई देती थी। इसी शान्ति के युग में लोग भौतिकवादी जीवन की अपेक्षा आध्यात्मिक जीवन को प्रधान लक्ष्य मान तदनुरूप वैदिक मर्यादाओं का पालन कर अपने-अपने वर्णाश्रम धर्म को पालते हुये प्रभु प्राप्ति और आत्म शान्ति एवं मुक्ति आदि जैसे परम लक्ष्य को प्राप्त करते थे जो कि मानव-जीवन के प्रमुख उद्देश हैं।

दुर्भाग्य कि यह सब सम्पूर्ण विश्व में अखण्ड रहने की अपेक्षा आर्यावर्त में भी इसका अक्षुण्ण प्रभाव नहीं। इसी सबका अनुभव युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने करते हुए आर्य समाज की स्थापना की और इस सब का दायित्व इस पर रखा। ऋषि ऋण की पूर्ति के लिये आर्यसमाज लगभग ९२ वर्ष से कृत संकल्प है और महर्षि की क्रिया कलापों को व्यवहृत करता आ रहा है।

भारत को स्वाधीन होकर २० वर्ष हो रहे हैं, परन्तु भारत की प्राचीन मर्यादाओं के अनुसार हमारा जीवन बनता नहीं दिखाई देता बल्कि राष्ट्र आज पाश्चात्य भौतिकवादी ध्वस्त राजनीतिक मार्ग पर अग्रसर होता दिखाई दे रहा है। और आज का भारतीय राष्ट्रिय जीवन नित नई समस्याओं में उलझता जा रहा है। इसकी भौगोलिक सीमायें भी सुरक्षित नहीं रहती दिखाई दे रही हैं। कभी चीनी आक्रमण का भय रहता है तो कभी पाकिस्तानी आक्रमण का खतरा बना दिखाई दे रहा है। दूसरी ओर ईसाई तथा मुस्लिम साम्प्रदायिक प्रवृत्तियों का सहारा लेकर राष्ट्रिय जीवन को विषाक्त किये हुए हैं। दिन प्रतिदिन इनके द्वारा होने वाला हिन्दु आर्य जनता का धर्म परिवर्तन भविष्य की एक गम्भीर चिन्ता है। ईसाइयों के द्वारा शिक्षा और सेवा का लबादा ओढ़ लोगों के मन और मस्तिष्क को बदलते हुये अपनी संख्या की वृद्धि कर देश के सम्मुख नागालैंड जैसी अराष्ट्रिय भावना को जागृत कर पृथकत्व का नारा देश के तथा जाति के लिये गम्भीर चुनौती के अतिरिक्त और कुछ नहीं।

इन्हीं सब परिस्थिति और समस्याओं को समक्ष रख हैदराबाद आर्य जगत् दशम सार्वदेशिक आर्य महा सम्मेलन का आयोजन अभूत पूर्व ऐतिहासिक रूप में नवम्बर मास मे करने जा रहा है। जिसमें योजना बद्ध कार्यों को क्रियात्मक रूप देने के लिये विचार किया जायगा तदर्थ एक लाख रुपये की राशि अपेक्षित होगी। जिसकी साधारण-सी रूप रेखा निम्न प्रकार है:-

आर्य महासम्मेलन का जो आयोजन नवम्बर मास में होने जा रहा है, उसके निमित्त पण्डाल निर्माण, प्रकाश व्यवस्था प्रतिनिधियों के निवास व भोजनादि व्यवस्था और सम्मेलन सम्बन्धी प्रचार एवं प्रकाशादि के लिये ३०,००० रुपये की राशि व्यय की जायेगी।

अराष्ट्रिय प्रचार निरोध व शुद्धि

देश में व्यापक रूप में हो रहे अराष्ट्रिय ईसाई प्रचार निरोध तथा माओ भक्त कम्युनिस्टों द्वारा बंगाल से लेकर आन्ध्र प्रदेश के सीमावर्ती अनेकों स्थानों पर नक्सल बाडी जैसा रूप दिये जाने के प्रयत्नों के प्रति जनता को जागरूक करने उपदेशकों द्वारा प्रचार तथा हिन्दी, अंग्रेजी और मराठी, कन्नड व तेलगु भाषा में ट्रैक्ट आदि प्रकाशित कर वितरण करने निमित्त २५,००० रु० की राशि निर्धारित की जा रही है। इस निधि में २-५-१० तथा २५ रुपये की टिकटें छापी गई हैं। अधिक से अधिक संख्या में बेचावें और धन संग्रह करें।

उपदेशक विद्यालय की स्थापना

सभा के तेलुगु, मराठी और कन्नड़ भाषा के व्यापक क्षेत्र को दृष्टि में और उसमे प्रचार के उद्देश्य से सभा के सम्मुख एक उपदेशक विद्यालय के स्थापना की योजना है। तीनों भाषाओं के उपदेशक तैयार करने एवं उनके प्रशिक्षित हो जाने पर उनसे कार्य लेने के निमित्त २५,००० रुपये व्यय किये जाने की योजना रखी गयी है।

साहित्य प्रकाशन

वैदिक सिद्धान्तों सम्बन्धी आर्य विद्वानों द्वारा लिखे गये उपयोगी ग्रन्थों को हिन्दी, अंग्रेजी तथा प्रान्तीय भाषाओं में प्रकाशित करवाने २०,००० रुपये की राशि निर्धारित की जा रही है। जिससे शिक्षितवर्ग तक साहित्य द्वारा आर्य सिद्धान्तों को पहुँचाया जा सके।

उपर्युक्त योजना [illegible] १ लाख रुपये के संग्रह का निश्चय किया जा रहा है। आर्य हिन्दु जनता ने आज तक देश और जाति के रक्षार्थ दान देकर आर्य समाज के कार्यों को प्रोत्साहित किया है। इसी परम्परानुसार यह अपील भी इस आशा से प्रसारित की गई है कि वह देश-जाति और राष्ट्र रक्षा के इस यज्ञ में अपनी दान रूपी आहुति देकर होने वाले इस सम्मेलन को सफल बनायेंगे।

धन भेजने का पता:—कार्यालय, आर्य प्रतिनिधि सभा
मध्य दक्षिण, सुलतान बाजार
हैदराबाद

दर्शनाभिलाषी

नरेन्द्र	कोत्तूर सीतैया गुप्त	शेषराव वाघमारे एडवोकेट
प्रधान सभा	उप प्रधान सभा	उप प्रधान सभा

रामचन्द्रराव कल्याणी, एम. एल. ए	[illegible] वेंकटस्वामी, एडवोकेट
मन्त्री सभा	उप प्रधान सभा
ए. बालरेड्डी,	छगनलाल विजयवर्गीय
उप मन्त्री सभा	उप मन्त्री सभा

श्री पं० कालीचरण जी शर्मा का देहान्त !

आर्यजगत् मे यह समाचार दुःख के साथ पढ़ा जायगा कि आर्य समाज के सुप्रसिद्ध शास्त्रार्थ महारथी श्री पं० कालीचरण जी शर्मा आर्य मुसाफिर, 'आलिम फाजिल' आगरा निवासी का १४ सितम्बर को लगभग ८० वर्ष की आयु मे बांकीकुई मे देहावसान हो गया। पंडित जी अरबी, संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित थे। उन्होंने मौलवियों, पादरियों से बडे बड़े शास्त्रार्थ किये थे। आपने आगरे में मुसाफिर विद्यालय भी चलाया था। आपने आर्यसमाज के शास्त्रार्थ क्षेत्र में पर्याप्त ख्याति अर्जित की थी। आपका अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यनुसार किया गया। परमात्मा दिवंगत आत्मा को शान्ति और शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें, यही प्रार्थना है।

...देवी का स्मृति दिवस

हरिद्वार—श्रीयुत फकीरचन्द जी रिटायर्ड वाइस प्रिंसिपल डिग्री कालेज कांठ (मुरादाबाद) की धर्मशीला पत्नी श्रीमती गोपीदेवी जी का भारत हैवी इलेक्ट्रिकल रानीपुर हरिद्वार में अकस्मात हृदय की गति रुक जाने से देहावसान हो गया था।

स्वर्गीया देवीजी के तीनों सुपुत्र

(१) श्री परमानन्द कौशिक अध्यक्ष सिविल इन्जीनियरिंग विभाग, पूसा पौलीटेक्निक नई दिल्ली (२) श्री डा० ... सर्जन इर्विन अस्पताल नई दिल्ली (३) श्री सुभाषचन्द्र एक्जीक्यूटिव इन्जीनियर हैवी इलै० रानीपुर तथा पुत्री श्रीमती भारतीदेवी सिद्धान्त शास्त्री तथा उनके जामाता श्री मोहनचन्द्रसिंह ... प्रिंसिपल स्टाफ ट्रेनिंग कालेज स्टेट बैंक आफ इण्डिया पटना, ये सब आर्य समाज के परम भक्त हैं।

देवी जी का स्मृति दिवस हैवी इलेक्ट्रिक रानीपुर में मनाया गया। और ५००) निम्नलिखित संस्थाओं को दान में दिया गया—

१०१) सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, १०१) आर्यसमाज कांठ मुरादाबाद) ५१) आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, २५) गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर, २५) विरक्ताश्रम ज्वालापुर, २१) महिला आर्यसमाज कांठ, २१) आर्य नारी पुस्तकालय कांठ ११), ... ज्वालापुर २१), शिवाश्रम ज्वालापुर २१), सेवा समिति हरिद्वार २१), आ०स० सिकन्दराराऊ (अलीगढ़) २१), कन्या गुरुकुल हाथरस (अलीगढ़) ५१) आर्य अनाथालय पटौदी हाऊस दिल्ली।

—रघुनाथप्रसाद पाठक

शुद्धि समाचार

आल इण्डिया दयानन्द साल्वेशन मिशन होशियारपुर के कार्य कर्त्ताओं ने भारत के विभिन्न प्रान्तों में माह जून, जुलाई तथा अगस्त १९६८ में ४२७ बेघर हिन्दुओं को शुद्ध करके वैदिक धर्म का अंग बनाया है। जिसका योग निम्न प्रकार है।

पंजाब प्रान्त में	१७८	शुद्धियां
उत्तर प्रदेश में	१५०	
हरियाणा प्रान्त में	२५	
मध्य प्रदेश में	४५	
उत्कल प्रान्त में	२७	
राजस्थान में	९	
कुल शुद्धियां	४२७	

—रामदास, प्रधान मिशन

स्व. उपाध्याय जी के सम्बन्ध में शोकप्रस्ताव

निम्नलिखित आर्यसमाजों व संस्थाओं से पूज्य प० गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय के निधन पर पारित किये गये प्रस्ताव प्रकाशनार्थ प्राप्त हुए हैं, स्थानाभाव के कारण केवल आर्यसमाजों व संस्थाओं के नाम दिये जा रहे हैं—

आ०स० देवबन्द साहूपुरी (वाराणसी), हमीरपुर, मारहरा (एटा), नगीना, राणाप्रताप बाग दिल्ली, मुगलसराय गया ... सीसामऊ (कानपुर) पूरनपुर, हरबला, कायमगंज, मऊनाथभंजन करौली मनपुरी, बढ़नी (बस्ती) ... (म० प्र०) बम्बई (काकड़ वाडी), गोरखपुर जबलपुर कालपी अमरोहा, हनुमानरोड नई दिल्ली, लल्लापुरा वाराणसी दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार, सरस्वती विद्यालय आर्यसमाज गुना (म०प्र०), श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ सतारपुर डा० बाबूलाल छावनी (मेरठ) आ० स० नरही लखनऊ।

ग्राम अड्डयापुर (मु० नगर) मे १४७ ईसाइयों की शुद्धि

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के तत्वावधान में श्री डालचन्द आर्य ने एक शुद्धि सम्मेलन का आयोजन किया जिसमें १४७ ईसाइयों ने वैदिक धर्म की दीक्षा ली। शुद्धि संस्कार श्री हरिप्रसाद शास्त्री ने कराया। श्री आनन्द जी ने दीक्षान्त भाषण दिया। श्री कल्याण देव आर्य श्री महाराज आदि के भजन उपदेश हुये। ग्राम चौधरियों का पूर्ण सहयोग मिला। ग्राम के प्रधान जी ने सबके भोजन का प्रबन्ध किया। चौ० रामसिंह का सहयोग सराहनीय रहा। श्री हरिदत्त शर्मा ने भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा की ओर से शुद्ध हुओं का स्वागत और सब ग्रामवासियों तथा बाहर से पधारे सभी महानुभावों का धन्यवाद किया।

आर्यसमाज स्पेशल ट्रेन

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य नई दिल्ली की ओर से एक स्पेशल आर्य समाज ट्रेन दिल्ली से हैदराबाद के लिये ... सार्वदेशिक सभा की ओर से ... सार्वदेशिक आर्य महा सम्मेलन जो कि हैदराबाद में ८, ९, १० नवम्बर को मनाया जा रहा है के उपलक्ष में चल रही है। आर्य केन्द्रीय सभा की ... ८ ६८ की बैठक में ... गया है कि इस यात्रा ... लाभ उठाया जावे। इसके लिये एक स्पेशल समिति बना दी गई है कि जिसके संयोजक लाला रामनाथ जी ठेकेदार बनाये गये हैं। इस गाड़ी की रूपरेखा शीघ्र ही प्रकाशित की जायगी। जो सज्जन जाना चाहें वह अभी से अपना कार्यक्रम बना लें।

—रामनाथ मन्त्री
आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य

आर्यसमाज कोसीकलाँ (मथुरा) का उत्सव

आर्यसमाज कोसीकलां का ३० वां वार्षिकोत्सव दि० २ से ४ अक्तूबर ६८ तक सुभाषगंज में मनाया जाना निश्चय हुआ है। जिसमें आर्यजगत के प्रसिद्ध साधु सन्यासी, व्याख्यानदाता, भजनोपदेशक तथा भजनमण्डलियाँ पधार रही हैं। —ओमप्रकाश आर्य मन्त्री

महर्षि दयानन्द का ८५ वाँ निर्वाण महोत्सव

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य की ओर से श्री दयानन्द जी का ८५ वां निर्वाण उत्सव २१ १० ६८ सोमवार को प्रातः ८ से १२ बजे तक रामलीला मैदान में मनाया जायगा। इस उत्सव को सफल बनाने के लिये आर्य केन्द्रीय सभा ने पूरे जोर शोर से तैयारी आरम्भ कर दी है।

सूचना

श्री मद्दयानन्द आर्य सेवा संघ (दिल्ली) के प्रबन्धक श्री आचार्य सत्यप्रिय जी है, जो छात्र प्रवेश लेना चाहे। अथवा जो माता, पिता अपने पुत्र को प्रवेश कराना चाहें वे उनसे पत्र व्यवहारादि द्वारा विशेष जानकारी प्राप्त करके शीघ्र से शीघ्र प्रवेश करें और होवें। परीक्षायें शास्त्री और आचार्य तक की दिला दी जाती हैं। और साथ ही उपदेशक भी तैयार किये जाते हैं। चरित्र निर्माण पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

विदेशों में वेद प्रचार

आर्यसमाज मोम्बासा का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज मोम्बासा का वार्षिकोत्सव ३० अगस्त से १ सितम्बर तक मनाया गया। इस अवसर पर २३ अगस्त से ३० अगस्त तक श्री भारतेन्दु विमल, विद्यावाचस्पति, एम० ए० के आचार्यत्व में यजुर्वेद ब्रह्म पारायण यज्ञ का भी आयोजन किया गया। प्रतिदिन प्रातःकाल श्री भारतेन्दु जी और सायंकाल श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी का वेदोपदेश होता रहा। इसके अतिरिक्त अनेक अन्य धार्मिक तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी सफल आयोजन किया गया।

मोम्बासा का आर्यसमाज पूरे कीन्या में प्रचार की दृष्टि से अच्छा काम कर रहा है। यहाँ पर भारत से श्री भारतेन्दु विमल के आ जाने के कारण समाज की गतिविधियों को काफी बल मिल गया है। इस समय आर्यसमाज की गतिविधियों में—

साप्ताहिक सत्सङ्ग, महिला सत्सङ्ग बाल सभा, सङ्गीत कक्षाएं, हिन्दी कक्षाएं, यूथ क्लब, आन स्पोर्ट्स क्लब आर्यन वाइस (मासिक पत्रिका) इत्यादि बड़े ही सफल कार्यक्रम हैं।

शाहपुरा में वृष्टियज्ञ

दिनांक ३ सितम्बर से १७ सितम्बर तक श्रीमान राजाधिराज सा० श्री सुदर्शनदेव जी ने अपने स्वयं के खर्च से वृष्टि यज्ञ किया।

यह यज्ञ श्रीमद्दयानन्द महिला शिक्षण केन्द्र (महलों के अन्दर) के चौक में हुआ। जिसके यजमान स्वयं राजाधिराज साहब एवं आचार्य वृष्टि विज्ञान ... वीरसेन जी वेदश्रमी इन्दौर ... —मन्त्री

अध्यात्म निकेतन के दर्शन

★

ग्रीष्म की लू अपनी प्रबल वेग से बह रही है। पशु पक्षी अपनी पिपासा को शान्ति करने के लिये इधर-उधर पानी के लिये व्याकुल होकर दौड़ रहे हैं। नव बधुएँ अपने मुख पर घूँघट डाले सिर पर घड़ा लिये अपने घर लौट रही हैं, इसी समय वेद मित्र ने अपने घर आकर अपने पिता से कहा—कि पिता जी मेरे मित्र सुरेश ने मुझसे गुरुकुल के दर्शन करने की अपनी अभिलाषा प्रकट की है। यदि आप आज्ञा दें तो मैं इन्हें गुरुकुल का दर्शन कराकर इनके अशान्त हृदय मे शान्ति की मन्दाकिनी बहा लाऊं। पिता ने कहा वत्स! यह बहुत ही पुण्य का कार्य है-यदि किसी उजड़े हुये नीड़ में शान्ति की मन्दाकिनी बहा दे ऐसे शुभ कार्य में मैं भला कैसे अपनी अनुमति नहीं दूंगा।

पिता की आज्ञा प्राप्त कर वेदमित्र दौड़ा हुआ अपने के मित्र घर गया और मित्र से कहा कि मित्र पिता जी ने जाने की आज्ञा दे दी है। अब प्रातः यात्रा प्रारंभ कर देना चाहिये। अब दोनों मित्र अपने घर में अपनी २ यात्रा का प्रबन्ध करने लगे। सुरेश एक सम्पन्न घराने का छात्र है। अतएव उसकी वेश-भूषा अंग्रेजी सभ्यता से सरा बोर है। वह अपने बालों में सुगन्धित तेल लगाकर अपने बालों को कंघी से ठीक किया। पैर में बूट डासन शोभायमान थे। फ्लाइंग शर्ट तथा पेंट उसके शरीर पर चमक रहे थे। कोमल हाथ मे रिष्ट-वाच चमक रही थी। जल्दी से वेदमित्र के घर आकर कहा कि मित्रवर जल्दी चलिये ट्रेन का समय हो गया। वेदमित्र का वेश-भूषा सादा हैं। पैर में साधारण चप्पल शरीर पर एक धोती खद्दर का तथा कुरत्ता और सिर के बाल मुड़े हुये हैं। वह अपनी मूँछों मे तेल लगाकर उसको मरोड़ता हुआ अपने कमरे से बाहर निकला। सुरेश ने मुस्कराकर कहा कि आप इस समय महाराणा प्रताप हो रहे हैं। आपकी मूँछे आपके शौर्य में इस समय चार चांद लगा रही हैं। वेदमित्र ने कहा कि आप इस समय लार्ड कर्जन मालूम दे रहे हैं। इस प्रकार हास परिहास मे दोनों मित्र स्टेशन की ओर चल दिये। दोनों मित्रों को स्टेशन पर अधिक देर तक ट्रेन की प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। जल्दी से ट्रेन आगई दोनों मित्र ट्रेन मे बैठ गये। ट्रेन अपनी द्रुति गति से चली आ रही थी उसके डिब्बे मे कई प्रकार के व्यक्ति बैठे थे, जिसमें स्त्री पुरुष दोनों थे। इतने मे एक मैली कुचैली पोटली बाधे उसके डिब्बे में एक वृद्ध व्यक्ति घुस एक बाबू ने कहा कि यह सेकिण्ड क्लास का डिब्बा है। थर्ड क्लास का डिब्बा पीछे है, तुम उधर जाओ। उसने कहा बाबू मेरे पास सेकेन्ड क्लास का ही टिकट है। उस बाबूने झेंपते हुए कहा कि तो फिर अन्दर आओ, कहाँ जाना है। उसने कहा कि इसमें गंगोत्री का जल है, इसे मै गंगोत्री से लाया हू और इस जल को चढ़ाने में रामेश्वरम् जा रहा हू। कुछ मुसलमान ईसाई तथा आधुनिक पढ़े लिये बाबुओं ने कहा कि देश स्वतन्त्र हो गया किन्तु यह ढोंग अभी दूर नहीं हुआ। वेदमित्र ने कहा कि आप इस वृद्ध की श्रद्धा का अनुमान लगाइये कि यह गंगोत्री का जल कितने कष्ट को सहन करते हुए रामेश्वरम् को लिये जा रहा है। इसके पीछे भारत माता की प्रतिमा संजोये हुये यह यात्रा कर रहा है। हिन्दुओं का चारोधाम द्वारिका, रामेश्वर, जगन्नाथ तथा बद्री-

नाथ में चार ब्रह्मचारी शंकराचार्य ने चार मठ स्थापित करके भारतीय राष्ट्रियता का ज्वलन्त उदाहरण समुपस्थित कर गये। उस डिब्बे में जितने व्यक्ति स्त्री पुरुष थे सब प्रसन्न हो गये और वेदमित्र के मुख को देखने लगे। सब लोगों ने पूँछा कि आप कहां जा रहे हैं। वेदमित्र जी ने कहा कि मैं इस बाबू (सुरेश) के अशान्ति हृदय मे शांति की सरिता प्रवाहित कराने गुरुकुल ज्वालापुर हरिद्वार जा रहा हूं।

दोनों मित्र गुरुकुल की रमणीय पुण्य स्थली मे पहुंच गये। प्रातःकाल का समय है ऊषादेवी सूर्यदेव के स्वागतार्थ रोली लिये खड़ी है। खग कुल पंचम स्वर मे ब्रह्मचारियों के स्वर मे स्तुति गान गा रहे हैं। गंगा की कल कल धारा आगन्तुकों के कल्मष को धो रही है। वेदमित्र ने सुरेश से कहा कि इन ब्रह्मचारियों की वेश-भूषा का अवलोकन कीजिये ब्रह्मचारी अब ईश उपासना में लीन हो गये। इन्हे अब प्रभु के आनन्द सागर मे डूबते हुये देखिये। तो देखो एक ब्रह्मचारी के मुख पर कैसी दिव्य आभा नर्तन कर रही है। जो देखो सुरेश उस ब्रह्मचारी को वह न जाने किस आनन्द का पान कर मुस्करा रहा है। इतने में गुरु जी ने अध्यात्मवाद की मन्दाकिनी निम्न वेद-मन्त्र से प्रवाहित की।—

उतस्या नोदिवा मतिरदितिरुत्या गमत्। सा शन्ताता मयस्करदप स्निधः॥

सामवेद ६।१।१०२॥

(स्या) वह (अदितिः) विनाशित न होने वाली (मति.) मति (ऊत्या) अपनी रक्षा सहित शक्ति (दिवा) दिन के प्रकाश मे (उत) भी (नः) हमे (आगमत्) उपलब्ध हो (सा) वह (शन्ताता) शान्ति का प्रसार करने वाली (बुद्धि) (स्रिधः) बाधाओं को (अप) दूर कर (मय.) सुख को (करत्) सृष्टि करे दिन के कठिन परिश्रम से थक कर मैं रात को सो रहा हूं। कुछ घण्टों के लिये मुझे अपनी सत्ता का भी कुछ ज्ञान नहीं रहता। मेरी इन्द्रियां सो रहती हैं, मेरा मन सो रहता है। गहरी नींद में मुझे किसी काम की चिन्ता नहीं रहती है। जिस काम को मैंने दिन में अधूरी-अवस्था मे छोड़ दिया [illegible] किसके सहारे। जिस संसार [illegible] र जाते ही आंख मूंद लेता हू वह [illegible] होते वैसे ही बना रहेगा। इसकी वास्तविकता क्या है? जब मेरे मन मे इस प्रकार के सन्देह उदय होने लगते हैं तो मेरे लिये सोना असम्भव हो जाता है। चिन्ता की अवस्था मे नींद कहाँ। रात आराम के लिये है। रात्रि रमयित्री है अर्थात् आराम देने वाली। चिन्ता भार के लिए दिन का समय है दिन के रहते सन्देह वाद को खुला अवसर है। रात को मनुष्य दिन की थकान से हार कर किसी विश्वसनीय शक्ति का सहारा लेकर सो जाता है। यह संसार जड़ शक्तियों की उपज नहीं है। इसकी रचना आकस्मिक नहीं हुई। आकस्मिक घटना पर विश्वास कैसा। जड़ शक्तियां श्रद्धा की पात्र क्यों कर हो सकती है।

—लक्ष्मीनारायण शास्त्री
साहित्य रत्न, मुबहनी—बांदा

रात अंधेरी हो पर मुझे उस पर विश्वास है कि हम जो भी सम्पदा सुख में छोड़ गये थे वह प्रातः मुझे मिल गई। हमारी रक्षिका कोई चेतन शक्ति है। हम उसी मां की गोदी में निश्चिन्त सो रहते हैं।

वेदमित्र ने सुरेश से पूछा कि कुछ सुन रहे हो। सुरेश ने कहा कि मित्रवर कुछ न पूछिये मैं आनन्द सागर में इस समय पैठा आनन्द पान कर रहा हू, मुझे इस समय अपने तन-मन की सुध बुध नहीं है। मैं अब इन ब्रह्मचारियों की भांति जीव[illegible] कर प्रभु के गीत गाऊंगा।

अजमेर में भव्य ऋषि मेला!

२५ से २७ अक्टूबर ९८ तक परोपकारिणी सभा के तत्त्वावधान में अखिल भारतीय स्तर पर विशाल ऋषि मेले का आनासागर स्थित ऋषि उद्यान अजमेर में आयोजन है। श्री स्वामी मेधार्थी जी की अध्यक्षता में सामवेद-परायण यज्ञ आरम्भ होगा। श्री पूज्य आनन्द स्वामी जी महाराज, स्वामी सत्यपंतानन्द जी महाराज, श्री आचार्य उदयवीर शास्त्री, श्री प० आनन्दप्रिय जी, श्री विद्योत्तमायती, श्री लाला रामगोपाल शालवाले संसद सदस्य, श्री ओ३म्-प्रकाश जी त्यागी संसद सदस्य- प्रभृति इस अवसर पर पधार रहे हैं। —मन्त्री

आर्यमित्र की सूचना

अब तक जिन ग्राहकों का इस वर्ष हेतु शुल्क समाप्त है, उन्हे काफी समय पूर्व ही चन्दा समाप्ति की सूचनायें भेज दी गई है। कुछ कृपालु ग्राहकों ने अपना शुल्क भेज भी दिया है; परन्तु अधिकांश अभी शेष है।

अतएव अनुरोध है कि अविलम्ब आप महानुभाव अपना अपना शुल्क १०)रु० मनीआर्डर द्वारा भेजने का कष्ट करें।

डाक दर मे असाधारण वृद्धि हो जाने के कारण वी० पी० पी० भेजने से ग्राहकों पर अनावश्यक १) व्यय भार पड़ता है, अतएव कृपया अपना चन्दा मनीआर्डर द्वारा ही भेजिए।

मनीआर्डर के कूपन पर अपनी ग्राहक संख्या अवश्य लिखिये।

—[illegible]

(पृष्ठ ४ का शेष)

है का मांस खाते थे क्या सच है ? मैंने सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा उसमें ऐसा नहीं था। यह पुस्तक कक्षा ८ की में लगायी गई है। आप इस पर क्या कर रहे हैं जो आर्यों भारत की महान जाति बताई उन पर ऐसा झूठा लाछन कितना बुरा है इसका अनुमान आपही लगा सकते है। क्यों न इस पुस्तक को बन्द कराते आप।

—देवीलाल सिहाग
प्रथम वर्ष विधि पोकर भवन नं० ३५
रानी बाजार बिकानेर

(७)

आर्यमित्र के कई अकों मे मै उक्त विषय पर कई लेख पढ़ चुका हू। जो भाई वृक्षों मे जीव नहीं मानते उनसे मैं पूछना चाहता हूं कि वैदिक सिद्धान्त एवं महर्षि दयानन्द के मन्तव्य के विरुद्ध विचार रखते हुए भी क्या अपने को आर्यसमाजी मानते हैं अथवा इस प्रकार के लेख लिखने से आप की ख्याति और विद्वानों में गणना हो जाएगी। सम्भव है आर्यमित्र के बहुत से पाठक मुझे जो जानते हों किन्तु लेख न लिखने का कारण यह है कि मैं लगातार कई मास से रोग ग्रसित हू और सरोजिनी ना० होस्पीटल में चिकित्सा करा रहा हूं। यदि आप लोगों के आशीर्वाद से स्वस्थ हो गया तो सेवा का अवसर प्राप्त करूगा पर जो भाई वृक्षों मे जीव नहीं मानते वह उत्तर दें।

(१) क्या आप वृक्षो को निर्जीव मानते हैं ? यदि हाँ तो आपके घर मे बर्तन मिट्टी को छोड़ सोने की चारपाई मकान में लगे ईंट पत्थर लोहा मकान की दीवाल इनको क्या मानते हैं जड़ वा चेतन एवं वृक्षों में और ऊपर की वस्तुओं में कोई अन्तर मानते हैं या नहीं आप इन बातों का उत्तर युक्ति उदाहरण एवं प्रमाणों से आर्यमित्र मे लिखिये मैं स्वस्थ होते ही आपको उत्तर दूंगा अन्यथा निवेदन है कि व्यर्थ की बातो से सिवाय इसके कि वातावरण गन्दा हो कोई लाभ नहीं।

रोग शय्या पर पड़ा आर्यजगत् का एक तुच्छ सेवक

—राजबहादुर आर्य 'सरस'

(८)

आर्यमित्र के स्वराज्य अक को मैंने पढ़ा—परन्तु भारत मे सब प्रथम स्वराज्य शब्द को मुंह मे निकालने वाले उस अंग्रेजी शासनकाल मे केवल महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ही थे-अंग्रेजी शासनकाल में स्वतन्त्रता व राष्ट्रियता का सर्व प्रथम पाठ देने वाले महर्षि ही थे, भारत की गुलामी को दूर करने मे उनका बहुत भारी कार्य रहा है। राजस्थान में जाकर प्रजा मे जागृत कर रानाडे गोखले जैसे वीर खड़े किये। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश में स्पष्ट लिखा कि 'कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। हम और आप सबको उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना हो और अब भी पालन होता हो और आगे भी होगा। उसकी उन्नति तन, मन, धन से सब जन मिलकर प्रीत से करें १८७६ ई० में हरिद्वार में स्वामी जी ने कहा कि इससे अधिक वेदना और क्या हो सकती है कि भारत मे गौ अब भी दुखी है, आज भी हजारो की संख्या मे कटती है और गोमास बाहर भेजा जा रहा है। स्वामी दयानन्द जी के विचारों का स्वराज्य ही कोसों दूर है। छटे समुल्लास से आर्य समाज को क्या घृणा है, क्यों इस अवसर पर कारबन्द नहीं होती—आगामी आने वाले चुनाव में यदि आर्य सज्जन अपनी-अपनी आर्य समाजों से उठने की चेष्टा करें और अच्छे लोग विधान सभाओं में पहुंचें तो श्री लालबहादुर जी जैसे सिद्ध हो सकते हैं। आर्य पुरुषों द्वारा ही भारत की हालत सुधर सकती है। इन्हीं मे से २५ प्रतिशत ने स्वराज्य प्राप्ति समय जेलों मे यातनायें भोगी है। अखिल भारतीय आर्य जनता की ओर से एक पत्र आर्य राष्ट्र निकलना प्रारम्भ हो गया है। आप सज्जन इसको पढ़ें और उसके अनुसार कार्य करने की व्यवस्था करें।

—तेजमित्र आर्य
निकट आर्यसमाज लालापार
सहारनपुर

जिला आर्य उप सभा लखनऊ का ६४ वॉमासिक अधिवेशन

रविवार २९-९-१९६८ को सायंकाल ५॥ से ८॥ बजे तक आर्यसमाज आर. डी. एस. ओ, कालोनी [आलमबाग] लखनऊ के सुप्रबन्ध में ग्राम मेहदी खेड़ा (सरकारी स्कूल के पास)

सामवेद से बृहत वैदिक यज्ञ, संध्या प्रार्थना, सुमधुर भजन, सिद्धान्त सम्बन्धी व्याख्यान व वेदोपदेश।

कृपया सपरिवार व इष्ट मित्रों सहित पधार कर इस रोचक कार्यक्रम मे आध्यात्मिक लाभ उठायें। यज्ञ प्रेमी सामवेद साथ मे लावें और यज्ञ मे रलकर पाठ कर आनन्द प्राप्त करें।

सभा के सदस्यो व सदस्याओ की उपस्थिति अनिवार्य है। जिले के आर्य संगठन को सुदृढ़ करना सब आर्यो का कर्त्तव्य है।

—विक्रमादित्य बसन्त
मन्त्री

हा देहलवी !

हा ! देहलवी कहाँ आप हैं खो गये ?
छोड़ सब आर्य परिवार को जो गये ॥
आङ्ग्लो फारसी हिन्दी अरबी तथा ।
देववाणी के साहित्य को भी मथा ॥
शीघ्र विद्वान् बेजोड़ जो हो गये ॥१

रङ्ग ऐसा चढ़ा ऋषि दयानन्द का ।
सारा तन हो गया बस दयानन्द का ॥
धर्म वैदिक प्रचारार्थ रत हो गये ॥२

कांपते पादरी थे व मुल्ला सभी ।
टिक न पाये ठगी पोप सम्मुख कभी ॥
धज्जियां दम्भ की यों उड़ा जो गये ॥

शक्ति गुणगान की ना 'नरेन्द्रार्य' है ।
याद तेरी देहलवी अपरिहार्य है ॥
आर्य सारे विह्वल शोक में हो गये ॥४

—नरेन्द्र, ओ३म् भण्डार, मैंनपुरी

जीवन-ज्योति

(पृष्ठ २ का शेष)

तोबा करो और अपने हाथ से बछड़ों को हलाक करो।

इसके अतिरिक्त कुरान में स्पष्ट लिखा है कि 'ऐ पैगम्बर काफिरों के साथ (हाथ से) और मुनाफिरों के साथ (जबान से) जिहाद करते रहो। और उन पर सख्ती रखो उनका ठिकाना दोजख है।'

जो लोग सभी मजहबों व वैदिक धर्म को एक समान मानते हैं, वे मूर्ख हैं, जब कि अन्य मत मजहब बनावटी व मनुष्यों के बनाये हुये दिमागों के फितूर मात्र हैं।'

मैंने देहलवी जी से प्रश्न किया, 'आजकल जो सांस्कृतिक कार्यक्रम के नाम पर स्कूल, कालेजों एवं सभा सोसायटियों में जवान लड़के, लड़कियों के एक साथ नाच कराये जाते हैं, क्या उनसे आर्य सभ्यता का नाश नहीं हो रहा है ?

उन्होंने कहा—'यह सब खुराफात आर्य संस्कृति को नष्ट-भ्रष्ट करने के लिये की जा रही है। लड़के-लड़कियों की सह-शिक्षा, सांस्कृतिक कार्यक्रमों की आड़ में नाच यह सब संस्कृति के विपरीत हैं। इस प्रकार से सांस्कृतिक कार्यक्रमों, सौन्दर्य प्रतियोगिताओं आदि द्वारा युवक-युवतियों को व्यभिचार, भ्रष्टाचार का इन्जेक्शन किया जा रहा है। यह सब बन्द किया जाना चाहिए। आज देश का जितना नैतिक पतन इन सांस्कृतिक कार्यक्रमों व सिनेमाओं ने कर डाला है, उतना कभी हुआ ही नहीं।'

मैंने कहा—देहलवी जी, आजकल तो कांग्रेसी सरकार की ओर से मांस, अण्डे मछली खाने का प्रचार किया जा रहा है। गांव में मछली पालने और मुर्गी पालन के केन्द्र खोले जा रहे हैं। हिन्दुओं को पूरी तरह से मांसाहारी बना डालने का षड्यन्त्र रचा जा रहा है।'

देहलवी जी ने गम्भीर होकर कहा कि मांसाहार का प्रचार भी आर्य संस्कृति को समाप्त करने के लिये किया जा रहा है। सन्त कहलाने वाले विनोबा भावे तक ने 'गीता प्रवचन' पुस्तक में हिन्दू ऋषि महर्षियों को गोमांस खाने वाला बता कर गोमांस खाने तक का प्रचार कर डाला है फिर उनके ये चेले और क्या करेंगे ?'

मैंने प्रश्न किया—कि आज जो देश में परिवार नियोजन आन्दोलन चलाया जा रहा है, उसके सम्बन्ध में आपका क्या मत है ? ' देहलवी जी ने तपाक से उत्तर दिया—

परिवार नियोजन हिन्दुओं के लिये एक भीषण खतरा सिद्ध होगा। परिवार नियोजन के कुचक्र में मुसलमान, ईसाई तो फंसने वाले नहीं हैं, केवल हिन्दू मूर्खतावश इसमें फंस रहे हैं। कुछ ही दिनों में हिन्दुओं की संख्या घट जायेगी और मुसलमान ईसाइयों की बढ़ जायेगी। तब मुसलमान एक नये पाकिस्तान की मांग उठायेंगे, तब हमें परिवार नियोजन की भयङ्करता का आभास होगा।'

देहलवी जी जीवन के अन्तिम क्षणों तक हिन्दुत्व की रक्षा के लिये चिन्तित रहे। गत दिनों मैं पुनः संसद सदस्य लाला रामगोपाल शालवाले एव श्री निरंजन वर्मा साथ उनसे भेंट करने हापुड़ आये तो उन्होंने हिन्दू संगठन पर बल देते हुए कहा था—'कि आज सनातन धर्मियों और समाजियों के आपसी शास्त्रार्थों का समय नहीं है। आज सब से अधिक खतरा ईश्वर की सत्ता में विश्वास न रखने वाले नास्तिकों से है। अतः ईश्वर को साकार मानने वाले सनातियों व निराकार मानने वाले आर्य समाजियों को ईश्वर को बेकार बताने वाले नास्तिकों से लड़ने के लिये संगठित होना चाहिए।

★

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता

नारी का आध्यात्मिक स्वरूप

★श्री फणीन्द्रमोहन दुबेदी

भारत ने सदा से ही समीवस्तुओं को आध्यात्मिक दृष्टि से देखा है। अध्यात्म-विरुद्ध किसी बात को कभी इस देश ने स्वीकार नहीं किया सच ही, इस वस्तु का महत्त्व, उसका आत्मा के साथ कितनी गहराई तक लगाव है, यह देख कर ही निश्चय किया जाता है। आध्यात्मिकता के अभाव मे मनुष्य का सारा वैभव व्यर्थ है।

आध्यात्मिक भारत ने नारी को देवी के रूप में जाना पहचाना है। वह पुरुष की मूल शक्ति है। उसके बिना शिव शव है। वह दुराचार को प्रश्रय देने वाली नहीं, दुराचार विघातिनी है। इन्द्रिय मन के बाह्य जगत मे भी हमारे आकर्षण का केन्द्र वही है। असुरों को मोहित करके उसने नष्ट कर दिया है। सुरों की उसने सदा रक्षा की है। और उन्हे वरदान दिये हैं। उसी की गोद में हम प्रथम विश्व-दर्शन करते है। अपने वक्षा के क्षीर से वही हमारे प्राणों का पालन करती है। उसके बिना कोई जीवन धारण नहीं कर सकता। उस महिमामयी के गुण दोष विवेचन की धृष्टता भला कौन करे, जिसे विधि-हरिहर भी पूरा-पूरा जान नहीं पाते ! उस सबकी मा को हम [illegible] कैसे माप सकते हैं ? अपरिमेय है वह [illegible] हमारा सारा ज्ञान, सारा वैभव उसी के आश्रय से है। हम [illegible] करके देखें तो देखेंगे कि हम उसे प्रणाम ही दे सकते हैं, और कुछ नहीं। इसी मे हमारा [illegible]कार है [illegible] लक्ष्य [illegible] माँ के दर्शन में ही है [illegible] ? माँ के सामने अपने को शिशु रूप में बिना देखे कोई सच्चा परिचय कहाँ हो पाता है ? नारी सबकी सत्ता है। उद्धत उस सत्ता को न जानने के कारण स्वयं असत् हो जाता है। उस सर्व सत्ता के सम्मुख नम्र होना ही तो विद्या का लक्षण है। विद्या ददाति विनयम्। नारी के सम्पर्क बिना पुरुष में वास्तव विनय आता नहीं। वह अहंकारी ही रहता है। यह पुरुष की जड़ता है कि वह अपने को नारी का स्वामी मानता है। वह तो उसे प्रभु की अहेतुकी कृपा से उसको तारने के लिये आई है। नर-नारी [illegible] भवतारिणी। भवसागर मे डूबते हुये नर को उसमें से निकाल लेने के लिये ही नारी पृथ्वी पर आई है। उसे न जानने वाला मूढ़ अभिमानी भला कैसे निस्तार पायेगा ? बाली को डाटते हुए राम ने कहा था।

मूढ़ तोहि अतिशय अभिमाना,
नारि सिखावन करसि न काना।

कहकर भगवान् ने उसकी मूढ़ता और अभिमानता दिखला दी। इससे प्रकट है कि हमारा युगल स्वरूप आध्यात्मिक है, चिन्मय है !

नारी के आध्यात्मिक महत्त्व को स्वीकार कर ही हम भारतवासियो ने लोक जीवन मे उसके माता, प्रिया भगिनी आदि रूपों को सम्मान दिया है वह सर्वत्र हमारे उचित आदर की पात्री है। मेरे इस लघु निबन्ध को पढ़कर आशा है, भारतीय नारी अपने गौरवमय स्वरूप [illegible] होने का प्रयत्न करेगी, [illegible] स्वस्थ दृष्टि [illegible] का अभ्यास करेगा।

इति शिवम् !

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल.-६०

२० आश्विन २०२५ आश्विन शु० ८
(दिनांक २९ सितम्बर सन् १९६८)

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

Registered No.L. 60
पता—'आर्य्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष : २५९९३ तार : "आर्यमित्र"

गोरक्षा-आन्दोलन

गौ-गुहार

मैं भारत की दीन धेनु हूं, उर में व्याप्त व्यथा,
अवध देश हो, सुनलो तुम, मेरी करुण कथा,
अतिशयोक्ति भय अतिरंजन का, इसमें नाम नहीं
मोद पुलक भय हास-हर्ष का, कुछ भी काम नहीं !!

स्मृति अतीत की धुंधली सी है, जब था सुप्त सभी;
उन्नति, वृद्धि, प्रकाश, ज्ञान का, पथ था पुण्य सभी;
तब मेरे ही पावन पय से, भारत का भाग्य
फैलाया आलोक जगत् में, तब भारत भाया !

गृह गृह में पूजा ही मेरी, गुण-गायन माना,
आर्य, सभ्य, सुसंस्कृत जन-गण ने एक लक्ष्य माना,
जब पौराणिक काल सुनहला, इठलाया प्यारा,
मेरी सेवा में भूपों ने, राज तजा सारा !!

क्या दिलीप यमदाग्नि भुलाये, जग से जायेंगे ?
क्या वशिष्ठ की कहीं कथा अब, गाथा गायेंगे ?
गायेंगे : सन्देह नहीं है, युग दुहरायेगा;
कृष्ण कन्हैया, धनु चरैया, भूल न जायेगा !!

यवनों को सफलता दिलाती, विजय धर्म खोया,
खोया राज्य ! बलशाली देश का, सिंहासन रोया,
आन-बान मर्यादा तजकर, योद्धा हार गये,
शस्त्र न मुझ पर किन्तु उठाये, बन बेकार गये !!

रघुकुल जो पूत रक्त के, प्रिय तर्पण द्वारा,
विजय कीर्ति के मेरे ही प्रति मधु अर्पण द्वारा,
जग में शाश्वत अमर हो गये, मुझ से प्यार किया.
शिवा, तेग, बंदा ने सब कुछ, मुझ पर वार दिया, !!

खेद : उन्हीं की सन्तति होकर, तुम इतना सोये,
क्यों मुझ पर चली दुधारी' नहीं किन्तु रोये,
जहां प्रचुर थे पावन पौष्टिक, मक्खन, दूध, दही,
वहीं मिलावट-वनास्पति की, बाको धूम रही !!

कैसे अन्न बढ़ेगा ? तुमको मिलती खाद नहीं,
मेरे सारे उपकारों की, किंचित् याद नहीं,
तृण खाकर, लघु तृण सी होकर, सब दिन मौन रही,
बतलाओ ! वह पूर्व भावना, तुम में क्यों न रही ?

तुम स्वतन्त्र हो, देश तुम्हारा, फिर भी सोच नहीं;
बतला दो ! किसलिये हृदय में तनिक करोंच नहीं;
भूल गये अपने को बोलो, या मूड बदल गये,
मानवता के मात्र सभी वे, अथवा निकल गये; !!

अर्थ-लोभ-पाशों ने पकड़कर, मुझको काट रहे,
नीरस अस्थि श्वान के ऐन, रह-रह चाट रहे
जननी के होने के नाते में, तुम्हे पुकार रही,
बतलादो ! मेरे प्रति तुम में, क्यों है प्यार नहीं, ?

अमृत वर्षा

महर्षि दयानन्द ने कहा था—

भाग्यवान राष्ट्र

जिस देश में यथायोग्य, ब्रह्मचर्य, विद्या, वेद तथा धर्म का प्रचार होता है, वही देश सौभाग्यवान है।

शिक्षा का सर्वव्यापक नियम

सबों को तुल्य वस्त्र, भोजन और आसन मिलना चाहिये चाहे वह राजकुमार हो या राजकुमारी अथवा किसी निर्धन की सन्तान ही क्यों न हो पांच या ज्यादा से ज्यादा आठ वर्ष के बाद कोई भी व्यक्ति अपने पुत्र या पुत्रियों को घर में नहीं रखे ऐसा राजनियम या जाति नियम होना चाहिये। पाठशाला में बालक-बालिकाओं को अनिवार्य रूप से दाखिल करे, जो नहीं करे उसे दण्डनीय माना जाय।

सच्ची उन्नति का उपाय

जो अपने कुल को उच्चकोटि का तथा अपनी सन्तान को उत्तम, दीर्घायु, सुशील बुद्धिबलशाली और पराक्रमी तथा श्री सम्पन्न बनाना चाहते हैं उन्हें चाहिये कि १६ वर्ष से पहले अपने पुत्र का विवाह न करें। यही सभी सुधारों का सुधार और सौभाग्यों का सौभाग्य तथा उन्नति का एकमात्र उपाय है। उक्त व्यवस्था में ब्रह्मचर्य का पालन कराते हुए अपनी सन्तानों को विद्या और सुशिक्षा दिलवानी चाहिये।

मेरे बछड़ों की ओटें से, निर्वाचन जीता;
प्रश्न पूछ लो, स्वयं समझ लो, कौन बचा-बीता ?
धोखा दे-देकर कब तक यों, मुझे मिटाओगे ?
बने केसरी कबतक बारे ? कहो सुलाओगे !

चक्र उठा है आज कृष्ण का, प्रश्न हो रहा है
युग बीते हैं पूर्ण भयंकर, कौन सो रहा है ?
कौन मूल आधार देश के, सारे काट रहे;
निष्ठुर बनकर नन्हें-मुन्ने प्यारे काट रहे !!

कौन दुराग्रह के ही पीछे, मति विवेक भूला ?
कौन झूलता दुविधा का वह, संक्रामक झूला ?
हर-हर बम-बम नाद निनादित, दशों दिशाओं में;
संगति भीषण दीख पड़ रही, प्रलय प्रभावों में !!

जाग चुके सारे अब, सद्गुरु, डमरू बाज रहा है;
वीरभद्र के रोष क्रोध का, दृढ़ साम्राज्य रहा;
सत्य शान्ति-प्रिय बार बार यह, स्वर गुंजित करते,
"कहां अहिंसा परमोधर्म, सत्यमेव जयते ?"

गऊ-गऊ स्वर सुनकर तुमको, नहीं दया आती;
हिंसा करते शांत अहिंसक, नहीं शर्म आती;
बापू को आत्मा रोती है, रोता जन-मन है,
ईश्वर द्वारा निर्मित जग का, रोता कण-कण है !

चेतावनी एक बस तुमको, सुनाना बाकी है,
'फल केवल कर्मो का,'' तुमको मिलना बाकी है,
खोद रहे जो कुआ उसी मे, तुम गिर जाओगे !
चले मिटाने हमे स्वय, पर तुम मिट जाओगे !

—श्री भैरवदत्त शुक्ल

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के लिये ज्ञानदीप आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से कृष्णगोपाल शर्मा द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।

सार्वदेशिक आर्य्य महासम्मेलनों का संक्षिप्त विवरण

★

१—प्रथम आर्य सम्मेलन वर्ष १९२७ ई०
स्थान दिल्ली।
प्रधान श्री महात्मा हंसराज जी
प्रयोजन—आर्यसमाजों के नगर कीर्तनों की बाधाओं के निराकरण एवं आर्य नेताओं के श्रृङ्खलाबद्ध वधों (हत्याओं) को रोकने के लिये।

२—द्वितीय आर्य महा सम्मेलन-वर्ष १९३१ ई०
स्थान बरेली।
प्रधान—श्री महात्मानारायणस्वामी जी
प्रयोजन आर्यसमाज के धार्मिक और नागरिक अधिकारों की रक्षा के लिए।

३—तृतीय आर्य महा सम्मेलन-वर्ष १९३३ ई०
स्थान अजमेर।
प्रधान श्री आचार्य रामदेव जी।
प्रयोजन—आर्यसमाज के आन्तरिक सगठन के दृढ़ीकरण के लिए।

४—चतुर्थ आर्य महा सम्मेलन-वर्ष १९३८ ई०
स्थान शोलापुर।
प्रधान श्री एम. एस. अणे।
प्रयोजन—हैदराबाद मे सत्याग्रह का निश्चय करने के लिए।

५-पंचम आर्य महासम्मेलन-वर्ष १९४४ ई०
स्थान दिल्ली।
प्रधान श्री स्व. डा. श्यामाप्रसाद मुकर्जी।

६-षष्ठ आर्य महासम्मेलन वर्ष १९४८ ई०
स्थान कलकत्ता।
प्रधान श्रीयुत घनश्यामसिंह जी गुप्त।
प्रयोजन—आर्यसमाज के आन्तरिक संगठन और कार्य को प्रगति देने के लिए।

७-सप्तम आर्य महासम्मेलन वर्ष १९५१ ई०
स्थान मेरठ।
प्रधान श्री पं. विनायकराव जी बार-एट-ला।
प्रयोजन—आर्यसमाज सामूहिक रूप से राजनीति मे भाग ले या नहीं, इस समस्या पर विचार के लिये।

८-अष्टम आर्य महासम्मेलन…वर्ष १९५४ ई०
स्थान हैदराबाद (दक्षिण)
प्रधान…श्रीयुत घनश्यामसिंह जी गुप्त।
प्रयोजन—गोरक्षा और ईसाई-प्रचार-निरोध के कार्य को प्रोत्साहित करने के लिए।

९-नवम आर्य महासम्मेलन वर्ष १९६१ ई०
स्थान देहली।
प्रधान श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज।
प्रयोजन—आर्यसमाज के संगठन को दृढ़ करने एवं कार्यक्रमों को प्रोत्साहित करने के लिए।

★गिरधारीलाल आर्य, चौरी चौरा.

लखनऊ में आर्य सम्मेलन

रविवार दिनांक ३-११-६८ को

मध्याह्न १ बजे से ४ बजे तक
स्थान डी० ए० वी० कालिज, लखनऊ।

सम्मेलन अध्यक्ष-पं० शिवकुमार जी शास्त्री, संसद सदस्य
संयोजक—श्री विक्रमादित्य 'वसन्त'
मन्त्री—जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा, लखनऊ।
स्वागताध्यक्ष—श्री रामचरण विद्यार्थी
प्रधान—आर्यसमाज गणेशगंज, लखनऊ
सम्मेलन का उद्घाटन—श्री कृष्ण बलदेव जी
प्रधान—जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा के द्वारा होगा।

इस सम्मेलन मे आर्यजगत् की धार्मिक एवम् सामाजिक समस्याओं पर विचार किया जायेगा। लखनऊ नगर की समस्त आर्यसमाजें इस सम्मेलन में सम्मिलित होंगी। सम्मेलन से पूर्व आर्यसमाज गणेशगंज के सुप्रबन्ध मे १००० व्यक्तियों के प्रीति भोजन की व्यवस्था की गई है। यह आयोजन आर्य समाज गणेशगंज के वार्षिकोत्सव के अवसर पर किया जा रहा है।

लखनऊ में वेद प्रचार

(१) ऋषि निर्वाण पर्व

रविवार दिनाङ्क २०-१० ६८ को लखनऊ नगर की समस्त आर्यसमाजो की ओर से आर्य समाज चन्द्रनगर आलमबाग लखनऊ में ऋषि निर्वाण पर्व बड़े समारोह पूर्वक मनाया गया। इसमें आर्य पर्व पद्धति से यज्ञ किया गया। ऋषि को श्रद्धाञ्जलियां अर्पित की गयीं। बाल सम्मेलन इस कार्य-क्रम का एक प्रमुख अङ्ग था, जिसमे भाग लेने वाले बच्चों के कार्य क्रम बहुत उत्तमता से तैयार करवाये गये थे। सभी बालकों व बालिकाओं को पुस्तकें पुरस्कार रूप मे दी गयीं। श्रीमती विमला माहना, पृथ्वीराज वरमानी तथा श्री मुल्कराज सोबती के भजन तथा सर्वश्री लाला देवराज वैदिक मिशनरी, महता हरिवन्शलाल जी के व्याख्यान हुए।

समस्त आयोजन जिलोप सभा लखनऊ के तत्वावधान में हुआ।

(२) ६५ वां मासिक अधिवेशन

रविवार दिनांक २७-१० ६८ को सायंकाल ५ से ८-३० तक भोपाल हाउस लालबाग में जिलोप सभा लखनऊ का ६५ वां मासिक अधिवेशन बड़े समारोह पूर्वक हुआ। सामवेद से वैदिक यज्ञ हुआ। श्री मोती राम यह रेडियो कलाकार के भजन तथा श्री विक्रमादित्य 'वसन्त' के वेदोपदेश हुए। शंकाओं का समाधान भी किया गया, अधिवेशन का सुप्रबन्ध आर्यसमाज लालबाग द्वारा किया गया था।

जिलोप सभा, लखनऊ का आगामी ६६ वां मासिक अधिवेशन आर्य समाज ऐशबाग के निमन्त्रण पर रविवार २४-११-६८ को सायं ५ से ८ तक होगा।

(पृष्ठ ९ का शेष)

कि आवश्यक शीघ्रता से हम कोई निर्णय न करें। धार्मिक और सामाजिक समस्याओं का ही निराकरण करें और अपने जीवन निर्माण से दूसरों को आर्यत्व की ओर आकृष्ट करें। समय चाहे कितना ही क्यों न लग जावे पर ठोस कार्य वही होगा। हम राजनीति के वृत्त में तब प्रविष्ट हों जब सब हम में प्रतिष्ठित हो जावें। और जनता हमारा उज्ज्वल चरित्र देखकर हमारा आह्वान करे।

✖

लखनऊ—रविवार कार्तिक १२ शक १८९०, कार्तिक शु० १३ वि० २०२५
३ नवम्बर सन् १९६८ ई०, दयानन्दाब्द १४४, सृष्टि संवत् १,९७,२९,४९ ०६९

सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु

आर्य जगत् मे समय-समय पर आर्य सम्मेलन किये जाते हैं। ये आर्य सम्मेलन नगर, जिला, प्रान्त अथवा सार्वदेशिक स्तर पर किये जाते हैं। इन आर्य्य सम्मेलनों का विशिष्ट उद्देश्य भी घोषित किया जाता है। आर्य नेताओं के धुंआंधार व्याख्यान होते हैं, लम्बे चौड़े प्रस्ताव पास किये जाते हैं। हमारे आर्य नेता समझते हैं उन्होंने अपने कर्त्तव्य का पालन कर लिया है। प्रस्ताव समाचार पत्रों मे प्रकाशन के लिए भेज दिये गये हैं। उनकी प्रतिलिपियाँ सरकार को भी भेज दी गई है। पर यह नितान्त सत्य है कि इन कागजी प्रस्तावों का कोई विशेष मूल्य नहीं होता क्योंकि प्रस्ताव तो सरलता से पास हो सकते हैं परन्तु उन्हें पारित करना ही कठिन होता है।

जिस समय यह अङ्क पाठको के हाथ मे होगा उस समय हमारी जानकारी के अनुसार तीन आर्य सम्मेलन हो रहे होंगे। हैदराबाद मे दशम आर्य्य महा सम्मेलन गढमुक्तेश्वर (मेरठ) में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का प्रान्तीय आर्य्य सम्मेलन और लखनऊ नगर की आर्य समाजो का आर्य सम्मेलन। इन आर्य सम्मेलनों मे यथा पूर्व आर्य जगत् की वर्तमान समस्याओ पर विचार विनिमय किया ही जाएगा और प्रस्ताव भी पास किये जाएंगे। लम्बी चौड़ी बातें होगी जिनका परिणाम क्या होगा, यह तो भविष्य ही बताएगा। हमे तो वर्तमान पर दृष्टि रखनी है। भविष्य तो सदैव अनिश्चित होता है यद्यपि आशावादी होने के कारण हम निरन्तर उज्ज्वल भविष्य की ही कामना करते है।

वायु का प्रवाह किस ओर है, इसका बोध हमे अमृतसर (पन्जाब) के आर्य सम्मेलन से होता है जो १३-१०-६८ को हुआ है। इस सम्मेलन मे पन्जाब के सभी प्रमुख नगरों के आर्य बन्धु पधारे हुए थे। सार्वदेशिक सभा के [illegible] लाला रामगोपाल जी शालवाले, श्री [illegible] जी, श्री [illegible] आदि अन्य नेताओं की उपस्थिति ने आर्य्य सम्मेलन के महत्व को बढ़ा दिया था। इस सम्मेलन की सबसे बड़ी उल्लेखनीय बात यह थी कि इस सम्मेलन मे केवल राजनीति का बोल बाला था। पंजाब में रहने वाले हमारे आर्य्य बन्धुओं को केवल पंजाब की वर्तमान राजनीतिक परिस्थिति की चिन्ता थी। हिन्दू और हिन्दी की रक्षा के लिए आर्यसमाज मे कोई ठोस कार्य क्रम बनाये जाए, ऐसी प्रमुख उत्सुकता थी। पंजाब मे जो नये चुनाव होने वाले है उनमे आर्यसमाज क्या करे, तो सम्मेलन मे उपस्थित बहुमत की मांग थी कि 'राज्य आर्य सभा की स्थापना की जाए जो आर्य समाज की एक राजनैतिक सभा हो और जो राजनैतिक मोर्चे पर अन्य राजनैतिक दलों से सीधी टक्कर ले और इस प्रकार राजनीति में खुल्लम खुल्ला भाग ले।

पंजाब के आर्य्य सम्मेलन मे इस प्रकार के विचार व्यक्त करने वालों का मत था कि उन्हे अन्य राजनैतिक दलों पर कोई आस्था नहीं है, क्योंकि उनका व्यवहार जो अब तक रहा है वह आर्य्य समाज की विचारधारा के प्रतिकूल रहा है। इसलिए उन पर विश्वास करने अथवा कोई समझौता करने के स्थान पर आर्यसमाज को चुनाव क्षेत्र मे सीधा उतरना चाहिये।

सार्वदेशिक सभा के नेताओ के विचार कुछ भिन्न थे। उनका कथन यह था कि केवल पंजाब की आर्य समाजें राज्य आर्य सभा बनाने का निश्चय नहीं कर सकतीं। यह कार्य सार्वदेशिक सभा का है। सम्मेलन के उत्साही आर्य बन्धुओ को इससे सन्तोष नहीं हुआ जिसके फलस्वरूप एक प्रस्ताव पास किया गया कि सार्वदेशिक सभा 'आर्य समाज और राजनीति' के बारे मे तुरन्त कोई निर्णय करे और अपनी नीति घोषित करे और हैदराबाद मे होने वाले सार्वदेशिक आर्य महा सम्मेलन मे इस पर अवश्य विचार करे और तदनुसार प्रचार करे। एक अन्य प्रस्ताव के अनुसार पंजाब के हिन्दुओं और हिन्दी की रक्षा के लिये [illegible] की [illegible] भी बनाई गई है जो [illegible] पर पूर्ण [illegible] करेगी और अन्य राजनैतिक दलों मे विचार विनिमय करेगा और तत्पश्चात् आर्य समाज का नीति की घोषणा करेगी।

इस बात में कोई सन्देह नहीं है कि पंजाब के आर्य सम्मेलन की प्रतिक्रिया अन्य आर्य सम्मेलनों मे भी होगी। दशम आर्य महा सम्मेलन में भी इस पर विचार विमर्श होगा, और सम्भवतः किसी नीति की घोषणा होगी। हम यहाँ पर केवल कुछ विशेष बातो की ओर आर्य सम्मेलनों के संयोजकों का ध्यान आकृष्ट करना चाहते हैं जो निम्न लिखित है।

(१) आर्य समाज एक धार्मिक समाज है, जो वैदिक धर्म के प्रचार के लिए है। आर्यसमाज एक आस्तिक समाज है जो परमात्मा पर आस्था रखता है और ईश्वर की सत्य विद्या का प्रसार करने का एक माध्यम है। यह हमारी वास्तविक आधार शिला है। परन्तु कितना खेदजनक है कि हम अपने आधार से आज खिसक रहे हैं, और परमात्मा के वास्तविक स्वरूप का बखान तथा उसके वेद ज्ञान का प्रसार न कर अन्य बातो मे उलझ रहे हैं। क्या राजनीति ही सर्वोपरि है? वह जीवन का एकाङ्ग है या सर्वाङ्ग है। हमारे आर्य बन्धु ठण्डे दिल मे इस बात को सोचें कि आज इस राजनीति ने आर्य समाज की क्या स्थिति कर रखी है। आज आर्य जगत् मे जितने भी झगड़े हैं, उन सबों का मूल क्या है अध्यात्मवाद का अभाव। सार्वजनिक सम्पत्तियों एवम् शिक्षण संस्थाओं की [illegible] आज हमारे [illegible] का क्या निर्माण कर रही है?

पंजाब के आर्य बन्धुओ को राजनीति से बहुत [illegible] है वे हिन्दुओ और हिन्दी की रक्षा करना चाहते हैं, परन्तु उनकी प्रतिनिधि सभाओं के अदालती झगड़े किस ओर संकेत करते हैं। आज जो अपनी रक्षा मे असमर्थ हैं, वे किसी अन्य की क्या रक्षा करेंगे? रक्षा के लिये बलिदान देने पड़ते हैं, बलिदान वीर करते हैं [illegible] और [illegible] आत्मबल [illegible] है आत्मवीरों को [illegible] है। दूसरे की रक्षा [illegible] बुराइयों [illegible] आध्यात्मिक [illegible] है [illegible]

(२) [illegible] है। अथवा यह एक हिन्दू समाज है। [illegible] पदार्थों का [illegible] अपने को हिन्दू [illegible] समाज की [illegible] आर्य समाज को [illegible] तक ही [illegible] ऊपर उठना है?

[illegible] दूर [illegible] कि संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है। 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' हमारा प्रिय नारा है। वेदानुसार मानव जाति आर्य और अनार्य तत्वो में विभाजित है। हमे आर्यत्व के प्रचार के लिये केवल हिन्दू तक सीमित नहीं रहना है, अन्य सम्प्रदायों के आर्यों को जो मन वचन, कर्म से श्रेष्ठ हैं, क्या हमे अपने अन्दर प्रविष्ट नहीं करना है यह तभी होगा जब हम संकीर्णताओ को त्यागेंगे, और हम उनके हृदयों को जीत कर उच्च कर्म कराने वालो को आर्यत्व के मन्दिर मे लायेंगे और अनार्यों का पृथकीकरण करेंगे भले ही वे नाम मात्र के लिये अपने को हिन्दू कहते हो।

आर्य सम्मेलनो मे यह विचारणीय होना चाहिए कि हम जो अन्यो का नेतृत्व अपने हाथों मे लेना चाहते हैं हममे कितना अपना आर्यत्व है। जब हमारे बच्चे ईसाई मिशनरियों के विद्यालयों मे शिक्षा पायें। हम खानपान लेन-देन के बन्धन मे जकड़े रहे। हम स्वयम् कुरीतियो और पाखण्डो के पाशों को छिन्न-भिन्न करें तो कौन हमारा अनुकरण करेगा? आर्य बनाने से पहले स्वयम् आर्य बनें और हमारे नेता गण इसका दृष्टान्त अपने जीवनो से प्रस्तुत करें।

(३) जिस भाषा समस्या को लेकर हम चल रहे है वह हमारे व्यवहार मे कितनी है। जब हिन्दी प्रेम का ढोल पीटने वाले अंग्रेजी और उर्दू मे पत्र व्यवहार करे। बच्चो को देव भाषा संस्कृत के स्थान पर अन्य विषयों का पठन-पाठन करवाये तो क्या परिणाम होगा। हमारी जानकारी मे कितने ही ऐसे गुरुकुल के स्नातक हैं जो अपनी जीविका के लिये पुनः अंग्रेजी पढ़े हैं। उनके संस्कृत ज्ञान का हमने क्या उपयोग किया है। कितनी लज्जा की बात है कि जिस राष्ट्र भाषा की उन्नति के लिए हम चिन्तित है उसका एक सुन्दर [illegible] सामाहिक पत्र भी हम निकाल [illegible] है।

लिखने को बहुत कुछ लिखा जा सकता है, परन्तु स्थान मात्र के कारण हमने मुख्य संकेत दे दिये है। राजनीति के दलदल मे आर्यसमाज को वर्तमान [illegible] पर [illegible] विचार करें, [illegible] है कि [illegible] सरकारी कर्मचारी अपने कार्यालय के समय के अतिरिक्त [illegible] लेकर आर्यसमाज की गाडी चला रहे है वे इस के राजनीतिक स्वरूप हो जाने पर अपनी नौकरी को प्रमुखता देने के कारण पृथक हो जाएँगे। [illegible] जो ९९ के फेर मे रत रहता है वह कितना अपना समय दे सकेगा यह बात सबके अनुभव की है [illegible] की

(शेष पृष्ठ २ पर)

आर्य महासम्मेलन हैदराबाद तथा कतिपय विचारणीय प्रश्न

★ डा० भवानीलाल भारतीय
एम. ए. पी. एच. डी.
सदस्य–सार्वदेशिक आ०प्र० सभा, दिल्ली

आगामी सप्ताह में आर्य महासम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। आर्यसमाज के सम्मुख जिस समय कोई महत्वपूर्ण विचारणीय प्रश्न उपस्थित होता है, तो उसका समाधान ढूंढ़ने के लिए अन्तर्राष्ट्रिय स्तर पर आर्य महासम्मेलन का आयोजन करना आवश्यक हो जाता है। १९७५ में आर्यसमाज अपना शताब्दी उत्सव मनायेगा। आर्यसमाज की स्थापना को १०० वर्ष पूरे हो जाएंगे। इस दीर्घ अवधि में आर्य समाज ने विश्व मानवता के हित के लिए क्या-क्या कार्य किये, उसकी उपलब्धियाँ क्या रहीं और उसे कहां असफलता मिली, इत्यादि कारणों पर आत्म निरीक्षण करने का यह सुन्दर प्रयोग हमे प्राप्त हुआ है। सार्वदेशिक सभा के निश्चयानुसार प्रति वर्ष इस प्रकार के महासम्मेलन देश के विभिन्न भागों में आयोजित किये जाएंगे। दक्षिण भारत के आर्य नर केसरी पं० नरेन्द्र जी के तत्वावधान मे आयोजित यह हैदराबाद महोत्सव हमारे लिए अत्यन्त प्रेरणादायी होना चाहिये।

महासम्मेलन के अवसर पर शोभा यात्रा, विविध सम्मेलन, प्रदर्शनी यज्ञ, भाषण, उपदेश आदि के आयोजन तो परम्परानुसार होंगे ही, परन्तु हमे तो अधिक गम्भीर समस्याओ पर अत्याधिक मनोनिग्रह पूर्वक विचार करना है। सर्व प्रथम हमे यह समझना होगा कि आर्य समाज मे वर्त्तमान व्याप्त फूट, कलह और पारस्परिक विग्रह के कारण हमारा सगठन किस प्रकार छिन्न-भिन्न हो गया है। आर्यसमाज के जिस प्रजातन्त्र पर आधारित विधान और उसके सुदृढ़ संगठन की प्रशंसा एक समय उसके कट्टर विरोधी भी करते थे तथा जिसे Government with in the Government (शासन के भीतर शासन) कहा जाता था, आज उसकी कितनी शोचनीय अवस्था हो गई है। आज आर्यसमाज मे सर्वत्र अनुशासन हीनता का बोल-बाला है। कोई समाज, सभा या सगठन ऐसा नहीं है जिसमे विग्रह के बीज दिखाई नहीं देते हों। सर्वग्रासिनी फूट ने तो हमे इतना खिन्न एवं व्याकुल बना दिया है कि हमें आर्य समाज के सर्वोच्च सगठन सार्वदेशिक सभा का वार्षिक साधारण अधिवेशन भी सम्यकतया सम्पन्न नहीं कर सके। उसमे भी राजाज्ञा ने बाधा दे दी। इस परिस्थिति मे हमे गम्भीरता पूर्वक सोचना होगा कि हमारे विधान मे ऐसी क्या त्रुटि है जिसके कारण हम अपने पारस्परिक विवादों का समझ बूझ पूर्वक समाधान न निकाल सकने के कारण अदालत की शरण लेते हैं। ऋषि दयानन्द ने आर्यसमाज के उपनियमों में यह स्पष्ट कर दिया है कि किसी भी परिस्थिति में हम अपने वाद विवादों का समाधान ढूंढ़ने के लिए कचहरी की शरण न लें और स्वनिर्मित न्याय सभा द्वारा ही निर्णय करायें। पुनः क्या कारण है कि आज समाजों सभाओं और आर्यसमाज द्वारा संचालित शिक्षण सस्थाओं के आपसी विवाद अदालतों मे ले जाये जाते हैं। महासम्मेलन को यह निश्चय करना चाहिए कि आर्यसमाज को अदालत में घसीटना अक्षम्य अपराध माना जाय और ऐसा करने वालों को आर्यसमाज की सदस्यता से पृथक कर दिया जाय।

आज विश्व की बदलती हुई परिस्थितियों को ध्यान मे रखते हुये हमें अपने प्रचार साधनों को परिवर्तित करना होगा धर्म प्रचार के लिये प्रेस और मंच का हम उपयोग अवश्य करते हैं, परन्तु हमारे प्रचार के ये साधन युग की मांग के अनुसार नये रूप में ढाले जाने चाहिये। हमारी प्रचार व्यवस्था सब धान बाईस पसेरी वाली कहावत चरितार्थ करती है। हमें ग्राम और नगर की प्रचार व्यवस्था में अन्तर लाना होगा। भजनोपदेशक परिपाटी पर सर्वाङ्गीण रूप से पुनर्विचार किया जाना आवश्यक है। हमारे इस प्रकार के उपदेशक संगीत के द्वारा श्रोताओं को मंत्र मुग्ध और भाव विभोर करने की अपेक्षा चुटकले बाजी का आसरा लेकर उन्हें मनोरंजन की सामग्री प्रदान करते हैं, बौद्धिक और शिक्षित वर्ग के लोगों के लिए प्रस्तुत किये जाने वाले गम्भीर दार्शनिक व्याख्यानों का अभाव हो रहा है। आर्यसमाज के मंच पर राजनीति हावी हो रही है, यदि इस स्थिति को जारी रहने दिया तो वह दिन दूर नहीं जबकि आर्यसमाज की वेदी एक चूं चूं का मुरब्बा मात्र रह जायेगी। आज भारतीय जनता स्वामी दयानन्द के विचारों और दर्शन के प्रति अपना आकर्षण व्यक्त न कर, स्वामी विवेकानन्द और रामकृष्ण परमहंस आदि के वेदान्तवादी विचारों की ओर जो आकृष्ट हो रही है, उसका एक प्रमुख कारण यही है कि हम स्वामी दयानन्द के विचार दर्शन को प्रबुद्धवर्ग के लोगों तक पहुँचाने में असफल हो रहे हैं। प्रचार प्रणाली में परिवर्तन लाना आज युग की सर्वोपरि आवश्यकता है।

मुझे स्मरण है कि १९६१ में जब दिल्ली के रामलीला मैदान में आर्य महासम्मेलन आयोजित किया गया था, उस समय भी प्रचार प्रणाली में परिवर्तन की आवश्यकता पर हमने विचार किया था, परन्तु वह विचार केवल विचार ही रह गया एवं हम उस पर क्रियात्मक रूप में अमल नहीं कर सके।

यही स्थिति हमारे साहित्य की है हम यह जानते और अनुभव करते हैं कि आज के युग में विचारों का प्रचार सशक्त, सजीव और जीवनोपयोगी साहित्य से ही सम्भव है। आज आर्य समाज उच्च-कोटि के साहित्य की दृष्टि से हीन है और विपन्न है। आर्यसमाज के अतीतकाल मे आर्य समाज के प्रवर्तक ऋषि दयानन्द के अतिरिक्त पं० गुरुदत्त, प० शिवशंकर शर्मा, पं० तुलसीराम स्वामी, प० आर्यमुनि, पं० राजाराम, भास्कर सत्यव्रत, पं० चमूपति, स्वामी दर्शनानन्द आदि विद्वान् लेखकों ने जिस उच्चकोटि के सैद्धान्तिक साहित्य की रचना की थी, आज वह पुनर्मुद्रण की प्रतीक्षा कर रहा है। महात्मा नारायण स्वामी और पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय का साहित्य के क्षेत्र में जो योगदान रहा वह अपूर्व है, परन्तु आज स्थिति इतनी शोचनीय है कि स्वामी ब्रह्ममुनि पं० भगवद्दत्त, प० वेदव्रत शास्त्री, प० युधिष्ठिर मीमांसक जैसे कतिपय विद्वानों के अतिरिक्त साहित्य प्रणयन के क्षेत्र के कार्य करने वाले व्यक्ति हमें न्यून ही दिखाई देते हैं। साहित्य की दरिद्र और विपन्न स्थिति आर्यसमाज जैसी जागरूक संस्था के लिये किसी भी प्रकार श्लाघनीय नहीं कही जा सकती।

आज विश्वविद्यालयों मे सर्वत्र आर्य समाज और ऋषि दयानन्द के विषय मे उच्च-कोटि का शोध कार्य हो रहा है, परन्तु क्या हम इन शोध ग्रन्थों के प्रकाशन की भी कोई व्यवस्था कर सके हैं। पर्याप्त प्रयत्न के पश्चात् इन पंक्तियों के लेखक के शोध ग्रन्थ 'आर्य समाज' की संस्कृत भाषा और साहित्य को देन' के प्रकाशन की व्यवस्था अब कहीं जाकर रामलाल कपूर ट्रस्ट द्वारा हो सकी है और वह भी तब जब कि इन पंक्तियों का लेखक आर्यसमाज के क्षेत्र में सुपरिचित है, परन्तु आर्यसमाज पर शोध कार्य ऐसे लोगों ने भी किया है जो आर्यसमाज से सम्बन्धित नहीं हैं। क्या हम ऐसे सभी शोध ग्रन्थों के प्रकाशन की कोई व्यवस्था नहीं कर सकते? अनुसन्धान विद्वान् तो अपनी शक्ति और श्रम लगाकर शोध कार्य करे, विश्वविद्यालय उस कार्य पर उपाधि प्रदान करें, तो क्या हम इतना भी नहीं कर सकते कि उस ग्रन्थ को छाप सकें। ऋषि दयानन्द की वेद भाष्य प्रणाली ऋषि दयानन्द के दर्शन तथा आर्य समाज का आधुनिक भारत के निर्माण में योगदान ये तीन शोध ग्रन्थ तो छापे जाने चाहिए। १९७५ की आर्य समाज स्थापना शताब्दी उत्सव के पूर्व ही यदि हम अपने साहित्य प्रकाशन कार्यक्रम को सुव्यवस्थित कर सकें तो यह हमारी एक महत्वपूर्ण उपलब्धि होगी।

(शेष पृष्ठ १६ पर)

दशम सार्वदेशिक आर्य महा सम्मेलन हैदराबाद के प्रधान महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज

दिल्ली, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय से प्रचारित विज्ञप्ति के अनुसार हैदराबाद मे ८, ९, १० नवम्बर ६८ को होने वाले दशम सार्वदेशिक आर्य महा सम्मेलन के प्रधान श्रीयुत महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज निर्वाचित हुए हैं।

आर्यसमाज का कार्य और भविष्य

★श्री पं० नरेन्द्र जी
प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य द०
महर्षि दयानन्द मार्ग सुलतान बाजार
हैदराबाद

आर्यसमाज को स्थापित हुये ७३ वर्ष होते हैं। इस थोड़े से ही समय में आर्यसमाज ने भारतवर्ष में प्राचीन रूढ़ियों और प्रथाओं और विचारों में एक क्रांति-सी उत्पन्न कर दी है। शीतल आह्लादक चन्द्रमा को शुभ्र किरणों से भारत वर्षीय विचार सागर में ज्वार भाटा-सा उत्पन्न कर दिया है। आर्यसमाज की विचार श्रेणी को न केवल भारत वर्षीय अपितु इतर देशीय धर्मों संस्थाओं और समाजों ने भी अपने सिद्धान्तों में स्थान देना आरम्भ कर दिया है। इसलिए कभी-कभी ऐसा ज्ञात होने लगता है कि कुछ समय के पश्चात् आर्यसमाज की इतर संस्थाओं से कुछ भी विशेषताएँ शेष नहीं रहेंगी। और यह अन्य संस्थाओं की भांति एक सामान्य संस्था हो जाएगी। इसलिए आर्यसमाज को भविष्य में यदि अपना महत्व और गौरव स्थिर रखना है तो उसके अनुयाइयों को इस समय भावी कार्यक्रम के सम्बन्ध मे विचार करना आवश्यक है। इसलिये आज मै आर्य समाज के कार्य और उसके भविष्य के सम्बन्ध मे अपने विचार आर्य जनता के सम्मुख प्रस्तुत करना चाहता हू।

किसी भी संस्था का भविष्य उसके वर्तमान पर और वर्तमान उसके अतीत पर आश्रित रहता है। इसलिये यदि हम आर्यसमाज के भविष्य पर विचार करना चाहते हैं तो यह आवश्यक है उसके अतीत के इतिहास का अवलोकन करें।

आर्यसमाज का कार्य क्षेत्र विस्तृत होने के कारण उसके सम्पूर्ण कार्यों की आलोचना करना कठिन है। इसलिये उसके कार्यों को ५ प्रमुख भागों मे विभक्त किया जा सकता है।

[१] धर्म प्रचार [२] शिक्षा प्रचार [३] समाज सुधार [४] राजनैतिक सुधार [५] सांस्कृतिक सुधार–

धर्म प्रचार

आर्यसमाज ने इन ९३ वर्षों में धर्म का जो सराहनीय प्रचार किया है, उसका अनुमान भारत वर्ष और अन्य उपनिवेशों में स्थान-स्थान पर स्थापित आर्यसमाजों से किया जा सकता है। आर्यसमाज की ओर से सहस्रों की संख्या में वैतनिक, अवैतनिक उपदेशक प्रचारक और साधु सन्यासी तथा वानप्रस्थी देश के कोने-कोने में घूम फिरकर महर्षि दयानन्द के सन्देश को जनता तक पहुंचाते रहे हैं। और पहुंचा रहे हैं। कुछ समय पूर्व जो लोग आर्यसमाज के अनुयाइयों को अपना शत्रु और महर्षि दयानन्द को अपना विरोधी मानते थे, वे आज आर्यसमाज के कन्धे से कन्धा मिलाकर काम कर रहे हैं। शिक्षित जन समुदाय में और वर्तमान समाज से पद्दलित लोगों में आर्यसमाज के प्रति दिनों दिन सहानुभूति बढ़ती जा रही है। आर्यसमाज इस समय के स्वतन्त्र भारत में एक धधकती भट्टी बन कर वर्तमान काल की धार्मिक कुरीतियों सामाजिक, असमानता, आर्थिक विषमता, छूत-छात आदि को भस्मकर पुनः प्राचीन संस्कृत के अनुरूप एक आदर्श भारत का निर्माण करना चाहता है। इस आदर्श को लक्ष्य बनाकर आर्यसमाज अपना धार्मिक प्रचार कार्य करता रहा है, और भविष्य मे उसे करना भी है। इसी के सम्बन्ध मे २२ दिसम्बर सन् १९३८ ई० को अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन शोलापुर के अध्यक्ष पद से भाषण देते हुए माननीय श्री एम० एस० अणे, ने कहा था कि आर्यसमाज एक अन्तरराष्ट्रिय धार्मिक आन्दोलन के रूप में वैदिक धर्म के अनुयाइयों और अन्य धर्मावलम्बियों के बीच एक सुन्दर धार्मिक समन्वय के पैदा करने का प्रयत्न करता रहा है। आर्यसमाज ने शिक्षित तथा सभ्य संसार में अपने धार्मिक ऊँच तत्वों के आधार पर अन्तरराष्ट्रिय मानवी प्रेम के प्रसार में शक्ति प्रदान की है और वेद के "विश्वे अमृतस्य पुत्रः" के सिद्धांत को लेकर आज के दानवी काल में शांति के अमूल्य, अमर सन्देश को फैलाने में प्रयत्नशील हैं।

माननीय श्री एम० एस० अणे के इन विचारों से आर्यसमाज के धार्मिक प्रचार की महत्ता प्रकट होती है। और वस्तुतः अब हमें वेद के इस सन्देश को लेकर मानव मानव के बीच फैले हुये ईर्ष्या, द्वेष और अविश्वास को मिटाकर प्रेम सद्भावना तथा विश्वास को लाना है। इस कार्य को क्रियात्मक रूप देने के लिए आर्यसमाज को अपना पग आगे बढ़ाना चाहिये।

शिक्षा प्रचार

आर्यसमाज की प्रचार शैली का आधार तर्क है। तर्क, अन्ध विश्वास और रूढ़िवाद पर विश्वास न कर बुद्धि पूर्वक विचार भी शिक्षा के बिना नहीं हो सकता है। यही कारण है कि आर्य समाज ने शिक्षा के क्षेत्र में अपना सर्वस्व लगा रखा है। इस संस्था की ओर से सहस्रों स्कूल कालेज और गुरुकुल चल रहे हैं। आर्यसमाज का इस समय शिक्षा केन्द्र पर वार्षिक २५ लाख रुपया व्यय हो रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में आर्य समाज ने भारतवर्ष में जो कार्य किया है, उसके मुकाबले में क्या विदेशी और क्या स्वदेशी! ऐसी कोई भी सुसाइटी भारत में नहीं है जिसने कि शिक्षा के क्षेत्र मे काम किया हो।

समाज सुधार

भारतवर्ष मे मध्य युग मे जो कुरीतियों और कुप्रथाओं तथा अन्ध-विश्वास ने हिन्दुओं पर घर कर लिया था।

उसका परिणाम यह हुआ कि हिन्दु जाति कृष्ण-पक्ष के चन्द्रमा की भांति दिन प्रतिदिन क्षीण होती चली गई। अमावस्या की रात आने को ही थी, कि वैदिक दिवाकर दयानन्द न उदय होकर अपनी प्रखर किरणों से भारत वर्ष के नभ मण्डल में व्याप्त अन्धकार को नष्ट कर डाला। सामाजिक बन्धनों के कारण आर्य जाति का अङ्ग-प्रत्यङ्ग शिथिल पड़ गया था। आर्य समाज के प्रचार से पूर्व स्त्रियों को केवल भोग विलास की सामग्री समझा जाता था। ऐसी अवस्था मे महर्षि दयानन्द ने ही सबसे पहले इस युग में स्त्रियों को पुरुषों के समान अधिकार देने का आन्दोलन किया। इस प्रकार पर्दा, बाल-विवाह, वृद्ध विवाह, अनमेल विवाह, मद्यपान निषेध, छूत छात तथा जात-पाति इत्यादि कुरीतियों के बढ़ते हुए प्रवाह को रोकने मे चट्टान का काम करने वाली यही एकमात्र संस्था है। हरिजन सेवक संघ, दलितोद्धार सभा तथा कांग्रेस, आदि संस्थाओं ने आर्य समाज की पुनीत पताका के नीचे आकर ही समाज सुधार का पाठ पढ़ा है।

राजनैतिक सुधार

आर्य समाज एक लोक तंत्रात्मक (डमोक्रेटिक) संस्था है। बिना किसी भेद-भाव के इसमें सभी स्त्रियों, पुरुषों के समान अधिकार हैं। स्वतन्त्रता, समानता और बन्धुत्व को ही इसके विधान में विशेष महत्व दिया गया है। महर्षि दयानन्द ने राज्य की व्याख्या करते हुए लोक सत्तात्मक शासन की ही प्रशंसा की है। आर्य समाज धार्मिक संस्था है, इसलिये सामूहिक रूप में आधुनिक व्यावहारिक राजनीति में भाग नहीं ले सकती, किन्तु व्यक्तिगत रूप मे प्रत्येक आर्य समाज के सदस्य को राजनीत में भाग लेने की पूर्ण स्वतन्त्रता है। आर्य समाज के कितने ही नेताओं तथा व्यक्तियों ने राष्ट्रिय आन्दोलन मे भाग लेकर यह संस्था व राष्ट्र की स्वतन्त्रता के प्रश्न मे अन्य किसी संस्था से पीछे नहीं रही है। आर्य समाज बाहर के लोगों को यह सुनकर आश्चर्य होगा कि स्वदेशी, स्वराज्य स्वतन्त्रता शब्द का प्रयोग वर्तमान युग मे सब प्रथम स्वामी दयानन्द जी ने किया है। स्वदेशी के महत्व को दर्शाते हुए महर्षि ने कितनी तीव्र वेदना प्रकट की है कि 'देश-देशांतर द्वीप-द्वीपांतर मे व्यापार किये बिना स्वदेश की उन्नति कभी नहीं हो सकती, जब स्वदेश में ही परदेशी व्यापार करें, तो दरिद्रता के सिवा और क्या? स्वराज्य का महत्व बतलाते हुए महर्षि ने कहा है कि 'कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है।' महर्षि को मजदूरों और गरीबों का कितना ध्यान था, वह कहते हैं कि 'राजाओं के राजा किसान आदि परिश्रम करने वाले हैं।' इन शब्दों मे किसानों और मजदूरों के प्रति कितना आदर है। प्रजातन्त्र के समर्थक के रूप मे ऋषि के यह उद्गार कि 'किसी एक को राज्य में स्वाधीन न करना चाहिए क्योंकि अकेला राजा स्वाधीन और उन्मत्त हो के प्रजा का नाशक होता है, एक को राजा और एक की बुद्धि पर राज्य के कार्य को निर्भर रखना बहुत ही बुरी बात है' प्रजातन्त्रता के समर्थक स्वामी दयानन्द जी ने तानाशाही से होने वाली हानि का वर्णन इस रूप में किया है।

भारत की स्वतन्त्रता से सम्बन्ध रखने वाली ऐसी कौन-सी बात है, जिस

(शेष पृष्ठ ११ पर)

दशम सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन

के कार्यक्रम की रूपरेखा

★छगनलाल विजयवर्गीय
स्वागत मन्त्री

सम्मेलन का आयोजन

सृष्टि के आरम्भ से ही आर्यजन वेदों को परम ईश्वरीय ज्ञान मान इनमें निर्दिष्ट मर्यादाओं पर चलते रहे। जिसके परिणाम स्वरूप सम्पूर्ण विश्व में "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना व्याप्त थी। इसी से समस्त मानवों मे परस्पर प्रेम, विश्वास और सहानुभूति का व्यवहार साम्राज्य रूप धारण किये हुए था। इसी से मानव समाज तो क्या प्राणी मात्र मे भी सर्वत्र शांति ही शांति दिखाई देती थी। इसी शान्ति युग मे लोग भौतिकवादी जीवन की अपेक्षा आध्यात्मिक जीवन को प्रधान लक्ष्य मान तदनुकूल वैदिक मर्यादाओं का पालन कर अपने अपने वर्णाश्रम धर्म को पालते हुए प्रभु प्राप्ति और आत्म शान्ति एवं मुक्ति आदि जैसे परम लक्ष्य को प्राप्त करते थे, जो कि मानव जीवन के प्रमुख उद्देश्य है।

दुर्भाग्य कि यह सब सम्पूर्ण विश्व में अखण्ड रहने की अपेक्षा आर्यावर्त मे भी इसका अक्षुण्ण प्रभाव नहीं है। इसी सबका अनुभव युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द ने करते हुए आर्यसमाज की स्थापना की और इस सबका दायित्व इस पर रखा। ऋषि ऋण की पूर्ति के लिये आर्यसमाज लगभग ९२ वर्ष से कृत सकल्प है और महर्षि के क्रिया कलापों को व्यवहृत करता जा रहा है।

भारत को स्वाधीन होकर २० वर्ष हो रहे हैं। परन्तु भारत की प्राचीन मर्यादाओ के अनुसार हमारा जीवन बनता नहीं दिखाई देता बल्कि राष्ट्र आज पाश्चात्य भौतिकवादी ध्वस्त राजनीति के मार्ग पर अग्रसर होता दिखाई दे रहा है। और आज का भारतीय राष्ट्रिय जीवन नित नई समस्याओं में उलझता जा रहा है। इसकी भौगोलिक सीमाएं भी सुरक्षित नहीं रहती दिखाई दे रही है। कभी चीनी आक्रमण का खतरा बना दिखाई देता है, तो कभी पाकिस्तानी आक्रमण का खतरा बना दिखाई दे रहा है। दूसरी ओर ईसाई तथा मुस्लिम साम्प्रदायिक प्रवृत्तियों का सहारा लेकर राष्ट्रिय जीवन को विषाक्त किये हुये हैं। दिन प्रति दिन इनके द्वारा होने वाला आर्य (हिन्दू) जनता का धर्म परिवर्त्तन भविष्य की एक गम्भीर चिन्ता है। ईसाइयों के द्वारा शिक्षा और सेवा का लबादा ओढ़ लोगों के मन और मस्तिष्क को बदलते हुए अपनी संख्या की वृद्धि कर देश के सम्मुख नागालैण्ड जैसी अराष्ट्रिय भावना को जागृत कर पृथकत्व का नारा देश तथा जाति के लिए गम्भीर चुनौती के अतिरिक्त और कुछ नहीं।

इन्हीं सब परिस्थितियों और समस्याओं को लक्ष्य रखकर हैदराबाद आर्य जगत् दशम सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन का आयोजन अभूतपूर्व ऐतिहासिक रूप मे नवम्बर मास मे करने जा रहा है। जिसमे योजनाबद्ध कार्यों को क्रियात्मकरूप देने पर विचार किया जाएगा। जिसके कार्यक्रम की साधारण सी रूप रेखा निम्न प्रकार अंकित की जा रही है—

सम्मेलन की तिथियां

दशम सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन का यह वृहद अधिवेशन दयानन्दाब्द १४४ तिथि मार्गशीर्ष कृष्ण ३.४ तथा ५ सम्वत २०२५ विक्रमी तदनुसार दिनांक ८, ९ तथा १० नवम्बर १९६८ ई०, शुक्र, शनि, तथा रविवार को समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है।

सम्मेलन का स्थान

आर्य महासम्मेलन का यह आयोजन हैदराबाद के सुप्रसिद्ध औद्योगिक प्रदर्शनी प्रागण (नुमाईश मैदान) नामपल्ली जिसका नाम 'विनायकराव नगर' रखा गया है मे किया जा रहा है।

सम्मेलन के अवसर पर

आर्य महासम्मेलन के अवसर पर अन्य सम्मेलन भी जैसे वेद सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन, आर्यवीर दल सम्मेलन, आर्य महिला सम्मेलन तथा गोरक्षा सम्मेलन आदि भी आयोजित किये जा रहे हैं। जिनमे आर्यजगत् के संन्यासी, महात्मा तथा मूर्धन्य विद्वान व नेतागण तथा भजनोपदेशक आदि भाग लेंगे।

यजुर्वेद पारायण महायज्ञ

दिनांक ४ नवम्बर १९६८ से १० नवम्बर ६८ तक सम्मेलन के अवसर पर यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। जिसके ब्रह्मा आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान् आचार्य कृष्ण जी तथा ऋत्विक् श्री पं० सत्यानन्द जी शास्त्री, व्याकरणाचार्य एम० ए० और श्री पं० सत्यप्रिय जी शास्त्री 'वेदशिरोमणि' एम० ए० रहेंगे। इनके अतिरिक्त आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण 'हैदराबाद के उपदेशक भी रहेंगे।

सभापति जी का जुलूस

आर्य महा सम्मेलन के सभापति महोदय का अभूतपूर्व और ऐतिहासिक, आकर्षक जुलूस दिनाक ८ नवम्बर ६८ को भगवानदास कालिज पत्थरगट्टी से मध्याह्न दो बजे निकाला जायगा। यह जलूस मुलतान बाज़ार होता हुआ— सम्मेलन प्रांगण 'विनायकराव नगर' को पहुचेगा।

प्रदर्शनिएं

आर्य महासम्मेलन के अवसर पर कुछेक विशिष्ठ प्रदर्शनियों का भी आयोजन किया जा रहा है। जैसेः—

१—आर्य समाज द्वारा चलाये गये आन्दोलनों के चित्रों की प्रदर्शनी।

२—शाकाहार प्रचार के चित्रों की प्रदर्शनी।

३—मद्य-निषेध सम्बन्धी चित्रों की प्रदर्शनी।

४—आर्य समाज द्वारा संचालित शिक्षण सस्थाओं का प्रगति सम्बन्धी चित्रों की प्रदर्शनी।

५—महर्षि दयानन्द सरस्वती के वस्तुओं की प्रदर्शनी। जिनमें उनके हस्तलिखित पत्र, पुस्तकें तथा वस्त्र आदि हैं।

नोट—

(१) दक्षिण के आर्यों के लिये यह प्रथम ही अवसर होगा कि वे महर्षि की वस्तुओं का दर्शन कर सकें।

(२) इन सभी वस्तुओं को प्रदर्शनार्थ परोपकारिणी सभा अजमेर से लाने का प्रयत्न किया जा रहा है।

(३) भारतदर्शन प्रदर्शनी।

प्रतिनिधि सभा का भावी कार्यक्रम

उपर्युक्त सभी के अतिरिक्त आर्य प्रतिनिधि सभा अपने क्षेत्र के लिए कार्य को गति देने कुछ विशिष्ठ योजनाओं को मूर्तरूप देना चाहती है जिसमेः—

(अ) अराष्ट्रिय ईसाई प्रचार निरोध व शुद्धि कार्य

देश मे व्यापक रूप से हो रहे अराष्ट्रीय ईसाई प्रचार निरोध तथा माऋ भक्त कम्युनिस्टों द्वारा बंगाल से लेकर आन्ध्र प्रदेश के सीमावर्ती अनेक स्थानों पर नक्सल बाड़ी जैसा रूप दिये जाने के प्रयत्नों के प्रति जनता को जागरूक करने उपदेशकों द्वारा प्रचार करवाना तथा हिन्दी अंग्रेजी और कन्नड़, मराठी व तेलगु भाषा मे ट्रक्ट आदि प्रकाशित कर वितरण करवाना। जिससे ईसाइयों आदि द्वारा होने वाले भ्रामक प्रचार का निवारण होकर भोली जनता धर्म परिवर्त्तन के चक्र से बच सके।

(आ) उपदेशक विद्यालय की स्थापना

सभा के तेलगु मराठी और कन्नड़ भाषा के व्यापक क्षेत्र की दृष्टि से और उसमे प्रचार के उद्देश्य से सभा के सम्मुख एक उपदेशक विद्यालय के स्थापना की योजना है। तीनों भाषाओं के उपदेशक तैयार करने एवं उन्हें प्रशिक्षित कर उनसे व्यापकरूप में कार्य लेने की योजना है।

(इ) साहित्य प्रकाशन

वैदिक सिद्धान्तों सम्बन्धी आर्य विद्वानों द्वारा लिखे गए उपयोगी ग्रन्थों को हिन्दी अंग्रेजी तथा प्रान्तीय भाषाओं मे प्रकाशित कर प्रचारित करना। जिससे सुपठित जनों तक आर्य सिद्धांतों को पहुंचाया जा सके।

इन्हीं सब उपर्युक्त कार्यक्रमों को क्रियान्वित करने के लिये आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण ने जो एक लाख रुपये की अपील की है। उसकी पूर्ति के निमित्त सभी आर्य बन्धुओं को तत्पर हो जाना चाहिये। आशा है कि सभी बन्धु इस संकल्प पूर्ति मे प्रयत्नशील होंगे।

महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज

[ऋषि निर्वाण अङ्क के निमित्त जो रचनायें हमें विलम्ब से प्राप्त हुई थीं, उन्हें हम इस साधारण अङ्क मे प्रकाशित कर रहे हैं। आशा है पाठक गण इन रचनाओं मे व्यक्त विचारो से प्रेरणा ले कर आर्य समाज के पुनीत कार्य में और योगदान देकर ऋषि के दिव्य स्वप्नों को साकार करेंगे। —सम्पादक]

महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना एक विशेष उद्देश्य की पूर्ति के लिए की थी। महर्षि दयानन्द पुन संसार मे वेदों का प्रचार और प्रसार चाहते थे और वैदिक धर्म के आधार पर व्यक्तियो के जीवन निर्माण और समाज की रूप-रेखा का निर्माण चाहते थे। आर्यसमाज को स्थापित हुए लगभग ९३ वर्ष हो चुके है। १९७५ मे स्थापना शताब्दी मनाई जाने वाली है। इसी मास के आरम्भ मे दशम आर्य महासम्मेलन होने जा रहा है महर्षि आर्यसमाज मे ये चाहते थे कि सब काम प्रीति पूर्वक धर्मानुसार सत्य और असत्य को विचार करके करना चाहिए दुर्भाग्य से आज दशा इससे बहुत विपरीत हो गई है। बहुत से स्थानीय समाजों मे निर्वाचन के आधार पर कलह और द्वेष की अग्नि धधक रही है। वह अग्नि प्रान्तीय समाजों तक प्रभाव उत्पन्न करती हुई सार्वदेशिक सभा मे भी पहुच गयी है। आज सार्वदेशिक सभा और आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब मे वर्षों से झगडा चल रहा है। महर्षि ने आर्य समाज के उपनियमों मे अदालतो मे मुकदमे करने के लिये निषेध किया था। आज मुकदमे बाजी का बोल बाला है। सार्वदेशिक सभा की बागडोर कुछ ऐसे महानुभावों के हाथ मे है, जिनकी नीति से इस उपनियम की अवहेलना हो रही है। दशम आर्य महा सम्मेलन में सबसे पूर्व आर्यसमाज की आंतरिक दशा सुधारने पर गम्भीरता से विचार होना चाहिए। यदि घर मे बीमारी है और आग लगी हुई है, तो उसके निराकरण पर विचार न करके संसार के अन्य प्राणियो के उपचार की चिन्ता करना कोई विशेष महत्व की बात नहीं हो सकती। कुछ सम्मेलनों को छोडकर प्रमुख आर्यो का सम्मेलन होना चाहिए जिसमे आर्यसमाज के प्रवेश प्रचार और प्रबन्ध की नीति पर विचार हो। देहली मे नवम् आर्य महा सम्मेलन के अवसर पर इस प्रकार का सम्मेलन किया गया था उसको आधार मानकर जो प्रस्ताव स्वीकार हुये थे उनको कार्य रूप मे परिणत करने के लिए गम्भीर रूप मे विचार करके उपाय निकाले जाय। नवम आर्य महासम्मेलन मे लगभग १ लाख रुपया का व्यय हुआ। सम्मेलन के पश्चात् सार्वदेशिक सभा की बागडोर जिनके हाथ में आई, उन्होंने उपरोक्त सम्मेलन के प्रस्तावो पर बार बार याद दिलाने पर भी विचार नहीं किया, न किसी अन्तरङ्ग सभा मे विचार हुआ और न वार्षिक अधिवेशन मे। मैंने इस सम्बन्ध मे प० नरेन्द्र जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण हैदराबाद को पत्र लिखे, परन्तु अभी तक कोई उत्तर नही मिला। मै आर्यसमाज की गतिविधि पर जब विचार करता हू तब बड़ा दु ख होता है। आर्यसमाज के अच्छे अच्छे कार्य कर्ता प० गगाप्रसाद जी उपाध्याय जैसे हमसे जुदा होते जा रहे हैं पिछले वर्ष कई महान् कार्य कर्ताओं का निधन हुआ है। कोई नहीं कह सकता कि मेरे ऐसे पके पत्तो का नम्बर कब आ जाय। मै ५० ६० साल की सेवा के आधार पर ये अवश्य चाहता हू कि आर्यसमाज दशम आर्य महासम्मेलन के अवसर पर अपनी आन्तरिक दशा पर कम से कम एक दिन का समय लगाकर विचार करे मै यह भी चाहता हू कि जिनका वियोग हुआ है उनको श्रद्धांजलि देकर सन्तुष्ट नहीं हो जाना चाहिये उनकी स्मृति को स्थाई रूप देने के लिये विचार होना चाहिये। प० गगाप्रसाद जी ने साहित्य के निर्माण मे एक अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया है, उनकी स्मृति मे किसी उचित स्थान पर उपाध्याय पब्लिशिंग हाउस या उपाध्याय साहित्य प्रकाशन गृह या उपाध्याय पुस्तकालय, उपाध्याय उपदेशक महाविद्यालय और उपाध्याय पुस्तक विक्रय केन्द्र की स्थापना हो। सारे देश की आर्य समाजें कम से कम १०० रुपये अधिक से अधिक जितनी उनकी सामर्थ्य हो हिस्से ले। सौ रुपये का एक हिस्सा हो। और इस नाम से और उपरोक्त कामों के लिये कम्पनी बनाई जाय और कार्य आरम्भ किया जाय। दशम आर्य महासम्मेलन के अवसर पर इस पर विचार करके इसकी घोषणा की जाय। मेरी धारणा है कि यदि दशम आर्य महासम्मेलन मे आर्यसमाज की आंतरिक दशा का सुधार और प्रचार की शैली संस्थाओं के प्रबन्ध और साहित्य प्रकाशन की योजना पर गम्भीरता मे विचार हो जाय तो बड़ा लाभ हो सकता है ये मैं मानता हू कि गो रक्षा, राष्ट्र रक्षा, और राष्ट्र भाषा सम्बन्धी समस्यायें बडी विचारणीय हैं परन्तु आर्य जगत मे इनके सम्बन्ध में

★ श्री बा. पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट
पूर्व प्रधान सार्वदेशिक सभा, देहली

विवाद नहीं है। इनके प्रस्ताव अध्यक्ष की ओर से प्रस्तुत किये जा सकते हैं दशम आर्य महासम्मेलन का रूप केवल मेले, जल्से या तमाशे का न हो, एक गम्भीर विचार गोष्ठी का रूप होने से इसमे आर्यसमाज का गौरव सुरक्षित होगा। मेरी सम्मति मे यह भी आवश्यक है कि दशम आर्य महासम्मेलन का अध्यक्ष कोई अनुभवी आर्यसमाजी होना चाहिये। और इसी प्रकार जो प्रमुख आर्यो का सम्मेलन हो उसका अध्यक्ष भी वही अनुभवी आर्यसमाजी होना चाहिये जिन्होने काम किया है जिनके सन्मुख कठिनाइयाँ आई हैं, जिन्होंने कठिनाइयों का सामना किया है। उनसे ही पथ प्रदर्शन की आशा हो सकती है। आर्य जगत् के बाहर का बडे से बडा आदमी भी आर्यसमाज की कठिनाई को अनुभव नहीं कर सकता और न उनको दूर करने का उपाय ही बता सकता है। जिन आर्यसमाज के महानुभावो का जीवन विशेष रूप से वर्षो से केवल प्रचार मे लगा है उनसे भी आन्तरिक कठिनाइयों के सुलझाने की आशा कम हो सकती है। मैं इस लेख को समाप्त करते हुए दशम आर्य महासम्मेलन की स्वागत समिति का ध्यान विशेष रूप मे आकर्षित करना चाहता हू। मै दो तीन वर्षो मे पर्याप्त सुझाव भेज चुका हू, जो सेवा मेरे योग्य हो उसके लिये उपस्थित हू। यदि कोई विशेष बात पैदा न हो तो आशा करता हू कि मेरे इन सुझाओ पर अवश्य विचार होना चाहिये।

★

युद्ध-ज्वाल

★

युद्ध ज्वाल उठ रही, शान्ति भी बिलख रही।
मनुष्यता सिसक सिसक मनुष्य से है कह रही।।
ये अस्त्र शस्त्र किसलिये, ये यान क्यो हैं उड़ रहे।
आज किस लिये राष्ट्र के, विनाश हेतु बन रहे।।

राष्ट्र हैं बिखर रहे भूख से तड़प रहे।
मानवों को भूनने, बम अजिशाल बन रहे।। युद्ध०

अनन्त विष ज्वाल ओढ़, शृङ्खला राष्ट्र बढ़ रहे।
आज भोगवाद मे सभी शान्ति रट रहे।
किन्तु शान्ति है कहाँ, जब बन्धु-बन्धु काल है।
बाह्य दृष्टि देखिये, शान्ति शान्ति नाम है।।

ईश मे न प्रेम है, देश मे न प्रेम है।
फिर ये राष्ट्र नाव क्यों, पयोधि मे डुबो रहे। युद्ध०

वीर वे भगत नहीं, वीर वे सुदी नहीं।
फिर सुभाष बोस के, रहे वे गर्जना नहीं।
ढींगरा मदन नहीं, आजाद वे युवक नहीं।
हम न क्रान्ति वीर का, हुकार अब हैं सुन रहे।।

ऋषिवर दयानन्द नहीं, मुनिवर गुरुदत्त नहीं।
लेख राम देहलवी के तर्क अस्त्र न रहे। युद्ध

★ लक्ष्मीनारायण शास्त्री साहित्यरत्न, मुजहनी, गोंडा

ऋषि दयानन्द का शास्त्र प्रमाणवाद

डा० भवानीलाल भारतीय

किसी दार्शनिक विचार धारा का अध्ययन करते समय या किसी धार्मिक नेता के मन्तव्यों की आलोचना करने से पूर्व यह जानना आवश्यक होता है कि तत् तत् विचारधारा या व्यक्ति ने ज्ञान प्राप्ति के किन किन साधनों को स्वीकारा है और उन साधनों का स्वरूप क्या है? भारतीय दर्शन परम्परा मे ज्ञान प्राप्ति के साधनों का बडे विस्तार से विचार हुआ है। विशेषत न्याय दर्शन की रचना का तो ध्येय ही प्रमाण विवेचन रहा है। सामान्यत भारतीय दार्शनिक सम्प्रदायों ने प्रत्यक्ष, अनुमान और शब्द—ये तीन ही प्रमाण स्वीकार किये हैं यद्यपि न्याय के मतानुसार उपमान भी एक पृथक प्रमाण है।

प्रस्तुत लेख में हमे स्वामी दयानन्द के शास्त्र विषयक विचारों की आलोचना करनी है और यह देखना है कि शब्द प्रमाण या शास्त्र प्रमाण के प्रति उनकी धारणा कहां तक एक दूसरे के अनुकूल या प्रतिकूल है। 'शब्द' को आप्तों का उपदेश कहा गया है। [आप्तोपदेश शब्द न्याय सूत्र १ १।७] परम आप्त परमात्मा का ज्ञान वेद भारतीय धर्म परम्परा मे परम प्रमाण माना गया और अन्यान्य ऋषि महर्षियों द्वारा लिखित ग्रन्थ वेद के अनुकूल होने के कारण परत प्रमाण ठहराये गये हैं। ग्रन्थो के प्रामाण्याप्रामाण्य का यह विचार अत्यन्त गूढ है, जिसका दार्शनिक आधार पर विस्तार पूर्वक विवेचन न्याय, मीमासा आदि वैदिक दर्शनों मे हुआ है।

शब्द मूल शास्त्र को धर्म के विषय मे सर्वोच्च प्रमाण मानने की हमारे देश की परम्परा अपने आप मे एक निराली मान्यता है। व्याकरण महाभाष्य के रचयिता महर्षि पतञ्जलि ने अत्यन्त गर्व पूर्वक अपने आपको शब्द प्रमाणवादी कहकर शास्त्र की प्रामाणिकता घोषित की है। [शब्द प्रमाणका वयम। यच्छब्द आह तदस्माकं प्रमाण। महाभाष्य-पस्पशाह्निक'] आज के बुद्धिवादी और विज्ञान प्रधान युग मे यह मान्यता चाहे उपहासास्पद ही क्यों न समझी जाय, यह कहने में तो कुछ भी विप्रतिपत्ति नहीं होनी चाहिए कि नैयायिकों और मीमासकों ने शास्त्र प्रमाण विषयक अपनी मान्यताओं को अत्यन्त प्रबल युक्तियों और तर्क का आधार प्रदान करने की चेष्टा की थी। हम यहां इन युक्तियों के विस्तार में नहीं जायेंगे जिनके बल पर शास्त्र की महत्ता को निर्विवाद घोषित करने की चेष्टा हमारे पुरातन आचार्यों ने की है। हमारा विवेचनीय विषय तो दयानन्द और वेद की इस विषयक धारणाओं का विश्लेषण और उनके औचित्य अनौचित्य का विचार करना है।

यह किसी से अप्रकट नहीं है कि दयानन्द ने अपनी विचारधारा को वेद प्रमाण के सुदृढ आधार पर स्थापित करने की चेष्टा की। यद्यपि उनका यह प्रयत्न कोई नया नहीं था शताब्दियों से भारतीय दार्शनिक [निज शक्त्यभिव्यक्तेः स्वतः प्रामाण्यम् सांख्य० स पूर्वेषामपि गुरु कालेनानवच्छेदात्। योग १।१।२६

मन्त्रायुर्वेद प्रामाण्यवच्च तत्प्रामाण्यमाप्त प्रामाण्यात् न्याय० २।१।६७

तद्वचनादाम्नायस्य प्रामाण्यम वैशेषिक १।१।३

शास्त्रयोनित्वात वे० १। १। ३ चिन्तक, विचारक और मीमासक एक स्वर से वेद को सर्वोच्च प्रमाण मानते रहे हैं, और धर्माधर्म एवं कर्तव्य के निर्णय के लिये वेद के आदेश और निषेध का मुंह जोहते रहे हैं [तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्य व्यवस्थितौ। ज्ञात्वा शास्त्र विधानोक्तं कर्म कर्तुमिहार्हसि ॥ श्रीमद्भगवतगीता अ० १६।२४] परन्तु यह भी मानना ही पड़ेगा कि मध्यकालीन भारतीय तत्त्व चिन्तक वेद के स्वत प्रमाणत्व को किसी भी प्रकार की शाब्दिक अवमानना या अवहेलना न करते हुए भी क्रियात्मक दृष्टि से उसके प्रति उपेक्षा भाव ही प्रदर्शित करते रहे। इस काल मे वेदेतर ग्रन्थो को प्रतिष्ठा मिली। ऋषियो के नाम पर विभिन्न स्मृतियों की रचना हुई, जन साधारण के लिये पुराणो के रूप मे सुगम और आयासरहित धर्म का रूप प्रस्तुत किया गया, निबन्धकारों ने धर्माधर्म और कर्तव्याकर्तव्य का विचार श्रौत आधार को छोड़ कर स्मार्त आधार पर किया। फलत. धर्म का पुराना विशुद्ध, सीधा और सरल रूप लुप्त हो गया और उसके स्थान पर जटिल कर्मकांड युक्त, रूढि और मूढतापूर्ण विश्वासो से युक्त कदाचार पूर्ण कर्मों को ही धर्म की संज्ञा मिली।

दयानन्द ने इसी रूढि और कदाचारयुक्त धर्म के विरुद्ध आवाज उठाई और वेदेतर ग्रन्थों की प्रामाणिकता को सापेक्ष बतलाते हुए वेद ज्ञान को निरपेक्ष घोषित किया। वेदों की प्रामाणिकता के विषय मे जो सिद्धान्त अत्यन्त पुरातन काल से भारत मे प्रचलित रहा। दयानन्द ने उसे ही ज्यों का त्यों स्वीकार कर लिया। कुल्लूकभट्ट ने अपनी मनुस्मृति की टीका मे यह स्पष्ट कर दिया है कि जहां श्रुति और स्मृति का विरोध होता है, वहां श्रुति वचन का ही आदर करना चाहिए, स्मृति का नहीं। [मन्वर्थ मुक्तावली (मनुस्मृति की टीका)] इसी व्यवस्था के आधार पर स्वामी दयानन्द ने भी वेद से विरुद्ध प्रतीत होने वाले तथा कथित स्मृति पुराण और तन्त्रादि ग्रन्थों के वचनों का अनादर करते हुए विशुद्ध वैदिक आधार पर ही अपनी विचारधारा की प्रतिष्ठा की

स्वामी दयानन्द के शास्त्र प्रमाण विषयक सिद्धांत की दो प्रमुख विशेषतायें दृष्टिगोचर होती हैं। प्रथम तो यह है कि उन्होंने इस सिद्धांत को केवल सिद्धान्त रूप मे ही सीमित नहीं कर दिया, अपितु उसे अपने धर्मान्दोलन का आधार बना कर व्यावहारिक रूप भी प्रदान किया। एक उदाहरण देना ही पर्याप्त होगा। स्वामी दयानन्द ने अपने जीवनकाल मे प्रति-पक्षियो से अनेक शास्त्रार्थ किये। जब जब मूर्ति-पूजा अवतार, मृतकश्राद्ध आदि अवैदिक कृत्यो के औचित्यानौचित्य पर उनके विपक्षियो मे शास्त्रार्थ होते तब-तब वे अपने विपक्षी पण्डितो से इन कृत्यो की प्रामाणिकता वेद के आधार पर सिद्ध करने का आग्रह करते। उस समय विरोधियों की हैरानी और परेशानी दर्शनीय हो जाती। सुप्रसिद्ध काशी शास्त्रार्थ मे भी यही हुआ। जब प्रथम बार काशी जाकर वहां की पण्डित मण्डली को दयानन्द ने मूर्ति पूजा के समर्थन मे वेद का प्रमाण प्रस्तुत करने के लिये आहूत किया तो विद्वद् वर्ग बड़ा असमंजस मे पड़ा। अब तक मूर्तिपूजा आदि कृत्यो पर उन्होंने इस दृष्टिकोण से विचार ही नहीं किया था। काशी नरेश द्वारा शास्त्रार्थ के लिये विवश किये जाने पर भी एक बार तो उन्होंने इन शब्दों द्वारा अपनी यथार्थ स्थिति प्रकट कर दी—संन्यासी (दयानन्द) मूर्ति पूजा की सिद्धि के लिए वेद प्रमाण मांगता है। और वेदो से प्रमाण देना तो दूर रहा, हमने उनके दर्शन भी नहीं किये हैं।"

कहने का तात्पर्य यह है कि दयानन्द ने केवल भावुकता वश या जन साधारण मे प्रचलित शास्त्र विषयक विश्वासो को उभारने की दृष्टि से ही वेद प्रमाण का आश्रय नहीं लिया जैसा कि कुछ लोग समझते है? उनके लिये शास्त्र प्रमाण का सिद्धान्त धर्माधर्म निर्णय का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण साधन था, जिनका बुद्धि और युक्तिवाद से भी उन्होंने पूर्णतया सामञ्जस्य स्थापित कर दिया था।

स्वामी दयानन्द के वेद प्रमाण विषयक सिद्धान्त की एक अन्य विशेषता है उनका मन्त्र संहिता भाग को ईश्वर कृत अपौरुषेय मानकर ब्राह्मण भाग को उससे पृथक अत परतः प्रमाण सिद्ध करना। कुछ शताब्दियो से यह विचार चल पड़ा कि वेद के अन्तर्गत मन्त्र भाग और ब्राह्मण भाग दोनो ही आते हैं। इस भ्रांति के मूल मे कात्यायन के नाम से प्रसिद्ध एक सूत्र है जो मन्त्र और ब्राह्मण दोनो को वेद की संज्ञा देता है। [मन्त्र ब्राह्मणयोर्वेद नामधेयम्।] आपस्तम्ब यज्ञ परिभाषा सूत्रों मे पढ़ा जाने के कारण यह सूत्र कुछ महत्त्व प्राप्त कर गया है' यद्यपि इसका सीधा सा समाधान यही हो सकता है कि यहां आपस्तम्ब जब अपनी यज्ञ पद्धति मे वेद को मन्त्र ब्राह्मणात्मक कहते हैं तो यह उनकी अपनी परिभाषा है जो उनके ग्रन्थ की सीमा के अन्तर्गत ही लागू हो सकती है। उसे सर्व तन्त्र सिद्धान्त की तरह स्वीकार नहीं किया जा सकता।

स्वामी दयानन्द ने ब्राह्मण भाग को वेद के रूप मे मान्यता न दिये जाने के पक्ष मे अनेक युक्तियां और प्रमाण अपनी ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका मे दिये हैं। उनके अनुसार ब्राह्मण ग्रन्थों की रचना ऐतरेय महीदास याज्ञवल्क्य आदि ऋषियों ने की है जब कि मन्त्र भाग ईश्वर रचित अपौरुषेय है। ब्राह्मणो मे अनेक उपाख्यान इतिहास आदि हैं जब कि मन्त्रो मे लौकिक, अनित्य, मानुषी इतिहास का लेश मात्र भी उपलब्ध नहीं होता। स्वामी जी द्वारा निरूपित यह संहिता प्रमाण वाद का सिद्धांत कुछ लोगों को अटपटा सा लगता है यद्यपि यह स्वीकार करना पड़ेगा कि उनकी युक्तियां बड़ी प्रबल हैं और वह पूर्णतया तर्क संगत तथा शास्त्रानुमोदित भी है।

●

काव्य कानन

जागृति

उठकर खड़ा हुआ है सब जग,
अन्तस्तल मे आग रे।
तू क्यों सोया पड़ा अभी तक,
जल्दी जल्दी जाग रे ॥१॥

हुआ प्रात, प्राची मे छाई,
ऊषा की शुभ-लालिमा।
पर तेरे अन्तर मे तम की,
चादर की है कालिमा ॥

भारत के अभ्युत्थानों मे, तेरा सक्रिय भाग रे।
तू क्यों सोया पड़ा अभी तक, जल्दी-जल्दी जागरे ॥

हिम गिरि भी हिल उठा देखकर,
दानव अत्याचार को।
भू की छाती फटी सुने पर
तेरे हाहाकार को ॥

कब तक सह सकता है भोले! तन्द्रा अपनी त्याग रे ॥
तू क्यो सोया पड़ा अभी तक, जल्दी-जल्दी जाग रे ॥३॥

हम तो सदा बताते आये,
तू तो चेतन रूप है।
तू तो सस्कृति का निर्माता,
तू जग भर का भूप है।

माता है तू पिता नहीं क्या ? यह है तेरा त्याग रे।
तू क्यों सोया पड़ा अभी तक जल्दी-जल्दी जाग रे ॥४।

स्वाभिमान को जगा, और,
हिल-मिल कर चलना सीख ले।
अब मत कभी किसी से झूठी।
रूठी-रूठी भीख ले ॥

मानव है साकार, चेतना तेरा भी श्रृङ्गार, रे ॥
तू क्यों सोया पड़ा अभी तक ? जल्दी-जल्दी जाग रे ॥५॥

★विश्वबन्धु: शास्त्री दर्शन वाचस्पति
आर्य नगर मूड बरेली

●

दिवाली की शाम

आई अब शाम दिवाली की, आकाश चमक रहा तारो मे।
जब दीप जलाये जाते थे, घरबार गली बाजारों मे ॥

पक्षीगण बैठ घोंसलो मे, अपना विश्राम ले चुके थे ॥
छिप करके सूर्य देव अम्ब मे, अन्धकार को दे चुके थे ॥

अब शीतल मन्द सुगन्ध पवन रुक रुककर चलती जाती थी।
जगमगा रहे दीपक घर घर, कुछ घड़ी निकलती जाती थी ॥

त्योहार दिवाली का घर-घर, जिस वक्त मनाया जाता था।
उस वक्त दयानन्द स्वामी का, चेहरा मुस्कराता जाता था ॥

कर जाप ओ३म् का ऋषिवर ने, खिड़की औ द्वारे खुलवाकर।
ईश्वर से प्रीत लगा करके, बोले मुख से मुस्कराकर ॥

हे ईश तेरी इच्छा पूर्ण हो अच्छी लीला दिखलाई।
हो गये विदा कहकर इतना, यह शाम दिवाली की आई ॥

★त्रिलोकचन्द्र राघव, टंकारा ट्रस्ट, देहली

तुम्हारी युग-युग ज्योति जले

सारे जग के हर मानव मे तेरी किरण जगे।
भारत की इस पतित दशा मे,
अन्धकार सा फैला जग मे,
दी 'सत्यार्थप्रकाश' करों में,
फिर क्यों निशा रहे—
तुम्हारी युग-युग ज्योति जले।
सारे जग के हर कोने मे वैदिक ज्योति जले।
जाति पांति के भेदभाव में,
फसा हुआ था मानव का मन,
लौकिकता के कोलाहल मे,
घिरा हुआ सबका तन, मन, धन,
सारे जग के हर घर घर मे दयानन्द का ज्ञान जगे।
तुम्हारी युग-युग ज्योति जले।
पीड़ित था मानव धरती का,
अन्धकार से घिरा हुआ था,
वेदों की प्रभुता को बिसराकर—
मानव उससे भटक गया था,
सत्य अहिंसा बनकर पग-पग तेरी ज्योति जले।
तुम्हारी युग युग ज्योति जले।
शान्ति, सुख, आनन्द और
पौरुष इस धरती पर जागे,
तुम आये थे मार्ग दिखाने
भ्रमित राष्ट्र के भाग्य जगे
हुआ सत्य की ओर अग्रसर प्रतिपल तेरी ज्योति जले।
तुम्हारी युग-युग ज्योति जले।

★विजयदयाल सक्सेना, बहराइच

●

दीप लाखों मत जलाओ

दीप लाखो मत जलाओ!
एक दीपक ऐसा बालो, जो अंधेरे को मिटा दे ॥

युग युगान्तर तक, हम भटके हैं तिमिर मे,
आज तक सम्मान ले कोई किरन चमकी नहीं है।
ग्रस लिया हर बार शशि को राहू ने
चांदनी हसकर कभी दमकी नहीं है ॥

मूर्तिवत मत मूर्ति को मस्तक झुकाओ!
स्वार्थों की यज्ञ मे आहुति डालो, जो तुम्हे साहस नया दे ॥

दो पहर जल भी चुकी हैं दीप की लम्बी कतारें,
पर भला इससे हुआ क्या कुछ मेरे ससार का।
यो तो हर सप्ताह, हम गले मिलते रहे हैं।
पर नहीं उखड़ा धरा से, तरु, वैर और प्रतिकार का।

घर गृहस्थी से निकल, कुछ कदम आगे बढ़ाओ!
भगवान के चरणों मे भावना के फूल डालो, जो तुम्हे अद्भुत कृपा दे ॥

तृप्त लोगों की पिपासा, को बुझाने मे लगे हम,
यह नहीं देखा कि, कुछ विक्षुब्ध और प्यासे से अधर है।
हर बार जगते को, जागृति की सीख हम देते रहे,
यह नहीं सोचा कि, लाखो सो रहे यो बेखबर हैं।

तुम जगे हो अब जरा उनको जगाओ
पर्व दीवाली पर उनको ज्ञान का दीपक दिखाओ, जो उन्हे जीवन नया दे

★कमल सन्देश, मोतीबाग-१, नई देहली-२३

महर्षि के प्रति-
विनीत श्रद्धांजलि

श्री पं. रघुनाथप्रसाद पाठक

आर्यसमाज के संस्थापक श्री स्वामी दयानन्द जी सरस्वती जी का जीवन और कार्य दोनों ही समान रूप से गौरव युक्त थे। इसी प्रकार उनका अन्त भी गौरवपूर्ण रहा। उनका जीवन प्रभु सेवा पर अर्पित रहा। उनमें असीम स्फूर्ति का स्रोत उनका ईश्वर विश्वास था। वे यह अनुभव करते थे कि मैं जो कुछ कर रहा हूँ वह ईश्वर का ही कार्य है। जब उनका अन्त समय आया तो उन्होंने अपने को प्रभु की इच्छा के अर्पण कर दिया। मृत्यु शय्या पर उनके मुख से ये शब्द निकल पड़े।

"प्रभो ! आपने अच्छी लीला की। आपकी इच्छा पूर्ण हो।"

स्वामी जी महाराज सत्य के अनन्य प्रेमी थे। वे आजन्म सत्य की खोज और प्रसार करते रहे और सत्य के लिये ही उन्होंने अपने प्राणों की बलि दे दी। सत्य के लिये मरने वाले केवल अपने देश या धर्म के लिए नहीं अपितु समस्त संसार के लिए मरते हैं। इस प्रकार स्वामी जी महाराज समस्त संसार के हैं और जगद्‌गुरुओं में उन्हें ऊँचा स्थान प्राप्त है। धर्म की शुद्धि समाज के सुधार और इस प्रकार स्वामी जी महाराज समस्त संसार के हैं और जगद्‌गुरुओं में उन्हें ऊँचा स्थान प्राप्त है। धर्म की शुद्धि, समाज के सुधार और इस प्रकार राजनीतिक उन्नति और दृढ़ता का राज मार्ग बना देने की दिशा में उनका योगदान अद्‌भुत है। उन्होंने धर्म के नाम पर होने वाले अधर्म की प्रक्रिया को रोका और पाश्चात्यता के प्रवाह में बहे जाने वाले शिक्षित वर्ग को पतन के गढ़े में गिरने से बचाया उन्होंने धर्म को आचरण का विषय बनाया।

स्वामी जी पहले महानुभाव थे जिन्होंने यह घोषणा की कि हम ही भारत के मूल निवासी हैं। हमारे पूर्वज कहीं बाहर से नहीं आए। उन्होंने लोगों को अपने देश से और आर्य संस्कृति से उसकी श्रद्धा का दिग्दर्शन कराके प्रेम करना सिखाया और राष्ट्रिय चेतना उत्पन्न की। उन्होंने यह प्रमाणित किया कि आर्यावर्त्त के प्राचीन ऋषियों की सम्पदा पर समस्त मानव-समाज का अधिकार है, वह किसी खास वर्ग और पवित्र देश की बपौती नहीं।

स्वामी दयानन्द सच्चे महर्षि थे। उन्होंने वैदिक धर्म और आर्य संस्कृति का पुनरुद्धार किया और दिखा दिया कि वेद की शिक्षाएं मानवोन्नति और भ्रातृत्व के उच्चतम आदर्शों से ओतप्रोत है। एकेश्वरवाद और भ्रातृत्व उनकी शिक्षाओं की आत्मा थे। मूर्तिपूजा और जन्मगत जात पात के कट्टर विरोधी थे। उच्च चरित्र का निर्माण करना और स्त्रियों को पुरुष के समान मानवता का दर्जा प्रदान करना उनके प्रिय उद्देश्य थे।

उन्होंने बाल विवाह का घोर खण्डन किया। विधवा विवाह का समर्थन किया। वह इस प्रकार हिन्दू जाति के भयंकर कैंसरों को निर्मूल करना चाहते थे। उन्होंने शिक्षा को प्रमुखता प्रदान की और शुद्धि आन्दोलन का सूत्रपात किया। गोरक्षा स्वदेशी और आर्य भाषा हिन्दी को राष्ट्रभाषा के पद पर आसीन करने की दिशा में उन्होंने क्रियात्मक पग उठाया। अस्पृश्यता निवारण के कार्य के तो वे जन्मदाता ही थे।

उनका व्यक्तित्व छाया हुआ था। वह उच्चकोटि के संस्कृत के विद्वान् थे। महान् तत्ववेत्ता थे, सच्चे देशभक्त थे, प्रबल समाज-सशोधक और सत्य के परम जिज्ञासु थे। उच्चतम कोटि के धर्मोपदेष्टा एवं वक्ता थे और विशिष्टतम गुणों के प्रतीक थे। उन्होंने जो कार्य किया उससे वे अमर हो गए हैं।

१९वीं शती का भारतीय इतिहास दयानन्द प्रभृति महापुरुषों के प्रादुर्भाव के साथ प्रारम्भ होता है। यदि उस समय दयानन्द जैसे महापुरुष पतन और अपमान की कालिमा को धोने के लिये न आते तो न जाने संसार का लोकमत भारत के विषय में क्या होता? हिन्दू समाज को जात-पात और अस्पृश्यता आदि की कुप्रथाओं से मुक्त करके उसे आत्म-सम्मान युक्त भले आदमियों के रहने योग्य बना देने की दयानन्द की दैवीय प्रेरणा से आने वाली पीढ़ी के मन की अधिक चिन्ता थी।

महर्षि महान् व्यक्ति थे। हमारे इतिहास को उज्वल रूप देने वाले आधुनिक भारत के निर्माता महर्षि दयानन्द के महान् योग के लिये जो उन्होंने हमारे पतित समाज को ऊँचा उठाने और संसार के निविड़ अन्धकार और अज्ञान में ग्रस्त लोगों को प्रकाश प्रदान करने में प्रदान किया है, हम कृतज्ञ हृदय से विनीत श्रद्धांजलि प्रस्तुत करते हैं।

●

राष्ट्रिय चेतना का वह कर्णधार !

प्रो० चम्पालाल गुप्त एम.ए.
महर्षि दयानन्द विद्यालय श्री गङ्गानगर

राष्ट्रिय चेतना का कर्णधार, हिन्दू जाति का रक्षक और पथ प्रदर्शक वह स्वामी दयानन्द वास्तव में युग प्रवर्तक पुरुष था। उसने महात्मागांधी और सरदार पटेल की जन्मदात्री भूमि गुजरात पर जन्म लेकर उसका सम्मान ही बढ़ाया था। वह सर्वतोमुखी प्रतिभा का आचार्य, महात्मा और महापुरुष था। उसने सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, चारित्रिक सभी क्षेत्रों में मानवता का पथ प्रदर्शन किया था। और पतनोन्मुख, पराधीन, अन्ध विश्वास, मूर्ति-पूजा, छुआ-छूत, मद्यपता, स्वार्थ परता, फूट, वैमनस्य अशिक्षा, दरिद्रता आदि से जर्जरित विशृंखलित, क्षत विक्षत आर्य जाति की शिराओं में नवीन रक्त प्रवाहित कर उसे नया जीवन-दान दिया था। भारत-भूमि आज भी उसके नाम का स्मरण कर गौ वान्वित अनुभव करती है।

उसने देश और राष्ट्र की रक्षा के लिये जो कार्य किया, उसे क्या सरलता से विस्मृत किया जा सकता है? कभी नहीं! उसने ही सबसे पहले देश में पराधीनता को अभिशाप बताते हुए स्वतन्त्रता का बिगुल बजाया था, और जन-जन तक इस बात को पहुंचाया था कि अच्छा बुरे से बुरा शासन भी दूसरों के श्रेष्ठतम शासन की अपेक्षा श्रेयस्कर होता है। उसने एक राष्ट्र, एक धर्म एक संस्कृति और एक राष्ट्र-भाषा का जो उद्‌घोष किया था, वह भी शाश्वत सत्य की भांति जनता के हृदयों में स्पंदित हो रहा है। गुजराती होते हुए भी उसने हिन्दी के महत्त्व को स्वीकार कर जो गौरव प्रदान किया, उसका महत्त्व भी आज भी सूर्य के आलोक के समान चिरन्तन और सत्य है। वस्तुतः में वह महान् भविष्य द्रष्टा और सत्य का प्रतिपादक था।

वह मानवता के लिए प्रकाशपुञ्ज था। उसने मानव-जगत् की सम्पूर्ण दिशाओं को अपने प्रकाश में आलोकित किया। उसने जगली गड़रियों की कही जाने वाली पुस्तक 'वेद' में सर्वाङ्गीण सत्य का दर्शन किया और युगों-युगों से अज्ञान व सकीर्णता की वीथिका में भटकने वाली मानवता को व्यापक दृष्टिकोण प्रदान किया। उसने भूत, भविष्य, वर्तमान तीनों कालों में सर्वत्र स्वीकारणीय सत्य को मानवता व असत्य को छुड़वाना उसके जीवन के महान् ध्येय थे। वास्तव में वह विश्व की महान् विभूति था।

हिन्दू-जाति का तो वह महान् मसीहा था। उसने उस समय भारत भूमि पर जन्म लिया था, जब कि चहुं ओर विदेशी सभ्यता व संस्कृति की घटाए जन-मानस पर व्याप्त थीं। हिन्दू जाति विदेशी प्रचार की चकाचौंध में बुरी तरह से उस अपने महान् आदर्शों और सिद्धान्तों से च्युत हो रही थी। ऐसे समय में उसने आर्य जाति को उसकी गौरव शालिनी परम्पराओं और समृद्धिशाली उन्नति का स्मरण कराकर मृतप्राय हिन्दू जाति में नये जीवन का सचार किया था। उसके प्रेरणा भरे ओजस्वी स्वरों को सुन कर हिन्दू जाति ने एक नई करवट ली थी। और उसने विश्व की शक्तिशाली, उन्नत जातियों की श्रेणी में अपने को उपस्थित पाया था। सम्पूर्ण आर्य जाति इस महान् उद्धारक के असीम उपकारों को कभी विस्मृत न कर सकेगी।

यद्यपि राष्ट्रिय चेतना का कर्णधार हिन्दू जाति का रक्षक और मानवता का प्रकाशपुञ्ज वह स्वामी दयानन्द पार्थिव रूप में इस लोक में नहीं, लेकिन इसके अमर सिद्धान्त और आदर्श आज भी पथ-भ्रष्ट मानवता के लिये देदीप्यमान हैं; उसके निम्न लिखित शब्द आज भी जन-मानस में गूंजते हुए एक नये साहस आत्म-बल और गौरवमयी जीवन को प्रदान करने के लिये पर्याप्त हैं कि —

अन्यायकारी बलवान से न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। सब सामर्थ्य से धर्मात्माओं की चाह व अनाथ निबल और गुणरहित भी क्यों न हो, उसकी रक्षा उन्नति, प्रियाचरण और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती सनाथ महा बलवान और गुणवान भी हो तथापि उसका नाश, अवन्नति और अप्रियाचरण सदा किया करे। इस काम में चाहे कितना ही दारुण दुःख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी भले ही क्यों न चले जावें, परन्तु मनुष्य रूप धर्म से कभी पृथक न होवें।'

तो आइए! आज हम इस महान् विभूति के इस महान् सन्देश को हृदयङ्गम करते हुए न्याय की रक्षा और अन्याय का प्रतिकार करने का सकल्प लें और इसके आलोक में अपनी सम्पूर्ण समस्याओं का समाधान कर भारत को विश्व के शक्तिशाली, समृद्ध राष्ट्रों की पंक्ति में खड़ा करें।

●

दशम आर्य महासम्मेलन में हम क्या करें ?

★पं० कालीचरण 'प्रकाश'
उपदेशक आ०प्र० सभा, मध्य दक्षिण

भारत की स्वाधीनता के २१ वर्ष की दीर्घावधि के पश्चात् ८-९ तथा १० नवम्बर १९६८ को आन्ध्र प्रदेश की ऐतिहासिक राजधानी हैदराबाद में विश्व के आर्यों का एक सम्मेलन होने जा रहा है। आर्यसमाज का प्रादुर्भाव भारत मे हुआ अवश्य, किन्तु इसका कार्य क्षेत्र भारत तक ही सीमित न रहकर विश्व मे व्याप्त हो गया है। इसलिये इसे सार्वभौमिक संस्था की संज्ञा दी जा सकती है। फिर भी चूंकि भारत इसका उत्पत्ति स्थान होने से भारत के धर्म संस्कृति, सभ्यता आचार-विचार तथा इसकी अभिवृद्धि से इसका हित अधिक उन्नत होना स्वाभाविक ही है। फिर भी विश्व के वायुमण्डल का भी इसे ध्यान रखना आवश्यक ही नहीं अनिवार्य है।

आज विश्व के वातावरण को दो भागों मे बांटने से इस सम्बन्ध में दृष्टिकोण बनाने अधिक सुगमता होगी। इस दृष्टि से विश्व को आज हम भौतिकवाद तथा अध्यात्मवादी होता पाते है। यदि इसे दैवी और आसुरी वृत्ति भी कहा जा सके तो अनुचित नहीं होगा। सम्मेलन पर एकत्रित आर्यबन्धुओं को विश्व की दृष्टि से केवल इतना ही विचारना होगा कि हम विश्व मे आर्यसमाज के लिए स्थान बनाने इस दिशा मे क्या पग उठाए ?

भारत की प्राचीन आर्य संस्कृति सदैव इस बात की पोषक रही है कि व्यक्ति, समाज, तथा विश्व में आध्यात्मिक भावना जागृत कर विश्व मानव में दैवी प्रवृत्ति फैलाई जावे। इस दिशा में यदि आज हम सम्मेलन कर कोई नीति निर्धारित करते हुये इन्हीं दो बातों के लिये योजना बना लें तो आर्यसमाज का विश्व के लिए बड़ा काम हो सकेगा। चूंकि विश्व की अन्य विचार धाराएं इस ओर या तो उदासीन है अथवा पथ भ्रष्ट शैली से गतिमान है। विशुद्ध आध्यात्मिक विचार धारा दैवी प्रवृत्ति की जननी होकर विश्व मानव के लिये वरदान सिद्ध हो सकती है

सम्मेलन को जहा विश्व के वायुमण्डल के सम्बन्ध मे विचार करना है, वहीं उससे कहीं अधिक अपने उद्गम स्थल पर भी विचारना आवश्यक है। तथापि यदि स्रोत स्थान की ओर ही ध्यान नही दिया गया तब इस पावनी गंगा का अन्यत्र कोई स्थान नहीं रह पाएगा। इस दृष्टि से भारत के लिए भी इसका विचार किया जाना अनिवार्य है। आज भारत सांस्कृतिक संघर्ष से [illegible] विदेशियों का [illegible] संघर्ष उतना अधिक द्योतक नहीं है जितना सांस्कृतिक संघर्ष। एक ओर ईसाईयत का प्रचार, दूसरी ओर इस्लाम का प्रचार, तीसरा राजनैतिक दृष्टि से साम्यवाद, समाजवाद आदि ऐसे प्रबल हैं जो भारत के मानव को बौद्धिक दृष्टि से ही बदल देना चाहते हैं। इस लिये आर्यसमाज रूपी प्रहरी को जहां ईसाई, मुसलमान तथा कम्युनिस्ट आदि बनने वालों की चिन्ता करनी है वहीं इससे कही अधिक इनके फैलने वाले विचारों के रोक थाम के लिए कटिबद्ध होना अनिवार्य है। यदि भारत का मानव समाज विचारा की दृष्टि से वैदिक धर्मी रहता है, तब तो वह भारतीय है, देश भक्त है, राष्ट्र सेवक हैं और राष्ट्र रक्षक भी। अन्यथा आने वाले सभी विदेशियों के लिए भारत का मैदान साफ कर रास्ता देने वाला जयचन्द्र ही। इस लिए अनिवार्य होगा कि हम न्यून से न्यून आर्यसमाज के सगठन द्वारा संचालित शिक्षण संस्थाओं में शिक्षा की पद्धति को बदलकर एक क्रांति का मूर्त रूप देते हुये अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द के स्वप्नों को साकारित करे। दूसरी ओर रूढ़िवादिता और मत मतान्तरों से खण्डन-मण्डन का कार्य कर विशुद्ध वैदिक धर्म का प्रसार तीयजनों में बीजारोपण की योजना बनाई जाए और इसे साकारित किया जावे।

यह सब तो होगा ही परन्तु इस सबका मूलाधार है भारतीयों का विशेषकर आर्यों का चरित्र। इसमें थोड़ी बहुत न्यूनता आ रही है। इसे हम आत्म मन्थन के द्वारा दूर कर सकते हैं। इसकी ओर ध्यान देना आज कर्त्तव्य हैं। और यह प्रारम्भ भी आर्यसमाज के उच्च नेताओं से होना चाहिए। अन्य संगठन के नेताओं की भांति हमारे में कथनी और करनी का जो अन्तर व्याप्त होकर वाक पटुता और वाचालता का ओदोघ आया है। उसे दूर करना होगा वैसे भी महापुरुषो का अनुकरण सर्वसाधारणजन करते हैं। जनता को बनाने वालों के लिये आवश्यक है कि वे जिस प्रकार की जनता को देखना चाहते हैं, प्रथम वे स्वयं को उसी प्रकार का बनावें। अन्यथा यह सब केवल 'मेला' मात्र बनकर रह जाएगा। जब तक दुरित दूर नहीं होंगे अच्छाई आएगी नही और आ भी गई तो गन्दगी हो जाएगी। चरित्र निर्माण सबसे महान् कार्य है। मनुष्यों का चरित्र बन गया तो कई राम बनेंगे और यदि मनुष्यों का चरित्र न बना रावण कहीं देखने की आवश्यकता न होगी। आशा है आर्य बन्धु विचार करेंगे कि 'राम' बनाना है या रावण और राम बनाता है क्या स्वयं से या अन्यों से। ●

दशम सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन हैदराबाद की विज्ञप्ति

मान्यवर मन्त्री जी,

नमस्ते !

आपको विदित ही है कि दशम सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन दिनांक ८ से १० नवम्बर ६८ को हैदराबाद में होने जा रहा है। जिसमें देश की वर्तमान परिस्थितियों पर गंभीरता से विचार किया जाना है। चूंकि आज देश की जहाँ पड़ोसी राष्ट्रों से सुरक्षा की आवश्यकता है, वहीं [illegible] भाषावाद-प्रान्तीयवाद तथा [illegible] से [illegible] रहना अनिवार्य है।

इस समय देश में इन सभी पर [illegible] विचार करने में आर्यसमाज का [illegible] है। इन सभी के लिए आवश्यक है कि सम्मेलन का यह अधिवेशन बड़े ही [illegible] और [illegible] हो। इसके लिए आर्य जन कोने कोने से एकत्रित होना चाहिये। [illegible] विचार कर सकेंगे। वहीं अपनी [illegible] शक्ति का भी परिचय करा सकेंगे। एतदर्थ सम्पूर्ण आर्य जगत् का [illegible] को अपेक्षित है। वह इस प्रकार कि

१—अधिक संख्या में आर्यजन सम्मेलन में अधिक संख्या में सम्मिलित हों।

२—आर्यसमाजों और आर्य जनों को सम्मेलन में अधिक सहयोग भी देना चाहिये।

भवदीय—
---नरेन्द्र
स्वागताध्यक्ष

(पृष्ठ ५ का शेष)

हुए पर ऋषि दयानन्द ने प्रकाश डालते हुए लेखनी न उठाई हो ! उसके रोम-रोम में देश-भक्ति भरी हुई थी। ऋषि का यह कितना ऊँचा आदर्श है और कितनी उदात्त भावना है !

साँस्कृतिक पुनरोद्धार

वर्त्तमान काल मे स्वामी दयानन्द ही पहले वह भारतीय है, जिन्होंने पश्चिमी सभ्यता के बढते हुये प्रवाह को रोका। महर्षि के प्रचार से पूर्व लोग पौरात्य सभ्यता व संस्कृति के प्रति घृणा की भावना रखते थे। वे पश्चिमी सभ्यता के वेगवान प्रवाह मे लुढ़कते हुए पत्थर की भांति बहते चले आ रहे थे। लोगो ने यह समझ रखा था कि विज्ञान, कला, कौशल और दार्शनिक विचारों का स्रोत भारत नहीं बल्कि योरुप है। परन्तु आर्य समाज के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द ने बताया कि 'जिस समय युरोपियन जाति के लोग दिगम्बर रूप मे असभ्य होकर जगलो मे फिरा करते थे, भारत उस समय कला, कौशल और सभ्यता के उच्च शिखर पर पहुचा हुआ था। यही कारण है कि लोग भारत की खोज को निकले और इससे कुछ पाकर अपने देश तथा विचारो को आलोकित किया।

भावी कार्यक्रम

आर्यसमाज ने इस थोड़े से समय में जो भी कार्य कर दिखाया है, वह अत्यन्त ही सराहनीय है। आर्य समाज को अपने भावी कार्यक्रम के निश्चय करने से पूर्व अपने देश को किस आदर्श स्थान पर पहुंचाना है, इसका निर्णय करके उसकी पूर्ति को करने से पहले यह निश्चय कर ले कि उन्हें किस रास्ते से जाना और कितने दिनो में यात्रा समाप्त करनी है। इसलिये अब सम्पूर्ण आर्य समाज के सदस्यों को श्रेष्ठ आर्य बनाना है। और जनता जनार्दन की हर प्रकार से सेवा मे लग जाना है। अपने सिद्धान्तों के आधार पर समाज निर्माण और आर्थिक विषमता की समस्या पर भी विचार करना है। अब हमे धोबी बनकर दूसरों के जीवन रूपी वस्त्रों पर लगे धब्बो को धोना नहीं है, अपितु भंगी बन कर अपने मल को साफ करके भारत को ऋषि के आदर्श और उदात्त कल्पनाओं के आधार पर निर्माण करना है। यही आर्य समाज का भावी कार्यक्रम है। यदि हम ऋषि के विचारों को अपनायेंगे, तो देश भी अपनायेगा और यदि हम ठुकरायेंगे, तो हमें संसार ठुकरायेगा !!! ★

निरीक्षक सूची वर्ष ६८-६९

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश से प्राप्त की आर्य समाजों के निरीक्षण करने के लिये निम्न निरीक्षक नियुक्त किये हैं-

नाम जिला	नाम निरीक्षक
१—देहरादून	श्री विद्याभास्कर जी शास्त्री, देहरादून
२—सहारनपुर	" चौ० देवसिंह जी, श्री चौ० बलेसिंह जी, सहारनपुर
३—मुजफ्फरनगर	" रामचन्द्र जी नई मण्डी, श्री मुरारीलाल जी मवीसा
४—मेरठ	" विश्वनाथ जी त्यागी। दौराला, श्री बलबीरसिंह जी वेवकूफ
५—बुलन्दशहर	" सत्येन्द्र बन्धु जी बोरवांव हिटौठा, श्री सुकर्मानन्द जी, श्री मुन्नीलाला जी सिकन्दराबाद
६—अलीगढ़	" मा० सरदारसिंह जी, श्री चम्पाराम जी आर्य, हाथरस श्री महेशचन्द्र जी बरौला
७—आगरा	" आत्मानन्द जी द्विवेदी, श्री कृष्णलाल जी कुसुमाकर, फीरोजाबाद
८—मथुरा	" केदारनाथ जी चौक, श्री जयकुमार जी मुद्गल, मथुरा
९—मैनपुरी	" रमेशचन्द्र जी वर्मा, श्री पं० दयाराम जी गौड़, शिकोहाबाद
१०—एटा	" मथुराप्रसाद जी आर्य एटा
११—बरेली	" सतीशचन्द्र जी उप सभा, श्री ओम्प्रकाश जी आर्य बरेली
१२—बदायूं	" उमरावसिंह जी नवादा मधुकर,
१३—बिजनौर	" बा० बनारसीलाल जी आर्य, श्री शिवचरण जी आर्य
१४—मुरादाबाद	" हरिदत्त जी शास्त्री किसरौल, श्री हरस्वरूपसिंह जी
१५—रामपुर	" कन्हैयालाल जी मुमुक्षु, लखीमपुर बिरनू
१६—शाहजहांपुर	" बोलेलाल सत्यपाल जी मुख्तार
१७—पीलीभीत	" जयदेव जी स्नातक
१८—नैनीताल	" इन्द्र वर्मा जी रामनगर, श्री मूमित्र आर्य हरसौली
१९—टेहरी गढ़वाल	" तोताराम जी जुगड़ाणा
२०—झांसी, बांदा	" बेहारीलाल जी आर्य झांसी
२१—जलौन, हमीरपुर	" विश्वनाथ तिवारी उरई
२२—इलाहाबाद	" रामकिशोरसिंह जी: श्री राधेमोहन जी, चौक प्रयाग
२३—उन्नाव	" बा० मुन्नालाल जी
२४—कानपुर	" रघुवरदयाल जी, श्री विजयपाल शास्त्री, श्री कृष्णकुमार बाजपेई
२५—फतेहपुर	" रामनारायण जी शास्त्री बिन्दकी
२६—इटावा	" उमेशचन्द्र स्नातक, श्री देवेन्द्रस्वरूप जी मर्धना
२७—फर्रुखाबाद	" सच्चिदानन्द जी आर्य, श्री रामचन्द्र जी महरोत्रा
२८—वाराणसी	" आनन्द प्रकाश जी, श्री भगवतीप्रसाद जी मुगलसराय
२९—जौनपुर	" रामावतार जी जौनपुर
३०—मिर्जापुर	" कपूरचन्द्र जी आजाद
३१—गाजीपुर	" प्रभुदयाल जी, गाजीपुर
३२—बलिया	श्री सुरेन्द्र जी स्नातक
३३—गोरखपुर-देवरिया	" सुरेशचन्द्र जी वेदालंकार, श्री ओमप्रकाश जी वनावनर्चेंट श्री फूलचन्द्र जी इन्जीनियर
३४—आजमगढ़	" अक्षयवरनाथ जी आर्य
३५—बस्ती	" निरंकार प्रसाद जी बस्ती
३६—फैजाबाद	" कृष्णदत्त जी आर्य वैद्य
३७—बहराइच	" श्यामलाल जी आर्य, श्री महेशचन्द्र जी
३८—गोंडा	" सुन्दरलाल जी बलरामपुर
३९—बाराबंकी	" प्रभाकरनाथ जी शुक्ल
४०—सुल्तानपुर	" रामकिशोर जी शास्त्री अमेठी
४१—रायबरेली प्रतापगढ़	" जगतनारायण जी प्रतापगढ़
३२—लखनऊ	" रामचरित्र जी पांडेय
४३—सीतापुर	" वीरेन्द्रकुमार जी श्रीमती माया चौधरी
४४—खीरी लखीमपुर	" राजबहादुर जी
४५—अल्मोड़ा	" हीरालाल व्रतपाल जी
४६—गढ़वाल देहली	" गोपालदत्त जी जोशी शास्त्री
४७—मुख्य निरीक्षक	१—श्री विश्वम्भरनाथ जी तिवारी कानपुर
	२—श्री पं० रामप्रसाद जी आर्य मैंडू
	३—श्री माता शकुन्तलादेवी जी गोयल, मेरठ

—प्रेमचन्द्र शर्मा सभा मन्त्री

(पृष्ठ ४ का शेष)

आर्यसमाज में आज नेतृत्व की कमी अनुभव की जा रही है। सामान्य आर्य जनता में कर्म शक्ति, निष्ठा, श्रद्धा, विश्वास, सहयोग की भावना अभी कुछ है। यदि कुछ कमी है तो हमारे नेताओं द्वारा इस जन-शक्ति का लाभ उठाकर आर्य समाज को अधिक सुदृढ़ और सशक्त बनाने की। १९५९ की मथुरा में मनाई गई दीक्षा शताब्दी और १९६१ का दिल्ली आर्य सम्मेलन में आर्य जनता की विशाल उपस्थिति, उसका उत्साह और कर्म निष्ठा इस बात के द्योतक हैं, कि यदि हमारा नेता वर्ग इस आर्य प्रजा का ठीक प्रकार से मार्ग दर्शन करे तो हम अविलम्ब आर्य समाज को विश्व-व्यापी बना सकते हैं। आज हमारे यहाँ ऐसे नेताओं का अभाव है। जो अपनी सम्पूर्ण कर्म-शक्ति को आर्य समाज के हित में ही व्यय करें। हमारी निष्ठायें (Loyalities) विभक्त है। राजनीति और अन्य क्षेत्रों मे जाकर आर्य समाज के सर्वोच्च नेता आर्य समाज के लिये उतना कुछ भी नहीं कर सकते जो उन्हें करना चाहिये, उल्टा आर्यसमाज को देश की प्रचलित, दूषित राजनीति से पृथक रखने की अपेक्षा वे अपनी दलगत विचारधारा को ही आर्यसमाज पर थोपने का प्रयास करते हैं। अतः आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने नेता वर्ग को आत्म निरीक्षण करने के लिये कहे और उनसे याचना करें कि आर्य समाज को सशक्त और जीवित रखने के लिये वे अपना महत्वपूर्ण योगदान दें।

यदि आर्य महा सम्मेलन के हैदराबाद अधिवेशन मे हमने आर्य समाज के आन्तरिक विग्रह को समाप्त करने, प्रचार प्रणाली मे परिवर्तन लाने, साहित्य-निर्माण की योजना बनाने तथा नेतृत्व को शुद्ध करने के ठोस प्रयत्न किए तो हमारा यह सम्मेलन निश्चित रूप से एक महत्वपूर्ण उपलब्धि होगी।

वधू की आवश्यकता

आर्य जगत

उत्सव

—आर्य समाज सीसामऊ (कानपुर) का वार्षिकोत्सव १, २, ३, नवम्बर को हो रहा है। कई महत्वपूर्ण सम्मेलन भी होंगे।

—लक्ष्मणकुमार शास्त्री

—आर्य समाज बड़रांव, आजमगढ़ का उत्सव १, २, ३ नवम्बर ६८ को होगा।

—आर्यसमाज सदर दयानन्द पथ मेरठ (सदर) का ७६ वां वार्षिक महोत्सव दिनांक ९, १०, ११ नवम्बर सन् १९६८ ई० शनि, रवि, सोमवार को आर्य समाज के अपने ही विशाल भवन के प्रांगण में बड़े समारोह पूर्वक मनाया जायगा। —मन्त्री

—आर्य समाज टांडा जि० फैजाबाद का ७७ वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक १ नवम्बर से ५ नवम्बर तक विशेष समारोह पूर्वक मनाया जावेगा। —मन्त्री

—मैनपुरी आर्यसमाज का ७७ वाँ वार्षिकोत्सव १५, १६, १७ नवम्बर ६८ को धूम-धाम से सम्पन्न होगा। जिसमे स्वामी समर्पणानन्द जी, पं० विद्यानन्द जी शर्मा तथा प० ओ३मप्रकाश जी शास्त्री आदि बड़े-बड़े विद्वान पधारेंगे।

—नरेन्द्र मन्त्री आर्यसमाज मैनपुरी

आर्य उप प्रतिनिधि सभा जि० मथुरा द्वारा मथुरा जिले में वेद प्रचार कार्य-क्रम

माठं, सादाबाद तथा आंशिक रूप से मथुरा तहसील में उत्सव सम्पन्न करने के पश्चात् अब दि० ३। ११। ६८ से ११।१२।६८ तक छाता तहसील में निम्न प्रकार से उत्सवों की व्यवस्था की गई है। जिनमे श्री स्वामी धर्मानन्द जी, श्री स्वामी निरोतानन्द जी, श्री इन्द्रजित शास्त्री, श्री चुन्नीलाल भजनोपदेशक हरियाना, श्री कुं० महीपालसिह भजनोपदेशक जिला प्रचारक व कुं० लेखराज सिंह जी प्रचारक भाग लेंगे। इसके अतिरिक्त समय समय पर जिला सभा प्रधान श्री नरदेव जी स्नातक संसदसदस्य, श्री पं० शिवकुमार जी शास्त्री संसद सदस्य, श्री डा० रघुवीर शरण जी मुख्य संयोजक अराष्ट्रिय प्रचार निरोध समिति उ० प्र० कुं० [illegible] सिंह जी सिंह कवि व बहिन प्रभावती जी स्नातिका भी पधारेंगी

कार्य क्रम

प्रा[illegible] से १० तक—यज्ञ (हवन) प्रवचन [illegible] मध्याह्नोत्तर [illegible] —म[illegible] एव सम्मेलन।

[illegible]

क्रम स०	स्थान	[illegible]
१	[illegible]नौली	[illegible]
२	शेरगढ़	५ ६-७ "
३	छाता	८-९-१० "
४	नन्दगाँव/बर्षाना?	११-१२ "
५	कालीका?	१३-१४ "
६	[illegible]	१५-१६-१७ "
७	[illegible]	१८-१९ "
८	राल्हेरा	२०-२१ "
९	[illegible]	२२-२३-२४ "
१०	शेरपुर	२५-२६ "
११	बलोता	२७-२८ "
१२	सेई	२९-३०
१३	नौगांव	३१-१-२ दि०
१४	बल्देव (सादाबाद)	३-४-५ "
१५	नरी	६-७ ८ "
१६	[illegible]	९-१०-११ "

नोट—१ दि० १०-११-६८ रविवार को दोपहरबाद दो बजे से छाता तहसील आर्य सम्मेलन का आयोजन किया गया है।

२—दि० ५-१२-६८ में सादाबाद तहसील आर्य सम्मेलन होगा।

—सुरेशचन्द्र आर्य मन्त्री

सस्ती उत्सव योजना के अन्तर्गत मास नवम्बर ६८ का कार्य-क्रम

१ से ५ नवम्बर ६८ गंगामेला तिगरी
७ से ८ " फतेहपुर बिश्नोई
९ से ११ " हसनपुर
१३ से १५ " नन्हेड़ा अल्यार
१७ से १९ " सराय तरीन
२० से २२ " महेशरा
२३ से २५ कुन्दरकी बिलारी (बियाराधीन)
२६ से २७ नवम्बर ६८ ठाकुरद्वारा
२८ से ३० " लबरपुर

उपरलिखित कार्यक्रमों पर श्री प० सत्य प्रिय जी वृती, श्री केशवदेव जी शास्त्री, श्री पं० श्यामसुन्दर जी शास्त्री श्री ज्ञानप्रकाश जी, डा० धर्मराज जी आदि पधार रहे है। कार्यक्रमो को सोत्साह मनायें।

—उमरावसिंह वर्मा
मन्त्री उप सभा

निर्वाचन

—आर्यसमाज मड़पुरा ([illegible]) प्रधान—श्री होरीसिंह, मन्त्री—श्री रामसिंह जी।

—आर्यसमाज पाण्डेयपुर जि० जौनपुर प्रधान—श्री सियाराम जी —मन्त्री श्री रामकिशोर।

—आर्यसमाज हाजीपुर (मुजफ्फरपुर) प्रधान—श्री ईश्वर प्रसाद जी अवस्थी मन्त्री—श्री आत्म प्रकाश।

—आर्यसमाज मुंगेर प्रधान—श्री वीरेन्द्रप्रसाद शर्मा, मन्त्री—श्री भागीरथ ठाकुर।

—आर्यकुमार सभा गंगा नगर—प्रधान—श्री नरेन्द्रमोहन पालीवाल मन्त्री—नरेशकुमार।

—आर्यकुमार सभा जनकपुर सहारनपुर—प्रधान—श्री डा० कर्णवीर आर्य मन्त्री—श्री धर्मसिंह जी आर्य।

—आर्यसमाज गोवा पंचवाड़ी—प्रधान—श्री बावनी विट्ठल मावकर, मन्त्री श्री चन्द्रकान्त जी, कोषाध्यक्ष—श्री गुरुदास मोरोडकर।

—आर्यसमाज शाहाबाद (चकिया) प्रधान—श्री जगरनाथ साहू, मन्त्री—श्री सर्वजीतसिह जी, कोषाध्यक्ष—श्री वंशनारायणसिंह जी।

—आर्यसमाज सुभाष नगर फैजाबाद प्रधान—श्री रामचन्द्र जायसवाल, मन्त्री—श्री केदारनाथ जी, कोषाध्यक्ष—श्री केदारनाथ जी।

—आर्यसमाज मलाही (चम्पारण) प्रधान—श्री शिवशंकर प्रसाद जी मन्त्री—श्री बद्रीनाथ प्रसाद जी, कोषाध्यक्ष—श्री भगवती शरण प्रसाद।

—आर्यकुमार परिषद मेरठ प्रधान—श्री [illegible] आर्य मोदीनगर मन्त्री—श्री आनन्द प्रकाश जी आर्य हापुड़, कोषाध्यक्ष—श्री मुनीन्द्र आर्य गाजियाबाद।

—गुरुकुल महाविद्यालय सिराथू, इलाहाबाद—प्रधान—श्री गंगाप्रसाद जी, मन्त्री व प्रबन्धक—श्री ज्ञानचन्द्र जी, कोषाध्यक्ष—श्री लखनलाल जी।

—आर्य स्त्री समाज बबू पुरवा, किदवई नगर कानपुर—प्रधान—श्रीमती सुन्दर बाई, मन्त्रिणी—श्रीमती दर्शन जी आर्या।

आर्य उपप्रतिनिधि सभा गोंडा का नवनिर्वाचन प्रधान—श्री सुन्दरलाल अग्निहोत्री मन्त्री—प्रकाशकुमार सक्सेना, कोषाध्यक्ष—श्री बल्देव प्रसाद।

—आर्यसमाज [illegible]—प्रधान—श्री [illegible] जी पटेल, मन्त्री—श्री [illegible] जी [illegible]

—मंडल आर्य वीर दल मिर्जापुर—[illegible] कुमार सिंह, [illegible]—[illegible] कुमार सिंह, शिक्षक—बसन्त सिंह।

—आर्य [illegible] पगड़ी [illegible]—प्रधान—श्री [illegible]लाल जी, मन्त्री—रामचन्द्र केमनिक।

—आर्यसमाज गन कैरिज फैक्ट्री क्वाटर्स जबलपुर—प्रधान—श्री विज्ञान शंकर जी, मन्त्री—श्री रवीन्द्रनाथ जी शर्मा, कोषाध्यक्ष—श्री रामनाथ जी शर्मा।

—आर्यसमाज चिलकाना (सहारनपुर)। प्रधान—श्री सुमेरचन्द्र जी आर्य, मन्त्री—श्री अतरसिंह जी गुप्त, कोषाध्यक्ष—श्री सूरजभान जी सेठ।

—आर्यसमाज परा (बदायूं)। प्रधान—श्री हरिशंकर जी, उपप्रधान—श्री प्रेमराज जी, मन्त्री—श्री श्यामलाल जी उपमन्त्री—श्री राम रतन जी।

—आर्यसमाज दिगनेर आगरा—प्रधान—श्री डा० बालमुकुन्द जी आर्य, मन्त्री—श्री विजयसिंह जी तोमर।

—आर्यसमाज ससौरा—प्रधान—श्री इन्द्रदेव जी, मन्त्री—श्री उदयचन्द्र जी।

—आर्यसमाज गदरपुर (नैनीताल) प्रधान—श्री हंसराज जी, मन्त्री—श्री नेपालसिंह जी।

—आर्यसमाज कानपुर जि० रामपुर—प्रधान—श्री रामगोपालसिंह मन्त्री श्री मास्टर प्यारेलाल जी।

—गोंडा जिले के आर्यसमाजों के वार्षिकोत्सवों की तिथियां निम्न प्रकार निश्चित की गई है—

आ० स० गोंडा -१४ से १८ नवम्बर ६८
" करनैलगंज २० से २२ " ६८
" परसपुर -२३ से २५ " ६८
(नवीन स्थापना)
आ० स० जानकीनगर २७ से ३० नवम्बर ६८
" नवाबगंज -१ से ३ दिसम्बर ६८
" वजीरगंज -४ से ६ दिसम्बर ६८
" पचपेड़वा -८ से १० " ६८

—आर्य कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय गोविन्द नगर कानपुर का अगले तीन वर्ष का निर्वाचन श्री देवीदास आर्य की अध्यक्षता मे निम्न रीति से सम्पन्न हुआ।

अध्यक्ष—श्री देवीदास आर्य (सभासद), प्रबन्धक—श्री शिवदयाल टटेजा, कोषाध्यक्ष—श्री कृष्णलाल बहल।

—आर्यकुमार सभा सदर मेरठ का वार्षिक चुनाव। संरक्षक—सेठ लक्ष्मीचन्द जैन (नवाने वाले) एवं सेठ लक्ष्मणदास जैसवाल। प्रधान—अशोक कुमार बी०ए० मन्त्री—योगेन्द्रकुमार। कोषाध्यक्ष—भूपेन्द्र कुमार।

—आर्यसमाज [illegible], प्रधान—श्री लालचन्द जी पीली, उप प्रधान—श्री शिवनारायण जी चौधरी, मन्त्री—श्री विष्णु शर्मा

श्री ठा० निरञ्जनसिंह संसद-सदस्य का

आकस्मिक देहावसान !

आर्य जगत् को बड़े दुःख के साथ सूचना दे रहा हूं, कि प्रसिद्ध राजनैतिक सामाजिक कार्यकर्त्ता श्री ठा० निरञ्जनसिंह जी सदस्य राज्य सभा का १६ अक्टूबर को भोपाल से नरसिंहपुर जाते समय रेल में हृदयगति रुक जाने से देहावसान हो गया। आप गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन के प्रसिद्ध स्नातक श्री उमेशचन्द्र एम० ए० के बहनोई थे। आपका शव भोपाल से उसी रेल से नरसिंहपुर ले जाया गया। बाद में वहां से करेली होकर उनके ग्राम महेसुर में वैदिक रीति से अन्त्येष्टि संस्कार सम्पन्न किया गया। आपकी अन्त्येष्टि में सभी राजनैतिक दलों के लोगों ने भाग लिया। मध्यप्रदेश के मुख्य मन्त्री श्री गोविन्दनारायण सिंह जी ने उनके निधन को एक अपूरणीय क्षति बताया।

स्वर्गीय ठा० साहब की शिक्षा आगरा व काशी विश्वविद्यालय में हुई थी, जलियां वाला बाग काण्ड के समय से ही आप देश के लिये समर्पित रहे। काकोरी काण्ड के समय आप ट्रेन के बाहर फायरिंग की ड्यूटी पर तैनात थे। गांधी जी के सत्याग्रह आन्दोलन मे अनेकों बार जेल गये एकबार नागपुर जेल से कूद कर बाहर आ गये और ४२ के आन्दोलन की अलख जगाते रहे। नेपाल मे क्रांति कराने मे भी आपने उल्लेखनीय योग दिया। स्वाधीन भारत मे भी आप शासन के भ्रष्टाचार के विरुद्ध संघर्ष करते रहे। गोआ और कच्छ सत्याग्रहों मे भी आपने भाग लिया। आपकी पत्नी श्रीमती दयावती शास्त्री कन्या गुरुकुल महाविद्यालय हाथरस की स्नातिका है। श्री ठाकुर साहब कन्या गुरुकुल कार्य कारिणी के सदस्य थे। गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन के साथ भी उनका घनिष्ठ सम्पर्क था। गुरुकुल पधार कर समय समय पर अपना सत्परामर्श देते रहते थे। उनका निधन समाज और देश के लिये गहरा आघात है।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति और शोक सतप्त परिवारिकों को धैर्य धारण की शक्ति प्रदान करें।

—नरदेव स्नातक एम० पी०

पं० अखिलानन्द जी का देहावसान !

आर्य जगत् को यह पढ़कर दुःख होगा कि झरिया वाले श्री ब्र० अखिलानन्द जी का १९ अक्तूबर को झरिया मे देहावसान हो गया। वे श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी के परम मित्र थे।

आवश्यक सूचना

आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध संगीतज्ञ, आर्य प्रचारक प० पन्नालाल जी पीयूष संगीत निपुण (एम०म्यूजिक) सि० शास्त्री को आर्यसमाजों के उत्सवों, पर्वों, विवाहादि के अवसरों पर बुलाने को एक मास पूर्व पत्र व्यवहार निम्नलिखित पते से करें।

प्रकाशचन्द्र कविरत्न
पहाड़ गंज, अजमेर (राज०)

विश्वकर्मा वंशज बालकों को

७०००) का दान

श्री भवानीलाल गज्जूलाल जी शर्मा स्थिर निधि

१—विश्वकर्मा कुलोत्पन्न श्रीमती तिजोदेवी-भवानीलाल शर्मा कुकहास की पुण्य स्मृति में श्री भवानीलाल जी शर्मा अमरावती (विदर्भ) निवासी ने श्री विश्वकर्मा वंशीय बालकों के हितार्थ ७०००) की धन राशि सभा को समर्पण कर बी० जी० शर्मा स्थिरनिधि की योजना निम्नलिखित नियमानुसार भाद्रपद संवत् २०१४ वि० सितम्बर १९५७ ई० को स्थापित की।

२—इस मूलधन से वार्षिक ब्याज जो कुछ प्राप्त होगा, उसे उत्तरप्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा विश्वकर्मा वंशज गरीब, असहाय किन्तु होनहार बालक बालिकाओं के शिक्षण मद में व्यय करती रहेगी।

३—उक्त निधि से आर्थिक सहायता लेने वाले इच्छुकों को मास जुलाई में 1) के स्टाम्प भेजकर सभा से छपे फार्म मंगाकर भरकर भेजना आवश्यक है।

★मन्त्री आर्यप्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश

राष्ट्रीय नवनिर्माण के लिए

आत्मिक, शारीरिक और सामाजिक उन्नति का सूत्रपात

सांस्कृतिक शिक्षा सोपान

पूना विश्वविद्यालय के उपकुलपति और पंजाब के राज्यपाल स्व० श्री नरहरि विष्णु गॅडगिल पुस्तक के विषय में लिखते हैं—

"सांस्कृतिक शिक्षा सोपान मेरे दृष्टि से एक बहुत बड़ा उपयुक्त पुस्तक है। आजकल हम भारत में जो चारित्र्य और शील का अधः पतन देख रहे हैं, उसको अगर हम रोकना चाहते हैं तो कुछ न कुछ कदम उठाना आवश्यक है। बालक और युवक इन दोनों के मन के ऊपर जो संस्कार होते हैं, वे उनके सामने जो व्यक्ति आते हैं उनके वर्तन करने होते हैं और साथ-साथ जो शिक्षा प्रणाली है उसका भी असर होता है। मैं ... में मानता हूं कि शिक्षा के प्राथमिक और माध्यमिक अवस्था में भी कुछ ऐसे विषयों का अध्ययन विद्यार्थियों द्वारा हो ... उनके ... इस दृष्टि से सांस्कृतिक शिक्षा सोपान ... उपयुक्त ... है।

मूल्य १.६० रु०

अन्य पुस्तकें ... और ... और प्रकाशित करते हैं। पत्र व्यवहार ... कीजिए।

आर्यावर्त प्रकाशन केन्द्र ... वैदिक ...
तिलक नगर, नई दिल्ली–१८

धार्मिक परीक्षायें

... इन्द्रप्रस्थ विद्यापीठ की विद्या प्रवेश, विद्या रत्न विद्याभूषण, विद्याकलाधर विद्या कला निधि एवं ... हिन्दी ... परीक्षायें आगामी ... में होंगी। परीक्षार्थी एवं केन्द्र इच्छुक सज्जन निम्न पते पर लिखकर पाठ विधि मगा सकते हैं।

—डा० महेश्वरप्रसाद वाग्मी
कुलसचिव इन्द्रप्रस्थ विद्यापीठ
मुखराम गार्डन, तिलकनगर, नई दिल्ली-१८

धार्मिक परीक्षायें

भारतवर्षीय वैदिक सिद्धांत परिषद् (रजि०) की
सिद्धांत प्रवेश, सि० विशारद, सि०भूषण, सिद्धान्तालंकार,
सि० शास्त्री, सिद्धान्ताचार्य

परीक्षायें आगामी दिसम्बर-जनवरी म समस्त भारत तथा विदेशों में होंगी। सर्व प्रथम, द्वितीय, तृतीय आने वालों को छात्रवृत्ति दी जाती है। उत्तीर्ण होने पर सुन्दर व तिरंगा प्रमाण-पत्र दिया जाता है। तथा अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश की सत्यार्थ सुधाकर, सत्यार्थमार्त्तण्ड उपाधियां

डाक द्वारा निःशुल्क प्राप्त करें। विशेष जानकारी के लिए १५ पैसे की टिकट भेजकर नियमावली मगाइये।

आदित्य ब्रह्मचारी	आचार्य मित्रसेन
यशःपाल शास्त्री	एम० ए०, सिद्धान्तालंकार
प्रधान	परीक्षा मन्त्री

भारतवर्षीय वैदिक सिद्धान्त परिषद्
सेवा-भवन, कटरा अलीगढ़ (उ० प्र०)

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल-६०
कार्तिक १३ शक १८९० कार्तिक शु० १४
(दिनांक ३ नवम्बर सन् १९६८)

आर्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

Registered No. L. 60
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष : २२९९३ तार : आर्यमित्र

प्रान्तीय आर्य महा सम्मेलन

मेला गढ़मुक्तेश्वर सैक्टर नं० ७ में

सर्व सज्जनों को यह जानकर अति हर्ष होगा कि जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा मेरठ के आतिथ्य में प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन कार्तिक मास की द्वादशी त्रयोदशी व चतुर्दशी ता० २, ३ व ४ नवम्बर १९६८ को गङ्गा किनारे सैक्टर नं० ७ में श्रीमान् पं० प्रकाशवीर शास्त्री प्रधान आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अध्यक्षता में बड़े समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। जिसको सफल बनाने हेतु आर्य जगत के गण्यमान्य नेता अधिकारी प्रचारक विद्वान व भजनोपदेशक पधार रहे हैं जिनमें श्री स्वामी मुनीश्वरानन्द जी महाराज, श्री स्वामी मुक्तानन्द जी महाराज पं० पृथ्वीर सिंह जी शास्त्री (सदस्य लोक सभा) श्री पं० शिवकुमार जी शास्त्री (सदस्य लोक सभा), श्री पं० महेन्द्रप्रताप जी शास्त्री श्री हरपालसिंह जी शास्त्री- श्री पं० नरदेव जी स्नातक (सदस्य लोक सभा), श्री उमेशचन्द्र जी स्नातक, श्री पं. प्रेमचन्द्र जी शर्मा (मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश), श्री प. शिवदयालु जी, श्री कु० सुखलाल जी आर्य मुसाफिर, श्री पं० विश्वबन्धु जी शास्त्री, श्रीमती [illegible]कुमारी जी (कन्या गुरुकुल हाथरस तथा गुरुकुल की कन्यायें), श्री पं० [illegible]राज जी (प्रधान आर्यसमाज मेरठ), श्री पं० वेदराज जी मुखिया, श्री सत्यपाल जी श्री वीरेन्द्रसिंह जी, महात्मा [illegible]सिंह जी तथा मेरठ जिला के प्रचारक श्री निरञ्जन देव जी, श्री करतारसिंह जी, व श्री [illegible] जी पधार रहे हैं। साथ ही [illegible] बोर्ड के मन्त्री श्री बो० निरञ्जनसिंह जी और आर्ट कालिज के मुख्य आचार्य श्री [illegible]सिंह जी भी पधार रहे है।

कार्य-क्रम

१ नवम्बर से ५ नवम्बर तक

प्रति दिन प्रातः ७ से ९।। बजे तक—यज्ञ भजन व प्रवचन
मध्याह्न १ बजे से ५ बजे तक —भजन व प्रवचन
साय. ७ बजे से ११ बजे रात्रि तक —भजन व प्रवचन

ता० २ से ४ नवम्बर तक श्री पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री की अध्यक्षता में प्रात ९।। से ११ तक आर्य प्रतिनिधियों व विद्वानों की गोष्ठी होगी, जिसमें विभिन्न कार्य क्रमों और प्रस्तावों पर विचार विनिमय होकर उन्हें भविष्य में किस प्रकार कार्यान्वित करना है।

नोट—१ शिविर की सुरक्षा के लिए मोरटा इन्टर कालिज, बड़ौत वैदिक आर्ट कालिज के छात्र व गुरुकुल व्यास विद्यापीठ के छात्र स्वयं सेवकों के रूप मे निरन्तर शिविर में रहेंगे।

२ शिविर मे पं० [illegible] वैद्य का धर्मार्थ औषधालय भी रहेगा।

३ शिविर मे धूम्र पान व मादक द्रव्य वर्जित होंगे।

निवेदक—

--डा० भगवद्दत्त गोयल
स्वागताध्यक्ष

-भवानी प्रसाद
स्वागत मन्त्री

—श्यामलाल
कोषाध्यक्ष

बलवीरसिंह बेधड़क
शिविर अध्यक्ष

आर्य उपप्रतिनिधि सभा मेरठ (उ० प्र०)

दशम आर्य महा सम्मेलन

श्री लाला रामगोपाल शालवाले संसद सदस्य तथा मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली—१

यह लिखते हुये हर्ष होता है कि दशम आर्य महा सम्मेलन हैदराबाद की तैयारियां जोर-शोर से हो रही हैं। श्री कोतूरसंतिया जी गुप्त, श्री किशनलाल जी पूर्व मेयर, हैदराबाद नगरपालिका श्री छगनलाल जी स्वागत मन्त्री तथा श्री पं० नरेन्द्र जी राज्य मे भ्रमण कर रहे हैं। लगभग ३२ हजार रुपया सम्मेलन के कार्यार्थ एकत्र हो चुका है। स्वागत समिति का लक्ष्य १ लाख रुपया एकत्र करने का है, जो अ० ई० प्रचार निरोध, उपदेशक विद्यालय और साहित्य प्रकाशन की योजनाओं के मूर्त रूप [illegible] में प्रयुक्त किया जायगा। ये तीनों ही कार्य बड़े आवश्यक हैं। अतः जनता को इसकी पूर्ति में पूर्ण सहयोग देना चाहिए।

इस अवसर पर वेद सम्मेलन, मद्य निषेध सम्मेलन, गोरक्षा सम्मेलन, महिला सम्मेलन आदि सम्मेलनों का भी आयोजन किया जा रहा है जिनके अध्यक्ष अखिल भारतीय चोटी के विद्वान् एवं नेता होंगे।

आर्य नर-नारियों ने भारी संख्या में सम्मेलन में सम्मिलित होने का प्रोग्राम बनाना प्रारम्भ कर दिया है। यद्यपि हैदराबाद बहुत दूर है तथापि आर्य जनों के प्रेम और उत्साह के समक्ष यह दूरी कोई अर्थ नहीं रखती। ऐसे अवसरों पर वे भारी संख्या में उपस्थित होकर अपनी संगठन एवं अनुशासन प्रियता का परिचय देते और आर्यसमाज के गौरव को बढ़ाते हैं।

सार्वदेशिक सभा सम्मेलन के प्रधान श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज के नाम की घोषणा कर चुकी है। इस अवसर पर अखिल भारतीय प्रसिद्ध के ५ आर्य विद्वानों एवं ५ कार्य कर्त्ताओं को भी सम्मानित किये जाने का प्रोग्राम है। प्रान्तीय सभाओं से परामर्श किया जा रहा है। सम्मेलन का उद्घाटन मारीशस के भारत स्थित हाई कमिश्नर माननीय श्री रवीन्द्र घरबरन जो कई वर्ष तक आर्य सभा मारीशस के प्रधान रह चुके हैं, ने करना स्वीकार कर लिया है।

सम्मेलन के अवसर पर एक बड़ी प्रदर्शनी भी लगाई जायगी, जो आर्य समाज से भी सम्बद्ध होगी।

सम्मेलन के लिये प्रान्तीय सभाओं से प्रतिनिधियों के नाम मंगाए जा रहे हैं।

१९५४ में हैदराबाद में श्री घनश्यामसिंह जी गुप्त की अध्यक्षता में नुमाइश मैदान, मोअज्जमजाही मार्केट के विशाल प्रांगण में सम्मेलन हुआ था। इसका उद्घाटन माननीय श्री अनन्तशयनम् पूर्व स्पीकर लोक सभा के द्वारा हुआ था। हमें विश्वास है कि यह दशम आर्य महा सम्मेलन प्रत्येक दृष्टि से सफल होगा। जहां हैदराबाद जैसे उत्साही एवं कर्मठ आर्य भाई हों और उन्हें श्री पं० नरेन्द्र जी जैसे कार्य कुशल कर्मठ और सुप्रसिद्ध नेता का नेतृत्व [illegible] प्राप्त हो।

बुन्देलखण्ड आर्य महा सम्मेलन एवं बुन्देलखण्ड आर्य महिला सम्मेलन का भव्य समारोह झांसी में !

दिनांक ३१ अक्तूबर एवं १ नवम्बर १९६८

वीर भूमि बुन्देलखण्ड की हृदय स्थली और स्वातन्त्र्य ज्योति महारानी लक्ष्मी बाई की शौर्यपीठ झांसी नगरी में किले के मैदान में दिनांक ३१ अक्तूबर व १ नवम्बर १९६८ को बुन्देलखण्ड आर्य महिला सम्मेलन एवं बुन्देलखण्ड आर्य महासम्मेलन जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा, झांसी के तत्वावधान में आयोजित किया गया है। यह सम्मेलन नूतन आकर्षक अभिनव रूप एवं भव्य विचारों का अप्रतिम सौन्दर्य लेकर आ रहा है, इसमें वेद शास्त्र पारंगत अनेक विद्वान् आमन्त्रित हैं जो अपने अमूल्य विचार रत्नों द्वारा अपने देश में वर्तमान अनेक धार्मिक सम्प्रदायिक एवं सांस्कृतिक विषम समस्याओं का वैदिक दृष्टि-कोण से समाधान प्रस्तुत कर हमें लाभान्वित करेंगे।

उदयभानु शास्त्री
प्रधान

बिहारीलाल
मन्त्री

गढ़मुक्तेश्वर आर्य सम्मेलन

गढ़ मुक्तेश्वर प्रान्तीय आर्य सम्मेलन व गंगा मेला में आने वालों को इन मार्गों से आना चाहिए। लखनऊ, इलाहाबाद कानपुर आदि से आने वाले सज्जन वाया मुरादाबाद से गढ़ मुक्तेश्वर स्टेशन पर उतरें। स्टेशन से तीन मील पर मेला है। मथुरा, आगरा, अलीगढ़, [illegible] आदि से आने वाले सज्जन हापुड़ स्टेशन पर उतरें। भोजन आवास आदि का प्रबन्ध जिला सभा मेरठ द्वारा होगा। मेले में सम्मेलन का शिविर सैक्टर नं० ७ में होगा।

—बलवीरसिंह बेधड़क

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के लिये [illegible] आर्य भास्कर प्रेस ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से कृष्णगोपाल शर्मा द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।

लखनऊ-रविवार आर्य सन १ शक १८९० आश्विन शु० १५ वि० सं० २०२५ दिनांक ६ अक्टूबर १९६८ ई

परमेश्वर की अमृत वाणी

न्याय, धर्म, सामाजिक एवम् राष्ट्रिय संघर्षों में आर्यत्व की सर्वत्र विजय होती है

★

इतो जयतो विजय स जय-जय स्वाहा ।
इमे जयन्तु परामी जयन्ता स्वाहैभ्यो दुराहामीभ्यः ।
नीललोहितेनामूनभ्य वतनोमि ॥
[अथर्व० काण्ड ८ सूक्त ८ मन्त्र २४]

[१] (इतः जय) उधर जीत (इतः विजय) इधर विजय प्राप्त कर (संजय) सम्यकतः जीत निरन्तर विजयी हो (जय स्वाहा) जय विजय के लिए सर्वस्व अर्पित कर दे ।

[२] (इमे जयन्तु) ये जीतें (अमी परा जयन्ताम) वे पराजित हों ।

[३] (एभ्यः स्वाहा) इनके लिये भली प्रकार से, सुख पूर्वक अर्पित हो (अमीभ्यः दुराहा) उनके लिये दुःखदायी हो, भर्तसना कर ।

[४] (नील लोहितेन) नीले और लाल से, पसीने और रक्त से (अमि) सर्वतः अमून अव- तनोमि) उनको परास्त कर ।

विश्व में जय पराजय का चक्र चला करता है । आर्य सदैव विजयी होते हे और अनार्य सदैव परास्त होते हैं । आर्य प्रत्येक प्रकार के संग्राम मे चाहे वह आत्मिक हो, सामाजिक राष्ट्रिय अधर्म अथवा अन्याय के विरुद्ध हो, सर्वत्र विजयी होते हैं क्योंकि विजय श्री की प्राप्ति के लिये सर्वस्व अर्पण करने को सदैव प्रस्तुत रहते हैं । ऐसे कर्मवीर आर्यों की सर्वत्र पूजा होती है । लोग हृदय से उनकी सराहना करते हैं एवम उनकी विजय कामना करते हुये उन्हे प्रत्येक प्रकार से अर्थात तन मन धन से सहयोग देते हैं । विजय श्री उसके चरण चूमती है जो रक्त और पसीना बहाता है, अर्थात पुरुषार्थ करता हैं ।

इसके सर्वथा विपरीत अनार्य जो व्यसनी और विलासी होते है जो आत्म विजयी नहीं होते, जो सदव अन्याय एवम् अधर्म युद्ध मे रत रहते हैं, उनकी पराजय होती है । जनता उनके नाम पर थूकती है और उन्हे परास्त करने के लिये उद्यत रहती है ।

वसम आर्य महा सम्मेलन पर एकत्र होकर आर्यजन विचार करें कि हमारी अवनति और पराजय का मूल क्या है हमारा विकास जो अवरुद्ध हो गया है, उसके मूल मे कहीं अनाचरण का कोढ तो नहीं है । कृण्वन्तो विश्व मार्यम की साध तो परस्पर प्रीति, सौहार्द एव सगठन से ही सिद्ध होगी, कलह द्वेष और विरोध से नहीं ।

इस अंक में पढ़िए !

१—अध्यात्म-सुधा १
२—सम्पादकीय ३
३—धर्म तथा सार सूचनायें ४
४—सार्वदेशिक वसम सम्मेलन ५
५ स्वाध्याय व शिक्षा ६
६—सिंहावलोकन ७
७—सामाजिक समस्यायें ८
—विनोद-बिंदु
८—देवासुर संग्राम ९-१०
९—श्री उपाध्याय जी ११
१०—प्रान्तीय आर्य महा सम्मेलन वनिता विवेक १२
११—आर्यजगत १३ १४
१२—जीवन ज्योति १५
१३ अमृत वर्षा १६

वार्षिक मूल्य १०)

छमाही मूल्य ६)

विदेश में २०)

एक प्रति २५ पै०

वर्ष	सम्पादक— क्षेमचन्द्र शर्मा, सभा मन्त्री	अंक
७०		३५

मूर्त्ति पूजा तथा देव पूजा

वर्तमान मूर्त्तिपूजा व देव पूजा का अवलोकन करते समय हृदय व मस्तिष्क शोक सिन्धु में डूब जाता है। क्योंकि प्रत्येक मनुष्य एक दूसरे को खा जाने की चेष्टा में है। किसी के अन्दर किसी के प्रति प्रेम व दया के लिये स्थान नहीं है परमेश्वर की बनाई हुई मूर्त्तियों के प्रति सभी में द्वेष, ईर्ष्या, छल कपट की अग्नि धधका करती है। परन्तु मन्दिरों में स्थित पत्थर की मूर्त्तियों पर जल चढ़ाने तथा घण्टा-घड़ियाल बजाने के कार्य में तनिक भी अवरुद्धता नहीं दिखाई पड़ती है। जरा सोचिये ! क्या जल, पत्ते, फूल और फल में परमेश्वर विद्यमान नहीं है ? नहीं; विद्यमान है।

जैसा कवि ने कहा है—

ओ३म् परमेश्वर जगत् ईश महादेव,
कण-कण व्यापक विनय सुनि लीजिये।
मन्त 'विभाकर' हैं दिव्य गुण कोष आप
सभी दुरितायों को समूल नष्ट कीजिए।
कुसुम अनोखी रचना में मैं हूं आप ही की,
मन्द, जड़, क्षुद्र पर तनिक पसीजिये।
आपको विनीत हो पुकार रहा सभी विधि
आज पवित्रतम् प्रदान मुझे कीजिये।

परमेश्वर ही हम सबों का माता-पिता, भाई, मित्र, गुरु-देव तथा सब कुछ है। उसी ने हम सबको ज्ञान भण्डार वेद प्रदान किया है। वेद परमेश्वर के गुणानुवाद से परिपूर्ण हैं। वेद ही आर्यों के पथ प्रदर्शक हैं। हम सब आर्यों की दिव्य विभूतियां हैं। हमारे पूर्वजों की जन्मभूमि, यही पुण्य भूमि है, जिसका हम सब अन्न-जलपान कर रहे हैं। इसका प्राचीनतम नाम आर्यावर्त्त है। आज के युग में हमारी जन्मभूमि चतुर्थ नामों से विभूषित है, जैसे आर्यावर्त्त, भारतवर्ष, हिन्दुस्तान और इण्डिया।

हमारा देश हृदय एवं मस्तिष्क बल में समस्त विश्व में अग्रगण्य था; क्योंकि आर्य का अर्थ श्रेष्ठ होता है। मानव योनि, समस्त योनियों का उच्चतम सोपान है। सभी मनुष्य भाई-भाई हैं, यह भावना प्रत्येक मनुष्य के अन्दर विद्यमान थी। अपने स्तर पर सभी का मान था।

मूर्ति-पूजा तथा देवपूजा का प्रचलन हमारे यहां अतीतकाल से ही चला आ रहा है। आज उसका भयावह रूप दृष्टिगोचर हो रहा है। जिसका स्रोत जैनमत है। मूर्तिपूजा तथा देवपूजा से तात्पर्य यह नहीं था कि पाषाण की मूर्ति पर जल चढ़ाया जाय व फूल बेल पत्र से सजाया जाय ; वास्तव में मूर्ति से अभिप्राय शरीर से था है। परमपिता परमेश्वर की कितनी दिव्य विभूतियां हैं, सभी के प्रति अनुराग रखना ही सच्ची मूर्त्तिपूजा है।

'मनुष्य मात्र बन्धु है,
यही बड़ा विवेक है।
पुराण पुरुष स्वयम्भू,
पिता प्रसिद्ध एक है।"
(गुप्त)

प्राणी समूह के हृदय में परमेश्वर विराजमान है। अतएव हम सबों का परम कर्त्तव्य है कि सबकी सेवा करें। किसी जीव की हत्या न करें तथा कर्त्तव्य, अकर्त्तव्य को समझें; उसी का अनुकरण करें। परमात्मा की निर्मित मूर्तियों से प्रेम करें। कभी भी द्वेष, ईर्ष्या, छल, तथा कपट को न आने दें। यही सच्ची मूर्ति पूजा है।

'अखिल विश्व का तिनका-तिनका,
जिसकी छवि से है छविमान।
उस महान जगदीश्वर को है—
अर्पित मेरा नम्र प्रणाम ॥

जल, पत्ते, फूल और फल को उठाकर, तोड़कर अन्यत्र फेंकना, परमेश्वर की सत्ता का अपमान करना ही तो है। घण्टा घड़ियाल की आवाज परमेश्वर का बधिरा होना, बतलाती है। जबकि गोस्वामी तुलसीदास जी ने परमेश्वर के विषय में लिखा है—

बिनु पग चलै, सुनै बिनु काना।
कर बिनु कर्म करै विधि नाना ॥
आनन रहित सकल रस भोगी।
बिनु बाणी वक्ता बड़ जोगी ॥

हम सभी आर्यों (मनु) की दिव्य सन्तान हैं। हमारे पूर्वजों ने जो मार्ग अपनाया था। उसी पथानुसरण में मेरा उत्कर्ष एवं कल्याण निहित है। 'विद्वान् माता-पिता, अतिथि, न्यायकारी राजा धर्मात्मा जन, पतिव्रता स्त्री और स्त्री-

★श्री ओंकार सिंह 'विभाकर'
उमरा, सुलतानपुर

व्रत पति का आदर पूर्वक सत्कार ही सच्ची पूजा है। पत्थरों पर जल चढ़ाना पोप लीला है।

देव शब्द का अभिप्राय देने से है। जिसमें देने की शक्ति हो उसी को देव कहते हैं। देव दो श्रेणियों में विभाजित है; प्रथम जड़देव, द्वितीय चेतन देव। जड़ देव में सूर्य, चन्द्र, पवन, पृथिवी अग्नि और जल आदि आते हैं। इनकी पूजा का विधान है। यज्ञ से ही ये देव प्रसन्न होते है। अग्नि और वायु महकने लगती हैं। वायु ही समस्त प्राणियों का जीवन है : वायु शुद्धता पर ही समयानुकूल जल वर्षा आश्रित है तथा माता वसुन्धरा हम सबों को अन्न, जल प्रदान करती है। सभी जीव नीरोग हो जाते हैं। अतएव 'देवयज्ञ' से ही जड़ देवता की पूजा होती है।

चेतन देव की श्रेणी में माता-पिता, आचार्य, अतिथि आदि आते हैं। इनकी विधिवत् सेवा ही सच्ची देव पूजा है।

परन्तु परमपिता परमेश्वर देवों का भी देव है। इसलिये वह महादेव कहा गया है। अतएव सर्व देवों के अतिरिक्त परमपिता परमेश्वर (महादेव) की उपासना करना (साय-प्रातः) परम कर्त्तव्य है। जिस पावन मंजुल कर्त्तव्य का पालन हमारे पूर्वज मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र जी ने भी किया था।

समय जानि गुरु आयसु पाई।
संध्या करन चले दोउ भाई ॥

★

ज्ञान-ज्वाल

●

जल उठी अचानक ज्ञान-ज्वाल।
हो गया भस्म रिपु अहम्पाल, हो गया भस्म सारा बवाल ॥
जल उठी अचानक ज्ञान-ज्वाल ॥

मैंने जो समझा था सच धन,
वह तो असत्य का था प्रतीक,
था निःसंशय सर्वथा अलीक,
तन मिथ्या रे ! मिथ्या यह मन ॥
अस्तित्व चिरन्तर भासमान, बन गया एक नैराश्य-जाल।
जल उठी अचानक ज्ञान-ज्वाल ॥

षड्रिपु रिपुत्व का भाव छोड़,
मित्रत्व निभाते निःसंशय।
कर-कर स्नेह का अति सञ्चय,
कैसी लग जाती निपुण होड़ ॥
वे बन जाते साथी सबके, जो कुछ पहले थे बने काल ॥
जल उठी अचानक ज्ञान-ज्वाल ॥

माया-ममता की मूल काट,
संशय-भ्रम का कर निराकरण।
कर राग-द्वेष का अपाकरण,
द्वैतत्व-गर्त्त को सद्य पाट ॥
भय से निर्भय, क्षय से अक्षय, तम से ज्योतिर्मय विरति-ताल ॥
जल उठी अचानक ज्ञान-ज्वाल ॥

हो गया भस्म रिपु अहम्पाल,
हो गया भस्म सारा बवाल।
जल उठी अचानक ज्ञान-ज्वाल ॥

★कवयिता—विश्वबन्धु शास्त्री
वरिष्ठ उप प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, मूड़, बरेली

अधर्म से बचें

उपप्रयन्तोऽध्वरं मन्त्रं वोचेमाग्नये ।
आरेऽअस्मे च शृण्वते ॥ यजु० अ० ३, म० ११ ॥

पदार्थः—(अध्वरम्) क्रियामय यज्ञ को (उपप्रयन्तः) अच्छे प्रकार जानते हुये । हम लोग के (अस्मे) जो हम लोगों के (आरे) दूर वा (च) निकट में (शृण्वते) सर्वार्थ सत्यासत्य को सुनने वाले (अग्नये) विज्ञान-स्वरूप अन्तर्यामी जगदीश्वर है उसी के लिये (मन्त्रम्) ज्ञान को प्राप्त कराने वाले मन्त्रों को (वोचेम) नित्य उच्चारण व विचार करें ।

भावार्थः—मनुष्यों को वेद मन्त्रों के साथ ईश्वर की स्तुति वा यज्ञ के अनुष्ठान को करके जो ईश्वर भीतर बाहर सब जगह व्याप्त होकर सब व्यवहारों को सुनता वा जानता हुआ वर्त्तमान है, इस कारण उससे भय मानकर अधर्म करने की इच्छा भी न करनी चाहिये जब मनुष्य परमात्मा को जानता है तब समीपस्थ और जब नहीं जानता तब दूरस्थ है ऐसा निश्चय जानना चाहिये ।

—महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

लखनऊ—रविवार आश्विन १४ शक १८९०, आश्विन शु० १५ वि० २०२५
६ अक्तूबर सन् १९६८ ई०,दयानन्दाब्द १४३, सृष्टि संवत् १,९७,२९,४९,०६९

उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते !

दशम आर्य महा सम्मेलन की सफलता की कामना करते हुये हमने विगत अंक में एक आवश्यक सुझाव यह दिया था कि हैदराबाद की ऐतिहासिक नगरी में पुनः हम एक और ऐतिहासिक सफलता प्राप्त करनी चाहिये और वह इस रूप में होनी चाहिए कि हम परस्पर ईर्ष्या द्वेष को त्याग कर संगठन के सूत्र में बन्धकर महर्षि दयानन्द के अधूरे काम को पूर्ण करने में तन मन धन से जुट जायें ।

लिखने की आवश्यकता नहीं है कि वर्त्तमान युग में संगठन का क्या महत्व है ? संगठित शक्ति की क्या चमत्कृति होती है यह तो अनुभव का विषय है । जहाँ एकत्व है वहां विजय है और जहां अनेकत्व है वहां पराजय है । जहां फूट की खाई है वहाँ मरण है और जहाँ संगठन की पर्वतमय दृढ़ता है, वहां जीवन है । हम क्या थे ? क्या हो गये और क्या होंगे अभी ? यह विषय प्रमुख रूप से विचारणीय होना चाहिये, यदि हमें सम्भलना है, उठना है और आगे प्रगति करना है तो इसके लिए हमें परस्पर द्वेष को मिटाना होगा क्योंकि यदि द्वेष का हमारे मध्य में [illegible] रहा तो एक दिन हमारा अस्तित्व तक मिट जाएगा ।

आर्य जगत् की [illegible] प्रधान समस्या का निराकरण [illegible] होना ही चाहिये ऐसा सब सन्यासी विद्वान नेतागण अनुभव करते हैं । अपने अपने विचारानुसार वे प्रयत्नशील भी होते हैं, किन्तु ज्यों-ज्यों समस्याओं को सुलझाने की चेष्टा की जाती है त्यों त्यों वह और उलझती चली जाती है । स्थान स्थान पर ऐसे लज्जाजनक दृश्य देखने में आते हैं कि हमारा सिर शर्म से नीचे झुक जाता है । अपने अधिवेशनों में संगठन सूक्त को वाणी से हम दुहराते रहते हैं, किन्तु करनी में हम जब हम उसका उल्टा व्यवहार करते हैं तो अन्य सगठित मतावलम्बियों से हम नेत्र तक नहीं मिला पाते हैं ।

यह प्रश्न उठता है कि क्या इसी दुरावस्था के लिये महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना की थी ? हम क्यों नहीं महर्षि की उन चेतावनी को आत्मसात करते जिनमें स्पष्टतया उन्होंने कहा था कि यदि इसमें ठीक व्यवस्था नहीं रखोगे तो आगे चलकर यह भी अन्य मत मतान्तरों की भांति एक मत हो जाएगा । ऋषियों के पास दिव्य दृष्टि होती है इसीलिये वे जिस दूर तक देख सकते हैं, वह साधारण जनों की क्षमता से [illegible] है । बात-बात में महर्षि दयानन्द का नाम लेने वाले, उसकी जय जयकार लगाने वाले, वेद प्रचार की दुहाई देने वाले और वेद प्रचार के निमित्त धन की याचना करने वाले क्यों नहीं इस बात पर विचार करते कि क्या महर्षि दयानन्द ने इस आसुरी फूट का उपदेश दिया था ? अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में "जिस आसुरी फूट के कारण महाभारत का विनाशकारी युद्ध हुआ, और आर्यावर्त्त के विनाश की मूल यह अपनी फूट कब दूर होगी" में क्या हमें महर्षि की मनोव्यथा झलकती हुई दृष्टिगत नहीं होती ? जिस वेद को हम अपने ज्ञान कर्म का आधार मानते हैं क्या उसकी शिक्षायें हमें द्वेष की ओर प्रेरित करती हैं ? 'विनाश काले विपरीत बुद्धि' का कैसी भीषण दल-दल है जिसमें हम फंसकर रह गये हैं ।

जो कभी दल दल में फंसे हैं या जिन्होंने कभी किसी को दल दल में फंसे हुये देखा हो उन्हें इस बात की जानकारी होगी कि ज्यों-ज्यों दल दल में फंसा हुआ व्यक्ति दल-दल में से निकलने का उपक्रम करता है त्यों-त्यों वह दल-दल में और फंसता चला जाता है । ठीक यही स्थिति आज हमारी हो रही है । जिस प्रकार दल-दल में फंसे व्यक्ति को युक्ति से बुद्धि पूर्वक बाहर निकाला जाता है ठीक उसी प्रकार आज हमें भी इस द्वेष रूपी दल दल से स्वयम् निकलना है तथा दूसरों को निकालना है ।

यह नितान्त सत्य है कि फूट के मूल में हमारा व्यक्तिगत निकृष्ट स्वार्थ है और उसका आधार विश्व में पनपता हुआ भौतिकवाद है । अतएव यदि हमें परस्पर प्रेम सौहार्द और संगठन के सूत्र में बंधना है तो भौतिकवाद के स्थान पर आध्यात्मवाद को आसीन करना होगा । आध्यात्मिकता की शक्ति को संचित करने के लिये यदि हम निम्नलिखित ठोस कार्य क्रम अपनाएं तो द्रुतगति से परिवर्तन लक्षित होने लगेगा और कटुता मधुरता में बदल जाएगी हमारे सुझाव इस प्रकार हैं ?

[१] आर्य समाज के जो दैनिक, साप्ताहिक एवम् पारिवारिक अधिवेशन होते हैं, उन्हें आध्यात्मिकता के रङ्ग में रङ्ग दिया जाये । केवल खाना पूरी के ओर पर ही नहीं वरन् यज्ञ सन्ध्या वेदोपदेश सब में तपा हुआ जीवन रस पान करने को मिले । वेद कथाओं का अधिकाधिक आयोजन किया जाये और वार्षिकोत्सवों में भी वेद प्रतिपादित अध्यात्मवाद का सर्वतः प्रसार किया जाये । आर्य समाजों में योग के विशेष शिविर लगाये जायें—सत्सङ्गों में ओ३म् नाम का और गायत्री का जाप कराया जाये ।

[२] आर्य समाजों, आर्य भवनों तथा समारोहों के शिलान्यास अथवा उद्घाटन चरित्रवान् व्यक्तियों से कराये जायें भले ही वे भौतिक रूप से समृद्धि शाली न हों । झूठे, अधर्मी, ढोंगी पाखण्डियों एवम् धूर्त्तों का कदापि कोई मान सम्मान न किया जाये और न ही उन्हें कभी किसी सम्मेलन का प्रधान आदि बनाया जाये ।

इस सम्बन्ध में दशम सार्वदेशिक महा सम्मेलन के सुअवसर पर आर्य जगत् के तपे तपाये सन्यासी पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी को प्रधान पद पर सुशोभित किया जाये ।

इसी प्रकार समाजों या सभाओं में भी विरक्त सन्यासियों एवम् वानप्रस्थियों को प्रमुखता दी जाये । यदि हम चरित्रवानों विद्वानों तथा साधु सन्यासियों की उपेक्षा करते हैं और स्वार्थियों तथा दुराचारियों की पूजा करते हैं तो हम उसकी छाप को सदस्यों पर लगने से कैसे रोक सकते हैं ?

[३] आर्य सभासद केवल उन्हें बनाया जाय जो चरित्र की कसौटी पर पूरे उतरते हों और इस सम्बन्ध में बुराई से किसी भी प्रकार का चाहे वह कितनी भी अल्प क्यों न हो, कोई समझौता न किया जाये और [illegible] की सभासद्यता तब तक समाप्त कर दी जाये जबतक उनका भ्रष्टाचार सदाचार में परिवर्तित नहीं हो जाता । समाज व सभाओं के निर्णय के विरुद्ध न्यायालयों की शरण लेने वालों की सदस्यता तुरन्त समाप्त कर दी जाये । यदि आवश्यक हो तो [illegible] में संशोधन कर दिया जाये ताकि प्रान्तीय एवम् सार्वदेशिक सभाओं के [illegible] विरुद्ध कोई अदालत का द्वार न खटखटा सके ।

[४] आर्य समाज की बागडोर आज [illegible] के हाथ में है व आज तप, त्याग, एवम् [illegible] का प्रत्यक्ष परिचय दें । यदि महात्माओं में उनसे अधिक योग्य [illegible] हैं तो वे स्वयम् उनके लिये स्थान [illegible] करदें । यदि उनके पास समय [illegible] है और वे [illegible] अपने [illegible] सकते तो उन्हें [illegible] होकर 'किसी [illegible] में [illegible] [illegible] निर्देशों में रूप [illegible] उन्हें सर्वो रक्षा [illegible] चाहिये । यहाँ [illegible] त्याग के न्याय का [illegible] और [illegible] आज हम उन [illegible] जो निवास के [illegible] में स्वयम् वहां छोड़ना [illegible] सुधारकों के [illegible] के स्थान पर उन्हें बात-बार [illegible] करते हैं । आवश्यकता इस बात की है कि मुख सुधारी

पाठकों को सूचना

आर्यमित्र का अगला १३ अक्तूबर का अङ्क बन्द रहेगा। १३ और २० अक्तूबर का संयुक्त अङ्क दीपावली का ऋष्यंक होगा। कृपालु पाठक व एजेण्ट नोट कर लें। अब इसके पश्चात् दीपावली पर ऋष्यंक पाठकों की सेवा में भेजा जाएगा। जिन ग्राहकों का वार्षिक शुल्क १५ अक्तूबर को समाप्त हो गया है और जिन्हें इसकी सूचना पहले ही दी जा चुकी है, जिन्होंने अभी तक रुपया नहीं भेजा उन्हें ऋष्यंक वी० पी० द्वारा भेजा जायगा। रुपया न भेजने पर कृपया वी० पी० छुड़ाकर अनुगृहीत करें।

—प्रेमचन्द्र शर्मा
अधिष्ठाता आर्यमित्र लखनऊ

सदैव की भांति
ऋषि-निर्वाण पर्व पर
अपने ढंग का अनुपम
आर्यमित्र का विशेषांक
ऋषि-निर्वाण अङ्क

२०-१०-६८ को प्रकाशित होगा

इस विशेषाङ्क में—

(१) महर्षि दयानन्द को श्रद्धाञ्जलियां
(२) वेद व्याख्यायें
(३) ओजस्वी कवितायें
(४) महर्षि के अधूरे काम [illegible] करने के लिये [illegible] त्मक योजनायें—
(५) एकाङ्की, आर्यकुमार संघ [illegible] आदि होंगे।

१३२ पृष्ठ के इस विशेषाङ्क का मूल्य केवल एक रुपया होगा।

आज ही अपने अपने आदेश भेजिये ताकि बाद में निराश न हों।

विद्वान् लेखक महोदय अपनी रचनायें कृपया तुरन्त भेजें।

—सम्पादक

जाये और प्रचार कार्य को तीव्र करने के लिये नवागन्तुकों का हार्दिक स्वागत किया जाये। ग्राम आर्य महासम्मेलन के अधिवेशनों में इन बातों का सूत्रपात होना ही चाहिये।

महर्षि दयानन्द के अनुयायियो! वेद को अपना धर्म ग्रन्थ मानने वालो! उठो! सम्भलो!! आज महर्षि की मान रक्षा के लिये वेद के पढ़ने-पढ़ाने और सुनने सुनाने को परम धर्म बनाओ। महर्षि के समान जीवन को शुद्ध पवित्र बनाओ और ऋषि ऋण चुकाने के लिये द्वेष को भस्मीभूत करो। चार दिनों के जीवन में मिथ्या आसक्तियों से बचो। 'हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापि हितं मुखम्' के अनुसार भौतिकता के आवरण को हटाओ और सत्य का साक्षात्कार करो। वेद माता स्वयम् आह्वान करते हुए कह रही है—"उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवान् यज्ञेन बोधय।"

हत्यारे को दण्डित कियाजाये

लगभग एक मास पूर्व श्री स्वामी अमृतानन्द जी सरस्वती की जो किसी अज्ञात व्यक्ति द्वारा हत्या कर दी गयी थी। उनका शव उनके निवास स्थान ग्राम बिठोरिया हल्द्वानी (नैनीताल) अमृताश्रम पर पानी की टङ्की में क्षत विक्षत अवस्था में पाया गया था। हत्या काड का बोध ग्राम वासियों को हत्या के दो दिन पश्चात् तब हुआ, जब उनके न मिलने पर उनके कमरे की दीवारों व फर्श को खून से सना पाया गया।

श्री स्वामी जी प्रकांड वैदिक विद्वान् थे। डी० ए० वी० कालिज लाहौर तथा गुरुकुल कांगड़ी में प्राध्यापक भी रह चुके थे। संस्कृत में उन्होंने अनेक पुस्तकें भी लिखी थीं। जिनमें से अष्टाध्यायी के भाष्य पर उन्हें पुरस्कृत भी किया था।

स्वामी जी की इस हत्या से आर्य जगत् में क्षोभ होना स्वाभाविक ही है। हम उत्तर प्रदेश की सरकार से इस बात की मांग करते हैं कि हत्यारे का पता लगाया जाये और ८० वर्ष के वयोवृद्ध संन्यासी की हत्या के आरोप में उसे कठोर दण्ड दिया जाये।

प्रान्तीय आर्य सम्मेलन को सफल बनाया जाये

उत्तर प्रदेश की समस्त आर्यसमाजों को सूचित किया जा चुका है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का प्रान्तीय आर्य सम्मेलन जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा मेरठ के निमन्त्रण पर गढ़मुक्तेश्वर के मेले के अवसर पर १, २, ३, व ४ नवम्बर ६८ को आयोजित किया जा रहा है। प्रान्तीय स्तर पर किये जा रहे इस वृहद् सम्मेलन में यह स्वाभाविक ही है कि इस में आर्य जगत् के माननीय नेता और अधिकारीगण तथा उच्चकोटि के सन्यासी एवम् विद्वान् आमन्त्रित किये गये हैं।

इस प्रान्तीय आर्य सम्मेलन को पूर्णतया सफल बनाना उत्तर प्रदेश की प्रत्येक आर्य समाज का पावन कर्तव्य है। आज के युग में संगठन और प्रचार का अपना एक अनुपम महत्त्व है। क्योंकि संगठित शक्ति और आकर्षक प्रचार का जन-साधारण पर अद्भुत प्रभाव पड़ता है। इस प्रान्तीय सम्मेलन का एक विशेष महत्व यह भी है कि इसमें सम्मिलित होकर आर्य जगत् में वर्त्तमान समस्याओं पर गम्भीरतापूर्वक विचार किया जा सकता है और ठोस योजनायें बनाई जा सकती हैं। यद्यपि आर्य प्रतिनिधि सभा के बृहत अधिवेशन प्रत्येक वर्ष होते हैं और इस वर्ष तो दो वृहदाधिवेशन हुए हैं। किन्तु उन अधिवेशनों में चुनाव के अतिरिक्त और कोई चर्चा नहीं हो पाती जिसके फलस्वरूप अनेक विषय समस्याओं पर कोई विचार विमर्श नहीं हो पाता और वे ज्यों की त्यों रह जाती हैं।

अतएव उत्तर प्रदेश की समाजों को चाहिये कि वे इन तिथियों पर अपने वार्षिक उत्सव न करें। यदि कहीं पर वे निश्चित हो चुके हों तो उन्हें स्थगित कर दिया जाये। इस प्रान्तीय सम्मेलन में प्रान्तीय आर्य समाजों के प्रधान, मन्त्री एवम् अधिकारीगण सोत्साह भाग लें। यदि कहीं पर प्रतिनिधि गणों को कोई आर्थिक कठिनाई हो तो समाजें उन्हें अपने कोष से मार्ग-व्यय भी दें अथवा धनी व दानी महानुभावों से दिलायें ताकि प्रान्तीय आर्य सम्मेलन जिस आदर्श को लेकर किया जा रहा है, वह पूरा हो और उसकी सफलता से हमें गौरव प्राप्त हो और हमारे कार्यों में नव उत्साह का संचार हो।

सभा के नव भवन निर्माण में मुक्त हृदय से दान दें।

अनेक वर्ष पूर्व सभा के नव भवन निर्माण की योजना बनाई गई थी क्योंकि १९६० में लखनऊ नगर में गोमती नदी की बाढ़ के कारण पुराना भवन क्षति ग्रस्त हो गया था। हीरक जयन्ती के अवसर पर भारत के प्रधान मन्त्री स्व० प० जवाहरलाल नेहरू के कर कमलों से उसका शिलान्यास भी कराया गया था किन्तु अर्थाभाव के कारण अभी तक भवन निर्माण का कार्य प्रारम्भ नहीं किया जा सका है। आर्यसमाजों के गढ़ उत्तरप्रदेश की समाजों के लिए यह गौरव की बात नहीं है। इन आठ वर्षों में शिलान्यास के अक्षर भी धुंधले हो चुके हैं और नव भवन निर्माण का प्रसङ्ग एक चुनौती के रूप में खड़ा है।

नव भवन का निर्माण केवल बातों और दान के वचनों से नहीं होगा उसके लिये धन चाहिये। पांच लाख की लागत से बना यह भवन अपने ढंग का एक विशाल भवन होगा और उससे सभा को पर्याप्त आर्थिक लाभ होगा जिससे सभा की अनेक महत्त्वपूर्ण योजनाएं क्रियान्वित की जा सकेंगी।

बड़े हर्ष की बात है कि इस वर्ष सभा के अधिकारियों का ध्यान इस महत्त्वपूर्ण विषय ने पुनः आकर्षित किया है जिसके फलस्वरूप मथुरा के स्थगित वृहदधिवेशन में अनेक जिलों से व दानी महानुभावों ने अपने अपने दान की घोषणा की है जिसकी सूची इस पत्र में प्रकाशित की जा चुकी है। हमारा निवेदन उनसे केवल इतना ही है कि इस शुभ कार्य का शुभारम्भ कराने के लिए सभा को 'शुभस्य शीघ्रम्' के अनुसार घोषित दान की राशि तुरन्त भेजें। जिन जिलों और अन्य दानियों की किसी कारण वश अभी घोषणायें नहीं हुई हैं वे भी अविलम्ब दान भेजें और पुण्य के भागी बनें।

★

दशम सार्वदेशिक आर्य महा सम्मेलन

भाग्यनगर (हैदराबाद) में ८, ९, १० नवम्बर १९६८ को दशम सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन होने जा रहा है। यह वही ऐतिहासिक महा नगरी है जो सन् १९३८-३९ के प्रसिद्ध हैदराबाद सत्याग्रह की लीलास्थली थी, और जहाँ आर्य समाज का भाग्य निर्णय अहिंसात्मक संग्राम के विजेता के रूप में हुआ था, जिस अहिंसात्मक संग्राम की व्यवस्था और सफलता को देखकर उसके प्रणेता जगत् वंद्य महात्मा गाँधी को भी प्रथम आर्य समाज की तथा महर्षि दयानन्द के अनुयायियों की श्रेष्ठता एवं कार्य कुशलता को स्वीकार करना पड़ा था। आसाम वह सत्याग्रहियों की निष्ठा एवं बलिदान की भावना को देखकर संसार स्तब्ध एवं आश्चर्य चकित रह गया। एक ओर अंग्रेजी सरकार के बल पर मदमस्त निजामशाही को सरकारी एवं सैनिक बाहुनी अत्याचार करने पर आरूढ़ खड़ी थी तो दूसरी ओर वैदिक धर्म के दीवानों की निशस्त्र सेना बलिदान देकर अपने रक्त से देश और धर्म के भाल पर विजय तिलक लगाने के लिये अधीर थी। निहत्थी और हथियार बन्द सेनाओं के अपूर्व संघर्ष का दृश्य सदुपस्थित था। जब कि आर्य समाज की सेना के प्रथम अध्यक्ष, वीतराग महात्मा नारायण स्वामी ने युद्ध के पांचजन्य का उद्घोष किया। आर्य समाज की चतुरंगिणी सेना जिसमें बाल, युवा, वृद्ध एवं नारी सभी थे निजाम हैदराबाद की शस्त्रास्त्र से सुसज्जित सेना से भिड़ गई। एक कोलाहल आकाश में छा गया, हैदराबाद की धरती पर निजामशाही का ताण्डव नृत्य होने लगा। किन्तु उसका समग्र तामस बल आर्य समाज के सात्विक बल का दमन करने में असफल हो गया। आर्यसमाज रूपी सूर्य को जो ग्रहण लगा था, वह छाया वैदिक धर्म दिवाकर के प्रखर प्रताप से छिन्न भिन्न हो गई।

आज उसी स्थल में दशम सार्वदेशिक आर्य महा सम्मेलन का आयोजन किया गया है। वास्तव में यह एक राष्ट्रभूत पक्ष है जिसमें देश की वर्तमान स्थिति को देखते हुये आर्य समाज की आवश्यकता पर एवं उसके भावी कार्यक्रम पर विचार विनिमय होगा। उसके लिये आवश्यक सुझावों का आवाहन किया गया है। भारत की वर्तमान दुर्दशा किसी से छिपी नहीं है। वैदिक सिद्धान्तों तथा आदर्शों से अनभिज्ञ शासन प्रणाली राष्ट्रियता की तथा देश कल्याण की भावना से ओत-प्रोत होते हुए भी कोई प्रगति नहीं कर पा रही है। उसकी भावी सद्भावनायें तथा सदाशयतायें कागजों के भण्डार में दब कर रह गई हैं। आज विचार का विषय यह है कि हमारी शासन प्रणाली वैदिक धर्म के अनुरूप किस सीमा तक है और यदि नहीं है तो उसमें कितना और कैसा संशोधन अपेक्षित है। उस संशोधन के लिये शान्तिपूर्ण आन्दोलन ही पर्याप्त होंगे अथवा उसका आमूल परिवर्तन करना होगा। यह समस्यायें ऐसी हैं जिनका सम्बन्ध समाज एवं राजनीति दोनों से है। सत्य तो यह है कि राजनीति समाज शास्त्र की ही परिस्थिति का दूसरा नाम है, हम उससे पृथक रह कर प्रभावित कर सकेंगे अथवा उनमें निमग्न होकर उसके प्रवाह को बदल सकेंगे। यह भी विचारणीय है, दोनों ही दशाओं मे हमारा घोषणा-पत्र स्पष्ट होना चाहिये जिससे आर्य समाज के सदस्य इतस्ततः भटकते न फिरें। यह भी एक अजीब विरोधाभास है कि वैदिक धर्म में विश्वास करने वाला व्यक्ति राजनैतिक रूप से, कांग्रेसी, कम्युनिस्ट, जनसंघी, समाजवादी आदि कुछ भी रह सकता है। इस परस्पर विरोधी स्थिति का अन्त न करना होगा। और एक ऐसे पथ का निर्माण करना है जिस पर चलकर आर्य समाज की यह बिखरी शक्ति संग्रथित और संगठित होकर देश के कल्याण के लिये कारगर सिद्ध हो।

उत्तर प्रदेश तथा भारत के अन्य प्रदेशों के आर्य विद्वानों से मेरा यह निवेदन है कि उपरोक्त गहन समस्याओं पर विचार कर अपने प्रौढ़ विचारों से आर्य समाज के द्वारा देश तथा राष्ट्र के कल्याण का मार्ग सुझाने के लिये तथा सब कार्यकर्ता उन विचारों को हृदयङ्गम कर उन्हें सम्पुष्ट और कार्यान्वित करने के लिये अधिक से अधिक संख्या मे आर्य जन उस तीर्थ स्थान में पहुंच कर अपना योगदान करें।

किसी भी योजना अथवा कार्य की सफलता उसके पीछे निहित प्रेरणा मे प्रतिबद्ध रहती है। गीता मे कहा है कि 'विश्वासो फलदायकः' यदि किसी मंजिल का राही यह सोच कर बैठ जाय हिम्मत हार दे कि मंजिल दूर है तो वह कदापि वहां नहीं पहुंच पाता। इसके विपरीत अल्प साधन वाला बटोही यदि यह निर्णय कर ले कि उसे गन्तव्य तक पहुंचना ही है तो वह अवश्य पहुंचेगा। 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के लक्ष्य के साधकों को भाग्यनगरी के इस आर्य महासम्मेलन को आर्य समाज का आत्म [illegible] बनाना है। आज जो लोग यह सोच बैठे हैं कि आर्य समाज मृत [illegible] एक शक्तिहीन समुदाय है वे पुनः आज हैदराबाद सत्याग्रह के [illegible] सोचने और [illegible] जीवन जागृत रखा है, कि महर्षि दयानन्द के अनुयायी [illegible] ही तेज, ओज और बल [illegible] हैं।

[illegible] चन्द्र [illegible] शर्मा
मन्त्री
[illegible] प्रतिनिधि सभा, उत्तर

हैदराबाद में:—

सार्वदेशिक आर्य महा सम्मेलन का दशम अधिवेशन

संसार का सुख और अभिवृद्धि ही आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है

श्री पं० नरेन्द्र जी प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा का वक्तव्य—

आर्यसमाज की स्थापना महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सन् १८७५ ई० में की थी। आर्यसमाज की स्थापना का उद्देश्य इसके अपने छठे नियम में स्पष्ट रूप से वर्णित किया गया है। संसार का सुख और अभिवृद्धि ही आर्यसमाज का मुख्योद्देश्य है। अर्थात् शारीरिक और आत्मिक उन्नति कराना। इस उद्देश्य के पूर्त्यर्थ आज तक आर्यसमाज प्रयत्न करता रहा और आगे भी प्रयत्नशील रहेगा ही।

महर्षि दयानन्द ने देश के सम्मुख जो चौमुखी उन्नति का कार्यक्रम प्रस्तुत किया था उसे आज देश क्रियात्मक रूप देते हुए ग्रहण करता चला आ रहा है। जैसे अछूतोद्धार, जन्ममूलक जाति पांति उन्मूलन, चरित्र निर्माण, स्वाधीनता, स्वदेशी का प्रचार तथा कला कौशल आदि कार्य हैं। इसके अतिरिक्त देश के कोने-कोने में पीड़ा व दैवी आपत्ति के समय आर्यसमाज ने अपने आपको जनता की सेवा मे अपर्णी रखा। बंगाल का अकाल, नवाखाली के साम्प्रदायिक उपद्रवों के समय एवं बिहार के अकाल और क्वेटा में भू-कम्प के समय तथा प्रस्तुत बिहार के अकाल मे आर्यसमाज की सेवायें व्यापकरूप से रही हैं जो सूर्य के प्रकाश की भाँति स्पष्ट हैं।

आर्यसमाज के सर्वतोमुख मानव हितैषी प्रयत्नों का परिणाम है कि भारत वर्ष मे जहां इसका प्रादुर्भाव हुआ, राष्ट्र के लिए नवजीवन और जनता में व्याप्त उत्पीड़न के लिए तड़प स्वाभिमान व गौरव से पूर्ण जागृति दिखाई दे रही है। आर्यसमाज ने भारत के इतिहास निर्माण तथा इसे समृद्ध करने और मानवमात्र के कल्याण की दिशा में जो बलिदान किये हैं, उनकी साक्षी मे इतिहास के पृष्ठ के पृष्ठ भरे पड़े हुए हैं। इसी प्रकार की राष्ट्रिय और आध्यात्मिक भावना से ओतप्रोत महान विभूतियें लाला लाजपत राय, अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द, क्रान्ति के जन्मदाता श्याम जी कृष्ण वर्मा, क्रान्ति प्रिय श्री रामप्रसाद बिस्मिल, शहीदों के सरताज सरदार भगतसिंह, लाला हरदयाल जी, तथा देवतास्वरूप भाई परमानन्द जी आदि ने अपने जीवन के पुष्परित पुष्पों की सुगन्धी से संसार के कोने कोने को महका दिया था। पंडित जी ने अपने वक्तव्य मे हैदराबाद की जनता से आशा प्रकट की है कि सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन का जो दशवां अधिवेशन आन्ध्रप्रदेश की प्रसिद्ध राजधानी, आर्यसमाज के शहीदों की नगरी हैदराबाद मे होने जा रहा है उसे तनमन धन से सफल बनाने में कोई कसर उठा नहीं रखी जाएगी।

आज हमारे देश के सम्मुख कुछ ऐसी समस्यायें हैं जिनकी ओर ध्यान देने की नितान्त आवश्यकता है। विशेषकर अध्यात्मवाद की उपेक्षा और भौतिकवाद की बढ़ती हुई अभिरुचि भारत [illegible] की वैदिक संस्कृति और सभ्यता की सुरक्षा के लिये चिन्ता का विषय है। इसके लिये आवश्यक ही नहीं अनिवार्य है कि आध्यात्मिक ज्ञान की प्रगति के लिये प्रयास किया जाये।

स्वाध्याय व शिक्षा

★ पूर्ण[illegible] एडवोकेट
पूर्व प्रधा[illegible] [illegible]देशिक सभा

स्वाध्याय योग दर्शन में व्यक्ति के जीवन निर्माण के लिये एक आवश्यक नियम बताया गया है। जीवात्मा में ज्ञान प्राप्त करने की शक्ति है, परन्तु ये ज्ञान उसे दूसरे के निमित्त से ही प्राप्त होता है। बिना निमित्त के वह ज्ञानी नहीं हो सकता। दूसरे से ज्ञान प्राप्त करने की विधि का नाम ही स्वाध्याय है। हम ज्ञान की वृद्धि पुस्तकों के पढ़ने से कर सकते हैं और दूसरों की बात सुनकर के हम पुस्तकों के पढ़ने में आँखों का प्रयोग करते हैं और बात सुनने में कानों का। यदि विचार की दृष्टि से देखा जाय तो [illegible] ज्ञानेन्द्रियों द्वारा ही ज्ञान [illegible] होता [illegible] है। और जो ज्ञान [illegible] होता है, वही हमारी मानसि[illegible] की व्यवस्था के लिये एक अचूक साधन बन जाता है।

जिस प्रकार शरीर की पुष्टि एवं रक्षा के लिए भोजन की आवश्यकता है उसी प्रकार मानसिक जगत् के लिये हमें मानसिक भोजन की आवश्यकता होती है। शारीरिक भोजन के लिये हमें भक्ष और अभक्ष का ज्ञान रखना होता है। क्या खायें और क्या न खायें कम खायें। कैसे खायें इन सब की मर्यादा है। ये भी ध्यान रखना आवश्यक है कि खाने मे किसी प्रकार का विष न मिला हो यदि जरा सा भी विष मिला होगा तो रक्षा के स्थान पर मृत्यु का कारण बन सकता है। मानसिक भोजन के लिये भी आवश्यक है कि हम उपरोक्त मर्यादाओं का ध्यान रखें। क्या पढ़ें क्या न पढ़ें क्या लिखें क्या न लिखें। क्या सुनें क्या न सुनें, क्या सूंघें क्या न सूंघें इस सब के लिये नियम और मर्यादा है।

जिस प्रकार शारीरिक भोजन के लिये ये आवश्यक है कि जो हम खावें वो हजम हो हमारा अङ्ग बने और जीवन की रक्षा करें। यदि खाया हुआ अन्न पचता नहीं और वैसे ही निकल जाता है तो खाना एक भयंकर रोग रूप धारण कर लेगा।

शारीरिक भोजन में हमें स्वाद और स्वास्थ्य दोनों का ज्ञान रखना आवश्यक है। यदि स्वाद के लिये वशीभूत होकर हम ऐसा खाना खायें जो स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है। वह खाना खाना नहीं विष समझना चाहिये।

इसी प्रकार मानसिक भोजन में हमें नैतिक स्वास्थ्य और रुचि दोनों का ध्यान रखना होगा। यदि केवल रुचि की ओर ध्यान गया और प्रभाव की ओर नहीं तो ऐसा पढ़ना पढ़ाना नहीं, पढ़ने से उल्टा है। हम जो पढ़ें वह हमारा अंग बन उसके लिये हम एक वेद मन्त्र उद्धृत करना चाहते हैं।

पुनरेहि वाचस्पते देवेन मनसा सह।
वसोष्पते निरमय मय्येवास्तु मयि श्रुतम्॥
(अ० १ १-२ ॥)

शब्दार्थ—(वाचः पते) हे वाणी व ज्ञान के पालक देव! तुम (पुनः) फिर (एहि) मुझ में आओ; (देवेन) देव, द्योतमान (मनसा) मनके मनन क्रिया के (सह) साथ आओ! (वसोः पते) हे वसु के पति! तुम (निरमय) मुझे (इस ज्ञान में) रमण कराओ, रस दिलाओ आनन्दित कराओ, एवं (मयिश्रुत) मेरा सुना हुआ ज्ञान (मयि एवं) मुझ में ही (अस्तु) रहे, ठहरे।

इस वेद मन्त्र में ईश्वर को वाचस्पते कहा गया है अर्थात् वाणी व ज्ञान के पालक देव और इसमें ये प्रार्थना है। कि ईश्वर का ज्ञान पुनः अर्थात बार बार हमारे ऊपर आवे परन्तु देव मन के साथ आवे अर्थात् ईश्वर का ज्ञान प्राप्त करते समय हमारी मानसिक भावना दिव्य गुण युक्त हो। इस में ईश्वर को केवल वाणी का ही पति नहीं वसु का पति भी कहा गया है। इसमें यह प्रार्थना है कि जो ज्ञान हम प्राप्त करें हम उसमें रमण करें। उसका रस प्राप्त करें और रस प्राप्ति से आनन्दित हों। अर्थात् हम मन लगाकर ज्ञान प्राप्त करें दिव्य युक्त मन से प्राप्त करें और उस पर मनन भी करें मनन से ही रस आता है। और आनन्द प्राप्त होता है। इसमें यह भी प्रार्थना है कि मेरा सुना हुआ ज्ञान मुझ में रहे ठहरे। ये नहीं कि एक कान से सुनकर दूसरे से निकाल दिया जाय दूसरे शब्दों में इस मन्त्र में श्रवण मनन, निध्यासन तीनों के लिये आदेश है।

आजकल अधिकता ये है जिनको सुनने का अवकाश नहीं है। और न सुनने की रुचि है। यदि भूले भटके चलते फिरते किसी के प्रभाव से या किसी परिस्थिति के वशीभूत होकर सुन लिया तो वह केवल सुनने तक रहता है। मनन का तो अवसर नहीं आता जब मनन ही नहीं है तो सुना हुआ चरित्र का आधार कैसे बन सकता है। आर्य्य जगत् में इस मन्त्र पर विशेष रूप से ध्यान देने की आवश्यकता है। आर्य समाज के सतसंग होते हैं, वैसे ही श्रम सदस्य आते हैं। और जो आते भी हैं वे ध्यान से नहीं सुनते और यह कहते हुये चले जाते हैं कुछ मजा नहीं आया कोई नई बात पल्ले नहीं पड़ी, नई [illegible] की रुचि हितकर है परन्तु [illegible] सीमा है। असली जीवन [illegible] और स्वास्थ्य तो रोज की [illegible] रोटी में ही होती है। स्वादिष्ट [illegible] तो कभी कभी प्राप्त होती हैं। और [illegible] हो जाने पर भी अधिक खाने से अजीर्ण हो जाती है। यदि थोड़ा खाया जाय खूब चबाकर खाया जाय तो वह खाना होता है। और अङ्ग बनाता है। आर्य जगत् में इस प्रसंग मे हमें यह भी विचार करना है कि उन सबों की विधि और विचार की शैली पर भी ध्यान देना है। भजनों को मेले का रूप न देकर विचार गोष्ठियों का रूप देना चाहिये। एक समय में व्याख्यान जितने जुड़ते विषयों पर हों, बिल्कुल असम्बन्धित विषयों पर नहीं यदि तीन दिन का उत्सव है तो एक दिन ईश्वर के स्वरूप पर विचार हो सकता है। दूसरे दिन जीव के स्वरूप पर और तीसरे दिन वेदों के सम्बन्ध में भजन और भाषणों के सम्बन्ध में भी हमें विचार करना है। भजन भावनाओं को प्रभावित करते हैं और भाषण बुद्धि को हक प्रचारकों को विचारों की खेती का रूप दे सकते हैं। यदि बीज बोने से पूर्व हल न चलाया जाय तो उपज ठीक नहीं होगी। हल चलाने से भूमि बीज बोने योग्य हो जाती है। इसी प्रकार सुन्दर भजन चित्त को एकान्त करने में सहायक होते हैं। गम्भीर और सुन्दर भजन सुनकर मानव हृदय रूपी भूमि विचार रूपी बीज को धारण करने के लिए तैयार हो जाती है। जिस प्रकार बीज बोने से पहले हल चलाना अनिवार्य है उसी प्रकार यदि बीज बोने के बाद हल चलाया जायगा तो बीज जम नहीं सकेगा। भाषणों से पहले अर्थात् आरंभ में भजन होने चाहिए। भाषणों के अन्त और मध्य में नहीं और इसी प्रकार का आदेश सार्वदेशिक सभा और प्रान्तीय सभाओं का है। परन्तु व्यवहार में इस आवश्यक नियम की अवहेलना प्रायः होती है। और इसी का यह परिणाम है कि उत्सव होते हैं धूम धाम से होते हैं भीड़ भी हो जाती है अधिकारी प्रसन्न भी हो जाते हैं। परन्तु विचारों की दृष्टि से और सिद्धान्तों के प्रचार की दृष्टि से [illegible] निष्प्रयोजन सिद्ध होते हैं। और इसी कारण पुराने आर्य समाजियों पर [illegible] का कोई रंग नहीं चढ़ता और नवीन सदस्य और श्रोता आकर्षित नहीं होते। जो आदेश इस वेद मन्त्र में है उसको चरितार्थ करने के लिए हमें अपनी विधि को गम्भीरता का रूप देना होगा। यदि गम्भीरता पर ध्यान दिया गया तो उत्सव के अन्त में अध्यक्ष महोदय को ये [illegible] देने की आवश्यकता नहीं होगी कि भाइयों जो सुना है उस पर ध्यान देना यहां पर ही पल्ले झाड़ कर न चले जाना। मैं जब कभी ऐसे शब्द सुनता हूं तो अपने मन में कहता हूं कि पहले तो हमने भी झड़वा लिये असम्बन्धित भाषण और बीच २ में भजन कराके रौनक बढ़ाई शान बढ़ाई परन्तु न ज्ञान बढ़ा न ध्यान बढ़ा जो विचार सुनने के और सुनाने के सम्बन्ध में वही पढ़ने और पढ़ाने के सम्बन्ध मे ध्यान देना योग्य है। यदि हम थोड़ा 'पढ़ें' ध्यान पूर्वक पढ़ें तो हमारी ज्ञान वृद्धि होगी। यदि हम अखण्ड पाठ की प्रथा चलायेंगे तो पुस्तक का पारायण कर्म तो हो जायगा परन्तु शब्द अर्थ और प्रयोजन में समन्वय नहीं होगा। नवीन बात का चस्का होना अच्छा है। परन्तु केवल नवीनता की रुचि पर्याप्त नहीं है। काम तो इन्हीं रात और दिन से पड़ता है। नया दिन और नई रात कभी नहीं आती दुनिया सनातन है। इसमे हर चीज अपने समय पर बार-बार सामने आती है। केवल रात और दिन ही नहीं, ऋतुयें भी बार-बार वही आती हैं। वही हम वही हमारे सम्पर्क मे आने वाली दुनिया रहती है, वही परिवार वही सहयोग देने वाले सज्जन दृष्टिगोचर होते हैं। प्रेम और रुचि वास्तविक उपयोगिता से सम्बन्धित

(शेष पृष्ठ १२ पर)

दोषी कौन ? अहल्या, गौतम, या इन्द्र !

★

[अहिल्या गौतम व इन्द्र को लेकर जो कलुषित कथायें हमें सुनने को मिलती हैं और जिन्हें अन्धविश्वास के अन्तर्गत आज तक हमारे जो भाई मानते आये हैं, उनके मौलिक लोचन इस लेख को पढ़कर अवश्य खुल जाने चाहिये और उन्हें सत्य को स्वीकार कर पाखण्ड का सर्वतः खण्डन करना चाहिये । —सम्पादक]

आर्य संस्कृति का प्रतिनिधित्व करने वाले साहित्य में वाल्मीकि रामायण का स्थान ऊँचा है। किसी जाति के इतिहास में रामायण से पुराना मानवीय जीवन का अद्भुत चित्रण नहीं मिलता।

उक्त रामायण में "अहल्या उद्धार की कथा" का उल्लेख नहीं है। हाँ अहल्या तथा उसके उद्धार की कथा तुलसी कृत रामायण बाल काण्ड में अवश्य मिलती है। जो विश्वास योग्य नहीं है, कारण कि यह अप्राकृतिक होने से अमान्य है। क्या कभी मनुष्य पत्थर बन सकता है या पुनः चरण स्पर्श मात्र से मनुष्य योनि में आ सकता है ! असम्भव। इस का उत्तर पौराणिक विद्वान् केवल ईश्वर लीला ही कहकर टाल देते हैं। यदि अधिक कहा जाय तो स्पष्ट कहने से नहीं चूकते कि आर्य समाजी तो नास्तिक होते ही है।

वास्तविकता यह प्रतीत होती है कि जब विद्वान् (महाभारत के युद्ध में मारे जाने से) बहुत ही कम रह गये और सत्य वैदिक उपदेश की परिपाटी सर्वथा लुप्त हो गई, उस समय प्रजायें अज्ञ वश मनमानी जिस तिस की उपासनायें करने लगीं। जो कुछ भी समझदार विद्वान् उस समय जहाँ तहाँ उपलब्ध थे। यद्यपि वह आर्य जनों को ब्रह्मोपासना के सही और सीधे मार्ग पर तो न ला सके, तथापि उन्होंने असंख्य प्राकृतिक देवताओं को भिन्न-भिन्न छुड़ाकर तीन देवताओं की उपासना में ही रुचि दिखायी। वह तीन देव यह है।

१. द्योलोकस्थ—सूर्यदेव
२. अन्तरिक्षस्थ—वायुदेव
३. पृथिवीस्थ—विद्युत या अग्नि-देव।

क्रम से इन्हीं तीनों के नाम विष्णु, ब्रह्मा, महादेव, रुद्र वा शिव रखे गए। इन सब विद्वानों ने यह भी उपदेश दिया कि यह तीनों यथार्थ में एक ही है। इस प्रकार सूर्य्य, वायु, अग्नि की पूजा चालू हो गई।

युग बदला बौद्ध मत का प्रचार बढ़ा, जैन मत फैला इन जैन मत वालों ने ही प्रथम इस देश में मूर्ति पूजा की रीति चलाई, वह अपने गुरु तीर्थंकरों (पारसनाथ) की मूर्ति बनाकर घण्टे घड़ियाल बजाकर स्थापित करके लोगों को आकर्षित करते थे, जो लोग इस सम्प्रदाय से घृणा करते थे उन्होंने विचारा कि जैनी घड़ियाल बजाकर भोले-भाले भाइयों को अपनी ओर खींच रहे हैं, उन्हें वहाँ जाने से रोकने के लिये उन्हें भी मूर्तियां बनानी चाहिये।

इस विचार के स्थिर होने पर (जो विद्वान् उस समय गिने जाते थे) उन्होंने तीन देवता कल्पित किये।

(१) सूर्य्य के स्थान पर विष्णु।
(२) वायु के स्थान पर ब्रह्मा।
(३) विद्युत (अग्नि) के स्थान पर—महादेव (शिव रुद्र्या) भोलानाथ

एक बात का स्मरण रहे कि उपरोक्त देवताओं के नाम उनके वाहन तथा पत्नी आदि के जो-जो नाम रखे

सिंहावलोकन

गये द्वियंक अथवा बहुअर्थक छाँटे गये जो परमात्मा का नाम भी उसमें घटित हो सके और स्त्री वाहन सन्तानादि भी उन अर्थों में सम्मिलित हो सके।

जिस समय वाल्मीकि जी ने रामायण लिखी वह युग राम को ऐतिहासिक पुरुष मानने का ही था, जिस समय तुलसीदास जी ने रामायण लिखी उस समय ईसा को ईसाई ईश्वर का बेटा कहकर अनेक कथाएं बनाकर जनता को ईसाई बनाते थे। और मुसलमानों ने कहा कि मोहम्मद खुदा का पैगम्बर है—और नारे तकबीर लगाना आरम्भ किया लोगों में प्रचार किया कि जो इन पर ईमान लाएगा उसे वह रोजे अजा निजात दिला देंगे। लोहे को लोहा काटता है। तुलसीदासजी ने तथा अन्य विद्वानों ने कहा कि हमारा राम तो साक्षात् ईश्वर है, कि जिसने पत्थर को भी तार दिया।

उक्त भावना भारतीय संस्कृति को नहीं अपितु विदेशियों के भारत में आगमन के साथ-साथ ही पनपी। इस विशेष स्थिति का सामना करने के लिये 'अवतारवाद" की सृष्टि हुई। यदि महात्मा तुलसीदास उस युग में यह प्रचार न करते तो निश्चित था कि हिन्दुओं की अनेक योनियां आज चमकती ही नहीं। उन्होंने कहा कि हमारे राम तो पत्थर तक तरा देते है इसी आधार पर यह 'अहल्या शाप वश पत्थर को उद्धार करने वाली' कथा रामायण में रखी गई प्रतीत होती है। कि जिससे जनता का विश्वास ईश्वरत्व से कम न हो। कभी न हटे। हर एक मत का वही हाल है। अहल्या गौतम की कथा राम को अवतार सिद्ध करने के लिये आधुनिक पुराण कर्त्ताओं ने पृथक-पृथक कितने हेर फेरों से अनेक प्रकार की रच दी हैं कि जिससे हमारे पूजनीय इन्द्र पर अहल्या का सत भ्रष्ट करने का आरोप लगाकर गौतम ने अपनी पत्नी अहल्या को शाप देकर पत्थर बना दिया जो राम ने फिर उसे चरण रज से जिलाया और वह स्वर्ग लोक चली गई।

—छेदालाल मीतल
८११ त्रिपोलिया बाजार जयपुर

वास्तव में अहल्या गौतम का प्रकरण रूपकालंकार है जो इस प्रकार हैं—

श्लोक—इन्द्र गच्छेति, गौ.। वदन
बम्कान्दिनन हल्यायें जारेति।
तध्यान्ये यारथ चरणानि
तेरे वेन मे तत मोचियति ॥
रेतः सोमः
(श० का० ३ प्र० ३ अ० ३)
रात्रि रादित्यस्याहित्या दयेऽन्तर्धयिते।
(निरु० अ० १२ खं० २१)
सूर्य रश्मि चन्द्रमा गन्धर्व इत्यादि
निगमो भवति, सोपि गौरुच्यते।
(नि० २/६)
जार आयाम। जार इव
भदमादित्येव जार उच्यते रात्रे जनिता एष एवेन्द्र इन्द्रपति।
(शत० का० १/८/३/१८)

अर्थ—इन्द्र गच्छेति (अर्थात् सूर्य का नाम इन्द्र) रात्रि का नाम अहल्या, तथा चन्द्रमा गौतम है। यहाँ रात्रि और चन्द्रमा का स्त्री पुरुष के समान रूपक अलंकार है। चन्द्रमा अपनी स्त्री रात्रि (अहिल्या) सुख पूर्वक सहवास करता है और सब प्राणियों को सुख देता है। और आनन्दित करता है। और रात्रि का जार (जीर्णशीर्ण) करने वाला आदित्य सूर्य (इन्द्र) है अर्थात् सूर्य उदय हो जाने पर अहल्या (रात्रि) का स्वरूप नष्ट होता है। यही इन्द्र का अहल्या से छिपकर सहवास करना है।

कैसी अच्छी रूपकालंकार कथा है जो भगवान् के भक्तों ने भक्ति प्रभाव में बहकर रूप में बदल डाली और अपने 'इन्द्र' पर भी लांछन लगा, अहल्या को श्राप वश पत्थर बना श्री राम की महिमा बढ़ाने तथा (ईश्वरावतार) सिद्ध करने के लिये उनके द्वारा पुनः स्त्री रूप बना दिया।

अब पाठक स्वयं ही विचारें कि दोष किसका है। आधुनिक पुराण रचयिताओं का या इन्द्र का।

★

अन्तरंग सभा की बैठक लखनऊ में

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश की अन्तरङ्ग सभा का आगामी साधारण अधिवेशन श्री प्रधान जी के आदेशानुसार तिथि आश्विन शु० १५ सं० २०२५ वि० तदनुसार दि० ६ अक्तूबर १९६८ दिन रविवार स्थान नारायण स्वामी भवन ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ में मध्याह्नोत्तर २ बजे से होगा। सभा के समस्त अन्तरङ्ग सदस्यों से प्रार्थना है कि वे समय पर पधार कर कृतार्थ करें।

—प्रेमचन्द्र शर्मा
मन्त्री सभा

आर्यसमाज को भारी खतरा

[केवल एकाध जात-पात तोड़क विवाह से आर्य जाति का उद्धार होने वाला नहीं है। जात पात तोड़क सम्मेलनों में केवल मौखिक दुहाई देने से काम नहीं चलेगा। यदि हम हृदय से जात पात के बन्धन में बंधी जाति का पुनरुद्धार चाहते है, तो आज इसे प्रत्यक्ष कर दिखाएँ। देखें इस भावपूर्ण लेख को पढ़कर कितने माई के लाल आगे आते हैं और कथनी को करनी में परिणत कर सजीव दृष्टांत उपस्थित करते हैं–

–सम्पादक]

—श्री संतराम बी० ए०
होशियारपुर (पंजाब)

आर्यसमाज के धार्मिक सिद्धांत निश्चय ही इस्लाम और ईसाइयत से कहीं अधिक श्रेष्ठ हैं। आत्मा की अमरता पुनर्जन्म और कर्मवाद जैसे इसके सिद्धांतों को अब पश्चिम के लोग भी मानने लगे हैं। शास्त्रार्थ में ईसाई और मुसलमान आर्य विद्वानो के सामने ठहर नहीं सकते। देश के विभाजन के पहले लाहौर में आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव पर बहुधा विधर्मियों के साथ शास्त्रार्थ हुआ करते थे। उनमें पण्डित गणपति शर्मा और श्री रामचन्द्र देहलवी जिस सुचारु रूप से मौलवी सनाउल्ला और सुबहान मसीह जैसे आदमियों को लाजवाब कर देते थे उससे वैदिक धर्म का सिक्का सबके दिलों पर बैठ जाता था। इस पर भी क्या कारण है कि इस्लाम और ईसाइयत तो भारत में दिन प्रतिदिन बढ़ती गयी, और आर्यसमाज अहिन्दू तो दूर सब हिन्दू कहलाने वालों को भी अपना न सका। इसी का परिणाम भारत का विभाजन हुआ। यह एक ऐसा प्रश्न है जिस पर प्रत्येक सच्चे आर्यसमाजी को निष्पक्ष भाव से विचार करने की आवश्यकता है।

कोई भी धर्म हो उसका उद्देश्य और उपयोगिता इस बात मे है कि उसको मानने वाले समाज में सुख और शान्ति रहे। जो धर्म समाज में जितना अधिक समता, बन्धुता और स्वतन्त्रता का भाव क्रियात्मक रूप मे लाकर लोगों को एकता के सूत्र में बांध सकता है, उतना ही वह अधिक फैलता है। इस सामाजिक बाति की तुलना मे परलोक और ब्रह्म ज्ञान की कल्पनात्मक बातें गौण सी हैं।

वर्तमान हिन्दू समाज का आधार जन्म मूलक ऊँच नीच अर्थात् जात पात पर है। यह बहुत पुराना रोग है। रामचन्द्र ने शम्बूक को इसलिये मार डाला कि वह जन्म का शूद्र होकर परमेश्वर की तपस्या करता था। द्रोणाचार्य ने एकलव्य का अंगूठा इसलिये काट डाला क्योंकि वह भील या जन्म का शूद्र था। सहस्रों वर्षों से भील गोण्ड आदि लोग भारत में बसते आ रहे हैं। कभी किसी हिन्दू राजा महाराजा ने उन्हें लिखा पढ़ाकर मानवता और समता के अधिकार नहीं दिये। हिन्दू यह तो चाहते हैं कि यह अप्रभावी लोग हिंदू कहलाएँ परन्तु रहें शूद्र, नीच अछूत ही। अछूत सवर्ण हिन्दुओं से ईपिक्टेटिस के शब्दों में पूछते है—"हमारा स्वामी बना रहने मे आप लोगों का स्वार्थ ही हो सकता है, परन्तु आपका दास बना रहने में हमारा क्या हित है?' ईसाई उनको लिखा पढ़ाकर मानवता के अधिकार देते हैं। इस लिये वे ईसाई बन रहे हैं। यह समझना भारी भूल है कि वे केवल दरिद्रता के दुःख से ही ईसाई बनते हैं। भारत के सभी मुसलमान और ब्राह्मण भी लखपति नहीं। वे इतनी बड़ी संख्या में ईसाई क्यों नहीं बनते।

एक चमार और भंगी को उसकी दरिद्रता इतनी नहीं चुभती जितना कि उसके जन्म के कारण स्वर्ण हिन्दू समाज में पग पग पर होने वाला उसका सामाजिक तिरस्कार। आर्यसमाज ने मेघों, डोमों और भंगियों को शुद्ध करके भक्त, महाशय और बाल्मीकि का नाम तो दिया, परतु सामाजिक रूप से उनको आत्मसात न कर सका। अछूत का नाम हरिजन कह देने से उनका सवर्ण समाज से पार्थक्य दूर नहीं हो गया। सहस्रों मेयो, गूजर, मूलेजाट और राजपूत 'शुद्ध' होकर हिन्दू बने परन्तु स्वयं

(शेष पृष्ठ १० पर)

सामाजिक समस्याएँ

विनोद-विन्दु

व्यंग्य-तिकड़ी

रिश्वत:—

रिश्वत देवी के भजन की बड़ी विचित्र बात
कुछ ही दिन के जाप से सब संकट कटि जात
सब संकट कटि जात लगं माया की ढेरी
मिलते बंगले कार बढ़े यूं शान घनेरी
चपरासी बैरिस्टर शासक जनता सेवी
सब पर निज प्रभाव रखत है रिश्वत देवी!

सिफारिश:—

हमने इस संसार में लिया घूम-फिर देख
बिना सिफारिश आज दिन काम बनें न एक
काम बने न एक कि इसमें झूठ न जानो
याहि तें तुम सिफारिश का प्रताप पिछानो
पदवी, अनुभव, योग्यता गुण सब ही के
सिफारिश की तुलना में हैं एकदम फीके।

कुत्ता:—

काल चक्र ने बड़ा अनोखा मोड़ लिया है
कुत्ते ने मानव को पीछे छोड़ दिया है
पीछे छोड़ दिया मानव को हार मिली है
उसको तो फुटपाथ कुत्ते को कार मिली है
नीति धर्म विवेक सबहु को छोड़ो भाई
'कुत्ता काव्य' लिखो जो चाहो मान बड़ाई!

★प्रो० ओमकुमार आर्य
एम. ए. (द्वय) दयानन्द कालेज सोलापुर

सत्य के पथ पर

सत्य की ही खोज करने के लिये, आर्यों ने जंगलों में तप किया।
यह मनुज जीवन सफल हो इसलिये प्रेमपूर्वक उस प्रभु का जप किया॥
जो वचन इक बार जिसको दे दिया, करके उसको पूर्ण दम लेते तभी।
प्राण जावें पर वचन जावे नहीं, वे नहीं निज सत्य से हटते कभी।
कहते हैं कुछ और फिर करते हैं कुछ, हम उन्हीं आर्यों की तो हैं सन्तति
इसलिये हमसे सफलता दूर है, सत्य पालन के बिना है दुर्गति॥
हमको है यदि गर्व कि हम आर्य हैं, पूर्वजों के सर्वथा ऋणदार हैं।
तो उन्हीं की मान वृद्धि के लिये, दो उन्हीं को जिनके जो अधिकार हैं।
वेद का सन्देश दे संसार को, कर सफल जीवन मनुज का तर गये।
फैलाने वाले उसी सुख सार को, आर्य 'छाजूराम' क्या हम मर गये?

श्रेष्ठ पुरुष

श्रेष्ठ पुरुष निज जीवन मे न कभी श्रेष्ठता को खोते।
देश धर्म पर मर मिटने वाले सच्चे शूर वीर होते॥
भारत के अगणित वीरों ने अपने को बलिदान किया।
धन वैभव का यहाँ उन्होंने नहीं कभी अभिमान किया॥
देश की आजादी के हित में लहू पसीना एक किया।
हानि-लाभ सुख-दुख क्या है यह मन में नहीं विवेक किया॥
ऊँचे चढ़कर नीचे गिरना नहीं कभी उन्होंने सीखा है।
उनको तो अग्नि-धुँओं का ऊपर चढ़ना ही दीखा है॥
संसार फिसलनी घाटी है कोई उठता है कोई गिरता है।
स्वारथ-परमारथ के कारण कोई जीता है कोई मरता है॥
उसका तो मरना भी जीना जो औरों के हित मे जीता।
जीवन का मूल्य समझ जिसका उपकार मे जीवन है बीता।
मानव की यही श्रेष्ठता है जिनके अन्दर हो मानवता।
पतितों का जो उद्धार करे, और तज दे सारी दानवता॥
ऊँच-नीच का भेद भुला मानव मानव से प्यार करे।
अन्यों का 'छाजूराम' नहीं अपना भी बेड़ा पार करे॥

—पं० छाजूराम 'शान्त' आर्योपदेशक
आर्य उप प्रतिनिधि सभा, फैजाबाद (उ० प्र०)

देवासुर संग्राम

[देवासुर संग्राम सृष्टि के आदि काल से चला आया है और सृष्टि के अन्त तक चलता रहेगा—इस देवासुर संग्राम का वैदिक स्वरूप क्या है, यह इस लेख में पढ़िए ! —सम्पादक]

वैदिक अनुसन्धान

ईश्वर हमारा पिता है हम भूमि के पुत्र हैं, सभी भूमि पुत्रों को भूमि पर समान अधिकार मिलना चाहिए।

मानव उत्पत्ति

क्रम

जब सृष्टि का समय आता है, तब परमात्मा परम सूक्ष्म पदार्थों को इकट्ठा करता है। अनेक स्थल अवस्थाओं को प्राप्त होते हुए क्रम से पांच स्थूल भूत जिनको हम लोग प्रत्यक्ष देखते है, उत्पन्न होते हैं। उनसे नाना प्रकार की औषधियां वृक्षादि उनसे अन्न, अन्न से वीर्य और वीर्य से शरीर होता है। परन्तु आदि सृष्टि मैथुनी नहीं होती ईश्वर भूमि के जीवों को उत्पन्न करता हैं। क्योंकि जब स्त्री पुरुषों के शरीर परमात्मा बना कर उनमें जीवों का संयोग कर देता है तदन्तर मैथुनी सृष्टि चलती है।

अवस्था

आदि में अनेक अर्थात् संकड़ों में सहस्रों मनुष्य उत्पन्न हुये और सृष्टि में देखने से भी निश्चय होता है कि मनुष्य अनेक मां-बाप की सन्तान है। आदि सृष्टि में मनुष्य आदि के युवावस्था में सृष्टि हुई थी, क्योंकि जो बालक उत्पन्न करता तो उनके पालने के लिये दूसरे मनुष्य आवश्यक होते और जो वृद्धावस्था में बनाता तो मैथुनी सृष्टि होती। इसलिये युवावस्था सृष्टि की है।

स्थल

मनुष्यों की आदि सृष्टि त्रिविष्ट अर्थात् तिब्बत मे हुई। यह आर्यावर्त्त का एक अवयव है। और अफगानिस्तान ब्रह्मा, श्याम, हिन्द चीन इत्यादि। अफगानिस्तान के पश्चिम जहां आज कल ईरान है बहुत पहले समुद्र था, जिसे पश्चिम समुद्र कहते थे। उस समुद्र से लेकर पूर्व समुद्र तक आर्यावर्त्त था। इस पूर्व समुद्र मे आजकल भारतीय द्वीप समूह पाये जाते है। यह सब द्वीप कभी आर्यावर्त्त मे शामिल थे, आर्यावर्त्त की उत्तरी सीमा हिमालय पर्वत पर स्थित तिब्बत की उत्तरी सीमा तक और दक्षिण में रामेश्वर के निकट स्थित विन्ध्याचल पर्वत तक थी, दक्षिण एवमेवास्तरे विन्ध्योऽपमिति निश्चितः। वा. रा. मद्रास मे समुद्र के किनारे-किनारे जो पर्वत है, उनका नाम विन्ध्याचल था, न कि नर्मदा के निकट। नर्मदा के निकट पर्वत का नाम शुक्तिमान था। हिमालय की तीन श्रेणियां हैं। १—अल्टाई २—ध्यानश्यान ३—गौरीशंकर।

हिमालय की मध्य रेखा ध्यानश्यान है इसके दक्षिण और पहाड़ों के भीतर और रामेश्वर पर्यन्त विन्ध्याचल के भीतर [illegible] न देश हैं इन सब को आर्यावर्त्त इसलिये कहते है कि यह आर्यावर्त्त देव अर्थात् विद्वानों ने बसाया और आर्य जनों के निवास करने से आर्यावर्त्त कहाया है। इसके पूर्व इस देश का नाम कोई भी नहीं था और न कोई आर्यों से से पूर्व इस देश मे बसते थे।

आर्यावर्त्त से भिन्न पूर्व, उत्तर, पश्चिम में रहने वालों का नाम म्लेच्छ और दक्षिण में रहने वाले मनुष्यों का राक्षस है और आर्यावर्त्त की भूमि पर रहने वालों का नाम नाग और उस देश का नाम पाताल इसलिये कहते हैं कि वह देश आर्यावर्त्त मनुष्यों के पाद अर्थात् पग के तले हैं और उनके नाग वंशी अर्थात् नाग नाम वाले पुरुष के राजा होते थे उसी उलोपी राज कन्या से अर्जुन का विवाह हुआ था। अर्थात् इक्ष्वाकु से लेकर कौरव पाण्डव पर्यन्त सब भूगोल में आर्यों का राज्य आव वेदों का थोड़ा-थोड़ा प्रचार आर्यावर्त्त से भिन्न देशों में भी रहता था।

आदि स्थान

कैलाश पर्वत पर ब्रह्मा ने एक सरोवर का निर्माण किया, इसलिये उसे मानस सर कहते हैं। यहीं पर मानस सृष्टि हुई थी। इसी को वाल्मीकि महाराज ने 'भुवनस्य नाभि' अर्थात् भुवन की नाभि कहा है, यहीं से मध्य रेखा की गणना आरम्भ होती है। सूर्य के दर्शन प्रथम-प्रथम यहां के निवासियों को हुये। मानस सर से पूर्व को ब्रह्मपुत्र, उत्तर को सिन्धु, पश्चिम को सतलज दक्षिण को सरयू नदियां निकली हैं। इन के और उनकी सहायक नदियों के किनारे-किनारे सबसे प्रथम आर्यावर्त्त मे बसे फिर आर्यावर्त्त से बाहर देशो में भी जाकर बसे। और वेदों से शब्द लेकर नदियो पर्वतों देशों और मनुष्य आदि के नाम रखे।

१—स्वायम्भव मनु

ब्रह्मदेव अर्थात् ईश्वर ने विराट् को उत्पन्न किया 'ततो विराट् अजायत'। उस विराट से भूमि के उत्पन्न होने के पश्चात् भूमि से वायव्य, आरण्य, ग्राम साध्य, ऋषि मनुष्य अनेकों उत्पन्न हुए।

सृष्टि की आदि में [illegible] अमैथुनी स्त्री पुरुषों में अग्नि वायु आदित्य अंगिरा, मनु, शतरूपा, ब्रह्मा इत्यादि प्रमुख थे। स्वयम्भू से उत्पन्न होने के कारण इनको स्वायम्भव कहते थे। स्वायम्भव मनु ही आदि मनु हैं जिनकी स्त्री का नाम शतरूपा है। वह पृथ्वी के आदि राजा हुये।

आदि राजो मनुश्च प्रजानां परिरक्षिता। वा० रा० बा ६।४

आदि मनु के मानव धर्म सूत्र का निर्माण किया जो इस समय अप्राप्य है, जिसमे वेदानुकूल गार्हस्थ्य धर्म, वर्णाश्रम राज धर्म आदि का वर्णन किया है।

ईश्वर ने अग्नि वायु आदित्य अंगिरा को चारो वेदों का ज्ञान दिया। इनसे जिसने चारों [illegible] को पढ़ा वह ब्रह्मा कहलाया। [illegible] विद्वान् हैं।

२—५ मनु

इसके पश्चात् स्वारोचिष दूसरे मनु हुये, तीसरे उत्तमोज, चौथे तामस, पांचवें रैवत और छटे चाक्षुष मनु हुये एक मनु के बाद दूसरे मनु का अन्तर ७१ चतुर्युगी रहा है।

६—चाक्षुष मनु

चाक्षुष मन्वन्तर मे ऋ० १०।९० के के मन्त्र दृष्टा एक नारायण ऋषि हुए उनका एक मानस पुत्र विरजा हुआ, विरजा के कीर्तिमान् और उनके कर्दम प्रजापति हुए, कर्दम [illegible] दो पुत्र थे। १—अनङ्ग २—सांख्य ज्ञान प्रवर्त्तक कपिल मुनि। अनङ्ग के [illegible] अतिबल हुआ, जिसका मृत्यु की पुत्री सुनीथा ब्याही थी। अतिबल के वेनु और वेनु के पृथु हुये। पृथु ऋ० १०।१४८ के मन्त्र दृष्टा थे। राजा पृथु चाक्षुष मन्वन्तर के अन्त के हुए थे चाक्षुष मन्वन्तर के अन्त में जल प्लावन हुआ।

जल प्लावन

हर मनु के अन्त में जल प्रलय है। सूर्य सिद्धांत १।१८ "मन्वन्त सर्वेषु विषमा जायते मही। म० श पर्व ५८।१२४।

जल प्रलय में भूमि का सबसे ऊं भाग शेष रहता है। उसमें थोड़े से प्र शेष रह जाते हैं। चाक्षुष मनु के अ में भी जल प्लावन हुआ। उसमें मरी प्रचेतस, अत्रि, वशिष्ठ, भृगु, पुलस्त्य

★श्री इन्द्रदेव जी
मन्त्री अखिल भारतीय आर्यसभा
पीलीभीत

पुलह, क्रतु, अंगिरस, नारद थे प्रमुख शेष बचे थे। इसलिये इन की का मानस पुत्र कहा है। कला, अनु वीरिणी (असिक्नी) इत्यादि स्त्रियां शेष रहीं थीं और भी अनेकों थीं।

मरीचिमत्र्यं गिरसौ
पुलस्त्यं पुलहं क्रतुम्।
प्रचेतसं वशिष्ठं च भृगुं
नारद मेव च ॥
एते मनन्तु सप्तान्या [illegible]
न्सृजन्भूरि तेजसः।
देवान देवनिरायांश्च
महर्षि श्चामितौजसः ॥

उपदेश मंजरी ८ वां व्याख्यान

७—वैवस्वत मनु

जल प्रलय के पश्चात् वैवस्वत मन्वन्तर आरम्भ हुआ। वैवस्वत मनु के आरम्भ से अट्ठाइस की चतुर्युगी कलियुग आरम्भ तक १२०५३८०० वर्ष हुये। इतने वर्षों का इतिहास पु परम्परा से लिखना असम्भव है। फिर स्वायम्भव आदि छै मन्वन्तरों का वर्ण तो कुछ भी नहीं मिलता है।

वैवस्वत मन्वन्तर का जो इतिहास मिल रहा है, वह भी इतिहास की सुर का आश्चर्य जनक प्रमाण प्रस्तुत है यह पीढ़ी परम्परा मे है पुत्र परम्परा से नहीं। यदि पुत्र परम्परा से नहीं यदि पुत्र परम्परा से इतिहास होता तो १२ करो वर्षों में इतने ही राजा नहीं होते जिनका वर्णन उपलब्ध है। एक एक राजा का राज्यकाल हजारों वर्षों का लिखा है। [illegible] अभिप्राय इसी राज से नहीं है [illegible] प्रतापी राजा तक का [illegible] के मध्य अनेकों साधा रण राजा [illegible] हैं जो छोड़ दिये गये हैं। जिस पीढ़ी परम्परा में जिसने राज धर्म का पालन किया और ख्याति प्राप्त की, उन्हीं के नाम आज इतिहास में पाये जा रहे हैं। [illegible] के नाम तो छो ही दिये गये हैं।

राजा

प्रजा के रंजन करने वाले—प्रत्येक प्रकार से हित करने वाले को राजा कहा जाता है जिनका राज्य पर पैतृक अधिकार नहीं होता है, प्रजा की रक्षा करने के कारण वे राजा गण प्रजा के पिता कहलाते थे। मनुष्यों के स्वयं पिता केवल जन्म देने वाले ही होते थे। किसी भी मनुष्य को किसी प्रकार पैतृक अधिकार नहीं होता था। इस राजा के पर्यायवाची निम्न शब्द हैं।

राजा राट पार्थिव क्ष्माभृन्नृप भूप महीक्षित. । अमर १४७० ।

नरेश

जो मनुष्यों को दास बनाकर रखने वाले और कृषभूमि के स्वय सर्व सर्वा मालिक, पैतृक, अधिकार के अनुयायी शासकों को नरेश कहते हैं। इसके पर्यायवाची इस प्रकार हैं—

राजा तु प्रणताशेष सामन्तः स्यादधीश्वर । अमर १४७१

ईश्वर राष्ट्री बादशाह किंग सामन्त अधीश्वर इत्यादि दैत्य दानव इसी प्रकार थे।

आर्य

'अहं भूमिमददामार्याय' वेद में परमात्मा आज्ञा देता है कि मैं आर्यों को भूमि देता हूं दस्युओं को नहीं यदि दस्यु भूमि पर कब्जा करें तो आर्यों को चाहिये कि उनसे भूमि छीन लें और उन्हें कारागार में बन्द कर दें। वहां उन्हें शिक्षा देकर आर्य बनाया जावे। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् आर्य बन जाने पर उन्हें भी भूमि दी जावे 'अर्यस्य पुत्र आर्यः' अर्य के पुत्र को आर्य कहते हैं। अर्य स्वतन्त्र सर्वाधीश ईश्वर का नाम है इसलिए निरुक्त में यास्काचार्य कहते हैं आर्याः ईश्वर पुत्राः। अर्थात आर्य ईश्वर पुत्र है क्योंकि वे ईश्वर की अमैथुन सृष्टि द्वारा उत्पन्न हुए सृष्टि की आदि में आर्य ही उत्पन्न हुए अतः उन्हें ही भूमि मिली। इन सबका एक रंग एक भाषा, एक रूप अर्थात् एक सभ्यता एक आकृति थी।

एक वर्ण, समानाषा एक रूपाश्च सर्वशः । वा० रा०

देव

मरीचि की स्त्री कला थी इससे कश्यप हुआ इसे सूर्य भी कहते हैं यह मारीच कश्यप ऋ० ९९,९६, ९१, ९२, ११३, ११४ का मन्त्र द्रष्टा है कश्यप सागर के पास ईरान की लाल मध्य भूमि इसी के समय बाहर निकली कश्यप को प्राचेतस दक्ष की तेरह कन्यायें अदिति इत्यादि ब्याहीं। बालायनी अदिति ऋ० १०७२ की मन्त्र दृष्टा हुई है अदिति से विवस्वान आदि बारह पुत्र उत्पन्न हुए जो देव कहलाये जिनके नाम ये हैं—धाता, अर्यमा मित्र वरुण, अंश भग, इन्द्र, विवस्वान पूषा पर्जन्य त्वष्टा विष्णु।

विवस्वान की पत्नी सुरेणु थी जिसे संज्ञा अथवा त्वाष्ट्री कहते हैं यह विवस्वान् ऋ० १०।१३ का मन्त्र दृष्टा है। विवस्वान् के दो पुत्र हुए १—मनु २—यम मनु ऋग्वेद ८ २७-३१ का मन्त्र दृष्टा है इसके समय में मात्स्य न्याय प्रचलित हो गया तब प्रजा ने वैवस्वत् मनु को अपना राजा बनाया अयोध्या नगरी इसी ने बसाई मात्स्य न्यायाभिभूता प्रजा मनु वैवस्वत राजान चक्रिरे कौ० अर्थ०। वैवस्वत् मनु ने आठ दिक्पालों की नियुक्ति की अपने भाई यम को न्यायाधीश बनाया यह ऋ० १०-१४ का मन्त्र दृष्टा ऋषि है अपने चाचा वरुण को जलसाध्यक्ष और वरुण को जलाध्यक्ष नियुक्त किया। पुलस्त्य के वंशज कुबेर को कोषाध्यक्ष और अग्नि द्वारा के पुत्र महादेव—ईश को सेनाध्यक्ष नियुक्त किया।

मनु की रानी श्रद्धा थी उससे इक्ष्वाकु आदि नौ पुत्र और इला नाम की कन्या का जन्म हुआ। इक्ष्वाकु से सूर्य वंश और इला से चन्द्रवंश चला।

असुर

दिति के पुत्र हिरण्यकशिपु और हिरण्याक्ष दैत्य कहलाये और मनु के पुत्र दानव दैत्य और दानवों का नाम असुर है।

देवासुर संग्राम का कारण

असुरों ने पृथ्वी को अपने आधीन कर लिया क्योंकि ये बड़े थे और देव छोटे थे, तेषा मियं वसुमती पुरासीत सवनार्णवा। वा०रा० अ० १४ १६ यही बात तैत्तिरीय ब्राह्मण ३-२९६ में मत्स्य पुराण ४७।४१ में ब्रह्माण्ड पुराण ३।७२।१ में तथा काठक संहिता ३१-८ में कही गई है।

असुराणां वा इयं पृथिव्यासीत्
ते देवा अब्रुवन दत्त नोऽस्याइति।

जब देव बड़े हुए तो उन्होंने असुरों से कुछ भूमि का भाग मांगा असुरों ने यह बात स्वीकार न की और युद्ध आरम्भ हो गया। यह युद्ध बहुत काल तक चलता रहा जो बारह देवासुर संग्राम के नाम से प्रसिद्ध है

चतुर्थ देवासुर संग्राम
मृत मथन

इस युद्ध में जब दानव राहु अमृत कलश लेकर भागा तो अदिति के पुत्र विष्णु ने उसे मार दिया।

पंचम देवासुर संग्राम
तारकामय

सत्य युग के अन्त प्रजापति सोम के राज्यकाल में बृहस्पति की स्त्री तारा के कारण यह युद्ध हुआ। इस युद्ध में प्रह्लाद के पुत्र विरोचन को इन्द्र ने मार दिया।

षष्ठ देवासुर संग्राम
आडीवक

त्रेता युग में अयोध्या के राजा बाण के साथ हुआ इस युद्ध में असुरों का सेनापति शुम्भ था। चन्द्र वंशीय राजा आयु और नहुष भी इस युद्ध में देवों के सहायक बने।

दशम देवासुर संग्राम वृत्रवध

वृत्र अर्थात् त्रिशिरा ऋ० १०.८।९ का मन्त्र दृष्टा था त्वष्टा का पुत्र था इसे विश्व रूप भी कहते थे देवराज इन्द्र ने इसे मारकर ब्रह्म हत्या के भय के कारण कहीं लुप्त हो गया, देवताओं ने देवभूमि का राजा नहुष को बना दिया।

द्वादश देवासुर संग्राम-कोलाहल

इस युद्ध में नहुष के भाई रजि ने देवों की सहायता करके असुरों को परास्त किया। और सदा के लिये युद्ध बन्द हो गये।

इन युद्धों का वर्णन रामायण और महाभारत में बार बार आया है हिरण्यकशिपु के काल से लेकर विरोचन के पुत्र बाणासुर के काल तक हुए देवों ने असुरों को परास्त करके सबके सुख के हेतु भूमि को प्राप्त किया युद्ध जीतने के लिए देवों ने बड़े प्रयास किये एक बार इन्द्र ने अपनी कन्या देकर असुरों के गुरु शुक्राचार्य को वश में करना चाहा परन्तु असफल रहे, हिरण्यकशिपु ने अपनी कन्या दिव्या भृगु को ब्याह दी उससे शुक्राचार्य पैदा हुए और असुरों ने शुक्राचार्य को अपना गुरु बना लिया। युद्ध समाप्त होने पर शुक्राचार्य को अपनी कन्या देवयानी का विवाह नहुष के पुत्र ययाति से करना पड़ा। विरोचन ने अपनी पुत्री यशोधरा का विवाह शुक्राचार्य के पुत्र त्वष्टा से किया था वे सब असुरों के पक्ष में रहे इसीलिए त्वष्टा के पुत्र वृत्र और मय (विश्वकर्मा) दोनों असुरों के पक्ष में रहे प्रलोम दानव ने भी अपनी कन्या भृगु को ब्याही उससे च्यवन पैदा हुआ नहुष ने भी अपनी कन्या रुचि को च्यवन के पुत्र अप्नुवान् के साथ विवाह दिया परन्तु भृगु वंश देवों का सहायक नहीं बना भृगु वंश बड़ा प्रतापशाली था।

इदं तु श्रूयते पार्थ युद्धं देवासुरे पुरा।
असुरा भ्रातरो ज्येष्ठा देवा श्चापि यवीयसः ॥१३॥
तेषामपि श्री निमित्तं महानासीत्समुच्छ्रयः।
युद्धं वर्ष सहस्राणि द्वात्रिंशदभवत् किल।
एकार्णवां महीं कृत्वा रुधिरेण परिप्लुताम्। जघ्नुर्दैत्यांस्तथा देवा स्त्रिदिवं चाभिसमिरे ॥१५

महा० शांति पर्व अ० ३२

आज भी भूमि असुरों के आधीन हो गयी है, यह भूमि मांगने से नहीं मिल सकती है, देवासुर संग्राम की भांति घोर परिश्रम करना पड़ेगा। इसलिये भूमिहीन भूमि के पुत्रो! उठो और देवासुर संग्राम छेड़ दो भूमि को प्राप्त कर स्वयं सुखी बनो और संसार को सुखी बनाओ।

★

(पृष्ठ ८ का शेष)

जात-पात में बुरी तरह फंसा होने के कारण आर्य समाज उनको आत्मसात न कर सका। उनके साथ रोटी-बेटी का सम्बन्ध न कर सका। इसलिए वे सब वापस लौट गये। आर्य समाजी आज अपने आप को शर्मा वर्मा, गुप्त आदि लिखते हैं। उनको किस वर्ण-व्यवस्था की कसौटी पर कस कर यह वर्ण दिये हैं? क्या वे केवल जन्म के कारण ही अपने को ऐसा नहीं लिखते? कितने आर्य समाजी हैं जो अपनी सन्तान का विवाह जात पात तोड़कर करते हैं? इसीलिए महर्षि दयानन्द को भी कहना पड़ा था:—'वर्ण-व्यवस्था, तो आज आर्यों के लिये मरण-व्यवस्था बन गई है। देखें इस डाकिन से इनका पीछा कब छूटता है।'

उत्तर प्रदेश का एक अग्रवाल बनिया आर्य समाजी पंजाब के एक सनातनधर्मी अग्रवाल को तो बेटी दे देगा, परन्तु अपने ही प्रान्त में बसने वाले एक कायस्थ आर्य समाजी को नहीं, किसी चमार से शुद्ध होकर आर्यसमाजी बने [illegible] की बात दूर रही। इसके विपरीत आप गये मुसलमान हो जायें, आपको रोटी और बेटी दोनों मिल जायगी।

इसलिये आर्यसमाज के नेताओं से मेरा निवेदन यह है कि यदि वे सचमुच आर्य समाज और हिन्दू समाज को समाप्त होने से बचाना चाहते हैं तो जात-पात को मिटाने पर सारा बल लगा दें। अन्यथा यह जात-पात रूपी यक्ष्मा धीरे-धीरे इनको समाप्त कर देगा। उपनिषद, शास्त्रों और वेदों का ब्रह्म ज्ञान इनका लोप होने से न बचा सकेगा।

★

श्री उपाध्याय जी आर्यसमाज के प्रकाश स्तम्भ थे

आर्य समाज के ९३ वर्षीय इतिहास में आदरणीय उपाध्याय जी का व्यक्तित्व बहुमुखी प्रतिमा का व्यक्तित्व था। वे एक आदर्श शिक्षक के रूप मे नवीन पीढ़ी का निर्माण करते रहे। डी० ए० वी० स्कूल इलाहाबाद के मुख्याध्यापक रूप मे उन्होंने जिन विद्यार्थियों का निर्माण किया उनमे से अनेक आज राष्ट्र के नवोन्मेश में सक्रिय भाग ले रहे हैं।

दर्शन के विद्यार्थी रूप मे आपने भारतीय एवं पाश्चात्य दर्शनों का महन अध्ययन किया था। उनके 'आस्तिकवाद' ग्रन्थ पर हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग ने मङ्गलाप्रसाद पारितोषिक प्रदान कर उन्हे सम्मानित किया था। इस प्रकार दर्शन के साथ-साथ वे हिन्दी जगत् के भी मूर्धन्य थे।

आर्य जगत् के प्रचार संगठन एवं नीति-निर्माण सभी पक्षों मे उपाध्याय जी का अभूतपूर्व योगदान रहा। एक विद्वान् वक्ता के रूप मे वे आर्य समाजों के उत्सवों में पहुंच-पहुंच कर अलख जगाते रहे। उनकी लेखनी जीवन के अन्तिम क्षण तक वैदिक धर्म का सन्देश प्रसारित करने में सक्षम रही। राष्ट्र, समाज, साहित्य, संस्कृति, धर्म, दर्शन सभी विषयों पर उनकी लेखनी ने इतना अधिक लिखा है कि चिरकाल तक हम उसका चिन्तन कर सकते हैं।

आर्य समाज के संगठन में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान और सार्वदेशिक सभा दिल्ली के प्रधान मन्त्री रूप मे उपाध्याय जी ने कर्त्तव्य पालन का जो आदर्श उपस्थित किया वह चिरकाल तक हमारे लिये अनुकरणीय रहेगा। वे समाज की दलबन्दी से ऊपर थे और सब के साथ समान व्यवहार करके आर्यत्व को जागृत करते थे। उनका एक ही सन्देश था आर्य समाज के मिशन की पूर्ति मे योग दीजिये। उन के इस सन्देश से सभी प्रभावित थे।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के वर्तमान मुख्यालय नारायण स्वामी भवन लखनऊ की कल्पना उपाध्याय जी के मस्तिष्क की ही देन है आज इस केन्द्र के कारण सारा उत्तर प्रदेश एक सुव्यवस्थित संगठन मे आबद्ध है। इस भवन के लिये उपाध्याय जी ने प्रान्त का तूफानी दौरा किया और प्रान्त में नव जीवन का सचार किया था। हैदराबाद सत्याग्रह के अवसर पर वे शोलापुर केन्द्र में जाकर बैठ गये और सत्याग्रह को सफल बनाने मे जुट गये।

—श्री उमेशचन्द्र जी स्नातक
पत भवन हल्द्वानी

उपाध्याय जी का सबसे बड़ा योगदान उनका नीति सम्बन्धी योगदान था। आर्य समाज की नीति के निर्धारण मे वे बहुत ही महत्वपूर्ण घटक थे। प्रत्येक विषम स्थिति मे सारा आर्य जगत् उनके नीति-निर्देशन की ओर आशा भरी दृष्टि से देखता था। आज के राजनैतिक युग में आर्य समाज को प्रचलित राजनीति से पृथक् रखने की नीति मे उनका उल्लेखनीय योग है। भारत से बाहर विश्व मे वैदिक धर्म का सन्देश पहुचाने मे भी उन्होंने स्वयं योगदान दिया और वे इस दिशा मे कार्य के लिये आर्य जगत् को विशेष प्रेरणा देते रहे। उपाध्याय जी के सम्मान मे महर्षि दयानन्द दीक्षा शताब्दी मथुरा के अवसर पर आर्यजगत् की ओर से राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद जी के करकमलों से अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया गया था—

आर्य जगत् मे इस प्रकार का यह सर्व प्रथम सम्मान था। वे बहुमुखी प्रतिमा के धनी थे। उनके अभाव से आर्य समाज की अपूरणीय क्षति हुई है, क्या हम उनके आदर्शों पर चल सकेंगे।

कीर्तियस्य सजीवति।

वर चाहिये

२१॥ वर्षीय वार्ष्णेय वैश्य कुमारी के लिये, जो एम० ए० फाइनल संस्कृत में पढ़ रही है तथा सुन्दर व स्वस्थ व गृहकार्य मे दक्ष है, एक २२-२५ वर्ष की आयु वाला ऐसा कुमार चाहिये जो एम० ए० या एम० एस० सी० या एम० कौम हो और रोजगार पर लगा हो या शीघ्र लगने वाला हो। फोटो व पूर्ण विवरण सहित लिखें।

७ वी—३१, ३३ ३५
—रमाशङ्कर वार्ष्णेय
१२ बापूनगर, अजमेर

जिनकी अब याद ही शेष रह गई है

२९ अगस्त को आर्यजगत के नेता धुरन्धर विद्वान्, अनेक भाषाओं के ज्ञाता अन्तर्राष्ट्रिय लेखक, महान् दार्शनिक, वाणी के धनी और आदर्श शिक्षक श्री प० गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय का निधन ८७ वर्ष की अवस्था मे (इलाहाबाद) मे हो गया। उनकी शव यात्रा मे इलाहाबाद तथा आस-पास के हजारों व्यक्ति अपनी अन्तिम श्रद्धाञ्जलियां अर्पित करने के लिये सम्मिलित हुये, जिनमें इन पंक्तियों का लेखक भी था। सयोग वश मे उस दिन हाईकोर्ट इलाहाबाद मे अपने कुछ निजी कार्य के कारण प्रयाग मे मौजूद था। मैं अगले दिन श्री उपाध्याय जी के निवास स्थान पर जाकर जिला उपप्रतिनिधि सभा बिजनौर की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित की और उनके पुत्र श्री विश्वप्रकाश जी को सम्वेदना तथा सहानुभूति का सन्देश दिया।

आर्यजगत् के लिये उनकी सेवायें भुलाई नहीं जा सकती। उनके निधन से देश ने एक उच्चकोटि का दार्शनिक और प्राच्य वेत्ता खो दिया और हम एक महान् विभूति से वञ्चित हो गये। उपाध्याय जी जैसी लम्बी आयु तो पाना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। परन्तु उनकी कथनी करनी और कृतित्व पर दृष्टिपात करने से आश्चर्य होने लगता है। उन्होंने कितने सारे अलभ्य और अमूल्य साहित्य का सृजन किया, यह सोचते ही सर चकराने लगता है। इतना व्यस्त जीवन होते हुये भी उनकी लेखनी विविध वैदिक सिद्धांतो पर तेजी से अनथक चलती रही, जिस की सराहना देश विदेशों के मूर्धन्य विद्वानो ने मुक्तकण्ठ से की है। इस दिशा मे उनका जीवन एक सम्पूर्ण जीवन कहा जा सकता है।

समाज और राष्ट्र की सेवा करने के लिये सन् १९१८ में ब्रिटिश सरकार की नोकरी छोड़कर डी० ए० वी० हाईस्कूल प्रयाग के प्रधानाचार्य बन गये और वहीं से १९३९ मे अवकाश ग्रहण किया। सरकारी नौकरी छोड़ते समय परिवार वालों तथा इष्ट मित्रों ने बहुत समझाया और उज्ज्वल भविष्य के स्वर्णिम स्वप्न भी सामने आये परन्तु आप अडिग रहे और कहा कि—

न मै काबे का मुसाफिर हू,
न मै बुत खाने का राही
सिजदा वहीं करूंगा
जहाँ देगा दिल गवाही।

उपाध्याय जी ने समस्त जीवन भर भारतीय सभ्यता और संस्कृति की वृद्धि के लिये कार्य किया। आपकी विद्वत्ता का परिचय आप द्वारा प्रस्तुत विशाल

—अमीचन्द गुप्त
उपप्रधान, उप सभा बिजनौर

साहित्य से लगाया जा सकता है हिन्दी संस्कृत, उर्दू और अंग्रेजी पर आपका पूर्ण अधिकार था। हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने आपको दार्शनिक ग्रन्थ 'आस्तिकवाद' पर मंगलाप्रसाद पारितोषिक देकर सम्मानित किया था। इसके अतिरिक्त सरकार ने तथा अन्य संस्थाओं ने कई बार आपका उचित सम्मान किया था। आप चलते फिरते विश्वविद्यालय थे। आप मिट्टी से सोना बनाने में सिद्धहस्त थे। आपके शिष्यों की एक बहुत बड़ी संख्या उत्तरप्रदेश में सर्वत्र पाई जाती है, जो आपसे प्रेरणा पाकर जाति धर्म और देश की सेवा मे संलग्न हैं। आप उत्तरप्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान तथा सार्वदेशिक सभा के मन्त्री रह चुके थे। वैदिक धर्म के प्रचारार्थ कई बार विदेश गये और प्यासी जनता को वैदिक अमृत पिलाया। जीवन भर कर्मठ परिश्रमी रहे और यह ही अपने शिष्यों को सिखलाया कि—

हर तलबगार को मेहनत
का सिला मिलता है,
धन तो क्या चीज है
ढूढ़ से खुदा मिलता है।

गिरते हुओं का सम्भालो हाथ पकड़कर चलना सिखलाया। कवि के शब्दों मे—

'नशा पिलाके गिराना तो सबको आता है,
मजा तो तब है कि गिरते को थाम ले साकी।'

ऐसे थे उपाध्याय जी
उनको शत शत प्रणाम
वह हमारे लिए आदेश छोड़ गये है कि
'जिन्दगी ऐसी बना,
जिन्दा रहे दिले शादत
तू न हो दुनिया में तो
दुनिया को आये याद तू॥'

वनिता विवेक

स्त्रियों का मानसिक रोग

श्री सुरेशचन्द्र चतुर्वेदी

कुछ महिलाए बिना रोग के ही स्वय को रोगी मानकर अनेक रोगों के जाल में फंस जाती हैं। यदि उन्हे कोई विशेष रोग नहीं है और औषधि सेवन कर रही हैं, तो भी प्रतिक्रिया स्वरूप भी रोगी बन सकती हैं। अतः हमें इस बात को विशेष ध्यान में रखना चाहिये कि हम मानसिक स्थिति दृढ़ करके रोगों के जाल में न फंसे।

जो महिलाएं शक्ति से अधिक शारीरिक व मानसिक परिश्रम करती हैं और जो हमेशा शोकातुर रहती हैं तथा जिन की शक्ति क्षीण हो गयी है और हमेशा निराश बनी रहती है जिनकी मान-हानि हुई है, अत्यन्त भय से ग्रस्त हैं या जिन पर कोई दैवी प्रकोप हो एवं अधिक सम्भोग करने से धातु क्षीण हो तथा जिनकी धातु निर्बल हो या विकृत हो एवं ओज नष्ट हो गया हो, ऐसी महिलायें प्रायः अनेक रोगों से घिरी हुई पाई गई।

लक्षण—

जिस प्रकार यह रोग विचित्र है, उसी प्रकार इसके लक्षण भी विचित्र होते हैं। हृदय में पीड़ा होने, सुई चुभने और कभी-कभी धड़कन बढ़ जाने से रोगी महिला हृदय रोग अनुभव करने लगती है जरा सी छाती में दर्द हो, तो हृदय की पीड़ा अनुभव होती है और चिन्तातुर रहने लगती है। वह समझती हैं कि मेरे सिर में कोई चीज भरी हुई है और मेरे सिर को फोड़ रही है। कई महिलायें यह समझती हैं कि मेरे पेट में सांप बैठा हुआ है, पेट को काट रहा है और बहुत सी महिलायें स्वयं के शरीर को कांच का बना हुआ समझती हैं और उस पर जरा भी आघात नहीं होने देतीं। बहुत सी तो अनेक प्रकार के विचार कर बैठती हैं और सान्त्वना देने पर ठीक अनुभव करती हैं। बहुत सी महिलायें भ्रम में ही रहती है इस प्रकार की महिलाओं से यदि कोई कह दे कि उन्हें रोग नहीं?, तो वे उसकी वैरी बन जाती हैं और यदि चिकित्सक कह दे कि तुम्हें कोई रोग नहीं है, तो वह मूर्ख सिद्ध होता है। अर्थात् इस प्रकार की महिला अनुकूल कहने वाले से प्रसन्न रहती हैं। इस प्रकार की महिला प्रायः पेट मे भयंकर पीड़ा अनुभव करती हैं। उसकी जीभ मैली, कफ से लिपी हुई होती है। श्वास मे दुर्गन्ध आती है। यदि रोग पुराना हो जाय तो उबकाई आना और उन्नति हीन के लक्षण पाये जाते हैं शरीर को छूने से शरीर रूखा अनुभव होता है। इस रोग मे ओज क्षीण होने से बुद्धि दुर्बल हो जाती है और अनेक बार कल्पना की व्याधियां पैदा हो जाती हैं।

प्रांतीय आर्य महा सम्मेलन

उत्तर प्रदेश

स्थानः-गंगा मेला गढ़मुक्तेश्वर (मेरठ)

मान्यवर महोदय,

यह सूचित करते हुये अत्यन्त हर्ष होता है कि कार्तिक सुदी द्वादशी, त्रियोदशी, चतुर्दशी, तदनुसार दिनांक २, ३, ४ नवम्बर १९६८ को गङ्गा मेले के पावन पर्व पर उपप्रतिनिधि सभा मेरठ के आतिथ्य मे प्रान्तीय आर्य महा सम्मेलन, श्री पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री सदस्य (लोक सभा) प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश की अध्यक्षता मे बड़े उत्साहपूर्वक मनाने का निर्णय किया गया है।

इस अवसर पर सुरक्षा सम्मेलन, नशा निवारण सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन किसान सम्मेलन, एव महिला सम्मेलन आदि का आयोजन किया गया है जिसमे भारत के गणमान्य शिक्षाविद्, विचारक, विद्वान् आदि भाग ले रहे हैं। इनके सारगर्भित भाषणों के साथ-साथ ही सुन्दर और सुमधुर भजनों की भी व्यवस्था की गई है।

महाशय, प्रान्त के सभी आर्यसमाजो को सादर आमंत्रित करते हुये हम अत्यधिक उत्साह एव उल्लास का अनुभव कर रहे हैं। हमे आशा ही नहीं अपितु विश्वास है कि प्रान्त के सभी आर्य महानुभाव इस पावन यज्ञ में अपना सहयोग एवं आहुति देकर हमे कृतार्थ करेंगे। आपके सहयोग पर ही हमारी सफलता आधारित है। प्रात. ९ बजे से ११ बजे तक प्रतिदिन आर्य प्रतिनिधियों तथा स्वागत समिति के सदस्यो की विचार गोष्ठियों की व्यवस्था भी की गई है। जिनका सभापतित्व प्रधान प्रतिनिधि सभा उ० प्र० करेंगे मेले पर स्वागत समिति की ओर से डेरे व छोलदारियो की समुचित व्यवस्था की गई है। कृपया अपने समाज के प्रतिनिधियों की संख्या से हमें सूचित करदें जिससे उन्हे वहां व्यर्थ का कष्ट न उठाना पड़े।

जो महानुभाव स्वतन्त्र रूप से पृथक डेरे में रहने के इच्छुक हों उन्हे उचित किराये पर इसकी भी व्यवस्था कर दी जायेगी : कृपया यह सूचना शिविर अध्यक्ष को इस पते पर दें।

कार्यालय—शिविर अध्यक्ष, प्रांतीय आर्य सम्मेलन, उ०प्र०
आर्यसमाज मन्दिर, हापुड़।

निवेदक—

डा० भगवद्दत्त गोयल स्वागताध्यक्ष	भवानीप्रसाद स्वागत मन्त्री
श्यामलाल कोषाध्यक्ष	बलवीरसिंह बेधड़क शिविर अध्यक्ष

आर्य उपप्रतिनिधि सभा मेरठ (उ० प्र०)

शिक्षा-जगत्

(पृष्ठ ६ का शेष)

हूं, केवल नवीनता से नहीं। इस भावना को अथर्व वेद के निम्न लिखित मन्त्र में बड़े सुन्दर ढंग से दर्शाया गया है:—

सनातनमेनमाहु रुताद्य
स्यात् पुनर्णवः।
अहोरात्रे प्र जायेते
अन्यो अन्यस्य रूपयो॥
अथर्व० १०।८।२३।

इस मन्त्र में ये बताया गया है कि परमात्मा ऐसा देव है जो सनातन भी अनादि कालीन और सनातन होते हुए प्रति दिन नया होता है। और ये बात भी देखनी है कि एक दूसरे के रूपों अर्थात् समान रूपो मे ही सदा पैदा होते रहते हैं। ये दुनियां सनातन और पुरानी है। परन्तु विचारक और ध्यान करने वाले के लिये नित्य नये सन्देश देती रहती है। बहती हुई नदियां ऊँचे पहाड़ चमकते सितारे सुगंधित फूल स्वादिष्ट फल सदैव हमारे सम्मुख रहते हैं परन्तु विचारक के लिये सदैव नवीन सन्देश देते रहते हैं। कभी चित्रकार और गायक इन्हीं रोज की घटनाओं से प्रभावित होते हैं। कोई कारण नहीं कि हमे आर्य समाज का सत्संग रुचिकर और आकर्षित न हो। सत्यार्थ प्रकाश की कथा सदैव प्रभाव उत्पादक माननी चाहिए। मैंने अपने अनुभव मे सत्यार्थ प्रकाश का कई बार स्वाध्याय किया है और आज कल भी कर रहा हूं। हर अवसर पर नई कठिनाई नई शंका और उत्साह प्राप्त होता रहता है। यदि उसी बात को ज्ञान पूर्वक बार-बार पढ़ा जाय तो उसमें अपने आप नवीनता प्रतीत होने लगती है। इस लेख में मैंने दो वेद मन्त्र उद्धृत किये हैं। दोनों पथ प्रदर्शन के लिये बड़े आवश्यक हैं। हम आर्य समाज के सत्संग में कर्त्तव्य समझ कर जायें ध्यान से सुने और विचार करें तो बड़ा लाभ होगा। अक्सर ये सुना जाता है कि मुसलमान मस्जिद मे और ईसाई गिर्जे मे जैनी अपने मन्दिर मे अधिक संख्या में रोज जाते हैं परन्तु आर्य समाज में ऐसा नहीं है। वे इन दोनों मार्गों पर और इनके आशय पर विचार करके हमें अपने विचार और प्रचार को दोनों को रोचक गम्भीर और आकर्षक बनाना चाहिए और ऐसा ही समझना चाहिए।

★

दशम सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन विज्ञप्ति

सम्मेलन की तिथियां

दशम सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन दिनांक ८-९ तथा १० नवम्बर को हैदराबाद के सुप्रसिद्ध औद्योगिक प्रदर्शनी (नुमाइश मैदान) के विशाल प्रांगण में होगा।

अतिथियों की आवास व्यवस्था

दशम सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन के अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बन्धित क्षेत्र की समाजों तथा भारत वर्ष की अन्य समाजों से आने वाले, संन्यासी महात्मा, विद्वान्, तथा कार्यकर्त्ताओं व आगन्तुकों के आवास के लिये उत्तम व्यवस्था की जा रही है। हैदराबाद के दोनों रेलवे स्टेशनों अर्थात् नामपल्ली (डाकगंज) और काचीगुडा (मोटरगंज) पर स्वागत सम्बन्धी कार्यालय रहेंगे और स्वयं सेवकों की भी व्यवस्था की जा रही है। जो आने वाले आगन्तुकों को सम्मेलन पण्डाल तक पहुंचाएंगे।

भोजन व्यवस्था

आगन्तुकों को भोजन व अल्पाहार की सुविधा के लिए पण्डाल में भोजनालयों और प्रातः राश के निमित्त होटलों का प्रबन्ध किया जा रहा है। जिससे आने वालों को किसी प्रकार का कष्ट न हो सके।

सम्मेलन के अध्यक्ष का ऐतिहासिक नगर परिक्रमा (जुलूस)

दिनांक ८ नवम्बर ६८ मध्याह्न २ बजे दशम सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन के मनोनीत अध्यक्ष का भव्य आकर्षक और ऐतिहासिक तथा भारतीय परम्परा अनुरूप जुलूस निकाला जायगा।

समस्त आर्यसमाजों से अनुरोध है कि सम्मेलन में सम्मिलित होते समय ओ३म् का ध्वज (जो सार्वदेशिक सभा से निर्धारित है।) को लाएं। अन्य प्रकार के ध्वज स्वीकृत नहीं होंगे। प्रत्येक समाज को अपने साथ समाज के नाम का पर्दा भी लाना होगा।

समाज व आर्य संस्थाएं अपनी आर्थिक सुविधानुसार ब्याण्ड भी ला सकेंगे।

सम्मेलनों का आयोजन

दशम सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन के अवसर पर—

१—वेद सम्मेलन, २—आर्य महिला सम्मेलन, ३—शिक्षा सम्मेलन, ४—रक्षा सम्मेलन, और आर्यवीरदल सम्मेलन का आयोजन किया है।

आर्यवीर सेवादल सम्मेलन में नवयुवक अधिक संख्या में भाग लेवें। जिससे वे भावी नेतृत्व अपने हाथ में लेकर देश तथा आर्यसमाज में पुनः नयी क्रांति तथा जागृति का सूत्रपात कर सकें।

प्रस्ताव तथा सुझाव भेजें

दशम आर्य महासम्मेलन को सफल बनाने के निमित्त आर्य समाजें, आर्य विद्वान् आदि अपने प्रस्ताव व सुझाव स्वागत समिति महर्षि दयानन्द मार्ग सुलतान बाजार हैदराबाद व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन रामलीला मैदान, नई दिल्ली—१ के पते पर भेजें। यह सब इस मास के अन्त तक प्राप्त होजाना चाहिये।

दान ही सर्व श्रेष्ठ कर्म है

दशमार्य महासम्मेलन की सफलता के फलस्वरूप दक्षिण में आर्यसमाज के भावी कार्यक्रम को जारी रखने और इस सम्मेलन को दृष्टि से सफल बनाने के लिये जो एक लाख रुपये की योजना स्वागत समिति द्वारा प्रकाशित की गई है यदि आर्यजन और दानी महानुभाव पूर्ति का संकल्प करें तो शीघ्र होसकेगी। आशा है दानी महानुभाव अपने इस कर्त्तव्य पूर्ति का ध्यान रखेंगे।

समाजें सम्मेलन पर आने वालों की संख्या भिजावें

आगन्तुक महानुभावों के आवास और सुख सुविधा के उत्तम प्रबन्ध के लिये आवश्यक है स्वागत कारिणी को आने वाले महानुभावों की संख्या का भी पता हो जावे।

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण क्षेत्र से सम्बन्धित समाजें तथा अन्य प्रान्तों की समाजों के मन्त्री आदि अधिकारियों से अनुरोध है कि वे अपनी २ समाजों से आने वाले आर्य महानुभावों की संख्या का ज्ञापन करावें। उनकी सूचना उपर्युक्त पते पर कार्यालय को १० अक्तूबर ६८ तक प्राप्त हो जानी चाहिये।

गोंडा की अपहृत लडकी कानपुर मे बरामद बेचने वाले फरार

२४-९-६८ कानपुर नगर के सुप्रसिद्ध आर्य नेता श्री देवीदास आर्य (सभासद नगर महापालिका) के साहस व प्रयत्न से गोंडा से अपहृत की गई १६ वर्षीया युवती श्रीमती तारा पाण्डे को स्थानीय हीरामन का पुरवा बेगमगंज स्थित दोस्त मोहम्मद के मकान में बरामद की गई। श्री आर्य ने तारादेवी को तुरन्त थाना जनरलगंज पुलिस के द्वारा हिन्दू अनाथालय भिजवा दिया। बताया गया है तारादेवी का कम दहेज लाने पर ससुराल वाले प्रायः यातनायें दिया करते थे। उसकी इस विवशता का लाभ ए० गुण्डा ने उठाया और वह उसको इस बहाने से भगा लाया कि वह उनको उनके पुलिस कान्स्टेबल मामा रामतीर्थ पाठक के यहां लखनऊ पहुंचा देगा। यह गुण्डा एक रिक्शा चालक बताया जाता है। उसने तीन दिन तक एक मकान में बन्द रखकर लड़की को बेचने का कार्यक्रम बनाया। यह देखकर लड़की ने आधीरात में चिल्लाना शुरू कर दिया। तब यह रहस्य प्रकट हो गया।

कुछ लोगों ने आर्य समाजी नेता श्री देवीदास आर्य को इसकी सूचना दी। वह कुछ व्यक्ति लेकर दोस्त मोहम्मद के मकान पहुंचे और अत्यन्त बुद्धिमत्ता से लड़की को बरामद कर लिया।

सभा भवन में दैनिक यज्ञ प्रारम्भ

आर्यप्रतिनिधि सभा के नारायण स्वामी भवन की विशाल यज्ञशाला में सर्वदा प्रातः सन्ध्या हवन प्रवचन हुआ करता था, पर इधर लगभग डेढ़ वर्ष से यह पुनीत कार्य बन्द था। अब यह पुनः प्रात ६ बजे से प्रारम्भ करा दिया गया है। महिला वर्ग के लिये सत्संग का साप्ताहिक अधिवेशन भी प्रति सोमवार को मध्याह्न के ४ बजे इसी यज्ञशाला में नियमित होता है। अतः प्रेमी पुरुष व देवियों को इसमें सम्मिलित होकर लाभ उठाना चाहिये।

—प्रेमचन्द्र शर्मा
सभा मन्त्री

शोक समाचार

आर्यसमाज ... के पुराने ... कार्यकर्ता प० शान्ति स्वरूप जी का देहान्त ... पर ... शोक सहानुभूति का प्रस्ताव पास किया। ... मास के बड़े मितव्ययी थे। —मन्त्री

... आर्य कन्या पाठशाला खुर्जा ने कुमारी कला ... एम० ए० ... कन्या पाठशाला खुर्जा के ... निधन पर शोक सहानुभूति का प्रस्ताव पास किया। —मन्त्री

—शाहजहांपुर निवासी श्री ब्रह्मदत्त व धर्मदत्त जी की पूज्य माता जी, जिनकी आयु लगभग ९० वर्ष की थी, का स्वर्गवास १४-८-६८ को प्रातःकाल अलीगढ़ में हुआ। उनका यह अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ

शोक प्रस्ताव

स्वामी अथर्वानन्द (म. रामगोपाल जी) रामपुर का निधन

आर्य समाज के महान् तपोनिष्ठ मूक कर्मठ कार्यकर्ता श्री स्वामी अथर्वानन्द जी का दि० २४-८-६८ को आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर में ८३ वर्ष की आयु में निधन हो गया।

रामपुर तथा ज्वालापुर के आर्य समाज मन्दिर आपकी यादगार हैं। आपके पास जो कुछ भी धन था इन मन्दिरों के निर्माण में लगा दिया तथा जनता से भी पर्याप्त धन मांग कर मन्दिर निर्माण में लगाया। ऋषिकेश वैदिक आश्रम के अध्यक्ष के रूप में भी आपने भारी काम किया। एक वर्ष तक आपने आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर के प्रधान पद को भी सुशोभित किया। देश व धर्म को जब-जब आपकी आवश्यकता पड़ी आपने आगे बढ़कर अपनी कुर्बानी प्रस्तुत की।

२५ अगस्त को आपके शव की शोभा यात्रा वानप्रस्थाश्रम के विमान पर निकाली गई। आश्रम से कनखल श्मशान तक लगभग २५० वानप्रस्थी नर-नारी गायत्री मन्त्र का जाप करते जा रहे थे। पूर्ण वैदिक रीति से आपके नश्वर शरीर का अन्तिम संस्कार किया गया।

रामपुर के अनेक सज्जन आपकी बीमारी का समाचार सुनकर दौड़ते चले आये और अन्त्येष्टि समाप्ति तक स्वर्गीय स्वामी जी की केवल पावन स्मृति साथ लेकर रामपुर सिधारे। ज्वालापुर आर्य समाज के भी अनेक नर-नारी शव-यात्रा के साथ चल रहे थे। सायं को आश्रम के सत्संग में पं० शिवदयालु जी व श्री आनन्द जी ने स्वामी जी के प्रति भावभीनी श्रद्धाञ्जलियाँ समर्पित कीं।

स्व. पं. गंगाप्रसाद जी उपाध्याय प्रयाग के निधन पर शोकसभा

आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान् प्रौढ़ वक्ता, गम्भीर विचारक, सिद्ध हस्त लेखक एवं मान्य नेता श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय के निधन समाचार को सुनकर सारे वानप्रस्थाश्रम में शोक छा गया। पं० जी का आश्रम के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध था। पीछे कई मास आश्रम में रहकर आपने आर्य सिद्धांतों की गम्भीर विवेचना की। ज्ञान गोष्ठियों में आप अन्य दम्पुत्रों की जिज्ञासा निवृत्त करते थे। आपके निधन से आर्यसमाज की नौका को सही दिशा में खेने वाले एक चतुर खेवट का भारी अभाव हो गया है।

परमात्मा आपकी आत्मा को चिर शांति प्रदान करें।

—शिवदयालु
आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर

आर्य समाज अमेठी के प्रधान का निधन

अमेठी (सुल्तानपुर) के जनप्रिय वकील श्री चन्द्रभान रायजादा का २९ अगस्त को रात्रि में १० बजे प्रयाग के मेडिकल कालेज में शरीरांत हो गया।

श्री चन्द्रभान जी अपनी सच्चाई और ईमानदारी के लिये प्रसिद्ध थे। मुकदमों में जब पैरवी नहीं होती थी और तारीख बढ़ जाती थी, तब ली हुई फीस लौटा दिया करते थे। उन पर सब का समान विश्वास था तथा अजात शत्रु माने जाते थे। उनके निधन का वृत्त पाते ही अमेठी की जनता शोक सागर में डूब गई। शोक सभायें हुईं और स्थानीय कचहरी, बाजार एवं स्कूलादि सभी बन्द कर दिये गये।

श्री चन्द्रभान जी का अनेक संस्थाओं से सम्बन्ध था। आर्यसमाज अमेठी के प्रधान थे, और रणवीर रणंजय डिग्री कालेज के प्रारम्भ से ही अवैतनिक सचिव तथा श्री रणवीर शिक्षा प्रचारिणी सभा के अवैतनिक प्रबन्धक थे।

उनकी अन्त्येष्टि संस्कार के समय अमेठी के राजा रणंजयसिंह, सेठ मातादीन, कालेज स्कूलादि के प्राचार्य प्रभृति अमेठी के सैकड़ों गण्यमान सज्जन प्रयाग पहुंच गये।

—रामकिशोर शास्त्री

पं० कालीचरण जी भी गये!

आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् शास्त्रार्थ महारथी पं० कालीचरण जी मौलवी फाजिल का देहावसान १४ सितम्बर ६८ को हो गया।

माननीय पं० भोजदत्त जी के आर्य मुसाफिर विद्यालय, आगरा के उज्ज्वल रत्न माननीय पं० जी सम्पूर्ण जीवन पर्यन्त वेद का प्रचार और विरोध रूप से वेद के विरोधियों से लोहा लेते रहे। उनके देहावसान से अपूर्णीय क्षति हुई है।

परम पिता परमात्मा दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

—शिवधर
आर्यसमाज मेस्टन रोड कानपुर

वैदिक धर्म परायणा श्रीमती रूपकुमारी जी का देहावसान

अत्यन्त दुःख है कि आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध अजमेर निवासी श्री सुजानसिंह जी के सुपुत्र स्व० श्री मोतीसिंह जी कोठारी की धर्म पत्नी श्रीमती रूपकुमारी जी का ५ सितम्बर को ८८ वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आप कुछ समय से लगातार रुग्ण थीं। आप का अन्त्येष्टि संस्कार वैदिक रीति से आपके सुयोग्य दत्तक पुत्र श्री सरदारसिंह जी ने बड़ी श्रद्धा पूर्वक सम्पन्न किया।

महिला आर्यसमाज कांठ की प्रधाना के पतिदेव श्री पं० वासुदेव जी दीक्षित को हृदय गति रुक जाने से मृत्यु हो गई। इस पर उनके निधन पर कांठ की महिला आर्य समाज शोक प्रकट करती है।

तथा ईश्वर से प्रार्थना करती है कि वह दिवंगत आत्मा को शान्ति दें।

—आर्यसमाज डुमरियागंज ने नगर के पुराने आर्यसमाजी एवं सामाजिक कार्य कर्ता श्री शिवदीन जी के असामयिक निधन पर शोक प्रकट किया।

—आर्यसमाज रामपुर ने श्री स्वामी अमृतानन्द जी की मृत्यु पर शोक सहानुभूति का प्रस्ताव पास किया।

—मन्त्री

—दुःख है कि मेरी पत्नी का २ फरवरी सन् १९६६ में देहान्त हो गया।

—कृष्णलाल आर्य प्रचारक
गोलाघाट गाजीपुर

उत्सव

गुरुकुल वैद्यनाथधाम का वार्षिक महोत्सव

गुरुकुल महाविद्यालय, वैद्यनाथधाम का वार्षिक महोत्सव बड़े समारोह के साथ ४ से ७ अक्तूबर १९६८ तक सम्पन्न होने जा रहा है। इस अवसर पर ब्रह्मचारियों के विभिन्न प्रकार के क्रीड़ा प्रदर्शन (आसन भू समाधि, स्तूप निर्माण, लेजिम, ड्रील आदि) भाषण प्रतियोगिता, आर्य सम्मेलन कवि सम्मेलन, भजनोपदेश आदि के आकर्षक कार्यक्रम आयोजित होंगे।

—मुख्याधिष्ठाता

—आर्यसमाज गोंडा ने अपनी साधारण बैठक दिनांक १५-९-६८ को सर्व सम्मति से तय किया है कि इस साल आर्यसमाज गोंडा का वार्षिक उत्सव दिनांक १४ नवम्बर से १७ नवम्बर सन् ६८ तक मनाया जाए।

—आर्य समाज फैजाबाद का ७७ वां वार्षिक महोत्सव ९ नवम्बर से १८ नवम्बर तक (१० दिन) होगा। प्रातः सामवेद-पारायण यज्ञ तथा सायंकाल ७ बजे से ८॥ बजे तक भजनोपदेश कुं० वीरेन्द्रसिंह "वीर" तथा ८॥ बजे से १० बजे तक प्रवचन श्री स्वा० आनन्द गिरि जी महाराज तथा यथावसर श्री विक्रमादित्य जी 'वसन्त' तथा श्री शांति प्रकाश शास्त्रार्थ महारथी के भाषण होंगे।

—ज्ञानेन्द्र भटनागर
मन्त्री

—वेद मन्दिर चांदपुर (बिजनौर) का वार्षिक सामवेद पारायण यज्ञ गत वर्षों की तरह इस वर्ष भी ता० ६ अक्तूबर से १३ अक्तूबर तक महात्मा प्रेमचन्द्र जी (भक्त) की अध्यक्षता में मनाया जायेगा।

—वेद प्रचार मण्डल गोविन्दनगर कानपुर का वार्षिक उत्सव दिनांक ३, ४ व ५ नवम्बर ६८ को होना निश्चित हुआ है। जिसमें आर्यजगत् के उच्च कोटि के संन्यासी, विद्वान् एवं भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

—मन्त्री

महान् दयानन्द

★ रवीन्द्र कुमार पाण्डेय
एम. ए. (अर्थशास्त्र, राजनीति एवं समाजशास्त्र)

"दयाया आनन्दो विलसति
परः स्वात्म विदितः
सरस्वत्यस्याग्रे निवसति
मुदा सत्यनिलया।"

महर्षि दयानन्द से पूर्व भारत अंध-विश्वास, अनार्य साहित्य, वेद विरुद्ध मन्तव्यों के गहन पाश में फँसकर अपने सत्य सनातन वैदिक धर्म का स्वरूप खो चुका था। ईसाई और मुसलमान हिन्दुओं के देवी देवताओं आदि की मर-पेट निन्दा कर रहे थे। अनेकों सम्प्रदाय चार्वाक, बौद्ध, जैन, वाममार्गी, नास्तिक, वैष्णव, गणपत्य सौर्य, गो स्वामी, वैरागी, दादू, निर्मले, रामस्नेही कबीर, नानक, पन्थी आदि अपने धर्म को सर्व श्रेष्ठ बतलाकर आर्य जाति को पथ भ्रष्ट करने मे संलग्न थे। वर्ण व्यवस्था तथा आश्रम व्यवस्था की मर्यादा समाप्त होकर उसका स्थान जाति भेद ने ले लिया था। नारी का समाज में कोई स्थान न था। न वह विद्या पढ़ सकती थी और न उन्हें कोई सामाजिक कार्य करने की स्वतन्त्रता। विधवाओं की स्थिति तो अपनी परा-काष्ठा की सीमा ही पार कर चुकी थी। बाल विवाह, बहु विवाह आदि अनेकों बुराइयाँ समाज मे आ चुकी थीं। यह थी स्थिति, जब महर्षि दयानन्द का आविर्भाव हुआ।

महर्षि दयानन्द १८ वीं शताब्दी के "सबसे बड़े वेद के विद्वान्, धर्म प्रचारक, समाज संशोधक, देशोद्धारक, और सर्वतोमुख सुधारक" थे।

उनका जन्म गुजरात प्रान्त के टंकारा ग्राम मे सन् १८२४ में हुआ था। मूल नक्षत्र मे उत्पन्न होने के कारण प्रारम्भिक नाम मूलशंकर रक्खा गया। उनके पिता का नाम पण्डित कर्शन जी तिवारी तथा माता का नाम अमृत बाई था। पण्डित कर्शन जी बड़े जमींदार, बैंकर तथा मोरवी राज्य के एक अधिकारी थे।

शिवरात्रि के पर्व पर जब मूल-शंकर की आयु केवल १४ वर्ष की थी उनके पिता उन्हें शिव मन्दिर में रात्रि जागरण और शिव पूजा के लिये अपने साथ ले गये। अर्ध रात्रि के उपरान्त जब पुजारी आदि सो गये तो एक चूहा बिल से निकला और शिव की मूर्ति पर चढ़कर भोग खाने लगा। यह देखकर मूलशंकर ने सोचा कि जो मूर्ति अपनी रक्षा एक चूहे से नहीं कर सकती, वह संसार की रक्षा का भार कैसे उठा सकेगी? उन्होंने उसी समय पिता को जगाकर सन्देह प्रकट किया, किन्तु डाँट डपट के सिवाय कुछ न मिला। छोटी सी अवस्था ही में यह निश्चय कर लिया कि जब तक सच्चे शिव का पता न लगा लूँगा, शान्त न बैठूँगा।

जब मूलशंकर की आयु १६ वर्ष की थी तब उनकी छोटी बहन की हैजा से मृत्यु हो गई इस मृत्यु को देखकर जब सब रो रहे थे, बालक मूलशंकर एक कोने में वहीं स्तब्ध खड़ा हुआ मृत्यु से छुटकारा पाने का उपाय सोच रहा था। इसके तीन वर्ष बाद उनके चाचा जो उन्हें बहुत प्यार करते थे वह भी विशूचिका से मृत्यु के ग्रास बने। इससे उनका वैराग्य और भी दृढ़ हो गया।

मूल शंकर को निश्चय हो गया कि 'इस असार संसार में कोई पदार्थ नहीं, जिसके अर्थ जीने की इच्छा की जाय व किसी पर मन लगाया जावे।' उन्होंने घर छोड़ा, सब कष्ट प्रसन्नता से सहन करते हुए ज्ञान और बल की वृद्धि में वे जुट गये। वह प्राचीन विश्वविद्यालयों की ओर भी गये जहां वह शिक्षा और दीक्षा पा सकते थे। उन्होंने पूर्णानन्द सरस्वती नामक विद्वान् संन्यासी से संन्यास लिया और मूलशंकर से दयानन्द सरस्वती बनकर योग सीखना प्रारम्भ कर दिया। नर्मदा तट से लेकर हिमालय की कन्दराओं तक जहां जो शिक्षा मिली, वह ग्रहण करते रहे।

मथुरा में उन्हें एक योगी विद्वान् गुरु विरजानन्द प्रज्ञाचक्षु मिले। उनके 'तीन वर्ष में व्याकरण आता है' कहने पर अष्टाध्यायी, महाभाष्य, वेदान्त सूत्र आदि आर्ष ग्रन्थ पढ़े। विद्याध्ययन समाप्ति पर गुरु आज्ञा ली।

पण्डित लेखराम जी के सम्पादित किये जीवन चरित्र मे जो शब्द दिये हैं वह बहुत कुछ स्वाभाविक हैं। गुरु विरजानन्द के शब्दों का भावार्थ था—

"देश का उपकार करो। सतत् शास्त्रों का उद्धार करो। मत मतान्तरों की अविद्या को मिटाओ और वैदिक धर्म फैलाओ" अन्त में आशीर्वाद देते हुये यह भी कहा—"मनुष्य कृत ग्रन्थों में परमेश्वर और ऋषियों की निन्दा है, और आर्ष ग्रन्थों मे नहीं इस कसौटी को हाथ से न छोड़ना।"

महर्षि दयानन्द की तुलना में, वैदिक संस्कृत का उद्भट विद्वान्, जगत-गुरु स्वामी शंकराचार्य के पश्चात् कोई पैदा नहीं हुआ। फिर भी महर्षि दयानन्द का कहना था कि यदि गौतम तथा कणाद ऋषियों के समय मे वे होते तो ऋषि गण इनको अपने यहां धोती धोने के लिये भी नौकर न रखते।

वास्तविकता यह थी कि राजा राममोहनराय, स्वामी विवेकानन्द इत्यादि जितने भी अन्य संशोधक हुये हैं, वे गीता तथा उपनिषदों तक ही सीमित रहे।

लाला लाजपतराय जी ने लिखा है कि "रचना का काम वास्तव में उन्होंने १८७४ ई० मे आरम्भ किया और १८८३ ई० मे उनका देहान्त हो गया। मानो दो तीन छोटे २ ट्रैक्टों के सिवा जो १८७४ से पहले छप चुके थे, शेष सब पुस्तकें सत्यार्थ-प्रकाश, संस्कार विधि, वेद भाष्य, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका वेदाङ्ग प्रकाश, अष्टाध्यायी की टीका आदि, सब इन्हीं ९ वर्षों के परिश्रम का फल है, और यह ९ वर्ष वह हे जिनमे उन्होंने स्थान स्थान पर आर्यसमाज स्थापित कर अपने उपदेशों से उनकी पुष्टि की। इन्हीं वर्षों में स्वामी जी ने पंजाब प्रान्त, पश्चिमोत्तर प्रदेश व अवध, बंगाल, मध्यप्रदेश बम्बई और राजपूताने देश मे भ्रमण भी किया। इन्हीं ९ वर्षों में उन्होंने बड़े बड़े शास्त्रार्थ भी किये। और इन्हीं ९ वर्षों में वह सब रचना भी रची, जिसको देख हम हैरान होते हैं।"

मोहम्मद साहब मृत्यु के समय अत्यन्त दुःखी थे, हजरत ईसा भी काल की व्यथा से व्यथित होकर कह गये थे कि "हे पिता! क्या तू मुझे भूल गया।" किन्तु महर्षि दयानन्द के अन्तिम शब्द कितने महान् थे—'हे ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो, तेरी इच्छा पूर्ण हो, तूने अच्छी लीला की।'

स्वामी दयानन्द की मृत्यु का समाचार पाकर सर सैय्यद अहमद खां ने लाहौर के 'कोहेनूर' मे लिखा था कि "निहायत अफसोस की बात है कि स्वामी दयानन्द साहिब ने जो संस्कृत के बहुत बड़े आलिम और वेद के बहुत बड़े मुहक्किक थे। ३० वीं अक्टूबर १८८३ को ७ बजे शाम के अजमेर मे इंतकाल किया। इलावा इल्म और फज़ल के निहायत नेक और दरवेश सिफत आदमी थे। इनके मुतअल्लकात इनको देवता मानते थे और बेशक वह इसी लायक थे। वह सिर्फ ज्योति स्वरूप निराकार के सिवा दूसरे की पूजा जायज़ नहीं रखते थे। हमसे और स्वामी दयानन्द मरहूम से बहुत मुलाकात थी। हम हमेशा उनका निहायत अदब करते थे। क्यों कि ऐसे आलिम और उम्दा शख्स थे कि हर एक मजहब वाले को इनका अदब लाज़िम था। बहरहाल ऐसे शख्स थे, जिनका मसल इस वक्त हिन्दुस्तान मे नहीं है, और हरेक शख्स को उनकी वफात का गम करना लाज़िम है। कि ऐसा बेनजीर शख्स इनके दर्मियान से जाता रहा।"

थियासोफिकल सोसाइटी के संस्थापक कर्नल अल्काट ने लिखा था 'स्वामी जी महाराज निःसन्देह एक महान् पुरुष और संस्कृत के बड़े विद्वान् थे। उनमे ऊँचे दरजे की योग्यता दृढ़ निश्चय और आत्मिक विश्वास का निवास था। वह मनुष्य जाति के मार्ग दर्शक थे। वह अत्यन्त सुडोल दीर्घाकार अत्यन्त मधुर स्वभाव और हमारे साथ व्यवहार मे दयाशील थे। हमारे दिमाग पर उन्होंने बहुत गहरा असर छोड़ा है।'

विलायत मे समाचार पहुंचा तो संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान् प्रोफेसर मैक्स-मूलर ने 'पाल माल' गजट में एक लेख लिखा। उस लेख मे प्रोफेसर महोदय ने स्वीकार किया कि 'स्वामी जी वैदिक साहित्य के बड़े भारी पंडित और प्रसिद्ध सुधारक थे। प्रोफेसर साहिब ने लिखा कि जहाँ कहीं भी शास्त्रार्थ हुआ, स्वामी दयानन्द का ही विजय हुआ।'

मैडम ब्लावट्स्की ने लिखा है कि, 'यह निरन्तर सत्य है कि स्वामी शंकरा-

आर्य्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल.-६०

वार्षिक १४ शक १८९० आश्विन शु० १५
(रविवार ६ अक्तूबर सन् १९६८)

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

Registered No. L. 60
पता—'आर्य्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष : २५९९३ तार : "आर्यमित्र

के अनुसार भारत में स्वामी दयानन्द से अधिक संस्कृत का विद्वान् उससे बढ़कर प्रत्येक बुराई को उखाड़ने वाला, उससे अधिक विचित्र वक्ता, उससे गहरा दार्शनिक पुरुष उत्पन्न नहीं हुआ।'

प्रसिद्ध विद्वान् रोमो रोला (Romain Rolland) ने लिखा है 'Dayanand Saraswati was a personality of the highest order This man with nature of a lion is one of those whom Furope is too apt to forget when she judges India, but whom She will probably be forced to remember to her cost, for he was the rare combination a thinker of action with a genious of Leadership,

कवि सम्राट रवीन्द्रनाथ टैगोर ने अपनी श्रद्धांजलि में लिखा—'मेरा सादर प्रणाम हो उस महान् गुरु दयानन्द को जिसकी दृष्टि ने भारत के आत्मिक इतिहास में सत्य और एकता को देखा, जिसके मन ने भारतीय जीवन के सब अङ्गों को प्रदीप्त कर दिया। जिस गुरु का उद्देश्य भारतवर्ष को अविद्या आलस्य और प्राचीन ऐतिहासिक तत्त्व के अज्ञान से मुक्त कर सत्य और पवित्रता की जागृति में लाना था उसे मेरा बारम्बार प्रणाम है।'

महात्मा गान्धी ने लिखा है कि 'महर्षि दयानन्द के लिये मेरा मन्तव्य यह है कि वे हिन्द के आधुनिक ऋषियों में, सुधारकों में, श्रेष्ठ पुरुषों में एक थे, उनका ब्रह्मचर्य, उनकी विचार स्वतन्त्रता उनका सबके प्रति प्रेम, उनकी कार्य कुशलता इत्यादि गुण लोगों को मुग्ध करते थे। उनके जीवन का प्रभाव हिन्दुस्तान पर बहुत हो पड़ा।'

लाला लाजपतराय ने लिखा है कि 'स्वामी दयानन्द मेरे गुरु हैं मैंने संसार में केवल इन्हीं को एकमात्र अपना गुरु माना है, वह मेरे धर्म के पिता हैं और आर्य समाज मेरी धर्म की माता है। इन दोनों की गोद में मैं पला और अपने हृदय और मस्तिष्क को ढाला। मुझे इस बात का अभिमान है कि मेरा गुरु बड़ा स्वतन्त्र मनुष्य था उसने हमको स्वतन्त्रतापूर्वक विचार करना, बोलना और कर्त्तव्य पालन करना सिखाया। मुझे इस बात का भी गर्व है कि मेरी माता ने मुझको एक संस्था में बद्ध होकर रहना सिखाया।'

श्री खदीजा बेगम एम० ए० ने लिखा है कि 'महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज भारत माता के उन प्रसिद्ध और उच्च आत्माओं में से थे जिनका नाम संसार के इतिहास में विशेषतया भारत के इतिहासाकाश में सदैव के लिए एक चमकते हुए सितारे की तरह प्रकाशित रहेगा। वह भारत माता के उन सपूतों में से हैं जिनके व्यक्तित्व पर जितना भी अभिमान किया जावे थोड़ा है। स्वामी जी बड़े निडर और पूर्ण सत्य सम्पन्न थे अगर वह भारत वर्ष में पैदा न हुये होते तो आज हमको महात्मा गांधी जी, महात्मा तिलक और लाला लाजपतराय जैसे देश भक्तों के दर्शन भी न होते।

रेवरेन्ड टी० डी० सले ने लिखा है कि "भारतीय विचार और धर्म के आदि स्रोत वेदों में स्वामी दयानन्द ने सारे आत्मिक उच्च सिद्धान्तों का बीज और केन्द्र पाया। एक ईश्वर में विश्वास जो कि सर्वज्ञ और न्यायकारी है सबका आदिकारण तथा सत्ता चैतन्य और आनन्द इन तीनों गुणों का आश्रय सच्चिदानन्द है यह ईश्वर सम्बन्धी सर्वोच्च वैदिक सिद्धान्त है—इस सिद्धान्त को सामने रखकर उन्होंने हिन्दुओं के पिछले ऐतिहासिक सम्प्रदायों की वर्तमान हिन्दू धर्म की और अन्य भारतीय मतों की आलोचनात्मक परीक्षा की जिसे उन्होंने सच्चाई समझा उसे स्वतन्त्रतापूर्वक स्वीकार किया तथा जिसे निकृष्ट और मिथ्या समझा उसे निर्भयता पूर्वक सबके सामने रख दिया।'

लाला हरदयालु जी, एम० ए० ने भी लिखा है कि 'स्वामी दयानन्द जी एक बड़े सुधारक थे, उन्होंने भारतवर्ष और हिन्दू जाति के सुधारने के लिये अपना जीवन अर्पण कर दिया था। स्वामी जी ने हिन्दू युवकों के हृदय में त्याग, परोपकार और देश-भक्ति की ज्योति जगा दी। भारतवर्ष के इतिहास की पवित्र श्रेणी में सोने के अक्षरों में स्वामी जी का नाम बड़े सुधारकों लिखा जायगा।"

★

अमृत वर्षा

महर्षि दयानन्द ने कहा था—

अधर्म से नाश

कभी अधर्म का आचरण न करे क्योंकि किया हुआ अधर्म निष्फल कभी नहीं होता। परन्तु जिस समय अधर्म करता उसी समय फल भी नहीं होता। इसलिये अज्ञानी लोग अधर्म से नहीं डरते, तथापि निश्चित जानो कि वह अधर्माचरण धीरे-धीरे तुम्हारे सुख के मूलों को काटता चला जाता है।

जब अधर्मात्मा मनुष्य धर्म की मर्यादा छोड़कर [जैसे तालाब के बन्ध को तोड़ जल जाता है वैसे] मिथ्या भाषण, कपट, पाखण्ड अर्थात् रक्षा करने वाले वेदों का खण्डन और विश्वासघातादि कर्मों के पराये पदार्थों को लेकर प्रथम बढ़ता है, पश्चात् धनादि ऐश्वर्य से खान, पान वस्त्र, आभूषण, यान स्थान, मान, प्रतिष्ठा को प्राप्त होता है. अन्याय से शत्रुओं को भी जीतता है, पश्चात् शीघ्र नष्ट हो जाता है जैसे जड़ काटा हुआ वृक्ष नष्ट हो जाता है वैसे अधर्मी नष्ट हो जाता है।

आर्यमित्र की सूचना

अब तक जिन ग्राहकों का इस वर्ष हेतु शुल्क समाप्त है, उन्हें काफी समय पूर्व ही चन्दा समाप्ति की सूचनायें भेज दी गई हैं। कुछ कृपालु ग्राहकों ने अपना शुल्क भेज भी दिया है; परन्तु अधिकांश अभी शेष है।

अतएव अनुरोध है कि अविलम्ब आप महानुभाव अपना अपना शुल्क १०)रु० मनीआर्डर द्वारा भेजने का कष्ट करें।

डाक दर में असाधारण वृद्धि हो जाने के कारण वी० पी० पी० भेजने से ग्राहकों पर अनावश्यक १) व्यय भार पड़ता है, अतएव कृपया अपना धन मनीआर्डर द्वारा ही भेजिए।

मनीआर्डर के कूपन पर अपनी ग्राहक संख्या अवश्य लिखिये। —व्यवस्थापक

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के लिये भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से कृष्णगोपाल शर्मा द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।

लखनऊ—रविवार कार्तिक १९ शक १८९० मार्गशीर्ष कृ० ५ वि० सं० २०२५, दिनांक १० नवम्बर १९६८ ई०

इस अंक में पढ़िए !

१—सिंहावलोकन २
२—सम्पादकीय ३
३ हमारे पाठक क्या कहते हैं ४
४—अध्यात्म सुधा ५
५—नैतिक उत्थान आन्दोलन ६
६—वनिता विवेक ७
७—बालकुमार कुञ्ज ९
८—ग्राम जीवन ११
९—आर्यजगत १० १५ १६

वार्षिक मूल्य १०)
छमाही मूल्य ६)
विदेश मे २०)
एक प्रति २५ पै०

परमेश्वर की अमृत वाणी—

मरे हुओं की, दूर चले जाने वालों की चिन्ता छोड़ ! अन्धकार से निकलकर ज्ञान के प्रकाश में आ और अपने को वेगयुक्त कर !!

मा गतानामा दीधीथा ये नयन्ति परावतम् ।
आ रोह तमसो ज्योतिरेह्या ते हस्तौ रभामहे ॥

[अथर्व वेद काण्ड ८ सूक्त १ मन्त्र ८]

[१] (गतानाम्) गए हुओं का मुर्दों की
[२] (ये परावतम्) जो दूर ले जाते हैं जो दूर चले जाते हैं
[३] (मा आ दीधीथा) मत चिन्ता कर
[४] (तमसः [अज्ञान]) अन्धकार का यन कर
[५] (ज्योतिः आ रोह) [ज्ञान] ज्योति पर आरूढ़ हो
[६] (एहि ते हस्तौ) आ इन हाथों को
[७] (आ रभामहे) वे युक्त करते हैं

अज्ञान मरण और ज्ञान जीवन है । अज्ञानी बीते हुए काल को, मरे हुओं को जो न जाने कितनी दूर चले गए हैं याद करता है और अतीत की मृत स्मृति को वर्तमान दुःख में परिवर्तित कर देता है । अज्ञानी जन सुनहरे अतीत की दुहाई देते रहते हैं किन्तु वर्तमान को ज्योतिर्मय करने का कोई नाम नहीं लेते । अज्ञान के अन्धकार में विचरण करने वाले केवल महापुरुषों के नाम लेकर उनका गुणगान करते रहते हैं और जयघोष लगाते रहते हैं किन्तु ज्ञान रथ में बैठने वाले वेदज्ञ स्वयम् महान् बनकर ऋषियों के ऋण चुकाते हैं और अज्ञान के अन्धकार में भटकने वालों को पुनः ज्योति का पथ दिखलाकर उनके सुप्त कर्मों को गतिवान करते हैं ।

अज्ञानी जन ऋषियों सन्तों और महात्माओं के नाम पर मतमतान्तर चलाकर मानवी समाज में भेदभाव की दीवार खड़ी करते हैं किन्तु सरस ज्ञानामृत का पान करने वाले वेदज्ञ सर्वज्ञ परमात्मा का मत ग्रहण कर उन्हें एक सूत्र में आबद्ध करते हैं ।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का जयनाद गुंजाने वालो ! अज्ञान के कूप से निकलो, केवल ऋषि गुणगान और जयघोष लगाना छोड़ो । वेद सुधा का पान करो और कराओ । जगत को सच्ची शान्ति और आनन्द का मार्ग बताओ और महर्षि स्वामी दयानन्द के दिव्य स्वप्नों को साकार करो ।

वर्ष ७० | सम्पादक— प्रेमचन्द्र शर्मा, सभा मन्त्री | अङ्क ३६

सत्यं शिवं सुन्दरम्

आधुनिक युग में महावाक्य 'सत्यं शिव सुन्दरम' का प्रयोग कला एव साहित्य जगत् मे एक आदर्श वाक्य की भाँति व्याप्त है। यह वाक्य इतना सशक्त सुन्दर और महत्वपूर्ण है कि भारतीयता का बाना पहन कर आज हमारे साहित्य से पूर्णतया घुलमिल गया है। इसका एकमात्र कारण यह है कि यह भारतीय भावना के अनुकूल है, चाहे इस वाक्य की उत्पत्ति किसी अन्य देश से ही क्यों न हुई हो। अनन्त ऐश्वर्य का स्वामी तथा भोक्ता होते हुए भी जिस प्रकार व्यक्ति सर्वव अशान्ति और अपूर्णता का अनुभव करता है, तथा वर्तमान से विकल और असन्तुष्ट रहा है, ठीक उसी प्रकार साहित्य की अपूर्णता भी उसके सत्य, शिव, सुन्दरम् न होने में है।

व्युत्पत्ति

'सत्य शिव और सुन्दरम' की उत्पत्ति तथा इनके इतिहास आदि के सम्बन्ध मे विद्वानो ने अलग-अलग मत व्यक्त किये है। कुछ लोग इस सूत्र-वाक्य को उपनिषदों तथा वेदो का वाक्य बतलाते हैं। तो कुछ इसकी व्युत्पत्ति भारत से न बताकर विदेश से बतलाते हैं।

वास्तव मे 'सत्य, शिवं, सुन्दरम्' यूनानी दार्शनिक अफलातूँ (प्लेटो) द्वारा प्रतिपादित महा वाक्य "The true, the good, the beautiful" का शाब्दिक अनुवाद है। परन्तु वाक्य मे विदेशीपन की तनिक भी गंध नहीं आती। इसलिये कुछ व्यक्तियो ने इस शब्दावली को उपनिषदों से खोजने का प्रयास किया है। 'सच्चिदानन्द' से लोग चिर परिचित है, जिसका अर्थ है सत्, चित्, आनन्द है। श्री मद्भगवद गीता में श्रीकृष्ण ने अर्जुन को वाणी के तप से सम्बन्ध बताते हुये 'सत्य, प्रिय और हितकर' आदि विशेषताओं का प्रयोग किया है--

अनुद्वेगकर वाक्य सत्य
प्रियहित च यत्।
स्वाध्यायाभ्यसन चैव
वाङ्मयं तप उच्यते॥"
--श्रीमद्भगवद्गीता [१७-१५]

आचार्य मम्मट ने काव्य के उद्देश्य इस प्रकार बताये हैं।

"काव्य यशसेऽर्थकृते
व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।
सद्य परनिवृतये कान्ता
सम्मितयोपदेशयुजे॥"

हम देखते हैं कि काव्य के प्रयोजनों में भी "सद्यः परनिवृतये" अर्थात् तुरत ही उत्कृष्ट आनन्द देने वाला, "शिवेतरक्षतये" मंगल की रक्षा करने वाला, तथा पत्नी के समान मधुर उपदेश देने वाला माने गये हैं। इससे स्पष्ट है कि सत्य, शिव, सुन्दरम् की प्रवृत्ति भी इसी भावना को लेकर चली।

तुलसीदास जी ने भी 'कला हित के लिए ही, सत्य हो और सुन्दर हो' इसका प्रत्यक्ष रूप दिखाया है--

"कीरति भनिति भूति भल सोई।
सुरसरि सम सब कर हित होई॥"

कुछ लोग सत्य और शिवं का भाव साहित्य से बताते हैं जैसा कि इस वाक्य से विदित है 'हितेन सहि सहित तस्य-भाव. साहित्यम्।

प्रयोजन

सत्य का अर्थ निरावरण सत्य से है, शिव से अभिप्राय कल्याण से है तथा सुन्दरम् से तात्पर्य प्रिय से है :

वीणा पुस्तक धारिणी' के रूप में साहित्य और कला की अधिष्ठात्री देवी हंसवाहिनी माता शारदा का ध्यान किया जाता है। हंस 'सत्य' का प्रतीक है क्योंकि वह नीर-क्षीर को अलग अलग कर सच्चाई सामने रखता है। वीणा 'सुन्दरम्' का प्रतिनिधित्व करती है तथा पुस्तक को 'सत्य और हित'से दोनों की साधिका के रूप में कहा जा सकता है।

डा० गुलाबराय ने अपनी पुस्तक सिद्धान्त और अध्ययन मे 'सत्यं शिव सुन्दरम्' का सम्बन्ध क्रमशः ज्ञान (Knowing) भावना (Feeling) और सकल्प (Willing) नाम की मनोवृत्तियों से बताया है। इन मनोवृत्तियों का सम्बन्ध क्रमश ज्ञान मार्ग, और भक्ति मार्ग और कर्म-मार्ग से है।

विज्ञान, धर्म और काव्य

'सत्य शिव सुन्दरम्' का सम्बन्ध विज्ञान, धर्म और काव्य से भी है। वैज्ञानिक सत्य को, धार्मिक शिव को, और कलाकार सत्यं शिव और सुन्दरम तीनों का समान महत्व प्रदान करता है।

वैज्ञानिक नग्न तथा कठोर सत्य का उपासक है। विज्ञान का सम्बन्ध जीवन की अनुभूति व रस से नहीं है। वैज्ञानिक के लिये शिव और सुन्दरम् गुण है। जो कुछ अटल है, निश्चित है, शाश्वत और नित्य है वैज्ञानिक की दृष्टि मे वही पूर्णतया सत्य है।

★दिलबागराय, एम. ए.
सराय सुल्तानी, अलीगढ

धार्मिक शिव के रूप में सत्य के दर्शन करता है। वह इन्द्र की पूजा इस लिये करता है कि वह जल देने वाला है हमे जीवन प्रदान करता है। कृषि को शस्य श्यामला बनाता है तथा मंगल का सकेत करता है। वेदों में "तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु" यजुर्वेद का पाठ पढ़ाया जाता है। धार्मिक इस लोक की चिन्ता न करके अगले लोक को बनाता है। वह आत्मा की तुष्टि तथा जीवन में कल्याण की पूर्ति मे विश्वास रखता है।

साहित्यिक सत्य को भावना के रंग मे चढ़ाकर उसे रूपवान बनाता है। उसके हृदय मे रसात्मक वाक्य का ही मान है। साहित्यकार या कवि की दृष्टि मे 'सौंदर्य' कला है। सहृदय होने के कारण कवि का भाव भावुकता की ओर अधिक झुक जाता है। 'तुलसी मस्तक तब नवै धनुष बाण लहु हाथ।'

सत्य

सृष्टि की रचना से लेकर आज तक दार्शनिक सत्य की खोज मे वैज्ञानिक सत्य के अन्वेषण मे, समाज सुधारक सत्य की परख मे तथा कवि एव साहित्यिक सत्य के ग्रहण, विकास एव प्रसार मे लीन रहे हैं। एक दार्शनिक का सत्य हमारे बौद्धिक जगत् को प्रभावित करता है तो वैज्ञानिक का सत्य भौतिक जगत् को। परन्तु हमारे भाव कल्पना जगत् को आन्दोलित करने वाला केवल कवि का ही सत्य है। कवि कीट्स ने सत्य और सौंदर्य का समन्वय करते हुये लिखा है--

"Beauty is truth
truth beauty that is all
ye know on earth,
and all ye need to know."
Keats (an ode to a
grecan urn)

[शेष पृष्ठ १२ पर]

सिंहावलोकन

मन मन्दिर में लख उसे--
ज्ञानचक्षु को खोल

अर्थ समझ श्रद्धासहित करो ओ३म का जाप।
पाओ परमानन्द प्रिय, मिटे सकल सन्ताप॥

राम, कृष्ण ऋषि वृन्द ने किया ओ३म का ध्यान।
तज इसकी आराधना मत पूजो पाषाण॥

माना यह जड़ मूर्ति मे, भी व्यापक भगवान्।
किन्तु मूर्ति मे तू कहाँ ! अरे ! भक्त नादान॥

विद्यमान दोनो जहाँ भक्त और भगवान्।
है 'प्रकाश' यह हृदय ही वह प्रिय पावन स्थान॥

जो अनुपम सर्वज्ञ विभु जिसकी माप न तोल।
मन मन्दिर मे लख उसे, ज्ञान चक्षु को खोल॥

सुरगण रक्षा खलों का करने को संहार।
लेते हैं अवतार प्रभु, यह विवाद निस्सार॥

दुष्टों की भी देह में व्यापक हैं भगवन्त।
कर सकते हैं वे वहीं उनका अन्त तुरन्त॥

सोचो तो वह नित्य अज, व्यापक त्रिभुवननाथ।
क्यों ! आवे तन धार कर, चक्र लिये निज हाथ॥

एक ओ३म् को ध्याइये सकल प्रपञ्च बिसार।
हो 'प्रकाश' भव सिन्धु से, जीवन नैया पार॥

★प्रकाशचन्द्र कविरत्न, अजमेर

ओ३म् देवो देवानामसि मित्रोअद्‌भुतो वसुर्वसूनामसि चारुरध्वरे ।
शर्मन्त्स्याम तव सप्रथस्तमेऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव ॥
ऋ० १९४-१३

व्याख्या—हे मनुष्यो! वह परमात्मा कैसा है? कि हम लोग उसकी स्तुति करें। हे अग्ने परमेश्वर ! आप 'देवः देवानामसि'' देवों (परम विद्वानो) के भी देव (परम विद्वान्) हो, तथा उनको परमानन्द देने वाले हो, तथा अद्‌भुतः'' अत्यन्त आश्चर्यरूप मित्र सर्व सुखकारक सबके सखा हो, 'वसु०' पृथिव्यादि वसुओं के भी वास कराने वाले हो तथा 'अध्वरे'' ज्ञानादि यज्ञ में ''चारु' अर्थात शोभायमान और शोभा के देने वाले हो। हे परमात्मन ! सप्रथस्तम सख्ये, शर्मणि तव'' आपके अति विस्तृत, आनन्दस्वरूप सखाओं के कर्म में, हम लोग स्थिर हों, जिससे हमको कभी दुःख न प्राप्त हो और आपके अनुग्रह से हम लोग परस्पर अप्रीतियुक्त कभी न हो।

लखनऊ—रविवार कार्तिक १९ शक १८९०, मार्गशीर्ष कृ० ५ वि० २०२५
१० नवम्बर सन् १९६८ ई०, दयानन्दाब्द १४४, सृष्टि संवत १,९७,२९,४९,०६९

अस्मभ्यम् भद्रम् चकार

इस संसार मे कुछ ऐसे मानव भी होते हैं, जिन्हें दूसरों को दुःख देने का एक व्यसन होता है। वे मानव रूप मे अपनी काया से अवश्य होते हैं, किन्तु उनके भीतर एक दानवी माया का दर्शन होता है। ऐसे दुष्ट जनों का भले ही कोई प्रयोजन सिद्ध हो अथवा न हो किन्तु उन्हे तो दूसरों को प्रत्येक परिस्थिति मे हर सम्भव उपाय से दुःख देना है। दूसरों को दुःख देने से उन्हे आनन्द तो नहीं मिलता, किन्तु उन्हे ऐसा लगता है कि उनकी आत्म तुष्टि हो रही है। अपने मनोरथ की पूर्ति होते देख कर उनके मुख पर 'दुष्टता भरी जो छाप लगी होती है उसकी अनुभूति उनकी कुटिल मुस्कान को देखकर होती है।

ऐसे अभद्र मनुष्यों का आज मानवी जगत् मे सर्वत्र बाहुल्य हो रहा है। राजनीति के प्राङ्गण मे तो इनकी भरमार तो थी ही किन्तु दुर्भाग्यवश इनका पदार्पण अब धार्मिक जगत् मे भी होने लगा है, जिसके फलस्वरूप अनेक सज्जनों ने तो अपने को धार्मिक संस्थाओं से पृथक् कर लिया है और अनेक ऐसे है जो दुःखी होकर पलायन करना चाहते हैं। यही कारण है कि जब धार्मिक संस्थाओं का नेतृत्व ऐसे दुष्टो के हाथ मे आ जाता है, तो नव-निर्माण का तो कहना ही क्या जो बना हुआ होता है, वह भी बिगड़ जाता है। संस्थायें बदनाम हो जाती हैं, और लोगों को उनके नाम तक से घृणा हो जाती है।

एक ऐसा ही दृश्य हमें एक धार्मिक अधिवेशन में देखने को मिला। सन्ध्या के उपरान्त एक सीधे-सादे सरल प्रकृति के वृद्ध व्यक्ति से जब प्रार्थना करने के लिये कहा गया तो उन्होंने अपनी योग्यतानुसार नपे तुले, रटे रटाये शब्दो मे ईश प्रार्थना करवा दी। एक वकील महोदय जिनकी धार्मिक सम्मेलन में कोई आस्था नहीं थी और जो सम्भवत केवल अपनी उपस्थिति नोट करने के लिये आये थे और जो यज्ञ के समय एक दैनिक समाचार पत्र मे रस ले रहे थे। प्रार्थना कराने वाले वृद्ध सज्जन पर एकाएक बरस पड़े और उनके मुखवृन्द से जो शब्दो की झड़ी लगी तो वह दस मिनट तक बन्द नहीं हुई। क्रोध मे भरे हुये वे कह रहे थे, 'तुम प्रार्थना करते हो या परमात्मा को व्याख्यान देते हो। कितनी बार कहा परमात्मा मे प्रकाश होता है, और तुम ज्योति-ज्योति की रट लगा रहे हो। परमात्मा पुलिङ्ग है और ज्योति कह कर तुम उसे स्त्रीलिङ्ग बना रहे हो।

जहा उनके क्रोध भरे व्यवहार से हमे खेद हुआ वहां ईश्वर सम्बन्धी उनके लिङ्ग ज्ञान पर हमे हास्य भी आया। मन मे विचार हुआ कि इस मनुष्य ने जो बीस साल से इस धार्मिक संस्था का सदस्य बना हुआ है, आखिर सीखा क्या है? लिखने की आवश्यकता नहीं कि उनके इस व्यवहार से आपस मे यथेष्ट तू तू और मैं-मै हुई जिसके फलस्वरूप अनेक बन्धु और बहनें उठकर चली गईं। अशान्त वातावरण मे शान्ति पाठ तक नहीं हो सका, और वकील साहब एक कुटिल मुस्कान लिये वहां से प्रस्थान कर गये, क्यों कि उनके अभीष्ट की सिद्धि हो गई थी।

आज ऐसे धूर्तों ने पवित्र वातावरण को विषाक्त कर डाला है। उनमें न तो स्वयम् कोई पवित्रता है, न वे पवित्रता चाहते हैं और न ही किसी को पवित्र देखना पसन्द करते हैं। हमने इन धार्मिक संस्थाओं मे ये दृश्य भी देखे हैं, कि ऐसे सज्जन न तो स्वयम् कोई कार्य करते हैं और न ही किसी को करने देते हैं। परिणाम यह होता है कि पवित्र धार्मिक प्रचार की गति अवरुद्ध हो जाती है। दुर्भाग्य से ऐसा अनिष्टकारी तत्व आज आर्यसमाज मे भी प्रविष्ट हो चुका है, जिसके कारण समाजो और सभाओ मे वे दृश्य देखने को मिल रहे हैं, जिन्हें व्यक्त करने मे हमारी लेखनी तक को लज्जा आ रही है।

हम वेदानुयायी हैं। वेद हमारा धर्मग्रन्थ है। वेद हमारे सत्य ज्ञान की कसौटी है। हम वेद मार्ग पर विश्व को चलाना चाहते हैं किसलिये? केवल इसलिये कि विश्व से अनार्यत्व नष्ट हो और आर्यत्व की स्थापना हो। अधर्म और पाप का नाश हो और धर्म व पुण्य फूले फले। इस पुनीत कार्य्य में हम प्रथम अपने गृह मे दिव्य ज्ञान का दीप जलाने के लिये यहा कुछ विचार प्रस्तुत करते हैं, ताकि हमारे हृदय मे ऐसे अभद्रकारी तत्व ज्ञान की रश्मियों से अपने जीवन को ज्योतित कर सकें और आर्यसमाज के नाम की मर्यादा की रक्षा कर सकें। हम ज्ञान मार्गी हैं और विश्व सुधार हमारा लक्ष्य है। इस विश्व कल्याण का मूल व्यक्ति सुधार है जिसे हमें अपने से प्रारम्भ करना है।

तनिक ध्यानपूर्वक देखें कि जब कोई मनुष्य किसी को दुःख देने का निश्चय करता है तो वह उसे जब तक दुःख नहीं दे पाता स्वतः अशान्त रहता है। अथर्व वेद के काण्ड ४ सूक्त १८ के मन्त्र ३ मे मे कहा है—

अमा कृत्वा पाप्मानं यस्तेनान्यं जिघांसति। अश्मानस्तस्यां दग्धायां बहुलाः फट करिक्रति ॥

अर्थात् कच्ची बुद्धि से पाप करके जो मनुष्य उसके द्वारा दूसरो की हिंसा करना चाहता है, उसकी स्वत: बुद्धि जलने लगती है और उसमे अनेक पत्थर पड़कर फट-फट करने लगते हैं।

यह बिल्कुल स्वाभाविक है कि दुःख देने मे सफल हो जाने पर उस व्यक्ति को अज्ञात शकाए घेर लेती हैं वह भय ग्रस्त रहता है क्योंकि उसे अपनी दुष्ट क्रिया की अज्ञात प्रतिक्रिया का भय घेरे रहता है। बुरा कर्म करने से पूर्व बुराई पहले उसके मन को आ घेरती है। पापी को स्वयम् उसका महाबली पाप आकर मारता है। यह कैसा अद्‌भुत ईश्वरी न्याय है। दूसरे का जो अनिष्ट होता है सो तो होता ही है, किन्तु मन मे बुराई का जो अंकुर उपजता है, वह अपना सर्वनाश पहले करता है।

एक प्रश्न उठता है कि ऐसे अभद्रकारियों के साथ हमारा कैसा व्यवहार हो तो धर्म केवल एक उत्तर देता है ''धृति''। जैसे को तैसा व्यवहार तो अग्नि में पेट्रोल डालना है। जब दुःख सुख कर्मानुसार मिलते हैं, तो हमें दुःख देने वाला हमारे धर्म के खाते से हमारी एक रेखा काटता है। यह तो प्रभु का अनुग्रह है। यह परमात्मा की एक परीक्षा है। हमे दुष्ट के साथ दुष्ट नहीं होना है। धूर्तता का उत्तर हमे साधुता से देना है। उत्तेजना की प्रतिक्रिया हमारी सहनशीलता से होनी चाहिये। युधिष्ठिर ने दुर्योधन के दुःख देने वाली वृत्ति को नहीं अपनाया संसार को उस के उज्ज्वल चरित्र का ज्ञान हुआ और अधर्मी दुर्योधन जब नहीं सम्भला तो कुत्ते की मौत मारा गया। जिसके लिए जगत् मे हमे जीना व मरना है, वह धर्म है, जिसका प्रथम लक्षण मनु महाराज ने धृति बतलाया है। यह धृति है जो हमारे अन्तःकरण को शुद्ध करती है।

यह नितान्त सत्य है कि जब दुष्ट अपने दुर्व्यवहार के कारण दूसरे को विचलित होते हुए नहीं देखता तो वह अपने भीतर और भी जलता है। वह अनिष्ट नहीं कर पाता जिसका उसने सोचा था। वह भी 'आत्मने तपन' के अनुसार अपने लिए ही संतप्त होता है क्योंकि 'अवश्यमेव भोक्तव्य कृत कर्म शुभाशुभम्' के अनुसार उसे अपना कर्म फल भी तो भोगना पड़ता है।

अतएव वेद ने बिल्कुल ठीक कहा है। ''चकार भद्रमस्मभ्यम्'' अर्थात् हमारे लिये भला ही होता है क्योंकि इन दुष्टों की दुष्टता के कारण ही तो धार्मिक जनों की बुद्धि और चरित्र प्रकाशित होते हैं। आर्य्यजगत् आज वेद की इन शिक्षाओं का प्रसार करे और प्रसार करने वाले इनको स्वतः आत्मसात करें। हमे क्या करना था और हमने क्या किया है और हम कर क्या रहे है? जो किया है क्या ठीक किया है जो कर रहे हैं क्या ठीक कर रहे हैं। यदि नहीं तो जो करें सो ठीक करें।

हर्ष की बात है कि लखनऊ के आर्य सम्मेलन मे जिसके विस्तृत समाचार इस अंक मे प्रकाशित किये जा रहे हैं आर्यजगत् को इस दिशा मे एक नया मोड़ दिया है। 'कृण्वन्तो स्वयमार्यम्' को लेकर ही सब चर्चा हुई है और अपने चरित्र निर्माण से दूसरो के जीवन निर्माण पर भारी बल दिया गया है। भविष्य के अन्य आर्य सम्मेलनों मे यदि इसका अनुकरण होता है तो आर्यसमाज को नवउत्साह मिलेगा। आपसी संघर्ष मिटेंगे और हमारा वेद प्रचार प्रवाह तीव्र होगा। लखनऊ आर्य्य सम्मेलन के संयोजक बधाई के पात्र हैं। आ० स० गणेशगंज लखनऊ के वार्षिकोत्सव पर एक सप्ताह तक जो प्रभात फेरियां निकाली गई हैं उन्होंने आर्यजगत् की पुरानी स्मृतियों को जीवित कर दिया है। आध्यात्मिकता से नव जीवन संचार के इस शुभ प्रयास ने निस्संदेह 'अस्मभ्यम् भद्रम् चकार' अर्थात् हमारे लिये भला ही किया है। ★

लखनऊ का आर्य्य सम्मेलन

रविवार दिनांक ३-११-६८ को

स्थान डी० ए० वी० कालिज, लखनऊ।

मध्याह्न १ बजे से ४ बजे तक

संयोजक—श्री विक्रमादित्य 'वसन्त'

मन्त्री—जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा, लखनऊ।
उपमन्त्री—आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश

स्वागताध्यक्ष—श्री रामचरण विद्यार्थी

प्रधान—आर्यसमाज गणेशगंज, लखनऊ

अध्यक्ष—श्री कृष्ण बलदेव जी

प्रधान—जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा
[विशेष प्रतिनिधि द्वारा

आर्य सम्मेलन का आयोजन आर्य समाज गणेशगंज लखनऊ के वार्षिकोत्सव के सुअवसर पर किया गया। वार्षिकोत्सव से पूर्व एक सप्ताह तक प्रतिदिन प्रातः ५॥ से ६॥ तक प्रभात फेरियों का आयोजन किया गया, जिसमें सभा के उपमन्त्री श्री विक्रमादित्य 'वसन्त' ने भाग लिया और न केवल उसका केवल संचालन किया वरन् भक्तिभाव से ओत-प्रोत आध्यात्मिक भजनों की झड़ी लगा दी। प्रभात फेरियाँ लखनऊ के इतिहास मे चिर स्मरणीय रहेंगी। इसमें लखनऊ नगर की समस्त आर्यसमाजों ने संकड़ों की सख्या में सोत्साह भाग लिया। नगर कीर्तन में भाग लेने वालों मे से प्रमुख श्री मुलहराज सोबती, श्री पृथिवीराज करमानी, श्री सत्यव्रत जी, श्रीमती विमला माहना और श्रीमती कमलेश बजाज थे।

२ से ५ नवम्बर तक के इस वार्षिकोत्सव में बाहर के निम्नलिखित विद्वान् पधारे थे—सर्व श्री प० बिहारीलाल शास्त्री, प० रुद्रदत्त जी शास्त्री, पं० वाचस्पति जी शास्त्री तथा पं० ओम-प्रकाश शास्त्री।

दिनांक ३-११-६८ को मध्याह्न एक सहस्र आर्य परिवारो के प्रीतिभोज के उपरान्त विशाल सुसज्जित मण्डप मे आर्य सम्मेलन का शुभारम्भ प्रार्थना मन्त्रों से हुआ। श्रीमती विमला माहना के सरस भक्तिभाव पूरित भजन के पश्चात् स्वागताध्यक्ष का व्याख्यान हुआ, तत्पश्चात् संयोजक द्वारा सम्मेलन के उद्देश्य पर प्रकाश डाला गया। श्री वसन्त जी की कविता 'दयानन्द के दिव्य स्वप्न का आओ करें निर्माण रे—भूले भटके गिरे मनुज का आज करें उत्थान रे' ने एक समा बांध दिया। सम्मेलन में प्रस्तुत प्रस्तावों पर सर्व श्री तेजनारायण, भूपेन्द्रनाथ पाल, महाराज किशोर, रामेश्वर सहाय, हरिवंश लाल मेहरा बृजेन्द्रकुमार निगम, चंद्रमा सिंह, श्री मान तिवारी ने विचार व्यक्त किए। अध्यक्ष श्री कृष्ण बलदेव जी ने पारित किये गये प्रस्तावों को क्रियान्वित करने की प्रेरणा देते हुये कहा कि आध्यात्मिक जीवन ही त्रिताप से त्राण करा सकता है।

प्रस्ताव—१

लखनऊ का यह आर्य सम्मेलन सर्व सम्मति से लखनऊ नगर के आर्य बन्धुओं से प्रार्थना करता है कि वे अपने व पारिवारिक जीवन को आध्यात्मिक उन्नति के लिये विशेष रूप से प्रयत्नशील हों। गन्दे साहित्य का पठन पाठन और चल चित्रों का देखना-दिखाना बन्द किया जाये तथा फैशन व्यसन और विलास के स्थान पर सादा जीवन और उच्च विचार को प्रमुखता दीजाये और इस निमित्त प्रत्येक परिवार मे दैनिक पारिवारिक का आयोजन अवश्य किया जाये—अर्थात् सध्या अग्निहोत्र मनन और स्वाध्याय आदि अवश्य हों।

प्रस्ताव—२

लखनऊ का यह आर्य सम्मेलन इस नगर मे आर्य सहकारी संघ की स्थापना की आवश्यकता प्रतीत करता है और श्री भूपेन्द्रनाथ पाल को उसके निर्माण की प्रेरणा देता है। यह आर्य सहकारी संघ अपने स्वतन्त्र रूप में होगा और यह औद्योगिक योजनाओं के माध्यम से दरिद्र आर्य बन्धुओं की आर्थिक सहायता करेगा।

प्रस्ताव—३

लखनऊ का यह आर्य सम्मेलन लखनऊ के आर्य बन्धुओं से प्रार्थना करता है कि वे अपने दैनिक जीवन के व्यवहार मे अभिवादन के रूप में केवल नमस्ते का ही प्रयोग करें। नमस्कार अथवा अन्य अभिवादनों को प्रोत्साहन न दें।

प्रस्ताव—४

लखनऊ का यह आर्य्य सम्मेलन लखनऊ नगर के आर्य बन्धुओं से प्रार्थना करता है कि वे अपने बच्चों को सस्कृत की अवश्य शिक्षा दिलाएँ। आर्यसमाजें भी इसकी सुविधानुसार व्यवस्था करें। जिन आर्यसमाजों द्वारा कुमार सभाओं का सचालन किया जाता है वहाँ पर इस शिक्षा की अवश्य व्यवस्था होनी चाहिए। जहा पर कुमार सभायें नहीं हैं वहा पर उनकी स्थापना की जानी चाहिये।

प्रस्ताव—५

लखनऊ का यह आर्य सम्मेलन आर्यसमाजों से प्रार्थना करता है कि वे शारीरिक उन्नति के लिये अखाड़ों व व्यायाम शालाओं का भी निर्माण करें तथा उनके कार्यक्रम आयोजित करके नव युवकों को शारीरिक व्यायाम द्वारा स्वस्थ रहने की प्रेरणा दें।

प्रस्ताव—६

लखनऊ का यह आर्य सम्मेलन जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा से इस बात का अनुरोध करता हैं कि वह मेले व ग्राम प्रचार के विशेष आयोजन करे।

प्रस्ताव—७

लखनऊ का यह आर्य सम्मेलन जिला उप प्रतिनिधि सभा से इस बात का अनुरोध करता है कि उसके तत्वावधान मे वर्ष मे एक बार नगर की समस्त आर्यसमाजों का सम्मिलित महोत्सव अमीनाबाद में अवश्य आयोजित हो।

प्रस्ताव—८

लखनऊ के आर्य सम्मेलन का यह निश्चित मत है कि राष्ट्र भाषा हिन्दी के द्वारा ही भारत का गठन व एकीकरण हो सकता है। हिन्दी भाषा राष्ट्र की आत्मा है। इसके बिना राष्ट्र की जागृति और उत्थान नहीं हो सकते। देश मे विदेशी भाषा के माध्यम से शिक्षा देना तथा कार्य चलाना राष्ट्र को कुंठित करना है। २ प्रतिशत अंग्रेजी पढ़े लिखे लोगों ने ९८ प्रतिशत जनता की भावना की अवहेलना की है। अतः यह आर्य सम्मेलन सरकार से अनुरोध करता है, कि हिन्दी भाषा को शीघ्राति शीघ्र शिक्षा तथा राजकाज का माध्यम बना जाये। यह सम्मेलन जनता से भी इस बात का अनुरोध करता है कि वह सर्वतः हिन्दी को प्रोत्साहन दे और अपने दैनिक व्यवहार मे उसका अधिकाधिक उपयोग करे और निर्वाचनों में अपना मत उन्हें ही प्रदान करें जो हिन्दी के प्रति निष्ठा रखते हों, उस का व्यवहार करते हों, और उसे शीघ्रातिशीघ्र राष्ट्र-भाषा के पद पर आरूढ़ करने में दृढ़ संकल्पयुक्त हों।

[इस सम्मेलन में इस प्रस्ताव पर यह स्पष्टीकरण दिया गया कि इसका राजनीति से प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष कोई सम्बन्ध नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति मत देने मे स्वतन्त्र है, उसे किसी विशिष्ट राजनैतिक दल से अथवा किसी विशेष व्यक्ति को मत देने में इस प्रस्ताव के द्वारा कोई प्रेरणा नहीं है]

★

'आर्य्यमित्र' का नया दीपावली विशेषांक उत्तम है। बधाई! 'आर्यमित्र' की लेख सामग्री तो सदा ही उत्तम होती है, फिर यह तो विशेष-अङ्क है—चुने हुए रचना, पुष्पों का सग्रह। यदि मित्र की छपाई की सुन्दरता और शुद्धता भी किसी प्रकार बढ़ सके तो उत्तम होगा। श्री विक्रमादित्य जी 'वसन्त' का कुछ विशेष परिचय मित्र द्वारा मिले, तो अच्छा होगा। मित्र परिवार में इस नये देवज, लेखक कवि का आगमन शुभ हो! मेरा उन से परिचय नहीं है। उनकी रचनायें स्थायी महत्त्व की हैं। श्री आचार्य विश्वश्रवा जी ने अपने लेख में महर्षि दयानन्द कृत यजुर्वेद विषय-सूची का उल्लेख किया है, उसका प्रकाशन मैं भी आवश्यक समझता हूं। परोपकारिणी सभा को पत्र भी लिख रहा हूं। आर्यमित्र को यह आवाज अधिक प्रभावपूर्ण ढंग से उठानी चाहिए। मेरा एक प्रस्ताव है—'आर्यमित्र की फायलों में आरम्भ से अब तक बड़े बड़े विद्वानों और विचारकों के लेखों का संग्रह दबा पड़ा है। यदि प्रति वर्ष दो चार लेख सग्रह आर्यमित्र की पुरानी फाइलों में से चुन कर छापने का आयोजन पुस्तक रूप में हो जाय तो विशेष लाभ होगा। जनता स्वागत करेगी। ऐसा एक मासिक पत्र भी निकाला जा सकता है। माननीय प्रबन्धक वर्ग तक मेरा प्रस्ताव पहुंचाने की कृपा करें।

—जगत्कुमार शास्त्री
"साधु सोमतीर्थ"
नई देहली—१

वेद मन्त्र

त्वमङ्ग प्रशंसिषो देवः शविष्ठ मर्त्यम् ।
न त्वदन्यो मघवन्नस्ति मर्डितेन्द्र ब्रवीमि ते वचः ॥

[ऋ० १-८४-१९, य० ६-३७ सा० २४७,१७ २३]

पद-पाठ

त्वम् अङ्ग प्र शंसिषः देवः शविष्ठ मर्त्यम् । न त्वत् अन्य मघवन् अस्ति मर्डिता इन्द्र ब्रवीमि ते वच ।।

जिस परम पित परमात्मा की हम स्तुति करते हैं, यश गान करते हैं, नेत्र बन्द कर प्रार्थना के स्वरो मे वाणी से कुछ व्यक्त करते हैं और जिस साधनामय पथ से उपासना क्षेत्र मे प्रवेश कर उसके समीपस्थ हो आनन्द सुधा का पान करना चाहते हैं, वह परमात्मा क्या है और उसके प्रति किस प्रकार के वचन बोलने चाहिये, इनका समन्वय इस मन्त्र में किया गया है ।

जो आस्तिक हैं, जिन्हें उस परमात्मा पर पूर्ण आस्था है, वे तो परमात्मा को आत्मना अहर्निश पुकारा करते हैं । वाणी से भले ही स्वर निकलें या न निकलें किन्तु उनकी आत्मा तो उस आनन्दमय ओ३म् की रटन् उच्चरती रहती है । आत्मना जब परमात्मा के ओम् नाम का जाप किया जाता है तो आनन्द पान मे जो आत्म तृप्ति होती है वह वाणी का विषय कदापि नहीं है । वह तो दिव्य आत्मानुभूति है जो अभिव्यक्ति से परे है वह तो गूंगे को गुड़ के स्वाद की भांति अथवा सुगन्धित फूल की सुवास की भांति है ।

किन्तु जो साधारण मानव है । जो संसार मे देखा देखी कुछ अनुकरण करते हैं । जो परम्पराओ की पूर्ति मात्र करते हैं, वे वाणी से उसका गुणगान करते रहते हैं । वाणी से प्रार्थना शैली में कुछ उद्गार उनके मुख से निकलते रहते हैं । वास्तव मे एक अभ्यास है जो एक दिन जड़मत को सुजान बना देता है, किन्तु यह तभी होता है जब हम एक एक सीढ़ी ऊपर बढ़ते रहें । जिस प्रकार विद्यार्थी प्रारम्भिक कक्षाओ में कुछ रटता है, किन्तु अक्षर व अर्थ ज्ञान होने पर उसे रटने की आवश्यकता नहीं रहती । ठीक यही स्थिति आध्यात्मिक जगत् की है । भूल केवल इतनी ही है कि विद्यार्थी तो प्रथम कक्षा से उठकर ऊपर की कक्षाओं में बढ़ता चला जाता है किन्तु आध्यात्मिक शाला में हम रटन की पहली कक्षा से ऊपर बढ़ नहीं पाते जिसके फलस्वरूप हम वहीं पर जमे रहते है, जहां से आगे चलना था ।

अध्यात्म-सुधा

प्रस्तुत मन्त्र में एक साधक प्रार्थनामय शैली मे अन्तर्मुखी होते हुये प्रार्थनामय शैली में अपने आत्म उद्गारों को वाणी से व्यक्त कर रहा है । वह कह रहा है (ते) तेरे प्रति (वचः ब्रवीमि) वचन बोलता हूं । परमात्मा ने वाणी मनोभावो को व्यक्त करने के लिए ही तो दी है । जब परमात्मा की लगन है तो वाणी से परमात्मा की ही बातें निकलेंगी । साधक वाणी से एकान्त मे भी और जन समूह मे भी परमात्मा से ही कुछ निवेदन करते हुये कहेगा क्योंकि वह आत्म ज्ञानी भली भांति जानता है कि इस संसार में परमात्मा ही सर्वोपरि है, उसका ... वह ही सर्व नियन्ता है ।

जिस परमात्मा के प्रति साधक को वाणी से कुछ कहना है वह परमात्मा क्या है और कैसा है उसके लिये साधक केवल चार विशेषणों का उपयोग करता है, जिनमे उनके सर्वगुण समाहित हैं । साधक कहता हैं "अङ्ग" परम प्रिय अङ्ग-अङ्ग में रहने वाला, सर्वांग, दिव्य ज्योति रूप मे सर्वतः दमकने वाला । हे प्रभु तुम प्रिय प्रिय हो क्योंकि तुम विश्व मे सर्वत्र रम रहे हो । सूर्य चन्द्र सितारों में अन्दर बाहर प्रभु तुम ही तुम हो । धरती आकाश जलवायु अग्नि सब में प्रभु तुम व्याप्त हो । मैं जिधर देखता हूं उधर तुम ही तुम हो । फूलों के सौंदर्य मे तुम्हारा सौंदर्य है उनकी सुगन्धि मे तुम्हारी सुगन्धि है । जल मे तुम्हारी शीतलता है, अग्नि मे तुम्हारी कान्ति और ताप है । वायु मे तुम्हारा प्राण है । रत्न गर्भा धरती मे तुम्हारे रत्न हैं । सन्त कबीर ने परमात्मा की सर्व व्याप्ति को लक्ष्य कर ही तो कहा था—

'मुझ को कहां तू ढूंढे बन्दे
मैं तो तेरे पासरे ।
मैं तो तेरे अन्दर रमता
ज्यो फूलन मे बासरे ॥

परमात्मा के सृष्टि सौंदर्य पर मुग्ध होकर उस सन्त ने कहा था "सुभान तेरी कुदरत, मै जाऊं कुरबान'

दूसरे विशेषण मे साधक पुकारता है "शविष्ठ' सर्वातिशय सर्व शक्तिमान साधक जिस परमात्मा के प्रति वाणी से निवेदन कर रहा है वह अपराजित रहता है । संसार की समस्त शक्तियां उसके सम्मुख पराजित हो उठती है । और वह सर्व शक्तिमान अपरास्त रहता है । इस संसार के समस्त विद्वान और शूरवान उसके सम्मुख क्या हैं कुछ भी तो नहीं । इस जगत मे बड़े बड़े अहंकारियों का दर्प उस सर्व शक्तिमान के सम्मुख चूर चूर हो जाता है ।

तीसरे विशेषण मे साधक उसके प्रति वाणी से बोलते हुये कहता है "मघवन" भगवान् । ऐश्वर्यवान ! भौतिक और आध्यात्मिक ऐश्वर्यो की प्राप्ति मे हम पाप और अपराध रत होते हैं वे उसी परमात्मा के हैं । शरीर रूपी रथ भी तो उसी परमात्मा का प्रदत्त है । यही कारण है कि भौतिक ऐश्वर्य की अपेक्षा साधक आत्मिक आनन्द की प्राप्ति के लिये उसके आध्यात्मिक ऐश्वर्य की कामना करते हैं जिससे उन्हे त्रिताप से मुक्ति मिले ।

चौथे विशेषण मे साधक वाणी मे उच्चारता है 'इन्द्र' शत्रुणा दारयिता शत्रु नाशक ! शत्रुओं का काम है विघ्न बाधा डालकर नष्ट करना । शत्रु से जो रक्षा करता है वह मित्र कहाता है वह परमात्मा तो 'मित्रो असि प्रिय" हम सबका परम मित्र है और फिर वह तो सर्व शक्तिमान मित्र है उसमे हमारे अन्तः बाह्य शत्रुओं का निराकरण करने का पूर्ण सामर्थ्य है । हमारी सकल दुरिताओ को समूल नष्ट करने वाला वह परमेन्द्र ही है । साधक जिस परमेन्द्र की सहयता मे अपने को नियुक्त करता है वहां आत्म जागरण होने से काम क्रोध मद लोभ मोह रूपी समस्त शत्रुओं का पलायन हो जाता है ।

ज्ञान से परमात्मा के वास्तविक रूप का आत्मबोध करता हुआ साधक परमात्मा से किस बात की कामना करता है, तो वह उसे वाणी से इस

(शेष पृष्ठ १० पर)

मेरा सोया भाग्य जगा दे

श्री विक्रमादित्य 'वसन्त'
उपमन्त्री आ०प्र० सभा उ०प्र० लखनऊ

मेरा सोया भाग्य जगा दे ।
कर प्रचेतित आत्मा मेरी, राग द्वेष सब दूर भगा दे ।
मेरा......

घोर अविद्या की है छाई
मेरे अन्तर मे अंधियारी ।
दूर करूं मे कैसे उसको
जब तक हो न कृपा तुम्हारी ।
आज मेरे मन मन्दिर में ज्ञान की तू ज्योति जला दे ।
मेरा ......

तेरे आनन्दमय सिन्धु मे,
बैठा हूं मैं अतिशय प्यासा ।
दर्शन और मिलन की तेरे,
मैं हृदय में लेकर आशा ।
सोम सुधा का पान कराकर, आज मेरी प्यास बुझा दो ।।
मेरा......

जीवन के अति दुर्गम वन मे,
पूरी होवे साधना मेरी ।
आवागमन के फेर में फिर से,
होवे प्रभु न फेरा फेरी ।
भव सिन्धु से वसन्त की नैय्या आज प्रभु तू पार लगा दे ।।
मेरा.........

नैतिक उत्थान आन्दोलन

आचार हीनं न पुनन्ति वेदा

डा०-रामदुलारसिंह 'धर्मभूषण'
मण्डलपति-मण्डल आर्यवीर दल
मीरजापुर (उ०प्र०)

नारी और पुरुष दोनों समाज रूपी रथ के दो पहिये हैं। दोनों के सह अस्तित्व से ही समाज श्रेष्ठ, सवृन्नत, प्रगतिशील एवं चरित्रवान बन सकता है। स्वयं महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में भी वेद मन्त्र का वाक्य उद्धृत किया है कि "मातृमान पितृमान आचार्यवान पुरुषो वेदः।" पुरुष का निर्माण माता पिता और आचार्य मिलकर करते हैं।) इन तीनों में मातृशक्ति को प्राथमिकता दी गई है और साथ ही यह भी कहा गया है कि-'माता निर्माता भवति' (माता निर्माण करने वाली होती है।) इसी वाक्य को विशिष्ट अपनी वशिष्ट स्मृति में कहते हैं कि-"दस उपाध्यायों की अपेक्षा आचार्य, सौ आचार्यों की अपेक्षा पिता और हजार पिताओं की अपेक्षा माता का गौरव अधिक है।" क्योंकि यह गर्भ धारण, पालन-पोषण एवं चरित्र उत्थान करती है। प्राचीन महापुरुषों का कथन है कि-"सुचरित्र निर्माण भी एक मानवता है। जिसका चरित्र पावन हो मानव, अन्यथा दानव।" चरित्र निर्माण की नीव एवं सुदृढ़ सीढ़ी जननी (माता) ही होती है। जैसी जननी होगी वैसे ही चरित्र के बच्चे भी होंगे, फिर वैसा ही समाज होगा। इसलिये नारी का चरित्र पावन एवं उच्चकोटि का होना चाहिये, जिससे नव जात शिशु चरित्रवान बन सके।

नव जात बालक को विशुद्ध वातावरण में रखकर अच्छे संस्कार का ज्ञानार्जन कराना, सात्विक, ताजा पुष्टिकर एवं शिशु के मूल के अनुसार ही खान-पान का ध्यान रखना माता का ही कर्त्तव्य है। जिससे बालक स्वस्थ, तेजस्वी बुद्धिमान बलवान ब्रह्मचारी हो सके। इन्हीं शब्दों को धनवन्तरि ने इस प्रकार कहा है कि-"हितभुक, मितभुक, रितभुक" (कम खाओ, ताजा खाओ, अपने नेक कमाई का खाओ) अतः माता ही चरित्र निर्माण की प्रथम एवं सुदृढ़ सीढ़ी है।

चरित्र निर्माण के लिये निम्न पहलुओं का होना आवश्यक है।

ब्रह्मचर्य

मानव जाति जब तक ब्रह्मचर्य व्रत का पालन नहीं करेगी तब तक चरित्रवान नहीं बन सकती। क्योंकि वेद ने भी ब्रह्मचर्य के गुण का इस प्रकार वर्णन किया है कि-

'ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नतः।'
(अथर्ववेद ११।५।१९)

(ब्रह्मचर्य से देवों (विद्वानों) ने मृत्यु को भी जीता है) इसी प्रकार शास्त्रकार भी कहते हैं कि-'मरण बिंदु पातेन, जीवनं बिन्दु धारणात्।' (मानव के एक बिन्दु पातन से मृत्यु और एक बिन्दु धारण से जीवन प्राप्त होता है।) इसलिए ब्रह्मचर्य व्रत पालन में निम्न बातों पर ध्यान देना अति आवश्यक है।

इसके पालनमें व्यायाम परमावश्यक है। इसके बिना ब्रह्मचर्य में सफलता नहीं मिल सकती। व्यायाम दो प्रकार का होता है पहला आसन, दूसरा दण्ड बैठकादि। आसन में शीर्षासन, सर्वांगासन, मयूरासन, सिद्धासन, पद्मासनादि। तथा दूसरे में दंड बैठकादि के अतिरिक्त दौड़ना, तैरना, कुस्ती आदि सम्मिलित हैं।

ब्रह्मचारी के लिये प्राणायाम भी आवश्यक है क्योंकि बिना प्राणायाम के मन एवं सम्पूर्ण इन्द्रियां वश में नहीं आती है। अतः प्राणायाम दोनों समय सन्ध्योपासन एवं गायत्री जप के साथ एकाग्र चित्त होकर मनसावाचा कर्मणा से अवश्य ही करना चाहिये। क्योंकि बिना ईश्वर के सहायता से अपने उद्देश्य की प्राप्ति नहीं हो सकती। ऋषि कृत ग्रन्थों का स्वाध्याय, सयम, साप्ताहिक सत्सग, आध्यात्मिक प्रवचन, दैनिक यज्ञ, ईश्वर भजन आदि बातों पर ध्यान देते हुये मानव चले तो अवश्य ही ब्रह्मचर्य के माध्यम से चरित्रवान बन सकता है।

समय

चरित्र निर्माण में समय भी एक आवश्यक अङ्ग है। प्रायः देखा जाता है कि जीवन एक क्षणिक पानी के बुलबुले के समान है। इसीलिये विश्व मे सबसे मूल्यवान यदि कोई वस्तु है तो—वह 'समय' ही है, अन्य सभी वस्तुयें हम खोकर भी पुन. प्राप्त कर सकते हैं, पर गया हुआ समय वापस नहीं आता है। इसी सम्बन्ध मे एक कवि ने कहा है कि—

सदा दौर दौरा दिखाता नहीं,
गया वक्त फिर काम आता नहीं।

जब महापुरुष हमें चेताते हैं या मृत्यु आ घेरती है तब हमे बड़ा पश्चताप होता है—"फिर पछताये होवत क्या जब चिड़ियां चुग गयीं खेत" तब तो हम इस प्रकार कहके टाल देते हैं कि—

"बीती ताहि बिसारि दे, आगे की सुध लेहु।" इसलिये समय का ख्याल करते हुये अपने सभी काम यथा समय करें। कहा भी गया है कि—Time is mony (समय अमूल्य है इसे व्यर्थ मत खोओ) इस प्रकार यदि प्रत्येक मानव समय की उपयोग की कला, और अपने मनोबल को जान लेवे तथा कम बद्ध कार्य करते जायें तो समय उसके पीछे पीछे दौड़ेगा, न कि वे समय के पीछे-पीछे।

शिविर

शिविर द्वारा भी मानव अपने अंदर के चरित्र का उत्थान कर सकता है। इसके लिये स्फूर्ति एव अच्छे संस्कार तथा चरित्रवान बनने का शिविर सर्वोत्तम साधन है। जब युवक स्वच्छ वातावरण में प्रकृति की गोद में बैठकर सदुपदेश सुनता है, तथा निःस्वार्थ सेवा, एवम् अनुशासित रहना सीखता है तो उसकी सोई हुई आत्मा जागृत होकर अपनी सुप्त शक्तियों का विकास प्रारम्भ करती है। इस प्रकार युवक के अन्दर सेवा, त्याग अनुशासन, सगठन एवम् चारित्रिक बल विकसित होती हैं।

सुसंगठित समाज

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है. समाज व्यक्तियों का समुदाय है। व्यक्ति जितने ही समुन्नत एवम् चरित्रवान होंगे वह समाज, संस्था, दल सघ उतना ही श्रेष्ठ और उन्नति कर सकेगी। अस्तु देश के स्वतन्त्र होने के पश्चात् राष्ट्र के निर्माण हेतु प्राप्त स्वतन्त्रता की रक्षा की समस्या आती है। आज चारों ओर से अनेक दलों, संस्थाओं एवं सैन्य शक्तियों का संगठन हो रहा है, परन्तु सभी के उद्देश्य सीमित हैं, किन्तु ऋषि दयानंद द्वारा प्रतिपादित आर्य संस्कृति, सभ्यता के आधार पर शारीरिक मानसिक, आत्मिक उन्नति कर चरित्रवान आदर्श नागरिक वीर युवक बनाना ही अभीष्ट है।

आज ससार में ऐसे श्रेष्ठ वीर पुरुषों की आवश्यकता है जिनके हृदय और मस्तिष्क दोनों ठीक हों, बुद्धि तथा शक्ति का समन्वय हो, जोश के साथ होश भी हो। जो सत्य एवं चरित्र निर्माण तथा गुणों का दमन कर सके। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि आज संसार में आर्य वीर एवं आर्यवीर दल की आवश्यकता है जो—"वीर भोग्या वसुंधरा," 'अस्माकं' वीरा उत्तरे भवन्तु" के आधार पर "कृण्वंतो विश्वमार्यम्" का प्रचार एवं प्रसार कर सकें। इसी भाव को पाल ग्यूरो ने अपनी पुस्तक में इस प्रकार लिखा है कि—"भविष्य उन्हीं जातियों के हाथ में है जो सदाचारी हैं" अतः यह निर्विवाद सत्य है कि आर्यसमाज के अन्तर्गत आर्यवीर दल ही एक ऐसी साधन है जिसके द्वारा निः स्वार्थ परोपकार, सेवा राष्ट्र रक्षा, आत्म रक्षा एव क्षात्र धर्म की भावना जागृत कर रही है। यही दल इस वर्त्तमान समय में युवक युवती बालक को बाल्यावस्था से ही सुसंस्कारित कर चारित्रिक एवं सामाजिक उन्नति कर रही है।

अब आप चरित्र निर्माण की अन्य विशेष पहलुओं पर ध्यान दीजिये—"आज के युग में धन गया तो कुछ नहीं गया, शरीर (स्वास्थ्य) गया तो थोड़ा चला गया किन्तु जिस मनुष्य का चरित्र ही चला गया तो ससार में उसका कोई भी अस्तित्व नहीं रहा।"

"निर्धन धनवान से डरता है, निर्बल बलवान से डरता है, मूर्ख विद्वान् से डरता है किन्तु जिस मानव के अन्दर चारित्रिक बल है उससे ये तीनों डरते हैं।"

जिस मानव के मन में 'यम-नियम के पालन से पहले पवित्रता उत्पन्न होगी उसी मे निश्चित ही कार्यों को सत्यासत्य का विचार करके करने की निर्भीकता भी आयेगी, और जिसके अन्दर पवित्रता, एव निर्भीकता का सृजन होगा वही दृढ़ता की सुदृढ़ चारित्रिक सीढ़ी पर चढ़कर सूर्य के समान प्रकाशित होगा।

उपरोक्त तत्त्वों को ध्यान में रखते हुये अपने महापुरुषों से यह शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए कि—'रावण वेद शास्त्रों का भले ही विद्वान् एव शक्तिशाली था। परन्तु उसमे आसुरी शक्तियां प्रवेश कर चुकी थीं, उसका चरित्र भ्रष्ट हो चुका था। अतः वह संसार के लिये निकृष्ट व्यक्तियों में गिना जाने लगा, क्योंकि

(शेष पृष्ठ १२ पर)

वनिता दीपक

बहनों की बातें-[१]

मनुर्भव दैव्यं जनम्

श्री सुरेशचन्द्र वेदालङ्कार
एम० ए० एल० टी०,
डी०वी० कालेज, गोरखपुर

[इस लेखमाला में महिलाओं की बातों के आधार पर वैदिक विचारों पर रोचक ढङ्ग से प्रकाश डालने का प्रयत्न किया गया है। राष्ट्र की नींव बालक हैं। बालकों का निर्माण मुख्यरूप से माताओं के हाथ मे है। अतः माताओं के लिये यह लेखमाला अत्यन्त उपयोगी होगी और जीवन निर्माण मे सहायक भी होगी। आशा है, पाठक इससे लाभ उठायेंगे। सम्पादक]

सरला की आयु यही लगभग बयालीस वर्ष की होगी। वह अधिक पढ़ी लिखी तो नहीं, पर स्वाध्याय एव सत्सग के कारण जीवन की अनेक गूढ़ बातों और रहस्यों को समझने लगी है। उनकी वाणी में आकर्षण और अपनापन है। सभी व्यक्ति उनकी बातों को प्रेम से सुनते हैं और उनमे एक ऐसी अद्‌भुत लगन है कि वे घर-घर जाकर महिलाओं में फैली कुरीतियों, अन्ध विश्वासों और दूसरी बुराइयों को दूर करना चाहती हैं और बालिकाओं मे, महिलाओ मे, मातृत्व के एव सद्‌गृहिणी के संस्कार जागृत कर उन्हे राष्ट्र को योग्य तथा सदाचारी सन्तानें समर्पित करने की प्रेरणा देती है। वे घर-घर मुहल्ले-मुहल्ले मे जाकर उनसे अपनापन कायम कर नये नये प्रश्नों को सरल और रोचक रूप मे उन्हे समझाने एवं उन पर चलने की प्रेरणा देती हैं।

इधर जब से हमारे कस्बे मे आई हैं, तब से शाम को बाबू भगवतीदयाल के घर के प्रागण मे महिलाओ की भीड़ जमा होती है, और बात-बात मे गम्भीर चर्चायें छिड़ जाती हैं उस दिन मेरी पुत्री भारती जो विज्ञान विषय लेकर ६०८२ की परीक्षा की तैयारी कर रही थी, वहाँ पहुँच गई, और उसने सरला बहन से पूँछा बहन जी! मनुष्य क्या है? मनुष्य और पशु मे क्या अन्तर है? मानव जीवन का क्या उद्देश्य है? क्या स्त्री और पुरुष समान है?

भारती के प्रश्नों की बौछार सुनकर अपनी सहज मुस्कराहट की किरणें बिखेरती हुई सरला बहन बोलीं, 'भारती बेटी, हमारा यह अत्यन्त सौभाग्य है कि प्रभु ने हमे मानव बनाया है। मानव सब प्राणियो का सिरताज है। हमे प्रभु का बार-बार धन्यवाद करना चाहिए कि उसने हमे मानव बनाया।'

अभी अपनी बात वे पूरी भी न कर पाई थीं, कि मनोरमा जो एक अत्यन्त प्रतिभा सम्पन्न बालिका थी, और जिसने युवावस्था की देहली पर अपने चरण रखे ही थे, झट से बोल पड़ी, 'दीदी, तुम्हारी यह बात जंचती नहीं मानव जीवन तो अत्यन्त सकटपूर्ण जीवन है। क्या तुम जगल मे निर्द्वन्द्व छलागें भरते हुये हरिण से मनुष्य को अधिक सौभाग्यशाली समझती हो? क्या तुम जगल मे खिले हुये और हवा को सुगंधित करते हुए फूल से खेल रहे भ्रमरों को मानव से हीन मानती हो? क्या कोकिल की वाणी मानव की बोली से कम सुखदायक है? क्या मयूर का नृत्य मानव को कभी प्राप्त हो सकता है? उड़ती हुई तितलियों, गाती हुई मैनाओं और तोते की सुन्दर वाणी क्या मानव से किसी भी रूप मे कम है? क्या सिंह का पराक्रम, हाथी की विशालता, गैंडे की कठोरता मनुष्य मे आ सकती है? तो वह कौन-सी वस्तु है जिसके कारण तुम मनुष्य को प्रभु की सौभाग्यशालिनी सन्तान मानती हो?'

सरला बहन ने मनोरमा की बात सुन कर रवीन्द्रनाथ टैगोर की एक कविता का भाव सुनाते हुए कहा, 'भगवान् फूल से उस दी हुई सुगन्ध की, रंग की माग करता है। कोकिल से वह केवल उस दी हुई मधुर स्वर की अपेक्षा करता है। वृक्ष से वह केवल उसके अपने दिये हुए फलो की आशा रखता है। लेकिन मनुष्य के सम्बन्ध मे प्रभु का नियम निराला है। मनुष्य दुःखों को सुखो मे परिवर्तन की आशा करता है। उसकी अभिलाषा है अन्धकार को प्रकाश मे परिवर्तित करे, वह चाहता है। मनुष्य अनृत को ऋत मे बदले। उसने मनुष्य को मननशील बनाया है। इसी बात को हम इस प्रकार कह सकते हैं, कि मनुष्य को कर्तृत्व शक्ति दी है। वह अपनी इच्छानुसार जो चाहे बन सकता हैं। जो चाहे कर सकता है। हम मनुष्य मरण से अमृतत्व प्राप्त कर सकते हैं। अपने चारों ओर फैले हुए असत् मे सत् प्राप्त कर सकते हैं, हम विष मे से सुधा का सृजन करें, इस अमंगल से मंगल का निर्माण करें।

शेक्सपीयर ने एक स्थान पर मनुष्य के बड़े पन का इस प्रकार वर्णन किया है कि मनुष्य कैसे बोलता है, कितने सुन्दर ढंग से चलता है, कितना सुन्दर दिखाई देता है, उसका हृदय कितना बड़ा है, उसकी विचार शक्ति कैसी है, कैसी विशाल दृष्टि है मानो मनुष्य भगवान् की मूर्त्ति है।

नरदेह के महत्त्व का भारतीय सन्तों ने भी वर्णन किया है:—

धन्य-धन्य है यह नर देह।
यह है अपूर्वता का गेह।

ये उदगार समर्थ रामदास स्वामी ने प्रकट किये हैं—

बहुना पुण्य पण्येन
क्रीतेयं कायनौस्त्वया।

यह मनुष्य शरीर तुझे बड़े भाग्य से मिला है। सन्त तुकाराम ने नरदेह को 'मोक्ष का कलश' कहा है।

बनार्डशा ने एक स्थान पर कहा है "मनुष्यों को पैदा हुए हजारो वर्ष हो गये। भगवान् धारा मे प्रतीक्षा कर रहा है। वह अपना उद्देश्य पूरा करने के लिये भिन्न भिन्न प्रयोग कर रहा था। वह भिन्न-भिन्न प्रकार के प्राणियो का निर्माण कर रहा था। सोचते-सोचते उसने हजारों प्राणियों का निर्माण कर दिया कि वह प्राणी मेरा उद्देश्य पूरा करेंगे, मेरी आशा सफल करेंगे, लेकिन उनकी आशा अपूर्ण रही। पहले के अनुभवों से लाभ उठाकर भगवान् ने नवीन प्राणियो का निर्माण किया, लेकिन वह नवीन प्राणी भगवान् को निराश ही करते थे। ऐसा करते करते भगवान् ने मानव का निर्माण किया। अपनी चतुराई खर्च करके, सारे अनन्त अनुभव उण्डेल कर भगवान ने इस दिव्य प्राणी का निर्माण किया और वह रुका। उसने देखा मानवो मे से ही उसके 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' के उद्देश्य को पूरा करने वाले प्राणी हुए।" सचमुच राम हुये, कृष्ण हुये, तुलसीदास हुये' सूरदास हुए, बुद्ध हुये, शंकर हुये, स्वामी दयानन्द हुये, स्वामी श्रद्धानन्द हुये, महात्मा गांधी हुये, लेखराम हुए गुरुदत्त विद्यार्थी हुये, भगतसिंह हुये, और रामप्रसाद बिस्मिल हुये। महिलाओं मे सीता, सावित्री, गार्गी भारती आदि ने अपने से विश्व को चमत्कृत किया तो विदुला जैसी स्त्रियों ने अपने युद्ध पराङ्‌मुख पुत्र को 'मुहूर्तं ज्वलितं श्रेयः न च धूमायित चिरात्' एक क्षण प्रकाशित होकर बुझ जाना अच्छा है, धुँआं धुँआं करके जलना अच्छा नहीं' कहकर युद्ध क्षेत्र में विजय की प्रेरणा दी। झांसी की रानी लक्ष्मी बाई ने अपनी वीरता से अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिये, सरोजनी नाइडू का नाम भारत के स्वतन्त्रता के इतिहास में अमर रहेगा। रामप्रसाद बिस्मिल की माँ ने बचपन से ही अपने बच्चे को स्वामी दयानन्द यह वाक्य सुनाकर गन्दे से गन्दा स्वदेशी राज्य, अच्छे से अच्छे विदेशी राज्य से अच्छा है, फांसी की रस्सी को चूमने की प्रेरणा दी। सरला बहन बोलीं। मनोरमा, तुम्हीं बताओ क्या पशु भी यह कार्य कर सकते हैं। मानव को छोड़कर यह कार्य करने की शक्ति और किसी मे नहीं है अतः मानव ही ससार का सर्व श्रेष्ठ प्राणी है।

इसलिये मानव और पशु मे यही तो अन्तर है कि पशु नवीन निर्माण कर सकता है। मनुष्य शब्द का अर्थ है 'मत्वा कर्माणि सीव्यन्ति' निरुक्त ३/७, जो विचार कर कर्म करे, अन्धाधुन्ध कर्म न करे कर्म करने से पूर्व जो भली प्रकार विचारे कि मेरे इस कर्म का क्या फल होगा? किस किस पर इसका क्या-क्या प्रभाव पड़ेगा? यह कर्म मूत हित साधक बनेगा या प्राणियों की पीडा का कारण बनेगा? इसके विपरीत पशु उसको कहते है जो 'पश्यतीति जो केवल देखकर कार्य करता है। अर्थात् पड़ी हुई रबड़ी का देखकर जो व्यक्ति दूसरे के सुख-दुःख की बात बिना सोचे उड़ा जाए तो वह बिल्ली, कुत्ता या और कोई प्राणी हो सकता है, मनुष्य नहीं।

मनुष्य और पशु मे एक अन्तर यह भी है कि मनुष्य मे लम्बी स्मृति होती है, पशुओं मे नहीं। अर्थात् मनुष्य किसी बात को बहुत देर तक याद रख सकता है। उसकी लम्बी स्मृति का ही तो फल है कि उसने एक के बाद दूसरी उन्नति, दूसरा आविष्कार जारी कर रखा है। यदि मनुष्य मे लम्बी स्मृति न होती तो वह अपने प्राप्त अनुभवो का उपयोग न कर पाता और इसके विपरीत पशु मे यदि लम्बी स्मृति होती और उसमे पशुत्व भी रहता तो आपने जिस बैल, कुत्ते या जानवर को छड़ी मारी होती या जिस बन्दर पर पत्थर फेंका होता या जिस गदहे पर भार लादा होता वह

इन बातों को स्मरण करके आपसे बतला लिये बिना न रहूगा।

मनुष्य और पशु में एक अन्तर यह भी कि मनुष्य तुलनात्मक अध्ययन और ज्ञान भी रखता है पशु मे यह बात नहीं। अर्थात् मनुष्य दूसरे से अपनी तुलना कर सकता है, जानवर नहीं। यदि जानवर मे यह शक्ति होती, तो मनुष्य बड़े सकट मे पड़ जाता और ससार मे निर्बलों का रहना असम्भव हो जाता। उस दशा मे तांगे मे जुता घोड़ा तांगे को पटक कर स्वय मनुष्य पर बैठ जाता, बैल गाडी खींचने वाला बैल मनुष्य के कन्धे पर जुआ रखवा देता, क्योंकि मनुष्य से उसकी शक्ति अधिक है।

मनुष्य और पशु का एक अन्तर यह भी है कि मनुष्य सामाजिक प्राणी है और मनुष्यता को उदात्त भावना उस मे विद्यमान है। सामाजिकता ही वह तत्व है जो मनुष्य को मनुष्य के निकट लाता है। उसे उदार बनाता है और दूसरे के लिये बलिदान होने की प्रेरणा देता है। यूनान के प्रसिद्ध दार्शनिक सुकरात का एक शिष्य सोवियस जो वृद्ध हो चुका था, एक बार बाजार के चौराहे पर जाकर खड़ा हो गया और प्रत्येक पास से गुजरने वाले से पूछने लगा, 'तुम कौन हो ?' उनके इस प्रश्न के उत्तर मे किसी ने अपने को डाक्टर वकील, प्रोफेसर, सगीतज्ञ, व्यापारी, अध्यापक और शिल्पकार बताया पर पर अपने को मनुष्य' किसी ने न कहा उनके उत्तर सुनकर सोवियस ने जो कहा वह आज भी उसी प्रकार सत्य है। उसका कथन था कि अब मुझे लगता है कि यूनान की सस्कृति नष्ट हो जायगी। क्योंकि यहाँ शिल्पकार, कलाकार, वकील, डाक्टर, अध्यापक तो लोग बन रहे हैं, पर 'मनुष्य' नहीं। मनुष्यता बड़ी चीज है। मनुष्यता सबसे श्रेष्ठ है। क्या आज हमारे देश की यह दशा नहीं। अतः यदि हम राष्ट्र की सेवा करना चाहती हैं तो हमें स्वय को मनुष्य बनना चाहिए और हमे स्वयं को मनुष्य बनाना चाहिये और हमें सच्ची मातायें बन कर मानवों का निर्माण भी करना चाहिए।

सरला बहन की वक्तृता समाप्त होते ही सबकी तन्मयता टूटी और थोड़ी देर चुप रहने के बाद भारती बोल उठी 'बहन जी, सचमुच परमेश्वर की सर्वोत्कृष्ट रचना मनुष्य ही है, और मनुष्य और पशु का अन्तर समझ लेने के बाद मानव जीवन का उद्देश्य भी सरलता से समझा जा सकता है और उसे हम इस प्रकार कह सकते हैं, 'मनुष्य वह है जो आत्मवत् सर्वभूतानि पश्यति' अपने समान संसार के सभी प्राणियों को देखता रहता है। जिसमें 'आर्यत्व' अर्थात् आगे बढ़ने की शक्ति है वह मनुष्य है। मानव इनका पूर्ण विकसित जीवन, स्पष्टवादिता, शिष्टाचार, स्वच्छता सद् व्यवहार, साहस, विनम्रता, पवित्रता, आर्यत्व दया, निर्बलों की रक्षा उदारता, सामाजिक कर्त्तव्यों के अनुष्ठान, ज्ञान की जिज्ञासा, बुद्धिमानों विद्वानों के लिए आदर बुद्धि और सामाजिक सद्गुणों के एक विशेष नैतिक और सामाजिक आदर्श का बोध कराता है। मनुष्य वह है जो प्रयत्नशील है और अपने बाहर और भीतर की प्रत्येक वस्तु पर विजय प्राप्त करता है जो कि मानवी उन्नति के मार्ग मे होती हैं। आत्म नियन्त्रण उसके 'बाधक स्वभाव का प्रथम नियम है। वह मन और उसकी आदतों को अपने वश मे करता है। वह प्रभु के राज्य को सदैव अपने भीतर और ससार मे लाने का प्रयत्न करता है। इसी मानवता के अभाव का ही तो परिणाम है कि मानव, मानव को खा रहा है। आज मनुष्य मनुष्य नहीं रहा वह बुद्धिमान बाघ बन गया है। क्रूरता का पशुत्व को बुद्धि का साथ मिल गया। अब क्या? बाघ के तो सिर्फ नख और दांत हैं। जब कोई प्राणी उसके पास आता है तभी वह उसको खाता है। लेकिन बुद्धिमान मानव बाघ ने एक आश्चर्य की बात कर दी है। वह पचासों मील दूर से भी मार कर सकता है। हवा से मार कर सकता है, किरण से मार सकता है सारे ससार के हिंसक तत्वों की खोज करके वह उनका उपासक बन गया है। आज कोई महलों में है तो दूसरा रास्तों पर भूखा सो रहा है, एक ओर विलास है तो दूसरी ओर कराह है, एक ओर चैन है तो दूसरी ओर अभाव है, एक ओर आनन्द है तो दूसरी ओर मृत्यु है, यह मानवता नहीं। इस परिस्थिति से बचने का उपाय यह है कि हम सच्चे अर्थों में मानव बनें, आर्य बनें और सारे संसार को परिवार समझें। 'मनुर्भव' यह वैदिक शब्द हमारा लक्ष्य हो। भारती की वक्तृता से छाई हुई निस्तब्धता को भग करते हुए सरला बहन ने मैथलीशरण गुप्त की यह कविता सुनाई:—

मनुष्य मात्र बन्धु है,
यही बड़ा विवेक है;
पुराण पुरुष स्वभू
पिता प्रसिद्ध एक है।
फलानुसार कर्म के,
अवश्य बाह्यभेद हैं;
परन्तु अन्तरैक्य मे,
प्रमाण भूत वेद हैं।

अनर्थ है कि बन्धु ही,
न बन्धु की व्यथा हरे;
वही मनुष्य है कि जो,
मनुष्य के लिये मरे।
विचार लो कि मर्त्य हो,
न मृत्यु से डरो कभी;
मरो परन्तु यों मरो,
कि याद जो करें सभी।
हुई न जो सुमृत्यु तो,
वृथा मरे, वृथा जिए;
मरा नहीं वही कि जो,
जिया न आपके लिये।

यही पशु प्रवृत्ति है कि,
आप आप ही चरे।
वही मनुष्य है कि,
जो मनुष्य के लिये मरे।

★ किसान ★

ओ किसान ! देश के प्रकाश, मान।
ओ किसान !

वायु के विकम्पन से कम्पित है तव गात्र,
देखने में दृश्य के उपलक्ष्य मात्र,
कार्य्य में अहोरात्र,
पर सदा ही देते हो अमित दान,
जो कि सबलों के प्राण।
ओ किसान !

\+ + +

घन की भयंकर अतुलता - प्रपूर्ण - वृष्टि,
करती है तुम पर दया की दृष्टि,
उसमें भी प्रजा की सृष्टि,
करके दिखाते हो सहिष्णु, प्राण,
सहते हो लू के निशत-बाण।
ओ किसान !

\+ + +

बुभुक्षा से पीड़ित रहते हैं तुम्हारे बाल,
औरों का पालन करते हो प्रणत पाल,
तुम हो उनके कालों के काल,
फिर भी फिरते हो ऐ ! बन अजान,
रखकर करतल पर, स्वप्राण।
ओ किसान !

\+ + +

उनकी भूख, तेरा त्याग - अनुराग,
उनकी मस्त नींद में अरे, रे, जाग,
उगल आग, उगल आग,
दावानल हो या बड़वा समान,
करदे भस्म उनकी तान।
ओ किसान !

\+ + +

★ आचार्य विश्वबन्धु शास्त्री
वरिष्ठ उपप्रधान—आ० प्र० सभा, उ० प्र०
आर्यनगर मुड बरेली

हा ! श्री ब्र. अखिलानन्द (झरिया) भी चल बसे

आर्य जगत् को यह जानकर महा शोक होगा कि सदाचार की मूर्त्ति, तपस्वी, सच्चे ब्राह्मण आर्य विद्वान् श्री पं० अखिलानन्द जी अब इस संसार में नहीं हैं। अभी इधर माननीय आर्य दार्शनिक श्री पं० गंगाप्रसाद जी के निधन का दारुण शोक बना ही हुआ था कि विधि ने यह दूसरा प्रहार किया। श्री ब्रह्मचारी जी झरिया में ही श्री बा० अर्जुनदेव अग्रवाल के आनन्द-भवन में ही बहुत दिनों से रह रहे थे। इस परिवार का उनके साथ बहुत प्रेम था।

२० अक्तूबर को जब मै अपने स्थान पर महर्षि दयानन्द भवन में पहुंचा तो श्री ब्रह्मचारी जी के अतिसन्निकटवर्ती श्री पं० आत्मानन्द जी त्रिपाठी आयुर्वेदाचार्य का फोन आया कि झरिया से स्वर्गीय ब्रह्मचारी जी की आतृज वधू का १८ तारीख का लिखा एक पत्र आया है कि ब्रह्मचारी जी अब अन्तिम वेला की सन्ध्या मे विद्यमान है। सख्त बीमार हैं। आपको याद करते हैं और श्री पूज्य आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री को भी आप यह सूचना कर दें। हम दोनों का आने का विचार हो रहा था कि फोन मे यह समाचार जानने को मिला कि ब्रह्मचारी जी को निमोनिया हो गया था और अब वे इस संसार मे नहीं रहे और इसे वह १९ अक्तूबर का प्रातः ही छोड़ चुके है। इस समाचार से बड़ा ही आघात पहुंचा। परन्तु इस घटना को टाल कौन सकता है।

स्वर्गीय ब्रह्मचारी अखिलानन्द जी जौनपुर जिले के पटखौली ग्राम मे एक ब्राह्मण कुल मे उत्पन्न हुये थे। बचपन से ही उन्हें भगवान् दयानन्द की लगन लगी और उन्होने घर का परित्याग कर श्री प० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु आदि के साथ आर्ष प्रणाली से शिक्षा प्राप्त करनी प्रारम्भ की। श्री प० जिज्ञासु जी और ब्रह्मचारी जी गुरुभाई थे। दोनो के जीवनकाल मे दोनो एक दूसरे के साथ रहते भी उसी परम्परा से थे। ब्रह्मचारी जी ने अनेकों शास्त्रार्थ किये और जीवन भर आर्य समाज के स्वतन्त्र उपदेशक रहकर कार्य करते रहे। वे बनारस आर्य समाज के प्रधान भी पहले वाराणसी मे रहते हुए रहे। बनारस बहुत दिन तक उनका कार्य क्षेत्र रहा। बनारस में शिक्षा प्राप्त करने वाले आर्य सामाजिक विद्वानों मे सभी उनसे परिचित हैं। वाल्मीकीय रामायण और महाभारत एवं उपनिषदों की कथा वे बडी मार्मिकता से किया करते थे।

★ आचार्य श्री वैद्यनाथ शास्त्री

वाल्मीकीय रामायण की तो टीका भी उन्होने की है जो 'देववाणी' कार्यालय से छपी है।

स्वर्गीय स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज का उनसे बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध था। श्री पं० जिज्ञासु जी और स्वामी जी महाराज के निधन से वे अपने को बड़ा ही दुःखी अनुभव करते थे।

मेरा और श्री प० आत्मानन्द त्रिपाठी आयुर्वेदाचार्य का उनसे बहुत ही समीप का सम्बन्ध था। हमे वे सदा बहुत ही वात्सल्य भाव मे देखते थे।

स्वर्गीय ब्रह्मचारी जी का भौतिक शरीर इस संसार में नहीं, परन्तु उनका यशः कार्य अब भी विद्यमान है और सबको प्रेरणा देता रहेगा। आर्यसमाज के क्षेत्र मे जौनपुर जिले ने कई विभूतियां आर्यसमाज को दी हैं। पूज्यपाद महात्मा नारायण स्वामी जी के पूर्वज सिंगारपुर जौनपुर के थे। श्री ब्रह्मचारी जी भी जौनपुर की ही विभूति थे। इसमे सन्देह का संकोच वा स्थान नहीं कि इन पंक्तियो के लेखक की भी जन्मभूमि जौनपुर जिला है।

मलकानो की शुद्धि के समय श्री ब्रह्मचारी जी ने अनथक कार्य किया। वे कांग्रेस मे भी सक्रिय कार्य करते रहे। आर्यसमाज के लिये तो वे थे ही। अपने को ऋषि दयानन्द का कट्टर अनुयायी कहने वालो मे वे भी एक थे।

ब्रह्मचारी जी सदाचार की मूर्त्ति थे। तपस्वी थे और एक सच्चे ब्रह्मचारी थे। उनके उठ जाने से आर्यसमाज की एक अपूरणीय क्षति हुई। उनके प्रति श्री प० आत्मानन्द जी त्रिपाठी के साथ मै श्रद्धा से नत हो अपनी श्रद्धांजलि समर्पित करता हूं।

×

अब नहीं समय सोने का !

★

ऋषि की सन्तानो जागो, अब नहीं समय सोने का।
आलस प्रमाद को त्यागो, अब नहीं समय सोने का॥
हो रहा कुठाराघात, तुम्हारी संस्कृति पर,
बर्बरता हँस रही, खडी है नग्न नृत्य कर।
उठो वीर भय भ्रांति मिटाने जागो—अब नहीं समय सोने का।
ऋषि की सन्तानो जागो, अब नहीं समय सोने का॥
वे गये किन्तु श्वेतांगों की, भाषा अब भी बाकी है,
जिसके कारण हो रही दुर्दशा अब भी भारत माँ की है।
उठो वीर हिन्दी को लाने जागो अब नहीं समय सोने का।
ऋषि की सन्तानो जागो, अब नहीं समय सोने का॥
धर्म चौधरी बन ईसाई, जग पर जाल बिछाते,
भूखी जनता को भारत की, पथ से अपने बहकाते।
उठो वीर यह जाल हटाने जागो, अब समय नहीं सोने का।
ऋषि की सन्तानों जागो, अब नहीं समय सोने का॥
ईसा मूसा के भक्तों से, जग की मानवता पीड़ित है,
ईसा मूसा की शिक्षा से, जग की दानवता जीवित है।
उठो वीर सद्धर्म जगाने जागो, अब नहीं समय सोने का।
ऋषि की सन्तानों जागो अब नहीं समय सोने का॥
मनु के दस लक्षण, सत्य अहिंसा आदि धर्म है सच्चा,
चलता था जिस पर 'राज' यहीं भारत का बच्चा-बच्चा।
उठो वीर वह ध्वज फहराने जागो, अब नहीं समय सोने का।
ऋषि की सन्तानो जागो, अब नहीं समय सोने का॥

रचयिता:—राजकुमार सक्सेना 'राज'
कटियाटोला शाहजहांपुर

रत्न-कण

१—सत्य तीर्थ है, क्षमा तीर्थ है, इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखना भी तीर्थ है, सब प्राणियों पर दया करना तीर्थ है और सरलता भी तीर्थ है। दान तीर्थ है, मन का संयम तीर्थ है, संतोष भी तीर्थ है, ब्रह्मचर्य का पालन उत्तम तीर्थ है, प्रिय वचन बोलना भी तीर्थ है, ज्ञान तीर्थ है, धैर्य तीर्थ है, तप को भी तीर्थ कहा गया है। तीर्थों मे सबसे बड़ा तीर्थ है, अन्तःकरण की आत्यन्तिक शुद्धि।

—महर्षि अगस्त्य

२—मनुष्य क्रोध को प्रेम से, पाप को सदाचार से, लोभ का दान मे और मिथ्या भाषण को सत्य से जीत सकेगा। —महात्मा बुद्ध

३—चक्रवर्ती राजा का राज भी उस समय तक नहीं होता, जब तक आपस में फूट न हो।

—महर्षि दयानन्द

४—मनुष्य ही परमात्मा का सर्वोच्च साक्षात मन्दिर है।

—स्वामी विवेकानन्द

५—दुर्बल तथा अज्ञानी ही अधिक नुक्ताचीनी करते हैं।

—स्वामी रामतीर्थ

६—चोरी का धन कच्चे पारे को खाने के समान है। जैसे कच्चा पारा शरीर मे से फूट निकलता है। वैसे ही चोरी का धन है।

—महात्मा गांधी

७—बाहर की दीनता भीतर भी दीनता ला देती है।

—रवीन्द्रनाथ टैगोर

८—एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति। उस एक प्रभु को विद्वान् लोग अनेक नामों मे पुकारते हैं।

—ऋग्वेद

★ मानस तीर्थ

बिहारीपुर बरेली समाज

आर्य समाज बिहारीपुर बरेली के इस समाज का उत्सव नहीं हुआ जिसकी सूचना श्री व्रतपालजी शास्त्री ने आर्य्यमित्र में छपाई है। इन लोगों के हाथ में अब समाज नहीं है।

उस समाज का उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया कि जो समाज सभा से सम्बद्ध है, जिसके प्रधान श्री भद्रगुप्त जी हैं। उत्सव पर श्री प० शिवकुमार शास्त्री संसद सदस्य, श्री पं० विश्वबन्धु शास्त्री उपप्रधान सभा तथा पूज्य श्री स्वामी सुखानन्द जी आचार्य निगमागम आश्रम पधारे थे। ऐसा उत्सव पच्चीस वर्ष से नहीं हुआ था। आचार्य श्री विश्वबन्धु जी व्यास की उत्सव मे बड़ी सहायता रही।

—बिहारीलाल शास्त्री

गोवा प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना

गोवा प्रदेश आर्य समाज का प्रथम आर्य प्रतिनिधि सम्मेलन श्री ना० मि० ०गांवकार भूतपूर्व सम्पादक 'जनतंत्र' के सभापतित्व मे हुआ, जिसका उद्घाटन श्री दयानन्द राव मुरटगोकर ने किया। १५ आर्य समाजों के १०० प्रतिनिधियों ने भाग लिया। प्रतिनिधि सभा की स्थापना हुई जिसके पदाधिकारियों का निर्वाचन निम्न प्रकार हुआ—

प्रधान—डा० अच्युत खिणकर, उपप्रधान—(१) श्री ना० मि० नागांवकार, (२) श्री एस० एम० काम्बले ० एल० ए०, मन्त्री—श्री रामप्रसाद ०, सयुक्त मन्त्री—श्री एल० एन० ०ेकर, खजांची—श्री रामप्रकाश अन्तरंग सदस्य अन्तरंग—श्री परशुराम ०गकर, श्री नन्दा शर्मा बोरकर. डा० प्रभु गांवकार, श्री गजानन रायकर हनुमन्त जगन्नाथ खेडेकर, श्री सदानन्द माद्रोलकर, श्री शिवनाथ ०गकर श्री मोहन सुर्लेकर, श्री ०नदास।

प्रतिनिधि सार्वदेशिक सभा

(१) डा० अच्युत रिवणकर (२) रामप्रसाद सेनी (३) श्री ना० मि० गांवकार (४) श्री रामप्रकाश ० (५) श्री एल० एन० मान्द्रेकर

—आर्यसमाज मड़गांव (गोवा)
प्रधान—श्री डी०एस० मोल्टीगीकर
०धान—श्री शशीकान्त प्रेमानन्द
—श्री सूर्या फोटू म्हामल
०ध्यक्ष—श्री प्रकाशचन्द गोयल
प्रति०—श्री मोहन सुर्लेकर

आवश्यक सूचना

—आर्य युवक परिषद् बम्बई का सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के साथ सम्बन्ध के बारे मे बहुधा पत्र व शिकायतें आती रहती हैं। अतः आर्यजनों को सूचित किया जाता है कि इस संस्था से सार्वदेशिक सभा का कोई सम्बन्ध नहीं। सभा से सम्बन्धित एक मात्र संस्था आर्यवीर दल है। इसी को सबको सहयोग देना उचित है।

—रामगोपाल शालवाले
ससद सदस्य
मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली

—आर्य समाज पुरैनी (जिला बिजनौर की ओर से ता० २ अक्तूबर को विजयदशमी के उपलक्ष में सात आर्य घरों में श्री पं०रणवीर जी शास्त्री वैद्य लुधियाना की अध्यक्षता में बृहद्-यज्ञ सम्पन्न हुआ। श्री शास्त्री जी तथा म० मुकन्दराम जी वैदिक मिशनरी ने विजया दशमी पर्व की महत्ता पर भाषण किया। —रामचन्द्रसिंह, मन्त्री

निर्वाचन

—आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली राज्य—प्रधान—श्री मस्तराम एडवोकेट, मन्त्री—श्री विद्यासागर।

—आर्यसमाज गोवर्धन (मथुरा) के अन्तर्गत सचालित डी० ए० वी० हा० से० स्कूल गावर्धन मे दिनांक १ १०-६८ विजय दशमी के शुभ पर्व पर एक यज्ञशाला का शिलान्यास श्री म० खुशीराम जी द्वारा सम्पन्न हुआ तथा विद्यालय के छात्रों का सामूहिक यज्ञोपवीत संस्कार विद्यालय के धर्म शिक्षक श्री चन्द्रभानु स्नातक द्वारा सम्पन्न हुआ। उपस्थित महानुभावों पर अच्छा प्रभाव पड़ा। मंत्री

—आर्यसमाज कोसीकलां का ३० वां वार्षिकोत्सव दिनांक २ से ५ अक्टूबर तक श्री शांति स्वरूप जी गोयल की अध्यक्षता मे समारोह पूर्वक मनाया गया। —मन्त्री

गुरुकुल वैद्यनाथधाम का वार्षिक महोत्सव ४ से ७ अक्तूबर १९६८ तक बड़े धूम-धाम से उत्साह पूर्ण वातावरण में सकुशल सम्पन्न हुआ।

—मुख्याधिष्ठाता

—आर्यसमाज अमेठी
प्रधान—श्री विजयपाल पाण्डेय वकील
मन्त्री—श्री यशपाल शास्त्री
कोषाध्यक्ष—श्री लालताप्रसाद

—उप प्रतिनिधि सभा जिला मुजफ्फरनगर
प्रधान—श्री वीरेन्द्र जी 'वीर'
मन्त्री—रामचन्द्र जी शर्मा मु० नगर
कोषाध्यक्ष—श्री बनारसीदास जी शामली

शुद्धि संस्कार

ग्राम डेटा (अलीगढ़) में ११८ ईसाइयों की शुद्धि

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा की ओर से श्री डालचन्द्र आर्य ने एक शुद्धि सम्मेलन का आयोजन किया। जिसमें ११८ ईसाइयों ने वैदिक धर्म की दीक्षा ली। शुद्धि संस्कार श्री हरिप्रसाद वानप्रस्थी ने कराया। श्री जी स्योदानसिंह की अध्यक्षता में एक सार्वजनिक सभा हुई जिसमें कई विद्वानों के भजन व उपदेश हुये। श्री हरिदत्त शर्मा कार्यालयाध्यक्ष भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा ने शुद्धिशुदाओं का स्वागत किया। श्री दीपचन्द्र जी व श्री मेहरसिंह जी के मधुर भजन हुये। ग्रामवासियों ने इस कार्य मे पूर्ण सहयोग दिया।

—द्वारकानाथ प्रधान मन्त्री

—आर्यसमाज बाराबंकी के अन्तर्गत श्रीमती उम्मेहबीबा निवासिनी बाराबंकी जिनकी अवस्था इस समय लगभग २४ वर्ष है अपनी दो पुत्रियों सहित इस्लाम धर्म को छोड़कर हिन्दू वैदिक धर्म स्वीकार कर लिया है। यह शुद्धि संस्कार बहुत धूम धाम से सायंकाल ६॥ बजे आर्यसमाज मन्दिर मे सम्पन्न हुआ। जिसमे बाराबंकी शहर के बहुत से सम्भ्रान्त व्यक्तियों ने भाग लिया, वैदिक धर्म मे दीक्षित होने के बाद श्रीमती उम्मेहबीबा का नाम उमा आर्या तथा उनकी पुत्रियों का नाम मीरा आर्या तथा प्रेमा आर्या रख दिया गया है। —मन्त्री

—आर्यसमाज पूना मे एक ईसाई युवक को शुद्ध करके उसका विवाह तारा के साथ कराया गया।

—दि० २ अक्टूबर को आर्यसमा० बलिया में दयानन्द विद्या मन्दिर का उद्घाटन जिलाधीश बलिया द्वारा हुआ। इस अवसर पर नगर के सभी अन्य नागरिक तथा कार्य कर्ता उपस्थित थे। जिलाधीश ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि देश में प्रत्येक कोने के छात्रों में जो अनुशासन हीनता बढ़ती जा रही है उसका एक मात्र कारण है छात्रों में धार्मिक शिक्षा का अभाव। अध्यापकों को भी उन्होंने सम्बोधित करते हुये कहा कि अध्यापक वर्ग को भी चाहिये कि बच्चों को नैतिकता की सीख दें।

(पृष्ठ ५ का शेष)

प्रकार करता है- देवः त्वं हे दिव्य देव तू (मर्त्यं) मरणशील मनुष्यों को (प्र शंसिषः) प्रशंसित करता है (त्वत् अन्यः) तुम से अन्य कोई भी (मडिता) सुख देने वाला (न अस्ति) नहीं है। परमात्मा के पास जो सुख शांति और आनन्द है वह ससार मे कहीं अन्यत्र उपलब्ध नहीं हो सकता। ससार मे दिव्यता से ओत प्रोत सुशान्त ही यशस्वी होते हैं।

इसलिये वाणी से जो हम प्रार्थना करें वह सक्षिप्त रूप मे सुख शांति और आनन्द के सार को लेकर होनी चाहिये। वाणी से परमात्मा को उपदेश या व्याख्यान देकर नये तुले शब्दों में वास्तविकता का बखान करना चाहिये। आत्मा की निर्मलता ही प्रार्थना का मुख्य उद्देश्य होना चाहिये। वह सर्वान्तर्यामी सब कुछ सुनता है, मन मे खोट हो वाणी से बहुत कुछ उसकी प्रशंसा करके हम उसको प्रसन्न कर लें तो यह उस न्यायकारी से सम्भव नहीं है अतएव इसका सदैव ध्यान रखें।

★

एक क्विंटल बीज से ४०० क्विंटल से अधिक धान

कामीनेनी वेंकया चौधरी को ताइचुंग नेटिव--१ धान की खूबियों का तब पता चला जिन दिनों उनके राज्य मैसूर में इसका बीज मुश्किल से मिलता था।

कृषि अधिकारियों ने धान की इस किस्म की खूबियों से उन्हें खूब वाकिफ कर दिया था। वह इस किस्म को अपने खेत में अजमाना चाहते थे।

दौड़ धूप करके उन्हें आंध्र प्रदेश से एक क्विंटल बीज मिला। यह बीज उनके साढ़े चार हेक्टर खेत के लिये काफी था'

युवक वेंकया चौधरी मैसूर राज्य में ताइचुंग नेटिव १ धान उगाने वाला सबसे पहला किसान होने का गौरव प्राप्त है। इतना ही नहीं, उन्हें अपने राज्य में इस किस्म के धान की सबसे अधिक पैदावार लेने का श्रेय भी है।

३६ वर्षीय कामीनेनी वेंकया चौधरी मूल रूप से आंध्र प्रदेशीय हैं। दस वर्ष पहले वह कृष्णा जिले से आकर मैसूर में रायचूर जिले के श्रीराम नगर में बस गये हैं।

चौधरी का उद्देश्य ताइचुंग नेटिव-१ धान से अतिरिक्त भारी पैदावार लेना था। इसके लिये उन्होंने तिल्ली तथा सनई की हरी खाद की फसल खेत मे पलट दीं। इसके अलावा फरवरी मे पौध रोपने से पहले फी हैक्टर १, २५० किलो अरंडी की खली, ५०० किलो उर्वरक मिश्रण (१६:५:५ के अनुपात मे) और ६० किलो म्यूरिएट आफ पोटाश भी डाला।

फरवरी मे अच्छी तरह कमाये गये खेत मे एक महीने की पौध रोप दीं। उन्होने खड़ी फसल पर उर्वरक का भुरकाव तीन बार किया। अमोनियम सल्फेट और यूरिया के रूप में फी हैक्टर कुल ११० किलो नाइट्रोजन डाला।

मार्च से अप्रैल तक उन्होंने फसल की तीन निराई गुड़ाई कीं। इससे खेत मे खरपतवार नही पनपने पाये और फसल को पूरी खुराक मिली।

फसल की कटाई की जा रही है।

श्री चौधरी ने अपनी फसल को झंझमारी बीमारी से बचाने के लिये पूरी निगरानी रखी। फसल की निगरानी के लिये वह हर रोज सुबह शाम खेत में चक्कर लगाया करते थे। रोपाई के एक सप्ताह बाद उन्होंने फसल पर एड्रिन दवा का छिड़काव किया। इसके अलावा उन्होंने मार्च के अन्तिम सप्ताह मे और अप्रैल के पहले सप्ताह मे फाइटोलान दवा भी दो बार छिड़की।

अप्रैल के दूसरे पखवारे में उन्होंने स्ट्रेप्टोसाइक्लीन और फाइटोलान के मिश्रण का छिड़काव किया। अप्रैल के तीसरे तथा चौथे सप्ताह मे उसी मिश्रण का फिर से छिड़काव किया।

मई मे आकाश मे बादल छाये हुये थे। बारिश के कारण फसल को अगवानी बीमारी लग सकती थी। इससे बचाव के लिये श्री चौधरी ने मई के पहले सप्ताह में स्ट्रेप्टोसाइक्लीन तथा फाइटोलान के मिश्रण का एक बार फिर छिड़काव किया।

फसल की कटाई के दिन बहुत से किसान और मैसूर कृषि विभाग के कृषि अधिकारी उनके खेत में जमा हो गये और अन्दाजा लगाया कि इस फसल से फी हैक्टर लगभग ८,००० किलो पैदावार मिलेगी।

लेकिन श्री चौधरी को प्रथम प्रयास में जो सफलता मिली वह उनके अन्दाजे से कहीं अधिक निकली। तौलने पर पैदावार फी हैक्टर १०,६०० किलो बैठी। दूसरे शब्दों में उन्होंने एक क्विंटल बीज से ४०० क्विंटल से अधिक धान पैदा किया।

×

चौधरी कटाई के लिए तय्यार अपनी ताईचुंग धान की फसल देख रहा है।

[पृष्ठ २ का शेष]

.. सत्य कर्त्तव्य रूप मे आकर शिवं बन जाता है और भावना से समन्वित हो सुन्दरम् के रूप मे दृष्टि गोचर होता है। सुन्दर सत्य का ही परिमार्जित रूप है। सौंदर्य सत्य को ग्राह्य बनाता है। पन्त जी के शब्दों में--

''वही प्रज्ञा का सत्य स्वरूप
हृदय में बनता प्रणय अपार,
लोचनों मे लावण्य अनूप,
लोकसेवा में शिव अविकार।'

शिवं

शिवं (हित) के रूप मे मतभेद है। कोई तो केवल आर्थिक और भौतिक हित को ही प्रधानता देते हैं (जैसे पतिवादी) और कोई उसकी उपेक्षा र आध्यात्मिक हित को ही महत्त्व दान करते हैं। वास्तवमे पूर्णता में ही आनन्द है। शिवं का अर्थ व्यक्तियों के भौतिक मानसिक और आध्यात्मिक क्तियों मे सामंजस्य स्थापित कर नको सुसंगठित और सुसम्पन्न एकता की ओर ले जाने से है।

सुन्दरम्

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने सौंदर्य र प्रकाश डालते हुये लिखा है ''कुछ प-रंग की वस्तुएं ऐसी होती हैं जो मारे मन मे आते ही थोड़ी देर के लए हमारी सत्ता पर ऐसा अधिकार र लेती हैं कि उसका ज्ञान ही हवा । जाता है और हम उन वस्तुओं की रवना के रूप मे ही परिणत हो जाते । हमारी अन्तस्सत्ता की यही तदा- ार परिणति सौंदर्य की अनुभूति है । स वस्तु के प्रत्यक्ष ज्ञान या भावना तदाकार परिणति जितनी ही धिक होगी उतनी ही वह वस्तु हमारे ए सुन्दर कही जायेगी।''

अंग्रेजी कवि शैली Shelly ने दर्य के सम्बन्ध मे लिखा है।

"A going out of our wn nature and an identi ication of ourselves with e beautiful which exists thought, action or per- n, not our own."
—A Defence of poetry

समन्वय

वास्तव मे सत्य शिव और सुन्दर न भिन्न क्षेत्रों में एक दूसरों के था अनेकता में एकता के रूप हैं। ज्ञान की अनेकता में एकता है, कर्म क्षेत्र की अनेकता की एकता रूप है। सौंदर्य भाव क्षेत्र का मंजस्य है।

श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर एक स्थान र सत्यं, शिवं सुन्दरम् का समन्वय करते हुये लिखते हैं ''सौंदर्य मूर्ति मंगल की पूर्ण मूर्ति है और मंगल मूर्ति ही सौंदर्य का पूर्ण स्वरूप है।'' अर्थात् इस त्रिमूर्ति मे ही सत्य रूप की प्रतिष्ठा है। जिस प्रकार सरस्वती मे 'सत्य और सुन्दरम् का समन्वय है उसी प्रकार लक्ष्मी मे 'शिवं और सुन्दरम्' सम्मिश्रण है। जहाँ 'सत्य और सुन्द' रम्' होता है वहाँ 'शिवं' अवश्य आकर सँवार करता है। बिहारी के प्रस्तुत पद में सत्यं, शिवं सुन्दरम् का कितना सुन्दर सामंजस्य है--

''नहिं पराग, नहिं मधुर रस,
नहिं विकास इहि काल।
अली कली ही सों बिन्ध्यो,
आगे कौन हवाल।।''

●

(पृष्ठ ६ का शेष)

वेद का यह प्रमाण है कि– 'आचार हीन न पुनन्ति वेदा।'' (आचार भ्रष्ट को वेद भी पवित्र नहीं करते है।) इसी बात को लार्ड कैनिंग ने लिखा है कि—''मैं चरित्र के रास्ते पर चलकर बल प्राप्त करूंगा और दूसरे मार्ग का अनुसरण नहीं करूंगा, मुझे भरोसा है कि यह रास्ता छोटा नहीं है एवं यही अपने उद्देश्य तक पहुंचाने वाला ठीक और निश्चित रास्ता है।'' इसी विषय मे जेम्स हावेज लिखते हैं कि-'चरित्र एक शक्ति है, प्रभाव है वह मित्र बनाता है, सहायक और संरक्षक प्राप्त करता है और धन, मान, तथा सुख का निश्चित मार्ग खोल देता है।'

चारित्रिक श्रेष्ठता के कारण लिंकन और वाशिंगटन अमेरिका के राष्ट्रपति बन गये, गांधी, श्रद्धानन्द, अमीचन्द, शिवाजी, सुभाष आदि महापुरुष सारे संसार के लिए जगमगाते सूर्य सदृश हैं। महर्षि दयानन्द का चरित्र कितना उज्ज्वल था। जब कि ''एक दिन महर्षि दयानन्द बैठे थे कि एक तेजस्वी महिला आयी, श्रद्धा से प्रणाम कर बोली 'महाराज आप आदित्य ब्रह्मचारी हैं, मैंने भी अपने जीवन मे आज तक अखण्ड ब्रह्मचर्य का पालन किया है। परन्तु अब मैं विवाह करने का विचार कर रही हूं। मेरी प्रबल इच्छा है कि आपके चरणों मे ही अपना जीवन समर्पित करूं। जिससे आपके समान तेजस्वी, प्रतिभावान पुत्र की माता बनने का गौरव मुझे प्राप्त हो।' महर्षि मुस्कराये और बोले आपका उद्देश्य सफल हो यह अच्छी बात है, परन्तु हे माता तुम मुझे ही अपना पुत्र मानो। कितना ऊँचा चरित्र था महर्षि का। हिमालय के सदृश स्फटिक मणि की भांति स्वच्छ और पवित्र।

अतः ऐ मानव आप भी महान् बनने के लिये अपने चरित्र को ऊँचा उठाइये क्योंकि महानता का भवन खड़ा करने के लिये चरित्र ही आधार है। तभी विश्व मे अज्ञान, अन्याय, अभाव एवं अत्याचार के शत्रु नष्ट होंगे और और दयानन्द का स्वप्न पूरा होगा तथा सारा विश्व कह उठेगा कि 'वैदिक धर्म की जय।।''

★

चौधरी भगवानदास वकील शाहपुर का निधन

चौधरी भगवानदास जी वकील शाहपुर (सरगोधा) का निधन ६८ वर्ष की आयु में फेफड़े के कैंसर से कलकत्ता में १ सितम्बर को अपने ज्येष्ठ पुत्र श्री मदनमोहन चौधरी हुगली घाइकाट के निवास स्थान पर हो गया।

स्व० चौधरी साहब ने शाहपुर में आर्यसमाज का कार्य दीर्घकाल तक बड़ी लगन के साथ किया। आप फौजदारी के बड़े वकील थे। कई हजार रुपयों की आय थी, किन्तु आपको बेईमानी से चिढ़ थी और इसी कारण उसको बन्द कर आपने ३५०) रु० मासिक पर राशनिंग आफिसरी की।

आप शाहपुर डी०ए०वी० स्कूल के प्रबन्धक व समाज के प्रधान पदों पर भी रहे। आप एक नैष्ठिक आर्य थे। आप का दाह कर्म संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से भारी जनसमूह के बीच सम्पन्न हुआ। कई सहस्र रुपया विभिन्न संस्थाओं को दान भी आपके पुत्रों ने किया।

आपने अपने पीछे तीन पुत्र तथा चार पुत्रियां छोड़ी हैं। श्री विद्योत्तमा यती जी सबसे बड़ी पुत्री हैं।

—शिवदयालु

श्री भवानीलाल गज्जूलाल जी

विश्वकर्मा वंशज बालकों को

७०००) का दान

श्री भवानीलाल गज्जूलाल जी शर्मा स्थिर निधि

१—विश्वकर्मा कुलोत्पन्न श्रीमती तिज्जोदेवी-भवानीलाल शर्मा कुकहास की पुण्य स्मृति में श्री भवानीलाल जी शर्मा अमरावती विदर्भ) निवासी ने श्री विश्वकर्मा वंशीय बालकों के हितार्थ ७०००) की धन राशि सभा को समर्पण कर श्री० जी० शर्मा स्थिरनिधि की योजना निम्नलिखित नियमानुसार भाद्रपद संवत् २०१४ वि० सितम्बर १९५७ ई० को स्थापित की।

२—इस मूलधन से वार्षिक ब्याज जो कुछ प्राप्त होगा, उसे उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा विश्वकर्मा वंश के गरीब, असहाय किन्तु होनहार बालक बालिकाओं के शिक्षण मद में व्यय करती रहेगी।

३—उक्त निधि से आर्थिक सहायता लेने वाले इच्छुकों को मास जुलाई मे ।) के स्टाम्प भेजकर सभा से छपे फार्म मंगाकर भरकर भेजना आवश्यक है।

★मन्त्री आर्यप्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश लखनऊ

श्रीमती तिज्जो देवी

—आर्य उप प्रतिनिधि सभा फैजाबाद के अधिकारियों तथा अन्तरङ्ग सदस्यों का निर्वाचन १७ नवम्बर को १ बजे से आर्य समाज के पण्डाल में होगा। जिले की सभी आर्य समाजें अपने प्रतिनिधि भेजें।

—कलवनाथगिरि, मन्त्री

—आर्यसमाज कायमगंज के श्री राजाराम जी के पुत्र श्री केशवकुमार के पुत्र का नाम करण संस्कार १७ अक्तूबर को हुआ।

—रामचन्द्र आर्य

—११ अक्तूबर को नवाबगंज (गोंडा) के श्री शेरसिंह जी का विवाह श्री करनादेवी के साथ हुआ। —मन्त्री

—आर्य समाज रजौली (गया) में श्री आचार्य सुदेव जी के ८ से १२ अक्तूबर तक विद्वत्ता पूर्ण उपदेश हुए।

—रामेश्वर प्रसाद मन्त्री

—४ से १३ अक्तूबर तक श्री पं० रामचन्द्र जी शर्मा वानप्रस्थी गुरुकुल एटा ने आर्यसमाज पपड़ी मिलक (फर्रुखाबाद) मे वैदिक धर्म का प्रचार किया। ३ यज्ञ, ५ उपनयन संस्कार कराये। आर्य समाज की स्थापना की।

—रामचन्द्र शर्मा

—आर्य समाज दरियागंज (दिल्ली) में, ५ से ११ अक्तूबर तक विजयादशमी के उपलक्ष मे श्री रमेशचन्द्र जी शास्त्री एम०ए० के भाषण हुये।

—चमनलाल मन्त्री

—१ अक्तूबर को हैदराबाद उन्नाव में विजयादशमी पर्व उत्साहपूर्वक मनाया गया। —राजकुमारसिंह कुशवाहा

—आर्य समाज मकरावार (फर्रुखाबाद) में वेद प्रचार सप्ताह उत्साह से मनाया गया। —मन्त्री

—८ सितम्बर को ग्राम पारा (बदायूं) में आर्य समाज की स्थापना हुई। श्रीमती गंगादासी पारा ने ५०००) के मूल्य का बाग जमीन व धर्मशाला, कुआं आर्य समाज को दान दे दिया। दान-पत्र प्रतिनिधि सभा लखनऊ के नाम कराया गया।

—प्रेमशंकर मन्त्री

—२३, २४ अगस्त को उमरैन (इटावा) मे श्री स्वामी प्रेमानन्द जी व श्री वेदपालसिंह जी ने वैदिक धर्म का प्रचार किया। ३०) सभा को दान मे दिये गये। —भगवत् दयाल आर्य

—५ से ९ सितम्बर तक आर्यसमाज देवगांव (आजमगढ़) में सभा के प्रचारक द्वारा प्रचार किया गया।

—केशवप्रसाद आर्य

—आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ के प्रचारक श्री खड़गपालसिंह ने अगस्त में सोगांव (मैनपुरी) में वैदिक धर्म का प्रचार किया। —हंसराज मन्त्री

आर्य-जगत

—आर्यसमाज जगतपुर (पुराना शहर) बरेली में वेद प्रचार सप्ताह धूम धाम से मनाया गया। —मन्त्री

—आ०स० बाजारगंज (मुहम्मदी) खीरी मे वेद प्रचार सप्ताह धूम धाम से मनाया गया। —मन्त्री

—आर्य केन्द्रीय सभा आगरा के तत्वावधान में २१ अक्तूबर को ऋषि निर्वाण पर्व राजामण्डी आर्य समाज के अर्द्ध निर्मित प्रांगण में समारोह पूर्वक मनाया गया। नगर की समस्त आर्य समाजों और संस्थाओं ने इस मे भाग लिया। —मन्त्री

—ग्राम जूधीपुर (गोण्डा) मे श्री शिवशंकरलाल जी मन्त्री आर्यसमाज दर्शनपुरवा कानपुर के प्रयत्न से आर्य समाज की स्थापना हो गयी है।

—अर्जुनचन्द्र

—८ अगस्त से १८ सितम्बर तक श्री ब्रह्मानन्द भजनोपदेशक ने श्री स्वामी सेवानन्द जी की अध्यक्षता मे हरदोई जिले के १४ १५ गावों मे वैदिक धर्म का प्रचार किया। —ब्रह्मानन्द

—गत मास श्री प० शिवदयालु जी की मोहन आश्रम हरिद्वार मे कथा हुई।

—मन्त्री

—श्री विद्योत्तमा यती ने हरिद्वार मे महर्षि दयानन्द वेद विद्यालय के नाम से संस्था कायम की है। २२०००) की लागत से जमीन खरीद ली गई है।

—नन्दलाल मन्त्री

—आर्यसमाज शाहजहांपुर (रजिस्टर्ड) मे श्री स्वामी आनन्द गिरि जी का १५ दिन तक प्रवचन हुआ। ईसाई निरोध के लिए श्री स्वामी जी को धन भी अर्पित किया गया।

—महावीरप्रसाद गुप्त

—महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस को आर्यसमाज नैनीताल मे पद्मश्री लेफ्टि कमाण्डर शुकदेव जी पाण्डेय की अध्यक्षता में 'राष्ट्र विरोधी शक्तियों का किस प्रकार निराकरण किया जाय' विषय पर महर्षि दयानन्द वाक प्रतियोगिता हुई। लगभग ३० प्रतियोगियों ने इसमें भाग लिया प्रतियोगियों को पुरस्कार दिये गये। अन्त मे श्री बांकेलाल कान आगन्तुकों का आभार प्रकट करते हुए धन्यवाद दिया।

—आर्य समाज पूरनपुर मे दैनिक यज्ञ और सत्संग होता है।

—मन्त्री

४ से १३ सितम्बर तक मिरहची एटा में तथा मारहरा में श्री रामचन्द्र शर्मा वानप्रस्थी ने प्रचार किया। ७ यज्ञ १० उपनयन संस्कार कराये। १५ से २७ सितम्बर तक आर्य समाज अमापुर में रामायण द्वारा प्रचार किया।

—रामचन्द्र शर्मा वानप्रस्थी

—८ अक्तूबर को दिगनेर (आगरा) मे आर्य समाज की स्थापना हो गई।

—डा० बालमुकुन्द आर्य

२५ अगस्त को आर्य समाज तिलक द्वार मथुरा मे समस्त आर्य समाजों का संयुक्त मासिक अधिवेशन श्री ठा० शेर सिंह जी प्रधान की अध्यक्षता मे हुआ।

—मन्त्री

—आर्य समाज जनकनगर (सहारनपुर) मे वेद प्रचार सप्ताह समारोह मे मनाया गया। —मन्त्री

—१३ सितम्बर को नागौर आर्य समाज की ओर से एक सभा हुई। जिसमे श्री आचार्य भगवानदेव जी, श्री कपिलदेव जी शास्त्री, श्री भगवतीप्रसाद जी के भाषण हुए। —मन्त्री

—८ सितम्बर को श्री पं० बुद्धदेव जी आर्य उपदेशक के प्रयत्न से गदरपुर (नैनीताल) मे आर्य समाज की स्थापना हुई। —मन्त्री

—श्री सेवानन्द जी सरस्वती के प्रयत्न से गांव कानपुर पो० ककरौआ (रामपुर) मे आर्यसमाज की स्थापना हो गई है। —मन्त्री

—श्री स्वामी सेवानन्द के प्रयत्न से ग्राम मझपुरा जिला रामपुर मे आर्य समाज की स्थापना हुई।

—३० सितम्बर को श्री जवाहरलाल जी अहमदगंज लखनऊ के नवजात पुत्र का नामकरण संस्कार और ६ अक्तूबर को पौत्र का निष्क्रमण संस्कार वैदिक रीत्यनुसार हुआ।

—ज्ञानप्रकाश

—मण्डल आर्यवीर दल प्रयाग तथा गुरुकुल सिराथू के निश्चयानुसार ३० अक्तूबर से ५ नवम्बर तक गुरुकुल सिराथू मे मण्डल स्तर पर आर्यवीर दल सांस्कृतिक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया है। २) प्रवेश शुल्क देना पड़ेगा। भोजन आदि का भार गुरुकुल वहन करेगा।

—मदनमोहन आर्य मण्डलपति

—आर्यसमाज मुगल सराय मे ऋषि निर्वाण पर्व समारोह से मनाया।

—मन्त्री

—आर्यसमाज पूरनपुर मे वेद प्रचार सप्ताह समारोह पूर्वक मनाया गया।

—मन्त्री

—गत मास श्री पं० विश्वनाथ जी त्यागी ने बम्बई आर्यसमाज की ओर से कई भाषण दिये। आपके व्याख्यानों का सुशिक्षित जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा। —प्रकाशचन्द्र शास्त्री

—अगस्त मे जिला उप सभा रामपुर द्वारा जिले के कई गांवों में वैदिक धर्म का प्रचार किया गया। हरसूनगला तथा गूह लुइया मे नवीन आर्यसमाज कायम की गई। —मन्त्री

—आर्यसमाज धमौरा (रामपुर, में वेद प्रचार सप्ताह धूमधाम से मनाया गया। —मन्त्री

—स्त्री आर्य समाज ब्रह्मपुरी अलीगढ़ ने श्रावणी पर्व व वेद प्रचार सप्ताह समारोह से मनाया। —मन्त्रिणी

—आर्यसमाज पीपीगंज गोरखपुर मे वेद प्रचार सप्ताह समारोह से मनाया गया। कथा और उपदेशों का कार्यक्रम बड़ा अच्छा रहा। —मन्त्री

—आर्य युवक समाज नगर उन्टारी पलामू मे १ से ३ अक्तूबर तक विजयादशमी पर्व समारोह से मनाया गया।

—मन्त्री

—सपनावत (मेरठ) मे गुरुकुल की स्थापना हुई है। —सत्य प्रेमी

—श्री ज्वाहरलाल जी आर्य दौलतगंज लखनऊ ने अपने वैदिक साहित्य प्रकाशन केन्द्र द्वारा 'दैनिक ईश्वर प्रार्थना उपासना'' की सैकड़ों प्रतियां दूर-दूर तक अस्पतालों मे रोगियों को वितरित की है। —संयोजक

—गोवा प्रदेश आर्यसमाज मे १५ आर्यसमाजों की स्थापना हो चुकी है।

—१ से ७ सितम्बर तक आर्यसमाज समस्तीपुर (दरभंगा) मे वेद प्रचार सप्ताह धूमधाम मे मनाया गया। मंत्री

—आर्यसमाज कायमगंज मे ऋषि निर्वाण पर्व मनाया गया। —मन्त्री

—आर्यसमाज खंडवा की ओर से दि० २३-९-६८ से २७-९-६८ तक समाज के प्रचारक सुखराम आर्य सिद्धांत शास्त्री ने ग्राम अतर, स्टेशन अतर, भेरूखेड़ा, मलगांव, निमाड़ खेड़ी आदि मे (वाल्मीकि रामायण के आधार पर रामायण का राष्ट्रिय स्वरूप सत्य सनातन वैदिक धर्म क्या है, ईश्वर भक्ति मानव धर्म आदि विषयों पर) महत्त्वपूर्ण ओजस्वी भाषण दिया। ग्रामीण जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

—मंत्री

आर्यसमाज खंडवा

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण स० एल.-६०

कार्तिक १९ शक १८९० मार्गशीर्ष कृष्ण ५
(दिनांक १० नवम्बर सन १९६८)

आर्य्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

Registered No L 60
पता—'आर्य्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष २५९९३ तार : "आर्यमित्र

—आर्यसमाज पुरानी गोदाम गया के तत्वावधान में गुरुकुल महाविद्यालय गया का 'शिलान्यास' विजय दशमी के शुभ अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान एवं बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के माननीय प्रधान पद्मभूषण श्री डा० दुखनराम जी द्वारा सम्पन्न हुआ।

—आ० स० पुरानी गोदाम गया (बिहार) का पंचम वार्षिकोत्सव दि० २८, २९, ३० सितम्बर व १ अक्तूबर को सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर गोरक्षा सम्मेलन, अराष्ट्रिय ईसाई प्रचार निरोध सम्मेलन, महिला सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन तथा आर्य गोष्ठी हुए।

—श्री जवाहरलाल जी आर्य द्वारा संस्थापित 'वैदिक साहित्य प्रकाशन' की प्रथम बैठक आर्यसमाज भवन चौक में वेद मनीषी श्री हरिवंशलाल जी मेहता की अध्यक्षता मे हुई। नई संस्था को अधिकाधिक उपयोगी बनाने के लिए निम्न संविधान निर्मात्री उपसमिति का चयन हुआ।

सर्व श्री तेजनारायण जी एडवोकेट (अध्यक्ष) ज्ञानकृष्ण अग्रवाल (संयोजक), जवाहरलाल आर्य, हरिवंशलाल जी मेहता 'वेद मनीषी', विष्णु स्वरूप, नाथूराम आर्य, कृष्ण बलदेव महाना, रामचरित्र पांडे व छेदीलाल अग्रवाल।

—ज्ञानकृष्ण अग्रवाल संयोजक

गायें समाज अलीगढ़ को मेजें

'दैनिक हिन्दुस्तान' दि० ८ अक्तूबर १९६८ के मुख पृष्ठ पर आयत के अन्तर्गत मुद्रित टिप्पणी 'कहां गये गो भक्त' के उत्तर मे; तथा 'दैनिक हिन्दुस्तान' दि० १२ अक्तूबर १९६८ की 'लोकवाणी' में प्रकाशित आर्यसमाज अनूपशहर की सेवाशील प्रतिक्रिया के समर्थन में; आर्यसमाज अलीगढ़ अपने दि० १३ अक्तूबर १९६८ के निश्चयानुसार राजस्थान प्रदेश के सम्माननीय मुख्य मन्त्री से अनुरोध करती है कि वे कृपया एक सौ गायें हमारी समाज को भिजवाने का कष्ट करें, स्थानीय आर्य समाज उनके पालन पोषण के लिये पूर्णतया तत्पर है। सूचना की प्रतीक्षा में—

—जयनारायण आर्य
मन्त्री—आर्यसमाज अलीगढ़

शोक संवेदना

आर्य अनाथालय दरियागंज दिल्ली के समस्त बालक बालिकाओं तथा कर्मचारियों ने एक शोक सभा करके श्री दानवीर रूपनारायण जी और श्री राजनारायण जी के आकस्मिक निधन पर शोक प्रस्ताव पास किया।

—आर्यसमाज अलीगढ़ ने १५ अक्तूबर को एक शोक सभा करके आर्यसमाज के उप प्रधान श्री राम स्वरूप जी मुख्तार की मृत्यु पर शोक सहानुभूति का प्रस्ताव पारित किया।

—जयनारायण आर्य

—आर्यसमाज सराय अगस्त एटा ने श्री प० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय की मृत्यु पर शोक सहानुभूति का प्रस्ताव पास किया। —मन्त्री

—आर्यसमाज खंडवा ने श्री प्रो० ताराचन्द्र जी माता की मृत्यु पर शोक सहानुभूति का प्रस्ताव पास किया।

—आर्यसमाज खंडवा की ओर से सिंगाजी के मले मे प्रचार किया गया।

—मन्त्री

—आर्यसमाज लल्लापुरा वाराणसी ने अपने सदस्य श्री माधो प्रसाद जी के निधन पर शोक सहानुभूति का प्रस्ताव पास किया। —मन्त्री

—आर्यसमाज लक्षीमपुर विष्णु (रामपुर) ने श्री प० दामोदर सातवलेकर जी, श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय और श्री पं० किशोरीलाल जी शर्मा हाथरस की मृत्यु पर शोक सहानुभूति का प्रस्ताव पास किया।

—कन्हैयालाल मुमुक्षु

—आर्यसमाज लल्लापुरा श्री प० कालीचरण जी शर्मा की मृत्यु पर शोक प्रकट करता है। —मन्त्री

—आर्यसमाज सीसामऊ कानपुर ने श्री पं० दामोदर सातवलेकर जी के निधन पर शोक प्रस्ताव पारित किया।

—मन्त्री

—आर्यसमाज काठ ने श्री बा० फकीरचन्द्र जी बी० ए० की पत्नी की मृत्यु पर शोक सहानुभूति का प्रस्ताव पारित किया। —मन्त्री

—आर्यसमाज पूरनपुर (पीलीभीत) ने श्री स्वामी अमृतानन्द जी की मृत्यु पर शोक प्रस्ताव पास किया। —मन्त्री

—आर्यसमाज ज्वालापुर ने श्री स्वामी अथर्वानन्द जी महाराज की मृत्यु पर शोक सहानुभूति का प्रस्ताव पास किया। —मन्त्री

—आर्यसमाज लल्लापुरा वाराणसी श्री मेवालाल जी की धर्म पत्नी की मृत्यु पर शोक प्रकट करता है। —मन्त्री

—आर्यसमाज पुरवा राजाबजार (उन्नाव) श्री स्वामी अमृतानन्द जी की मृत्यु पर शोक प्रकट करता है। —मन्त्री

—आर्यसमाज बांसीकुई ने श्री प० कालीचरण जी शर्मा मौलवी फाजिल की मृत्यु पर शोक सहानुभूति का प्रस्ताव पास किया। —मन्त्री

—आर्यसमाज बिलासपुर ने श्री प० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय की मृत्यु पर शोक सहानुभूति का प्रस्ताव पास किया। —मन्त्री

—आर्यसमाज टाण्डा अफजल (मुरादाबाद) ने श्री प० सातवलेकर जी, श्री प० गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय श्री प० रामचन्द्र जी देहलवी, प० काली चरण जी की मृत्यु पर शोक सहानुभूति का प्रस्ताव पास किया। —मन्त्री

—आर्यसमाज गन कैरिज फैक्टरी क्वाटर्स जबलपुर व आर्यसमाज गोविन्दपुरी (मेरठ) ने श्री गंगाप्रसाद जी उपाध्याय की मृत्यु पर शोक प्रस्ताव पारित किया। —मन्त्री

—आर्यसमाज बीसलपुर ने श्री प० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय की मृत्यु पर शोक सहानुभूति का प्रस्ताव पारित किया। —मन्त्री

—आर्यसमाज अनूपशहर ने श्री प० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय और श्री प० दीनदयाल जी उपाध्याय की मृत्यु पर शोक सहानुभूति का प्रस्ताव पास किया। —मन्त्री

—आर्यसमाज जौनपुर ने श्री स्वामी अमृतानन्द जी की मृत्यु पर शोक सहानुभूति का प्रस्ताव पास किया।

—मन्त्री

—आर्यसमाज काशीपुर ने श्री प० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय की मृत्यु पर शोक सहानुभूति का प्रस्ताव पारित किया। —मन्त्री

—आर्यसमाज जामनगर ने श्री प० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय की मृत्यु पर शोक सहानुभूति का प्रस्ताव पास किया। —मन्त्री

—आर्यसमाज शाहजहांपुर ने श्री पं० दामोदर सातवलेकर जी, प० देवनारायण जी भरतीय, श्री ब्रह्मदत्त की माता के निधन पर शोक सहानुभूति का प्रस्ताव पास किया।

डा० तिलकलाल उपप्रधान

—आर्यसमाज हमीरपुर आर्य जगत् के प्रसिद्ध नेता श्री प० कालीचरण जी शर्मा की मृत्यु पर शोक सहानुभूति प्रकट करता है। —मन्त्री

दिनांक १८ सितम्बर को देहली इरविन अस्पताल में महान् समाज सेविका एव आर्य कन्या डिग्री कालिज खुरजा कौंसिलेटरी कु० कलावती गुप्ता का निधन हो गया।

आपका जन्म सन् १९०१ मे हुआ। गुरुकुल एव विश्वविद्यालय में शिक्षा ग्रहण करने के उपरान्त आपने अध्यापन का कार्य किया। १३ वर्ष तक देहली के इन्द्रप्रस्थ कालिज की प्रधानाचार्या रहीं।

आप के निधन से आर्य कन्या पाठशाला परिवार अत्यधिक शोक ग्रस्त है उनके निधन के शोक में खुरजा नगर की समस्त आर्य संस्थाएं दिनांक १८ सितम्बर १९६८ को बंद रहीं।

—प्रिंसिपल

२७ व्यक्तियों की शुद्धि

दिनांक १९-९-६८ को ग्राम टूंसर थाना कुलड्डा जिला सुन्दरगढ़ उड़ीसा मे वेदव्यास भारतीय करण सभा की ओर से नियोजित शुद्धि संस्कार में पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्दजी सरस्वती के तत्वावधान मे २७ ईसाई व्यक्तियों ने वैदिक धर्म की दीक्षा ली। शुद्धि के अवसर पर एक हजार से भी अधिक व्यक्ति उपस्थित थे। शुद्धि के प्रति सभी वन वासियों मे अपूर्व उत्साह था। शुद्धि संस्कार श्री देशपाल जी दीक्षित, श्री सुरेन्द्रकुमार जी सामवेदी व श्री स्वामी शिवानन्द जी तीर्थ ने किया। शुद्ध होने वाले सभी व्यक्ति उराव जाति के थे।

—९ अक्तूबर को एम० सी० वैदिक इन्टर कालेज आगरा में गांधी शताब्दी समारोह सप्ताह के अवसर पर एक सभा प० पूरनमल जी शर्मा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई इस अवसर पर समस्त छात्रों अध्यापकों एव कर्मचारियों ने देश की भावनात्मक एकता को अहिंसात्मक मार्ग से स्थापित करने की प्रतिज्ञा की।

—प्रधानाचार्य

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के लिये भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से कृष्णगोपाल शर्मा द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।

ओ३म्

लखनऊ-रविवार कार्तिक २६ शक १८९०, मार्गशीर्ष कृ० १२ वि० सं० २०२५ दिनाङ्क १७ नवम्बर १९६८ ई०

दशम सार्वदेशिक आर्य महा सम्मेलन के अध्यक्ष श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज ने

अपने अध्यक्षीय भाषण द्वारा आर्यसमाज एवम् आर्य जनता को विश्व में वेद प्रचार की ओजस्वी प्रेरणा दी एवम् भारतीय गौरव की स्थापना में महर्षि दयानन्द के आदर्शों का अनुसरण करने का निर्देश दिया-

श्री महात्मा आनन्दस्वामी जी महाराज

आर्यसमाज के संगठन को सुदृढ़ एवं आदर्श बनाने के लिए अनुशासन की की भावना पर विशेष बल देते हुए सदस्यों और सभाओं को अपने मतभेद आपस में सुलझाने पर बल दिया।

स्वामी जी ने कहा प्रान्तीय सभाओं को सार्वदेशिक के अनुशासन में चलना चाहिये, परन्तु साथ ही चेतावनी भी दी कि यदि सार्वदेशिक सभा स्वयं दल बन्दी में फंसी हो और एक पार्टी के रूप में काम करे तो आर्य समाजियों को पूर्ण अधिकार है कि वे संगठन के हित में विवाद में हस्तक्षेप करें। आर्यसमाज के हित में तत्कालीन सर्वदेव व्यवस्था स्थापना में ... कर्तव्य पालन करेंगे।

परमेश्वर की अमृत वाणी-

वेद पढ़ो और पढ़ाओ

मिमीहि श्लोकमास्ये पर्जन्य इव ततनः।
गाय गायत्रमुक्थ्यम् ॥

[ऋग्वेद १/३८/१४]

[१] (श्लोकम्) श्लोक को, वेद की शिक्षा से युक्त मन्त्र को।

[२] (आस्ये मिमीहि) अपने मुख में निर्मित कर अर्थात् मुख में भर ले अथवा जिह्वाग्र व कण्ठाग्र कर।

[३] (पर्जन्य इव ततनः) मेघों की भांति वर्षाकर।

[४] (उक्थ्यम् गायत्रम् गाय) कहने योग्य, बोलने वाले प्रशंसनीय वेद ज्ञान को, वैदिक सूक्तों को, गायत्री छन्द वाले स्तोत्रों, को गा और गवा, पढ़ और पढ़ा।

वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है—यह आर्यसमाज का एक सुनहरी नियम है, जिसके पालन से अन्य सब नियम स्वतः जीवन में घटित होने लगते हैं। विचार कीजिये वेद का श्रवण श्रावण, पठन पाठन धर्म नहीं परम धर्म बताया क्योंकि वेद ही सत्य विद्याओं का पुस्तक है और अविद्या का नाश तथा विद्या की वृद्धि तब होगी जब सत्य विद्या का प्रसार होगा। अतः स्वयं परमेश्वर स्वयम् अपनी वेद वाणी में अपने अमृत पुत्र और पुत्रियों को यही दिव्य सन्देश दे रहा है।

क्या हम परमेश्वर की इस आज्ञा का पालन कर रहे हैं? क्या महर्षि स्वामी दयानन्द द्वारा बताये हुए परम धर्म को ग्रहण कर रहे हैं? यदि परमेश्वर की आज्ञा नहीं मान रहे तो क्या हम उस के भक्त कहलाने के अधिकारी हैं? यदि हम महर्षि दयानन्द के वर्णित परम धर्म का अनुकरण नहीं कर रहे तो क्या हम ऋषि अनुयायी हैं?

केवल परमात्मा और ऋषि गुणगान से अभीष्ट की सिद्धि नहीं होगी। इसलिए आर्यो आज वेद पढ़ने पढ़ाने सुनने सुनाने, गाने गवाने का दृढ़ व्रत लो और मानव की शुष्कता को परमेश्वर की सुधा से सींचो। 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' की साध तभी पूर्ण होगी।

इस अंक में पढ़िए!

१—बाद से कैसे बचें?	२
२—सम्पादकीय	३
४—अध्यात्म सुधा	५
५—काव्य-कानन	६
६—सत्य-नदी रहस्य	७-८
७—आर्य महिला मण्डल	१०
८—कहानी-कुञ्ज	११-१२
९—जीवन ज्योति, वैदिक अनुसन्धान	१५
१०—हमारे पाठक क्या कहते हैं	१६

	वर्ष	अङ्क
वार्षिक मूल्य १०) छमाही मूल्य ६) विदेश में २०) एक प्रति २५ पै०	७०	४०

सम्पादक—
—प्रेमचन्द्र शर्मा
सभा मन्त्री

नैतिक उत्थान आन्दोलन

पाप से कैसे बचें ?

★श्री चोखेलाल सत्यपाल
शाहजहांपुर

(१) सत्यं वद्

(२) धर्मंचर

इन शब्दों से हमारे लिये एक रास्ता मिलना है कि पाप से कैसे बचें।

पाप क्या है इसकी कोई ठीक व्याख्या नहीं की जा सकती। प्रत्येक देश व मानव की परिस्थिति के अनुसार अपने-अपने रस्म रिवाज के अनुसार पाप की व्याख्या करते हैं। जन-जन मे जिन भावना का संचार होता है, उनके विरुद्ध चलना ही पाप समझा जाता है। हमारे देश में तप त्याग और बलिदान की बहुत महिमा है। नैतिक बल की प्रथम प्राथमिकता है। हमारे देश से बाहर यह प्रचलन नहीं है। वहाँ धनी तिकड़मी और परम्परा के अनुसार चलने वालों का मान होता है। भारत देश संसार के सब देशों से महान् रहा है, और उस परमात्मा का कोटि-कोटि धन्यवाद है कि समय के अनुसार यह राजनैतिक सामाजिक बन्धनों में फंस गया है, और इसी कारण आर्थिक संकटों में पड़ गया है। एक समय आया कि राजनैतिक बन्धन तोड़े और आर्थिक व सामाजिक समस्या ज्यों की त्यों बनी रही। जिस समय कि यह पाप विमोचन अंक निकल रहा है उस समय भारतीयों के नैतिक बल का पतन हो चुका है और भ्रष्टाचार का बोलबाला है। १९ वीं शताब्दी में जब कि लोग ईश्वर को भूल चुके थे, तब एक महान् आत्मा का टकारा काठियावाड़ गुजरात में जन्म हुआ। उसने देश व समाज की अधोगति पर दो आँसू बहाये और मानव मात्र के कल्याण के लिए एक संस्था स्थापित की जिसका कि मुख्य उद्देश्य था संसार का उपकार करना और बताया कि वेद सब सत् विद्याओ का पुस्तक है, उसका पढ़ना-पढ़ाना सबका परम धर्म है। वेद-विश्वासी और ईश्वर विश्वासी तीन चीजों के प्रभाव मे अनादि बसता है। (१) ईश्वर (२) जीव (३) प्रकृति। सतचित आनन्द आज के मानव का जीवन वेद से विमुख हो रहा है, और इसी कारण भ्रष्टाचार और पाप संसार में बढ रहा है। सरकार को बनाने का अधिकार जनता को अवश्यमेव प्राप्त है, परन्तु जनता सरकार ठीक तरह से न बना सकी, और बहुत से प्रान्तों की सरकारें विध्वंस हुयीं। सरकार ने अधिक से अधिक सत्ता अपने हाथों में रखीं, इससे कर्मचारियों की संख्या बढी और काम मँहगा हुआ, तथा इसी कारण सरकार का तेजी से ह्रास हुआ। पवित्रता के भाव धूल में मिल गये। वेद विरुद्ध ईश्वर की सत्ता का अनादर होने लगा फलस्वरूप मानव का जीवन चिन्ताजनक तथा पापमय होने लगा। निर्दोष व सीधा साधा मानव जीवन के सुख की चाहना में सत्ताधारी व तिकड़मी लोगों से पीछे रहने लगा और अपने को धिक्कारने लगा कि अगर तिकड़म और चालाकी से काम लिया होता और थोड़ा सा असत्य ही बोल दिया होता तो यह दुर्दिन देखने को न मिलता। वह भूल जाता है कि प्रभु परमात्मा भूत वर्तमान और भविष्य का जानने वाला है। न्यायकारी है और सबका रक्षक है। अच्छे कर्म का अच्छा फल होता है और बुरे कर्म का बुरा।

बुरे कर्म को पाप कहते हैं और अच्छे कर्म को पुण्य, मानव को पाप से बचने व बचाने के लिये अपने अन्तःकरण को ध्यान देना चाहिए और अपनी आत्मा की पुकार को सुनना चाहिए और तदनुसार ही करना चाहिये, परन्तु स्वार्थ की लोलुपता के कारण अपनी आत्मा की पुकार के विरुद्ध आचरण करना पाप है। प्रभु में विश्वास रख करके ही जो कार्य किया जाता है, वही सफल होता है। किसी को धोखा नहीं देना चाहिए, इससे अन्तःकरण की पुकार दब जाती है और मानव भूल जाता है, कि परमात्मा दयालु और न्यायकारी है। मूर्ख लोग बड़े गर्व से यह कहने का साहस करते हैं कि जो प्रभु दयालु है वह न्यायकारी नहीं हो सकता। सत्यार्थ प्रकाश में श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती ने बड़े सुन्दर ढंग से व्याख्या की है जो इस प्रकार है "न्याय और दया का नाम मात्र ही भेद है क्योंकि जो न्याय से प्रयोजन सिद्ध होता है वही दया से दण्ड देने का प्रयोजन है, कि मनुष्य अपराध से बन्द होकर दुःखों को प्राप्त न हो वही दया कहाती है। जो पराये दुःखों को छुड़ाना और जैसा अर्थ दया और न्याय का तुमने किया है वह ठीक नहीं क्योंकि जिसने जितना बुरा कर्म किया हो उसे उतना ही दण्ड देना चाहिए और इसी का नाम न्याय है। और जो अपराधी को दण्ड न दिया जाय तो दया का नाश हो जाय क्योंकि एक अपराधी डाकू को छोड़ देने से सहस्रों धर्मात्मा पुरुषों को दुःख देना है, जब तक कि छोड़ने में सहस्रों मनुष्यों को दुःख प्राप्त होता है। वह दया किस प्रकार हो सकती है। दया वही है कि उस डाकू को कारागार में रखकर पाप करने से बचाना। डाकू पर और उस डाकू को मार देने से अन्य सहस्रों पुरुषों पर दया प्रकाशित होती है।"

पाप से बचने के लिये एक ही

(शेष पृष्ठ १६ पर)

धर्म का स्वरूप
और
समन्वय

'धर्म' शब्द का अर्थ मित्रवर ! धारण करना करते विद्वान्
श्रेयमार्ग ही धर्म मार्ग है; सात्त्विक मति की थाम लगाम।
सत्य धर्म का अर्थ बुद्धि से, मन से, रसना से, सच ग्रहण करो
सच कहना, प्रिय कहना, मानव ! धर्मभाव को मनन करो ॥

शब्द 'सत्यनारायण' सबको सच की महिमा बतलाता है
सच धारण करने से यह नर, नारायण सम बन जाता है।
जैसे रवि के प्रबल तेज से अन्धकार सब मिट जाता है
'सत्य सूर्य' के विमल उदय से, मिथ्या संशय मिट जाता है ॥

परम धर्म 'आचार' बुद्धि, से मन से, तन से, ग्रहण करो
सदाचार की अटल शिला पर आचार धर्म की नींव धरो।
सदाचार के सूर्य तेज से दुराचार मल जल जाता है
श्रेष्ठों की श्रेणी मे आसन सदाचार ही बिछवाता है ॥

दया धर्म को लखकर हिंसा 'क्रोध बन्धु' के साथ गई
दया धर्म की शीतल किरणें, मस्तक दिल में व्याप गई।
सब के पति 'मित्रदेव' की विश्व मोहिनी अभिराम हुई
सच की 'वीणा' से लगी निकलने, नित्य रागिणी शान्ति मयी ॥

मित्रदेव जब घर में आये संग मित्रता रानी लाये
सभी पड़ोसी मित्र बनाये मैत्री के शुभ सुमन खिलाये।
दाल यहां पर नहीं गलेगी दुष्ट बुद्धि, ने झट भांप लिया
सिर पर पग रख उसी समय ही, द्वेष भाव भी भाग गया ॥

देख सत्यनारायण आभा, लक्ष्मी दल बल ले आन जुटी
ऋद्धि सिद्धि से पूरित होकर चमक उठी अनुपम धर्मकुटी।
मन मन्दिर मे धर्मदेव' की ज्योत्स्ना निर्मल शुभ काम हुई
पुण्य रूप सन्तोष पधारे लोभ भावना सब शान्त हुई ॥

ऋद्धि, सिद्ध लक्ष्मी जब आई, उदर भरण भी आसान हुआ
ब्रह्मयज्ञ के साथ गृहस्थी पालन का सब सामान हुआ

★योगेन्द्रपाल, रायकोट

ओ३म् ऋचो अक्षरे परमे व्योमन् यस्मिन्देवा अधि विश्वे निषेदुः।
यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति य इत्तद्विदुस्त इमे समासते ॥

—ऋ० मण्डल २ सूक्त १६४ मन्त्र ३९

प्रश्न—जिसका विनाश कभी नहीं होता और जो सबसे श्रेष्ठ, आकाशवत् व्यापक सब में रहने वाला परमेश्वर है, जिसमें अर्थ सहित चारों वेद विद्यमान तथा जिसका उत्पन्न किया हुआ सब जगत् है, वह ब्रह्म क्या वस्तु है ?

उत्तर—जिसमें सम्पूर्ण विद्वान् लोग, सब इन्द्रियां, सब मनुष्य और सब सूर्यादि लोक स्थित हैं वह परमेश्वर कहाता है। जो मनुष्य वेदों को पढ़ के ईश्वर को न जाने, तो क्या यथार्थ जानने का फल उसको प्राप्त हो सकता है ? कभी नहीं जो कोई पाठ मात्र ही पढ़ता है, वह उत्तम सुख को प्राप्त कभी नहीं हो सकता। इस कारण से जो कुछ पढ़ें, सो अर्थ ज्ञानपूर्वक ही पढ़ें। —महर्षि दयानन्द सरस्वती

लखनऊ—रविवार कार्तिक २६ शक १८९०, मार्गशीर्ष कृ० १२ वि० २०२५
१७ नवम्बर सन् १९६८ ई०, दयानन्दाब्द १४४, सृष्टि संवत् १,९७,२९,४९ ०६९

यज्ञस्य धाम प्रथमं मनन्त

●

यज्ञ श्रेष्ठतम कर्म है। दान संगति करण पूजा तीनों श्रेष्ठतम कर्म के आधार है। यज्ञ के तीन धाम हैं। प्रथम शोधन द्वितीय बोधन तृतीय व्यापन। भौतिक यज्ञ जिसे हम देवयज्ञ कहते हैं उसमें भी प्रथम धाम शोधन है अर्थात् हम सर्वप्रथम यज्ञशाला अथवा यज्ञस्थली को धोते हैं, गोबर इत्यादि से लीपते हैं। समिधायें साफ की जाती हैं, गीली हों तो सुखाई जाती हैं। घी तपाया जाता है छाना जाता है सामग्री कूटी जाती है बीनी जाती है। आसन उपासन सब साफ सुथरे बिछाए जाते हैं। यज्ञ कुण्ड व पात्र सब मांजे जाते हैं। यहां तक कि यजमान, ब्रह्मा, पुरोहित ऋत्विज सभी नहा धोकर स्वच्छ वस्त्र पहनकर यज्ञ वेदी पर बैठते हैं। वाणी से जो मन्त्र पाठ होता है, वह बोधन है और अग्नि से पदार्थों का सूक्ष्म होकर गतिवान् होना तथा उच्च स्वर से वेद मन्त्र की ऋचाओं का व्योम में गुञ्जन उनका व्यापन है।

ठीक उसी प्रकार हम जो आत्मिक यज्ञ करते हैं, उसमें भी शोधन का स्थान प्रथम है और परमात्मा के अमृत पुत्र और पुत्रियां 'विप्रं पदम् अङ्गिरसः दधाना। यज्ञस्य धाम प्रथमं मनन्त' के अनुसार शोधन को प्रमुख धाम मानकर सर्वाधिक ध्यान उस ओर ही देते हैं। जीवन के सुपावन यज्ञ में हृदय ही हमारी यज्ञ स्थली है। अन्तःकरण की शुद्धता ही वह नींव है जिस पर जीवन के शोधन पर ही ध्यान केन्द्रित करने हैं।

आज सारा मानवी जगत् जिस भौतिक समृद्धि की होड़ में लगा है वहां पर उसके मन का चैन इसलिए नहीं है कि उनके जीवनयापन के स्तर को उन्नत बनाने की नित्य नवीन खोज शोधन को आधार शिला पर केन्द्रित नहीं है। मन की शान्ति के बिना सुख नहीं भोगा जा सकता। भोग के साधन होने पर भी जब मन को शान्ति नहीं होती तो वहीं सुख के साधन दुःख का हेतु बन जाते हैं।

शोधन से जिस चरित्र की निर्मिति होती है और जिसकी चमत्कृति से सब समस्यायें सुलझती है, उस शोधन की नींव जितेन्द्रियता है जिसकी आज सर्वत्र उपेक्षा है। यही कारण है कि असंयमी आज अपने असंयमित जीवन के कारण दुरिताओं के शिकार होकर निरन्तर असफल हो रहे हैं। हमारे पूर्व पुरुष जो ऋषि कहाते हैं इस रहस्य से परिचित थे इसीलिये उन्होंने विश्ववासियों को स्पष्ट शब्दों में कहा था—

"एतद्देश प्रसूतस्य सकाशा दग्र जन्मनः।
स्वं-स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्व मानवाः"

अर्थात् इस धरती पर निवास करने वाले चरित्र की शिक्षा को इस भूमि के वासी वैदिक संस्कृति के उपासकों की शरण ग्रहण करें।

यह नितान्त सत्य है कि जो शुद्ध होता है, वही बुद्ध और प्रबुद्ध होता है और विवेकशील शुद्ध पवित्र ही संसार में व्यापनशील होकर यशस्वी होता है। इस धरती पर के मानवों ने जब तक शोधन के महत्त्व को समझा वे तेजस्वी वर्चस्वी मनस्वी और यशस्वी हुए, किन्तु उसकी अवहेलना ने उन्हें पतन के गर्त में धकेल कर उनका सर्वनाश कर दिया। वास्तव में जितेन्द्रियता ही मनुष्य को आत्मविजयी बनाती है। आचार्य चाणक्य ने तो 'राज्यमूलमिन्द्रिय जयः' में उसे राज्य की जय का मूल कहा है। यह आत्मोन्नति है जो 'सम्यग्विजितात्मा विजितात्मा भवति' आत्म विजयनि बनाती है। वेद ने वाचस्पति सूक्त में स्पष्ट शब्दों में कहा—

"इहैवाभि वितनूभे आर्त्नीइवज्या।
वाचस्पतिर्नि यच्छतु मय्ये वास्तु मयि श्रुतम् ॥"

आचार्य जब तक छात्र की मस्तिष्क व ज्ञानेन्द्रिय की दोनों कोटियों को नहीं कसता, छात्र का सुना हुआ उसके भीतर नहीं ठहरता। महाराज मनु ने भी जीवन की दीर्घता का रहस्य जितेन्द्रियता में बताया है—

"सर्व लक्षण हीनोपि यः सदाचार वान्नरः। श्रद्दधानोऽनु सूयश्च शतं वर्षाणि जीवति ॥"

बौद्धकाल में भी शोधन के ऊपर अत्यधिक बल दिया गया जिसके परिणाम स्वरूप जितेन्द्रिय बौद्ध भिक्षुओं ने अपने मत का प्रचार दूर-दूर तक के देशों में सफलता पूर्वक किया। राजा अशोक के एक शिला लेख पर यह वाक्य खुदा हुआ मिलता है—

"मेरी यह एकान्त कामना है कि मनुष्य चाहे किसी मतका अनुयायी क्यों न हो, चरित्र की उन्नति का साधन उसे अवश्य ही करना चाहिए।

आज आर्य जगत् का जो प्रकाश मन्द पड़ गया है, और संस्थाओं में नाना प्रकार के संघर्षों का विकास हो गया है, उस के मूल में इसी शोधन का अभाव है। जब वाणी के स्थान पर चरित्र बोलने लगता है, तो उसके सौन्दर्य और सुगन्धित से जगत् आकृष्ट होकर खिंचा चला आता है। महाभारत में आर्य संस्कृति का तो भयंकर ह्रास हुआ उसके मूल में भी यज्ञ के इस प्रथम धाम का मनन न करना ही था। वर्तमान युग में भी फ्रांस व ब्रिटेन के पतन का कारण उनके नवयुवक वर्ग की अशुद्धता है। महर्षि स्वामी दयानन्द ने आर्य जाति के पतन का कारण वर्णन करते हुए अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में कितने मार्मिक शब्द कहे हैं—

"आपस की फूट, मतभेद, ब्रह्मचर्य का सेवन न करना, विषयासक्ति, मिथ्या भाषणादि कुलक्षण, वेद विद्या का अप्रचार आदि है। जब आपस में कोई भाई-भाई लड़ते हैं, तो तीसरा विदेशी आकर पंच बन बैठता है। क्या तुम लोग महाभारत की बातें भूल गये। आपस की फूट से कौरव पाण्डव और यादवों का नाश हो गया सो तो हो गया परन्तु अब तक भी वह रोग पीछे लगा है, न जाने यह भयंकर राक्षस कभी पीछा छोड़ेगा या आर्यों को सब सुखों से छुड़ाकर दुःख सागर में डुबा मारेगा।'

ऋषियों की वाणी में सत्य होता है, वे दिव्य दृष्टि वाले होते हैं। आज आर्य जगत् की आपसी फूट जिस अशुद्धता के कारण है उसे यदि शीघ्र दूर न किया गया तो वह महामारी आर्यसमाज का सर्वनाश करके दम लेगी। 'आर्य समाज अमर रहे' का जयघोष लगाने वाले यदि वास्तव में आर्यसमाज को अमर रखना चाहते हैं तो उन्हें आज अपना पूर्ण ध्यान यज्ञ के प्रथम धाम शोधन की ओर केंद्रित करना होगा।

यह शोधन कैसे हो इसका केवल एक उपाय है और वह यह कि आर्य समाजों के समस्त कार्यक्रमों को आध्यात्मिकता के रंग में रंग देना और आर्यों के जीवन को प्रार्थनामय जीवन बना देना। महर्षि स्वामी दयानन्द ने स्पष्ट शब्दों में इस सत्य को दर्शाया है कि प्रार्थना से ही आत्मा में निर्मलता आती है। वेद ने भी कहा है—

'परिमाग्ने दुश्चरितात् बाधस्व मा सुचरिते भज। उदायुषा स्वायुषोदस्थाम मृता मनु।' (य० अ० ४ म० २८)

अर्थात् हे परमेश्वर तू मुझे दुराचार से पृथक कर सदाचार में डाल।

निष्कर्ष केवल यही है कि जिस शुद्धता और पवित्रता का समर्थन विश्व के सभी मनीषी और धर्म ग्रन्थ करते हैं और जो वास्तव में मनुष्य के सुख शान्ति और समृद्धि की कुंजी हो उसकी अवहेलना से न आत्मोन्नति होती है और न ही परिवार समाज और राष्ट्र की उन्नति होती है। आत्म कल्याण ही विश्व कल्याण की आधार शिला है। अतएव 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का यश रखाने वाले आर्यसमाज को आज 'यज्ञस्य धाम प्रथमं मनन्त' की ओर गम्भीरतापूर्वक ध्यान देना चाहिए। शुद्ध और पवित्र आर्य जिस दिन वेद की वीणा बजायेंगे उस दिन विश्व सम्मोहित होकर उच्चता के शिखर पर चढ़ने लगेगा। चरित्रवान् आर्य ही विश्व के मारकीय भौतिक प्रवाह को अवरुद्ध कर आनन्द का सोपान करायेंगे, ईर्ष्या द्वेष दुर्भावना वैर विरोध और संघर्ष की प्रवृत्तियों से तो केवल दुःख दर्द और सन्ताप ही मिलेगा।

★

गोमांस भक्षण प्रचार

इस देश का यह दुर्भाग्य है कि समय-समय पर कहीं न कहीं से किसी न किसी रूप में गो मांस भक्षण का प्रचार किया जाता है। कभी श्री विनोबा भावे रामायण काल में ऋषियों द्वारा बछड़ा पकाए जाने की बेतुकी बात कहते हैं तो कभी कोई आर्यावर्त में आर्यों द्वारा गो मांस खाये जाने की घोषणा करता है। किसी को न जाने कहाँ से वेद में गोमांस खाने की गन्ध आ जाती है। इस अवांछ प्रचार का तीव्र विरोध आर्यसमाज द्वारा किया जाता है। शास्त्रार्थ की चुनौतियां दी जाती हैं, किन्तु कोई माई का लाल उसे स्वीकार नहीं करता।

अभी और ऐसी ही घटना की ओर आर्यसमाज रतनगढ़ (राजस्थान) ने हमारा ध्यान आकर्षित किया है। राजस्थान सरकार द्वारा स्कूलों की नवीं कक्षा के लिये निर्धारित पाठ्य पुस्तक 'ज्ञान रीडर' के पृष्ठ १०३ पर प्रकाशित एक पाठ में गोमांस भक्षण का प्रचार इन शब्दों में किया गया है—

Now it is time for lunch. I am going to have beef and beans and then fruits and cream in the second course. It will be a lunch than yours at school I expect

अर्थात्—[यह दोपहर के भोजन का समय है। मैं गोमांस और साग भाजी खाऊंगा और दूसरे दौर में फल और मलाई (क्रीम) लूंगा। मुझे आशा है कि स्कूल में तुम्हारे दोपहर के भोजन की अपेक्षा यह भोजन बढ़िया होगा]

ऐसा विदित हुआ है कि इस पुस्तक का लेखक एक ईसाई है। किन्तु जिन्होंने इस पुस्तक को पाठ्यक्रम में स्थान दिया है, वे अपने कर्त्तव्य एवं दायित्व के प्रति अन्धे प्रतीत होते हैं। सार्वजनिक सभाएं करके आर्यसमाज राजस्थान ने इस पुस्तक को पढ़ाये जाने के स्थगित करने की जो मांग की है वह सर्वथा उचित है। पुस्तक से इस आवरण को तुरन्त हटाया जाना चाहिये ताकि इससे विरुद्ध उत्पन्न हुये रोष को शान्त किया जा सके। आशा है राजस्थान सरकार अपनी समझदारी का तुरन्त प्रमाण देगी और कर्त्तव्य विमुख अधिकारियों के विरुद्ध तुरन्त कार्यवाही करेगी।

गोमांस भक्षण करने वालों के सम्मुख हम एक वैज्ञानिक रहस्य को व्यक्त करते हैं ताकि वे स्वयम् अपने स्वास्थ्य के लिये इसका भक्षण बन्द कर दें। हम वेदानुसार जिस धर्म का आश्रय लेते हैं उसके पीछे एक वैज्ञानिक रहस्य होता है। हम नेत्र बन्द करके अन्ध विश्वास के आश्रित कोई कर्म नहीं करते। वेद जिन कर्मों को करने के लिए आज्ञा देता है अथवा उनका निषेध करता है, उनकी पृष्ठ भूमि में कोई न कोई वैज्ञानिक कारण अवश्य होता है।

जिस प्रकार मलेरिया के कीटाणु मच्छर में होते हैं और मनुष्य को मच्छर काटने पर उनके कारण जो ज्वर आदि हो जाता है, उसी प्रकार गाय की मांस पेशियों में पेचवर्म नामक कीटाणु रहता है। गोमांस को आप चाहे जितना उबालिए वह कीटाणु नहीं मरता। जब मनुष्य गो भक्षण करता है तो वह कीटाणु सरलता से मनुष्य के पेट में जा पहुंचता है। अपने अनुकूल वातावरण पाकर ये कीटाणु द्रुत गति से बढ़ते हैं और कई फीट लम्बे हो जाते हैं ये कीटाणु उभय लिङ्गी होते हैं। ये लाखों की संख्या में प्रतिदिन अण्डे देते हैं जो मनुष्य की अन्तड़ी को निष्काम कर देते हैं जिसके फलस्वरूप मनुष्य की मृत्यु हो जाती है।

पाश्चात्य जगत् में बढ़ते हुये कैंसर आदि भयानक रोगों का अनुसन्धान करते हुये जिस तथ्य का हमारे वैज्ञानिक अब साक्षात्कार कर रहे हैं उसे भारत के वैदिक ऋषियों ने अरबों वर्ष पूर्व जान लिया था। यह हमारे लिये गौरव की बात है। गो मांस भक्षण करने वालों को इस तथ्य की जानकारी हो जाने के पश्चात् ईश्वर प्रदत्त वेद ज्ञान की शरण में आना चाहिये और उससे जीवन का निर्माण करना चाहिये।

●

आर्यसमाज अमेठी का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज अमेठी (सुलतानपुर) का वार्षिकोत्सव २१ से २४ नवम्बर तक मनाया जायगा। जिसमें सभा मन्त्री श्री प्रेमचन्द्र शर्मा, महोपदेशक श्री सत्यमित्र शास्त्री, श्री कुंवर महिपालसिंह तथा श्री ठा० महेशचन्द्रसिंह प्रभृति प्रसिद्ध एवं प्रतिष्ठित पुरुष पधार रहे हैं।

—यज्ञनारायण उपाध्याय
कृते मन्त्री आर्यसमाज अमेठी

शिक्षा विभाग की सूचना

धर्म शिक्षा पढ़ाने योग्य बनाने के लिए आर्य विद्यालयों की अध्यापिकाओं के लिए एक प्रशिक्षण शिविर इस विभाग के तत्वावधान में आर्य कन्या इण्टर कालेज गुलावठी जिला बुलन्दशहर में १०-११-६८ से १७-११-६८ तक लगेगा। जिसमें निम्नलिखित आर्य कन्या विद्यालयों से एक-एक या दो-दो अध्यापिकाएं आमंत्रित की गयी हैं। प्रशिक्षार्थियों के आवास व भोजन आदि का प्रबन्ध निःशुल्क आर्यसमाज आर्य कन्या इण्टर कालिज गुलावठी की ओर से होगा।

आ० क० इ० कालिज रुड़की आ० क० इ० कालिज गंगोह (सहारनपुर), जमुनादास जू० हाई स्कूल पुरानी मंडी (सहारनपुर), आ० क० इ० कालिज खाला पार सहारनपुर), आ० क० जू० हाई स्कूल सिविल लाइन्स मिल कालोनी सहारनपुर आ० क० जू० हा० स्कूल बहादराबाद सहारनपुर, आ० क० इण्टर कालिज लुक्खुवाला देहरादून, आ० क० इ० कालिज अनूपशहर बुलन्दशहर, आ० क० इ० कालिज बुलन्दशहर, आ० क० इ० कालिज गुलावठी बुलन्दशहर, आ० क० इ० कालिज खुर्जा, बुलन्दशहर, आ० क० डिग्री कालिज खुर्जा, बुलन्दशहर जं० पुरी इ० का० मुजफ्फर नगर, आ० क० जू० हाई स्कूल कैराना, मुजफ्फरनगर, आ० क० इ० कालिज मुजफ्फरनगर, आ० क० इ० का० मेरठ, नागौरयो आर्य क० इ० क० लालकुर्ती मेरठ, आ० क० इण्टर कालिज सदर मेरठ, आ० क० डिं० कालिज गाजियाबाद मेरठ, चन्द्रलोदेवी आर्य क० उच्चतर माध्यमिक विद्यालय द्वारिकापुरी ब्रह्मपुरी मेरठ, आ० क० इण्टर कालिज मवाना मेरठ, श्री मल्हूसिंह आर्य क० जू० हाइ स्कूल मटोर दौराला (मेरठ)।

—रामबहादुर एडवोकेट
अधिष्ठाता शिक्षा विभाग
आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

भू-सम्पत्ति विभाग की सूचनाएं

[१]

आर्य प्रतिनिधि सभा के सहायक कोषाध्यक्ष व अधिष्ठाता भू-सम्पत्ति विभाग श्री हरप्रसाद जी, श्री मन्त्री जी के आदेशानुसार अमोली (फतेहपुर) की दान दी हुई सम्पत्ति के विषय में निरीक्षण करने के लिये दिनांक १०-११-६८ को स्थानीय आर्य समाज फतेहपुर के मन्त्री एवं श्री बा० उमाशंकर जी से मिले। और स्थिति का अवलोकन किया। शीघ्र ही वे अपनी आख्या श्री मन्त्री जी आर्य प्रतिनिधि सभा को प्रस्तुत करेंगे।

[२]

आर्य समाज मुरादनगर (मेरठ) की भूमि के विषय में अधिष्ठाता भू सम्पत्ति विभाग ने अपनी आख्या अन्तरङ्ग में प्रस्तुत करके निर्णय लिया कि उपरोक्त सम्पत्ति को बेच दिया जाय।

—देवेन्द्र आर्य
कोषाध्यक्ष, सभा

[३]

उत्तर प्रदेश के समस्त आर्यसमाज, सभासद अन्तरङ्ग सदस्य एवं निरीक्षक महानुभावों की सेवा में निवेदन है कि:—

आपको विदित हो कि सभा के अन्तर्गत भू-सम्पत्ति विभाग की प्रदेश में बिखरी हुई चल-अचल (भू-सम्पत्ति) को संग्रह करने का कार्य प्रारम्भ कर दिया गया है। आपके शहर, जिला, तहसील, कस्बा आदि में सभा के नाम जिस प्रकार की भी जायदाद हो, उसकी निम्नांकित सूचना सभा को शीघ्र देने की कृपा करें।

१—सम्पत्ति के दान दाता का नाम, पता
२—सम्पत्ति किस प्रकार की मकान, दुकान भूमि आदि ?
३—किस निमित्त दी गई।
४—सम्पत्ति का मूल्य क्या है ?
५—सभा के नाम कब रजिस्ट्री हुई ?
६—दान-पत्र (दस्तावेज) कहां है ?
७—आय-व्यय विवरण
८—प्रबन्धक कौन है ?

हरप्रसाद आर्य
अधिष्ठाता, भू-सम्पत्ति विभाग
५ मीराबाई मार्ग लखनऊ

—१४ सितम्बर को आर्यसमाज चेम्बर (बम्बई) के एक समारोह में श्री लाला रामगोपाल शालवाले और श्री ओमप्रकाश जी त्यागी संसद सदस्य का स्वागत किया गया।

—आर्यसमाज भरथना व बकेवर के उत्सव क्रमशः २४ से २६ और २७ से २८ अक्तूबर तक मनाये गये।

—श्याम जी आर्य भरथना

—३० सितम्बर से १ अक्तूबर तक पतारी (फतेहपुर) में वैदिक धर्म का प्रचार हुआ।

—रामनारायण शास्त्री

—आर्यसमाज महर्षि दयानन्द मार्ग बीकानेर का वार्षिकोत्सव ८ से १२ अक्तूबर तक समारोह से मनाया गया।

—मन्त्री

—आर्य उप प्रतिनिधि सभा हरदोई की ओर से ८ से १० नवम्बर तक बिलग्राम के मेले में वैदिक धर्म का प्रचार हुआ।

—अनन्तराम शर्मा मन्त्री

अध्यात्म-सुधा

सखा सखिभ्य ईड्यः।

★श्री विक्रमादित्य 'वसन्त'
उपमन्त्री आ०प्र० सभा, उ०प्र०

वेद मन्त्र—

त्वं जामिर्जनानामग्ने मित्रो असि प्रियः।
सखा सखिभ्य ईड्यः॥ [ऋग्वेद १-७५-४ सामवेद १५३६]

पद-पाठ—त्वम् जामिः जनानाम् अग्ने मित्रः असि प्रियः।
सखा सखिभ्यः ईड्यः॥

भावार्थ—(अग्ने) ज्ञान स्वरूप परमात्मन्! (त्वम् असि) जनानाम् जामिः प्रियः मित्रः) तू है जनों का ज्ञाता प्रिय मित्र (सखिभ्यः) सखाओं के लिये (ईड्यः सखा) स्तुति वाला सखा।

वह परमात्मा कौन है, उसे सांसारिक जनों में से कौन जानता है, वह किस में धारित है और कौन उसमें समर्पित है। अर्थात् कौन उसका भक्त है। जिसने उसका वरण कर अपने आपको निष्पाप बना कर ऊँचा उठा लिया है। ये स्वाभाविक प्रश्न हैं, जो प्रत्येक विवेकशील मानव के अन्तःकरण मे उठा करते हैं। हम अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि चाहते हैं, ताकि अज्ञान तिमिर दूर हो और ज्ञान ज्योति का प्रसार हो।

वेद सत्य विद्याओ का पुस्तक है और सत्य स्वरूप परमेश्वर अपनी अमर वेद वाणी में स्वयम् इन प्रश्नों का उत्तर दे रहा है। वेद की शैली बड़ी रोचक है, सरस है और आनन्दप्रद है। इस आनन्दमय ज्ञान में परमात्मा ने प्रश्नोत्तर शैली मे भी अपने अमृत पुत्र पुत्रियों को बड़ी सरलता से समझाया है। प्रस्तुत मन्त्र में तो कुछ उत्तर दिये गये हैं जो पूर्व के मन्त्र में प्रश्न रूप मे हैं। अर्थात्—

कस्ते जामिर्जनानामग्ने को दाश्वध्वरः। को ह कस्मिन्नसि श्रितः॥

[ऋ० १ ७५-३, सा० १५३५]

जब अविद्या और अज्ञान का अन्धकार होता है तो मनुष्य भटकता है और भटकाता है। ठोकर पर ठोकर खाता है, स्वयम् गिरता है और दूसरों को भी गिराता है। अज्ञान के वशीभूत होकर न जाने कितने सीधे-साधे भोले-भाले व्यक्ति ठगों और पाखण्डियों के हाथ धोखा खाते हैं, और ठगे जाते हैं। सारा जीवन व्यतीत हो जाता है और कुछ भी पल्ले नहीं पड़ता। जो स्वयम् अज्ञानी है वह ज्ञानोपदेश क्या करेगा। जिसने स्वयम् परमात्मा को नहीं जाना वह दूसरे को उसकी क्या वास्तविकता बतलायेगा या समझायेगा।

वह परमेश्वर (कः) कौन है? (ह:) निश्चय से (अग्ने) परमात्मा क्या है? तो परमेश्वर ने अपनी वेद वाणी में बड़ा सुगम उत्तर दिया है। 'मित्रः असि प्रियः' अर्थात् प्रियमित्र है। प्रभु हमारा मित्र है, प्रिय सखा है, वह हमारा परम सखा है। वेद ने अनेक स्थलों पर इसकी पुष्टि की है जैसे—

'इन्द्रस्य युज्य सखा'
'वेधाम इन्द्रो युवा सखा'

आत्मा का युक्त युवा सखा परमात्मा। कैसा है वह मित्र तो वेद कहता है—

'अद्भुत मित्रः' अनोखा अनुपम। मित्र की पहचान क्या है—दुःख मे सहायता करने वाला। विपदाओं से त्राण दिलाने वाला। जिनका संसार में कोई नहीं होता, उसका परमात्मा ही सर्वस्व होता है, 'सखा त्वमेव' 'त्वमेव सर्वम् मम देव देव' है। कितनी विचित्रता है कि वह हमारा परम प्रिय सखा हमसे सदैव युक्त है, पर हमने अपने को उसके बहुत दूर कर रखा है। 'अग्नेस्त्वम् नो अन्तम् उत त्राता शिवो भव वरुथ्या' सबसे समीपतम् कवच बन कर हमारी रक्षा करने वाला हमारा हितकारी मित्र वह परमात्मा है, और हम उससे इतनी दूर पड़े हुए हैं। हमारी दूरी का कारण है अज्ञान और उससे उत्पन्न अपवित्रता। उसी का बोध कराने के लिये यह प्रश्न हुआ।

"जनानाम कः ते जामि"

अर्थात् जनों में कौन तुझे जानता है? कौन तेरा ज्ञाता है, तो उत्तर मिला 'त्वम् असि जनानाम् जामि' प्रभो! यह तो तू ही जानता है, कि कौन तेरा ज्ञाता है। ये सांसारिक जन तो भौतिक बातें करते हैं। आध्यात्मिक बातें भी ये भौतिक लाभ के लिए करते हैं। कबीर ने इसी तथ्य को लक्ष्य में रख कर कहा था—चाको चाको सब कहें,

जाको कहे न कोय।
छुरे सङ्ग जो लिपटयो,
बाल न बाँका होय॥

हमारी उस परम मित्र से दूरी केवल इसलिये है, कि हम अज्ञान की निद्रा में माया के स्वप्न देखते हैं, मित्र निकटतम है किन्तु हम उसे न देखकर उसके संसार में होने वाले खेल देख रहे हैं, और हमारा ध्यान उधर नहीं है। विषयों मे रत रहने के कारण विषयों की तल्लीनता हमे उसकी समीपता का आभास नहीं करा पाती किन्तु कोई है, कोई ऐसा है जो उसे जानता है और उसमें धारित रहता है, कौन है वह प्रश्न उपस्थित होता है—

"कः दाशु अध्वरः" कौन ऐसा निष्पाप साधक है, जिसने अपना आत्म अर्पण कर दिया है, अपने को समर्पित कर दिया है। अपने स्वामी की आज्ञा में दास की भाति रत कर दिया है, निज को क्या उत्तर मिलता है।

"सखिभ्यः ईड्यः सखा" वह स्तुत्य सखा तो सखाओं के लिये है। जो उससे मित्रता करता है वह उसका मित्र है, जो उससे यारी करता है, वह उसका यार है, जो उसे अपना प्रियतम मानता है, वह उससे प्यार करता है, जो उसे स्वामी मानता है वह उसके आत्मार्पण को स्वीकार करता है, और मित्रवत व्यवहार से उसके दुःखमय पाशों को छिन्न-भिन्न कर देता है। यह आत्म समर्पण कैसा होता है। मीरा के शब्दों में—

'जित बैठावे तित ही बैठूं,
जित भेजे तित जाऊँ।
जो पहिरावे सो ही पहरूं,
जो दे सो ही खाऊ॥

परमात्मा के रङ्ग मे रङ्गी हुई मीरा का दासी भाव से आत्मार्पण कितना भव्य हो जाता है, जब वह कहती है—

"जनम-जनम की दासी मीरा,
चाकरी मे सुख पाती॥"

परमात्मा को सखा मानने वाले, उससे प्रीति करने वाले, उसको आत्मना समर्पित होने वाले उसकी स्तुति अहिर्निश करते हैं। बाह्य जगत् में वे कर्त्तव्य निर्वाह करते हुए अन्तः जगत् में सदैव अपने दिव्य सखा से युक्त रहते हैं। सन्त सूरदास ने कितने मार्मिक शब्दों मे कहा है—

मेरो मन अनत कहाँ सुख पावे,
ज्यों उड़ि जहाज को पंछी,
पुनि जहाज पर आवे।'

इसलिये अध्यात्म मार्ग का अनुसरण

[शेष पृष्ठ १३ पर]

आभिलाषा करो भरपूर

होकर इतने पास तुम्हारे, फिर भी कितनी दूर।
अपनी मलिनता के कारण ही दर्शन से मजबूर॥
जानता हू मैं अपनी गाथा, पाप अधर्म से अपना नाता।
जो कुछ मेरी मूल विधाता, मैं मानता हूं मेरे त्राता।
अपनी कुटिलता के कारण ही तेरी दया से दूर॥
होकर......

बचपन मैंने खेल गँवाया, बड़ा हुआ तो पाप कमाया।
दुःखी हुआ, जग ने ठुकराया, तेरी शरण में दौड़ा आया।
अब तो मुझ को पार उतारो, मैं तो थकन से चूर॥
होकर ....

माता-पिता तो तू है मेरा, बन्धु सखा तो तू है मेरा।
जनम-जनम का प्रीतम मेरा, जो कुछ भी तू सब कुछ मेरा।
अब तो मुझ को ज्योति कर दो हे दुनिया के नूर॥
होकर ...

कैसे पाऊं मैं पथ तेरा, कैसे खोजूं तेरा डेरा।
दूर करूं अज्ञान अँधेरा, तोडूं भव बन्धन का घेरा।
'वसन्त' की इस अभिलाषा को, आज करो भरपूर॥
होकर......

का व्य का न न

सन्ध्या

गायत्री मन्त्र

प्राणदा, कष्टहर, आनन्दमय, श्री ओ३म् दिव्य देव भगवान।
वर करें शुद्ध प्रभु पूजन हम, मम बुद्धि करो सन्मार्ग दान॥

आचमन

हे ईश अभीष्ट आनन्द हो, शुभ कल्याणकारी वृन्द हो।
प्रभु ऐसे जल की वृष्टि करो, जो मम शान्तिपथ स्वच्छन्द हो॥

इन्द्रिय स्पर्श

मम वाणी हो मृदु कल्याणी, स्वस्थ प्राण शुभ नेत्र निहारें।
कान सुने सत नाभि प्रबल हो, हृदय उदार में स्वयं विहारें॥
कण्ठ सुकोमल शिर मे मेधा, मेधा मे शुभ उदगार भरो।
बाहों में दो शक्ति कीर्तिमय, कर ग्रहण-त्याग अधिकार करो॥

मार्जन

रक्षक पितु शिर बुद्धि शुद्ध हो, दुखहारी प्रभु नेत्र शुद्ध हो।
सुख रूप ईश स्वस्थ कण्ठ दें, प्रभो, महान् हृदय प्रबुद्ध हो॥
जनक पिता नाभि सृजन बल दो, प्रबल पिता पद मे तपबल दो।
सत्य पिता सिर पुनः शुद्ध हो, व्यापक, हर इन्द्रिय सम्बल दो।

प्राणायाम

ओं भूः ओं भुवः ओं स्वः ओं मह ओं जनः ओंतपः ओं सत्यम्।
प्राणदा, मोक्षदा, सुखध्यायी, महा, जनक, तापी तू नित्यम्॥

अघमर्षण

स्वप्रकाश प्रभु ने वेद ज्ञान, सत्य सनातन नियम बनाये।
जिनके आधीन प्रकृति ने, नाना भांति रूप हैं पाये॥
सर्ववशी ने जल प्रथम काल, फिर वर्ष, दिवस निशि को गति दी!
विगत कल्प सी इस कल्प मध्य, भी सदा सुहावन ससृति दी॥
रवि, शशि, पृथ्वी, अन्तरिक्ष में, लोकान्तर का निर्माण किया।
जो महाशक्ति से भय मानें, उसने अपना कल्याण किया॥

मनसा परिक्रमा

है द्वेष हमें या द्वेष उसे, प्रभु दोनों का उद्धार करें।
हर द्वेष न्याय पर तेरे प्रभु, हम मित्र भाव व्यवहार करें॥
पूर्व दिशा पति अग्नि ज्ञान प्रभु, रवि रश्मि बाण विस्तार करें।
पापी से जगत बचाते जो, हम नमस्कार हर बार करें।
हर द्वेष न्याय पर तेरे प्रभु, हम मित्र भाव व्यवहार करें॥
दक्षिण का पति प्रभु इन्द्र धनी, कटु कीट आदि निस्सार करे।
हैं पितर ज्ञान की खान जहाँ, हम नमस्कार हर बार करें॥
हर द्वेष न्याय पर तेरे प्रभु हम मित्र भाव व्यवहार करें॥
पश्चिम के राजा वरुण देव, वे पुष्ट अन्न उपकार करें।
करता विषसर्प दुष्ट वंचित, हम नमस्कार हर बार करें।
हर द्वेष न्याय पर तेरे प्रभु, हम मित्र भाव व्यवहार करें॥
उत्तर का पति सोम शान्तिमय, प्रभु रक्षा भली प्रकार करे।
तेरे विद्युत के बाण अमर, हम नमस्कार हर बार करें।
हर द्वेष न्याय पर तेरे प्रभु, हम मित्र भाव व्यवहार करें॥
अधो दिशा का ईश विष्णु प्रभु, शुभ शस्य सृष्टि श्रृङ्गार करें।
हर वृक्ष बाण है दक्ष त्राण, हम नमस्कार हर बार करें।
हर द्वेष न्याय पर तेरे प्रभु, हम मित्र भाव व्यवहार करें॥
ऊपर का पति पिता बृहस्पति, घन बाण वृष्टि संचार करें।
तू जीवन का आधार महा, हम नमस्कार हर बार करें।
हर द्वेष न्याय पर तेरे प्रभु, हम मित्र भाव व्यवहार करें॥

उपस्थान

तम दूर दूर प्रकाश व्यापक, देवों के देव महा स्वामी।
तुम प्रलयबाद भी वर्तमान, दो शरण-त्राण अन्तर्यामी॥
वेदादि ज्ञान विख्याता प्रभु, सर्वत्र व्याप्त चिर विभावान।
वर विश्व विद्या विविध दाता, तुम पूज्य एक ईश्वर महान।

रवि, शशि, लोकान्तर निर्माता, मीत नेत्र सामर्थ्य दिखाता।
प्राण अपान अग्नि की ज्योती, विद्वानों का हृदय सुहाता॥
ईश्वर अनादि से अनन्त तक, रचता जग करता संचालन।
वैसे ही सौ, सौ से अधिक वर्ष, हम करें धर्म का पालन॥
सौ शरद लखें, सौ शरद जियें, सौ शरद सुनें, व्याख्यान करें।
स्वाधीन, अधिक आनन्द करें, जीकर प्रभु का गुणगान करें॥

समर्पण

हे ईश्वर मय दया निधे, हम जो करते पूजन अर्चन हैं।
नित करते उत्तम कर्म, धर्म, वे तुमको सभी समर्पण हैं॥

नमस्कार

सुख शम्भु ईश को नमस्कार, आनन्दरूप को नमस्कार।
शंकर मङ्गलमय नमस्कार, शिव शुभकारी प्रभु नमस्कार॥

रचयिता—देवनारायण भारद्वाज
उपमन्त्री आर्यसमाज अलीगढ़

उठो देश के वीर सपूतो

उठो देश के वीर सपूतो, गौ माता पुकारती।
नयनों मे है नीर भरा, वह आज तुम्हे निहारती॥

गौमाता की करुण कहानी फटती जिससे छाती है।
उगते सूरज के पहले ही, जननी काटी जाती है॥

उसके पहले उसे निल्हाते, उबले-उबले पानी में।
हजारों का यही हाल है, बुढ़ापे और जवानी में॥

हाय! यह कैसी क्रूरता, यह मूक तपस्वी गाय रे—

गो-हत्या से दुःखित है, यह राम कृष्ण की भारती।
नयनों में है नीर भरा, वह आज तुम्हें निहारती॥ १॥

नन्हें मुन्ने, जवान बुढ्ढे, नहीं है माता और उसी को।
माता बनकर दूध पिलाती, नहीं करती है दूर किसी को।

हिन्दू मुस्लिम, सिख, इसाई, सम्प्रदाय और पंथ सभी को।
देशी-विदेशी, काला-गोरा, है बनाती स्वस्थ सभी को।

यह कामधेनु! आधार जगत का, यह मूक तपस्वी गाय रे—

निज बैलों से कृषि उपजाती, अन्न संकट निवारती।
नयनों में है नीर भरा, वह आज तुम्हें निहारती॥ २॥

मरने बाद भी वे आती है, महिमा का है पार नहीं।
सोच समझ ले अपने मन मे, बिना इसके उद्धार नहीं।

मानव तुझको बहु उपकारी, जीवन साथी और नहीं॥
ढूंढ़ेगा तू सभी जगत् को, गौमाता बिन सार नहीं॥

फिर भी मानव! क्यों काट रहे, यह मूक तपस्वी गाय रे—

गो हत्या महा पाप भयंकर, ऋषि-मुनि धिक्कारती।
नयनो में है नीर भरा वह आज तुम्हें निहारती॥ ३॥

गद्दारों ने भुला दिया है, दिये वचन की शर्म नहीं।
याद रखो जयचन्दों! तुम्हें नहीं मिलेगी जगा कहीं॥

संकट हरने गो माता का, बच्चा-बच्चा जाग उठेगा।
गो-रक्षा की ज्योति जली है, अँधियारा शीघ्र मिटेगा॥

कसम तुम्हें है आर्य वीरों, यह मूक तपस्वी गाय रे—

निज प्राणों का दीप जलाओ, बलिदानों की आरती।
नयनों मे है नीर भरा वह आज तुम्हें निहारती॥ ४॥

—श्री मधुकर सदार, सिद्धांतालंकार
मन्त्री, आर्य वीर दल, नागपुर

विवाह-संस्था का उद्देश्य-

सप्त-पदी-रहस्य

[आजकल विवाह सस्कारो मे प्राय: केवल लकीर पीटी जाती है जिसके फल-स्वरूप वह केवल एक आडम्बर मात्र बनता चला जा रहा है। यदि वैवाहिक जीवन को भव्य बनाना है तो ऋषियों द्वारा प्रदत्त सप्त पदी के विधान को समझना होगा। प्रस्तुत लेख न केवल गृहस्थियों के लिये वरन सस्कार कराने वाले पडितों के लिये भी नितान्त उपयोगी है। —सम्पादक]

श्री प० जगत्कुमार शास्त्री
'साधु सोम तीर्थ'' देहली

वैदिक-विवाह पद्धति के अनुसार 'सप्त-पदी' विवाह-सस्कार की एक मुख्य और अत्यन्त महत्त्वपूर्ण विधि है। यह सप्तपदी ही विवाह-सस्कार को पूर्णता प्रदान करती है। यह सप्त-पदी ही विवाह बन्धन को अटूट और वंध भी बनाती है। यदि कोई विशेष विघ्न किसी कारणवश विवाह के समय उपस्थित हो जाये, तो धर्म-शास्त्र और विवाह-पद्धति के अनुसार मधु-पर्क, पाणि-ग्रहण, प्रधान होम, और लाजा होम आदि-आदि प्रसिद्ध विधियो के हो चुकने पर भी विवाह सस्कार अपूर्ण ही रहता है। इस अपूर्ण सम्बन्ध को तोड़ने या निरस्त करने के लिये किसी कानूनी कार्यवाही की कुछ भी आवश्यकता नहीं है। परन्तु सप्त-पदी का अनुष्ठान पूरा होते ही विवाह-सम्बन्ध धार्मिक और कानूनी दोनो ही दृष्टियों से पक्का हो जाता है। यद्यपि विवाह-पद्धतियों के अनुसार सप्त पदी के बाद भी कुछ याज्ञिक कर्मों एव उपचारों का विधान है, परन्तु वे किये जायें वा न किये जायें, अथवा यूं कहे कि वे किये जा सकें, वा न किये जा सकें, इन बातों का कोई विशेष महत्त्व नहीं है। सप्त-पदी के बाद के तो सभी कृत्य गौण हैं। विवाह-सम्बन्ध तो सप्त पदी के साथ ही पक्का और अटूट हो जाता है। धार्मिक दृष्टि से तो जीते जी विवाह सम्बन्ध को कोई तोड़ ही नहीं सकता, हां; नया हिन्दू-विवाह-विधान कुछ विशेष अवस्थाओ के विवाह सम्बन्ध के विच्छेद का विधान करता है, जिसके लिये विवाह के दोनो ही पक्षो को अत्यन्त जटिल, व्यय-साध्य, श्रम और कष्ट साध्य एव सुदीर्घकाल व्यापी मुकदमेबाजी मे से होकर गुजरना पड़ता है, मुकदमेबाजी के सिलसिले मे लोगों को कुछ ऐसे अनैतिक उपायो का आश्रय भी लेना पड़ता है, जिन को अपनाना कोई भी भला आदमी ठीक नहीं समझेगा। यद्यपि नये हिन्दू विवाह विधान में तलाक का सिद्धान्त भी स्वीकारा गया है, परन्तु व्यावहारिक रूप में तलाक के लेन-देन को बहुत कठिन बना दिया गया है। आपस के समझौते से भी तलाक का लेन-देन अब सम्भव नहीं है। जब तलाक का सिद्धान्त मान्य न था, तब तो रिवाज वा समझौते के रूप में तलाक वा विवाह विच्छेद हो भी जाता था; परन्तु अब यह सम्भव नहीं।

विवाह-पद्धति के पूर्वा पर प्रसगों पर विचार करने से ऐसा प्रतीत होता है कि विवाह-सस्कार ईश्वर, अपने अन्तरात्मा और गुरुजनों को साक्षी करके ही वर और वधू आपस में आजीवन मेल-मिलाप और सद्भाव पूर्वक एक दूसरे के साथ रहने और अनुकूल आच-रण करने के जो-जो अलिखित अनुबन्ध किया करते हैं, यह सप्त-पदी विधान ही उनको उपसहार आत्मक रीति से सुस्पष्ट रूप मे दोहराता और दर्शाता है। उन उन अनुबन्धो के आचरण का आरम्भ भी इस सप्त-पदी अनुष्ठान के साथ ही हो जाता है। वर और वधू केवल प्रतिज्ञा बद्ध होकर ही नहीं रह जाते, अपितु वे तत्काल ही उस यज्ञ वेदी पर ही अपने सम्मिलित नव-जीवन का आरम्भ भी करते है। यही है विवाह सस्कार का अन्तिम और कानूनी कर्म, जो कि शास्त्रीय भाषा मे सप्त पदी कह-लाता है। वैदिक और धार्मिक ... तो के प्रतिफल तो उनके अनुसार आचरण से ही प्राप्त होते हैं।

गहरे पानी पैठ

लाजा-होम और केश-मोचन की विधियों के पश्चात सप्त-पदी का विधान करते हुए महर्षि दयानन्द जी सस्कार विधि मे लिखते हैं.—

"तत्पश्चात सभा मण्डप में आके सप्त-पदी विधि का आरम्भ करे। इस समय वर के उपवस्त्र के साथ वधू के उत्तरीय वस्त्र की गाँठ देनी [चाहिए]। इसे जोड़ा कहते हैं। वधू-वर दोनों अपने आसन पर से उठ के, वर अपने दक्षिण हाथ से वधू की दक्षिण हस्ताञ्जलि पकड़ के यज्ञ कुण्ड के उत्तर भाग में जावें। तत्पश्चात् वर अपना दक्षिण हाथ वधू के दक्षिण स्कन्ध पर रखके दोनों समीप-समीप उत्तराभिमुख खड़े रहें। तत्पश्चात् वर—

मा सव्येन दक्षिण मतिक्राम।

ऐसा बोल के वधू को उसका दक्षिण पग उठवा के चलने के लिये आज्ञा देवे।' [संस्कार-विधि]

यहां इतनी बातें सुस्पष्ट हैं:—

१—वर और वधू का गठ-बन्धन सप्त-पदी के आरम्भ में होता है। लाजा होम के आरम्भ में नहीं।

२—वर अपने दक्षिण हाथ से वधू की दक्षिण हस्ताञ्जलि को पकड़ता है, और फिर वे दोनों यज्ञ-कुण्ड के उत्तर भाग मे जाते हैं।

३—वर अपना दक्षिण हाथ वधू के दक्षिण स्कन्ध पर रखता है और वे दोनों उत्तर की ओर मुंह करके खड़े होते हैं।

४—वर-वधू से अनुरोध करता है कि वह किसी भी अवस्था मे उत्तम मर्यादाओ का उलघन न करे। [मा सव्येन दक्षिण मतिक्राम्।] उलटे मार्ग पर न चले.

५—उत्तर दिशा—उन्नति और उत्कर्ष की दिशा मानी जाती है। उत्तर की ओर ... के खडे होने का एक तात्पर्य यह है कि अपने गृहस्थ जीवन मे वर और वधू दोनों ही उत्तम जीवन अर्थात् उत्तरायण की ओर ही अग्रसर होंगे। चित्रों, नकशो मे भी नीचे दक्षिण दाईं ओर पूर्व बाईं ओर पश्चिम और ऊपर की ओर उत्तर दिशा को मानने दर्शाने का सार्वभौम नियम प्रचलित है।

सप्त-पदी मे वर सात मन्त्रो को एक-एक करके सात बार बोलता है और प्रत्येक मन्त्र को बोलने के बाद ईशान दिशा मे एक-एक पग आगे चलता है। वधू भी वर के आदेशानुसार उसका अनुगमन करती है और एक एक पग आगे बढ़ती है। सप्त-पदी के विषय में महर्षि दयानन्द जी 'संस्कार-विधि' में ही पाद-टिप्पणी मे लिखते हैं:—

"इस पग धरने की विधि ऐसी है कि वधू प्रथम अपना जमणा [दायाँ] पग उठा के ईशान कोण की ओर बढ़ा के धरे। तत्पश्चात् दूसरे बायें पग को उठा के जमणे पग की पटली तक धरे। अर्थात् जमणे पग के थोड़ा-सा पीछे बायां पग रखे। इसी को एक पहला [कदम] गिनना। इसी प्रकार आगे छः मन्त्रों से भी क्रिया करनी। अर्थात् एक-एक मन्त्र से एक एक पग ईशान दिशा की ओर धरना।'

सप्त-पदी मे जो सात मन्त्र एक एक करके सात बार बोले जाते हैं, उनके केवल आरम्भिक वाक्यों मे ही भेद है। उन मन्त्रों का शेष पाठ एक जैसा ही है। सप्त-पदी का पहला मन्त्र यह है.—

ओं इषे एकपदी भव सा मामनुव्रता भव विष्णुस्त्वा नयतु पुत्रान् विन्दावहै बहूंस्ते सन्तु जरदष्टयः ॥

इस मन्त्र को वर बोलता है। फिर वर और वधू दोनों ईशान दिशा में पूर्वोक्त रीति से एक पग आगे बढते हैं। इस मन्त्र का भावार्थ इस प्रकार है। वर वधू से कहता है.—

हे देवि! इषे अर्थात् मधुर, उत्तम और स्वादिष्ट अन्न की प्राप्ति के लिये तू अपना पहला कदम आगे बढा। मेरे जीवन का जो ध्येय, व्रत वा लक्ष्य है आज इस समय से तू भी उसका ही अनुसरण कर। सर्व व्यापक और सर्वज्ञ भगवान् विष्णु तेरा पथ-प्रदर्शन करें। प्रभु की कृपा से हम दोनो पुत्रों और पुत्रियों को प्राप्त करेंगे। मेरी यह हार्दिक अभिलाषा है, कि तू बहुत-से पुत्रों भ्राताओं और सेवक आदि वीरों को प्राप्त करे।

विवाह का सर्व प्रथम उद्देश्य उत्तम अन्न-जल और खान-पान की उत्तम व्यवस्था की प्राप्ति ही है। जो युवक और युवतियां अपनी-अपनी रोटी कमाने मे भी असमर्थ हैं, अथवा जो यथोचित रीति से अपने खान-पान की व्यवस्था करने मे भी असमर्थ हैं, उनको तो विवाह करने का अधिकार ही नहीं है, विशेष रूप से ऐसे नवयुवकों को जो वधू को सम्मान पूर्वक और आवश्यकता-नुसार रोटी-कपड़ा आदि नहीं दे सकते। यदि कोई ऐसा पुरुष विवाह करता है, तो वह अनधिकार चेष्टाओं के परिणाम तो सदा ही भयंकर होते हैं।

खान-पान तो सभी को चाहिए; क्योंकि जीवन को एक सामान्य और प्राथमिक आवश्यकता है। हां, खान-पान की बातें—ऐसी बातें, जिनमें चिन्ता, विद्वेष, सकीर्णता, मेरे-तेरे मुंह चिढ़ाने या दुर्भावना फैलाने की भावनायें भी मिश्रित हों, अच्छी नहीं लगतीं। ऐसी बातों का करना घोर असभ्यता और अशिष्टता में गिना जाता है। तथापि

उचित रीति से रोटी की बातों के चलने चलाने में कोई बुराई नहीं है। जो अधिक धनिक वर्ग माना जाता है, वह भी सामान्य अन्न और जल के द्वारा ही अपना निर्वाह करता है। सोने-चांदी की रोटियां कोई नहीं खाता है, न खा ही सकता है। जीवन के लिये ही भोजन है। भोजन के लिये जीवन नहीं है। इस उत्तम सिद्धान्त को भली प्रकार समझ लेना हितकर है।

गीताकार ने इस सार्वभौम सत्य को इस प्रकार दर्शाया है:—

युक्ताहारविहारस्य,
युक्तचेष्टस्य कर्मसु।
युक्तस्वप्नावबोधस्य,
योगे भवति दुःखहा ॥

गीता—६।१७

यथायोग्य आहार और विहार करने वाले का, और सभी कर्त्तव्य कर्मों में यथा योग्य चेष्टा करने वाले का, और यथायोग्य रीति से ही शयन करने तथा जागने वाले का ही दुःखों को नष्ट करने वाला योग—अनुष्ठान, पुरुषार्थ, मेल-मिलाप सिद्ध होता है।

सप्त-पदी का दूसरा मन्त्र है:—

ओं ऊर्ज्जे द्विपदी भव...

[शेष प्रथम मन्त्रानुसार]

अर्थ—हे देवि! ऊर्ज्जे अर्थात् बल, ओज, तेज और प्रभाव की प्राप्त के लिये तू अपना दूसरा कदम आगे बढ़ा।

विवाह का दूसरा उद्देश्य यह बल, ओज, तेज और प्रभाव की प्राप्ति ही है। जो लोग अन्न और जल आदि को खा तथा पचा ही नहीं सकते, उनको अन्नादि ऐश्वर्य की प्राप्ति से क्या लाभ? जो युवक और युवतियां विवाह के बाद संयम-शून्य होकर अपने बल, वीर्य, ओज, तेज और प्रभाव को गँवा देते हैं, वे तो जीवन भर पछताते ही रहते हैं। विवाह से पहले और विवाह के तुरन्त पश्चात् युवक-युवतियों को सप्त-पदी के इस दूसरे पग का विशेष विचार कर्तव्य है।

सप्त-पदी का तीसरा मन्त्र है:—

ओं रायस्पोषाय त्रिपदी भव...

[शेष प्रथम मन्त्रानुसार]

अर्थ—हे देवि! भौतिक और आत्मिक ऐश्वर्य तथा सम्पोषण की प्राप्ति के लिये अब तू अपना तीसरा पग आगे बढ़ा।

विवाह का तीसरा उद्देश्य है ऐश्वर्य और पूर्ण सम्पोषण वा पूर्ण संरक्षण। इसी में वस्त्रों और मकान आदि का ग्रहण भी हो जाता है। वर और वधू का अपना सुविधा जनक मकान भी होना ही चाहिये। 'गृह पति' और 'दम्पत्ति' शब्दों का अर्थ एक जैसा ही है। संस्कृत में 'दम' नाम घर का है। इससे ही 'दम्पति' और 'दाम्पत्य' शब्द बने हैं। आवास के विषय में यदि वर और वधू को अथवा उनके परिवार को किसी प्रकार का कष्ट होगा, तब तो उत्तम खान पान और स्वास्थ्य के होने पर भी उनका गृहस्थ-जीवन सुखी न बन सकेगा। इतना ही नहीं विवाहित जीवन की सफलता भी खतरे में पड़ जायगी। वर-और वधू का स्वभाव चिड़चिड़ा हो जायेगा। ऐसा होने पर उनके विवाहित सम्बन्ध विच्छेद की नौबत भी आ जायेगी।

वस्त्रों की कमी दरिद्रता का सूचक है। बेढंगे कपड़े मूर्खता की निशानी हैं। गृहस्थियों—विशेष करके नव-दम्पतियों के लिये सज-धजकर रहने में कोई बुराई नहीं है। परन्तु सुरुचि और शिष्ट मर्यादाओं की ओर भी उनको आवश्यक ध्यान देना चाहिए। शारीरिक पोषण और जीवन एवं व्यवसाय का पूर्ण संरक्षण भी सभी गृहस्थियों को अवश्य ही प्राप्त करना चाहिए। समाज और राज्य के संरक्षण-साधन भी उनके लिये ही हितकर होते हैं, जो जागरूक और सावधान होते हैं।

चौथा मन्त्र है:—

ओं मयोभवाय चतुष्पदी भव...

[शेष प्रथम मन्त्रानुसार]

अर्थ—हे देवि! अब आनन्द की प्राप्ति के लिये तू अपना चौथा कदम आगे बढ़ा।

विवाह का चौथा उद्देश्य है—आनन्द की प्राप्ति। आनन्द एक सापेक्ष भाव है। जो एक के लिये आनन्द है, वही दूसरे के लिये कष्ट भी हो सकता है। आनन्द के विषय में प्रत्येक व्यक्ति की अपनी-अपनी गति, मति, पसन्द, परिस्थिति, संस्कार-परम्परा और अनुभूति आदि को ही प्रधान माना जाता है। स्वतन्त्रता सुख है, परतन्त्रता दुःख। अनुकूल वेदना सुख है, प्रतिकूल वेदना दुःख। उत्तम स्वास्थ्य और उत्तम शारीरिक विकास सुख है, स्वास्थ्य का अभाव तथा इन्द्रियों की दुर्बलता एवं अविकसित शरीर दुःख। ज्ञान तो सुखद होता ही है; कभी कभी अज्ञान भी सुखद एवं वरदान स्वरूप होता है। गृहस्थ-जीवन में पति और पत्नी का पारस्परिक सहयोग, सद्भाव, अनुकूल आचरण, हित, चिन्तन, मधुर सम्भाषण सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिकोण और सह-निवास ही सर्वोपरि आनन्द है। कभी खा पीकर आनन्द होता है, कभी खिला-पिलाकर। पति और पत्नी कभी भी कोई ऐसा काम न करें, जिस से आनन्द प्राप्ति के स्थान पर जीवन की कड़वाहट ही बढ़ने लगे।

पांचवा मन्त्र यह है—

ओं प्रजाभ्यः पंचपदी भव...

[शेष प्रथम मन्त्रानुसार]

हे देवि! अब सन्तान प्राप्ति के लिये तू अपना पांचवा कदम बढ़ा।

विवाहित-जीवन की सफलता का एक प्रधान लक्षण उत्तम सन्तान की प्राप्ति है। यही विवाह का पांचवां उद्देश्य भी है। सन्तान प्राप्ति की इच्छा प्रत्येक व्यक्ति में स्वाभाविक रूप से पाई जाती है। सन्तान हीनता से व्यक्तियों के जीवन तो शोक सन्तप्त होते ही हैं, वंश की बेल भी मुरझा जाती है। सुयोग्य उत्तराधिकारियों के अभाव में वंशानुगत उत्तम मर्यादायें, उत्तम व्रत और परिवार की परम्परागत सब उपलब्धियां भी विनष्ट हो जाती हैं। अधिक सन्तान का होना तो कभी पहले भी अच्छा न माना जाता था; परन्तु सन्तानहीनता को तो सदा से ही बुरा माना जा रहा है। दाम्पत्य-जीवन में संयम-शीलता का कवच अत्यन्त हितकर होता है। केवल उतनी ही सन्तान की कामना की जाये जिससे मन की भूख भी मिटे, परिवार को सुयोग्य सहायक और उत्तराधिकारी मिले, संसार में उत्तम नागरिकों की वृद्धि हो, तथा पति पत्नी का स्वास्थ्य भी उत्तम बना रहे, शारीरिक सम्पर्कों में निमग्न होना और भोग-विलास को ही जीवन का सब कुछ मान लेना तो किसी भी दृष्टि से अच्छा नहीं। यदि परिपालन और प्रशिक्षण का सामर्थ्य न हो। तब तो सन्तान का न होना ही अच्छा है। सन्तान प्राप्ति के किसी प्रकार की अनधिकार चेष्टा कोई न करे। ब्रह्मचर्य व्रत का परिपालन पूर्णतया किया जाये।

मरणं बिन्दु पातेन,
जीवनं बिन्दु धारणात् ॥

छठा मन्त्र इस प्रकार है—

ओं ऋतुभ्यः षट्पदी भव...

[शेष प्रथम मन्त्रानुसार]

अर्थ—हे देवि! देश, काल और परिस्थिति के अनुसार यथायोग्य रीति से अपने कर्त्तव्यों का पालन करने के लिये छठा पग उठा।

खान, पान, पहिरान और लेन-देन आदि सभी आवश्यक व्यवहारों में देश, काल, परिस्थिति, अवसर, पात्र और औचित्य एवं मात्रा आदि-आदि का पूरा पूरा ध्यान भी पति और पत्नी अवश्य ही रखें। दोनों ही अपने-अपने नद्विवेक को जागृत रखते हुए आपस में एक दूसरे की भूलों और भ्रान्तियों से सहानुभूतिपूर्वक बचाते एवं सावधान करते रहें। विवाहित-जीवन का छठा उद्देश्य यही है। (गीता ६-१७) के जिस सार्वभौम सिद्धान्त और दुःख नाशक योग का उल्लेख इस लेख के प्रथम पद प्रसंग में किया गया है, उसी का विचार यहां पर फिर भी करना चाहिये। अवसर और औचित्य को जानना, पहिचानना और उचित महत्त्व देना—सीख लेना चाहिये।

नीको पै फीको लगै,
बिन अवसर की बात।
जैसे बरण युद्ध मे,
न शृंगार सुहात॥
फीको पै नीको लगै,
कहिये समय बिचारी।
सबका मन हर्षित करै,
ज्यों विवाह में गारी॥

सब धार्मिक अनुष्ठानों में भी देश, काल, पात्र मात्रा आदि को यथोचित महत्त्व प्रदान किया जाये।

सप्त-पदी का सातवां और अन्तिम मन्त्र है—

ओं सखे सप्तपदी भव......

[शेष प्रथम मन्त्रानुसार]

अर्थ—हे देवि! समानता और स्वतन्त्रता (सखे) की प्राप्ति के लिये अब तू अपना सातवां कदम आगे बढ़ा।

विवाहित-जीवन का सातवां और अन्तिम लक्ष्य पति और पत्नी का पारस्परिक सखा-सखी भाव है। समान ख्याति येषां गुणा ते सखा। जिनकी ख्याति अर्थात् मान-मर्यादा, प्रसिद्धि, गुण, कर्म व स्वभाव, विचार, आदर्श, सूझ-बूझ और कार्य प्रणाली एक जैसी ही होती है, वे आपस में एक दूसरे के सखा-सखी हैं। सखा-सखी-भाव में समानता भी होती है, प्रसन्नता और स्वतन्त्रता भी। जहां जोर-जबरदस्ती, डर, लालच या इसी प्रकार के मनोविकारों के आधीन न होकर सम्बन्ध जोड़े जाते हैं, वहां सखा सखी भाव या मख्यी-मित्रता की प्रतिष्ठा तो कभी हो ही नहीं सकती। वे कोई और होंगे जो नारियों के लिये "पांव की जूती" जैसी गन्दी-भद्दी कल्पनायें किया करते हैं। वैदिक धर्म तो नारियों की पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन में पूर्ण स्वतन्त्र और सम्मानपूर्ण समानता का ही स्थान प्रदान करता है।

वैदिक समाज-व्यवस्था के अनुसार गृहस्थाश्रम में पति और पत्नी का दर्जा स्थान और महत्व कर्त्तव्य-पालन और अधिकार प्राप्ति आदि सभी दृष्टियों से बराबर है। छुटाई बड़ाई के सभी विचार एवं रस्म-रिवाज अनुचित हैं। सभी सामाजिक और पारिवारिक कार्यों में पति और पत्नी को उनकी अपनी अपनी स्वतन्त्र विशेषताओं का ध्यान

[शेष पृष्ठ १० पर]

अब सपना, सपना नहीं रहा

पांच साल पहले प्रति हैक्टर १०० क्विंटल पैदावार लेना केवल सपना मात्र था। आज भारत के अनेक किसान इस सपने को साकार कर रहे हैं। वे लोग प्रति हैक्टर १०० क्विंटल ही नहीं बल्कि इससे भी ज्यादा पैदावार ले रहे हैं।

"आज प्रति हैक्टर १०० क्विंटल अनाज लेना किसानों के बस की बात है। यह मत अनेक किसानों तथा विशेषज्ञों का है। पिछले वर्षों में इसकी अनेक मिसालें देखने में आई हैं।

पंजाब मे लुधियाना जिले के मछिवारा विकास खंड के अलोणाटोला गाँव में भगवतसिंह औसतन ४० क्विंटल गेहूं और ६० क्विंटल संकर मक्का पैदा कर लेते हैं। दिल्ली मे कुतुब मीनार के पास एक छोटे किसान ने भी संकर मक्का और गेहूं बो कर क्रमशः ४० और ३० क्विंटल पैदावार ली है। उसने एक हैक्टर से करीब ४,००० रुपये कमाये। लुधियाना के ही एक अन्य किसान हरजीतसिंह सनेहवाल ने ६७ क्विंटल संकर मक्का और ४२ क्विंटल गेहूं एक ही खेत से एक साल मे लिये।

यह कहानी उत्तर भारत के किसानों तक ही सीमित नहीं दक्षिण भारत के किसान प्रगति की इस दौड़ मे किसी से पीछे नहीं हैं आंध्र प्रदेश के पश्चिम गोदावरी जिले में एक सुब्बाराव तथा के० पुल्लम राजू जैसे अनेक किसान आज ताईचुंग नेटिव--१ धान की प्रति हैक्टर औसतन ७० क्विंटल पैदावार ले रहे हैं।

मैसूर में संकर मक्का की जड़ें हाल ही में जमी हैं। एक किसान ने वहां पर प्रति हैक्टर १२५ क्विंटल मक्का ली है। १९६४ मे एक अन्य मैसूर किसान एन० अर्जुनप्पा ने ९३ क्विंटल संकर मक्का ली थी। मैसूर राज्य में तुंगभद्रा प्रोजेक्ट इलाके के श्री के० वेंकैया चौधरी ने १९६५-६६ मे पहली बार ताइचुंग नेटिव, १ धान बोया और प्रति हैक्टर १०६ क्विंटल पैदावार ली है।

इसी प्रकार सैकड़ों किसानो के नाम गिनाये जा सकते हैं। यह सही है कि इन लोगों के पास सिंचाई की सुविधायें हैं। इन्हे नहरों, तालाबों, कुओ या नलकूपों से सारा साल पानी मिलता रहता है। लेकिन इनमें से हर एक के खेती की पैदावार बढ़ाने के तीन तरीके जरूर अपनाये।

पहला तरीका है भारी पैदावार देने वाली किस्मे बोने का। पिछले कुछ सालों से हमारे वैज्ञानिकों ने अनेक भारी पैदावार देने वाली किस्में निकाली हैं। संकर मक्का की कई किस्मे हैं जो देश के हर इलाके के लिए उपयुक्त हैं। संकर ज्वार की दो किस्में सी० एम० एच० १ और सी० एस० एच० २, संकर बाजरा की एच० बी० १ धान की ताइचुंग नेटिव-१, ताइनान-३-ताइचुंग-६५, ए० डी० टी० २७ और आई० आर० ८ भारी पैदावार देने वाली किस्मे हैं। गेहू की भी कई बौनी किस्मे निकाली गई हैं, जैसे सोनोरा ६४, लर्मारोज, एस० २२७, कल्याण २२७, शरबती सोनोरा आदि। यहीं तक कि मूंगफली की भी एक भारी पैदावार देने वाली किस्मे निकली हैं जिसका नाम अमेरिका ताइटुन्डे है। यह किस्म सिंचाई की सुविधाए होने पर अन्य किस्मो की अपेक्षा १०० प्रतिशत ज्यादा पैदावार देती है।

इन किस्मो से किसानों को भारी पैदावार मिल रही है। इनके अलावा कई ऐसी किस्में हैं जो थोड़े समय मे ही पक कर तैयार हो जाती है और कुछ ऐसी है जो किसी भी मौसम मे पकाई जा सकती है। इसलिये किसान अपने एक ही खेत मे साल मे तीन फसलें तक ले सकते हैं।

एक ही खेत मे तीन फसलें लेना बहुफसलीय तरीका कहलाता है। खाद्य उत्पादन बढ़ाने का यह दूसरा तरीका है। इस तरीके से अनेक किसान खरीफ मे संकर मक्का या संकर बाजरा या धान या चारे की फसलें लेते हैं और रबी मे गेहू की अच्छी फसल लेते हैं। रबी और खरीफ के बीच वे आलू भी उगाते हैं।

यह अब इसलिए सम्भव हो गया है कि सोनोरा ६४ जैसी गेहू की किस्मे नवम्बर या दिसम्बर तक बोयी जा सकती हैं। देर से बोने पर भी उनसे भारी पैदावार मिलती है।

उत्तर प्रदेश मे लाखों हैक्टर जमीन ऐसी है, जहां किसान नवम्बर मे धान की फसल लेने के बाद गेहू नहीं बो पाते। इसका कारण यह है कि गेहू की देसी किस्मे देर से नहीं बोयी जा सकतीं। वहाँ अब सोनोरा ६४ जैसा गेहू बोकर रबी की फसल आसानी से ली जा सकती है। इसके अलावा के० २४ जो भी दिसम्बर मे बोया जा सकता है।

आंध्र प्रदेश के कुछ भागों मे अ... कल धान की कटाई के बाद कपास फसल लेते हैं. क्योंकि धान की दू... फसल के लिये वहां पर्याप्त पानी ... मिल पाता। यह अच्छा तरीका ... धान खाद्य फसल है और कपास नक... फसल। लेकिन उन इलाकों मे सं... ज्वार सी० एस० एच०—१ भी जनव... फरवरी से लेकर अप्रैल-मई तक अ... तरह उगाई जा सकती है। परीक्ष... मे देखा गया है कि इस प्रकार ७० ... क्विंटल प्रति हैक्टर अनाज और ज्व... मिल गया। कुछ किसान संकर ज... की पेड़ी की फसल से ज्वार की ... फसल के बराबर ही पैदावार मिली...

आन्ध्र प्रदेश के कृष्णा, गोदाव... करनूल तथा महबूब नगर के जिलों ... मैसूर राज्य के रायचूर और ते... जिलों मे धान के बाद मूंगफली अच्छी तरह उगाई जा सकती है। ... प्रकार बिहार मे खरीफ धान की दे... कटाई होने या कुछ जमीनों में पानी ... जाने के कारण रबी की फसल नहीं ... जाती। परीक्षणों से पता लगा है ... वहां के किसान दिसम्बर में सोनोरा ६४ बोकर गेहू की अच्छी पैदावार ... सकते हैं।

ताइचुंग नेटिव १—धान को ... और खरीफ दोनों ही मौसमों में ब... जा सकता है। मिसाल के लिये फि...

[शेष पृष्ठ १० पर]

भारी पैदावार देने वाली किस्मो से किसानों ने भारी लाभ कमाया।

आर्य्य महिला मण्डल

इनकी कदर समझिये

★ श्रीमती अर्चना सूद

क्या आप भी उन गृहणियों मे हैं जो क्सर सब्जियों की ऊपर की पत्तियों ो बेकार समझकर फेंक देती हैं ? उन्हें ह नहीं मालूम कि इनमे भी पौष्टिक त्व होते हैं।

मूली, गाजर, चुकन्दर तथा शल-म ऐसी ही सब्जियां हैं जिनकी पत्तियों ा अक्सर फेंक दिया जाता है। दर सल, इनकी पत्तियां जड़ों से ज्यादा ष्टिक होती हैं, क्योंकि इनमे खनिज ा विटामिन होते हैं।

इनकी पत्तियों से शोरबा, भुजिया साम्बर जैसे कई व्यंजन बनाये जा ते हैं। इन्हें बारीक काटकर और टे मे गूंधकर इनकी स्वादिष्ट रोटियां ा पराठे बनाये जा सकते हैं। मूली पत्तियों मे थोड़ा-सा नमक मिलाकर ा नीबू निचोड़कर सलाद के रूप मे सकते हैं।

इसी तरह फूल गोभी तथा बन्द भी के पत्तों को भी उनके रेशे निकाल खाने के काम मे लाया जा सकता । इन सब्जियों के डंठल भी गोभी जैसे ही पौष्टिक होते हैं।

बथुआ तथा चौलाई जैसे सागों को लोग हेय दृष्टि से देखते हैं। लेकिन असल इन सागों में दूसरी सब्जियों के ाबले पौष्टिक तत्व ज्यादा होते हैं।

मटर के छिलकों की बड़ी स्वादिष्ट ी बनती है। इसकी सब्जी बनाने के े अन्दर का रेशा छील लेना चाहिये ही सब्जी में आलू डालकर स्वाद या जा सकता है।

सब्जियों के गलत तरीके से पकाने भी इनके पौष्टिक तत्व नष्ट हो । हैं। सब्जियों को हमेशा काटने से र धो लेना चाहिये। काटने के बाद । से इनके विटामिन नष्ट हो जाते सब्जियों को पानी में जरूरत से दा कभी नहीं भिगोना चाहिये। जहां बने उन्हें छिलके सहित ही पकाना हिये। अगर छीलना जरूरी हो तो का हल्का छिलका उतारना चाहिये, कि कुछ सब्जियों के छिलकों में गूदे ने ही विटामिन होते हैं।

अधिक पानी में ज्यादा देर तक ने से भी पौष्टिक तत्व नष्ट हो जाते इनके लिये सब्जियों को जरूरत भर । में ढक कर पकाना चाहिये। इससे पौष्टिक तत्व नष्ट नहीं होंगे।

अगर सब्जी उबालनी हो तो उसके लिए पहले पानी को खौला कर उसमे सब्जी डालनी चाहिये। इससे सब्जी मे पौष्टिक तत्व बने रहते हैं। जिस पानी में सब्जी उबाली या धोयी गई हो उसे दाल, साम्बर या शोरबे मे इस्तेमाल किया जा सकता है।

सब्जियां पकाते समय पहले कुछ मिनट के लिये बरतन को खुला रखें और फिर उसे ढक दें। इससे सब्जियों का अपना रंग, स्वाद तथा उनके पौष्टिक तत्व बने रहते हैं।

सब्जियों को भाप देकर पकाना सबसे अच्छा रहता है क्योंकि इस तरीके से उनके पौष्टिक तत्व कम मात्रा में नष्ट होते हैं। इसके बाद तदूर मे पकाना अच्छा रहता है। इस तरीके से पकायी गई सब्जियों मे अधिकाश पौष्टिक तत्व बने रहते हे और इन्हे पचाना भी आसान होता है। इसीलिये बच्चों तथा बीमारों के लिये भाप से या तन्दूर मे पका भोजन बताया जाता है।

मुलायम तथा कच्ची सब्जियों में पौष्टिक तत्व काफी मात्रा मे होते हैं। खीरा, गाजर, टमाटर, अंकुर फूटे मूंग, हरी मटर, प्याज, मूली तथा सलाद की पत्तियां कच्ची ही खायी जा सकती हैं।

छाछ को भी कुछ गृहणियां बेकदरी करती हैं। लेकिन इसमे प्रोटीन तथा खनिज होते हैं जिससे शरीर बनता है। छाछ में अगर थोड़ा-सा नमक, पिसा जीरा तथा पोदीना मिला लिया जाये तो अच्छा खासा रायता बन जाता है।

अगर छाछ बहुत खट्टी है तो इसमें बेसन मिलाकर कढ़ी बनायी जा सकती है।

छाछ को इस्तेमाल करने का एक दूसरा तरीका इसे रोटी के आटे में मिला लेना है। छाछ के गुंधे आटे में थोड़ी-सी कोई पत्ती वाली सब्जी काट मिला लीजिये और उसके पराठे बनाकर खाइये। ये बहुत स्वादिष्ट लगेंगे।

खट्टी छाछ में चावल भी पकाये जा सकते हैं। इसके लिये तेल या घी में कुछ मसाले तलकर चावल में मिला लीजिये। थोड़ी-सी छाछ डालकर चावलों को पका लीजिये। ये बहुत स्वादिष्ट लगते हैं। क्या आपने यह कहावत सुनी है कि "खट्टे छाछ से भी गये।" शायद छाछ की बेकदरी करने वालों के लिये ही यह कहावत बनाई है।

रोटियों के लिये आटा गूंधते समय अक्सर गृहणिया आटे को छानकर चोकर फेंक देती है। लेकिन ऐसा नहीं करना चाहिये, क्योंकि चोकर मे विटा-मिन तथा खनिज काफी मात्रा में होते हैं जो छानने पर बेकार चले जाते हैं। अगर आप आटा छानती ही हैं तो इसकी चोकर फेंकिये नहीं। चोकर के बिस्कुट बनाए जा सकते हैं जो बहुत स्वादिष्ट होते है।

चावल पकाते समय इन्हे थोड़े-से पानी मे धोइये। धोते समय इन्हें हाथ से रगड़ना नहीं चाहिये। चावलों को जरूरत भर पानी मे उबालें। अगर फालतू पानी छानना पड़े तो इसके पानी को फेंकने के बजाय दाल मे इस्तेमाल कर लीजिये। इसकी लप्सी भी बनायी जा सकती है। इसे थोड़ा-सा नमक मिलाकर तथा नींबू निचोड़कर पीने के काम भी लाया जा सकता है। पीने मे स्वादिष्ट लगता है।

इस प्रकार गृहणियां बहुत सी चीजों को बेकार समझकर फेंकने के बजाय उनका पूरा सदुपयोग कर सकती हैं। इससे उनको तथा उनके परिवार के सदस्यों को पौष्टिक भोजन भी मिलेगा।

★

[पृष्ठ ८ का शेष]

रखते हुये समान स्थिति मे ही प्रतिष्ठित करना चाहिये। स्वतन्त्रता और अधि-कारों की प्राप्ति जैसे किसी भी प्रलो-भन पूर्ण उच्छृंखलता एवं संकीर्ण मार्ग को अपना कर गृहस्थ जीवन और पति-पत्नी के पारस्परिक प्रेम, सद्भाव और सम्मिलित भविष्य, उत्कर्ष अभ्युदय और निःश्रेयस को बरबाद करने का कोई मार्ग अथवा कोई ऐसा संदिग्ध मार्ग, जिससे पति और पत्नी के पार-स्परिक सम्बन्धों में बिगाड़ की आशंका हो, कोई कभी भूलकर भी न अपनाये। इस विषय में दोनों पक्षों के मित्रों, हितैषियों, निकट सम्बन्धियों और पारि-वारिक सेवकों को बुद्धिमत्तापूर्वक अपने-अपने कर्त्तव्यों का निर्वाह करना चाहिये।

सप्त-पदी के इस विचार में पारि-वारिकता और सामाजिकता की प्रायः सभी मुख्य-मुख्य बातों, रीतियों और नीतियों का समावेश हमारे पूर्वजों ने बहुत सोच-समझ कर, उत्सुकता के साथ किया है। यह सप्त-पदी विवाह दाम्पत्य-जीवन की सफलता की कुंजी भी है, पारिवारिक और सामाजिक सुख-शान्ति का सुदृढ़ आधार भी।

[पृष्ठ ९ का शेष]

फीस के अन्तर्राष्ट्रिय चावल अनुसन्धान शाला ने ताइचुंग नेटिव-१ की पहली फसल से प्रति हैक्टर ७४ क्विटल, दूसरी फसल से ६७ क्विंटल तथा तीसरी फसल मे ताइनान-२४२ बोकर ६१ क्विंटल पैदावार ली।

इसी तरह पश्चिम गोदावरी जिले के रायलम गांव मे नरसिम्मा राजू ने सारा साल धान की फसलें उगायी और प्रति हैक्टर ११६ क्विंटल पैदावार ली।

खेती की पैदावार बढ़ाने का तीसरा तरीका है, अन्तरवर्तीय फसलें लेना। इस दिशा में हमारे किसानों ने काफी प्रगति की है। मैसूर के सोमेगौड़ा ने अपने ईख के खेत में फरासबीन बो कर ७०० रुपये अलग मुनाफा कमाया। इस प्रकार आंध्रप्रदेश के अंजी रेड्डी ने अपने बगीचों में पी० २१६ एफ० कपास उगाकर प्रति हैक्टर ४५०० की अतिरिक्त आमदनी ली।

मध्यप्रदेश में भोपाल के निकट बधोहा गांव के किसान आसाराम शर्मा ने गेहूं के साथ आलू भी बोया। उन्होंने पहले आलू की बोआई की बाद में आलू खोदने के बाद खेत की सिंचाई की और गेहूं बो दिया। इस तरह उन्हे प्रति हैक्टर ४५० क्विंटल आलू और ४० क्विंटल गेहू की पैदावार मिली।

गन्ने के खेत मे प्याज, मक्का, लोभिया, ज्वार की फसलें अच्छी तरह बोयी जा सकती हे इस तरह से अन्तर-वर्तीय फसलों से खाद्य उत्पादन भी बढ़ता है और आमदनी भी।

अब तक किसानों को इतनी भारी पैदावार लेना केवल एक सपना हुआ था। किन्तु आज वैज्ञानिको ने तथा हमारे कुछ प्रगतिशील किसानों ने इस सपने को सपना नहीं रहने दिया। आज कल तो वे यह कहते सुने जाते हैं कि जो किसान साल में अपने खेत से फी हैक्टर १०० क्विटल पैदावार न ले सके उसे किसानी छोड़ देनी चाहिए।

★

साधु आश्रम का उत्सव

श्री सर्वदानन्द साधु आश्रम अली-गढ़ का वार्षिकोत्सव मिती अगहन सुदी ३, ४, ५ शुक्रवार, शनिवार, तथा रविवार तदनुसार दि० २२, २३, २४ नवम्बर सन् १९६८ ई० को होगा।

—मा० सरदारसिंह मन्त्री

लांछन

[श्रीमती मेहता के पास माया तो थी, परन्तु करुणा भरा मानो हृदय नहीं था। माया के अभिमान निर्दोष पर लांछन लगाना उनके लिए स्वाभाविक ही था।

नीला अशिक्षिता थी, उसकी पुत्री रूपा पर जो लांछन लगाया गया था, वह उसे चौथ के चन्द्रमा के दर्शन का अभिशाप मानती थी। रूपा अपमान भरे जीवन से मर जाना अच्छा समझती थी; परन्तु नीला को विश्वास था कि पुरुषार्थ ही इस दुनियां मे सब कामना पूरी करता है।

जीवन संघर्ष की ऐसी ही यह करुणामयी तथा उत्साह प्रदत्त कहानी है।

—सम्पादक]

तनिक-सी असावधानी से आज रूपा के हाथों जो नुकसान हो गया है, वह सचमुच असाधारण है और उसकी ही गलती के कारण उसकी मां-नीला को जो कड़ी फटकार सुननी पड़ी है, उसके लिए भी रूपा मन ही मन अपने-आपको कितना कोस रही है, यह वह किसे और कैसे बतलावे ?

"मा, अब क्या होगा ?" कुछ देर के बाद रूपा ने भय से कांपती आवाज मे कहा।

"होगा क्या बेटी।" नीला ने कहा "जो होना था, वह तो हो ही चुका। सुना नहीं तुमने, मेरी नौकरी मालकिन ने छीन ली' इससे ज्यादा और अब क्या ले सकेंगे वह हमसे ?' फिर एक क्षण रुक कर वह बोली, "अच्छा, चलो, अब घर चलें। यहीं खड़े रहने से क्या होगा ?"

और, दोनों ही चुपचाप अपने घर की तरफ चल पड़ीं। नीला जानती है कि रूपा से जो गलती हो गई है वह अब दुरुस्त तो हो नहीं सकती। फिर क्यों उसे व्यर्थ ही डाट फटकार बतलाई जाए ? और डांट-फटकार से ही, यदि हो चुका नुकसान वापस मिल सकता, तो क्या मालकिन ने कम फटकारा है बेचारी रूपा को ! इसीलिये उसने इस प्रसंग को छेड़ना अब ठीक नहीं समझा।

अपनी कोठरी मे पहुच कर दोनों मा-बेटी मौन रहीं और बिस्तर पर लेट गयीं। लेकिन दोनों के अन्तराल मे, प्रदर्शिनी मे हो चुकी घटना सप्तरंगी लड़ियों की तरह रह-रहकर चमक उठतीं, उन्हें बेचैन कर बैठतीं और विविध कल्पनाओं के भवर जाल मे पटक-पटक देतीं।

झमझम कर बरसती घनघोर झड़ी के दिनों में, जब भादों के शुक्लपक्ष की चौथ का चांद कोई अनायास देख लेता है, तो एक आशंका से उसका हृदय भीतर ही-भीतर कांप उठता है। क्षण भर को ही सही, किन्तु उसकी मुद्रा म्लान हो उठती है। उसे लगता है कि यह चौथ का चांद, जो उसने अनायास ही देख लिया है, निश्चय ही किसी ऐसे कलंक का उस पर आरोप करा देगा कि दुनियां को मुंह दिखलाने लायक भी शायद वह न रह जाए।

अंधेरी कोठरी मे अपने बिस्तर पर लेटी हुई नीला की मनोदशा भी आज ठीक ऐसी ही थी।

शाम को उसकी मालकिन श्रीमती मेहता ने जब प्रदर्शनी में नीला का उस की पुत्री रूपा के साथ चलने की बात कही थी, तब एक अप्रकट उल्लास से वह कितनी भर उठी थी। लपक कर अपने घर आई और रूपा को लेकर प्रदर्शनी देखने जा पहुंची थी, अपनी मालकिन के साथ।

लेकिन क्षण भर मे ही क्या से क्या हो जायगा, इसका पता मानव को नहीं रहता। यदि ऐसा होने लगे तो इस दुनिया का नाम मायावी क्यों रह जाए? तब शायद इस जगती मे कभी कोई परिवर्तन ही न हो। और उस अपरिवर्त्तनशील जगती में फिर कभी कोई रहना भी शायद पसन्द न करे। इसीलिये इस जग के सृजक ने इसे परिवर्त्तनशील और क्षणभंगुर बना रक्खा है।

नीला जब प्रदर्शिनी देखने गई थी तब उसे स्वप्न में भी यह आशंका नहीं

थी कि मनोरञ्जन के जिस स्थल पर वह जा रही है, वहां से किसी गहन उत्पीड़न को लेकर उसे लौटना पड़ेगा।

माना कि रंगबिरंगी आतिशबाजी देखने में यह रूपा इतनी बेसुध हो गई कि किसी बदमाश ने उसके हाथ से अचानक ही वह बण्डल एक झटके के साथ छीन लिया, जिसमें श्रीमती मेहता की सैकड़ों रुपयों की अनमोल चीजें थीं, लेकिन यह कोई कैसे कह सकता है कि रूपा ने किसी जान पहचान वाले को जान-बूझकर वह बण्डल दे डाला है।

नीला ने स्वीकार किया कि ये बड़े आदमी किसी पर कलंक लगाने में तनिक भी आगा-पीछा नहीं सोचते। किसी गरीब को गालियां तो ये लोग देते ही हैं, लेकिन उसकी नीयत पर भी सन्देह करने लगते हैं। धन के कारण इनका विवेक भी शायद धीरे-धीरे भस्म हो जाता है। ये लोग यह भूल जाते हैं कि नीयत और ईमानदारी का जहाँ तक सम्बन्ध है, गरीबों मे भी यह अपना अस्तित्व रखती है। गरीब को किसी वस्तु की आवश्यकता होगी, तो वह निःसकोच उसकी याचना कर लेगा। लेकिन अपनी नीयत पर बट्टा लगाने और उसे चुपचाप उड़ा देने की उच्छृङ्खलता का सहारा वह कभी भूलकर भी न लेगा। लेकिन जो बड़े आदमी हैं, धनवान हैं, वे किसी से याचना करने मे अपनी मानहानि समझते हैं, किसी के आगे अपना हाथ फैलाने मे अपना अपमान समझते हैं, अतः उन्हें गैर ईमानदारी का पल्ला ही पकड़ना पड़ता है। यदि ऐसा न हो, तो गरीबों का शोषण करने में इन्हें दर्द न हुआ करे।

नीला जानती है कि श्रीमती मेहता के घर मे रुपयों की कमी नहीं। यदि आज की प्रदर्शनी में खरीदी हुई चीजें रूपा की असावधानी से खो भी गई, तो उनका कोई ऐसा नुकसान नहीं हो गया, जिसके लिये आपे मे बाहर होकर वह इतना बरस पड़ीं और एक तरुण कुमारी पर यह कलंक लगा बैठें।

दवाइयों की इतनी बड़ी दूकान है, लडका भी डाक्टर है। प्रतिदिन सैकड़ो का लाभ होता है। फिर भी इतनी अधीरता और इतनी आह ! माना कि नुकसान उनका हो चुका है। लेकिन मन का इतना उथलापना बतलाने से वह नुकसान वापस तो मिल नहीं जायगा। और, रूपा ने अनजाने ही जो यह नुकसान कर दिया है, उसके लिये उसे डांट-फटकार तो उन्हें बतलानी ही चाहिये, लेकिन निराधार आरोप किसी पर आरोपित करना कहाँ तक ठीक है ?

रूपा पर लाञ्छन लगाते समय मालकिन ने यह भी न सोचा कि प्रदर्शनी की भीड़भाड़ मे, आसपास खड़े रहने वालों मे से जिन कुछ लोगों ने यह लांछन सुना होगा, उनमे दो-चार इस मुहल्ले के भी लोग रहे होंगे। और, पड़ोसियों में जहां यह खबर फैली नहीं कि फिर क्या होगा, इसका परिणाम ?

पड़ोसवालों को दूसरों के दुःख-दर्द मे सहानुभूति का अमृत उड़ेलने की उतनी चिन्ता नहीं होती, जितनी कि किसी के लाञ्छन पर दांत निकालने और उसका मखौल उड़ाने की उत्सुकता।

★देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त'

गरीबों का जीवन यों ही कितना अशान्त और अस्त व्यस्त रहता है, इसे ये धनवान् क्या समझें ? जीवन की पगडण्डी पर कितने ही प्रभात इनके लिये सन्ध्या की सिमटती-सी अधियारी के अतिरिक्त कुछ नहीं होते। दिन का प्रखर आलोक इन गरीबों के लिये रात्रि के कुहू अन्धकार-सा ही प्रतीत होता है। जीवन की चहल-पहल किसी श्मशान का सन्नाटा बनकर इन गरीबों को भीतर भीतर जैसे काट खाने को दौड़ती है। तारों भरी स्निग्ध रातें जहां अमीरों के लिये जीवन के राग-रंगों का स्पर्श करने के लिये आती हैं, वहीं इन गरीबों के जीवन की उलझी गुत्थियां सुलझाने की साधना वेला बनकर आती और चली जाती है।

और, इसके साथ-ही-साथ यदि कोई लांछन इनके पल्ले बंध आये, तब तो इनका जीवन जैसे दूभर ही हो उठता है।

नीला को इस बात का अभिमान है, उसे पूरा-पूरा इतमीनान भी है कि उस की लड़की रूपा ऐसी नहीं, कि जो उस की गैरहाजिरी मे पास-पड़ोस के लड़कों से जान-पहचान करने का कभी अवसर देखती हो। यही कारण है मालती ने जब यह कहा कि मालूम पड़ता है किसी जनजान वाले को ही इसने जान-बूझकर यह बण्डल दे डाला है, तब न केवल नीला बल्कि रूपा की भी आंखों से टपाटप आंसू झड़ पड़े थे।

किसी भी व्यक्ति पर जब कोई निराधार कलङ्क लगा दिया जाता है तो उसके अन्तर का मानव स्वभावत आकुल व्याकुल हो उठता है। [illegible] कदाचित इसीलिये मन ही मन एक असह्य पीड़ा से भर उठी थी, लेकिन अपनी मा की नौकरी का ख्याल रखकर ही [illegible] श्रीमती मेहता [illegible] [illegible] करना उचित नहीं समझा।

लेकिन अपनी निर्दोष पुत्री पर इस कलंक का आरोप सुनकर नीला भला कैसे चुप रह जाती ? [illegible] इस कलंक का विनम्र प्रतिरोध

हा, तो उल्टे उसे अपनी नौकरी से हाथ धो लेना पड़ा। इससे अधिक ौर कोई दण्ड देना शायद श्रीमती हता के हाथ में नहीं था।

न्तु उसकी नौकरी छीन लिये ने की घोषणा श्रीमती मेहता कर कीं, तब रात्रि के सन्नाटे में नीला अपनी पुत्री के साथ घर आकर चुपचाप ेट रही। लेकिन इस घटना से उत्पन्न हापोह पर ही नीला बहुत रात तक रती रही।

रूपा से उसने एक भी शब्द नहीं ा। रूपा के आकुल-व्याकुल अन्तराल वह इसी प्रसंग को छोड़कर और धक बेचैन नहीं करना चाहती थी। न्तु दिल और दिमाग में सिवा इस ंग के कोई दूसरी बात थी ही नहीं। ोलिये वह चुपचाप लेटी रही और ा नहीं, कब तक इसी प्रकार जागती ी!

सुबह जब रूपा की आंख खुली, तो ने देखा कि माँ-नीला—अपने बिस्तर उठकर दरवाजे पर जाकर गुपचुप-सी ी है।

रूपा को अपनी मां की मनोदशा पने में देर नहीं लगी। रात की ना फिर उसकी आँखों के सामने च उठी। मूर्त्त होकर वह घटना उसे शान-सी करती प्रतीत हुई।

बिस्तर से उठकर रूपा अपनी मां पास जाकर खड़ी हो गई और ली, "तुम अभी तक रात की ही बात च रही हो मां!"

नीला चुप थी। एकबार उसने ाकर देखा, तो पाया कि रूपा के पर भी उदासी की गहरी छाया तक है। एक नजर में नीला ने देख या कि रूपा की आँखें सूजी हुई हैं। क्या रात में यह रूपा रोती रही ?

इसी बीच रूपा ने कहा, 'कहने लों का मुंह तो बन्द नहीं किया जा कता मां! फिर वे बड़े आदमी हैं, र हम ठहरे गरीब। वे सब कुछ कह कते हैं मा!' और यह कहते कहते ा की सिसकियां जोर पकड़ने ीं।

"सब कुछ कह सकते हैं!" नीला रूपा के शब्दों को दोहराया और कर उसे अपने वक्ष से लगाते हुए ा, "तुम ठीक कहती हो बेटी! किन मैं सोचती हूं, यह बात पास ोस में फैल गई तो? कहते-कहते ा चुप हो गई।

'तो क्या मां? तुम रुक क्यों गई? ने पूछा।

'तो मुझे कहीं नौकरी कैसे मिलेगी बेटी?' नीला ने कह दिया।

रूपा अपने आपको अब तक प्रकृतिस्थ कर चुकी थी। उसने कहा, जो बात कही जा चुकी है, वह अब वापस नहीं हो सकती मां! धनुष से छूटा हुआ बाण भी कहीं लौटकर आता है! फिर उसी बात को लेकर हम कब तक यों ही रोते रहेंगे? जो होना होगा सो होकर रहेगा, मां। लेकिन सच्ची बात कभी छिपकर नहीं रह सकती। कभी न कभी सच्ची बात प्रकट हो ही जाएगी और यह झूठा कलंक भी अपने आप धुल जायेगा।'

"रूपा!" नीला ने कहा, "एक बात पूछती हूं, बतलाएगी?"

यह सुनते ही रूपा कुछ सकपका गई। पता नहीं, माँ क्या पूछने वाली है। फिर भी संयत स्वर में कहा उसने, "क्या मां?"

"इस साल भादों में उजियाले पाख की चौथ का चांद देखा था, बेटी तुमने?"

"नहीं तो।"

"अच्छी तरह याद है तुझे?"

"हां मां! अच्छी तरह याद है।" रूपा ने कहा "उस दिन तुम बहुत रात तक काम से वापस नहीं आई थीं। मैं चुपचाप कोठरी में लेटी रही थी—किवाड़ लगाए। मुहल्ले वालों ने अपनी कोठरी के छप्पर पर बहुत से ईंट पत्थर भी फेंके थे, लेकिन मैं चुपचाप ही पड़ी रही थी। और, जब तुम लौटकर आई थी तब तक चौथ का चांद आसमान में डूब चुका था।"

"फिर यह कलङ्क कैसे लगा बेटी?'

"कलङ्क लगने के लिये चौथ का चांद ही एक मात्र कारण नहीं होता मा!" रूपा ने कहा, "गरीबी क्या चौथ का चांद नहीं है, जिसे देखते ही अमीर सदा चौंक पड़ते हैं? यों किसी व्यक्ति को देखते ही ये अमीर नहीं चौंकते, लेकिन जहाँ इन्हें मालूम पड़ा कि उनकी दृष्टि के सामने जो व्यक्ति खड़ा है, वह गरीबी का शिकार है, वहाँ ये फौरन चौंक पड़ते हैं—ठीक उसी तरह, जिस प्रकार हम लोग चौथ का चांद देखकर चौंक पड़ते हैं।"

"गरीबों को देखकर ये अमीर कितने ही क्यों न चौंक उठते हों," नीला ने कहा "लेकिन उन्हें यह नहीं भूलना चाहिए कि हम गरीबों को ही चूस-चूसकर वे अमीर बन पाते हैं। और, जिन गरीबों को देखकर वे चौंक पड़ते हैं, यदि वे न रहें, तो इनका वह सम्मान भी न रह जाये जो इन्हें नसीब होता है। तुम सोचो रूपा, यदि हम गरीब न हों, तो कौन इन्हें अमीर कहेगा, कौन इनकी सेवा करेगा और कौन इनकी लाल-लाल आँखों का क्रोध सहन करेगा?"

"यह सब ठीक है मां, लेकिन यही सब इन्हे समझाये कौन?"

समझाने की जरूरत ही क्या है बेटी? नीला ने कहा, "भगवान् सब देखता है। वही इन्हें समझाएगा।"

"यही तो नहीं होता माँ!" रूपा बोली, यदि परमात्मा इन अमीरों को गरीबों पर किये जाने वाले अन्यायों का फौरन दण्ड दे दिया करे, तो इनकी आंखें ही न खुल जाएं और गरीबों पर किये जाने वाले जोर जुल्म की रफ्तार कम न हो जाये। लेकिन मुझे तो ऐसा मालूम पड़ता है कि परमात्मा इन बातों पर शायद ध्यान ही नहीं देता।"

"नहीं बेटी, यह बात नहीं है। परमात्मा किसी भी अन्याय का अथवा पाप का दण्ड तत्काल नहीं देता। वह तो धीरे-धीरे होमानव को इसकादण्ड फिर एक क्षण रुककर कहा, अच्छा बेटी मैं कहीं जाकर नौकरी की तलाश करूं।

"तुम भी एक ही हो मां! रात को नौकरी छूटी और सुबह फिर तलाश करने की चिन्ता करने लगीं। दो-एक दिन इसी बहाने आराम कर लो न?"

"आराम गरीबों के भाग्य में आराम कहाँ बेटी? फिर दूसरी नौकरी क्या यों ही मिल जायेगी कहीं?"

"न भी मिले, तो इतनी चिंता नहीं करनी चाहिये।"

"यह तू क्या कह रही है रूपा?" नीला ने आश्चर्य मुद्रा से उसकी आंखों में आँखें डालते हुये प्रश्न किया।

"ठीक कह रही हूं माँ!" रूपा ने कहा, "देश के कई भागों में अकाल पड़ चुका है और बिना अकाल के भी कई जगह बिना नौकरी के कितने ही लोग भूख से छटपटाकर दम तोड़ चुके हैं। यदि तुम्हें नौकरी न भी मिली और हमें भी इसी तरह दम तोड़ देना पड़ा, तो कौन सी बुराई हो जायेगी मां?"

बेटी की ये बातें सुनकर नीला अवाक् रह गई। दो एक क्षण तो उसकी समझ में ही न आया कि वह क्या कहे। फिर उसने कुछ सोच समझकर कहा, "कहना और सुनना सरल है बेटी! भगवान् न करे हमें भी वैसे ही दिन देखने पड़ें। लेकिन यदि ऐसे दुर्दिन की छाया कभी हम पर आ गई तो समझ लो, अकाल मौत ही हमें मरना होगा।"

"यह अच्छा ही होगा मां!" रूपा ने कहा, "रात दिन की झंझटों से छुट्टी मिल जायेगी। किसी की खरी खोटी सुनने की तो नौबत तो न आयेगी। आंख फूटी पीर बुझानी"

"चल-चल रहने दे ये ज्ञान-ध्यान की बातें। मैं नौकरी की तलाश करके दोपहर तक लौट आऊंगी! और नीला अपनी कोठरी के बाहर चली गई।

उत्सव

—आर्य समाज कन्नौली का वार्षिकोत्सव १६ से १८ नवम्बर तक बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। आर्य जगत् के प्रमुख विद्वान् पधार रहे हैं।

श्री पूज्य स्वामी आनन्दगिरी जी महाराज जहाँ भी हों उक्त तिथियों में कन्नौली दर्शन देने की आवश्य ही कृपा करें, और अपनी स्वीकारी देकर कृतार्थ करें। —मन्त्री

—बलरामपुर आर्य समाज का वार्षिकोत्सव १६ नवम्बर से १९ नवम्बर १९६८ तक बड़ी धूमधाम के साथ मनाया जा रहा है। जिसमें आर्यजगत् के प्रसिद्ध संन्यासी सर्व श्री प्रणवानन्द जी सरस्वती, आचार्य रामानन्द जी शास्त्री, विश्ववर्धन जी वेदालंकार, कु० सुखलाल जी आर्य मुसाफिर, कु० महिपाल सिंह जी, नन्दलाल जी आर्य पधार रहे हैं।

—रमाकान्त मिश्र मन्त्री

(पृष्ठ ५ का शेष)

करने वालों का निम्न लिखित बातों को आत्मना ग्रहण करना चाहिए—

(१) सर्वज्ञ परमेश्वर पर पूर्ण आस्था।

(२) उसके मित्र स्वरूप की जानकारी।

(३) निष्पाप होकर सरल साधुता को ग्रहण कर आत्मना समर्पण।

यदि हम आध्यात्म सोपान चाहते हैं, तो हमें आनन्द सुधा के स्रोत परमानन्द परमात्मा की सख्यता में निहित होना पड़ेगा। आनन्द पान का यही एकमेव उपाय है।

वर चाहिए

कुमारी रेवती उम्र २० वर्ष मैट्रिक तक की योग्यता गृहकार्य में दक्ष और अत्यन्त सुशीला को योग्य आर्य वर चाहिए।

पत्र-व्यवहार का पता—
कविराज नरेन्द्रनाथ वैद्य
प्रधान मन्त्री
आर्य समाज मन्दिर, दीपनगर,
[भागलपुर १]

लखनऊ नगर की आर्यसमाजों का सम्मिलित ६६ वाँ मासिक अधिवेशन

रविवार दि० २४ नवम्बर १९६८ सायकाल ५ से ८ बजे तक आर्यसमाज ऐशबाग, लखनऊ के प्रबन्ध में होगा।

स्थान—बाल क्रीड़ उद्यान (लाल निवास के सम्मुख) रामनगर, ऐशबाग (वाटर वर्क्स रोड)

आर्यसमाज के समस्त सदस्यों से अनुरोध है कि वे सपरिवार तथा इष्ट मित्रों सहित ठीक समय पर पधारने की कृपा करें।

कार्य क्रम—यज्ञ, सन्ध्या, प्रार्थना, भजन, कविताएँ, बाल कार्यक्रम, वेदोपदेश।

—कृष्ण बलदेव —विक्रमादित्य 'वसन्त'
प्रधान मन्त्री
जिला आर्य उप-प्रतिनिधि सभा लखनऊ
आर्यसमाज ऐशबाग लखनऊ

आर्यसमाज मैनपुरी का उत्सव स्थगित

आर्यसमाज मैनपुरी का प्रस्तावित वार्षिक उत्सव स्थगित कर दिया गया है। आगामी तिथि निश्चित हो जाने पर सूचित करूँगा। —रमेशचन्द्र मिश्र मन्त्री

आवश्यकता

३० वर्षीया एक कायस्थ सक्सेना ग्रेजुएट आर्य परिवार की सुशीला कन्या को ३५ से ३७ वर्षीय वर की आवश्यकता है, जो कुलीन परिवार का और नौकर हो। दहेज के इच्छुक बात-चीत न करें।

२—एक ग्रेजुएट कायस्थ, सरकारी नौकरी में उच्च पद पर कार्य करने वाले २७ वर्षीय युवा को शिक्षक, योग्य सुन्दरी कन्या की आवश्यकता है— सम्बन्ध कायस्थ मात्र में हो सकेगा।

—ओमप्रकाश
कटियार, मकान २४
पूरनमल, पुराना गंज पीलीभीत

—आर्यसमाज पांडेपुर (जौनपुर) का प्रथम वार्षिकोत्सव १३-१४ अक्तूबर को सम्पन्न हुआ। —मन्त्री

आवश्यकता

श्री श्रद्धानन्द बाल वनिता आश्रम, देहरादून को निम्नांकित पदों के लिये योग्य व्यक्तियों की आवश्यकता है—

१—पुरुष संरक्षक

योग्यता—हाई स्कूल अथवा समकक्ष हिन्दी परीक्षाओं का प्रमाण-पत्र आयु ४५ वर्ष अथवा अधिक।

२—महिला संरक्षक

योग्यता—हिन्दी का ज्ञान अनिवार्य आयु—३० से ६५ वर्ष।

वृद्ध आर्य समाजी तथा अनुभवी प्रार्थियों को प्राथमिकता दी जायेगी।

प्रार्थना पत्र ३०-११ १९६८ तक श्री कृष्णलाल जी, अधिष्ठाता आश्रम १६ डी, इ० सी० रोड देहरादून के पास पहुंच जाने चाहिए।

आवश्यकता

आर्य कन्या पाठशाला हा० स्कूल बिल्सी बदायूँ में निम्न लि० स्थानों के लिए योग्य एवं अनुभवी प्रशिक्षत अध्यापिकाओं की आवश्यकता है।

१—योग्य प्रशिक्षित महिला स्नातिका संस्कृत साहित्य सहित।

१ योग्य प्रशिक्षित महिला स्नातिका अंग्रेजी साहित्य सहित।

प्रार्थना-पत्र ३० नवम्बर तक श्री प्रशासक आर्य कन्या हा० से० स्कूल बिल्सी जि० बदायूँ के पास भेजें।

श्री भवानीलाल गज्जूलाल जी

विश्वकर्मा वंशज बालकों को ७०००) का दान

श्री भवानीलाल गज्जूलाल जी शर्मा स्थिर निधि

१—विश्वकर्मा कुलोत्पन्न श्रीमती तिज्जोदेवी-भवानीलाल शर्मा कुकहास की पुण्य स्मृति में श्री भवानीलाल जी शर्मा अमरावती विदर्भ) निवासी ने श्री विश्वकर्मा वंशीय बालकों के हितार्थ ७०००) की धन राशि सम [illegible] बी० जी० शर्मा स्थिरनिधि की योजना निम्नलिखित नियमानुसार [illegible] संवत २०१४ वि० सितम्बर १९५७ ई० को स्थापित की।

२—इस मूलधन से वार्षिक ब्याज जो कुछ प्राप्त होगा, उसे उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा विश्वकर्मा वंशज गरीब, असहाय किन्तु होनहार बालक बालिकाओं के शिक्षण मद में व्यय करती रहेगी।

३—उक्त निधि से आर्थिक सहायता लेने वाले इच्छुकों को माह जुलाई में ।) के स्टाम्प भेजकर सभा से छपे फार्म मंगाकर भरकर भेजना आवश्यक है।

★मन्त्री आर्यप्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश लखनऊ

श्रीमती तिज्जो देवी

—आर्यसमाज लाजपत नगर का वार्षिक उत्सव दि० १६ नवम्बर से २२ नवम्बर ६८ तक बडे समारोह से मनाया जा रहा है, जिसमें आर्य जगत् के उच्च कोटि के विद्वान् व भजनोपदेशक पधार रहे हैं। —योगेन्द्र सरीन, मन्त्री

—२१ अक्तूबर को केसरी (मैन-पुरी के श्री कर्मवीर जी की पुत्री का चूडा संस्कार श्री स्वामी ओमानन्द जी ने वैदिक रीत्यनुसार कराया।

—फूलनसिंह आर्य

—आर्यसमाज लाजपत नगर की ओर से दिनांक १६ नवम्बर शनिवार से २२ नवम्बर ६८ शुक्रवार तक प्रति-दिन लाजपतनगर टंकी वाले पार्क मे आर्यजगत के प्रसिद्ध सन्यासी और महान् वक्ता श्री स्वामी समर्पणानन्द जी सर-स्वती द्वारा वेद कथा और श्री कुंवर मह्रपाल जी सगीत विशारद के मनोहर भजनोपदेश सायं ७ बजे से १० बजे तक प्रतिदिन होंगे।

—योगेन्द्र सरीन, मन्त्री

पंजाब केसरी-
लाला लाजपतराय

★श्री अनूपसिंह
दयानन्द भवन, मुजफ्फरनगर (उ. प्र)

लाला जी का जन्म २८ जनवरी सन् १८६५ को पंजाब के एक ढोंडी ग्राम में हुआ था। उनके पिता जी विद्यालय के निरीक्षक थे। लाला जी की शिक्षा का प्रबंध बहुत उत्तम ढग से हुआ था। वकालत पास करने के बाद वे लाहौर में प्रेक्टिस करने लगे। वहां पर उनका परिचय 'आर्यसमाज' से हुआ जिसका उनके ऊपर गहरा प्रभाव पड़ा। वे आगे चलकर आर्यसमाज के प्रभावशाली नेता बने। आर्यसमाज के विषय में वे कहा करते थे—"ऋषि दयानन्द" मेरे पिता हैं और आर्यसमाज मेरी माता है। मुझे उसकी गोद मे पलने का गौरव है।

२३ वर्ष की आयु में लालाजी कांग्रेस में सम्मिलित हुए। कांग्रेस मन्च से हिन्दी मे पहला प्रभावोत्पादक भाषण उन्हीं का हुआ था। लाला जी महान् वक्ता थे। श्री सी० वाई० चिन्तामणि के अनुसार सार्वजनिक भाषण करने में वे Loyd George से कम नहीं थे। लखनऊ में उनका इतना ओजस्वी भाषण था कि यदि दक्षिणी अफ्रीका का कोई गोरा वहां आस-पास पहुंच मे होता तो उसका जीवन सकट मे पड़ जाता। यह उस समय की बात है जब कि अनेक प्रमुख राष्ट्रिय नेता अंग्रेजी राज्य के न्याय का गुण गान करते नहीं थकते थे।

लालाजी को १९०५ मे कांग्रेस शिष्ट मण्डल का सदस्य बनाकर भारतियों के विचारों को इग्लेण्ड की जनता के समक्ष रखने लिये भेजा गया। वहां से लौटने पर उग्रराष्ट्रवादी नीति का प्रचार करने के कारण सरकार उनसे चिढ़ उठी। उधर बग भंग का सूत्रपात्र हुआ। इधर लाला जी ने 'पगड़ी संभाल ओ जट्टा" नामक किसान आन्दोलन आरम्भ कर दिया। लाला जी द्वारा सचालित राष्ट्रिय इतिहास में सबसे पहला किसान आन्दोलन यही था।

सन् १९०७ में लाला जी एव उनके देशभक्त साथी अजीतसिंह हुतात्मा भगतसिंह के चाचा) को राजद्रोह एव सशस्त्र क्रान्ति का षडयन्त्र रचने के आरोप मे देश से निर्वासित किया। देश से निकाले जाने वाले वह प्रथम देशभक्त थे।

१९१४ से १९१९ तक भारत से देश निकाले की स्थिति में वह संयुक्त राज्य अमेरिका में रहे। इस अवधि मे उन्होने "Young India" नामक प्रसिद्ध पुस्तक लिखी। सरकार ने इस पुस्तक को जब्त कर लिया था। उसका पढ़ना भी उस समय अपराध समझा जाता था।

लालाजी नरम दल की नीति को भिक्षावृत्ति की नीति समझते थे। वे इस नीति का प्रबल विरोध करते थे। उन्होंने कहा था--

"An English man hates or dislikes nothing like beggary, I think a beggar deserve to be hated Therefore it is our duty to show the English man that we are no longer beggars. Our motto is self reliancc and not mendicancy"

अर्थात "एक अंग्रेज सबसे अधिक घृणा एक भिखारी से करता है। मेरे विचार में भिखारी घृणा का पात्र भी है। अतः हमारा कर्त्तव्य है कि हम अंग्रेज को दिखायें कि हम भिखारी नहीं। हमारा उद्देश्य आत्म निर्भरता है भिक्षा मांगना नहीं।" लालाजी की वीरता और निडरता के कारण ही 'पंजाब केसरी' कहकर पुकारा जाता था।

सन् १९२१ में 'असहयोग आन्दोलन' में भाग लेने के कारण लाला जी को १॥ वर्ष की सजा हुई। १९२३ मे केन्द्रीय धारा सभा में उनका निर्वाचन हुआ तथा स्वराज्य पार्टी के उप-नेता बने।

१९२८ में जब 'साइमनकमीशन' के विरोध में वे एक जलूस निकाल रहे थे, तो उन पर पुलिस द्वारा लाठी प्रहार किया गया, जिसके परिणाम स्वरूप वह १५ दिन के बाद इस ससार से चल बसे। लाठी प्रहार की घातक चोट खाने के बाद लालाजी ने जलूस में भाग लेने वालों को सम्बोधित करते हुये कहा था -"मेरे शरीर पर पड़ने वाली लाठी का एक एक प्रहार भारत मे अंग्रेजी राज्य के कफन मे एक-एक कील का काम करेगा।" राष्ट्र पिता महात्मा गांधी जी ने उनको श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुये कहा था—"जब तक भारतीय आकाश में सूर्य चमकेगा तब तक लाला जी जैसे मनुष्य नहीं मर सकते। उनके (गांधी जी) के शब्द हैं—

'Men like the lala can not die so dong as the sun shimes in the indian sky"

अन्त मे Lonfellow के शब्दों में कहूंगा "Dead he is not. but departed"

महर्षि दयानन्द का व्यवहारसूत्र

★आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री

आर्यसमाज के प्रवर्त्तक भगवान् दयानन्द ही एक ऐसे दार्शनिक आचार्य है, जिन्होंने व्यवहार और परमार्थ का सतुलन स्थापित किया व्यक्ति और समाज मे समन्वय का मार्ग प्रशस्त किया तथा स्थापित किया। राष्ट्रियता और विश्वबन्धुत्व के सामंजस्य को। व्यक्तिवाद और समष्टिवाद दो भेदक एवं परस्पर विरोधी वादों के रूप मे खड़े थे। दोनों मे से किसी एक को लेकर चरम सीमा पर पहुचाया जा रहा था। समष्टि अन्तर्राष्ट्रियता को जन्म दिया, परन्तु व्यक्तित्व को समष्टि मे समाप्त कर दिया: व्यक्तिवाद को एकान्तिक रूप देने वालों ने समाज और जगत् को मिथ्या बताकर व्यक्ति को ब्रह्म मे रूपान्तरित कर एकांतवाद चलाया। परन्तु ये दोनों ही एक किनारे की नदी बनाना चाहते थे। ऋषि ने दोनों को समन्वित कर व्यक्ति और समाज ये सामन्जस्य स्थापित किया। आर्यसमाज के नियम इसके लिये उदाहरण हैं।

एक धारणा यह भी दृढ़ता पकड़ रही थी कि विश्व बन्धुत्व की भावना के साथ राष्ट्रियता का सामन्जस्य नहीं हो सकता है। परन्तु ऋषि के ग्रन्थों के पढने से यह धारणा सर्वथा निर्मूल हो जाती है। राष्ट्रियता और विश्वबन्धुत्व साथ साथ चलते हैं और इसी से मानव का कल्याण है।

परमार्थ और व्यवहार की भेदक भित्ति को भी महर्षि ने उखाड़ा। यह विश्वास जाता रहा कि परमार्थ में व्यवहार को स्थान नहीं और यदि व्यवहार सिद्ध करना है तो परमार्थ को छोड़ देना चाहिये। यह ससार भोग और मोक्ष दोनो के लिये है। भगवान् पतञ्जलि का कथन सर्वथा सत्य है। "भोगापवर्गार्थमिदम् दृश्यम्–यह दृश्य जगत् भोग और अपवर्ग की सिद्धि के लिए है। जब जगत् दोनो उद्देश्यों का पूरक है तो फिर यह कथन किसी प्रकार भी ठहरने वाला नहीं कि परामार्थ और व्यवहार का परस्पर विरोध है। ऋषि के दर्शन में 'हा' और 'नही' स्पष्ट हैं जब कि मध्य कालीन दर्शनकार 'हां' और 'नहीं' को स्पष्ट नहीं कर सकते थे। उनकी विचार धारा में 'हा' और 'नहीं' दोनों ही विशेषणों और अपवादों से रिक्त नहीं। जहां 'हा' में भी नहीं और 'नहीं' मे भी हां प्रविष्ट हो वहां विचार का स्पष्टीकरण सम्भव नहीं है। इसलिये कुछ दार्शनिक सम्प्रदायो को कहना पड़ा कि यथार्थता का विवेचन करते हुये अन्त यथार्थता ही पल्ले पड़ती है। एक ने यह कहकर अपने वाद की इति श्री की कि जो भी वस्तु दिखाई पड़ रही है उसकी वास्तविक कोई सत्ता नहीं है। वादों की दुनिया आदर्श वाद और न्यूनीकरण दोनों ही यथार्थ नहीं है। वस्तुतः यथार्थ जैसा है वही यथार्थ है। वस्तु को सैगनी फाइंग शीशे के देखने से रूप आया है वह उसका रूप नहीं। बड़ी वस्तु को छोटी [illegible] से रूप आया है वह भी वास्तविक नहीं। वास्तविक तो वही होगा जो [illegible] गया है।

महर्षि ने आर्यसमाज के नियमों मे मानवव्यवहार का एक बड़ा अच्छा सूत्र बताया है, वह है 'सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, और यथायोग्य वर्तना

(शेष पुष्ठ १६ कालम ४ के नीचे)

आर्य्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल.-६०
कार्तिक २९ शक १८९० मार्गशीर्ष कृष्ण१२
(दिनांक १७ नवम्बर सन् १९६८)

आर्य्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

Registered No.L. 60
पता—'आर्य्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष्य : २५९९१ तार : "आर्यमित्र

आर्यसमाज में स्त्रियों को तो इस बला से बचाओ

आर्य समाज के प्रारम्भ में सब आर्यसमाजी अपने नाम के साथ जाति या उप जाति लगाना उचित नहीं समझते थे। महात्मा हंसराज जी, महात्मा मुन्शीराम जी (स्वामी श्रद्धानन्द जी), भाई परमानन्द जी तथा अन्य महानुभावों ने अपने नाम के साथ जाति या उप जाति लगाने की भरसक विरुद्धता की है, परन्तु बाद में आर्य समाजियों में अपने नाम के साथ जाति या उपजाति लगाने का एक रिवाज सा चल पड़ा। अब तक स्त्रियां इस बुराई से पृथक थीं, परन्तु दुर्भाग्यवश वे भी अब इस भयानक रोग का शिकार बन गई है।

आर्य जगत् दिनांक १५-९-६८ के पृष्ठ ८ तथा कालम ४ पर एक स्त्री आर्यसमाज का चुनाव पढ़ने को मिला है। यह चुनाव आर्य प्रादेसिक प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक श्री पं० चन्द्रसेन जी आर्य हितैषी के नेतृत्व में हुआ है। उक्त आर्य समाज के नौ पदाधिकारियों के नाम दिये गये हैं और हर एक नाम के साथ उनकी उपजाति दी गई हैं।

महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज जातपात के अत्यधिक विरोधी थे। जातपात के प्रति उनकी भावना उनके इन शब्दो से स्पष्ट हो जाती है, कि यह डायन कभी हिन्दुओं का पीछा छोड़ेगी कि नहीं, या हिन्दू समाज को समाप्त ही कर देगी? यदि मातायें अपनी लोरी में बच्चों को इस तरह का जातपात का भाव प्रदान करती रहेंगी तो फिर आर्य समाज का कोई भी प्रयत्न हिन्दुओं की इस डायन (जातपात) से मुक्ति नहीं कर सकेगा।

मुझे आशा है कि सब आर्य समाजी बन्धु इस बात पर पूर्ण संजीदगी एवं गम्भीरतापूर्वक विचार करेंगे।

—रामदास, होश्यारपुर

प्रिय महोदय,

सप्रेम हरिस्मरण। दीपावली पर्व पर 'आर्यमित्र' साप्ताहिक का 'ऋषि निर्वाणाङ्क' प्रकाशित कर आपने पाठकों का बड़ा उपकार किया है। अङ्क प्राप्त हुआ। धन्यवाद! हम लोग इस अङ्क से लाभ उठायेंगे। शेष भगवत्कृपा।

भवदीय

—शिवनाथ दुबे

कृते, सम्पादक 'कल्याण'
गीताप्रेस गोरखपुर

मान्यवर सम्पादक जी,

नमस्ते!

निवेदन है कि आपका विशेषांक बहुत प्रिय लगा। आपका शुरू में ही जो लेख है वास्तविक मर्म से भरा हुआ है। मैं 'आर्यमित्र' की उन्नति के लिये २१) सहायतार्थ भेज रहा हू। इस बार कागज भी आपने अच्छा लगवाया है। समाज बाहर की सुन्दरता पर लगा हुआ है भीतर की सफाई की कोई चिन्ता नहीं। वास्तव में आर्यसमाज ही अन्धकार में अभी टिमटिमा रहा है। जिसका प्रकाश वास्तव में मन्द होता जा रहा है। जिन साधनों में सुख नहीं हम उनको तरफ दौड़ लगा रहे हैं। निवेदन है कि आप राजनीति से अलग रहकर हमे जीवन से संघर्ष करने का साहस देते रहे जिससे हम सत्य का अनुशरण करें और सुखी रहें।

भवदीय

नरेन्द्रकुमार
गुलावठी (बुलन्दशहर)

(पृष्ठ २ का शेष)

रास्ता है कि मानव वेदों की आज्ञा को माने, अपनी आत्मा की पुकार को सुने पवित्र काम के लिये पवित्र साधन जुटायें, मन, वचन, और कर्म को एक ही अक्ष में रखें, अन्याय का बड़ी मजबूती से मुकाबिला करें। प्रभु परमात्मा सदा सत धर्म और न्याय पर चलने वाले का साथ देते हैं और मानव को तभी सुख शान्ति प्राप्त होती है।

हमारे नवयुवक सम्पादक श्री विक्रमादित्य बसन्त ने पाप विमोचन अंक निकाल कर आर्यमित्र के अंक मे एक नया पन्ना जोड़ा है। यह श्री बसन्त जी का विचार सराहनीय है।

मानव के जीवन मे अच्छाई और बुराई दोनो का समावेश है। अच्छा मानव देवताओं की श्रेणी मे बैठता है बुरा मानव असुरों की।

अच्छाई और बुराई, देव और असुर सदा रहे हैं, और सदा रहेंगे। पापी को अच्छाई से लगाव नहीं और अच्छे लोगों की बुराई से लगाव नहीं और अच्छे लोगो को बुराई से लगाव नहीं। यह दोनों परस्पर विरोधात्मक हैं। फिर भी अच्छे और बुरे मानव आपस मे मिलते हैं और यह मिलना जुलना स्वाभाविक है।

आज मेरे देश मे विज्ञान और भौतिकवाद चरमसीमा पर है। नव जवान बड़े वेग से इस ओर दौड़ा चला जा रहा है, अध्यात्म क्या है, ईश्वर क्या है, ईश्वरीय ज्ञान क्या है इसके बारे में नवजवान कुछ नहीं सोचते हैं। उसको तो अच्छे मकान, अच्छे कपड़े की चिन्ता है, देश में स्वार्थपरता और कृतघ्नता की मात्रा बढ़ गयी है। प्रभु अब हमारे देश वासियों को ईश्वर में वेद में श्रद्धा उत्पन्न करे तभी कुछ काम हो सकता है और मानव पाप से बच सकता है।

साहित्य-समीक्षण

न्याय-दर्शन

अनुवादक और प्रकाशक श्री स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक विद्यामार्तण्ड गुरुकुल कांगड़ी, साइज २०×३०=१६ पृष्ठ सं० १३८ मू० १.७५।

पुस्तक मिलने का पता—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन (रामलीला मैदान) नई दिल्ली १

इससे प्रथम वेदान्त और सांख्य पर श्री स्वामी जी अपने भाष्य प्रस्तुत कर चुके हैं, परन्तु यह भाष्य उन्होंने श्री वात्स्यायन मुनि का अनुवाद प्रस्तुत किया है। कई सूत्र पढ़कर देखे अनुवाद बहुत उत्तम और सही हुआ है। कई जगह श्री मुनि जी ने अपनी उपयोगी टिप्पणियां भी दी हैं। और 'प्राक्कथन' भी जो लिखा है वह विशेष ज्ञातव्य है। उससे पता चला है कि न्याय दर्शन पर वात्स्यायन भाष्य से पहले भी कोई भाष्य था। सत्यार्थप्रकाश में श्री स्वामी जी ने न्याय पर वात्स्यायन भाष्य पढ़ने की प्रेरणा की है। अतः इस भाष्य के अनुवाद से संस्कृत न जानने वाले शास्त्र जिज्ञासुओं का बड़ा लाभ हुआ है। यह वात्स्यायन कौन से वात्स्यायन थे, इसका भी यदि विशेष विवेचन होता तो बहुत बढ़िया बात रहती।

—बिहारीलाल शास्त्री

(पृष्ठ १५ का शेष)

चाहिये। मानव का यह स्वभाव है कि प्रत्येक के साथ प्रीतिपूर्वक वर्त्ते। हृदय उसको सदा सदृश्यता का पाठ सिखाता है। वह मानव-मानव नहीं जिसमें सदृश्यता नहीं। परन्तु इस व्यवहार में भी सर्वाधिक पूर्णता नहीं। ऐसे भी अवसर आते हैं, जहां यह प्रीतिपूर्वक व्यवहार कुण्ठ हो जाता है। ऐसी अवस्था मे इसके साथ 'धर्मानुसार' जोड़ देना चाहिए। अर्थात् धर्म के निर्देश और आदेश को देखकर प्रीतिपूर्वक व्यवहार किया जावे। परन्तु कभी-कभी इतने से भी कार्य पूरा नहीं होता है। ऐसी विचित्र परिस्थितियां आ जाती हैं कि प्रीति और धर्म दोनों की कर्त्तव्य विमूढ़ता मे मनुष्य को लाकर खड़ा कर देते हैं। आजकल की समाजों की मीटिंगे और चुनाव सभायें आदि बहुधा ऐसी ही परिस्थितियों के उदाहरण हैं। जिन्हे ऐसे अवसरों को देखने का मौका मिला है, वे इसे भली प्रकार समझ सकते हैं। ऐसी अवस्था में पूर्व के प्रीतिपूर्वक और धर्मानुसार के साथ 'यथायोग्य' का समावेश करना चाहिए। यह समस्या 'यथायोग्य' से सुलझ सकती है। परन्तु इस यथायोग्य में प्रीति और धर्म का लोप नहीं होना चाहिए। व्यवहार का यह एक अनुपम सूत्र है।

●

आत्म-शुद्धि

★स्नातक देवव्रत (अमरावती निवासी) लखनऊ

जीवन में प्रतिदिन ऐसे प्रसंग एवं अवसर आते ही हैं, जिनमें प्रत्येक जीव अपनी व्यवहार कुशलता का प्रयोग कर सफलता तथा सुख समृद्धि की इच्छा रखते हुए व्यवहार करता है। इसमें अवसरवादितापूर्ण कठोर यथार्थ वादी जिसे कि यथार्थवादिता आर्थिक विषमता का काल कहना अधिक उपयुक्त होगा, प्रत्येक पग-पग पर माया युक्ति कौशल का आश्रय लिया जाना उचित एवं आवश्यक माना जाने लगा है। इसी को आज का मानव 'व्यवहार-चरित्र' कहता है। इसका नैपुण्य मनुष्य को कहाँ से कहाँ ले जा सकता है, इसका कोई अन्त नहीं है। इसके चक्र में मनुष्य यदि पाश्चात्य युग की देन भौतिक लिप्सा वासिता की झंझा में फंस गया तो उसके जीवन की धारा उसे बहाकर ऐसी संकटमय भंवर के बीच से लाकर फंसा देती है कि उसके जीवन संकट के समुपस्थित होने की घड़ियां आँखों के सामने नाचती दिखाई देती हैं। वह प्राणी, जिसे उस क्षण अथवा सारा 'नैपुण्य' चल चित्र की तरह क्षणमात्र में स्मृति पटल पर दीखने लगता है। सारे जीवन के किये गये पाप-पुण्य मय व्यवहार हाथ में रखे आँवले के समान प्रत्यक्ष हो उठते हैं। यथार्थ में यह क्षण कौतुक उसे उबार भी सकता है। यदि वह सच्चे हृदय से अपने आप को प्रभु की शरण में पूर्ण रूपेण समर्पित कर देता है। अन्यथा अहंकार का ज्वार उसे डुबाकर ही दम लेता है। लोक के सम्मुख अनेक उदाहरण परम्पराओं में एक कड़ी और जुड़ जाती है। निःसन्देह यदि मानव व्यवहार कौशल में प्रभु आज्ञा का सदा ध्यान रखता रहे कोई ऐसी दुरशक्ति नहीं है जो उसकी जीवन नौका को संकटावस्था के चक्रजाल में खींच ले जा सके। शिक्षा प्राप्ति की उस स्वर्णिम बेला से ही एक दो मन्त्र मेरे जब मस्तिष्क में घर बनाये हैं—

> 'ईशा वास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्
> तेनत्यक्तेन भुंजीथाः मागृधः कस्यस्विद्धनम्'
>
> [यजुः ४०/१]

इस चराचर मय सम्पूर्ण विश्व को प्रभु की साक्षिता से भरा जानते हुये एवं परमात्मा की ही सम्पत्ति मानते हुये उसके द्वारा दिये हुये ही उपभोग करें। किसी अन्य के भाग का ग्रहण करने का—छीनने का विचार मात्र भी मन में न लावें।

यह तो परिणाम भोग की व्यवस्था है। कार्यबाधिता के लिये बताया है—

> 'हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्,
> तत्त्वं पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये।'
>
> [यजुः ४०/३

हे पूषन्—संसार में सुख ऐश्वर्य की इच्छा वाले मानव, जीवन का व्यवहार चरित्र—सत्य का मुख सोने के पात्र से अर्थात् भोग वाद की विविध लोलुपताओं से आवृत है ढंका हुआ है। उसे जानकर सत्य-जीवन को अपने व्यवहार का आदर्श मानकर सच्चाई के मार्ग पर चल। इस प्रकार से सच्चाई का मुखावरण खोल दें। जीवन सत्य चमकता रहे। व्यवहार में सच्चाई का गला न घोंट दें। क्योंकि यदि सच्चाई का गला घोंटोगे तो तुम्हारा जीवन डूब जायगा। इसे पूर्ण सिद्ध सत्य समझो। इससे बचो।

कितना सत्य-भाव चित्र प्रभु ने स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया है। हमारे दैनिक जीवन के व्यवहार आचरण में चरित्र में यदि यह बात नहीं पैदा हो सकी तो हमारा जीवन उस सड़े जल की तरह दुर्गन्धित हो उठेगा कि हमारे लेशमात्र भी सम्पर्क में आने वाला नाक बन्द कर मुंह घुमाकर थूकता हुआ बचकर निकल भागना चाहेगा।

हमारे इस जीवन की परिणति क्या होगी इसे अगले मन्त्र में स्पष्ट दर्शाया है—

> 'असूर्य्यानाम ते लोका अन्धेन तमसावृताः,
> तांस्ते प्रेत्याभिगच्छन्ति ये के चात्म हनो जनाः।
>
> यजुः ४०।३

जीवन में क्षण मात्र भी सत्य का गला घोंटने वाला 'आत्महत्या' कर देता है। वह आत्मा की सत्य, न्यायपूर्ण वाणी, सत्प्रेरणा की उपेक्षा कर देता है। ऐसे आत्म-हत्यारे ऐसे जीवन को प्राप्त होते हैं जहाँ सूर्य—अर्थात् ज्ञान व जीवन जागृति का प्रकाश मात्र भी उपलब्ध नहीं होता है।

आह ! तुमने आज में रोम कम्पायमान हो उठते हैं। जब दुर्गति होती है, तो कैसी बीतती होगी। यह मजाक नहीं नग्न सत्य है। प्रतिदिन ऐसे बावन दुःखी हमारी आपकी दृष्टि के सामने भिक्षुक, अपाहिज, मूक, बधिर, कुष्ठ रोगी, पशु योनिज दिख पड़ते ही हैं, जिनको कर्म चक्र उस परिणाम पर खींच लाया है। वे 'त्राहिमाम्'-'त्राहिमाम्' आर्त भाव से रात दिन प्रभु से पश्चात्ताप की भावना से प्रार्थना करते हैं। परन्तु पाप परिणाम की पूर्ण भोग रम्यता के पश्चात् ही छुटकारा सम्भावित है।

कई बार मुझसे मिलने वाले सज्जन, जो मुझसे परिचित हैं, अर्थात् मेरे गत जीवन से परिचित हैं कह बैठते हैं, भाई, तुम भावुक अधिक हो जाते हो, इस सांसारिक व्यवहार क्रूरता को नहीं अपनाते हो। देहावसान से कुछ

मास पूर्व स्वामी, प्रभुआनन्द जी महाराज से जब मैंने चर्चा की तो उन्होंने भी इसी लहजे में कहा—बेटे—

> व्रजन्तिते मूढधियः पराभवं,
> भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः।
>
> किरातार्जुनीयम्।

अर्थात् तुमने उसका-सा आचरण किया है जो बुद्धि शून्य दुःखी होता है, क्यों—क्योंकि वह छल कपट वालों के साथ वैसा ही व्यवहार नहीं करता। स्वामी जी की धारणा और वैसा ही जीवन-व्यवहार, सत्यता, दोनों का निर्वाह किस तरह एक साथ हो सके। यहीं पर मैं सोचता हूं कि कमाई किया हुआ चरित्र एक पूँजी है, उसमें यदि दाग आ गया तो उस 'दाग' आए दर्पण की तरह उपेक्षनीय हो जाऊँगा, जिसे मुँह देखने के लिये भी योग्य नहीं समझा जाता है।

प्रभु से यही प्रार्थना करता हू कि प्रभो ! मुझे 'अग्नेनय सुपथा रायेऽस्मान्' सन्मार्ग पर चलाओ।

'देवस्य धियो यो नः प्रचोदयात्'। देवत्व प्राप्त कराने वाली सद्बुद्धि हमें प्राप्त हो हमारे जीवन में सत्य की धारा हमें शुद्ध करती रहे।

सभी तो हमारे सम्पर्क में आने वाले दूसरे शुद्ध होने की सत्प्रेरणा पा सकेंगे। सच्चरित्र की शक्ति से हमारे जीवन को प्रभु भरदें। यही प्रार्थना है।

'जैसे हैं ठाकर वैसे हैं चाकर'

स्वर्ण की मूरत गौरी गणेश की,
ले गये लम्पट चोर चुराकर।
पत्थर के शिव मौन खड़े रहे,
पुत्र, त्रिया को न लाये छुड़ा कर॥
भक्त, पुजारी भी बैठे रहे, धुन,
के सिर, नैन से नीर बहाकर।
है गति एक-सी दोनों की देखिये,
जैसे हैं ठाकुर, वैसे हैं चाकर॥

—प्रकाशचन्द्र कविरत्न
पहाड़गंज, अजमेर [राजस्थान]

[illegible] प्राप्त [illegible] हुई है [illegible]।

व्याख्या है सुख और मोक्ष की इच्छा करने वाले मनो ! सब पदार्थों को ही 'इन्द्र' इस नाम प्राप्त होने के लिये [illegible] कि उसको हम कब [illegible] । क्योंकि वह [illegible] जगत् का स्वामी [illegible] और ईशन (उत्पादन) करने की इच्छा वाला है । दो प्रकार का जगत् है अर्थात चर और अचर । इन [illegible] का [illegible] विज्ञानमय विज्ञानप्रद और तृप्तिकारक ईश्वर से अन्य कोई नहीं है । उसको 'अवसे' अपनी रक्षा के लिये हम [illegible] (इन्द्रियों) से आह्वान करते हैं । जैसे [illegible] 'ईश्वर पूषा' हमारे लिये पोषणप्रद है, वैसे ही 'वेद साम्' धन और विज्ञानों की वृद्धि का इच्छिता रक्षक है । तथा 'स्वस्तये' निरुपद्रवता के लिये हमारा "पायु" पालक वही है और "अदब्ध" हिंसारहित है । इसलिये ईश्वर जी निराकार सर्वदानन्दप्रद है, हे मनुष्यो उसको मत भूलो । बिना उसके कोई सुख का ठिकाना नहीं है ।

आर्याभिविनय

लखनऊ—रविवार मार्गशीर्ष ३ शक १८९०, मार्गशीर्ष शु० ५ वि० २०२५
२४ नवम्बर सन १९६८ ई०, दयानन्दाब्द १४४, सृष्टि संवत १,९७,२९,४९,०६९

ब्रह्मन त्वं बहु मा वदः

★

परमपिता परमेश्वर का यह संसार वेदानुसार एक आनन्दमय क्रीडा है । पशु पक्षी जगत तो भयमय है, केवल सर्वोत्तम प्राणी मानव ही भोग से योग की ओर जाने में समर्थ है । विवेकशील मानव ही योग के पथ को अपनाता है । विवेकहीन तो पशुओं के स्तर से भी गिर कर भोग का कीडा बना रहता है । मानव जीवन अपने मे एक विचित्र क्रीडा को लिए हुए है । यह एक वृक्ष है जिस पर नाना प्रकार की क्रीडायें नित्य होती रहती है । ऋग्वेद के इन्द्र सूक्त मे कहा गया है—

वृक्षे वृक्षे नियता मीमयत् गौस्ततो वयः प्रपतान् पूरुषादः । अथेदं विश्वं भुवनं भयात इन्द्राय सुन्वदृषये च शिक्षत ।'

अर्थात जीवन जीवन मे जो चेतना निहित है वह यदि गतिवान हो जाये तो पुरुष को खाने वाले झपट्टामार पक्षी मनुष्य के जीवन रूपी वृक्ष से उड जायें, और ऐसे ही निर्मल आत्माओं से योग कर्म जगत भयभीत होता हैं । ऐसे ही ऋषि गण मानवीय आत्माओं को सन्मार्ग पर शिक्षित कर चलाते हैं ।

आर्य जन सन्ध्या में पाठ करते हैं । 'हे ईश्वर दयानिधे ! भवत्कृपयाऽनेन जपोपासनादि कर्मणा धर्मार्थ काम मोक्षाणां सद्यः सिद्धिर्भवेत् नः ।'

अर्थात् हे परमेश्वर दयानिधे ! आपकी कृपा से जपोपासनादि कर्मों को करके हम धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि को शीघ्र प्राप्त होवें ।

मानव रूपी जीवन वृक्ष का मूल धर्म है । अर्थ इस वृक्ष के पत्ते है काम नायें इसके तने व टहनियां हैं और मोक्ष इसके फल फूल है ।

मानव के जीवन का लक्ष्य मोक्ष अथवा मुक्ति है धर्म से अर्थ का उपार्जन करें । अर्थ से सदकामनाओं की पूर्ति करें जो हमें बन्धनों से छुडाकर मोक्षानन्द प्राप्त करें ।

मानवी जीवन रूपी वृक्ष पर यों तो अनेक खेल होते हैं परन्तु वृक्ष के अग्र भाग पर जहाँ पुष्प और फल लगते हैं वहाँ प्रमुख रूप से बुद्धि और मन की क्रीडायें होती हैं । यजुर्वेद मे स्पष्ट रूप से कहा है—

'माता च ते पिता च तेऽग्रे वृक्षस्य क्रीडतः । विवक्षत इव ते मुखम् ब्रह्मन मा त्वम् वदो बहु ।'

(य० २३/२५)

अर्थात मानव रूपी जीवन वृक्ष पर माता रूपी बुद्धि और पिता रूपी मन के खेल होते हैं । इन खेलों की अभिव्यक्ति के लिये परमेश्वर ने मानवों को वाणी दी है । ज्ञानी को मन्त्र मे कहा गया है कि तू अधिक मत बोल अर्थात वाणी पर संयम रख ।

संसार में सफलता का रहस्य ही वाणी पर संयम है । भद्र पुरुष सत्य वचन प्रसारित करता है । 'जिह्वा मे मधु' के अनुसार उसकी जिह्वा मधु [illegible] होती है । [illegible] की वाणी [illegible] होती है और [illegible] जिह्वा [illegible] इन्द्रियों का [illegible] करती है । [illegible] दोनों प्रकार के [illegible] है, और यह [illegible] होता है [illegible] मन 'मे मनः शिव संकल्पमस्तु' के अनुसार शिव संकल्पी होता है और बुद्धि [illegible] नहीं होती । वह वेद [illegible] वरण कर 'प्रचोदयात्' होती [illegible] आनन्दमय [illegible] जीवन [illegible] है ।

इतना वेदोपदेश देने की आवश्यकता हमे इसलिये प्रतीत हुई है कि मेरठ निवासियों की ओर से एक [illegible] विज्ञप्ति श्री अटल बिहारी वाजपेई अध्यक्ष अखिल भारतीय जनसंघ की सेवा में प्रकाशित की गई है। इस विज्ञप्ति में एक बात कही गई है, कि श्री वाजपेई ने जनसंघ के कालीकट अधिवेशन में प्रकाशित पत्रिका मे हिन्दुओं को यह उपदेश दिया है कि उन्हें अब मुसलमानों के साथ खानपान प्रारम्भ कर देना चाहिए। उनके साथ रोटी बेटी का सम्बन्ध करने से ही हम उन्हें राष्ट्रीय जीवन मे आत्म सात कर सकेंगे ।'

हम [illegible] है कि कुछ मास पूर्व पंजाब मे [illegible]काशित होने वाले आर्य जगत तथा अन्य पत्रो मे इस वक्तव्य की प्रतिक्रिया हुई थी, और आर्यों मे इस बात पर रोष था कि श्री अटल जी ने इस बात को भी स्वीकार किया है कि वे स्वयम सब कुछ खाते पीते हैं । मेरठ की प्रकाशित विज्ञप्ति मे यह मांग की गयी है कि वे सार्वजनिक सभा मे अपने विचार पूर्ण रूप से स्पष्ट करें । यह मांग सर्वथा उचित है क्योंकि एक राजनैतिक दल के अध्यक्ष होने के नाते उन्हे अपने विचार पूर्ण रूप से स्पष्ट करने चाहिये ताकि भ्रान्ति दूर हो सके ।

यह निर्विवाद हैं कि भले ही भारतीय जनसंघ को उसके कर्णधार एक राष्ट्रीय संस्था का रूप देना चाहते हों और इसके निमित्त हिन्दुओं के अतिरिक्त अन्य मत मतान्तरों के लोगों को भी अपने दल मे सम्मिलित करना चाहते हों तथापि साधारण जन इसे एक हिन्दू संस्था ही मानते हैं क्योंकि प्रत्यक्ष देखने में तो यही आता है कि हिन्दू राष्ट्रवाद की पोषक राष्ट्रीय स्वयम सेवक संघ का पूर्ण समर्थन एवं सहयोग जनसंघ को प्राप्त है, कल तक जिन कार्य्य कर्त्ताओं को हम राष्ट्रिय स्वयम् सेवक संघ मे सक्रिय पाते थे और काली टोपी मे देखते थे, उनमें से कितनों को अब केसरिया टोपी लगाये जनसंघ का प्रचार करते देखते हैं । स्वयम् श्री अटल जी भी राष्ट्रिय स्वयम् सेवक संघ के प्रमुख प्रचारक रह चुके हैं और अब भी हिन्दू राष्ट्रवाद का समर्थन करते हैं । वेदानुसार हम तो मनुष्य का [illegible] कर्मों से करते हैं, हिन्दू [illegible] भारत में विभिन्न सम्प्रदायों के अनेक नाम होने से, [illegible] हिन्दू [illegible] के आधार पर हिन्दू राष्ट्र के समर्थक जनसंघ के अध्यक्ष के लिये यह [illegible] उचित है कि वह अपनी नीति का स्पष्टीकरण, इन बातों के आधार पर करें—

(१) क्या जनसंघ मांस भक्षण खाने की नीति का समर्थन करता है ?

(२) क्या हिन्दुओं को मुसलमानों के साथ खान पान के व्यवहार में मांस भक्षण भी कर लेना चाहिये ? मदिरा पान के विषय में क्या करना चाहिये ?

(४) बेटी बेटे के सम्बन्ध में अपने मत या तथा कथित धर्म का परित्याग भी करना चाहिए । हिन्दुओं को मुसलमान हो जाना चाहिये या मुसलमानों को शुद्ध कर लेना चाहिए ?

श्री वाजपेई जी को स्वयम भी यह स्पष्ट कर देना चाहिये कि स्वयम शाकाहारी है या आमिष भोजन करते हैं और यदि मांसाहारी हैं तो जो मांस भक्षण के विषय मे उन्हें क्या कहना है ? मदिरा सेवन करते हैं या नहीं। मुसलमानो से रोटी बेटी के सम्बन्ध मे इच्छुक होते हुये क्या वे स्वयम ऐसा करने को प्रस्तुत हैं । शेख अब्दुल्ला जैसे राष्ट्र द्रोही के साथ फोटो खिचाने वाले यदि स्वयम अविवाहित हैं तो क्या मुसलमान परिवार में स्वयम विवाह करके आदर्श को उपस्थित कर सकते हैं ? यदि हाँ तो वे उसको हिन्दू धर्म में शुद्ध करेंगे या दो विभिन्न मतों के होकर चलेंगे व अपनी कथनी को करनी मे परिवर्तित करके व अथवा उनके अनुयायी जनता का ठीक प्रकार से मार्ग प्रदर्शन करें तो अत्युत्तम होगा ।

श्री वाजपेई जी की भारतीय जनता के लिए जो सुन्दर सेवायें हैं, उनका आदर करते हुये हम उन्हे वेदानुकूल प्रेरणा देते हैं । वे ज्ञानी हैं और वेद ने ज्ञानी के लिए कहा है कि तू अधिक मत बोल अर्थात वाणी पर संयम रख । वाजपेई जी को वाज का पान करना चाहिये 'वातरंहा भव वाजिन्' वाजिन वात वेगी हो वाणी मे ओज हो किन्तु वाजिन होने के लिये "उत नो वाज सातये पवस्व बृहती इषः । द्युमत् इन्दु सुवीर्यम ।। अर्थात वाज सत्यार्थ इषायें बृहत होनी चाहिये । आत्मा सुवीर्य और ज्योतित हो। उसके लिए "आहार शुद्धौ सत्व शुद्धि का श्री वाजपेई जी को स्वयम मन्त्र लेना और देना चाहिए । रोटी-बेटी के व्यवहार मे भी उन्हें आर्यत्व और अनार्यत्व की भावनाओं की ओर ध्यान देना चाहिये ।

वेद पठन से ही पाप-विमोचन सम्भव है

'पाप क्या है ?' वस्तुत. यह अत्यन्त गम्भीर तथा जटिल प्रश्न है, क्योंकि इसके ठीक-ठीक उत्तर पर 'बन्ध मोक्ष' जैसे प्रश्न भी आश्रित हैं। यह ऐसे प्रश्नों में से एक है, जो अनादि-काल से चले आ रहे हैं यथा ईश्वर क्या है, मैं क्या हूं, और शरीर नाश अर्थात् मृत्यु के पश्चात् मेरा क्या परिणाम होगा इत्यादि। जो उपनिषद् आदि अनेक 'तत्व विद्या विषयक' ग्रन्थों के विषय बन गये हैं। यह प्रश्न आज भी ज्यों के त्यों, प्रायः अधिकांश जन-समुदाय के लिये, पूर्ववत् बने हुए हैं, क्योंकि उन्होंने 'वेदों का रहस्य गम्भीर अध्ययन' नहीं किया। जिन विरल जनों ने आज के समय में भी इन वेदों का गम्भीर स्वाध्याय' किया है, उनके लिए ऐसे प्रश्न सरल हैं, और उनका समाधान वे कर चुके हैं, और उत्तर देने मे भी समर्थ हैं। ऐसे विरल-जन का वर्तमान युग मे उदाहरण महर्षि दयानन्द वेद धर्म प्रवर्तक का है, जो मृत्यु के समय 'निष्पाप हंसते हंसते 'मोक्ष' को प्राप्त हो गये।

ऐसे महर्षि दयानन्द का अनुकरण करना 'हम आर्य समाजियों के लिये 'कर्त्तव्य' है। यह हम भी लौकिक तथा वैदिक संस्कृत जानकर 'वेदों का सरहस्य अध्ययन' करलें, तो निश्चय ही हम भी मृत्युकाल में हंसते-हंसते 'बन्ध से मोक्ष' के अधिकारी हो सकते हैं। यही 'मानव अभिप्रेत उद्देश्य' है, जो वेदों मे स्थान-स्थान पर प्रतिपादित है।

हमारे धर्म में वेदों का स्थान

सर्वोच्च, अन्य शास्त्रों की तुलना में है, क्योंकि 'वेद ईश्वर-प्रदत्त-ज्ञान विश्व-मानव कल्याणार्थ है, और इसी कारण उसको अपौरुषेय कहा जाता है।' यह वेद-ज्ञान देवता-सकाशात् जब-जब सृष्टि होती है, दिया जाता है। अतः 'ईश्वर सर्वज्ञ सर्व व्यापक, सम्पूर्ण आदि है, अतः उसका ज्ञान होनिर्भ्रान्ति हो सकता है, और इसी कारण वेद को स्वतः प्रमाण माना जाता है।' मानव अल्पज्ञ है, अतः मानव निर्मित-शास्त्रों को 'परतः प्रमाण' कहा जाता है, क्यों कि कैसा भी विद्वान् कोई मानव क्यों न हो, 'अल्पज्ञ' होने से उसके शास्त्रों में भ्रान्ति की पूर्व-सम्भावना है, 'यदि वेद का आशय ठीक समझ कर नहीं लिया गया, वर्तमान-सृष्टि में वेद प्रायः दो अर्बुद (दो अरब गणना में) वर्ष प्राचीन हैं। यद्यपि विकासवादी, नास्तिक, तथा अन्य सम्प्रदायवादी इसके खंडन का

पाप क्या है?

["अधर्माचरण ही पाप है। जिन कर्मों से स्वास्थ्य विकृत होता हो मन विकृत होता हो जीवन का पतन होता हो तथा भविष्य अन्धकार मय बनता हो वह सब पाप कर्म हैं। इसके विपरीत स्वास्थ्य एवं मन को उत्तम एवं सबल करने वाले जीवन को विकसित करने वाले एवं भविष्य को उज्ज्वल बनाने वाले कर्म पुण्य हैं और धर्म हैं। —शिवदयालु]

दुस्साहस करते हैं, परन्तु वस्तुतः वे खंडन कर नहीं सकते। यथा 'इन अनन्त रचना अर्थात् निखिल ब्रह्माण्ड का रचयिता ईश्वर है, तथैव वह सर्वज्ञादि ईश्वर नित्य वेद-ज्ञान भी सर्ग-सर्ग में देता है,' अन्यथा कोई भी सत्य ज्ञान प्राप्त लोक में सम्भव नहीं है। इस अनन्त रचना मे 'अनेक सूर्य मण्डल हैं, और अनेक विशालकाय लोक-लोकान्तर हैं, जो हमारे पृथ्वी-लोक से लाखों गुना बड़े हैं, तथा करोड़ों तथा अरबों मील दूर हैं।' यह 'अनन्त-प्रयोजनपूर्ण रचना' मानव नहीं कर सकता, इसे 'नास्तिक-वैज्ञानिक' भी मानने लगे हैं, यदि ईश्वर द्वारा यह 'अनन्त रचना' न

नैतिक उत्थान आन्दोलन

की जाय, तो कदापि,

'अभ्युदय-निःश्रेयस'

अर्थात् मोक्ष प्राप्त नहीं हो सकती, जो वेद धर्म का प्रयोजन है। वेद-धर्म ही 'एकमात्र ईश्वर प्रदत्त-धर्म है,' अन्य सम्प्रदाय आचार्यों द्वारा स्थापित किये गये हैं, और केवल ३-४ सहस्र वर्ष प्राचीन हैं। इन मानव स्थापित सम्प्रदायों की तुलना 'ईश्वर-प्रदत्त-वेदधर्म' से नहीं हो सकती, यथा मानव की तुलना वेद-वर्णित-ईश्वर' से नहीं हो सकती। अतः हमें वेद से ही जानना चाहिए कि 'पाप क्या है ?'

पाप शब्द के अर्थ क्या हैं ?

पाप शब्द के अर्थ को ठीक-ठीक जानने से यह ज्ञान सरलता से हो सकता है, कि 'पाप क्या है ?' पाप शब्द का अर्थ है:—

'जिस कर्म के न करने से
आत्मा की रक्षा होती है'

वेदों में मुख्य कर दो प्रकार के मन्त्र मिलते हैं, अर्थात् (अ) विधि विषयक, जिन मन्त्रों में स्पष्ट ईश्वराज्ञा है, कि अमुक-अमुक कर्म किये जावें। इन कर्मों के करने से न केवल 'अभ्युदय' (लोक कल्याण या लोकोन्नति) अपितु अन्त में 'निःश्रेयस-सिद्धि अर्थात् मोक्ष प्राप्ति' भी होती है। ईश्वर से बड़ा तो कोई भी नहीं। जो ईश्वर वेद में 'आज्ञा' देता है, करने की वही अनिवार्य 'विधिकर्म' है, और मानवों को उसे करना ही चाहिए। यतः इन कर्मों के करने से मानव को 'अभ्युदय तथा निःश्रेयस' की सिद्धि होती है, जो मानव जी का चरमोद्देश्य है, अर्थात् इन कर्मों करने से 'आत्मा' की रक्षा होती है तथा न् आत्म-हनन नहीं होता, अतः वे कर्म 'पापयुक्त' नहीं अर्थात् उनका करना 'पाप' नहीं। (आ) परन्तु जिन वेदमन्त्रों में 'निषेध-विधि' है अर्थात् जिन कर्मों के न करने के लिये ईश्वराज्ञा' है, वही 'पाप' है, क्योंकि उन कर्मों के करने से 'आत्म हनन' होता है अर्थात् 'अभ्युदय-निःश्रेय' की सिद्धि नहीं होती, जो 'धर्म का उद्देश्य' है।

विधि तथा निषेध वेद-मन्त्रों का उदाहरण

यजुर्वेद के ४० अध्याय के पहिले दो मन्त्रों को लीजिये। पहिले मन्त्र में 'कर्म का निषेध' है अर्थात् ईश्वराज्ञा है कि अन्याय के आचरण से अर्थात् धोका आदि देकर किसी भी व्यक्ति के धनादि का अपहरण न किया जाय।' ऐसा 'निषिद्ध-कर्म' करने के लिए असत्य भाषणादि दुष्ट कार्यों का अवलम्बन करना पड़ेगा। अतः 'पाप-कर्म' है 'परधनादि का अपहरण'। दूसरा मन्त्र 'विधि-मन्त्र' है, क्यों कि 'वैदिक-कर्म-बोध' की शिक्षा, तथा आदेश देता है अर्थात् फलाशा को छोड़कर कर्त्तव्य-कर्म करने मात्र से मानव को मोक्ष प्राप्त हो जाती है।' विधि-कर्म 'पाप' नहीं है, क्योंकि उससे 'आत्म-रक्षा' होती है, आत्म हनन नहीं। यही उपयुक्त परिभाषा वेदानुसार 'पाप-पुण्य' शब्दों की

★पं० श्यामकुमार, आचार्य,
एडवोकेट गोंडा उ० प्र०

है। पुण्य शब्द के अर्थ हैं 'अपनी आत्मा को वेद-विहित कार्यों के करने से पवित्र करना।'

हमारे मनुस्मृति आदि ग्रन्थों में क्या है ?

उपर्युक्त परिभाषा उन ग्रन्थों में भी 'पाप-पुण्य' की लगती है। वहां भी दो प्रकार के कर्मों का वर्णन है, अर्थात् (अ) विधिकर्म तथा (आ) निषिद्ध-कर्म आपद्धर्म को छोड़कर। मनुस्मृति के १२ वें अध्याय के ५ से लेकर ९ श्लोक तक उदाहरणार्थ पढ़ा जाय। वहां भी 'परधन-हरण' सर्व प्रथम पाप-कर्मों में गिनाया है, और फिर असत्य भाषण आदि-आदि।

शेष सम्प्रदायों के कथित-धर्म ग्रन्थों में पाप-पुण्य का क्या विवेचन है ?

यद्यपि 'आस्तिक सम्प्रदायों के निर्माता—आचार्य भी' ईश्वर का (ईश्वर की कल्पना मतों के अनुसार अलग-अलग है) आश्रय लेते हैं, और कहते हैं, कि जो उन्होंने अपने मत के धर्म ग्रन्थों मे लिखा है, वह ईश्वरोपदेश' तो है, भी यह नग्न-सत्य है, कि वे ग्रन्थ तत्तद्-आचार्य निर्मित हैं और मानवकृत-ग्रन्थों मे 'भ्रान्ति' होना अवश्यम्भाविनी है। परन्तु उन ग्रन्थों में भी जो कर्म करने को बताये हैं, वह 'पुण्य' और जो 'निषिद्ध-कर्म' हैं वह 'पाप' है।

वेदों के पठन-पाठन तथा उन पर आचरण करने से ही

वस्तुतः 'पाप विमोचन' सम्भव है। अन्यथा सृष्टि-काल से आरम्भ करके आज तक हमारे ऋषि, मुनि 'वेदों का सरहस्य पठन पाठन तथा वेदाज्ञाओं पर आचरण' मानवमात्र के लिये 'अनिवार्य' न करते। क्या हमारे आर्य समाजी भाई 'पाप-विमोचन-विषयक इस वेद विधि' को अपनायेंगे ? +

ईसाई नवयुवक श्री कृष्टोफर के प्रश्नों का उत्तर

मेरठ के एक शिक्षण संस्थान के अध्यापक ने आर्य समाजियों के लिये प्रश्न, शीर्षक से जो १८ प्रश्न लिखकर भेजे हैं उनका उत्तर क्रमशः निम्न प्रकार दिया जाता है।

प्रश्न १—वेदों को सर्व प्राचीन और श्रेष्ठ क्यों मानते हैं ? यह कैसे कह सकते हैं कि केवल वेद ही सत्य हैं ? क्या वेदों में इस प्रकार कहा गया है ?

उत्तर—मानव सृष्टि का आदिम ज्ञान होने से वेदों को सर्व प्राचीन माना जाता है और सर्वज्ञ परमात्मा की ओर से इनका प्रकाश होने के कारण श्रेष्ठ ही नहीं, श्रेष्ठतम माना जाता है।

चिरन्तन सत्य (Eternal Truths) तथा मानव की चरम उन्नति के लिए केवल ऋत ज्ञान से भरपूर होने के कारण केवल वेद ही सत्य ज्ञान हैं। अन्य तथाकथित ईश्वरीय ज्ञान सम्बन्धित पुस्तकों में सृष्टि क्रम और विज्ञान विपरीत बातें भरी होने से तथा व्यक्ति विशेषों के इतिहास आदि से युक्त होने के कारण इन पुस्तकों को ईश्वरीय। न वह श्रेष्ठ नहीं कहा जा सकता। यजुर्वेद अ०७ म०—१४ में 'सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्व वारा" ऐसा आया है जिसमें वेद को विश्व की आदिम वरण करने योग्य संस्कृति प्रतिपादित किया गया है।

प्रश्न २—जब परमेश्वर को अजन्मा माना है और वह अदृश्य है तो उसको भाषा का बोध कैसे हुआ ? क्या उसकी भाषा केवल संस्कृत है और अन्य नहीं है क्योंकि वेद केवल संस्कृत में ही हैं।

उत्तर—सनातन चेतन आत्माओं में अन्तर्यामी रूप से परमात्मा वेद की भाषा में वेद का प्रकाश करता है। वेद की भाषा संस्कृत नहीं अपितु उससे मिलती जुलती स्वतन्त्र वैदिक भाषा है। वेद की भाषा से ही संस्कृत, पाली, प्राकृतिक, पारसी, ग्रीक, लैटिन आदि विश्व की भाषायें निकली हैं। संसार के समस्त भाषा विज्ञान विशारदों का यही दृढ़ मत है।

प्रश्न ३—यदि परमेश्वर एक ही भाषा जानता है तो संसार में अन्य भाषायें कहां से आ गयी जबकि परमेश्वर ने ही स्वयम् संसार को बनाया है ?

उत्तर—वैदिक भाषा पूर्ण वैज्ञानिक एवं ध्वन्यात्मक होने के कारण तथा संसार की सर्व भाषाओं की जननी होने के कारण उसी को परमेश्वर ने अपने ज्ञान विस्तार का माध्यम बनाया।

उसी भाषा से विकृत होकर संसार की अनेक भाषायें बनी हैं। इस विकृति के कर्ता मनुष्य हैं अर्थात् अनेक विकृत भाषाओं के जन्म देने वाले मानव ही हैं।

प्रश्न ४—बिना रूप के नाम और गुण कैसे हो सकता है ?

उत्तर—समस्त चैतन्य तत्वों को तथा सूक्ष्म जड़ तत्वों स्थूल आखें नहीं देख सकतीं और स्थूल जड़ तत्वों को रूप का बोध भी आंखों को न होकर चैतन्य तत्व आत्मा को ही होता है। परम चैतन्य तत्व परमात्मा ने नाम गुणों का बोध वेदों द्वारा जीवात्माओं को कराया।

प्रश्न ५—परमात्मा या परमेश्वर के अर्थ अपनी व्याख्या व विचारों में समझाइये। परमात्मा क्या आत्मा के बिना हो सकता है।

उत्तर—चैतन्य तत्वों मे सबसे

शंका समाधान

महान् एव व्यापक होने से ब्रह्म को परमात्मा कहते हैं। सर्व सामर्थ्य युक्त होने से उसको परमेश्वर कहा जाता है। आत्म तत्व के अभाव में परमात्मा शब्द सापेक्ष होने से असिद्ध हो जाता है।

प्रश्न ६—स्वामी दयानन्द ने परमेश्वर को सत्यार्थ प्रकाश मे देवताओं का देवता कहा है जबकि आत्मा का स्वरूप नहीं माना। क्योंकि संसार में अन्य प्रत्येक विशेष व्यक्ति (रामकृष्ण आदि) को केवल महापुरुष ही कहा है तो परमेश्वर कौन से देवताओं का देवता है। देवता की परिभाषा दीजियेगा ?

उत्तर—देव वा देवता समानार्थक वाची हैं। दाता होने, प्रकाश युक्त होने, प्रकाश करने वाले जड़ व चैतन्य तत्वों को देव वा देवता माना जाता है। ज्ञानी मानवों को भी देव कहा जाता है क्योंकि वह ज्ञान का प्रकाश करते हैं। सूर्य, चन्द्र आदि जड़ पदार्थ भी प्रकाश आदि का दान करने के कारण देव हैं। परमात्मा सबसे बड़ा दाता, ज्ञानी तथा ज्ञान आदि का प्रकाशक होने से देवताओं का देवता माना जाता है।

आत्मा के स्वरूप को स्वामी दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश में स्पष्ट व्याख्या की है। इच्छा, द्वेष, प्रयत्न सुख दुःख ज्ञानात्मनो लिंगं। इच्छा द्वेष आदि से युक्त होना आत्मा का स्वभाव है। राम कृष्णादि महा पुरुष हैं अर्थात् पुरुषों से महान् हैं और परमेश्वर महत्तम है इसलिये उसको परमपुरुष कहा जाता है। पिण्ड अर्थात् देह में निवास करने के कारण जीव को पुरुष कहा जाता है और ब्रह्माण्ड रूपी देह अर्थात संसार में व्यापक होने से परमात्मा को परमपुरुष माना जाता है। परमेश्वर निश्चय ही रामकृष्ण आदि देवताओं का देवता अर्थात् महादेव हैं।

प्रश्न ७—आप कौन-सी शक्ति को परमेश्वर की शक्ति कहते हैं ? उसे आपने या संसार ने कैसे जाना है ?

उत्तर परमेश्वर की निजी स्वाभाविक शक्ति को परमेश्वरीय शक्ति कहा जाता है। प्रकृति (Matter) को भी शक्ति कहते हैं और ईश्वर का उस पर स्वामित्व होने से उसको भी ईश्वर की शक्ति कहा जाता है।

प्रत्यक्षादि प्रमाणों से हम तथा संसार के ज्ञानी पुरुष उसको जान पाते हैं।

प्रश्न ८—आप जादू विद्या जो कि बंगाल व चीन मे प्रसिद्ध है, को मानते हैं या नहीं ? अर्थात् क्या आप जादू को सत्य मानते हैं ?

उत्तर—जादू टोना आदि सब असत्य विद्यायें हैं, जो बंगाल आदि मे प्रचलित हैं। हम उनको असत्य विद्याओं के रूप मे मानते हैं। असत्य विद्या उसको कहते हैं जो सत्य से शून्य हो और विज्ञान से सिद्ध न हो सकती हो।

प्रश्न ९—सिद्धि के विषय में आपका क्या विचार है, क्या यह सब सत्य है या व्यर्थ ? यदि व्यर्थ है तो क्यों ?

उत्तर—अणिमा, महिमा, लघिमा गरिमा, प्राप्ति प्राकाम्य, ईशत्व, वशित्व आदि योगिक सिद्धियों को जो विज्ञान सिद्ध हैं हम मानते हैं। मर कर जिन्दा होने व मुर्दों को जिन्दा होने सम्बन्धी ईसा की तथा कथित सिद्धियों को हम असत्य मानते हैं। तन्त्रों, मन्त्रों द्वारा अघों को क्षमा करने, लूलों को अच्छा करने आदि सिद्धियों को हम ढोंग समझते हैं। हां चिकित्सा शास्त्री द्वारा यदि ऐसा हो सकता हो तो मान्य है।

प्रश्न १०—आप क्या तो सत्य मानते हैं और क्या झूठ मानते हैं ? सुना हुआ लिखा हुआ या आंखों से देखा अथवा अनुभव में आया हुआ ?

उत्तर—जो सृष्टि क्रम के अनुकूल विज्ञान सिद्ध हो और प्रत्यक्षादि अष्ट प्रमाणों से सिद्ध होता हो हम उसको सत्य मानते हैं और इससे विपरीत को झूठ। सुना लिखा देखा आदि अष्ट प्रमाणों के अन्तर्गत आ जाता है।

श्री पं० शिवदयालु जी

प्रश्न ११—संसार की सृष्टि पर अपने विचार प्रकट कीजिए और बताइये कि कौन-सी पुस्तक इसको बताती है ?

उत्तर—सनातन परमाणुओं मे जब संयुक्त होने की क्षमता का काल उपस्थित होता है तब परमात्मा अपनी स्वाभाविक शक्ति से उनको संगठित करता और महत्व, द्व्यणुक, त्रिसरेणु, महत्तत्व तन्मात्राए, प्राण तत्व, पञ्च तत्वों का और तत्पश्चात् लोक-लोकान्तरों, पर्वत, सागर, नदी, तृण, वनस्पति अन्न आदि को पूर्ण वैज्ञानिक क्रम से उत्पन्न करता है। सृष्टि रचना विज्ञान वेदों द्वारा हमको उपलब्ध होता है।

प्रश्न १२—परमेश्वर सच है या झूठ ? यदि सच है तो संसार में झूठ किस प्रकार से आया ?

उत्तर—परमेश्वर सनातन सत्य ही है झूठ का उससे कोई सम्बन्ध नहीं संसार में झूठ अर्थात् असत्य का जन्मदाता अल्पज्ञ जीवात्मा है। जीवों को मानव देह मे अपने विशेष ज्ञान से युक्त कर परमात्मा तो असत्य से सत्य की ओर प्रगति देने वाला है।

प्रश्न १३—क्या परमेश्वर मनुष्य को अन्धा, लंगड़ा, गूंगा व बहरा बनाता है ?

उत्तर—जीव अनादि हैं। कर्मानुसार परमात्मा उनको शरीर प्रदान करता है। मानव तन में किये हुये पाप कर्मों के आधार पर लंगड़ा, लूला, गूंगा आदि उनको बनना पड़ता है। परमात्मा न्यायकारी है कोई भी उसके न्याय व्यवस्था का उलंघन नहीं कर सकता।

प्रश्न १४—आप कितने लोक मानते है ?

उत्तर—लोक शब्द का एक अर्थ योनि।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

सभा द्वारा सञ्चालित १९६८ की धार्मिक परीक्षाओं के सञ्चालक

तथा प्रत्येक परीक्षा में सर्वप्रथम उत्तीर्ण परीक्षार्थियों के चित्र एवं संक्षिप्त परिचय

श्री पं० प्रेमचन्द्र जी शर्मा सभा मन्त्री

श्री पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री सभा प्रधान

श्री रामबहादुर जी एडवोकेट
मन्त्री विद्यार्य सभा

मीरा बंसल
के. ना. ले. आ. क. इण्टर कालिज
आगरा
धर्माधिकारी प्रथम पुरस्कार

इन्दु धवन
आ० कन्या महाविद्यालय
लखीमपुर-खीरी
धर्माधिकारी द्वितीय

सुधा रानी
आ० क० इण्टर कालिज
गंगोह
धर्माधिकारी तृतीय

पुष्पा शर्मा
आ० कन्या हा० से० स्कूल
दौराला
धर्मभूषण प्रथम

पूनम
आ. क. इ. का. गंगोह
धर्म प्रवेशिका प्रथम
(चित्र अप्राप्त)

अजयकुमार
आ० इण्टर कालिज
महादराबाद
धर्म भूषण द्वितीय

कु० सरोजिनी
आ०क० महाविद्यालय
लखीमपुर-खीरी
धर्म भूषण तृतीय

साहब बख्शसिंह
डी. ए.वी. जू.हा. स्कूल, बाराबंकी
धर्म प्रवेशिका द्वितीय

विजयकुमार
डी० ए० वी० हा० स्
मथुरा
धर्म प्रवेशिका तृतीय

आ. प्र. सभा उत्तर प्रदेश द्वारा संचालित धर्म शिक्षा परीक्षायें १९६८ में निम्न-लिखित अनुक्रमांक के छात्र-छात्रायें उत्तीर्ण हुये हैं

आर्य कन्या इण्टर कालिज सहारनपुर

धर्म प्रवेशिका

प्रथम श्रेणी—१४१६ २० २१ २२ ३ २७ २८ १५३६ ४१ ४५ ५९ ६५ ६ ।

द्वितीय श्रेणी—१४१७ १८ १९ २४ ५ २६ २९ ३० ३२ ३३ ३६ ३८ ४० ४ ५५ ५९ ६० ६३ ६६ ६७ ७० ८० ३ ९१ ९४ ९५ ९८ १५०२ ६ ९ ११ ७ २२ ३२ ४३ ४४ ४७ ४८ ४९ ५० १ ५५ ५६ ६० ६१ ६३ ६७ ६८ ७२ ३ ७४ ७६ ८० ८३ ८४ ८६ ८७ ९० १ ९६'९७ ।

तृतीय श्रेणी—१४११ ३४ ३५ ३७ ९ ४१ ४२ ४३ ४४ ४६ ४९ ५० ५१ २ ५३ ५४ ५६ ५८ ६१ ६२ ६५ ६८ ६ ७१ ७२ ७३ ७४ ७६ ७७ ७८ ८१ ४ ८५ ८७ ८८ ८९ ९२ ९६ .९ १५०० ३ ४ ५ ८ १० १२ ३ १४ १५ १६ १८ १९ २० २१ २३ (२५ २६ २७ २९ ३० ३१ ३४ ३५ । ३८ ३९ ४० ४२ ४६ ५२ ५४ ५७ ६२ ६४ ७० ७१ ७७ ७८ ७९ ८१ २ ८९ ९३ ९४ ९५ ।

धर्म भूषण

प्रथम श्रेणी—५६४१ ६५ ५७२३ ।

द्वितीय श्रेणी—५६४३ ४४ ७० ७८ ८७ ९४ ९७ ९८ ५७०४ ६ १७ १९ २७ ३२ ४६ ।

तृतीय श्रेणी—५६३५ ३६ ३८ ३९ ४२ ४५ ४६ ४७ ४८ ५० ५२ ५४ ६१ ६३ ६६ ६७ ६९ ७३ ७५ ७६ ८१ ८२ ८३ ८४ ८६ ८८ ८९ ९० ९३ ९५ ९६ ९९ ५७०२ ३ ५ ७ ९ १३ १४ १५ १६ १८ २१ २२ २५ २८ ३० ३१ ३३ ३६ ३७ ३८ ४० ४१ ४७ ४८ ४९ ५२ ५३ ५६ ।

धर्माधिकारी

प्रथम श्रेणी—४३२१ ५३ ।

द्वितीय श्रेणी—४३२२ २४ २७ ३२ ४५ ४६ ४९ ५१ ५७ ६० ६२ ६३ ७० ७३ ७६ ८० ८२ ८३ ८५ ८७ ८९ ९२ ९७ ९९ ४४०४ ६ ।

तृतीय श्रेणी—४३२३ २५ २६ २८ ३० ३१ ३३ ३५ ३६ ३७ ३८ ४१ ४३ ४७ ४८ ५० ५३ ५५ ५६ ५८ ६१ ६४ ६५ ६६ ६८ ६९ ७१ ७२ ७५ ७७ ७८ ८१ ८४ ९० ९१ ९३ ९६ ९८ ४४०० ४४०१ २ ३ ५ ।

आर्य कन्या इण्टर कालिज मीरजापुर

धर्म प्रवेशिका

प्रथम श्रेणी—१७३७ ३९ ४१ ४

द्वितीय श्रेणी—१७०१ १३ २२ ३६ ४२ ४९ ५२ ५८ ६६ ८१ ८२ ८४ ८५ ८७ ९८ ९९ ५९८७ ९३ ६००० ३ ६ १० ।

तृतीय श्रेणी—१७०२ ४ ७ ८ ९ १० १५ १६ १७ १८ १९ २१ २४ २५ २९ ३० ३२ ३४ ३५ ४४ ४५ ४६ ४७ ५० ५५ ६३ ६४ ६५ ७४ ७६ ७९ ८३ ९३ ९६ १८०० ५ ५९८८ ९१ ९९ ६००१ २ ५ १२ १४ ।

धर्म भूषण

प्रथम श्रेणी—५८३१ ५९४१ ।

द्वितीय श्रेणी—५८१३ १५ ३२ ३३ ५७ ८० ९२ ९३ ९८ ५९०८ २९ ३१ ३२ ३५ ४३ ४४ ।

तृतीय श्रेणी—५८१७ १९ २० २१ २४ २५ ३४ ३८ ३९ ४० ४२ ४३ ४५ ८३ ८५ ८६ ९१ ९५ ९६ ९९ ५९०३ ९ २५ २६ २७ ३६ ३८ ३९ ५० ६६ ७२ ७७ ७८ ७९ ।

धर्माधिकारी

प्रथम श्रेणी—४४१२ १४ १५ २५ ३३ ३७ ४५ ५३ ५४ ७८ ८९ ।

द्वितीय श्रेणी—४४१७ २० २३ २८ ३२ ३६ ३८ ४१ ४३ ४८ ५० ५५ ।

तृतीय श्रेणी—४४२९ ३५ ३९ ४० ५८ ५९ ९० ४५०१ ।

दयानन्द वैदिक विद्यालय मोहद्दीपुर, गोरखपुर

धर्म प्रवेशिका

तृतीय श्रेणी—५८०६ ।

आर्य कन्या पाठशाला हा०से० स्कूल, खुर्जा

धर्म प्रवेशिका

द्वितीय श्रेणी—८७३ ८७७ ८७९ ८८० ।

तृतीय श्रेणी—८७० ८७१ ८७२ ८७५ ८७६ ८७८ ।

धर्म भूषण

द्वितीय श्रेणी—३९८७ ।

तृतीय श्रेणी—३९८८ ।

धर्माधिकारी

द्वितीय श्रेणी—४२६६ ।

आ.क. पाठशाला कोटद्वार

धर्म प्रवेशिका

प्रथम श्रेणी—२६८ २६९ २७१ २७२ ।

द्वितीय श्रेणी·२७० २७३ २७४ २७५ २७६ २७७ २७८ २८० २८१ ।

तृतीय श्रेणी—२६६ २६७ ।

धर्माधिकारी

प्रथम श्रेणी—४०९३ ९४ ।

द्वितीय श्रेणी—४०९५ ।

श्री मल्हूसिंह आर्य कन्या हायर सेकेण्डरी स्कूल मटौर दोराला (मेरठ)

धर्म प्रवेशिका

प्रथम श्रेणी—१६० १६२ १६३ १६४ १६६ १६८ १७० १७१ १७३ १७४ १७५ १७६ ।

द्वितीय श्रेणी—१५९ १६५ १६९ १७२ ।

तृतीय श्रेणी—१६१ १६७ ।

धर्म भूषण परीक्षा

प्रथम श्रेणी—३६३७ ३६३८ ४० ४१ ४४ ४५ ४७ ४९ ।

द्वितीय श्रेणी—३६३९ ४२ ४३ ४६ ४८ ।

आर्य कन्या इण्टर कालेज गंगोह (सहारनपुर)

धर्म प्रवेशिका

प्रथम श्रेणी—१२१ ४२ ५२ ५८ ज ।

द्वितीय श्रेणी—१२१ २३ २४ ३६ ३७ ३९ ४५ ४६ ४९ ५१ ५३ ।

तृतीय श्रेणी—११९ २० २५ २९ ३० ३१ ३३ ३४ ३८ ४० ४१ ४४ ४८ ५५ ५८ ब ।

धर्म भूषण

प्रथम श्रेणी—३६१४ २७ २९ ।

द्वितीय श्रेणी—३६१७ १८ १९ २५ ३१ ३२ ३३ ।

तृतीय श्रेणी—३६१४ १५ १६ २१ २३ २८ ३४ ।

धर्माधिकारी

प्रथम श्रेणी—४०५९ ६० ६१ ६२ ।

द्वितीय श्रेणी—४०५६ ५८ ।

तृतीय श्रेणी—४०५७ ।

आर्य इण्टर कालिज बहाबरा-बाद जिला सहारनपुर

धर्म प्रवेशिका

प्रथम श्रेणी—१०४१ ४४ ४५ ५३ ७२ ७५ ८० ८१ ८२ ८५ ८९ ९१ ९२

द्वितीय श्रेणी—१०४२ ४३ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५५ ५६ ६० ६३ ६५ ६७ ६८ ६९ ७० ७३ ७६ ७७ ७८ ८४ ८७ ८८ ।

तृतीय श्रेणी—१०५४ ५७ ५९ ६१ ६३ ६४ ६६ ७१ ७४ ७९ ८३ ८६ ९० ९३ ९६ ९८ ९९ ११०० ११०२ ।

धर्म भूषण

प्रथम श्रेणी—५०१७ १८ १९ ४१ ४५ ४६ ५० ५३ ५४ ५५ ५९ ७० ७१ ७३ ७४ ७६ ८० ९१ ९२ ९३ ९४ ९९

द्वितीय श्रेणी—५०१० ११ २२ २६ २७ २९ ३१ ३९ ४० ४२ ५२ ५६ ५७ ६४ ६७ ६८ ६९ ७१ ७७ ७९ ८१ ८२ ८४ ८५.८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९७ ९८ ५१०० १ २ ४ ।

तृतीय श्रेणी—५०१३ १४ १५ २० २८ ३९ ३३ ४७ ४८ ४९ ५८ ६० ६१ ७५ ७८ ८३ ९५ ९६ ५१०३ ५ ।

धर्माधिकारी

प्रथम श्रेणी—४२८९ ।

द्वितीय श्रेणी—४२७१ ७६ ७८ ७९ ८० ८१ ८३ ८६ ८७ ।

तृतीय श्रेणी—४२६९ ७० ७२ ७३ ७४ ७७ ८२ ८४ ८८ ।

पार्वती आर्य कन्या इण्टर कालिज बदायूं

धर्म प्रवेशिका

द्वितीय श्रेणी—११३६ ४१ ४३ ५१४० ।

तृतीय श्रेणी—११२५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३९ ४० ४२ ४५ ४६ ।

धर्म भूषण

तृतीय श्रेणी—५१३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ।

धर्माधिकारी

तृतीय श्रेणी—४२९० ९१ ४४०७ ४४०८ ।

आर्य कन्या पाठशाला हा. से. स्कूल कालपी (जालौन)

धर्म प्रवेशिका

प्रथम श्रेणी—१२५५ ६५ ७२ ७६

द्वितीय श्रेणी—१२४१ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ५१ ५३ ५४ ५७ ६३ ७४ ।

तृतीय श्रेणी—१२४९ ४९ ५० ५२ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६४ ६७ ७० ७१ ७३ ७५ ७७ ७८ ।

धर्म भूषण

प्रथम श्रेणी—५१६३ ६७ ७३ ।

द्वितीय श्रेणी—५१४० ४२ ४३ ४५ ४६ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५८ ५९ ६१ ६४ ७० ७१ ७२ ।

तृतीय श्रेणी ५१४१ ४४ ४७ ४९ ५७ ६० ६२ ६५ ६८ ६९ ।

आर्य कन्या इण्टर कालिज मवाना (मेरठ)

धर्म प्रवेशिका

द्वितीय श्रेणी—१३६६ ७० ७५ ७६ ७७ ७९ ८० ८३ ।

तृतीय श्रेणी—१३६७ ६८ ६९ ७१

७२ ७३ ७४ ७८ ८१ ८२ ८५ ८६ ८७ ८९ ९०।

धर्म भूषण

प्रथम श्रेणी–५५७४।

द्वितीय श्रेणी–५५४८ ६१ ६२ ७५ ७७ ८४ ९७ ९८ ५६०० ५ ८ १६ २१ २४।

तृतीय श्रेणी–५५३१ ४३ ४५ ४६ ५७ ५८ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७९ ९५ ९६ ९९ ५६०२ ३ ७ १० १८ २० २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१।

आर्य कन्या इण्टर कालिज मुजफ्फरनगर

धर्म प्रवेशिका

द्वितीय श्रेणी–७२१ २७ २९ ६१ ८०३ १२ १६ १७ ४४ ५२ ४१ ५६ ५८ ५९ ६० ६१।

तृतीय श्रेणी–७४५ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५४ ५५ ५६ ५८ ६० ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७९ ८० ८१ ८२ ८८ ९३ ९५ ९६ ९७ ९८ ८०० १ २ ४ ६ ७ ८ ११ १३ १४ १९ २० २१ २३ २५ २६ २९ ३१ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४१ ४२ ४३ ४५ ४६ ४८ ५० ५४ ५७ ६४ ६५ ६६ ६९।

तृतीय श्रेणी–४२१७ २६ ३१ ५५।

डी०ए०वी० इण्टर कालिज फीरोजाबाद

धर्म प्रवेशिका

द्वितीय श्रेणी:–९०६ १२ १३ १७ २३ ३५ ३६ ३८ ४० ४१ ४३ ४६ ४८ ४९ ५१ ५६।

तृतीय श्रेणी:–८८२ ८९ ९० ९१ ९२ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ ९०० १ २ ३ ७ ८ ९ १४ १६ १८ १९ २० २१ २२ २४ २५ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३७ ४२ ४८ ५० ५२ ५३ ५४ ५५ ५८ ५९ ६३।

डी०ए०वी० इण्टर कालिज बलरामपुर (गोंडा)

धर्म प्रवेशिका

तृतीय श्रेणी:–११२८ ५९ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८।

दयानन्द विद्या मंदिर सीतापुर

धर्म प्रवेशिका

द्वितीय श्रेणी–४१४ १५ १७ १८ २१ २८।

तृतीय श्रेणी:–४११ १३ १६ २३ २५ २६ २७ २९ ३० ३१ ३५।

दयानन्द गुरुकुल उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बिरालसी

धर्म प्रवेशिका

प्रथम श्रेणी–११२२।

द्वितीय श्रेणी–११०३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १८ १९ २० २१ २४।

तृतीय श्रेणी:–१११७ २३।

धर्म भूषण

द्वितीय श्रेणी:–५१०६ ७ ८ १० ११ १२ १३ १४ १८ १९ २० २५ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३।

तृतीय श्रेणी–५१०९ १५ १६ १७ २१ २२ २३ २४ २६ २७।

कृष्णकिशोर लालमणि आ. क. हा.से. स्कूल काशीपुर (नैनीताल)

धर्म प्रवेशिका

प्रथम श्रेणी–३६७।

द्वितीय श्रेणी–३६८ ७० ७४ ७८ ७९।

तृतीय श्रेणी–३६९ ७२ ७३ ७५ ७६ ७७ ८०।

धर्म भूषण

प्रथम श्रेणी– ३७४२ ४९ ५०।

द्वितीय श्रेणी–३७४६ ४७ ४८ ५१।

तृतीय श्रेणी–३७४३ ४४ ४५ ५२ ५३ ५४।

रामप्यारी आ. क. उच्चतर मा० विद्यालय चन्दौसी

धर्म प्रवेशिका

प्रथम श्रेणी–३८७ ९७ ४०३ ४०६ ९।

द्वितीय श्रेणी–३८१ ८२ ८३ ८५ ९० ९२ ९३ ९४ ९६ ९८ ९९ ४१४ १५ १७ १८ २२ २८।

तृतीय श्रेणी–३८४ ८६ ८८ ८९ ९१ ९५ ४०० १ २ ४ ५ ७ ८ ४११ १३ १६ २३ २५ २६ २७ २९ ३० ३१ ३५।

धर्माधिकारी

प्रथम श्रेणी–४१०३ ४ ८ ९।

द्वितीय श्रेणी–४१०२ ५ ७ १०।

मथवानबीन आ.क.महाविद्यालय, लखीमपुर-खीरी

धर्म प्रवेशिका

प्रथम श्रेणी–३० ४० ७२ ८६।

द्वितीय श्रेणी–१ ४ ६ १२ १४ १५ १८ २१ २२ २४ २९ ३० ३१ ३२ ३९ ४३ ४६ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५६ ५९ ६२ ६३ ६४ ६६ ६९ ७० ७१ ७४ ७६ ७७ ८५ ८७ ८९ ९० ९१ ९२ ९४ ९७ ९८ ९९ १०१ २ ९ १० १४ १८।

तृतीय श्रेणी–२ ३ ५ ७ ८ १० ११ १३ १६ १७ १९ २० २३ २५ २६ २७ २८ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ४१ ४२ ४५ ४७ ५३ ५५ ५७ ५८ ६० ६१ ६५ ६८ ७८ ८२ ८३ ८४ ९३ ९५ ९६ १०० ३ ४ ५ ६ ७ ८ १२ १३ १५ १६ १७।

धर्म भूषण

प्रथम श्रेणी–३५१७ २४ ३२ ४३ ४४ ४५ ५५ ५९ ७५ ९६ ९० ९९।

द्वितीय श्रेणी–३५०२ ७ ८ १६ २३ ३० ३१ ३३ ३४ ३८ ४२ ४७ ४८ ४९ ५२ ५४ ५६ ६० ६१ ६४ ६५ ६७ ७० ७३ ७४ ८० ८४ ८९ ९२ ३६०५।

तृतीय श्रेणी–३५०१ ३ ४ ५ ६ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १८ १९ २० २१ २२ २५ २६ २७ २८ २९ ३५ ३६ ३७ ३९ ४० ४१ ४६ ५० ५१ ५८ ६२ ६३ ६९ ७१ ७२ ७६ ७७ ७९ ८१ ८२ ८३ ८५ ८८ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ३६०० १ ६ ७ ८।

धर्माधिकारी

प्रथम श्रेणी–४००९ १७ १८ २० २२ ३६ ४४ ४६।

द्वितीय श्रेणी–४००१ ३ ६ ७ ८ ९ १० ११ १३ १५ १९ २१ २४ २७ २८ ३१ ३३ ३५ ३८ ३९ ४२ ४३ ४७ ४९ ५० ५१ ५२।

तृतीय श्रेणी–४००४ ५ १२ १४ १६ २३ २६ २९ ३० ३२ ३७ ४० ४१ ४८।

आर्य कन्या हा. सै. स्कूल फिरोजाबाद

धर्म प्रवेशिका

प्रथम श्रेणी–१८६२।

द्वितीय श्रेणी–१८५५।

तृतीय श्रेणी–१८५३ ५४ ५७ ५८ ६०।

धर्म भूषण

द्वितीय श्रेणी–५७९९।

तृतीय श्रेणी–५७९६ ९७ ९८।

जमुनादास आर्य कन्या जू० हाई स्कूल, सहारनपुर

धर्म प्रवेशिका

प्रथम श्रेणी–११४८ ५० ५५।

द्वितीय श्रेणी–११४९ ५१ ५२ ५३ ५४ ५६ ५७।

आर्य पुत्री इण्टर कालिज सुभाषनगर बरेली

धर्म प्रवेशिका

प्रथम श्रेणी–५१३।

तृतीय श्रेणी–५०६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १५ १६ १८ १९ २० २१ २३ २४ २६ २७

धर्म भूषण

द्वितीय श्रेणी–३८२८

तृतीय श्रेणी–३८१७ १८ १९ २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २९ ३०।

धर्माधिकारी

प्रथम श्रेणी–४१२६।

द्वितीय श्रेणी–४१२७ २८ २९ ३० ३१।

तृतीय श्रेणी–४१३२ ३३ ३६।

आर्य कन्या इण्टर कालिज बुलन्दशहर

धर्म प्रवेशिका

प्रथम श्रेणी–३३०।

द्वितीय श्रेणी–२८३ ९४ ३०४ ११ १२ १३ १४ १५ १६ १९ २१ २२ २४ २६ २७ ७८ ३१

तृतीय श्रेणी–२८२ ८४ ८६ ८८ ९० ९१ ९३ ९६ ९७ ९९ ३ १ २ ३ ६ ७ ८ ९ १० १८ २० २५ २९ ३२ ३३ ३४ ३५।

धर्म भूषण

तृतीय श्रेणी–३७२६ २७ २८ ३१ ३१ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३९।

धर्माधिकारी

प्रथम श्रेणी–नहीं

द्वितीय श्रेणी–४०९७ ४१००

बाबलीदेवी आर्य कन्या उ० विद्यालय ब्रह्मपुरी (मेरठ)

धर्म प्रवेशिका

प्रथम श्रेणी–१२३४ ३९।

द्वितीय श्रेणी–११७८ ८१ ९ १२०३ ६ १२ १५ १८ १९ २२ २७ २८ ३१ ३६ ३७ ३८ ४०।

तृतीय श्रेणी–११७० ७१ ७३ ७५ ७७ ७९ ८० ८३ ८६ ८८ ९ ९६ ९८ ९९ १२०० ९ १३ १४ १७ २० २१ २३ २४ २५ २९ ३ ३५।

आर्य महिला इण्टर कालिज शाहजहाँपुर

धर्म प्रवेशिका

प्रथम श्रेणी–२०८ ३५ ४[illegible] ४३ ६३।

द्वितीय श्रेणी–१८४ ८५ ८[illegible] ९७ २०३ १२ १३ १४ २० २[illegible] २५ २६ ३१ ३४ ३६ ३८ ४७ [illegible] ५६ ५८ ६१ ६२।

तृतीय श्रेणी–१८१ ८३ ८[illegible] ९२ ९३ ९४ ९५ ९८ २०० १[illegible] १५ १६ १७ १८ २८ २९ ३० ३९ ४० ४४ ४५ ४६ ४९ ५० ५४ ५७ ६० ६४।

धर्म भूषण

द्वितीय श्रेणी–३६५४ [illegible] ६० ६३ ७० ७३ ८१ ८२ [illegible] १७०३ ५ १[illegible]

तृतीय श्रेणी–३६५१ [illegible] ५७ ५२ ५[illegible] ५[illegible] ५९ ६२ ६[illegible] ७५ ७९ ८० ८[illegible] ८[illegible] ९० ९[illegible] ९८ ३७०० ४ [illegible] [illegible] १० ११ [illegible]

धर्माधिकारी

प्रथम श्रेणी–.....

द्वितीय श्रेणी–४०८१ [illegible]

तृतीय श्रेणी–४०६७ ६८ ७२ ७३ ७४ ७५ ७७ ७८ ७९

८७ ८८ ८९ ९० ।

ए.वी. हा. सै. स्कूल मथुरा

धर्म प्रवेशिका

प्रथम श्रेणी—३३९ ४४ ४५ ४९ ५५ ५७ ।

द्वितीय श्रेणी—३३६ ३७ ३८ ४० ४२ ४३ ४६ ४७ ४८ ५० ५२ ५३ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६४ ६५

तृतीय श्रेणी—३५४ ६३ ।

क० इण्टर कालिज गुलावठी

धर्म प्रवेशिका

प्रथम श्रेणी—४३८ ४२ ८१ ।

द्वितीय श्रेणी—४३७ ३९ ४० ४१ ४५ ४६ ४७ ४८ ५० ५१ ५२ ५६ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७५ ७६ ७७ ७९ ८० ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९९ ५०० १ २ ३ ४ ५ ।

तृतीय श्रेणी—४४९ ५३ ५४ ५५ ५९ ७४ ८२ ।

धर्म भूषण

प्रथम श्रेणी— .. ..

द्वितीय श्रेणी—३७६१ ६२ ६४ ६५ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७७ ७८ ७९ ८४ ८७ ८९ ९० ९२ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ ३८०० ५ ६ ९ १० ११ १२ १३ १४

तृतीय श्रेणी—३७५६ ५७ ५८ ६३ ९१ ३८०१ २ ७ ८ ।

धर्माधिकारी

प्रथम श्रेणी—४१२३ ।

द्वितीय श्रेणी—४१११ १२ १३ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २४ २५ ।

माज गर्ल्सज इण्टर कालिज मथुरा

धर्म प्रवेशिका

प्रथम श्रेणी—५२९ ७८ ६१० २३

द्वितीय श्रेणी—५२८ ४० ४४ ४६ ६६ ७७ ८४ ८५ ८६ ९० ९१ ९४ ९८ ६०१ ४ १५ १६ १८ ३२ ।

तृतीय श्रेणी—५३० ३१ ३२ ३३ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४१ ४२ ४३ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५३ ५४ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७४ ७५ ७९ ८१ ८२ ८९ ९२ ९५ ९७ ६०० २ ६ ७ ८ ९ १७ १९ २० २१ २२ २६ २७ २८ २९ ३१ ३३ ३४

धर्म भूषण

प्रथम श्रेणी— —

द्वितीय श्रेणी—३८३६ ४१ ४३ ५१ ६७ ६८ ६९ ७३ ८९ ९० ९३ ९६ ९८ ३९००२ १४ १८ २४ २७ ।

तृतीय श्रेणी—३८३२ ३३ ३८ ३९ ४२ ४६ ४७ ४८ ४९ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ६४ ६५ ७० ७१ ७२ ७५ ७८ ७९ ८२ ८८ ९१ ९४ ९५ ९७ ९९ ३९०० ४ ६ ८ १० १७ २० २१ २८ ।

धर्माधिकारी

प्रथम श्रेणी—४१६३ ७९ ८४ ८७ ८९ ।

द्वितीय श्रेणी—४१३७ ३८ ४२ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५२ ५६ ५८ ६० ६४ ६६ ६९ ७० ७१ ७४ ७५ ८० ८६ ।

तृतीय श्रेणी—४१५३ ७२ ७३ ८१ ८५ ।

ललित आर्य महिला इण्टर कालिज हल्द्वानी

प्रवेशिका

प्रथम श्रेणी—६३९ ४४ ४५ ७३ ७०१ २ ३६ ४३ ।

द्वितीय श्रेणी—६३६ ३७ ४३ ४७ ४८ ४९ ५३ ५९ ६० ६१ ६७ ६८ ६९ ७४ ७६ ७९ ८१ ८५ ८७ ८८ ९४ ७०० ३ ४ ६ ११ १३ १४ १६ १७ १८ २१ २३ २४ २६ ३१ ३९ ४४ ।

तृतीय श्रेणी—६३८ ४० ४१ ४६ ५० ५१ ५२ ५४ ५५ ५६ ५८ ६२ ६३ ६४ ६५ ७० ७१ ७२ ७५ ७७ ७८ ८० ८२ ८४ ८६ ८९ ९० ९२ ९५ ९६ ९७ ९८ ७०५ ८ १० १२ १९ २० २२ २५ २७ २८ २९ ३० ३२ ३३ ३५ ४२ ।

धर्म भूषण

प्रथम श्रेणी—३९४७ ५० ५९ ।

द्वितीय श्रेणी—३९४० ४३ ४४ ४८ ५३ ५४ ५८ ६० ६१ ६२ ६५ ६८ ६९ ७२ ७६ ७८ ८२ ।

तृतीय श्रेणी—३९३७ ३८ ४१ ४२ ४५ ४९ ५६ ५७ ६३ ६६ ६७ ७० ७१ ७३ ७५ ८० ।

धर्माधिकारी

प्रथम श्रेणी—४२०७ ।

द्वितीय श्रेणी—४१९० ९३ ९६ ९७ ९८ ९९ ४२०३ ९ १० ।

तृतीय श्रेणी—४१९४ ९५ ४२०१ ८ ११ ।

डी.ए.वी. जू. स्कूल, बाराबङ्की

धर्म प्रवेशिका

प्रथम श्रेणी—९६८ ६९ १००१ ।

द्वितीय श्रेणी—९६५ ६६ ७१ ७२ ८३ ७४ ७६ ७७ ७९ ८० ८१ ८२ ८४ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९४ ९६ ९७ क ९७ ख ९८ ९९ १००० ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १९ २१ २२ २४ २५ २६ २७ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३५ ३८ ३८ ४० ।

तृतीय श्रेणी—९७५ ८५ ९५ १००२ २० १४ ।

दयानन्द इं. कालिज बिन्दकी

धर्म प्रवेशिका

प्रथम श्रेणी— —

द्वितीय श्रेणी—१२८१ ८४ ८७ ८८ ८९ ।

तृतीय श्रेणी—१२८० ८२ ८३ ८५ ८६ ९० ९२ ९३ ।

दयानन्द रा. प्र. हंसरानी आर्य कन्या इंटर कालिज सीतापुर

धर्म प्रवेशिका

प्रथम श्रेणी—१३४० १६१९ ।

द्वितीय श्रेणी—१२९५ ९९ १३०२ ६ ८ १० १२ १६ १७ १३३६ ४२ ४३ ४४ ५२ ५३ ६१ ६२ १६२३ ३४ ३६ ३८ ३९ ४३ ४५ ४७ ५४ ६८ ६९ ७१ ७२ ७३ ७५ ८८ ९० ९१ ९२ ।

तृतीय श्रेणी—१२९४ ९६ ९७ १३०० १ ३ ४ ५ ९ ११ १३ १४ १५ १८ १९ २० २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३७ ३९ ४१ ४५ ४६ ४८ ४९ ५० ५१ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६३ ६४ ६५ १६१७ १८ २० २१ २२ २७ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ४० ४१ ४२ ४४ ४६ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ७३ ६४ ६५ ६६ ७० ७४ ७५ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८४ ८५ ८६ ८७ ८९ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ।

धर्म भूषण

द्वितीय श्रेणी—५४५८ ५९ ६५ ६८ ७५ ८० ८५ ८६ ९३ ९७ ५५०० ७ ८ १९ ।

तृतीय श्रेणी—५४३९ ४० ४१ ४३ ४४ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५४ ५५ ५७ ६० ६१ ६२ ५४ ६६ ६७ ६९ ७० ७३ ७४ ७६ ७७ ७८ ८९ ८१ ८२ ८३ ८७ ८९ ९० ९१ ९२ ९४ ९५ ९६ ९८ ९९ ५५०१ २ ३ ५ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ २० २१ २२ २३ २६ ।

धर्माधिकारी

प्रथम श्रेणी—४३१२ १३ ।

द्वितीय श्रेणी—४२९३ ९५ ९६ ४३०१ ५ ८ १० १४ १८ १९ ।

तृतीय श्रेणी ४२९२ ९४ ९८ ९९ ४३०० २ ३ ४ ६ ११ १६ ।

आर्य कन्या जूनियर हाई स्कूल रेलबाजार कानपुर कैण्ट

धर्म प्रवेशिका

प्रथम श्रेणी—१८४७ ।

द्वितीय श्रेणी—१८३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४२ ४३ ४४ ४५ ४८ ५० ५१ ।

तृतीय श्रेणी—१८४१ ४६ ५२ ।

आदर्श विद्या निकेतन उच्चतर मा० वि० बिजनौर

धर्म प्रवेशिका

द्वितीय श्रेणी—१८६७ ७३ ८० ९१ ९३ ।

तृतीय श्रेणी—१८६४ ६५ ६६ ६९ ७० ७२ ७५ ७६ ७७ ७८ ८१ ८२ ८७ ८९ ९२ ९४ ।

धर्म भूषण

प्रथम श्रेणी—६०२४ २५ १७ २८ ।

द्वितीय श्रेणी—६०१७ १८ २३ २६ ३९ ४१ ।

तृतीय श्रेणी—६०२० २१ ३० ३२ ३४ ३५ ३६ ४२ ४० ।

के० ना० से. आर्य कन्या इण्टर कालिज बेलनगंज, आगरा

धर्म प्रवेशिका

प्रथम श्रेणी—१८९७ १९०९ २४ २५ २८ २९ ३४ ४२ ५३ ६१ ७५ ७६ ।

द्वितीय श्रेणी—१८९५ ९६ १९०१ ५ ७ ८ १० ११ १३ १४ १६ १७ १९ २३ ३२ ४० ४६ ४७ ५८ ५९ ६२ ६३ ६४ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७३ ७४ ७७ ७८ ८२ ८१ ८२ ८६ ८७ ९० ९९ २००६ १३ १४ १८ २२ २४ ३१ ३८ ४१ ४६ ५२ ५७ ६० ६१ ६२ ६३ ९४ ९५ २१११ ।

तृतीय श्रेणी—१८९९ १९०० २ ३ ६ १२ १८ २२ २६ ३१ ३५ ३६ ३८ ३९ ४१ ४३ ४४ ४५ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५४ ५५ ५६ ५७ ६० ६५ ७२ ८० ८४ ८५ ८९ ९१ ९२ ९४ ९८ २००० १ २ ४ ५ ७ ८ ९ ११ १२ १५ १६ १७ १९ २० २३ २५ २८ २९ ३० ३३ ३४ ३६ ३९ ४० ४२ ४३ ४५ ४७ ५० ५१ ५४ ५५ ५६ ५८ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ७१ ७२ ७३ ७६ ७८ ७९ ८२ ८३ ८४ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९९ २१०० १ ३ ४ ७ ८ ९ १० १२ १३ ।

धर्म भूषण

प्रथम श्रेणी—६०७५ ९१ ६१०० ३ ८ १५ १७ २३ २६ २८ ५७ ६३ ७३ ९० ६२१२ २६ ३८ ४५ ५७ ८४ ।

द्वितीय श्रेणी—६०५१ ५३ ५४ ६६ ७९ ८८ ९० ९८ ६१०१ २ ५ ६ ११ १२ १४ १९ २१ २५ ३४ ३५ ३८ ३९ ४० ४४ ४५ ४८ ५० ५१ ५५ ५९ ६२ ६७ ६९ ७० ७१ ७२ ७४ ७९ ८२ ८३ ८४ ८९ ९१ ९४ ९८ ६२०४ ९ १० २० २२ २३ २४ २७ ३० ३४ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४८ ४९ ५१ ५३ ५६ ६२ ६६ ६७ ७१ ७२ ७५ ७६ ७९ ८१ ८५ ९० ९१ ९४ ९६ ९७ ।

धर्म भूषण

प्रथम श्रेणी— —

(शेष पृष्ठ १३ पर)

'मेरा पग'

पग रुक-रुक, क्यों मग चलते हैं ?

ये छू न सकेगी अमल-अमल,
ये कर सकती क्या अनिल विकल ।
चपला की चपल - मुस्कराहट,
मुसका कर कर न सकी चञ्चल ।
देखो, ये नभ के उडुगण भी, मुझको ही देख मचलते हैं ।।१
पग रुक-रुक, क्यों मग चलते हैं ?

मैं पा न सका, सुख-कण क्षण भर,
मैं गा न सका, मस्ती का स्वर ।
मैं जा न सका, जीवन-पथ पर,
मैं छा न सका, नभ घन बनकर ।
मैं अपने इन प्रिय-श्वासों में कुछ कर न सका, जो चलते हैं ।।२
पग रुक-रुक, क्यों मग चलते हैं ?

रोने दो मुझको रोने दो,
अन्तर्ज्वाला को सोने दो ।
छेड़ो मत छेड़ो कह-कहकर—
जो होता है, वह होने दो ।।
धोने दो अपने पापों को, पीछे पछता, कर मलते हैं ।।३
पग, रुक-रुक, क्यों मग चलते हैं ?

—विश्वबन्धुः शास्त्री उपप्रधान आ. प्र. सभा
आर्यनगर मूढ़, बरेली

'कुटी बनाकर'

निर्जन वन में कुटी बनाकर,
तेरा गीत सुनाऊं ।
हरे भरे तरु देख देखकर,
पुलक पुलक कर गाऊं ।
विकसित कलिका को जब देखूं,
तब मधुर कण्ठ से गाऊं ।। निर्जन वन में ।।
अर्द्ध रात्रि मे काले घन मे,
जब विद्युत छबि देखूं ।
ऊषा की मुसकान छटा जब,
प्रातःकाल में देखूं ।
तब प्रभुवर में गदगद होकर,
तेरा गीत बनाऊं । निर्जन वन में ।।

—लक्ष्मीनारायण शास्त्री, साहित्यरत्न, गोंडा

पल्ला झाड़ कथा सुनि आप चले जाते हो

झूंठ बोल-बोल तुम्हें गप्प जो सुनावे नित,
ताके हेतु बंकड़ों ही नोट बरसाते हो ।
नाच-कूद गन्दे गीत तुमको सुनावत जो,
उन्हें सुनने में तुम नेक न लजाते हो ।।
विश्व हित सत्य बात सबको सुनावे उस—
आर्यसमाज को तुम क्यों न अपनाते हो ।
'छाजूराम' एक भी न पैसा तुम दान करो,
पल्ला झाड़ कथा सुनि आप चले जाते हो ।।

आर्यसमाज को न जाना है

भूत जाना प्रेत जाना मियाँ औ मसान जाना,
चण्डी औ चुड़ैल पूजना भी तूने जाना है ।।
पण्डे औ पुजारी स्याने भोपाओं को जाना तूने,
कब्रों पै चादर चढ़ाना तू ने जाना है ।।
चहुं ओर खींचतान लूटमार होत जहां,
ऐसे काशी गया आदि तीर्थों को जाना है ।
विश्व के हितैषी और सत्य के प्रचारक—
छाजूराम ऐसे आर्यसमाज को न जाना है ।।२

—पं० छाजूराम 'शान्त' फैजाबाद

(पृष्ठ ६ का शेष)

है । योनियाँ असख्य हैं । मनुष्य उनकी गणना नहीं कर सकता ।

लोक शब्द का दूसरा अर्थ नक्षत्र, ग्रह, और उपग्रह है । यह भी ब्रह्माण्ड में असंख्य है । ब्रह्माण्ड को तीन भागों मे विभाजित किया जाता है । एक विभाग में प्रकाशमान सूर्य, ध्रुव, अश्विनी, भरणी आदि नक्षत्र हैं जिसको द्यौः कहते हैं दूसरे प्रकाशहीन विभाग में भूमि, चन्द्र आदि ग्रह उपग्रह हैं इसको पृथिवी लोक कहते हैं । इनसे भिन्न तीसरा विभाग शून्य आकाश का है जिसको अन्तरिक्ष कहते हैं जिसमे मेघ, विद्युत आदि का वास है । इस प्रकार यह ब्रह्माण्ड तीन भागों में विभक्त किया जाता है ।

प्रश्न १५—संसार के मनुष्यों पर मृत्यु क्यों अपना अधिकार जमाती है ?

उत्तर—मनुष्य की आयु श्वासों पर आधारित है । मनुष्य अपने कर्मों के द्वारा आयु को बढ़ा और घटा सकता है । मनुष्य का तन सदा एक जैसा नहीं रहता । शरीर पुराना हो जाने पर उस को बदलकर नया चोला आदि देने में परमात्मा की कृपा निहित है ।

प्रश्न १६—क्या आपके समाज में राम और कृष्ण को महापुरुष मानते हैं, परन्तु क्या उनकी लीलाओं को जो उन्होंने की हैं, मानते है या नहीं ?

उत्तर—आर्य समाज राम, कृष्ण आदि महापुरुषों को अवश्य मानता है किन्तु उनके नाम पर छली, कपटी दम्भी और पाखण्डी लोगों ने जिन लीलाओं का प्रचार किया है और जो आपके मस्तिष्क में भी घर किये हुये हैं, इन लीलाओं को कदापि नहीं मानता ।

प्रश्न १७—जिस शिव का वर्णन शिव पुराण मे है क्या आप उसको मानते हैं?

उत्तर—हम शिव को अवश्य मानते हैं, किन्तु उसका जो स्वरूप वेदों में वर्णित है, वही हमें मान्य है । हम शिव पुराण आदि को प्रामाणिक ग्रन्थ नहीं मानते और उसमें वर्णित शिव के स्वरूप को भी जो ज्ञान विरुद्ध है, हम नहीं मानते ।

प्रश्न १८—वेदों को कहां और कौन से स्थान पर ऋषियों ने सुना और आज कल वह स्थान किस नाम से पुकारा जाता है ?

उत्तर—मानव सृष्टि का आरम्भ उस स्थान पर हुआ जो भू भाग सर्व प्रथम समुद्र से ऊपर प्रकट हुआ उसी भू भाग मे अत्यन्त पवित्र हृदय मानवों ने अपनी आत्माओं के अन्दर अन्तर्यामी परमात्मा द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जि[स] ज्ञान का नाम वेद है । उस स्थान क[ो] वैदिक साहित्य में त्रिविष्टप नाम [से] पुकारा गया जिसको आजकल तिब्बत कहते हैं ।

★

आर्यसमाज लशकर का ६७वाँ वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज लशकर का ६७ वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक ११ से १३ अक्तूबर तक समारोह पूर्वक मनाया गया ।

प्रतिदिन प्रातः [illegible] समाज मन्दिर में यज्ञ, भजन तथा कथा होती थी । सायंकाल गोरखी (बाड़ा) प्रांगण में विशाल जन सभा में आर्य विद्वानों के भाषण होते थे ।

श्री स्वामी ब्रह्ममुनि जी ने आस्तिकवाद, योग, सन्ध्या और हमारे शरीर मे पञ्चकोश जैसे उत्तम विचारों पर वेद कथा के बीच प्रकाश डाला । चौधरी मरथासिंह (करनाल), श्री जोरावरसिंह तथा उनकी धर्म पत्नी श्री प्रभावती जी के सामयिक देशभक्ति पूर्ण एवं आर्य मन्तव्यों से ओत-प्रोत भजनोपदेश हुए ।

संसद सदस्य प्रसिद्ध आर्य नेता श्री प्रकाशवीरजी शास्त्री ने बताया कि कांग्रेस ने २१ वर्ष के शासनकाल मे देश को दुर्बल बना दिया है । हमारी सीमाएँ खतरे से खाली नहीं हैं । देश मे विदेशी जासूसों का जाल बिछा हुआ है । कर्मचारियों विद्यार्थियों और दूसरे वर्गों में असन्तोष व्याप्त है । आज देश में जनतन्त्र खतरे में है । अब देश मे चुने हु[ए] मेधावी लोगों की एक राष्ट्रिय सरका[र] होनी चाहिए ।

संसद सदस्य श्री शिवकुमारजी शास्[त्री] ने बताया कि देश में व्याप्त भ्रष्टाचा[र] तथा जनतन्त्र को खतरे से बचाने के लि[ए] धर्म से राजनीति को जोड़ना होगा[।] आस्तिकवाद से ही स्वतन्त्रता की र[क्षा] हो सकती है । —हरवन्शलाल म[न्त्री]

ऋषि निर्वाण उत्सव

निम्न आर्यसमाजों में २१ अक्तूबर को ऋषि निर्वाण उत्सव सानन्द मनाया गया । प्रातः संध्या यज्ञ ऋषि के प[वित्र] जीवन चरित्र का पाठ ऋषि गुणगान आदि कार्यक्रम हुये ।

खण्डवा, चौक, डुमराँव, (बिहार) पुरानी गोदाम गया, हमीरपुर, [illegible] कासगंज ।

ऋषि निर्वाण दिवस

दिनांक २२ अक्तूबर १९६८ [को] ऋषि उद्यान स्थित सरस्वती भवन [illegible] मे आचार्य मेधार्थी स्वामी की अध्[यक्षता] मे ऋषि निर्वाण दिवस मनाया और भी कई प्रकार के का[र्यक्रम] सम्पन्न हुये । —[illegible] करण शा[स्त्री]

वैदिक धर्म प्रचार

आर्य समाज मेस्टनरोड द्वारा कार्तिकी पूर्णिमा के अवसर पर, कानपुर जिला मे बिठूर सरसैया घाट तथा गंगापार वेद प्रचार का प्रबन्ध किया गया।

श्री विजयपाल शास्त्री, श्री बाल कृष्ण शर्मा, तथा श्री रतन जी के अनवरत प्रयास से मेले में एकत्रित अराष्ट्रिय तत्व को पलायन ही नहीं करना पड़ा, अपितु सर्व साधारण जनता ने यह सकल्प भी किया कि वे जहाँ कहीं भी जिस समय भी ऐसे अराष्ट्रीय तत्वों को पायेंगे उनका प्रतिवाद करेंगे।

इस अवसर पर वैदिक साहित्य विशेषरूप से आर्योद्देश्यरत्न माला, व्यवहार भानु, गोकरुणानिधि आदि पुस्तकें कम मूल्य पर अधिक मात्रा में वितरित की गई।

—विद्याधर मन्त्री

—आर्यसमाज देवबन्द मे दो सिख परिवारों और सिख लड़कियों का वैदिक विधि से विवाह संस्कार सम्पन्न हुआ।

—मन्त्री

सामवेद पारायण यज्ञ

श्रीमान् आचार्य मेधार्थी स्वामी ० ए० की अध्यक्षता में अजमेर मे दि० ० से २७ अक्तूबर १९६८ तक सामवेद पारायण यज्ञ बड़े ही भक्तिभावएव शान्तिपूर्ण वातावरण मे सम्पन्न हुआ। प्रसिद्ध विद्वान सन्यासी और ऋषि भी उपस्थित थे।

आर्यवीरदल समाचार

पूर्व सूचना के अनुसार मैंने केराकत गंज व जौनपुर आर्य वीर दल का निरीक्षण २६, २७ व २८ अक्टूबर को किया। केराकत का कार्यक्रम उत्तम , तीनों जगह से ५१) ५१) 'वीर दल' मद्दे प्राप्त हुआ। केराकत में शाखायें चल रही हैं।

—देवनसिंह स० सचालक

बिहारीपुर बरेली का उत्सव

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश से मान्यता प्राप्त आर्य समाज बिहारीपुर बरेली का वार्षिकोत्सव एव नगर कीर्तन बड़ी धूमधाम से दीपावली के दिन से प्रारम्भ होकर सम्पन्न हुआ। इसमें आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् आचार्य विश्वश्रवा जी एव श्री आर्य विश्वबन्धुजी शास्त्री वरिष्ठ उप प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश सम्मिलित हुए। जनता के कथनानुसार ऐसा आयोजन १०-१२ वर्षो में प्रथम बार ही हुआ। इस सबका श्रेय श्रीमान् आर्य प्रधान आर्यसमाज बिहारीपुर को है।

—विश्वबन्धु शास्त्री

—आर्यसमाज ठठिया के प्रधान श्री कृष्णचन्द्र जी की माता का ९० वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आपका अन्त्येष्टि सस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

—मन्त्री

—श्री स्वामी अमृतानन्द जी मोजपुर खेडी (बिजनौर) की २७ अक्तूबर को मालगाडी से टकराकर मृत्यु हो गयी। आपका अन्त्येष्टि सस्कार पूर्ण वैदिक रीति से हुआ।

—मन्त्री

आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर समाचार

आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर की प्रबन्ध समिति के पास ३० आर्य महानुभावों के नवीन कुटिया निर्माण सम्बन्धी प्रार्थना पत्र आये हुए हैं। इसी कारण आश्रम ने ज्वालापुर स्टेशन के सन्निकट अपने सामने की लगभग ८ बीघा भूमि ५५०००) रुपयों मे क्रय करली हैं। प्लान तैयार कराकर नगरपालिका के पास स्वीकृति के लिये भेज दिया गया है।

आश्रम के अन्दर की सड़क को पक्का करने के लिये श्री बलराम जी ने अपनी धर्म पत्नी की स्मृति मे बनवाने के हेतु ५०००) रु० आश्रम को प्रदान किया है। यह सडक भी अब बन जावेगी।

आश्रम का महिला घाट भी बनना आरम्भ हो गया है। घाट नहर विभाग की सरक्षता मे बन रहा है।

आजकल श्री वृजबिहारी जी रुदौली (बाराबकी) वाले आश्रम में बड़ी निष्ठा से कार्यकर्त्ता प्रधान के रूप में कार्य कर रहे हैं।

स्वामी शान्तिप्रकाश जी का देहावसान

महान् दुःख है कि ३१ अक्तूबर को लोहिया कालेज चूरू (राजस्थान) में प्रात ४-१५ के ब्रह्ममुहूर्त में ;आर्य गुरुकुल एटा वाले पूज्य स्वामी शाति प्रकाश जी ने परम पिता परमात्मा की सुखद गोद मे अनन्त काल के लिये विश्राम ले लिया।

वे २७ अक्तुबर को दोपहर तीन बजे वहाँ पधारे थे। वे स्वस्थ थे, अकस्मात् ही केवल कुछ श्वास उखड़ा तथा ओ३म् का जप करते हुए उन्होंने प्राणत्याग किया। उनकी भव्य अन्त्येष्टि वैदिक रीति से हुई।

—शारदाप्रसाद राव —राजकुमार गुप्त

—आर्य गुरुकुल एटा के सन्यासी श्री स्वामी शान्तिप्रकाश जी का निधन ३१ अक्तुबर को प्रात. चूरू रामगढ़ (राजस्थान) मे हो गया। वे उच्चकोटि के महात्मा विचारक एव समाज सुधारक थे। उनकी आयु ७६ वर्ष की थी।

—ज्योतिस्वरूप

यजुर्वेद पारायण महायज्ञ

आर्य गुरुकुल यज्ञ तीर्थ एटा में २९ अक्तूबर से ४ नवम्बर तक श्री सेठ ओम् प्रकाश जी मेहरा व श्रीमती कमला देवी जी मेहरा बम्बई की ओर से अतीव समारोह पूर्वक यज्ञ सम्पन्न हुआ।

निर्वाचन

—आर्य समाज मसूरी मेरठ

प्रधान—श्री ला० आशाराम

मन्त्री—श्री शिवकुमार सिंघल

—मन्त्री

—आर्यसमाज फीरोजपुर झिरका में श्री प० आशानन्द जी ने मशीन द्वारा बगाल बिहार की बाढ़ के दृश्य दिखाये।

-मन्त्री

—३ नवम्बर को आर्यसमाज चौक लखनऊ के श्री शंकर दयाल जी की कन्या का वाग्दान हुआ।

ज्ञानकृष्ण अग्रवाल

-ऋषि मेला अजमेर के अवसर पर आर्य सन्यासी मण्डल के रिक्त स्थान पर श्री स्वामी सत्यानन्द जी वकील बलिया नियुक्त हुये हैं।

शोक संवेदना

आर्यसमाज अमेठी और आर्यसमाज रामनगर में श्री ब्रह्मचारी अखिलानन्द जी एव ठा० निरञ्जनसिंह जी उभय सदस्य के आकस्मिक देहावसान पर शोक प्रस्ताव पारित किये गये। श्री राजा रणञ्जयसिंहजी ने दोनों महानुभावों की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए कहा कि भारत का घोर दुर्भाग्य है, जो बहुत अल्प समय में उसके एक से एक नर रत्न उठते चले जा रहे हैं। —मन्त्री

—श्रीमान् ब्रह्मचारी अखिलानन्द जी का ७० वर्ष की आयु में १९ अक्तूबर सन् १९६८ को हरिया में स्वर्गवास हो गया। इससे आर्यसमाजों को महती क्षति हुई।

श्री ब्रह्मचारी अखिलानन्द जी की जन्मभूमि ग्राम पटखौली जिला जौनपुर थी। वे स्वर्गीय श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी और श्री ब्रह्मदत्त जिज्ञासु के साथ कार्य करने वाले आर्यसमाज के प्रतिभाशाली और विद्वान् नेताओं में से थे। रामायण महाभारत और उपनिषदों की कथा बड़े सुन्दर ढग से प्रस्तुत करते थे। शास्त्रार्थों मे आपके सामने विरोधी टिक नहीं पाते थे। आपका स्वास्थ्य सुन्दर और कलंव्य प्रभावशाली एव आकर्षक था। जहाँ आप आर्य सिद्धान्तों के अपूर्व पण्डित थे,वहाँ आपका चरित्र भी उच्चकोटि का था। आप आजन्म ब्रह्मचारी रहे और जन्म भर आर्यसमाज की निष्काम भाव से सेवा करते रहे। गुरुकुल अयोध्या के सस्थापक श्री स्वामी त्यागानन्द जी महाराज ने आपको ही अपने स्वर्गवास से पूर्व गुरुकुल अयोध्या का कुलपति बनाया था।

—कृष्णदत्त वैद्य आयुर्वेदालकार

ऋषि का सच्चा भक्त आर्य प्रेमी चल बसा

यह सूचना देते हुए अत्यन्त दुःख हो रहा है कि आर्यसमाज का सच्चा सेवक, ऋषि का भक्त, यज्ञ प्रेमी और कर्मशील कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री हकीम चौकमल जी आर्य प्रेमी का दिनांक ३-११-६८ रविवार को प्रात काल ८॥ बजे अजमेर में देहान्त हो गया। हकीम जी ने एक जून ६८ को ही अपने जीवन के ६२ वर्ष पूर्ण किये थे। हकीम जी आर्य जनता के आदरणीय, सबके दिलों पर छा जाने वाले प्रिय, वेदों के भक्त, जनता में वैदिक धर्म की धूम मचा देने वाले लगनशील कार्यकर्त्ता, यज्ञ प्रेमी सदा के लिये हमें अकेला छोड कर हमसे विदा हो गये। वास्तव में अजमेर नगर में आर्यसमाज को नई चेतना देने वाला उसमें प्राण फूकने वाला धन, मन, तन न्योछावर करने वाला समाज सेवी सूर्य सदा के लिये अस्त हो गया। इस असामयिक मृत्यु पर हम उनके योग्य सुपुत्र श्री मोहनलाल जी वैद्य आर्य प्रेमी एवम् उनके परिवार के साथ पूर्ण सवेदना प्रकट करते है। ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि हकीम चौकमल जी आर्य प्रेमी की आत्मा को शांति तथा उनके परिवार एवं आर्य जनों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

मन्त्री आर्यसमाज, धान मण्डी बाजार अजमेर

★एकांकी

दयालुता की चरम सीमा

प्रथम दृश्य

[जोधपुर का एक उद्यान । महर्षि दयानन्द फैजुल्ला खां के उस उद्यान में तीन-चार दिनों से ठहरे हुए हैं । राजा जसवन्तसिंह को राज धर्म पर अब से तीन दिन पूर्व महर्षि उपदेश कर चुके हैं तथा राजा के लिये यह निषिद्ध कर्म बतलाते हैं जो चाणक्य के वचन हैं—

"देशाटनं पण्डित मित्रता च वारांगना राज सभा प्रवेश" इत्यादि

एक दिन महर्षि स्वयं जोधपुर नरेश के यहाँ राज महल में प्रवेश कर क्या देखते हैं कि 'नन्ही जान' वेश्या की पालकी में स्वयं नरेश कन्धा लगा रहे हैं ।]

महर्षि दयानन्द—(स्वगत) अभागे भारत ! तेरे वह दिन कहां गये जब आर्य राजाओं (मनु, दिलीप, रघु, अज, जनक, राम आदि) का चक्रवर्ती वैदिक राज्य था । घर-घर संध्या हवन हुआ करते थे । दुःख तो नाममात्र को भी न था, कभी यह आत्मिक भौतिक विज्ञान व विद्या का केन्द्र था, विश्व गुरु था और आज तेरी यह दशा ! जिस आर्यावर्त देश पर किसी ने कभी आंख तक न उठाई थी, आज राजाओं की विलासिता व परस्पर फूट के कारण नास्तिकों क्रूर हिंसक विदेशियों के हस्तगत होकर परतन्त्रता की बेड़ी में पड़ा हुआ है । शोक है प्रभो ! आर्य सन्तति का इतना पतन ! (आंसू आ जाते हैं)

नरेश—महाराज ! कुछ कहते नहीं बन रहा है । पधारिये अपनी करतूत पर लज्जा से मरा जा रहा हूं ।

महर्षि—(रोष से) नरेश ! "सिंह जब कुत्तों के समान हैं । ये वेश्याएं कुतियाएं हैं । कुतियों से सम्बन्ध करना कमीने कुत्तों का काम है और सिंहों का नहीं" तुम लोगो के विलासिता के कारण ही आज विदेशी ६०० वर्षों से राज्य कर रहे हैं । समस्त रत्नों को लूटकर ले गये और इन विदेशी पामरों ने अनेक वैदिक धर्म ग्रन्थों को नष्ट कर डाला । कहां तक कहूं आज भ्रष्टाचार की सर्वत्र भरमार है, तुम लोगों के ही कारण आज भारत पतनोन्मुख है । कब तक अविद्यान्धकार में पड़े रहोगे ?

नरेश—पूज्य गुरुदेव महर्षि प्रवर ! आज से मैं अनन्यतम इस पाप कर्म को छोड़ता हूं । (चरणों में गिर पड़ते हैं नरेश की आँखों से गरम गरम आंसू महर्षि के चरणों पर पड़ते हैं)

महर्षि—उठो वत्स ! शेष जीवन को संभालो । अपने कर्त्तव्य का पालन करो । देखो नरेश! मैं स्वयं एक सम्पन्न परिवार का था । परमपिता, पतित-पावन, दीन दयाकर परमात्मा की कृपा से मुझे ज्ञान पिपासा हुई । देश की दयनीय दशा पर अत्यन्त शोक हुआ । २१ वर्ष की अवस्था में घर त्यागकर गुरु चरणों में विद्या समाप्ति कर अन्तः प्रेरणा व गुरु आज्ञा से समाज सुधार के कार्य में लगा हुआ हूं । यद्यपि आर्यावर्त के सुधार के लिये मुझ जैसे अनेक उपदेशकों की आवश्यकता है, परन्तु मैं यथा सामर्थ्य अपना कार्य कर रहा हूं । नरेश! आज से ही प्रतिदिन गायत्री जप किया करो और अनेक कुकर्मों पर पश्चात्ताप करो । मेरे दिये हुए उपदेश राज धर्म का पालन करो इसी में तुम्हारा कल्याण है । बोलो स्वीकार है न ।

नरेश—महाराज जो आज्ञा ।

महर्षि—नरेश ! केवल 'जो आज्ञा' कहने मात्र से काम न चलेगा पालन भी करोगे या नहीं ?

नरेश—महाराज ! आपके दिए हुए उपदेशों का आज से ही अक्षरशः पालन करूंगा ।

महर्षि अच्छा मैं चलता हूं ।

(प्रथम दृश्य समाप्त)

★

द्वितीय दृश्य

[सायं काल का समय है । नन्हीं जान' वेश्या अकेली सोच रही है कि किस प्रकार इस साधू को विष दिया जाय जो काल का ग्रास बन सके, इसने अठारह बार विष को खाकर भी निकाल दिया है, कई ने विष देकर इसे मारने का प्रयत्न किया, पर सब प्रयास विष दाताओं के विफल रहे । मैं इस साधू को मृत्यु के मुख में पहुंचाने के लिये प्रयत्न करती हूं । यदि यह सफल हो जावे तो अच्छा न सफल होगा तो किसी को कभी मुख न दिखाऊँगी और सदा के लिये सो जाऊँगी, परन्तु यह कार्य कुछ लोगों से मिलकर ही करना चाहिये तभी सफल होगा] । [सहसा कल्लू नामक व्यक्ति का प्रवेश]

कल्लू—(नन्हीं जान से) क्यों देवी आप आज किस शोक में हैं ?

नन्हीं—कुछ नहीं ।

कल्लू—कुछ कैसे उदास दिखाई दे रही हैं, क्या नरेश आप से रुष्ट है ।

नन्हीं—नहीं वह तो रुष्ट नहीं है (रोने लगती है)

कल्लू—अरे ! आप तो रो रही हैं बताइये तो सही क्या बात है ? किसके सिर पर मृत्यु नाच रही है । जिसने आपको दुखित किया ?

नन्हीं—ऐसा मत कहो तुम उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकते । वह साधू मृत्युञ्जयी है, उसने १७ बार मृत्यु को टाल दिया फिर तुम तो उसके सेवक हो उसके विषय में तुम से क्या कहूं ?

कल्लू—सच कहता हू नन्हीं जान ! नरेश की आज्ञा से उसकी सेवा नाम मात्र को कर रहा हूं अन्यथा वह मेरा परम द्वेषी है, नित्य हम लोगों के सनातन धर्म का खण्डन करता है । क्या उसी ने तुम्हें कुछ कहा है ? यदि ऐसी बात है तो मैं सब कुछ कर सकता हूं । मैं उनका सेवक जो ठहरा । उस साधू की क्या मजाल जो हमारे षड्यन्त्र को समझ सके । कहो मेरे लिये क्या आज्ञा है ?

नन्हीं-रहने भी दो क्यों डींग मारते हो ? गरजते बादल बरसते नहीं ।

कल्लू—मैं तुमसे कहता हूं और शपथ ग्रहण करता हूं कि उस साधू के नाश करने मे कुछ कसर नहीं रखूंगा । परन्तु इसका पुरस्कार !

नन्हीं—यदि तुमने यह कार्य पूरा कर दिया तो तुम्हें कुछ रुपये तो भेंट करूँगी ही, साथ ही विशेष रूप से तुम्हारे लिये अपने शरीर को समर्पण कर दूंगी ।

कल्लू—(प्रसन्नता से उछलते हुये) अच्छा ! सच कहती हो शरीर समर्पण कर दोगी ? करो तीन बार प्रतिज्ञा ।

नन्हीं—मैं प्रतिज्ञा करती हू ।

कल्लू—तो मैं भी अपना कार्य शीघ्र पूरा करता हूं (आगे बढ़कर नन्हीं जान का चुम्बन कर लेता है)

नन्हीं०-सुनो तो सही । तनिक मुझे बताओ यह कार्य तुम कैसे पूरा करोगे ?

कल्लू-कैसे करूँगा ? यह घर जाकर सोचूंगा ।

नन्हीं०—कुछ मेरा भी तो परामर्श लेते जाओ ।

कल्लू०—कहो न क्या परामर्श देती हो ?

नन्हीं०—उस साधू का जो रसोईया है उसी के द्वारा भोजन या दूध में विष मिला देना चाहिये ।

★श्री पं० धर्मदेव आर्य शास्त्री
पोलायकलां जि० शाजापुर (म०प्र०)

कल्लू०—परन्तु वह तो उस साधु का परम भक्त है, वह ऐसा कार्य क्यों कर सकेगा । यदि तुम्हारे कहने से कर सके तो बुलाऊँ ?

(सहसा जगन्नाथ का प्रवेश)

दोनों—(हर्ष के साथ) अरे ! तुम आ ही गये, हम दोनों अभी तुम्हारी याद कर रहे थे । यह तो बताओ आज इधर कैसे चले आये ?

जगन्नाथ—क्या करूं रातदिन स्वामी जी की सेवा में ही लगा रहता हूं । और मुझे भी उनकी सेवा करने में आनन्द आता हैं । ऐसे महात्मा की सेवा करना मेरे लिए बड़े सौभाग्य की बात है । वह कभी कभी मुझे भी उपदेश देते रहते हैं । वह साक्षात् दया के समुद्र हैं । उनके गुणों का कहां तक बखान करूँ कुछ कह नहीं सकता । हाँ इतना अवश्य कहता हू कि वह देवताओं की कोटि मे से एक है । आज मुझे दिन में सो लेने के कारण नींद नहीं आई अतः तुम्हें ढूंढता हुआ इधर चला आया ।

कल्लू०—क्यों कोई काम है क्या ? महाराज ने तो मुझे नहीं बुलाया ?

जगन्नाथ—काम तो कुछ नहीं परंतु यही कि सुख-दुःख की दो दो बातें करें अत. चला आया । महाराज ने तुम्हें नहीं बुलाया ।

कल्लू—भैय्या जगन्नाथ ! तुमसे एक बड़े भारी कार्य में सहायता लेना है, क्या तुम सहयोग दे सकोगे ? मुझे आशा है कि मेरे मित्र होने के नाते सब वृत्तांत को गुप्त रखोगे और मेरे कार्य में सहयोगी बनोगे । बताओ किसी से कहोगे तो नहीं ?

जगन्नाथ— नहीं कहूंगा, कहो क्या कार्य है ?

कल्लू०.—वह है साधू जी के प्राण लेने का । तुम जानते नहीं रात दिन वह सभी के धर्मो का खण्डन करता है, और हर किसी को वह कठोर शब्द बिना विचारे कह देता है । उस दिन रात्रि क

आर्य्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल.-६०

मार्गशीर्ष ३ शक १८९० मार्गशीर्ष शु० ५
(दिनांक २४ नवम्बर सन् १९६८)

Registered No. L. 60.
पता—'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष : २४९१३ तार : "आर्यमित्र

न जाने नन्हीं जान व नरेश से क्या-क्या कहा और फटकारा।

जगन्नाथ:—राम ! राम !! ऐसा पाप कर्म मैं करूं !!!

मुझ से यह कार्य न हो सकेगा, धड़कता हूं मेरा कलेजा कांप रहा है।

नन्हीं०:—जगन्नाथ ! सुनो तो सही देखो तुम और कल्लू तो उनके सेवक हो। जब वह यहां से चले जायेंगे तुम किसी और के सेवक होओगे। तुम्हें पता है, मुझे उन्होंने कुतिया आदि शब्द कहकर तिरस्कार किया है।

देखो तुम्हें ५००) रु० दूंगी मेरी बात मानकर यह कार्य शीघ्र करो।

कल्लू०:—आज तक तुम मेरी बात मानते रहे और आज उस साधु के पीछे मित्र का तिरस्कार ! या तो मेरे व नन्हीं जान के कथनानुसार कार्य करो वरना जान से हाथ धोना पड़ेगा। (छुरी दिखाता है) समझे !

जगन्नाथ:— (भय से कांपते हुए) अच्छा जैसा तुम·········।

[चला जाता है]

नन्हीं जान—अगर कहीं यह भेद खोल देगा तो हम दोनों की खैर न होगी।

अजी हां ! उसकी क्या मजाल जो वह डरपोक भेद खोल सके। और फिर मेरा तो वह दोस्त है। मैं जब चाहूं तब उसे प्रसन्न कर दूं। अच्छा समय अधिक हो रहा है। जाता हूं। नींद भी आ रही है।

नन्हीं—शोक मे नींद कहां, मुझे तो तभी सुख की नींद आवेगी जब वह साधू काल कवलित हो जावेगा।

कल्लू—और मुझे भी·······।

(दोनों जाते हैं)

[द्वितीय दृश्य समाप्त]

तृतीय दृश्य

(स्थान:—राजा भिनाय की कोठी अजमेर ! महर्षि शय्या पर लेटे हुए हैं कुछ सेवक जन आस-पास बैठे हुए हैं। दीपावली का पर्व है, मङ्गलवार का दिन) ।

एक व्यक्ति:—ओहो ! उस दुष्ट ने कितना बुरा किया। उस महा हत्यारे ने हमारे महान योगीराज सन्यासी को विष दे दिया। इन्होंने क्या बिगाड़ा था, उस नालायक धूर्त का ! मुझे मिल जाय तो नालायक को जूते मार-मार कर ही जान लूं। उस पापी का कहीं पता भी तो नहीं लगता।

द्वितीय व्यक्ति—अरे उस नीच का पता कहां से लगे महर्षि जी कुछ बताते भी तो नहीं बेचारे कैसी अलौकिक महान् आत्मा हैं, हत्यारे का भी हित चिन्तक है। १९ बार महर्षि ने प्राण घातकों को क्षमा कर दिया है। और यहां तक ही नहीं उस पापी ने जो कुछ किया सो किया, परन्तु मुझे तो यह भी सन्देह है कि उस अली मर्दान खां हकीम ने भी स्वामी जी को विष दिया है, तभी तो रोग पहले से अधिक भी बढ़ गया है।

प्रथम व्यक्ति—स्वामी जी को आबू पर्वत पर ले जाने पर डा० लक्ष्मण दास की चिकित्सा से कुछ लाभ अवश्य हुआ था, परन्तु दु:ख की बात है कि स्वामी जी की चिकित्सा प्रारम्भ से किसी कुशल चिकित्सक से न करवाई ये राजा लोग भी लापरवाह हैं, क्या कहें।

द्वितीय व्यक्ति —और एक बात यह भी तो है कि महाराज ने भी तो भूल की जब लक्ष्मणदास जी उपचार कर चले जाते और सेवकों से कह जाते कि स्वामी जी को कमरे से बाहर न ले जाना तो भी डा० लक्ष्मणदास जी के चले जाने पर स्वामी जी आग्रह कर वायु मे अपना पलग निकलवा लेते थे, जो कि उनके लिये उचित न था।

महर्षि—सब उपचार छोड़ दो अब हमारा अन्त समय है।

प्रथम व्यक्ति—पूज्य स्वामी जी ! आपका चित्त कैसा है।

महर्षि:—अच्छा है।

डा० जीवनदत्त—आप कहां हैं ?

महर्षि—ईश्वरेच्छा से। (कुछ देर बाद एक व्यक्ति से) तनिक आत्मानन्द को बुलाओ !

प्रथम व्यक्तिः—महाराज यह आ गये हैं।

महर्षि—आत्मानन्द क्या चाहते हो ?

आत्मानन्द जी:—ईश्वर से यही चाहते हैं, कि आप अच्छे हो जांय।

महर्षि:—और गोपालगिरि तुम ?

गोपालगिरि:—महाराज ! मैं भी आपके स्वास्थ्य की कामना करता हूं।

महर्षि —"यह देह है इसका क्या अच्छा होना" । (आत्मानन्द व गोपाल-गिर के सिर पर हाथ रखते हुए) आत्मानन्द व गोपाल ! तुम दोनों अच्छे प्रकार से रहना।

प्रथम व्यक्ति—महाराज आपका चित्त कैसा है ?

महर्षि—अच्छा है। तेज और अन्धकार का भाव है। (कुछ देर रुक कर) जो लोग हमारे साथ हैं तथा दूरस्थ स्थानों से आये हैं उन्हें बुलाकर हमारे पीछे खड़ा कर दो। सामने कोई खड़ा न हो। चारों ओर के द्वार खोल दो। आज कौन-सा पक्ष क्या तिथि और क्या वार है।

गुरुदत्त—आज कृष्ण पक्ष का अन्त, अमावस्या, और मङ्गलवार है।

महर्षि—(कुछ क्षण रुककर वेदमन्त्रों का गान, ईश्वरोपासना, व गायत्री मन्त्र का पाठ करते हुए) हे दयामय ! सर्व शक्तिमन् ईश्वर ! तेरी यही इच्छा है, तेरी यही इच्छा है, तेरी इच्छा पूर्ण हो, आहा !!! तैंने अच्छी लीला की !!

[यह वाक्य कहकर सदा के लिये सो जाते हैं

सर्व जन—(रोने लगते हैं)

पाठक गण ! आप आद्योपान्त महर्षि का जीवन चरित्र श्रद्धा व विश्वास से पढ़ जाइये आपको अनेक स्थानों पर [illegible] के उदाहरण मिलेंगे। अधिक क्या भी क्योंकि जगन्नाथ महा हत्यारे को ५००) रु० की थैली भेंटकर उसे नैपाल भाग जाने को कहा, यही महर्षि की दयालुता की चरमसीमा है। महर्षि कई बार करुण दृश्य देखकर रो पड़ते थे। महर्षि के जीवन से शिक्षा लेकर हमको अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिये। आज आर्यों में प्राय: खण्डन-मण्डन शास्त्रार्थ व वैदिक धर्म प्रचार, शुद्धि प्रचार कम होता जा रहा है। अतः हमको प्रति दिन अधिक से अधिक वैदिक ग्रंथों का स्वाध्याय करते हुए महर्षि स्वप्न 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' पूरा करना चाहिये इसी में मानव जाति का कल्याण है।

★

स्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के लिये अध्यक्षीय आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ मे कृष्णगोपाल शर्मा द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित

मित्रस्याऽहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे। - वेद

लखनऊ रविवार मार्गशीर्ष १० शक १८९०, मार्गशीर्ष शु० १२ वि० सं० २०२५. दिनाङ्क १ दिसम्बर १९६८ ई०

परमेश्वर की अमृत वाणी-

मुक्ति के लिए साधनाशील बन, उपासना कर और आनन्द को प्राप्त हो

•

ओ३म् युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तं परि तस्थुषः।
रोचन्ते रोचना दिवि ॥

[ऋ० १।६।१]

(युञ्जन्ति) मुक्ति का उत्तम साधन उपासना है, इसलिये जो विद्वान् लोग हैं, वे सब जगत् और सब मनुष्यों के हृदयों में व्याप्त ईश्वर को उपासना रीति से अपने आत्मा के साथ युक्त करते हैं। वह ईश्वर कैसा है कि (चरन्तम्) अर्थात् सबका जानने वाला (अरुषम) हिंसादि दोष रहित, कृपा का समुद्र (ब्रध्नम्) सब आनन्दों का बढ़ाने वाला सब रीति से बड़ा है। इसीसे (रोचनाः) अर्थात् उपासकों के आत्मा सब अविद्यादि दोषों के अन्धकार से छूट के (दिवि) आत्माओं को प्रकाशित करने वाले परमेश्वर में प्रकाशमय होकर (रोचन्ते) प्रकाशित रहते हैं।

मानव जीवन का एक विशिष्ट लक्ष्य है, और वह है मुक्ति। परमेश्वर ने जब मनुष्य को सर्वश्रेष्ठ प्राणी बनाया है, तो इसमें कोई विशेष प्रयोजन है। मानव योनि ही वह सर्वोत्तम गृह है–जहाँ भोगात्मक वृत्ति को तिलांजलि देकर योग की ओर अग्रसर हुआ जाता है। पशुत्व को छोड़कर देवत्व को धारण किया जाता है, और उपासना के निमित्त पावन साधनामय पथ पर चल कर चतुर्थी मोक्षावस्था प्राप्त कर आनन्द पान किया जाता है।

विद्वान् ज्ञान रश्मियों से स्वतः को ज्योतित कर जीवन के उद्देश्य के प्रति सतत जागरूक रह कर उस परमेश्वर से अपना सम्बन्ध जोड़ते हैं, जो सर्वज्ञ है, सर्व नियंता है, आनन्दप्रद और अविद्या के अन्धकार को दूर कर ज्ञान का प्रकाश देने वाला है।

यही कारण है कि परमेश्वर से युक्त हो कर ऐसी दिव्य आत्मायें सतत ज्योतिर्मय होकर संसार में ज्ञान की ज्योति का प्रसार करती हैं, और अनार्यों को आर्यत्व में दीक्षित कर 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' की साध को सिद्ध करती हैं।

—'बसन्त'

•

वर्ष | अङ्क
७० | ४२

वार्षिक मूल्य १०)
छमाही मूल्य ६)
विदेश में २०)
एक प्रति २५ पै०

इस अंक में पढ़िए !

१–अध्यात्म सुधा	२	६–सामयिक समस्याएं	७-८-९
२–सम्पादकीय	३	७–आर्यकुमार संघ, देश-विदेश	१०
३–सभा तथा आर्य सूचनायें	४	८–वनिता-विवेक	११
४–वेद व्याख्या	५	९–आर्यजगत्	१२
५–काव्य-कानन	६	–कहानी-कुञ्ज	१३-१६

सम्पादक—

—प्रेमचन्द्र शर्मा

—सभा मन्त्री

आत्मा और परमात्मा का भेद एवं निराकार परमात्मा के दिव्य दर्शन की झांकी

★ जियालाल कुलश्रेष्ठ आर्य
सीपरी बाजार झांसी

साधारणतया अनेक लोग निराकार परमात्मा को सच्चे हृदय से यथार्थ रूप में मानने के लिए इस कारण सहमत एवं उद्यत नहीं होते कि वह उन्हें कहीं देखने को तो मिलता ही नहीं। जब वह निराकार और निरवयव है, सुतराम ध्यान में भी नहीं आता, तो इतना विशाल ब्रह्माण्ड वह कैसे बना सका होगा और किस प्रकार उसे नियम में रखता होगा। इसका विश्वास उन्हें निश्चयात्मक और सत्य रूप से नहीं होता। वह किसी अंश में भी उनकी सीमित बुद्धि में नहीं आता। इसी कारण करोड़ों श्रद्धालु व्यक्ति परमात्मा के अवतारों को मानने के लिये विवश हैं और उसे मनुष्य रूप में ही देखना चाहते हैं जो किसी भी युग में अन्य मनुष्यों की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली एवं बुद्धि और ज्ञान में श्रेष्ठतम रहा हो। उस में कुछ ईश्वरीय गुण भी विशेष हों और जो संसार में पापी, दुष्ट, अत्याचारी राक्षसों का नाश एवं धर्मात्मा पुरुषों का संरक्षण कर धर्म की रक्षा कर सके। ऐसे ही पुरुष को वे ईश्वर मान लेते हैं, और उसकी पूजा करना आरम्भ कर देते हैं, परन्तु वे यह नहीं जानते और न जानने का प्रयत्न ही करते है, कि निराकार अर्थात् अदृश्य शक्तियां जड़ और चेतन दोनों ही, किसी भी मनुष्य से कहीं अधिक शक्तिशालिनी होती हैं, और उनके कार्य भी अत्यन्त महान् होते हैं। यदि वे उन्हें बुद्धि द्वारा यथार्थ रूप से समझलें, जो सम्भव भी है, तो कदाचित वे निराकार परमात्मा उसकी अनंत शक्ति, सामर्थ्य एवं पराक्रम में विश्वास भी करने लगें जो मनुष्यों में कभी और किसी प्रकार सम्भव नहीं। इसी तथ्य को ध्यान में रख कर उन्हें निराकार परमात्मा के सत्य ज्ञान से किसी अंश में ही सरल रूप से अवगत कराने का प्रयास इस लेख में किया गया है। अस्तु, यह लेख उसी निराकार परमात्मा की सर्व शक्तिमत्ता एवं सर्व ज्ञाता को सरल रूप में प्रमाणित करने तथा उन्हें परमात्मा के दिव्य दर्शन की झांकी मात्र कराने के लिए लिखा गया है। वेद, शास्त्र और उपनिषदों का तो अध्ययन लगभग सहस्रों में एक भी नहीं करता और न उन्हें सम्पन्न रूपेण समझ ही सकता है। अस्तु, निराकार ईश्वर में उनकी रुचि एवं सत्य आस्था हो ही नहीं सकती। इस लेख में उन्हें इसी हेतु वेद, शास्त्र, एवं उपनिषदों के प्रमाण न देकर केवल साधारण बुद्धि एवं सुबोध प्रमाणों द्वारा ही परमात्मा के अस्तित्व, सर्व व्यापकता, सर्वज्ञता, एवं सर्व शक्ति मत्ता का कुछ अंशों मे ही परिचय कराना है, जिससे वे अज्ञानान्धकार से निकल कर ज्ञानरूपी प्रकाश मे आ सकें और उस सत्य स्वरूप निराकार परमात्मा के दिव्य दर्शन एवं उस पर विश्वास भी केवल साधारण सुबुद्धि एवं सत्य ज्ञान द्वारा ही कर सकें। यहाँ यह कह देना भी अनुचित न होगा कि इस महान् ब्रह्मांड के सभी कार्य परमात्मा के बनाये विधान द्वारा कुछ अपरिवर्तनशील नियमों के आधार पर ही चल रहे हैं। जिन्हें संसार के सभी विद्वजन एवं वैज्ञानिक एक मत हो कर मानने को उद्यत हैं। अस्तु नियमों को मानना और नियामक को न मानना केवल बुद्धि हीनता का ही द्योतक होगा, ठीक उसी

प्रकार जैसे कि किसी ग्रामीण अनपढ़ का घड़ी के कार्यों को देखकर उसके कौशल को तो स्वीकार करना परन्तु उसके निर्माता को न मानना। घड़ी में उसके निर्माता ने यन्त्र के अवयवों को इस प्रकार निर्मित कर जमाया है, कि वह नित्य निश्चित समय पर बिना हिलाये डुलाये ही, सैकड, मिनट, घण्टा, एवं तिथि इत्यादि ठीक-ठीक बताती है। हम उसके बताये हुए समय को ठीक मानते हैं, और तदनुसार अपने अनेक कार्यों का सम्पादन भी करते, जिनमें समय सम्बन्धी कोई भूल भी नहीं होती। अस्तु, उसके निर्माता को मान लेना ही युक्ति युक्त एवं बुद्धिमत्ता है। घड़ी अपने आप न बन सकती है, और न समय ही बता सकती है। उसका बनाने वाला अवश्य है, और हम उसे अन्ततोगत्वा मान लेने को भी उद्यत हैं, यद्यपि हमने उसे देखा कभी नहीं है। ठीक उसी प्रकार हमें परमात्मा को भी मान लेना चाहिये, जिसने इस महान् ब्रह्माण्ड की रचना की है जिसमें घड़ी के समान ही दिन-रात, ऋतु परिवर्तन, सूर्य, चन्द्र एवं अन्य नक्षत्रों का नियमानुकूल सदैव घूमते रहना, समुद्र में ज्वार और भाटों का यथा समय आना समय पर वर्षा का होना तथा हवाओं का चलना इत्यादि। हममें से किसी ने उसे नहीं देखा है। क्योंकि निराकार होने के कारण वह इन भौतिक नेत्रों से देखा ही नहीं जा सकता। वह तो केवल ज्ञान चक्षुओं से यम नियमों के पालन एवं योगाभ्यास द्वारा ही अनुभव किया जा सकता है।

स्मरण रहे यह विषय अत्यन्त गम्भीर, जटिल एवं विचारणीय है, अस्तु इस लेख को विशेष ध्यानपूर्वक एवं एकाग्र चित्त होकर पढ़ना आवश्यक है। परमात्मा के दिव्य दर्शन की झांकी के लिये तो पाठकों को अदृश्य जगत् में आना अनिवार्य होगा। आइये, अब हम इस अदृश्य जगत् में प्रवेश करें। इसमे सभी प्रकार के जड़,-चेतन, पंचमहाभूत, सूक्ष्म शरीर, कारण शरीर, आत्मा, परमात्मा एवं अन्य तत्व भी हैं, जिनमें से केवल कुछ पर ही यहाँ उपरोक्त विषय के सम्बन्ध में विचार करना है। इस अदृश्य जगत् के अस्तित्व को सरलता से समझने के लिये उसे दो भागों में विभक्त कर लिया गया है, जड़ और चेतन।

(१) अदृश्य जड़ जगत् में तो सम्मिलित हैं—आकाश, वायु, विद्युत, तेज, आकर्षण शक्ति, अणुशक्ति, चुम्बक शक्ति, ज्ञानेन्द्रियां मन, चित्त, अन्तकरण स्मरण शक्ति, संकल्प शक्ति, प्रतिभा, प्रज्ञा इत्यादि।

(२) अदृश्य चेतन जगत् में—केवल आत्मा और परमात्मा।

जड़ जगत् में अनेकों दृश्य एवं अदृश्य महान् शक्तियां हैं जो इस विश्व में बड़े-बड़े महान् कार्य कर रही हैं, परन्तु वे सब चेतन परमात्मा की दी हुई हैं और उसी की प्रेरणा तथा शक्ति से वे कार्य कर रही हैं। इस लेख में मुझे केवल कुछ अदृश्य शक्तियों का ही दिग्दर्शन कराना है, जैसे आकर्षण शक्ति, विद्युत शक्ति, चुम्बक शक्ति इत्यादि। हम इन अदृश्य शक्तियों को आँखों से देख तो नहीं सकते परन्तु उनके द्वारा होते हुए महान् कार्यों को अवश्य देख सकते हैं और उन्हीं को देखकर उन शक्तियों के अस्तित्व को बुद्धि से समझकर मान भी लेते हैं। प्रत्येक अदृश्य शक्ति को हम उसके गुण, धर्म और कर्म से ही जान सकते हैं, अन्यथा नहीं। दृश्य महान् शक्तियों जैसे सूर्य, चन्द्र इत्यादि के विषय में यहां विशेष लिखने की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती, क्योंकि उन्हें तो हम नित्य ही देखते हैं और उनके महान् कार्यों को भी। सूर्य के बिना तो जगत् में मानव, पशु-पक्षी, वनस्पति इत्यादि जीवधारियों का जीवन ही सम्भव नहीं। वायु को हम देख तो नहीं सकते, परन्तु जब प्रचण्ड वायु वेग (आंधी) से बड़े-बड़े वृक्ष, छप्पर एवं मकान इत्यादि गिरते टूटते देखते हैं, समुद्र में भी उसी कारण भयंकर तूफान आ जाने से उत्तुङ्ग लहरों द्वारा बड़े-बड़े विशालकाय जलयानों को डगमगाते और डूबते देखते है, कभी-कभी तो इन विनाशकारी उत्तुङ्ग लहरों के प्रबल वेग से निकटस्थ रेलगाड़ियां भी उलट-पलट होकर रेलवे लाइन सहित बह जाती हैं, छोटे-छोटे द्वीप मैदान बन जाते हैं, रेलवे स्टेशन और आस-पास के गांव विध्वंस हो जाते हैं, सहस्रों व्यक्तियों एवं पशुओं इत्यादि की मृत्यु हो जाती है। ऐसी ही एक घटना अभी कुछ वर्ष पूर्व ता० २३-१२-६४ को रामेश्वरम् द्वीप तथा धनुष कोटि मे घटी थी, जो इस अदृश्य शक्ति की प्रचण्डता एवं प्रबलता का प्रत्यक्ष प्रमाण है। इस प्रकार की घटनाओं से ही वायु की अपार शक्ति का ज्ञान हमें हो जाता है। वायु से ही सभी प्राणी सांस लेते हैं और जीवित रहते हैं। वायु से अग्नि भी प्रज्वलित होती है। अस्तु, इस अदृश्य महान् शक्ति का अस्तित्व

(शेष पृष्ठ १५ कालम ४ पर)

ओ३म् येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढ़ा येन स्व स्तभितं येन नाकः।
योऽअन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥६॥

यजुर्वेद अध्याय ३२

जिसने द्युलोक को तेजोमय किया तथा पृथिवी को दृढ़ किया, जिसने आदित्य मण्डल धारण किया हुआ है जिसने मोक्ष को धारण किया हुआ है, जो अन्तरिक्ष मे लोकलोकान्तरो का निर्माण करने वाला है, उस प्रजापति परमेश्वर की हम भक्ति-भाव से उपासना करें।

लखनऊ—रविवार मार्गशीर्ष १० शक १८९०, मार्गशीर्ष शु० १२ वि० २०२५
१ दिसम्बर सन् १९६८ ई०, दयानन्दाब्द १४४, सृष्टि संवत १,९७,२९,४९ ०६९

वयम् भगवन्तः स्याम

हैदराबाद दक्षिण मे सार्वदेशिक आर्य महा सम्मेलन जो सम्पन्न हुआ है, उसकी प्रशंसा आर्य जगत् में सर्वत्र हो रही है। विभिन्न समाचार-पत्रो मे जो आर्य समाज मे सम्बन्धित नहीं है, इस महा सम्मेलन की चर्चा हुई है। आर्य समाज एक विशाल संगठन है। आर्य समाजें केवल भारत मे ही नहीं वरन् विदेशो मे भी हैं, और सार्वदेशिक स्तर पर महा सम्मेलन का आयोजन होने के कारण देश-विदेश के समस्त भागों से आर्यों का एकत्रीकरण होना स्वाभाविक ही है। जब संगठन की भावना से सहस्रों नर-नारी किसी स्थान पर एकत्रित हों तो वहा पर उत्साह का सागर हिलोरें लेगा ही, इसलिये जो विशाल शोभा-यात्रा निकली वह हैदराबाद नगर के इतिहास मे अद्वितीय थी। सहस्रों आर्य बन्धुओं ने विभिन्न सम्मेलनों में भाग लिया और अनेक महत्वपूर्ण प्रस्ताव पास किये। आर्य जगत् के मूर्धन्य संन्यासियों और नेताओं ने अपने तेजस्वी विचार व्यक्त किये। हैदराबाद का वातावरण वेद की पवित्र ऋचाओं और दिव्य विचारों से सुशोभित होता रहा। आर्य प्रतिनिधि सभा हैदराबाद के तपःपूत प० नरेन्द्र जी के सुप्रबन्ध की सर्वतः धूम रही, और इनके सहयोगियों के सुप्रयास सफल रहे। वे निस्सन्देह आर्य जगत् की बधाई पात्र के हैं।

जिन आर्य बन्धुओं ने इस महा सम्मेलन मे भाग लिया है, उनके अन्तःकरण में इसकी स्मृति सदैव सजीव रहेगी। आर्य समाज की शक्ति संगठन और सेवाव के कारण उनमे अपरिमित उत्साह का सचार हुआ है। अब आवश्यकता इस बात की है, कि यह उत्साह निरन्तर बना रहे, यह प्रेम और संगठन की भावना सतत् विकसित होती रहे। इस के लिए आवश्यक है कि केवल बाह्याङ्ग को ही नहीं वरन् अन्तराङ्ग की ओर भी ध्यान दिया जाये।

प्रत्येक वस्तु के दो अङ्ग होते हैं, एक बाह्याङ्ग और एक अन्तराङ्ग। आज विश्व की स्थिति मे जो बिगाड़ है वह केवल इस कारण है कि बाह्याङ्ग को तो प्रमुखता दी जाती है, किन्तु अन्तराङ्ग की उपेक्षा की जाती है, और इसी लिये पूर्ण उन्नति नहीं हो पाती। स्वस्तिमय जीवन के लिए भौतिक और आध्यात्मिक दोनों प्रकार की उन्नति होना आवश्यक है। आज संसार केवल बाह्य प्रदर्शन की ओर लगा हुआ है, अन्तःकरण की पुष्टि की ओर उसका ध्यान नहीं है। विश्व प्रवाह मे बहते हुए और नकल की प्रवृत्ति होने के कारण ससार के मानव केवल बाह्य प्रदर्शनो मे मस्त हो रहे हैं। मनुष्य से निर्मित समाजों पर भी इसका प्रभाव पड़ना अनिवार्य है, जिसके फलस्वरूप धार्मिक जगत् मे भी केवल वाह्याडम्बरों पर अधिक बल दिया जाता है, और अन्तराङ्ग की घोर उपेक्षा की जाती है। आज का मानव इसीलिए ऊपर से भले ही सूटेड बूटेड और फैशन मास्टर्ड हो पर भीतर पाप से गल-सड़ रहा है। धार्मिक जगत् बड़े-बड़े प्रदर्शन करता है, जलूस निकालता है, सम्मेलन करता है, प्रस्ताव पास करता है, लम्बे-चौड़े भाषणों का आयोजन करता है, और विश्वास करता है कि बहुत बड़ा धर्म प्रचार हो गया और मनुष्य धर्म की ओर झुक गये। किसी भी सार्वजनिक कार्य क्रम की सफलता का अनुमान हम उस भीड़ से लगाते हैं जो वहाँ पर एकत्रित होती है, और उच्च स्वर से हमारे साथ जयघोष करती है। सत्य तो केवल यह है कि चार दिन की चांदनी और फिर वही अंधेरी रात होती है। जनता इन सम्मेलनो और उत्सवों को केवल एक तमाशा समझती है, और नित्य नये खेल देखने मे उसे क्षणिक रस ही आता है, और फलस्वरूप रोग बढ़ता जा रहा है, ज्यों ज्यों उसकी चिकित्सा हो रही है।

आर्य समाज भी इसका अपवाद नहीं है। हम सर्वत्र देखते हैं कि उत्सवों और सम्मेलनो मे बाह्य सजावट पर अधिक बल दिया जाता है। सुन्दर सुसज्जित भव्य मण्डपो मे जो बिजली की चकाचौंध से सबको आकृष्ट करते हैं उनमे विचार व्यक्त करने वालो का अधिकतर ध्यान इस ओर रहता है कि जनता को कैसे प्रसन्न रक्खा जाये और तालियों की गड़गड़ाहट कैसे करवाई जाये। हमारे भजनोपदेशक अब अकबर बीरबल की कहानियां और मनोरंजक चुटकले सुनाते हैं। उपदेशक गण ऋषि दयानन्द का कोरा गुणगान करने मे ही अपने कौशल की इतिश्री समझते हैं और विद्वत मन्डल से हम केवल रटे-रटाये व्याख्यान सुनते हैं। सारे मन्डप मे दो चार अथवा एक दो ईसाई मुसलमान भले ही आते हों किन्तु हम कुरान और बाइबल की धज्जियां उड़ाकर केवल अपने उपस्थित वर्ग का मनोरञ्जन करते हैं। हमारे कुछ नेताओं ने केवल राजनीति को ही सर्वस्व समझ रखा है और सम्भवतः आर्यसमाज को हिन्दू समाज समझकर केवल सम्प्रदायक दृष्टिकोण से कुछ चर्चा करना ही अपने लक्ष्य की सिद्धि मान रखा है। वेद प्रचार मरता जा रहा है। वेद की ऋचाओं को गुन्जाने वाले निरन्तर कम होते जा रहे हैं। वेद व्याख्या करनेवाले एक तो यों ही कम है तिस पर उनकी घोर उपेक्षा है। हमने प्रत्यक्ष इस बात का अनुभव किया है कि वेद-व्याख्या करने वालों को कार्यक्रम के आरम्भ मे जब अल्प मात्रा में जनता एकत्रित होती है, मंच पर बैठा दिया जाता है। और चुटकले सुनाने वालों या राजनीति की गर्मागर्म चर्चा करने वालों की अपेक्षा अल्प दक्षिणा दी जाती है। केवल आध्यात्मिक चर्चा करने वालों को दुबारा निमन्त्रण भी कठिनता से मिलता है। ऐसी परिस्थितियों में वेद का पठन पाठन, श्रवण-श्रवण कौन करे व करावेगा। जब अध्यात्मवाद का प्रचार नहीं किया जायेगा तो जनता में ईश्वर के प्रति कैसे आस्था उत्पन्न होगी और उनके जीवन मे कैसे मानवीय धर्म का उदय होगा। जब धर्म को हम तिलांजलि दे देंगे, जब मूल को ही नष्ट कर देंगे तो संसार का उपकार कैसे होगा?

ऊपर लिखी हुई बातें भले ही आर्य जगत के विद्वानो और नेताओं को कटु लगें परन्तु हैं ये नितान्त सत्य। सत्य कटु होता है। औषधि भी कटु होती है किन्तु उपचार मे उसे देना आवश्यक हो जाता है। सत्यप्रिय और सत्यवादी होने के कारण ही हमे इस सत्य की ओर ध्यान आकृष्ट करना पड़ रहा है। पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे भी स्पष्ट शब्दो मे इस तथ्य की ओर संकेत किया है उनका भाषण हम इस अङ्क मे प्रकाशित कर रहे हैं और पाठक-पाठिकाओं से अनुरोध करते हैं कि वे इसे आद्योपान्त पढ़ें, अनेक बार पढ़ें और गम्भीरता से विचार करें। यह नितान्त सत्य है कि जिस दिन से हम प्रभु के रंग मे रंग जायेंगे उसी दिन से हमारे जीवनो मे एक विलक्षण कारी परिवर्तन दिखाई देने लगेगा। परस्पर के वाद विवाद समाप्त हो जायेंगे और हमारे जीवन का सौरभ और सुगन्धि दूसरों को आकृष्ट करेंगे। जीवन दीप से जीवन दीप जलेंगे और ज्ञान ज्योति से जगत जगमगा उठेगा। अतएव अध्यात्मवाद के प्रसार के लिये हम जी-जान से जुट जाएं और उपेक्षित अन्तराङ्ग की ओर ध्यान दें। हमारे मंच वेद की पवित्र ऋचाओ से गूंज उठें। ईश्वर और धर्म की चर्चाएं हों। राष्ट्रिय सम्मेलन भी वेद पर आधारित किए जाएं और एक शुद्ध वैदिक दृष्टिकोण का प्रतिपादन करवाया जाये। पर यह सब तभी होगा जब हम इसकी ओर अग्रसर होंगे।

वेद माता ने कितने सुन्दर शब्दो मे हमे कहा है—"वयम् भगवन्तः स्याम" अर्थात् हम स्वयं भगवान् बनें। 'भग एव भगवान्' जो भगों से युक्त है वह भगवान् है। कर्मशीलता ही भगों की दात्री है। वेद ने कहा है—

'अयं मे हस्तो भगवानयं मे भगवत्तरः।
अयं मे विश्व भेषोज्य शिवाभिमर्शन ॥'

अर्थात् मेरे हाथ भगवान है, भगवान से भी बढ़कर हैं हाथ कर्म के प्रतीक हैं। कर्म ही विश्व की औषधि है। सुकर्म का सुस्पर्श ही विश्व कल्याण करने वाला है। हम 'आर्यमित्र' के आगामी अङ्क मे इस विषय पर विस्तार से एक लेख दे रहे हैं ताकि आर्यजगत् के आर्य स्वयम् भगों से युक्त होकर ऋषि दयानन्द के मन्तव्यों को ठीक दिशा में चलकर पूर्ण कर सकें और इस आर्य महा सम्मेलन से प्रभावित आर्यों में उत्साह निरन्तर बना रहे और तप त्याग व प्रेम से उनके हृदय पूरित रहें।

सम्पादकीय टिप्पणियाँ

बरसाती मेंढक

वेद की विद्या का जब से इस देश मे लोप हुआ अनेक मत मतान्तरों ने अपने पग यहां पर जमाए और अविद्या के कूप मे पड़े हुए जनमानस को अन्धविश्वास के चक्कर मे डालकर उनकी आत्मिक उन्नति को कुण्ठित कर दिया। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने इस घोर असत्य की नींव को पकड़ा और एकाकी ही पाखण्ड खण्डिनी पताका लहराई। जब तक आर्यसमाज के प्रचार का बोलबाला रहा, पाखण्डी अपने बिलों मे दुम दबाये पड़े रहे, पर इधर वेद प्रचार मे जो न्यूनता आ गई है उसके कारण अब पाखण्डियों ने पुनः बिलों से निकल कर सिर उठाने प्रारम्भ कर दिए है। प्रतिदिन कहीं न कहीं से कोई समाचार इन पाखण्डों का सुनने को मिलता रहता हैं। सबसे नवीनतम इस सम्बन्ध मे कलयुग मे अवतार प्राप्ति का है। रुड़की से एक विज्ञप्ति प्रकाशित हुई है, जिसमे श्री भगवान् नारायण वेंकटेश्वर के मन्दिर की सर्प घटना को लेकर पाखण्ड का तमाशा खड़ा किया जा रहा है। भोले भाले अशिक्षित लोगो को यह कहकर बहकाया जा रहा है कि मन्दिर मे एक सर्प प्रविष्ट हुआ, पुजारीगण उसे बाहर निकालने में असमर्थ रहे। सर्प ने वृद्ध ब्राह्मण का रूप धारण किया और कहा कि मैं धरती पर पुनः जन्म लेने वाला हू, अपने भक्तों को सुखी रखूंगा और दुष्टों का दमन करूंगा। इस पाखण्ड को फैलाने की प्रेरणा इस रूप में दी गई है कि जो इस घटना का विवरण ५० व्यक्तियों मे प्रचार-पत्र के रूप में बांटेंगे उनकी मनोकामना २५ दिन के अन्दर पूर्ण होगी और इसे असत्य मानने वाले २५ दिन के भीतर दुःख दर्द और क्षति उठावेंगे। जिन्होंने इस घटना का प्रचार किया उनके हजारों रुपये के लाभ की चर्चा भी की गई है, और झूठा प्रचार करने वालों के पुत्रों के निधन की भी चर्चा की गई

तिरुपती भगवान् श्री बाला जी के अवतार प्राप्ति का हम खुल्लम खुल्ला खण्डन करते हैं। एक ओर लोभ और दूसरी ओर भय दिखाकर अपना उल्लू सीधा करने की यह जो योजना बनाई गई है, उसके मूल में अविद्या के कारण परम्परा से चले आ रहे अन्ध विश्वास से विद्याविहीनों को उल्लू बनाना है। सम्भवतः मन्दिर के पुजारियों का चढ़ावा कम हो गया है, और उसकी पूर्ति के लिये यह नया पाखण्ड रचा गया है।

इस पाखण्ड की पुनरावृत्ति अन्य नगरों मे भी हो सकती है। मनुष्य जीवन के लोभ और भय दो ऐसे पहलू हैं जिनको छूकर स्वार्थ की सिद्धि की जा सकती है। आर्यसमाजों को चाहिए कि जहां-जहां पर ऐसे बरसाती मेंढक टर-टर करें उन्हें शान्त करने के लिए उन्हें सार्वजनिक रूप से ललकारा जाये। और शास्त्रार्थ की चुनौती दी जाये। प्रत्युत्तर में विज्ञप्तियां बांट कर जनता को सचेत किया जाये और इस प्रकार सर्वत्र पाखण्ड-खण्डिनी पताकायें लहरा कर जनता को डसने वाले इन विषैले नागों का सिर कुचला जाये।

★

दयानन्द, सावरकर का मार्ग देशरक्षा का एकमात्र उपाय

★ श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री, संसद-सदस्य
प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

आर्य नेता संसदसदस्य श्री पं० प्रकाशवीर शास्त्री ने हैदराबाद मे कहा कि इस समय राष्ट्र की सुरक्षा का एकमात्र उपाय स्वामी दयानन्द सरस्वती एव वीर सावरकर द्वारा प्रतिपादित मार्ग ही है।

श्री शास्त्री यहां सार्वदेशिक आर्य महा सम्मेलन के राष्ट्र सुरक्षा सम्मेलन का उद्घाटन कर रहे थे।

देश के सैनिकीकरण की मांग पर जोर देते हुये आपने कहा कि जब तक हम देश के प्रत्येक युवक को सैनिक शिक्षा देना अनिवार्य नहीं करेंगे तथा अणुबम आदि आधुनिकतम शस्त्रास्त्रों से सम्पन्न नहीं होंगे देश की सुरक्षा असम्भव है।

श्री शास्त्री जी ने कहा कि पाकिस्तान व चीन तेजी से भारत पर आक्रमण की तैयारियों में संलग्न हैं, अतः ऐसे संकट के समय सरकार को दूरदर्शिता से काम लेकर देश मे [illegible] तत्त्वो पर कड़ी नजर रखनी चाहिये तथा सुरक्षा की तैयारियां युद्ध स्तर पर प्रारम्भ करनी चाहियें।

उन्होंने कहा कि पाकिस्तान ने बाड़मेर व अन्य क्षेत्रों मे जो तीस-तीस मील तक का क्षेत्र हिन्दुओं से खाली करा लिया है उससे यह [illegible] जाता है कि पाकिस्तान गम्भीर आक्रमण की तैयारियो में संलग्न है। भारत सरकार को भी अपनी सीमाओं की सुरक्षा के लिये सीमावर्ती क्षेत्रों में बसने वाले व्यक्तियों से क्षेत्र खाली करा लेना चाहिये। अन्यथा वे पाक समर्थक तत्त्व आक्रमण के समय खुलकर पाकिस्तान का साथ देंगे। तथा देश मे ही आन्तरिक अशांति उत्पन्न कर देंगे।

श्री शास्त्री ने आरोप लगाया कि एक ओर राजस्थान व पंजाब की पाक से लगने वाली सीमा पर पाक समर्थक तत्त्व सक्रिय हैं, तो दूसरी ओर चीन की सीमा के क्षेत्र से चीन समर्थक कम्युनिस्ट तोड़फोड़ की कार्यवाहियों मे संलग्न हैं। सरकार को ऐसे तत्त्वों के विरुद्ध भारर्कता से कायदे ही करनी चाहिये।

पं. भगवद्दत्त का निधन!

आर्यसमाज की महान् क्षति !!

आर्यजगत् में यह समाचार अत्यन्त दुःख से पढ़ा जायगा कि वेदों के महान् विद्वान् प्रकाण्ड पण्डित श्री पं० भगवद्दत्त जी रिसर्चस्कालर दिल्ली का २२ नवम्बर को देहान्त हो गया !

आप गत ६ सप्ताह से बीमार थे। आपका अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यनुसार हुआ। आपकी शव यात्रा में दिल्ली के सैकड़ों आर्य बन्धु सम्मिलित थे।

हैदराबाद आर्यमहासम्मेलन का गोरक्षा सम्मेलन —एक स्पष्टीकरण

आर्य बन्धुओं की जानकारी के लिए सूचित किया जाता है कि हैदराबाद आर्य महासम्मेलन के खुले अधिवेशन मे गोरक्षा सत्याग्रह का कोई प्रस्ताव पारित नहीं हुआ। वस्तु स्थिति इस प्रकार है—

आर्य महा सम्मेलन के अवसर पर कुछ अवान्तर सम्मेलन भी रखे जाते हैं, जिनके पृथक्-पृथक् प्रधान होते है पर आर्य महासम्मेलन का प्रधान समस्त प्रान्तों की प्रतिनिधि सभाओं की सम्मति लेकर सार्वदेशिक सभा नियत करती है। इन अवान्तर सम्मेलनों मे वेद सम्मेलन महिला सम्मेलन, गोरक्षा सम्मेलन आदि थे। इन सम्मेलनो में उन उन प्रधानों के सभापतित्व में पारित प्रस्ताव आर्य महा सम्मेलन के प्रस्ताव तब तक नहीं कह सकते जब तक वे प्रस्ताव खुले अधिवेशन में पास न किये जावें।

गोरक्षा सम्मेलन भी अवान्तर सम्मेलन था। श्री निरंजनदेव तीर्थ (शङ्कराचार्य) के सभापतित्व में यह सम्मेलन हुआ। श्री निरञ्जनदेव तीर्थ जी ने सबसे सीताराम का जप कराया। हर-हर महादेव कहलाया और सनातन धर्म की जय कहलाई। वहां बैठे आर्य लोग हृदय मसोसे बैठे रहे कि यह क्या हो रहा है और उस सम्मेलन मे गोरक्षा सत्याग्रह प्रस्ताव पारित हुआ, परन्तु वह प्रस्ताव आर्य महासम्मेलन का प्रस्ताव तब कहलाता जब गोरक्षा सम्मेलन के बाद आर्य महासम्मेलन का खुला अधिवेशन महात्मा आनन्द स्वामी जी के सभापतित्व हुआ, तब वह प्रस्ताव यदि पारित होता तब वह प्रस्ताव आर्य महासम्मेलन का प्रस्ताव कहलाता। सत्याग्रह के लिए उतावले लोग जानते थे कि आनन्दस्वामी जी सत्याग्रह के विरुद्ध हैं। आनन्दस्वामी जी महाराज ने खुले अधिवेशन में यह कह दिया कि गोरक्षा सत्याग्रह एम०पी० बनने वालों का राजनीतिक स्टंट था। कोई अवान्तर सम्मेलन चाहे छोटे पण्डाल मे हो या बड़े पण्डाल मे उपस्थिति हजार की हो या लाख की इन बातों से अवान्तर सम्मेलनों के प्रस्ताव आर्य महासम्मेलन के प्रस्ताव नहीं कहला सकते। फिर इस गोरक्षा सम्मेलन मे हम जसे व्यक्तियों को बोलने भी नहीं दिया गया। केवल एक पक्ष के व्यक्तियों को ही शङ्कराचार्य ने बोलने दिया।

—आचार्य विश्वश्रवाः व्यास

श्री महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती की कथा

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आर्य जगत् के परमपूज्यनीय सन्यासी विदेशों मे वेदों की दुन्दुभी बजाने वाले महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती का २ दिसम्बर को प्रयाग मे आगमन हो रहा है

आपके द्वारा अमृतमयी वेद की पावन कथा २ दिसम्बर से ८ दिसम्बर तक नित्य प्रति सायंकाल ७॥ बजे से आर्य समाज मन्दिर चौक में होगी।

—राधेमोहन, मंत्री

गायत्री माता

★श्री पं० जगत्कुमार जी शास्त्री, 'साधु सोमतीर्थ' देहली

ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो
देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

यजु० ३६ । ३ ॥

शब्दार्थ.—(ओ३म्) सबका रक्षक (भूः) सत् स्वरूप, (भुवः) चित् स्वरूप और (स्वः) आनन्द स्वरूप (तत) उस (सवितुः) सर्व जगदुत्पादक (देवस्य) विविध प्रकार के दिव्य गुणों से युक्त प्रभु को (वरेण्यम्) प्राप्त करने योग्य (भर्गः) सब दुःखों को दूर करने वाले और आनन्ददायक तेज को (धीमहि) धारणा, ध्यान और समाधि द्वारा हम धारण करते हैं । (यः) जो परमेश्वर (नः) हमारी (धियः) बुद्धियों को (प्रचोदयात्) उत्तम प्रेरणा देवे ।

भावार्थः—ईश्वर सर्वरक्षक और सच्चिदानन्द स्वरूप है । हम उस जगदुत्पादक देव के प्राप्त करने योग्य और सब दुःखों के नाशक एवं आनन्ददायक तेज को धारण करते हैं । वह प्रभु हम पर सब प्रकार से कृपा रखे और हमारी बुद्धियों को सदैव उत्तम प्रेरणा देता रहे ।

प्रवचन

यह पवित्र गायत्री मन्त्र है । इसको ही गुरु-मन्त्र और सावित्री-मन्त्र भी कहते हैं । 'तत्सवितु' इस समस्त पद से आरम्भ करके, इस मन्त्र का छन्द गायत्री है । गायत्री वेद के एक प्रसिद्ध छन्द का नाम है । जो इस मन्त्र को प्रेम पूर्वक गाता=जपता है, उसका कल्याण हो जाता है । इसलिये भी यह गायत्री-मन्त्र कहलाता है ।

जब गुरु शिष्य की शिक्षा का आरम्भ करता है, तब वह सर्वप्रथम इस गायत्री-मन्त्र को ही सिखाता है । अतः गुरु-मन्त्र भी यही है । इसमें सर्वजगदुत्पादक सविता-देव का वर्णन है । इसलिये इसको सावित्री-मन्त्र भी कहते हैं ।

ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप है । यह सारा संसार ईश्वर जीव और प्रकृति के मेल का खेल है । प्रकृति केवल सत्स्वरूपा है । जीव सत्+चित्=सच्चित्स्वरूप है । ईश्वर सत्+चित्+आनन्द=सच्चिदानन्दस्वरूप है । प्रकृति जड़ है । उसे आनन्द की आवश्यकता नहीं । जीव चेतन है । इसे आनन्द की विशेष आवश्यकता है । इस आवश्यकता की पूर्ति के लिये ही जीव नम्रता पूर्वक सर्वजगदुत्पादक सविता देव अर्थात् सच्चिदानन्द-स्वरूप परमपिता परमात्मा की शरण ग्रहण करता है । वैदिक-स्तुति, प्रार्थना और उपासना का मूल-सूत्र यही है । वैदिक-भक्तिवाद का आरम्भ इसी सूत्र के आधार पर होता है ।

हे प्रभो ! तू सर्वजगदुत्पादक है । दिव्यता से युक्त है । सच्चिदानन्द स्वरूप है । सबका रक्षक और शासक है । ईश्वर की यह स्तुति इस मन्त्र में है । हे प्रभो ! तू हमें अपना पाप-ताप नाशक, प्राप्त करने योग्य जीवन शक्ति संचारक अमोघ तेज प्रदान कर । यह प्रार्थना भी यहां मौजूद है । हे प्रभो ! तेरा सामीप्य हमें सदैव प्राप्त रहे, और तू प्रत्येक परिस्थिति में, सब कालों में, सब देशों में हमें उच्च जीवन की ओर प्रेरित करता रहे । यह उपासना भी यहीं है ।

इस एक ही वेद-मन्त्र में स्तुति प्रार्थना और उपासना, इन तीनों का बहुत ही सुन्दर समन्वय वर्तमान है । बुद्धि को प्रेरणा देने की बात इस मन्त्र में विशेष रूप से ध्यान देने योग्य है । यह प्रेरणा यदा-कदा तो प्रत्येक मनुष्य को तो मिला ही करती है, परन्तु इस प्रेरणा को स्थायी रूप से निरन्तर ही प्राप्त करने की क्षमता तो मनुष्य को अभ्यास, वैराग और परमात्म-देव की विशेष कृपा से ही प्राप्त होती है । ईश्वर हमें ऐसी शक्ति प्रदान करे, जिससे हम अपनी पवित्रता की वृद्धि निरन्तर किया करें ।

गायत्री-महिमा

युधिष्ठर के प्रति भीष्मपितामह का कथन है:—

यः एतां वेद गायत्री, पुण्यां सर्वगुणान्विताम् ।
तत्त्वेन भरत श्रेष्ठ ! लोके स न प्रणश्यति ।

म० भा० भी० १४ । १६

हे भरतश्रेष्ठ ! जो पुरुष इस सर्व गुण युक्त और पवित्र करने वाली गायत्री को यथार्थ रूप में जान लेता है, वह संसार में कभी भी दुर्गति को प्राप्त नहीं होता ।

विश्व कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर लिखते हैं:—

'वेद में उद्‌बोधन का अर्थात् जगाने वाला जो मन्त्र है, वह अत्यन्त सरल है । उसका एक श्वांस में ही उच्चारण किया जा सकता है । वह गायत्री मन्त्र है ।'

भारत के महामहिम भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी का अभिमत है:—

'गायत्री यह एक सार्वभौमिक प्रार्थना है । इस पर विचार करें तो ज्ञात होगा कि गायत्री हमें सचमुच वास्तविक लाभ देती है । गायत्री हमारे अन्दर भावुक नवजीवन का स्रोत उत्पन्न करने वाली प्रार्थना है । ... सन्मार्ग दर्शन के लिए अपने अन्तःकरण में की जाने वाली खोज है ।...... यह तो प्रत्येक व्यक्ति को अपने अन्तस्तल में ध्यानावस्थित होकर चुपचाप स्वयं करनी होगी :'

महर्षि दयानन्द जी का [सत्यार्थप्रकाश के तीसरे समुल्लास में] आदेश है

'पिता माता या अध्यापक अपने लड़के लड़कियों को अर्थ सहित गायत्री मन्त्रों का उपदेश कर दें ।'

फिर लिखते हैं:—

इस प्रकार गायत्री मन्त्र का उपदेश करके सन्ध्योपासन की जो स्नान, आचमन, प्राणायाम आदि क्रिया हैं. सिखलावें ।

वे आगे फिर लिखते हैं:—

'जंगल में अर्थात् एकान्त देश में जा, सावधान होके नित्याकर्म करते हुये सावित्री अर्थात् गायत्री-मन्त्र का उच्चारण अर्थ ज्ञान और उसके अनुसार अपने चाल-चलन को करे । परन्तु यह जप मन से करना उत्तम है ।'

★

ऋषिराजो दिवमगात्

★

ऋषिवर्योऽखिलानन्दः करुणाया पयोनिधे !
विदुषामग्र गण्यस्त्वं, सर्वेषां हृदयप्रियः ॥१॥

सहसा कुतः सर्वाभिप्रायं बन्धूनत्यज्य परान् ।
त्यक्त्वा शान्ति पदं दिव्यं गतवान् स्वर्दिवाकर ॥२॥

अनिशं परिपश्यामि चिन्तयामि मुहुर्मुहुः ।
नवदृष्टि पथे कश्चिदायाति ते गुणान्वित ॥३॥

जगन्नाथस्य किं ? कश्चिल्लोकः शून्य त्वया विना ।
वदन्ति जनाः सद्यः मिलताम् मूलनादितः ॥४॥

ओंकार ! करुणागार ! प्रार्थयामि जगत्पते !
सन्निर्वाण पदं तिष्ठेद्, देवानां मलवर्जनम् ॥५॥

आर्येषु मूलस्थेषु, गुणानन्दस्य तरस्विनः ।
आगच्छन्तु यथाशीघ्र मिति याचे मुहुर्मुहुः ॥६।

★गङ्गाधर शास्त्री, आ०प्र०सभा पटना-४

दशम सार्वदेशिक आर्य महा सम्मेलन हैदराबाद में-

महात्मा आनन्द स्वामी जी सरस्वती का अध्यक्षीय भाषण

★

ओ३म् त्वं हि नः पिता वसो,
त्वं माता शतक्रतो बभूविथ
अधा ते सुम्न मीमहे ।

ऋ० ८-९८-११

माताओ तथा सज्जनो !

४१ वर्ष व्यतीत हो गए जब सार्वदेशिक आर्य महा सम्मेलन का आरम्भ हुआ था, उस महा सम्मेलन के प्रधान पूज्य महात्मा हंसराज जी महाराज बनाये गये थे। और अब दशवें सम्मेलन का यह भार मुझे सौंपा गया है। संन्यास लेकर मैंने अपना मार्ग कुछ ऐसा निर्धारित किया था,जिसमें ऐसे सम्मेलन सहायक नहीं बनते। मेरी इच्छा भी नहीं थी कि मैं इसे स्वीकार करता, किन्तु सारे आर्यजगत् की आज्ञा की अवहेलना करना भी मैंने उचित नहीं समझा। क्योंकि आर्यजगत् के इतने अहसान मुझ पर हैं, कि उसके आदेश पर मैं दहकते अग्नि-कुण्ड मे भी कूद सकता हूं। अतः मुझे यह आज्ञा मानकर आपकी सेवा मे उपस्थित होना पड़ा। आर्यसमाज के इस दशम महासम्मेलन मे देश के कोने-कोने से हजारों माताएं, और श्रद्धालु आर्य जन आये हैं—उन सभी को महर्षि के प्रति अगाध प्रेम है, यही प्रेम उन्हें यहां लाया है।

हम सभी को आज गम्भीरता से अपने कर्त्तव्य का और भावी कार्यक्रमों पर विचार करना है। मेरी प्रार्थना तो केवल यही है, कि हमें सदा एक बात स्मरण रखनी है कि हम महर्षि दयानन्द के अनुयायी हैं और हमारा काम महर्षि के दिव्य स्वप्नों को पूर्ण करना है।

हमारे गुरुदेव दयानन्द ने समाधि का सुख छोड़कर, विष के प्याले पी-पी कर ईंट पत्थर और गालियाँ खाकर भी मनुष्य जाति को मृत्यु मार्ग से हटा जीवन और आनन्द के मार्ग पर चलाने के लिए अपनी सारी शक्ति लगा दी थी महर्षि चाहते थे कि संसार में रहने वाले ईश्वर के अरबों पुत्र सच्चे अर्थों में पिता के पुत्र बन आनन्द, शान्ति और प्रेम के मार्ग पर चलें। दुःख की छाया भी किसी के पास न आये। इसी लक्ष्य को पूरा करने के लिए उन्होंने आर्यसमाज की स्थापना की थी और आज इस पवित्र लक्ष्य की पूर्ति कैसे हो, हमको यही विचार करना है। आज संसार में बहुत बड़े तूफान उठ खड़े हुए हैं। इन तूफानों से धरती पर सत्य का सिंहासन हिल रहा है। महर्षि दयानन्द सरस्वती धर्म, मानवता, सभ्यता और संस्कृति को विनाश करने वाले उन तूफानों का सामना करने के लिये कार्यक्षेत्र मे आये थे। भारत ही नहीं दुनियां के सभी देशों में इस समय भयंकर हाहाकार मचा हुआ है। विज्ञान ने मानव को सुखी बनाने के लिये कसर उठा नहीं रखी परन्तु, कष्टों, क्लेशों विपदाओं व परस्पर के संघर्षों में मानव अधिक फंसता हुआ चला आ रहा है।

पिछले २०-२५ वर्षों मे दुनिया के अन्दर जो नाना प्रकार के परिवर्तन हुए हैं और हो रहे हैं उनसे मानव सुखी नहीं हुआ, अपितु दुःखी हो गया है। आर्यसमाज ने अपने गत ९३ वर्षों मे

अपनी शक्ति से बढ़कर कार्य किया है। अपने सम्पूर्ण कार्यों द्वारा आर्यसमाज मनुष्यमात्र के कल्याण और उत्थान के लिये यत्नशील रहा है। वस्तुतः निष्पक्ष भाव से विचार किया जाये तो भू-मण्डल में आर्यसमाज ही एकमात्र ऐसा संगठन है जो मनुष्य-मनुष्य के बीच की समस्त दीवारों को समाप्त कर देना चाहता है। वह संसार के प्रत्येक मनुष्य को ईश्वर का पुत्र होने के नाते भाई समझता है। वर्ग-जाति रंग, नस्ल, ऊँच-नीच और देश के आधार पर आर्यसमाज मनुष्य-मनुष्य में कोई भेद स्वीकार नहीं करता।

आर्य समाज वेद के शब्दों में एक ऐसे संसार का निर्माण करना चाहता है:—

यत्र विश्वं भवत्येकनीड़म्

यह संसार एक घोंसला बन जाए। सारे दुःख और सारे सुख हम मिलकर बांट लें तो फिर दुःख कहां रहेगा? द्वेष, दुःख, ईर्ष्या और घृणा की हस्ती को आर्यसमाज जड़ मूल से मिटा कर प्रेम-एकता और आनन्द के पवित्र संदेश को सर्वत्र प्रसारित करने के लिए कृत-संकल्प है।

इस महान् लक्ष्य की पूर्ति के लिये आर्यसमाज जन्म काल से ही यत्नशील रहा है। भारतवर्ष के अविद्यान्धकार में प्रकाश ज्ञान की किरणें फैलाने का उसका प्रयत्न अत्यन्त सफल रहा और उसके कार्यों का ही यह परिणाम है कि आज स्त्री शिक्षा मे वह लोग भी बढ़ बढ़ कर भाग ले रहे हैं जो उनकी शिक्षा के कट्टर विरोधी थे। वर्ण व्यवस्था तो स्थापित नहीं हुई पर जाति पांति के बन्धन स्वयमेव दूर होते जा रहे हैं। विद्या प्रचार के लिये आर्यसमाज ने गुरुकुलों, कालिजों, पाठशालाओं और विद्यालयों का एक जाल-सा देश में बिछा दिया है जिसका अनुकरण अन्य लोग भी कर रहे हैं।

दैवी संकट में सेवा, सहायता के कार्य भी सबसे पहले आर्यसमाज ने आरम्भ किये। बीकानेर के अकाल, कांगड़ा के भूचाल और दक्षिण के तूफान व मालाबार के भयंकर नर-संहार में, बिहार और क्वेटा के भूकम्प मे और इसी प्रकार सर्वत्र कष्ट क्लेश व दैवी विपदाओं मे आर्यसमाज के सेवक प्रथम पंक्ति में रहे हैं।

राष्ट्र की पराधीनता को स्वतन्त्रता मे बदलने का मूलमन्त्र भी सबसे प्रथम आर्यसमाज ने ही दिया। उसकी शिक्षा के परिणामस्वरूप निर्भयता और स्वराज्य की भावना फैलती गई—और यह ऐतिहासिक सच्चाई है कि १८५७ के भयंकर दमन के बाद महर्षि दयानन्द ने भारत को वैदिक संजीवनी न दी होती तो आज इस देश में राम-कृष्ण की, ऋषि मुनियों की संस्कृति समाप्त हो चुकी होती।

आर्यसमाज के प्रयत्नों और नए जागरण से देश स्वतन्त्र तो हो गया पर स्वराज्य के २० वर्ष बीतने पर भी भारत सुखी न हो सका। सुख की खोज में भटकती हुई दुनियां सुख से दूर होती जा रही है। जैसा पहले मैंने कहा तूफान बड़ा भयङ्कर है भारत स्वतन्त्र तो हो गया परन्तु, इसके विरोधियों की गिनती भी बहुत बढ़ गई। हर प्रकार से भारत को नीचा दिखाए रखने के लिये चारों ओर से प्रयत्न हो रहे हैं। भारत के बाहर और भीतर से यह विरोधी तूफान बढ़ते ही चले जा रहे हैं। ऐसे समय मे एक आर्यसमाज ही ऐसी शक्ति दिखाई देती है जो इन तूफानों का सामना कर सके। और आज भी मानवता की रक्षा और भारत के उत्थान व दुनियां को सन्मार्ग बताने के लिए आर्यसमाज ही हमारी आशाओं का केन्द्र है। ऋषि दयानन्द के वीर सैनिकों से मुझे कहना है कि तूफान तो उठते ही रहते हैं और उठते ही रहेंगे। इनका मुकाबला हम आर्यों को करना ही होगा।

वह पथ क्या, पथिक कुशलता क्या,
जिस पथ पर बिखरे शूल न हों।
नाविक की धैर्य परीक्षा क्या,
जब धारा ही प्रतिकूल न हो।
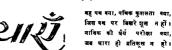
ऐसी अवस्था मे करना क्या है? पहली बात, आर्यसमाज को सशक्त बनाना। आर्यसमाज की शिथिलता का सबसे बड़ा कारण आध्यात्मिकता की कमी है। आज से ३७ वर्ष पूर्व महात्मा नारायण स्वामी जी ने भी कहा था—"जन्म काल से ही जो उदासीनता आर्य समाज के सदस्यों ने आत्मिक सुधार के सम्बन्ध मे दिखाई है वह अक्षम्य है। जहां देखो दलील बाजी मिलेगी। तर्क ऋषि प्रतिष्ठित मिलेंगे। इस तर्क साम्राज्य में जो आर्य समाजियों ने स्थापित कर रखा है,श्रद्धा और विश्वास का कोई स्थान नहीं है। इसीलिये ईश्वर विश्वास आस्तिक बुद्धि, और भक्ति व प्रेम के बाहुल्य से जो तेज और शान्ति की झलक चेहरे से दिखाई दिया करती है। उनसे अधिकतर आर्यों के चेहरे शून्य मिलेंगे।"

मै महात्मा नारायण स्वामी जी के शब्दों से पूर्णतया सहमत हूं। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज के

नियमों में शारीरिक और आत्मिक उन्नति को साथ-साथ रखा है। जब पक्षी के दोनों पंख न हों तब तक वह उड़ नहीं सकता। आज की दुनियां के दु:ख और बिगाड़ का सबसे बड़ा कारण यही है यह भौतिक उन्नति की ओर तो दौड़ती चली आ रही है और आध्यात्मिकवाद को इसने सर्वथा भुला दिया है। आर्यसमाज की शिथिलता का भी कारण यही है और इसके अन्दरूनी झगड़ों का भी कारण यही है। आध्यात्मवाद के द्वारा एक ऐसा आत्मिक बल उत्पन्न होता है जिसके तुल्य कोई भौतिक शस्त्र अस्त्र नहीं है। और इस बल को बढ़ाने के लिये महर्षि ने अपने ग्रन्थों में लिखा है कि प्रत्येक को न्यून से न्यून १ घण्टा ध्यानावस्थित होना चाहिये महर्षि के ये शब्द हमें सदा समक्ष रखने चाहिये। आत्मा का बल इतना बढ़ेगा कि वह पर्वत के समान दु:ख प्राप्त होने पर भी नहीं घबरायेगा और सबको सहन कर सकेगा।

आर्यसमाज मे अध्यात्म की कमी के कारण आज देश मे कितने ही मत मतान्तर निकल आये है जो थोड़े ही वर्षों में सर्वसाधारण पर छा गये। महर्षि ने कार्य क्षेत्र में तब पदार्पण किया था, जब निरन्तर २५-३० वर्षों तक साधना की भट्टी से अपने जीवन को गुजार चुके थे और आत्मिक व शारीरिक शक्ति प्राप्त कर चुके थे। तभी वे केवल ९ वर्षों मे इतना बड़ा कार्य कर गए कि आज आर्यसमाज के एक करोड़ के लगभग अनुयायी भी नहीं कर पा रहे।

अत. आर्यसमाज के लिये आवश्यक है कि जैसे उसने नाना प्रकार की संस्थाओं द्वारा शारीरिक उन्नति के साधन जुटाएं हैं, इसी तरह साधना आश्रमों की स्थापना कर अध्यात्म बल को बढ़ाने का यत्न करें। हम सभी सदा यह स्मरण रखें कि हमें यह मनुष्य शरीर एक पवित्र लक्ष्य सिद्धि के लिए मिला है। वह लक्ष्य है प्रभु प्राप्ति। परमात्मा को भूलकर इस संसार में और भले ही सब कुछ मिल जाये पर शान्ति और आनन्द नहीं मिल सकता।

आध्यात्मवाद का रास्ता छोड़ देने से ही आर्यसमाज की आंतरिक स्थिति भी शोचनीय होती जा रही है। स्थान-स्थान पर परस्पर वैमनस्य, ईर्ष्या द्वेष, व कलह क्लेश देखने में आते हैं। यह रोग इतना बढ़ चुका है कि अब इसकी चिकित्सा होनी ही चाहिये और इसके लिये सार्वदेशिक सभा द्वारा सचालित विशेष न्यायाधिकरणों को सक्रिय और सबल होना चाहिये। और यह अनिवार्य नियम होना चाहिये कि आर्यसमाज के सारे विवाद सरकारी न्यायालयों मे न जाकर सार्वदेशिक सभा द्वारा संघटित न्याय सभा द्वारा ही निपटाए जाए। कोई भी आर्य किसी भी स्थिति मे आपस के विवादों को लेकर राजकीय न्यायालय मे न जाये। जो जाए उसे आर्यसमाज का सभासद न समझा जाये। इसी अनिवार्य नियम होने से और अपनी न्याय सभाओं द्वारा न्याय कराने से ही इस पवित्र संगठन मे एकता और प्यार बच सकेगा। अत. इस विषय मे देरी न कर शीघ्र से शीघ्र आवश्यक पग उठाने चाहिये। वस्तुत: मुकदमेबाजी से कभी झगड़े का निपटारा नहीं होता। परस्पर सहनशील, सामञ्जस्य की भावना और लक्ष्य के प्रति प्रेम और सहिष्णुता से ही समाज उन्नति कर सकता है। झगड़े तो निकृष्ट स्वार्थ से होते हैं, इसे दूर करने के लिये अध्यात्मवाद ही अमोघ अस्त्र है।

आज के युग मे विज्ञान और राजनीति दो बड़े हथियार माने जाते है। इन दोनों से ही आर्यसमाज ने कार्य लेना है। आर्य विचारधारा वाले वैज्ञानिक वैदिक सिद्धान्तों का विज्ञान द्वारा समर्थन करें और राजनीति मे रुचि रखने वाले आज की बिगड़ी राजनीति का सुधार करें। प्रचलित राजनीति तो इतनी गन्दी, घिनौनी और बदनाम हो चुकी है कि कोई भला आदमी तो इसमे भाग लेने के लिए तैयार नहीं होता। आर्यसमाज के कुछ महानुभाव आर्यसमाज को बलशाली बनाने के लिये यह सुझाव देते हैं कि आर्यसमाज को सामूहिक रीति से राजनीति मे भाग लेना चाहिये, परन्तु इस राजनीति का अर्थ है, केवल निर्वाचनों मे भाग लेना और वोट एकत्र करना। और जिस प्रकार से आज वोट एकत्र किये जाते हैं क्या वही ढग आर्य समाज बरतने के लिये तैयार होगा? यदि होगा तो उसका पतन हो जायगा, यदि नहीं होगा तो सफलता नहीं मिलेगी। फिर राजनीति में भाग कैसे लें, इसका मार्ग महर्षि ने दिखाया है। महर्षि ने सत्यार्थप्रकाश में लिखा है कि—

"राजा और राज सभा के सभासद तब हो सकते हैं, कि जब वे चारों वेदों की कर्मोपासना, ज्ञान विद्याओं के जानने वालों, से तीनों विद्या, सनातन दण्डनीति न्याय विद्या, आत्मविद्या, अर्थात् परमात्मा के गुण, कर्म स्वभाव रूप को यथावत जानने रूप ब्रह्म विद्या और लोक से वार्ताओं का आरम्भ (कहना और पूछना) सीखकर सभासद वा सभापति हो सकें। सब सभासद और सब सभापति इन्द्रियों को जीतने अर्थात् अपने वश मे रख के सदा धर्म में वर्तें और अधर्म से हटे-हटाए रहें, इसलिए रातदिन नियत समय में योगाभ्यास भी करते रहें क्योंकि जो अजितेन्द्रिय अपनी इन्द्रियों (जो मन, प्राण और शरीर प्रजा है इस को जीते बिना बाहर की प्रजा को अपने वश मे स्थापन करने को समर्थ कभी नहीं हो सकता।"

इस ऋषि के आदेश के अनुसार जो अपने को बना सकें वे राजनीति मे लगें परन्तु बिना इस स्थिति को प्राप्त किए जो राजनीति मे प्रवेश करेंगे, वे राजनीति का सुधार न कर सकेंगे अपितु आर्यसमाज की शिथिलता का ही कारण बनेंगे। इसके साथ ही हमे आज की राज्य शक्ति और विज्ञान शक्ति का उपयोग अध्यात्म की उन्नति मे करना है। वस्तुत: आर्यसमाज आज के युग का मार्गदर्शन विज्ञान को अध्यात्म की खोज मे प्रवृत्त करके ही कर सकता है। भौतिकवादी विज्ञान से भौतिक पदार्थों के रहस्य खोज रहे है। उन्हे सफलता भी मिल रही है किन्तु समस्त भौतिक पदार्थों का भोक्ता जो 'मै' हू, जिसे आत्मतत्त्व कहते है उसे कोई नहीं जानता। ससार के विश्वविद्यालयों मे और सभी कुछ पढ़ाया जाता है, किन्तु कहीं यह पढाने का प्रबन्ध नहीं यह 'मैं' कौन हू? अत: सुख शान्ति और आनन्द की धारा पृथ्वी तल पर बहाने, और साकार स्वर्ग दुनिया को बनाने के लिये आवश्यकता है कि विज्ञान और राजनीति अध्यात्म की खोज और प्रेरणा में लगें। इस राह का मार्गदर्शन केवल आर्यसमाज ही कर सकता है।

आर्यसमाज की शक्ति को बढ़ाने का सबसे बड़ा साधन दूसरे देश मे वेद का सन्देश पहुचाया जाये। मै योरुप तथा दक्षिण पूर्वी एशिया के अनेक देशों मे भ्रमण कर आया हू, वहा के लोग वेद की बात बड़ी श्रद्धा भक्ति से सुनते हैं पर वेद को अपनी भाषा मे पढ़ना चाहते है। राम-कृष्ण परमहस के सच्चे शिष्य, स्वामी विवेकानन्द जी ने विदेशों मे जाकर परमहस रामकृष्ण जी का नाम अमर कर दिया। ससार का कोई देश ऐसा नहीं जहां रामकृष्ण मिशन न मिलते हों और भारत मे भी इनकी शक्ति बढ़ती जा रही है। महर्षि दयानन्द का कोई विवेकानन्द नहीं मिला जो विदेशों में वेद का सन्देश सुनाता फैलाता। योरुप, अफ्रीका आदि देशों में लोग पूछते हैं कि क्या वेद इंग्लिश फ्रैंच जर्मन आदि भाषाओं मे मिलते हैं जिस प्रकार आर्यसमाज ने अध्यात्मवाद से उदासीनता दिखाई इसी तरह वेद को विभिन्न भाषाओं में प्रसारित करने में भी उदासीनता दिखाई। अब तो यह उदासीनता छोड़नी चाहिये और वेदों के विभिन्न भाषाओं में सुन्दर प्रकाशन की व्यवस्था मे आर्यसमाज को शक्ति लगानी चाहिये। हमे यह किसी भी स्थिति मे नहीं भूलना चाहिये कि वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना-सुनाना हमारा साधारण नहीं—परम धर्म है। हिन्दी हमारी राष्ट्र भाषा है। उसकी उन्नति करना हमारा कर्त्तव्य है। किन्तु आर्यसमाज का वास्तविक कार्य तो वेद प्रचार है। एक भाषा से चिपटकर तो वेद का सन्देश ससार मे नहीं फैल सकता। इसलिये ससार की प्रमुख भाषाओं मे वेद भाष्य का आयोजन हमे अवश्य ही करना चाहिये और इस सम्मेलन मे पधारे आर्य महानुभावों से मै प्रार्थना करता हू कि वे इस दिशा मे रचनात्मक पग उठाएं। मै तो इस दशम आर्य महासम्मेलन को तभी सफल समझूंगा जब इस दिशा मे क्रियात्मक पग उठाने का वे संकल्प लेंगे। इसके साथ ही हमे प्रचार के आधुनिकतम उपाय भी व्यवहार मे लाने होंगे। हमारा साहित्य, हमारे अखबार, ट्रैक्ट सभी ऐसे सुन्दर और आकर्षक होने चाहिये कि उन्हें देखकर, पढ़कर सभी प्रभावित हों। विज्ञान ने प्रचार के जो नवीनतम साधन रेडियो, टेलीविजन, चल-चित्रादि खोजे है उनकी उपेक्षा कर हम अपना सन्देश नहीं फैला सकते। हमे अपनी विचारधारा फैलाने के लिये सभी सम्भव और आधुनिकतम साधनों का प्रयोग करने के साधन जुटाने चाहिये।

देश-विदेश मे अच्छे और प्रभावशाली प्रचारक तैयार कराने और फिर उनकी जीविका का प्रबन्ध करने की ओर ध्यान देना भी आगे बढ़ने लिये परमावश्यक है। त्यागी, तपस्वी, साधक युवकों का स्वागत, सम्मान कर उन्हें वेद सन्देश फैलाने की प्रेरणा करना भी आज की अनिवार्य आवश्यकता है। यह हर्ष की बात है कि हैदराबाद के आर्य बन्धु इस दिशा मे क्रियात्मक पग उठा रहे है।

आर्यसमाज को स्वामी दयानन्द जी महाराज ने गोकरुणानिधि देकर यह आदेश दे रखा है कि गोवंश की वृद्धि की जावे। किन्तु गोरक्षा केवल नारों से नहीं हो सकती और न ही यह कार्य केवल सरकार के सुपुर्द किया जा सकता है। इसलिए आर्यसमाज ने जैसे लोगों के अज्ञान को दूर करने के लिये विद्यालय स्थापित किये हैं, इसी प्रकार गोवंश वृद्धि के लिये गो निकेतन आरम्भ करने चाहिए। साथ ही सरकार को भी चाहिये कि वह अविलम्ब कानून द्वारा गो-वध की हत्या पर प्रतिबन्ध लगाये।

योरुप तक दूसरे देशों में ईसाइयत की प्रगति रुक चुकी है क्योंकि वह साइंस के विपरीत है। ईसाई मत के सेवकों ने यह देखा कि ईसाइयत के सिद्धान्त लोगों पर प्रभाव नहीं डाल सकते, इसलिये उन्होंने ईसाइयत प्रचार के लिये सेवा-त्याग और प्रलोभन से कार्य लेना आरम्भ कर रखा है। और भारत में इन्हीं के बल पर ईसाइयत फैल रही है। हम केवल भाषणों से उनका सामना नहीं कर सकते। जहां कहीं ईसाइयों ने अपने अस्पताल, मन्दिर आदि बनाये और सेवा कार्य आरम्भ किया वहीं पहुंचकर हमें भी सेवा और त्याग का सहारा लेकर कार्य करना चाहिये। साथ ही सरकार को चाहिये कि वह विदेशी पादरियों की राजनैतिक गतिविधियों को धर्मप्रचार की ओट में न पनपने दे।

आर्य समाज ने जो शुद्धि का कार्य आरम्भ किया था—उसमें सामूहिक शुद्धि के कार्य में हम सफल हुए—किन्तु व्यक्तिगत शुद्धि में सफलता हमसे दूर रही, क्योंकि हमने इन्हें अपनाया नहीं। इस दिशा में व्यावहारिक और ठोस पग उठाने की आवश्यकता है। शुद्ध हुए बन्धुओं की आवश्यकताओं की पूर्ति और सामाजिक सम्मान के विषय में हमें विशेष ध्यान देना चाहिए।

अछूतोद्धार का कार्य आर्यसमाज अपूर्व सफलता से कर रहा था। और जिन्हें अछूत कहा जाता था, उन्हें आर्य समाज सबों के बराबर बिठा रहा था, किन्तु, स्वराज्य मिलने ही जिन लोगों के हाथों में राज्य की बागडोर आयी उन्होंने आर्य समाज के ७० वर्ष के परिश्रम पर पानी फेर दिया। इस अछूतोद्धार के लिये कितने ही आर्य पुरुषों ने अपनी बलि देकर अछूत कहे जाने वालों को यज्ञोपवीत देकर द्विज बनाया। किन्तु, कांग्रेस ने हरिजन नाम और कानून का संरक्षण देकर उन्हें विशेष वर्ग के रूप में देखा किया। परिणामस्वरूप जिन्हें आर्य समाज ने उठाया था और जिन्हें ऊपर तक उठाते थे, वे फिर वहीं गड्ढे में गिर गये, और इस नीति ने देश में एक गम्भीर समस्या उत्पन्न कर दी है, जिसके लिए उत्तरदायी सरकार की अदूरदर्शितापूर्ण नीति है।

आज हैदराबाद में यह सम्मेलन हो रहा है यह हैदराबाद वह संग्राम-स्थली है, जहां युवक व वृद्ध आर्यों का खून बह चुका है। निजामशाही के अन्याय के विरुद्ध आर्य समाज ने जब सत्याग्रह आरम्भ किया तो कहा गया कि आर्य समाज ने पहाड़ से टक्कर लगाई है, किन्तु दुनियां ने देख लिया कि आर्य वीरों के बलिदान, तप, त्याग पवित्र भावना ने आज उस पहाड़ का अस्तित्व ही समाप्त कर दिया है। आर्य समाज का यह सत्याग्रह पूर्ण सफल रहा था। अतः हम श्रद्धा से स्वर्गीय श्री ... विष्णुभगवान, दत्तात्रेय, शिवचन्द्र आदि और शहीदों की स्मृति में सादर श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। ऐसी पवित्र भूमि पर यह सम्मेलन हो रहा है, हमें यहां से सब ... ठना चाहिए अब हम ऐसे निश्चय कर लें कि जिन से आर्य समाज पुनः शक्तिशाली होकर महर्षि के महान् लक्ष्य को पूर्ण कर सकें। अन्त में अपने हृदय की बात आपसे कहना चाहता हूं, और वह यह कि -

१–आर्य समाज में अध्यात्मवाद को मुख्य स्थान दिया जाए।

२–वेद विचार के प्रसार और प्रचार के लिए जो आर्य देश पुरुष स्वाध्यायशील हैं वे वानप्रस्थ वा सन्यास ग्रहण कर प्रचार में जुट जावें।

३–विदेश प्रचार के लिए इंगलिश फ्रेंच और जर्मन भाषाओं में प्रचारक और साहित्य तैयार किये जायें।

४–आर्य समाज के आन्तरिक झगड़ों को मिटाने के लिये सार्वदेशिक सभा द्वारा निर्मित निष्पक्ष सज्जनों की न्याय सभायें कार्य करें।

५–आर्य ... अन्य कार्यों को करते हुए भी ... भी आरम्भ करें।

६–जो लोग राजनीति में भाग सेवा चाहते हैं वे पहले योग साधन की भट्टी से अपने को गुजारें।

७–संन्यासियों उपदेशकों और विद्वानों का पूर्ण सम्मान होना चाहिए ताकि वे अनुभव करें कि वेद प्रचार करते हुए उनका कार्य आदर की दृष्टि से देखा जा रहा है।

माताओं और सज्जनो!

मैं आपका अधिक समय नहीं लेना चाहता। मेरा हृदय तो आपके उत्साह और उमंग को देखकर हर्ष विभोर हो रहा है। मैं तो वह दिन देखने के लिए तरस रहा हूं जब सत्य, धर्म और मानवता की प्रतीक, 'ओ३म्' की वह पावन पताका धरती के प्रत्येक मनुष्य के हृदय मन्दिर पर लहर लहर लहर देवी।

मैं तो आप से यही प्रार्थना करता हूं कि आप दयानन्द के वीर सैनिक बनें और वेद विचार के प्रचार के लिए जुट जायें। आपस की फूट ईर्ष्या द्वेष, स्वार्थों को यज्ञ की अग्नि में समाप्त कर प्रेम, एकता, संगठन और त्याग का मन्त्र लेकर यहां से जायें और अपने महान् गुरु दयानन्द ऋषि के चरणों की स्मृति में बैठ कर व्रत लें कि हम अपनी पूरी शक्ति महर्षि के दिव्य स्वप्नों की पूर्ति में लगा देंगे।

आर्य माताओ और सज्जनो! ध्यान से देखो और विचारो हमारे धर्म पर, संस्कृति और परम्परा पर संकट की ऐसी काली घटा सारे इतिहास में कभी नहीं मंडरायी जैसी आज आयी है। समस्त आसुरी शक्तियां अपने हथियार सजा कर सत्य धर्म और मानवता को मिटाने की तमन्ना ... निरन्तर आगे को बढ़ रही है। ईश्वर के अमृत पुत्रो उठो! अपने गुरु के चरण चिह्न पर चलकर, सत्य का बल और प्रभु का विश्वास लेकर, पवित्र ओ३म् पताका के साथ आगे बढ़ो! कार्य करो विजय निश्चय ही तुम्हारी होगी क्यों कि प्रभु तुम्हारे साथ है।

एक संन्यासी होने के नाते मैं आपसे गुरुदेव दयानन्द का कार्य पूरा करने की भिक्षा मांगता हूं ... –

'प्राण जाए तो जाएं, पर वेद की ध्वजा न झुकने पाए।

मुझे विश्वास है कि आप यह भिक्षा अवश्य ही मेरी झोली में डालेंगे, और मेरे साथ मिल कर घोषणा करेंगे कि:—

'वैदिक धर्म जहा से
मिटा है न मिटेगा,
फूंकों से आफताब
बुझा है न बुझेगा।"

—आनन्द स्वामी सरस्वती
नई दिल्ली

श्री पं० सुरेशचन्द्र वेदालंकार के पिता जी का देहान्त !

आर्यमित्र के सुप्रसिद्ध विद्वान् लेखक श्री पं० सुरेशचन्द्र जी वेदालङ्कार एम०ए०एल०टी १७५ आफरा बाद गोरखपुर के पूज्य पिता जी का ८५ वर्ष की आयु में देहान्त हो गया। आपका अन्त्येष्ट संस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यनुसार सम्पन्न हुआ। वे निष्काम सेवक आर्यसमाजी थे। आर्यसमाज के मन्त्री भी रहे थे। उन्होंने हरिजनों की भी सेवा की। घूंस वाले पद पर रहते हुए भी कभी घूस नहीं ली। चिकित्सा के द्वारा भी व जनसेवा करते थे। परम प्रभु दिवंगत आत्मा को शान्ति और शोक संतप्त परिवार को धैर्य, प्रदान करें यही प्रार्थना है।

बच्चे अनुशासन एवं आदर के भाव कैसे सीखें

★सुधा वर्मा बी० ए०
१२१ ७३ अशोकनगर कानपुर

प्रत्येक देश के नागरिक अपने बच्चों के लालन-पालन पर ध्यान देते हैं, और उन्हे सब तरह से योग्य और समाज के लिये उपयोगी बनाने की कोशिश करते हैं। बच्चो के जीवन में अनुशासन और आदर करने कराने का विशेष स्थान है। बलगेरिया वासी अपने बच्चों में विशेष दिलचस्पी लेते हैं और उनमें आवश्यक गुणों के विकास पर विशेष ध्यान देते हैं। वहां के बच्चो मे यह विचार प्रारम्भ से ही कैसे भरे जाते हैं, उस पर इस लेख में प्रकाश डाला गया है। बलगेरिया मे अनुशासन और दूसरो की भावना समझना बच्चों को प्रारम्भ से ही सिखाया जाता है। बच्चो से कुछ काम करने को और कुछ न करने को कहा जाता है, किंतु वे यान्त्रिक आदेश नहीं होते। बच्चो से जिस काम की आशा की जाती है वह 'क्यो' यह बताया जाता है। इससे माता पिता और बच्चो के बीच एक मैत्रीपूर्ण श्रृङ्खला बन जाती है। दूसरी ओर बच्चे स्वयं भी विचार करना और बातों को उचित दृष्टि और अनुपात में समझना तथा ठोस परिस्थितियो मे क्या करना होगा, यह सीखते हैं।

शिष्टाचार सत्कार शिक्षण

बलगेरिया में बच्चों की शिक्षा में शिष्टाचार और सत्कार का महत्त्वपूर्ण स्थान है। बच्चों को सिखाया जाता है कि वे घर आने वालों के साथ कैसा व्यवहार करें, और उसकी अवस्था, उनके आगमन के प्रयोग का कैसे ध्यान रखें और देखते हैं कि उनके आगमन का माता-पिता के लिये क्या अर्थ है। कुछ सीमाओं मर्यादाओं को रखते हुए बच्चों को अपना अभिक्रम या पहल करने और हमेशा नकेल सी ही न चलना सिखाया जाता है।

परम्परा से पिता—पारिवारिक अधिकार में सब से बड़ा माना जाता है। जब कि माता बच्चों की शिक्षक और परामर्शदात्री मानी जाती है। पिछले दो तीन दशकों में स्त्री अधिकारों में समानता की ओर प्रवृत्ति रही है। अर्थात् परिवार में माता का अधिकार बढ़ा है। बच्चे केवल पिता के ही कृत्यों मे गौरव का अनुभव नहीं करते वरन् माता के लिये भी वैसा ही अनुभव करते हैं।

बच्चों की स्फूर्ति का सदुपयोग

बच्चों में कार्य करने की प्रबल भावना रहती है। उनकी पारिवारिक शिक्षा का एक अंग उन्हें संयम या आत्म नियन्त्रण रखना सिखाना है। यह ज्यादा तड़कीले भड़कीले कपड़ो के लिये उत्साह घटाने, जो कुछ परोसा जाय उसे खाने, अपने जेब खर्च से छुट्टियों या छोटे मोटे शौकों के लिये बचाना आदि सिखा कर किया जा सकता है।

बच्चो को घर के काम मे सहायता देना अपने से बड़ों और महमानों के बोलते समय बीच में न बोलना सिखाया जाता है।

संग-कुसंग

यदि बच्चे कुसगत मे पड़ते या खराब आदतें डालते जान पड़ते तो माता पिता उन्हें खेल, रुचि वर्धक कार्य या किसी प्रकार के सामूहिक कार्य मे भाग लेने के लिये प्रोत्साहित करके कुसग या खराब आदतों से बचाने की कोशिश करते हैं।

पिछले दशक या उसके कुछ आगे पीछे बच्चों की शिक्षा का समन्वय तीन सस्थाओं परिवार स्कूल और युवक संगठनों के बीच किया गया है।

परिवार एवं पाठशाला

'परिवार एवं पाठशाला' नामक पत्रिका माता-पिताओं की सहायता के लिये निकाली गयी है। संरक्षकों की नियमित बैठकें, व्याख्यान और विचार गोष्ठियां भी माता-पिताओं के मार्ग दर्शन के लिये की जाती है। अन्य अनेक प्रकाशनों में माता-पिता और बच्चों के सम्बन्ध में तथा शिक्षा विधियों के विषय में विशेष स्तम्भ रहते हैं।

★

चेकोस्लोवाकिया के ७० हजार नागरिक देश से बाहर

वियना—चेकोस्लोवाकिया की राजधानी प्राग मे राजनयिक सूत्रों से प्राप्त जानकारी के आधार पर यह अनुमान किया गया है कि इस समय चेकोस्लोवाकिया के ऐसे ७० हजार व्यक्ति बाहर के देशो मे हैं जो घर वापस आने को तैयार नहीं है।

इनमे से लगभग एक तिहाई ऐसे व्यक्ति हैं जिनको बुद्धि जीवी कहा जाता है—वैज्ञानिक, लेखक, अध्यापक, व्यवस्थापक छात्र और इञ्जीनियर, आदि।

इनमें से ५० हजार व्यक्ति पश्चिमी यूरोप के देशों में है, और २० हजार युगोस्लाविया, रूमानिया आदि पूर्व यूरोपीय देशों मे।

इनके घर वापस आने के मार्ग मे सबसे बड़ी बाधा रूसी की सेना उपस्थिति है। इस समय चेकोस्लोवाकिया मे रूस के कई लाख सैनिक हैं।

पता चला है कि कनाडा और आस्ट्रेलिया ने जिनको ऐसे व्यक्तियों की आवश्यकता है, यह आश्वासन दिया है कि इनमे से जो लोग वहां आना चाहे, उनको सफर खर्च और रोजगार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए।

स्मरण रहे कि रूस ने चेकोस्लोवाकिया पर यह कह कर सैनिक आक्रमण किया था कि वहाँ क्रांति विरोधी तत्त्व शक्तिशाली होते जा रहे हैं। पर उस समय भी चेकोस्लोवाकिया एक साम्यवादी देश था और आज भी है।

रूसी कवि के नाटक पर प्रतिबन्ध

मास्को—कवि येवटुशेंको के एक नाटक का रूस मे खेला जाना बन्द कर दिया गया है।

कवि येवटुशेंको ने रूस द्वारा चेकोस्लोवाकिया पर आक्रमण किये जाने का विरोध किया था।

उन्होंने रूस के शासक दल के नेता श्री ब्रजनेव को एक पत्र लिखकर यह कहा था कि 'मेरा यह विश्वास है कि इससे रूस और चेकोस्लोवाकिया की परस्पर मैत्री और साम्यवाद को भारी चोट लगी है। मैं अपना नैतिक कर्त्तव्य समझता हूं कि मैं अपनी गहरी भावनाओं और धारणाओं को न छिपाऊँ।

ईरान के इस्पात उद्योग में नया अन्तर्राष्ट्रिय परीक्षण

तेहरान—ईरान के इस्पात उद्योग के विकास में एक नया अन्तर्राष्ट्रिय परीक्षण किया जा रहा है।

कारून नदी के तट पर स्थित ईरान के सबसे पहले कारखाने में ३२ प्रतिशत पूंजी एक ईरानी पूंजीपति ने लगाई है, १२ प्रतिशत सरकार ने और शेष जर्मनी और स्विटजरलैंड के पूंजीपतियों ने।

इस समय इस कारखाने की व्यवस्था की बागडोर एक जर्मनी इञ्जीनियर डाक्टर हेल्मुट सेन्टमालेर के हाथ मे है। वह ईरानी इञ्जीनियरों को साथ मे प्रशिक्षण भी देते है।

यह कारखाना छोटे पैमाने पर भारत के रूरकेला कारखाने ही की प्रतिमूर्त्ति है।

सन् १९७० तक इसका उत्पादन दो लाख टन तक पहुंच जायगा। यह कारखाना केवल मोटा इस्पात ही तैयार नहीं करता, वरन् वहां नल और चादरें आदि भी तैयार होती हैं।

भारत का प्रथम व्यापारिक बैंक

नयी दिल्ली—नेशनल ग्रिन्डलेज बैंक अपनी सेवायें विस्तृत कर रहा है, और शीघ्र ही वह एक व्यापारिक बैंक का कार्य करने लगेगा।

व्यापारिक बैंक के नाते यह बैंक आर्थिक नियोजन, पूंजी संयोजन, विदेशी कम्पनियो के सहयोग और आयकर पर सलाह सम्मति उन व्यापारियो को देगा जिनका उस बैंक में हिसाब है। आय कर की अदायगी और लेखा-जोखा का भुगतान भी निर्देशन पर बैंक स्वतः करता रहेगा।

बैंक की इस व्यापारिक सुविधा की व्यवस्था ४१ वर्षीय श्री जान एडम्स करेंगे वे इसी मास भारत आयेंगे और अपने विशेषज्ञ सहयोगियों की सहायता से व्यापारिक बैंक का कार्य संचालन शुरू कर देंगे। शुरू शुरू में ये व्यापारिक सुविधायें बैंक की कलकत्ता और बम्बई शाखाओं में उपलब्ध होंगी।

श्री एडम्स के छः सहयोगियों में से केवल एक अंग्रेज होगा। ये सहयोगी कानून, हिसाब किताब और आयकर पर विशेषज्ञ होंगे।

एक वर्ष बाद श्री एडम्स अपना कार्य पूरा कर भारत छोड़ देंगे। अनुमान है कि उसके बाद वे पाकिस्तान जायेंगे और वहा भी ऐसी ही व्यापारिक सुविधायें उस देश के नेशनल एंड ग्रिन्डलेज बैंक में स्थापित करेंगे।

बहनों की बातें-

माता निर्माता भवति

शनिवार को मन में एक विशेष आनन्द रहता है। रविवार का अवकाश तो सोमवार को विद्यालय को कचहरी की ओर अन्य कार्यों की चिंता उत्पन्न कर रहा होता है, जब शनिवार की शाम कल की छुट्टी का आनन्द दे रही होती है। मन भी कैसी विचित्र वस्तु है। इसीलिए शनिवार की रात्रि 'गोल्डनाइट' समझी जाती है। उस दिन विद्यार्थी गप्प का दिन समझते हैं। शनिवार को सरला बहन जागती की एक सखी कमलेश के घर पहुंची और उस दिन महिलाओं की भीड़ नहीं लगी। मधु ने जो प्रायः सरला बहन से प्रश्न पूछा करती थी, आज 'स्त्री के स्वरूप और उसकी महिमा' जानने की इच्छा प्रकट की और 'स्त्री तथा पुरुष' के अन्तर के विषय में भी पूछा।

सरला बहन ने कुछ गम्भीर मुद्रा बनाकर कुछ सोचकर कहा—स्त्री का वास्तविक स्वरूप माता का है। इसलिए स्त्रियां त्याग मूर्ति हैं। स्त्रियां मूर्तिमान तपस्या हैं, मूक सेवा हैं। स्त्रियां अपार श्रद्धा और अमर आशावाद हैं। प्रकृति जिस प्रकार बिना शोर मचाये अपना काम कर रही हैं, फूल खिला रही हैं उसी प्रकार भारतीय स्त्रियां परिवार में अनंत कष्ट सहन करके चुपचाप परिश्रम करके आनन्द का निर्माण करती हैं। वह माता है, माता के रूप में ही स्त्री की अपार महिमा है। वह सारे संसार करने वाली है—बच्चों को संभालनेवाली पति को संभालने वाली, स्नेह की संभालने वाली। वह किसी को भी कष्ट नहीं देती है। वह सबको प्रेम देती है, आशीर्वाद देती है, सेवा करती है। वह ईश्वर का ही रूप है। भक्तों ने भी ईश्वर के लिये माता शब्द ही प्रयुक्त किया। कबीर ने लिखा है—'हरि जननी मैं बालक तोरा।'' ईश्वर का पालन-पोषण का और सबका उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेने का जो कार्य किया है वह माता ही करती है। ईश्वर को मां कहकर पुकारने से बढ़कर और कोई उपयुक्त अर्थ वाली पुकार नहीं। संसार में यदि कोई ऐसी वस्तु है, जिससे ईश्वर के प्रेम की कल्पना हो सकती है तो वह माता ही है। इसीलिये हम माता की वन्दना करते हैं। उपनिषद् में आचार्य ऐहिक देवों का नाम बताते हुए सबसे पूर्व 'मातृदेवोभव' माता को देवता समझकर पूज्य कहते हैं। इतना ही नहीं, प्राचीन साहित्य में एक स्थान पर तो इतना कहा गया है 'न मातुः परम दैवतम्' माता के अलावा कोई देवता नहीं क्यों? कभी सोचा है आपने? हमारे यहां ईश्वर मां है। भारत मां है। गाय मां है। सरस्वती (विद्या) मां है।

गङ्गा मां है। सब जगह माता की महिमा क्यों गाई है। क्योंकि 'माता निर्माता भवति' माता व्यक्ति का, संसार का और राष्ट्र का निर्माण करने वाली होती है।'' सरला बहन ने अपनी बात का प्रवाह जारी रखते हुए वीर माता विदुला की बात बताई और कहा 'तुमने महाभारत में पढ़ा होगा कि एक बार सिन्धुराज ने संजय के राष्ट्र पर आक्रमण कर उसे जीत लिया और संजय ने सिन्धुराज से प्रार्थना की कि वह उसका राज्य लौटा दे और सन्धि कर लि। इससे यह लाभ होगा कि वह राजा भी बन जायेगा और रक्तपात भी नहीं होगा। यह बात संजय ने जब अपनी मां से कही तो इसे सुनकर उस यशस्विनी, कुलीना, संयमशीला, दीर्घदर्शिनी, वीर माता का चेहरा क्रोध से लाल हो गया। उसने कहा—'अरे क्षत्रिय वर्ण! तू मेरा पुत्र नहीं और न तू अपने पिता का ही अंश है। वीर पुरुषरणभूमि में मानवोचित पराक्रम दिखलाते

करती थी, जो उसे ऐसा पुत्र दे सके जिससे उसका नाम अमर हो सके। गर्भ का पता लग जाने के बाद तीसरे चौथे महीने पुंसवन संस्कार किया जाता था। पुंसवन संस्कार' भी बालक के निर्माण के लिये माता को श्रेष्ठ विचार वाली बनाने के लिए एक प्रेरणा थी। इसमें उसे कहा जाता था 'आ वीरो जायतां पुत्रस्ते दशमास्यः' दस मास तेरी कोख में रहकर तेरा वीर पुत्र उत्पन्न हो। जीवन के प्रारम्भ में ही माता अपने प्रबल, सशक्त विचारों से, अपनी बलवती संस्कारों की धारा से अपने पुत्र को जीवित दिशा निर्माण किया देने लगती थी। पुंसवन संस्कार उसके भौतिक शरीर के निर्माण के समय का संस्कार था। जब बालक का मानसिक शरीर का निर्माण होना प्रारम्भ होता था, तब 'सीमन्तोन्नयन' संस्कार किया जाता था। माता के बाल संवारे जाते थे, उसे अपने सिर एवं मस्तिष्क का विशेष ध्यान रखने को कहा जाता था।

सरला बहन ने इस विषय को जरा विस्तार से समझाते हुए कहा, 'बेटी, इस समय यह बच्चा एक ऐसी मशीन में पड़ जाता है जिसमें उसके कारण शरीर' को पकड़ कर अपने संस्कारों के ढांचे में उसके संस्कारों को ढाला जा सकता है। आत्मा का 'कारण शरीर' में बंध जाना, 'कारण शरीर का माता पिता के रज वीर्य में बंध जाना, माता पिता के अङ्ग-अङ्ग से ही आत्मा का इस जन्म में इस रूप में आ सकना—

★सुरेशचन्द्र वेदालंकार
एम० ए० एल० टी०, डी० बी०
कालेज गोरखपुर

इसके बिना न आ सकना—ये सब बातें माता-पिता के हाथ में एक ऐसा साधन दे देती हैं जिससे वे सन्तान को जो चाहें बना सकते हैं। इतिहास में हमें अनेक उदाहरण दिखाई देते हैं। अमेरिका के प्रेसीडेंट गारफील्ड का घातक गोद जब पेट में था तब उसकी माता गर्भपात की औषधियां खाकर उसे गिराना चाहती थी, वह न गिरा, परन्तु उसके घातक विचारों ने उसे हत्यारा बना दिया। सरला बहन ने आगे कहा कि तुमने जो यह पूछा कि माता कुमाता नहीं होती तो पुत्र क्यों कुपुत्र हो जाते हैं? अच्छा प्रश्न है। इसका कारण यह है, माता के बच्चों का निर्माण करने की इच्छा मात्र से ही तो काम सिद्ध न होगा। उसे इसके लिए तपस्या साधना, परिश्रम, त्याग और अपने में सद्विचार लाने होंगे? उसे भोग विलास, वासनायें और बुरी बातों के चिन्तन से बचना होगा। आज हम बच्चों के अनुशासन हीनता और उनके दोषों से परेशान हैं। सरकार परिवार नियोजन को सफल बनाने के लिये गर्भपात को कानूनी मान्यता पहुंचाने की बात सोच रही है। लूपबन्दी, नसबन्दी आदि के कार्यक्रम को सफल बनाने का सतत प्रयत्न हो रहा है। परन्तु याद रखना गर्भपात के विरोध के अपराध का भय निकल जाने एवं इन दवाओं का प्रभाव यह होगा कि 'मातृत्व की भावना' का स्थान भोग लिप्सा ले लेगी और उस समय जो अचानक सन्तानें बन जाएंगी वे भीरु के समान बनकर और घातक होंगी। अमेरिका में आज क्या हो रहा है? साधना और तपस्या के द्वारा जो सन्तानें उत्पन्न होंगी वे शिवा जी की तरह वीर, राष्ट्र-भक्त स्वतन्त्रता प्रेमी, दीनों और निर्बलों की रक्षक होंगी। नेपोलियन की माता जब गर्भवती थी तब नित्य फौजों की कवायद देखने जाती थी। सैनिकों

वनिता विवेक

जाते हैं, नहीं तो वीर गति को प्राप्त हो जाते हैं। युद्ध में जाओ और विजय प्राप्त करके आओ। 'मुहूर्तं ज्वलितं श्रेयः न च धूमायितं चिरात्' थोड़ी को भाई घुटकर नपुंसकों की भांति जीवन का जीवन बिताना अच्छा नहीं, प्रत्युत दो घड़ी के लिये जलती हुई लकड़ी की भांति युद्ध में अपना तेज दिखाकर वीर गति को प्राप्त होना क्षत्रिय के लिए कल्याणकारी है।'' संजय ने युद्ध में जाकर माता की आज्ञा का पालन किया और विजय प्राप्त की।

माता का निर्माण कार्य बचपन से ही और बचपन से भी पूर्व से निर्माण कार्य शुरू कर देती है। बालक के जन्म से पूर्व 'गर्भाधान' 'पुंसवन' और सीमन्तोन्नयन' संस्कार किये जाते थे। गर्भाधान संस्कार में अपने से ऊंचे, अपने से श्रेष्ठ और अपनी इच्छानुकूल आत्मा को आमन्त्रित किया जाता था। माता अपने मन में अपने से ऊंचे, अपने से श्रेष्ठ और अपनी इच्छानुकूल आत्मा को आमन्त्रित करती है। माता अपने मन में अपने गर्भ में बालक के आने से पूर्व इस प्रकार के विचार बना आरम्भ

माता के सम्मुख घी का कटोरा रखकर पिता पूछता था 'किं पश्यसि' इस कटोरे में क्या देखती हो? माता कहती थी 'प्रजां पश्यामि' मैं इसमें अपनी सन्तान को देखती हूं। दिन-रात अपनी सन्तान के निर्माण में माता लीन रहती थी। इन नौ दस महीनों में माता इस एक ध्यान में लीन रहती थी कि उसे एक ऐसी सन्तान को जन्म देना है, जिसे वह अपनी इच्छाओं के अनुसार जो चाहे बना सकती है। उसके गर्भ में जो बन गया उसे फिर बदला न जा सकेगा।

बीच में टोक कर मधु ने पूछा 'बहिन, तुम्हारी बात ठीक भी जच रही है, पर यह विश्वास नहीं हो रहा है कि बच्चे को कुछ बनना है वह अपनी मां के पेट में ही बन जाता है यदि मां की पेट में ही बच्चे का भविष्य निर्धारित हो जाता हो तो वह कौन-सी मां है जो उसे खराब बनाना चाहेगी। माता तो सदा अपने बच्चे को अच्छा ही बनाना चाहती है। गुप्त जी ने लिखा भी है। 'माता न कुमाता, पुत्र कुपुत्र भले ही' जब माता कुमाता नहीं तब पुत्र कुपुत्र कैसे हो जाता है?'

१३२ ईसाइयों की शुद्धि का भव्य आयोजन

उपदेशक विद्यालय की स्थापना होगी

रांची—प्राप्त समाचार के अनुसार प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी सिमडेगा सब डिवीजन अन्तर्गत स्थित रामरेखा धाम मे कार्तिक पूर्णिमा के मेले के अवसर पर महन्त श्री जयराम जी प्रपन्न के उद्योग से एक विशाल शुद्धि महायज्ञ का आयोजन हुआ। दि० ४-११-६८ को रात्रि मे सांस्कृतिक कार्यक्रमोपरान्त ५ नवम्बर को प्रात: ११ बजे से प० गोविन्दप्रसाद आर्य विद्यावारिधि के पौरोहित्य मे गुरुकुल वैदिक आश्रम पानपोश के संस्थापक व कर्मठ आर्य सन्यासी स्वामी ब्रह्मानन्द जी के संरक्षण में २१ परिवारों के १३२ वनवासियों ने ईसाई धर्म का स्वेच्छा से त्यागकर पुनः सत्य सनातन वैदिक धर्म मे प्रवेश किया। इस अवसर पर महन्त जयराम जी प्रपन्न व स्वामी ब्रह्मानन्द जी के अतिरिक्त स्वामी शिवानन्द जी तीर्थ (लोहरदगा) ब्र० यशपाल दीक्षित (सिमडेगा) ब्र० सुरेन्द्रकुमार सामवेदी एवं गुरुकुल वैदिक आश्रम पानपोश के ब्रह्मचारी गण उपस्थित थे।

मध्याह्नोत्तर मेले में इस क्षेत्र के सुदूर ग्रामों एवं अञ्चल से आये हुये बन्धुओं ने देश व धर्म के रक्षार्थ हिन्दू धर्म रक्षा केन्द्रीय समिति का गठन किया। साथ ही यह भी निश्चय किया गया कि छोटा नागपुर कमिश्नरी के शान्ति आश्रम, लोहरदगा या वैदिक आश्रम गोविन्दपुर मे शीघ्रातिशीघ्र एक उपदेशक विद्यालय की स्थापना की जाय जो नई दिल्ली के सार्वदेशिक सभान्तर्गत अराष्ट्रिय प्रचार निरोध समिति के तत्वावधान में चलेगा। उपदेशक विद्यालय के संचालन का भार स्वामी ब्रह्मानन्द जी, स्वामी शिवानन्द जी तीर्थ एवं प० गोविन्दप्रसाद आर्य विद्यावारिधि को दिया गया। रात्रि में विभिन्न स्थानों के आये वक्ताओं द्वारा प्रवचन कार्य हुआ।

—दयाराम पोद्दार मन्त्री

गोरक्षा-आन्दोलन

दशम् आर्य महासम्मेलन के प्रस्ताव

हैदराबाद आन्ध्र प्रदेश की राजधानी हैदराबाद में दशम् सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन के अन्तर्गत विनायकनगर के विशाल प्रांगण मे सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री तथा संसत्सदस्य लाला रामगोपाल जी शालवाले की अध्यक्षता में गोरक्षा सम्मेलन हुआ।

लाखों के जन समुदाय को सम्बोधित करते हुए पुरी के शंकराचार्य श्री निरञ्जनदेव जी तीर्थ ने अपने उद्घाटन भाषण मे कहा कि धार्मिक, सामाजिक तथा आर्थिक सभी दृष्टि से गाय के महत्व को बताया और कहा कि वैदिक साहित्य मे सर्वत्र गोरक्षा को परमावश्यक एवं धर्म माना गया है। उन्होंने आगे कहा कि हिन्दुओं के धर्म ग्रन्थों के अतिरिक्त मुसलमानों के कुरान तथा ईसाइयों के बाइबिल मे भी गोहत्या का विधान नहीं है। यदि कोई यह प्रामाणित कर दे कि इनमे कहीं भी गोहत्या का विधान है तो मैं शङ्कराचार्य की गद्दी छोड़ने को तैयार हूं।

श्री शङ्कराचार्य ने हिन्दू धर्म मे स्त्रियों के अधिकारों की चर्चा करते हुए कहा कि वैदिक धर्म में सर्वत्र स्त्रियों के सम्मान तथा अधिकारों की चर्चा है। उन्होंने स्त्रियों को वैदिक धर्मानुसार समान अधिकार दिये जाने की घोषणा की। श्री शङ्कराचार्य ने चार मास के पश्चात् पुनः गोरक्षा आन्दोलन आरम्भ करने की भी बात कही।

विगत गोरक्षा आन्दोलन में आर्यसमाज के सहयोग की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि गोरक्षा आन्दोलन में आर्यसमाज का सहयोग सराहनीय रहा है और मैं उनके इस सहयोग का इस जीवन मे तथा अगले जन्मों में ऋणी रहूंगा।

अध्यक्षपद से बोलते हुये सार्वदेशिक सभा के मन्त्री तथा संसद सदस्य लाला रामगोपाल जी शालवाले ने कहा कि आर्यसमाज ने गोरक्षा के लिये अनेक बलिदान दिये हैं। यदि भारत सरकार ने ४० करोड़ जनता की भावनाओं की ओर ध्यान नहीं दिया तो इसके गम्भीर परिणाम होंगे।

श्री शालवाले ने आगे कहा कि केन्द्रीय सरकार गोरक्षा के प्रश्न को प्रान्तीय सरकारों का प्रश्न बताकर टालना चाहती है। इसलिये मेरा आन्ध्र-प्रदेश के श्री रेड्डी सरकार से अनुरोध है कि वह अपने राज्य में कानूनन गो वंश की हत्या पर पाबन्दी लगाये अन्यथा कहीं आर्यसमाज को इसी हैदराबाद में जिस प्रकार कि निजाम को गद्दी से उतारने के लिये महान आन्दोलन करना पड़ा था उसी प्रकार रेड्डी सरकार के विरुद्ध भी आन्दोलन करना पड़े। इसलिये प्रदेश सरकार को शीघ्रातिशीघ्र कानूनन गो हत्या पर पाबन्दी लगानी चाहिये।

के जोशीले गीत सुनती थी, उससे जो उसके हृदय मे वीरता की तरगें उठती थीं उन्होंने नेपोलियन को नेपोलियन बना दिया। कौरव और पाडव सेना में चक्रव्यूह को तोड़ने की शक्ति अर्जुन के अतिरिक्त अभिमन्यु मे ही थी। अभिमन्यु ने चक्रव्यूह भेदन की विद्या अपनी माता के गर्भ में सीखी थी। प्रिंस बिस्मार्क जिसने नेपोलियन को हराया उसके विषय में कहा जाता है कि जिस माता के गर्भ में वह था। वह अपने घर के द्वार पर लगे हुए नेपोलियन की सेना के तलवारों के चिह्नों को जब देखा करती थी, उस समय उसके हृदय मे फ्रांस से बदला लेने की इच्छा प्रबल हो उठती थी। इन संस्कारों ने फ्रांस से बदला लेने वाला बिस्मार्क पैदा कर दिया। गर्भावस्था की दस महीने की मशीन इतनी जबर्दस्त है, इस समय बालक पर डाले गये संस्कार इतना वेग रखते हैं कि जन्म जन्मान्तर के संस्कार ढीले पड़ जाते हैं। तभी मनुष्य जन्म को दुर्लभ माना गया है। अन्य जन्मों में यह बात सम्भव नहीं।

भारती बड़ी गम्भीरता से इन वचनों को सुन रही थी उसके मन में कुछ कहने की उत्कण्ठा जागृत हो ही रही थी कि कमलेश ने प्रश्न कर दिया "बहनजी, कारण शरीर क्या है जो माता-पिता के रजवीर्य में बनता ?"

सरला बहन ने कहा कि आज तो समय बहुत अधिक हो गया है। तुम्हारा प्रश्न समझने योग्य है इसमें समय भी लगेगा। इसलिए अगले दिन की बैठक में हम तुम्हें कारण शरीर और रजवीर्य से बनने का तात्पर्य समझावेंगे। आज तो बस यह याद रक्खो 'भारतीय स्त्री का स्वरूप माता का स्वरूप है। वह 'मिस इण्डिया' या 'मिस वर्ल्ड' नहीं बनना चाहती वह तो विदुला, गार्गी, मैत्रेयी और जीजाबाई बनना चाहती है वह तपस्या की साक्षात प्रतिमा है। वह साधना और परिश्रम का मूर्त्तिमान्रूप है। वह बालकृष्ण से बातें करती है, उसे शिक्षित करती है, उसका जीवन निर्माण के लिये श्रृङ्गार करती है, उसे नैवेद्य लगाती है। सबकी सेवा करना ही उसका काम है। वह कभी सन्तान को जन्म देती है, कभी भोजनादि के द्वारा परिवार का पालन-पोषण करती है, परिवार की उलझी बातों को सुलझाती है, अटकी बातों का समाधान करती है। उसके लिये स्वतन्त्रता नहीं, समय नहीं विनोद नहीं, आनन्द नहीं। सबका आनन्द, परिवार का आनन्द, परिवार का सुख उसका आनन्द है, उसका सुख है। वह शराब के नशे में चूर अपने गिरे हुए पति को प्रेम से उठाकर महानन्द बना देती है। वह घर का सारा अपमान सहकर घर को स्वर्ग बना देती है। पति के हजारों अपराधों को क्षमा कर देती है। बच्चों की लात सहती है—वह क्षमा की मूर्ति है, पवित्रता का आदर्श है, सहनशीलता की साक्षात प्रतिमा है। अपने बच्चों को कमालने वाली और राष्ट्रिय जीवन को बनाने वाली माता को अनन्त प्रणाम !

आर्यसमाज के वर्तमान सङ्गठन से निराश आर्यों को आवश्यक सूचना

आर्य बन्धुओ। आपकी सेवा मे नम्र निवेदन किया जाता है कि यदि आप किसी भी कारण से वर्तमान सङ्गठन से निराश होकर अलग हो गये है, तो आप पुनः सङ्गठन का शुद्ध आर्य सङ्गठन का रूप देने के लिये निम्न पते पर पत्र-व्यवहार करें। साथ ही असन्तोष का कारण भी व्यक्त करें। बड़ी कृपा होगी।

—विश्वबन्धु शास्त्री
वरिष्ठ उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश
आर्य नगर मूड बरेली

स्वामी श्रद्धानन्द जी की ४२ वीं बलिदान जयन्ती २५ दिसंबर १९६८ बुधवार को

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य नई दिल्ली तथा दिल्ली की समस्त आर्य संस्थाओं की ओर से स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की ४२ वीं जयन्ती २५ दिसम्बर ६८ बुद्धवार को मनाई जायगी। इस उपलक्ष मे हर साल की भांति एक जुलूस श्रद्धानन्द बलिदान भवन से दिन के ठीक १२ बजे निकलेगा। यह जलूस खारी बावली, नया-बांस, लालकुंआ, काजीहाउस, चावड़ी बाजार, नयी सड़क, घण्टाघर, चांदनी चौक, दरीबा, अस्पताल रोड होता हुआ ठीक सायं ४ बजे गांधी मैदान पहुंचेगा। वहां पर एक सार्वजनिक सभा होगी। इस सभा मे आर्य नेता पूज्य स्वामी जी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे। आर्य केन्द्रीय सभा आर्य समाजों तथा आर्य संस्थाओं से प्रार्थना करती है कि वह इस बलिदान जयन्ती को मनाने के लिए अभी से जुट जायें।

—रामनाथ सहगल, मन्त्री

वार्षिक उत्सव

—आर्य समाज रुदौली का वार्षिक उत्सव दिनाङ्क १४ से १६ नवम्बर तक बड़े समारोह पूर्वक मनाया गया। जिसमे श्री प० बिहारीलाल जी शास्त्री काव्यतीर्थ, श्री प० सत्यमित्र शास्त्री तथा आचार्य वाचस्पति जी के तीन दिनों तक सारगर्भित व्याख्यान हुये।

उत्सव के पश्चात् १७ नवम्बर को श्री पं० विद्याभिक्षु जी एम० ए० एल० टी० के नाती शचीन्द्र शर्मा व प्रतिभारानी का यज्ञोपवीत सस्कार बड़े उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ।

श्री विद्याभिक्षु जी अस्वस्थ !

श्री प० विद्याभिक्षु जी एम० ए० एल०टी० अध्यक्ष आर्यसमाज रुदौली जो स्थानीय हिन्दू इण्टर कालेज के प्रधानाचार्य हैं। १९ नवम्बर को रात्रि मे रक्तचाप के तीव्र आक्रमण से पुन विशेष अस्वस्थ हो गये है।

श्री आचार्य जी बाराबङ्की के वार्षिक उत्सव में व्याख्यान करते समय इस बार मूर्छित अवस्था मे घर लाये गये। विशेष आश्चर्य की बात यह है कि श्री आचार्य जी रक्तचाप के प्रथम आक्रमण में ३०० डिग्री ब्लडप्रेशर में भी जीवित रहे जिसे देखकर बड़े-बड़े डाक्टर दंग रह गये।

—मन्त्री

वधू की आवश्यकता

क्षत्रिय वशज, आर्य परिवार गुरुकुल वृन्दावन का स्नातक, डबल एम० ए० कर रहा है, घर पर अच्छी जमीन है, उम्र २५ साल। सुन्दर व स्वस्थ युवक के लिए बी० ए०, एम० ए० शिक्षित सुन्दर व स्वस्थ वधू की आवश्यकता है। जाति बन्धन तोड़कर भी सम्बन्ध हो सकेगा। विशेष जानकारी के लिये पत्र व्यवहार करें।

पता—
सत्यदेव आर्य
मु० बड़ेंगा, धर्मनिवास, शिकोहाबाद
जि० मैनपुरी

वर चाहिए

कक्षा १० मे पढ़ रही है, सोलह वर्षीया, गोराङ्गी, सुन्दर, स्वस्थ, शिष्ट सक्सेना कायस्थ, कुलीन परिवार के प्रति सजातीय कर्मठ आर्य वर शिक्षित की आवश्यकता है, जो परिवार-सहित दहेज-प्रथा को अभिशाप समझता हो।

पत्र-व्यवहार का पता—
कृष्णगोपालदास 'कृष्ण'
डवलपमेण्ट-आफिसर
लाइफ इन्श्योरेन्स कारपोरेशन आफ इण्डिया
स्थान, पोस्ट—मोगांव
जि० मैनपुरी (उ० प्र०)

विश्वकर्मा वंशज बालकों को

७०००) का दान

श्री भवानीलाल गज्जलाल जी

श्री भवानीलाल गज्जूलाल जी शर्मा स्थिर निधि

१- विश्वकर्मा कुलोत्पन्न श्रीमती तिज्जोदेवी-भवानीलाल शर्मा कुकहास की पुण्य स्मृति मे श्री भवानीलाल जी शर्मा अमरावती (विदर्भ) निवासी ने श्री विश्वकर्मा वंशीय बालकों के हितार्थ ७०००) की धन राशि सभा को समर्पण कर बी० जी० शर्मा स्थिरनिधि की योजना निम्नलिखित नियमानुसार भाद्रपद संवत् २०१४ वि० सितम्बर १९५७ ई० को स्थापित की।

२—इस मूलधन से वार्षिक ब्याज जो कुछ प्राप्त होगा, उसे उत्तरप्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा विश्वकर्मा वंशज गरीब, असहाय किन्तु होनहार बालक बालिकाओं के शिक्षण मद मे व्यय करती रहेगी।

३—उक्त निधि से आर्थिक सहायता लेने वाले इच्छुकों को मास जुलाई मे [illegible] के स्टाम्प भेजकर सभा से छपे फार्म मगाकर भरकर भेजना आवश्यक है।

श्रीमती तिज्जो देवी

★मन्त्री आर्यप्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश लखनऊ

उत्सव

★

प्रभात का समय है। नवयुवक दौड़-दौड़ कर मेज कुर्सियाँ ला-ला कर जहां पर उत्सव होने वाला है, रख रहे हैं। इन नवयुवकों मे गरीब धनवान् दोनों प्रकार के नवयुवक है। कुछ विलासी स्त्री-पुरुष इन नवयुवकों को इतना कठिन परिश्रम करते हुए देखकर यह कहते हुये कि ये अभी छोकरे हैं इन्हे अपने घर का काम काज करना चाहिये। तब तक उन्हीं नवयुवको में पंकज भी दिखाई पड़ा जो एक डिप्टी कलक्टर का लड़का था, वह एम० ए० मे पढ़ रहा था। उन विलासी स्त्री-पुरुषों ने जब उसे अपने सिर पर कुर्सी लाते हुये देखा तब आश्चर्य का ठिकाना न रहा। उन लोगों ने उन नवयुवको से पूँछा कि आज क्या होगा जो आज लोग इस शरद ऋतु मे ठिठुरते हुये इतना कठोर परिश्रम कर रहे है। पंकज ने कहा कि आज से आपके नगर मे आर्य समाज का उत्सव होने जा रहा है। आप लोग सायंकाल मधुर गीत तथा ओजपूर्ण व्याख्यान सुनने अवश्य आइयेगा। इतना कहकर पंकज अपने कार्य मे तल्लीन हो गया। पंकज उत्साह के साथ व्याख्यान वेदी को सजा रहा हैं। व्याख्यान वेदी के सामने ओ३म् ध्वज गगन को चूम रहा है। व्याख्यान देने वाले महानुभाव के पीठ पीछे एक सुन्दर वस्त्र पर "कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्" अर्थात् सारे विश्व को आर्य बनाओ लिखा हुआ है, जिसे श्रोता महानुभाव पढ़कर गद-गद हो रहे हैं। मण्डप के सामने यज्ञ कुण्ड बना हुआ है,जिसमें से सुवासित धूम सारे नगर को सुवासित कर रहा हैं।

सायंकाल का समय हो रहा है। सूर्यदेव अस्ताचल की ओर द्रुति गति से जाते जा रहे है। संध्या सुन्दरी चन्द्रमा के साथ विहँस रही है। स्त्री-पुरुष उत्सव में आ रहे हैं। देवियों के बैठने का अलग प्रबन्ध है। आर्यसमाज का मंडप खचा-खच भर रहा है। प्रेमलता ने अपनी माँ से कहा कि आज मैं आर्य समाज के उत्सव में जाना चाहती हूं, आप आज्ञा दे दें। प्रेमलता की मां ने कहा कि पुत्री तुम बी० ए० की छात्रा हो, तुम्हें अपनी परीक्षा की तैयारी करनी चाहिये। तुम्हें वहां क्या मिलेगा। प्रेमलता ने कहा कि आर्यसमाज के एक दिन के उत्सव से मेरी परीक्षा की हानि नहीं होगी। माँ ने प्रेमलता से कहा कि पुत्री तुम अपने पिता से भी पूछ लो। प्रेमलता ने कहा कि माँ वे मना कर जाने देंगे। वे यही कहेंगे कि वहाँ पर तुम्हें क्या मिलेगा, यदि तुम्हारा मन अधिक ब्यग्र हो तो सिनेमा देख आओ। प्रेमलता के पिता पुलिस में उच्चाधिकारी है,उन्होंने जल्दी घर आकर प्रेमलता की मा से कहा कि मुझे जल्दी भोजन करा दो, मेरी डियूटी आर्यसमाज के उत्सव में लगी है जहाँ मुझे कुछ सिपाहियो को लेकर जाना है, क्योंकि उसमें एक क्रान्तिकारी आ रहा है। उसे मुझे गिरफ्तार करने के लिये आदेश मिला है। प्रेमलता ने कहा कि मैं भी उत्सव मे जाना चाहती हूं। पिता ने कहा कि पुत्री तुम वहाँ जाकर क्या करोगी प्रेमलता ने कहा कि मैं अवश्य चलूँगी।

प्रेमलता अपने पिता के साथ आर्य समाज के उत्सव मे आई,तो वहाँ देखती है कि आर्यसमाज का पन्डाल भरा हुआ है। वह अपने पिता से अलग होकर एक किनारे पर बैठ गई। उनके तथा उसके पिता के आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब देखा कि पंकज इस उत्सव का

सूत्र संचालन कर रहा है। व्याख्यान वेदी पर हारमोनियम की मधुर रागिनी निकल रही है और भजनोपदेशक की कोकिल कंठ से मधुर संगीत सुनकर आनन्द के सागर मे डूब रहे हैं, अगणित नरनारी। उसी समय एक नवयुवक दाढ़ी मूँछ रखाये हुये मंच पर विराजमान हुआ। प्रेमलता के पिता ने जल्दी से अपनी जेब से चित्र निकाल कर उस नवयुवक से मिलाने लगा और अपने मन में ऊँचे पदोन्नति की कल्पना करने लगा। जैसे ही संगीत की स्वर लहरी बन्द हुई वैसे ही पंकज ने मंच पर खड़े होकर श्रोताओं से कहा कि सज्जनों! जिसकी प्रतीक्षा आप कर रहे थे, वह नवयुवक अब आप लोगों के सामने अपने हृदय के अंगार को प्रज्वलित करेगा। इस नवयुवक को वैदिक धर्म तथा भारत माता की बेड़ियों को काटने के निमित्त कई बार कारागार की यातनाएं सहन करनी पड़ी है और मेरे विचार से यह फिर यहीं से कारागार को जाएंगे। मैं इन नवयुवक क्रान्तिकारी से प्रार्थना करता हूं कि वे आकर अपने हृदय अङ्गार को हम लोगों के मानस में जला दें जिससे हम लोग क्रांति की ज्वाला बनकर वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार तथा भारत माता की दासता की बेड़ियाँ तोड़ सकूँ। जैसे ही पंकज के स्वर बन्द हुये उसी समय वह नवयुवक क्रान्तिकारी मंच पर आकर खड़ा हो गया और वेद के इस पवित्र मन्त्र को मधुर कण्ठ से उच्चारण कर कि—"ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तन्न आसुव।" अपने हृदय उद्गार निम्न प्रकार से प्रकट किया भद्र पुरुषो! मेरे हृदय मे जहां वेदों की शान्ति मन्दाकिनी बहती है वहीं पर जब मैं देखता हूं कि वेदों की उपेक्षा करके शिक्षित लोग वाम मार्ग के पथिक बनकर व्यभिचार का खुला प्रचार करते है और ईश्वर तथा धर्म को भूलकर अशान्ति की ज्वाला में जल रहे हैं तब मुझ इनकी दयनीय दशा पर जहां दया आती है। वहीं पर इनके गुरुओ के प्रति घृणा उत्पन्न होती है और मेरे मानस की ज्वाला इन व्यभिचार कराने वाले गुरुओं को भस्मी भूत करने को आतुर हो जाती है। आ मेरे नवयुवकों तथा नवयुवतियों! तुम एकान्त मे बैठकर भला सोचो तो कि तुम्हारा जन्म किस लिये हुआ कि क्या खा पीकर मर जाने के लिये हो। जिस भूमि में तुम लोग जन्मे हो उसी भूमि में राम-कृष्ण बुद्ध दयानन्द भी जन्मे थे। देश भक्त प्रताप ने राजा होकर भी घास की रोटी खाई थी और राजा मानसिंह चाटुकारिता करके अपनी बहिन देकर अपने को कलंकित किया था। क्या १८५७ ई० को कभी तुम भूल सकते हो जहाँ पर झाँसी की रानी ने खड्ग चमकाकर नारियों को वीरता का मार्ग प्रशस्त कर गई। अब मैं देखता हू कि माँ मेरी अब भी सिसक रही है। भारत माता के खण्ड होते जा रहे हैं, ईसाई अपनी सुन्दर युवतियों द्वारा हिन्दुओं के लड़कों को ईसाई मत मे प्रवेश करा रहे हैं। कितने मन चले हिन्दू नवयुवक इनके नुकीले प्रेम बाणो से बिन्धकर चिल्ला रहे हैं। जहाँ ईसाई अथवा यह नाटक खेल रहे हैं मेरे इस पुण्य भारत भूमि में वहीं पर "करुणा निधि" लिखने वाले क्रांतिकारी गुरुवर दयानन्द के शिष्य को गो वध सरकार द्वारा कराते हुये देखकर जब अपनी ही सरकार हैं आँखों में लाल डोरे आ जाते है। सिनेमाओं द्वारा नवयुवकों तथा नवयुवतियों को प्रेम के बाणों से मार कर नपुंसक बनाये जा रहा है। पाकिस्तान के कितने भक्त

★ लक्ष्मीनारायण शास्त्री

साहित्यरत्न मुजहनी गोंडा

अभी भारत मे बैठे हमारी छाती पर मूंग दल रहे हैं, किन्तु सरकार मुसलमान बिगड़ न जायें मौन धारण किये बैठी है, हिन्दी माँ की सौत बनकर अभी अंग्रेजी मुस्करा रही है। युवको तुम्हें क्रान्ति की ज्वाला सुलगानी है मुझे क्या मैं बलिदान होने को आतुर हूं। जैसे ही व्याख्यान समाप्त हुआ प्रेमलता के पिता ने उसे गिरफ्तार कर लिया। वह हँसता कारागार की ओर चला जा रहा है। और प्रेमलता उसे अश्रु भरे नयनों से देख रही है और कहा कि यहाँ नहीं रहूंगी।

●

[पृष्ठ २ का शेष]

मानने को हम बाध्य हैं।

विद्युत को भी हम देख तो नहीं सकते, परन्तु उसके अस्तित्व और आश्चर्यजनक शक्ति का न्यूनाधिक ज्ञान इस वैज्ञानिक युग मे लगभग सभी को है। विद्युत सिनेमा रेडियो, टेलीविजन, टेप रिकार्डर, तार, टेलीफोन, रेलो का इञ्जन, छपाई की विशालकाय मशीनें, आटा पीसने की चक्की इत्यादि का संचालन एवं अनेकों महान शक्ति से सम्पन्न होने वाले कार्यों का सम्पादन होता है। कितनी अपूर्व विलक्षण, बलवती शक्ति है वह। विद्युत जब किसी तार मे होकर गमन कर रही होती है तो हम उसे देख तो नहीं सकते, परन्तु उस तार के स्पर्शमात्र से जब वह हमें प्रबल वेग से धक्का देती है तो हम जान लेते हैं कि उसमें विद्युत है। एक ही शक्तिशाली विद्युत से युक्त तार सहस्रों जीवधारियों को स्पर्श मात्र से एक पल मे मारने को समर्थ है। अस्तु उस निराकार विद्युत और उसकी निराकार शक्ति का अस्तित्व भी हमें मानना ही पड़ता है, यद्यपि हम उसे देख नहीं सकते। एक दूसरा ज्वलन्त उदाहरण विद्युत शक्ति से सम्बन्धित हमे आत्मा की हमारे शरीरों मे विद्यमानता का ज्ञान कराने वाला यहां दे देना असंगत न होगा, प्रत्युत उपयुक्त ही होगा। विद्युत का बल्ब तो आप सभी ने देखा होगा जो विशेष रूप से शहरों में जहाँ विद्युत का प्रचलन है, लगभग प्रत्येक मकान मे रात्रि को प्रकाश करते दिखाई देते हैं।

(क्रमशः)

पंजीकरण सं० एल.-६०
मार्गशीर्ष १० अंक १९९० मार्गशीर्ष शु०१२
(दिनांक १ दिसम्बर सन् १९६८)

आर्य्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पता—'आर्य्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष्य : २५९९३ तार : "आर्यमित्र"

सुझाव और सम्मतियां

केवल पांच वर्ष शेष हैं

केवल इतना ही समय और बचा है जब हम आर्यसमाज की स्थापना शताब्दी मनायेंगे। आर्यसमाज ने जो काम किये हैं, वे अद्भुत हैं। महान् हैं, गौरवपूर्ण हैं आर्यसमाज के कामों को अब वे लोग अपना रहे हैं, जो लोग कभी उन कार्यों के विरोधी थे। युवायुवति-विवाह, स्त्रियों की उच्च शिक्षा, शुद्धि आदि कार्य अब सब हिन्दू अपना रहे हैं। वेदों का पढ़ना पढ़ाना भी सबके लिये खुल गया है।

परन्तु, आर्यसमाज की कार्य-पद्धति अब बदल गई है। पहले आर्यसमाज वह काम करता था, जिसे और लोग नहीं कर पाते थे। आर्यसमाज पथ-प्रदर्शक था। परन्तु, अब आर्यसमाज औरों का अनुकरण कर रहा है। पहले अगुआ था अब अनुचर!

ऐसा क्यों हो रहा है? क्योंकि आर्यसमाज नेतृ विहीन है। अतः नेत्र विहीन है। कहने को तो सैकड़ों नेता हैं, किन्तु, वस्तुतः नेता का अभाव है।

लीडरों की धूम है,
और फालवर कोई नहीं।
हैं सभी जनरल यहां,
आखिर सिपाही कौन है।

अस्तु, जैसा कुछ-भी है, अब तो इसी दशा मे काम करना है। सारवान् साहित्य का प्रकाशन प्रथम कार्य है! ऐसा साहित्य जो विदेशो मे भेजा जा सके, हमारे पास कहां है? वैदिक धर्म की भौतिकवाद और विज्ञान से तुलना करनी होगी। मतवादियो की भ्रान्तियों का निराकरण और वैदिक धर्म की महत्ता दिखानी होगी। समाज मे वैदिक धर्म ही सामञ्जस्य स्थापित कर सकता है यह सिद्ध करना होगा।

भारत के सब प्रान्तों में प्रचार

अभी तक कई प्रान्त हैं, जहाँ आर्य समाज का प्रचार नहीं। बङ्गाल, आन्ध्र तामिल और केरल में। उन प्रान्तों के कितने व्यक्ति आर्यसमाजी हैं। पड़ोसी देश नेपाल में भी अभी प्रचार नहीं हो सका। विदेशों में आर्यसमाज का कुछ भी प्रचार नहीं, जबकि श्री विवेकानन्द जी के नगाड़े बज रहे हैं। हमें अपने पड़ोसी देश वालों को आर्य धर्म में लाना चाहिये। विदेशों में कई दृष्टियों से अमेरिका और पश्चिमी जर्मन में प्रचार करना बहुत आवश्यक है। उपयोगी है। भारत के लिए हितकर है।

शुद्धि

शुद्धि का काम बन्द हो गया है। शुद्धि सभा जिनके हाथ में है, उन्हें अपने कर्त्तव्य का ध्यान नहीं। भारत में एक करोड़ से अधिक व्यक्ति शुद्ध हो सकते हैं [illegible] वर्ष के भीतर यदि लगन के साथ धैर्य से काम किया जाये।

ऋषि कृत ग्रन्थों का शुद्ध प्रकाशन

ऋषि के ग्रन्थों का उत्तराधिकार वैदिक यंत्रालय अजमेर को मिला हुआ है, परन्तु, इसकी यह विशेषता है कि जो भी कुछ छपे वह अशुद्धियों से पूर्ण होना चाहिए। सत्यार्थ प्रकाश का ३५ वाँ संस्करण हमारे सामने है जिसकी शुद्धि का दावा किया गया है, और इस पर कई पण्डितो के नाम भी छपे हैं, जिनमें कई ऐसे हैं, जिन्होंने सत्यार्थ-प्रकाश को मन लगाकर शायद ही पढ़ा हो, उनकी रुचि ही इसमे नहीं है।

ऋग्वेद का भाष्य भी साधारण अशुद्धियों से भरपूर है जितने भी सत्यार्थ प्रकाश छपे हैं, सब ही त्रुटिपूर्ण हैं, और एक पंडित दूसरे को कोस रहा है। इन सब सत्यार्थ प्रकाशों और पंडितों को इकट्ठा करके सब के संशोधन द्वारा सर्व सम्मत एक संस्करण प्रकाशित किया जाये।

सभा भवन का निर्माण

सभा भवन की बुनियादें यदि भर जायें तो कई व्यक्ति हैं जो कमरे बनवाने को तैयार हैं। सभा अधिकारियों और अन्तरङ्ग सदस्यों को इधर समय देना चाहिए।

प्रत्येक अन्तरङ्ग सदस्य अपने सप्ताह में १५ दिन लगाये। उप अधिकारी १ मास और प्रमुख अधिकारी दो मास लगावें। मैं भी अपना समय लगाने को तैयार हूं। काम की योजना बनाई जावे।

प्रत्येक आर्य समाजी का कर्त्तव्य है कि एक घण्टा नित्य समाज के काम में लगावे।

सर्वेक्षण

आर्य समाज इतना पुराना हो गया है कि इतने समय में कई दोष भी उत्पन्न हो सकते हैं। अतः आर्य समाज की संस्थाओं, संन्यासियों, उपदेशक प्रचारकों आदि का निरीक्षण किया जाये इसके लिये योग्य लोगों का एक आयोग बनाया जाये।

—बिहारीलाल शास्त्री

★

विश्व-वैचित्र्य

दो पेंस के डाक-टिकट की अब एक लाख पौण्ड कीमत

लंदन—गत १४ अक्तूबर को यहां एक विलक्षण डाक टिकट का प्रदर्शनी हुई। इस टिकट की कीमत एक लाख पौंड बताई जाती है।

वैसे यह केवल दो पेंस का टिकट है। इसको १८४७ में ब्रिटिश सरकार की ओर से मोरीशस में जारी किया गया था।

कहते हैं ब्रिटेन के उपनिवेशों में डाक टिकट जारी करने का यह पहला अवसर था। इससे पहले चिट्ठी लाने वाले को चिट्ठी पाने वाला पारिश्रमिक दिया करता था।

इस टिकट के प्रशंसकों के अनुसार इस टिकट को उस समय के मारिशस के अंग्रेज गवर्नर की पत्नी ने अपने लिये एक फ्रांसीसी चित्रकार से तैयार कराया था।

उन्होंने किसी भोज का आयोजन किया था। उसके लिये आमन्त्रित किये गये व्यक्तियों को, जो चिट्ठियां भेजी गई थीं, उन पर इसका इस्तेमाल किया गया, था ताकि उनको चिट्ठी लाने वाले को पारिश्रमिक न देना पड़े। इस प्रकार के पांच सौ टिकट छपवाये गये थे।

यह टिकट इस समय एक अमरीकी संग्रहकर्त्ता की सम्पत्ति है। इसको लंदन भेजने से पहले उसने इसका एक लाख ८० हजार डालर का बीमा कराया था।

सूरज की किरणों से बिजली

लंदन—टेम्स नदी के ५ लाइट हाउस को सूर्य की किरणों से बनायी गई बैटरियों से चलाया जाएगा, ऐसा उसके अधिकारियों ने निश्चय किया है।

ये बैटरियां ऐसे पुरजों से तैयार की गई हैं, जो सूरज की किरणों को बिजली में बदल देती हैं। इन पर साधारण बैटरियों की अपेक्षा खर्च कम आता है।

इस प्रकार की बैटरियां राजस्थान जैसे सूखा ग्रस्त प्रदेशों में काम आ सकती हैं। इनमे रोशनी के अतिरिक्त ऐसी शक्ति प्राप्त की जा सकती है जिससे साधारण इन्जन चल सकें।

एम्बुलेंस कार्यकर्त्ताओं को गुरुद्वारे में न घुसने दिया गया

लंदन—दूलवर हैम्पटन नामक स्थान के गुरुद्वारे में वहां के सिखों ने एम्बुलेंस के कार्यकर्त्ताओं के अन्दर नहीं घुसने दिया जबकि एक सिख महिला अन्दर बेहोश पड़ी थी और वे उसको अस्पताल ले जाना चाहते थे।

सिखों को इस बात पर आपत्ति थी कि एम्बुलेंस के कार्यकर्त्ताओं ने अपना सिर नहीं ढका और जूते भी नहीं उतारे।

रोगी स्त्री की अवस्था को बिगड़ जाने का समाचार पाने पर एम्बुलेंस के लोग जबरन अन्दर घुस गये और महिला को हस्पताल ले गये।

अब उस नगर के सिखों में यह कहा जा रहा है कि उनके धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप किया गया।

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के लिये मधु:मवीद आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से कृष्णगोपाल वर्मा द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित

आर्य्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. का मुखपत्र

मित्रस्याऽहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे

लखनऊ-रविवार मार्गशीर्ष १७ शक १८९०, पौष कृष्ण ३ वि० सं० २०२५, दिनाङ्क ८ दिसम्बर १९६८ ई०

परमेश्वर की अमृत वाणी-

सैकड़ों कमा, हजारों दे

शतहस्त समाहर सहस्रहस्त संकिर।
कृतस्य कार्य्यस्य चेह स्फातिं समावह॥
३-२४-५)

[शत हस्तः] सैकड़ों हाथों वाला होकर [सम+आ+हर] एकत्र कर के आ [सहस्र हस्तः] हजारों हाथों वाला होकर [स+किर] समानता से बखेर दे अर्थात् दान दे। [कृतस्य+च] किये हुए कर्म का और [कार्य्यस्य] आगे किये जाने वाले कर्म का [स्फातिम्] विस्तार (इह) इस संसार में [सम+आ+वह] भली प्रकार सर्वथा प्राप्त कर।

मनुष्य को दो हाथ होते हुये भी ...र्थ से उत्साह पूर्वक धर्मानुसार विद्या, धन और धन आदि का अर्जन इस प्रकार करना चाहिये मानो उसके सैकड़ों हाथ हों। तत्पश्चात कमाए हुये आध्यात्मिक और भौतिक धन को धर्मानुसार सहस्रों रूपों में वितरित करने के लिये सदैव उद्यत रहना चाहिये। दानशीलता से ही पुण्य अर्जित होते हैं, मानव जन्म सफल होता है और लोक व परलोक दोनों बनते हैं।

—'बसन्त'

कानपुर में-

सभा प्रधान श्री पं. प्रकाशवीरजी शास्त्री को २०४७) की भेंट

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान माननीय श्री पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री संसद् सदस्य को २३ नवम्बर १९६८ को कानपुर की आर्य समाजों द्वारा सभा के लिए २०४७) रुपयों की राशि भेंट की गई। जिसका पूर्ण विवरण इस प्रकार है-

११००) आर्य समाज मेस्टन रोड कानपुर।
३००) आर्य समाज लाजपत नगर कानपुर।
२५१) आर्य समाज गोविन्द नगर कानपुर।
२५१) आर्य समाज सीसामऊ कानपुर।
५१) आर्य समाज शास्त्रीनगर कानपुर।
३१) वेद प्रचार मण्डल कानपुर।
२१) आर्य समाज दर्शनपुरवा कानपुर।
२१) आर्य समाज नवाबगंज कानपुर।
२१) आर्य समाज जवाहरनगर कानपुर।
———
२०४७) सर्वयोग

इसके पूर्व भी माननीय प्रधान जी को पिछले मास मेरठ से ११०१), झांसी से १००१), देहरादून से १०००) व नैनीताल से ५००) की राशियां सभा के लिये अर्पित की गई हैं। जिनके विस्तृत समाचार आर्यमित्र के विगत अङ्कों में प्रकाशित किये गये हैं।

दिसम्बर मास में हरदोई (बाराबंकी), लखनऊ तथा अन्य स्थानों से माननीय प्रधान जी को सभा की सहायतार्थ राशियां अर्पित की जाने वाली हैं।

सभा को सुसंगठित करने के लिए, सभा के नव भवन निर्माण के लिए तथा आर्य समाजों के झगड़ों को न्यायपूर्वक निपटा कर आर्य समाजों में नव-जीवन संचार के लिए सभा प्रधान, मन्त्री एवम् अन्य सभाधिकारी विशेष रूप से प्रयत्नशील हैं, और उत्तर प्रदेश का भ्रमण करेंगे। समस्त आर्य समाजों का कर्त्तव्य है कि वे सभाधिकारियों का सर्वत्र स्वागत करें, और प्रान्त के आर्य संगठन को सुदृढ़ करने के लिये तन, मन, धन से पूर्ण सहयोग दें।

वर्ष	अङ्क
७०	४३

वार्षिक मूल्य १०)
छमाही मूल्य ६)
विदेश में २०)
एक प्रति २५ पै०

इस अंक में पढ़िए!

१—अध्यात्म-सुधा १
२—सम्पादकीय ३
३—सभा तथा धार सूचनायें ४
४—दयानन्दस्वामी के पैरों में अश्रु ५
५—नैतिक उत्थान आन्दोलन ६
६—राजनैतिक समस्याएं ७
७—स्वास्थ्य० या ८
८—महान् दयानन्द ९
९—आर्यजगत् ११-१२
—जीवन-ज्योति १२

सम्पादक—
—प्रेमचन्द्र शर्मा
—सभा मन्त्री

आत्मा और परमात्मा का भेद एवं निराकार परमात्मा के दिव्य दर्शन की झांकी

★ जियालाल कुलश्रेष्ठ आर्य
सीपरी बाजार झांसी

(गताङ्क से आगे)

यह बल्ब प्रकाश तभी देते हैं जब उनसे सम्बन्धित सूक्ष्म तारों में विद्युत का संचार होता रहता है। यही विद्युत संचार बल्ब का जीवन कहा जा सकता है, परन्तु ज्यों ही वह फ्यूज हुआ अथवा उसमें विद्युत का संचार बन्द हुआ, उसके प्रकाश का तत्क्षण अन्त हो जाता है, और वह उसी अवस्था में निर्जीव-सा पड़ा रहता है। साधारणतया आंखों से देखने में उसमें कोई अन्तर दृष्टिगोचर नहीं होता, परन्तु उसके जीवन का अन्त हो जाता है। अब यह विदित हो गया कि अदृश्य विद्युति ही बल्ब का जीवन थी जो अब उससे पृथक हो गई है। ठीक इसी प्रकार मनुष्य के शरीर और जीवात्मा का सम्बन्ध है। ज्यों ही अदृश्य चेतन जीवात्मा जो वास्तव में बुद्धि मन और इन्द्रियों द्वारा कार्य कर रहा है शरीर से पृथक हुआ कि उस (शरीर) की मृत्यु हो जाती है, और वह निर्जीव, गतिहीन शरीर, यद्यपि देखने में बल्ब की भांति ही यथा पूर्व दृष्टिगोचर होता है, निश्चेष्ट पड़ा रह जाता है, उसकी सभी इन्द्रियाँ निष्क्रिय हो जाती हैं, क्योंकि क्रिया तो चैतन्य निराकार जीवात्मा में थी न कि शरीर और इन्द्रियों में जो स्वयं जड़ है एवं ज्ञान और प्रयत्न विहीन। जिसकी विद्यमानता में जो कार्य हो और पृथक् हो जाने से न हो उसी का कार्य हो सकता है अन्य का नहीं, जैसे लोहे में अग्नि का प्रवेश हो जाने से उसमें जलने का गुण आ जाता है, परन्तु ठण्डा हो जाने पर अर्थात अग्नि से पृथक हो जाने पर उसमें वह गुण नहीं रहता। क्योंकि जलना गुण अग्नि का है न कि लोहे का। इस उदाहरण से शरीर में अदृश्य चैतन्य जीवात्मा के अस्तित्व का निसन्देह पूर्णत समर्थन हो जाता है।

अन्य नक्षत्रों की भांति पृथ्वी में भी आकर्षण शक्ति अदृश्य है जो किसी भी भारी से भारी द्रव्य को अपनी ओर आकर्षित करने में समर्थ है। एक अन्य ऐसी ही अदृश्य शक्ति है जो अत्यन्त महान् विशालकाय नक्षत्रों, सूर्य, चन्द्र, पृथ्वीलोक इत्यादि सभी को इस महान् ब्रह्माण्ड में सदैव अपनी-अपनी परिधि में घूमते हुए यथा स्थान स्थिर रखती है। कोई किसी से कभी टकराता नहीं है। कितनी अद्भुत बलवती शक्ति है परन्तु वह परमात्मा ही की देन है। हम सब इस पृथ्वी पर आकर्षण शक्ति के द्वारा ही ठहरे हुए हैं। यदि वह शक्ति हटा ली जाय तो हम इस विशाल ब्रह्माण्ड में प्रबल वेग से इस अनन्त आकाश में ऊपर जाकर एक पल में विलीन हो जावें, और संसार में किसी का भी अस्तित्व न रहे। इस तथ्य को हाल ही में पिछले कुछ वर्षों में अन्तरिक्ष यात्रियों ने रूस और अमरीका में सिद्ध करके दिखा दिया है।

अब हम अपने मूल विषय के और अधिक निकट आकर आत्मा का स्वरूप जानने का प्रयास करेंगे क्योंकि बिना आत्मा को जाने परमात्मा को जान ही नहीं सकते। दोनों ही चेतन अदृश्य शक्तियाँ हैं। आत्मा अमरण धर्मा एवं नित्य है, आत्मा का स्वरूप भी आत्मा के गुण, कर्म और धर्म से ही जाना जा सकता है। परमात्मा ने ही मनुष्य को जो कुछ दिया है, उसी से उसके गुण, कर्म एवं धर्म का यथार्थ ज्ञान हो सकता है। जीवात्मा को परमात्मा ने प्राण, अर्थात शरीर में जीव धारण करने वाली शक्ति जिसके निकल जाने से जीवन का अन्त हो जाता है, मन बुद्धि एवं इन्द्रियाँ दी हैं। अतः जीवात्मा का धर्म (मन से) इच्छा करना (बुद्धि से) ज्ञान प्राप्त करना और (इन्द्रियों से) कर्म और प्रयत्न करना है। जीवात्मा परमात्मा की अपेक्षा अत्यन्त अल्पज्ञ, अल्प शक्ति वाला एवं एकदेशी है। उसकी सभी इन्द्रियाँ अल्प ज्ञान वाली हैं। आंखें थोड़ी ही दूर देख सकती हैं, कान थोड़ी ही दूर तक का शब्द सुन सकते हैं। इसी प्रकार नाक मुँह, त्वचा इत्यादि सभी में अल्पज्ञता है। परन्तु परमात्मा प्रदत्त बुद्धि बल से यन्त्रों द्वारा तथा विद्युत तरंगों की सहायता से वह बहुत दूर अर्थात सहस्रों, लाखों मील दूर तक का भी शब्द सुनने में समर्थ है। रेडियो तरंगों द्वारा यह सब सम्भव है। टेलीविजन द्वारा वह हजारों मील दूर हो रहे खेल तथा अन्य सभी सांसारिक कार्यों को भी देख सकता है। अस्तु यह प्रत्यक्ष है कि जीवात्मा प्रत्येक ऐसा कार्य मन, बुद्धि और इन्द्रियों की सहायता से ही कर सकता है, अन्यथा नहीं, जब कि परमात्मा अपने सभी कार्य बिना किसी की सहायता से ही करने में समर्थ है। उसके संकल्प मात्र से इस महान जगत की उत्पत्ति हो जाती है, उसको किसी अन्य की सहायता की आवश्यकता अपने स्वाभाविक कार्यों की पूर्ति के लिए नहीं होती। परमात्मा के प्रकाश से ही सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र आदि प्रकाशित हैं। जड़ होने से उनमें कोई शक्ति निज की नहीं है, वह सब चैतन्य परमात्मा ही की देन है। तार में विद्युत का प्रवेश अथवा संचार चैतन्य आत्मा के ज्ञान एवं कर्म द्वारा ही होता है, जड़ तार में अपनी कोई शक्ति नहीं है। परन्तु जीवात्मा की शक्तियाँ सीमित हैं वह वही कर सकता है जो उसके मन, बुद्धि तथा सीमित ज्ञान द्वारा इन्द्रियों से सम्भव है। उसकी इन्द्रियां भी इस बात का प्रमाण हैं कि उसका ज्ञान और शक्ति परिमित है। परमात्मा ने सभी जीवधारियों को इन्द्रियां उनके गुण एवं कर्मानुसार ही दी हैं, और उन्हीं से उनकी शक्ति एवं कार्यों का यथार्थ बोध होता है। शेर और हाथी में शारीरिक शक्ति मनुष्य से कहीं अधिक है परन्तु मनुष्य बुद्धि, बल (निराकार शक्ति) से उन्हें भी अपने वश में कर लेता है। अनेकों जड़ शक्तियाँ जो सूक्ष्म और अदृश्य हैं, महान् हैं, जैसा ऊपर बताया जा चुका है। जीवात्मा की शक्ति अति सूक्ष्म और चैतन्य होने से उनसे कहीं अधिक महान् है। इसने जलयान, दूर वीक्षण यन्त्र, अणुबम, रेडियो, टेलीफोन, टेप रिकार्ड, ग्रामोफोन, राकेट, स्पुतनिक, रेल, मोटर कार, सिनेमा, वायुयान, इत्यादि बना कर संसार में कितने आश्चर्यजनक और महान् कार्य किये हैं। जिन्हें देखकर यह मान लेना पड़ता है कि सूक्ष्म अदृश्य आत्मा ही शरीर में रह कर मन, बुद्धि, और इन्द्रियों द्वारा इन सभी महान कार्यों को करने में समर्थ है, जो ऊपर बताये जा चुके हैं, न कि जड़ इन्द्रियां।

उपरोक्त व्याख्या से यह भली-भांति समझ में आ गया होगा कि अदृश्य चैतन्य और सूक्ष्म मनुष्य की आत्मा ही इस संसार में उपरोक्त सभी कार्य करती है, न कि अन्य जड़ और भौतिक पदार्थ। शक्ति आत्मा में है न कि जड़ जगत में, अस्तु हमें आत्मा का अस्तित्व मानना ही पड़ता है, और जब हमने आत्मा का अस्तित्व मान लिया तो परमात्मा का अस्तित्व भी मानना ही पड़ेगा जो अत्यन्त सूक्ष्मतम और महान् तथा चैतन्य शक्ति है और सर्वत्र व्याप्त है। आत्मा को कर्म करने के लिये इन्द्रियाँ अपेक्षित है, परमात्मा को नहीं क्योंकि वह सर्व शक्तिमान है, वह अपनी अनन्त शक्ति से संसार के सभी अपने कार्य नियमित रूप से कर रहा है, जैसे सूर्य, चन्द्र, एवं नक्षत्रों का नियमित रूप से घूमना, दिन रात का होना, हवाओं का नियमानुसार चलना, ऋतु परिवर्तन, वर्षा का होना, ज्वार भाटा सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण सृष्टि रचना, प्रलय इत्यादि का अपने अपने समय पर होते रहना जो मनुष्य की शक्ति से नितान्त परे हैं। आत्मा परमात्मा का अंश नहीं जीव और ब्रह्म के वैधर्म्य होने से जीव और ब्रह्म कभी एक नहीं हो सकते, क्योंकि अंश में भी वही गुण होते हैं जो पूर्ण में जैसा कि जल, वायु, अग्नि, सुवर्ण इत्यादि में विज्ञान द्वारा परीक्षण करके देखे और जाने जा सकते हैं।

परमात्मा सुख, दुःख, चिन्ता, राग, द्वेष, घृणा इत्यादि से रहित है, जीव नहीं। परमात्मा पूर्ण, सर्वज्ञ, एवं सर्व शक्तिमान है, जबकि जीव अपूर्ण अल्पज्ञ एवं अल्प शक्ति वाला है। जीवात्मा कर्म करने वाला है, परमात्मा कर्म फलों को देने वाला। वह स्वयं कोई ऐसा कर्म नहीं करता जिसका फल अपेक्षित हो।

[शेष पृष्ठ १२ पर]

अध्यात्म-सुधा

अभी एक शताब्दी भी नहीं हुई है, इसकी नैया को विश्वसिन्धु के किस मंझधार में जाकर डुबोयेंगे, इसका वे स्वयम् अनुमान कर अपनी करनी को सुधारें तो अत्युत्तम होगा। यदि समय रहते वे नहीं चेते तो भयङ्कर दुष्परिणामों के भोगी होंगे, और आर्यसमाज के इतिहास में दुर्योधन शकुनि सम कलंकित हो जायेंगे।

पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज की जिस आन्तरिक वेदना के कारण उनके नेत्र अश्रुओं से छलछला उठे हैं वे हमारे आर्य नेताओं के हृदयों को द्रवित करने के लिये पर्याप्त होने चाहिये। उन्हें सत्य मार्गी होने के कारण दुराग्रह मिथ्याभिमान को तुरन्त छोड़ देना चाहिये, और निकृष्ट स्वार्थ से ऊंचा उठ कर परमार्थ की ओर अग्रसर होना चाहिए। यदि अब भी वे न समझें तो वैदिक धर्म के अनुयाइयों का यह पावन कर्त्तव्य होगा, कि वे उन्हें बल पूर्वक गद्दियों से उतार फेंके और आर्य समाज जैसी पवित्र धार्मिक संस्था की बागडोर इन स्वार्थियों व पद लोलुपों के स्थान पर पूज्य आनन्द स्वामी जी महाराज के पावन और दृढ़ हाथों में दें। हम ऋताचारी हैं और दुष्कृतों से हम नहीं तर सकते जैसा कि प्रभु ने पुनीत वाणी में कहा है:—

"ऋतस्य पन्था न तरन्ति दुष्कृतः।"

जाना सब को बारी-बारी

★

आर्य जगत् के अन्तर्क्लेश के कारण जहाँ आर्यजन एक ओर दुःखी हैं वहां दूसरी ओर एक-एक करके जो महान् विभूतियां हमारे मध्य से उठती चली जा रही हैं और रिक्त स्थानों की पूर्ति होती दृष्टिगत नहीं हो रही है, उसके लिये उनकी मनोव्यथा और भी बढ़ी हुई है। आर्यसमाज का यह कैसा दुर्भाग्य है कि इस वर्ष अनेक महान् आत्माओं का हमसे विछोह हो गया है। प्रसिद्ध शास्त्रार्थ महारथी प० रामचन्द्र देहलवी वेद मूर्ति प० दामोदर सातवलेकर जी, पूज्य प० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय, स्वामी अमृतानन्द जी, ब्र० अखिलानन्द जी आदि के निधन के पश्चात् अब हमें प० भगवद्दत्त जी प्रसिद्ध वैदिक अनुसन्धान कर्त्ता तथा स्वामी सुधानन्द जी के देहावसान के समाचार प्राप्त हुए हैं। प० भगवद्दत्त जी की जीवन ज्योति के सम्बन्ध में हम एक लेख इस अङ्क में दे रहे हैं। स्वामी सुधानन्द जी के जीवन के विषय में एक लेख आगामी अङ्क में प्रकाशित किया जाएगा।

आर्यमित्र परिवार दोनों महात्माओं के वियोग से पीड़ित होकर परमपिता परमात्मा से जहाँ उनकी आत्माओं की शान्ति के निमित्त प्रार्थना करता है, वहां आर्य जगत् से इस बात की कामना करता है कि वैदिक धर्म के प्रचार के पुनीत कार्य को और दृढ़ता से अपने हाथ में लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति के लिये उद्यत हों। परस्पर कलह और द्वेष का परित्याग कर हम अपने वास्तविक ध्येय की ओर यदि आज अग्रसर हों, तो दिवंगत आत्माओं के प्रति यह हमारी सच्ची श्रद्धाञ्जलि होगी। कथनी के स्थान पर करनी की श्रद्धांजलि ही श्रेयस्कर होती है और हमें वही अर्पित करनी चाहिये।

★

सभा की सूचनायें

आर्य समाजों के साप्ताहिक सत्संगों को रोचक बनाने के लिये उत्तर प्रदेश की समस्त आर्यसमाजों को सूचित किया जाता है कि—

१—आर्य समाजें अपने आर्य मन्दिरों को शुद्ध सफाई के साथ रखने की कृपा करें। मन्दिरों पर ध्वजा 'ओ३म् की अवश्य लगाई जाय।

२—रविवार के दिन प्रातः साप्ताहिक अधिवेशन उत्तम रीति के साथ मनाने का पुरोगम बनाया जावे। जिससे जनता में उत्साह पैदा हो।

३—समाजों के अधिकारी आर्य सभासदों, एवं जनता से समयानुसार उनके गृहों पर जा-जा कर सम्पर्क स्थापित करें।

४—समाज के अधिवेशनों में बालक बालिकाओं तथा देवियों के लिये विशेष रूप से आमन्त्रित करने के लिये प्रेरणा करें।

५—आर्यसमाजों को विशेष रूप से इस बात पर बल देना चाहिये कि आर्यसमाज मन्दिर में प्रातः सायं सत्संग हुआ करें आर्यसमाज मन्दिर में प्रतिदिन दैनिक हवन-यज्ञ करने का अवश्यमेव आयोजन किया जाए। जिससे जनता जनार्दन में उत्साह उत्पन्न हो। इससे आर्यों के परिवारों पर भी विशेष रूप से प्रभाव पड़ेगा। और आर्यसमाज के कार्यों में भी जागृति होगी।

आशा की जाती है कि आर्यसमाजों के अधिकारी गण उपर्युक्त निवेदन पर विशेष रूप से ध्यान देकर सभा को कृतार्थ करेंगे।

—प्रेमचन्द्र शर्मा सभा मन्त्री

उत्तर प्रदेशीय समाजों से निवेदन

सभा से सम्बन्धित सभी आर्य समाजों के मन्त्री महोदयों से यह निवेदन है कि वर्ष १९६८ का सभा प्राप्तव्य धन दशांश, सूद कोटि एवं पवनी फण्डादि किन्हीं उपदेशक प्रचारक को न देकर सीधा प्रतिनिधि सभा कार्यालय ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ को मनीआर्डर से भेजा जाये—अन्यथा अधिवेशन के समय प्रतिनिधियों को स्वीकार करना सम्भव नहीं होगा।

उपदेशकों व प्रचारकों को सूचना

सभा के प्रत्येक उपदेशक एवं प्रचारक को यह आदेश दिया जाता है कि वर्ष १९६८ का सभा का प्राप्तव्य धन दशांश, सूद कोटि एवं पवनी आदि फण्ड किसी समाज से प्राप्त न करें। केवल वेदप्रचार की राशि ही प्राप्त करें।

३१ दिसम्बर ६८ तक का समस्त हिसाब १५ जनवरी १९६९ तक कार्यालय में अवश्य भेज दें।

आवश्यक सूचना

सभा के महोपदेशक श्री पं० बलवीर शास्त्री को उत्तर प्रदेश की समाजें, उस समय तक कोई धन देने का कष्ट न करें, जब तक इनके सम्बन्ध में दूसरी आज्ञा सभा आर्यमित्र में प्रकाशित न करें।

जनवरी ६८ से अब तक जिन समाजों अथवा आर्य महानुभावों ने इनको धन दिया हो, कृपया उसकी सूचना सभा कार्यालय को अविलम्ब भेजने का कष्ट करें।

निरीक्षकों की सेवा में—

आर्यमित्र तथा कार्यालय द्वारा आपकी सेवा में निवेदन किया जा चुका है कि आप आर्य समाजों के निरीक्षक नियुक्त हुये हैं। इस सम्बन्ध में बहुत ही न्यून महानुभावों की स्वीकृति मिल सकी है—कृपया आप अपनी स्वीकृति अविलम्ब भेजने का कष्ट करें, ताकि प्रमाण पत्र एवं निरीक्षण फार्म आदि भेजे जा सकें।

—विक्रमादित्य 'वसन्त'
मुख्य उपमन्त्री सभा

भू-सम्पत्ति विभाग की सूचना

उत्तर-प्रदेश के समस्त आर्य समाजों को विदित हो कि दिनांक १७ नवम्बर १९६८ के आर्यमित्र में भूसम्पत्ति विभाग की सूचना प्रकाशित की गई थी, किन्तु अब तक सभा कार्यालय को पूर्वीय क्षेत्र के एक आर्य समाज की सूचना प्राप्त हुई है। अन्य किसी भी आर्यसमाज ने ध्यान नहीं दिया। अतः पुनः निम्न प्रकार सूचना प्रकाशित की जा रही है।

विश्वास है कि आर्यसमाज इस ओर विशेष ध्यान देकर सभा को सूचित करेंगे।

"सभा के अन्तर्गत भू-सम्पत्ति विभाग की प्रदेश में बिखरी हुई चलअचल (भू-सम्पत्ति) को संग्रह करने का कार्य प्रारम्भ कर दिया गया है। आप के शहर, जिला, तहसील, कस्बा आदि में सभा के नाम जिस प्रकार की भी जायदाद हो, उसकी निम्नांकित सूचना सभा को शीघ्र देने की कृपा करें।"

१—सम्पत्ति के दान-दाता का नाम, पतादि।

२-सम्पत्ति किस प्रकार की है मकान दुकान, भूमि आदि?

३—जायदाद किस निमित्त प्रदान की गई?

४—सम्पत्ति का मूल्य क्या है?

५—सभा से नाम कब रजिष्ट्री हुई।

६—दान-पत्र (दस्तावेज) कहाँ है?

७—आय-व्यय विवरण

८—प्रबन्धक कौन है?

हरप्रसाद आर्य
अधिष्ठाता, भू-सम्पत्ति विभाग
५ मीराबाई मार्ग लखनऊ

आर्यसमाजों से आवश्यक निवेदन

आर्य समाज सावली आदि पचपुरी गढ़वाल में स्यूंसी नामक स्थान में पर्वतीय प्रदेश में प्रचार कार्य को व्यवस्थित रूप देने के लिये आर्यसमाज मन्दिर बनाने का निश्चय किया है और इस कार्य के लिये दस हजार रुपये की अपील आर्य जगत् से सहायतार्थ निकाली है। इस अपील को आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली का समर्थन प्राप्त है। अलग से सार्वदेशिक सभा के महासचिव माननीय लाला रामगोपाल जी शालवाले ने भी समाजों से अपील निकाल कर सहायतार्थ निवेदन किया है। आर्यमित्र और सार्वदेशिक साप्ताहिक में अपीलें प्रकाशित हो चुकी हैं। यह पर्वतीय प्रदेश पौराणिक और वाम मार्गियों के गढ़ हैं। अराष्ट्रिय तत्व ही यहाँ क्रियाशील हैं, परन्तु आ० स० को सहयोग नहीं मिल सकता। वैसे यहाँ धन की भी कमी है। यह कार्य बिना आर्य जगत् के सहयोग के हो ही नहीं सकता।

दस हजार की धनराशि कोई बड़ी नहीं है धन इस समाज के पास अथवा प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश या सार्वदेशिक सभा के पास कहीं भी भेजा जा सकता है, परन्तु उसकी सूचना यहाँ हमारे पास भेजनी आवश्यक है ताकि उनके आधार पर काम किया जा सके। समाज मन्दिर बनेगा, निश्चय हो चुका है। परन्तु आपके आर्थिक सहयोग की नितान्त आवश्यकता है। विलम्ब न कीजिये, शीघ्र धन भेजिये।

—शान्तिप्रकाश 'प्रेम'
सदस्य अन्तरङ्ग सभा
मन्त्री आ०स० पचपुरी
पो० बंजरो, गढ़वाल

हैदराबाद आर्यमहासम्मेलन में-

महात्मा आनन्दस्वामी जी महाराज के नेत्रों में अश्रु

[एक प्रत्यक्ष दर्शी की लेखनी से]

★

हैदराबाद आर्य महासम्मेलन में प्रथम ही दिन ८ नवम्बर को जब विषय निर्धारिणी की बैठक प्रारम्भ होने जा रही थी। मञ्च पर प्रात काल समस्त देश के प्रतिनिधि सैकड़ों की सख्या मे आकर उपस्थित हुये। महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज ने प्रधान का आसन ग्रहण किया और सब को आदेश दिया कि सब मिलकर "विश्वानि देव" अग्ने नय सुपथा और गायत्री मन्त्र का पाठ करें। मन्त्र पाठ समाप्त होते ही आचार्य विश्वश्रवा जी ने सबको सम्बोधित करते हुये कहा, कि इस आर्य महासम्मेलन की क्या [illegible]ा है। जब कि हम आर्य हाई कोर्ट मे मुकदमे लड़ रहे हैं। सार्वदेशिक सभा और पजाब सभा के मध्य वर्षों से मुकदमे हो रहे हैं। बम्बई सभा मे भी मुकदमे हो रहे हैं। सार्वदेशिक सभा के निर्वाचन मे भी कोर्ट ने हस्तक्षेप किया, एक आर्य भाई सार्वदेशिक सभा पर स्टे आर्डर लाये। हमारा निर्लज्जता का यह एक नग्न दृश्य है और यहाँ हम दूसरो को उपदेश देने के लिये भव्य पण्डाल बना रहे हैं, और महात्मा बन कर प्रस्ताव पास करेंगे कुछ लज्जा तो आनी चाहिए। अत. मेरा प्रस्ताव है कि सर्व प्रथम यह निर्णय हो कि ये झगड़े समाप्त हो तब आर्य महा सम्मेलन हो।

इस पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान मन्त्री ला० रामगोपाल शालवाले ने कहा कि मै तो समझता था कि आचार्य जी आवेश मे ही बात कहा करते है, पर आज जिस सात्विक भाव से हृदय की वेदना के साथ आचार्य विश्वश्रवा: जी ने प्रस्तावना प्रारम्भ की है, मै इस [illegible]र का हृदय से स्वागत करता हू। [illegible] समस्या का निर्णय होना चाहिये।

श्री धर्मेन्द्रसिंह जी देहरादून, पं० शिवकुमार जी शास्त्री ससद्-सदस्य तथा आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के प्रधान श्री नारायणदास जी कपूर आदि सब ही प्रान्तों के प्रतिनिधियों ने इस विचार का समर्थन किया। फिर भी कुछ अवाञ्छनीय तत्त्व वहाँ उपस्थित थे। जो यह नहीं चाहते थे कि यह प्रस्ताव पास हो, वे मुकदमेबाजी मे ही विश्वास रखते थे। फलस्वरूप साढ़ेचार घण्टे तक इस विषय पर विचार हुआ। बा० सोमनाथ जी मरवाहा ऐडवोकेट ने कहा कि हमने पहले भी श्री आनन्द स्वामी जी के सुपुर्द यह सब कुछ किया था। इस पर महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज ने इसका विरोध किया कि यह बात बिल्कुल असत्य है कि मेरे सुपुर्द कुछ भी किया गया। महात्मा आनन्द स्वामी ने विषय को स्पष्ट करते हुये बताया कि नारायणदास कपूर जी ने पंजाब सभा और सार्वदेशिक सभा के प्रमुख व्यक्तियों को बुलाया और मै भी उपस्थित था, और एक प्रस्ताव इस ढग का बनाया कि सब झगड़े मेरे सुपुर्द कर दिये जावें। इस समझौते पर पंजाब सभा के प्रधान प्रो० रामसिंह जी मन्त्री पं० रघुवीरसिंह जी शास्त्री, प० जगदेव जी सिद्धान्ती आदि सहयोग देवें, यह उपहास था।

महात्मा आनन्द स्वामी जी ने कहा कि मैंने बम्बई जाकर सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री प्रताप भाई को स्पष्ट कहा कि यह विषय मेरे सुपुर्द किया गया है, या मेरे मुँह पर चपत लगाई गई है और मैंने यह प्रस्ताव उन्हीं को दे दिया। महात्मा जी ने कहा कि न्याय सभा का बन्धन तथा मुझे आदेश देकर मुझे बाँध कर मेरे सुपुर्द झगडो को करने का जो नाटक करते हो उसमे मैं कुछ नहीं कर सकता। इस पर पं० प्रकाश-

> पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी को दशम आर्य महासम्मेलन में अध्यक्ष बना कर जो गौरव प्रदान किया गया है, उसकी आर्यजगत् में सर्वत्र सराहना की गई है। ऐसे दिव्य देव के नेत्रों से अश्रुपात होना इस बात का द्योतक है कि आर्य-जगत् में होने वाले संघर्षों के कारण स्वामी जी महाराज को कितनी घोर मानसिक वेदना है।
>
> हम परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते है कि ऋषि दयानन्द को आचार्य मानने और विश्व को आर्य बनाने के जय घोष लगाने वालों को सद्बुद्धि प्रदान करे ताकि वे निजी स्वार्थों से ऊपर उठकर परमार्थ के पावन पथ पर चलने वाले महात्मा आनन्द स्वामी जी को पूर्ण सहयोग देकर शान्ति पाठ करने वाले आर्य बन्धुओ के सामाजिक संघर्षों को समाप्त कर उन्हें शान्ति प्रदान करने में समर्थ हो सकें।
>
> —सम्पादक

ने भी हस्ताक्षर कर दिये, और सार्वदेशिक सभा की ओर से ला० रामगोपाल जी शालवाले और बा० सोमनाथ जी मरवाहा ऐडवोकेट ने भी हस्ताक्षर कर दिये. और मेरे भी हस्ताक्षर करा लिये गये। प्रतीत ऐसा हुआ कि [illegible] झगड़े समाप्त हो [illegible] महात्मा आनन्द स्वामी जी ने बात को और स्पष्ट करते हुए कहा कि सार्वदेशिक की अन्तरग जो बम्बई मे हुई उसमे इस प्रस्ताव को रद्दी की टोकरी मे डाल दिया गया और यह निर्णय मेरे पास भेजा कि जैसा न्याय सभा ने निर्णय किया उसके अनुसार सार्वदेशिक सभा के प्रधान को महात्मा आनन्द स्वामी

तथा अन्य सब प्रान्तो के प्रतिनिधियों ने एक स्वर मे कहा, कि इस समय समस्त आर्य जगत् आप को सर्वमान्य नेता स्वीकार करता है, और बिना किसी बन्धन मे आपको डालते हुए सब झगड़े आप के सुपुर्द करता है, आप कोर्ट के सब मुकदमे वापिस करायें निर्णय सब आपके अधीन है. जो उचित समझें फैसला दे दें। इस पर महात्मा आनन्द स्वामी जी ने पूछा कि सार्वदेशिक सभा के जो व्यक्ति बैठे हैं, वे क्या कहते हैं ? दूसरा पक्ष तो यहाँ है ही नहीं। जिससे कहूं, तब ला० रामगोपाल जी शालवाले आदि जो सार्वदेशिक सभा के अन्तरंग सदस्य और अधिकारी वहाँ उपस्थित थे, उन्होंने महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज को पूर्ण आश्वासन दिया कि बिना किसी शर्त को लगाये यह प्रस्ताव हम सार्वदेशिक की अन्तरग मे स्वीकार कर लेंगे। साढ़े चार घण्टे की बहस के बाद यह प्रस्ताव सर्व सम्मिति से विषय निर्धारिणी मे पास हुआ फिर। आर्य महासम्मेलन के खुले अधिवेशन मे यह प्रस्ताव रखा गया और जय जय के नारों के बीच एक लाख की उपस्थिति मे यह प्रस्ताव पारित हुआ और समस्त आर्य जगत् ने महात्मा आनन्द स्वामी जी मे विश्वास प्रकट किया, और देश देशान्तर के समस्त आर्य जगत् का सर्वमान्य नेता स्वीकार किया और इस आशा मे कि अब पूर्ण निर्णयों का कोई बन्धन महात्मा जी पर नहीं लादा जावेगा। और वे निष्पक्ष दृष्टि से सबका निर्णय कर देंगे, और सब मान लेंगे, और अब कोर्ट मे केस नहीं चलेंगे। समस्त आर्य जगत् ने सुख की सांस ली, और हर्ष ध्वनि के साथ आर्य सम्मेलन के खुले अधिवेशन मे महात्मा आनन्द स्वामी जी को निर्णायक चुना।

(दिल्ली में स्वार्थियों की प्रतिक्रिया)

जब यह समाचार देहली पहुंचा तब वह दृश्य हमे याद हो आया कि रामायण काल मे भरत मिलाप के समय जब सब धरती खुशी हो रही थी, उस समय दो व्यक्ति रो रहे थे। इसी प्रकार जब महात्मा आनन्द स्वामी के सुपुर्द सब झगड़े कर दिये गये है, यह समाचार देहली पहुचा सब खुशी से भर गये पर दिल्ली मे दो व्यक्तियो ने इसका विरोध प्रदर्शन करते हुय कहना शुरू कर दिया, कि देखेंगे यह कैसे होता है ? महात्मा आनन्द स्वामी जी कौन होते हैं ? ऐसा प्रतीत होता है, कि ये दो व्यक्ति अपने व्यक्तिगत स्वार्थों से प्रेरित होकर आर्य [illegible]त् मे शान्ति नहीं चाहते है। हम इ[illegible] समय उनके नामो पर पर्दा ही डाले रखना चाहते हैं और उन दोनों से आर्य जगत् के हित मे निम्न शब्दों मे निवेदन करते है कि वे महात्मा आनन्द स्वामी जी को पूर्ण सहयोग दें, और सघर्ष मिटा कर शान्ति स्थापित होने दें। अन्यथा हमें उनके स्वार्थों से आर्य जगत् को अवगत कराना पड़ेगा।

★

नैतिक उत्थान आन्दोलन

पाप-विवेचन

पाप क्या है इस विषय पर विश्व के सभी मतवादियों ने अपने-अपने दृष्टिकोण से विचार किया है। सभी ने अपने-अपने सम्प्रदायों के मान्य ग्रन्थों के अनुकूल आचरण को धर्म तथा उनके प्रतिकूल आचरण को अधर्म घोषित किया है। सभी मतवादियों के धर्म ग्रंथ केवल उन सम्प्रदायों के मानने वालों के लिये ही उपदेश देते हैं, तथा वे परस्पर मे विरुद्ध भी हैं। कोई भी मजहबी ग्रन्थ मानव मात्र के व्यापक कल्याण के दृष्टिकोण से नहीं लिखा गया है, अत उनके उपदेश भी सार्वभौम मानव को कल्याणकारी नहीं है।

पाप क्या ? पुण्य क्या है ? दार्शनिक विषय अत्यन्त सूक्ष्म दृष्टि से विवेचन चाहता है। केवल वैदिक शास्त्र इस विषय पर समाधान प्रस्तुत करने की स्थिति मे धर्म का लक्षण बताते हुये शास्त्रकार लिखते हैं—

यतोऽभ्युदय निःश्रेयस सिद्धिः स धर्मः।
(वैशेषिक)

अर्थात—जिन कार्यों के करने से जिस तत्व ज्ञान को प्राप्त करने से मानव को इस लोक में शारीरिक मानसिक, आत्मिक एवं सामाजिक उन्नति हो और उस उन्नति को करता हुआ मनुष्य मोक्ष को प्राप्त कर सके वही धर्म है। जिस उन्नति का सम्बन्ध केवल इस जीवन की उन्नति से हो किन्तु मोक्ष प्राप्ति मे वह सहायक न हो अथवा बाधक हो, वह धर्म नहीं माना जा सकता है।

हमारे सामने शास्त्रकार का यह सूत्र धर्म क्या है और अधर्म क्या है ? इस प्रश्न का सारा रहस्य खोलने के पर्याप्त है। मोक्ष प्राप्ति के मार्ग के ... से जो भी बातें बाधक हैं व विरोधी हैं वे सभी पाप हैं। निःश्रेयस के लिये अत्यन्त शुद्ध अत्यन्त परिष्कृत, अत्यन्त उच्च आत्मा की आवश्यकता है। जो कि तभी बन सकती है जब मनुष्य प्रारम्भ से ही धार्मिक वृत्ति का हो, परोपकारी हो, परमेश्वर का प्रिय बनने के लिए उसके ध्यान मे तत्पर रहने वाला हो, प्राणी मात्र के प्रति प्रेम एवं सहृदयता का व्यवहार रखता हो। जो मनुष्य अपने मन को ईर्षा द्वेष दूसरों को हानि पहुचाना, स्वार्थ भावना हिंसा चोरी दुष्कर्म आदि विचारों तथा अभ्यास से दूषित बना लेता है। वह परमात्मा का सान्निध्य नहीं प्राप्त कर सकता है। अभक्ष्य भोजन, तामसिक पदार्थों का सेवन गन्दे विचारों का बार बार मन मे लाना इन सारे कामों से मन व मस्तिष्क दूषित संस्कार वाले बन जाते हैं। जिसका मन व अन्तःकरण मलीन बन जाता है वह परमेश्वर को प्रत्यक्ष रूप से प्राप्त नहीं कर सकता है। अत शास्त्रकार के वचन के अनुसार उस मनुष्य के कर्म निःश्रेयस प्राप्ति मे बाधक होने से धर्म न होकर पाप कर्म उतरते हैं।

—आचार्य डा० श्रीराम आर्य

पाप क्या है ? मन व वचन कर्म वह जो मानसिक भावनाएं दूषित बनती शारीरिक स्वास्थ्य की हानि होती हो, दूसरों को अकारण क्लेश पहुचता हो, सामाजिक, राजनैतिक धार्मिक दृष्टि से जो स्वयं को तथा अन्यों को पतन की ओर ले जाने वाले हों, जिनसे मानव का चारित्रिक ह्रास होता हो, आत्मा के विकास में बाधक हों, उसे निर्मल बनाने के स्थान पर बलहीन बनाने वाले हों वे सभी कार्य, विचार व्यवहार पाप की श्रेणी मे आते हैं।

प्रश्न उपस्थित होगा कि सुकर्मों का निर्देश कहा से प्राप्त किये जावें एक तो उत्तर होगा कि परमात्मा ने मानव को सन्मार्ग प्रदर्शनार्थ एवं उस सन्मार्ग पर चलते हुये मोक्ष प्राप्त करने के लिये समर्थ बनने को वेद द्वारा समस्त आवश्यक उपदेश सृष्टि के प्रारम से दे रखे हैं। सभी मनुष्यों को तदनुकूल आचरण करना चाहिये। उनके विपरीत आचरण पाप होंगे क्योंकि वे मानव के विकास मे बाधक हैं।

प्रत्येक कार्य के संस्कार मानव के लघु मस्तिष्क मे बनते हैं जो कि कई जन्मों मे जाकर धीरे धीरे मिटते हैं। अशुभ कर्मों के जो संस्कार अन्तःकरण मे जमा हो जाते हैं और आवागमन में जीवात्मा के साथ जाते रहते हैं उन्हें भस्म की तरह नहीं मिटाया जा सकता है। किसी भी व्यक्ति मे यह सामर्थ्य नहीं है कि वह अपने व दूसरों के संस्कारों को आशीर्वाद से मिटा सके। साम्प्रदायिक ग्रन्थों कुरान बाइबिल पुराण या गीता आदि के अपने चेलों के इन कुसंस्कारों को पापों को मिटाकर मोक्ष देने के दावे बे सर पैर के एवं मिथ्या रहे हैं। शुभ संस्कारों का फल सुख व आनन्द होता है अशुभ पाप के संस्कारों का प्रभाव दुःख निम्न योनियों मे जन्म आदि देना होता है, करने से करने का न करने से न करने का अभ्यास बनता है। पुनर्जन्म मे दुष्कर्म मे अभ्यस्त जीवों को उन परिस्थितियों मे रखा जाता है कि उनके दुष्कर्म करने के अभ्यास छूट जाते हैं और जीवों का सुधार हो जाता है। साथ ही उनके शुभाशुभ कर्मों के फलों का भोग भ ... ।

जिस प्रकार की परिस्थिति में मनुष्य रहते हैं, जिस प्रकार का साहित्य वे पढ़ते हैं, जैसी संगति उनको मिलती है, वैसे ही उनके विचार व आचार बनते हैं। बार बार एक ही प्रकार के विचारों को मन में लाने से अथवा कार्यों के करने से संस्कारों का निर्माण होता है। श्रेष्ठ संस्कार मानव के उत्थान में सहायक होते हैं। मलिन ... युक्त संस्कार मानव को अपमान व कष्ट देने वाले, संसार में जीवन में परेशानी मे डालने वाले होते हैं। अतः सभी को इस ओर विशेष ध्यान देकर अशुभ कर्मों से अशुभ विचारों से बचना चाहिये ताकि उनके संस्कार अशुभ पाप मय न बनने पावें, और उनका इह लौकिक जीवन पतन की ओर जाने से बचे। क्योंकि जो भी जैसे भी संस्कार एक बार बन जाते हैं वे मनुष्य को निरन्तर उसी मार्ग की ओर जाने को प्रेरित करते रहते हैं। चाहे बाद को मनुष्य संभलने की कोशिश भी करे, किन्तु संस्कारों की प्रबलता अवसर मिलने पर उसे अपने अनुकूल हो जाने पर विवश कर देती है, जैसे कि भूमि मे पड़े रहने वाले बीज अपने अपने अनुकूल जलवायु मिलने पर भिन्न-भिन्न अवसरों पर उगने लगते हैं।

●

जोधपुर में ऋषि की बलिदान भूमि हस्तांतरित की जाये

श्री सेठ प्रतापसिंह शूर जी का श्री सुखाड़िया को पत्र

नई दिल्ली सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष श्री प्रतापसिंह शूर जी वल्लभदास ने राजस्थान के मुख्य मन्त्री श्री सुखाड़िया को पत्र लिखकर मांग की है कि जोधपुर का वह स्थान जहां महर्षि दयानन्द को विष दिया गया था, सभा को दिया जाये ताकि उसे स्मृति व स्मारक का रूप दिया जाये।

श्री प्रतापसिंह शूर जी वल्लभ दास ने लिखा कि जहां आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द की जन्मशती को सौ वर्ष पूरे होकर शताब्दि महोत्सव सन १९७५ मे मनाने का आयोजन हो रहा है, वहां यह इच्छा होना स्वाभाविक है कि उनसे सम्बन्धित जितने भी स्थान भारत में हों, उनको उपलब्ध कर उनको सुरक्षित करके स्मारक के रूप मे उपस्थित किया जाये जिससे भविष्य मे उनके नाम, कार्य व स्मृति के रूप मे ये आने वाली पीढ़ियों को चिर तन प्रेरित करते रहें। महर्षि के जन्मस्थान टंकारा मे महान, मथुरा, हरिद्वार अजमेर दिल्ली प्रयाग उदयपुर आदि बनाये जा चुके हैं और इनके द्वारा जनता की सेवा हो रही है।

महर्षि की निर्वाण स्थली अजमेर में भी स्वामी जी की पुनीत स्मृति को चिरंतन जागृत रखने के लिए वहां सरस्वती उद्यान, दयानन्द उद्यान, वैदिक यन्त्रालय दयानन्द भवन, महर्षि दयानन्द मार्केट आदि संस्थाएं परोपकारिणी सभा द्वारा सचालित हैं जिनके लिए न केवल आर्यसमाज को अभिमान है, वरन राजस्थान सरकार को भी गौरव होना स्वाभाविक है। वहां प्रति वर्ष ऋषि मेला लगता है, जिसमे दूर दूर से सहस्रों नरनारी उपस्थित होकर महर्षि के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

श्री प्रतापसिंह शूर जी वल्लभदास जी ने श्री सुखाड़िया को लिखा कि यदि किसी कारणवश जोधपुर का उक्त स्थान दान स्वरूप राजस्थान सरकार न दे सके तो उसका नैमित्तिक मूल्य लेकर वह स्थान सभा को दे दे तो भी यह कार्य राजस्थान सरकार के लिये गौरवप्रद होगा।

हमें कहां जाना था,

भारत मे जनतन्त्र अपने जीवन के चौराहे पर है, यदि इसे सावधानी से न संभाला गया तो यह आदर्श पद्धति लड़खड़ा सकती है, स्वतन्त्र भारत को रूप रेखा देते समय नेता जी सुभाषचन्द्र बोस ने शायद इस लिये यह कहा था कि जनतन्त्रीय अधिकार एकदम से लोगों पर लाद न दिये जायें, भारत ज्यों-ज्यों इनका आदी होता चले त्यों त्यों अधिकारों का क्रम बढ़ाना चाहिये, अन्यथा परीक्षण देश को मंहगा पड़ सकता है।

कुछ दिनों में आन्दोलन, हड़ताल, घेराव और तोड़ फोड़ आदि की घटनाओं से देश मे यह भी चर्चा चलने लगी है कि आखिर इन सबका अन्त कहां होना है? मजदूरों और मालिकों के झगड़े तो कुछ हद तक समझ में भी आते थे, पर शिष्यों और गुरुओं के विवाद भी सीमा लांघ सकते हैं, यह कल्पना आसानी से नहीं होती थी। अब विधान मण्डलों मे भी कुछ ऐसी घटनायें बढ़ चली हैं। आशङ्का है कि जन तन्त्र की जड़ें कहीं हिल न जायें। बिहार बंगाल, उत्तर प्रदेश और पंजाब की विधान सभाओं मे पिछले दिनों जो काँड हुये थे, वह जन-तन्त्रीय परम्पराओं के लिये अभिशाप थे। लेकिन अब यह प्रवृत्ति धीरे-धीरे संसद को स्पर्श करने लगी है।

उप प्रधान मन्त्री श्री मोरार जी देसाई जब १९६८ का बजट प्रस्तुत करने लगे तब कुछ सदस्यों ने यह प्रयास किया कि वह अपना भाषण न कर सकें, पर उस समय वे सदस्य सफल न हो सके। पिछले सप्ताह प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्द्रागांधी को अविश्वास प्रस्ताव का उत्तर देते समय नहीं बोलने दिया गया। इसकी भी प्रतिक्रिया संसद मे और देश में अच्छी नहीं रही। इसी दिन शाम को परराष्ट्र उप मन्त्री श्री सुरेन्द्रपाल सिंह सीमान्त गांधी अब्दुल गफ्फार खाँ से सम्बन्धित चर्चा का उत्तर दे रहे थे, उन्हें भी लगभग इसी ढंग से रोका गया। उपाध्यक्ष को विवश होकर यह कहना पड़ा आप अपने भाषण का शेष भाग सदन के पटल पर रख दें।

संसद जनता का सर्वोच्च प्रतिनिधि संगठन है। उसमें सरकार के निर्णयों की आलोचना भ की जाय अथवा उन पर रोष का प्रकटीकरण भी मर्यादा में रह कर होना चाहिए। जनतन्त्र की शोभा उसी में है, दुनिया के कई देशों में जनतन्त्रीय परम्परा समाप्त होकर सैनिक शासन स्थापित होते जा रहे हैं। जनतन्त्र की रक्षा के लिये भारत से विश्व को बहुत आशायें हैं। यदि यहां यह अवस्था परम्परायें बढ़ती चली गयीं तो न केवल भारत मे अपितु विश्व में भी जनतन्त्र को खतरा पैदा हो जायेगा।

रिहर्सल ?

प्रधान मन्त्री को अविश्वास प्रस्ताव पर जब नहीं बोलने दिया गया और उस प्रवृत्ति को कुछ सदस्यों ने अच्छा नहीं बताया तब एक सदस्य ने कहा इंगलैंड की पार्लियामेंट मे तो सैकड़ों बार ऐसे अवसर आये हैं, जब प्रधान मन्त्री को नहीं बोलने दिया। लेकिन कहने वाले शायद यह भूल गये कि जो सम्मान इस

राजनैतिक समस्याएं

जनतन्त्रीय परम्परा को उस देश में प्राप्त है उसका भी तो आदी भारत को बनना चाहिए। विधान मण्डलों की कार्यवाही देखने के लिए स्कूल और कालेजों के छात्र भी बड़ी संख्या में प्रतिदिन आते हैं। वे इन सब बातों को देख कर जब घर लौटते हैं, तब रिहर्सल तो शायद वह कालेजों और विश्वविद्यालयों मे भी आकर नहीं करते? सम्वैधानिक परम्पराओं और अपने बड़ों का सम्मान जब विधान मण्डलों में ही नहीं रहेगा तब इन नयी पीढ़ी के छात्रों से क्या आशा की जा सकती है?

कुछ दिन पहले दिल्ली के एक कालेज में एक कांग्रेसी और दूसरे जनसंघी सदस्य के साथ गोष्ठी मे भाग लेने मुझे जाना पड़ा। कार्यक्रम प्रारम्भ होने में कुछ देरी थी, तब तक प्रिंसिपल महोदय के कमरे में लोगों को बैठाया गया। इसी बीच छात्र संघ का एक नेता जो लाउड स्पीकर से अपने सहयोगी छात्रों को शान्ति के हाल में शांत रहने का अनुरोध कर रहा था, उसके अन्य शब्दों में पड़े वह कह रहा था—अरे भाई तुम तो इतना शोर कर रहे हो जितना पार्लियामेन्ट में भी नहीं होता।

सुनकर कुछ शर्म महसूस हुई और उससे भी कहीं अधिक भारत भविष्य पर चिन्ता हुई। हमें कहां जाना था और कहां चल पड़े?

इसी तरह की एक घटना अभी कुछ दिन पहले संसदीय अध्ययन संस्थान द्वारा आयोजित छात्रों की प्रतिमान लोक सभा के अधिवेशन में देखने को मिली। छात्र लोक सभा को आदर्श मानकर चलें, उसी के लिये यह छात्र कार्यक्रम दिल्ली में तीन दिन तक चला। इसके उद्घाटन समारोह मे केरल विश्वविद्यालय के उप कुलपति ने कहा—आज की संसद को छात्र आदर्श मानकर चलें, पहले इस प्रश्न पर तो हमें गम्भीरता से विचार कर लेना चाहिए कहीं ऐसा न हो कि जो कुछ वह आज हैं उतने भी न रहें?

समाचार-पत्र

देश मे चारों ओर ही इस तरह की गतिविधियों पर अपने-अपने ढंग से चिन्ता व्यक्त की जा रही है। लगता है, अब पानी नाक तक पहुंचने की तैयारी कर रहा है। इससे जहाँ सम्बन्धित कुछ अन्य पक्षों को नये ढंग से कुछ निर्णय लेने होंगे, समाचार पत्रों को भी कुछ अस्वस्थ परम्पराओं के सम्बन्ध मे गम्भीरता से कुछ सोचना होगा। जनतन्त्र मे समाचार-पत्रों का विशेष महत्व है। वह जन साधारण और सरकार के बीच की कड़ी है। कुछ व्यक्ति अपने बोलने अथवा प्रदर्शन आदि करने में जब समाचार पत्रों की ओर ही विशेष ध्यान रखते हैं, सरकारी निर्णयों पर इसका क्या प्रभाव होगा उसकी चिन्ता नहीं करते। तब कभी-कभी ऐसा भी लगने लगता है कि कहीं शक्ति विधान मण्डलों से अधिक समाचार पत्रों में तो नहीं जा रही है? संविधान के प्रति आस्था अधिक होने के बजाय समाचार-पत्रों के प्रति तो निष्ठा नहीं बढ़ रही है? यह प्रश्न विचारणीय है। जब वह समाचार है तब स्वस्थ पत्रकारिता उसकी उपेक्षा तो कैसे कर सकती है। स्थिति को मोड़ देने या सम्भालने मे समाचार पत्रों ने विचार और समाचार दोनो दृष्टियों से ही अपनी प्रमुख भूमिका निभायी है। जिनका जन-तन्त्रीय परम्पराओं मे विश्वास ही नहीं है उनकी तो बात दूसरी है, परन्तु जिनका विश्वास है उन पत्रों पर आज कुछ अधिक दायित्व आ गया है।

विधान मण्डलों में बढ़ रही इस प्रवृत्ति को रोकने में सरकार और सत्तारूढ़ दल दोनों का ही व्यवहार भी कुछ कम जिम्मेदार नहीं है। सत्तारूढ़ दल को यह सोच कर चलना चाहिये कि पहले की तरह अब वह केन्द्र और राज्य दोनों में ही उतने भारी बहुमत मे नहीं हैं जिसका वह मनमाने ढंग से उपयोग करें, समस्याओं का हल देश की भावनाओं के अनुरूप ही खोजने का प्रयास करना चाहिए। सदन मे सरकार की ओर से जो उत्तर और नीति सम्बन्धी वक्तव्य दिये जाएं वह पर्याप्त स्पष्ट और सन्तोष प्रद हों सदस्यों को निरुत्तर करने की ही प्रतिभा का उपयोग न किया जाय।

पिछले बीस वर्षों से केन्द्र में लगातार एक ही दल का शासन होने से भी उसमें शिथिलता आनी स्वाभाविक है। दूसरे दलों में यह भावना तेजी से घर कर रही है, कि सत्ता में बने रहने के लिये वह गलत, सही सब उपाय काम मे ला रहे हैं। इससे दूसरे दलों में खीज और क्षोभ भी व्याप्त हो गया है। अच्छा तो यह था कि जब देश में चारों ओर ही असन्तोष की लहर बढ़ रही है, तब जन-तन्त्रीय प्रणाली में हृदय से

कहां चल पड़े ?

★ संसद् सदस्य श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री सभा प्रधान

कुछ ऐसे स्थानों में अशोभनीय घटनायें होती हैं, और उनका प्रथम पृष्ठ पर स्थान मिलता है तब सम्बन्धित व्यक्ति समझते हैं हमारा उद्देश्य पूरा हो गया। पर यदि इस तरह की घटनाओं को प्रोत्साहन देने के बजाय समाचार-पत्र और जनता अपने ढंग से उन्हें रोकने में सहयोग दे तो फिर रुख दूसरी ओर भी मुड़ सकता है। केवल सम्पादकीय टिप्पणी में ही इस तरह की घटनाओं पर विरोध व्यक्त करना पर्याप्त नहीं है।

समाचारों में भी उन घटनाओं को कहाँ और कैसे स्थान दिया जाय, यह विश्वास रखने वाले व्यक्तियों को लेकर एक राष्ट्रीय सरकार का निर्माण होता। इससे भारत में कुछ नवीन परम्परायें भी आरम्भ होती। परन्तु जब तक सोचने के ढंग में यह उदारता या विशालता नहीं आती तब तक कम से कम सत्तारूढ़ दल को अपने निर्णयों में तो दूरदर्शिता से काम लेना चाहिये। लोकमान्य तिलक ने एक बार कहा था, जो सरकार जनता की भावनाओं का निरन्तर तिरस्कार करती चली जायगी वह आज नहीं तो कल जरूर उखाड़ फेंकी जायेगी।

★

स्वास्थ्य रक्षा के लिए:-

शीत ऋतु में खांसी से बचिए—

स्वास्थ्य-सुधा

★ श्री सुमित्रा देवी अग्रवाल
विशारद

स्वास्थ्य रक्षा के लिए शीत ऋतु का आगमन मानव मात्र के लिये कल्याणकारी माना गया है। इस ऋतु में आहार-विहार एवं संयमित जीवन व्यतीत करके सुन्दर स्वास्थ्य बनाया जा सकता है। शीत ऋतु में जरा-सी असावधानी कर देने से सर्दी लगने का डर रहता है। खांसी, ज्वर, जुकाम सभी अनेक रोग जाड़े में प्रायः सभी को सताते हैं। इन रोगों की पूर्ण जानकारी एक चतुर गृहिणी को होनी चाहिए। बात-बात में अस्पताल दौड़ना सम्भव नहीं है। अतः खांसी नाशक कुछ घरेलू सरल उपचार और आसान तरीके बताये जा रहे हैं। परिवार में किसी भी उम्र के व्यक्ति को खांसी होने पर निम्नलिखित सरल उपचारों से आप स्वयं खांसी का इलाज कर सकती हैं।

अदरक का रस पाव तोला, तुलसी के पत्ते आठ, दो पान चार अडूसे के पत्ते, इन सबों का रस निकाल कर शहद के साथ दिन में तीन बार चाटने से खांसी दूर हो जाती है। रात्रि को सोते समय नमक मिला हुआ गरम पानी दो चार घूंट पीने से तीन चार दिन में ही खांसी नष्ट हो जाती है। बंसलोचन पीस कर शहद के साथ चाटने से बच्चों की खांसी ठीक हो जाती है। सोते समय गरम पानी में नींबू का रस डाल कर पीने तथा पैरों में सरसों के तेल की मालिश करने से सर्दी जुकाम में लाभ होता है। यदि सूखी खांसी हो तो अच्छी की गाजी खाने से कफ पतला होकर बाहर निकलने लगता है इक्कीस काली मिर्च पीस कर तीन माशे शहद में मिलाकर सुबह शाम चाटने से तीन चार दिनों में ही जुकाम दूर हो जाता है।

अदरक और गुड़ की गोली बना कर चूसने से खांसी अच्छी हो जाती है। सफेद बंसलोचन को आधी रत्ती की मात्रा से चटाने से कुकुरखांसी शीघ्र ही अच्छी हो जाती है। छोटी कटेरी के फूल केसर के साथ पीसकर शहद के के साथ चाटने से खांसी शीघ्र अच्छी हो जाती है। काली मिर्च की सात गोलियां निगल जाने से जुकाम शीघ्र दूर हो जाता है। नमक और पीसी हुई हल्दी अन्दाज से फाकर ऊपर से गुनगुना पानी पीने से भी खांसी में कमी होती है। अदरक का रस शहद के साथ चाटने से तीन चार दिन में ही खांसी में लाभ होता है।

सोते समय चाय और नमक मिले हुये पानी से चार छः बार कुल्ली करने से खांसी में लाभ होता है। मुनक्का, मुलहठी, मिश्री, काली मिर्च और तुलसी की पत्ती का काढ़ा बनाकर पीने से हर प्रकार की खांसी, बुखार, जुकाम और इन्फ्लुएंजा में आराम होता है। तुलसी के पत्तों का रस शहद तथा और अदरक के रस के साथ देने से कफ नष्ट हो जाता है। खांसी में कफ आता है तो शहद में काली मिर्च के साथ तुलसी का रस चाटने से कफ दूर हो जाता है। काली और सूखी खांसी में शुद्ध घी का सेवन करने से गलतर होकर कष्ट दूर हो जाता है।

लहसुन को भूनकर दिन में दो तीन बार खाने से आराम मिलता है। भुनी हुई लहसुन को छीलकर उसकी गरम गरम फाकें नमक के साथ खाने से लाभ होता है। दो लौंग आग मे भूनकर भुनी हुई लौंग फूल जायेगी, इसे गरम गरम ही महीन पीस लें। लौंग के इस चूर्ण को थोड़े से गुनगुने दूध में डालकर सोते समय पी लेने से लाभ होता है। इसी प्रकार केले के फूल अथवा फूल न मिलने पर पत्तों को लेकर कंडे की राख में जला लें। यह ध्यान रहे कि जलाते समय एकदम राख न होने पावे और जब धुंआ समाप्त हो जाय तो किसी बर्तन से ढककर बुझा लें। इस बुझे हुये फूल की राख का चूर्ण बनाकर रख लें। आवश्यकता पड़ने पर केले के फूल या पत्तों से तैयार की गई राख की एक चुटकी लेकर शहद के साथ मिलाकर दिन में दो तीन बार चटाने से हर प्रकार की खांसी में शीघ्र ही लाभ होता है। इससे काली खांसी मियादी खांसी और कुकुरखांसी भी ठीक हो जाती है।

थोड़े से गर्म पानी में अन्दाज से पिसी हुई हल्दी और आधी चम्मच नमक डालकर थोड़ा गुनगुना ही पी लेने से आराम मिलता है। मुलहठी को आग में भूनकर कूट पीस कर कपड़छान कर लें और किसी साफ शीशी में भरकर रख लें। चार रत्ती की मात्रा में शहद या दूध में मिलाकर चटाने से हर प्रकार की खांसी में आराम मिलता है। अदरक का रस बराबर मात्रा में शहद मिला कर दिन में तीन चार बार आधा तोला की मात्रा में चाटने से खांसी दूर हो जाती है। पान के साथ थोड़ा-सा नमक मिलाकर खाने से लाभ होता है छोटे बच्चों के लिये लगे हुये पान में नमक और अजवायन डालकर कूट पीस लें और चटा दें, साथ होवा पान के साथ मुलहठी का रस खाने से भी आराम होता है।

चाय के पानी में थोड़ी सी अदरख तुलसी के पत्ते डाल दीजी, लौंग अन्दाज से डालकर चाय तैयार करें और दूध चीनी डालकर चाय की तरह ही छान कर गरम-गरम पिएं, इससे खांसी में शीघ्र ही आराम मिलता है। इसी प्रकार एक कप पानी में तुलसी की पत्तियां, नमक काली मिर्च एवं बताशा डालकर औटा लें, छानकर गरम पीकर लिहाफ ओढ़कर लेट जाय, थोड़ी देर में पसीना आयेगा, और खांसी में लाभ दिखाई पड़ेगा। छोटे बच्चों की खांसी को दूर करने के लिये आपको चाहिये सरसों के तेल में लहसुन पकाकर, बच्चे की कनपटी, सीने हाथ, पैर के तलुओं पर मालिश करके सुला दें, बच्चे को नींद आ जाएगी, और आप देखेंगी कि दूसरे दिन प्रात काल खांसी से छुटकारा मिल गया।

छोटी पीपल का बारीक चूर्ण करके शहद के साथ मिलाकर चटाने से बालकों की खांसी, ज्वर, तिल्ली, हिचकी आदि में लाभ होता हैं। काकड़ा सिंगी अथवा बंसलोचन पीसकर शहद के साथ चटाने से बालकों की खांसी दूर हो जाती है। यदि छोटे बच्चों को खांसी ने परेशान कर रखा हो तो बंसलोचन पीसकर किसी बोतल अथवा शीशी में भरकर रख लें। दिन में चार पांच बार चटाते रहने से खांसी दूर हो जाती है। यदि बच्चे शहद के साथ न चाट सकें तो दूध के साथ देना चाहिये। भुना हुआ सुहागा ६ माशा, अनभुना छः माशा, काली मिर्च एक तोला, इन सभी वस्तुओं को ग्वारपाठे के रस में खूब घोंटकर मूंग के दाने के बराबर गोली बना लें। दो दो तीन-तीन घण्टे के बाद एक-एक गोली मुंह में डालकर चूसने से लाभ होता है। भुना हुआ पोस्ता एक तोला, सेंधा नमक दो-दो माशे, काली मिर्च एक माशा, सभी को पीसकर बारीक चूर्ण बना लें। दो-दो रत्ती चूर्ण दिन में तीन चार बार चटायें, कफ की खांसी में शीघ्र ही लाभ होगा। काकड़ासिंगी, अतीस, छोटी पीपल, प्रत्येक आधा तोला लेकर सभी को कूट पीस कर छान कर चूर्ण बनाकर रख लीजिये। दो-दो रत्ती चूर्ण थोड़े से शहद में मिलाकर दिन में तीन चार बार देने से ज्वर, खांसी, और वमन में लाभ होता है।

नागरमोथा, अतीस, काकड़ासिंगी, तीनों को बराबर मात्रा में लेकर बारीक चूर्ण बनाकर रख लें। इसमें से एक या दो रत्ती चूर्ण शहद में मिलाएं कि चटनी की तरह बन जाय। इसे तीन चार बार बालकों को चटाने से खांसी तो दूर होती है, बालकों के अन्य रोग में भी लाभ होता है।

दाख चीनी छः माशे, काकड़ासिंगी ६ माशे, दोनों को पीसकर चूर्ण कर लें। इस चूर्ण को एक आध मुनक्का में भरकर बालक को सुबह शाम खिलाते रहें। इस सेवन से हर प्रकार की खांसी में लाभ होता है।

खांसी का इलाज शीघ्र ही प्रारम्भ करके उससे छुटकारा पाने से ही स्वास्थ्य की रक्षा होती है, अतः शीत ऋतु में खांसी से बचना आवश्यक है।

★

महर्षि के जीवन की अलौकिक घटनायें

किसी प्राणी या उसके जीवन से सम्बन्ध घटना को जब हम अलौकिक कहते हैं तब उसका अर्थ यही होता है कि वह सामान्यतः लोक में दृष्टिगोचर नहीं है। यह अलौकिकता कुल या समाज से सम्बन्ध नहीं रखती। इसका सम्बन्ध होता है शरीर से, सौन्दर्य से, बल से, मन से और पवित्रता से। किसी मनुष्य का शरीर बहुत नाटा या लम्बा हो, उसमें अनुपम लोकातिक्रान्त सुरूपता हो, अनेक हाथियों का बल हो, सब मनुष्यों से अलग वह चमक रहा हो और वासनाओं के चतुर्दिक प्रसृत जाल में भी उसकी पवित्रता अपना प्रभाव दिखा रही हो, तो हम कहेंगे, वह मनुष्य अलौकिक है।

महर्षि दयानन्द इस दृष्टि से अलौकिक थे। उनका शरीर लम्बा था। गठन सुडौल और सुन्दर थी। ब्रह्मचर्य ने शरीर को उद्दीप्त प्रदान की थी। हजारों की भीड़ में महर्षि को कोई भी दूर से पहिचान सकता था।

महर्षि के भाल पर दमदमाता हुआ तीव्र तेज कुछ ऐसा प्रभाव रखता था कि पापी को उन पर आक्रमण करने का साहस न होता था। अनेक पण्डित भी शास्त्रार्थ के लिये सन्नद्ध होकर आते थे, पर महर्षि के सामने बोल नहीं पाते थे। और निरुत्तर होकर लौट जाते थे। बड़े-बड़े पादरी तथा मौलवियों का भी यही हाल होता था। मैडम ब्लैवैटस्की इसे स्वामी जी के जादू का प्रभाव कहा करती थीं।

महर्षि के बल की परीक्षा कई बार हुई। एक बार गंगा तट पर विराजमान महर्षि को गंगा में डुबा देने के लिये प्रतिपक्षियों की ओर से कई पहलवान भेजे गये। एक पहलवान ने पहल की, तो महर्षि उसे लेकर गंगा में कूद पड़े। एकाध डुबकी तो उसे लग ही गई, पर महर्षि ने उसे छोड़ दिया और स्वयं देर तक जल में बैठे रहे, फिर बाहर निकल आये।

करण वास के राव करणसिंह चक्रांकित वैष्णव थे। वे स्वामी जी से चिढ़ गये और राजघाट पर विराजमान स्वामी दयानन्द को मार डालने का प्रयत्न करने लगे। उन्होंने तीन मनुष्यों को खड्ग देकर अर्द्ध रात्रि के समय स्वामी जी का सिर काट लाने की आज्ञा दी। दो बार ये मनुष्य स्वामी जी के पास तक गये, पर हिम्मत न पड़ी। तीसरी बार जब कुटी तक पहुंचे तो स्वामी जी की हुंकार सुनते ही घबड़ा गये और लौट आये।

एक बार स्वामी दयानन्द ने सरदार विक्रमसिंह की चलती हुई बग्घी को पकड़ कर रोक लिया। सरदार जी जब नीचे उतरे तो स्वामी जी ने कहा—आप ब्रह्मचर्य के बल की परीक्षा लेना चाहते थे। वह आपको मिल गई। इसी प्रकार एक बार असबाब से लदी हुई और कीचड़ में फंसी हुई गाड़ी को बाहर निकालने में जब बैल असमर्थ हो गये, तो स्वामी जी ने बैल खोल दिये और स्वयं गाड़ी को खींच कर कीचड़ से बाहर निकाल लाये।

स्वामी जी एक समृद्ध परिवार में उत्पन्न हुए थे। वे धन सम्पदा को छोड़ कर संन्यासी हो गये, पर धर्मशील को सम्पदा कैसे छोड़ सकती है? स्वामी जी के निधन के समय जो सम्पत्ति थी, उनकी उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा बनी, जिसके प्रथम सभापति उदयपुर के महाराणा सज्जन सिंह थे। स्वामी जी का यश उनके जीवनकाल ही

महान् दयानन्द

में विश्व भर में फैल गया था। अमेरिका के आल्काट तथा मैडम ब्लैवैटस्की लम्बी समुन्द्री यात्रा करके महर्षि के दर्शनार्थ भारत आये। मैडम महोदय स्वामी जी के सम्बन्ध में लिखती हैं—उनका यह लम्बा वर्ण प्रकाश युक्त श्वेत और आकार देशीयों की अपेक्षा अंग्रेजों से अधिक मिलता है। नेत्र विशाल तथा चमकीले लम्बे लम्बे भूरे रंग के बाल थे, उनकी ध्वनि उज्वल पर बलवती थी। वे गुणों के पुञ्ज थे। अमेरिका के ऐंड्यू जैक्सन डीयुस आर्य समाज को प्रेम का प्रकाश तथा कूड़े कर्कट को भस्म कर देने वाली अग्नि कहा करते थे, जो महायोगी दयानन्द सरस्वती के हृदय से उत्पन्न हुई थी। इसी प्रकार जर्मनी में उत्पन्न और इग्लैंड में बसे हुए मैक्समूलर फ्रांस के रोमाऐला आदि ने स्वामी जी के काम की भूरि प्रशंसा की है। इस देश में तो स्वामी जी जहां-जहां जाते थे, वहीं उनका सम्मान होता था। शाहपुर, उदयपुर, जोधपुर आदि रियासतों ने स्वामी जी का आतिथ्य सत्कार किया और लाभ उठाया। उदयपुर राज्य का तो सारा कार्य स्वामी जी की प्रेरणा से हिन्दी तथा देवनागरी लिपि में होने लगा था। बंगाल के केशव चन्द्रसेन और महाराष्ट्र में रानाडे महोदय स्वामी जी के भक्त थे।

महर्षि का जीवन तपे हुये स्वर्ण के समान पवित्र था। उनके हृदय में कुरीतियों तथा दुर्गुणों के प्रति रोष था, पर किसी भी प्राणी के प्रति द्वेष नहीं था। वे उदात्त मानवता के उन्नयन में अपना जीवन बलिदान कर गये। वे मनुष्य को बन्धन मुक्त दिलाने के लिये आये थे, और निःसन्देह भारतवासी उनके उपदेश के फलस्वरूप रूढ़ियों तथा पाखण्डों से मुक्ति पा गये। कामजयी दयानन्द के जीवन की एक घटना मेरठ से सम्बन्ध रखती है। वे मेरठ के एक बाग में ठहरे हुये थे। पण्डिता रमाबाई उनके व्याख्यान तथा तेजोदीप्त मुख मण्डल से ऐसी प्रभावित हुईं कि उनके हृदय में वैसा ही एक पुत्र प्राप्त करने की कामना जागृत हो गई। रात्रि के समय वे स्वामी जी के पास पहुंचीं। स्वामी जी भूमि पर एक ईंट का तकिया लगाये विश्राम कर रहे थे। एक महिला को सामने देख कर उठ बैठे और कहने लगे—देवि! आपका आगमन इस समय कैसे हुआ? रमाबाई ने जब उन जैसे पुत्र की आकांक्षा व्यक्त की और विवाह का प्रस्ताव रखा तो स्वामी जी बोले—माँ! तुम मुझे ही अपना पुत्र समझ लो। ब्रह्मचर्य व्रत के धनी दयानन्द के अतिरिक्त और किस लौकिक धरातल के प्राणी में ऐसी शक्ति हो सकती थी जो वासना पाश को तोड़ कर अपने पावन रूप का प्रकाश कर सके और निर्मलता की रक्षा कर सके।

महर्षि के जीवन की इस अलौकिकता के मूल में प्रभु भक्ति का अनश्वर प्रसाद था। उनका बल एकमात्र ईश्वर था। उसी के बल पर वे निर्भयता पूर्वक मतों एवं सम्प्रदायों के मिथ्या सिद्धान्तों का खण्डन करते रहे। सत्यार्थ प्रकाश के दस समुल्लास वैदिक सिद्धान्तों के मण्डन में और शेष चार अवैदिक मत-मतान्तरों के खण्डन में लिखे गये हैं। स्वामी जी हृदय से चाहते थे कि सब मनुष्य सत्य के साथी बनें। १८७३ के दिल्ली दरबार में उन्होंने विभिन्न मतावलम्बियों को एक मञ्च पर एकत्र भी किया, पर वे एकमत न हो सके। प्रभु एक है तो उसके पुत्र भी एक मत के हो सकते हैं। उनकी गम्भीर ध्वनि व्योम में व्याप्त हुई। शृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्राः तथा इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्। पर सुनने वाले और सुनकर उसे हृदय में स्थान देने वाले कम निकले।

प्रभु भक्ति के सम्बन्ध में महर्षि के जीवन का एक संस्मरण डा० ह्यूम ने अपनी डायरी में लिखा है। डा० ह्यूम इटावा में कलक्टर थे। वे प्रातः वेला में भ्रमणार्थ निकले और यमुना की ओर चल दिये। तट की ओर दृष्टि गई तो एक महात्मा को ध्यान मग्न अवस्था में पाया। कुछ निकट से देखा तो महात्मा की बगल में बैठे एक घड़ियाल की मूर्ति सामने आयी। ह्यूम कुछ भयभीत हुये और यह सोच कर कि यह मगर महात्मा का कहीं अनिष्ट न कर बैठे, उन्होंने अपनी पिस्तौल निकाल कर सीधी की। थोड़ा-सा बढ़े ही थे कि उनके पैर की आहट से चौकन्ना होकर मगर यमुना नदी के प्रवाह में छप-छप करता हुआ विलीन हो गया। ह्यूम महर्षि के सामने खड़े थे। ध्यान से निवृत्त स्वामी जी ने उन्हें देखा। वार्तालाप चल पड़ा ह्यूम ने पूछा—महाराज? मगर आपकी बगल में बैठा रहा और आप उससे भयभीत क्या शंकित भी न हुये। महर्षि ने कहा—मुझे मगर का भान भी नहीं हुआ। मैं तो प्रभु के समीप था, और मगर आया भी तो मुझसे क्यों बोलता? मेरे हृदय में हिंसा की भावना नहीं तो उसके अन्दर भी नहीं हो सकती। अहिंसा प्रतिष्ठायां तत्सन्निधौ वैरत्यागः। यदि मैं अहिंसक हूं तो हिंसक प्राणी भी मेरे समीप वैर छोड़कर ही आवेगा। कर्म विपाक की बात अलग है। सामान्य नियम यही है।

महर्षि के जीवन की ऐसी घटनायें उन्हें महापुरुष के पद पर प्रतिष्ठित कर देती हैं। वे निःसन्देह हम सामान्यों में असामान्य थे, हम पतितों के मध्य उन्नत खड़े थे, और हम लौकिकों में अलौकिक पद के भागी थे। उनके चरण चिह्नों पर चल कर एक अनार्य आर्य बन सकता है, अवैदिक वैदिक बन सकता है और नास्तिक आस्तिक बन सकता है।

★आचार्य डा० मुन्शीराम शर्मा
'सोम' आर्यनगर कानपुर

इस बार भी सोनोरा-६४ बोऊँगा'

"पर बरखा हो गई होती तो मौत ओर को नाज हो तो।" इन्द्रसिह के फार्म पर चोधरी जहारिया के इस कहने में अफसोस नहीं था, बल्कि सुनहरे भविष्य की आशा थी। इन्द्रसिह का फार्म शहादरा विकास खण्ड मे मोल्हड़-बन्द गांव है।

दिल्ली के किसानों में सोनोरा-६४ को लोकप्रिय बनाने के लिए पिछले साल भारतीय कृषि अनुसन्धानशाला की ओर से इन्द्रसिह के एक एकड़ के फार्म पर सोनोरा-६४ का राष्ट्रिय प्रदर्शन किया गया था।

प्रत्यक्ष को प्रमाण की क्या आवश्यकता है। चोधरी के प्रदर्शन के प्लाट को आसपास के किसानों ने देखा। और देखा कि उर्वरकों की पूरी मात्रा डालने पर भी फसल ढ़ी नहीं थी। मोल्हड़-बन्द गांव में इन्द्रसिह ने पहली बार सोनोरा गेहू बोया हो, ऐसी बात नहीं है। इससे पहले उनके पड़ोसी किसान रामपाल ने सोनोरा से फी एकड़ ५० मन पैदावार ली थी।

"रामपाल की देखादेखी हमने भी इस साल तक एक एकड के प्रदर्शन के प्लाट के अलावा साढ़े चार एकड में सोनोरा ६४ बोया है। चौधरी दूसरों के अच्छे कामों को देखकर खुद करने मे नहीं झिझकते हैं।

सोनोरा-६४ के राष्ट्रीय प्रदर्शन वाला प्लाट खरीफ मे परती नहीं छोड़ा गया था। इससे पहले उसमें ज्वार की फसल ली गई थी। "देशी गेहूं के लिये हमे जमीन परती छोडनी पडती थी। यह सोनेरा-६४ की खूबी है कि इसके लिए जमीन को परती छोड़ने की जरूरत नहीं है।"

चौ० इन्द्रसिह ने खेत की तैयारी ट्रैक्टर से की थी। उन्होंने बताया कि देशी हल से गहरी जोताई होने का डर रहता है। क्योंकि विस्तार कार्यकर्ताओं ने उन्हें बता दिया था कि सोनोरा-६४ की बोआई २ इच से ज्यादा गहरी नहीं की जानी चाहिये। इन्द्रजीतसिह ने अपने एक एकड़ के खेत में १० गाड़ी गोबर-कूड़े की खाद डालने के बाद कुल ८ जोताई कीं। इस प्लाट मे उन्होंने १२० पौण्ड नाइट्रोजन और ६० पौंड फास्फोरिक एसिड डाली थी।

सोनोरा ६४ की तारीफ करते हुए जहारिया ने कहा—इसका बीज इतना साफ था कि खरपतवार उगे ही नहीं। सरसों के दो-चार पौधे थे। मगर फसल को नुकसान पहुंचने के डर से हम खेत में घुसे ही नहीं।"

सोनोरा-६४ में देशी के मुकाबले बीज कम लगता है। 'एक एकड़ के प्लाट में ३२ किलोग्राम बीज ही लगा जबकि देशी में ५० किलो बीज लग जाता है।"

वर्षा नहीं हुई तो क्या चौधरी इन्द्रसिह ने फसल को प्यासा नहीं रखा। उन्होने पिछले से पिछले साल ही अपने फार्म पर नलकूप लगवाया था। इसलिए सिफारिश के मुताबिक उन्होंने पूरी ६ सिंचाई कीं।

प्रदर्शन के प्लाट में फसल को कोई रोग और कीड़ा नहीं लगा, इसलिये कीट नाशक दवायें इस्तेमाल करने की जरूरत नहीं पड़ी। हां जोताई करते समय एक एकड़ के प्लाट में १० किलो बीएचसी ऐतिहातन भुरक दिया था। आखिरी जोताई से पहले उन्होंने फी एकड़ १० प्रतिशत बीएचसी की १० किलो दवा बिखेर कर खेत में डाल दी जिससे फसल को दीमक और गुझिया कीड़ा न लग सके।

फसल २२ नवम्बर १९६६ को बोई गई थी और उसकी कटाई ६ अप्रैल १९६७ को की गई। पैदावार १९ क्विंटल १५ किलो। भूसा २८ क्विंटल निकला। चौ० इन्द्रजीत इतनी पैदावार से खुश नहीं है। हांलाकि देशी के मुकाबले अतिरिक्त खाद पानी का खर्चा निकालकर भी पैदावार ज्यादा है। इस साल उनका विश्वास है कि सोनोरा-६४ से वह और भी ज्यादा पैदावार लेंगे। उन्होंने कहा, 'इस बार भी मैं सोनोरा-६४ ही बोऊंगा।'

सोनोरा-६४ की लहलहाती फसल का निरीक्षण करते हुये चौधरी जहारिया

धर्म शिक्षा प्रशिक्षण शिविर गुलावठी

आर्य कन्या विद्यालयों की अध्यापिकाओं को धर्म-शिक्षा पढ़ाने योग्य बनाने के लिये प्रदेशीय विद्यार्य सभा उत्तरप्रदेश (अन्तर्गत आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश) के तत्वावधान मे एक प्रशिक्षण शिविर १० नवम्बर से १७ नवम्बर तक आर्य कन्या इण्टर कालिज गुलावठी मे लगा। इस शिविर में ५ विद्यालयों की अध्यापिकाएं सम्मिलित हुईं। इस शिविर में प्रशिक्षण कार्य श्री जयदेव जी निरीक्षक आर्य विद्यालय तथा श्री हरस्वरूप जी शास्त्री डाहना निवासी अवैतनिक उपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा ने बड़ी लगन से किया। तीन व्याख्यान श्री रामबहादुर जी मन्त्री प्रदेशीय विद्यार्य सभा के भी प्रशिक्षणार्थियों के समक्ष हुये। श्री हरप्रसाद जी शास्त्री बहुत ही योग्य विद्वान् और सरल प्रकृति के धर्मोपदेष्टा हैं। उनकी निःस्वार्थ सेवाओं के लिये यह विभाग विशेष आभारी है। समस्त प्रशिक्षणार्थियों के आवास, भोजन, व जलपान आदि का बहुत ही सुन्दर और प्रशंसनीय प्रबन्ध आर्य कन्या इण्टर कालिज की ओर से था। विद्यालय की ओर से प्रत्येक प्रशिक्षणार्थिनी को एक-एक पुस्तक महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र तथा एक-एक पुस्तक गृहस्थाश्रम एवं नारी पूजा की भेंट की गई. इसके लिये श्री नारायणदास जी प्रबन्धक व श्री अमरसिह जी प्रधान तथा श्रीमती प्रधानाचार्या आर्य कन्या इण्टर कालिज गुलावठी अत्यन्त धन्यवाद के पात्र हैं। अन्तिम दिन समापन कार्य समारोहपूर्वक उत्सव के रूप में विद्यालय के विशाल प्रांगण मे श्री रामबहादुर जी मन्त्री प्रदेशीय विद्यार्य सभा उत्तरप्रदेश की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ और प्रशिक्षणार्थियों को सभा की ओर से प्रमाण पत्र दिये गये। विद्यालय की अनेक छात्राओं ने शिक्षाप्रद निबन्ध पढ़े तथा शिक्षाप्रद अभिनय व एकांकी आदि का प्रदर्शन किया। प्रशिक्षण शिविर बहुत ही प्रभावशाली रहा। जिन विद्यालयों से प्रशिक्षणार्थी सम्मिलित हुये उनकी सूची निम्नप्रकार है। इन विद्यालयों के प्रबन्धक स्तुत्य हैं।

[१] आर्य कन्या इण्टर कालिज बुलन्दशहर
[२] " " गुलावठी
[३] " " मेरठ शहर
[४] " " मवाना मेरठ
[५] श्री मल्हूसिह आ० क० मा० विद्यालय दौराला मेरठ

—रामबहादुर एडवोकेट
अधिष्ठाता शिक्षा विभाग आ० प्र० सभा, उत्तरप्रदेश

—१५ नवम्बर को कायमगंज के श्री पन्नालाल जी आर्य के पुत्रों का मुण्डन व कर्णवेध संस्कार वैदिक रीति से हुआ।
—रामचन्द्र आर्य

—श्री निरंजन प्रसाद शर्मा मेरठ के प्रचार स्वरूप गांव होशदारपुर गढ़ी (हापुड़) में नवीन आर्यसमाज की स्थापना हुई। जिसके प्रधान श्री चेतराम शर्मा और मन्त्री श्री बाबूसिंह जी चुने गये। —मन्त्री

—मानपुर [गया] के श्री बाबूलाल आर्य की ११० वर्षीया नानी की मृत्यु हो जाने पर अन्त्येष्टि संस्कार वैदिक रीत्यनुसार किया गया। —यज्ञदत्त आर्य

—रसूलपुर बकिया (उन्नाव) के कार्तिकी स्नान के मेले मे उन्नाव के आर्य वीर दल ने प्रशंसनीय कार्य किया।
—आशाशंकर मन्त्री

—१२ से १४ नवम्बर तक आर्य समाज लखना (पटना) का उत्सव समारोह से मनाया गया। —मन्त्री

—कार्तिक पूर्णिमा के मेले मे भागलपुर (देवरिया) में आर्यसमाज की ओर से प्रचार किया गया। मन्त्री

—१२ नवम्बर को श्री विश्वनाथ जी मन्त्री आर्यसमाज बक्सर के पौत्र का नामकरण संस्कार श्री कुमारी पुष्पा जी वाराणसी ने कराया। —केदारनाथ आर्य

—बिहार के भजनोपदेशक श्री शिवधर जी की पत्नी का ६ नवम्बर को देहान्त हो गया। प्रभु मृतात्मा को शान्ति दे। —मन्त्री आ०स० ब्यापुर

—आर्यसमाज गोण्डा का वार्षिक उत्सव १४ से १८ नवम्बर तक बड़े समारोह से मनाया गया। श्री शान्ति प्रकाश जी, श्री स्वामी शिवानन्द जी सरस्वती, श्रीमती शकुन्तला जी गोयल प्रभृति के ओजस्वी भाषण हुए। —मन्त्री

—आर्यसमाज राणाप्रताप बाग दिल्ली वार्षिकोत्सव से पूर्व ९ से १५ नवम्बर तक श्री प० हरिशरण जी ने उपनिषदों की कथा कही। उत्सव सफलतापूर्वक हुआ। मन्त्री

—आर्यसमाज शामली का ६१ वां वार्षिकोत्सव बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। दैनिक अर्जुन के सम्पादक श्री के० नरेन्द्र जी, आर्य विदुषी श्री प्रज्ञादेवी जी श्री स्वामी दर्शनानन्द जी के प्रभावशाली भाषण हुए। —डा० प्यारेलाल

—आर्यसमाज कर्णपुरवत्त [फर्रुखाबाद) के प्रधान श्री ठा० शकूरसिंह जी का २० नवम्बर को अचानक देहावसान हो गया। आप बड़े कर्मठ आर्य थे। आर्य समाज परमपिता परमात्मा से मृतात्मा की शान्ति के लिए और शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करने के लिये प्रार्थना करता है। —इन्द्रपालसिंह मन्त्री

—आर्यसमाज बड़रांव (आजमगढ़) का ५ वां वार्षिकोत्सव १ से ३ नवम्बर तक समारोहपूर्वक मनाया गया। —मन्त्री

—२२ से २४ नवम्बर तक आर्य समाज हरथला कालोनी मुरादाबाद मे श्री स्वामी मुनीश्वरानन्द जी के अत्यन्त प्रभावशाली प्रवचन हुए। २४ नवम्बर को प्रातः मुरादाबाद की सभी आर्य समाजों का सम्मिलित अधिवेशन भी आर्यसमाज हरथला मे ही हुआ।
—गोविन्दराम आर्य मन्त्री

—आर्यसमाज मैनपुरी का वार्षिक उत्सव १५ से १७ नवम्बर तक समारोह से सम्पन्न हुआ। जिसमें श्री स्वामी देवानन्द जी, श्री बिहारी जी वाचस्पति, श्री राणा रणवीरसिंहजी के प्रभावशाली भाषण हुए। उत्सव के साथ आयुर्वेद सम्मेलन, आर्यवीर दल सम्मेलन भी हुए जिनका जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा।
—नरेन्द्र मन्त्री

—आ०स० खण्डवा ने हकीम वीरूमल जी की मृत्यु पर शोक सहानुभूति का प्रस्ताव पास किया। —मन्त्री

—आर्य स्त्री समाज बदायूं का वार्षिक उत्सव २७, २८ अक्तूबर को समारोहपूर्वक मनाया गया।
—प्रकाशवती अफा मन्त्रिणी

आर्यसमाज बांसगांव तहसील जिला गोरखपुर का ४४वां वार्षिकोत्सव दिनांक ८ से १० नवम्बर १९६८ तक बड़े समारोहपूर्वक मनाया गया। जिसमे शास्त्रार्थ महारथी पं० विद्यानन्द जी शर्मा, प० सत्यमित्र शास्त्री वेदतीर्थ, प० सुरेशचन्द्र वेदालङ्कार के उपदेश तथा ठाकुर धर्मराजसिंहजी तथा श्री वीरेन्द्रप्रसाद जी आर्य के भजनोपदेश हुए।

—आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली राज्य के प्रधान श्री भक्तराम जी एडवोकेट की अध्यक्षता मे २२-११-६८ को जे०,जे० कालोनी इन्द्रपुरी नई दिल्ली मे आर्य समाज की स्थापना की गई, जिसके प्रधान श्री चतुरसिंह जी गुप्त, उपप्रधान श्री रामशरण जी, मन्त्री श्री लखनलाल जी कन्नोजी, उपमन्त्री श्री हंसराज जी व कोषाध्यक्ष श्री बख्शीराम जी निर्वाचित हुए। —विद्यासागर मन्त्री

—आर्यसमाज फतेहपुर का ५५ वां वार्षिकोत्सव २१ से २४ फरवरी सन् ६९ को मनाया जायगा। २१ फरवरी को नगरकीर्तन निकलेगा। —मन्त्री

—आ० उप प्रतिनिधि सभा रामपुर श्री पूज्य स्वामी अथर्वानन्द जी के देहावसान पर शोक प्रकट करती है। पूज्य स्वामी जी ने आ० स० रामपुर आ० स० धमोरा के समाज भवन निर्माण में बड़ी सहायता दी। आ० स० टाडा व आ० समाज मिलक मे समाज के भवन निर्माणार्थ जमीन खरीदी हुई पड़ी है। उन्होंने बड़े त्याग तपस्या मे वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर मे अपना आदर्श जीवन बिताया था। ईश्वर से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करें।
—कन्हैयालाल 'मुमुक्षु' सि० शास्त्री
उप प्रधान

—आर्य समाज बिहारीपुर बरेली, वैदिक वाङ्मय के प्रकाड पंडित व वैदिक रिसर्च स्कालर पं० भगवद्दत्त जी के देहावसान पर शोक प्रकट करता है हम सब परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं वियुक्तात्मा को सद्गति व पूर्ण शान्ति तथा पंडित जी के सम्बन्धी, इष्ट-मित्र बन्धु बान्धवों को इस गम्भीर आघात को सहन करने की सामर्थ्य प्रदान करे।
—भद्रगुप्त वैद्य, प्रधान
आर्य समाज बिहारीपुर बरेली

श्री पं० विद्याभिक्षु जी रोगी

श्री प० विद्याभिक्षु जी जो कि इस समय आर्यजगत् में एकमात्र अरबी के विद्वान् हैं। उन्हे अचानक व्याख्यान देते हुए ही बाराबङ्की मे फालिज का दौरा पड़ गया। पण्डित जी आजकल दाराशिकोह के फारसी उपनिषदों के अनुवाद मे लगे थे। पण्डित जी अरबी, फारसी, हिन्दी, उर्दू, इङ्गलिश और कुछ संस्कृत के भी विद्वान् हैं। आर्यजगत् की विभूति हैं। हिन्दू कालेज रुदौली के प्रधानाचार्य हैं। ईश्वर उन्हे शीघ्र निरोगता प्रदान करें।
—बिहारीलाल शास्त्री

बेधड़क जी का पता

मेरठ क सुप्रसिद्ध ओजस्वी वक्ता, गायक व प्रचारक श्री बलवीरसिंह जी 'बेधड़क' को जो आर्यसमाजें अपने उत्सव पर या विवाह शादियों मे बुलाना चाहे वे निम्न पते पर पत्र व्यवहार करें—
—श्री बलवीरसिंह जी 'बेधड़क'
आर्यसमाज हापुड़ (मेरठ)

पं. अखिलानन्द जी महान् थे

पं० अखिलानन्द जी की मृत्यु का समाचार सुनकर मुझे बड़ा दुःख हुआ। मैं इनका शिष्य हूं। संस्कृत का प्रारम्भ मैने इन्हीं से किया था। लगभग ६ वर्ष तक मैंने इन्हीं के चरणों मे बैठकर अष्टाध्यायी महाभाष्य का अध्ययन किया। आर्यजगत् के सभी विद्वान् उनसे सुपरिचित हैं। ब्रह्मचारी जी अत्यन्त गम्भीर और उदार चरित्र थे। आदित्य ब्रह्मचारी रहकर समस्त जीवन आर्यसमाज के प्रचार कार्य मे लगा दिया। कई शास्त्रार्थों मे मै इनके साथ रहा हूं। अपनी विद्वत्ता से विपक्षियों को परास्त करने की अद्भुत योग्यता इनमे थी।

आप वैदिक इतिहास के प्रकाण्ड पण्डित थे। महाभारत और रामायण इन्हे कण्ठस्थ थी। रामायण और महाभारत की कथा जो इनसे एक बार सुन ले वह प्रभावित हुये बिना नहीं रह सकता था। इनका सब कुछ दूसरो के लिये था किसी का भी दुःख देख तड़प उठते थे। शान्ता. सन्ता. सुशीलाश्च सर्व भूत हितेरताः ॥ इसके अनुकूल ही आपका जीवन था।

सन् १९३६ की बात है, जब यह ४०) केवल भोजन वृत्ति के लिये देवरिया विद्यालय से लेते थे। इसमे से भी यह ३०) मासिक छात्रवृत्ति के रूप मे संस्कृत पढ़ने वाले छात्रों को दे दिया करते थे। ऐसे उदार और महान् विद्वान् के स्थान की पूर्ति होना कठिन है। प्रभु से प्रार्थना है कि इनके भाई क्षमानन्दजी आदित्य जी, राममूर्ति जी एवं भ्रातृवधू को धैर्य एवं शान्ति प्रदान करें।
—विद्याभास्कर शास्त्री, देहरादून

श्री गौतम जी स्नातक का निधन !

भागलपुर (देवरिया) के आर्य विद्वान् श्री गौतम शास्त्री स्नातक का आर्य कन्या महाविद्यालय बड़ौदा मे १६ नवम्बर को देहावसान हो गया। आप गुरुकुल वृन्दावन के स्नातक थे। और वहां अध्यापक भी रह चुके थे। स्थानीय आर्यसमाज मे मृतात्मा के शान्ति और परिवार को धैर्य प्रदान करने के लिये ईश्वर से प्रार्थना की गई। —मन्त्री

निर्वाचन

—जिला आर्योपप्रतिनिधि सभा गोरखपुर
प्रधान—श्री ब्रह्मदेवप्रसाद वकील सरकार
उपप्रधान—श्री मोहनलाल जी प्रधानाचार्य
मन्त्री—श्री सुरेशचन्द्र जी वेदालंकार एम.ए.
उप मन्त्री—श्री त्रियुगीनारायण पाठक
कोषाध्यक्ष—श्री बाबूलाल शर्मा

प्रान्तीय आर्य महा सम्मेलन गढ़मुक्तेश्वर के प्रस्ताव

१—नशाबन्दी सम्मेलन मेला गढ़मुक्तेश्वर दि० ४-११-६८

अध्यक्ष—श्री डा० जगन्दत्त गोयल प्रधान आर्य उपप्रतिनिधि सभा, जि० मेरठ
प्रस्तावक—श्री इन्द्रराज मन्त्री, केन्द्रीय आर्य समिति, मेरठ
अनुमोदक—श्रीमती शकुन्तला गोयल, मेरठ

प्रस्ताव

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश का यह आर्य महा सम्मेलन देश मे बढ़ती हुई मद्यपान की प्रवृत्ति पर चिन्ता प्रगट करता है। जब भारत विदेशी दासता से मुक्त होने के लिये संघर्ष कर रहा था विचार था कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् देश मे पूर्णतया नशाबन्दी लागू कर दी जायगी, जिसको हमने भारतीय संविधान के अनुच्छेद ४७ मे सिद्धान्त रूप से स्वीकार किया है। दुर्भाग्य है कि स्वराज्य प्राप्ति के पश्चात् मद्यपान निरन्तर बढ़ रहा है, और नये-नये स्थानों पर नई नई दुकानें खोली जा रही हैं। यदि यह इसी प्रकार बढ़ता रहा तो इसे रोकना असम्भव नहीं तो अत्यन्त कठिन अवश्य हो जायगा। जो कि हमारी संस्कृति, सभ्यता धार्मिक विश्वास, परम्परागत मान्यताओं के प्रतिकूल है।

अतः सम्मेलन प्रदेश के सभी आर्य जनो, आर्य समाजो से अनुरोध करता है कि इस घातक व्यसन को समाप्त करने के लिये प्राण-पण से पूरी शक्ति के साथ प्रयत्न किया जाय। हमारा यह भी अनुरोध है कि आगामी मध्यावधि चुनावो मे उन्हीं प्रत्याशियों का समर्थन किया जाय जो प्रदेश मे नशाबन्दी के समर्थन की प्रतिज्ञा करें, तथा वे स्वयं मद्य-पान न करते हो।

हमारा वर्तमान प्रदेशीय एवं केन्द्रीय शासन से भी आग्रह है कि विधान की पूर्वोक्त भावना को दृष्टि मे रख कर समूचे देश में पूर्ण नशाबन्दी लागू करे।

२—आर्य स्त्री समाज सदर दि० ११-११-६८ के महिला सम्मेलन में पारित प्रस्ताव।

प्रस्तावकः—श्रीमती शकुन्तला गोयल जी, अनुमोदनः—श्रीमती प्रेमवती जी

आर्य स्त्री समाज सदर मेरठ का यह महिला सम्मेलन देश मे बढ़ती हुई मद्यपान की प्रवृत्ति पर गहरी चिन्ता प्रकट करता है। जब अपनी स्वतन्त्रता के लिये संघर्ष कर रहा था, तब राष्ट्र-पिता महात्मा गांधी के नेतृत्व मे मद्य निषेध के लिये भी कड़ा संघर्ष किया गया था, और उस संघर्ष मे हमारी बहनों ने भी भाग लिया था। क्योंकि मद्यपान का सबसे अधिक दुष्प्रभाव स्त्री जाति पर पड़ता है। उस समय यह विचार था कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् सारे देश मे पूर्ण नशाबन्दी लागू कर दी जायगी, जिसको हमने भारतीय संविधान के अनुच्छेद ४७ मे सिद्धान्त रूप से स्वीकार किया है।

दुर्भाग्य है कि स्वराज्य प्राप्ति के पश्चात् मद्यपान निरन्तर बढ़ रहा है। यदि यह इसी प्रकार बढ़ता रहा तो इसको रोकना अत्यन्त कठिन हो जायगा जो कि हमारी संस्कृति सभ्यता धार्मिक विश्वास एवं परंमपरागत मान्यताओं के सर्वथा प्रतिकूल है।

गांधी जयन्ती के अवसर पर देशवासियो को यह आशा थी, कि गोवा में होने वाले अखिल भारतीय कांग्रेस के अधिवेशन मे इसी वर्ष से सारे देश में पूर्ण नशाबन्दी का निर्णय लिया जायगा, परन्तु इस महिला सम्मेलन को यह सुन कर अत्यन्त निराशा हुई कि उक्त अधिवेशन मे मद्य निषेध को लागू करने के लिये ७ वर्ष की अवधि निश्चित की गई है।

इस महिला सम्मेलन का यह दृढ़ मत है कि केन्द्रीय शासन को विधान की पूर्वोक्त भावना को दृष्टि मे रखकर समूचे देश मे पूर्ण नशाबन्दी शीघ्र लागू करनी चाहिए। एवं देश की जनता से आग्रह है कि इस घातक व्यसन को समाप्त करने के लिये पूरी शक्ति के साथ प्रयत्न किया जाये, और आगामी मध्यावधि चुनावों में उन्हीं प्रत्याशियों का समर्थन किया जाये जो प्रदेश मे शीघ्र नशाबन्दी के समर्थन की प्रतिज्ञा करें, तथा वे स्वयं भी मद्य-पान न करते हों।

●

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की बलिदान जयन्ती की तैयारियां जोर शोर से आरम्भ

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य की ओर से बुधवार दि० २५-१२-६८ को स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की इक्तालीसवीं बलिदान जयन्ती मनाई जायेगी। उस दिन एक भारी जलूस दिन को १२ बजे नया बाजार से निकल कर खारी बावली, नया बांस होजकाजी, चावड़ी बाजार, नयी सड़क चांदनी चौक, दरीबा होता हुआ ४ बजे गांधी मैदान मे पहुंचेगा। जहां एक भारी सार्वजनिक सभा होगी जिस मे पूज्य स्वामी जी महाराज को श्रद्धांजलि अर्पित की जायेगी।

मन्त्री आर्य केन्द्रीय सभा सब समाजो, स्त्री समाजों, आर्य कुमार समाजो आर्य वीर दल तथा हिन्दू संस्थाओं से अनुरोध करते हैं कि वे अधिक से अधिक संख्या मे जलूस मे शामिल हो।

१—२२-१२-६८ रविवार को साप्ताहिक सत्संगो मे स्वामी जी के सम्बन्ध मे ही व्याख्यान करवायें।

२—२५-१२-६८ मे तीन दिन पूर्व अपने इलाके मे प्रभात फेरियां करें।

३—सब लोग उस दिन केसरी टोपियां व केसरी पगड़ी, स्त्रियां केसरी दुपट्टे पहन कर जलूस मे शामिल हो।

४—सब समाजें तथा अन्य संस्थायें अपने अपने मोटो तथा ओ३म्ध्वज साथ लेकर आयें।

५—जिनके पास स्कूटर हो वह अपने स्कूटर पर ही जायें और जलूस से आगे-आगे चलें।

६—आर्य स्कूल तथा डी० ए० वी० स्कूल बैण्ड तथा छात्रों को अधिक से अधिक लाने की प्रेरणा करें।

—रामनाथ सहगल
मन्त्री

बुन्देलखण्ड में वैदिक धर्म प्रचार

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा, झांसी के तत्वावधान मे झांसी बुन्देल खड क्षेत्र मे वेद प्रचार का आयोजन किया गया है। इस आयोजन के अन्तर्गत दिनांक ८-११-६८ व ९-११-६८ को दतिया मे श्री प्रेमबाबू के निवास स्थान पर आर्य जगत् की सुप्रसिद्ध आर्य सन्यासिनी माता विद्योत्तमा यति एवं आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के भजनोपदेशक श्री प्रकाशवीर शर्मा व्याकुल के उपदेश एवं भजन हुये। इस आयोजन में क्षेत्र की जनता ने भाग लिया तथा इस अभूतपूर्व आयोजन की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा कीतथा इस प्रकार के आयोजन भविष्य में किये जाने हेतु प्रार्थना की। दिनांक ११-११-६८ को रात्रि को ८ बजे से झांसी जीवन बीमा निगम के प्रबन्धक श्री पी० पी० सचदेव के निवास स्थान पर झांसी होटल मे इसी प्रकार का भजनोपदेश आयोजन किया गया।

दिनांक १२-११-६८ को मऊरानीपुर आर्यसमाज जो कि कई वर्ष से बंद थी, को जाग्रत करने हेतु प्रयत्न किया गया और रात्रि मे यहां वेद प्रचार का कार्य किया गया। इस आयोजन को सफल बनाने हेतु श्री भास्कर जी अग्रवाल मन्त्री आर्यसमाज एवं श्री बद्रीप्रसाद दुबे, वाइस प्रिंसिपल दमेले इन्टर कालेज मऊरानीपुर ने अपना अमूल्य सहयोग दिया। माता विद्योत्तमा जी यति तथा श्री प्रकाशवीर जी शर्मा के मधुर प्रवचनों ने एक अमिट छाप छोड़ी। अब आगे इस आर्यसमाज का कार्य सुचारु रूप से चलाने की प्रतिज्ञा सभी आर्य भाइयो ने की। श्री केदारनाथ जी आर्य पूर्व एक्जीक्यूटिव नगरपालिका जो कि यहां की आर्यसमाज के संस्थापक हैं, ने भी इस आयोजन को सफल बनाने मे समय दिया। श्री महात्मा गंगाराम जी आर्य वानप्रस्थी ने इस दोनों आयोजनों मे अपना पूर्ण सहयोग दिया तथा स्वयं भी दोनों ही स्थानो पर उपस्थित रहे।

-केदारीलाल आर्य
मन्त्री
जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा, झांसी

निर्वाचन

गुरुकुल महाविद्यालय गया (बिहार)
संरक्षक—पद्मभूषण श्री डा० दुखनराम जी
प्रधान—श्री परमेश्वरराम आर्य
मन्त्री—श्री लखनलाल आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री उदयप्रकाश आर्य
कार्यनिरीक्षक—श्री वासुदेवनारायण आर्य
मुख्याधिष्ठाता—श्री शकूर आर्य वानप्रस्थी

आर्यसमाज मीरजापुर का उत्सव

आर्यसमाज मीरजापुर का ८३ वां वार्षिकोत्सव पौष कृष्ण सप्तमी से दशमी तक सन् २०२५ विक्रमी तदनुसार दि० १२-१३-१४-१५ दिसम्बर १९६८ ई० गुरुवार, शुक्रवार, शनिवार, रविवार को उत्साह एवं समारोह के साथ मनाया जा रहा है। आर्य प्रति० सभा उत्तर प्रदेश के माननीय प्रधान श्री पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री संसद सदस्य सभा के मुख्य उपप्रधान आचार्य विश्वबन्धु जी शास्त्री महोपदेशक, आचार्य श्री पं. शिवकुमार जी शास्त्री संसद सदस्य, दर्शन केसरी श्री वाचस्पति शास्त्री, कुंवर दशपालसिंह जी संसद सदस्य, शास्त्रार्थ महारथी पं० विश्वानन्द शर्मा वाराणसी, सभा के उपमन्त्री माननीय पं० विक्रमादित्य जी वसन्त, आर्यजगत्-ख्याति प्राप्त भजनोपदेशक सर्व श्री बेगराज वंसला, श्री नन्दलाल जी, महिपालसिंह जी, महानन्द सिंह जी, विश्राम सिंह जी आदि भाग ले रहे हैं।

दि० १४-१२-६८ को मध्यान में महिला सम्मेलन, दि० १५-१२-६८ को मध्यान में जिला आर्य सम्मेलन होगा।

—आशाराम पाण्डेय
मन्त्री आर्यसमाज मीरजापुर

धर्म शिक्षा परीक्षायें १९६९ ई०

[अन्तरगत आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश]

आर्य प्रतिनिधि समान्तरगत समस्त आर्य विद्यालयों तथा आर्यसमाजों को सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में होने वाली निम्नलिखित धर्म-शिक्षा परीक्षायें सन् १९६९ को २ मार्च सन् १९६९ को होंगी।

केन्द्र—प्रत्येक आर्य विद्यालय अपनी संस्था का केन्द्र रहेगा।

प्रवेशफार्म—२० दिसम्बर सन् ६८ तक इस कार्यालय से आवश्यकतानुसार प्रवेश फार्म मागे जावें।

प्रवेशफार्म के प्राप्त होने की अन्तिम तिथि—प्रत्येक संस्था प्रत्येक परीक्षा के प्रवेशफार्म पृथक-पृथक भर कर रजिस्ट्री डाक से १५ जनवरी सन् ६९ तक इस कार्यालय को परीक्षा शुल्क सहित अवश्य भेज दें। परीक्षा शुल्क मनीआर्डर द्वारा भेजें।

नाम परीक्षा	कक्षा जिसके विद्यार्थी सम्मिलित हो सकते हैं	परीक्षा शुल्क छात्र/छात्रा
(१) धर्म प्रवेशिका	७	·७५
(२) धर्मभूषण	९	·८७
(३) धर्माधिकारी	११	१·००

इस शुल्क के अतिरिक्त १) प्रति विद्यालय परीक्षाफल के गजट के लिए भी आना चाहिये।

—रामबहादुर एडवोकेट
अधिष्ठाता-शिक्षा विभाग
मन्त्री-प्रदेशीय विद्यार्य सभा उत्तरप्रदेश
स्थान-पूरनपुर, जिला पीलीभीत

श्री स्वामी वेदराज मुनि का देहावसान

आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान आजिवय ब्रह्मचारी, एवं गुरुकुल कांगड़ी के स्नातक श्री स्वामी वेदराज जी मुनि विद्यावाचस्पति का देहावसान ८६ वर्ष की आयु में दि० २५ नवम्बर १९६८ को प्रातः ५ बजे, गुरुकुल झज्जर में हो गया। उन्हें चिर काल से हाई ब्लड प्रेशर तथा पक्षघात था।

—विश्वराज भ्राता

आर्य डायरी १९६९

भिन्न-भिन्न प्रकार तथा आकार की प्रकाशित हो गई हैं। इस वर्ष डायरी में कई विशेषताएं हैं। दो रंगीन चित्र चार एकरंगीन चित्र, संध्या, दैनिक यज्ञ, ऋग्वेद के सूत्र, आर्यसमाज के नियम, ईश्वर प्रार्थना आदि बहुत-सी आवश्यक बातें दी हैं। प्रत्येक पृष्ठ में वेदों के मन्त्र हैं। शीघ्र मंगायें। डायरी २ ता० की ७) रु. दर्जन पाकिट। १ ता० की १०) रु० दर्जन। बड़ी १३) रु० दर्जन। डाक खर्च अलग।

मेसर्स गुप्ता एण्ड कम्पनी बुकसेलर
खारी बावली, देहली-६

स्वाध्याय और प्रवचन

(ले० श्री रामेश्वर शास्त्री, गुरुकुल वृन्दावन)

उच्चकोटि के वेद मन्त्रों का चयन करके विद्वान् लेखक ने यह पुस्तक लिखी है। मन्त्रों के शब्दार्थ के साथ वेद-मन्त्रों के गूढ़ भावों की पूर्ण व्याख्या है। मूल्य १-५० पैसे।

श्रीकृष्ण चरित

(ले० श्री भवानीलाल भारतीय एम. ए.)

विद्वान् लेखक ने भारतीय संस्कृति के उन्नायक श्री कृष्ण का वैज्ञानिक विश्लेषण करके शुद्ध रूप इस पुस्तक में रखा है। मूल्य ३ २५ पैसे।

उपनिषद संग्रह

(अनु. पं. देवेन्द्रनाथ शास्त्री, गुरुकुल सिकन्दराबाद)

जनता के विशेष आग्रह पर इस पुस्तक का नवीन संशोधित व परिवर्धित संस्करण निकाला गया है। मूल्य ६) रु०

सांख्य दर्शन (भाषा भाष्य)

आर्यजगत् के विशिष्ट विद्वान स्वामी ब्रह्ममुनि द्वारा विरचित

स्वामी जी ने इस पुस्तक में सांख्य दर्शन जैसे गूढ़ विषय को रोचक, सरल एवं सुबोध भाषा में खोलकर रख दिया है। इस साहित्य भाष्य पर उत्तर प्रदेश राज्य ने पुरस्कार दिया है। मूल्य ७) रु०

भारतवर्षीय आर्य विद्या परिषद् की विद्या विनोद, विद्यारत्न, विद्या विशारद व विद्या वाचस्पति की परीक्षायें भारत के सभी स्थान में प्रतिवर्ष होती है। इन परीक्षाओं की समस्त पुस्तकें अन्य विक्रेताओंके अतिरिक्त हमारे यहां भी मिलती हैं।

चारों वेद भाष्य, स्वामी दयानन्द की कृत ग्रन्थ तथा आर्यसमाज की समस्त पुस्तकें का प्राप्ति स्थान—

आर्य साहित्य मण्डल लिमिटेड
श्रीनगर रोड, अजमेर

ग्रन्थों का सूचीपत्र तथा परीक्षाओं की पाठविधि मुफ्त मंगावें।

विश्वविख्यात प्रो० सुरेन्द्र शुक्ल

[आधुनिक अर्जुन]

श्री प्रो० सुरेन्द्र शुक्ल

के अपूर्व शारीरिक तथा धनुर्विद्या प्रदर्शनों के द्वारा अपने उत्सव की शोभा बढ़ाइये, तथा जनता में नवीन चेतना तथा स्फूर्ति संचार कीजिए।

प्रो० शुक्ल स्वर्गीय श्री राममूर्ति के सुयोग्य शिष्य है, आपने भारत के विभिन्न क्षेत्रों का भ्रमण करके अपने प्रदर्शन के द्वारा अनेकों स्वर्ण रजत पदक एवं प्रमाण-पत्र प्राप्त किये हैं।

विशिष्ट प्रदर्शनों की सूची

धनुर्विद्या तथा राइफल शूटिंग के अनेकों आश्चर्यजनक लक्ष्यभेद, छाती पर हाथी को खड़ा करना, दो चालू मोटरों को एक साथ रोकना, हाथी बांधने की सांकल तोड़ना, भारी से भारी पत्थर छाती पर रखकर तुड़वाना आधी सूत मोटी तांबे की थाली को कागज की तरह हाथों से चीर डालना आठ मनुष्यों से अकेले रस्साकसी, हृदय एवं नाड़ी की गति को रोकना आदि-आदि।

पता-प्रो० सुरेन्द्र शुक्ल [आधुनिक-अर्जुन]
शक्ति-निवास, सीतापुर

विश्वकर्मा वंशज बालकों को

७०००) का दान

श्री भवानीलाल गज्जूलाल जी

श्री भवानीलाल गज्जूलाल जी शर्मा स्थिर निधि

१—विश्वकर्मा कुलोत्पन्न श्रीमती तिज्जोदेवी-भवानीलाल शर्मा कुम्हार की पुण्य स्मृति में श्री भवानीलाल जी शर्मा अमरावती विदर्भ) निवासी ने श्री विश्वकर्मा वंशीय बालकों के हितार्थ ७०००) की धन राशि सभा को समर्पण कर श्री भ० ग० शर्मा स्थिरनिधि की योजना निम्नलिखित नियमानुसार भाद्रपद संवत् २०२४ दि० सितम्बर १९६७ ई० को स्थापित की।

२—इस मूलधन से वार्षिक व्याज जो कुछ प्राप्त होगा, उसे उत्तरप्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा विश्वकर्मा वंशज गरीब, असहाय किन्तु होनहार बालक बालिकाओं के शिक्षण मद में व्यय करती रहेगी।

३-उक्त निधि से आर्थिक सहायता लेने वाले इच्छुकों को मास जुलाई से १) के स्टाम्प भेजकर सभा से छपे फार्म मंगाकर भरकर भेजना आवश्यक है।

★ मन्त्री आर्यप्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश लखनऊ

श्रीमती तिज्जोदेवी

जीवन-ज्योति

भारत विरोधी विद्वानों को मुँह तोड़ उत्तर देने वाले-

श्री पं० भगवद्दत्त जी रिसर्चस्कालर

[वैदिक रिसर्च स्कालर पं० भगवद्दत्त जी आज हमारे बीच नहीं रहे, मैक्समूलर, मैकडोनल्ड, ग्रीफिथ जैसे विदेशी विद्वानों के भारत सम्बन्धी मतों का सतर्क और अकाट्य प्रमाणों से खण्डन करने वालों मे अग्रणी रहे। उनके अगाध ज्ञान का लोहा सभी को मानना पड़ा। वे उस पीढ़ी के प्रतिनिधि थे जो आज शनैः शनैः समाप्त होती जा रही है। यहां उनके अभिन्न सहयोगी श्री गुरुदत्त के संस्मरण प्रस्तुत हैं। सम्पादक]

मैं डी० ए० वी० कालेज लाहौर में एम०एस०सी० में पढ़ता था। उन दिनों भगवद्दत्त जी बी० ए० में पढ़ा करते थे कालेज में वे महाशय जी के नाम से विख्यात थे। संध्या इत्यादि में रुचि लेने के कारण उनकी ऐसी ख्याति थी। डी०ए०वी० कालेज के बायलोजी के प्रोफेसर श्री सी० बी० पुरानी के ग्रुप में मैं भी था और पं० भगवद्दत्त भी ? ग्रुप में भी इनके विचार प्रकट होते रहते थे। वे तब भी कट्टर आर्यसमाज और स्वामी दयानन्द के भक्त समझे जाते थे।

पण्डित जी बी० ए० पास करने के बाद डी० ए० वी० कालेज के रिसर्च विभाग में कार्य करने लगे। उन दिनो उनका विशेष कार्य प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों का संग्रह करना था। कभी-कभी आर्यसमाज, अनारकली लाहौर के साप्ताहिक अधिवेशनों मे वे अपने अनुसन्धान कार्य के विषय मे बताया करते थे। इनके व्याख्यान सुनने से मेरी रुचि इनमें उत्तरोत्तर बढ़ती जाती थी।

जब मैं एम०एस० सी० पास करने के उपरान्त गवर्नमेण्ट कालेज की कैमीकल लेबोरट्रीज मे डिमोस्ट्रेटर नियुक्त हो गया तब पण्डित जी आर्यसमाज मन्दिर में वेद पाठ का ढंग सिखाया करते थे। प्रात. ६ बजे वेद पाठ सीखने वाले विद्यार्थी एकत्रित हो जाया करते थे और एक घण्टा तक स्वरसहित वेद पाठ हुआ करता था। मैं इस श्रेणी में लगभग एक वर्ष तक नित्य जाता रहा। उन दिनों पण्डित जी हिन्दू शास्त्र पर लिखने वाले पाश्चात्य विद्वानों के विरुद्ध मे इनके व्याख्यान हुआ करते थे। ये मैक्समूलर आदि विद्वानों के घोर आलोचक थे। इनकी आलोचना महर्षि दयानन्द सरस्वती की परिपाटी के अनुसार होती थी। इनकी आलोचना से यूरोप के कई विद्वान् प्रभावित होकर भारतीय शास्त्रों के विषय में अपना दृष्टिकोण बदल रहे थे। जिनके विषय मे ये आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संगों में बताया करते थे।

पण्डित जी का मत था कि मैक्समूलर मैकडोनल्ड, ग्रीफिथ आदि विद्वानों ने वेदादि शास्त्रों के मिथ्या अर्थ किये हैं। इनका मत था कि वेदों के अर्थ करने में यास्काचार्य की निरुक्ति और महर्षि शौनिक के 'बृहद् देवता' ही हमारे पथ प्रदर्शक हो सकते हैं। सायण इत्यादि भाष्यकारो का मान करते हुए भी पण्डित जी उनको उस सीमा तक ही मान्यता देते थे जिस सीमा तक निरुक्त आदि के अनुसार भाष्य थे।

इन दिनो पण्डित जी ने 'वैदिक वाङमय का इतिहास' नाम से एक ग्रन्थ लिखा था जिसमें वेदों की उत्पत्ति और वैदिक भाषा को समझने की कुञ्जी का बहुत विस्तार से उल्लेख किया था। इसके साथ ही वैदिक ग्रन्थों का तिथि-काल भी इन्होंने अपने मतानुसार लिखा है।

दुर्भाग्य की बात यह है कि उन दिनों आर्यसमाज के अन्दर भी कुछ लोग ऐसे घुस आये थे जो मैक्समूलर आदि पाश्चात्य विद्वानों की आलोचना सहन नहीं कर सकते थे। जहां पं० भगवद्दत्त जी एक ही वाक्य में पाश्चात्य विद्वानों के मतों को अमान्य कर देते थे वहां आर्यसमाज के कुछ विद्वान मध्यम मार्ग स्वीकार करना चाहते थे।

अब पण्डित जी, यह बात १९२६-२७ की है, पाश्चात्य विद्वानों द्वारा लिखे गये भारत के इतिहास पर कार्य करने लगे। उन्हें पाश्चात्य विद्वानों के मत में बहुत भूलें दिखाई दीं। इस कारण उन्होंने "भारतवर्ष का बृहद् इतिहास' नाम से दो भागों में ग्रन्थ लिखा है।

पण्डित जी पहले आदमी थे जिन्होंने मेगस्थनीज का भारत में आने के काल के विषय में सन्देह प्रकट किया। इन्होंने अपने इस इतिहास में यूरोपियन एवं ईरानी लेखकों के लेखों से ही सिद्ध किया है कि मेगास्थनीज महा झूठा आदमी था। इनका मत है कि मेगास्थनीज चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार मे आया ही नहीं। यह किसी और समय भारत में आया होगा और कदाचित आया ही नहीं।

इस प्रकार पण्डित जी ने महाभारत युद्ध की तिथि के विषय मे खोजपूर्ण लेख अपने इतिहास ग्रन्थ मे दिया है।

पण्डित जी के ये ग्रन्थ मेरी दृष्टि मे सन् १९४८-४९ मे आये। तब से ही मेरी मान्यता भारतवर्ष के इतिहास के विषय मे सर्वथा बदल गई है। इस इतिहास के संकलन में पण्डित जी ने रामायण और अन्य पुराणों से बहुत सहायता ली है। यह बात भी आर्यसमाज मे दूसरे लोगों के मतभेद का कारण बन गई। यह मतभेद इतना उग्र हुआ कि इनको लगभग सन् १९३० में डी० ए० वी० कालेज छोड़ना पड़ा तब से ये स्वतन्त्र रूप से अनुसन्धान कार्य कर रहे थे। इन्होंने कई ग्रन्थ लिखे हैं जो प्राचीन भारतवर्ष के इतिहास पर प्रकाश डालते हैं। साथ ही वेदादि शास्त्रों की व्याख्या परक हैं।

पण्डित जी में विशेष गुण यह था कि इनको वेदादि शास्त्रों और पुराण ग्रन्थो के इतने स्थल कण्ठस्थ थे कि उन पर किसी भी विषय पर बात करते हुये धारा प्रवाह प्रमाण पर प्रमाण दिया करते थे। इनकी नवीनतम पुस्तक अंग्रेजी में है। नाम है—'दी स्टोरी आफ क्रियेशन इन' —'वेदाज' उनके अति विस्तृत अध्ययन की छाप संसार के समस्त विद्वानों पर पड़ी। पंजाब सरकार ने उन्हें भूरि पुरस्कार से विभूषित किया। पंजाब सरकार के सर्वोच्च पदाधिकारी सर जान मेनार्ड और सर डी मान्टमोरसी उनके अनुसन्धान के काम से अति प्रभावित हुये।

योरोप के प्रोफेसरों ने उनके लेखों को ओझल करने का गुप्त प्रयत्न किया सन् १९४७ मे अंग्रेजो की कूटनीति के कारण भारत का विभाजन हुआ। भगवद्दत्त ने अपना केन्द्र दिल्ली मे बनाया। दिल्ली में आई० ए० एस० वालों को उन्होंने प्रति वर्ष भारतीय संस्कृति पर

★ श्री वैद्य गुरुदत्त जी

व्याख्यान दिये। दिल्ली मे पंजाब विश्व विद्यालय के कैम्प-कालेज मे वे प्राध्यापक रहे और पंजाब विश्वविद्यालय के सैनेट के आठ वर्ष सदस्य रहे। यहीं दिल्ली से भारतवर्ष का बृहद् इतिहास के दो भाग प्रकाशित हुए। सन् १९६२-६३ में उत्तरप्रदेश ने बृहद इतिहास के द्वितीय भाग पर २५००) रु० का नरेन्द्र देव पुरस्कार भेंट किया। उन्होंने वेद-विद्या निदर्शन नामक ग्रन्थ भी लिखा।

६० वर्ष से मैं इनके अत्यन्त निकट रह रहा था और उनका अर्थशास्त्र ज्ञान देखकर आज ऐसा अनुभव करता हूं कि इस प्रकार का शास्त्रों का ज्ञाता भारत में पुनः पैदा होना असम्भव प्रतीत होता है। आर्यसमाज के क्षेत्र में उनके निधन से चिरकाल तक अभाव अनुभव होता रहेगा।

★

अध्यात्म-सुधा

[पृष्ठ २ का शेष]

परमात्मा एक है, आत्मा अनेक। परमात्मा शोक, रोग, एवं जन्म-मरण के बन्धन से रहित है, जब कि आत्मा उनसे ग्रसित। परमात्मा सर्वव्यापक एवं सर्वान्तर्यामी है जब कि जीवात्मा एक देशी। जैसे शरीर मे जीव रहता है वैसे आत्मा में परमात्मा व्याप्त है। वह सर्वान्तर्यामी जीवो के सभी पाप-पुण्यों का साक्षी होकर उनका फल जीवों को देकर उन्हें नियम में रखता है। वह सृष्टिकर्ता है, संसार उसी के विधान से चल रहा है। परमात्मा और आत्मा व्यापक और व्याप्य रूप से सदैव साथ रहते हैं। अस्तु निर्विवाद रूप से सिद्ध हो गया कि आत्मा परमात्मा का अंश नहीं है, परन्तु उससे भिन्न है जैसा कि अभी बताया जा चुका है। परमात्मा का यही थोड़ा-सा ज्ञान उसके दिव्य स्वरूप अथवा दर्शन की झांकी मात्र है। वह इतना महान् है कि उसका पूर्णज्ञान होना असम्भव है। वेदों ने भी उस सम्बन्ध में 'नेति, नेति ही कहा है।

●

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल.-६०
मार्गशीर्ष १७ शक १८९० पौष कृ० ३
(दिनांक ८ दिसम्बर सन् १९६८)

आर्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

Registered No. L. 60
पता—'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष्य : २५९९३ तार : "आर्यमित्र"

धार्मिक समस्याएं

एक शङ्का

★

श्री पूर्णचन्द्र एडवोकेट

परिवार नियोजन और सन्तति निरोध के विषय में स्वाध्याय करते हुए मुझे एक शङ्का उत्पन्न हुई है। जिसका समाधान मैं नहीं सोच पाया हूं। आर्य मित्र के पाठकों और आर्यजगत् के विद्वानों से उसके समाधान के लिए याचना है।

(१) पहली शङ्का यह है कि शास्त्र के अनुसार मनुष्य का शरीर मिलना बड़ा दुर्लभ है। केवल पुण्य करने वालों को ही इसकी आशा हो सकती है। आजकल अधिकतर जन संख्या ऐसी है जिसके सम्बन्ध मे भ्रष्टाचार, अनाचार, और मिथ्याचार की शिकायत है। उनको मरने के पश्चात् मनुष्य योनि मिले और वह भी इतनी संख्या में कि चारों ओर से रोकथाम करते हुए भी माताओं के गर्भ में आत्मायें प्रवेश पाती रहती हैं, इसका क्या समाधान है।

(२) जिन आत्माओं को मनुष्य शरीर मिलना ही है, ईश्वर की व्यवस्था से और कर्मों के फल से। उनको कैसे रोका जा सकता है। उनमे से कुछ आत्मायें ऐसी होंगी जो नीचे की योनियों मे चक्कर काटकर मनुष्य बनने की अधिकारी हुई हैं और कुछ मनुष्य से मनुष्य की योनि में आये हैं। दोनों दशा में उनको न तो पशुओं में लौटाया जा सकता है और न मुक्ति मे भेजा जा सकता है। आर्य समाज भूत योनि तो मानता नहीं जिसमे आत्मा बिना शरीर धारण किये विचरता फिर।

(३) सन्तति निरोध के लिये तो सदैव से बल दिया जाता रहा है। कि स्त्री और पुरुष का सम्पर्क केवल विवाह के पश्चात् हो और वह भी मर्यादानुसार और केवल उस दशा मे जब सन्तान उत्पत्ति की इच्छा और आवश्यकता हो। इसके लिए ब्रह्मचर्य का पालन और आत्म संयम अचूक साधन माने गये हैं। आजकल गर्भ धारण न होने पाये परन्तु समागम और सम्पर्क होता रहे। क्या ये उल्टी रीति या मार्ग तो नहीं है। इसका भयंकर प्रचार राज्य स्तर पर हो रहा है! गर्भपात तक उचित समझा जाने लगा है। सम्भव है कि निकट भविष्य में नवजात बालकों के गला घोंटने की प्रथा भी प्रचलित होने लगे। इस भयंकर प्रथा को कैसे रोका जा सकता है। हम इस शंका के सम्बन्ध में कुछ अंश अपनी कविता 'रोटी का तराना' से उद्धृत करना चाहते हैं—

गर्भ रोको गिरा दो या उसको,
गला घोंटो तब मिले रोटी!
अब खटकते हैं लाल गोदी के,
आँख में छा गई है अब रोटी!
बच्चा पैदा न हो दुआ ये है,
गोद सूनी रहे मिले रोटी।
बीज डालो मगर न आये फसल,
वर्ना पाओगे फिर कहाँ रोटी!
है दवा और दुआ का जोर यही,
बच्चे घट जाँय तब मिले रोटी!

★

आर्यमित्र

के

आगामी अंक के कुछ आकर्षण

★

[१] दशम आर्य महासम्मेलन का आंखों देखा विस्तृत विवरण—आचार्य विश्वश्रवा: जी की लेखनी से।

[२] अध्यात्म-सुधा का पान श्री विक्रमादित्य जी 'वसन्त' के द्वारा।

[३] आपके प्रश्न ?—हमारे उत्तर

[४] भक्ति-भाव से पूरित सुमधुर भजनों की पुष्पाञ्जलि।

[५] वनिता-विवेक में बहनो की बातें—श्री सुरेशचन्द्र जी वेदालङ्कार।

[६] मुगल राज्य में किसान और कारीगर— —श्री बिहारीलाल जी शास्त्री

[७] साहित्य समीक्षा-नए प्रकाशनों की समालोचना

[८] मन्दिर की घंटियां-कहानी-कुञ्ज।

—सम्पादक

वेद प्रचार मर रहा है

श्री पं० बिहारीलाल जी शास्त्री

आर्यसमाज अमर रहे का घोष करने वालों! आर्यसमाज का प्राण वेद प्रचार अब मर रहा है तो आर्यसमाज कैसे अमर रह सकता है? जाटव, रैदासी आदि में प्रचार आरम्भ हुआ था, किन्तु अब बिलकुल नष्ट हो गया। जि० बिजनौर मे रैदासियों के सहयोग हुए, मगर अब उनमे से एक भी आर्यसमाज के पास नहीं आता। मैंने जाटव आदि हरिजनों मे प्रचार के लिये कई साल तक सभा को १३०) रु० मासिक दिलाये थे, उझानी प्रेम मिल से। किन्तु श्री जयदेवसिंह जी ने एक हरिजन प्रचारक कुछ दिन रक्खा फिर सभा ने वह रुपया और कामों में लगा डाला और फिर सभा की सुस्ती से दान बन्द हो गया।

अब महत्वपूर्ण संख्या वाले ये जाटव आदि डा० फरीदी जैसे मुसलमानों के साथ जा रहे हैं, बौद्ध बन रहे हैं जबकि इनमे सबसे प्रथम जागृति आर्यसमाज ने की थी। आर्यसमाजों पर रुपये की कमी नहीं है, परन्तु वह रुपया अब कुछ व्यक्तियों के पेटों मे जाता है अथवा निष्फल संस्थाओ मे। हमारे प्रान्त का एक आर्यसमाज तो इतना उदार है कि ईसाई स्कूल को रुपया दे रहा है। परन्तु वेद प्रचार में रुपया देने की रुचि समाजों में नहीं है।

इस प्रान्त में दो हरिजन मजनीक रखने हैं। एक जाटवों के लिये, दूसरा बाल्मीकियों (मेहतरों) के लिये। तीन सौ रुपये मासिक का व्यय है। जिन समाजों को धर्म प्रचार मे रुचि हो, वह श्री प० प्रेमचन्द जी शर्मा मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ को धन भेजें। मैं यत्न कर रहा हूं कि मिल से भी पुन. कुछ मिलने लगे। देखना है कि इस जरूरी राष्ट्रिय और धार्मिक काम मे आर्यसमाजी कितनी रुचि रखते हैं।

वधू की आवश्यकता

क्षत्रिय वंशज, आर्य परिवार गुरुकुल वृन्दावन का स्नातक, डबल एम० ए० कर रहा है घर पर अच्छी जमीन है, उम्र २५ साल। सुन्दर व स्वस्थ युवक के लिए बी० ए०, एम० ए० शिक्षित सुन्दर व स्वस्थ वधू की आवश्यकता है। जाति बन्धन तोड़कर भी सम्बन्ध हो सकेगा। विशेष जानकारी के लिये पत्र व्यवहार करें।

पता—
सत्यदेव आर्य
मु० पढ़ैना, पो० शिकोहाबाद,
जि० मैनपुरी

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के लिये मजनदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से कृष्णगोपाल शर्मा द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित

आर्य्य प्रतिनिधि सभा उ. [illegible] पत्र

आर्य्यमित्र

मित्रस्याऽहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।

लखनऊ-रविवार मार्गशीर्ष २४ शक १८९०, पौष कृष्ण १० वि० सं० २०२५, दिनाङ्क १५ दिसम्बर १९६८ ई०

परमेश्वर की अमृत वाणी-

पवित्र कमाई कमा-
पाप कमाई दूर कर

एता एना व्याकर खिले गा विष्ठिता इव ।
रमन्तां पुण्या लक्ष्मीर्याः पापीस्ता अनीनशम् ।
(अथर्व ७। ११५। ४)

शब्दार्थ-(एतः) इन (एनाः) उन (व्याकर) विवेक पूर्वक पृथक करता हूं (खिले विष्ठिता गमः इव) जैसे कि विविध प्रकार की गौवें बैठी हुई होती हैं (याः पुण्याः लक्ष्मीः) जो पवित्र लक्ष्मी है (रमन्तां) रमण करे (याः पापीः) जो पाप युक्त है [ताः] उसे [अनीनशम्) विनष्ट करता हू ।

भावार्थ-इस मन्त्र में परम पिता परमेश्वर ने मनुष्य को धर्म पूर्वक अर्थ कमाने का आदेश दिया है, और पाप कमाई से बचने की आज्ञा दी है। मनुष्य कैसा मूर्ख है कि दो पैसे के मिट्टी के घड़े को तो घर में ठोक पीट और बजाकर घर लाता है, किन्तु उसके घर में अधर्म की कमाई का अनेक प्रकार से जो प्रवेश हो रहा है, उसकी ओर से वह पूर्णतयः विमुख रहता है। 'धर्मार्थ काम मोक्षाणां च सिद्धिर्भवेत।' में एक प्रेरणा अन्तर्निहित है कि धर्म पूर्वक अर्थ को अर्जित करो और अर्थ से उन कामनाओं को पूर्ण करो जो मोक्ष प्रदत्त हों।

पाप पुण्य की कमाई की पहचान के लिए परमेश्वर ने हमें बुद्धि दी है। नर और विवेक से काम लेते हुये हम दोनों का पृथकीकरण करें। जिसके कारण सङ्कटमय व अशान्ति उत्पन्न होती है वह पाप कमाई है। जिससे सन्तुष्टि अभय और आनन्द मिलता है,वह धर्म कमाई है। इस बहुमुखी संसार मे पतन और उत्थान के अनेक मार्ग हैं-पथ भ्रष्ट करने वाले अनेक रंग बिरंगे आकर्षण हैं किन्तु जिस प्रकार से गोपालक विविध रंग-बिरंगी गौवों में से अपनी गौ को पृथक कर लेता है उसी प्रकार साधक भी भौतिकता के विभिन्न आकर्षणों में से अपने दिव्य पथ को पृथक कर उस पर आगे बढ़ता है।

विश्व को आर्य बनाने वालों ! परमेश्वर की इस अमृत वाणी को सुनो और भौतिकता की चका चौंध से अपने को पृथक कर सुन्दर, सुपावन ज्योतिर्मय मार्ग को चुनो और उसपर स्वयम् आगे बढ़ो, तथा संसार को बनाओ।

-'बसन्त'

वर्ष | अङ्क

इस अंक में पढ़िए !

१-अध्यात्म-सुधा	२	६-सिंहावलोकन	७
२-सम्पादकीय	३	७-कुत्ल राज्य में किसान और	८
३-सर्वो तथा सार सूचनायें	४	८-व्यङ्ग-विनोद	९
४-वनिता-विवेक	५	९-आर्यजगत्	११-१२
५-काव्य-कानन	६	१०-बहामोडूडक	१५

सम्पादक—

—प्रेमचन्द्र शर्मा

अध्यात्म-सुधा

बार-बार प्रभु को पुकार!

कदु प्रचेतसे महे वचो देवाय शस्यते । तदूयस्य वर्धनम ॥

—सामवेद मन्त्र २२४

शब्दार्थ—(महे प्रचेतसे) महान ज्ञानी, महान प्रचेतना देने वाला, सर्वज्ञ (देवाय) परमदेव परमात्मा के लिये (कत् उ) थोड़ा सी भी (वचः शस्यते) वचन बोला जाता है (तत् हि) वह वास्तव में (अस्य) इसका (वर्धनम् इत) बढ़ाने वाला होता है ।

परमात्मा की हम स्तुति करते हैं। स्तुति का प्रमुख आधार हम इन परमेष्ठी वाग्देवी अर्थात् वाणी को बनाते हैं। वाणी से हम परमेश्वर की स्तुति करते हैं, कीर्त्तन करते हैं, गुणगान करते हैं। वाणी के माध्यम से ही परमात्मा की प्रार्थना करते हैं। संसार में जो भी आस्तिक हैं वे किसी न किसी रूप में परमात्मा की चर्चा अवश्य करते हैं। क्यों करते हैं किसलिये करते हैं तो इन प्रश्नों का एक ही उत्तर है, सुख शान्ति के लिये पर क्या वह हमें मिल पाती है ?

सुख शान्ति के लिए तो भौतिकवादी नास्तिक भी सतत प्रयत्नशील रहते हैं और अपनी बुद्धि से नित्य नवीन वैज्ञानिक आविष्कार करते चले जाते हैं। आस्तिक जब उन्हें घोर अशान्त और अतृप्त पाते हैं तो वे प्रायः कह उठते हैं बिना भक्ति भाव के जीवन में चैन कहां मिल सकता है ? दूसरी ओर नास्तिक जब भक्ति करने वाले आस्तिकों को भी अतृप्त अशान्त और दुःखी पाते हैं तो वे भी इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि यह एक आडम्बर है इसमें भी कोई तथ्य नहीं है। वास्तविकता क्या है, इसका बोध हमें उपासना काण्ड अर्थात् सामवेद का यह मन्त्र करा रहा है। जीव का लक्ष्य सुख प्राप्ति और दुःख विनाश के लिये है। जब पशु पक्षी भी सुख के लिये प्रयत्नशील होते हैं तो प्रबुद्ध मानव तो विशेष रूप से उसके लिये उद्यत रहता है। यह मानवी स्वभाव है कि उसके पास जो वस्तु नहीं होती, उसकी प्राप्ति के लिये वह लालायित रहता है और तब तक छटपटाता रहता है जब तक उसकी प्राप्ति नहीं हो जाती ।

मनुष्य अपने जीवन में जिस वस्तु का विशेष रूप से अभाव पाता है, वह है आनन्द। मनुष्य मस्त रहना चाहता है, मस्ती उसे प्रिय है पर वह उसे संसार में मिल नहीं पाती . आनन्द एक ऐसी अनमोल वस्तु है जो संसार के किसी भी भौतिक पदार्थ के विनिमय में प्राप्त नहीं की जा सकती। सद् ग्रन्थों के स्वाध्याय से और संसार में फैले हुए ईश्वर के नियमों को देखकर उसे ऐसा बोध होता है कि एक परम शक्ति है जो सारे संसार को नियन्त्रित चला रही है। यह जीव है जो दुःख सुख भोगता है। वह परम चेतना तो निरंतर एक रूप रहती है। कौन सा मध्य रूप है वह सो आनन्द है। परमानन्द सदैव आनन्दमय है। दुःख और अशांति से वह परे है। यह विश्व उसका आनन्द क्रीडा क्षेत्र है। वह सर्वज्ञ इसमें सर्व व्यापक होकर आनन्द विभोर रहता है। एक क्षण के लिये भी वह आनन्द से च्युत नहीं होता है।

"क्या मैं उस प्रकार के आनन्द का सेवन कर सकता हूं ? इस प्रश्न के प्रत्युत्तर में अन्तर्ध्वनि गुंजरित उठती है "अवश्य। इस मानव योनि में यह सम्भव है।"

"कैसे ?"

'उस परमानन्द के समीपस्थ होकर उसके आनन्द अमृत का पान करने से।'

ऐसी दिव्य अनुभूति होने पर उपासना के क्षेत्र में प्रविष्ट होने के लिये मनुष्य स्तुति और प्रार्थना का आधार लेता है। 'स्तुति किसकी ?' 'ईश्वर की ?' 'स्तुति किस प्रकार ?' 'स्तुति के गुणगान से।'

'गुणगान से क्या होगा।'

"गुण धारक के प्रति प्रीति और उन गुणों को अपने अन्दर धारण करने की इच्छा में निरन्तर विकास ।

'गुण धारण के उपरान्त क्या होगा ?'

'प्रार्थना के स्वर गुञ्जरित होंगे।'

'प्रार्थना से क्या मिलेगा ?'

'शक्ति! आत्म शक्ति'

'किस प्रकार ?'

'निर्मलता से—अहंकार नष्ट होने पर जो सब पापों का मूल है।

इस वैज्ञानिक विश्लेषण से स्पष्ट है कि आनन्द पान के लिये परमेश्वर के समीपस्थ होना पड़ता है। आनन्द का दान चाहिये तो अहङ्कारी बनकर नहीं वरन् शुद्ध पवित्र और निर्मल बनिये। ये सब प्रार्थना के आश्रित हैं। किस प्रार्थना के जो कामना है जिसमें शब्द जाल का आडम्बर नहीं है जो दिल से निकली हुई आवाज है। हृदय की चाह के लिये तड़प चाहिये जो परमेश्वर गुणों को ध्यान में रखने से उत्पन्न होती है।

आत्म शुचिता के मूल भूत जो पञ्चनियम हैं उनमें ईश्वर प्रणिधान सबके अन्त में है उसके पूर्व शौच सन्तोष तप और स्वाध्याय है। जब तक हम अपने अन्तर्मलों को दूर नहीं करते, हमें आत्म तृप्ति उपलब्ध नहीं होगी। आत्म तृप्ति में ही जीवन का तत्व अन्तर्निहित है और तपस्वी ही स्वाध्याय अर्थात् आत्म ज्ञान के माध्यम से उस सर्व श्रेष्ठ अन्तर्यामी के भीतर प्रविष्ट होता है।

★विक्रमादित्य 'वसन्त'
उप मन्त्री आर्यप्रतिनिधि सभा,
उत्तरप्रदेश

इस मन्त्र में इसीलिये कहा गया है कि परमेश्वर का, उस परम चेतना का, उसकी दिव्यता प्राप्ति के लिये हम थोड़ा बहुत जो कुछ भी करते हैं वह वास्तव में हमें बढ़ाने वाला होता है। भक्ति का फल ही सुख है किन्तु परमात्मा का नाम लेना, ओ३म् का जाप करना अथवा उसके भजन गाना तब सुखदायक और आनन्द वर्धक हो सकता है, जब वह ज्ञानाश्रित हो, अर्थात् केवल दिखावा व कोरा अभ्यास मात्र न होकर उस अन्तर्निहित श्रेष्ठता की आत्मानुभूति निरन्तर होती रहे। इन तथ्यों को कभी विस्मृत न होने दीजिए—

(१) बिना मर्म को जाने कोरे अभ्यास से ईश्वर का वास्तविक ज्ञान श्रेष्ठ है।

(२) ईश्वर का कोरा ज्ञान रखने की अपेक्षा उस पर आस्था रखना श्रेष्ठ है।

(३) ईश्वर पर पूर्ण आस्था रखते हुए अपने मन और बुद्धि को उसमें लगाकर उसके गुणों को धारण करना श्रेष्ठ है।

(४) उसके गुणों को धारण करते हुए सत्कर्मों में रत रहकर, कर्म फल की आशा न लगाकर, निष्काम कर्म करना अर्थात् यज्ञमय जीवन बनाना श्रेष्ठ है।

(५) वास्तविक शान्ति अथवा मन का चैन कर्म फल के त्याग में निहित है और आनन्द के सोपान का यही शुभारम्भ है।

अतएव जीवन को साधनामय बनाने के निमित्त साधक और साधिकाओं को परमेश्वर के शुभ नाम ओम् का जाप एवम् उसके गुणगान से गुण ग्रहण करने का सतत प्रयास करना चाहिए। ★

मैं तेरा बन जाऊँ!

मैं तेरा बन जाऊँ रे, मैं तेरा बन जाऊँ।

रात दिवस और सायं प्रातः, तेरे ही गुण गाऊँ
पल-पल छिन-छिन घड़ी-घड़ी निशदिन, तुमको ही मैं ध्याऊँ
करूं समर्पित अपना जीवन, तुमको मीत बनाऊँ
मन-मन करके अन्तर अपना, ज्योति में ज्योति मिलाऊँ ॥
मैं तेरा ... ...

दुर्गुण छोड़ूं व्यसन त्यागूं, उत्तम कर्म कमाऊँ
कर्म करूं निष्कामी बनकर, शान्ति सुधा को पाऊँ।
दीन दु:खी की सेवा करके, उनको सुख पहुंचाऊँ
प्रेम सुधा के पीकर प्याले, सबको पान कराऊँ ॥
मैं तेरा..........

दूर हटा कर अविद्या तम को, ज्ञान का दीप जलाऊँ,
मानवता की ज्योति जगाकर, दुनिया को चमकाऊँ।
वेद पढ़ूं और वेद पढ़ाऊँ, अमृत रस बरसाऊँ,
महक उठे जीवन की क्यारी, सुरभित सुमन खिलाऊँ ॥
मैं तेरा..........

होकर सफल परीक्षा में मैं, धाम पे तेरे आऊँ,
निर्मल हो जब आत्मा मेरी, दर्शन तेरा पाऊँ।
तू मुझमें और मैं हू तुझमें, ऐसा तुझे रिझाऊँ,
आवागमन से पाकर मुक्ति, जीवन सफल बनाऊँ ॥
मैं तेरा..........

—'वसन्त'

ओ३म् आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो ऽ अपरीतास ऽ उद्भिदः। देवा नो यथा सदमिद् वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे-दिवे ॥१४॥

—यजुर्वेद अध्याय २५ मन्त्र १४

कल्याणकारी अबाधित असीम विविध सुखोत्पादक यज्ञ हमको सब ओर से इस प्रकार प्राप्त हों जिनसे विद्वान एवं दिव्य शक्तियाँ सर्वथा हमारी वृद्धि के लिये प्रतिदिन प्रमाद रहित होकर रक्षक हो सकें।

लखनऊ—रविवार मार्गशीर्ष २४ शक १८९०, पौष कृ० १० वि० २०२५
२२ दिसम्बर सन् १९६८ ई०, दयानन्दाब्द १४४, सृष्टि संवत १,९७,२९,४९ ०६९

शिक्षकों की समस्या

★श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री संसद सदस्य
प्रधान—आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश

सरकार द्वारा सिद्धान्त रूप में स्वीकृत कोठारी आयोग की रिपोर्ट आने के बाद भी भिन्न राज्यों में अभी तक शिक्षकों को उचित वेतनमान नहीं मिला उनमें यों तो लगभग सभी राज्यों में असन्तोष व्याप्त है। परन्तु उत्तर प्रदेश में जहाँ प्रारम्भ से ही शिक्षकों के नाम पर सरकार का खजाना खाली रहता आया है वहाँ यह असन्तोष अपनी चरम सीमा को पहुंच गया है। सरकारी सूत्रों के ही अनुसार उत्तरप्रदेश के तीस से भी अधिक जिलों में या तो शिक्षण संस्थायें पूरी तरह बन्द हैं, अथवा फिर आधी चौथाई कहीं खुली हुई हैं। अभी [illegible]दिन पहले प्राथमिक विद्यालयों के [illegible]ापकों ने आन्दोलन का सहारा लिया [illegible] उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक आन्दोलन प्रदर्शन और सत्याग्रह आदि उपायों का अवलम्बन कर रहे हैं। दुर्भाग्य से राज्य में यह स्थिति तब और भी विषम हो रही है जब छात्रों के भी अपने ढङ्ग के कुछ आन्दोलन चल रहे हैं। स्थिति की गम्भीरता को यदि सही न आंका गया तो इसके परिणाम दूरगामी होंगे।

इस समय भारत में प्राथमिक शिक्षकों की सबसे अधिक दयनीय स्थिति उत्तरप्रदेश में है। पंजाब और हरियाणा जैसे छोटे राज्यों में भी प्रारम्भिक विद्यालयों के कम से कम वेतन क्रम ३५७ और ३५२ रुपये हैं। ऐसे में देश के सबसे बड़े राज्य के प्राथमिक अध्यापकों को महगाई भत्ता सहित ८० और १०३ रुपये वतन मिल [illegible]है। केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री के अनुसार यह वेतन अब बढ़कर ११० रुपये प्रति मास से लेकर १२५ रुपया प्रति मास देने का निश्चय किया गया है। फिर भी देश के अन्य राज्यों की तुलना में यह वेतन बहुत कम बैठेगा। शिक्षा मन्त्री का यह भी कहना है कि यदि उत्तरप्रदेश में प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों को डेढ़ सौ रुपया प्रति मास वेतन दिया जाय तो राज्य पर सात करोड़ रुपये का और अतिरिक्त भार पड़ेगा। इतनी बड़ी राशि राज्य में लोकप्रिय सरकार बनने पर ही दी जा सकेगी। परन्तु अभी तो राज्य में लोकप्रिय सरकार का बनना और बन भी गयी तो उसका ठहरना दोनों ही भविष्य के गर्भ में हैं। राष्ट्रपति शासन में केन्द्र जितनी अपनी जिम्मेवारी निभा सकता है वह तो निभाये। कई वर्ष पहले केन्द्रीय सरकार ने श्री बी०जी०खेर की अध्यक्षता में एक समिति गठित की थी। उस समिति ने यह सिफारिश की थी कि—हर राज्य सरकार अपनी आय का दस प्रतिशत भाग शिक्षा पर व्यय करे। देश के कई राज्यों ने उसे मान लिया, परन्तु उत्तर प्रदेश सरकार ने नहीं माना। वह राज्य की कुल आय का छः प्रतिशत ही शिक्षा पर व्यय करती है। इस तरह चौदह करोड़ रुपया वह शिक्षा के मद से बचा रही है। राज्य सरकार यदि यह राशि शिक्षकों का उचित वेतन मान निर्धारित करने पर व्यय करती तो निश्चय ही इसकी अतिरिक्त आधी राशि सात करोड़ रुपया केन्द्र सरकार भी और राज्य सरकार को दे देती। इस तरह इक्कीस करोड़ रुपये से बहुत हद तक शिक्षकों का असन्तोष दूर किया जा सकता था। अध्यापकों की मदद का एक और भी प्रकार हो सकता है। उनके बालकों को विश्वविद्यालय स्तर तक की मुफ्त शिक्षा की सुविधा दी जाय। चिकित्सा और निवास की व्यवस्था सरकार अपनी ओर से उनके लिए करे। शिक्षा विभाग से उनकी सन्तान को सेवा के लिये प्राथमिकता दी जाय। शिक्षकों में बढ़ रहे असन्तोष को दूर करने के लिए कुछ तो किया जाय।

प्रारम्भिक शिक्षा जिला परिषदों, नगर पालिकाओं और विकास खण्डों के हाथ में होने से भी शिक्षकों के सामने कई अन्य कठिनाइयाँ खड़ी हो गई हैं। ऐसी शिकायतें अधिकांश स्थानों पर सुनने को मिली हैं, कि इन स्वल्प वेतन भोगी अध्यापकों के वेतन में से जहाँ राजनीतिक कार्यों के लिये चन्दे आदि एकत्रित किये जाते हैं वहाँ निर्वाचनों आदि की गन्दी राजनीति में भी इन गरीब अध्यापकों का प्रयोग किया जाता है। कहीं यदि किसी ने अपनी असमर्थता प्रकट की तो घर से इतनी दूर स्थान परिवर्त्तन कर फेंक दिया जाता है। जिससे उसे मिलने वाले वेतन का बहुत बड़ा भाग उसके किराये आदि में ही व्यय हो जाय। गावों के कन्या विद्यालयों में पढ़ाने वाली अध्यापिकाओं का जब इस तरह स्थान परिवर्तन होता है तब तो वह स्थिति उसके लिए और भी असह्य हो जाती है।

अंग्रेजों के समय में गवर्नमेंट स्कूलों और कालिजों को वेतनादि में विशेष सुविधायें प्राप्त थीं। उन्हें तात्कालीन सरकार के लाडले बेटों की संज्ञा दी जाती थी। परन्तु अब जब स्वतन्त्र भारत के संविधान की धारा ३९ में स्पष्ट शब्दों में समान कार्य के लिये समान वेतन का सिद्धांत माना गया है, तब फिर राजकीय और सहायता प्राप्त विद्यालयों के वेतन और महँगाई भत्तों में यह भारी अन्तर क्यों? जबकि आज इन राजकीय विद्यालयों की अपेक्षा निजी विद्यालयों के परीक्षा परिणाम और अनुशासन क्रम भी उनसे कहीं अधिक अच्छे हैं। दोनों वेतन क्रमों में समानता का सिद्धान्त लागू करने से कोई बहुत बड़ा व्यय भी उत्तर प्रदेश में सरकार के कन्धों पर नहीं पड़ेगा। केवल डेढ़ करोड़ रुपया अतिरिक्त देने से यह समस्या हल हो सकती है। राज्य सरकार ने पीछे एक इस प्रकार का आदेश भी जारी किया था। उससे राज्यपाल ने महगाई भत्तों में समानता का सिद्धान्त स्वीकार किया था। परन्तु नहीं कहा जा सकता कि वह आदेश अभी कहाँ और किस फाइल में अटका पड़ा है।

संयुक्त विधायक दल की पिछली सरकार ने लगभग यह निर्णय भी कर लिया था कि—सहायता प्राप्त स्कूलों के अध्यापकों का वेतन सीधा राज्य के खजाने से दिया जाय। छात्रों से जो शुल्क और दूसरी आय होती है वह सरकारी खजाने में जमा हो और वहीं से उनका समुचित वितरण हो। केरल और महाराष्ट्र में यह पद्धति पहले से ही चल रही है। इसकी आवश्यकता इसलिये भी अनुभव हुई क्योंकि कई स्थानों पर ऐसी शिकायतें सुनने को मिली हैं जहां अध्यापकों से वेतन के रजिस्टर पर तो पूरे वेतन के हस्ताक्षर कराये जाते हैं, परन्तु वेतन पूरा नहीं दिया जाता। बेरोजगारी के शिकार नई पीढ़ी के यह स्नातक विवशता में ऐसा करने के लिये भी तैयार हो जाते हैं। परन्तु कमरतोड़ महगाई में कब तक उनकी यह दर्दभरी आवाज न निकलती? इस पर भी समझ में नहीं आता क्यों शिक्षकों की इस उचित मांग को मानने में सरकार आना कानी कर रही है? थोड़ा बहुत प्रशासनिक भार इसमें यदि बढ़ भी जाय तो भी अध्यापकों का पेट काटने सम्बन्धी इस घृणित प्रथा को रोकने के लिये वह भार अधिक नहीं होगा।

किसी भी देश में राष्ट्र निर्माता शिक्षक को हड़ताल और प्रदर्शन पर जाना पड़े यह शुभ परम्परा नहीं है। परन्तु सरकारी नीति ने आज उन्हें यह कदम उठाने के लिए मजबूर कर दिया है। छात्रों पर कुप्रभाव न पड़े यह कैसे सम्भव हो सकता है। आज के छात्र आन्दोलनों में भी बहुत हद तक यह असंतोष कारण बन रहा है। वह जब अपने गुरुओं को सड़कों पर नारे लगाते और विद्यालयों का बहिष्कार करते हुये देखते हैं तो उनमें बढ़ चढ़ कर उनकी अनुकृति होनी स्वाभाविक है।

प्रारम्भिक और माध्यमिक स्तर की शिक्षा आज चार श्रेणियों में बटी हुई है। ऐसे भी कुछ पब्लिक स्कूल आज इस देश में हैं जहाँ पढने वाले एक छात्र पर २५० और २०० रुपया मासिक तक व्यय बैठता है। उनके विपरीत ऐसे भी विद्यालय इस देश में हैं जहां पढाने वाले अध्यापक को ८० रुपये प्रतिमास वेतन मिलता है। इनके अतिरिक्त माण्टेसरी प्रणाली के स्कूल तथा कानवेन्ट स्कूल भी चल रहे हैं। राष्ट्रीय एकता परिषद् में शिक्षा में समानता लाने के लिए निर्णय लिये गये थे। परन्तु वह निर्णय लगता है अभी फाइलों में ही सुरक्षित हैं। यदि प्रारम्भ से ही शिक्षा में यह विषमता रहेगी तब व्यावहारिक क्षेत्र में कैसे समानता आ

हिन्दी को पंजाबी के समान स्तर दिलाने वालों को ही वोट

आर्य सम्मेलन का निर्णय

जालंधर ९ दिसम्बर संसत्सदस्य श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री की अध्यक्षता मे आयोजित आर्यसमाज के एक सम्मेलन मे एक प्रस्ताव द्वारा पंजाब के हिन्दुओं से अपील की गई कि वे राज्य के आगामी मध्यावधि चुनाव मे केवल उन्हीं उम्मीदवारों का समर्थन करें जो कि राज्य में हिन्दी के लिए पंजाबी के समान दर्जा दिलाने की क्षमता रखते हों।

प्रस्ताव मे कहा गया है कि भाषाई अल्पसंख्यक होने के कारण हिन्दुओं को संविधान में भाषाई अल्पसंख्यकों को प्रदत्त अधिकारों के अन्तर्गत रक्षा की आवश्यकता है।

प्रस्ताव पर भाषण करते हुए पंजाब के भूतपूर्व मन्त्री श्री वी० एन० कक्कड़ ने कहा कि वे बिना यह जाने ही कि कौन-सा दल पंजाब मे हिन्दी को पंजाबी के समान दर्जा दिला सकता है, इस प्रस्ताव का समर्थन कर रहे हैं। कांग्रेस हिन्दी की रक्षा करने में असफल रही है। जबकि जनसंघ ने, जो कि हिन्दी के समर्थन में बोलता रहा है अब लोगों के साथ 'विश्वासघात' कर दिया है।

सम्मेलन ने प्रशासन से हिन्दी को बिलकुल हटा देने के प्रयासों की निन्दा की और मांग की कि शैक्षणिक संस्थाओं, प्रशासन, अदालतों, विधायिकाओं और स्थानीय निकायों में हिन्दी को पंजाबी के बराबर दर्जा दिया जाए।

सम्मेलन ने अकाली प्रेस द्वारा राज्य में साम्प्रदायिक तनाव बढ़ाने और आर्य समाज विरोधी अभियान चलाये जाने की निन्दा की। सम्मेलन ने मांग की कि वह अकाली प्रेस को नियन्त्रण में लाये। सम्मेलन में कहा गया है कि आर्यसमाज सदा से हिन्दू एकता का समर्थक रहा है। वह हिन्दी को, जो कि राष्ट्र भाषा है, कभी छोड़ नहीं सकता। इसने मांग की कि सरकारी शिक्षण संस्थाओं मे सच्चर फार्मूला लागू किया जाये।

सम्मेलन ने हरिजनों को राज्य विधान सभा मे उचित प्रतिनिधित्व देने का आश्वासन दिया। एक अन्य प्रस्ताव द्वारा आकाशवाणी जालन्धर द्वारा हिन्दी की उपेक्षा पर चिन्ता व्यक्त की गई।

सकेगी ?

उत्तर प्रदेश में शिक्षकों की इस हड़ताल को रोकने के लिये एक अध्यादेश भी जारी किया गया है। इसी तरह का एक अध्यादेश पीछे १९ अक्तूबर को हुई केन्द्रीय कर्मचारियों की हड़ताल के सम्बन्ध मे भी जारी किया गया था। सरकार के कानून में अब और भी कई प्रावधान इन समस्याओं के सुलझाने के लिये हैं तब अध्यादेश जारी कर उसकी अवहेलना करने का अवसर देना कहां की समझदारी है। आगे चलकर हो सकता है कुछ ऐसी राष्ट्रिय और अन्तर राष्ट्रिय समस्यायें भी पैदा हों, जिनमे महत्त्वपूर्ण अध्यादेश जारी किया जाय। विशेषकर चीन और पाकिस्तान का संकट जिस देश के लिए चिन्ता का विषय बना हुआ है, उस तो कभी न कभी इस तरह के कुछ निर्णय लेने ही पड़ सकते हैं। पर अभी से यदि अध्यादेशों की धज्जियां उड़ाने की आदत सरकार ने जन साधारण मे डाल दीं तो फिर आगे चल कर इन कानूनों का क्या महत्त्व रह जाएगा। शिक्षक जैसे दायित्वपूर्ण पदों पर कार्य करने वाले व्यक्तियों के आन्दोलन को दबाने या कुचलने मे अध्यादेश का प्रयोग बुद्धिमत्तापूर्ण निर्णय नहीं कहा जा सकता। नयी पीढ़ी में चारों ओर आज असन्तोष की एक अजीब लहर उमड़ रही है। क्षुद्र राजनीतिक स्वार्थ उन्हें हवा देने से बाज नहीं आ रहे हैं ऐसे मे उन्हें सही रास्ते पर डालने वाले शिक्षक को भी अपने हाथ से खो देना इतिहास की भारी भूल सिद्ध होगी।

×

श्री उमेशचन्द्र स्नातक जेल में

'आर्यमित्र' के भूतपूर्व सम्पादक, आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तरङ्ग सदस्य श्री उमेशचन्द्र जी स्नातक माध्यमिक शिक्षक संघ की ओर से सचिवालय लखनऊ का घेरा करने के कारण २६ नवम्बर को गिरफ्तार कर लिये गये। वह आजकल आदर्श कारागार लखनऊ में हैं। आपके साथ श्री गिरजाभूषण पाण्डेय, श्री कृष्णकुमार रत्नाकर, श्री पी०डी०जोशी और श्री धर्मसिंह जी अध्यापक हल्द्वानी भी हैं।

श्री महेन्द्रप्रताप शास्त्री, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के विज़िटर नियुक्त हुए

सीनेट का सर्वसम्मत निश्चय

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की सीनेट ने अपनी बैठक दि० १० ११ ६८ मे श्री महेन्द्र प्रताप जी शास्त्री भूतपूर्व उप कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय को सर्व सम्मति से डा० मंगलदेव शास्त्री के स्थान पर विश्वविद्यालय का विज़िटर नियुक्त किया है।

श्री शास्त्री जी भारत के एक उच्चकोटि के शिक्षा शास्त्री तथा प्रबन्धकों में से हैं और आर्य जगत् मे उनका एक प्रमुख स्थान है। उक्त समाचार से आर्य जगत् मे बड़ा हर्ष उत्पन्न हुआ है।

(१)

'आर्यमित्र' के लेख बहुत ही गम्भीर व शिक्षाप्रद आ रहे हैं। और श्री 'वसन्त' जी ने तो इस साल बहुत ही उत्तम उत्तम शिक्षायें 'आर्यमित्र' व उसके विशेषांकों मे निकाली है जिनको पढ़कर हम सभी सभासद अति सन्तुष्ट हैं। आशा है कि आप अभी इस पत्र को और भी शिक्षाओं से भरपूर करते रहेंगे, जिससे बड़ा परोपकार होता रहेगा, और जो बातें नहीं मालूम वे होती रहेंगी। हम आपके बड़े आभारी हैं। अब तो आर्योदय से भी उत्तम लेख हमारे आर्यमित्र मे आते हैं। आशा है आगे भी इसी प्रकार जानकारी कराते रहेंगे।

आपका—

—सोनपाल आर्य

कोषाध्यक्ष आर्यसमाज इगलास

(२)

सप्रेम नमस्ते।

आपके पत्र संख्या ७३३ दि० २१-११-६८ का आर्यमित्र का ऋषिअङ्क मिला। जिसके लिए आपका अतीव धन्यवाद है। सचमुच यदि आप यह अङ्क न भेजते तो मैं इन बहुमूल्य लेखों के पढ़ने मे वञ्चित रह जाता। जिस ढंग से आपने अङ्क निकाला है, वह दूसरे पत्रों के लिए एक पथ दर्शक उदाहरण है। काश कि वह लोग आपका अनुकरण करें।

—डा० सेवकराम यात्री

शुगर मिल, खतौली

(३)

'आर्यमित्र' निःसंदेह अब उन्नति के पथ पर अग्रसर है, जो उसके लेखों से स्वयं विदित है। उसमे लेख अत्यन्त उच्चकोटि के पुरुष, महिलाओं एवं बच्चों इत्यादि सभी के लिये उपयोगी ज्ञान वर्धक, रोचक एवं धर्म और ईश्वर के प्रति श्रद्धा तथा विश्वास उत्पन्न करने वाले आ रहे हैं, जो अत्यन्त उत्साह वर्द्धक और प्रयोजनीय हैं। निश्चय ही मित्र ने अब सत्य ज्ञान का द्वार सभी के लिए खोल दिया है। मैं अब भविष्य में 'आर्यमित्र' की सेवा का सम्भव प्रयत्न अवश्यमेव करता रहूंगा। क्योंकि उपरोक्त सभी बातों को देखकर मेरा भी उत्साहवर्धन निःसंदेह हुआ है और मेरे अशक्त जीवन मे पुनः नवजीवन का संचार हुआ है।

—जियालाल कुलश्रेष्ठ आर्य

डी०बी०एस०आफिस जी आई०पी०रेलवे

अवकाश प्राप्त प्रधान लिपिक,

(४)

पिछले ६ मास से मैं आर्यमित्र पढ़ रहा हूं। वास्तव मे लेख बहुत उच्चकोटि के तथा पठनीय होते हैं, फिर भी एक कमी दृष्टि गोचर हुई है वह यह है कि छपाई साफ नहीं है—कभी कभी तो स्याही बिलकुल नहीं होती और कभी-कभी अधिक होती है।

भवदीय—

—विद्याधर वर्मा, मन्त्री

आर्यसमाज राणाप्रताप बाग, दिल्ली ७

बहनों की बातें (३)

ममपुत्राः शत्रुहणः मे दुहिता विराट

[बहनों की बातें बहनों को कहनी चाहिए। हमारी बहनें आर्यमित्र के वनिता-विवेक, महिला-मण्डल मे रुचि लें इसलिए हमारी प्रार्थना पर विद्वान लेखक बहनों की बातें लिख रहे हैं जिसकी यह तीसरी कड़ी है। 'माता निर्माता भवति' के क्रम को इस लेख माला मे संस्कार महत्त्व के आधार पर बढ़ाया गया है। क्या हमारी माताएं और बहनें वेद के आधार पर इन स्तम्भो के अन्तर्गत अपनी रचनायें भेजकर अपने उत्साह का प्रदर्शन करेंगी? गुरुकुल की स्नातिकायें छात्रायें और स्वाध्यायशील देवियां आर्यमित्र मे अपने इन स्तम्भो का उपयोग कर वेद प्रचार मे हमे पूर्ण सहयोग दें।—सम्पादक]

★ सुरेशचन्द्र वेदालङ्कार
एम० ए० एल० टी० गोरखपुर

चि० शशी के छोटे भाई का मुण्डन सस्कार था। उसने अपनी सभी सहेलियो विमला, मधु कमलेश, भारतीय ऊषा मोहता और सातवलेकर सभी को आमन्त्रित किया था। सरला बहन भी विशेष रूप से बुलाई गई थीं। वास्तव मे मनुष्य का स्वभाव ही उसे लोकप्रिय बनाता है। सरला बहन हँसमुख, सेवा मे अभिरुचि लेने वाली और करुणामयी बहन की तरह थीं। जो उनके सम्पर्क मे एक बार आता उनकी शिक्षा दायिनी सुरुचि पूर्ण बात उसे मन्त्र मुग्ध कर लेती थी। कितने ही परिवारो की अशान्तता दूर कर सद्धर्म से उन्होंने परिचित कराया था। उनकी वाणी का प्रभाव सरल और रोचक विधि से समझाए नये तथ्य बालिकाओं को बहुत पसन्द आते थे। मुण्डन सस्कार की समाप्ति के बाद सब लड़कियो ने उन्हे घेर लिया, और सस्कार के पवित्र दिवस पर बच्चे को आशीर्वाद और हम सबको उपदेश देने के लिए आग्रह किया। अभी वे कुछ कहने को सोच रही थीं, कि कमलेश ने अभिलाषा प्रकट की कि आप 'कारण शरीर क्या है? और यह पुरुष तथा स्त्री के वीर्य और रज से कैसे सम्बन्धित होता है' यह बताने की कृपा करें। इससे हम सस्कारो के महत्व को समझ सकेंगी।

कमलेश की बात सुनकर सरला बहन ने कहा "अच्छा सुनो, सस्कार शब्द तुमने सुना है। सस्कार किसे कहते हैं? उन्होंने एक चाक का टुकड़ा लिया और उसे ब्लैक बोर्ड पर दे मारा। ब्लैक बोर्ड पर एक चिह्न पड़ गया। वह चिह्न सस्कार हुआ, और चाक का वहाँ फेंकना कर्म। इसी प्रकार मनुष्य कर्म करता है और कर्म के बाद उसके सस्कार उसकी आत्मा पर पड़ते हैं। सस्कारो से ही मनुष्य बनता है। एक जन्म मे सस्कार पड़ते है, अच्छे या बुरे—यही तो इस जन्म को, पिछले जन्मो की और अगले जन्मो की कहानी है। मनुष्य जन्म का उद्देश्य शुभ सस्कारो द्वारा आत्मा' के मैल को धोना और निखारना है। उपनिषद् के ऋषि ने इसीलिये कहा था "इह चेदवेदीत् अथा सत्यमस्ति, न चेदवेदात् महती विनष्टिः" अर्थात् इस जन्म मे अगर आत्मा को जान लिया तो ठीक, जन्म सार्थक हो गया, न पाया तो नाश, महानाश हो गया।

अब रही, कारण शरीर की बात कर्म के विषय मे मानव समाज मे अनेक प्रकार की बात प्रचलित हैं। किसी का विश्वास है कि प्रत्येक मनुष्य की पीठ पर विद्यमान फरिश्ते उनके कर्मों को बहियों मे लिखते रहते हैं, दूसरी ओर लोग चित्रगुप्त की बही मे कर्मों के लेखे जोखे के लिखे जाने की बात कहते सुनाई देते हैं। परन्तु, तुम याद रखना कर्म किसी रजिस्टर मे नहीं लिखे जाते। कर्म तो चाक के समान अपने सस्कार, अपनी लकीर, अपनी रेखा या निशानी खींचते चले जाते हैं। कर्म की आत्मा पर पड़ी हुई निशानी, चिह्न या लकीर ही सस्कार कहे जाते हैं। आत्मा पर एक कर्म नहीं लिखा जाता, उन कर्मों के कारण आत्मा के जो सस्कार बनते हैं, आत्मा की रुचि उसकी प्रवृत्ति उसकी

वनिता विवेक

गति की दिशा बनते जाना कर्मों की शृङ्खला का लिखा जाना है। मान लो, हम भोजन करते हैं, वह भोजन पचकर शरीर बन जाता है, वैसे ही हम कर्म करते हैं, उन कर्मों से तत्काल उनका फल सस्कार बन जाते हैं। जब भोजन शरीर बन जाता है तो उस भोजन से हमे निपटना नहीं पड़ता है। इसी प्रकार सस्कार बन जाने के बाद अलग-अलग कर्मों से हमे उलझना नहीं पड़ता है। अर्थात जिन कर्मों का फल हमे तत्काल नहीं मिला वे कर्म अपना सस्कार छोड़ते जाते हैं, वैसे के वैसे बने रहते हैं। सस्कारो का सिद्धान्त ही यह है कि एक एक कर्म से हमारा सम्बन्ध नहीं रह जाता हमारा सम्बन्ध सस्कारो से, आत्मा की रुचि से, प्रवृत्ति से, रह जाता है। कर्मों का प्रश्न संस्कारो के बन जाने पर समाप्त हो जाता है, और इसके बाद हमारी वास्तविक समस्या कर्म नहीं रहते, सस्कार हो जाते हैं। सस्कारो का पुञ्ज ऋषि मुनियों के शब्द मे 'कारण शरीर' या सूक्ष्म शरीर' कहा जाता है।

इस प्रकार मानव के उत्पन्न होने से पूर्व उसके सस्कारो के शरीर मे, उस शरीर मे जो इस जन्म का कारण है जिसे अभी हमने कारण शरीर' 'सूक्ष्म शरीर' आदि नामों से कहा है, नवीन आत्मा को जन्म देने वाले स्त्री पुरुष अपने विचारो के वेग से, बल से, उनकी उग्रता से इस शरीर पर नवीन सस्कार डालने का यत्न करते हैं। इस मनुष्य की उत्पत्ति रज वीर्य से होती है माता पिता जैसे होंगे उनका रज-वीर्य वैसा होगा। रज वीर्य जैसा होगा वैसा प्रभाव कारण शरीर पर पड़ेगा, और जैसा प्रभाव उस पर पड़ेगा वैसा मानव बनेगा, इसीलिए तुम्हे ध्यान रखना होगा कि गर्भावस्था की दस महीने की मसीन इतनी शक्तिशाली होती है कि इस समय बालक पर डाले गये सस्कार इतना वेग रखते है कि जन्म जन्मान्तर के सस्कार उसके सम्मुख ढीले पड़ जाते हैं, तभी इस जन्म को दुर्लभ माना गया है। यदि यह नष्ट हो गया तो हमे असख्य योनियो मे भटकना पड़ेगा। इस प्रकार तुम आसानी से समझ सकती हो कि बच्चे के भविष्य के निर्माण मे माता का कितना सम्बन्ध और कितना प्रभाव है। उस समय माता का हाथ विश्वकर्मा का हाथ है। वह जो चाहे कर सकती है। इस कारण कहा गया है, 'न मातुः परं दैवतम्' माता से बढ़कर और कोई देवता नहीं। जब कहीं असली माता आ जाती है तो उससे पृथ्वी के वदन कमल पर सुहास्य फैल जाता है। उस समय वन श्री का गौरव खिल उठता है। उस समय घर घर नगर नगर मे समृद्धि बढ़ जाती है। ऐसा लगता है। मानो मां शारदा का रूप धारण कर पृथ्वी पर प्रकट होती है वीणा की झङ्कार प्रारम्भ हो जाती है, सगीत और नृत्य ठौर ठौर आरम्भ हो जाते है।

सरला बहन ने भाव वेश मे आकर कहा 'मैं तुमसे पूछती हूं कि क्या कभी तुमने सोचा है कि स्त्री का वास्तविक स्वरूप क्या है? उसका रूप कैसा है? बाला? मुग्धा? प्रौढ़ा? या पुरन्ध्री? वह वास्तविक स्त्री मञ्जुल हासिनी बाला नहीं है, मनोमोहनी मुग्धा नहीं है, विलास चतुरा प्रौढ़ा नारी नहीं है। वह तो नित्य यौवना, किन्तु स्तन्यदायिनी माता है। वह हमारे साथ हँसती है, खेलती है, परन्तु वह हमारी सखी नहीं, माता है। हम उसके साथ बालोचित क्रीडा कर सकते हैं, लेकिन हमे यह न भूलना चाहिए। कि हम वास्तव मे माता के सम्मुख हैं। स्त्री का वास्तविक स्वरूप माता अर्थात पवित्रता, वत्सलता कारुण्य, कारण शरीर पर अपने वेगवान शुभ सस्कारो द्वारा पुराने सस्कारों को अच्छे मे परिवर्तन करने वाले विश्वकर्मा और विधात्री का है। माता अर्थात अमृत-निधान का है। इस माँ के स्तन्य का स्पर्श जिन होठो को हुआ हो, वे होठ अपवित्र वाणी का उच्चार नहीं करेंगे, निर्बलता का वचन मुँह से नहीं निकालेंगे, द्वेष का सूचन तक न करेंगे, पाप को नहीं सँवारेंगे, पौरुष की हत्या नहीं करेंगे और मुग्धजनो को धोखा नहीं देंगे।

जब माँ का वास्तविक स्वरूप हम समझ लेंगी जो हमारा रूप ससार से रोग और कष्ट को दूर कर देगा। ऐसी माता के मन्दिर मे कला रहेगी, पर कला के नाम पर विचरने वाली विलासिता नहीं रहेगी। सच्ची माता के भवन मे प्रेम का वायु मण्डल रहेगा, केवल सौन्दर्य का मोहन नहीं। माता के उपवन मे प्राणो का स्फुरण रहेगा, निराशा का निश्वास नहीं। माता के लता कुंजो मे विश्व प्रेम का सगीत गूंजेगा, परस्पर अनुनय का मूर्खतापूर्ण कल कूजन नहीं। माता के विहार में स्वतन्त्रता की धीरोदात्त गति होगी,

(शेष पृष्ठ १० पर)

काव्य कानन

शोषित मानव

मानव ! तेरा क्यों अन्तिम स्वर ?
युग-युग की आशा का प्रस्तर, क्यों कांप रहा अविरल थर-थर ?
मानव ! तेरा क्यों अन्तिम स्वर ?
जीवन की स्वप्निल वे घड़ियाँ
तेरा करतीं शृङ्गार, अरे !
इस वितत विपति में व्याकुल-से-
तेरा क्या ? जो आहार करे ॥
प्रतिदिन शीतल आहों के कण, भक्षण कर, करता आयु पूर्ण ।
अपने अरमानों के अंग, पलभर में करता चूर्ण-चूर्ण ॥
अवशिष्ट अस्थियों के पञ्जर,
तेरा जीवन करता मर-मर ॥
मानव ! तेरा क्यों अन्तिम स्वर ?
दानव की क्रूर-कुटिलता ने,
ताने-बाने, ताने अनेक ।
तेरा यौवन, रो पड़ा हाय ।
हँस पड़े, क्रूर-वैभव-विवेक ॥
दुर्बल भुज-बल पर भार उठा, औरों का पाला पेट रोज ।
तू दाने-दाने को तरसा, तड़पा उनके अवलोक भोज ॥
तेरी हड्डी-पसली पा-जर,
तेरी जीवन-गति भैरव पर ॥२॥
मानव ! तेरा क्यों अन्तिम स्वर ?
नयनों में अश्रु निराशा के,
पद-पद पर, गल में पड़ा तोक ।
कर मे करकी, करकी जंजीर,
परतन्त्र-युवक का अजब शोक ।
निस्तेज, कमल-सा मुरझाया मुख, पिचक गये दोनों कपोल ।
है दन्त-कर्ण नेत्रों-विहीन, वाणी का पड़ना मन्द बोल ॥
यह भी क्या मानव का उत्तर
जिसमे अविनश्वर भी नश्वर ॥३॥
मानव तेरा क्यों अन्तिम स्वर ?
युग-युग की आशा का प्रस्तर, क्यों कांप रहा अविरल थर-थर ॥
मानव ! तेरा क्यों अन्तिम स्वर ?

★श्री विश्वबन्धुः शास्त्री,
वरिष्ठ उप प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र० आर्यनगर मूढ बरेली

●

शिक्षक तेरा अभिनन्दन है

हिन्द देश की आशाओं के अमर दीप ?
हे कर्मवीर शिक्षक तेरा अभिनन्दन है ।
वीणा वादिन के वरद पुत्र हे राष्ट्र नींव,
हे विश्व गुरू ?, हे राष्ट्र पूज्य शत-वन्दन है ॥
है निरख रहा तेरी प्रतिमा को हिन्द दग—
श्रम की रेखायें उभर पड़ी इक प्यार गीत ।
भ्रष्टाचारी के शीत युद्ध का कर भेदन—
बढ़ रहे शान्ति पथ" पर सपूत ये राष्ट्रमीत ॥
उपकारों से करते रहते जग को निहाल ।
सौभाग्यपूर्ण ? हे जगत गुरू मानस मराल ।
बढ़ रहे "शान्ति" पथ पर सपूत ये राष्ट्र मीत,
हे कर्मवीर शिक्षक तेरा अभिनन्दन है ।
वीणा वादिन के वरद पुत्र हे राष्ट्र नींव—
हे राष्ट्र पूज्य शिक्षक तेरा अभिनन्दन है ॥
असभ्यता के अन्धकार मे—
ज्ञान की ज्योति जलाई है ।
शिक्षक ने शिक्षण बल ही—
भारत किसमत चमकाई है ।

भजन पुष्पाञ्जलि—

प्रभु की शरण

शरण आ गया हू प्रभुवर तुम्हारी ।
दया का भिखारी, चरण का पुजारी ॥
निज मान में अभिमान में, क्यों हजारों को दिया ।
धन-धाम में परिवार मे, प्रभु के नियम को तज दिया ॥
नियम विनय की बातों से, फिर कैसे करार करूगा ?
हू विश्वास देके आये, फिर क्या जवाब भरूँगा ?
वादे की बातें हैं घटती हमारी ।
शरण आ गया हूं प्रभुवर तुम्हारी ॥
चले हम अभी, विनय की चोट दे प्रभो को ।
रसों की धार जो निकले, पिए पीकर तजे अज्ञान को ॥
कामना आलस्य तज, प्रभु नियम में नियमित रहू ।
फिर देखते ससार दु:खमय सुख ही सुख अनुभव करूँ ॥
मन है जो बाधक हों साधक हमारी ।
शरण आ गया हू प्रभुवर तुम्हारी ॥
पथिक करके इच्छा, उठाया एक पद को ।
खड़े ही रहे या गिरे या चले हम आगे को ॥
है अटल विश्वास कि प्रभो, शरणागत पालक हो ।
हो प्रेम मे जो मुग्ध "प्रेमी" उनके तुम उद्धारक हो ॥
आशा की लहरें हैं बढ़ती हमारी ।
शरण आ गया हू प्रभुवर तुम्हारी ॥

प्रेम करो भगवान् से

प्रेम करो भगवान से, आनन्द का वह मूल ।
जीव जगत सुख शून्य है, दारा द्रव्य निर्मूल ॥
दारा द्रव्य निर्मूल, चैन कहिं और नहीं है ।
किन्तु व्यग्रता चपलता हर जगह बनी है ॥
कह 'प्रेमी' जग से सुख लेना मानो यों है ।
बालू पेर तेल को लेना जानो ज्यों है ॥

★मंहगूप्रसाद 'प्रेमी' गोरखपुर छावनी

●

काम से बनाते तुम,
जन को जीना सिखलाते तुम,
जो शरण तिहारी आ जाये—
नवजीवन ज्योति जगाते तुम।
सद्ज्ञान मार्ग दर्शक गुरू को—
करता भारत अभिनन्दन है ।
वीणा वादिन के वरद पुत्र ?, हे राष्ट्र नींव—
हे विश्व गुरू ?, हे राष्ट्र पूज्य शत-वन्दन है ॥
घट घट मे ज्योति जगाता गुरू—
मुक्ती का मार्ग दिखाता गुरू
जो शरण गुरू की आ जाये—
मुक्ति का मार्ग बताता गुरू ।
दानव युग को पलटाता गुरू—
मानव युग का अवतार गुरू—
मुर्दों को देता नवजीवन—
सोयी किसमत को जगाता गुरू ।
ज्ञान मार्ग दर्शाने वाले गुरू, सतगुरू—
हे राष्ट्रदूत गुरुवर, तेरा अभिनन्दन है ।
भारत माता की आशाओ के अमर दीप—
हे कर्मशील योगी तेरा अभिनन्दन है ।

★अध्यापक शान्तिस्वरूप 'शान्त'
८/२२० गम्भीरपुरा, अलीगढ़

दशम आर्य महासम्मेलन हैदराबाद की चिरस्मरणीय झांकियां

[दशम आर्य महासम्मेलन हैदराबाद के प्रत्यक्षदर्शी आचार्य विश्वश्रवा: जी ने वहाँ पर क्या देखा, यह आप उनके ही शब्दों में पढ़िए। जहाँ फूल होते हैं, वहाँ कांटे भी होते हैं। जहाँ सुन्दर परम आयोजन होते हैं, वहाँ कुछ त्रुटियों का होना भी स्वाभाविक है। त्रुटियों को भविष्य में दूर करना ही विवेकशीलता है।

हमारे जो आर्य बन्धु व बहनें इच्छा रहते हुए भी अर्थाभाव व अन्य कारणों से हैदराबाद न जा सके हों वे इस जीते जागते चित्र को देखकर वास्तविकता की अनुभूति प्राप्त करें। वैदिक वेदि में जिन नेताओं की भूल से 'हर हर महादेव' के नारे लगे हैं और जय राम श्री राम का कीर्तन हुआ है, उन्हें आर्यसमाज के सैद्धान्तिक नाश रूपी महापाप का तुरन्त सार्वजनिक रूप से प्रायश्चित्त करना चाहिये।

—सम्पादक]

★ आचार्य विश्वश्रवा: व्यास
एम० ए० वेदाचार्य

सार्वदेशिक सभा के कार्यालय को लेकर हम ५ नवम्बर को प्रात: हैदराबाद पहुंचे। हैदराबाद रेलवे स्टेशन पर दक्षिण भारत के आर्य नेता पं० नरेन्द्र जी तथा अन्य आर्य भाई स्टेशन पर ही स्वागतार्थ मिले और कारों के द्वारा हम को और हमारे सामान को आर्य महासम्मेलन के स्थान विनायकराव नगर में पहुंचा दिया गया। जहाँ बड़ी सुन्दर रहने की व्यवस्था, जल का पूर्ण प्रबन्ध विशाल पण्डाल शोभायमान प्रदर्शनी और बाजार विशाल यज्ञशाला और हजारों आदमियों के रहने के स्थान ही बनते थे। यह सब कुछ पं० नरेन्द्र जी के तपस्यामय जीवन का उदाहरण था। पं० नरेन्द्र जी के आह्वान पर हैदराबाद का प्रत्येक धर्म का व्यक्ति चाहे वह जैनी थे या सनातन धर्मी ऐसी तत्परता से कार्य कर रहे थे जैसे उनका ही सम्मेलन हो या यों कहो कि उनके घर पर ही मेहमान आए हुए हों। सब लोगों का व्यवहार नम्रतापूर्ण और प्रेम भरा था कि सम्मेलन में आये लोग अपना घर भूल गये और ऐसा अनुभव करते थे कि हम अपने परिवार में ही बैठे हैं।

पं० नरेन्द्र जी एक मास से अधिक समय से उस जंगल में खड़े काम कर रहे थे, और कई बार मैंने देखा कि वे थके बेहोश होकर आँखें बन्द करके कुछ लेटते और फिर उठ बैठते थे और काम में लग जाते थे। महात्मा नारायणस्वामी जी महाराज ने जिस प्रकार मथुरा जन्म शताब्दी का प्रबन्ध किया था, उसके बाद दूसरा उदाहरण पं० नरेन्द्र जी की व्यवस्था का था। मथुरा दीक्षा शताब्दी की व्यवस्था भी पं० नरेन्द्र जी ने मथुरा में की थी।

यज्ञशाला का भव्य प्रदर्शन

उस विनायकराव नगर में एक विशाल और भव्य यज्ञशाला बनी हुई थी जिसमें हजारों व्यक्तियों के बैठने का स्थान था। श्री आचार्य कृष्ण जी के ब्रह्मत्व में वह यज्ञ हो रहा था उसमें अच्छे विद्वान् श्री पं० सत्यव्रत जी व्याकरणाचार्य आदि सम्मिलित होकर ब्रह्म पारायण यज्ञ करा रहे थे। आचार्य कृष्ण जी सार्वदेशिक सभा की निर्धारित पद्धति के अनुसार यज्ञ का संचालन कर रहे थे। दो एक बार मैं भी यज्ञ में सम्मिलित हुआ क्योंकि पं० नरेन्द्र जी ने यज्ञशाला में दर्शक रूप से उच्चकोटि के विद्वानों और पूज्य सन्यासियों के बैठने की सुन्दर व्यवस्था पृथक् उच्च आसनों --

की हुई थी। इसमें सन्देह नहीं कि आचार्य कृष्ण जी यज्ञ वेदि पर यज्ञ कराते हुये जो प्रवचन करते थे वे प्रवचन बड़े रोचक और शिक्षाप्रद थे जिससे स्पष्ट प्रतीत होता था कि आचार्य कृष्ण जी ने अच्छा स्वाध्याय प्रवचनों का किया है। अत: मैंने भी यज्ञ की वेदि पर उन्हें साधुवाद कहा।

यज्ञ में नरनारी बड़ी श्रद्धा से हजारों की संख्या में बैठते थे। यज्ञशाला में मन्त्रोच्चारण की तथा प्रवचनों की सुन्दर व्यवस्था थी और मैंने यह भी देखा पं० नरेन्द्र जी ने यज्ञ की समाप्ति पर यज्ञ कराने वाले आर्य विद्वानों को भरपूर वस्त्रादि तथा दक्षिणा से सम्मानित किया। यज्ञ कराने वालों में एक कन्या जो आचार्य कृष्ण जी की मानजी थी महिला जगत् की ओर से पुरोहितत्व का प्रतिनिधित्व कर रहीं थी उस बेटी का मन्त्रोच्चारण अति प्रशंसा के योग्य था।

भोजन की सुव्यवस्था

इतने बड़े आर्य महासम्मेलनों में हजारों व्यक्तियों के भोजन की साधारण व्यवस्था भी कठिन होती है, परन्तु साधुवाद है हैदराबाद के प्रबन्धकों को कि जिन्होंने एक विशाल भोजनशाला का निर्माण किया जिसमें हजारों व्यक्ति एक साथ बैठकर भोजन कर सकें। भोजन का प्रकार यह था कि दक्षिण भारतीय भोजन और उत्तर भारतीय भोजन दोनों ही बनाये जाते थे। बिना मिर्च का शाक और दाल भी बनता था और मिर्च वाला रोटी का भी प्रबन्ध था और पूरी का भी। चावल अनन्त मात्रा में बनता था और सब ही भोजन प्रत्येक समय गरम ही मिलता था। ऐसा उनका प्रबन्ध था देशी घी का प्रयोग था और डालडा आदि वर्जित था। उस भोजनशाला में प्रबन्धकों और परोसने वालों की इतनी अधिक संख्या थी कि किसी व्यक्ति को प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती थी। कई बेटियाँ भी दक्षिण भारत की भोजन खिलाने में व्यस्त रहती थीं।

भोजनशाला में सबसे अधिक प्रशंसा के योग्य उन प्रबन्धकों का प्रेम था कि वे कितने प्रेम और आदर से सब को भोजन कराते थे और ये प्रबन्धक लोग सब आर्यसमाजी ही नहीं थे जैनी भी थे और पौराणिक भाई भी थे और ये लोग अपने घर के लखपति थे जो धोती कसे हुये सबको भोजन करा रहे थे। उन प्रतिष्ठित व्यक्तियों के उमड़े हुये प्रेम को देखकर नम्रता और सुशीलता देखकर हम लोगों का हृदय प्रेम के आंसुओं से भर जाता था। और यह सोचने लगते थे कि यदि आर्य महासम्मेलन अगली बार हमारे यहाँ होगा तब हम इन सबका आदर सत्कार ऐसा कर भी सकेंगे या नहीं।

जल आदि की व्यवस्था

आर्य महासम्मेलन की उस विशाल विनायकराव नगरी में पं० नरेन्द्र जी ने जगह-जगह जल की सुन्दर व्यवस्था की हुई कि अनन्त जल चारों तरफ था।

वहाँ अस्थायी फ्लश की टट्टियां बड़ी संख्या में बनवाई गई थीं, जिससे किसी भी प्रकार का कोई कष्ट न हुआ।

बाजार और प्रदर्शनी

विस्तृत बाजार बना हुआ था जहाँ प्रत्येक प्रकार की वस्तु खाने पीने आदि की वहाँ उपलब्ध थी, किताबों की दूकान काफी संख्या में आई थी, परोपकारिणी सभा का पुस्तकालय भी आया हुआ था। एक दिन पण्डाल से भाषण देते हुए मैंने दक्षिण भारत के लोगों को परोपकारिणी सभा का परिचय कराया। पता करने पर मालूम हुआ कि परोपकारिणी सभा की ९ हजार रुपयों की बिक्री हुई और पुस्तक विक्रेता भी पर्याप्त बिक्री करके गये।

प्रदर्शनी बड़ी भव्य और विस्तृत थी, जहाँ स्वास्थ्य आदि तथा महर्षि की जीवन घटनाओं की सुन्दर प्रदर्शनी थी और भगवानस्वरूप जी न्यायभूषण ऋषि के कपड़े और हस्तलिखित ग्रन्थ ऋषि के प्रदर्शनी में लाये थे, जिनको आर्य जनता ने बड़ी श्रद्धा और आदर के साथ देखा। बाजार और प्रदर्शनी भी विनायकराव नगर की शोभा थी।

शोभायात्रा (जलूस)

हैदराबाद के इस आर्य महा सम्मेलन का जलूस भी देखने योग्य ही था। जलूस में हाथी ऊँट और मोटर साइकल वाले तथा कारें भी पर्याप्त थी। प्रधान सिंहासन पर सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री ला० रामगोपाल जी शालवाले और सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान डा० दुखनराम जी पटना विद्यमान थे। जिन पर नगर के नर-नारी मालाएँ और फूल वैसी ही श्रद्धा से चढ़ा रहे थे, जैसे पौराणिक लोग राम और सीता पर रामनवमी पर चढ़ाते हैं। मीलों लम्बा यह जलूस नगर में जब निकला

सब रास्ते पुलिस ने बन्द कर दिये और जलूस की व्यवस्था की।

हम दक्षिण भारत से बिलकुल अपरिचित थे, जलूस में दक्षिण भारत के लोग जब अपने-अपने आर्यसमाजों के मोटोज और झण्डे लेकर जलूस में निकल रहे थे तब ऐसा प्रतीत होता था कि क्या दक्षिण भारत सारा ही आर्य हो गया हैं। हमने आर्यसमाजों के मोटोज पर लिखे शहरों और कसबों के नाम एक स्थान पर खड़े होकर नोट करने प्रारम्भ किये। जिनके कुछ नाम ये हैं—

आर्यसमाज—महबूब नगर, यशपुर, ब्राह्मणवाड़ी, कोंडगल, तुलजपुर, अमिस्तारी, विरमोग्ता, गुञोटी अम्बा जोरा, हमनाबाद, ताण्डूर, नरगल, ध्रुवपेठ, औराद, धाराशिव, सूर्यपेट, बीड़, मुरताड़, दिलबर, धामम, केशवगुडा, दिलसूर, घोडेवाडी, बीदर, हलसापुरी आर्माशाद, धावगिरि, लातूर, तुल्ली, बोलकुन्द, कंजारा, कमलापुर, [illegible], निरना, अहीराबाद, निलंग, जालना वसवू, कलमान, घटकेश्वर, वेगमपेठ सिकन्दराबाद, देगलमडी। हम सब नाम नोट नहीं कर सके, संकड़ों की संख्या में दक्षिण भारत के आर्यसमाज एकत्र थे।

इनके अतिरिक्त बम्बई मध्यप्रदेश मध्य भारत दिल्ली राज्य आदि के आर्यसमाज भी अपने झण्डे और मोटोज लेकर जलूस में चल रहे थे। यह शोभा यात्रा जिसका मैं पूरा वर्णन नहीं कर पा रहा हू आर्य जगत् के इतिहास में उदाहरण के रूप में थी।

अनेक सम्मेलन

इस अवसर पर अनेक सम्मेलन भी हुये, जैसे वेद सम्मेलन, महिला सम्मेलन गोरक्षा सम्मेलन, युवक सम्मेलन आदि। वेद सम्मेलन का अध्यक्षीय भाषण पं० धर्मदेव जी विद्या मार्तण्ड का पाण्डित्य पूर्ण तथा ग्राह्य था। इसी अवसर पर स्वर्गीय पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु की स्मृति मे दक्षिण भारत में सरल संस्कृत शिक्षा की जो परीक्षायें होती हैं, उन छात्रों को प्रमाणपत्र वितीर्ण किये गये। इस सम्मेलन मे जब प्रमाणपत्र दिये जा रहे थे, वहाँ पं० ब्रह्मदत्त जी का भव्य चित्र रखा हुआ था। जिसको देखकर स्मरण आकर आखों में आंसू आते थे, कि हम और पं० ब्रह्मदत्त जी बहुत वर्ष लाहौर में साथी रहे। पं० भगवद्दत्त जी पं० ब्रह्मदत्त जी और मैं आचार्य विश्वश्रवा: तीन की जोड़ी लाहौर में प्रसिद्ध थी, आज पं० ब्रह्मदत्त जी इस संसार में नहीं और आर्य महासम्मेलन से लौटकर समाचार मिला कि पं० भगवद्दत्त जी भी स्वर्गवासी हो गये बस अब हमारी बारी है।

उपर्युक्त सभी सम्मेलन गोरक्षा सम्मेलन आदि महा सम्मेलन के अतिरिक्त समय में हुआ करते थे। सब से अच्छी उपस्थिति गोरक्षा सम्मेलन में थी। और आर्यसम्मेलन के खुले इजलास में जो उपस्थिति होती थी उसकी गणना ही कठिन थी।

आर्यसमाज का नेतृत्व

प्राय: लोग ऐसा कहा करते हैं कि आर्यसमाज में कोई सर्वसम्मत नेता नहीं है, पर इस बार आर्यजगत् ने यह स्पष्ट कर दिया कि यह धारणा गलत है। समस्त आर्यजगत् ने आर्य सम्मेलन के खुले अधिवेशन में और विषय निर्धारिणी की बैठक में स्पष्ट घोषणा के साथ आर्यजगत् का सर्वमान्य नेता योगाभ्यासी धर्ममूर्त्ति महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज को अपना नेता चुना और यह प्रस्ताव पास कर दिया कि अब आर्य जगत् का कोई व्यक्ति कोर्ट में नहीं जावेगा। सब निर्णय महात्मा आनन्द स्वामी जी कर देंगे। और जहाँ-जहाँ मुकदमे चल रहे हैं वे सब वापिस कर लिये जावेंगे।

महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज ने कहा कि सब आर्यजगत् की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक सभा है, पर यदि सार्वदेशिक सभा और उसकी न्याय सभा गलती करे तो सन्यासी को अधिकार है कि वह कुछ अपने हाथ में लेले। समस्त आर्यजगत् ने जो भार मेरे कन्धों पर डाला है उसको अब वहन करूंगा। सब आर्य भाई मुझे सहयोग दें। और जिनके स्वार्थों को धक्का लगता हो वे भी आर्यसमाज पर दया करें, अपने स्वार्थ के कारण मुझे झगड़ों के निपटाने में विघ्न न डाल। उनके चरणों मे इस सन्यासी की नम्र प्रार्थना है। जय-जय के नारे के साथ आर्य महासम्मेलन मे महात्मा आनन्द स्वामी जी को सर्व समत नेता आर्य जगत् का चुना गया। आर्यजगत् प्रतीक्षा कर कि अब आगे क्या होता है।

विषय निर्धारिणी और खुला अधिवेशन

विषय निर्धारिणी की बैठक में तथा खुले अधिवेशन में बहुत महत्वपूर्ण प्रस्ताव पास हुये, सभी आर्यजगत् के नेताओं और विद्वानों के महत्वपूर्ण बातें आर्य जगत के सम्मुख रहीं। पास हुये प्रस्तावों पर एक लेख हम पृथक् लिखेंगे। सम्मेलन के खुले अधिवेशन में पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री और पं० रामनारायण जी शास्त्री बिहार ने बड़ा सुन्दर दृश्य खींचकर रखा। पूर्ण सफलता के साथ यह आर्य महासम्मेलन समाप्त हुआ।

परन्तु अखरने वाली ये चार बातें

१—यज्ञ की वेदि से प्रवचन करते हुये मैंने आर्यसमाज के वर्तमान स्वर्ण युग का चित्र खींचा। परन्तु दूसरे ही दिन आचार्य कृष्ण ने यज्ञीय प्रवचन में हजारों की उपस्थिति में यह कहना प्रारम्भ कर दिया कि सार्वदेशिक सभा में बेईमान इकट्ठे हो गये हैं, ये सार्वदेशिक सभा के वर्त्तमान अधिकारी निकाल दिए जावें तब आर्यसमाज की शुद्धि होगी। यज्ञशाला में यह बात न कही जाती तो अच्छी थी। यद्यपि आचार्य कृष्ण के हृदय में आर्यसमाज की दशा पर आग लगी हुई थी वे दिल्ली में रहते हैं और अपनी आंखों और कानों से वहां अपनी समझ के अनुसार जो जानते हैं उसका यह उद्‌गार था।

२—जलूस में सार्वदेशिक सभा के मन्त्री उपप्रधान सिंहासन पर थे और उन पर फूल मालायें चढ़ रही थीं और आर्यजगत् के मूर्धन्य विद्वान् केवल लोग पैदल चल रहे थे। यह दृश्य अच्छा नहीं था। सनातन धर्म सभा के जलूस में शंकराचार्य सिंहासन पर रहते हैं और मन्त्री प्रधान पैदल चलते हैं। यदि शंकराचार्य आर्यसमाज का विद्वान् बन जावें तो उसकी क्या दुर्दशा हो।

३—गोरक्षा सम्मेलन में उन शंकराचार्य को प्रधान बनाया गया जिन्होने अजमेर के वेदान्त सम्मेलन में एक कल्पना नाम की १२ वर्षीया कुमारी कन्या को ओ३म् और वेद पर बोलने से रोक दिया कि तू औरत होकर ओ३म् और वेद पर नहीं बोल सकती। तब हजारों की उपस्थिति मे अजमेर में मुझे उस लड़की को चारों वेद भेंट मे देने पड़े और इन शंकराचार्य और करपात्री को मैंने ललकारा। यह वह शंकराचार्य है जिन्होंने अलवर मे ऋषि दयानन्द के विरुद्ध बकवास की और वहां के आर्यसमाज को आर्य विद्वानों को बुलाकर भाषण कराने पड़े और शास्त्रार्थ का चैलेंज इन शंकराचार्य को देना पड़ा। सार्वदेशिक की अन्तरङ्ग सभा मे राजस्थान के आर्य नेता बा० छोटूराम जी ने और भी घटनाएं इन शंकराचार्य की बकवास की सुनाईं।

इन शंकराचार्य को हमें आचार्य कहना पड़ता है। चाहे हम जानते हैं कि न ये आचार्य परीक्षा पास हैं और न आचार्य परीक्षा की योग्यता ही इनमें है, पर क्योंकि उन्होंने अपनी गद्दी का नाम शंकराचार्य रख छोड़ा और जगत् गुरु लगाते हैं। आर्य समाचार पत्र भी उन्हें जगत् गुरु लिख छोड़ते, पर आर्य लोग न उन्हें जगत् गुरु समझते हैं और न आचार्य समझते हैं, पर कह देते हैं, इसी प्रकार शंकराचार्य ने भी स्वामी दयानन्द जी को महर्षि दयानन्द कह दिया, पर वह न स्वामी दयानन्द को ऋषि मानते हैं और न महर्षि। जो नाम हम स्वामी का लेते हैं वह उन्होंने भी उसी रूप में कह दिया। और इतने बड़े आर्य सम्मेलन में समस्त आर्य जगत् से उन्होंने सीताराम का पाठ कराया। हर-हर महादेव कराया। और सनातन धर्म की जय लगवाई यह आर्यसमाज के लिए लज्जा प्रद ही था। वह आर्यसमाज को अपना जिज्ञासु बनाना चाहते हैं सो बनाकर चले गये। यह आर्य महासम्मेलन मे न होता तो अच्छा था।

४—आर्य महा सम्मेलन में जहां सब प्रस्ताव सर्व सम्मति से पास हुए वहां अन्तिम दिन अन्तिम बैठक में ११ नवम्बर रात्रि को आर्यसमाज और राजनीति विषयक प्रस्ताव छिड़ गया जो नाटक हर सम्मेलन मे होता है, वह दृश्य वहां उपस्थित हुआ। कुछ लोग बुरी तरह चिल्लाने लगे और यह प्रस्ताव कि आर्यसमाज सामूहिक रूप से इस राजनीति के दलदल में न फंसे यही एक प्रस्ताव बहुसम्मति से पास हुआ। यह भी न होता तो अच्छा था।

★

मुगल राज्य में किसान और कारीगर

★श्री बिहारीलाल जी शास्त्री

नीचे लिखा हुआ वृत्तान्त डाक्टर बर्नियर का है जो कि देहली में औरंगजेब के समय में एक अमीर का घरेलू चिकित्सक रहा था। वह लिखता है —

बादशाह जो कि भूमि का मालिक है, वे टुकड़ों को दूसरों को देता है, जिनको यहाँ जागीर और टर्की में 'तेमार' कहते हैं। और जिसका अर्थ है कि उसको बादशाह से लिया जाय अथवा वेतन वसूल करने का स्थान। इसी प्रकार की जागीरें उनके और उनकी सेना के वेतन में इस प्रतिज्ञा पर दी जाती हैं कि जो आमदनी बचे उसका एक विशेष अंश प्रति वर्ष बादशाही खजाने में देते रहें। जो भूमि जागीर में नहीं दी जाती और स्वयं बादशाह तथा उनके कुटुम्बियों के लिये है और कदाचित् ही किसी को जागीर में दी जाती है। वह इजारेदारों को दी जाती है। जो प्रति वर्ष नियत रुपया देते रहते हैं इस प्रकार जो लोग भूमि पर अधिकार प्राप्त करते हैं, चाहे वे सूबेदार हों, चाहे इजारेदार, चाहे तहसीलदार उनका किसानों पर बड़ा अधिकार रहता है। और किसानों ही तक बात नहीं है वरन अपने प्रान्त के गावों और कस्बों के व्यापारियों और कारीगरों पर भी उनको वैसा ही अनोखा अधिकार प्राप्त है। जिस ढग से वे इस अधिकार का व्यवहार करते हैं उससे अधिक कष्टदायक अत्याचार मेरे विचार में नहीं आ सकता। इसके अतिरिक्त ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जिसके पास ये बेचारे अत्याचार के मारे किसान कारीगर और व्यापारी अपना दुखड़ा रोयें।

अर्थात् न तो फ्रांस की तरह यहाँ कोई प्रेटलार्ड हैं न पार्लियामेंट और न अदालत के जज जो इन निदयी अत्याचारियों के अत्याचारों को रोकें। जो न्याय करने वाले (काजी) यहाँ हैं, उन्हे इन अभागे लोगों का दुःख दूर करने का कोई अधिकार नहीं।

प्रजा के साथ इस प्रकार का गुलामों जैसा बर्ताव व्यापार के लिये हानि पहुचाने वाला है। इससे लोगों की दशा सुधरने नहीं पाती। और किसी को व्यापार करने का हौसला इसीलिये नहीं होता कि इसके बदले जो कुछ लाभ उठावें उसे वे अपने सुख के लिए खर्च करें। उसको देख करके किसी अत्याचारी और ताकतवर पड़ोसी के मुँह में पानी भर आता है जो सदा यह चाहता है कि किसी सरकार को उसकी मेहनत का फल न चखने दें। अगर किसी को धन मिल भी जाता तो वह बजाये इस के कि वह खुश रहे, और स्वतन्त्रता के साथ जीवन बिताये गरीब-सा बना रहता है। अपना मकान और सामान बुरी दशा में रखता है। खाने-पीने में कृपणता दिखाता है। अपना धन माल जमीन में गाड़कर रखता है।

सब लोगों में चाहे वे किसान हों या कारीगर या व्यापारी, हिन्दू हों या मुसलमान यही रीति है। हां जो लोग शाही नौकरी में या जिनकी आमदनी का कोई बड़ा जरिया है। उन्हें गरीबी दिखाने की आवश्यकता नहीं है। डाक्टर बर्नियर की राय में यह सब बुराई इसलिये है कि भूमि पर यहां बादशाह का अधिकार है किसानों का नहीं।

राजधानी से दूर स्थानों पर तो सूबेदारों, जागीरदारों और तहसीलदारों का ऐसा अत्याचार है कि उसे बादशाह भी नहीं रोक सकता। यह अत्याचार इतना बढ़ा हुआ है कि किसानों और कारीगरों के पास उनकी गुजर बसर के लिये कुछ भी नहीं रह पाता। और वे गरीबी में पड़े रहते हैं। इस अत्याचार के कारण अबतो उनके कोई सन्तान होती ही नहीं। और हो भी तो बचपन में ही भूख से मर जाती है।

आगे बर्नियर ने लिखा है कि लोग गाव छोड़ जाते हैं। दूसरी जगह जा बसते हैं। कारीगरों से हंटरों के बल पर काम लिया जाता है।

डाक्टर बर्नियर औरङ्गजेब के एक दरबारी अमीर 'दानिशमन्द खाँ' का निजी चिकित्सक था, और निजी चिकित्सा से भी कमाई कर लेता था। उसने अपने मित्र के लिए जो फ्रांस को जो पत्र लिखे हैं, उन्हों में औरङ्गजेब के समय के हाल, भारत की रीति नीतियां और दर्शनीय स्थान, सामाजिक दशा आदि पर बहुत कुछ लिखा है।

वास्तव में पठान और मुगलों के समय सामान्य जनता की दशा बड़ी दयनीय थी। शासकों का काफिर जनता से कोई सहानुभूति हो ही नहीं सकती थी। जनता साहस हीन हो गयी थी। अंग्रेजों के राज्य को इसीलिये जनता ने सराहा कि जनता को इनके प्रबन्ध में कुछ विश्राम मिला था। परतु अंग्रेजों ने भी किसानों के सिर पर जमींदार तालुकेदार, आदि लाद रखे थे। और कारीगरों का काम चौपट कर दिया था। अपने देश के बने माल को यहाँ लाकर। जनता को पचड़ा राज्य तो अब अपने राज्य में हो [illegible] जमींदारों का बोझ किसानों के [illegible] उतर गया। उपज के मूल्य बढ़ादिये। साहूकारों का दबाव जाता रहा। परन्तु अब जो कष्ट किसानों और सामान्य जनता को है, वह अज्ञान अन्धविश्वासों और अन्य दुर्व्यसनों के कारण है। जनता का अज्ञान तो शिक्षा से दूर होगा जिसका प्रयत्न सरकार भरसक कर रही है, और अन्धविश्वास कुरीतियां तथा दुर्व्यसनों को दूर आर्यसमाज का प्रचार ही कर सकता है। अतः सामान्य कृषक कारीगर और मजदूर जनता के हित के लिए आर्यसमाज का सन्देश गाव गांव पहुचाना चाहिये।

●

जिन्होंने आजीवन आर्यसमाज की सेवा की—

स्व. स्वामी सुधानन्द जी

★श्री रामानन्द जी

आर्यसमाज के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी सुधानन्द जी का गत १८ नवम्बर को दयानन्द मठ दीनानगर में दोपहर १२ बजे देहावसान हो गया। वह लगभग ८ मास से कैन्सर रोग से पीड़ित चले आ रहे थे, अनेक डाक्टरों तथा वैद्यों ने उनका इलाज किया किन्तु कोई लाभ न हो सका।

आप आर्यसमाज के एक तपस्वी, वीतराग, विद्वान तथा स्वाध्यायशील संन्यासी थे। व्यर्थ के वार्तालाप से हमेशा कोसों दूर रहते हुए आप अपना सारा समय स्वाध्याय तथा वेद प्रचार में ही व्यतीत किया करते थे। इसी कारण वेद के हजारों मन्त्र तथा स्मृति और नीति ग्रन्थों के हजारों श्लोक व प्रमाण आपको कण्ठस्थ थे। महीनों तक लगातार शास्त्रीय कथा धर्म प्रचार में श्रोताओं को नित्य नवीन सामग्री आपके उपदेशों से उपलब्ध हुआ करती थी।

संग्रह की प्रवृत्ति से सदा दूर रहते हुए श्रद्धालु लोगों से प्राप्त धन को आप निर्धन विद्यार्थी तथा अत्यन्त दीन दुखी जनों की सहायता में वितरण कर देते थे।

आर्यसमाज में प्रविष्ट होने से पूर्व आप कांग्रेस के एक सुयोग्य कार्यकर्ता के रूप में रहे और उसी के प्रचार हेतु आपको कई बार जेलों की कठोर यातना भी सहनी पड़ी।

आप सदाचार के अत्यन्त पक्षपाती थे, यदि किसी आर्यसमाज के किसी भी अधिकारी में कोई दोष पाते तो उसे अधिकारी पद से पीछे हटने या दोषों का परित्याग करने के लिये विवश कर देते थे।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के साथ मिलकर आप पच्चीस वर्ष तक वैदिक धर्म का प्रचार पंजाब तथा दूसरे प्रान्तों में करते रहे। आप सदा नंगे पांव तथा केवलमात्र श्वेत वस्त्र पहने रहते थे, तथा इसी अवस्था में हिमाचल के बर्फीली तथा अन्य स्थानों पर पैदल चलकर आपने धर्म प्रचार किया।

ऐसे सुयोग्य महात्मा के चले जाने से आर्यसमाज को जो महान् क्षति पहुची उसकी पूर्ति आर्यसमाज के लिये यद्यपि दुर्लभ न हो असम्भव अवश्य है।

(पृष्ठ ५ का शेष)

उद्देश्यहीन और स्खलनशील एवम् नहीं। माता के पीठ (स्थान) में ब्रह्म रस का प्रवाह है न कि विषय रस का उन्माद नहीं।

सरला बहन की इस भाव भरी वक्तृता से थोड़ी देर सन्नाटा रहा और उनके होठों पर मुस्कराहट की रेखा खेलती दिखाई देती रही। जिज्ञासा को भड़काते हुये कारण शरीर पर माता अपने उपयुक्त संस्कार डालकर क्या कर सकती है इसका उदाहरण सुनाते हुये भारती ने रामप्रसाद बिस्मिल का नाम लिया और बताया कि गोरखपुर जेल में उसे ब्रिटिश राज्य को उखाड़ने के प्रयत्न में फांसी की सजा दी जा चुकी थी। भारत के गवर्नर जनरल ने क्षमा मांग लेने और भविष्य में वैसा न करने का आश्वासन देने पर फांसी से छुटकारा देने का आश्वासन दे दिया था। रामप्रसाद बिस्मिल की फांसी से एक दिन पूर्व उसके पिता उससे मिलने आये और उन्होंने पुत्र प्रेम से विह्वल हो उसे क्षमा मांगने और भविष्य में स्वतन्त्रता के संग्राम में न कूदने का आश्वासन देने की मार्मिक अपील की। पुत्र को मृत्यु भयभीत नहीं कर सकती थी। स्वामी दयानन्द के अनुयायी इस बिस्मिल के लिये मृत्यु कोई भयावनी वस्तु नहीं थी। मृत्यु का अर्थ उसकी दृष्टि में था माँ की गोद में सो जाना। छोटा बच्चा दिन भर खिलखिलाता है, हंसता है, रोता है, गिरता है और रात्रि होते ही माँ उसे उठा लेती है, गोदी में लेकर सुला देती है। यही हाल जीव का है, संसार में जीव को वह माता उठा लेती है। मृत्यु मानो महामाया है, महा प्रस्थान है, मृत्यु महा निद्रा है। मृत्यु मानो शान्ति है। मृत्यु मानो नवजीवन का आरम्भ है, मृत्यु मानो आनन्द का दर्शन है। मृत्यु मानो पर्व है। वह आत्मा और परमात्मा की एकता का संगीत है। मृत्यु मानो प्रियतम के पास जाना है। तब भला यह मृत्यु रामप्रसाद बिस्मिल को कैसे भयभीत कर सकती? उसने पिता की प्रार्थना अस्वीकार कर दी। कुछ समय बाद उसकी मां पहुंची। माँ के पहुंचते ही रामप्रसाद बिस्मिल के आश्चर्य का ठिकाना न रहा कि माँ ने पहुंचते ही रोना शुरू कर दिया। मां रोती जा रही थी। उसके आँसुओं से उसका आंचल भीग उठा। जब वे शांत हुईं तो बिस्मिल ने कहा—"माँ, तुम रोती हो? तुम कहो तो मैं क्षमा मांग कर फांसी से बच जाऊं? मैं जो भी कुछ हूं उसके बनाने का श्रेय तुम्हीं को है। तुम्हीं ने मुझे बचपन से स्वतन्त्रता के लिये मरने मिटने में हिचक न करने का उपदेश दिया है, तुमने अपने दूध की घूँट के साथ स्वामी दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश में लिखे हुए गन्दे से गन्दा स्वदेशी राज्य अच्छे से अच्छे विदेशी राज्य से अच्छा है और उस विदेशी राज्य को उखाड़ना चाहिये।' यह शिक्षा दी है, यह पाठ अपने दूध की घुट्टी के साथ पिलाया है। आज सौभाग्य से यह सुअवसर हमें प्राप्त हुआ है। ऐसे समय तुम्हारे ये आँसू मुझे विचित्र प्रतीत हो रहे हैं। माँ कहो तो मैं माफी मांग लूं।' मां बोली "बच्चा, मैं आज भी मृत्यु से भयभीत नहीं हूं देश के लिए 'प्राणोत्सर्ग' मृत्यु प्राण है। मृत्यु मानो खेल है मृत्यु मानो आनन्द है। मृत्यु मानो मेवा मिठाई है। मृत्यु मानो पुराने वस्त्र बताना है। मृत्यु मानो चिर विवाह है। मैं मृत्यु से नहीं डरती। मैं तो इसलिए रो रही हूं कि कल जब भारत की स्वतन्त्रता की प्राप्ति और रक्षण हेतु दूसरी मातायें अपने प्राण प्यारे पुत्रों को गोद में लेकर स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए माँ के चरणों में अर्पित कर रही होंगी, उस समय मेरे पास तुम जैसी और वीर सन्तान न होगी जिसे मैं राष्ट्रमाता के चरणों में समर्पित कर सकूंगी। बच्चे मैं तुझे आशीर्वाद देती हूं।" मां के चेहरे पर एक अपूर्व आभा दिखाई दी। आज भी उसके ये शब्द गोरखपुर की जेल की दीवारों में गूंज रहे हैं। आज भी भारत की स्वतन्त्रता के इतिहास का यह गौरवमय पृष्ठ माता की दिव्य शोभा से शोभित है। कहना न होगा रामप्रसाद बिस्मिल सम्भवतः अपनी माता का एकमात्र पुत्र था।

मधु ने भारती की बात समाप्त होते ही कहा "भारतवर्ष के इतिहास में माता को बहुत महत्व दिया है। माताओं ने अपने हृदय के तीव्र वेगों से जो चमत्कार किये हैं उनके अनेक उदाहरण दिए जा सकते हैं। परन्तु माता बनने के लिए हमें आत्म निर्माण करना होगा, स्त्रियों एवं बालिकाओं को माता बनने के लिये किन गुणों की आवश्यकता है अतः आप हमें अब उन गुणों की शिक्षा दीजिये जो हमें अपने जीवन निर्माण के लिये, अपने को माता—सच्ची माता बनाने के लिये आवश्यक है।"

सरला बहन ने मुस्कराते हुए कहा—'बहन चलो, पहले भोजन कर लें और बच्चों को आशीर्वाद दे और फिर किसी दिन उन बातों पर विचार किया जायगा जो मनुष्य बनने के लिये—माता बनने के लिये आवश्यक है।"

इस प्रकार सरला बहन ने कारण शरीर और संस्कारों के महत्त्व पर प्रकाश डाला।

★

बाल-विनोद

अच्छे बालक

★

पढ़ो लिखो गुरु आज्ञा मानो,
इसमें हित है तुम्हारा।
नम कर चलो कभी मत फूलो,
ज्ञान मिलेगा सारा।
आगे चलकर अगुआ बनकर,
कार्य करो तुम सारे।
जो हर कार्य में अगुण रहते,
वे असफल मित्र तुम्हारे।
सच कहता हूं बच्चों तुमसे,
जो अगुआ रहते हैं।
असफल रहते कभी जिन्दगी,
में न सफल होते हैं।
हिम्मत रखो कार्य करने की,
रखो मन में विश्वास।
यही बालको गुण हैं तुम्हारे,
सभी गुणों के दास।

आर्य वीर

★

हम हैं! भारत की सन्तान,
हम हैं भारत मां की आन।
हम ही गांधी हमहीं नेहरू,
हमही भारत माँ के पहरू!
हमही शिवा और बोस महान,
हम है भारत माँ की आन!
पढ़ लिखकर हम योग्य बनेंगे,
ले कर में खग वीर बनेंगे!
हमको भारत पर अभिमान,
हम हैं भारत माँ की आन!
हो शत्रु तुम मुझको प्यारे,
हम हैं सारे जग से न्यारे!
माफ करेंगे तेरी जान,
हम हैं भारत मा की आन!
हम भारत के वीर जवान,
दिखला देंगे तुमको शान!
मिटा देंगे तेरे अरमान,
हम हैं भारत माँ की आन!

ज्ञान वर्धक बातें

●

१—शार्क मछली पानी में तैरने वाले सब जीवों से तेज दौड़ती है। यह दिन में ८०० मील तैरती है।

२—यूरोप का नाम यूरपा देवी से पड़ा है जो वहाँ के राजा अगनेवा की लड़की थी।

३—संसार का सबसे बड़ा पुस्तकालय लेनिन लाइब्रेरी रूस में है।

४—दुनिया का सबसे बड़ा मोती वेरे स्फोड होप है जिसका वजन १००५ ग्राम है।

५—विश्व का सबसे बड़ा कमरा रामेश्वर में ४०० फीट लम्बा है।

६—संसार की सबसे बड़ी सेना रूस के पास है।

७—विश्व का सबसे पहला रिक्सा जापान में चला।

८—कछुए ५-६ मन तक के भारी होते है।

९—संसार का सबसे पुराना वृक्ष केलेफोर्निया में है। जो ५००० वर्ष पुराना है।

१०—कोलोराडो के किसान जेंकी खान के खेत में संसार का सबसे बड़ा आलू पैदा हुआ। जिसका वजन ९६ पौंड १० औन्स था। और लम्बाई २ फीट ५ इंच थी।

११—संसार का सबसे ठिगना मनुष्य मिस्टर विलियम फोर्ड है। जो ३.५ फीट ऊँचा है।

१२—मनुष्य दिन भर में २४७००५०० सांसें लेता है।

१३—दुनियां की जनसंख्या ५२० करोड़ है। संग्रह कर्त्ता रामवीरसिंह कक्षा ९ पता— डाकखाना खडौली ग्राम जौ चकपुर फर्रुखाबाद।

★

आर्यसमाज कलकत्ता का ८३ वाँ वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज कलकत्ता का ८३ वां वार्षिकोत्सव दिनांक २५ दिसम्बर से १ जनवरी १९६९ तक स्थानीय मुहम्मद अली पार्क में मनाया जायगा। २५ दिसम्बर मध्यान्ह विशाल नगर कीर्तन निकलेगा। प्रतिदिन प्रातः ७ बजे से ९ बजे तक ऋग्वेद परायण यज्ञ होगा। देश के गण्य मान्य महात्मा संन्यासी उपदेशक उत्सव के अवसर पर अनेक भाषणों से कृतार्थ करने के लिए पधार रहे हैं। सर्व साधारण की उपस्थिति सादर प्रार्थनीय है।

—दलीचदास शर्मा
मन्त्री

अंग्रेज युवती की शुद्धि व विवाह संस्कार

दिनांक १७-११ ६८ रविवार को प्रातःकाल १० । बजे मसूरी में बनेले निवासिनी अंग्रेज नवयुवती कु० फ्लोरेंस रोज हार्टन फील्ड का शुद्धि संस्कार कराया गया, और यज्ञोपवीत धारण पूर्वक गायत्री मन्त्र का उपदेश किया गया—नवीन नाम कु० कुसुम रखा गया ।

तदनन्तर मसूरी के प्रतिष्ठित निवासी श्री जगन्नाथ पाधी के सुपुत्र डा० भीम एस० पाधी के साथ उपर्युक्त महिला का शुभ पाणिग्रहण संस्कार सम्पन्न हुआ । सुश्री कुसुम ने वेद मन्त्रो का उच्चारण शुद्धता के साथ किया और उनके महत्वपूर्ण अन्शो का भावार्थ उनको अंग्रेजी मे समझाया गया ।

इस शुभ अवसर पर मसूरी, देहरादून तथा जिले के अनेक गण्यमान्य प्रतिष्ठित व्यक्ति विद्यमान् थे । जिन्होने संस्कार की शोभा बढाई तथा वर कन्या को आशीर्वाद दिया । प्रीतिभोज मे लगभग २०० व्यक्ति तथा सायंकालीन स्वागत जलपान मे लगभग ६०० व्यक्तियों ने भाग लिया । इस शुभ अवसर पर वर पक्ष की ओर से आर्यसमाज आदि संस्थाओं को ५१) रु० दान दिया गया । संस्कार का जिले की विद्वान् मण्डली पर सुन्दर प्रभाव पड़ा ।

संस्कार मेरे द्वारा सम्पन्न किया गया तथा आ०स० मसूरी व देहरादून के पदाधिकारियों का सहयोग प्राप्त हुआ ।

—आचार्य कृष्णदेव शर्मा भू०पू० प्रधानाचार्य

२,-११-६८ को २६० ईसाइयों की शुद्धि

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के उपदेशक श्री इतवारीलाल आर्य के प्रयत्न से ग्राम दिनकरपुर जिला मुजफ्फरनगर मे शुद्धि समारोह का आयोजन हुआ । दिल्ली से श्री प० दीपचन्द शर्मा (नान), गाजियाबाद से श्री हरिप्रसाद वानप्रस्थी और मेरठ से श्री रामजीदास कल्याण प्रधान दलितवर्ग संघ सम्मिलित हुए और २६० ईसाई भाइयो को श्री वानप्रस्थी जी ने शुद्धि संस्कार करके उनको पुरातन रविदास जाति मे प्रविष्ट किया । श्री कालूराम त्यागी की अध्यक्षता मे एक सभा हुई जिसमे बाबू रणवीरसिंह त्यागी ने आर्यसमाज के सिद्धान्त से ही संसार का कल्याण और ऋषि दयानन्द जी के अनुयायियों को धन्यवाद तथा शुद्धि समारोह के प्रति कृतज्ञता प्रकट की । प० दीपचन्द जी ने उपस्थित जनसमुदाय का धन्यवाद किया व शुद्धि शुदाओं का सभा की ओर स धन्यवाद किया ।

—द्वारिकानाथ प्रधान मन्त्री

१४४ धारा में १४४ व्यक्तियो की शुद्धि

रामरेखा जिला—रांची बिहार एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है । जहा प्रतिवर्ष हजारों नीर यात्री दर्शन तथा स्नान करने के लिये आते है ।

इसी शुभ अवसर पर दि०५ ११ ६८ को शुद्धि के दिन पचास साठ हजार यात्रियों की भीड थी । इस समय चिन्ता थी कि शुद्धि समारोह दर्शको की सुविधा के लिए किसी दूसरे स्थान मे किया जाये । परन्तु शुद्ध जैन कार्यो के नये पहले ही १४४ धारा लग चुकी थी ।

विवश हो शुद्धि संस्कार एक वृक्ष यज्ञवेदी पर ही रखा गया । दर्शको की भीड़ मे यह स्थान खचाखच भर गया था । इस समारोह मे रामरेखा महन्त श्री जयराम जी प्रपन्न तथा श्री देशपाल जी दीक्षित की विशेष लगन से पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती के तत्वावधान मे भारतीय करण सभा की ओर से २३ परिवारों के १४४ व्यक्तियो की शुद्धि की गई । शुद्ध होने वाले सभी परिवार लोभ लालच मे फसकर ईसाई बन गये थे । इस अवसर पर धीरू राजा श्री धनुजय देवसिंह जी, श्री सुरेन्द्रकुमार जी साम-वेदी प्रचाराध्यक्ष श्री स्वामी शिवानन्द जी तीर्थ श्री कन्हैयालाल जी वानप्रस्थ आदि अनेक सहयोगी महानुभाव उपस्थित थे ।

यह ज्ञातव्य है कि इस स्थान पर अब तक भारतीय करण सभा की ओर से ३४४ व्यक्तियों की शुद्धि की जा चुकी है ।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय सर्जिकल कैम्प

हरिद्वार, सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि श्रद्धानन्द चिकित्सालय, आयुर्वेद कालेज, गुरुकुल कांगड़ी मे ९ दिसम्बर, ६८ से १६ दिसम्बर, ६८ तक प्रतिवर्ष की भांति 'सर्जिकल कैम्प' की व्यवस्था की जा रही है । इसमे टेढ़ी मेढ़ी जुड़ी हड्डियों तथा आंखों के ओपरेशन अन्य सभी प्रकार के जैसे गिल्लड़, पेट, पथरी तथा गुर्दों आदि के बड़े आपरेशन किये जायेंगे । इसमे गरीबो की मुफ्त चिकित्सा की जायगी ।

इसके लिए एक प्रसिद्ध सर्जन तथा विशेषज्ञ की व्यवस्था की गई है जोकि यहा के स्थानीय डाक्टरों की सहायता से यह कार्य करेंगे । जनता को इससे लाभ उठाना चाहिए ।

—डा० अमृतानन्द प्रिंसिपल
आयुर्वेद महाविद्यालय, गुरुकुल कांगड़ी
हरिद्वार

आर्यसमाज शामली का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

शामली । स्थानीय आर्य समाज शामली के ६१ वें वार्षिकोत्सव पर दैनिक अर्जुन के सम्पादक श्री के० नरेन्द्र ने कहा कि आज देश के हाकिम जानबूझ कर हिन्दी को आगे नहीं बढने देते । जो लोग विधान के मनवाने की बात करते हैं उन्हें साम्प्रदायिक कहा जाता है । जिस भाषा ने सारी भाषाओं को जन्म दिया उस संस्कृत भाषा का हमारी सरकार मजाक उड़ाती है । अंग्रेज की तरह हमारी सरकार भी प्रगति के नाम पर संस्कृत को समाप्त करने पर तुली है । यदि आप में शक्ति नहीं है तो एक दिन वह आयेगा जब देश संस्कृति सभ्यता और वेद समाप्त हो जायेंगे । —मन्त्री

— जिला उप सभा चम्पारण
प्रधान—श्री रामकृष्ण लाल
मन्त्री—श्री ब० के० शास्त्री

श्री रघुवीरसिंह जी शास्त्री ससद्सदस्य मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का जर्मनी को प्रस्थान

भारत सरकार की ओर से तीन ससद्सदस्यों का एक शिष्ट मण्डल पश्चिम जर्मनी के निमन्त्रण पर ३-१२-६८ को हवाई जहाज द्वारा गया है । उसमे श्री रघुवीरसिंह जी शास्त्री सभा मन्त्री भी गये हैं । जर्मनी के बाद वह फ्रांस, इटली, इंग्लैण्ड आदि देशों को भी जावेंगे तथा २० दिसम्बर तक भारत लौटेंगे ।

आर्यमित्र का आगामी अङ्क
स्वामी श्रद्धानंद होगा

इस विशेषांक के मुख्य आकर्षण

(१) अमरशहीद स्वामी श्रद्धानन्द [जीवन-ज्योति]
लेखक—श्री अनूपसिंह मुजफ्फरनगर

(२) स्वामी श्रद्धानन्द और प० राधेश्याम [सिंहालोकन]
लेखक—श्री चन्द्रनारायण, बरेली

(३) काव्य कानन मे ओजस्वी कवितायें

(४) दिव्य सौन्दर्य से सर्वत्र जगमगा [वेद-व्याख्या]
लेखिका—श्रीमती कान्तिदेवी, बी० ए० लखनऊ

(५) राष्ट्रिय एकता की समस्या [राष्ट्रीय समस्याएं]
लेखक—श्री भवानीलाल भारतीय, एम ए. पी.एच डी.

(६) जीवन का सत्य [कथा-कुंज]
लेखक—श्रीराम शर्मा राम

(७) साधना का पावन पथ [अध्यात्म-सुधा]
लेखक—श्री विक्रमादित्य 'वसन्त'

(८) शङ्का समाधान, ग्रन्थ परिचय, इत्यादि
विभिन्न स्तम्भ ।

—सम्पादक

—२३ से २६ नवम्बर तक जिला उप सभा बलिया की ओर से सुदिष्ठ बाबा के मेले मे वैदिक धर्म का प्रचार किया गया। —मन्त्री

—२३ नवम्बर को आर्य समाज हलुतवार के मन्त्री श्री सुदर्शनसिंह जी के भानजे श्री राघवेन्द्रनाथ जी की मृत्यु जीप ट्रक टक्कर मे धनबाद के पास हो गई। आपकी आयु ३२ वर्ष की थी। आप धनबाद मे प्रथम श्रेणी के मजिस्टेट थे। सितम्बर मे ही आपके पिता जी की मृत्यु हुई थी। प्रभु दिवगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें। —मन्त्री

—१६ नवम्बर को आर्यसमाज खिदिरपुर कलकत्ता के उपप्रधान श्री जनकलाल जी के पौत्रों का चूडाकर्म और अन्नप्राशन सस्कार श्री उमाकान्त जी उपाध्याय ने कराया। —मन्त्री

—१ दिसम्बर को कायमगंज के श्री जीवाराम जी आर्य की पुत्री का नामकरण सस्कार वैदिक रीत्यनुसार हुआ। —रामचन्द्र आर्य

—आर्य समाज सम्भल श्री ललिता प्रसाद जी मन्त्री के सुपुत्र की मृत्यु पर शोक प्रकट करता है।

—हरदोई जिले की आर्यसमाजें उत्सव करने के लिये उपदेशको के लिए हमसे पत्र-व्यवहार करें।

—अनन्तराम शर्मा मन्त्री
जिला सभा हरदोई

—हैदराबाद आर्य सम्मेलन मे दिल्ली से एक स्पेशल ट्रेन से आर्यबन्धु गये थे। सम्मेलन के पश्चात् यह ट्रेन बगलौर तक गयी। वहां से सब आर्यबन्धु मैसूर घूमने के लिये बस से गये। मैसूर के हंसराज विद्यालय के अधिकारियों ने इन आर्य बन्धुओं का मैसूर मे स्वागत किया। जुलूस निकाला और फिर आर्य नेताओ के भाषण सुने। —कृष्ण शास्त्री

—कायमगंज के श्री रामचन्द्र आर्य की पुत्री विमला का पाणिग्रहण सस्कार छर्रा (अलीगढ) के श्री सेठ मूलचन्द्र जी के सुपुत्र श्री गंगासहाय जी भारद्वाज के साथ वैदिक रीत्यनुसार २४ नवम्बर को हुआ। —रामचन्द्र आर्य

—२६ नवम्बर को कायमगंज के श्री रामचन्द्र आर्य के गृह पर 'सत्यनारायण व्रत कथा हुई।

—३ नवम्बर को कलकत्ता आर्य समाज मे आर्य प्रतिनिधि सभा बगाल आसाम की ओर से गुरुकुल झज्जर के आचार्य श्री भगवानदेव जी को अभिनन्दन-पत्र भेंट किया गया। —मन्त्री

—२० अक्टूबर को श्री महानन्द के प्रचार स्वरूप बाल्मीकि नगर (चम्पारन) में आर्य समाज की स्थापना हो गई। प्रधान श्री विन्ध्येश्वरी प्रसाद और मन्त्री नागेन्द्रप्रसाद जी चुने गये। —विन्ध्येश्वरी प्रसाद

—आर्यसमाज जानकीनगर (गोंडा) का वार्षिकोत्सव २७ से ३० नवम्बर तक समारोह पूर्वक मनाया गया। —मन्त्री

—वेद प्रचार मण्डल गोविन्दनगर कानपुर का वार्षिकोत्सव ३ दिन तक धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर महात्मा ज्ञानेश्वरानन्द जी, श्री शिवमुनि जी, श्री प्रो० रतनसिंह जी, श्री ठा० जोरावरसिंह प्रभृति के व्याख्यान तथा भजन हुए। इस अवसर पर गायत्री पारायण यज्ञ भी हुआ। —प्रेमकपूर सह मन्त्री

—आर्य समाज भोजूवीर बनारस छावनी का ४४ वां वार्षिकोत्सव २ से ५ नवम्बर तक समारोह पूर्वक मनाया गया। श्री स्वामी समर्पणानन्द जी के विद्वत्ता पूर्ण प्रवचनों का प्रभाव जनता और शिक्षित वर्ग पर खूब पड़ा। —मन्त्री

—७ नवम्बर सन् ६८ को श्री माता विद्योत्तमा यति के सद् प्रयत्न से स्त्री आर्यसमाज शहर झांसी जो कि कई वर्ष से शिथिल पड़ी थी, उसका पुनर्गठन किया गया। आगामी वर्ष के लिये निम्न निर्वाचन हुआ—

प्रधाना—श्रीमती प्रेमलता
उपप्रधाना—" पार्वती जी
मन्त्रिणी—श्रीमती लक्ष्मी जी
उपमन्त्रिणी—श्री सीताबाई जी
कोषाध्यक्षा—श्रीमती पुष्पा जी

इस समाज का सत्सग आर्यसमाज शहर में प्रत्येक बुधवार को ३ बजे से हुआ करेगा। —बेदारीलाल आर्य मन्त्री

—बुन्देलखण्ड आर्य महासम्मेलन के अन्तर्गत आयोजित बुन्देलखण्ड आर्य समासदो की यह सभा जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा झांसी के प्रधान श्री उदयभानु जी शास्त्र के सुपुत्र श्री जयदेव शास्त्र की धर्म पत्नी श्रीमती कचनलता शास्त्र के असामयिक दुःखद निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करती है तथा परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि वह दिवगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे व शोक संतप्त परिवार को इस महान् शोक को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—बेदारीलाल आर्य मन्त्री

—आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली राज्य के प्रधान श्री भक्तराम जी एडवोकेट की अध्यक्षता में ३-११-६८ को बापा नगर करोल बाग नई दिल्ली मे आर्यसमाज की स्थापना की गई जिसके प्रधान श्री प्रो० वेदमित्र जी पी एच डी, मन्त्री श्री कामेश्वर जी शास्त्री, उपमन्त्री श्री त्रिलोकचन्द्र जी वजूजर व कोषाध्यक्ष श्री ला० मोहरसिंह जी निर्वाचित हुए। —विद्यासागर मन्त्री

सार सूचनायें

—आर्य उप प्रतिनिधि सभा हरदोई के अन्तरङ्ग सदस्यों की बैठक १५ दिसम्बर को दो बजे हरदोई आर्यसमाज मे होगी। सदस्यों की उपस्थिति प्रार्थनीय है। —अनन्तराम शर्मा मन्त्री

—१२ से १५ दिसम्बर तक आर्य समाज तथा आर्य महिला समाज कोटा का वार्षिकोत्सव धूमधाम से मनाया जायगा। इसी अवसर पर यजुर्वेद पारायण यज्ञ भी होगा।

डा० राजबहादुर प्रधान, सुलक्षिणादेवी सचालिका, मागीलाल मन्त्री

—आर्य अनाथालय मिरजापुर के लिये एक ४० से ५० वर्षीया संरक्षिका की आवश्यकता है वेतन योग्यतानुसार मिलेगा। —मन्त्री

—आर्य समाज बेवर (मैनपुरी) के भवन निर्माणार्थ श्री अटलबिहारी जी वानप्रस्थ भ्रमण कर रहे है। दानी महोदय इनको धन देकर रसीद ले लें। मन्त्री

प्रिय दयानन्द आर्य एम० ए० कहाँ हो?

मेरा पुत्र दयानन्द आर्य एम० ए० आचार्य विश्वबन्धु जी के पास वैदिक रिसर्च संस्थान साधुआश्रम होशयारपुर मे कार्य करता था। गत २ नवम्बर से आश्रम से कहीं चला गया है। न कोई पत्र आया है न पता लगा है। बड़ी चिन्ता लगी हुई है। आर्य समाजों संस्थाओं, मित्रों, परिचित भाई बहिनों से निवेदन है कि यदि किसी को पता हो या किसी से भी कहीं पर पता चले तो कृपया नीचे लिखे पते पर सूचना देकर कृतार्थ करें। —त्रिलोकचन्द्र शास्त्री

सम्पादक आर्यजगत्
आर्य प्रादेशिक सभा
जालन्धर-शहर (पञ्जाब)

कानपुर जिले में व्यापक रूपेण वेद प्रचार

आर्य उप प्रतिनिधि सभा, जिला कानपुर के तत्वावधान मे कानपुर जिले मे आर्यसमाज रनिया, मोनापुर, तरौंवा गंगागंज, रुखाहार एवं फतेहपुर रोशनाई मे वार्षिकोत्सव तथा व्यापकरूपेण वेद प्रचार कराने का प्रबन्ध-श्री मन्नीलालजी ठा० गजराजसिंह, डा० विश्वनाथ जी, ठा० गजराजसिंह, श्री प० विश्वनाथ जी बाजपेई, ठा० रणधीरसिंह जी तथा श्री राजेन्द्रसिंह आदि के सहयोग से श्रीयुत प० विजयपाल जी शास्त्री, एम० ए०, स्वामी योगानन्द जी, स्वामी शिवमुनि जी वानप्रस्थी श्री रतन जी, श्री देवी प्रसाद जी, श्री खेमचन्द्र जी, श्री लालता प्रसाद जी एवं श्री रामगोपाल जी आदि ने सफलतापूर्वक प्रचार कार्य किया।

यद्यपि इस समय गांवों मे अधिकांश जनता कृषि सम्बन्धी कार्यों मे अत्यन्त व्यस्त है फिर भी बहुत बड़ी सख्या में सायंकाल तथा रात्रि मे १२ बजे तक सभा मे सम्मिलित होती रही। ऐसा प्रतीत होता है, ग्रामो मे आर्यसमाज के प्रचार के प्रति अत्यधिक रुचि है, कमी है तो हम लोगों की ही जो इसका समुचित प्रबन्ध नहीं कर पाते। प्रचार करते समय यह विदित हुआ कि अराष्ट्रीय तत्व बहुत अधिक मात्रा मे प्रत्येक गांव मे ही नहीं, अपितु छोटे छोटे पुरवा में भी पहुंच कर अपना साहित्य वितरण कर चुके हैं। पता लगाने पर प्रायः प्रत्येक स्थान पर उनके द्वारा वितरित साहित्य उपलब्ध हुआ। इस सम्बन्ध में आर्यसमाज को जागरूक होकर समुचित प्रबन्ध करना होगा।

शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज मेस्टनरोड कानपुर के विशेष अधिवेशन में आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान् पं० भगवद्दत्त जी, रिसर्चस्कालर तथा विद्वद्वर्य ब्रह्मचारी अखिलानन्द जी महाराज के निधन पर हार्दिक शोक व्यक्त किया गया। परमपिता परमात्मा दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

सब ने यह अनुभव किया कि रिक्त स्थान की पूर्ति होना असम्भव है, फिर भी यह संकल्प किया गया कि अपनी-अपनी सामर्थ्य व शक्ति के अनुसार हम में से प्रत्येक अपने दैनिक जीवन को शुद्ध और पवित्र बनायेंगे एवं कुछ समय नियमित रूप से वेद प्रचार के निमित्त समर्पित करेंगे।

विजयपाल शास्त्री, स० मन्त्री
आर्यसमाज, मेस्टनरोड कानपुर

निर्वाचन—

—आर्य उपप्रतिनिधि सभा बलिया—
प्रधान—श्री रामेश्वरप्रसाद बलिया
मन्त्री—श्री आर्यकुसुमित्र मनियर
कोषाध्यक्ष—श्री सुदर्शनसिंह हलुतवार

सभा की सूचनायें

जिला आर्य सम्मेलन किये जायें

इस समय प्रान्त में वैदिक धर्म प्रचार की नितान्त आवश्यकता है। सभा का यह सुझाव है कि जिले की आर्यसमाजें एवं उपप्रतिनिधि सभायें इस ओर विशेष ध्यान दें तो जिले में नव स्फूर्ति पैदा हो सकती है। अतः जिन जिन जिलों मे उप सभायें प्रभावशाली हैं, वे और जिनमें उप सभाओं का कार्य नियमित रूप से नहीं चल रहा है, उन जिलों के प्रमुख आर्यसमाजों का कर्त्तव्य है कि वे अपने-अपने जिलों में विशाल रूप से 'जिला आर्य सम्मेलन" समयानुसार करने का निश्चय करें और सभा के अधिकारियों को उस सुअवसर पर आमन्त्रित करें। जिले की समस्यायें उनके समक्ष रखकर समाधान कराया जाय। और जिले मे प्रचार की व्यवस्था जिरस्थाई रखने पर विचार किया जाय।

सम्मेलन करने की तिथि से कम से कम एक मास पूर्व प्रत्येक ग्राम ग्राम-कस्बा-कस्बा इत्यादि मे प्रचार की धूम मचा देनी चाहिये। और आर्य बन्धुओं को सम्मेलन में आने के लिये निमन्त्रित किया जाये। जिससे जिले में जागृति होगी।

सम्मेलन का रचनात्मक कार्य-क्रम बनाया जाय। और सभा से सहयोग प्राप्त करने के लिये पत्र व्यवहार किया जाए।

—प्रेमचन्द्र शर्मा सभा मन्त्री

भू-सम्पत्ति विभाग की सूचना

उत्तर-प्रदेश के समस्त आर्य समाजों को विदित हो कि दिनांक १७ नवम्बर १९६८ के आर्यमित्र मे भूसम्पत्ति विभाग की सूचना प्रकाशित की गई थी, किन्तु अब तक सभा कार्यालय को पूर्वीय क्षेत्र के एक आर्य समाज को सूचना प्राप्त हुई है। अन्य किसी भी आर्यसमाज ने ध्यान नहीं दिया। अत. पुन. निम्न प्रकार सूचना प्रकाशित की जा रही है। विश्वास है कि आर्यसमाज इस ओर विशेष ध्यान देकर सभा को सूचित करेंगे।

"सभा के अन्तर्गत भू-सम्पत्ति विभाग को प्रदेश में बिखरी हुई चल-अचल (भू-सम्पत्ति) के संग्रह करने का कार्य प्रारम्भ कर दिया गया है। आप के शहर, जिला, तहसील, कस्बा आदि मे सभा के नाम जिस प्रकार की भी जायदाद हो, उसकी निम्नांकित सूचना सभा को शीघ्र देने की कृपा करें।"

१—सम्पत्ति के दान-दाता का नाम, पतादि।

२ सम्पत्ति किस प्रकार की है मकान दुकान, भूमि आदि ?

३—जायदाद किस निमित्त दान की गई ?

४—सम्पत्ति का मूल्य क्या है ?

५—सभा से नाम कब रजिस्ट्री हुई।

६—दान-पत्र (दस्तावेज) कहाँ है ?

७—आय-व्यय विवरण

८—प्रबन्धक कौन है ?

हरप्रसाद आर्य
अधिष्ठाता, भू-सम्पत्ति विभाग
५ मीराबाई मार्ग लखनऊ

अपने उत्सव की शोभा बढ़ाइये श्री रामचन्द्र शर्मा को बुलाइये।

आर्यसमाज के उत्सव पर, विवाह संस्कार, अथवा अन्य किसी महोत्सव की शोभा बढाने के लिये आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध प्रचारक गायक संगीत विशारद

पत्र व्यवहार का पता—
श्री रामचन्द्र शर्मा संगीत विशारद
ग्राम० पो० हसनपुर त्यागनी
जि० मुरादाबाद

घासीराम प्रकाशन विभाग

विक्रयार्थ पुस्तकों की सूची

महान् दयानन्द	५० पैसे	पाप पुण्य	३५ पैसे
मेहरे बाबा मत दर्पण	१० "	राष्ट्र सुरक्षा और वेद	१५ "
ऋग्वेद रहस्य	५ रु०	अभिनन्दन ग्रन्थ	१० रु०
लघु स०प्र० भाग २	३७ पैसे	धरती माता की महिमा	३७ पैसे
" " ३	३७ "	बहाई मत दर्पण	१० पैसे
स्वर्ग मे सब्जेक्ट कमेटी	४० "	सत्यार्थप्रकाश उपदेशामृत	६५ पैसे
मानव धर्म भाग १	२० "	भागवत खण्डन	५० पैसे
" " २	२० "	श्रा मोपनिषद	६ पैसे
" " ३	२० "	विरजानन्द चरित्र	५६ पैसे
गायत्री उपनिषद	५० "	आर्य पर्व परिचय	१२ पैसे
विद्वारी हिम प्रवाह	२५ "	वैदिक निघण्टु	२५ पैसे
नक्षत्र्येष्टि यज्ञ	१० "	ब्रह्मवेद का रहस्य	२० पैसे
आर्यसमाज की छात्र शक्ति		स्वर्ग मे महासभा	३० पैसे
पिप्पलादि संहिता अंग्रेजी	१९ "	इण्डियन इफेलेंस ६) रु०	संकड़ा
ओंकार उपासना	२५ "	अमर बलिदानी	
आर्यन मेनिफेस्टो	६० "	ओंकार दर्शनम्	५० पैसे
व्यवहार भानु	२५ "	ज्योतिषचन्द्रिका	२५ पैसे
सोम और सुरा	३० "	जैन मत दर्पण	२० पैसे

पाश्चात्य विद्वान् और ईसाइयत	१० पैसे
आर्य प्रतिनिधि सभा का इतिहास	२ रु० ५० पैसे
यजुर्वेद संहिता भाग २, भाषा अनुवाद सहित	२ रु० ५० पैसे
थामसपेन और क्रिश्चियनटी अंग्रेजी	३ पैसे
थामसपेन और इसाइयत हिन्दी	५ पैसे
मैं और मेरा भगवान	१ रु० ४० पैसे
इस्लाम और आर्यसमाज उर्दू	२ रु०
" " हिन्दी	२ रु०
मुसाहिब इस्लाम उर्दू	५ रु०
सत्यनारायण व्रत कथा रहस्य	५० पैसे
कमेण्ट्री आन दी ईशोपनिषद अंग्रेजी	२५ पैसे
प्राबलम्स आफ द यूनीवर्सल अंग्रेजी	६ पैसे
वैदिक साहित्य भौतिक विज्ञान	३० पैसे
आर्य संस्कृति के मूल तत्व	४ रु० ५० पैसे
ऋग्वेद भाष्य भूमिका, अजिल्द	३ रु०
संस्कार विधि अजिल्द	१ रु० २५ पैसे
सत्यार्थप्रकाश अजिल्द बड़ा	४ रु०
यजुर्वेद संहिता (मूल) सजिल्द	४ रु०
सामवेद संहिता (मूल) मन्त्र सूची सहित सजिल्द	३ रु०
सामवेद संहिता (मूल) सजिल्द	२ रु० ५० पैसे
ऋग्वेद के मन्त्रों की अनुक्रमणिका	॰ ॰० ५० पैसे
अथर्ववेद की संहिता (मूल)	६ रु०
आर्याभिविनय : गुटका, सचित्र,	४० पैसे

मिलने का स्थान—

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश
५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

(पृष्ठ १६ का शेष)

पुजारियों की मण्डली उनकी यह दशा देखकर सन्नाटे में आगई।

प्रातःकाल की आरती का समय हो रहा था, भक्तगण मन्दिर में आ रहे थे; सहायक पुजारी मुरलीधर ने एक नई घोषणा की। जनार्दन स्वामी को रात को बजरंगबली भगवान् ने दर्शन दिये। साक्षात् दर्शन। जब जनार्दन स्वामी उनके चरणों से लिपट गए तब भगवान् ने उन्हें आशीर्वाद दिया। वे तो भगवान् को छोड़ ही नहीं रहे थे—जब बजरंगबली भगवान् अन्तर्ध्यान हो गये तो स्वामी जी उनका वियोग सहन नहीं कर सके और मन्दिर की छत से नीचे गिर पड़े और घायल हो गये।

भक्त समुदाय विचलित हो गया।

मन्दिर की घटियां रात दिन बजने लगीं टन-टन टन-टन। मुहल्ले वालों ने जनार्दन स्वामी का पर्दाफाश किया।

चवर कहां गया? स्वर्ण कहां गई कोई नहीं जानता।

किन्तु मन्दिर की घटियां पूर्ववत् बजती हैं और धर्म तथा आस्था के वातावरण का निर्माण करती हैं जिससे सहस्रों आगन्तुक आनन्दित हो जीवन पथ पर अग्रसर होते हैं। इन घटियों से निर्मित संगीत के प्रवाह में किसी व्यक्ति की दुर्बलता का महत्व नहीं।

आवश्यकता है

अग्रवाल बंसल गोत्र २४ वर्ष का लड़का इन्टर साइन्स स्वस्थ व सुन्दर जिसकी निजी व्यवसाय से लगभग ३०००) तीन हजार रुपये मासिक की आय है। एक स्वस्थ, सुन्दर शिक्षित अग्रवाल आर्य कन्या की आवश्यकता है पूरा विवरण लिखें।

मन्त्री
आर्यसमाज सेक्टर ६
भिलाईनगर (म० प्र०)

विश्वकर्मा वंशज बालकों को ७०००) का दान

श्री भवानीलाल गज्जूलाल जी

श्री भवानीलाल गज्जूलाल जी शर्मा स्थिर निधि

१—विश्वकर्मा कुलोत्पन्न श्रीमती तिज्जोदेवी-भवानीलाल शर्मा कुम्हार की पुण्य स्मृति में श्री भवानीलाल जी शर्मा अमरावती विदर्भ निवासी ने श्री विश्वकर्मा वंशीय बालकों के हितार्थ ७०००) की धन राशि सभा को समर्पण कर श्री० जी० शर्मा स्थिर निधि की योजना निम्नलिखित नियमानुसार भाद्रपद संवत् २०१४ वि० सितम्बर १९५७ ई० को स्थापित की।

२—इस मूलधन से वार्षिक ब्याज जो कुछ प्राप्त होगा, उसे उत्तरप्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा विश्वकर्मा वंशज गरीब, असहाय किन्तु होनहार बालक बालिकाओं के शिक्षण मद में व्यय करती रहेगी।

३—उक्त निधि से आर्थिक सहायता लेने वाले इच्छुकों को मास जुलाई में १) के टिकट भेजकर सभा से छपे फार्म मंगाकर भरकर भेजना आवश्यक है।

★मन्त्री आर्यप्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश लखनऊ

श्रीमती तिज्जो देवी

मन्दिर की घंटियां

[मन्दिर की घण्टियां प्रातः सायं बजती हैं और लोगों को इस बात का आह्वान करती हैं कि मनुष्य की बुरी वेदना से अन्तर्मुखी होकर परमात्मा से आत्मा को प्रेम करो, किन्तु जब तक मानव के मन मन्दिर की घण्टियां न बजें तब तक वह भावना के पुनीत पथ पर अग्रसर नहीं हो सकता। मानव जीवन के उतार चढ़ाव को इस कथानक में देखिये और सत्य को ग्रहण कीजिये।
—सम्पादक]

★श्री शिवरतन तैलङ्ग

टेम्पल हिल पर बने महावीर-मन्दिर की घण्टियाँ—टन .....टन... ..टन—मधुर स्वर से बजती चली आ रही थीं। मन्दिर के साथ ही जुड़ा हुआ जो सबसे बड़ा महत्व है, वह है धर्म का और वास्तव में उस महत्व की अधिकारिणी मन्दिर की घण्टियां ही हैं। फिर भले ही मन्दिर की घण्टियों के पीछे यदा-कदा वह सब घटता हो जिसे समाज के सामने घटने में कोई लज्जा महसूस होती हो।

महावीर मन्दिर के जगमग-जगमग जलते दीप,दीपों की रोशनी, गुलाब चम्पा, चमेली, कमल के फूल, धूप और अगर की सुगन्ध पूर्ण सुवास इत्र की महक और भक्ति की निर्मलता एक ऐसे अलौकिक वातावरण का निर्माण कर देती थी कि शहर से दूर एकांत में पर्वत पर बने इस महावीर मन्दिर में एकबार आकर भगवद् प्रेमी भक्तों को नीचे उतरना कठिन हो जाता था। प्रकृति की सुरम्य वनस्थली के बीच बना महावीर मन्दिर पर्वत का स्वर्ग नाम से विख्यात था।

नगर में आने वाले यात्रियों के लिए जो महावीर मन्दिर नगर भ्रमण के कार्यक्रमों में शीर्ष-स्थान पर था। पर्वत पर बने इस मन्दिर के नीचे अनेक दूकानें थीं। इन दूकानों ने बाजार का रूप ले लिया था।

बाजार की दूकानों में फूल, प्रसाद, अगरबत्ती, कपूर की दूकानें एक ओर थी, दूसरी ओर 'फेन्डस रेडीमेड क्लॉथ स्टोर' 'मोहन क्लॉथ कम्पनी' 'माया रेस्तारां' जैसी माडर्न शापें भी थीं। 'रेस्तारां' और माडर्न शापों के बीच में जो शाप थी। उसका नामथा। 'ग्लैमर हेयर ड्रेसर'। ग्लैमर हेयर ड्रेसर' पर्यटकों और टूरिस्टों का बड़ा प्रिय सैलून था। टूरिस्टों और पर्यटकों का क्यू इस 'ग्लैमर' में लगा रहता था।

'ग्लैमर' का मालिक था 'बन्दर'। सफेद शर्ट, काला पेन्ट, कुछ अजीब से रूखे रूखे बाल (यह रूखे बाल ही 'बन्दर स्टाइल' नाम से लोक प्रिय थे। बन्दर ने अपने नाम पर ही इस स्टाइल का नाम करण किया था, और लोग इस स्टाइल के पीछे दीवाने थे।) आंखों में बारीक सुरमा, जो उसके गौर रंग को और भी सुन्दर बना देता था।

एक बार जर्मनी से आये टूरिस्ट ने बन्दर से कहा था कि "वैल, मुझे इस बात का सख्त अफसोस है कि आप हेयर ड्रेसर का काम कैसे कर सकते हैं, मिस्टर बन्दर ? तुम्हें तो हेयर का काम करने के बजाय 'टूरिस्ट गाइड' होना चाहिए था।"

जब मनोहर मित्र दुभाषीये ने, जो इस टेम्पल हिल के इलाके का प्रसिद्ध गाइड था, बन्दर को जर्मनी टूरिस्ट की जर्मन बात का हिन्दी अनुवाद सुनाया, तो बन्दर ने हँस कर कहा—'शुक्रिया ! मैं उस दिन का इन्तजार करूँगा जब मेरी जिन्दगी मे वह दिन आ जाये। मैं आपकी इस बात को कभी नहीं भूलूंगा। आपने मुझे एक नई जिन्दगी की मंजिल दिखाई है। वक्त आया कभी तो... मैं जरूर उस मंजिल की ओर कदम बढ़ाऊँगा।'

जर्मन टूरिस्टर बन्दर की बात का मनोहर दुभाषिये से तर्जुमा सुनकर बहुत खुश हुआ था। उसने बन्दर से हाथ मिलाया और अपनी दिली खुशी जाहिर की और चेयर पर बैठते-बैठते मुस्कराकर बोला—'बन्दर स्टाइल, बन्दर स्टाइल।'

मनोहर और बन्दर दोनों हंस पड़े।

"यार बन्दर तुमने तो कमाल कर दिया।"

बन्दर हंसकर चुप हो गया। वह काम में डूब गया। उसके आस-पास की दुनिया भी डूब गई। बन्दर अपने काम को कला की दृष्टि से करता था। यही 'कला' उसकी ख्याति थी।

* * *

महावीर मन्दिर की दुनिया जहां निराली थी वहीं उसके महन्त जनार्दन स्वामी की दुनिया और भी निराली थी।

महन्त जनार्दन स्वामी की आयु थी तो पैंतीस वर्ष, मगर वे सिर्फ २५ वर्ष के ही नजर आते थे। वे ब्रह्मचारी थे, बाल ब्रह्मचारी। उनके वंश का एक सख्त नियम था मन्दिर की गद्दी के उत्तराधिकारी को आजन्म ब्रह्मचारी रहने की शपथ लेना।

पीढ़ियों से इस नियम का पालन उसके वंश में होता आ रहा था। प्रत्येक उत्तराधिकारी इस नियम और शपथ का पालन करता आ रहा था।

इस शपथ की भी एक किंवदन्ती इस वंश में चली आ रही है। वह किंवदन्ती इस प्रकार है—महन्त जनार्दन स्वामी के प्रथम पूर्वज माधव स्वामी जब इस टेम्पल हिल पर घूमते-घूमते उनको बजरंगबली की एक स्वर्ण प्रतिमा मिल गई माधव स्वामी इस स्वर्ण प्रतिमा को लेकर धर्मशाला में आ गये जहां वे अपनी धर्म पत्नी और दो पुत्रों—इन्दु एवं विजय के साथ ठहरे हुए थे। बजरङ्गबली की प्रतिमा को देखकर परिवार बड़ा खुश हुआ। प्रतिमा को श्रद्धा से नमन कर पूजा की पेटी में रखकर वे रात को निश्चिन्तता से सो गए।

मगर ठीक आधी रात को दोनों पति-पत्नी चौंककर उठ बैठे। एक सपने ने उन्हें चौंका दिया था।

'मीरा तुम कैसे जाग पड़ी एकाएक माधव स्वामी ने पत्नी से प्रश्न किया।

'मैं कैसे बतलाऊँ तुम्हें, मेरा तो दिल धड़क रहा है। तुम कैसे उठ गये ? मीरा ने अपने आंचल से पसीना पोंछते हुए कहा।

'भगवान् महावीर की जय' माधव स्वामी ने अपने दोनों हाथ जोड़कर आंखें बन्द करते हुये कहा—'मीरा भगवान् बजरङ्ग बली साक्षात् मेरे स्वप्न में आये और कहा 'माधव आज मेरी स्वर्ण प्रतिमा तुझे मिली है। इस प्रतिमा की स्थापना कर। जहां प्रतिमा मिली है, वहीं मेरे मन्दिर का निर्माण कर ...। कहते-कहते माधव स्वामी चुप हो गए। पसीने से उनका शरीर नहा गया।

'फिर...फिर क्या हुआ...?' मीरा ने एकटक अपने पति की ओर देखते हुए पूछा।

'फिर......फिर" मीरा !, बजरंग बली ने कहा कि—'माधव मगर इस मंदिर की' स्थापना के एक शर्त तुझे पूरी करनी पड़ेगी। मन्दिर की स्थापना के बाद मेरी पूजा करने वाले को आजीवन ब्रह्मचारी रहना पड़ेगा। समझा ! सुन, इस पद पर तेरे बड़े लड़के इन्दु को तुझे उत्तराधिकारी बनाना है। मेरी आज्ञा को पूरी करना। और आज से तू माधव नहीं तेरे बेटे के कारण महन्त इन्दु स्वामी का पिता है। महन्त माधवानन्द।' माधव का शरीर जैसे आधी रात मे काठ का हो गया।

'वही का यही स्वप्न मुझे भी दिखलाई पड़ा है। मीरा ने धर्मशाला की खिड़की के बाहर घिरे अंधेरे की ओर देखते हुये कहा।

माधव और मीरा ने इन्दु को भगवान बजरङ्गबली की सेवा में समर्पित कर दिया।

पीढियाँ गुजर गईं। महन्त माधवानन्द वंश के उत्तराधिकारियों का इसी शपथ और परम्परागत कट्टर पवित्र नियमों के कारण जनता मे अत्यधिक सम्मान है। उन्हें पवित्रता का प्रतीक माना जाता है। मन्दिर में भक्ति का समुद्र हिलोरें लिया करता था और महन्त जनार्दन स्वामी के मुख पर भक्ति का प्रकाश जगमगाता रहता था।

एक दिन अचानक महन्त के पद के उत्तराधिकारी के रूप में जनार्दन स्वामी का नाम महन्त परिवार ने घोषित कर दिया।

और-फिर एक दिन मन्दिर की घण्टियां बजने लगीं—टन "टन"...टन"... टन" मन्त्र और पवित्र श्लोकों के बीच जनार्दन स्वामी को महन्त बना दिया गया। वे मन्दिर के ही नहीं उसकी विशाल सम्पत्ति के अधिपति भी बन गये महन्त जनार्दन स्वामी स्वयं भी नहीं जानते थे कि कैसे इस अपार धनराशि को व्यय किया जाये। वैसे मन्दिर का ट्रस्ट इस हिसाब-किताब को व्यवस्थित रखता था और चौबीसों घण्टे जनार्दन स्वामी का हिसाब किताब समझाने को तैयार रहता था। ट्रस्ट के कर्मचारियों के क्वार्टर मन्दिर के पास ही बने हुये थे।

इतनी सम्पत्ति के अलावा भक्तजनों द्वारा प्रति दिन चढ़ाने वाले चढ़ावे का हिसाब तो अलग ही था।

महन्त जनार्दन स्वामी इस विशाल सम्पत्ति के स्वामी तो थे परन्तु उनके आराध्य थे भगवान बजरङ्ग बली।

पूजा, अर्चना, भक्तिभाव, भजन-कीर्तन, यज्ञ उत्सवों, महोत्सवों के बीच महन्त जनार्दन स्वामी का जीवन चलने लगा। इस पवित्र जीवन के वातावरण

आर्य्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल.-६०
मार्गशीर्ष २४ शक १८९० पौष कृ० १०
(दिनांक १५ दिसम्बर सन् १९६८)

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

Registered No L 60
पता—'आर्य्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष्य : २५९९३ तार : "आर्यमित्र"

का उनके जीवन और मन पर इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि महन्त जीवन के इस पार से न जाने अचानक कब उस पार से वैराग्य उनके अन्तर्मन पर आ बैठा इसका उनको पता ही नहीं चला।

उस दिन सन्ध्या से ही बदली छाई हुई थी। बदली छा जाने के कारण मन्दिर में अंधेरा फैल गया था। जनार्दन स्वामी को बड़ा अचरज लगा। देखते-देखते सफेद आसमान कैसे मटमैला हो गया? वे खिड़की के पास जा खड़े हुये उन्होंने स्विच आन कर दिया। चौंककर कमरे का अंधेरा दूर जा खड़ा हुआ और रोशनी की चादर कमरे में फैल गई। घड़ी में छः बज रहे थे। आरती में आधा घण्टा ही रह गया है।

जब वे पीली रेशमी धोती, सफेद रेशमी कुर्ता, और खड़ाऊं पहनकर मन्दिर में आये तब वाद्य वृन्द तैयार किये जा रहे थे।

आरती शुरू हो गई। बजरङ्ग बली के सिंदूर पुते शरीर पर चांदी के चमकते वर्क चिपके थे। भगवान् बजरङ्ग बली अपार शक्ति के पुञ्ज के रूप में खड़े थे उनकी विशाल मूर्त्ति के नीचे फूलों के ढेर पर उनकी स्वर्ण प्रतिमा भी विराजमान थी। आरती का प्रकाश उनकी दिव्य मूर्तियों को अलौकिकता प्रदान कर रहा था।

वाद्यवृन्द बजने लगे। वाद्य-वृन्दों पर 'हनुमान चालीसा' का पाठ होने लगा।

पाठपूजा होते ही सुवत्त ने एक भजन शुरू किया।

'प्रभु जी मेरे अवगुण चित न धरो'

वाह-वाह! सुवत्त जी वाह-वाह! आपने तो अमृत बरसा दिया।' मन्दिर में बैठे भक्तों के कण्ठों से स्वर फूट पड़ा।

जनार्दन स्वामी का मुख प्रसन्नता से खिल गया। स्वामी जी! एक किशोर लड़के ने उठकर कहा।

स्वामी जी के नेत्र उस लड़के की ओर उठ गये।

'क्या कहना चाहते हो स्वामी जी से? सहायक पुजारी ने कहा।

'मैं भी एक गीत गाना चाहता हूं' उस गौर वर्ण लड़के ने कहा।

'जरूर जरूर! यह मन्दिर तो भजन कीर्तन का केन्द्र है। जरूर सुनाओ गीत।' जनार्दन स्वामी ने कहा।

लड़के ने एक छोटा-सा अलाप लेकर गीत शुरू किया— रिमझिम रिमझिम करती आई, बरखा की बहार'।

लोगों ने आश्चर्य से देखा सचमुच बाहर वर्षा हो रही थी। हवा के झकोरों से बरसात की बूंदें मोतियों की झालर की तरह चमक रही थीं।

गीत समाप्त कर लड़का मौन खड़ा रह गया। लोग रस निमग्न बैठे थे।

'बहुत सुन्दर गाते हो। क्या नाम है तुम्हारा?' जनार्दन स्वामी ने प्रश्न किया।

'जी मेरा नाम चन्दर है।'

'कहां के रहने वाले हो? तुम्हारे माता पिता का नाम?' सहायक पुजारी मुरलीधर ने प्रश्न किया।

'जी मेरे कोई नहीं है। माता-पिता कई वर्ष पहले मुझे छोड़ गए।' चन्दर की आंखों में आंसू छलक आये।

'खैर' कोई चिन्ता नहीं। मुरलीधर जी चन्दर के रहने की व्यवस्था कर दो। हां देखो, कल तीसरे पहर मुझसे मिलना।' जनार्दन स्वामी ने कहा और उठकर खड़े हो गये। भक्तों का समूह उठ खड़ा हुआ।

चन्दर को स्वामी जी के पास रहते कई दिन बीत गये। इसी बीच चन्दर के अनुपम सौन्दर्य ने जनार्दन स्वामी की भक्ति, संयम, ज्ञान, वैराग्य और ब्रह्मचर्य को हिला दिया। भोला भाला परिस्थितियों से मजबूर चन्दर जनार्दनस्वामी को कुछ न कह सका। न चाहते हुये भी वह अनैतिक रास्ते पर चला गया।

मन्दिर की घण्टियां वैसी ही बजती रहीं टन टन टन और अपनी ध्वनियों के साथ मन्दिर का कार्य यथावत् चलता रहा। जनार्दन स्वामी की वैसी ही प्रतिष्ठा थी, भक्तों की टोलियां उसी प्रकार उनके चरण छू रही थीं।

और एक दिन टेम्पल हिल की मार्डन शापों के बीच एक नई दुकान खुल गई। नाम था, 'ग्लैमर" इस "ग्लैमर" ने मन्दिर के नीचे बनी दुकानों की सुन्दरता में चार चांद लगा दिये। आसपास के सभी लोग और साथ ही पास के लोग भी ताज्जुब में पड़ गये। कौन है यह! कहां से आया है? इतना पैसा इसके पास कहां से आया? सिर्फ चन्दर ही जानता था कि जनार्दन स्वामी को जब उसने बताया कि वह जाति से नाई है तब एक साल बाद उन्होंने उसे अपने पैतृक व्यवसाय को ही करने का परामर्श देकर बम्बई ट्रेनिंग के लिये भेजा और 'ग्लैमर' को खोलने में रुपया लगाया।

चन्दर की जिन्दगी के पृष्ठ फिर खुली हवा में फड़फड़ाए और उसके विवाह का एक नया पृष्ठ उसमें जुड़ गया।

फिल्म एक्ट्रेस की लड़की से चन्दर का विवाह हो गया। लड़की का नाम था 'स्वर्णा'।

चन्दर के ब्याह में जनार्दन स्वामी ने खुले हाथों दौलत लुटाई। अनाथ लड़के-लड़कियों का ब्याह कर देने में जनार्दन स्वामी का नाम प्रसिद्ध था। ऐसे कई ब्याह उन्होंने कर दिये थे, इसीलिये चन्दर के ब्याह पर लोगों ने कोई आश्चर्य प्रकट नहीं किया।

चन्दर के ब्याह के बाद एक दिन रात को जनार्दन स्वामी चन्दर के घर आये। चन्दर ने स्वामी जी को अन्दर एक शानदार कुर्सी पर बैठाया।

स्वामी जी कुर्सी पर बैठ गए। उनके मन में पिछले वर्षों की घटनायें चलचित्र की तरह घूम रही थीं। वे मन ही मन खुश हो रहे थे कि चन्दर के जीवन को उन्होंने किस तरह बनाया उनके मन में विचार आया कि चन्दर ने भी उनके जीवन की रिक्तता को दूर करने में सहयोग दिया... और... और...।

अन्दर के कमरे से बजती चूड़ियों की खनक ने उनके विचार चक्र को तोड़ दिया। जनार्दन स्वामी चौंक पड़े।

'किस विचार में डूब गये थे स्वामी जी।' चन्दर ने हंसकर पूछा, जो देर से उनके चेहरे को गौर से देख रहा था।

'विचार... हां चन्दर! सचमुच मैं विचार-चक्र में ही डूब गया था... मगर यह आवाज कैसी थी?' स्वामी जी ने चन्दर से कहा। उनकी निगाहें दूसरे कमरे में जलती बिजली की तेज रोशनी की ओर थीं।

'आवाज! ओह वह तो स्वर्णा की चूड़ियों की खनक थी, स्वामी जी! स्वर्णा, ओ स्वर्णा! यहां आओ। स्वामी जी आए हैं और इन्हें प्रणाम करो।' चन्दर ने स्वर्णा को पुकार कर कहा।

जनार्दन स्वामी स्वर्णा का रूप देखकर ठगे से रह गये। 'ओह तो यह है नारी का दिव्य रूप?'

"... हमें मन्दिर का उत्तराधिकार नहीं चाहिये हम आजीवन ब्रह्मचारी रहना नहीं चाहते।'

जनार्दन स्वामी के कानों में अपने बड़े भाइयों के शब्द गूंज उठे, जो उन्होंने महन्त के चुनाव के समय कहे थे, और उत्तराधिकार में प्राप्त होने वाले सारे वैभव को ठुकरा दिया था। और अब अपनी-अपनी पत्नियों के साथ शानदार जिन्दगी बिता रहे थे।

'... तो यह बात थी? इस स्वर्गीय रूप के आगे सारा वैभव तुच्छ है।' जनार्दन स्वामी ने मन ही मन दुहराया।

उसी क्षण स्वर्णा जनार्दन स्वामी के जीवन में सुगन्ध बनकर समा गई।

अब स्वर्णा के माथे पर कुंकुम था चन्दर के नाम का और... और।

*   *   *

कुछ महीनों के गुजरते न गुजरते पास के लोगों को जिनमें निम्न श्रेणी के लोग ज्यादा थे, कुछ कुछ सन्देह हो गया। वे चन्दर के घर पर तेज निगाह रखने लगे।

बन्द दरवाजे पर दस्तक की आवाज सुनाई दी। स्वर्णा ने धीरे से दरवाजा खोल दिया। साधारण वेश में जनार्दन स्वामी अन्दर आ गये। स्वर्णा ने दरवाजा बन्द कर दिया। अभी दरवाजा बन्द ही हुआ था कि 'खटा खट, खटा खट' तड़ा तड़, तड़ा तड़' बड़े-बड़े पत्थर आकर चन्दर के घर में गिरने लगे।

पूरी रात पत्थरों की वर्षा चन्दर के घर पर होती रही। पूरी रात स्वर्णा और स्वामी जी को महसूस होता रहा कि पास के कुछ लोगों की भीड़ भेड़ियों की तरह उनके घर के आस पास चक्कर काट रही है।

सुबह चार बजे अन्धेरे में जनार्दन स्वामी जैसे ही मन्दिर जाने के लिये बाहर निकले पास वालों ने पकड़कर इतना मारा कि वे घायल हो गये। चंदर ने मुहल्ले वालों के पैरों पर माथा रखकर जनार्दन स्वामी को छुड़ाया। मगर तब तक स्वामी जी बेहोश हो चुके थे।

चंदर ही जनार्दन स्वामी को लेकर मन्दिर में गया। मन्दिर [illegible]

(शेष पृष्ठ १४ पर)

...र्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. का मुखपत्र

मित्रस्याऽहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे

लखनऊ-रविवार पौष १ शक १८९०, पौष शुक्ल ३ वि० सं० २०२५, दिनाङ्क २२ दिसम्बर १९६८ ई०

...रमेश्वर की अमृत वाणी-

...र्थ सिद्ध करने के लिए इन्द्रिय-निग्रह करो

सप्त स्वसृरुषीर्वावशानो विद्वान् मध्व उज्जभारा दृशे कम्। अन्तर्येमे अन्तरिक्षे राजा इच्छन्वव्रिमविदत्पूषणस्य ॥

[ऋ० १०।५।५]

(कम्) सुख को (दृशे) देखने के लिए (वावशान) ...न्तर वश मे करने वाला (विद्वान्) ज्ञानी (सप्त) ...त (अरुषी) गतिशील (स्वस्र) बहिनों को [सामर्थ्य ...ान करने वाली इन्द्रियों को] (मध्व) मधु से (उत् ...जभार) उन्नत करता है। (पुराजा) पहले प्रकट होने ...ला जीव (अन्तरिक्षे अन्त येमे) अन्तःकरण में संयमी ...ता है (इच्छन्) चाहता हुआ वह (पूषणस्य वव्रिम) ...ट करनेवाले के आश्रय को (अविदत) प्राप्त करता है।

...भोगी अज्ञान से इन्द्रियों को विलास में रत करके ...नकी शक्ति को क्षीण कर देते हैं, किन्तु विद्वान् योग के ...ावन पथ पर चलकर उनका निग्रह करते हैं क्योंकि ...समें आनन्द रस की प्राप्ति होती है। आत्मा अन्तःकरण ... के अधिष्ठाता मन को जब वश में कर लेता है ...स्वतः शान्त हो जाती हैं। इन्द्रियों की चञ्च...ता समाप्त होते ही आत्मा अन्तर्मुखी होकर साधना के ...न्तरङ्गों में अर्थात् ध्यान धारणा समाधि के क्षेत्र में ...विष्ट होता है और आत्म अवस्थित होकर प्रभु ...साक्षात्कार करता है और सर्वशक्तिमान से अनन्त शक्ति ...प्त करके युग प्रवाह को मनवाञ्छित मोड़ देने में सिद्धि ...प्त करता है।

...जब योगी मुन्शीराम इन्द्रिय-निग्रह से स्वामी श्रद्धा...न्द बन सकता है तो प्रत्येक आर्य भी उसी प्रकार अन्तः...करण के संयम से सिद्ध बनकर विश्व के आर्य करण में ...पना योगदान दे सकता है। अमर हुतात्मा स्वामी ...श्रद्धानन्द के बलिदान दिवस पर ऐसी दृढ़ प्रतिज्ञा ही ...हमारी सच्ची श्रद्धांजलि है। —'वसन्त'

स्वामी श्रद्धानन्द अंक

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द

वैदिक आदर्श को क्रियात्मक रूप देने के लिए जिस महात्मा ने सर्वस्व त्याग दिया, उसे पौषवदि १४ [२३ दिसम्बर, १९२६] को दिल्ली में रोगार्त स्थिति में मतिभ्रष्ट मतान्ध अब्दुल रशीद ने धर्म-चर्चा की आड़ में गोली का निशाना बनाया। स्वामी जी का शरीरान्त हुआ पर वे अमर हो गये, क्योंकि धर्म के पावन पथ पर बलिदा... होने वाले न कभी मरे हैं और न मरेंगे।

वर्ष ७० | अङ्क ४५

वार्षिक मूल्य १०)
छमाही मूल्य ६)
विदेश में २०)
एक प्रति २५ पै०

इस अंक में पढ़िए !

१—जीवन-ज्योति २
२—सम्पादकीय ३
३—सभा तथा तार सूचनायें ४
४—भारतवासी पंजाब के हिन्दी ५
५—अमरशहीद श्रद्धानन्द ६
६—विनोद-बिन्दु ७
७—स्वामी श्रद्धानन्द श्रद्धांजलि ८
८—काव्य-कानन १०
९—आर्यजगत् ११-१२
१०—महापुरुष १५ १६

सम्पादक—
—प्रेमचन्द्र शर्मा
—सभा मन्त्री

अमर बलिदानी श्री स्वामी श्रद्धानन्द

पूज्यपाद स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का बरेली से विशेष सम्बन्ध रहा है, उनके पूज्य पिता श्री नानकचन्द्र जी बरेली के कोतवाल थे, स्वामी जी (श्री मुन्शीराम जी) भी बरेली में कुछ दिन नायब तहसीलदार रहे थे। बरेली में ही श्री स्वामी जी [ऋषि दयानन्द से] आप की भेंट हुई थी। प्रश्नोत्तर भी हुए थे। और पादरी स्काट के साथ जो श्री स्वामी जी का लिखित शास्त्रार्थ हुआ था उसके श्री मुन्शीराम जी ऋषि के पत्र लेखनादि में सहायक थे।

लाला मुन्शीराम में यह विशेषता थी कि जो विचार आये उन्हे आचार मे परिणत किया। सारे दुर्व्यसन एकदम त्याग दिये और रूढ़िमात्र जाति बन्धन को तोड़कर अपनी पुत्री का विवाह अरोड़ों मे किया। पत्नी के स्वर्गवास हो जाने पर दूसरा विवाह न करके अपनी सन्तान को आश्वस्त और सुखी रक्खा। अपना सर्वस्व त्याग कर लाला से महात्मा बने। सर्वप्रथम गुरुकुल में अपनी संतान को ही अर्पित किया। जो काम हिन्दू विश्व विद्यालय के संस्थापक पूज्य मालवीय जी न कर सके उसे महात्मा मुन्शीराम जी ने कर दिखाया। गुरुकुल में उच्च शिक्षा का माध्यम हिन्दी को बनाकर महात्मा जी ने भारत के विद्वानों की आंखें खोल दीं। गुरुकुल में अंग्रेजी शिक्षा और सभ्यता को एक चुनौती थे। तत्कालीन अंग्रेज सरकार गुरुकुल को भययुक्त दृष्टि से देखती थी। गुरुकुलों ने पांच सहस्र वर्ष पुराने दृश्यों को उपस्थित कर दिया था। ऋषियों के आश्रम दुबारा जी उठे थे। आर्यभाषा पुनः गौरव से फूली न समाती थी। यह काम महान् क्रान्तिकारी था। महात्मा गांधी जी गुरुकुल को देख कर श्रद्धा से भर उठे थे। गुरुकुल में ही श्री गांधी मिस्टर से महात्मा बने। यह उपाधि उन्हे महात्मा मुन्शीराम जी से ही मिली थी।"शिक्षा मे समाज-सुधार में महान् कार्य करके पूज्य महात्मा जी जो कि अब स्वामी श्रद्धानन्द बन चुके थे राजनीति की ओर देखा और निर्बल राजनीति को जानदार बना दिया। दिल्ली चांदनी चौक में संगीनों के सामने छाती खोलकर सेना के सिपाहियों को स्तब्ध कर देने वाले महान् नेता केवल स्वामी श्रद्धानन्द ही हुये हैं। और दिल्ली की जामा मस्जिद के मिम्बर अर्थात् उपदेश वेदी पर जिस पर सम्राट अकबर को भी मुस्लिम विद्वानों ने नहीं चढ़ने दिया था चढ़कर जनता को भाषण सुनाने वाले आप ही एकमात्र प्रथम गैर मुस्लिम थे। आपके प्रभाव ने पंजाब कांग्रेस में जीवन डाल दिया था। कांग्रेस के महान् नेताओं में थे एक थे।

उन्होंने समाज सुधार शिक्षा-सुधार राजनैतिक सेवा तो करी ही, किन्तु इस सबसे बढ़कर था उनका काम—

देश के करोड़ों लोगों का राष्ट्रियकरण

करना। इसे ही शुद्धि कहते हैं, अर्थात् अराष्ट्रिय विचारों को शुद्ध करके राष्ट्रिय बनाना।

हमारे देश मे जब अरब, पठान, तुर्क, ईरानी मुगल मुसलमानो ने अधिकार समाल लिया तो उनकी भाषा, सभ्यता संस्कृति का प्रभाव इस देश के लोगों पर पड़ना ही था, किन्तु उन विदेशियों पर भी भारत का प्रभाव, अनेक बातों में पड़ा। दूसरे वे मुसलमान हैं, जो भारतीय वंश के हैं, और लोभ, दबाव या सामाजिक नियम न पालने के

कारण जो हिन्दुओं से पृथक् होकर मुसलमान बने। इन नये मुसलमानों ने अपने धर्म को ही नहीं बदला किन्तु अपनी भाषा, सभ्यता संस्कृति को भी बदल डाला। पूरी तरह पर उन विदेशी मुसलमानों का अनुकरण इन्होंने किया। उस ही अराष्ट्रिय भावना का परिणाम है, पाकिस्तान का बनना। कांग्रेस के किसी भी नेता की समझ मे आज तक यह बात नहीं आयी, और जिन्होंने इस बात को समझा उन्हे इन मूर्खों ने साम्प्रदायिक कहा, संकीर्ण बताया। पर आज भी यह बात तथ्य है, कि भारत में दो चार को छोड़कर कोई भी मुसलमान राष्ट्रिय नहीं है। और न ही हो सकता है। क्योंकि सिद्धान्तः मुसलमान और कम्यूनिस्ट की कोई भी राष्ट्रियता नहीं होती।

मुसलमानों की अराष्ट्रियता के दो तीन उदाहरण देता हूं। सुनिये—

इस्लाम में आयुर्वेद और दर्शन शास्त्र अपना नहीं है। ये दोनों विद्यायें अरबों ने यूनान से सीखीं, परन्तु भारत का जमाना मुसलमान जिसकी कि दोनों वस्तुयें अपनी। उसको त्याग कर यूनानी धर्म और यूनानी फलासफी को अपनाता है। अपने बालकों के नाम रुस्तम और सोहराबरखने में प्रसन्न होता है, जो कि न इस्लामी नाम है, न इसके अपने देश भारत के नाम हैं किन्तु अपने देश के राम और कृष्ण नामों से घृणा करता है। उर्दू के प्रति भक्ति यह घोर अराष्ट्रियता के कारण ही है। उर्दू के मुहावरे, उपमायें, भाव, अक्षर सब विदेशी हैं। हिन्दू तो इतना उदार है, कि उसके नाम रामगुलाम, रामबहादुर, गंगाबख्श मिलते हैं। परन्तु मुसलमान का नाम मुहम्मददास, अलीदीन, मुहम्मदत्त नहीं मिल सकते। भारत के नौ मुस्लिम मुसलमान शासकों के ही दास नहीं बने उनकी भाषा सभ्यता और संस्कृति के भी दास बन गये।।

इन आत्महीन भावनाओं से मुसलमानों का उद्धार करने के लिए, राष्ट्रिय एकता दृढ़ बनाने के लिये, भारतीय मुसलमानों के मस्तिष्कों से अराष्ट्रियता दूर करने के लिए माननीय स्वामी जी ने शुद्धि यज्ञ प्रारम्भ किया। राष्ट्र हित के लिए यह महान् काम था। यदि उस समय भारत के ये भ्रान्त कांग्रेसी नेता शुद्धि मे लग जाते और अभागे हिन्दुओं ने शुद्ध हुओं को उदारता से अपनाया होता, तो पाकिस्तान कभी न बन पाता। किन्तु उस समय के कांग्रेसी नेता गांधी जी और नेहरू भ्रान्त मोह जाल मे फंसे थे, और हिन्दू अन्धविश्वासों के दास थे। कांग्रेसी नेताओं ने शुद्धि यज्ञ का विरोध किया। मुसलमानों ने धमकियां दी, परन्तु स्वामी जी का फूंका हुआ शुद्धि का शङ्ख बजता ही रहा, उसकी ध्वनि को कोई मन्द न कर सका।

लाखों बिछुड़े भाई आ मिले अपनी खोई हुई सभ्यता संस्कृति और राष्ट्रियता को उन्होंने अपना लिया।

ब्रज भूमि मे शुद्धि की धूम मच गई। दिग्-दिगन्त यज्ञ धूम से सुगन्धित और वेद ध्वनि से प्रतिध्वनित हो उठे। इस्लाम मे भूचाल आ गया। हिन्दुओं मे जीवन जाग उठा। मुसलमान मौलवी या नेता आज तक कभी कहीं भी बुद्धि से तो किसी धर्म का विशेषकर हिन्दू धर्म का मुकाबिला कर ही नहीं सके केवल छुरी तलवार का ही बल इस्लाम को है, षड्यन्त्र करके मुस्लिम मत के नेताओं ने श्री स्वामी जी की हत्या का षड्यन्त्र रचा। और उनकी हत्या एक

★श्री बिहारीलाल शास्त्री

आततायी से करवा भी दी गई। धर्म के ऊपर दिल्ली में यह तीसरा बलिदान था। प्रथम एक ब्राह्मण को लोदियों के समय इसलिए जीवित आग में जला दिया गया, कि वह इस्लाम और हिन्दू धर्म को बराबर कहता था। दूसरा बलिदान माननीय गुरु तेग बहादुर जी का हुआ। क्योंकि वे हिन्दुओं की चोटी और जनेऊ की रक्षा करते थे। तीसरा बलिदान पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द जी का इसलिये हुआ कि वे देश के लोगों की अराष्ट्रिय मान्यताओं को दूर करके उन लोगों का राष्ट्रिय करण करते थे।

मौलवी लोग और कांग्रेस नेता बराबर इस्लाम की सफाई देते रहते हैं कि इस्लाम शान्ति का धर्म है। परन्तु मुसलमान अपनी करतूतों से इन लोगों को झूठा साबित करते रहते हैं। मुसलमान शासकों के अत्याचारों को मुसलमान लोग आज भी ताजा करते रहते हैं। महात्मा गांधी ने इस्लाम की सफाई में अपने प्राण तक दे दिये। मुसलमानों के खूनी कारनामों पर आयुभर यह परदा डालते रहे। मुसलमान इससे कुछ सीखते पर ऐसा नहीं हुआ। उनके हौसले और बढ़े। महात्मा जी फिर भी मुसलमानों का पक्ष डटकर लेते रहे। अन्तिम परिणाम यह हुआ कि उनके ही धर्म वाले ने होश खो दिए। जोश में भर कर गांधी जी का वध कर डाला।

आर्य समाज प्रायः शिक्षित हैं, शान्ति प्रिय हैं, देश-भक्त हैं। अतः चुप रहे। किसी मुसलमान के ऊपर बदले में हाथ नहीं उठाया। परन्तु अहिंसा वाद महात्मा गांधी के चेले महात्मा जी के वध पर बौखला उठे थे। उन्होंने हिन्दू राजा महाराजाओं को परम देश भक्त महान् बलदानी सावरकर जी जैसे हिन्दू नेताओं को पकड़ा अभियोग चलाये। कई को फांसी दी, जेलों में भेजा। आर्य समाजी इस रूप में बदले नहीं लेता। वह विचार बदलता है।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

ओ३म् अग्न ऽ आयूं षि पवस ऽ आ सुवोर्जमिषं च नः ।
आरे बाधस्व दुच्छुनाम् ॥३८॥

—यजु० एकोनविंश अध्याय मन्त्र ३८

हे अग्रनायक विद्वन् ! हमारी आयु को तू (अपने उपदेश से) पवित्र कर। हमारे लिए पराक्रम तथा इष्ट सिद्धि को प्राप्त करा। दुष्ट वृत्तियों को दूर हटा।

लखनऊ—रविवार पौष १ शक १८९०, पौष शु० ३ वि० २०२५
२२ दिसम्बर सन् १९६८ ई०, दयानन्दाब्द १४४, सृष्टि सम्वत् १,९७,२९,४९ ०६९

पृतना जयेम

★

इस संसार में आर्यत्व का अनार्यत्व से सदैव संघर्ष रहा है। संसार एक ऐसा रंग स्थल है, जहां अनवरत संघर्ष होता रहता है। विद्या का अविद्या से, ज्योति का अन्धकार से, धर्म का अधर्म से, पुण्य का पाप से, सत्य का असत्य से एक युद्ध चलता रहता है मानव समाज भी विभिन्न सम्प्रदायों में विभक्त होकर विचार भेद से और स्वार्थ के वशीभूत होकर युद्धरत रहता है। पशु और पक्षियों तक में स्वार्थ और हिंसा की भावना के कारण आपसी लड़ाई देखी जाती है।

मानव योनि सर्वोत्तम है। इसमें किसी को सन्देह नहीं है। समस्त मानवी सभ्यतायें मनुष्य के भीतर से पशुत्व को निकालने के लिए हैं, क्योंकि मनुष्य के अन्दर दो भाव सदैव विद्यमान रहते हैं एक भाव देवत्व का है, तो दूसरा पशुत्व का। देवत्व के प्रबल भाव आर्यत्व की ओर अग्रसर करते हैं और पशुत्व भाव उसे अनार्यत्व की ओर प्रेरित करते हैं।

वेदानुसार सत्याधार पर मानव को केवल दो कोटियों में विभक्त किया गया है। देवत्व की ओर बढ़ने वाले आर्य और पशुत्व की ओर जाने वाले अनार्य। आर्य वे जो मन, वचन, कर्म से श्रेष्ठता को अपनाते हैं और अनार्य जो मन, वचन, कर्म से पतन मार्गी बनते हैं। आर्य सादा जीवन उच्च विचार के माध्यम से प्रभु के समीपस्थ होने के लिए प्रयासरत रहते हैं। अनार्य सदैव खाने-पीने मौज उड़ाने के उद्देश्य को लेकर जीवन यापन करते हैं। सुर व असुर का भेद इन्हीं विभिन्न दृष्टिकोणों के कारण है। जो भौतिक जीवन में ही रस प्राप्ति के निमित्त व्यग्र रहते हैं, वे राक्षस कहलाते हैं। जो उससे ऊपर उठ कर आनन्द पान के द्वारा आत्मतृप्ति की अभिलाषा करते हैं, वे मनुष्य बनकर, देवत्व के शिखर पर चढ़ते हैं।

आर्य व अनार्य की श्रेणियों में वैदिक विभक्ति करण बड़ा मनोरम एवम् सत्यप्रद है। शिक्षित होकर भी जो कर्मक्षेत्र में अज्ञानी है वह अनार्य है, और पुस्तक ज्ञान से विहीन होकर भी जो परमेश्वर के दिव्य ज्ञान से अलंकृत हो कर तदनुकूल आचरण करता है, वह निरक्षर भी आर्य है। चार वेद और छः शास्त्रों का ज्ञाता रावण केवल इसलिए असुर कहलाता है कि वह आचरण भ्रष्ट था। 'आचारहीन न पुनन्ति वेदा' आचारहीन को वेद की ऋचाएं पवित्र नहीं करती। 'आचारो हो परमः धर्मः' आर्य और अनार्य का भेद देखना हो तो माता सीता और राम के सम्वाद में देखिए? रावण ने भगवती सीता को कहा था—

"भुङ्क्ष्व भोगान् यथा काम पिब भीरु रमस्व च।"

[वा० रा० सुन्दर काण्ड २०।२४]

अर्थात् सीते यथेष्ट भोग, खा, पी और मौज कर।

'पिब विहार रमस्व भुङ्क्ष्व भोगान्'

[वा० रा० सुन्दर काण्ड २०।३५]

अर्थात् पी, विहार कर, मौज उड़ा भोगों को भोग।

रावण जैसा वेदज्ञ जब सीता से कहता है—

"स्वधर्मो रक्षसा भीरु सर्वमेव न संशयः। गमन वा परस्त्रीणा हरण सम्प्रमथ्य वा।"

[वा० रा० सुन्दर काण्ड २०।५]

अर्थात् हे धर्मभीरु सीते! पर स्त्री गमन व्यभिचार, बलात्कार, भोग-विलास, पर स्त्री हरण, ये तो राक्षसों का स्वधर्म है।

वैदिक संस्कारों से अलंकृत सीता की आत्मा ने इन समस्त प्रलोभनों को ठुकरा दिया। वह माता आर्या थी उसने अनार्यत्व के जीवन से मृत्यु को श्रेयस्कर समझा इसलिए अमरत्व को प्राप्त हुई।

वास्तव में वेद लिखकर भी जब मानव की बुद्धि भ्रष्ट हो जाये तो वह आर्यत्व से उच्च शिखर से गिरकर अनार्यत्व के गड्ढे में गिर जाता है। दूसरी ओर अनार्यत्व के कूप में गिरा हुआ व्यक्ति भी अपने सत्प्रयत्न और पुरुषार्थ से ऊपर चढ़ जाता है। धूप-छांव सम आर्यत्व और अनार्यत्व का यह खेल चलता रहता है। इस संसार में नित्य कितने ही पथभ्रष्ट होकर अनार्य हो जाते हैं और कितने ही ऐसे भी होते हैं जो जीवन में ठोकरें खाकर आर्यत्व के उज्ज्वल शिखर पर चढ़ने को दृढ़ प्रतिज्ञ बनते हैं। प्रत्येक युग में एक प्रवाह चलता है कभी आर्यत्व की वेगवती धारा प्रवाहित होती है तो कभी अनार्यत्व की उत्ताल तरङ्गों के थपेड़े लगते हैं।

वर्त्तमान काल में लिखने की आवश्यकता नहीं है कि अनार्यत्व के प्रबल प्रवाह में समस्त विश्व अबाध गति से बहता चला जा रहा है। पाप-ताप-सन्ताप के भयङ्कर दुष्परिणाम भोगते हुए भी मानव समुदाय आसुरी वृत्तियों को संजोए अकाल मृत्यु के मुख में निरन्तर चले जा रहे है। असुर अपने भीतर ही केवल संगठित नहीं है उन्होंने संसार को आर्य बनाने वाले समाज में भी प्रवेश पा लिया है और विघटन के लिये उद्यत हो गये हैं। समस्त संसार का उपकार करना जिस समाज का उद्देश्य है विश्व का आर्यकरण करना जिसका परम लक्ष्य है आज उससे ये प्रश्न किये जाते हे—कि समाज ने कभी मुन्शीराम जैसे भ्रष्ट को आर्यत्व की परिधि में बांधकर स्वामी श्रद्धानन्द बना दिया अमीचन्द जैसे असुर को परमपिता के आनन्द पान कराने वाला बना दिया तो आज ये कैसे आसुरी दृश्य हैं कि कहीं धर्म स्थानों पर ताले लगे हे कहीं चुनावों में हाथापाई है कही अदालतों के द्वार खटखटाये जा रहे हैं कहीं महात्मा आनन्दस्वामी जी को पीड़ित किया जा रहा है। जिन्हे दूसरो को आर्य बनाना है वे स्वय क्यो अनार्य बन रहे हैं। जिन्हे स्वय देवत्व का धारण कर अपनी जीवन-ज्योति से दूसरो के जीवन दीप जलाने हैं वे स्वय क्यों बुझ रहे हैं। जिन्हे संसार से पशुत्व के प्रतीक संघर्षों को मिटाना है वे स्वय क्यों हिंसाशील हो रहे हैं। महर्षि दयानन्द के नाम लेवा क्यों आज महर्षि के पवित्र समाज को अपनी करनी से अपवित्र कर रहे हैं।

२३ १२ ६८ को स्व भी श्रद्धानन्द को श्रद्धाजलिया देने वाले आत्मचिंतन कर और विचार कि कही उनकी करनी से पवित्र आर्यसमाज को बट्टा तो नहीं लग रहा। जिन्हें अनार्यों के साथ जूझना है वे क्यों आपस में जूझ रहे है। वे कौन सी तृष्णायें हैं वे कौन सी आसक्तियां हैं जो गृहयुद्ध मे लिप्त कर उन का सर्वनाश कर रही हैं। उन्हे क्या करना था, किया क्या है और कर क्या रहे हैं। 'इस घर को आग लग रही घर के चिराग से' कैसी विडम्बना है। आइये श्रद्धानन्द के पवित्र बलिदान दिवस पर हम महान् उद्देश्य के लिए बलिदान होने का दृढ व्रत लें। यदि मुन्शीराम ऊंचा उठकर स्वामी श्रद्धानन्द बन सकता है तो हम भी ये क्षणिक अस्थायी पशुत्व त्यागकर पुन आर्यत्व का कवच पहन कर स्वामी श्रद्धानन्द की भांति अनार्यत्व से लोहा लेकर अमर बलिदानी होकर आर्यसमाज के पवित्र कार्य को आगे बढा सकते हैं। हम मत भूलें कि वेद माता ने हमे यह दिव्य प्रेरणा दी है पृतना जयेम' अर्थात युद्धों को उपद्रवों को हम जीतें। कैसे? किस प्रकार?? (त्वया अध्यक्षेण) तुम अध्यक्ष के द्वारा, परमपिता परमात्मा तेरी अध्यक्षता मे रह कर तेरी आज्ञा मे रत रहकर क्योंकि 'त्वया इन्धाना वयम' तेरे प्रकाश से ही हम प्रकाशित होते हैं।

परमेश्वर की इस दिव्य वाणी का जिस दिन आर्य जन आत्म साक्षात्कार करेंगे, उनके परस्पर संघर्ष मिट जायेंगे और विजय श्री उनके पग चूमेगी।

★

आचार्य प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के उपकुलपति नियुक्त

नई दिल्ली—९-१२-६८, गत वर्ष गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के संघर्ष को समाप्त करने के लिये जब श्री महेन्द्र प्रताप जी शास्त्री ने उपकुलपति के पद से त्यागपत्र दिया था, तब आचार्य प्रियव्रत जी को स्थानापन्न उपकुलपति नियुक्त किया गया था। अब सीनेट द्वारा नियुक्त उपसमिति की सिफारिशों के आधार पर श्री महेन्द्रप्रताप जी शास्त्री विजिटर गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय ने आचार्य प्रियव्रत जी को ही स्थायी रूप से विश्वविद्यालय का उपकुलपति नियुक्त किया है। और आचार्य जी ने ७-१२-६८ से स्थायी उपकुलपति का पद सम्भाल लिया है।

ज्ञान की किरणें भारतवर्ष से ही संसार में पहुँची

वेद की ज्योति को जीवित रखना ही सबसे बड़ा काम है ★प्रकाशवीर शास्त्री

लखनऊ १५ दिसम्बर, आज यहाँ आर्यसमाज शृङ्गार नगर के वार्षिकोत्सव पर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के माननीय प्रधान श्री पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री संसद् सदस्य ने कहा कि वेद में हमारी उच्च संस्कृति भरी पड़ी है। भगवान् ने जब सृष्टि की रचना की तो उसके लिये कुछ नियम भी बनाये, यह नियम ही संस्कृति है। हमारे देश की यह महान् संस्कृति देश के कोने-कोने में पहुंची। दुनिया में सबसे पहले सामवेद का गान भारतवर्ष में हुआ। यहीं से अन्य देशवासी ज्ञान की भावना लेकर अपने-अपने देश को गये। इस समय सबसे बड़ी संख्या ईसाइयों की है। दूसरी संख्या बौद्धों की। तीसरा नम्बर हमारा वैदिक धर्म का है, और चौथा मुसलमानों का। इस समय संसार में मुख्य यही चार विचारधारायें चल रही हैं। इन सभी धर्मों में ज्ञान की किरणें यहीं से पहुंची। बाइबिल में जो कुछ अच्छी बातें हैं, वे सब हमारी उपनिषदों से ली गयी हैं। ईसा का जो आठ-दस वर्ष का अज्ञातकाल है, वह उसने भारत वर्ष में ही व्यतीत किया और यहीं उसने ज्ञान प्राप्त किया। उसके आधार पर उसने अपने यहाँ जाकर प्रचार किया। इसे सबने माना है। हमारे पड़ोसी देश लङ्का, जावा, बर्मा, श्याम देश जो अब थाईलैंड कहलाता है, तिब्बत आदि इन सब में हमारी संस्कृति फैली हुई है। और यह देश हमसे अपने सांस्कृतिक सम्बन्ध जोड़ना चाहते हैं, रखना चाहते हैं। हमारे समीप आना चाहते हैं, पर हम उन्हें पास नहीं आने देना चाहते। अन्य धर्मों में यह नियम है कि उनके प्रवर्त्तकों पर विश्वास लाओ। पर हमारे यहां कोई राम और कृष्ण को छोड़ दे, कोई हानि नहीं। वह वैदिक धर्मी है।

हमारे यहां बड़े-बड़े वैज्ञानिक पैदा हुए हैं, जिन्होंने अद्भुत कार्य किये हैं, आप दक्षिण में जाइये, वहां वैज्ञानिकों के कार्य देखिये। दक्षिण के मन्दिर अजन्ता की गुफायें जिन्हे देखकर मनुष्य चकित रह जाता है। यह गुफायें २॥ हजार वर्ष पहले की हैं, ईसाई धर्म को तो अभी १९६८ वर्ष ही होते हैं। इन गुफाओं की चित्रकारी, उनके नमूने, उनके रंग जो आज तक फीके नहीं पड़े। हमारे वैज्ञानिकों की महत्ता के द्योतक हैं। सबसे पहले जो विमान बना था, उसका खाका हमारे देश में ही बना था।

हमारे ज्ञान की प्रतिमा दूर देशों में फैल रही है, पर हमारे यहाँ समाप्त होती जाती है। हमारा ज्ञान मिटना नहीं चाहिये। वेद की ज्योति को जीवित रखना ही बड़ा काम है। इसे जारी रखो। जो ज्ञान का अध्ययन करते हैं, और उससे दूसरों को लाभ पहुंचाते हैं, वे धन्यवाद के पात्र हैं। हम अपने ज्ञान ही से संसार में आगे रह सकते हैं। हमारे पूर्वजों की थाती वैदिक धर्म का ज्ञान ही है। उसे सुरक्षित रक्खो। स्वामी दयानन्द जी महाराज ने कहा कि अपने ज्ञान को सीखो, पर हमारे लोग विश्व से तो परिचित हैं, पर अपने से परिचित नहीं है। भारत पताका दुनिया में फैल रही है, पुरानी नई संस्कृति को लोग अपना रहे है। पर हमारे विद्यार्थी से पूछो कि संसार में कौन-कौन महान् व्यक्ति हुए हैं तो वह पाश्चात्य विद्वानों के नाम तो गिनादेगा। पर अपने यहाँ के व्यास, कणाद, जैमिनी कालिदास, आदि के नामों से अपरिचित नहीं है। संसार हमें गुरु मानता है। यहीं से अन्य देशवासी उच्च आध्यात्मिक ज्ञान धारा लेकर गये और उन्होंने अपने चरित्रों को ऊँचा उठाया।

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वे मानवाः॥

भव्य स्वागत

माननीय श्री शास्त्री जी के उत्सव में पधारने पर जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा तथा शृङ्गारनगर आर्यसमाज के अधिकारियों ने आपका भव्य स्वागत किया। और जिलोपसभा लखनऊ की ओर से आपको ११२२) की थैली इस अवसर पर प्रदान की गई। जिसका पूर्ण विवरण आगामी अङ्क में दिया जायगा।

सभा का वर्ष

प्रदेशीय आर्य समाजों को विदित हो कि सभा का वर्ष ३१ दिसम्बर १९६८ को समाप्त हो रहा है। समाजों को चाहिए कि अपने आर्यसमाजों का वर्ष सभा के वर्ष के साथ-साथ समाप्त करने की कृपा करें।

(२) सभा की स्थापना ?

आर्यसमाजों का कर्त्तव्य

विदित हो कि आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना २९ दिसम्बर को मेरठ नगर में हुई थी। समाजों को चाहिए कि इस दिन "स्थापना दिवस" आर्य मन्दिरों में बड़े धूम धाम के साथ मनाने का आयोजन करें।

१—आर्य मन्दिरों मे संध्या, हवन, यज्ञ किये जायें।

२—भजन भाषणों द्वारा जनता को सभा की स्थापना के सम्बन्ध में आर्य जनता को बतलाया जाए।

३—सभा को चिरस्थाई रखने के लिए प्रतिज्ञा कीजिए।

४—सभा के नवीन भवन के लिये दान-भवन निर्माण मे सहयोग करने की कृपा करें और संग्रहीत धन सभा के कोष में भेजदें।

५—आर्यमित्र के ग्राहक बनाये जायें।

जिला आर्य सम्मेलन किये जायें

इस समय प्रान्त में वैदिक धर्म प्रचार की नितान्त आवश्यकता है। सभा का यह सुझाव है कि जिले की आर्यसमाजें एवं उपप्रतिनिधि सभायें इस ओर विशेष ध्यान दें तो जिले में नव स्फूर्ति पैदा हो सकती है। अतः जिन-जिन जिलों में उप सभायें प्रभावशाली हैं, वे और जिनमें उप सभाओं का कार्य नियमित रूप से नहीं चल रहा है, उन जिलों के प्रमुख आर्यसमाजों का कर्त्तव्य है कि वे अपने-अपने जिलों में विशाल रूप से "जिला आर्य सम्मेलन" समयानुसार करने का निश्चय करें और सभा के अधिकारियों को उस सुअवसर पर आमन्त्रित करें। जिले की समस्यायें उनके समक्ष रखकर समाधान कराया जाय और जिले मे प्रचार की व्यवस्था चिरस्थाई रखनेपर विचार किया जाय।

सम्मेलन करने की तिथि से कम से कम एक मास पूर्व प्रत्येक ग्राम-ग्राम-कस्बा-कस्बा इत्यादि में प्रचार की धूम मचा देनी चाहिये। और आर्य बन्धुओं को सम्मेलन मे आने के लिये निमन्त्रित किया जाये। जिससे जिले में जागृति होगी।

सम्मेलन का रचनात्मक कार्य-क्रम बनाया जाय। और सभा से सहयोग प्राप्त करने के लिये पत्र व्यवहार किया जाए।

त्याग-पत्र

सभा के वैतनिक प्रचारक श्री बालकृष्ण शर्मा ने सभा की सेवाओं से त्यागपत्र दे दिया है। अतः समाजों को चाहिये कि किसी भी प्रकार का सभा प्राप्तव्य धन उन्हें न देवें।

निवेदन

सभा के समस्त वैतनिक उपदेशकों एवं प्रचारकों से अनुरोध है कि चूंकि सभा का वर्ष ३१ दिसम्बर ६८ को समाप्त हो रहा है अतः मास नवम्बर ६८ तक के दिन डायरी शीघ्रातिशीघ्र सभा कार्यालय को भेजकर अनुगृहीत करें ताकि हिसाब का जमा खर्च हो सके और आपका हिसाब आपके पास भिजवाया जा सके।

प्रेमचन्द्र शर्मा
सभा मन्त्री

भू-सम्पत्ति विभाग की सूचना

उत्तरप्रदेशीय समस्त आर्यसमाजों एवं उपसभाओं को सूचित किया जाता है कि सभा द्वारा स्थापित भूसम्पत्ति विभाग का कार्य सुचारुरूप से आरम्भ हो गया है। इस विभाग के कागजातों को पूरा करने के लिये आर्य समाज के द्वारा न्यायालय में चल रहे अभियोगों के सम्बन्ध में सभा को पूर्ण जानकारी कराने के हेतु निम्न प्रकार सूचित करें कि—

१—वाद किस न्यायालय में चल रहा है।

२—मुकदमा नम्बर क्या है ?

३—वादी प्रतिवादी के नाम ?

४—वाद (अभियोग) किस तारीख को न्यायालय में दायर किया गया ?

५—अभियोग किस विषय का है ?

६—अब तक क्या-क्या कार्यवाही की गई ?

७—अभियोग इस समय किस स्थिति में है ?

८—न्यायालय का निर्णय कब किस तारीख को हुआ ?

९—अभियोग के निर्णय (फैसले) की प्रतिलिपि भेजी जावे।

—हरप्रसाद आर्य
अधिष्ठाता, भू-सम्पत्ति विभाग

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

भारतीय संस्कृति के प्रतीक, शुद्धि आन्दोलन के जन्मदाता, स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानी, राष्ट्रीय रक्षा के सच्चे नेता अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस कानपुर नगर की समस्त आर्यसमाजों की ओर से आर्यसमाज सीसामऊ में दि० २५ दिसम्बर बुधवार सायं ६॥ बजे मनाया जा रहा है। इसमें श्री यशपाल जी शर्मा संसद सदस्य का ओजस्वी भाषण होगा।

सारे भारतवासी पंजाब के हिन्दी प्रेमियों के साथ

आर्य सम्मेलन में श्री प्रकाशवीर शास्त्री का अध्यक्षीय भाषण

आर्य सम्मेलनों का उद्देश्य हिन्दू संगठन

—वीरेन्द्र

जालन्धर, ८ दिसम्बर—आज एंग्लो संस्कृत हायर सेकेण्डरी स्कूल में आयोजित आर्य सम्मेलन श्री प्रकाशवीर शास्त्री संसदसदस्य की अध्यक्षता मे हुआ। इसमे पंजाब के विभिन्न नगरों

श्री पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री एम०पी०
प्रधान—आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश

से आर्य नेता शामिल हुए। श्री प्रकाशवीर शास्त्री ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि पंजाब के हिन्दी प्रेमियों के साथ देश के ४७ करोड़ हिन्दू हैं उन्हे किसी प्रकार घबराना नही चाहिये।

श्री शास्त्री ने कहा कि हैदराबाद सम्मेलन में पंजाब की भाषाई समस्या पर विचार किया गया। इसमे फैसला किया गया कि १९६९ का अखिल भारतीय आर्यसमाज सम्मेलन पंजाब में किया जाये। उन्होने कहा कि यह हमारा दुर्भाग्य है कि गलत फैसला के आधार पर भाषाई राज्य बनाये गये हैं। पंजाब के विभाजन के पीछे कुछ और ही उद्देश्य था। यह सब कुछ केन्द्रीय सरकार के द्वारा हुआ। अब वह सब कुछ धीरे-धीरे उसके सामने आ रहा है। हिन्दी को एक भाषा का स्थान सर्वसम्मत रूप से प्राप्त है।

उन्होंने आगे कहा है कि भाषा के प्रश्न पर सारे देश के हिन्दी प्रेमी उनके साथ हैं। आर्यसमाज को राजनीतिक सन्तुलन अपने हाथ में लेने के लिये प्रयत्न करना चाहिए। पंजाब विधान सभा में २० सीट प्राप्त करने का प्रयत्न होना चाहिए और यह राजनीतिक सन्तुलन उनके हाथ में आ जाएगा तो भाषाई व अन्य समस्यायें स्वय ही हल हो जायेंगी। हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा प्राप्त होने के बावजूद देश में आकाशवाणी से अंग्रेजी के समाचार प्रसारण पहले होते थे लेकिन अब भारी प्रयत्न करने के बाद आज से हिन्दी के समाचार पहले प्रसारित होंगे।

श्री शास्त्री जी ने कहा कि हमारी यह मांग है कि संसद के बिल और अध्यादेश अंग्रेजी के साथ साथ हिन्दी में भी आने चाहिए, इस पर भी वर्तमान अधिवेशन से अमल शुरू हो जाएगा। कोई भी काम लगन से किया जाए तो उसमें सफलता मिल जाती है। पंजाब में जब सिख ३० प्रतिशत थे, तो उन्होंने सच्चर फार्मूला लागू और क्षेत्रीय फार्मूला लागू कराके भाषा को संरक्षण दिया गया था। इसलिए आज कोई कारण नहीं वर्तमान पंजाब के ४० प्रतिशत हिन्दी प्रेमियों को संरक्षण न मिले। उन्होंने कहा कि दुर्भाग्य से लाला लाजपतराय के बाद पंजाब के हिन्दुओ को कोई नेता नही मिला। यदि आर्य समाज पंजाब मे हो रहे चुनावों मे भाग ले तो मैं उनकी सेवा के लिए उपस्थित हूंगा। यदि राजनीतिक सन्तुलन आर्यसमाज के हाथ मे आ गया तो वह न केवल पंजाब बल्कि सारे भारत की रक्षा मे महत्वपूर्ण योग देगा।

इस सम्मेलन मे अमृतसर, लुधियाना, होशियारपुर, गुरदासपुर, फिरोजपुर आदि स्थानो से प्रतिनिधि शामिल हुये। आर्यनेता दीवान राम सरनदास ज्ञानी रामसिंह अमृतसर, प्रो० मदन मोहन, डा० देवव्रत, श्री विश्वनाथ ग्रोवर अमृतसर, प्रिंसिपल रामचन्द्र जावेद, चौ० करचन्द चण्डीगढ़ श्री विश्वम्भरदास कक्कड़ मुकेरियां और श्री वीरेन्द्र के नाम विशेषरूप से उल्लेखनीय हैं।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री का भव्य स्वागत

आज प्रात. श्री प्रकाशवीर शास्त्री संसद सदस्य पण्डाल मे पहुंचे तो उनका भव्य स्वागत किया गया। 'आर्यसमाज अमर रहे' 'हिन्दी भाषा अमर रहे।' के नारे लगाये गये।

हिन्दी के विरोधी पंजाब को भारी हानि पहुँचा रहे हैं

-श्री प्रकाशवीर शास्त्री

जालन्धर ८ दिसम्बर। आज यहां आर्य सम्मेलन के खुले अधिवेशन मे भाषण करते हुए श्री प्रकाशवीर शास्त्री संसद सदस्य ने घोषणा की कि हिन्दी पंजाब के ४० प्रतिशत लोगों की मातृ भाषा और भारत की राष्ट्रभाषा है इसके रथ को कोई रोक नही सकता। हिन्दी को सन्त भाषा कहने वाले सन्त फतहसिंह कान खोलकर सुन लें कि हिन्दी रूस या अमरीका की सम्पर्क भाषा तो हो सकती है, पंजाब की नहीं। पंजाब दो भाषाई राज्य है।

आपने कहा हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने का फैसला स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व का है। आज यह देश के ७ राज्यों की राजभाषा है। केरल और मद्रास के लोगो ने भी इसे अपना लिया है क्योंकि इसके बिना गुजर नहीं। अतः आपने पंजाब के अकालियो को चेतावनी दी कि जो कोई हिन्दी का विरोध करेगा वह पंजाब को क्षति पहुचायेगा।

आपने अकाली समाचार पत्रों के साम्प्रदायिक प्रचार की निन्दा की और कहा कि किसी भी समाचार पत्र को ऐसा विष फैलाने की इजाजत नहीं दी जा सकती। हिन्दू सिख एक है और एक रहेंगे।

आपने कहा पाकिस्तान ने भारी सख्या मे अपने एजेन्ट भारत भेजे हैं जो यहां आन्तरिक उपद्रव कराना चाहते हैं ताकि ऐसी स्थिति मे पाकिस्तान हमला करे तो वे यहां अन्दर अशान्ति पैदा कर दें। आपने कहा कि हमारी सेनायें सशक्त है, सजग हैं, अगर अब लड़ाई हुई तो हमारी सेनाये लाहौर और करांची तक पहुचेगी, और पाकिस्तान को सन् ६५ से भी अधिक मजा चखावेंगी।

★

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश द्वारा—

आर्य-संसार एवं साहित्यिक जगत् के ख्याति-प्राप्त महाकवि

श्री नाथूरामशङ्कर शर्मा के यशस्वी-सुपुत्र

स्वर्गीय डा० हरिशंकर शर्मा कविरत्न

की पुण्य स्मृति मे

'स्मृति-ग्रन्थ' का प्रकाशन

हमारा सौभाग्य है कि श्रद्धेय श्री बनारसीदास चतुर्वेदी ने इस गौरव पूर्ण कार्य को अपने हाथों मे लिया है। वही इस ग्रन्थ के प्रमुख सम्पादक एव निर्देशक हैं। इस ग्रन्थ की विशेषता यही है कि जो सामग्री हमें श्री चतुर्वेदी जी द्वारा उपलब्ध होगी वह अन्यत्र दुर्लभ है।

स्वर्गीय पण्डित जी के हस्त-लिखित लगभग ३०० पत्र श्री चतुर्वेदी के पास सुरक्षित हैं। जो उनके 'विमल-व्यक्तित्व' एवं 'कुशल कृतित्व' वास्तविक झांकी कराते हैं।

'स्मृति ग्रन्थ के लिये लेख इत्यादि संग्रह करने का कार्य ' गया है। अतः आपसे हमारा विनम्र निवेदन है कि इस कार्य ' के लिये तन मन-धन से सहयोग प्रदान करें। प्रत्येक आर्य क यही श्रद्धा होगी।

इस ग्रन्थ के सम्पादन मे लगभग पन्द्रह सहस्र रुपये व है। ग्रन्थ का मूल्य दस रुपया होगा। अग्रिम मूल्यदा छूट देने का निश्चय किया है।

प्रकाशवीर श

प्रधान आर्य प्रति

स्वामी श्रद्धानन्द और पं० राधेश्याम

★चन्द्रनारायण एडवोकेट
बरेली

महात्मा मुन्शीराम जब मुन्शीराम थे तब उन्हें बरेली में महर्षि दयानन्द के दर्शन हुए। जब १९१६ में उन्होंने संन्यास लिया तब भी बरेली के बहुत से लोग उस समारोह में हरिद्वार पहुंचे। स्वामी जी को भी बरेली से विशेष प्रेम था। स्व० डाक्टर श्यामस्वरूप ने जब कार्यक्षेत्र में पदार्पण किया तो उनकी प्रेरणा के स्रोत स्वामी जी ही थे। आर्य समाज बिहारीपुर के उत्सव पर स्वामी जी प्रायः पधारते थे। कांग्रेस आंदोलन में भी वे कई बार बरेली पधारे।

भारत विख्यात नाटककार व प्रसिद्ध राधेश्याम रामायण के रचयिता पं० राधेश्याम कथावाचक सनातनधर्मी होते हुए भी आर्यसमाज के उत्सवों में सोत्साह सम्मिलित होते थे। कहा करते थे कि जोशीले भजन तब गाये जाते हैं जब मंच पर मालवीय जी जैसा धर्मनिष्ठ या श्रद्धानन्द जैसा कर्मनिष्ठ नेता शोभायमान हो।

एक बार स्वामी जी ने पं० राधेश्याम के मुख से रामायण सुनने की इच्छा प्रकट की। पण्डित जी को उत्सव मे लाने का काम मेरे सुपुर्द किया गया।

स्वामी जी ने "गहने नहीं पहनना चाहिये" इस विषय पर व्याख्यान दिया महिलायें क्रुद्ध और असंतुष्ट हो गयीं। अब पण्डित जी खड़े हुए उन्होंने हारमोनियम पर उंगली रखी—स्वर दिया, तबले वाले ने खंड़ खंड़ की। कहा "मुझे आज तक यह नहीं मालूम हुआ कि आर्य समाज और सनातन धर्म में अन्तर क्या है। वेद ही दोनों का प्रेरणा स्रोत है। मेरी समझ में एक अन्तर आया है, जो बात आर्यसमाज कहे उसके विपरीत कहना ही सनातन धर्म है। बहनो, पूज्य स्वामी जी कहते हैं गहने मत पहनो, मैं सनातन धर्मी हूं, उसके विपरीत कहूंगा, पहनो, और खूब पहनो! तुरन्त एक गाना बनाया और सुनाया। गाना बनाते जाते थे और सुनाते जाते थे। बोल थे—"बहनो ऐसा गहना पहनो, जिससे सुधरे सब संसार" तर्ज था रसिया। महिलायें प्रसन्न पुरुष खुश।

"आदर का झूमर हो सर पर—
तेज की बिन्दी हो माथे पर—
मधुर स्वरों का गुलूबन्द हो
पति के प्रेम का हार।" बहनो—

ऐसा समां बंधा कि १९१८ की बात ऐसी लग रही है जैसे कल शाम को सुना हो। स्वामी जी भी मुस्करा उठे।

दूसरे दिन स्वामी जी ने 'सर्वेषामेव दानानाम् ब्रह्मदान विशिष्यते" पर और "गुरुकुल शिक्षा" पर व्याख्यान दिया। जादू का सा प्रभाव पड़ा। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का जन्मदाता जिस बात को कहे उसका प्रभाव क्यों न हो। उस दिन पण्डित जी ने कहा आज विरोध नहीं करूंगा। दोनों ब्रह्म के उपासक हैं। यहाँ विरोध नहीं। तुरन्त कल की तरह भजन बनाया और सुनाया—

"न दान विद्या से बढ़के कोई,
न ब्रह्म विद्या से कोई विद्या।"
कहाँ हो भारत के नौ निहालो,
तुम्हें पुकारे है सोई विद्या।"

सुनने वालों के दिल हिल गये। गुरु विरजानन्द के यहाँ स्वामी दयानन्द ने किस प्रकार विद्या प्राप्त की उसका वर्णन करते हुये कहा—

वही है आदित्य ब्रह्मचारी,
वही है सद् शास्त्र का पुजारी,
कि जिसने पुरुषार्थ की रई से
गुरु के आगे बिलोई विद्या॥

विनोद-बिन्दु

अन्त में कहा—
हमें तो टेक उसके नाम की है,
पुकार यह राधेश्याम की है,
उसी की खेती है लहलहाई
कि जिसने मेहनत से बोई विद्या॥

तीसरे दिन कहा—"आज स्वामी जी को अपनी नवीनतम कृति "कौशल्या माता से बिदाई" सुनाऊंगा।" कौशल्या माता की बात कहते हुये शेर कहा—

झिझकीं सकुचीं कुछ बिकल हुईं,
फिर पुत्रनेह में डोल उठीं।
जो एक बात ही जोरदार,
वह ही कौशल्या बोल उठीं।
'मैं माता हूं माता का पद,
हैं बड़ा पिता से ए बेटा।
इसलिये आज्ञा देती हूं।
बन मत जाओ मेरे बेटा॥

माता की स्नेह पूर्ण और करुणा पूर्ण आज्ञा सुन कर सभा में सन्नाटा छा गया। तब राम ने उत्तर दिया—

जो पिता ने तो कुछ कहा नहीं,
उनकी फकत प्रतिज्ञा है।
इस बन जाने मे जो कुछ है,
कैकेयी माँ की आज्ञा है॥
कौशल्या की आज्ञा रद्द हो गई।
कहा—
ऐसा है तो मजबूर हूं मै,
यह बोली कौशल्या माता।
या बड़ी और मझली छोटी,
हैं सब समान माता, माता।

महिलायें गद्‌गद थीं, श्रोता मुग्ध थे. स्वामीजी के नेत्रों से अश्रु निकल रहे थे। पण्डित जी ने कहा—गोस्वामी जी ने रामचरित मानस में सब कुछ कहा परन्तु आश्चर्य है कि 'उर्मिला' की ओर ध्यान नहीं दिया। मैंने उस पर भी लिखा है। लक्ष्मण जी को जब कैकयी पर क्रोध आया तो कह डाला—

वह कौन मांगने वाली है,
जो माँग रही है राजतिलक।
अधिकारी जो गद्दी का है,
उसको ही होगा आज तिलक॥
यह तो स्वत्वों का झगड़ा है,
चुप रहने में सन्तोष नहीं।
बन जाने की भी खूब रही,
क्यो जायें अब कुछ दोष नहीं।
सुमित्रा ने समझाया—
प्रतिकूल पिता की आज्ञा से
सुतका चलना है ठीक नहीं।
इसलिये मौन रहना अच्छा,
यह बात निकलना ठीक नहीं।'

पण्डित जी ने तीनों माताओं की भावना की समालोचना करते हुए कहा—

एक तो वह माता है जो,
लड़के को राज दिलाती है।
और सौतेले लड़के के लिये,
लड़के बनवास कराती है।
एक वह भी तो माता है,
उस माता के भी छाती है।
जो सौतेले लड़के के लिए,
अपने को भेंट चढ़ाती है।
महिलायें भावावेश मे रो पड़ीं।

लक्ष्मण माता से बन जाने की आज्ञा लेकर उर्मिला के महल में गये।

हीरों की सुघर चटाई पर,
जो बहू गृह लक्ष्मी पड़ी हुई।
ज्यों ही पति को आते देखा,
गम्भीर भाव से खड़ी हुई।
पहिले चरणों में गये,
फिर ऊपर को नैन।
तभी उर्मिला से कहे,
लक्ष्मण ने ये बैन।'
उर्मिला, उर मिला बिदा करो,
दिन है उत्साह दिखाने का।
माता ने आज्ञा दे दी है,
कर चुका हूं प्रण बन जाने का।
उर्मिला—
जब बन जाने को तत्पर हो,
पोशाक सफर की पहरे हो।
तो प्राणनाथ कारण क्या है,
तुम यहाँ किसलिये ठहरे हो।

लक्ष्मण—
यदि मेरी चौदह वर्षों की,
बिछुड़न तुमको खल सकती हो।
तो मैं यह कहने को आया हूं,
तुम साथ मेरे चल सकती हो।
उर्मिला—
किसके डर से साथ जो,
सेवा करने जाय।
सेवक का कब धर्म है,
पत्नी सङ्ग ले जाय॥
यदि [illegible] मोह हो उठा प्रबल,
तो यह यह सेवा छुट जायेगी।
बन नहीं हवा खोरी है यह
कहकर माता झुंझलायेगी॥"

अस्तु, रामायण के परम श्रद्धालु स्वामी श्रद्धानन्द और महान् गायक पंडित राधेश्याम के जीवन की घटनाओं का वर्णन किया।

न स्वामी जी घर पर हैं
न राधेश्याम वसुधा पर।
सुयश और कीर्ति दोनों की।
रहेगी निश्चय अचला पर॥

(पृष्ठ २ का शेष)

शुद्धि का चक्र आज भी चालू है। इस्लाम को कसौटी पर कसना अब भी बन्द नहीं हुआ है। सहस्रों छुरे, तलवारऔर पिस्तौलें आर्य समाज के चलाये हुए बुद्धिवाद को नहीं रोक सकते। श्रद्धानन्द अमर हैं। उनकी विचारधारा अमर है।

राष्ट्र धर्म हित के लिए,
तन मन, धन सानन्द।
अनुपम बलिदानी हुए,
स्वामी श्रद्धानन्द।

"स्वामी श्रद्धानन्द" श्रद्धांजलि

आंग्लभाषा के महान् कवि "शेक्सपीयर" ने कहा—

"Some are born great,
Some achieve greatness
And some have greatness
Thrust upon them"

अर्थात् कुछ (व्यक्ति) महान् पैदा होते हैं, कुछ महत्ता प्राप्त कर लेते हैं और कुछ के ऊपर महत्ता थोप दी जाती है। मैं जिस महान् पुरुष के जीवन का उल्लेख करने चला हूं, वह महान पैदा नहीं हुआ था, न महत्ता उसके ऊपर थोपी गई थी, अपितु उसने अपने कार्यों के द्वारा महत्ता को प्राप्त किया था।

लाला मुन्शीराम (सन्यास लेने के बाद स्वामी श्रद्धानन्द नाम रखा) का जन्म सन् १८५६ में पंजाब में 'तलवन' नामक स्थान में हुआ था। उनके पिता श्री नानकचन्द्र जी शहर कोतवाल थे। २१ वर्ष की आयु में उनका विवाह शिवदेवी के साथ हुआ। लाला मुन्शीराम जी शिक्षा का प्रबन्ध अच्छा था परन्तु कुसंग के कारण उनमें मांस-शराब-शतरंज जुआ-हुक्का और दुराचारादि सब व्यसनों ने घर कर लिया था।

वैदिक धर्मोद्धारक अखण्ड बाल ब्रह्मचारी महर्षि दयानन्द जी सरस्वती महाराज बरेली में व्याख्यान देने के लिए पधारे। मुन्शीराम जी के पिता जी वहीं शहर कोतवाल थे। उनको यह आदेश हुआ कि वे 'महर्षि दयानन्द' के व्याख्यानों में शान्ति भंग न होने दें। श्री नानकचन्द्र जी (शहर कोतवाल) उनके भाषणों से अत्यधिक प्रभावित हुए। उनको यह भी दृढ़ विश्वास हो गया कि महर्षि दयानन्द ही उनके नास्तिक पुत्र में आस्तिक भाव भर सकते हैं। उन्होंने अपने पुत्र को सम्बोधित करते हुए कहा—"बेटा मुन्शीराम! एक बड़े संन्यासी आये हैं। बड़े विद्वान् और योगीराज हैं। उनकी वक्तृता सुनकर तुम्हारे संशय दूर हो जायेंगे। कल मेरे साथ चलना।" मुन्शीराम पिता जी की आज्ञानुसार व्याख्यान सुनने गये। उनके ऊपर व्याख्यान का इतना प्रभाव पड़ा कि वे प्रतिदिन बिना नागा व्याख्यान सुनने लगे। इन भाषणों का उनके मन पर स्थायी प्रभाव पड़ा और उनकी काया पलट होनी प्रारम्भ हो गई।

अंग्रेजी की उक्ति "Man falls to rise" (व्यक्ति गिर कर ही उठता है) मुन्शीराम पर पूर्णरूपेण चरितार्थ होती है। सब कुटेव और दुर्व्यसनों से घिरे हुए मुन्शीराम ने अपना रास्ता बदलना, और आत्म विश्लेषण कर अपने चरित्र को इतना महान् और उज्ज्वल बनाया कि 'सर रैमजे मैकडानल्ड" (जो बाद में चलकर इंग्लैंड का प्रधान मन्त्री बना) उससे प्रभावित होकर यह लिखे बगैर न रहा' वर्तमान काल का कोई जीवित मॉडल

लाला मुन्शीराम जी जो बाद में स्वामी श्रद्धानन्द हुए।

चाहे तो मैं इस भव्य मूर्ति की ओर इशारा करूंगा। यदि कोई मध्यकालीन चित्रकार सेंटपीटर के चित्र के लिए नमूना मांगेंगे तो मैं इस जीवित मूर्ति के दर्शन करने की प्रेरणा दूंगा।"

ईसाई मिशन स्कूल से घर आती हुई अपनी पुत्री वेदकुमारी को—

इक बार ईसा-ईसा बोल,
तेरा क्या लगेगा मोल?
ईसा मेरा राम रमैया,
ईसा मेरा कृष्ण कन्हैया।"

नामक गीत गाती हुई सुनकर मुन्शीराम जी स्तब्ध रह गए। उन्होंने विचार किया कि कितनी छोटी आयु में हिन्दू लड़कियों को ईसाई बनाने का कुचक्र इन तथाकथित मिशन स्कूलों द्वारा चलाया जा रहा है। अतः उन्होंने कन्या विद्यालय खोलने का निश्चय किया ताकि हिन्दू लड़कियों का ईसाइयत के प्रभाव से बचाया जा सके। उन्होंने कन्या महाविद्यालय जालंधर तथा देहरादून में कन्या गुरुकुल की स्थापना की।

समाज सुधारक के रूप में मुन्शीराम जी ने हिन्दू समाज में प्रचलित जाति-प्रथा को ही रुकावट सोचा। इसके विरुद्ध उन्होंने केवल मौखिक रूप से ही कार्य नहीं किया, अपितु अपनी पुत्री का अन्तर्जातीय विवाह किया। अपने दोनों सुपुत्रों का भी विवाह उन्होंने जाति तोड़कर ही किया। अस्पृश्यता की भावना को मिटाने के लिये उन्होंने अनेक ओजस्वी भाषण दिए, तथा लेख लिखे। लाला मुन्शीराम ने सन् १९१७ में संन्यास ले लिया तथा अपनी प्रिय शिक्षण संस्था गुरुकुल कांगड़ी, जिसकी उन्होंने स्थापना की थी, संसार की सेवा करने के लिये छोड़ दी। सन् १९१८ में गढ़वाल भयंकर अकाल की लपेट में आ गया। स्वामी जी ने वहां जाकर अकाल पीड़ितों की सेवा की तथा उनकी सहायतार्थ धन संग्रह किया।

पंजाब में पंजाबी और उर्दू को छोड़कर हिन्दी के प्रति श्रद्धा जागृत कराने वाले व्यक्ति स्वामी श्रद्धानन्द जी ही थे। उन्होंने अपने प्रचलित समाचार पत्र 'सद्धर्म प्रचारक' को बहुत हानि उठाते हुए भी उर्दू से हिन्दी में परिवर्तित करके इस कार्य में सबसे पहला उदाहरण प्रस्तुत किया।

कुछ राजनैतिक विषयों पर स्वामी जी और महात्मागांधी के बीच तीव्र मतभेद हो गया। स्वामी जी ने २ मई १९१९ को सत्याग्रह समिति से (जिसके प्रधान महात्मा गांधी और उपप्रधान स्वामी जी थे) त्याग पत्र दे दिया। पंजाब में "मार्शल ला' लागू करने से अंग्रेजों का अन्याय और अत्याचार संसार के सामने खुले रूप में आ गया। इस ला से उत्पन्न जनता की व्यथा को शमन करने के लिए स्वामी जी पंजाब पहुंचे। उन्होंने कांग्रेस का अपना अधिवेशन अमृतसर में करने के लिए निमन्त्रित किया। स्वागताध्यक्ष के रूप में उन्होंने अपना भाषण हिन्दी में दिया। सन् १९२२ में 'गुरु का बाग' आन्दोलन शुरू हुआ। स्वामी जी ने इसमें सक्रिय भाग लिया और जेल गये।

जब स्वामी जी ने कांग्रेस के द्वारा दलितोद्धार के कार्य को पूरा न होते देखा तो उन्होंने इस कार्य की पूर्ति के लिये देहली में 'अखिल भारतीय दलितोद्धार सभा' की स्थापना की, तथा कांग्रेस से इन शब्दों में त्याग-पत्र दे दिया कि—मैंने अमृतसर और मियांवाली जेलों में यह अनुभव किया कि चरित्र गठन और अस्पृश्यता निवारण द्वारा स्थापित हुए राष्ट्रीय एक्य के बिना कांग्रेस अथवा उस तरीकी राजनैतिक संस्थायें कुछ भी नहीं कर सकेंगी।' मैं अपनी शक्ति इस कार्य में लगाना चाहता हूं। इसलिए आप मेरा त्याग-पत्र स्वीकार करें।'

यथा गुरु, तथा शिष्य अपने गुरु महर्षि दयानन्द की भांति स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने सदैव निर्भीकता का परिचय दिया। जब वे ३० मार्च १९१९ में देहली में रोलट-एक्ट के

(शेष पृष्ठ १२ पर)

★ श्री अनूपसिंह
दयानन्द भवन मुजफ्फरनगर

श्रद्धा की वेदी पर

—श्री मदनमोहन एडवोकेट मोंठ (झाँसी)

व्रतेन दीक्षामाप्नोति, दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति, श्रद्धया सत्यमाप्यते (यजु १९-३०) ॥

वीर व्रतधारी दीक्षित हो, दीप्तवान बन जाते
दीक्षा द्युति दिव लक्षणा से, दक्षिणा पद पाते
अधिकार अलंकृत तार झंकृत, श्रद्धा से भर जाते
चारु चन्द्र सत सुधा सुगन्ध सह, 'श्रद्धानन्द' कहाते

अर्थात् उत्तम शुभ कर्म व्रतधारी वीर दृढ़ संकल्पों से दीक्षित होकर उत्तम अधिकारों से अलंकृत जीवन रूपी चौराहे पर खड़े होकर पूर्ण विश्वास एवं साधिकार वाणी से मानव मात्र के कल्याण मार्ग का निर्देशन कर सकता है। ऐसी कुशाग्र बुद्धि से दुरुहतम विषय भी सुगमतम हो जाते हैं, यही दक्षिणा की प्राप्ति है। इस अपूर्व प्राप्ति से मानव हृदय में श्रद्धा का अथाह सागर प्रवाहित होने लगता है। श्रद्धारूपी अग्नि सतत प्रज्वलित होने से सत्यब्रह्म ज्ञान ज्योति का साक्षात्कार होता है, यही मोक्ष प्राप्ति का सुरम्य सोपान है। देव दयानन्द के दिव्य दर्शनों से एवं उच्चतम उपदेशों से महात्मा मुन्शीराम का उर उद्वेलित हो उठा। जालंधर की जाज्वल्यमान ज्योति ने बाह्य जगत् में राष्ट्रोत्थान के क्रान्तिकारी कदमों से घूम घूम कर धूम मचा दी। वेद कुमारी के ईसा ईसा बोल की पोल खोलने को भारत विख्यात कन्या महाविद्यालय जालंधर का श्री गणेश किया। द्युतिमान देश भक्तोत्पादक मानव जीवन के गुरुतर गढ़ गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की। सन् १९१८ में विषम परिस्थितियों में कांग्रेस अमृतसर अधिवेशन की योजना कर कांग्रेस के इतिहास में सर्व प्रथम हिन्दी भाषा में अपना स्वागताध्यक्षीय भाषण पढ़कर अदम्य साहस व प्रेम का परिचय दिया। कठोपनिषद् के ऋषि वाजश्रवस तथा गुरुवर दयानन्द के समान सर्वमेध यज्ञ आरम्भ कर सर्व प्रथम अपने पुत्रों को गुरुकुल में प्रविष्ठ कराया, अपना पुस्तकालय संवत् १९३९ ई० में गुरुकुल को भेंट कर दिया। सत्य धर्म प्रचारक प्रेस भी दान में दे दिया। तीस हजार की कोठी जो शेष रह गई थी, गुरुकुल के रजत उत्सव पर समर्पित कर सर्वमेध यज्ञ की पूर्णाहुति दे दी। चांदनी चौक में गोरखा सिपाहियों की संगीनों पर सीना तान कर निर्भीक सन्यासी ने अद्वितीय देश भक्ति प्रदर्शित की। तदनु सत्वरतः सर्वप्रथम जामा मस्जिद पर 'त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता' वेद ध्वनि से गुंजित गगन में कीर्ति केतु फहराया। वसुधा के कुटुम्ब कण पर जन-जन ने श्रद्धा से 'श्रद्धा' के चरणों पर शीश झुकाया। अपनों को अपने से अलग देख हृदय भर आया, शुद्धि का बिगुल बजा, तथा साज सजा और अन्त में २३ दिसम्बर १९२६ को भारत मां के उस निर्भीक लाड़ले सपूत का बलिदान हुआ। शत-शत प्रणाम उस देवी को जिसने नशे में चूर अपने पति को प्रेम से उठाकर उनको श्रद्धानन्द बनाया। भारत मां का अंचल भी अपने वीर सपूत का अभिनन्दन करने को नीचे आया—

मातृभूमि का वक्षस्थल से माटी पर अंचल आता
पार्थिव तन से त्याग दिया वहें अपना अन्तिम नाता
राष्ट्रीय आह्वान अलौकिक पाषाण मौन भर जाता
माथा ऊँचा करती माँ का, गाथा अमर सुनाता।
जो माँ का सम्मान किया करते हैं
प्राणों को बलिदान किया करते हैं
कायर तो मरने के पहिले मरते रहते बार-बार
किन्तु वीर तो एक बार ही मर के जिया करते हैं
माटी में मिल गई अनमोल वह पूंजी
गोलियों से गगन में यह सदा गूंजी
दर्दे वतन की अब न कोई दवा मिली
दिलावर को गोलियाँ खाकर शिफा मिली
सत्य शौर्य संयम साहस का आज हमें अभिमान है।
श्रद्धा सुमन सहित मोहन का शत-शत तुम्हें प्रणाम है।

स्वामी श्रद्धानंद जी की झांकी निकालने की अनुमति न देने से जनता में भारि असंतोष

नई दिल्ली—२ दिसम्बर ६८।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री ने प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी को एक पत्र लिखकर भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय द्वारा दिल्ली प्रशासन के उस प्रस्ताव को अस्वीकार करने पर खेद व्यक्त किया है, जिसमें गणतन्त्र दिवस के समारोह में अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी की झांकी निकाले जाने की योजना है।

अपने पत्र में श्री मन्त्री जी ने लिखा है कि स्वामी जी महाराज देश के महान विभूति थे। जिनका देश को स्वतन्त्र कराने में बड़ा योग रहा और जिन्होंने स्वतन्त्रता संग्राम में महत्वपूर्ण काम किया था।

जलियावाला काण्ड के बाद अमृतसर में कांग्रेस का अधिवेशन कराने और उसे सफल बनाने में श्री स्वामी जी का बड़ा महत्वपूर्ण योगदान था। वह स्वयं उस अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष थे। उनकी निर्भीकता और देश निष्ठा की प्रशंसा स्वर्गीय जवाहरलालजी नेहरू ने अपनी आत्मकथा में की है।

प्रधान मन्त्री से अपील की गई है कि ऐसे महान् व्यक्ति की झांकी निकाले जाने की अनुमति न देना वस्तुतः देशभक्त का अपमान है और इससे करोड़ों देशवासियों की भावना को ठेस लगेगी।

इस मामले में प्रधान मन्त्री से हस्तक्षेप करने तथा अनुमति दिलाए जाने का अनुरोध किया है।

ऋषि गुण गान

ऋषिराज आज तेरा, गुणगान हो रहा है।
तेरे बताये पथ का, सत्कार बढ़ रहा है॥
अद्भुत थी शक्ति तुझ में, मेधा विमल थे पाये।
वैदिक तर्कास्त्र द्वारा, पाखण्ड-दुर्ग ढाये।
चहुं दिशि जगत् में देखा, सद ज्ञान बढ़ रहा है॥ ऋषि०
धूर्त पाखण्डी जो ऊधम मचा रहे थे।
इल्हामी-वेद का जो हंसी उड़ा रहे थे।
उन धूर्त निन्दकों की हँसी जग आज कर रहा है। ऋषि०
स्त्री शूद्रादि पतितों को प्रथम तुम्हीं उठाये।
ब्रह्म विद्या का उपहार दे, उनको गले लगाये।
सब पतितों का जग में उद्धार हो रहा है॥ ऋषि०
स्वामी जी! तेरे उपकार थे तब तक अमर रहेंगे।
रवि चन्द्र इस जगत में, जब तक प्रकाश करेंगे।
'पाठक' ऋणी हो तेरा, तुझे नमस्कार कर रहा है। ऋषि०

—ओ३मेन्द्रप्रकाश (डी. एन.) पाठक सि. शास्त्री वाचस्पति

कवित्त

भारत के भाल से भगाया भीरुता की भूत
भव्य भाव भर भाग्य भानु की उज्यारी की।
तर्क तोप तोर से हटाया दम्भियों का दल,
पोपों के पुराण की अट्टों में खूब ख्वारी की
भूषित धरा को धाक धर्म की ध्वजा से कर,
शुद्धि का अजेय अस्त्र दान व्रत धारी को।
ज्ञान गुण गौरव गुमान गरिमा की छाप,
क्षिति में छिपी है दयानन्द ब्रह्मचारी की।
लाज ललनाओं की बचाने को सन्नद्ध रही,
मार-मार लम्पटों को 'संकटों को झेली है।
कीर्ति कौमुदी शरद शशि सी सुशोभित है,
विक्रम में विजय-वधू की जो सहेली है।
श्रद्धानन्द शोणित से सिंचित किया था जिसे,
लेखराम ने भी लहू डालकर ले ली है।
जिसकी छत्र छाया छाती क्षेम क्षिति में,
वह 'संत' स्वामी दयानन्द की लगाई कला बेली है।

★ रचयिता-संत सेवक 'संत'

काव्य कानन

श्रद्धा-श्रद्धांजलि

[१]

देव दयानन्द की विभूति-मूर्ति लेके साथ,
जीवन के क्षेत्र में अमन्द बढ़ते गए।
प्रतिद्वन्द्वियों के द्वन्द्व मूधरों को ढाते गए,
होकर स्वच्छन्द वीर-छन्द पढ़ते गए।
फोड़ डाले क्रूर कुम्भ कुटिल कुचालियों के,
दम्भ को दबा के शूल शृङ्ग चढ़ते गए।
गौरव-गुमान का महत्व-तत्व गाते गए,
मन्त्र अमरत्व के स्वतन्त्र गढ़ते गए।

[२]

मृत्यु से—
रोग-ग्रस्त ग्रस्त सारा सुन्दर शरीर अब,
बोली मृत्यु-शोणित से खप्पर को भर दे।
बोले—'घोर-वीर और शीतल समीर पीके,
मानस अधीर की समीर तेज कर दे।
टूटने न पावे सूत्र 'शुद्धि' का विशुद्ध देवि !—
ले लो प्राण चाहे देव बुद्धि तू अमर दे।
आऊँ आर्य देश में मिटाऊँ कालिमा कलङ्क
अङ्क में समाऊँ बार-बार ऐसा बर दे !

[३]

घोर तम तोम से विमण्डित बना था व्योम,
चारों ओर भूतल भ्रमों से भासमान था।
काली करतूतों की कलङ्क-कालिमा से कहीं,
दूषित स्वधर्म का पुनीत परिधान था।
व्याघ्र से विरोधियों के व्यूह सामने थे खड़े—
देश भक्ति, प्रेम एकता का अवसान था।
विषम परिस्थिति में प्रकटा प्रभा का पुञ्ज,
मानों आर्य जाति का दिनेश मूर्तिमान था।

★'कुसुमाकर', फीरोजाबाद

★

अनमोल वाणी सुधा

★

सब प्राणी पर आत्मवत, जो करते व्यवहार।
पर पीड़ा देते न जो, उत्तम वे इस संसार।॥१
जो कि सबल हो निबल की, नित करते हैं त्राण।
वे ही तो सच मनुज हैं, वे ही अरे ! महान्॥२
पर हानि में स्वार्थवश, जो नित है क्रियमाण।
वे तो सच मानव नहीं, वे हैं पशु समान॥३
मातृभूमि के हित श्रेष्ठ है, सब ही भांति स्वराज्य।
भला न सुखप्रद यदपि हो, जो कि विदेशी राज्य॥४
निर्णय कर सत असत का, ग्रहें जो सत्य प्रमाण।
जो असत्य को त्याग दे, वह सच्चा विद्वान्॥५
जिसके जल, रज, वायु से, बना, बढ़ा यह देह।
वही हमारा देश प्रिय, भारत निःसन्देह॥६
उसकी उन्नति में करें, तन धन अर्पण सर्व।
सबसे प्रिय है वह हमें, हमको उसका गर्व॥७
जब आवे आपत्ति तब कभी न छोड़े धीर।
बुद्धिमत्ता से काम ले, बने वीर, गम्भीर॥८
आत्मोन्नति से ही नहीं, कभी रहे सन्तुष्ट।
है समष्टि में व्यष्टि की, उन्नति, वह हो दृष्टि॥९
नहीं जन्म से मनुज की, होय जाति पहिचान।
पर गुण, कर्म, स्वभाव से, हो निश्चित अनुमान॥१०

★श्रीकृष्णचन्द्र श्रेंदरे 'हृदयेश'

युग पुरुष

युगों की दिशा गीत गाये न गाये।
धरा, किन्तु गाती सुनाती रहेगी॥१
सुनाते हुये त्याग के जो तराने नया राष्ट्र में रक्त संचारते हैं।
लिए कर्म की प्रेरणा की अनी को निराशा निशा–प्राण सहारते हैं
सदा देश भक्तो मे ऐसे नरो को
इकाई स्वयं ही गिनाती रहेगी॥२
विरोधी खड़े वीर भी काँपते हैं धुरी ध्रुव निश्चय जभी घूमती है
लगाते रहे प्राण की बाजिया जो उन्हीं के चरण सिद्धि आ चूमती है
जवानी रँगा ली लिए जोश रागिनि।
सदा गीत बंसी बजाती रहेगी।३
सजे शौर्य 'श्रद्धा' भरी रश्मियों से खिलाते रहे जिन्दगी की कली को
किया चूर दासत्व की शृङ्खला को मिलाते रहे मुक्ति माँ की गली को
चुने वर्ष पुष्पावली भाव की ये
रमा हार प्यार बनाती रहेगी॥४
युगों की प्रथा को नया मोड़ देने चले वीर सत्ता विजेता बने जो।
लिए सर्ग में आत्म-उत्सर्ग धारा महा काव्य के सुप्रणेता बने जो॥
सभी शक्ति दुर्गा उन्हीं मानवों की।
महा मान्यता को मनाती रहेगी॥५

★कविवर 'प्रणव' शास्त्री एम०ए०,फीरोजाबाद

★

मैं चुपचाप रहूंगा कैसे ?

ओ दयानन्द के अनुयायी,
कल को जब तुम उसे भुलाकर
एक नया पथ अपनाओगे—
मैं चुपचाप रहूंगा कैसे ?
जीवन दान किया है जिसने,
मार्ग सत्य दर्शाने को
वैदिक नाद बजाया जिसने,
देश पुनः जगाने को।
कल को जब तुम चेतनावस्था में
विस्मृत उसको कर दोगे—
मैं चुपचाप रहूंगा कैसे ?
जिसने भारत की पतित दशा में
उसको नया उत्थान दिया
करके जन-जन में परिवर्तन
वेदों का सम्मान दिया।
कल को जब तुम ज्ञानी बनकर
भ्रमितों को राह न बताओगे—
मैं चुपचाप रहूंगा कैसे ?
जग की पीड़ा को अपनाकर
सह करके मिटना होगा
भटके हुए पथिक को पाकर
सत्य ज्ञान बतलाना होगा
यदि बहक गये तुम
इस जगती के मायामोह में—
मैं चुपचाप रहूंगा कैसे ?
ओ दयानन्द के अनुयायी,
तुमको भी अपने जीवन में,
कार्य वही करना होगा।
दयानन्द की अभिलाषाओं को,
पूरी कर दिखलाना होगा।
यदि कहीं तुम निज उन्नति में
जग का साथ निभाना भूल गये—
मैं चुपचाप रहूंगा कैसे ?

★विजयदयाल सक्सेना, बहराइच

आर्य-जगत

आर्यसमाज लाजपतनगर कानपुर का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

कानपुर—आर्यसमाज लाजपतनगर कानपुर का वार्षिकोत्सव बड़े समारोह के साथ सम्पन्न हुआ। उत्सव के पूर्व एक सप्ताह स्वामी समर्पणानन्द जी वेद कथा करते रहे। विशाल जलूस (नगर कीर्तन) भी निकाला गया। जलूस के तत्काल पश्चात् महर्षि दयानन्द वैदिक प्रदर्शनी का उद्घाटन जिला पुलिस अधीक्षक श्री धर्मवीरसिंह आर्य ने किया। उत्सव का प्रारम्भ श्री देवीदास आर्य द्वारा ओ३म् ध्वज को लहरा कर किया गया। उत्सव मे एक दिन नगर महापालिका के मुख्य नगर अधिकारी श्री पृथ्वीनाथ सहाय यजमान बने। उत्सव पर श्री प्रकाशवीर शास्त्री प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश को कानपुर नगर की सभी आर्य समाजों की ओर से सभा की सहायतार्थ २१००) रुपये की थैली भेंट की गई। इस अवसर पर सर्व श्री प० वाचस्पति शास्त्री, पं० शान्तिप्रकाश शास्त्रार्थ महारथी, स्वामी समर्पणानन्द, राजपाल चिमटा मण्डली, कुँवर सुखलाल आर्य मुसाफिर, कुँवर भद्रपाल, पं० चन्द्रसेन, आदि के सारगर्भित भाषण हुये।

इस अवसर पर बच्चों द्वारा 'युग पुरुष दयानन्द' विषय पर भाषण प्रतियोगिता डा० शिवदत्त की अध्यक्षता मे हुई। इस प्रतियोगिता मे कु० शन्नोदेवी आर्या पुत्री श्री देवीदास आर्य प्रथम आई, और श्री शशि नागरथ द्वितीय व कु० रेखा तृतीय आई। उत्सव मे एक दिन ऋषि लंगर भी किया गया।

—मन्त्री

आर्यसमाज मेस्टन रोड, कानपुर का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज, मेस्टन रोड, कानपुर का ८९ वां वार्षिकोत्सव शिवरात्रि के अवसर पर १३, १४, १५, १६ फरवरी १९६९ (बृहस्पतिवार, शुक्रवार, शनिवार तथा रविवार) का होगा।

नगर कीर्तन—बृहस्पतिवार, १३ फरवरी को होगा।

—विद्याधर मन्त्री

—२१ नवम्बर से ४ दिसम्बर तक गाजीपुर मे श्री हरिशरण जी आर्य के गृह पर श्री प० सत्यमित्र जी शास्त्री ने चतुर्वेद ब्रह्म पारायण यज्ञ कराया।

[पृष्ठ ८ का शेष]

विरुद्ध सत्याग्रह आन्दोलन का नेतृत्व कर रहे थे, तो सेना ने आकर उनको तथा सत्याग्रहियो को घेर लिया। संगीनो के सामने अपनी छाती खोल कर दहाड़ते हुये उन्होने कहा था—Pierce me first then alone you can shoot at my Country men"

अर्थात् पहले मुझे गोली मारो। बाद मे तुम मेरे देशवासियों पर गोली चला सकते हो। सन्यासी की निर्भीकता एव साहस के सामने सैनिको का खून ठण्डा पड़ गया।

हिन्दुस्तान के इतिहास मे 'जामा-मस्जिद' पर वेद मन्त्र द्वारा अपना उपदेश प्रारम्भ करने का श्रेय केवल स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज को ही है। ४ अप्रैल सन् १९१९ मे उन्होंने 'जामा मस्जिद' के मन्च पर खड़े होकर अपना उपदेश दिया था।

२३ दिसम्बर १९२६ का वह अभागा दिन है जिस दिन एक धर्मान्ध मुस्लिम युवक अब्दुल रशीद ने तीन गोलियाँ चलाकर उनके भौतिक शरीर का अन्त कर दिया। उनकी मृत्यु पर शोक प्रकट करते हुये किसी कवि ने कहा था—

नङ्गी सङ्गीन सिपाही मदान्ध,
निरीह प्रजा अब कैसे निभेगी ?
आगे था कौन जो भारत के हित,
आपकी छाती यूँ ढाल बनेगी।
आत्मा कौन कि मोह बिछोह को,
छोड यूँ शरणागत स्नेह सनेगी।।
'श्रद्धानन्द' सरीखे सपूत बता जननी !
फेर भला कब और जनेगी ?'

★

आवश्यकता है

अग्रवाल बंसल गोत्र २४ वर्ष का लड़का इण्टर साइन्स स्वस्थ व सुन्दर जिसकी निजी व्यवसाय से लग० ३०००) तीन हजार रुपये मासिक आय है। एक स्वस्थ सुन्दर शिक्षित अग्रवाल आर्य कन्या की आवश्यकता है। पूरा विवरण लिखें। मन्त्री

आर्यसमाज सेक्टर ६
भिलाईनगर (म० प्र०)

हिमालय के हरे
आँवलों से निर्मित,
विटामिन 'सी' तथा
लोह से भरपूर
गुरुकुल
कांगड़ी
का
च्यवनप्राश
शक्ति संचय के
लिए आज से
ही सेवन करें

—आर्यसमाज गाजीपुर का वार्षिक उत्सव २१ से २४ नवम्बर तक समारोह पूर्वक मनाया गया। —मन्त्री

—३-४ दिसम्बर को बेवाना (फैजाबाद) में श्री पण्डित छाजूराम जी ज्ञान्त आर्योपदेशक ने मैजिक लालटेन द्वारा प्रचार किया। —राम बचन चौधरी

—आर्यसमाज बारो (मुंगेर) का वार्षिकोत्सव २५ से २९ नवम्बर तक हुआ। श्री स्वामी आनन्दगिरि जी, आचार्य रामानन्द जी शास्त्री, पं॰गङ्गाधर जी आदि विद्वानों के उपदेश हुए। —मन्त्री

—अकतूपुर हरदोई के श्री तोताराम जी आर्य के पिता श्री दलीपसिंह जी का २२ नवम्बर को देहावसान हो गया ५ दिसम्बर को शुद्धि यज्ञ हुआ। इसके पश्चात् दलीपसिंह जी श्री प॰ भगवद्दत्त जी, श्री पं॰ सुरेशचन्द्र जी बेवालङ्कार के पिता की मृत्यु पर शोक सहानुभूति का प्रस्ताव पास हुआ।

—अनन्तराम शर्मा

—आर्य उप प्रतिनिधि सभा हरदोई की ओर से ८, ९, १० नवम्बर को विसग्राम मेला व रामलीला प्रदर्शनी के अवसर पर वैदिक धर्म का प्रचार किया गया। —अनन्तराम शर्मा, मन्त्री जिलासभा

श्री भवानीलाल गज्जूलाल जी

विश्वकर्मा वंशज बालकों को
७०००) का दान

श्री भवानीलाल गज्जूलाल जी शर्मा स्थिर निधि

१—विश्वकर्मा कुलोत्पन्न श्रीमती तिज्जोदेवी-भवानीलाल शर्मा कुम्हार की पुण्य स्मृति मे श्री भवानीलाल जी शर्मा अमरावती विदर्भ) निवासी ने श्री विश्वकर्मा वंशीय बालकों के हितार्थ ७०००) की धन राशि सभा को समर्पण कर बी॰ जी॰ शर्मा स्थिर निधि की योजना निम्नलिखित नियमानुसार भाद्रपद संवत् २०१४ वि॰ सितम्बर १९५७ ई॰ को स्थापित की।

२—इस मूलधन से वार्षिक ब्याज जो कुछ प्राप्त होगा, उसे उत्तरप्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा विश्वकर्मा वंशज गरीब, असहाय किन्तु होनहार बालक बालिकाओं के शिक्षण मद में व्यय करती रहेगी।

३—उक्त निधि से आर्थिक सहायता लेने वाले इच्छुकों को मास जुलाई मे ।) के स्टाम्प भेजकर सभा से छपे फार्म मगाकर भरकर भेजना आवश्यक है।

★ मन्त्री आर्यप्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश लखनऊ

श्रीमती तिज्जो देवी

कहानी-कुञ्ज

जीवन का सत्य

★ श्रीराम शर्मा 'राम'

उस दिन प्रातः से ही, पटवारी रामलाल के दिमाग में उलझन पैदा हुई कि जग्गू चौधरी की जमीन का पट्टा होने वाला है। अतएव, वहीं से बड़ी रकम प्राप्त होने की आशा थी। जब जग्गू चौधरी नहीं आया, पटवारी रामलाल स्वतः ही उसके पास जाने को सन्नद्ध हो गया। स्वार्थ अपना था। खसरा मिलान कराना, खसरा, खतौनी और रोजनामचा भी लिखने को पड़ा था, तहसील में कागज दाखिल करने का समय आ गया था। कानूनगो कागज देखने के लिए तीन चार बार टोक चुका था। लेकिन प्रातः की उस बेला मे, पटवारी रामलाल को काम —ने की अपेक्षा, कुछ प्राप्त करना आवश्यक था, और कदाचित् इसका कारण यह था कि लड़की सयानी हो गयी, उसके लिये न अभी लड़का मिला, न पैसों का प्रबन्ध हुआ। अतएव जितने लड़के देखे, उनमें से किसी एक को रोक देना जरूरी था। रात में यही उसने पत्नी से कहा था।

नौकर हुक्का भरकर रख गया। तभी एक गिलास ताजा दूध भी पटवारी रामलाल के पेट में उतर गया। सहसा गांव के तीन चार व्यक्ति वहाँ आये। साथ में एक औरत। वे सभी गांव के चमार थे, जाने-पूछे काश्तकार। आते ही एक वृद्ध ने पटवारी रामलाल को जयराम जी की और नीचे जमीन में बैठकर बोला—"दीवान जी, तो क्या हमें भूखों ही मरना है?"

उस समय इतने बड़े आरोप का बोझ रामलाल नहीं सह सका। एकाएक क्षुब्ध और विपन्न स्वर में बोला—"क्या मैं कसाई हूं, या लुटेरा हूं।"

पटवारी को गुस्से में देखकर, वृद्ध कुटिल भाव से विनीत बनकर कहा, "अपने माई बाप से ऐसे ही कहा जाता है, दीवान जी।" वह बोला—बताओ यह सच है न, तुम रमलू को जमीन हमसे छिनवा रहे हो। सुना है, जगधर एक हजार रुपये दे रहा है।"

पटवारी रामलाल ने बात सुन ली, किन्तु एकाएक अपना मत व्यक्त नहीं किया। वह पूर्ववत् हुक्के से धुआं निकालता रहा।

वृद्ध फिर बोला—'पेट हमारा भी है, दीवान जी! हम भी इन्सान हैं। बाल-बच्चेदार हैं। बताओ तो, जमीन छूट जाएगी, तो खायेंगे क्या?" यह कहते हुए उसने पटवारी के पैरों मे पगड़ी रख दी और कहा—"हमारे तुम्हीं परमेश्वर हो, चाहे उबार दो, चाहे डुबा दो।"

उस अवस्था मे हुक्के की नली को छोड़कर पटवारी रामलाल ने उन सबकी ओर देखा और कहा—"चेता चौधरी, तूने मुझे गलत समझा है। यह रमलू का काम है, मेरा नहीं।"

"कलम तो तुम्हारी चलती है, दीवान जी।"

"हाँ, उसने पूछा था। वह कहीं से ज्यादा रुपए पा रहा है। यह भी उसने कहा था।"

पास खड़ी चेता की स्त्री ने कहा—तुम हमारी तरफ देखोगे, तो जमीन कोई नहीं ले सकेगा। जब उसे बोते जोतते हम हैं, तब भला किसका अधिकार होगा?"

पटवारी रामलाल ने फिर हुक्के मे दम मारा और अपने-आप बोला, "औरत चालाक है। कानून की बात करती है।" तभी चेता ने धोती के पल्ले में बँधे दस रुपये निकालकर कहा—"अभी तो इन्हें मन्जूर करो। आगे की बात तुम जानो।"

रुपये देखकर रामलाल चौंका। तुरन्त बोला—"इतने से काम नहीं चलेगा।"

चेता ने कहा—"आलू अभी खुदने बाकी हैं, तो उन्हें बेचकर कुछ और दे जाऊंगा।

पटवारी रामलाल सुबह का बोहनीबट्टा खूब जानता था। वह भी छोटी जाति का। अतएव, वे रुपये उठा लिये और बोला—"अच्छी बात है. तुम जाओ।"

सब चले गये, तभी रामलाल पटवारी ने सोचा, शायद आज का दिन अच्छा रहेगा। और कहा उसने, अजीब मुश्किल है, बड़ा झंझट है, इस पटवारी के पेशे में। चारों ओर दुश्मनी, सभी ओर खींच-खिंचाव। एक जान और हजार ग्राहक। कहां कहां फिरे यह रामलाल किस-किस को खुश करे,—ओह!

उसी समय पड़ोसी छोतर आया और बोला—"कुछ सुना दीवान जी, रात चौपाल में राजपूत कह रहे थे, यह पटवारी गांव की जोंक है, जिससे चिपटता है, उसी का खून चूस लेता है। वह कह रहे थे, कलेक्टर को अर्जी देंगे कि पटवारी गांव में फिसाद करता है। अपने स्वार्थ के लिए एक दूसरे को लड़ाता है।"

इतना सुनना था कि पटवारी रामलाल ने अपनी मूंछों पर बल दिया और वह सामने खड़ा छोतर कहीं उसके मन की दुर्बलता न पहचान ले; इसलिये रोबीले स्वर में बोला—"अरे छोतर! तू भी बुद्धू रहा। तू तो अब आकर कह रहा है, मैं तो रात ही सुन चुका था। ऐसी बातें मैं रोज सुनता हूं। जानता नहीं, घोड़े पर चढ़ना, और रकाब में पैर रखना मौत को निमन्त्रित करना है .....हाँ, यह समझ ले पटवारी का पेशा सुगम नहीं। बालू से तेल निकालना पड़ता है, इस रामलाल को। इन जानवरों को न लड़ाऊ, तो मुझे खा जायें इनका बस चले, तो पटवारी गिरी का बस्ता छीन ले और मार दें।" उसने कहा—"बत्तीस दांतो के बीच में रहता है, यह रामलाल पटवारी"।

छोतर अपने मन की गांठ खोलता हुआ बोला "लेकिन दीवान जी, अब तुम भी कुछ सोचो। जमाने ने करवट बदली है, यह समझ लो। अच्छा यही है, अपने तरकस के तीरों को म्यान मे रखो। समय आ गया है कि इन्सान की जिन्दगी पर कुछ रहम करो। तुम भी कुछ पुण्य कमा लो!"

उस उपदेश को सुनकर, पटवारी रामलाल हंसा 'अरे, मूर्ख! मैं दानी या पुण्यात्मा नहीं हूं। सोचो तो, घर का इतना खर्चा है, वह कैसे चले। वेतन भी थोड़ा मिलता है, और खर्च करना पड़ता है बहुत धर्म कर्म की बातें करनी हों तो वैरागी बनो, गृहस्थ नहीं।" यह कहते हुए रामलाल ने हुक्के मे दम मारा और कहा छोतर चौधरी लड़की सयानी हुई, दस हजार का खर्चा सिर पर खड़ा है। लड़कों की पढ़ाई का खर्च अलग। ये दो भैंसे हैं, गाय है, नौकर है। घर का नित्य का खर्च है, तब भला, यह कैसे पुरेगा? इस रामलाल को रेत से तेल निकालना ही पड़ता है।"

छोतर ने चकित बनकर कहा "बड़ा खर्चा है"।

"जी, अगर मैं बुद्धू रहूं, अपने तरकस के तीरों को न चलाऊँ तो जानता है न 'नौकरी रहेगी, न गांव मे इज्जत। बच्चे भी भूखों मर जाएंगे।" तभी छोतर ने पूछा" चेता आया था? क्यों आया था??"

"जिस तरह और लोग आते हैं, उसी प्रकार वह भी आया। बिना मतलब के कौन आता है, इस रामलाल के पास। जानता नहीं कि लोग मुझे भेडिया समझते हैं।

'तो चेता कुछ दे गया?'

'हां, दे गया, दस रुपये।'

'लो कमा लिये न सुबह ही सुबह दस रुपये। घर बैठे-बिठाये। तुम्हारी कलम क्या है, कोई फरिश्ता है।'

रामलाल ने हँसकर कहा—'तू बुद्धू है समझता नहीं। मेरी कलम मे जादू है। सांप की तरह डक मारना मेरी कलम का काम है।"

छोतर दयाभाव से बोला—'बड़ा गरीब है चेता। उसका कुटुम्ब बड़ा है।'

किन्तु रामलाल ने उपेक्षा भाव से कहा, मैं यह नहीं जानता। यहाँ जो भी आयेगा, अपना काम करायेगा। कुछ देकर भी जायेगा।

सुनकर छोतर हँस दिया—'तुम काम भी कहां करते हो। आदमी को न मारते हो, न जीवित रहने देते हो? लेते हो, और आँख दिखाते हो।'

उत्तर मे रामलाल भी हँस दिया—'चौधरी इस दुनिया में ऐसे ही काम चलता है। भला सीधी उंगली से कहीं घी निकलता है।'

सुनकर छोतर चौधरी चुप रह गया। उसे लगा कि हाड-मांस का यह आदमी रामलाल जाने कितना भयङ्कर है, सचमुच, जैसे भेड़िया, जिसने आदमी की खाल ओढ़कर आदमी को ठगना ही सीखा है, उसे खा जाना ही। तभी वह लौट गया।

+ + +

सम्भवत, यह दुर्दैव की ही बात थी कि मुन्शी रामलाल के विपरीत गांव के लोग दिन-दिन उग्र बन रहे थे। कई बार उस पर प्रहार भी किये गये, परन्तु वह जिस डगर पर बढ़ा आ रहा था, उससे पीछे नहीं हटा। फलस्वरूप उस अवस्था मे घर भर परेशान था। दीखता यह था कि पैसे ने पटवारी रामलाल को अन्धा बना दिया। न्याय-अन्याय, पाप-पुण्य, मानों उनकी दृष्टि मे केवल माया के शब्द थे, जिनकी ओट

आर्य्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं० एल.-६०

पौष १ शक १८९० पौष शु० ३
(दिनांक २२ दिसम्बर सन् १९६८)

उत्तर प्रदेशीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

Registered No.L. 60
पता—'आर्य्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष्य : २५९९३ तार : "आर्यमित्र"

में समाज चिर पुरातन से ठगा गया। उसका कोई व्यावहारिक अस्तित्व नहीं था। फलत उसे रात-दिन पैसे की चिन्ता रहती। घर खर्च भी सुरसा राक्षसी की तरह अपना मुँह फाड़े जा रहा था, यह भी सत्य था कि इसका प्रभाव उसके मस्तिष्क पर अनुकूल तो पड़ा नहीं, प्रतिकूल ही रहा। वह मिजाज का चिड़चिड़ा बन गया। बात-बात पर क्षुब्ध बनता। अपना और पराया, घर और बाहर, सभी जगह उसे शत्रु दिखाई देते। स्थिति इतनी बद-तर हुई कि वह प्राय सोचता, लोग उसे लूट लेंगे, मार भी देंगे।

कदाचित् यही देखकर पत्नी ने एक दिन कहा—'तुम्हें हुआ क्या है! ऐसे क्या इस घर की जिन्दगी का कारवाँ चलेगा। देखती हू, तुमने गाँव भर को अपना शत्रु बना रखा है। पानी में रह [मग]रमच्छ से बैर किया है।'

[सुन]कर, रामलाल झुंझला गया। 'कायर न बन रामप्यारी! ठकुर की बात कराकर। तू तो घर में बैठती है, मैं गाँव की नस-नस जानता हू।

रामप्यारी ने कहा—'गाँव में तो मैं भी रहती हू। घर मे बैठी रहकर सभी कुछ सुनती हू।' परन्तु रामलाल ने खिन्न बनकर कहा 'मुझे चैन नहीं। आराम नहीं।'

रामप्यारी बोली—'वह होगा ही कैसे! जब रास्ते मे काँटे बिछाओगे तो वह चुभेंगे भी।"

खिन्न भाव में रामलाल बोला—'मैं अकेला हू, मेरा कोई नहीं।'

रामप्यारी ने कहा—'सभी ऐसा कहते हैं। जो दूसरों को सतायेंगे, वे खुद भी सताये जाते हैं।'

एकाएक रामलाल का क्रोध जाग पड़ा 'रामप्यारी!'

किन्तु रामप्यारी सतर्क थी। पति के कल्याण मे अपने बच्चों का भला देखती थी। अतएव उसने कहा मैं झूठ नहीं कहती। तुम्हारे दुःख सुख में ही मेरा दुःख-सुख है। आजकल जो कुछ सुनती हूँ, उसमे मेरा जी काँपता है। तुमने तो अब यह भी भुला दिया कि कोई ईश्वर है। वह सभी कुछ देखता है।

तपाक से, क्षुब्ध भाव में रामलाल बोला, 'आग पड़े तुम्हारे ईश्वर पर! वह भी ढोंग है। मन का छलावा है। मनुष्य की दुर्बलता जब जागती है तो भगवान् का नाम लिया जाता है।'

दुःख और पीड़ा से भरकर राम-प्यारी ने कहा, अब यह भी कहने लगे। इतना समझने लगे। मैं कहती हू आदमी ही देवता है, आदमी ही राक्षस है। तुम उसी में ईश्वर खोजो।'

रामलाल चीख पड़ा—'मुझे पता है, गाँव में कौन मेरा दुश्मन है। वह जगपत लोगों को भड़काता है।"

रामप्यारी ने कहा, 'तुमने उसकी जमीन छिनवा दी। उससे रुपया भी खा लिया। बोलो यह क्या अच्छा है?'

रामलाल ने उपेक्षा भाव से कहा 'जिसने ज्यादा दिया उसका काम कर दिया।' वह तेज स्वर में बोला 'यह सौदा है, जो अधिक देगा, वह पायेगा। मैं धर्मादा की दुकान नहीं खोले बैठा जो बाँटता फिरूँ।

रामप्यारी ने कहा, 'कल चैता चमार की स्त्री आई, तो वह भी रो रही थी। उसकी जमीन छिनवा दी।'

'हाँ, वह भी मेरी इसी परम्परा का परिणाम था। चालाक औरत कम कराना चाहती थी, परन्तु देने के नाम पर भगवान का नाम लेती थी।'

रामप्यारी ने कहा, 'जानते हो, आजकल उसके घर मे बच्चे भूखे रहते हैं। जाने क्या कुछ खाकर पेट भरते हैं। वह रो रही थी और उसकी आत्मा कोस रही थी।'

रामलाल ने बात सुनी, तो वह घृण्य भाव से मुसकराकर रह गया।

× + +

रात थी, घोर काली काली। उसी समय गाँव मे शोर उठा, बन्दूक की गोली का नाद भी। बच्चे बच्चे ने समझ लिया कि पटवारी रामलाल के घर डाका पड़ गया। किन्तु लोग तटस्थ थे, गोली के डरके कौन जाय। सभी के मन में इसी प्रकार के विचार आ जा रहे थे।

फलस्वरूप डाकुओं ने माल लूटा और रामलाल के साथ उसकी पत्नी रामप्यारी को घायल भी कर दिया। किन्तु जब डाकू लौटे, तो बिजली की तरह गाँव मे यह बात भी फैल गयी कि डाकू रामलाल की लड़की यशोदा को भी मुश्क बाँध कर ले जा रहे हैं। इतना सुनना था कि वह उपेक्षित, उदासीन समाज एकाएक जागरूक बन गया। उसे रामलाल से शिकायत हो सकती थी, परन्तु उसकी लड़की से नहीं। वह तो गाँव की लड़की थी। गाँव की प्रतिष्ठा थी। तभी घर-घर से लाठी, बल्लम और गड़ासे निकल आये। गाँव का समाज बढ़ आया। डाकू जैसे ही राम-लाल के घर से निकले, तो वे घेर लिये गये। किन्तु उनके पास बन्दूकें थीं, उनकी सुव्यवस्थित युद्ध-रचना थी। लेकिन जब गाँव आंधी की तरह बढ़ा, तो वे डाकू भी अपने को न सभाल सके गांव के कई आदमी घायल हुए तो कई डाकू भी। लड़की छुड़ा ली गई। किन्तु रामलाल का रुपया, जेवर भागने वाले डाकू ले गये।

रामलाल और उसकी पत्नी अस्वस्थ घायल थे। बेहोश थे। उसी अवस्था में वे रातों रात नगर के अस्पताल में पहुचा दिये गये। पुलिस आ गई। गाव में जो व्यक्ति घायल थे पुलिस उन्हें भी उठा ले गई। डाकुओं की लाशें भी ले गई। लेकिन रामलाल जब होश में आया और पुलिस अफसर ने उसका बयान लिया, तो उसने सभी डाकुओं को तो पहचाना नहीं, परन्तु जगपत और चैता के [लड़कों] का नाम उसने अवश्य लिया।

वहीं पर उपस्थित लोगों में [गाँव] का मुखिया भी था। उसने कहा, "[हुजूर] ने बात कर रामलाल जगपत और [चैता] का लड़का हरखू घायल हो चुके [हैं] उन्हें डाकुओं ने मारा है। उन्होंने [आगे] बढ़कर डाकुओं को रोका था। [वे] लड़की के लिये आज उनके घर बरबाद हो गये।"

रामलाल ने बात सुनी, तो वह [मौन] रह गया। बरबस ही, कदाचित जीवन में पहली बार गाँव के मुखिया [तथा] पुलिस अफसर के समक्ष फूट फूटकर [रो] दिया। वह चीख पड़ा, हाय "जगपत हरखू"

दो मास बाद जब रामलाल [पत्नी] सहित अस्पताल से निकला तो लोग [कहते] वह कोई दूसरा रामलाल था, पहले [वाला] नहीं। आश्चर्य कि उसकी जीवन [भर] की कमाई चली गई, तो भी [उसे] [सन्ताप] नहीं हुआ। परन्तु जीवन में जिस सत्य को नहीं समझ सका था, अब उसी को अपनी दृष्टि के समक्ष पा गया [था]। वह गद्गद् और हर्ष से पुलकित हो [उठा] था।

आर्यसमाजों से अपील

गढ़वाल में आर्यसमाज मन्दिर निर्माण की योजना

आर्यसमाज साँवली आदि पचपुरी (गढ़वाल) के कार्यकर्ताओं ने निश्चय किया है कि स्यूंसी (गढ़वाल) मे एक आर्यसमाज मन्दिर बनाया जावे। गढ़वाल आदि पर्वतीय क्षेत्रों में आर्यसमाज का अधिक प्रचार न होने के कारण मन्दिर निर्माणार्थ उन्हें बाहर से धन संग्रह करने निमित्त विवश होना पड़ रहा है। उपरोक्त आर्यसमाज ने धन के लिये अपील भी निकाली जिसका समर्थन सार्वदेशिक सभा ने किया है तथा प्रदेशीय सभा ने अपनी अन्तरंग दि० ९-१० ६८ में निश्चय किया है कि अपील आर्यमित्र में प्रकाशित की जावे।

पर्वतीय क्षेत्रों में ईसाई मिशन की व्यापक और आपत्ति जनक प्रवृत्तियों एवं उनके बढ़ते हुये प्रभाव को रोकने के लिये वहाँ आर्यसमाज मन्दिर की परमावश्यकता है।

अत. सभा समस्त उत्तर प्रदेशीय आर्यसमाजों और आर्यसमाज से प्रेम रखने वाले महानुभावों से अनुरोध करती है कि उपरोक्त आर्यसमाज मन्दिर निर्माणार्थ वह धन भेजकर पुण्य के भागी बनें।

दानी महानुभाव धन मनीआर्डर अथवा बैंक ड्राफ्ट द्वारा आर्यसमाज साँवली आदि पचपुरी पो० बंजरो (गढ़वाल) अथवा आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ के पते पर भेजने का कष्ट करें।

—प्रकाशवीर शास्त्री
प्रधान

प्रेमचन्द्र शर्मा
मन्त्री

आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के लिये सत्यार्थवीर आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से कृष्णगोपाल शर्मा द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित